प्रचारक ग्रन्थावली परियोजना
हिन्दी प्रचारक संस्थान

पो.बाक्स ११०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१ के लिए विजय प्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित तथा मुद्रण इम्प्रेशन ग्राफिक्स, वाराणसी ✆ : ३१७७२०

१९९७ मूल्य: ८०.००

प्रचारक ग्रंथावली परियोजना-३

आवरण: अवनि धर

कलासंयोजन: राम प्रसाद सिंह

फोटो टाइप सेटिंग: विशिष्ठा रिप्रोग्राफिक्स (प्रा० लि०)
एच०-74 सेक्टर-9
नोएडा (गाजियाबाद, उ० प्र०)

देवकीनन्दन खत्री समग्र

DEWAKINANDAN KHATRI SAMAGRA

All Novels of Dewakinandan Khatri

Edited by Dr. Yugeshwar

प्रकाशकीय,

बाबू देवकीनंदन खत्री ने हिन्दी की तिलिस्मी कथा को इतनी प्रौढ़ता दी कि वे तिलिस्मी कथा के पर्याय बन गये । उनके उपन्यासों ने हिन्दी में पाठकों का अच्छा खासा समूह पैदा कर दिया । बहुतों ने चंद्रकांता संतति पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी ।

खत्री जी के उपन्यासों ने प्रारंभ से ही पाठकों को जिस ढंग से आकर्षित किया है वह आकर्षण आज तक बना है । काल-प्रवाह में हिन्दी कथा साहित्य ने अनेक उतार चढ़ाव देखे । किन्तु देवकीनन्दन खत्री आज भी लोकप्रिय हैं;तिलिस्म कथा सम्राट् हैं । अनेक लेखकों ने उनके अनुकरण का प्रयास किया । किंतु कोई भी कथाकार खत्री जी के मानक को तोड़ न सका ।

अद्‌भुत प्रतिभा पायी थी खत्री जी ने । इतने सारे पात्रों, परिस्थितियों, घटनाओं तथा स्थानों का सामंजस्य बैठाते हुए पाठकों की उत्सुकता को निरंतर बनाए रखना असामान्य मेधा का काम है ।

बहुत दिनों से पाठकों की मांग थी कि समग्र खत्री साहित्य कम मूल्य पर सुलभ हो । पाठकों की

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर हमने चंद्रकांता, चंद्रकांता संतति के साथ ही खत्री जी के अन्य सभी उपन्यास, 'कुसुम कुमारी,' 'नरेन्द्र मोहिनी,' 'बीरेंद्र वीर,' 'काजर की कोठड़ी' एवं 'गुप्त गोदना' को भी शामिल कर लिया है। भूतनाथ को खत्री जी के पुत्र स्व० दुर्गाप्रसाद खत्री ने पूरा किया। इस लिए इस समग्र में भूतनाथ को शामिल करना अनुचित समझा गया। इस समय हम हिन्दी पाठकों को भारतेन्दु समग्र, देवकीनन्दन खत्री समग्र, बंकिम समग्र दे रहे हैं। आने वाले दिनों में हमारी समग्र परियोजना और आगे बढ़ेगी। हम दूसरे लेखकों को भी छापेंगे। आकाश छूते हिन्दी पुस्तकों के मूल्य को हमने धरती पर खड़ा करने का विनम्र साहस किया है। किन्तु यह भी स्पष्ट है कि इस परियोजना और हमारे साहस की सारी सफलता हिन्दी के श्रद्धालु एवं खरीदकर पढ़ने वाले पाठकों पर निर्भर है। हमारा आग्रह है कि आप तो इस ग्रंथावली को खरीदें ही, साथ ही कम से कम पांच अन्य पाठकों को भी प्रेरित करें।

प्रकाशक

भूमिका

श्री देवकीनंदन खत्री हिंदी के क्रांतिकारी लेखक हैं । क्रांतिकारी का अर्थ सामाजिक क्रांति नहीं बल्कि साहित्यिक क्रांति से है । इनके उपन्यासों ने साहित्य की सृष्टि में तहलका मचा दिया । सारी विधाओं के चूल हिल गये । स्थापितों ने चौंक कर देखा 'अरे यह क्या हो गया ? कैसा तूफान आ गया ?' प्रत्येक क्रांति के पीछे क्रोध, प्रेम, आकर्षण और आश्चर्य मिले रहते हैं । खत्री जी के उपन्यासों की क्रांति के पीछे भी ऐसा ही होना चाहिए। किंतु आश्चर्य है कि खत्री जी के आसपास क्रोध बिल्कुल नहीं है । कहीं एकाध झटका था भी तो वह शीघ्र ही समाप्त हो गया । और क्रांति के इस बुनियादी आधार के बिना भी हम उन्हें क्रान्तिकारी लेखक कहकर क्रोध ही तो जगाना चाहते हैं ।

खत्री जी की रचनाओं में क्रोध के अवसर बहुत हैं । इसलिए कि उनमें द्वन्द्व ही तो है । किंतु वे क्रोध को किंचित् स्थानों पर व्यक्त करते हैं । तलवारें चलती हैं । बर्छे चमकते हैं । घायल होते हैं । किंतु मौतें कम से कम होती हैं । जीवन संकटों से भरा है । फंसना, घिरना, पकड़े जाना, कैद की जिंदगी बिताना आम हैं । शायद कोई प्रमुख पात्र अपनी क्रियाशीलता में धोखा न खाता हो । गिरफ्तार न हुआ हो । किंतु बिना क्रोध और घबड़ाहट के प्रयत्न करता है । ऐयारी का उद्देश्य है दूसरों को फाँसना । इस फाँसने के चक्कर में हर ऐयार या ऐयारा फँसे बिना नहीं रहता है । किंतु ऐयारों पर किसी को क्रोध नहीं आता। उन्हें दंडित नहीं किया जाता। उनका दंड मात्र जेल है। यातना नहीं। ऐयारों के साथ क्रोध और क्रूरता दिखाने वालों को अच्छा नहीं माना जाता। इसलिए कि ऐयारों की स्थिति राजदूतों सी प्रतिष्ठित और सुरक्षित है।

दंड भी कर्मों का फल है। नरेन्द्र मोहिनी के अंत में 'मोहिनी चिल्लाई और बोली' हाय हाय ! बेशक धोखा हुआ ।......अफसोस मेरी बिल्कुल कार्रवाई मिट्टी हो गई और जीते जी मुझे अपने कर्मों का फल भोगना पड़ा ।' खत्री के सारे उपन्यासों का यही निष्कर्ष है । पापी की पराजय । धर्मात्मा की विजय । सत् पक्ष कभी हारता नहीं । सत्यमेव जयते । इसे सिद्ध करने के लिए लेखक ने अनेक क्रूर पात्रों की सृष्टि की । क्रूरता, नीचता और हत्याओं के लिए छटपटाने वाले असत्पक्षी पात्रों की कमी नहीं । बीरेन्द्रवीर का सुजान सिंह अपने हाथों अपनी लड़की का खून करना चाहता है किंतु यह उसकी लाचारी है । उसकी हर हत्या में हिचक है । लेखक प्रायः क्रूरता को बचाता है । किंतु यह भी सच है कि क्रूरता और हत्याएँ समाज में हैं । उनकी सामाजिक गति और उपयोगिता भी है । दया की शक्ति क्रूरता की शक्ति के विरोध में ही प्रगट होती है । लेखक क्रूरता को कैसे बचाता है इसका एक उदाहरण 'बीरेन्द्रवीर' में दिखाई पड़ता है 'इत्तिफाक से हरीसिंह का सिर पत्थर की चौखट पर इस जोर से जाकर लगा कि फट कर खून का तरारा बहने लगा । साथ ही इसके एक लौंडी ने लपक कर हरीसिंह के हाथ की गिरी हुई तलवार उठा ली और एक ही वार में हरीसिंह का सिर काट कलेजा ठंडा किया । बाबू साहब—'हाय तुमने यह क्या किया ?'

क्रूरतम को मारने में 'इत्तिफाक' और लौंडी का प्रयोग इस बात को प्रमाणित करता है कि लेखक हत्याओं से कितना दूर रहना चाहता है । हर समय षड्यंत्रों, अपराधों और

जालसाजों के बीच चलने वाली कथा क्रोध, क्रूरता और हत्याओं से वहुत ही वचकर चलती है । इसे खत्री जी के उपन्यासों की एक महत्वपूर्ण खूवी कहनी चाहिए ।

किंतु क्रोध रहित क्रांति की वात अभी पूरी नहीं हुई है । खत्री जी की क्रांति के कई आयाम हैं । एक आयाम की चर्चा वार-वार आती है कि इनके उपन्यासों ने हिंदी रचना संसार में ऐसा चमत्कार पैदा किया कि लोगों को हिंदी सीखने के लिये मजवूर होना पड़ा । चंद्रकांता और चन्द्रकांता संतति पढ़ने के लिये लोग हिंदी सीखने लगे । विना किसी वैर विरोध या जोर जवर्दस्ती के साहित्य की दुनिया में खत्री जी का डंका वजने लगा । वे कथा साहित्य के वादशाह हो गये । क्या यह कम क्रांतिकारी वात है ? विना किसी जद्दोजहद के न केवल कि खत्री जी वादशाह वने वल्कि वेचारी हिंदी भी प्रतिष्ठित हुई । खत्री जी के उपन्यास हिंदी की सीमा लांघ गए । हर राज्य और हर स्तर के पाठकों पर छा गए । वाद में जव पाठकों की रुचि वदली तव भी किसी ने विरोध नहीं किया । जिस सहज भाव से ऐयार और तिलस्म आए थे उसी सहज भाव से कम होने लगे । शायद खत्री जी भी इस वात को जानते थे । इसीलिये उनके उपन्यासों का एक तत्व तिलिस्मी तोड़ना भी है । समय के प्रवाह में तिलस्म टूटे । किंतु टूटकर भी वे मौजूद हैं । एक वार जो स्थापित हो गया वह टूटकर भी कितना टूटेगा ? किसी न किसी रूप में आज भी मौजूद है । आज भी इन उपन्यासों की पाठक संख्या कम नहीं है । प्रवुद्ध वर्ग चाहे जो सोचता हो किंतु सरल उत्सुकता पूर्ण जीवन के पाठकों की कमी नहीं है । इन्हें आज भी ये उपन्यास आनंद देते हैं । वहुत थोड़े से लेखक हैं जो पाठक को चंद्रकांता और संतति सा पकड़ते हैं । जो भी पाठक एक वार खत्री जी के कमंद में वंधकर या भूल से भी तिलस्म में घुसा कि उसका निकलना कठिन । खत्री जी के ऐयार हर क्षण घूमते हैं । इनकी कोई भी चीज सूंघी नहीं कि होश गायव । फिर दुनिया का कोई भी लकलका पाठक को होश में नहीं ला सकता ।

ऐयारी, तिलस्म, लकलका, वटुआ आदि के कारण कभी-कभी इन उपन्यासों को वहुत हलका समझने की कोशिश हुई है । किन्तु इन उपन्यासों की दुनिया कुछ असामान्य है । इनका समाज और मनोविज्ञान असामान्य है । आवश्यकता है इस असामान्य को सहानुभूति देकर समझने की । किंतु देवकीनंदन खत्री के उपन्यासों को समझने के पूर्व हमें खत्री जी का परिचय जानना आवश्यक है । रचना के साथ रचयिता को जानना हर वार आवश्यक नहीं । उससे कभी-कभी असुविधा भी हो सकती है । नासमझी आ सकती है । किंतु देवकीनंदन खत्री के साथ ऐसी वात नहीं है । उलटे खत्री जी का जीवन, उनका रहन-सहन, विचरण और कार्यक्षेत्र हमें उनके उपन्यासों को समझने में सहायता देते हैं ।

देवकीनंदन खत्री के पूर्वज कभी मुल्तान में रहते थे । किंतु इनके पिता लाला ईश्वरदास काशी आकर रहने लगे थे । विवाह के वाद ईश्वरदास अपनी ससुराल पूसा, मुजफ्फरपुर में रहने लगे । वहीं १८ जून सन् १८६१ को (आषाढ़ कृष्ण ७ सं. १९१८) देवकीनंदन खत्री का जन्म हुआ । इनकी एक कोठी गया में भी थी । वनारस के राजा ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह की वहन गया के टिकारी राज्य में व्याही थी । देवकी नंदन-खत्री अपने व्यापार के सिलसिले में अक्सर टिकारी जाया करते थे । वहीं इनका संवंध काशी नरेश ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह से हुआ । ये महाराज के अत्यंत कृपापात्र हो गए। इससे इन्होंने चकिया और नौगढ़ के जंगलों का ठीका लिया । इस ठीके के कारण इन्हें यहाँ के जंगलों और खंडहरों में घूमने का पर्याप्त मौका मिला । खुद भी घूमते । मित्र मंडली भी घूमती । यह एक ढंग का रोमानी उत्साह भी रहा होगा ।

देवकीनंदन जी की मित्र मंडली में कई रियासतों के राजा, कितने ही फकीर, औलिया और तंत्र साधक थे । सुनने में यह मेल विचित्र लग सकता है किंतु इसमें कोई

अस्वाभाविकता न थी । अपने श्वसुर से न पटने के कारण इनके पिता मुजफ्फरपुर छोड़कर काशी आ गए । आप यहाँ जरी, चाँदी के हौदे एवं राजदरबार का सामान बनवा कर व्यापार करते । इससे आमदनी के साथ राजाओं, जमींदारों और सामंतों का गहरा संपर्क भी था ।

देवकीनंदन खत्री की प्रारंभिक शिक्षा उर्दू-फारसी में हुई थी । बाद में इन्होंने हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त किया । इन्हें पहाड़ों, जंगलों आदि में घूमने का बड़ा शौक था । १५-२० दिनों तक लगातार घूमते । दिन-रात घूमते । चाँदनी रातों में जंगलों में घूमते । दिल्ली, कलकत्ता, मथुरा, हरिद्वार आदि भी घूम आए थे । हरिद्वार से विशेष प्रेम था । इसलिये साल में एक बार वहाँ अवश्य जाते थे । ध्यान रखिए, हरिद्वार हिमालय का द्वार है । रहस्यों से भरा हिमालय । तांत्रिकों, योगियों, साधु-संन्यासियों का हिमालय । शिव का निवास और नदियों का उद्गम एवं विभिन्न प्राकृत संपदा का संगम हिमालय । ऐसे ही प्रतिवर्ष नैनीताल भी जाते ।

उनमें एक तरफ सामंती शान-शौकत थी तो दूसरी ओर बनारसी मौज-मस्ती और फक्कड़पन थे । भांग का शौक था । सामंती अंदाज में आम, कसेरू, शहतूत, फालसा या लीची आदि की भाँग बनती ।

देवकीनंदन खत्री की इस छोटी सी जीवनी से उनके संस्कारों का पता लगता है । उन्होंने सामंती जीवन की अच्छाइयों, बुराइयों और स्थितियों को अत्यंत नजदीक से देखा था । उसे भोगा भी था । इसीलिये सामंती समाज को समझने में उनके उपन्यासों से काफी मदद मिलती है । उनके उपन्यासों के मुख्य विषय राजा, रानी, राजकुमार, राजकुमारी, सामंत, सामंत संतानें और उनके सैनिक आदि हैं । दास-दासियाँ जो सामंती जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं इन उपन्यासों में लुप्त प्राय हैं । दास-दासियों का स्थान ऐयारों को प्राप्त है । भोग की अपेक्षा संघर्ष की प्रधानता है । कई पीढ़ी संघर्ष में लगी है । चंद्रकान्ता के पति वीरेन्द्रसिंह, उनके पिता सुरेन्द्रसिंह, पुत्र इन्द्रजीतसिंह और आनंदसिंह यह तीन पीढ़ी संघर्षशील है । ऐसी ही स्थिति भूतनाथ की है ।

अंग्रेजी राज ने भारत में एक अजीब तिलस्म तैयार किया था । उसने आधुनिंक उद्योगों का पूंजीवाद आरम्भ किया। एक नवीन मध्यवर्ग की स्थापना की । पुराने मूल्यों, मान्यताओं के स्थान पर नये मूल्यों और मान्यताओं को बढ़ावा दिया । एक नया वर्ग तैयार हुआ । अंग्रेजी पढ़ा, अंग्रेज भक्त एवं अंग्रेजी संस्थाओं से सम्बद्ध यह वर्ग अर्ध अंग्रेज था । किन्तु पुराने सामंतों को बिल्कुल समाप्त नहीं कर दिया । उनकी पुरानी हैसियत और प्रतिष्ठा कम अवश्य कर दी । किंतु उन्हें समाज के साधारण वर्ग से अलग रखा । नये मध्य वर्ग में भी शामिल नहीं होने दिया ।

पुराने सामंतों की मनःस्थिति माध्यमिक थी। ये शासक भी थे, शासित भी । किंतु इनकी आर्थिक स्थिति बदलती रहती थी । इनके जीवन में बड़ा उतार-चढ़ाव था । ये अंग्रेजों के भक्त भी थे, डरे भी थे । डर कई ओर से था । अंग्रेजों का, नए मध्य वर्ग का एवं साधारण जन का । ये साधारण जन के शासक अवश्य थे । किंतु पुराना आत्मविश्वास समाप्त हो चुका था । आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक दुनिया में भी इन की नींव हिल रही थी । राज्यसत्ता मूलतः विदेशियों के हाथ में थी । इन्हें अंग्रेज अफसरों की हर प्रकार की सेवा करनी पड़ती थी । एक तरफ थी विलासिता की पुरानी परंपरा तो दूसरी ओर नयी औद्योगिक सभ्यता उसे इनकार कर रही थी।

पूरी सामंती व्यवस्था लड़खड़ा गयी थी । यह भी सच है कि १८५७ में अंग्रेजों के विरुद्ध मुख्यतः सामंत ही लड़े । इसलिये कि अंग्रेजों ने सत्ता सामंतों से छीनी थी । उस

समय और कौन था जो अंग्रेजों से लोहा लेता। जिसे हम जनता कहते हैं उसमें चेतना लाने का श्रेय तो महात्मा गाँधी को है। उस समय जन भावना का प्रतिनिधित्व सामंतों के हाथ में था। यही कारण है कि १८५७ का विद्रोह सामंती होकर भी राष्ट्रीय आन्दोलन था। सामंतों का नेतृत्व होने मात्र से वह अराष्ट्रीय नहीं कहा जा सकता है। बहुत बाद में राष्ट्रीय-आन्दोलन का नेतृत्व पूंजीपतियों के हाथ में गया। वह भी खुल कर नहीं। बाद में सामंत अंग्रेजों के साथ हो गए। पूंजीपति सत्ता में सीधी साझेदारी की अपेक्षा प्रतिनिधि मूलक साझेदारी में विश्वास करता है। उसका मुख्य ध्यान व्यापार, उद्योग और पैसों पर रहता है। वह शासन के झमेले में नहीं फंसना चाहता है। जैसे पुराने सामंत व्यापारी नहीं होते थे। यह एक ढंग की वर्णव्यवस्था है। वर्ग विभाजन है। सत्ता और सम्पत्ति के बीच की लक्ष्मण रेखा है। इसे आज भी देखा जा सकता है। स्वतंत्र भारत में अनेक करोड़पति हैं जो पहले कंगाल थे। ये करोड़पति सत्ता बल पर हुए हैं यह नहीं कहा जा सकता है। ऐसे नये धनियों में तस्करों और ठीकेदारों को देखा जा सकता है। व्यापारियों की परंपरा भी बहुत कुछ सत्ता से स्वतंत्र है। इनमें कभी-कभी घाल-मेल भी देखा जा सकता है। कुछ मान्य पेशे और सरकारी नौकरियाँ भी पैसा बनाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण होती हैं।

खत्री जी कालीन जमींदार या सामंत एक टूटते हुए स्वप्न लोक में रह रहे थे। जिस लोक को वे छोड़ना नहीं चाहते थे। किन्तु जिसका रहना उनके वश में नहीं था। वे किसी विद्रोह की स्थिति में भी नहीं थे। एक बार विद्रोह पराजित हो चुका था। वे ऐयारी से काम लेना चाहते थे। कोई लकलका सुँघाए कि काम बने। इस प्रकार वे एक दिवास्वप्न में लीन हैं। किंतु वे अपनी बेचैनी को जानते हैं। इसीलिये सामाजिक छल-कपट, ईर्ष्या, द्वेष, मार पीट भी बहुत हैं। उनका समाज विच्छृंखल हो रहा है। उनकी सत्ता टूट रही है। वे लड़ते अवश्य हैं। किंतु उनकी लड़ाई की पुरानी तेजस्विता खत्म है। पुराना अंदाज भी नहीं रह गया है। उनमें पौरुष और पुरुषार्थ का घोर अभाव है।

सामंती सभ्यता ने जिन मानवी मूल्यों और आदर्शों की स्थापना की थी वे भी समाप्त प्राय हैं। वे सब करीब-करीब मुगल शासन में ही साथ छोड़ चुके थे। आखिर मुगल शासन का पतन हुआ ही क्यों ? इसीलिये न कि वह केवल विलासी मात्र रह गया था। राज्य का आधार विलास और निवास हो गया था। शासन का प्रजा से संबंध बिल्कुल छूट गया था। कोई भी शासक अपना विलास छोड़ने को तैयार न था। विलास ने आपसी कलह को जमीन दी। विलास और कलह में वे इतने लिप्त हुए कि उन्हें अपनी सुरक्षा का ध्यान भी नहीं रहा। उर्दू की श्रृंगारी और रीतिकाल की श्रृंगारी कविताएँ इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं।

राष्ट्रीय जागरण का विकास इनसे हटकर हुआ। भारत के राष्ट्रीय जागरण में न केवल कि अंग्रेजों का विरोध है बल्कि भारत के सामंत वर्ग का भी विरोध है। यही कारण है कि समाजवादी नारों और कुछ कार्यों के बावजूद स्वराज्य में पूंजीवाद विकसित हुआ। किंतु सामंती प्रथा का बिल्कुल उच्छेद हो गया। स्वतंत्र भारत में देशी रियासतों को केंद्र के दीपक पर गिरे पतंग सा मिला लिया गया। इसलिये कि स्वतंत्र भारत में सामंतवाद के लिए कोई स्थान नहीं रह गया था। उसने जनता की पूरी सहानुभूति खो दी थी। आधुनिक भारत के विकास में वह अवरोधक सिद्ध हो रहा था। अंग्रेजी राज्य के जमाने में हुए चुनावों में सामंतों ने अपनी पार्टियाँ अलग बनाई। उन्होंने राष्ट्रीय कांग्रेस का विरोध किया। अस्तित्व रक्षा के लिए अंग्रेजों का समर्थन किया। यह भी एक अलग स्थिति थी कि जिन शक्तियों ने १८५७ में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया वे आगे चलकर अंग्रेजों के साथ हो गयीं। किन्तु सामंत लगातार पराजित होते गए। खत्री जी के उपन्यासों की

कहानियाँ प्रायः छोटी-छोटी रियासतों के आपसी कलह की हैं । खत्री जी प्रायः अंग्रेजी राज के चित्रणों से बचते हैं । उनकी कथा अंग्रेजों की नगर सभ्यता से दूर जंगलों-पहाड़ों में रहती है । खत्री जी के कथा साहित्य में ये राजनीतिक संघर्ष प्रगट रूप से भले न हों । किंतु जो संघर्ष और हलचल हैं उनमें इन्हें देखा जाना चाहिए ।

ऐयारी और तिलस्मी कथा की गति बाधित होने का एक कारण इनमें चित्रित सामंती जीवन शैली भी है । औद्योगिक क्रांति के विकास की आवश्यकताओं और स्थितियों से इनका सामंजस्य नहीं बैठ सका । ये बीते दिनों की कहानियाँ हो गयीं । आगे की कथाओं में किसान, मजदूर एवं मध्यम वर्ग ने स्थान पाया । इनके अतिरिक्त सामाजिक बुराइयाँ भी स्थान पाने लगीं । विधवा, अछूत, वेश्या, राष्ट्रीय आन्दोलन आदि की समस्यायें ज्वलंत बन गयीं । इनकी कथाओं ने सामाजिक-राष्ट्रीय समस्याओं को अपना क्षेत्र बनाकर नयी क्रांति की शुरूआत की । नयी क्रांति की जमीन तैयार की । अब कथा साहित्य मनोरंजन के संसार से आगे बढ़कर परिवर्तन का वाहक बना । इतना अवश्य है कि इनकी मनोदशा खत्री जी के कथा साहित्य में भी देखी जा सकती है ।

तिलिस्मी कथाएँ घटनामूलक होती हैं । हर क्षण कोई न कोई घटना घटती रहती है । ऐसी घटनाएँ जिनका पूर्वानुमान नहीं होता । ये घटनाएँ छोटी-छोटी होती हैं । बंधन-मुक्तिवाली होती हैं । बाबू देवकीनंदन खत्री कहते हैं—'तिलस्म वही शख्स तैयार करता है जिसके पास बहुत मालखजाना हो और जिसका कोई वारिस न हो । तब वह अच्छे अच्छे ज्योतिपियों नजूमियों से दरयाफ्त करता है कि उसके या उसके भाइयों के खानदान में भी कभी कोई प्रतापी और लायक पैदा होगा या नहीं, आखिर ज्योतिषी और नजूमी इस बात का पता देते हैं कि इतने दिनों के बाद आप के खानदान में एक लड़का प्रतापी होगा, बल्कि उसकी जन्मपत्री भी लिखकर तैयार कर देते हैं । उसी के नाम से खजाना और अच्छी-अच्छी कीमती चीजों को रखकर उस पर तिलिस्मी बाँधते हैं* किंतु संतति के अनेक भाग, भूतनाथ में उनका और विस्तार खत्री जी की तिलस्म संबधी मान्यता को बाधित करते हैं । चंद्रकांता तक यह मान्यता ठीक थी । आगे तो संतानों की भीड़ लगी है । इसीलिये खत्री जी ने एक 'आजकल.....'वाली परिभाषा दी । तिलिस्मी मूलतः राजपरिवारों से संबद्ध होता है । इसमें राजपरिवारों के प्रेम, द्वन्द्व, संघर्ष आदि खुलकर काम करते हैं । केन्द्रीयसत्ता अंग्रेजों के पास रहने के कारण सीमित क्षेत्र के सामंत या राजपरिवार आपसी प्रतिद्वन्द्विता में संलग्न रहते हैं । इसमें गुप्त धन की खोज होती है । किंतु धन जैसा ही महत्वपूर्ण है राजकुमारों और राजकुमारियों का प्रेम । इस प्रेम में खलनायक-नायिकाओं की भूमिका भी रहती है । तिलिस्म को बनाने, तोड़ने, पता बताने, खोलने आदि में ज्योतिषियों, तांत्रिकों आदि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । पुरुष पात्र तिलस्म को तोड़ते हैं । स्त्रियाँ उन्हें खोलती हैं । तिलस्म की संपत्ति के रक्षक या तो पैत्रिक संपति मानकर रक्षा करते हैं या इसके लिये नियुक्त कर्मचारी होते हैं । ये गुप्त स्थान में संन्यासी का वेश बनाए रहते हैं । उपयुक्त अधिकारी का इंतजार करते हैं । दारोगा और मायारानी ऐसे ही पात्र हैं । तिलस्म है तो किला । किंतु यह मानव बाशिंदों से हीन संसार है। ऐसे किलों की चर्चा पुराणों, प्राचीन कहानियों आदि में मिलती है । सीता की खोजमें भटकनेवाले वानर एक ऐसे ही खोहनुमा किला में चले गये थे । जहाँ सबका प्रवेश वर्जित है । इसकी रखवाली एक तपस्विनी करती थी । यहाँ मनुष्य को छोड़कर सारी सुविधाएँ प्राप्त थीं । इससे निकलने का रास्ता नहीं है । वानरों ने आँख मूंदी । बाहर आ गए । मूँदहु नयन बिबर तजि जाहू । वही हुआ । वानरों ने आँखें बन्द कीं । नयन मूँदि पुनि देखहिं बीरा । ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा ।

* चंद्रकान्ता, भाग ४, बयान २० ।

यहां सीता की खोज भी एक प्रकार का प्रेम-प्रसंग है।

तिलस्म में अन्न नहीं होता । वहाँ फँसे लोग प्रायः फलों और मेवों पर जीवन बिताते हैं। मधुर फल । मधुर जल । 'मानस' की तपस्विनी वानरों से कहती है—

तेहि तब कहा करहु जलपाना । खाहु सुरस सुंदर फल नाना ।

ये लोग नहाना नहीं भूलते । दोनों स्थानों में नहाने की पूरी व्यवस्था है । चंद्रकान्ता, संतति आदि में तो कपड़े भी बदले जाते हैं । पूजा आदि भी होती है।'मानस' के वानर कौन सा वस्त्र बदलते ?

चूंकि सारी कथा जंगलों में है अतः वहाँ भी दोनों में मेल है । महाभारत में गुफा है'। गुफा कई योजन लंबी है । पहले भाग में अंधकार, फिर प्रकाश है । यह दैत्यराज मय का बनाया है । प्रभावती नामी तपस्विनी इसकी रक्षा करती है । इसमें सब प्रकार के भोज्य एवं पेय पदार्थ हैं । (वनपर्व, रामोपाख्यान) देखने में ये कथाएँ ऐतिहासिक सत्य लगती हैं । किंतु शुद्ध कल्पना धारित हैं। इनमें एक नैतिक भाव भी है। स्त्रियाँ हैं। किन्तु अधिकतर सती साध्वी हैं। बदचलन को अच्छा नहीं माना जाता है। चन्द्रकान्ता और सन्तति में कहीं भी स्त्री संबंधी छिछोरापन नहीं है । बंद और बेहोश कर भयानक एकांत में भी उनमें कर्म की नैतिकता बनी है । बदचलन स्त्रियाँ खलनायिका हैं। यही स्थिति पुरुष की है। नैतिकता को छोड़े बिना संघर्ष करते हैं। अंत में उन्हें सफलता मिलती है। इच्छित प्रेमी प्रेमिका मिलते हैं। वह भी अपनी सामाजिक मर्यादा के अनुसार । यह नहीं कि राजा की लड़की सिपाही के बेटे के साथ चली जायगी । वर्ण-वर्ग व्यवस्था का पूरा ध्यान रहता है ।

खत्री जी के उपन्यासों में स्त्रियाँ प्रायः शीलवान् किंतु बाहरी जीवन में भी सक्रिय हैं । भारतीय वर्ण-व्यवस्था और सामंती जीवन में स्त्री प्रायः पर्दे में रही है। उसे सूर्य भी न देख सके । किंतु खत्री जी केकथा साहित्य की स्त्रियाँ सीता और सावित्री के समान वन भी जाती हैं ।

उन्हें ऐयारी की छूट मिली है । वे कहीं आने-जाने में, गिरफ्तार करने, कराने, होने आदि के लिए स्वतंत्र हैं । राजपरिवार में पैदा होकर भी वे गुप्तचर जैसा कार्य करती हैं । ऐयार तो प्रथम श्रेणी की हैं । इसीलिये पुरुष की अपेक्षा स्त्रियाँ ऐयारी के काम को और भी खूबी के साथ करती हैं । फिर भी समाज में उनका स्थान नहीं है । ऐयारी के बाद उनका क्षेत्र घर है । प्रबन्ध और शासन सब पुरुषों के हाथ है।इनमें कुसुमकुमारी अपवाद है । क्योंकि पिता के अभाव में उसे स्वयं ही सब कुछ करना होता है । खत्री जी के उपन्यासों से लगता है कि लड़कियाँ हर कार्य के लिए सक्षम बनाई जाती थीं । घोड़ा चढ़ना, युद्ध करना, राजनैतिक कौशल दिखलाना आदि । किंतु इनका उपयोग वे पुरुष की अनुपस्थिति में ही करती थीं । पुरुष की उपस्थिति में इन्हें सौंदर्य और कोमलता की मूर्ति समझा जाता था ।

देवकीनंदन खत्री का तिलस्म भी एक प्रकार का प्रतीक है । यह सृष्टि एक तिलस्म है । जो इसमें फँस गया निकल नहीं सकता । फँसता ही जाता है । इसके रहस्य को जानना अत्यन्त कठिन है । सभी जान भी नहीं सकते । इसके संकेत और लिपि संसार के सामान्य संकेतों से भिन्न हैं । भाग्यवान ही इन संकेतों और लिपियों को पढ़ पाते हैं । तिलिस्म के माध्यम से लेखक इस दुनिया में एक भिन्न दुनिया का निर्माण करता है । जहाँ की समस्याएँ सामान्य दुनिया की समस्याओं से भिन्न हैं । चूंकि तिलस्म जंगलों में हैं इसलिए यहाँ भोजन-पानी की समस्या नहीं है । लोग जंगली फलों को खाकर आसानी से जी लेते हैं । मेवों की चर्चा ऐसे की जाती है जैसे मिर्जापुर के जंगलों में मेवों की बहुतायत हो । जब कि ऐसी बात है नहीं । मेवे ऐयारों के झोलों में है । जंगल में हैं । लेखक मेवों का नाम लेने में सावधान है । प्रायः जंगली मेवों का ही नाम लेता है ।

कौतूहल उत्पन्न करना और उसका शिकार होना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। जीवन नाटक का एक महत्वपूर्ण भाग है। बच्चों में कौतूहल की प्रधानता होती है। वे हर वस्तु को आश्चर्य से देखकर उनके बारे में नाना प्रकार के प्रश्न करते हैं। यही स्थिति बड़ों की है। क्या ऐसा भी कभी आता है कि हमारा बचपन हमसे बिल्कुल छूट जाय? सच तो यह है कि जैसे-जैसे हम विराट् की ओर बढ़ते हैं हमारा एक बचपन छूटता है और दूसरा सामने आकर खड़ा हो जाता है। महाभारत युद्ध के मैदान में कृष्ण ने अपने भीतर के तिलस्म से परिचय कराया। अर्जुन उस विराट् तिलस्म को देखकर घबड़ा गया। बालक सा प्रार्थना करने लगा। इस तिलस्म की दुनिया को समेट लेने की प्रार्थना करने लगा। क्योंकि तिलस्म जीवन नहीं, जीवन का पार्श्व है। यह केवल देखने, दिखाने और जानने के लिए है। खत्री का तिलस्म टूटता है किंतु विराट का तिलस्म अखंड, अनादि और अनंत है। अर्जुन विमूढ़, रोमांच युक्त, भयभीत और चकित होकर सब देख गया। उसके कौतूहल को भय ने घेर लिया। तिलस्म से काम न होगा। चतुर्भुज रूप ही ठीक है। हे विश्व मूर्ते तुम अपने सामान्य रूप में ही मुझे दर्शन दो। अपने तिलस्म को समेटो। खत्री जी ने अपना तिलिस्मी तोड़ दिया। लगता है स्वयं इससे ऊब गये, फिर भी तिलस्म देखने-दिखाने से कोई बच नहीं सकता। देखने-दिखाने के बाद यह समेटा जा सकता है। किंतु एक बार देखना-दिखाना तो होगा ही। अर्जुन ने कृष्ण के तिलस्म में क्या नहीं देखा? सब देखा, उतना इस तिलिस्म में कहाँ से आ सकता है? ईश्वरी और मानवी तिलस्म में अन्तर तो है ही।

यह तिलस्म कभी देवता बनाते हैं और कभी दानव। मय दानव ने महाभारत में एक भ्रम तैयार किया था। इसी भ्रम में दुर्योधन फँस गए। पानी को सूखा और सूखे को पानी समझ लिया। कहीं भींगे और कहीं चोट खा गये। असत् पात्र होने के कारण मय राक्षस की माया नहीं समझ सके। सत्य के कारण पांडव लाक्षागृह के तिलस्म को भी तोड़कर बच गये। बाहर आ गये। पाँच दूसरे व्यक्ति जल गये, ऐसा इस तिलस्म में भी होता है। मुख्य नायक को बचाने के लिए किसी सामान्य पात्र की हत्या हो जाती है। बहुत दिनों तक लोग समझते हैं कि मुख्य नायक-नायिका की ही हत्या हो गयी। नरेन्द्र-मोहिनी में रम्भा बच गई और दूसरी औरत कत्ल हो गई। ऐसी स्थिति अन्यत्र भी देखने को मिलती है। महाभारत में भी सुरंगों की महत्ता है। तिलस्म का काम सुरंगों द्वारा होता है। दोनों ही स्थानों में सत्-असत् पात्र लड़ते हैं।

लेखक स्वयं महाभारत का संकेत करते हैं-उसमें महाभारत की तस्वीरें बनी हुई थीं। ये तस्वीरें उसी ढंग की थीं जैसी कि उस तिलस्म बंगले में चलती-फिरती तस्वीरें इन लोगों ने देखी थी..... तस्वीरें एक-एक कर गायब हो रही हैं। यहाँ तक कि घड़ी भर के अन्दर ही सब तस्वीरें गायब हो गयीं और दीवार साफ दिखाई देने लगी। इसके बाद दीवार की चमक भी बन्द हो गई और फिर अन्धकार दिखाई देने लगा। —बाईसवाँ भाग, नौवें बयान में। यही तो संसार का रूपक है। चमकना। फिर गायब होना। फिर अन्धकार। शून्य भीति पर बने चित्र गायब हो जाते हैं। रह जाता है अन्धकार। शून्यता। बीसवाँ भाग नौवां बयान में इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा-मालूम होता है 'ब्राह्ममण्डल' यहीं है, इसी जगह हम लोगों को बराबर आना पड़ेगा तथा चुनारगढ़ के तिलस्म की चाभी भी इसी जगह से हमें मिलेगी। यह एक संकेत मात्र है।

नवरसों में अद्भुत एक रस है। इसका स्थायी भाव विस्मय है। आश्चर्य है। किंतु साहित्य में यह आठवें स्थान पर है। गौण है। खत्री जी ने अद्भुत को प्रधान रस का दर्जा दिया है। श्रृंगार, करुण, वीर, भयानक आदि अंग हैं। और अद्भुत अंगी। शायद कोई रचना हो जिसमें अद्भुत रस इतने विस्तार से वर्णित हो। रासो के समान इनके उपन्यासों

में श्रृंगार और वीर भाव का गहरा संयोग है। किंतु दोनों से ऊपर है अद्भुत। इससे अनेक भाव स्थान-स्थान पर अपने उत्कर्ष पर पहुंचे हैं।

'चन्द्रकान्ता और संतति का कथा क्षेत्र मुख्यत: चुनार, नौगढ़, विजयगढ़ और रोहतासगढ़ हैं। किन्तु राजगृह, गया और हाजीपुर भी केन्द्र बनते हैं। 'काजर की कोठरी' का पूरा क्षेत्र ही दरभंगा और पटना है। किन्तु लेखक काशी और भाँग को भी साथ लिये चलता है। इस प्रकार देखा जा सकता है कि देवकीनंदन खत्री की कथा का क्षेत्र व्यापक है। ऐतिहासिक उपन्यास का क्षेत्र तो और भी दूर-दूर तक जाता है।

सारा खेल प्रकृति की गोद में होता है। प्रसिद्ध नाटक 'मुद्राराक्षस' में भी कूटनीतिक दाँव-पेंच हैं। श्री खत्री अपनी ऐयारी का वहीं से समर्थन लेते हैं। कौटिल्य अथवा चाणक्य अपनी कूटनीति के लिए प्रसिद्ध हैं। और बिना युद्ध किये केवल कूट बल से नंद और उसके राक्षस मंत्री को पराजित कर सत्ता पर कब्जा कर लेता है। किन्तु चाणक्य का खेल नीरस है। सूखा है। इसके मुकाबले खत्री जी के कथानक के क्षेत्र प्रकृति गोद में हैं। स्त्री-पुरुष का प्रेम विराट प्रकृति की गोद में विकसित होता है। सारे दाँव-पेंच का स्थान जंगलों और पहाड़ों के रमणीय स्थल हैं। लेखक स्थान-स्थान पर इनका वर्णन करते चलता है। 'चन्द्रकान्ता' के ऐयार देवीसिंह ने देखा कि खूब खुलासी जगह बल्कि कोस भर का साफ मैदान चारों तरफ ऊंची-ऊंची पहाड़ियाँ जिन पर किसी तरफ आदमी चढ़ नहीं सकता,- बीच में एक छोटा सा झरना पानी का बह रहा है और बहुत से जंगली मेवों के दरख्तों से अजब सोहावनी जगह मालूम होती है। चारों तरफ की पहाड़ियाँ नीचे से ऊपर तक छोटे छोटे करजनी घुमची बैर मकोइचे चिरौंजी वगैरह के घने दरख्तों और लताओं से भरी हुई हैं, बड़े-बड़े पत्थर के ढोंके मस्त हाथी की तरह दिखाई देते हैं।..हवा चलने से पेड़ों की घनधनाहट और पानी की आवाज तथा बीच में मोरों का शोर और भी दिल को खींच लेता है...दोनों तरफ जामुन के पेड़ लगे हुए हैं। पके जामुन उस चश्मे के पानी में गिर रहे हैं।-...पहाड़ों में कुदरती खोह बने हैं...।'

प्रेम, प्रकृति, ऐयारी के तालतिकड़म एवं तिलिस्म के आश्चर्यों के बीच पाठक बढ़ता चलता है। प्रकृति की गोद में प्रेम, सौंदर्य, उदारता और क्रूरता का खेल चला है।

स्त्रियों के प्रति लेखक को सहानुभूति है। स्त्रियां कुछ ही हैं जो बुरी हैं। वे भी प्राय: सवतिया डाह के कारण। किन्तु वे बुराई पर उतर कर कुछ भी करने को तैयार हो जाती हैं। फिर भी लेखक मुक्त यौनाचार से बचा है। दो-एक औरतें ही मुक्त यौन वाली हैं। प्रेम का मूलाधार रूपाकर्षण है। कोई भी विष कन्या नहीं है। वेश्याओं का क्षेत्र भी अत्यन्त सीमित है। प्रेम का क्षेत्र विशाल है। किन्तु अनुलोम-प्रतिलोम प्रेम के स्थान पर समान स्तरी प्रेम की प्रधानता है। प्रेम विवाह का पूर्वाधार है। जिनसे विवाह नहीं हो सकता उनसे प्रेम नहीं होता। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि पूरी कथा राजाओं और सामंतों की है। ये प्राय: एक ही बिरादरी के हैं। वे हैं क्षत्रिय। लेखक को न केवल वर्ण व्यवस्था में विश्वास है बल्कि उसके कर्मकाण्ड में भी। विवाह जाति में ही होना है। छूआछूत भी है। राजकुमार मुसलमान का भोजन नहीं करते। पानी नहीं पीते। बिना स्नान, ध्यान और सन्ध्योपासना के कोई भी व्यक्ति भोजन नहीं करते। हंसी दिल्लगी और ठठोली के लिए स्थान बिल्कुल नहीं है। श्रृंगार के दोनों पक्षों में पूर्व राग और वियोग मुख्य हैं। क्योंकि संयोग होते ही कथा समाप्त हो जाती है। पूर्व राग का वर्णन विस्तार पाता है। किन्तु प्रेम दोनों ओर पलता है जिसे अभिभावकों की भी स्वीकृति रहती है। अभिभावक विरोधी प्रेम को प्रेम नहीं कहा जा सकता। वे प्राय: कुटिला के प्रेम हैं। प्रेम और पीड़ा दोनों सहचर हैं। यह

वात स्पष्ट देखी जाती है। वल्कि प्रेमी को दुःख झेलना होता है। श्रेष्ठ पति या पत्नी अनेक बाधाओं से प्राप्त होते हैं। सभी कथानकों के मूल में प्रेम है। प्रेमास्पद को पाने के लिये ही कथा सृष्टि होती हैं। इसे रूप तत्व कहा जा सकता है। रूप लोभी कुटिल पात्र या खलनायक मौजूद हैं। उनके व्यवहारों मे कथा विकसित होती है।

दूसरा तत्व है धन। राज्य। धन या राज्य के लिए संघर्ष होते हैं। राजा शिवदत्त इसके अच्छे उदाहरण हैं। स्वयं भूतनाथ के भ्रष्टाचार के मूल में धन है। राज्य से पदच्युत कर धन प्राप्त करने के लिए राजा गोपालसिंह को अनेक कष्ट दिये जाते हैं। राजाओं और जमींदारों के होने वालों षड्यंत्रों तथा उनसे प्रभावित जीवन को ये उपन्यास अच्छे ढंग से व्यक्त करते हैं। राज्य का सुख भी है। अपहरण, जेल और हत्या की काली चादर इन्हें घेरे भी रहती है। औरत-पुरुष सब बदल दिये जाते हैं। धन के लोभ में स्त्रियाँ व्यभिचारिणी भी बनती हैं। क्रूरता करती हैं। किंतु अंत में विजय सत्य की होती है।

खत्री जी अपने पात्रों में शील, शक्ति और सौंदर्य चाहते हैं। वीरता, वचन की कद्रता, प्रजावत्सलता आदि गुण हैं। पुरुष के समान ही स्त्रियाँ भी घोड़े की सवारी करती हैं। हथियार चलाती हैं। फिर भी नैतिक स्तर पर खत्री जी का विरोध हुआ। यह विरोध इस विधा का था। पंचतंत्र और हितोपदेश आदि के मुकाबले निश्चय ही खत्री जी की कथा उपदेश प्रधान न होकर मनोरंजन से जुड़ी थी। केवल मनोरंजन भारत के साहित्य का कभी उद्देश्य नहीं रहा। खत्री जी की कथा से उपदेशात्मक साहित्य को धक्का लगा। उपदेश सुनते-सुनते ऊबे लोगों ने ललक कर खत्री जी के साहित्य का स्वागत किया। खत्री जी की प्रेमकथाओं ने रीतिकाल के पुनः लौटने का भय भी पैदा किया। इससे नैतिकतावादियों के कान खड़े हो गए। खत्री जी के पात्र चाहे जितने भी पवित्र और शालीन क्यों न हों किंतु पाठक उन्हें आदर्श व्यक्ति नहीं मानता। वे चरित्र बनाने में हमारी मदद नहीं करते। किसी भी साहित्य का यह क्या कम अपराध है कि वह मनुष्य को उठाने की जिम्मेदारी से मुक्त रहे। पूरी कथा मनुष्य के बहिरंग का खेल है।

चंद्रकांता में तीन स्त्रियाँ प्रमुख हैं-चंद्रकांता, चपला और चम्पा। इनमें सबसे होशियार चपला है। तीनों 'च' वाली हैं। तीनों चपल हैं। इन स्त्रियों में कहीं न कहीं महफिली अंदाज है। लेखक कहता है 'चपला कोई साधारण औरत न थी। खूबसूरती और नजाकत के सिवाय उसमें ताकत भी थी। दो चार आदमियों से लड़ जाना या उनको गिरफ्तार कर लेना उसके लिए एक अदना काम था, शस्त्रविद्या को पूरे तौर से जानती थी, ऐयारी के फन के अलावे और भी कई गुण उसमें थे। गाने और बजाने में उस्ताद, नाचने में कारीगर, आतिशबाजी बनाने का बड़ा शौक। इसीलिये लोगों में इन्हें आदर्श हिंदू नारी मानने में झिझक होती थीं। पूरी कथा में हिंदू-मुसलमान संघर्ष न होकर भी मुसलमानों के प्रति अविश्वास और अलगाव स्पष्ट है। चंद्रकान्ता संतति के आनंद का बयान है -"यह तो हो ही नहीं सकता कि मैं इसे चाहूँ या प्यार करूं। राम राम मुसलमानिन से और इश्क! यह तो सपने में भी नहीं होने का।...मुसलमानिन के घर में अन्न जल कैसे ग्रहण करूँगा? पहला भाग छठवां बयान। इसका सबब इश्क बिबाह का पूर्व रूप है। और विवाह तो आज भी नहीं हो रहा है। हिंदू से हिंदू लड़ता है। किंतु मुसलमान के सामने आते ही वह बेगाना लगने लगता है। नाजिम और अहमद क्रूरसिंह को मुसलमान बनाना चाहते हैं। वह तैयार भी हो गया।

ये सब बातें उस समय की मनोभूमि के विरुद्ध थीं। लोग मुसलिम संस्कृति से ऊब रहे थे। अहमद और नाजिम को आसानी से मार दिया जाता है जबकि ऐयार को मारने की प्रथा न थी। खत्री एक तरफ मुसलमान विरोधी हैं। दूसरी ओर मुगलिया सामंती संस्कृति

से अत्यंत प्रभावित ।

लगता है ऐयारी विद्या तंत्र विद्या का एक भाग थी। ऐयारी की मुख्य उपासिका शक्ति जयमाया थी। ऐयारी माया है। यह भी द्रष्टव्य है कि तिलिस्म और ऐयारी का केन्द्र विंध्यवासिनी मन्दिर के आस पास ही रहा है। इसके साथ ही मिर्जापुर और वाराणसी ये दोनों जिले भांग-बूटी छानने के लिए भी प्रसिद्ध रहे हैं। इस प्रकार ये कथाएँ हल्की आंचलिकता का भी संकेत देती हैं। विशेषकर मिर्जापुर के जंगलों का एक वैभवयुक्त विराट चित्र उपस्थित होता है।

खत्री जी की इन रचनाओं का एक विचित्र इतिहास है । खत्री मूलतः लेखक न थे । एक दुर्घटनावश इस क्षेत्र में आये । वे काशी राज्य की ओर से चकिया-नौगढ़ के जंगलों के ठेकेदार थे । वहाँ शेर शिकार की मनाही थी । किन्तु संयोगवश एक शेर का शिकार हो गया । इससे नाराज महाराज ने इनका ठेका खत्म कर दिया । इस घटना के बाद खत्री जी उपन्यास लेखन की ओर मुड़ गए । उन्होंने 'उपन्यास लहरी' नामक एक मासिक पत्रिका भी निकाली थी । इसके अतिरिक्त श्री माधव प्रसाद मिश्र के संपादन में प्रकाशित 'सुदर्शन' भी इन्हीं के निर्देशन में निकलता था ।

लोगों का अनुमान है कि श्री खत्री फैजी के 'दास्तान अमीर हम्जा' तथा 'तिलिस्म होशरुबा' से प्रभावित थे । किन्तु खत्री जी के उपन्यासों में भूत, प्रेत, जिन्न या किसी अलौकिक शक्ति का वर्णन नहीं है। सारा वर्णन पदमावत के समान लौकिक धरातल पर मानव सीमा के भीतर है । इसमें पश्चिमी विज्ञान और पूर्व की वास्तुकला का भी मेल दिखाई पड़ता है । चंद्रकांता और सन्ततिस्वयं में तिलस्म है । लेखक कथा में जगह-जगह ऐसे सूत्र छोड़ता जाता है कि कथा बढ़ती जाती है । न कथा रुकती है, न पाठक रुकता है । अंतहीन कहानी चंद्रकांता से आरंभ होकर भूतनाथ तक चली जाती है । इन उपन्यासों को वैज्ञानिक उपन्यासों का आरंभिक रूप भी कहा जा सकता है ।

लेखक को अपनी कथा शैली पर पूरा विश्वास है । वह सीधे अपने पाठक से संवाद करता है जिसे वह बयान कहता है। बयानों की संख्या है। पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा आदि। वह काफी देर तक असली नामों को छिपाता है। एक ही नाम के दो व्यक्ति साथ-साथ दीखते हैं। असली कमला और नकली कमला। रूप परिवर्तन तो साधारण बात है। किन्तु रूप परिवर्तन को प्रायः व्यभिचार का माध्यम नहीं बनाता। अगर ऐसा हुआ तो नीच पात्रों द्वारा। शराब पीने वाली स्त्री को बुरा मानते हैं।

प्राचीन युग में साधुओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । राज्यच्युत राजा प्रायः साधु होकर जंगल में जीवन बिताते थे । 'मानस' में प्रतापभानु का विरोधी एकतनु ऐसा ही राजा है । खत्री जी के उपन्यासों में ऐसे साधु बहुत से हैं जो समय पर प्रकट होकर अपना काम करते हैं । साधु बनना ऐयारी का भी एक अंग है । ऐयार भी साधु बनकर ठगते हैं । अपना काम करते हैं । रावण भी तो सीता को साधु बन कर ही हर ले गया था ।

साधुवेश महत्वाकांक्षा को छिपाने का एक महत्वपूर्ण साधन है । दस सिर और बीस भुजा को एक सिर और दो भुजा में बदल कर साधु का वेश धारण करना एक प्रकार की ऐयारी ही तो थी । खत्री जी ने इस कला को बार-बार अपनाकर कथा विकसित की है । तेजसिंह एक बार पागल बनते हैं । स्त्रियों का पुरुष और पुरुष का स्त्री बनना तो बार-बार देखा जा सकता है ।

अब थोड़ा खत्री जी की भाषा पर विचार करना चाहिए । खत्री जी की भाषा नागरी लिपि में होने मात्र से हिंदी है वरना इसे उर्दू भी कह सकते थे । किन्तु यह उर्दू भी नहीं है । इसकी शब्दावली पर उर्दू का गहरा प्रभाव है । किन्तु इसकी मूल प्रकृति हिंदी वाली है ।

इसीलिये लोग इसे हिंदुस्तानी का अच्छा नमूना कहते हैं । इसके सारे व्याकरणिक रूप उर्दू के न हो कर हिंदी के हैं। किंतु अरबी-फारसी शब्दों की बहुलता इतनी है कि उर्दू भी झख मारे। प्रत्येक पृष्ठ पर कुछ न कुछ अपरिचित शब्द मिल ही जाते हैं। कहीं-कहीं लेखक ने स्वयं अपने शब्दों के पर्याय कोष्ठकों में दे दिए हैं। जैसे-जापे (सौरी), नयाम (म्यान), संगीन (पत्थर)आदि। हिंदी में सब्जी का सम्बन्ध सामान्यतः रंग से न होकर वस्तु से है जबकि लेखक लोगों को घास की सब्जी पर बैठा दिखाता है। किंतु कुल मिलाकर भाषा सरल ही है। हाँ, प्रेमचन्द जैसी मुहावरे वाली नहीं है। लेखक का मुख्य ध्यान शब्दों और वर्णनों पर है। विशेषण प्रायः अरबी-फारसी के हैं-हसीन, नमकीन, हरामखोर, रहमदिल, खुशनुमा, आलीशान, आफत का परकाला, दिलजला, परीजमाल, नाजनीन आदि। इन विशेषणों ने उर्दू तथा मुगल कालीन सामंती वातावरण बनाने में सुविधा प्रदान की है। वर्णन में अलंकरण की प्रधानता है। 'अहा, इस समय की छवि देखने लायक है।' 'खदेड़ा हुआ सौन्दर्य', 'सर मुड़ाए बरसाती मेंढक' बना बैठा था। 'नंग धड़ंग औंधी हाँड़ी सा सर', 'सिर से पैर तक आबनूस का कुन्दा', 'इश्क का मैदान', 'हुस्न के बाग टहलना', 'मुहब्बत गुरू आशिक चेला माशूक भगवान', 'मोहब्बत का दरिया'। 'लड़कपन ने यद्यपि अभी उसका साथ नहीं छोड़ा था मगर नौजवानी के हरकारे ने उसे अपनी जगह छोड़ने का हुक्म सुना दिया था।' अज्ञात यौवना का यह वर्णन और भी विस्तार से इस प्रकार है-उसका चेहरा बहुत ही सुन्दर और सुडौल था, बड़ी-बड़ी आंखें पलकों के अन्दर छिपी हुई थीं। छोटे-छोटे पतले होंठों पर पान की सुर्खी चढ़ी हुई थी। चौड़ी पेशानी सिंदूर से खाली थी और नुकीली नाक में बेशकीमती मोतियों वाली एक नथ थी जिसकी गोलाई में उस वक्त फर्क पड़ा हुआ था……। (गुप्त गोदना)

लेखक नखशिख वर्णन में भी सिद्धहस्त है । निहायत हसीन और कमसिन का प्रयोग बार-बार करता है । कहीं इश्क का मानवीकरण के द्वारा प्रभाव उत्पन्न करता है-"इश्क भी क्या बुरीबला है ! हाय, इस दुष्ट ने जिसका पीछा किया उसे खराब करके छोड़ दिया और उसके लिए दुनिया भर के अच्छे पदार्थ बेकाम और बुरे बना दिए।" संयोग और वियोग श्रृंगार दोनों का अत्यन्त प्रभावी वर्णन किया है। फलतः कथा केवल भागती नहीं रमाती भी है । रोकती भी है । हाय, आह, वाह, बेशक, अफसोस, लम्बी सांस लेना आदि प्रयोग भागने वाले नहीं रोकने वाले हैं । कहीं-कहीं वर्णन बिल्कुल कविता बन जाता है ।

खत्री जी उर्दू-फारसी प्रभावित हैं । उसका अंतरंग और बहिरंग दोनों पक्ष उन्होंने लिये हैं । किंतु इनके उपन्यासों में अप्राकृत रति या प्रेम का पूरा अभाव है । हूरें हैं। गिलमें नहीं हैं । न तो उर्दू शायरी है । इसलिए कि खत्री जी गद्य शायर हैं । पद्य की छंद वाली शायरी में उनकी रुचि नहीं है । भारती कथाओं की उपदेश पद्धति से भी उन्हें परहेज है । भूलकर भी वे उपदेश नहीं देते हैं । उपदेश को ध्वनित मात्र करते हैं । धार्मिक भावना के बावजूद कथा का धरातल शुद्ध लौकिक है । इह लोकवादी जैसा । आध्यात्मिकता उनकी उद्देश्य सीमा में नहीं है ।

नाम रखने में भी लेखक ने दृष्टि का परिचय दिया है । सुरेन्द्र, बीरेन्द्र, इन्द्रजीत ये तीनों पीढ़ियाँ इन्द्र हैं । इनके साथ हैं आनन्दसिंह । सबसे होशियार ऐयार तेजसिंह । उसका बाप जीतसिंह । चंद्रकांता, चपला, चंपा की चर्चा ऊपर आ चुकी है । ये 'च' चमत्कार लिए हैं । चंद्रकांता की माँ रत्नगर्भा (समुद्र) । चन्द्र समुद्र से ही पैदा हुआ है । इनके विरोधी हैं क्रूरसिंह, फतहसिंह, घसीटासिंह, जालिमसिंह आदि। भूतनाथ तो ऐयारों का बादशाह ही है।

ऐयारों की निष्ठा और स्वामिभक्ति देखने लायक है । प्राण देकर भी लोग स्वामी का काम करते हैं । भेद नहीं खोलते । किन्तु असत् से ऊबकर अलग भी हो जाते हैं । केवल मायारानी है जो अपने ऐयार की हत्या कर देती है। असत् पात्र कुछ भी कर सकते हैं किन्तु सत् पात्र जरा भी नहीं चूकते। घोर संकट में भी अपनी नैतिकता बनाए रहते हैं। स्त्री पर कभी हाथ नहीं

उठाते। शरणागत की रक्षा करते हैं। इससे खत्री जी के उपन्यास अपना नैतिक धरातल बनाए रहते हैं और ये उपन्यास कोरा मनोरंजन से ऊपर दीखने लगते हैं। स्त्री-पुरुषों के वर्णन चित्र स्थूल, श्रृंगारी और सजावट युक्त हैं। शरीर की सुन्दरता के साथ ही गहनों की भरमार है। इसलिए कि अधिकतर स्त्री-पुरुष सम्पन्न परिवारों के हैं। मिर्जापुर के जंगलों में निरावरित आदिवासी सौंदर्य भी है। धूप, पानी और हवा के झटकों से ठोस सौंदर्य भी है। इसका खत्री जी को बिल्कुल पता नहीं हैं। इन जंगलों में घूमकर भी वे राज घरानों से ही जुड़े हैं। जंगल का उन्होंने मुख्यतः उद्दीपन और लुकने-छिपने के लिए प्रयोग किया है।

खत्री जी की कथा का इतना प्रचार इसलिये भी हुआ कि उस समय का पाठक समुदाय किसी न किसी रूप में उर्दू शिक्षित था । भाषा और भाव दोनों में उसकी मानसिकता बनी थी । उर्दू गद्य हिंदी गद्य से पूर्ववर्ती है । बहुतों ने खत्री जी का अनुकरण भी किया । किन्तु वे सफल न हो सके । इसलिये कि वे अनुकरण थे । अतः उनमें वह रंग न आ सका । स्थितियाँ भी बदल गयी थीं । धीरे-धीरे स्पष्ट और तीव्र सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं ने घेरा डाल दिया । जैसा कि रुद्र काशिकेय ने कहा है–'खत्री जी के तिलिस्मी रास्ते के जितने पथिक हुए उनमें श्री हरिकृष्ण जौहर को आचार्य शुक्ल जी ने विशेष उल्लेखयोग्य' बताया है। संभवतः श्री निहालचंद वर्मा की कृति उनकी नजरों से नहीं गुजरी थी । अन्यथा जौहर जी के साथ ही वे वर्मा जी का भी नामोल्लेख अवश्य करते क्योंकि श्री देवकीनंदन का अनुकरण करने वालों में सफलता इन्हीं दोनों को मिली थी ।' -(बाबू देवकीनंदन खत्री स्मृति ग्रंथ पृ. १७)

ऐयारी उपन्यासों में बुद्धि का खेल महत्वपूर्ण है । वैयक्तिक जीवन को धोखे से बचने के प्रति सावधानी तो देता ही है । राष्ट्रीय जीवन में आत्म विश्वास पैदा करता है । निश्चय ही उस समय के क्रांतिकारियों पर इसका प्रभाव पड़ा होगा । वे क्रांतिकारी जो अंग्रेजी सत्ता को समाप्त करने के लिये विभिन्न रासायनिक नुस्खों का प्रयोग कर रहे थे । मध्यकालीन सिद्धों, नाथों और योगियों ने योग-तंत्र तथा रसायन का सहारा लिया था । श्री खत्री के उपन्यासों में इनके साथ वैज्ञानिक आविष्कार भी जुड़े दीखते हैं । शरीर को रंगना, रूप बदलना, जमीन पर ऐसा लेप करना कि पैर रखते ही आवाज हो, गोली फेंककर धुआं निकले और लोग बेहोश हो जायँ, ऐसी दवा पी ली जाय जिससे बेहोशी की दवा का असर न हो आदि ।

और अंत में यह कि यह कार्य जिनके अथक परिश्रम और सहयोग से पूरा हुआ वे हैं इस पुस्तक के प्रकाशक सर्वश्री कृष्णचन्द्र बेरी, विजय प्रकाश बेरी, राजेंद्र बेरी एवं अनिल बेरी । बेरी परिवार में कल्पना और साहस का सुंदर समन्वय है । ऐसा न होता तो करीब ४०० रु० की अनेक जिल्दोंवाली ये पुस्तकें मात्र ५० रु० और एक जिल्द में कैसे प्रकाशित होतीं ? इनके अतिरिक्त प्रूफ तथा अन्य सज्जादि में जिनके महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आभारी हैं वे हैं–

डा० लालमणि तिवारी, श्री कन्हैयालाल 'राज', चित्रकार श्री अवनिधर, श्री रामप्रसाद जी और उनके सहयोगी, प्रो० श्री गिरींद्र नाथ शर्मा, श्री मनु शर्मा, श्री वशिष्ठ मुनि ओझा, श्री हेमन्त शर्मा एवं मुद्रक श्री प्रदीप कौल (विशिष्ठा रिप्रोग्राफिक्स प्रा० लि०, नौएडा) । इन सज्जनों के हम हृदय से आभारी हैं और शुभाशंसा व्यक्त करते हैं ।

शिवरात्रि, १९८८
काशी विद्यापीठ
वाराणसी-२

संपादक

रचनाएँ

चंद्रकांता

चंद्रकांता मूलत: प्रेम कहानी है। जंगल और पहाड़ियों में वसा नौगढ़ (वाराणसी जिले का एक तहसील है। कस्वा है।) के राजा सुरेन्द्रसिंह के राजकुमार वीरेन्द्रसिंह और विजयगढ़ (मिर्जापुर जिला) के राजा जयसिंह की राजकुमारी चंद्रकांता में प्रेम हो गया। किन्तु विजयगढ़ के दीवान का लड़का श्री क्रूरसिंह भी चंद्रकान्ता की ओर आकृष्ट था। क्रूर नामक यह व्यक्ति निम्न स्तर का है। यह प्रेम से नहीं, क्रूरता पूर्वक चंद्रकांता को प्राप्त करने की कोशिश करता है। किंतु उस शैतान की हर कोशिश विफल होती है। वह दो प्रेमियों के मिलन को रोक न सका। विघ्नों से चंद्रकांता और वीरेंद्रसिंह के प्रेम में किसी प्रकार की कमी नहीं आती है। क्रूर और उसके साथियों का अंत होता है। इसी क्रूर के वहकावे में चुनार (मिर्जापुर) के राजा शिवदत्तसिंह भी चंद्रकांता को पाने की कोशिश करते हैं। किंतु उन्हें भी सफलता की कौन कहे राज्य से भी हाथ धोना पड़ता है। किन्तु राजा सुरेन्द्रसिंह की उदारता और क्षमादान की प्रवृत्ति से वे वच जाते हैं। फिर भी वे षड्यंत्र करने से नहीं चूकते। इसमें क्षमा और छल दोनों के महत्व की अभिव्यक्ति हुई है।

चंद्रकांता के साथ चपला और चंपा दो और स्त्रियां हैं। ये दोनों ऐयारा हैं और क्रमशः तेजसिंह और देवीसिंह की प्रेमिकाएँ हैं। वीरेन्द्रसिंह के साथ जीतसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह, वद्रीनाथ, जगन्नाथ ज्योतिषी आदि ऐयार हैं। ये ऐयार और ऐयारा ही पूरी कथा को विकसित करते हैं। तिलस्म में फँसना और गिरफ्तारी के कौतूहल युक्त भय के संसार में पाठक उत्सुकता पूर्वक ऐयारों द्वारा मुक्ति का इन्तजार करता है। एक मुक्ति होती है तब तक दूसरे बंधन का दृश्य उपस्थित हो जाता है। इस प्रकार पूरा उपन्यास बंधन और मुक्ति, मुक्ति और बंधन के चक्कर में घूमता है। अंत में वीरेन्द्रसिंह तिलिस्म तोड़कर उसमें फँसी चंद्रकांता का उद्धार करते हैं। तिलिस्म तोड़ने से उन्हें प्रचुर संपत्ति भी मिलती है। वीरेन्द्रसिंह के साथ चंद्रकांता, तेजसिंह के साथ चपला और देवीसिंह के साथ चंपा का विवाह होता है। कथा का अंत सुखमय होता है।

चंद्रकांता संतति

यह उपन्यास चौवीस भागों में विभक्त है। इसमें चंद्रकांता और वीरेन्द्रसिंह के दो पुत्र कुँअर इन्द्रजीतसिंह और कुँअर आनन्दसिंह की कहानी मुख्य है। इसके अतिरिक्त भी अनेक पिता, पुत्र, पुत्री आदि की कहानियाँ जाल सी गुंथी हैं। एक साथ ही दो-दो, तीन-तीन पीढ़ियाँ कार्यरत हैं। उदाहरण के लिए राजा सुरेन्द्रसिंह, वीरेन्द्रसिंह और इन्द्रजीतसिंह एवं आनन्दसिंह तीन पीढ़ियों को लिए लोग हैं। विना किसी रिटायरमेंट के पिता, पुत्र, पौत्र के अच्छे सम्बन्ध हैं।

'संतति' का कथा क्षेत्र बनारस से विहार तक फैला है। अनेक राजे और राजधानियाँ हैं। पात्रों की भीड़ लगी है। हर पात्र घटना सम्बद्ध है। इसलिये घटनाओं में विविधता, विशालता और फैलाव इतना अधिक है कि सामान्य आदमी भटक जाय। किन्तु लेखक का संयोजन विचित्र है। वह हर घटना, पात्र और परिस्थिति का ऐसा संयोजन करता है कि कुछ छूट न जाय। कुछ अतिरिक्त और अस्वाभाविक न लगे। जितने पुरुष पात्र हैं लगभग उतनी ही स्त्रियाँ हैं। स्त्रियाँ सभी प्रकार की हैं। राजमहिषी से लेकर बाँदी तक।

आदर्शवादी भी और आदर्शहीन भी । किंतु आदर्शवादी, नेक चलन और सच्चरित्र पात्रों की प्रधानता है ।

कथा के आरंभ में कुँअर इन्द्रजीतसिंह और कुँअर आनन्दसिंह दादा सुरेन्द्रसिंह से आज्ञा माँग कर शिकार खेलने जाते हैं । वहाँ शिवदत्त के ऐयार उन्हें फँसा देते हैं । वे गिरफ्तार हो जाते हैं । कुँअर इन्द्रजीत का शिवदत्त की पुत्री किशोरी और आनन्दसिंह का दीवान अग्निदत्त की पुत्री कामिनी से प्रेम होता है । लेकिन प्रेमपूर्णता में अनेक बाधाएँ आती हैं । पूरा उपन्यास इन्हीं के केंद्र में घूमता है । दोनों भाई गोपालसिंह की सहायता से तिलस्म तोड़ते हैं । गोपालसिंह स्वयं अत्यंत कष्ट भोगते हैं । उन्हें धोखे से एक दूसरी स्त्री से शादी करा दी जाती है । और गिरफ्तार कर मृत घोषित किया जाता है । गोपालसिंह जमानिया के राजा और इन्द्रजीतसिंह तथा आनन्दसिंह के रिश्ते में भाई हैं । धन और राज्य के कारण राजाओं का जीवन भी कितना संकट में रहता है गोपालसिंह और उनकी पत्नी लक्ष्मीदेवी की यातनाएँ इसका सबसे अच्छा उदाहरण हैं । गोपालसिंह के पिता की हत्या कर दी जाती है । पत्नी बदल कर दूसरी पत्नी बैठा दी जाती है । बाद में असली पत्नी और स्वयं भी जेल भोगते हैं । यह सब कोई और नहीं अपने ही विश्वसनीय कर्मचारियों द्वारा होता है । राजकर्मचारी निष्ठावान भी हैं । धोखेबाज भी । ऐसे ही और भी अनेक पात्र हैं जो षड्यंत्र के शिकार होते हैं ।

इसी में भूतनाथ का उदय होता है जिसकी भूमिका महत्वपूर्ण किंतु विवादास्पद रहती है। यही भूतनाथ आगे चलकर स्वयं उपन्यास का प्रमुख नायक बन जाता है। भूतनाथ का लड़का और पत्नी भी कथा में शामिल होते हैं।

उपन्यास में न केवल कौतूहल और उत्सुकता की प्रधानता है बल्कि रोमांचक स्थितियाँ भी भरी पड़ी हैं । काम और अर्थ लोभी स्त्रियों के घात-प्रतिघात ने उपन्यास में सामाजिक यथार्थ को भी व्यक्त किया है । लेखक सामाजिक दुराचरण के विरुद्ध नैतिकता और शिष्टाचार का समर्थक है । यों कहिए कि वह आदर्श हिंदू सामाजिक मूल्यों के लिये संघर्षशील है । इतने सामाजिक और नैतिक संघर्ष के बावजूद इस उपन्यास को मात्र तिलस्मी और ऐयारी समझने वालों को क्या कहा जाय ? असल में तिलस्म के भीतर यह एक सामाजिक उपन्यास है । एक तरफ गौहर, मायारानी, नौरतन और माधवी जैसी शरीर व्यवसायिनी स्त्रियाँ हैं तो दूसरी ओर लक्ष्मीदेवी, कमलिनी, किशोरी, कामिनी आदि नेकचलन तथा उच्च संस्कारों वाली स्त्रियाँ हैं । ऐसे ही पुरुष हैं । लेखक का एक सामाजिक और नैतिक उद्देश्य है। वह कथा के माध्यम से कुछ कहना चाहता है । 'मैंने अपने उन विचारों को जिनको मैं अभी तक प्रकाश नहीं कर सका था फैलाने के लिये इस पुस्तक को और सरल भाषा में उन्हीं मामूली बातों को लिखा जिसमें उस होनहार मंडली का प्रियपात्र बन जाऊँ जिसके हाथ में भारत का भविष्य सौंप कर हमें इस असार संसार से बिदा होना है ।' (चंद्रकांता संतति भाग २४ अंतिम पृष्ठ) इस कथन से स्पष्ट है कि लेखक के पास कोई विचार है, आदर्श है । वह कथा कहानी के अतिरिक्त भी कुछ कहना चाहता है । और वह है जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना तथा आदर्श समाज और व्यक्तियों का संकेत । कुल मिलाकर धर्म की स्थापना और अधर्म-अनाचार का विरोध । दुर्भाग्यवश लोगों ने इस उपन्यास के सामाजिक और नैतिक पक्ष पर कम से कम ध्यान दिया है । चरित्र और नैतिकता के लिए संघर्ष करने वाला हिंदी का यह महत्वपूर्ण उपन्यास है ।

कुसुम कुमारी

इस उपन्यास में राजा इन्द्रनाथ के पुत्र रनबीरसिंह और राजा कुबेरसिह की पुत्री कुसुम कुमारी के प्रेम का वर्णन है। भाग्यवश दोनों का विवाह बचपन में ही हो गया था जिसकी जानकारी दोनों को नहीं थी। अपने को मृत प्रचारित कर दोनों के पिता लम्वे अरसे तक छिपे रहे। रनबीर और कुसुमकुमारी के विवाह की बात राजपरिवारों के बहुत थोड़े किंतु विश्वस्त लोगों को ज्ञात थी। उपन्यास में रनबीर की वीरता, कुसुम कुमारी के सौंदर्य एवं प्रशासन, डाकुओं का आतंक एवं राजाओं की तपस्या आदि का विस्तार से वर्णन है। अनेक विघ्नों, संघर्षों और कालगत सीमाओं के बाद कुसुमकुमारी और रनबीर का मिलन होता है। इनके पिता भी मिलते हैं। अपनी संतानों को प्रसन्न और संपन्न स्थिति में देख वे पुनः जंगल चले जाते हैं।

नरेन्द्र मोहिनी

नरेन्द्र और मोहिनी दोनों ही बिहार के राजाओं की संतानें हैं। रंभा से विवाह न कर नरेन्द्र भागता है और मोहिनी के प्रेम में फँस जाता है। मोहिनी की दो बहनें और हैं। बड़ी केतकी और छोटी गुलाब। केतकी दोनों की हत्या करा देती है किंतु भाग्यवश दोनों बच जाती हैं। बाद में केतकी के घर नरेन्द्र और रंभा की मुलाकात होती है। नरेन्द्र अफसोस से रंभा को अपनाना चाहता है किन्तु अब मोहिनी बाधक बन जाती है। मोहिनी रंभा और नरेन्द्र दोनों की हत्या में विफल होकर स्वयं हत्या कर लेती है और नरेन्द्र रंभा को अपनाता हैं।

बीरेन्द्रवीर अथवा कटोरा भर खून

यह उपन्यास भी बिहार से ही सम्बद्ध है। घटना नेपाल की तराई क्षेत्र की है। बीरेन्द्र-सिह हरिपुर रियासत के राजा का छोटा लड़का है। इसके बाप का नाम करणसिह है। हरिपुर रियासत नेपाल राज्य क अधीनस्थ और उसको कर देने वाली है। करणसिह राठू नामक एक कर्मचारी ने वास्तविक राजा की हत्या कर दी और स्वयं राजा बन बैठा। नाम की समानता के कारण उसका भ्रम चल जाता है। राठू राजा करण सिंह के बड़े लड़के की भी हत्या करवा देता है। किंतु वह बच जाता है और नाहरसिंह डाकू के नाम से प्रसिद्ध हो जाता है।

सुजानसिंह राजा राठू का एक कर्मचारी और बीरेन्द्रसिंह की स्त्री तारा का पिता है। सुजानसिंह ने बीरेन्द्रसिंह की कैदी बहन सुंदरी की लड़की की हत्या कर दी और उसका खून एक कटोरे में रख दिया। यह उसने राठू के दबाव में आकर किया। यह खून उसकी कमजोरी बन गया। अब वह सुजान का प्रयोग बीरेन्द्रसिंह को मरवाने के लिए करना चाहता है। किन्तु घटनाएं बदलने लगती हैं।

बीरेन्द्रसिंह की भेंट कथित डाकू नाहरसिंह से होती है जो उसका बड़ा भाई है। परिचय के बाद दोनों भाई मिलते हैं। दोनों भाइयों के पिता करण सिंह जो साधु का वेश धारण कर जीवन बिता रहे थे निकल आते हैं। राठू की आँखें निकाल ली गई। वह कुछ ही दिनों में स्वर्ग सिधार गया। बीरेन्द्रसिंह को राजगद्दी मिली।

काजर की कोठड़ी

यह उपन्यास मुख्यत: वेश्या जीवन पर लिखा गया है । हरनंदन सिंह का विवाह सरला के साथ होने वाला है । किंतु विवाह के पूर्व ही सरला गायब हो जाती है । जहाँ वह गायब होती है वहीं खून से सनी पोटली मिलती है । हरनंदन सिंह शादी में आयी वेश्या से संबंध स्थापित कर सरला के गायब होने का पता लगाता है । सरला का चचेरा भाई जो अपने चाचा का अत्यंत विश्वास-पात्र बनता है अपनी चचेरी बहन का विवाह हरनंदन सिंह के साथ नहीं करना चाहता था । चाची की वसीयत के कारण वह सरला की शादी अन्यत्र कराकर आधे धन का मालिक बनना चाहता था । हरनंदन सिंह बांदी वेश्या को विश्वास में लेकर सरला का पता लगाता है । अपराधी दंडित होते हैं ।

गुप्त गोदना

इसे हिंदी का पहला ऐतिहासिक उपन्यास कहा गया है । इसमें औरंगजेब और दाराशिकोह के समय की कहानी है । इसका नायक उदयसिंह है। यह भी एक प्रेम कहानी है । किन्तु मुगल बादशाह के परिवार का आंतरिक कलह और हिन्दू सामंतों की स्थिति पर भी अच्छा प्रकाश डालता है ।

डॉ० युगेश्वर

काशी विद्यापीठ
वाराणसी–२२१००२

विषय-सूची

क्रम पृष्ठांक

दे
व
की
न
न्द
न खत्री समग्र
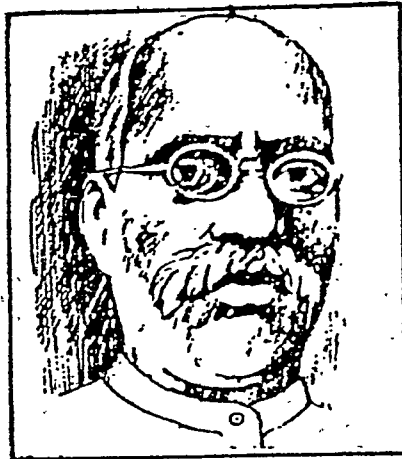
प्रचारक ग्रंथावली परियोजना

हिन्दी प्रचारक पब्लि० प्रा० लि०
सी २१/३० पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१ ०१०
✆ : ३५०४२५, ३५८४७०

बाबू देवकीनन्दन खत्री हिन्दी के पहले उपन्यासकार हैं जिन्हें जनता ने व्यापक रूप से मान्यता दी।ये हिन्दी में ऐय्याशी और तिलस्मी उपन्यासों के जनक माने गये।

देवकीनन्दन खत्री ने अपने उपन्यासों के द्वारा अपने जीवन में ही उत्तर भारत में वह ख्याति अर्जित की, जो अन्यों को नहीं मिली। इनके उपन्यास चन्द्रकान्ता को पढ़ने की ललक ने अनेक अहिन्दी भाषियों को भी हिन्दी सीखने के लिए विवश किया।

खत्री जी ने हिन्दी कथा लेखन को क्रान्तिकारी आयाम दिया। उनके सारे उपन्यास मात्र एक जिल्द में दिये गये हैं। इनमें चारों भाग चंद्रकान्ता और चौबीसों भाग चन्द्रकान्ता संतति है। इनके अतिरिक्त कुसुम कुमारी, नरेन्द्र-मोहिनी, वीरेन्द्र वीर, काजल की कोठरी, गुप्त गोदना तथा अन्य उपन्यास हैं। यह एक अद्भुत संग्रह है।

॥ श्री ॥

चन्द्रकान्ता

पहिला भाग

पहिला बयान

शाम का वक्त है, कुछ सूरज दिखाई दे रहा है, सूनसान मैदान में एक पहाड़ी के नीचे दो शख्स वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह एक पत्थर की चट्टान पर बैठे आपुस में कुछ बातें कर रहे हैं।

वीरेन्द्रसिंह की उम्र इक्कीस या बाईस वर्ष की होगी। यह नौगढ़ के राजा सुरेन्द्रसिंह का इकलौता लड़का है। तेजसिंह राजा सुरेन्द्रसिंह के दीवान जीतसिंह का प्यारा लड़का और कुंअर वीरेन्द्रसिंह का दिली दोस्त, बड़ा चालाक और फुर्तीला, कमर में सिर्फ खंजर बाँधे, बगल में बटुआ लटकाये, हाथ में एक कमन्द लिए बड़ी तेजी के साथ चारों तरफ देखता और इनसे बातें करता जाता है। इन दोनों के सामने एक घोड़ा कसा कसाया दुरुस्त पेड़ से बँधा हुआ है।

कुंअर वीरेन्द्रसिंह कह रहे हैं, "भाई तेजसिंह, देखो मुहब्बत भी क्या बुरी बला है जिसने इस दर्जे तक पहुंचा दिया।" कई दफे तुम विजयगढ़ राजकुमारी चन्द्रकान्ता की चीठी मेरे पास लाये और मेरी चीठी उन तक पहुंचाई जिससे साफ मालूम होता है कि जितनी मुहब्बत मैं चन्द्रकान्ता से रखता हूं उतना ही चन्द्रकान्ता मुझसे रखती है और हमारे राज्य से उसके राज्य के बीच सिर्फ पांच कोस का फासला भी है, इस पर भी हम लोगों के किये कुछ नहीं बन पड़ता। देखो इस खत में भी चन्द्रकान्ता ने यही लिखा है कि 'जिस तरह बने जल्द मिल जाओ'।

तेजसिंह ने जवाब दिया, " मैं हर तरह से आपको वहां ले जा सकता हूं मगर एक तो आजकल चन्द्रकान्ता के पिता महाराज जयसिंह ने महल के चारों तरफ सख्त पहरा बैठा रक्खा है, दूसरे मन्त्री का लड़का क्रूरसिंह उस पर आशिक हो रहा है ऊपर से उसने अपने दोनों ऐयारों *को जिनका नाम नाजिमअली और अहमदखाँ है इस बात की ताकीद कर दी है कि बराबर वें लोग महल की निगहबानी किया करें क्योंकि आपकी मुहब्बत का हाल क्रूरसिंह और उसके ऐयारों को बखूबी मालूम हो गया है। चाहे चन्द्रकान्ता क्रूरसिंह से बहुत ही नफरत करती है और राजा भी अपनी लड़की अपने मंत्री के लड़के को नहीं दे सकता फिर भी उसे उम्मीद बँधी हुई है और आपकी लगावट बहुत बुरी मालूम होती है। अपने बाप के जरिये उसने महाराज जयसिंह के कान तक आपकी लगावट का हाल दिया है और इसी सबब से पहरे की यह सख्त ताकीद हो गई है। आपको ले चलना अभी मुझे पसन्द नहीं जब तक कि मैं वहाँ जाकर फसादियों को गिरफ्तार न कर लूँ।

"इस वक्त मैं फिर विजयगढ़ जाकर चन्द्रकान्ता और चपला से मुलाकात करता हूँ क्योंकि चपला ऐयारा और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है और चन्द्रकान्ता को जान से ज्यादा मानती है। सिवाय इस चपला के मेरा साथ देने वाला वहां कोई नहीं है। जब मैं अपने दुश्मनों की चालाकी और कार्रवाई देख कर लौटूँ तब आपके चलने के बारे में राय दूँ। कहीं ऐसा न हो कि बिना समझे बुझे काम करके हम लोग वहाँ ही गिरफ्तार हो जायँ।"

वीरेन्द्र–जो मुनासिब समझो करो, मुझको तो सिर्फ अपनी ताकत का भरोसा है लेकिन तुमको अपनी ताकत और ऐयारी दोनों का।

तेजसिंह–मुझे यह भी पता लगा है कि हाल ही में क्रूरसिंह के दोनों ऐयार नाजिम और अहमद यहाँ आकर पुनः हमारे महाराज का दर्शन कर गये हैं। न मालूम किस चालाकी में आये थे ? अफसोस, उस वक्त मैं यहाँ न था।

---

* ऐयार उसको कहते है जो हर एक फन जानता हो, शक्ल बदलना और दौड़ना उसका मुख्य काम है।

वीरेन्द–मुश्किल तो यह है कि तुम क्रूरसिंह के दोनों ऐयारों को फँसाना चाहते हो और वे लोग तुम्हारी गिरफ्तारी की फिक्र में हैं, परमेश्वर ही कुशल करे। खैर अब तुम जाओ और जिस तरह बने चन्दकान्ता से मेरी मुलाकात का बन्दोबस्त करो।

तेजसिंह फौरन उठ खड़े हुए और बीरेन्द्रसिंह को वहीं छोड़ पैदल विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए। वीरेन्द्रसिंह भी घोड़े को दरख्त से खोल कर उस पर सवार हुए और अपने किले की तरफ चले गये।

दूसरा बयान

विजयगढ़ में क्रूरसिंह *अपनी बैठक के अन्दर नाजिम और अहमद दोनों ऐयारों के साथ बैठा बातें कर रहा है।

क्रूर–देखो नाजिम, महाराज को तो यह खयाल है कि मैं राजा होकर मंत्री के लड़के को कैसे दामाद बनाऊँ और चन्द्रकान्ता बीरेन्द्रसिंह को चाहती है। अब कहो कि मेरा काम कैसे निकले? अगर सोचा जाय कि चन्द्रकान्ता को लेकर भाग जाऊँ, तो कहाँ जाऊँ और कहाँ रह कर आराम करूँ? फिर ले जाने के बाद मेरे बाप की महाराज क्या दुर्दशा करेंगे? इससे तो यही मुनासिब होगा कि पहिले बीरेन्द्रसिंह और उसके ऐयार तेजसिंह को किसी तरह गिरफ्तार कर किसी जगह ले जाकर खपा डाला जाय कि हजार वर्ष तक पता न लगे और इसके बाद मौका पाकर महाराज को मारने की फिक्र की जाय, फिर तो मैं झट गद्दी का मालिक बन जाऊँगा और तब अलबत्ता अपनी जिन्दगी में चन्दकान्ता से ऐश कर सकूँगा। मगर यह तो कहो कि महाराज के मरने के बाद मैं गद्दी का मालिक कैसे बनूँगा? लोग कैसे मुझे राजा बनाएँगे?"

नाजिम–हमारे राजा के यहाँ बनिस्बत काफिरों के मुसलमान ज्यादा हैं, उन सभों को आपकी मदद के लिए मैं राजी कर सकता, और उन लोगों से कसम खिला सकता हूँ कि महाराज के बाद आपको राजा मानें, मगर शर्त यह है कि काम हो जाने पर आप भी हमारे मजहब मुसलमानी को कबूल करें?

क्रूरसिंह–अगर ऐसा है तो तुम्हारी शर्त मैं दिलोजान से कबूल करता हूँ।

अहमद–तो बस ठीक है, आप इस बात का एकरारनामा लिख कर मेरे हवाले करें, मैं सब मुसलमान भाइयों को दिखला कर उन्हें अपने साथ मिला लूँगा।

क्रूरसिंह ने काम हो जाने पर मुसलमानी मजहब अख्तियार करने का एकरारनामा लिख कर फौरन नाजिम और अहमद के हवाले किया, जिसपर अहमद ने क्रूरसिह से कहा, अब सब मुसलमानों को एकदिल कर लेना हम लोगों के जिम्मे है इसके लिए आप कुछ न सोचिये, हाँ हम दोनों आदमियों के लिए भी एक एकरारनामा इस बात का हो जाना चाहिए कि आपके राजा होने पर हमीं दोनों वजीर मुकर्रर किये जायँगे, और तब हम लोगों की चालाकी का तमाशा देखिये कि बात की बात में जमाना कैसे उलट पलट कर देते है!'

क्रूरसिंह ने झटपट इस बात का भी एकरारनामा लिख दिया जिससे वे दोनों बहुत ही खुश हुए। इसके बाद नाजिम ने कहा, "इस वक्त हम लोग चन्द्रकान्ता के हालचाल की खबर लेने जाते हैं क्योंकि यह शाम का वक्त बहुत अच्छा है, चन्द्रकान्ता जरूर बाग में गई होगी और अपनी सखी चपला से अपनी विरह कहानी कहती होगी, इसलिए हमको इसका पता लगाना कोई मुश्किल न होगा कि आजकल बीरेन्द्रसिंह और चन्दकान्ता के बीच में क्या हो रहा है।"

यह कह कर दोनों ऐयार क्रूरसिह से विदा हुए।

तीसरा बयान

कुछ दिन बाकी है, चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बाग में टहल रही है। भीनी भीनी फूलों की महक धीमी हवा के साथ मिल कर तबीयत को खुश कर रही है। तरह तरह के फूल खिले हुए है। बाग के पश्चिम की तरफ वाले आम के घने पेड़ों की बहार और उसमें से बैठते हुए सूरज की किरणों की चमक एक अजीब ही मजा दे रही है। फूलों की

---

*इसकी उम्र २१ या २२ वर्ष की थी, इसके ऐयार भी कमसिन थे।

क्यारियों की रविशों में अच्छी तरह छिड़काव किया हुआ है और फूलों के दरख्त भी अच्छी तरह पानी से धोए हैं। कहीं गुलाब, कहीं जूही, कहीं बेला, कहीं मोतिये की क्यारियाँ अपना अपना मजा दे रही हैं। एक तरफ बाग से सटा हुआ ऊँचा महल और दूसरी तरफ सुन्दर सुन्दर बुर्जियाँ अपनी बहार दिखला रही हैं। चपला जो चालाकी के फन में बड़ी तेज और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है अपने चंचल हावभाव के साथ चन्द्रकान्ता को साथ लिए चारों ओर घूमती और तारीफ करती हुई खूशबूदार फूलों को तोड़ तोड़ कर चन्द्रकान्ता के हाथ में दे रही है मगर चन्द्रकान्ता को बीरेन्द्रसिंह की जुदाई में ये सब बातें कब अच्छी मालूम होती हैं, उसे तो दिल बहलाने के लिए उसकी सखियाँ जबर्दस्ती बाग में खींच लाई हैं।

चन्द्रकान्ता की सखी चम्पा तो गुच्छा बनाने के लिए फूलों को तोड़ती हुई मालती लता के कुंज की तरफ चली गई लेकिन चन्द्रकान्ता और चपला धीरे धीरे टहलती हुई बीच के फव्वारे के पास जा निकली और उसकी चमकदार टोटियों से निकलते हुए जल का तमाशा देखने लगीं।

चपला–न मालूम चम्पा किधर चली गई !

चन्द्रकान्ता–कहीं इधर उधर घूमती होगी।

चपला–दो घडी से ज्यादे हुआ कि हम लोगों के साथ नहीं है।

चन्द्रकान्ता–देखो वह आ रही है।

चपला–इस वक्त तो इसकी चाल में फर्क मालूम होता है।

इतने में चम्पा ने आकर फूलों का एक गुच्छा चन्द्रकान्ता के हाथ में दिया और कहा, "देखिये यह कैसा अच्छा गुच्छा बना लाई हूँ, अगर इस वक्त कुँअर बीरेन्द्रसिंह होते तो इसको देख मेरी कारीगरी की तारीफ करते और मुझको बहुत कुछ इनाम देते।"

बीरेन्द्रसिंह का नाम सुनते ही यकायक चन्द्रकान्ता का अजब हाल हो गया। भूली हुई बात फिर याद आ गई, कमल मुख मुरझा गया, ऊँची ऊँची सांस लेने लगी, आँखों से आँसू टपकने लगे। धीरे धीरे कहने लगी, "न मालूम विधाता ने मेरे भाग्य में क्या लिखा है ? न मालूम मैंने उस जन्म में कौन ऐसे पाप किये है जिनके बदले यह दुःख भोगना पड़ा। देखो पिता को क्या धुन समाई है। कहते है कि चन्द्रकान्ता को कुआरी ही रखूंगा। हाय ! बीरेन्द्रसिंह के पिता ने शादी कराने के लिए कैसी कैसी खुशामदें कीं मगर दुष्ट क्रूर के बाप कुपथसिंह ने उनको ऐसा कुछ अपने बस में कर रक्खा है कि कोई काम होने नहीं देता, और उधर कम्बख्त क्रूर मुझसे अपनी ही लसी लगाना चाहता है।"

यकायक चपला ने चन्द्रकान्ता का हाथ पकड़ कर जोर से दबाया मानों चुप रहने के लिए इशारा किया।

चपला के इशारे को समझ चन्द्रकान्ता चुप हो रही और चपला का हाथ पकड़ कर फिर बाग में टहलने लगी, मगर अपना रुमाल जानबूझ कर उसी जगह गिराती गई। थोड़ी दूर आगे बढ़ कर उसने चम्पा से कहा, " सखी देख तो फव्वारे के पास कहीं मेरा रुमाल गिर पड़ा है।"

चम्पा रूमाल लेने फौव्वारे के तरफ चली गई तब चन्द्रकान्ता ने चपला से पूछा, "सखी तूने बोलते समय मुझे यकायक क्यों रोका ?"

चपला ने कहा, "मेरी प्यारी सखी, मुझको चम्पा पर शुबहा हो गया है। उसकी बातों और चितवनों से मालूम होता है कि वह असली चम्पा नहीं है।"

इतने में चम्पा ने रूमाल लाकर चपला के हाथ में दिया। चपला ने चम्पा से पूछा, "सखी, कल रात को मैंने तुझको जो कहा था सो तैंने किया ?" चम्पा बोली, "नहीं मैं तो भूल गई।" तब चपला ने कहा, " भला वह बात तो याद है या वह भी भूल गई !' चम्पा बोली, "बात तो याद है।" तब फिर चपला ने कहा भला दोहरा के मुझसे कह तो सही तब मैं जानूँ कि तुझे याद है।"

इस बात का जवाब न देकर चम्पा ने दूसरी बात छेड़ दी जिससे शक की जगह यकीन हो गया कि यह चम्पा नहीं है। आखिर चपला यह कह कर कि 'मैं तुझसे एक बात कहूंगी' चम्पा को एक किनारे ले गई और कुछ मामूली बातें करके बोली, " देखो तो चम्पा मेरे कान से कुछ बदबू तो नहीं आती ? क्योंकि कल से कान में दर्द है !' नकली चम्पा चपला के फेर में पड़ गई और फौरन कान सूँघने लगी। चपला ने चालाकी से बेहोशी की बुकनी कान में रख कर नकली चम्पा को सुँघा दिया जिसके सूँघते ही चम्पा बेहोश होकर गिर पड़ी।

चपला ने चन्द्रकान्ता को पुकार कर कहा, "आओ सखी अपनी चम्पा का हाल देखो।" चन्द्रकान्ता ने पास आकर चम्पा को बेहोश पड़ी हुई देख चपला से कहा, "सखी कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा ख्याल धोखा ही निकले और पीछे चम्पा से शरमाना पड़े !" "नहीं ऐसा न होगा।" कह कर चपला चम्पा को पीठ पर लाद फौवारे के पास ले गई और चन्द्रकान्ता

से बोली, तुम फौव्वारे से चिल्लू भर पानी इसके मुँह पर डालो, मै धोती हूं।" चन्द्रकान्ता ने ऐसा ही किया और चपला खूब रगड़ रगड़ कर उसका मुँह धोने लगी। थोड़ी देर में चम्पा की सूरत बदल गई और साफ नाज़िम की सूरत निकल आई। देखते ही चन्द्रकान्ता का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और वह बोली, "सखी इसने तो बड़ी बेअदबी की !"

"देखो तो अब मै क्या करती हूँ।" कह कर चपला नाजिम को फिर पीठ पर लाद बाग के कोने में ले गई जहां बुर्ज के नीचे एक छोटा सा तहखाना था। उसके अन्दर बेहोश नाजिम को ले जाकर लिटा दिया और अपने ऐयारी के बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर जलाई। एक रस्सी से नाजिम के पैर और दोनों हाथ पीठ की तरफ खूब कस कर बांधे और डिबिया से लखलखा निकाल उसको सुँघाया जिससे नाजिम ने एक छींक मारी और होश में आकर अपने को कैद और बेबस देखा। चपला कोड़ा लेकर खड़ी हो गई और मारना शुरू किया।

"माफ करो, मुझसे बड़ा कसूर हुआ, अब मै ऐसा कभी न करूंगा बल्कि इस काम का नाम भी न लूँगा ! इत्यादि कह कर नाजिम चिल्लाने और रोने लगा, मगर चपला कब सुनती थी ? वह कोड़ा जमाए ही गई और बोली, "सब्र कर, अभी तो तेरे पीठ की खुजली भी न मिटी होगी ! तू यहाँ क्यों आया था ? क्या बाग की हवा अच्छी मालूम हुई थी ? क्या बाग की सैर को जी चाहा था ? क्या तू नहीं जानता था कि चपला भी यहाँ होगी ? हरामजादे के बच्चे, बेईमान, अपने बाप के कहने से तूने यह काम किया ? देख मै उसकी भी तबीयत खुश कर देती हूँ।" यह कह कर फिर मारना शुरू किया तब पूछा, "सच बता तू कैसे यहाँ आया और चम्पा कहाँ गई ?"

मार के खौफ से नाजिम को असल हाल कहना ही पड़ा। वह बोला, "चम्पा को मैने ही बेहोश किया था, बेहोशी की दवा छिड़क कर फूलों का गुच्छा उसके रास्ते में रख दिया जिसको सूँघ कर वह बेहोश हो गई तब मैंने उसे मालती लता के कुंज में डाल दिया और उसकी सूरत बन उसके कपड़े पहिर तुम्हारी तरफ चला आया। लो मैंने सब हाल कह दिया, अब छोड़ दो !"

चपला ने कहा, 'ठहर छोड़ती हूं।' मगर फिर भी दस पाँच खूबसूरत कोड़े और जमा ही दिए, यहाँ तक कि नाजिम बिलबिला उठा, तब चपला ने चन्द्रकान्ता से कहा, ' सखी तुम इसकी निगहबानी करो, मै चम्पा को ढूँढ़ कर लाती हूँ। कहीं यह पाजी झूठ न कहता हो !"

चम्पा को खोजती हुई चपला मालती लता के पास पहुँची और बत्ती बाल कर ढूँढ़ने लगी। देखा कि सचमुच चम्पा एक झाड़ी में बेहोश पड़ी है और बदन पर उसके एक लत्ता भी नहीं है। लखलखा सुँघा कर होश में लाई और पूछा, 'क्यों मिजाज कैसा है, खा न गई धोखा !"

"चम्पा ने कहा, 'मुझको क्या मालूम था कि इस समय यहाँ ऐयारी होगी ? इस जगह फूलों का एक गुच्छा पड़ा था जिसको उठा कर सूँघते ही मै बेहोश हो गई, फिर न मालूम क्या हुआ। हाय हाय, न जाने किसने मुझे बेहोश किया, मेरे कपड़े भी उतार लिए, बड़ी लागत के कपड़े थे !"

वहाँ पर नाजिम के कपड़े पड़े हुए थे जिनमें से दो एक लेकर चपला ने चम्पा का बदन ढांका और तब यह कह के कि "मेरे साथ आ, मै उसे दिखलाऊँ जिसने तेरी ऐसी हालत की !"चम्पा को साथ ले उस जगह आई जहाँ चन्द्रकान्ता और नाजिम थे। नाजिम की तरफ इशारा करके चपला ने चम्पा से कहा, "देख, इसी ने तेरे साथ यह भलाई की थी ! "चम्पा को नाजिम की सूरत देखते ही बड़ा गुस्सा आया और वह चपला से बोली, "बहिन अगर इजाजत दो तो मै भी दो चार कोड़े लगा कर अपना गुस्सा निकाल लूँ।"

चपला ने कहा, "हाँ हाँ, जितना जी चाहे इसे मूए को जूतियाँ लगाओ !"बस फिर क्या था, चम्पा ने मनमानते कोड़े नाजिम को लगाए, यहाँ तक कि नाजिम घबड़ा उठा और जी में कहने लगा, "खुदा क्रूरसिंह को गारत करे जिसकी बदौलत मेरी यह हालत हुई !"

आखिरकार नाजिम को उसी तहखाने में कैद कर तीनों महल की तरफ रवाना हुईं। यह छोटा सा बाग जिसमें ऊपर लिखी बातें हुईं, महल के संग सटा हुआ उसके पिछवाड़े की तरफ पड़ता था और खास कर चन्द्रकान्ता के टहलने और हवा खाने के लिए ही बनवाया गया था। इसके चारों तरफ मुसलमानों का पहरा होने के सबब से ही अहमद और नाजिम को अपना काम करने का मौका मिल गया था।

चौथा बयान

तेजसिंह वीरेन्द्रसिंह से रुखसत होकर विजयगढ़ पहुँचे और चन्द्रकान्ता से मिलने की कोशिश करने लगे, मगर कोई तरकीब न बैठी क्योंकि पहरे वाले बड़ी होशियारी से पहरा दे रहे थे। आखिर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

रात चाँदनी है, अगर अँधेरी रात होती तो कमन्द लगा कर ही महल के ऊपर जाने की कोशिश की जाती।

आखिर तेजसिंह एकान्त में गये और वहाँ अपनी सूरत एक चोबदार की सी बना महल के ड्योढ़ी पर पहुँचे। देखा कि बहुत से चोबदार और प्यादे बैठे पहरा दे रहे हैं। एक चोबदार से बोले, "यार, हम भी महाराज के नौकर हैं, आज चार महीने से महाराज ने हमको अपनी अर्दली में नौकर रक्खा है, इस वक्त छुट्टी थी, चाँदनी रात का मजा देखते टहलते इस तरफ आ निकले, तुम लोगों को तम्बाकू पीते देख जी में आया कि चलो दो फूँक हम भी लगा लें, अफियूम खाने वालों को तम्बाकू की महक जैसी मालूम होती है, आप लोग जानते ही होंगे !"

"हाँ हाँ आइए, बैठिए, तम्बाकू पीजिए !" कह कर चोबदार और प्यादों ने हुक्का तेजसिंह के आगे रक्खा। तेजसिंह ने कहा, "मैं हिन्दू हूँ, हुक्का तो नहीं पी सकता, हाँ हाथ से जरूर पी लूँगा।" यह कह चिलम उतार ली और पीने लगे।

दो फूँक भी तम्बाकू के नही पीए थे कि खाँसना शुरू किया, इतना खाँसा कि थोड़ा सा पानी भी मुँह से निकाल दिया और तब कहा, "मियाँ, तुम लोग अजब कड़वा तम्बाकू पीते हो ? मै तो हमेशा सर्कारी तम्बाकू पीता हूँ। महाराज के हुक्काबर्दार से दोस्ती हो गई है, वह बराबर महाराज के पीने वाले तम्बाकू में से मुझको दिया करता है, अब ऐसी आदत पड़ गई है कि सिवाय उस तम्बाकू के और कोई तम्बाकू अच्छा नहीं लगता !"

इतना कह चोबदार बने हुए तेजसिंह ने अपने बटुए में से एक चिलम तम्बाकू निकाल कर दिया और कहा, "तुम लोग भी पीकर देख लो कि कैसा तम्बाकू है।"

भला चोबदारों ने महाराज के पीने का तम्बाकू कभी काहे को पीया होगा, पीना क्या सपने में भी न देखा होगा। झट हाथ फैला दिया और कहा, "लाओ भाई तुम्हारी बदौलत हम भी सर्कारी तम्बाकू तो पी लें, तुम बड़े किस्मतवर हो कि महाराज के साथ रहते हो, तुम तो खूब चैन करते होगे।" यह कह नकली चोबदार (तेजसिंह) के हाथ से तम्बाकू ले लिया और खूब डबल जमा कर तेजसिंह के सामने लाए। तेजसिंह ने कहा, "तुम लोग सुलगाओ, फिर मै भी ले लूंगा।"

अब हुक्का गुड़गुड़ाने लगा और साथ ही गप्पें भी उड़ने लगीं।

थोड़ी ही देर में अब चोबदार और प्यादों का सर घूमने लगा, यहाँ तक कि झुकते झुकते सब औंधे होकर गिर पड़े और बेहोश हो गये।

अब क्या था, बड़ी आसानी से तेजसिंह फाटक के अन्दर घुस गये और नजरबाग में पहुँचे। देखा कि हाथ में रोशनी लिए सामने से एक लौंडी चली आ रही है। तेजसिंह ने फुर्ती से पास जाकर उसके गले में कमन्द डाली और ऐसा झटका दिया कि वह चूं तक न कर सकी और जमीन पर गिर पड़ी। तुरंत उसे बेहोशी की बुकनी सुंघाई और जब बेहोश हो गई तो उसे वहाँ से उठाकर किनारे ले गये। बटुए में से सामान निकाल मोमबत्ती जलाई और सामने आईना रख अपनी सूरत बनाई, इसके बाद उसको वहीं छोड़ उसी का कपड़ा पहिन महल की तरफ रवाना हुए और वहाँ पहुंचे जहाँ चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा दस पाँच लौंडियों के साथ बैठी बातें कर रही थीं। लौंडी की सूरत बने हुए तेजसिंह भी एक किनारे जाकर बैठ गये।

तेजसिंह को देख चपला बोली, "क्यों केतकी, जिस काम के लिए मैंने तुझको भेजा था क्या वह काम तू कर आई जो चुपचाप आकर बैठ रही है ?"

चपला की बात सुन तेजसिंह को मालूम हो गया कि जिस लौंडी को मैंने बेहोश किया है या जिसकी सूरत बन कर आया हूं उसका नाम केतकी है।

नकली केतकी—हाँ, काम करने तो गई थी मगर रास्ते में एक नया तमाशा देख तुमसे कुछ कहने के लिए लौट आई हूँ।

चपला—ऐसा ! अच्छा तैने क्या देखा कह ?

नकली केतकी—सभों को हटा दो तो तुम्हारे और राजकुमारी के सामने बात कह सुनाऊं।

सब लौंडियाँ हट गईं और केवल चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा रह गईं। अब केतकी ने हँस कर कहा, "कुछ इनाम दो तो खुशखबरी सुनाऊँ।"

चन्द्रकान्ता ने समझा कि शायद यह कुछ बीरेन्द्रसिंह की खबर लाई है, मगर फिर यह भी सोचा कि मैंने तो आज तक कभी बीरेन्द्रसिंह का नाम भी इसके सामने नहीं लिया तब यह क्या मामला है ? कौन सी खुशखबरी है जिसके सुनाने के लिए यह पहिले ही से इनाम मांगती है ? आखिर चन्द्रकान्ता ने केतकी से कहा, "हाँ हाँ इनाम दूंगी, तू कह तो सही क्या खुशखबरी लाई है ?"

केतकी ने कहा, "पहिले दे दो तो कहूँ नहीं तो जाती हूँ !" यह कह उठकर खड़ी हो गई।

बेवकूफी पर अफसोस करती लौट आई और बोली, " क्या कहूँ, सचमुच अहमद नाजिम को छुड़ा ले गया।" अब तेजसिंह ने छेड़ना शुरू किया, " बड़ी ऐयारा बनती थीं, कहती थी हम चालाक हैं, होशियार हैं, ये हैं वो हैं। बस एक अदने ऐयार ने नाकों दम कर डाला !"

चपला झुँझला उठी और चिढ़ कर बोली, "चपला नाम नहीं जो अबकी दोनों को गिरफ्तार कर इसी कमरे में ला बेहिसाब जूतियाँ न लगाऊँ।"

तेजसिंह ने कहा, " बस तुम्हारी कारीगरी देखी गई, अब देखो मैं कैसे एक एक को गिरफ्तार कर अपने शहर में ले जा के कैद करता हूं।"

इसके बाद तेजसिंह ने अपने आने का पूरा हाल चन्द्रकान्ता और चपला से कह सुनाया और यह भी बतला दिया कि फलानी जगह पर मैं केतकी को बेहोश करके डाल आया हूँ तुम जाकर उसे उठा लाना। उसके कपड़े मैं न दूंगा क्योंकि इसी सूरत से बाहर चला जाता हूँ। देखो सिवाय तुम तीनों के यह सब हाल और किसी को न मालूम हो नहीं तो सब काम बिगड़ जायगा।

चन्द्रकान्ता ने तेजसिंह से ताकीद की कि "दूसरे तीसरे तुम जरूर यहाँ आया करो, तुम्हारे आने से ढाँढ़स बनी रहती है।"

"बहुत अच्छा, मैं ऐसा ही करूँगा !" कह कर तेजसिंह चलने को तैयार हुए। चन्द्रकान्ता उन्हें जाते देख रो कर बोली, "क्यों तेजसिंह, क्या मेरी किस्मत में कुमार की मुलाकात नहीं बदी है ?" इतना कहते ही गला भर आया और फूट फूट कर रोने लगी। तेजसिंह ने बहुत समझाया और कहा कि देखो यह सब बखेड़ा इसी वास्ते किया जा रहा है जिसमें तुम्हारे उनके हमेशा के लिए मुलाकात हो, अगर तुम ही घबड़ा जाओगी तो कैसे काम चलेगा ? बहुत कुछ समझा बुझा कर चन्द्रकान्ता को चुप कराया, तब वहाँ से रवाना हो केतकी की सूरत में दर्वाजे पर आये। देखा तो दो चार प्यादे होश में आये हैं बाकी चित्त पड़े हैं, कोई औंधा पड़ा है, कोई उठा तो है मगर फिर भी झुका ही जाता है। नकली केतकी ने डपट कर दरबानों से कहा, "तुम लोग पहरा देते हो या जमीन सूँघते हो ! इतनी अफीम क्यों खाते हो कि आँखें नहीं खुलतीं और सोते हो तो मुर्दों से बाजी लगा कर ! देखो मैं बड़ी रानी से कह कर तुम्हारी क्या दशा करती हूँ !"

जो चोबदार होश में आ चुके थे केतकी की बात सुन कर सन्न हो गए और लगे खुशामद करने–

"देखो केतकी माफ करो, आज एक नालायक सरकारी चोबदार ने आकर धोखा दे ऐसा ज़हरीला तम्बाकू पिला दिया कि हम लोगों की यह हालत हो गई। उस पाजी ने तो जान से ही मारना चाहा था, अल्लाह ने बचा दिया, नहीं तो मारने में क्या छोड़ा था। देखो रोज तो ऐसा नहीं होता था, आज धोखा खा गये। हम हाथ जोड़ते हैं, आगे कभी ऐसा देखना तो जो चाहे सजा देना !"

नकली केतकी ने कहा, "अच्छा आज तो छोड़ देती हूँ मगर खबरदार जो फिर कभी ऐसा हुआ !" यह कहते हुए तेजसिंह बाहर निकल गये। डर के मारे किसी ने यह भी न पूछा कि केतकी तू कहाँ जा रही है ?

पांचवाँ बयान

अहमद ने, जो बाग के पेड़ पर बैठा हुआ था, जब देखा कि चपला ने नाजिम को गिरफ्तार कर लिया और महल में चली गई तो सोचने लगा कि चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा बस यही तीनों महल में गई है, नाजिम इन सभों के साथ नहीं गया तो जरूर वह इस बगीचे में ही कहीं कैद होगा, यह सोच कर वह पेड़ से उतर इधर उधर ढूँढ़ने लगा। जब उस तहखाने के पास पहुँचा जिसमें नाजिम कैद था तो भीतर से चिल्लाने की आवाज आई जिसे सुन उसने पहिचान लिया कि नाजिम की आवाज है। तहखाने के किवाड़ खोल अन्दर गया, नाजिम को बंधा पा झट उसकी रस्सी खोली और तहखाने से बाहर ला कर बोला, "चलो जल्दी, इस बगीचे के बाहर हो जायँ तब हाल सुनें कि क्या हुआ !"

नाजिम और अहमद बगीचे के बाहर आए और चलते चलते आपुस में बातचीत करने लगे। नाजिम ने चपला के हाथ फँस जाने और कोड़ा खाने का पूरा हाल कहा।

अहमद–भाई नाजिम जब तक पहले चपला को हम लोग न पकड़ लेंगे तब तक कोई काम न होगा क्योंकि चपला बड़ी चालाक है और धीरे धीरे चम्पा को भी तेज कर रही है। अगर वह गिरफ्तार न की जायगी तो थोड़े ही दिनों में एक की दो हो जायेंगी यानी चम्पा भी इस काम में तेज होकर चपला का साथ देने के लायक हो जायगी।

नाजिम–ठीक है, खैर आज तो कोई काम नहीं हो सकता मुश्किल से जान बची है, हाँ पहिले कल यही काम करना है

यानी जिस तरह हो चपला को पकड़ना और ऐसी जगह छिपाना कि जहां पता न लगे और अपने ऊपर भी किसी को शक न हो।

ये दोनों आपुस में धीरे धीरे बातें करते चले जा रहे थे, थोड़ी देर में जब महल के अगले दरवाजे के पास पहुँचे तो देखा कि केतकी जो कुमारी चन्द्रकान्ता की लौंडी है सामने से चली आ रही है।

तेजसिंह ने भी जो केतकी के वेष में चले जा रहे थे, नाजिम और अहमद को देखते ही पहिचान लिया और सोचने लगे कि भले मौके पर ये दोनों मिल गये हैं और अपनी भी सूरत अच्छी तरह है, इस समय इन दोनों से कुछ खेल करना चाहिए और बन पड़े तो दोनों नहीं एक को तो जरूर ही पकड़ना चाहिए।

तेजसिंह जान बूझ कर इन दोनों के पास से होकर निकले। नाजिम और अहमद भी यह सोच कर उसके पीछे हो लिये कि देखें कहाँ जाती है। नकली केतकी (तेजसिंह) ने फिर कर देखा और कहा, "तुम लोग मेरे पीछे क्यों चले आ रहे हो? जिस काम पर मुकर्रर हो उस काम को करो!" अहमद ने कहा, "किस काम पर मुकर्रर हैं और क्या काम करें? तुम क्या जानती हो?" केतकी ने कहा, "मैं सब जानती हूँ! तुम वही काम करो जिसमें चपला के हाथ की जूतियाँ नसीब हों! जिस जगह तुम्हारी मददगार एक लौंडी तक नहीं है वहां तुम्हारे किए क्या होगा?"

नाजिम और अहमद केतकी की बात सुनकर दंग हो गये और सोचने लगे कि यह तो बड़ी चालाक मालूम होती है, अगर हम लोगों के मेल में आ जाय तो बड़ा काम निकले और इसकी बातों से मालूम होता है कि कुछ लालच देने पर हम लोगों का साथ देगी।

नाजिम ने कहा, "सुनो केतकी, हम लोगों का तो काम ही चालाकी करने का है। हम लोग अगर पकड़े जाने और मरने मारने से डरें तो कभी काम न चले, इसी की पैसा खाते हैं, बात की बात में हजारों रुपये इनाम मिलते हैं, खुदा की मेहरवानी से तुम्हारे ऐसे मददगार भी मिल जाते हैं जैसे आज तुम मिल गई। अब तुमको भी मुनासिब है कि हमारी मदद करो, जो कुछ हमको मिलेगा उसमें से हम तुमको भी हिस्सा देंगे।"

केतकी ने कहा, "सुनो जी मैं उम्मीद के ऊपर जान देने वाली नहीं हूं, वे कोई दूसरे होंगे, मैं तो पहले लेकर काम करती हूँ। बस इस वक्त कुछ मुझको दो तो मैं अभी तेजसिंह को तुम्हारे हाथ गिरफ्तार करा दूं, नहीं तो जाओ जो कुछ करते हो करो।"

तेजसिंह की गिरफ्तारी का नाम सुनते ही इन दोनों की तबीयत खुश हो गई। नाजिम ने कहा, "अगर आज तेजसिंह को पकडा दो तो जो कहो हम तुमको दूँ!

केतकी–एक हजार रुपये से कम मैं हरगिज न लूँगी अगर मंजूर हो तो लाओ रुपये मेरे सामने रक्खो।

नाजिम–अब इस वक्त मैं आधी रात को कहाँ से रुपये लाऊँ, हाँ कल जरूर दे दूँगा।

केतकी–ऐसी बातें मुझसे न करो, मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि उधार सौदा नहीं करती, लो मैं जाती हूँ।

नाजिम–(आगे से रोक कर) सुनो तो, तुम खफा क्यों होती हो? अगर तुमको हम लोगों का एतबार न हो तो तुम इसी जगह ठहरो, हम लोग जाकर रुपये ले आते हैं।

केतकी–अच्छा एक आदमी यहाँ मेरे पास रहो और एक आदमी जाकर रुपये ले आओ।

नाजिम–अच्छा अहमद यहाँ तुम्हारे पास ठहरता है, मैं जाकर रुपये ले आता हूं।

कह कर नाजिम ने अहमद को तो उसी जगह छोड़ा और आप खुशी खुशी क्रूरसिंह की तरफ रुपये लेने को चला।

नाजिम के चले जाने के बाद थोड़ी देर तक केतकी और अहमद इधर उधर की बातें करते रहे। बात करते करते केतकी ने दो चार इलाइची बटुए से निकाल कर अहमद को दी और आप भी खाई। अहमद को तेजसिंह के पकड़े जाने की उम्मीद में इतनी खुशी थी कि कुछ सोच न सका और इलायची खा गया, मगर थोड़ी ही देर बाद उसका सर घूमने लगा। तब वह समझ गया कि बेशक यह कोई ऐयार (चालाक) है जिसने धोखा दिया। झट कमर से खन्जर खींच बिना कुछ कहे केतकी को मारा, मगर केतकी पहिले से होशियार थी, दाँव बचा कर उसने अहमद की कलाई पकड़ ली जिससे अहमद कुछ न कर सका बल्कि जरा ही देर बाद बेहोश होकर गिर पड़ा। तेजसिंह ने उसकी मुश्कें बाँध कर चादर में गठरी कसी और पीठ पर लाद नौगढ़ का रास्ता लिया। खुशी के मारे जल्दी जल्दी कदम बढ़ाते चले गये, यह भी खयाल था कि कहीं ऐसा न हो कि नाजिम आ जाय और पीछा करे।

इधर नाजिम रुपये लेने के लिए गया तो सीधे क्रूरसिंह के मकान पर पहुँचा। उस वक्त क्रूरसिंह गहरी नींद में सो रहा था। जाते ही नाजिम ने उसको जगाया। क्रूरसिह ने पूछा, "क्या है जो इस वक्त आधी रात के समय आकर मुझे उठा रहे हो?"

नाजिम ने क्रूरसिंह से अपनी पूरी कैफियत यानी चन्द्रकान्ता के बाग में जाना और गिरफ्तार होकर कोड़े खाना, अहमद का छुड़ा लाना, फिर वहाँ से रवाना होना, रास्ते में केतकी से मिलना और हजार रुपयों पर तेजसिंह को पकड़वा देने की बातचीत तै करना वगैरह, सब खुलासा कह सुनाया। क्रूरसिंह ने नाजिम के पकड़े जाने का हाल सुनकर कुछ अफसोस तो किया मगर पीछे तेजसिंह के गिरफ्तार होने की उम्मीद सुनकर उछल पड़ा और बोला, "लो अभी हजार रुपये देता हूं बल्कि मैं खुद तुम्हारे साथ चलता हूं यह कह कर हजार रुपये सन्दूक में से निकाले और नाजिम के साथ हो लिया।

जब नाजिम क्रूरसिंह को साथ लेकर वहाँ पहुँचा जहाँ अहमद और केतकी को छोड़ गया था तो दोनों में से कोई न मिला। नाजिम तो सन्न हो गया और उसके मुंह से यह बात निकल पड़ी कि 'धोखा हुआ' !

क्रूरसिंह–कहो नाजिम क्या हुआ ?

नाजिम–क्या कहूँ, वह जरूर केतकी नहीं कोई ऐयार था जिसने पूरा धोखा दिया और अहमद को तो ले ही गया।

क्रूरसिंह–खूब, तुम तो बाग ही में चपला के हाथ से पिट ही चुके थे, अहमद बाकी था सो वह भी इस वक्त कहीं जूतें खाता होगा, चलो छुट्टी हुई।

नाजिम ने शक मिटाने के लिए थोड़ी देर तक इधर उधर खोज भी की पर कुछ पता न लगा, आखिर रोते पीटते दोनों ने घर का रास्ता लिया।

छठवाँ बयान

तेजसिंह को विजयगढ़ की तरफ बिदा कर बीरेन्द्रसिंह अपने महल में आये मगर किसी काम में उनका दिल न लगता था। हरदम चन्द्रकान्ता की याद में सर झुकाए बैठे रहना और जब कभी निराला पाना तो चन्द्रकान्ता की तस्वीर अपने सामने रखकर बातें किया करना, या पलंग पर लेट मुँह ढाँक खूब रोना, बस यही तो उनका काम था। अगर कोई पूछता तो बातें बना देते। बीरेन्द्रसिंह के बाप सुरेन्द्रसिंह को बीरेन्द्रसिंह का सब हाल मालूम था मगर क्या करते, कुछ बस नहीं चलता था, क्योंकि विजयगढ़ का राजा उनसे बहुत जबरदस्त था और हमेशा उन पर हुकूमत रखता था।

बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह को विजयगढ़ जाती दफे कह दिया था कि तुम आज लौट आना। रात बारह बजे तक बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह की राह देखा, जब वह न आये इनकी घबराहट और भी ज्यादा हो गई आखिर किसी तरह अपने को सम्हाला और मसहरी पर लेट दर्वाजे की तरफ देखने लगे। सवेरा हुआ ही चाहता था कि तेजसिंह पीठ पर एक गट्ठर लादे आ पहुँचे। पहरे वाले इस हालत में इनको देख हैरान थे मगर खौफ से कुछ कह नहीं सकते थे। तेजसिंह ने बीरेन्द्रसिंह के कमरे में पहुँच कर देखा कि अभी तक वे जाग रहे हैं। बीरेन्द्रसिंह तेजसिंह को देखते ही उठ खड़े हुए और बोले, "कहो भाई क्या खबर लाये?"

तेजसिंह ने वहाँ का सब हाल सुनाया, चन्द्रकान्ता की चीठी हाथ पर रख दी, अहमद की गठरी खोल के दिखा दिया और कहा, "यह चीठी है और यह सौगात !"

बीरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए। चीठी को कई मर्तबा पढ़ कर आँखों से लगाया, फिर तेजसिंह से कहा, "सुनो भाई, इस अहमद को ऐसी जगह रक्खो जहाँ किसी को मालूम न हो, अगर जयसिंह को खबर लगेगी तो फसाद बढ़ जायगा।"

तेजसिंह–इस बात को मैं पहिले से सोच चुका हूँ। मैं इसको एक पहाड़ी खोह में रख आता हूँ जिसको मैं ही जानता हूँ।

यह कह कर तेजसिंह ने फिर अहमद की गठरी बाँधी और एक प्यादे को भेज कर देवीसिंह नामी ऐयार को बुलाया जो तेजसिंह का शागिर्द, दिली दोस्त और रिश्ते में साला भी लगता था, तथा ऐयारी के फन में भी तेजसिंह से किसी तरह कम न था। जब देवीसिंह आ गये, तेजसिंह ने अहमद की गठरी अपनी पीठ पर लादी और देवीसिंह से कहा, " आओ साथ चलो, तुमसे एक काम है।" देवीसिंह ने कहा, "गुरुजी, यह गठरी मुझको दो मैं ले चलूँ, मेरे रहते यह काम आपको अच्छा नहीं लगता।" आखिर देवीसिंह ने यह गठरी पीठ पर लाद ली और तेजसिंह के पीछे चल निकले।

ये दोनों शहर के बाहर हो जंगल और पहाड़ियों के घूमघुमौवे पेंचीदे रास्तों से जाते जाते दो कोस के करीब पहुँच कर एक अँधेरी खोह में घुसे। थोड़ी देर चलने के बाद कुछ रोशनी मिली। वहाँ जाकर तेजसिंह ठहर गए और देवीसिंह से बोले, "गठरी रख दो।"

देवीसिंह–(गठरी रख कर) गुरुजी, यह तो अजीब जगह है, अगर कोई आवे भी तो यहाँ से जाना मुश्किल हो जाय।

तेजसिंह–सुनो देवीसिंह, इस जगह को मेरे सिवाय कोई नहीं जानता, तुमको अपना दिली दोस्त समझ कर ले आया हूं, तुम्हें अभी बहुत कुछ काम करना होगा।

देवीसिंह–मैं तुम्हारा तावेदार हूँ, तुम गुरु हो क्योंकि ऐयारी तुम्हीं ने मुझको सिखाई है, अगर मेरी जान की भी

कुछ देर तक सोचते विचारते रहे। यकायक बदन में कपकपी हुई और सिर उठाया हिम्मत ने कलजा ऊँचा किया।

घोड़ों के चारजामों में, जो कुछ रुपया अशर्फी आर जवाहिरात था निकाल कर कमर में रक्खा, ऊपर से लँगोटा कसा और एक कटार कमर में छिपाने बाद अपने पहिरने के कपड़े वगैरह वहीं फेंक बदन में मिट्टी मल अवधूती सूरत बना फिर उस गाँव की तरफ चले। मन में कहते जाते थे– 'बिना रनबीरसिंह के इस दुनिया में जिन्दगी रखने वाला मैं नहीं हूँ। या तो उन्हें ढूँढ ही निकालूँगा या अपनी भी वही दशा करूँगा जो सोच चुका हूँ।

तीसरा बयान

रात आधी से ज्यादे जा चुकी थी जब जसवन्तसिंह अवधूती सूरत बनाए उस गाँव की तरफ रवाना हुए। रनबीरसिंह की याद में आँसू बहाते ढूँढने की तर्कीबें सोचते चले जा रहे थे। यह बिल्कुल मालूम नहीं था कि उनका दुश्मन कौन है या किसने उन्हें गिरफ्तार किया होगा। वे सवार भी फिर उस तरफ नहीं लौटे जिधर से आए थे।

जसवन्तसिंह अभी उस गाँव के पास भी नहीं पहुँचे थे बहुत दूर इधर ही थे कि सामने से बहुत से घोड़ों के टापों की आवाज आने लगी जिसे सुन ये चौंक पड़े और सिर उठा कर देखने लगे। कुछ ही देर में बहुत से सवार जो पचास से कम न होंगे वहाँ आ पहुँचे। जसवन्तसिंह को देख सभों ने घोड़ा रोका मगर एक सवार ने जोर से कहा, 'सभों के रुकने की कोई जरूरत नहीं हरीसिंह अपने दसों सवारों के साथ रुकें, हमलोग बढ़ते हैं।' इतना कह उसी पहाड़ी की तरफ रवाना हो गए जहाँ से रनबीरसिंह गायब हुए थे।

कुल सवार तो उस पहाड़ी की तरफ चले गए मगर ग्यारह सवार जसवन्त सिंह के सामने रह गए जिनमें से एक ने जिसका नाम हरीसिंह था आगे बढ़ कर इनसे पूछा— 'बाबाजी, आप कौन हैं और कहाँ से आ रहे हैं?

जसवन्त–मैं एक गरीब साधु हूँ और (हाथ से बता कर) उस पहाड़ी के नीचे से चला आ रहा हूँ।

सवार–वहाँ किसी आदमी को देखा था?

जसवन्त–हाँ पाँच सवारों को मैंने देखा था जो पहाड़ी के ऊपर जा रहे थे।

हरीसिंह– (चौंक कर) पहाड़ी के ऊपर जा रहे थे?

जसवन्त–जी हाँ पहाड़ी के ऊपर जा रहे थे।

हरीसिंह–गजब हो गया! भला उन सभों ने वहाँ से किसी को गिरफ्तार भी किया?

जसवन्त–हाँ पहाड़ी के ऊपर से एक दिलावर खूबसूरत जवान को गिरफ्तार कर ले गए जिसे मैंने कल उस बाग में देखा था।

हरीसिंह–यह किस वक्त की बात है?

जसवन्त–आज ही शाम की।

हरीसिंह–आप उस पहाड़ी के ऊपर क्यों गए थे?

जसवन्त–इसी तरह 'जी में आया' कि ऊपर एकान्त जगह होगी, चल के धूनी जगावेंगे, मगर ऊपर जाकर और ही कैफियत देखी इससे लौट आया।

हरीसिंह–भला आप उस बेचारे के बारे में और भी कुछ जानते हैं जिसे दुष्ट सवार गिरफ्तार करके ले गए हैं।

इस सवार (हरीसिंह) की बातचीत से जसवन्तसिंह को विश्वास हो गया कि यह हमलोगों का दोस्त है दुश्मन नहीं इसके साथ मिलने में कोई हर्ज नहीं होगा। यहे सोच उन्होंने जवाब दिया, "हाँ मैं उस बेचारे के बारे में बहुत कुछ जानता हूँ, कई दिनों तक साथ रह चुका हूँ।"

सवार–अगर आप घोड़े पर चढ़ सकते हैं तो आइये मेरे साथ चलिये किसी तरह उन्हें कैद से छुड़ाना चाहिये।

जस–बहुत अच्छा मैं आपके साथ चलता हूँ।

उस सवार ने एक दूसरे सवार की तरफ देख कर कहा "तुम घोड़े पर से उतर जाओ, बाबाजी को चढ़ने दो।" सवार 'बहुत अच्छा' कह के उतर गया। बाबाजी (जसवन्तसिंह) उछल कर उस घोड़े पर सवार हो गए और बराबर घोड़ा मिलाये हुए तेजी के साथ उस पहाड़ी की तरफ रवाना हुए।

चौथा बयान

सवेरा हो गया था जब बाबाजी को साथ लिये हुए ये ग्यारहों सवार उस पहाड़ी के नीचे पहुचे। देखा कि उनके साथी सवारों में से बहुत से उसी जगह खड़े हैं।

हरीसिह ने उनसे पूछा— 'क्या हाल है ?'

एक सवार ने जवाब दिया, ''कुछ साथी लोग उनको लेने के लिये ऊपर गए हैं।' हरीसिह ने एक लम्बी सास लेकर कहा, ' ऊपर है कौन जिसे लेने गए है, वहाँ तो मामला ही दूसरा हो गया। क्या जाने ईश्वर की क्या मर्जी है,? (जसवन्त सिह की तरफ देख कर) आइये बाबाजी हम और आप भी ऊपर चलें।'

हरीसिह और जसवन्तसिह घोडे पर से उतर पहाडी के ऊपर गए और बाग में जाकर,अपने साथियों को रनवीरसिह की खोज में चारों तरफ घूमते देखा।

हरीसिह और बाबाजी को देख एक सवार जो सभों का बल्कि हरीसिह का भी सर्दार मालूम होता था आगे बढ आया और बोला, ' हरीसिह, यहाँ तो कोई भी नही है। माली ने बिल्कुल गप्प उड़ाकर हमलोगों को फजूल ही हैरान किया।

हरीसिह–नहीं नहीं माली ने झूठी खबर नहीं पहुचाई थी।

सर्दार–क्या इन बाबाजी से कोई हाल तुम्हें मिला है ?

हरीसिह–हाँ बहुत कुछ हाल मिला है। यह कहते है कि पाच सवारों ने यहा आकर रनवीरसिह को गिरफ्तार कर लिया और अपने साथ ले गए।

सर्दार–(चौक कर) है, यह क्या गजब हो गया !(बाबाजी की तरफ देख कर) बाबाजी, क्या यह बात ठीक है ?

जसवन्त–हा मै बहुत ठीक कह रहा हू।

इसके बाद हरीसिह ने अपने सर्दार से वे सब बातें कहीं जो रास्ते में बाबाजी से हुई थीं और आखीर में यह भी कहा कि यह बाबाजी हमें असली बाबाजी नही मालूम होते जरूर इन्होंने अपनी सूरत बदली है, जब से यह घोडे पर सवार हो कर हमारे साथ चले है तभी से मैं इस बात को सोच रहा हू, क्योंकि जिस तरह सवार होकर ये बराबर हम लोगों के साथ घोड़ा फेंके चल आये हैं इस तरह की सवारी करना किसी बाबाजी का काम नहीं है कौन ऐसे बाबाजी होंगे ?

हरीसिह की बातें सुन कर सर्दार ने गौर से जसवन्तसिह की तरफ देखा और कहा–

'कृपानिधान अब आप अपना ठीक ठीक हाल कहिये, यह तो आपको भी मालूम होगया कि हमलोग रनवीरसिह के खैरख्वाह है और मुझे भी यकीन होता है कि आप भी रनवीरसिह की भलाई चाहनेवालों में से हैं फिर छिपे रहने की जरूरत ही क्या है ?'

जसवन्तसिह ने कहा 'मै अपना हाल जरूर कहूगा। मैंने अपनी ऐसी सूरत इसीलिये बनाई थी कि जब इस तरफ कोई मेरा मददगार नहीं है तो अपने दोस्त रनवीरसिह को किस तरह छुड़ाऊगा ? मेरा नाम जसवन्तसिह है, मुझसे और रनवीरसिह से दिली दोस्ती है।'

जसवन्तसिह इतना ही कहने पाये थे कि सर्दार ने रोक दिया और लपक कर जसवन्तसिह का हाथ पकड के कहने लगा, ''बस बस, मालूम हो गया, अहा !क्या,जसवन्तसिह आपही का नाम है ? बेशक आपसे और रनवीरसिह से दिली दोस्ती है। अब ज्यादे पूछने की कोई जरूरत नहीं, सिर्फ इतना कहिये कि आपसे और उनसे जुदाई कैसे हुई ?

जसवन्तसिह ने ताज्जुब में आकर कहा, पहिले यह तो बताइये कि आपने मेरा नाम कब और कैसे सुना ?

सर्दार–यह किसी दूसरे वक्त पूछियेगा, पहले मेरी बातों का जवाब दीजिये।

जसवन्त–मैं और रनवीरसिह दोनों दोस्त एक साथ ही भूले भटके यहाँ तक आ पहुचे। (हाथ का इशारा करके)उस मन्दिर में जो औरत की मूर्ति है उसे देखते ही रनवीरसिह के सिर पर इश्क सवार हो गया और पूरे पागल हो गए। जब मेरे समझाने बुझाने से न उठे तब लाचार हो उनके लिये कुछ खाने पीने का बन्दोबस्त करने में उस गाव की तरफ जा रहा था जिसके पास आप लोगों से मुलाकात हुई थी, बस उसी वक्त से हम दोनों जुदा हुए।

सर्दार–उन सवारों को आपने कहाँ देखा था जो रनवीरसिह को कैद कर के ले गए हैं ?

जसवन्त–मैं उस गाँव के पास पहुचा भी न था कि पाँचों सवारों के दर्शन हुए। उन्होंने मुझसे रोक टोक की पर मैंने

अपना ठीक पता नहीं दिया फिर भी उनकी बात चोत से मुझ शक हुआ, नहीं वल्कि निश्चय हो गया कि वे लोग इस पहाड़ी पर जरूर पहुचेगे क्योंकि उनके सर्दार ने अपन जेव से एक तस्वीर निकाल कर देखी और कहा, 'मैं उस दूसरे आदमी की खोज में निकला हू–इससे कोई मतलव नहीं, चलो देरी होती है।' इतना कह साथियों को साथ ले वड़ तेजी से इसी पहाडी की तरफ रवाना हुआ। मुझे यकीन हो गया कि ये लोग जरूर मेर दोस्त को परेशान करेंगे इसलिये मै भी तुरन्त इसी तरफ लौटा मगर अव क्या हो सकता था वे लोग घोडों पर थे और मै पैदल, जब तक यहॉ पहुचू वे लोग मेरे प्यारे दोस्त को गिरफ्तार करके ले गये। यहॉ आकर जब मैंने अपने लगोटिये दोस्त को न देखा, जी में वडा दुःख हुआ। यह वाग राक्षस की तरह खाने को दौडने लगा। उसी वक्त पहाड़ी के नीचे उतर गया और जहॉ हमार घोडे मरे पड़े थे वहीं बैठ कर रनबीरसिह के बारे में सोचने लगा आखिर अपने कपडे उतार कर फेंक दिये और इस फकीरी सूरत में दोस्त को खोजने निकला, दिल में निश्चय कर लिया कि विना उनसे मिले खुद भी अपने घर न लौटूगा, इसी सूरत में रहूगा। उन्हीं की खोज में फिर उसी गॉव की तरफ जा रहा था कि रास्ते में आप लोगों से मुलाकात हुई। इसके आगे का हाल आप जानते ही है मैं क्या कहू।'

इतना कह जसवन्तसिह दोस्त के गम में ऑसू गिराने लगे यहा तक कि हिचकी वध गई।

सर्दार ने उन्हें वहुत कुछ समझाया बुझाया और दिलासा देकर कहा, "आप इतना सोच न कीजिये। हम लोग आपके साथ है जब तक दम है आपके मित्र का पता लगाने में कसर न करेंगे और न उनके दुश्मन से वदला लिए विना ही छोड़ेंगे। मगर आपका यह सोचना ठीक नहीं कि जब तक दोस्त न मिले तब तक वावाजी बने रहें आप अकेले ढूँढ़ने निकलते तो जोगी वनना वाजिव था मगर हम लोगों के साथ फकीरी भेष से चलना ठीक नहीं है क्योंकिइसका कोई ठिकाना नहीं कि हमलोगों को कब लडने भिडने का मौका आन पडे, तो क्या आप क्षत्री होकर उस वक्त खडे मुह देखेंगे?'

ऐसी ऐसी वातें करक उस सर्दार ने जिसका नाम चेतसिह था जसवन्तसिह को अपने कपडे पहिरने और हरव लगाने पर राजी किया और सब कोई वहा से उठ पहाडी के नीचे आये।

रनबीरसिह और जसवन्तसिह के दोनों मरे हुए घोडे अभी तक उसी तरह पडे हुए थे किसी जानवर ने भी नहीं खाया था और उन्हीं के पास ही जसवन्तसिह के कपड़े जहा वे छोड गए थे उसी तरह ज्यों के त्या पडे थे जिस उन्होंने झाड पोंछ कर फिर पहिर लिया।

सर्दार चेतसिह ने अपनी सवारी का घोडा जसवन्तसिह को दिया और जिस घोडे पर जसवन्तसिह आये थे वह हरीसिह का दे उनका घोडा आप ले लिया।

थोडी देर तक यह मण्डली उस पहाडी के नीचे बैठकर यह सोचती रही कि अव क्या करना चाहिए। आखिर सर्दार चेतसिह ने कहा— पहिले महारानी के पास चल कर यह सब हाल कहना चाहिये, शायद उनको पता हो कि उनका दुश्मन कौन है। हमलोग तो कुछ नहीं जानते कि महारानी का दुश्मन भी कोई है और न इसी वात का विश्वास होता है कि ऐसी नेक रहमदिल गरीब परवर और बुद्धिमान महारानी का कोई दुश्मन भी होगा।

आखिर यही राय ठीक रही और अपने अपने घोड़ों पर सवार हो सब उसी गॉव की तरफ रवाना हुए। जसवन्तसिह ने सर्दार चेतसिह से बहुत पूछा कि वह महारानी कौन है और रनबीरसिह से उनसे क्या वास्ता परन्तु सर्दार चतसिह ने कुछ भी खुल के न कहा और न उनके इसी सवाल का कोई जवाब दिया कि मैं तो लड़कपन से रनबीरसिह के साथ हू, उन्हें कभी कहीं आते जाते नहीं देखा, तव महारानी से उनकी जान पहिचान कव हुई?

ये सव के सव सवार जो गिनती में जसवन्तसिह सहित इक्यावन थे उस गॉव में पहुचे जिसका जिक्र ऊपर आ चुका है। यह गाव बहुत छोटा था और इसमें पचास साठ घर से ज्यादा की बस्ती न होगी।

जसवन्तसिह ने पूछा, "यह गाव किसके इलाके में है?"

सर्दार चेतसिह–हमारे ही सर्कार का है।

जसवन्त–इसी राह से वे पाचो सवार आये थे जिन्होंने रनबीरसिह को गिरफ्तार किया है। अगर मुनासिव हो तो यहा के रहने वालों से कुछ पूछिए।

चेत–नहीं, मेरी समझ में यह बात जाहिर करने लायक नहीं है।

जसवन्त–जैसा मुनासिव समझिये।

ठीक शाम के वक्त ये लाग एक लम्बे चौडे मैदान में पहुचे जहॉ पल्टनी सिपाहियों के रहन लायक कई खेमे खडे थे और बहुत से आदमी खाने की चीजें तैयार कर रहे थे, पास ही एक बहुत वडा कूऑ भी था।

सदार चतसिह ने घोडा रोक कर जसवन्तसिह स कहा, यह हन लागों का पडाव (टिकने की जगह) है। हमलोगों के घोडे वहुत थक गए हैं और हम लोग खुद भी वहुत भूख प्यासे है। इस वक्त रात को इस जगह खा पीकर आराम करना मुनासिब होगा कल सवर कुछ रात रहते हमलोग फिर रवाना होंगे।" जसवन्त सिह ने जवाव दिया, "जो आप वेहतर समझिये वही ठीक है मुझे ता यह भी नहीं मालूम कि कहा जाना है या क्या करना है और कितनी दूर का सफर बाकी है।

सर्दार चेतसिह ने इसका जवाव कुछ न दिया। खेमों के पास पहुच कर कुल सवार घोडों पर स उतर पड़। यहाँ पर वहुत से साईस भी मौजूद थे जिन्होंने उसी वक्त आगे वढ कर अपन अपने घाड़े थाम लिय और मलन दलने की फिक्र में लगे। सर्दार चेतसिह जसवन्तसिह को साथ लिय एक खेमे में गये जा वनिस्वत और खेमों के छोटा मगर खूवसूरत था और जिसके अन्दर एक सफरी चारपाई और एक खूवसूरत पलग विछा हुआ था। सर्दार चतसिह न पलग की तरफ इशारा करके जसवन्तसिह से कहा रनवीरसिह के लिए यह मसहरी विछाई गई थी। हमलाग साचते थ कि आज उनका अपने रगथ लाकर इसी मैदान में डरा करेंगे मगर अफसोस विल्कुल महनत वर्वाद गई। अव आप इस मसहरी पर आराम कीजिये।'

सर्दार चेतसिह की वाते सुन आर मसहरी के पास वैठ रनवीर सिह का याद कर जसवन्तसिह खूव राये। सर्दार ने उन्हें वहुत कुछ समझाया.और हिम्मत दिला कर आसू पोंछ हाथ मुह धुलवाया। घण्ट भर वाद खान की तैयारी हुई और सर्दार ने जसवन्तसिह को खाने के लिए कहा।

जसवन्तसिह तीन दिन के भूखे थे तिस पर भी खान स इन्कार किया। सर्दार चेतसिह के वहुत कहन सुनन और कसम देने पर मुश्किल स दो चार ग्रास खाकर उठ खड हुए और हाथ मुह धा खेम के अन्दर आ उसी सफरी चारपाई पर लेट रहे जो सर्दार चेतसिह के लिए विछी हुई थी और पडे पडे रनवीरसिह की याद में आँसू वहान लगे।

सर्दार ने आकर देखा कि जसवन्तसिह मसहरी छाड उसकी चारपाइ पर लेटे हैं। समझ गये कि इनका रनवीरसिह का गम हद्द स ज्यादे है, उनके वास्ते लगाई मसहरी पर कभी न सोवेंग और इसके लिए जिद्द करना उन्हें दु ख देना होगा लाचार दूसरी चारपाई मगवाकर आप उस पर लेट रहे।

पॉचवॉ बयान

थोड़ी रात वाकी थी जव सर्दार चेतसिह की ऑख खुली। उठ कर खेमे के वाहर आये और अपनी जेव से एक छोटा सा विगुल निकाल कर वजाया जिसकी आवाज दूर दूर तक गूज गई इसके वाद फिर खेमे के अन्दर गये और चाहा कि जसवन्तसिह को जगावें मगर वे पहिले ही से जाग रहे थे वल्कि उन्हें ता रात भर नींद ही नहीं आई थी, सर्दार चेतसिह के उठने और विगुल वजाने से आप भी चारपाई पर से उठ खड़े हुए और पूछा 'क्या चलने की तैयारी हो गई? सर्दार चेतसिह ने जवाब दिया, हॉ अब थोड़ी ही देर में हमारे सवार भी तैयार हो जाते हैं और घण्टे भर में हम लाग यहॉ से कूच कर देंगे।

जसवन्त–अभी कितनी रात वाकी है?

चेत–दो घण्टे के करीव वाकी हागी।

जसवन्त–हमलोग उस ठिकाने कव तक पहुचेगे जहॉ जाने का इरादा है?

चेत–सूरज निकलते निकलते हमलोग अपने ठिकाने पहुच जायगे, आप भी जरूरी कामों से छुट्टी पा लीजिये, तव तक मै भी तैयार होता हू।

जसवन्तसिह और सर्दार चेतसिह जरूरी कामों से निपट हाथ मुह धो और कपडे पहिर तैयार हो गए, इसके बाद सर्दार ने फिर खेमे के वाहर आ एक दफे विगुल वजाया जिसक साथ ही उनके कुल सवार घोडों पर सवार हो रवाने हा गए।

घण्टा भर दिन चढ़ते तक ये लोग एक शहर में पहुचे। यद्यपि यह शहर छोटा ही सा था मगर देखने में नेहायत खूवसूरत था, अभी दुकानें विल्कुल नहीं खुली थीं लेकिन अन्दाज से मालूम होता था कि गुलजार है।

एक छोटे किले के पास पहुच सर्दार ने अपने साथी सवारों को कुछ इशारा करके कहीं रवाना कर दिया और खुद जसवन्तसिह को अपने साथ ले दर्वाजे के अन्दर घुसे।

इस किले का फाटक बहुत बड़ा था.और बहुत से सिपाही सगीन लिये पहरे पर मुस्तैद थे-जिन्होंने सर्दार चेतसिह

को अदब के साथ सलाम किया और उसके बाद जसवन्तसिह को भी सलाम किया।

सर्दार चेतसिह ने एक सिपाही से पूछा 'दीवान साहब अभी दर्बार में आये या नहीं ? जिसके जवाब में उस सिपाही ने कहा, अभी नही आये मगर आते ही होंगे, वक्त हो गया है, लकिन आप उनके आने की राह न देखें क्योंकि हमलोगों को महारानी साहबा का हुक्म है कि सर्दार साहब जिस वक्त आवें फौरन सीधे हमारे पास पहुचे दर्वाजे पर अटकने न पावें, सो आप दीवान साहब की राह न देखिये ! इतना कह वह सिपाही इनके साथ चलने पर मुस्तैद हो गया।

सर्दार चेतसिह ने इतना सुन फिर दीवान साहब के आने की राह न देखी और सिपाही के कहे मुताबिक जसवन्तसिह को साथ लिये महल की तरफ रवाना हुए।

फाटक के अन्दर थोडी दूर जाने पर एक निहायत खूबसूरत दीवानखाने में पहुचे जिसके बगल में एक दर्वाजा जनाने महल के अन्दर जाने के लिए था। यह दर्वाजा बहुत बडा तो न था मगर इस लायक था कि पालकी अन्दर चली जाये। इस दर्वाजे पर कई औरतें सिपाहियाना भेष किये ढाल तलवार लगाये रुआब के साथ पहरा देती नजर आई जिन्होंने सर्दार चेतसिह को झुक कर सलाम किया। एक सिपाही औरत इन्हें देखते ही बिना कुछ पूछे अन्दर चली गई और थोड़ी ही देर के बाद लौट आकर सर्दार चेतसिह से बोली "चलिये, महारानी ने बुलाया है।'

जसवन्तसिह को साथ लिये हुए सर्दार चेतसिह उसी औरत के पीछे पीछे महल के अन्दर गए। जसवन्तसिह ने भीतर जाकर एक नेहायत खूबसूरत और हरा भरा छोटा सा बाग देखा जिसके पश्चिम तरफ एक कमरा और सजा हुआ दालान, पूरब तरफ बारहदरी दक्खिन तरफ खाली दीवार, और उत्तर तरफ एक मकान और हम्मान नजर आ रहा था। बहुत सी लौडियाँ अच्छे अच्छे कपडे और गहने पहरे इधर उधर घूम रही थीं।

औरत के पीछे पीछे ये दोनों पश्चिम तरफ वाले उस दालान में पहुचे जिसके बाद कमरा था। कमरे के दर्वाजों मे दोहरी चिकें पडी हुई थीं तथा दालान में फर्श बिछा हुआ था।

सर्दार ने चिक की तरफ झुककर सलाम किया और इसी तरह जसवन्तसिह ने भी सर्दार की देखा देखी सलाम किया। इसके बाद एक लौडी ने बैठने के लिये कहा और ये दोनों उसी फर्श पर बैठ गए। चारों तरफ से बहुत सी लौडिया आकर उसी जगह खडी हो गईं और जसवन्तसिह को ताज्जुब की निगाह से देखने लगीं।

चिक के अन्दर से मीठी मगर गम्भीर आवाज आई ' क्यों चेतसिह, क्या हुआ और यह तुम्हारे साथ कौन है ?'

चेत–एक सवार की जुबानी ताबेदार ने कुछ हाल कहला भेजा था।

आवाज–हाँ हाँ, मालूम हुआ था कि जिनको लाने के लिए तुम गए थे उन्हें कोई दुश्मन ले गया और यह हाल तुम्हें एक साधु से मालूम हुआ। वह साधु कहाँ है ? और यह तुम्हारे साथ कौन है ? इनका नाम जसवन्तसिह तो नहीं है ?

चेत–जी हाँ इनका नाम जसवन्तसिह ही है उनकी जुदाई में ये ही साधु बने घूम रहे थे और हमलोगों को मिले थे।

आवाज–इनसे और रनबीरसिह से तो बडी दोस्ती है, फिर सग कैसे छूटा ?

इसके जबाब में सर्दार चेतसिह ने वह पूरा हाल कह सुनाया जो जसवन्तसिह से सुना और अपनी आखों देखा था।

जसवन्तसिह अपने दोस्त की जुदाई में तो परेशान और दु खी हो हीरहे थेदूसरे इन ताज्जुब भरी बातों और घटनाओं ने उन्हें और भी परेशान कर दिया। पहिले तो यही ताज्जुब था कि सर्दार चेतसिह ने मेरा नाम सुनते ही कैसे पहिचान लिया कि मैं रनबीरसिह का दोस्त हू अब उससे भी बढ के यह बात हुई कि यहा पर्दे के अन्दर से महारानी ने विना नाम पूछे ही पहचान लिया कि यह जसवन्त है और रनबीर सिंह का पक्का दोस्त है। क्या मामला है सो समझ में ही आता, इन लोगों को हमारे रनबीरसिह से क्या मतलब है और इनका इरादा क्या है ?

इन बातों को नीचे सिर किये हुए जसवन्तसिह सोच रहे थे कि इतने में चिक के अन्दर से फिर आवाज आई—

'अच्छा चेतसिह, जसवन्तसिह को तो हमारी लौडियों के हवाले करो, वे सब इनके नहलाने धुलाने खाने पीने का सामान कर देंगी और इन्हें यहा आराम के साथ रक्खेंगी, और इनको भी समझा दो कि यहा इन्हें किसी तरह की तकलीफ न होगी आराम के साथ रहें और हमारे दीवान साहब को कहला दो कि शाम के वक्त जासूसों के जमादार को साथ लेकर यहाँ आवें, इस वक्त मैं दरबार न करुगी। आज दर्बार के वक्त किसी के आने की जरूरत नहीं है और किसी तरह की दर्खास्त भी आज न ली जायगी।'

यह हुक्म पाकर सर्दार चेतसिह उठ खडे हुए और पर्दे की तरफ झुककर सलाम करने के बाद बाहर रवाना हो गए।

हमारे जसवन्तसिह बेचारे चुपचाप ज्यों के त्यों हक्का बक्का बैठे रहे, मगर थोड़ी देर बाद कई लौडियों ने अन्दर से आकर उनसे कहा, 'आप उठिये और नहाने धोने की फिक्र कीजिये क्योंकि आज ही आपको हमलोगों के साथ रनबीरसिह की खोज में जाना होगा। हमलोग उनके दुश्मन को जानते हैं आप किसी तरह की चिन्ता न करें।'

जसवन्तसिह ने जवाब दिया, ' हाय, मुझे बिल्कुल नहीं मालूम कि इस वक्त मेरे दोस्त पर क्या आफत गुजरती होगी ? उसको नहाने धोने का भी मौका मिला होगा या नहीं ? उसने क्या खाया पीया होगा ? हाय मुझे विश्वास है कि उसके दिमाग से अभी तक पागलपन की बू न गई होगी, उसी तरह बकना झकना जारी होगा, अब तो उसके सामने वह सत्यानाशी मूरत भी नहीं जिसे देख वह खाना पीना भूला गया था 'अब न मालूम उसकी क्या दशा होगी, अगर तुम लोग यह जानती हो उसे फलाना आदमी ले गया है तो ईश्वर के लिये जल्दी बता दो कि मै उसके पास पहुच कर जिस तरह बने उसे कैद से छुडाऊ या अपनी भी जान उसके कदमों पर न्योछावर करु। मेरे नहाने धोने खाने पीने की फिक्र मत करो, इसका कुछ अहसान मेरे ऊपर न होगा। अगर मेरे दोस्त के दुश्मन का पता बता दोगे तो मै जन्म भर तुम्हारा ताबेदार बना रहूगा, बिना खरीदे गुलाम रहूगा, चाहे मुझसे एकरार लिखा लो पर यह ईश्वर के लिए जल्द बताओ कि वह कहाँ है और किस दुष्ट ने उसे दु ख दिया है ? हाय अभी तक उसके ऊपर किसी तरह की तकलीफ नहीं पड़ी थी। न मालूम वह कौन सी सत्यानाशी घड़ी थी जिसमें हम दोनों घर से बाहर निकले थे। उसके मा बाप की क्या दशा होगी ? हाय, उनके एक ही यह लड़का है दूसरी कोई औलाद नहीं जिसे देख उनके जी को तसल्ली हो, !

इतना कह जसवन्तसिह चुप हो गए और उनकी आँखों से आसुओं की बूदें गिरने लगीं।

लौडियों के बहुत कुछ कहने और समझाने बुझाने पर वे वहा से उठे, स्नान किया और कुछ अन्न मुह में डाल कर, जल पिया, इसके बाद फिर हाथ जोड़ और रो रो कर लौडियों से पूछने लगे-

' परमेश्वर के लिय सच बता दो क्या तुम रनबीरसिह के दुश्मन को जानती हो ? अगर जानती हो तो बताने में देरी क्यों करती हो? हाय कहीं तुम लोग मुझे धोखा तो नहीं दे रही हो !!

रनबीरसिह की जुदाई में जसवन्तसिह को हद से ज्यादे दु खी देख लौडियों से रहा न गया, आपुस में राय करके एक लौंडी ने जाकर महारानी से उनका सब हाल कहा और जवाब पाने की उम्मीद में सामने खडी ही रही।

बहुत देर तक सोचने के बाद महारानी ने उस लौडी को हुक्म दिया, ' अच्छा जाओ, जसवन्तसिह को मेरे पास ले आओ, मै उसे समझाऊँगी, अब तो पर्दा खुल ही गया और बेहयाई सिर पर सवार हो ही चुकी, तो रनबीरसिह के दोस्त का सामना करने में ही क्या हर्ज है !

हुक्म पाकर लौडी दौडी हुई गई और अपने साथ वालियों से महारानी का हुक्म कहा। वे सब जसवन्तसिह को साथ ले महारानी के पास चली।

जिस दालान में पहले सर्दार चेतसिह के साथ जसवन्तसिह बैठाये गये थे उसी के साथ पीछे की तरफ महारानी का खास महल था। लौडियाँ जसवन्तसिह को साथ लिये हुए दूसरी राह से उसके अन्दर गई। इस मकान को जसवन्तसिह ने बहुत ही अच्छी तरह से सजा हुआ पाया और यहीं पर एक छोटे स कमरे में स्याह गद्दी के ऊपर गावतकिये के सहारे बाई हथेली पर गाल रक्खे बैठी हुई महारानी दिखाई पड़ीं।

महारानी को देखते ही जसवन्तसिह ने जोर से 'हाय किया और साथ ही बेहोश होकर जमीन पर गिर पडा।

छठवां बयान

पाठक, जसवन्तसिह का बेहोश हो जाना कोई ताज्जुब की बात न थी बल्कि वाजिब ही था। हाय, जिस शक्ल पर उसका दोस्त आशिक हुआ, जिसकी पत्थर की मूरत ने उसके दिली दोस्त का दिमाग बिगाड़ दिया, जिस सत्यानाशी सूरत ने उसके मित्र रनबीरसिह का घर चौपट कर दिया, वही जानघातक सूरत इस समय फिर उसे अपने सामने नजर आ रही थी !

उस पत्थर की मूरत ने जिसमें हाथ पैर हिलाने या चलने फिरने या बोलने की ताकत न थी जब इतनी आफत मचाई तो यह मूरत तो हाथ पैर हिलाने, चलने फिरने, बोलने और हँसने की ताकत रखती है। वह बेजान थी यह जानदार है, वह स्थिर थी यह चचल है, वह नकल थी यह असल है। जब उसने इतना किया तो यह क्या नहीं कर सकती है ? फिर क्यों न जसवन्तसिह की यह दशा हो !

यह सब कुछ तो है ही उस पर से अफसोस की बात यह कि जमाना भी बहुत बुरा है। किसी की बात का कोई विश्वास नहीं, किसी के दिल का कोई ठिकाना नहीं, किसी की दोस्ती का कोई भरोसा नहीं—अथवा है तो क्यों नहीं, लेकिन हुस्न और इश्क का झगड़ा बुरा होता है, खूबसूरती जी का जजाल हो जाती है, और आदमी को शैतान बना देती है। यह वही जसवन्तसिह है जिसे अभी तक हम रनबीरसिह का पक्का और सच्चा दिली दोस्त लिखते चले आये मगर देखा चाहिये कि इन महापुरुष के लिए आगे अब क्या लिखना पड़ता है।

जसवन्तसिह को बेहोश होकर गिरते देख महारानी ने लौडियों को कहा, ' देखो देखा सम्हालो, यह रनबीरसिह का दिली दोस्त है, इसे कुछ न होने पावे, वेदमिश्क वगैरह लाकर जल्द इस पर छिडको !

मुँह पर अर्क बेदमिश्क इत्यादि छिडकने से थाडी देर में जसवन्तसिह होश में आये और रानी के सामने वैठ कर वोल –

'क्या मे स्वप्न देख रहा हू या जाग रहा हू ? नहीं नही यह स्वप्न नहीं है, मगर स्वप्न नहीं तो आखिर है क्या ? क्या आप ही की मूरत उस पहाडी के ऊपर थी ? नहीं नहीं इसमें ता कोई शक ही नहीं कि वह आपही की मूरत थी जिसकी बदौलत मेरे दोस्त पर यह आफत आई और मुझको उनके साथ से अलग हाना पडा ।ठीक है वह सगीन मूरत (पत्थर की मूरत) आप ही की थी जिसे कारीगर सगतराश न वडी मेहनत और कारीगरी स वनाया था मगर इतनी नजाकत और सफाई उस तस्वीर में वह कहाँ से ला सकता था जो आप में ह। रनबीरसिह के नसीव ही में यह लिखा था कि वह उस मूरत ही को देख कर पागल हो जाय और आप तक न पहुच सके, इसे कोई क्या करे ? अपनी अपनी किस्मत अपने अपने साथ है !!

इतना कह जसवन्तसिह चुप हो रहे मगर महारानी से न रहा गया। एक 'हाय के साथ ऊँची साँस लेकर धीमी आवाज से वाली–

"हाँ वह पत्थर की मूरत तो मेरी ही थी मगर अफसोस सोचा था कुछ और हो गया कुछ ।खैर अव ईश्वर मालिक है देखा चाहिये क्या हाता है मै अपने दुश्मन को खूब पहिचानती हू आखिर वह जाता कहा है !

इतना कह महारानी चुप हो रही। जसवन्तसिह भी मुह बन्द किये वैठे रहे। थोडी देर तक विल्कुल सन्नाटा रहा, इसके बाद महारानी ने फिर जसवन्तसिह से कहा, "आज मै अपने जासूसों को इस वात का पता लगाने के लिये भेजूगी कि रनवीरसिह कहा और किस हालत में है।

जसवन्त–जरूर भेजना चाहिये।

महारानी–अभी आपको तकलीफ करने की कोई जरूरत नही।

जसवन्त–मै जानता ही नहीं कि वह कहा है।

महारानी–अगर जान भी जाओ तो क्या करोगे ?

जसवन्त–जो वन पडेगा करूगा ।भला बताइये तो सही कि उनका वह दुश्मन कोन है और कहा है ?

महारानी–यहाँ से बीस कोस दक्खिन की तरफ एक गॉव है जिसका मालिक वालेसिह नामी एक क्षत्री है। कहने को तो वह एक जमींदार है मगर पुराना डाकू है और उसके सगी साथी इतने दुष्ट है कि वह राजाओं को भी कुछ नहीं समझता। जहॉ तक मै समझती हू यह काम उसी का है।

जसवन्त–रनवीरसिह ने उसका क्या बिगाड़ा है ?

महारानी–(कुछ शर्मा कर और नीची गर्दन करके) आपसे कहने में तो कोई हर्ज नहीं, खैर कहती हू। एक वर्ष के लगभग हुआ कि उसने अपनी एक तस्वीर मरे पास भेजा और कहला भजा कि तुम मेरे साथ शादी कर लो पर मैंने इसे कबूल न किया। क्योंकि मेरा दिल अपने काबू में न था। बहुत पहिले ही से वह रनबीरसिह के काबू में जा चुका था और मै दिल में उनको अपना मालिक बना चुकी थी, जिस बात को किसी तरह बालेसिह भी सुन चुका था। उसने बहुत जोर मारा मगर कुछ न कर सका, बस यही असल सबब है।

जसवन्त–(ताज्जुब में आकर) आपने रनबीरसिह को कब देखा ? क्या आप ही ने उस पहाडी पर अपनी और रनवीरसिह की मूरत बनवाई थी ?

महारानी–हॉ, मगर वह सब हाल मै अभी न कहूँगी, मौका आवेगा तो तुम्हें आप ही मालूम हो जायगा।

जसवन्त–अच्छा, उस वालेसिह की वह तस्वीर कहाँ है ? जरा मै देखूँ ?

महारानी–हॉ देखो, (एक लौंडी से) वह तस्वीर तो ले आ।

महारानी का हुक्म पाते ही लौंडी लपकी हुई गई और वह तस्वीर जो हाथ भर से कुछ छोटी होगी ले आई। जसवन्तसिह ने उसे गोर से देखा। अजब तस्वीर थी, उसके एक अग से बहादुरी और दिलावरी झलकती थी मगर साथ ही इसके सूरत बहुत ही डरावनी रग काला, बड़ी बडी सुर्ख ऑखें, ऊपर की तरफ चढी हुई कडी कडी मूछें—देखने ही से रोंगटे खडे होते थे। मोटे मोटे मजबूत ऐंठे हुए अगों पर की चुस्त पौशाक और ढाल तलवार पर निगाह डालने ही से बहादुरी छिपी फिरती थी, मगर जसवन्तसिह उसे देखकर हँस पड़ा और बोला–

"वाह !क्या सूरत है !कैसे हाथ पैर हैं !मजा तो तभी था न कि बहादुरी के साथ साथ मेरे जैसी मुलायमियत और

खूबसूरती भी होती ! खैर आज ही कल में मुझसे और इस दुष्ट से हाथापाई होगी ही ! देखें कितनी बहादुरी दिखाता है !

जसवन्तसिंह की बात सुन और उसके चेहरे की तरफ गौर से देख, महारानी गुस्से में लाल आँखें कर उठ खड़ी हुई और जब तक जसवन्तसिंह आँख उठा कर उनकी तरफ देखे तब तक बिजली की तरह लपक कर दूसरे कमरे में चली गई।

जसवन्तसिंह ताज्जुब से उस तरफ देखने लगा बल्कि कुछ देरी तक देखता रहा लेकिन फिर महारानी न दिखाई पड़ी हां लौंडियां जितनी उस वक्त उस जगह खड़ी थीं ज्यों की त्यों जसवन्तसिंह को घेरे खड़ी रहीं।

अब तो जसवन्त के दिल में बड़े बड़े ख्याल पैदा होने लगे। महारानी क्यों चली गई ? जाती वक्त मुझसे कुछ कहा भी नहीं ? कुछ रंज तो नहीं हो गई ! इस तस्वीर की निन्दा करने से कुछ गुस्सा तो नहीं आ गया। वह तो इस डाकू से अपना रंज और रनबीरसिंह से मुहब्बत दिखाती थी ! फिर यह क्या हो गया ? हाय, क्या भोली सूरत है ! रनबीरसिंह का इस पर आशिक होना ठीक ही था मगर यह पत्थर की मूरत इतनी खूबसूरत कहां जितनी यह खुद है ! वाह वाह, मेरी भी किस्मत कितनी अच्छी थी जो अपनी आँखों से इसकी मोहिनी मूरत देख ली। कम्बख्त रनबीरसिंह की ऐसी किस्मत कहां ? वाह क्या मजे में सामने बैठी बातचीत कर रही थी, यकायक न मालूम क्यों उठकर चली गई और अभी तक न लौटी। मेरा तो यही जी चाहता है कि दिन रात बैठे बैठे इसकी सूरत ही देखा करूं, रनबीरसिंह की खोज में कहां टक्कर मारता फिरूंगा ! यह तो अपनी किस्मत है, जो जिसके नसीब में लिखा है होगा ही, किसी की मदद से क्या होता जाता है ? मगर अफसोस तो यही है कि यह रनबीरसिंह पर आशिक है ! कोई तरकीब ऐसी करनी चाहिये जिसमें यह रनबीरसिंह को भूल जाय और मेरे साथ ब्याह करने पर राजी होजाय। क्या मैं किसी तरह रनबीरसिंह से खूबसूरती में कम हूं ? बात यह है कि इसने पहिले किसी तरह रनबीर को देख लिया है या उसकी तस्वीर ही देख ली है और इसी से उसके ऊपर जान दे बैठी है। रनबीर के बदले में पहिले मुझे देखती तो मेरी ही किस्मत जाग जाती। खैर रनबीर तो इस वक्त जहन्नुम में जा पड़ा है, किसी तरह न छूटे सो ही ठीक है आखिर दस पांच दिन में यह मेरे साथ मिल ही जायगी मगर जब तक रनबीर की उम्मीद है तब तक यह मुझे न कबूल करेगी ! अगर उस डाकू ने रनबीर को मार डाला हो तो बड़ी खुशी की बात है नहीं तो जिस तरह हो सके उससे मिल कर रनबीर को खतम करा देना चाहिये तब मेरा काम होगा। ऐसी खूबसूरत औरत भी मिलेगी और इस राज्य का मालिक भी बनूगा।

दुष्ट और बेईमान जसवन्तसिंह वहां बैठा बैठा इसी किस्म की बातें सोच रहा था कि इतने में एक लौंडी वहाँ आई जिसे जसवन्त ने पहिले नहीं देखा था और उसने कहा भोजन तैयार है, चलिये खा लीजिये।

जसवन्त–कहाँ चलू ? तुम्हारी महारानी कहां गई ! क्या अब वह न आवेगी ?

लौंडी–जी नहीं, अब इस वक्त उनसे मुलाकात न होगी, आपको दूसरे मकान में ले चल कर,भोजन कराने के लिए हुक्म दिया है।

जसवन्त–अच्छा चलिये उनका हुक्म मानना जरूरी है।

जसवन्तसिंह को साथ लिये हुए वह लौंडी उस महल के बाहर हुई और अलग एक दूसरे मकान में ले गई जहाँ खाने पीने तथा आराम करने और सोने का बिल्कुल सामान दुरूस्त था और दो लौंडियाँ भी हाजिर थीं।

जसवन्त ने आज खूब पेट भर के भोजन किया और चारपाई पर लेट कर रनबीरसिंह और महारानी के बारे में क्या क्या करने चाहिये यही सब कुछ सोचने लगा।

सातवां बयान

महल के अन्दर ही एक छोटा सा नजरबाग है जिसके बीच में थोडी सी जमीन घास की सब्जी से दुरुस्त की हुई है, उसी पर एक फर्श लगा है और पाँच चार सखी सहेलियों के साथ महारानी वहीं बैठी धीरे धीरे बातें कर रही हैं। महारानी ने कहा, 'देखो, हरामजादे का मिजाज एकदम से फिर गया !

एक सखी–उससे यह उम्मीद बिलकुल न थी।

दूसरी सखी–अब किसी तरह का भरोसा उससे न रखना चाहिये।

महारानी–राम राम, उसका भरोसा रखना अपनी जान से हाथ धो बैठना है मगर मुश्किल तो यह है कि अगर रनबीरसिंह से कोई कहे कि जसवन्त तुम्हारा सच्चा दोस्त नहीं है तो वह कभी न मानेंगे।

तीसरी सखी–न मानेंगे तो धोखा भी खायेंगे।

महारानी–बड़ी मुश्किल हुई अब तो किसी से कुछ काम लेने का जी नहीं चाहता।

इतन मे एक लौडी ने आकर खबर दी कि ड्योढी पर सर्दार घतसिह जासूसों का लेकर हाजिर हुए है क्या हुक्म होता है ? इसके जवाब में महारानी ने कहा, 'कह दो इस वक्त हमारी तबीयत अच्छी नही है और जासूसों की भी काई जरूरत नही, फिर देखा जायगा।

इसके बाद एक लौडी की जुबानी जसवन्तसिह को कहला भेजा कि रनबीरसिह क दुश्मन का पता हमने आपको बतला दिया अब अगर आपका उनकी मुहब्बत है ता वहाँ जाकर उनको बचाने की तर्कीब कीजिये, क्योंकि मै औरत हू मेरे किये कुछ नहीं हा सकता और बालेसिह बडा भारी शैतान है, मै किसी तरह उसका मुकाबला नहीं कर सकती।

हुक्म पाकर लौडी जसवन्तसिह क पास गई और महारानी का सन्देशा दिया। जिसे सुन बड़ी देर तक जसवन्तसिह चुप रह इसके बाद जवाब दिया— अच्छा आज ता नहीं मगर कल मै जरूर रनबीरसिह के छुड़ाने की फिक्र मे जाऊगा।'

जसवन्तसिह ने यह कह तो दिया कि रनबीरसिह को छुड़ाने के लिये मै कल जाऊँगा मगर कल तक राह देखना और बेकार बैठे रहना भी उसने मुनासिब न समझा क्योंकि वह दुष्ट यही सोच रहा था कि जहाँ तक जल्द हो सक बालेसिह स मेल करके रनबीरसिह को मरवा देना चाहिये। आखिर उसस न रहा गया और शाम हाते ही महारानी से हुक्म ले बालेसिह की तरफ रवाना हुआ।

महारानी ने अपन लायक और ईमानदार दीवान को बुला कर कहा, ' आज कल मेरी तबीयत ठीक नहीं रहती, कुछ न कुछ बीमार रहा करती हू, मेरा इरादा है कि महीने पन्द्रह दिन तक बाग मे जाकर रहू और हवा पानी बदलू, तब तक राज का कोई काम न करूँगी। लीजिये यह मोहर अपनी आपको देती हूँ, जब तक मेरी तबीयत बखूबी दुरुस्त न हो जाय तब तक आप राज का काम ईमानदारी क साथ कीजिये।

दीवान ने पर्दे की तरफ हाथ जोड कर अर्ज किया अगर सरकार की तबीयत दुरुस्त नहीं है तो जरूर कुछ दिन बाग में रहना चाहिए ताबेदार स जहाँ तक होगा ईमानदारी स काम करेगा। ईश्वर चाहेगा ता किसी काम में हर्ज न होगा। ऐसा ही काई मुश्किल काम आ पडगा ता सर्कारी हुक्म लेकर करूगा।

महारानी ने कहा 'नहीं, जब तक मै बाग से वापस न आऊ तब तक मुझे किसी काम क लिए मत टोकना जो मुनासिब मालूम हो करना।

दीवान साहब 'बहुत अच्छा जो हुक्म सर्कार का' कह और सलाम कर रवाना हुए।

आठवां बयान

शैतान क बच्चे जसवन्तसिह ने बेचारे रनबीरसिह क साथ बदी करने पर कमर बाँध ली। उस पहिली मुहब्बत की बू उसक दिल स बिल्कुल जाती रही। अब तो यह फिक्र हुई कि जहाँ तक जल्द हो सक रनबीरसिह की जान लेनी चाहिये बल्कि इस खयाल ने उसके दिमाग मे इतना जोर पैदा किया कि नेक और बद का कुछ भी खयाल न रहा और वह बेधड़क बालेसिह की तरफ रवाना हुआ ' हा चलती समय उसन इतना जरूर सोचा कि महारानी ने पहले ता मेरी खूब ही खातिरदारी की थी मगर पीछे से इतनी बेरुखी क्यों करन लगी यहाँ तक कि सवारी के लिय एक घोड़ा तक भी न दिया और मुझे पैदल बालेसिह क पास जाना पडा 'साथ ही इसके यह खयाल भी उसके दिल मे पैदा हुआ कि पहिले मुझ रनबीर का दोस्त समझ हुए थी इसलिय खातिरदारी के साथ पेश आई मगर जब से मेरा सामना हुआ तब से वह मुझको मुहब्बत की निगाह स देखने लगी इसी स इस नई मुहब्बत को छिपाने के लिए उसन मेरी खातिरदारी छोड़ दी।

इन्हीं सब बतुकी बातों का सोचता विचारता बेधडक बालेसिह की तरफ पैदल रवाना हुआ। दो दिन रास्ते मे लगा कर तीसरे दिन पूछता हुआ उस गाँव में पहुचा जिसमे बालेसिह थोड स शैतानों को लेकर हुकूमत करता था।

यह बालेसिह का गाव देखने मे एक छोटा सा शहर ही मालूम होता था। जिसक चारों तरफ मजबूत दीवार बनी हुई थी और अन्दर जाने के लिये पूरब और पश्चिम की तरफ दो बड बड फाटक लगे हुए थ। दीवारें इस अन्दाज की बनी हुई थीं कि अगर काई गनीम चढ आवे ता फाटक बन्द करके अन्दर वाल्दरूनी अपनी हिफाजत कर सकते थे और दीवार के छोटे छोट सूराखों में से बाहर अपने दुश्मनों पर गोली और तीर इत्यादि बरसा सकते थे।

जसवन्तसिह जब पूरब के दर्वाजे से उस छोटे से किलेनुमा शहर क अन्दर घुसा तो दर्वाजे ही पर कई पहरेवालों स मुलाकात हुई। पहिले तो वह फाटक के दोनों तरफ पहरेवालों को देखकर अटका मगर फिर सोच विचार कर आगे बढ़ा। पहर वालों न भी उसको तरफ गौर से देखा और आपुस मे कुछ इशारा करके हसने लगे। जब जसवन्त कुछ आगे बढ़ा तब उन पहरे वालों में स दो आदमी उसके पीछे पीछे रवाना हुए।

जसवन्त भी चौंका हुआ था और इसीलिए इधर उधर आगे पीछे देखता भालता जा रहा था। अपने पीछे दो

दिलावर जगी सिपाहियों को आते देख वह कुछ अटका मगर फिर आग वढा इसी तरह घड़ी घड़ी पीछ देखता अटकता आगे वढ़ता चला जा रहा था। पीछे पीछे जाने वाले दोनों सिपाही भी उसी की चाल चलते थे अर्थात् जव वह अटकता ता वह भी रुक जात और उसके चलने के साथ ही पीछे पीछ चलने लगते। यह कैफियत देख जसवन्तसिह के जी में खुटका पैदा हुआ वल्कि उसे खौफ मालूम हाने लगा और एक चौमुहानी पर पहुच वह एक किनारे हट कर खड़ा हो गया। व दोनों सिपाही भी कुछ दूर पीछ ही खडे हो गए।

जसवन्त आधी घडी तक खडा रहा, जव उन दोना सिपाहियों को भी रुके हुए देखा तो पीछे की तरफ लौटा, मगर जब वहाँ पहुचा जहा वे दोना सिपाही खडे थे तव रोक लिया गया। दोना सिपाहियों ने पूछा, ' लौटे कहा जाते हा ?"

जसवन्त ने कहा 'जहा से आये थे वहा जाते है।"

दानों सिपाहियों ने कहा ' तुम अव लौट कर नहीं जा सकत इस चारदीवारी क अन्दर जहा जी चाहे जाओ घूमो फिरो हम दोनों तुम्हारे साथ रहेंगे, मगर लौट कर नहीं जाने देंगे।

जसवन्त–क्यों ?

एक सिपाही–मालिक का हुक्म ही ऐसा है।

जसवन्त–यह हुक्म किसके लिये है ?

दूसरा सिपाही–खास तुम्हार लिये।

जसवन्त–क्या तुम लोग मुझ जानते हो ?

दोनों–खूब जानते हैं कि तुम जसवन्तसिह हो।

जसवन्त–यह तुमने कैसे जाना ?

दानों–इसका जवाव देने की जरूरत नहीं। तुम यहाँ क्यों आये हो ?

जसवन्त–तुम्हारे मालिक वालेसिह से मुलाकात करने आया था।

एक–ता लौट क्यों जाते हो ? चलो हम लोग तुम्हें अपने मालिक के पास ल चलते है।

जसवन्त–(कुछ सोच कर) खैर चलो, इसीलिये तो मैं आया ही हू।

दोनों सिपाही जसवन्त को साथ लिये अपन सर्दार वालेसिह के पास पहुचे। उस वक्त वालेसिह एक सुन्दर मकान क वड़े कमरे में अपन साथी दसग्यारह आदमियों के साथ वैठा गप्पें उड़ा रहा था। अपन दा सिपाहियों के साथ जसवन्त को आते देख खिलखिला कर हस पडा और जसवन्त के हाथ पैर खुले देख वोला क्या यह खुद आया है ? जिसके जवाब में दोनों सिपाहियों ने कहा "जी सर्कार !"

वालेसिह–क्यों जसवन्तसिह साहब वहादुर, क्या इरादा है ? कैसी नीयत है जो वधडक चल आये हो ?

जसवन्त–वहुत अच्छी नीयत है, मैं आपसे मित्रभाव रखकर आपक मतलब की कुछ कहने आया हू।

वाले–मैं तो तुम्हारा दुश्मन हू, मेरी भलाई की वात तुम क्यों कहन लग ?

जसवन्त–आप मेरे दुश्मन क्यों होंगे ! मैने आपका क्या बिगाडा है ? या आप ही ने मेरा क्या नुक्सान किया है ?

वाले–(जाश में आकर) तुम्हारे दोस्त रनवीरसिह का मैने गिरफ्तार कर लिया है और कल उनका सिर अपने हाथ से काटूँगा !

जसवन्त–(जी में खुश होकर) क्या हुआ जो रनवीरसिह को आपने गिरफ्तार कर लिया ? शौक से उसका सर काटिये, इसके बाद एक तर्कीब ऐसी वताऊगा कि महारानी वडी खुशी से आपके साथ शादी करने पर राजी हो जॉयगी।

वाले–(जोर से हस कर) वाह वे शैतान के बच्चे, क्या उल्लू बनाने आया है ! अबे तेरे ऐसे पचासों को मैं चुटकियों पर नचाऊं, तू क्या मुझे भुलावा देने आया है ! वेईमान हरामजादा कहीं का ! मुझे पढाने आया है ! जन्म भर जिसका नमक खाया, जिसके घर में पला, जिसके साथ पढ लिख कर होशियार हुआ और जिसके साथ दिली दोस्ती रखने का दावा करता है आज उसी के लिए कहता है कि शौक से उसका सर काट डालो ! जरूर तेरे नुत्फे* में फर्क है, इसमें कोई शक नहीं ! तेरा मुह देखने से पाप है। रनवीर ने तेरे साथ क्या वुराई की थी जो तू उसके बारे में ऐसा कहता है ? उल्लू के पट्ठे, जब तू उसके साथ यह सलूक कर रहा है तो मेरे सग क्या दोस्ती अदा करेगा !(इधर उधर देख कर) कोई है ? पकडो इस वेईमान को अपने हाथ से कल इसका भी सर काट कर कलेजा ठढा करूगा !

हुक्म पाते ही चारों तरफ से जसवन्त के ऊपर आदमी टूट पडे और देखते देखते उसे पकड़ रस्सियों से कस के बाध लिया।

वालेसिह ने अपने हाथ से वे बिल्कुल बातें कागज पर लिखी जो उस वक्त जसवन्तसिह से और उससे हुई थीं और

*वीर्य।

इसे एक आदमी के हाथ में देक र कहा "यह पुर्जा रनबीरसिह को दो और इस नालायक को ले जाकर जिस मकान में रनबीरसिह है उसी में लोहे के जगले वाली कोठरी में बन्द कर दो।"

बालेसिह ने पहाडी के ऊपर से रनबीरसिह को गिरफ्तार तो जरूर किया था मगर अपने घर लाकर उनको बड़े आराम के साथ रक्खा था। एक छोटा सा खूबसूरत मकान उनके रहने के लिये मुकर्रर करके कई नौकर भी काम करने के लिये रख दिये थे और मकान के चारो तरफ पहरा बैठा दिया था। मिजाज उनका अभी तक वैसा ही था। उस पत्थर की मूरत का इश्क सिर पर सवार था, घड़ी घडी ठढी सास लेना रोना और बकना उनका बन्द न हुआ था, खाने पीने की सुध अभी तक न थी बल्कि उस पत्थर की तस्वीर से अलहदे हाकर उनको और भी सदमा हुआ था। बालेसिह से हरदम लड़ने को मुस्तैद रहते थे मगर उनके सामने जव वालेसिह आता था और उनको गुस्से में देखता था तो हाथ जोड के यही कहता था 'मैं तो तुम्हारा ताबेदार हू !' इतना सुनने ही से रनवीरसिह का गुस्सा ठढा हो जाता था और अपना क्षत्रिय धर्म याद कर उसे कुछ नहीं कहते थे, बल्कि किसी न किसी तर्कीब से कह सुन कर बालेसिह उनको कुछ खिला पिला भी आता था। जब ये खाने से इन्कार करते तो बालेसिह कहता कि आप अगर कुछ न खॉयगे तो मैं उस पहाडी पर जाकर उस मनमोहिनी मूरत के टुकड़े टुकडे कर डालूँगा, और अगर आप इस वक्त कुछ खा लेंगे तो मैं वह मूरत आपके पास ले आऊगा। यह सुन रनबीरसिह लाचार हो जाते और कुछ न कुछ खाकर पानी पी ही लेते।

कभी कभी जव तबीयत ठिकाने होती तो वे ये बातें भी सोचने लगते कि पहाडी पर मुझे अकेला छोड कर मेरा दोस्त जसवन्त कहाँ चला गया? इस बालेसिह ने धोखा देकर मुझे क्यों गिरफ्तार किया? मैंने इसका क्या बिगाड़ा था? तिस पर न तो यह मेरा दोस्त मालूम होता है न दुश्मन, क्यों कि कैद भी किये है और खुशामद ओर खातिरदारी भी करता है। जो हो इस बात का तो अफसोस रह ही गया कि मैं किसी तरह की लडाई न कर सका और एकाएक धोखे में गिरफ्तार हो गया।

आज भी इन्हीं सब बातों को वैठे बैठे रनबीरसिह सोच रहे थे कि आठ दस आदमियों के साथ हथकडी बेडी से जकडे हुए जसवन्तसिह आते दिखाई पडे और उन सभों मे से एक आदमी ने बढकर वह पुर्जा रनबीरसिह के हाथ में दिया जा बालेसिह ने अपनी और जसवन्त की बातचीत होने के बारे में लिखा था।

रनबीरसिह जसवन्त को देखकर बहुत खुश हुए, वह पुर्जा हाथ से जमीन पर रख दिया और जल्दी से उठ कर जसवन्त के साथ लपट गए, बाद इसके उन सिपाहियों से जो इसे कैदी की तरह से लाये थे पूछा, "इसे हथकडी बेडी क्यों डाल रक्खी है? जब तुम्हारा सर्दार मेरे साथ इतनी नेकी करता है तो उसने मेरे इस दोस्त को इतनी तकलीफ क्यों दे रक्खी है!

जिस सिपाही ने रनबीरसिह के हाथ में पुर्जा दिया था उसने जवाव में कहा, "उस पुर्जे को पढने से इसका सबब आपको मालूम हो जायगा जिसे हमारे राजा साहब ने लिख कर आपके पास भेजा है।"

रनवीरसिह ने उस पुर्जे को उठा कर पढा और ताज्जुब में आकर सोचने लगे, 'है! यह क्या मामला है? जसवन्त मेरा दुश्मन क्यों हो गया और यह सब क्या लिखा है! जसवन्त ने कहा है– क्या हुआ जो रनबीरसिह को आपने गिरफ्तार कर लिया! शौक से उसका सर काटिये! इसके बाद एक तर्कीब ऐसी बताऊंगा कि मायारानी बडी खुशी के साथ आप से शादी करने पर राजी हो जायगी यह सब क्या बात है? कौन महारानी बालेसिह के साथ शादी करने पर राजी हो जायगी, जो मेरे मरने की राह देख रही है? मालूम होता है कि वह पत्थर की मूरत जरूर किसी ऐसी औरत की है जो महारानी बाली जाती है और मुझसे मुहब्बत रखती है। बालेसिह भी उस पर आशिक है और शायद इसी सबब से उसने मुझ गिरफ्तार भी कर लिया हो तो ताज्जुब नहीं। मगर यह ता कभी हो नहीं सकता कि जसवन्त मेरे साथ दुश्मनी करन पर कमर बाधे हा इस पुर्जे के नीचे यह भी तो लिखा है कि 'मै खुद आकर आपको समझा दूँगा कि जसवन्त की नीयत खराब हो गई और अब वह आपका पूरा दुश्मन हो रहा है। खैर बालेसिह भी आता ही होगा देखें क्योंकर साबित करता है कि मेरी तरफ स जसवन्त की नीयत खराब हो गई।

उन सिपाहियों ने अपने सर्दार बालेसिह के हुक्म के मुताबिक जसवन्त को उसी मकान की एक लोहे के जगले वाली कोठरी में कैद कर के ताला लगा दिया और वहाँ से चले गए। रनबीरसिह ने किसी को न टोका कि जसवन्त को क्यों कैद करते हो! मगर जब वे लोग उसे कैद करके चले गये तब उठ कर जसवन्त की काठरी के पास जगले के बाहर जा बैठे और बातचीत करने लगे-

रनवीर–क्यों जसवन्त तुमने क्यों खुदबखुद आकर इस बालेसिह के हाथ में अपने को फसाया?

जसवन्त–मैं तो आपको छुडाने की नीयत से आया था, मगर कुछ कर न सका और इसने मुझे गिरफ्तार कर लिया।

रनवीर–तो छिप कर क्यों न आये?

जसवन्त–(कुछ सोच कर) भूल हो गई, मैंने सोचा था कि जाहिर होकर चलूगा और तुम्हारा दुश्मन और उसका दोस्त बनके काम निकाल लूँगा मगर उस शैतान के बच्चे से कारीगरी न चली। पर आपको तो उसने इस तौर पर रक्खा है कि कैदी मालूम ही नहीं पड़ते !

रनबीर–भला यह तो बताओ कि तुम्हें कुछ मालूम हुआ कि वह पत्थर की मूरत किसकी है ?

जसवन्त–हॉ घूम फिर कर दरियाफ्त करने से मुझे मालूम हो गया कि उसी पहाडी से थोडी दूर पर एक रानी रहती है और उसी ने अपनी और आपकी मूरत उस पहाडी पर बनवाई है। यह सुन कर मुझे यकीन हो गया कि वह जरूर आपसे मुहब्बत रखती है तभी तो फॅसाने के लिए ये दोनों मूरतें उसने बनवाई हैं। यह सोच कर मैं उसके पास गया। मुझे उम्मीद थी कि जब आपके गिरफ्तार होने का हाल उससे कहूगा तो वह आपके छुडाने की जरूर कोशिश करेगी और मुझे भी मदद देगी, मगर कुछ नहीं वह तो निरी बेमुरौवत निकली !सब बातें सुन साफ जवाब दे दिया और बोली कि मैं क्या कर सकती हू, मुझसे रनबीरसिंह से क्या वास्ता जो उसको छुडाऊ ऐसे ऐसे सैकडों रनबीरसिंह मारे मारे फिरते हैं !!

रनबीर–(ऊची सॉस लेकर) ठीक ही है, भला इतना तो पता लगा कि वह पत्थर की मूरत झूठी न थी !खैर जो भी हो मैं तो उसके दर्वाजे की खाक ही बटोरा करूगा, इसी में मेरी इज्जत है।

रनबीरसिंह और जसवन्तसिंह में बातें हो ही रही थीं कि कई आदमियों को साथ लिये बालेसिंह उसी जगह आ पहुचा और रनबीरसिंह को जसवन्त से बातें करते देख बोला---

"महाराजकुमार आप इस नमकहराम से क्या बातें कर रहे हैं !यह पूरा बेईमान और पाजी है, इसका तो मुह न देखना चाहिये !

रनबीर–यह मेरा पुराना दोस्त है मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं कि यह मेरे साथ बुराई करेगा।

बाले–आप भूलते हैं जो ऐसा सोचते हैं, आज ही इसने मेरे सामने आकर कैसी कैसी बातें कहीं आपको तो मैंने लिख ही दिया था। क्या पढा नहीं !

रनबीर–मैंने पढा मगर यह कहता है कि मैं अकेला था इसलिए आपके छुडाने की सिवाय इसके और कोई तर्कीब न देखी कि जाहिर में तुम्हारा दुश्मन और बालेसिंह का दोस्त बनूँ !

बाले–कभी नहीं यह झूठा है !मैं खूब समझ गया कि जिस पर आप आशिक हैं यह खुद भी उसी पर आशिक हो गया है और चाहता है कि आपकी जान ले।

रनबीर–होगा मगर मुझे विश्वास नहीं होता !

बाले– अच्छा एक काम कीजिये, आप अपने हाथ से एक चीठी महारानी को लिख कर पूछिये कि जसवन्त तुम्हारे पास गयाथा या नहीं और तुमने इसकी नीयत कैसी पाई ? उस खत को मैं अपने आदमी के हाथ भेज कर उसका जवाब मगा देता हू !

रनबीर–अहा, अगर ऐसा करो तो मैं जन्मभर तुम्हारा ताबेदार बना रहू !भला मेरी ऐसी किस्मत कहॉ कि मैं उनके पास चीठी भेजूँ और जवाब आ जाय !हाय !जिसकी सूरत देखने की उम्मीद नहीं, उसके पास मेरी चीठी जाय और जवाब आवे तो मेरे लिये इससे बढके और क्या खुशी की बात होगी !!

बाले–जरूर जवाब आवेगा मगर एक बात है---आप उस चीठी में यह भी लिख दीजियेगा कि बालेसिंह ने मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं दी है बडे आराम के साथ रक्खा है, और भाई की तरफ मुझको मानता है।

रनबीर–हॉ हॉ, जरूर मैं ऐसा लिख दूँगा !जब तुम मेरे साथ इतनी नेकी करोगे कि मेरी चीठी का जवाब मगा दोगे तो क्या मैं तुमको अपने भाई के बराबर न समझूगा ?

जसवन्त–(चिल्ला कर) मगर यह कैसे मालूम होगा कि महारानी ही ने इस पत्र का जवाब दिया है ? क्या जाने तुम जाल बना कर किसी गैर से चीठी का जवाब लिखवा के ला दो, तब ?

बाले–(गुस्से में आकर) बेइमानों को ऐसी ही सूझती है !हमलोग क्षत्रिय वश में पैदा होकर जाल करने का नाम भी नहीं जानते। जरूर इस पत्र का उत्तर महारानी अपने हाथ से लिखेंगी और अपनी खास लौडी के हाथ भेजेंगी क्योंकि इनके लिये वह अपनी जान भी देने को तैयार है। क्या तुमने महारानी की सूरत देखी है ?

जसवन्त–हा, मैं उन्हें देख चुका हू, वह इतनी मुरौवत वाली नहीं !

बाले–(हस कर) बस बस अब मुझे पूरा विश्वास हो गया। ऐसा तो कोई दुनिया में है ही नहीं जो उसे देखे और अपनी नीयत साफ बनाये रहे !

रनवीर—(बालेसिह से) इन सब बातों में देर करने की क्या जरूरत है, आप मेरे ऊपर कृपा कीजिये और चीठी लिखने का सामान मगाइये मैं अभी लिख देता हू !

बालसिह ने अपने एक आदमी को भेज कर कलम दावात तथा कागज मगवाया और रनवीरसिह के सामने रख कर कहा, 'लीजिये लिखिये। रनबीरसिह खत लिखने बैठे।

अह, जिसके इश्क में रनवीरसिह की यह दशा हुई इतनी आफतें उठाई आज उसी को पत्र लिखने बैठे हैं मगर क्या लिखे ? क्या कह कर लिखें ? कौन सी शिकायत करें ? इन्हीं बातों को घडी घडी सोच सोच रनवीरसिह को कम्प हो रहा था, आखें डबडबा आती थीं, लिखन वाला कागज ऑसुओं से भीज जाता था बडी मुश्किल से कई दफे कागज बदलने बाद यह लिखा—

"मेरे लिए तुमने जो कुछ सोचा मुनासिब ही था, जिसका पहिला हिस्सा ठीक भी कर चुके। मगर अफसोस उसका आखिरी हिस्सा अभी तक तै न हुआ। जसवन्त की मदद तक न की 'बालेसिह की खातिरदारी अभी तक जान बचाये जा रही है।
तुम्हारा रनबीर।

बालेसिह ने यह पत्र उसी समय अपने एक विश्वासी और चालाक आदमी के हाथ महारानी की तरफ रवाना किया। उस आदमी के जाने के बाद रनबीरसिह ने बालसिह से पूछा—

'क्यों बालेसिह, यह महारानी कौन है ? और मुझे तुमने क्यों गिरफ्तार कर रक्खा है ? देखो सच कहना झूठ मत बोलना !'

बालेसिह ने कहा, ' ऐसा ही है तो लीजिये सुन ही लीजिये, आखिर मैं कहा तक और किस किस से डरा करूगा। महारानी चाहे जो भी हों आज मेरे और जसवन्त के तरह के सैकडों ही उनके लिये जान दे रहे हैं, लेकिन उन्होंने सिवाय तुम्हारे किसी से भी शादी करना मजूर न किया—जिसने जिद्द की उसी की दुर्गति कर डाली। अभी तक मेरे पास उनका लिखा पत्र मौजूद है जिसमें उन्होंने साफ लिखा है कि सिवाय रनवीरसिह के मैं किसी को कुछ भी नहीं समझती। अपने पत्र का ऐसा जवाब पाकर मुझे भी बडा ही गुस्सा आया और दिल में ठान लिया कि अगर ऐसा ही है तो फिर चाहे जो हो मैं भी रनवीरसिह से और उससे मुलाकात न होने दूगा !सिवाय इसके !

बालसिह की बातें सुनते सुनते एकाएक रनवीरसिह को बडा ही क्रोध चढ आया। वह आगे कुछ और कहा चाहता था मगर उसकी यह आखिरी बात कि— 'मैं भी रनबीरसिह से और उससे मुलाकात न होने दूँगा सुन कर उठ खडे हुए अपने गुस्से को जरा भी न रोक सके और उसके गले में हाथ डाल ही तो दिया। दोनों में खूब कुश्ती और मुक्कों की मार होने लगी यहाँ तक कि दोनों के सिर और बदन से खून बहने लगा। आखिर रनवीरसिह ने बालेसिह को उठा कर जमीन पर पटक दिया और उसकी छाती पर चढ बैठे।

अभी तक बालेसिह के आदमी जो वहाँ मौजूद थे चुपचाप खडे तमाशा देख रहे थे। जब अपने मालिक की पीठ जमीन पर देखी और उम्मीद हो गई कि अब रनबीरसिह उसका गला के दबा मार ही डालेंगे तब एक दम रनवीरसिंह के ऊपर टूट पडे यहाँ तक कि बालेसिह मौका पाकर हाथ से निकल गया और अपने साथियों की मदद से उसने रनबीरसिह को [illegible] लिया।

अब रनवीरसिह की आजादी बिल्कुल जाती रही वे पूरे कैदी हो गये। हथकडी बेडी डाल कर एक कोठरी में बन्द कर दिये गये। अभी तक बालेसिह को उनकी खूबसूरती और हाथ पैरों की मुलायमियत देख कर उनके इतने ताकतवर बहादुर और जवाँमर्द होने की उम्मीद बिल्कुल न थी, अपने सामने वह किसी को भी कुछ नहीं समझता था मगर आज रनवीरसिह ने उसकी शेखी भुला दी, बल्कि अपना रोब उसके दिल पर जमा दिया।

नौवां बयान

बालेसिह का आदमी रनबीरसिंह की चीठी लेकर महारानी की तरफ रवाना हुआ, मगर जब उस शहर में पहुँचा तब सुना कि महारानी बहुत बीमार है और इन दिनों बाग में रहा करती है, दवा इलाज हो रहा है, बचने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि आज का दिन कटना भी मुश्किल है।

वह आदमी जो चिट्ठी लेकर गया था निरा सिपाही न था बल्कि पढा लिखा होशियार और साथ ही चालाक भी था। ऐसे मौके पर महारानी के पास पहुच कर खत देना मुनासिब न जान उसने सराय में डेरा डाल दिया और सोच लिया कि जब महारानी की तबीयत ठीक हो जायेगी तब यह खत देकर जवाब लूगा।

सराय में डेरा दे और कुछ खा पी कर वह शहर में घूमने लगा यहाँ तक कि उस बाग के पास जा पहुचा जिसमें

महारानी बीमार पड़ी थीं। अपने को उसने बिल्कुल जाहिर न किया कि मैं कौन हू, किसका आदमी हू और क्यों आया हू, मामूली मुसाफिर की तरह घूमता फिरता रहा। शाम होते होते बाग के अन्दर से रोने और चिल्लाने की आवाज आई और धीरे धीरे वह आवाज बढती ही गई, यहाँ तक कि कुछ रात जाते जाते बाग से लेकर शहर तक हाहाकार मच गया, कोई भी ऐसा न था जो रो रो कर अपना सिर न पीट रहा हो ! शहर भर में अँधेरा था, किसी को घर में चिराग जलाने की सुध न थी। जिसको देखिये वही "हाय महारानी ! कहा गई ? अब मैं किसका होकर रहूगा ? पुत्र की तरह से अब कौन मानेगा ? किस भरोसे पर जिन्दगी कटेगी !' इत्यादि कह कह कर रोता चिल्लाता सर पीटता और जमीन पर लोटता था।

वह आदमी जो चीठी लेकर गया था घूम घूम कर यह कैफियत देखने और पूछताछ करने लगा। मालूम हो गया कि महारानी मर गईं, उसे बहुत ही रज हुआ और अफसोस करता सराय की तरफ रवाना हुआ। वहाँ भी वही कैफियत देखी, किसी को आराम या चैन से न पाया, लाचार होकर वहाँ से भी लौटा और शहर से बाहर जा मैदान में एक पेड़ के नीचे रात काटी। सवेरे वापस हो अपने मालिक बालेसिह की तरफ रवाना हुआ।

महारानी के मरने से उनकी रियाया को जितना गम हुआ और वे लोग जिस तरह रोते पीटते और चिल्लाते थे यह देख कर उस सिपाही को भी बड़ा रज हुआ। बराबर आँसू बहाता हुआ दूसरे दिन अपने मालिक बालेसिह के पास पहुचा।

बालेसिह जो कई आदमियों के साथ बैठा गप्पें उड़ा रहा था अपने सिपाही की सूरत देखते ही घबड़ा गया और सोचने लगा कि शायद इसे किसी ने मारा पीटा है या यह कैद हो गया था किसी तरह छूट कर भाग आया है, मगर पूछने पर जब उसकी जुबानी महारानी के मरने का हाल सुना तब उसकी भी अजब हालत हो गई। घन्टे भर तक सकते की हालत में इस तरह बैठा रहा जैसे जान निकल गई हो या मिट्टी की मूरत रक्खी हो, इसके बाद एक ऊची सास लेकर उठ खड़ा हुआ और दूसरे कमरे में जा चारपाई पर लेट कर सोचने लगा--

"हा ! जिसके लिए इतना बखेड़ा किया, इतने हैरान और परेशान हुए, बेचारे रनबीरसिह को व्यर्थ कैद किया, अपनी जान आफत में डाली, वही दुनिया से उठ गई ! हाय अभी तक वह भोली भाली सूरत आखों के आगे घूम रही है, वह पहिला दिन मानो आज ही है, यही मालूम होता है कि बाग में मकान की छत पर सहेलियों के साथ चढ़ी हुई इधर उधर दूर दूर तक के मैदान की छटा देख रही है। हाय, ऐसे वक्त में पहुच कर मैंने क्यों उसकी सूरत देखी जो आज इतना रज और गम उठाना पड़ा और मुफ्त की शर्मिन्दगी और बदनामी भी हाथ लगी !!

'मगर कहीं ऐसा तो नहीं है कि मेरा सिपाही झूठ बोलता हो या वहा महारानी ने इसे रिश्वत देकर अपनी तरफ मिला लिया हो और अपने मरने का हाल कहने के लिए समझा बुझा कर इधर भेज दिया हो ? नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। अगर ब्रह्मा भी मेरे सामने आकर कहें कि यह तुम्हारा सिपाही बेईमान और झूठा है तो भी मैं न मानूगा, यह मेरा दस पुश्त का नौकर कभी ऐसा नहीं कर सकता, इसके ऐसा तो कोई आदमी ही मेरे यहाँ नहीं है !

"खैर जब महारानी मर ही गईं तो फिर क्या किया जायगा ? अब रनबीरसिह और जसवन्तसिह को कैद में रखना व्यर्थ है, उन्होंने मेरा कोई कसूर नहीं किया है।

ऐसी ऐसी बहुत सी बातें वह घंटो तक सोचता रहा आखिरकार उठ खड़ा हुआ और सीधे उस मकान में पहुचा जहाँ रनबीरसिह और जसवन्तसिह कैद थे। बालेसिह की सूरत देखते ही रनबीरसिह ने पूछा, "क्यो साहब, आपका सिपाही महारानी के पास से वापस आया ?'

बाले--हम लोगों का फैसला ईश्वर ही ने कर दिया !!

रनबीर--वह क्या ?

बाले--महारानी ने परलोक की यात्रा की ! अब आपको भी मैं छोड़े देता हू, जहा जी चाहे जाइये। यह लीजिये आपके कपडे और ढाल तलवार इत्यादि भी हाजिर है।

बालेसिह की बात सुनते ही रनबीरसिह ने जोर से 'हाय' मारी और बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। बालेसिह ने जल्दी से उनकी हथकडी बेड़ी खोल डाली और मुह पर बेदमिश्क वगैरह छिड़क कर होश में लाने की फिक्र करने लगा। जसवन्तसिह को भी कैद से छुट्टी दे दी।

कैद से छूट और महारानी के मरन का हाल सुन जसवन्तसिह की नीयत फिर बदली। जी में सोचने लगा कि अब रनबीरसिह की तरफ से नीयत खराब रखनी मुनासिब नहीं क्योंकि इसके साथ रहने में जिस खुशी के साथ जिन्दगी बीतती है वैसी खुशी इससे अलग होने पर नहीं मिल सकती। सिवाय इसके महारानी तो मर ही गईं जिनके लिये बहुत कुछ सोचे हुए था, इस लिये अब तो इनके साथ पहिले ही की तरह मिल जुल कर ही रहना मुनासिब है मगर अभी इस

बात का पूरा यकीन कैसे हो कि महारानी मर गई !दुश्मन की बात का यकीन करना बिल्कुल भूल और नादानी है।

बहुत देर के बाद रनबीरसिंह होश में आये मगर मुंह से कुछ न बोले और न अपना इरादा ही कुछ जाहिर किया कि अब वे क्या करेंगे। उठ खड़े हुए अपने कपड़े पहिरे और हर्बों को ले शहर के बाहर की तरफ रवाना हुए। जसवन्त भी इनके साथ हुआ किसी ने टोका भी नहीं कि कहाँ जाते हो।

शहर से बाहर हो चुपचाप सिर नीचा किये हुए एक तरफ रवाना हुए। इसका खयाल कुछ भी न किया कि कहाँ जा रहे हैं और रास्ता किधर है। जसवन्त ने चाहा कि समझा बुझा कर घर की तरफ ले जायें मगर रनबीरसिंह ने उसकी एक भी न सुनी, लाचार बहुत सी बातें कहता जसवन्त भी उन्हीं के साथ साथ रवाना हुआ।

लगभग कोस भर के गए होंगे कि एक तरफ से दो सिपाहियों ने जो ढाल तलवार के अलावे हाथ में तोड़ेदार बन्दूक भी लिए हुए थे जिसका पलीता सुलग रहा था आकर रनबीरसिंह को रोका और अदब के साथ सलाम करके बोले आपसे कुछ कहना है। (और तब जसवन्त की तरफ देख कर कहा, 'हट जा वे यहाँ से, बात करने दे !

जसवन्त ने कहा, "क्या तुम्हारे कहने से हट जायें, जन्म से तो हम इनके साथ हैं, ऐसी कौन बात है जो यह हमसे न कहते हों ?"

इसके जवाब में एक सिपाही ने बन्दूक तान कर कहा "बस हट जा यहां से, नहीं तो अभी गोली मारता हूं जन्म से साथ रहने की सारी शेखी निकल जायगी !

सिपाही की डांट से जसवन्त हट गया और कुछ दूर पर जा खड़ा हुआ। दूसरे सिपाही ने अपने जेब से एक चीठी निकाल कर रनबीरसिंह को दिखाई जिसके जोड़ पर बड़ी सी मोहर की हुई थी। मोहर पर निगाह कर रनबीरसिंह ने सिपाही की तरफ देखा और चीठी खोल कर पढ़ने लगे, पढ़ते वक्त आँखों से बराबर आँसू जारी था। जब चीठी खत्म होने पर आई तब एक दफे उनके चेहरे पर हँसी आई और आंसू पोंछ सिपाही की तरफ देखने लगे।

सिपाही ने कहा 'बस, अब मैं बिदा होता हूं, आप मेरे सामने यह खत फाड़ डालिये।' इसके जवाब में रनबीरसिंह ने यह कह कर खत फाड़ के फेंक दिया कि मैं भी यही मुनासिब समझता हूं !

जब वे दोनों सिपाही वहाँ से चले गये जसवन्तसिंह ने इनके पास आकर पूछा 'ये दोनों कौन थे और यह खत किसका था ?'

रनबीर—था एक दोस्त का।

जसवन्त—क्या नाम बताने में कुछ हर्ज है ?

रनबीर—हां हर्ज है।

जसवन्त—अब तक तो कभी ऐसा नहीं हुआ था !

रनबीर—खैर अब सही।

जसवन्त—क्या मैं आपका दुश्मन हो गया ?

रनबीर—बेशक।

जसवन्त—कैसे ?

रनबीर—हर तरह से।

जसवन्त—आपने कैसे जाना ?

रनबीर—अच्छे सच्चे और पूरे सबूत से जाना।

जसवन्त—अफसोस एक नालायक बदमाश बालेसिंह के कहने से आपका चित्त मेरी तरफ से फिर गया और लड़कपन के संग साथ और दोस्ती की तरफ जरा भी ख्याल न गया !!

रनबीर—दूर हो मेरे सामने से हरामजादे के बच्चे !तेरे तो मुंह देखने का पाप है। सच है, बड़ों का कहना न मानना अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारना है। मेरे पिता बराबर कहते थे कि यह दुष्ट सात पुश्त का हरामजादा है, इसका साथ छोड़ दे नहीं तो पछतायगा। हाय मैंने उनकी बात न मानी और तेरी जाहिरा सूरत और मीठी बातों में फंसकर अपने को जा बैठा। वह तो ईश्वर की कृपा थी कि जान बच गई नहीं तो तूने उसके लेने पर भी कमर बाँध ली थी !

जसवन्त—यह ख्याल आपका गलत है। आप आजमाने पर मुझे ईमानदार और अपना सच्चा दोस्त पावेंगे।

इतनी बात सुनते ही रनबीरसिंह को बेहिसाब गुस्सा चढ़ आया और कमर से तलवार खैंच होठों को कंपाते हुए बोले, 'हट जा सामने से, नहीं तो अभी दो टुकड़े कर डालूंगा !!'

रनबीरसिंह की यह हालत देख खौफ के मारे जसवन्त हट गया और जी में समझ गया कि अब किसी तरह यह न

मानेगा, खैर देखा जायगा यिह सोच वहा से रवाना हुआ और जाती वक्त रनबीरसिह से कहता गया देखिये मेरा साथ छोड कर आप जरूर पछताएंगे !

दसवां बयान

जसवन्त के जाने के बाद रनबीरसिह कुछ देर तक वहीं खड़े कुछ सोचते रहे, तब पश्चिम की तरफ चले। थोडी दूर जाकर इधर उधर देखने लगे, बाईं तरफ पीपल का एक पेड़ नजर आया, उसी जगह पहुचे और उस पेड़ को खूब गौर के साथ देख उसके नीचे बैठ गये।

उस पेड़ के नीचे बैठे हुए रनबीरसिह इस तरह चारों तरफ देख रहे थे जैसे कोई किसी ऐसे आदमी के आने की राह देखता हो जिसे वह बहुत ही ज्यादा मानता हो या जान बचाने के लिए जिसका मिलना बहुत जरूरी समझता हो।

खैर जो कुछ भी हो, मगर रनबीरसिह को घड़ी घड़ी खड़े होकर चारों तरफ देखते देखते वह पूरा दिन बीत गया और भूख और प्यास से उनकी तबीयत बेचैन हो गई मगर वह उस जगह से दस कदम भी इधर उधर न हटे। आखिर शाम होते होते कई सवार एक निहायत उम्दा घोड़ा कसा-कसाया खाली पीठ और कुछ असबाब लिये उस जगह पहुचे। एक सवार ने जो सभों का सर्दार मालूम होता था घोड़े से नीचे उतर कर अपने जेब से एक चीठी निकाली और रनबीरसिह को सलाम करने के बाद उनके हाथ में दे दी।

रनबीरसिह खत खोल कर पढने लगे, जैसे जैसे पढ़ते जाते थे तैसे तैसे उनके चेहरे पर खुशी चढ़ती हुई दिखाई देती थी और घडी घड़ी हँसी आती थी। जब खत तमाम हुआ तब उस सवार की तरफ देख कर बोले, ' इसमें कोई शक नहीं कि उन्होंने ऐसा काम किया जो अच्छे अच्छे चालाकों से होना मुश्किल है, खैर यह तो बताओ कि तुम्हारी फौज यहाँ कब पहुचेगी ? '

सवार ने कहा "आधी रात के बाद से कुछ न कुछ असबाब खेमा वगैरह आना शुरू हो जायगा बल्कि सुबह होते होते कुछ फौज भी आ जायगी, बाकी कल और परसों दो दिन में कुल सामान के ठीक हो जाने की उम्मीद है। लेकिन पूरी फौज यहा इकट्ठी न होगी वह मुकाम यहा से कुछ दूर है जहाँ अब मैं आपको ले चलूँगा।

रनबीर-इस वक्त तुम्हारी फौज कहाँ है ?

सर्दार-इसका जवाब मैं कुछ नहीं दे सकता, क्योंकि आज कई दिनों से कई ठिकाने पर फ़ौजी आदमी बैठ हुए हैं। बालेसिंह की कैद से आपके छूटने की खबर जब मुझको लग चुकी है तब मैंने अपने जासूसों को चारो तरफ रवाना किया है और एक ठिकाने का निशान देकर जहा आज मैं आपको ले चलूगा ताकीद कर दी है कि जहाँ तक जल्द हो सके उसी जगह सभों को इकट्ठा करो इसके बाद अपने सर्कार में भी इन सब बातों की इत्तिला भेज दी है।

रनबीर-इसके पहिले जो चीठी एक सवार के हाथ मुझे मिली थी वह भी तो शायद तुम्हारे सर्कार ही के हाथ की लिखी थी ?

सवार - जी हाँ मगर वह कई दिन पहिले की लिखी हुई थी और उस सवार को हुक्म था कि जब आप छूटें उसी वक्त यह चीठी आपको दे।

रनबीर-तो अब उस ठिकाने चलना चाहिए जहा फौज इकट्ठी होगी ?

सवार-जी हॉ, मैं आपकी सवारी का घोडा और कपडे तथा हर्बे वगैरह भी लेता आया हू और कुछ खाने का भी सामान लाया हू, आप भोजन कर लें तो चलें।

रनबीरसिह ने खुशी और जल्दी के मारे भोजन करने से इनकार किया मगर उस सवार की जिद्द से जिसका नाम बीरसेन था हाथ मुह धो कुछ खाना ही पडा, इसके बाद उन चीजों में से जो वह सवार इनके लिये लाया था जो कुछ जरूरी समझा लेकर घोड़े पर सवार हुए और वहाँ से रवाने हुए।

उन सवारों के साथ साथ कई कोस तक चले गए। आधी रात जाते जाते एक मैदान में पहुचे जिसके चारो तरफ घना जगल और बीच में बहुत से नीम के दरख्त थे, वहा सभों ने घोडे की बाग रोकी और उस सवार ने रनबीरसिह से कहा "बस यही ठिकाना है जहा सभों को इकट्ठे होने के लिए कहा गया है।

इन सभों को वहा पहुचे अभी कुछ ही देर हुई होगी कि खेमों और डेरों से लदे हुए कई ऊँट उस जगह आ पहुचे जिनके साथ बहुत से आदमी थे। रात चांदनी होने के कारण रोशनी की कुछ जरूरत न थी। फर्राशों ने खेमा डेरा खडा करना शुरू किया और तब तक कुछ कुछ फौज भी इकट्ठी होने लगी। रनबीरसिह ने बीरसेन से पूछा, आपकी फौज

यहा कितनी इकटठी होगी और उसका सेनापति कौन है ?"

वीरसेन ने कहा ' फौज दस हजार से ज्याद नहीं है और उसका सेनापति यही तावदार आपके सामने हाजिर है।'

रनवीर–इससे ज्यादे फौज की जरूरत ही क्या है ?

वीरसन–आपका कहना ठीक है मगर वह वडा ही कट्टर है, और इतन से ज्यादे लड़ाकों का वन्दावस्त कर सकता है।

रनवीर–अफसोस तुम्हारी हिम्मत वहुत छोटी मालूम होती है।

वीरसेन–मेरी हिम्मत जा कुछ है और होगीयह तो मौके पर आपको मालूम भी होगा मगर आप खुद इसे साच सकते है कि वेसर्दार की फौज कहा तक काम कर सकती है और मेरा सर्दार किस ढग का है !हाँ आज आपकी तावदारी से अलवत्ते हम लोगों का हौसला दूना हो रहा है और वहुत सा गुस्सा भी मिजाज को तेज कर रहा है।

पॉच दिन तक धीर धीरे वरावर फौज इकट्ठी हाती रही और रनवीरसिह अपने मन माफिक उसका इन्तजाम करते रहे। छठे दिन उनकी फौज पूरे तौर पर तैयार हो गई और तव रनवीरसिह न वीरसेन से कहा 'अव वालेसिह के पास दूत भेजना चाहिये।

वीरसेन–मेरी समझ में तो एकाएक उसके ऊपर चढाई कर देना ही ठीक होगा।

रनवीर–सो क्यों ?

वीरसेन–क्योंकि हमारी नीयत का हाल अभी तक उसे कुछ भी मालूम नहीं और वह विल्कुल वैठा है ऐसे समय में उसको जीतना कोई मुश्किल न होगा।

रनवीर–नहीं नहीं, ऐसा कभी न साचना चाहिये हम लोग धोखे की लडाई नहीं लडते !

वीरसेन–वालसिह और उसकी फौज वडी ही कट्टर है महारानी के पिता को उसने तीन दफे लडाई में जीता और आज तक हमारी महारानी का हौसला कभी न पडा कि उसका मुकावला करें और इसी सवव से उन्होंने कैसी कैसी तकलीफें उठाई सो भी आपको मालूम ही हो चुका है।

रनवीर–जो हो मगर मै तो उससे कह वद के लडूँगा।

वीरसेन–मै समझता हू कि ऐसा करने के लिये महारानी भी आपको मना करेंगी ?

रनवीर–मै इसमें उनकी राय न लूगा।

इसी तरह की वात वीरसेन से देर तक होती रही यहाँ तक कि सूर्य अस्त हो गया। उसी समय किसी आदमी ने खेमे के अन्दर आकर रनवीरसिह के हाथ में एक चिट्ठी दी।

चिट्ठी पढते ही रनवीरसिह की अजव हालत हो गई। इतने दिनों तक हर तरह की मुसीवत और रज उठाने का ख्याल तक उनके जी स जाता रहा और गम की जगह खुशी ने अपना दखल जमा लिया मगर यह खुशी भी अजव ढग की थी। दुनिया में कई तरह की खुशी होती है और हर तरह की खुशी का रग ढग और भाव जुदा ही होता है। यह खुशी जो आज रनवीरसिह को हुई है निराले ही ढग की है, जिसके साथ कुछ तरदद्दुद का लेश भी लगा हुआ है। चिट्ठी पढने के थोड़ी देर वाद रनवीरसिह की आँखें सुर्ख हो गईं, वदन कॉपने और रोमॉच होने लगा, सॉस तेजी के साथ चलने लगी वेचैनी के साथ इधर उधर देखने लगे। मगर थोड़ी ही देर में रगत फिर वदली वहाँ से उठ खड़े हुए और वीरसेन से इतना कहते कहते खेमे के वाहर हुए– अव मै कल तुमसे मिलूँगा किसी जरूरी काम के लिए जाता हू !

वीरसेन खूव जानते थे कि रनवीरसिह को किस वात की खुशी है या किस वात पर क्रोध हुआ है वह किसका आदमी है जिसने इन्हें पत्र दिया और अव ये कहाँ जा रहे हैं इस लिये घोडा तैयार करके हाजिर करने क लिये हुक्म देकर वे खुद भी रनवीरसिह के साथ साथ खेमे के वाहर आ गये।

घोड़ा हाजिर किया गया रनवीरसिह सवार हुए, वह चिट्ठी लाने वाला भी अपने घोडे पर सवार हुआ जिसे वह खेमे के वाहर एक छोटे से पेड के साथ बाँध गया था। जगल ही जगल दानों पश्चिम की तरफ रवाना हुए।

ग्यारहवां बयान

सूर्य अस्त हो चुका था पर वह चन्दमा जो सूर्य अस्त होने के पहिले ही से आसमान पर दिखाई दे रहा था। अव खूव तेजी के साथ माहतावी रोशनी फैला कर रनवीरसिह को रास्ता दिखाने और चलने में मदद करने लगा और ये भी खुशी से फूले हुए उस सवार के साथ जाने लगे। कभी कभी कहते थे कि कदम वढ़ाये चलो जिसके जवाव में वह खत लान वाला सवार कहता था कि राह ठीक नही है और जैसे जैस हम लोग आग वढ़ेंगे रास्ता और भी खराव मिलता जायगा,

इसलिये धीरे ही धीरे चलना मुनासिव होगा। लाचार रनवीरसिह उसी के मन माफिक चलते थे, फिर भी अगर ये उस स्थान को जानते होते जहा जाने की हद्द से ज्यादे खुशी थी तो उस सवार की बात कभी न मानते और पत्थरों की ठोकर खाकर गिरने सिर फूटने या मरने तक का भी खौफ न करके जहा तक हो सकता तेजी के साथ चल कर अपने को वहाँ पहुचाते जहाँ के लिये रवाना हुए थे।

राह की खराबी के बारे में उस सवार का कहना झूठ न था। जैसे जैसे आगे बढते थे, रास्ता ऊँचा नीचा और पथरीला मिलता जाता था और यह भी मालूम होता था कि धीरे धीरे पहाड के ऊपर चढते जा रहे है, मगर यह चढ़ाई सीधी न थी, बहुत घूम फिर कर जाना पड रहा था।

आधी रात तक तो इन लोगों को चन्द्रमा की मनमानी रोशनी मिली जिसके सबब से चलने में बहुत तकलीफ न हुई, मगर अब चन्द्रमा भी अपने घर के दर्वाजे पर जा पहुचा और जगल बहुत घना मिलने लगा। जिसके सबब स चलने में बहुत तकलीफ होने लगी यहाँ तककि घोडे से उतरकर पैदल चलने की नौबत पहुची।

थोडी देर तक बडी तकलीफ के साथ अधेरे में चलने के बाद साथी सवार अटक गया। रनवीरसिह ने रुकने का सबब पूछा जिसके जवाब में उसने कहा 'हमलोग अपने ठिकाने के बहुत पास आ चुके है मगर अब अधेरे के सबब रास्ता बिल्कुल नहीं मालूम होता और यह जगल ऐसा भयानक और रास्ता ऐसा खराब है कि अगर जरा भी भूल कर इधर उधर टसके तो कोसों भटकना पड़ेगा!'

रनवीर–फिर क्या करना चाहिये?

सवार–देखिये मै अभी पता लगाता हू।

यह कह उस सवार ने अपनी कमर में से एक छोटी सी बिगुल निकाल कर बजाई और इधर उधर घूम घूम कर देखने लगा। थोड़ी ही देर बाद एक रोशनी दिखलाई पडी जिस देखते ही इसने फिर बिगुल फूँकी। अब वह रोशनी इन्हीं की तरफ आने लगी। धीरे धीरे यह मालूम हुआ कि एक आदमी हाथ में मशाल लिये चला आ रहा है। जब वह इनके पास आया तो रोशनी में इन दोनों की सूरत देख बोला, 'आइये, हमलोग बडी देर से राह देख रहे है।

यहाँ से फिर घोडे पर सवार हो मशाल की रोशनी में रवाने हुए। थोडी दूर जाकर एक खुले मैदान में पहुचे। रनबीरसिह खडे हो चारो तरफ देखने लगे मगर अँधेरे में कुछ मालूम नहुआ। हाँ, इतना जान पडा कि जँगल के बीच में यह एक छोटा सा मैदान है जिसमें दस पाच बड बडे दरख्तों के सिवाय छोटे छोटे जगली पेड बहुत कम है।

थोडी दूर और बढ कर पत्तों से बनी एक झोपडी नजर पड़ी जिसके चारो तरफ पत्तों ही की टट्टियों से घेरा किया हुआ था। टट्टी के बाहर चारो तरफ सैकडों ही आदमी मैदान में पडे थे तथा छोटी छोटी और भी कुटियाँ पत्तों की बनी इधर उधर नजर आ रही थी।

रनबीरसिह के पहुचते ही सब के सब उठ खडे हुए और कई आदम्यिों ने उनके सामने आकर अदब के साथ सलाम किया। एक ने सवार से कहा 'उधर चलिये, वहाँ सोने बैठने का सब सामान दुरुस्त है।

सवार के साथ रनवीरसिह दूसरी तरफ गये जहाँ साफ जमीन पर फर्श लगा हुआ था। घोड़ से उतर कर फर्श पर जा बैठे, खिदमत के लिये कई खितमतगार हाजिर हुए कोई पानी ले आया कोई पखा झलने और कोई पैर दबाने लगा।

इतने ही में एक लौडी आई और हाथ जोड रनवीरसिह से बोली, आपके आने की खबर सर्कार को मिल चुकी है। अब रात बहुत थोडी बाकी है इसी जगह दो घन्ट आराम कीजिये सुबह को मिलना मुनासिब होगा।' यह कह जवाब की राह न देख लौडी वहाँ से चली गई।

रनवीरसिह को भला नींद क्यों आने लगी थी! तरह तरह के खयाल दिमाग में पैदा होने लगे कभी तरद्दुद कभी रज कभी क्रोध और कभी खुशी इसी हालत में सोचते विचारते रात बीत गई सवेरा होते ही एक लौंडी पहुची और हाथ जोडकर बोली, "अगर तकलीफ न हो तो मेरे साथ चलिये!

रनबीरसिह तो यह चाहते ही थे, तुरन्त उठ खडे हुए और लौण्डी के साथ साथ उसी पत्तों वाले घेरे में गये जिसके अन्दर पत्तों ही की कुटी बनी हुई थी।

इस समय ऐसे जगल में पत्तों की इस कुटी को ही अच्छी से अच्छी इमारत समझना चाहिये जिसमें खास कर रनबीरसिह के लिये, क्योंकि इसी झोपड़ी में आज उन्हे एक ऐसी चीज मिलने वाली है जिससे बढ के दुनिया में वह कुछ भी नहीं समझते या ऐसा कहना ठीक हागा कि जिस चीज पर उनकी जिन्दगी का फैसला है। इसके मिलने ही से वह दुनिया में रहना पसन्द करते है, नहीं तो मौत ही उनके हिसाब से बेहतर है।

और वह चीज क्या है? महारानी कुसुमकुमारी!! जैसे ही रनवीरसिह उस घर के अन्दर जाकर झोपडी क पास पहुचे कि भीतर से महारानी कुसुमकुमारी उनकी तरफ आती दिखाई पड़ी।

अहा इस समय की छवि भी देखने ही लायक है !बदन में कोई जेवर न होने पर भी उनके हुस्न और नजाकत में किसी तरह का फर्क नहीं पडा था। सिर्फ सुफेद रंग की एक सादी साडी पहरे हुए थीं जिसके अन्दर से चम्पे का रंग लिये हुए गोरे बदन की आभा निकल रही थी सिर के बाल खुले हुए थे जिसमें से कई घूँघरवाली लटें गुलाबी गालों पर लहरा रही थीं काली काली भौंहें कमान की तरह खिंची हुई थीं जिनके नीचे की बडी बडी रतनार मस्त आँखें रनबीरसिंह की तरफ प्रेमबान चला रही थीं।

पाठक हम इनके हुस्न की तारीफ इस मौके पर नहीं किया चाहते क्योंकि यह कोई श्रृंगार का समय नहीं बल्कि एक वियोगिनी महारानी के ऐसे समय की छवि है जब कि खदेडा हुआ वियोग देखते देखते उनकी आँखों के सामने से भाग रहा है। आज मुद्दत से उन्होंने इस बात पर ध्यान भी नहीं दिया कि श्रृंगार क्या होता है या गहना जेवर किस चिडिया को कहते हैं सुख का नाम ही नाम सुनते हैं या असल में वह कुछ है भी। हाँ आज उनको मालूम होगा कि उस चीज का मिलना कैसा आनन्द देता है जिसके लिये वर्षों रो रो कर बिताया हो और जीते जी बदन को मिट्टी मान लिया हो।

यह महारानी कुसुमकुमारी वही हैं जिनकी मूरत अपनी मूरत के साथ पहिले पहल पहाड पर रनबीरसिंह ने देखी थी और निगाह पडते ही पागल हो गए थे या जिसे देखते ही जसवन्तसिंह की भी नीयत ऐसी खराब हो गई थी कि उसने बालसिंह से मिल कर रनबीरसिंह को मरवा ही डालना पसन्द किया था और यह वही महारानी कुसुमकुमारी है जिसके मरने की खबर सुन कर ही बालसिंह ने रनबीरसिंह औ जसवन्त को कैद से छुट्टी दे दी थी। उसी महारानी कुसुमकुमारी को जीती जागती और मिलने के लिये स्वयम् सामने आती हुई रनबीरसिंह देख रहे हैं क्या यह उनके लिये कम खुशी की बात है ?

रनबीरसिंह और कुसुमकुमारी की चार आँखें होते ही दोनों मिलने के लिये एक दूसरे की तरफ झपटे कुसुमकुमारी दौड कर रनबीरसिंह के पैरों पर गिर पडी और आँखों से गरम आँसू बहाने लगी। रनबीरसिंह जल्दी से उसी जगह घास पर बैठ गए और कुसुमकुमारी को दोनों बाजू पकड के उठाया।

हद दर्जे की बढी हुई खुशी भी कुछ करने नहीं देती। सिवाय इसके कि कुसुमकुमारी की दोनों कलाई पकड उसके मुह की तरफ देखते रहें रनबीर से और कुछ न बन पडा। इसी हालत में बैठे बैठे आध घण्टे से ज्याद दिन चढ आया और सूर्य की किरणों ने इनका चेहरा पसीने पसीने कर दिया।

चालाक और वफादार लौंडियाँ बहुत कुछ कह सुन कर इन दोनों को होश में लाई और उस पत्ते वाली झोपडी के अन्दर ले गई। इसके भीतर सुन्दर फर्श बिछा हुआ था जिसपर वे दोनों बैठे और धीरे धीरे बातचीत करने की नौबत पहुची।

रनबीर—मेरे लिये तुमको बहुत कष्ट उठाना पडा।

कुसुम—मुझे किसी बात की तकलीफ नहीं हुई हाँ इस बात का रंज जरूर है कि इसी कम्बख्त की बदौलत बालसिंह के कैद खाने में आपको दु ख भोगना पडा !

रनबीर—वहा मैं बडे आराम से रहा जो जो तकलीफें तुमने उठाई हैं उसका सोलहवाँ हिस्सा भी मुझे नहीं उठानी पडीं। हाय आज तुमको अपनी आँखों से इस जंगल मैदान में पत्तों की झोपडी बना तपस्विनी बन दिन भर की गर्मी और गर्म गर्म लू में शरीर सुखाते देखना पडा !

कुसुम—बस बस इस समय ये सब बातें अच्छी नहीं मालूम होतीं जो हुआ सो हुआ अब तो मेरे ऐसा भाग्यवान कोई है ही नहीं !(हँस कर) आपके दोस्त जसवन्तसिंह बहादुर कहाँ हैं ?

रनबीर—हाय हाय उस नालायक हरामजादे ने तो गजब ही किया था !बालेसिंह के घर से निकलते ही अगर तुम्हारी चिट्ठी मुझे न मिलती तो न मालूम अभी और क्या भोग भोगना पडता। तुम्हारे मरने की खबर सुन कर मैंने निश्चय कर लिया था किसी ऐसी जगह जाकर अपनी जान दे देनी चाहिये कि वर्षों सर पटकने पर भी किसी को मालूम न हो कि रनबीर कहाँ गया और क्या हुआ। ऐसे वक्त में तुम्हारी चिट्ठी ने दो काम किये एक तो मुझे मरते मरते बचा लिया दूसरे विश्वासघाती जसवन्त से जन्म भर के लिए छुट्टी दिलाई नहीं तो वह फिर भी मेरा दोस्त ही बना रहता। सच तो यह है कि मुझे उसकी दोस्ती का पूरा विश्वास था यहां तक कि बालेसिंह के कहने पर भी मेरा जी उसकी तरफ से नहीं हटा था।

इसके बाद रनबीरसिंह ने अपने बालेसिंह के हाथ में फँसने *जसवन्त का वहाँ पहुँचकर बालेसिंह से मेल करने की

---

*पहाड पर जब रनबीरसिंह कुसुमकुमारी की और अपनी मूरत देख कर पागल हो गए थे उसी समय पता लगा कर बालेसिंह ने धोखे में उन्हें गिरफ्तार करवा लिया था। पहाड से उतर कर पहिली मतबा गाँव में आते समय जो कई सवार जसवन्तसिंह को मिले थे वे बालेसिंह ही के नौकर थे यह ऊपर जनाया जा चुका है और पाठक भी समझ ही गए होंगे।

धुन लगाने वालेसिह का जसवन्त की वदनीयती का हाल कहने, जसवन्त के कैद होने, कुसुमकुमारी के पास चिट्ठी भेजने, और उनके मरने की खबर पाकर अपने छूटने का हाल पूरा पूरा कहा जिसे महारानी बड़े गौर के साथ सुनती रही।

कुसुम–अपने मरने की झूठी खवर उडाने के सिवाय वालेसिह की कैद स आपको छुड़ाने की कोई तर्कीव मुझे न सूझी और ईश्वर की कृपा से वह तर्कीव पूरी भी उतरी।

रनवीर–ओह !!

कुसुम–मै कई दिन पहिले ही वीमार वन कर वाग में चली गई थी। जो कुछ मेरा इरादा था वह सिवाय मेरे नेक दीवान के और कोई भी नही जानता था हॉ लौडियों को जरूर मालूम था। ऐसे वक्त में दीवान ने भी दिलाजान से कोशिश की और कई जासूसों के जरिये बरावर वालेसिह के यहा की खवर लेता रहा। यह भी मुझे मालूम हो गया था कि वालेसिह का आदमी आपके हाथ की चिठठी लेकर आया है, अस्तु उसी वक्त मैंने यह काम पूरा करने का मौका वेहतर समझा। (मुस्कुरा कर) शहर भर को विश्वास हो गया कि कुसुमकुमारी मर गई वेचारे दीवान को उस समय राजकाज सम्हालने में वडी ही मुश्किल हुई !

रनवीर–अव तुम्हें अपने घर लौट चलना चाहिये।

कुसुम–नहीं नहीं विना दुष्ट वालेसिह को फॅसाये मै घर न जाऊगी, और इसक लिये जो कुछ बन्दोवस्त किया गया है आप जानते ही होंगे।

रनवीर–हा मैं तो सव कुछ जानता हू। वह कुछ ऐसा ही मौका था कि धोखे में उसने मुझे फसा लिया सो भी तुम्हारे मिलने की खुशखवरी अगर वह मुझे न देता तो जरूर अपनी जान से हाथ धोता, पर अव मै उसे कुछ भी नहीं समझता उसका घमण्ड तोड भी चुका हू !

कुसुम–(मुस्कुरा कर) जी हॉ मै सुन चुकी हू–तो भी मै चाहती हू कि घर पहुँचने के पहिले वालेसिह पर कब्जा कर लूँ।

रनवीर–खैर अगर यही मर्जी है तो दा ही चार दिन में तुम्हारे इस हौसले को भी पूरा किय देता हू।

कुसुम–हाय उस कम्बख्त ने मेरे साथ जो कुछ सलूक किया जव मै याद करती हू कलेजा पानी हो जाता है !(ऑसू की वूँदें गिरा कर) हाय हाय अगर आज मेरे वाप या मॉ ही होती तो यह नौवत क्यों पहुचती ? (कुछ सोच कर) नहीं नही मुझे इसकी भी शिकायत नहीं है क्योंकि

रनवीर–(कुसुम का नर्म पजा अपने हाथों में लेकर)है यह क्या ? वस वस देखो तुम्हारी ऑसू की बूंदें मेरे दिल के साथ वह वर्ताव कर रही है जो वन्दूक से निकले हुए छर्रे गुलाव की डाल पर बैठी हुई वेचारी वुलवुल के साथ करते है !

कुसुम–(ऑसू पोंछ कर) नहीं नहीं ऐसा न कहो बल्कि यही कहो कि ईश्वर करे ये ऑसू की वूँदें वालेसिह के लिये प्रलय का समुद हों जिसमें उसकी उम्र की टूटी हुई किश्ती का कहीं पता भी न लग !

देर तक वातचीत होती रही। आज का दिन इन दानोंआशिक माशूकों के लिए कैसी खुशी का था इसे वही खूब समझ सकता है जिसे कभी ऐसा मौका पडा हो। जिसे जी प्यार करता हो, जिसके मिलने की उम्मीद में तनोबदन की सुध भुला दी हो जिसके मुकावले में दुनिया की कुल नियामतें तुच्छ मालूम होती हों, जिसके विना जिन्दगी दुश्वार हो गई हो वह अगर मिल जाय तो क्या खुशी का कुछ ठिकाना है? मगर दुनिया भी अजव वेढव जगह है यहॉ रह कर खुशी से दिन विताना किसी वडे ही जिन्दादिल का काम है नहीं तो ऐसा कौन है जिसे किसी न किसी बात की फिक्र न हो, किसी न किसी तरह का गम न हो किसी न किसी किस्म का दु ख न हो सच पूछिये तो सुख के मुकाबले में दु ख का पल्ला हरदम भारी ही रहता है अगर किसी को एक तरह की खुशी है तो जरूर दो तरह का रज भी होगा। यहॉ तो जिनका दिल मजवूत है, या जो दुनिया को सराय समझ कर अपना दिन विता रहे हैं वे ही मजे में है। और सभों को जाने दीजिये, आशिक माशूकों के लिए तो दु ख मानों बॉटे पडा है या यों कहिए उन्हीं के लिए बनाया ही गया है।

देखिये आधी रात का समय है चारो तरफ सन्नाटा है, निद्रादेवी ने निशाचर छोड सभी जानदारों पर अपना दखल जमा रक्खा हे और थोडी देर के लिए सभों के दिल से दु ख सुख का दौर हटा उन्हें वेहोश करके डाल दिया है। इस समय वही जाग रहा है जो चोरी की धुन में वा छप्पर कूद जाने या सीध लगाने की फिक में है या उसी की ऑखों में नींद नहीं है जो किसी माशूक के आने की उम्मीद में चारपाई पर लेटा लेटा दरवाजे की तरफ देख रहा है जरा खटका हुआ और दिल उछलने लगा कि वह आये जब किसी को न देखा एक लम्बी सॉस ली और समझ लिया कि यह सव हवा महारानी की शैतानी है। हा खूब याद आया इस समय उस वेदर्द की ऑखों में भी नींद नहीं है जो अपना दुश्मन समझ कर किसी बदिल बेचारे का नाहक ही खून करने का मौका ढूढ रहा है जरूर ऐसा ही है क्योंकि यहा भी ऐसा ही कुछ

उपद्रव हुआ चाहता है।

इन सभों के सिवाय रनवीरसिह और कुसुमकुमारी की मुहब्बत और लालच भरी ऑखों में अभी तक नींद का नाम निशान नहीं है। एक को देख दूसरा मस्त हो रहा है इस चॉदनी ने इन दोनों के चुटीले दिलों को और भी चरका दिया है हाथ में हाथ दिये झोपडी के बाहर मगर पत्तों की चारदीवारी के अन्दर टहल रहे है दीन दुनिया को भूले हुए हैं, इस बात का गुमान भी नहीं कि अभी थोडी ही देर में कोई बला ऐसी आने वाली है कि जिसके सबब से यह सब सुख सपने की सम्पत्ति हो जायगा और रोते रोते ऑखों को सुजाना पडेगा।

लीजिये अब अधेरा हुआ ही चाहता है। ये दोनों धीरे धीरे टहलते हुए पूरब तरफ की टट्टी तक पहुचे जहॉ कोने की तरफ सब्ज टट्टी की आड में सब्ज ही कपडा पहिरे मुह पर नकाब डाले एक आदमी छिपा खडा है। न मालूम कब टट्टी फॉद कर आ पहुँचा किस धुन में लगा है और इन दोनों की तरफ टकटकी बॉधे गजब भरी निगाहों से क्यों देख रहा है?

देखिये ये दोनों हद्द तक पहुँच गए और उस दुष्ट का मतलब भी पूरा हुआ। जैसे ही दोनों ने लौटने का इरादा किया कि वह हरामजादा इन पर टूट पडा और अपनी बिल्कुल ताकत खर्च करके पीछे से रनबीरसिह के सर पर ऐसी तलवार लगाई कि वह चक्कर खा जमीन पर गिर पडे। जब तक चौकी हुई कुसुमकुमारी फिर कर देखे तब तक तो वह टट्टी के पार हो गया और बाहर से "चोर चोर! धरो धरो!! की आवाज आने लगी।

बारहवां बयान

रनबीरसिह और जसवन्तसिह को छोड कर बालेसिह निश्चिन्त हो बैठा मगर महारानी कुसुमकुमारी के मरने का गम अभी तक उसके दिल पर बना ही हुआ है। कामकाज में उसका जी बिल्कुल नहीं लगता। इस समय भी दीवानखाने में अकला बैठा कुछ सोच रहा है तनोबदन की सुध कुछ भी नहीं है, उसे यह भी होश नहीं कि सुबह से बैठे शाम हो गई। किसी की मजाल भी न थी कि एसी हालत में उसे टोकता या याद दिलाता कि अभी तक आपने स्नान भी नहीं किया। ऐसे मौके पर किसी आने वाले के पैरों की चाप ने उसे चौंका दिया, सर उठा कर दर्वाजे की तरफ देखा तो जसवन्तसिह!

बाले–(गुस्से में आकर) तुझे यहॉ आने की इजाजत किसने दी? तू यहॉ क्यों आया? क्या किसी पहरे वाले ने तुझे नहीं रोका? क्या तुझे अपनी जान प्यारी नहीं है?

जस – मैं अपनी खुशी से यहॉ आया मुझे चोबदार ने रोका और यह भी कहा कि इस समय तुम्हारे आने की खबर तक नहीं का जा सकती।

बाले–फिर इतना बडा हौसला तैंने किस उम्मीद पर किया?

जस–इस उम्मीद पर कि आप बेइन्साफी कभी न करेंगे और मेरी जबान से भारी खुशखबरी सुन कर खुश होगें बल्कि इनाम देंगे।

बाले–(चौंक कर) खुशखबरी!!

जस–जी हाँ।

बाले–अब ऐसी कौन सी बात रह गई जिसे सुना कर तू मुझे खुश किया चाहता है?

जस–सिर्फ यही कि महारानी जीती जागती है और उसने तथा रनबीरसिह ने आपको पूरा धोखा दिया।

बाले–कभी नहीं! तू झूठा है! मेरा पुराना खानदानी नौकर मुझसे झूठ कभी नहीं बोल सकता जो अपनी आखों से वहा का सब हाल देख आया है!!

जस–पुराना और पुश्तैनी नौकर होने ही से उसके दिल में मालिक की मुहब्बत नहीं हो सकती, मैं आज ही साबित कर सकता हू कि वह दगाबाज और रिश्वती है और उसने कुसुमकुमारी से मिल कर आपको धोखा दिया। मै आपको यह भी विश्वास दिला सकता हू कि मै पहिले भी सच्चा था और अब भी सच्चा हू, आपकी मुहब्बत और आपके साथ रहने की ख्वाहिश मेरे दिल में है। मै उम्मीद करता हू कि मेरी कारगुजारी देख कर आप खुश होंगे और मुझे सच्चा खैरखाह समझ कर अपने साथ रक्खेंगे। यकीन कीजिये कि मेरे बराबर काम करने वाला आपके यहॉ कोई भी मुलाजिम अफसर या दोस्त नहीं होगा।

बाले–(ताज्जुब में आकर) क्या यह सब बातें तेरी सच्ची हैं जो बडी फरफराहट से तू कह गया है?

जस–बेशक मै सच कहता हू, आप चाहे और मेरे साथ चलने की तकलीफ उठावें तो आज ही अपनी सचाई का सबूत दे दू और दिखला दूँ कि आपकी जान लेने के लिये क्या क्या बन्दिशें की गई हैं जिनकी आपको खबर तक नहीं

और इस पर भी आप भरोसा करते हैं कि आपके नौकर खैरखाह है 'अगर आज मै आपकी मदद न करता तो अपने सर पर आई बला को कल आप किसी तरह नहीं रोक सकते और देखते देखते इस मजबूत इमारत का नाम निशान मिट जाता।

बाले–(कुछ घबडा कर) अगर तेरी बात सही है तो मै बेशक तेरे साथ चलूगा और अगर तू सच्चा निकला तो तुझे अपना दोस्त बल्कि भाई समझूँगा। मगर ताज्जुब इस बात का है कि जिस रनबीरसिह के यहॉ तैने परवरिश पाई उसी का दुश्मन क्यों बन बैठा !!

जस–आप सच समझिये कि अगर रनबीरसिह मुझे अपना दोस्त समझता या मानता तो मै उसके लिये अपनी जान तक देने से न चूकता लेकिन वह मेरे साथ बराबर बुराई करता रहा। मै नमक का खयाल करके तरह देता गया, मौका मिलने पर भी कभी उसकी जान का ग्राहक नहीं हुआ, पर आखिर जब वह मेरी जान ही लेने पर मुस्तैद हो बैठा तो मै क्या करूँ ? अपनी जान सभी को प्यारी होती है। वह बडा भारी बेईमान है। दूर न जाइये आपके यहॉ इतने आराम से कैद रहने पर भी उसने आपको ऐसा धोखा दिया कि आप जन्मभर याद रखियेगा।

जसवन्त की चलती फिरती और मतलब से भरी बातें बालेसिह के दिल पर असर कर गई और वह बड़े गौर में पड गया। वह जसवन्त को पूरा बेईमान और नमकहराम समझे हुए था मगर इस वक्त उसके फन्दें में फस गया और खूब सोच विचार कर उसने निश्चय कर लिया कि अगर जसवन्त इन सब बातों का सबूत दे देगा जो वह कह रहा है तो जरूर उसे नेक समझ कर खातिरदारी से बराबर अपने साथ रक्खेगा। वह जसवन्त के बारे में और भी बहुत कुछ सोचता और भले बुरे का विचार करता मगर उसकी इस आखिरी बात ने कि उसने (रनबीर ने) आपके यहॉ कैद रहने पर भी आपको ऐसा धोखा दिया कि जन्म भर याद रखियेगा' !उसे देर तक सोचने न दिया। उसने जल्दी से अपने फैले हुए खयालों को बटोरा और घबडा कर बोला–

आज मै जरूर तुम्हारे साथ चल कर तुम्हारी सचाई के बारे में निश्चय करूँगा आओ मेरे पास बैठो और कहो मर लिये उन लोगों ने क्या क्या तैयारियॉ की है ?'

जस–(पास बैठ कर) रनबीरसिह और कुसुमकुमारी ने आपकी तबाही का पूरा इन्तजाम कर लिया है और लडाई के लिये आपके खयाल से भी ज्यादे फौज ऐसी जगह इकट्ठी की है कि न आपको पता लगा है न लगेगा। जिस तरह आप निश्चित होकर बैठे है अगर यकायक वह फौज आप पर चढ आवे तो आप क्या करें!

बाले–(कुछ देर सोच कर) जसवन्तसिह, मै सच कहता हू कि अगर तुम इन सब बातों का सबूत दे दोगे तो तुमको अपने भाई से ज्यादा मानूगा और बेशक कहूगा कि तुमने मेरी जान बचाई फिर देखना कुसुमकुमारी और रनबीर की मैं क्या गत करता हू और उनके बने बनाये खेल को किस तरह मिट्टी करता हू। सरे बाजार दोनों को कुत्तों से नुचवा कर न मार डाला (मूछों पर ताव देकर) तो बालेसिह नाम नही !!

जस–थोडी ही देर में आप विश्वास करेंगे कि मै बहुत सच्चा और आपका दिली खैरखाह हू।

आज जसवन्त की बडी खातिर की गई। बालेसिह के दिल से रज और गम भी जाता रहा बल्कि उसे एक दूसरे ही तरह का जोश पैदा हुआ। बडी मुश्किल से दो घण्टे रात बिताने बाद उसने जसवन्त के साथ चलने की तैयारी कर ली। पहिले तो बालेसिह को खयाल हुआ कि कही ऐसा न हो कि जसवन्त धोखा दे और बेमौके ले जाकर कहीं अपना बदला ले मगर कई बातों को सोच और अपनी ताकत और चालाकी पर भरोसा कर उसे यह खयाल छोड देना पडा।

दोनों ने काले कपडे पहिरे, मुह पर काले कपडे की नकाब डाली, कमर में खजर और एक छोटा सा पिस्तौल रख चुपचाप पहर रात जाते जाते घर से बाहर निकल घोडों पर सवार हो जगल की तरफ चल पडे।

बालेसिह को साथ लिये जसवन्त उस जगल के पास पहुचा जहा महारानीकुसुमकुमारी की वह फौज तैयार और इकट्ठी की गई थी जिसका अफसर बीरसेन था और जहॉ से चिट्ठी पाकर कुसुमकुमारी से मिलने के लिये रनबीरसिह गये थे। दोनों घोडे एक पेड के साथ बॉध दिये गये और बालेसिह ने यहॉ से पैदल और अपने को बहुत छिपाते हुए जाकर उन बहुत बडे बडे फौजी खेमों को देखा जिनके चारो तरफ बडी मुस्तैदी के साथ पहरा पड रहा था।

बाले–(धीरे से) बस आगे जाने का मौका नहीं है, मै खूब जान गया कि यह कुसुमकुमारी के फौजी खेमे है क्यों देखो (हाथ से बता कर) मै उस आदमी को बखूबी पहिचानता हू जो उस बड़े खेमे के आगे चौकी पर बैठा निगहबानी कर रहा है जिसके आगे दो मशाल जल रहे हैं, और नगी तलवार लिये कई सिपाही भी इधर उधर घूम रहे है।

जस–अगर कुछ शक हो तो और अच्छी तरह देख लीजिये।

बाले–नही नही मै इस फौज से खूब वाकिफ हू !हकीकत में जसवन्तसिह (गले लगा कर) तुमने मेरे साथ बडी

नेकी की !बस अब जल्द यहाँ से चलो क्योंकि इसका बहुत कुछ बन्दोबस्त करना होगा। अब मै यह भी समझता हू कि महारानी जरूर जीती होंगी।

जस--एक बात तो मेरी ठीक निकली अब इसका भी सबूत दिये देता हू कि महारानी जीती है और उन्हीं के हुक्म से यह सब कार्रवाई की गई है सिर्फ दीवान के हुक्म से नहीं।

बाले--अब मुझे तुम्हारे ऊपर किसी तरह का शक नहीं है और बेशक तुम्हारी वह बात भी ठीक होगी। इस वक्त तो मुझे यम यही धुन है कि घर पहुचते ही पहले उस नमकहराम का सर अपने हाथ से काटूँ जिसने महारानी के मरने की झूठी खबर सुना कर मुझे तबाह करना चाहा था।

जस--हॉ जरूर उसे सजा मिलनी चाहिये जिसमें औरों को डर पैदा हो और आगे ऐसा काम करने का हौसला न पडे।

जसवन्त जानता था कि बालेसिह का आदमी बिल्कुल बेकसूर है, महारानी की चालाकी ने शहर भर को धोखे में डाला था उसकी कौन कहे उसने चाहा भी था कि उस बेचारे को बचा दे मगर इस समय उस हरामजादे ने यह सोच कर हा में हा मिला दी कि उसके मारे जाने ही स मेरा रोआब लोगों पर जम जायगा और मेरे नाम से सब कापने लगेंगे।

ये दोनों घोडों पर सवार हो घर की तरफ रवाना हुए मगर अपने अपने खयालों में ऐसा डूबे थे कि तनोबदन की सुध न थी वे बिल्कुल नहीं जानते थे कि किधर जा रहे हैं और घर का रास्ता कौन है कि एकाएक जगली सूखे पत्तों की खडखडाहट सुन दोनों चौंके और सर उठा कर सामने की तरफ देखने लगे।

दूर से बहुत से मशालों की राशनी दिखाई पडी जो इन्हीं की तरफ आ रही थी। ये दोनों एक झाडी की आड में हाकर देखने लगे। पास आने से मालूम हुआ कि बहुत से फौजी सिपाही दो पालकियों को घेरे हुए जा रहे हैं जिनके साथ साथ कई लौंडियॉ भी कदम बढाये चली जा रही हैं।

जब वे लाग दूर निकल गये दोनों आदमी झाडी से बाहर हुए। बालेसिह ने कहा 'जसवन्त, बेशक इसमें महारानी होंगी मगर मालूम नहीं दूसरी पालकी में कौन है ?

जस--मैं सोचता हू कि दूसरी पालकी में रनबीर होगा।

बाले--तुम्हारा ख्याल बहुत ठीक है मगर देखो हमलोग अपने अपने खयालों में ऐसा डूबे हुए थे कि रास्ता तक भूल गये चलो बाईं तरफ घूमो।

दोनों बाईं तरफ घूमे और तेजी से चल पडे।

तेरहवां बयान

पाठक इन दोनों को जाने दीजिये और आप जरा हमारे साथ चलिये, देखें इन पालकियों में कौन है और यह फौजी सिपाही कहॉ जा रहे हैं जिनके पैरों की आवाज ने बालेसिह को चौंका कर बता दिया था कि तुम लोग रास्ता भूले हुए किसी दूसरी ही तरफ जा रहे हों।

बालेसिह का खयाल बहुत ठीक है, बेशक ये महारानी कुसुमकुमारी के फौजी आदमी है जो दोनों पालकियों को घेरे जा रहे हैं और वे खास महारानी की लौंडिया हैं जो पालकी का पावा पकडे हुए कदम बढाये जा रही हैं। एक पालकी के अन्दर से सिसक सिसक कर रोने की आवाज आ रही है, बेशक इसमें कुसुमकुमारी हैं। हाय बेचारी पर कैसी मुसीबत आ पडी 'रनबीरसिह जख्मी होकर जा गिरे तो अभी तक होश नहीं आया, लाचार पालकी में रख कर अपने घर ले चली हैं। इस झुण्ड में कोई बेदर्द हत्यारा कैदी भी हथकडी बेडी से जकडा हुआ नजर नहीं आता जिससे मालूम होता है कि खूनी पकडा नहीं गया।

महारानी अपने किले में पहुँची और रनबीरसिह के इलाज के लिय कई वैद्य और हकीम मुकर्रर किये मगर पॉच दिन बीत जाने पर भी उन्होंने ऑखें नहीं खोलीं इस गम में कुसुमकुमारी ने भी एक दाना अन्न का अपने मुह में नहीं डाला। बेचारी बिल्कुल कमजोर हो गई है तिस पर भी उसने इरादा कर लिया है कि जब तक उसका प्यारा रनबीरसिह होश में आकर कुछ न खायगा तब तक वह भी उपवास ही करगी क्योंकि उन्हीं के सहारे अब इसकी जिन्दगी है। उसे तनोबदन की सुध नहीं हरदम रनबीरसिह के पास बैठी उनका मुँह दखा करती और हाथ उठा उठा कर ईश्वर से उनकी जिन्दगी मनाती रहती है।

कुसुमकुमारी रनबीरसिह के पास बैठी तलहथी पर गाल रक्खे कुछ सोच रही है ऑखों से ऑसू बराबर जारी है

थोडी थोडी देर पर लम्बी लम्बी सॉसें ले रही है, चारो तरफ लौडियॉ घेरे बैठी है, उसकी प्यारी सखिया भी पास बैठी उसका मुँह देख रही है मगर किसी का हौसला नही पडता कि उसे कुछ कहें या समझावे। यकाएक नक्कारे की आवाज ने उसे चौका दिया।

यह नक्कारे की आवाज कहाँ से आई ? क्या मेरी फौज किसी से लड़ने के लिए तैयार हुई है ? मगर मैंने तो अपनी फौज को ऐसा कोई हुक्म नहीं दिया ! क्या मेरा सेनापति बीरसेन फौज लेकर लौट आया ? लेकिन अगर लौट ही आया तो नक्कारे पर चोट देने की क्या जरूरत थी ? लो फिर आवाज आई !मगर वह आवाज बहुत दूर की मालूम होती है !!

इन सब बातों को सोचती हुई महारानी ने सिर उठाया और इधर उधर देखने लगी। इतने ही में एक लौडी बदहवास दौडी हुई आई और घबराहट की आवाज में डरती हुई बोली, "दीवान साहब यह खबर सुनाने के लिये हाजिर हुए है कि बालेसिह की फौज शहर के पास आ पहुँची जिसका मुखिया वही दुष्ट जसवन्त मुकर्रर किया गया है !"

यह खबर कुछ ऐसी न थी जिसके सुनने से बेचैनी न हो जिसमें बेचारी कुसुमकुमारी ऐ ी औरत के लिये !वह भी इस दशा में कि उसका प्यारा रनबीर जिसे जान से ज्यादे समझे हुए है उसकी आखों के सामने दुश्मन के हाथ से जख्मी होकर बेहोश पडा है और उसकी फौज एक दूसरे ही ठिकाने दूसरी फिक्र में डेरा डाले पडी है जो यहां से लगभग पन्द्रह कोस के होगा।

दीवान को बुलाकर सब हाल सुना मगर सिवाय इसके और कुछ न कह सकी कि जो मुनासिब समझो बन्दोबस्त करो, मै तो इस समय आप ही बदहवास हो रही हू, क्या राय दूँ ?

बेचारे नेकदिल दीवान ने जो कुछ हो सका बन्दोबस्त किया, मगर यह किसे उम्मीद थी कि यकायक बालेसिह फौज लेकर चढ आवेगा और खबर तक न होने पावेगी। इस छोटे से शहर के चारों तरफ बहुत मजबूत और ऊँची दीवार थी, जगह जगह मौके मौके पर लडने तथा गोली बल्कि ताप चलाने तक की जगह बनी हुई थी और बाहर चारों तरफ खाई भी बनी हुई थी जिसमें अच्छी तरह से जल भरा हुआ था मानों एक मजबूत किले के अन्दर यह शहर बसा हुआ हो। महारानी की कुछ ज्यादे फौज न थी मगर इस किले की मजबूती के सबब दुश्मनों की कलई जल्दी लगने नही पाती थी। कह सकते है कि अगर इस किले के अन्दर गल्ले की कमी न हो तो इसका फतह करना जरा टेढ़ी खीर है।

दीवान साहब ने एक जासूस के हाथ बीरसेन के पास चीठी भेजी जिसमें लिखा हुआ था—' रनबीरसिह के जख्मी होने से हम लोगों की बनी बनाई बात बिगड गई, इतने मेहनत और तरद्दुद से फौज का इकट्ठा करना बिल्कुल बेकार हो गया। यकायक चढाई करने के पहिले ही न मालूम किस दुष्ट ने बालेसिह को होशियार कर दिया और वह अपनी फौज लेकर इस किले पर चढ आया जिसकी कोई उम्मीद न थी। अब हम लोग किला बन्द करके जो कुछ थोड़े बहादुर यहाँ मौजूद है उन्हीं को सफीलों पर चढा कर दुश्मन की फौज पर गोला बरसाते है, जहा तक जल्द हो सके तुम फौज लेकर उस गुप्त राह से हमारे पास पहुचो। अफसोस हमें यकीन नहीं है कि यह चीठी तुम्हारे पास पहुच सकेगी क्योंकि जहाँ तक हम समझ सकते है पहर दो पहर के अन्दर ही बालेसिह इस किले को घेर लोगों की आमदरफ्त बन्द कर देगा। ईश्वर मदद करे और यह खत तुम्हारे पास पहुच जाय तो आज के तीसरे दिन सनीचर को उसी सुरग की राह से जिसका दर्वाजा आधी रात के समय खुला रहेगा तुम मेरे पास फौज लिये हुए पहुँच जाओ। रनबीरसिह अभी तक बेहोश पड़े है।"

इस चीठी को रवाना कर दीवान साहब ने किला बन्द करने का हुक्म दे दिया, शहरपनाह की दीवारों और बुर्जियों पर तोपें चढने लगी।

चौदहवां बयान

आधी रात का समय होने पर भी किले में सन्नाटा नहीं है। दीवान साहब मुस्तैदी के साथ सब इन्तजाम कर रहे हैं। कोई सलहखाने से हर्बे निकाल कर बॉट रहा है, कोई मेगजीन की दुरूस्ती में जी जान से लगा हुआ है, कोई तोपों के लिए बारूद की थैलियॉ भरवा रहा है, कोई बन्दूकों के लिये बारूद और गिन गिन कर गोलियॉ तक्सीम कर रहा है, किसी तरफ कडाबीन वालों को कडाबीन में भर कर चलाने के लिए गोरखपुरी पैसे तौल-तौल के दिए जा रहे है। एक तरफ गल्ले का बन्दोबस्त हो रहा है हजारों बोरे अन्न से भरे हुए भण्डार में जा रहे हैं, और दीवान साहब घूम घूम कर हर एक काम देख रहे है।

इधर तो यह धूमधाम मची है मगर उधर महल की तरफ सन्नाटा है सिवाय पहरा देने वाले सिपाहियों के और कोई दिखाई नहीं देता। महारानी के महल के पास ही दीवान साहब का मकान है जिसके दर्वाजे पर तो पहरा पड रहा है मगर पिछवाड़े की तरफ देखिये एक आदमी कमन्द लगा कर ऊपर चढ जाने की फिक्र में है। लीजिये वह छत पर पहुच भी

गया अब मालूम करना चाहिए कि यह कौन है जो इतना बड़ा हौसला करके राजदीवान के मकान पर चढ़ गया है नकाब की जगह मामूली एक कपड़ा मुंह पर डाले हुए है जिसे देखते हुए इतना कह सकते हैं कि चोर नहीं है।

यह आदमी छत पर होकर जब तक मकान के अन्दर जाय हम पहिले ही चलकर देखें कि इस मकान में कौन कौन जाग रहा है और कहाँ क्या हो रहा है।

ऊपर वाले खण्ड में एक सजा हुआ कमरा है जिसमें जाने के लिए पाँच दर्वाजे हैं उसके आगे पटा हुआ आठ दरका दालान है जिसके हर एक खंभो और महरावों पर मालती लता चढ़ी हुई है कुछ फूल भी खिले हुए हैं जिनकी भीनी भीनी खुशबू इस दालान और कमरे को मुअत्तर कर रही है। इस कमरे में यों तो बहुत सी बिल्लौरी होडियाँ और दीवारगीरें लगी हुई हैं मगर बिचले दवाजे के दोनों बगल वाली सिर्फ दो तिशाखी दीवारगीरों और गद्दी के पास वाले दो छोटे छोटे शमादानों में मोमबत्तियाँ जल रही हैं। ये दोनों बैठकी सुनहरे शमादान बिल्लौरी मृदगियों से ढके हुए थे जिनकी रोशनी उस खूबसूरत कमसिन नौजवान औरत के गुलाबी चेहरे पर बखूबी पड रही है जो गावतकिए के सहारे गद्दी पर बैठी हुई है और जिसके पास ही एक दूसरी हसीन औरत गद्दी का कोना दबाये बैठी उसके मुँह की तरफ देख रही है।

यह औरत बला की खूबसूरत थी इसके हर एक अंग मानों साँचे में ढले हुए थे। इसके गालों पर गुलाब के फूलों की सी रंगत थी। इसके ओंठ नाजुक और पतले थे मगर ऊँची साँस लेकर जब वह अपना निचला ओंठ दबाती तब इसके चेहरे की रंगत फौरन बदल जाती और गम के साथ ही गुस्से की निशानी पाई जाती। इसके नाजुक हाथों में स्याह चूड़ियाँ और हीरे के कड़े पड़े हुए थे उंगलियों में दो चार मानिक की अंगूठियाँ भी थीं जिनकी चमक कभी कभी बिजली की तरह उसके चेहरे पर घूम जाती थी। हुस्न और खूबसूरती के साथ ही चेहरे पर गजब और गुस्से की निशानी भी पाई जाती थी। इसके तेवरों से मालूम होता था कि यह जितनी हसीन है उतनी ही बेदर्द और जालिम भी है। तेवर बदलने के साथ ही जब कभी यह अपने ओंठों को न मालूम तौर पर हिलाती तो साफ मालूम हो जाता कि इसके दिल में खुटाई भी परले सिरे की भरी हुई है। मगर वो सब जो कुछ भी हो लेकिन देखने में इसकी छवि बहुत ही प्यारी मालूम होती थी।

थोड़ी देर तक सन्नाटा रहने के बाद उस औरत ने जिसका हुलिया ऊपर लिख आये हैं ऊँची साँस ले शमादान की तरफ देखते हुए कहा--

'बहिन मालती, तुम सच कहती हो। मैं खूब जानती हूं कि वीरसेन का दर्जा किसी तरह कम नहीं है, महारानी के फौज का सेनापति है उसकी वीरता किसी से छिपी नहीं है और मुझे भी बहुत चाहता है मगर क्या करूँ मेरा दिल तो दूसरे ही के फन्दे में जा फँसा है और अपने काबू में नहीं है।

मालती--ठीक है मगर तुम्हारे पिता ने तो वीरसेन के साथ तुम्हारा संबंध कर दिया है और सभों को यह बात मालूम भी हो गई है कि कालिन्दी की शादी बहुत जल्द वीरसेन के साथ होगी।

कालिन्दी--जो हो पर मुझे यह मंजूर नहीं है।

मालती--भला यह तो सोचो कि इस समय बेचारी महारानी पर कैसा संकट आ पड़ा है। तुम्हारे पिता दीवान साहब किस तरह महारानी के नमक का हक अदा कर रहे हैं और दुश्मन से जान बचाने की फिक्र में पड़े हैं। अफसोस कि तुम उनकी लड़की होकर दुश्मन ही से मुहब्बत किया चाहती हो!! खैर इसे जाने दो तुम खूब जानती हो कि जसवन्तसिंह महारानी पर आशिक है और उन्हीं के लिए इतना बखेड़ा मचा रहा है वह जानता भी नहीं कि तुम कौन हो, तुम्हारी सूरत तक कभी उसने नहीं देखी, फिर किस उम्मीद पर तुम ऐसा करने का हौसला रखती हो? उसे क्या पड़ी है जो तुमसे शादी करे।

कालिन्दी--वह झख मारेगा और मुझसे शादी करेगा।

मालती--(ओंठ बिचका कर) वाह, क्या अनोखा इश्क है!

कालिन्दी--बेशक जब वह मुझे देखेगा खुशामद करेगा।

मालती--शायद तुमने अपने को महारानी से भी ज्यादे खूबसूरत समझ रक्खा है!!

कालिन्दी--नहीं नहीं इस कहने से मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं महारानी से बढ़कर हसीन हूं।

मालती--तब दूसरा कौन मतलब है?

कालिन्दी--मैं उसे इस किले के फतह करने की तर्कीब बताऊंगी जिसमें सहज में उसका मतलब निकल जाय और लड़ाई दंगे की नौबत न आवे। क्या तब भी वह मुझसे राजी न होगा?

यह सुनते ही मालती का चेहरा जर्द हो गया और बदन के रोंगटे खड़े हो गए। उसकी आंखों में एक अजब तरह की चमक पैदा हुई। उसने सोचा कि यह कम्बख्त तो गजब किया चाहती है अब महारानी की कुशल नहीं। मगर बड़ी

मुश्किल से उसने अपने भाव को रोका और पूछा –

मालती–भला तुम उसकी क्या मदद करोगी और कैसे यह किला फतह करा दोगी ?

कालिन्दी–मैं खुद उसके पास जाऊँगी और अपने मतलब का वादा कराके समझा दूगी कि फलानी सुरग की राह से तुम इस किले में मय फौज के पहुच सकते हो क्योंकि मैं खूब जानती हू कि सनीचर के दिन उस सुरग का दर्वाजा बीरसेन के आने की उम्मीद में खुला रहेगा।

अब मालती अपने गम और गुस्से को सम्हाल न सकी और भौ सिकोड कर बोली—

'तब तो तुम इस राज्य ही को गारत किया चाहती हो !'

कालिन्दी–मेरी बला से राज्य रहे या जाय।

मालती–क्या महारानी पर तुम्हें रहम नहीं आता ?

महारानी भी तो एक गैर के लिये जान दे रही है !फिर मैं अपने दोस्त की मदद करूँ तो क्या हर्ज है ?

मालती–महारानी ने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे किसी को दु ख हो, लेकिन तुम्हारी करतूत से तो हजारों घर चौपट होंगे, सो भी एक ऐसे आदमी के लिये जिससे किसी तरह की उम्मीद नहीं।

कालिन्दी–तुम्हें चाहे उम्मीद न हो पर मुझे तो बहुत कुछ उम्मीद है। मैं सोचे हुए थी कि तुम मेरी मदद करोगी मगर हाय, तुम तो पूरी दुश्मन निकलीं।

मालती–और तुम इस राज्य भर के लिये काल हो गई !

कालिन्दी–क्या सचमुच तुम मेरा साथ न दोगी ?

मालती–कभी नहीं जब तुम्हारी बुद्धि यहाँतक भ्रष्ट हो गई है तो साथ देना कैसा, मैं इस भेद को खोल कर इस आफत से महारानी को बचाऊँगी ?

कालिन्दी–आह लडकपन से तुम मेरे साथ रहती आई, जो जो मैंने कहा तुमने माना, आज मुझे इस दशा में छोड अलग हुआ चाहती हो ? क्या तुम कसम खाकर कहती हो कि मेरी मदद न करोगी ?

मालती–हाँ हाँ मैं कसम खाकर कहती हू कि तुम्हारी खातिर महारानी की जान पर आफत न लाऊगी, तुम मुझसे किसी तरह की उम्मीद मत रक्खो। मैं फिर भी कहे देती हू कि इस काम में तुम्हें कभी खुशी न होगी, पीछे हाथ मल मल के पछताओगी और कुछ करते धरते न बन पड़ेगा। अफसोस, तुम दीवान सुमेरसिह की इज्जत मिटटी में मिला कर क्षत्री कुल की कलक बना चाहती हो, तुम्हारे तो मुह देखने का पाप है, सिवाय

बेचारी मालती कुछ और कहा चाहती थी मगर मौका न मिला। बाघिन की तरह उछल कर कालिन्दी उसकी छाती पर चढ बैठी और कमर से खजर निकाल, जो शायद इसी काम के लिये पहिले से रख छोड़ा था, यह कह कर उसके कलेजे के पार कर दिया कि—'देखें तुम मेरा भेद क्योंकर खोलती हो !'

हाय, बेचारी नेक महारानी की खैरखाह और नमकहलाल मालती ने दो ही चार दफा हाथ पॉव पटक हमेशे के लिये इस बदकार नमकहराम कालिन्दी का साथ छोड दिया और किसी दूसरी ही दुनिया में जा बसी। मगर उसी समय बाहर दालान के एक कोने से यह आवाज आई ऐ कालिन्दी !खूब याद रखियो कि तेरी यह शैतानी छिपी न रहेगी, जो कुछ तैंने सोचा है कभी वह काम पूरा न होगा और बहुत जल्द तुझे इस बदकारी की सजा मिलेगी !'

इस आवाज ने कालिन्दी की अजब हालत कर दी और वह एकदम घबरा कर चारो तरफ देखने लगी मगर थोड़ी ही देर में उसकी दशा बदली और वह खून से भरा खजर मालती के कलेजे से निकाल हाथ में ले कमरे से बाहर निकली और भूखी राक्षसी की तरह इधर उधर घूम घूम कर देखने लगी जिसमें उस आदमी का भी काम तमाम करे जिसने उसकी कार्रवाई देख सुन ली है, मगर उस ने मकान भर में किसी जानदार की सूरत न देखी। कई दफे ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर गई मगर कुछ पता न लगा तब खडी होकर सोचने लगी। इसी बीच में कई दफे उसकी सूरत ने पलटा खाया जिससे मालूम होता था वह डर और तरददुद में पडी हुई है, मगर यकायक वह ठमक पड़ी और तब चौंक कर आप ही आप बोली 'ओफ !मुझे डर किस बात का है ? अगर किसी ने मेरी कार्रवाई देख ही ली तो क्या हुआ ? अब मुझे यहाँ रहना थोडे ही है। हाँ अब जल्दी करनी चाहिये, बहुत जल्दी करनी चाहिये !'

कालिन्दी तेजी के साथ एक दूसरी कोठरी में घुस गई जिसमें उसके पहिरने के कपड़े रहते थे और थोड़ी ही देर बाद मर्दानी पोशाक पहिरे हुए बाहर निकली नकाब की जगह रेशमी रूमाल मुँह पर बॉधे हुए थी जिसमें देखने के लिए ऑख के सामने दो छेद किए हुए थे कमर में खजर खोंसे और हाथ में कमन्द लिए वह छत पर चढ़ गई और उसी के सहारे बेधडक पिछवाडे की तरफ उतर एक तरफ को रवाना हुई।

यह मकान बैठक की तौर पर सजसजाकर कालिन्दी को रहने के लिए दिया गया था। इसके साथ ही सटा हुआ

एक दूसरा आलीशान मकान था जिसमें कालिन्दी की माँ और लौंडियाँ वगैरह रहा करती थी। कालिन्दी बहुत ही टेढी और जल्दी रज हो जाने वाली औरत थी इसलिये उसके डर से बिना बुलाये कोई उसके पास न जाता और घण्टे दो घण्टे या जब तक जी चाहता वह अकेलीही इस बैठके में रहा करती थी।

कालिन्दी शहरपनाह के फाटक पर पहुँची जहाँ कई सिपाही संगीन लिये पहरा दे रहे थे। उसने पहुँचते ही जल्द फाटक की खिडकी खोलने के लिए कहा।

एक सिपाही–तुम कौन हो ?

कालिन्दी–मेरा नाम रामभरोस है दीवान साहब का खास खिदमतगार हू, उनकी चिट्ठी लेकर बीरसेन के पास जा रहा हू, क्योंकि बहुत जल्द उन्हें बुला लाने का हुक्म हुआ है।

सिपाही–तुमने अपनी सूरत क्यों छिपाई हुई है ?

कालिन्दी–इसलिये कि शायद कोई दुश्मन का आदमी मिल जाय तो पहिचान न सके। मगर मुझे देर हो रही है जल्द फाटक खोलो दमभर भी कहीं रुकने का हुक्म नहीं और यह मौका भी ऐसा ही है।

पहरेवाले सिपाही ने यह सोच कर कि अन्दर से बाहर किसी को जाने देने में कोई हर्ज नहीं है, हमारा काम यही है कि कोई गैर आदमी बाहर से किले के अन्दर आने न पावे। खिडकी खोल दी और कालन्दिी खुशी खुशी बाहर हो गई।

बालेसिह का लश्कर यहाँ से लगभग डेढ कोस की दूरी पर था। घण्टेभर में यह रास्ता कालिन्दी ने तै किया मगर फौज के पास पहुँचते ही रोकी गई। पहरे वालों के पूछने पर उसने जवाब दिया 'महारानी कुसुमकुमारी की चिट्ठी लेकर जसवन्तसिह के पास आया हू, मुनासिब है कि तुममे से एक आदमी मेरे साथ चलो और मुझे उनके पास पहुँचा दो।'

बालेसिह के यहाँ आज जसवन्तसिह की बडी कदर और इज्जत है। फौज का सेनापति होने के सिवाय बालेसिह उसे जी जान से मानता है क्योंकि अगर महारानी कुसुमकुमारी की फौज का पता बालेसिह को वह न देता तो बेशक बाले सिह की किस्मत फूट ही चुकी थी। एक तो रनबीरसिह के जख्मी होने से दूसरे जसवन्तसिह के होशियार कर देने से बालेसिह की जान बच गई। इससे भी बढ कर जसवन्तसिह ने और एक काम किया था जिससे बालेसिह बहुत ही खुश है और उसे अपनी जान के बराबर मानता है। इस जगह पर यह कहने की कोई जरूरत नहीं नजर आती कि जसवन्त ने वह कौन सा लासानी काम करके बालेसिह को मुट्ठी में कर लिया है क्योंकि आगे मौके पर यह बात छिपी न रहेगी।

जसवन्तसिह का समय देखके बालेसिह के कुल मुलाजिम फौज और अफसर इसका हुक्म मानते हैं। समझते हैं कि यह जिससे रंज होगा उसके सिर पर आफत आएगी और वह उसी तरह तोप के आगे रख कर उडा दिया जायगा जिस तरह वह जासूस उडा दिया गया था जिसने महारानी कुसुमकुमारी के मरने की खबर बालेसिह को पहुँचाई थी। अस्तु जसवन्तसिह का नाम सुनते ही एक सिपाही कालिन्दी के साथ हुआ और उसे जसवन्तसिह के पास पहुचा कर अपने ठिकाने चला आया।

आसमान पर सफेदी आ रही थी और बुझती हुई चिनगारियों की तरह दस बीस लुपलुपाते हुए तारे दिखाई दे रहे थे जब कालिन्दी जसवन्तसिह के खेमे के पास पहुँची। पहरेवालों से जाना गया कि वह अभी सो रहा है। साफ सवेरा हो जाने से मालूम हो जायगा कि यह औरत है इसलिये कालिन्दी ने उसी वक्त खेमे के अन्दर जाने का इरादा किया मगर हुक्म के खिलाफ समझ कर पहरे वालों ने ऐसा करने से रोक दिया।

कालिन्दी–अच्छा तुम अभी जाकर खबर करो कि महारानी का भेजा हुआ एक आदमी आया है।

एक सिपाही–सर्कार अभी सो रहे है, किसकी मजाल है जो उन्हें जाकर उठावे।

कालिन्दी–लडाई के वक्त सफर में कोई फौजीबहादुर ऐसा हुक्म जारी नहीं कर सकता, ऐसे मौके पर आराम को चाहने वाला कभी फायदा नहीं उठावेगा फौज इस वक्त दुश्मन के मुकाबले में पड़ी हुई है। मुझे विश्वास नहीं होता कि जसवन्तसिह ने काम पडने पर भी नींद से जगाने की मनाही कर दी हो।

पहरे वाला–तुम्हारा कहना ठीक है, ऐसा हुक्म तो नहीं दिया गया है, मगर.

कालिन्दी–मगर तगर की कोई जरूरत नहीं, तुम अभी जाकर जगाओ नहीं तो मैं तुरन्त लौट जाऊँगा और इसका नतीजा तुम लोगों के हक में बहुत बुरा होगा।

लाचार पहरेवालों ने खेमे के अन्दर पैर रक्खा, आहट पाते ही जसवन्तसिह की आँख खुल गई और पहरे वाले सिपाही को अन्दर आते देख बोला—

जसवन्त–क्यों क्या है ?

पहरे वाला–हुजूर एक आदमी [illegible] है कि महारानी का सन्देशा लाया हू, अगर फौरन खबर न करोगे

तो मैं वापस चला जाऊगा।

जस–(ताज्जुब से) महारानी कुसुमकुमारी का सन्देशा लाया है 'ठीक है मालूम होता है रनबीर चल बसा, तभी राह पर आई है अच्छा उसे हाजिर करो।

कालिन्दी खेमे के अन्दर पहुचाई गई उसे देखते ही जसवन्त उठ बैठा और उसने जल्दी में पहिली बात यही पूछी, "कहो रनबीरसिह की क्या खबर है ? महारानी का अब क्या इरादा है ?"

कालिन्दी–रनबीरसिह अभी तक बेहोश पडे हैं, मगर हकीमों के कहने से मालूम होता है कि दो एक दिन में होश में आ जायगे, मेरे हाथ महारानी ने कोई सन्देशा नहीं भेजा है, मैं उनसे लडकर यहाँ आया हू, आप मेरी खातिर करेंगे तो दो ही दिन में यह किला फतह करा दूगा, इस तरह आप साल भर में भी इसे फतह नहीं कर सकते। महारानी के यहाँ मेरा उतना ही अख्तियार है जितना बालेसिह के यहाँ आपका।

इतना कह अपने मुह से नकाब हटा चारपाई के पास जा खडी हुई, उसकी बातों का जवाब जसवन्त क्या देगा इसका कुछ भी इन्तजार न किया।

कालिन्दी की बातों ने जसवन्त को उलझन में डाल दिया मगर जब मुह खोल कर पास जा खडी हुई तो उसकी हालत बिल्कुल बदल गई और उसके दिमाग में किसी दूसरे ही ख्याल ने डेरा जमाया।

कम्बख्त कालिन्दी गजब की खूबसूरत थी, उसको देखते ही अच्छे अच्छे ईमानदारों के ईमान में फर्क पड जाता था, बेईमान जसवन्त की क्या हकीकत थी कि उसके लासानी हुस्न को देखे और चुप रह जाय। फौरन उठ खडा हुआ, हाथ पकड के अपने पास चारपाई पर बैठा लिया, और शमादान की रोशनी में जा इस वक्त खेमे के अन्दर जल रहा था उसकी सूरत देखने लगा। कालिन्दी के मन की भई, ईश्वर ने बेईमानों की अच्छी जोडी मिलाई दोनों को एक दूसरे के देखने से सन्तोष नहीं होता था, मगर इसी समय किसी ने खेमे के दर्वाजे पर ताली बजाई क्योंकि जब दो आदमी खेमे के अन्दर बैठे बातें कर रहे हों तो ऐसे वक्त में किसी सिपाही या गैर की बिना इत्तला अन्दर जाने की मजाल न थी।

कालिन्दी उसके पास पलग पर बैठी हुई थी ऐसे मौके पर वह कब किसी दूसरे को अन्दर आने देता 'खुद उठ कर बाहर गया और देखा कि कई सिपाही एक आदमी की मुश्कें बाँधे खडे हैं।

जसवन्त–यह कौन है ?

एक सिपाही–यह महारानी का जासूस है कहीं जा रहा था कि हमलोगों ने गिरफ्तार कर लिया।

जसवन्त– किस वक्त और कहाँ पकडा गया ?

एक सिपाही–यहाँ से पाँच कोस की दूरी पर कुछ दिन रहते ही यह गिरफ्तार हुआ था यहाँ आते आते बहुत रात हो गई। हुजूर आराम करने चले गए थे इसलिये इत्तिला न कर सके, अब सवेरा हाने पर हाजिर किया है।

जसवन्त–इसकी तलाशी ली गई या नहीं ?

एक सिपाही–जी हाँ तलाशी ली गई थी, एक चिट्ठी इसके पास से निकली और कुछ नहीं।

जसवन्त–वह चिट्ठी कहाँ है, लाओ !

सिपाही ने वह चिट्ठी जसवन्त के हाथ मे दी जिसे पढ कर वह बहुत ही खुश हुआ। पाठक समझ ही गए होंगे कि यह चिठ्ठी वही थी जो दीवान साहब ने बीरसेन के पास भेजी थी और जिसमें लिखा था कि —'शनीचर के दिन मय फौज के सुरग की राह तुम किले के अन्दर चले आना, दर्वाजा खुला रहेगा।'

'वह सुरग कहा पर है इसका हाल वह औरत (कालिन्दी) जो अभी आई है जानती होगी और वह जरूर मुझसे कह देगी अब इस किले का फतह करना कोई बडी बात नहीं है ! यह सोचता हुआ जसवन्त फिर खेमे के अन्दर चला गया।

पन्द्रहवां बयान

महारानी कुसुमकुमारी के लिये आज का दिन बडी खुशी का है क्योंकि रनबीरसिह की तबीयत आज कुछ अच्छी है। वह महारानी के कोमल हाथों की मदद से उठकर तकिए के सहारे बैठे हैं और धीरे धीरे बातें कर रहे हैं। हकीमों ने उम्मीद दिलाई कि दो ही चार दिन में इनका जख्म भर जायगा और ये चलने फिरने लायक हो जायेंगे।

घण्टे भर से ज्यादे दिन न चढा होगा। रनबीरसिह और कुसुमकुमारी बैठे बातें कर रहे थे कि एक लौंडी बदहवास दौडी हुई आई और बोली–

लौंडी–कालिन्दी के खास कमरे में मालती की लाश पडी हुई है और कालिन्दी का कहीं पता नहीं है।

कुसुम– है ! मालती की लाश पडी हुई है !! उसे किसने मारा ?

लौंडी–न मालूम किसने मारा ! कलेजे में जख्म लगा हुआ है खून से तर बतर हो रही है !!

कुसुम–और कालिन्दी का पता नहीं !!

लौंडी–तमाम घर ढूढ डाला लेकिन

रनवीर–शायद कोई ऐसा दुश्मन आ पहुचा जो मालती को मार डालने बाद कालिन्दी को ले भागा।

कुसुम–इधर कई दिनों से कालिन्दी उदास और किसी सोच में मालूम पडती थी इससे मुझे उसी पर कुछ शक पडता है।

रनवीर — अगर एसा है ता मैं भी कालिन्दी ही पर शुबहा करता हू।

कुसुम–हाय बेचारी मालती !!

कुसुमकुमारी जी जान से मालती को प्यार करती थीं उसके मरने का उसे बडा ही गम हुआ साथ ही इस तरद्दुद ने भी उसका दिमाग परेशान कर दिया कि कालिन्दी कहाँ गायब हो गई और उसके सोच में उसके माँ बाप की क्या दशा होगी।

कुसुम ने रनवीरसिह की तरफ देखकर कहा सब से ज्यादे फिक्र तो मुझे बीरसेन की है। उसको कालिन्दी से बहुत ही मुहब्बत थी बल्कि थोडे ही दिनों में उन दोनों की शादी होने वाली थी। अब वह यह हाल सुन कर कितना दु खी होगा ? एक तो मैं उसे अपने छोटे भाई की तरह मानती हू, दूसरे इस समय ज्यादे भरोसा बीरसेन ही का है। तुम्हारी यह दशा है ईश्वर ने जान बचाई यही बहुत है मै औरत ठहरी दीवान साहब बेचारे लडने भिडने का काम क्या जानें सो उन्हें भी आज लडकी का ध्यान बेचैन किए होगा सिवाय बीरसेन के बालेसिह का मुकाबला करने वाला आज कोई नहीं है ! हाय, सत्यानाशी मुहब्बत आज उस भी बेकाम करके डाल देगी देखें कालिन्दी के गम में उसकी क्या दशा होती है !

रनबीर–क्या बालेसिह के चढ आने की कोई खबर मिली है ?

कुसुम–खबर क्या उसकी फौज इस किले के मुकाबले में आ पडी है जिसका सेनापति आपका दोस्त (मुस्कुरा कर)जसवन्तसिह बनाया गया है।

रनबीर–क्या यहाँ तक नौबत पहुच गई !!

कुसुम–जी हॉ लाचार होकर दीवान साहब ने किला बन्द करने का हुक्म दे दिया है और सफीलों पर से लडाई करने की तैयारी कर रहे हैं शायद बीरसेन का भी बुलवा भेजा है।

रनबीर–(कुछ सोच कर) खैर क्या हर्ज है दरियाफ्त करो कोई बीरसेन के पास गया है या नहीं वह आ जाय तो मैं खुद मैदान में निकल कर देखता हू कि बालेसिह किस हौसले का आदमी है और जसवन्त मेरा मुकाबला किस तरह करता है।

कुसुम–क्या ऐसी हालत में तुम लडाई पर जाओगे ?

रनबीर–क्या चिन्ता है ?

कुसुम–तुममें तो उठ कर बैठने की भी ताकत नहीं है !

रनबीर–ताकत तभी तक नहीं है जब तक गद्दी और तकिये के सहारे बैठा हू जिस वक्त जेई और खौद पहिन कर हर्बे बदन पर लगाऊँगा और नेजा हाथ में लेकर मैदान में निकलूँगा उस वक्त देखूँगा कि ताकत क्योंकर नहीं आती। क्षत्रियों के लिए लडाई का नाम ही ताकत और हौसला बढाने वाला मन्त्र है !

कुसुम–(हाथ जोडकर और ऊपर की तरफ देख कर दिल में) हे ईश्वर तू धन्य है ! मुझ पर क्या कम कृपा की कि ऐसे बहादुर के हाथ में मेरी किस्मत सौंपी !

रनबीर–(एक लौंडी से) जाकर पूछ तो बीरसेन के पास कोई गया है या नहीं ?

हुक्म पाते ही लौंडी बाहर गई मगर तुरन्त ही लौट आकर बोली "बीरसेन आ पहुचे बाहर खडे हैं ?

रनबीर–मालूम होता है यहाँ से सन्देसा जाने के पहिले ही बीरसेन इस तरफ रवाना हो चुके थे।

कुसुम–यही बात है, नहीं तो आज ही कैसे पहुच जाते ? आज तक तो मैं उसे अपने सामने बुलाकर बातचीत करती थी क्योंकि मैं उसे भाई के समान मानती हू मगर अब जैसी मर्जी !

रनबीर–(हँस कर) तो क्या आज कोई नई बात पैदा हुई ? या भाई का नाता धोखें में टूट गया !

कुसुम–(शर्मा कर) जी मेरा भाई आप सा धर्मात्मा नहीं है।

रनबीर–ठीक है, तुम्हारे सग पापी हो गया !

कुसुम–वस माफ कीजिए इस समय दिल्लगी अच्छी नहीं मालूम होती मैं आप ही दु खी हो रही हू, ऐसा ही है तो लो जाती हू !

रनबीर–(ऑचल थाम कर) वाह क्या जाना है खैर अव न वोलेंगे (लौडी की तरफ देख कर) वीरसन को यहॉ वुला ला।

वीरसेन आ मौजूद हुए और रनवीरसिह और कुसुमकुमारी को सलाम कर के वैठ गए। इस समय वीरसेन का चेहरा प्रफुल्लित मालूम होता था जिससे महारानी कुसुमकुमारी को वहुत ताज्जुव हुआ क्योंकि वह सोचे हुए थी कि जव वीरसेन यहॉ आयेगा कालिन्दी की खवर सुन कर जरूर उदास होगा मगर इसके खिलाफ दूसरा ही मामला नजर आता था। आखिर महारानी से न रहा गया वीरसेन से पूछा—

कुसुम–आज तुम वहुत खुश मालूम होते हो !!

वीर–जी हॉ आज मैं वहुत ही प्रसन्न हू, अगर वेचारी मालती के मरन की खवर न सुनता तो मेरी खुशी का कुछ ठिकाना न हाता।

रनवीर–मालती का मरना और कालिन्दी का गायव होना दानों ही वातें बढव हुई।

वीर–कालिन्दी का गायव होना तो हमलोगों के हक में वहुत ही अच्छा हुआ।

कुसुम–सो क्या ? मैं तो कुछ और ही समझती थी ! मुझे तो विश्वास था कि तुम

वीर–जी नहीं जो था सो था अव तो कुछ नहीं है इस समय तो हॅसी राके नहीं रुकती। हॉ दीवान साहव को चाहे जितना रज हो उन्हें मैं कुछ नहीं कह सकता।

कुसुम–अव इन पहेलियों से तो उलझन होती है साफ साफ कहा क्या मामला है ?

वीरसेन इधर उधर देखने लगे, जिसका सवव रनवीरसिह समझ गए और सव लौडियों का वहॉ से हट जाने का हुक्म दिया। हुक्म के साथ ही सन्नाटा हो गया सिवाय रनवीरसिह कुसुमकुमारी और वीरसेन के वहॉ कोई न रहा तव वीरसेन न कहना शुरू किया—

'अगर कल मुझे कालिन्दी का हाल मालूम हाता तो आज मैं आपसे न मिलता क्योंकि मैं छिप कर सिर्फ यह जानने के लिये यहॉ आया था कि (रनवीरसिह की तरफ देख कर) आपकी तवीयत अव कैसी है ? यहॉ पहुचने पर मालूम हुआ कि अव आप अच्छे हैं। मैं यहॉ पहुच चुका था जव दीवान साहव ने मेरे पास तलवी की चीठी भजी थी। कालिन्दी की लौडी से जो मेरे पास जाया करती थी और जिसको वहुत कुछ देता लेता रहता भी था कालिन्दी का हाल पूछा तो मालूम हुआ कि आज कल न मालूम किस धुन में रहती है दिन रात सोचा करती है कुछ पता नहीं लगता कि क्या मामला है। यह सुन कर मुझे कुछ शक मालूम हुआ। रात को जव दीवान साहव इन्तजाम में फॅसे हुए थे और चारो तरफ सन्नाटा था मैं कमन्द लगाकर कालिन्दी के वैठके में जा पहुचा। उस समय कालिन्दी और मालती आपस में कुछ वातें कर रही थीं मैं छिप कर सुनने लगा।

'देर तक दोनों में वातें होती रहीं जिससे मालूम हुआ कि कालिन्दी दुष्ट जसवन्तसिह पर आशिक हो गई है और उसके पास जाया चाहती है मालती ने उसे वहुत समझाया और कहा कि जसवन्त को क्या पडी है जो अपनी धुन छोड तेरी खातिर करेगा मगर कालिन्दी ने कहा कि मैं उसकी मदद करुगी और यह किला फतह करा दूॅगी तव तो मेरी खातिरदारी करेगा। मैं उस सुरग का हाल उसे वता दूॅगी जो इस किले में आने या यहॉ से जाने के लिय वनी हुई है क्योंकि मैं जानती हू कि सनीचर के दिन वीरसेन अपनी फौज लेकर उसी सुरग की राह इस किले में आवेंगे और उनके आने की उम्मीद में उसका दर्वाजा खुला रहेगा। यह सुन मालती वहुत रज हुई और कालिन्दी को समझाने वुझाने लगी पर जव अपने समझाने का कोई अच्छा नतीजा न देखा तव मालती ने चिढ कर कहाकि 'मैं तेरा भेद खाल दूॅगी वस फिर क्या था ! मालती को अपने अनुकूल न देख कालिन्दी झपट कर उसकी छाती पर चढ वैठी और यह कहती हुई कि देखू, तू मेरा भेद कैसे खोलती है कमर से खजर निकाल उसके कलेजे के पार कर दिया। मैं उसी समय यह आवाज देता हुआ वहॉ से चल पडा कि ऐ कालिन्दी तेरा भेद छिपा न रहेगा और तुझे इसकी सजा जरूर मिलेगी' !

'मेरी वात सुन कर कालिन्दी वहुत घवराई और इधर उधर मेरी तलाश करने लगी पर मैं वहा कहॉ था ! आखिर उसने मर्दानी पौशाक पहिरी मुह पर नकाव डाला, और कमन्द लगा अपने मकान से पिछवाडे की तरफ उतर पडी तथा वालेसिह की तरफ चली गई। मैंने भी कुछ टोकटाक न की और उसे वहॉ से वेखटके चले जाने दिया।

वीरसेन की जुवानी यह हाल सुन रनवीरसिह तो कुछ सोचने लगे मगर महारानी कुसुमकुमारी की विचित्र हालत हो गई। रनवीरसिह ने वहुत कुछ समझा बुझाकर उसे ठढा किया।

कुसुम–(वीरसेन से) तुमने उसे जाने क्यों दिया ! रोक रखना था, फिर मैं उससे समझ लेती !

रनबीर–नहीं नहीं इन्होंने उसे जाने दिया सो बहुत अच्छा किया नहीं तो इन्हीं को झूठा बनाती और अपने ऊपर पूरा शक न आने देती, अब क्या वह बच कर निकल जायगी !तुम चुपचाप बैठी रहो, देखो हमलोग क्या करते हैं।

कुसुम–अख्तियार आपको है, जो चाहिये कीजिये मैं किसी काम में दखल न दूँगी।

रनबीर–(बीरसेन से) अब मैं तुम्हारे साथ बाहर चला चाहता हू वहॉ दीवान साहब को भी बुलाकर कुछ कहूगा।

बीरसेन–बहुत अच्छी बात है, चलिये मगर अपनी ताकत देख लीजिये।

रनबीर–कोई हर्ज नहीं जब तक बेहोश था तभी तक बेदम था अब मैं अपना इलाज आप ही कर लूगा क्या आज मकान के अन्दर घुस कर बैठे रहने का दिन है ?

बीरसेन–कभी नहीं।

बीरसेन के साथ रनबीरसिह बाहर आये और दीवानखाने में बैठ दीवान साहब को बुलाने का हुक्म दिया।

यह बीरसेन बडे ही जीवट का आदमी था। इसकी उम्र बीस वर्ष से ज्यादे की न होगी। यह बिना मॉ बाप का लडका था मॉ तो इसकी जापे (सौरी) ही में मर गई थी और बाप जो यहॉ की फौज का सेनापति था इसे तीन वर्ष का छोड कर मरा था। कुसुमकुमारी के पिता ने अपने लडके के समान इसकी परवरिश की और लिखाया पढाया। लडकपन ही से बीरसेन का सिपाहियाना मिजाज देख इस फन की बहुत अच्छी तालीम दी गई। मरती समय कुसुमकुमारी के पिता उससे कह गए थे— 'कुसुम, तुम इसे अपने सगे भाई के समान मानना इसके बाप से मुझसे बहुत ही मुहब्बत थी।

ईश्वर इच्छा से रनबीरसिह को देखते ही बीरसेन के दिल में उनकी सच्ची मुहब्बत पैदा हो गई इनके बहादुराना शान शौकत और हौसले पर वह जी जान से आशिक हो गया था।

उदास मुख दीवान साहब भी आ मौजूद हुए। रनबीरसिंह ने मौके मौके से दुरुस्त करके मुख्तसर में वह सब हाल उन्हें कह सुनाया जो कालिन्दी के बारे में बीरसेन ने सुना था। वह सब हाल सुनते ही दीवान साहब की हालत बिल्कुल बदल गई गम की जगह गुस्सा आ गया, कुछ सोचने के बाद क्रोध से कॉपती हुई आवाज में बीरसेन से बोले —

'बीरसेन, मैं तुम्हारा बडा अहसान मानूँगा अगर उस कमबख्त का सर लाकर मेरे हवाले करोगे !

तीनों में देर तक बातचीत होती रही जिसके लिखने की यहॉ कुछ जुरूरत नहीं मालूम पडती।

सोलहवां बयान

कालिन्दी को पाकर जसवन्त बहुत खुश हुआ। सब से ज्यादे खुशी तो उसे इस बात की हुई कि उसने सोचा कि कालिन्दी की सलाह और तर्कीब से इस किले को फतह करके कुसुमकुमारी और रनबीर दोनों से समझूँगा।

कालिन्दी को अपने खेमे में छोड पहरेवालों को समझा बुझा और महारानी के जासूस को जो गिरफ्तार किया गया था साथ ले जसवन्त घन्टा दिन चढते चढते बालेसिह के खेमे में पहुचा। उस समय खेमे के अन्दर फर्श पर अकेला बैठा हुआ बालेसिह सोच रहा था जसवन्त सलाम करके बैठ गया।

बालेसिह–आइये आइये, मैं यही सोच रहा था कि आपको बुलाऊ तो कुछ हाल चाल पूछू।

जस–मैं खुद हाल चाल साथ लिये हुए आ पहुचा।

बालेसिह–आपके साथ यह कैदी कौन है ?

जसवन्त–कुसुमकुमारी का जासूस है बीरसेन के पास जाता हुआ पकड़ गया है, एक चिठ्ठी तलाशी लने से मिली है, लीजिये पढ़िए।

बालेसिह–(सिपाहियों की तरफ देखकर) इस कैदी को ले जाकर हिफाजत में रक्खो। (चिट्ठी पढकर) भाई जसवन्तसिह, इस चिट्ठी में जिस सुरग की राह बीरसेन को बुलाया है कहीं उस सुरग का पता लगता तो बडा ही आनन्द होता !

जसवन्त–उसका पता मिलना कोई बडी बात नही, उस तरफ का एक आदमी आज मुझसे आ मिला है।

बालेसिह–हॉ मुझे खबर लगी है कि महारानी का कोई आदमी तुम्हारे पास आया है, मगर उस पर औरत होने का शक है।

जसवन्त–यह कैसे मालूम हुआ ?

बालेसिह–क्या मैं बेफिकरा हू, खाकर सो रहना ही जानता हू ? अपने काम काज में तुमसे ज्यादे होशियार हू, एक दफे महारानी की चालाकी ने मुझे धोखे में डाल दिया इससे यह न समझना कि बालेसिह निपट बेवकूफ है, कहिये तो उस औरत का नाम तक बता दूँ जो आई है !

जसवन्त–आश्चर्य है ! मगर भला कहिये तो कि आपको कैसे मालूम हुआ ?

बालेसिह–भैया मेरे यह न पूछो मैं अपनी कार्रवाई किसी से कहने वाला नहीं अपने बाप से तो कहू नहीं, दूसरे की क्या हकीकत है ! तुमने जिस काम को हाथ में लिया है उसे करो।

जसवन्त–खैर न बताइये अच्छा तो मैं अपनी फौज साथ लेकर सुरग की राह किले में जाऊँगा।

बालेसिह–खुशी से जाओ और किला फतह करो।

जसवन्त–मुश्किल तो यह है कि आपने कुल पॉचहजार फौज मेरे हवाले की है और पन्द्रह हजार अपने कब्जे में रख छोड़ी है।

बालेसिह–और नहीं तो क्या कुल फौज तुम्हें सौंप दूँ और आप लॅडूरा बन बैठूँ, आखिर मै भी तो अपने को बहादुर और चालाक लगाता हू, किले के अन्दर ले जाने के लिये क्या पॉच हजार फौज थोडी है ? फिर मैं भी तो तुम्हारे साथ ही हू !

जसवन्त–क्या आप भी सुरग की राह किले में चलेंगे ?

बालेसिह–नहीं तुम जाओ मैं बाहर का इन्तजाम करूँगा। अच्छा अब तुम अपनी फिक्र करो और और मैं भी नहाने धोने जाता हू।

जसवन्त वहॉ से उठ कर अपने खेमे में आया और कालिन्दी के पास बैठ कर बातचीत करने लगा—

कालिन्दी–कहिए बालेसिह से मि.। आये ?

जसवन्त–हॉ मिल आया।

कालिन्दी–मेरे आने का हाल भी उससे कहा होगा !

जसवन्त–उसे पहिले ही खब्र लग चुकी है बडा ही धूर्त है !

कालिन्दी–बालेसिह के पास कुल कितनी फौज है और तुम्हारे मातहत में कितनी फौ- है ?

जसवन्त–बालेसिह के पास बीस हजार फौज है, मगर मैं पॉच ही हजार का अफसर बनाया गया हू।

कालिन्दी–बाकी फौज का अफसर कौन है ?

जसवन्त–कहने के लिये तो दो तीन आदमी हैं मगर असल में वह आप ही उसकी अफसरी करता है।

कालिन्दी–पॉच हजार फौज भी अगर तुम्हें और दे देता तो बडा काम निकलता।

जसवन्त–अगर ऐसा होता तो क्या बात थी दोनों राज का मालिक मैं बन बैठता ! एक बात और है, उसकी फौज में लुटेरे और डाकू बहुत हैं जिनको वह तनखाह नहीं देता हॉ लूट के माल का हिस्सा देता है इसी से तो उसने इतनी बडी फौज इकट्ठी कर ली है नहीं तो यह कोई राजा महराजा तो हैं नहीं ! खैर जो भी हो मगर मेरी यह पॉच हजार फौज मुझसे बहुत खुश है।

कालिन्दी–खैर इस किले को फतह करके तेजगढ* के राजा तो कहलाओ फिर बूझा जायगा।

जसवन्त–बस इसी तेजगढ के फतह करने की देर है, फिर क्या बालेसिह की अमलदारी सीतलगढ** मेरे हाथ से बच रहेगी !

कालिन्दी–खैर देखा जायगा, मगर बालेसिह बडा ही चालाक है।

जसवन्त–कुछ न पूछो उसके मन का हाल तो कभी मालूम ही नहीं होता ! अच्छा आज रात को मेरे साथ चल कर उस सुरग का दर्वाजा तो दिखा दो।

कालिन्दी–बहुत अच्छा चलियेगा।

इतने ही में बाहर किसी ने ताली बजाई। जसवन्त बाहर गया और अपने खास अरदली के एक सिपाही को देख कर पूछा 'क्या है ?

सिपाही–सरकार ने अपने अरदली के जवानों को यहॉ पहरे के लिये भेज दिया है, अब हम लोगों को क्या हुक्म होता है ?

---

*अब बिहटा के नाम से मशहूर है, पटने से ग्यारह कोस पश्चिम है।

**अब गया जिले में सीतलगढ पडबी के नाम से प्रसिद्ध है।

जसवन्त–यहाँ हमारे खेमे के पहर पर अपन जवान भेजे है ?

सिपाही–जी हाँ।

जसवन्त–(कुछ सोच कर) अच्छा तुम लोग पहरा छोड दो मगर इस खेमे के पास ही रहो।

सिपाही–बहुत खूब।

जसवन्त फिर खेमे के अन्दर गया, कालिन्दी ने पूछा, 'क्या बात है ?'

जसवन्त–एक नया गुल खिला है।

कालिन्दी–वह क्या ?

जसवन्त–बालसिह ने अपने अरदली के सिपाही यहाँ हमारे पहरे पर मुकर्रर किये है।

कालिन्दी–इसमें जरूर कोई भेद है तुम कुछ उज्र मत करो।

जसवन्त–नहीं नहीं उज्र क्यों करने लगा क्या मै इतना बेवकूफ हू ? उसस जरा भी इस बारे में कुछ कहूगा तो चौकन्ना हो जायेगा और उलटा बेईमान बनायेगा मुझे तो इस समय अपना काम निकालना है।

आधी रात के समय कालिन्दी ने मर्दानी पौशाक पहरी और जसवन्तसिह के साथ खेमे के बाहर निकली। दोनों आदमी निहायत उम्दे अरबी घोडों पर सवार हुए और दक्खिन का कोना लिये हुए पश्चिम की ओर चल पडे। कालिन्दी ने जसवन्तसिह से कहा आपको सुरग का मुहाना दिखाने ले तो चलती हू मगर वहाँ का रास्ता बहुत ही बीहड और पेंचदार है जरा गौर से चारो तरफ देखते हुए चलियेगा।

जसवन्त–कोई हर्ज नहीं चली चलो, मै इस काम में बहुत होशियार हू !

कालिन्दी–इस भरोसे न रहियेगा मैं फिर कहती हू कि अपने चारो तरफ की निशानियों पर खूब गौर से निगाह करत हुए चलिये।

जसवन्त–बहुत ठीक।

दोनों आदमी लगभग तीन कोस के चले गए। आगे एक छोटा सा नाला मिला जिसमें पानी तो बहुत कम था मगर जल तेजी के साथ बह रहा था। दोनों आदमी पार हो किनारे किनारे जाने लगे और थोडी दूरतकघूमघूमौवे पर चल कर एक पुराने भयानक स्मशान पर पहुचे।

पहर रात बाकी थी। चाँदनी अच्छी तरह फैली रहने के कारण इधर उधर की चीजें साफ मालूम पड रही थीं। चारो तरफ फैली पुरानी हड्डियों पर निगाह दौडाने से विश्वास होता था कि यह स्मशान बहुत पुराना है मगर आजकल काम में नहीं लाया जाता। पास ही में एक लम्बा चौडा कब्रिस्तान भी नजर पडा जो एक मजबूत सगीन चारदीवारी से घिरा हुआ था एक तरफ फाटक था मगर बिना किवाडे का।

जसवन्तसिह को साथ लिये हुए कालिन्दी उस कब्रिस्तान में घुसी और घोडे पर से उतर कर बोली 'बस हम लोग ठिकाने पहुच गए आप भी उतारेये ! जसवन्तसिह भी घोडे से उतर पडा और दोनों आदमी कब्रिस्तान में घूमने लगे।

कालिन्दी–आपने इस कब्रिस्तान को अच्छी तरह देखा ?

जसवन्त–हाँ बखूबी देख लिया।

कालिन्दी–आप क्या समझते है कि इन कब्रों में मुर्दे गडे है ?

जसवन्त–जरूर गडे होंगे मगर शाबाश तुम्हारा दिल भी बहुत ही कडा है, इस तरह बेधडक ऐसे भयानक स्थान में चले आना किसी ऐसी वैसी औरत का काम नहीं।

कालिन्दी–(हँस कर) जो काम औरत से न हो सके उसे मर्द क्या करेगा ?

जसवन्त–बेशक आज तो मुझे यही कहना पडा !

कालिन्दी–हाँ तो आप समझते हैं कि इन कब्रों में मुर्दे गडे हैं ?

जसवन्त–क्या इसमें भी कोई शक है ?

कालिन्दी–इन कब्रों में से कोई भी कब्र ऐसी नहीं है जिसमें लाश गडी हो सिर्फ दिखाने के लिये ये कब्रे बनाई गई है इन सभी के नीचे कोठरियाँ बनी हुई हैं जिसमें समय पर हजारों आदमी छिपाये जा सकते हैं।

जसवन्त–(ताज्जुब स) तो क्या उस सुरग का फाटक भी इन्हीं कब्रों में स कोई है ?

कालिन्दी–हाँ ऐसा ही है मैं उसे भी दिखाती हू।

जसवन्त–क्या तुम कह सकती हो कि यह कब्रिस्तान कब का बना है ?

कालिन्दी–नहीं मुझे ठीक मालूम नहीं मगर इतना जानती हू कि सैकडो वर्ष का पुराना है, कभी कभी इसकी मरम्मत भी की जाती है अच्छा अब आप आइये सुरग का दर्वाजा दिखा दूँ।

जसवन्तसिह को साथ लिए कालिन्दी सगमर्मर की एक कब्र पर पहुची और उसकी तरफ इशारा करके बोली, 'देखिये यही सुरग का फाटक है जरूरत पडने पर इसका मुँह खोला जायगा।'

जसवन्त—यह कैसे निश्चय हो कि यही सुरग का फाटक है ?

कालिन्दी—क्या मेरी बात पर तुम्हें विश्वास नहीं है ?

जसवन्त—तुम्हारी बात पर मुझे पूरा विश्वास है, मगर मै यह पूछता हू कि तुम्हें क्योंकर निश्चय हुआ कि यही उस सुरग का फाटक है जिसका दूसरा सिरा किले के अन्दर जाकर निकला है ?

कालिन्दी—मैंने अपने बाप की जुबानी सुना है और दो तीन दफे उन्हीं के साथ यहाँ आई भी हू।

जसवन्त—क्या तुमने इस दर्वाजे को कभी खुला हुआ भी देखा है ?

कालिन्दी—नहीं।

जसवन्त—तो हो सकता है कि तुम्हारे बाप ने तुमसे झूठ कहा हो और बच्चों की तरह फुसला दिया हो !

इसी समय एक तरफ से आवाज आई 'नहीं बच्चों की तरह नहीं फुसलाया है बल्कि ठीक कहा है !

अभी तक जसवन्त और कालिन्दी बडी दिलजमई से बातचीत कर रहे थे मगर अब इस आवाज ने जिसके कहने वाले का पता नहीं था, इन्हें बदहवास कर दिया। घबडा कर चारो तरफ देखने लगे मगर कोई नजर न पडा। इतने में दूसरी तरफ से आवाज आई, अगर अब भी निश्चय न हुआ हो तो मेरे पास आओ !

साफ मालूम पडता था कि यह आवाज किसी कब्र में से आई है। जसवन्तसिह के रोगटे खडे हो गये कालिन्दी थर थर कॉपने लगी, जवाँमर्दी और दिलावरी हवा खाने चली गई। फिर आवाज आई, किसी कब्र को खोद के देख तो सही मुर्दे गडे हैं या नहीं ?' साथ ही इसके दूसरी तरफ से खिलखिला कर हॅसने की आवाज आई।

अब तो इन दोनों की विचित्र दशा हो गई, बदन का यह हाल कि मानों जडैया बुखार चढ गया हो, भागने की कोशिश करने लगे मगर पैरों की यह हालत थी कि जैसे किसी ने नसों में खून की जगह पारा भर दिया हो हिलाने से जरा भी नहीं हिलते। इन दोनों के घोडे यहाँ से थोडी ही दूर पर थे मगर इन दोनों की यह हालत थी कि किसी तरह वहाँ तक पहुचने की उम्मीद न रही।

थोडी देर तक सन्नाटा रहा कहीं से कोई आवाज न आई इन दोनों ने मुश्किल से अपने हवास दुरुस्त किये और धीरे धीरे वहाँ से घसकने लगे। जैसे ही एक कदम चले थे कि बाईं तरफ से आवाज आई "देखो भागने न पावे ! इसके जवाब में किसी ने दाहिनी तरफ से कहा, भागना क्या खेल है !बहुत दिनों पर खुराक मिली है !! सामने की एक और कब्र से आवाज आई, 'मैं भी कब्र से निकलता हू, जल्दी न करना !!

जसवन्त होशियार हो चुका था, वह बडे जोर से भागा, मगर कालिन्दी की बुरी दशा हो गई। ऊपर से उसे अकेला छोड जसवन्त के भाग जाने से वह बिल्कुल ही आपे में न रही, जोर से चिल्लाकर जमीन पर गिरी और बेहोश हो गई।

जब उसे होश आई अपने को उसी जगह पडे पाया। सवेरा हो चुका बल्कि सूर्य की किरणों स कालिन्दी का बदन पसीज रहा था और गर्मी मालूम होती थी। वह घबराकर उठ बैठी और चारो तरफ देखने लगी। कब्रिस्तान में हर तरफ सन्नाटा था सवेरा होने की खुशी में फुदकती चिडियों और मधु बोलियों से दिल लुभाने वाले खुशरग पक्षियों के सिवाय किसी आदमजात की सूरत दिखाई नहीं देती थी, हॉ थोडी ही दूर पर एक पेड से बॅधा हुआ उसका कसा कसाया घोडा टापों से जमीन खोदता हुआ जरूर दिखाई पड रहा था।

दिन निकल आने के कारण कालिन्दी का डरा हुआ दिल धीरे धीरे शान्त हो रहा था और कलेजे की धडकन मिट चुकी थी। भागने के बदले इस समय वह पहरों उसी कब्रिस्तान में बैठी रह सकती थी मगर किसी की बेमुरौवती और खुदगर्जी ने उसके कलेजे को निचोड डाला था जिसके सदमे से वह बदहवास हो रही थी।

यह बेमुरौवती और खुदगर्जी जसवन्तसिह की थी। पाठक भूले न होंगे कि उस दुष्ट के प्रेम में कितनी मतवाली और अन्धी होकर कैसे नाजुक समय में महारानी के साथ कितना नीच व्यवहार करके कालिन्दी घर से निकल जसवन्त के पास गई थी और उससे मिलकर कितनी प्रसन्न हुई थी मगर आज उसकी उम्मीदें बिल्कुल जाती रहीं और उसके बुरे कर्मों का फल बडा भयानक होकर मिलता हुआ उसे दिखाई पडा। बदकार औरतों का दिल एक तरह पर कभी स्थिर नहीं रहता जिसका नमूना इस दुष्टा ने अच्छी तरह दिखलाया। यह सदमा उससे किसी तरह बर्दाश्त न हुआ और वह इस सन्नाटे के आलम में ऊँचे स्वर में बोल उठी—

'अफसोस !मैंने बहुत ही बुरा किया !हाय दुष्ट जसवन्त मुझे कैसी बुरी अवस्था में छोडकर अपनी जान लेकर भाग निकला !मुझे यह उम्मीद न थी। वह बडा ही कमीना और मतलबी है, मौका पड़े तो वह मेरी जान लेकर भी अपना

मतलब साधने से बाज आने वाला नहीं !मालती ने सच कहा था !हाय मैंने बहुत बुरा किया !अब न तो इधर की रही और न उधर की !मगर भला रे दुष्ट, देख मै तुझसे कैसा बदला लेती हू !!

सत्रहवां बयान

जसवन्त घोडे पर सवार हो उस कब्रिस्तान से बेतहाशा भागा। जब तक वह अपने खेम में न पहुचा उसके हवास दुरुस्त न हुए। उसके पाजीपन ने उसके दिल को कितना डरपोक और बेकाम कर दिया था इसको वही जानता होगा सुबह होते होते वह अपने खमे में पहुचा और बेदम होकर अपने पलग पर लेट रहा। उसके दिल में तरह तरह के खयालात पैदा होने लगे क्योंकि उसे विश्वास हो गया था कि जरूर कालिन्दी ने धोखा दिया और वह कब्रिस्तान किसी सुरग का रास्ता नहीं है।

कायदे की बात है कि डरपाक और भूत प्रत के मानने वालों के दिल में जो जो बातें रात के वक्त पैदाहोते है वह दिन को कभी नहीं पैदा होतीं। वे जितना रात को डरते है उतना दिन को नहीं। वही हालत जसवन्त की भी थी। इस समय उसके दिल में यह बात नहीं जम रही थी कि उस कब्रिस्तान में मुर्दे बोल रहे थे या भूत प्रेत उसकी जान लिया चाहते थे हॉ यह गुमान जरूर होता था कि कालिन्दी मेरी मुहब्बत में अपने घर से नहीं आई बल्कि मुझे धोखा देकर मेरी जान की ग्राहक बन कर आई थी और अपनी मालिक कुसुमकुमारी का काम खूबसूरती से करके खैरखाह बना चाहती थी, अच्छा ही हुआ जो मै वहाँ से भाग आया नहीं तो जान जाने में क्या कसर थी, खैर अब वह हरामजादी मिलेगी तब मैं समझूँगा !

ऐसी ऐसी बहुत सी बातें पडा पडा जसवन्त सोच रहा था और सूर्य निकल आने परभी अपने खयालों में डूबा हुआ था कि एक चोबदार ने जो जानता था कि इस समय इस खेमें के अकेला जसवन्तसिह है वहॉ पहुँच कर उसे होशियार कर दिया और सुना दिया कि बालेसिह खुद आपसे मिलने के लिये यहॉ चले आ रहे है।

जसवन्त घबडा कर उठ बैठा और बालेसिह के इस्तकबाल (अगवानी) के लिये झट खेमे के बाहर निकल आया, तब तक बालेसिह भी पहुच चुका था। साहब सलामत के बाद दोनों खेमे के अन्दर गए और बातचीत करने लगे।

बालेसिह–कहिये क्या हाल है? मैंने सुना रात आप दोनों उस सुरग का पता लगाने गए थे फिर अकेले क्यों लौटे और कालिन्दी कहॉ गई?

जसवन्त–कुछ न पूछिये उसने तो मुझे पूरा धोखा दिया !अभी आपकी खिदमत मेरी किस्मत में बदी हुई थी इसी लिये जान बच गई नहीं तो मरने में कोई कसर बाकी न थी।

बाल–सो क्या? कालिन्दी तो तुम्हारे प्रेम में उलझ कर आई थी फिर उसने धोखा क्यों दिया?

जसवन्त–वह मेरे प्रेम में उलझकर नहीं आई थी बल्कि मेरी मौत बनकर आई थी और मुझे मार कर अपने मालिक की खैरखाही उत्तम रीति से किया चाहती थी !

बाले–इसी से मैंने इस काम में तुम्हारा साथ नहीं दिया दुश्मन के घर से आये हुए किसी के साथ यकायक इस तरह घुल मिल जाना बेवकूफी नहीं तो क्या है, तिस पर तुम अपने को बडा चालाक लगाते हो !

जसवन्त–बेशक मुझसे भूल हुई अब कभी ऐसा न करूँगा।अगर कोई मर्द रहता तो मैं कभी धोखे में न आता मगर उस औरत की सूरत ने मुझे दीवाना बना दिया !

बाले–खैर जो हुआ सो हुआ यह बताओ कि वह तुम्हें कहॉ ले गई थी और किस तरह की दगाबाजी उसने तुम्हारे साथ की?

जसवन्त ने कालिन्दी के साथ अपने जाने का हाल पूरा पूरा बालेसिह को कह सुनाया जिसे सुन बालेसिह देर तक सोचता रहा फिर भी वह किसी तरह यह निश्चय न कर सका कि कालिन्दी धोखा ही देने के लिये आई थी या सच्चे प्रेम ने उसकी मान मर्यादा का मुँह काला किया था। आखिर उसने जसवन्त से कहा—

'इस बारे में मेरा दिल अभी किसी तरफ गवाही नहीं देता। न तो मुझे कालिन्दी के झूठे होने का यकीन है और न यही कह सकता हू कि वह सच्ची थी। खैर जो हो आज तुम मुझे उस कब्रिस्तान में ले चलो, देखो मैं क्या तमाशा करता हू। डरो मत मै बहुत से आदमी अपने साथ ले कर चलूगा !

थोडी देर तक और बातचीत करने के बाद बालेसिह वहॉ से उठा और जसवन्त को साथ ले अपने खेमे में चला गया।

अट्ठारहवां बयान

शाम का वक्त है, ठण्ढी ठण्ढी हवा चल रही है महारानी कुसुमकुमारी के महल के पीछे वाला नजरबाग खूब रौनक पर है खिले हुए फूलों की खुशबू हवा से मिल जुल कर चारो तरफ फैल रही है, बाग के बीचोबीच में एक छोटा सा सगमर्मर का खूबसूरत चबूतरा है तिस पर महारानी कुसुमकुमारी रनबीरसिह और बीरसेन बैठे धीरे धीरे कुछ बातें कर रहे हैं, इनकी बातों को सुनने वाला कोई चौथा आदमी यहाँ मौजूद नहीं है महारानी की लौंडियाँ कुछ दूर पर फैली हुई जरूर नजर आ रही हैं।

रनबीर–उस समय मारे हँसी के मेरा पेट फटा जाता था, यह बीरसेन भी बडा मसखरा है !

बीरसेन–(हँस कर) जसवन्त डर के मारे कैसा दुम दबा कर भागा कि बस कुछ न पूछिये, बडी मुश्किल से मैंने हँसी रोकी !

कुसुम–एक तो वह कब्रिस्तान बड़ाही भयानक है दूसरे रात के सन्नाटे में इस तरह भूत प्रेत बनकर आप लोगों ने उन्हें डराया ऐसी हालत में अपने को सम्हालना जरूर मुश्किल काम है !

बीरसेन–दीवान साहब मुझ पर बडा बिगडे, कहने लगे तुम लोगों ने जसवन्त को छोडा तो छोडा मगर कालिन्दी को क्यों न उठा लाए, मै अपने हाथ से उसका सिर काट अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता।

रनबीर–कालिन्दी पर विशेष कोध के कारण उन्होंने ऐसा कहा !ऐसा नहीं है कि दीवान साहब हम लोंगों की इस कार्रवाई से नाखुश हों और इस बात को न समझ गए हों कि हम लोगों ने उस कब्रिस्तान में जसवन्त और कालिन्दी को सिर्फ डरा ही कर छोड देनें में क्या फायदा विचारा था।

कुसुम–बेशक समझ गए होंगे वे बडे ही चतुर आदमी है।

बीरसेन–इसमें तो कोई शक नहीं।

कुसुम–जसवन्त और कालिन्दी में अब कभी नहीं बन सकती और कालिन्दी अपने किये पर जरूर पछताती होगी।

रनबीर–(कुसुम की तरफ देखकर) खैर इन बातों को जाने दो, मै एक दूसरी बात पूछता हू, सच सच कहना देखो झूठ न बोलना।

कुसुम–मै आपसे झूठ कदापि न बोलूँगी, इसे आप निश्चय जानिये।

रनबीर–मेरे साथ तुम्हारा इस तरह का बर्ताव करना क्या तुम्हारे सरदारों और कारिन्दों को बुरा न लगता होगा ? वह-यह न कहते होंगे कि कुसुम बडी निर्लज्ज है ?

कुसुम–किसी को बुरा न मालूम होता होगा, हा उन लोंगों के बारे में मै कुछ नहीं कह सकती जो नये मुलाजिम है।

रनबीर–मै कैसे विश्वास करू ?

बीरसेन–(रनबीर से) इसमें आप शक न कीजिये इतना तो मै भी कह सकता हू कि हमारे यहाँ जितने पुराने मुलाजिम हैं और एक छिपे हुए भेद को जानते है वह आप दोनों को कभी बुरा नहीं कह सकते बल्कि वे लोग बडे ही खुश होंगे।

रनबीर–भेद कैसा !

कुसुम–भैया देखो अभी मौका नहीं है।

कुसुम की बात सुन बीरसेन चुप हो रहा मगर रनबीरसिह अपनी बात का जवाब न पाने और कुसुम के मना करने से चौंक पडे और सोचने लगे कि वह कौन सा भेद है जिसके बारे में बीरसेन ने इशारा किया मगर कुसुम के टोकने से चुप हो रहा उसे खोल न सका।

रनबीरसिह – (कुसुम से) खैर तुम ही कहो वह क्या भेद है ?

कुसुम–कुछ भी नहीं इसने यों ही कह दिया।

रनबीर–बेशक कोई भेद है जो तुम छिपाती हो, खैर जब मै तुम्हारे यहाँ के भेदों को नहीं जान सकता तो इतनी खातिरदारी भी व्यर्थ है और मुझे किसी तरह की उम्मीद तुमसे रखना मुनासिब नहीं !

इतना कह कर रनबीरसिह चुप हो रहे और उनके चेहरे पर उदासी छा गई, जिसे देख कुसुमकुमारी का जी बेचैन हो गया और वह बीरसेन का मुह ताकने लगीं। बीरसेन ने कहा 'बहिन, अगर हमलोग आज ही इस भेद को खोल दें तो किसी तरह का नुक्सान नहीं आखिर कभी न कभी तो यह भेद खुलेगा ही, फिर इनका दिल दुखाने की क्या जरूरत है !'

कुसुम–खैर जो मुनासिब समझो, मुझे यह मजूर नहीं कि यह किसी तरह उदास हों।

"बीरसेन–(रनबीर से) आप यह न समझिये कि हमलोग कोई भेद आपसे छिपाते है या छिपावेंगे, बल्कि जिस भेद के बारे में आप पूछ रहे हैं वह ऐसा नहीं कि आप विना जाने रहें, हमलोग क्या यहा की एक एक दीवार उस भेद को आपसे कहेगी और विना किसी के समझाये आप समझ जायेंगे।

रनबीर–तुम भी क्या मसखरापन करते हो, विना समझाये मै समझ जाऊगा !!

बीरसेन–जी हॉ ऐसा ही है।

कुसुम–खैर तव वहुत कहने सुनने की कोई जरूरत नहीं इस बखेडे को भी तय ही कर डालना चाहिये।

बीरसेन–अच्छा तो ,

कुसुम–(अपने ऑचल से एक ताली खोल और वीरसेन को देकर) लो तुम जाओ वहॉ रोशनी का इन्तजाम कर आओ तो हमलोग चलें।

अच्छा मैं जाता हू, बहुत जल्द लौटूगा कह बीरसेन वहॉ से उठे और महल की तरफ चले गये। भेद जानने के लिये रनबीरसिह की तबीयत घबडा रही थी, इन लोगों की अनोखी बातचीत ने उनकी उत्कठा और भी बढा दी थी यहा तक कि थाडी देर के लिये भी सब्र न कर सके और बीरसेन के जाने बाद अधीर हो कुसुमकुमारी का हाथ पकड पूछने लगे—

"भला कुछ तो बताओ कि क्या मामला है सुनने के लिये जी बेचैन हो रहा है ?

कुसुम–अब क्या घबडा रहे हैं दम भर में सब मालूम ही हुआ जाता है, बीरसेन आ लें तो चल के जो कुछ है दिखा देते हैं।

रनबीर–जब तक बीरसेन आवे तब तक कुछ बातचीत तो होनी चाहिये।

कुसुम–तो क्या एक यही बातचीत रह गई है ?

लाचार बीरसेन के आने तक रनबीरसिह को सब्र करना ही पडा। जब बीरसेन लौट आये तो दोनों से बोले—"चलिये सब तैयारी हो चुकी।' झट रनबीरसिह उठ खडे हुए और हाथ थाम कुसुमकुमारी को उठाया। तीनों आदमी महल की तरफ रवाने हुए और बहुत जल्द उस कमरे में पहुचे जो खास कुसुमकुमारी के बैठने का था। लौंडियॉ हटा दी गईं और किवाड बन्द कर दिये गये।

जिस जगह कुसुमकुमारी के बैठने की गद्दी बिछी हुई थी उसी जगह तकिये के पीछे दीवार में एक दर्वाजा बना हुआ था। बीरसेन ने उसका ताला खोला। तीनों एक लम्बे चौड़े सजे हुए कमरे में पहुचे जिसमें दीवारगीरों में मोमबत्तियॉ जल रही थीं और दिन की तरह उजाला हो रहा था। चारो तरफ दीवारों पर नजर डालते ही रनबीरसिंह चौंके और एक दम बोल उठे, 'वाह वाह ! यह क्या तिलिस्म है !!'

उन्नीसवां बयान

इस कमरे में बीस जोडी दुशाखी दीवारगीरें लगी हुई थीं जिनमें इस समय मोमबत्तियॉ जल रही थीं, इसके सिवाय और कोई शीशा आईना या रोशनी का सामान कमरे में न था और न फर्श वगैरह ही बिछा हुआ था। सैकडों किस्म के खुशरग पत्थर के टुकडे जमीन पर इस खूबसूरती से जमाए हुए थे कि बेशकीमत गालीचे का गुमान होता था और वहॉ दिखाई फूल पत्तियों पर असली होने का घोखा होता था। चारो तरफ दीवारों पर मुसौवरों की अनोखी कारीगरी दिखाई देती थी अर्थात् इस खूबी की तस्वीरें बनी हुई थीं कि यकायक इस कमरे के अन्दर जाते ही रनबीरसिह को मालूम हुआ कि सैकडों आदमी इस कमरे में मौजूद है। एक तरफ दीवार से कुछ हट कर सगमर्मर की चौकियों पर दो पत्थर की मूरतें बैठाई हुई थीं जिनकी पौशाक और सजावट देखने से मालूम होता था कि ये दोनों राजे हैं जो अभी बोला ही चाहते हैं। इन्हीं दोनों मूरतों पर देर तक रनबीरसिह की निगाह अटकी रही और सकते के आलम में ये भी पत्थर की मूरत की तरह देर तक बिना हाथ पैर हिलाए खडे रहे क्योंकि इन दोनों मूरतों में एक मूरत इनके पिता की थी।

थोडी देर बाद जब रनबीरसिह की बदहवासी कुछ कम हुई तो उन्होंने कुसुमकुमारी की तरफ घूम कर देखा और दोनों मूरतों में से एक की तरफ इशारा करके कहा—

'यह मेरे प्यारे पिता की मूरत है। मुझ पर बडा ही प्रेम रखते थे, न मालूम इस समय कहॉ और किस अवस्था में होंगे, दुश्मनों के हाथ से छुट्टी मिली या बैकुण्ठ चले गए ! अच्छा हुआ जो मेरी मॉ ने उस जगल ही में अपना सिर काट लिया नहीं तो आज उसे बडा ही कष्ट उठाना पडता !!'

इतना कहते हुए रनबीरसिह उस मूरत के पास जाकर रोने लगे मगर उनकी बातें बेचारी कुसुमकुमारी की समझ में कुछ भी न आई और न वह इनको कुछ धीरज ही दे सकी, उनकी हालत देख इस बेचारी की ऑखों में भी ऑसू भर आए

और वह चुपचाप खडी रनबीरसिह का मुँह देखने लगी।

कुछ देर बाद रनबीरसिह ने सामने की दीवार पर निगाह दौडाई और बोले, ' क्या आश्चर्य है !जिधर देखो उधर ही मेरे मतलब की तस्वीरें दिखाई पडती है। प्यारी कुसुम, क्या तुम इन तस्वीरों का हाल और जो जो मैं पूछूँ बता सकोगी ? '

कुसुम–जी नहीं।

रनबीर–सो क्यों ?

कुसुम–इसीलिये कि इनके बारे में मैं कुछ भी नहीं जानती।

रनबीर–तब कौन जानता है ?

कुसुम–इस समय सबसे ज्यादे जानकार दीवान साहब है जिन्होंने मुझे अपने गोद में खिलाया है, मेरे पिता ने इस कमरे की ताली भी उन्हीं के सुपुर्द की थी और अब तक उन्हीं के पास थी , कल मैंने मँगा ली है।

रनबीर–जब दीवान साहब ने तुम्हें गोद में खिलाया है तो उनसे पर्दा क्यों करती हो ?

कुसुम–केवल राज्य नियम निबाहने के लिये, नहीं तो मुझे कोई पर्दा नहीं है।

रनबीर–तो मैं उन्हें यहाँ बुलवाऊँ !

कुसुम–बुलवाइये।

रनबीरसिह ने बीरसेन की तरफ देखा, वह मतलब समझ कर तुरन्त दीवान साहब को बुलाने के लिये चले गए। जब तक दीवानसाहब न आये तब तक रनबीरसिह चारो तरफ की तस्वीरों को बडे गौर से देखते रहे जिससे उनके लड़कपन की बहुत सी बातें उन्हें इस तरह याद आ गई जैसे वे सब घटनाए आज ही गुजरी हों।

थोड़ी ही देर में दीवान साहब भी आ मौजूद हुए। उन्हें देखते ही रनबीरसिह ने कहा, "दीवान साहब, इस कमरे में आने से आश्चर्य ने मुझे चारो तरफ से ऐसा घेर लिया है कि मेरी बुद्धि ठिकाने न रही। लड़कपन से होश सम्हालने तक की बातें मुझे इस तरह याद आ रही हैं जैसे मेरे सामने एक ही दिन में किसी दूसरे पर बीती हों, अब मेरी हैरानी और परेशानी सिवाय आपके कोई नहीं मिटा सकता।"

दीवान–ठीक है इन तस्वीरों का हाल यहाँ मुझसे ज्यादे कोई दूसरा नहीं जानता, क्योंकि ये सब मेरे सामने बल्कि मेरी मुस्तैदी में बनवाई गई है और इसकी ताली भी बहुत दिनों तक बतौर मिल्कियत के मेरे ही अमानत रही है।

रनबीर–तो आप मेहरबानी करके इन तस्वीरों का हाल ठीक ठीक मुझसे कहें।

दीवान–बहुत खूब !(कुसुमकुमारी की तरफ देख कर) आप भी मेरी बातों को गौर से सुनें क्योंकि इनका जानना जितना जरूरी रनबीरसिह के लिये है उतना ही आपके लिये भी।

कुसुम–बेशक ऐसा ही है और उनसे ज्यादे सुनने की चाह मुझे है क्योंकि इसके पहिले मैं एक दफे और भी इस कमरे में आ चुकी हू और तभी से हैरानी मेरा ऑचल पकडे हुए है।

दीवान–(रनबीरसिह की तरफ देख कर) अच्छा तो इन तस्वीरों का हाल आप अलग अलग मुझसे पूछेंगे या मैं खुद कह चलूँ ?

रनबीर–उत्तम तो यही होगा कि आप कहते जाय और मैं सुनता जाऊ।

दीवान–बहुत अच्छा ऐसा ही होगा। (बीरसेन की तरफ देख कर) तुम भी ध्यान देकर सुनो।

बीरसेन–जरूर सुनूँगा।

दीवान साहब ने हाथ के इसारे से बता बताकर यों कहना शुरू किया ' पहिले इन दो बडी मूरतों पर ध्यान दीजिये जिनमें से एक को आप बखूबी जानते हैं क्योंकि वह आपके पिता इन्द्रनाथ की मूरत है और दूसरी मूरत जिसकी है उसे भी आप कई दफे देख चुके हैं वह कुसुमकुमारी के पिता कुबेरसिह की मूरत है। ये दोनों आपस में लडकपन ही से सच्चे और दिली दोस्त थे मगर मैं इन दोनों का किस्सा पीछे कहूगा पहिले चारो तरफ दीवारों पर खिची हुई तस्वीरों का हाल कहता हू बल्कि इसके भी पहिले यह कह देना मुनासिब समझता हू (दोनों मूरतें दिखा कर) इन दोनों दोस्तों ने अपनी जिन्दगी ही में आपकी शादी कुसुमकुमारी के साथ कर दी थी। इस बात को कुसुमकुमारी बखूबी जानती है बल्कि यहाँ के सैकडों आदमी जानते हैं। आप भी अपनी शादी का हाल भूले न होंगे मगर आप खयाल करते होंगे कि आपकी शादी किसी दूसरी लडकी से हुई थी क्योंकि कुसुम की सूरत किसी कारण से आपको दिखाई नहीं गई थी।

रनबीर–हाँ ठीक है मैं इस दूसरी मूरत को भी पहिचानता हू मेरे पिता से मिलने के लिये ये अक्सर आया करते थे और मुझ पर बहुत ही प्रेम रखते थे। उस समय मेरी अवस्था केवल सात वर्ष की थी तो भी मुझे शादी का दिन बखूबी याद है बाकी भूली हुई बातों की (हाथ के इशारे से बता कर) देखिये वह दीवार पर खिची तस्वीरे याद दिलाती है !(दीवार

के पास जाकर और एक तस्वीर पर उँगली रख कर) दुश्मनों के हाथ से सताये हुए मेरे पिता इसी मकान में मुझे लेकर रहते थे, इस मकान के आगे यह छोटा सा बाग है **जिसमें** मैं दुष्ट जसवन्त के साथ खेला करता था उस नालायक की तस्वीर भी यह देखिये मौजूद है।

दीवान–जी हॉ और आगे यह देखिये आपके ब्याह के समय की तस्वीरें हे दोनों दास्त यह पेड के नीचे बैठे हैं पण्डितजी आपकी शादी करा रहे हैं, घूँघट स मुँह छिपाय यह आपके बगल में कुसुम बैठी हुई है और यह दखिये आपके पिता के पीछे सिपाहियाना ठाठ से एक आदमी खडा है, आप पहिचानते हैं ?

रनवीर–(गौर से देख कर) इसे तो मै नहीं पहिचानता।

दीवान–याद न होगा क्योंकि बचपन मं इसे आपने दो ही एक दफे देखा है तमाम फसाद इसी दुष्ट का मचाया हुआ है इसी की बदौलत आपके पिता

रनवीर–हॉ हॉ कहिये—मेरे पिता क्या ? आप **रुक क्यों गए ?**

दीवान–यह हाल पीछे कहेंगे पहिले इधर देखिये।

रनवीर–नहीं पहिले मरे पिता का हाल कह लीजिये।

दीवान–(कुछ हुकूमत के ढग पर) इसके लिये आपको जिद न करना चाहिये पहिले जो मैं कहता हू उस सुनिये।

रनबीर–खैर जैसा मुनासिब समझिये।

दीवान–इधर आइये पहिले इस तरह की तस्वीरों स शुरू कीजिये।

वीरसन–(यकायक रोक कर) सुनिये तो ! यह शोर गुल की आवाज कैसी आ रही है ?

बीरसेन के टोकने से कुसुमकुमारी दीवान साहब और रनवीरसिह भी चौंक पडे और कान लगा कर सुनने लगे।

पहर रात से ज्यादे जा चुकी थी। तीनों आदमी दीवान साहब की बातें सुनने और तस्वीरों के देखने में ऐसा मग्न हो रहे थे कि तनोबदन की सुध भुला बैठे थे मगर इस शोर गुल की आवाज न उन लोगों को दीवान साहब की बातों और तस्वीरों का आनन्द नहीं लेन दिया लाचार चारो आदमी कमरे के बाहर निकल आये और उस तरफ देखने लगे जिधर से 'मार मार की आवाज आ रही थी।

पॉच सात लौंडियॉ बदहवास रोती और चिल्लाती हुई वहा पहुची जहॉ ये चारों इस बात का पता लगाने के लिये खडे थे कि शोरगुल की आवाज कहॉ स और क्यों आ रही है। ये लौंडियॉ खून से तरबतर हो रही थीं इनक पैर खौफ से कॉप रहे थे और इनकी आवाज घबराहट से लडखडा रही थी।

दीवान–यह कैसा हगामा मचा हुआ है ? तुम लोगों की ऐसी दशा क्यों हो रही है ?

एक लौंडी–हमारे बहुत स दुश्मन हाथ में नगी तलवारे लिये महल में आ पहुचे हैं न मालूम कहॉ से और किस राह से आये हैं। यह कह कह कर लौंडी गुलामों को मार रहे है कि यही कुसुम है यही रनबीर है कई लौंडी और गुलामों की लाशें इधर उधर पडी तडप रही है और हम लोगों की यह दशा हो गई है !

यह सुन कर दीवान साहब सोच में पड़ गए रनबीरसिह को बहादुरी का जोश चढ आया बीरसेन का बदन गुस्से के मारे कापने लगा और बेचारी कुसुमकुमारी रनवीरसिह को खाली हाथ देख अफसोस करने लगी।

इस समय केवल बीरसेन की कमर से एक तलवार लटक रही थी जिसे रनबीरसिह ने फुर्ती से निकाल लिया और उस तरफ बढे जिधर से घबडाई हुई लौंडियॉ आई थीं। रनबीरसिह को इस तरह जाते देख बीरसेन और दीवान साहब खाली ही हाथ उनक पीछ दौडे मगर दूर जाने की नौबत न आई क्योंकि दुश्मनों का झुण्ड धूम और फसाद मचाता हुआ उसी जगह आ पहुचा जहॉ ये लोग थे। उन लोगों ने चारो तरफ से इनको घेर लिया। बचारे खाली हाथ दीवान साहब एक ही हाथ तलवार का खाकर जमीन पर गिर पडे। बीरसेन ने अपने पर वार करते हुए एक दुश्मन के हाथ से तलवार छीन ली और तीन चार दुष्टों का बात की बात में यमलोक पहुचा दिया। रनबीरसिह की तलवार त. इस समय कालरूप हा रही थी जिसकी गर्दन क साथ छू जाती उसका सर काट कर दूर फेक देती थी, जिसक मोढे पर बैट जाती उसका साफ जनेवा काट कर दो टुकडे कर देती थी जिसकी खोपड़ी पर पहुँच जाती उसकी कमर तक ककडी की तरह काटती हुई उतर जाती थी।

रनबीरसिह और बीरसेन के बदन पर भी छोटे छोटे कई जख्म लगे मगर इनकी बेतरह काटने वाली तलवारों ने थोड़ी ही देर में दुश्मनों को परेशान कर दिया और विश्वास दिला दिया कि जो थोड़ी देर भी वहॉ ठहरगा बेशक अपनी जान से हाथ धो बैठेगा। भागने की फिक्र में कोई तो छत के नीचे गिर कर हाथ पैर तोड़ बैठा, कोई सीढियों ही पर लुढ़कता हुआ नीचे पहुच कर बदहवास हो गया, और कोई अपनी जान सलामत लेकर भाग निकला।

लड़ते ही लड़ते रनवीरसिंहने यह भी देख लिया कि कई दुश्मन उस तरफ जा पहुचे है जिधर बेचारी कुसुमकुमारी खड़ी रनवीरसिह की बहादुरी देख रही थी। दुश्मनों पर फतह पाये हुए रनवीरसिह इसलिये वहाँ गये जिसमें बेचारी कुसुम को किसी तरह की तकलीफ न पहुचने पावे मगर रनवीरसिह को कुसुमकुमारी न मिली और ये घवडा कर चारो तरफ ढूँढने लगे। तस्वीर वाले कमरे के दर्वाजे पर कुसुमकुमारी की ओढनी मिली जिसे इन्होंने उठा लिया, हाथ में लेते ही मालूम हो गया कि यह खून से तर है।

रनबीरसिह समझ गए कि दुश्मनों के हाथ से बेचारी कुसुम भी जख्मी हुई। थोडी ही देर में लोगों के यह कहने से कि—"तमाम महल में ढूँढ डाला मगर महारानी का पता न लगा रनवीरसिह को विश्वास हो गया कि वह दुश्मनों के कब्जे में आ गई। इस गम में उनका दिमाग चक्कर खाने लगा और वे वदहवास होकर जमीन पर गिर पडे।

वीरसेन ने वेहोश रनवीरसिह को उसी तरह छोड दिया चारो तरफ कुसुम की खोज में दौडती वदहोस और रोती हुई लौडियों की तरफ कुछ भी ध्यान न दिया, और तुरन्त महल से वाहर निकल एक तरफ को रवाना हो गए।

बीसवां बयान

यह छोटा सा शहर जो महारानी कुसुमकुमारी के कब्जे में था, एक मजवूत चारदीवारी के अन्दर वसा हुआ था। इसके वाहर खाई के वाद तीन तरफ गॉव था जिसकी आवादी घनी तो थी मगर सभी मकान कच्चे तथा फूस और खपडे की छावनी के थे जिनमें छाटे जमींदार और खेती के ऊपर निर्भर रह कर समय विताने वाले गरीब लोग रहा करते थे। चौथी तरफ जिधर शहर का दर्वाजा था विल्कुल मैदान था। किले से वाहर निकलते ही चौडी सड़क मिलती थी जिसके दोनों तरफ आम के पेड लगे हुए थे और इधर ही से एक छोटी सड़क घूमती हुई वरावर उस गॉव तक चली गई थी जिसका हाल अभी ऊपर लिख चुके है।

इसी छाटी सी सडक पर जो गॉव में चली गई है, एक आदमी कम्वल ओढे वड़ी तेजी के साथ कदम वढाये चला जा रहा है। रात आधी से ज्यादे जा चुकी है, गॉव में चारो तरफ सन्नाटा है, आकाश में चन्दमा के दर्शन तो नहीं होते मगर मालूम होता है कि चन्द्रमा ने अपनी रोशनी चमक या कला जा कुछ भी कहिय इन छोटे छाटे गरीव मुहताज तारों को वॉट दी है जिससे खुश हो ये वडी तेजी के साथ चमक रहे हैं और इस वात को विल्कुल भूले हुए है कि यह चमक दमक वहुत जल्द ही जाती रहेगी और कलयुगी राजों की तरह चन्द्रमा भी धीरे धीरे पहुच कर अपनी दी हुई चमक के साथ ही उनकी पहिली आव भी जो प्रकृति ने उन्हें दे रक्खी है लेकर सूर्य का मुकावला करने को तैयार हो जायगा अर्थात् कहेगा कि आज मै भी इस रात को दिन की तरह वना कर छोड़ूँगा।

यह स्याह कम्वल ओढ हुए जाने वाला आदमी गॉव में झोपडियों की गिरती हुई परछॉई के तले अपने को हर तरह से छिपाता हुआ जा रहा है जिससे मालूम होता है कि इसे इससे भी ज्यादे अधेरी रात की जरूरत है। कभी कभी यह अटक कर कान लगा कुछ सुनने की कोशिश करता और पीछ फिर कर देखता है कि कोई आ तो नहीं रहा है।

धीरे धीरे वह एक ऐसी झोपडी के पास पहुचा जिसके पीछे की तरफ छप्पर से जमीन को एक कर देने वाली लता बहुत ही घनी फैली हुई थी। वह उसी जगह जा कर खडा हो गया और पत्तों की आड में छिप कर चारो तरफ देखने लगा, जव कोई नजर न आया तो उसने धीरे धीरे दो चार दफे चुटकी वजाई। थोडी देर वाद उस झोपड़ी से एक औरत निकल कर उस तरफ आई जिधर वह खडा था। उस औरत को देखते ही वह पत्तों की आड से वाहर निकला और दोनों ने मैदान का रास्ता लिया।

ये दोनों जव तक गॉव की हद्द से दूर न निकल गए विल्कुल चुप थे, वहुत दूर निकल जाने के वाद यों बातचीत होने लगी —

औरत–मैं वहुत देर से तुम्हारी राह देख रही थी जैसे जैसे देर होती थी कलेजा धक धक करता था।

मर्द–तुम्हारे लिये मैंने अपनी जान आफत में डाल दी अव देखें तुम मेरे साथ किस तरह निवाह करती हो।

औरत–मेरी बात में कभी फर्क न पडेगा, पहले भी कई दफे कह चुकी हू और फिर कहती हू कि मै तुम्हारी हो चुकी जिस तरह रक्खोगे रहूगी मेरी मुराद तुमने पूरी की, अव मै किसी तरह तुम्हारे हुक्म से वाहर नहीं हो सकती।

मर्द–अभी मैं कैसे कहू कि तुम्हारी मुराद पूरी हो गई।

औरत–(चौक कर) क्या कुसुमकुमारी हाथ नहीं लगी।

मर्द–कुसुम तो हाथ लग गई मगर मेरे कई साथी मारे गए और अभी न मालूम क्या क्या होगा !

औरत–अगर कुसुम किले के वाहर हो गई तो अव हम लोगों को भी कुछ डर नहीं है।

मर्द–कुसुम को तो हमारा एक दोस्त लेकर दूर निकल गया मगर फिर भी हम अपने को तब तक बचा हुआ नहीं समझ सकते जब तक यह न सुन लें कि चचलसिह पर कोई आफत न आई। (हाथ का इशारा करके) देखो उसी पेड के नीचे वे दोनों घोडे मौजूद है जिन पर सवार होकर हम और तुम भागेंगे और जहॉ तक जल्द हो सकेगा पटने पहुच कर अपनी जान बचावेंगे मगर देखो कालिन्दी, अब पटने पहुच कर कुसुम को अपने हाथ से मार कर अपनी प्रतिज्ञा जल्द पूरी कर लो जब तक वह जीती रहेगी हम लोग निश्चिन्त नहीं हो सकते।

कालिन्दी–घर पहुचते ही मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूगी।

अब तो पाठक समझ ही गए होंगे कि यह औरत कालिन्दी है और यह बिल्कुल बखेडा इसी का मचाया हुआ है, मगर यह मर्द कौन है ? इसका हाल आगे मालूम होगा। जब तक ये दोनों उस पीपल क नीचे पहुच कर घोडों पर सवार हों तब तक आइये हमलोग बीरसेन की खबर लें और मालूम करें कि बेहोश रनबीरसिंह और जख्मी दीवान साहब को उसी तरह छोड़ वे कहॉ गए या किस काम में उलझे।

शहर के पिछली तरफ शहर से बाहर निकल जाने के लिये एक छोटा सा दर्वाजा था जो चोर दर्वाज के नाम से मशहूर था। इस दर्वाजे के बाहर निकलते ही जल से भरी हुई खाई मिलती थी और समय पर काम देने के लिये एक छोटी सी किश्ती भी बराबर इस जगह रहा करती थी। इस छोटे मगर मजबूत दर्वाजे की चौकसी बीस सिपाहियों के साथ चचलसिह नामी एक राजपूत करता था।

बीरसेन ने यह सोच कर कि महारानी को ले जाने वाले दुश्मनों को किले से बाहर हो जाने का सुबीता इस चोरदर्वाजे के और कोई नहीं हो सक्ता सीधे इसी तरफ का रास्ता लिया। रास्ते ही में बीरसेन का मकान भी था। यह फौज के सेनापति थे इसलिये इनका मकान आलीशान था और उसके चारो तरफ सैकडों फौजी सिपाही रहा करते थे मगर इस समय इन्होंने अपने मकान की तरफ कुछ ध्यान न दिया और सीधे चोरदर्वाजे की तरफ बढते चले गए।

अपने मकान से कुछ ही आगे बढे थे कि सामने से एक आदमी आता हुआ दिखाई पडा जो इनको अपनी तरफ लपकता आता देख सहमकर अपने का छिपाने की नीयत से एक मकान की आड में खडा हो गया। बीरसेन ने तो उसे देख ही लिया था उसे दीवार की आड में हो जाते देख इनको शक पैदा हुआ और इन्होंन उसके पास पहुच कर ललकारा।

बीरसेन को पहिचानते ही डर के मारे उसकी अजब हालत हो गई, थर थर कॉपने लगा और कुछ बोल न सका। उसके पास एक गठरी थी जिसे उसी जगह फेंक कर भागा मगर बीरसेन के हाथ से बच कर न जा सका। इन्होंने लपक कर उसे पकड लिया और गठरी समेत अपने मकान की तरफ लौटे तथा फाटक पर पहुच कर खडे हो गए जहॉ कई सिपाही नगी तलवार लिये पहरा दे रहे थे और कई भीतर की तरफ पहरा बदलने के लिये तैयार हो रहे थे।

बीरसेन ने उस चोर का एक सिपाही के हवाले किया और दूसरे को गठरी खोल कर देखने का हुक्म दिया। सिपाही ने चौक कर कहा "हुजूर इसमें तो जडाऊ गहने है !"

बीरसेन–है !जडाऊ गहने !!

सिपाही–जी हॉ।

बीरसेन–इधर तो लाओ देखें !

फाटक पर रोशनी बखूबी हो रही थी बीरसेन ने उन गहनों को देखते ही पहिचान लिया कि ये कालिन्दी के हैं। इसके बाद उस चोर पर गौर किया तो मालूम हुआ कि यह उन सिपाहियों में से है जो चोर फाटक के पहरेदार चचलसिह के मातहत है। बहुत थोडी देर खडे रह कर बीरसेन कुछ सोचते रहे इसके बाद गठरी और चोर को हिफाजत से रखने के लिये ताकीद कर दस सिपाहियों को अपने साथ ले चोर फाटक की तरफ रवाना हुए और अपने पहरे वालों से कहते गए कि बहुत जल्द और बीस सिपाहियों को चोर फाटक पर भेजो।

बीरसेन ने चोर फाटक पर पहुच कर दस बारह सिपाहियों को बैठे और चचलसिह को टहलते पाया ललकार कर पूछा "क्यों जी चचलसिह !क्या हो रहा है ?

चचल–जी कुछ नहीं देखिये पहरे पर मुस्तैद हू !

बीरसिह–तुम्हारे मातहत के सिपाही कहॉ है ?

चचल–जी इसी जगह तो हैं दो चार कहीं इधर उधर गए होंगे।

बीरसेन–अच्छा इधर आओ तुमसे कुछ बात करना है।

इस तरह यकायक बीरसेन का पहुचते देख चचलसिह घबडा गया और ठीक तरह से बातचीत न कर सका। बीरसेन ने थोडी देर तक उसे बातों में लगाया तब तक वे बीस सिपाही भी वहॉ पहुच गए जिन्हें जल्द भेजने के लिये वे

कह आये थे। उन सिपाहियों के पहुचते ही वीरसन ने हुक्म दिया कि चचलसिह और उसके मातहती के सब सिपाहियों की मुश्के बॉध लो और हमारे घर ले जाकर खूब हिफाजत से रक्खो।

इसके बाद अपने दस सिपाहियों को कई बातें समझा कर चोर फाटक के पहरे पर तैनात किया और दर्वाजा खोल कर बाहर निकले। उस छोटी किश्ती पर पहुचे जो जरूरत पर काम देने के लिये खाईं के किनारे बधी हुई थी। डॉड़ उठा कर देखा तो गीला पाया कुछ ऊची आवाज में बोले—"बेशक वही हुआ जो मैं सोचता हू !

एक सिपाही को अपने पास बुला लिया और डोंगी खे कर पार उतरने के बाद उस डोंगी को फिर अपने ठिकाने ले जा कर बॉध देने का हुक्म दिया।

बीरसेन सीधे मैदान की तरफ कदम बढाये चले गए और घण्टे भर बाद उस पीपल के पेड के पास पहुचे जिसके नीचे कसे कसाये दो घोडे बधे थे और एक साईस खडा था।

पाठक समझ ही गए होंगे कि इसी पीपल के पेड के नीचे एक मर्द को साथ लिये कालिन्दी पहुचने वाली थी बल्कि यों कहना चाहिये कि इन्हीं घोड़ों पर सवार हो वे दोनों भागने वाले थे। देखिये अपने साथी मर्द का हाथ थामे वह कालिन्दी भी आ रही है वीरसेन पहिले ही पहुच चुके है देखें क्या करते है।

इक्कीसवां बयान

जिस समय बीरसेन पीपल के पेड के नीचे पहुचे और उस साईस ने इन्हें देखा जो दोनों घाडों की हिफाजत कर रहा था तो उठ खडा हुआ और वीरसेन को बडे गौर से अपनी तरफ देखते पा कुछ घबडानासा हो गया, क्योंकि बीरसेन का सिपाहियाना ठाठ और उनकी बेशकीमत और चमकती हुई पौशक साधारण मनुष्यों के योग्य न थी परन्तु उस समय उसे कुछ ढाढस भी हुई जब उसने और दो आदमियों को सामने से अपनी तरफ आते देखा क्योंकि वह तुरन्त समझ गया कि ये दोनों वही हैं जिनके लिये मैं इस जगह दो घोड़ों को लिये मुस्तैद हू।

इस समय आसमान पर चमकते हुए तारों की रोशनी कुछ कम हो गई थी क्योंकि पूरब तरफ की सुफेदी चन्द्रमा की अवाई का इशारा कर रही थी। बीरसेन ने साईस से डपट कर पूछा 'ये घोड़े किसके हैं ?' इसके जवाब में वह साईस कुछ बोल तो न सका मगर उसने उन दोनों आदमियों की तरफ हाथ का इशारा किया जो अब इस पेड के पास पहुचा ही चाहते थे। आखिर बीरसेन को कुछ ठहर कर राह देखनी ही पडी। जब वे दोनों भी वहॉ पहुच गये तो वीरसेन ने म्यान से तलवार निकाल ली और डपटकर कहा 'मै पहिले अपना नाम वीरसेन सेनापति बता कर तुम दोनों का नाम पूछता हू।'

बीरसेन सेनापति का नाम सुनकर साईस तो पहिले से भी ज्यादे घबडा गया और कालिन्दी भी डर के मारे कॉपने लगी, मगर उस आदमी ने अपना दिल कडा करके अदब से सलाम किया और कहा "मेरा नाम तारासिह है और मै गयाजी का रहने वाला हू।"

वीर–यह औरत जो तुम्हारे साथ है कौन और कहॉ की रहने वाली है ?

तारा–मैं इसे नहीं पहिचानता। इसने मेरे ये दोनों घोडे किराये पर लिये हैं और इसी के लिये ।

वीर–बस बस मै समझ गया, ज्यादा बातचीत करना मैं नहीं चाहता तुमको इसी समय मेरे साथ किले में चलना होगा।

तारा–बहुत खूब, मै चलने को तैयार हू, मगर यह औरत ?

वीर–इसे भी मेरे साथ चलना होगा ! (औरत की तरफ देख कर) चल आगे बढ !

कालिन्दी–मै तुम्हारे साथ किले में क्यों जाऊ ?

वीर–इसका जवाब मैं कुछ भी न दूंगा।

कालिन्दी–(अपने साथी की तरफ देख कर) क्या तुम इसी लिये मेरे साथ आये हो ?

आदमी–तो क्या मैं अपनी जान देने के लिये तुम्हारे साथ आया हू ? ये यहॉ के मालिक है मै इनके इलाके में रहता हू, इसलिये जो ये हुक्म देंगे वही मैं करूगा।

वीर–(कालिन्दी से) तू अपने को किसी तरह छिपा नहीं सकती मैं खूब पहिचानता हू कि तू कालिन्दी है। वही कालिन्दी जिसने अपने कुल में दाग लगाया और वही कालिन्दी जिसने अपने मालिक के साथ निमकहरामी की। खैर, तिस पर भी मैं तुझे छोड देता हू और हुक्म देता हू कि जहॉ तेरा जी चाहे चली जा मैं देखा चाहता हू कि ईश्वर तेरे पापों की तुझे क्या सजा देता है। (उसके साथी की तरफ देख के) देर मत कर और मेरे आगे आगे चल !

इस समय साईस को तो सिवाय भागने के और कुछ भी न सूझा—वह अपनी जान लेकर एकदम वहॉ से भागा।

वीरसेन ने भी इसकी कुछ परवाह न की और उस आदमी को फिर अपने आगे आगे चलने के लिये कहा।

आदमी—अच्छा एक घोडे पर आप सवार हो लीजिये और एक पर मै सवार होकर आपके साथ चलता हू।

बीर—नहीं, तुझे पैदल ही चलना होगा।

आदमी—एक ता मैं बीमार हू दूसरे वहुत दूर से पैदल आने के कारण थक गया हू।

वीर—(क्रोध से) चलता है या बातें बनाता है ?

आदमी—(घोडे की तरफ वढ कर) पैदल तो मैं नहीं चल सकता !

बीरसेन ने क्रोध में आकर उसे एक लात मारी साथ ही उसने भी म्यान से तलवार निकाल ली और बीरसेन पर वार किया। बीरसेन ने फुर्ती से वगल में हट कर अपने को वचा लिया और एक हाथ तलवार का ऐसा लगाया कि उसकी दाहिनी कलाई जिसमें तलवार थी कट कर जमीन पर गिर पडी और वह आदमी हक्का बक्का होकर सामने खडा रह गया। वीरसेन ने कहा, अव भी चलेगा या इसी तरह अपनी जान देगा !!

मगर वह आदमी भी वडा ही साहसी था। कलाई कट जाने से भी वह सुस्त न हुआ वल्कि उसने अपन कमर से एक रुमाल निकाल कर कटी हुई कलाई के ऊपर लपेटा और बीरसेन के आगे आगे किले की तरफ रवाना हुआ। थोड़ी दूर चल कर बीरसेन ने उससे कहा, इसमें कोई सन्देह नहीं कि महारानी के गायव होने का हाल तू जानता है बल्कि उस बुरे काम में तू भी साथी रहा है। यदि इसी जगह उसका पूरा पूरा हाल वता दे तो मैं तुझे छोड दूँगा नहीं तो समझ रख कि थोडी ही देर में तेरा सर धड से अलग कर दिया जायगा !

आदमी—आप यदि प्रतिज्ञा करें कि महारानी का पता वता देने और हर तरह की मदद देन पर आप मेरी जान छोड देंग तो मै इसमें जो कुछ भेद है आपसे कहू और महारानी का ठीक ठीक पता भी आपको वता दू क्योंकि मुझसे भूल तो हो ही चुकी है और यह भी निश्चय हो गया कि अब किसी तरह जान नहीं बचेगी। हॉ इसके साथ ही आपको यह प्रतिज्ञा भी करनी होगी कि आप लोग मेरा नाम और पता न पूछंगे।

वीरसेन—यद्यपि तू इस योग्य नहीं है तथापि मै प्रतिज्ञा करता हू कि महारानी यदि जीती जागती मिल जायगी तो तरी जान छोड दूँगा मगर इस बात को भी खूव याद रखियो कि अगर तू धोखा देने का उद्योग करेगा तो तरी जान वहुत बुरी तरह से ली जायगी। और मैं यह प्रतिज्ञा करता हू कि तेरा नाम और पता जानने के लिये जवरदस्ती न की जायगी।

आदमी—आप क्षत्री है आपकी प्रतिज्ञा कभी झूठी नहीं हो सकती न मालूम कौन से क्रूर ग्रह आ पडे थे कि हमलोग कालिन्दी के धोखे में आ गए और इतना वडा अनर्थ कर वैठे। हाय नि सन्देह वह काली नागिन है। खैर जो होना था हो गया अब विलम्ब करना उचित नहीं है। अभी तक महारानी वहुत दूर न गई होंगी क्योंकि जो लाग उन्हें ले गए हैं थोडी ही दूर पर एक नियत स्थान पर ठहर कर मेरे और कालिन्दी के आने की राह देखते होंगे। अब खुटका केवल दो बातों का है एक ता यह कि कालिन्दी जो सब बखेडे की जड है और जिसे आपने छोड दिया है वहाँ पहुच कर लोगों का बहका न दे या इस वात की खवर कहीं बालसिह को न पहुच जाय जिसकी फौज किले के सामने वाले मैदान में पडी हुई है। साथ ही इसके इतना और भी कहे देता हू कि केवल आप ही अकेले चल कर महारानी को उन दुष्टों क हाथ से नहीं छुडा सकते क्योंकि व लोग लडने और जान देने के लिये तैयार हो जायगे।

इतना ही कहते कहते वह आदमी सुस्त हाकर जमीन पर बैठ गया क्योंकि उसकी कटी हुई कलाई में जख्म ठण्डा हो जाने क कारण दर्द ज्यादे हो गया था। इस समय वीरसेन तरद्दुद के भारे किले की तरफ इस तरह दखने लगे मानों किसी के आने की उम्मीद हो।

अब आसमान पर चॉद अच्छी तरह निकल आया था जिसकी रोशनी में किले की तरफ से बहुत से आदमियों को अपनी तरफ आत हुए बीरसेन ने देखा और बोले—"लो रनवीरसिह भी आ पहुचे !

आदमी—(खडा होकर और किले की तरफ देख कर) अब आप अपना काम बखूबी कर सकेंगे।

बीरसेन—तू इस समय कलाई कट जान के कारण तकलीफ में है इसलिये मैं अपने साथ तुझे वहाँ ले जाना उचित नहीं समझता जहाँ महारानी के मिलने की आशा है अस्तु वहाँ का पता मुझे अच्छी तरह वता दे और तू मेरे आदमियों के साथ किले में जा वहाँ तेरे जख्म पर दवा लगाई जायगी।

आदमी—वहुत अच्छा मैं आपको पता बताए देता हू। (हाथ का इशारा करके) आप सीधे इसी तरफ चल जाइये, यहाँ से कोस भर चले जाने वाद एक गॉव मिलेगा।

बीरसन—हॉ हॉ वह गॉव हमारा ही है उसका नाम पालमपूर है।

आदमी—ठीक है उस गॉव के किनारे ही पर आम की एक वारी है। उसी में आप उन लोगों को पावेंगे जिनके पजे में

इस समय महारानी है।

वीरसन–मैं उस आम की वारी को भी अच्छी तरह जानता हू।

इस वीच रनवीरसिह भी अपन साथ सौ सिपाहियों को लिय हुए वहाँ आ पहुचे और वीरसन की तरफ देख के वोले, 'शुक्र है तुमसे वहुत जल्द मुलाकात हो गई तुम्हारे खास आदमी ने मुझे इत्तिला दी थी और उसी क कह मुताविक मैं सौ आदमियों को साथ लेकर आ रहा हू।

वीरसेन–जी हॉ, मै अपने आदमी स ताकीद कर आया था कि वह सव हाल आपसे कह कर आपको इधर आने के लिय कह। उस समय आप होश मे न थ जव मुझे अपनी कार्रवाई क लिये मजवूरन वहाँ से निकलना पडा।

वीरसन ने पिछला हाल वहुत थोडे में कहा जिसे रनवीरसिह गौर से सुनकर वाल– कम्वख्त कालिन्दी को तुमने अव भी छोड दिया। खैर अव वहाँ चलने में देर न करनी चाहिये।

पाच आदमियों क साथ उस अपरिचित व्यक्ति का जिसकी कलाई कट गई थी किल की तरफ रवाना करके वीरसन और रनवीरसिह अपन वहादुर सिपाहियों को साथ लिये हुए तेजी के साथ पालमपूर की तरफ रवाना हुए और थोडी ही देर में उस आम की वारी में जा पहुच। इन लोगों के वहाँ पहुचते पहुचते तक साफ सवेरा हो गया था इसलिये काम में वहुत हर्ज न हुआ।

महारानी कैदियों की तरह जकडी हुई एक डोली के अन्दर जिस वीस आदमी के लगभग घेरे हुए थे पाई गई थी। इन लागों के पहुचने में अगर आधी घडी की भी देर होती तो फिर कुसुमकुमारी का पता न लगता क्योंकि सवेरा हो जाने क कारण वदमाश लाग डाली उठवा कर दो ही कदम आगे वढ थे कि वीरसेन और रनवीरसिह वगैरह ने पहुच कर उन लोगों का घेर लिया। मगर अफसोस उसी समय नमकहराम जसवन्तसिह और पाच सौ सिपाहियों को साथ लिये हुए दुष्ट वालेसिह भी उस जगह आ पहुचा और वीरसेन और रनवीरसिह वगैरह को चारो तरफ से घेर कर उस डोली पर झुक पडा जिसमें वेचारी कुसुमकुमारी थी।

बाईसवां बयान

कालिन्दी का विश्वास हो गया था कि वीरसन अव मुझे जीता न छोडेगा मगर वहादुर वीरसेन ने लापरवाही के साथ उस छाड़ दिया और अपन सामन से चल जाने के लिये कहा। कालिन्दी ने इसे ही गनीमत समझा और अपनी जान ले कर वहाँ से भागी। यद्यपि अपने स्वभाव और करनी के अनुसार कालिन्दी राक्षसी की पदवी, पाने योग्य थी परन्तु विधाता ने उसमें खूवसूरती और नजाकत कूट कूट कर भर दी थी। उसमें इतनी हिम्मत न थी कि दो तीन कोस पैदल चल सकती परन्तु जान क खौफ से उसे भागना ही पडा। राह में वह तरह तरह की वातें साचती जाती थी। 'जसवन्त से मिलूँ या न मिलूँ? अगर मैं उसके पास जाऊँगी ता वह अवश्य मरी खातिर करेगा, मगर नहीं वह वडा ही खुदगर्ज है देखो मुझ अकेली छोडके कव्रिस्तान से कैसा भाग निकला नहीं नहीं, इसमे उसका कोई कसूर नहीं वह जरा डरपोक है इसी से भाग गया था अव अगर वह मुझे देखेगा तो अवश्य क्षमा मॉगगा। अस्तु एक दफे पुन उसक पास चलना चाहिये, यदि वह अवभी मुझसे प्रेम न करेगा तो अवश्य उसे यमलोक में पहुँचाऊँगी।' इत्यादि वातों को सोचती विचारती वह वालेसिह के लश्कर की तरफ वढी चली जा रही थी मगर थकावट के कारण भरपूर चल नही पाती थी।

वालेसिह का लश्कर जव से तेजगढ के सामने आकर पडा था तव से वह रात को स्वयं थोडे से आदमियों को साथ लेकर इधर उधर घूमा करता था। यद्यपि उसने कई जासूस गुप्त भेदों का पता लगाने चारो तरफ छिप कर घूमने के लिये मुकर्रर किये थ परन्तु जव तक वह स्वय रात को इधर उधर न घूमता उसका जी न मानता। आजभी वह थोडे से सवारों को साथ लेकर घूमने के लिये अपने लश्कर से वाहर निकला ही था कि एक जासूस सामने आकर खड़ा हो गया और वोला, किले के पिछले दर्वाजे से महारानी कुसुमकुमारी को निकाल ले जाने की नीयत से कई आदमी किले के अन्दर रिश्वत देकर घुसे हैं मुझे ठीक पता मिला है कि यह कार्रवाई कालिन्दी की तरफ से की गई है। मैं अपने दो सिपाहियों को उस जगह छोड कर आपको खवर देने के लिये आया हूँ।'

यह खवर सुनकर वालेसिह वहुत खुश हुआ और उसी जासूस को हुक्म दिया कि जहॉ तक जल्द हो सके जसवन्तसिह को वुला लावे। जासूस जसवन्तसिह के खेमे की तरफ रवाना हुआ और वालेसिंह खडा होकर सोचने लगा कि अव क्या करना चाहिये। थाडी देर में जसवन्तसिह भी लडाई के सामान से दुरुस्त होकर वालेसिह के पास आ पहुँचा। वालेसिह ने जासूस की जुवानी जा कुछ सुना था उससे कहा और इसके वाद जसवन्तसिह और उस जासूस को साथ लेकर किले के पिछली तरफ रवाना हुआ। जो कुछ सवार तैयार थे उन्हें साथ लेता गया और हुक्म दे गया कि पॉच सौ

सवार बहुत जल्द मुझसे आकर मिलें।

बालेसिंह थोडी ही दूर गया था कि पहिले जासूस का एक और साथी भी आ पहुँचा और उसने खबर दी कि चोरदर्वाजे से किले के अन्दर जो लोग घुसे थे उनमें से कई आदमी किसी को जबर्दस्ती गिरफ्तार करके ले आये और पालमपूर की तरफ रवाना हो गए। यह खबर पाकर बालेसिंह ने घोडे की बाग मोडी और उस जासूस को यह आज्ञा देकर पालमपूर की तरफ रवाना हुआ कि तू इसी जगह खडा रह जब मेरे सवार यहाँ आवें तो उन्हें पालमपूर की तरफ भेज दे।

पालमपूर की तरफ लगभग आध कोस के गया होगा कि सामने से एक औरत आती हुई दिखाई पड़ी, जब पास पहुँचा तो उसे रोक कर पूछा कि 'तू कौन है?' चाँद अच्छी तरह निकल आया था इसलिए उस औरत ने बालेसिंह और जसवन्तसिंह को बखूबी पहिचान लिया और कहा, "मैं कालिन्दी हूँ, इस समय तुम्हारा एक काम किये हुए चली आ रही हूँ। इसके जवाब में बालेसिंह ने कहा– "जो कुछ तू कर चुकी है मुझे बखूबी मालूम है!'

इसी समय बालेसिंह के और सवार भी आ पहुँचे, उनमें से दस सवारों को उसने आज्ञा दी कि इस औरत (कालिन्दी)को ले जाओ और हिफाजत से रक्खो। इसके बाद बालेसिंह बाकी सवारों को साथ लिये हुए तेजी के साथ पालमपूर की तरफ रवाना हुआ और बात की बात में वहाँ पहुँचकर उसने रनबीरसिंह इत्यादि को चारो तरफ से घेर लिया, जैसा कि ऊपर के बयान में हम लिख आये हैं।

उस समय पूरब तरफ सूर्य की किरणें दिखाई दे रही थीं। रनबीरसिंह यह देख कर कि बालेसिंह की नीयत कुसुमकुमारी पर कब्जा करने की है जोश में आ गए और नगी तलवार लिये हुए बालेसिंह पर टूट पडे। इस समय रनबीरसिंह की बहादुरी देखने ही योग्य थी। बालेसिंह ने बहुत जोर मारा परन्तु महारानी की डोली पर हाथ न रख सका। बेचारी कुसुम यह हाल देख कर घबडा गई और अँजुली उठा कर बोली 'हे ईश्वर, इस समय मेरी लाज को रखनेवाला तेरे सिवा इस जगत मे और कोई भी नहीं है!'

थोडी ही देर में लडाई की यह नौबत पहुँची कि बालेसिंह के सवार जिन्होंने चारो तरफ से घेर लिया था रनबीरसिंह बीरसेन और उनके सिपाहियों की बहादुरी देख के दग हो गए और उन्हें लाचार होकर एक तरफ हो मुकाबला करना पडा। इसी बीच में रनबीरसिंह ने अपनी पीठ किले की तरफ कर दी और बीरसेन से कहा कि 'कुसुम की डोली लेकर लडते हुए पीछे की तरफ हटना शुरू कर दो' और बीरसेन ने ऐसा ही किया। लडाई अन्धाधुन्ध होने लगी और मौत का बाजार ऐसा गर्म हुआ कि बहादुरों को दीन-दुनिया की होश न रही और न किसी को यहीआशा रह गई कि आज इस लडाई से जीते जी बच कर घर जायँगे। रनबीरसिंह की बेतरह काटने वाली तलवार पर दुश्मनों की निगाह नहीं ठहरती थी। वे देखते कि उस बहादुर की तलवार बिजली की तरह चारो तरफ घूम रही है अभी एक के सिर पर पडी और तुरन्त दूसरे की गर्दन से निकलते ही तीसरे को सफा किया और चौथे की तरफ पलट पडी। इसी बीच में रनबीरसिंह की निगाह नमकहराम जसवन्तसिंह पर जा पडी जिसकी निगाह कुसुम की डोली पर घडी घडी पड रही थी। उसे देखते ही रनबीरसिंह यह कहते हुए उसकी तरफ झुक पडे "ओ कमबख्त! अब मेरे हाथ से बच कर तू कहाँ जा सकता है? जसवन्त ने चाहा कि अपने को रनबीर की निगाह स छिपा ले मगर न हो सका। बाज की तरह झपट कर रनबीरसिंह उसके पास जा पहुँचे और तलवार का एक वार किया। जसवन्त ने चालाकी से अपने घोडे को पीछे की तरफ हटा लिया इसलिये रनबीर की तलवार अबकी दफे केवल जसवन्त के घोडे का खून चाट सकी अर्थात घोडे की गर्दन पर जा पडी और सिर कट जाने के कारण घोडा जमीन पर गिर पडा और साथ ही इसके जसवन्त ने भी जमीन चूम ली। उस समय बहादुर रनबीरसिंह क्षण मात्र तक इसलिये रूक गये कि वह नमकहराम सीधा होकर उनकी तलवार को फिर एक दफे देख ले। जसवन्त ने उठ कर रनबीर पर वार करना ही चाहा था कि उस बहादुर की तलवार ने कम्बख्त जसवन्त का काम तमाम कर दिया। उसका सिर बालेसिंह के सामने जो केवल दस हाथ की दूरी पर खडा इस अद्भुत लड़ाई को देख रहा था जा गिरा और इस तरह लोगों के देखते ही देखते विश्वासघाती जसवन्त अपने किये की सजा पाकर नर्क भोगने के लिये यमराज की राजधानी की तरफ रवाना हो गया।

लडाई को घण्टा भर से ज्यादे हो गया इस बीच बालेसिंह के पचास सवार जान से मारे गए और दो सौ लडाके बेकाम होकर जमीन पर लेट गए उनके घोडे भी जख्मी होकर और अपनी पीठ खाली पाकर मैदान की तरफ भाग गए। बालेसिंह के बदन पर भी कई जख्म लगे बहादुर रनबीरसिंह के तीस आदमी मारे गए और वह स्वय भी जख्मी हुए मगर लडने की हिम्मत अभी बाकी थी। दिलेर बीरसेन भी यद्यपि जख्मी हुए था मगर दिलावरी के साथ अभी तक कुसुम को दुश्मनों के हाथ से बचाये रहा।

यह लडाइ ऐसी नहीं थी कि छिपी रहे और दिन विशेष चढ जाने के कारण इस लडाई की धूम और भी हो गई। किले में से पाँच सौ बहादुर सिपाही और आ पहुँचे जो कुसुमकुमारी के लिये जान देने को तैयार थे और इसी तरह

बालेसिह के हजार फौजी सिपाही भी उस जगह आ पहुँचे। अव लडाई का ढग बिल्कुल ही बदल गया। हटते हटते रनबीरसिह अपनी फौज के सहित किले की तरफ हो गए और बालेसिह मुकाबले में अपने लश्कर की तरफ हो गया और लड़ाई कायदे के साथ होने लगी।

पॉच सौ फौजी आदमियों के पहुँच जाने से वीरसेन को मौका मिल गया। वह रनबीरसिह की आज्ञानुसार महारानी कुसुमकुमारी की डोली को दुश्मनों के हाथ से बचा कर चोरदर्वाजे की राह से किले के अन्दर जा पहुँचा और किले के अन्दर से तोप की आवाज आने से रनबीरसिह समझ गए कि उनकी पतिव्रता स्त्री कुसुम कुशलतापूर्वक किले के अन्दर पहुँच गई, क्योंकि यह काम भी इन्हीं की आज्ञानुसार हुआ था।

कुसुम कुशलपूर्वक किले के अन्दर पहुँच गई मगर उसकी जान लडाई के मैदान ही में रह गई जिसका फैसला रनबीरसिह की जिन्दगी पर मुनहसिर था। यदि रनबीर की जान बच गई तो कुसुम भी जीती बचेगी नहीं तो वह विधवा होकर इस दुनिया में जिन्दगी बिताने वाली औरत नहीं है। इसी तरह की कितनी ही बातें सोच कुसुम ने बीरसेन से पूछा—' वह दस हजार फौज जो तुम्हारे मातहत में थी इस समय कहॉ है और कब हम लोगों के काम आवेगी ?

बीरसेन--उसका इन्तजाम मै कर चुका हूँ। आज किसी समय वह फौज लड़ाई के मैदान में अवश्य दिखाई देगी और जो कुछ आने से रह जायगी वह दो दिन के अन्दर पहुँच जायगी।

कुसुम--अच्छा तो इस समय किले के अन्दर जो फौज है उसे लेकर तुम इसी समय उनकी मदद के लिये चले जाओ, बस इज्जत बचाने का यही समय है, क्योंकि बालेसिह की बेशुमार फौज इस समय मुकाबले में है। यदि हो सके तो अपने मालिक को बचा कर किले के अन्दर चले आओ फिर हमारी फौज आ जायगी तो देखा जायगा।

बीरसेन--जी हॉ, मैं अब एक सायत यहॉ न ठहरूगा जो कुछ फौज मौजूद है उसे लेकर अभी जाता हू।

दिन पहर भर से ज्यादे चढ आने पर भी अभी तक किले के सामने वाले मैदान में लडाई हो रही है। बालसिह की बहादुरी ने भी बहुतों को चौपट किया मगर रनबीरसिह की चुस्ती चालाकी और दिलावरी ने उसे चौधिया दिया था। इस समय वह सोच रहा था कि जसवन्तसिह के हाथ से जख्मी होकर रनबीरसिह बहुत दिनों तक बेकाम पडे रहे और बहुत सुस्त हो गये है, तिस पर उनकी हिम्मत ने आज पजे में आई हुई कुसुम को छुड़ा ही लिया यदि वे भले चगे होते तो न मालूम क्या करते !

घटे भर तक फौजी बहादुरों में लडाई होती रही और इस बीच में बालेसिह की बहुत सी फौज वहॉ आकर इकटठी हो गई। जिस समय किले में की बची हुई फौज को साथ लेकर बीरसेन मैदान में आ पहुचा उस समय मार काट का सौदा बहुत ही बढ गया और बीरसेन ने भी जी खोल कर अपनी बहादुरी का तमाशा बालसिह को दिखा दिया। रनबीरसिह और बीरसेन अपने बहादुरों को लेकर बालेसिह की फौज में घुस गए। उस समय मालूम होता था कि इस लडाई का फैसला आज हो ही जायगा। इसी समय बीरसेन की मातहतवाली फौज भी आती हुई दिखाई पड़ी जिससे रनबीरसिह के पक्ष वालों का दिल और भी बढ गया और वे लोग जी खोल कर जान देने और लेने के लिए तैयार हो गये।

लडाई का जोहर दिखाता हुआ हमारा बहादुर रनबीर ऐसी जगह जा पहुचा जहॉ से बालेसिह थोडी ही दूर पर दिखाई दे रहा था। उस समय रनबीरसिह के जोश का कोई हद्द न रहा और वे बालेसिह के पास पहुचने का उद्योग करने लगे। बालेसिह ने भी उन्हें देखा मगर पास पहुच कर उनका मुकाबला करने की हिम्मत न हुई। इस समय रनबीरसिह और बालेसिह दोनों ही घोड़ों पर सवार थे।

रनबीरसिह को अपनी तरफ बढते देख बालेसिह छिप गया और धोखा देकर घूमता हुआ रनबीरसिह के पीछे जा पहुचा और पीछे ही से तलवार का एक भरपूर हाथ रनबीरसिह पर चलाया। तलवार रनबीरसिह के बॉए मोढे पर बैठी जिससे उनको सख्त सदमा पहुचा। उन्हे यह नहीं मालूम था कि पीछे की तरफ बालेसिह आ पहुचा है तथापि चोट खाने के साथ ही रनबीर ने घूम कर एक हाथ दुश्मन पर ऐसा जमाया कि वह बेकाम हो गया। तलवार उसकी जघा पर बैठी और उसका दाहिना पैर कट कर जमीन पर गिर पडा और साथ ही इसके वह घोड़े की पीठ से लुढक कर जमीन पर आ रहा। बालेसिह के फौजी आदमी यह हाल देखकर हताश हो गये और अपने मालिक को उठाकर खेमे की तरफ भागे।

वीरसेन रनबीरसिह से दूर न था और वह इस लडाई का तमाशा बखूबी देख रहा था। रनबीरसिह ने भी बहुत सी चोटें खाई थी मगर इस समय बालेसिह के हाथ से पहुची हुई चोट ने उन्हें एकदम मजबूर कर दिया। बालेसिह से अपना बदला तो ले लिया मगर उनकी ऑखों के आगे भी अधरा छा गया और वे त्योरा कर जमीन पर गिर पडे। इस समय बीरसेन ने बड़ी दिलावरी की। अपने आदमियों को साथ लिये हुए बिजली की तरह उनके पास जा पहुचा और सब लोगों के देखते देखते उन्हें उठा कर अपनी फौज में ले गया। इस समय बीरसेन का कपडा भी लहू से तरबतर हो रहा था और उसके बदन पर भी कितने ही जख्म लग चुके थे।

बात की बात में रनबीरसिह किले के अन्दर पहुचाये गए और बेहोश बालेसिह अपने खेमें में पहुचा दिया गया। दोनों मालिकों के बेकाम हो जाने से लडाई बन्द हो गई और फौजें अपने अपने ठिकाने लौट गई।

तेईसवां बयान

बालेसिह के जख्म पर जर्राहों ने दवा लगा कर पट्टी बाधी मगर वह आठ पहर तक बहोश पडा रहा, इसके बाद होश में आया तरह तरह की बातें सोचने लगा। वह अपने दिल में बहुत शर्मिन्दा था कि केवल थोडे से सिपाहियों को साथ लेकर रनबीरसिह ने उसे नीचा दिखाया और देखते देखते महारानी कुसुमकुमारी को बचा ले गया। यद्यपि उसके दिल ने कह दिया था कि अब रनबीरसिह के मुकाबले में तेरी जीत न होगी और तुझे हर तरह से नीचा देखकर यहाँ से लौट जाना पडेगा मगर वह अपने क्रोध को किसी तरफ दबा न सकता था और बहुत ही खिजलाया हुआ था। इस समय जब कि उसमें उठने की सामर्थ्य बिल्कुल न थी वह कर ही क्या सकता था ? हॉ चारो तरफ ध्यान दौडाने पर उसे कालिन्दी का खयाल आया जिस हिफाजत से रखने के लिये अपने आदमियों के सुपुर्द कर चुका था। उसने कालिन्दी को अपने सामने तलब किया और बिना कुछ कहे या पूछे एक आदमी को हुक्म दिया कि इस औरत की नाक काट लो और छोड दो, जहॉ जी आवे चली जाय।

इसके बाद बालेसिह क्या करेगा और अपना क्रोध किस पर निकालेगा सो जिक्र छोड कर हम इस जगह कालिन्दी का कुछ हाल लिखते है।

कालिन्दी जिसे अपने रूप पर इतना घमण्ड था आज नकटी होकर कुरूपा स्त्रियों की पक्ति में बैठने योग्य हो गई। उसे बहुत ताज्जुब था कि बालेसिह न मेरे साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया मगर वह इसका सबब कुछ पूछ न सकी और उस समय जान बचा कर वहॉ से निकल जाना ही उसने उचित जाना। इस समय जब कि उसे नकटी करके बालेसिह ने निकाल दिया था रात लगभग दो घन्टे के जा चुकी थी। रोती और अपने किये पर अफसोस करती वह नमकहराम औरत नाक पर कपडा रक्ख बालेसिह के लश्कर से बाहर निकली और सीधी पूरब की तरफ चल निकली। इस समय कोई उसका यार और मददगार न था बल्कि यों कहना चाहिये कि उसे खाने तक का ठिकाना न था क्योंकि वह अपने जेवर भी चोरदर्वाजे क पहरे वालों को रिश्वत में दे चुकी थी और अब केवल एक मानिक की अगूठी उसकी उगली में रह गई थी। वह केवल एक मामूली साडी पहिर हुए थी जो मर्दानी पौशाक बदलने के लिये कम्बख्त जसवन्त ने उसे दी थी और असल में वह जसवन्त की ही धोती थी।

उदास और अपने किये पर पछताती हुई कालिन्दी को यकायक ख्याल आया कि और कोई तो महारानी के डर से मुझे अपने घर में घुसने न देगा मगर यहॉ से दो कोस की दूरी पर हरिहरपूर मौजे के जमींदार की लडकी जमुना मेरी सखी है और मुझे बहुत चाहती है शायद वह मेरी कुछ मदद कर सके तो ताज्जुब नहीं अस्तु इस उसी के पास चलना उचित है। कालिन्दी यही सोचती चली जा रही थी मगर हरिहरपुर का रास्ता उसे मालूम न था, वह बिल्कुल ही नहीं जानती थी कि मेरी सखी का घर किधर है और किस राह से जाना होगा हॉ इतना जानती थी कि एक नदी रास्ते में पडेगी। कालिन्दी के नाक से अभी तक खून जारी था और दर्द से उसका जी बेचैन हो रहा था।

थोडी ही देर में एक नदी के किनारे पहुची और उस समय उसे मालूम हुआ कि उसके पीछे पीछे कोई आ रहा है। कालिन्दी ने घूम कर देखा तो दो आदमियों पर निगाह पडी। रात ॲधेरी थी और कालिन्दी भी घबडाई हुई थी इसलिये उन आदमियों की सूरत शक्ल के विषय में वह विशेष ध्यान न दे सकी बल्कि डर के मारे कॉपने लगी और खडी हो गई। उस समय व दोनों आदमी भी रुके और एक न आगे बढ के कालिन्दी से कहा डरो मत मै खूब जानता हू कि तुम्हारा नाम कालिन्दी है और तुम इस समय नदी के पार जाया चाहती हो मगर बिना डोंगी के तुम नदी के पार नहीं जा सकती हो। हम दोनों आदमी मल्लाह है, यहॉ से थोडी ही दूर पर हमारी डोंगी है उस पर सवार करा के तुमको नदी के पार उतार देंगे। इतना कह कर उसने अपने साथी की तरफ देखा और कहा "जाओ डोंगी इसी जगह ले आओ।"

कालिन्दी-(डरी हुई आवाज में) तुमन कैसे जाना कि मै पार जाऊगी और बिना मुझसे पूछे अपने साथी को डोंगी लाने के लिए क्यों भेज दिया ?

मल्लाह-मुझे खूब मालूम है कि आप पार उतरेंगी और इस पार रहना आपके लिए अच्छा भी नहीं है।

कालिन्दी ने इस बात का कुछ भी जवाब न दिया और चुपचाप खडी रहकर नदी की तरफ देखती रही। थोडी ही देर में वह दूसरा मल्लाह डोंगी को लिये हुए उसी जगह आ पहुचा। सोचती विचारती कालिन्दी उस डोंगी पर सवार हुई और ऑचल से थोडा सा कपडा फाड कर पानी से तर करके अपनी नाक पर पट्टी बॉधी। एक मल्लाह खेने लगा और

दूसरा चुपचाप बैठ गया।

यद्यपि कालिन्दी दोनों मल्लाहों से डरी हुई थी परन्तु उसे आशा थी कि दोनों मल्लाह उसे नदी के पार पहुचा देंगे, लेकिन ऐसा न हुआ, क्योंकि जव डोंगी नदी के बीचोबीच में पहुची तो मल्लाहों ने खेवा मॉगा।

कालिन्दी–मेरे पास तो कुछ भी नहीं है खेवा कहॉ से दूॅ।

मल्लाह–(डोंगी को बहाव की तरफ ले जाकर) खेवे ही की लालच से तो तुम्हें पार उतारत है जब तक खवा न ले लेंगे पार न जायग।

कालिन्दी–तो डोंगी वहाव की तरफ क्यों लिये जाते हो ?

मल्लाह–खेवा वसूल करने की नीयत से ?

कालिन्दी–जव मेरे पास कुछ हई नहीं है तो खेवा कहॉ से देंगे ?

मल्लाह–कोई जेवर हो तो दे दो।

कालिन्दी–जेवर भी नहीं है।

मल्लाह–जेवर भी नहीं है तो चुपचाप वैठी रहो, जहॉ हमारा जी चाहेगा तुम्हें ले जायगे और जिस तरह हो सकेगा खेवा वसूल करेंगे !

मल्लाह की आखिरी वात सुनते ही कालिन्दी सुस्त हो गई और डर के मारे कॉपने लगी। उसे निश्चय हो गया कि ये लोग बदमाश हैं और मुझे तग करेंगे। जैसे जैसे डोंगी वहाव की तरफ तेजी के साथ जा रही थी कालिन्दी के कलेजे की धड़कन ज्यादे होती जाती थी। आखिर वहुत मुश्किल से अपने को सम्हाला और वह मानिक की अगूठी जो उसकी वची बचाई पूजी थी और इस समय उसकी उगली में थी उतार कर एक मल्लाह की तरफ वढाती हुई योली, अच्छा यह एक अगूठी मेरे पास है, इसे ले लो और मुझे वहुत जल्द पार उतार दो।' इसके जवाव में मल्लाह (जो चुपचाप बैठा हुआ था) 'वहुत अच्छा' कहके उठा और अगूठी अपने हाथ में लेकर कालिन्दी के सामने खडा हो गया।

कालिन्दी–अव खडे क्यो हो ? किश्ती पार ले चलो !

मल्लाह–अव केवल इसलिये खडे हैं कि तुझ कम्बख्त को अपना परिचय दे दें।

कालिन्दी–(घवडा कर) परिचय कैसा ?

मल्लाह ने एक चोर लालटेन जिसे अपने बगल में छिपाये हुए था निकाली और उसके मुह पर से ढकना हटाके उसकी रोशनी अपने चेहरे पर डाली। उसका चेहरा देखते ही कालिन्दी चिल्ला कर उठ खडी हुई और घबडा कर पीछे हटती हटती बेहोश होकर गिर पडी।

चौबीसवां बयान

आज फिर रनबीरसिह को जख्मी होकर चारपाई का सहारा लेना पडा और आज वेचारी कुसुमकुमारी के लिए पुन वही मुसीवत की घडी आ पहुची जो थोडे ही दिन पहिले रनबीरसिह के जख्मी होने की वदौलत आ चुकी थी। पहिले तो कम्बख्त और नमकहराम जसवन्त ने फरेव देकर इन्हें जख्मी किया था आज बालेसिह के हाथ से जख्मी होकर तकलीफ उठा रहे है मगर इस जख्म की इन्हें परवाह नहीं वल्कि एक प्रकार की खुशी है क्योंकि चोट खाने के साथ ही अपने दुश्मन से बदला ले चुके थे और उसे सदैव के लिये वेकार कर चुके थे।

जिस कमरे में पहिले मुसीवत के दिन काटे थे आज य उस कमरे में नहीं है, बल्कि आज उस कमरे में चारपाई के ऊपर पड़े है जिसमें अपने जीवन वृत्तान्त की तस्वीरें देख कर ताज्जुब में आये थे। एक सुन्दर और नर्म विछावन वाली चारपाई पर रनबीरसिह पडे हुए हैं सिर्हाने की तरफ बेचारी कुसुम वैठी है, सामने की तरफ चारपाई पर बहादुर बीरसेन पडा हुआ है बीच में दीवान सुमेरसिह जो इन तीनों को अपने ही बच्चों के बरावर समझते थे वैठे बातें कर रहे है और थोड़ी ही दूर पर पॉच सात कमसिन और खूबसूरत लौडियॉ हाथ बॉधे खडी हैं। इस समय दीवान साहब भी सुस्त थे क्योंकि इसके पहिले के बखेडे में जो किले के अन्दर हुआ था जख्मी हो चुके थे, तथापि इस योग्य थे कि बैठ कर इन लोगों से बातचीत कर सकते।

रात लगभग पहरभर के जा चुकी है। उस चित्रवाले विचित्र कमरे में रोशनी बखूबी हो रही है जिसकी दीवार पर की तस्वीरें चारपाई पर लेटे रहने की अवस्था में भी रनबीरसिह बखूबी देख सकते है। इस समय जिस तस्वीर पर अपनी निगाहें दौडा रहे थे उसके देखने से रनवीरसिह के चेहरे पर कुछ खुशी सी झलक रही थी। थोडी देर तक सन्नाटा रहा

इसके बाद कुसुम ने दीवान साहब की तरफ देख कर कहा—

कुसुम–यदि इस समय इन चित्रों के विषय में कुछ सुना जाय तो अच्छा है।

रनवीर–हॉ मेरा जी भी बहले और उन भेदों का पता लगे जिनके जाने विना जी बेचैन हो रहा हे।

दीवान–हॉ ठीक है, परन्तु ऐसा करने की आज्ञा नहीं है।

रनबीर–(ताज्जुब से) किसकी आज्ञा और कैसी आज्ञा ?

दीवान–जिस समय राजा कुबेरसिह और राजा इन्द्रनाथ ने इस कमरे की ताली मेरे सुपुर्द की थी उस समय अपना और इन तस्वीरों का भेद अच्छी तरह समझाने के बाद मुझे ताकीद करदी थी कि इन तस्वीरों के भेद बीमारी की अथवा रज की अवस्था में आप लोगों स कदापि न कहू, इसलिये जब मै आपको और कुसुमकुमारी को अच्छी तरह प्रसन्न देखूँगा तभी जो कुछ कहना होगा कहूगा।

रनबीर–(कुछ सोचकर) ठीक है यह आज्ञा भी मतलब मे खाली नहीं है, खैर।

कुसुम–मै भी बडों की आज्ञा मानना उचित समझती हू, अच्छा यदि बालेसिह के विषय में कुछ खबर मिली हो तो कहिये।

दीवान–अभी दा घण्टे हुए होंगे एक जासूस ने खबर दी थी कि बालेसिह दर्द से बहुत ही बेचैन है, रज और गुस्से में ओर तो कुछ कर न सका केवल कम्बख्त कालिन्दी की नाक काट कर उसे निकाल दिया और आप भी वहाँ से कूच करने की तैयारी कर रहा है।

बीरसेन–अब भी यदि यहॉ से न भागे तो उसकी शामत ही कहना चाहिये क्योंकि वह अपनी सजा को पहुच चुका और अब बहादुरी दिखाने योग्य नहीं रहा।

दीवान–हॉ जसवन्त के मरने से वह और भी निराश हो गया।

बीरसन–(रनबीरसिह की तरफ इशारा कर के) अहा लडाई के समय इनकी बहादुरी देखने योग्य थी। मुझे तो जन्म भर ऐसा याद रहेगी जैसे आज ही की बात हो।

रनबीर–(बीरसेन से) हॉ यह तो तुमने ठीक तरह से कहा ही नहीं कि जब कुसुम की खोज में यहॉ से निकले तो क्या क्या हुआ और कुसुम का पता लगाने में क्या क्या कठिनाइयॉ हुईं।

इसके जवाब में बीरसेन ने अपना कुल हाल अर्थात् घर से निकलना, चारदर्वाजे के फाटक पर जाना, पहरवालों की बेईमानी का हाल कालिन्दी क जेवरों का मिलना (जो उसने रिश्वत में दिय थे) और चोर दर्वाजे की राह से बाहर जाना इत्यादि बयान किया। इसके बाद दीवान साहब का इशारा पाकर सब कोई वहॉ से चले गये और केवल बीरसेन और रनबीर उस कमरे में रह गये क्योंकि रात बहुत जा चुकी थी और उन दोनों के लिये आराम करना बहुत मुनासिब था। इस समय एक कमरे में केवल एक शमादान जलता रह गया और बाकी दीवारगीर इत्यादि की बत्तियॉ बुझा दी गईं।

केवल दो घडी रात बाकी थी जब बीरसेन की ऑख खुली और उस समय उन्हें बहुत ही आश्चर्य हुआ जब रनबीरसिह की चारपाई खाली देखी। ताज्जुब में आकर वे सोचने लगे कि है, यह क्या हुआ ? रनबीरसिह में तो उठने की भी ताकत नहीं थी, फिर चले कहॉ गय यदि उठने की ताकत हो भी तो उन्हें चारपाई पर से उठना उचित न था क्योंकि जख्म पर पट्टी बॅधी थी और हिलने डोलन की उन्हें मनाही कर दी गई थी। आखिर बीरसेन से रहा न गया और पुकार उठे, "कोई है ?

कमरे का दर्वाजा उढकाया हुआ था मगर उसके बाहर लौंडियॉ बारी बारी से पहरा दे रही थीं। बीरसेन की आवाज सुनते ही एक लौंडी दर्वाजा खोल कर कमरे के अन्दर आई मगर वह भी रनबीरसिह की चारपाई खाली देखकर घबडा गई और ताज्जुब में आकर बीरसेन की तरफ देखने लगी।

बीरसेन–(चारपाई पर बैठकर) क्या रनबीरसिह जो बाहर गए है ?

लौंडी–जी नहीं, या शायद उस समय बाहर गए हों जब कोई दूसरी लौंडी पहरे पर हो।

बीरसन–पूछो और पता लगाओ।

वे सब लौंडियॉ बीरसेन के सामने आईं जो पहिले पहरा दे चुकी थीं मगर किसी की जुबानी रनबीरसिह के बाहर जाने का हाल मालूम न हुआ। धीरे धीरे यह खबर महारानी कुसुमकुमारी के कान तक पहुची और वह घबडाई उस कमरे में आई। बीरसेन की जुबानी सब हाल सुन कर उसका दिल धडकने लगा मगर क्या कर सकती थी। जो कुछ थोडी रात बाकी थी वह बात की बात में बीत गई बल्कि दूसरा दिन भी बीत गया मगर रनबीरसिह का कुछ भी पता न लगा।

पच्चीसवां बयान

सुबह का सुहावना समा सभी के लिये एक सा नहीं होता। यद्यपि आज ही सुबह उन लोगों के लिये जो हर तरह से खुश है सुखदाई है परन्तु उस होनहार जवामर्द की सुबह दु खदाई जान पड़ती है जिसका नाम रनबीरसिंह है और जिसका हाल अब इस बयान मे हम लिखेंगे।

पारिजात के घने जगल में एक पेड़ के नीचे रनबीरसिंह अपने को कोमल पत्तों के बिछावन पर पड़े हुए पाते है। सुबह की ठडी ठडी हवा ने उनको जगा दिया है और वे ताज्जुब भरी निगाहों से चारो तरफ देख रहे है और जब अपने यकायक यहाँ आने का सबब नहीं मालूम होता तो यह सोच कर फिर आखें बन्द कर लते है कि अवश्य यह निद्रा की अवस्था है और मै स्वप्न देख रहा हू। जागने की बनिस्वत स्वप्न का भ्रम जो उन्हें विशेष हो रहा है इसका एक सबब यह भी है कि उनके जख्मों पर यद्यपि अभी तक पट्टी बँधी हुई है मगर दर्द की तकलीफ बिलकुल नहीं है। कल तक उनके जख्मी हाथ में ताकत बिल्कुल न थी परन्तु इस समय उसे बखूबी हिलाडुला सकते है कमजोर बदन में इस समय ताकत मालूम होती है, और वे अपने को बखूबी चलने फिरने के लायक समझते है।

जख्मी आदमी की अवस्था थोड़ी ही देर में यकायक इस तरह नहीं बदल सकती इस बात को साच कर उन्होंने दिल में निश्चय कर लिया कि यह स्वप्न है और फिर आंखें बन्द कर ली। मगर थोडी देर तक चुपचाप पड़े रहने के बाद फिर आखें खोलकर उठ बैठे और अचम्भे में आकर चारो तरफ देखते हुए धीरे धीरे बोलने लगे —

"ओफ इस स्वप्न से किसी तरह छुट्टी नहीं मिलती। क्या जाने वास्तव में यह स्वप्न है भी या नहीं। (अपने हाथ में चिकोटी काट कर) नहीं नहीं, यह स्वप्न नहीं है, और देखो पहिले जब ऑख खुली थी तो पूरब तरफ सूर्य की कवल लालिमा दिखाई देती थी परन्तु इस समय धूप अच्छी तरह निकल आई है। यद्यपि गुजान पडों क सबब स पूरी धूप यहाँ तक नहीं पहुचती कवल वुन्दकियों का मजा दिखा रही है तथापि कुछ गर्मी मालूम हाती है। (खडे होकर और दो चार कदम टहल कर) नहीं नहीं नहीं यह स्वप्न कदापि नही है मगर आश्चर्य की बात है कि यकायक मै यहॉ क्योंकर आ पहुचा और मरे कमजोर तथा जख्मी बदन मे चलने फिरने की सामर्थ्य कहाँ से आ गई! (जख्म पर बँधी हुई पट्टियों की तरफ देख कर) ये पट्टिया वह नहीं है जो कुसुम के जर्राह ने लगाई थी बेशक किसी न बदली है। (एक पट्टी खोल कर) वह मरहम भी नहीं है यह तो किसी किस्म की घास पीस कर लगाई हुई है 'आश्चर्य आश्चर्य! ईश्वर ने जडी बूटियों मे भी क्या सामर्थ्य दी है!' जख्म बिल्कुल ही मुद गए है मगर मालूम नहीं एक ही दिन में यह बात हुइ है या कई दिनों मे ? आज ही यहाँ आया हू या कई दिन से इस जमी पर पडा हू ? मुझ यहा कौन लाया ? यद्यपि मेरी बीमारी तो दूर हो गई परन्तु यह नेकी करने वाले न मुझ एक उससे भी बडी बीमारी में डाल दिया। वह बीमारी कुसुम की जुदाई की है। जख्मों में दवा लगाने के बदले यदि नमक पीसकर डाल दिया जाता तो इतनी तकलीफ न हाती जितनी कुसुम की जुदाइ से हो रही है इसीलिए कुछ समझ में नहीं आता कि मै इस नेकी कहू या बदी ? यह लो दाहिनी आख भी फडक रही है। लोग इसे अच्छा कहते है मगर मै क्योंकर अच्छा कहू और कैसे समझूँ कि किसी तरह की खुशी मुझे होगी ? मै अपनी तमाम खुशी कुसुम की खुशी के साथ समझता हू। इस समय उसकी जुदाई में तो अधमुआ हो ही रहा हू मगर मुझे खोकर वह भी बहुत ही पछताती होगी। हाय उस आदमी की सूरत भी नहीं दिखाई देती जो उस किले के अन्दर स मुझे इस तरह उठा लाया कि किसी को कानों कान खबर तक न हुई। वह कौन है ? (जोर से) यहाँ अगर कोई है तो मेरे सामने आवे!

मगर रनबीरसिंह की बात का किसी ने कोई जवाब न दिया, वे और भी घबड़ाये और सोचने लगे कि अब बिना इधर उधर घूमे कुछ काम न चलेगा कोई मिले तो उससे पूछूँ कि तेजगढ किधर और यहाँ से कितनी दूर है। अफसोस इस समय मेरे पास कोई हर्बा भी नहीं है। यदि किसी दुश्मन से मुलाकात हो जाय तो मै क्या कर सकूगा ?

यकायक रनबीरसिंह की निगाह एक लिखे हुए कागज पर जा पडी जो उस पेड के साथ चिपका हुआ था जिसके नीचे कोमल पत्तों के बिछावन पर उन्होंने अपने को पाया था। पास जाकर देखा तो यह लिखा हुआ था —

उसको मत भूलो जिसने तुमको सब योग्य बनाया। पश्चिम की तरफ जाओ जहा तक जा सको। दोस्त और दुश्मनों से होशियार रहो।"

इसके पढने से एक नई फिक्र पैदा हुई क्योंकि उस कागज में पश्चिम तरफ जाने की आज्ञा के साथही दोस्त और दुश्मनों से अपने को बचाने के लिए ध्यान दिलाया गया था। थोड़ी देर तक तो खडे खड़े कुछ सोचते रहे, अन्त में यह कहते हुए पश्चिम तरफ को चल निकले कि —'जो होगा देखा जायगा'।

लगभग आध कोस के जाने बाद उन्हे पत्ते की एक झोपडी दिखाई पडी जिसके आगे की जमीन बहुत साफ और सुथरी थी। छोटे छोटे जगली मगर खुशनुमा पेडो को लगा कर छोटा सा बाग भी बनाया हुआ था जिसके बीच में एक साधु धूनी लगाये बैठा था जिसने रनबीरसिह को दखते ही पुकारा और कहा आओ रनबीर मै मुबारकबाद दता हू कि तुम दुश्मन के हाथ से बच गए !

रनबीर–(पास जाकर और दण्डवत करके) मेरी समझ में न आया कि आपने किस दुश्मन की तरफ इशारा करके मुझे मुबारकबाद दी ?

साधु–(आशीर्वाद देकर) आओ मेरे पास बैठ जाओ सब कुछ मालूम हो जायगा।

रनबीर–(बैठ कर और हाथ जोड कर) क्या आप अपना परिचय मुझे दे सकते है ?

साधु–हाँ परन्तु आज नहीं इसके बाद मै एक दफे तुमसे और मिलूगा तब अपना हाल कहूगा। इस समय जो जरूरी बातें मै कहता हू उसे ध्यान देकर सुनो।

रनबीर–आज्ञा कीजिये मै ध्यान देकर सुनूँगा।

रनबीरसिह के ऊपर उस साधु का रोब छा गया। दमकता हुआ चेहरा कहे देता था कि साधु महाशय साधारण नही है बल्कि तपोबल की बदोलत अच्छ दर्जे को पहुच चुके है। उनकी अवस्था चाहे जो हो परन्तु सिर और दाढी के बाल चोथाई से ज्यादे सफेद नही हुए थे और रनबीरसिह गौर करने पर भी नही समझ सकते थे कि इन साधु महाशय की इज्जत और मुहब्बत उनके दिल मे ज्याद क्यों होती जा रही है।

साधु–मै समझता हू कि तुम्हें इस समय जख्मों की तकलीफ न होगी और उस अनमाल बूटी ने तुम्हें बहुत कुछ फायदा पहुचाया होगा जो तुम्हारे जख्मों पर बाधी गई थी।

रनबीर–बेशक अब मुझे किसी तरह की तकलीफ नही है। मालूम होता है कि यह कृपा आप ही की तरफ से हुई है ?

साधु–इसका जवाब मे अभी नहीं दे सकता। हॉ अब सुनो कि मै क्या कहता हू। कुसुम बेशक तुम्हारी है क्योंकि उसके साथ तुम्हारी शादी हो चुकी है परन्तु तेजगढ उसकी अमलदारी है इसलिये तुम स्त्री की अमलदारी में रह क और वहॉ हुकूमत करके जमाने के आगे इज्जत नहीं पा सकत। बेशक उस से जुदा होने का रज तुम्हें होगा, परन्तु इस समय उसका ध्यान भुला देना चाहिये। तुम्हे वह दिन याद होगा जिस दिन तुम्हारा बाप राजा इन्द्रनाथ अपना राज अपने मित्र नारायणदत्त को देकर आजाद हुआ था और तुम्हें उसके सुपुर्द करके साधु हुआ था।

रनबीर–जी हॉ वह बात मुझे बखूबी याद है, परन्तु ऐसा करने का सबब मै कुछ नही जानता।

साधु–इसके कई सबब है जो पीछे मालूम होगे, उनमे से एक सबब यह भी है कि बेईमान कर्मचारियो ने उन्हे कई दफे जहर दे दिया था जिससे उन्हें राज्य से घृणा हो गई थी तथापि उन्होंने जो कुछ किया अच्छा किया। आज इतना समय नहीं है कि मै उनका खुलासा हाल तुमसे कहू बल्कि मै समझता हू कि बहुत कुछ हाल दीवान सुमेरसिह ने तुमसे उन चित्रों को दिखा कर कहा होगा जो कुसुम के खासमहल में एक कमरे के अन्दर दीवारो पर बन हुए है।

रनबीर–बेशक उन चित्रों ने मेरी आखें खोल दी थीं परन्तु दीवान साहब की जुबानी उनका हाल सुनने का मोका न मिला क्योंकि पहिले दिन जब दीवान साहब उन तस्वीरों की तरफ इशारा कर के खुलासा हाल कहने लगे तभी कुसुम पर आफत आ गई जिसके !

साधु–हॉ हॉ उसका हाल मुझे मालूम है, अपना बयान जल्द खतम करो।

रनबीर–दूसरे दिन जब दीवान साहब से उन तस्वीरों का हाल मेंने पूछा तो उन्होंने यह कह कर टाल दिया कि बीमारी अथवा रज की अवस्था में इन तस्वीरों का हाल कहने की आज्ञा नहीं है।

साधु–दीवान ने बहुत अच्छा किया खैर सुनो इस समय मेरी आज्ञानुसार तुम्हें एक जरूरी काम करना होगा जिससे तुम इनकार नहीं कर सकते और न उस काम को किये बिना तुम दुनिया में खुशी और नेकनामी के साथ रह सकते हो।

रनबीर–मै समझता हू कि कुसुम के महल से यकायक मेरा यहाँ पहुचना आप ही के सबब स हुआ ?

साधु–(कुछ चिढकर) इन सब बातों को तुम अभी मत पूछो क्योंकि मै तुम्हारी इन बातों का जवाब न दूगा। अच्छा पहिले इस कागज को देखो और पढ़ो फिर जो कुछ मै कहू उसे करो।

इतना कह कर साधु ने धूनी के बगल की जमीन खोदी और वहॉ से कागज का एक छोटासा मुट्ठा निकालकर रनबीरसिह के हाथ में दिया। रनबीरसिह ने उसे खोला और पढना शुरू किया। सब के ऊपर एक तस्वीर थी और उस के नीचे कुछ लिखा हुआ था। रनबीरसिह उस [illegible] पढते जाते थे और ऑखो से ऑसू की बूँदें गिरा रहे थे यहाँ तक कि कागज खतम करते करते तक हिचकी [illegible] त में कागज जमीन पर रखकर साधु महाराज के पैर पर गिर

कर बोले "बस अब सिवाय आपके बदनामी का टीका मेरे सर से छुड़ाने वाला और कोई भी नही है।

साधु ने रनवीर को जमीन पर से उठाकर गले से लगाया और कहा, घबड़ाओ मत, आज दोपहर बाद तुम्हें अपने साथ लेकर मै रवाना हो जाऊँगा।

साधु महाशय इतना कह कर उठ खड़े हुए और रनवीर को बैठे रहने के लिये ताकीद करके जंगल मे चले गए। थोड़ी देर बाद वे एक बूटी हाथ में लिये हुए आ पहुंचे जिसकी जड़ का हिस्सा तोड़ कर रनवीर को खाने के लिये दिया और पत्तियाँ मलकर उसका पानी रनवीर के जख्मों में लगाने के बाद बोले अब तुम्हें जख्म की तकलीफ बिल्कुल न रहेगी और चलने तथा लड़ने की ताकत भी आ जायगी। घंटे भर बाद कुटी के अन्दर से दो चार फल लाकर रनवीर को खिलाया और पानी पिलाया। दोपहर होते होते उन्हें अपने साथ चलने के लिये कहा और वह कागज का मुट्ठा जो रनवीर को पढ़ने के लिए दिया था जंगल में रनवीर के सामने ही एक पेड़ के नीचे गाड़ दिया।

छब्बीसवां बयान

रनवीर को साथ लिए हुए साधु महाशय धीरे धीरे पश्चिम की तरफ रवाना हुए और सूर्य अस्त होते होते तक जंगल ही जंगल बराबर चले गये। यद्यपि धूप की तेजी दुःखदाई थी परन्तु घने पेड़ों की बदौलत दोनों मुसाफिरों को कोई कष्ट न हुआ। इस बीच में उन दोनों में विशेष बातचीत न हुई हां दो चार बातें मतलब की हुई जिन्हें हम नीचे लिखते है —

साधु–तुमने समझा होगा कि जसवन्त को मार कर और बालेसिंह को बेकाम करके तुम निश्चिन्त हो गए मगर नहीं तुम्हें उस भारी दुश्मन की कुछ भी खबर नहीं है जिसकी बदौलत तुम्हारे पिता ने दुःख भोगा और जो तुमको भी सुख की नींद सोने न देगा।

रनवीर–उस कागज के पढ़ने से मुझे बहुत कुछ हाल मालूम हुआ है। आशा है कि उस दुश्मन का पता आप मुझे देंगे और मैं जिस तरह हो सकेगा उससे बदला ले सकूंगा।

साधु–बेशक ऐसा ही होना चाहिये। तुम वीर-पुत्र हो और इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम स्वयं बहादुर हो इसलिये दुश्मन से अपना बदला अवश्य लोगे। मैं एक आदमी से तुम्हारी मुलाकात कराता हूँ जो समय पर तुम्हारी सहायता करेगा। ताज्जुब नहीं कि इस काम को करते करते बहुत से दीन दुःखियाओं का भला भी तुम्हारे हाथ से हो जाय। तुम्हें इस समय कुसुम का ध्यान भुला देना चाहिये क्योंकि उस कागज के पढ़ने से तुम समझ ही गए होगे कि कुसुम की भलाई भी इस काम के साथ ही साथ होगी।

रनवीर–बेशक ऐसा ही है।

इसके अतिरिक्त और जो कुछ बातें हुई उनके लिखने की हम कोई आवश्यकता नहीं समझते।

सूर्य अस्त होने पर ये दोनों यात्री उस घने जंगल से बाहर हुए और एक पहाड़ी के नीचे पहुंचे अब साधु महाशय उस पहाड़ी के नीचे नीचे दक्खिन की तरफ जाने लगे। लगभग आध कोस के जाने के बाद एक छोटीसी बावली और उसके किनारे एक बारहदरी दिखाई पड़ी जिसके पास पहुंचने पर साधु महाशय ने रनवीर की तरफ देखा और कहा दो तीन घण्टे यहाँ आराम करना उचित है, इसके बाद पहाड़ी पर चढ़ेंगे।' इसके जवाब में रनवीरसिंह ने कहा, 'बहुत अच्छा।'

पहर भर से ज्यादे रात जा चुकी है, चन्द्रमा के दर्शन की कोई आशा नही है परन्तु साधु महाशय को इसकी कोई परवाह नहीं वह रनवीरसिंह को साथ ले पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। इस समय रनवीरसिंह के दिल में तरह तरह की बातें पैदा होती थीं परन्तु न जाने क्यों उन्हें साधु पर इतना विश्वास हो गया था कि उसकी आज्ञा के विरुद्ध कुछ भी करने का जरा साहस नहीं कर सकते थे। आधी रात जाने के पहिले ही दोनों मुसाफिर उस पहाड़ी के ऊपर जा पहुंचे।

इस पहाड़ी के ऊपर से चारो तरफ निगाह दौड़ाकर देखना और विचित्र छटा का आनन्द लेना इस समय कठिन है क्योंकि रात का समय तिस पर चन्द्रदेव के दर्शन अभी तक नहीं हुए हाँ इतना मालूम हुआ कि पश्चिम तरफ मैदान है। रनवीरसिंह को साथ लिये हुए साधु महाशय उसी मैदान की तरफ रवाना हुए और लगभग आध कोस के जाकर रुके क्योंकि आगे की जमीन ढालवीं थी और उन दोनों को नीचे की तरफ उतरना था। रनवीरसिंह को चलने में परिश्रम हुआ होगा और थक गये होंगे यह सोच कर साधु महाशय रनवीरसिंह को एक चट्टान पर बैठने का इशारा करके आपभी उसी पर बैठ गए मगर थोड़ी देर दम लेकर फिर उठ खड़े हुए और बाईं तरफ झुकते हुए ढालवीं पहाड़ी उतरने लगे। लगभग सौ कदम के जाकर एक गुफा के मुंह पर साधु खड़े हुए और कुछ ऊँची आवाज में बोले, "महादेव," इसके जवाब में

गुफा क अन्दर से भी वैसी ही आवाज आइ और साथ ही इसक एक सन्यासी बाहर निकल आया जिसने रनबीरसिंह की तरफ इशारा करके साधु महाशय से कुछ पूछा। सन्यासी की विचित्र बोली रनबीर की समझ में न आई और उसके जवाब में साधु ने भी जो कुछ कहा वह भी वे समझ न सके। इसक बाद दोनों को लिए हुए सन्यासी गुफा क अन्दर चला गया और जब तक रात बाकी रही उस गुफा के अन्दर से कोई भी न निकला, सवेरा होने पर बल्कि कुछ दिन निकलने पर तीनों आदमी गुफा के बाहर आये। मगर इस समय रनबीर सिंह की सूरत कुछ विचित्र ही हो रही थी उनका तमाम बदन इतना काला हो गया था कि उनका संगी साथी भी उन्हें नहीं पहिचान सकता था। रनबीरसिंह अपने बदन की तरफ देख कर हँसे और बोले बूटी तो लाल थी परन्तु उसके रस ने मुझे बिलकुल ही काला कर दिया।"

सन्यासी–धूप लगन पर यह रंग और भी काला और चमकीला होगा और महीने भर तक इसमें किसी तरह की कमी न होगी, इसक अन्दर तुम्हारा काम न हुआ तो एक दफे फिर उसी बूटी का रस लगाना।

रनबीर–बहुत अच्छा।

सन्यासी–उस बूटी को तुमने बखूबी पहिचान लिया है न ?

रनबीर–जी हाँ मैं बखूबी पहिचान गया।

सन्यासी–इस पहाडी में वह बूटी बहुतायत से मिलेगी। अच्छा अब वहाँ जाने का रास्ता तुम्हें समझा देना उचित है (इशारा कर के) तुम इस तरफ जाओ थोडी थोडी दूर पर स्याह पत्थर की छोटी छोटी ढेरियाँ तुम्हें मिलेंगी, उन्हें बाई तरफ रखते चले जाना अथात् उन ढेरियों के दाहिनी पगडण्डी पर बराबर चल जाना और वहाँ का हाल तो तुम्हें अच्छी तरह समझा ही चुके हैं। और कुछ पूछना है या सब बातें ध्यान में अच्छी तरह आ गई ?

रनबीर–अब कुछ नहीं पूछना है सब बात मैं अच्छी तरह समझ गया।

इसके बाद साधु और सन्यासी से रनबीरसिंह बिदा हुए और पश्चिम तरफ चल निकले। इस समय सूरत शकल के साथ ही साथ रनबीरसिंह की पौशाक भी बदली हुई थी। वह फकीरी के वेश में थे और हाथ में एक लकडी के सिवाय एक छोटी सी कटार भी कमर में छिपाए हुए थे। दो सौ कदम जाकर एक स्याह पत्थर की ढेरी नजर आई जिसके दाहिनी तरफ पगडण्डी थी। रनबीरसिंह उसी पगडण्डी पर चलने लगे और इसी तरह स्याह पत्थर की ढेरियों का अपना निशान मान कर दो पहर दिन चढ़ तक एक चश्मे के किनारे पहुंचे जिसके दोनों तरफ सायेदार और घने पेड लगे हुए थे। रनबीरसिंह ने पीछे फिर कर देखा तो बहुत ऊँचा पहाड दिखाई दिया क्योंकि अभी तक वे बराबर नीचे अर्थात ढाल की तरफ ही उतरते चले गये थे। सामने और दाहिनी तरफ भी ऊंचा पहाड था मगर बाईं तरफ जहाँ तक निगाह काम करती थी बराबर जमीन और घना जंगल दिखाई देता था और यह चश्मा भी उसी तरफ बह कर गया था।

रनबीरसिंह को सफर की थकावट और भूख ने आगे चलने न दिया इस लिये थोडी देर तक आराम करना उन्हें उचित जान पडा। पास ही के पेड़ों में से जंगली फल जो वहाँ बहुतायत से लगे हुए थे तोड कर खाये और चश्मे के पानी से प्यास बुझा कर पत्थर की एक चट्टान पर लेट रहे जो चश्मे के किनारे ही सायेदार पेडों के नीचे थी। जंगली पेडों से छनी हुई निराग और ठंढी ठंढी हवा लगने से उन्हें नींद आ गई और वे ऐसा बेखबर सोये कि सूर्यास्त तक उठने की नौबत न आई। सन्ध्या होते होते दस पन्द्रह सिपाही एक पालकी को घेरे हुए वहाँ आ पहुचे और दम लेने के लिए उसी चश्मे के किनारे थोडी दूर तक ठहर गए। उन लोगों की आवाज से रनबीरसिंह की नींद उचट गई। वे घबरा कर उठ बैठे और आसमान की तरफ देख कर अफसोस करने लगे क्योंकि शाम होने के पहिले ही उन्हें उस जगह पहुच जाना चाहिये था, जहाँ ये जा रहे थे। यद्यपि वह जगह अब बहुत दूर न था परन्तु रात के समय उन निशानों का पाना बहुत ही मुश्किल था जिनके सहारे वे चश्मे के आगे बढ़कर अपने नियत स्थान पर पहुँचते।

थोड़ी देर तक चिन्ता करने के बाद रनबीरसिंह उठ खडे हुए और यह जानने के लिये पालकी की तरफ बढ़े कि उसके अन्दर कौन है और इतने सिपाही उस पालकी को घेर कर क्यों और कहा चले जाते है। इस विचार के साथ ही रनबीरसिंह को यह भी शक हुआ कि इन सिपाहियों को हमने कहीं देखा है या इनकी चाल ढाल से जानकार अवश्य हैं। आखिर दिल ने गवाही दी और बता दिया कि बेशक ये सब बालेसिंह के सिपाही हैं।

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस सफर में रनबीरसिह फकीराना भेष में थे साथ ही उनका शरीर भी इतना काला हो गया था कि उनकी माँ भी यदि देखती तो शायद पहिचान न सकती इसलिये हमारे बहादुर ने निश्चय कर लिया कि ये लोग मुझे कदापि न पहिचान सकगे अस्तु पास चल कर टोह लेना चाहिय कि ये लोग कहाँ जा रहे हैं और इस पालकी के अन्दर कौन है।

रनबीरसिह मस्त साधु की नकल करते हुए उस पालकी की तरफ चले अर्थात् कभी जमीन और कभी आसमान की तरफ दखत और यह बकते हुए आगे बढे कि— अहा! तू ही तो है ! जब पालकी के पास पहुँचे तो सिपाहियों न हाथ जोडे और अनोखे बाबाजी ने पालकी की तरफ देख क कहा— अहा! तू ही तो है ! फिर आसमान की तरफ देख के कहा – 'अहा! तू ही तो है ! उस पालकी का पट खुला हुआ था इसलिये रनबीरसिह न देख लिया कि उसके अन्दर बालेसिह लेटा हुआ है।

एसे उजाड और बीहड स्थान में बालेसिह को दख कर रनबीरसिह को ताज्जुब नहीं हुआ क्योंकि स्वामीजी की बदौलत वे बालेसिह के गुप्त भेदों को अच्छी तरह जान चुके थे और उन्हें यह भी निश्चय हो गया था कि जहाँ मै जा रहा हूँ बालसिह भी उसी जगह जायगा। बालेसिह क सिपाहियों न भी रनबीरसिह को अच्छी तरह गोर से देखा मगर महात्मा जान कर चुप हो रह कुछ पूछने की हिम्मत न पडी। रनबीरसिह भी ज्यादा देर तक पालकी के पास न रहे, वहाँ से लौट कर चश्मे क पार उतर गय और एक पेड के नीच बैठ कर देखने लगे कि अब वे लोग क्या करते हैं या किधर जाते हैं।

घण्ट ही भर के बाद अन्धकार ने धीरे धीरे अपना दखल जमा लिया। बालेसिह के सिपाहियों ने मशालें जलाई कहारों ने पालकी उठाई और सभी ने उस तरफ का रास्ता लिया जिधर चश्में का पानी बह कर जा रहा था। रनबीरसिह को भी उसी तरफ जाना था मगर एक तो सन्ध्या हा गई थी दूसरे बालेसिह के साथ जाना भी मुनासिब न जाना लाचार यह निश्चय किया कि रात इसी जगल में बितावेंगे और सवेरा होने पर रवाना होंगे। रनबीरसिह एक पत्थर की चट्टान पर लेट रहे मगर दिन को सो जाने और इस समय तरह तरह के विचारों में डूबे रहने के कारण उन्हें नींद न आई। पहर रात जात जाते तक जगली जानवरा के बोलने की आवाज आने लगी। ऐसी अवस्था में वहाँ ठहरना उचित न जान रनबीरसिह एक ऊँचे और घने पेड पर चढ गये।

उन्हें पेड पर चढे आधी घडी से ज्यादे न बीती थी कि दूर से मशाल की रोशनी नजर आई जो इन्हीं की तरफ चली आ रही थी, कुछ पास आने पर मालूम हुआ कि एक आदमी हाथ में मशाल लिये हुए आगे है और उसके पीछे पाँच औरतें और हाथ में नगी तलवार लिये हुए एक सिपाही है। कुछ ही देर में वे औरतें उसी पेड के नीचे आ पहुँची जिस पर रनबीरसिह चढे हुए थे। वे पाँचों औरतें कमसिन और खूबसूरत थीं लेकिन पौशाक उनकी बिलकुल ही सादी यद्यपि साफ थी, बदन में जेवर का नाम निशान न था। ये औरतें बहुत ही खूबसूरत और भोली भाली थीं मगर इनके चेहरे पर रज गम और तरद्दुद की निशानी साफ साफ पाई जाती थी। ये सब औरतें एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गई जो उसी पेड़ के नीचे था एक तरफ मशालची खडा हो गया और दूसरी तरफ वह सिपाही भी हुकूमत की निगाह से उन औरतों की तरफ देखता हुआ खड़ा हो गया। अन्दाज से मालूम होता था कि इन सभों को शीघ्र ही किसी के आने की आशा है क्योंकि वे पाँचों औरतें सिर झुकाए बैठी हुई थी। मशालची अपना काम कर रहा था, सिपाही को केवल हिफाजत का खयाल था, पूरी तौर से सन्नाटा था कोई किसी से बात करने की इच्छा भी नहीं करता था। आधे घण्टे तक यही हालत रही, इसके बाद घोडे की टापों की नर्म आवाज आने लगी जिससे साफ जाना जाता था कि कोई आदमी घोडे पर सवार धीरे धीरे इसी तरफ आ रहा है। टापों की आवाज ने सभों को चौंका दिया, मशालची ने कुप्पी में से तेल उलट कर मशाल की रोशनी तेज कर दी सिपाही अपने कुर्ते को जो कईजगह से सिकुड गया था खींच तान कर और चपरास को ठीक कर मुस्तैदी के साथ खडा हो गया मगर उन पाँचों औरतों के चेहरे पर बदहवासी का हिस्सा बहुत ज्यादा हो गया और वे तरद्दुद भरी निगाहों से एक दूसरी को देखने और आँसू की बूँदें गिराने लगीं। बात की बात में वह सवार वहाँ आ पहुचा जिसके आने की आहट ने सभों की हालत बदल दी थी। उसे देखते ही वे औरतें उठीं और हाथ जोड कर मगर सिर झुकाये हुए सामने खडी हो गईं। पेड पर बैठे हुए रनबीरसिह सोच रहे थे कि वह बेशक कोई जालिम और भयानक रूपधारी मनुष्य होगा जिसके आने की आहट से वे औरतें ज्यादे दु खी और परेशान हो गई थीं मगर नहीं यह आदमी बहुत ही हसीन और नौजवान था। इसकी पौशाक भी बेशकीमत थी इसका मुश्की घोडा भी बहुत ही खूबसूरत और चञ्चल था, और सूरत देखने से यह जवान नेक और रहमदिल भी मालूम पडता था, फिर भी न मालूम वे औरतें उसके आने से इतना क्यों डरी थीं। हाँ एक बात और कहने के लायक है जो यह कि उस अभी आये हुए नौजवान की सूरत से भी रज और गम की

निशानी पाई जाती थी। वह अपने घोडे स नहीं उतरा मगर हसरत भरी निगाहों से उन औरतों की तरफ देखने लगा। उन औरतों में से जा अभी तक हाथ जोडे खडी थीं एक ने सिर उठाया और नौजवान की तरफ देख कर पूछा, "क्या हमलोंगों के लिए जो कुछ हुक्म हुआ था वह वहाल ही रहा ? इसके जवाव में नौजवान ने एक लम्बी सॉस लेकर कहा अफसोस ! क्या करू लाचार हू !! उस औरत ने फिर पूछा 'क्या कुसुमकुमारी के लिए भी वही हुक्म दिया गया है ? अबकी दफे जवान 'हॉं ! करके रह गया।

अभी तक तो रनवीरस्हि वडी सावधानी से इन सभों की वातें सुन रहे थे मगर आखिरी दो वातों ने उन्हें भी उदास करके तरद्दुद में डाल दिया। वह सोचने लगे कि ये औरतें कौन है ! यह नौजवान कहॉं से आया ! इन औरतों से और कुसुमकुमारी स क्या निस्वत या इस नौजवान से और कुसुमकुमारी से क्या सम्वन्ध ! और इस भयानक जंगल में कुसुमकुमारी पर हुकूमत करन वाला कौन है और कहॉं रहता है ! आह इस जगह उन्हें एक दूसरे ही तरद्दुद ने घेर लिया और वे मन ही मन सोचने लगे– अब मुझमें इतनी ताकत न रही कि इन बातों का पता लगाये बिना आगे बढूं। खैर देखना चाहिये अव ये औरतें कहॉं जाती है और यह नौजवान इन सभों के साथ कैसा वर्ताव करता है !!

उन सभों में फिर कुछ वातें न हुई, हॉं उस नौजवान ने उन पॉंचों की तरफ दख कर केवल इतना कहा, अच्छा मेरे पीछ पीछे चले आओ। 'नौजवान ने धीरे धीरे घने जगल की तरफ घोडा वढाया। सिपाही मशालची और औरतें पीछ पीछ जाने लगीं। रनबीर से भी रहा न गया उन सभों के कुछ आगे वढ जाने पर वे भी पेड से उतरे और छिपते हुए उन सभों के पीछे पीछे रवाना हुए।

सत्ताईसवां बयान

थोडी ही दूर जाने पर रनबीरसिंह को मालूम हो गया कि वे सब लोग भी उसी तरफ जा रह है जिधर वालेसिह गया है या जिधर व जानेवाले थे। यद्यपि रात का समय था मगर आगे आगे मशाल की रोशनी रहने के कारण रनबीरसिह ने उन निशानों में से कई निशान देखे जो गस्ते में मिलने वाले थे और जिनके वारे में सेंन्यासी ने पता दिया था। यह रास्ता थोडी दूर तक चश्मे क किनारे किनारे गया था और उसके वाद चक्कर खाकर ढालवीं पहाडी उतरनी पडती थी। रनवीरसिह उनलागों क पीछे पीछे घूमघूमौव और पेचीले रास्ते पर नीचे की तरफ झुकते हुए पहर भर तक वरावर चले गए और इसके वाद एक मकान के पास पहुच। यह मकान वहुत लम्वा चौडा पत्थरों से वना हुआ और चारो तरफ के ऊचे ऊचे पहाडों स इस तरह घिरा हुआ था कि रास्त का हाल पूरा पूरा जाने बिना यहॉं तक किसी का पहुँचना वहुत ही मुश्किल था। यद्यपि यह मकान बहुत वडा था मगर उसका दर्वाजा इतना छोटा था कि एक साथ दोआदमियों स ज्यादा उसके अन्दर नहीं जा सकते थे। नौजवान सवार न दर्वाजे के पास पहुँच कर एक सीटी बजाई जिसे सुनते ही चार आदमी मकान के वाहर निकल आये। नौजवान घाडे पर से उतर पड़ा और उन चारों को कुछ कह कर मकान क अन्दर चला गया। उन चारों में से एक आदमी उसका घोडा थाम कर चक्कर खाता हुआ मकान के पीछ की तरफ चला गया और तीन आदमी उस नौजवान के अन्दर जातेही उन पॉंचों औरतों और मशालची तथा सिपाही को साथ लिये हुए मकान के अन्दर चले गए।

रनबीरसिह दूर खड यह सब तमाशा देख रहे थे। जव मकान क वाहर सन्नाटा हो गया तो वे एक पत्थर की चट्टान पर यह साच कर लेट रह कि सवेरा होने पर जा कुछ हागा दखा जायगा मगर उनकी ऑंखों में नींद न थी क्योंकि वे इस बात को भी साच रहे थे कि कहीं ऐसा न हा कि इस मकान के अन्दर से वे औरतें जिनके पीछे पीछे हम आये है या औरकोई निकल कर वाहर चला जाय और उन्हें खवर तक न हो।

साफ सवेरा हो जाने पर वही नौजवान जो उन पॉंचों औरतों सिपाही तथा मशालची को साथ लिये हुए यहॉं आया था मकान के वाहर निकला और निगाह दौडा कर चारो तरफ दखने लगा। यकायक उसकी निगाह रनवीरसिह पर पडी जा उससे थोडी ही दूर पर एक चट्टान पर लेटे हुए थ। एक नय आदमी को वहॉं देख उसे ताज्जुव मालूम हुआ और हाल चाल मालूम करने के लिये वह रनवीरसिह की तरफ बढ़ा। रनबीरसिह ने उसे अपने पास आते देख ऑंखें बन्द कर लीं और घुर्राटा लेने लगे !

नौजवान रनवीरसिह क पास पहुचा और उन्हे गौर से देखने लगा, उसी समय रनबीरसिह ने भी मानों पैर की आहट पाकर आखें खोल दीं और चारो तरफ देख के बोले, 'अहा ! तू ही तो है !!

नौजवान–कहिये वावाजी आपका गुरुद्वारा कहॉं है और यहॉं किसके साथ आये ?

रनवीर–अहा ! तू ही तो है !! गुरुद्वारा गिरनार है। अहा तू ही तो है ! सत्तगुरु देवदत्त की जय !!

नौजवान–अहा, आप महात्मा देवदत्त की गद्दी के चेले है ! तब तो आप हमलोगों के गुरु हैं * !!

रनबीर–(ताज्जुब से) क्या तुम हमारे चेले हो ?

नौजवान–केवल मै ही नहीं बल्कि (मकान की तरफ इशारा करके) इस मकान में जितने आदमी रहते है सब सत्तगुरु देवदत्तजी की गद्दी को मानते हैं और आपके चेले हैं।

रनबीर–(हस कर) तब तो हम अपनी राजधानी में आ पहुचे !!

नौजवान–बेशक।

रनबीर–(आसमान की तरफ देख के) अहा ! तू ही तो है !!

नौजवान–(रनबीर का पैर छू कर) अब आप कृपा कर के मकान के अन्दर चलिये तो हमलोग आपका चरणामृत लेकर कृतार्थ हों।

रनबीर–(सिर हिला कर) नहीं नहीं, मै मकान के अन्दर तब तक न जाऊगा जब तक मुझको यह न मालूम हो जायगा कि मै यहॉ क्योंकर आ पहुँचा। कल सन्ध्या के समय मैं एक चश्मे के किनारे पर था, रात को सत्तगुरु का ध्यान करने लगा। सत्तगुरु ने दर्शन दिया और कहा कि यहॉ क्यों घूम रहा है–कुछ काम कर अपने शिष्यों के पास जा और उन लोगों को नित्य-क्रिया का उपदेश दे क्योंकि वे लोग अपनी नित्य-क्रिया को बहुत दिनों तक छोड देने के कारण भूल गए हैं, और इससे उनके ऊपर एक भारी आफत आने वाली है ! (कुछ सोचकर) न मालूम क्या बात थी कि मुझे यकायक नींद आ गई और ऑख खुली तो अपने को यहॉ पाता हूँ। अहा ! तू ही तो है !! अब तो सबके पहिले गुरु की आज्ञा का पालन करूँगा और अपने शिष्यों से मिल कर उन्हें उपदेश करूँगा मैं तुम्हारे साथ उस मकान में नहीं जा सकता, (खडे होकर) पहिले मैं उन चेलों को खोजूँगा और उन्हें उपदेश करूगा !

नौजवान–(पैरों पर गिर कर) बस बस अब मुझे निश्चय हो गया कि सत्तगुरु ने आपको हमारे ही लिये यहॉ भेजा है, हमी लोग उपदेश पाने योग्य हैं और नित्य क्रिया भूले हुए हैं।

रनबीर–(झूम कर) अहा, तू ही तो है! मगर मैं तुम्हारी बातें नहीं मान सकता, यहॉ से चले जाओ, आधी घडी के लिये मुझे छोडदो, हम सत्तगुरु से पूछ लें।

इतना कहकर रनबीरसिह चट्टान पर बैठ गए और सिद्धासन होकर ध्यान करने लगे। नौजवान थोडी देर तक पास खडा रहा इसके बाद जल्दी जल्दी कदम बढाता हुआ मकान के अन्दर चला गया और थोडी ही दर में उन्नीस बीस आदमियों को साथ लिये रनबीरसिह के पास आ पहुचा। रनबीरसिह अभी तक ध्यान में बैठे हुए थे इसलिये वे लोग उन्हें चारो तरफ से घेरे चुपचाप अदब से बैठ गए। उन लागों की पौशाक बेशकीमत और सिपाहियाना ठाठ की थी और वे लोग नौजवान और देखने में हाथ पैर से मजबूत और लड़ाके मालूम होते थे।

थोडी देर बाद रनबीरसिह ने ऑखें खोलीं और अपने चारो तरफ भीड देख कर बोले;-"तू ही तो है !"(नौजवान से)हॉ ठीक है, सत्तगुरु की आज्ञा हो गई बेशक यहॉ के रहने वाले तीन आदमियों को छोडकर बाकी सब हमारे चेले हैं, इसलिये मैं सभों को उपदेश करूगा।

नौजवान–(जिससे पहिले मुलाकात हुई थी) वे तीन आदमी कौन हैं जिन्हें आप अपना चेला नहीं मानते ? बेशक सत्तगुरु उनसे रुष्ट हैं यदि आप कृपा करके उन तीनों का पता सत्तगुरु से पूछ के हमें बतावें तो उन्हें अवश्य दण्ड दिया जाय।

रनबीर–(झूमकर) अहा ! तू ही तो है ! अच्छा देखा जायगा घबडाओ मत मुझे सत्तगुरु ने पन्द्रह दिन तक यहा रहने की आज्ञा दी है।

नौजवान–(खुश होकर) सत्तगुरु की हमलोगों पर बडी भारी कृपा है ! अब आप कृपा करके मकान के अन्दर चलें तो हम लोंगों का चित्त प्रसन्न हो।

थोडी देर तक मस्ताने ढग की बातें करने के बाद रनबीरसिह मकान के अन्दर जाने के लिये उठ खड़े हुए, नौजवान और उसके साथी बडे ही आदर सत्कार के साथ अपने अनूठे गुरु रनबीरसिह को मकान के अन्दर ले गए और उनके रहने के लिये एक उत्तम स्थान का प्रबन्ध किया। इस मकान के अन्दर जाने और उसकी बनावट देखने से रनबीरसिह को बहुत ताज्जुब हुआ क्योंकि यह मकान सैकडों आदमियों के रहने लायक और विचित्र ढग का बना हुआ था और इसमें

*उस मकान के रहने वाले जिनका असल हाल आगे चल कर मालूम होगा सत्तगुरु देवदत्त की गद्दी को मानते थे और उस गद्दी के चेलों को गुरु के समान मानते और उनसे डरते थे।

कई कैदखाने और तहखाने भी बने हुए थे जिनका कुछ कुछ हाल आगे चल कर मालूम होगा।

रनबीरसिंह ने सत्कार पाने स्नान ध्यान पूजा पाठ करने और मकान को अच्छी तरह देखने में वह समूचा दिन बिता दिया और सन्ध्या होते ही हुक्म दे दिया कि जब तक मैं न बुलाऊ कोई मेरे पास न आवे।

महात्मा रनबीरसिंह को जो स्थान रहने के लिये दिया गया था उसके सामने ही एक छोटा सा मन्दिर था जिसमें माँ अन्नपूर्णा की मूर्ति स्थापित थी और एक बुढिया औरत के सुपुर्द वहाँ का बिलकुल काम था। रात आधी बीत गई चारो तरफ सन्नाटा छा गया, उस मकान के अन्दर रहने वाले स्त्री पुरुष अपने अपने स्थान पर सो रहे होंगे मगर रनबीरसिंह की आँखों में नींद नहीं। वह उस मृगछाला पर से उठे जो उन्हें बिछाने के लिये दिया गया था और चुपचाप अन्नपूर्णाजी के मन्दिर की तरफ चले। जब उस छोटे से सभा-मण्डप में पहुँचे तो एक चटाई पर उस बुढिया पुजारिन को सोते हुए पाया। रनबीरसिंह ने उसे उठाया। वह चौंक कर उठ खडी हुई और अपने सामने रनबीरसिंह को देख कर ताज्जुब करने लगी क्योंकि बुढिया रनबीरसिंह की फकीरी इज्जत को अच्छी तरह जानती थी, दिन भर में जो खातिरदारी उनकी की गई थी उसे भी अच्छी तरह देख चुकी थी, और उसे मालूम था कि ये उन विकट मनुष्यों के गुरु हैं जो इस मकान में रहते हैं। रनबीरसिंह ने अपने कमर में से एक चिट्ठी निकाली और बुढिया के हाथ में देकर कहा, "मैं खूब जानता हू कि तू पढी लिखी है अस्तु इस चिट्ठी को बहुत जल्द बाँच ले और इसके बाद जला कर राख कर दे।' बुढिया ने ताज्जुब के साथ वह चिट्ठी ले ली और पढने के लिये उस चिराग के पास गई जो मन्दिर के एक कोने में जल रहा था। उसने बडे गौर से चिट्ठी पढी और उसकी लिखावट पर अच्छी तरह ध्यान देने के बाद उसी चिराग में जला कर रनबीरसिंह के पास लौट आकर बोली, "नि सन्देह आपने बडा ही साहस किया, परन्तु वह काम बहुत ही कठिन है जिसके लिये आप आये हैं।

रनबीर–बेशक वह काम बहुत ही कठिन है परन्तु जिस तरह मैं अपनी जान पर खेल कर यहाँ आया हू उसे भी तू जानती ही है। उस चिट्ठी के पढने से तुझे मालूम हुआ होगा कि यहाँ तुझसे ही सहायता पाने की आशा पर मैं भेजा गया हू।

बुढिया–बेशक और मुझसे जहा तक होगा आपकी सहायता करूगी। आह, आज एक भारी बोझ मेरी छाती पर से हट गया और एक बहुत पुराना भेद मालूम हो गया जिसके जानने की मैं इच्छा रखती थी। खैर जो होगा देखा जायगा, आप दो तीन दिन तक चुपचाप रहें, इस बीच में मैं सब बन्दोबस्त करके आपको इत्तिला दूगी। तब तक आप यहा की तालियों का झब्बा किसी तरह अपने कब्जे में कर लीजिये। बस अब यहा से जाइये ऐसा न हो कोई यहाँ आपको देख ले तो केवल काम ही में विघ्न न पडेगा वरन् मेरी आपकी दोनों ही की जान चली जायगी।

रनबीर–ठीक है, मैं अभी लौट जाता हूँ।

रनबीरसिंह वहाँ से लौटे और अपनी जगह आकर मृगछाला पर लेट रहे।

अट्ठाईसवां बयान

रनबीरसिंह दो दिन के जागे हुए थे इसलिये नींद ने उन्हें अच्छी तरह धर दबाया ऐसा सोये कि पहर दिन चढ तक आँख न खुली और उस मकान के रहने वालों में से किसी ने उन्हें न जगाया। आखिर जब आँख खुली तो "तू ही तो है !"कहते हुए उठ बैठे। उस समय बीस पच्चीस आदमी इनके सामने हाथ जोडे खडे थे जिन्हें देखकर रनबीरसिंह ने बैठने का इशारा किया और बोले 'तुम लोगों को जो कुछ कहना हो कहो !" उन आदमियों में वह नौजवान भी था जिसके पीछे-पीछे इस विचित्र स्थान में रनबीरसिंह आये थे और जिससे पहले पहल उस हाते में मुलाकात हुई थी। इस किस्से में जब तक उसकी जरूरत पडेगी हम उसे नौजवान ही के नाम से लिखेंगे। जब सब कोई बैठ गये तो नौजवान ने हाथ जोडकर रनबीरसिंह से कहा, इस समय गुरु महाराज की जो कुछ आज्ञा हो हम लोग करने को तैयार हैं !

रनबीर–सिवाय इसके और कुछ भी कहना नहीं है कि सत्तगुरु की पूजा के लिए ग्यारह फल कहीं से ला दो।

नौजवान–(सिर झुकाकर) जैसी आज्ञा! (अपने साथियों में से एक की तरफ देखकर) तुम जाओ।

रनबीर–इस समय और कोई बात अगर न हो तो तुम लोग जाओ अपना अपना काम करो, मेरे पास व्यर्थ बैठने की कोई जरूरत नहीं। अहा! तू ही तो है !!

नौजवान–हमलोग चाहते हैं कि आज की कचहरी आपके सामने की जाय और उसमें सब काम आप ही की आज्ञानुसार किया जाए। रनबीरसिंह और कुसुमकुमारी के हाथ से दु खी होकर बालेसिंह यहाँ आया है और सत्तगुरु की मदद चाहता है अब तक उसकी मदद बराबर की गई है, आगे के लिए जैसी आज्ञा हो। बालेसिंह बडा ही नेक ईमानदार और सत्तगुरु का भक्त है।

रनवीर–वालेसिह का हाल हमें मालूम हो चुका है और सत्तगुरु ने उसके विषय में जो कुछ कहना था वह भी कह दिया है परन्तु सत्तगुरु की आज्ञा वालेसिह को आज के पॉचवें दिन सुनाई जायगी।

नौजवान–बहुत अच्छा, तब तक यहा

रनवीर–बस बस बस, चुप चुप! अहा, तू ही तो है !!

इसके आगे नौजवान की हिम्मत आगे न पडी कि कुछ कहे। थोड़ी देर बाद रनवीरसिंह ने फिर कहा–

रनवीर–सत्तगुरु की आज्ञा से तुम लोगों के सर्दार को मै कुछ उपदेश करूगा, उसे जल्द बुलाओ।

नौजवान–(हाथ जोडकर) वे तो काशी की तरफ गये हुए है आज कल मे

रनवीर–बस बस बस, ज्यादे मत बोलो किसी को भेजो आगे बढके उसे दर्शन और जल्द आन के लिए कहे !

नौजवान–जो आज्ञा।

नौजवान ने तुरन्त दो आदमियों को जाने का इशारा किया। रनवीरसिंह भी अहा तू ही तो है ! अहा,तू ही तो है !! कहते हुए वहा से उठे और मकान के बाहर हो उसके चारो तरफ वाले खुशनुमा मैदान मे टहलने लगे, और लोगों को उन्होंने अपना अपना काम करने के लिए कहा।

इत्तिफाक की बात थी कि उन लोगो का सर्दार जो किसी काम के लिए सफर में गया हुआ था इसी समय वहा आ पहुचा मगर इस बात को उन लोगों ने बाबा जी की ही करामात समझा और सभों को विश्वास हो गया कि सत्तगुरु देवदत्त की गद्दी के महात्माजी (रनवीर) नि सन्देह महान् पुरुष है। नौजवान ने आगे बढ़कर सर्दार को सत्तगुरु के आने का हाल कहा। जिसे सुनकर वह बहुत ही प्रसन्न हुआ। यद्यपि उन लोगों का काम डाकू लूटेरों और बदमाशों का सा बल्कि इससे भी बढा हुआ था परन्तु अपने गुरु के नाम तथा गद्दी की बडी ही इज्जत करते थे और समझते थे कि सत्तगुरु देवदत्त एक अवतार हो गये है और उन्हीं की कृपा से हम लोग अपना काम कर सकते है। उन लोगों का जब कोई काम बिगड़ता तो यही समझते कि आज सत्तगुरु देवदत्त हम लोगों से रज हो गये है इसी से यह काम बिगड गया है यही कारण था कि सर्दार ने गुरु का दर्शन किये बिना मकान के अन्दर जाना उचित न जाना और सब लोगों तथा नौजवान को लिए हुए मैदान के उस हिस्से की तरफ बढ़ा जहा रनवीरसिह– अहा, तू ही तो है !!"कहते हुए मस्तानों की तरह झूम झूम कर टहल रहे थे।

रनवीरसिह ने दूर ही से देखा कि उस मकान के रहने वाले इकट्ठे होकर हमारी तरफ आ रहे है और उनके आगे आगे एक आदमी जो हर तरह से सर्दार मालूम होता है हाथ जोड़े हुए चला आ रहा है। जब वह सर्दार रनबीरसिह के पास पहुचा तो दण्डवत करने के लिए जमीन पर लेट गया और उसकी देखा देखीउसकेसाथियों ने भी यही किया, मगर उस सर्दार को देखते ही रनवीरसिह का कलेजा काप गया और उनके चेहरे पर डर और तरद्दुद की निशानी दौड़ गई जिस यद्यपि उन्होंने बडी मुश्किल और होशियारी से उन लोगों के उठने के पहिले दूर कर दिया मगर कलेजे की धडकन कुछ कुछ रह ही गई जिसे उद्योग करने पर भी दूर न कर सके हॉ इतनी चालाकी अवश्य की कि बैठ गए।

हम नहीं कह सकते की उस सर्दार से रनवीरसिह के इतना डरने का क्या कारण था। क्या रनवीरसिंह उसे पहिले कभी देख चुके थे ?या उसके हाथों कुछ तकलीफ उठा चुके थे ?या वे इस बात को नही जानते थे कि इस जगह हम किसी ऐसे आदमी को देखेंगे जिसके देखने की आशा न थी ?या उन बाबाजी ने इस सर्दार के बारे में कुछ परिचय दिया था जिसकी बदौलत यहाँ तक आये हैं या और कोई सबब है सो तो वही जानें, मगर यह अवस्था उनकी ज्यादे देर तक न रही बल्कि तुरन्त ही दूसरी अवस्था के साथ बदल गई, अर्थात् जब सर्दार हाथ जोडकर सामने खडा हो गया तो डर की जगह गुस्से ने अपना दखल जमा लिया और रनवीरसिह के चेहरे पर वे निशानियाँ दिखाई देने लगीं जो दुश्मन से बदला लेने के समय बहादुर सिपाही के चेहरे पर दिखाई देती है। यद्यपि रनवीरसिह ने इस अवस्था को भी बडी होशियारी के साथ दबाया तथापि माथे के बल और आँखों की लाली पर सर्दार की निगाह पड ही गई और उसने बड़े ताज्जुब में आकर रनवीरसिंह से पूछा क्या गुरु महाराज मुझ पर कुछ क्रोधित है ?

रनवीर–(जमीन की तरफ देखकर) हॉ।

सर्दार–क्यों।

रनवीर–इसलिये कि तुमने कई काम नियम और धर्म के विरुद्ध किये हैं।

यह एक साधारण सी बात थी जो रनवीरसिह ने सर्दार से कही, और ऐसी बातें हर एक से कह कर उसका जी खुटके में डाला जा सकता है। क्योंकि दुनिया में कोई मनुष्य ऐसा न होगा जिससे नियम तथा धर्म के विरुद्ध कोई न कोई काम न हो गया हो फिर ऐसे नालायकों से जिनका कि दिन और रात बुरे कामों ही में बीतता हो। यह रनबीरसिह की केवल चालाकी थी सो भी इसलिए कि उनके हाव भाव को देखकर सर्दार के दिल में किसी दूसरे प्रकार का खुटका न

पैदा हो' मगर सर्दार ने उनकी बात सुन सिर नीचा करके कुछ सोचा और कहा ठीक है परन्तु आशा है गुरु महाराज उस अपराध को क्षमा करेंगे।'

रनबीर–(मुस्कुरा कर) सत्तगुरु देवदत्त से पूछ कर तुम्हारा अपराध क्षमा किया जायगा परन्तु तुम लोगों को कुछ प्रायश्चित्त करना होगा।

सर्दार–आज्ञानुसार करने के लिए मै तैयार हूँ।

रनबीर–अच्छा इस समय तुम लोग जाओ अपना अपना काम करो कल सन्ध्या को देखा जायगा।

सर्दार–(हाथ जोडकर) गुरु महाराज भी मकान के अन्दर पधारें जिसमें हमलोग सेवा करके जन्म कृतार्थ करे।

रनबीर–आज हम (हाथ का इशारा करके) उस पेड के नीचे दिन भर और मकान के अन्दर रातभर उपासना करेंगे इस बीच में बिना बुलाये मेरे पास कोई न आवे कल देखा जायेगा। अहा! तू ही तो है सत्तगुरु की पूजा के लिए ग्यारह फल भेजो बस जाओ। अहा! तू ही तो है 'अहा! तू ही तो है !!

इस मकान के चारो तरफ की जमीन बहुत ही साफ सुथरी और जगह जगह कुदरती फूल, बूटों से बहुत ही भला मालूम देता था चारो तरफ ऊचे ऊचे पहाड थे जिनमें स पानी के कई झरने गिर रहे थे जो नीचे आकर एक हो गये थे और दक्षिण तरफ ढालवीं जमीन होने के कारण बह कर एक पहाडी के नीचे चले गये थे। रनबीसिह एक झरने के किनारे सुन्दर छाया देख कर बैठ गये और ऑखें बन्द कर सोच विचार में दिन बिताने लगे। थोडी देर बाद एक आदमी ग्यारह फल लेकर आया और उनके पास रख कर चला गया।

रनबीरसिह ने दिन भर उसी पेड के नीचे बिताया और वही ग्यारह फल खाकर आत्मा को सन्तोष कराया सन्ध्या होने पर मकान के अन्दर गए अगवानी के लिये आदमियों के साथ सर्दार को दर्वाजे पर मौजूद पाया झूमते और उन्हीं मामूली शब्दों का उच्चारण करते हुए मकान के अन्दर गये और अपने स्थान पर मृगछाला के ऊपर जा बिराजे। नैवेद्य की रीति पर खाने पीने की सामग्री आगे रक्खी गई मगर रनबीरसिह ने इन्कार करके कहा 'मैं फल के सिवाय और कुछ भी नहीं खाता इसके अतिरिक्त मैं तो तुमसे कही चुका हू कि आज का पूरा दिन और रात उपासना में बिताऊगा अस्तु इसे ले जाओ कल देखा जायगा। अब मैं दर्वाजा बन्द करके ध्यान किया चाहता हू मगर यह मकान सन्नाटे का नहीं है उत्तर तरफ कोने में जो कोठरी है वह मुझे इस काम के लिये पसन्द है कल घूम फिर के देखने के समय उसे भी मैंने देखा था ' इसक जवाब मे सर्दार ने कहा जैसी इच्छा गुरु महाराज की चलिये।

रनबीरसिह ने देखा कि आखिरी बात कहते समय सर्दार के चेहरे की रगत कुछ बदल गई परन्तु दिलावर रनबीर ने इसका कुछ खयाल न किया और उस स्थान पर चलने के लिये तैयार हो गये। सर्दार ने भी रनबीर की इच्छानुसार सब सामान उसी कोठरी में ठीक कर दिया रनबीर ने भीतर से दर्वाजा बन्द करके मृगछाला पर आराम किया कोठरी में गर्मी बहुत थी जिसे पखे से निवारण करने लगे।

यह कोठरी यद्यपि बहुत लम्बी चौडी तो न थी तथापि इसमें चार पॉच चारपाई बिछने लायक जगह थी। एक तरफ दीवार में छोटा सा दर्वाजा था जिसमें एक साधारण पुराना ताला लगा हुआ था। आधी रात जान के बाद रनबीरसिह के कान में एक आवाज आई उन्हें साफ सुनाई दिया कि मानों किसी ने दिल के दर्द से दु खी होकर कहा 'प्यारे रनबीर! तू इस दुनियॉ में है भी या नहीं! यह आवाज भारी और कुछ बुझी हुई थी रनबीसिह को केवल इतना ही निश्चय नहीं हुआ कि यह आवाज किसी मर्द की है बल्कि उन्हें और भी कई बातों का निश्चय हो गया जिससे वे बेताब हो गए। इस समय यदि कोई उन्हें देखता तो ठीक वैसी ही अवस्था में पाता जैसी गोली लगने पर शेर की होती है और इसका अनुभव उन्हीं को हो सकता है जिन्होंने शेर का शिकार किया या अच्छी तरह देखा है।

रनबीरसिह मृगछाला पर से उठ खडे हुए और सोचने लगे कि यह आवाज किधर से आई ? उनकी ऑखें सुर्ख हो गई और क्रोध के मारे बदन कॉपने लगा। उनका ध्यान उस छोटे से दर्वाजे पर गया जिसमें साधारण छोटा सा ताला लगा हुआ था। रनबीरसिह उसके पास गए, कमर से कटार निकाल कर धीरे से उस ताले का जोड खोल डाला और कुडे से ताला अलग करन बाद दर्वाजा खोल कर अन्दर की तरफ झॉका। भीतर अन्धकार था जिससे कुछ मालूम न पडा। जहॉ रनबीरसिह का आसन लगा हुआ था उसके पास ही एक दीवार के ऊपर चिराग जल रहा था रनबीरसिह ने वह चिराग उठा लिया और उस छोटी सी खिडकी के अन्दर चले गए। यहॉ उन्होंने अपने को एक लम्बी चौडी कोठरी में पाया। चारो तरफ दीवार में सैकडों खूटियॉ गडी हुई थीं और उनमें तरह तरह की पौशाकें लटक रही थीं जिनमें से कोई कोई पौशाक तो बहुत ही बेशकीमत थी मगर बहुत दिनों तक यों ही पडे रहने के कारण बर्बाद सी हो रही थीं कोई पौशाक सौदागरों की सी, कोई सिपाहियों की सी और किसी किसी खूटी पर जनाने कपडे भी लटक रहे थे। रनबीरसिह एक खूटी के पास गए

जिस पर एक बेशकीमत पौशाक लटक रही थी उस पर एक टुकड़ा सुफेद कपड़े का सीया हुआ था और उस टुकड़े पर यह लिखा था— यह भूदेवसिह अपने का बडा ही बहादुर लगाता था।'

इसके बाद एक दूसरी पौशाक के पास गए जो किसी जमींदार की मालूम पड़ती थी और उसके साथ भी सुफेद कपडे का टुकडा सीया हुआ था और उस पर यह लिखा था , इसे अपनी जमींदारी का बडा ही घमण्ड था। किसी स डरता ही न था और अपने को जालिमसिह के नाम से मशहूर कर रक्खा था।' इस पौशाक के बगल ही में एक जनानी साड़ी लटक रही थी और उस पर यह लिखा हुआ था, यह चन्द्रावली रनबीरसिह को अपनी गाद स उतारती ही न थी। इस लिखावट ने रनबीरसिह के गुस्से के साथ वह काम किया जो घी भभकती हुई आग के साथ करता है मगर क्रोध का मौका न जानकर उन्होंने बडी कोशिश से अपने को सम्हाला तथा फिर और किसी पौशाक के पास जान का इरादा न किया इतने ही में वह आवाज फिर सुनाई दी जिसे सुन कर रनबीरसिह बेताब हुए थे मगर अबकी दफे शब्द बदले हुए थे अर्थात कहन वाले न यह कहा— हाय कुसुम ! तेर साथ किसी न दगा तो नहीं की ! रनबीरसिह को निश्चय हो गया कि इन शब्दों का कहने वाला भी वही है क्योंकि बनिस्बत पहिले के यह आवाज कुछ पास मालूम हुई। रनबीरसिह का ध्यान जमीन की तरफ गया और एक तहखाने के दर्वाजे पर निगाह पडी जो कवल जजीर के सहारे बन्द था। रनबीरसिह ने उस दर्वाजे का खाला तो नीचे उतरने के लिये सीढियाँ दिखाई दीं हाथ में चिराग लिये हुए नीचे (तहखाने में) उतर गए। यह तहखाना वास्तव में कैदखाना था क्योंकि यहाँ लोहे के छडों से बनी हुई एक कोठरी के अन्दर उदास सुस्त और हथकडी बेड़ी से बेबस एक कैदी पर रनबीरसिह की निगाह पड़ी और साथ ही इसके यह भी दिखाई दिया कि उस कैदखाने में आने जाने के लिये एक दूसरी राह भी है जिसका अधखुला दर्वाजा सामने की तरफ दिखाई दे रहा था।

कैदी के ऊपर रनबीरसिह की निगाह पडने के पहिले ही कैदी की निगाह रनबीरसिह पर पड़ी क्योंकि कैदखाने का दर्वाजा खुलने की आहट से चौक कर वह आने वाले को देखने के लिये पहिले ही से तैयार था।

कैदी की अवस्था इस समय बहुत ही बुरी हो रही थी, सर और दाढ़ी के बाल बढे रहने और कैद की तकलीफ बहुत दिनों तक उठाने के कारण उसकी उम्र का अन्दाजा करना इस समय बहुत ही कठिन है उसकी बडी बडी आखें भी इस समय गड़हे के अन्दर घुसी हुई थी और शरीर के ऊपर अन्दाज से ज्यादे मैल चढी हुई थी इतने पर भी रनबीरसिह न उस कैदी को देखने के साथ ही पहिचान लिया और कैदी ने भी इनको गहरी निगाह स देखन में किसी तरह की त्रुटि नहीं की। रनबीरसिह ने जगला खोला और अन्दर जा कर तेजी के साथ कैदी के पैरों पर गिर पडे बोलने के लिये उद्योग किया मगर रुलाई ने गला दबा दिया, उधर उस कैदी ने मुहब्बत से रनबीरसिह के सिर पर हाथ फेरा ही था कि सिर में एक छोटा सा गडहा पाकर चौक उठा और बोला, यद्यपि तूने रगकर अपना चेहरा और बदन बिगाड़ रक्खा है तथापि यह गडहा और मेरा दिल गवाही देता है कि तू मेरा प्यारा पुत्र रनबीरसिह है! है, है और अवश्य वही है !!

इतने ही में पीछे स आवाज आई "है है बेशक वही है ! सतगुरु देवदत्त के नाम से धोखा देनेवाला यही रनबीर है ! भला कम्बख्त अब जाता कहाँ है !!"

रनबीरसिह ने चौक कर पीछे की तरफ देखा तो उसी सर्दार पर निगाह पड़ी जो इस जगह और यहाँ के रहने वालों का मालिक था।

उनतीसवां बयान

जिस समय रनबीरसिह ने चौककर पीछे की तरफ देखा और उस सर्दार पर निगाह पडी जो वहाँ के रहने वालों का मालिक था तो उनका क्रोधचौगुना बढ गया। यद्यपि यह ऐसा मौका था कि देखनेके साथ ही रनबीरसिह उससे डर जाते मगर नहीं, डरके बदले में क्रोध से उनकी भुजा फड़क उठी क्योंकि उनका प्यारा बाप जो न मालूम कितने दिनों से दुःख भोग रहा था कैदियों की तरह बेबस उनके सामने मौजूद था और जिसने उनके बाप को कैद कर रक्खा था और हर तरह का दुख दिया था उसने भी माफी माँगने के बदले में धमकी की आवाज दी थी। इस समय रनबीरसिह ने जितनी तेजी और फुर्ती दिखाई उससे ज्यादे कोई आदमी दिखा नहीं सकता था। उनके दिल में क्रोध के साथ ही साथ इस खयाल ने भी तुरन्त जगह पकडली कि —"कहीं यह सर्दार इस जगले वाली कोठरी का दर्वाजा बाहर से बन्द करके मेरे पिता की तरह मुझे भी बेबस और मजबूर न कर दे।" अस्तु रनबीरसिह बिजली की तरह लपक कर कोठरी के बाहर निकल आये और आते ही उन्होंने उस सर्दार के गले में हाथ डाल दिया। यद्यपि वह सर्दार ताकतवर और बहादुर था मगर इस समय रनबीरसिह के सामने उसके बलकौशल ने उसका कोई साथ न दिया, यहाँ तक कि वह म्यान से तलवार भी न निकाल

सका। उसने कुश्ती के ढग पर दाँव पेंच करना चाहा परन्तु रनबीर ने उसका भी जवाब देकर उसे जमीन पर पटक दिया और उसकी छाती पर चढ कर ऐसा दबाया और एक दफे कूदे कि उसकी तमाम पसलियॉ कडकडा कर टूट गई और उसने अपनी जिन्दगी की आखिरी निगाह रनबीर पर डाल कर ऑखें उलट दीं। उसके मुह से खून का सोता सा बह चला और वह फिर न उठा। दो चार दफे सॉस लेने के बाद उसकी आत्मा ने यमालय की तरफ प्रस्थान किया।

रनबीरसिह उसकी छाती पर से उतरे और उस अच्छी तरह देखने और जॉचने के बाद पुन जगले के अन्दर जाकर अपने बाप के पास पहुँचे जिनके मुँह से दो दफे शाबाश शाबाश की आवाज निकल चुकी थी। हथकडी और बेडी खोलने के बाद वे बोले अब विलम्ब न कीजिये उठिय और मेरे साथ ही साथ इस मकान के बाहर निकल चलिये !

जरा देर रुक कर रनबीरसिह ने पहिले यही बात सोची कि किस राह से बाहर निकलना चाहिये ? जिस राह से व आये हैं उस राह से या जिस राह से यह सर्दार आया था उस राह से निकल चलना चाहिय ? पर अन्त में उन्होंने यही निश्चय किया कि जिस राह से हम आये हैं उसी राह से निकल चलने में सुबीता होगा।

रनबीरसिह अपने पिता को लिये हुए कोठरी के बाहर निकले और ऊपर जाने वाली सीढियों पर चढा ही चाहते थे कि पीछे से आवाज आई, 'नहीं नहीं आप इधर से आइये !' रनबीरसिह ने फिर कर देखा, उसी बूढी औरत पर निगाह पडी जिसके नाम की चीठी वे लाये थे जा यहॉ क मन्दिर की पुजारिन थी और जिसके साथ इस समय एक नौजवान भी था। रनबीरसिह उस नौजवान को देखकर हिचके मगर बुढिया न उनके दिल का विचार समझ कर तुरन्त कहा ' आप इसकी तरफ से (नौजवान की तरफ इशारा कर के) कुछ चिन्ता न कीजिये यह मेरा लडका है और उस चीठी में जो आप लाय थे इसी लडके क बार में इशारा किया हुआ था !

रनबीर–हॉ तुम्हारा लडका यही है !!

बुढिया–जी हॉ मेरा लडका यही है !

रनबीर–जिस समय मैंने पहिले पहल इसे देखा था उसी समय मर दिल ने गवाही दी थी कि यह जवान बहुत नेक और धर्मात्मा जान पडता है, परन्तु न जान ऐसे दुष्ट पुरुषों का साथ क्यों दे रहा है !

नौजवान–(हाथ जोडकर) इसका हाल भी आपका मालूम हो जायगा परन्तु इस समय आप विलम्ब न कीजिये और हमलोगों के पीछे पीछे चले आइये हा पहिले मुझे एक काम कर लने दीजिये।

इतना कह वह नौजवान सीढी चढ कर उस कोठरी में चला गया जिसमें रनबीरसिह ने अपना आसन जमाया था और भीतर से उस कोठरी का और उसके बाद वाली दूसरी कोठरी का भी अच्छी तरह बन्द करता हुआ नीचे उतर कर फिर बोला 'हा अब आप लोग चले आइये !!'

आग आगे वह नौजवान, उसके पीछे बूढी औरत फिर रनबीरसिह के पिता और सब क पीछे रनबीरसिह वहॉ से रवाना हुए। चौकठ पार हा जाने पर उन्होंने उस रास्ते को एक सुरग की तरह पर पाया जिसके खतम होने के बाद सीढी की राह से ऊपर चढना पडता था। वे लोग जब उस राह से बाहर निकल तो अपने को मकान के अन्त में पश्चिम तरफ की मामूली कोठरी के दर्वाजे पर पाया उस समय रनबीरसिह ने नौजवान से पूछा, अब तुम्हारी क्या राय है ?'

नौजवान–पहिले आप ही बताइये कि आपकी क्या राय है ?

रनबीर–नहीं पहिले तुम्हीं को अपनीराय देनी चाहिये क्योंकि मै यहॉ की हर एक बातों से अनजान हू।

नौजवान–मान लीजिय कि यहॉ पर आप हर तरह से अनजान हैं मगर यह कहिये कि अगर हम लोग आपको न मिलते तो आप क्या करते ?

रनबीर–अगर तुम लाग न मिलते तो मुझे बहुत कुछ सोचना और गौर करना पडता क्योंकि मैने कई दिन की जल्दी की थी।

बुढिया–(ताज्जुब से) तो क्या दो चार दिन में यहॉ आपका कोई मददगार आने वाला है और क्या वह भी आप ही की तरह से आवेगा ?

रनबीर–यह मै नहीं कह सकता कि कौन और किस तरह आवेगा मगर बाबाजी ने इतना कहा था कि तुम्हारे पास फलाने दिन मदद पहुँच जायगी मगर यकायक (पिताकी तरफ इशारा करके) इनकी आवाज पाकर मैं कैदखाने में चला गया और वहॉ तुम्हारे सर्दार के पहुँच जाने से उसे भी मारना पडा।

बुढिया–मै भी यही सोचे हुए थी कि आपको मुझसे मदद लेने की जरूरत पडेगी और आपका काम दो एक रोज के बाद होगा यही बात मैंने अपने लडके से भी कही थी।

नौजवान–मुझे भी जब मॉ ने यह बताया कि आप फलाने हैं तो मैं हर एक बातों से होशियार हो गया। आज जब मैंने देखा कि सर्दार को आप पर शक हुआ है और वह इस राह से कैदखाने में जा रहा है तो हम दोनों भी छिप कर उसके पीछे

पीछे चले गये और वहाँ उसकी अनूठी मौत देखने में आई।

रनबीर–मैंने यह प्रण कर लिया था कि यहाँ जितने कैदी हैं सभों को छुडाऊगा मगर अब एक तरद्दुद सा मालूम होता है।

बुढिया–अगर सर्दार का मरना दो दिन तक छिपा रहे तो सब कुछ हो सकता है मगर जिस समय (रनबीर के पिता की तरफ इशारा कर के) इनको मामूली समय पर खाना देने के लिये वह आदमी जो नित्य जाया करता है जायगा तो सब बातें खुल जायँगी और सर्दार के नौकर तथा साथी सब आफत मचा डालेंगे।

नौजवान–यह हो सकता है कि दो दिन तक खाना पहुँचाने का जिम्मा मै ले लूँ और किसी को कैदखाने में जाने न दूँ।

बुढिया–तो बेहतर है कि यही किया जाय और लोगों को इस बात की खबर कर दी जाय कि गुरुजीमहाराज ने सर्दार को किसी गुप्त कार्य के लिये कहीं भेजा है और इधर इन्हें (रनबीर के पिता को) दो दिन तक कहीं छिपा रक्खा जाय ऐसी अवस्था में दो दिन में कोई खराबी नहीं हो सकती।

रनबीर–बात तो बहुत अच्छी है मगर दो दिन तक रुक रहना बडा कठिन जान पडता है, यहाँ से इसी समय चल देना ही ठीक होगा।

नौजवान–मगर क्यों कर जा सकेंगे ? यह तो आप जानते ही हैं कि रास्ता बहुत खराब और पथरीला है और पीछा करने वाले हम लोगों को बहुत जल्द पकड लेंगे।

रनबीर–हाँ यह तो मै जानता हू मगर मैंने इसके लिये भी एक तर्कीब सोची है।

नौजवान–वह क्या ?

रनबीर–पहिले यह तो बताओ कि रात कितनी बाकी होगी ?

नौजवान–रात अभी पहर भर से भी ज्यादे बाकी है।

रनबीर–तब तो जो कुछ मैंने सोचा है वह बखूबी हो जायगा अच्छा यह कहो कि तुम अपने सर्दार की कोठरी में जाकर उसके पहिरने के कपडे जिसे वह सफर में जाती समय पहिरता हो ला सकते हो ?

नौजवान–हाँ मै ला सकता हू मगर फिर (कुछ रुक कर) अच्छा अच्छा मै समझ गया वह कपडा आप इनको (रनबीर के पिता को) पहिरावेंगे और यहाँ से निकाल ले चलेंगे। ठीक तो है ऐसा करने से हम लोग सभों के देखते ही देखते यहाँ से निकल चलेंगे और कोई आदमी पीछा भी न करेगा हाँ उस समय हम लोगों का हाल यहाँ वालों को जरूर मालूम हो जायगा जब कैदी को भोजन देने के लिये कोई आदमी तहखाने में जायगा।

रनबीर–तब तक तो हम लोग बडी दूर निकल जायँगे। और हाँ, एक काम चलते चलाते तुम और करना।

नौजवान–वह क्या ?

रनबीर–चलते समय यहाँ के किसी ऐसे आदमी को जो तुम्हारे बाद बाकी नालायकों पर हुकूमत कर सकता हो कह देना कि तुमको और तुम्हारी माँ को भी सर्दार साहब और गुरु महाराज किसी काम के वास्ते कहीं लिये जा रहे हैं और हुक्म देना कि कल तक कोई आदमी फलाने कैदी को दाना पानी न दे।

नौजवान–बात तो ठीक है, और ऐसा करने से हम लोग बेफिक्री के साथ चले जायँगे। (कुछ जोश में आकर) उह अगर कोई कम्बख्त हम लोगों का पीछा करेगा ही तो क्या होगा ? केवल यहाँ से पाँच कोस अर्थात् सरहद के बाहर हो जाना चाहिये फिर बीस पचीस आदमी भी हमारा कुछ नहीं कर सकते आप की बहादुरी को मै अच्छी तरह जान गया हू और मै भी आपकी ताबेदारी करने लायक हू।

रनबीर–खैर तो तुम अब जाओ और जो कुछ मैंने कहा है उसे जल्दी करो जिसमें आधे घण्टे से ज्यादे देर न होने पावे और हम लोग अन्धेरा रहते यहाँ से निकल चलें।

नौजवान–बहुत अच्छा, मै अभी जाता हू, आप लोग इसी जगह खडे रहिये।

तीसवां बयान

बेचारी कुसुमकुमारी ने रनबीरसिंह का पता लगाने के लिए बहुत ही उद्योग किया परन्तु सब व्यर्थ हुआ। दो दिन बीते चार दिन बीते, सप्ताह दो सप्ताह के बाद महीने दिन की गिनती भी कुसुम ने अपनी नाजुक उंगलियों पर पूरी की मगर रनबीरसिंह का कुछ हाल मालूम न हुआ। बेचारी कुसुम मुर्झा गई, उसे कोई चीज कोई बात अच्छी नहीं लगती थी, पर तिस पर भी आशा ने उसका साथ नहीं छोडा था। वह रनबीर से मिल कर प्रफुल्लित होने की आशा में जान बचाने के

लिए दूसर तीसरे कुछ थोडा सा अन्न खा लेती और तमाम रात ऑखों में विता कर ईश्वर से रनवीर का कुशल पूर्वक रखन की प्रार्थना किया करती थी।

वीरसन को भी रनबीर से वडी मुहब्बत हो गई थी अतएव उसने भी रनवीर का पता लगान के लिय कोई वात उठा नहीं रक्खी और उतना ही उद्योग किया जितना एक परले सिर का उद्योगी मनुष्य कर सकता है परन्तु परिणाम कुछ भी न हुआ।

आज जिस दिन का हम जिक्र कर रहे हैं वह शुक्ल पक्ष की द्वितीया का दिन है। सन्ध्या होने के पहले ही कुसुमकुमारी अपनी अटारी पर चढ गई और आश्चर्य नहीं कि आज चन्द्रमा का दर्शन पृथ्वी क मनुष्यों में सव स पहिले उसी ने किया हो। यद्यपि अव चन्द्रदेव को निकले वहुत दर हो गई परन्तु कुसुम ने अभी तक उनकी तरफ से ऑखें नहीं फेरी क्यों ? क्या रनबीर से मिलने की आशा में चन्द्रमा से टपकते हुए अमृत को नेत्रों द्वारा पान करक कुसुमकुमारी अमर हुआ चाहती है ? नहीं एसा नहीं है यदि ऐसा होता तो कलिकाल में प्राण रक्षा का सव से वडा सहारा "अन्न" कुसुमकुमारी के जी स न उतर जाता तो क्या कुसुमकुमारी अपन कलेजे के दाग का चन्द्रमा के दाग से मिलान कर रही है ? नहीं यह भी नहीं है क्योंकि इसका आनन्द विना पूर्ण चन्द्रोदय के नहीं मिल सकता तो क्या चन्द्रदेव से अपन टेढे नसीव का सीधा करने क लिये प्रार्थना कर रही है ? नहीं नहीं चन्द्रदेव तो आज स्वय ही वक हो रहे हैं उनसे एसी आशा बुद्धिमान कुसुमकुमारी का नहीं हो सकती। अच्छा कदाचित् कुसुमकुमारी इस लिय चन्द्रमा को वडी दर से देख रही है कि आज द्वितीया के चन्द्रमा का दर्शन आवश्यक हाने के कारण रनबीर की ऑखें भी चन्द्रदेव ही की तरफ लगी हुइ होंगी और नहीं तो इसी बहाने चार ऑखें तो हो जायँगी। ठीक है यह वात ध्यान में आ सकती है आश्चर्य नहीं कि अभी तक चन्द्रदेव की तरफ इसी लालच से कुसुमकुमारी देख रही हों। यद्यपि चन्द्रदर्शन से उसकी तृप्ति नहीं होती थी और कदाचित उसका इरादा वहुत देर तक वहॉ ठहरने का था परन्तु एक लौंडी ने अचानक वहॉ पहुच कर ऐसी खवर सुनाई जिससे वह चौंक कर लौंडी की तरफ देखने लगी और वोली 'तून क्या कहा ?

लौंडी—रनवीरसिह क पिता नारायणदत्त की सवारी शहर के पास आ पहुची।

कुसुम—शहर के पास !!

लौंडी—जी हॉ अव दा कोस स ज्यादे दूर न हागी।

कुसुम—क्या जासूस यह खबर लेकर आया है ?

लौंडी—जी नहीं उन्होंन स्वयम् अपना आदमी खबर करने के लिये भेजा है।

कुसुम—वडी खुशी की वात है अच्छा मै नीचे चलती हू तू दौडी हुई जा और वीरसेन को मेरे पास वुला ला।

'वहुत अच्छा' कह कर लौंडी वहॉ स चली गई और कुसुमकुमारी भी नीच उतर कर अपने कमर में आ वैठी थाडी ही देर में वीरसेन भी वहॉ पहुचे जिन्हें देखत ही कुसुम न कहा, "सुनती हू कि महाराज की सवारी शहर के पास आ पहुची है !

वीरसेन—जी हॉ, यह खवर लेकर उनका खास मुसाहव यहॉ आया है मगर हमारे जासूस ने और भी एक खुशखवरी सुनाई है।

कुसुम—वह क्या ?

बीरसेन—वह कहता है कि दो तीन दिन के अन्दर ही रनबीरसिह भी यहॉ आने वाले हैं।

कुसुम—(खुश होकर) इसका पता उसे कैसे लगा ?

वीरसेन—नारायणदत्तजी के लश्कर में जव वह गया था तो उन्हीं लोगों में स कई आदमियों को रनबीरसिह के विषय में तरह तरह की वातें करते सुना था जिसका नतीजा उसने यह निकाला कि रनवीरसिह भी शीघ्र ही यहॉ आने वाल हैं।

कुसुम—ईश्वर करे कि जासूस का खयाल ठीक निकले परन्तु रगविरग की गप्पें सुनकर सच्ची वात का पता लगा लेना बहुत कठिन है, हॉ यदि मै उन वातों को पूरा सुनू जो जासूस ने सुनी हैं तो मालूम हो कि जासूस ने अपने मतलव का नतीजा क्योंकर निकाला।

वीरसेन—यों तो जासूस ने वहुत सी वातें सुनी थीं परन्तु एक वात जो उस ने सुनी है वह यदि सच है तो मैं भी कह सकता हू कि रनवीरसिह शीघ्र ही आने वाले हैं।

कुसुम—वह क्या ?

वीरसेन—जासूस के सामने ही एक जमींदार ने फौजी अफसर से पूछा था कि महाराज नारायणदत्तजी 'तेजगढ' *

---

* कुसुमकुमारी की राजधानी 'तेजगढ'।

क्यों जा रहे हैं ? इसक जवाव में अफसर ने कहा कि 'वहाँ उन्हें अपने लडके रनवीरसिह के पाने की आशा है'। वस यही वात जासूस ने सुनी थी।

कुसुम–अगर यही बात है तो तुम्हें वहुत जल्द इसका सच्चा पता लग जायगा क्योंकि महाराज की अगवानी (इस्तकबाल) के लिये तुमको और दीवान साहव को इसी समय जाना होगा।

वीरसेन–जी हाँ दीवान साहब महाराज की खातिरदारी का इन्तजाम कर रहे है और मै भी उसी बन्दोबस्त में लगा हू, आधी घडी के अन्दर ही हमलोग चले जायँगे।

कुसुम–शावाश, देखो मैं तुम्हें भाई के बराबर समझती हू और तुम पर बहुत भरोसा रखती हू इसलिये कहती हू कि मेरी इज्जत तुम्हारे हाथ है, मै आज कल अपने होश हवास में नहीं हू अस्तु जो कुछ मुनासिव समझा करो ऐसा न हो कि किसी वात में कमी हो जाय और पीछे शर्मिन्दगी उठानी पड़े।

वीरसेन–नहीं नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता आप बेफिक्र रहें, किसी तरह की बदनामी न होने पावेगी, अच्छा तो अव मुझे जाने की आज्ञा मिले क्योंकि अभी वहुत काम करना है।

कुसुम–अच्छा जाओ।

इक्कतीसवां बयान

अब हम अपने पाठकों को राजा नारायणदत्त के लश्कर में ले चलते है।

कुसुमकुमारी की राजधानी तेजगढ़ से लगभग दो कोस की दूरी पर राजा नारायणदत्त का लश्कर उतरा हुआ हैं। लश्कर में हजार बारह सौ आदमियों से ज्याद की भीड़ भाड नहीं है और कोई बहुत बडा या शानदार खेमा वा शामियाना भी दिखाई नहीं देता, छोटी मोटी मामूली रावटियों में अफसरों सर्दारों तथा गल्ला इत्यादि बाटने वालों का डेरा पड़ा हुआ है और उसी तरह की एक रावटी में राजा नारायणदत्त का भी आसन लगा हुआ है। और रावटियों में राजासाहब की रावटी से यदि कुछ भेद है तो इतना ही कि राजासाहव की रावटी आसमानी रग की है और वाकी सब रावटिया सफेद कपड़े की।

पहरभर से कुछ ज्यादे रात बीत जाने पर जिस समय कुसुमकुमारी के दीवान और वीरसेन वहाँ पहुचे और आज्ञानुसार राजा साहव के पास हाजिर किये गए उस समय उन्होंने देखा कि राजा साहब एक चटाई पर साधु रूप से बैठे हुए है सिर के बाल सँवारे न जाने के कारण विखरे हुए है, ललाट में भस्म का त्रिपुण्ड और बीच में सिन्दूर की बिन्दी लगी हुई है, वदन में गेरुएरग के रेशमी कपडे का एक चोगा है जिससे तमाम बदन ढका हुआ है, खुशबूदार जल और इत्र से शरीर की सेवा न होने पर भी प्रताप और तपोबल उनके सुन्दर तथा सुडौल चेहरे से झलक रहा है और बड़ी बडी आँखें एक ग्रन्थ की तरफ झुकी हुई हैं जो लकडी की छोटीसी चौकी पर उनके सामने रक्खा हुआ है और जिसके बगल में घी का बडा सा चिराग जल रहा है।

पाठकों को आश्चर्य होगा कि नारायणदत्त राजा होने पर भी साधुओं की तरह क्यों रहते हैं ? और ऐसी अवस्था में राजकाज कैसे देखते होंगे ? इसके जवाब में यदि हम राजा साहब का असल हाल न कहें तो भी इतना कहना आवश्यक है कि राजा नारायणदत्त जब बिहार की गद्दी पर बैठे थे तब से साल भर तक तो उसी ढग और टीमटाम के साथ रहे जिस तरह राजा लोग रहते है मगर उसके बाद उन्होंने अपना ढग और रहन सहन तथा खानपान आदि बिल्कुल बदल दिया, सादा अन्न अपने हाथ से बनाकर खाना सादा कपडा पहिरना जमीन पर सोना और दर्बार का समय छोड दिनरात ग्रन्थ देखने और ईश्वराधन में बिताना उनका काम था। वे शरीर सुख या मनोविलास के लिये कोई काम न करते और प्रजा के हित साधन का ध्यान बहुत रखते थे और प्रजा भी उन्हें ईश्वर के तुल्य समझती थी। सतोगुण स्वभाव और आचरण रहने पर भी जब वे दर्बार में बैठते थे तो दुष्टों को दण्ड की आज्ञा दिये बिना न रहते थे। उन्हें पत्नी न थी और न कोई भाइबन्द था, हाँ रनवीरसिह को लडके से बढकर मानते और बडा स्नेह रखते थे। इस बात का ध्यान तो बहुत ही रखते थे कि राज्य की आमदनी राज्य और प्रजा ही के हित में लगे।

राजा नारायणदत्त में केवल इतनी ही बात न थी बल्कि एक दो बातें और भी थीं। वे इस बात को भी अच्छी तरह समझते थे कि—"हमारे ऐसा राजा औरों के लिये चाहे सुखदाई क्यों न हो परन्तु व्यापारियों के लिये दुःखदाई होता है। उससे व्यापार की कच्ची दीवार को धक्का लगता है और ऐसा होने से देश में व्यापार की उन्नति नहीं होती।' इसीलिये वे

इनाम बहुत बॉटते थे और इनाम में नकद रूपये न देकर अच्छे अच्छे गहने, जेवर, कपड़े, बर्तन, इत्यादि बॉटा करते थे, और इसी सबब से उनके मुसाहब नौकर कारगुजार और अन्य लोग भी उन्हें खुश करने की चेष्टा करते थे और प्रजा का किसी बात की कमी नहीं रहती थी और न किसी तरह का कष्ट होता था।

राजा नारायणदत्त का हाल जो हम ऊपर लिख आये हैं दीवान का वीरसेन कुसुमकुमारी और उसकी रिआया को अच्छी तरह मालूम था क्योंकि राजा साहब दूर रहने पर भी कुसुमकुमारी के हालचाल की खबर रखते थे और आवश्यकता पडने पर कुसुमकुमारी भी उनसे मदद और राय लिया करती थी।

जब दीवान साहब और वीरसिंह राजा साहब के सामने पहुचे तो दोनों ने प्रणाम किया। राजा साहब ने उन्हें अपने सामने चटाई पर बैठने की आज्ञा दी और प्रसन्नता के साथ बातचीत करने लगे—

राजा—कहो तुम लोग अच्छे तो हो ?

दोनों—(हाथ जोड के) महाराज के आशीर्वाद से सब कुशल है।

राजा—कुसुमकुमारी और उसकी प्रजा प्रसन्न है ?

दोनों—रानी कुसुमकुमारी महाराज का आगमन सुन कर बहुत प्रसन्न है और उनकी प्रजा भी दिन रात महाराज का मंगल मनाया करती है।

वीरसेन—महाराज ने अपने आने की कोई सूचना नहीं दी थी इसीलिए हम लोग इससे पहिले सेवा में उपस्थित न हो सके।

राजा—यह तो हमारा घर है, घर में आने की सूचना कैसी ? जब आवश्यकता हुई आ गए और जब समय आया चले गए !

दीवान—हम लोगों को इस बात की बडी लज्जा है कि आपका अमूल्य रत्न रनवीरसिंह हमारे यहाँ से खो गया और हमलोग महाराज के आगे मुँह दिखाने योग्य नहीं रहे, यद्यपि अभी तक खोज हो रही है परन्तु पता नहीं लगा।

राजा—उसके लिये खेद करने की आवश्यकता नहीं मुझे खबर मिल चुकी है कि वह प्रारब्ध और उद्योग का आनन्द लेने गया है और अब शीघ्र ही हम लोगों से मिलने वाला है।

वीरसेन—(उत्कंठा से) कब तक उनके दर्शन होंगे ?

राजा—जहा तक मैं समझता हू आज कल के बीच ही में हमलोग यकायक उसी कमरे के अन्दर देखेंगे जिसमें उसके तथा कुसुमकुमारी के सम्बन्ध की तस्वीरें लिखी हुई है और इसलिये मै यहा आया भी हू। (कुछ सोच कर) ईश्वर की माया बड़ी प्रबल है, इसी दो दिन में कई छिपे हुए भेद भी खुलनें वाले है और बिहार तथा तेजगढ दोनों राजधानियों की कायापलट होने वाली है, प्रारब्ध और उद्योग दोनों एक से एक बढ के हैं इसमें कोई सन्देह नहीं।

वीरसेन और दीवान साहब ने आश्चर्य के साथ राजा साहब की बातें सुनीं। उद्योग तथा प्रारब्ध के खटके ने उनके दिल में भी जगह पकड ली वे दोनों सिर नीचा कर के सोचने लगे कि इस विषय में राजा साहब से और कुछ पूछना उचित होगा या नहीं ?

राजा—(दीवान से) क्यों सुमेरसिंह तुम्हें कुछ पिछली बातें याद हैं ?

दीवान—(हाथ जोड के) बहुत अच्छी तरह से, वे बातें इस योग्य नहीं कि भूल जाऊँ।

राजा—अच्छा जो कुछ भूला भटका हो उसे भी याद कर लो क्योंकि कल तुम लोग एक अनूठा और आश्चर्यजनक तमाशा देखने वाले हो।

दीवान—सो क्या महाराज ?

राजा—सो सब कल ही मालूम होगा जब मैं उस चित्रवाले कमरे में बैठा होऊँगा जिसमें कुसुम और रनवीर के सम्बन्ध की तस्वीरें लिखी हुई है।

दीवान—तो अब महाराज को यहाँ से प्रस्थान करने में क्या विलम्ब है ?

राजा—कुछ नहीं मैं वहाँ चलने के लिये तैयार बैठा हू और इसीलिये कुसुम के पास कहला भेजा था (बाहर की तरफ मुँह करके) कोई है ?

इतना सुनते ही एक चोबदार रावटी के अन्दर घुस आया और हाथ जोड कर सामने खड़ा हो गया।

राजा—(चोबदार से) मैं इसी समय तेजगढ जाने वाला हू लश्कर से सिवाय तुम्हारे और कोई आदमी मेरे साथ न जायगा।

चोबदार—जो आज्ञा।

इतना कह कर चोबदार चला गया और थोड़ी देर में फिर हाजिर होकर बोला, ' सवारी तैयार है।

राजा–(दीवान से) आप दोनों आदमी अकेले आये हैं या कोई साथ आया है ?

दीवान–हम दोनों के साथ तो केवल दो सवार आए हैं परन्तु तेजगढ के बहुत से आदमी महाराज के दर्शन की अभिलाषा से हम लोगों के पीछे पीछे आए हैं और चले आ रहे है।

इतना सुन कर राजा साहब कुछ सोचने लगे और कुछ देर बाद सिर उठा कर चोबदार की तरफ देखा।

चोबदार–बहुत से आदमी महाराज के दर्शन की अभिलाषा से आए हुए है और चल ही आ रहे है छोटे दर्जे के आदमी दही, दूध, अन्न इत्यादि लेकर ।

राजा–हमने तो तुम से पहले ही कह दिया था।

चोबदार–जी महाराज उस बात का प्रबन्ध पूरा पूरा किया गया है,

राजा–तब कोई चिन्ता नहीं, अच्छा गोपीकृष्ण से कह दो कि सभों को जो तेजगढ़ से आये है इनाम बाट दें और सूचना दे दें कि हम कल तुम लोगों को तेजगढ़ में ही देखेगें।

इतना सुनते ही आधी घडी के लिये चोबदार बाहर चला गया, जब लौट आया तो महाराज उठ खड़े हुए और बीरसेन तथा दीवान साहब को साथ लिये हुए रावटी के बाहर निकले जहाँ कसे कसाये तीन घोड़े नजर पड़े तथा मशालों की रोशनी भी बखूबी हो रही थी।

बीरसेन और दीवान साहब ने देखा कि उनके घोडे जिन्हें वे लश्कर के छोर पर छोड़ आये थे उसी जगह खड़े हैं और उनके पास महाराज का घोडा खड़ा है। महाराज घोडे पर सवार हो गये और उनकी आज्ञा पा बीरसेन तथा दीवान साहब भी घोडे पर सवार हुए और महाराज के पीछे पीछे तेजगढ की तरफ चल निकले। बीरसेन को इस बात से बड़ा ही आश्चर्य था कि इतने बडे राजा होकर हम लोगों के साथ रात के समय अकेले तेजगढ की तरफ जा रहे हैं। थोडी दूर जाने बाद पीछे से तीन घोडों के टापों की आवाज आई, बात की बात में, मालूम हो गया कि साथ जाने वाला महाराज का चोबदार और दीवान साहब के दोनों सवार आ पहुच।

बत्तीसवां बयान

आज कुसुमकुमारी को आश्चर्य उत्कण्ठा और प्रसन्नता ने इस तरह घेर लिया है कि उसकी आँखों में निद्रादेवी अपना प्रभाव नहीं जमा सकती। आधी रात के लगभग बीत चुकी है मगर वह अभी तक अपने कमरे में बैठी हुई बीरसेन और दीवान साहब के लौट आने की बाट देख रही है और खबर लेने के लिये बार बार लौंडियों को बाहर भेजती है। इसी अवस्था में एक लौंडी दौडती और हाफती हुई कमरे के अन्दर आई और बोली 'महाराज यहाँ पहुच गए। आपके पास बीरसेन और दीवान साहब को लिये हुए आ रहे है !!"

इतना सुनते ही कुसुमकुमारी घबडाकर उठ खडी हुई और खूँटी से लटकती हुई एक चादर उतार और अच्छी तरह ओढकर दर्वाजे की तरफ लपकी। कमरे से बाहर निकल कर दालान में पहुची ही थी कि महाराज के दर्शन हुए। कुसुम दौडकर महाराज के पैरोंपर गिरपडी और उसकी आँखों से आँसू की धारा बह चली।

राजा नारायणदत्त को कुसुमकुमारी पहिले भी कई दफे देख चुकी थी और उन्हें अच्छी तरह पहचानती भी थी क्योंकि आवश्यकता पड़ने पर वे कई दफे कुसुमकुमारी के पास आ चुके थे मगर यह हाल रनबीरसिह को मालूम न था। दालान में रोशनी बखूबी हो रही थी जिसके सबब से महाराज के प्रतापी चेहरे का हर एक हिस्सा साफ साफ दिखाई दे रहा था।

इस समय महाराज के नेत्र भी अश्रुपूर्ण थे। उन्होंने बड़े प्यार से कुसुमकुमारी को उठाया और उसका सर अपनी छाती से लगा आशीर्वाद के तौर पर कहा, "बेटी! ईश्वर तुझे सदैव प्रसन्न रक्खे और तेरी अभिलाषा पूरी हो।"

कुसुम–(अपने कमरे की तरफ इशारा कर के) कमरे में चलिये।

राजा–नही, मै इस कमरे में न जाऊगा वल्कि उस चित्र वाले कमरे में डेरा डालूँगा जिसमें अपने प्यारे लडके रनबीर और उसी के साथ ही साथ अपने एक सच्चे मित्र से मिलने की आशा है।

इन शब्दों के सुनने से कुसुम के दिल की मुर्झाई हुई कली यकायक तरोताजा हो गई और उसे जितनी खुशी हुई उसका हाल स्वय वही जान सकती थी। वह खुशी खुशी महाराज को साथ लिये हुए उस कमरे की तरफ रवाना हुई और बीरसेन बैठने का सामान करने के लिए तेजी के साथ आगे बढ़ गए।

इसके थोड़ी ही देर बाद महाराज नारायणदत्त कुसुमकुमारी दीवान साहब और बीरसेन को हम उस चित्रवाले

क्रिया नियम के विरुद्ध लाश का मुँह खोले बिना ही कर दी गई और इस बारे में बिहारीसिंह और हरनामसिंह तथा लौंडियों ने यह बहाना किया कि 'राजा साहब की सूरत देख मायारानी बहुत बेहाल हो जायेंगी इसलिए मुर्दे का मुँह खोलने की कोई जरूरत नहीं । और लोगों न इन बातों पर खयाल किया हो चाहे न किया हो मगर मेरे दिल पर तो इन बातों ने बहुत बडा असर किया और यही सबब है कि मुझे राजा साहब के मरने का विश्वास नहीं होता ।

इन्द्रदेव–(कुछ साच कर) शक तो तुम्हारा बहुत ठीक है, अच्छा यह बताओ कि तुम इस समय कहाँ जा रहे थे ?

गिरिजा–(मेरी तरफ इशारा करक) गुरुजी के पास यही सब हाल कहने के लिए जा रहा था ।

मैं–इस समय मनारमा कहाँ है सा बताओ ?

गिरिजा–जमानिया में मायारानी के पास है ।

मैं–तुम्हारे हाथ स छूटने के बाद दारागा और मनोरमा में कैसी निपटी इसका कुछ हाल मालूम हुआ ?

गिरिजा–जी हॉ मालूम हुआ उस बारे में बहुत बडी दिल्लगी हुई जो मैं निश्चिन्ती के साथ बयान करूँगा ।

इन्द्रदेव–अच्छा यह तो बताआ कि गापालसिंह के बारे में तुम्हारी क्या राय है और अब हम लोगों को क्या करना चाहिये ?

गिरिजा–इस बारे में मैं एक अदना और नादान आदमी आपको क्या राय दे सकता हू ! हॉ मुझे जो कुछ आज्ञा हो सो करने के लिए जरूर तैयार हू ।

इतनी बातें हो ही रही थीं कि सामने जमानिया की तरफ से दारागा और जैपाल घोडों पर सवार आत हुए दिखाई पडे जिन्हें देखते ही गिरिजाकुमार ने कहा 'देखिए ये दोनों शैतान कहीं जा रहे हैं इसमें भी कोई भेद जरूर है यदि आज्ञा हो ता मैं इनक पीछे जाऊँ ।

दारोगा और जैपाल का देख कर हम दोनों पेड की तरफ घूम गये जिसमें वे पहिचान न सकें । जब वे आगे निकल गए तब मैंन अपना घाडा गिरिजाकुमार को दकर कहा 'तुम जल्द सवार हो के इन दोनों का पीछा करो ।' और गिरिजाकुमार ने ऐसा ही किया ।

*तईसवॉ भाग समाप्त *
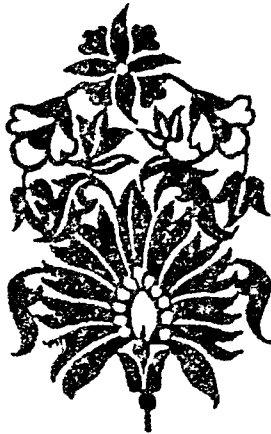
जव इन्द्रदेव के मकान पर पहुचा तो देखा कि वे सफर की तैयारी कर रहे है, पूछने पर जवाब मिला कि गोपालसिंह बीमार हो गये हैं, उन्हें देखने के लिए जाते हैं। सुनने के साथ ही मेरा दिल धडक उठा और मेरे मुँह से ये शब्द निकल पडे– 'हाय अफसोस ! कम्बख्त दुश्मन लोग अपना काम कर गए !!"

मेरी बात सुन कर इन्द्रदेव चौंक पडे और उन्होंने पूछा, आपने यह क्या कहा ?" दो चार खिदमतगार वहॉं मौजूद थे उन्हें बिदा करके मैंने गिरिजाकुमार का सब हाल इन्द्रदेव से बयान किया और दारोगा साहब की लिखी हुई वह चीठी उनके हाथ पर रख दी। उसे देख कर और सब हाल सुन कर इन्द्रदेव बेचैन हो गए आधे घटे तक तो ऐसा मालूम होता था कि उन्हें तनोबदन की सुध नहीं है, इसके बाद उन्होंने अपने को सम्हाला और मुझसे कहा–' बेशक दुश्मन लोग अपना काम कर गए मगर तुमने भी बहुत बडी भूल की कि दो दिन की देर कर दी और आज मेरे पास खबर करने के लिए आए ! अभी दो ही घडी बीती है कि मुझे उनके बीमार होने की खबर मिली है, ईश्वर ही कुशल करें !"

इसके जवाब में चुप रह जाने के सिवाय मैं कुछ भी न बोल सका और अपनी भूल स्वीकार कर ली। कुछ और बातचीत होने के बाद इन्द्रदेव ने मुझसे कहा, खैर जो कुछ होना था सो हो गया, अब तुम भी मेरे साथ जमानिया चलो, वहॉं पहुचने तक अगर ईश्वर ने कुशल रक्खी तो जिस तरह बन पडेगा उनकी जान बचावेंगे !!"

अस्तु हम दोनों आदमी तेज घोडों पर सवार होकर जमानिया की तरफ रवाना हो गये और साथियों को पीछे से आने की ताकीद कर गये।

जब हम लोग जमानिया के करीब पहुचे और जमानिया सिर्फ दो कोस की दूरी पर रह गया तो सामने से कई देहाती आदमी रोते और चिल्लाते हुए आते दिखाई पड़े। हम लोगों ने घबडा कर रोने का सबब पूछा तो उन्होंने हिचकियॉं लेकर कहा कि हमारे राजा गोपालसिह हम लोगों को छोडकर बैकुँठ चले गये।

सुनने के साथ हम लोगों का कलेजा धक हो गया। आगे बढने की हिम्मत न पडी और सड़क के किनारे एक घने पेड के नीचे जाकर घोडों पर से उतर पडे। दोनों घोड़ों को पेड़ के साथ बॉंध दिया और जीनपोश बिछा कर बैठ गये ऑंखों से ऑंसू की धारा बहने लगी। घटे भर तक हम दोनों में किसी तरह की बात-चीत न हुई क्योंकि चित्त बड़ा ही दु खी हो गया था। उस समय दिन अनुमान तीन घटे के बाकी था, हम दोनों आदमी पेड़ के नीचे बैठे ऑंसू बहा रहे थे कि यकायक जमानिया से लौटता हुआ गिरिजाकुमार भी उसी जगह आ पहुचा। उस समय उसकी सूरत बदली हुई थी इसलिए हम लोगों ने तो नहीं पहिचाना परन्तु वह हम लोगों को देख कर स्वय पास चला आया और अपना गुप्त परिचय देकर बोला मैं गिरिजाकुमार हू।

इन्द्रदेव–(ऑंसू पोछ कर) अच्छे मौके पर तुम आ पहुचे ? यह बताओ कि क्या वास्तव में राजा गोपालसिह मर गये ?

गिरिजा–जी हॉं उनकी चिता मेरे सामने लगाई गई और देखते ही देखते उनकी लाश पचतत्व में मिल गई परन्तु अभी तक मेरे दिल को विश्वास नहीं होता कि राजा साहब मर गये।

इन्द्रदेव–(चौंक कर) सो क्या ? यह कैसी बात ?

गिरिजा–जी हॉं, हर तरह का रग ढग देख कर मेरा दिल कबूल नहीं करता कि वे मर गये।

मैं–क्या तुम्हारी तरह वहॉं और भी किसी को इस बात का शक है ?

गिरिजा–नहीं ऐसा तो नहीं मालूम होता बल्कि मैं तो समझता हू कि खास दारोगा साहब को भी उनके मरने का विश्वास है मगर क्या किया जाय मुझे विश्वास नहीं होता और दिल बार बार यही कहता है कि राजा साहब मरे नहीं।

इन्द्रदेव- आखिर तुम क्या सोचते हो और इस बात का तुम्हारे पास क्या सबूत है ? तुमने कौन सी ऐसी बात देखी जिससे तुम्हारे दिल को अभी तक उनके मरने का विश्वास नहीं होता ?

गिरिजा–और बातों के अतिरिक्त दो बातें तो बहुत ही ज्यादे शक पैदा करती है। एक तो यह है कि कल दो घटे रात रहते मैंने हरनामसिह और बिहारीसिह को एक कंगले की लाश उठाये हुए चोर दर्वाजे की राह से महल के अन्दर जाते हुए देखा, फिर बहुत टोह लेने पर भी उस लाश का कुछ पता न लगा और न वह लाश लौटा कर महल के बाहर ही निकाली गई, तो क्या वह महल ही में हजम हो गई ? उसके बाद केवल राजा साहब की लाश बाहर निकली।

इन्द्रदेव–जरूर यह शक करने की जगह है।

गिरिजा–इसके अतिरिक्त राजा गोपालसिह की लाश को बाहर निकालने और जलाने में हद दर्जे की फुर्ती और जल्दीबाजी की गई यहॉं तक कि रियासत के उमरा लोगों के भी इकट्ठा होने का इन्तजार नहीं किया गया। एक साधारण आदमी के लिए भी इतनी जल्दी नहीं की जाती वे तो राजा ही ठहरे ! हॉं एक बात और भी सोचने के लायक है ! चिता पर

सिहासन पर बैठी हुई लाडिली की मूरत कहाँ स आई *और उस आइने (शीशे) वाले मकान में जिसमें कमलिनी लाडिली तथा हमारे ऐयारों की सी मूरतों ने हमें धोखा दिया क्या था ? जब हम दोनों उसके अन्दर गये तो उन मूरतों को दखा जो नालियों पर चला करती थीं **मगर ताज्जुब है कि

गोपाल-(बात काट कर) वह सब कार्रवाई मेरी थी। एत तौर पर मैं आप लोगों को कुछ कुछ तमाशा भी दिखाता जाता था। वे सब मूरतें बहुत पुराने जमाने की बनी हुई हैं मगर मैंने उन पर ताजा रग रोगन चढा कर कमलिनी लाडिली वगैरह की सूरतें बना दी थीं।

इन्द-ठीक है मेरा भी यही खयाल था। अच्छा एक बात और बताइये !

गोपाल-पूछिये।

इन्द-जिस तिलिस्मी मकान में हम लोग हँसते हँसते कूद पडे थे उसमें कमलिनी के कई सिपाही भी जा फसे थे और

गोपाल-जी हा ईश्वर की कृपा से वे लोग कैदखान में जीते जागते पाये गये और इस समय जमानिया में मौजूद हैं। उन्हीं में के एक आदमी को दारोगा ने गठरी बॉध कर रोहतासगढ के किले में छोडा था जब मैं कृष्णाजिन्न बन कर पहिले पहिल वहा गया था ***।

इन्द्रजीत-बहुत अच्छा हुआ, उन बेचारों की तरफ से मुझे बहुत ही खुटका था।

बीरेन्द्र-(गोपालसिह से) आज दलीपशाह की जुबानी जो कुछ उसका किस्सा सुनने में आया उससे हमें बडा ही आश्चर्य हुआ। यद्यपि उसका किस्सा अभी तक समाप्त नहीं हुआ और समाप्त होने तक शायद और भी बहुत सी बातें मालूम हो परन्तु इस बात का ठीक ठीक जवाब तो तुम्हारे सिवाय दूसरा शायद कोई नहीं दे सकता कि तुम्हें कैद करने में मायारानी ने कौन सी ऐसी कार्यवाई की कि किसी को पता न लगा और सभी लोग धोखे में पड गये यहाँ तक कि तुम्हारी समझ में भी कुछ न आया और तुम चारपाई पर से उठा कर कैदखाने में डाल दिये गये।

गोपाल-इसका ठीक ठीक जवाब तो मै नहीं दे सकता। कई बातों का पता मुझे भी नहीं लगा क्योंकि मै ज्यादा देर तक बीमारी की अवस्था में पडा नहीं रहा बहुत जल्द बेहोश कर दिया गया। मै क्योंकर जान सकता था कि कम्बख्त मायारानी दवा के बदले मुझे जहर पिला रही है, मगर मुझको विश्वास है कि दलीपशाह को इसका हाल बहुत ज्यादे मालूम हुआ होगा।

जीत-खैर आज के दर्बार में और भी जो कुछ है मालूम हो जायगा।

कुछ देर तक इसी तरह की बातें होती रहीं। जब महाराज उठ गये तब सब कोई अपने ठिकाने चले गये और कारिन्दे लोग दर्बार की तैयारी करने लगे।

भोजन इत्यादि से छुट्टी पाने के बाद दोपहर होते होते महाराज दर्बार में पधारे। आज का दर्बार भी कल की तरह रौनकदार था और आदमियों की गिनती बनिस्बत कल के आज बहुत ज्यादे थी।

महाराज की आज्ञानुसार दलीपशाह ने इस तरह अपना किस्सा बयान करना शुरू किया -

"मै बयान कर चुका हू कि मैंने अपना घोडा गिरिजाकुमार को देकर दारोगा का पीछा करने के लिए कहा, अस्तु जब वह दारोगा के पीछे चला गया तब हम दोनों में सलाह होने लगी कि अब क्या करना चाहिए, अन्त में यह निश्चय हुआ कि इस समय जमानिया नजाना चाहिए बल्कि घर लौट चलना चाहिये।

"उसी समय इन्द्रदेव के साथी लोग भी वहा आ पहुचे। उनमें से एक का घोड़ा मैंने ले लिया और फिर हम लोग इन्द्रदेव के मकान की तरफ रवाना हुए। मकान पर पहुच कर इन्द्रदेव ने अपने कई जासूसों और ऐयारों को हर एक बातों का पता लगाने के लिए जमानिया की तरफ रवाना किया। मै भी अपने घर जाने को तैयार हुआ मगर इन्द्रदेव ने मुझे रोक दिया।

"यद्यपि मै कह चुका हू कि अपने किस्से में भूतनाथ का हाल बयान न करूँगा तथापि मौका पडने पर कहीं कहीं लाचारी से उसका जिक्र करना ही पडेगा, अस्तु इस जगह यह कह देना जरूरी जान पडता है कि इन्द्रदेव के मकान ही

---

*देखिये नौवा भाग दूसरा बयान।

**देखिये सोलहवा भाग छठवा बयान।

***देखिये बारहवा भाग सातवा बयान।

*श्री *

चन्द्रकान्ता सन्तति

चौबीसवां भाग

पहिला बयान

दिन घटे भर से ज्यादे चढ चुका है। महाराज सुरेन्द्रसिह सुनहरी चौकी पर बैठे दातून कर रहे हैं और जीतसिह, तेजसिह इन्दजीतसिह आनन्दसिह, देवीसिह, भूतनाथ और राजा गोपालसिह उनके सामने की तरफ बैठे हुए इधर उधर की बातें कर रहे हैं। रात महाराज की तबीयत कुछ खराब थी, इसलिये आज स्नान सन्ध्या में देर हो गई है।

सुरेन्द्र–(गोपालसिह से) गोपाल, इतना तो हम जरूरकहेंगे कि गद्दी पर बैठने के बाद तुमने कोई बुद्धिमानी का काम नहीं किया बल्कि हर एक मामले में तुमसे भूल ही होती गई !!

गोपाल–नि सन्देह ऐसा ही है और उस लापरवाही का नतीजा भी मुझे वैसा ही भोगना पडा।

बीरेन्द–धोखा खाये बिना कोई हाशियार नहीं होता। कैद से छूटने के बाद तुमने बहुत से अनूठे काम भी किये हैं। हॉ यह तो बताओ कि दारोगा और जैपाल के लिये तुमने क्या सजा तजबीज की है ?

गोपाल–इस बारे में दिन रात सोचा ही करता हू मगर कोई सजा ऐसी नहीं सूझती जो उन लोगों के लायक हो और जिससे मेरा गुस्सा शान्त हो।

सुरेन्द–(मुस्कुरा कर) मै तो समझता हू कि यह काम भूतनाथ के हवाले किया जाय, यही उन शैतानों के लिए कोई मजेदार सजा तजवीज करेगा। (भूतनाथ की तरफ देख के) क्यों जी, तुम कुछ बता सकते हो ?

भूत–(हाथ जोड के) उनके योग्य क्या सजा है इसका बताना तो बडा ही कठिन है, मगर एक छोटी सी सजा मैं जरूर बता सकता हू।

गोपाल–वह क्या ?

भूत–पहिले तो उन्हें कच्चा पारा खिलाना चाहिये जिसकी गरमी से उन्हें सख्त तकलीफ हो और तमाम बदन फूट जाय, जब जख्म मजेदार हो जाय तो नित्य लाल मिर्च और नमक का लेप चढाया जाय। जब तक वे दोनों जीते रहे तब तक ऐसा ही होता रहे।

सुरेन्द्र–सजा हलकी तो नहीं है, मगर किसी की आत्मा

गोपाल–(बात काट कर) खैर उन कम्बख्तों के लिए आप कुछ न सोचिये, उन्हें मैं जमानिया ले जाऊगा और उसी जगह उनकी मरम्मत करूँगा।

बीरेन्द–इन सब रञ्ज देने वाली बातों का जिक्र जाने दो, यह बताओ कि अगर हम लोग जमानिया के तिलिस्म की सैर किया चाहें तो कैसे कर सकते है ?

गोपाल–यह तो मैं आप ही निश्चय कर चुका हू कि आप लोगों को वहा की सैर जरूर कराऊगा।

इन्दजीत–(गोपाल से) हा खूब याद आया, वहाँ के बारे में मुझे भी दो एक बातों का शक बना हुआ है।

गोपाल–वह क्या ?

इन्द–एक तो यह बताइए कि तिलिस्म के अन्दर जिस मकान में पहिलेमहिल आनन्दसिह फँसे थे, उस मकान में

कोई और था जिसे मैं नहीं जानती। दारोगा ने बहुत सोच विचार कर विश्वास कर लिया कि यह काम भूतनाथ का है। इसके बाद उन दोनों में जो कुछ बातें हुई उनसे यही मालूम हुआ कि गोपालसिंह जरूर मर गये और दारोगा को भी यही विश्वास है, मगर मेरे दिल में यह बात नहीं बैठती, खैर जो कुछ हो। उसके दूसरे दिन मनोरमा के मकान में से एक कैदी निकाला गया जिसे बेहोश करके जैपाल ने बेगम के मकान में पहुंचा दिया। मैंने उसे पहिचानने के लिए बहुत कुछ उद्योग किया मगर पहिचान न सका क्योंकि उसे गुप्त रखने में उन्होंने बहुत कोशिश की थी, मगर मुझे गुमान होता है कि वह जरूर बलभद्रसिंह होगा। अगर वह दो दिन भी बेगम के मकान में रहता तो मैं जरूर निश्चय कर लेता मगर न मालूम किस वक्त और कहां बेगम ने उसे पहुंचवा दिया कि मुझे इस बात का कुछ भी पता न लगा, हां इतना जरूर मालूम हो गया कि दारोगा भूतनाथ को फँसाने के फेर में पड़ा हुआ है और चाहता है कि किसी तरह भूतनाथ मार डाला जाय।

'इन कामों से छुट्टी पाकर दारोगा अकेला अर्जुनसिंह के मकान पर गया, इनसे बड़ी नरमी और खुशामद के साथ मुलाकात की और देर तक मीठी मीठी बातें करता रहा जिसका तत्व यह था कि तुम दलीपशाह को साथ लेकर मेरी मदद करो और जिस तरह हो सके भूतनाथ को गिरफ्तार करा दो अगर तुम दोनों की मदद से भूतनाथ गिरफ्तार हो जायेगा तो मैं इसके बदले में दो लाख रुपया तुम दोनों को इनाम दूंगा, इसके अतिरिक्त वह आपके नाम का एक पत्र भी अर्जुनसिंह को दे गया।

अर्जुनसिंह ने दारोगा का वह पत्र निकाल कर मुझे दिया, मैंने पढ़ कर इन्द्रदेव के हाथ में दे दिया और कहा इसका मतलब भी वही है जो गिरिजाकुमार ने अभी बयान किया है परन्तु यह कदापि नहीं हो सकता कि मैं भूतनाथ के साथ किसी तरह की बुराई करूँ हां दारोगा के साथ दिल्लगी अवश्य करूँगा।

'इसके बाद कुछ देर तक और भी बातचीत होती रही। अन्त में गिरिजाकुमार ने कहा कि मेरे इस सफर का नतीजा कुछ भी न निकला और न मेरी तबीयत ही भरी, आप कृपा करके मुझे जमानिया जाने की इजाजत दीजिये।

गिरिजाकुमार की दरखास्त मैंने मंजूर कर ली। उस दिन रात भर हम लोग इन्द्रदेव के यहां रहे, दूसरे दिन गिरिजाकुमार जमानिया की तरफ रवाना हुआ और मैं अर्जुनसिंह को साथ लेकर अपने घर मिर्जापुर चला आया।

घर पहुंच कर मैंने भूतनाथ की स्त्री शान्ता को देखा जो बीमार तथा बहुत ही कमजोर और दुबली हो रही थी मगर उसकी सब बीमारी भूतनाथ की नादानी के सबब से थी और वह चाहती थी कि जिस तरह भूतनाथ ने अपने को मरा हुआ मशहूर किया था उसी तरह वह भी अपने और अपने छोटे बच्चे के बारे में मशहूर करे। उसकी अवस्था पर मैं बड़ा दुःखी हुआ और जो कुछ वह चाहती थी उसका प्रबन्ध मैंने कर दिया। यही सबब था कि भूतनाथ ने अपने छोटे बच्चे के विषय में धोखा खाया जिसका हाल महाराज तथा राजकुमारों को मालूम है, मगर सर्वसाधारण के लिए मैं इस समय उसका जिक्र न करूँगा। इसका खुलासा हाल भूतनाथ अपनी जीवनी में बयान करेगा। खैर—'

घर पहुंच कर मैंने दिल्लगी के तौर पर भूतनाथ के विषय में दारोगा से लिखा पढ़ी शुरू कर दी मगर ऐसा करने से मेरा असल मतलब यह था कि मुलाकात होने पर मैं वह सब पत्र जो इस समय हरनामसिंह के पास मौजूद हैं भूतनाथ को दिखाऊं और उसे होशियार कर दूं अस्तु अन्त में मैंने उसे (दारोगा को) साफ साफ जवाब दे दिया।

यहां तक अपना किस्सा कह कर दलीपशाह ने हरनामसिंह की तरफ देखा और हरनामसिंह ने सब पत्र जो एक छोटी सी सन्दूकड़ी में बन्द थे महाराज के आगे पेश किये जिसे मामूली तौर पर सभों ने देखा। इन चीठियों से दारोगा की बेईमानी के साथ ही साथ यह भी साबित होता था कि भूतनाथ ने दलीपशाह पर व्यर्थ ही कलंक लगाया। महाराज की आज्ञानुसार वह चीठियां कम्बख्त दारोगा के आगे फेंक दी गईं और इसके बाद दलीपशाह ने फिर इस तरह बयान करना शुरू किया —

'मेरे और दारोगा के बीच जो कुछ लिखा पढ़ी हुई थी उसका हाल किसी तरह भूतनाथ को मालूम हो गया था वह शायद स्वयं दारोगा से जाकर मिला और दारोगा ने मेरी चीठियां दिखा कर इसे मेरा दुश्मन बना दिया तथा खुद भी मेरी बर्बादी के लिए तैयार हो गया। इस तरह दारोगा की दुश्मनी का वह पौधा जो कुछ दिनों के लिए मुरझा गया था फिर से लहलहा उठा और हराभरा हो गया और साथ ही इसके मैं भी हर तरह से दारोगा का मुकाबिला करने के लिए तैयार हो गया।

'कई दिन के बाद गिरिजाकुमार जमानिया से लौटा तो उसकी जुबानी मालूम हुआ कि मायारानी का दिन बड़ी खुशी और चहल पहल के साथ गुजर रहा है। मनोरमा और नागर के अतिरिक्त धनपति नामी एक औरत और भी है जिसे मायारानी बहुत प्यार करती है मगर उन पर मद होने का शक होता है। इसके अतिरिक्त यह भी मालूम हुआ कि दारोगा ने मेरी गिरफ्तारी के लिए तरह तरह के बन्दोबस्त कर रक्खे हैं और भूतनाथ भी दो तीन दफे उसके पास आता जाता दिखाई दिया है मगर यह बात निश्चय रूप से मैं नहीं कह सकता कि वह जरूर भूतनाथ ही था।

पर मुझे इस बात की खबर लगी कि भूतनाथ की स्त्री बहुत बीमार है। मेरे एक शागिर्द ने आकर यह सदेशा दिया और साथ ही इसके यह भी कहा कि आपकी स्त्री उसे देखने के लिए जाने की आज्ञा मागती है।

भूतनाथ की स्त्री शान्ता बडी नेक और स्वभाव की बहुत अच्छी है। मैं भी उसे बहिन की तरह मानता था इसलिए उसकी बीमारी का हाल सुन कर मुझे तरद्दुद हुआ और मैंने अपनी स्त्री को उसके पास जाने की आज्ञा दे दी तथा उसकी हिफाजत का पूरा पूरा इन्तजाम भी कर लिया। इसके कई दिन बाद खबर लगी कि मेरी स्त्री शान्ता को लेकर अपने घर आ गई।

आठ दस दिन बीत जाने पर भी न तो जमानिया से कुछ खबर आई न गिरिजाकुमार ही लौटा। हॉ रियासत की तरफ से एक चीठी न्योते की जरूर आई थी जिसके जवाब में इन्द्रदेव ने लिख दिया कि गोपालसिह से और मुझसे दोस्ती थी सा वह ता चल बसे अब उनकी क्रिया मैं अपनी ऑखों से देखना पसन्द नहीं करता।

मेरी इच्छा तो हुई कि गिरिजाकुमार का पता लगाने के लिए मै खुद जाऊं मगर इन्द्रदेव ने कहा कि नहीं दो चार दिन और राह देख लो, कहीं ऐसा न हो कि तुम उसकी खोज में जाओ और वह यहा आ जाय। अस्तु मैंने भी ऐसा ही किया।

बारहवें दिन गिरिजाकुमार हम लोंगों क पास आ पहुचा। उसके साथ अर्जुनसिह भी थे जो हमलोगों की मण्डली में एक अच्छे ऐयार गिने जाते थे मगर भूतनाथ से और इनसे खूब ही चखाचखी चली आती थी। (महाराज और जीतसिह की तरफ देख कर) आपने सुना ही होगा कि इन्होंने एक दिन भूतनाथ को धोखा देकर कूऍं में ढकेल दिया था और उसके बटुए मे स कई चीजें निकाल ली थीं।

जीत–हा मालूम हे मगर इस बात का पता नहीं लगा कि अर्जुन ने भूतनाथ के बटुए में से क्या निकाला था।

इतना कह कर जीतसिह ने भूतनाथ की तरफ देखा।

भूत–(महाराज की तरफ देख कर) मैने जिस दिन अपना किस्सा सरकार को सुनाया था उस दिन अर्ज किया था कि जब वह कागज का मुट्ठा मेरे पास से चोरी गया तो मुझे बडा ही तरद्दुद हुआ और उसके बहुत दिनों के बाद राजा गोपालसिह के मरने की खबर उडी *इत्यादि। यह वही कागज का मुट्ठा था जो अर्जुनसिह ने मेरे बटुए में से निकाल लिया था तथा इसके साथ और भी कई कागज थ। असल बात यह है कि उन चीठियों की नकल के मैंने दो मुट्ठे तैयार किये थे एक तो हिफाजत के लिए अपने मकान में रख छोडा था और दूसरा मुट्ठा समय पर काम लेने के लिए हरदम अपने बटुए में रखता था। मुझे गुमान था कि अर्जुनसिह ने जो मुट्ठा ले लिया था उसी से मुझे नुकसान पहुचा मगर अब मालूम हुआ कि ऐसा नही हुआ अर्जुनसिह ने न तो वह किसी को दिया और न उससे मुझे कुछ नुकसान पहुचा। हाल में जो दूसरा मुट्ठा जैपाल ने मेरे घर से चुरवा लिया था उसी ने तमाम बखेड़ा मचाया।

जीत–ठीक है (दलीपशाह की तरफ देख के) अच्छा तब क्या हुआ ?

दलीपशाह ने फिर इस तरह कहना शुरू किया –

दलीप–गिरिजाकुमार और अर्जुनसिह में एक तरह की नातेदारी भी है परन्तु इसका खयाल न करके ये दोनों आपुस में दोस्ती का बर्ताव रखते थे। खैर उस समय इन दोनों के आ जाने से हमलोगों को खुशी हुई और फिर इस तरह की बातें होन लगी –

मैं–गिरिजाकुमार तुमने तो बहुत दिन लगा दिए !

गिरिजा–जी हा मुझे तो और भी कई दिन लग जाते मगर इत्तिफाक से अर्जुनसिह से मुलाकात हो गई और इनकी मदद से मेरा काम बहुत जल्द हो गया।

मैं–खैर यह बताओ कि तुमन किन किन बातों का पता लगाया और मुझसे विदा होकर तुम दारोगा के पीछे कहाँ तक गए ?

गिरिजा–जैपाल को साथ लिए हुए दारागा सीधे मनोरमा के मकान पर चला गया। उस समय मनोरमा वहा न थी वह दारोगा के आन के तीन पहर बाद रात के समय अपने मकान पर पहुची। मै भी छिप कर किसी न किसी तरह उस मकान में दाखिल हो गया। रात का दारोगा और मनोरमा में खूब हुज्जत हुई मगर अन्त में मनोरमा ने उसे विश्वास दिला दिया कि राजा गोपालसिह का मारन के विषय में उससे जबर्दस्ती पुर्जा लिखा लेने वाला मरा आदमी न था बल्कि वह

---

*देखिये इक्कीसवॉ भाग दूसरा बयान।

कमरे में बैठे हुए देखते हैं जिसमें से रनबीरसिह यकायक गायब हो गए थे।

राजा–(चारो तरफ देख के) अहा !आज यहाँ एक सच्चे मित्रसे मिलने की अभिलाषा मुझे कितना प्रसन्न कर रही है सो मै ही जानता हू। (दीवान से) क्यों सुमेरसिह, अब कितनी रात बाकी होगी ?

दीवान–(हाथ जोड के) जी यही कोई डेढ पहर रात होगी।

राजा–अब समय निकट ही है।

वीरसेन–क्या रनबीरसिहजी से इसी कमरे में मुलाकात होगी ?

राजा–हॉ वह अकस्मात इसी कमरे में दिखाई देगा।

वीरसेन–सो कैसे ?

राजा–(मुस्कुरा कर) वैसे ही जैसे यहॉ से गायब हो गया था !

कुसुमकुमारी सिर नीचा किये तरह तरह की बातें सोच रही थी। उसे यकायक राजा नारायणदत्त के इस ढग से यहॉ आने पर बडा ही आश्चर्य था और उसे यह भी विश्वास हो गया था कि आज यहाँ कोई नया गुल खिलने वाला है। राजा साहब की बातें उसे और भी आश्चर्य में डाल रही थीं और वह ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी कि–"हे ईश्वर जो कुछ अद्‌भुत और आश्चर्य जनक घटना तुझे दिखलानी हो शीघ्र दिखा !!.

राजा (दीवान से) इस जगह तीन चार साधुओं के बैठने का सामान शीघ्र करना होगा।

दीवान–जो आज्ञा !(बीरसेन की तरफ देखकर) आप किसी को आज्ञा दे दें।

राजा–नही नहीं वीरसेन को यहॉ बैठा रहने दीजिये आप स्वयं बाहर जाकर इसका प्रबन्ध कीजिये कवल इतना ही नहीं एक प्रबन्ध आपको और भी करना होगा !

दीवान–(खडे होकर) आज्ञा ?

राजा–हम लोगों के सिवाय कोई दूसरा आदमी इस कमरे में न आने पावे और यदि कोई बाहर हा तो इतनी दूर हो कि हमलोगों की बातें न सुन सके।

दीवान साहब कमरे के बाहर चले गए और थोडी ही देर में सब बन्दोबस्त जैसा कि राजा साहब ने कहा था हो गया।

हम ऊपर लिख आये है कि इस कमरे में एक तरफ सगमर्मर की दो बडी मूरतें थीं उनमें से एक तो कुसुमकुमारी के पिता कुबेरसिह की मूरत थी और दूसरी मूरत रनबीरसिह के पिता इन्दनाथ की थी इस समय सब काई उसी मूरत के सामने बैठे हुए थे। यकायक दोनों मूरतें हिलने लगीं जिसे देख कुसुमकुमारी और बीरसेन को बडा ही ताज्जुब हुआ। तीन ही चार सायत के बाद वे दोनों मूरतें गज गज भर अपने चारो तरफ की छत लिये हुए जमीन के अन्दर चली गई और उस के बदल में उसी गडहे के अन्दर से पॉच आदमी बारी बारी से इस तरह निकलते हुए दिखाई दिये जैसे कोई धीरे धीरे सीढी चढ कर ऊपर आ रहा हो।

उन पॉचों आदमियों में से दो आदमियों को तो दीवान साहब बीरसेन और कुसुमकुमारी भी पहिचान गई मगर बाकी के तीन आदमियों को जो फकीरी सूरत में थे सिवाय राजा नारायणदत्त के और किसी ने भी नहीं पहिचाना।

जिस समय वे पॉचों आदमी छत के नीचे से ऊपर आये उसी समय राजा नारायणदत्त, दीवान साहब और बीरसेन उठ खडे हुए। बेचारी कुसुमकुमारी सहम कर एक तरफ हट गई। राजा नारायणदत्त दौड कर उन तीनों साधुओं में से एक साधु के पैर पर गिर पडे और ऑसुओं की धारा से उसके चरण की धूलि धोने लगे। उस साधु ने मुहब्बत के साथ राजा साहब की पीठ पर हाथ फेरा और उठा कर कहा अपने सच्चे प्रेमी मित्र से मिलो !' यह कह कर दूसरे साधु की तरफ जो उनके बगल ही में था इशारा किया और राजा साहब झपट कर उसके गले के साथ चिमट गए। उस साधु ने भी बडे प्रेम से राजा साहब को गले लगा लिया और दोनों की आखों से ऑसुओं की धारा बह चली।

रनबीरसिह आगे बढकर दीवान साहब स साहबसलामत करने बाद बीरसेन से मिल और तब मोहब्बत भरी एक गहरी निगाह कुसुमकुमारी पर डाली उधर उसने भी अपने धडकते हुए कलेजे को शान्ति दकर प्रेम पूरित दृष्टि से रनबीर को देखा और लज्जा से ऑखें नीची कर लीं।

इस समय का कौतुक देख कर दीवान साहब और बीरसन तो हेरान थे ही मगर कुसुमकुमारी के दिल का क्या हाल था सो हमारे पाठक स्वयं अनुमान कर सकते है।

अपने मित्र साधु से जो वास्तव में रनबीर के पिता थे मिलने के बाद राजा नारायणदत्त तीसरे साधु से गले गले मिल और तब रनबीर के पिता कुसुम कुमारी की तरफ बढे। राजा नारायणदत्त ने कुसुम से कहा 'यह रनबीरसिह के पिता है इनके पैरों पर गिरो।'

कुसुमकुमारी रनबीरसिह के पिता क पैरों पर गिर पडी जिन्होंने बडे प्रेम से उठाकर उसका सर छाती स लगाया

और कहा वटी कुसुम आज का दिन हम लोगों को देखना नसीब होगा इसका तो गुमान भी न था, हा इतना जानत थ कि हमलोगों की वास्तविक प्रसन्नता में कोई बाधा नहीं डाल सकता, अच्छा वेठो और हमलागों का जीवनचरित्र सुनो।'
इतना कहकर इन्दनाथ (रनवीर के पिता) दीवानसाहव और वीरसन की तरफ घूम और कुशलमगल पूछने लगे दीवान साहव और वीरसेन भी इन्द्रनाथ के पेरों पर गिरे और दीवान साहव न कहा मुझ पूरा विश्वास था कि जा कुछ आपन कहा है वही हागा परन्तु आज के दिन की खवर न थी और न यही जानता था कि आज का दिन हमलागो के लिय इतनी वडी खुशी का होगा।

हम ऊपर लिख आय है कि छत क नीच से सीढिया चढकर पाच आदमी निकल जिनमें स चार आदमियों का हाल तो हम लिख चुक है मगर पॉचवें आदमी का परिचय अभी नहीं दिया गया वह पांचवा आदमी वही सर्दार चेतसिह था जिसका वयान पहिले आ चुका है जा वहुत स फौजी सिपाहियों का लकर रनवीरसिह की खाज में उस पहाडी क ऊपर गया था जिस पर कुसुमकुमारी और रनवीरसिह की मूरत वनी हुई थी। यह नक सर्दार पुरानी उम्र का था और दीवान साहव की तरह वहुत स भेदों का जानता था कुसुम कुमारी क पिता इस दोस्ती की निगाह स दखते थे और इस पर बहुत भरोसा रखते थे कुसुम को इसन गोद में खिलाया था इसलिये कुसुम इससे किसी तरह का पर्दा नहीं करती थी। इन्द्रनाथ इत्यादि क साथ सर्दार चतसिह का भी अद्भुत ढग स उस कमरे में पहुचते देख दीवान साहव वीरसेन और कुसुमकुमारी को वडा ही ताज्जुव हुआ पर यह विचार कर कुछ न पूछा कि थाडी ही देर में वहुत से भद खुलने वाले हैं ताज्जुव नहीं कि उन्हीं के साथ सर्दार चेतसिह का हाल भी मालूम हा जाय।

थोडी देर तक आश्चर्य से सव कोई एक दूसर को दखते रहे और जव राजा साहव की इच्छानुसार सव कोई वैठ गये तो उस नये साधु ने जिसके पैर पर राजा साहव गिरे थे कहा यह खुशी जा किसी कारणवश वहुत दिनों तक लाप हो गई थी आज यकायक विचित्र रूप से तुम लोगों के सामने आकर खड़ी हुइ है यह खुशी क्यों और कहा चली गई थी और आज यकायक कैसे आ पहुची तथा अव क्या अवस्था हागी इसका पूरा पूरा हाल जिसक जानने के लिये तुम वचैन हा रहे हाग राजा इन्दनाथ और राजा कुवरसिह का हाल सुनने ही से तुम लागों का मालूम हा जायगा और यह हाल इस समय हमारा यह शिष्य (दूसरे साधु की तरफ इशारा करके) तुमलागों स कहेगा परन्तु अपनी जुवान से कुसुमकुमारी की प्रसन्नता के लिये या उसके दिल का खुटका शीघ्र ही दूर करन के लिय इतना मै कह दता हू कि दुनिया मे मित्रता का नमूना दिखान वाले दानों मित्र इन्दनाथ और कुवेरसिह मरे चेले हैं और आज इस जगह य दोनों ही मित्र उपस्थित हैं तथा (राजा नारायणदत्त की तरफ इशारा करके) यह नारायणदत्त वास्तव में कुसुमकुमारी क पिता कुवेरसिह हैं।

गुरु महाराज के मुह से इतनी वात निकलते ही कुसुमकुमारी चीख उठी और— पिता पिता मेरे प्यारे पिता! इतने दिनों तक मुझ अभागिनी को छोडकर तुम दूर क्यों रहे ? कहती हुई राजा नारायणदत्त के पैरों पर गिर पडी और राने लगी। राजा नारायणदत्त की आखें भी डवडवा आईं और उन्होंन वडे प्यार से कुसुमकुमारी को उठा कर कहा 'वटी कुसुम यद्यपि वहुत दिनों तक मै तुझसे दूर रहा परन्तु तू खूव जानती है कि मैं तेरी तरफ से वेफिक नहीं रहा और वरावर तरी हिफाजत करता रहा। इतन दिनों तक मै दूर क्यों रहा ? इसका हाल हमारे गुरु भाई अभी अभी तुम लोगों से कहेंगे, शान्त हाकर वैठ और हम दोनों मित्रों का विचित्र हाल सुन।' इतना कह कर राजा साहव चुप हो गए और सव कोई अपने अपने ठिकाने वैठ गए।

सभों का जी राजा साहव के गुरुभाई की तरफ लगा हुआ था जिनकी जुवानी दोनों राजाओं का विचित्र हाल सुनन के लिये सव वेचैन हो रहे थे। अस्तु राजा साहव के गुरुभाई ने यों कहना प्रारम्भ किया —

राजा इन्द्रनाथ और राजा कुवेरसिह वडे प्रेमी और पूरे मित्र होने के कारण प्राय एक साथ रहा करते थे दोनों इन्हीं (गुरु वावाजी की तरफ इशारा करके) गुरु महाराज के चेले है जिनका चेला मैं हू। दोनों मित्रों को ज्योतिष पढने का हद्द से ज्यादे शौक था और गुरु महाराज ने भी वडे प्रेम से दोनों को ज्योतिष के ग्रन्थ पढाय और ज्योतिष की गूढ वातें वताईं। उन दिनों इन दोनों मित्रों के पिता जीते थे और तेजगढ तथा विहार का राज्य करते थे। एक दिन इन दोनों मित्रों ने एकान्त में वैठ कर अपने अपने पिता के विषय में ज्योतिष द्वारा भविष्यत फल तैयार करना आरम्भ किया और जव दोनों को यह मालूम हुआ कि इन दोनों ही के पिता आज के चालीसवें दिन एक साथ सग्राम में मारे जायेंगे तो इन्हें वडा ही आश्चर्य और रज हुआ। उन दिनों न तो किसी से लडाई लगी हुई थी और न उन दोनों राजाओं का कोई दुश्मन ही था। अतएव इस वात से दोनों को आश्चर्य हुआ कि इतनी जल्दी किस लडाई में दोनों के पिता मारे जायॅगे। उस समय इन दोनों मित्रों की अवस्था लगभग वीस वर्ष की होगी।

जव इन दोनों को अपने अपने पिता का हाल हर तरह से मालूम हो गया तो दोनों ने इस वात को छिपा रक्खा और इस उद्योग में लगे कि चालीस दिन की जगह पचास दिन तक न तो किसी से लडाई होने पावे और न उनके पिता मारे

जाय क्योंकि इन दोनों मित्रों को प्रारब्ध के साथ उद्योग पर बहुत कुछ भरोसा था।

उसके पांचवे दिन राजा इन्द्रनाथ की राजधानी में एक जवहरी के घर डाका पडा और राजा के कर्मचारियों ने तीन डाकुओं को और एक चौदह वर्ष की उम्र के लडके को गिरफ्तार किया। उन तीनों डाकुओं में एक अपनी मण्डली का सदार था और वह नौउम्र लडका भी उसी का था। जब वे चारो दर्बार में हाजिर किय गए तो उस समय राजा कुंवरसिंह के पिता भी उसी दर्बार में मौजूद थे। इस जगह हमें यह भी कह देना आवश्यक है कि राजा इन्द्रनाथ के पिता और कुंवरसिंह के पिता भी आपुस में वडे मित्र थे और प्राय मिला जुला करते थे। जब दोनो राजाओं ने उन डाकुओं का हाल सुना और डाकुओं ने भी अपना दोष स्वीकार कर लिया तो राजा इन्द्रनाथके पिता को उस डाकू लड़के के जीवट पर वडा ही आश्चय हुआ। तीनों डाकुओं को तो प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी और उस लडके के विषय में अपने मित्र कुंवरसिंह के पिता से राय ली। कुंवरसिंह के पिता ने कहा कि जब यह लडका चौदह वर्ष की उम्र में इतना दिलेर और निडर है तो भविष्य में वडा ही शैतान और खूनी निकलेगा और सिवाय डाकूपन के कोई दूसरा काम न करेगा। अतएव इस लडके को भी प्राणदण्ड ही देना चाहिये छोड देने में भलाई की आशा नहीं हो सकती।

यह विचार जब उस डाकू सदार ने सुना जिसका वह लड़का था तो वह वडे जोर से चिल्लाया और बोला महाराज! हम लोगों को प्राणदण्ड की आज्ञा हो चुकी है खैर कोई चिन्ता नहीं हम लोग अपनी जिन्दगी का बहुत वडा हिस्सा ऐश वो आराम में बिता चुके हैं किसी बात की हवस बाकी नहीं है मगर इस बच्चे ने अभी दुनिया का कुछ भी नहीं देखा है अतएव आप कृपा कर इसे छोड दें हम इस लडके को कसम देकर कह देते हैं कि भविष्य के लिये यह डाकूवृत्ति को छोड़कर और कोई दूसरा रोजगार करके जीवन निर्वाह करे।

डाकू सर्दार ने बहुत कुछ कहा मगर महाराज ने कुछ भी न सुना और उस लडके को भी फाँसी की आज्ञा दे दी। बस उसी दिन से डाकुओं के साथ दुश्मनी की जड पैदा हुई और उन चारों के संगी साथी डाकुओं ने उत्पात मचाना आरम्भ किया। दोनों राजाओं को भी इस बात की जिद हो गई कि जहाँ तक बन पडे खोज खोज के डाकुओं को मारना और उनका नाम निशान मिटाना चाहिए। उस जमाने में डाकुओं की वडी तरक्की हो रही थी और भारतवर्ष में चारो तरफ वे लोग उत्पात मचा रहे थे।

धीरे धीरे बदनसीबी के तीस दिन बीत गए और दस दिन बाकी रहे तब इन्द्रनाथ और कुंवरसिंह दोनों मित्रों ने विचार किया कि आज कल डाकुओं से वडी लागडाट चल रही है और डाकू लोग भी दोनों राजाओं को मार डालने की फिक्र में लगे हुए हैं ऐसी अवस्था में ज्योतिष की बात सच हो जाय तो कोई आश्चर्य नहीं अस्तु कोई ऐसी तर्कीब निकालनी चाहिये कि आज से पन्द्रह दिन तक दोनों राजा घर में ही बैठ कर बदनसीबी के दिन बिता दें। कुंवरसिंह की राय हुई कि अपने अपने पिता को इस बात से होशियार कर देना चाहिये। यद्यपि यह बात इन्द्रनाथ को पसन्द न थी मगर सिवाय इसके और कोई तर्कीब भी न सूझी आखिर जैसा कुंवरसिंह ने कहा था वैसा ही किया गया अर्थात् दोनों राजा ज्योतिष के भविष्यत्फल से सचेत कर दिए गए।

यद्यपि दोनों राजा जानते थे कि उनके लडके ज्योतिष विद्या में होशियार और दक्ष हैं तथापि उन्होंने लडकों की बात हंसकर उडा दी और कहा हमें इन बातों का विश्वास नहीं है, और यदि हम लडाई में मारे ही गये तो हर्ज क्या है? क्षत्रियों का यह धर्म ही है! लाचार हो दोनों मित्र चुप हो रहे और किसी से लडाई न होने पावे छिप छिपे इसी बात का उद्योग करने लगे।

उनतालीस दिन मजे में बीत गये चालीसवें दिन बाहर ही बाहर राजा इन्द्रनाथ के पिता अपने मित्र से मिलने के लिए तेजगढ की तरफ जा रहे थे जब रास्ते में सुना कि उनके मित्र शिकार खेलने के लिये शेरघाटी की तरफ आज ही रवाना हुए हैं। यह सुन इन्द्रनाथ के पिता भी शेरघाटी की तरफ घूम गए और शाम होते होते बीचही में उनसे जा मिले। दोनों का डेरा एक जंगल के किनारे पडा और वहाँ हजार बारह सौ आदमियों की भीड भाड हो गई।

पहर रात गई होगी जब उन दोनों को खबर लगी कि कई आदमी जो पौशाक और रंग ढंग से डाकू मालूम पड़ते हैं इधर उधर घूमते दिखाई पडे है।

राजा लोगों ने इस बात पर विशेष ध्यान न दिया और अपने आदमियों को होशियार रहने की आज्ञा देकर चुप हो रहे।

दो पहर रात से ज्यादे जा चुकी थी जब डाकुओं के एक भारी गिरोह ने उस डेरे पर छापा मारा जिसमें दोनों राजा दो खूबसूरत पलंगडियों पर सो रहे थे और चारो तरफ कई आदमी पहरा दे रहे थे। फौजी सिपाही भी वहां जा पहुंचे मगर जान से हाथ धो कर लड़ने वाले डाकुओं की उमंग को रोक न सके। दोनो महाराज भी तलवार लेकर मुस्तैद हो गये और चार पांच डाकुओं को मार कर खुद भी उसी लडाई में मारे गये। इस लड़ाइ में बहुत से डाकू मार गए जिनमे चार

पॉच डाकू ऐस भी मिले जिनकी जान तो नहीं निकली थी मगर जीने लायक भी न थे इन्हीं की जुवानी मालूम हुआ कि उस गिरोह का सर्दार अनगढसिह नामी उस डाकू का वडा भाई था जिस चौदह वर्ष की अवस्था मे प्राणदण्ड दिया गया था।

यह खवर जव इन्द्रनाथ और कुवरसिह को लगी तो उन्हें वडा ही रज हुआ यहा तक कि राज्य करन की अभिलाषा दोनों क दिल से जाती रही। दोनों ने साचा कि जव प्रारब्ध का लिखा हुआ मिट ही नहीं सकता और जो कुछ हाना है सो हागा तो व्यर्थ की किचकिच में फॅरो रहने स क्या मतलव ? दो वर्ष तक तो इन्द्रनाथ किसी तरह से अपने पिता की गद्दी पर बैठे रहे इसके वाद अपने दीवान को राज्य सौप कर फकीर हो गए, उस समय रनवीरसिह की उम्र पॉच वर्ष की थी और कुसुमकुमारी की अढाई वर्ष की।

राजा इन्द्रनाथ अपनी स्त्री और लडके को लेकर काशी चले गए और उसी जगह श्रीविश्वनाथजी की आराधना में दिन विताने लगे। राजा इन्द्रनाथ के राज्य छोडन का केवल एक वही सवव न था वल्कि उन्हें कई आपुस वालों ने कई दफे जहर देकर मार डालने का उद्योग भी किया था मगर ईश्वर की कृपा स जान वच गई थी इसलिये उन्हें कुछ पहिले से भी राज्य से घृणा हो रही थी। राजा कुवेरसिह ने भी अपने मित्र का साथ दना चाहा मगर इन्द्रनाथ न कसम देकर उन्हें ऐसा करन से रोका और कहा कि कुछ दिन और ठहर जाओ उसके वाद जा चाहना सो करना आखिर राजा कुवेरसिह ने उनका कहा मान लिया मगर राज्य का काम वदिली क साथ करन लगे और महीन दो महीने पर अपने मित्र से अवश्य मिलते रहे।

कुछ दिन वाद जव एक रोज दोनों मित्र इकट्ठे हुए अर्थात् जव कुवेरसिह काशी में जाकर इन्द्रनाथ से मिले ता वात ही वात में पुन ज्योतिपविद्या की चर्चा होने लगी, दोनों मित्रों की इच्छा हुई कि एक दफे पुन उद्याग करके अपने नसीव को देखना चाहिये और मालूम करना चाहिये कि अव आगे क्या हाने वाला है। आखिर एसा ही हुआ तीन दिन के उद्योग में दोनों ने कई वर्ष का फल तैयार कर लिया जिससे मालूम हुआ कि इन्द्रनाथ और कुवेरसिह दानों साधु हो जायॅग रनवीरसिह और कुसुमकुमारी दोनों के लिए राज-सुख वदा नहीं है, कुसुम को कोई राजा जवर्दस्ती व्याह ले जायगा। इसके अतिरिक्त और भी कई वातें मालूम हुई। राजा इन्द्रनाथ ने कुवेरसिह से कहा कि भाई पहिली दफे ता हमलोग धोखे में रह गए परन्तु अवकी दफे देखना चाहिये कि उद्योग की सहायता से हम लाग अपने प्रारब्ध के साथ क्या कर सकते हैं हम तो अव फकीर हो ही चुके है मगर तुम कदापि फकीर न होना यद्यपि राजा वने रहने की इच्छा न भी रहे तो टेक निवाहने के लिये अपने देश के मालिक वने ही रहना। मालूम हुआ है कि कुसुम को कोई राजा जवर्दस्ती व्याह ले जायगा, सो तुम अभी ही कुसुम की शादी छिपे छिपे रनवीर के साथ यहाँ ही कर दो और दो तीन आदमियों को यह भेद वता दो जिनमें समय पर काम आवे और कोई गैर आदमी इस भेद को जानने न पावे। अपने घर में एक चित्रशाला वनावाओ जो इन भेदों को समय पडने पर खोल दे उस घर में हमेशा ताला बन्द रह और उसकी ताली किसी योग्य पुरुष के सुपुर्द रहे, इसके वाद तुम अन्तर्ध्यान हो जाओ और फिर सूरत बदल कर हमारी राजगद्दी पर वैठो और देखो कि प्रारब्ध और उद्योग में कैसी निपटती है हमारी राजगद्दी पर वैठे रहने से तुम कुसुम और रनवीर की हिफाजत भी कर सकोगे, इत्यादि।'

कुवेरसिह अपने मित्र की वात किसी तरह टाल नहीं सकते थे मगर एक खुटके ने उन्हें तरद्दुद में डाल दिया और सिर झुका कर सोचने लगे। जव कुछ देर हो गई तो इन्द्रनाथ ने पूछा आप क्या सोच रह है ?' इसके जवाव में कुवेरसिह ने कहा कि मै यह सोचता हू कि आपने जो कुछ कहा उसे मै जी जान से कर सकता हू परन्तु विचार इस वात का है कि जव मै लड़की की शादी रनवीर के साथ कर दूँगा तो आपके राज्य का मालिक मै कैसे बन सकूँगा ? आपकी आमदनी का एक पैसा भी मेरे काम आने से मे लोक परलोक दानों में से कहीं का न रहूगा, और जव अपना राज्य अपनी लडकी को दे दूँगा तो उसमें से भी एक पैसा लेन लायक न रहूगा, ऐसी अवस्था में आपकी आज्ञानुसार काम कर के अपना जीवन निर्वाह मै क्यां कर कर सकूँगा ? साथ ही इसके काई काम ऐसा भी न हाना चाहिये जिसमें आपकी राजगद्दी चलाने के समय में लोगों को मेरे असल हाल का पता लग जाय।'

कुवेरसिह की वात सुन कर राजा इन्द्रनाथ ने कहा कि– आपका सोचना वहुत ठीक है मगर उसके लिये एक तर्कीव हो सकती है अर्थात् कुसुम को राज्य दे देने और उसकी शादी करने के पहिले ही आप अपने राज्य का कोई मोजा या परगना राज्य से अलग करके किसी ऐसे आदमी के सुपुर्द कर दीजिये जिस पर आप पूरा विश्वास कर सकते हों और जिस आप इस भेद में भी शरीक करना पसन्द व करते हों वस वह आदमी आपके अलग किये हुए परगने की आमदनी। किसी ढग से आपको दिया करेगा और उसी से आप अपना काम चलाया करेंगे।

राजा कुवरसिह को यह वात वहुत पसन्द आई और वह गुप्तरीति से इसका वन्दोवस्त करने लगे। (दीवार की तरफ

इशारा करके) यह दखिये उसी जमाने की तस्वीर है, उन दिनों इन्द्रनाथ की स्त्री भी जो वडी पतिव्रता थी राजा साहव के साथ ही रहा करती थी और रनवीर के साथ खेलने के लिये व जसवन्त नामी एक लडके का भी साथ रखते थे। जसवन्त पर भी राजा साहव वडी कृपा रखते थ मगर उस कम्वख्त ने अन्त में ऐसी करनी की कि जो सुनेगा उसके नाम से घृणा करेगा अव ता वह मर ही गया उसका जिक्र करना फजूल है।

जव ऊपर कही हुई यात का दो वर्ष यीत गये और राजा कुवरसिह न गुप्त रीति से सव वातों का पूरा पूरा वन्दोवस्त कर लिया तव यात्रा करने के वहाने अपनी स्त्री और कुसुम को तथा और भी वहुत स आदमियों का साथ लेकर काशी जी गये। कुवेरसिह का जो कुछ इरादा था उसकी खवर सिवाय उनकी स्त्री दीवान साहव और सर्दार चेतसिह के और किसी को भी न थी वल्कि और लोगों को यह भी मालूम न था कि राजा इन्दनाथ अपनी स्त्री और लडक के सहित काशी पुरी में रहते है। मगर जिस रात उस मकान में जिसमें इन्द्रनाथ रहत थे गुप्त रीति से कुसुम का विवाह हुआ और विवाह करन के लिये काशी क एक पडित को वुलाया गया। उसी रात गोत्रोच्चारण के समय में उस पडित को मालूम हो गया कि वह साधु वास्तव में राजा इन्द्रनाथ है और उसी पडित की जुवानी जिसे इस विवाह में वहुत कुछ मिला भी था मगर जो पेट का हलका था धीरे धीरे कई आदमियों को इसकी खवर हो गई कि फला साधु या व्रह्मचारी वास्तव में राजा इन्द्रनाथ हैं। (दीवार की तस्वीर दिखा कर) देखिये यह कुसुम के विवाह के समय की तस्वीर है। एक बात कहना तो हम भूल ही गए, देखिये इसी तस्वीर में राजा इन्द्रनाथ के पीछे सिपाहियाना ठाठ से एक आदमी खडा है यह इन पडित जी का नौकर है जा विवाह करान आये थे। डरपोक पडित ने समझा कि कहीं ऐसा न हा कि विवाह कराने के वहाने ये लोग वेठिकान ले जाकर उन्हीं का कपडा लत्ता छीन लें जैसा कि काशी में प्राय हुआ करता है इसीलिये इस आदमी को अपने साथ लाये थे, राजा इन्दनाथ ने तो समझा था कि व्राह्मण का आदमी है सीधा सादा हागा मगर वह वडा ही शैतान और पाजी निकला और उसी न रुपये की लालच में पड कर अन्त में इन्द्रनाथ का पता डाकुओं को दे दिया। कुसुम की शादी के थोडे ही दिन बाद कुसुम की मॉ का दहान्त हुआ। उन दिनों कुवरसिंह वहुत उदास रहा करत थे और उसी उदासी क जमाने में ये तस्वीरें वनाई गई थीं। इन तस्वीरों के वनाने में सर्दार चेतसिह ने वडी कारीगरी खर्च की है। यद्यपि ये मुसौवर नहीं थे मगर हम सव क काम को अपने हाथ से पूरा करने के लिए राजा कुवेरसिह की आज्ञानुसार इन्होंन वडी कोशिश से मुसौवरी सीखी थी। देखिये चारों तरफ की तस्वीरें कुवेरसिह और इन्दनाथ की दोस्ती और इनके लडकपन के जमाने का हाल दिखा रही है। कुसुम की शादी के कई वर्ष बाद कुवेरसिंह ने कुसुम को गद्दी देकर दीवान साहब के सुपुर्द कर दिया और कुसुम कुमारी तथा और लोगों को यह कह कर कि मै बद्रिकाश्रम जाता हू, सन्यास लेकर उसी तरफ कहीं रहूँगा। घर से बाहर हो गए। जाती समय बहुत सी वातें कुसुम को समझा गए जो उस समय कुछ होशियार हो चुकी थी तथा यह भी कह गए कि मेरी नसीहत को आखिरी नसीहत समझियो क्योंकि अव मै कदाचित लौट कर घर भी न आऊगा और यदि मेरे देहान्त की किसी तरह की खवर लगे तो क्रिया कर्म किया न जाय क्योंकि मै यहॉ से जान के साथ ही सन्यासी हो जाऊगा।

कुवरसिह जिस समय यहॉ से जाने लगे घर और बाहर चारो तरफ हाहाकार मच गया और सभों का जी बड़ा ही दु खी और उदास हुआ परन्तु कोई उनके इरादे का रोक नहीं सकता था अस्तु वह कार्य भी हो गया और तीन चार आदमियों को छोड़ के फिर किसी को कुवेरसिह का पता न लगा।

कुवरसिह घर से निकल कर बदरिकाश्रम नहीं गए वल्कि सीधे अपने मित्र इन्द्रनाथ के पास काशी पहुचे और दोनों मित्र मिल जुल के रहने लगे। थोडे दिन बाद जगल की जडी बूटियों की सहायता से कुवेरसिह का रग रूप बदल दिया गया और इन्द्रनाथ ने अपने दीवान का जो उनका सब हाल जानता था और जिसे मरे आज कई वर्ष हो गए है वुलवाकर बहुत कुछ समझाया और कुबेरसिह को अपनी जगह राजा वनानें की आज्ञा देकर कुवेरसिह के सहित उसे बिदा किया। उस दिन स कुवेरसिह ने अपना नाम नारायणदत्त रक्खा और विहार के राजा कहलाने लगे। इसके थाडे ही दिन वाद इन्द्रनाथ को मालूम हो गया कि डाकुओं को हमारा पता लग गया और वे लोग हमारी जान लेने की फिक्र कर रहे है। इन्द्रनाथ को अपनी जान प्यारी न थी मगर अपनी स्त्री और रनवीरसिह का वडा ध्यान था इसलिये अपनी स्त्री और लड़के को अपने मित्र कुवेरसिह के सुपुर्द करना चाहा परन्तु उनकी स्त्री ने स्वीकार न किया। उसने कहा कि लडके को चाहे भेज दो मगर मैं आपका साथ न छोडूँगी इस सवव से रनवीर को कुवेरसिह के हवाले करने की कार्रवाई कुछ दिन के लिये रुकी रही। एक दिन रात के समय दो तीन डाकू सींध लगा कर उनके मकान में घुसे ईश्वर इच्छा से इन्द्रनाथ जाग रहे थे इसलिये जान वच गई मगर फिर भी उन डाकुओं के साथ लडना ही पडा उनकी स्त्री उसी दिन एक डाकू के हाथ से मारी गई मगर इन्द्रनाथ ने भी उन डाकुओं में से सिवाय एक क किसी को जीता न छाडा वह एक डाकू जो वच गया था इन्द्रनाथ की स्त्री के कपडे की गठरी लेकर भाग गया, उस समय रनवीरसिह और जसवन्त चारपाई पर सो रहे थे जिन्हें इस लड़ाई की कुछ भी खवर न थी। अव इन्द्रनाथ इस फेर में पडे कि सवेरा होने पर जब इस डाके की खवर

लोगों को होगी और राजकर्मचारी लोग इकट्ठे होकर तहकीकात करेंगे तो हमारा भेद खुल जायगा और अगर हम रनबीर को लेकर कहीं चल जायँ तो अपनी स्त्री की लाश का क्या करें जो बेचारी इस समय डाकुओं के हाथ से मारी गई है, (कुछ रुककर) अहा ईश्वर की भी विचित्र महिमा है। इन्द्रनाथ इस फेर में पड़े हुए सोच ही रहे थे कि मैं जा पहुंचा और सब हाल मालूम करने के बाद उनका साथ देने के लिये तैयार हो गया। अपनी स्त्री की लाश कम्बल में बाँध कर इन्द्रनाथ ने पीठ पर लादी और रनबीर को मैंने गोद में उठा लिया, जसवन्त की उंगली पकड़ ली और उसी समय वहाँ से निकल कर बाहर हुए। तरनतारनी भगवती जान्हवी के तट पर पहुंच कर और डोमडों को बहुत कुछ देकर रनबीर के मा की दाहक्रिया की गई और दो ही घण्टे में उस काम से भी छुट्टी पाकर हम लोग काशी के बाहर हो गए, फिर न मालूम पीछे क्या हुआ और लोगों ने क्या सोचा। रनबीर अपनी मा के मरने से बड़ा उदास और दुःखी हुआ, यद्यपि उस समय वह बालक ही था मगर घड़ी घड़ी अपने पिता से यही कहता था कि 'मेरी मा को जिसने मारा उसका पता बता दो मैं अपने हाथ से उसका सर काटूँगा'। आखिर लाचार होकर इन्द्रनाथ ने उसे समझा दिया कि तेरी माँ को किसी दूसरे ने नहीं मारा बल्कि वह अपने हाथ से अपना गला काट के मर गई।

इतना कहकर बाबाजी कुछ देर के लिए चुप हो गए क्योंकि यह हाल कहते कहते उनका जी उमड़ आया था और रनबीर तथा कुसुमकुमारी की आँखों से भी आंसू की धारा बह रही थी। थोड़ी देर बाद बाबाजी ने फिर कहना शुरू किया—

'काशी से बाहर होकर हमलोग तीन दिन तक बराबर चले ही गए और विन्ध्य की एक पहाड़ी पर जाकर विश्राम किया। इन्द्रनाथ ने एक खोह में डेरा डाला और मुझे कुबेरसिंह को बुलाने के लिये भेजा। जब कुबेरसिंह आये तो रनबीर तथा जसवन्त को समझा बुझाकर उनके हवाले किया और आप अकेले रहने लगे। उस दिन से फिर रनबीर को अपने बाप का कुछ हाल मालूम न हुआ।

इस जगह हम यह कहना पसन्द नहीं करते कि रनबीरसिंह किस तरह अपनी राजधानी में रहा करते थे क्योंकि कुसुम का छोड़ के और सभों को उसका हाल मालूम है तथापि रनबीर को पुनः जताने के लिये इतना अवश्य कहेंगे कि राजा नारायणदत्त (कुबेरसिंह) रनबीर को बराबर कहा करते थे कि जसवन्त अच्छे खानदान का शुद्ध लड़का नहीं है अतएव तुम इस पर भरोसा न रक्खा करो और इसका साथ छोड़ दो।

थोड़े दिन तक उस पहाड़ी में ईश्वराधन करने के बाद इन्द्रनाथ वहाँ से उठ कर अपने गुरु के पास गए और साल भर तक उनके पास रहने बाद फिर अलग हुए क्योंकि उस जगह (जहाँ गुरुजी रहा करते थे) डाकुओं की आमदरफ्त शुरू हो गई थी और डाकुओं को उनका पता लग जाने का भय था अस्तु इन्द्रनाथ वहाँ से रवाना होकर मथुरापुरी की तरफ चले गए, फिर मुद्दत तक किसी को मालूम न हुआ कि राजा इन्द्रनाथ कहाँ गए क्या हुए और उन पर क्या मुसीबत आई तथापि राजा कुबेरसिंह और गुरुमहाराज उनकी खोज में लगे रहे। इधर लगभग तीन वर्ष के हुआ होगा कि राजा कुबेरसिंह के एक जासूस ने आकर यह खबर दी कि राजा इन्द्रनाथ को बालेसिंह ने गिरफ्तार कर के डाकुओं के हवाले कर दिया। इतना सुनते ही कुबेरसिंह गुरु महाराज के पास गए और सब हाल उनसे कहा और इसके बाद उसका पता लगा कर कैद से छुड़ाने की फिक्र होने लगी।

यह बात कई आदमियों को मालूम थी कि—'बालेसिंह डाकुओं के किसी गिरोह का गुप्त रीति से साथी है और डाकुओं की बदौलत वह अपने को बड़ा ताकतवर समझता है और वास्तव में बात भी ऐसी ही थी। डाकुओं की बदौलत बालेसिंह बात की बात में अपने फौजी ताकत को तो बढ़ा ही लेता था मगर वह खुद भी बड़ा ही काइयाँ और शैतान था। स्वयं राजा कुबेरसिंह ने उससे रंज होकर कई दफे उस पर चढ़ाई की थी मगर वह काबू में न आया, ईश्वर रनबीरसिंह पर सदैव प्रसन्न रहे जिसने अपनी बहादुरी से बालेसिंह को बेकाम कर दिया।

जिन दिनों गुरु महाराज को यह मालूम हुआ कि इन्द्रनाथ को बालेसिंह ने डाकुओं के हाथ में फंसा दिया उन दिनों गुरु महाराज की सेवा में एक नौजवान बहादुर आया करता था जो बड़ा ही नेक और रहमदिल था। उसका बाप जो बालेसिंह का नौकर था मर चुका था केवल उसकी एक माँ थी जो बालेसिंह के यहाँ रहा करती थी वह नौजवान लड़का भी जिसका नाम रामसिंह था अपनी माँ के साथ बालेसिंह के ही यहाँ रहा करता था परन्तु यद्यपि वह बालेसिंह के यहाँ रहता था और उसका नमक खाता था मगर बालेसिंह की चाल चलन उसे पसन्द न थी और इसलिये वह गुरु महाराज से कहा करता था कि कोई ऐसी तर्कीब बताइये जिससे मैं अमीर हो जाऊँ और बालेसिंह की मुझे कुछ परवाह न रहे जिसके जवाब में गुरु महाराज यही कहा करते थे कि 'उद्योग करो जो चाहते हो सो हो जायगा, उद्योगी मनुष्य के आगे कोई बात दुर्लभ नहीं है'। जब गुरु महाराज को इन्द्रनाथ का हाल मालूम हुआ तो उन्होंने इन्द्रनाथ का ठीक-ठीक पता लगाने का काम उसी नौजवान रामसिंह के सुपुर्द किया और कहा कि उद्योग करने का यही मौका है यदि तेरे उद्योग से

इन्द्रनाथ का ठीक ठीक पता लग गया और इन्द्रनाथ डाकुओं के फन्दे से निकल गए तो तुझे अमीर कर देने का जिम्मा हम लेते हैं। रामसिंह ने बड़े उत्साह से गुरु महाराज की आज्ञा स्वीकार कर ली क्योंकि वह जानता था कि कई राजा लोग गुरु महाराज के चेले हैं अगर ये चाहेंगे और मुझसे प्रसन्न होंगे तो निःसन्देह मुझे अमीर कर देंगे।

गुरु महाराज को इस बात का पूर्ण विश्वास था कि बालसिंह को या किसी डाकू को यह नहीं मालूम है कि इन्द्रनाथ और कुंवरसिंह हमारे चेले हैं या उनसे और हमसे कुछ सम्बन्ध है इसीलिये बेफिक्री के साथ रामसिंह को मदद दे सकते थे और रामसिंह को अपना भेद खुल जाने का भय न था।

फिर तो रामसिंह को यह धुन हो गई कि किसी तरह डाकुओं का सर्दार मुझसे प्रसन्न हो जाय और बालेसिंह से मांग ले तो मेरा काम बन जाय अस्तु उसने वर्षों की कोशिश में बालसिंह को अपने ऊपर प्रसन्न कर लिया और ऐसे ऐसे बहादुरी के काम कर दिखाये कि बालसिंह उसे जी जान से मानने लग गया। जब जब डाकुओं का सर्दार मिलने के लिये बालेसिंह के पास जाता तब तब वह उस नौजवान की तारीफ उससे करता। एक दिन डाकू सदार ने रामसिंह से कहा कि "मैं बालसिंह की जुबानी तेरी बड़ी तारीफ सुना करता हूं परन्तु मैं अपनी आँखों से तेरी बहादुरी देखा चाहता हूं। कल हमलोग एक मुहिम पर जाने वाले हैं, तू हमारे साथ चल और अपनी बहादुरी का नमूना मुझे दिखला।

रामसिंह ने मन में प्रसन्न होकर कहा कि "मैं आपके साथ चलने के लिये जी जान से तैयार हूं परन्तु मालिक की आज्ञा होनी चाहिये।

मुख्तसर यह है कि डाकू सर्दार ने रामसिंह को आठ दस दिन के लिये मांग लिया और अपने साथ एक मुहिम पर ले गया। डाकू सर्दार को खुश करने का यह बहुत अच्छा मौका रामसिंह के हाथ लगा और उसने मुहिम पर जाकर ऐसी बहादुरी दिखलाई कि डाकू सर्दार मोहित हो गया और मुहिम पर से लौटने बाद बड़ी जिद्द करके उसने बालसिंह से रामसिंह को माँग लिया। जब रामसिंह डाकू सर्दार के साथ जाने लगा तब उसने कह सुन कर अपनी माँ को भी साथ ले लिया जो उसके दिल का हाल अच्छी तरह जानती थी।

गिरनार पहाड़ के पास ही कहीं पर 'सत्तगुरु देवदत्त' का कोई स्थान है। हम यह नहीं जानते कि ये 'सत्तगुरु देवदत्त' कौन थे और उनकी गद्दी का क्या हाल है मगर इतना रामसिंह की जुबानी मालूम हो गया था कि आज कल के डाकू लोग 'सत्तगुरु देवदत्त' की गद्दी के चेले हैं और उनके नाम की बड़ी इज्जत करते हैं।

डाकू सर्दार के पास जाने के बाद भी महीने में दो तीन दफे रामसिंह गुरु महाराज के पास आया करता था। इसी महीने में जब डाकू सर्दार ने खुश होकर रामसिंह को अपने सिपाहियों का सर्दार बना दिया तब उसे मालूम हुआ कि इन्द्रनाथ इसी डाकू सर्दार के कब्जे में पड़े हुए हैं इसके पहिले उसे इस बात का केवल शक था पर विश्वास न था।

जिस दिन इस किले के सामने मैदान में बालेसिंह से और रनबीरसिंह से लड़ाई हुई थी उसी दिन रामसिंह ने गुरु महाराज के पास आ कर यह खुशखबरी सुनाई थी कि इन्द्रनाथ का पता लग गया वह उसी डाकू सर्दार के कब्जे में हैं जिसके यहाँ मैं रहता हूं, आप जो कुछ उचित समझें करें और मुझे जो कुछ आज्ञा हो करने के लिये मैं तैयार हूं।

यह खुशखबरी सुन कर गुरु महाराज बहुत प्रसन्न हुए, रामसिंह को तो कई बातें समझा बुझाकर बिदा किया और मुझे यह आज्ञा दी कि रनबीरसिंह को इस ढब से मेरे पास ले आओ जिसमें किसी को कानों कान खबर न हो। हम सर्दार चेतसिंह के नाम पत्र लिख देते हैं वह इस काम में तुम्हारी सहायता करेगा बल्कि एक पत्र और लिये जाओ वह भी सर्दार चेतसिंह को देना और कह देना कि अपने किसी विश्वासपात्र के हाथ राजा नारायणदत्त के पास भेजवा दें।

गुरु महाराज की आज्ञा पाकर मैं यहाँ आया और सर्दार चेतसिंह से मिल कर तथा सब हाल कह कर गुरु महाराज की चीठी दी। सर्दार चेतसिंह ने उसी समय अपने भतीजे को राजा नारायणदत्त के पास रवाना किया और रनबीरसिंह को यहाँ से ले जाने में मुझे सहायता दी। (उस गड़हे की तरफ इशारा करके जिस राह से ये लोग इस कमरे में आये थे) इसी राह से मैं इस कमरे में आया था, उस समय रनबीरसिंह और बीरसेन दोनों आदमी इस कमरे में सोये हुए थे और दोनों के सिर्हाने पानी का भरा हुआ एक चाँदी का बर्तन रक्खा हुआ था मैंने दोनों के सिर्हाने जाकर पानी के बर्तनों में एक प्रकार की दवा डाल दी जो जख्मों को फायदा पहुंचाने के साथ ही साथ गहरी नींद में बेहोश कर देने की शक्ति रखती थी और उलटे पैर यहाँ से लौट गया तथा यह रास्ता बन्द करता गया। दो घण्टे के बाद जब मैं फिर इस कमरे में आया तो पानी का बर्तन देखने से मालूम हो गया कि दोनों ने इसमें से थोड़ा थोड़ा जल पीया है बस मैं बेफिक्री के साथ सर्दार चेतसिंह की सहायता से रनबीरसिंह को यहाँ से उठा ले गया और जब अपने स्थान के पास पहुंचा तो एक पेड़ के नीचे इन्हें रख तथा इनके जख्मों पर अनूठी बूटी का रस लगाकर अलग हो गया।

पाठक महाशय, अब तो आपको मालूम ही हो गया होगा कि यह साधु बाबा वही हैं जिनका हाल हम ऊपर पर्दोत्सवे बयान में लिख आए हैं और यह साधु महाशय अपने साथ रनबीर को लेकर जिस बाबाजी के पास गए थे या जिसने

रनबीर की सूरत बदलकर डाकुओं की तरफ रवाना किया था वह गुरु महाराज ही थे जिनका हाल छब्बीसवें बयान में लिखा जा चुका है।

ऊपर लिखा हुआ हाल कहकर साधु बाबा दम लेने के लिये कुछ रुक गए और फिर इस तरह कहने लगे —

' जब रनबीरसिंह की आँख खुली तो मेरा लिखा हुआ एक पुर्जा पढ़ कर जिसे मैंने उसके पास वाले एक पेड़ के साथ चपका दिया था पश्चिम की तरफ चल निकले और थोड़ी ही देर बाद इनकी मुझसे मुलाकात हुई। मैंने गुरु महाराज की आज्ञा से इन्द्रनाथ का कुछ हाल कागज पर पहिले ही से लिख के इसलिये रख छोड़ा था कि इन्द्रनाथ का पता न लगेगा तो यह कागज कुसुमकुमारी के पास भेज देंगे। वही कागज मैंने रनबीर के आगे रख दिया जिसके पढ़ने से इन्हें सब हाल मालूम हो गया। इसके बाद मैं रनबीर को गुरु महाराज के पास ले गया और सब हाल कहा। गुरु महाराज ने इन्हें डाकुओं का सब भेद बताया जहाँ वे रहते थे वहा का पता दिया और यह भी कहा कि ये डाकू लोग सत्तगुरु देवदत्त की गद्दी तथा उनके चेलों और नाम को हद से ज्यादे मानते है, तुम सत्तगुरु देवदत्त के नकली चेले बन के वहाँ जाओ और अपने पिता का छुडाने का उद्योग करो। वहाँ डाकुओं के मकान में माई अन्नपूर्णा का एक स्थान है जिसकी पूजा एक औरत करती है, वह और उसका लडका राम सिंह तुम्हारी मदद करेगा, हम बुढिया के नाम की एक चीठी लिख देते हैं, इस बात की खबर राजा नारायणदत्त के पास भेज दी गई है तीन चार दिन के अन्दर तुम्हारे पास मदद भी पहुच जायगी मगर तुम अपना काम बडी होशियारी से करना जिसमें डाकू सर्दार को तुम पर शक न होने पावे नहीं तो सब काम चौपट हो जायगा, इस भरोसे पर मत रहना कि डाकू सर्दार की जिन्दगी में उसके मकान की हद के अन्दर फौजी मदद (जो तुम्हारे पास भेजी जायगी) कुछ काम कर सकेगी। तुम्हे मदद पहुचने के पहिले ही डाकू सर्दार पर अपना कब्जा कर लेना चाहिए। इत्यादि बातें समझा बुझा कर एक बूटी का रस लगा कर इनका रंग काला कर दिया और उस तरफ रवाना किया।

इतना कह कर साधु महाशय दम लेने के लिये फिर रुके और उस समय बीरसेन ने पूछा ' जब डाकू लोग सत्तगुरु देवदत्त को मानते हैं तो माई अन्नपूर्णा की पूजा क्यों करते है ?'

साधु–माई अन्नपूर्णा का वह स्थान जिसका मैंने जिक्र किया है डाकुओं का बनाया हुआ न था बल्कि रामसिंह की माँ ने बनवाया था क्योंकि वह माई अन्नपूर्णा की उपासना और भक्ति बहुत दिनों से करती है।

बीरसेन–ठीक है, अच्छा तब क्या हुआ ?

साधु–इसके आगे का हाल यदि रनबीरसिंह बयान करें तो अच्छा होगा।

कुबेरसिंह–मैं भी यही अच्छा समझता हूं और रनबीर की जबानी सविस्तार हाल सुनने की इच्छा रखता हूं।

रनबीर–जैसी आज्ञा।

रनबीरसिंह ने डाकुओं के घर जाकर कारवाई करने का हाल जैसा कि हम ऊपर लिख आये है बयान किया इसके बाद अपना बाकी का हाल जिसे हम छोड आये है यों कहना शुरू किया —

'जैसाकि अभी कह चुका हूं उस ढंग से जब मैं रामसिंह उसकी मां और अपने पिता को साथ लेकर पैदल ही वहाँ से रवाना हुआ तो मैंने रामसिंह से पूछा कि वे पाँचों औरतें कौन थीं जिन्हें तुम मेरे देखते देखते इस मकान में ले आये थे ? इसके जवाब में रामसिंह ने कहा वे पाँचों औरतें राजा कुबेरसिंह के रिश्तेदार मन्मथसिंह के घर की हैं जो डाकू सर्दार की आज्ञानुसार इसलिये गिरफ्तार की गई हैं कि उनके बदले में बहुत सा रुपया लेकर तब छोडी जायें क्योंकि डाकू सर्दार को आज कल रुपये की बहुत जरूरत थी, और इसीलिये उसी दिन डाकू सर्दार ने कुसुमकुमारी को भी गिरफ्तार करने की आज्ञा दी थी।'

इतना सुनते ही राजा कुबेरसिंह चौंक पडे और बोले, 'हैं! मन्मथसिंह के घर की औरतें !

रनबीर–जी हाँ।

कुबेर–अब वे औरतें कहाँ है ?

रनबीर–(उस गडहे की तरफ इशारा कर के) नीचे बैठी हुई हैं, यदि इच्छा हो तो बुला ली जायें।

कुबेर–(गुरु महाराज की तरफ देख के) यदि आज्ञा हो तो वे ऊपर बुला ली जायें ?

गुरू–जल्दी न करो, वे आराम से नीचे बैठी हुई है, जहाँ तक हम समझते है सिवाय इन लोगों के जो यहाँ मौजूद है और किसी को भी तुमलोगों का हाल मालूम न होना चाहिए।

कुबेर–सो तो ठीक है।

इन्द्रनाथ–बेशक हमलोगों का हाल किसी को मालूम न होना चाहिये।

मन्मथसिंह के घर की औरतों का नाम सुनकर कुसुमकुमारी के दिल की अजब हालत हुई अगर बडे लोग वहाँ

उपस्थित न होते या रनवीरसिंह के बदले में कोई दूसरा आदमी इस किस्से को सुनाता होता तो कुसुमकुमारी अपने दिल को न रोक सकती कुछ न कुछ जरूर पूछती और उन लोगों का देखने की इच्छा प्रकट करती मगर इस समय लज्जा ने उसे रोका और वह ज्यों की त्यों चुपचाप बैठी रही।

कुवेर–(गुरू जी से) क्या उन औरतों को इन्द्रनाथ का हाल मालूम नहीं है।

गुरु–अगर मालूम भी है तो केवल इतना ही कि यह कैदी वास्तव में राजा इन्द्रनाथ हैं जिन्हें छुडाने के लिय रनवीरसिह आये थे।

कुवेर–(रनवीर से) अच्छा तव क्या हुआ और उन औरतों का तुमने किस तरह छुडाया ?

रनवीर–(कुवर से) जैसे ही हमलोग डाकुओं की सरहद के बाहर हुए वैसे ही आपके पॉचसौ फौजी सिपाही जिन्हें गुरु महाराज की आज्ञानुसार आपने भेजा था मिले, उस समय मैन रामसिह से पूछा कि अब क्या करना चाहिये ? यदि कहा तो इस छोटी सी फौज को लेकर मैं पीछे की तरफ लौटू और जितने डाकू वहॉ हैं सभों को मार कर बाकी कैदियों को भी छुड़ाऊँ, रामसिह ने जवाव दिया कि 'वेशक ऐसा ही करना चाहिये, डाकू सर्दार मारा ही गया और जो सभों का अफसर था आपके साथ हू अस्तु अव वे लोग कुछ भी नहीं कर सकत आपकी राय अगर ढीली भी हो ता मे जोर देकर कहता हू कि लौटिये और उन कम्बख्तों को मारिये जिसमें भविष्य के लिये मुझे किसी तरह का डर न रहे। आखिर ऐसा ही हुआ, बस हम लोग उस छोटी सी फौज को साथ लकर लौट पडे और डाकुओं के उस मकान को घेर लिया जिसमें पिताजी कैद थे। रामसिह की वहादुरी की मै जहॉ तक तारीफ करूँ उचित है, उसन कोठरियों और तहखानों में घुस घुस कर के डाकुओं को खोज निकाला और मारा। मेरी इच्छा तो बालेसिह को वहॉ से ले आने की थी मगर उस मार काट में रामसिह की तलवार ने उसका सर भी अलग कर दिया और उसके साथियों में से भी किसी को न छोडा जो उसकी खबर उसके घर पहुचाता।

दीवान–अच्छा हुआ जो वह कम्बख्त मारा गया। उसने हमलोगों को बडा ही तग किया था, परसाल उसने कुसुम से अपनी शादी के लिये कितना जोर मारा और दिक किया कि मै कह नहीं सकता। जब उसे रनबीरसिह का हाल मालूम हुआ तो उसने अपन इलाके मे रनवीरसिह को फॅसाने के लिय पहाड पर कुसुम तथा रनवीर की मूरतें वनाई क्योंकि उसे यह खबर लग चुकी थी आज कल शिकार खेलते हुए रनवीरसिह वहॉ तक आया करते हैं। यद्यपि हम लोगों को उसकी खबर हो गई थी मगर सिवाय निगरानी के हम लोग और कुछ भी नहीं कर सकते थे, अगर साल भर पहिले ही हम रनबीरसिह और जसवन्तसिह के हाल से कुसुम को होशियार न कर दिये होते और दोनों की तस्वीरें कुसुम को न दिखा दिये होते तो बडा ही गडबड मचता। अच्छा हुआ जो उस कम्बख्त को रामसिह ने जहन्नुम में पहुचाया।

इन्द्रनाथ–कुसुम को अपनी शादी का पूरा पूरा हाल कब मालूम हुआ ?

दीवान–दो साल से ऊपर हुआ,जब कुसुमकुमारी एक दिन ताला तोडकर इस कमरे में चली आई थी क्योंकि वह बराबर सभों से इस कमरे का हाल पूछती थी मगर कोई कुछ वताता न था आखिर एक दिन क्रोध में आकर उसने ताला तोड ही डाला, और जव इन तस्वीरों का देखा तो मुझ बुलवा भेजा और इन तस्वीरों का हाल पूछा लाचार होकर मुझे कुछ थाडा सा हाल कहना ही पडा। मैंने केवल उसकी शादी के विषय में थोडा सा हाल कहा और रनवीर तथा जसवन्त की तस्वीर का परिचय देकर बताया कि वह रनवीरसिह राजा नारायणदत्त का लडका है। वस इससे ज्यादे कुछ हाल कुसुमकुमारी को मालूम न हुआ।

कुवेर–मुझे याद है आपने एक दिन मुझसे मिलकर यह बात कही भी थी। (रनवीर से) अच्छा तब क्या हुआ ?

रनबीर–डाकुओं के मारने बाद उनका माल असबाब सब लूट लिया और उन लोगों को भी जो उनके यहॉ कैद थे छुडा गुरु महाराज के स्थान पर आये। गुरु महाराज की आज्ञानुसार कई फौजी आदमियों को साथ करके और खर्च इत्यादि दकर सब कैदियों को उनके घर भेजवा दिया। इसके बाद गुरुमहाराज ने (कुबेरसिह की तरफ दखकर)लालसिह को जो उन फौजी सिपाहियों का अफसर था और जिसे आपने गुरु महाराज की आज्ञानुसार काम करने की आज्ञा दी थी बाकी फौजी आदमियों के सहित आपके पास लौट जाने की आज्ञा दी और उसी के हाथ एक पत्र भी आपका भेजा जिसस आपको हम लोगों का सब हाल मालूम हुआ होगा।

इतना कहकर रनवीरसिह चुप हो गये। कुसुमकुमारी उठकर पुन अपने पिता के पैरों पर गिर पडी और बोली 'पिता! अब तो तुम मुझसे जुदा न होओगे ? और रोने लगी।

कुसुमकुमारी के रोनेने सभी का कलेजा पानी कर दिया कुबेरसिह इन्द्रनाथ और गुरु महाराज ने समझा बुझा कर उसे शान्त किया। इसके बाद कुसुम और [illegible] ने उस रास्ते को बडे गौर से देखा जिधर से इन्द्रनाथ वगैरह इस कमरे

में आय थे। मालूम हुआ कि वह छत का छाटा सा टुकड़ा जजीरों के सहारे टगा हुआ रहता है और नीचे कमरे में जजीरों को खैंचने और ढीला करने के लिये चर्खियॉ लगी हुई हैं। इसी कमरे के आगे सर्दार चेतसिह के रहने का कमरा था।

तैंतीसवां बयान

इस विचित्र ढग से अपने पिता स मिलन का जैसा आनन्द रनबीरसिह और कुसुमकुमारी को हुआ इसका लिखना कठिन है। आश्चर्य नहीं कि हमारे पाठकों का भी दोनों राजर्षि राजाओं के उद्योग और प्रारब्ध का हाल पढ कर कुछ आनन्द मिला हो। अब इस किस्से की समाप्ति में थाडा सा हाल लिखना और बाकी रह गया। वह यह है कि घण्टे भर बाद मन्मथसिह के घर की औरतें ऊपर बुलाई गई और कुसुमकुमारी बडे प्रेम से उनसे मिली मगर इन औरतों को रनबीरसिह के अतिरिक्त दोना राजाओं और गुरु महाराज का परिचय नहीं दिया गया और वे सब इसी समय अच्छी तरह से अपने घर पहुचा देने के लिये सदार चेतसिह के हवाले की गईं उन्हें केवल इतना ही मालूम हुआ कि राजा रनबीरसिह ने हम लोगों को छुडाया। रनबीरसिह ने बहुत उद्योग किया कि उनके पिता इन्द्रनाथ अब उनके पास ही रहें मगर उन्होंने न माना और गुरू महाराज ने भी कहा कि अब ये राज्य करने और तुम्हारे पास रहने लायक न रहे क्योंकि ये सन्यास ले चुके है शहर में रहने से कोई न कोई काम इनसे ऐसा हो ही जायगा जिससे यह पातकी होग आर धेर्म म बाधा पडेगी मगर तुम्हें इन सब बातों का ख्याल न कर के अपना राज्य करना ही होगा और इन्द्रनाथ को हम इसी समय यहॉ से ले जायेंगे।

लाचार रोते ओर सिसकते हुए रनबीर को उनकी आज्ञा माननी ही पडी और उसी समय अपने चेले बाबाजी और इन्द्रनाथ को लेकर गुरु महाराज जिस राह से आये थे उसी राह से रवाना हो गए।

दूसरे दिन राजा नारायणदत्त चोर दर्वाजे के पहरेदार चञ्चलसिह को प्राणदण्ड की आज्ञा देन के बाद रनबीरसिह की इच्छानुसार तेजगढ की राजधानी रामसिह के सुपुर्द कर के कुसुमकुमारी रनबीरसिह दीवान साहब बीरसेन सर्दार चेतसिह ओर उनक लडके बाला को साथ लेकर बिहार चले गये। इसके महीन भर के बाद वे रनबीरसिह को राजतिलक देकर अपने मित्र इन्द्रनाथ क अनुगामी और पक्षपाती होकर जगल की तरफ पधार गए और फिर उन दोनों मित्रों का हाल किसी को मालूम न हुआ और कुसुमकुमारी तथा रनबीरसिह को यह दु ख सहना ही पडा। साल भर के बाद दीवान साहब को मालूम हुआ कि बालेसिह क लश्कर से भागी हुई कालिन्दी का उन्हीं के दा नौकरों ने नदी पार उतारने के बहाने से डोगी पर चढा कर गिरफ्तार कर लिया था और जब उसे घसीट कर दीवान साहब क पास लाने लग तो कालिन्दी ने आत्महत्या कर ली थी। मगर इस खबर से दीवान साहब को किसी तरह का रज न हुआ और वह बहुत दिनों तक जीते रह कर कुसुमकुमारी और रनबीरसिह के सुख भोगन का आनन्द लेते रहे।

समाप्त

॥ श्री ॥

नरेन्द्र-मोहिनी

पहला भाग

पहिला बयान

'इस वक्त यह जगल कैसा भयानक मालूम पड रहा है ! इस चादनी ने तो और भी रग जमाया है। पेडों में से छन कर जमीन पर पडती हुई दूर तक दिखाई देती है। बीच बीच में कटे हुए पेडों की थुन्निया निगाहों के सामने पड कर मेर दिल के साथ क्या काम करती है इसे मैं ही जानता हूँ !"

धीर धीरे यह कहता हुआ बीस बाईस वर्ष के सिन का एक युवा बड भारी और डरा ने जगल में इधर से उधर घूम रहा है। गोरा रग, हर एक अग साफ और सुडौल चहरे से जवामर्दी और बहादुरी बरस रही है मगर साथ ही इसके फिक्र और उदामी भी इसके खूबसूरत चेहरे से मालूम पड रही है।

घूमते घूमते इस नौजवान बहादुर के कान में एक रोने की दर्दनाक आवाज आई जिसे सुनत ही वह चौक उठा और इधर उधर ध्यान लगा कर देखने लगा मगर दूसरी बार वह आवाज सुनाई न पड़ी।

यह दर्दनाक आवाज एसी न थी जिसे सुन कर कोइ भी अपने दिल को सम्हाल सकता। हमारा यह बहादुर नौजवान तो एकदम ही परेशान हो गया क्योंकि वह जितना दिलेर और ताकतवर था उतना ही नेक और रहमदिल भी था, आवाज कान में पडत ही मालूम हो गया था कि यह किसी कमसिन औरत की आवाज है जिस पर जरूर कोई जुल्म हो रहा है। आखिर इससे रहा न गया और यह आवाज की सीध पर पश्चिम की तरफ चल निकला।

थोडी ही दूर जान पर फिर वैसी ही दर्दनाक आवाज इस बहादुर के बाईं तरफ स आई जिस सुन कर यह बाईं तरफ को मुडा और थोडी ही देर में उस जगह आ पहुचा जहाँ से पत्थर जैसे कलेज को भी गला कर बहा देने वाली यह आवाज आ रही थी।

वहाँ पहुँचने पर इसकी तबीयत और घबराई खौफ ताज्जुब और गुस्से से अजब हालत हो गई और कलेजा धक धक करन लगा क्योंकि उस जगह पर ऐसा ही दृश्य नजर आया।

जिस जगह यह जवान पहुँच कर खडा हुआ उसक सामन ही एक बडा सा पीपल का पेड था। आधी रात के इस सन्नाटे में हवा लगने से उस पेड की पत्तियाँ खडखड़ा रही थीं। उसी पेड की एक मोटी डाल के साथ एक लाश लटक रही थी जिसके पैर में रस्सी बधी हुई थी और सिर नीचे की तरफ था। इसी लाश को देख कर हमारे नौजवान बहादुर की वह दशा हुई थी जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं।

उस लाश का दख कर नौजवान न म्यान से तलवार खैंच ली जो उसके कमर में बधी हुई थी और आगे बढा। पास जाने पर यह मालूम हुआ कि यह लाश एक औरत की है। साडी उसकी जमीन पर लटक रही थी और कई जगह से बदन नगा हो रहा था दोनों हाथ भी नीचे की तरफ लटक रहे थे।

वह बहुत गौर स उस लाश को देखन लगा। इतने ही में हवा का एक तेज झटका आया जिसके सबब से पेड की तमाम छोटी छोटी डालियाँ हिल हिल कर झोंका खाने लगीं। वह डाली भी जो चन्द्रमा की रोशनी को उस लाश तक पहुचने नहीं देती थी जोर से एक तरफ को हट गई और चन्द्रमा की रोशनी बहुत थोडी देर के लिए उस लाश के ऊपर पडी। साथ ही नौजवान के बिलकुल रोंगटे खडे हो गए क्योंकि उस औरत का चेहरा जो पेड के साथ बेहोश उल्टी लटक रही थी उस चाद से किसी भी तरह कम न था जिसकी राशनी ने क्षण भर के लिए उसके बदन पर पड कर उसकी हालत नौजवान को दिखला दी थी।

नौजवान को चाद की इस रोश्नी में एक बात और भी ताज्जुब की दिखलाइ पडी। वह उल्टी लटकी हुई औरत बिल्कुल जडाऊ जेवरों से लदी हुई थी और इस बात को देख कर नौजवान के खयाल कई तरफ दौडने लगे।

जल्दी से उस लाश के पास जाकर देखने लगा कि इसमें कुछ दम है या नहीं। नाक पर हाथ रक्खा सास चल रही थी जिससे मालूम हुआ कि यह नाजुक औरत अभी तक जी रही है अब इसकी तबीयत कुछ खुश हुई और इसने इस बात पर कमर बॉधी कि जिस तरह भी हो सकेगा इसे उतार कर इसकी जान बचाऊँगा और उस शैतान के बच्चे को पूरी सजा दूँगा जिसने इसके साथ ऐसी बुराई की है।

यह सोच कर वह बहादुर नौजवान पेड पर चढ गया और बहुत होशियारी के साथ उस रस्से को खोला जिससे वह औरत लटक रही थी। उसे धीरे धीरे जमीन पर छोडा और तब आप भी नीचे उतर आया और उसके पैर से रस्सी खोल उसे सीधा कर पेड के साथ खडा कर दिया मगर हाथ से थामे रहा जिसमें उसके बदन का तमाम खून जो बहुत देर तक उल्टे रहने के सबब से सिर की तरफ उतर आया था लौट कर तमाम बदन में फैल जाय।

कुछ देर बाद उस औरत ने ऑख खोली और बैठना चाहा। बहादुर नौजवान ने धीरे से पेड के सहारे उसे बैठा दिया और पूछा 'अब मिजाज कैसा है?' जिसके जवाब में वह कुछ न बोली हॉ ऑख उठा कर चन्द्रमा की तरफ देखा फिर सिर नीचे करके बहुत धीरे धीरे बोलने लगी –

औरत – आपने मेरी जान बचाई ! इसका बदला मै किसी तरह पर नहीं दे सकती ! अगर जन्म भर मै आपके जूठे बर्तन मॉजूँ तो भी पूरा नहीं हो सकता।

नौजवान – इसके कहने की कोई जरूरत नही मैंने तुम्हारे साथ कोई नेकी नहीं की बल्कि मैंने अपनी भलाई की कि अपने को पाप का भागी होने से बचाया। मैंने अपनी जान लडा कर तुम्हारी जान बचाई, राह चलते इस जगह आ पहुँचा और तुमको इस हालत में देख कर जो कुछ हो सका किया। मै तो क्या कोई पत्थर के कलेजे वाला भी इस जगह आकर तुम्हारी सी औरत को ऐसी दशा में देखता तो बिना बचाए भला कहीं जा सकता था? तिस पर जो जरा भी जानता होगा कि ईश्वर कोई चीज है उससे तो स्वप्न में भी कभी ऐसा न होगा इसलिए मैंने अपनी ही भलाई की कि अपने को राक्षस कहलाने से बचाया।

इस बीच में कई दफे हवा के झोंके आये जिन्होंने उन पीपल की डालियों को हटा कर चन्द्रमा की रोशनी को उन दोनों तक पहुँचने दिया जिससे एक को दूसरे ने कुछ अच्छी तरह देखा। हर दफे उस नाजुक औरत ने मीठी मीठी बातें कहते उस नौजवान की सूरत को देखा मगर देख देख सिर नीचा कर लिया तथा बात खत्म होने पर यह जवाब दिया –

औरत – मुझे इतनी बुद्धि नही है कि आपकी इन बातों का जवाब दूँ क्योंकि आखिर तो औरत हू, हॉ मैं इतना जरूर कह सकती हूँ कि आपने मेरे साथ जो कुछ किया है उसे मैं ही जानती हूँ कहने की सामर्थ्य नहीं और बहुत बातें करने का यह मौका भी नहीं क्योंकि अगर हम लोग यहॉ देर तक रहेंगे तो जरूर हम तीनों ही की जान बुरी तरह जायगी।

नौजवान – (ताज्जुब से) यहॉ पर तो सिवाय हमारे और तुम्हारे तीसरा कोई भी नहीं है ! तब तुमने यह कैसे कहा कि हम तीनों की जान जायगी?

औरत–(ऊँची सॉस लेकर) हाय ! मेरी बहन भी इसी जगह है।

नौजवान – (चौंक कर) है यहॉ पर तुम्हारी बहन भी है ! कहॉ है? जल्दी बताओ जिसमें उसके भी बचाने की फिक्र की जाय।

औरत – (हाथ से बतला कर) इसी जगह गडी है।

नौजवान – अगर जमीन में गडी है तो वह कब की मर गई होगी !

औरत – (चन्द्रमा की तरफ देखकर) नहीं नहीं उसे गडे बहुत देर नहीं हुई है, मुझको लटकाने के बाद बदमाशों ने उसे गाडा है। सिवाय इसके वह एक बहुत लम्बे चौडे सन्दूक में रख कर गाडी गयी है अस्तु जरूर अभी तक जीती होगी।

इतना सुनते ही वह नौजवान उठ खडा हुआ और उस औरत की बताई हुई जमीन को खजर से खोदने लगा, वह नाजुक औरत अपने हाथों से वहॉ की मिट्टी हटाने लगी।

सन्दूक बहुत नीचे नहीं गाडा गया था इसलिए उसके ऊपर वाला तख्ता बहुत जल्द निकल आया।

सन्दूक में ताला नहीं लगा था। नौजवान ने आसानी से उसका पल्ला उठा कर किनारे किया और तब दोनों ने मिलकर उस औरत को सन्दूक से बाहर निकाला जो उसके अन्दर बेहोश पडी हुई थी। इसके बदन के भी कुल गहने जडाऊ थे और साडी भी बेशकीमती थी। चेहरा साफ नजर नहीं आता था तो भी कुछ कुछ पडती हुई चन्द्रमा की रोशनी उसकी खूबसूरती को छिपा रहने नहीं देती थी।

सन्दूक के बाहर निकलने और ठण्डी हवा लगने पर दो घडी के बाद कहीं जाकर उसे होश आया। तब तक वह नौजवान और वह नाजुक औरत अपने रूमाल और आचल से उसके मुँह पर हवा करते रहे।

होश में आते ही उस औरत ने चौक कर उस नौजवान तथा उस नाजुक औरत की तरफ देखा और धीरे से बोली, "बहिन मेरी यह दशा कैसे हुई? उसने जवाब दिया, "यह वक्त इन सब बातों के पूछने का नहीं है। इस समय हम लोगों को यही चाहिए कि सिवाय भागने के और कुछ न करें बल्कि जब तक दूर न निकल जाय बात तक न करें, हॉ जब ईश्वर हम लोगों को किसी हिफाजत की जगह पर पहुचा देगा तब सब कुछ कह सुन लेंगे।'

इतना सुनते ही वह उठ कर बैठ गई और इधर उधर देख कर फिर बोली–

"बहिन, क्या हम लोग ऐसी जगह आ फँसे है कि सिवाय भागने के और कुछ भी नहीं कर सकते ? अगर ऐसा हो तो मैं भागने को तैयार हूँ मगर कम से कम इतना तो बता दो कि यह नौजवान जो तुम्हारे पास बैठा है कौन है और मेरी बगल में गडहा कैसा है जिसमें सन्दूक सा दिखाई पडता है ?

औरत – मै आप ही नहीं जानती कि यह बहादुर जिसन हम लोगों की जान बचाई कौन है, हाँ इस गड़हे और इस सन्दूक का हाल जानती हूँ मगर इस समय सिवाय भागने के मुझे कुछ नही सूझता। अगर तुम्हारे में भागने की ताकत न हो तो बोलो उठाकर तुम्हारे यहाँसे निकाल ले जाने की फिक्र की जाय।

दूसरी औरत – नहीं नही, अब मै बखूबी तुम लोगों के साथ चल सकती हूँ, लो चलो मै तैयार हूँ।

यह कह कर वह उठ खडी हुई और चलने को तैयार हो गई।

दूसरा बयान

तीनों उस जगह से धीरेधीरे रवाना हुए। उस नौजवान औरत ने जो पेड पर से उतारी गई थी कहा, 'मुझे आगे चलने दो क्योंकि मै बहुत जल्द यहाँ से निकल चलने का रास्ता जानती हूँ, और तुम दोनों चुपचाप मेरे पीछे पीछे आओ। नौजवान औरत आग हुई और सीधे पश्चिम की तरफ चल निकली, ये दोनों भी चुपचाप उसके पीछे पीछे जाने लगे।

लगभग घडी भर के चलने के बाद ये तीनों एक नदी के किनारे पहुँचे जिसका पाट बहुत चौडा न था मगर इतना कम भी न था कि किसी का फेंका हुआ पत्थर या ढेला उस पार पहुच सकता।

छोटी छोटी दो खूबसूरत किश्तियाँ किनारे पर खूटे से बधी हुई दिखाई पडी जिन पर खेने के लिए हलके हलके डाड़े भी पडे थे। वह नाजुक औरत उसी जगह खडी हो गई और अपने पीछे आने वाले दोनों से बोली, 'जल्दी इनमें से किसी एक किश्ती पर सवार हो लो देर मत करो। यह सुन नौजवान ने कहा, पहिले तुम दोनों सवार हो लो फिर मैं सवार हो जाऊगा।' यह कह अपने हाथ का सहारा दे दोनों औरतों को किश्ती पर सवार कराया मगर जब खुद चढने लगा तब उस नाजुक औरत ने रोका और कहा पहिले उस दूसरी किश्ती को किनारे से खोल कर इस किश्ती के साथ बाँध लो तब तुम सवार हो क्योंकि उस किश्ती को भी मैं अपने साथ लेती चलूँगी।

नौजवान – दूसरी किश्ती को इसके साथ बाध कर ल चलना बेफायदे है और हमारी किश्ती उसके साथ बधने से उतनी तेज न चल सकेगी जितनी अकेली।

औरत – नहीं जो मै कहती हूँ उसे करो इसका सबब तुम्हें मालूम नहीं। बस अब देर करने में हर्ज होगा। जल्दी उस किश्ती को भी इसके साथ बाध कर तुम सवार हो जाओ।

नौजवान ने यह सोचकर कि शायद इसमें कोई भेद हो उस दूसरी किश्ती को किनारे से खोल कर अपनी किश्ती के साथ बाधा और खुद सवार होकर किश्ती किनारे से हटाने के बाद डाड लेकर खेने लगा।

औरत – अब मेरा जी ठिकाने हुआ और जान बचने की उम्मीद हुई। यह सब आप ही की बदौलत है। अब आप इस तरफ आकर बैठिए मै किश्ती खेकर ले चलती हूँ।

नौजवान–वाह मै बैठू और तुम किश्ती खेओ !यहभी खूब कही 'बस तुम दोनों चुपचाप बैठी रहो देखो मैं कितनी तेज इस ले चलता हूँ। तुम लोगों के तो अभी तक होश भी ठिकाने नहीं हुए होंगे। हा यह तो बताओ कि अभी तक तो मुझसे तुम कह कर पुकारती रही मगर जब से किश्ती पर सवार हुई हो आप कह के पुकारने लगीं। इसका क्या सबब है ? तुम्हारी बातचीत स साफ मालूम होता है कि तुम पढी लिखी हो। अगर ऐसा न होता तो मै इस बात का ख्याल न करता और कभी तुमसे यह सवाल भी न करता।

उन दोनों औरतों ने इसका जवाब कुछ न दिया बल्कि मुस्करा कर सिर नीचा कर लिया।

नौजवान – भला किसी तरह तुम दोनों के चेहरेपर हँसी तो दिखाई दी।

औरत – हम लोग काफी दूर निकल आये है।अब अगर यह किश्ती जो हमारी किश्ती के साथ बँधी हुई चली आ रही है डुबा दी जाय तो हम लोग पूरे तौर पर निश्चिन्त हो जाय।

नौजवान – इस दूसरी किश्ती को अपने साथ लाने का सबब अब मै बखूबी समझ गया जहा तक हो सके इसे जल्द ही डुबो देना चाहिए और सो भी ऐसी तर्कीब से कि हमारी किश्ती को कोई नुक्सान न पहुचे।

यह जान कर नौजवान ने डाड खेना बन्द कर दिया और अपनी किश्ती से उतर कर उस किश्ती पर आ गया जो पीछे बँधी हुई थी। इसने अपनी कमर से खजर निकाल एक हाथ जार से उसकी पेंदी में मारा जिससे सूराख होकर उसमें पानी आने लगा, इसके बाद नौजवान ने अपनी किश्ती में आकर उसे खोल दिया और धीरे से खेकर अपनी किश्ती कुछ आगे बढा ले गया।

देखते देखते उस दूसरी किश्ती में जल भर आया और वह डूब गई। अब नौजवान ने अपनी किश्ती खूब तेजी से आगे बढ़ाई।

नदी का जल बिलकुल ठहरा हुआ मालूम होता था जैसे किसी ने फर्श बिछा दिया हो। चन्द्रमा भी अपनी पूर्ण किरणों से साफ आसमान में उठा हुआ था। ये तीनों किश्ती पर बैठे चले आ रहे थे। तीनों नौजवान, तीनों खूबसूरत, तीनों नाजुक बदन, आपुस में देख देख कर खुश होते मुस्कुराते और डाड़ चलाये चल जाते थे।

नाजुक औरत ने हंस कर हमारे नौजवान बहादुर से कहा "बस अब हम लोगों को किसी का डर और खौफ नहीं है, किश्ती को धीरे धीरे बहने दीजिये और मेरे पास आकर बैठिये।"

नौजवान भी यही चाहता था कि इन दोनों के पास बैठ कर बातचीत से मालूम करे कि ये दोनों कौन हैं, क्योंकि अब बात करने का मौका बहुत अच्छा है, अस्तु उसने डाड़ खेना बन्द कर दिया बल्कि उन्हें उठा कर किश्ती में डाल लिया और खुशी खुशी उस जगह आकर बैठ गया जहा वे दोनों औरतें बैठी हुई थी।

तीसरा बयान

किश्ती धीरे धीरे बहने लगी। नौजवान ने दोनों औरतों की तरफ देखकर कहा ' अब हम बिल्कुल बेखौफ है, मुझे तो किसी का डर न था मगर तुम लोगों के सबब से डरना पड़ा। अब तुम दोनों का हाल जाने बिना जी बहुत बेचैन हो रहा है और इससे अच्छा समय भी बातचीत करने का न मिलेगा।"

नाजुक औरत – पहिले आप कहिये कि आपका क्या नाम है कहा के रहने वाले है, और उस जगल में– (काप कर) ओफ याद करते कलेजा दहलता है-आप कैसे पहुचे ?

नौजवान – पहिले तुमको अपना हाल कहना चाहिये क्योंकि तुम्हारे पूछने के पहिले ही मैं यह सवाल कर चुका हूं, सिवाय इसके मेरा कोई विचित्र हाल भी नहीं है हा तुम दोनों की हालत जब याद करता हूँ तो जरूर बदन के रोगटे खड़े हो जाते हैं। हाय, उसका कैसा कलेजा था जिसने तुम दोनों के साथ ऐसा सलूक किया।

दूसरी औरत – (जो जमीन से निकाली गई थी) हा बहिन पहिले तुम ही अपना हाल कहो क्योंकि मेरी तबीयत भी यह सुने बिना बहुत ही घबड़ा रही है कि मेरी वह दशा किसने की थी।

नाजुक औरत – अच्छा पहिले मैं ही अपनी रामकहानी कहती हूँ। (नौजवान की तरफ देखकर) आप और कुछ हाल न कहिये तो कम से कम अपना नाम तो बता दीजिये जिसमें बात करने या पुकारने का सुबीता हो।

नौजवान – इसमें कोई मुजायका नहीं, सुनो मेरा नाम 'नरेन्द' है। बस अब जब तक तुम दोनों का पूरा हाल न मालूम होगा मैं और कुछ न कहूगा।

नाजुक औरत – हा हा अब आप दिल लगा कर मेरा हाल सुनिये, मैं कहती हूँ।

इन लोगों ने किश्ती खेना बन्द कर दिया था और एक दूसरे की बात में इतना लीन हो रहे थे कि इन्हें किश्ती की चाल और बहाव का कुछ खयाल न रहा था जिससे वह बहती हुई कुछ किनारे की तरफ हो गई।

अभी नाजुक औरत ने अपना किस्सा कहना शुरू नहीं किया था कि इन लोगों की किश्ती एक घने पीपल के पेड़ के नीचे पहुँची जो नदी के किनारे ही पर था।

इन लोगों की किश्ती उस पेड़ के नीचे पहुँची ही थी कि ऊपर से आवाज आई, ' भला नरेन्द, ले जा भगा के ! अब यारों की फिक्र क्यों होगी ! मगर हम भी तुम्हारे उस्ताद ही निकले, रास्ता ही आकर बन्द कर दिया ! भला अब आगे बढ़ो तो सही, देखें कितना हौसला रखते हो '

इस आवाज के सुनते ही वे दोनों औरतें डरीं मगर हमारा बहादुर नौजवान एक दम हँस पड़ा जिससे दोनों औरतों को बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि इस आवाज को सुन कर वे घबड़ा गई थी। उनको पूरा विश्वास हो गया था कि कोई हम लोगों का दुश्मन आ पहुचा और डर के मारे उनका बदन कापने लगा था मगर हमारे बहादुर नौजवान नरेन्द को हँसते देख उन दोनों की विचित्र हालत हो गई और वे उनके मुँह की तरफ देखने लगी। नरेन्द ने हँस कर कहा–

' घबडाओ मत देखो मैं इसे अपनी किश्ती पर बुलाता हूं। इतना कह उस पेड की तरफ देखा और बोला–

'अबे भूतने ! अब पेड़ से उतरेगा भी कि ऊपर ही बैठा रहेगा ? आ किनारे पर !!"

आवाज – नही अब मैं नीचे नहीं आने का, जाओ अपनी किश्ती ले जाओ ! हि हि हि किश्ती ले जाना क्या हँसी ठट्ठा है ! छू लो ऐसा मन्त्र पढ दिया कि सिवाय किनारे लगाने के इस किश्ती को तुम आगे ले जा ही नहीं सकते। बचाजी, तुम तो खूब जान बचा के भागे थे पर अब कहां जाओगे ? तीन दिन का भूखा प्यासा मैं आज तुम तीनों को खाये बिना थोड़े ही छोडूगा !

नरेन्द – (किश्ती किनारे लगा कर) अबे उतरेगा कि दूँ मिर्चे की धूनी !!

आवाज – अगर मिर्च के खेत में भी आग लगा दो तो कुछ नहीं होगा।

नरेन्द – अच्छा मेरे भाई अब तो उतरो।

आवाज – जी हाँ मैं ऐसा वैसा भूत नहीं हूं कि जल्दी उतर जाऊ।

नरेन्द – अबे उतरता है कि नही !

आवाज – जाता है कि नहीं !

नरेन्द्र – राम राम इसने तो दिक कर डाला ! भला यह तो बताओ तुम उतरते क्यों नहीं ?

आवाज – भाई जान, तुम रंज क्यों हो गये हो ? जानते ही हो कि मैं कितना फूंक फूंक कर पैर रखता हूं।

नरेन्द्र – तो इस वक्त तुम्हें किस बात का डर है ?

आवाज – यही कि कहीं नजर न लग जाय।

नरेन्द्र – किसकी नजर ?

आवाज – ये दोनों औरतें मेरी जवानी और पहलवानी पर नजर लगा देंगी।

इतना सुनते ही नरेन्द्र एक दम खिलखिला कर हँस पडा बल्कि वे दोनों औरतें भी जो अभी तक डर के मारे काँप रही थीं हँस पडीं मगर फिर सोचने लगीं–

"यह कौन है ? क्या सचमुच कोई भूत है ! अगर यह भूत है तो नरेन्द्र भी कोई पिशाच ही होंगे ! नहीं नहीं ऐसा नहीं सोचना चाहिए। नरेन्द्र बहादुर और लासानी आदमी हैं, और फिर अगर भूत प्रेत या पिशाच होते तो इनकी परछाहीं जो चन्द्रमा की रोशनी से इस किश्ती में पड रही है न पडती होती और इनके आँखों की पलकें भी नीचे न गिरतीं ! खैर यह सब तो ठीक है मगर वह कौन है जो पेड पर चढा हुआ बोल रहा है और नीचे नहीं उतरता !"

नरेन्द्र ने बहुत कुछ कहा मगर वह शैतान पेड से नीचे न उतरा। आखिर नरेन्द्र हँसते हुए किश्ती से नीचे उतरे और पेड के पास जाकर बोले उतरता है या काट डालूँ पेड को ? यह कह कर एक हाथ तलवार का उस पेड पर लगाया साथ ही इसके पेड के ऊपर वाला शैतान चिल्लाया "हाँ हाँ हाँ हाँ ! ऐसा काम कभी मत करना ! पेड मत काटना नहीं तो मैं गिर कर मर जाऊंगा ! लो मैं आप ही उतरता हूँ तुम दिक मत करो !!

नरेन्द्र – अच्छा तो फिर उतर जल्दी !

आवाज – उतरता हूँ, घबडाते क्यों हो ? क्या जल्दी में गिर कर जान दे दूँ ?

आखिर धीरे धीरे वह शैतान नीचे उतरा और नरेन्द्र ने उसका हाथ पकड के किश्ती पर ला बैठाया इसके बाद किश्ती को किनारे से हटा गहरे जल में ले जा कर बहाव पर छोड दिया।

नरेन्द्र ने जब उस शैतान को किश्ती में लाकर बैठाया तभी से उसकी शक्ल देख दोनों औरतों की अजब हालत हो रही थी। मारे हँसी के लोटी जा रही थीं क्योंकि पेड पर से वह जिस दिलावरी और डरावनी आवाज से बोलता था नीचे उतरने पर वह वैसा न पाया गया बल्कि उसकी सूरत ऐसी थी कि जो कोई देखे जरूर हँसने लगे।

पचीस तीस वर्ष का सिन नाटा कद छोटे छोटे हाथ पैर सीतला-मुँह दाग एक आँख गायब लाल रंग की धोती लाल ही रंग का कुरता और टोपी जिसमें गोटा टका हुआ था कांधे पर एक अंगोछा बगल में एक बटुआ हाथ में भाँग घोंटने का डण्डा भाँग पीसने की कूंडी टोपी के नीचे।

ऐसी सूरत देख के भला किसे हँसी न आवेगी ? दोनों औरतों ने मुश्किल से हँसी रोक कर नरेन्द्र को हाथ के इशारे से अपने पास बुलाया और धीरे से पूछा–

"यह कौन है जिसे बडी चाह से तुम इस किश्ती पर लाये हो ?

नरेन्द्र – यह हमारा लड़कपन का साथी है।

औरत – क्या तुम्हारा ऐसे ही लोगों से साथ रहता है ?

नरेन्द्र–नहीं नहीं, हम तो दिल बहलाने के लिये इसे अपने साथ रखते हैं, बडा खैरख्वाह है और जान से ज्यादे हमको मानता है कुछ थोडा सा बेवकूफ तो है मगर बाजे दफे इसे दूर की सूझती है। अब तो यह साथ ही है, इसका बाकी हाल तुमको रास्ते में मालूम हो जायगा।

औरत – इसका और तुम्हारा साथ कब छूटा ?

नरेन्द्र – मैं तो घर से अकेला निकला था यह शायद मुझे ढूँढता हुआ आ पहुँचा। देखो मैं इससे हाल पूछता हूं, आप ही सब मालूम हो जायगा।

औरत – इसका नाम क्या है ?

नरेन्द्र – इसका नाम सभों ने बहादुरसिंह रक्खा है।

बहादुरसिंह का नाम सुनकर फिर उन दोनों को हँसी आ गई।

बहादुर – क्यों जी नरेन्द्र यह दोनों औरतें घडी घडी मुझको देख देख कर हँसती क्यों हैं ? कहीं मुझे भी गुस्सा आ जाय तो क्या हो ?

नरेन्द्र – भला इसमें रंज होने की कौन सी बात है ! जो कोई तुम्हें देख कर खुश हो उससे रंज होना क्या मुनासिब है ?

बहादुर – नहीं मैंने कहा कि शायद अगर इन दोनों को किसी बात की शेखी हो तो मैं अभी तैयार हूँ, आवें कुश्ती लड

क जी का हौसला मिटा लें।

नरन्द – वाह, औरतों स कुश्ती लड कर पहलवानी दिखाओग ?

वहादुर – जी हा कल क लड़क हो कभी औरतो मे पाला नहीं पडा है। सुनो और मेरी नसीहत याद रक्खो, दस मर्दों स लड़ जाना कोई मुश्किल नहीं मगर एक भी औरत का मुकाविला करना टेढी खीर हाता है।

नरन्द – सच है सच है लकिन भला यह तो कहो कि तुम इस जगल में कहा से पैदा हो गय ?

वहादुर – तुम तो चुपचाप घर स निकल भाग समझ कि वस हो चुका अव पता कौन लगाता है। मगर इसका भूल ही गये कि मै चालीस कम दो कोस स तुम्हारी वू पा लता हू। खाजता खाजता आखिर आ ही न पहुँचा। मै तो डरा (रुक कर)राम राम डरा काहे को मै तो किसी स कभी डरता ही नहीं कहन की कुछ मुँह से निकलता है कुछ।

दोनों औरत – (हँस कर) क्या डींग की लत है शखी किय विना न मालूम क्या विगडा जाता है ! अजी एस जगल वियावान में जहा हजारों डाकू घूमत रहत है वड़ वडे डर जाते है अगर तुम डर तो कौन सी वात है।

वहादुर – सच तो कहा मगर मै तो कहीं डरता हो नहीं हा यह तो कहो क्या सचमुच इस जगल में डाकू घूमा करते है ?

नरन्द – वशक, अभी हमी स डाकुओं की मुठभड़ हो गई थी, वार किसी तरह बच गय।

वहादुर – अफसोस हम न हुए नहीं तो एक को भी जीता न छोड़ता हा यह वताओ के डाकू थ ?

नरन्द – यही कोइ चालीस पचास !

वहादुर – वस इतन ही ! इतनों म भला क्या डरना ? अच्छा इन सव वातों को जाने दो और मरी सुनो। अव सवरा हुआ चाहता है, यह किनार वाला जगल भी वडा ही रमणीक है, चलो किश्ती किनार लगाओ मैं भग पीसता हूँ तुम भी पीया और इन दोनों को भी पिलाओ। यह भी क्या याद करेंग कि किसी के हाथ की भग पी थी। वस इसी जगह दिशा फरागत स्नान पूजा स छुट्टी पा कर फिर जहाँ चाहे चलना।

' अच्छा चलो ' कह कर नरन्द्र न डाउ उठाया और किश्ती का मुंह किनारे की तरफ फेरा ही था कि किनारे स गीदड़ क चिल्लान की आवाज आई।

वहादुर – वस वस, नहीं नहीं इधर नहीं, और आग चलो। यह जगल किसी काम का नहीं वपर्द है आग घने जगल में ठीक रहेगा !

इतना सुनत ही दोनों औरतें खिलखिला कर हँस पड़ी और नरेन्द्र ने भी मुस्कुरा दिया।

वहादुर – वस वात तो सोचा नहीं और हँस दिया। क्या तुम लोगों न समझ लिया कि वहादुरसिह गीदड की आवाज सुनकर डर गय ? एसा ही डरत तो तुमको खाजन क्या निकलते ? मुझको आज रास्ते में ऐस एस जगल पड है जहा पचासों पेड इकट्ठ एक से एक सटे और चिपके दिखाइ पड़ते थ।

वहादुरसिंह की इस वात न तीनों को और भी हँसाया, नरन्द्र तो जानत ही थ कि वहादुरसिह वडा ही डरपोक है मगर वात वनाने स नहीं चूकता यह तो उन्हीं की मुहव्वत में घर स निकल पडा नहीं तो कभी अकेला दूर जाने वाला थाड ही था।

नरन्द्र – वस जो असल वात थी तुमने खुद कह दी। यह भी मालूम हो गया कि तुम वड वडे घन जगलों को पार करते हुए मुझसे मिल हो उस छोट जगल में नहीं पहुँचे जहाँ मै फँसा था।

वहादुर – जी हा इसमें भी कोई झूठ है। अरे अर, फिर तुम किनारे ही पर किश्ती लिय जा रह हो ! सुनत नहीं मे क्या कहता हू !!

नरन्द्र – (झुझला कर) अजव उल्लू है ! क्या सैकडों कोस तक जगल ही मिलता जायगा ? जगल कव का पीछे छूट गया यह भी कोई जगल है ? दस वीस वेरी क पड़ दखे और कह दिया जगल है ! अव कौन सा घना जगल मिलेगा ? दखता नहीं आगे वालू ही वालू दिखाई देता है !!

वहादुर–वाह, मुझी को उल्लू वनान लगे, मैं तो खुद हो कहता हू कि आग किसी जगल क किनारे नाव लगाओ यहा मैदान है।

नरन्द्र वस वस, आग यह भी नहीं मिलेगा।

नरन्द्र न वहादुरसिंह की वकवाद पर ध्यान न दिया और किश्ती किनारे पर लगा कर वहादुरसिंह स उतरन क लिय कहा मगर वह न उतरा, कहने लगा, मैं इसी किश्ती पर भंग वना लूँगा तव उतरूँगा, और तुम भी वैठो जल्दी क्या है अभी तो अच्छी तरह सवरा भी नहीं हुआ।

औरत – अच्छा इनको यहा वैठन दो चलो हम लोग नीचे उतरें।

नरन्द्र – अच्छा चलो।

नरन्द्र न लग्गी गाड़ के किश्ती वॉध दी, तव हाथ का सहारा दे दोनों औरतों को किनारे पर उतारा और उनके वैठने क लिय अपनी कमर से चादर खोल जमीन पर विछा दिया।

जव से नरन्द्र न दोनों औरतों को फाँसी और कब्र से वचाया और किश्ती पर सवार होकर पूर चन्द्रमा में इनकी सूरत

देखी तभी से इन पर जी जान से आशिक हा गये थे। उधर वे दोनों औरतें भी पूरी मुहब्बत की निगाह से उनको देखने लगीं बल्कि इनको पाकर अपनी बिल्कुल तकलीफ भूल गई और सोच लिया कि अब जन्म भर इनका साथ कभी न छोडेंगी।

'तीनों किनार पर बैठ नरन्द न कहा उस भगेडी मसखरे की बातचीत में तुम दानों का हाल भी न सुना।

एक औरत – क्या हर्ज है लौंडी ता साथ में हई है जब चाहे इसकी राम कहानी सुन लेना पर अब ता हाल कहने का मौका है नहीं।

नरन्द – अच्छा हाल तो किसी दूसर वक्त सुन लेंग मगर अपना नाम तो इस वक्त बता दा।

एक औरत – (जा पेड पर से उतारी गई थी) जी मेरा नाम ता माहिनी है और इसका नाम गुलाब है जिस आपने जमीन से निकाल कर बचाया।

नरन्द – मोहिनी! अहा क्या सुन्दर नाम है!!

इतन में दूर से कुत्त के भूँकने की आवाज आई जिसे सुन नरन्द ने मोहिनी की तरफ देख के कहा 'मालूम होता है यहा पास ही काई गाव है क्योंकि कुत्ते सिवाय आदमी क पडौस क और कहीं नहीं रहत। अच्छी बात हो अगर हम लोग आज का दिन इसी गाव में काटें क्योंकि दिन की धूप इस खुली हुई छोटी किश्ती में नहीं बर्दास्त होगी।

माहिनी – आपका कहना सच है मगर हम लोगा का किसी छाट गाव में रहना उचित नहीं इसस तो दिन भर की धूप सह कर भी इसी किश्ती पर सफर करते रहना ठीक हागा।

गुलाब – (इधर उधर दखकर) दखा वह एक नाव का मस्तूल दिखाई देता है। (उठ के और गौर स दख कर) वाह वाह यह ता बडी भारी उप्परदार नाव है अगर इस किराये कर लिया जाय तो बहुत अच्छा हो। इसी पर सफर करते हुए हम लाग किसी शहर मे बडे आराम क साथ पहुच जायेंगे।

नरेन्द – (खड हाकर और उस नाव का देख कर) हा ठीक ता है।

माहिनी – बस ता फिर दर क्यों उसी नाव को ठीक कीजिय चलिये इसी किश्ती पर बैठकर वहा चल चल।

नरेन्द – अभी तुम लोगों को वहा ल जाना ठीक न होगा। कौन ठिकाना वह नाव खाली है या किसी का माल लदा है अगर दूसर क किराये में हागी ता मुझ कैसे मिल सकेगी। तुम दानों अच्छे कपडे और गहने पहिरे हा कोई देखेगा तो क्या समझगा? कोइ एसी तर्कीब भी नहीं हा सकती कि तुम दानों का छिपा कर वहा तक ले चलूँ और अगर नाव भरी न हो तो उसी जगह किराय कर लूँ। इस तरह बहुत आदमियों के बीच में तुम दोनों का कैस ले चलूँ।

गुलाब – चलिये नाव खाली हुई तो सवार हा लेंग नहीं तो आगे चल कर कही ठहरेंगे और आज का दिन डोंगी में ही बिता देंग।

नरेन्द्र–आग दूर तक बालू ही बालू दिखाई पडता है कहीं पेड का नाम निशान तक नहीं है कहाँ ठहरेंगे?

मोहिनी – तो फिर आपकी क्या राय है?

नरन्द – मैं चाहता हूँ कि तुम दानों यहा ठहरा बहादुरसिह भी तुम्हारे पास हैं बहुत जल्द जाकर उस नाव को देख आता हूँ। अगर खाली होगी तो तुम लागों का ले जाकर सवार कराऊँगा नहीं तो इसी जगह लौट कर हम लोग दिन बितावेंग और रात को फिर चलेंग।

मोहिनी–नहीं नहीं अब मैं तुम्हारा साथ न छोडूगी क्या जाने तुम कहीं

नरन्द – वाह मैं कहा चला जाऊँगा? बात की बात में तो लौट के आता हूँ!

माहिनी – (ऑख डबडबा कर) मैं क्या

नरेन्द ने माहिनी की ऑखों में ऑसू डबडबाते हुए देखा। जी बेचैन हो गया हाथ थाम कर बोला 'हैं यह क्या? यह ऑसू कैसा?

माहिनी का जी पूर तौर से उमड आया आँसुओं की तार बध गई हिचकी लेकर बोली न मालूम क्यों मेरा कलेजा काँप रहा है खुद बखुद रोने को जी चाहता है बस तुम मत जाओ इसी जगह दिन काटो जो कुछ होगा देखा जायेगा।

खैर किसी तरह नरेन्द न बहुत तरह से मोहिनी का समझा बुझाकर इस बात पर राजी किया कि वे जा कर नाव का हाल दर्याफ्त कर आवें।

हमारे बहादुरसिह अभी तक भग घाट रहे हैं। दीन दुनिया की कुछ खबर नहीं यह भी नहीं मालूम कि नरेन्द मोहिनी और गुलाब में क्या क्या बातचीत हुई। दोनों पैरों से भग पीसने की कुडी पकडे हुए नीचे के होठ को दातों से दबाये कभी बाईं तरफ कभी दाहिनी तरफ सोंटा घुमा घुमा कर भग पीस रहे हैं।

नरेन्द न पुकार कर कहा 'अजी ओ बहादुर भगी! अभी तक तुम्हारी भग तैयार नहीं हुई? दखो इधर खयाल रखो हम जाते हैं।

बहादुरसिह ने गुस्से की निगाह से नरेन्द की तरफ देख कर कहा 'बस खबरदार! हमको भगी का कहना इतना बुरा मालूम न हुआ जितना तुम्हारे इस कहने का रज हुआ कि हम जाते हैं। क्या मजाल जो तुम कहीं जा सको! एक क्या दस करोड नरन्द्र बनकर आओ तब तो जाने ही नही दू! एक दफे तुम्हें अकेले छोड कर फल पा लिया अब क्या मैं उल्लू

हू जा घडी घडी ऐसा ही करूँ ?'

नरेन्द्र – अबे कुछ सुनता समझता भी है कि अपनी ही टाय टॉय किये जाता है !

बहादुर – बस बस मै सब सुन चुका और समझ गया, बैठो सीधे होकर !

नरेन्द्र – अजी मै नाव किराये करने जाता हूँ और कहीं नहीं जाता।

बहादुर – नाव ! नाव ! कैसी नाव ? यह क्या छकडा है ?

नरेन्द्र – (हँस कर) यह भी नाव है मगर मै बडी नाव छप्पर वाली किराये करने जाता हू।

बहादुर – कहा है छप्पर वाली नाव ?

नरेन्द्र – (हाथ से इशारा करके) वह देखो।

बहादुर – हॉ है तो (सोंटा रख कर) मै भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

नरेन्द्र – (मोहिनी और गुलाब को बता कर) तो इनके पास कौन रहेगा ?

बहादुर – तुम।

नरेन्द्र – ओर तुम किसके साथ जाओगे ?

बहादुर – नरेन्द्र के साथ।

बहादुरसिह की इस बात ने सबको हँसा दिया। मोहिनी जो उदास बैठी थी वह भी हस पडी।

बहादुर – हसने की कौन बात है ! (कुछ सोचकर) हा हा ठीक है मुझसे गलती हुई, मै भूल गया, अच्छा जाओ सीधे उस नाव की तरफ चले जाओ। मै देख रहा हूँ, इधर उधर हटे नहीं कि मैने डण्डा फेंक कर मारा।

अच्छा यही सही ! यह कह कर नरेन्द्र उस बडी नाव की तरफ रवाना हुए। मोहिनी और बहादुरसिह की निगाह बराबर नरेन्द्र की तरफ थी।

चौथा बयान

हमारा बहादुर नौजवान इन तीनों को उसी जगह छोड उस नाव की तरफ चला और यह इरादा कर लिया कि उसे किराये करके आराम से अपना सफर तमाम करेगा। पाठक इतना ता मालूम ही हो गया कि उसका नाम नरेन्द्रसिह है अस्तु अब हमको भी इसी नाम से इस उपन्यास में लिखना ठीक होगा।

देखने में वह नाव बहुत पास मालूम देती थी मगर नरेन्द्रसिह के वहा पहुचते पहुचते पहर भर से ज्यादा दिन चढ आया। पास पहुँचकर उन्होंने किसी आदमी को उस नाव के ऊपर न देखा। इस सबब से नाव के पास जाकर अन्दर की तरफ झॉका।

यह नाव बहुत बडी थी और इस लायक थी कि हजार मन से ज्यादा बोझ लाद सके। फूस का छप्पर उसके ऊपर था और चारों तरफ टट्टियों से घेरा हुआ था। दो चार खिडकियॉ भी दोनों तरफ इस लायक थी कि भीतर बैठा हुआ आदमी बाहर की तरफ देख सके। नरेन्द्रसिह को झॉकते देख एक आदमी अन्दर से बाहर निकल आया जिसकी सूरत देखने से मालूम होता था कि यह मल्लाह है। उसने इनसे पूछा, ' आप क्या चाहते हैं ? '

नरेन्द्र – क्या यह नाव किराये पर हो सकती है ?

मल्लाह – हा हॉ आप जरूर इसे किराये पर ले सकते हैं।

नरेन्द्र – इसका मालिक कौन है ?

यह सुन कर मल्लाह ने अन्दर की तरफ मुँह कर ' बिहारी, बिहारी' करके आवाज दी। आवाज के साथ ही एक दूसरे मल्लाह ने बाहर निकल कर पूछा "क्या है ?'

पहिला मल्लाह – सर्कार नाव किराये किया चाहते हैं।

दूसरा – (नरेन्द्र की तरफ देख कर) कुछ माल लादा जायगा ?

नरेन्द्र – नहीं हम दो तीन आदमी है जो इस पर सवार होकर सफर किया चाहते हैं।

मल्लाह – कहा तक जाइयेगा ?

नरेन्द्र – हम लोग पटने तक जायेंगे।

मल्लाह – तो आपके और साथी सब कहा है ?

नरेन्द्र – (हाथ का इशारा करके) उस तरफ थोडी दूर पर हैं, तुम बातचीत कर लो तो बुला लावें।

मल्लाह – सवारी जनानी भी है या सब मर्दाने ही हैं ?

नरेन्द्र – हॉ जनानी भी हैं।

मल्लाह – अच्छा आइये यहा आकर भीतर से नाव को देख लीजिए। जनानी सवारी के सुबीते की भी जगह इसमें बनी हुई है।

यह कह मल्लाह ने एक काठ की सीढी नीचे गिरा दी और नरेन्द्रसिह का हाथ पकड कर ऊपर चढा लिया तब अपने

साथ छप्पर के अन्दर ले गया। नरेन्द्रसिह ने अन्दर लगभग पन्द्रह बीस मल्लाहों को बैठे पाया जिनमें पाँच छ तो बड़ी भयानक सूरत के थे। उनकी काली काली सूरत और बडी बडी आखें देखने से ही डर मालूम होता था। एक तरफ कुछ थोडी सी कुल्हाडिया गडॉसे नेजे और तलवारों का ढेर लगा हुआ था और दस बीस गठरियॉ भी ऐसी पडी थीं कि जो देखने स किसी सौदागर की मालूम होती थीं। इन चीजों को देख नरेन्द्रसिह के जी में कई तरह के खुटके पैदा हुए और इस नाव को किराये करने का मन न किया। मल्लाहों की तरफ देख कर बोले, "हम लोग सिर्फ चार आदमी हैं। नाव बहुत बडी है और सफर भी बहुत दूर तक का है। यह नाव मेरे काम की नहीं है।' विहारी ने कहा ' एक नाव बहुत छोटी और पटी हुई हमारे पास और भी है। अगर उस पर आप सफर करें तो सिर्फ एक ही मल्लाह आपको पटने तक पहुँचा सकेगा क्योंकि वह नाव चलने में बहुत सुबुक है। अगर जरा सा आप यहॉ ठहरें तो उस नाव को यहॉ लाकर दिखला दूं।

नरन्द – वह नाव कहा पर है ?

विहारी – पास ही है बस वहीं जहॉ इस नदी का मोड घूमा है।

नरेन्द्रसिह को इस बात का शक तो जरूर हुआ कि ये लोग डाकू है मगर बिहारी की यह बात सुनकर कि एक नाव और भी है और एक ही आदमी उस पर पटने पहुचा देगा सोचने लगे कि इसमें हमारा कोई हर्ज नहीं अगर एक आदमी डाकू भी होगा तो हमारा कुछ न कर सकेगा। बिहारी से कहा, 'जाओ उस नाव को ले आओ मगर जल्द आना।

बिहारी ने अपने साथियों की ओर देखकर कहा– तुम लोग भी आओ तो उस नाव को जल्दी खैंच लावें।"

अपने कुछ साथियों को लेकर बिहारी नाव के नीचे उतरा और थोडी दूर तक दरिया के किनारे किनारे जाकर पास के जगल में गायब हो गया।

विहारी को गये घण्ट भर से ज्यादा हो गया। नरेन्द्रसिह बैठे बैठे घवडा उठे और दूसरे मल्लाहों से जो उस नाव में थे बोले "तुम्हारा बिहारी नाव लेकर अभी तक न आया हमारे साथी घवडा रहे होंगे हम तो जाते हैं।

इसके जवाव में एक मल्लाह ने कहा, चढाव की तरफ नाव लाने में देर लगती है आप जरा और ठहर जायें आता ही हागा।

घण्टे भर तक नरेन्द्रसिह और ठहरे मगर नाव न आई। घवडा उठे। मोहिनी की तरफ जी लगा हुआ था। मल्लाहों की बात पर ध्यान न दिया। नाव से नीचे उतर आये और उस तरफ चले जहॉ अपने साथियों को छोडा था।

आते वक्त भी उतनी ही देर लगी यहा तक कि दोपहर हो गया जव उस ठिकाने पहुँचे। मगर अफसोस बेचारी मोहिनी और उसकी वहिन गुलाब को वहॉ न पाया और न अपने लडकपन के दोस्त बहादुरसिह को ही वहा देखा जिसे भग घोटते छोड गय थे हॉ किश्ती ज्यों की त्यों वहाँ ही बधी थी।

पॉचवॉ बयान

मोहिनी गुलाब और अपने दोस्त बहादुरसिह को न देखने से नरेन्द्रसिह को कितना ताज्जुव अफसोस तरद्दुद फिक्र गम और सदमा हुआ यह वही जानते होंगे। घबड़ा कर चारों तरफ देखने लगे जब किसी को न देखा तो बोले 'हाय मैं उस अकेला क्यों छाड गया! मेरे सिर कैसी कम्वख्ती सवार थी जो दूसरी नाव किराये करने गया! हाय जिस किश्ती ने बेचारी मोहिनी और गुलाब की जान बचाई और जिस किश्ती पर बैठ कर हम लोग हॅसते खेलते यहॉ तक पहुँचे, उसी को छोडना चाहा! परमेश्वर ने इसी की सजा दी। हाय कम्वख्त दिल! उस वक्त धूप की सूझी! बेचारी मोहिनी धूप का कुछ खयाल न करके इसी किश्ती पर सफर करने को तैयार थी मगर तुझे गर्मी सताने लगी! अब उसकी जुदाई की आग में न जाने कब तक तुझे जलना पडेगा। हाय वह कहॉ चली गई! क्या मौका पाकर भाग तो नहीं गई! नहीं नही, उसे छिपकर भागने की जरूरत ही क्या थी! मैं तो उसे उसके घर तक पहुँचा देन ही वाला था, मैंने उसका क्या बिगाडा था कि छिप कर भागती! फिर वहादुरसिह कहा चला गया? वह तो मेरा साथ छोड़ने वाला न था! क्या कोई दुश्मन पहुँचा जिसके सबब से बेचारी मोहिनी और गुलाब को फिर दु ख भोगना पड़ा? कहीं उन नाव वाले मल्लाहों की तो वदमाशी नहीं! सूरत से वे लोग वडे दुष्ट और डाकू मालूम पडते थे। वे किश्ती लेने नहीं गये घूम फिर धोखा दे जरूर यहा आये और तीनों को ले भागे क्योंकि पहिले ही उन लोगों को मुझसे मालूम हो चुका था कि हमारे साथ औरतें हैं और उन्होंने पूछा भी था कि कहॉ है? हाय! मैने क्यों इशारे से वता दिया कि इस तरफ है! जरूर उन्हीं लोगों की शैतानी है! खैर अब मोहिनी ही नहीं तो अव मैं जी कर क्या करूँगा? इससे तो अव यही वेहतर है कि उन लोगों से लडकर ही अपनी जान दे दूँ, और कुछ नहीं तो दो चार की जान जरूर ही ले लूगा।"

यह सोचते सोचते हमारे वहादुर नरन्द्रसिह को बेहिसाव गुस्सा चढ आया बडी बडी आखें सुर्ख हो गई, बदन कॉपने लगा घडी घडी तलवार के कब्जे पर हाथ जान लगा। थोडी देर तक इसी हालत में खडे रह कर कुछ सोचते रहे, इसके वाद तेजी के साथ उस नाव की तरफ चले।

पहिले दफे नरेन्द्रसिह जव उस किश्ती की तरफ गये थे तव इनको रास्ते में वहुत देर हो गई थी मगर अव की दफे घटे ही भर में ये उस नाव के पास जा पहुँचे।

अवकी मतबे नाव के ऊपर जाने के लिय काठ की सीढी ही नहीं लगी थी मगर बहादुर नरेन्द्रसिह ने इसका कुछ

खयाल न किया झट म्यान से तलवार निकाल ली और उछल कर नाव के ऊपर चढ गये, मगर वहाँ किसी को न पाया। उन शैतानों में से एक भी वहा न था जिन्हें पहली मर्तबे देखा था हा कुछ गठडियाँ और दस पॉच कुल्हाडियॉ इधर उधर जरूर पडी थीं।

बहादुर नरेन्द्र इस गम को बर्दाश्त न कर सके। उनका सिर घूमने लगा और नगी तलवार हाथ में लिये हुए ही बदहवास हो कर उसी नाव पर धम्म से गिर पडे।

छठवॉ बयान

एक छोटी सी कोठरी में आले पर चिराग जल रहा है तीन तरफ दीवार है और एक तरफ लोहे के मोटे मोटे छड लगे हुए हैं जिनमें एक छोटा सा दर्वाजा लोहे की सीखों का बना हुआ लगा है जो इस समय बद है और उसमें बाहर से ताला बद है और जिसके पास ही एक आदमी बैठा हुआ है, शायद पहरे वाला हो। यह मकान हर तरफ से बद है, कहीं से आस्मान दिखाई नहीं देता। आजकल शुक्ल पक्ष है मगर चन्द्रमा की रोशनी भी कहीं नहीं दिखाई देती जिससे मालूम होता है कि शायद यह जमीन के अन्दर कोई तहखाना है जहा दिन और रात का भेद कुछ नहीं जाना जाता। इसी कोठरी के अन्दर बहादुरसिह बैठा हुआ धीरे धीरे कुछ बोल रहा है।

'हॉ कहते थे नालायक से कि मुझे मत सता ! मैं ब्राह्मण हूँ, मेरी आह पडेगी तो जल कर भस्म हो जाएगा। मगर सुनता कौन है ? अपनी बहादुरी के नशे में वह मानता किसकी है ? दौलत के घमण्ड में वह किसी को समझता ही क्या है ! खूबसूरत पॉच औरतें क्या मिल गईं कि दिमाग आस्मान पर चढ गया ! रहो बचा, दो औरतें तो छिन ही गईं बाकी की तीनों भी छिन जाती हैं ! और जगल में गडी हुई तेरी दौलत भी तेरे हाथ से निकल जाय तब मेरा कलेजा ठण्डा हो ! नालायक मैंने तेरा क्या बिगाडा था कि मुझे राह चलते पकड लिया और साल भर से मुफ्त में अपनी खिदमत करा रहा है जान भी नहीं छोडता। हाय ! मेरे मॉ बाप, लड़के बाले जोरू जाने क्या कहते होंगे, मुझे कहॉ कहॉ ढूँढते होंगे ! खैर उनकी तो कुछ पर्वाह नहीं, मेरा तो शरीर ही सकट में पड गया था, दिन में बीस बीस मर्तबे गदहे को भग पीस पीस के पिलानी पडती थी। चलो उससे तो छुट्टी हुई ! मेरा क्या ? वहॉ भी खाने को मिलता था यहॉ भी मिलेगा घोडे को कोई ले जाय खाने को घास तो देहीगा। मेहनत से जान बची अब इसी कोठडी में बैठे डण्ड पेलेंगे। वाह रे बहादुरसिह तू भी किस्मत का बडा ही जबर्दस्त है !!

कोठडी के बाहर बैठा हुआ पहरेवाला अपनी गर्दन नीचे किये हुए बहादुरसिह की यह भनभनाहट सुन रहा था। जब बहादुरसिह अपनी बात तमाम कर चुका तब उसने इनकी तरफ सिर उठा कर देखा और कहा— "मालूम होता है आपका नाम बहादुरसिह है !"

बहादुर – (चौंक कर) है यह आपने कैसे जाना ?

पहरे – आपकी बातों से ही मालूम होता है !

बहादुर – हमारी कौन सी बातें !

पहरे – अजी अभी तो तुम कह रहे थे कि 'वाह बहादुरसिह तू भी किस्मत का बडा जबर्दस्त है !'

बहादुर – हॉ ठीक है मेरा नाम बहादुरसिह है !

पहरे – आप बडे ही लापरवाह मालूम होते हैं !

बहादुर – हॉ भाई साहब लापरवाह तो हई हैं और फिर आप ही सोचिये कि मेरे जैसा आदमी अगर लापरवाह न होगा तो और दुनिया में होगा कौन ? जात का ब्राह्मण हूँ, कहीं रहूँ, कोई खाने को दे, मुझे ले लेने में कोई शर्म नहीं कमा कर खाने की कोई फिक्र नहीं ! जोरू के पास कुछ रूपये हैं, वही अपना सौदा सुलफ बाजार से लाती है पकाती है खिलाती है, महीनों तक पीने के लिए भग भी वही बेचारी ला देती है मैं मजे में घोटता हूँ और पीता हूँ ! फिर मुझे फिक्र काहे की ? हॉ थोडे दिन इस नालायक नरेन्द्र के साथ रहना पडा तो अलबत्ते कुछ फिक्र ने आ घेरा था जब जरा आराम से बैठे बस झट हुक्म हुआ भग पीसो यहॉ तक कि दिन रात भग पीसते पीसते जी घबडा गया था पर अब उससे भी बेफिक्र हूँ। यहॉ तो काम काज कुछ करना ही नहीं है बैठे बैठे खाना है हॉ भग की तकलीफ कहीं न हो जाय सो खैर आपकी कृपा होगी तो भग भी पीने को मिल ही जायगी। आज मैं अपने हाथ की बूटी पिलाऊँगा। देखो तो उसके आगे स्वर्ग कुछ मालूम पडता है ? और सब से भारी बात तो यह है कि मुझे कुछ लालच नहीं ! लालच के नाम ही से मैं कोसों भागता हूँ, नहीं तो नरेन्द्र की लाखों रूपये की सम्पत्ति जो मेरे आखों के सामने रखी हुई है ले लेता और मजे में राजा बन के बैठता ! मगर मैं सोचता हू कि राजा से हजार दर्जे बढकर खुशी से मैं अपनी जिदगी काट रहा हूँ तब कौन साला रुपये बटोर कर अपने ऊपर कम्बख्ती ले !!

पहरे – (सच है सच है (मन में) यह कुछ पागल भी मालूम होता है ! अगर नरेन्द्रसिह का खजाना इसे मालूम है तो फुसला कर पता ले लेना कोई बडी बात नहीं है।

बहादुर – क्यों भाई तुम भग पीते हो कि नहीं ?

पहरे — मुझ तो भग पिये विना किसी दिन चैन ही नहीं पडता !

बहादुर — (खुश होकर) वाह वाह वाह बडी खुशी की बात तुमने सुनाई तब तो हम तुम दोनों एक हैं बस आज से हमारे तुम्हार दोस्ती हो गई। मालूम होता है तुम भी ब्राह्मणया क्षत्री हा।

पहरे — हॉ मै क्षत्री हूँ।

वहादुर — आहा हा ! फिर क्या कहना है आओ जरा गल गल ता मिल लें !!

पहरे — (मन में) अव क्या है इससे नरेन्द्रसिह की दौलत का पता लगाना वहुत सहज है अगर वह दौलत मिल जाय तो मै जन्म भर कमाने से छुट्टी पाऊँ और अपने साथियों को अगूठा दिखा किनारे हो जाऊ !

बहादुर — वस बस सोचते क्या हो ! आआ दोस्त जल्दी गले मिलो अव जी नहीं मानता !!

पहरवाले न ताला खोला खुशी खुशी अन्दर गया और बहादुरसिह से खूब गल गल मिला।

वहादुर — (मन में) फॉसा साल को अव क्या है !!

पहर — भाई वहादुरसिह अव तो हमारे तुम्हारे दास्ती हो ही गई मगर इस दोस्ती को छिपाये रखना चाहिये क्योंकि हमारा सर्दार जान गया कि इन दोनों में दास्ती हो गई है तो झट मुझे यहॉ स हटा देगा और किसी दूसरे को यहॉबैठादेगा

बहादुर — उसकी एसी तैसी ! कभी मालूम ता हागा नहीं कि इन दोनों में दोस्ती है जब वह आवेगा तो घडी भर तक तुमका गालियॉ ही दिया करूँगा तव कैसे समझेगा ?

पहर — हॉ ठीक है ऐसा ही करना मै भी ऊपर क मन से तुम पर सख्त पहरा रक्खूँगा। अव उसके आने का वक्त हुआ है मैं फिर ताला वद करक वाहर जा वैटता हूँ।

वहादुर — जरूर जरूर ! बहुत जल्दी ! पर भला यह ता बता दो कि तुम्हारा नाम क्या है ?

पहरे — मेरा नाम भालासिह है।

वहादुर — वाह भाइ भालासिह हकीकत मे तुम बड ही भाले हा ! कुछ कपट जरा भी तुम्हारे चित्त में नहीं है !!

पहरेवाला भोलासिह वहादुरसिह से दुवारा गले गले मिलके वाहर वैठ गया साथ ही बहादुरसिह उससे धीरे धीरे वातचीत भी करने लगा।

वहादुर — क्यों दोस्त भालासिह ! क्या कभी सूरज या चन्द्रमा का दर्शन न कराओग ? इस अधेरे में बैठे बैठे तो कई दिन हो गय।

भोलासिह — दोस्त घवराओ मत वन पडा ता आज ही तुम्हें इस तहखान के बाहर ले चलूगा !

वहादुर — वाह वाह तव तो बडा मजा हो जायेगा !

भोला — क्यों दोस्त क्या ही अच्छी बात हा अगर नरन्द्रसिह की गाडी हुई दौलत हम तुम दोनों निकाल लें और जन्म भर खुशी से गुजारा करें !!

वहादुर — नहीं नहीं नहीं ऐसा न हागा ! मै लालच को अपने पास भी कभी न आने दूँगा ! हॉ तुमको अगर जरूरत हो तो चलो वता दूँ जितना मर्जी हो निकाल ला मगर मैं एक पैसा न छूऊँगा।

भोला — अच्छा हमीं का वता दा।

वहादुर — आज ही चला भला यह कौन सी बडी बात है ! और फिर वहॉ तो इतनी दौलत है कि कोई लाख दो लाख निकाल ले तो भी कुछ पता न लगे।

भाला — ओफ ओह ! अच्छा तो फिर आज ही मौका पाकर हम तुम निकल चलेंगे।

वहादुर — तुम्हारा अफसर तो अभी तक नहीं आया।

भाला — हॉ आज देर हो गई अब उसके आने की कोई उम्मीद भी नहीं है।

वहादुर — तो चलो फिर बाहर की हवा खायें।

भोला — घडी भर और ठहरो तब तक अगर न आया ता फिर आज न आवेगा हॉ यह तो कहो कि नरेन्द्र की दौलत गडी कहॉ है ?

वहादुर — जहा उसका मकान है उसके दो कोस पूरव हटके, मगर मुश्किल तो यह है कि मै कमजोर आदमी न मालूम कै दिन में वहा पहुँचूँगा !

भोला — नहीं नहीं, मै जाकर दो घोडे ल आऊँगा। हमार सर्दार के यहॉ जितन घोडे हैं सभी तज चलने वाले है सभों में से चुनकर दो घोडे ले आऊगा। कोई अगर हम लोगों का पीछा करेगा तो भी पकड न सकेगा। मगर तुम घोडे पर वैठ सकते हो कि नहीं ?

बहादुर — हॉ हॉ भला घोडे पर चढना मुझे न आवेगा !

थोडी दर क वाद भोलासिह उस तहखाने के बाहर निकला और आधी रात जाने के पहिले ही कसे कसाये दो उम्दे घोडे लिये हुए आ पहुँचा। दानों घोडों को तो वाहर एक दरख्त के साथ बॉधा और आप तहखाने में गया। बहादुरसिह को कैद से निकाल कर बाहर ले आया और दोनों आदमी घोडे पर सवार हो पश्चिम की तरफ रवाना हुए।

दो दिन तक दोनों जगह जगह पर टिकते और दम लते बराबर चले गए। तीसरे दिन य दानों एक छोटी सी नदी के किनारे पहुँचे जिसके दोनों तरफ घना जगल और किनारे पर बडे बड़े साखू क दरख्त थे। यहाँ पर वहादुरसिह ने अपना घोडा रोका और भालासिह से कहा–

"वस अव हम लोगों को इससे आगे न बढ़ना चाहिये। नरेन्द्र की जमा पूँजी इसी जगह से हाथ लगेगी।"

भोला – कहाँ पर है ?

बहादुर – पहिल यह वताओ कि जमीन कैसे खोदाग ? काई फरसा या कुदाली है !

भोला – फरसा या कुदाली तो साथ लाये नहीं। -

वहादुर – फिर आये क्या करने ? यहा ता आठ नौ पुरसा जमीन खोदनी पडगी।

भोला – वहाँ कहते तो हम यह भी साथ ले लिये होते !

वहादुर – क्या मैंने नही कहा था कि जमीन खाद के दौलत निकालनी पड़गी ?

भोला – हॉ हॉ कहा ता था, खैर अव क्या किया जाय ?

वहादुर – किया क्या जाय वस इस जगह (हाथ से वता कर) खोदा।

भाला – यहाँ से शहर भी ता पास ही मालूम हाता है कहा तो जाकर कुदाली ले आऊँ ?

बहादुर – अच्छा जाओ ले आओ। मगर सुनो तो क्या मुझे अकेला छाड जाओगे ?

भोला – जैसा कहा।

पाठक वहादुरसिह इस दुष्ट भोलासिह को धाखा द यहा तक ता ल आये। अब य दोनों अपनी अपनी चालाकी में लगे है। भोलासिह सोचता है कि कही ऐसा न हा कि वहादुरसिह घपला देकर चलता वन। पीछे हम किसी लायक न रहेंग, हमारी मडली वाले भी वईमान समझकर अपने साथ न मिलावेंग। मगर लालच न उस पूरे तौर स फसा लिया था और वह कुछ वेवकूफ भी था। उधर वहादुरसिह सोचते थे कि इस नालायक का यहाँ तक तो ले आय और हम हर तरह से भाग के जा भी सकत है मगर असल काम तो उन दानों औरतों को इन हरामजादों की कैद से छुड़ाना है। अगर यह लौट कर फिर वहाँ चला जायेगा जहाँ से आया है ता मुश्किल हागी अपने साथियों स कह सुन कर उन औरतों को किसी दूसरी जगह हटवा देगा ता वड़ा तरद्दुद हागा जिस तरह हो इस यहीं गिरफ्तार करना चाहिए।

लेकिन असल में वहादुरसिह इसे अपने कब्जे में ले ही आय क्योंकि इस वक्त जहा दानों खड है यह वह जगह है जहाँ नरेन्द्र के छोटे भाई घोडे पर सवार होकर रोज आया करते हैं और यहा से नरेन्द्र का मकान भी बहुत करीब है।

वहादुरसिह और भालासिह खड वातचीत कर ही रहे थे कि सामने से एक सवार हाथ में नजा लिए आता हुआ दिखाई पड़ा जा वहादुरसिह को देख तेजी के साथ लपक कर इनके पास पहुँचा और बोला, "वहादुर ! तू कहाँ चला गया था ? और यहाँ खडा क्या कर रहा है ! कुछ भाई नरन्द का पता भी लगा ?

यही नरेन्द्रसिह के छोट भाइ जगजीतसिह है। उम्र इनकी अभी अट्ठारह वष की है। खूबसूरत और नाजुक हाने पर भी यह अपने शरीर को वहुत मजवूत बनाये रहते है। घोडे पर चढ़न हर्वा चलान और शिकार खेलने का शौक लड़कपन ही से है। इसक सिवाय हर तरह की विद्या में अपने को निपुण वनाये रहने का भी वहुत ज्यादा ध्यान रहता है। यह शौकीन भी वहुत थे मगर जब स नरन्दसिह चले गये हैं तव से इनका अपन शरीर का ध्यान ही जाता रहा। अच्छे अच्छे कपड़े पहिरने शिकार खेलन घूमन फिरने वल्कि दुनिया स भी य उदास हा गय। दिन रात यही सोच है कि भाई नरेन्द्र मुझे क्यों छोड़ गये ! क्योंकि इनकी और नरेन्द की मुहब्बत को जो कोई देखता वह यही कहता कि इससे वढ के भाइयों का प्रेम दुनिया में न हागा। इस समय वह घोडे पर सवार हवा खाने या शिकार खलने नहीं आये है। यहाँ स पास ही एक बनदेवी का स्थान है उनके नित्य दर्शन का इन्होंने प्रण वॉधा हुआ है। कुछ दिन रहे घोड़े पर सवार हा अपने घर से दो कोस चल कर राज वनदेवी का दर्शन करने आत है। जव तक घर रहेंगे नेम न टूटेगा, चाहे पानी वरसे, पत्थर पड आफत आवे मगर यह विना दर्शन किये न रहेंग। यही सवव है कि उनसे मुलाकात होने की उम्मीद में बहादुरसिह उनके रास्ते पर आ जमा हे।

वहादुरसिह ने कहा "हा हा पता जानते है (भाला की तरफ हाथ स इशारा करके) मगर पहिल इस दुष्ट को पकडो जिसकी वदौलत नरेन्द्रसिह सकट में पडे हैं !"

वहादुर की बात सुनते ही वह नया वहादुर भोलासिह की ओर झुका।

अव भालासिह को मालूम हा गया कि वहादुरसिह उसक साथ चालाकी खेल गये धोखा देकर यहाँ तक ले आये और अव फसाया चाहते है।

उनको अपनी तरफ लपकते देख भालासिह ने झट म्यान स तलवार खेंच ली और इस जोर से उनके ऊपर चलाई कि अगर वह चालाकी से पैंतरा वदल कर हट न जाते तो साफ दो टुकडे नजर आते। मगर इसक वाद उन्होंने भी अपने नजे को घुमा कर वडी खूवसूरती के साथ एक वार भोलासिह की टाग पर किया जिसके लगने से वह खडा न रह सका और फौरन जमीन पर गिर पडा। जमीन पर गिरते ही उसे कैद कर लिया और कमरवन्द खोल उसके हाथ पैर कस एक पेड के साथ वॉध दिया। इसक वाद वहादुरसिह से वोले "हॉ अव कहो क्या हाल है ! हमारे नरेन्द्र भैया कहाँ है और तुम उनसे

कैसे मिले ?

वहादुरसिह ने कहा "नरेन्द्रसिह के चले जाने के वाद उदास होकर बिना सर्कार से कहे मैं भी उनकी खोज में निकला। कई दिन तक खोजता फिरता एक नदी के किनारे पहुँचा। दूर से एक छोटी सी किश्ती आती दिखाई पडी, डर के मारे मैं एक घने पेड पर चढ गया जो उसी नदी के किनारे पर था। जब वह किश्ती पास आई तव मालूम हुआ कि हमारे वॉके नरन्दसिह दो खूवसूरत और जवान औरतों को जो सिर से पैर तक जडाऊ जेवरों से लदी हुई थीं साथ वैठाये हॅसते वोलते चले आ रहे हैं। देखते ही मेरी तवीयत खुश हो गई। मैंने पुकारा, जब वह किनारे पर आये मुलाकात हुई मैं खुशी खुशी उनके साथ हो लिया।"

सवेरा होन पर किश्ती किनारे लगाइ गई। मं भ्रग पीसने लगा उन दोनों औरतों को मेरे सपुर्द कर नरेन्द्रसिह दूसरी नाव किराये करने चले गये जो वडी थी और वहा से दिखाई भी दे रही थी।"

नरेन्द्रसिह के आन में बहुत दर हुई इधर कई डाकुओं ने आकर हम लोगों को गिरफ्तार कर लिया और हमारी ऑखों पर पट्टी वॉध अपने घर ले गये। यह तो मालूम नहीं कि उन दोनों औरतों को कहा कैद किया और उन पर क्या गुजरी हॉ मुझे एक जल खाने में कैद कर दिया और पहरे पर इस नालायक को वैठा दिया। यह नरेन्द्रसिह की दौलत लेने मेरे साथ आया है पूछो इस हरामजादे से कि इससे मुझसे कब की मुहब्वत थी जो वेचारे नरेन्द्रसिह की दौलत मैं इसे देता !!"

इसके वाद भालासिह को धोखा देने का हाल वहादुरसिह ने सुनाया जिसे सुन जगजीतसिह बहुत ही हॅसे। भोलासिह पेड के साथ वॅधा हुआ सुन सुन कर चिढता और जी ही जी में गालियॉ देता था।

जगजीतसिह ने भालासिह से पूछा तुम कौन हा तुम्हारे सगी साथी कहॉ रहते हैं और उन दोनों औरतों को कहॉ कैद कर रक्खा है ? मगर सिवाय चुप रहने के भोलासिह एक वात भी न वोला, एक दम गूगा वन वैठा। पूछते पूछते थक गये मगर अपनी बात का कुछ भी जवाब न पाया वल्कि गुस्से में आकर भोलासिह को कई लात भी लगाये मगर उसका भी कोई नतीजा न निकला। आखिर लाचार होकर वहादुर से बोले–

'तुम इसी जगह ठहरा मैं इस नालायक को ले जाकर कैदखाने में डाल आता हूँ और खान पीने के सामान के साथ दो चार साथियों को भी ले आता हूँ तव नरेन्द भाई का पता लगाने और उन दोनों औरतों को डाकुओं की कैद से छुडाने के लिये चलूँगा।'

वहादुरसिह ने कहा बहुत अच्छा।"

शाम होते होते अपने दो तीन साथियो के साथ कुछ खाने पीने का सामान लिए और सफर की तैयारी किये हुए जगजीतसिह फिर आ पहुचे। वहादुरसिह भी भूख से दु खी हो रहा था। उसे भोजन कराया इसके वाद उससे कहा 'तुम अब घर जाओ और हम लोग नरेन्द्रसिह की खोज में जाते हैं क्योंकि तुम न तो हम लोगों के साथ ही चल सकते हो और न लडने भिडने में ही साथ दे सकते हो।

वहादुरसिह ने कहा "इसमें काई शक नही है कि मैं आपके बरावर नहीं चल सकता और लडाई से तो सौ कोस भागता हूँ मगर नरेन्द्रसिह को खोकर मुझसे घर पर न बैठा जायगा तुम लोग अपना काम करो मैं भी चुपचाप इधर उधर घूम कर उन्हें खोजूँगा।

उन्होंने जवाव दिया, 'खैर जो मुनासिब मालूम हो करो मगर मुझे ठीक ठीक पता दो कि उन्हें तुमने कहॉ छोडा और तुम कहाँ कैद रहे ?'

वहादुरसिह जगजीतसिह को पूरा पूरा पता बता कर वहॉ से दूसरी तरफ़ रवाना हो गया।

सातवां बयान

आधी रात का वक्त है। चॉदनी खूब खिली हुई है। इस खूबसूरत और ऊॅचे मकान के पिछवाडे वाली दीवार पर चॉदनी पडने से साफ मालूम होता है कि इसमें तीन वडी वडी दरीचिया हैं और बीच वाली दरीची (खिडकी) में दो औरतें वैठी आपुस में वातें कर रही हैं। नीचे की तरफ एक पाईं बाग हे जिसमें कि खुशबूदार फूलों की महक ठण्डी ठण्डी हवा के साथ मिल कर इस दरीची में आ रही है जहॉ वे औरतें वैठी वातें करती हुई घडी घडी उस वाग की तरफ देखती और ऊॅची सास लेती हैं।

इन दोनों में से एक की उम्र तेरह चौदह वर्ष के लगभग होगी। चॉद सा गोरा मुख देखने से यही मालूम होता था कि इस मामूली चॉद के अलावे यह दूसरा चॉद इस मकान की दरीची से निकला चाहता है। दर्वाजे के साथ ढासना लगाये अपना दाहिना हाथ दरीची के वाहर निकाले है जिसमें अनमोल हीरे की जडाऊ चूडियॉ और अगूठियॉ पडी हुई हैं। वात वात में ऊॅची सॉस लेती और ऑसू टपका टपका कर अपने ठीक सामने की तरफ वैठी हुई उस दूसरी औरत से वातें कर रही है जो खूवसूरती और गहने कपडे के लेहाज स इसकी प्यारी सखी मालूम हाती है।

कुछ देर तक दोनों चुप रहीं, इसके बाद उस चन्दमुखी ने अपनी सखी की तरफ मुह करके कहा--
सखी तारा, अब मैं क्या करूं ?

तारा - प्यारी रम्भा तुम तो नाहक जिद्द करती हो ! अगर अपने पिता का कहना मान लो तो कोई हर्ज नहीं है।

रम्भा -- नहीं बहिन ऐसा न होगा। धर्म तो बिगडेहीगा ऊपर से इसमें बदनामी भी बडी होगी। दुनिया क्या कहेगी कि रम्भा की शादी नरेन्द्रसिह से लगी तिलक चढ चुका था बारात निकल चुकी थी मगर नरन्दसिंह ने ब्याह न किया बारात में से भाग गये, तब रम्भा की दूसरी शादी की गई। क्या मैं दो शादी वाली न कहलाऊँगी ?

तारा -- सुनते हैं नरेन्द्र तुम्हारे लायक था भी नहीं, बड़ा ही बदसूरत और एक टाग से लगडा भी था फिर क्यों उसके लिये जिद्द करती हो ?

रम्भा -- सखी जो हो लगडा लूला अन्धा कोढी चाहे जैसा भी हो आखिर तो मेरा पति हो चुका है ! अब मैं दूसरी जगह शादी न करने की। पण्डित लोग लाख कसम खायें कि इसमें कोई दोष नहीं मगर मैं एक न सुनूगी। ज्यादे जिद्द करेंगे तो बाप माँ भाई इत्यादि सभी को छोड कहीं चली जाऊँगी या अपनी जान ही दे दूँगी।

तारा -- सखी सच पूछो तो बात सही है जिसके हुए उसके हुए मगर अफसोस तो यह है कि नरेन्दसिह कहते हैं कि मैं जन्म भर शादी ही न करूगा चाहे जो हो।

रम्भा -- अगर उनकी ऐसी ही मर्जी है तो क्या हर्ज है मैं भी उनके नाम पर जोगिन बन जन्म गवाँउगी। मगर मुझे निश्चय है कि अगर मेरा सामना नरेन्दसिह से हो जावेगा और मैं हाथ बाध अपने को उनके पैरों में डाल दूगी तो वह मुझको कभी न त्यागेंगे। मगर क्या करूँ ? कहा ढूढू ? मैं तो उन्हें पहिचानती तक नहीं !

तारा -- बहिन अब मुझे निश्चय हो गया कि तुम अपनी जिद्द न छोडोगी अपने धर्म को न बिगाडोगी। खैर तो फिर मैं भी बाप मा को छोड तुम्हारे दुख सुख की साथी बनूँगी क्योंकि अब यहा रहना ठीक नहीं है।

रम्भा -- (रोकर) प्यारी सखी तुम मेरे साथ क्यों अपनी जिन्दगी बिगाडती हो ?

तारा -- (रोकर और हाथ जोड कर) बहिन क्या तुम समझती हो कि तुमसे अलग हो कर मैं सुखी रहूँगी ?

रम्भा -- नहीं मैं तो खैर तुम्हारी जैसी मर्जी !!

तारा -- मैं कभी तेरा साथ नहीं छोड सकती।

रम्भा -- मैं तो आज इस शहर का छोड देना चाहती हूँ।

तारा -- अच्छा है तो चलो फिर, मैं भी तैयार बैठी हूँ।

रम्भा -- भला यह तो बताओ मुझे किस भेष में यहाँ से निकलना चाहिए ?

तारा -- इन जेवरों और कपडों को उतार देना चाहिए जो हम लोग पहिरे हुए हैं और मैली धोती और एक चादर ले यहाँ से चल देना चाहिए।

रम्भा -- मेरी समझ में एक एक पोशाक मर्दानी भी साथ रख लेना मुनासिब होगा।

तारा -- जरूर ऐसा करना चाहिए कुछ दूर जा कर हम लोग मर्दाने भेष में सफर करेंगे।

रम्भा -- तो अब देर करना मुनासिब नहीं,है चलो फिर।

तारा -- मगर मेरी समझ में आज चलना ठीक नहीं होगा।

रम्भा -- क्यों ?

तारा -- ईश्वर की कृपा से अगर नरेन्दसिह कहीं मिले भी तो हम लोग उनको कैसे पहिचानेंगे ? अगर न पहिचान सके और वह मिल कर भी फिर जुदा हो गये तो बिलकुल मेहनत बर्बाद हो जायगी और दौडधूप में ही जिन्दगी बीत जायेगी।

रम्भा -- फिर क्या करना चाहिए ?

तारा -- तुम्हारी माँ के पास नरेन्दसिह की तस्वीर है, किसी तरह उसे ले लेना चाहिए।

रम्भा -- ऐसा ! मगर मुझे कुछ मालूम नहीं कि वह तस्वीर कब आई और कहाँ है।

तारा -- तुम्हारी शादी पक्की होने के पहिले ही वह तस्वीर तुम्हारे पिता लाये थे जो अभी तक माँ के पास है।

रम्भा -- तो उसे किस तरह लोगी ?

तारा -- कल जिस तरह बनेगा उस तस्वीर को मैं जरूर गायब करूँगी, हाँ एक काम और भी करना चाहिए।

रम्भा -- वह क्या !

तारा -- एक नामी खानदान की लडकी का इस तरह यकायक अपने घर से बाहर निकलना ठीक नहीं है, इसमें बड़ी बदनामी होगी। चाहे तुम कितनी ही नेक और पतिव्रता क्यों न बनो मगर कोई भी तुम्हारी नेक चलनी को न मानेगा, यहाँ तक कि नरेन्दसिह का भी ताना मारने की जगह मिल जायगी, इससे जरूर किसी मर्द को साथ ले लेना चहिए।

रम्भा -- ऐसा कौन है जो मेरे पिता से बरखिलाफ होकर ऐसे वक्त में हम लोगों का साथ देगा और जिसके साथ बाहर जाने में बदनामी भी न होगी ?

तारा -- तुम्हारा चचेरा भाई अर्जुनसिह अगर साथ चले तो अच्छी बात है, उसके सग जाने में किसी तरह की

बदनामी नहीं हो सकती। सिवाय इसके वह दिलेर और वहादुर भी है दस बीस दुश्मनों का मुकाविला करना उसके लिए अदनी वात है, और वह साथ चलने पर राजी भी हो जायेगा क्योंकि तुम्हें बहुत मानता है और तुम्हारी इस दूसरी शादी की वातचीत स उसे भी रज है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि तुम्हें किसी तरह से दु ख हो।

रम्भा – वात तो बहुत ठीक कही मुझे आशा है कि अर्जुनसिह अवश्य मेरा साथ देगा अच्छा कल सवेर जव वह मामूली समय पर मुझसे मिलने आवेगा तव मैं उससे वातें करूँगी, वह नरेन्द्रसिह को पहिचानता भी है, मगर तुम वह तस्वीर लने से न चूकना और जिस तरह वने कल दिन भर में उसका वन्दोवस्त जरूर करना।

तारा – ऐसा ही होगा।

इसके वाद वे दोनों उसी कमरे में अपनी अपनी चारपाई पर सो रहीं। तारा को तो नींद आ गई मगर रम्भा की आख विलकुल न लगी। रात भर घडियाल की आवाज गिना की और अपने जाने की तैयारी तथा दूसरी वातें सोचती रही। सवेरा हाते ही वह चारपाई स उठी तारा को भी जगाया, हाथ मुँह धो कर बैठी और अपन भाई अर्जुनसिह के आने की राह देखने लगी।

थोडी ही देर वाद अर्जुनसिह भी आ पहुँचे। रम्भा को रोज से ज्यादे उदास देख बोले– 'वहिन आज तुम बहुत ज्यादा उदास मालूम होती हो ! इसका सबब तो मै जानता ही हूँ क्यों पूछूँ–तो भी कहता हूँ कि सब्र करो और घबडाओ मत, देखो ईश्वर क्या करता है।

रम्भा – क्या करु भैया, अव तो मैं अपनी जान देने को तैयार हो चुकी। पिता मानते नहीं मा कुछ सुनती नहीं तुम कुछ मदद करत ही नहीं फिर जी ही के क्या (आसू बहाती है)।

अर्जुन – (अपने रूमाल स रम्भा के आसू पोंछ कर) वहिन मै तो कई दफे मना कर चुका हूँ मगर लोभी पण्डितों के फ़ेर में पड के कोई सुनता ही नहीं तो क्या करूँ ? अब जो तुम कहो मैं करने को तैयार हूँ। अपने जीते जी किसी तरह की तकलीफ तुमको न होने दूँगा ?

रम्भा – क्या मेरा कहना तुम मानोगे ?

अर्जुन – जरूर मानूँगा।

रम्भा – अच्छा मुझे इन सभों से चुपचाप काशी पहुँचा दो मैं वहा विश्वनाथ के चरणों में अपना पतिव्रत निबाहूँगी और देखूँगी कि माई अन्नपूर्णा मेरी कुछ सुनती है या नहीं।

अर्जुन – क्या हर्ज है चलो तुमको आज ही यहा से ले चलता हूँ, कहो तो किसी और को भी साथ लेता चलूँ ?

रम्भा – तारा मेरे दु ख सुख की साथी होकर चलेगी और किसी को साथ लेना मुनासिव न होगा।

अर्जुन – (तारा की तरफ देख कर) क्यों क्या तुम चलोगी ?

तारा – जरूर चलूँगी।

अर्जुन – अच्छा ता फिर सवारी का वन्दोवस्त किया जाय ?

रम्भा – तुम जानते ही हो कि हम लोगों को घाडे पर चढने का खूब मोहावरा है फिर भागने के लिए इससे बढकर और कौन सवारी होगी ?

अर्जुन – अच्छा तो फिर घोडे का ही वन्दोवस्त हो जायगा। अव मैं जाता हूँ क्योंकि इसी वक्त से फिक्र करनी होगी

तारा – तुम्हारे पास नरेन्द्रसिह की तस्वीर भी तो होगी ?

अर्जुन – हॉ है तो।

तारा – मुझे दा।

अर्जुन – अच्छा मेरे साथ आओ मैं तुम्हें दूँ।

तारा – (भौहें मडाड कर) वाह ! तुम्हारे साथ वहॉ मर्दो में चलूँ !!

अर्जुन – (हॅस कर) अच्छा मै अपने साथ लेता चलूँगा रास्ते में ले लेना।

तारा – सो हो सकता है।

अर्जुन – अच्छा तो मैं जाता हूँ, अव आधी रात को मुलाकात होगी।

अर्जुनसिह वहा से रवाना हुए और अपने घर जाकर छिपे छिपे सफर की तैयारी करने लगे।

आठवां बयान

शाम होते ही रम्भा और तारा ने भी अपनी तैयारी इस तरह पर कर डाली कि किसी लौंडी तक को मालूम न हुआ। इसके वाद कुछ खा पीकर सोने के कमरे में जा अपने अपने पलग पर सो रहीं। पर नींद काहे को आती थी यही सोच रही थीं कि अर्जुनसिह आवें और हम लोग यहॉ स चलते वनें।

आधी रात के वाद वाहर से किसी के पैर की चाप मालूम हुई। दोनों उसी तरफ देखने लगीं। अर्जुनसिह सामने आ खडे हुए जिनको देखते ही दोनों उठ बैठीं और तारा ने पूछा, 'क्या आप तैयार हो आये ? इसके जवाव में अर्जुनसिह ने कहा 'हॉ सब दुरुस्त है अव देर मत करो।

रम्भा – यहा आती समय पहरे वालों ने तो जरूर टोका होगा और जाती समय भी टोकेंगे !

अर्जुन – क्या पहरे वालों की इतनी मजाल हो गई कि मुझे आते जाते रोक टोक करें ? हॉ जाने के बाद जिसका जी चाहे शिकायत करे। अच्छा अब देर मत करा जल्दी चलो।

रम्भा और तारा दोनों को साथ लेकर अर्जुनसिह घर स बाहर निकले और पैदल ही मैदान की तरफ चले। थोडी दूर जा कर इन लोगों को एक पुराना बड का पड मिला जिसके नीचे तीन साईस कसे कसाये घोडे लिये अर्जुनसिह के आन की राह देख रहे थे।

तीनों आदमी घोडे पर सवार हुए। अर्जुनसिह ने तीनों साईसों से कहा अब तुम लाग अपने अपन घर जाओ, जब हम आवेंगे तब बुला लेंगे। घर बैठे तुम लागों के खाने को पहुँचा करेगा।

तीनों साईस सलाम कर बिदा हुए और इन लोगों ने पश्चिम का रास्ता पकडा।

जब तक रात रही तीनों घोडा फेंके चल गये। जब आस्मान पर सफेदी दिखाई दने लगी तब अर्जुनसिह न घोडे की बाग रोकी और रम्भा की तरफ देख कर कहा, 'बहिन, अब हम लोगों को यहॉ कुछ देर के लिए रुक जाना चहिए। अदाज से मालूम होता हे कि मुसाफिरों के टिकने का स्थान अर्थात् चट्टी (पडाव) अब बहुत करीब है, मगर हम लोग आगे चल कर किसी दूसरी चट्टी में डेरा डालेंगे यहा न ठहरेंगे, इसलिए इसी जगह रुक कर घोडों को ठण्ढा कर लेना चाहिए। तुम दोनों के बदन के लायक मर्दानी पोशाक भी मैं लेता आया हूँ जो तुम लोगों के घाडों की जीन के साथ असबाब में पीछे की तरफ बँधी हुई है मुनासिब है कि तुम दोनों भी अपनी मर्दानी सूरत बना लो।'

अर्जुनसिह की बात तारा और रम्भा न भी पसन्द की और घोडे स उतर पडीं। जीन खोल घोडों का ठण्डा होन के लिये छोडा और खुद भी जनानी पोशाक उतार मर्दाने कपड़े पहिर कर तैयार हो गईं।

तीनों आदमी चारजामा बिछा कर पेड के नीचे बैठ गये। कुछ देर बाद रम्भा का इशारा पा तारा न अर्जुनसिह से कहा आपने वादा किया था कि नरेन्द्रसिह की तस्वीर मुझे दिखावेंगे ?

अर्जुनसिह न कहा, हॉ हॉ मैं नरेन्द्रसिह की तस्वीर लेता आया हूँ, लो दखो। यह कह अपने जेब स तस्वीर निकाल तारा के हाथ में दे दी और आप घोड़ों को कसने लगे।

तारा ने रम्भा के हाथ में तस्वीर दकर कहा 'देखा बहिन एसे खूबसूरत और दिलावर नरेन्द्रसिह के बारे में लोगों ने कैसी कैसी गप्पें उडाई है !!

तस्वीर दखते ही रम्भा की आखें डबडबा आईं और जी बेचैन हो गया। अपने को बडी मुश्किल से सम्हाला और तस्वीर तारा के हाथ में देकर बोली 'देखना चाहिए इनकी बदौलत मेरी क्या गति होती है !!

अर्जुनसिह दो घाडों पर जीन कस चुके जब अपनी सवारी का घोडा कसने लगे तो यकायक कुछ देख कर घोडा भडका और अर्जुनसिह के हाथ से छूट मैदान की तरफ भागा वे भी उसके पीछे दौडे।

रम्भा और तारा यह देख उठ खडी हुईं और उस तरफ देखन लगीं जिधर घोडे क पीछे पीछे अर्जुनसिह दौड गये थे। घोडा चक्कर लगा लगा कर दौडता और कभी खड़ा हाकर पीछे की तरफ देखता, जब अर्जुनसिह उसके पास पहुँचते तो फिर तेजी के साथ भागता था।

दिन बहुत चढ आया मगर वह घोडा अर्जुनसिह के हाथ न लगा यहा तक कि देखत देखते वे इन दोनों की नजरों से गायब हो गये। आखिर घबडा कर रम्भा और तारा दोनों घोड़ों पर सवार हुईं और उसी तरफ चलीं जिधर घोडे के पीछे अर्जुनसिह गये थे, मगर इनका मतलब सिद्ध न हुआ दिन भर भूखे प्यासे दौड़ने पर भी अर्जुनसिह से मुलाकात न हुई और दोनों एक बडे भयानक मैदान में पहाडी के नीचे पहुँच कर रुक गईं।

लाचार दोनों औरतें घोडों से नीचे उतरीं। घोडों की पीठ खाली कर लम्बी बागडोर लगा पत्थर से अटका चरने के लिये छोड दिया। और खुद एक चिकने पत्थर पर बैठ रोने और अफसोस करने लगीं।

रम्भा – देखो बहिन, बुरी किस्मत इसे कहते हैं !

तारा – परमेश्वर की मरजी न मालूम कैसी है ! इस वक्त हमलोग कैसी विवश हो रही है !

रम्भा – अर्जुनसिह के हाथ अगर घोड़ा लग भी गया होगा तो वह उस ठिकाने जाकर हम लोगों को न देख कितना घबडाये होंगे।

तारा – लेकिन अब हम लोगों का वहा तक पहुँचना मुश्किल है।

रम्भा – मालूम ही नहीं कि घूमते फिरते कहा आ गये ! अब भूख के मारे जी बेचैन हो रहा है।

तारा – मुझे विश्वास है कि जीन की खुर्जी में थोडा बहुत मवा अर्जुनसिह ने जरूर रखवा दिया होगा।

रम्भा – देखो तो कुछ है कि नहीं ?

तारा ने उठ कर दोनों घोडों की जीन की तलाशी ली, लगभग दो सेर के मेवा दोनों में पाया जिससे वह बहुत खुश हुई और पुकार कर रम्भा से बोली–

'हम दोनों दुखियों के खाने लायक बल्कि चार पाच दिन तक जान बचाने लायक मेवा इसमें हैं।'

रम्भा – कहीं पानी मिले तो पहिले मुँह धो लेना चाहिए !

तारा – इस पहाड की सब्जी की तरफ देख कर मैं समझती हूँ कि इसके ऊपर पानी का चश्मा जरूर होगा।

रम्भा – अभी तो दिन भी बहुत है चलो पहाडी के ऊपर चलें।

रम्भा और तारा दोनों ने मेवा साथ लिया और पहाडी के ऊपर चढने लगीं। थोडी दूर ऊपर जाकर पानी के कई सोते इनको मिले। एक झरने के पास बैठ कर इन लोगों ने मुँह धोया और किफायत के साथ थोडा सा मेवा खा कर जी ठण्डा किया जिसके बाद फिर पहाड के ऊपर चढने लगीं यहा तक कि शाम होते होते चोटी पर जा पहुँचीं।

पहाड के ऊपर एक खूबसूरत इमारत और उसके पास ही दाहिनी तरफ हट कर कोस भर की दूरी पर एक छोटा सा शहर भी दिखाई पडा।

रम्भा ने कहा तारा हम लोग इस शहर में चल के नरेन्द्रसिंह को जरूर ढूँढेंगे। देखो लोगों ने उनके बारे में क्या क्या गप्पें उडाई थीं कि लँगड़े लूले काने और बड़े ही बदसूरत है। लेकिन अगर वैसे भी होते तो क्या था ? मेरा सम्बन्ध तो उनसे हो चुका था मेरे पति कहला चुके थे अस्तु मेरे लिए परमेश्वर वही है चाहे जैसे हों।

तारा – उन लोगों की जुबान में सॉप डसे जिन्होंने नरेन्द्रसिंह के बारे में ऐसा कहा था। मैं तो कह सकती हूँ कि ऐसा खूबसूरत और बहादुर दुनिया भर में न होगा। तुम बडी किस्मतवर हो

रम्भा – आज की रात इस पहाड पर काट कर कल उस शहर में जरूर चलना चाहिये।

तारा – ऐसा ही करेंगे।

रम्भा – मैं समझती हूँ कि इस मर्दानी सूरत के बदले हम लोग फकीरी हालत में रह कर अपने को इससे ज्यादे छिपा सकेंगे।

तारा – इसमें तो कोई शक नहीं कल उस शहर में चल कर बाजार से कपडे खरीद फकीरी ढंग की पोशाक दुरूस्त करा लूँगी।

ये दोनों बैठी बातें कर ही रही थीं कि आस्मान में काली काली घटा घिर आई। चारों तरफ अंधेरा छा गया पानी बरसने लगा बिजली चमकने और गरजने लगी जिसकी डरावनी आवाज पहाडों से टक्कर खा कर दसगुनी हो इन दोनों बेचारियों के जी को दहलाने लगी। दोनों उठ कर उस दालान में चली गई जिसका हाल ऊपर लिख चुके हैं।

रात भर पानी बरसता रहा और वे दोनों उसी दालान में बैठी अपनी अपनी किस्मत की शिकायत करती रहीं। जब सवेरा हुआ पानी बरसना बन्द हुआ और धूप निकल आई। वे दोनों भी उठीं और सवेरे के जरूरी कामों से छुट्टी पा एक चश्मे में हाथ मुँह धो कुछ मेवा खा कर शहर की तरफ चलने की तैयारी कर दी। तारा ने कहा कुछ मालूम नहीं हमारे दोनों घोडों पर क्या गुजरी रात भर पानी में दुःख उठा कर मर गये या जीते हैं।

रम्भा – वे घोडे अब वहाँ न होंगे किसी पेड से तो वे बंधे नहीं थे जब बदन पर पानी पडा होगा किसी तरफ भाग गये होंगे। फिर हम लोगों को भी तो अब घोडों की जरूरत नहीं है पैदल चलना ठीक होगा जहाँ मन में आया गए जहाँ चाहा पड रहे मगर हा पहाडी के नीचे चल कर उन घोडों को एक बार देखना जरूर चाहिए। अगर अभी भी बँधे हों तो खोल देना ही उचित होगा।

तारा – मेरी भी यही राय है।

वे दोनों पहाडी के नीचे उतरीं मगर घोडों को वहाँ न पाया। रम्भा ने कहा सखी मैं कहती थी कि दोनों घोडे भाग गये होंगे। चलो अच्छा ही हुआ बखेडा छूटा अब यहा ठहरने की कोई जरूरत नहीं।

इसके बाद वे दोनों शहर की तरफ रवाना हुईं।

हाय आज तक जो बडे लाड और प्यार से पली थीं उसको धर्म के कठिन रास्ते का दुःख भोगना पडा। अभी तक जिसको जमाने की गर्म सर्द हवा छू नहीं गई थी उसको आँधी और लू के झपेटे बर्दास्त करने पडे। चन्द्रमा की कडी चाँदनी से जिसके सर में दर्द होता था उस कडी धूप में मक्खन से भी कोमल अपने बदन को पिघलाना पडा। जो कभी दस कदम भी जबर्दस्ती से नहीं चलाई गई थी आज वह कोसों मिट्टी फॉकने के लिए मजबूर की गई। जो भोजन करने के लिए दिन भर में दस दफे पूछी जाती थी उसे कोई मुट्ठी भर अन्न देने वाला भी न रहा ! जिसकी आँख डबडबाई हुई देख लोगों का जी बेचैन हो जाता था उसके आसू पोंछने वाला आज कोई नहीं ! जो हा नरेन्द्रसिंह की बदौलत रम्भा को आज यह सब दुःख भोगने पडे। मगर धन्य है बेचारी तारा को जो ऐसे समय में भी अपनी प्यारी सखी का साथ नहीं छोडती। यह सब प्रेम की बात है नहीं तो कौन किसे पूछता है।

थोडी थोडी दूर पर धूप से घबडा कर किसी पेड के नीचे ठहरती दम ले कर चलती आसुओं से अपने चेहरे को तर करती दम दम भर पर 'हाय' कह के जी के बुखार को निकालती हुई दिन ढलते ढलते सखी तारा को साथ लिए रम्भा उस शहर के पास जा पहुँची जिसे पहाडी के ऊपर से देखा था।

शहर की बाहरी हद्द पर एक सुन्दर पहाडी थी जिसके नीचे हाथों में लट्ठ लिये बदमाशी ठाट के कई आदमी दिखाई पडे। तारा ने चाहा कि किसी से इस शहर का नाम पूछे मगर वे सब के सब बिना कहे इन दोनों के पास पहुँचे और इन

दोनों से तरह तरह की बातें पूछने लगे।

कोई कहता है, 'क्यों साहब, आप किसके यहाँ जायेंगे ? हम लोग गयावाल के नौकर हैं। यहाँ आपका पण्डा कौन है ? कोई कहता है "लालाजी भैया के हम आदमी है, हमारे साथ चलिये।" कोई आपुस में चिल्ला कर कहता है– 'अजी यह पुरविये हैं हमारे जजमान हैं चलो हटो, तुम झूठे बखेडा मचाये हुए हो।" कोई इन दोनों के पास आ के कहता है कि आप मेरे यहाँ चलिये, वहा टिकने का बड़ा आराम है और हम यात्रा पिण्डा भी बहुत अच्छी तरह करा देंगे, आइये यह रामसिला है, पहिले इसी का दर्शन करना चाहिए नहीं तो यात्रा सफल न होगी। कोई कहता है, "अभी तो यह आप ही लड़के है पिण्डा क्या देंगे !

इसी तरह उन लोगों ने चारों तरफ से रम्भा और तारा को घेर लिया और अपनी अपनी बकवाद करने लगे। तारा ने उन सभों से कहा कि हम लोग यात्री नहीं है सौदागर के लडके है।' मगर वे लोग कब मानने वाले थे, इन दोनों को यहा तक तग किया कि दोनों की आँखों में आसू डबडबा आये और तारा ने झुझला कर कहा "तुम लोग बडे शैतान हो बात नहीं मानते और बेफायदे तग कर रहे हो। हम लोग मुसलमान होकर पिण्डा सिण्डा क्यों देने लगे ?'

मुसलमान का नाम सुनकर वे लोग पीछे हटे और वेहूदी बातों के साथ आवाजें कसने लगे। ये दोनों आगे बढी तब तारा ने कहा 'देखो वहिन ये लोग यात्रियों को कितना दिक्क करते है। अगर हम लोग अपने को मुसलमान न बताते तो इन लोगों के हाथ से बहुत तग होते तिस पर भी देखो अव ये लोग गालियाँ देने पर उतारू हुए है।'

रम्भा ने कहा चुपचाप चली चलो, नालायकों को वकने दो। अब मालूम हुआ कि यह गयाजी है, ताज्जुब नहीं कि यहा नरेंद्रसिह से मुलाकात हो जाय। इतना कह रम्भा ने फिर कर देखा तो उन्ही शैतानों में से दो आदमियों को पीछे पीछे आते पाया। यह देख रम्भा बहुत घबडाई और तारा से बोली, अभी दुष्ट लोग पीछा किये चले ही आ रहे हैं ! बडी मुश्किल हुई। इन लोगों के मारे कहीं यह भेद न खुल जाय कि हम लोग औरत हैं और मर्दानी पोशाक केवल अपने को छिपाने के लिए पहिरे हैं। अगर ऐसा हुआ तो इज्जत पर आ बनेगी और अपने हाथों अपना गला काटना पडेगा !!

तारा बोली "खैर कदम बढाये चलो। राम करे सो होय ! कहीं सराय में चल कर डेरा डालेंगे, फिर देखा जायगा।

पहर भर दिन बाकी था जब ये दोनों शहर में घुस कर खोजती फिरती एक सराय के दर्वाजे पर पहुँची। भठियारी आगे आकर इन लोगों को खतिरदारी के साथ सराय में ले गई, एक अच्छी साफ कोठरी इन दोनों को रहने के लिए दी और चारपाई तथा बिछौने का इन्तजाम करके पूछा अगर कुछ बाजार से लाने की जरूरत हो तो ले आऊँ ?' तारा ने कहा 'नहीं इस वक्त किसी चीज की जरूरत नहीं है। यह सुन भठियारी वहाँ से हट दूसरे मुसाफिरों की टोह में सराय से बाहर चली गई मगर इन दोनों के पास कोई असबाब न देख कर हैरान थी।

गयावाल पण्डे के दोनों आदमी जो रम्भा और तारा के पीछे पीछे आ रहे थे इन दोनों को सराय के अन्दर जाते देख बाहर फाटक पर अटक गये। जब भठियारी इन दोनों को डेरा दिलवा कर फिर सराय के फाटक पर गई तब वे दोनों आदमी भठियारी से धीरे धीरे कुछ बातचीत करने लगे इसके बाद अपने कमर से कुछ निकाल कर भठियारी के हाथ में दे दिया जिसे लेकर उसने कहा 'आप बेपरवाह रहिये, मैं सब बन्दोबस्त कर दूँगी।"

नौवां बयान

रम्भा और तारा ने वह रात उदासी और तकलीफ के साथ बिताई। सवेरा होते ही बुढिया भठियारी उन दोनों के पास गई और सामने बैठ कर बातचीत करने लगी–

भठियारी – कहिये रात को किसी तरह की तकलीफ तो आप लोगों को नहीं हुई ?

तारा – नहीं, हमलोग बडे आराम से रहे।

भठि – यहाँ आराम तो हर तरह का है मगर आपको तकलीफ जरूर भई होगी क्योंकि मर्द का भेष बना कर अपने को छिपाने के तरद्दुद में आप लोगों ने कुछ खान पीने का भी इन्तजाम नहीं किया न बाजार ही से जाकर कुछ सौदा लाये।

तारा – (ताज्जुब और घबराहट से रम्भा की तरफ देख कर) लो सुनो ! बीवी भठियारी को हम लोगों पर कुछ और ही शक है !!

भठि – (हँस कर) अभी आप इस लायक नहीं हुई कि मुझे धोखा दें। इसी शैतानी में मैंने जन्म बिताया अपने लडकपन और जवानी के समय में मैंने कैसे कैसे ढग रचे कि अच्छे अच्छे चालाकों की नानी मर गई अभी आप लोगों की उम्र ही क्या है ?

तारा डर कर जी में सोचने लगी, "यह बुढ़िया तो हम लोगों को पहिचान गई, कहीं ऐसा न हो कि कोई आफत लावे ! यह खयाल करके अपने कमर से एक अशर्फी निकाल उस भठियारी के हाथ में रख कर बोली, ' माई तुम्हें इन सब बातों से क्या मतलब है ! हम लोग किसी तरह मुसीबत के दिन काट रहे हैं। दो चार रोज इस शहर में भी रह कर और कहीं का रास्ता लेंगे। इज्जतदार है, आवारे और बदमाश नहीं है। तुमको चाहिए हर तरह से हमको छिपाओ और हमारी

इज्जत का ध्यान रक्खो।'

बुढिया अशर्फी पाकर खुश हो गई और बोली नहीं नहीं भला यह कैसे हा सकता है कि हमारे सबब से आप लागों का किसी तरह की तकलीफ हा। क्या मजाल है कि किसी का आपका भेद मालूम हो जाय।"

इतनी बातें हो ही रही थीं कि सराय के अन्दर घाड पर चढा हुआ एक लडका बीस बाईस वर्ष के सिन का खूबसूरत और वेशकीमत भडकीली पोशाक पहिर आता दिखाई पडा जिसे देखते ही भठियारी उठ खडी हुई। रम्भा और तारा की निगाह भी उस पर पडी। दखा कि हाथ में लम्बे-लम्ब लट्ठ लिए कई आदमी भी उसके साथ हैं जिसमें वे दोनों आदमी भी हैं जो कल उन दानों के पीछ-पीछ आये थ और भठियारी स बातचीत करके उसके हाथ में कुछ दे गये थे।

यह देखते ही रम्भा और तारा का माथा ठनका। तरह तरह के शक उनक दिल में पैदा होने और डर क मारे कलेजा कॉपने लगा। वह सवार बराबर वहॉ तक चला आया जहॉ रम्भा और तारा कोठरी के दरवाजे पर बैठी थीं।

वह सवार इन दोनों की तरफ गौर स देख कर भठियारी से बोला मुझे टिकने क लिए कोई जगह दो।

भठि – आपके रहने लायक जगह इस सराय म कहा ? चलिए कोई उम्दा निराला मकान आपके रहने क लिए दूँ।

भठियारी उनको साथ ले सराय के बाहर चली गई और घटे भर तक न आई।

जब भठियारी फिर सराय में लौटी तो सीधे रम्भा और तारा के पास चली गई और बैठ कर कहने लगी यह बहुत बडे आदमी हैं, साल में दो तीन दफे हमारे यहा आकर टिका करते हैं अमीरों और रईसों क टिकने के लिए मैने कई मकान भी बनवा रक्खे हैं जिनमें सजा हुआ कमरा और हर तरह का सामान भी दुरूस्त रहता है उन्हीं मकानों में से किसी में इन्हे टिकाया करती हूँ। यह जब तक रहते हैं एक अशर्फी राज देते हैं। तुम भी किसी आली खानदान की लडकी मालूम होती हा अगर कहो तो तुम्हें भी एक अलग मकान टिकने के लिये दूँ और बाजार से सौदा वगैरह लाने के लिए किसी हिन्दू मजूरनी का भी बन्दोबस्त कर दूँ, क्योंकि इस जगह आप लोगों को हर तरह की तकलीफ होगी और भेद खुलने का खौफ भी बराबर बना रहेगा, आखिर सवेरे सवेरे आपने मुझे एक अशर्फी दी है उसी की बदौलत एक और अमीर का डेरा मेरे यहॉ आया, सो मुझे भी चाहिए कि जहॉ तक बने आप लोगों के आराम के साथ रहने का बदोबस्त करूँ।

तारा ने कहा इस साहब के पियादों में कई आदमी ऐसे हैं जिन्हें मैं पहिचानती हूँ क्योंकि कल शहर के बाहर पहाडी से यहा तक वे लोग हमार पीछे पीछे आये थे।

भठि –हॉ, व गयावाल पण्डों के नौकर हैं उनका काम ही है कि शहर क बाहर की उस पहाडी के नीचे जिसका नाम रामसिला है बैठे रहते हैं और जब कोई मुसाफिर आता है तब उसे अपने मालिक का जजमान बनाने के लिए कोशिश करते हैं। इन्हें अपना जजमान बना आज इन्हीं के साथ वे लोग आये होगे जिन्हें कल आपने देखा था।

तारा – खैर अगर हम लोगों के लायक कोई उम्दा मकान हो तो दो।

यह सुन कर भठियारी वहा से उठ सराय के बाहर चली गई और घडी भर के बाद फिर लौट कर तारा स बोली 'चलिए सब दुरूस्त कर आई हूँ।"

तारा और रम्भा को साथ ले भठियारी सराय के बाहर हुई और थोडी दूर जाकर एक सुनसान गली में घुसी। कई मकान आगे बढ वह एक छोटे से मकान के बन्द दर्वाजे पर खडी हो गई और चाभी से उसका ताला खोला जो उसके आचल क साथ बॅधी हुई थी।

दोनों को लिए हुए मकान के अन्दर घुस गई। यह मकान अन्दर से भी बहुत साफ और सुथरा था कुल चीजें जरूरत की इसमें मौजूद थीं एक कमरे में कई शीशे लगे हुए थ जमीन पर फर्श और उसके ऊपर दो चारपाइयॉ बिछी हुई थीं जिनके बिछौने की चादर सब्ज रेशम की डोरियों से खूब कसी हुई थीं।

रम्भा और तारा को ज्यादे चीजों की जरूरत न थी मगर इस मकान को दख कर खुश हो गई। तारा ने भठियारी से कहा 'मकान तो तुमने बहुत अच्छा दिया, अब एक हिन्दू मजदूरनी का भी बन्दोबस्त कर दो तो पानी वगैरह का भी इन्तजाम हो जाय और वह दो चार जरूरी बर्तन भी बाजार से खरीद कर ले आवें।

भठियारी दौडी हुई गई और थोडी ही दर में एक हिन्दू मजदूरनी भी ले आई जो गले में तुलसी की कण्ठी पहिरे हुए थी।

भठियारी चली गई। जिन जिन चीजों की जरूरत थी सब मजदूरनी की मार्फत बाजार से मगवा ली गई। इस मकान में कुऑ न था इसलिए पानी भी बाहर ही से मगवाना पडा।

दोनों ने स्नान किया इसके बाद खाना बना कर भोजन करने के बाद मकान का दर्वाजा बन्द कर पलग पर जा लेटीं। नींद आ गई। जब थोडा दिन बाकी रह गया तब उठीं। रम्भा ने तारा से कहा 'बहिन आज रात को मर्दाने भेष में घूम कर नरेन्द्रसिह की टोह लगानी चाहिए। तारा ने कहा जरूर आज रात को हम लोग घूमेंगे।

हाथ मुँह धोने के लिए पानी की जरूरत पडी, मजदूरनी को पुकारा वह मौजूद न थी। तारा ने रम्भा से कहा, 'देखो हमने उस नालायक से कह दिया था कि बिना पूछे बाहर न जाइयो मगर वह चली गई, मैं पहिले जा कर दर्वाजा बन्द कर आऊँ।

यह कह तारा नीचे उतरी। दर्वाजा खुला हुआ था। दर्वाज के वाहर लट्ठ लिए हुए कई आदमी दिखाई पडे जिनमें व दोनों भी थे जो रामसिला पहाडी से रम्भा और तारा के पीछे पीछे आये थे और दूसरी दफे सवार के साथ सराय में दिखाई पडे थे।

तारा इन सभों को दरवाजे पर देख कर घवडा गई और कई तरह की वातें सोचने लगी। अन्दर स दरवाजा वन्द करना चाहा मगर न हो सका क्योंकि वह जजीर टूटी हुई थी जिससे दरवाजा पहिली मर्तवे वन्द किया था। अव वह और घवडाई इतन में दर्वाज के वाहर वैठे हुए कई आदमियों में से एक न कुछ हँस कर कहा 'अब यह दरवाजा भीतर से वन्द नहीं हो सकता !!'

यह सुन तारा के होश जाते रहे। दौडी हुई ऊपर आई और रम्भा से वोली, 'लो वहिन, गजब हो गया ! इज्जत बचने की कोई सूरत नजर नहीं आती। हरामजादी भठियारी ने पूरा धोखा दिया। अव हम लोगों को चाहिए कि अपने को कैदी समझें और जान से हाथ धो वैठें।

रम्भा ने घवडा कर पूछा क्यों क्यों क्या हुआ ? इसके जवाब में घवडाई हुई तारा ने जल्दी से सब हाल कहा जिसे सुन कर रम्भा का कलजा धक-धक कॉपने लगा और दोनों ऑखों स आसुओं की वूँदें टपाटप गिरने लगी। तारा ने इस पर कहा वहिन अव रोने स कोई काम न चलगा जान बचाने की कोई फिक्र करनी चाहिए।

रम्भा – जान वचाने की फिक्र क्या की जाय ?

तारा – जहॉ तक हो खूव चिल्लाना चाहिए जिसमें इधर उधर से आदमी इकट्ठे हो जाय और हम लोगों को अपना दु ख कहन का मौका मिले।

रम्भा – यह मकान ऐसी गली में है कि सडक तक आवाज भी न जायगी।

तारा – तो भी पडास के कुछ आदमी तो इकट्ठे हो ही जायेंगे।

रम्भा – दर्वाजा तो इस लायक उन्होंने नहीं रक्खा कि वन्द किया जाय मगर सीढी की किवाडियों का क्या विगडा है ! उन्हें तो वन्द कर दो फिर रोन चिल्लाने की साचना।

'हॉं यह वो मुझे याद ही न रहा।" यह कहती हुई तारा दौड़ गई और सीढ़ी के किवाड़ खूब मजबूती से बन्द कर आई। इतने ही में धमधमाते हुए कई आदमी नीचे के चौक (ऑंगन) में आ पहुँचे। तारा ने झाँक कर देखा कि वही गयावाल पण्डा जिसे सराय में देखा था कई और आदमियों को लिए जिनमें वे दोनों भी थे जिन्होंने रामसिला पहाडी से रम्भा और तारा का पीछा किया था आ पहुँचा है और सभों को नीचे छोड आप ऊपर चला आ रहा है।

सीढी के किवाड़ वन्द थे इसलिए वह यकायक इन लोगों के पास न पहुँच सका और जजीर खोलने के लिए आरजू मिन्नत करने लगा। यह देख रम्भा और तारा मकान की छत पर चढ गईं। इस मकान के साथ ही सटा हुआ एक दूसरा मकान देखा जिसकी छत इससे नीची थी। ये दोनो उसी मकान मे कूद पडीं।

दसवां बयान

दोपहर का समय है। एक छोटे से जगल में घने पड के नीचे आठ दस आदमी बैठे आपुस में कुछ वातचीत कर रहे हैं। ये सव कौन हैं इसके लिए साफ ही कह देना ठीक है कि ये लोग वे ही मल्लाह हैं जिनसे नरेन्द्रसिह से उस समय बातचीत हुई थी जब वे माहिनी गुलाव और वहादुरसिंह को छोटी किश्ती के पास छोड बडी नाव किराये करने गये थे। इन लोगों में एक वहुत वुडढा है जिसे नरेन्द्रसिंह ने पहिले नहीं देखा था शायद यह उन सभों का सरदार हो।

एक – वडी भूल तो यह हो गई कि नरेन्द्रसिह को न पकड लिया।

दूसरा – हॉं अगर उनको भी गिरफ्तार कर लेते तो बस चारों ही को ठिकाने पहुँचा देते फिर कोई पूछने या पता लगाने वाला भी न रहता अब तो एक चिन्ता-सी लगी रह गई।

वूढा – अजी ईश्वर ने अच्छा किया जो उस समय तुम लोगों को नरेन्दसिह के पकडने का हौसला न दिया नहीं तो ऐसी हालत में जब कि हमारे साथी को भुलावा देकर वहादुरसिह ले गया है बडी मुश्किल होती। हम लोगों का खौफ तो इस समय भी वहुत कुछ है क्योंकि नरेन्दसिह का बाप वडा ही जालिम है भोला और बहादुरसिंह जरूर उससे जाकर सब हाल कहेंगे और हम लोगों का पता देंगे।

चौथा – इसमें तो कुछ भी शक नहीं। फिर क्या करना चाहिए ?

पॉचवा – हम लोगों का तो जमा पूजी से मतलव था, सो दोनों औरतों के गहने उतार ही लिये, इतनी भारी रकम जन्म से आज तक हाथ न लगी थी अव उन दोनों को जमीन के अन्दर पहुँचाइये वस हो गया।

वूढा – न मालूम तुम लोगों की बुद्धि कहॉं चरने चली गई है ! दोनों औरतों को मार कर क्या अपनी जान वचा लोगे ? नरेन्द्रसिंह तुम लागों को छोड देगा ? नहीं जानते कि उसके यहॉं कैसे कैसे वेढव पता लगाने वाले जासूस मौजूद हैं ? नरन्दसिंह को उतने गहनों की परवाह नहीं है जो हम लोगों ने उन दानों औरतों के उतार लिए हैं मगर उनकी जानों पर आफत आते ही हम लोगों की जड वुनियाद तक बाकी न रहेगी इसे खूब समझ लेना !

पहिला – तव फिर क्या किया जाय ?

बूढा – बस इस वक्त यही मुनासिव है कि वे दोनों औरतें छोड दी जायें घूमती फिरती आप ही नरेन्द्रसिंह को मिल जायगी उनके मिलने पर फिर वे हम लोगों की इतनी खोज भी न करगे। इसके साथ ही वह मकान भी हम लोगों को खाली कर देना चाहिए उसे अव उजडा हुआ समझो।

तीसरा – हम लोग तो हुक्म के मुताविक काम करेगें, नफा नुकसान आप समझ लीजिए।

बूढा – हम खूब सोच चुक इस काम में अव देर करना अच्छा नहीं है। इसके बाद सव उठ कर एक तरफ को रवाना हुए।

ग्यारहवां बयान

मल्लाहों का पता न लगन से मोहिनी और गुलाव के गम में नरन्द्रसिह वेहोश होकर गिर पडे। घण्टे भर क बाद उन्हें होश आया। उठ कर तलवार म्यान में की और नाव क नीचे उतरे। मोहिनी गुलाव और बहादुरसिंह के लिए तबीयत बचैन थी वहा स धीर धीरे एक तरफ का रवाना हुए मगर यह नहीं जानते थे कि किस तरफ जा रहे है और आगे जगल मिलेगा या शहर।

जगली फलों पर गुजारा करते हुए कई दिनों के बाद वे एक घने जगल के किनारे पहुचे। विना कुछ खयाल किए यह उस जगल में घुसे। जैसे आगे जाते जगल रमणीक और सुहावना मिलता जाता था यहा तक कि शाम होते होते वे एक ठिकाने जा पहुचे जहॉ क जगल को लम्बा चौडा वाग ही कहना मुनासिब है। साखू आसन तेंद पारजात वगैरह खुदरी (आप से आप उगने वाले) दरख्तों के अलाव कायदे से हाथ क लगाए हुए खुशबूदार फूलों के पेड भी दिखाई पडे और जमीन भी वहॉ की साफ और सुथरी नजर आई। दाहिनी तरफ कुछ दूर पर पेडों की झिलमिलाहट में एक सफेद इमारत भी दिखाई पडी।

इस जगह पहुँच कर हमारे नरन्दसिह अड गए और कुछ गौर करने लग। इतने में ही इनकी निगाह बाई तरफ जा पडी। देखा कि कुछ दूर पर कई कमसिन औरतें खूबसूरत लिबास पहिने अठखेलियॉ करती इधर उधर टहल रही है। कभी धीरे धीर चलती हैं कभी दौड़ कर एक दूसरे का पकडती या धक्का देती है कभी कोई सीटी या ताली बजा कर खूब जोर से हस दती हैं।

ऐस दु ख की अवस्था में भी नरन्द्रसिह का जी उस तरफ जा फॅसा। गौर के साथ देखने लगे, चाहा कि उधर न जाय मगर जी न माना, धीरे धीरे उसी तरफ वढे। जव उन लोगों के पास पहुँचे तो रुक गए। इतने में उसमें से कई औरतों की निगाह नरेन्द्रसिह पर जा पडी। सकपका कर इनकी तरफ देखने लगीं यहा तक कि कुछ औरतों ने इन्हें ताज्जुब की निगाह से देखा और आपुस में इशारे स बातचीत करने लगीं जिससे नरेन्द्रसिह को भी मालूम हो गया कि उनके आन पर सभों का आश्चर्य है।

इन सभों में से एक औरत चाल ढाल पोशाक जेवर और खूबसूरती के हिसाब से सभों में सर्दार मालूम होती थी। यों तो सभी चचल और खूबसूरत थीं मगर उसके मुकाबिले की एक न थी जिसने उदास और गमगीन नरेन्द्रसिंह का दिल भी अपनी तरफ खेंच लिया क्योंकि नरेन्द्रसिंह को यह धोखा हुआ कि यह मोहिनी है।

माहिनी का ख्याल बधते ही नरेन्द्रसिह उसकी तरफ लपके जिससे उन औरतों को और भी आश्चर्य हुआ ? इन्होंने जल्दी से पास पहुच कर पूछा "क्यों मोहिनी तुम यहॉ कैसे पहुँचीं ? मैं कब से तुम्हारी खोज में परेशान हो रहा हूँ !

उस औरत ने इनकी बात का कोई जवाब न दिया और अपनी हमजोलियों की तरफ देख कर सिर नीचा कर लिया। नरेन्द्रसिह ने फिर पूछा 'क्यों चुप क्यों हो ?

वह फिर भी कुछ न वाली पर ऑखों से आँसू की बूँदें टपाटप गिराने लगीं।

ऐसी दशा देख नरेन्द्रसिह और भी बेचैन हो गये और बोले, 'क्या सवब है जो तुम अपना हाल कुछ नहीं कहतीं और रो रही हो ! तुम्हारी वह सूरत नहीं रही, चेहरे में भी फर्क पड गया मालूम होता है वर्षों बाद मुलाकात हुई हो, मारे गम के तुम्हारी जवानी भी तुमसे रज हाने लगी। मैं तो समझता था मुझसे मिल कर तुम खुश होगी मगर तुन्हें रोते देख जी और बेचैन हो रहा है। कहा गुलाव तो अच्छी तरह है, वह तुम लोगों के साथ दिखाई नहीं देती कहॉ है ?

गुलाव का नाम सुन कर वह और भी रोने लगी बल्कि उसकी सहेलियों की भी ऑखें डवडवा आईं जिसे देख नरेन्द्रसिह को विश्वास हो गया कि जरूर गुलाव किसी आफत में फॅस गई या जान ही से गुजर गई।

नरेन्द्रसिह के कई मर्तबे पूछने और जिद्द करने पर वह अपने ऑचल से ऑसू पोंछ कर वोली -

'सव कुशल है गुलाव भी अच्छी तरह से है वाकी हाल मैं इस समय न कहूँगी। जल्दी क्या है आप भी थके मॉदे आय है, चलिए मकान में आराम कीजिए जो कुछ कहना है निश्चिन्ती में कहूँगी लेकिन पहिले आप जरा देर इसी जगह ठहरिए मैं अपनी सखियों को एक काम सौंप लूँ तव आपके साथ चलूँ।

इतना कह नरेन्द्रसिह का उसी जगह छाड इशारे से अपनी सखियों को वूला कर एक किनारे चली गई और आधी

घडी तक आपुस में कुछ बातें करती रही इसके बाद फिर नरेन्द्रसिह के पास आई और बोली चलिये मकान में क्योंकि अब अन्धेरा हो गया और यहा ठहरने का मौका नहीं रहा।

नरेन्द्रसिह को साथ लिये हुए उसी मकान में गई जिसे उन्होंने कुछ दूर पेडों की आड में चमकता हुआ देखा था। इस मकान के दर्वाजे पर कई सिपाही नगी तलवार लिये पहरा दे रहे थे जो एक नये आदमी के साथ अपने मालिक को आते देख उठ खडे हुए। नरेन्दसिह का हाथ पकडे हुए मोहिनी मकान के अन्दर गई पीछे उसकी सखियॉ भी पहुँचीं।

फाटक के अन्दर जाकर एक लम्बे चौडे बाग में पहुँचे जिसकी रविशें निहायत खूबसूरती के साथ बनाई हुई थीं। पहाडी और जगली फल पत्तियों के अलावे खुशबूदार फूलों के पड भी बशुमार लगे हुए थे जिनकी खुशबू से तमाम बाग गमक रहा था। सामने ही एक लम्बा चौडा दामजिला मकान बना हुआ नजर आया।

नरेन्द्रसिह का हाथ पकडे हुए उस मकान के ऊपर वाले खण्ड में ले गई और सजे हुए कमरे में ले जाकर बैठाया।

नरेन्द्रसिह को इस वक्त बडी ही खुशी थी मगर साथ ही इसके गुलाब को देखे विना जी बेचैन था। बैठते ही पूछा 'क्यों मोहिनी गुलाब कहाँ है ? उसे जल्द बुलाओ मैं देखूँगा।'

मोहिनी – आज आप उसे नहीं देख सकते।

नरन्दसिह – क्यों ?

मोहिनी – इसका सबब फिर आपसे कहूँगी।

नरेन्द्रसिह – अच्छा यह तो बताओ कि तुम्हारी सूरत ऐसी क्यों हो गई ? मालूम होता है कि सात आठ वर्ष बाद तुम्हें देख रहा होऊँ !

मोहिनी – (ऊँची सॉस लेकर) एक तो तुम्हारी जुदाई, दूसरे बहिन के गम ने मेरी यह हालत कर दी !

नरेन्द – क्या गुलाब के सिवाय और भी तुम्हारी कोई बहिन थी ?

मोहिनी – जी नहीं।

नरेन्द – फिर किसका गम हुआ ?

मोहिनी – उसी गुलाब का।

नरेन्द – (चौक कर) गुलाब को क्या हुआ ? वह कहाँ गई ?

मोहिनी – (ऑसू गिरा कर) वैकुण्ठ चली गई !

गुलाब के मरने का हाल सुन नरेन्द्रसिह की अजीब हालत हो गई बहुत देर तक रोते रहे।

नरेन्द्रसिह – अफसोस अभी तक तुम्हारा कोई हाल भी नहीं मालूम हुआ कि तुम कौन हो और किस सबब से तुम्हारी वह दशा हुई थी।

मोहिनी – क्या इतने दिन अलग रह कर भी आपको मेरा हाल कुछ मालूम न हुआ ?

नरेन्द – कुछ भी नहीं।

मोहिनी – अच्छा तो मैं जरूर अपना हाल कहूँगी।

नरेन्द – भला इतना तो बता दो कि उस किश्ती पर से तुम लोग कहाँ गायब हो गई और **बहादुरसिह** कहाँ चला गया ?

मोहिनी – इसका हाल भी अपने हाल के साथ ही कहूँगी इस समय कुछ भोजन करके आराम कीजिए क्योंकि आपके चेहरे से थकावट और सुस्ती बहुत मालूम होती है।

नरेन्द – तुम्हारे मिलने ही से थकावट और सुस्ती बिल्कुल जाती रही, मगर अफसोस बेचारी गुलाब !

इतना कहते कहते फिर ऑखों में ऑसू आ गए। मोहिनी ने बहुत कुछ समझाया और कुछ खाने के लिए जिद्द की मगर नरेन्द्रसिह ने कुछ न सुना। लाचार उनको चारपाई पर लिटा और उनसे बिदा हो वह नीचे उतर आई और एक दूसरे कमरे में गई जहाँ उसकी सखियॉ बैठी उसकी राह देख रही थीं और शराब से भरी हुई कई बोतलें भी उस जगह रक्खी हुई थीं जिनमें से थोडा थोडा गिलास में डाल कर वे सब पी रही थीं। मोहिनी को आते देख वे सब उठ खडी हुई और हँस कर बोलीं 'मुबारक हो ईश्वर ने तेरे लिए क्या खूबसूरत जवान भेज दिया !'

मोहिनी – (हँस कर) देखिए जब रह जाय तब तो !

एक – तेरे पजे में फॅसा हुआ कब निकल सकता है हॉ तू खुद निकाल बाहर करे तो बात दूसरी है !

मोहिनी – नहीं नहीं इसके साथ कभी वैसा न करूँगी जैसा दूसरों के साथ किया है क्योंकि ऐसा खूबसूरत और बहादुर जवान अभी तक मुझे कोई भी नहीं मिला था। मुझे तो मालूम होता है यह जरूर किसी राजा का लडका है।

एक – इसमें कोई शक नहीं ! आओ बैठो कहो क्या क्या बातचीत हुई ?

मोहिनी – इस वक्त कोई विशेष बातचीत तो नहीं हुई सिर्फ गुलाब का हाल पूछा सो मैंने कह दिया कि मर गई। यह सुन बहुत रोए पीटे फिर पूछा की तुम अपना हाल बताओ कि तुम्हारी वह दशा कैसे भई थी, किश्ती पर से कहाँ चली गई और बहादुरसिह कहाँ गया। इसका जवाब भला क्या देती ? मुझे कुछ मालूम तो था नहीं, और न मै बहादुरसिह को ही जानती थी कि वह कौन बला है आखिर यह कह के टाल दिया कि कल कहूँगी।

दूसरी – उनको यह पूरा विश्वास हो गया कि मोहिनी तुम ही हो।

तीसरी – इनकी शक्ल सूरत भी मोहिनी की सी है, फर्क इतना ही है कि उससे यह उम्र में सात वर्ष बडी है।

मोहिनी – अब मुझे यह फिक्र है कि कल अपना हाल क्या कहूँगी ?

एक – पेड़ से लटकी हुई मोहिनी और जमीन में गडी हुई गुलाब की जान जरूर इन्होंने बचाई है या इनस उन दोनों की किसी तरह मुलाकात हो गई है।

दूसरी – जरूर एसा ही हुआ है लेकिन उससे क्या जो जी में आवे बना कर अपना हाल कह दना।

तीसरी – अगर मोहिनी पहले अपना हाल कुछ कह चुकी हो तब ?

मोहिनी – नहीं मोहिनी ने अपना हाल कुछ नहीं कहा क्योंकि बात ही बात में यही दरियाफ्त करन के लिए मैंने पूछा था कि मुझसे जुदा होकरमी मेरा हाल तुम को मालूम नहीं हुआ ? जिसके जवाब में वे बोले कि 'कुछ भी नहीं। इसक इलावे पहिल ही उन्होंने कहा था कि 'मुझे अभी तक यह नहीं मालूम हुआ कि तुम कौन हो' इन सब बातों का ख्याल करक मैं समझती हूँ कि मोहिनी अपना हाल कुछ कहने न पाई और फिर इनसे अलग हो गई।

एक – तुम्हारा सोचना वहुत ठीक है !

मोहिनी – मुझे तो इनका नाम भी नहीं मालूम !

दूसरी – कल तुम उन से कहना कि तुमने भी तो अपना ठीक ठीक नाम और हाल अभी तक नहीं वताया तब वे खुद ही कहेंगे कि मेरा नाम ठीक फलाना ही है और अपना हाल भी कुछ कहेंगे।

इतने में एक सखी ने शराब का गिलास भर कर मोहिनी के हाथ में दे दिया और कहा, 'लो आज बडी खुशी का दिन है, रोज से दूनी पीनी चाहिए पीयो और हमलोगों का भी कुछ ख्याल रक्खो। ईश्वर ने इनको यहाँ भेज दिया है तो ऐसा न हो कि इनके आने का सुख अकेली तुम ही लूटो।

इसके जवाब में मोहिनी ने हँस कर कहा क्या मैं तुम लोगों को रोकती हूँ ? इसमें मेरा बस है या उनका ?

थोडी देर तक हँसी खुशी की शैतानी दिल्लगी रही इसके बाद लौंडियाँ खाने पीने का सामान उस जगह ले आईं सब मिल कर खाने और शराब पीने लगीं, यहाँ तक कि नशे में मस्त होकर जमीन पर लेट गई और किसी को तनोबदन की सुध न रह गई।

मोहिनी की इन सखियों में दो ऐसी थीं जो शराब को हाथ से भी नहीं छूती थीं और हर तरह से नेक और दयालु थीं। दिन रात का ज्यादे हिस्सा ईश्वर के भजन और ध्यान ही में गँवाती थीं। यह शैतान मण्डली उन्हें भली नहीं मालूम होती थी मगर क्या करें लाचार हाकर साथ रहना पडा था। इनका नाम श्यामा और भामा था।

मोहिनी तो अपनी सखियों के साथ शराब के नशे में ऐसी बेहोश पडी कि पहर दिन चढे तक तनोबदन की सुध न रही मगर बेचारी श्यामा और भामा कुछ रात रहते ही उठीं और जरूरी कामों से छुट्टी पा नहा धो साफ कपडे पहिर नरेन्द्रसिह के पास पहुँची और दिलोजान से उनकी खिदमत करने लगीं।

मोहिनी की सूरत में फर्क क्यों पड गया ! सूरत ही नहीं बल्कि चालचलन निगाह चितवन बातचीत सभी दूसरे ही ढग की नजर आती है। आँखों में उतनी हया भी नहीं है। सिवाय इसके शहर छोड जगल में रहना इसने क्यों पसन्द किया ? और अन्दाज से यह भी मालूम होता है कि मुझसे जुदा होकर इसने मेरी खोज बिल्कुल नहीं की ! नरेन्द्रसिह ने इसी सोच और ख्याल में वह पूरी रात बिता दी और घडी घडी उठ कर देखते रह कि सवेरा हुआ या नहीं।

अभी अच्छी तरह आसमान पर सफेदी नहीं फैली थी यद्यपि एक तरह पर सवेरा हो चुका था। नरेन्द्रसिह पलग पर लेटे लेटे दर्वाजे की तरफ देख रहे थे कि हाथों में जल का लोटा लिये श्यामा और भामा वहाँ पहुँचीं। उसी रास्ते से होकर दूसरे कमरे में चली गईं और लोटा रख कर लौट गईं। थोडी देर बाद मुँह धोने के लिए दतुअन मजन और धोती गमछा इत्यादि कुल सामान लेकर आईं और उसी कमरे में जिसमें जल का लोटा रख गई थीं इन चीजों को भी रक्खा इसके बाद नरन्द्रसिह के पलग के पास पहुँचीं। इनको पास आते देख नरेन्द्रसिह ने जान बूझ कर आँखें बन्द कर लीं और अपने को सोता हुआ सा बना लिया।

श्यामा पैर दबाने और भामा पखा झलने लगी। थोडी देर बाद नरेन्द्रसिह उठ बैठे और उन्होने पूछा 'सवेरा हो गया ?'

श्यामा – जी हाँ उठिये मुँह हाथ धोइए।

नरेन्द्र – (उठ कर) मोहिनी कहाँ है ?

श्यामा – मोहिनी कौन ?

नरेन्द्र – तुम्हारी मालिक।

श्यामा – जी हाँ वह अभी तक सोई हुई है।

नरेन्द – बहुत देर तक सोया करती है !

श्यामा – अब उनके उठन का समय हो ही गया है तब तक आप चाहें तो स्नान सन्ध्या से छुट्टी पा सकते है।

नरेन्द्र – मै भी यही चाहता हूँ।

इतना कह नरेन्द्रसिह पलग के नीच उतरे। श्यामा और भामा दोनों दिलोजान से खिदमत करने पर मुस्तैद हो गई। इनकी होशियारी और फुर्ती के साथ काम करन के सबब स नरेन्द्रसिह जरूरी कामों से छुट्टी पाकर दतुअन कुल्ला स्नान सध्या इत्यादि से वहुत जल्द निश्चिंत हो गए किसी वात की जरा भी तकलीफ न हुई।

श्यामा और भामा जिस प्रेम के साथ उनकी खिदमत कर रही थीं उसे देख कर यह दग हो गये और सोचने लग कि ऐसी सलीके वाली लौंडियॉं तो आज तक मैंने नहीं देखीं। सिवाय इसके इन्हें लौंडी कहते भी सकोच मालूम होता है। चाहे इनकी पाशाक वशकीमत न हो फिर भी वातचीत और चाल ढाल से य छाट दर्जे की औरतें नहीं मालूम होतीं। इन दोनों का रग कुछ सावला है तो क्या हुआ मगर इनके रूपवान हाने में कोई शक नहीं तिसमें यह एक जा अपना नाम श्यामा वताती है परम सुन्दरी है और लक्षणों स मालूम हाता है कि अभी कुँआरी है। अहा ! क्या ही सुन्दर मुख और कैसी वडी वडी रतनार ऑखें हैं ! अभी तक मैंने इसकी सुन्दरता पर ध्यान नहीं दिया था मगर अव जो गौर करके दखता हूँ ता यही कहन का जी चाहना है कि यह श्यामा खूवसूरती में किसी तरह भी माहिनी स कम नहीं है वल्कि गुण और शील में उसस बढ कर है। इस तो सामने से जाने दने का जी नहीं चाहता ! न मालूम क्यों इसकी तरफ मेरा चित् खिचा जाता है। माहिनी आव ता पूछूँ कि ये दोनों कौन हैं ?

इसी तरह की बातें सोच रहे थ कि इतन ही में नींद स जाग जमुहाई लेती हुई माहिनी भी आ पहुँची। इसका खुमार अभी तक उतरा न था, आत ही नरेन्द्रसिह क पास वैट गई और गले में हाथ डाल कर वाली क्या अभी साकर उठे हा ? स्नान न करोग ?

माहिनी क मुँह स शराव की एसी वुरी भभक निकली कि नरन्द्रसिह का जी विगड गया। माहिनी का हाथ अपने गले से निकाल झट उठ खड हुए और वाल "मैं तुम्हारी इन दानों हाशियार लौंडियों की वदौलत स्नान पूजा आदि सव चीजों स छुट्टी पा चुका हूँ। तुम शायद अभी साकर उठी हा !"

मोहिनी का अपना हाथ गले में से निकाल कर एकाएक इस तरह नरेन्द्रसिह का उठ जाना वहुत ही वुरा मालूम हुआ और वह लाल लाल ऑखें कर नरेन्द्रसिह की तरफ दखन लगी।

नरेन्द्रसिह भी अपन दिल में साचने लग कि मोहिनी का यह क्या हो गया। यह ता वातचीत से वहुत नक और शरीफ खानदान की लडकी मालूम होती थी मगर इसका रग ढग विल्कुल वदला हुआ दखता हूँ। जव मैने गुलाव का हाल इसस पूछा तो वाली कि 'वह मर गई !' लकिन अभी मुझस इसका सग छूटे पन्दह दिन भी नहीं हुए ता क्या इसी वीच में गुलाव के मरने का गम इसके दिल से जाता रहा और यह हँसी खुशी में दिन विताने लगी ? क्या किसी शरीफ खानदान की कुँआरी लडकी का एसा करना मुनासिव ह ? यह ता विल्कुल असभ्य और कुलटा मालूम होती है। अगर इसकी चालचलन ऐसी ही है तो मैं इसकी मुहव्वत से वाज आया। मैं ऐसी वदचलन औरत से वात भी करना पसन्द नहीं करता। वाह ! मेरे गल में हाथ डालते इस जरा भी शर्म न मालूम हुई !"

थोड़ी देर तक दोनों अपने अपने मतलव की साचते रहे आखिर माहिनी से न रहा गया। वोली "क्यों साहव आपने तो मेरी वडी वेइज्जती की !!"

नरेन्द्र – वह क्या ?

मोहिनी – मैं आपकी मुहव्वत से आपके पास आकर वैठूँ और आप इस तरह मुझ दुतकार कर उठ जायें ! क्या इसी को सभ्यता कहते हैं ?

नरेन्द्र – अगर औरतें सौ दफ इस तरह क नखरे करें तो कोई हर्ज नहीं मगर मर्द एक ही दफे के नखरे में खराब समझा गया !!

वस नरेन्द्रसिह के इतना कहने स माहिनी का खयाल वदल गया और वह हँस के वोली –

'खैर तो आइये वैठिये !'

नरेन्द्र – मरा कायदा है कि नहाने के वाद मैं उस आदमी के पास नहीं वैठता जो विना नहाया हो।

मोहिनी – क्या छूत लग जाती है ?

नरेन्द्र – चाहे छूत न लग ता भी ऐसा कायदा रखने से वहुत कुछ फायदा है।

मोहिनी – (उठ कर) खैर साहव मैं जाकर नहा आती हूँ।

नरेन्द्र – हॉं इसके वाद फिर हमसे वातचीत हागी।

मोहिनी – (श्यामा की तरफ दख कर) मैं नहाने जाती हूँ तब तक तुम इनके खाने पीने का कुछ वन्दोवस्त करो।

श्यामा – वहुत अच्छा'।

मोहिनी चली गई इसके वाद श्यामा न हाथ जोड कर नरेन्द्रसिह से कहा "मुझे मालिक का हुक्म हुआ है कि आपके वास्ते खाने पीने का वन्दोवस्त करूँ मगर मेरा जी यहॉं से जाने को नहीं चाहता क्योंकि आपसे एक बात कहनी वहुत जरूरी है। अगर मैं यहॉं स जा कर आपके भोजन का बन्दोबस्त करूँ तो फिर बात करने का मौका न रहेगा क्योंकि तव तक यह फिर आ जायगी और मेरी बात ऐसी है कि सिवाय आपके अगर कोई दूसरा सुन ले तो मेरी जान जाने में कोई शक न रहे।

नरेन्द्र – वह कौन सी वात है कहा।

श्यामा – इस तरह मै नहीं कहने की हॉ आप इस बात की कसम खायॅ कि किमी दूसर स न कहेंग तो मैं जो कुछ गुप्त भेद है उस कह डालूॅ।

गुप्त भद का नाम सुनते ही नरेन्द्रसिह चौंक पडे। वह वात कोन सी है जिसके लिय श्यामा कसम खिलाया चाहती है, यह जानने क लिए जी बेचैन हो गया। कुछ गौर करने के वाद नरन्द्रसिंह ने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली और श्यामा से कहा 'दखा मैं क्षत्री हूँ, मर लिए इससे यढ क कोई कसम नहीं है इसे हाथ में ल मै कसम खाता हूँ कि तुम्हारी वात कभी किसी स नहीं कहूँगा।

श्यामा – वस वस मरा जी भर गया पर फिर भी मैं आपस एक वादा और कराया चाहती हूँ।

नरन्द्र – वह भी कहो।

श्यामा – अगर मरी वात सुन कर आप यहॉ स भागा चाहें ता हम दानों को भी यहॉ स निकालन की फिक्र करं नही तो आपके जान क वाद हम लाग किसी तरह वच नहीं सकेंगी।

नरन्द – (ताज्जुव से) एसी कोन सी वात है जिस सुन मं यहॉ स भाग जाऊँगा ?

श्यामा – वह एसी ही वात है।

नरेन्द – खैर मैं इस बात की कसम खाता हूँ कि अपन साथ तुम दानों का भी यहॉ से वाहर करूँगा। हॉ पहिले यह कह दा कि क्या मरे लिए तुम अपन मालिक का साथ छाडोगी ?

श्यामा – ईश्वर न कर ऐसी वदकार औरत की नौकरी कभी करनी पड न मालूम मैंन कोन स ऐस पाप किय हैं जिनक वदल कई दिन इसक पास रहन का दु ख परमेश्वर न मुझे दिया ! मै इसकी लौंडी नहीं हूँ मगर वक्त का क्या करूँ ? यह सब आपकी

इतना कहत कहत ऑखों स टपाटप ऑसू की वूदें गिरन लगीं कण्ठ भर आया और आवाज वन्द हा गई।

नरन्द – (हाथ थाम कर) हॉ हॉ यह क्या !! राती क्यों हा ? मै वादा करता हूँ कि जहॉ तक हागा तुम्हारा दु ख दूर करन स वाज न आऊँगा।

श्यामा – आपके तो जरा सा निगाह ही कर दन स मेरा जन्म भर का दु ख दूर हा जायगा नहीं मरी हुइ तो हई हूँ।

नरेन्द्र – इसके लिए भी मैं वही कसम खाता हूँ कि अगर मरे किये तुम्हारा दु ख दूर हा जायगा तो मैं कभी मुँह न फेरूगा।

श्यामा – (आसू पॉछ कर और अपने का खूव सम्हाल कर) अव ध्यान दकर सुनिए। पहिले ता यही वता देना ठीक हागा कि यह मोहिनी नहीं है जिस आप मोहिनी समझे हुए है।

नरेन्द – (चौंक कर) है ! क्या यह माहिनी नहीं है ? श्यामा – नहीं।

नरेन्द–खैर यह सव जाने दो और यह वताओ कि अगर यह मोहिनी नहीं तो कौन है ? क्या यह अपनी सूरत वदले हुए है ? **श्यामा**–यह मोहिनी की बडी वहिन है।

नरेन्द – हाय हाय ! नालायक न ता पूरा धाखा दिया ! पहिले ही मरा जी इससे खटका था। औरतें भी क्या ही आफत होती हैं ! ऐसों ही की शैतानी और बदकारी कितावों में दख दख कर और लोगां से सुन सुनकर मैंने दिल में निश्चय कर लिया था कि कभी शादी न करूँगा। इसी सवव से मैंन अपना देश छाडना मजूर किया फिर भी मोहिनी की मुहब्वत में फॅस गया और दु ख उठाना ही पडा।

श्यामा – नहीं आपका ऐसा साचना मुनासिव नहीं है। सभी औरतें एसी वदकार ओर नालायक नहीं होतीं एक के सबव से सौ का वदनाम करना धर्म विरुद्ध है।

नरेन्द – इसके वार में जा कुछ तुमका मालूम हे खुलासा कहो।

श्यामा – सुनिये मैं सब कुछ कहती हूँ। इन्हीं कई दिनो में जव से मै यहॉ आई इन लागों का पूरा इतिहास जान गई हूँ। इसका नाम कतकी है। गुलाव मोहिनी और केतकी तीनों एक ही मॉ के पेट स पैदा हुई हैं। गुलाव को सात महीने की छाड इनकी मॉ मर गई थी। ये तीनों अपने वाप के वडे लाड प्यार से पली हैं जिसका नाम हजारीसिह था और जो गया के वहुत वडे जमींदारों में गिना जाता था। नरेन्द – अच्छा फिर ?

श्यामा – केतकी जब जवान हुई तव इसने वदचलनी पर कमर वाधी जिससे इसके वाप का वहुत रज हुआ और उसन एक अच्छे खानदान के लडके से इसकी शादी कर दी, मगर इस हरामजादी ने उसे जहर देकर मार डाला। यह दख इसके वाप का और भी रज हुआ और उसने कतकी को मार डालने का पूरा पूरा इरादा कर लिया। यह खवर केतकी को लग गई और उसने रसोई वनाने वाले व्राह्मण से मिल कर जिसके साथ यह फॅसी हुई थी अपने बाप को जहर दिलवा दिया और उसके मरने के वाद कुल जायदाद की मालिक वन बैठी।

नरन्द – ईश्वर ऐसी औरत से बचावे ! अच्छा फिर क्या हुआ ?

श्यामा – कुछ दिन में माहिनी और गुलाब भी हाशियार हुईं और इसका चालचलन दख देख चिढ उठीं। मोहिनी और गुलाव दोनों वहुत ही नेक और सूधी थीं, दोनों में प्रेम भी वहुत था इसलिए दोनों ने अपने वाप के माल में अपना

अपना हिस्सा अलग कर लेना चाहा।

नरेन्द्र – क्या और कोई इनका बडा बुजुर्ग नहीं था ?

श्यामा – कोई नहीं।

नरेन्द्र – अच्छा तव।

श्यामा – हिस्सा देना केतकी को बहुत बुरा मालूम हुआ। कई बदमाशों से मिल कर वह मोहिनी और गुलाब दोनों को धोखा देकर जगल में ले गई जहॉ सुनते है कि दोनों को फॉसी देकर मार डाला मगर ताज्जुब यही है कि अगर वे दोनों मर ही गईं तो आपने उन्हें कैसे देखा ?

नरेन्द्र – मौत से उन्हें मैंने ही बचाया था।

श्यामा – ठीक है। खैर यह केतकी अपने बाप की बेहिसाव दौलत ऐयाशी में उडान लगी। यह मकान उसके वाप ही का बनवाया हुआ है। अव यह ज्यादेतर इसी में रहा करती है, यहा इसने कई आदमियों का साथ किया और थोडे थोडे दिन बाद सभों की जान लेती गई। बस इसके सिवाय और मैं कुछ नहीं जानती। हॉ आप मोहिनी का हाल कहिए कि वह क्योंकर बची ?

नरेन्द्र – मोहनी का हाल कहने के पहिले मुझे अपना हाल भी कहना पड़ेगा कि घर से क्यों बाहर निकला।

श्यामा – नहीं वह तो मैं जानती हूँ कि आप शादी के खिलाफ होकर ठीक बारात वाले दिन भाग निकले थे।

नरेन्द्र – (ताज्जुब से) यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

श्यामा – मेरा घर भी उसी शहर में है और उस दिन मैं भी आपके ससुराल में ही थी। वदकिस्मती से यहॉ तक की नौबत पहुँची। अच्छा अब आप मोहिनी का हाल कहिये।

नरेन्द्र – मै घर से भागा हुआ जगल जगल घूमता फिरता रात के वक्त वहॉ पहुँचा जहॉ एक पेड के साथ मोहिनी उलटी लटकी हुई थी। उसे उतारा जव होश में आई तब उसी की जुबानी मालूम हुआ कि गुलाब भी उसी जगह गाडी गई है अस्तु उसे भी निकाला। सन्दूक में रख कर वह गाडी गई थी इसलिये बच गई। वहॉ से पास ही एक नदी थी, और एक किश्ती भी किनारे मौजूद थी। हम लोग उस पर सवार होकर वहॉ से रवाने हुए। सुबह होने पर मैंने किश्ती किनारे पर लगाई। वहा पर मेर लडकपन के एक साथी बहादुरसिह से मुलाकात हुई। वहॉ से कुछ दूर पर एक बडी नाव दिखाई पडी, बहादुरसिह को मोहिनी और गुलाब की हिफाजत के लिए छोड मैं वह नाव किराये करने गया मगर वहा से जव लौटा तो तीनों में से किसी का भी न पाया न मालूम वे सब कहा गायव हो गए थे। उन्हीं को खोजता खोजता यहॉ तक आ पहुँचा हूँ।

इससे ज्यादा और कुछ बात न होने पाई क्योंकि उसी समय केतकी आ पहुँची जिसे देख नरेन्द्रसिह ने अपनी कहानी का सिलसिला तोड दिया और मुस्कुरा कर केतकी से कहा, आइये मै आप ही की राह देख रहा हूँ !"

केतकी – क्या बात है जो श्यामा और भामा सवेरे ही से आपके पास अडी है !

नरेन्द्र – ये दोनों बेचारी वडी नेक हैं और दिल से मेरी खिदमत कर रही हैं इनके रहने से मुझे वडा आराम मिला। तुम्हारे जाने के बाद अकेले बैठा क्या करता, इन्हीं से बातचीत करता रहा।

केतकी – तो क्या आपने अभी तक भोजन नहीं किया ?

नरेन्द्र – भोजन करने की इच्छा नहीं हुई इसीलिए मना कर दिया।

केतकी – और ये दोनों भी आफत की मारी चुप हो रहीं !

नरेन्द्र – तो क्या करतीं ? मुझी को भूख न थी तो इनका क्या दोष ?

केतकी – (श्यामा की तरफ देख कर) जाओ भोजन ले आओ।

श्यामा – बहुत अच्छा।

नरेन्द्र – नहीं नहीं, मै अभी कुछ न खाऊँगा।

केतकी – यह तो न होगा।

नरेन्द्र – मेरी तबीयत आज ठीक नहीं है। तुम्हारी खोज में बहुत दूर तक पैदल घूमना पडा। आदत तो थी नहीं, इससे पैरों में बहुत दर्द है और कुछ कुछ पेट भी दुख रहा है। इस समय अगर मैं कुछ भी खाऊँगा तो जरूर बीमार पड जाऊगा। तीन चार घटे मुझे और छोड दो जब थोडा दिन बाकी रह जायगा तब मैं भोजन करूगा। तुम मेहरबानी करके इन दोनों को हुक्म दो कि जल्द भोजन कर आवें क्योंकि मैं अपनी खिदमत के लिए इन्हीं दोनों को पसन्द करता हूँ।

केतकी – जैसी मर्जी आपकी ! (श्यामा और भामा की तरफ देख कर) अच्छा जाओ तुम लोग जल्दी अपनी छुट्टी करके आओ।

श्यामा और भामा भोजन करने चली गई। अब केतकी और नरेन्द्रसिह में बातचीत होने लगी।

नरेन्द्र – हा मोहिनी, अब मौका बहुत अच्छा है अब अपना हाल कहो।

मोहिनी – नहीं, पहिले आप ही अपना हाल कहिए।

नरेन्द्र – नही नहीं पहिले तुम्हीं को कहना पडेगा। हा बोलो जगल में तुम्हारी जान किसने बचाई ?

कतकी – (कुछ साच कर) घूमते फिरते एक साधू जगल में आ गय । उन्हीं की बदौलत मरी जान बची इसके बाद आप्स मुलाकात हुई ।

अब ता जो कुछ थोडा बहुत शक नरेन्दसिह क मन में था वह भी जाता रहा फिर कतकी स कोई सवाल न किया केतकी क पूछने पर कुछ झूठ सच अपना नाम पता आदि बता कर ऊपर क दिल न आध घण्ट भर तक उसस बातचीत करत रह । तब तक श्यामा और भामा भी आ गई । तब नरन्दसिह उठ कर चारपाई पर चल गय । केतकी चारपाई क नीच उनके पास जा बैठी श्यामा पैर दबान और भामा पखा झलन लगी । नरन्दसिह थाडी देर तक कतकी स हँसी दिल्लगी करत रह इसक बाद सा रह ।

नरेन्दसिह न जान बूझ कर आखें बन्द कर लीं । कतकी समझी कि इन्हें नींद आ गई । थाडी दर बैठ कर चली गई तब इन्होंन अपनी ऑखें खाली और हँस कर श्यामा की तरफ देखा ।

श्यामा – (मुस्कुरा कर) आपका ता खूब नींद आइ !

नरन्द – क्या कहें उसस ता बात करन का भी जी नहीं चाहता अब ता मुझ भागन की फिक्र पडी है ।

श्याना – हाशियार रहिय कतकी का अगर जरा भी शक हा जायगा कि आप भागा चाहत हैं ता बिना आपकी जान लिय न छाडगी ! वह हमेशा स ऐसा ही करती आई है न मालूम कितन बचारे इसी कमरे में अपनी जान दे चुके हैं ।

नरन्द – उसक उस्ताद का ता पता लगगा ही नहीं !

श्यामा – दखिये मरा ख्याल रखियगा ! कहीं एसा न हा कि आप मुझ यहीं छाड जाय और मैं पीछे कुत्तों स नुचवाइ जाऊ !!

नरेन्द – वाह वाह ! क्या तुमन मुझ एसा बमुरौवत समझ लिया है !

श्यामा – आपके बेमुरौवत होने में काई शक है ?

नरन्द – (जाश में आकर) क्या दा ही घण्ट की जान पहिचान में मुझे बमुरौवत भी समझ लिया ?

श्यामा – जी नहीं मगर मैं आपकी तारीफ सब सुन चुकी हूँ । मरी मौसी आप ही के शहर में रहती हैं और उनकी चीठी पत्री बराबर आया करती है इस सबब स आपका कोई हाल मुझसे छिपा हुआ नहीं है ।.

नरन्द – ता क्या तुम्हारी मौसी न लिखा है कि नरन्द नालायक है ?

श्यामा – नहीं मगर उन्होंने रम्भा का हाल जरूर लिखा है ।

नरन्द – रम्भा कौन ?

श्याना – जिससे आपने शादी की है ।

नरन्द – मरी शादी ता हुई ही नहीं ! मैं ता बारात में स ही निकल भागा था !

श्यामा – आप जा चाह समझें मगर आपके निकल भागने से हाता ही क्या है । रम्भा तो समझ चुकी कि आपक साथ शादी हो गई अब क्या वह दूसरी शादी करगी !

नरन्द – क्या उसका बाप उसकी दूसरी शादी न करगा ?

श्यामा – उसक बाप न तो बहुत कोशिश की थी कि उसकी दूसरी शादी कर मगर रम्भा न साफ इन्कार कर दिया और कह दिया कि मेर पति तो नरन्द हो चुके !!

नरन्द – फिर क्या हुआ ?

श्यामा – उसके बाप न बहुत काशिश की और कई आदमियों स उस कहलाया कि नरन्द बडा ही बदमाश और बदसूरत था क्या हुआ जा चला गया पण्डित लोग कहत हैं दूसरी शादी करन में कोई हर्ज नहीं है मगर रम्भा ने एक न मानी और बाली कि नरन्द चाहे कैस ही खराब से खराब क्यों न हों मगर मर लिए बहुत अच्छ हैं । जब लागों न उसे बहुत तग किया तब वह अपनी एक सखी और चचेरे भाई अर्जुन को साथ ले आपको खाजन निकली । अब न मालूम वह कहा कहा टक्करें मारती और मुसीबत झलती हागी । उस औरत का दखिय कि अपने धर्म का उस कैसा खयाल रहा और बिना दख आपक प्रम में कैसी उलझ गई इसके खिलाफ आप अपन का दखिये कि कहॉ ता यह शेखी कि शादी ही न करूँगा कहाँ माहिनी का देख एसा मस्त हुए कि बस उस रग ढग की जहॉ किसी का दखा माहिनी ही समझ लिया और इश्क का पिशाच आपके सिर पर सवार हा गया ! अब कहिये आपके बेमुरौवत होने में कोई शक है ! आप मेरी बातों से खफा न हाइयगा मुझस साफ साफ कहे बिना नहीं रहा जाता, मैं क्या करूँ !

नरन्द – नहीं नहीं खफा क्यो हान लगा मगर श्यामा तुम तो गजब की औरत हा । न मालूम कहॉ कहॉ की बातें तुम्हें मालूम हैं । अगर सचमुच रम्भा न एसा किया जैसा तुम कहती हो तो जरूर मुझे उसके आगे शर्मिन्दा होना पडेगा !

श्यामा – जी हा मैं जा कुछ कहती हूँ बहुत सही कह रही हूँ । अब उसके बाप न बहुत स आदमी उसकी खाज में इधर उधर रवाना किय है । मेरी मौसी न जब बचारी रम्भा का हाल लिखा तो पढ कर मुझे बडा ही रज हुआ । मैंन अपनी मौसी स उसकी तस्वीर मॉग भजी उसने बडी काशिश कर क उसकी तस्वीर उसके घर से लाकर मुझ भजी है उसी के साथ आपकी तस्वीर भी आई थी अभी परसों ही तो वह तस्वीर मुझ मिली है । हाय उसके देखन से कितना रञ्ज हाता है !

नरेन्द्र – उसकी तस्वीर कहाँ है, मुझे दिखाओ !

श्यामा – उसको देख कर आप क्या कीजियेगा, आपको तो औरतों से नफरत ही है !

नरेन्द्र – भला देखें तो सही कि वह कैसी है जिसने मेरी इतनी कदर की।

श्यामा – खैर उसने जो मुनासिब समझा किया, आपको तो उसकी गरज ही नहीं है फिर तस्वीर देख कर क्या कीजियेगा !

नरेन्द्र – तुमने उसका हाल मुझे ऐसा सुनाया कि मेरे रोंगटे खड़े हो गये। मैं तुम्हारा बड़ा ही अहसान मानूँगा अगर तुम उसकी तस्वीर मुझे दिखा दोगी।

श्यामा – (भामा की तरफ देखकर) अच्छा बहिन रम्भा की तस्वीर लाकर इन्हें दिखा दो।

भामा वहाँ से चली गई और बहुत जल्द रम्भा की तस्वीर ले कर आई। घबराहट के मारे नरेन्द्रसिंह ने खुद उठ कर बल्कि कुछ आगे बढ कर रम्भा की तस्वीर भामा के हाथ से ले ली और एक निगाह उस पर डाली। वह तस्वीर थी या कोई आफत कि देखते ही नरेन्द्रसिंह की हालत बदल गई चारपाई पर बैठना भूल गये और उसी जगह जमीन पर बैठ तस्वीर देखने और आँसू बहाने लगे। कई सायत के बाद बोले –

' अहा ! क्या यही वह रम्भा है जिसको मैंने एकदम त्याग दिया और जिसके साथ शादी करने से इनकार कर दिया। हाय इस दुनिया में कोई मेरे ऐसा कम्बख्त न होगा जिसने आती हुई लक्ष्मी को लात मारी। आह, यह खूबसूरती ! इतना बढा-चढा हुस्न ! तिस पर इतनी नेक और पतिव्रता !! हाय ! बदनसीब नरेन्द्र ! तैने बहुत बुरा किया जो ऐसी को सताया। जरूर इसी पाप का फल भोग रहा है। बिना देखे और जाचे किसी की बेकदरी करना बड़ी भारी भूल है। क्या ऐसी गुणवाली औरत तुझे कहीं मिल सकती है ? हाय ! अगर मेरी आखों में शील और मुरौवत और हृदय में दया होती तो इसके सामने किसी का कभी नाम भी न लेता ! मगर नहीं, उसका खयाल अगर दूर कर दूँगा तो पक्का बेईमान और बेमुरौवत कहलाऊँगा और दुनिया में मेरी कुछ भी कदर न रहगी। मगर क्या मोहिनी को रम्भा ऐसी नेक औरत की खिदमत करने में कुछ उज्र होगा ? कभी नहीं ! खैर जो कुछ होगा देखा जायेगा अब तो रम्भा को खोजना ही मेरा पहला काम हुआ ! अच्छा अगर यह न मिली तो मैं क्या करूँगा ? इसके कहने की कोई जरूरत नहीं, किसी दूसरे का नहीं तो अपनी जान का तो मैं मालिक हू !!

इसी तरह की बातें घण्टों तक नरेन्द्रसिंह कहते तथा बकते झकते रोते कलपते और अफसोस करते रहे। दूर ही से श्यामा और भामा इनकी दशा देख मुस्कुराती रहीं। मगर आखिर श्यामा से न रहा गया, जी उमड आया बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाला और नरेन्द्रसिंह के सामने आकर बोली आप यह क्या कर रहे हैं !बिल्कुल बनी बनाई बात बिगाड़ना चाहते हैं ! कहीं केतकी आ जाय और इस तरह पर आपको देखें तो कहिए क्या हो ? अब उसके आने का वक्त भी हो गया है, लाइये यह तस्वीर मुझे दीजिए। लेकिन आप घबराइये नहीं, मैं वादा करती हूँ कि आपको रम्भा से मिला दूँगी। मैं उसका बहुत कुछ हाल जानती हूँ और यह भी जानती हूँ कि इस समय वह कहाँ है।'

नरेन्द्र – (सिर उठा के श्यामा की तरफ देखकर) है !क्या तुम जानती हो कि इस समय रम्भा कहा है और वादा करती हो कि मुझे उससे मिला दोगी !

श्यामा – हाँ हाँ मैं जानती हू और वादा करती हू कि आपको रम्भा से मिला दूँगी मगर इस शर्त पर कि जो कुछ मैं कहूँ आप उससे इन्कार न कीजिये।

नरेन्द्र – मुझसे कसम ले लो मैं कभी तुम्हारे कहने के खिलाफ चलू। हाय इस वक्त तुम भी मुझको भली मालूम होती हो क्योंकि (तस्वीर देखकर) रम्भा की बहुत सी बातें तुममें पाई जाती हैं।

श्यामा – (भामा की तरफ देख कर और मुस्करा कर) बहिन जरा इनकी बातें तुम भी याद रखना !

भामा – मुझे तो यही डर है कि कहीं केतकी न आ पहुँचे।

नरेन्द्र – केतकी भला मेरा क्या कर लेगी ? क्या मैं मर्द हो कर औरत से डरूँगा ? केतकी की मजाल है जो मुझे रोक सके !!

श्यामा – राम राम, ऐसा न कहिये ! चाहे केतकी आपका कुछ न कर सके मगर उसका बन्दोबस्त ऐसा है कि आप ऐसे दस को भी वह कुछ नहीं समझती। इसका हाल तो मैं जानती हूँ। लाइये यह तस्वीर मुझे दीजिए और चारपाई पर आकर लेटिए। अब तो मैं इस बात का बीड़ा ही उठा चुकी हूँ कि आपका रम्भा से मिला दूँगी फिर क्या है ? अगर आप मेरी बात नहीं सुनते तो लीजिए फिर मैं जाती हूँ, आप जानिए आपका काम जाने !

नरेन्द्र – नहीं नहीं तुम जो कहोगी मैं वही करूँगा लो तस्वीर लो मगर फिर जब मैं माँगू तब दे देना।

श्यामा – हाँ यह हो सकता है।

नरेन्द्रसिंह ने रम्भा की तस्वीर श्यामा के हाथ में दे दी और पलग पर आकर लेट रहे मगर उनकी क्या दशा थी यह वही जानते होंगे।

थोड़ी ही देर में सीढी पर चढते हुए किसी आदमी के आने की आहट मालूम हुई। तीनों की निगाह दरवाजे पर जा लगी, देखा तो केतकी आ रही है।

मगर इस समय केतकी का रग बदला हुआ था। गुस्से के मार उसका गारा मुँह सुर्ख हो रहा था ऑख लाल नजर आती थीं और बदन कॉप रहा था। आते ही वह कडक कर बोली–

"क्यों रे श्यामा ! क्या तूंने मुझका छाकडी समझ लिया ? अरे तेर ऐसे पचास का मै चरा के रख दूँ, क्या मुझस चालाकी खेलेगी ? वाह री लौंडी ! अच्छा खिदमत करन के बहाने मुझ पर बिजली गिराने लगी। वह दिन याद नहीं कि बैठने का ठिकाना तुझको नहीं मिलता था ? मैंने अपने यहाँ रख लिया यह क्या तरे साथ कोई बुराई की ? मगर पॉच ही सात दिन में तेरे गुन जाहिर हो गये ! मैं नहीं समझती थी कि तू आस्तीन की नागिन बन जायगी ! अर शैतान की बच्ची ! तुझको जरा भी मरा डर न हुआ ! क्या तू नहीं जानती थी कि मै कौन हूँ ! क्या तुझे यह खयाल न हुआ कि केतकी अगर कहीं छिपके सुनती होगी तो मेरी क्या दशा करेगी ? अरे मै ता पहले ही ताड गई थी कि इनक पास तेरा इतना बैठना उठना और खिदमत करना बसबब नहीं है जरूर कुछ दाल में काला है। अगर मैं छिप के सब बात न सुनती तो मुझे भला क्या मालूम होता कि तै जहर की बुझी कटारी है !यह खूबसूरती और यह कसाईपना !अरे मैंने तो समझा था कि यह किसी बड़े खानदान की नेक लडकी है, किसी आफत के सबब मारी मारी फिर रही है इसे रख लो, मैं क्या समझती थी कि तू मेरे ही लिए काल हो जायगी ? अच्छा तैंने तो मेरा भण्डा फोड ही दिया अब ले तू भी क्या याद करेगी कि किसी से काम पडा था !!

इतना कह फुर्ती से नरन्द्रसिह की बगल से तलवार उठा ली और श्यामा के ऊपर चलाई मगर नरेन्द्रसिह ने झपट कर उसकी कलाई थाम ली और इतना उमेठा कि तलवार का कब्जा उसके हाथ से छूट गया, इसके बाद एक लात एसी मारी कि वह दूर जाकर धम्म से गिर पडी और बडे जार से चिल्लाई।

केतकी के चिल्लात ही पचासों सिपाही नगी तलवारें हाथों में लिए हुए इस तरह आ पहुँचे मानो वे लोग सीढी पर तैयार ही थे और केतकी की आवाज की राह भर देख रहे थ।

इनको देखते ही नरेन्द्रसिह ने झट तलवार उठा ली और देखने लगे कि ये लोग क्या करते हैं।उन सिपाहियों में से दस तो श्यामा और भामा की तरफ झुके और बाकी नरन्द्रसिह के अगल बगल हो गए। जब श्यामा और भामा की मुश्कें कसी जानें लगी तब श्यामा न ऑखों में ऑसू भर कर नरेन्द्रसिह की तरफ़ देखा और कहा –

प्राणनाथ ! अब ता मै जाती हूँ, लेकिन आप रम्भा जी की खाज में दु ख न उठाइयेगा क्योंकि आपकी दासी वह कम्बख्त रम्भा मैं ही हूँ और प्यारी सखी तारा यही मरे साथ है। मै चाहती थी कि किसी अच्छे मौके पर अपना भेद खोलूँ मगर हाय विधाता तैंने कुछ करन न दिया !

इतना सुनत ही नरेन्द्रसिह को जोश चढ आया। गरज कर जवाब दिया कि 'क्या मजाल है किसी की जो मेर जीते जी रम्भा को सता सके'। इतना कह दसों सिपाहियों पर टूट पडे जो रम्भा और तारा (श्यामा और भामा) की मुश्कें बॉध कर उठा ल जाया चाहते थे। फुर्ती से दो आदमियों का सिर धड़ से अलग किया इतने में सब के सब नरन्द्रसिह पर टूट पडे।

इस समय नरेन्द्रसिह की बहादुरी देखने लायक थी। जैसे शेर बकरियों के झुण्ड में उछलता हो वही हालत इनकी थी। इनके बदन में कई जख्म लगे मगर इन्होंने दखते देखते दस बारह आदमियों को काट के गिरा दिया जिससे कुल सिपाहियों क हौसल पस्त हा गये। मगर इतने ही में गिरी हुई एक तलवार उठा कर केतकी ने पीछे से नरेन्द्रसिह की पीठ पर मारी जिसक साथ ही नरेन्द्रसिह ने पीछ फिर के दखा। उसी वक्त एक सिपाही ने ऐसी तलवार इनके सिर में मारी कि यह ठहर न सके और चक्कर खाकर जमीन पर गिर पडे।

बारहवां बयान

रम्भा के भाई अर्जुनसिंह क्या हुए ? रम्भा और तारा गयाजी से यकायक इस शैतान की बच्ची केतकी के यहा कैसे आ पहुँचीं ? नरन्दसिह की अब क्या गति होगी ? बहादुरसिंह इस समय कहाँ और किस फिराक में हैं। बेचारी माहिनी और गुलाब कहाँ टक्कर मार रही है ? रम्भा जब घर स निकल काशीजी रवाना हुई तो उसके घर में क्या धूम मची ? नरेन्द्रसिह के भाई जगजीतसिह उनकी खोज में निकले थे वह कहा गए ? इत्यादि बहुत सी बातें जानने के लिए इस समय पाठक उत्कठित हा रहे होंगे इसलिए हम नरन्दसिह रम्भा तारा और केतकी को इसी दशा में छाड दूसरी तरफ झुकते है और पहिले जगजीतसिह की कथा सुनाते हैं।

जगजीतसिह न भाई की खोज में जाने के पहिले ही बहादुरसिह स सब हाल पूछ लिया था और उस तहखाने का भी पता मालूम कर लिया जिसमें बहादुरसिह कैद थे।

बहादुरसिह से जुदा हाकर जगजीतसिह कई आदमियों का साथ लिये बनदेवी के मन्दिर में पहुँचे और माई का दशन कर बडी देर तक प्रार्थना करते रह। इसके बाद मन्दिर के बाहर आकर अपनी मामूली पोशाक उतार दी और साधुओं क कपडे जा घर से लेते आय थे पहन लिए बदन में सिर से पैर तक विभूति मल ली लगाटा कस कर एक छोटी

सी दुनाली पिस्तौल गोली भर कर कमर में छिपा ली ओर कुछ गोली बारूद अलग भी रख ली। ऊपर से गेरुये रंग का लम्बा लबादा पहिर हाथ में एक बडा सा चिमटा ले लिया और अपने साथ दो बहादुरों का भी ऐसी ही सूरत बना उनकी कमर में भी एक पिस्तौल और छुरी छुपा कर ऊपर से गेरुआ लबा अबा पहिरा उनके हाथ में भी एक भारी चिमटा दे दिया। तब सिर्फ इन्हीं दो आदमियों का साथ लेकर बाकी सभों को घर की तरफ लौटा कर पैदल वहां से रवाना हुए और पहिले उसी तहखाने की तरफ चले जिसमें बहादुरसिंह कैद था।

कुछ रात जा चुकी थी जब ये तीनों आदमी वनदेवी के मन्दिर से रवाना हुए। चन्द्रमा निकल आया था उसकी सुन्दर चांदनी चारों तरफ फैल गई थी। आसमान पर छोटे छोटे बादल के टुकड़े मन्द मन्द हवा के झोंकों से धीरे धीरे दौड रहे थे। कभी थोड़ी देर के लिए चन्द्रमा बादलों में छिप जाता मगर तुरन्त ही उस टुकड़े के हट जाने से निकल आता था।

एक पहर रात जाते जाते ये तीनों आदमी उसी नाले के किनारे पहुँचे जहां बहादुरसिंह से मुलाकात हुई थी। जगजीत सिंहके दोनों साथियों का नाम जयसिंह और हरीसिंह था। ये दोनों बडे बहादुर और लड़ाई के फन में यकता थे। नरेन्द्रसिंह के बाप उदयसिंह के दरबार में इन दोनों की अच्छी कदर थी और लडाई भिड़ाई के काम में इन दोनों की बराबर राय ली जाती थी। जयसिंह की उम्र पचास वर्ष के ऊपर थी मगर हरीसिंह अभी पचीस वर्ष का दिलावर होनहार बहादुर था।

जयसिंह ने कहा देखिए आसमान पर बदली गहरी होती जाती है थोडी देर में पानी जरूर बरसेगा। ऐसे समय दूर का रास्ता पकडना मुनासिब नहीं है, पास ही आपका शिकारगाह है वहाँ चलिये। शिकार खेलने का तहखाना भी आज साफ है उसी में डेरा दें। अगर पानी बरसा तो रात उसी जगह काटेंगे नहीं तो चांदनी निकल आने पर उधर का रास्ता पकडेंगे जहां जाने का निश्चय कर चुके हैं।

जगजीतसिंह ने इस बात को पसन्द किया और रात उसी तहखाने में काटी पानी भी सवेरे तक खूब बरसता रहा। दूसरे दिन सवेरे पानी खुलने पर ये लोग वहाँ से रवाना हुए। जगजीतसिंह ने सोचा कि पहिले उस ठिकाने चलना चाहिए जहां बहादुरसिंह कैद था, जरूर कुछ न कुछ पता लग ही जायगा।

जगजीतसिंह को इस बात का डर न था कि वहां डाकुओं की मण्डली भारी होगी और हमलोग कुल तीन ही आदमी हैं क्योंकि एक तो यह तीनों अपने साज सामान और ताकत के ऐसे पूरे थे कि दस बीस आदमियों का भगा देना इन लोगों के सामने कोई बडी बात न थी दूसरे जगजीतसिंह अल्हडों की तरह सिर्फ दो ही आदमी साथ लेकर नरेन्द्रसिंह की खोज में नहीं निकले थे बल्कि उन्होंने बहुत कुछ सामान अपने लिए कर के तब घर से बाहर पैर निकाला था। उन्होंने और क्या सामान किया था इसके कहने की अभी कोई जरूरत नहीं समय पडने पर आप ही मालूम हो जाएगा।

रास्ते में कोई घटना नहीं हुई और चौथे दिन दोपहर को ये तीनों उस तहखाने के पास पहुंच गए जिसमें बहादुरसिंह कैद था।

इस जगह कोई इमारत न थी न कोई मकान ही था कोई ऐसा निशान भी नहीं दिखाई देता था जिससे मालूम हो कि वहां जमीन के अन्दर कोई तहखाना है हां बहादुरसिंह ने तहखाने की पहचान जगजीतसिंह को बता दी थी इसलिए इनको मालूम हो गया था कि यही वह तहखाना है जिसमें बहादुरसिंह कैद था।

इस जगह एक निहायत उम्दा बहुत बडा संगीन कूआ देखने में आया जिसकी कुर्सी जमीन से तीन हाथ ऊंची थी। कूएं के ऊपर जाने के लिए चारो तरफ पत्थर की सीढियाँ बनी हुई थीं।

हरी–यही वह कूआँ मालूम होता है।

जगजीत–इसमें कोई शक नहीं कि यह वही कुआँ है जिसे बहादुरसिंह ने तहखाने का दर्वाजा कहा था। चारो तरफ की सीढियों को अच्छी तरह देखो, किसी सीढी के नीचे बगल में दर्वाजा होगा।

जय–(चारों तरफ देख कर और एक सीढी के पास खडे होकर) दर्वाजा तो कोई नहीं है मगर यहाँ दर्वाजा होने का एक निशान जरूर मालूम होता है, आप जरा इधर आइये और देखिए।

जगजीत – (जयसिंह के पास जाकर और देख कर) क्या निशान है ?

जय–यह जमीन नम (गीली) मालूम होती है, मैं समझता हूँ डाकुओं ने यह जगह छोड़ दी और ईंट से यह दर्वाजा बन्द कर चूना चढा बराबर कर दिया है। (चिमटे से खोद और एक ईंट निकाल कर) देखिए अब साफ मालूम होता है।

जगजीत–छोड दो, अब खोदना व्यर्थ है।

जय–खोदना व्यर्थ न होगा चाहे डाकुओं ने यह जगह छोड़ दी हो मगर हाल चाल लेने के लिए कोई न कोई डाकू यहाँ रोज जरूर आता होगा, क्योंकि उन लोगों को भोलासिंह के फँस जाने से बहुत कुछ डर पैदा हो गया होगा। मेरी राय है कि दर्वाज़ा साफ कर दिया जाय और इसी कूए पर हम लोग डेरा डालें। जब डाकुओं में से कोई पता लगानेके लिए यहाँ आयेगा इसको खुदा हुआ देख उसे जरूर शक होगा। उस समय हमलोग उसकी सूरत और आकृति ही से पहिचान जायँगे कि यह डाकू है।

जगजीत–बात तो ठीक है, अच्छा ऐसा ही करो।

हरीसिह और जयसिह न मिल कर अपने बडे बडे चिमटों से खोद के वह दर्वाजा साफ कर डाला। चौखट किवाड और बन्द ताला भी निकल आया। यह दर्वाजा बहुत बडा न था बल्कि ऐसा था कि बिना अच्छी तरह झुके कोई उसके अन्दर नहीं जा सकता था। जयसिह ने ताला तोड डाला।

जगजीत–चलो इसके अन्दर चल कर दखें कि क्या है ?

जय–ऐसा भूल के भी न कीजियेगा !

हरी–क्यों ?

जय–हम लोग इसके अन्दर चले जायें उधर कोई डाकू यहॉ आवे और शक करके बाहर का दर्वाजा बन्द कर दे तो बस हम लोग इसी के अन्दर ही सडा करें ! यह कोई बुद्धिमानी नहीं है।

जगजीत–यही सब सोचने के लिए तो तुम्हें साथ ले आये है।

हरी–अच्छा आप दोनों आदमी खडे रहिए मै जाता हूँ।

जय–बिना रोशनी के भीतर जाकर क्या देखोगे ? इस समय रहने दो फिर देखा जायगा।

शाम हो गई। तीनों ने उस कुए पर आसन जमाया और अच्छी तरह सलाह कर ली कि अब क्या करना चाहिए।

अभी अधेरा नहीं हुआ था कि एक देहाती उस कुएँ के पास पहुचा और जगजीतसिह को झुक कर सलाम करने के बाद हरीसिह और जयसिह को सलाम करके खडा हो गया।

जगजीत – कहो क्या हाल है ? तुम्हारे और साथी सब कहॉ है ?

देहाती – सब इधर उधर फैले हुए है जब किसी को कुछ हाल मिलेगा तब वह आपके हुक्म मुताबिक इसी कुए पर पहुँचेगा।

जय – तुम्हें क्या काई हाल मिला है जो यहॉ आये हा ?

देहाती – दो बातें मेरे देखन में आई हैं।

जय – वह क्या ?

दहाती – आप लोग तो चक्कर देते हुए इधर आए और मै सीधा गयाजी चला गया। वहॉ से फल्गू पार हो पूरब तरफ चला। लगभग तीन कोस जाने के बाद जगल में एक भारी इमारत नजर आई, मै उसी तरफ झुका और वहा पहुच कर उसके इर्द गिर्द घूमने लगा।

जय – फिर ?

दहाती – जब रात हुई तो बहुत से आदमी उस मकान से बाहर निकले और सीधे दक्खिन का रास्ता लिया। मैं भी चक्कर दे उस भीड में मिल गया। देखा कि वे लोग कई लाशों को उठाए लिए जा रहे है। मैन सोचा कि बिना कारण ही एक दम इतने नहीं मर सकते, इस मकान के अन्दर जरूर कुछ न कुछ खून खराबा हुआ है। आखिर वही बात निकली। वे लोग आपस में धीरे धीरे बातें करते जा रहे थे। कुछ बातें तो मरी समझ में नहीं आईं। हॉ इतना मालूम हुआ कि उसी मकान में जिसमें से वे लाग निकले थ गया के जमींदार उसी हजारी सिह की लडकी रहती है जिसने हाजियों की लडाई में आपके पिता को मदद दी थी और वे सब आदमी हमारे नरेन्द्रसिह के हाथ से मरे हैं जिनकी लाश वे लोग उठाए लिए जा रह थ।

जय – खाली बातों स तुमने कैसे निश्चय कर लिया कि वे सब नरेन्द्रसिह के हाथ से मरे थे ?

देहाती – जी हॉ उन्हीं में से एक बोल उठा आखिर नरेन्द्रसिह बिहार के प्रतापी और बहादुर राजा उदयसिह का पुत्र है वह अगर मैदान पाता तो और भी कितनों ही की जान लेता ! यह सुन दूसरा बोला नरेन्द्रसिह को गिरफ्तार कर लेना भी केतकी के हक में ठीक न होगा खैर यहॉ तक तो नमक की शर्त अदा कर दी अब ऐसे की नौकरी कभी न करूँगा इसके सिवाय और भी बहुत सी बातें सुनने में आईं जिसस मुझ निश्चय हो गया कि वे सब नरेन्द्रसिह के हाथ मरे है मगर इतनों को मारने के बाद आखिर में वे खुद भी गिरफ्तार हो गए।

जग – पिताजी का यह खबर कहला भजनी चाहिए।

जय – कोई जरूरत नहीं मालूम होती।

देहाती – ताज्जुब नहीं कि उन्हें यह खबर लग गई हो।

जय – मै यही खयाल करता हूँ, क्योंकि उनकी चाल और नीति भी बडी ही टेढी है।

जगजीत – अच्छा तो अब यहॉ ठहरना ठीक नहीं है।

जय – जी हा चलिए हमलोग भी उसी तरफ चलें। (देहाती की तरफ देख के) हरी दखो हम तुम्हें दो तीन काम सुपुर्द किये देते हैं जहॉ तक हो उन्हें जल्दी करना।

हरी – जो हुक्म।

जयसिह ने देहाती को जिसका नाम हरी जासूस था कई बातें समझाई और इसके बाद तीनों आदमी वहॉ से उठ कर कतकी के मकान की तरफ रवाना हुए।

तेरहवां बयान

अब हम फिर नरेन्द्रसिह और केतकी का हाल लिखते है। जब उनको केतकी की शैतानी का हाल मालूम हुआ तब यह सोच कर कि गुलाब और मोहिनी के दु ख का कारण यही है, उन्हें उसके ऊपर बहुत ही गुस्सा आया। उसी समय श्यामा और भामा की जुबानी रम्भा के प्रेम का हाल सुन उनकी और ही दशा हो गई और उस रम्भा से मिलने का शोक हद्द से ज्यादे पैदा हुआ। जब गिरफ्तार होते समय श्यामा ने कहा कि मै ही रम्भा हूँ तब तो उनकी ऑखों में खून उतर आया और अपनी जान से हाथ धो केतकी के आदमियों से लड गए, मगर क्या हो सकता था यह अकेले और वे बहुत थे आखिर कई आदमियों को मार कर खुद भी गिरफ्तार हो गए।

हरामजादी केतकी नरेन्द्रसिह रम्भा और तारा के खून की प्यासी बन बैठी। उसने तीनों को कैद में डाल दिया मगर कई दिनों तक नरेन्द्रसिह को समझाती और कहती रही कि मोहिनी गुलाब और रम्भा का ध्यान छोड मेरे साथ शादी कर लो बल्कि मेरे सामने अपने हाथ से रम्भा का सिर काट डालो तो तुम्हें कैद से छुट्टी मिल जायगी मगर नरेन्द्रसिह इसे कब मजूर करने लगे, जवाब में सिवाय चुप रहने के वे और कुछ भी न बोले। आखिर लाचार हो केतकी ने मन ही मन निश्चय कर लिया कि आज रात को अपने हाथ से नरेन्द्रसिह रम्भा और तारा का सिर काट कलेजा ठडा करेगी।

यह केतकी लडकपन ही की शैतान थी। इसी तरह इसने कई आदमियों को फॅसा फॅसा कर अपने हाथ से मार डाला था। इसने पहले तो सोचा कि थोडे दिन तक और भी नरन्द्रसिह को कैद रख कर समझावे बुझावे मगर यह ख्याल करके कि यदि यह भेद राजकर्मचारियों को मालूम हो गया तो बडी मुश्किल होगी, उसने ज्यादा दिनों तक इनको कैद रखने का हौसला न किया।

एक दिन चॉदनी रात में छत पर बैठी बाग की बहार देख रही थी, उसकी सखियां भी पास ही बैठी हुई थीं और नरेन्द्रसिह की खूबसूरती पर रहम खा उन्हें छोड देने के लिए समझा रही थीं, मगर इस सगदिल का दिल नरम न हुआ और इसने झुझला कर कैदी नरेन्द्रसिह को हाजिर करने का हुक्म दिया।

यह मकान जिसमें केतकी रहती थी शहर से बहुत दूर था। यहॉ से गयाजी लगभग तीन चार कोस के होगी, पास में और कोई दूसरा शहर या कसबा न था। इस मकान के चारों तरफ कोसों तक जगल ही जगल था यहा तक के किसी आदमी के पहुँचने का बहुत कम मौका पडता, इसलिए वह यहॉ बहुत ही स्वतन्त्रता से रह कर बेखौफ अपना दिन ऐयाशी में बिताया करती थी।

नरेन्द्रसिह केतकी के सामने लाये गये। उसन अपने हाथ में तलवार ले ली और उन्हें धमकाना शुरू किया, मगर उसी समय पूरब तरफ से शोरगुल की आवाज आती सुन वह ठिठक गई और खडी होकर देखने लगी। मालूम हुआ कि सैंकडों आदमी गरजते हुए इसके मकान की तरफ ही चले आ रहे हैं। देखते ही देखते उन सभों ने जो अन्दाज में पॉच सौ से कम न होंगे पास पहुच कर चारों तरफ से इस मकान को घेर लिया।

केतकी के सिपाहियों ने इन्हें रोकना चाहा मगर ऐसा कब हो सकता था। वे पचास से ज्यादे न थे और घेरा डालने वाले पाच सौ से भी ज्यादा। आखिर आये हुए आदमियों के हुक्म से उन्हें फाटक से हट ही जाना पड़ा।

लगभग सौ आदमियों के नगी तलवारें लिए कोठी पर चढ गये। जो कुछ माल असबाब या हर्वा उस मकान में पाया सब लूट लिया, एक पैसे की जमा या छटाक भर लोहा उस मकान में न छोडा, यहॉ तक कि केतकी और उसकी सखियों के बदन से भी कुल जेवर उतार लिए और जाती समय रोती चिल्लाती रम्भा और तारा को भी लेते गये मगर रस्सियों से जकड़े हुए नरेन्द्रसिह को ज्यों का त्यों छोड गए। इन सभों के मुँह पर नकाब पडी हुई थी इसलिए कुछ भी जान न पडा कि ये कौन थे, कहॉ से आए थे या केतकी के साथ इनकी कब की दुश्मनी थी।

चौदहवां बयान

हम ऊपर लिख आये हैं कि केतकी के मकान पर बहुत से आदमी चढ गए और सब कुछ लूट लिया यहॉ तक कि जाती समय रम्भा और तारा को भी लेते गये।

इन लुटेरों के पहुचने और इस तरह की कार्रवाई करने से केतकी की अजब हालत हो गई। जान बची इसी को उसने गनीमत समझा और कहीं फिर वे लोग पहुच कर कुछ और दु ख न दें इस खौफ से वहॉ ठहर भी न सकी। नरेन्द्रसिह को उसी हालत में छोड नीचे उतर आई और यह कहती हुई मकान के बाहर निकल गई कि 'जिसको मेरा साथ देना मजूर हो चला आवे, अब मै इस मकान में एक सायत भी नहीं टिक सकती।'

उसकी कुछ सखियों और दो चार सिपाहियों ने तो साथ दिया, बाकी सभों ने अपना अपना रास्ता लिया क्योंकि इसकी चालचलन से सभी नाराज थे मगर उन लोगों को लाचारी थी जिनको कल के लिए खाने का ठिकाना न था और तनखाह भी कम पाते थे, इसलिए ऐसों ही ने इसका साथ दिया।

अव सिर्फ नरेन्द्रसिह इस मकान में रह गए सा भी इस हालत में कि न कहीं जा सकते हैं और न कुछ कर सकत हैं क्योंकि हाथ पैर कैदियों की तरह बँधे हुए थे। चारो तरफ जगल के वीच में यह मकान तो था ही तिस पर इस सन्नाटे ने, और भी गजब किया ऊपर से रम्भा की जुदाई न तो मौत की ही सूरत दिखा दी जो उनके (नरेन्द के) देखते देखते जबर्दस्ती माल असवाव की तरह उन लुटेरों के हाथ पड गई थी।

क्या वे लोग डाकू थे ? नही अगर डाकू हाते ता सिर्फ माल असवाव से मतलव रखते, रम्भा और तारा को उठा ले जान स वास्ता ? शायद औरतों को भी उन्होंने माल ही समझा हो और उन्हें वेच कर रुपये वसूल करने की नियत हा ? नहीं नहीं, अगर ऐसा होता तो केतकी को क्यों छोड जाते ? केतकी के सिवाय उसकी कई सखिया भी तो इस मकान में थीं उनको भी ले जाते ! वेशक रम्भा और तारा के ले जाने का कोई खास मतलब है। हाय, रम्भा के सच्च प्रेम ने ता मुझे और भी दु ख में डाल दिया। उस वेचारी ने मेरे लिए कितनी तकलीफें उठाईं ! वाप मा को छोडा तनोबदन की सुध भुला दी अपने देश और वाधवों को लात मार मेरी खोज में चल खडी हुई ! किसी तरह मुझ तक पहुँची भी तो हाय, किस्मत ने एक नया ही गुल खिलाया। आज उसकी मुसीवत का क्या कुछ ठिकाना होगा !!

इन्हीं वातों को साच सोच कर नरन्द्रसिह ऑसू बहा रह थे। थोडी थाडी दर पर लम्बी सॉसों से कलेजा ठण्डा किया चाहते थे मगर क्या हा सकता था। ज्यों ज्यों आसमान के तारे घसके जा रहे थे त्यों त्यों इनके जिगर की चिनगारियों में भी चमक बढती जा रही थी यहाँ तक कि सुवह की नर्म ठण्डी और खुशवूदार हवा चलन लगी। आफत क मारे बेचारे नरन्द्रसिह क सर पर से अब तारों ने भी अपना साया हटा लिया और गम की फौज का लाल झण्डा पूरव तरफ क आसमान पर दिखाई देन लगा।

अभी सूर्य अच्छी तरह नहीं निकला था कि फिक्र के दरिया में गात खाते हुए नरन्द्रसिह को किसी आने वाल के पैरों की आहट ने सहारा दिया। मुँह फेर कर देखा ता तीन साधुओं पर नजर पडी जिनमें एक की उम्र वहुत कम थी।

इस कम-उम्र साधू न दौड कर नरेन्द्रसिह क हाथ पैर खोल और गले से लिपट कर रोन लगा। नरन्द्रसिह क ऑसू भी न रुके क्योंकि खून ने जोश में आकर कह दिया कि यह तेरा छोटा भाई जगजीतसिह है जो तरी खोज में न मालूम कव से और कहा कहा घूम रहा है ? थोडी देर में दोनों अलग हुए और वातचीत होने लगी–

जग – भाई आपने तो एक दम ही हम लोगों से मुँह फेर लिया !

नरेन्द – क्या कहें अफसास वडी भूल हो गई !

जग – खैर अव घर चलिए।

नरेन्द – अव हिम्मत और मर्दानगी के साथ साथ किसी की सच्ची मुहब्बत ने मुझे इस लायक ही नहीं रक्खा कि घर जाऊँ। जब तक तुम मेरा हाल न सुन लो मेरे बारे में कुछ राय नहीं दे सकते।

जग – मै वहाँ तक आपका हाल सुन चुका हूँ जव बहादुर सिह और दो औरतों को दरिया के किनारे छाड आप दूसरी नाव किराए करने चले गए थे। आगे का हाल मुझे कुछ नहीं मालूम।

नरेन्द्र – वह हाल तुमस किसन कहा ?

जग – बहादुरसिह ने।

नरेन्द – क्या बहादुर घर पहुँच गया ? तो वे दोनों औरतें भी उसके साथ होंगी ?

जग – जी नहीं ! वे दानों औरतें और वहादुरसिह डाकुओं की कैद में फॅस गए थे। बहादुर तो निकल भागा मगर उन दोनों का हाल कुछ नहीं मालूम। अब आप घर चलें किसी तरह उन दोनों का भी मैं पता लगाऊँगा।

नरेन्द्र – अगर सिर्फ उन्हीं दोनों औरतों का खयाल रहता ता मैं बेशक तुम्हारे साथ चला चलता मगर मुझे तो उस सायत ने मार डाला जिस सायत में मै रञ्ज हो कर घर से निकल भागा था। मैं नहीं जानता था कि रम्भा पतिव्रता कहाने में एक ही हागी।

जग – वेशक रम्भा ऐसी ही थी। आपके वारात स चले जाने क बाद उसके वाप ने दूसरे के साथ उसकी शादी करनी चाही मगर उसने मन्जूर न किया और जवर्दस्ती के खौफ से न मालूम कहाँ निकल भागी अफसोस !

नरेन्द – यही ता रञ्ज है ! रम्भा मेर लिए घर से निकल भागी और मुझसे मिली भी मगर किस्मत को काई क्या करे !

इसके बाद नरेन्द्रसिह ने अपना कुल हाल जगजीतसिह से कहा जिसे सुन उन्हें भी जोश चढ आया और वे वड गभीर भाव से बोले –

जग – भाई मैं जान गया कि वेचारी रभा पर जुल्म करने वाला कौन है। मुझे यह भी मालूम हो गया कि इस वक्त रम्भा कहाँ होगी। अव मैं आपका यह न कहूँगा कि घर चलिए और न मैं खुद ही घर जाऊँगा जव तक रम्भा को दुष्टों के हाथ स न छुडा लूँगा। क्या हमारी जिन्दगी रहते रम्भा को कोई दूसरा ले जायगा ? मै उसी दिन अपने को मर्द और दुनिया में मुँह दिखाने लायक समझूँगा जिस दिन अपने घर में रम्भा को 'भाभी' कह के पुकारूँगा। अव आप उठिए और मेरे साथ चलिए इस बारे में जो कुछ मैं जानता या समझता हूँ रास्ते में कहूँगा। आप यह न समझिये कि मैं सिर्फ (हाथ

का इशारा करके) इन्हीं दोनों जयसिह और हरीसिह को साथ ले कर घर से निकला हूँ। मै अपने पूरे वन्दोवस्त में हूँ और जो कुछ कर सकता हूँ या करूँगा वह आपसे कुछ छिपा न रहगा।

अपने छोटे भाई की यह वात सुन नरेन्द्रसिह को वहुत ढाढ़स हुई और व फौरन उठ खड़े हुए।

इस केतकी के मकान के साथ अस्तवल भी था जिसमें अच्छे अच्छे घोड़े मौजूद थे। नरेन्द्रसिह जगजीनसिह जयसिह और हरीसिह चारो आदमी घोडों पर सवार हुए और जगजीतसिह की राय के मुताविक तेजी के साथ एक तरफ रवाना हुए।

पन्द्रहवां बयान

पटने से पूरव सालिग्रामी नदी के उस पार किनार ही पर हाजीपुर आवाद है। इस समय तो वह एक कस्व की तरह मालूम होता है मगर हम जव का हाल लिख रहे हैं उस जमाने में यह एक छोटे से मगर खूवसूरत शहर की तरह रौनक पर था। इसी जगह गण्डक के किनारे ही एक छोटा मगर सगीन और मजवूत किला भी था जिसमें वहाँ के राजा दौलतसिह रहा करते थे। पहिले वे हाजीपुर के नामी जिमींदारों में थे मगर अपनी चालाकी और वहादुरी से अव वहा के राजा वन वैठ थे। इन्ही के लड़के प्रतापसिह से नरेन्द्रसिह के चले जाने के वाद रम्भा की शादी होन वाली थी जिसके खौफ से वह वेचारी अपने चचेरे भाई अर्जुनसिह और तारा को साथ ले घर से वाहर निकल गई थी।

इन सव वातों को जगजीतसिह जानते थे, और इसीलिए उन्हें यकीन हो गया कि केतकी का मकान लूट कर रम्भा और तारा को ले जाने वाले वेशक राजा दौलतसिह क ही आदमी होंगे। घोडे पर सवार जाते जाते रास्ते में जगजीतसिह ने यह सव हाल मुख्तसर में नरेन्द्रसिह से कहा और अपना खयाल जाहिर किया।

नरेन्द – तुम्हारा खयाल वहुत ठीक है। मुझे भी विश्वास होता है कि यह काम सिवाय दौलतसिह के दूसरे का नहीं, मगर ताज्जुव इस वात का है कि उसे पता कैसे लगा ?

जग – किसी तरह मालूम हो गया होगा, अपने जासूस चारों तरफ दौडा दिए होंगे। और फिर यह भी तो सोचिए कि सिवाय दौलतसिह के इस तरफ ऐसा जवर्दस्त दूसरा और कौन है ?

नरेन्द – वेशक यह उसी का काम है।

जग – इसीलिए हम लोग हाजीपुर की तरफ चल रहे है, अभी वे लोग वहुत दूर न गए होंगे।

चारो आदमी दोपहर तक वरावर घोड़ा फेंके चल गये। जव धूप वहुत तेज हुई कही ठहर कर सुस्ताने और घोडों को ठडा करने का इरादा किया और चारों तरफ निगाह दौडा कर देखने लग। सडक के दाहिनी तरफ कुछ दूर पर आम की एक वारी थी जिसमें वहुत से फौजी आदमी उतरे हुए थ--कई घोडों पर चढ हुए इधर उधर घूम फिर रहे थे। पेडों में से छन कर ऊपर की तरफ उठते हुए धुएँ से मालूम होता था कि वे सव रसोई वना रहे है। जगजीतसिह ने कहा, 'वेशक वे लोग इसी वारी में उतरे हुए है जिनकी खोज में हम लोग चले आ रहे हैं।

नरेन्द – तुम तीनों आदमी साधुओं की सूरत वने हुए हई हो एक आदमी घोड़ा छोड कर चले जाओ और पता लगाओ।

जग – (हरीसिह की तरफ देख कर) घोडा इसी जगह छोड दो और जाकर देखो वे ही लोग है या दूसरे ?

हरी – वहुत अच्छा।

सडक के किनारे पीपल का एक पेड था। तीनों आदमी उसके नीचे खडे हो गए। हरीसिह ने अपना घोडा पेड के साथ वाध दिया और वडा सा चिमटा हाथ में हिलाते हुए उस वाडी की तरफ चले गए। थोडी ही देर वाद लौट आकर वे वोले 'हा वे ही लोग है और दो डोलिया भी उनके साथ है जिनके अन्दर से रोने की आवाज आ रही है।

नरेन्द – (जयसिह की तरफ देख कर) अब क्या इरादा है ?

जयसिह – विना लडे भिडे काम चलेगा नही और हम लोगों के पास कोई हर्वा नहीं तीन आदमियों के पास सिर्फ वडे वडे चिमटे है जिन्हें साधुओं का भेष वनाने के लिए रख छोड़ा हे, और आपके पास वह भी नहीं। केतकी के मकान में इन लुटेरों ने कोई हर्वा छोडा ही नहीं जो साथ ले लेते, इसलिए अपना सामान दुरुस्त करने के लिए हमको एक दिन अर्थात् कल तक और सव्र करना चाहिए।

नरेन्द – कल तक क्या वन्दोवस्त कर सकोगे ?

जग – वन्दावस्त होना कोई मुश्किल नहीं। हमने अपने वहुत से फौजी आदमियों को निशान वता कर चारों तरफ फैला दिया हे जिनमें से थोड़े वहुत जरूर इकट्ठे हो सकते हे।

नरेन्द – अगर ऐसा है तो फिर तरद्दुद ही क्या है ?

जग – जयसिह, तुम वस घोडा दौडाये चले जाओ और अपने सिपाहियों को वटोर लाओ। वह टीला यहाँ से वहुत दूर भी तो न होगा जहाँ एक अड्डा हमने कायम किया है।

जयसिंह – तो भी आठ कोस से क्या कम होगा ! इसी खयाल से मैंने कहा था कि कल तक सब्र करना चाहिये। अब आप एक काम कीजिए। मैं तो यह सब बन्दोबस्त करने जाता हूँ और आप तीनों आदमी लुके-छिपे इन लोगों के साथ साथ चले जाइए। कल इन लोगों को पुनपुन नदी पार करनी होगी जो इनके रास्ते में पड़ेगी। आज-कल उस नदी में पानी ज्यादा है, बिना नाव के पार उतरना मुश्किल है इसलिए ये लोग जरूर कल रात को यहां डेरा डालेंगे और सवेरा होने पर पार उतरेंगे ! वहां सिर्फ एक ही नाव होगी ये लोग जल्दी किसी तरह नहीं कर सकते।

जग – बस ठीक है मैं समझ गया। तुम अपना बन्दोबस्त करके उसी जगह पहुँच जाओ हम तीनों आदमी धीरे-धीरे चलते हैं। (हरीसिंह की तरफ देखकर) क्यों हरीसिंह वे लोग कितने आदमी होंगे जिन्हें अभी तुम देख आये हो ?

हरी – चार-पांच सौ के करीब होंगे।

नरेन्द्र – जयसिंह अगर तुम्हें पचास आदमी भी मिल तो तुम लेकर चले आओ देख लेना हम लोगों की एक-एक तलवार दस-दस का सिर काट के दम लेगी।

जयसिंह – इसमें क्या शक है !

जगजीत – खैर जो भी मिलें ले आओ यों तो हमारे और भी बहुत से आदमी फैले हुए हैं पर वक्त पर जो मिल जाय वही ठीक है।

जयसिंह – अच्छा तो मैं जाता हूँ।

जग – जाओ।

सोलहवां बयान

पुनपुन *नदी के किनारे ही मैदान में यह लश्कर पड़ा हुआ है जिस पर नरेन्द्रसिंह और जगजीतसिंह आज छापा मारने वाले हैं। इस लश्कर को यहाँ पहुँचे अभी घण्टा भर नहीं हुआ है इसलिए रात की पहिली अंधेरी छा जाने पर भी लश्करी आदमी निश्चिन्त नहीं हैं। सभी को खाने-पीने की फिक्र पड़ी है, कोई जमीन खोद कर चूल्हा बना रहा है कोई इधर-उधर से सूखी-सूखी लकड़ियाँ बटोर रहा है थोड़े आदमी जलावन की फिक्र में गांव की तरफ चले जा रहे हैं कुछ आदमी बनिये की खोज में दौड़ रहे हैं। इस जगह सिर्फ एक टीकेदार मल्लाह की मड़ई पड़ी हुई है बनियें की कोई दुकान नहीं हलवाई का नाम-निशान नहीं खाने-पीने की कोई चीज मिल नहीं सकती नदी के पार कुछ दूर पर गांव है उसी गांव में खाने-पीने का सामान मिलेगा इसलिए सभों को उस पार जाने की जल्दी पड़ी है। बरसात का मौसम होने के कारण इस बरसाती नदी में पानी भी खूब आया हुआ है मगर सिवाय एक छोटी सी नाव के पार उतरने का कोई सहारा नहीं है इसलिए घाट पर एक मेला सा लगा हुआ है और कूद-कूद कर लोग नाव पर पहिले चढ़ने के लिए उतावले हो रहे हैं।

पाँच सौ आदमियों की भीड़ कुछ कम नहीं होती ! इतने आदमियों के खाने-पीने का सामान गाँव के दो एक बनियों से पूरा होना बहुत मुश्किल है इसलिए गांव में हर तरफ हुज्जत हो रही है। जमींदार और किसानों के मकान पर लोग धूम मचा रहे हैं, ' आटा हो आटा ही दे दो चावल हो चावल ही दे दो, चना हो चना ही दे दो जो चाहे दाम ले लो मगर दो नहीं दोगे तो हम जबर्दस्ती लूट लेंगे ! ऐसी-ऐसी बातों को सुन-सुन कर जमींदार ठाकुर लोग भी बदहवास हो रहे हैं। जिससे जो बनता है देता है और हाथ जोड़ता है मगर कोलाहल किसी तरह कम नहीं होता।

दो घन्टे रात जाते-जाते तक इन पाँच सौ आदमियों में से अपनी-अपनी फिक्र में लगभग चार सौ आदमियों के पार उतर गये और आसपास के गाँवों में फैल गये और सिर्फ एक सौ आदमी उन डोलियों को घेरे रह गये जिनमें बेचारी रम्भा और तारा अपने दु:ख की घड़ियां गिन रही थीं। इन लोगों के खाने-पीने का सामान इनके संगी-साथी ले आवेंगे डोली की हिफाजत कम न होने पावे इसीलिए जरूरी समझ कर ये सौ आदमी छोड़ दिए गए हैं पर इस हुल्लड़ में यह कुछ भी मालूम नहीं होता कि इन पाँच सौ आदमियों का सर्दार कौन है।

क्या नरेन्द्रसिंह और जगजीतसिंह इस सोच में थे कि इन पाँच सौ आदमियों में से अपनी-अपनी फिक्र में बहुत से इधर उधर टल जायँ तो एकाएक बचे हुए सिपाहियों पर छापा मारें ? बेशक वे इसी फिक्र में थे। वह देखिए चालीस सवारों को साथ लिए दोनों भाई दक्खिन तरफ से घोड़े फेंके चले आ रहे हैं जिन्होंने बात की बात में डोली के पास पहुँच कर तलवारों को खून चटाना शुरू कर दिया।

बेसरोसामान निश्चिन्त बैठे हुए सौ आदमी ऐसी हालत में भला क्या कर सकते थे ? आधी घड़ी में आधे से ज्यादे मारे गए और बाकी बचे हुओं को सिवाय भागने के दूसरी बात न सूझी। देखते-देखते मैदान साफ हो गया और सिर्फ वे दोनों डोलियां रह गईं जिनके लिए इतना खून-खराबा मचाया गया था। डोलियों में से दोनों औरतें बाहर निकाल ली गईं एक को नरेन्द्रसिंह ने अपने घोड़े पर और दूसरी को जगजीत ने अपने घोड़े पर बैठा लिया तथा जिधर से आये थे उधर ही को जाते हुए दिखाई देने लगे।

हमें इससे कोई मतलब नहीं कि इस खून-खराबे के बाद उन लोगों की क्या दशा हुई और उन चार सौ फैले हुए

---

*पुनपुन बाकीपुर से चार कोस दक्खिन गयाजी के रास्ते पर की एक छोटी नदी है।

आदमियों ने बहुत कर क्या किया, किस धुन में लगे ? हमें तो इस समय रम्भा और तारा ही का हाल लिखने में मजा आ रहा है, मगर अफसोस, कुछ दूर निकल जाने पर नरेन्द्रसिंह को मालूम हुआ कि इन दो औरतों में रम्भा नहीं है एक तो तारा है और दूसरी गुलाब।

मगर है ! यह गुलाब कहां से आ पहुँची ! और रम्भा कहां चली गई ?

सत्रहवां बयान

अब हम अपने पाठकों को एक घने जंगल में ले चल कर पत्तों की झोपड़ी में फटे कपड़े पहिरे और तमाम अंग में भस्म लगाये जलती हुई धूनी के पास उदास सर झुकाए बैठी हुई एक योगिनी से मुलाकात कराते हैं। चाहे इसकी अवस्था कैसी ही खराब क्यों न हो मगर फिर भी इसकी जवानी खूबसूरती और अंगों की सुडौली देखने वालों के दिल पर कुछ ऐसा असर करती है कि बिना घण्टों तक देखे जी नहीं मानता। योगिनी कहते कलेजा काँपता है, और सूरत देखते ही जी बेचैन होकर इस सोच में डूब जाता है कि दुनिया से हाथ धो इस अवस्था में पहुँच कर भी यह अपनी आँखों से आँसुओं की धारा क्यों बहा रही है।

आसमान गहरे बादलों से घिरा हुआ है, पानी अच्छी तरह बरस रहा है पछमा हवा के झपेटों ने पेड़-पत्तों से बगावत मचा रक्खी है और उन्हीं के कारण यह झोपड़ी भी जड़ बुनियाद से उखड कर किसी दूसरी ही जगह जा पड़ने को तैयार है। यह मालूम ही नहीं होता कि सुबह है या शाम। झोपडी के अन्दर बैठी सर्दी के मारे आग सेंकती हुई उस बेचारी योगिनी के लिए यह समय और भी दुःखदायी हो रहा है। रह-रह कर ऊंची सांस लेती और कभी-कभी फूट-फूट कर रो देती है मगर किसी तरह भी उसके जी की बेचैनी कम नहीं होती।

अचानक इसी समय किसी मुसाफिर ने झुक कर झोपड़ी के अन्दर झांका जिसकी सूरत से साफ मालूम होता था कि इस आंधी-पानी से दुःखी होकर यह कोई आड़ की जगह ढूँढ रहा है।

योगिनी — कौन है ? चले आओ कोई हर्ज नहीं, क्यों पानी में जान दे रहे हो यह तो उस गरीबिन की कुटी है जो दिन रात दूसरों के ही हित का ध्यान रखती है।

मुसाफिर — हाँ माई आता हूं, आपकी कृपा से जान बच जायेगी नहीं तो इस तूफान ने तो बस मार ही डाला है।

मुसाफिर झपड़ी में आकर बैठ गया बल्कि दो चार दम लेकर बदहवास की तरह आग के पास लेट गया मगर वह योगिनी इस तरह उसकी तरफ देखने लगी जैसे उसे पहिचानती हो। इस मुसाफिर के कपडों पर कई जगह खून के दाग थे और चेहरे पर के दो-चार निशान यह भी कहे देते थे कि आज ही कल में इसने कहीं तलवार की चोट खाई है। घंटे भर बाद उसका जी ठिकाने हुआ और वह उठ बैठा। योगिनी ने उससे बातचीत शुरू कर दी।

योगिनी — क्या किसी डाकू का मुकाबला हो गया था ! ये जख्म कैसे लगे ?

मुसा — जी एक बहादुर के हाथ से मेरी तरह कई सिपाही जख्मी हुए।

योगिनी — वह कौन बहादुर था ?

मुसा — नरेन्द्रसिंह।

नरेन्द्रसिंह का नाम सुन योगिनी ने एक लम्बी सांस ली और सिर नीचा कर लिया। थोडी देर बाद कुछ सोच कर उसने पूछा—

'तुम लोगों को नरेन्द्रसिंह से लडने की क्या जरूरत आ पड़ी ?

मुसाफिर — हम लोगों को उनसे लड़ने की कोई जरूरत न थी मालिक ने उन्हें गिरफ्तार करने का हुक्म दिया था इसी से उनसे लडना पडा मगर वह बहादुर यकायक क्यों हाथ आने वाला था !!

योगिनी — तुम तो केतकी के नौकर हो न ?

मुसा — (चौंक कर) जी हाँ लेकिन आप केतकी को क्योंकर पहिचानती हैं ?

योगिनी — मैं कई दफे घूमती-फिरती ऐशमहल *तक पहुँच चुकी हूँ। मुझे खूब याद है कि वहाँ तुम्हें पहरा देते देखा था।

मुसा — (गौर से कुछ देर तक योगिनी की सूरत देख कर और पैरों पर गिर कर) वाह वाह, क्या खूब, क्या मैं ऐसा अन्धा हूँ कि इतने पर भी अपने मालिक को न पहिचान सकूंगा ? बेशक आपका नाम मोहिनी है ! लेकिन इतने दिनों तक आप कहाँ थीं ? केतकी ने तो हौरा उडा दिया था कि रात के समय मोहिनी और गुलाब चुपचाप न मालूम कहाँ निकल भागीं !

मोहिनी — केतकी तो मेरी जान की दुश्मन हो चुकी थी और मुझे मार डालने में भी उसने कोई कसर न छोड़ी थी

---

*'ऐशमहल' उसी आलीशान मकान का नाम था जिसमें नरेन्द्रसिंह और केतकी की मुलाकात हुई थी या जहाँ रम्भा और तारा उनसे मिली थीं।

मगर उसी बेचारे नरेन्द्रसिंह की बदौलत मेरी जान बची जिसके हाथ से तुम जख्मी हुए हो। खैर अपना खुलासा हाल मै फिर किसी समय कहूँगी इस समय तो तुम यह बताओ कि नरेन्द्रसिंह केतकी के मकान पर कैसे पहुँचे और केतकी को उनसे दुश्मनी क्यों पैदा हुई। जैसी वह कुचाल है उस हिसाब से तो बल्कि उसे खुश होना चाहिए था फिर ऐसी नौबत क्यों आ पहुँची ?

मुसा – आपका कहना ठीक है मगर

मोहिनी – देखो लालसिंह हमारे यहाँ तुम सब सिपाहियों के जमादार और अफसर थे हमारे पिता तुम्हें कितना मानते थे इसे तुम भूल न गए होगे। तुम खूब जानते हो कि केतकी कितनी खराब औरत है, बाप का नाम उसने मिट्टी में मिला दिया और मुझको तथा गुलाब को अपने हिसाब से मार ही डाला। मुझको अब उसकी कुछ भी मुहब्बत नहीं है बल्कि जहाँ तक मैं समझती हूँ तुम भी उसे बुरा ही समझते होगे।

लालसिंह – बेशक मैं उसे बहुत बुरा समझता हूँ, मुझे नर्क में रहना कबूल है मगर उसके साथ रहना मन्जूर नहीं।

मोहिनी – ठीक है तब मैं यह भी उम्मीद करती हूँ कि तुमको उसका जो कुछ हाल मालूम है साफ कह दोगे और मैं जो उस हरामजादी से अपना बदला लिया चाहती हूँ उसमें मेरा साथ ही नहीं दोगे बल्कि मेरी मदद करोगे।

लालसिंह – मैं हर हालत में आपका साथ दूँगा और जो कुछ हाल केतकी का मुझे मालूम है कुछ भी न छिपाऊँगा।

मोहिनी – अच्छा तो फिर कहो कि नरेन्द्रसिंह और केतकी में तकरार होने की नौबत क्यों आ गई ?

लालसिंह – नरेन्द्रसिंह तुमको खोजते हुए अकस्मात् ऐशमहल तक जा पहुँचे और केतकी को देख उन्हें धोखा हुआ कि यह मोहिनी है, शायद तकलीफ के सबब से उसकी सूरत इतनी बदल गई है। उस समय केतकी मैदान में टहल रही थी, नरेन्द्रसिंह बेधड़क उसके पास चले गए और 'मोहिनी' कह कर पुकारा।

मोहिनी – केतकी के तो मन की भई होगी।

लाल – जी हाँ बातचीत होने पर उसने भी अपने को मोहिनी ही बतलाया और जाल फैलाने में कोई बात उठा न रक्खी।

मोहिनी – फिर क्या हुआ ?

लाल – इस बात के कुछ ही दिन पहिले घूमती-फिरती दो कमसिन और खूबसूरत औरतें भी वहां आ पहुँची थीं जिनको केतकी ने अपनी सखियों में भरती कर लिया था।

मोहिनी – वे कौन थीं ?

लाल – सुनिए मैं सब हाल कहता हूँ। वे दोनों औरतें नरेन्द्रसिंह की खूब खिदमत करने लगीं। केतकी का और तुम्हारा हाल हम लोगों से मिल-जुल कर उन दोनों ने अच्छी तरह मालूम कर लिया था।

मोहिनी – तब तो उन्होंने जरूर नरेन्द्रसिंह को भड़काया होगा ?

लाल – हाँ ऐसा ही हुआ। उन दोनों ने जिनका नाम श्यामा और भामा था केतकी का, आपका और साथ ही अपना हाल ठीक-ठीक नरेन्द्रसिंह को कह सुनाया जिसे केतकी ने छिप कर अच्छी तरह सुन लिया बल्कि धीरे-धीरे हमलोगों को भी मालूम हो गया।

मोहिनी – तभी केतकी बिगड़ी !

लाल – जी हां, मगर एक बात और भी हुई।

मोहिनी – वह क्या।

लाल – आपको यह तो मालूम ही होगा कि नरेन्द्रसिंह अपने घर से क्यों निकल भागे थे ?

मोहिनी – बिल्कुल नहीं। उनसे बातचीत करने की तो नौबत भी नहीं आई और हमलोग अलग हो गए।

लालसिंह – मैं नरेन्द्रसिंह को पहिले से पहिचानता था और थोड़ा-बहुत उनका हाल भी जानता था क्योंकि तुम्हारे बाप की जिन्दगी में कई दफे उनके घर जाने की नौबत पहुँची थी, मगर केतकी के खौफ से कुछ बोल न सकता था।

मोहिनी – तब तो और भी खुलासा हाल मुझे मालूम होगा।

लाल – सुनिये मैं सब कहता हूँ। नरेन्द्रसिंह बिहार के राजा उदयसिंह के लड़के हैं। उनकी शादी पटने के नामी जमींदार गुलाबसिंह की लड़की रम्भा से पक्की हुई, मगर नरेन्द्रसिंह कहते थे कि मैं जन्म भर शादी न करूगा। खैर उन्होंने चाहे जो कुछ भी कहा-सुना हो पर उनके बाप ने उनकी एक न सुनी और शादी ठीक हो गई। तिलक चढ़ गया और बारात दर्वाजे पर जा पहुँची, उस समय नरेन्द्रसिंह को मौका मिला और वे घोड़ा भगा किसी तरफ को निकल गए।

मोहिनी – वाह वाह ! अच्छा तब ?

लाल – आखिर रोते-कलपते सब लोग लौट आये। उसके बाद गुलाबसिंह ने दूसरी जगह रम्भा की शादी ठीक की, मगर यह बात रम्भा को मंजूर न हुई। लोगों ने बहुत-कुछ समझाया-बुझाया और यहाँ तक कहा कि नरेन्द्रसिंह लंगड़े हैं बदसूरत हैं दूसरी शादी कर लेने में कोई हर्ज नहीं, मगर उसने एक न मानी। बोली, अंधे, लंगड़-लूले चाहे जैसे भी हों मगर मेरे पति तो हो चुके।

मोहिनी – शायाश खूब किया !!

लाल – रम्भा न जव देखा कि अव उसके साथ जवदस्ती की जायगी तो अपनी सखी तारा का साथ ले घर से निकल भागी।

मोहिनी – वाह रे हौसला ! धर्म का ध्यान इस कहते है ! मगर खैर आगे कहा ?

लाल – घूमती-फिरती वे दोनों केतकी के यहाँ जा पहुँची, उन्होंन अपना नाम श्यामा और भामा वतलाया और मौका पाकर उन्होनें नरन्दसिह से सव हाल कहा !

माहिनी – (रग वदल कर) गजव हो गया तव कोई आशा रखना नादानी है ! खैर तव ?

लाल – केतकी न जव दखा कि उसका पर्दा खुल गया वस विगड वैठी। नरेन्दसिह, रम्भा और तारा को पकडने का हुक्म दिया मगर नरेन्द्रसिह यकायक क्यों हाथ आन लग थ ! हम लोगों को जख्मी होना पडा। अन्त में धोखा देकर पीछे स उन पर वार किया गया तव गिर।

माहिनी – (चौंक कर) क्या मर गए ?

लाल – नहीं नहीं दा ही राज में सम्हल गए मगर कैद में डाल दिए गय। इसक कई दिन वाद न मालूम कहाँ के चार-पाच सौ आदमी ऐशमहल पर चढ आए और अच्छी तरह उस घर को लूटा वल्कि जाती समय रम्भा और तारा को भी पकड कर ल्त गए। यह हाल देख हमलागो न भी कतकी का साथ छोड दिया और वह नरन्द्रसिह को हाथ-पैर वधा उसी मकान में छोड सखियों को साथ ले डरती-कापती गयाजी की तरफ भाग गई।

यह सव हाल सुन थोडी दर तक माहनी चुप रही और वडे साच में डूव गइ। उसका रग दम-दम मे वदलता रहा मगर धीरे-धीरे गुस्से की निशानी उसके चहरे पर आने लगी वल्कि थाडी दर मे उसका तमाम वदन क्राध स कापने लगा।

पानी वरसना वन्द हो गया था और हवा ठहर गइ थी। माहिनी ने लालसिह स कहा मुझ प्यास लगी है पीने के लिए साफ पानी कहीं स लाओ। लालसिह के पास लोटा-डोरी मोजूद थी वह पानी लान के लिए कुटी के वाहर हो एक तरफ का रवाना हुआ।

जव माहिनी अकली रह गइ तव आप ही आप साचने और धीर-धीर वुदवुदाने लगी– वेशक रम्भा न वडा काम किया ! इतना जान कर भी वहादुर नरन्दसिह उसे किसी तरह नहीं छोड़ सकते है अगर छोडें तो उनस वढ कर वमुरौवत कोई भी नही ! मगर मै अव किसका पल्ला पकडू ? क्या मै नरन्दसिह का जी स भुला दूँ ? नहीं नहीं यह ता मुझस कभी न हागा। तो क्या रम्भा की सवत वन कर रहूँ ? कभी नहीं मुझस सवत का मुह न देखा जायगा ! और इसमें भी शक नही कि नरन्दसिह रम्भा स जरूर शादी करेंग। तव फिर मेरी क्या दशा होगी ? सिवाय मरने के दूसरी वात नहीं सूझती ! मगर वाह मरन क्यों लगी। अभी तो मुझे कतकी स वदला लेना है ! तो फिर लगे हाथ रम्भा की भी सफाई क्यों न कर डालू ? वेशक एसा ही करूँगी अव ता वह मरी सवत हो चुकी न मुझस सवत के साथ रहा जायगा और न नरन्दसिह का ध्यान भूलगा तव जरूरी है कि मैं अपनी आदत वदल दू ! हा हा मै एसा ही करुगी ! अपना काम साधते समय कहीं मरा कामल कलेजा दहल न जाय इसका वन्दावस्त भी पहिले ही से कर डालना चाहिए। वन्दावस्त क्या ? वस यही कि जो कुछ करना है उसक लिए कसम खा लू। (आग की तरफ हाथ उठा कर) ह अग्निदेवता ! तुम साक्षी रहना मै कसम खाती हूँ कि आज स अपनी आदत वदल दूँगी अच्छी स वुरी हा जाऊगी नक से वद वनूँगी औरत से मर्द वनने की कोशिश करूगी सूधापन विल्कुल छोड दूगी अपन मोम एसे दिल को पत्थर वना डालूगी एक चिउटी को तकलीफ दत जी हिचकता था पर अव खूवसूरत आदमी का सर काटते न हिचकूँगी चाहे वह मर्द हा या औरत। जितनी मैं नक थी उतनी ही वद वनूगी जो काम न कर सकती थी उसे वेधडक करूगी कुल-धर्म-मर्यादा का एकदम तिलाजुली द दूँगी मगर जाहिर मे अपनी हालत न वदलूगी। दखन मे सूधी, नेक और धर्मात्मा ही वनी रहूँगी पर अन्दर से जहरीली और गुस्सवर नागिन की तरह रहूँगी। चाहे जो हा पर अपना काम साधने में कुछ भी न उठा रक्खूगी, हाँ मैं ऐसी तभी तक वनी रहूँगी जव तक कतकी और रम्भा का नाम-निशान इस दुनियाँ स न उठा डालूगी अगर रम्भा के मरने पर नरेन्दसिह की हालत मरे लायक न रहेगी तो उन्हें भी वैकुण्ठ पहुँचाऊगी और उस समय नेक और पतिव्रता वन उनक साथ सती हो जाऊगी।

एसी कसम खाते-खात माहनी के रोंगट खड हा गए वदन का रग सुर्ख हो गया गुस्से से थर-थर कॉपने लगी। वहुत कोशिश स अपने को सभाला और कुटी के वाहर निकल कर लालसिह की राह देखने लगी।

थाडी ही दर मे लालसिह भी आ पहुचा मोहनी न पानी पी कर मुँह-हाथ धाया और कुछ ठहर कर फिर लालसिह से वातचीत करने लगी –

माहनी – हॉ लालसिह तो तुम सच कहते हा कि मरा साथ दोगे ?

लाल – जी जान से मै आपकी खिदमत करने को तैयार हूँ। आपको मैने गाद में खिलाया है आपकी नकचलनी मेरे दिल में वैठी हुई है ऐसी मालिक भला मै कहाँ पाऊगा ?

माहिनी – अच्छा तो फिर एक काम करा। इस समय ऐशमहल जरूर सुनसान पडा हागा, मै उसी में चल कर डेरा

डालतो हूँ। तुम मुझे वहा पहुँचा कर उन सब आदमियों को बटोर लाओ जो हमारे पुराने नौकर हैं और जिन्हें केतकी ने निकाल दिया है। इसके बाद मैं कतकी स समझ लूगी।यह न समझना कि मेरे पास दौलत नहीं है, इस हालत में भी एक बड खजाने की मालिक हू जिसका हाल किसी को भी मालूम नहीं है।

लाल – आप इस बात का तरद्दुद न करें मैं अपने पास से खाकर वर्षों तक आपकी खिदमत कर सकता हू, बस आप यहा से चलें।

मोहिनी – चला मै तैयार हूँ।

अट्ठारहवां बयान

कई दिनों क बाद आज ऐशमहल को हम फिर रौनक पर देखत है। पहिले की तरह कई सिपाही पहर पर मुस्तैद है बाग भी रौनक पर है और दस बीस लौंडिया भी इधर-ऊधर घूम रही है।

मकान के अन्दर कमर में मसनद के ऊपर माहिनी बैठी कुछ साच रही है। काई दूसरी औरत उसके पास नहीं है। शाम हो गई लौडियों न रोशनी का इन्तजाम किया, और हुक्म पाकर फिर इधर-उधर फैल गई मगर न जाने क्या-क्या सोचती हुई मोहिनी फिर भी अकली ही बैठी रह गई।

यकायक ही वह उठी और यह कहती हुई नीचे उतर आई कि आज जरूर उस खजाने को देखूगी जो मेरी मॉ खास मरे वास्ते छोड गई है!

नीच उतर कर माहिनी ने कुल दर्वाजे अन्दर से बन्द कर लिए जिसम कोई आकर यह न दख ले कि वह क्या कर रही है। इसके बाद वह एक छोट कमरे में पहुची जो अच्छी तरह सजा हुआ था और जहा रोशनी खूब हो रही थी। उत्तर तरफ दीवार में पॉच आलमारियॉ बनी हुई थीं उसने पिछली आलमारी खाली जिसमें दस-पाच तलवार, खजर और कटार आदि रक्खे हुए थे। एक कटार उठा लिया और दक्खिन पूरब के काने में पहुची। फर्श उठाकर कटार से जमीन खोदना शुरू किया। जब लगभग दो हाथ के बराबर जमीन खुद चुकी एक छोटी सी डिबिया हाथ में आई जिसे दखते ही खुशी के मार उछल पडी और बोली शुक्र है कि मेरी दौलत अभी तक ज्यों की त्यों रक्खी है किसी ने हाथ भी नहीं लगाया। माहिनी न डिबिया ले ली और गडहे में मिटटी भर जमीन बराबर कर ऊपर से फर्श जैसा था उसी तरह बिछा दिया। इस काम से छुटटी पाकर उसने चारों तरफ क दर्वाजे खोल दिए और ऊपर के कमरे में चली आई जहाँ वह पहिले बैठी हुइ थी। गद्दी पर बैठ शमादान क सामन डिब्बी खोली जिसमें सोने की एक अगुल की एक विचित्र चाभी रक्खी हुई थी। मोहिनी ने चाभी निकालकर चूम ली और धीरे स बोली आज आधी रात को मैं अपनी जमा पूँजी अच्छी तरह सहज लूगी! थोडी दर बाद मोहिनी ने भाजन किया और निश्चिन्त हाकर सो रही मगर लौडियों का हुक्म दे दिया कि आज इस मकान में मै अकेली ही साऊँगी मकान के बाहर बहुत सी कोठरियॉ और दालान है, तुम लोग उसी में जाकर आराम करा।

आधी रात का सन्नाटा हाने पर मोहिनी उठी और नीचे उतर कर फिर उसी कमर में पहुँची जिसमें जमीन खोद कर डिब्बी निकाली थी। चारों तरफ का दर्वाजा बन्द करने के बाद उसने पुन वही आलमारी खोली जिसमें से जमीन खोदने के लिए कटार निकाला था।

यह आलमारी खूब लम्बी-चाडी थी, यहॉ तक कि इसके अन्दर दो आदमी बखूबी खड हो सकते थे। मोहनी ने धीरे-धीरे उस आलमारी का खाली किया जिसमें असबाब रखने के लिए तीन दर्जे बने हुए थे। नीचे वाले दर्जे की जमीन भी लकडी की और ऐसी साफ बनी हुई थी कि यह गुमान भी नहीं हो सकता था कि यह नीचे से पोली होगी। इस लकडी पर पीतल के बहुत से फूल बूटे पच्चीकारी क काम के बने हुए थे जिनमें चारों तरफ चार कमल के फूल बने हुए थे। इनमें से एक फूल का माहनी ने अगूठे स दबाया साथ ही एक पीतल का टुकडा ऊचा हो गया और उसक नीचे ताला लगाने की जगह दिखाई दने लगी। उसने वही ताली लगाकर घुमाया। वह लकडी का तख्ता कुछ ऊपर उठ आया जिसे मोहिनी ने निकालकर अलग कर दिया। अब नीचे एक तहखाना नजर आया जिसमें उतरने के लिए सीढियॉ बनी हुई थीं। हाथ में लालटेन लिए हुए माहिनी आलमारी में घुस गई और उसी जीने की राह नीचे उतर गई।

नीचे बीस हाथ लम्बी और इतनी ही चौडी एक कोठरी नजर आई जिसके अन्दर वह पहुँची। यहॉ बीचोंबीच में चादी का एक पलग था जिस पर दुशाला ओढे कोई आदमी साया हुआ मालूम पडा। चारों तरफ बड बड चॉदी के दग सरपोश से ढक हुए नजर आ रह।

मोहिनी ने पहिले उन बड़े-बड़े देगों को एक-एक करके सरपोश (ढक्कन) उठाकर देखा। अशर्फियों से भरा पाया। इसके बाद पलग के पास आई और उस सोये हुए आदमी को देखने क लिए उसके बदन पर से दुशाला हटाया।

यह एक लाश थी जिसके बदन पर चमड और गोश्त का नाम-निशान न था सिर्फ हड्डी का ढॉचा सिर से पैर तक दुरुस्त रक्खा हुआ था।

इसे देख माहिनी घण्टों तक खडी रोती रही। आखिर उसी तरह दुशाल स उसे ढॉप दिया और एक दग में से थोडी

सी अशर्फियाँ ले उस तहखाने में से बाहर निकल आई। आलमारी वगैरह को जैसा पहले था उसी तरह दुरुस्त कर दिया और ऊपर चली गई।

उन्नीसवां बयान

आज हाजीपुर में खूब धूमधाम मची हुई है। जगह-जगह बाजे बज रहे हैं। हर एक आदमी खुश और हसता हुआ दिखाई दे रहा है। बाजारों में दुकानदारों ने दुकानें सज-सजा कर दुरुस्त कर रक्खी हैं। राजकर्मचारी चारों तरफ दौड़ते हुए दिखाई पड रह है। इन्हीं में अगल-बगल निगाह दौडाते सुर्ख पौशाक पहिरे बगल में झोला लटकाये और साथ में भग घोंटने का डण्डा लिये हमारे रगीले जवान बहादुरसिह भी धीरे-धीर मस्तानी चाल से चलते दिखाई पड़ रहे हैं। हाजीपुर की धूमधाम देख ये ताज्जुब कर रहे हैं और इनकी अनोखी चाल और सूरत देख बाजारी लोग भी मुस्कुरा रहे हैं। बहादुरसिह दुकानों की सैर करते हुए एक दफे पूरब से पश्चिम जात है और फिर पश्चिम से पूरब लौटते हैं।

शामत की मार कोई भला आदमी इनसे पूछ बैठा कि-- 'क्यों साहब आप किसे ढूढ रहे हैं ! बस इतना पूछना था कि आप झुझला उठे और बोले, 'वाह इसी अकिल पर दुकानदारी करत हो और कहते हो कि हम आदमी है ! मेरी सूरत से भी नहीं पहिचानते कि मै घूम-घूम कर बाजार देख रहा हूँ या किसी को ढूढ रहा हूँ ! विजया देवी ने दोनों आँखें दे रक्खी है, बस शेखी में ऐंठे जा रहे है ! मेरी तरह से एक ऑख जर्राह ने चवाई होती ता दुनिया की कदर जानते और समझते कि इस बेचारे के पास एक ही आख की तो पूँजी ठहरी, एक दफे इधर से उधर जाता है तो एक ही तरफ की दूकानें दीख पडती हैं, दूसरी तरफ की दुकानों पर नजर डालन के लिए लाचार बेचारे को फिर लौटना पड़ता है। वाह, वाह वाह ! क्या इस शहर में ऐसे-एसे ही बुद्धिमान बसते हैं !!! मगर क्यों न बसें ! इतनी दूर घूमे अभी तक भग की दुकान एक भी नजर न आई हमारे मुल्क में अब तक एक हजार एक सौ एक दुकान भग दिखाई द गई होतीं !

बहादुरसिह की बातें एसी न थीं कि कोई रञ्ज होता। इधर-उधर के कई आदमी इनकी बात सुन हस पडे और एक खुशदिल बजाज खुश हो अपनी दुकान से उतर इनके पास आकर बाला आइए आइये आप मेरी दूकान पर बैठिये बडे भागों से आप ऐसे सत्पुरुषों के दर्शन होते है !

बहादुर -- बस रहन दीजिए मै एसे आदमी के पास नहीं बैठता जो भग न पीता हो।

बजाज -- यह आप भला कैस जानत हैं कि मै भग नहीं पीता ? अजी मैं तो इतनी भग पीता हूँ कि आप भी न पीते होंगे। दुनिया में भग से बढ कर भी भला कोई चीज है ?

बस इतना सुनते ही बहादुरसिह खुश हो गये और उसकी दूकान पर जा डट।

बजाज -- लें अब हुक्म कीजिए तो मै भग बनाऊ ?

बहादुर -- नहीं नहीं इस समय ता मैं सिद्धी पी चुका हूँ, अब सन्ध्या का दोहरैया छनेगी। कमर स एक रुपया निकाल और बजाज की तरफ फेंक कर एक रूपये का गुलाबजामुन मगवाइए तो मै खाऊँ, बड़े जोर की भूख लगी है।

बजाज -- अजी इस रुपय का रहन दीजिए, मै आपके लिए अभी खाने को मॅगवाता हू।

बहादुर -- (दोनों हाथ हिला कर) नहीं नहीं एसा कीजियेगा तो मै भाग जाऊँगा आपको भग ही की भारी कसम है जो इस बारे में फिर बोलिए, बस इसी रूपये का मॅगवाइये !

बजाज -- अच्छा अच्छा आप इतनी बडी कसम न दीजिए मै इसी रूपय का मगाता हू बल्कि खुद जाकर लाता हूँ, हां यह तो कहिए कि एक रूपये का मॅगा कर क्या कीजियेगा ?

बहादुर -- (चमक कर) अजी तो क्या एक रूपये का मन दो मन मिल जायगा ! हम और तुम दो आदमी खाने वाले भी तो है !

बजाज -- नहीं मैं न खाऊगा अभी रसोई जेंम चुका हूँ, एक रुपये का पॉच सेर गुलाबजामुन् मिलेगा।

बहादुर -- (ताज्जुब से) बस ! कुल पॉच सेर ! यहाँ बड़ा महगा सौदा मिलता है !! खैर आप न खाइए मै ही कुछ जलपान करके रह जाऊँगा, पॉच सेर से होता ही क्या है ?

बहादुरसिह की यह बात सुन कर बजाज हैरान हो गया कि यह बित्ते भर का आदमी कहता है कि पॉच सेर से होता ही क्या है ! खैर लाओ तो सही देखें क्योंकर खाता है। बजाज जरा खुशदिल और दिल्लगीबाज था। अपने नौकर को हलवाई की दूकान पर भेजा। वह दौडा हुआ गया और पॉच सेर गुलाबजामुन एक छितनी में ला कर बहादुरसिह के सामने रखता हुआ बोला, पानी एक घडा लाऊ या दो घड़ा ?'

नौकर की इस बात को सुन कर बजाज भी हस पडा। बहादुरसिह ने कहा, अजी नहीं, बस आध पाव जल पीने के लिए और सेर भर हाथ धोने के लिए। जल ही पी कर पेट भर लेंगे तो खायेंगे क्या ?'

अब बहादुरसिह सामने पत्ता रख गुलाबजामुन छीलने लगे। पॉच सेर गुलाबजामुन को छीलछाल के कुल एक छटॉक भर भीतर का गूदा निकाला और उसे खा, पानी पी, नौकर को हाथ धुलाने का इशारा किया।

बजाज -- बस खा चुके। और इतना मुफ्त में बर्बाद किया।

बहा – और नहीं ता क्या तुम चाहते हा कि छिलके,समेत खा जाता और पेट में दर्द हाता ता परदेश में वैद्य ढूँढता फिरता ? वाह जी वाह अच्छी सलाह देने लगे !(नौकर की तरफ देखकर) इसे लेजाकर किसी वैल के आगे डाल दे।

बजाज – क्या आप राज इसी तरह खाते है ?

बहादुर – नहीं ता क्या साल में एक ही दिन खाते है ?

बजाज – एसे तो आपके खाने में वहुत खर्च पडता होगा ?

बहादुर – अजी हजारों रूपयों का भोजन करता हू, इसके अलावे भग-बूटी का खर्च कहॉ तक वताऊ। सच पूछिये तो मै राजे महाराजों की चौथाई तहवील खा जाता हू। मरा पालना कुछ हसी-ठट्ठा थोडी ही है। अव दखिए यहॉ आया ही ह् आपसे जान-पहिचान हो ही चुकी है सव कुछ मालूम हो ही जायेगा।

बजाज – अच्छा यह तो वताइय आपका नाम क्या है ?

बहा – (छाती ऊची करके) वहादुरसिह ।

बजाज – और रहते कहॉ हैं ?

बहा – लका में।

बजाज – (ताज्जुव से) लका में ?

बहा – हॉ जी हॉ लका में।

बजाज – कौन लका ?

बहा – वडी लका।

बजाज – (हसकर) बडी लका कौन है और छोटी लका कौन है ?

वहा – छोटी लका वह जहॉ शिवभक्त रहते हों और बडी लका वह जहॉ शिव और उनके भक्त दोनों ही रहते हों–अब समझे या कुछ और साफ-साफ समझाऊँ ?

बजाज – जी हॉ जरा खुलासा समझाइये।

बहा – छोटी लका वह जो सोने की थी और जहॉ रावण रहता था। वडी लका 'काशी' जो रत्न-जडित है और जहॉ, श्रीविश्वनाथ,माई अन्नपूर्णा और उनके भक्त लाग रहते है। अगर अब भी न समझो तो हम जाते है, ऐसे नासमझ के पास रहना मुनासिव नहीं।

बजाज – (हॅसकर) नहीं नहीं आप खफा न होइये मैं सब कुछ समझ गया आपने पहिले ही क्यों न कह दिया कि मैं काशीजी रहता हूँ, साफ-साफ तो बात थी।

यहा – क्या साफ-साफ कहना है, अजी कवि लोग विना घुमाये-फिराये कभी बात कहते हैं ?

बजाज – क्या आप कवि भी हैं।

बहा – जी हा वल्कि कपि भी हैं।

इस 'कपि' के कहन पर खुशदिल बजाज तथा और भी कई आदमी जो वहादुरसिह की सूरत देखने और बात सुनने क लिए आ गये थे, हँस पडे। बजाज ने फिर कुछ पूछना चाहा मगर बहादुरसिह जोर से बोले–

'बस बस बस, अब मुँह मत खोलिये !ऐसा न होगा कि जन्म भर तुम ही सवाल करते जाओ और मै कुछ भी न पूछूँ !!

बजाज – अच्छा अच्छा, आपको जो कुछ पूछना हो आप भी पूछ लीजिये।

वहा – यह बताइये कि आज इस शहर में धूमधाम कैसी है, लोग दुकानों और मकानों की सजावट में क्यों लगे है ? मै तो कई दफे पहिले आ चुका हूँ मगर ऐसा तो कभी न देखा।

बजाज – अजी हमारे कुँअर साहव की शादी न होने वाली है।

बहा – हाँ !कब कब ?

बजाज – यही आठ दस दिन में।

बहा – बारात कहॉ जायेगी ?

बजाज – बस इसी शहर में घूमे-फिरेगी।

वहा – सो क्या ? राजों के लडकों की शादी तो किसी राजे ही की लडकी या वडे तोंद वाले जिमींदार की लडकी से होनी चाहिए फिर शहर ही में किसकी लडकी से शादी होगी ?

बजाज – जी वह एक जिमींदार की लडकी है मगर लूटकर लाई गई है इसलिए इसी शहर में वल्कि महल ही में उसे रक्खा गया है और वहॉ ही शादी भी होगी।

बहा – वह किस कम्वख्त की लडकी लूटी गई है ! क्या वह देने को राजी नहीं होता था ?

बजाज – अजी राजों-महाराजों के घर की बातचीत है इस तरह आम सडक पर नहीं कही जाती, वल्कि इस बारे में ज्यादे कहना-सुनना भी मुनासिब नहीं।

बहा – जी कहना-सुनना तो जरूर है, अगर आम सडक का खयाल हो तो चलिए कोठडी में घुस चलें।

बजाज – (हँस कर) खूब कही !!

बहा – अच्छा उस लडकी के बाप का तो नाम बताइयेगा या वह भी नहीं ?

बजाज – इसमें क्या हर्ज है सुनिए–वह पटने के जिमींदार गुलाबसिह की लडकी है और उसका नाम रम्भा है। क्या तुम उसे नहीं जानते ? अरे वही जिसके लिए बिहार के राजा उदयसिह के पुत्र नरेन्द्रसिह से फसाद मच चुका है !!

बहा – वाह वाह !उन लोगों को मै खूब जानता हूँ और लड़की की तो नस-नस से वाकिफ हू !(गर्दन हिला कर) लेकिन बुरा हुआ अगर यह नरेन्द्रसिह के घर जाती तो अच्छा होता, उस शैतान की चाहे जो दुर्दशा होती हमें कुछ रञ्ज न था मगर यहॉ तुम्हारे राजा के लडके से ब्याही गई तो ठीक न होगा। हाय। अब तो गई बेचारे बच्चे की जान। बुरा हुआ, बहुत ही बुरा हुआ !!

रम्भा का हाल तो बहादुरसिह से छिपा ही नही था वह नरेन्द्रसिह के लिए घर छोड कर निकल गई थी सो भी यह बखूबी जानते थे। आज वही बेचारी रम्भा इस मुसीबत में आ पडी, इसका बहादुरसिह को बहुत ही रञ्ज हुआ मगर वे अपनी चलाकी से कब चूकने वाले थे ! कोई न कोई तर्कीब सोच ही तो ली।

बहादुरसिह ने जब विचित्र मुद्रा से गर्दन हिला कर कहा कि हाय अब गई बेचारे बच्चे की जान !बुरा हुआ, बहुत ही बुरा हुआ !! तो वह बेचारा बजाज और वहॉ बैठे हुए आदमी भी सभी घबडा गये कि आखिर यह कह क्या रहा है ! हमारे राजा के लडके की जान भला क्यों जाने लगी ? आखिर बजाज से न रह गया, उसने बहादुरसिह से पूछा –

'सो क्या इसमें जान जाने की कौन सी बात है ?'

बहा – अजी यह राजा के घर की बातचीत है इस तरह दस आदमी के बीच में नहीं कही जाती !लो अब मै जाता हूँ, अब इस शहर में रहना और सिसक कर किसी को मरते देखना मुझे मजूर नहीं। (उठने की तैयारी करने लगे)।

बजाज – (हाथ पकड कर) अजी बैठो तो, घबडा क्यों गये, मुझे अभी तुमसे बहुत काम है।

बहा – राम राम काम से तो मैं कोसों भागता हू।

बजाज – अच्छा जरा ठहरिये तो।

बहा – अच्छा दो बात मानने का वादा कीजिये तो जरा सा क्या दो-तीन दिन तक ठहर जायें।

बजाज – कहिय कहिये, मुझे पहिले ही से मजूर है ऐसा कौन होगा जो आप ऐसे खुशदिल आदमी से अलग होना चाहेगा ?

बहा – अच्छा तो फिर वह बातें कह डालू ?

बजाज – हॉ हॉ कहिए और बहुत जल्द कहिए।

बहा – एक तो यह कि मै तुम्हारे यहॉ दो-तीन दिन तक डेरा डालूगा और भग घोंट-घोंट कर पीऊगा। डरो मत खाने-पीने में मै अपने पास से खर्च करूँगा तुम्हारे रुपये बर्बाद न होने दूगा।

बजाज – अजी अब जल्दी कहो भी, कि लगे मुर्गी की टॉग तोडने ! मै इतना कगाल नहीं हूँ कि दो-चार महीने तुम्हारी दावत न कर सकू ! खाओ न कितना गुलाबजामुन छील-छील कर खाओगे दोरुखी हार मानो तो सही !

बहा – अच्छा खैर तो मेरी दूसरी बात भी तो सुन लो ?

बजाज – उसे भी कह डालो।

बहा – वह यह है कि जो बात तुम मुझसे पूछ रहे हो उसके जानने की इस समय जिद्द न करो, निराले में रात को या कल सब कुछ मुझसे सुन लेना, अजी मै त्रैलोक्य का हाल बता सकता हूँ यह तो मामला ही क्या है। मै बडे काम का आदमी हू, मरने के बाद भी मेरी एक-एक हडडी दो-दो लाख की नीलाम होगी।

बजाज – क्या बात है आपकी !

बहा – नहीं नहीं क्या बात किसी दूसरे की होगी, मेरी बडी बात है।

बजाज – अच्छा साहब मुझे यह भी मजूर है।

थोडी दर तक और मसखरेपन की बातचीत होती रही बहादुरसिह की बातों से सभी हसते-हसते लोट-पोट हुए जाते थे। दोपहर को बजाज ने दुकान बन्द की और बहादुरसिह को साथ ले घर गया। बहादुरसिह ने उसके घर डेरा डाला और थोड़ी देर आराम करने के बाद घूमने-फिरने के लिये बाहर निकले, लेकिन बाजार का रास्ता छोड़ किले की तरफ रवाना हो गए।

किले की एक खिडकी ठीक गण्डक नदी के किनारे ही पडती थी और उस राह से बहुत से आदमी गण्डक के किनारे आते थे कई सर्कारी लौडियॉ भी उसी राह से जल भरने के लिए आ-जा रही थीं।

बहादुरसिह चाहे कितना ही बडा मसखरा और बेवकूफ क्यों न समझा जाय मगर असल में वह बडा ही चालाक और धूर्त था। वह बखूबी जानता था कि रम्भा जीते जी सिवाय नरेन्द्रसिह के किसी दूसरे से शादी न करेगी। उन्ही के लिए ता वह जान पर खेल कर घर के बाहर निकल गई थी पर न मालूम किस तरह इन दुष्टों के हाथ लग गई अब वह सोच रहा था कि कोई तर्कीब ऐसी करनी चाहिए जिसमें यहॉ से उसकी रिहाई हो जाय। इसी धुन में डूबा हुआ वह एक

किनार वैठ गया और किले के अन्दर से आते-जात औरत मर्दो का तमाशा दखन लगा।

जैसे-जैस दिन वीतता जाता था लोगों की आमदरफ्त कम होती जाती थी यहाँ तक कि शाम हाते-हात सिर्फ दो लौडियों को साथ लिए हुए एक वूढी औरत घाट पर रह गई और चारों तरफ सन्नाटा हा गया। इस वूढी औरत की उम्र साठ साल से कम न हागी ता भी यह वदन में वहुत स साने के गहने पहिने हुए थी और इसके साथ वाली दानों लौडियों का वदन भी सोने क गहनों से खाली न था। वहादुरसिह ने समझ लिया कि यह वुढिया वेशक रानी साहेवा की खास लौडी वल्कि लौडिया की सर्दार हागी। वह वहुत दर तक छिपे-छिप इन तीनों का दखता रहा। जव वुढिया नहा चुकी और साडी वदल दोनों औरतों को साथ ले किले में जाने के लिए सीढियॉ चढने लगी तव वहादुरसिह दौड कर उसक पास पहुँचा और पैर पर गिर कर रोने लगा–

'हाय मॉ तू कहॉ चली गई थी ! मैनें तेरा क्या विगाडा था जा मुझ अकेला छाड कर चली गई। अव तरी सी मॉ मै कहॉ स लाऊ ! तू दिन में चार-चार पॉच-पॉच दफ मुझे प्यार करक और जिदद करके खिलाया करती थी अव कोई दा दफे भी खिलान वाला न रहा ! खुद अपने हाथ से चूल्हा फूकता और खाने का पकाता हूँ। इसमे सन्दह नहीं कि तू लाखों रूपयमेरे लिये घर में छोड गई मगर अव वह किस काम का है। तेरी पतोहू भी मर गई अव वह सव धन कौन भोगगा। मै जानता हूँ कि तू मेर वाप से लड ओर लाखों रूपय और जडाऊ गहनों पर लात मार कर चुपचाप चली गइ थी मगर अव ता वाप राम भी चल वसे घर में सिवाय मेरे और दूसरा कोई न रहा। मॉ मुझसे इतना धन-दौलत सभाला नहीं जाता जिमींदारी का वन्दोवस्त किसी तरह नहीं हाता मॉ अव मै न मानूगा जरूर तुझ घर ल चलूगा ! मॉ मैन तो तेरा कुछ नहीं विगडा था फिर तू मुझसे क्यों खफा हो गई ? हाय मॉ हाय मॉ !! अव-जीत जी मै तुझ कभी न छोडूँगा। तैने जिद्द करके मरे लिय जो सिकरी वनवा दी थी ले मै उतार कर तरे आग फेंक देता हूँ, अव इसे कभी न पहिरूगा ! (गल स सिकरी निकाल कर और उसक आगे फेंक कर) तू अगर न चलगी ता मै सव धन-दौलत फकीरों को वॉट साधू हो जगल में चला जाऊगा। मै तेरी खोज म वर्षो एक शहर से दूसर शहर मारा फिरा। मॉ तू, कहीं न मिली ! आज राम ने तुझस मिलाया अव मैं तुझे कभी न छोडूगा चाहे जो हो और विना घर ले गये कभी न मानूगा। मैन सुना था कि मेरे दो तीन भाई वहिन भी थ जिन्हें तू अपन साथ ल गई थी हाय अव व कहॉ है ? मुझ जल्द दिखा जा कुछ दौलत घर में है मे उनके हवाले करूँगा। वे ही गॉव-गिरॉव का भी वन्दोवस्त किया करेंगे मुझसे अव किसी वात से सरोकार नहीं। मुझे धन-दौलत की परवाह नहीं मैं तो दिन-रात भग में मस्त रहना चाहता हूँ, वस पाव भर भग ओर आधा सर चीनी चाहिए और कुछ नहीं। मॉ अव तुझ घर चलना ही हागा मै किसी तरह न मानूगा।

इसी तरह की वहुत सी वातें कहता हुआ वहादुरसिह दर तक वुढिया का पेर पकड कर रोता ओर गिडगिडाता रहा। पहिले तो वुढिया घवडाई कि यह कहॉ की वला पीछ पडी मगर जव वेशुमार धन-दौलत और गॉव-गिरॉव का नाम सुना तो मुँह में पानी भर आया। साचने लगी कि यहॉ जितना माल दस जन्म म पैदा करूगी,उतना एकदम वात की वात में यह पगला देने को तैयार है। मालूम हाता है कि इसकी मॉ ठीक मेरी सूरत-शक्ल की थी। यह कहता है मेरी वहिन और मेरे भाई का भी तू लती गई थी चलो यह भी अच्छा ही है मेरी एक लडकी और एक लडका ता हई है वही इसके भाई-वहिन वनें ! फिर इतनी दौलत छोड वैठना नादानी नहीं तो क्या होगा ? मेरी समझ में तो यही आता है कि इसके साथ चली चलूँ, मगर इस वार में पहिल अपने लडके स सलाह कर लेना मुनासिव है।

इसी तरह की वातें वुढिया वडी दर तक साचती रही। दोनों अपन-अपने मतलव की धुन में थे। आखिर वुढिया न कहा खैर जव तू कहता है ता मैंतर घर चलूँगी मगर पहिले तेरे भाई से सलाह कर लूँ।

वहा – क्या मरा भाई भी इसी शहर में है ? वह क्या काम करता है ?

वुढिया – महाराज के यहॉ सवारों में नौकर है।

वहा – और वहिन ?

वुढिया – तेरी वहिन तो अपने ससुराल में है।

वहा – हाय ता मैं उसकी सूरत आज न दख सकूँगा ! मॉ हजार दा हजार रूपया उसके पास भेज दे और घर चल के तुरन्त अपन यहॉ वुलवा भज भाई का भी साथ लेती चल मैं उसकी अपने राजा से मुलाकात कराऊगा।

वुढिया – तरा राजा कौन है ?

वहा – उदयसिह।

वुढिया – कौन उदयसिह ? विहार का राजा ?

वहा – हॉ वही।

विहार क राजा उदयसिह का नाम सुन वुढिया थोडी दर तक कुछ साच में पड गई मगर फिर सम्हल गई और वहादुरसिह से वोली अच्छा अव देर हाती है इस समय तो मै जाती हूँ लेकिन कल इसी समय इसी जगह तू मुझसे मिलियो फिर जैसी राय होगी करूँगी।

वहादुर – राय-वाय मै कुछ नहीं जानता तुझ चलना ही हागा।

बुढिया – हॉ हॉ मै चलूगी !

अच्छा यह सिकरी तू लती जा मेर भाई को दे दीजियो।

बुढिया – (सिकरी उठा कर) खैर जिसमें तू खुश हो मै वही करूगी।

दो चार बातें और करके बुढिया वहॉ से चली गई और बहादुरसिह भी अपना काम हो जाने की खुशी में मस्त झूमते हुए अपने नये दोस्त बजाज के यहॉ पहुँचे जिसने अपने घर में रख कर इनकी बडी खातिरदारी की। बहादुर सिह ने भी अपन मसखरेपन स बजाज को बहुत ही खुश किया बल्कि अपना दोस्त बना लिया।

दूसर दिन बुढिया स मिलने के लिए बहादुरसिह फिर उसी जगह पहुँचे। आज बुढिया के साथ उसका लडका भी था जो बहादुरसिह से खुशी-खुशी सगे भाई की तरह गले मिला और देर तक बातचीत करता रहा।

बहादुरसिह को निश्चय हो गया कि अब मेरा काम अवश्य हो जायैगा।

आखिर-धीरे-धीर बहादुरसिह ने अपने मतलब वाली बात छेडी।

बहा – अच्छा मॉ बता अब घर कब चलगी ?

बुढिया – जब कहो तब चलूँ।

बहा – (अपने बनोए भाइ अथात बुढिया के लडके की तरफ दख कर) भाईजान मै तुम्हें चिटठी देता हूँ। उसे तुम विहार के राजा उदयसिह के पास ले जाओ। हमको वह अपने भाई की तरह मानते हैं। हमारा बहुत सा रुपया उनके यहॉ जमा है हमारे घर की ताली भी उन्ही के यहॉ है वह तुमका हमार घर की ताली और दस हजार रुपया नगद देंगे और हमार नौकरों को बुला कर तुम्हें सहेज देंगे और कह देंगे कि यह बहादुरसिह जवहरी का भाई है। फिर वे लोग तुम्हारा हुक्म मानेंग। तुम घर का इन्तजाम करना और आज के ठीक पन्द्रहवें दिन घर में से चॉदी वाली पालकी और सोलह कहारों को लेकर शहर के पॉच कोस इधर चले आना जिसमें हम माताजी को इज्जत के साथ घर ले जाय। (कमर से एक चिट्ठी और दस अशर्फी निकाल कर) ला यह चिटठी राजा साहब को देना और यह अशर्फियॉ रास्ते में खर्च करना। एक घोडा किराया कर लो और हॉका-हॉकी चले जाओ।

बुढिया के लडके रामदास ने यह कह कर कि 'कल सरकार से छुटटी ले कर मै जरूर चला जाऊगा' बहादुरसिह के हाथ से अशर्फी और चिटठी ले ली। इसके बाद अपने-अपने ठिकाने चले जाने के लिए तीनों आदमी खडे हो गये। बहादुरसिह ने अपनी माताजी की तरफ देख कर पूछा–

मॉ यह तो बताओ यहा लोगों ने तुम्हारा नाम क्या रक्खा है ?

बुढिया – चमेला दाई।

बहा – राम राम अच्छा भला नाम बदल कर क्या बुरा नाम रख दिया ! बस चले तो सभों का नाक काट डालू ! अच्छा इस वक्त तो जाता हूँ लेकिन कल जरूर यहा ही मिलना, किसी से डरना मत।

चमेला – लो मै डरन् क्यों लगी। अपने लडके से मिलती हूँ इसमें भी किसी का इजारा है !!

बहा – (पैर छू कर) अच्छा तो अब जाता हूँ।

बीसवां बयान

हाजीपुर के राजा दौलतसिह का लडका प्रतापसिह बडा ही उजडड था। उसे पढने-लिखने का शौक बिल्कुल न था यहा तक कि सिवाय दस्तखत करने के अपने हाथ से एक चीठी भी नहीं लिख सकता था। दस-बीस गपोडी और बात-बात में तारीफ करने वाले साथियों के साथ हाहा-ठीठी में दिन बिताया करता था, हा कविता का शौक इसे जरूर था। इन दिनों तो यह शादी होने की खुशी में फूला हुआ है। रभा जब से इसके घर में आई है, छिप कर दो दफे उसकी सूरत देख चुका है और अपने साथियों के बीच में बैठ कर उसकी खूबसूरती की तारीफ किया करता है। इसे भग और गॉजे का बहुत शौक है दिन में तीन-तीन दफे बूटी छना करती है और दिन-रात नशे में चूर रहता है।

बहादुरसिह ने इसके चाल-चलन का पता अच्छी तरह लगा लिया था इसलिए सध्या को बूटी पीने का समय विचार वह उसी नजरबाग के दरवाजे पर पहुँचा जिसमे नित्य प्रतापसिह बूटी पी,पहर रात गए तक गप्प उडाया करता था। पहरे वाले से कहा कुमार को बहुत जल्द खबर करो कि एक विजया के सिद्धजी' तुमसे मिलने आये है।

पहरे वाले सिपाहियों को बहादुरसिह की सूरत-शक्ल पर बडी ही हसी आई। यह समझ कर कि हमारे कुअर साहब ऐसी सूरत देख बहुत ही खुश होंगे – एक सिपाही दौडा हुआ बाग के अन्दर गया और कुअर साहब को सलाम कर बोला –

सरकार आज एक विचित्र आदमी सरकार से मिलने के लिए आया है जिसकी सूरत देखने से मारे हसी के दम निकला जाता है। उसने अपना नाम विजया के सिद्धजी' बतलाया है। हुक्म हो तो आने दिया जाय।

कुमार – हॉ हॉ उन्हें बहुत जल्द हमारे सामने लाओ।

सिपाही हुक्म पाते ही लपका हुआ बाहर गया और बहुत जल्द बहादुर सिह को लिए हुए कुँअर साहब के सामने हाजिर हुआ।

पाठक महाशय यह न समझें कि बहादुरसिह को जिस सूरत में पहिले देख चुके है, आज भी उसी सूरत-शक्ल में देखेंगे। नहीं आज वह एक नए ही ढग का बाका जवान बना है। सिर से पैर तक अपने को सिदूर से रग खासा महाबीर बना हुआ है धोती कुर्ते या टोपी से कुछ वास्ता नहीं जॉघिया कसे और भॉग का झोला बगल में लटकाये हुए हैं हाथ में भग घोंटने का डडा और टोपी की जगह भग घोंटने की बडी सी कूँडी सिर पर औंधे हुए हैं।

कुअर साहब के सामने पहुँचते ही बहादुरसिह ने आशीर्वाद में यह दोहा पढा –

दोहा

महादेव की परम प्रिय, सिद्धन की सिधि जोय।
आवनहार अरिष्ट तुव टारहिं विजया सोय॥

भगेडी के सामने जब भग की तारीफ की जाय तो वह बडा प्रसन्न हाता है। बहादुरसिह के दोहे से कुँवर साहब बहुत ही प्रसन्न हुए और समझ गय कि यह विजयादेवी का इष्ट है मगर साथ ही इसके दोहे के तीसरे चरण से उन्हें खुटका भी हुआ लेकिन वह समझ कर कि सिद्धजी कहीं जाते ता हैं ही नहीं फिर पूछ लिया जायेगा कि इस दोहे का तीसरा चरण आपने ऐसा क्यों कहा इस विषय में कुछ न पूछा।

कुअर – (हॅसते हुए) आइये आइये सिद्धजी यह आसन बिछा हुआ है, बैठिये, कुशल तो है ?

सिद्ध– दोहा

देहि विजय तुमको सदा, सो विजया बरदानि।
नित हम लहि जाकी कृपा रहत अभय सुखमानि॥

कुँवर – वाह वाह सिद्धजी क्या बात है ! विजया ऐसी ही वस्तु है !

सिद्ध – इसमें क्या सन्देह अन्नदाता देखिये –

देत अमन्द अनन्द दन्द दु ख दूर बहावै।
भामिनी भोजन ओर दुचन्द चाह उपजावै॥

सप्त दीप को वर महीप छिन माहि बनावै।
अष्ट सिद्धि सुख अनुभव बिनहि प्रयास करावै॥
नन्दन बन कैलास अरु स्वर्ग विभव दुर्लभ जिते।
करति सुलभ अपनी कृपा करत देखि विजया तिते॥

कुअर – वाह वाह वाह क्या बात है सिद्धजी ! विजया देवी की महिमा अकथनीय है ! कहिये आपका मकान कहा है ?

सिद्ध – मेरा मकान तो कहीं भी नहीं है, मेरे बाप का मकान काशी था सो अब नहीं है।

कुअर – (हस कर) सो अब नहीं है, इसका क्या मतलब ? क्या बाप के मर जाने से मकान भी टूट जाता है ?

सिद्ध – जी नहीं मरने से तो मकान नहीं टूटता मगर वह तो काशी में मर के मोक्ष हो गये इसलिये मिलने की अब कोई उम्मीद न रही दादा का मकान दरभगे था सो उनकी भी गया किए आ रहा हू इसलिये अब वह भी गया-गुजरा हुआ। हाँ परदादा का मकान मुलतान था, सो गयाजी जाने पर भी मैंने उनके नाम का पिण्डा न दिया, आखिर अपने बुजुर्गों में से किसी का पता-ठिकाना तो रहने देना चाहिए !

सिद्धजी की बेसिर-पैर की बातों पर सभी हस पडे और कुँवर साहब न फिर पूछा –

कुअर – क्या गयाजी में तुमने अपने परदादा का पिण्डा नहीं दिया इससे उनका मकान मुलतान में बचा रह गया ?

सिद्ध – आप समझे नहीं, मकान उसी को कहते है जहा कोई रहे चाहे जीता-जागता रहे या मरने के बाद भूत होकर रहे, जब मैंने गया में उनके नाम का पिण्डा नहीं दिया तो आखिर भूत होकर तो वहा रहेंगे ! पिण्डा दे देता तो उनकी भी गति हो जाती तो फिर मकान से उनका रिश्ता न टूट जाता !

कुअर – तो क्या आपको निश्चय है कि वह भूत होकर वहा हैं ?

सिद्ध – जी हा, मुझसे कई दफे मुलाकात हो चुकी है ?

कुअर – फिर किस तरह मुलाकात हो चुकी है ?

सिद्ध – बस किसी के सिर पर आकर दो चार बातें कर गए मुलाकात हो गई जैसे गुलाबसिह की दादी।

कुँअर – कौन गुलाबसिह की दादी ?

सिद्ध – (हाथ उठा कर) अजी यही पटने के जिमींदार गुलाबसिह की दादी मगर वह तो बडी ही बेढब है खाली अपनी परपोती रम्भा ही के सिर आया करती है।

कुँअर – (चौंक कर और डर कर) तुम्हें कैसे मालूम कि रम्भा के सिर पर उसकी परदादी आया करती है।

सिद्ध – मैं स्वय देख चुका हू और दु ख भोग चुका हू।

कुँअर – क्या रम्भा के सिर पर उसकी परदादी को आते खुद देख चुके है ?

सिद्ध – जी हॉ, कहा तो कि देख चुका हूँ और दु ख भोग चुका हू।

कुँअर – आपको क्या दु ख भोगना पडा ?

सिद्ध – सो न पूछिये वडी लम्बी-चौड़ी कथा है।

कुँअर – भला कहिए तो सही।

सिद्ध – आप जिद्द करत है तो खैर सुनिय मे कहता हूँ। रम्भा की परदादी के साथ और भी वहुत सी चुड़ैलें है। जव वह रम्भा के ऊपर आती है और रम्भा किसी के सिर पर हाथ रख दती है या धोखे से हाथ पड जाता है तो कोई न कोई चुडेल उसके ऊपर भी आ जाती हे ओर उसकी हडडी-हडडी हिला दती है। एक दिन मे इसी तरह पटन में गुलावसिह के यहा गया हुआ था। शाम होते-होते महल में खूब शोरगुल मचा जिसे सुन गुलावसिह घवडा गए। मैंने उनसे डरने का सवब पूछा। वे वेचारे सूधे आदमी साफ वोल उठे कि हमारी लड़की पर हर अमावस्या क दिन चुडेल आती है सो आज अमावस्या है मालूम होता है कि वही वखेडा फिर महल मे मचा है। शामत की मार मरे मुह से निकल गया कि मै भूत उतार सकता हू मुझ ले चलिए ! वस साहव वह मुझे अपन जनान में ल गए। मैन जाते ही ललकारा वस खवरदार !" इतनाकहना था कि वह विगडी और झट मरे पास आकर मर सिर पर हाथ रख ही ता दिया। वस फिर क्या पूछना है उसी समय मै वदहवास हो गया। न मालूम मेरी क्या दुर्दशा हुई दूसरे दिन जव होश आया तो अपन को गगा किनारे वालू पर पडा हुआ पाया। हाय हाय !! वह दिन मुझ कभी न भूलगा। पन्द्रह दिन तक मेरा वन्द-वन्द दुखता रहा ! मरत-मरते वचा। अव जो मुझे कोई कहे कि तुम्हें लाख रूपय दूँगा तुम पटन चला तो वस जाने वाले की सात पुश्त पर लानत भेजता हू, अव तो यह भी सुना हे कि उन्होंने लाचार होकर रम्भा को निकाल दिया आर वहाना कर दिया कि वह खुद कहीं भाग गई।

सिद्धजी की वातें सुन कर कुँअर साहव तो वदहवास हो गए। वदन के रौगटे खड हा गए कलेजा धक-धक करने लगा, सोचने लग कि हाय उसी रम्भा स तो मेरी शादी होने वाली है ! कहीं सिद्धजी की वात सच हुई ता मुफ्त में जान गई। कहीं मेरे भी सिर पर हाथ रख देगी तो वस मे गया गुजरा ! लकिन कहीं सिद्धजी गप्पे न उड़ाते हों – यह सोचकर कुँवर साहव ने फिर पूछा, क्या सिद्धजी आप यह सच्च कह रहे है ? मुझे तो विश्वास नहीं होता !

सिद्ध – नहीं विश्वास हाता तो मेरी वला से ! अगर आपका सच-झूठ मालूम करना है ता पता लगवाइय कि रम्भा कहॉ है फिर अमावस्या क दिन उसके पास चलिए और देखिए तमाशा !

कुँअर – रम्भा का पता तो मुझे मालून है।

सिद्ध ता वस जिस शहर में वह हा वहॉ जाइये और अमावस्या की शाम का उससे मिलिय !

कुअर – रम्भा इस समय इसी शहर में है और अमावस्या को भी थोड ही दिन है।

सिद्ध (चौंक कर) क्या रम्भा इसी शहर में हे ?

कुँअर – जी हॉ वल्कि हमारे ही मकान में है।

हाय हाय ! वडा गजव हुआ ! हे परमेश्वर ! मैन तेरा क्या विगाडा था जो तू मुझको इस शहर में ले आया ! अव जान वचा !! यह वकता हुआ वहादुरसिह वहॉ स भागा। कुवर साहव पुकारते ही रह गए कि "हॉ हॉ ! सिद्धजी सुनिए तो, सुनिए ता ! मगर सुनता कोन ह ? यह ता कूडी-साटा तक फेंक क भाग। दवाज पर पहरे वालों न राका तो यह जमीन पर लाट गए और मार डाला मार डाला ! मरे रे मरे रे !! कह कर चिल्लाने लग। लाचार सभों ने छोड दिया और वहादुरसिह हॉफत हुए वहा से भागे।

कुअर साहव के दिल की क्या हालत थी यह तो व ही जानते होंगे। सिद्धजी के भागने वाद वह घन्टों तक परेशान रहे और तरह-तरह की वातें सोचते रहे। शादी की खुशी गम के साथ वदल गई। यहॉं तक डरे कि मा से मिलने के लिये भी महल म जाने की हिम्मत न रही। आखिर डरते-डरते अपन एक दोस्त का साथ ले वाप के पास पहुँचे और सिर नीचा कर चुपचाप वगल में वैठ रहे।

उदासी का सवव वहुत पूछन पर कुवर साहब के दोस्त न विजया क सिद्धजी का सव हाल कहा। राजा दोलतसिह सुन कर चुप हा रहे लेकिन कुछ दर सोचने के वाद वोले, "ओफ यह सव वाहियात वात है। हम नहीं मानते, भूत-प्रेत कोई चीज नहीं सव ढकासला है। तुम्ह लडका समझ के वहका दिया होगा। फिर तरद्दुद की वात ही क्या है ? अमावस्या का छ ही सात रोज वाकी है वस तुम्हारे दिल से शक दूर हो जायगा।"

इक्कीसवां बयान

पुनपुन नदी के किनार पड हुए लश्कर पर छापा मार जब नरेन्द्रसिह और जगजीतसिह दोनों औरतों को छीन लाये तो थोडी दूर पहुँचने के बाद मालूम हुआ कि इन दोनों में रम्भा नहीं है। तारा और गुलाब को पाने से एक तरह खुशी हुई मगर रम्भा के हाथ न लगन से वह खुशी नरेन्द्रसिह की बढती हुई उदासी को किसी तरह कम न कर सकी। नरेन्द्रसिह ने तारा से पूछा "तेरे साथ ही तो रम्भा भी पकडी गई थी, वह कहां है ?"

तारा – हम दोनों का जबर्दस्ती ले जाने वाले डाकुओं ने जब नदी के किनारे डेरा किया तो सब लोग अपने-अपने काम की फिक्र में पड। मेरी और रम्भा की डोली एक ही जगह रक्खी हुई थी, उस समय रम्भा ने मौका पाकर रात की पहिली अधेरी में डोली से उतर कर मैदान का रास्ता लिया और न मालूम कहॉ चली गई। मैने भी भागने की कोशिश की मगर न हो सका क्योंकि रम्भा के भागते ही पहरे वालों को मालूम हो गया और "खोजो-खोजा धरो-पकडो ' की आवाज चारों तरफ से आने लगी बल्कि थोडी ही दर बाद यह आवाज भी कान में आई कि मिल गई मिल गई है ! मुझे विश्वास हो गया कि रम्भा भाग न सकी पकडी गई। उसी के थोडी देर बाद आप लोग पहुँचे और लडभिड कर हम लोगों की जान बचाई, मगर अब मैं अपनी प्यारी रम्भा क बदले किसी दूसरी ही औरत को दख रही हूँ।

जगजीत – (गुलाब की तरफ दख कर) तुम कैसे फॅस गई ?

गुलाब – मैं आफत की मारी अपनी बहिन मोहिनी के साथ मारी-मारी फिर रही थी, इत्तिफाक से उसी नदी के किनारे पहुँची जहाँ लडाई दगा हुआ है। मैं पानी पीने के लिए नदी किनारे गई यकायक कई आदमी मेरे पास पहुँचे और यह कह कर कि 'मिल गई मिल गई , यही है यही ! मुझे पकड़ लिया। मैंने बहुत कहा सुना मगर सुनता कौन है ! हाय, मेरे पकड़े जाने के बाद न मालूम बहिन मोहिनी की क्या दुर्दशा हुई होगी !!

नरेन्द – मालूम होता है वह बच के निकल गई।

जगजीत–मुझे तो उम्मीद नहीं कि वह बच के निकल गई होगी। हम लोगों से लड़ने के बाद भागे और फैले हुए. दुश्मनों के हाथ उसका फिर से फस जाना ताज्जुब नहीं है।

नरेन्द – शायद ऐसा ही हुआ हो फिर अब क्या करना चाहिये ?

जगजीत – मेरी राय तो यही है कि घर चलिये वहा से जो कुछ होगा बन्दोबस्त किया जायगा ?

नरेन्द – नहीं ऐसी हालत में घर तो नहीं जाऊगा।

जगजीत – आप बड हैं मैं ज्यादे कुछ तो नहीं कह सकता मगर इतना कहे बिना भी न रहूँगा कि आप जरूर घर चलें, मैं आपको घर छोड कर खुद उसकी खोज में निकलूँगा और वादा करता हू कि बिना पता लगाये आपको अपना मुह न दिखलाऊगा।

नरेन्द – बेचारी मोहिनी भी भारी दुर्दशा में फस गई होगी।

जगजीत – (अपने मन में) भाई साहब ने तो इश्क के दो टुकडे कर डाले ईश्वर ही बचावे ! (जाहिर में) अपनी अपनी किस्मत का भोग सभी भोगते हैं, इसका खयाल कहाँ तक कीजियेगा !

जगजीतसिह की आखिरी बात नरेन्दसिह को बहुत बुरी मालूम हुई। माथे पर बल पड गए रगत बदल गई , ऑखों में सुर्खी आ गई। होंठ बिचका कर बोले अगर यही खयाल है तो रम्भा या मोहिनी का पता खूब ही लगाओगे !

आखिरी बात मुँह से निकल जाने पर जगजीतसिह को भी बहुत कुछ अफसोस हुआ और भाई को मनाने के लिए **उन्हें दूनी मेहनत करनी पड़ी। आखिर हर तरह से समझा-बुझा कर उन्हें घर ले ही गए। गुलाब और तारा भी साथ में गई।**

नरेन्दसिह के बाप उदयसिह अपन लडके के घर लौट आने से बहुत ही खुश हुए मगर जब अपने छोटे लडके जगजीतसिह की जुबानी सब हाल सुना तो कई तरह की फिक्र पैदा हो गई। यह तो उन्होंने निश्चय कर लिया कि जिस तरह हो रम्भा का पता लगाना बल्कि उसे लाकर नरेन्द्रसिह के साथ ब्याह देना चाहिए चाहे इसके लिए सर्वस्व जाय तो जाय मगर साथ ही इसके यह भी सोच लिया कि भरसक मोहिनी का पता न लगने देंगे और अगर शायद वह यहाँ आ भी जाय तो घुसने न देंगे क्योंकि आखिर वह बदमाश और मक्कार केतकी की बहिन है, कहाँ तक खोटी न होगी। इस बात के सुनने से उन्हें बहुत दुख हुआ कि नरेन्द्र का दिल रम्भा और मोहिनी दोनों ही की तरफ खिचा हुआ है।

उदयसिह ने जो कुछ सोचा या खयाल किया था उसे किसी पर जाहिर न किया मगर अपने छोटे लडके जगजीतसिह से छिपा रखना भी मुनासिब न समझा क्योंकि जगजीतसिह बहुत ही गम्भीर और नेक-बद को अच्छी तरह समझने वाले थे यहाँ तक कि मुश्किल से मुश्किल विषय में इनके पिता इनसे राय लिया करते थे और इनकी राय बहुत ही भली समझी भी जाती थी।

गुलाब को देख कर जगजीतसिह उस पर मोहित तो हो गए मगर अपने दिल को हाथ से जाने न दिया। उन्होंने अपना यह इरादा अच्छी तरह मजबूत कर लिया कि चाहे गुलाब के इश्क में जान चली जाय मगर साथ न करेंगे, हा अगर हर तरह से आजमाने पर वह अपनी बहिन केतकी के रग-ढग की साबित न होगी तो कोई मुजायका नहीं लेकिन तभी जब साथ ही इसके यह भी जाहिर हो जाय कि वह मुझसे मुहब्बत रखती है।

रम्भा का पता लगाने के लिए बहुत से आदमी चारों तरफ भेजे गए। थोडे दिन बाद यह खबर मालूम हुई कि वह हाजीपुर में है। सुनते ही जगजीतसिह अपने बाप से बिदा हुए मगर घर से बाहर न निकलने पाये थे कि बहादुरसिह की वह चीठी वहाँ पहुँच गई जो उस मसखरे ने अपने बनावटी भाई के हाथ भेजी थी।

बाईसवां बयान

हाजीपुर के राजकुमार प्रतापसिह को डरा-धमका कर हमारे बहादुरसिह जो भागे सो फिर किसी को पता भी न लगा कि कहाँ गए और क्या हुए मगर भगेडी महाशय घूम फिर कर अपने दोस्त बजाज की दुकान पर पहुँच ही गए। कई दिनों की सोहबत में गेपालदास बजाज उनका दोस्त तो हो गया था मगर अपने काम की तरफ खयाल कर के और यह सोच कर कि हमारी वजह से बजाज बेचारे पर कोई आफत न आवे, बाद में वहादुरसिह ने उसके यहाँ रहना भी छोड दिया और अब काई भी नहीं कह सकता कि वह कहा रहता हे या क्या करता है।

लेकिन बहादुरसिह चाहे जहाँ भी रहता हो मगर वह चमेलादाई से रोज ही मिल कर माँ के रिश्ते को मजबूत करता रहा। पॉच-चार दिन की मुलाकात में भी बहादुरसिह ने चमेलादाई से अपने मतलब की बात न छेडी जब तक कि उसे यह निश्चय न हो गया कि चमेलादाई का लडका रामदास हाजीपुर से चला गया बल्कि बहुत दूर निकल गया होगा।

एक दिन दोपहर के सन्नाटे में चमेलादाई अपने सपूत लडके बहादुरसिह को उस घर में ले गई जिसमें उसका कम्बख्त लडका रामदास रहा करता था और बहुत सी अच्छी-अच्छी खाने की चीजें वहादुरसिह के आगे रक्खीं जो रनवास से छिपा-लुका के इसी काम के लिए लाई थी। बटेर के बराबर खाने वाल बहादुरसिह ने भोजन करना शुरू किया और समय पाकर अपने मतलब की बात भी छेड दी।

बहा – मा ! सुना है कि तुम्हारे राजकुमार की शादी होने वाली है ?

चमेला – हॉ बेटा शादी तो जरूर होने वाली है मगर लडकी बडी ही कम्बख्त है।

बहा – सो क्या ?

चमेला – यही कि दिन-रात रोया-पीटा करती है।

बहादुर – वह तो पटन के जिमींदार गुलाबसिह की लडकी है न ?

चमेला – हा गुलाबसिह की लडकी है।

बहा – उसकी शादी तो हमारे राजकुमार नरेन्द्रसिह से होने वाली थी ?

चमेला – सो तो नहीं मालूम कि किसके साथ होने वाली थी मगर इतना देखती हूँ कि वह दिन-रात नरेन्द्र, नरेन्द्र कह कर रोया करती है और यहा होने वाली शादी को बिल्कुल पसन्द नहीं करती।

बहा – माँ अगर तुम अपने साथ उसे अपने घर ले चलो तो बडा ही मजा हो ! हम उसे अपने राजा के यहाँ भेज दें और बहुत सा रूपया इनाम मिले।

चमेला – अरे राम राम ऐसा खयाल भी न करना ! जिस रोज ऐसा सोचेंगे उसी रोज हमारी-तुम्हारी दोनों की जान चली जायेगी।

बहा – हम तो अपनी जान रात दिन हथेली पर लिए रहते हैं मगर अफसोस है कि तुम बुढिया हो कर मरने से इतना डरती हो ?

चमेला – तो क्या तुम मुझे मारने ही के लिए यहाँ आये हो और इसी लिए बेटा बने हो ?

बहा – उमर मेरी बहुत कम है तो क्या हुआ मै कभी किसी का बेटा नहीं बनता अगर बनता भी हूँ तो बस पॉच-सात दिन नहीं हमेशा सब का बाप ही बना रहता हूँ, आज तुम्हारा भी बाप बनने का जी चाहता है।

बहादुरसिह की बात सुन कर बुढिया घबडा गई बल्कि कहना चाहिये कि बदहवास हो गई और समझ गई कि वहादुरसिह बडा भारी मक्कार और धूर्त है। बहुत देर तक बहादुरसिह का मुँह देखती रही आखिर बोली–

चमेला – तुम बडे भारी बदमाश मालूम पडते हो ?

बहा – शाबाश, तुमने खूब पहिचाना ! अब तुम भी मेरे साथ लुच्ची व मक्कार बनो तो काम चले !

चमेला – खबरदार लौंडे मुँह सम्हाल कर बात कर, मक्कार कहीं का ! निकल जा यहा से, नहीं तो कान पकड कर उखाड लूगी !!

बहा – वेशक मगर मुझमें एक बडा भारी गुण यह है कि जिससे मैं कोई काम लिया चाहता हूँ पहिले उसे अपने कब्जे में कर लेता हूँ जिसमें नाकर-नूकर करने न पावे। इसी तरह तुम्हें भी मैंने पहिले ही अपने कब्जे में कर लिया है।

चमेला – मैं क्योंकर तेरे कब्जे में आ सकती हूँ ! मैं जब चाहूँ तुझे फॉसी दिला दूँ !

बहा – (हस कर) मै तो फॉसी पड नहीं सकता मगर कहीं तुम्हारा लडका ही फॉसी न पड जाय ! मै सच कहता हूँ कि तुम्हारी नकेल मैंने अपने हाथ में कर ली है। अव तुम झख मारोगी और मेरा काम करोगी।

चमेला – तैं पागल तो नहीं हो गया है !!

वहा – क्या यह पागलों का काम है कि अस्सी बरस की खन्नास बुढिया को काबू में कर ले ?

चमेला – फिर वही बके जाता है !

बहा – अब तो तुम्हें साफ कह के समझाना पडा। लो सुनो मै कहता हूँ– पहिले तो मैंने तुम्हे जो सिकरी दी है उसे

बस कोरी जजीर ही समझना, और दूसरे जो तुम्हारे लडके को बिहार भेजा है सो यही समझना कि उसे यमलोक भेज दिया अब वह फिर लौटकर नहीं आता। हा जब तुम मरा काम कर दोगी और मैं एक चीठी अपन हाथ से लिख दूँगा कि उस लडके को छोड दो तब उसकी जान छूटगी नहीं तो बस उसकी खोपडी एक दिन किसी अघोरी के हाथ में दिखलाई दगी !

बहादुरसिह की बातों ने तो बुढिया को मुर्दा कर दिया। वह अपने किये पर पछतानें लगी और समझ गई कि वह बुरी फस गई और अब किसी तरह बहादुरसिह के हाथ से जान नहीं बचती, झख मार के इसका काम करना ही पडेगा नहीं तो लडके की जान बशक चली जायेगी।

बहादुरसिह ने जब बुढिया का हर तरह से अपने कब्जे में कर लिया ता अपना काम निकालने की जा कुछ तर्कीब वह कर चुका था या किया चाहता था बुढिया को कहा और साथ ही इसके काम हो जाने पर बहुत कुछ इनाम दिलान का भी वादा किया, आर इसके बाद वहाँ से रवाना हाकर मैदान की तरफ चल पडा। बहादुरसिह की राय क मुताबिक बुढिया ने क्या-क्या काम किया यह तो तभी मालूम होगा जब रम्भा के सिर पर भूत आवगा हाँ इतना हम अभी कहे देते हैं कि अपनी मदद क लिये बुढिया ने कई एक जवान औरता को रख लिया और कार्रवाई शुरू कर दी।

तेईसवां बयान्

हाजीपुर के राजा न रम्भा क सिर पर भूत आने का हाल जिस समय अपन लडके की जुबानी सुना तो बहुत ही हैरान हुआ। जाहिर में तो उसने अपन लडके स कह दिया कि यह सब कोई बात नहीं है मगर उसके दिल में तरद्दुद बना ही रहा। रात के समय जब वह अपन महल में गया तो उसने अपने लडक की जुबानी जा कुछ सुना था, अपनी रानी स कहा। वह बेचारी सुनते ही कॉप गई और बोली राम राम मैं कभी ऐसी लडकी के साथ ब्याह करके अपने बच्चे की जान पर आफत नहीं ला सकती मैं आज ही उसे घर स बाहर निकाले देती हूँ, जाय अपन मा-बाप का घर तबाह करे !

दौलत – घबडाने की काई जरूरत नहीं !

रानी – घबडाना कैसा मैं ता भूत-प्रत क नाम स कॉपती हूँ ! मुझे यह सब बखडा मजूर नहीं !!

दौलत – जल्दी क्यों करती हा ? पहिल यह भी ता देख लो कि उस दिन उस पर चुडैल आती भी है या नहीं कहीं उस मगेडी ने धाखा न दिया हा !

रानी – उस बचार का भला क्या पडी थी कि धोखा देता ?

दौलत – डरने की कोई बात नहीं है देखा तो क्या हाता है।

डरत-कॉपत वह पाच-सात दिन ता निकल ही गए मगर अमावस्या के दिन सवेरे ही से रानी के पेट में चूहे उछलने लगे। चमला दाई अपनी सधी हुई लौंडियों के साथ रम्भा के ऊपर मुस्तैद थी ही उसके अलाव और भी तीन-चार लौंडियों का रानी न मुस्तैद कर दिया मगर वह भूत आने वाला हाल किसी के ऊपर जाहिर न किया।

रानी ता डर क मारे दिन भर उस कमर में न गई जिसमें रम्भा रहा करती थी मगर शाम होते-होते चमला दाई दौडी दौडी रानी के पास आई और हॉफते-हॉफते बोली--

चमला – महारानी ! रम्भा का तो अजब हाल है !!

रानी – (डरकर) सो क्या ?

चमला – उसका चहरा लाल हो गया है और बडी-बडी ऑखं खालकर चारों तरफ देख और झूम रही है।

रानी – उससे तैने कुछ पूछा भी ?

चमेला – मुझ ता उसके पास जाते डर लगता हे। दूर से जब मैं पूछती हूँ तो लाल-लाल ऑखें निकाल कर मेरी तरफ दखती है और दॉत पीस-पीस के कहती है कि मैं इस घर भर को खा जाऊगी !

रानी – (हाथ उठाकर) हे परमेश्वर तू ही बचाने वाला है ! हाय न मालूम कहा की आफत आई थी जो लोग उस लडकी को इस घर में ल आये !

चमला – (हाथ जोडकर) मुझ तो मालूम हाता है कि उसके ऊपर कोई जिन्न आया है।

रानी – नहीं जिन्न नहीं है जो है उसे मैं जानती हू, जरा चल तो सही मैं देखूँ क्या हाल है।

चमेला – भगवान के लिये आप न जाइये कहीं ऐसा न हो कि कोई नया बखेडा मचे !

रानी – वह जो कुछ बखेड़ा मचा सकती है सा भी मै जानती हूँ। मै उसके पास जाने वाली नहीं हूँ दूर ही से तमाशा देखूगी।

चमेला दाई क साथ रानी साहबा उस कमरे के पास गई जिसमें रम्भा थी। रम्भा के पास जाना ता दूर ही रहा उन्हाने चौखट के अन्दर भी पैर न रक्खा दूर ही से झाक के देखा। रम्भा उस समय खूब झूम रही थी और ऑखें फाड कर छत की तरफ देख रही थी।

रानी – चमेला किसी को कहो तो सही उसके पास जाए और बाजू पकड कर हिलावे।

चमेला – बहुत अच्छा।

चमेला कमरे के अन्दर गई और सधी हुई एक लौंडी से, जिसका नाम परमेसरी था रम्भा के पास जाने के लिए कहा। परमेसरी रम्भा के पास गई और उसका बाजू पकड़ के हिलाने लगी।

रम्भा – (गुस्स भरी आखें दिखा कर) भाग जा, भाग जा, नहीं तो खा जाऊगी !

लौंडी – तुम कौन हो, अपना नाम तो बताओ ?

रम्भा – तें न मानेगी ? न मानेगी ? दिखाऊ तमाशा ?

लौंडी – अजी कहो तो सही तुम कौन हो ?

रम्भा – फिर बकती है ! तैं न मानेगी ? अच्छा तो देख तमाशा !!

' अच्छा तो देख तमाशा !' कह कर रम्भा ने उसके सिर पर हाथ रख ही तो दिया। बस फिर क्या था ! परमेसरी लौंडी तो लगी नाचने और चिल्लाने ! चारों तरफ घूम-घूम कर चिल्लान और लौंडियों को चिकोटी काटने लगी। कुल लौंडियॉं जो उस घर में बैठी थीं ओफ !!' करके बाहर निकल आई परमेसरी भी बाहर निकल आई और खूब उछलने-कूदने लगी।

यह हाल देखत ही रानी के तो होश उड गए। वह कॉपती हुई वहॉं से भागीं और अपने कमरें में आ घुसीं। एक लौंडी को कहा 'जल्दी जा और महाराज को बुला ला, आकर देखें रम्भा का हाल और उसके पास आकर अपने सिर पर भी हाथ रखा लें ! मे उसी दिन कहती थी कि इस चुडैल को आज ही निकाल दो ! न माना अब भोगें बैठ के !!

लौंडी दौडी हुई बाहर गई और चोबदार क मारफत राजा दौलतसिह को खबर कराई। राजा साहब पहिले ही से इसी सोच में पडे हुए थे कि देखें रम्भा के सिर पर आज उसकी परदादी आती है या नहीं। खबर पाते ही घबडा कर उठ खडे हुए और डरते-डरते महल में गए। देखें तो रानी साहब घुस कर अपने कमरे में बैठी हैं और भीतर से किवाड लगा लिया है, तथा परमेसरी दाई खूब चिल्ला रही है और इधर से उधर नाच रही है। उसे अपने तनाबदन और कपड़े तक की कुछ सुध नहीं है। बस समझ गए कि रम्भा की परदादी आ पहुची। महाराज लौट कर उस कमरे के दर्वाजे पर गए जिसके अन्दर रानी थीं और केवाड खुलवाया।

रानी – देखा घर में क्या बखेडा मचा हुआ है।

दौलत – बेशक वह बात सच निकली अब क्या किया जाय ?

रानी – बस आज ही उसे घर से बाहर निकाल देना चाहिए।

दौलत – इस समय तो उसके पास जाना आफत है क्या जाने सिर पर हाथ रख दे तो बस

रानी – ईश्वर आज का दिन कुशल से बितावे तो कल उस नानी से समझूगी !

इतन में एक लौंडी और उस कोठरी म गई जिसमें रम्भा थी। रम्भा ने उसके सिर पर भी हाथ रक्खा और वह भी परमेसरी की तरह उछलती-कूदती बाहर निकल आई। अब तो महल में बडी भारी धूम मच गई। जितनी औरतें महल में थी सभी अपनी-अपनी जान बचाने की फिक्र में लगीं सभी को यह खयाल हुआ कि कहीं रम्भा अपनी कोठरी में से निकल कर हम लोगों के सर पर हाथ न रख दे।

महाराज दौलतसिह अपनी रानी से बातचीत कर ही रहे थे कि एक लौंडी ने आकर अर्ज किया।

लौंडी – डेवढी पर एक डोली आई है।

रानी – उस पर कौन है ?

लौंडी – उन्होंन अपना नाम तो नही बताया मगर किसी रईस की लडकी मालूम पडती है।

रानी – क्या यहॉं आना चाहती है ?

लौंडी – जी हॉं वह हाजिर हुआ चाहती है और कहती है कि रम्भा के बारे मे महारानी साहबा को बिलकुल धोखा दिया गया है, उसका असल भेद सिवाय मेर और कोई नहीं जानता।

रानी – (महाराज की तरफ देख कर) यह कुछ दूसरा ही तमाशा नजर आता है ! मै कैसे विश्वास करूं ? सब कुछ तो अपनी ऑंखों दख चुकी हूँ।

लौंडी – वह कहती है कि अगर इस समय रम्भा के सिर पर चुडैल मोजूद हा ता अच्छी बात है मै बहुत जल्द सब शक मिटा दूँगी। एक चीठी भी उन्होनें दी है।

रानी – ला कहॉं हे चीठी ?

लौंडी न रानी साहबा क हाथ मं चीठी दी। राजा दौलतसिह ने बड गौर स उस चीठी को पढा। यह लिखा था – रम्भा के सिर पर भूत-प्रेत या चुडैल का आना सब झूठ है। यह फिसाद बहादुरसिह भगेडी का मचाया हुआ है। वह नरेन्दसिह का दोस्त है और आपकी लौंडियों को उसन मिला लिया है। बाकी हाल हाजिर होकर कहूँगी।

दौलत – देखिये, मैं कहता था न कि यह सब धोखा है। अब उसे जल्द बुला कर पूछना चाहियें।

महारानी का हुक्म पाते ही लौंडी दौडी हुई गई और डाली पर स सवारी उतरवा लाई।

चौबीसवां बयान

मोहिनी ने अपने जी में जो कुछ ठान लिया है उसे हमारे पाठक अच्छी तरह जानते हैं। इसके पहिले जो कुछ हाल लिखा गया है उसके पढने से तो आपको यही मालूम हुआ होगा कि इस उपन्यास के पात्रों में केतकी बडी ही बदकार और बुरी नायिका है मगर अब कुछ कार्रवाई मोहिनी की दिखाया चाहते हैं जिसे इस उपन्यास का असल पात्र कहना बहुत ही मुनासिब होगा।

श्यामा और भामा (रम्भा और तारा) के छिन जाने और मकान के लुट जाने के बाद जब केतकी भागी तो सीधे अपने जन्मस्थान खास गयाजी में पहुँची और एक छोटे से मकान में जिसमें कभी उसका बाप रहा करता था रहने लगी। पहिली सी भीड-भाड अब उसके यहाँ नहीं है सिर्फ पाँच-सात आदमी जो उनका साथ किसी तरह छोड नहीं सकते थे मौजूद हैं। रुपये-पैसे की तरफ से चाहे उसे किसी तरह की तकलीफ न हो मगर फिर भी उसका दिल किसी तरह खुश नहीं है। यह जानकर कि मोहिनी और गुलाब की जान नरेन्द्रसिंह की बदौलत बच गई उसे बडा ही कष्ट हुआ। उसने समझ लिया कि अब मेरी जान किसी तरह नहीं बच सकती क्योंकि मोहिनी और गुलाब बदले लिए बिना कभी नहीं छोड़ेंगी। दिन-रात इसी सोच में पड़ी है कि अब क्या किया जाय। थोडे ही दिन बाद उसे जब यह खबर मिली कि मोहिनी ऐशमहल में पहुच गई तो वह और भी घबडाई और अपनी दो-तीन सखियों को पास बैठाकर सलाह करने लगी मगर इस बात का निश्चय किसी तरह न कर पाई कि मोहिनी के साथ क्या बर्ताव करना चाहिये।

जिस मकान में केतकी रहती थी उसके पीछे एक बाग था। आज वह चाहे कैसी ही बुरी अवस्था में क्यों न हो मगर उसके बाप की जिन्दगी में वह बाग बहुत ही दुरुस्त रहता था। इस बाग के बीचोंबीच में एक छोटा सा बंगला भी था जो इस समय केतकी का बैठक बन रहा था। अपने समय का बहुत ज्यादे हिस्सा इसी बंगले में अकेले बैठकर वह बिताती थी।

इस बंगले में किसी तरह की सजावट न थी सिर्फ फर्श बिछा हुआ था और एक तरफ ऊँची गद्दी पर गाव तकिये के अलावे कई छोटे-छोटे तकिए भी मौजूद थे। कोने में चौकी के ऊपर जल से भरी गंगाजमनी सुराही और चाँदी का गिलास हर वक्त मौजूद रहता था।

आज आधी रात से ज्यादे बीत जाने पर भी केतकी अकेली उस बंगले में गद्दी पर लेटी हुई कुछ सोच रही है। थोडी-थोडी देर पर उसी से ले ले कर और आखिर में आँफ करके रह जाती है। बंगले के चारों तरफ वाले बाग में एक दम सन्नाटा है। अंधेरी रात की स्याही ने पूरी तरह अपना दखल जमा रक्खा है।

यकायक सामने का दरवाजा खुला और मर्दाने ठाठ में कमरे के अन्दर आती हुई एक औरत दिखाई पडी जिस पर नजर पडते ही केतकी ने पहिचान लिया और वह चौंककर उठ बैठी।

यह औरत मोहिनी थी जो हाथ में एक बडा सा चमकता हुआ छूरा लिये केतकी के सामने जा खडी हुई और बोली अब क्या इरादा है ?

इस समय मोहिनी की भयानक सूरत देखकर केतकी का कलेजा धक-धक करने लगा। पुराने पाप ने उसकी रग रग ढीली कर दी। डर के मारे चारों तरफ देखने लगी और यहाँ तक घबडाई कि मोहिनी की बात का कुछ भी जवाब न दे सकी। मोहिनी ने फिर ललकार कर पूछा क्यों चुप क्यों है ! कुछ बोल तो सही ! तैने क्या सोचकर मुझ पर इतना बडा जुल्म किया था ?

केतकी कुछ भी जवाब न दे सकी और सिर्फ एक टक मोहिनी के हाथ में मौजूद छूरे की तरफ देखती रही। आखिर मोहिनी यह कहती हुई कि "देख अब मेरी बारी है, सम्हल बैठ ! उसके पास जा पहुँची और छाती पर सवार हो छूरा उसके कलेजे में भोंक दो-तीन दफे अच्छी तरह हिलाया। दस पाँच दफे हाथ पैर पटककर केतकी ने दम तोड़ दिया और उसकी सुन्दर देह मुर्दों की गिनती में गिने जाने लायक हो गई।

मोहिनी ने छूरा उसके कलेजे से निकाल लिया और उसी की साडी से पोंछ कर वहां से चल खडी हुई। बँगले के बाहर निकल वह बाग के पूरब और दक्खिन कोने की तरफ गई जिधर की दीवार कुछ टूटी हुई थी और पैर अडा कर पार हो जाने का सुबीता था। वह बेखटके दीवार के पार हो गई और वहां अपने वफादार सिपाही लालसिंह को दो घोडों की बागडोर थामे मौजूद पाया। मोहिनी को देखते ही लालसिंह ने पूछा "काम हो गया ?

'हाँ' कहकर मोहिनी एक घोडे पर सवार हो गई और दूसरे घोडे पर लालसिंह चढ बैठा। दोनों ने तेजी के साथ मैदान का रास्ता लिया। सुबह होने के घण्टे भर पहिले ही दोनों आदमी ऐशमहल में जा पहुचे जिसे मोहिनी का घर कहना चाहिए। घर पहुँचकर भी मोहिनी ने आराम नहीं किया बल्कि सीधे नीचे के उस कमरे में पहुँची जिसमें तहखाने का रास्ता था और जिसके बारे में हम ऊपर खुलासा लिख आये हैं। यहाँ आकर उसने चारों तरफ से दर्वाजा बन्द कर लिया।

मोहिनी ने वही आलमारी खोली जिसे तहखाने का दर्वाजा कहना चाहिये और हाथ में रोशनी लेकर नीचे अर्थात् तहखाने में उतरी। पहिले थोडी [illegible] तक उस लाश के पास खडी रही जो उस तहखाने में मौजूद थी और जिसका कुछ जिक्र हम कर [illegible] सिरहाने की तरफ से बिछावन का कोना उल्टा और लपेटा हुआ

मुट्ठा जो उसके नीचे रक्खा हुआ था निकाला। सरसरी निगाह से उलट-पलट कर उसे इसलिये देखा जिसमें विश्वास हो जाय कि यह वही मुटठा है जिसे वह चाहती है। इस मुट्ठे में कई बन्द कागज नत्थी किये हुए थे जिनमें सुर्ख रोशनाई से कुछ लिखा हुआ था।

मोहिनी ने उस कागज के मुट्ठे को अपनी कुरती के अन्दर रख लिया और फिर से उन देगों का मुँह खोल-खोल कर देखने लगी जिनमें अशर्फियॉ भरी हुई थीं। एक देग में से थोड़ी सी अशर्फियॉ निकाल लीं और तहखाने से बाहर निकल कर उसका दर्वाजा ज्यों का त्यों बन्द और दुरुस्त कर दिया।

इसके बाद उसने दूसरी आलमारी खोली और उसमें से सादा कागज और कलमदान निकाल कर गद्दी पर जा बैठी। इस कलमदान में स्याह रोशनाई थी जिससे उसने एक सादे कागज के दोनों तरफ कुछ लिखा और तहखाने के अन्दर लाश के सिरहाने से लाये हुए कागज के मुट्ठे को कुरती के अन्दर से निकाल कर उसी में अपने लिखे हुए इस कागज को भी नत्थी कर लिया, फिर कुछ सोच कर उसने आलमारी में से मोमजामे का एक टुकड़ा निकाला और उसी में उस कागज के मुट्ठे को लिफाफे की तरह बन्द कर जोड पर मोहर कर दिया और उस लिफाफे को फिर अपनी कुरती के अन्दर रख लिया। मोहर और चपड़ा भी उसी कलमदान में मौजूद था।

जब तक यह सब काम मोहिनी करती रही तब तक उसकी ऑखों से बराबर ऑसू जारी थे। कुछ सोचने के बाद उसने वह मोहर उठा ली जिससे लिफाफा बन्द किया था और कमरे के बाहर निकल आई। इस समय भी उसने अपने सिपाही लालसिह को दर्वाजे के बाहर टहलते पाया।

मोहिनी को बाहर निकलते देख कर लालसिह ने पूछा, अब क्या करना है?'

' ठहरो मैं आती हूँ ' इतना कह कर मोहिनी बाग के पूरब तरफ चली गई और एक कूऍं में उस मोहर को फेंक कर तुरत लौट आई। सवेरा होने के पहिले मोहिनी ने इन सब कामों से छुट्टी पा ली और इसके बाद वह लालसिह के पास जाकर खडी हो गई।

लालसिह – देखिये सुबह की सुफेदी निकली आती है।

मोहिनी – मुझे भी अब कोई काम करना बाकी नहीं है। दोनों घोडे तैयार है?

लाल – जी हॉ (हाथ का इशारा करके) उस पेड़ के साथ बधे है।

मोहिनी – (अशर्फियॉ लालसिह को देकर) दिन को जो कुछ राय हो चुकी है उसी के मुताबिक इन अशर्फियों को बॉट दो और सब आदमियों को समझा-बुझा कर तुम जल्द आओ तब तक मैं आगे बढती हूँ।

घोड पर सवार हाकर मोहिनी उस हाते के बाहर निकल गई।

पच्चीसवां बयान

दो कोस निकल जाने के बाद मोहिनी एक पेड के नीचे अटक कर लालसिह की राह देखने लगी। थोडी ही देर बाद लालसिह भी आ पहुँचा। मोहिनी ने पूछा "सभों को अच्छी तरह समझा-बुझा आये?'

लाल – जी हा।

माहिनी – अब वे लोग उस ठिकाने पहुँच जायगे?

लाल – बेशक पहुँच जायगे।

मोहिनी – अच्छा तो फिर चलो।

लालसिह – यहॉ से दोनों तरफ जाने के लिए रास्ता है।

मोहिनी – अगर तुम्हें विश्वास है कि नरेन्द्रसिह बिहार ही में मौजूद है तो वहॉ ही चलने में हमारा काम ठीक होगा।

लाल – इसमें तो कोई शक नहीं कि नरेन्द्रसिह बिहार में है मगर एक दफे मै आपको जरूर समझाऊगा और कहूँगा कि इतने बडे काम पर आप कमर न बॉधें और मुफ्त में अपनी जान देने पर मुस्तैद न हों।

मोहिनी – लालसिह, मै जो कुछ इरादा कर चुकी हूँ उसे किसी तरह तोड नहीं सकती मगर तुम क्यों घबडाते हो? तुम्हारे लिये बहुत दौलत रक्खे जाती हूँ जिसे तुम और तुम्हारी औलाद दस पुश्त तक आराम से बैठे खायेंगी तो भी किसी तरह की कमी न होगी।

लाल – यह ठीक है कि आप मेरे लिये बहुत दौलत रख जाती हैं मगर आप ऐसा मालिक फिर मै कहॉ से पाऊगा?

मोहिनी – यह तो दुनिया का कायदा ही है, कोई अमर होकर नहीं आया आखिर एक दिन मरना ही है, फिर मैं अपने दुश्मनों को आराम करने के लिए क्यों छोड जाऊ? मैं जो कुछ प्रण कर चुकी हूँ उसे अवश्य पूरा करूँगी। देखो लालसिह अब इस बारे में तुम मुझ कभी न टोकना, अपने वादे के मुताबिक चलो नहीं तो पछताओगे।

लाल – मैं जो कुछ वादा कर चुका हूँ उसके खिलाफ कभी नहीं कर सकता, खैर अब न टोकूगा।

तीसरे दिन मोहिनी बिहार पहुँची, एक सुन्दर मकान किराये पर लेकर उसमें डेरा डाला, तथा अपने जरूरी काम का कुल सामान बाजार से मगवा कर रख लेने के बाद लालसिह के हाथ एक पुर्जा नरेन्द्रसिह के पास भेजा।

नरेन्द्रसिह यह खबर पाकर कि मोहिनी यहाँ पहुँच गई है, वहुत ही खुश हुए और अपनी इज्जत का खयाल कुछ न करक उसी समय वेखटके उस मकान में चले गए जिसमें मोहिनी ने अपना डेरा जमाया था।

हम ऊपर लिखे आये हैं कि जब से तारा और गुलाब को लेकर नरेन्द्रसिह अपने शहर में आए है,तव से बहुत ही उदास रहा करते है। रम्भा और मोहिनी दोनों ही का इश्क उनके दिल को मसोस रहा था और दोनों ही के सोच में दिन रात उदास रहा करते थे। पर आज ही बहादुरसिह की भेजी हुई चीठी उनके पास पहुँची है जिसकी खुशी में वह फूले नहीं समाते। बहादुरसिह के लिखे मुताबिक चमेला दाई के लडके को कैद कर लिया और अव अमावस्या के पहिले ही हाजीपुर पहुँचने की फिक्र कर रहे थे कि मोहनी की चीठी लिए हुए लालसिह पहुँचा और एकान्त में मिल कर उनके हाथ में चीठी दी। मोहिनी के आने की खबर पाकर और भी खुश हुए और वेखटक उस हरामजादी के मकान पर चले गए।

इनको घर में आते देख मोहिनी खूब ही रग लाई। दौड कर इनके गले से लपट गई और देर तक राती रही। नरेन्द्रसिह ने उसे वहुत समझा-बुझा कर चुप किया और देर तक वातचीत करते रहे। मोहिनी ने अपना हाल वना कर इस तरह से कहा कि उसकी मुहब्बत उनके दिल में और भी ज्यादे हो गई यहा तक कि थोडी देर क लिये बेचारी रमा का भी ध्यान उनके दिल स जाता रहा। वहुत कह-सुन कर आखीर में मोहिनी ने पूछा   अब क्या हुक्म होता है ?

नरेन्द्रसिह – तुम हमारी हो-हम तुम्हारे है, मगर हाथ जोड़ कर हम तुमसे पाच सात दिन की छुट्टी मागते हैं इतने दिन तक तुम इसी मकान में रहो हम बहुत जल्द, लौट आवेंगे।

मोहिनी – सो क्या ? कहा जाने का इरादा है ?

नरेन्द – हाजीपुर।

मोहिनी - सो क्यों ?

इसके जवाब में नरन्द्रसिह रम्भा का कुल हाल रत्ती-रत्ती कह गए और अन्त में बोले   अब रम्भा हाजीपुर में है और यह सब खबर मुझे उसी मसखरे ने भेजी है। उसने वहा पहुँच कर बडा ही रग बॉधा है। रानी की एक चमेलादाई को उसने मिला लिया है और राजा दौलतसिह के लडके प्रतापसिह से मिल कर उसके दिल में यह बात जमा दी है कि हर अमावस्या को रम्भा के सिर पर उसकी नानी या दादी चुडैल वन कर आती है और उस दिन वह जिसके सिर पर हाथ रख दगी उसक ऊपर भी भूत आ जायेगा। प्रतापसिह क साथ रम्भा की शादी होने वाली थी पर वे लोग अमावस्या की राह देख रहे हैं। अगर उस दिन रम्भा के सिर पर चुडैल आई तो उसे निकाल देंगे और इसमें भी कोई शक नहीं कि उस दिन उसके सिर पर चुड़ैल अवश्य आवेगी, चमेलादाई बहादुरसिह से मिली हुई है, वह सब बन्दोबस्त कर रक्खेगी।

यह हाल सुनते ही मोहिनी का क्राध चौगुना हो गया मगर उसने अपने को खूब सभाला और दिल का हाल जाहिर होने न दिया।

मोहिनी – अगर चमेलादाई बहादुरसिह की मदद न करे तब ?

नरेन्द्र – वह झक मारगी और मदद करगी ! बहादुरसिह ने धोखा देकर उसे वढब फसा रक्खा है। न मालूम क्या समझा-बुझा कर उसने उसके लडके को मेरे पास एक चीठी देकर भेज दिया है जिसमें लिखा है कि इस लडके को कैद करके रखना। अब वह चमेलादाई को जरूर कहेगा कि अगर तू मेरी मदद न करेगी तो तेरा लडका जान से मारा जायेगा और भला चमेलादाई कब कहेगी कि उसका लडका मारा जाय !

मोहिनी – वेशक उस काने (बहादुरसिह) ने खूब ही धोखा दिया है !

नरेन्द – इसीलिये आज मैं हाजीपुर जाने वाला हूँ। अगर काम निकल गया तो अच्छा ही है, नहीं फौज लेकर राजा दौलतसिह से लडाई करनी पडगी।

मोहिनी – आप जरूर जाइये, जहाँ तक मैं समझती हूँ आपका काम अवश्य हो जायगा ईश्वर करे बेचारी रम्भा यहाँ आ जाय, मैं उससे मिल कर बहुत ही खुश होऊगी।

नरेन्द – तुम्हारी बहिन गुलाव को मैं तुम्हारे पास भेज देता हूँ।

मोहिनी – नहीं नहीं वह आपके घर में हैं तो मुझे किसी तरह की चिन्ता नहीं है मैं इस समय उससे मिला नहीं चाहती क्योंकि जब तक आप हाजीपुर से लौट कर न आवेंगे तव तक मैं इस शहर में गुप्त भाव से रहूगी। आप भी किसी से मेरी चर्चा न कीजियेगा आपको मेरे सर की कसम है।

नरेन्द – (हँस कर) जैसी तुम्हारी मर्जी।

और दो घण्ट तक वातचीत होती रही ! इस समय मोहिनी ने बनावटी मुहब्बत जताने में किसी तरह की कसर रहने न दी। आखिर नरेन्द्रसिह मोहिनी से विदा हो कर घर चले आये और बहुत जल्द तैयारी करके बीस-पचीस आदमियों को साथ ले हाजीपुर की तरफ रवाना हो गये।

हम ऊपर लिख आये हैं कि हाजीपुर में राजा दौलतसिह के महल में पहुँच कर एक औरत ने इस बात का जाहिर

कर दिया कि रम्भा के सिर पर भूत चुडैल या जिन्न कोई नहीं आता, यह सब उसका पाखण्ड है।

उस औरत ने महारानी के पूछने पर अपना नाम 'सुन्दर बतलाया था। महल में पहुँच कर उसने रानी को समझा दिया कि रम्भा के सिर चुडैल नहीं आती और यह सब उसका नखरा है। यह जान कर रानी बहुत खुश हुई और सुन्दर से बोली, तुमने मेरे साथ बडी नकी की, मै उम्मीद करती हूँ कि तुम खुद यह सब हाल महाराज से कह कर उनके दिल का शक भी दूर कर दोगी क्या इसमें कोई हर्ज है ?

सुन्दर – नहीं हर्ज क्या है ?

रानी – तो मै महाराज को बुलवाऊ !

सुन्दर – हॉ हॉ आप महाराज को बुलवायें मुझे उनके सामने बातचीत करने में किसी तरह का खौफ नहीं है वह राजा है, मै उनकी लडकी हूँ, मै उन्हें समझा दूँगी कि इस मामले में आपको धोखा दिया गया।

रानी ने महाराज को बुलाने के लिये उसी समय लौंडी भेजी और जब वे आ गए तो कहा, लीजिये सब भेद खुल गया, रम्भा के सिर पर चुडैल-परी कोई भी नहीं आती, यह सब धोखा है।'

राजा – हा ! तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

रानी – (सुन्दर की तरफ इशारा कर के) इन्होंने कहा।

रानी – (सुन्दर से) तुम्हारा नाम क्या है ?

सुन्दर – सुन्दर।

राजा – मकान कहॉ है ?

सुन्दर – पटन।

रानी – तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि रम्भा नकल करती है ?

सुन्दर – नरन्दसिह क दोस्त बहादुरसिह न यहॉ पहुँच कर यह सब बखेड़ा मचाया है। उसी ने आपके लडके का सिद्धजी बन कर धाखा दिया उसी ने आपकी चमलादाई को मिला लिया और इस पाखण्ड का बन्दोबस्त कर लिया कि रभा के ऊपर चुडैल आती है। उसने साचा था कि आप जब यह हाल सुनेंगे और जानेंगे ता उसे निकाल देंग और तब रभा उन लोगों के पास पहुँच जायेगी जो उसक लिये इतना उद्योग कर रहे है। आपकी चमेलादाई का लडका इन सब बातों की खबर पहुँचान महाराज उदयसिह क पास बिहार गया है रास्त में मुझसे मुलाकात हुई। वह मुझे अच्छी तरह पहिचानता था, उसी की जुबानी यह सब हाल मैंने सुना है और अब इनाम की लालच में आपके पास आई हू।

राजा – बेशक यह इनाम का काम हे ! (लौंडियों की तरफ दख कर) चमेलादाई कहॉ है ? जल्द हमारे पास बुला लाओ।

हुक्म पात ही कई लौंडिया चमलादाई का बुलाने के लिए दौड गईं मगर चमेलादाई कब हाथ आने वाली थी। वह इन सब बातों की सुनगुन पाते ही वहॉ से निकल भागी। लाचार लौंडियों न वापस आकर अर्ज किया कि चमेलादाई ता भाग गई !

चमेलादाई के भागने की खबर सुन कर महाराज को सुन्दर की बातों पर विश्वास हा गया। महल के बाहर चल आये और चमलादाई के लडके की खोज की पर उसका भी पता न लगा। क्रोध के मारे महाराज का शरीर कॉपने लगा। अपने लडके को बुला कर सब हाल कहा। धीरे-धीर यह बात तमाम शहर में फैल गई।

छब्बीसवां बयान

हाजीपुर से कोस भर की दूरी पर आम की एक बारी में कई आदमियों को साथ ले नरेन्दसिह टहल रहे हैं। इनके साथ जितने आदमी है सभी घोडों पर सवार हैं केवल नरन्द्र सिह पैदल टहल रहे है। और इनके सवारी के घोडे की लगाम एक सवार के हाथ में है। चॉदनी अच्छी तरह छिटकी हुई है मगर इस आम की घनी गाछी में उसका बहुत कम हिस्सा जमीन तक पहुँचता है, हॉ पत्तों में से छनी हुई चॉदनी कहीं-कहीं जमीन पर पड कर सफेद बुन्दकियों की सी दिखाई दे रही है।

नरेन्दसिह को धीरे टहलते और सोचते हुए दो घण्टे बीत गए। अपने विचार में यहॉ तक लीन थे कि इस बात का ज्ञान बिल्कुल जाता रहा था कि वे कहॉ है या किस लिए आये है लेकिन यकायक घोडों के टापों की आवाज ने इन्हें चौंका दिया, सर उठा कर उस तरफ देखने लगे जिधर से कई सवार आ रहे थे।

नरेन्दसिह के साथी एक सवार ने कहा आप भी घोडे पर सवार हो जाय क्या जाने ये आने वाले सवार हमारे दोस्त हों या दुश्मन !

नरेन्दसिह अपने घोडे पर सवार हो गए और साथ ही एक आवाज हलकी बिगुल की सुन कर बोले 'ये तो हमारे ही आदमी मालूम पडते हैं शायद हमीं लोगों को ढूँढ रहे है।

सवार – जी हॉ, हमलोगों को भी बिगुल का जवाब देना चाहिये।

नरन्द – अवश्य।

इधर से भी विगुल की हलकी आवाज दी गई जिसे सुनते ही व लोग तेजी के साथ नरेन्द्रसिह के पास आ पहुचे और यहुत जल्द मालूम हो गया कि नरन्द सिह के छोटे भाई जगजीतसिह कई सवारों को साथ लकर आय हैं।

नरेन्द्र – तुम क्यों आ गए ?

जगजीत – पिताजी की आज्ञा से।

नरन्द्र – देर हो जाने क कारण उन्हें चिन्ता हुई ?

जगजीत – नहीं वल्कि विश्वास हा गया कि जिस काम के लिए आप आये हैं उसमें विघ्न पड गया।

नरेन्द्र – वेशक ऐसा ही हुआ।

जगजीत – ता क्या वहादुरसिह से मुलाकात नहीं हुई ?

नरन्द – वहादुरसिह से तो मुलाकात हुई वल्कि रोज ही होती है मगर महल में एक दुष्ट औरत ने पहुँच कर बिल्कुल काम बिगाड़ दिया। उसने बहादुरसिह और चमेलादाई की कार्रवाई का हाल खोल दिया। न मालूम उस हरामजादी का कैसे पता लग गया। डर के मारे चमलादाई भी कहीं भाग गई, वहादुरसिह की खोज हो रही है एक हिसाव से काम बिगड ही गया।

जगजीत – फिर आप यहाँ क्यों अटके है ? अव तो घर चलना चाहिए और लडाई का सामान दुरुस्त करना चाहिए !

नरेन्द – वहादुरसिह भी आता ही होगा, जरा उससे राय मिला ली जाय।

जगजीत – हमारी समझ में तो अव इस तरह की कार्रवाइयों से काम न चलेगा।

नरेन्द – क्या कहें, वना-वनाया काम विगड गया !

थोडी देर तक वातचीत होती रही इतने में वहादुरसिह भी आ पहुंचे। देखते ही नरेन्द्रसिह उनके पास गए और व्याकुलता के साथ पूछा 'कहो कुछ काम होने का रग है ?'

वहादुर – जी नहीं, अव हम लोगों को यहाँ से जल्द भागना चाहिये आपक आने की खवर यहाँ के राजा का हो गई। गिरफ्तारी के लिए फौज आती होगी। (जगजीतसिह की तरफ देख कर) अच्छा हुआ जो छोटे कुमार भी आ गए।

नरेन्द – तो क्या क्षत्री हो कर डर के मारे भाग जॉय !

वहादुर – जी वस इस वक्त बहादुरी को तो रहने दीजिये ! ऐसे मौके पर क्षत्रीपना नहीं दिखाना चाहिये। वहादुर आपसे भी ज्यादे वहादुर है मगर मौका देख के काम करता है !

जगजीत – वहादुर भाई का कहना ठीक है, ऐसे मौके पर अटकना न चाहिये।

वहा – अभी घर चल कर तुरत फौज ले कर लौटेंगे। देखिये तो क्या होता है, हाजीपुर के राजा को सुख की नींद कभी जो सोने दिया तो वहादुर नहीं !!

नरेन्द्रसिह – वस शेखी की वातें रहने दीजिये आप लोगों से न कुछ हुआ है न होगा आप लाग जहा जी चाह जाइये, मै नहीं जाता।

जगजीत – (हाथ जोड कर) इस समय ठहरने का मौका नहीं है आप वस यह एक वात मेरी मान लीजिए।

नरेन्द – (कुछ सोच कर और लम्वी सॉस लेकर) खैर !!

ये लोग वहॉ से विहार की तरफ रवाना हुए और सुबह होते-होते दस वारह कोस के लगभग निकल गये। इसके आगे रास्ते ही में एक सुन्दर तालाव देखकर नरन्दसिह ने स्नान-ध्यान से छुटटी पाने का इरादा किया, आखिर दो घण्टे के लिए वहॉ ठहरना पडा।

उसी जगह मौका मिलने पर एकान्त में जगजीतसिह न वहादुरसिह से हाजीपुर का हाल पूछा।

वहादुर – (चारो तरफ देख कर) कोई सुनता तो नहीं ?

जगजीत – काई नहीं सुनता आप कहिये।

वहादुर – वडा ही गजव हुआ।

जगजीत – (चौक कर) सा क्या ?

वहादुर – वस कहने लायक वात नहीं है, देखें नरेन्द्रसिह अव अपना क्या हाल करत हैं।

जगजीत – तुम्हारी वातें तो हौलदिल पैदा करती है; ईश्वर के लिय जल्द कहो क्या हुआ ?

वहादुर – अभी हमें उस वात पर पूरा विश्वास नहीं है।

जगजीत – ता भी कहने में देर न करो।

वहादुर – एक औरत न महल में पहुँच कर काम विगाड़ दिया यह हाल ता आपने सुना ही हागा ?

जगजीत – हा भाईजी न कहा था।

वहादुर – हाय सुना है कि उस औरत ने वचारी रम्भा का काम ही तमाम कर दिया और भाग गई।

जगजीत – हाय यह क्या गजव हुआ !!

बहादुर – अभी हमें इस बात पर पूरा विश्वास नहीं होता मगर महल से एक लाश निकाल कर गगा किनारे जलाई गई इससे विश्वास भी करना ही पडता है। यह बात नरेन्द्रसिह से अभी मत कहियेगा नहीं तो गजब हो जायेगा।

जगजीत – हाय बुरा हुआ ! मगर तुमने कैसे सुना ?

बहादुर – हमारी दोस्ती वहाँ के एक बजाज से हो गई, राजदर्बार से उसका घना सम्बन्ध है उसी की मार्फत यह सब बातें मालूम हुई है।

बहादुरसिह की बातें सुन कर जगजीतसिह के चेहरे पर उदासी छा गई और ऑखों से ऑसू की बूदे गिरने लगीं, मगर इस खयाल से कि नरेन्द्रसिह को पता न लगे, उन्होंने बहुत जल्द अपने को सम्हाला और मुँह-हाथ धोकर दुरुस्त हो गए।

नरेन्द्रसिह अपने घर पहुँचे और फौज दुरुस्त करके हाजीपुर पर चढाई करने की फिक्र में पडे। मगर यह बात मुश्किल थी क्योंकि जगजीतसिह और बहादुरसिह ने रम्भा के मारे जाने का हाल महाराज से कह दिया था। महाराज को भी इसका भारी गम हुआ मगर खुल कर कुछ कर या कह भी नहीं सकते थे क्योंकि इस बात का खयाल था कि अगर नरेन्द्रसिह सुनेंगे तो अपना बुरा हाल करेंगे और उनसे छिपाया भी जाय तो कब तक ? नरेन्द्रसिह लडाई की तैयारी किया चाहते हैं उन्हें रोका जाय तो क्योंकर ? क्योंकि जब रम्भा ही न रही तो लडाई किसके लिये ? इत्यादि बहुत सी बातों को सोचते हुए महाराज बहुत ही विकल हो रहे थे, साथ ही इसके बहादुरसिह का यह कहना भी अजब तरह का खुटका पैदा कर रहा था कि अभी रम्भा के मरने का हम निश्चय नहीं कर सकते ताज्जुब नहीं कोई चालबाजी की गई हो।

चाहे कितनी ही कोशिश क्यों न की जाय मगर जिगर में घाव करने वाले गम की हालत किसी तरह छिपाये नहीं छिपती। रम्भा के मरने की खबर अभी तक यहाँ सिर्फ तीन ही आदमी जानते हैं और तीनों ही उस खबर को छिपाने की कोशिश कर रहे हैं मगर उदासी उनके चेहरे का साथ नहीं छोडती जिसे देख-देख नरेन्द्रसिह भी बेचैन हो रहे हैं लेकिन उदासी का सबब उन्हें किसी तरह मालूम नहीं होता।

रात के समय नरेन्द्रसिह मोहिनी से मिलने के लिए उस मकान में गए जहा पहिले उससे मिले थे। इन्हें देख मोहिनी बहुत खुश हुई और बडी खातिर और मुहब्बत से पेश आई।

मोहिनी – आप तो कह गए थे कि बहुत जल्द लौटेंगे !

नरेन्द्र – हाँ उम्मीद तो ऐसी ही थी मगर देर हो गई।

मोहिनी – रम्भा को ले आये ?

नरेन्द्र – नहीं।

मोहिनी – सो क्यों ?

नरेन्द्र – वह तर्कीब जो बहादुरसिह ने की थी दुरुस्त न उतरी, अब फौज लेकर जाना पडेगा।

बहुत देर तक इन दोनों में बातचीत होती रही। जहाँ तक हो सका मोहिनी ने मुहब्बत जताने में कोई बात उठा न रक्खी। अपने हाथ से कई चीजें खाने की बना नरेन्द्रसिह को भोजन कराया और नित्य मिलने का वादा करा के बिदा किया।

सत्ताईसवां बयान

आधी रात से ज्यादे जा चुकी है। एक सुन्दर सजे हुए कमरे में पलग के ऊपर बेचारे नरेन्द्रसिह बीमार पडे हुए हैं। महाराज उदयसिह और कुँअर जगजीतसिह सुस्त और उदास उनके पास बैठे हैं। बहादुरसिह भी एक तरफ बैठे रो रहे हैं। कई हकीम और वैद्य भी दवा इलाज की फिक्र में लगे हुए हैं मगर बीमारी क्या है इसका पता ही नहीं लगता। जाहिर में तो पेट और कलेजे में जलन की शिकायत करते है। चेहरा जर्द पड गया है घटे-घटे बाद कै होती है मगर सिवाय खून के और कुछ नहीं निकलता। सभी के चेहरे पर उदासी छाई हुई है। लोग दौड धूप कर रहे हैं। इस समय किसी के आने-जाने की रुकावट नहीं है, जिसका जी चाहे आवे-जाये कोई कुछ नहीं पूछता। ऐसी ही अवस्था में लोगों ने देखा कि हाथ में कागज का एक मुट्ठा लिये हुए मोहिनी उस कमरे में घुस आई और राजा उदयसिह के हाथ में कागज का मुट्ठा देकर दूर खड़ी होकर बोली 'मुझे ऐसी अवस्था में इस ढग से यहा पहुँचे हुए देख आपको आश्चर्य होगा मगर मैं इसका सबब और इसके अन्तर्गत जो-जो बातें छिपी हुई है जुबानी न कह कर यह कागज का मुट्ठा आपके हाथ में देती हूँ। इसे किसी ऐसे के हवाले कीजिये जो शुरू से आखीर तक ऊची आवाज में पढ के सुना दे। मैं पुकार कर लोगों से कहे देती हूँ कि सब लोग ध्यान देकर सुनें कि इस कागज में क्या लिखा है और मालूम करें कि मोहिनी कौन थी और इस दुनिया में आकर उसने क्या किया ! अफसोस, आज वह दिन है कि हजारों आदमी रोवेंगे और मोहिनी को अर्थात् मुझको गालिया देंगे। खैर मैं इसी को गनीमत समझती हूँ क्योंकि ये सब काटे मेरे ही बोये हुए हैं और सब के पहिले इसका फल भोगने के लिये मैं तैयार हूँ।

इस समय मोहिनी की अजीब सूरत थी सर के बाल बिखरे हुए थे आखें सुर्ख हो रही थीं, और बोलते समय होठ काँप रहे थे, पर उसकी विचित्र बातों ने सभों का ध्यान अपनी तरफ खैंच लिया। राजा उदयसिह नरेन्द्रसिह, जगजीतसिह

और बहादुरसिंह के दिल में इस समय क्या-क्या बातें पैदा हो रही थी उनका समझना मुश्किल है।
राजा उदयसिंह ने वह कागज का मुट्ठा मोहिनी के हाथ से ले लिया और पहिले स्वय खोलकर देखा। यह मुट्ठा बहुत लम्बा और जन्मपत्री के तौर पर लपटा हुआ था। इसमें कई बन्द लिखे हुए कागज के गोंद से नबरवार चिपकाये हुए थे। इसमें पहिला बन्द कागज का जो सब से ऊपर था स्याह रोशनाई से और इसके बाद कई बन्द लाल रोशनाई से लिखे हुए थ। राजा उदयसिंह ने वह कागज का मुट्ठा एक मुन्शी के हाथ में दिया और ऊचे स्वर से पढ़ने के लिए कहा। मुन्शी ने पढना शुरू किया।
पहिले जो कुछ स्याह रोशनाई से लिखा हुआ था, यह था –
इस कागज के पढने से आप लोगों को मालूम होगा कि मैंने इस राज्य के साथ बडी भारी बुराई की है। ऐसी अवस्था में आप लोगों को पहिले यह मालूम होना चाहिये कि मै किसकी लडकी हूँ और मेरे बाप ने इस दुनिया में अपनी करतूतों का क्या बुरा फल उठाया था। इसके बाद आपको मालूम होगा कि मैंने औरत होकर क्या-क्या किया। मेरे बाप ने अपनी जिन्दगी का हाल स्वय लिखा था उसके बाद जो कुछ कसर रह गई थी उसे मैंने पूरा किया और उसी में अपना हाल भी मिलाकर यह मुट्ठा पूरा किया। इसमें जहा तक लाल रोशनाई से लिखा हुआ है वह मेरे पिता के हाथ का लिखा है और पहिले उसी को पढना मुनासिब होगा तथा उसी ढग से मैंने इस लेख का सिलसिला दुरूस्त भी किया है।
लाल रोशनाई से जो कुछ लिखा था, वह यह था –
'मेरा नाम हजारीसिंह है। मैंने अपनी करनी से जो कुछ तकलीफें उठाई सक्षेप में लिखकर एक ठिकाने रख देना चाहता हूँ। इसमें सदेह नहीं कि इस कागज के पढने वालों पर मेरी बुराई खुल जावेगी और मैं बदनाम हो जाऊगा मगर यह समझकर कि मेरे इस हाल को पढकर लोगों को नसीहत होगी और वे वैसे काम न करेंगे जिनकी बदौलत मैंने तकलीफें उठाई और अभी तक जान का खौफ बना ही है मैं एसा करता हूँ। मैं नही कह सकता कि मेरी जिन्दगी का आखिरी दिन आज होगा या कल।
मेरे पिता मेरे लिए पचास हजार की आमदनी की जमींदारी और बहुत कुछ दौलत छोड गए। मेरी शादी उन्होंने अपनी जिन्दगी ही में कर दी थी मगर मेरी औरत बदसूरत थी इसलिये मै उससे मुहब्बत नही करता था। मेरी अवस्था उस वक्त बीस वर्ष की थी जब मैं अपने बाप की दौलत का मालिक हुआ। मेरे यहाँ कई लौंडियॉ थीं जिनमें से एक लौंडी जिसका नाम शिवकुअरी था, बहुत ही खूबसूरत और हसीन थी। मै उसे बहुत प्यार करता और यही समझता था कि विधाता ने मेरे ही लिये उसे इस दुनिया में भेजा है और यही सबब था कि मेरी बदौलत उसे गहने, कपडे की परवाह न थी।
' शिवकुअरी किसी दूसरे शहर या इलाके की रहने वाली थी। हमारे यहाँ वह केवल अपनी बूढ़ी मॉ के साथ आई थी और रहती थी। जब उसकी मा मर गई, मैं बहुत खुश हुआ और शिवकुअरी को अपनी जोरू के समान मानने लगा। हॉ यह कहना मै भूल गया कि शिवकुअरी भी मुझसे मुहब्बत रखती थी और हरदम मेरे खुशी के सामान में लगी रहती थी।
शिवकुअरी का हाल सुनकर मेरी स्त्री को बडा ही रज हुआ और उसने मुझे यह कह के धमकाया कि अगर तुम इस लौंडी को यहॉ से न निकालोगे तो मै बिरादरी में तुम्हारी करतूत का हल्ला मचवा दूँगी। मेरे लिये यह धमकी बहुत भारी थी क्योंकि मै अपनी बिरादरी का पच था।
शिवकुअरी की मुहब्बत मै किसी तरह कम नहीं कर सकता था। मैं चाहता तो अपनी स्त्री को जहर दिलवाकर तय कर देता मगर ऐसा करने से जब बिरादरी वालों को मालूम होता कि मेरी स्त्री मर गई है तब जबर्दस्ती मेरी शादी कर दी जाती जो मुझे मन्जूर न था। मुझे तो शिवकुअरी ही को अपनी औरत बनाकर रखना था इसलिये यह कार्रवाई न कर सका, हॉ तीर्थयात्रा का बहाना करके अपनी स्त्री को बाहर ले गया और तब ऐसे ठिकाने खपा आया कि किसी को खबर न हुई और तब उस नेक औरत की जगह मैंने हरामजादी शिवकुअरी को दे दी। कई तर्कीबें ऐसी की गईं कि बिरादरी वालों को मेरी औरत के मरने का हाल मालूम नहीं हुआ और वे लोग बिल्कुल न जान सके कि मेरे घर में मेरी ब्याहता पत्नी है या कोई दूसरी। मगर अफसोस, थोडे ही दिन बाद कम्बख्त शिवकुँअरी ने जहर उगलना शुरू किया और अपनी बदचलनी का तमाशा अच्छी तरह दिखाया जिसका हाल मैं आगे चलकर लिखता हूँ।
गयाजी से थोडी दूर पर अपनी अमलदारी में मैंने एक बाग और एक मकान बनवाया और उसका नाम ऐशमहल रखकर उसी में शिवकुअरी के साथ खुशी-खुशी दिन बिताने लगा।
'सात वर्ष के अन्दर शिवकुअरी से तीन लडकियां पैदा हुई। बडी का नाम केतकी मझली का नाम मोहिनी और सब से छोटी का नाम गुलाब रक्खा गया। धीरे-धीरे शिवकुअरी की बुरी चालचलन मेरे दिल में खटकने लगी और मुझे मालूम हो गया कि वह कई नीच लोगों से मुहब्बत रखती है जिसका हाल खुलासे तौर पर यहा लिखना पसन्द नहीं करता।

' शिवकुअरी को आजमाने के लिये एक दिन देहात पर दौरे जाने का बहाना कर मैं घर से निकल गया और रात को बेमालूम तौर पर लौट आया। नौकरों में अपने आने की चर्चा न होने दी। सीधा मकान के अन्दर चला गया और सीढ़ी पर धीरे-धीरे पैर रख ऊपर की मरातिब को चला। यकायक मेरे कानों में किसी के बातचीत की आवाज आई जिसे मैं अच्छी तरह समझ नहीं सकता था। धीरे-धीरे कदम दबाये हुए ऊपर पहुँचा और कमरे के पास जिसका दर्वाजा बन्द था जाकर

खडा हो कान लगा कर सुनने लगा। अब साफ मालूम हो गया कि शिवकुअरी किसी से बातें कर रही है। पहिली बात जो मैंने सुनी यह थी –

जो कुछ तुमने कहा मुझे मन्जूर है मैं खूब चिल्लाऊँगी जिसमें मुझ पर काई शुबहा न हो, फिर तुम्हारे साथ इसी महल में ऐश करूँगी

इससे ज्यादे मे कुछ भी सुनने न पाया–गुस्से से कॉपने लगा एकदम किवाड खोल अन्दर जा घुसा और अपने पलग पर एक आदमी को लेटे और शिवकुअरी को उसके सिर में तेल लगाते देखा। मगर मैं उस दृश्य को अच्छी तरह देख न सका। मैं नहीं जानता था कि मेरे लिये यहॉ बहुत सामान इकट्ठे हो चुके हैं। चौखट के अन्दर पैर रक्खा ही था कि पीछे से आकर किसी ने मेरे गले में कपडा डाल दिया और एक झटका देकर इस तरह खैंचा कि मैं बदहवास होकर पीठ के बल गिर पडा। घबराहट और चोट के सदमे से एक दम बेहोश हो गया और जब होश में आया अपने को एक तहखाने में बन्द पाया। मैं नहीं कह सकता कि वह समय रात का था या दिन का।

'इस तहखाने की दीवारें सगीन थीं और इसकी महराबी छत बहुत नीची थी। एक तरफ आले में चिराग जल रहा था। मेरे हाथ-पैर खुले थे। मै घबडा कर उठ खडा हुआ और धीरे-धीरे टहलने लगा। इस कोठरी में दो तरफ दो दर्वाजे थे जिन्हें खोल कर बाहर निकलने का इरादा किया। पहिले एक दर्वाजे की तरफ गया और खोलने की कोशिश की, मालूम हुआ कि बाहर से बन्द है क्योंकि अन्दर की तरफ कोई जञ्जीर या सिटकिनी बन्द करने के लिये न थी, लाचार लौट आया और दूसरे दवाजे की तरफ गया।

"यह दर्वाजा अन्दर से बन्द न था जिससे मै आसानी से खोल सका मगर उस तरफ झाकने से बिल्कुल अन्धेरा पाया लाचार फिर लौटा और हाथ में चिराग लेकर उसके अन्दर गया। छोटी सी कोठड़ी नजर पड़ी जिसमें नीचे उतर जाने के लिए सीढियां बनी हुई थी। मै नीचे उतर गया मगर वहॉ की कैफियत देख एक दम काप उठा और थोडी देर के लिए बदहवास हो दीवार से ढासना लगा के बैठ गया। थोड़ी देर बाद अपने को सम्हाल कर फिर उठा और घूम घूम कर देखने लगा। यह कोठड़ी बहुत लम्बी-चौड़ी थी चारों तरफ हड्डियों के ढेर लगे हुए थे, बीच में एक सगमर्मर का चबूतरा था जिसके ऊपर लोहे की एक मूरत आदमी के कद से बडी बनी हुई थी। उसके दोनों हाथ अन्दाज से भी ज्यादे लम्बे थे यह मूरत बडी भयानक थी और इसके चेहरे की तरफ निगाह करने से डर मालूम होता था। इस मूरत के तमाम बदन में दोरुखे धारवाले नुकीले चाकू लगे हुए थे।

मुझे विश्वास हो गया कि यह जरूर ऐसी जगह है जंहा आदमी बडी बेदर्दी के साथ मारा जाता है। इस ख्याल के साथ ही मेरा सिर घूमने लगा और मै सोचने लगा कि क्या मै भी यहा इसीलिये लाया गया हू ! बेशक ऐसा ही होगा। इसमें कोई शक नहीं कि यह काम शिवकुअरी के लगाव से किया गया है। इसके साथ ही मै उस समय की बातों को सोचने लगा जब अपने मकान पर जबर्दस्ती और बेबस करके गिरफ्तार किया गया था।

'इन्ही सब बातों को बैठा सोच रहा था कि सामने वाला दर्वाजा खुला और दो आदमियों के साथ शिवकुअरी आती दिखाई पडी। उन दोनों आदमियों की सूरत से बदमाशी और बेदर्दी साफ मालूम होती थी। उनका काला रग, स्याह चढी मूछे सुर्ख ऑखें और उलझे हुए घने बाल उनकी दुष्टता का परिचय दे रहे थे। ऊपर लिखी बातों के सिवाय कमर का जॉघिया और हाथ की भुजाली उन्हें साक्षात् काल रूप ही बनाए हुए थी।

'मगर आश्चर्य यह है कि ऐसे समय में उन दोनों आदमियों के साथ रहने पर भी शिवकुअरी के चेहरे पर डर घबराहट या उदासी का कोई निशान नहीं पाया जाता था बल्कि वह एक तरह पर खुश मालूम होती थी ! तीनों आदमी मेरे सामने आकर बैठ गए और शिवकुअरी मुझसे बातें करने लगी।

शिव – अफसोस कि मैंआपको एसी अवस्था में देख रही हू !

मै – मगर तुम्हारी सूरत से किसी तरह का रञ्ज नहीं पाया जाता।

शिव – ठीक है मै आपको इस कैद से छुडा सकती हूँ, मगर एक शर्त पर।

मै – वह क्या ?

शिव – तुम्हारे बाप का लिखा हुआ जो वसीयतनामा है वह मुझे दे दो और अपने हाथ से एक वसीयतनामा दूसरा मेरे नाम का लिख कर मुझे दे दो जिसके जरिये मै तुम्हारी कुल जायदाद की मालिक बन सकू, क्योंकि तुम्हारे बाप ने जो वसीयतनामा लिखा है उसके जरिये से तुम्हारे बाद तुम्हारा लड़का और लडका न हो तो तुम्हारा चचेरा भाई मालिक बन सकता है तुम्हारी औरत या तुम्हारी लडकी को सिवाय खाने-पीने के और कुछ नहीं मिल सकता।

मै – (क्रोध से) क्या तुमने इसी मतलब से मुझे ऐसी हालत में डाल दिया है ?

शिव – बेशक।

मै – हाय, मुझे तुझसे ऐसी उम्मीद कभी न थी ! मै तुझे अपना समझता था ! अफसोस !!

शिव – रडियों या सुरैतिनों को अपना समझना बिल्कुल नादानी है और उनसे किसी तरह की भलाई की उम्मीद रखने वाला पूरा बेवकूफ है !

मै – (जोश में आकर) चाहे मेरा सिर काट लिया जाय मगर मै ऐसा कभी नहीं कर सकता ! साथ ही अगर जिन्दगी है तो जरूर तुझसे इसका बदला लूगा !!

शिव – (हस कर) अभी जिन्दगी की उम्मीद तुम्हें बाकी है ! मेरा कहना न मान कर तुम कभी जिन्दा नहीं रह

सकते !

'इसके साथ ही उन दोनों आदमियों में से एक ने मुझसे डपट के कहा यह न समझो कि तुम सहज ही में मार डाले जाओगे तुम्हारी जान बड़ी तकलीफ से जायेगी। अच्छा देखो मैं तुम्हें मौत का मजा दिखाता हूं !!

इतना कहकर उन दोनों ने मुझे मजबूती से पकड़ लिया और घसीटते हुए तहखाने में ले जाकर उस तेज चाकुओं से भरे हुए मूरत के सामने खड़ा कर दिया जिसका हाल मैं ऊपर लिख चुका हूँ और जिसे मैं तहखाने का दर्वाजा खोल कर खुद ही देख आया था। उन दोनों ने कहा –

देखो एक पेंच के घुमाने से इस मूरत में इतनी ताकत आ सकती है कि तुम्हे हाथों से अपनी छाती के साथ लगा ले और ये सब तेज चाकू तुम्हारे बदन में घुस जायें। हम लोग ऐसा कर सकते हैं और करेंगे कि तुम्हें उसी हालत में छोड़कर चले जायें और तुम इस मूरत के साथ लगे हुए तड़फ-तड़प कर मर जाओ। कोई तुम्हारे चिल्लाने की आवाज भी नहीं सुन सकता। अब तुम्हीं सोच लो कि अगर तुम मारे जाओगे तो किस तकलीफ से जान जायेगी !!

' मैं यह बात सुनकर बदहवास हो गया और थोड़ी देर तक अपने आप में न रहा लेकिन यकायक मुझे एक बात याद आ गई जिससे मेरी बदहवासी जाती रही और मुझे अपनी जिन्दगी की कुछ-कुछ उम्मीद हो गई। मैंने कहा, 'खैर, जो कुछ तुम लोग कहोगे मैं वही करूंगा। इतना सुन वे लोग कुछ खुश हुए और मुझे फिर उसी कोठड़ी में ले आए जहाँ मैं पहिले था।

शिव – अच्छा अब बताओ तुम्हारे बाप का लिखा हुआ वसीयतनामा कहां है ? उसे पाने के बाद मैं कागज, कलम, दावात लेकर तुम्हारे पास आऊंगी और तुम दूसरा वसीयतनामा लिख देना, बस फिर तुम छोड़ दिये जाओगे।

मैं – यह वसीयतनामा मेरे पुराने खिदमतगार रामदीन के पास है तुम उससे ले लो।

शिव – वह मुझे कभी न देगा जब तक कि तुम एक पुर्जा उसके नाम न लिख दोगे।

मैं – तुम उसे कहना कि वह वसीयतनामा दे दो जिसके साथ तीन सौ तेंतीस रुपये तेरह आने की थैली तुम्हारे सुपुर्द की गई है।

शिव – अगर इतना कहने से भी वह न दे तब ?

मैं – तो जो चाहे मेरी सजा करना।

शिव – अच्छा आखिर मेरे कब्जे से निकल कर कहां जाओगे ! यह भी करके देख लेती हूं !

इसके बाद वे तीनों वहां से चले गए और दरवाजा बन्द करते गए। भूख-प्यास मुझे फिर उसी तहखाने में रहकर सोचने और ख्याल दौड़ाने का मौका मिला।

'मैंने सोच लिया था कि अगर वसीयतनामा न दूंगा तो बेशक बेदर्दी के साथ मारा जाऊंगा और वसीयतनामा देने और दूसरा लिख देने पर भी ये लोग मुझे जीता न छोड़ेंगे क्योंकि बिना मुझे मारे वे लोग वसीयतनामे का सुख नहीं भोग सकते यही सोचकर मैंने दूसरी चालाकी खेली थी कि शायद इस तर्कीब से जान बच जाय।

'रामदीन खिदमतगार मेरे पिता के समय का था। वह बहुत ही नेक, होशियार और दूर अंदेश था। मेरे पिता उसे बहुत ज्यादा चाहते और मानते थे। अपनी जिन्दगी में मेरे पिता ने उसे एक भेद समझा रक्खा था। उस भेद अथवा इशारे की बदौलत कई दफे पिताजी की जान बच चुकी थी क्योंकि भारी जिमींदार और अमीर होने के सबब उनके बहुत से दुश्मन थे। वही इशारा रामदीन ने मुझे समझा रक्खा था और ताकीद कर दी थी कि तुम्हारी चालचलन अच्छी नहीं है और मेरी नसीहत भी नहीं मानते हो ताज्जुब नहीं कि कभी किसी आफत में फंस जाओ। ईश्वर न करे अगर ऐसा मौका पड़े तो तुम भी अपने बाप की तरह हमारे साथ उसी इशारे का बर्ताव करना। वही बात मुझे याद आ गई जिससे जिन्दगी की कुछ उम्मीद हुई और वही तर्कीब मैंने की। साथ ही यहां मैं यह भी लिख देना चाहता हूँ कि रामदीन मेरा सब हाल जानता था और किसी समय भी मेरी तरफ से बेफिक्र नहीं रहता था।

'इसके बाद शिवकुअरी और रामदीन से जो बातें हुईं और रामदीन ने अपनी कार्रवाई का जो कुछ हाल मुझसे कहा वह लिखता हूं –

जब मैं इलाके पर जाया करता था तो शिवकुअरी अक्सर तीन-तीन, चार-चार घण्टे तक सिर्फ दो तीन लौंडियों के साथ ले ऐशमहल के आस-पास जंगल और मैदान में घूमा करती थी। अबकी दफे भी मैं मामूली तौर पर इलाके पर गया हुआ था मगर मेरे चुपचाप लौटने का हाल किसी को मालूम न हुआ और यकायक शिवकुअरी के [illegible] गया। मैंने शिवकुअरी को (जब ऐशमहल में रहने लगा था) घोड़े पर चढ़ना अच्छी तरह सिखाया था क्योंकि वहां [illegible] में और मण्डली या बिरादरी से दूर उसे घोड़े पर अपने साथ लेकर घूमने-फिरने में कोई हर्ज नहीं समझता था।

मेरी गैरहाजिरी में शिवकुँअरी घोड़े पर सवार हो हवा खाने के लिए बाहर गई और सात घण्टे के बाद लौटी। उसका यह काम रामदीन को बहुत ही बुरा मालूम हुआ सो भी ऐसी हालत में जब कि वह बराबर ही उससे बुरा मानता था और उसे मेरे लिए एक कलंक समझता था।

सुबह के वक्त शिवकुअरी अपने कमरे में बैठी कुछ सोच रही थी। थोड़ी देर बाद उसने [illegible] को बुलवाया और उसे अपने पास बैठाकर इधर-उधर की बातें करने लगी। थोड़ी ही देर में एक लौंडी ने आ [illegible] दिया कि

सरकार का एक आदमी देहात पर से आया है और एक खत लाया है मगर मुझे नही देता।
शिव – (रामदीन से) तुम उसके हाथ से खत ले लो।
रामदीन – बहुत अच्छा।
रामदीन बाहर गया और सरसरी निगाह से उस आदमी को सिर से पैर तक देखने के बाद चीठी लेकर शिवकुअरी के पास आया। शिवकुअरी ने चीठी पढ़कर रामदीन से कहा –
शिव – सरकार ने हमे वहीं बुलाया है !
राम – वहा बुलाने की क्या जरूरत थी ?
शिव – क्या मालूम ! और तुमसे एक चीज लेते आने के लिये भी लिखा है।
राम – वह कौन सी चीज ?
शिव – वसीयतनामा, जो उनके पिता ने लिखा था।
राम – वह वसीयतनामा उन्ही के पास है ! मुझे उन्होंने कब दिया जो मागते है !!
शिव – नहीं तुम्हारे ही पास है। लो चीठी पढ़ा देखा उन्होने लिखा है कि तीन सौ तेतीस तेरह आने की थैली के साथ जो वसीयतनामा रामदीन के पास है सो उससे लेकर चली आओ।
तीन सो तेतीस तरह आने का नाम सुनते ही रामदीन काप उठा और एक दफ गौर से शिवकुअरी की तरफ देख कर बोला, अच्छा ठहरो, मै वसीयतनामा लाकर तुम्हे देता हू मगर यह चीठी मुझे दे दो जिससे सरकार यह न कहे कि हमने वसीयतनामा नही मगाया था !' शिवकुँअरी ने चीठी रामदीन को दे दी, चीठी लेकर रामदीन बाहर आया और उस आदमी को जो चीठी लाया था साथ लेकर एक तरफ चला गया।
' दो घण्टे बीत गए मगर रामदीन न आया। शिवकुअरी ने उस आदमी को जो चीठी लाया था, अपने पास बुला लाने के लिए लौडी भेजी। लौडी ने वापस आकर जवाब दिया कि वह आदमी बाहर नही है, रामदीन उसे अपने साथ ले गया। यह सुनकर शिवकुअरी सोच मे पड़ गई और देर तक गौर करती रही, आखिर कमरे के बाहर निकल आई और एक लौडी को हुक्म दिया कि बहुत जल्द घोड़ा कसवा कर ले आ। लौडी घोडा कसवाने के लिए चली गई मगर बहुत जल्द वापस आकर बोली –
लौडी – साईस का तो आज दिमाग ही नही मिलता, वह कहता है कि मै इस समय घोडा कसकर न लाऊगा।
शिव – (लाल आँखें करके) क्या उसको इतनी हिम्मत हो गई !!
लौडी – जी हा !
शिव – अस्तबल के दारोगा को तैने इस बात की इत्तिला की थी ?
लौडी – की थी मगर वे भी कुछ नही सुनते कहते है कि बिना हुक्म रामदीन के घोडा नही कसा जा सकता।
शिव – (दात पीसकर) रामदीन कौन है जो !
इतना कहते-कहते वह रुक गई जैसे उसे यकायक कोई बात याद आ गई हो।
' शिवकुअरी दूसरे कमरे मे चली गई और हवाखोरी की पोशाक पहिन कमर मे खञ्जर छिपा मुह पर नकाब डाल कर एक लौडी को साथ ले हाते के बाहर चली मगर दर्वाजे पर रोक दी गई। वे आदमी जो उसका हुक्म मानते थे और उसके नाम से कापते थे इस समय मुकाबला करने को तैयार हो गए और साफ कहने लगे कि आप इस फाटक के बाहर' नही जा सकतीं। लाचार शिवकुअरी वहाँ से लौटी और अपने कमरे मे आकर बैठ गई। थोड़ी ही देर बाद एक लपेटा हुआ कागज हाथ मे लिये रामदीन भी आ पहुँचा
राम – वसीयतनामा तो मै ले आया हूँ।
शिव – (हाथ बढ़ाकर) मेरे हवाले करो !
राम – मै आप साथ चलता हूँ अपने हाथ से सर्कार को दूगा।
शिव – क्या मेरा एतबार नही है ?
राम – नही, बिल्कुल नही !(कुछ सोचकर) खैर बात बढाने की कोई जरूरत नही अब साफ-साफ बता दो कि सर्कार कहाँ है ?
शिव – (कुछ घबड़ाकर) मै क्या जानू सरकार कहा पर है ?
रामदीन ने जोर से ताली बजाई जिसकी आवाज ऊचे छत वाले कमरे मे गूज गई और इसके साथ ही हाथ मे कुछ लिए दो आदमी उस कमरे मे घुस आये जिन्हे देखते ही शिवकुंअरी ने पहिचान लिया कि ये दोनो रामदीन के लड़के है।
रामदीन – (शिवकुअरी से) देखो अब साफ-साफ बता दो नही तो तुम्हारी दुर्गत की जायेगी। तुम यह न समझना कि तुम इस घर की मालिक हो। मै बखूबी जान गया कि तुमने मेरे मालिक को धोखा दिया। जो आदमी खत लाया था उसे मैने कब्जे मे कर लिया और सजा देकर सब हाल मालूम कर लिया।
शिव – रामदीन ! मालूम होता है तुम पागल हो गये हो !!

इतना सुनते ही रामदीन ने अपन दोनों लडकों को कुछ इशारा किया। उन दानों ने शिवकुअरी की मुश्कें बॉध ली और बेंत से मारना शुरू किया।

'मै अपना हाल बहुत मुख्तसर में लिखा चाहता हूँ इसलिए इतना ही लिखना बहुत है कि शिवकुअरी और उस नकली चीठी लाने वाले आदमी का मारपीट कर रामदीन ने मेरा कुल हाल मालूम कर लिया और जिस तरह बना मुझे उस कैद से छुडाया।

'मै उस तहखान मे कसम खा चुका था अगर यहा से बच कर किसी तरह निकलूगा तो शिवकुअरी से बतरह समझूगा। घर पहुँच कर मैंने अपनी कसम पूरी की।

ऐशमहल में मैंने एक तहखाना बनवाया था जिसमें अपना खजाना रक्खा करता था। शिवकुअरी का उसी तहखाने में ले गया और कुत्तों से नुचवा कर उसे यमलाक की तरफ रवाना किया। साफ करा कर उसकी हड्डियों का ढॉचा उसी तहखाने में रखवा दिया जा उम्मीद है कि बहुत दिन तक रहेगा और किसी न किसी को मेर हाल की खबर द कर कुलटा स्त्रियों से बचने के लिए नसीहत करेगा क्योंकि यह कागज भी मै उसी के साथ रखता हूँ।

यहॉ पर मोहिनी के बाप का हाल जो उसने अपन हाथ से सुर्ख राशनाई से लिखा था समाप्त हा गया। अब उस लेख का वह हिस्सा पढा जाने लगा जो स्याह रोशनाई से मोहिनी ने अपने हाथ से लिख कर पूरा किया और तब चिपकाया था। इस जगह महाराज ने उस मुशी को जो पढ रहा था,दम लेने क लिए कहा क्योंकि हजारीसिह के विचित्र हाल ने उनके कामल कलेजे को दहला दिया था। नरेन्द्रसिह भी पलग पर पडे-पडे इस अनूठे किस्से को सुन के बहुत परेशान हुए। मोहिनी की तरफ से उन्हें नफरत हो गई यहा तक कि मुह फेर लिया और दूसरी तरफ देखन लग। तकलीफ से बहुत ही बेचैन हो रहे थे दम-दम भर पर दवा दी जा रही थी मगर नब्ज कमजोर ही होती जाती थी फिर भी उन्होंन मुशी की तरफ देख कर आगे पढने का इशारा किया और मुशी न पढना शुरू किया –

'मरा नाम माहिनी है। मै हजारीसिह की मझली लडकी हूँ। मेरी बडी बहिन का नाम केतकी और छोटी का नाम गुलाब है। यों तो मॉ के मिजाज का असर हम तीनों बहिनों पर पडा मगर केतकी उन ऐबों से अच्छी तरह भरी हुई थी जो दुनिया में भले लोगों के हिसाब स बुर गिने जात है। हमारे बाप हजारीसिह को मुनासिब तो यही था कि हमारी मा के साथ साथ हम तीनों बहिनों को भी मार डालता क्योंकि बुरों की औलाद और हरामी पैदाइशों से किसी तरह की भलाई की उम्मीद नहीं हा सकती मगर हमार बाप ने हमलोगों पर रहम किया और परवरिश कर के बडा किया। थाडे ही दिन बाद केतकी जवानी पर आई और उसकी शादी की गई मगर उसकी चालचलन ने हमारे बाप को होशियार कर दिया और उसन निश्चय कर लिया कि इन तीनों लडकियों से भी सिवाय बुराई के भलाई की उम्मीद किसी तरह नहीं हा सकती इन तीनों को भी खपा ही देना चाहिये।

'न मालूम किस तरह से अपने बाप का इरादा केतकी ने मालूम कर लिया और वह अपनी जान बचा कर उनकी जान लेने पर मुस्तैद हो गई मगर यह समझ कर कि उनके मरने बाद जायदाद का मालिक उनका भाई या भतीजा होगा रुकी और पहिल उन्हीं दोनों की जान लने पर मुस्तैद हुई। आखिर उन लागों से मेल और दोस्ती बढ़ा कर जिस तरह हा सका एक ही दफे जहर दिलवा कर उन दोनों का काम तमाम किया और इसके दो ही चार दिन बाद अपने खसम का मारा तथा तब रसोइये ब्राहमण से मिल के अपने बाप की जान ली।

हम तीनों बहिनें अपने बाप के जायदाद की मालिक हुई मगर केतकी अकेली ही सुख भोगा चाहती थी इसलिय हम छाटी बहिनों का रहना भी उसे नापसन्द हुआ और उसने बदमाशों के हाथ यह काम सुपुर्द किया। मेरी और गुलाब की जान जिस तरह नरेन्द्रसिह ने बचाई उसके लिखने की कोई जरूरत नही क्योंकि यह बात बहुत मशहूर हो रही है और महाराज भी उस अच्छी तरह जानते होंगे। नरेन्द्रसिह का अहसान मुझे मानना चाहिए था मगर नहीं अब मै उनका अहसान नहीं मान सकती। अपनी बडी बहिन केतकी से ता बदला ल ही लिया और उसे जहन्नुम में पहुँचा ही दिया मगर नरेन्द्रसिह को भी अपनी ऑखों के सामने दम तोडते देखा चाहती हूँ।

मुन्शी न यहॉ तक पढा था कि सभों की हालत बदल गई क्रोध क मारे बदन कापन लगा ऑखें सुख हा गई तलवारों के कब्जों पर हाथ जाने लगे और दॉत पीस-पीस कर माहिनी की तरफ लोग देखने लगे। बडी कोशिश करके महाराज न अपन का सम्भाला और आगे पढने के लिये मुन्शी को इशारा किया। मुन्शी ने फिर पढना शुरू किया –

'नरेन्द्रसिह की मुहब्बत देख कर मुझ उम्मीद थी कि मै उनक साथ ब्याही जाऊँगी क्योंकि मै भी उन पर जी से मरती थी मगर मैने सुना कि वे रम्भा के लिए मर रहें हैं तो वह उम्मीद जाती रही क्योंकि मै अपने साथ किसी सवत का होना पसन्द नहीं करती और न मुझे यह मजूर ही है। जब मैं स्वय नरेन्द्रसिह स मिली और बातचीत की नौबत आई तो मुझे निश्चय हो गया कि रम्भा से ब्याह करेंगे, लाचार मुझे भी कसम खानी पडी कि रम्भा और नरेन्द दोनों ही को इस दुनिया स उठा दूगी।

अपनी बडी बहिन कतकी से बदला लेकर और उसे जान से मार कर जब मै बिहार में अर्थात् यहा आई तो गुप्त रीति से नरन्दसिह से मिली। उनकी बातचीत से यह तो जरूर मालूम हुआ की वे मुझे भी चाहत है और मुझस शादी करने

पर राजी है मगर साथ ही इसके यह भी निश्चय हो गया कि पहले वे रम्भा से ही शादी करेंगे और तब मुझसे। खैर अपनी कसम पर मजबूत रहना पड़ा।

नरेन्द्रसिंह की जुबानी मालूम हुआ कि रम्भा हाजीपुर में कैद है और बहादुरसिंह भी हाजीपुर में विराज रहे हैं और वहाँ उन्होंने चमलादाई पर अपना कब्जा करके गप्प उड़ाई है कि रम्भा के सिर पर चुड़ैल आती है–इत्यादी जिसमें वहाँ का राजा रम्भा को निकाल दे और वह सहज ही में नरेन्द्रसिंह के हाथ लग जाय।

जब नरेन्द्रसिंह रम्भा को लेने गए तो मैं भी भेष बदल कर हाजीपुर पहुंची। अपना नाम सुन्दर रख कर महल में गई और बहादुरसिंह और चमेलादाई का भेद खोल दिया। वहाँ मेरी बड़ी खातिर हुई और रम्भा के बगल ही में एक कोठड़ी मुझे रहने को मिली। महल भर की लौंडियों पर मेरी हकूमत कायम की गई जिसमें मुझे अपना काम करने का बहुत कुछ मौका मिला।

रात के समय मैं अपनी कोठड़ी से बाहर निकली महल में सभों को सोता पाया। रम्भा की कोठड़ी में घुस गई मगर वहाँ बिल्कुल ही अंधेरा था। टटोलती हुई रम्भा की चारपाई तक पहुँची और उसे नींद में बेहोश पाकर खञ्जर से उसका काम तमाम किया। यह खबर उसी रोज चारो तरफ फैल गई बल्कि बहादुरसिंह ने सुना हो तो ताज्जुब नहीं।

मुझे महल से बाहर निकलने में किसी तरह की तकलीफ न हुई। मैं तुरन्त वहाँ से भाग निकली। और नरेन्द्रसिंह के पहले यहाँ आ पहुँची। जब नरेन्द्रसिंह यहाँ आये तो मुझ से मिले। मैंने अपने हाथों से कई चीजें खाने की बनाई और उन्हें खिलाया जिनमें ऐसा जहर मिलाया हुआ था कि जिसका असर किसी तरह और किसी भी दवा से दूर नहीं हो सकता। मेरी मुराद पूरी हुई, नरेन्द्रसिंह भी घण्टे दो घण्टे में इस दुनिया को छोड़ा चाहते हैं अब मैं भी मरने के लिए तैयार हूँ, जिस तरह चाहे मेरी जान ली जाय कुछ परवाह नहीं।'

॥ इति ॥

इस आखरी लेख के पढ़ने और सुनने पर सभों का अजब हाल हो गया। जितने लोग वहां मौजूद थे सभों के मुँह से 'हाय हाय' की आवाज निकलने लगी और सभों के मुँह पर उदासी और मुर्दनी छा गई। महाराज ने अपने दोनो हाथ सिर पर मारे और हाय बेटा नरेन्द्र ! कह कर बेहोश हो गए।

जगजीतसिंह की आखों से आंसुओं की नदी बह चली। दीवान मुत्सद्दी और मुसाहब लोग जो वहां मौजूद थे सभी रोने और चिल्लाने लगे। सब तरफ हाहाकार मच गया। बिजली की तरह यह बात चारों तरफ फैल गई। हर तरफ से रोने और चिल्लाने की आवाजें आने लगी। धीरे-धीरे नरेन्द्रसिंह के चेहरे पर भी मुर्दनी छाने लगी और नाड़ी ने जगह छोड़ दी।

पाठक यह मौका बड़े ही रंज और गम का है। ऐसे किस्सों का लिखना मुझे पसन्द नहीं और न ही मेरे कलेजे में इतनी मजबूती ही है। इस समय जो हालत है मैं अपनी कलम से लिख नहीं सकता, तो भी उम्मीद है कि यह भयानक समा अवश्य पाठकों की ऑखों में घूम जायेगा और वे जान जायगे कि यह कैसा नाजुक मौका है। बहुतों को दु:खान्त नाटक और उपन्यास पसन्द हैं। उन लोगों से मेरी प्रार्थना है कि बस इसके आगे न पढ़ें और इस उपन्यास को दु:खान्त समझ कर इसी जगह छोड़ दें !

मगर उन लोगों के लिए जो कोमल कलेजे रखते हैं जिन्हें दु:ख की कहानी पसन्द नहीं थोड़ा और लिख देता हूं।

आधे घन्टे में बाहर-भीतर सभों में यह बात फैल गई और सायत-सायत में 'हाय हाय' की आवाज बढ़ गई। महाराज दुहत्थड़ मार-मार कर रोने लगे। नौकरों ने मोहिनी की मुश्कें बॉध लीं और राह देखने लगे कि जरा इशारा हो और इसकी बोटी-बोटी काट कर कुत्तों को खिला दें।

इसी समय दो आदमी सिपाहियाना ठाठ से ढाल तलवार और खञ्जर लगाये मुंह पर नकाब डाले बेधड़क भीड़ को चीरते हुए वहाँ जा पहुँचे जहाँ नरेन्द्रसिंह की आखिरी हालत देख लोग चिल्ला और रो रहे थे। इन दोनों में से एक ने अपने दोनो हाथ उठाये और चिल्ला कर कहा –

आप लोग चुप रहें, किसी तरह का गम न करें और विश्वास रक्खें कि नरेन्द्रसिंह किसी तरह नहीं मर सकते ! मैं आ पहुँचा हूँ। आप लोगों के देखते ही देखते इन्हें आराम करूंगा और थोड़ी देर में यहाँ खुशी के बाजे बजते होंगे !!'

इस आदमी के यकायक पहुँचने और इस तरह चिल्ला कर ढाढस देने से सभी चौकन्ने हो गए। एक उम्मीद की झलक सभों के चेहरों पर मालूम होने लगी। महाराज उठ खड़े हुए और ताज्जुब के साथ उम्मीद भरी निगाहों से उस आदमी की तरफ देखने लगे। इस समय मोहनी की मुश्कें बंधी हुई थी और वह हर तरह से बेबस एक कोने में खड़ी थी मगर किसी तरह की परेशानी उसके चेहरे से मालूम न होती थी। इस नये आए हुए आदमी के मुँह से निकली हुई बातों को सुन कर वह हँस पड़ी और बोली–

अगर ब्रह्मा भी उतर कर आयें तो नरेन्द्रसिंह को आराम नहीं कर सकते ! दुनिया में ऐसी कोई दवा ही नहीं जो मेरे जहर को दूर कर सके !

मोहिनी की इस बात ने फिर सभों को परेशान कर दिया। जो थोड़ी सी उम्मीद बंधी थी वह भी जाती रही, महाराज

कदमों पर गिर कर बोला–

'मेरा ही नाम रम्भा है। वह कम्बख्त मै ही हूँ, और मेरे साथ यह मेरा चचेरा भाई अर्जुनसिह है जो अकस्मात हाजीपुर में महल से वाहर निकलने पर मुझे मिला था।"

महाराज नरेन्द्रसिह जगजीतसिह और खैरखाह बहादुरसिह की खुशी का भी अव कुछ ठिकाना था ॥

यह सब हाल सुनते ही मोहिनी ने इस जार से अपना सर दीवार पर मारा कि दो टुकडे हो गया और उसकी आत्मा अपने पतित देह को छोड कर नर्क की तरफ रवाना हो गई।

अन्त में इतना और कह देना मुनासिब है कि यह हाल सुन कर महल में गुलाब ने भी छत पर से कूद कर अपनी जान दे दी।

चारो तरफ खुशी के वाजे बजने लग और दो ही चार दिन में बडे धूम-धाम स नरन्द्रसिह की शादी हो गई।

॥ समाप्त ॥

बीरेन्द्रवीर

पहिला बयान

"लोग कहते है कि नेकी का बदला नेक और बदी का बदला वद मिलता है' मगर नहीं देखो आज मैं किसी नेक और पतिव्रता स्त्री के साथ बदी किया चाहता हूँ। अगर मैं अपना काम पूरा कर सका तो कल ही राजा का दिवान हो जाऊँगा। फिर कौन कह सकेगा कि बदी करने वाला सुख नहीं भोग सकता या अच्छे आदमियों को दु ख नहीं मिलता ? बस मुझे अपना कलेजा मजबूत करना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि उसकी खूबसूरती और मीठी बातें मेरी हिम्मत (रुककर) देखो कोई आता है !

रात आधी से ज्यादे जा चुकी हे। एक तो अधेरी रात दूसरे चारों तरफ से घिर आने वाली काली-काली घटा ने मानो पृथ्वी पर स्याह रग की चादर विछा दी है। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है। तेज हवा के झपेटों से कॉपते हुए पत्तों की खडखडाहट के सिवाय और किसी तरह की आवाज कानों में नहीं पडती।

एक बाग के अन्दर अगूर की टट्टियों में अपने को छिपाये हुए एक आदमी ऊपर लिखी बातें धीरे-धीरे बुदबुदा रहा है। इस आदमी का रग-रूप कैसा है। इसका कहना इस समय बहुत ही कठिन है क्योंकि एक तो उसे अधेरी रात ने बहुत अच्छी तरह छुपा रक्खा है, दूसरे उसने अपने को काले कपडो से ढक लिया है तीसरे अगूर की घनी पत्तियों ने उसके साथ उसके ऐबों पर भी इस समय पर्दा डाल रक्खा है। जो हो, आगे चल कर तो इसकी अवस्था किसी तरह छिपी न रहेगी; मगर इस समय तो यह बाग के बीचोबीच वाले एक सब्ज बगले की तरफ देख-देख कर दात पीस रहा है।

यह मुख्तसर सा बगला सुन्दर लताओं से ढका हुआ है और इसके बीचों-बीच में जलने वाले एक शमादान की रोशनी साफ दिखला रही है कि यहाँ एक मर्द और एक औरत आपस में कुछ बातें और इशारे कर रहे हैं। यह बगला बहुत छोटा था, इसकी बनावट अठपहली थी, बैठने के लिए कुर्सीनुमा आठ चबूतरे बने हुए थे, ऊपर बास की छावनी जिस पर घनी लता चढी हुई थी। बगले के बीचों-बीच में एक मोढे पर मोमी शमादान जल रहा था। एक तरफ चबूतरे पर ऊदी

चिनियापोत की बनारसी साडी पहिरे एक हसीन और बैठी हुई थी। जिसकी अवस्था अट्ठारह वर्ष से ज्यादे की न होगी। उसकी खूबसूरती और नजाकत की जहॉ तक तारीफ की जाय थोडी है। मगर इस समय उसकी वडी-वडी रसीली ऑखों से गिरे हुए मोती सरीखे ऑसूकी बूँदें उसके गुलाबी गालों को तर कर रही थी। उसकी दोनों नाजुक कलाइयों में स्याह चूडियॉ छन्द और जडाऊ कडे पडे हुए थे बाएँ हाथ से कमरबन्द और दाहिने से उस हसीन नौजवान की कलाई पकडे सिसक-सिसक कर रो रही है जो उसके सामने खडा हसरत भरी निगाहों से उसके चेहरे की तरफ देख रहा है और जिसके अन्दाज से मालूम होता था कि वह कहीं जाया चाहता है मगर लाचार है किसी तरह उन नाजुक हाथों से अपना पल्ला छुडा कर भाग नहीं सकता। उस नौजवान की अवस्था पचीस वर्ष से ज्यादा की न होगी, खूबसूरती के अतिरिक्त उसके चेहरे से बहादुरी और दिलावरी भी जाहिर हो रही थी। उसके मजबूत और गठीले बदन पर चुस्त बेशकीमत पौशाके बहुत ही भली मालूम होती थी।

औरत०—नहीं, मैं जाने न दूँगी।

मर्द०—प्यारी !देखो तुम मुझे मत रोको, नहीं तो लोग ताना मारेंगे और कहेगें कि बीरसिह डर गया और एक जालिम डाकू की गिरफ्तारी के लिए जाने से जी चुरा गया। महाराज की ऑखों से भी मैं गिर जाऊँगा और मेरी नेकनामी में धब्बा लग जायेगा।

औरत०—वह तो ठीक है मगर क्या लोग यह न कहेंगे कि तारा ने अपने पति को जान-बूझ कर मौत के हवाले कर दिया ?

बीर०—अफसोस !तुम वीर-पत्नी होकर ऐसा कहती हो ?

तारा०—नहीं नहीं मैं यह नहीं चाहती की आपके वीरत्त्व में धब्बा लगे वल्कि आपकी बहादुरी की तारीफ लोगों के मुँह से सुन कर मै प्रसन्न हुआ चाहती हूँ, मगर अफसोस आप उन वातों को फिर भी भूल जाते है जिनका जिक्र मैं कई दफे कर चुकी हूँ और जिनके सबब से मैं डरती हूँ और चाहती हूँ कि अपन साथ मुझे भी ले चल कर इस अन्याई राजा के हाथ से मेरा धर्म बचावें। इसमें कोई शक नहीं कि उस दुष्ट की नीयत खराब हो रही है और यही सबब है कि वह आपको एक एसे डाकू के मुकाबल में भेज रहा है जो कभी सामने होकर नहीं लडता वल्कि छिप कर लोगों कि जान लिया करता है।

वीर०—(कुछ देर सोच कर) जहॉ तक मैं समझता हूँ जब तक तुम्हारे पिता सुजनसिह मौजूद हैं तुम पर किसी तरह का जुल्म नहीं हो सकता।

तारा०—आपका कहना ठीक है मगर मुझे अपने पिता पर बहुत कुछ भरोसा है मगर जब उस 'कटोरा भर खून' की तरफ ध्यान देती हूँ जिसे मैंने अपने पिता के हाथ में देखा था तब उनकी तरफ से भी नाउम्मीद हो जाती हूँ और सिवाय इसके कोई दूसरी वात नहीं सूझती कि जहॉ आप रहें मै भी आपके साथ रहूँ और जो कुछ आप पर बीते उसमेंसे आधे की हिस्सेदार वनू।

वीर०—तुम्हारी बातें मेरे दिल में खुपी जाती हैं और मै यही चाहता हूँ कि महाराज की आज्ञा न भी हो तो भी तुम्हें अपने साथ लेता चलूँ मगर उन लोगों के ताने से शर्माता और डरता हूँ जो सिर हिला कर कहेंगे कि लो साहब वीरसिह जोरू को साथ लेकर लडने गये है !

तारा०—ठीक है इन्हीं बातों को सोच कर आप मुझ पर ध्यान नहीं देते और मेरे उस बाप के हवाले किये जाते है जिसक हाथ में उस दिन खून स भरा हुआ चॉदी का कटोरा (कॉप कर) हाय हाय !जब वह वात याद आती है,कलेजा कॉप उठता है वचारी कैसी खूबसूरत ओफ !!

वीर०—ओफ !वडा ही गजब है वह खून तो कभी भूलने वाला नहीं—मगर अब हो भी तो क्या हो ? तुम्हारे पिता लाचार थे किसी तरह इनकार नहीं कर सकते थे !(कुछ सोच कर) हॉ खूब याद आया, अच्छा सुनो एक तर्कीब सूझी है।

यह कह कर वीरसिंह तारा क पास बैठ गए और धीरे-धीरे वातें करने लगे।

उधर अगूर की टट्टियों में छिपा हुआ आदमी जिसके वारे में हम इस बयान के शुरू में लिख आए है इन्हीं की तरफ एकटक देख रहा था। यकायक पत्तों की खडखडाहट और पैर की आहट ने उसे चौंका दिया। वह हाशियार हो गया और पीछे फिर कर देखने लगा एक आदमी को अपने पास आते देख कर धीरे से बोला "कौन है, सुजनसिंह ?' इसके जवाब में 'हॉ की आवाज आई और सुजनसिंह उस आदमी के पास जाकर धीरे से बोला, 'भाई रामदास अगर तुम

मुझे यहां से चले जाने की आज्ञा दे देते तो मै जन्म भर तुम्हारा अहसान मानता !!'

रामदास०—कभी नहीं, कभी नहीं !

सुजन०—तो क्या मुझे अपने हाथ से अपनी लड़की तारा का खून करना पड़ेगा ?

रामदास०—बेशक, अगर वह मंजूर न करेगी तो।

सुजन०—नहीं नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है !अभी से मेरा हाथ कांप रहा है और कटार गिर पड़ती है।

रामदास—अख मार कर तुम्हे ऐसा करना होगा !

सुजन०—मेरे हाथों की ताकत तो अभी से जा चुकी है मै कुछ न कर सकूगा।

रामदास०—तो क्या वह 'कटोरा भर खून' वाली बात मुझे याद दिलानी पड़ेगी ?

सुजन०—(कांपकर) ओफ गजब है !!(रामदास के पैरो पर गिरकर) बस बस माफ करो अब फिर उसका नाम न लो !मै करूंगा और बेशक वही करूंगा जो तुम कहोगे।अगर मंजूर न करे तो अपने हाथ से अपनी लड़की तारा को मारने के लिए मै तैयार हू, मगर अब उस बात का नाम न लो !हाय, लाचारी इसे कहते है !!

रामदास०—अच्छा हम लोगो को यहाँ से निकलकर फाटक की तरफ चलना चाहिए।

सुजन०—जो हुक्म।

राम०—मगर नहीं क्या जाने ये लोग उधर न जाय। हाँ वे दोनो उठे। मै वीरसिंह के पीछे जाऊंगा तारा तुम्हारे हवाले की जाती है।

उधर बगले मे बैठे हुए वीरसिंह और तारा की बातचीत समाप्त हुई। इस जगह हम यह नहीं कहा चाहते कि उन दोनों मे चुपके-चुपके क्या बाते हुईं मगर इतना जरूर कहेंगे कि तारा अब प्रसन्न मालूम होता है, शायद वीरसिंह ने कोई बात उसके मतलब की कही हो या जो कुछ तारा चाहती थी उसे उन्होंने मंजूर किया हो !

वीरसिंह और तारा वहाँ से उठे और एक तरफ जाने के लिए तैयार हुए।

वीर०—तो अब मै तुम्हारी लौंडिया को बुलाता हूँ और तुम्हे उनके हवाले करता हूँ।

तारा०—नही मै आपको फाटक तक पहुंचा कर लौटूंगी तब उन लोगों से मिलूंगी।

वीर०—जैसी तुम्हारी मर्जी।

हाथ मे हाथ दिये दोनो वहाँ से रवाना हुए और बाग के पूरब तरफ, जिधर फाटक, था चले। अब फाटक पर पहुंचे तो वीरसिंह ने तारा से कहा बस अब तुम लौट जाओ।

तारा०—अब आप कितनी देर मे आयेंगे ?

वीर०—मै ठीक नहीं कह सकता मगर पहर भर के अन्दर आने की आशा कर सकता हू।

तारा०—अच्छा जाइये मगर महाराज से न मिलियेगा।

वीर०—नही, कभी नहीं।

वीरसिंह आगे की तरफ रवाना हुआ। और तारा भी वहा से लौटी मगर कुछ दूर उसी बगले को तरफ मुड़ी और दक्खिन तरफ घूमी, जिधर एक रंगीन सजी हुई बारहदरी थी और वहा आपुस मे कुछ बाते करती हुई कई नौजवान औरतें भी थी और जो शायद तारा की लौंडिया होंगी।

धीरे-धीरे चलती हुई तारा उस अंगूर की टट्टी के पास पहुँची। उसी समय उस झाड़ी मे से एक आदमी निकला जिसने लपककर तारा को मजबूती से पकड़ लिया और उसे जमीन पर पटक छाती पर सवार हो बोला बस तारा मुझे इस समय रोने या चिल्लाने की कोई जरूरत नहीं और न इससे कुछ फायदा है। बिना तेरी जान लिए अब मै किसी तरह नहीं रह सकता !!'

तारा०—(डरी हुई आवाज मे) क्या मै अपने पिता सुजनसिंह की आवाज सुन रही हू ?

सुजन०—हा, मै ही कम्बख्त तेरा बाप हू।

तारा०—पिता !क्या तुम स्वयं मुझे मारने को तैयार हो ?

सुजन०—नहीं मै स्वयम् तुझे मारकर कोई लाभ नहीं उठा सकता मगर क्या करूं लाचार हूँ।

तारा०—हाय !क्या कोई दुनिया मे ऐसा है जो अपने हाथो से अपनी प्यारी लड़की को मारे ?

सुजन०—एक अभागा तो मै ही हूँ तारा !लेकिन अब तू कुछ मत बोल। तेरी प्यारी बाते सुनकर मेरा कलेजा कांपता है, रुलाई गला दबाती है, हाथ से कटार छूटा जाता है। बेटी तारा !बस तू चुप रह मै लाचार हू !!

तारा०—क्या किसी तरह मेरी जान नहीं वच सकती ?

सुजन०—हॉ वच सकती है अगर तू 'हरी वाली वात मजूर करे।

तारा०—ओफ ऐसी बुरी वात का मान लना ता मुश्किल है !खैर अगर मै वह बात भी मजूर कर लूँ ता ?

सुजन०—ता तू बच सकती है ? मगर मै नहीं चाहता कि तू उस वात को मजूर करे।

तारा०—बेशक मैं कभी नहीं मजूर कर सकती, यह तो केवल इतना जानने के लिए बोल बैठी कि देखू तुम्हारी क्या राय है ?

सुजन०—नहीं मै उस किसी तरह मजूर नहीं कर सकता बल्कि तेरा मरना मुनासिब समझता हूँ लकिन हाय अफसास !आज मै कैसा अनर्थ कर रहा हूँ !!

तारा०—पिता वशक मेरी जिन्दगी तुम्हार हाथ में है। क्या और नहीं तो केवल एक दफे किसी के चरणों का दर्शन कर लने के लिए तुम मुझे छोड सकते हा ?

सुजन०—यह तेरी भूल है जिसस तू मिला चाहती है वह भी घण्टे भर के अन्दर ही इस दुनिया स कूच कर जायेगा, अव शायद दूसरी दुनिया में ही तरी और उसकी मुलाकात हो !!

तारा०—हाय अगर एसा है ता मै पति क पहिले ही मरने क लिए तैयार हूँ, बस अव दर मत करो। हे !पिता !तुम रोते क्यों हा ? अपने का सम्हाला और मेर मारने में अव देर मत करा !!

सुजन०—(ऑसू पोंछ कर) हॉ हा एसा ही होगा ले अब सम्हल जा !!

दूसरा बयान

वीरसिंह तारा स विदा होकर वाग क वाहर निकला और सडक पर पहुँचा। इस सडक के दानों किनारे वडे वडे नीम के पेड थे जिनकी डालियों के ऊपर जाकर आपस में मिल रहन के कारण सडक पर पूरा अधरा था। एक ता अधरी रात, दूसरे वदली छाई तीसरे दुपट्टी घन पेडों की छाया ने पूरा अन्धकार कर रक्खा था मगर वीरसिंह बरावर कदम वढाय चला जा रहा था। जव वाग की हद्द से दूर निकल गया तो यकायक पीछ किसी आदमी क आने की आहट पाकर रुका और फिर कर देखन लगा मगर कुछ मालूम न पडा लाचार पुन आगे वढा परन्तु चौकन्ना रहा क्योंकि उसे दुश्मन क पहुँचन और धाखा दन का पूरा गुमान था। आखिर थाडी दूर और आगे वढने पर वैसा ही हुआ। बॉए तरफ से झपटता हुआ एक आदमी आया और उसन अपनी तलवार से वीरसिंह का काम तमाम करना चाहा मगर न हो सका क्योंकि वह पहिले ही से सम्हला हुआ था हॉ एक हलका सा घाव जरूर लगा। जिसके साथ ही उसने भी तलवार खैंच कर सामना किया और ललकारा। मगर अफसास उसक ललकार की आवाज ने उलटा ही असर किया अर्थात् दो आदमी और निकल आये जा थोडी ही दूर पर एक पड की आड में छिपे हुए थे। अव तीन आदमियों स उसे मुकावला करना पडा।

वीरसिंह बेशक वहादुर आदमी था उसके अगों में ताकत के साथ ही साथ चुस्ती और फुर्ती भी थी।तलवार बॉक पटा और खजर इत्यादि चलाने में वह पूरा आस्ताद था। खराव से खराव तलवार भी उसके हाथ में पडकर जौहर दिखाती थी और दो एक दुश्मन को जमीन पर गिराये विना न रहती थी।

इस समय उसकी जान लेने पर तीन आदमी मुस्तैद थे तीनों आदमी तीन तरफ से तलवार चला रहे थे मगर वह किसी तरह न सहमा और वधडक तीनों आदमियों की तलवारों को खाली कर दता और अपना वार करता था। थाडी ही देर में उसकी तलवार स जख्मी होकर एक आदमी जमीन पर गिर पडा। अव केवल दा आदमी रह गये पर उनमें से भी एक वहुत सुस्त और कमजार हो रहा था। लाचार वह अपनी जान वचा कर सामने से भाग गया अव सिर्फ एक आदमी उसक मुकावले में रह गया। वेशक यह लडका था और इसने आधे घण्टे तक अच्छी तरह स वीरसिंह का मुकावला किया वल्कि इसके हाथ से वीरसिंह क वदन पर कई जख्म लगे मगर आखिर को वीरसिंह के अन्तिम वार न उसका सर धड से अलग करक फैंक दिया और वह हाथ-पैर पटकता हुआ जमीन पर दिखाई देने लगा।

अपने दुश्मन के मुकावले में फतह पाने से वीरसिंह का खुश होना था मगर ऐसा न हुआ। हरारत मिटान के लिए थोडी देर को वह पेड के नीचे वैठ गया और दम का फूलना बन्द हुआ तो यह कहता हुआ उठ खडा हुआ—

"इन्हीं तीनों पर मामला खत्म नहीं है, जरूर कोई भारी आफत आने वाली है। अव मैं आगे न वढ़ूँगा वल्कि लौट चलूँगा, कहीं ऐसा न हो कि मेरी तरह वेचारी तारा को भी दुश्मनों ने घेर लिया हो !'

बीरसिंह जिधर जा रहा था उधर न गया वल्कि तारा से मिलने के लिए फिर उसी वाग की तरफ लौटा जहॉ से रवाना हुआ था। थोडी ही देर में वह वाग के अन्दर जा पहुँचा और सीधे उस वारहदरी में चला गया जिसमें तारा की लौडियॉ और सखियॉ वैठी आपस में बातें कर रही थीं। वीरसिंह को आते देख वे सब उठ खडी हुई और तारा को उसके साथ न देख कर उसकी एक सखी ने पूछा, "मेरी तारा वहिन को कहाँ छोडा ?

वीर०–उसी से मिलने के लिए तो मैं आया हूँ, मुझे विश्वास था कि वह इसी जगह होगी।

सखी०–वह तो आप के साथ थीं, यहाँ कव आई ?

वीर०–अफसोस !

सखी०–कुछ समझ में नहीं आता कि क्या मामला हुआ आपने उन्हें कहा छोड़ा ?

वीर०–इस समय कुछ कहने का मौका नहीं एक रोशनी लेकर मेरे साथ आओ और चारों तरफ वाग मं खोजो कि वह कहाँ है।

बीरसिंह के यह कहने से उन औरतों में खलवली पड़ गई और व सव घबड़ा कर इधर-उधर दौड़ने लगीं। दो लौडियाँ लपक कर एक तरफ गई और जल्दी से दो मशाल जला कर ले आई, बीरसिंह ने उन दोनों मशाल-वालियों के अतिरिक्त और भी कई लौंडियों को साथ लिया और वाग में चारों तरफ तारा को खोजने लगा मगर उसका कहीं पता न लगा।

बीरसिंह तारा को ढूँढता हुआ उसी अगूर की टट्टी के पास पहुचा और एकाएक जमीन पर एक लाश देख कर चौंक पड़ा। उसे विश्वास हो गया कि यह तारा की ही लाश है। बीरसिंह को रुकते देख लौडियों ने मशाल आगे किया और वह वड़े गौर से उस लाश की तरफ देखने लगा।

बीरसिह ने समझ लिया था कि यह तारा की लाश है मगर नहीं, वह तो एक कमसिन लडके की लाश थी जिसकी उम्र दस वर्ष से ज्यादे कि न होगी। लाश का सिर न था जिससे पहिचाना जाता कि कौन है, मगर वदन के कपडे बेशकीमत थे, हाथ में हीरे का जड़ाऊ कड़ा पडा हुआ था, उगलियों में कई अगूठियॉ थीं, गर्दन के नीचे जमीन पर गिरी हुई मोती की एक माला भी मौजूद थी।

वीर०–चाहे इसका सिर मौजूद न हो मगर गहने और कपडे की तरफ ख्याल करके मैं कह सकता हूँ कि यह हमारे महाराज के छोटे लड़के सूरजसिह की लाश है।

एक लौडी०–यह क्या हुआ ? कुँवर साहब यहाँ क्योंकर आये और उन्हें किसने मारा ?

बीर०–कोई गजब हो गया है, अब किसी तरह हम लोगों की जान नहीं बच सकती, जिस समय महाराज को खबर होगी कि कुँअर साहव की लाश वीरसिंह के वाग में पाई गई तो वेशक मैं खूनी ठहराया जाऊँगा। मेरी बेकसूरी किसी तरह सावित नहीं हो सकेगी और दुश्मनों को भी वात बनाने और दु:ख देने का मौका मिल जायेगा। हाय !अब हमारे साथ हमारे रिश्तेदार लाग भी फॉसी दे दिये जायगे। हे ईश्वर !धर्मपथ पर चलने का क्या यही बदला है !!

अपनी-अपनी जान की फिक्र सभी को होती है, चाहे भाई-बन्धु रिश्तेदार हो या नौकर समय पर काम आवे, वही आदमी है, वही रिश्तेदार है और वही भाई है। कुँअर साहब की लाश देख और वीरसिंह को आफत में फॅसा जान धीरे-धीरे लौडियों ने घसकना शुरू किया, कई तो तारा को खोजने का वहाना कर के चली गई कई 'देखे इधर कोई छुपा तो नहीं है, कह कर आड में हो गई और मौका पा अपने घर में जा छिपी, और कई विना कुछ कहे चीख मार कर सामने से हट गई और पिछा देकर भाग गई। अगर किसी दूसरे की लाश होती तो शायद किसी तरह बचने की उम्मीद भी होती मगर यहां तो महाराज के लड़के की लाश थी–न मालूम इसके लिए कितने आदमी मारे जायेंगे, ऐसे मौके पर मालिक का साथ देना वडे जीवट का काम है, हॉ अगर मर्दो की मण्डली होती तो शायद दो एक आदमी रह भी जाते मगर औरतों का इतना वडा कलेजा कहाँ ? अब उस लाश के पास केवल वेचारा बीरसिंह रह गया। वह आधे घण्टे तक उस जगह खड़ा सोचता रहा आखिर उस लाश को उठा कर उस तरफ चला जिधर के दरख्त बहुत ही घने और गुन्जान थे और जिधर लोगों की आमदरफ्त वहुत कम होती थी।

बीरसिह ने उस गुजान और भयानक जगह पर पहुँच कर लाश को एक जगह रख दिया और वहाँ से लौट कर उस तरफ गया जिधर मालियों के रहने के लिए कच्चा मकान फूस की छावनी का बना हुआ था। अब बिजली चमकने और

छोटी-छोटी बूँदें भी पडने लगीं।

बीरसिंह एक माली की झोपडी में पहुँचा, माली को गहरी नींद में पाया, एक तरफ कोने में दो तीन कुदाल और फरसे पडे हुए थे बीरसिंह ने एक कुदाल उठा लिया और फिर उस जगह गया जहाँ लाश छोड आया था। इस समय वर्षा अच्छी तरह हाने लगी थी और चारों तरफ अन्धकारमय हो रहा था, कभी-कभी बिजली चमकती थी तो जमीन दिखाई दे जाती थी, नहीं तो पैर भी आगे रखना मुश्किल था।

बीरसिंह को उस लाश का पता लगाना कठिन हो गया जिसे उस जगह रख गया था। वह चाहता था कि उस लाश के पास पहुँच कर कुदाल से जमीन खोदे और जहाँ तक जल्द हो सके उसे जमीन में गाड दे मगर न हो सका, क्योंकि इस अधेरी रात में हजार ढूढ़ने और सर पटकने पर भी वह लाश न मिली। जब बिजली चमकती, वह उस निशान को अच्छी तरह पहिचानता जिसके पास लाश छोड गया था मगर ताज्जुब की बात थी कि वह लाश उसे दिखाई न पडी।

पानी ज्यादे बरसने के कारण बीरसिंह को बडा कष्ट उठाना पडा एक तो तारा की फिक्र ने उसे बेकाम ही कर दिया था दूसरे कुँअर साहब की लाश न पाने स वह अपनी जिन्दगी से भी नाउम्मीद हो गया था और अपने को तारा का पता लगान लायक नहीं समझता था। बेशक उसे अपने मालिक महाराज और कुँअर साहब की बहुत मुहब्बत थी मगर इस समय वह यही चाहता था कि कुँअर साहब की लाश छिपा दी जाय और असल खूनी का पता लगाने के बाद ही यह भेद सभों पर खोला जाय लेकिन यह न हो सका क्योंकि कुँअर साहब की लाश जब तक वह कुदाल लेकर आवे, इसी बीच में आश्चर्य रूप से गायब हो गई थी।

वीरसिह हैरान और परेशान उस लाश को चारों तरफ खाज रहा था पानी से उसकी पोशाक बिल्कुल तर हा रही थी। यकायक बाग के फाटक की तरफ उसे कुछ रोशनी नजर आई और वह उसी तरफ देखने लगा। वह रोशनी भी उसी तरफ आ रही थी। जब बाग के अन्दर पहुँची तो मालूम हुआ कि दो मशालों की रोशनी में कई आदमी मोमजामे का छाता लगाये और मशालों को भी छाते की आड में लिए बारहदरी की तरफ जा रह है।

मुनासिब समझ कर बीरसिह वहाँ से हटा और उन आदमियों क पहिले ही बारहदरी में जा पहुँचा। बारहदरी के पीछे की तरफ तोशेखाना था। वह उसमें चला गया और गीले कपडे उतार दिये। सूखे कपडे पहिनने की नौबत नहीं आई थी कि रोशनी लिए वे लोग बारहदरी में आ पहुँचे।

वीरसिह केवल सूखी धोती पहिर कर उन लोगों के सामने आया सभी न झुक कर सलाम किया। इन आदमियों में दो महाराज करनसिंह के मुसाहब थे और बाकी के आठ महाराज के खास गुलाम थे। महाराज करनसिंह के यहाँ वीरसिंह की अच्छी इज्जत थी, यही सबब था कि महाराज के मुसाहब लोग भी इनका अदब करते थे। बीरसिंह की इज्जत और मिलनसारी तथा नेकियों का हाल आगे चल कर मालूम होगा।

वीर०—(दोनों मुसाहबों की तरफ देख कर) आप लोगों को इस समय ऐसे आँधी-तूफान में यहाँ आने की जरूरत क्यों पडी ?

एक मुसाहब०—महाराज ने आपको याद किया है।

बीर०—कुछ सबब भी मालूम है ?

मुसाहब०—जी हाँ, कुँअर साहब के दुश्मनों की निस्बत सरकार ने कुछ बुरी खबर सुनी है, इससे बहुत ही बेचैन हो रहे है।

बीर०—(चौक कर) बुरी खबर ? सो क्या ?

मुसाहब०—(ऊँची साँस लेकर) यही की उनकी जिन्दगी शायद नहीं रही।

बीर०—(काँप कर) क्या ऐसी बात है ?

मुसाहब०—जी हाँ।

बीर०—मैं अभी चलता हूँ।

कपडे पहिरने के बाद बीरसिंह तोशेखाने में गया। इस समय यहाँ कोई भी लौंडी मौजूद न थी जो कुछ काम करती। बीरसिंह की परेशानी का हाल लिखना इस किस्से को व्यर्थ बढाना है तौ भी पाठक लोग ऊपर का हाल पढ कर जरूर समझ गये होंगे कि उसके लिए यह समय कैसा कठिन और भयानक था बेचारे को इतनी मोहलत भी न मिली कि अपनी स्त्री तारा का पता तो लगा लेता, जिसे वह अपनी जान से ज्यादे चाहता और मानता था।

बीरसिंह कपडे पहिर कर महाराज के मुसाहबों और आदमियों के साथ रवाना हुआ। इस समय पानी का बरसना बिल्कुल बन्द हो गया था और रात एक पहर से कम रह गई थी। बीरसिंह खास महल की तरफ जा रहा था मगर तरह-तरह के ख्यालों ने उसे अपने आपे से बाहर कर रक्खा था अर्थात् वह अपने विचारों में ऐसा लीन हो रहा था कि तनबदन की सुध न थी, केवल मशाल की रोशनी में महाराज के आदमियों के पीछे चले जाने की खबर थी।

बीरसिंह कभी तो तारा के ख्याल में डूब जाता और सोचने लगता कि वह यकायक कहाँ गायब हो गई या किस आफत में फँस गई ? और कभी उसका ध्यान कुँअर साहब की लाश की तरफ जाता और जो-जो ताज्जुब की बातें हो चुकी थीं उन्हें याद कर और उनके नतीजे के साथ अपने और अपने रिश्तेदारों पर भी आफत आई हुई जान उसका मजबूत कलेजा काँप जाता क्योंकि बदनामी के साथ अपनी जान देना वह बहुत ही बुरा समझता था और लड़ाई में बीरता दिखाने के समय वह अपनी जान की कुछ भी कदर नहीं करता था। इसी के साथ-साथ वह जमाने की चालबाजियों पर भी ध्यान देता था और अपनी लौंडियों की बेमुरौवती याद कर के वह क्रोध के मारे दाँत पिसने लगता था। कभी-कभी वह इस बात को भी सोचता कि आज महाराज ने इतने आदमियों का भेज कर मुझे क्यों बुलवाया ? इस काम के लिए तो एक अदना नौकर काफी था। खैर इस बात का तो यों जवाब देकर अपने दिल को समझा देता कि इस समय महाराज पर आफत आई हुई है, बेटे के गम में उनका मिजाज बदल गया होगा घबराहट के मारे बुलाने के लिए इतने आदमी उन्होंने भेजा होगा।

इन्हीं सब बातों को सोचते हुए महाराज के आदमियों के पीछे-पीछे बीरसिंह जा रहा था जब वह अंगूर की टट्टी के पास पहुँचा जिसका जिक्र कई दफे ऊपर आ चुका है या जिस जगह अपने निर्दयी बाप के हाथ में बेचारी तारा ने अपनी जान सौंप दी थी या जिस जगह कुँअर सूरजसिंह की लाश पाई गई थी तो यकायक मशालची रूके और चौंक कर बोले, "है ! देखिए तो सही यह किसकी लाश है ?"

इस आवाज ने सभी को चौंका दिया। दोनों मुसाहबों के साथ बीरसिंह भी आगे बढा और पटरी पर एक लाश पडी हुई देखकर ताज्जुब करने लगा। चाहे यह लाश बिना सिर के थी तौ भी बीरसिंह के साथ महाराज के आदमियों ने भी पहचान लिया कि कुँअर की लाश है। अब बीरसिंह के ताज्जुब का काई ठिकाना न रहा क्योंकि इसी लाश को उठा कर वह गाडने के लिए एकान्त में ले गया था और जब माली की झोपड़ी में से कुदाल लेकर आया तो वहाँ से गायब पाया था। देर तक ढूढने पर भी जो लाश उसे न मिली, अब यकायक उसी लाश को फिर ठिकाने देखता है जहाँ से उठा कर गाडने के लिए एकान्त में ले गया था।

महाराज के आदमियों ने इस लाश को देख कर रोना और चिल्लाना शुरू किया। खूब ही गुल-शोर मचा। अपनी-अपनी झोपडीयों मे बेखबर सोये हुए माली भी सब जाग पडे और उसी जगह पहुँच कर रोने लगे और चिल्लाने में शरीक हुए।

थोडी देर तक वहाँ हाहाकार मचा रहा, इसके बाद बीरसिंह ने अपनें दोनों हाथों पर लाश को उठा लिया तथा रोता और आँसू गिराता महाराज के तरफ रवाना हुआ।

तीसरा बयान

आसमान पर सुबह की सुफेदी छा चुकी थी, जब लाश को लिए हुए बीरसिंह किले में पहुँचा। वह अपने हाथों पर कुँअर साहब की लाश उठाये हुए था। किले के अन्दर की रिआया तो आराम में थी, केवल थोड़े से बुड्ढे जिन्हें खासी ने तग कर रक्खा था, जाग रहे थे और इस उद्योग में थे कि किसी तरह बलगम निकल जाय और उनकी जान को चैन मिले। हाँ सरकारी आदमियों में कुछ घबराहट सी फैली हुई थी और वे लोग राह में जैसे-जैसे बीरसिंह मिलते जाते उसके साथ होते जाते थे, यहाँ तक कि दीवानखाने की ड्योढी पर पहुँचते-पहुँचते पचास आदमियों की भीड बीरसिंह के साथ हो गई मगर जिस समय उसने दीवानखाने के अन्दर पैर रक्खा, आठ दस आदमियों से ज्यादा न रहे। कुँअर साहब की मौत की खबर यकायक चारों तरफ फैल गई और इसलिए बात की बात में वह किला मातम का रूप हो गया और चारों तरफ हाहाकार मच गया।

दीवानखाने में अभी तक महाराज करनसिह गद्दी पर बैठे हुए थे। दो तीन दीवारगीरों में रोशनी हो रही थी, सामने दो मोमी शमादान जल रहे थे बीरसिंह तेजी के साथ कदम बढाए हुए महाराज के सामने जा पहुँचा और कुँअर साहब की लाश आगे रख कर सर पर दुहत्थड मार कर रोने लगा।

जैसे ही महाराज की निगाह उस लाश पर पडी तो अजब हालत हो गई। नजर पड़ते ही पहिचान गये कि यह लाश

उनक छोटे लडके सूरजसिंह की है। महाराज क रज और गम का कोई ठिकाना न रहा। वे फूट-फूट कर रोने लगे और उनके साथ-साथ और लोग भी हाय-हाय करके रोने और सर पीटने लगे।

हम उस समय के गम की हालत और महल में रानियों की दशा को अच्छी तरह लिख कर लेख को व्यर्थ बढाना नही चाहते केवल इतना लिख देना बहुत हागा कि घण्टे भर तक दिन चढने तक सिवाय रोने धोने के महाराज का ध्यान इस तरफ नहीं गया कि कुँअर साहब की मौत का सबब पूछें या यह मालूम करें कि उनकी लाश कहॉ पाई गई।

आखिर महाराज ने अपने दिल को मजबूत किया और कुँअर साहब की मौत के बारे में बीरसिंह से बातचीत करने लगे।

महा०—हाय मेरे प्यारे लडके का किसन मारा ?

बीर०—महाराज अभी तक यह नहीं मालूम हुआ कि यह अनर्थ किसने किया।

महाराज न उन दोनों मुसाहबों में स एक की तरफ दखा जो बीरसिह का लेने क लिए खिदमतगारों के साथ बाग में गये थे।

महा०—क्यों हरीसिंह तुम्हें कुछ मालूम है ?

हरी०—जी कुछ भी नहीं हॉ इतना जानता हूँ कि जब हुक्म के मुताबिक हम लोग बीरसिंह को बुलाने गय तो इन्हें घर पर न पाया लाचार पानी बरसते ही मैं इनके बाग में पहुचे और इन्हें वहॉ पाया। उस समय ये नगे बदन हम लोगों के सामने आये। इनका बदन गीला था इससे मुझ मालूम हो गया कि य कहीं पानी में भीग रहे थे और कपडे बदलने का ही थे कि हम लाग जा पहुच। खैर हम लोगों ने सर्कारी हुक्म सुनाया और य भी जल्द कपडे पहिन हम लोगों के साथ हुए। उस समय पानी बरसना बिल्कुल बन्द था। जब हम लोग बाग के बीचो-बीच अगूर की टट्टियों क पास पहुँचे तो यकायक इस लाश पर नजर पडी !!

महा—(कुछ साच कर) हम कह ता नहीं सकत क्योंकि चारों तरफ लागों में बीरसिह नेक, ईमानदार और रहमदिल मशहूर है, मगर जैसा कि तुम बयान करत हा, अगर ठीक है तो हमें बीरसिह के ऊपर शक हाता है।

हरी०—ताबेदार की क्या मजाल कि महाराज के सामने झूठ बोले ! बीरसिंह मौजूद है पूछ लिया जाय कि मैं कहॉ तक सच्चा हूँ।

बीर०—(हाथ जोड कर) हरीसिह ने जो कहा वह बिल्कुल सच है—मगर महाराज यह कब हो सकता है कि अपने अन्नदाता और ईश्वर-तुल्य मालिक पर इतना बडा जुल्म करूँ !

महा०—शायद ऐसा ही हा मगर यह ता कहा कि मैने तुमको ता मुहिम पर जाने के लिए हुक्म दिया था और ताकिद कर दी थी कि आधी रात बीतन के पहिले ही यहॉ से रवाना हो जाना फिर क्या सबब है कि तीन पहर रात बीत जाने पर भी तुम अपने बाग ही में मौजूद रहे और तिस पर भी वैसी हालत में जैसा कि हरीसिंह ने बयान किया ? इसमें कोई भद जरूर है।

बीर०—इसका सबब केवल इतना ही है कि बेचारी तारा के ऊपर एक आफत आ गई और वह किसी दुश्मन के हाथ में पड गई जब तक मैं ढूँढता रहा, पानी बरसता रहा, इसी से मेरे कपडे भी गील हो गए और मैं उस हालत में पाया गया। जैसा कि हरीसिह न बयान किया है।

महा०—ये सब बाते बिल्कुल फजूल हैं, अगर तारा का गायब हो जाना ठीक है तो कोई ताज्जुब की बात नहीं क्योंकि वह बदकार औरत है बेशक किसी के साथ कहीं चली गई होगी, उसका ऐसा करना तुम्हार लिए एक बहाना हाथ लगा।

"तारा बदकार औरत है" यह बात बीरसिंह का गोली के समान लगी क्योंकि वे खूब जानते थे कि तारा पतिव्रता है और उन पर उसका प्रेम सच्चा है। मारे क्रोध के बीरसिंह की ऑखें लाल हो गई और बदन कॉपने लगा मगर इस समय क्रोध करना सभ्यता के बाहर जान चुप हो रह और अपने को सँभाल कर बोले —

बीर०—महाराज तारा क विषय में एसा कहना अनर्थ है !

हरी०—महाराज ने जो कुछ कहा ठीक है ! (महाराज की तरफ दख कर) बीरसिह पर शक करने का ताबेदार को और भी मौका मिला है।

महा०—वह क्या ?

हरी०—कुँअर साहब जिन तीन आदमियों के साथ यहॉ स गय थे उनमें से दो आदमियों को बीरसिह ने जान से मार डाला और सिर्फ एक भाग कर बच गया। जब हम लाग बीरसिंह को बुलाने के लिए उनके घर की तरफ जा रहे थे उस

समय यह हाल उसी की जुबानी मालूम हुआ था। इस समय वह आदमी जिसका नाम रामदास है, ड्योढी पर मौजूद है।

महा०—हॉ !क्या ऐसी बात है ?

हरी०—मै महाराज के कदमों की कसम खाकर कहता हूँ कि यह हाल खुद रामदास ने मुझसे कहा।

जिस समय हरीसिह ये बातें कर रहा था महाराज कि निगाह कुँअर साहब की लाश पर थी। यकायक कलेजें में कोई चीज नजर आई महाराजा ने हाथ बढाकर देखा तो मालूम हुआ छुरी का मुट्ठा है जिसका फल बिलकुल कलेजे के अन्दर घुसा हुआ था। महाराज न छुरी को निकाल लिया और पोंछ कर देखा। कब्जे पर राजकुमार वीरसिह खुदा हुआ था।

अब महाराज की हालत बिल्कुल बदल गई शोक के बदले क्रोध की निशानी उनके चेहरे पर दिखाई देने लगी और होंठ कॉपने लगे। वीरसिंह ने चौंककर कहा "बेशक यह मेरी छुरी है आज कई दिन हो गये चोरी गई थी मैं इसकी खोज में था मगर पता नहीं लगता था।

महा०—बस चुप रह नालायक !अब तू किसी तरह अपनी बेकसूरी साबित नहीं कर सकता !!हाय, क्या इसी दिन के लिए मैंने तुझे पाला था ? अब मै इस समय तेरी बातें नहीं सुनना चाहता !(दर्वाजे की तरफ देखकर) कोई है ? इस हरामजादे को अभी ले जाकर कैदखाने में बन्द करो हम अपने हाथ से इसका और इसके रिश्तेदारों का सिर काटकर कलजा ठडा करेंग !(हरीसिह की तरफ देखकर) तुम सौ सिपाहियों को लकर जाओ इस कम्बख्त का घर घेर लो और औरत-मर्दो को गिरफ्तार करके कैदखाने मे डाल दो।

फौरन महाराज के हुक्म की तामील की गई और महाराज उठकर महल में चले गये।

चौथा बयान

ऊपर लिखी वारदात के तीसरे दिन आधी रात के समय वीरसिंह के बाग में उसी अगूर के टट्टी के पास एक लॉबे कद का आदमी स्याह कपडे पहिरे इधर से उधर टहल रहा था। आज बाग में रौनक नहीं बारहदरी में लौडियों और सखियों की चहल-पहल नहीं सजावट की तो जाने दीजिय कहीं एक चिराग तक नहीं जलता। मालियों की झोपडी में भी अँधेरा पडा है। वह लॉबे कद का आदमी अगूर की टट्टियों से लेकर बारहदरी और उसके पीछे तोशेखाने तक जाता है और लौट आता है मगर अपने को हर तरह छिपाये हुए है जरा सा भी खटका होने से या एक पत्ते के भी खडकन से वह चौकन्ना हो जाता है और अपने को किसी पेड या झाडी की आड में छिपाकर देखने लगता है।

इस आदमी को टहलते हुए दो घण्टे बीत गये मगर कुछ मालूम न हुआ कि किस नियत से चक्कर लगा रहा है या किस धुन में पड़ा हुआ है। थोडी देर और बीत जाने पर बाग में एक आदमी के आने की आहट मालूम हुई। लाबे कद वाला आदमी एक पेड की आड में छिपकर देखने लगा कि यह कौन है और किस काम के लिए आया है। वह आदमी जो अभी आया है, सीधे बारहदरी में चला गया। कुछ देर वहाँ ठहर कर पीछे वाले तोशेखाने में गया और ताला खोलकर तोशेखाने में अदर घुस गया। थोडी ही देर बाद एक छोटा सा डिब्बा हाथ में लिए हुए निकला और ताला बन्द करके बाग के बाहर की तरफ चला। वह थोडी ही दूर गया था कि उस लॉबे कद के आदमी ने जो पहिले ही से घात में लगा हुआ था, पास पहुँच कर पीछे से उसके दोनों बाजू मजबूत पकड लिये और इस जोर से झटका दिया कि वह सम्हल न सका और जमीन पर गिर पडा। लॉबे कद का आदमी उसकी छाती पर चढ बैठा और बोला सच बता तू कौन है तेरा नाम क्या है यहॉ क्यों आया और क्या लिय जाता है ?

यकायक जमीन पर गिर पडने और अपने को बेबस पाने से वह आदमी बदहवास हो गया और सवाल का जवाब न दे सका। उस लॉबे कद के आदमी ने एक घूसा उसके मुंह पर जमाकर फिर कहा "जो कुछ मैने पूछा है उसका जवाब जल्द दे नहीं अभी गला दबाकर तुझे मार डालूँगा ! आखिर लाचार हो और अपनी मौत को छाती पर सवार जानकर उसने जवाब दिया —

"मै वीरसिह का नौकर हूँ, मेरा नाम श्यामलाल है मुझे मालिक ने अपनी मोहर लाने के लिये यहॉ भेजा था सो लिए जाता हूँ। मैने कोई कसूर नहीं किया, मालूम नहीं आप मुझे क्यों !

इससे ज्यादा वह कहने नही पाया था कि लॉबे कद के आदमी ने एक घूँसा और उसके मुँह पर जमाकर कहा "हरामजादे के बच्चे अभी कहता है कि मैंने कोई कसूर नहीं किया !मुझी से झूठ बोलता है ? जानता नहीं की मैं कौन हूँ ?

ठीक है तू क्योंकर जान सकता है कि मैं कौन हूँ ? अगर जानता तो मुझसे झूठ कभी न बोलता। मैं बोली ही से तुझे पहचान गया कि तू बीरसिंह का आदमी नहीं बल्कि उस बेईमान राजा करनसिह का नौकर है जो एक भारी जुल्म और अधर करने पर उतारू हुआ है। तेरा नाम बच्चनसिह है। मैं तुझे अभी इस झूठ बोलने की सजा देता और जान से मार डालता मगर नहीं तेरी जुबानी उस बेईमान राजा को एक सदेसा कहला भेजना है,इसलिए छोड देता हूँ। सुन और ध्यान देकर सुन मेरा नाम नाहरसिह है मेरे ही डर से तेरे राजा की जान सूखी जाती है मेरे ही नाम से यह हरिपुर शहर कॉप रहा है और मुझी को गिरफ्तार करने क लिए तेरे बेईमान राजा ने बीरसिह को हुक्म दिया था लेकिन वह जाने भी न पाया था कि वेचारे को झूठा इलजाम लगाकर गिरफ्तार कर लिया !(मोहर का डिब्बा वच्चनसिह के हाथ से छीनकर) राजा से कह दिजियो कि मोहर का डिब्बा नाहरसिह न छीन लिया तू नाहरसिह को गिरफ्तार करने के लिए वृथा ही फौज भेज रहा है न मालूम तेरी फौज कहाँ जायेगी और किस जगह उसे ढूँढगी वह तो हरदम इसी शहर में रहता है देख सम्हल बेठ अब तेरी मौत आ पहुची, यह न समझियो कि 'कटोरा भर खून का हाल नाहरसिह को मालूम नहीं है !!

वच्चन०—कटोरा भर खून कैसा ?

नाहर०—(एक मुक्का जमाकर) एसा !तुझे पूछन से मतलब !!जो मैं कहता हूँ जाकर कह दे और यह भी कह दीजियो कि अगर वन पडा और फुरसत मिली तो आज के आठवें दिन सनीचर को तुझसे मिलूँगा। बस जा—हॉ एक बात और याद आई, कह दीजियो कि जरा कुँअर साहब को अच्छी तरह बन्द करके रक्खें जिसमें भण्डा न फूटे !!

नाहरसिंह डाकू ने बच्चन को छोड दिया और मोहर का डिब्बा लेकर न मालूम कहाँ चला गया। नाहरसिंह के नाम से वच्चन यहाँ तक डर गया था कि उसके चले जाने के बाद भी घण्टे भर तक वह अपने होश में न आया। बच्चन क्या इस हरिपुर में कोई भी ऐसा नहीं था जो नाहरसिंह डाकू का नाम सुनकर कॉप न जाता हो।

थोडी देर बाद जब बच्चनसिह के होश हवाश दुरूस्त हुए वहाँ से उठा और राजमहल की तरफ रवाना हुआ। राजमहल यहॉ से बहुत दूर था तो भी आध कोस से कम भी न होगा। दो घण्टे से भी कम रात बाकी होगी जब बच्चनसिह राजमहल की कई ड्योढियॉ लॉघता हुआ दीवानखाने में पहुँचा और महाराज करनसिंह के सामने जाकर हाथ जोड खडा हो गया।इस सजे हुए दीवानखाने में मामूली रोशनी हो रही थी महाराज किमखाब की ऊँची गद्दी पर जिसके चारों तरफ मोतियों की झालर लगी हुई थी विराज रहे थे दो मुसाहब उनके दोनों तरफ बैठे थे सामने कलम दावात कागज और कई बन्द कागज के लिखे हुए और सादे भी मौजूद थे।

इस जगह पर पाठक कहेंग कि महाराज का लडका मारा गया है,इस समय वह सूतक में होंगे, महाराज पर कोई निशानी गम की क्यों नहीं दिखाई पडती ?

इसके जवाव में इतना जरूर कह देना मुनासिव है कि पहिले जो गद्दी का मालिक होता था प्राय वह मुर्दे को आग नहीं देता था और न स्वय क्रिया-कर्म करने वालों की तरह सिर मुडा अलग बैठता था अब भी कई रजवाडों में ऐसा दस्तूर चला आ रहा है इसके अतिरिक्त यहॉ तो कुँअर साहब के मरने का मामला विचित्र था। जिसका हाल आगे चलकर मालूम होगा।

बच्चन ने झुककर सलाम किया और हाथ जोड सामन खडा हो गया। नाहरसिह डाकू के ध्यान से डर के मारे अभी तक कॉप रहा था।

महा०—मोहर लाया ?

वच्चन०—जी लाया तो था मगर राह में नाहरसिंह डाकू ने छीन लिया।

महा०—(चौककर) नाहरसिंह डाकू ने !!

वच्चन०—जी हॉ।

महा०—क्या आज वह इसी शहर में आया है ?

वच्चन०—जी हॉ बीरसिंह के बाग में मुझे मिला था।

महा०—साफ साफ कह जा क्या हुआ ?

वच्चन ने वीरसिह के तोशेखाने से मोहर लेकर चलने का और उसी बाग में नाहरसिह के मिलने का हाल पूरा-पूरा कहा। जब वह सदेशा कहा जो डाकू ने महाराज को दिया था तो थोडी देर के लिए महाराज चुप हो गए और सोचने लगे आखिर एक ऊँची सॉस लेकर बाले—

महा०—यह शैतान डाकू न मालूम क्यों मेरे पीछे पड़ा है और किसी तरह गिरफ्तार भी नहीं होता। मुझे बीरसिंह की

तरफ से छुट्टी मिल जाती तो कोई न कोई तर्कीव उसके गिरफ्तार करने की जरूर करता। कुछ समझ में नही आता कि मेरी उन कार्रवाइयों का पता उसे क्योंकर लग जाता है जिन्हें मै बडी होशियारी से छिपा कर करता हूँ (हरिसिंह की तरफ देख-कर) क्यों हरिसिंह तुम इस बारे में कुछ कह सकते हो ?

हरि०—महाराज उसकी बातों में अक्ल कुछ भी काम नहीं करती ! मै क्या कहूँ ?

महा०—अफसोस ! मगर मेरी रिआया बीरसिंह से मुहब्बत न रखती तो मै उसे एक दम मार कर ही बखेड़ा तै कर देता मगर जब तक बीरसिंह जीता है, मै किसी तरह निश्चिन्त नहीं हो सकता। खैर अब तो बीरसिंह पर एक भारी इलजाम लग चुका है, परसों मै आम दर्बार करूगा। रिआया के सामने बीरसिंह को दोषी ठहरा कर फॉसी दूगा फिर उस डाकू से समझ लूगा, आखिर वह हरामजादा है क्या चीज !!

महाराज ने आखिरी शब्द कहा ही था कि दर्वाजे की तरफ से यह आवाज आई 'बेशक वह डाकू कोई चीज नहीं है मगर एक भूत है जो हरदम तेरे साथ रहता है और तेरा सब हाल जानता है देख इस समय यहा भी आ पहुचा !!

यह आवाज सुनते ही महाराज कॉप उठे, मगर उनकी हिम्मत और दिलावरी ने उन्हें उस हालत में देर तक रहने न दिया म्यान से तलवार खैंच कर दर्वाजे की तरफ बढे दोनों मुलाजिम लाचार साथ हुए मगर दर्वाज में बिल्कुल अधेरा था। इसलिए आगे बढने की हिम्मत न हुई आखिर यह कहते हुए पीछ हट गये कि 'नालायक ने अन्धेरा कर दिया !!

पाँचवॉ बयान

बेचारे बीरसिह कैदखाने में पड़े सड रहे है। रात की बात ही निराली है, इस भयानक कैदखाने में दिन को भी अधेरा ही रहता है, यह कैदखाना एक तहखाना के तौर पर बना है जिसके चारों तरफ की दीवारें पक्की और मजबूत है। किले से एक मील की दूरी पर जो कैदखाना था और जिसमें दोषी कैद किये जाते थे उसी के बीचोबीच में यह तहखाना था। जिसमें बीरसिह कैद थे। लोगों में इसका नाम 'आफत का घर मशहूर था। इसमें वे ही कैदी कैद किये जाते थे जो फॉसी देने के योग्य समझे जाते या बहुत ही कष्ट देकर मारे जाते थे।

इस कैदखाने के दर्वाजे पर पचास सिपाहियों का पहरा पडा करता था। नीचे उतर कर तहखाने में जाने के लिए पॉच मजबूत दर्वाजे थे और हर दर्वाजे में मजबूत ताला लगा रहता था। इस तहखाने में न मालूम कितने कैदी सिसक-सिसक कर मर चुके थे आज बेचारे बीरसिंह को भी हम इसी भयानक तहखाने में देखते है। इस समय उनकी अवस्था बहुत ही नाजुक हो रही है। अपनी बेकसूरी के साथ ही साथ बेचारी तारा की जुदाई का गम और उसके न मिलने की नाउम्मीदी इन्हें मौत का पैगाम दे रही है इसके अतिरिक्त न मालूम और कैसे-कैसे खयालात इनके दिल में काटे की तरह खटक रहे है। तहखाना बिल्कुल अधकारमय है, हाथ को हाथ नहीं सूझता और यह भी नहीं मालूम होता कि दर्वाजा किस तरफ है और दिवार कहॉ है ? इस जगह कैद हुए इन्हें आज चौथा दिन है। इस बीच में केवल थोडा सा सूखा चना खाने के लिए और गरम जल पीने के लिए मिला था मगर बीरसिंह ने उसे छुआ तक नहीं और एक लम्बी सॉस लेकर लौटा दिया था। इस समय गरमी के मारे दु खित हो तरह-तरह की बातें सोचते हुए बेचारे बीरसिंह जमीन पर पड़े ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं। यह भी नहीं मालूम कि इस समय दिन है या रात।

यकायक दिवार की तरफ कुछ खटके की आवाज हुई, यह चैतन्य होकर उठ बैठे और सोचने लगे कि शायद कोई सिपाही हमारे लिए अन्न-जल लेकर आता है—मगर नहीं, थोडी ही देर में कई दफे आवाज आने से इन्हें गुमान हुआ कि शायद कोई आदमी इस तहखाने की दिवार तोड रहा है या सेंध लगा रहा है। आखिर उनका सोचना सही निकला और थोडी ही देर बाद दिवार के दूसरी तरफ रोशनी नजर आई। साफ मालूम हुआ कि बगल वाली दीवार तोड कर किसी ने दो हाथ के पेटे का रास्ता बना लिया है।

अभी तक उन्हें इस बात का गुमान भी न था कि उनसे मिलने कोई आदमी इस तरह दिवार तोड कर आवेगा। उस सेंध के रास्ते हाथ की रोशनी लिए एक लम्बे कद का आदमी स्याह पौशाक पहिरे मुँह पर नकाब डाले उनके सामने आ खडा हुआ और बोला –

आदमी०—मै तुम्हें छुडाने के लिए आया हूँ, उठो और मेरे साथ यहॉ से निकल चलो।

बीर०—इसके पहिले कि तुम मुझे यहॉ से छुडाओ, मै जानना चाहता हू कि तुम्हारा नाम क्या है और मुझ पर मेहरबानी करने का क्या सबब है ?

आदमी०—इस समय यहॉ पर इनके पूछने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि समय बहुत कम है। यहॉ से निकल चलने

पर मै अपना पता तुम्हें दूँगा इस समय इतना ही कह देता हूँ कि तुम्हें बेकसूर समझ कर छुडान क लिए आया हूं।
वीर–सब आदमी जानते हैं कि मुझ पर कुँअर साहब का खून साबित हो चुका हे तुम मुझ बकसूर क्यो समझत हा ?

आदमी०–मै खूब जानता हूँ कि तुम बेकसूर हा ?

वीर०–खैर अगर एसा भी हो ता यहॉ से छूट कर भी मै महाराज क हाथ से अपन का क्योंकर बचा सकता हूं ?

आदमी०–मै इसक लिए भी बन्दोबस्त कर चुका हूँ।

वीर०–अगर तुमन मेर लिए इतनी तकलीफ उठाई ता क्या मेहरबानी करके इसका बन्दोवस्त भी कर सकोगे कि निर्दोषी बन कर लोगों का अपना मुँह दिखाऊँ और कुँअर साहब का खूनी गिरफ्तार हा जाय ? क्योंकि यहां स निकल भागने पर लागों को मुझ पर और भी सन्देह होगा बल्कि विश्वास हा जाएगा कि जरूर मैंने ही कुअर साहब का मारा है।

आदमी०–तुम हर तरह स निश्चिन्त रहो इन बातों का मै अच्छी तरह सोच चुका हूँ बल्कि मै कह सकता हूँ कि तुम तारा के लिए भी किसी तरह की चिन्ता मत करो।

वीर०–(चौंक कर) क्या तुम मरे लिए ईश्वर हाकर आये हो ! इस समय तुम्हारी बातें मुझ हद्द स ज्यादा खुश कर रही हैं !

आदमी०–बस इसस ज्यादा मै कुछ नहीं कहा चाहता और हुक्म दता हूँ कि तुम उठो और मेरे पीछ आओ।

वीरसिंह उठा और उस आदमी क साथ-साथ सुरग की राह तहखाने के बाहर हा गया। अब मालूम हुआ कि कैदखान की दीवारों के नीचे-नीचे से यह सुरग खोदी गई थी।

बाहर आन के बाद बीरसिंह न सुरग के मुहाने पर चार आदमी और मुस्तैद पाय जा उस लम्बे आदमी के साथी थे। ये छ आदमी वहॉ से रवाना हुए और ठीक घण्टे भर चलन क बाद एक छोटी नदी क किनारे पहुँचे। वहॉ एक छोटी सी डोंगी मौजूद थी जिस पर आठ आदमी हल्की-हल्की डॉड लिए मुस्तैद थे। अपन साथी के कहे मुताबिक बीरसिंह उस किश्ती पर सवार हुए और किश्ती बहाव की तरफ छोड दी गई। अब बीरसिंह को मौका मिला कि अपने साथियों की ओर ध्यान दे ओर उनकी आकृति को देखे। लॉबे कद के आदमी ने अपन चहर से नकाब हटाई और कहा बीरसिंह ! दखो और मेरी सूरत हमेशा के लिए पहिचान ला !!

बीरसिंह ने उसकी सूरत पर ध्यान दिया। रात बहुत थाडी बाकी थी तथा चन्द्रमा भी निकल आया था इसलिए बीरसिह को उसका पहिचानने और उसक अगों पर ध्यान दने का पूरा-पूरा मौका मिला।

उस आदमी की उम्र लगभग पैंतीस वर्ष की होगी। उसका रग गोरा बदन साफ, सुडौल और गठीला था चेहरा कुछ लम्बा सिर क बाल बहुत छोटे और घुँघराल थे। ललाट चौडा भौह काली और बारीक थीं ऑखें बडी-बडी और नाक लॉबी मुँछ के बाल नर्म मगर ऊपर की तरफ चढ हुए थे। उसके दॉतों की पक्ति दुरुस्त थी उसके दानों होंठ नर्म मगर नीच का कुछ मोटा था। उसकी गर्दन सुराहीदार और छाती चौडी थी। बॉह लम्बी और कलाइ मजबूत थी तथा बाजू और पिण्डलियों की तरफ ध्यान दने से बदन कसरती मालूम होता था। हर बातों पर गौर करके हम कह सकते हैं कि वह एक खूबसूरत और बहादुर आदमी था। बीरसिंह को उसकी सूरत दिल में भाई शायद हम सबब से कि वह बहुत ही खूबसूरत और बहादुर था। बल्कि अवस्था के अनुसार कह सकते हैं कि बीरसिंह की बनिस्बत उसकी खूबसूरती बढी-चढी थी मगर देखा चाहिए नाम सुनन पर भी बीरसिह की मुहब्बत उस पर उतनी ही रहती है या कुछ कम हो जाती है।

बीर०–आपकी नेकी और अहसान की तारीफ मै कहाँ तक करूँ ! आपने मर साथ वह बर्ताव किया हे जो प्रेमी भाई, भाई क साथ करता है आशा है कि अब आप अपना नाम भी कह कर कृतार्थ करेंगे।

आदमी०–(चेहरे पर नकाब डाल कर) मेरा नाम नाहरसिंह है।

बीर०–(चौक कर)नाहरसिंह !जो डाकू के नाम से मशहूर है !!

नाहर०–हॉ।

बीर०–(उसके साथियों की तरफ देख कर और उन्हें मजबूत और ताकतवर समझ कर) मगर आपके चेहर पर कोई भी निशानी ऐसी नही पाई जाती जा आपको डाकू जालिम होना साबित करे। मै समझता हूँ कि शायद नाहरसिंह डाकू कोई दूसरा ही आदमी होगा।

नाहर०–नहीं नहीं वह मै ही हूँ मगर सिवाय महाराज के और किसी के लिए मै बुरा नहीं। महाराज ने ता मरी

गिरफ्तारी का हुक्म दिया था न ?

बीर०—ठीक है मगर इस समय तो मै ही आपके आधीन हूँ।

नाहर०—ऐसा न समझो अगर तुम मुझे गिरफ्तार करने के लिए कहीं जाते और मेरा सामना हो जाता तो भी मै तुमसे आज ही की तरह मिल वैठता। बीरसिह तुम यह नहीं जानते कि यह राजा कितना बडा शैतान और बदमाश है, वेशक तुम कहोगे कि उसने तुम्हारी परवरिश की और तुम्हें बेटे की तरह मान कर ऊँचा मर्तबा दे रक्खा है मगर नहीं, उसने अपनी खुशी से तुम्हारे साथ ऐसा बर्ताव नहीं किया बल्कि मजबूर होकर किया। मै सच कहता हूँ कि वह तुम्हारा जानी दुश्मन है। इस समय शायद तुम मेरी बात न मानोगे मगर मै विश्वास करता हूँ कि थोडी ही देर में तुम खुद कहोगे कि जो मै कहता था, सब ठीक है।

बीर०—(कुछ सोच कर) इसमें कोई शक नहीं कि राजाओं में जो-जो वातें होनी चाहिए वे उनमें नहीं है मगर इस बात का कोई सबूत अभी तक नहीं मिला कि उसने मेरे साथ जो कुछ नेकी की लाचार होकर की।

नाहर०—अफसोस कि तुम उसकी चालाकी को अभी तक नहीं समझे। यद्यपि कुँअर साहब की लाश की बात अभी बिल्कुल ही नई है !

वीर०—कुँअर साहब की लाश से क्या तात्पर्य है ? मै नहीं समझा।

नाहर०—खैर यह भी मालूम हो जायेगा पर अब मै तुमसे पूछना चाहता हूँ कि तुम मुझ पर सच्चे दिल से विश्वास कर सकते हो या नहीं ? देखो झूठ मत बोलना जो कुछ कहना हो साफ-साफ कह दो !!

बीर०—बेशक आज की कार्रवाई ने मुझे आपका गुलाम बना दिया है मगर आपको अपना सच्चा दोस्त या भाई उसी समय समझूगा जब कोई ऐसी बात दिखला देंगे जिससे साबित हो जाय कि महाराज मुझसे खुटाई रखते है।

नाहर०—बेशक तुम्हारा यह कहना बहुत ठीक है और जहॉ तक हो सकेगा मै आज ही साबित कर दूँगा कि महाराज तुम्हारे दुश्मन हैं और स्वय तुम्हारे ससुर सुजनसिह के हाथ से तुम्हें तबाह किया चाहते है।

वीर०—यह बात आपने और भी ताज्जुब की कही !

नाहर०—इसका सबूत तो तुमको तारा ही से मिल जायेगा। ईश्वर करे वह अपने बाप के हाथ से जीती बच गई हो !

वीर०—(चौंक कर) अपने बाप के हाथ से !!

नाहर०—हॉ सिवाय सुजनसिह के ऐसा कोई नहीं है जो तारा की जान ले तुम नहीं जानते कि तीन आदमियों की जान का भूखा राजा करनसिह कैसी चालबाजियों से काम निकाला चाहता है।

वीर०—(कुछ सोच कर) आपको इन बातों की खबर क्योंकर लगी ? मैंने तो सुना था कि आप का डेरा नेपाल की तराई में है और इसी से आपकी गिरफ्तारी के लिए मुझे वहीं जाने का हुक्म हुआ था ?

नाहर०—हॉ खबर तो ऐसी ही है कि मै नेपाल की तराई में रहता हूँ मगर नहीं मेरा ठिकाना कहीं नहीं है और न कोई मुझे गिरफ्तार ही कर सकता है। खैर यह बताओ तुम कुछ अपना हाल भी जानते हो कि तुम कौन हो ?

बीर०—महाराज की जुबानी मैंने सुना था कि मेरा बाप महाराज का दोस्त था और जगल में डाकुओं के हाथ मारा गया महाराज ने, दया करके मेरी परवरिश की और मुझे अपने लडके के समान रक्खा।

नाहर०—झूठ !बिल्कुल झूठ !(किनारे की तरफ देख कर) अब वह जगह बहुत ही पास है जहॉ हम लोग उतरेंगे।

नाहरसिंह और बीरसिह में बातचीत होती जाती थी और नाव तीर की तरह बहाव की तरफ जा रही थी क्योंकि खेने वाले बहुत ही मजबूत और मुस्तैद थे। यकायक नाहरसिह ने नाव रोक कर किनारे की तरफ ले चलने का हुक्म दिया। माझियों ने वैसा ही किया। किश्ती किनारे लगी और दोनों आदमी जमीन पर उतरे। नाहरसिह ने एक माझी की कमर से तलवार लेकर बीरसिह के हाथ में दी और कहा कि इसे तुम अपने पास रक्खो शायद जरूरत पडे। उसी समय नाहरसिह की निगाह एक बहते हुए घडे पर पडी जो बहाव की तरफ जा रहा था। वह एक टक उसी की तरफ देखने लगा। घड़ा बहते-बहते रुका और किनारे की तरफ आता हुआ मालूम पडा। नाहरसिंह ने बीरसिह की तरफ देखकर कहा—"इस घडे के नीचे कोई बला नजर आती है !"

बीर०—बेशक, मेरा ध्यान भी उसी तरफ है क्या आप उसे गिरफ्तार करेंगे ?

नाहर०—अवश्य !

बीर०—कहिये तो मै किश्ती पर सवार होकर जाऊँ और उसे गिरफ्तार करूँ ?

नाहर०—नहीं नहीं, वह किश्ती को अपनी तरफ आते देखकर निकल भागेगा देखो मै जाता हूँ।

इतना कह कर नाहरसिह ने कपडे उतार दिये केवल उस लगोटे को पहरे रहा जो पहिले से उसकी कमर में था।

एक छुरा कमर में लगाया और माझियों को कुछ इशारा कर जल में कूद पडा। दूसर गाते में उस घडे के पास पहुँचा साथ ही मालूम हुआ कि जल में दो आदमी हाथाबाही कर रहे हैं। माझियों ने तजी के साथ किश्ती उस जगह पहुँचाई और बात की बात में उस आदमी को गिरफ्तार कर लिया जो सर पर घडा औंध अपने को छिपाय हुए जल में बहा जा रहा था।

सब लोग उस आदमी का किनार लाये जहाँ नाहरसिह ने अच्छी तरह पहिचान कर कहा, अख्आह, कौन ? रामदास !भला वे हरामजादे खूब छिपा छिपा फिरता था !अब समझ ले कि तेरी मौत आ गई और तू नाहरसिंह डाकू क हाथ स किसी तरह बच नहीं सकता !!

नाहरसिह का नाम सुनते ही रामदास के तो होश उड गए मगर नाहरसिह न उसे बात करने की फुरसत न दी और तुरत तलाशी लेना शुरू किया। मोमजामें में लिपटी हुई एक चिठी और खजर उसकी कमर से निकला जिसे ले लेने के बाद हाथ पैर बाँध नाव पर माझियों को हुक्म दिया ' इसे नाहरगढ में ले जाकर कैद करो, हम परसों आवेगें तब जो मुनासिब होगा किया जायेगा। माझियों ने वैसा ही किया और अब किनारे पर सिर्फ ये ही दोनों आदमी रह गए।

छठवां बयान

किनारे पर जब केवल नाहरसिह और बीरसिह रह गए तब नाहरसिह न वह चिठी पढी जा रामदास की कमर से निकाली थी। उसमें यह लिखा हुआ था –

'मेर प्यारे दोस्त,

अपने लडक के मारने का इलजाम लगाकर मैंने बीरसिह को कैद खाने भेज दिया। अब एक ही दो दिन में उसे फॉसी देकर आराम की नींद साऊँगा। ऐसी अवस्था में मुझ रिआया भी बदनाम न करगी। बहुत दिनों के बाद यह मौका मर हाथ लगा है अभी तक मुझ मालूम नहीं हुआ कि रिआया बीरसिह की तरफदारी क्यों करती हे और मुझस राज्य छीन कर बीरसिंह को क्यों दिया चाहती है ? जो हो अब रिआया को भी कुछ कहने का मौका न मिलेगा। हॉ एक नाहरसिह डाकू का खटका मुझे बना रह गया उसके सबब से मैं बहुत तग हूँ। जिस तरह तुमने कृपा करके बीरसिंह से मेरी जान छुडाई आशा है कि उसी तरह नाहरसिह की गिरफ्तारी की तर्कीब बताओगे।

तुम्हारा सच्चा दोस्त–

करनसिह।

इस चिठी के पढने स बीरसिंह का बडा ही ताज्जुब हुआ और उसने नाहरसिंह की तरफ देख कर कहा –

बीर०–अब मुझ निश्चय हो गया है कि करनसिह बडा ही बेईमान और हरामजादा आदमी है। अभी तक मैं उसे अपने पिता की जगह समझता था और उसकी मुहब्बत को दिल में जगह दिय रहा। आज तक मैंने उसकी कभी कोई बुराई नहीं की फिर भी न मालूम क्यों वह मुझस दुश्मनी करता है। आज तक मैं उसे अपना हितू समझे हुए था मगर.

नाहर०–तुम्हारा कोई कसूर नहीं तुम नहीं जानते कि तुम कौन हो और करनसिह कौन है !जिस समय तुम यह सुनागे कि तुम्हारे पिता को करनसिंह ने मरवा डाला तो और भी ताज्जुब कराग और कहोगे कि वह हरामजादा ता कुत्तों से नुचवाने लायक है।

बीर०–मेरे बाप का करनसिह न मरवा डाला !!

नाहर०–हाँ।

बीर०–वह क्योंकर और किस लिय ?

नाहर०–यह किस्सा बहुत बडा है इस समय मैं कह नहीं सकता दखो सवेरा हो गया और पूरब तरफ सूर्य की लालिमा निकली आती है। इस समय हम लागों का यहाँ ठहरना मुनासिब नहीं है। मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम मुझे अपना सच्चा दास्त या भाई समझाग और मेरे घर चल कर दा तीन दिन आराम करोग। इस बीच में जितने छिपे हुए भेद हैं सब तुम्हें मालूम हा जायेंगे।

बीर०–बशक अब मैं आपका भरोसा रखता हूँ क्योंकि आप ने मेरी जान बचाई और बेईमान राजा की बदमाशी से मुझे सचत किया।अफसोस इतना ही है कि तारा का हाल मुझे कुछ भी मालूम न हुआ।

नाहर०– मैं वादा करता हूँ कि तुम्हें बहुत जल्द तारा स मिलाऊँगा और तुम्हारी उस बहिन से भी तुम्हें मिलाऊँगा जिसके बदन में सिवाय हड्डी क और कुछ नहीं बच गया है।

वीर०–(ताज्जुब से) क्या मेरी कोई वहन भी है ?

नाहर०–हॉ है मगर अव ज्यादा वातचीत करने का मौका नहीं है। उठो और मेरे साथ चलो, देखो ईश्वर क्या करता है।

वीर०–करनसिह ने वह चीठी जिसके पास भेजी थी उसे क्या आप जानते है ?

नाहर०–हॉ मै जानता हूँ, वह भी वडा ही हरामजादा और पाजी आदमी है पर जो भी हो मेरे हाथ से वह भी नहीं वच सकता।

दोनों आदमी वहॉ से रवाना हुए और लगभग आध कोस जाने के वाद एक पीपल के पेड़ के नीचे पहुँचे जहॉ दो साईस दो कसे-कसाये घाड़े लिए मौजूद थे। नाहरसिह ने वीरसिह स कहा, अपने साथ तुम्हारी सवारी का भी वन्दोवस्त करके मैं तुम्हें छुडाने के लिए गया था लो इस घोड़े पर सवार हो जाओ और मेर साथ चलो।'

दोनों आदमी घोडो पर सवार हुए और तेजी के साथ नैपाल की तराई की तरफ चल निकले। ये लोग भूखे-प्यासे पहर भर दिन वाकी रहे तक वरावर घोडा फेंके चले गए। इसके वाद एक घने जगल में पहुँचे और थोडी दूर तक उसमें जाकर एक पुराने खण्डहर के पास पहुँचे। नाहरसिह ने घोडे से उतर कर वीरसिह का भी उतरने के लिए कहा और वताया कि यही हमारा घर है।

यह मकान जो इस समय खण्डहर मालूम होता है पॉच छ विगहे के घेरे में होगा। खराव और वर्वाद हो जाने पर भी अभी तक इसमें सौ सवा सौ आदमियों के रहने की जगह थी। इसकी मजवूत चौडी और सगीन दीवारों से मालूम होता था कि इसे किसी राजा ने वनवाया होगा और वेशक यह किसी समय में दुलहिन की तरह सजाकर काम में लाया जाता होगा। इसके चारों तरफ की मजवूत दीवारें अभी तक मजवूती के साथ खडी थीं हा भीतर की इमारत खराव हो गई थी तो भी कई कोठरियॉ और दालान दुरुस्त थ जिनमें इस समय नाहरसिह और उसके साथी लोग रहा करते थे। वीरसिह ने यहॉ लगभग पचास वहादुरों को देखा जो हर तरह से मजवूत और लड़ाके मालूम होते थे।

वीरसिंह को साथ लिए हुए नाहरसिह उस खण्डहर में घुस गया और अपने खास कमरे में जाकर उन्हें पहर भर तक आराम करके सफर की हरारत मिटाने के लिए कहा।

सातवां बयान

दूसरे दिन शाम को खण्डहर के सामने घास की सब्जी पर वैठे हुए वीरसिह और नाहरसिह आपुस में वातें कर रहे हैं। सूर्य अस्त हो चूका है सिर्फ उसकी लालिमा आसमान पर फैली हुई है। हवा के झोंके वादल के छोटे-छोटे-टुकड़ो को आसमान पर उडाये लिए जा रहा है। ठंडी-ठडी हवा जगली पत्तों को खड़खड़ाती हुई इन दोनों तक आती और हर खण्डहर की दिवार से टक्कर खाकर लौट जाती है। ऊँचे-ऊँचे सलई के पेडों पर वैठे हुए मोर आवाज लडा रहे है। और कभी-कभी पपीहे की आवाज भी इन दोनों के कानों तक पहुँच कर समय की खूबी और मौसम के वहार का सन्देसा दे रही है। मगर ये चीजें वीरसिह और नाहरसिह को खुश नहीं कर सकतीं। वे दोनों अपनी धुन में न मालूम कहॉ पहुँचे हुए और क्या साच रह हैं यकायक वीरसिह ने चौंक कर नाहरसिह से पूछा –

वीर०–खैर जो भी हो आप उस करनसिह का किस्सा तो अव अवश्य कहें जिसके लिए रात वादा किया था।

नाहर०–हॉ सुनो मैं कहता हूँ क्योंकि सवके पहिले उस किस्से का कहना ही मुनासिब समझता हूँ।

करनसिंह का किस्सा

पटने का रहने वाला एक छोटा सा जमीदार जिसका नाम करनसिंह था थोडी सी जमींदारी में खुशी के साथ अपनी जिन्दगी विताता और वाल-वच्चों में रह कर सुख भोगता था। उसके दो लडके थे और एक लड़की। हम उस समय का हाल कहत हैं जब उसके वड लडके की उम्र वारह वर्ष की थी। इत्तिफाक से दो साल की वर्सात वहुत खराव वीती और करनसिह के जमींदारी की पैदावार विल्कुल ही मारी गई। राजा की मालगुजारी सिर पर चढ गई जिसके अदा होने की सूरत न वन पडी। वहॉं का राजा वडा ही सॅगदिल और जालिम था, उसने मालगुजारी में से एक कौडी भी माफ न की और न अदा करने के लिए कुछ समय ही दिया। करनसिह की विल्कुल जायदाद जब्त कर ली गई। जिससे वह वेचारा हर तरफ से तवाह और वर्वाद हो गया। करनसिह का एक गुमाश्ता था जिसको लोग करनसिंह राठू या कभी-कभी सिर्फ राठू कह कर पुकारते थे। लाचार होकर करनसिंह ने स्त्री का जेवर वेच पॉच सौ रुपये का सामना किया। उसमें से तीन

सौ अपनी स्त्री को दकर उस करनसिंह राठू की हिफाजत में छोडा और दो सौ आप लेकर रोजगार की तलाश में पटने स बाहर निकला। उस समय नेपाल की गद्दी पर महाराज नारायणसिंह विराज रहे थे जिनकी नेकनामी और रिआयापरवरी की धूम दशान्तर में फैली हुई थी। करनसिह ने भी नेपाल ही का रास्ता लिया। थाड ही दिन में वहाँ पहुँच कर वह दर्बार में हाजिर हुआ पूछन पर उसने अपना सच्चा हाल राजा स कह सुनाया राजा को उसके हाल पर तरस आया और उसने करनसिंह को मजबूत ताकतवर और बहादुर समझ कर फौज में भरती कर लिया। उन दिनों नपाल की तराई में दा तीन डाकूओं ने बहुत जोर पकड रक्खा था करनसिंह ने स्वय उनकी गिरफ्तारी के लिए आज्ञा मागी जिससे राजा बहुत ही प्रसन्न हुआ और दो सौ आदमियों का साथ देकर करनसिंह को डाकुओं की गिरफ्तारी के लिए रवाना किया। छ महीने के अरसे में एकएकी करक करनसिंह ने तीनों डाकुओं का गिरफ्तार किया जिसस राजा के यहाँ उसकी इज्जत बहुत बढ गई और उन्होंने प्रसन्न होकर हरिपुर का इलाका उसे द दिया जिसकी आमदनी मालगुजारी देकर चालीस हजार से कम न थी साथ ही उन्होंन एक आदमी को इस काम के लिए तहसीलदार मुकर्रर करके हरिपुर भेज दिया कि वह वहाँ की आमदनी वसूल करे और मालगुजारी दकर जो कुछ बचे करनसिंह का दे दिया करे। अब करनसिंह की इज्जत बहुत बढ गई और नेपाल की फौज का सनापति मुकर्रर किया गया। अपने को ऐस दर्जे पर पहुँचा देखकर करनसिंह ने पटने से अपनी जारू और लडके लडकियों का करनसिंह राठू क सहित बुलवा लिया और खुशी से दिन बीतने लगा।

दा वर्ष का जमाना गुजर जाने के बाद तिरहुत के राजा न बडी धूमधाम से नेपाल पर चढाई की जिसका नतीजा यह निकला कि करनसिह न बडी बहादुरी स तिरहुत के राजा का अपनी सरहद के बाहर भगा दिया और उसका ऐसी शिकस्त दी कि उसन नेपाल को कुछ कौडी दना मजूर कर लिया। नपाल के राजा नारायणसिह ने प्रसन्न हाकर करनसिह की नौकरी माफ कर दी और पुश्तहापुश्त के लिए हरिपुर का भारी परगना लाखिराज करनसिंह के नाम लिख दिया और एक परवाना तहसीलदार के नाम इस मजमून का लिखा कि वह परगने हरिपुर पर करनसिह को दखल दे दे और खुद नेपाल लौट आव।

नपाल से रवाना हान क पहल करनसिंह की स्त्री न बुखार की बीमारी से देहत्याग कर दिया लाचार करनसिंह न अपने दानों लडकों और लडकी तथा करनसिंह राठू को साथ ले हरिपुर का रास्ता लिया।

करनसिह राठू की नीयत बिगड गई। उसने चाहा कि अपने मालिक करनसिंह को मार कर राजा नेपाल के दिए परवाने से अपना काम निकाले और खुद हरिपुर का मालिक बन बैठ। उसको इस बात पर भरोसा था कि उसका नाम करनसिंह है मगर उम्र में वह करनसिंह से सात वर्ष छोटा था।

करनसिंह राठू कोअपनी नियत पूरी करने में तीन मुश्किलें दिखाई पडी। एक तो यह कि हरिपुर का तहसीलदार अवश्य पहचान लगा कि यह करनसिंह सेनापति नहीं है। दूसर यह करनसिह सेनापति का लडका जिसकी उम्र पन्द्रह वर्ष की हो चुकी थी इस काम में बाधक होगा और नपाल में खबर कर देगा जिससे जान बचनी मुश्किल हो जायेगी। तीसरे खुद करनसिंह की मुस्तैदी से वह और भी कॉपता था।

जब करनसिंह रास्त ही में थे तब ही खबर पहुँची कि हरिपुर का तहसीलदार मर गया। एक दूत यह खबर लेकर नपाल जा रहा था जो रास्ते में करनसिंह सेनापति से मिला। करनसिंह ने राठू के बहकाने से उसे वहीं रोक लिया और कहा कि अब नेपाल जाने की जरूरत नहीं है।

अब करनसिंह राठू की बदनीयती ने और भी जोर मारा और उसने खुद हरिपुर का मालिक बनने के लिए यह तरकीब सोची कि करनसिंह सेनापति क साथियों को बडे-बड ओहदों और रूपये के लालच से मिला ले और करनसिंह को मय उसके लडकों और लडकी के किसी जगल में मार कर अपन ही को करनसिंह सेनापति मशहूर करे और उसी परवाने के जरिये हरिपुर का मालिक बन बैठे मगर साथ ही इसके यह भी खयाल हुआ कि करनसिंह के दोनों लडकों और लडकी के साथ मरन की खबर जब नेपाल पहुँचगी ता शायद वहाँ के राजा को कुछ शक हो जाय इससे बेहतर यही है कि करनसिंह सनापति और उसके बडे लडके को मार कर अपना काम चलाव और छाटे लडके और लडकी को अपना लडका और लडकी बनावे क्योंकि ये दोनों नादान हैं इस पेचिले मामले को किसी तरहसमझ नहीं सकेंगे और हरिपुर की रिआया भी इनको नहीं पहिचानती उन्हें तो केवल परवाने और करनसिंह नाम से मतलब है। आखिर उसने ऐसा ही किया और करनसिह के साथी सहज ही में राठू के साथ मिल गए।

करनसिंह राठू ने करनसिह को तो जहर देकर मार डाला और उसके बडे लडक को एक भयानक जगल में पहुँच

कर जख्मी करके एक कूए में डाल देने के बाद खुद हरिपुर की तरफ रवाना हुआ। रास्त में उसने बहुत दिन लगाये जिसमें करनसिंह सेनापति का छोटा लड़का उससे हिल-मिल जाय।

हरिपुर में पहुँचकर उसने सहज ही वहाँ अपना दखल जमा लिया। करनसिंह सेनापति के लड़के और लड़की को थोड़े दिन तक अपना लड़का-लड़की मशहूर करने के बाद उसने एक दोस्त का लड़का और लड़की मशहूर किया। उसके ऐसा करने से रियाआ के दिल में कुछ शक पैदा हुआ मगर वह कुछ न कर सकी क्योंकि करनसिंह साल में पाँच छ मरतबे अच्छे-अच्छे तोहफे नपाल भेजकर वहा के राजा को अपना मेहरबान बनाये रहा, यहा तक कि कुछ दिन बाद नपाल का राजा जिसने करनसिंह को हरिपुर की सनद दी थी, परलोक सिधारा और उसका भतीजा गद्दी पर बैठा। तब से करनसिंह राठू और भी निश्चिन्त हो हरिपुर गया और रिआया पर जुल्म करने लगा। वही करनसिंह राठू आज हरिपुर का राजा है जिसके पंज में तुम फँसे हुए थे। कहो ऐसे नालायक राजा के साथ अगर मैं दुश्मनी करता हूँ तो क्या बुरा करता हूँ?

वीर०–(कुछ देर चुप रहने के बाद) बेशक वह बड़ा मक्कार और हरामजादा है। ऐसों के साथ नेकी करना तो मानों नेकों के साथ बदी करना है !!

नाहर०–बेशक ऐसा ही है।

वीर०–मगर आपने यह नहीं कहा कि अब करनसिंह सेनापति के लड़के कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं?

नाहर०–क्या इस भेद को भी मैं अभी खोल दूँ?

वीर०–हाँ, सुनने को जी चाहता है।

नाहर०–करनसिंह सेनापति के छोटे लड़के तो तुम ही हो मगर तुम्हारी बहिन का हाल मालूम नहीं। पारसाल तक तो उसकी खबर मालूम थी मगर इधर साल-भर से न मालूम वह मार डाली गई या कहीं छिपा दी गई।

इतना सुनकर वीरसिंह रोने लगा, यहाँ तक कि हिचकी बंध गई। नाहरसिंह ने बहुत समझाया और दिलासा दिया। थोड़ी देर बाद वीरसिंह ने अपने को सम्भाला और फिर बातचीत करने लगा।

वीर०–मगर तुम ने तो कहा था कि तुम्हारी उस बहिन से मिलावेंगे जिसके बदन में सिवाय हड्डी के और कुछ नहीं रह गया है। क्या वह मेरी बहिन है जिसका हाल ऊपर के हिस्से में कह गए हैं।

नाहर०–बेशक वही है।

वीर०–फिर आप कैसे कहते हैं कि साल भर से उसका पता नहीं है?

नाहर०–यह इस सबब से कहता हूँ कि उसका ठीक पता मुझे मालूम नहीं है, उड़ती सी खबर मिली थी कि वह किले ही के किसी तहखाने में छिपाई गई है और सख्त तकलीफ में पड़ी है। मैं कल किले में जाकर उसी भेद का पता लगाने वाला था मगर तुम्हारे ऊपर जुल्म होने की खबर पाकर वह काम न कर सका और तुम्हारे छुड़ाने के बन्दोबस्त में लग गया।

वीर०–उसका नाम क्या है?

नाहर०–सुंदरी।

वीर०–तो आपको उम्मीद है कि उसका पता जल्द लग जायगा?

नाहर०–अवश्य।

वीर०–अच्छा अब मुझे एक बात और पूछना है।

नाहर०–वह क्या?

वीर०–आप हम लोगों पर इतनी मेहरबानी क्यों कर रहे हैं और हम लोगों के सबब राजा के दुश्मन क्यों बन बैठे हैं?

नाहर०–(कुछ सोचकर) खैर इस भेद को भी छिपाये रहना अब मुनासिब नहीं है। उठो, मैं तुम्हें अपने गले लगाऊँ तो कहूँ। (वीरसिंह को गले लगाकर) तुम्हारा बड़ा भाई मैं ही हूँ जिसे राठू ने जख्मी कर कुए में डाल दिया था। ईश्वर ने मेरी जान बचाई और एक सौदागर के काफिले को वहाँ पहुचाया जिसने मुझे कुए से निकाला। असल में मेरा नाम विजयसिंह है। राजा से बदला लेने के लिए इस ढंग से रहता हूँ। मैं डाकू नहीं हूँ, सिवाय राजा के किसी को दुख भी नहीं देता केवल उसी की दौलत लूटकर अपना गुजारा करता हूँ।

वीरसिंह को भाई के मिलने की खुशी हद से ज्यादा हुई और घड़ी-घड़ी उठकर कई दफे उन्हें गले लगाया। थोड़ी देर और बातचीत करने के बाद दोनों उठकर खंडहर में चले गये और अब क्या करना चाहिए यह सोचने लगे।

आठवां बयान

घटाटोप अधेरी छाई हुई है रात आधी से भी ज्यादा जा चुकी है बादल गरज रहा है बिजली चमक रही है मूसलाधार पानी बरस रहा है सडक पर बित्ता-बित्ता भर पानी चढ गया है राह में कोई मुसाफिर चलता हुआ नही दिखाई देता। ऐसे समय में एक आदमी अपनी गोद में तीन वर्ष का लडका लिए और उसे कपडे से छिपाये छाती स लगाए मोमजामे क छाते से आड किये किले की तरफ लपका चला जा रहा है। जब कहीं रास्त में आड की जगह मिल जाती है अपने को उसक नीचे ल जाकर सुस्ता लता है और तब न वन्द होने वाली बदली की तरफ काई ध्यान न दकर पुन चल पडता है।

यह आदमी जब किले के मैदान में पहुँचा तो बाएँ तरफ मुडा जिधर एक ऊँचा शिवालय था। यह बेखौफ उस शिवालय में घुस गया और कुछ देर सभामण्डप में सुस्ताने का इरादा किया मगर उसी समय वह लडका राने और चिल्लाने लगा जिसकी आवाज सुनकर वहाँ का पुजारी उठा और बाहर निकल कर उस आदमी के सामने खडा होकर बोला 'कौन है बाबू साहब ?

बाबू साहब०—हाँ।

पुजारी०—बहुत अच्छा किया जा आप आ गए। चाहे यह समय कैसा ही टेढा क्यों न हो मगर आपके लिए बहुत अच्छा मौका है।

बाबू साहब०—(लडके को चुप कराके) कवल इस लडक की तकलीफ का खयाल है।

पुजारी०—कोई हर्ज नहीं अब आप ठिकाने पहुँच गए। आइये हमारे साथ चलिये।

उस शिवालय की दिवार किले की दीवार से मिली हुई थी और किला भी नाम को ही किला था असल में ता इसे एक भारी इमारत कहना चाहिए मगर दीवारें इसकी बहुत ही मजबूत और चौडी थीं। इसमे छोट-छाटे कई तहखान थे। यहाँ का राजा करनसिह राठू बडा ही सूम ओर जालिम था खजाना जमा करन और इमारत बनान की इसे हद से ज्यादे शौक था। खर्च के डर से वह थाडी ही फौज स अपना काम चलाता और महाराज नेपाल के भरोसे किसी को कुछ नहीं समझता था हाँ नाहरसिह ने इसे तग कर रक्खा था जिसके सबब स इसके खजान में बहुत कुछ कमी हा जाया करती थी।

वह पुजारी पानी बरसते ही में कम्बल आढ कर बाबू साहब का साथ लिए किले के पिछवाडे वाले चोर दर्वाजे पर पहुँचा और दो तीन दफे कुडी खटखटाई। एक आदमी ने भीतर से किवाड खोल दिया और ये दोनों अदर घुसे। भीतर से दर्वाजा खालने वाला एक बुड्ढा चौकीदार था जिसने इन दोनों को भीतर लेकर फिर से दर्वाजा बद कर दिया। पुजारी ने बाबू साहब स कहा अब आप आगे जाइये ओर जल्द लौट कर आइय मैं जाता हूँ।

बाबू साहब ने छाता उसी जगह रख दिया क्योंकि उसकी अब यहाँ कुछ जरूरत न थी और लडके का छाती से लगाये बाई तरफ के एक दालान में पहुचे जहाँ से हाते हुए एक सहन में जाकर पास की बारहदरी में होकर छत पर चढ गए। ऊपर उन्हें दो लौडियाँ मिली जो शायद पहिले ही से इनकी राह दख रही थीं। दोनों लौडियों ने इन्हें अपन साथ लिया और दूसरी सीढी की राह से एक कोठरी में उतर गई जहाँ एक ने बाबू साहब से कहा अब बिना रामदीन खवास की मदद के हम लोग तहखाने में नहीं जा सकते। आज उसको राजी करने के लिए बडी कोशिश करनी पडी। वह बिचारा नेक और रहमदिल है इसलिए काबू में आ गया, अगर कोई दूसरा होता तो हमारा काम कभी न चलता। अच्छा अब आप यहीं ठहरिये मैं जाकर उसे बुला लाती हूँ।' इतना कह कर वह लौडी वहाँ से चली गई और थोडी ही देर में उस बुड्ढे खवास का साथ लेकर लौट आई।

इस बुड्ढे खवास की उम्र सत्तर वर्ष से कम न होगी। हाथ में पीतल की एक जालदार लालटैन लिए वहाँ आया और बाबू साहब के सामने खडा होकर बोला 'देखिए बाबू साहब मैं तो आपके हुक्म की तामील करता ही हूँ मगर अब मेरी इज्जत आप के हाथ में है। एक हिसाब से आज मैं मालिक की नमकहरामी करता हूँ कि इस राह से आपको जाने देता हूँ। मगर नहीं सुँदरी दया के योग्य है, उसकी अवस्था पर ध्यान देने से मुझे रूलाई आती है और इस बच्चे की हालत सोच कर कलेजा फटा जाता है जो आपकी गोद में है। बेशक मैं एक अन्यायी राजा का अन्न खाता हूँ। लाचार हूँ, गरीबी जान मारी जाती है नहीं तो आज ही नौकरी छोडने के लिए तैयार हूँ।

बाबू साहब०—रामदीन बेशक तुम बडे ही नेक और रहमदिल आदमी हो। ईश्वर तुम्हें इस नेकी का बदला देवे। अभी तुम नौकरी मत छोडो नहीं तो हम लोगों का काम मिट्टी हो जायेगा वह दिन बहुत करीब है कि इस राज्य का सच्चा

राजा गद्दी पर बैठे और रिआया को जुल्म के पजे से छुडावे।

रामदीन०—ईश्वर करे ऐसा ही हो। अच्छा आप जरा सा और ठहरें और इसी जगह बेखौफ बैठें रहें, मै घण्टे भर में लौट कर आऊँगा तब ताला खोल कर तहखाने में जाने के लिए कहूँगा क्योंकि महाराज अभी तहखाने में गये हुए है, वे निकल कर जा लें तब मैं निश्चिन्त होऊँ। इस तहखाने में जाने के लिए तीन दर्वाजे है जिनमें एक तो सदर दर्वाजा है, यद्यपि अब वह ईंटों से चुन दिया गया है मगर फिर भी वहाँ हमेशा पहरा पडा करता है, दूसरे दर्वाजे की ताली महाराज के पास रहती है और एक तीसरी छोटी सी खिडकी है जिसकी ताली मेरे पास रहती है और इसी राह से लौडियों को आने जाने देना मेरा काम है।

बाबू०—हॉं यह हाल मै जानता हूँ मगर यह तो कहो तुम तो जाकर घण्टे भर के बाद लौटोगे, तब तक यहा आकर मुझे कोई देख न लेगा ?

रामदीन०—जी नहीं, आप बेखौफ रहें, अब यहाँ आने वाला कोई नहीं है बल्कि इस बच्चे के रोने से भी किसी तरह का हर्ज नहीं है क्योंकि किले का यह हिस्सा बिल्कुल ही सन्नाटा रहता है।

यह कह कर रामदीन वहाँ से चला गया और घण्टे भर तक बाबू साहब को उन दोनों लौडियों से बातचीत करने का मौका मिला। यों ता घँटे भर तक कई तरह की बातचीत होती रही मगर उनमें से थोडी बातें ऐसी थी जो हमारे किस्से से सबध रखती है इसलिए उन्हें यहाँ पर लिख देना मुनासिब मालूम होता है।

बाबू साहब०—क्या महाराज कल भी आये थे ?

एक लौडी०—जी हॉं मगर वह किसी तरह नहीं मानती, अगर पॉंच-सात दिन यही हालत रही तो जान जाने में कोई शक नहीं। ऊपर से बीरसिह की गिरफ्तारी का हाल सुनकर वह और बदहवास हो रही है।

बाबू साहब०—मगर बीरसिह तो कैदखाने से भाग गए।

एक लौडी०—कब ?

बाबू साहब०—अभी घण्टा भर भी नहीं हुआ।

एक लौडी०—आपको कैसे मालूम हुआ ?

बाबू साहब०—इसके पूछने की कोई जरूरत नहीं !

एक लौडी—तब तो आप एक अच्छी खुशखबरी लेकर आये है। आपसे कभी बीरसिह से मुलाकात हुई है कि नहीं ?

बाबू साहब०—हॉं मुलाकात तो कई मर्तबे हुई है मगर बीरसिह मुझे पहिचानते नहीं। मैं बहुत चाहता हूँ कि दोस्ती पैदा करूँ मगर कोई सबब ऐसा नहीं मिलता जिससे वह मेरे साथ मुहब्बत करें हॉं मुझे उम्मीद है कि तारा की बदौलत बेशक उनसे मुहब्बत हा जाएगी।

एक लौडी—कल पचायत होने वाली थी सो क्या हुआ ?

बाबू साहब—हॉं कल पचायत हुई थी जिसमें यहाँ के बडे-बडे पद्रह जमीदार शरीक थे। सभों को निश्चय है कि असल में यह गद्दी बीरसिह की है। बीरसिह यदि लडने के लिए मुस्तैद हों तो वे लोग उनकी मदद करने को तैयार है।

एक लौडी०—आपने भी कोई बन्दोबस्त किया है या नहीं ?

बाबू साहब०—हॉं मै भी इसी फिक्र में पडा हुआ हूँ। मगर लो देखो रामदीन आ पहुँचा।

रामदीन ने पहुच कर खबर दी कि महाराज चले गए अब आप जायें। रामदीन ने उस कोठरी में एक छोटी सी खिडकी खोली जिसकी ताली उसकी कमर में थी और तीनों को उसके भीतर करके ताला बन्द कर दिया और आप बाहर बैठा रहा। बाबू साहब ने दोनों लौडियों के साथ खिड़की के अदर जाकर देखा कि हाथ में चिराग लिए एक लौडी इनके आने की राह देख रही है। यहाँ से नीचे उतरने के लिए सीढियाँ बनी हुई थीं। बाबू साहब फिर नीचे उतरे, यहाँ की जमीन सर्द और कुछ तर थी। पुन एक कोठरी में पहुँच कर लौडी ने दर्वाजा खोला और बाबू साहब को साथ लिए एक बारहदरी में पहुँची। इस बारहदरी में एक दीवारगीर और एक हॉंडी के अतिरिक्त एक मोमी शमादान भी जल रहा था। जमीन पर फर्श बिछा हुआ था बीच में एक मसहरी पर बारीक चादर ओढे एक औरत सोई हुई थी, पायताने की तरफ दो लौडियॉं पखा झल रही थीं पलग के सामने एक पीतल की चौकी पर चॉंदी की तीन सुराही, एक गिलास और एक कटोरा रक्खा हुआ था। उसके बगल में चॉंदी की एक दूसरी चौकी थी जिस पर खून से भरा हुआ चॉंदी का एक छोटा सा कटोरा एक

नश्तर और दो सलाइयाँ पडी हुई थीं। वह औरत जो मसहरी पर लेटी हुई थी बहुत ही कमजोर और दुबली मालूम होती थी। उसके बदन में सिवाय हड्डी के मॉस या लहू का नाम ही नाम था मगर चेहरा उसका अभी तक इस बात की गवाही देता था कि किसी वक्त में यह निहायत खूबसूरत रही होगी। गोद में लडका लिए बाबू साहब उसके पास जा खड हुए और डबडबाई हुई ऑखों से उसकी सूरत देखने लग। उस औरत न बाबू साहब की ओर देखा ही था कि उसकी ऑखों से ऑसू की बूदें गिरन लगी। हाथ बढा कर उठाने का इशारा किया मगर बाबू साहब ने तुरत उसके पास जा और बैठ कर कहा "नहीं नहीं उठने की कोई जरूरत नहीं तुम आप कमजोर हा रही हो। हाय !इस दुष्ट के अन्याय का कुछ ठिकाना है !! लो यह तुम्हारा बच्चा तुम्हारे सामने है इसे दखो और प्यार करा !घबडाआ मत दो ही चार दिन में यहाँ की कोया पलट हुआ चाहती है !!

बाबू साहब ने उस लडके को पलग पर बैठा दिया। उस औरत ने बडी मुहब्बत से उस लडके का मुँह चूमा। ताज्जुब की बात थी कि वह लडका जरा भी न ता रोया और न हिचका बल्कि उस औरत के गले स लिपट गया जिसे देख कर बाबू साहब लौंडियों और उस औरत का भी कलेजा फटने लगा और लोगों ने बडी मुश्किल से अपने को सँभाला। उस औरत न बाबू साहब की तरफ देख कर कहा–

"प्यारे क्या मै अपनी जिदगी का कुछ भी भरोसा कर सकती हूँ ? क्या मे तुम्हारे घर में बसने का खयाल ला सकती हूँ ? क्या मै उम्मीद कर सकती हूँ कि दस आदमी के बीच में इस लडके को लकर खिलाऊँगी ? हाय !एक बीरसिह की उम्मीद थी सो दुष्ट राजा उस भी फॉसी दिया चाहता है !

बाबू साहब०–प्यारी तुम चिन्ता न करो। मै सच कहता हूँ कि सवेरा होते होते इस दुष्ट राजा की तमाम खुशी खाक में मिल जावेगी और वह अपने को मौत के पॅजे में फँसा हुआ पावेगा। क्या उस आदमी का कोई कुछ बिगाड सकता है जिसका तरफदार नाहरसिह डाकू हो ? दखो अभी दो घण्टे हुए हैं कि वह कैदखाने से बीरसिंह को छुडा कर ले गया !

औरत०–(चौंक कर) नाहरसिह डाकू बीरसिंह को छुडा कर ल गया !मगर वो तो बडा भारी बदमाश और डाकू है ! बीरसिह के साथ नेकी क्यों करन लगा ? कहीं दु ख न दे !!

बाबू साहब०–तुम्हें ऐसा न सोचना चाहिये। शहर भर में जिससे पूछोगी कोई भी यह न कहगा कि नाहरसिंह ने सिवाय राजा के किसी दूसरे को कभी कोई दु ख दिया हॉ वह राजा को बेशक दु ख देता है और उसकी दौलत लूटता है मगर इसका काई खास सबब जरूर होगा। मैने कई दफे सुना है कि नाहरसिह छिप कर इस शहर में आया कई दु खियों और कगालों को रुपये की मदद की और कई ब्राह्मणों के घर में जो कन्यादान के लिए दु खी हो रहे थे रुपये की थैली फेंक गया। मुख्तसर यह है कि यहॉ की कुल रिआया नाहरसिह के नाम से मुहब्बत करती है और जानती है कि वह सिवाय राजा के और किसी को दु ख देन वाला नहीं।

औरत–सुना तो ह मैने भी ऐसा ही हे। अब देखें वह बीरसिह के साथ क्या नेकी करता है और राजा का भण्डा किस तरह फूटता है। मुझे वर्ष भर इस तहखाने में पडे हो गये मगर मैंने बीरसिह और तारा का मुँह नहीं देखा, यों तो राजा के डर से लडकपन ही से आज तक मै अपने को छिपाती चली आई और बीरसिह के सामने क्या किसी और के सामने भी न कहा कि मै फलानी हूँ या मेरा नाम सुदरी है मगर साल भर की तकलीफ ने (रो कर) हाय !न मालूम मेरी मौत कहाँ छिपी हुई है !!

बाबू साहब०–(उस खून से भरे हुए कटोरे की तरफ देख कर) हॉ यह खून भरा कटोरा कहता है कि मैं किसी के खून से भरा हुआ कटोरा पीऊँगा !

सुन्दरी०–(लडके को गले लगाकर) हाय हम लोगों की खराबी के साथ इस बच्चे की भी खराबी हो रही है !!

बाबू साहब०–ईश्वर चाहता है तो इसी सप्ताह में लोगों को मालूम हो जावेगा कि तुम कुँआरी नहीं हो और यह बच्चा भी तुम्हारा है।

सुन्दरी०–परमेश्वर करे ऐसा ही हो !हॉ उन पचों का क्या हाल है ?

बाबू साहब०–पचों का जोश बढता ही जाता है, अब वे लोग बीरसिह की तरफदारी पर पूरी मुस्तैदी दिखा रहे है।

सुन्दरी०–नाहरसिह का कुछ और भी हाल मालूम हुआ है ?

बाबू साहब०–और तो कुछ नही मगर एक बात नई जरूर सुनने में आई है।

सुन्दरी०–वह क्या ?

बाबू साहब०–तारा के मारने के लिए उसका बाप सुजनसिंह मजबूर किया गया था।

सुन्दरी–(लम्बी सास लकर) हाय, इसी कम्बख्त न तो मेरे बड़ भाई विजयसिह का मारा है।

बाबू साहब०–मै एक बात तुम्हारे कान मे कहा चाहता हू।

सुन्दरी०–कहो।

बाबू साहब ने झुक कर उसके कान में कोई बात कही जिसके सुनते ही सुन्दरी का चेहरा बदल गया और खुशी की निशानी उसके गालों पर दौड़ आई। चौक कर पूछा, "क्या तुम सच कह रहे हो ?"

बाबू साहब०–(सुन्दरी के सिर पर हाथ रख के) तुम्हारी कसम, सच कहता हूँ।

एक लौडी०–मालूम होता है कोई आ रहा है।

सुन्दरी०–(लड़के को लौंडी के हवाले करके) हाय, क्या गजब हुआ ! क्या किस्मत अब भी आराम न लेने देगी ?

इतने ही में सामने का दर्वाजा खुला और हाथ में नगी तलवार लिये हरीसिंह आता दिखाई दिया जिसे देखते ही बेचारी सुन्दरी और कुल लौडियॉ कॉंपने लगीं। बाबू साहब के चेहरे पर भी एक दफे तो उदासी आई मगर साथ ही वह निशानी पलट गई और हांठों पर मुसकुराहट मालूम होने लगी। हरीसिंह मसहरी के पास आया और बाबू साहब को देख कर ताज्जुब से बोला, "तू कौन है ?"

बाबूसाहब०–तू मेरा नाम पूछ कर क्या करेगा ?

हरीसिंह०–तू यहाँ क्यों आया है ? (लौडियों की तरफ देख कर) आज तुम सभों की मक्कारी खुल गई !!

बाबू साहब०–अबे तू मेरे सामने हो और मुझसे बोल ! औरतों को क्या धमकाता है ?

हरीसिंह०–तुझसे मै बातें नहीं किया चाहता, तुझे तो गिरफ्तार कर के सीधे महाराज के पास ले जाऊंगा, वहीं जो कुछ होगा देखा जायेगा।

बाबू साहब०–मै तुझे और तेरे महाराज को तिनके के बराबर भी नहीं समझता तेरी क्या मजाल कि मुझे गिरफ्तार करे !!

इतना सुनना था कि हरीसिंह गुस्से से कॉप उठा। बाबू साहब के पास आकर उसने तलवार का एक वार किया। बाबू साहब ने फुर्ती से उस का हाथ खाली दिया और घूम कर उसकी कलाई पकड़ ली तथा इस जोर से झटका दिया कि तलवार उसके हाथ से दूर जा गिरी। अब दोनों में कुश्ती होने लगी। थोड़ी ही देर में बाबू साहब ने उसे उठा कर दे मारा। इत्तिफाक से हरीसिंह का सिर पत्थर की चौखट पर इस जोर से जाकर लगा कि फट कर खून का तरारा बहने लगा। साथ ही इसके एक लौडी ने लपक कर हरीसिंह के हाथ की गिरी हुई तलवार उठा ली और एक ही वार में हरीसिंह का सिर काट कर कलेजा ठडा किया।

बाबू साहब०–हाय तुमने यह क्या किया ?

लौडी०–इस हरामजादे का मारा ही जाना बेहतर था, नहीं तो यह बड़ा फसाद मचाता !!

बाबू साहब०–खैर जो हुआ सो हुआ, अब मुनासिब है कि हम इसे उठा कर बाहर ले जावें और किसी जगह गाड़ दें कि किसी को पता न लगे।

बाबू साहब पलट कर सुन्दरी के पास आए और उसे समझा-बुझा कर बाहर जाने की इजाजत ली। एक लौडी ने लड़के को गोद में लिया, बाबू साहब ने उसी जगह से एक कम्बल लेकर हरीसिह की लाश बाध पीठ पर लादी और जिस तरह से इस तहखाने में आये थे उसी तरह बाहर की तरफ रवाना हुए। जब उस खिड़की तक पहुँचे जिसे रामदीन ने खोला था, तो भीतर से कुडा खटखटाया। रामदीन बाहर मौजूद था, उसने झट दर्वाजा खोल दिया और ये दोनों बाहर निकल गये।

रामदीन बाबू साहब की पीठ पर गट्ठर देख चौका और बोला, "आप यह क्या गजब करते हैं ! मालूम होता है आप सुन्दरी को लिए जाते है ! नहीं, ऐसा न होगा, हम लोग मुफ्त में फॉसी पावेंगे। इतना ही बहुत हैं कि मै आपको सुन्दरी के पास जाने देता हूँ !!

बाबू साहब ने गठरी खोल कर रामदीन को लाश दिखा दी और कहा, रामदीन, तुम ऐसा न समझो कि हम तुम्हारे ऊपर किसी तरह की आफत लावेंगे। यह कोई दूसरा आदमी है जो उस समय सुन्दरी के पास आ पहुँचा जिस समय मै वहाँ मौजूद था, लाचार यह समझ कर इसे मारना ही पड़ा कि मेरा आना-जाना किसी को मालूम न हो और तुम लोगों पर आफत न आवे।

लौडी०–अजी यह वही हरामजादा हरीसिंह है जिसने मुद्दत से हम लागों को तग कर रक्खा था !

रामदीन०—हाँ अगर यह ऐसे समय में सुन्दरी के पास पहुँच गया तो इसका मारा जाना ही बेहतर था मगर इसे किसी ऐसी जगह गाडना चाहिए कि पता न लगे।

बाबू साहब०—इससे तुम बेफिक्र रहो, मैं बन्दोबस्त कर लूँगा।

बाबू साहब जिस तरह इस किले के अन्दर आए थे वह हम ऊपर लिख आये हैं उसके दुहराने की कोई जरूरत नहीं है, सिर्फ इतना लिख देना बहुत है कि पीठ पर गट्ठर लादे वे उसी तरह किले के बाहर हो गये और मैदान में जाते हुए दिखाई देने लगे। सिर्फ अबकी दफे इनके साथ गोद में लडके को उठाए एक लौंडी मौजूद थी। पानी का बरसना बिल्कुल बन्द था और आसमान पर तारे छिटके हुए दिखाई देने लगे थे।

बाबू साहब न शिवालय की तरफ न जाकर दूसरी ही तरफ का रास्ता लिया मगर जब वह सन्नाटे खेत में निकल गये तो हाथ में गँड़ासा लिए दो आदमियों ने इन्हें घेर लिया और डपट कर कहा, 'खबरदार, आगे कदम न बढाइयो !गट्ठर मेरे सामने रख और बता तू कौन है !बेशक किसी की लाश लिए जाता है।

बाबू साहब०—हॉ हॉ बेशक इस गट्ठर में लाश है और उस आदमी की लाश है जिसने यहॉ की कुल रिआया को तग कर रक्खा था 'जहॉ तक मैं ख्याल करता हूँ इस राज्य में काई आदमी ऐसा न हागा जो इस कम्बख्त का मरना सुन खुश न हागा।

प० आ०—मगर तुम कैस समझते हो कि हम भी खुश होंगे ?

बाबू साहब०—इसलिए कि तुम राजा के तरफदार नहीं मालूम पडते।

दू० आ०—खैर जो हो, हम यह जानना चाहते हैं कि यह लाश किसकी है और तुम्हारा नाम क्या है ?

बाबू साहब०—(गट्ठर जमीन पर रख कर) यह लाश हरीसिंह की है मगर मैं अपना नाम तब तक नहीं बताने का जब तक तुम्हारा नाम न सुन लूँ।

प० आ०—बेशक यह सुन कर कि यह लाश हरीसिह की है मुझे भी खुशी हुई और मै यह कह देना उचित समझता हूँ कि मेरा नाम नाहरसिंह है। मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम हमारे पक्षपाती हो लेकिन अगर न भी हो तो मैं किसी तरह तुमसे डर नहीं सकता।

बाबू साहब०—मुझे यह सुन कर बडी खुशी हुई कि आप नाहरसिह है। बहुत दिनों से मैं आपसे मिला चाहता था मगर पता न जानने से लाचार था। अहा, क्या अच्छा होता इस समय बीरसिंह से भी मुलाकात हो जाती !

दू० आ०—बीरसिंह से मिल कर तुम क्या करत ?

बाबू साहब०—उस होशियार कर देता कि राजा तुम्हारा दुश्मन है और कुछ हाल उसकी बहिन सुन्दरी का भी बताता जिसका उसे ख्याल भी नहीं है, और यह भी कह देता कि तुम्हारी स्त्री तारा बच गई है मगर अभी तक मौत उसके सामने नाच रही है। (नाहरसिंह की तरफ देख कर) आपकी कृपा होगी तो मैं बीरसिंह से मिल सकूगा क्योंकि आज ही आपने उन्हें कैद से छुडाया है।

नाहर०—अहा अब मै समझ गया कि आप का नाम बाबू साहब है नाम तो कुछ दूसरा ही है मगर दो चार आदमी आपका बाबू साहब के नाम से ही पुकारते है, क्यों है न ठीक !

बाबू साहब०—हाँ है तो ऐसा ही !

नाहर०—मैं आपका पूरा-पूरा हाल नहीं जानता हॉ जानने का उद्योग कर रहा हूँ, अच्छा अब हमको भी साफ-साफ कह देना मुनासिब है कि मेरा नाम नाहरसिंह नहीं है, हम दोनों उनके नौकर हैं हाँ यह सही है कि वे आज बीरसिंह को छुड़ा के अपने घर ले गए हैं जहाँ आप चाहें तो नाहरसिंह और बीरसिंह से मिल सकते हैं।

बाबू साहब०—मैं जरूर उनसे मिलूगा।

प० आ०—और यह आपके साथ लडका कौन है ?

बाबू साहब०—इसका हाल तुम्हें नाहरसिंह के सामने ही मालूम हो जायेगा।

प० आ०—तो क्या आप अभी वहाँ चलने के लिए तैयार है।

बाबू साहब०—बेशक !

प० आ०—अच्छा तो आप इस गट्ठर को मेरे हवाले कीजिए, मैं इसे इसी जगह खपा डालता हूँ, केवल इसका सिर मालिक के पास ले चलूँगा, इस लडके को गोद में लीजिए और इस लौडी को बिदा कीजिए, चलिए सवारी भी तैयार है।

बाबू साहब ने उस लौंडी को विदा कर दिया। एक आदमी ने उस गट्ठर को पीठ पर लादा, बाबू साहब ने लड़के को गोद में लिया और उन दोनों के पीछे रवाना हुए मगर थोड़ी ही दूर गए थे कि पीछे से तेजी के साथ दौड़ते हुए आने वाले घोड़ों के टापों की आवाज इन तीनों के कानों में पड़ी। बाबू साहब ने चौंक कर कहा ताज्जुब नहीं कि हम लोगों को गिरफ्तार करने के लिए सवार आते हों !!

नौवां बयान

आधी रात का समय है। चारों तरफ अंधेरी छाई हुई है। आसमान पर काली घटा छाई रहने के कारण तारों की रोशनी भी जमीन तक नहीं पहुँचती। जरा-जरा बूंदी हो रही है मगर वह हवा के झपेटों के कारण मालूम नहीं होती। हरीपुर में सन्नाटा छाया हुआ है। ऐसे समय में दो आदमी स्याह पौशाक पहिरे नकाब डाल (जो इस समय पीछेकी तरफ उलटी हुई है) तेजी से कदम बढ़ाये एक तरफ जा रहे हैं। ये दोनों सदर सड़क को छोड़ कर गली गली जा रहे हैं और तेजी से चल कर ठिकाने पहुचने की कोशिश कर रहे हैं, मगर गजब की फैली हुई अंधेरी इन लोगों को एक रंग पर चलने नहीं देती, लाचार जगह-जगह रुकना पडता है, जब बिजली चमक कर दूर तक का रास्ता दिखा देती है तो फिर ये कदम बढ़ाते हैं।

ये दोनों गली-गली चल कर एक आलीशान मकान के पास पहुचे जिसके फाटक पर दस बारह आदमी नंगी तलवारें लिए पहरा दे रहे थे। दोनों ने नकाब ठीक कर ली और एक ने आगे बढ़ कर कहा ' महादेव ! इसके जवाब में उन सभों ने भी "महादेव !' कहा, इसके बाद एक सिपाही ने जो शायद सभों का सरदार था आगे बढ़ कर उस आदमी से जिसने 'महादेव' कहा था पूछा "आज आप अपने साथ और भी किसी को लेते आए हैं ? क्या ये भी अन्दर जायेंगे ?'

आगन्तुक०--नहीं, अभी तो मैं अकेला ही अन्दर जाऊँगा और ये बाहर रहेंगे लेकिन सर्दार साहब इनको बुलावेंगे तो ये भी चले जायेंगे।

सिपाही०--बेशक ऐसा ही होना चाहिए अच्छा आप जाइए।

इन दोनों में से एक तो बाहर रह गया और इधर-उधर टहलने लगा और एक आदमी ने फाटक के अन्दर पैर रक्खा। इस फाटक के बाद नकाबपोश को और तीन दर्वाजे लाघने पड़े तब वह एक लम्बे चौड़े सहन में पहुँचा जहाँ एक फर्श पर लगभग बीस आदमी बैठे आपस में कुछ बातें कर रहे थे। बीच में दो गाभी शमादान जल रहे थे और उसी के चारों तरफ वे लोग बैठे हुए थे। ये सब रोआबदार गठीले और जवान आदमी थे तथा सभों ही के सामने एक-एक तलवार रक्खी हुई थी। उन लोगों की चढी हुई मूछें, चौडी और तनी हुई छाती, बडी-बड़ी सुर्ख आखें कह देती थीं कि ये सब तलवार के जौहर के साथ अपना नाम रोशन करने वाले बहादुर हैं। ये लोग रेशमी चुस्त मिरजई पहिरे, सर पर लाल पगड़ी बाधे, रक्त-चन्दन का त्रिपुण्ड लगाए, दोपट्टी आमने-सामने वीरासन बैठे बातें कर रहे थे। ऊपर की तरफ बीच में एक कम-उम्र बहादुर नौजवान बडे ठाठ के साथ जडाऊ कब्जे की तलवार सामने रक्खे बैठा हुआ था। उसकी बेशकीमत गुछली टकी हुई सुर्ख मखमल की चुस्त पोशाक साफ-साफ कह रही थी कि वह किसी ऊँचे दर्जे का आदमी बल्कि किसी फौज का अफसर है मगर साथ ही इसके उसकी चिपटी नाक रहे-सहे भ्रम को दूर करके निश्चय करा देती थी कि वह नैपाल का रहने वाला है बल्कि यों कहना चाहिए कि वह नैपाल का सेनापति या किसी छोटी फौज का अफसर है। चार आदमी बड़े बड़े पखे लिए इन सभों को हवा कर रहे हैं।

यह नकाबपोश उस फर्श के पास जाकर खड़ा हो गया और तब वीरों को एक दफे झुक कर सलाम करने के बाद बोला, "आज मैं सच्चे दिल से महाराज नैपाल को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने हम लोगों का अर्थात् हरिपुर की रिआया का दु ख दूर करने के लिए अपने एक सरदार को यहाँ भेजा है। मैं उस सर्दार को भी इस कमेटी में मौजूद देखता हूँ जिसमें यहाँ के बड़े क्षत्री जमीदार, वीर और धर्मात्मा लोग बैठे हैं। अस्तु उन्हे प्रणाम करने के बाद (सर झुका कर) निवेदन करता हूँ कि वे उन जुल्मों की अच्छी तरह जाँच करें जो राजा करनसिंह की तरफ से हम लोगों पर हो रहे हैं। हम लोग इसका सबूत देने के लिए तैयार हैं कि यहाँ का राजा करनसिंह बड़ा ही जालिम, संगदिल और बेईमान है !!

उस नकाबपोश की बात सुन कर नेपाल के सर्दार ने जिसका नाम खड़गसिंह था, एक क्षत्री वीर की तरफ देख कर पूछा--

खड़ग०—अनिरूद्धसिह, यह कौन है ?

अनिरूद्ध०—(हाथ जोड़ कर) यह उस नाहरसिंह का साथी है जिसे यहाँ के राजा न डाकू के नाम से मशहूर कर रक्खा है। अक्सर हम लोगों की पचायत में शरीक हुआ करता है। इसका नाम सोमनाथ है।

खड़ग०—मगर क्या तुम उस नाहरसिंह डाकू के साथी को अपना शरीक बनाते हो जिसने हरिपुर की रिआया को तग कर रक्खा है और जिसकी दवगता और जुल्म की कहानी नेपाल तक मशहूर हो रही है ?

सोम०—नाहरसिह को केवल यहा के वेईमान राजा ने वदनाम कर रक्खा है क्योंकि वह उन्हीं के साथ बुरी तरह पेश आता है, उन्हीं का खजाना लूटता है, और उन्हीं की कैद से वेचारे बेकसूरों को छुडाता है। सिवाय राजकर्मचारियों क हरिपुर का एक अदना आदमी भी नहीं कह सकता कि नाहरसिह जालिम है या किसी को सताता है।

खड़ग०—(अनिरूद्ध की तरफ देख कर) क्या यह वात सच है ?

अनिरूद्ध०—वेशक सच है ।नाहरसिह वडा ही नेकमर्द, रहमदिल, धर्मात्मा और वीर पुरूष है। वह किसी को तग नहीं करता बल्कि वह महीने में हजारों रूपये यहा की गरीब प्रजा में गुप्त रीति से वाटता, गरीबों का दुख दूर करता, और ब्राह्मणों की सहायता करता है। हॉ राजा करनसिह को अवश्य सताता है उनकी दौलत लूटता है और उनके सहायको की जानें लेता है।

खडग०—अगर ऐसा है तो हम वेशक नाहरसिह को बहादुर और धर्मात्मा कह सकते है (सोमनाथ की तरफ देख कर) मगर राजा करनसिह नाहरसिंह की वहुत बुराई करता है और उसे जालिम कहता है, सबूत में हाल ही की यह नई बात दिखलाता है कि नाहरसिह निमकहराम वीरसिह का कैद से छुडा ले गया जिस पर राजकुमार का खून हर तरह साबित हो चुका था और जो तोप के सामने रख कर उडा देने के योग्य था। नाहरसिह इसका क्या जवाव रखता है ?

अनिरूद्ध०—सोमनाथ वरावर हम लोगों की पचायत में मुँह पर नकाव डाल कर आया करते हैं। हम लोग इस वात की जिद्द नहीं करते कि वे अपनी सूरत दिखाएँ वल्कि कसम खा चुके है कि इनके साथ कभी दगा न करेंगे। जिस दिन से नाहरसिह ने बीरसिह को छुडाया है उस दिन से आज ही मुलाकात हुई है। हम लोग खुद इस वात का जवाव इनसे लिया चाहते थे कि उस आदमी की मदद नाहरसिह ने क्यों की जिसने राजा के लड़के को मार डाला ? नाहरसिंह से ऐसी उम्मीद हम लोगों को न थी। हम लोग वेशक राजा के दुश्मन है मगर इतने वड़ नहीं कि उसके लड़के के खूनी को भगा दें। मगर हम लोगों को सब से ज्यादा ताज्जुव इस वात का है कि वीरसिंह के हाथ से ऐसा काम क्योंकर हुआ। वड़ा ही नेक, धर्मात्मा और सच्चा आदमी है, राजा से भी ज्यादा हम लोग उसे मानते हैं और उससे मुहव्वत रखते हैं क्योंकि इस राज्य में या कर्मचारियों में एक बीरसिह ही ऐसा था जिसकी वदौलत रिआया आराम पाती थी या जो रिआया को अपने लड़के के समान मानता था, मगर ताज्जुव है कि

सोम०—इस बात का जवाव मै दे सकता हूँ और निश्चय करा सकता हूँ कि नाहरसिंह ने कोई बुरा काम नही किया और वीरसिंह बिल्कुल वेकसूर है।

खड़ग०—अगर नाहरसिंह और बीरसिंह की बेकसूरी सावित होगी तो हम वेशक उनके साथ कोई भारी सलूक करेंगे। सुनो सोमनाथ, राजा के खिलाफ यहा की रिआया तथा नाहरसिह की अर्जियॉ पाकर महाराज नैपाल ने खास इस बात की तहकीकात करने के लिए मुझे यहाँ भेजा है और मै अपने मालिक का काम सच्चे दिल से धर्म के साथ किया चाहता हूँ। (बहादुरों की तरफ इशारा करके) ये लोग मुझे भली प्रकार जानते है और मुझ पर प्रेम रखते हैं तभी मैं इन लोगों की गुप्त पचायत में आ सका हूँ और ये लोग भी अपने दिल का हाल साफ-साफ मुझसे कहते है, हॉ बीरसिंह की बेकसूरी के बारे में तुम क्या कहना चाहते हो कहो ?

सोम०—बीरसिंह कौन है और आप लोगों को कहाँ तक उसकी इज्जत करनी चाहिए यह फिर कभी कहूँगा इस समय केवल उसकी बेकसूरी साबित करता हूँ। बीरसिंह ने महाराज के लड़के को नहीं मारा, यह महाराज ने जाल किया है। महाराज का लडका अभी तक जीता-जागता मौजूद है, और महाराज ने उसे छिपा रक्खा है, मै आपको अपने साथ ले जाकर राजकुमार को दिखा सकता हूँ।

खड़ग०—है !महाराज का लड़का सूरजसिह जीता-जागता मौजूद है !!

सोम०—जी हाँ।

खडग०—ज्यादा नही केवल एक बात का विश्वास हो जाने से हम यहा के रिआया की दरखास्त सच्ची समझेंगे और

राजा करनसिह को गिरफ्तार करके नेपाल ले जायेंगे।

सोम०--केवल यही नहीं, राजा ने बीरसिंह के कई रिश्तेदारों को बेकसूर मार डाला है जिसका खुलासा हाल सुन-कर आप के रौंगटे खड़े होंगे, बेचारा बीरसिह अभी तक चुपचाप बैठा है।

खडग०--(तलवार के कब्जे पर हाथ रख के) अगर यह बात सही है तो हम लोग बीरसिह का साथ देने के लिए इसी वक्त से तैयार है मगर नाहरसिह को खुद हमारे सामने आना चाहिए।

इतना सुनते ही खडगसिंह के साथ अन्य सर्दारों और बहादुरों ने भी तलवारें म्यान से निकालीं और धर्म का साक्षी देकर कसम खाई कि हम लोग नाहरसिंह क साथ दगा न करेंगे बल्कि उसके साथ दोस्ताना बर्ताव करेंगे। उन सभों को कसम खाते देख सोमनाथ ने अपने चेहरे से नकाब उलट दी और तलवार सर के साथ लगा कर गरज कर बोला, "आप लोगों के सामने खडा हुआ नाहरसिह भी कसम खाता है कि अगर वह झूठा निकला तो दुर्गा की शरण में अपने हाथ से अपना सिर अर्पण करेगा। मेरा नाम नाहरसिह है आज तक मै अपने को छिपाये हुए था और अपना नाम सोमनाथ जाहिर किए था।'

शमादान की रोशनी एक दम नाहरसिंह के खूबसूरत चेहरे पर दौड गई। उसकी सूरत, आवाज और उसके हियाव ने सभों को मोहित कर लिया, यहॉ तक कि खडगसिंह ने उठ कर नाहरसिंह को गले लगा लिया और कहा 'बेशक तुम बहादुर हो !ऐसे मौके पर इस तरह अपने को जाहिर करना तुम्हारा ही काम है !भगवती चाहे तो अवश्य तुम सच्चे निकलोगे इसमें कोई शक नहीं। (सर्दारों और जमींदारों की तरफ देख कर) उठो और ऐसे बहादुर को गले लगाओ इन्हीं के हाथ से तुम लोगों का कष्ट दूर होगा !!

सभों ने उठ कर नाहरसिह को गले लगाया और खडगसिह ने बडी इज्जत के साथ उसे अपने बगल में बैठाया।

नाहर०--बीरसिंह को मै बाहर दर्वाजे पर छोड आया हूँ।

खडग०--क्या आप उन्हें अपने साथ लाए थे ?

नाहर०--जी हॉ।

खडग०--शाबाश !तो अब उनका यहॉ बुला लेना चाहिए।(एक सर्दार की तरफ देख कर) आप ही जाइए।

सर्दार०--बहुत अच्छा।

सर्दार उठा और बीरसिंह को लिवा लाने के लिए ड्योढी पर गया मगर लौटनें मे देरी अन्दाज से ज्यादे हुई इसलिए जब वह बीरसिह को साथ लिए लौट आया तो खडगसिह ने पूछा, इतनी देर क्यों लगी ?

सर्दार०--(बीरसिह की तरफ इशारा कर के) ये टहलते हुए कुछ दूर निकल गए थे।

नाहर०--बीरसिह तुम इधर आओ और अपने चेहरे से नकाब हटा दो क्योंकि आज हमने अपना पर्दा खोल दिया।

यह सुन कर बीरसिह ने सिर हिलाया मानों उसे ऐसा करना मजूर नहीं है।

नाहर०--ताज्जुब है कि तुम नकाब हटाने से इन्कार करते हो ? जरा सोचो तो कि मेरी जुबानी तुम्हारा नाम इन लोगों ने सुन लिया तो पर्दा खुलने में फिर क्या कसर रह गई ? क्या सूरत इन लोगों से छिपी है ? हम तुम्हें बहादुर और शेरदिल समझते थे। यह क्या बात है ?

बीरसिह ने फिर सर हिला कर नकाब हटाने से इन्कार किया बल्कि दो तीन कदम पीछे की तरफ हट गया। यह बात नाहरसिह को बहुत बुरी मालूम हुई वह उछल कर बीरसिंह के पास पहुँचा तथा उसकी कलाई पकड क्रोध से भर उसकी तरफ देखने लगा। कलाई पकडते ही नाहरसिह चौंका और एक निगाह सिर से पैर तक बीरसिह पर डाल खडगसिह की तरफ देख कर बोला मुमकिन नहीं कि बीरसिह इतना बुजदिल और कम हिम्मत हो।यह हो ही नही सकता कि बीरसिह मेरा हुक्म न माने।देखिये कितनी बडी चालाकी खेली गई।बेईमान राजा ने हम लोगों को कैसा धोका दिया।हाय अफसोस बेचारा बीरसिह किसी आफत में फॅसा मालूम होता है !!

इतना कहकर नाहरसिंह ने बीरसिंह के चेहरे से नकाब खैंच कर फेंक दी। अब सभों ने पहिचाना की राजा का प्यारा नौकर बच्चनसिंह है।

खडग०--नाहरसिंह, यह क्या मामला है।

नाहर०--भारी चालबाजी की गई, यह इस उम्मीद में यहॉ बेखौफ चला आया कि चेहरे से नकाब न हटानी पडेगी शायद इसे यह मालूम हो गया था कि मैं यहॉ आकर चेहरे से नकाब नहीं हटाता। मैं नहीं कह सकता कि इसके साथ हमारे दुश्मनों को और कौन-कौन सा भेद हम लोगों का मालूम हो गया। यही पाजी बीरसिह के कैद होने के बाद

उसके बाग में वीरसिंह की मोहर चुराने गया था जो वहाँ मेरे मौजूद रहने के सबब इसके हाथ न लगी न मालूम मोहर लेकर राजा क्या-क्या जाल बनाता !

इतना सुनते ही खडगसिह उठ खडे हुए और नाहरसिंह के पास पहुँच कर बोले :--

खड़ग०--बेशक हम लोग धोखे में डाले गए। इसमें कोई शक नहीं कि इस कुमेटी का बहुत कुछ हाल करनसिंह को मालूम हो गया इन सब सर्दारों में से जो यहाँ बैठे हैं जरूर कोई राजा का पक्षपाती है और जाल करके इस कुमेटी में मिला है।

नाहर०--खैर क्या हर्ज है बूझा जायगा, इस समय बाहर चल कर देखना चाहिए कि वीरसिंह कहाँ है और पता लगाना चाहिए कि उस बेचारे पर क्या गुजरी मगर इस दुष्ट को किसी की हिफाजत में छोडना मुनासिब है।

इस मामले के साथ ही कुमेटी में खलबली पड गई, सब के सब उठ कर खडे हुए क्रोध के मारे सभों की हालत बदल गई एक सर्दार ने बच्चनसिंह के पास पहुच कर उसे लात मारी और पूछा "सच बोल वीरसिंह कहाँ है और उसे क्या धोखा दिया गया नहीं तो अभी तेरा सिर काट डालता हूँ!!

इसका जवाब बच्चनसिंह ने कुछ न दिया तब वह सर्दार खडगसिंह की तरफ देखकर बोला आप इसे मेरी हिफाजत में छोडिए और बाहर जाकर वीरसिंह का पता लगाइये, मैं इस हरामजादे से समझ लूगा !

खडगसिंह ने इशारे से नाहरसिंह से पूछा कि 'तुम्हारी क्या राय है ? नाहरसिंह ने झुककर कहा मुझे इस सर्दार पर भी शक है जो इन सब सर्दारों से बढ कर हमदर्दी दिखा रहा है।

खडग०--(जोर से) बेशक ऐसा ही है !

खडगसिंह ने उस सर्दार को जिसका नाम हरिहरसिंह था और बच्चनसिंह का दूसरे सर्दारों के हवाले किया और कहा, राजा की बेईमानी अब हम पर अच्छी तरह जाहिर हो गई इस समय ज्यादे बातचीत का मौका नहीं है तुम इन दोनों को कैद करो हम किसी और काम के लिए बाहर जाते हैं।

खडगसिंह ने अपने तीन साथी बहादुरों को अपने साथ आने का हुक्म दिया और नाहरसिंह से कहा अब देर मत करो, चलो ! ये पाँचो आदमी उस मकान के बाहर हुए और फाटक पर पहुँच कर रुके। नाहरसिंह ने पहरे वालों से पूछा कि जिस आदमी को हम यहाँ छोड गए थे वह हमारे जाने के बाद इसी जगह रहा या कहीं गया था ?

खडग--अनिरूद्धसिंह, यह कौन है ?

नाहर०--(खडगसिंह से) देखिए मामला खुला न !

खड़ग०--खैर आगे चलो।

नाहर०--अफसोस !बेचारा वीरसिंह !!

खडग०--तुम चिन्ता न करो देखो अब हम क्या करते हैं। एक पहरे वाले को चलने का हुक्म हुआ नाहरसिंह ने अपने चेहरे पर नकाब डाल ली। थोडी दूर जाने के बाद सडक पर एक लाश दिखाई दी जिसके इधर-उधर की जमीन खूनोखून हो रही थी।

दसवां बयान

हरिहरपुर गढी के अन्दर राजा करनसिंह अपने दिवानखाने में दो मुसाहबों के साथ बैठा कुछ बातें कर रहा है। सामने हाथ जोडे दो जासूस भी खडे महाराज के चेहरे की तरफ देख रहे है। उन दोनों मुसाहबों में से एक का नाम शभूदत्त और दूसरे का नाम सरूपसिंह है।

राजा०--रामदास के गायब होने का तरद्दुद तो था ही मगर हरीसिंह का पता न लगने से और भी बेचैन हो रहा है।

शमू०--रामदास तो भला एक काम के लिए भेजे गए थे शायद वह काम अभी तक नहीं हुआ इसलिए अटक गए होंगे मगर हरीसिंह तो कहीं भेजे भी नहीं गए।

सरूप०--जितना बखेडा है सब नाहरसिंह का किया हुआ है।

राजा०--बेशक ऐसा ही है न मालूम हमने उस कम्बख्त का क्या बिगाडा है जो हमारे पीछे पड़ा है। वह ऐसा शैतान है कि हरदम उसका डर बना रहता है और वह हर जगह मौजूद मालूम होता है। वीरसिंह को कैदखाने से छुड़ा ले जाकर उसने हमारी महीनों की मेहनत पर मट्टी डाल दी और बच्चन के हाथ से मोहर छीन कर बनी बनाई बात बिगाड दी नहीं तो रिआया के सामने वीरसिंह को दोषी ठहराने का पूरा बन्दोबस्त हो चुका था उस मुहर के जरिए बड़ा काम निकलता और बहुत सच्चा जाल तैयार होता।

सरूप०–सो तो सब ठीक है मगर कुँअर साहब को आप कब तक छिपाए रहेंगे, आखिर एक न एक दिन भेद खुल ही जायेगा।

राजा०–तुम बेवकूफ हो जिस दिन सूरजसिह को जाहिर करेंगे उस दिन अफसोस के साथ कह देंगे कि भूल हो गई और बीरसिह को कतल करने का महीनों अफसोस कर देंगे मगर वह किसी तरह हाथ लगे भी तो अभी तो नाहरसिंह छुडा ले गया।

सरूप०–यहॉ की रिआया बीरसिह से बहुत ही मुहब्बत रखती है, उसे इस बात का विश्वास होना मुश्किल है कि बीरसिह ने कुमार सूरजसिह को मार डाला।

राजा०–इसी विश्वास को दृढ करने के लिए तो मोहर चुराने का बन्दोबस्त किया गया था मगर वह काम ही नहीं हुआ।

शभू०–यहॉ की रिआया ने बडी धूम मचा रक्खी है एक बेचारा हरिहरसिंह आपका पक्षपाती है जो रिआया की कुमेटी का हाल कहा करता है अगर आप बडे-बडे सर्दारों और जमींदारों को जो आपके खिलाफ कुमेटी कर रहे हैं बन्दोबस्त न करेंगे तो जरूर एक दिन वे लोग बलवा मचा देंगे।

राजा०–उनका क्या बन्दोबस्त हो सकता है ? अगर उन लोगों पर विना कुछ दोष लगाये जोर दिया जाता तो भी गदर का डर है हाय यह सब खराबी नाहरसिह की बदौलत है अफसोस, अगर लडकपन ही में हम बीरसिह को खतम करा दिये होते तो काहे को यह नौबत आती क्या जानते थे कि वह लोगों का इतना प्रेमपात्र बनेगा ? उसने तो हमारी कुल रिआया को मुट्ठी में कर लिया। अब नेपाल से खडगसिह तहकीकात करने आये हैं, देखें वे क्या करते हैं। हरिहर की जुबानी तो यही मालूम हुआ है कि यहॉ के रईसों ने उन्हें अपनी तरफ मिला लिया।

सरूप०–आज की कुमेटी से पूरा-पूरा हाल मालूम हो जायेगा।

राजा–बच्चनसिह बीस पचीस आदमियों को साथ लेकर उसी तरफ गया हुआ है देखें वह क्या करता है।

सरूप०–खडगसिह तीन चार सौ आदमियों के साथ हैं अगर अकेले-दुकेले होते तो खपा दिये जाते।

राजा०–(हस कर) तो क्या अब हम उन्हें छोड देंगे ? अजी महाराज नेपाल तो दूर है खडगसिह के साथियों तक को तो पता लगेगा ही नहीं कि वह कहॉ गया या क्या हुआ। हॉ सुजनसिह के बारे में भी अब हमको पूरी तरह सोच-विचार कर लेना चाहिए।

सलाह विचार करते-करते रात का ज्यादा हिस्सा बीत गया और केवल घण्टा भर रात बाकी रह गई। महाराज की बाते खतम भी न हुई थीं कि सामने का दरवाजा खुला और एक लाश उठाए हुए चार आदमी कमरे के अन्दर आते हुए दिखाई पडे।

ग्यारहवां बयान

अब हम थोडा हाल तारा का लिखते हैं जिसे इस उपन्यास के पहिले बयान में छोड आये हैं। तारा बिल्कुल ही बेबस हो चुकी थी उसे अपनी जिन्दगी की कुछ भी उम्मीद न रही थी। उसका बाप सुजनसिह उसकी छाती पर बैठा जान लेने को तैयार था और तारा भी यह सुन कर कि उसका पति बीरसिंह अब जीता न बचेगा मरने के लिए तैयार थी, मगर उसकी मौत अभी दूर थी। यकाएक दो आदमी वहॉ आ पहुँचे जिन्होंने पीछे से जाकर सुजनसिंह को तारा की छाती पर से खैंच लिया। सुजनसिंह लडने के लिए मुस्तैद हो गया और उसने वह हर्बा जो तारा को जान लेने के लिए हाथ में लिए हुए था एक आदमी पर चलाया उस आदमी ने भी हर्बे का जवाब खजर से दिया और दोनों में लडाई होने लगी। इतने ही में दूसरे आदमी ने तारा को गोद में उठा लिया और लडते हुए अपने साथी को विचित्र भाषा में कुछ कह कर बाग के बाहर का रास्ता लिया। इस कसमकसी में बेचारी तारा डर के मारे एक दफे चिल्ला कर बेहोश हो गई और उसे तनोबदन की सुध न रही।

जब उसकी ऑख खुली, उसने अपने को एक साधारण कुटी में पाया सामने मन्द-मन्द धूनी जल रही थी और उसके आगे सिर से पैर तक भस्म लगाये वडी-बडी जटा और लाबी दाढी में गिरह लगाये एक साधू बैठा था जो एकटक तारा की तरफ देख रहा था। उस साधू की पहिली आवाज जो तारा के कान में पहुँची यह थी, "बेटी तारा, तू डर मत अपने को सभाल और होशहवास दुरूस्त कर।'

यह आवाज ऐसी नर्म और ढाढस देने वाली थी कि तारा का अभी तक धडकने वाला कलेजा ठहर गया और वह

[illegible] बैठे।

साधु०—तारा, क्या सचमुच तेरा नाम तारा ही है या मुझे धोखा हुआ ?

तारा०—[illegible] मेरा ही नाम तारा है।

साधू ने अपनी झोंपड़ी के कोने में से बड़े-बड़े दो आम निकाले और तारा के हाथ में देकर कहा [illegible] फिर [illegible] तारा का जी बहुत ही बेचैन था, तरह-तरह के ख्यालों ने उसे अपने आप [illegible] कर दिया था और इस फिक्र ने कि उसके पति बीरसिंह पर जरूर कोई आफत आई होगी, उसे अधमुआ कर दिया था। वह [illegible] थी कि अगर मैं अपने बाप के हाथ से मार डाली गई होती तो अच्छा था क्योंकि इन सब बखेड़ों से और अपने पति के बारे में बुरी खबरें के सुनने से तो बचती। तारा ने आम खाने से इन्कार किया मगर साधू महाशय के बहुत जिद करने और [illegible] से लाचार हुई और आम खाना ही पड़ा। हाथ धोने के लिए जब वह कुटी के बाहर निकली तब उसने [illegible] कि यह कुटी एक नदी के किनारे पर बनी हुई है और चारों तरफ जहाँ तक निगाह काम करती है [illegible]। और [illegible] दिखाई पड़ता है। समय दोपहर का था, बल्कि धूप कुछ ढल चुकी थी, जब तारा हाथ मुँह धोकर बैठी और [illegible] कहने लगी :—

साधू०—हाँ तारा ; अब मैं उम्मीद करता हूँ कि तू अपना सच्चा-सच्चा हाल मुझसे कहेगी।

तारा०—बेशक मैं आपसे जो कुछ कहूँगी, सच कहूँगी क्योंकि मुझे आपसे अपनी भलाई की बहुत उम्मीद [illegible]

साधू०—मेरे सामने अग्नि जल रही है मैं इसे साक्षी देकर कहता हूँ कि तू मुझसे सिवाय भलाई के बुराई [illegible] जरा भी मत रख। हाँ अब कह तू कौन है और तुझ पर क्या आफत आई है ?

तारा०—मैं राजा करनसिंह के खजानची सुजनसिंह की लड़की हूँ।

साधू०—वह लड़की जिसकी शादी बीरसिंह के साथ हुई है ?

तारा०—जी हाँ।

साधू०—तेरा बाप है तो क्या हुआ मगर मैं यह कहने से बाज न आऊँगा कि सुजनसिंह बड़ा ही निमकहराम और खुदगर्ज आदमी है। साथ ही इसके बीरसिंह की बीरता लायकी और रिआया परवरी मुझसे अपनी तारीफ कराये बिना नहीं रहती। बीरसिंह बड़ा ही धर्मात्मा और साहसी है तारा, जब तू सुजनसिंह की लड़की है तो जरूर राजा के यहाँ भी आती-जाती होगी ?

तारा०—जी हाँ, पहिले तो मैं महीनों राजा ही के यहाँ रहा करती थी मगर अब तो राजा और पिता दोनों ही के यहाँ का आना-जाना बन्द हो गया।

साधू०—सो क्यों ?

तारा०—क्योंकि दोनों मेरी जान के गाहक हो गए !

साधू०—खैर दोनों जगह का आना-जाना बन्द होने का सबब पीछे सुनूँगा, पहिले यह बता कि तेरा पति सुजनसिंह 'कटोरा भर खून' के नाम से क्यों डरता और [illegible]

तारा०—(काँपकर) ओफ! याद करके कलेजा काँपता है [illegible] मैं कहूँगी मगर यह बड़ी ही नाजुक बात है।

साधू०—मैं कसम खाकर कह चुका कि तू मुझसे [illegible]

तारा०—मैं कहूँगी और जरूर कहूँगी, मेरा दिल [illegible] चरणों में मुहब्बत होती है।

तारा के इस कहने से साधू की आँखें [illegible] और इस तर्कीब से आँसू सुखा कर बोला।

साधू०—खैर तारा यह तो ईश्वर की कृपा है [illegible]

तारा०—मगर इसके साथ मुझे अपना भी बहुत सा [illegible]

साधू०—कोई हर्ज नहीं, मैं सब [illegible] सुनने को तैयार हूँ।

तारा०—अच्छा तो मैं कहती हूँ [illegible] रहती थी। महल में एक और [illegible] मुझे दिल से चाहती और प्यार करती थी [illegible] मगर तो भी मैं उससे मुहब्बत [illegible]

अहिल्या के माता-पिता कौन और कहाँ हैं और उसका कोई रिश्तेदार है या नहीं। मैंने कई दफे अहिल्या स पूछा कि तेरे माता-पिता कौन हैं और कहाँ है मगर इसके जवाब में उसने केवल आँसू गिरा दिया और मुँह से कुछ न कहा। मेरी और वीरसिंह की जान-पहिचान लडकपन ही से थी। वह महल में बराबर राजा के साथ आया करते थे, अक्सर अहिल्या के पास भी जाकर कुछ देर बैठा करते थे और वह उन्हें भाई के समान मानती थी। मैं अहिल्या को बीबी कह कर पुकारती थी। अहिल्या और वीरसिंह दोनों ही को राजा माना करते थे बल्कि अहिल्या ही के कहने से मेरी शादी वीरसिंह के साथ हुई।

साधू०—अहिल्या का नाम अहिल्या ही था या कोई और नाम भी उसका था ?

तारा०—उसका कोई दूसरा नाम कभी सुनने में नहीं आया मगर एक दिन एक भयानक घटना के समय मुझे मालूम हो गया कि उसका एक दूसरा नाम भी है।

साधू०—वह क्या नाम है ?

तारा०—सो मैं आगे चल कर कहूँगी, अभी आप सुनते जाइये।

साधू०—अच्छा, कहा

तारा०—महारानी ने राजा से कई दफे कहा कि अहिल्या बहुत बडी हो गई है उसकी शादी कहीं कर देनी चाहिए मगर राजा ने यह बात मजूर न की। थोडे दिन बाद राजा के बर्ताव से महारानी तथा और कई औरतों को मालूम हो गया कि अहिल्या के ऊपर राजा की बुरी निगाह पडती है और इसी सबब से वे उसकी शादी नहीं करते।

साधू०—हरामजादा पाजी बेईमान कहीं का !हाँ तब क्या हुआ ?

तारा०—यह बात रानी को बहुत बुरी लगी और इसके सबब कई दफे राजा से झगड़ा भी हुआ, आखिर एक दिन राजा ने खुल्लमखुल्ला कह दिया कि अहिल्या की शादी कभी न की जायेगी।

साधू०—अच्छा तब क्या हुआ ?

तारा०—यह बात रानी को तीर के समान लगी और अहिल्या का चेहरा भी सूख गया और डर के मारे राजा के सामने जाना बन्द कर दिया। तीन चार दिन बाद अहिल्या यकायक महल से गायब हो गई। राजा ने बहुत ऊधम मचाया, कई लौंडियों को मारा-पीटा, कितनों ही को महल से निकाल दिया, रानी से भी बोलना छोड दिया मगर अहिल्या का पता न लगा।

साधू०—क्या अभी तक अहिल्या का पता नहीं है ?

तारा०—आप सुने चलिये मैं सब कुछ कहती हूँ। कई वर्ष के बाद एक दिन किसी लौंडी से चुपके-चुपके रानी को यह कहते मैंने सुन लिया कि 'अब तो अहिल्या को दूसरा लडका भी हुआ, पहिली लडकी तीन वर्ष की हो चुकी, ईश्वर करे उसका पति जीता रहे, सुनते हैं बड़ा ही लायक है और अहिल्या को बहुत चाहता है।"

अहिल्या के सामने ही मेरी शादी बीरसिंह से हो चुकी थी और मैं अपने ससुराल में रहने लग गई थी। अहिल्या के गायब होने का रज मुझे और बीरसिह को भी हुआ था और इसी से मैंने महल में आना-जाना ही कम कर दिया था मगर जिस दिन रानी की जुबानी ऊपर वाली बात सुनी मुझे एक तरह की खुशी हुई। मैंने यह हाल बीरसिंह से कहा, वह भी सुन कर बहुत खुश हुए और समझ गये कि रानी ने उस कहीं भेजवा कर उस की शादी करा दी थी। उसके बाद यह भेद भी खुल गया कि रानी ने उसे अपने नैहर में भेज दिया था।

साधू०—तुम्हारे ससुराल में कौन-कौन है ?

तारा०—नाम ही को ससुराल है असल मे मेरा सच्चा रिश्तेदार वहाँ कोई भी नहीं हाँ पाँच सात मर्द और औरतें हैं, हमारे पति उनमें से किसी को चाचा किसी को मौसा किसी को चाची इत्यादि कह कर पुकारा करते हैं, असल में उनका कोई भी नहीं है ;उनके माँ-बाप उनके लड़कपन में ही मर गए थे और राजा ने उन्हें पाला था। राजा उन्हें बहुत मानते थे मगर फिर भी वे कहा करते थे कि राजा बडा ही बेईमान है, एक न एक दिन हमसे और उससे बेहतर बिगडेगी।

साधू०—खैर तब क्या हुआ ?

तारा०—बहुत दिन बीत जाने पर एक दिन रानी ने मिलने के लिए मुझे महल में बुलाया। मैं गई और तीन-चार दिन तक वहाँ रही, इसी बीच में एक रात को मैं महल में लेटी हुई थी मेरा पलग रानी की मसहरी क पास बिछा हुआ था, इधर-उधर लौंडियाँ भी सोई हुई थीं रानी भी नींद में थीं, मगर मुझे नींद नहीं आ रही थी। यकायक यह आवाज मेरे कान में पड़ी— 'हाय आखिर बेचारी अहिल्या फँस ही गई। चलो दीवानखाने के ऊपर वाले छेद से झाँक कर देखें कि किस तरह

बेचारी की जान ली जाती है फिर आकर रानी को उठावें।'

इस अवाज के सुनते ही मै चौंक पडी कलेजा धकधक करने लगा, बेतावी ने मुझे किसी तरह दम न लेने दिया मै चारपाई पर से उठ बैठी और कुछ सोच-विचार कर ऊपर की छत पर चली गई और धीरे-धीरे उस पाटन की तरफ चली जो दीवानखाने की छत से मिली हुई थी। कमर भर ऊँची दीवार फॉद कर वहॉं पहुँची। वहॉं छोटे-छोटे कई सूराख ऐसे थे जिनमें झॉक कर देखने से दीवानखाने की कुल कैफियत मालूम हो सकती थी। मेरे जाने के पहिले ही दो औरतें वहॉं पहुची हुई थीं।

साधू०—वे दोनों कौन थीं ?

तारा०—दोनों रानी की लौडियॉं थीं, मुझे देखते ही मेरे पास पहुँची और हाथ जोडकर बोली— 'ईश्वर के वास्ते आप कोई ऐसा काम न करें जिसमें हम लोगों की और आपकी जान जाय अगर राजा जान जायेगा या किसी ने देख लिया तो बिना जान से मारे न छोडेगा ! इसके जवाब में मैंने कहा— 'तुम खातिर जमा रक्खो किसी को कुछ भी खबर न होगी।

यह दीवानखाना पुराना था जब से राजा ने अपने लिए दूसरा दीवानखाना बनवाया तब से वर्षों हुए यह खाली ही पडा रहता था, इसमें कभी चिराग भी नहीं जलता था लोगों का ख्याल था कि इसमें भूत-प्रेत रहते है इसलिए कोई उस तरफ जाता भी न था। मैंने सूराख में झॉंककर देखा सामने ही बेचारी अहिल्या सिर झुकाये बैठी आसू गिरा रही थी एक तरफ कोने में पॉंच-चार कुदाल जमीन खोदने वाले पडे थे। दूसरी तरफ मट्टी के बीस-पच्चीस घडे जल से भर पड़े हुए थे। अहिल्या के सामने राजा खडा उसी की तरफ देख रहा था, राजा के पीछे मेरा बाप सुजनसिंह और हरीसिंह राजा के मुसाहब खडे थे। मेरे बाप की गोद में एक लडकी थी जिसकी उम्र लगभग तीन वर्ष के होगी। हाय उसकी सूरत याद पडने से रोंगटे खडे हो जाते हैं। उसकी सूरत किसी तरह भूलाये नहीं भूलती। राजा ने अहिल्या से कहा— 'सुन्दरी तू मेरी बात न मानेगी ? तू मेरी होकर न रहगी ?

साधू०—क्या नाम लिया सुन्दरी !

तारा०—जी हॉं सुन्दरी उसी समय मुझे मालूम हुआ कि उसका नाम सुन्दरी भी है।

साधू०—हाय, अच्छा तब क्या हुआ ?

तारा०—सुन्दरी ने सिर हिलाकर इन्कार किया।

साधू०—तब ?

तारा०—राजा ने कहा 'सुन्दरी अगर तू मेरी बात न मानेगी तो पछताएगी। मै जबर्दस्ती तुझे अपने कब्जे में करके अपनी ख्वाहिश पूरी कर सकता हूँ, मगर मै चाहता हूँ कि एक दिन के लिए क्या हमेशा के लिए तू मेरी हो जा। अगर तेरी इच्छा है तो तेरे लिए रानी को भी मार डालने को मै तैयार हूँ और तुझे अपनी रानी बना सकता हूँ ! इसके जवाब में सुन्दरी ने कहा अरे दुष्ट, तू बेहूदी बातें क्यों बकता है अगर तू साक्षात इन्द्र भी बनके आवे तो मेरे दिल को नहीं फेर सकता !!

साधू०—शाबाश, अच्छा तब क्या हुआ ?'

तारा०—राजा ने मेरे पिता की तरफ कुछ इशारा किया उसने लड़की को जिसे वह गोद में लिए हुए था, चादर से बॉंध खूटी के साथ उलटा लटका दिया और खंजर निकाल सामने जा खडा हुआ। लडकी बेचारी चिल्लाने लगी और सुन्दरी की ऑंखों से भी ऑंसू की धारा बह चली। राजा ने फिर पुकार कर कहा 'सुन्दरी अब भी मान जा नहीं तो तेरी इसी लडकी के खून से तुझे नहलाऊँगा !! हाय क्या मै अपने पति के साथ दगा करूँ और उसकी होकर दूसरे की बनूँ ! यह कभी नहीं हो सकता !!

राजा ने हरीसिंह और मेरे पिता की तरफ कुछ इशारा किया, हरीसिंह ने एक कटोरा लड़की के नीचे रख दिया मेरे पिता ने खञ्जर से लड़की का काम तमाम करना चाहा मगर न मालूम कहॉं से उसके दिल मे दया का संचार हुआ कि खञ्जर उसके हाथ से गिर पड़ा। राजा को उसकी अवस्था देख क्रोध चढ आया, तलवार खैंचकर मेरे पिता के पास पहुँचा और बोला 'हरामजादे !क्या मेरी बात तू नहीं सुनता !खबरदार होशियार हो जा, इस लड़की का खून इस कटोरे में भर कर मुझे दे मै जबर्दस्ती हरामजादी को पिलाऊँगा !!

लाचार मेरे बाप ने फिर खञ्जर उठा लिया। और उसका दस्ता (कब्जा) इस जोर से बेचारी चिल्लाती हुई लड़की के सर मे मारा कि सर फूट की तरह फट गया और खून का तरारा बहने लगा। यह हाल देखकर बेचारी सुन्दरी चिल्लाई और 'हाय' करके बेहोश हो गई। मेरे भी हवास जाते रहे और मै भी बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी। घन्टे भर बाद

जब मुझे होश आया मैं उठी और उसी सूराख की राह झाँककर देखने लगी मगर इस वक्त दूसरा ही समा नजर पडा। उस दीवानखाने में न तो सुन्दरी थी और न वह लटकती हुई लडकी ही। उसके बदले दूसरे दो आदमियों की लाश वहाँ पडी हुई थी। राजा और उसके साथी जो-जो बातें करते थे साफ सुनाई देती थीं। राजा ने मेरे बाप की तरफ देखकर कहा "ये दोनों हरामजादी लौंडियाँ छत पर चढ़कर मेरी कारवाई देख रही थीं। इन्हें अपनी जान का कुछ खौफ न था। (हरीसिंह की तरफ देखकर) हरी, इन दोनों की लाश ऐसी जगह पहुँचाओ कि हजारों वर्ष बीत जाने पर भी किसी को इनके हाल की खबर न हो (मेरे बाप की तरफ देखकर) तैंने बहुत बुरा किया जो तारा को छोड़ दिया बेशक अब वह भाग गई होगी, लेकिन तेरी जान तभी बचेगी जब तारा का सर मेरे सामने लाकर हाजिर करेगा वह भी ऐसे ढंग से कि किसी को कानोंकान खबर न हो कि तारा कहाँ गई और क्या हुई। बेशक तारा यह हाल वीरसिंह से भी कहेगी मुझे लाजिम है कि जहाँ तक जल्द हो सके वीरसिंह को भी इस दुनिया से उठा दूँ।" यह सुनते ही मेरा कलेजा काँप उठा और यह सोचती हुई कि मैं अभी जाकर अपने पति को इस हाल की खबर करूँगी जिसमें वे अपनी जान बचा सकें वहाँ से भागी और महल से एक लौंडी साथ ले तुरंत अपने घर चली आई।

साधू महाशय तारा के मुँह से इस किस्से को सुनकर काँप गये और देर तक गौर में पड़े रहने के बाद बोले "यह राजा बड़ा ही दुष्ट और दगाबाज है, लेकिन ईश्वर चाहेगा तो बहुत जल्द अपने कर्मों का फल भोगेगा"॥

बारहवां बयान

हम ऊपर लिख आये हैं कि जमींदारों और सरदारों की कुमेटी में से अपने तीनों साथियों और नाहरसिंह को साथ ले वीरसिंह की खोज में खड्गसिंह बाहर निकले और थोडी दूर जाकर उन्होंने जमीन पर पडी हुई एक लाश देखी। लालटेन की रोशनी में चेहरा देखकर लोगों ने पहिचाना कि यह राजा का आदमी है।

नाहर०—मालूम होता है इस जगह राजा के आदमियों और वीरसिंह में लडाई हुई है।

खड्ग०—अगर ऐसा हुआ है ताज्जुब नहीं कि वीरसिंह को गिरफ्तार करके राजा के आदमी ले गए हों।

नाहर०—अगर इस समय हम लोग महाराज के पास पहुचें तो वीरसिंह को जरूर पावेंगे।

खडग०—मैं इस समय जरूर महाराज के पास जाऊँगा, क्या आप भी मेरे साथ वहाँ चल सकते है ?

नाहर०—चलने में हर्ज ही क्या है ? मैं ऐसा डरपाक नहीं हूँ, और जब आप ऐसा मददगार मेरे साथ है तो मैं किसी को कुछ नहीं समझता ! फिर मुझे वहाँ पहिचानता ही कौन है ?

खड्ग०—शाबाश ! आपकी बहादुरी में कोई शक नहीं मगर मैं इस समय वहाँ जाने की राय आपको नहीं दे सकता, क्या जाने कैसा मामला हो। आप इसी जगह ठहरें मैं जाता हूँ, अगर वीरसिंह वहाँ होंगे तो जरूर अपने साथ ले आऊँगा (कुछ सोचकर) मगर आपका यहाँ अकेले रहना भी मुनासिब नहीं।

नाहर०—इसकी चिन्ता आप न करें। मैं अकेला नहीं हूँ मेरे साथी लोग इधर-उधर छिप-लुके जरूर होंगे।

खडग०—अच्छा तो मैं इन तीनों आदमियों को साथ लिए जाता हूँ।

अपने तीनों आदमियों को साथ ले खड्गसिंह राजमहल की तरफ रवाना हुए। वहाँ ड्योढ़ी पर के सिपाहियों ने राजा के हुक्म मुताबिक इन्हें रोका मगर खडगसिंह ने किसी की कुछ न सुनी ज्यादे हुज्जत करने का हौसला भी सिपाहियों को न हुआ क्योंकि वे लोग जानते थे कि खडगसिंह नैपाल के सेनापति हैं।

खडगसिंह धडधडाते हुए दिवानखाने में चले गये और ठीक उस समय पहुँचे जब राजा करनसिंह अपने दोनों मुसाहबों शंभूदत्त और सरूपसिंह के साथ बातें कर रहा था और चार आदमी एक लाश उठाये हुए वहाँ पहुँचे थे। वह लाश वीरसिंह की ही थी और इस समय राजा के सामने रक्खी हुई थी। वीरसिंह मरा नहीं था मगर बहुत ज्यादे जख्मी हो जाने के कारण बेहोश था।

यकायक खड्गसिंह को वहाँ पहुँचते देख राजा को ताज्जुब हुआ और वह कुछ हिचका चेहरे पर खौफ की निशानी फैल गई, उसने बहुत जल्द अपने को सम्हाल लिया उठकर बडी खातिरदारी के साथ खडगसिंह का इस्तकबाल किया और अपने पास बैठाकर बोला, "देखिए बडी महनत और परेशानी से अपने प्यारे लडके के खूनी वीरसिंह को जिसे शैतान नाहरसिंह छुड़ा कर ले गया था, मैंने फिर पाया है।"

खड्ग०—खूनी के गिरफ्तार होने की मैं आपको बधाई देता हूँ। मैंने अच्छी तरह तहकीकात किया और निश्चय कर लिया कि वीरसिंह बड़ा ही शैतान और निमकहराम है। मैं अपने हाथ से इसका सिर काटूँगा। हाँ मैं एक बात कीऔर

मुबारकबाद दता हूँ।

राजा०–वह क्या ?

खडग०–आपके भारी दुश्मन नाहरसिह को भी इस समय मैंने गिरफ्तार कर लिया !

राजा०–(खुश होकर) वाह वाह यह वडा काम हुआ ! इसके लिए मैं जन्म भर आपका अहसान मानूँगा वह कहाँ है ?

खडग०–सिपाहियों के पहरे में अपने लश्कर भेज दिया है। मैं मुनासिब समझता हूँ कि वीरसिह को भी आप मेरे हवाले कीजिए और अपने आदमियों को हुक्म दीजिए कि इसे उठा कर मेरे डेरे में पहुँचा आवें। कल मैं एक दर्बार करूँगा जिसमें यहाँ की कुल रिआया को हाजिर हाने का हुक्म हागा। उसी में महाराज नैपाल की तरफ से आपको पदवी दी जायेगी और बिना कुछ ज्यादे पूछताछ किए इन दोनों को मैं अपन हाथ से मारूँगा। इसके सिवाय आपके दो चार दुश्मन और भी है उन्हें भी मैं उसी समय फॉसी का हुक्म दूँगा।

राजा०–यह आपको कैसे मालूम हुआ कि मरे और भी दुश्मन है ?

खडग०–महाराज नैपाल न जब मुझको इधर रवाना किया तो ताकीद की थी कि करनसिह की मदद करना और खोज कर उनके दुश्मनों को मारना। हरीपुर की रिआया बडी बेईमान और चालबाज है उन लोगों को चिढाने के लिए मरी तरफ से करनसिह को यह पत्र और अधिराज की पदवी देना। उसी हुक्म के मुताविक मैंने यहाँ पहुँच कर यहाँ के जमीदारों और सर्दारों स मेल पैदा किया और उनकी गुप्त कुमेटी में पहुँचा जो आपके विपक्ष में हुआ करती है बस फिर आपके दुश्मनों का पता लगाना क्या कठिन रह गया !

राजा०–(हस कर) आपने मेर ऊपर बडी मेहरबानी की मैं किसी तरह आपके हुक्म के खिलाफ नहीं कर सकता आप मुझे अपना तावेदार ही समझिए। क्या आप वता सकते है कि मेरे वे दुश्मन कौन हैं ?

खडग०–इस समय मैं नाम न बताऊंगा, कल दर्बार में आपके सामने ही सभों को कायल करक फॉसी का हुक्म दूँगा वे लोग भी ताज्जुब करेंगे कि किस तरह उनके दिल का भेद ले लिया गया।

खडगसिह जब यकायक दीवानखान में राजा के सामने जा पहुँचा तो राजा बहुत ही घबडाया और डरा, मगर उसने तुरंत अपन को सभाला और जी में सोचा कि खडगसिह के साथ जाहिरदारी करनी चाहिए अगर मौका देखूँगा तो इसी समय इन्हें भी खपा कर बखेडा ते करूँगा किसी को कानोकान खबर भी न होगी।

उधर खडगसिह के दिल में भी यकायक यही बात पैदा हुई। उसने सोचा कि मैं कवल तीन आदमी साथ लेकर यहाँ आ पहुँचा सो ठीक न हुआ कहीं एसा न हो कि राजा मरे साथ दगा करे क्योंकि अभी थोडी ही देर हुई है, इस बात का पता लग चुका है कि कमेटी में एक आदमी राजा का पक्षपाती भी धोखा देकर घुसा हुआ है उसकी जुबानी मेरी कुल कार्रवाई राजा को मालूम हा गई होगी, ताज्जुब नहीं कि वह इस समय दगा करे। इन बातों को सोच कर बुद्धिमानी खडगसिह ने फौरन अपना ढग वदल दिया और मतलब भरी बातों के फेर में राजा को ऐसा फसा लिया कि वह चूँ तक न कर सका। उसे विश्वास हो गया कि खडगसिंह मेरा मददगार है इससे किसी तरह का उज्र करना मुनासिब नहीं। उसने तुरंत अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वीरसिंह को उठा कर सेनापति खडगसिह के डेरे पर पहुँचा आओ। खडगसिह भी दीवानखाने क नीचे उतरे और सडक पर पहुँच कर उन्होंने अपने साथी तीन बहादुरों में से दो को मरहम पट्टी की ताकीद करक वीरसिंह के साथ जाने का हुक्म दिया तथा एक को अपने साथ लेकर उस तरफ बढे जहाँ नाहरसिंह को छोड आए थ।

उस मकान में जिसमें कमेटी हुई थी थोडी दूर इधर ही खडगसिंह न नाहरसिंह को पाया। इस समय नाहरसिह अकेला न था बल्कि पॉच आदमी और भी उसके साथ थे जिन्हें देख कर खडगसिंह ने पूछा "कौन है नाहरसिंह !" इसके जवाब में नाहरसिह ने कहा "जी हॉ।"

खडग०–ये सब कौन है ?

नाहर०–मेरे साथियों में से जो इधर-उधर घूम रहे थे और इस इन्तजार में थे कि समय पडने पर मदद दें।

खडग०–इतने ही हैं या और भी ?

नाहर०–और भी है यदि चाहूँ ता आधी घडी क अन्दर सौ बहादुर इकट्ठे हो सकते हैं।

खड्ग०–बहुत अच्छी बात है क्योंकि आज यकायक लडाई हो जाना ताज्जुब नहीं।

नाहर०–वीरसिंह का पता लगा ?

खडग०—हॉ, उन्हें जख्मी करके करनसिह के आदमी ले गए थे, उसी समय मै भी जा पहुँचा, फिर वह मुझसे क्योंकर छिपा सकता था ? आखिर उन्हें अपने कब्जे में किया और अपने आदमियों के साथ अपने डेरे पर भेजवा दिया।

नाहर०—बीरसिह की कैसी हालत है ?

खड़ग०—अच्छी हालत है कोई हर्ज नहीं जख्म हैं मालूम होता है बहादुर ने लडने में कसर नहीं की। मेरे आदमियों ने पट्टी बॉध दी होगी। अब देर न करो चलो, सर्दार लोग अभी तक बैठे मेरा इन्तजार कर रहे होंगे।

नाहर०—जी हॉ, जब तक हम लोग न जायेंगे वे लोग बेचैन रहेंगे।

खडगसिह के पीछे अपने साथियों के साथ नाहरसिह फिर उसी मकान में गया जिसमें कुमेटी बैठी थी कुल सर्दार और जमींदार अभी तक वहॉ मौजूद थे। खडगसिह को देख सब उठ खडे हुए। खडगसिह ने बैठने के बाद अपने बगल में नाहरसिह को बैठाया और सब को बैठने का हुक्म दिया। नाहरसिह ने अपने साथियों में से एक आदमी को अपने पास बैठाया जो अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए था।

अनिरूद्ध०—बीरसिंह का पता लगा ?

खडग०—हॉ, वह राजा के दगाबाज नौकरों के हाथ में फॅस गया था, मै वहॉ जाकर उसे छुडा लाया और अपने डेरे पर भेजवा दिया, अब बच्चनसिह और हरिहरसिह को भी पहरे के साथ हमारे लश्कर में भिजवा देना चाहिए।

तुरत हुक्म की तामील हुई, कई सिपाहियों को पहरे पर से बुलवा कर दोनों बईमान उनके सुपुर्द किए गए और एक बहादुर सर्दार उनके साथ पहुँचाने के लिए गया।

खडग०—(नाहरसिंह की तरफ देख कर) हॉ तो करनसिंह का लडका जीता है ? उसे तुम दिखा सकते हो ?

नाहर०—जी हॉ, उसके जीते रहने का एक सबूत तो मेर पास इसी समय मौजूद है।

खडग०—वह क्या ?

नाहरसिंह ने एक पत्र कमर से निकाल कर खडगसिह के हाथ में दिया और पढने के लिए कहा। यह वही चिट्ठी थी जो नदी में तैरते हुए रामदास को गिरफ्तार करने के बाद उसकी कमर से नाहरसिह ने पाई थी। इसे पढते ही गुस्से से खडगसिह की ऑखें लाल हो गई।

खडग०—बेशक यह कागज राजा के हाथ का लिखा हुआ है, फिर उसकी मोहर भी मौजूद है, इससे बढ कर और किसी सबूत की हमें जरूरत नहीं, अब सूरजसिह का पता न भी लगे तो कोई हर्ज नहीं। (अनिरूद्धसिंह के हाथ में चिट्ठी देकर) लो पढो बाकी सभों को भी पढने को दो।

एकाएकी वह चिट्ठी सभों के हाथ में गई और सभी ने पढ कर इस बात पर अपनी प्रसन्नता प्रकट की कि बीरसिंह निर्दोष निकला।

अनिरूद्ध०—(खडगसिंह से) अब आपको मालूम हो गया कि हम लोगों की जो दरखास्त नैपाल गई थी वह व्यर्थ न थी।

खडग०—बेशक (नाहरसिंह की तरफ देख कर) हॉ आपने कहा था कि बीरसिंह का असल हाल आप लोग नहीं जानते। वह कौन सा हाल है क्या आप कह सकते है ?

नाहर०—हॉ मै कह सकता हूँ यदि आप लोग दिल लगा कर सुनें।

खडग०—जरूर सुनेंगे।

नाहरसिंह ने करनसिह और करनसिंह सतू का हाल और अपने बचने का सबब जो बीरसिह से कहा था इस जगह खडगसिंह और सब सर्दारों के सामने कह सुनाया और इसके बाद बीरसिंह को कैद से छुडाने का हाल और अपनी बहिन सुन्दरी का भी पूरा हाल कहा जो तारा ने बाबाजी से बयान किया था। सुन्दरी का बहुत कुछ हाल नाहरसिंह को पहिले से ही मालूम था, बाकी हाल जो तारा ने बीरसिह से कहा था वह अपने बडे भाई नाहरसिह को सुनाया था। बीरसिह यह नहीं जानता था कि उसकी स्त्री तारा ने जिस अहिल्या का हाल उससे कहा था वह उसकी बहिन सुन्दरी ही थी। जब बीरसिंह और नाहरसिंह में मुलाकात हुई और अपनी बहिन सुन्दरी का नाम नाहरसिह से सुना तब मालूम हुआ कि अहिल्या या सुन्दरी ही वह बहिन है।

नाहरसिंह की जुबानी करनसिंह का किस्सा सुन कर सभी का जी बेचैन हो गया, ऑखों में ऑसू भर कर सभों ने लम्बी सॉसें ली और बेईमान करनसिंह राटू को गालियॉ देने लगे। थोडी देर तक सभों के चेहरे पर उदासी छाई रही मगर

फिर क्रोध ने सभों का चेहरा लाल कर दिया और सभों ने दाँत पीस कर कहा कि 'हम लोग ऐसे नालायक राजा की तावेदारी नहीं कर सकते, हम लोग अपने हाथों से राजा को सजा देंगे और असली राजा करनसिंह के लडके विजयसिह (नाहरसिह) को यहाँ की गद्दी पर बैठावेंगे, हम लोग चन्दा करके रुपै बटोरेंगे और फौज तैयार करके विजयसिह और बीरसिंह को सर्दार बनावेंगे, इत्यादि इत्यादि ।"

जोश में आकर बहुत सी बातें सरदारों ने कहीं और इसी समय खडगसिंह ने भी अपनी फौज के सहित जो नेपाल से साथ लाए थे, बीरसिंह और नाहरसिंह की मदद करना कबूल किया।

नाहर०—मेरी बहन सुन्दरी का हाल थोडा सा और बाकी है जिसे आप चाहें तो सुन सकते हैं, यह हाल मुझे इनकी (अपने बगल में बैठे हुए साथी की तरफ इशारा करके) जुबानी मालूम हुआ है।

सर्दार०—हाँ हाँ जरूर सुनेंगे ये कौन है ?

नाहर०—यह अपना हाल खुद आप लोगों से बयान करेंगे।

खडग०—मगर इनका चाहिए कि अपने चेहरे से नकाब हटा दें।

नाहरसिह के ये साथी महाशय जो उनके बगल में बैठे हुए थे वे ही बाबू साहब थे जो बाद में एक लडके को लेकर सुन्दरी से मिलने के लिए किले के अन्दर तहखाने में गये थे। इन्हें पाठक अभी भूले न होंगे। खडगसिंह के कहते ही बाबू साहब ने 'कोई हर्ज नहीं' कह कर अपने चेहरे से नकाब हटा दी और बचारी सुन्दरी का बाकी किस्सा कहने लगे। इन्हें इस शहर में कोई भी पहिचानता नहीं था।

बाबू साहब०—सुन्दरी अहिल्या के नाम से बहुत दिनों तक इस नालायक राजा के यहा रही। राजा की पाप भरी आँखों का अन्दाज रानी को मालूम हो गया और उसने चुपके से सुन्दरी को अपने नैहर भेज कर बाप को कहला भेजा कि उसकी शादी करा दी जाय। सुन्दरी की शादी मरे साथ की गई और वह बहुत दिनों तक मेरे घर में रही, एक लडकी और उसके बाद एक लडका भी पैदा हुआ। तब तक राजा को सुन्दरी का पता न लगा मगर वह खोज लगाता ही रहा आखिर मालूम हाने पर उसने सुन्दरी का चुरा मंगाया और उसके साथ जिस तरह का बर्ताव किया आप बहादुर विजयसिह की जुबानी सुन ही चुके हैं। बेचारी लडकी जिस तरह मारी गई उसे याद करने से कलेजा फटता है। सुन्दरी को राजी करन के लिए राजा ने बहुत कुछ उद्योग किया मगर उस बेचारी ने अपना धर्म न छोडा। आखिर राजा ने उसे गुप्त रीति से किले के अन्दर के एक तहखाने में बन्द किया और उसकी लडकी का खून एक कटोर में भर कर और मसाले से जमाकर एक चौकी पर उसके सामने रख दिया जिससें वह रात-दिन उसे देखा करे और कुढा कर। आप लोग खूब समझते है कि उस बेचारी की क्या हालत होगी और उस कटोरे भर खून की तरफ देख-देख कर उसके दिल पर क्या गुजरती होगी, मगर वाह रे सुन्दरी फिर भी उसने अपना धर्म न छोडा !!

बाबू साहब ने इतना ही कहा था कि सभों के मुँह से वाह रे सुन्दरी शाबाश शाबाश ! धर्म पर दृढ रहने वाली औरत तेरे जैसी कोई काहे को होगी ! की आवाज आने लगी। बाबू साहब ने फिर कहना शुरू किया—

बाबू साहब०—जब सुन्दरी कैदखाने में बेबस की गई तो कई लौंडियाँ उसकी हिफाजत के लिए छोडी गईं। उनमें से एक लौंडी सुन्दरी पर दया करके ओर अपनी जान पर खेल के वहाँ से निकल भागी। उसने मेरे पास पहुँच कर सब हाल कहा और अन्त में उसने सुन्दरी का यह सदेसा मुझे लाकर दिया कि लडके को लेकर तुम्हें एक नजर देखने के लिए बुलाया है, जिस तरह बन आकर मिलो ! सुन्दरी का हाल सुन मेरा कलेजा फट गया। मै इस शहर में आया और उससे मिलने का उद्योग करने लगा। इस फेर में बरस भर से ज्यादे बीत गया बहुत सा रूपया खर्च किया और कई आदमियों को अपना पक्षपाती बनाया आखिर दो ही चार दिन हुए है कि किसी तरह उस छोटे बच्चे को जा नालायक के हाथ से बच गया और मरे पास था, लेकर किले के अन्दर तहखाने में गया और उससे मिला इत्तिफाक से उसी दिन नाहरसिंह ने बीरसिंह को कैदखाने से छुडाया था और यह हाल मुझे मालूम था बल्कि बीरसिह के छुडाने की खबर कई पहरे वालों को भी लग गई थी मगर वे लोग राजा के दुश्मन और बीरसिह के पक्षपाती हो रहे थे इस लिए नाहरसिह के काम में विघ्न न पडा।

सुन्दरी जानती थी कि बीरसिंह उसका भाई है मगर राजा के जुल्म ने उसे हर तरह से मजबूर कर रक्खा था। बीरसिंह के कैद होने का हाल सुन कर सुन्दरी और भी बचैन हुई मगर जब मैने उसके छूटने का हाल कहा तो कुछ खुश हुई। मै तहखाने में सुन्दरी से बातचीत कर ही रहा था कि राजा का मुसाहब बेईमान हरीसिह वहाँ जा पहुँचा। उस समय सुन्दरी मेरी और अपनी जिन्दगी स नाउम्मीद हो गई। आखिर हरीसिह उसी समय मुझसे लड कर मारा गया और मैं

उसकी लाश एक कम्बल में बॉध और लडके को एक लौंडी की गोद में दे और उसे साथ ले तहखाने के बाहर निकला और मैदान में पहुंचा। वहॉ नाहरसिह के दो आदमियों से मुलाकात हुई। मुझे नाहरसिंह तथा बीरसिंह से मिलने का बहुत शौक था और उन लोगों ने भी मुझे अपने साथ ले चलना मजूर किया। आखिर हरीसिंह की लाश गाड़ दी गई लौडी वापस कर दी गई और मै लडके को लेकर उन दो आदमियों के साथ नाहरसिंह की तरफ रवाना हुआ। उसी समय राजा के कई सवार भी वहॉ आ पहुँचे जो नाहरसिंह की खोज में घोड़ा फेंकते उसी तरफ जा रहे थे हम लोगों को तो डर हुआ कि गिरफ्तार हो जायेंगे, मगर ईश्वर ने बचाया। एक पुल के नीचे छिप कर हम लोग बच गए और नाहरसिंह और बीरसिंह से मिलने की नौबत आई।

खडग०—लडका अब कहॉ है ?

बाबू साहब०—(नाहरसिंह की तरफ इशारा कर के) इनके आदमियों के सुपुर्द है।

खडग०—तुम लोगों का हाल बडा ही दर्दनाक है सुनने में कलेजा कापता है। लेकिन अभी तक यह नहीं मालूम हुआ कि बेचारी तारा कहॉ है और उस पर क्या बीती ?

नाहर०—तारा का हाल मुझे मालूम है मगर मैंने अभी तक बीरसिंह से नहीं कहा।

एक सर्दार०—तो इस समय भी उसका कहना शायद आप मुनासिब न समझते हों।

नाहर०—कहने में कोई हर्ज भी नहीं।

खडग०—तो कहिए।

नाहर—ऊपर के हाल से आपको इतना तो जरूर मालूम हो गया होगा कि बेईमान राजा ने तारा के बाप सुजनसिह को इस बात पर मजबूर किया था कि वह तारा का सिर काट लावे।

खडग०—हॉ, इसलिए कि सुजनसिंह ने दीवानखाने की छत पर से लौंडियों को तो गिरफ्तार किया मगर तारा को छोड दिया था।

नाहर—ठीक है राजा यह भी चाहता था कि तारा यदि राजा के साथ रहना स्वीकार करे तो उसकी जान छाड दी जाय। इस काम के लिए समझाने-बुझाने पर हरीसिह मुकर्रर किया गया था, मगर तारा ने कबूल न किया। जिस समय बीरसिह के बाग में सुजनसिह अपनी लडकी तारा की छाती पर सवार हो उसे मारना चाहता था मै भी वहा मौजूद था उसी समय एक साधू महाशय भी वहॉ आ पहुँचे और उन्होंने मेरी मदद से तारा को छुडाया। इस समय तारा उन्हीं के यहॉ है।

खडग०—आपने एक साधू फकीर की हिफाजत में तारा को क्यों छोड दिया ? उस साधू का क्या भरासा ?

नाहर०—उस साधू का मुझे बहुत भरोसा है। वे बडे ही महात्मा है। यह तो मै नहीं जानता कि वे कहॉ के रहने वाले हैं मगर वे किसी से बहुत मिलते-जुलते नहीं निराले जगल में रहा करते हैं मुझ पर बडा ही प्रेम रखते हैं मैंने सब हाल उनसे कह दिया है और अक्सर उन्हीं की राय से सब काम किया करता हूँ, उनके खाने-पीने का इन्तजाम भी मैं ही करता हूँ।

खडग०—क्या मै उन से मिल सकता हूँ ?

नाहर०—इस बात को शायद वह नामजूर करें। (आसमान की तरफ देख कर) अब तो सवेरा हुआ ही चाहता है मेरा शहर में रहना मुनासिब नहीं।

खडग०—अगर आप मेरे यहॉ रहें तो कोई हर्ज भी नहीं है।

नाहर०—ठीक है मगर ऐसा करने से कुछ विशष लाभ नहीं है बीरसिंह को मै आपके सुपुर्द करता हूँ और बाबू साहब को अपने साथ लेकर जाता हूँ फिर जब और जहॉ कहिए हाजिर होऊँ।

खडग०—खैर ऐसा ही सही मगर एक बात और सुन लो।

नाहर०—वह क्या ?

खडग०—उस समय जब मैं बीरसिंह को छुडाने के लिए राजा के पास गया था तो समयानुसार मुनासिब समझ कर उसी के मतलब की बातें की थीं मैं कह आया था कि कल एक आम दर्बार करूँगा और तुम्हारे दुश्मनों तथा बीरसिंह को फॉसी का हुक्म दूँगा, उसी दर्बार में महाराज नैपाल की तरफ से तुमको अधिराज की पदवी भी दी जायेगी। यह बात मैंने कई मतलबों से कही थी। इस बारे में तुम्हारी क्या राय है ?

नाहर०—बात तो अच्छी है। इस दर्बार में बडा मजा रहेगा, कई तरह के गुल खिलेंगे मगर साथ ही इसके फसाद भी

खूब मचगा ताज्जुब नहीं कि राजा बिगड जाय और लडाई हो पड, इससे मरी राय है कि कल का दिन आप टाल दें और लडाई का पूरा बन्दोबस्त कर लें इस बीच मै भी अपन को हर तरह से दुरुस्त कर लूगा।

खडग०–(और सर्दारों की तरफ देख कर) आप लोगों की क्या राय है ?

सर्दार०–नाहरसिंह का कहना ठीक है हम लोगों को लडाई के लिए तैयार हो कर ही दर्बार में जाना चाहिय। हम लोग भी अपने सिपाहियों की दुरुस्ती करना चाहते हैं कल का दिन टल जाय तभी अच्छा है।

खडग०–खैर एसा ही सही।

गुप्त रीति से राय के तौर पर दो चार बातें और करने के बाद दर्बार बर्खास्त कर दिया गया। बाबूसाहब को साथ लकर नाहरसिह चला गया सर्दार लाग भी अपन अपन घर को रवाना हुए खड्गसिह अपन डेरे पर आये और बीरसिह को होश में पाया उनसे सब हाल कहा और उनका इलाज कराने लगे।

तेरहवां बयान

खडगसिंह जब राजा करनसिंह के दीवानखाने में गये और राजा से बातचीत करके बीरसिंह को छुडा लाये तो उसी समय अर्थात् जब खडगसिंह दीवानखाने से रवाना हुए तभी राजा के मुसाहबों में सरूपसिह चुपचाप खडगसिंह के पीछे रवाना हुआ और छिपता हुआ वहाँ तक आया जहाँ सडक पर खडगसिंह और नाहरसिंह से मुलाकात हुई थी और खडगसिंह ने पुकार कर पूछा था, 'कौन है नाहरसिह।

सरूपसिंह उसी समय चौंका और जी में सोचने लगा कि खडगसिह दिल में राजा का दुश्मन है क्योंकि राजा के सामने उसने कहा था कि नाहरसिंह का हमने गिरफ्तार कर लिया और कैद करके अपने लश्कर में भेज दिया है मगर यहाँ मामला दूसरा ही नजर आता है नाहरसिह तो खुले मैदान में घूम रहा है 'मालूम होता है खड़गसिह ने उससे दोस्ती कर ली।

लेकिन नाहरसिंह का नाम सुनते ही सरूपसिह इतना डरा कि वहाँ एक पल भी खडा न रह सका भागता और हाँफता हुआ राजा के पास पहुँचा।

राजा०–क्यों क्या खबर है ? तुम इस तरह बदहवास क्यों चले आ रहे हो ? कहाँ गये थे ?

सरूप०–खडगसिंह के पीछे गया था।

राजा०–किस लिए ?

सरूप०–जिससे मालूम करूँ कि वह कहा जाता है और सच्चा है या झूठा।

राजा०–तो फिर क्या देखा ?

सरूप०–बडा ही भारी बेईमान और झूठा है उसने आपको पूरा धोका दिया और नाहरसिह के गिरफ्तार करने की बात भी बिल्कुल झूठ कही। नाहरसिह खुले मैदान घूम रहा है बल्कि खडगसिह और उनमें दोस्ती मालूम पडती है। जिस मकान में दुश्मनों की कुमेटी होती है उनके पास ही खडगसिंह नाहरसिह से मिला जो कई आदमियों को साथ लिए वहाँ खडा था और बातचीत करता हुआ उसके साथ ही कुमेटी वाले मकान में चला गया।

राजा०–तुमने कैसे जाना कि यह नाहरसिह है ?

सरूप०–खडगसिंह ने नाम लेकर पुकारा और दोनों में बातचीत हुई।

राजा०–क्या बीरसिंह को लिए हुए खडगसिंह वहाँ गया था ?

सरूप०–नहीं उसने बीरसिह को तो अपने आदमियों के साथ करके अपने डेरे पर भेज दिया और आप उस तरफ चला गया था।

राजा०–तो बेईमान ने मुझे पूरा धोखा दिया !!

सरूप०–बेशक।

राजा०–अफसोस 'यहाँ अच्छे मौके पर आया था अगर मै चाहता तो उसी वक्त काम तमाम कर देता और किसी को खबर भी न होती।

सरूप०–इस समय खडगसिंह नाहरसिह को साथ लेकर उस मकान में गया है जिसमें कुमेटी हो रही है अगर

आप सौ आदमी मेरे साथ दें तो मै अभी वहाँ जाकर दुश्मनों को गिरफ्तार कर लू।

राजा०—पागल भया है !रिआया के दिल में जो कुछ थोड़ा खौफ बना है वह भी जातारहेगा, इसी समय शहर में बलवा हो जायेगा और फिर कुछ करते-धरते न बन पड़ेगा पहिले अपने पैर मजबूत कर लेना चाहिए तुम तो चुपचाप बिना मुझसे कुछ कहे खड़गसिंह के पीछे-पीछे चले गए थे मगर मैने खुद शभूदत्त को उनके पीछे भेजा है, दखें वह क्या खबर लाता है। वह आ ले तो कोई बात पक्की की जाय। अफसोस !मै धोखे में आ गया !!

थोडी देर तक इन दोनों में बातचीत होती रही, सरूपसिंह के आधे घण्टे बाद शभूदत्त भी आ पहूँचा, वह भी बदहवास और परेशान था।

राजा०—क्या खबर है ?

शभू०—खबर क्या पूरी चालबाजी खेली गई खड़गसिंह ने धोखा दिया। बीरसिंह को तो अपने आदमियों के साथ अपने डेरे पर भेज दिया और सीधे उस मकान में पहुँचा जिसमें दुश्मनों की कुमेटी हुई थी, नाहरसिंह रास्ते में मिला उसे अपने साथ लेता गया।

राजा०—खैर इतना हाल तो हमें सरूपसिह की जुबानी मालूम हो गया, ज्यादे तुम क्या खबर लाए ?

शभू०—यह सरूपसिंह को कैसे मालूम हुआ ?

राजा०—सरूपसिंह खुद खड़गसिंह के पीछे गया था जिसकी मुझे खबर न थी।

शभू०—अच्छा तो मैं एक खबर और भी लाया हूँ।

राजा०—वह क्या ?

शभू०—बच्चनसिंह गिरफ्तार हो गया और हरिहरसिह के हाथ में भी हथकड़ी पड गई।

राजा०—(चौककर) क्या ऐसी बात है ?

शभू०—जी हाँ।

राजा०—इतनी बडी ढिठाई किसने की ?

शभू०—सिवाय खडगसिह के इतनी बडी मजाल किसकी थी ?

राजा०—अब वे दोनों कहाँ है ?

शभू०—खडगसिंह के लश्कर में गये, उनके आदमी भी साथ थे लश्कर के पास तक मैं पीछे-पीछे गया फिर लौट आया।

राजा०—अब तो हद्द से ज्यादा हो गई !(जोश में आकर) खैर क्या हर्ज है समझ लूगा। उन कम्बख्तों को मैं कब छोड़ने वाला हूँ, अब तो खडगसिंह पर भी खुल्लमखुल्ला इलजाम लगाने का मौका मिला। अच्छा सेनापति को बुलाओ बहुत जल्द हाजिर करो।

शभू०—बहुत खूब।

राजा०—नही नहीं, ठहरो, आने-जाने में देर होगी मैं खुद चलता हूँ, तुम दोनों मेरे साथ चलो।

शभू०—जो हुक्म।

राजा ने अपने कपडे दुरुस्त किये हर्बे लगाए, और चल खडा हुआ, दोनों मुसाहब उसके साथ हुए।

सदर ड्योढी पर पहुँचा, तीन सवारों के घोडे ले लिए और उन्हीं पर सवार होकर तीनों आदमी उस तरफ रवाना हुए जिधर राजा की फौज रहती थी। घोड़ा फेंकते हुए ये तीनों आदमी बहुत जल्द वहां पहुँचे और सेनापति के बगले के पास आकर खडे हो गये।

सेनापति को आने की खबर की गई, वह बेमौके राजा के आने पर जो एक नई बात थी, ताज्जुब करके घबड़ाया हुआ बाहर निकल आया और हाथ जोडकर राजा के पास खडा हो गया। राजा और उसके मुसाहब घोडे के नीचे उतरे और सेनापति के साथ बगले के अन्दर चले गये, वहाँ के पहरे वालों ने घोडा थाम लिया।

घण्टे भर तक ये लोग बगले के अन्दर रहे, न मालूम क्या-क्या बातें होती रहीं और किस-किस तरह का बन्दोबस्त इन लोगों ने विचारा। खैर जो कुछ होगा मौके पर देखा जायेगा। घण्टे भर के बाद राजा बगले के बाहर निकला और मुसाहबों के साथ अपने घर पहुँचा। सुबह की सुफेदी आसमान पर फैल चुकी थी। वह रात भर का जागा हुआ था, आँखें भारी हो रही थीं, पलग पर जाते ही नींद आ गई और पहर दिन चढे तक सोया रहा।

जब करनसिंह राठू की आँख खुली तो वह बहुत उदास था। उसके जी की बेचैनी बढती ही जाती थी, रात की बातें

एक पल के लिए उसके दिल से दूर न होती थी। थोडी देर तक वह किसी सोच-विचार में बैठा रहा आखिर उठा और जरूरी कामों से छुट्टी पा स्नान-भोजन कर दीवानखाने में जा बैठा। अपने मुसाहबों को जो पूरे बेईमान और हरामजादे थे तलब किया और जब वे लोग आ गए तो खडगसिंह के नाम की एक चिट्ठी लिखी जिसमें यह पूछा कि आपने आज दर्बार करने के लिए कहा था, सो किस समय होगा' ?

इस चिट्ठी का जवाब लाने के लिए सरूपसिंह को कहा गया और वह राजा से विदा हो खडगसिंह की तरफ रवाना हुआ।

इस समय खडगसिंह अपने डेरे में बैठे यहाँ के बड़े-बड़े रईसों और सरदारों से बातचीत कर रहे थे जब दर्बान ने हाजिर होकर अर्ज किया कि राजा का एक मुसाहब सरूपसिंह मिलने के लिए आया है। खडगसिंह ने उसके हाजिर होने का हुक्म दिया। सरूपसिंह हाजिर हुआ तो रईसों और सरदारों को बैठा हुए देख कर कुढ गया मगर लाचार था क्योंकि कुछ कह नहीं सकता था। राजा की चिट्ठी खडगसिंह के हाथ में दी और उन्होंने पढ कर यह जवाब लिखा –

"जहाँ तक मैं समझता हूँ आज दर्बार करना मुनासिब न होगा क्योंकि अभी तक इस बात की खबर शहर में नहीं की गई इससे मैं चाहता हूँ कि दर्बार का दिन कल मुकर्रर किया जाय और आज इस बात की पूरी मुनादी करा दी जाय। दर्बार का समय रात को और स्थान आपका बडा बाग उचित होगा दर्बार में केवल यहाँ के रईस और सरदार लोग ही बुलाए जायें।"

—खडगसिंह

चिट्ठी का जवाब लेकर सरूपसिंह राजा के पास हाजिर हुआ और जो कुछ वहाँ देखा था अर्ज करने के बाद खडगसिंह की चिट्ठी राजा के हाथ में दी। चिट्ठी पढने के बाद थोडी देर राजा चुप रहा और बोला –

राजा०–अब तो खडगसिंह के हर काम से भेद मालूम होता है दर्बार का दिन कल मुकर्रर किया गया, यह तो मेरे लिए भी अच्छा है मगर समय रात का और स्थान बाग इसका क्या सबब ?

सरूप०–किसी के दिल का हाल क्योंकर मालूम हो ? मगर यह तो साफ जानता हूँ कि उसकी नियत खराब है जरूर वह भी अपने लिए कोई बन्दोबस्त करना चाहता है।

राजा०–खैर जो होगा देखा जायेगा मुनादी के लिए हुक्म दे दो हम भी अपने को बहादुर लगाते हैं। यकायकी डरने वाले नहीं हाँ इतना होगा कि बाग में हमारी फौज न जा सकेगी–खैर बाहर ही रहेगी।

सरूप०–उसने वहाँ एक सिंहासन भेजने के वास्ते भी कहा है। शायद पदवी देने के बाद आप उस पर बैठाये जायेंगे।

राजा०–हाँ उन सब चीजों का जाना तो बहुत ही जरूरी है क्योंकि इस बात का निश्चय कोई भी नहीं कर सकता कि कल क्या होगा और उसकी तरफ से क्या-क्या रंग रचे जायेंगे मगर इतना खूब समझे रखना कि करनसिंह उन शैतानों से नावाकिफ नहीं है और ऐसा कमजोर भोला या बुजदिल भी नहीं है कि जिसका जी चाहे यकायकी धोखा दे जाय या खम ठोंक कर मुकाबला करके अपना काम निकाल ले !!

चौदहवां बयान

रात पहर भर जा चुकी है। खडगसिंह अपने मकान में बैठे इस बात पर विचार कर रहे हैं कि कल दर्बार में क्या किया जायगा। यहाँ के दस-बीस सर्दारों के अतिरिक्त खडगसिंह के पास नाहरसिंह, बीरसिंह और बाबू साहब भी बैठे हैं।

खडग–बस यही राय ठीक है। दर्बार में अगर राजा के आदमियों से हमारे खैरखाह सर्दार लोग गिनती में कम भी रहेंगे तो कोई हर्ज नहीं।

नाहर०–जिस समय गरज कर मैं अपना नाम कहूँगा राजा की आधी जान उसी समय निकल जायेगी फिर कसूरवार आदमी का हौसला ही कितना बडा ? उसकी आधी हिम्मत तो उसी समय जाती रहती है जब उसके दोष उसे याद दिलाये जाते हैं।

एक सर्दार०–हम लोगों ने यह भी सोच रक्खा है कि या तो अपने को हमेशा के लिए उस दुष्ट राजा की ताबेदारी से छुड़ायेंगे या फिर लड कर जान ही दे देंगे।

नाहर–ईश्वर चाहे तो ऐसी नौबत नहीं आवेगी और सहज ही में सब काम हो जायेगा। राजा की जान लेना यह तो

काई वडी वात नहीं मगर मै चाहता ता आज तक कभी का उस यमलाक पहुचा दिये हाता, मगर मै आज का सा समय ढूढ़ रहा था और चाहता था कि वह तभी मारा जाय जव उसकी हरमजदगी लोगों पर सावित हो जाय और लाग भी समझ जॉय कि वुर कामों का फल ऐसा ही हाता है।

खड़ग० –(नाहरसिह से) हॉ आपने कहा था कि बावाजी ने तुमसे मिलना मजूर कर लिया, घण्टे में यहाँ जरूर आवेंगे अभी तक आए नहीं।

नाहर०–वे जरूर आवेंग।

इतने में दर्वान ने आकर अर्ज किया कि एक माधू वाहर खड है जो हाजिर हुआ चाहत है। इतना मुनत ही खडगसिह उठ खडे हुए और सभों की तरफ देखकर वाले एस परोपकारी महात्मा की इज्जत सभों को करनी चाहिये।

सव के सव उठ खड हुए और आग वढकर वडी इज्जत म वावाजी को ले आये और सव से ऊँचे दर्जे पर वैठाया।

वावा०–आप लाग व्यर्थ इतना कष्ट कर रहे है। मै एक अदना फकीर इतनी प्रतिष्ठा क योग्य नहीं हूँ।

खडग०–यह कहन की कोइ आवश्यकता नहीं आपकी तारीफ नाहरसिह की जुवानी जो कुछ सुनी है मर दिल में है।

वावा०–अच्छा इन वातों को जाने दीजिए और यह कहिए कि दर्वार के लिए जा कुछ वन्दोवस्त आप लोग किया चाहते थे वह हो गया या नहीं?

खडग०–सव दुरुस्त हो गया कल रात को राजा क वड वाग में दर्वार हागा।

वावा०–मरी इच्छा हाती है कि दर्वार में चलू।

खडग०–आप खुशी से चल सकते है रोकन वाला कौन है?

वावा०–मगर इस जटा दाढी मूछ और मिट्टी लगाए हुए वदन से वहॉ जाना वमौक होगा।

खडग०–कोई वमौके न हागा।

वावा०–क्या हर्ज होगा अगर एक दिन क लिए मै साधू का भेष छाड दूँ और सर्दारी ठाठ वना लूं।

खडग०–(हस कर) इसमें भी कोइ हर्ज नहीं। साधू और राजा समान समझे जाते है।।

वावा०–और ता काई कुछ न कहेगा मगर नाहरसिह स चुप न रहा जायेगा।

नाहर०–(हाथ जाड कर) मुझे इसमें क्यों उज्र होगा?

वावा०–क्यों का सवव तुम नहीं जानते और न मै कह सकता हूँ मगर इसमें कोई शक नहीं कि जव मै अपना सर्दारी ठाठ वनाऊँगा ता तुमस चुप न रहा जायेगा।

नाहर०–न मालूम आप क्यों ऐसा कह रहे है।

वावा०–(खडगसिह स) आप गवाह रहिये नाहर कहता है कि मै कुछ न वोलूँगा।

खडग०–मै खुद हैरान हूँ कि नाहर क्यों बोलेगा।।

वावा०–अच्छा फिर हजाम को वुलवाइये अभी मालूम हो जाता है। लेकिन आप और नाहर थाडी दर के लिए मरे साथ एकान्त में चलिए और हजाम को भी उसी जगह आने का हुक्म दीजिए।

आखिर ऐसा ही किया गया। वावाजी खडगसिह, और नाहरसिंह एकान्त में गए हजाम भी उसी जगह हाजिर हुआ। वावाजी ने जटा कटवा डाली दाढी मुडवा डाली, और मूछों के वाल छोटे-छोटे करवा डाले। नाहरसिंह और खडगसिह सामने बैठे तमाशा देख रहे थे।

वावाजी के चहरे की सफाई होते ही नाहरसिह की सूरत वदल गई चुप रहना उसके लिए मुश्किल हो गया वह घवरा कर वावाजी की तरफ झुका।

वावा०–हॉ हॉ, देखो! मैंने पहिल ही कहा था कि तुमसे चुप न रहा जायेगा।।

नाहर०–वशक मुझसे चुप न रहा जायेगा। चाहे जो हो मै बिना वोले कभी नहीं रह सकता।।

खडग०–नाहरसिंह! यह क्या मामला है?

नाहर०–नहीं नहीं मै विना वोले नहीं रह सकता।।

वावा०–यह तो मै पहिले ही से समझे हुए था खैर हजाम को विदा हो लेने दो केवल हम तीन आदमी रह जाय तो जो चाह वोलना।

हजाम बिदा हुआ दो खिदमतगार बुलाए गए बाबाजी ने उसी समय सिर मल के स्नान किया और उनके लिए जो कपड़े खड़गसिंह ने मँगवाए थे उन्हें पहिर कर निश्चिन्त हुए मगर इस बीच में नाहरसिंह के दिल की क्या हालत थी सो वह जानता होगा। मुश्किल से उसने अपने आपको रोका और मौके का इन्तजार करता रहा जब इन कामों से बाबाजी ने छुट्टी पाई तीनों आदमी एकान्त में बैठ और बात करने लगे।

न मालूम घण्टे भर तक कोठरी के अन्दर बैठ उन तीनों में क्या-क्या बातें हुई हाँ बाबाजी नाहरसिंह और खड़गसिंह तीनों के सिसक सिसक कर रोने की आवाज कोठरी के बाहर कई दफे आई जिसे हमने भी सुना और स्वप्न की तरह आज तक याद है।

कोठरी से बाहर निकल कर साधू महाशय मुंह पर नकाब डाल बिदा हुए और नाहरसिंह तथा खड़गसिंह उस दालान में आ बैठे जिसमें बाकी के सरदार लोग बैठे हुए थे। सर्दारों ने पूछा कि 'बाबाजी कहाँ गए और उनकी ताज्जुब भरी बातों का क्या नतीजा निकला ? इसके जवाब में खड़गसिंह ने कहा कि 'बाबाजी इस समय तो चले गए मगर कह गए हैं कि मेरे पेट में जो-जो बातें भेद के तौर पर जमा हैं वे कल दर्बार में जाहिर हो जायँगी इसलिए मेरे साथ आप लोगों को भी उनका हाल कल ही मालूम होगा'।

आधी रात तक ये लोग बैठे बातचीत करते रहे इसके बाद अपने-अपने घर की तरफ रवाना हुए।

पन्द्रहवाँ बयान

हरिपुर के राजा करनसिंह राठू का बाग बड़ी तैयारी से सजाया गया रोशनी के सबब दिन की तरह उजाला हो रहा था बाग की हर एक रविश पर रोशनी की गई थी बाहर की रोशनी का इन्तजाम भी बहुत अच्छा था। बाग के फाटक से लेकर किले तक जो एक कोस के लगभग होगा, सड़क के दोनों तरफ गज की रोशनी थी हजारों आदमी आ जा रहे थे। शहर में हर तरफ इस दर्बार की धूम थी। कोई कहता था कि आज महाराज नेपाल की तरफ से राजा को पदवी दी जायेगी कोई कहता था कि नहीं नहीं महाराज को यहाँ की रिआया चाहती है या नहीं इस बात का फैसला किया जायेगा और इस राजा को गद्दी से उतार कर दूसरे को राजतिलक दिया जायगा। अच्छा तो यही होगा कि बीरसिंह को राजा बनाया जाय, हम लोग इसके लिए लड़ेंगे धूम मचावेंगे और जान देने के लिए तैयार रहेंगे।

इसी प्रकार तरह-तरह के चर्चे शहर में हो रहे थे शहर भर बीरसिंह का पक्षपाती मालूम होता था मगर जो लोग बुद्धिमान थे उनके मुँह से एक बात भी नहीं निकलती थी और वे लोग मन ही मन में न मालूम क्या सोच रहे थे। आज के दर्बार में जो कुछ होना है इसकी खबर शहर के बड़े-बड़े रईसों और सर्दारों को भी जरूर थी मगर वे लोग जुबान से इस बारे में एक शब्द भी नहीं निकालते थे।

बाग में एक आलीशान बारहदरी थी उसी में दरबार का इन्तजाम किया गया। उसकी सजावट हद्द से ज्यादे बढ़ी हुई थी। खड़गसिंह ने राजा को कहला भेजा था कि दर्बार में एक सिंहासन भी रहना चाहिए जिस पर पदवी देने के बाद आप बैठाए जायँगे इसलिए बारहदरी के बीचोबीच में सोने का एक सिंहासन बिछा हुआ था उसके दाहिनी तरफ राजा के लिए और बाईं तरफ नेपाल के सेनापति खड़गसिंह के लिए चाँदी की कुर्सी रक्खी गई थी और सामने की तरफ शहर के रईसों और सर्दारों के लिए दुपट्टी मखमली गद्दी की कुर्सियाँ लगाई गई थीं। सजावट का सामान जो राजदर्बार के लिए मुनासिब था सब दुरुस्त किया गया था।

चिराग जलते ही दर्बार में लोगों की आवाई शुरू हो गई और पहर रात जाते-जाते दर्बार अच्छी तरह भर गया राजा करनसिंह और खड़गसिंह भी अपनी-अपनी जगह बैठ गए। नाहरसिंह बीरसिंह और बाबू साहब भी दर्बार में बैठे हुए थे मगर बाबाजी अपने मुँह पर नकाब डाले एक कुर्सी पर विराज रहे थे जिनको देख कर लोग ताज्जुब कर रहे थे और राजा इस विचार में पड़ा था कि ये कौन हैं ?

राजा या राजा के आदमी नाहरसिंह को नहीं पहिचानते थे पर बीरसिंह को बिना हथकड़ी-बेड़ी के स्वतन्त्र देख कर राजा की आँखें क्रोध से लाल हो रही थीं मगर यह मौका बोलने का न था इसलिए चुप रहा, हाँ राजा की दो हजार फौज चारों तरफ से बाग को घेरे हुए थी और राजा के मुसाहब लोग इस दर्बार में कुर्सियों पर न बैठ के न मालूम किस धुन में चारों तरफ घूम रहे थे।

सेनापति खड़गसिंह के भी चार सौ बहादुर लड़ाके जो नेपाल से साथ आए थे बाग के बाहर चारों तरफ बट कर फैले हुए थे और नाहरसिंह के सौ आदमी भी भीड़ में मिले-जुले चारों तरफ घूम रहे थे, बाग के अन्दर दो हजार से ज्यादे

आदमी मौजूद थे जिनमें पॉच सौ राजा की फौज थी और बाकी रिआया।

जब दर्बार अच्छी तरह भर गया खडगसिह ने अपनी कुर्सी से उठकर ऊँची आवाज में कहा –

मैं महाराज नेपाल का सेनापति जिस काम के लिए यहाँ भेजा गया हूँ उसे पूरा करता हूँ। आज का दर्बार केवल दो कामों के लिए किया गया है, एक तो इस राज्य के दिवान बीरसिह का जिसके ऊपर राजकुमार का खून साबित हो चुका है फैसला किया जाय दूसरे राजा करनसिह का अधिराज की पदवी दी जाय। इस समय लोग इस विचार में पडे होंगे कि बीरसिह जिस पर राजकुमार के मारने का इल्जाम लग चुका है बिना हथकडी बेडी यहाॅ क्यों दिखाई देता है–इसका जवाब मै यह देता हूँ कि एक तो बीरसिह यहाँ के राजा का दीवान है दूसरे इस भरे हुए दर्बार में से किसी तरह भाग नहीं सकता तीसरे परसों राजा के आदमियों ने उसे बहुत जख्मी किया है जिससे वह खुद कमजोर हो रहा है चौथे बीरसिह को इस बात का दावा है कि वह अपनी बेकसूरी साबित करेगा। अस्तु बीरसिह को हुक्म दिया जाता है कि उसे जो कुछ कहना हो कहे।

इतना कह कर खडगसिह बैठ गए और बीरसिंह ने अपनी कुर्सी से उठ कर कहना शुरू किया –

आप लोग जानते है और कहावत मशहूर है कि जिस समय आदमी अपनी जान से नाउम्मीद होता है तो जो कुछ उसके जी में आता है कहता है और किसी से नहीं डरता। आज मेरी भी वही हालत है। यहाँ के राजा करनसिह ने राजकुमार के मारने का बिल्कुल झूठा इलजाम मुझ पर लगाया है। उसने अपने लडके को तो कही छिपा दिया है और गरीब रिआया का खून करके मुझे फँसाना चाहता है। आप लोग जरूर कहेंगे कि राजा ने ऐसा क्यों किया ? उसके जवाब में मैं कहता हूँ कि राजा करनसिह असल में मेरे बाप के खूनी हैं। पहिले यह मेरे बाप का गुलाम था मौका मिलने पर इसने अपने मालिक को मार डाला और अब उसके बदले में राज्य कर रहा है। पहिले राजा को मेरा डर न था मगर जब से नाहरसिंह ने राजा का सताना शुरू किया है और यहाँ की रिआया मुझे मानने लगी है तभी से राजा को मेरे मारने की धुन सवार हुई है। नाहरसिंह भी बेफायदा राजा को नहीं सताता वह मेरा बडा भाई है और राजा से अपने बाप का बदला लिया चाहता है। (करनसिह करनसिह राठू, नाहरसिंह सुन्दरी, तारा और अपना कुल किस्सा जो हम ऊपर लिख आये हैं खुलासा कहने के बाद) अब आप लोग उन दोनों बातों का अर्थात एक तो मुझ पर झूठा इल्जाम लगाने का और दूसरे मेरे पिता के मारने का सबूत चाहेंगे। इनमें से एक बात का सबूत तो मेरा बडा भाई नाहरसिह देगा। जिसका असली नाम बिजयसिंह है और इसी दर्बार में मौजूद है तथा सिवाय राजा के और किसी का दुश्मन नहीं है और दूसरी बात का सबूत कोई और आदमी देगा जो शायद यहीं कहीं मौजूद है।

इन बातों को सुनते ही चारों तरफ से त्राही त्राही की आवाज आने लगी। राजा के तो होश उड गए। अब राजा को विश्वास हो गया कि यह दर्बार केवल इसीलिए लगाया गया है कि यहाँ कुल रिआया के सामने मेरा कसूर साबित हो जाय और मै नालायक और बेईमान ठहराया जाऊँ। यह सिंहासन भी शायद इसलिए रखवाया गया है कि इस पर रिआया की तरफ से नाहरसिह या बीरसिह बैठाया जाय। आफ अब किसी तरह जान बचती नजर नहीं आती। मेरे कर्मों का फल आज पूरा हुआ चाहता है। अगर मैं अपनी फौज का इन्तजाम न करता तो मुश्किल हो चुकी थी लेकिन अब तो एक दफे दिल खोल के लड़ूँगा। लेकिन जरा ठहरना चाहिए देखें वह अपनी दोनों बातों का सबूत क्या पेश करता है। नाहरसिंह कौन है ? सबूत लेकर आगे बढे तो देखें उसकी सूरत कैसी है ?

राजा इन सब बातों को सोचता ही रहा उधर बीरसिंह की बात समाप्त होते ही नाहरसिंह जिसका नाम अब बिजयसिंह लिखेंगे, अपनी कुर्सी से उठा और वह चिट्ठी जो उसने रामदास की कमर से पाई थी खडगसिंह के हाथ में यह कह कर दे दी कि एक सबूत तो यह है।

खडगसिह ने उस चिट्ठी को खडे होकर जोर से सभों को सुना कर पढा और चिट्ठी वाला हाथ ऊँचा करके कहा एक बात का सबूत तो पक्का मिल गया इस चिट्ठी पर राजा के दस्तखत के सिवाय उसकी मुहर भी है जिससे वह किसी तरह इन्कार नहीं कर सकता है। चिट्ठी को सुनते ही चारों तरफ से आवाज आने लगी लानत है ऐसे राजा पर। लानत है एसे राजा पर !!

खडगसिह अपनी कुर्सी पर बैठे ही थे कि बाबाजी उठ खडे हुए मुँह से नकाब हटा कर सिहासन के पास चले गये, और जोर से बोले– दूसरी बात का सबूत मै हूँ। (सभा की तरफ देख कर) राजा तो मुझे देखते ही पहिचान गया होगा कि

मै फलाना हूँ मगर आप लोग यह सुनकर घवडा जायेंगे कि वीरसिंह का वाप करनसिंह जिसे राजा ने जहर दिया था जिसका किस्सा आप लोगों को सुना चुका हे मैं भी हूँ। मेरी जान बचाने वाले का भाई भी इस शहर में मौजूद है हॉ यदि राजा का जोश कोई राक सके ता मै आप लागों को अपना विचित्र हाल सुनाऊँ मगर ऐसी आशा नहीं है। बेईमान राजा की जल्दवाजी आप लोगों का मेरा किस्सा सुनने न देगी। दखिए देखिए यह वईमान कुर्सी स उठकर मुझ पर वार किया चाहता है नमकहराम और विश्वासघाती को अव भी शर्म नहीं मालूम हाती और वह !!

वावाजी की बाते क्योंकर पूरी हा सकती थीं बइमान राजा का दिल कावू मे न था और न वह यही चाहता था कि वावाजी (करनसिंह) यहाँ रहें और उनकी वातें काई सुन वह वहुत कम दर तक वखुद रहने के वाद एकदम चीख उठा और नयाम (म्यान) स तलवार खींचकर अपने आदमियों का यह कहता हुआ कि मारा इन लागों को एक भी वचके न जाने पावे उठा और वावाजी पर तलवार का वार किया। वावाजी न घूमकर अपने को वचा लिया मगर राजा क सिपाही और सर्दार लोग वीरसिंह और उसके पक्षपातियों पर टूट पडे। लडाई शुरू हा गई और फर्श पर खून ही खून दिखाई दने लगा पर वीरसिंह के पक्षपाती बहादुरों के सामन काई ठहरता दिखाई न दिया।

राजा करनसिंह के बहुत स आदमी वहाँ मौजूद थे और दो हजार फौज भी वाहर खडी थी जिसका अफसर इसी दर्वार मे था मगर विल्कुल वेकाम। किसी ने दिल खोलकर लडाइ न की एक तो वे लोग राजा के जुल्मों की वात सुन पहिले ही वदिल हा रहे थ दूसरे आज की वारदात वीरसिंह और सुन्दरी का किस्सा और राजा के हाथ की लिखी चिट्ठी का मजमून सुनकर और राजा को लाजवाव पाकर सभी का दिल फिर गया। सभी राजा के ऊपर दात पीसने लगे। केवल थाडे से आदमी जा राजा के साथ ही साथ खुद भी अपनी जिन्दगी स नाउम्मीद हो चुके थे, जान पर खेल गये और रिआया क हाथों मारे गए। इस लडाइ में वावू साहव का और राजा करनसिंह रादू का सामना हो गया। वावू साहव न करनसिंह को उठाकर जमीन पर द मारा और उगली डाल कर दोनों ऑखें निकाल लीं।

इस लडाई मे सुजनसिंह शभूदत्त और सरूपसिंह वगैरह भी मारे गये। यह लडाई वहुत देर तक न रही और फौज को हिलने की भी नौवत न आई।

खडगसिंह ने उसी समय वीरसिंह को जो जख्मी हाने पर भी कई आदमियों को इस समय मार चुका था और खून से तर-वतर हा रहा था उसी साने के सिहासन पर वैठा दिया और पुकार कर कहा –

इस समय वीरसिंह जिनका यहा की रिआया चाहती है राज-सिहासन पर वैठा दिये गए। राजा वीरसिंह का हुक्म है कि वस अब लडाइ न हा और सभों की तलवार नयाम मे चली जाय।

लडाइ शान्त हा गइ वीरसिंह को रिआया ने राजा मजूर किया और अध करनसिंह को दख-दख कर लाग हसने लगे।

सोलहवां बयान

दूसरे दिन यह बात अच्छी तरह स मशहूर हा गइ कि वह वावाजी जिन्हें देखकर करनसिंह रादू डर गया था वीरसिंह के वाप करनसिंह थ। उन्हीं की जुवानी मालूम हुआ कि जिस समय रादू न सुजनसिंह की मार्फत करनसिंह का जहर दिलवाया उस समय करनसिंह क साथियों को रादू न मिला लिया था मगर चार-पॉच आदमी ऐसे भी थ जा जाहिर में ता मौका देखकर मिल गए थे पर दिल से उसकी तरफ न थे। जिस समय जहर क असर से करनसिंह वेहाश हो गए उस समय जान निकलने क पहिले ही उनके मरने का गुल मचाकर रादू न उन्हें जमीन में गडवा दिया और तुरत वहाँ स कूच कर गया था। रादू के कूच करते ही धर्नासिंह नामी एक राजपूत अपने नौकरों का साथ लेकर जान-वूझ के पीछे रह गया। उसने जमीन खोदकर करनसिंह को निकाला और उनकी जान बचाई। जहर के असर न पॉच वरस तक करनसिंह का चारपाई पर डाल रक्खा। वे पॉच वरस तक दूसरे शहर में रहे और फिर फकीर हो गये मगर रादू की फिक्र में लगे रहे। जव नाहरसिंह का नाम मशहूर हुआ तब हरिहर के पास के जगल मे आ वसे और नाहरसिंह से मुलाकात पैदा की मगर अपना नाम न वताया।

करनसिंह को वचाने वाला धनसिंह तो मर गया था मगर उसका छाटा भाइ अनिरूद्धसिंह (रइसों और सरदारों की कमेटी में इसका नाम आ चुका है) इसी शहर में रहता हे जिसकी गिनती रईसों में है। उसको भी इनमें की वहुत सी वाते मालूम हैं और वह हमेशा वीरसिंह का पक्षपाती रहा मगर समय पर ध्यान देकर करनसिंह का हाल उसने किसी स न कहा।

आज वडी खुशी का दिन है कि करनसिंह ने अपने दोनों लडके-लडकी और दामाद को नाती सहित पाया और छोटे लडके को सिहासन पर देखा। इस जगह लोग पूछ सकते है कि करनसिंह सिंहासन पर क्यों नहीं वैठे या वडे भाई के

रहते छोटे भाई को गद्दी क्यों दी गई ? इसके लिए थोडा सा यह लिख दना जरूर है कि जब करनसिह खडगसिह और बिजयसिंह एकान्त में मिन्ने थे तो इस विषय की बातचीत हो चुकी थी करनसिह ने राज्य करने से इन्कार किया था बिजयसिंह ने भी कबूल नहीं किया और कहा कि अभी तक मेरी शादी नहीं हुई और न शादी करूँगा ही, अस्तु यह बात पहिले ही से पक्की हो चुकी थी कि बीरसिंह को गद्दी दी जाय।

राजमहल से रातू के वे रिश्तेदार जिन्होंने वीरसिह की शरण चाही निकाल कर दूसरे मकान में रख दिए गए और खाने-पीने का वन्दोवस्त कर दिया गया। अब राजमहल में वही सुन्दरी जो तहखाने के अन्दर कैद रह कर मुसीबत के दिन काटती थी और तारा जो असली करनसिंह (बाबाजी) के कब्जे में थी रहने लगी मगर रातू के लडके सूरजसिह क कही पता न लगा न मालूम वह किसके यहाँ भेज दिया गया था या किस जगह छिपा कर रक्खा गया था। रामदास ने आत्महत्या की। ऑख की तकलीफ से पॉच ही सात दिन में रातू यमलोक की तरफ चल बसा और वीरसिह ने बडी नेकनामी से राज्य चलाया।

समाप्त

काजर की कोठरी

में कैसहू सयानो जाय
काजर की रेख एक लागिहै पै लागिहै।'

पहिला बयान

सध्या होने में अभी दो घण्टे की देर है मगर सूर्य भगवान के दर्शन नहीं हो रहे क्योंकि काली-काली घटाओं ने आसमान को चारों तरफ से घेर लिया है। जिधर निगाह दौडाइये, मजेदार समा नजर आता है और इसका तो विश्वास भी नहीं होता कि सध्या होने में अभी कुछ कसर है।

ऐसे समय में हम अपने पाठकों को उस सडक पर ले चलते हैं जो दरभगे * से सीधी बाजितपुर की तरफ गई है।

दरभगे से लगभग दो कोस के आगे बढ कर एक बैलगाडी पर चार नौजवान और हसीन तथा कमसिन रडियॉ धानी काफूर पेयाजी और फालसई साडियॉ पहिरे मुख्तसर गहनों से अपने को सजाए आपुस में ठठोलपन करती वाजितपुर की तरफ जा रही है। इस गाडी के साथ पीछे-पीछे एक दूसरी गाडी भी जा रही है जो उन रडियों के सफरदाओं के लिए थी। सफरदा गिनती में दस थे मगर गाडी में पाच से ज्यादे के बैठने की जगह न थी, इसलिए पाच सफरदा गाडी के साथ पैदल जा रहे थे। कोई तम्बाकू पी रहा था कोई गाजा मल रहा था, कोई इस बात की शेखी बघार रहा था कि फलाने मुजरे में हमने वह बजाया कि बडे-बडे सफरदाओं को मिर्गी आ गई' इत्यादि। कभी-कभी पैदल चलने वाले सफरदा गाडी पर चढ जाते और गाडी वाले नीचे उतर आते, इसी तरह अदल-बदल के साथ सफर तै कर रह थे। मालूम होता है कि थोड़ी ही दूर पर किसी जिमींदार के यहॉ महफिल में इन लोगों को जाना है, क्योंकि सन्नाटे मैदान में सफर करती समय सध्या हो जाने से इन्हें कुछ भी भय नहीं है और न इस बात का डर है कि रात हो जाने से चोर-चुहाड़ अथवा डाकुओं से कहीं मुठभेड न हो जाय।

बैल की किराची गाडी चर्खा तो होती ही है, जब तक पैदल चलने वाला सौ कदम जाय तब तक वह बत्तीस कदम से ज्यादे न जायेगी। बरसात का मौसिम, मजेदार बदली छायी हुई सडक के दोनों तरफ दूर-दूर तक हरे-हरे धान के खेत दिखाई दे रहे हैं, पेडों पर से पपीहे की आवाज आ रही है ऐसे समय में एक नही बल्कि चार-चार नौजवान हसीन और मदमाती रण्डियों का शान्त रहना असम्भव है इसी से इस समय इन सभों को चीं-पों करती हुई जाने वाली गाडी पर बैठे रहना बुरा मालूम हुआ और वे सब उतर कर पैदल चलने लगीं और बात ही बात में गाडी से कुछ दूर आगे बढ गई। गाडी चाहे छूट जाय मगर सफरदा कब उनका पीछा छोडन लगे थे ? पैदल वाले सफरदा उनके साथ हुए और हॅसते बोलते जाने लगे।

थोडी ही दूर जाने के बाद इन्होंने देखा कि सामने से एक सवार सरपट घोडा फॅके इसी तरफ आ रहा है। जब वह थोडी दूर रह गया तो इन रण्डियों को देख कर उसने अपने घोडे की चाल कम कर दी और जब उन चारों छबीलियों के

---

* दरभगा तिरहुत की राजधानी समझी जाती है।

पास पहुँचा तो घोडा रोक कर खडा हो गया। मालूम होता है कि ये चारों रण्डियाँ उस आदमी को बखूबी जानती और पहिचानती थीं क्योंकि उसे देखते ही वे चारों हँस पडी और एक छबीली जो सब से कमसिन और हसीन थी ढिठाई के साथ उसके घोडे की बाग पकड कर खडी हो गई और बोली वाह वाह तुम भागे कहा जा रहे हो ? बिना तुम्हारे मोती

'मोती' का नाम लिया ही था कि सवार ने हाथ के इशारे से उसे रोका और कहा 'बाँदी तुम्हें हम बेवकूफ कहें या भोली ? इसके बाद उस सवार ने सफरदाओं पर निगाह डाली और हुकूमत के तौर पर कहा तुम लोग आगे बढो ।

अब तो पाठक लोग समझ ही गए होंगे कि उस छबीली रण्डी का नाम बाँदी था जिसने ढिठाई के साथ सवार के घोडे की लगाम थाम ली थी और जो चारों रडियों में हसीन और खूबसूरत थी। इसकी कोई आवश्यकता नहीं कि बाकी तीन रडियों का नाम भी इसी समय बता दिया जाय हाँ उस सवार की सूरत-शक्ल का हाल लिख देना बहुत जरूरी है।

सवार की अवस्था लगभग चालीस वर्ष की होगी। रंग काला हाथ-पैर मजबूत और कसरती जान पडते थे। बाल स्याह छोटे मगर घूघरवाले थे सर बहुत बडा और बनिस्बत आगे के पीछे की तरफ से बहुत चौडा था। भौहें घनी और दोनों मिली हुई आँखें छोटी-छोटी और भीतर की तरफ कुछ घुसी हुई थीं। होंठ मोटे और दाँतों की पंक्ति बराबर न थी मूछ के बाल घने और ऊपर की तरफ चढे हुए थे। आँखों में ऐसी बुरी चमक थी जिसे देखने से डर मालूम होता था और बुद्धिमान देखने वाला समझ सकता था कि यह आदमी बडा ही बदमाश और खोटा है मगर साथ ही इसके दिलावर और खूँखार भी है।

जब सफरदा आगे की तरफ बढ गये तो सवार ने बाँदी से हँस के कहा तुम्हारी होशियारी जैसी इस समय देखी गई अगर ऐसी ही बनी रही तो सब काम चौपट करोगी ।

बाँदी – (शर्माकर) नहीं नहीं मैं कोई ऐसा शब्द मुँह से न निकालती जिससे सफरदा लोग कुछ समझ जाते।

सवार – वाह मोती का शब्द मुँह से निकल ही चुका था।

बाँदी – ठीक है मगर

सवार – खैर जो हुआ सो हुआ अब बहुत सम्हाल के काम करना। अब वह जगह दूर नहीं है जहाँ तुम्हें जाना है। (सडक के बाईं तरफ उंगली का इशारा करके) देखो वह बडा मकान दिखाई दे रहा है।

बाँदी – ठीक है मगर यह तो कहो कि तुम भागे कहाँ जा रहे हो ?

सवार – मुझे अभी बहुत काम करना है मौके पर तुम्हारे पास पँहुच जाऊंगा हाँ एक बात कान में सुन लो।

सवार ने झुक कर बाँदी के कान में कुछ कहा साथ ही इसके दिल खुश करने वाली एक आवाज भी आई। बाँदी ने एक नर्म चपत सवार के गाल पर जमाई सवार ने फुर्ती से घोडे को किनारे कर लिया तथा फिर दौडता हुआ जिधर जा रहा था उधर ही को चला गया।

दूसरा बयान

अब हम अपने पाठकों को एक गाँव में ले चलते हैं। यद्यपि यहाँ की आबादी बहुत घनी और लम्बी-चौडी नहीं है तथापि जितने आदमी इस मौजे में रहते हैं सब प्रसन्न हैं। विशेष करके आज तो सभी खुश मालूम पडते हैं। क्योंकि इस मौजे के जिमींदार कल्याणसिंह के लडके हरनन्दनसिंह की शादी होने वाली है। जिमींदार के दरवाजे पर बाजे बज रहे हैं और महफिल का सामान हो रहा है। जिमींदार का मकान बहुत बडा और पक्का है जनाना खण्ड अलग और मर्दाना मकान जिसमें सुन्दर-सुन्दर कई कमरे और कोठरियाँ हैं अलग है। मर्दाना मकान के आगे मैदान है जिसमें शामियाना खडा है और महफिल का सामान दुरुस्त हो रहा है। मकान के दाहिनी तरफ एक लम्बी लाइन खपडैल की है जिसमें कई दालान और कोठरियाँ हैं। एक दालान और तीन कोठरियाँ में भण्डार (खाने की चीजों) का सामान है और एक दालान तथा तीन कोठरियाँ में उन रडियों का डेरा पडा हुआ है जो इस महफिल में नाचने के लिए आई हैं और नाचने का समय निकट आ जाने के कारण अपने को हर तरह से सजधज के दुरुस्त कर रही हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये रडियाँ बहुत ही खूबसूरत और हसीन हैं और जिस समय अपना श्रृंगार करके धीरे-धीरे चल कर महफिल में आ खडी होंगी उस समय नखरे के साथ अधखुली आँखों से जिधर देखेंगी उधर ही चौपट करेंगी पर फिर भी यह सब कुछ चाहे जो हो, मगर इनका जादू उन्हीं लोगों पर चलेगा जो दिल के कच्चे और भोले-भाले हैं। जो लोग दिल के मजबूत और इनकी करतूतों तथा नकली मुहब्बत को जानने वाले और बनावटी नखरों का हाल अच्छी तरह जानते हैं उन बुद्धिमानों के दिल पर इनका असर होने वाला नहीं है क्योंकि ऐसे आदमी जितनी ज्यादे खूबसूरत रण्डी को देखेंगे उसे उतनी ही बडी चुडैल समझ के हर तरह से बच रहने का भी उद्योग करेंगे।

रात लगभग पहर भर के जा चुकी है। महफिल बारातियों और तमाशबीनों से खचाखच भरी हुई है। जिमींदार का लडका हरनन्दनसिंह, जिसकी शादी होने वाली है, कारचोबी काम की मखमली गद्दी के ऊपर गावतकिये के सहारे बैठा

हुआ है। उसके दोनों बगल जमींदार लोग जो न्योते में आये हैं, कत्तीदार पगडी जमाये बैठे उस रण्डी से आखें मिलाने का उद्योग कर रहे हैं जो महफिल में नाच रही है और जिसका ध्यान बनिस्बत गाने के भाव बताने पर ज्यादे है।

इस समय महफिल में यद्यपि भीडभाड बहुत है मगर जिमींदार साहब का पता नहीं है जिनके लडके की शादी होने वाली है। दो घण्टे तक तो लोग चुपचाप बैठे गाना सुनते रहे मगर इसके बाद जिमींदार कल्याणसिह के उपस्थित न होने का कारण जानने के लिए लोगों में कानाफूसी होने लगी और लोग उन्हें बुलाने की नीयत से एका-एकी मकान की तरफ जाने लगे। आधी रात जाते जाते महफिल में खलबली पड गई। कल्याणसिह के न आने का कारण जब लोगों को मालूम हुआ तो सभी घबड़ा गये और एका-एकी करके उस मकान की तरफ जाने लगे जिसमें कल्याणसिह रहते थे।

अब हम कल्याणसिह का हाल बयान करते हैं और यह भी लिखते हैं कि वह अपने मेहमानों से अलग रहने पर क्यों मजबूर हुए।

संध्या के समय जिमींदार कल्याणसिह भडार का इन्तजाम देखते हुए उस दालान में पहुँचे जिसमें रडियों का डेरा था। वे यद्यपि बिगडैल ऐयाश तो न थे मगर जरा मनचले और हँसमुख आदमी जरूर थे इसलिए इन रडियों से भी हँसी-दिल्लगी की दो बातें करने लग। इसी बीच नाजुकअदा बॉदी ने उनके पास आकर अपने हाथ का लगाया हुआ दो बीडा पान का खाने के लिए दिया। यह वही बॉदी रडी थी जिसका हाल हम पहिले लिख आए हैं। कल्याणसिह पान का बीडा हाथ में लिए हुए लौटे तो उस जगह पहुँचे जहा महफिल का सामान हो रहा था और उनके नौकर-चाकर दिलोजान से काम कर रहे थे। थोडी देर तक वहाँ भी खडे रहे। यकायक उनके सर में दर्द होने लगा। उन्होंने समझा कि मेहनत की हरारत स ऐसा हो रहा है और यह भी सोचा कि महफिल में रात भर जागना पडेगा इसलिए यदि इसी समय दा घण्टे सो कर हरारत मिटा लें तो अच्छा होगा। यह विचार करते ही कल्याणसिह अपने कमरे मे चले गए जो मर्दाने मकान में दुमजिले पर था। चिराग जल चुका था कमरे के अन्दर भी एक शमादान जल रहा था। कल्याणसिह दरवाजा वन्द करके एक खिडकी के सामने चारपाई पर जा लेटे जिसमें से ठडी-ठडी बरसाती हवा आ रही थी और महफिल का शामियाना तथा उसमें काम-काज करते हुए आदमी दिखाई दे रहे थे।

यह कमरा बहुत बडा न था तो भी तीस-चालीस आदमियों के बैठने लायक था। दीवारें रगीन और उन पर फूल-बूटे का काम होशियार मुसौवर के हाथ का किया हुआ था। कई दीवारगीरें भी लगी हुई थीं। छत में एक झाड के चारों तरफ कई कन्दीलें लटक रही थीं जमीन पर साफ-सुफेद फर्श बिछा हुआ था। एक तरफ सगमरमर की चौकी पर लिखने-पढने का सामान भी मौजूद था। बाहर वाली तरफ छोटी-छोटी तीन खिड़कियाँ थी जिनमें से मकान के सामने वाला रमना अच्छी तरह दिखाई दे रहा था। उन्ही खिडकियों में से एक खिडकी के आगे चारपाई बिछी हुई थी जिस पर कल्याणसिह सो रहे और थोडी ही देर में उन्हें नींद आ गई।

कल्याणसिह तीन घण्टे तक बराबर सोते रहे, इसके बाद खड़खडाहट की आवाज आने के कारण उनकी नींद खुल गई। देखा कि कमरे के एक कोने में छत से कुछ ककड़ियाँ गिर रही हैं। कल्याणसिह ने सोचा कि शायद चूहों ने छत में बिल किया होगा और इसी सबब से ककड़ियाँ गिर रही हैं, परन्तु कोई चिन्ता की बात नहीं कल-परसों में इसकी मरम्मत करा दी जावेगी, इस समय घण्टे भर और आराम कर लेना चाहिए, यह सोच मुँह पर चादर का पल्ला रख सो रहे और उन्हें नींद फिर आ गई।

दो घण्टे बाद कमरे के उसी कोने में से जहाँ से ककड़ियाँ गिर रही थीं धमाके की आवाज आई जिससे कल्याणसिह की ऑख खुल गई। वह घबडा कर उठ बैठे और चारों तरफ देखने लगे परन्तु रोशनी गुल हो जाने के सबब इस समय कमरे में अधेरा हो रहा था। उन्हें इस बात का ताज्जुब हुआ कि शमादान किसने गुल कर दिया। वह घबडा कर उठ खड हुए और किसी तरह दर्वाजे तक पहुँचे और दर्वाजा खोल कमरे के बाहर आये। उस समय एक पहरदार सिपाही के सिवाय वहाँ और कोई भी न था, सब महफिल में चल गये थे और नौकर चाकर भी काम काज में लगे थे। कल्याणसिह ने सिपाई से लालटेन लाने के लिए कहा। सिपाही तुरत लालटेन बालकर ले आया और कल्याणसिह के साथ कमरे के अन्दर गया। कल्याणसिह ने अबकी दफे उस कोने मे बेंत का एक पिटारा पडा हुआ देखा जहाँ से पहिली दफ नींद खुलने की अवस्था में ककडियाँ गिरने की आवाज आई थी। कल्याणसिह को बडा ही ताज्जुब हुआ और वह डरते-डरते उस पिटारे के पास गए। पिटारे के चारों तरफ रस्सी लपेटी हुई थी और एक बहुत बडा रस्सा भी उसी जगह पडा हुआ था जिसका एक सिरा पिटार के साथ बँधा हुआ था। जिमींदार ने छत की तरफ देखा तो छत टूटी फूटी हुई दिखाई दी जिससे यह विश्वास हो गया कि यह पिटारा रस्सी के सहारे इसी राह से लटकाया गया और ताज्जुब नहीं कि कोई आदमी भी इसी राह से कमरे में आया हो क्योंकि शमादान का बुझना बेसबब न था। कल्याणसिह ताज्जुब भरी निगाहों से उस पिटारे को देखते रहे इसके बाद सिपाही के हाथ से लालटेन ले ली और उससे पिटारा खोलने के लिए कहा। सिपाही ने जो ताकतवर होने के साथ ही साथ दिलेर भी था झटपट पिटारा खोला और ढकना अलग करके देखा तो उसमें बहुत से कपडे भरे हुए दिखाई पड़े मगर उन कपडों पर हाथ रखने के साथ ही वह चौंक पडा और अलग हट कर खड़ा हो गया। जब कल्याणसिह ने पूछा कि क्यों क्या हुआ ? तब उसने दोनों हाथ लालटेन के सामने किये और दिखाया कि उसके दोनों हाथ खून से तर है।

कल्याणसिंह – हैं ! यह तो खून है !!

सिपाई – जी हॉ उस पिटारे में जो कपडे हैं वे खून से तर है और कोई कॉटेदार चीज भी उसमें मालूम पड़ती है जो कि मेरे हाथ में सुई की तरह चुभी थी।

कल्याणसिंह – ओफ नि सन्देह कोई भयानक बात है ! अच्छा तुम पिटारे को खैंच कर बाहर ले चलो !

सिपाही – बहुत खूब।

सिपाही ने उस पिटारे को उठाना चाहा तो बहुत हल्का पाया और सहज ही में वह उस पिटारे को कमरे के बाहर ले आया। उस समय तक और भी सिपाही तथा दो-तीन नौकर वहॉ आ पहुँचे थे।

कल्याणसिंह की आज्ञानुसार रोशनी ज्यादा की गई और तब उस पिटारे की जॉच होने लगी। नि सन्देह उस पिटारे के अन्दर कपडे थे और उन पर सलमे-सितारे का काम किया हुआ था।

सिपाही – (सलमे-सितारे के काम की तरफ इशारा करके) यही मेरे हाथ में गडा था और कॉटे की तरह मालूम हुआ था ! (एक कपडा उठाकर) ओफ यह तो ओढनी है !!

दूसरा – और बिलकुल नई !

तीसरा – ब्याह की ओढनी है !

सिपाही – मगर सरकार इसे मैं पहिचानता हूँ और जरूर पहिचानता हूँ !

कल्याण – (लम्बी सॉस लेकर) ठीक है मैं भी इसे पहिचानता हूँ, अच्छा और निकालो।

सिपाही – (और एक कपडा निकाल के)लीजिए यह लहगा भी है ! बेशक वही है !!

कल्याण – ओफ यह क्या गजब है ! यह कपडे मेरे घर क्यों आ गए और ये खून से तर क्यों हैं ? नि सन्देह ये वही कपडे हैं जो मैंने अपनी पतोहू के वास्ते बनवाए थे और समधियाने भेजे थे। तो क्या खून हुआ ? क्या लडकी मारी गई ? क्या यह मंगल का दिन अमंगल में बदल गया ?

इतना कहकर कल्याणसिंह जमीन पर बैठ गया। नौकरों ने जल्दी से कुर्सी लाकर रख दी और कल्याणसिंह को उस पर बैठाया। धीरे-धीरे बहुत से आदमी वहॉ आ जुटे और बात की बात में यह खबर अन्दर-बाहर सब तरफ अच्छी तरह फैल गई। इस खबर ने महफिल में भी हलचल मचा दी और महफिल में बैठे हुए महमानों को कल्याणसिंह को देखने की उत्कण्ठा पैदा हुई। आखिर धीरे-धीरे बहुत से नौकर सिपाही और मेहमान वहॉ जुट गए और उस भयानक दृश्य को आश्चर्य के साथ देखने लगे।

यों तो कल्याणसिंह के बहुत से मेली-मुलाकाती थे मगर सूरजसिंह नामी एक जिमींदार उनका सच्चा और दिली दोस्त था जिसकी यहॉ के राजा धर्मसिंह के यहॉ भी बडी इज्जत और कदर थी। सूरजसिंह का एक नौजवान लडका भी था जिसका नाम रामसिंह था और जिसे राजा धर्मसिंह ने बारह मौजों का तहसीलदार बना दिया था। उन दिनों तहसीलदारों को बहुत बडा अख्तियार रहता था यहा तक की सैकडों मुकदमे दीवानी और फौजदारी के खुद तहसीलदार ही फैसला करके उसकी रिपोर्ट राजा के पास भेज दिया करते थे। रामसिंह को राजा धर्मसिंह बहुत मानते थे अस्तु कुछ तो इस सबब से मगर ज्यादे अपनी बुद्धिमानी के सबब से उसने अपनी इज्जत और धाक बहुत बढा रखी थी। जिस तरह कल्याणसिंह और सूरज सिंह में दोस्ती थी उसी तरह रामसिंह और हरिनन्दन में (जिसकी शादी होने वाली थी) सच्ची मित्रता थी और आज की महफिल में वे दोनों ही बाप-बेटा थे।

रामसिंह और हरिनन्दनसिंह दोनों मित्र बडे ही होशियार बुद्धिमान पडित और वीर पुरुष थे और उन दोनों का स्वभाव भी ऐसा अच्छा था कि जो कोई एक दफे उनसे मिलता और बातें करता वही उनका प्रेमी हो जाता। इसके अतिरिक्त वे दोनो मित्र खूबसूरत भी थे और उनका सुडौल तथा कसरती बदन देखने ही योग्य था।

जब कल्याणसिंह की घबराहट का हाल लोगों को मालूम हुआ और महफिल में खलबली पड गई तो सूरजसिंह और हरिनन्दन भी कल्याणसिंह के पास जा पॅहुचे जो दु खित हृदय से उस पिटारे के पास बैठे हुए थे जिसमें से खून से भरे हुए शादी वाले जनाने कपड़े निकले थे। थोड़ी देर में वहॉ बहुत से आदमियों की भीड़ हो गई जिन्हें सूरजसिंह ने बड़ी बुद्धिमानी से हटा दिया और एकान्त हो जाने पर कल्याणसिंह से सब हाल पूछा। कल्याणसिंह ने जो कुछ देखा था या जो कुछ हो चुका था बयान किया और इसके बाद अपने कमरे में ले जाकर वह स्थान दिखाया जहॉ पिटारा पाया गया था और साथ ही इसके अपने दिल का शक भी बयान किया।

हरिनन्दन को जब सब हाल मालूम हो गया तब वह चुपचाप अपने कमरे में चला गया और आरामकुर्सी पर बैठ कुछ सोचने लगा। उसी समय कल्याणसिंह के समधियाने से अर्थात् लालसिंह के यहा से यह खबर भी आ पहुँची कि 'सरला (जिसकी हरनन्दन से शादी होने वाली थी) घर में से यकायक गायब हो गई और उस कोठरी में जिसमें वह थी सिवाय खून के छींटे और निशानों के और कुछ भी देखने में नहीं आता।

यह मामला नि सन्देह बडा भयानक और दु खदायी था। बात की बात में यह खबर भी बिजली की तरह चारों तरफ फैल गई। जनानों में रोना-पीटना पड गया। घण्टे ही भर पहिले जहा लोग हसते-खेलते घूम रहे थे अब उदास और दु खी दिखाई देने लगे। महफिल का शामियाना उतार लेने के बाद गिरा दिया गया। रडियों को कुछ दे-दिलाकर सवेरा होने से

पहिले ही विदा हो जाने का हुक्म मिला। इसके बाद जब सूरज सिंह और रामसिंह सलाह विचार करके कल्याणसिंह से विदा हुए और मिलने के लिए हरनन्दन के कमरे में आए तो हरनन्दन को वहाँ न पाया हाँ खोज करने पर मालूम हुआ कि बाँदी रंडी के पास बैठा हुआ दिल बहला रहा है यही बाँदी रंडी जिसका जिक्र इस किस्से के पहिले बयान में आ चुका है और जो आज की महफिल में नाचने के लिए यहाँ आयी थी।

सूरजसिंह और रामसिंह को सुनकर बड़ा ताज्जुब हुआ कि हरनन्दन बाँदी रंडी के पास बैठा हुआ दिल बहला रहा है क्योंकि वे हरनन्दन के स्वभाव से अनजान न थे और इस बात को भी खूब जानते थे कि वह रंडियों के फेर में पड़ने या उनकी साहबत को पसन्द करने वाला लड़का नहीं है और फिर ऐसे समय में जबकि चारों तरफ उदासी फैली हुई हो उसका बाँदी के पास बैठकर गप्पें उड़ाना तो हद दर्जे का ताज्जुब पैदा करता था। आखिर सूरजसिंह ने अपने लड़के रामसिंह को निश्चय करने के लिए उस तरफ रवाना किया जिधर बाँदी रंडी का डेरा था और आप लौट कर पुन अपने मित्र कल्याणसिंह के पास पहुँचे जो अपने कमरे में अकेले बैठे कुछ सोच रहे थे।

कल्याण – (ताज्जुब से) आप लौट क्यों ? क्या कोई दूसरी बात पैदा हुई ?

सूरज – हम लोग हरनन्दन से मिलने के लिए उसके कमरे में गए तो मालूम हुआ कि वह बाँदी रण्डी के डेरे में बैठा हुआ दिल बहला रहा है।

कल्याण – (चौंककर) बाँदी रण्डी के यहाँ ! नहीं कभी नहीं, वह ऐसा लड़का नहीं है और फिर ऐसे समय में जब कि चारो तरफ उदासी फैली हुई और हम लोग एक भयानक घटना के शिकार हो रहे हों। यह बात दिल में नहीं बैठती।

सूरज – मेरा भी यह ख्याल है और इसी से निश्चय करने के लिए मैं रामसिंह को उस तरफ भेजकर आपके पास लौट आया हूँ।

कल्याण – अगर यह बात सच निकली तो बड़े शर्म की बात होगी। हँसी-खुशी के दिनों में ऐसी बातों पर लोगों का ध्यान विशेष नहीं जाता और न लोग इस बात को इतना बुरा ही समझते हैं, मगर आज ऐसी आफत के समय में मेरे लड़के हरनन्दन का ऐसा करना बड़े शर्म की बात होगी हर एक छोटा-बड़ा बदनाम करेगा और समधियाने में यह बात न मालूम किस रूप में फैलकर कैसा रूपक खड़ा करेगी, सो कह नहीं सकते।

सूरज – बात तो ऐसी ही है मगर फिर भी मैं यही कहता हूँ कि हरनन्दन ऐसा लड़का नहीं है। उसे अपनी बदनामी का ध्यान उतना ही रहता है जितना जुआरी को अपना दाव पड़ने का, उस समय जब कि कौड़ी खलाड़ी के हाथ से गिरा ही चाहती हो।

इतने ही में हरनन्दन को साथ लिए हुए रामसिंह भी आ पहुँचा जिसे देखते ही कल्याणसिंह ने पूछा, "क्यों जी रामसिंह, हरनन्दन से कहाँ मुलाकात हुई ?

रामसिंह – बाँदी रण्डी के डेरे में !

कल्याणसिंह – (चौंककर) है ! (हरनन्दन से) क्यों जी तुम कहाँ थे ?

हरनन्दन – बाँदी रण्डी के डेरे में।

इतना सुनते ही कल्याणसिंह की आँखे मारे क्रोध के लाल हो गई और मुँह से एक शब्द भी निकलना कठिन हो गया। उधर यही हाल सूरजसिंह का भी था। एक तो दुःख और क्रोध ने उन्हें पहले ही से दबा रखा था मगर इस समय हरनन्दन की ढिठाई ने उन्हें आपे से बाहर कर दिया। वे कुछ कहना ही चाहते थे कि रामसिंह ने कहा–

रामसिंह – (कल्याण से) मगर हमारे मित्र इस योग्य नहीं है कि आपको कभी अपने ऊपर क्रोधित होने का समय दें। यद्यपि अभी तक मुझे कुछ मालूम नहीं हुआ है तथापि मैं इतना कह सकता हूँ कि इनके ऐसा करने का कोई न कोई सबब जरूर होगा।

हरनन्दन – बेशक ऐसा ही है।

कल्याण – (आश्चर्य से) बेशक ऐसा ही है।

हरनन्दन – जी हाँ।

इतना कह हरनन्दन ने कागज का एक पुर्जा जो बहुत मुड़ा हुआ था उनके सामने रख दिया। कल्याणसिंह ने बड़ी बेचैनी से उसे उठाकर पढ़ा और तब यह कह कर अपने मित्र सूरजसिंह के हाथ में दे दिया कि बेशक ऐसा ही है। सूरजसिंह ने भी उसे बड़े गौर से पढ़ा और 'बेशक ऐसा ही है' कहते हुए अपने लड़के रामसिंह के हाथ में दे दिया और उसे पढ़ने के साथ ही रामसिंह के मुँह से भी यही निकला कि 'बेशक ऐसा ही है' !!

तीसरा बयान

जमींदार लालसिंह के घर में बड़ा ही कोहराम मचा हुआ था। उसकी प्यारी लड़की सरला घर में से यकायक गायब हो गई थी और वह भी इस ढंग से कि याद करके कलेजा फटता था और विश्वास होता था कि उस बेचारी के खून

से किसी निर्दयी न अपना हाथ रगा है। बाहर-भीतर हाहाकार मचा हुआ था इस खयाल से तो और भी ज्यादे रुलाई आती थी आज ही उसे ब्याहने के लिए बाजे-गाजे के साथ बारात आवेगी।

लालसिह मिजाज का बडा ही कडुवा आदमी था। गुस्सा तो मानो ईश्वर के घर ही से उसके हिस्से में पडा था। रञ्ज हो जाना उसके लिए कोई बड़ी बात न थी जरा-जरा से कसूर पर बिगड जाता और बरसों की जान-पहिचान तथा मुरौवत का कुछ भी खयाल न करता। यदि विशष प्राप्ति की आशा न होती तो उसके यहॉ नौकर,मजदूरनी या सिपाही एक भी दिखाई न देता। इसी स प्रकट है कि वह लोगों का देता भी था मगर उसका दान इज्जत के साथ न होता और लोगों की बेइज्जती तथा फजीहत करने में ही वह अपनी शान समझता था। यह सब कुछ था मगर रुपये ने उसके सब ऐबों पर जालीलेट का पर्दा डाल रखा था। उसक पास दौलत बेशुमार थी मगर लडका कोई भी न था सिर्फ एक लडकी वही सरला थी जिसके सबब स आज दो घरों में रोना-पीटना मचा हुआ था। वह अपनी इस लडकी को प्यार भी बहुत करता था और भाई-भतीजे मौजूद रहने पर भी अपनी कुल जायदाद जिसे उसने अपने उद्योग से पैदा किया था,इसी लडकी क नाम लिखकर तथा वह वसीयतनामा राजा के पास रख कर अपने भाई-भतीजों को जो रुपये-पैसे की तरफ से दुखी रहा करते थे,सूखा ही टरका दिया था हॉ खाने-पीने की तकलीफ वह किसी को भी नहीं देता था। उसके चौके में चाहे कितन ही आदमी बैठकर खाते इसका वह कुछ खयाल न करता बल्कि खुशी से लोगों को अपने साथ खाने में शरीक करता था।

अपनी लडकी सरला के नाम जो वसीयतनामा उसने लिखा था वह भी कुछ अजब ढग का था। उसके पढने ही से उसके दिल का हाल जाना जाता था। पाठकों की जानकारी के लिए उस वसीयतनामे की नकल हम यहॉ पर देते हैं –

वसीयतनामा

"मै लालसिह

अपनी कुल जायदाद जिस मैंन अपनी मेहनत से पैदा किया है और जो किसी तरह बीस लाख रुपये से कम की नहीं है और जिसकी तफसील नीचे लिखी जाती है,अपनी लडकी सरला के नाम से जिसकी उम्र इस वक्त चौदह (१४)वर्ष की है वसीयत करता हूँ।इस जायदाद पर सिवाय सरला के और किसी का हक न होगा बशर्ते कि नीचे लिखी शर्तों का पूरा बर्ताव किया जाय –

(१) सरला को अपनी कुल जायदाद का मैनेजर अपने पति का बनाना होगा।

(२) सरला अपनी जायदाद का (जो मैं उसे दता हूँ)या उसका कोई हिस्सा अपने पति की इच्छा क विरुद्ध खर्च न कर सकेगी और न ही किसी को देगी।

(३) सरला क पति को सरला की कुल जायदाद पर बतौर मैनेजरी के हक होगा न कि बतौर मालिकाना।

(४) सरला का पति अपनी मैनजरी की तनख्वाह (अगर चाहे तो) पॉच सौ रुपये महीने के हिसाब से इस जायदाद की आमदनी में से ले सकेगा।

(५) सरला की शादी का बन्दोबस्त मै कल्याणसिह के लडके हरनन्दनसिह के साथ कर चुका हूँ और जहॉ तक समव है अपनी जिन्दगी में उसी के साथ कर जाऊँगा। कदाचित् इसके पहिले ही मेरा अन्तकाल हो जाय तो सरला को लाजिम होगा कि उसी हरनन्दन सिह के साथ शादी कर। अगर इसके विपरीत किसी दूसरे के साथ शादी करेगी तो मेरी कुल जायदाद के (जिसे मैं इस वसीयतनामा में दर्ज करता हूँ) आधे हिस्से पर हमारे चारों सगे भतीजों, राजा जी, पारसनाथ धरनीधर और दौलतसिह का या उनमें से उस वक्त जै हों हक हो जायेगा और बाकी के आधे हिस्से पर सरला के उस पति का अधिकार होगा जिसके साथ कि वह मेरी इच्छा के विरुद्ध शादी करेगी। हॉ अगर शादी होने के पहिले सरला को हरनन्दन की बदचलनी का काई सबूत मिल जाय तो उसे अख्तियार होगा कि जिसके साथ जी चाहे शादी करे। उस अवस्था में सरला को मेरी कुल जायदाद पर उसी तरह अधिकार होगा जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है। अगर शादी के बाद हरनन्दन की बदचलनी का कोइ सबूत पाया जाय तो सरला को आवश्यक होगा कि उसे अपनी मैनेजरी से खारिज कर दे और अपनी कुल जायदाद राजा के सुपुर्द कर के काशी चली जाय और वहॉ केवल एक हजार रुपये महीना राजा से लेकर तीर्थवास करे। और यदि ऐसा न करे तो राजा को (जो उस वक्त में यहाँ का मालिक हो) जबर्दस्ती एसा कराने का अधिकार होगा।

(६) सरला के बाद सरला की सम्पति का मालिक धर्मशास्त्रानुसार होगा।

जायदाद की फिहरिस्त और तारीख इत्यादि:–

इस वसीयतनामे के पढने से ही पाठक समझ गए होंगे कि लालसिह कैसी तबीयत का आदमी और अपनी जिद्द का कैसा पूरा था। इस समय जब यकायक सरला के गायब हो जाने का हाल लौंडी की जुबानी सुना तो उसके कलेजे पर एक चोट सी लगी और वह घबडाया हुआ मकान के अन्दर चला गया जहॉऔरतों में विचित्र ढग की घबडाहट फैली हुई थी। सरला की मॉ उस कोठरी में बेहोस पडी थी जिसमें स सरला यकायक गायब हो गई थी और जहॉ उसके बदल में चारों

तरफ खून के छींटे और निशान दिखाई दे रहे थे। कई औरतें उस बेचारी के पास बैठी रो रही थीं कई उसे होश में लाने की फिक्र कर रही थीं और कई इस आशा में कि कदाचित् सरला कहीं मिल जाय, ऊपर-नीचे और मकान के कोनों में घूम-घूम कर देखभाल कर रही थीं।

जिस समय लालसिह सरला की कोठरी में पहुचा और उसने वहाँ की अवस्था देखी, घबडा गया और खून के छींटों पर निगाह पडते ही उसकी आखों से आँसू की नदी वह चली। उस थाडी देर तक तो तनोबदन की सुध न रही फिर उसने अपने आप को बडी कोशिश से सँभाला और तहकीकात करने लगा। कई औरतों और लौडियों से उसने इजहार लिए मगर उससे ज्यादे पता कुछ भी न लगा कि सरलाअपनी कोठरी में से यकायक गायब हो गई। उस किसी ने भी कोठरी के बाहर पैर रखते या कहीं जाते नहीं देखा। जब लालसिह ने खून के निशान और छींटों पर ध्यान दिया तो उसे बडा ही आश्चर्य हुआ क्योंकि खून के जो कुछ छींट या निशान थे सब कोठरी के अन्दर ही थे चौकठ के बाहर इस किस्म की कोई बात न थी। वह अपनी स्त्री का होश में ला और दिलाशा देने का बन्दोबस्त कर के बाहर अपने कमरे में चला आया जहाँ से उसी समय अपने समधी कल्याणसिह के पास एक आदमी रवाना करके उसकी जुबानी अपने यहाँ का सब हाल उसने कहला भेजा।

रात भर रज और गम में बीत गई। सरला को खोज निकालने के लिए किसी ने कोई बात उठा न रक्खी मगर नतीजा कुछ भी न निकला। दूसरे दिन दो पहर बीते वह आदमी भी लौट आया जो कल्याणसिह के पास भेजा गया था और उसने वहाँ का सब हाल लालसिह से कहा जिसे सुनते ही लालसिह पागल की तरह हो गया और उसके दिल में कोई नई बात पैदा हो गई मगर जिस समय उस आदमी ने यह कहा कि "खून खराबे का सब हाल मालूम होने पर भी हरनन्दन सिह को किसी तरह का रज न हुआ और वह एक रण्डी के पास जिसका नाम बोदी है और जो नाचने के लिए उसके यहा गई हुई थी, जा बैठा और हँसी-खुशी में अपना समय बिताने लगा यहाँ तक कि उसके बाप ने बुलाने के लिए कई आदमी भेजे मगर वह बाँदी के पास से न उठा, आखिर जब स्वय रामसिह गये तो उसे जबरदस्ती उठा लाए और लानत-मलामत करने लगे — तो लालसिह की हालत बदल गई। उसके लिए यह खबर बडी ही दु:खदायी थी। यद्यपि वह सरला के गम में अधमुआ हो रहा था तथापि इस खबर ने उसके बदन में बिजली पैदा कर दी। कहाँ तो वह दीवार के सहारे सुस्त बैठा हुआ सब बातें सुन रहा और आखों से आँसू की बूँदे गिरा रहा था, कहाँ यकायक सम्हल कर बैठ गया क्रोध से बदन काँपने लगा, आँसू की तरी एक दम गायब हो कर आखों ने अगारों की सूरत पैदा की और साथ ही इसके वह लम्बी-लम्बी साँसें लेने लगा।

उस समय लालसिह के पास उसके चारों भतीजे — राजाजी, पारसनाथ, धरनीधर और दौलतसिह तथा और भी कई आदमी जिन्हें वह अपना हिती समझता था, बैठे हुए थे और सभी की सूरत से उदासी और हमदर्दी झलक रही थी। हरनन्दन और बाँदी वाली खबर सुन कर जिस समय लालसिह क्रोध में आकर चुटीले साँप की तरह फुकारने लगा उस समय उन लोगों ने भी नमक-मिर्च लगाना आरम्भ कर दिया।

एक — देखने, सुनने और बातचीत से तो हरनन्दन बडा नेक और बुद्धिमान मालूम पडता था।

दूसरा — मनुष्य का चित्त अन्दर-बाहर से एक नहीं हो सकता।

तीसरा — मुझे तो पहिले ही से उसके चालचलन पर शक था मगर लोगों में उसकी तारीफ इतनी ज्यादे फैली हुई थी कि मैं अपने मुँह से उसके खिलाफ कुछ कहने का साहस नहीं कर सकता था।

चौथा — बुद्धिमान ऐयाशों का यही ढग रहता है।

पाँचवाँ — असल तो यों है कि हरनन्दन को अपनी बुद्धिमानी पर घमण्ड भी हद से ज्यादा है।

छठा — नि सन्देह ऐसा ही है। उसने तो केवल हमारे लालसिह जी को धोखा देने के लिए यह रूपक बाँधा हुआ था नहीं तो वह पक्का बदमाश और

पारस — (लालसिह का भतीजा) अजी मैं एक दफे (लालसिह की तरफ इसारा करके) चाचा साहब से कह भी चुका था कि हरनन्दन को जैसा आप समझे हुए हैं, वैसा नहीं है मगर आपने मेरी बातों पर कुछ ध्यान ही नहीं दिया उल्टे मुझी को उल्लू बनाने लगे।

लाल — वास्तव में मैं उसे बहुत नेक आदमी समझता था।

पारस — मैं तो आज भी डके की चोट पर कह सकता हूँ कि बेचारी सरला का खून (अगर वास्तव में वह मारी गई है तो) हरनन्दन ही की बदौलत हुआ है। अगर मेरी मदद की जाय तो मैं इसको साबित करके दिखा सकता हूँ।

लालसिह — क्या तुम इस बात को साबित कर सकते हो?

पारस — बेशक!

लालसिह — तो क्या सरला के मारे जाने में भी तुम्हे कोई शक है?

पारस — जी हाँ पूरा शक है। मेरा दिल गवाही देता है कि यदि उद्योग के साथ पता लगाया जायेगा तो सरला मिल जायेगी।

लालसिंह – क्या यह काम तुम्हारे किये हो सकता है ?

पारस – बेशक मगर खर्च बहुत ज्यादा होगा।

लाल – यद्यपि मैं तुम पर विश्वास और भरोसा नहीं रखता पर इस बारे में अन्धा और बेवकूफ बनकर भी तुम्हारी मार्फत खर्च करने को तैयार हूँ। मगर तुम यह तो बताओ कि हरनन्दन सरला के साथ दुश्मनी करके अपना नुकसान कैसे कर सकता है।

पारस – इसका बहुत बडा सबब है जिसके लिए हरनन्दन ने ऐसा किया वह बडे आन-बान का आदमी है।

लाल – आखिर यह सबब क्या है सो साफ-साफ क्यों नहीं कहते ?

पारस – (इधर-उधर देखकर) मैं किसी समय एकान्त में आपसे कहूंगा।

लाल – अभी इसी जगह एकान्त हो जाता है जो कुछ कहना है तुरन्त कहो क्या तुम नहीं जानते कि इस समय मेरे दिल पर क्या बीत रही है ?

इतना कह कर लालसिंह ने चारों तरफ देखा और उसी समय वे लोग उठ कर थोडी देर के लिए दूसरे कमरे में चले गए। उस समय पुनः पूछे जाने पर पारसनाथ ने कहा- "हरनन्दन अपनी बुद्धि और विद्या के आगे रुपये की कुछ भी कदर नहीं समझता। वह आपके रुपयों का लालची नहीं है बल्कि अपनी तबीयत का बादशाह है। उसका बाप बेशक आपकी दौलत अपनी किया चाहता है मगर हरनन्दन को सरला के साथ ब्याह करना मंजूर न था क्योंकि वह अपना दिल किसी और को दे चुका है जो एक गरीब लडकी है और जिसके साथ शादी करना उसका बाप पसन्द नहीं करता। इसीलिए उसने इस ढंग से सरला को बदनाम करके अपना पीछा छुडाना चाहा है। इस सम्बन्ध में और भी बहुत सी बातें हैं जिन्हें मैं आपके सामने मुँह से नहीं निकाल सकता क्योंकि आप बडे हैं और बातें छोटी हैं।

लाल – (ताज्जुब के साथ) क्या तुम ये सब बातें सच कह रहे हो ?

पारस – मेरी बातों में रत्ती बराबर भी झूठ नहीं है। मैं छाती ठोंक के दावे के साथ कह सकता हूँ कि यदि आप खर्च की पूरी-पूरी मदद देंगे तो थोडे ही दिनों में ये सब बातें सिद्ध करके दिखा दूँगा।

लाल – इस बारे में क्या खर्च पडेगा ?

पारस – दस हजार रुपये। अगर जीती जागती सरला का भी पता लग गया और उसे छुडा कर अपने घर ला सका तो पच्चीस हजार रुपै से कम खर्च नहीं पडेगा।

लाल – (अपनी छाती पर हाथ रख के) मुझे मंजूर है।

पारस – तो मैं भी फिर अपनी जान हथेली पर रख कर उद्योग करने के लिए तैयार हूँ।

लाल – अच्छा अब उन लोगों को बुला लेना चाहिए जो दूसरे कमरे में चले गए हैं।

पारस – जो आज्ञा मगर ये बातें सिवाय मेरे और आपके किसी तीसरे को मालूम न हो।

चौथा बयान

रात दो घण्टे से ज्यादे नहीं गई है। दरभंगा के बाजारों की रौनक अभी मौजूद है,हाँ उस बाजार की रौनक कुछ दूसरे ही ढंग पर पलटा खा रही है जो रंडियों की आबादी से विशेष सम्बन्ध रखती है अर्थात् उनके निचले खण्ड की रौनक से ऊपर वाले खण्ड की रौनक ज्यादे होती जा रही है। इस उपन्यास के इस बयान में हमको इसी बाजार से कुछ मतलब है क्योंकि उस बाँदी रंडी का मकान भी इसी बाजार में है जिसका जिक्र इस किस्से के पहिले और दूसरे बयान में आ चुका है। बाँदी का मकान तीन मरातिब का है और उसमें जाने के लिए दो रास्ते हैं एक तो बाजार की तरफ से,दूसरा पिछवाडे वाली अन्धेरी गली में से।

पहिली मरातिब में बाजार की तरफ एक बहुत बडा कमरा और दोनों तरफ दो कोठडियाँ तथा उन कोठडियों से दूसरी कोठडियों में जाने का रास्ता बना हुआ है और पिछवाडे की तरफ केवल पाँच दर का एक दालान है। दूसरी मरातब पर चारों कोनों में चार कोठडियाँ और बीच में चारों तरफ छोटे-छोटे चार कमरे हैं। तीसरी मरातब पर केवल एक बँगला और बाकी का मैदान अर्थात् खुली छत है। इस समय हम बाँदी को इसी तीसरी मरातब वाले बँगले में बैठे देखते हैं उसके पास एक आदमी और भी है जिसकी उम्र लगभग पचीस वर्ष के होगी। कद लम्बा रंग गोरा चेहरा कुछ खूबसूरत बडी-बडी आँखें, (मगर पुतलियों का स्थान स्याह होने के बदले कुछ नीलापन लिए हुए था) भवें दोनों नाक के ऊपर से मिली हुई पेशानी सुकडी सर के बाल बडे-बडे मगर घुँघराले हैं। बदन के कपडे पायजामा,चपकन, रूमाल इत्यादि यद्यपि मामूली ढंग के है मगर साफ हैं हाँ सिर पर कलाबत्तू कोर का बनारसी दुपट्टा बाँधे है जिससे उसकी ओछी तथा फैलसूफ तबीयत का पता लगता है। यह शख्स बाँदी के पास एक बडे तकिए के सहारे झुका हुआ मीठी-मीठी बातें कर रहा है।

इस बंगले की सजावट भी बिल्कुल मामूली और सादे ढंग की है। जमीन पर खुरदुरा फर्श और छोटे-बडे कई रंग के बीस-पचीस तकिए पडे हुए हैं। दीवार में केवल एक जोडी दीवारगीर की लगी है जिसमें रंगीन पानी के गिलास की रोशनी

हो रही है। बॉदी इस समय बड़े प्रम स नौजवान की तरफ झुकी हुई बातें कर रही है।

नौजवान – मै तुम्हारे सर की कसम खा कर कहता हू, क्योंकि इस दुनिया में मैं तुमसे बढ़कर किसी को नहीं मानता।

बॉदी – (एक लम्बी सॉस लेकर) हम लोगों के यहाँ जितने आदमी आते है सभी लम्बी-लम्बी कसमें खाया करते है मगर मुझको उन कसमों की कुछ परवाह नहीं रहती, परन्तु तुम्हारी कसमें मेरे कलेजे पर लिखी जाती है क्योंकि मै तुम्हें सच्चे दिल से प्यार करती हू।

नौजवान – यही हाल मेरा है। मुझे इस बात का खयाल हरदम बना रहता है कि बाप माँ माई बेरादर देवता धर्म सबसे बिगड़ जाय मगर तुमसे किसी तरह कभी बिगड़ने या झूठ बोलने की नौबत न आवे। सच तो यह यों है कि मै तुम्हारे हाथ बिक गया हू बल्कि अपनी खुशी और जिन्दगी को तुम्हार ऊपर न्यौछावर कर चुका हूँ और केवल तुम्हारा ही भरोसा रखता हूँ। देखो अबकी दफे मेरी माँ सचमुच मेरी दुश्मन हो गई मगर मैने उसका कुछ भी खयाल न किया हाथ लगी रकम क लौटाने का इरादा भी मन में न आने दिया और तुम्हारी खातिर यहाँ तक ला ही के छोड़ा। अभी तो मै कुछ कह नहीं सकता,हाँ अगर ईश्वर मेरी सुन लेगा और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लग जायेगी ता मै तुम्हें मालामाल कर दूगा।

बॉदी – मै तुम्हारी ही कसम खा कर कहती हूँ कि मुझे धन-दौलत का कुछ भी ख्याल नहीं है। मै तो केवल तुमको चाहती हूँ और तुम्हारे लिए जान तक देने को तैयार हूँ, मगर क्या करू मेरी अम्मा बड़ी चाडालिन है। वह एक दिन भी मुझे रुलाए बिना नहीं रहतीं। अभी कल ही की बात है कि दोपहर के समय मै इसी बँगले मे बैठी हुई तुम्हें याद कर रही थी, खाना-पीना कुछ भी नहीं किया था, चार-पाच दफे अम्मा कह चुकी थीं मगर मैने पेट-र्दद का बहाना करके टाल दिया था इत्तिफाक स न मालूम कहाँ का मारा-पीटा एक सर्दार आ पहुँचा और अम्माजान का यह जिद्द हुई कि मैं उसके पास अवश्य जाऊँ जिसे उन्होंने बडी खातिर से नीचे वाले कमरे में बैठा रक्खा था। मगर मुझे उस समय सिवाय तुम्हारे ख्याल के और कुछ अच्छा ही नहीं लगता था इसलिए मै यहाँ बैठी रह गई नीचे न उतरी, बस अम्मा एक दम यहाँ चली आई और मुझे हजारों गालियाँ देने लगीं और तुम्हारा नाम ले लेकर कहने लगीं कि पारसनाथ आवेंगे तो रात-रात भर बैठी बातें किया करेगी और जब कोई दूसरा सर्दार आकर बैठेगा तो उसे पूछेगी भी नहीं ! आखिर घर का खर्च कैसे चलेगा ? इत्यादि बहुत कुछ बक गई मगर मैंने वह चुप्पी साधी कि सर तक न उठाया। आखिर बहुत बक-झक कर चली गई। फिर यह भी न मालूम हुआ कि अम्मा ने उस सर्दार को क्या कह कर विदा किया या क्या हुआ। एक दिन की कौन कहे रोजही इस तरह की खटपट हुआ करती है।

पारस – खैर थोड़े दिन और सब्र करो फिर तो मै उन्हे ऐसा खुश कर दूँगा कि वह भी याद करेंगी। मेरे चाचा की आधी जायदाद भी कम नहीं है अस्तु जिस समय वह तुम्हें बेगमों की तरह ठाठबाट से देखेंगी और खजाने की तालियों का झब्बा अपनी करधनी से लटकता हुआ पावेंगी,उस समय उन्हें बोलने का कोई मुँह न रहेगा दिन-रात तुम्हारी बलाएँ लिया करेंगी।

बॉदी – तब भला वह क्या करने लायक रहेंगी और आज भी वह मेरा क्या कर सकती है ? अगर बिगड़कर खडी हो जाऐं तो उनके किये कुछ भी न हो, मगर क्या करूँ लोकनिन्दा से डरती हूँ।

पारस – नहीं नहीं, ऐसा कदापि न करना ! मै नहीं चाहता कि तुम्हारी किसी तरह की बदनामी हो और सर्दार लोग तुम्हारी ढिठाई की घर-घर में चर्चा करें। अब भी मैंने तुम्हें रत्ती भर तकलीफ होने न दूँगा और तुम्हारे घर का खर्चा किसी न किसी तरह जुटाता ही रहूँगा।

बादी – नहीं जी मै तुम्हें अपने खर्चे के लिए भी तकलीफ देना नहीं चाहती, मै इस लायक हूँ कि बहुत से सर्दारों को उल्लू बनाकर अपना खर्च निकाल लूँ। मैं तुमसे एक पैसा लेने की नीयत नहीं रखती, मगर क्या करूँ अम्मा के मिजाज से लाचार हूँ इसी से जो कुछ तुम देते हो ले लेना पडता है। अगर उनके हाथ में मै यह कह कर कुछ रूपै न दूँ कि पारस बाबू ने दिया है तो वे बिगड़ने लगती है कि ऐसे सर्दार का आना किस काम का जो बिना कुछ दिए चला जाय ! मैंने तुमसे अभी तक इस बात को साफ-साफ नहीं कहा, आज जिक्र आने पर कहती हूँ कि उन्हें खुश करने के लिए मुझे बडी तरकीबें करनी पडती है। और सर्दारों से जो कुछ मुझे मिलता है उसका पूरा-पूरा हाल तो उन्हें मालूम हो ही नहीं सकता इससे उन रकमों में से मै बहुत कुछ बचा सकती हूँ। जिस दिन तुम बिना कुछ दिये चले जाते हो उस दिन अपने पास से उन्हें कुछ दे कर तुम्हारा दिया हुआ बता दती हूँ यही सबब है कि वह ज्यादे चीं-चपड नहीं कर सकतीं।

पारस – यह तो मै अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम मुझे जी-जान से चाहती हो और मुझ पर मेहरबानी रखती हो मगर क्या करूँ लाचार हूँ ! तो भी इस बात की कोशिश करूँगा कि जब तुम्हारे यहाँ आऊँ,तुम्हारे वास्ते कुछ न कुछ जरूर लेता आऊँ।

बॉदी – अजी रहो भी तुम तो पागल हुए जाते हो ! इसी से मै तुम्हें सब हाल नहीं कहती थी। जब मै उन्हें किसी न किसी तरह खुश कर ही लेती हूँ तो फिर तुम्हें तरद्दुद करने की क्या जरूरत है ?

इसी प्रकार की बातें दोनों में हो रही थीं कि एक नौजवान लौंडी जो घर भर की बल्कि दुनिया की हर एक चीज को एक ही निगाह (ऑख) से देखती थी, मटकती हुई आ पहुँची और बाँदी से बोली बीबी नीचे छोटे नवाब साहब आये हैं!

बाँदी — (चौंक कर) अरे! आज क्या है! कहाँ बैठे हैं?

लौंडी — अम्मा ने उन्हें पूरब वाली कोठरी में बैठाया है और आप भी उन्हीं के पास बैठी हैं।

बाँदी— अच्छा तू चल मैं अभी आती हूँ! (पारसनाथ की तरफ देख के) बड़ी मुश्किल हुई अगर मैं उनके पास न जाऊँ तो भी आफत कहें कि लो साहब रंडी का दिमाग नहीं मिलता! इतना ही नहीं बेइज्जती करने के लिये तैयार हो जायें।

पारस — नहीं नहीं ऐसा न करना चाहिये लो मैं जाता हूँ, अब तुम भी जाओ। (उठते हुए) ओफ बड़ी देर हो गई!

बाँदी — पहिले वादा कर लो कि अब कब मिलोगे?

पारस —कल तो नहीं मगर परसों जरूर मैं आऊँगा।

बाँदी — मेरे सर पर हाथ रक्खो।

पारस — (बाँदी के सर पर हाथ रखके) तुम्हारे सर की कसम परसों जरूर आऊँगा!

दोनों वहाँ से उठ खड़े हुए और निचले खण्ड में आए। पारसनाथ सदर दर्वाजे से होता हुआ अपने घर रवाना हुआ और बाँदी उस कोठरी में चली गई जिसमें नवाब साहब के बैठाये जाने का हाल लौंडी ने कहा था। दर्वाजे पर पर्दा पड़ा हुआ था और कोठरी के अन्दर बँदी की माँ के सिवाय दूसरा कोई न था। नवाब के आने का तो बहाना ही बनाना था।

बाँदी को देखकर उसकी माँ ने पूछा गया?

बाँदी — हाँ गया, कम्बख्त जब आता है उठने का नाम ही नहीं लेता!

बाँदी की माँ — क्या करेगी बेटी! हम लोगों का काम ही ऐसा ठहरा। अब जाओ कुछ खा पी लो हरनन्दन बाबू आते ही होंगे इसीलिए मैंने नवाब साहब का बहाना करवा भेजा था।

बाँदी और उसकी माँ धीरे-धीरे बातें करती खाने के लिये चली गई। आधे घण्टे के अन्दर ही छुट्टी पाकर दोनों फिर उसी कोठरी में आई और बैठकर यों बातें करने लगीं—

बाँदी — चाहे जो हो मगर सरला किसी दूसरे के साथ शादी न करेगी।

बाँदी की माँ — (हँस कर) दूसरे की बात जाने दो उसे खास हरिहरसिंह के साथ शादी करनी पड़ेगी जिसकी सूरत-शक्ल और चालचलन को वह सपने में भी पसन्द नहीं करती!

पाठक! हरिहरसिंह उसी सवार का नाम था जिसका जिक्र इस उपन्यास के पहिले बयान में आ चुका है और जो बाँदी रण्डी से उस समय मिला था जब वह नाचने गाने के लिए हरनन्दनसिंह के घर जा रही थी।

बाँदी अपनी माँ की बातें सुन कर कुछ देर तक सोचती रही और इसके बाद बोली लेकिन ऐसा न हुआ तब?

बाँदी की माँ — तब पारसनाथ को कुछ भी फायदा न होगा।

बाँदी — पारसनाथ को तो सरला की शादी किसी दूसरे के साथ हो जाने ही से फायदा हो जायेगा चाहे वह हरिहरसिंह हो चाहे कोई और हो मगर हो पारसनाथ का कोई दोस्त ही।

बाँदी की माँ — अगर ऐसा न हुआ तो वसीयतनामे में झगड़ा हो जायगा।

बाँदी — अगर सरला का बाप पहिला वसीयतनामा तोड़ कर दूसरा वसीयतनामा लिखे तब?

बाँदी की माँ — इसी खयाल से तो मैंने पारसनाथ से कहा था कि सरला की शादी लालसिंह के जीते जी न होनी चाहिये और इस बात को वह अच्छी तरह समझ भी गया है।

बाँदी — मगर लालसिंह बड़ा ही काँइयाँ है।

बाँदी की माँ — ठीक है, मगर वह पारसनाथ के फेर में उस वक्त आ जायेगा जब वह उसे यहाँ लाकर तुम्हारे पास बैठे हुए हरनन्दन का मुकाबला करा देगा।

बाँदी — लालसिंह जब यहाँ हरनन्दन बाबू को देखेगा तो वह उन्हें बिना टोके कभी न रहेगा और अगर टोकेगा तो हरनन्दन बाबू को विश्वास हो जायेगा कि बाँदी ने मेरे साथ दगा की।

बाँदी की माँ — नहीं नहीं हरनन्दन बाबू को ऐसा समझने का मौका कभी न देना चाहिए! मगर यही तो हम लोगों की चालाकी है! हमें दोनों तरफ से फायदा उठाना और दोनों को असामी बनाये रहना ही उचित है।

बाँदी — तो फिर क्या तरकीब की जाय?

बाँदी की माँ — हरनन्दन बाबू को सरला का पता बताना और लालसिंह को हरनन्दन की सूरत दिखाना ये दोनों काम एक ही समय में होना चाहिए। इसके बाद हमलोग लालसिंह से बिगड़ जायेंगे और उसे यहाँ से फौरन निकल जाने के लिए कहेंगे, उस समय हरनन्दन बाबू का हम लोगों पर शक न होगा।

बाँदी — मगर इसके अतिरिक्त इस बात की उम्मीद कब है कि हरनन्दन बाबू से बहुत दिनों तक फायदा होता रहेगा!

बाँदी की माँ – (मुस्कुरा कर) अरे हमलोग वड़े-वडे जतियों का मुरुण्डा कर लेती है हरनन्दन है क्या चीज ? अगर मेरी तालीम का असर तुझ पर पड़ता रहेगा तो यह कोई बड़ी बात न होगी।

बाँदी – कोशिश तो मै जहाँ तक हो सकेगा करूँगी मगर सुनने में बराबर यही आता है कि हरनन्दन बाबू का गाना-बजाने का या रण्डियों से मिलने का कुछ भी शौक नहीं है बल्कि वह रण्डियों के नाम से चिढ़ता है।

बाँदी की माँ – ठीक है, इस मिजाज के सैकडों आदमी होते है और है मगर उनके खयालों की मजबूती तभी तक कायम रहती है जब तक वे किसी न किसी तरह हम लोगों के घर में पैर नहीं रखते, और जहाँ एक दफे हम लोगों के आँचल की हवा उन्हें लगी तहाँ उनके खयालों की मजबूती में फर्क पड़ा ! एक दो की कौन कहे पचासों जती और ब्रह्मचारियों की खबर तो मैं ले चुकी हूँ। हाँ अगर तेरे किए कुछ हो न सके तो बात ही दूसरी है।

इसी किस्म की बातें हो रही थीं कि लौंडी ने हरनन्दन बाबू के आने की खबर दी। सुनते ही बांदी घबराहट के साथ उठ खडी हुई और बीस-पचीस कदम आगे बढ़कर बडी मुहब्बत और खातिरदारी का बर्ताव दिखाती हुई उसी कोठरी के दर्वाजे तक ले आई जिसमें बैठकर अपनी मा से बातें कर रही थी और जहां उसकी माँ सलाम करने की नीयत से खड़ी थी। अस्तु बाँदी की माँ ने हरनन्दन बाबू को झुककर सलाम करने के बाद बाँदी से कहा बाँदी ! आपको यहाँ मत बैठाओ जहाँ अकसर लोग आते-जाते रहते है बल्कि ऊपर बंगले में ले जाओ क्योंकि वह आप ही के लायक है और आपको पसन्द भी है।

इतना कहकर बाँदी की मा हट गई और बांदी 'हा एसा ही करती हू कहकर हरनन्दन बाबू को लिए ऊपर वाले उसी बंगले में चली गई जिसमें थोडी देर पहिले पारसनाथ बैठकर बांदी के साथ 'चारा-बदलौअल' कर चुका था !

हरनन्दन बाबू बडी इज्जत और जाहिरी मुहब्बत के साथ बैठाए गए और इसके बाद उन दोनों में यों बातचीत होने लगी –

बाँदी – कल तो आपने खूब ही छकाया ! दो बजे रात तक मै बराबर बैठी इन्तजार करती रही, आखिर बडी मुश्किल से नींद आई, सो नींद में भी बराबर चौंकती रही।

हरनन्दन – हाँ एक एसा टेढा काम आ पड़ा था कि मुझे कल बारह बजे रात तक बाबूजी ने अपने पास से उठने न दिया उस समय और भी कई आदमी बैठे हुए थे।

बाँदी – तभी एसा हुआ ! मै भी यही सोच रही थी कि आप बिना किसी भारी सबब के वादाखिलाफी करने वाले नहीं है !

हरनन्दन – मै अपने वादे का बहुत बडा खयाल रखता हूँ और किसी को यह कहने का मौका नहीं दिया चाहता कि हरनन्दन वादे के सच्चे नहीं हैं।

बाँदी – इस बारे में तो तमाम जमाना आपकी तारीफ करता है। मुझे आप ऐसे सच्चे सर्दार की साहबत का फख्र है। अभी कल मेरे यहाँ बी इमामी जान आई थी। बात ही बात में उन्होंने मुझे कह ही तो दिया कि 'हाँ बांदी, अब तुम्हारा दिमाग आसमान के नीचे क्यों उतरने लगा ! हरनन्दन बाबू ऐसे सच्चे सर्दार को पाकर तुम जितना घमण्ड करो थोडा है !, मैं समझ गई कि यह डाह से ऐसा कह रही है।

हरनन्दन – (ताज्जुब की सूरत बनाकर) इमामीजान को मेरा हाल कैसे मालूम हुआ ? क्या तुमने कह दिया था ?

बाँदी – (जोर देकर) अजी नहीं, मै भला क्यों कहने लगी थी ? यह काम उसी दुष्ट पारसनाथ का है। उसी ने तुम्हें कई जगह बदनाम किया है। मैं तो जब उसकी सूरत देखती हू मारे गुस्से के आखों में खून उतर आता है यही जी चाहता है कि उसे कच्चा ही खा जाऊं मगर क्या करूं, लाचार हूँ, तुम्हारे काम का खयाल करके रुक जाती हूँ। कल वह फिर मेरे यहाँ आया था, मैंने अपने क्रोध को बहुत रोका मगर फिर भी जुबान चल ही पड़ी बात ही बात में जली-कटी कह गई।

हरनन्दन-- लेकिन अगर उससे ऐसा ही सूखा बर्ताव रक्खोगी तो मेरा काम कैसे चलेगा ?

बाँदी – आप ही के काम का ख्याल तो मुझे उससे मिलने पर मजबूर करता है, अगर ऐसा न होता तो मैं उसकी वह दुर्गति करती कि वह भी जन्म भर याद करता। मगर उसे आप पूरा बेहया समझिये तुरन्त ही मेरी दी हुई गालियों को बिल्कुल भूल जाता है और खुशामदें करने लगता है। कल मैंने विश्वास दिला दिया कि मुझसे और आप (हरनन्दन) से लडाई हो गई और अब सुलह नहीं हो सकती, अब यकीन है कि दो-तीन दिन में आपका काम हो जायेगा।

हरनन्दन – अरे हा परसो उसी कम्बख्त की बदौलत एक बडी मजेदार बात हुई।

बाँदी – (और आगे खिसककर और ताज्जुब के साथ) क्या क्या ?

हरनन्दन – उसी के सिखान-पढाने से परसों लालसिह ने एक आदमी मेरे बाप के पास भेजा। उस समय जब कि उस आदमी से मेरे बाप में बातें हो रही थीं इत्तिफाक से मैं भी वहा जा पहुँचा। यद्यपि मेरा इरादा तुरत लौट पडने का था मगर मेरे बाप ने मुझे अपने पास बैठा लिया लाचार मैं उन दोनों की बातें सुनने लगा। उस आदमी ने लालसिह की तरफ से मेरी बहुत सी शिकायतें कीं और बात-बात में यही कहता रहा कि हरनन्दन बाबू तो बांदी रण्डी को रक्खे हुए है और

दिन-रात उसी के यहा बैठे रहते हैं। ऐसे आदमी को हमारी लडकी के गायब हो जाने का भला क्या रंज होगा? मेरे पिता पहिले तो चुपचाप बैठ देर तक ऐसी बातें सुनते रहे मगर जब उनको हद्दसे ज्यादे गुस्सा चढ आया तब उस आदमी से डपटकर बोले 'तुम जाकर लालसिंह को मेरी तरफ से कह दो कि अगर मेरा लडका हरनन्दन एयाश है तो तुम्हारे बाप का क्या लेता है? तुम्हारी लडकी जाय जहन्नुम में और अब अगर वह मिल भी जाय तो मैं अपने लडके की शादी उससे नहीं कर सकता। जो नौजवान औरत इस तरह बहुत दिनों तक घर से निकलकर गायब रहे वह किसी भले आदमी के घर में ब्याहुता बनकर रहने लायक नहीं रहती! अब सुन लो कि मेरे लडके ने खुल्लमखुल्ला बांदी रण्डी को रख लिया है और उसे बहुत जल्द यहा ले आवेगा! बस तुम तुरन्त यहाँ से चले जाओ मैं तुम्हारा मुँह देखना नहीं चाहता!!

इतना सुनते ही वह आदमी उठ कर चला गया और तब मेरे बाप ने मुझसे कहा 'बेटा! अगर तुम अभी तक बांदी से कुछ वास्ता न भी रखते थे तो अब खुल्लम्खुल्ला उसके पास आना-जाना शुरू कर दो और अगर तुम्हारी ख्वाहिश हो तो तुम उसे नौकर भी रख लो या यहा ले आओ। मैं उसके लिए पाच सौ रुपये महीने की आमदनी का इलाका अलग कर दूँगा बल्कि थोडे दिन बाद वह इलाका उसे लिख भी दूँगा जिसमें वह हमेशा आराम और चैन से रहे। इसके अलाव और जो कुछ तुम्हारी इच्छा हो उसे दो, मैं तुम्हारा हाथ न रोकूँगा देखें तो सही लालसिंह हमारा क्या कर लेता है!!

बाँदी – (बड़े प्यार से हरनन्दन का पजा पकड़कर) सच कहना! क्या हकीकत में ऐसा हुआ?

हरनन्दन – (बांदी के सर पर हाथ रख के) तुम्हारे सर की कसम भला मैं तुमसे झूठ बोलूँगा! तुमसे क्या मैने कभी और किसी से भी आज तक कोइ बात भला झूठ कही है?

बांदी – (खुशी से) नहीं नहीं इस बात को तो मैं बहुत अच्छी तरह जानती हूँ कि आप कभी किसी से झूठ नहीं बोलते!

हरनन्दन – और फिर इस बात का विश्वास तो और लोगों को भी थोडी ही देर में हो जाएगा क्योंकि आज मैं किसी से लुक-छिप के यहाँ नहीं आया हूँ बल्किखुलमखुल्लाआया हूँ। मेरे साथ एक सिपाही और एक नौकर भी आया है जिन्हें मैं नीचे दरवाजे पर इसलिए छोड आया हूँ कि बिना मेरी मर्जी के किसी को ऊपर न आने दें।

बाँदी – (ताज्जुब से) हाँ!!

हरनन्दन – (जोर देकर) हाँ! और आज मैं यहाँ बहुत देर तक बैठूँगा बल्कि तुम्हारा मुजरा भी सुनूँगा। डेरे पर मैं सभों को कह आया हूँ कि 'मै बाँदी के यहाँ जाता हूँ,अगर कोई जरूरत आ पडे तो वहीं मुझे खबर देना। मैं तो बाप का हुक्म पाते ही इस तरफ को रवाना हुआ और यहाँ पहुँचकर बडी आजादी के साथ घूम रहा हूँ।आज से तुम मुझे अपना ही समझो और विश्वास रक्खो कि तुम बहुत जल्द अपने को किसी और ही रंग-ढंग में देखोगी।

बाँदी – (खुशी से हरनन्दन के गले में हाथ डाल के) यह तो तुमने बडी खुशी की बात सुनाई! मगर रूपये-पैसे की मुझे कुछ भी चाह नहीं है, मैं तो सिर्फ तुम्हारे साथ रहने में खुश हूँ,चाहे तुम जिस तरह रक्खो।

हरनन्दन – मुझे भी तुमसे ऐसी ही उम्मीद है।अब जहाँ तक जल्द हो सके तुम उस काम को ठीक करके पारसनाथ का जवाब दे दो और इस मकान को छोडकर किसी दूसरे आलीशान मकान में रहने का बन्दोबस्त करो।अब मुझे सरला का पता लगाने की कोई जरूरत तो नहीं रही मगर फिर भी मैंअपने बाप को सच्चा किए बिना नहीं रह सकता जिसने मेहरबानी करके मुझे तुम्हारे साथ वास्ता रखने के लिए इतनी आजादी दे रक्खी है और तुम्हें भी इस बात का खयाल जरूर होना चाहिये। वे चाहते हैं कि सरला लालसिंह के घर पहुँच जाय और तब लालसिंह देखें कि हरनन्दन सरला के साथ शादी न करके बांदी के साथ कैसे मजे में जिन्दगी बिता रहा है।

बाँदी – जरूर ऐसा होना चाहिए! मै आपसे वादा करती हूँ कि चार दिन के अन्दर ही सरला का पता लगा के पारसनाथ का मुँह काला करूँगी!!

हरनन्दन – (बांदी की पीठ पर हाथ फेर के) शाबाश!!

बाँदी – यद्यपि आपको अब किसी का डर नहीं रहा और बिल्कुल आजाद हो गए है मगर मैं आपको राय देती हू कि दो-तीन दिन अपनी आजादी को छिपाए रखिए जिसमें पारसनाथ से मैं अपना काम बखूबी निकाल लूँ।

हरनन्दन – खैर जैसा तुम कहोगी वैसा ही करूँगा मगर इस बात को खूब समझ रखना कि आज से तुम हमारी हो चुकी, तुम्हारा बिल्कुल खर्च मैं अदा करूँगा और तुम्हें किसी के आगे हाथ फैलाने का मौका न दूँगा। आज से मैं तुम्हारा मुशाहरा मुकर्रर कर देता हूँ और भी गैरों के लिए अपने घर का दरवाजा बन्द कर दो।

बाँदी - जो कुछ आपका हुक्म होगा मैं वही करूँगी और जिस तरह रक्खोगे रहूँगी। मेरा तो कुछ ज्यादे खर्च नहीं है और न मुझे रूपये-पैसे की लालच ही है मगर क्या करूँ अम्मा के मिजाज से लाचार हूँ और उनका हाथ भी जरा शाहखर्च है।

हरनन्दन – तो हर्ज ही क्या है जब रूपये-पैसे की कुछ कमी हो तो ऐसी बातों पर ध्यान देना चाहिए। जब तक मैं मौजूद हूँ तब तक किसी तरह की फिक्र तुम्हारे दिल में पैदा नहीं हो सकती और न कोई शौक पूरा हुए बिना रह सकता है अच्छा जरा अपनी अम्मा को तो बुला लाओ।

बादी – वहुत अच्छा मै खुद जाकर उन्हें अपने साथ ले आती हूँ।

इतना कह कर बादी हरनन्दन के मोढे पर दबाव डालती हुई उठ खडी हुई और कमर का वल देती हुई कोठरी के वाहर निकल गई। थोड़ी देर तक हमारे हरनन्दन बाबू को अपने विचार में डूबे रहने का मौका मिला और इसके बाद अपनी अम्माजान को लिए हुए बाँदी आ पहुँची। बादी हरनन्दन से कुछ दूर हट कर बैठ गई और बुढिया आफत की पुडिया ने इस तरह बातें करना शुरू किया –

बुढिया – खुदा सलामत रक्खे आले मरातिब हो ! मैं तो दिन-रात दुआ करती हूँ, कहिए क्या हुक्म है ?

हरनन्दन – बडी बी ! मै तुमसे एक बात कहा चाहता हूँ।

बुढिया – कहिये कहिये, क्या बादी से कुछ बेअदबी हो गई है ?

हरनन्दन – नहीं नहीं बादी बेचारी ऐसी बेअदब नहीं है कि उससे किसी तरह का रज पहुचे। मै उससे बहुत खुश हूँ और इसीलिए मै उसे हमेशा पास रखना चाहता हू।

बुढिया – ठीक है, अगर आप ऐसा अमीर इसे नौकर न रक्खेगा तो रक्खेगा ही कौन ? और अमीर लोग तो ऐसा करते ही हैं ! मैं तो पहिले ही सोचे हुए थी कि आप ऐसे अमीर उठाईगीरों की तरह चूल्हा रखना पसन्द न करेंगे।

हरनन्दन – मैं नहीं चाहता कि जिसे मैं अपना बनाऊँ उसे दूसरे के आगे हाथ फैलाने पडें या कोई दूसरा उसे उँगली भी लगावे।

बुढिया – ठीक है ठीक है भला ऐसा कब हो सकता है ? जब आप ही की बदौलत मेरा पेट भरेगा तो दूसरे कम्बख्त को आने ही क्यों दूँगी ! आप ही ऐसे सरदार की खिदमत में रहने के लिए तो हजारों रुपै खर्च करके मैंने इसे आदमी बनाया है, तालीम दिलवाई है, और सच तो यों है कि यह आपके लायक है भी ! मैं बड़े तरद्दुद में पड़ी रहती थी और सोचती थी कि यह तो दिन-रात आपके ध्यान में डूबी रहती है और मै कर्ज के बोझ से दबी जा रही हूँ आखिर काम कैसे चलेगा। चलो अब मै हलकी हुई आप जानें और बादी जाने इसकी इज्जत-हुरमत सब आपके हाथ में है।

हरनन्दन – भला बताओ तो सही कितने रुपै महीन में तुम्हारा अच्छी तरह गुजर हो सकता है ?

बुढिया – ऐ हुजूर ! भला मैं क्या बताऊँ ? आपसे कौन बात छिपी हुई है ? घर में दस आदमी खाने वाले ठहरे, तिस पर महँगी के मारे नाकों दम हा रहा है। हाथ का फुटकर खर्च अलग ही दिन-रात परेशान किये रहता है। अभी कल की बात है कि छोटे नबाब साहब इसे दो सौ रुपै महीना देने को राजी थे, मगर नाच-मुजरा सब बन्द करने को कहते थे, मैंने मजूर न किया क्योंकि नाच-मुजरे से सैकडो रूपये आ जाते हैं तब कहीं घर का काम मुश्किल से चलता है, खाली दो सौ से क्या हो सकता है ?

हरनन्दन – खैर नाच-मुजरा तो मेरे वक्त में भी बन्द करना ही पडेगा, मगर आदत बनी रहने के ख्याल से मैं खुद सुना करूंगा और उसका इनाम अलग दिया करूँगा। अभी तो मै इसके लिए चार सौ रुपै महीने का इन्तजाम कर देता हूँ फिर पीछे देखा जायेगा। मैने अपना इरादा और अपने बाप का हाल भी बादी से कह दिया है तुम सुनोगी तो खुश होवोगी। (बीस अशर्फियाँ बुढिया के आगे फेंक कर) लो इस महीने की तनखाह पेशगी दे जाता हूँ। अब तुम्हें कोई दूसरा आलीशान मकान भी किराए पर ले लेना चाहिए जिसका किराया मैं अलग से दूँगा।

बुढिया – (अशर्फियों को खुशी से उठा कर) बस बस बस इतने में मेरे घर का खर्च बखूबी चल जायेगा नाच मुजरे की भी जरूरत न रहेगी। बाकी रहा गहना, कपडा, सो आप जानिए और बादी जाने, जिस तरह रखियेगा रहेगी। अब मैं एक ही दो दिन में अपना और बादी का गहना बेच कर कर्जा भी चुका देती हूं, क्योंकि ऐसे सरदार की खिदमत में रहने वाली बाँदी के घर किसी तगादगीर का आना अच्छा नहीं है और मैं यह बात पसन्द नहीं करती।

इतना कह कर बुढिया उठ गई और हरनन्दन बाबू ने उसकी आखिरी बात का कुछ जवाब न दिया।

बुढिया के चले जाने के बाद घण्टे भर हरनन्दन बादी के बनावटी प्यार और नखरे का आनन्द लेते रहे और इसके बाद उठ कर अपने डेरे की तरफ रवाना हुए।

पाँचवाँ बयान

दिन आधे घण्टे से ज्यादे बाकी है। आसमान पर कहीं-कहीं बादल के गहरे टुकडे दिखाई दे रहे है और साथ ही इसके बरसाती हवा भी इस बात की खबर दे रही है कि यही टुकडे थोडी देर में इकट्ठे होकर जमीन को तराबोर कर देंगे।

इस समय हम अपने पाठकों को जिस बाग में ले चलते है वह एक तो मालियों की कारीगरी और शौकीन मालिक की निगरानी तथा मुस्तैदी के सबब खुद ही रौनक पर रहा करता है, दूसरे आज-कल के मौसिम बर्सात ने उसके जीवन को और उभाड रक्खा है। यह बाग जिसके बीच में एक सुन्दर कोठी भी बनी हुई है हमारे हरनन्दन बाबू के सच्चे और दिली दोस्त रामसिह का है और इस समय वे स्वय हरनन्दन बाबू के हाथ में हाथ दिए और धीरे-धीरे टहलते हुए इस बाग के सुन्दर गुलबूटे और क्यारियों का आनन्द ले रहे है। देखने वाला तो यहां कहेगा कि 'ये दोनों मित्र इस दुनियाँ का सच्चा सुख लूट रहे है' मगर नहीं, इस समय ये दोनों एक भारी चिन्ता में डूबे हुए हैं और किसी कठिन मामले की कार्रवाई पर विचार कर रहे है जो कि आगे चलकर उनकी बातचीत से आपको मालूम होगा।

हरनन्दन - तुम कहते तो हो मगर ज्यादे खुल चलना भी मुझे पसन्द नहीं है।

रामसिंह - ज्यादे खुल चलना जमाने की निगाह में नहीं सिर्फ बाँदी और पारसनाथ की निगाह में।

हरनन्दन-हाँ सो तो होगा ही और होता भी है मगर इस बात की खबर पहिले ही बाबू लालसिंह को ऐसी खूबी के साथ हो जाना चाहिए कि उनके दिल में रंज और शक की जगह न मिलने पावे और वे अपनी जान की हिफाजत का पूरा बन्दोबस्त भी कर रक्खें, बल्कि मुनासिब तो यह है कि वे कुछ दिन के लिए मुर्दों में अपनी गिनती करा लें।

रामसिंह - (आवाज में जोर दे कर) बेशक ऐसा ही होना चाहिए ! यह बात परसों ही मेरे दिल में पैदा हुई थी और इस मामले पर दो दिन तक मैंने अच्छी तरह गौर करके कई बातें अपने पिता से आज ही स्वर कही भी है। उन्होंने भी मेरी राय बहुत पसन्द की और वादा किया कि कल लालसिंह से मिलने के लिए जायंगे और वहाँ पहुँचने के पहिले चाचा जी*(कल्याणसिंह) से मिल कर अपना विचार प्रकट कर देंगे।

हरनन्दन - हाँ ! तब तो कोई चिन्ता नहीं है यद्यपि लालसिंह बड़ा जडडी और जिद्दी आदमी है परन्तु आशा है कि चाचाजी की बातें उसके दिल में बैठ जायेंगी।

रामसिंह - आशा तो ऐसी ही है। हाँ मैं यह कहना तो भूल ही गया कि आज मैं महाराज से भी मिल चुका हूँ। ईश्वर की कृपा से जो कुछ मैं चाहता था महाराज ने उसे स्वीकार कर लिया और तुम्हें बुलाया भी है। सच तो यों है कि महाराज मुझ पर बडी ही कृपा रखते हैं।

हर - निःसन्देह ऐसा ही है और जब महाराज से इतनी बातें हो चुकी हैं तो हम अपना काम बडी खूबी के साथ निकाल लेंगे। अच्छा मैं एक बात तुम से और कहूँगा।

रामसिंह - वह क्या है ?

हर - एक आदमी ऐसा ही होना चाहिए जिस पर अपना विश्वास हो और अपने तौर पर जाकर बाँदी के यहा नौकरी करले और उसका एतबारी बन जाय।

रामसिंह – ठीक है मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। अपने असामियों में से बहुत जल्द किसी ऐसे आदमी का बन्दोबस्त करूँगा। भरसक किसी औरत ही का बन्दोबस्त किया जायगा। (कुछ सोचकर) मगर मेरे यार ! इस बात का खुटका मुझे हरदम लगा रहता है कि कहीं बाँदी तुम्हें अपने काबू में न कर ले। देखा चाहिए इस कालख से तुम अपने पल्ले को कहाँ तक बचाये रहते हो !

हरनन्दन – मैं दावे के साथ तो नहीं कह सकता मगर नित्य सवेरे उठते ही पहिले ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि मुझे इस बुरी हवा से बचाये रहियो।

रामसिंह – ईश्वर ऐसा ही करे ! (आसमान की तरफ देख कर) बादल तो बेतरह घिरे आ रहे हैं !!

हरनन्दन – हाँ चलो कोठी की छत पर बैठ कर प्रकृति की शोभा देखें।

रामसिंह – अच्छी बात है चलो।

दोनों मित्र धीरे धीरे बातें करते हुए कोठी की तरफ रवाना हुए।

छठवां बयान

रात दो घण्टे से कुछ ज्यादे जा चुकी है। लालसिंह अपने कमरे में अकेला बैठा कुछ सोच रहा है। सामने एक मोमी शमादान जल रहा है तथा कलम दवात और कागज भी रक्खा हुआ है। कभी कभी जब कुछ खयाल आ जाता है तो उस कागज पर दो तीन पंक्तियाँ लिख देता है और फिर कलम रख कर कुछ सोचने विचारने लगता है। कमरे के दर्वाजे बन्द हैं और पंखा चल रहा है जिसकी डोरी कमरे के बाहर एक खिदमतगार के हाथ में है। यकायक पंखा रुका और लालसिंह ने सर उठा कर सदर दर्वाजे की तरफ देखा। कमरे का दरवाजा खुला और उसने अपने पंखा खैंचने वाले खिदमतगार को एक पुर्जा लिए हुए कमरे के अन्दर आते देखा।

खिदमतगार ने पुर्जा लालसिंह के आगे रख दिया जिसने बड़े गौर से पुर्जा पढ़ने के बाद पहिले तो नाक-भौं चढ़ाया तथा फिर कुछ सोच-विचार कर खिदमतगार से कहा 'अच्छा आने दे। इतना कह उसने वह कागज जिस पर लिख रहा था, उठा कर जेब में रख लिया।

खिदमतगार चला गया और उसके बाद ही सूरजसिंह ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा। उन्हें देखते ही लालसिंह उठ खड़ा हुआ और मजबूरी के साथ जाहिरी खातिरदारी का बर्ताव करके साहब सलामत के बाद अपने पास बैठा लिया। इस समय सूरजसिंह अपनी मामूली पोशाक तो पहिरे हुए थे मगर ऊपर से एक बडी स्याह चादर से अपने को ढाँपे हुए थे।

लाल – आज तो आपने मुझ बदनसीब पर बडी कृपा की !

---

*हरनन्दन रामसिंह के पिता को चाचाजी कहता था और रामसिंह हरनन्दन के पिता को चाचाजी कहता था।

सूरज – (मुस्कुराते हुए) बदनसीब कोई दूसरा ही कम्बख्त होगा मैं तो इस समय एक खुशनसीब और बुद्धिमान आदमी के बगल में बैठा हुआ बातें कर रहा हूँ जिससे मिलने के लिए आज चार दिन से सोच विचार में पड़ा हुआ था।

लाल - (कुछ चौंककर) ताज्जुब है कि आप एक ऐसे आदमी को खुशनसीब कहते हैं जिसकी एकलौती लड़की ठीक ब्याह वाले दिन इस बेदर्दी के साथ मारी गई कि जिसकी कैफियत सुनने से दुश्मन को भी रंज होता हो, और साथ ही इसके जिसके समधी तथा दामाद की तरफ से ऐसा बर्ताव हुआ हो जिसके बर्दाश्त की ताकत कमीने से कमीना आदमी भी न रख सकता हो !

सूरज - यह सब आपका भ्रम है और जो कुछ आप कह गए है उसमें से एक बात भी सच नहीं है।

लाल – (आश्चर्य से) सो कैसे ? क्या सरला मारी नहीं गई ? और क्या उस समय आपके हरनन्दन बाबू बाँदी रण्डी के साथ खुशियाँ मनाते हुए

सूरज – (बात काट के) नहीं नहीं नहीं ! ये दोनों बातें झूठ हैं और आज यही साबित करने के लिए मैं आपके पास आया भी हूं।

लाल – कहने के लिए तो मुझसे भी लोगों ने यही कहा था कि सरला के मरने में शक है मगर बिना किसी तरह का सबूत पाए ऐसी बातों का विश्वास कब हो सकता है !

सूरज – ठीक है मगर मैं किसी तरह का सबूत पाए ऐसी बातों पर जोर देने वाला आदमी भी तो नहीं हूँ।

लाल – तो क्या किसी तरह का सबूत इस समय आपके पास मौजूद भी है जिससे मुझे विश्वास हो जाए कि सरला मारी नहीं गई और हरनन्दन ने जो कुछ किया वो उचित था ?

सूरज – जी हां।

इतना कहकर सूरजसिंह ने एक पुर्जा निकालकर लालसिंह के आगे रख दिया। लालसिंह ने उस पुर्जे को बड़े गौर से पढ़ा और ताज्जुब में आकर सूरजसिंह का मुंह देखने लगा।

सूरज – कहिए इन हरूफों को आप पहिचानते हैं ?

लाल - बेशक ! बहुत अच्छी तरह पहिचानता हूँ !

सूरज – और इसे आप मेरी बातों का सबूत मान सकते हैं या नहीं ?

लाल – मानना ही पड़ेगा मगर सिर्फ एक बात का सबूत।

सूरज – दूसरी बात का सबूत भी आप इसी को मानेंगे मगर उसके बारे में मुझे कुछ जुबानी भी कहना होगा।

लाल – कहिये कहिये मैं आपकी बातों पर विश्वास करूँगा क्योंकि आप प्रतिष्ठित पुरुष हैं और निःसन्देह आपको मेरी भलाई का खयाल है। इस समय यह पुर्जा दिखाकर आपने मेरे साथ वैसा ही सलूक किया जैसा समय की वर्षा का सूखी हुई खेती के साथ होता है।'

सूरज – यह सुनकर आपको ताज्जुब होगा कि बाँदी के पास हरनन्दन के बैठने का कारण यही पुर्जा है। इस तत्व को बिना जाने ही लोगों ने उसे बदनाम कर दिया। यों तो आपको भी उसके मिजाज का हाल मालूम ही है मगर ताज्जुब है कि आप भी बिना सोच-विचारे दुश्मनों की बातों पर विश्वास कर बैठे !

लाल – बेशक ऐसा ही हुआ और लोगों ने मुझे धोखे में डाल दिया। तो क्या यह पुर्जा हरनन्दन के हाथ लगा था ?

सूरज – जी हाँ जिस समय महफिल में नाचने के लिए बाँदी तैयार हो रही थी उसी समय उसके कपड़े में से गिरे हुए इस पुर्जे को हरनन्दन के नौकर ने उठा लिया था। वह नौकर हिन्दी अच्छी तरह पढ़ सकता है अस्तु उसने जब यह पुर्जा पढ़ा तो ताज्जुब में आ गया। यह पुर्जा तो उसने फौरन लाकर अपने मालिक को दे दिया और उसी समय महफिल का रंगबदरंग हो गया जैसा कि आप सुन चुके हैं। अब आप ही बताइए कि इस पुर्जे को पढ़के हरनन्दन को सबसे पहिले क्या करना उचित था ?

लाल – (कुछ सोचकर) ठीक है उस समय बाँदी के पास जाना ही हरनन्दन को उचित था क्योंकि वह नीति-कुशल लड़का है इस बात को मैं खूब जानता हूं।

सूरज – केवल उसी दिन नहीं बल्कि जब तक हमारा मतलब न निकले तब तक हरनन्दन को बाँदी से मेल रखना चाहिए।

लाल – ठीक है मगर यह काम तो हरनन्दन के अतिरिक्त कोई और आदमी भी कर सकता है !!

सूरज – बेशक कर सकता है मगर वही जिसे उतनी ही फिक्र हो जितनी हरनन्दन को। इसके अतिरिक्त बाँदी को जो आशा हरनन्दन से हो सकती है वह किसी दूसरे से कैसे हो सकती है ?

इस बात का जवाब तो लालसिंह ने कुछ न दिया मगर सूरजसिंह का पंजा उम्मीद भरी खुशी और मुहब्बत से पकड़ के बोला 'मेरे मेहरबान सूरजसिंहजी ! आज आपका आना मेरे लिए बड़ा ही मुबारक हुआ। यदि आप आकर इन सब भेदों को न खोलते तो न मालूम मेरी क्या अवस्था होती और मेरे नालायक भतीजे किस तरह मेरी हड्डियाँ चबाते। उड़ती हुई खबरों और भतीजों की रंगीन बातों ने तो मुझे एक दम से उल्लू बना दिया और बेचारे हरनन्दन की तरफ से भी

बड़े-बड़े शक मेरे दिल में बैठा दिए मगर आज आपकी मेहरबानी ने उन स्याह धब्बों को मिटाकर मेरा दिल हरनन्दन की तरफ से साफ कर दिया। आज हरनन्दन और बाँदी को हाथ में हाथ दिए सरे बाजार टहलता हुआ भी अगर कोई मुझे दिखा दे तो भी मेरे दिल में उसकी तरफ से कोई शक न बैठेगा हाँ बेचारी सरला का पता लगना न लगना यह आपकी मेहरबानी और मेरे भाग्य के आधीन है।

सूरज – बेचारी सरला का पता लगेगा और जरूर लगेगा। हरनन्दन ने खुद मुझसे अपने बाप के सामने कहा है कि बाँदी ने सरला को दिखा देने का वायदा किया है और इस बात का निश्चय दिला दिया है कि सरला पारसनाथ के कब्जे में है।

लाल – (चौंककर) पारसनाथ के कब्जे में !!

सूरज – जी हाँ। इस बात का निश्चय कर लेने के बाद हरनन्दन नहीं चाहता था कि बाँदी के घर में कभी पैर रक्खे मगर उसके बाप कल्याणसिंह ने उसे बहुत समझाया और बाँदी के साथ चालबाजी करने का रास्ता बताया तथा इस काम में मैंने भी इसे ताकीद की तब लाचार होकर उसने बाँदी के यहाँ आना-जाना शुरू किया और ऐसा करने के बाद उसे बहुत सी बातों का पता लगा।

लाल – (कुछ सोचकर) बेशक ऐसा ही होगा क्योंकि इस काम में पारसनाथ ही मुझसे ज्यादे बातें किया भी करता है।

सूरज – अगर आप मुनासिब समझें तो वे बातें मुझसे भी कह सुनावें जो पारसनाथ ने इस विषय में आपसे कही हैं क्योंकि मैं उन बातों से हरनन्दन को होशियार करूँगा और तब वह अपना काम और भी जल्दी तथा खूबसूरती के साथ निकाल सकेगा।

लाल – बेशक मैं उसकी बातें आपको सुनाऊँगा और आपसे राय करूँगा कि अब मुझे क्या करना चाहिए।

इतना कहकर लालसिंह ने पारसनाथ की बिलकुल बातें जो ऊपर के बयानों में लिखी जा चुकी हैं सूरजसिंह से बयान कीं और इसके बाद पूछा कि अब मुझे क्या करना चाहिए ?

सूरज – इस बात को तो आप भी समझते होंगे कि रंडियाँ कैसी चालबाज और शैतान होती हैं तथा बड़े-बड़े घरों को थोड़े ही दिनों में बर्बाद कर देने की शक्ति उनमें कितनी ज्यादे होती है क्योंकि आप अपनी नौजवानी का कुछ हिस्सा इन लोगों की सोहबत में गँवा कर हर तरह से होशियार हो चुके हैं।

लाल – जी हाँ मैं इन कमबख्तों की करतूतों से खूब वाकिफ हूँ। ऐसे ही कोई सरस्वती के कृपापात्र होते हैं जो इनके फन्दे से अपने को बचा ले पाते हैं, नहीं तो केवल लक्ष्मी के कृपापात्रों को तो ये लोग लक्ष्मी का वाहन ही बनाकर दम लेती हैं। जिसमें भी उन रंडियों से तो ईश्वर ही बचावे तो कोई बच सकता है जिसके यहाँ नायकाओं* की प्रधानता बनी हुई हो।

सूरज – बस तो इसी से आप समझ लीजिए कि बाँदी के यहाँ जब पारसनाथ और हरनन्दन दोनों जाते हैं तो बाँदी इस बात को चाहेगी कि जहाँ तक हो सके दोनों ही से रुपये वसूल करे मगर उसे ज्यादे पक्ष उसी का रहेगा जिससे ज्यादे आमदनी की सूरत देखेगी।

लाल – बेशक !

सूरज – अस्तु जब तक वह पारसनाथ से रुपये वसूल करने का मौका देखेगी तब तक उनको अपना दुश्मन बनाने में भी जहाँ तक होगा टालमटोल करती ही रहेगी, इसलिए सब से पहिले काम वही करना उचित है जिसमें पारसनाथ रुपये के बारे में बारम्बार बाँदी से झूठा बनता रहे

लाल – (बात काटकर) ठीक है ठीक है मैं आपका मतलब समझ गया वास्तव में ऐसा होना ही चाहिए। हाँ मुझे एक और भी बहुत ही जरूरी बात पर आपसे सलाह करनी है।

सूरज – मुझे भी अभी आपसे बहुत सी बातें करनी हैं।

इसके बाद सूरजसिंह और लालसिंह में घण्टे भर तक बातचीत होती रही जिसके अन्त में दोनों आदमी एक साथ उठ खड़े हुए। लालसिंह ने अपने दर्बारी कपड़े खूँटी पर से उतारकर पहिरे और हाथ में एक मोटा सा डण्डा लिया जिसके अन्दर गुप्ती बंधी हुई थी इसके बाद दोनों आदमी कमरे के बाहर निकलकर किसी तरफ को रवाना हो गए।

सातवां बयान

पारसनाथ अपने चाचा के हाल-चाल की खबर बराबर लिया करता था। उसने अपने ढंग पर कई ऐसे आदमी मुकर्रर कर रक्खे थे जो कि लालसिंह का रत्ती-रत्ती हाल उसके कानों तक पहुँचाया करते और जैसा कि प्रायः कुपात्रों के संगी-साथी किया करते हैं उसी तरह उन खबरों में बनिस्बत सच के झूठ का हिस्सा बहुत ज्यादे रहा करता था।

रात को लालसिंह के पास सूरजसिंह के आने की इत्तिला भी पारसनाथ को हो गई मगर उसमें दो बातों का फर्क पड़ गया। एक तो उसके जासूस इस बात का पता न बता सके कि आने वाला कौन था क्योंकि सूरजसिंह अपने को

---

*रंडियों की बुढ़िया माँ नानी इत्यादि 'नायका' कहलाती हैं। साहित्य के हिसाब से कैसी उल्टी बात है !!

छिपाए हुए लालसिंह तक पहुँचे थे और इस बात का गुमान भी किसी को नहीं हो सकता था कि सूरजसिंह लालसिंह के पास आवेंगे, दूसरे जब सूरजसिंह के साथ लालसिंह बाहर चले गए तब पारसनाथ को इस बात की खबर लगी।

शैतानी का जाल फैलाने वाला हरदम चौकन्ना ही रहा करता है, अस्तु पारसनाथ का भी वही हाल था। खबर पाते ही वह लालसिंह की तरफ गया मगर कमरे के दर्वाजे पर पहुँचते ही उसने सुना कि लालसिंह किसी के साथ कहीं बाहर गए हैं। थोडी देर तक उनके आने का इन्तजार किया, जब वे न आए तो लौटकर अपने स्थान पर चला गया मगर इस बात का प्रबन्ध करता गया कि जब लालसिंह लौटकर आवे तो उसी समय उसे खबर मिल जाय।

तरह तरह के सोच और विचारों ने उसकी आँखों में नींद को आने न दिया और वह तीन पहर रात गुजर जाने तक भी अपनी चीरपाई पर करवटें बदलता रहा। इस बीच में लालसिंह के लौट आने की भी उसे इत्तिला न मिली, जिससे उसके दिल का खुटका भी और बढता गया। आखिर तरद्दुदों और फिक्रों से हाथापाई करती हुई निद्रा ने उसकी आखों में अपना दखल जमा लिया और वह तीन चार घण्टे के लिए बेखबर सो गया। जब उसकी आँख खुली तो दिन घण्टे भर से कुछ ज्यादे चढ चुका था।

आँख खुलने के साथ ही वह घबडाकर बैठा और धीरे-धीरे यह बुदबुदाता हुआ अपनी कोठरी के बाहर निकला, "ओफ, बडी देर हो गई! चाचा साहब कभी के आ गए होंगे!!" उसी समय उसके नौकर ने सामने पडकर उसे इत्तिला दी, "सर्कार (लालसिंह) बरामदे में बैठे तम्बाकू पी रहे हैं।"

जल्दी-जल्दी हाथ मुँह धोकर वह लालसिंह की तरफ रवाना हुआ और जब उनके बरामदे में पहुँचा तो उन्हें कुर्सी पर बैठे तम्बाकू पीते देखा। अदब के साथ झुककर सलाम करने के बाद एक किनारे खडा हो गया।

लालसिंह की कुर्सी के पास ही एक छोटी सी चौकी बिछी हुई थी जिस पर इशारा पाकर पारसनाथ बैठ गया और यह बातचीत होने लगी—

लाल – रात को तुम कहा चले गए थे ? जब हमने तुमको बुलाया तब तुम घर में न थे *।

पारस – (ताज्जुब से) मैं तो रात को घर ही में था ! किस समय आपने याद किया था ?

लाल – उस समय मैं अपने तरद्दुदों मे डूबा हुआ था इसलिए ठीक नहीं कह सकता कि कितनी रात गई होगी।

पारस – ठीक है तो बहुत रात न गई होगी, क्योंकि जब मैं लौटकर घर आया था तब पहर भर से ज्यादे रात न गई थी।

लाल – शायद ऐसा ही हो।

पारस – मैं रात को आपके पास आया भी था मगर सुना कि आप किसी अनजान आदमी के साथ बाहर गए हैं।

लाल – उस समय तुम क्यों आए थे ?

पारस – दो एक नई खबरें जो कल मुझे मिली थीं वही आपको सुनाने के लिए आया था ! मैंने सोचा था कि अगर जागते हो तो इसी समय दिल का बोझ हलका कर लू।

लाल – वह कौन सी खबर थी ?

पारस – उस खबर का असल मतलब यही था कि आज रात हरनन्दन को रडी के यहा बैठे आपको दिखा सकूँगा।

लाल – (कुछ सोचकर) बात तो ठीक है मगर मैं सोचता हू कि हरनन्दन को रण्डी के यहा देखने से मेरा मतलब ही क्या निकलेगा ?

पारस – (कुछ उदास होकर) भला मेरे कहने का आपको विश्वास तो हो जायेगा ! और मैंने जो आपकी आज्ञा से बहुत कोशिश करके और कई आदमियों को बहुत कुछ देने का वायदा करके इस काम का बन्दोबस्त किया है वह

लाल – (लापरवाही के ढग पर) खैर देने-लेने की कोई बात नहीं है उन लोगों को जिनसे तुमने वादा किया है जो कुछ कहोगे यदि उचित होगा तो दे दिया जायेगा और जब हम लोग उनसे काम ही न लेंगे या हरनन्दन को रण्डी के घर देखने ही न जायेंगे, तो उन्हें कुछ देने की भी जरूरत ही क्या है।

पारस – आपको अख्तियार है, उसे देखने जाय या न जाय, मगर वे लोग तो अपना काम कर ही चुके हैं, और जब उन्हें कुछ देना पडेगा ही तो जरा सा तकलीफ करने में क्या हर्ज है ? और कुछ नहीं तो मुझे आपके आगे सच्चे बनने का

लाल – (बात काटकर) केवल हरनन्दन को रण्डी के यहाँ दिखाकर तुम सच्चे नहीं बन सकते। तुमने हमें सरला के जीते रहने का विश्वास दिलाया है।

पारस – ठीक है मगर मैंने साथ ही इसके यह भी कहा था कि सरला अगर मारी गई तो, या जीती है तो, मगर उसके साथ बुराई करने वाला हरनन्दन ही है। मैं सरला को भी खोज निकालने का बन्दोबस्त कर रहा हूँ मगर उसके पहिले हरनन्दन की बदचलनी दिखाकर कुछ तो अपने बोझ से हलका हो जाऊँगा।

---

*यह बात लाल सिंह ने बिलकुल झूठ कही।

लाल – हाँ सा हा सकता है मगर मेरा कहना यह है कि जब तक सरला का ठीक पता न लग जाए तब तक मैं हरनन्दन की बदचलनी देखकर भी क्या जस लगा लूगा ? बिना सबूत के किसी तरह का शक भी तो उस पर नहीं कर सकता ! क्योंकि उसका एक दास्त एसा आदमी है जिसकी महाराज क यहाँ बडी इज्जत है उसका खयाल भी तो करना चाहिए। हाँ अगर सरला का पता लगता हो ता जो कुछ कहा, देन या खर्च करने क लिए मै तैयार हूँ।

पारस – सरला का पता भी शीघ्र ही लगा चाहता है। अभी कल ही उन लागा न मुझे सरला क जीते रहन का विश्वास दिलाया है जिन लागों ने आज हरनन्दन का रण्डी क यहाँ दिखा देने का प्रबन्ध किया है। यदि उनका पहिला उद्योग व्यर्थ कर दिया जायेगा ता आगे किसी काम में उनका जी न लगगा और न फिर व मेरे काम में कोई उद्योग ही करेंग, बल्कि ताज्जुब नहीं कि मेरी बेइज्जती करन पर उतारू हो जायें।

लाल – ठीक है रुपया एसी चीज है। रुपये के वास्त लोग सभी कुछ कर गुजरते हैं, भले-बुरे पर ध्यान नहीं देते। लकिन जिस तरह वे लोग रुपय के लिये तुम्हारी बेइज्जती कर सकते हैं उसी तरह तुम भी अपना रुपया बचाने के लिए बेइज्जती सह सकते हो। मेरे इस कहन का मतलब यह नहीं है कि मैं रुपये खर्च करने स भागता हूँ या रुपये का सरला स बढ़कर प्यार करता हूँ मगर हाँ व्यर्थ रुपये खर्च करना भी बुरा समझता हूँ। यों तो तुम जो कहाग उन लागों के लिए दूगा मगर घडी-घडी भर दिल में यही बात पैदा होती है कि रंडी के यहाँ हरनन्दन को देख लेने ही स मेरा क्या मतलब निकलगा ? मान लिया जाय कि उसकी बदचलनी का सबूत मिल जायगा तो मै बिना कष्ट उठाए और बिना रुपय बर्बाद किय ही अगर यह मान लू कि हरनन्दन बदचलन है ता इसमें नुकसान ही क्या है ! बल्कि फायदा ही है। इसक अतिरिक्त मैं एक बात और भी सोचता हूँ वह यह कि यदि मैंने रंडी के मकान पर जाकर हरनन्दन को देख लिया और उसने मुझे अपने सामने दखकर किसी तरह की परवाह न की या दा एक शब्द बेअदबी के बोल बैठा तो मुझे कितना रञ्ज हागा ?

अपने चाचा लालसिंह की दारंगी और चलती-फिरती बातें सुनकर पारसनाथ कुछ नाउम्मीद और उदास हो गया। उसके दिल में तरह तरह क खुटके पैदा होने लग। लालसिंह की बातों से उसक दिली भेद का कुछ पता नहीं चलता था और न रुपये मिलने की ही पूरी-पूरी उम्मीद हा सकती थी, अस्तु आज चाँदी को क्या देंगे और कहाँ स देंगे इस विचार ने उस और भी दु खी किया तथापि बलवती आशा ने उसका पीछा न छोड़ा और वह जल्दी के साथ कुछ विचार कर बाला ' आप हरनन्दन को बडा नेक और सुजन समझते हैं, तो क्या उससे ऐसी बेअदबी होने की आशा करते है ? '

लाल – जब तुम हमारे विचार का रद करक कहत हा कि वह नालायक और ऐयाश है तथा इस बात का सबूत दने के लिए भी तैयार हो अगर मैं तुम्हें सच्चा मानूगा तो जरूर दिल में यह बात पैदा होगी ही कि अगर वह मेरे साथ बेअदबी का बर्ताव करे तो ताज्जुब नहीं।

पारस – (कुछ लाजवाब हाकर) खैर आप बडे हैं, आपसे बहस करना उचित नहीं समझता जा कुछ आप आज्ञा देंगे मैं वही करूगा।

लाल – अच्छा इस समय तुम जाओ मैं स्नान- पूजा तथा भाजन इत्यादि स छुट्टी पाकर इस विषय पर विचार करूगा फिर जो कुछ निश्चय होगा, तुम्हें बुलावा कर कहूँगा।

उदास मुख पारसनाथ अपन चाचा के पास से उठकर चला गया और उसके रोब तथा बातों की उलझन में पड़कर यह भी पूछ न सका कि आप रात को किसके साथ कहाँ गए थे ?

आठवां बयान

अब हम अपने पाठकों को एक एसी कोठरी म ले चलत है जिसे इस समय कैदखाने क नाम स पुकारना बहुत उचित होगा मगर यह नहीं कह सकत कि यह कोठरी कहाँ पर और किसके आधीन है तथा इसक दर्वाजे पर पहरा देने वाले कौन व्यक्ति है।

यह कोठरी लम्बाई में पन्द्रह हाथ और चौडाई में दस हाथ से ज्यादे न होगी। बेचारी सरला का हम इस समय इसी कोठरी में हथकडी बेडी स मजबूर देखते हैं। एक तरफ कोने में जलते हुए चिराग की रोशनी दिखा रही है कि अभी तक उस बेचारी के बदन पर वे ही साधारण कपडे मौजूद हैं जो ब्याह वाले दिन उसके बदन पर थे जिन कपडो के सहित वह अपने प्यारे रिश्तेदारों से जुदा की गई थी। हाँ उसके बदन में जा कुछ जेवर उस समय मौजूद थे उनमें से आज एक भी दिखाई नहीं देते। यद्यपि इस वारदात को गुजर अभी बहुत दिन नहीं हुए मगर दखन वालों की आखों में इस समय वह वर्षों की बीमार मालूम हाती है। शरीर सूख गया है और अन्धेरी कोठरी में बन्द रहन के कारण रंग पीला पड गया है। उसके तमाम बदन का खून पानी होकर बडी-बडी आखों की राह बाहर निकल गया और निकल रहा है। उसक खूबसूरत चेहरे पर इस समय डर के साथ उदासी और नाउम्मीदी भी छाई हुई है और वह न मालूम किस खयाल या किस दर्द की तकलीफ से अधमूई होकर जमीन पर लेटी है। यद्यपि वह वास्तव में खूबसूरत, नाजुक और भोली-भाली लड़की है मगर

इस समय या इस दुर्दशा की अवस्था में उसकी खूवसूरती का बयान करना विल्कुल अनुचित सा जान पडता है इसलिए इस विषय को छोड कर हम असल मतलव की वातें बयान करते हैं।

सरला के हाथों में हथकडी और वेडी पडी हुई है और वह केवल एक मामूली चटाई के ऊपर लेटी हुई ऑचल से मुँह छुपाए सिसक-सिसक कर रो रही है। हम नहीं कह सकते कि उसके दिल में कैसे-कैसे खयालात पैदा होते और मिटते है अथवा वह किन विचारों में डूबी हुई है। यकायक वह कुछ सोचकर उठ वैठी और इधर-उधर देखती हुई धीरे से बोली तो क्या जान दे देने के लिए भी कोई तरकीव नहीं निकल सकती ?'

इसी समय उस काठरी का दरवाजा खुला और कई नकाबपोश एक नए कैदी को उस कोठरी के अन्दर डालकर बाहर हो गए। कोठरी का दरवाजा उसी तरह से बन्द हो गया।

जब वह कैदी सरला के पास पहुँचा तो सरला उसे देख कर चौंकी और इस तरह उसकी तरफ झपटी जिसस मालूम होता था कि यदि सरला हथकडी से जकडी हुई न होती तो उस कैदी से लिपट कर खूब रोती, मगर मजबूर थी इसलिए 'हाय भैया! कह कर उसके पैरों पर गिर पडने के सिवाय और कुछ भी न कर सकी। यह कैदी सरला का चचेरा भाई पारसनाथ था। उसने सरला के पास बैठ कर आसू बहाना शुरू कर दिया और सरला तो ऐसा रोई कि उसके हिचकी वध गई। आखिर पारस ने उसे समझा-वुझा कर शान्त किया और तब उन दोनों में यों वातचीत होने लगी –

सरला – भैया ! क्या तुम लोगों को मुझ पर कुछ भी दया ना आई ? और मेरे पिताजी भी मुझे एक दम भूल गये जो आज तक इस वात की खोज तक न की कि सरला कहाँ और किस अवस्था में पडी हुई है ?

पारस–मेरी प्यारी बहन सरला ! क्या कभी ऐसा हो सकता था कि हम लोगों को तेरा पता लगे और हम लोग चुपचाप बैठे रहें ! मगर क्या किया जाये, लाचारी से हम लोग कुछ कर न सके ! जब से तू गायव हुई है तभी से मै तुम्हारी खाज में लगा हुआ था मगर जव मुझे तरा पता लगा तव मै भी तेरी तरह उन्ही दुष्टों का कैदी बन गया जिन्होंने रूपये की लालच में पड कर तुझे इस दशा को पहुँचाया।

सरला – मैं ता अभी तक समझे हुई थी कि तुम्ही ने मुझे इस दशा को पहुँचाया क्योंकि न तुम मुझे बुलाकर चोर–दर्वाजे के पास ले जाते और न मैं इन दुष्टों के पॅजे में फॅसती।

पारस – राम राम राम यह बिल्कुल तेरा भ्रम है। मगर इसमें तेरा कुछ कसूर नहीं। जव आदमी पर मुसीबत आती है तव वह घवडा जाता है यहा तक कि उसे अपने पराये की मुहब्वत का भी कुछ खयाल नहीं रहता, और वह दुनिया भर को अपना दुश्मन समझने लगता है। अगर तूने मेरे बारे में कुछ शक किया तो यह कोई ताज्जुव की वात नहीं है।

सरला – मगर नहीं अब मुझे तुम पर किसी तरह का शक नहीं लेकिन तुम यह वताओ कि आखिर हुआ क्या ?

पारस – वास्तव में मै चाचाजी की आज्ञानुसार तुझे बाहर की तरफ ले चला था मगर मुझे इस बात की क्या खवर थी कि दर्वाजे ही पर दस बारह दुष्ट मिल जायेंगे।

सरला – तव क्या मेरे पिता जी ने ऐसा किया और उन्होंने ही इन दुष्टों को दर्वाजे पर मुस्तैद करके मुझे उस रास्ते से बुलवाया था ?

पारस – हरे हरे हरे ! वे बेचारे तो तेरे बिना मुर्दे से भी बदतर हो रहे हैं। जब से तू गायब हुई है तब से उनका ऐसा बुरा हाल हो गया है कि मै कुछ बयान नहीं कर सकता।

सरला – तब यह सब बखेड़ा हुआ ही कैसे ?

पारस – जब वे लोग तुझे जर्बदस्ती उठा कर घर से बाहर निकले तो मैंने उनका पीछा किया मगर दर्वाजे के बाहर निकलते ही उनमें से एक आदमी ने घूम कर मुझे ऐसा लट्ठ मारा कि चक्कर खाकर जमीन पर गिर पडा और दो घण्टे तक मुझे तनोवदन की सुध न रही। आखिर जब मैं होश में आया, तो धीरे धीरे चल कर चाचा जी के पास पहुँचा और उनसे सब हाल कहा। बस उसी समय चारों तरफ रोना पीटना मच गया पचासों आदमी इधर-उधर तुम्हें खोजने के लिए दौड गए तरह-तरह की कार्यवाइयॉ होने लगीं। मगर सब व्यर्थ हुआ, न तो तुम्हारा ही पता लगा और न उन दुष्टों ही की कुछ टोह लगी। यह खबर तुम्हारे ससुराल वालों को भी पहुँची और वहाँ भी खूब रोना-पीटना मच गया। मगर हरनन्दन पर इस घटना का कुछ भी असर न पडा और वह महफिल में से उठ कर बॉदी रण्डी के डेरे पर चला गया जो उसके यहाँ नाचने के लिए गई थी। जब लोगों ने उसे इस नादानी पर शर्मिन्दा करना चाहा तो उसने लोगों को ऐसा उत्तर दिया कि सब कोई अपने कान पर हाथ रखने लगे और उसका वाप भी उससे बहुत रज हो गया।

सरला – (हरनन्दन की खबर सुन दु ख और लज्जा से सिर नीचे करके) खैर यह वताओ कि आखिर मेरा पता तुम्हें कैसे लगा ?

पारस – मै सब कुछ कहता हूँ तुम सुनो तो सही। हॉ तो हरनन्दन की बात तुम्हारे पिता को मालूम हुई तो उन्हें वडा ही क्रोध चढ आया। उन्होंने मुझे बुला कर सव हाल कहा और यह भी कहा कि 'मुझे यह सब कार्रवाई उसी हरनन्दन की मालूम पडती है अस्तु तुम पता लगाओ कि इसका असल भेद क्या है ? इस मामले में जो कुछ खर्च होगा मैं तुम्हें दूँगा।

बस उसी समय से मैंने अपनी जान हथेली पर रख ली और तुम्हें खोजने के लिए घर से बाहर निकल पडा। इस कार्रवाई म क्या-क्या तकलीफें उठानी पडीं और मैंने कैसे-कैसे काम किए इसका कहना व्यर्थ है। असल यह है कि मुझे शीघ्र इस बात का पता लग गया कि यह सब जाल हरिहरसिंह के फैलाए हुए है जिसके साथ तुम्हारी वह मौसेरी बहन 'कल्यानी ब्याही गई थी जो आज इस दुनिया में तुम्हारा दु ख देखने के लिए न रह कर वैकुण्टधाम चली गई।

सरला – मैंन हरिहर सिह का क्या बिगाडा था जो उसने मेरे साथ ऐसा सलूक किया? मरे पिता ने भी ता उसक साथ किसी तरह की बुराई नहीं की थी ?

पारस – ठीक है मगर मैं इसका सबब भी तुमसे बयान करता हूँ, तुम सुनती चलो। तुम्हारे पिता न जो वसीयतनामा लिखा है उसका हाल तो तुम्हें मालूम ही होगा ?

सरला – हॉ मैं अपनी मॉ की जुबानी उसका हाल सुन चुकी हूँ।

पारस – बस वही वसीयतनामा तुम्हारी जान का काल हो गया और उसी रूपये की लालच में पड कर हरिहर ने एसा किया।

सरला बहुत ही नक बुद्धिमान तथा पढी-लिखी लडकी थी। यद्यपि उसकी अवस्था कम थी मगर उसकी पतिव्रता और बुद्धिमान माता ने उसके दिल में नकी और बुद्धिमानी की जड कायम कर दी थी और वह इसीलिए ऊची-नीची बातों को बहुत नहीं तो थाडा-बहुत अवश्य समझ सकती थी मगर इतना होन पर भी वह न मालूम क्या सोच कर पूछ बैठी– 'क्या ऐसा करने से हरिहर को मेरे बाप की दौलत मिल जायेगी ? इसके जवाब में पारसनाथ ने कहा–

पारस – हॉ मिल जायेगी अगर उसकी शादी तुम्हार साथ हो जायेगी ता !

सरला – मगर उस हालत में ता उसमें से आधी दौलत तुम लोगों को भी मिलने की आशा हो सकती है।

पारस – (कुछ झेंप कर) हॉ तुम्हारे पिता की लिखावट का मतलब ता यही है मगर हम लोग एसी दौलत पर लानत भेजते हैं जिसमें तुम्हारा और चाचा जी का दिल दु खे हॉ इतना जरूर कहेंग कि जान से ज्याद दौलत की कदर न करनी चाहिए और इस समय तुम्हारे हाथ में कम से कम चार आदमियों की जान तो जरूर है अगर अपनी जान नहीं ता अपने प्यारे रिश्तेदारों की जान का जरूर ही खयाल करना चाहिए।

सरला – (कुछ चौंक कर) मरी समझ में न आया कि तुम्हार इस कहन का मतलब क्या है ?

पारस – बस यही कि अगर तुम हरिहरसिह के साथ ब्याह करना स्वीकार कर लोगी तो इस समय तुम्हारी तुम्हारे पिता की तुम्हारी माता की और साथ ही मेरी भी जान बच जाएगा और रुपया-पैसा तो हाथ-पैर का मैल है तथा यह बात भी मशहूर है कि लक्ष्मी किसी के पास स्थिर भाव स नहीं रहती इधर-उधर डोला ही करती है।

सरला – क्या हम लोगों में से किसी औरत का दूसरा ब्याह भी होता है ! मै तो दिल से समझे हुए हूँ कि मेरी शादी हा चुकी ! हॉ इसमें कोई सन्दह नहीं कि मैं अपनी जान समर्पण करके तुम लोगों की जान बचा सकती हूँ, मगर उस ढग स नहीं जिस ढग स तुम कहत हो क्योंकि मेर पिता क जीत जी न तो वह वसीयतनामा ही कोई चीज है और न किसी को उनकी दौलत ही मिल सकती है। नतीजा यही हुआ कि जिस लालची को मै धर्म-त्याग करके स्वीकार कर लूँगी वह मेरे बाप की दौलत शीघ्र पान की आशा स मेर पिता का अवश्य मार डालेगा और ताज्जुब नहीं कि अब भी उनके मारने का उद्याग कर रहा हो। हॉ एक दूसरी तरकीब से उन लोगों की जान अवश्य बच जायेगी जो मै अच्छी तरह सोच चुकी हूँ

पारस – (बात काट कर) न मालूम तुम कैसी अनहोनी बातें सोच रही हो जिनका न सिर है न पैर !

सरला – जो कुछ मैंन सोचा है वह बहुत ठीक है। मेर साथ चाहे कितनी बुराई की जाय या मेरी बोटी-बोटी भी काट डाली जाय मगर मै अपनी दूसरी शादी कदापि न करूँगी ! तुम मुझे यह नहीं समझा सकत कि यह दूसरी शादी नहीं है और न तुम्हारा समझाना मै मान सकती हूँ मगर हां मै किसी के साथ शादी न करके भी अपने पिता की जान दो तरह से बचा सकती हूँ और इसमें किसी तरह की कठिनाई भी नहीं है !

पारस – खैर और बातों पर तो पीछे बहस करूँगा पहिले यह पूछता हूँ कि वे दोनों ढग कौन से हैं जिनसे तुम हम लोगों की जान बचा सकती हो।

सरला – उनमें से एक ढग तो मै नहीं बता सकती मगर दूसरा ढग साफ-साफ है कि मरी जान निकल जाने ही से बखेडा तै हो जायेगा।

पारस – यह सब सोचना तुम्हारी नादानी है ! अगर तुम अपने हिन्दू धर्म को जानती होतीं या काई शास्त्र पढी होतीं ता मेरी बातो पर विश्वास करतीं यह न सोचतीं कि मेरी शादी हो चुकी अब जा शादी होगी वह दूसरी शादी कहलावेगी और जान दन में किसी तरह का

सरला – (बात काट कर) अगर मै कोई शास्त्र नहीं भी पढी तो भी शास्त्र के असल मर्म को अपनी माता की कृपा से अच्छी तरह समझती हूँ। उसने मुझे एक ऐसा लटका बता दिया है जिससे पूरे धर्मशास्त्र का भेद मुझे मालूम हो गया है। उसने मुझे कहा था कि बेटी जो चित्त को बुरी मालूम हो या जिस बात क ध्यान से दिल में जरा भी खटका पैदा

हो, अथवा जिस बात से लज्जा को कुछ भी सम्बन्ध हो अर्थात् जिसके कहने से लज्जित होना पड़े उसके विषय में समझ रक्खो कि शास्त्र में कहीं न कहीं उसकी मनाही जरूर लिखी होगी। अस्तु मेरे स्वार्थी भाई, इस विषय में तुम मुझे कुछ भी नहीं समझा सकते, क्योंकि मैं अपनी माता की इस बात को आज्ञा बल्कि उनकी सब बातों को 'वेद-वाक्य' के बराबर समझती हूँ।

पारस – (कुछ लज्जित होकर) अब तुम्हारी इन लड़कपन की सी बातों का मैं कहा तक जवाब दूं ? और जब तुम मुझी को स्वार्थी कह कर पुकारती हो तो अब तुम्हें किसी तरह का उपदेश करना भी व्यर्थ ही है।

सरला – नि सन्देह ऐसा ही है, अब इस समय में तुम मुझे कुछ भी समझाने-बुझाने का उद्योग न करो। जो कुछ समझना था मैं समझ चुकी और जो कुछ निश्चय करना था उसे मैं निश्चय कर चुकी।

पारस – (लज्जा और निराशा के साथ) खैर अब मुझे तुम्हारे हृदय की कठोरता का हाल मालूम हो गया और निश्चय हो गया कि तुम्हें किसी के साथ मुहब्बत नहीं है और न किसी की जान जाने की ही परवाह है।

सरला -- ठीक है, अगर तुम उस ढग और कहने पर नहीं समझे तो इस दूसरे ढग से जरूर समझ जाओगे कि जब मुझे अपनी ही जान प्यारी नहीं है तो दूसरे की जान का खयाल कब हो सकता है ?

पारस -- अच्छा तब मैं अपनी जान से भी हाथ धो लेता हूँ और कह देता हू कि इस विषय में अब एक शब्द भी मुह से न निकालूँगा।

सरला – केवल इसी विषय में नहीं बल्कि मेरे किसी विषय में भी अब तुम्हें बोलना न चाहिए क्योंकि मैं तुम्हारी बातें सुनना नहीं चाहती।

इतना कहकर सरला पारसनाथ से कुछ दूर हटकर जा बैठी और चुप हो गई। पारसनाथ की आखों में क्रोध की लाली दिखाई देने लगी मगर सरला को कुछ कहने या समझाने की उसकी हिम्मत न पड़ी। थोड़ी देर के बाद पुन उस कोठरी का दर्वाजा खुला और एक नकाबपोश ने कोठरी के अन्दर आकर दोनों कैदियों से पूछा, क्या तुम लोगों को किसी चीज की जरूरत है ?

इसके जवाब में सरला ने तो कहा, "हाँ, मुझे मौत की जरूरत है।" और पारसनाथ ने कहा, "मैं पायखाने जाया चाहता हूँ।'

वह आदमी पारसनाथ को लेकर कोठरी के बाहर निकल गया और कोठरी का दर्वाजा पुन पहिले की तरह बन्द हो गया।

नौवां बयान

इस समय हम बाँदी को उसके मकान में छत के ऊपर वाली उसी कोठरी में अकेली बैठी हुई देखते हैं जिसमें दो दफे पहिले भी उसे पारसनाथ और हरनन्दन के साथ देख चुके हैं। हम यह नहीं कह सकते कि उसके बाद पारसनाथ और हरनन्दन बाबू का आना इस मकान में दो दफे हुआ, हाँ इसमें कोई शक नहीं कि उसके बाद भी उन लोगों का आना यहाँ जरूर हुआ, मगर हम उसी जिक्र को लिखेंगे जिसमें कोई खास बात होगी।

बाँदी अपने सामने पानदान रक्खे हुए धीरे-धीरे पान लगा रही है और कुछ सोचती भी जाती है। दो ही चार बीड़े पान के उसने खाए होंगे कि लौंडी ने खबर दी कि पारसनाथ आए है, बड़ी बीबी उन्हें बरामदे में रोककर बातें कर रही है'। इतना सुनते ही बाँदी ने लौंडी को तो चले जाने का इशारा किया और खुद पानदान को किनारे कर एक बारीक चादर से मुँह लपेट सो रही।

जब पारसनाथ उस कोठरी में आया तो उसने बाँदी को ऊपर लिखी हालत में पाया चुपचाप उसके पास बैठ गया और धीरे-धीरे उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगा।

बाँदी – (लेटे ही लेटे) कौन है ?

पारस – तुम्हारा एक ताबेदार !

बाँदी – (उठकर) वाह वाह, मैं तो तुम्हारा ही इन्तजार कर रही थी।

पारस – पहिले यह तो बताओ कि आज तुम्हारा चेहरा इतना सुस्त और उदास क्यों है ?

बाँदी – कुछ नहीं, यों ही बेवक्त सो रहने से ऐसा हुआ होगा।

पारस – नहीं नहीं, तुम मुझे धोखा देती हो, सच बताओ क्या बात है ?

बाँदी – कह तो चुकी और क्या बताऊँ ? तुम तो खाहमखाह की हुज्जत निकालते हो और यों ही शक करते हो।

पारस – बस बस, रहने भी दो, मुझसे बहाना न करो, जो कुछ है वह मैं तुम्हारी अम्मा से सुन चुका हूँ।

बाँदी – (कुछ भौहें सिकोड़ कर) जब सुन ही चुके हो तो फिर मुझसे क्या पूछते हो ?

पारस – उन्होंने इतना खुलासा नहीं कहा जितना मैं तुम्हारी जुबान से सुना चाहता हूँ।

बाँदी – (ठट्ठा उडान के तौर पर हँसकर) जी हाँ ! क्या बात है आपकी चालाकी की ! अब दुनिया में एक आप ही तो समझदार और सच्चे रह गये है !!

पारस –(चौंककर) यह 'सच्चे' के क्या मानी ? आज 'सच्चे' के उलटे खिताब पर तुमने ताना क्यों मारा ? क्या मै झूठा हूँ या क्या मै तुमसे झूठ बोलकर तुम्हें धोखे में डाला करता हूँ ?

बादी – तो तुम इतना चमके क्यों? तुम्हें सच्चा कहा तो क्या बुरा किया ? अगर मुझे ऐसा ही मालूम होता तो दावे के साथ तुम्हें 'झूठा' कहती।

पारस – फिर वही बात ! वही ढग !!

बादी – खैर इन बातों को जाने दो इन पर पीछे बहस करना पहिले यह बताओ कि तुम कल आये क्यों नहीं ? तुम तो यहाँ हरनन्दन बाबू को दिखा दने के लिए अपने चाचा को साथ लेकर आने का वादा न कर गए थे। तुम्हारी जुबान पर भरोसा करके न मालूम किन-किन तर्कीबों से मैंने आधी रात तक हरनन्दन बाबू को रोक रक्खा था। आखिर वही 'टॉय टॉय फिस' ! मैं पहिले ही कह चुकी थी कि अब हरनन्दन बाबू को तुम्हारे चाचा का कुछ भी डर नहीं रहा और इस बारे में तुम्हारे चाचा को मुँह तोड जवाब मिल चुका है। अब वह बडे भारी बेवकूफ होंगे जो हरनन्दन बाबू को देखने के लिए यहाँ आवेंगे।

पारस – (तरद्दुद की सूरत बनाकर) बात तो कुछ ऐसी ही मालूम पड़ती है मगर इतना मै फिर भी कहूँगा कि कल के पहिले इस किस्म की कोई बात न थी पर कल मुझे भी रग बुरे ही नजर आये जिसका सबब अभी तक मालूम नहीं हुआ, पर मै बिना पता लगाये छोडने वाला भी नहीं।

बाँदी – (मुस्कुराकर) अजी जाओ भी तुम्हें बसत की कुछ खबर तो हुई नहीं कहते है कि 'कल से कुछ बुरे रग नजर आते हैं'। हाँ यह कहत तो कुछ अच्छा भी मालूम पडता कि 'मेरे हाशियार कर देने पर कल कुछ पता लगा है।

पारस – नहीं नहीं ऐसा नहीं है। मै तुम्हारे सर की कसम खाकर कहता हूँ कि कल जो कुछ मैंने देखा वह नि सन्देह एक अनूठी और ताज्जुब की बात थी। सुनोगी तो तुम भी ताज्जुब करोगी। मगर मै यह नहीं कहता कि जो कुछ तुमने कहा था उसकी कुछ भी असलियत नहीं है, शायद वैसा भी हुआ हो।

बाँदी – बस, लाजवाब हुए तो मेरे सर की कसम खाने लगे ! इनके हिसाब मेरा सर मुफ्त का आया है ! खैर, पहिले मै सुन तो लूँ कि कल तुमने क्या देखा ?

पारस – (चेहरा उदास बनाके) तुम्हें मेरी बातों का विश्वास ही नहीं होता। क्या तुम समझती हो कि मै यों ही तुम्हारे सर की कसम खाया करता हूँ और तुम्हारे सर का कद्दू समझता हूँ ?

बाँदी – (मुस्कुराकर) खैर तुम पहल कल वाली बात तो कहो।

पारस – क्या कहूँ, तुम तो दिल दुखा देती हो।

बाँदी – अच्छा अच्छा मैं समझ गई कि तुम्हारे दिल में गहरी चोट लगी और बशक लगी होगी, चाहे मरी बातों स या और किसी की बातों से !

पारस – फिर उसी ढग पर तुम चलीं ! और जब ऐसा ही है तो फिर मेरी बातों का तुम्हें विश्वास ही क्यों होने लगा ? (लम्बी साँस लेकर) हाय क्या जमाना आ गया है ! जिसक लिए हम मरें वही इस तरह चुटकियाँ ल !!

बाँदी – जी हाँ मरते तो सैकडों को दखती हूँ मगर मुर्दा निकलते किसी का भी दिखाई नहीं देता !

इतना कहकर बादी बात उडान के लिए खिलखिला कर हँस पडी और पारसनाथ के गाल पर हलकी चपत लगा क मुस्कुराती हुई पुन बोली 'जरा सी दिल्लगी में रो देने का ढग अच्छा सीख लिया है इतना भी नहीं समझते कि मैं कौन सी बात ठीक कहती हूँ और कौन सी दिल्लगी के तौर पर ! अच्छा बताओ कल क्या हुआ और तुम आये क्यों नहीं ? मुझ तुम्हार न आने का बडा रज रहा।

पारस – (खुश होकर और बाँदी के गल में हाथ डालकर) बेशक रज हुआ होगा और मुझे भी इस बात का बहुत खयाल था मगर लाचारी है कि वहाँ एक आदमी न पहुँचकर चाचा साहब के मिजाज का रग ही बदल दिया और अब वह दूसर ही ढग से बातें करन लग।

बाँदी – (गल में स हाथ हटाकर) तो कुछ कहो भी तो सही !

पारस – परसों रात का एक आदमी चाचा साहब के पास आया और उन्हें अपन साथ कहीं ले भी गया तथा जब से वे लौटकर घर आए हैं तभी स उनके मिजाज का रग कुछ बदला हुआ दिखाई देता है।

बादी – वह आदमी कौन था ?

पारस – अफसोस ! अगर उस आदमी का पता ही लग जाता ता इतनी कराहत क्यों हाती ! मै उसका ठीक इलाज कर लता।

बाँदी – तो क्या किसी ने उस दखा न था ?

पारस– देखा ता सही मगर वह ऐसे ढग पर स्याह कपडा आढकर आया था कि काई उसे पहिचान न सका। सुबह का जब मैं चाचा साहब क पास गया तो उनस कहा कि आज हरनन्दन को बादी के यहा दिखा देने का पूरा-पूरा बन्दोबस्त

हो गया है मगर उन्होंने इस बात पर विशेष ध्यान न दिया और बोले कि हरनन्दन का रंडी के यहा देखने से फायदा ही क्या होगा, जब तक कि इस बात का पूरा-पूरा सबूत न मिल जाय कि सरला को तकलीफ पहुचाने का सबब वही हरनन्दन है। इसके बाद मुझसे और उनसे देर तक बातें होती रहीं मैंने बहुत तरह से समझाया मगर उनके दिल में एक न बैठी।

बाँदी – ठीक है मगर फिर भी मैं वही बात कहूँगी कि तुम्हारे चाचा का ख्याल कल से नहीं बदला बल्कि कई दिन पहिले ही से बदल गया है। जब कि हरनन्दन के बाप ने टका सा सूखा जवाब दे दिया और हरनन्दन खुल्लमखुल्ला रंडियों के यहा आने-जाने लगा तब वे हरनन्दन का कर ही क्या सकते है और ताज्जुब नहीं कि उन्हें हरनन्दन की इस नई चालचलन का पता लग भी गया हो। ऐसी हालत में तुम्हारा सूम चाचा रुपया क्यों खर्च करने लगा? अब तो जहा तक जल्द हो सके सरला की शादी किसी दूसरे के साथ हो जानी चाहिए। हा मैंने तो आज यह भी सुना है कि तुम्हारा चाचा दूसरा वसीयतनामा तैयार कर रहा है।

पारस – (चौंक कर) यह तुमसे किसने कहा?

बांदी – आज राजा साहब का एक मुसाहब अपने लड़के की शादी में नाचने के लिए बीड़ा देने के वास्ते मेरे यहाँ आया था। वही इस बात का जिक्र करता था। उसका नाम तो मैं इस वक्त भूल गई अम्मा को याद होगा।

पारस - अगर ऐसा हुआ तो बडी मुश्किल होगी!

बांदी – बेशक!

पारस – भला यह भी कुछ मालूम हुआ कि दूसरे वसीयतनामे में उसने क्या लिखा है?

बांदी – तुम भी अजब उल्लू हो! भला इस बात का जवाब मैं क्या दे सकती हूँ और मैं उस कहने वाले से पूछ ही क्योंकर सकती थी?

पारस – ठीक है (कुछ सोच कर) अगर यह बात ठीक है तो मैं समझता हूँ कि अपने चाचा को जहन्नुम में पहुचा देने के सिवाय मेरे लिए और कोई उचित कार्य नहीं है।

बॉदी – अब इन बातों को तुम ही समझो मगर मैं यह पूछती हूँ कि अब तक तुमने सरला की शादी का इन्तजाम क्यों नहीं किया? अगर वह हो जाती तो सब बखेडा ही तै था!

पारस – ठीक है मगर जब तक सरला शादी करने पर दिल से राजी न हो जाय तब तक हमारा मतलब नहीं निकलता। मान् लिया जाय कि अगर हमने उसकी शादी जबर्दस्ती किसी के साथ कर दी और प्रकट होने पर उसने इस बात का हल्ला मचा दिया कि मेरे साथ जबर्दस्ती की गई तब मेरे लिए बहुत बुराई पैदा हो जायेगी और शादी हो जाने के बाद भी उसे छिपाये रहना उचित नहीं होगा। ताज्जुब नहीं कि बहुत दिनों तक सरला का पता न लगने के कारण मेरा चचा उसकी तरफ से नाउम्मीद होकर अपनी कुल जायदाद खैरात कर दे या कोई दूसरा वसीयतनामा ही लिख दे। हमारा काम तो तब बने कि सरला शादी होने के बाद एक दफे किसी बडे के सामने कह दे कि हाँ वह शादी मेरी इच्छानुसार हुई है। इसके अतिरिक्त हमारी गुप्त कमेटी ने भी यही निश्चय किया है कि चचा साहब को किसी तरह खतम कर देना चाहिए जिसमें उन्हें दूसरा वसीयतनामा लिखने का मौका न मिले। उन लोगों ने जो कुछ चाल सोची थी वह तो अब पूरी होती नजर नहीं आती।

बॉदी – वह कौन सी चाल?

पारस – यही कि मेरा चचा खुद हरनन्दन से रंज होकर यह हुक्म दे देता कि सरला को खोज कर दूसरी शादी कर दी जाय। बस उस समय मुझे खैरखाह बनने का मौका मिल जाता। मैं झट सरला को प्रकट करके कह देता कि इसे हरनन्दन के दोस्त डाकुओं के कब्जे में से निकाल लाया हूँ और जब उसकी शादी किसी दूसरे के साथ हो जाती तब इसके पहिले कि मेरा चचा दूसरा वसीयतनामा लिखे मैं उसे मार कर बखेडा मिटा देता। ऐसी अवस्था में मुझे उसके लिखे वसीयतनामे के अनुसार आधी दौलत अवश्य मिल जाती। इसके अतिरिक्त और भी बहुत सी बातें है जिन्हें तुम नहीं समझ सकती। (कुछ गौर करके) मगर अब जो हमलोग गौर करते है तो हम लोगों की पिछ्ली कार्रवाई बिल्कुल जहन्नुम में मिल गई सी जान पडती है क्योंकि मेरे चचा हरनन्दन के खिलाफ कोई कार्रवाई करते दिखाई नहीं देते। आज हरिहरसिह ने भी यही बात कही थी कि खाली तुम्हारे चाचा के मारे जाने से कोई फायदा नहीं हो सकता। फायदा तभी होगा जब तुम्हारा चाचा भी मारा जाय और सरला भी अपनी खुशी से शादी कर ले। मगर बडे अफसोस की बात है कि मैं सरला को भी किसी तरह समझा न सका। मैं स्वय कैदी बन कर उसके पास गया और बहुत तरह से समझाया-बुझाया मगर उसने एक न मानी उल्टे मुझी को बेवकूफ बना के छोड दिया।

बॉदी – (ताज्जुब से) हॉ! तुम सरला के पास गये थे? अच्छा तो वहॉ क्या हुआ मुझसे खुलासा कहो?

पारस ने अपना सरला के पास जाने और वहॉ से छुछ्छू बन कर बैरंग लौट आने का हाल बांदी से बयान किया और तब बांदी से मुस्कुरा कर कहा, अगर मैं सरला को दूसरे के साथ शादी करने पर राजी कर दूँ और वह इस बात को खुशी से मंजूर कर ले तो मुझे क्या इनाम मिलेगा?'

इतना सुन कर पारस ने उसके गले में हाथ डाल दिया और प्यार की निगाहों से देखता हुआ खुशामद के ढंग पर बोला तुम मुझसे पूछती हो कि मुझे क्या इनाम मिलेगा! तुम्हें शर्म नहीं आती! हालांकि तुम इस बात को बखूबी

जानती हो कि यह सब कार्रवाई तुम्हारे ही लिए की जा रही है और इस काम में जो कुछ मिलेगा उसका मालिक सिवा तुम्हारे दूसरा कोई नहीं हो सकता तुम जो कुछ हाथ उठा कर मुझे दे दागी वही मेरा होगा।

बॉदी – यह सच ठीक है, मुझ तुमस रुपये-पैसे की लालच कुछ भी नहीं है मै तो सिर्फ तुम्हारी माहब्बत चाहती हूँ, मगर क्या करूँ अम्मा के मिजाज से लाचार हूँ। आज बात ही बात में तुम्हारा जिक्र आ गया था तब अम्मा बोलीं 'मै तो दो ही तीन दिन की मेहनत में सरला को राजी कर लूँ मैं ही नहीं बल्कि मरी तर्कीब से तू भी वह काम कर सकती है मगर मुझे फायदा ही क्या जो इतना सिर-खप्पन करूँ !' मैंने बहुत कुछ कहा कि अम्मा वह तर्कीब मुझे बता दो मै उनका काम कर दूँ ता मुझे भी फायदा होगा मगर उन्होंने एक न मानी बोलीं कि फलाने-फलान ढग से मेरी दिलजमयी कर दी जाय तो मै सब कुछ कर सकती हूँ। जो किसी के किये न हो सके वह हमलाग कर सकती हैं। उन्हीं की बात मुझे इस समय याद आ गई, तब मै तुमसे कह बैठी कि अगर मै ऐसा करूँ तो मुझे क्या इनाम मिलेगा नहीं तो मै भला तुमसे क्या मॉगूगी ! खैर इन बातों को जाने दो, अम्मा तो पागल हो गई है तुम जो कुछ कर रहे हो करो उनकी बातों पर ध्यान न दो।

पारस – नहीं नहीं, तुम्हें ऐसा न कहना चाहिय, आखिर जो कुछ तुम्हारी अम्मा क पास है या रहेगा वह सब तुम्हारा ही तो है, और अगर मै इस समय उनकी इच्छानुसार कुछ करूँगा तो उसमें तुम्हारा ही फायदा है। मेर दिल का हाल तो तुम जानती ही हो कि मैं तुम्हारे मुकाबले में किसी चीज की भी हकीकत नहीं समझता ! खैर पहिल यह बताओ कि वे चाहती क्या थीं ?

बॉदी – अजी जान भी दो उनकी बातों में कहा तक पडोग ? वह तो कहेंगी कि अपना घर उठा कर द दो तो कोई क्या अपना घर उठा कर दे देगा ?

पारस – और कोई चाहे न दे मगर मै तो अपना घर तुम्हारे ऊपर न्योछावर किये बैठा हूँ, अस्तु मै सब कुछ कर सकता हूँ। तुम कहो भी तो सही मतलब तो अपना काम होन से है।

बांदी – (सिर झुकाती हुई नखरे क साथ) मै क्या कहूँ, मुझसे तो कहा नहीं जाता !!

पारस – फिर वही नादानी की बात ! तुम तो अजब बेवकूफ औरत हो ! कहो कहो तुम्हें मरे सर की कसम कहा तो सही वे क्या मॉगती थीं ?

बॉदी – कहती थीं कि इस समय ता सरला क कुल गहन मुझ द दो जो ब्याह वाल दिन उस वक्त उसके बदन पर थ जब तुम लोगों न उसे घर से बाहर निकाला था और जब तुम्हारा काम हो जाय अर्थात् सरला प्रसन्नता से दूसरे के साथ शादी कर ले बल्कि सभों स खुल्लमखुल्ला कह दे कि हॉ यह शादी मैंन अपनी खुशी से की है तब दस हजार रूपया नक्द मुझे मिले। मगर वे चाहती हैं कि रुपय की बाबत आप एक पुर्जा पहिले ही लिख कर उन्हें द दें। बस यही तो बात है जो अम्मा कहती थीं।

पारस – तो इसमें हर्ज ही क्या है ? आखिर वह रुपया जो मुझे मिलेगा तुम्हारा ही तो है। फिर आज अगर दस हजार देने का पुर्जा पहिले मै लिख ही दूगा तो क्या हर्ज है ? मगर एक बात जरा मुश्किल है।

बॉदी – वह क्या ?

पारस – गहने जो सरला के बदन पर थ उनमें से आध के लगभग तो हम लोगों न बेच डाले है।

बॉदी – तो हर्ज ही क्या है जो कुछ हो उन्हें कह-सुनकर ठीक कर लूँगी आखिर कुछ भी मरी बात मानेंगी या नहीं ? ऐसी ही जिद्द करन पर उतारू होंगी तो मै उनका साथ ही छोड दूँगी ! वाह जिस मै प्यार करती हूँ उसी का वह मनमाना सतावेंगी ! यह मुझस बर्दाश्त न हो सकेगा। अच्छा तो बुलाऊँ निगोडी अम्मा को ?

पारस – हॉ हॉ बुलाओ पुर्जा तो इसी समय लिख देता हूँ और बचे हुए गहने कल इसी समय लेकर हाजिर हो जाऊँगा। मगर तुम उन्हें निगोडी क्यों कहती हो ? वह बडी है उन्हें ऐसा न कहना चहिए !

बॉदी – (तनक कर) उह ! जब कि वह मरी तबीयत के खिलाफ करके मेरा दिल जलाती है तो मै उन्हें कहने स कब बाज आती हूँ।

इतना कह कर बॉदी चली गई और थोडी ही दर में अपनी अम्मा को साथ लेकर चली आई। उस समय उस निगाडी अम्मा क हाथ में कलम, दवात और कागज भी मौजूद था। 'बडे-बडे मरातबे हों अल्लाह सलामत रक्ख' इत्यादि कहती हुई वह पारसनाथ के पास बैठ कर धीरे-धीरे बातें करन लगी और थोडी ही दर में उल्लू बना कर उसन पारसनाथ से अपनी इच्छानुसार पुर्जा लिखवा लिया। मामूली सिरनामे के बाद उस पुर्जे का मजमून यह था –

'बादी की अम्माजान रसूलबादी स मै एकरार करता हू कि उसकी कोशिश से अगर सरला (जो इस समय हमारे कब्जे में है) मेरी इच्छानुसार हरनन्दन के अतिरिक्त किसी दूसरे के साथ प्रसन्नता पूर्वक विवाह कर लगी ता मै रसूलबादी' का दस हजार रूपये नकद दूगा।

पुर्जा लिखवा कर बुढिया विदा हुई और बादी पारसनाथ को अपन नखरे का आनन्द दिखाने लगी। मगर पारसनाथ के लिय यह खुशकिस्मती का समय घण्टे भर स ज्याद देर तक क लिये न था क्योंकि इसी बीच में लौंडी ने हरनन्दन बाबू के आन की इत्तिला दी जिसे सुनकर पारसनाथ ने बादी से कहा लो तुम्हारे हरनन्दन बाबू आ गए अब मुझे विदा करो।

बादी – मेर काहे को होंग जिसके होंग उसके होंगे। मैं तो तुम्हारे काम का ख्याल करके उन्हें अपने यहा आने देती हूँ ,नहीं तो मुझे गरज ही क्या पडी है ?

पारस – उनकी गरज तो कुछ नहीं मगर रूपये की गरज ता है ?

बादी – जी नहीं, मुझे रुपये की भी लालच नहीं, मैं तो मुहबत की भूखी हूँ सो तुम्हारे सिवाय और किसी में देखती नहीं।

पारस – तो अव हरनन्दन से मेरा क्या काम निकलेगा ?

बादी – वाह वाह क्या खूब ? इसी अक्ल पर सरला की शादी दूसरे के साथ करा रहे हो ?

पारस – सा क्या ?

बादी – आखिर दूसरी शादी करने के लिए सरला को क्योंकर राजी किया जायेगा ? और तर्कीवों के साथ ही साथ एक तर्कीव यह भी होगी कि हरनन्दन के हाथ की लिखी हुई चिट्ठी सरला को दिखाई जायेंगी जिसमें सरला से घृणा और उसकी निन्दा होगी।

पारस – (बात काट कर) ठीक है ठीक है अव मैं समझ गया ! शावाश बहुत अच्छा सोचा ! सरला हरनन्दन के अक्षर पहिचानती भी है। (उठता हुआ) अच्छा तो मेरे जाने का रास्ता ठीक कराओ, वह कम्बख्त मुझे देखन न पावे।

बादी – बस तुम सीढी के बगल वाले पायखाने में घुस कर खडे हो जाओ जब वे ऊपर आ जायें तब तुम नीचे उतर जाना और गली के रास्ते बाहर हो जाना क्योंकि सदर दर्वाजे पर उनके आदमी होंगे।

पारस – (मुस्कुराते हुए) बहुत खूब ! रडियों के यहाँ आने का एक नतीजा यह भी है कि कभी-कभी पायखान का आनन्द भी लेना पडता है !!

इसके जवाब में बादी ने मुस्कुराकर एक चपत (थप्पड़) से पारसनाथ की खातिर की और मटकती हुई नीचे चली गई। जब तक हरनन्दन बाबू को लेकर वह ऊपर न गई तब तक पायखाने का विमल अथवा समल आनन्द पारसनाथ को भोगना पड़ा।

दसवां बयान

बादी की अम्मा पारसनाथ से मन-मानता पुर्जा लिखवा कर नीचे उतर गई और अपने कमरे में न जाकर एक दूसरी कोठरी में चली गई जिसमें सुलतानी नाम की एक लौंडी का डेरा था।

यह सुलतानी लौंडी पुरानी नहीं है बल्कि बाँदी के लिये बिल्कुल नई है। आज चार ही पाँच दिन से इसने बादी के यहाँ डेरा जमाया है। इसकी उम्र चालीस वर्ष से कम न होगी। बातचीत में तेज चालाक और बडी ही धूर्त है। दूसरे कोअपने ऊपर मेहरवान बना लेना तो इसके बाएँ हाथ का करतब है। यद्यपि उम्र के लेहाज से लोग इसे बुढिया कर सकते है मगर यह अपने को बुढिया नहीं समझती। इसका चेहरा सुडौल और रग अच्छा होने के सबब से बुढापे का दखल जैसा होना चहिए था न हुआ था और अब भी यह खूबसूरतों के बीच में बैठ कर अपनी लच्छेदार बातों से सभों का दिल खुश कर लेने का दावा रखती है। इसने बादी के घर पहुँच कर उसकी अम्मा को खुश कर लिया और उसकी लौंडी या मुसाहब बन कर रहन लगी। इसके बदन पर जेवर और एक हजार रूपया नक्द भी था जो उसने बाँदी के पास यह कह कर अमानत में रख दिया था कि 'एक नजूमी (ज्योतिषी) के कहे मुताबिक मे समझती हूँ कि मेरी उम्र बहुत कम है, अब मैं और चार-पाँच साल से ज्यादे इस दुनिया में नहीं रह सकती, साथ ही इसके मेरा न तो कोई मालिक है न वारिस, एक लडकी थी वह भी जाती रही, अस्तु इस एक हजार रूपये को जो मेरे पास है,अपनी आकबत सुधारने का जरिया समझ कर तुम्हारे पास अमानत रख देती हूँ और उम्मीद करती हूँ कि इससे मेरे मरने के बाद मेरी आकबत ठीक करके कब्र वगैरह बनवा दोगी।

रूपये वाले की कदर सब जगह होती है, अस्तु बादी की मा ने भी खुशी-खुशी उसे रूप्ये सहित अपने घर रख लिया और लौंडी के बदले में उसे अपना मुसाहब समझा। बस इस समय बादी की मा ने जो कुछ पारसनाथ से लिखवाया वह इसी की सलाह का नतीजा था।

बादी की अम्मा को देखकर सुलतानी खडी हुई और बोली, "कहिये क्या रग है ?

बादी की अम्मा – सब ठीक है जो कुछ मैंने कहा उसन बेउज्र लिख दिया देखो यह उसके हाथ का पुर्जा है।

सुलतानी – (पुरजा पढ कर) बस इतने ही से तो मतलब था आइय बैठ जाइये गहने के बारे में उसने क्या कहा

बादी की अम्मा – (बैठ कर) गहना आधा तो उसने बेच खाया, बाकी आधा कल ले आवेगा। जो कुछ करना है तुम्हीं को करना है क्योंकि तुम्हारे कहे मुताबिक और तुम्हारे ही भरोसे पर यह कार्रवाही की गई है।

सुल – आप किसी तरह का तरद्दुद न करें सरला को राजी कर लेना मेरे लिये कोई बड़ी बात नहीं है, इस काम के लिये केवल हरनन्दन बाबू के हाथ की एक चिट्ठी उसी मजमून की चाहिये जैसा कि मैं कह चुकी हूँ, बस और कुछ नहीं।

वादी की अम्मा – यकीन तो है कि हरनन्दन बाबू भी सरला के बारे में चिट्ठी लिख देंगे। जब उन्हें सरला से कुछ मतलब ही नहीं रहा तो चिट्ठी लिख देने में उनको हर्ज क्या है ?

सुलतानी – अगर वे लिखने में कुछ हीला करें तो मुझे उनके सामने ले चलियेगा फिर देखियेगा कि मैं किस तरह समझा लेती हूँ।

इसी तरह की बातें इन दोनों में देर तक होती रहीं जिसे विस्तार के साथ लिखने की कोई जरूरत नहीं हां बादी और हरनन्दन बाबू का तमाशा देखना जरूरी है।

हरनन्दन बाबू की खातिरदारी का कहना ही क्या ? बादी ने इन्हें सोने की चिड़िया समझ रक्खा था और समय तथा आवश्यकता ने इन्हें भी दाता और भोला-भाला ऐयाश बनने पर मजबूर किया था। दिल में जो कुछ धुन समाई थी उसे पूरा करने के लिये हर तरह की कार्रवाई करने का हौसला बांध लिया था मगर बादी इन्हें आधा बेवकूफ समझती थी। बादी को विश्वास था कि हरनन्दन का दिल हाथ में कर लेना उतना मुश्किल नहीं है जितना पारसनाथ का-और इन्हीं सबबों से इनकी खातिरदारी ज्यादा होती थी।

हरनन्दन बाबू बड़ी खातिर और इज्जत के साथ उसी ऊपर वाले बगल में बैठाये गए। बरसने वाले बादल के घिर आने से पैदा भई हुई उमस ने जो गर्मी बढ़ा रक्खी थी उसे दूर करने के लिये नाजुक पंखी ने बादी के कोमल हाथों का सहारा लिया और इस बहाने से समय के खुशनसीब हरनन्दन बाबू का पसीना दूर किया जाने लगा। आह मेरा दिल इतना बर्दाश्त नहीं कर सकता ! यह कह कर हरनन्दन बाबू ने बाँदी के हाथ से पंखी लेनी चाही मगर उसने नहीं दी और मुहब्बत के साथ झलती रही। दो ही चार दफे की 'हाँ-नहीं' के बाद इस नखरे का अन्त हुआ और इसके बाद मीठी-मीठी बातें होने लगीं।

हरनन्दन – मालूम होता है पारसनाथ आया था ?

बाँदी – (मुस्कुराती हुई) जी हाँ।

हरनन्दन – है या गया ?

बाँदी – (मुस्कुराती हुई) गया ही होगा।

हरनन्दन – इसके क्या मानी ! क्या तुम नहीं जानती कि वह है या गया ?

बादी – जी हाँ मैं नहीं जानती क्योंकि जब आपके आने की खबर हुई तब मैंने उसे पायखाने में छिपे रहने की सलाह दी क्योंकि उसे आपका सामना करना मंजूर न था और मुझे भी उसके छिपने के लिए इससे अच्छी जगह दूसरी कोई न सूझी।

हरनन्दन – ठीक है रंडियों के घर में आकर पायखाने में छिपना उगालदान का उठाना तलवे में गुदगुदाना अथवा नाक पर हँसी का बुलाना बहुत जरूरी समझा जाता है बल्कि सच तो यों है कि ऐयाशी के सुन्नसान मैदान में ये ही दो चार खुशनुमा दरख्त हरारत को दूर करने वाले हैं।

बाँदी – (दिल में शरमाती मगर जाहिर में हँसती हुई) आप भी अजब आदमी हैं। मालूम होता है आपने खानगियों के बहुत से किस्से सुने हैं मगर किसी खानदानी रण्डी की शराफत का अभी अन्दाजा नहीं किया है !

हरनन्दन – (हँस कर) ठीक है या अगर अन्दाजा किया है तो पारसनाथ ने !

बाँदी – (कुछ झेंप कर) यह दूसरी बात है ! 'जैसा मुँह वैसी थपेड़। न मैं उसके लिये रण्डी हूँ और न वह मेरे लिये लायक सर्दार। वह दिवालिया और चोंगला सर्दार और मैं अम्मा के दबाव से जेरबार ! हाँ अगर आप जैसा सर्दार मुझे मिला होता तो मैं दिखाती कि खानदानी रण्डी की वफादारी किसे कहते हैं ! (अपना कान छूकर) शारदा की कसम हम लोग उन खानगियों में नहीं हैं जिन्होंने हमारी कौम की बदनामी कर रक्खी है।

हरनन्दन – (प्यार से बाँदी को अपनी तरफ खैंचकर) बेशक बेशक ! मुझे भी तुमसे ऐसी ही उम्मीद है और इसी ख्याल से मैंने अपने को तुम्हारे हाथ बेच डाला है।

बाँदी – (हरनन्दन के गले में हाथ डाल कर) मैं तो तुम्हारे कहने से और तुम्हारे काम का ख्याल करके उस मूड़ी-काटे से दो-दो बातें भी कर लेती हूँ, नहीं तो उसके नाम पर थूकना भी नहीं चाहती।

हरनन्दन – (इस बहस का बढ़ाना उचित न जानकर और बाँदी को बगल में दबाकर) मारो कम्बख्त को जाने भी दो कहां का पचड़ा ले बैठी हो ! अच्छा यह बताओ वह कब से बैठा हुआ था ?

बादी – कम्बख्त दो घण्टे से मगज चाट रहा था।

हरनन्दन – मेरा जिक्र तो आया ही होगा ?

बादी – भला उसका भी कुछ पूछना है !

हरनन्दन – क्या-क्या कहता था ?

बादी – बस वही सरला वाली बातें मैंने तो उस कम्बख्त से कई दफे कहा कि अब हरनन्दन बाबू सरला से शादी न करेंगे मगर उनको विश्वास ही नहीं होता और विश्वास न होने का एक सबब भी है।

हरनन्दन – वह क्या ?

बादी – तुमने चाहे अपन दिल से सरला को भुला दिया है मगर सरला ने तुम्हें अभी तक नही भुलाया।

हरनन्दन – इसका क्या सबूत है ?

बादी – इसका सबूत यही है कि वह (पारसनाथ) कैदी बन कर उस कैदखाने में गया था जिसमें सरला कैद है और सरला को कई तरह समझा-बुझा कर दूसरे के साथ ब्याह करने के लिए राजी करना चाहा था मगर उसने एक न मानी।

हरनन्दन – (ताज्जुब के ढग से) हॉ ! उसने तुमसे खुलासा कहा कि किस तरह से सरला के पास गया और क्या-क्या बातें हुई ?

बादी – जी हॉ उसने जो कुछ कहा है मै आपको बताती हूँ।

इतना कहकर बादी ने वह हाल जिस तरह पारसनाथ से सुना था उसी तरह बयान किया जिसे सुनकर हरनन्दन ने कहा, अगर ऐसा है तो मुझे भी कोई तर्कीब करनी चाहिए जिसमें सरला के दिल से मेरा खयाल जाता रहे।'

बादी – इससे बढकर और कोई तर्कीब नहीं हो सकती कि तुम उसे कैद से छुडा कर उसके साथ ब्याह कर लो। मैं इस काम में हर तरह से तुम्हारी मदद करने के लिए तैयार हूँ बल्कि उसका पता भी करीब-करीब लगा चुकी हूँ। दो ही एक दिन में बता दूँगी कि वह कहाँ और किस हालत में है साथ ही इसके मैं यह भी खुदा कि कसम खाकर कहती हू कि मुझे इस बात का जरा भी रज न होगा बल्कि मुझे एक तरह पर खुशी होगी क्योंकि मेरा दिल घड़ी-घडी यह कहता है कि सरला जब इस बात को जानेगी कि मेरा कैद से छूटना और अपने चहेते के साथ ब्याह का होना बादी की बदौलत है तो वह मुझे भी प्यार की निगाह से देखेगी और ऐसी हालत में हम दोनों की जिन्दगी बड़ी हँसी-खुशी के साथ बीतेगी।

हरनन्दन – (बादी की पीठ पर ठोंक के) शाबाश ! क्यों न हो ! तुम्हारा यह सोचना तुम्हारी शराफत का नमूना है। मगर बादी ! मै क्या करूँ लाचार हूँ कि मेरे दिल से उसका ख्याल बिल्कुल जाता रहा और अब मै उसके साथ शादी करना बिल्कुल पसन्द नहीं करता। मै नहीं चाहता कि मेरी उस मुहब्बत में कोई भी शरीक हो जो मैंने खास तुम्हारे लिय उठा रक्खी है।

बादी – मेरे ख्याल से तो कोई हर्ज नहीं है।

हरनन्दन – नहीं नहीं, ऐसी बातें मत करो और अब कोई ऐसी तर्कीब करो जिससे उसके दिल से मेरा ख्याल जाता रहे।

बादी – (दिल में खुश होकर) खैर तुम्हारी खुशी मगर यह बात तभी हो सकती है जब वह तुम्हारी तरफ से बिल्कुल नाउम्मीद हो जाय और उसकी शादी किसी दूसरे के साथ हा जाय।

हरनन्दन – हॉ तो मैं भी तो यही चाहता हूँ मगर साथ ही उसके इतना जरूर चाहता हू कि वह किसी नेक के पाले पडे !

बादी – अगर मेहनत की जाय तो ऐसा भी हो सकता है मगर यह काम किसी बडे चालाक के किए ही हो सकता है जैसी कि इमामीजान।

हरनन्दन – कौन इमामीजान ?

बादी – इमामीजान एक खबीस बुढिया है जो बडी चालाक और धूर्त है। कभी-कभी अम्मा के पास आया करती है। मै तो उसे देख के ही जल जाती हूँ।

हरनन्दन – खैर मेरे लिये तुम इतनी तकलीफ और करके इमामीजान को इस काम के लिये मुस्तैद करो मगर यह बताओ कि इमामीजान को सरला के पास पहुँचने का मौका कैसे मिलेगा ?

बॉदी – इसका इन्तजाम मै कर-लूँगी किसी न किसी तरह आपका काम करना जरूरी है। मै पारसनाथ को कई तरह स समझा कर कहूँगी कि अगर सरला तुम्हारी बात नहीं मानती तो मैं एक औरत का पता बताती हू, तुम उसे सरला के पास ले जाओ बेशक वह सरला को समझा कर दूसरे के साथ ब्याह करन पर राजी कर देगी। उम्मीद है कि पारसनाथ इस बात को मजूर करके इमामी को सरला के पास ले जायेगा, बस

हरनन्दन – बस बस बस मै समझ गया। यह तर्कीब बहुत ही अच्छी है और पारसनाथ इस बात को जरूर मान लेगा।

बादी – मगर फिर यह भी तो उस बताना चहिए कि वह किसके साथ ब्याह करने पर सरला को राजी करे ?

हरनन्दन – मै सोच कर इसका जवाब दूगा, क्योंकि इसका फैसला पहिले करना होगा कि वह आदमी भी सरला के साथ ब्याह करने से इन्कार न करे जिसके साथ उसका सम्बन्ध होना मै पसन्द करूँ।

बादी – हॉ यह तो जरूर होना चहिए साथ ही इसके इसका बन्दोबस्त भी बहुत जरूरी है कि सरला के दिल से तुम्हारा ध्यान जाता रहे और उसे तुम्हारी तरफ से किसी तरह की उम्मीद बाकी न रहे।

हरनन्दन — यह तो काई मुश्किल नहीं है मैं एक चिट्ठी ऐसी लिख दूगा जिसे देखते ही सरला का दिल भी मरी तरफ स खट्टा हो जायेगा और उसमें

बादी — बस बस मैं आपका मतलब समझ गई बेशक ऐसा करने से मामला ठीक हो जायेगा ! (कुछ सोचकर) मगर कम्बख्त इनामी को लालच हद से ज्यादे है।

हरनन्दन — काई चिन्ता नहीं जो कुछ कहोगी उस द दूगा। और फिर उसे चाह जो कुछ दिया जाय मगर इसमें काई शक नहीं कि अगर यह काम मेरी इच्छानुसार हो जायेगा ता मै तुम्हें दस हजार रुपये नकद दूगा और अपने को तुम्हारे हाथ बिका हुआ समझूगा।

बादी — (मुहब्बत से हरनन्दन का हाथ पकड क) जहा तक हागा मैं तुम्हारे काम में काशिश करूँगी। मुझे इस बात की लालच नहीं है कि तुम मुझे दस हजार रूपये दोगे। तुम मुझे चाहते हा मेरे लिये यही बहुत है। जब कि मैं अपने को तुम्हारी मुहब्बत पर न्यौछावर कर चुकी हू, तब भला मुझ इस बात की ख्वाहिश कब हो सकती है कि तुमसे रूपये वसूल करूँ ? (लम्बी सासें ले कर) अफसोस कि तुम मुझे आज भी वैसा ही समझते हो जैसा पहिले दिन समझे थे !!

इतना कह कर बादी नखरे में दो चार बूँद आसू की बहा कर आचल स आख पोंछने लगी। हरनन्दन न भी उसक गल में हाथ डालकर कसूर की माफी मागी और एक अनूठ ढग स उसे प्रसन्न करने का विचार किया। इसके बाद क्या हुआ सा कहन की काई जरूरत नहीं। बस इतना ही कहना काफी है कि हरनन्दन दो घण्टे तक और बैठ तथा इसके बाद उन्होंने अपन घर का रास्ता लिया।

ग्यारहवां बयान

अब हम थाडा सा हाल लालसिह के घर का बयान करते है।

लालसिह का घर से गायब हुए आज तीन या चार दिन हो चुके हैं। न तो व किसी से कुछ कह गये है और न कुछ बता ही गये हैं कि किसके साथ कहा जाते हैं और कब लौट कर आवेंगे। अपने साथ कुछ सफर का सामान भी नहीं ले गय जिससे किसी तरह की दिलजमयी होती और यह समझा जाता कि कहीं सफर में गये हैं काम हा जाने पर लौट आवगें। वह तो रात के समय यकायक अपने पलग से गायब हा गये और किसी तरह का शक भी न होने पाया। न तो पहरवाला किसी तरह का शक जाहिर करता है। सब के सब तरददुद और परेशानी में पडे हैं तथा ताज्जुब के साथ एक दूसरे का मुँह दखते हैं। इसी तरह पारसनाथ भी परेशान चारों तरफ घूमता है और अपने चाचा का पता लगाने की फिक्र कर रहा है। उसने भी लालसिह की तलाश में कई आदमी भजे हैं मगर उसका यह उद्याग चचा की मुहब्बत के खयाल से नहीं है बल्कि इस खयाल से है कि कहीं यह कार्रवाइ भी किसी चालाकी के खयाल से न की गई हो। वह कई दफे अपनी चाची क पास गया और हमदर्दी दिखाकर तरह तरह क सवाल किए मगर उसकी जुबानी भी किसी तरह का पता न लगा बल्कि उसकी चाची ने उसे कई दफ कहा कि बेटा ! तुम्हारे एसा लायक भतीजा भी अगर अपने चाचा का पता न लगावगा ता और किससे ऐसे कठिन काम की उम्मीद हो सकती है ?

इस तरद्दुद और दौड धूप में चार दिन गुजर गये मगर लालसिह के बारे में किसी तरह का कुछ भी हाल न मालूम हुआ।

सध्या का समय है और लालसिह के कमरे के आगे वाल दालान में पारसनाथ एक कुर्सी पर बैठा हुआ सोच रहा है। उसके दिल में तरह तरह की बातें पैदा होती और मिटती हैं और एक तौर पर वह गम्भी र चिन्ता में डूबा हुआ मालूम पडता है। इसी समय अकस्मात एक परदशी आदमी ने उसके सामने पहुँच कर सलाम किया और हाथ में एक चिटठी देकर किनार खडा हो गया। हाथ पैर और सूरत शक्ल देखने से मालूम हाता था कि वह आदमी कहीं बहुत दूर से सफर करता हुआ आ रहा है।

पारसनाथ न लिफाफे पर निगाह दौडाई जो उसी के नाम का लिखा था। अपने चचा के हाथ के अक्षर पहिचान कर चौंक पडा और व्याकुलता क साथ चिटठी खोल कर पढने लगा। उसमें यह लिखा हुआ था —

चिरजीव पारसनाथ योग्य लिखी लालसिह की आसीस।

अपनी राजी खुशी का हाल लिखना तो अब व्यर्थ ही है हा ईश्वर से तुम्हारा कुशल-क्षेम मनाते हैं। बेशक तुम लोग ताज्जुब और तरद्दूद में पडे होवोगे और मेरे यकायक गायब हो जाने से तुम लोगों को रज हुआ होगा मगर मैं क्या करू ! अपन दिली उलझनों से लाचार हाकर मुझे ऐसा करना पडा। सरला क गायब होने और हरनन्दन की ऐयाशी ने मेर दिल पर गहरी चोट पहुँचाई। अब मैं गृहस्थ-आश्रम में रहना और किसी को अप्ना मुँह दिखाना पसन्द नहीं करता इसलिए बिना किसी से कुछ कहे सुने चुपचाप यहां चला आया और आज इस आदमी के सामने ही सिर मुडा सन्यास ले लिया है। अब मुझे न तो गृहस्थी से कुछ सरोकार रहा और न अपनी मिल्कियत से कुछ वास्ता। जो कुछ वसीयतनामा मैं लिख चुका हूँ आशा है कि तुम ईमानदारी के साथ उसी के मुताबिक कार्रवाई कराग तथा मेरे रिश्तेदारों को धीरज व दिलासा देकर रोने कलपने से बाज रक्खोग। आज मैं इस स्थान का छोड अपने गुरु के साथ बदरिकाश्रम की तरफ जाता हूँ और

उधर ही किसी जगल में तपस्या करके शरीर-त्याग दूँगा। अब हमारे लौटने की रत्ती भर आशा न रखना और जिस तरह मुनासिब समझना घर का इन्तजाम करना। —लालसिंह।

चिटठी पढ़कर पारसनाथ तबीयत में तो बहुत खुश हुआ मगर जाहिर में रोनी सूरत बनाकर अफसोस करने लगा और दस-बीस बूँद आसू की गिराकर उस चिट्ठी लाने वाले से यों बोला—

पारस — तुम्हारा नाम क्या है ?

आदमी — लोकनाथ !

पारस — मकान कहा है ?

लोकनाथ — काशीजी।

पारस — हमारे चाचा साहब ने तुम्हारे सामने ही सन्यास लिया था ?

लोक — जी हॉ उस समय जो कुछ उनके पास था दो सौ रुपये मुझे देकर बाकी सब दान कर दिया और यह चिटठी जो पहिले ही लिख रक्खी थी देकर कहा कि यह चिटठी मेरे भतीजे के पास पहुँचा देना और जो दो सौ रुपये हमने तुम्हें दिये है उसे इसी की मजूरी समझना। दूसरे दिन जब वे दण्ड-कमण्डल लिये हुए हरिद्वार की तरफ चले गये तब मै भी किराये के इक्के पर सवार होकर इस तरफ रवाना हुआ।

पारस — अफसोस ! न मालूम चाचा साहब को क्या सूझी। उनका अगर पता मालूम हो तो मै उनके पास जरूर जाऊँ और जिस तरह हो घर लिवा लाऊँ। अगर सन्यास ले लिया है तो क्या हुआ, अलग बैठे रहेंगे, हम लोगों को आज्ञा दिया करेंगे। उनके सामने रहने ही से हम लोगों का आसरा बना रहेगा।

लोक — एक तो अब उनका पता लगना ही कठिन है, दूसरे वह ऐसे कच्चे सन्यासी नहीं हुए हैं जो किसी के समझाने-बुझाने से घर लौट आवेंगे। अब आप लोग उनका ध्यान छोड दें और घर-गृहस्थी के धन्धे में लगें।

पारस — तो क्या अब हम लोग उनकी तरफ से बिल्कुल निराश हो जायें ?

लोक — नि सन्देह ! अच्छा अब मुझे विदा कीजिये तो मै अपने घर जाऊँ ?

पारस — नहीं नहीं अभी तुम विदा न किये जाओगे। अभी मै हवेली (महल) में जाकर औरतों को यह सम्वाद सुनाऊँगा कदाचित चाची साहिबा को तुमसे कुछ पूछने की जरूरत पडे। इसके बाद उनकी आज्ञानुसार कुछ देकर तुम्हारी विदाई की जाएगी तब तुम अपने घर जाना।

लोक — ठीक है आप इसी समय महल में जाकर अपनी चाची साहबा से जो कुछ कहना-सुनना हो कह-सुन लें, यदि उन्हें कुछ पूछना हो तो मै जवाब देने के लिए तैयार हूँ, परन्तु किसी के रोकने से मै यहाँ रुक नहीं सकता और न विदाई या भोजन के तौर पर कुछ ले ही सकता हूँ क्योंकि ऐसा करने के लिए लालसिंह ने मुझे कसम दिला दी है बल्कि यहाँ तक कसम देकर कह दिया है कि जब तक तुम वहाँ रहना तब तक अन्न-जल न छूना। इसलिए मै कहता हूँ कि मुझे यहाँ से जल्द छुट्टी दिलाइये क्योंकि इस इलाके से बाहर हो जाने के बाद ही मै अपने खाने-पीने का बन्दोबस्त कर सकूँगा। मुझे इस काम की पूरी मजदूरी लालसिंह दे गये हैं, अस्तु अब मै उनकी कसम को टालकर अपना धर्म न बिगाड़ूँगा।

लोकनाथ की बातें सुनकर पारसनाथ को ताज्जुब मालूम हुआ मगर वास्तव में ये सब बातें उसकी दिली खुशी को बढाती जाती थीं। वह हाथ में चिट्ठी लिए हुए वहाँ से उठा और सीधे अपनी चाची के पास चला गया। जो कुछ देखा-सुना था, बयान करने के बाद उसने लालसिंह की चिट्ठी पढकर सुनाई। सब कुछ सुनकर जवाब में उसकी चाची ने कहा 'हा वह तो होना ही था वे पहिले से ही कहते थे कि अब हम सन्यास ले लेंगे। उन्होंने तो जो कुछ सोचा सो किया मगर अब दुर्दशा हम लोगों की है !!

इतना कह के लालसिंह की स्त्री ऑखों से ऑसू गिराने लगी। पारसनाथ उसे बहुत कुछ समझा-बुझाकर शान्त किया और फिर लोकनाथ के बारे में पूछा कि वह जाने को तैयार है जब तक यहा रहेगा पानी भी न पीयेगा, उसे क्या कहा जाय ?

लालसिंह की स्त्री ने जवाब दिया, मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास है और यह चिट्ठी भी ठीक उनके हाथ की लिखी हुई मौजूद है फिर मैं उस आदमी से क्या पूछूँगी और उसे किसलिए अटकाऊँगी ? तुम जाओ और उसे बिदा करके मेरे पास आओ।

पारसनाथ खुशी-खुशी बाहर गया जहाँ उसने दो चार बातें करके लोकनाथ को विदा कर दिया। इसके बाद खुशी-खुशी एक चिटठी लिखकर अपने खास नौकर के हाथ किसी दोस्त के पास भेजकर पुन महल के अन्दर चला गया।

बारहवां बयान

आज हम फिर हरनन्दन और उसके दोस्त रामसिंह को एक साथ हाथ में हाथ दिए उसी बाग के अन्दर सैर करते हुए देखते है जिसमें एक दफे पहिले देख चुके हैं। यों तो उन दोनों में बहुत देर से बातें हो रही हैं मगर हमें इस समय की थोडी सी ही बातों का लिखना जरूरी जान पडता है।

राम – ईश्वर न कर कोई इन कम्बख्त रडियों के फर में पड ! इनकी चालबाजियों को समझना वडा ही कठिन है। इस रास्ते में चलने वाले बड-बडे घूर्त और चालाकों को मुँह के बल गिरत मै अपनी ऑखों से देख चुका हूँ।

हरनन्दन – ठीक है, मेरा भी यही कौल है मगर मेरे वार में तुम इस तरह की बदगुमानियों को दिल में जगह न दो। कोई बुद्धिमान और पढा-लिखा आदमी इन लोगों के हथकडे में पड कर बरबाद नही हो सकता चाहे वह अपनी खुशदिली के सबब इन लागों की सोहबत का शौकीन ही क्यों न हो !

राम – कभी नहीं मेरा दिल इस बात का नहीं मान सकता यद्यपि यह हो सकता है कि तुम उसकी मुट्ठी में न आओ, क्योंकि साहबत थाड दिन की और दूसर खयाल से है, तिस पर मै डडा लिए हरदम तुम्हारे सर पर मुस्तैद रहता हूँ, मगर जो आदमी अपना दिल खुश करने की नीयत से इनकी साहबत में बैठेगा वह बिना नुकसान उठाय बेदाग नही बच सकता चाह वह कैसा ही चालाक क्यों न हा। और जिस पर रडी आशिक हो गई वह ता जड्मूल से नाश हो गया। जो रडियों की बातों पर विश्वास करता है उस पर ईश्वर भी विश्वास नहीं करता। क्या तुम्हें याद नहीं है कि पहिले-पहिल जब हम तुम दानों अपने दास्त नारायण के जिद्द करन पर गौहर क मकान पर गय थे तो दर्वाजे क अन्दर घुसते समय पैर कॉपते थ मगर जब ऊपर जाकर उसक सामन दो घण्टे बेठ चुके तब वह बात जाती रही और यह सोचने लगे कि यहाँ की किस बात का लाग बुरा कहत है ?

हरनन्दन – ठीक है और इसमें भी काई सन्देह नहीं कि इस दुनिया में जितनी बातें एब की गिनी जाती हैं उन सभों में निपुणता भी इन्हीं की कृपा का फल हाता है। झूठ बोलना बहाना करना बात बनाना बेईमानी या दगाबाजी करना इत्यादि ता इनकी सोहबत का साधारण और मामूली पाठ है मगर साथ ही इसके पुरान विद्वानों का यह भी कौल है कि 'इनकी साहबत के बिना आदमी चतुर नहीं हो सकता'। यह बात मै इस खयाल से नहीं कहता कि इनकी साहबत मुझ पसन्द है बल्कि एक मामूली तौर पर कहता हूँ।

राम – (मुस्कुरा कर) 'काजर की कोठरी में कैसहूं सयानो जाय काजर की रेख एक लागिहै पै लागिहै ! और कुछ नहीं तो इन दो ही दिनों की सोहबत का इतना असर ता तुम पर हो ही गया कि इनकी सोहबत कुछ आवश्यक समझने लग।

हरनन्दन – नहीं नहीं मरे कहने का यह मतलब नहीं था तुम ता खामखाह की बदगुमानी करते हो

राम– अच्छा अच्छा, दूसरा ही मतलब सही मगर यह तो बताआ कि क्या आप जिमींदार लाग कम धूर्त और चालाक तथा फरेबी होते हैं ?

हरनन्दन – (हँस कर) बहुत खासे ! अब आप दूसरे रास्त पर चले तो क्या आप जिमींदारों की पक्ति से बाहर हैं?

राम – (हँस कर) खैर इन पचडों को जाने दो ऐसी दिल्लगी ता हमारे-तुम्हार बीच बहुत दिनों तक होती रहगी हॉ यह बताओ कि अब तुम बांदी के यहॉ कब जाओगे ?

हरनन्दन – आज तो नही मगर कल जरूर जाऊँगा तब तक यकीन है कि सब काम ठीक हुआ रहेगा।

राम – अब केवल दिन और समय ठीक करना ही बाकी है ?

हरनन्दन – उसका निश्चय तो तुम ही करोगे।

राम – अगर बॉदी से सरला का पता लग गया होता तो ज्यादे तकलीफ करने की जरूरत न पडती और सहज ही में सब काम हो जाता।

हरनन्दन – मैं ने बहुत चाहा था कि वह किसी तरह सरला का पता बता दे मगर कम्बख्त ने बताया नहीं और कहने लगी कि मुझ मालूम ही नहीं, मैनें भी ज्यादे जोर देना उचित न जाना।

राम – खैर कोई हर्ज नहीं हमारा यह हाथ नी भरपूर बैठगा मगर इन सब बातों की खबर महाराज को अवश्य कर देनी चाहिय।

हरनन्दन – तो चलिए शिवनन्दन से मिलते हुए महाराज स भी मुलाकात कर आवें।

राम – अच्छी बात है अभी गाडी तैयार करने के लिए कहता हूँ।

इतना कह कर रामसिह न एक माली को आवाज दी और जब वह आ गया तब हुक्म दिया कि 'कोचवान को शीघ्र गाडी तैयार करने के लिए कहो।

जब तक गाडी तैयार हाती रही तब तक दोनों दोस्त बाग में टहलते और बातें करत रह जब मालूम हुआ कि गाडी तैयार है तब कमरें में आए और पोशाक बदल कर वहाँ से रवाना हुए। कहाँ गये और क्या किया इसक कहने की कोई जरूरत नही। हाँ इस जगह पर थोडा सा हाल पारसनाथ का जरूर लिखेंग जिसन इन दोनों को बाजार में गाडी पर सवार जाते देखा था और चाहा था कि किसी तरह इन दोनों का सत्यानाश हो जाय तो बेहतर है।

पारसनाथ बाजार को तय करता हुआ ऐसी जगह पहुँचा जहाँ से बहुत तग और गन्दी गलियों का सिलसिला जारी हाता था और इन गलियों में घूमता हुआ एक उजाड मुहल्ले में पहुँचा जहाँ दिन दापहर के समय भी आदमियों का जाते डर मालूम पडता था। यहॉ पर एक मजबूत मगर पुराना मकान था जिसके दरवाजे पर पहुँच कर पारसनाथ ने कुण्डी

खटखटाई। थोडी देर बाद किसी ने भीतर से पूछा, "कौन है ?' इसके जवाब में पारसनाथ ने कहा, 'गूलर का फूल !'

दर्वाजा खुला और पारसनाथ उसके अन्दर चला गया। इसके बाद मकान का दर्वाजा भी बन्द हो गया। इस मकान की भीतरी कैफियत बयान करने की इस समय कोई जरूरत नहीं है क्योंकि हम मुख्तसर ही में उन बातों को बयान करना चाहते है जिन्हें असल फैक्ट कह सकते हैं।

एक लम्बे-चौड दालान में पारसनाथ के कई दोस्त और मददगार बैठे आपस में बातें और दम-दम भर पर गॉजे का दम लगा कर मकान को सुवासित कर रहे थे, इसी मण्डली में हमारा पुराना परिचित हरिहरसिह भी बैठा हुआ था।

पारसनाथ को देख कर सब उठ खडे हुए और हरिहरसिह ने बडी खातिर क साथ बैठा कर बातचीत करना शुरू किया।

हरिहर – कहो दास्त क्या रग-ढग है ?

पारस – बहुत अच्छा है। आनन्द ही आनन्द दिखता है। हमारे मामले का पुराना कोढ भी निकल गया और अब हम लोग हर तरह से बफिक्र हा कर अपना काम करने लायक हो गये।

हरिहर – (चौंक कर) कहा कहो जल्दी कहो, क्या हुआ! वह काढ कौन सा था और कैसे निकल गया ?

दूसरा – हॉ यार सुनाआ ता सही यह तो तुम बडी खुशखबरी लाये !

पारस – बेशक खुशखबरी की बात है बल्कि यों कहना चाहिये कि हम लागों के लिए इसस बढ कर खुशखबरी हो ही नहीं सकती।

हरिहर – सच तो यों है कि दम लगा लेंग तभी कुछ कहेंगे।

दूसरा – (तैयार चिलम पारसनाथ की तरफ बढा कर) लीजिए दम भी तैयार है मलते-मलते मोम कर डाला है।

पारस – (दम लगा कर) हम लागों को अपन कम्बख्त चचा लालसिह का बडा ही डर लगा हुआ था। यह सोचते थे कि कहीं एसा न हो कि कम्बख्त दूसरा ही वसीयतनामा लिख कर हमारी सब मेहनत ही मटटी कर द, एसी हालत में सरला की शादी दूसर के साथ हो जाने पर भी इच्छानुसार लाभ न हाता और इसी सबब स हम लाग उसे मार डालने का विचार भी कर रह थे !

तीसरा – हॉ हॉ ता क्या हुआ वह मर गया ?

पारस – मरा ता नहीं पर मरे के बराबर हा गया।

हरिहर – सो कैसे ? तुमन ता कहा था कि वह कहीं चला गया।

पारस – हॉ ठीक है एसा ही हुआ था मगर आज उसक हाथ की लिखी हुई एक चिट्ठी मुझे मिली जिसे एक आदमी लेकर मर पास आया था।

हरिहर – उसमें क्या लिखा था ?

पारस – (जब स चिटठी निकाल कर और हरिहरसिह को दिखाकर) ला जो कुछ है पढ लो और हमारे इन दास्तों को भी सुना दा।

हरिहर – (चिटठी पढ कर) बस बस बस अब हमारा काम हो गया। जब उसने संन्यास ही ले लिया तब उसे अपनी जायदाद पर किसी तरह का अधिकार न रहा और न वह किसी तरह का वसीयतनामा ही लिख सकता है, ऐसी अवस्था में केवल सरला की शादी ही किसी दूसरे के साथ हो जान से काम चल जायेगा और किसी को किसी तरह का उज्र न रहेगा मगर एक बात की कसर जरूर रह जायेगी।

पारस – वह क्या ?

हरिहर – यही कि शादी हो जान के बाद सरला अपने मुँह स किसी बडे बुजुर्ग या प्रतिष्ठित आदमी के सामन कह दे कि 'यह शादी मेरी प्रसन्नता से हुई है ।

पारस – हॉ यह बात बहुत जरूरी है मगर मै इसका भी पूरा-पूरा बन्दोबस्त कर चुका हूँ।

हरिहर – वह क्या ?

पारस – बादी ने इस काम के लिए एक बुडढी खन्नास का ठीक कर दिया है। वह सरला को दूसरे के साथ शादी करने पर राजी कर लेगी।

हरिहर – मगर मुझे विश्वास नहीं हाता कि सरला इस बात का मजूर कर लेगी या किसी के कहने-सुनने में आ जायेगी। उस रोज खुद तुम्हीं न सरला से बातें करक देख लिया है।

पारस – ठीक है मगर उसके लिए बादी की मॉ ने जो चालाकी खली है वह भी साधारण नहीं है।

हरिहर – सो क्या ?

पारस – उसन हरनन्दन से एक चिट्ठी लिखवा ली है कि मुझे सरला के साथ शादी करना स्वीकार नहीं है। जो नौजवान और कुआरी लडकी घर से निकल कर कई दिन तक गायब रहे उसके साथ शादी करना धर्मशास्त्र के विरुद्ध है इत्यादि।' इसके अतिरिक्त हरनन्दन ने उस चिट्ठी में और भी ऐसी कई गन्दी बातें लिखी हैं जिन्हें पढते ही सरला

आग हो जायेगी और हरनन्दन का मुँह देखना भी पसन्द न करेगी।

हरिहर – अगर हरनन्दन ने ऐसा लिख दिया है तो कहना चाहिए कि अब हमारे काम में किसी तरह की अण्डस बाकी न रही।

पारस – ठीक है मगर दो बातें बांदी ने हमारी इच्छा के विरुद्ध की है।

हरिहर – वह क्या ?

पारस – एक तो उसने सरला के गहने मुझसे ले लिए और काम हो जाने पर दस हजार रुपये नकद देने का भी एकरारनामा लिखवा लिया है।

हरिहर – खैर इसके लिए कोई चिन्ता नहीं है जब इतनी दौलत मिलेगी तो दस हजार रुपया कोई बडी बात नहीं है

पारस – यही तो मैंने भी सोचा।

हरिहर – और दूसरी बात कौन सी है ?

पारस – दूसरी बात उसने हरनन्दन की इच्छानुसार की है, क्योंकि अगर वह बात को कबूल न करती तो हरनन्दन उसकी इच्छानुसार चिट्ठी न लिख देता। इसके अतिरिक्त वह हरनन्दन से भी कुछ रुपया ऐंठना चाहती थी। अस्तु लाचार होकर मुझे वह भी कबूल करना ही पडा।

हरिहर – खैर वह बात क्या है सो तो कहो ?

पारस – हरनन्दन ने बाँदी से कहा था कि मैं तो सरला से शादी न करूँगा, मगर ऐसा जरूर होना चाहिये कि उसकी शादी मेरे किसी दोस्त के साथ हो जिससे मैं कभी-कभी सरला को देख सकूँ। अगर ऐसा तुम्हारे किये हो सके तो मैं चिट्ठी लिख देने के लिए भी तैयार हूँ और चिट्ठी के अतिरिक्त काम हो जाने पर बहुत सा रुपया भी दूँगा। इसी से बांदी को हरनन्दन की बात कबूल करनी पडी। बांदी को क्या उस बुढिया खन्नास को भी रुपये की लालच ने घेर लिया और वह इस बात पर तैयार हो गई कि जिस आदमी के साथ शादी करने के लिए हरनन्दन कहेंगे उसी आदमी के साथ शादी करने पर सरला को राजी करूँगी।

हरिहर – (रञ्ज से कुछ मुँह बनाकर) खैर जो चाहा सो करो मगर मैं तो समझता हूँ कि अगर तुम कुछ और रुपया देने का एकरार बांदी से करते तो शायद यह पचडा ही बीच में न आन पड़ता।

पारस – नहीं नहीं मेरे दोस्त ! यह काम मेरे अख्तियार के बाहर था, रुपये की लालच से नहीं निकल सकता था। मैंने बहुत कुछ बाँदी से कहा और चाहा, मगर उसने कबूल ही नहीं किया। सब से भारी जवाब तो उसका यह था कि अगर मैं हरनन्दन की बात कबूल नहीं करती और उसकी इच्छानुसार काम कर देने की कसम नहीं खाती तो वह सरला के नाम की चिट्ठी कदापि नहीं लिखेगा और जब तक हरनन्दन की लिखी हुई चिट्ठी सरला को दिखाई न जायेगी तब तक सरला भी बातों के फेर में न आवेगी। और उसका कहना भी वाजिब ही था, इसी से लाचार होकर मुझे भी स्वीकार करना ही पडा।

हरिहर – (लम्बी साँस लेकर) खैर किसी तरह तुम्हारा काम हो जाय यही बडी बात है। मेरे साथ सरला की शादी हुई तो क्या और न भी हुई तो क्या।

पारस – (हरिहर का पंजा पकडकर) नहीं नहीं मेरे दोस्त तुम्हें इस बात से रंज न होना चाहिये मैं तुम्हारे फायदे का भी बन्दोबस्त कर चुका हूँ। सरला के साथ शादी होने पर भी जो कुछ तुम्हें फायदा होता सो अब भी हुए बिना न रहेगा

हरिहर – (कुछ चिढकर) सो कैसे हो सकता है ?

पारस – ऐसे हो सकता है – जिस आदमी के साथ सरला की शादी होगी वह रुपये के बारे में तुम्हारे नाम से एक वसीयतनामा लिख देगा *।

हरिहर – यह बात तो जरा मुश्किल है। मगर मुझे उन रुपयों की कुछ ऐसी परवाह भी नहीं है। मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि किसी तरह तुम्हारा यह काम हो जाय।

पारस – मुझे विश्वास है कि ऐसा हो जायेगा और अगर न भी हुआ तो मैं तुमसे इकरार करता हूँ कि मुझे जो कुछ मिलेगा उसमें आधा तुम्हारा होगा।

हरिहर – (कुछ खुश होकर) खैर जो होगा देखा जायेगा। अब यह बताओ कि वह बुढिया यहाँ कब आवेगी और सरला के पास कब जायेगी ?

पारस – वह बुढ़िया आती ही होगी।

ये बातें हो ही रही थीं कि बाहर से किसी ने दर्वाजा खटखटाया। मामूली परिचय देन के बाद दर्वाजा खोला गया तो हरनन्दन के एक दोस्त के साथ सुलतानी दर्वाजे के अन्दर पैर रखती हुई दिखाई पडी।

---

*यह बात पारसनाथ ने अपनी तरफ से झूठ कही।

तेरहवां बयान

यह सुलतानी वही औरत है जिसे हम बादी के मकान में दिखला आये है और लिख आये है कि इसने हाल ही में बादी के यहॉ नौकरी की है। बादी की तरफ से सरला को समझाने का ठीका लिया है और यही इस काम का बीड़ा उठाकर आई है कि सरला को दूसरे के साथ शादी करने पर राजी कर लूँगी। जिस समय वह उन लोगों के सामने पहुँची, पारसनाथ उठा, "लीजिये वो आ गई। अब इसे सरला के पास पहुँचाना चाहिये।"

सरला कहीं दूर न थी, इसी मकान की एक अधेरी मगर हवादार कोठरी में अपनी बदकिस्मती के दिनों को नाजुक उगलियों के पोरों पर गिनती और बडी-बड़ी उम्मीदों को ठडी सॉसों के झोंकों से उड़ाती हुई जमाना बिता रही थी। साधारण परिचय देने और लेने के बाद सुलतानी उस कोठरी में पहुँचाई गई जिसमें एक चिराग सरला की अवस्था को दिखलाने के लिए जल रहा था।

जब से सरला को यह कोठरी नसीब हुई तब से आज तक उसने किसी औरत की सूरत नहीं देखी थी। इस समय यकायक सुलतानी पर निगाह पडते ही वह चौंकी और ताज्जुब से उसका मुह देखने लगी। सुलतानी ने सरला के पास पहुँच कर धीरे से कहा "मुझे देखकर यह न समझना कि तुम्हार लिए काई दु खदाई खबर या सामान अपने साथ लाई हूँ, बल्कि मेरा आना तुम्हें दु ख के अथाह समुद्र से निकालने के लिए हुआ है। अपने चित्त को शान्त करो और जो कुछ भी कहती हूँ उसे ध्यान देकर सुनो।"

पाठक ! इस जगह हम यह न लिखेंग कि सुलतानी ने सरला से क्या-क्या कहा और सरला न उसकी चलती-फिरती बातों का क्या और किस तौर पर जवाब दिया अथवा उन दोनों में कितनी देर तक हुज्जत होती रही। हॉ इतना जरूर कहेंगे कि सुलतानी के आने का नतीजा इस समय पारसनाथ वगैरह को खुश करने के लिए अच्छा ही हुआ अर्थात घण्टे भर के बाद जब सुलतानी मुस्कुराती हुई उस कोठरी के बाहर निकली और कोठरी का दरवाजा पुन बन्द कर दिया गया तब उसन (सुलतानी ने) पारसनाथ से कहा ' लीजिये बाबू साहब, मै आपका काम कर आई। हरनन्दन की लिखी हुई चिट्ठी का नतीजा तो अच्छा होना ही था मगर मेरी अनूठी बातों ने सरला का दिल मोम कर दिया और जब उसने मेरी जुबानी यह सुना कि उसका बाप लालसिह उसी के गम में सन्यासी हो गया तब तो और भी उसका दिल पिघल कर बह गया और जो कुछ मैंने उसे समझाया और कहा उसे उसने खुशी से कबूल कर लिया। उसने इस बात का भी मुझसे वादा किया है कि ब्याह हो जाने पर मै अपने हाथ से अपने बाप को इस मजमून की चिट्ठी लिख दूँगी कि मैंने अपनी खुशी और रजामन्दी से शिवनन्दन के साथ शादी कर ली। मगर मुझसे उसने इस बात की शर्त करा ली है कि शादी होने के समय मै उसक साथ रहूगी।

सुलतानी की बातें सुनकर ये लाग बहुत प्रसन्न हुए और पारसनाथ ने खुशी के मारे उछलते हुए अपने कलेजे को रोककर सुलतानी से कहा "क्या हर्ज है अगर एक रोज दो घण्टे के लिए तुम और भी तकलीफ करोगी। तुम्हारे रहने से सरला का ढाढस बनी रहेगी और वह अपने कौल से फिरने न पायेगी। तुम यह न समझो कि मैं तुम्हें यों ही परेशान करना चाहता हूँ, बल्कि विश्वास रक्खो कि शादी हो जाने पर मै तुम्हें अच्छी तरह खुश करके बिदा करूँगा।

सुलतानी ने खुश होकर सलाम किया और जिसके साथ आई थी उसी के साथ मकान के बाहर होकर अपने घर का रास्ता लिया।

हमारे पाठक यह जानना चाहते होंगे कि यह शिवनन्दन कौन है जिसक साथ शादी करने के लिए सरला तैयार हो गई। इसके जवाब में हम इस समय इतना ही कहना काफी समझते हैं कि बादी न शिवनन्दन के बारे में पारसनाथ से इतना ही कहा था कि शिवनन्दन एक साधारण और बिना बाप मॉ का गरीब लडका है, उसकी और हरनन्दन की उम्र एक ही है, बातचीत और चालढाल में भी विशेष फर्क नही है। हरनन्दन और शिवनन्दन एक साथ एक ही पाठशाला में पढते थे, उसी सबब से हरनन्दन के दिल में उसका कुछ खयाल है और उसी के साथ सरला की शादी हरनन्दन पसन्द करता है।

शिवनन्दन को पारसनाथ भी बहुत दिनों से जानता था और उसे विश्वास था कि यह बिल्कुल साधारण और सीधे मिजाज का लडका है। सुलतानी को बिदा करने के बाद पारसनाथ और हरिहरसिह शिवनन्दन के मकान पर गये और उसकी शादी के बारे में बहुत देर तक चलती-फिरती बातें करते रहे। हरिहरसिह वहॉ भी अपनी चालाकी से बाज न आया, शिवनन्दन को शादी के बन्दोबस्त से खुश देखकर उसने इस बात का इकरार लिखा लिया कि शादी होने के बाद सरला की जो जायदाद उसे मिलेगी उसमें से आधा हरिहरसिह को वह बिला उज्र दे देगा।

शादी की बातचीत खतम हुई। दिन और समय ठीक हो गया। शादी कराने वाले पण्डितजी भी स्थिर कर लिये गये और यह भी तै पा गया कि बिना धूमधाम के मामूली रस्म और रिवाज के साथ रात्रि के समय शादी हो जायेगी। इन बातों में शिवनन्दन ने अपने खानदान की रस्मों में से दो बातों का होना बहुत जरूरी बयान किया और उसकी ये दोनों बातें भी

खुशी से मजूर कर ली गई। एक तो चेहर पर रोली का जमाना और दूसरे वादले का वन्ददार सेहरा वॉधकर घर से वाहर निकलना। साथ ही इसके यह वात भी तै पा गई कि शादी के समय पर कवल एक आदमी का साथ लिये हुए शिवनन्दन उस मकान में पहुँचाए जायेंगे जिसमें सरला है अथवा जिसमें शादी का वन्दोवस्त हागा।

वातचीत खतम होने पर पारसनाथ और हरिहरसिह घर चले गय और उसके दो घण्टे वाद शिवनन्दन ने भी रामसिह के घर की तरफ प्रस्थान किया।

चौदहवां बयान

अव हम सरला और शिवनन्दन की शादी वाले दिन का हाल वयान करते हैं। वह दिन पारसनाथ और हरिहरसिह के लिए वडी खुशी का दिन था। हरनन्दन की इच्छानुसार वॉदी ने पूरा-पूरा वन्दोवस्त कर दिया था और इसी वीच में हरनन्दन और पारसनाथ को कई दफे वादी के यहा जाना पडा और इसका नतीजा जाहिर में दानों ही के लिए अच्छा निकला। जिस दिन शादी होने वाली थी उस दिन पारसनाथ ने शादी का कुल सामान उसी मकान में ठीक किया जिसमें सरला कैद थी। आदमियों में से केवल पारसनाथ हरिहरसिह सुलतानी, सरला और शिवनन्दन के पुरोहित उस मकान में दिखाई दे रहे थे इनके अतिरिक्त पारसनाथ का भाई धरणीधर भी इस काम में शरीक था जो आधी रात के समय शिवनन्दन को लाने के लिए उसक मकान पर गया हुआ था।

रात आधी से ज्यादा जा चुकी थी मकान के अन्दर चौक में शादी का सब सामान ठीक हो चुका था कसर इतनी ही थी कि शिवनन्दन आवें और दो चार रस्में पूरी करके शादी कर दी जाय। थोडी ही देर में वह कसर भी जाती रही अर्थात् दरवाजे का कुण्डा खटखटाया गया और जव मामूली परिचय लेने के वाद पारसनाथ ने उसे खोला तो शिवनन्दनसिह को साथ लिए हुए धरणीधर ने उस मकान के अन्दर पैर रक्खा। इस समय शिवनन्दन के साथ केवल एक आदमी था जिसे पारसनाथ वगैरह पहिचानते न थे। शिवनन्दनसिह पूरे तौर से दूल्हा वने हुए थे। मकान के अन्दर जिस समय दाखिल हुए उस समय मोटे और स्याह कपडों से अपने तमाम वदन का छिपाये हुए थे पर जिस समय वह स्याह कपडा उतार कर उन्होंने दूर रख दिया उस समय लागों ने देखा कि उनके ठाठ में किसी तरह की कमी नहीं है अवाकवा और जामा-जाडा से पूरी तरह लैस है। सिर पर वडी मन्दील और वादले का बना सेहरा और उसके ऊपर खुशवूदार फूलों के सहरे ने उनके चेहरे को पूरी तरह से ढक रक्खा था।

खैर शिवनन्दनसिह नाममात्र के मडवे में वैठाए गये और प्रोहितजी ने पूजा की कार्रवाई शुरू की। यद्यपि पारसनाथ वगैरह को जल्दी थी और वे चाहते थे कि दो ही पल में शादी हो-हवा के छुट्टी हो जाय मगर प्रोहितजी को यह बात मजूर न थी। वे चाहते थे कि पद्धति और विधि में किसी प्रकार की कमी न होने पावे अस्तु लाचार होकर पारसनाथ वगैरह को भी उनकी इच्छानुसार चलना पडा।

पारसनाथ ने कन्यादान किया और एक तौर पर एक शादी राजी-खुशी के साथ तै पा गई। इसी समय में पारसनाथ ने कलम, दवात और कागज सरला के सामने रख दिया और कहा अव वादे के मुताविक तू लिख दे कि मैंने अपनी प्रसन्नता से शिवनन्दन के साथ अपना विवाह कर लिया इसमें न तो किसी का दोष है और न किसी ने मुझ पर किसी तरह का दवाव डाला।'

सरला ने इस वात का मन्जूर किया और पुर्जा लिखकर पारसनाथ के हाथ में दे दिया। जव पारसनाथ ने उसे पढा तो उसमें यह लिखा हुआ पाया –

मुझ अपने पिता की आज्ञानुसार हरनन्दनसिह के अतिरिक्त किसी दूसरे के साथ विवाह करना स्वीकार न था। यद्यपि मेरे भाइयों ने इसके विपरीत काम करने की इच्छा से मुझे कई प्रकार के दु ख दिये और वड़े वड़े छल खेले मगर परमात्मा ने मेरी इज्जत वचा ली और अन्त में मेरी शादी हरनन्दनसिह ही के साथ हो गई।

पुर्जा पढकर पारसनाथ को ताज्जुव मालूम हुआ और वह क्रोध भरी ऑखों से सरला की तरफ देखने लगा पर उसी समय यकायक दर्वाजे पर किसी के खटखटाने की आवाज आई। जब धरणीधर ने जाकर पूछा कि 'कौन है ?' तो जवाव में वाहर से किसी ने वही पुराना परिचय अर्थात् 'गूलर का फूल' कहा। दर्वाजा खोल दिया गया और धड़धड़ाते हुए कई आदमी मकान के अन्दर दाखिल हो गए।

जो लोग इस तरह मकान के अन्दर आये वे गिनती में चालीस से कम न होंगे उनके साथ वहुत सी मशालें थीं और कई आदमी साथ में नगी तलवारें लिए हुए मारने-काटने के लिए भी तैयार दिखाई दे रहे थे। उन लोगों ने आते ही पारसनाथ धरणीधर और हरिहरसिह की मुश्कें वॉध लीं और एक आदमी ने आगे वढकर पारसनाथ से कहा 'कहो मेरे चिरञ्जीव! मिजाज कैसा है? क्या तुम इस समय भी अपने चाचा को सन्यासी के भेष में देख रहे हो ?

मशालों की रोशनी से इस समय दिन के समान उजाला हो रहा था। पारसनाथ ने अपने चाचा लालसिह को सामने

खडा देख भय और लज्जा से मुँह फेर लिया और उसी समय उसकी निगाह शिवनन्दन, रामसिह, सूरजसिह और कल्याणसिह पर पडी जिन्हें देखते ही ता वह एक दम घवडा गया।

अव हम थोडी सी रहस्य की वातों का लिखना उचित समझते हैं। सुलतानी असल में वॉदी की लौंडी न थी। उसे रामसिह ने वॉदी के यहॉ रहकर भेदों का पता लगाने के लिए मुकर्रर किया था और रामसिह की इच्छानुसार सुलतानी ने वडी खूबी के साथ अपना काम पूरा किया। वह हरनन्दन के हाथ की लिखी हुई केवल उसी चिट्ठी को लेकर सरला के पास नहीं गई थी जो वॉदी ने लिखवाई थी वल्कि और भी एक चिट्ठी लालसिह के हाथ की लेकर गई थी जिसमें लालसिह ने सच्चा-सच्चा हाल लिखकर सरला को ढाढस दी थी और यह भी लिखा था कि तुम्हारा बाप वास्तव में सन्यासी नहीं हुआ वल्कि समयानुसार काम करने के लिए छिपा हुआ है, अस्तु इस समय जो कुछ सुलतानी कहे उसके अनुसार काम करना तुम्हारे लिए अच्छा होगा।

यही सवव था कि सरला ने सुलतानी की वात स्वीकार कर ली और जो कुछ उसने मन्त्र पढाया, उसी के अनुसार काम किया। शिवनन्दनसिह रामसिह के आधीन था और जो कुछ उसने किया वह सव रामसिह की इच्छानुसार था। दूलह वनकर दुष्टों के घर जाने के समय शिवनन्दन अलग हो गया और दूलह का काम हरनन्दन ने पूरा किया। सेहरा इत्यादि वॅधे रहने के सवव किसी तरह का गुमान न हुआ और तव तक राजा साहव की भी मदद आन पहॅुची जिसका वन्दोवस्त पहिले ही से सूरजसिह ने कर रक्खा था। यद्यपि यह सव वातें उपन्यास में गुप्त थीं परन्तु ध्यान दकर पढने वालों को ऊपर के वयानों से अवश्य झलक गया होगा तथापि जिन्होंने न समझा हो, उनके लिए सक्षेप में लिख देना हमने उचित जाना।

पारसनाथ, धरणीधर और हरिहरसिह इत्यादि जेल में पहुँचाये गये और हरनन्दनसिह, सरला तथा अपने मित्रों को लिये लालसिह अपने घर पहुँचे। उस समय उनके घर में जिस तरह खुशी हुई उसका वयान करना व्यर्थ कागज रगना है, मगर वाजार में हर एक की जुवान से यही निकलता था कि अपनी रडी वादी की वदौलत हरनन्दनसिह ने सरला का पता लगा लिया।

समाप्त

गुप्तगोदना

पहिला बयान

सध्या हाने में कुछ विलम्व नहीं है नियमानुसार पूरव तरफ से उमडकर कमश घिर आन वाली ॲधियारी ने अस्त होते हुए सूर्य भगवान की किरणों द्वारा आकाश के पश्चिमीय खण्ड में फैली हुई लालिमा पर अपनी स्याह चादर का पर्दा वढाना आरभ कर दिया है। समय पर वलवान हाकर विजय-पताका लिये हुए शीघ्रता से बढती हुई अपनी सहायक ॲधियारी और उसके डर से अपनी हुकूमत छाडकर भागी जाती हुई शत्रु लालिमा की विकल अवस्था देख दो-एक वलवान तारे मन्द-मन्द हॅसते हुए आकाश में दिखाई देने लगे हैं। जाड के दिनों में कलेजा दहलाने वाली ठढी हवा आज जगली फूलों की महक से सौंधी हुई अठखेलियों के साथ मन्द मन्द चलकर खुशदिलों और नौजवानों की तवीयत में गुदगुदी पैदा कर रही हे। वरसात में उमग के साथ वढकर दानों किनारों पर लगे हुए सायेदार पेडों को गिराकर भी सतोष न पाने वाली पहाडी नदी आज किसी की जुदाई में दुवली भई हुई वडे-वडे ढोकों से सर टकराती शिथिलता के कारण डगमगा कर चलती हुई भी प्रेमियों के हृदय का प्रफुल्लित कर रही है। चारा चुगने के लिए सवेरा होने के साथ ही उडकर दूर-दूर की खवर लाने वाली खूवसूरत चिडियाए घिरी आने वाली ॲधियारी के डर से लोटकर कोमल-कोमल पत्तों की आड में अपने-अपने घोंसलों के वाहर वल्कि चारों तरफ फुदक-फुदकर मन-भावन शब्दों से चहचहा रही हैं। ऐसे समय में एक खुशरू खुशदिल खुश-पोशाक और नौजवान मुसाफिर चौकन्ना होकर इधर-उधर देखता और एक पत्ते के भी खडखडाने से चौकता हुआ इस तरह चारो तरफ घूम रहा है जैसे कोइ शिकारी कब्जे में आकर निकल गये हुए शिकार की खोज में फिर-फिर कर टोह लगाता हो। जिस जगल में यह नौजवान घूम रहा है, पहाडी-नदी ने बीच में पडकर उसके दा हिस्से कर दिये हैं। पूरव वाले हिस्से में तो वहुत ही भयानक और घना जगल है मगर पश्चिमी हिस्से वाला वह जगल वहुत घना नहीं है जिसमें हमारा नौजवान घूम रहा है। नौजवान की उम्र लगभग बीस वर्ष के होगी। चेहरा खूवसूरत हाथ-पैर गठील पाशाक अमीराना मगर शिकारियों और सवारों के ढग की सी तलवार कमर से लटकती हुई और नेजा हाथ में लिये हुए था। जिस घोड़े पर वह यहॉ तक आया था वह थोडी ही दूर पर एक पेड के साथ वागडोर के सहारे वॅधा हुआ था और उससे थोडे ही फासले पर एक जख्मी हरिण जमीन पर वेदम दिखाई दे रहा था।

धीरे-धीरे रात हो जान के कारण चारों तरफ अन्धकार छा गया। उस हसीन औरत की सूरत-शक्ल भी जा थोडी ही देर पहिले साफ दिखाई द रही थी, अव वखूवी दिखाई नहीं देती। यद्यपि उस औरत की मुहब्वत ने उदयसिह के दिल में अपनी जगह कर ली थी मगर वह उस मुहव्वत का अपने दिल स दूर कर देने का उद्योग करने लगा जो कि उसकी सामर्थ्य से विलकुल ही वाहर था, हा अपने दोस्त रविदत्त की खोज से वह किसी तरह मुँह नहीं मोड़ सकता था परन्तु ऐस आदमी का पता लगाना कठिन ही नहीं वल्कि असम्भव था जा एक दफे आखों के सामन पडकर पुन अन्तर्ध्यान हो गया हो।

उदयसिह उसी जगह खडा-खडा तरह-तरह की वातें साच रहा था कि सामन स कई आदमियों के आन की आहट पाकर चौंक पडा और उनकी तरफ दखन लगा जिनके तेजी क साथ चलने के कारण जगली पडों से जुदा भये हुए सूख पत्ते चर्रमर्र कर रहे थे और जिनक साथ कई मशालें भी थीं।

थोडी ही दर में और पास आन पर मालूम हुआ कि वे लोग जो चाल और पोशाक तथा हर्वो क लहाज से फौजी सिपाही जान पडते थे गिनती में वीस-पच्चीस से कम न होंग। पहिले तो उदयसिह के दिल में यह आया कि ऐसे समय में यहा स टल जाना ही उचित हागा जव वे लाग आगे निकल जायंगे तो जैसा हागा देखा जायेगा परन्तु साथ ही इसके यह भी विचार किया कि यदि मे यहाँ स हट जाऊँगा और वे लाग इस औरत के पास पहुच जायेंग ता ताज्जुव नही कि इसे लावारिस समझ के इसक साथ किसी तरह की वेअदवी का वर्ताव करें और यदि मे यहाँ मौजूद रहूगा तो कह-सुनकर उनके हाथों से इसे वचाऊँगा। आखिर पिछले विचार पर उदयसिह न ज्यादे जोर दिया और उस औरत क पास ज्यों का त्यों खडा रहा।

जव वे फौजी सिपाही उदयसिह के पास पहुँचे ता उनकी निगाह उदय सिह और उस वहाश औरत पर पडी और सबके सव उसी जगह खड हा गय। उन सिपाहियों में एक सिपाही सव का सर्दार था और उनकी पौशाक भी वनिस्वत औरों के ज्यादे भडकीली थी। यद्यपि उस सदार की तथा औरों की भी निगाह उदयसिंह पर पडी परन्तु किसी न भी उससे किसी तरह का सवाल न किया और न उसकी तरफ ध्यान दिया ऐसी अवस्था में उदयसिंह को स्वय कुछ पीछे हट जाना पडा। सर्दार ने अपने सिपाहियों की तरफ देख के कहा, विना डोली या पालकी के इन्हें उठा कर ले जाना ठीक न होगा।

एक – यदि हाश आ जाय ता वेहतर है।

सर्दार – तो भी क्या होगा ? क्या पैदल जा सकेगी ?

दूसरा – खैर जा हुक्म हा किया जाय।

सर्दार – (कुछ सोच कर) इनका होश में न आना ही अच्छा है तलवार से पेड़ की छोटी छोटी डालियाँ काटो और दा-तीन आदमियों की चादर लेकर झोली तैयार करो।

सर्दार की आज्ञा पाकर कई सिपाहियों ने "वहुत अच्छा' कहा और झोली तैयार करने की फिक्र करने लगे। उदयसिह इतनी देर तक चुपचाप खडा रहा मगर अव उससे चुप न रहा गया, उसने सर्दार के पास जाकर पूछा –

उदयसिह – आप किस लश्कर या फौज से सम्वन्ध रखते है और इन्हें (औरत की तरफ इशारा करके) कहाँ ले जायँगे ?

सर्दार – मै तुम्हारी वातों का जवाव न देना ही अच्छा समझता हूँ। मगर इतना कह देना जरूरी है कि तुम यहाँ से चुपचाप चले जाओ नहीं तो तुम्हारे हक में वेहतर न होगा।

उदय – मगर वड अफसोस की वात है कि आप लोग सिपाही आदमी होकर एक सिपाही की बात का जवाव नहीं देते।

सर्दार – मगर क्या तुम इस वात को नहीं जानते कि यहाँ वालों के लिए आजकल का समय कैसा है ?

उदय – मै खूब जानता हूँ कि आजकल फौजी कानून का वर्ताव वडी सख्ती से हो रहा है।

सर्दार – तिस पर भी मैंने तुमसे यह नहीं पूछा कि तुम कौन और कहा क रहने वाले हो ! क्या यह मामूली बात है ?

इतना कह कर सर्दार ने बड़े गौर से उदयसिह की तरफ देखा और कुछ पीछे हट गया। उदयसिह भी उसके पास चला गया और कुछ पूछा चाहता ही था कि सर्दार ने धीरे से कहा "अगर मेरा तजुर्वा मुझे धोखा नहीं देता तो मै कह सकता हूँ कि तुम होनहार और वहादुर आदमी मालूम पड़ते हो तथा रुपये पैसे की भी तुम्हें कमी नहीं है, अगर यह बात ठीक है तो तुम अपने क्षत्रीपन का हमें परिचय दो और इस वेचारी की कुछ मदद करो। मै स्वाधीन न होने के कारण लाचार हूँ परन्तु क्या करू, दया मेरा पीछा नहीं छोडती, यद्यपि मै ऐसे आदमी का नमक खा रहा हू जिसमें दया का लेश मात्र नहीं है ! (हाथ पकड़ कर और धीरे से) तुम्हारा नाम उदयसिह तो नहीं है ?"

उदय – (ताज्जुब में आकर) वेशक मेरा यही नाम है मगर तुम मुझे कैसे जानते हो ? मैने तो तुम्हें कभी देखा नहीं।

सर्दार – मै तुम्हें वहुत दिनों से जानता हू। कई लड़ाइयों में मेरा और तुम्हारे पिता का साथ रहा है। वह बड़े बहादुर आदमी है मै इस समय तुमसे विशेष वात नहीं कर सकता क्योंकि मेरे आदमियों को शक हो जायगा मगर इतना जरूर

कहना चाहूँगा कि यदि तुम भी अपने बाप की तरह बहादुर हो तो औरगजेब के लश्कर में आकर मुझसे मिलो। मगर भेष बदल कर आना और अपना नाम रामसिह रखना।

उदय – बहुत अच्छा मगर तुम्हारा पता किस नाम से लगाऊगा ?

सर्दार – मेरा नाम भरतसिह हैं, बस अब किनारे हो जाओ और इस समय हम लोगों का पीछा न करो।

इतना कहकर वह सर्दार अपनी मण्डली में जा मिला, उदयसिह के देखते ही दखते उस औरत को उठवा कर ले गया।

दूसरा बयान

उस सर्दार और सिपाहियों क चले जाने के बाद उदयसिह को फिर अपने मित्र रविदत्त की फिक्र पडी और दोस्त का पता न लगने के कारण जो बचैनी पैदा हुई थी वह बढने लगी।

यद्यपि चारों तरफ अन्धकार छाया हुआ था और जगल के घने पेड़ों की बदौलत उसे और भी सहायता मिल रही थी मगर उदयसिह ने अपने मित्र की खोज में किसी तरह की सुस्ती न की और इधर-उधर घूम-घूम कर खोज लगाता ही रहा। यकायक पत्तों की खडखड़ाहट से उसे मालूम हुआ कि दाहिनी तरफ से दो आदमी आ रहे हैं। उदयसिह एक पेड़ की आड देकर खड़ा हो गया और थोडी ही देर में धीरे-धीरे बातें करते हुए वे दोनों आदमी उसके पास आ पहुचे और कुछ देर के लिए उसी जगह खड़े हो गए जहा से सात या आठ हाथ की दूरी पर पेड़ की आड में उदयसिह खड़ा था। रात और सन्नाटे का समय था इसलिये उन दोनों की बातें सुनने का उदयसिह को अच्छा मौका मिला। उन दानों में यों बातचीत होने लगी –

एक – अच्छा हुआ जो वे लोग उस औरत को उठाकर ले गए, अगर रविदत्त उसे देख लेता तो जरूर पहचान जाता।

दूसरा – इसीलिये तो ऐसा प्रबन्ध किया गया था। मैं तो रविदत्त को देख कर एक दम चौंक पडा और समझा कि अब मामला बिगड गया मगर तुमन अच्छी चालाकी खेली।

पहिला – मेरी तो यही राय थी कि रविदत्त को मार कर बखेड़ा ही तै कर दिया जाय मगर तुमने न माना।

दूसरा – तुम बडे ही दुष्ट हो !जरा से काम के लिये किसी को मार डालना क्या अच्छी बात है ?

पहिला – अजी समय पर सब कुछ किया जाता है।

दूसरा – तो उसे छोड़ देने में तुम्हारी हानि क्या हुई ? बल्कि हम लोग बफिक्र रहे। यदि वह मार डाला जाता तो उदयसिह उसके खूनी का पता लगाये बिना कभी न रहता और अब तो किसी को कुछ गुमान भी न होगा, यहा तक कि स्वय रविदत्त ही को किसी तरह का शक न होगा।

पहिला – तुम, जो चाहो सो कहो मगर मैं तो अपनी उसी राय को पसन्द करता हू। खूनी का पता लग जाना क्या हसी-खेल है ? जिस पर आज-कल की लडाई के समय में !हजारों आदमियों पर उदयसिह का शक जाता और हम लोगों का तो ध्यान भी उसके दिल में न आता। अब भी मैं यही राय देता हू कि रविदत्त का मार कर बखेडा तै करो। मुझ शक है कि वह जान-बूझ कर बेहोश बना हुआ था, ईश्वर न करे कहीं यह गुमान सच निकला तो बडी मुश्किल होगी, रविदत्त बड़ा ही कोधी आदमी है और हमारे-तुम्हारे ऐसे चार के लिये वह अकेला ही काफी है।

दूसरा – बात तो ठीक है मगर

पहिला – मगर-तगर काहे की ? मैं जो कहता हू उसे मानो और लौट चलो रविदत्त का जीते रहना ठीक नहीं।

दूसरा – अजी रहने भी दो। उधर उदयसिह उसकी खाज में घूम रहा होगा, मिल जायेगा तो सभी काम चौपट हो जायेगा। जो हो गया सो हो गया, चलो आगे का रास्ता लो।

पहिला – ठहरो अपने साथी को तो आ लेने दो वह कहा-कहा भटकता फिरेगा। हा मुझे एक बात और याद आइ जिस समय हमलोग रविदत्त को उठाने लगे थे उस समय उसने जरा सी आख खोल दी थी और फिर जल्दी स बन्द कर ली मालूम होता है कि हमलोगों का पहिचान कर उसन नखरा किया।

दूसरा – अगर यह बात तुम सच कहते हा ता बेशक खौफ का मुकाम है।

पहिला – मै तुम्हार ही सर की कसम खाकर कहता हू तुमसे कदापि झूठ न बालूगा इसक सिवाय उसके बगल में

यहा पर की कुछ बातें उदयसिह को अच्छी तरह सुनाई नहीं पडीं।

दूसरा – खैर जो तुम कहो करन के लिए मैं तैयार हू।

पहिला – तो बस लौट चलो और उसे मार कर बखेडा निबटाओ यहा स कुछ बहुत दूर ता है नहीं और अभी भी वह बेहोश पडा होगा।

दूसरा – अच्छा चला जो कुछ होगा दखा जायेगा।

दानों आदमी यहाँ से हट कर पीछे की तरफ लौट चले और कदम दबाते हुए उदयसिह भी उनक पीछे-पीछे रवाना हुआ। इन दोनों की बातों स उदयसिह को अपने मित्र का पता लग गया और यह भी मालूम हो गया कि तमाम फसाद

इन्हीं दोनों आदमियों का है मगर इन दोनों की बातों से यह नहीं मालूम हुआ कि ये लोग रविदत्त को कहा छोड आये है।

उदयसिह को एक बात का खौफ और भी मालूम हुआ। वह सोचने लगा 'कहीं ऐसा न हो कि हम रविदत्त की टोह में इन दोनों के पीछे-पीछे चले जाने की धुन में रहें और ये दोनों उसके पास पहुच कर एक ही वार में उसका काम तमाम कर दें आखिर ये दोनों आगे-आगे तो जा ही रहे हैं।

उदयसिह का यह सोचना नि सन्देह वाजिब था और इस विचार ने उसे चौका भी दिया। उसने पीछे-पीछे जाना पसन्द न किया और उन दोनों को रोकने का मौका ढूढने लगा। थोडी दूर आगे जा कर एक छोटा सा मैदान मिला। यहा की जमीन ऊसर होने के कारण पेड-पत्तों से खाली थी, उदयसिह को अपने खयाल से यह अच्छा मौका मिला झपट कर उन दोनों के पास जा पहुचा। तलवार खैंच कर सामने खडा हो कर बोला, 'तुम दोनों कौन हो ?

उने दानों ने भी तलवार खैंच ली और एक न अकड कर कहा, हमलोग बादशाह के सिपाही है, तुम कौन हो जो यहा अकेले घूम रहे हो ? जल्द जवाब दो नहीं तो गिरफ्तार करके बादशाह के हुजूर में ले चलेंगे।'

उदय – अब इस नखरे और धमकी को तो तह कर रक्खो, यह बताओ कि रविदत्त को कहा रख आये हो ?

एक – रविदत्त कौन?

उदय – बहाना करने से कोई फायदा न निकलेगा, समझ लो कि मेरा नाम उदयसिह है और मैंने तुम्हारी सब बातें छिप कर सुन ली हैं।

दूसरा – (अपने साथी से कुछ कापती हुई आवाज में) अजी यह वही उदयसिह है जिसे हम लोग बडी देर से खोज रहे है, इसी को गिरफ्तार करने के लिये बादशाह ने हुक्म दिया है। (उदय से) बस तलवार जमीन पर रख दो और चुपचाप हमारे साथ चले चलो।

इतना सुनते ही उदयसिह को क्रोध चढ आया। उसने तेजी से एक के ऊपर तलवार का वार किया जिसे दूसरे ने बडी फुर्ती से रोका मगर उदयसिह के दूसरे वार को रोक न सका और कधे पर गहरा घाव खा जाने के कारण त्योरा कर जमीन पर गिर पडा उसी समय उदयसिह ने दूसरे की भी खबर ली। उदयसिह दिलावर और बहादुर आदमी था, तलवार चलाने की विद्या अच्छी जानता था इसलिये बात की बात में उस आदमी को भी नीचा दिखाया अर्थात् दूसरे को भी जमीन पर गिरा दिया।

उदयसिह को मालूम हो गया कि ये दोनों ऐसे नहीं गिरे है कि उठ कर भाग जाय या किसी का पीछा करें इसलिए बेधडक एक के पास चला गया और बोला, अब भी बता दो कि रविदत्त कहा है नहीं तो तुम्हारा सर काट डालूगा ? इसका जवाब उसने कुछ भी नहीं दिया और अपने को ऐसा बना लिया मानो उसमें बोलने की ताकत ही नहीं है, दूसरे ने भी अपने को ऐसा ही दर्शाया।

उदयसिह ने सोचा कि अब इनके ऊपर तलवार का वार करना उचित नहीं है इन्हें यहा पर इसी तरह छोड कर रविदत्त की खोज में इधर उधर भटकना भी मुनासिब नहीं जान पडता। यह तो मालूम हो ही चुका है कि रविदत्त यहा से थोड़ी ही दूर पर या कहीं पास ही बेहोश पडा है और सिवाय इन दोनों के और कोई उसे दु ख देने वाला भी नहीं है साथ ही इसके इस अधेरी रात में और ऐसे घने जगल में रविदत्त का पता लग जाना कठिन ही नहीं असम्भव है, इससे यही बेहतर है कि इन दोनों के पास ही थोडी दूर पर बैठे रहें आखिर थोडी देर में रविदत्त की बेहोशी दूर होगी ही, उस समय मेरी सीटी की आवाज सुन कर वह आप ही यहाँ आ जायेगा। अगर इन दोनों को छोडकर उसे ढूढने जाता हू तो ताज्जुब नहीं मेरे पीछे ये दोनों सम्हल बैठें और मुझसे पहले ही रविदत्त के पास पहुचकर उसे मार डालें क्योंकि मैं तो बेअदाज इधर-उधर खोजूँगा और ये दोनों झट उसके पास जा पहुचेंगे।

इत्यादि बहुत सी बातें सोचकर उदयसिह ने वहा से चले जाना उचित न समझा और उन दोनों जख्मियों से थोडी दूर जमीन पर बैठ गया। थोडी देर बाद उदयसिह ने जेब से सीटी निकाल कर बजाई और तुरन्त ही उसका जवाब भी पाया।

उदयसिह को विश्वास हो गया कि उसकी सीटी का जवाब रविदत्त ही ने दिया और वह हमारी तरफ आता ही होगा मगर यह बात न थी। मुरादबख्श की फौज के कुछ सिपाही किसी काम के लिये इस रास्ते से कहीं जा रहे थे जो सीटी की आवाज सुनकर रुक गये। उन सभी के पास भी बजाने वाली सीटी थी जिसे एक ने अपनी जेब से निकाल कर उदयसिह की सीटी का जवाब दिया था।

सीटी का जवाब पाकर उदयसिह ने पुन सीटी बजाई और थोडी ही देर बाद अपने चारों तरफ पन्द्रह या बीस फौजी सिपाहियों को मौजूद पायां। उन सभों के पास चोर लालटेन मौजूद थी और उसमें रोशनी हो रही थी। एक ने लालटेन का मुह खोल कर उदयसिह के चेहरे पर रोशनी की और उसे बडे गौर से देख कर पूछा तुम कौन हो ? इसी बीच में दूसरे की लालटेन ने सभी को बता दिया कि यहा दो जख्मी भी पडे हुए हैं। ऐसी अवस्था देख कर सभी ने अपने लालटेन की रोशनी खोल दी और दोनों जख्मियों तथा उदयसिह को अच्छी तरह देखा। ऐ लोग उदयसिह को पहचानते न थे मगर इनकी पौशाक ने इनको बता दिया कि ये मुसल्मानी फौज के सिपाही हैं।

लालटनों की राशनी हा जान स उदयसिंह का उत्कण्ठा हुई कि वह उन दानों की सूरत दख जा उसक हाथ स जख्मी हाकर पृथ्वी की शरण ल चुक थ। फौजी सिपाही की बातों क जवाब में कवल इतना ही कहकर कि 'ठहरिय मैं आपका सब कुछ कहता हू उदयसिंह दानों जख्मिया की तरफ बढ गया और लालटन की राशनी में उनक चहरों को अच्छी तरह दखा। देखत ही उदयसिंह चौंका और घबडा कर बाल उठा आह ! यह ता हमारा भाई है !

तीसरा बयान

फौजी सिपाहियों ने जो कुछ यहाँ पर दखा,उनकी उत्कण्ठा बढाने के लिए काफी था। पहिले तो उदयसिंह को दखकर उन्हें ताज्जुब हुआ। फिर जब और दो आदमियों को जख्मी पाया ता ख्याल हुआ कि इसी (उदय)ने इन दोनों का मारा है मगर जब उदयसिंह न जख्मी का दखकर ताज्जुब क साथ कहा कि आह ! यह ता हमारा भाई है ! तब उन लोगों के आश्चर्य का कोई हद न रहा।

उन सिपाहियों में स एक न जिसका नाम हमीदखाँ था जो उन सभों का अफसर था उदयसिंह से पूछा आप कौन है ?

उदय – मै यहा से बहुत दूर का रहने वाला हू, शिकार की लालच में यहा तक चला आया।

हमीद – आजकल शिकार की लालच में यहा आना ताज्जुब पैदा करता है ! क्या आप नहीं जानत कि क्षिप्रा नदी के दानों किनारों पर किनकी फौजे पडी हुई हैं और किस तरह की लडाई होने वाली है ?

उदय – मैं जानता हू, अगर रास्ता मैं भूल न जाता तो इस तरफ कदापि न आता।

हमीद – खैर मगर इन दोनों का किसने जख्मी किया ?

उदय – मैंन।

हमीद – (ताज्जुब स) आपने !!

उदय – हा।

हमीद – आप अभी कह चुके हैं कि यह तो हमारा भाई है। फिर आपने अपने भाई को क्यों मारा ?

उदय – इसने इस अधेरी रात में मरे साथ दुश्मनी की थी और अपन को जाहिर नहीं किया इसी स मुझे धोखा हुआ।

हमीद – अब आप इसक साथ कैसा बर्ताव करेंगे ?

उदय – सा इसस बातचीत किय बिना मैं नहीं कह सकता।

हमीद – (कुछ सोच कर) आप जसवन्तसिंह को जानते हैं ?

उदय – एस बहादुर और राना क दामाद का कौन नहीं जानता हागा ? खास कर क आजकल क जमाना में जब कि बादशाह शाहजहा न उन्हें औरगजब क मुकाबले में भजा है और क्षिप्रा क उस पार उनका डरा पडा हुआ है।

हमीद – और कासिमखाँ का भी आप जानते ही होंग ?

उदय – बशक ! मगर आपके इस सवाल का मतलब क्या है ?

हमीद – कुछ नहीं यों ही पूछता हू, हा आपका नाम तो मैंन पूछा ही नहीं !

इसका जवाब देना उदयसिंह को कठिन हो गया क्योंकि उदयसिंह को उस औरत क लिए औरगजब के लश्कर में जाना जरूरी था और भरथसिंह ने कह दिया था कि 'वहा तुम भेष बदल कर आना तथा अपना नाम रामसिंह बताना। अब उदयसिंह ने सोचा कि अगर इन लागों से मैं अपना नाम उदयसिंह बताता हू तो शायद उस समय कुछ बुराई पैदा हो जब कि औरगजेब क लश्कर में इससे मुलाकात हा और अगर मैं इसी समय अपना नाम रामसिंह रखता हू तो यह जख्मी भाई तुरन्त मुझ झूठा नाम ठहरा कर मेरा असल नाम जाहिर कर देगा उसी समय ये लोग मेर दुश्मन हो जायँग। अस्तु उदयसिंह सिर नीचा करके साचने लगा कि अब क्या करना चाहिय ?

हमीद – आप चुप क्यों हा गये क्या नाम बतान में कुछ हर्ज है ? या आप अपने को छिपाया चाहते है ?

उदय – न ता नाम बताने ही में कोई हर्ज है और न मैं अपन का छिपाया ही चाहता हू, मतलब यह है कि हमलोग अपने मुँह से अपना नाम नहीं ले सकत हैं यदि आपका मेरा नाम सुनना जरूरी है तो कागज पर लिख कर बता सकता हूं।

हमीद – अब इस जगह कागज कलम दवात कहाँ से आ सकती है? खैर आप जमीन पर उँगली से निशान करक बताइये मैं पढ़ लूगा।

उदयसिंह ने अपना नाम 'रामसिंह 'लिख दिया जिसे पढने के साथ ही हमीदखाँ न सलाम करक कहा, अच्छा तो मुझे रुखसत कीजिये यदि कुछ सिपाहियों की आवश्यकता हो तो कहिये आपकी मदद क लिये छाड जाऊ ?

उदयसिंह ने कहा 'मुझे किसी की भी जरूरत नहीं है।' यह सुन कर हमीदखाँ ने अपने साथियों में स एक की तरफ देख कर कहा, अच्छा अब हम लोग लश्कर में जाते हैं तुम पता लगाओ कि उस बेहोश नौजवान को उठा ल जाने वाल कौन थे ?

उदय – क्या इस जगल में से किसी को

हमीद – जी हाँ जब हम लोग इधर आ रहे थे तब रास्ते में पेड़ की आड़ में एक बेहोश आदमी को पड़े देखा, लालटेन की रोशनी जब उसके चेहरे पर डाली गई तो मालूम हुआ कि यह कोई अच्छे खानदान का और सिपाही आदमी है। मैंने बड़े गौर से उसकी सूरत देखी और चाहा कि उसे होश में लाकर हाल-चाल दरियाफ्त करने का बन्दोबस्त किया जाय मगर उसी समय बहुत से सिपाहियों के आने की आहट मालूम हुई और हम लोगों को रोशनी बन्द करके आड़ में हो जाना पड़ा इसलिये कि हमको सिर्फ जासूसी का काम सौंपा गया है, दुश्मनों के सामने जाहिर होने या उनसे लड़ने का हुक्म नहीं है, और उन सिपाहियों पर दुश्मन होने का गुमान था तथा वे गिनती में भी ज्यादे मालूम पड़ते थे।

उदय – मगर यहाँ हमारे पास तो अब बहुत जल्द और खुल्लम-खुल्ला चले आये !

हमीद – सिर्फ सीटी की आवाज सुनकर। फिर भी एक आदमी को आगे भेजकर दरियाफ्त कर लिया था कि यहाँ कितने आदमी हैं ?

उदय – अच्छा तो उस आदमी की सूरत-शक्ल कैसी थी और उम्र क्या होगी ?

हमीद – उम्र तो पचीस या तीस साल से ज्यादे न होगी, रंग कुछ सांवला चेहरा गोल, नाक चिपटी ठुड्डी पर एक जख्म था जिस पर पट्टी लगी हुई थी और दाहिनी आंख के ऊपर एक बड़ा सा मसा था तथा ..

उदय – अस्तु,अच्छा तो उन लोगों ने वहाँ पहुंचकर क्या किया ?

हमीद – वे लोग उस नौजवान को हाथों-हाथ उठाकर (हाथ का इशारा करके)इसी तरफ ले गये।

उदय – कितनी देर हुई होगी ?

हमीद – अभी आधी घडी भी न हुई होगी, हमारा आदमी जल्द उनके पास पहुँचकर पता लगा लेगा। अच्छा तो अब मैं विदा होता हूँ।

इतना कहने के बाद हमीदखाँ ने सलाम करके उत्तर तरफ का रास्ता लिया।

उस बेहोश नौजवान का जो कुछ हुलिया हमीदखाँ ने बयान किया था उससे हमारे उदयसिंह को निश्चय हो गया कि वह अवश्य उसका दोस्त रविदत्त था, अस्तु इससे तो निश्चिन्ती हो गई ये दोनों बेईमान उसे किसी तरह की तकलीफ पहुँचा न सकेंगे मगर फिर भी गैर के पंजे में फँस जाने से खुटका बना ही रहा। उदयसिंह को सबसे ज्यादे आश्चर्य इस बात का था कि जब से उसने हमीदखाँ से अपना नाम रामसिंह बताया तब से हमीदखाँ की बातचीत का ढंग बिल्कुल ही बदल गया। हमीदखाँ ने उसके साथ इज्जत और मेहरबानी का वर्ताव किया बल्कि कभी-कभी तो यह मालूम होता था कि हमीदखाँ अपने को छोटा और कम दर्जे का आदमी समझकर बातचीत करता है। यद्यपि पहिले तो उदयसिंह ने कई बातों का ख्याल करके रुकावट के साथ बातचीत की थी मगर जब देखा कि हमीदखाँ सभ्यता और इज्जत का वर्ताव करता है तब यह समझकर कि शायद रामसिंह के नाम में कोई भेद हो और इस भेद को नष्ट करना चाहिए दिल खोलकर बातें कीं और ऐसा करना उदयसिंह के लिए बहुत मुनासिब था।

वे दोनों शैतान जिन्हें उदयसिंह ने जख्मी किया था उसी समय सब बात सुन रहे थे और शायद कुछ देख भी रहे थे। हम नहीं कह सकते कि उदयसिंह और हमीदखाँ की बातों का असर उन दोनों पर क्या पड़ा उदयसिंह बहुत देर तक उन दोनों के पास खड़ा सोचता रहा और अन्त में धीरे-धीरे ये कहता हुआ वहाँ से रवाना हो गया कि खैर देखा जायेगा, पहिचान तो लिया ही है।

अब इस समय उदयसिंह को तो दो बातों की फिक्र रही, एक तो औरंगजेब के लश्कर में जाकर मरथसिंह से मिलना और उस औरत का भेद मालूम करना दूसरे अपने दोस्त रविदत्त का पता लगाना।

उदयसिंह को तो मालूम ही हो गया था कि कई आदमी रविदत्त को फलानी जगह ले गये हैं अस्तु दोनों जख्मियों को उसी तरह छोड़ पहिले रविदत्त की फिक्र में रवाना हुआ।

रात पहर भर से कम बाकी थी और चन्ददेव भी अपने अनूठे स्थान से बाहर निकल कर इधर-उधर झाँकने लग गये थे। उदयसिंह अपने ख्यालों में डूबा हुआ आध कोस से ज्यादे दूर न गया होगा कि पीछे से एक आदमी ने आकर उसके मोढ़े पर हाथ रक्खा और उदयसिंह ने चौंककर उसकी तरफ देखा उस आदमी का तमाम बदन स्याह कपड़े से ढका हुआ था और चेहरे पर स्याह नकाब पड़ी हुई थी।

उदय – (तलवार के कब्जे पर हाथ रखकर) तुम कौन हो ?

नकाबपोश – एक मामूली आदमी।

उदय – हमसे क्या चाहते हो ?

नकाबपोश – कुछ भी नहीं।

उदय – फिर हमारे पास आकर हमें होशियार करने का सबब क्या है ?

नकाबपोश – मैं केवल इतना ही कहने के लिए आया हूँ कि यदि अपने दोस्त रविदत्त से मिलना चाहते हो तो मैं उससे मुलाकात करा सकता हूँ या तुम्हें उसके पास तक पहुंचा सकता हूँ।

उदय – कौन रविदत्त ?

नकाबपोश – जिसकी खोज में तुम परशान हो रहे हो !

उदय – मैं तो किसी रविदत्त को नहीं खोजता शायद तुम्हें धोखा हुआ हो या तुम किसी और की खोज में हा।

नकाबपोश – (जार से हस कर) बहुत खास ! मुझ कई बातों में धाखा ही धोखा हा कर रह गया ! हॉ ठीक बहुत अच्छा वह आदमी कोई दूसरा ही होगा जिसने अपने दोस्त के दो दुश्मनों को जख्मी करके जमीन पर गिरा दिया था वह कोई और ही होगा जिसने एक फौजी अफसर से बेहोश रविदत्त का हुलिया पूछा था 'खैर मुझे उसस क्या मतलब मैं क्यों जोर दकर तुम्हें कहूँ कि चल के रविदत्त से मिले और उसकी सहायता करे जाआ आनन्द करो मैं भी सलाम करता हूँ।

इतना कह कर नकाबपाश पीछ की तरफ लौटा पर दो ही चार कदम गया था कि कुछ सोच कर उदयसिह न उसे पुकारा और कहा 'सुनो सुनो, भागे क्यों जाते हो ?'

नकाबपाश – जब तुमसे और रविदत्त से कोइ वास्ता ही नहीं और तुम उदयसिह हा ही नहीं तो हम क्यों अपना काम हर्ज करके तुम्हारे पास खडे रहें।

उदय – अच्छा अच्छा बताआ रविदत्त कहॉ है ?

नकाबपाश – (जार स हॅस कर) क्या सहज ही कह दिया कि 'बताआ रविदत्त कहॉ है ? अजी मैं जा इस भयानक जगल में दौड़ता हुआ तुम्हारे पास आया हूँ आखिर इसका भी काई सबब है या नहीं ?

उदय – सा तो तुम ही कह सकत हो ?

नकाबपोश – नही नही सो तो तुम ही कह सकने हो कि रविदत्त का पता लगा देन के बदले में तुम मुझ क्या दाग ?

उदय – इस समय जो कुछ कीमती चीजें मर पास हैं वह सब तुम्हार हवाले कर दूगा।

नकाबपाश – इसक अतिरिक्त और कुछ भी दना हागा।

उदय – इस समय और मै क्या द सकता हूँ ?

नकाबपोश - इस समय नहीं ता समय मिलन पर दे सकते हा। मैं इस समय उसक बदल में एक हुण्डी लिख देना ही काफी समझूगा।

उदय –हॉ इस बात को मै मजूर करता हूँ।

नकाबपाश – अच्छा तो इस पत्थर की चटटान पर बैठ जाआ मर नौकर को आ लने दो।

उदय – बहुत अच्छा मैं बैठता हू।

इतना कहकर उदयसिह बैठ गये और उन्हीं के पास वह नकाबपोश भी बेठ गया। थाडी दर तक उदयसिह क मतलब की बातें कहकर नकाबपोश ने समय बिताया और इसके बाद उदयसिह को मालूम हुआ कि यह हमारी भलाई करने नहीं आया था जब कि पन्द्रह बीस आदमियों ने वहा पहुच उस चारों तरफ से घर लिया और उस नकाबपोश ने कहा अब आप ढाल-तलवार जमीन पर रख दीजिए।

चौथा बयान

यद्यपि उदयसिह नकाबपाश के फदे में फस गया और उसे कई आदमियों न आकर चारों तरफ से घेर लिया मगर इससे वह डर कर बदहवास नहीं हुआ और न उसने हिम्मत हारी क्योंकि वह बहादुर था और लडाई के फन में अपने को अनूठा समझता था। नकाबपाश के इस कहन पर कि अब आप ढाल-तलवार जमीन पर रख दीजिए उदयसिह उठ खड़ा हुआ और नेजा सम्हाल कर बोला, 'क्या इन थोडे से नामर्दों स डर कर मैं ढाल-तलवार रख दूगा ?

इस समय चन्द्रमा की राशनी दखूबी फैल चुकी थी और इस जगह जगली पड भी बहुत कम थे जिससे उदयसिह को लडाई में बहुत कुछ सुभीता हा सकता था। उदयसिह ने खडे होकर नजा घुमाना शुरू किया और ललकार कर कहा 'जिसको मेरे मुकाबले में आना हा, आवे और देखे कि मुझमें क्या करामात है।

उस नकाबपोश ने जिसने उदयसिह को धोखा दिया था अपने आदमियों को ललकार कर कहा 'हा दखना जाने न पावे जिस तरह हा सके जीता ही गिरफ्तार कर लो।

उदयसिह नजा चलान में बहुत ही तज और हाशियार था यद्यपि हाथ में नगी तलवार लिए हुए तीन आदमियों ने एक साथ उस पर हमला किया मगर उदय का कुछ भी न बिगडा बल्कि उदयसिह क नेजे की चोट खाकर एक दुश्मन जमीन पर गिर पडा और उस समय सभों ने एक साथ ही उदयसिह पर हमला कर दिया।

उदयसिह ने अपने दिल में निश्चय कर लिया था कि वह नकाबपोश जिसने उसको धोखा दिया था इन सभों का सर्दार है इसलिए जहाँ तक हो सके पहिले उसी को बेकाम करना चाहिये, साथ ही इसके उदयसिह को यह भी बहुत जल्द मालूम हो गया कि वह नकाबपोश अपने को सामना करन से बचाता है और अपने साथियों के पीछे ही रह कर काम

निकालना चाहता है, तथापि उदयसिह ने अपने विचार में किसी तरह की कमी न होने दी और नकाबपोश के पास पहुँचने की धुन में लगा ही रहा।

थोडी ही देर में उदयसिह ने अपने नेजे से तीन आदमियों को बेकाम करके जमीन पर गिरा दिया और उसी समय उसे नकाबपोश के पास जा पहुँचने का मौका भी मिल गया। जब नकाबपोश और उदयसिह का सामना हो गया तो उदयसिह ने नकाबपोश की छाती में एक नेजा ऐसा मारा कि वह पीठ की हड्डी फोड कर पार निकल गया और नकाबपोश वेदम होकर जमीन पर गिर पडा।

नकाबपोश के गिरते ही उसके मददगारों की हिम्मत टूट गई और वे मैदान खाली छोड कर भाग गये। उदयसिह ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और नकाबपोश का चेहरा खोल कर उसकी सूरत पर गौर करने लगा जो इस समय दम तोड रहा था। यद्यपि चन्द्रमा की रोशनी उसके चहरे पर वखूबी पड़ रही थी मगर उदयसिह उस किसी तरह भी पहिचान न सका और यह कह कर पीछे हट गया कि "मैने इसे आज के पहिले कभी नहीं देखा।'

इस लडाई में यद्यपि उदयसिह ने फतह पाई मगर उसके बदन पर भी कई जख्म लग चुके थे जिसमें से बहुत ज्यादे खून निकल जाने के कारण उसके सर में चक्कर सा आने लग गया। यह सोच कर कि यहा ठहरने से पुन किसी दुश्मन से मुकाबिला न हो जाय उदयसिह ने अपने को सम्हाला और वहाँ से तुरन्त एक तरफ को रवाना हो गया परन्तु उसमें ज्यादे दूर तक जाने की ताकत न थी इस लिए थोडी दूर जाकर एक पत्थर की चट्टान पर वैठ गया और फिर लेटन के साथ ही बेहोश हो गया।

पाँचवाँ बयान

दूसर दिन पहर भर दिन चढने क वाद जव उदयसिह होश में आया तो अपन पास अपन मित्र रविदत्त को वैठे पाया और यह भी देखा कि उसके (उदय के) जख्मों पर गीली पट्टी वँधी हुई है।

उदयसिह चौंक कर वैठा हुआ और अपने मित्र की तरफ देख कर वोला है तुम यहा कैसे आ पहुच ? यह आशा तो बिल्कुल न थी कि तुमसे इतनी जल्द मुलाकात होगी !

रविदत्त – बात भी एसी ही थी मैं स्वय आपक दर्शन की आशा स हाथ धो वैठा था मगर धन्यवाद है उस सर्वशक्तिमान जगदीश्वर को जिसन आशा क विरुद्ध एक अनूठ ढग से मुझे वचा लिया और पुन आपसे मिलने का मौका दिया।

उदय – कहो तो सही कि तुम किस मुसीवत में गिरफ्तार हो गय थ और क्योंकर यहा तक पहुचे ?

रविदत्त – मै अपना हाल वयान करने क पहिल आपका हाल सुनूगा मगर इस जगह न तो मैं कुछ सुनने के लिय तैयार हू और न कुछ कहने क लिये।

उदय – वेशक हमलोगों को यहा अटके न रहना चहिये मगर अब तो दिन का समय है।

रविदत्त – क्या हुआ अगर दिन का समय है तो मालूम होता है आपको अपन दुशमनों का हाल कुछ मालूम नहीं हुआ।

उदय – क्यों नहीं मालूम हुआ ? मै उन दानों को वखूवी जान गया जिन्होंने तुम्हें धोखा दिया था।

रविदत्त – उन्हें तो मै भी जानता हू, वही मुलेठी वाले न ?

उदय – हा हा व ही।

रविदत्त – मै खूव जान गया हू, मगर इस जगह न तो कुछ कहूगा और न कुछ सुनूगा आपमें यदि चलने की ताकत है तो उठिये या नहीं तो कहिये मैं कोई सवारी का वन्दोवस्त करू।

उदय – मै वखूवी चल सकता हूं मगर यह वताओ कि तुम मुझ कितनी दूर और कहा ले जाओगे ?

रविदत्त – वस मैं आध कोस स ज्याद दूर चलने की आपको तकलीफ न दूगा।

दानों मित्र वहा स उठ खडे हुए और आधे घटे तक सफर करने क वाद एक ऐसे स्थान में पहुच जहा घना जगल और जानवरों का भय रहने के कारण आदमियों का आना-जाना वहुत कम हो सकता था। उस जगह एक पुराने और टूटे हुए मकान का कुछ हिस्सा वचा हुआ मौजूद था। उदयसिह का साथ लिए हुए रविदत्त उसी टूट मकान (या खँडहर) के अन्दर घुस गया। जिसमें इस समय भी दो कोठरिया मजवूत और रहने योग्य वची हुई थी और उस खँडहर के पास ही स एक पानी का नाला पश्चिम से आकर पूरव की तरफ वहता हुआ चला गया था।

दानों मित्रों को मामूली कामों से छुट्टी पान और आराम का वन्दावस्त करने में दो घटे से कुछ ज्यादे वीत गए और इसके वाद एक साफ जगह पर बैठ कर यों वातचीत करने लग –

उदय – हा तो तुम हमस जुदा हो कर कहा गये और क्या हुआ ?

रविदत्त – सो नहीं पहिले अपना हाल कह जाइये तव मेरा हाल सुनिये।

उदय – एसा ही सही (अपना हाल खुलासा कहन के बाद) अच्छा अब तुम कहो।

रविदत्त – आपकी बातों से मालूम होता है कि हम दोनों आदमी इसी जगल में एक दूसरे को खोजते और भटकत रहे। मैं जब आपकी खोज में घूमता-घूमता थक गया तो एक पड के नीच जीनपोश बिछा कर बैठ गया और दर तक सोचता रहा कि अब क्या करना चहिये 'इसी बीच में एक औरत क चिल्लान की आवाज मरे कान में आइ और वह आवाज एसी ददनाक थी कि जिस सुनकर मैं बचैन हो गया और तुरन्त उठ कर उसी तरफ रवाना हुआ जिधर से आवाज आई थी। थोडी ही दर में पहुच कर देखा कि एक पड के नीचे नहायत हसीन और खूबसूरत औरत पडी है उसकी आखे बद थी और होंठ कुछ हिल रहे थे मानों कुछ कह रही थी। मैं अपना कान उसके मुँह के पास ल गया और जो कुछ सुना वह बड ही ताज्जुब की बात थी ! धीर-धीरे उसक मुँह से य शब्द मैन सुने कौन कहेगा गाविन्ददव के उदयसिह न मेरी जान ली चालाक औरङगजब का फिर भी उदय की याद वही उसी की याद हाय प्यारा उदय

उदयसिह – (ताज्जुब स कुछ बेचैन होकर) बशक ताज्जुब की बात तुमन सुनी 'उसकी सूरत-शक्ल कैसी थी ?

रविदत्त – बेशक वही औरत थी जैसे आपने देखा था। जब मैंन देखा तब भी वह दुनाली तमचा उसकी जेब में मौजूद था।

उदय – वही औरत थी ?

रविदत्त – बशक वही थी। आपने उसकी गर्दन में एक मसा भी शायद देखा

उदय – (बात काटकर) हॉ हॉ बेशक वही थी वह मसा ता मुझ कभी न भूलेगा। अच्छा तब क्या हुआ ?

रविदत्त– उसक बाद फिर कोई आवाज उसके मुँह से न निकली और मुझे वह बहाश हा गई सी जान पडी। मैंने सोचा कि यदि उसक चेहरे पर जल का छींटा दिया जाय तो कदाचित होश आ जाय। आखिर इसी ख्याल से जल लाने के लिए मैं नदी की तरफ गया और अपना पटूका तर करके ल आया मगर अफसोस कि लौट कर मैंन उस औरत का वहा न पाया। मुझ बडा ही ताज्जुब हुआ और मैं उसकी खाज में चारों तरफ घूमन लगा। उसी समय आपक सीटी की आवाज मैंने सुनी और सीटी ही में उसका जवाब दकर आपकी तरफ रवाना हुआ और थाडा ही दूर गया था कि यकायक फिर उसी औरत पर निगाह पडी जो कि सब्ज घास के ऊपर पडी हुई थी।

मैं विश्वास नहीं दिला सकता कि यह वही औरत थी क्योंकि उसका तमाम बदन सुफेद चादर स ढका था केवल एक हाथ और पैर का हिस्सा खुला हुआ था। मगर हाथों में वही साने के कड और स्याह चूडिया तथा उँगलियों में जडाऊ छल्ल दखन स मुझ निश्चय हा गया कि वही औरत हे और यह दखन के लिय कि कहीं यह मर ता नहीं गई या मारी ता नहीं गई जा उसके ऊपर सुफेद चादर डाल दी गई है मैं आपकी तरफ जान का ख्याल छाड उसी की तरफ बढा और बैठे-बैठाय आफत की टोकरी सर पर उठा ली।

जब वह औरत मुझस छ सात हाथ की दूरी पर रह गई और मैं उसक पास पहुँचना ही चाहता था कि घास स ढकी हुई पोली जमीन पर पैर पडा और मैं एक गडह के अन्दर चला गया।

शिकारी लाग जानवरों का फॅसान के लिये जिस तरह गडहा खोद कर ऊपर स घास-फूस बिछा के उसका मुँह बन्द कर दते हैं ठीक वैसा ही मामला वहा पर भी था। उस गडहे का मुँह इस तरह घास फूस से ढका हुआ था कि मुझे कुछ भी मालूम न हुआ और मैं उसक अन्दर चला गया इसके अतिरिक्त सध्या का समय भी था और कुछ अधकार सा भी हो रहा था।

मैं यह नहीं कह सकता कि वह गडहा तैयार किया गया था या पहिल ही का बना हुआ था मगर उसक नीचे मिट्टी कडी थी और मैं मुँह के बल गिरा भी था इसलिए मुझ चोट ज्यादे लगी और मैं बहोश हो गया। उसके बाद क्या हुआ इसकी खबर मुझ कुछ भी नहीं हा जब मुझे कई आदमी वहा से उठाकर दूसरी जगह ल चले तब मुझे होश आया और जरा सी आख खोल कर मैंने अपने दुश्मन को पहिचान लिया मगर कई बातों का ख्याल करके फिर उसी तरह आखें बन्द कर लीं। उसी समय मर दुश्मनों में से एक न कहा 'वही कपडा फिर उसके मुँह पर रख दो और चल चलो। बस मर मुँह पर एक गीला रुमाल रख दिया गया जिसमें किसी तरह की तेज महक बेहोशी पैदा करने वाली थी और मैं पुन बहाश हा गया। इसक बाद दीन-दुनिया की खबर कुछ भी न रही।

उदय – आखिर व लाग कौन थे जो तुम्हें वहाँ से उठा कर ले गए ?

रविदत्त – वे हमारे सिपाही लोग थे जा पीछ छूट गये थे और हम लोगों का खोजत हुए इत्तिफाक से वहा आ पहुच थे। उन्हीं की बदौलत मेरी जान बची और वे ही लोग मुझे उठाकर खँडहर में ले आए थ।

उदय – अगर वे लाग आ मिले थे तो उस समय जब मै हाश में आया तो तुम अकेल क्यों नजर पडे और वे लोग कहा हैं ?

रविदत्त – मैं उन लोगों के साथ ही आप लोगों को खोजने निकला था और जव आप वेहोशी की हालत में मिल गये तव मैने उन लागों का कई काम सुपुर्द करक इधर-उधर भेज दिया। कई तो छिपकर हम लोगों की हिफाजत कर रहे है और कइ औरगजेब के लश्कर में गये है और दा तीन आदमी दुश्मनों का दूढ रहे हैं। इस खँडहर क आस-पास भी एक दा आदमी जरूर होंगे। उस औरत के मुँह से आप का नाम सुनकर मुझे उसका पता लगाना आवश्यक हो गया मगर अव ता आपकी जुवानी मालूम हो गया कि वह ओरगजव के लश्कर में गई है शायद आप भी रामसिह वनकर वहा जाएहींगे।

उदय –जाऊगा मगर एक वात का ख्याल और भी

उदयसिह अपनी वात पूरी करने भी न पाए थे कि कई आदमी हाथ में नगी तलवार लिये हुए खडहर के अन्दर आते दिखाई पडे।

छठवां बयान

गरमी के दिर्नो में मुसाफिरों को रात का सफर कुछ अच्छा मालूम पडता है, तिस पर यदि रात चादनी हो और चित्त के अनुकूल सवारी हो तो फिर कहना ही क्या है? मगर एसे रास्ते से हाना चाहिए जहा डाकुओं का डर लुटरों का खौफ और बदमाशों का ख्याल न हो। आज यद्यपि चन्द्रदेव के दर्शन आधी रात के वाद होंगे परन्तु वेचारे टुटपूजिये तारे यह समझकर कि थोडी ही देर में हमारी चमक-दमक के साथ ही साथ कदर और रौनक भी जाती रहेगी, अपनी राशनी से दिल खालकर मुसाफिरों और राह चलतों को फायदा पहुचा रहे हैं। इस समय जिस आगर स दिल्ली जान वाली सडक पर हम अपने पाठकों का ले चलते हैं वह आजकल की तरह पक्की सडकों का मुकाविला करने वाली ता नहीं मगर पुरान जमाने की कच्ची सडकों में अच्छी समझे जाने लायक थी। उसके दानों तरफ वडे-वडे मैदान (चौर) थ जिनमें वरसाती पानी भरे रहन के कारण मौसम में धान की खेती के सिवाय कोसों तक और कुछ दिखाई नहीं देता था परन्तु आज उनमें एक पत्ती भी न हाने के कारण विचित्र सन्नाटा छाया हुआ है। यह जमाना भी (आजकल की तरह) सोना उछालत जाने की कहावत पूरी करने वाला नहीं वल्कि जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत पैदा करने वाला था। अच्छे-अच्छ जमींदार डाकुओं के मली वने हुए थे और लूट के माल के साथ ही साथ गरीव मुसाफिर का दु ख पहुचाने में भी एक भारी हिस्सा लेते थे।

इसी सडक पर हम एक पालकी जिस पर जरबफ्त *का पर्दा पडा हुआ था और जिसे वानाती पौशाक पहिरे हुए वत्तीस कहारों के अतिरिक्त दस-ग्यारह फौजी सवार अपनी हिफाजत में लिये हुए थे तजी के साथ दिल्ली की तरफ जाते हुए देख रह हैं।

इसी तरह बहुत दूर तक सफर करने के बाद कहारों ने एक जगह पालकी रख दी और दम लेने लग। उस समय हिफाजत करने वाले सवारों में से एक सवार जो कम उम्र और हर तरह से सभों का सर्दार मालूम होता था घोडे से उतरकर उस पालकी के पास गया और जरा सा पर्दा उठाकर बोला 'किसी चीज की जरूरत है? इसके जवाव में पालकी के अन्दर से एक नाजुक सी वारीक आवाज आई, "नहीं किसी चीज की जरूरत नहीं है मगर सुनो तो सही।

नि सन्देह इस पालकी के अन्दर एक कमसिन और खूवसूरत औरत थी मगर इस अँधरी रात में विना अच्छी तरह देखे-भाले हम उसकी खूवसूरती का वयान इस जगह नहीं कर सकते केवल उन दोनों की वातचीत लिखकर छोड देना उचित समझते हैं। उस औरत की यह वात कि मगर सुना तो सही सुनकर उस नौजवान ने पालकी का पदा उठाया और कहा 'कहो, क्या कहती हा?

औरत – क्या अभी कोइ गाव या कसबा हम लागों को नहीं मिलेगा?

नौजवान – मिलेगा क्यों नहीं मगर इस तरफ ता वडी दूर-दूर पर गाव मिलता है। चलते-चलते तवीयत घवडा गई कहार लोग भी परशान हो रहे हैं।

औरत – तवीयत क्या घवडा गई मेरा तो डर क मारे दम निकला जाता है घडी रात गये से इस समय तक हमलाग वरावर दौडादौड चले आ रहे हैं मगर अभी तक वस्ती या आवादी की बू तक नहीं मिली। किसी से पूछो तो सही।

नौजवान – पूछें किससे काई आदमी भी तो दिखाई नहीं दता।

औरत – क्या इन कहारों में से कोई भी नहीं जानता कि गाव कब और कहा मिलेगा?

नौजवान – कहारों से मैं पूछ चुका हू, उन बेचारों को इस तरफ की कुछ भी खवर नहीं है।

औरत – कहीं आग की राशनी या उजाला भी दिखाई नहीं देता?

नौजवान – कहीं नहीं चारों तरफ सन्नाटा मालूम पडता है बस्ती का निशान वताने वाले कुत्ते के भौंकने की भी आवाज सुनाई नहीं देती।

औरत – हे! है!! तब कैसे वनेगा? इस तरफ के डाकुओं का हाल सुन सुन के पहिले ही से मैं अधमुई हो रही थी अब तो और भी

*सोने-चाँदी के तारों से बना हुआ कपडा

नौजवान – नहीं कोई चिन्ता की बात नहीं है हम लाग अकले दुकेले तो है नहीं कि यकायक जिसका जी चाहेगा आकर लूट लगा इसक अलावे हम लोगों क पास और हर्ब तो हई हैं बन्दूकें भी भरी हुई तैयार हैं कोई तुम्हारी पालकी क पास फटकने तो पावहीगा नहीं।

औरत – अजी मुझ कुछ अपनी ही फिक्र थाडे ही है तुम्हारी जान भी ता प्यारी है, तो यहा सन्नाटे मैदान में खडे क्यों हो रहे हो ?

नौजवान – यहा दा कारणों से रुक जाना पडा एक तो पालकी के कहार बहुत थक गये है दूसर आग का रास्ता कुछ ज्यादे खराव और पथरीला मिलता जाता है इससे हम चाहत हैं कि चन्द्रमा निकल आवे तो आगे वढें।

औरत – हा यह बात तो ठीक है, चन्द्रमा निकल आवगा तो दूर का आदमी भी दिखाई दगा मगर चन्द्रमा कव निकलेगा ?

नौजवान – अव निकला ही चाहता है देखो वह आसमान की तरफ उजाला फैल रहा है।

इतन ही में एक तरफ से कुत्ते के भौकनें की आवाज आई और उसी तरफ आग की रोशनी देखकर वह औरत वोली–

औरत – देखो वह आग चमक रही है और उसी तरफ से कुत्ते के भौंकने की आवाज आती है वहॉ पर जरूर कोई गाव या वस्ती है।

नौजवान – हॉ है तो सही।

औरत – ता फिर उसी तरफ क्यों नहीं चले चलत ?

नौजवान – विना समझे बूझ सडक छाडकर मैदान की तरफ खत ही खेत जाना मुनासिब नहीं है कौन ठिकाना वहा जाकर हम लागों का आवादी की सूरत दिखाई न पडे और केवल किसी खेत अगोरने वाले की झापडी ही दखकर अफ़सोस करना पड।

औरत – इस सामने की तरफ खत में कुछ लगा ता है नहीं। इसी तरह दानों तरफ मैदान ही मैदान है तव अगारन वाल एसी जगह रहकर क्या करेंगे ? वहा जरूर काई गाव होगा।

नौजवान – अगर तुम्हारा कहना ठीक हो तो भी हम सडक छोडकर उस तरफ जाना मुनासिव नहीं समझते।

औरत – मै इस वारे में जोर नहीं द सकती जैसा मुनासिव समझो करो अगर रात इसी जगह विताने का इरादा है तो इसी जगह पालकी के पास ही कुछ विछाकर आराम से बैठो मेरा भी जी लगा रहेगा।

नौजवान – हॉ ऐसा ही करते हैं।

इतना कह कर नौजवान न पालकी का पर्दा छाड दिया और खड होकर एक कहार स अपने घाड का जीनपाश लाने के लिये कहा जब कहार जीनपोश ले आया तो नौजवान न उसे पालकी के पास जमीन पर विछा दिया और पर्दे का हिस्सा उठाकर पालकी के ऊपर फेंक दिया। मौका दखकर कहार लाग पालकी क दूसरी तरफ हट गये और पुन उन दोनों में यों वातचीत होने लगी –

औरत – क्या तुम्हें इतना भी नहीं मालूम कि हम लोगों को अब कितनी दूर जाने के वाद आराम मिलेगा ?

नौजवान – हा इतना तो हम कह सकते है कि अगर बादशाह की तरफ से हम लोगों का पीछा न किया गया ता पच्चीस कास का सफर और करन के बाद हम लोग एक ऐसे ठिकाने पर जा पहुचेगे जहा वर्षो आराम के साथ रहें और किसी को कानोंकान खबर न हो।

औरत – बादशाह का तो हमलोगों ने कुछ बिगाडा नहीं फिर उनकी तरफ से हमलोगों का पीछा क्यों किया जायेगा ?

नौजवान – हा हम लोगों ने तो कुछ बिगाडा नहीं है मगर उदयसिह की तरफ से बादशाह का दिल साफ नहीं है, उन्हें किसी ने विश्वास दिला दिया है कि उदयसिह औरगजेव का तरफ्दार है और

नौजवान अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि यकायक घोड़े के टापों की आवाज सुनकर चौंक पड़ा और बोला, "कोई सवार आता है।"

औरत – कोई डाकू या लुटेरों के साथियों में से न हो ?

नौजवान – डाकुओं और लुटेरों के साथियों में से अगर होता तो अकेला न होता और यह सवार जहा तक टापों की आवाज से मालूम होता है अकेला ही जान पड़ता है, देखो दम भर में मालूम ही हो जायेगा, अगर डाकुओं के साथियों में से होगा ता हम उसे साथियों को खबर करने के लिये लौटकर जाने न देगें।

इतना कहकर नौजवान उठ खड़ा हुआ, पालकी का पर्दा गिरा दिया और जीनपोश उठाए हुए पालकी के दूसरी तरफ आकर खड़ा हो गया। एक कहार ने उसके हाथ से जीनपोश लेकर उसके घोड़े की पीठ पर डाल दिया और सब उस सवार के आने का इन्तजार करने लगे।

थोडी ही देर में वह सवार भी वहा आ पहुचा और सभों को अच्छी तरह देख-भाल कर घोड़े से नीचे उतर पडा। एक सवार ने उससे पूछा, "तुम कौन हो ?

इसके जवाब में सवार ने कहा, ' पहिले यह बताओ कि सर्कार कहॉ है ? '

हमारे नौजवान ने उसकी आवाज पहिचान ली और उसे अपने पास बुला कर कहा, "कहो प्रतापसिह !तुम कैसे आए ? '

प्रताप – मैं आपको इस बात की इत्तिला देने आया हू कि आप लोगों के भागने की खबर बादशाह के कानों तक पहुच गई और उसने आप लोगों की गिरफ्तारी का हुक्म दे दिया है, अस्तु अब उचित है कि आप लोग सड़क ही सडक जाने का खयाल छोड़ के जगल और मैदान का रास्ता लीजिये और जिस तरह हो सके अपने को जुल्म के पजे से बचाइये।

नौजवान – खैर कोई चिन्ता नहीं, जब ईश्वर हमारा निगहबान है और हम ईश्वर की तरफ से निर्दोष है तो हमारा कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता मगर तुमने बहुत ही अच्छा और बड़े हिम्मत का काम किया कि इस बातकी इत्तिला करने यहॉ तक चले आए, इससे हम लोगों को बहुत फायदा पहुचेगा।

प्रताप – मैं क्यों न आता ? ऐसी खबर सुन कर भी मुझसे कब रुका जाता था ? उदयसिहजी का नमक ऐसा नहीं है जिसे मैं इस जन्म में भुला दूॅ और उसके प्यारों की इज्जत और हुर्मत का ख्याल न करूॅ।

नौजवान – शाबाश !शाबाश !!अब जो कुछ तुम्हारी राय होगी वही किया जायेगा। यह बताओ कि अब तुम लौट जाओगे या

प्रताप – मैं अब आप लोगों का साथ छोड़ कर कहीं नहीं जा सकता। कहारों को हुक्म दीजिये कि पालकी उठावें और सडक के नीचे उतर चलें।

यद्यपि पालकी के अन्दर बैठी हुई वह बेचारी कमसिन औरत प्रताप की सब बातें सुन रही थी तथापि नौजवान ने उसके पास जाकर सब हाल कहा और दिलासा देकर प्रताप के पास चला आया। हुक्म पाकर कहारों ने पालकी उठाई, नौजवान घोडे पर सवार हो गया। पालकी सडक के नीचे उतर कर खेत ही खेत रवाना हुई और सब हिफाजत करने वाले उसे घेर कर जाने लगे। इस समय चन्द्रदेव उदय होकर मुसाफिरों को अपनी रोशनी या चादनी से मदद पहुचाने लग गये थे।

सातवां बयान

सडक से उतर कर सवारी पुन तेजी के साथ रवाना हुई। अब चन्द्रमा की रोशनी चारो तरफ फैल चुकी थी इस लिय कहारों को खेत ही खेत चलने में भी विशेष तकलीफ नहीं होती थी। हमारा नौजवान और प्रतापसिह दोनों साथ ही साथ घोड़ा मिलाए जा रहे थे और उन दोनों में यों बातचीत होती जाती थी –

नौजवान – बादशाह को यह खबर कैसे लग गई ?

प्रताप – आजकल खबर लगना कौन बडी बात है ? चारो तरफ की चढाई के कारण दाराशिकोह को नींद तो आती नहीं। जब देखो तब जासूसों का बाजार गरम रहता है। इनाम पाने की उम्मीद में लोग चारो तरफ से तरह-तरह की खबरें लाकर उसे पहुचाया करते हैं और इस बात का कुछ भी खयाल नहीं करते कि झूठ-सच क्या है धर्म और अधर्म किसे कहते हे !बुरों के साथ ही साथ भलों को भी पीस डालना कैसी बुरी बात है इत्यादि सभी बातों को छोड झूठी-सच्ची खबरें पहुचा कर हाथ रगना लोगों का काम हो रहा है। एक तो स्वय दाराशिकोह की अक्लमन्दी का हाल आपको मालूम ही है, तिसपर आज कल के मामले ने तो उसे यहा तक चौकन्ना कर दिया है कि वह बैठे-बैठे हवा से भी इधर-उधर की खबरें पूछा करता है। किसी ने उसे यह भी कह दिया है कि उदयसिह छिपे-छिपे औरगजेब से जा मिले हैं, रविदत्त ने भी उन्हीं का साथ दिया है और उन्हीं की आज्ञानुसार ये लोग (अर्थात् आप लोग) भी भाग गये हैं। केवल इतना ही नहीं, न मालूम और भी क्या-क्या बातें लोगों ने कह दी हैं जिससे वह जल-भुन कर खाक हो रहा है। मैं भी उसकी तरफ से बेफिक्र नहीं था, मुझे भी उसके क्रोध का हाल तुरन्त ही मालूम हो गया और सुनने के साथ ही मैं इस तरफ रवाना हुआ।

नौजवान – तुमने बहुत अच्छा किया जो हम लोगों को इत्तिला कर दी नहीं तो सडक ही सडक जाने से ताज्जुब नहीं कि पीछा करने वाले हम लोगों को पा लेते परन्तु अब आशा है कि हम लोगों का पता किसी को मालूम न होगा और हम लोग हिफाजत के साथ अपने ठिकाने पर जा पहुचेंगे।

प्रताप – ठीक है इसके अतिरिक्त कदाचित कोई मिल भी गया तो शायद हमलोगों से लडने का साहस न करेगा, क्योंकि एक तो हम लोग पूरी हिफाजत के साथ हैं दूसरे शाहजादा साहब (दाराशिकोह) के हुक्म की तामील भी पूरी नहीं होती।

नौजवान – हा सो तो जरूर है क्योंकि नौकरों को दोनों तरफ के हुक्म का ख्याल रहता है दाराशिकोह कुछ और ही हुक्म देता है और बादशाह सलामत गुप्त रीति से उसे कुछ और ही समझा देते हैं।

प्रताप – दाराशिकोह अपने तीनों भाइयों का नाम तक मिटाने के लिए तैयार है मगर बादशाह की मुहब्बत नही चाहती कि उसके चारों लडकों में से एक भी मारा जाय। जसवन्तसिह और कासिमखा का हाल तो आपको मालूम हुआ ही होगा जिनको दाराशिकोह ने मुकाबले में भेजा है ?

नौजवान – हा सुना है कि बादशाह (शाहजहा) ने उन्हें गुप्त रीति पर कह दिया था कि जहा तक हो सके लडाई मत होने देना !

प्रताप – 'कासिमखा तो दाराशिकोह से रज भी रखता है मगर हमलोगों को अफसोस इस बात का है कि हमारे उदयसिहजी को लोगों ने व्यर्थ ही बदनाम कर रखा है।

नौजवान – जहा तक मै ख्याल करता हू यह हुक्म हुआ है सो खास बादशाह का हुक्म है या दाराशिकोह का ?

प्रताप – जहा तक मै ख्याल करता हू यह हुक्म सिर्फ दाराशिकोह की तरफ से है, बादशाह बेचारे को तो इन बातों की खबर भी न होगी, वह तो आज कल एक प्रकार स कैदी हो रहा है।

इसी प्रकार की बातें करते वे दोनों आदमी पालकी के साथ-साथ जा रहे थे सवारी खेत ही खेत जा रही थी और रास्ता बहुत ही खराब तथा ऊँचा-नीचा था इसलिए वे लोग 'बडी' मुश्किल से सफर तै कर रहे थे, चॉदनी रात का इन लोगों को बहुत कुछ सहारा था। इसी तरह पहर भर तक बराबर चले जाने के बाद कहारों ने कुछ देर तक दम लेने के लिए पालकी जमीन पर रख दी और इसी वजह से सवारों ने भी नौजवान की आज्ञानुसार थोडी देर के लिए घोडों की पीठ खाली की। नौजवान भी घोडे से नीचे उतर पडा और प्रताप से कुछ कहकर पालकी के पास आया और एक तरफ (जिधर निराला था)का पर्दा कुछ उठा कर पूछा, 'किसी चीज की जरूरत तो नहीं है ?'

औरत - नहीं,मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है मगर यह तो बताओ कि अब रात कितनी बाकी होगी ?

नौजवान - रात तो अभी दो घटे से कुछ ज्यादे ही होगी।

औरत – किसी तरह से सवेरा हो तो डाकुओं का खौफ दिल से निकले।

नौजवान – मुझे तो अब डाकुओं का कोई ख्याल नहीं रहा और बादशाह का भी कुछ ऐसा ख्याल नहीं हैक्योंकि हम लोग सडक से दूर हट आये हैं,इसके अतिरिक्त मालूम होता है कि यहा पास ही में कोई गाव भी है।

औरत – (कुछ खुश होकर) क्या कोई गाव मालूम पडता है ?

नौजवान – हा कुछ स्याही नजर आती है।

औरत – तो फिर यहा क्यों ठहर गये उसी गाव में चले चलना था।

नौजवान – गाव का पता लगाने के लिये मैंने प्रताप को भेजा है वह लौट कर आ जाय और निश्चय हो जाय कि पास में कोई गाव है तो अवश्य वहा चल कर ठहरेंगे।

इसके बाद उन दोनों में कुछ देर तक बातचीत होती रही और तब तक प्रताप भी लौट कर आ गया, नौजवान ने प्रताप के पास जाकर पूछा, क्यों क्या खबर है ?'

प्रताप – यहा से थोडी ही दूर पर बहुत बडा गाव है और उसके किनारे ही पर बहुत बडा शिवालय और सुन्दर पक्का कूआ है। शिवालय में हमलोगों के रहने लायक जगह भी काफी है।

नौजवान – तो बस अब देर करने की कोई जरूरत नहीं, सवारी उठाओ और उसी जगह चले चलो।

तुरन्त सवारी (पालकी)उठवाई गई और घडी भर के अन्दर ही सब कोई उस शिवालय के दर्वाजे पर जा पहुचे।

अभी वह जमाना नहीं आया था कि औरगजेब के हाथों से बडे बडे शिवालय और मन्दिर मटियामेट हो जाते। अभी तक भारतवर्ष के हर एक हिस्से में जगह-जगह हिन्दुओं के आराम और उपासना का स्थान मिल सकता था। इसीलिए यह मन्दिर भी यद्यपि एक मामूली गाव वालों की भक्ति और श्रद्धा का नमूना था तथापि इस योग्य था कि आए गए सौ-पचास परदसियों को आराम पहुचाता। इसके चारो तरफ एक मजिल की और सामने फाटक के ऊपर दो मजिल की पक्की इमारत बनी हुई थी जिसमें अमीर और गरीब हर तरह के मुसाफिर आराम पा सकते थे। इस समय उसमें बाहर से आए हुए केवल दस बारह मुसाफिर उतरे हुए थे मगर फाटक के ऊपर वाला कमरा बिल्कुल खाली था। इन सभों के वहा पहुचनें पर महन्थ ने दर्वाजा खुलवा दिया और कह दिया कि जहॉ तुम लोगों को आराम मिले डेरा डालो और जिस चीज की जरूरत या कमी हो मुझसे बेखटक माग लो और उसे ठाकुरजी का प्रसाद समझो।

महन्थ की यह असाधारण कृपा कुछ इन्हीं लोगों के लिये न थी बल्कि जितने मुसाफिर उस शिवालय में आया करते सभों के साथ ऐसा ही बर्ताव होता क्योंकि जिस गाव में यह मन्दिर या शिवाला था उस गाव की आमदनी (मालिकों की तरफ से)इस मन्दिर में इसी काम के लिये लगी हुई थी।

हमारे इन अनोखे मुसाफिरों ने जिस समय मन्दिर में डेरा डाला उस समय रात बहुत कम बाकी थी।पालकी में जो औरत सवार थी उसका डेरा फाटक के ऊपर वाले कमरे में पडा और उसी के दर्वाजे वाली एक कोठरी में नौजवान तथा

प्रताप ने डेरा जमाया बाकी लोगों ने उनकी आज्ञानुसार इधर-उधर रहने का बन्दोबस्त कर लिया। इन सभों का यह इरादा हो चुका था कि आज का दिन इसी मन्दिर में बिता कर सध्या होते ही यहा से रवाना हो जायगे।

सवेरा होने के साथ ही वे सब मुसाफिर अपनी-अपनी मजिल को रवाना हो गये जो इन लोगों के आने से पहिले ही उस मदिर में टिके हुए थे। हमारे मुसाफिरों ने भी स्नान-पूजा से छुट्टी पाई, मौका और आड़ का बन्दोबस्त हो जाने पर वह औरत जो पालकी पर सवार हो कर यहाँ आई थी नौजवान को साथ लेकर ठाकुर जी का दर्शन करने लगी।

वास्तव में इस एक मन्दिर के अन्दर दो मन्दिर थे, एक में शिव पचानन की मूर्ति थी और दूसरे में श्रीराम पञ्चायतन विराजमान थे। जिस समय यह औरत दर्शन करने गई उस समय महन्थ शिवजी की आरती कर रहा था आरती करके जब वह घूमा तब इस औरत पर महन्थ की निगाह और महन्थ पर इस औरत की निगाह जा पड़ी, दोनों ने एक दूसरे को ताज्जुब के साथ देखा। औरत बदहवास होकर पीछे की तरफ हट गई, उसका चेहरा जर्द पड गया और तमाम बदन थर-थर कापने लगा। महन्थ भी ऐसा घबराया कि वह जल्दी के साथ आरती जमीन पर न रख देता तो नि सन्देह वह उसके हाथ से छूट कर गिर पडती तिसपर भी महन्थ अपने को अच्छी तरह सम्हाल न सका और पूजा का कुछ हिस्सा अधूरा ही छोड मन्दिर के बाहर निकल कर अपनी कोठरी में चला गया।

इन दोनों की विचित्र हालत देख कर नौजवान को भी हद्द से ज्यादे ताज्जुब हुआ। यह तो उसेनिश्चयहो गया कि इन दोनों की देखा-देखी या विचित्र अवस्था के साथ प्रेम का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, मगर जो कुछ है वह क्या है? इसका पता लगाना चाहिये।

दर्शन करने के बाद जब वे दोनों अपने डेरे पर आए तब भी नौजवान ने उस औरत को घबराहट और परेशानी से खाली नहीं पाया। हा यह जरूर मालूम होता था कि वह औरत अपनी अवस्था ठीक करने की चेष्टा कर रही है, अस्तु थोडी ही देर में उसकी अवस्था ठीक हो गई और तब नौजवान ने उससे पूछा "जैसा कि पहिले निश्चय हो चुका है, दिन भर यहा रहने का इरादा है, या नहीं? अगर यहा से इसी समय रवाना हो जाने की इच्छा हो तो कहो तैयारी की जाय।'

औरत – यह तो निश्चय हो ही चुका है कि आज दिन भर यहा रह कर सध्या के समय रवाना होंगे फिर पुन पूछने का क्या सबब है? अभी तो किसी के खाने-पीने का भी कुछ बन्दोबस्त नहीं हुआ है।

नौजवान – मेरे पुन पूछने का सबब यही है कि यहाँ के महन्थ को देख कर तुम कुछ घबरा या डर गई थीं इसीलिये मुझे शक हुआ कि कहीं उस महन्थ ने तुम्हें पहिचान तो नहीं लिया या उससे तुम्हें किसी तरह का खौफ तो नहीं है?

औरत – नहीं उससे मुझे किसी तरह का खौफ नहीं है।

नौजवान – फिर तुम उसे देख कर डरीं क्यों?

औरत – (कुछ सोच कर) तुमने उसके चेहरे पर भी तो उस समय ध्यान दिया होगा।

नौजवान – हा वह तो तुमसे भी ज्यादे डरा और घबडाया हुआ मालूम पड़ता था। आखिर इसका कुछ सबब तो जरूर होगा।

औरत – इसका सबब थोडी ही देर में आप से आप तुम्हें मालूम हो जायेगा मगर

इतना कहने के साथ ही वह कुछ सोचने लगी और बाहर से प्रताप के बुलाने की आवाज आई। नौजवान बाहर चला गया और थोड़ी ही देर के बाद वापस आकर उस औरत से बोला, "महन्थ तुमसे मिलने के लिए आया है। प्रताप ने उससे कहा भी था कि तुम अन्दर कैसे जा सकोगे? इसके जवाब में उसने कहा कि 'सकेंगे और जायेंगे, तुम इत्तला करो।'

यह सदेसा सुन कर फिर उस औरत की वही दशा हो गई, चेहरे पर घबराहट की निशानी दिखाई देने लगी और वह उठ कर बिना कुछ जवाब दिये इधर-उधर टहलने लगी।

आठवां बयान

हाथ में नगी तलवारें लिये हुए जिन लोगों को खडहर के अन्दर आते हुए उदयसिह और रविदत्त ने देखा, वे लोग असल में दाराशिकोह की फौज के सिपाही थे और गिनती में दस थे। उन्हें खडहर के अन्दर इस ढग से आते देख रविदत्त और उदयसिह भी तलवार लेकर खड़े हो गये मगर तुरन्त ही मालूम हो गया कि वे लोग इन दोनों से लड़ने की नीयत नहीं रखते तथापि उन सभों में से एक ने आगे बढ़के उदयसिह से पूछा "क्या आप दोनों आदमी कृपा करके अपना नाम बता सकते है?"

उदय – मेरा नाम कृष्णसिह है और (रविदत्त की तरफ बता के) इनका नाम भानुदत्त है।

सिपाही – क्या आप लोगों ने इस जगल में उदयसिह को देखा? या उन्हें जानते है?

उदय – हा मैं उदयसिह को जानता हू मगर आप लोगों को उनसे क्या काम है?

सिपाही – मैं उनके नाम की एक चीठी लाया हू।

उदय – वह चीठी किसकी लिखी हुई है?

सिपाही – इसका जवाब मैं तब तक नहीं दे सकता जब तक मुझे यह न मालूम हो जाए कि आपको उदयसिह से कोई सम्बन्ध है या नहीं, अगर है तो क्या?

उदय – अस्तु इसी तरह मुझे भी मालूम हो जाना चाहिए कि आप लोग उदयसिह के विपक्षी हैं या ......

सिपाही – क्या आप इतना नहीं सोचते कि अगर हमलोग उनके दुश्मन होते तो उनके नाम की चिट्ठी लाते ?

उदय – दुश्मन के नाम की चिट्ठी या हुक्मनामा लाना क्या कोई पाप है ? खैर तुम लोग अगर हमारे दुश्मन भी होवो तो हम कुछ परवाह न करके साफ-साफ कह देते हैं कि उदयसिह मेरा ही नाम है।

सिपाही – (सलाम करके) मगर हमार मालिक की यही आज्ञा है कि तुम किसी की बात पर विश्वास न करना और उदयसिह का परिचय लेकर तब पत्र देना। परिचय में उन्होंने "मामा का शब्द कहा था।

उदय – (प्रसन्न हो कर) अच्छा तो मेरी तरफ से ' पूर्ण ' शब्द उसके उत्तर में समझ लो और अब चाहे अपने मालिक का नाम न भी बताओ मगर मुझे मालूम हो गया कि तुम लोगों को जसवन्तसिहजी ने भेजा है।

सिपाही – (पुन सलाम करके और एक पत्र उनकी तरफ बढा के) नि सन्देह ऐसा ही है अस्तु यह पत्र लीजिये और इसका उत्तर शीघ्र ही दीजिये।

उदयसिह ने सिपाही के हाथ स पत्र लिया और खोलकर पढा। पढने के साथ ही भृकुटी चढ गई आखों में अन्दाज से ज्यादे सुर्खी दिखाई देने लगी और ओठों की फडकन ने साफ बता दिया कि उदयसिह इस समय क्रोध के वश में हो रहे हैं। पत्र पढ कर उदयसिह ने रविदत्त के हाथ में दिया और उसे पढने के बाद रविदत्त की भी वही अवस्था हुई। उदय – (सिपाही से) कोई चिन्ता नहीं परन्तु पत्र का उत्तर कैसे दिया जाय ? क्योंकि हम लागों के पास लिखने का कोई सामान नहीं है।

सिपाही – मैं कलम, दवात और कागज अपने साथ लाया हू।

यह कह कर सिपाही ने कलम, दवात और कागज उदयसिह के सामने रख दिया और उन्होंने उस पत्र का जवाब लिख कर सिपाही के हवाले किया और इसके बाद वह पत्र जो सिपाही लाया था फाड कर फेंक दिया। सिपाहियों ने जगल का रास्ता लिया और रविदत्त तथा उदयसिह में बातें होने लगीं।

नौवां बयान

सूर्य भगवान अस्त हो चुके हैं और पल-पल में बढने वाली अधियारी चारों तरफ अपना दखल जमा रही है। उदयसिह और रविदत्त भेष बदले हुए औरगजेब के लश्कर में घूम रहे हैं। इस समय उन दोनों के बदन पर जो पौशाक है उसके विषय में इतना ही कह सकते हैं कि इसके पहिले जब इन दोनों को हमने देखा था तब उनके पास इन कपडों का नामो-निशान भी न था मगर यह नहीं कह सकते कि ये कपड़े इन दोनों को कब कहा से और क्योंकर मिले। दोनों की पौशाक सादी और सिपाहियाना ढग की थी और हर्बो की किस्म में से केवल ढाल-तलवार उनके पास थी और वे दोनों बडी वेफिकी के साथ सैर करते हुए उस तरफ जा रहे थ जिधर सर्दारों के बडे-बडे खेमे खड़े थे और आशा करते थे कि मरथसिह का खेमा भी उसी तरफ होगा।

थोडी ही देर बाद उन दोनों को मालूम हो गया कि यद्यपि यहा किसी ने किसी तरह की रोक-टोक नहीं की मगर दो तीन आदमी गुप्त रीति से उनका पीछा किये हुए हैं अस्तु वे दोनों भी रुके और लौट कर उन्हीं लोगों से रविदत्त ने पूछा कि 'मरथसिह का डेरा कहाँ है'?

एक – आप कहा के रहने वाल हैं और भरतसिह को क्यों खोजते हैं।

रवि – उनस मिलन की जरूरत है।

वही – क्या आप लाग अपना नाम बता सकते हैं ?

रवि – हाँ हाँ (उदयसिह की तरफ वता कर)इनका नाम रामसिह है।

रामसिह नाम सुनते ही उसने झुक कर सलाम किया और कहा, "आप मेरे साथ-साथ चले आवें मैं आपको भरतसिह जी के पास ले चलता हूँ '। उदयसिह और रविदत्त उसके पीछे-पीछे रवाना हुए और चक्कर देते हुए थोड़ी ही देर में भरतसिह के खेमे के दर्वाजे पर पहुचे। उसी आदमी ने अन्दर जाकर भरतसिह को इत्तिला दी और वह स्वय आकर वडी खातिर से उन दोनों को खेमे के अन्दर ले गय और इसके बाद भी वह आदमी भी किसी तरह चला गया जिसके साथ य दोनों यहा तक आये थे।

खमे के अन्दर बिल्कुल सन्नाटा था अथात् सिवाय भरतसिह के कोइ दूसरा आदमी वहाँ न था। जमीन वहाँ की सिर्फ एक दरी से ढकी हुई थी और पिछले भाग में एक छाटा सा फर्श बिछा हुआ था। इधर-उधर वहुत स हर्वे पडे थे और फर्श के पास छाटी सी चोकी पर बहुत से लिख और साद कागज तथा लिखने का सामान भी मौजूद था।

भरतसिह ने दानों को अपने पास ही फर्श पर वैठाया और बातचीत हाने लगी -

भरत – (रविदत्त की तरफ वता कर) इनका नाम शायद रविदत्त है। उदय – जी हाँ।

भरत – मैं कल तक आपके आने का इन्तजार करक नाउम्मीद हा चुका था।

उदय – ठीक है मगर मैं कइ एसी आफतों में फँस गया कि आ न सका। वताइये उस औरत का क्या हाल है ?

भरत–बुरा हाल है। **उदय**–वह है किस जगह पर ?

भरत – खास औरगजव के खम के वगल ही म छाट से खमे क अन्दर।

उदय – उसके चारो तरफ सख्त पहरा पड़ता होगा ?

भरत – वेशक।

उदय – क्या आप वता सकते है कि वह कहॉ की रहने वाली है और उसका नाम क्या है ?

भरत – (मुस्करा कर) क्या वास्तव में आप उसे नहीं जानत ?

उदय – विल्कुल नहीं।

भरत – उसने तो आप ही का नाम लेकर औरगजव के गुस्से का वढा दिया था।

उदय – (ताज्जुव से) मेरा नाम ले कर !!

भरत - जी हा और इसी स उस मै समझता था कि आप उस जरूर जानत होंग।

उदय – जी नहीं, मै उसे विल्कुल नहीं जानता केवल आपकी आज्ञानुसार यहा आया हू और अव जिस तरह आप कहें उसी तरह करने के लिए तैयार हूँ।

भरत – शायद ऐसा ही हो अस्तु मुझे किसी तरह का वास्ता न होने पर भी उस पर दया आती है और मै उस इस आफत से छुड़ाने की फिक्र में हूँ।

उदय – आप क वादशाह ने उसे कैद क्यों कर रक्खा है ?

भरत – केवल मुरादवख्श की प्रसन्नता के लिये। एक ता वह पहिले ही एयाशी के नश में चूर हा रहा था दूसरे औरगजेव दिन-दूनी-रात चौगनी उसकी ऐयाशी को तरक्की द रहा है, सच तो यों है कि खास शाह साहव बन कर लागों को धाखा दने वाले औरगजेव की चालाकियों का कुछ पता नहीं लगता और इसका भी भद नहीं खुलता कि इस वचारी औरत को मुराद की नजर करने में औरगजेव ने क्या फायदा सोचा है। इसके अतिरिक्त कल तो मुझ यह भी आशा थी कि इस होने वाली घमासान लडाई का माका उस औरत को छुड़ा देन के लिए वहुत ही अच्छा होगा मगर आज उसकी आशा जाती रही क्योकि इस लडाई में औरगजेव फतह पावेगा, यह निश्चय हो गया।

उदय – (वात काटकर) सो कैस ?

भरत – (धीरे स)दाराशिकाह की फौज का अफसर कासिमखा मिला लिया गया और वह दाराशिकोह से कुछ रज भी था मगर वादशाह (शाहजहा) की आज्ञा का पालन करने के लिए चला आया है।

उदय – ठीक है मगर उस फौज का दूसरा अफसर जसवन्तसिह एसा नहीं है जा अपन धर्म में वट्टा लगा कर औरगजव से मिल जाय।

भरत – वेशक ऐसा ही है मगर जव उसका साथी ही वईमान हा रहा तव वह क्या स्वय धोखे में नहीं पड सकता ?

उदय – अस्तु जो हा आखिर आपने उसके छुडाने के लिये कोइ तदवीर तो सोची ही होगी।

भरत – हा

भरतसिह और कुछ कहा ही चाहता था कि उसका एक खैरखाह सिपाही खेम के अन्दर आता हुआ दिखाइ दिया जिस पर निगाह पडते ही भरतसिह ने चौंक कर पूछा "क्यों कुशल तो है !"

सिपाही – मै ठीक नहीं कह सकता कि कुशल है या नहीं मगर इस कुसमय की वुलाहट का कुछ न कुछ सवव तो जरूर है ?

भरत – क्या वादशाह ने मुझे तलव किया है ?

सिपाही – केवल आपही को नहीं वल्कि (उदय की तरफ वता कर) इनको भी तलव किया है।

भरत - (ताज्जुव से) इनसे क्या मतलव था ?

सिपाही – सो ईश्वर जाने। यदि आज्ञा हो तो उस चोवदार को हाजिर करूँ जो तलवी का परवाना वनकर आया है।

भरत – (कुछ सोच कर) खैर उसे मरे पास भेजो।

इतना सुन कर वह सिपाही खेमे के वाहर चला गया और थोडी ही देर वाद चोबदार को साथ लिये हुए पुन खेमे के अन्दर आया। चोबदार न भरतसिह को एक मामूली सलाम करके कहा खुदवदौलत (औरङ्गजेव)ने आपका तलव फर्माया है और यह भी हुक्म दिया है कि आप अपने नये मेहमान को भी जिसने अपना नाम रामसिह वताया हे साथ लेते आवें।

भरत – बहुत अच्छा मै वहुत जल्द हाजिर होता हूँ।

सिपाही – मुझे अपने साथ लाने के लिए हुक्म हुआ है खैर कोई हर्ज नहीं तव तक वाहर खडा हूँ आप वातें कर लें।

इतना कहकर चोवदार वाहर चला गया और भरतसिह ने उदयसिह की तरफ देख के कहा "यह वहुत ही बुरा हुआ मै नहीं जानता कि औरगजेव को आप लोगों के वारे मे किस तरह का शक हुआ है। (कुछ रुक कर और किसी तरह की आहट पाकर)दखिये मालूम होता है कि वहुत से फौजी सिपाहियो ने हमारा खमा घेर लिया है।

दसवां बयान

महन्थ के आन की खबर सुनकर उस औरत का पुन उस तरह घवरा जाना और विना कुछ जवाब दिये उठ कर इधर-उधर घूनना और अपनी तवीयत को सम्भालने की कोशिश करना नौजवान का ताज्जुव में डालने के लिये मामूली वात न थी अस्तु उसन रुकती हुई आवाज में पुन उस औरत से कहा 'यदि कहा ता महन्थ को साफ-साफ जवाव द दिया जाय और कह दिया जाय कि पुन मुलाकात नहीं हो सकती। उसकी मजाल नहीं कि विना हमारी आज्ञा चौकठ क अन्दर पैर रख सके।

औरत – नहीं नहीं अगर वह आ गया है ता उसको राकना मुनासिव न होगा।

नौजवान – और शायद उसस किसी किस्म के पर्दे की भी जरूरत न होगी।

औरत – ठीक है पर्दे की भी कोई जरूरत नहीं है। तुम उसे अपन साथ लिवा लाआ मगर इस बात का ध्यान रखना कि वह अपन साथ किसी तरह का हर्बा न लाने पावे और जव तक वह मरे पास वैठा रह तुम भी मेरे पास हिफाजत के लिय मौजूद रहो।

नौजवान – जव तुम्हारे दिल में उसका इतना वडा डर वना हुआ है तो उसे अपने पास लाने के लिये क्यों कहती हो ?

औरत – अफसास है कि मै मिलने से इनकार नहीं कर सकती साथ ही इसके जितना उससे डरती हू उतना ही वह भी मुझसे डरता है। खैर तुम उसे यहा तक लाओ ता सही।

औरत की वातों न नौजवान के ताज्जुव को और भी वढा दिया तरह-तरह की बातें साचता हुआ वह कमरे के वाहर आया और जव महन्थ के पास पहुचा तो उसे भी तरद्दुद घवराहट और परेशानी क साथ टहलते हुए पाया। नौजवान न महन्थ स पूछा कि आप क्या चाहते है ? इसक जवाव में महन्थ न कहा कि मै उस औरत स मिला चाहता हू जिसक साथ आप आये हैं।

नौजवान – क्या आप वता सकत है कि आप को उनसे मिलने की जरूरत क्यों पडी ?

महन्थ – अफसास है कि मैं इसका सवव वयान नहीं कर सकता।

नौजवान – अच्छा ता मै आपका अपने साथ उनके पास ल चलता हू मगर आपको इस बात की तलाशी दे देनी हागी कि आपके पास किसी तरह का हर्वा नहीं है।

महन्थ – हा आपको मैं तलाशी ल लने का अख्तियार देता हू और अपने हाथ की यह छडी भी वाहर ही रख देता हू।

नौजवान – अच्छी वात है मैं भी आपको ले चलने के लिय तैयार हू।

इतना कह नौजवान न महन्थ की तलाशी लेकर अपनी दिलजमई कर ली और उसे अपन साथ लिये हुए उस औरत के पास चला आया। औरत ने जा एक छोटी सी दरी पर बैठी हुई थी अपने स थोडी दूर पर विछे हुए एक कम्बल की तरफ इशारा करक महन्थ का वैठने के लिये कहा और महन्थ भी विना कुछ कह उस कम्वल पर वैठ गया।

औरत – (महन्थ से) कहिय आप मुझसे क्या कहा चाहते हैं ?

महन्थ – मैं जा कुछ कहा चाहता हू वह एसी वात नहीं है कि कोई तीसरा सुन सके।

औरत – (नौजवान की तरफ इशारा करके) मैं इस समय इनकी हिफाजत में हू इन्ह मुझ अकेला छोडने न छोडने का अख्तियार है। अगर यह यहा से चले जायें तो मुझे किसी तरह का उज्र नहीं हो सकता।

महन्थ – (नौजवान स) क्या आप आधी घडी क लिय वाहर जा सकते है ?

नौजवान – हर्गिज नहीं ! क्योंकि मुझमें वादशाह का हुक्म टालने की हिम्मत नहीं है।

महन्थ – कौन वादशाह ? शाहजहॉ या दाराशिकाह ?

नौजवान – मरा मतलव शाहजहॉ स है।

महन्थ – ठीक है, क्योंकि दाराशिकोह न तो इनकी गिरफ्तारी का पर्वाना ही जारी किया है।

नौजवान – मुझ इस वात की खवर नहीं है कि गिरफ्तारी का पर्वाना कव और क्यों जारी हुआ।

महन्थ – ठीक है मगर मै समझता था कि प्रताप आपके पास यही खवर लकर आया होगा क्योंकि जब आप लोग घर से चले हैं तो प्रताप आपके साथ में न था।

नौजवान – मैं नहीं जानता था कि आप इस मन्दिर की महन्थी करते हैं या दाराशिकोह की जासूसी !!

इस बात का जवाव महन्थ ने तो कुछ भी न दिया मगर उसी औरत ने नौजवान की तरफ देखकर कहा अगर इन्होंने जासूसी का कोई काम किया तो यह कोई नई और ताज्जुव की वात नहीं है बल्कि ताज्जुव की कोई वात है तो यह

है कि ये यहा के महन्थ बन हुए दिखाई देते है। क्या आपको बड़ी शाहजादी साहबा का हाल मालूम नहीं जिव कि वह

महन्थ – (औरत का बोलने से रोककर) बस बस ! बस !! मुझे यह आशा न थी कि तुम उन बातों का जिक्र किसी तीसरे के सामने छेड़ोगी !!

औरत – (कुछ क्रोध में आकर) मगर लाचार हू कि तुम अपना रोब जमाने के लिये एक अनूठे ही ढग पर चल रहे हो और दाराशिकोह के नाम की धमकी दिया चाहते हो।

महन्थ – तो क्या मैंने कुछ झूठ कहा था ?

औरत – मेरी भी तो सुन लेते कि मै झूठ कहती हू या सच !!

महन्थ – मगर मेरे कहने का मतलब किसी भेद खोलने से न था।

औरत – अगर था तो केवल धमकाने का !!

महन्थ – शायद तुम नहीं जानती थीं कि गद्दी मे कितने आदमियों पर हुकूमत कर रहा हूं।

औरत – इसके जानने की मुझे कोई जरूरत भी नहीं है क्योंकि तुम्हारी हुकूमत का झण्डा बात की बात में गिरा देने वाला वह औजार अभी तक मेरे पास मौजूद है जिसे लोग तस्वीर के नाम से भी पुकार सकते हैं और जिस पर बादशाह की मोहर भी मौजूद है। अभी थोड़ी देर हुई है जब मैंने कई बातें समझाकर वह लिफाफा प्रताप के हाथ में दे दिया है।

महन्थ – (कुछ डरी हुई आवाज से) खैर अब मालूम हुआ कि तुम यहा तक मेरा बन्दोबस्त कर चुकी हो और प्रताप को भी इस भेद में शरीक कर चुकी हो !मगर याद रहे कि महन्थ की चाबुक सवारी भी कोई मामूली बात नहीं है जैसा रास्ता तुम पकड़ोगी वैसी ही चाल मुझे भी चलनी पड़ेगी।

औरत – इस बात का खयाल तो दोनों ही तरफ होना चाहिये।

महन्थ – अब तो मैं भी पूछ सकता हूं कि पहिले कारवाई किस तरफ से शुरू हुई ?

औरत – कारवाई नहीं इसे बचाव का ढग कहिये।

महन्थ – खैर तो अब मैं कह देता हूं कि इन सब बातों का कोई जरूरत नहीं, जब तक तुम्हारी इच्छा हो यहा रहो और जब इच्छा हो चली जाओ मेरी तरफ से किसी बात का खयाल न करो।

औरत – तुम्हारी बातों पर विश्वास करना मुझे पसद नहीं अब अगर कुछ पसन्द है तो यही कि इसी समय मैं यहा से कूच कर जाऊ और जब तक सूर्य अस्त न हो तुम्हें भी अपनी पालकी के संग दौड़ाऊं और सध्या हो जाने पर कहूं कि अब तुम अपने मन्दिर की तरफ लौट जाओ।

महन्थ – (कापकर) नहीं नहीं ऐसा खयाल भी अपने दिल मे न लाना इसमें मेरी बड़ी बेइज्जती होगी।

औरत – आखिर मैं कर ही क्या सकती हूं, तुम्हारी चालबाजियों ने मुझे इस लायक नहीं रक्खा कि मैं तुम्हारी बातों पर भरोसा करूं।

महन्थ – अगर ऐसा करोगी तो लाचार होकर तुम्हारी गिरफ्तारी का हुक्म देना पड़ेगा।

औरत – कोई चिन्ता नहीं मगर समझ रहना कि उसके बदले तुम्हारे लिए भी फासी का हुक्म मौजूद है और साथ ही इसके यह भी ख्याल रखना कि मुझे अपनी जान उतनी प्यारी नहीं है जितनी तुम्हें तुम्हारी।

महन्थ – (गुस्से से) तुम बात हो बात बहुत बढ़ी जा रही हो और इस बात को भूल रही हो कि मै कौन हूं।

औरत – अगर इस बात का शक हो कि मैं तुम्हें भूल गई तो कहो मैं तुम्हारी पिछली बातें याद दिलाऊं।

महन्थ – तो क्या मैं ऐसा नहीं कर सकता ?

औरत – खैर तो जो तुमसे बन तुम करना और जो मुझसे हो सकेगा मैं करूंगी समझ लूंगी कि मेरा सफर यहीं तक पूरा हो गया है।

महन्थ – फिर इसके सिवाय नुकसान के फायदा ही क्या है ?

औरत – अगर मुझे नहीं तो (नौजवान की तरफ बताकर) इन्हें फायदा जरूर होगा और सच तो यों है कि प्रताप भी अपनी माँ के ऋण से उऋण हो जाएगा।

महन्थ – (घबराहट के साथ ही साथ झुझलाकर) फिर तुम उसी रास्ते पर चलने लगी ?

औरत – लाचारी है, इसके सिवाय बचाव के लिए और कर भी क्या सकती हूं।

महन्थ – तो तुम्हें नुकसान ही कौन पहुचा रहा है ?

औरत – आखिर तुम क्या ठाकुरजी का प्रसाद लेकर मेरे पास आए हो ?

महन्थ – (अपने क्रोध को रोककर) अच्छा तो मैं जाता हूं।

औरत – जाओ मगर इस बात को याद रक्खो कि आध घन्टे के अन्दर ही तुम्हें मेरे साथ चलने के लिए तैयार हो जाना पड़ेगा मैं वादा करती हू कि सूर्य अस्त होने के घटे भर पहिले ही तुम्हें यहा लौट आने के लिए छोड़ दूँगी।

महन्थ – ऐसा तो नहीं हो सकेगा।

औरत – होगा और ऐसा ही होगा।

महन्थ – (क्राध स दात पीस कर)तो क्या मुझे जसवन्तसिह की मतीजी के लिये तामदान की सवारी का बन्दोबस्त करना हीं पडेगा ? और क्या पुन उदयपुर जाने की नौबत आवेगी ?

महन्थ की यह आखिरी बात सुनकर उस औरत का चेहरा मार क्रोध के लाल हो गया और उसके नाजुक होंठ कापने और दातों के नीचे जाने लगे। उसने जमीन पर पैर पटक करके कहा, आखिर यह क्या बात है ? क्या तुम्हें अभी विश्वास नहीं हुआ कि आज मैं मरने के लिये तैयार हो चुकी हू मगर एक सत्पुरुष के खानदान भर की आत्मा को दु खी न करुगी ?' इतना कह कर वह औरत उठी और उस तरफ बढी जिधर उसका विछावन और असबाब रक्खा हुआ था। जवरात की एक छोटी सी सन्दूकडी लाल कपडे में बधी हुई उसी जगह रक्खी थी जिस वह उठा लाई और नौजवान की तरफ बढाकर तथा महन्थ की तरफ देखती हुई बोली, अगर कुछ प्रताप के पास है तो कुछ इसमें भी है।'

अब महन्थ अपने रज को बर्दाश्त न कर सका, घबराहट क साथ उठ खडा हुआ और उस औरत की तरफ देखता हुआ बोला, अच्छा अच्छा मैं तुम्हारे साथ जहा तक कहो चलने के लिये तैयार हू, इन गडे मुर्दो को उखाडने से फायदा ही क्या है ?

औरत – मुझे ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है, अगर तुम चलने के लिए तैयार हो तो मैं भी यहा ठहरना पसन्द नहीं करती। मेरे साथी लोग यहा नहीं तो आगे चलकर कुछ खा ही लेंगे।

महन्थ – मैं प्रसाद भेज देता हू तुम खा-पी कर निश्चिन्त हो जाओ तब तक मैं भी भोजन कर लेता हू।

औरत – (ताने के तौर पर)जी अपना प्रसाद आप उठा रखिये, किसी बडे खानदान के काम आवेगा।

इस बात ने महन्थ के बदन में पुन कपकपी पैदा कर दी और वह खून भरी आखों से उस औरत की तरफ देखता हुआ कमरे के बाहर निकल आया।

इन दोनों की बातों ने हमारे नौजवान क दिल पर क्या असर किया सो वही जानता हागा मगर इतना जरूर है कि वह ताज्जुब के साथ उन दोनों की बातें सुनता और उस पर गौर करता रहा मगर असली तत्त्व समझ में न आया। आदमी बुद्धिमान था इसलिए बेमौके कुछ बालने या पूछने का इरादा भी न किया। जब महन्थ कमरे के बाहर चला गया और वह भी उसे सीढियों तक पहुचा आया ता उस औरत से बोला मैं अफसोस करता हू कि यहा आने के सबब तुम्हें एक तरफ की तकलीफ उठानी पडी।

औरत – कोई चिन्ता नहीं, बल्कि एक तौर पर अच्छा ही हुआ। हम दोनों की बातें सुनकर तुम ताज्जुब करते होगे मगर निश्चय रक्खा कि मैं इन भेदों को तुमसे छिपा न रक्खूगी क्योंकि इस भेद से और तुम से तथा प्रताप से बहुत बडा सबध है। अब तुम जहा तक जल्द हो सके कूच की तैयारी कर दो महन्थ अवश्य हम लोगों के साथ चलेगा और रास्ते में तुम्हें दिखाऊगी कि यह कोई मामूली आदमी नहीं है।

नौजवान "बहुत अच्छा कह कर कमरे के बाहर हो गया और थोडी ही देर में कूच का सामान ठीक कर दिया। दोपहर होने के पहिले ही इन लागों का डेरा कूच हो गया और महन्थ भी एक घोडे पर सवार नौजवान के साथ ही साथ जाता हुआ दिखाई देने लगा।

ग्यारहवां बयान

महन्थ के विषय में नौजवान का दिल तरद्दुद से खाली न था उसने जो कुछ दखा सुना था वह प्रताप से बयान किया और प्रताप नौजवान से भी ज्यादे सोच विचार और तरद्दुद में पड गया।

जब उन लोगों का डेरा कूच हुआ था दिन दो पहर से ज्यादे बाकी था और सूर्य भगवान किरणों द्वारा मानों अगारे उगल रहे थे। सवारी की कैफियत यह थी कि आगे आठ सवार, उसके पीछे पालकी और पालकी के पीछे बचे हुए सवार तथा कहारों की भीड थी। पालकी के बाई तरफ प्रताप और दाहिनी तरफ नौजवान अपने साथ ही साथ महन्थ को लिय जाता था। पहर भर से कुछ ज्यादे देर तक इसी तरह पर सफर जारी रहा और इस बीच किसी से किसी की बातचीत नहीं हुई मगर जब पहर भर दिन बाकी रह गया तब महन्थ न नौजवान से कहा 'हमलोग बहुत दूर निकल आये है अगर अब भी मुझे छुट्टी मिल जाती तो दिन रहते रहते अपने ठिकाने पहुच जाता नहीं तो रात हो जायेगी और रास्ते में सख्त तकलीफ होगी।'

नौजवान – मैं इस विषय में कुछ भी नहीं कह सकता हा थोडी देर में दम लेने के लिए कहार लोग पालकी उतारेंगे तब मैं बेशक पूछ कर कुछ कह सकता हू।

महन्थ – अगर आप चाहें तो इस समय भी पूछ सकत हैं।

नौजवान – हा मगर उसी तरह जिस तरह आप चाहें तो बिना पूछे इसी समय लौट जा सकते हैं।

महन्थ – नही नहीं, मुझमें और आप में बहुत बडा फर्क है जब मैं अपने घर में था जहा मेरी हुकूमत थी तब तो मैं साथ आने से इनकार कर ही नहीं सका और अब जब मैं अकेला आप लोगों के कब्जे में हू तब क्योंकर लौटने का इरादा कर सकता हू ?

नौजवान – खैर थाडी देर और सब्र कीजिए कोई बाग या ठिकाने का कूआ आ जाय तो मैं सवारी रुकवा कर आप के बारे में दरियाफ्त करता हू, मगर वे तो आप से पहिले कह चुकी थी कि 'सूर्य' अस्त होने के घट भर पहिले तुम्हें छोड दूँगी ।

महन्थ – ठीक है मगर आप चाहें तो जल्द छुट्टी दिला सकते है असल तो यों है कि मुझ पर व्यर्थ अत्याचार हो रहा है ।

नौजवान – (मुस्कुरा कर) व्यर्थ ! तो आप चले क्यों नहीं जाते ?

महन्थ – यह मेरी भलमनसी है । क्या उन्होंने मेरे विषय में आप से कुछ कहा था ?

नौजवान - बहुत कुछ कहा था बल्कि यों कहना चाहिये कि आपके सम्बन्ध की सभी बातें कही हैं ।

महन्थ – केवल आपही से या किसी और से भी ?

नौजवान - कई आदमियों से ।

महन्थ - किस-किस से ?

नौजवान – नाम बताने की काई जरूरत नहीं और न इस विषय में बातें करने की मुझे आज्ञा ही है । लीजिए यह आम की बारी आ गई इसी में कुछ देर के लिए ठहरने का बन्दोबस्त करता हूँ ।

यद्यपि उस स्त्री ने महन्थ के विषय में कोई हाल या उसका भेद नौजवान से नहीं कहा था मगर मौका मुनासिब समझ कर नौजवान ने महन्थ से कह दिया कि हा आपका सब हाल मुझसे कह चुकी है । सवारी उठते समय उस औरत ने सफर के विषय में कई बातें नौजवान को समझा दी थीं उसी मुताबिक अभी तक नौजवान ने कहारों को ठहरने की इजाजत नहीं दी थी मगर इस समय जब वे लोग एक ऐसे मुकाम पर पहुचे जहा सडक के बगल ही में एक आम की बारी (गाछी) और सुन्दर कूआ था और उसके थोडी ही दूर आगे एक गाव भी दिखाई दे रहा था तब नौजवान का इशारा पाकर सवारों और कहारों ने सुस्ताने का इरादा किया । प्रताप आगे बढकर आम की बारी में चला गया और उसके बाद कहारों ने वहा पहुच कर पालकी उतारी। उसी समय महन्थ को दूसरी तरफ ठहरने की इजाजत देकर नौजवान उस पालकी के पास चला गया जिस तरफ निराला या सन्नाटा था उस तरफ का पर्दा उठा कर पूछा, "कहिये, किसी चीज की आवश्यकता है ?

औरत – सिवाय जल के और किसी चीज की आवश्यकता नहीं । पालकी में जल तो है मगर गरम हो गया है ।

नौजवान – बहुत अच्छा, मैं अभी ताजा जल मँगवाता हूँ ।

इतना कह कर नौजवान ने प्रताप की तरफ देखा जो उस से थोडी ही दूर पर खड़ा था, जब प्रताप पास आया तब उसे जल मगवाने के लिये कहा और आप पालकी के अन्दर से एक कपडा ले बिछा कर बैठ गया और कुछ देर के बाद उस औरत से यों बातचीत होने लगी -

औरत – पालकी के उस तरफ कोई है या नहीं ?

नौजवान – कोई नहीं सब लोग दूर खडे हैं ।

औरत – वह कम्बख्त महन्थ कहा है ?

नौजवान – (हाथ का इशारा करके) उसी तरफ एक पेड के नीचे जीनपोश बिछा कर बैठा है ।

औरत – तुमसे कुछ कहता भी था ?

नौजवान – हा, पहिले तो उसने यह कहा था कि मुझे लौट जाने की इजाजत दिला दो । इसके बाद उसने यह जानना चाहा कि मुझे उसका कुछ भेद मालूम है या नहीं, अथवा तुमने उसके विषय में मुझसे कुछ कहा है या नहीं ?

औरत – तुमने क्या जवाब दिया ?

नौजवान – मैंने कह दिया कि तुम्हारा बहुत कुछ हाल मुझे बल्कि और भी कई आदमियों को मालूम हो चुका है । बस इससे ज्यादे और कोई बात मैंने नहीं कही ।

औरत – बहुत अच्छा किया । अब मैं इसी जगह उस कम्बख्त का असल भेद तुमसे बयान करूगी और तुम भी वह भेद प्रताप से इसी समय कह देना । असल तो यों है कि यह महन्थ बड़ा ही दुष्ट और जालिम आदमी है, इसका गुप्त भेद जब तुम सुनोगे तो अपने क्रोध को रोक न सकोगे मगर समय पर ध्यान देकर क्रोध रोकना ही पड़ेगा और प्रताप को तो तुमसे भी ज्यादे रंज और क्रोध होगा जब वह तुम्हारे मुँह से इस कम्बख्त का असल भेद सुनेगा । मगर तुम प्रताप को भी समझा देना कि यह मौका उबलने का नहीं है बल्कि मुनासिब ढग पर काम करने का है ।

नौजवान – ऐसा ही होगा । जब से मैने तुम्हारी और इस महन्थ की बातचीत सुनी है तब से मेरे दिल का क्या हाल है सो मैं ही जानता हू, बयान नहीं कर सकता ।

औरत – ठीक है। अच्छा अब जो मैं कहती हू उसे गौर से सुनो। इतना कह कर उस औरत ने एक किस्से के ढग पर उस महन्थ का हाल कहना शुरू किया मगर उसने नौजवान से क्या कहा सो इस जगह बयान करना उचित नहीं जान पडता।

आधे घटे तक बराबर उस औरत ने महन्थ का हाल बयान किया इसी बीच में जल भी आया और उस औरत ने अपनी प्यास भी बुझाई।

जब वह औरत महन्थ की कथा समाप्त कर चुकी तो अन्त में बोली, "अब तुम्हें मुनासिब है कि सूर्य अस्त हो जाने तक उसे अपने साथ से हटने न दो और यह हाल प्रताप से भी कह दो और महन्थ को बिदा करने के बाद अपने सफर का वैसा ही बन्दोबस्त करो, जैसा कि मैं कह चुकी हूँ।

नौजवान – वैसा ही होगा बल्कि मेरी राय तो यह है कि इस कम्बख्त को रात भर अपने साथ घसीटे लिये चलना चाहिये। मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह बिना कुछ बन्दोबस्त किये घर से बाहर न निकला होगा।

औरत – मेरा भी यही खयाल है खैर जो कुछ असल भेद था मैने तुमसे कह दिया। अब तुम जैसा उचित समझो करो, क्योंकि तुम मर्द तथा लिखे-पढ़े बुद्धिमान हो। मैं निर्बुद्धि औरत की जात तुम्हें क्या समझा सकती हूँ।

नौजवान – अस्तु कोई चिन्ता नहीं अब तुम वेफिक्र रहो देखा तो सही मैं कैसा तमाशा करता हूँ।

इतना कहकर नौजवान उठा और प्रताप की तरफ चला गया जो महन्थ के पास खडा बातें कर रहा था पास पहुचने पर महन्थ ने नौजवान से कहा, 'मेरे विषय में क्या हुक्म हुआ ? आशा है कि आपने मुझे छुट्टी दिला दी होगी क्योंकि अब दिन बहुत कम रह गया है और मुझे जाना बहुत दूर है।

यह सुनकर नौजवान ने कुछ रूखी आवाज में जवाब दिया, 'नहीं, अभी आपको और भी कुछ देर तक हम लोगों के साथ रहना बल्कि कुछ आगे चलना पडेगा।'

इतना कह और प्रताप का हाथ पकड कर वह कुछ दूर एकान्त की तरफ ले गया और जो कुछ उस औरत से सुना था प्रताप से बयान किया तथा उसके सुनने से प्रताप को जो क्रोध चढ आया था उसे समझा बुझा कर शात भी किया।

थोडी देर और दम लेने के बाद सवारी उठी और आगे की तरफ रवाना हुई। हम ऊपर बयान कर चुके हैं कि यहा से कुछ ही दूर आगे एक गाव दिखाई दे रहा था। अस्तु, वहा पहुच कर और एक दो आदमियों से पूछ कर प्रताप ने मालूम कर लिया कि यहा से पाच कोस पर एक बहुत बडा गाव है जहा मुसाफिरों को हर तरह से आराम मिल सकता है। आखिर जाहिर में यही ठीक किया कि हम लोग उसी अगले गाव में चल कर डेरा डालेंगे। सवारी तेजी के साथ रवाना हुई और महन्थ को भी लाचार हो कर उनके साथ जाना पडा।

जब सध्या हो गई और अधकार ने भी कुछ-कुछ अपना दखल चारों तरफ जमा लिया और वह गाव भी जहा हमारे मुसाफिर ठहरने वाले थे, वहाँ से केवल एक कोस की दूरी पर रह गया तब नौजवान और प्रताप ने महन्थ को लौट कर अपने घर जाने की आज्ञा दी। महन्थ पीछे की तरफ लौटा और उसने अपने घोडे को तेज किया।

लौटने के साथ ही महन्थ के चहर ने पलटा खाया। जब तक वह हमारे मुसाफिर नौजवान के साथ था तब तक उसने अपने को खूब सम्हाला और अपने दिल का भाव अपने चेहरे से जाहिर न होने दिया मगर लौटने के साथ ही उसने एक लम्बी साँस के साथ अपने दिल का भाव भी बाहर कर दिया। भृकुटी चढ गई आँखों ने सुर्खी के साथ अपना आकार भी बढा दिया, काँपते हुए होंठों को दाँतों ने पीसना आरम्भ कर दिया और खून ने जोश में आकर थर्राहट पैदा कर दी। उस समय उसने अपने घोडे के मरने या जीने की कुछ भी परवाह न की और नौजवान तथा प्रताप इत्यादि की नजरों के ओट होते ही उसे उसकी ताकत के माफिक दौडाया, यहा तक कि बात की बात में वह दो कोस से ज्यादे निकल आया और ऐसी जगह पहुचा जहा सडक के किनारे भिखमगों के दो तीन झोंपड़े और पास ही में एक कूआँ भी था। देखने वाला यही कहेगा कि इन झोंपडों में रहने वाले भिखमगें हैं मगर जिन्हें उनसे वास्ता पड चुका था वे जानते थे कि ये वास्तव में सगदिल डाकुओं या भयानक लुटेरों तथा बदमाशों के भेदिये हैं।

महन्थ सडक के नीचे उतर कर एक झोपडे के पास गया और घोडे को रोक कर आवाज दी 'अरे कोई भूखा भिखमगा है रे ? आवाज सुनते ही एक बुड्ढा 'हाँ बाबू कहता हुआ बाहर निकला और सामने एक सवार को देख कर बोला "हुक्म सरकार ! अब्दुल्लाह हाजिर है।'

महन्थ – रमललवा आया था ?

भिखमगा – जी हाँ आया था।

महन्थ – (धीरे से) रगू से मुलाकात हुई थी ?

भिखमगा – (धीरे से) आहा ! आप हैं महन्थ जी ?

महन्थ – हाँ।

भिखमगा – जी हाँ रगू आये उनसे मुलाकात करा दिया और सब बात भी ठीक हो गई जब आप पालकी के साथ जा रहे थ तब आपका रामलाल इसी झोंपड़ी के अन्दर बैठा देख रहा था, मैं सड़क पर था, जब आपने मेरी तरफ पैसा

फेंका था, गँवारी बोली में मैंने दोआ दी थी।

महन्थ – ठीक है, तो मामला सब लैस हो गया था ?

भिखमगा – जी हॉ रगू भी यहा से दो घटा पहिले ही अपने सगी-साथियों का बन्दोबस्त करके आगे बढ़ गये थे।

महन्थ – कुछ कहा भी था ?

भिखमगा – जी हा इतना कह गये थे कि महन्थजी आवें तो कह दीजियो कि आप सोच न करें आपका काम जरूर हो जायैगा हम लोग जिगना, हरैया और दयालपुर तीनों जगह घेरे रहेंगे, कहीं न कहीं मिले बिना नहीं रहते, अपने घर न जायँ, हमार घर पर आवें, सवेरा होने के पहिले हम पालकी वाली और दोनों सवारों का सिर लिये हुए आवेंगे।

महन्थ – हॉ !!

भिखमगा – जी हॉ, अब आप सीधे रगू के घर चले जाइये।

महन्थ – नहीं, हम इस समय रगू के घर न जायेंगे बल्कि उसी पालकी की तरफ जायँगे और वहीं ही रगू से मिल लेंगे, क्योंकि हमारे रहने से काम अच्छा होगा और हमारे कई आदमी भी उधर गये हुए है उनका हाल भी मिल जायँगा।

भिखमगा – जैसी मर्जी।

महन्थ ने फिर घोड़े को लौटाया और जिधर से आया था उसी तरफ अर्थात् पालकी, नौजवान और प्रताप की तरफ रवाना हुआ।

बारहवां बयान

हमारा नौजवान प्रताप और वह पालकी वाली औरत जिस गाव में उतरने वाले थे उस गाव का नाम 'हरैया था और उसके चार कोस आगे एक गाव और था जिसे लोग दयालपुर के नाम से पुकारते थे। हरैया के पहिले अर्थात इस तरफ जो गाव पडता था जहा से हमारे नौजवान सवार ने हरैया के बारे में दरियाफ्त किया था वही गाव जिगना के नाम से मशहूर था। जिस आम की बारी में थोडी देर के लिये नौजवान ने सवारी उतरवाई थी वह जिगना ही की जमींदारी में शरीक़ था।

महन्थ बराबर घोडा दौडाये जिगना तक चला गया और जब उस गाव के कुछ दूर आगे निकल गया तब उसने अपने घोडे की चाल सुस्त की और सडक के दोनों तरफ ध्यान देता हुआ धीरे-धीरे जाने लगा। इस समय रात दो घंटे से ज्यादे जा चुकी थी। यद्यपि चन्द्रदेव के उदय होने के कारण चारों तरफ अधकार छाया हुआ था तथापि आसमान साफ और मैदान होने के सबब थोडी दूर पर के आदमियों की आहट बखूबी मिल सकती थी।

महन्थ ने यकायक सडक के दाहिने किनारे दो तीन आदमियों का टहलते हुए देखा घोडा रोक कर आवाज दी : 'कौन है ?' इसक जवाब में एक ने कहा, "भिखमगा।" महन्थ ने आवाज पहिचानी और पुन पुकार कर कहा, रगू ?

रगू – जी हा महन्थ जी ! आप क्यों चले आये ?

महन्थ – तुम लोग अभी तक इसी जगह हो ?

रगू – जी हा अपने दो एक आदमियों की राह देख रहा हू मगर उस काम का पूरा-पूरा इन्तजाम कर चुका हूँ, आपके आने की तो कोई जरूरत न थी !

महन्थ – अगर जरूरत न होती तो मैं कदापि न आता, तुमसे एक बात कहना बहुत जरूरी है।

रगू – वह क्या ?

महन्थ – कहना यही है कि उस औरत, नौजवान और प्रताप का सिर ऐसे समय में काटा जाय कि उनके मुँह से एक बात भी न निकले और कोई सुनने न पावे। जहाँ तक मैं समझता हूँ उस औरत ने पूरा-पूरा इन्तजाम करके डेरा डाला होगा और रात भर में एक घड़ी के लिए भी आराम न करेगी अगर वह चिल्ला कर कुछ भी कहेगी और उसके मुँह से निकली हुई बात कोई भी सुन लेगा तो बडा गजब हो जायेगा, फिर हमारी जान किसी तरह भी न बच सकेगी।

रगू – यह तो आपने बड़ी बेढब कही। मैं तो यही सोचे हुए था कि हम लोग यकायक डाकुओं की तरह हल्ला कर देंगे और उन तीनों की जान लेने के बाद लूट-पाट कर चल देंगे। उन लोगों के रोने और चिल्लाने से कुछ भी न होगा।

महन्थ–नहीं नहीं, ऐसा खयाल भी न करना। उस औरत की बातों में बहुत बड़ा असर है, अगर उसके मुँह से निकली हुई बात तुम लोग भी सुन लोगे तो विश्वास रखो कि तुम लोगों का हाथ भी जहा का तहा रुक जायगा और कुछ करते-धरते न बनेगा। वह साधारण औरत नहीं है, अगर ऐसा होता तो हम खुद ही उसका काम तमाम कर देते, तुम लोगों को तकलीफ देने की जरूरत न पड़ती।

रगू – ठीक है यही तो हम लोग भी सोच रहे थे कि इस मामूली काम के लिये इतना बखेड़ा क्यों किया ! मगर अब आपकी बातें सुनकर मालूम हुआ कि यह मामूली काम नहीं है।

महन्थ – बेशक ऐसा ही है।

रगू – अच्छा तो यह बताइये कि वह औरत है कौन ?

महन्थ – इसका जवाब देना भी सहज नहीं है। जब इस काम से छुट्टी मिल जायेगी तब सब हाल तुमसे कहेंगे।

रगू – खैर हमें इसके जानने की कोई ऐसी जरूरत भी नहीं है मगर यह तो बताइये कि बिना गुलशोर मचे काम कैसे चल सकता है ?

महन्थ – यही समझने और समझाने के लिये तो मुझे लौटना पडा, अच्छा पहिले यह बताओ कि तुमने अपने साथ कितने आदमियों का बदोबस्त किया है ?

रगू – हम लोग इस समय बाईस आदमी तैयार हैं।

महन्थ – और इस बात का भी पता लग गया है कि वे लोग किस जगह पर उतरे हैं ?

हॉ पता लग चुका है कि वे लोग गाव के बीचोबीच एक मस्जिद के अन्दर उतरे है जिसके चारों तरफ मुसलमानों के कच्चे घर है।

महन्थ – यह बात और भी ताज्जुब की है ! ऐसा हो नहीं सकता। उसका मुसलमानों की आबादी के बीचोबीच में बल्कि एक मस्जिद के अन्दर उतरना भेद से खाली नहीं है, वह बडी ही चालाक और धूर्त औरत है।

रगू – तब क्या करना चहिये ?

महन्थ – (कुछ सोच कर) अच्छा चलो, मै भी तुम्हारे साथ चलता हू, वहा पहुचने पर जो कुछ राय होगी किया जायेगा।

इतना कह कर महन्थ ने आगे की तरफ घोडा बढाया और अपने साथियों सहित रगू भी घोडे के साथ ही साथ कदम बढाता हुआ रवाना हुआ। रास्ते में वे लोग धीरे-धीरे अपने मतलब की बातें करते जाते थे। घटे भर के बाद जब वे लोग उस गाव के पास पहुचे जिसमें हमारे मुसाफिरों का डेरा पडा हुआ था तो बने हुए सकेत की बदौलत रगू के और साथी लोग भी आ मिले और तब वे लोग एक पुल के नीचे आ ठहरे जो गाव से कुछ हट कर था और इस समय वहाँ किसी आदमी के पहुचने की उम्मीद भी नहीं हो सकती थी। जिस नदी के ऊपर वह पुल था इस समय उसका (उस स्थान का) जल सूखा रहने और अन्धकार विशेष होने के कारण उन दुष्टों को छिपे रहने का मौका अच्छा मिला।

तेरहवां बयान

अब हम थोडा सा हाल अपने मुसाफिरों का लिखते है जिन्होंने इस गाव में लाचार होकर डेरा जमाया था। इनके बारे में रगू ने जो कुछ महन्थ से कहा था वह एक तौर पर ठीक ही था अर्थात् उस गाव के बीचोबीच एक छोटी सी मस्जिद थी और हमारे मुसाफिरों ने उसी में डेरा जमाया था। वहा के मुसलमानों की रजामन्दी से टिकने के लिये यह स्थान ले लिया गया था। जनानी सवारी मस्जिद के अन्दर उतारी गई थी और सवारों ने उसके चारों तरफ हिफाजत के तौर पर डेरा जमाया था। एक बनिये के मार्फत तमाम जरूरी चीजें जुटाई गई थीं और खुले दिल के साथ उन चीजों की कीमत भी अदा की गई थी। इन सब कामों से छुट्टी पाने के बाद एक कार्रवाई और की गई अर्थात् जाहिर में तो उस औरत और प्रताप के सहित हमारे नौजवान ने मस्जिद के अन्दर डेरा जमाया था, मगर जब कुछ रात चली गई और अन्धकार ने चारों तरफ अपना दखल जमा लिया तब वे तीनों आदमी चुपचाप मस्जिद के अन्दर से निकल कर उस बनिये के मकान में चले गये जिसकी मार्फत उन लोगों ने रसद खरीद की थी और इसके साथ ही साथ और भी कई बातें का उन लोगों ने इन्तजाम कर लिया था।

मकान के अन्दर उस औरत के आराम का पूरा-पूरा इन्तजाम करने के बाद नौजवान और प्रतापसिह पौशाक का ढग बदल कर बनिये की दुकान पर बाहर की तरफ आ बैठे जहा बनिये ने उनके लिये एक मामूली गद्दी बिछा दी थी और उनके पीछे की तरफ आले पर एक चिराग जल रहा था जिसकी धुधली रोशनी मोटी-मोटी चीजों को बताने के सिवाय किसी आदमी की सूरत पहिचानने में मदद नहीं कर सकती थी।

उसी समय एक फकीर भी भीख मागता हुआ उस बनिये की दुकान पर पहुचा और दुआ दे कर एक मुट्ठी चने का सवाल किया।

बनिया – यह कौन सा वक्त भीख मागने का है ? तमाम गॉव सो गया है तब तू भीख मागने निकला है ?

फकीर – बाबा हम मुसाफिर आदमी हैं अभी लुडकते-पुड़कते आपके गाव में आये हैं, दिन भर के भूखे हैं।

बनिया – खैर जो कुछ हो अच्छे हो, मगर इस वक्त यहा से कुछ मिलेगा नहीं, जाओ दूसरा दर्वाजा देखो।

फकीर – बाबा आज तो आपने नये मुसाफिरों की बदौलत बहुत कुछ पैदा किया है, उसमें से कुछ अल्लाह के नाम भी निकालो, तुम्हारा भला होगा।

बनिया – (चिढ़ कर) पैदा किया है तो उसमें तुम्हारे बाप का क्या ? तुम भी उन्हीं के दर्वाजे पर जाओ कुछ मिल जायेगा।

फकीर – हम तो पहिले ही उन्हीं के दर्वाजे पर गये थे मगर टका सा सूखा जवाब पाकर लौट आये, सुना कि मालिक मस्जिद के अन्दर नहीं किसी दूसरे मकान में टिका है, उसका पता भी अगर बता दो तो चले जायें वहा से जरूर मिल जायेगा, सुनते हैं कि वह खूब खैरात करने वाला है।

बनिया – हम आप ही नहीं जानते कि वे लोग कहा जा टिके हैं, तुम्हें पता कैसे बतावें ?

फकीर – आप जरूर जानते होंगे, क्योंकि आपही के यहा से कुल रसद-पानी खर्च हुआ है।

बनिया – रसद-पानी खर्च होने से क्या होता है ? सौदा दिया दाम लिया किनारे हुए ! कहा उतरे हैं ! कहा गये ! कहा जायेंगे ! इन सब बातों के पूछने से हमें मतलब ? तुम भीख मागते हौ या लोगों का भेद लेते-फिरते हौ ?

ये बातें हो ही रही थीं कि हमारे नौजवान और प्रताप दोनों धीरे से उठकर पेशाब के बहाने दुकान के नीचे उतर गये और बाहर जा कर इधर-उधर की आहट लेने लगे। उसी समय वह फकीर भी चौकन्ना होकर उठ खड़ा हुआ और यह कहता हुआ चला कि अच्छा बाबा आपकी खुशी ! हम तो फकीर है यहा से न मिला, दूसरी जगह जा मागेंगे।

इस जगह हम उस पालकी वाली औरत और उसके साथ आने वाले नौजवान बहादुर का नाम भी प्रकट कर देते है क्योंकि बिना नाम के लिखने और पढने में तकलीफ नजर आती है।

पालकी वाली औरत का नाम "राजकुमारी धनवन्ती' और नौजवान का नाम "गुलाबसिह था। बस इससे ज्यादे इन दोनों का परिचय अभी नहीं दे सकते।

गुलाबसिह को इस बात का निश्चय हो गया था कि यह फकीर अकेला नहीं है बल्कि इसके पास ही कोई और भी होगा और वास्तव में था भी ऐसा ही। उससे पाच ही सात कदम की दूरी पर एक और आदमी फकीर की सूरत में खडा था जिसे प्रतापसिह ने गुलाबसिह का इशारा पाकर पकड लिया और पहिला फकीर जब अपनी बात पूरी करके रवाना हुआ तब गुलाबसिह ने यह कहके उसका हाथ भी पकड लिया कि आओ हम उन मुसाफिरों का पता तुम्हें बताते हैं बल्कि कुछ दिला भी देते हैं।

दोनों फकीर समझ गये कि हमारी गिरफ्तारी मामूली नहीं है बल्कि हम पहिचाने गये। इस लिये उन दोनों ने अपने को छुडाना चाहा मगर यह न हो सका। आखिर उन दोनों ने दोनों पर छुरे का वार किया मगर इसका नतीजा कुछ भी न निकला क्योंकि गुलाबसिह और प्रतापसिह पहिले ही से होशियार हो रहे थे कि ये दोनों गुल शोर करना पसन्द न करेंगे। आखिर ऐसा ही हुआ और हमारे दोनों नौजवान उन दोनों फकीरों को पकडे हुए बनिये की दूकान में ले आए।

बनिया यह कैफियत देख कर घबरा गया और उसने डरते-डरते गुलाबसिह से पूछा, 'यह क्या मामला है ? इसके जवाब में गुलाबसिह ने बनिये से कहा, 'तुम बेचारे सूधे-साधे आदमी हौ इस लिये इन मक्कारों को तुमने पहिचाना नहीं, ये डाकू लोग है और तुम्हारी दूकान लूटने के इरादे से भिखमगे बनकर भेद लेने के लिए आये थे।

इतना सुनते ही बनिया घबरा गया और डर के मारे थर-थर कापने लगा और लोगों को बटोरने की नीयत से गुलशोर मचाया ही चाहता था कि गुलाबसिंह ने ऐसा करने से उसे रोककर कहा, 'ठहरो, जरा इनकी जाच तो कर लेने दो।

बनिया – अब जाच क्या कीजियेगा ? ये लाग जरूर डाकू है, अगर डाकू न होते तो आपके ऊपर छुरा क्यों चलाते ?

गुलाब – इनके डाकू होने में कोई शक तो नहीं है मगर जरा चिराग की रोशनी तेज करके सूरत तो देख लो !

बनिया बडा ही डरपोक था। उसमें इतनी हिम्मत न थी कि चिराग की रोशनी तेज करके उन डाकुओं की सूरत देखता। अस्तु वह एक दम चोर-चोर कहके चिल्लाने लगा और बात की बात में सैकडों आदमी हाथ में तरह-तरह के हर्बे लिये हुए आकर उसकी दूकान पर इकट्ठे हो गये।

चौदहवां बयान

अब हम औरगजेब के लश्कर की तरफ झुकते हैं और कुछ उधर का हाल लिखकर इस उपन्यास के सिलसिले को ठीक किया चाहते हैं। हमारे नौजवान नायक को आज औरगजेब से पाला पडा है अस्तु औरगजेब किस मिजाज का आदमी था उसकी आदतें कैसी थीं और वह अपना काम किस चालाकी मकर और फरेब से निकाला करता था इसका हाल सबके पहिले ही लिख देना उचित जान पड़ता है। केवल औरगजेब ही नहीं बल्कि शाहजहाँ के चारों लडकों के मिजाज और चालचलन का हाल लिख देना उचित है क्योंकि इस उपन्यास में हमारे नौजवान नायक और उसके पक्षपातियों को उन्हीं सभों से वास्ता पडे गा और उन्हीं सभों की बदौलत उसे दु ख सुख भोगना नसीब होगा।

प्रसिद्ध बादशाह के पोते शाहजहा और शाहजहा की औलाद का हाल यदि देखा चाहें तो कई इतिहासों में देख सकते हैं परन्तु इस विषय में लोगों की राय एक सी नहीं है, कोई किसी इतिहास को सच्चा समझता है, और कोई किसी को। मगर दो एक इतिहास ऐसे है जिन पर किसी को शक करने का मौका नहीं मिलता, खास करके डाक्टर बर्नियर साहब ने अपने सफरनामे में जो कुछ इस खान्दान का हाल लिखा है बहुत ठीक और सच्चा है क्योंकि उक्त डाक्टर साहब स्वय शाहजहा के दर्बार में मौजूद थे और वर्षो तक उस खान्दान के साथ मिले-जुले रहकर तरह-तरह की

तकलीफें उठा चुके थे। अस्तु, हमने भी ऐसे ऐसे मौकों पर उन्हीं की किताब का सहारा लेना उचित समझा, परन्तु "सैरउलमुताखरीन ऐसे नामी इतिहास को भी आखों से नहीं गिराया।

हम ऊपर भी लिख चुके हैं कि शाहजहा के चार लडके और दो लडकिया थीं सबसे बडे बेटे का नाम दाराशिकोह, दूसरे का शुजा तीसरे का औरगजेब और सबसे छोटे चौथे लडके का नाम मुरादबख्श था। दोनों लडकियों में से 'बेगम साहब' और छोटी का नाम 'रोशनआरा" था।

'दाराशिकोह" बातचीत में बडा ही मीठा और हाजिर जवाब था सखी भी पहले सिरे का था, लोगों को उसके हाथ से बहुत कुछ मिला करता था इसलिये लोभी और लालची लोग हरदम उसे घेरे रहा करते थे। साथ ही साथ इसके वह अपने को बडा अक्लमद और मुन्तजिम समझता था। अपनी राय के सामने किसी की राय को पसन्द नहीं करता और उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि हम किसी से सलाह लिये बिना हर एक काम का अच्छा बन्दोबस्त और इन्तजाम कर सकते हैं बल्कि उसका ऐसा कथन था कि 'हमको सलाह देने लायक कोई आदमी ही नहीं है। अगर कोई उसका खैरख्वाह रहता और किसी तरह की सलाह देता भी था तो वह उसे बेइज्जती की निगाह से देख के मुस्करा देता था। इन्हीं सबबों से उसके खैरख्वाह लोग उसके भाइयों की चालाकियों से उसे होशियार न कर सके और यह न बता सके कि तुम्हारे भाई लोग छिपे-छिपे क्या रग बैठा रहे हैं।

वह लोगों को धमकाने में बडा ही तेज था, यहा तक कि बडे-बडे उमरा और दर्बारी लोगों को बुरा-भला कह बैठता और जरा-जरा सी बात में बेइज्जत कर देता था, लेकिन उसका गुस्सा ज्यादे देर के लिये नहीं होता था।

'सुल्तान शुजा की आदतें कुछ-कुछ अपने बडे भाई से मिलती थीं परन्तु यह उसकी अपेक्षा विशेष बुद्धिमान और अपने विचारों पर दृढ रहता था और बातचीत तथा बर्ताव वैसा ही अच्छा था जैसा कि बादशाह के लडकों को होना चाहिये। साथ ही इसके अपना काम साधने के लिये लोगों को मिला लेने मे वह बडा ही तेज और धूर्त था और ऐसे कामों के लिये गुप्त रीति से इनाम भी बहुत दिया करता था और बडे-बडे राजाओं, सरदारों और दर्बारियों को दोस्ती और मेल जोल के सहारे अपना पक्षपाती बनाए रहता था। इतना होने पर भी शौकीन और ऐयाश बहुत बडा था खूब शराब पीना और जब नाच-मुजरे में बैठना तो तमाम दिन और रात बिता देना उसके लिये कोई बडी बात न थी। जो मुसाहब लोग अपनी इज्जत बचाये रहना चाहते थे वे ऐसे मौकों पर उसे रोकने या टोकने की हिम्मत नहीं कर सकते थे। इन्हीं सबबों से उसके (राजकीय) काम धन्धे प्राय बिगड़े ही रहते थे और रेआया के दिल में भी उसकी मुहब्बत कम रहती थी।

'औरगजेब' यद्यपि अपने बडे भाइयों की तरह खुशमिजाज और मेल-जोल बढाने वाला आदमी न था मगर वह ऐसे आदमियों को चुनकर छाट निकालने में बडा ही होशियार और बुद्धिमान था जो उसका काम ईमानदारी के साथ करते और जी जान से उसके साथी बने रहते। लोगों को इनाम वगैरह तो वह भी बहुत दिया करता मगर मौका मतलब-समझ कर। बिना मतलब के वह एक कौडी भी किसी को न देता। वह अपने भेदों और विचारों को खूब छिपाये रहता और मक्कारी और दगाबाजी के फन में तो पूरा ओस्ताद था। जब वह अपने बाप के पास या सल्तनत में रहता तो पूरा साधू बना रहता और लोगों के दिल पर यही जमाता कि वह राजपाट और धन-दौलत का तुच्छ समझता है। परन्तु भविष्य के लिये अपनी ताकत बढाने और राज्य पर कब्जा कर लेने की कोशिश भीतर ही भीतर बडी मजबूती के साथ करता था यहा तक कि जब वह दकन (दक्खिन) का सूबेदार बनाया गया था तब भी वह अपने दर्बारियों पर यही प्रकट करता कि यदि मुझे यह दुनिया छोड देने और फकीर बन जाने की आज्ञा मिलती तो बडा ही प्रसन्न होता क्योंकि मुझे सच्चा सुख ईश्वराराधन और एकान्तवास ही में मिलता है। यद्यपि उसका दिन फरेब और साजिशों में गुजरता मगर इस काम को वह ऐसी खूबी के साथ करता कि दर्बार में उसके भाई दाराशिकोह को छोड के सभों ही ने उसकी चालबाजियों को समझने में धोखा खाया। दाराशिकोह अक्सर अपने मुसाहिबों से कहा करता कि अगर मुझे किसी का डर है तो केवल इस महात्मा, दीनदार और नेमाजी साहब (औरङगजेब) ही का है।

"मुरादबख्श जो शाहजहा का सब से छोटा लडका था अक्लमन्दी और होशियारी में सब भाइयों से कम था। अच्छी-अच्छी चीजों के खाने और शिकार खेलने का उसे शौक था, हा मुहब्बती और शाहखर्च जरूर था। एकान्त में बैठ-कर सलाह करने, साजिश करने और छिपी चाल चलने को वह तुच्छ समझता था और यही प्रकट करता था कि मै केवल अपनी ताकत और तलवार पर भरोसा रखता हू और वास्तव में वह दिलेरी और बहादुरी का पुतला था। अगर इसके साथ ही साथ वह बुद्धिमान और चालाक भी होता तो नि सन्देह अपने तीनों भाइयों से बढ जाता और बेखटके हिन्दोस्तान का बादशाह बन बैठता।

ऊपर का बयान पढकर पाठक समझ गये होंगे कि चारों भाइयों में औरगजेब बडा ही धूर्त और चालाक था।

जिस जमाने का हम जिक्र कर रहे हैं उसके कुछ वर्ष पहिले बादशाह (शाहजहा) का दिल अपने फसादी लडकों की तरफ से दु खी हो गया था। यद्यपि उसके चारों लडके बड़े होशियार, लायक और बाल-बच्चों वाले थे मगर तख्त और सल्तनत की लालच ने उन्हें ऐसा अन्धा कर दिया था कि आपुस में भाई-भाई के नाते को छोड एक दूसरे के दुश्मन हो रहे थे यहा तक कि दर्बार में उनके तरफदारों के अलग-अलग धडे बध गए थे। इन कैफियतों को देख कर बादशाह को अपनी ही जान की फिक्र पड रही थी और वह अपने को एक बडे सकट में पडा हुआ समझता था और बारबार यही

सोचता था कि इन चारों को ग्वालियर क मजबूत किले में कैद कर दे जिसमें बादशाही खानदान के लाग प्राय कैद रहा करते थे और जिसका फतह करना या जिसमें से निकल भागना बडा ही कठिन था। मगर वे चारों लड़के तरह तरह की चालबाजियों के कारण एसे जबर्दस्त हो गये थे कि उनके साथ ऐसा सलूक करना बड़ा ही कठिन था। अस्तु उसे यह निश्चय हा गया था कि ये चारों एक न एक दिन आपुस में लड़ कर या तो अपनी बादशाही अलग कर लेंगे या इसी सल्तनत में खून की नदी बहा कर रेआया को बर्बाद करने के साथ ही साथ अपनी किस्मतों का भी फैसला कर लेंगे। ऐसी-ऐसी बहुत सी बातों का साच-विचार कर उसने निश्चय कर लिया कि इन चारों को अलग अलग हुकूमत देकर एक को दूसरे से दूर कर दिया जाय अस्तु उसने सुलतान शुजा को बङ्गाला, औरंगजेब को दखन मुरादबक्श को गुजरात और दाराशिकोह को मुलतान और काबुल का हाकिम मुकर्रर कर दिया।

दाराशिकोह के सिवाय तीनों लड़के अपनी-अपनी हुकूमत पर चले गये और मनमानती कार्रवाइया करने लगे। थोड ही दिन में तरह-तरह के बहाने बना कर तीनों ने बडी-बडी फौजें इकट्ठी कर लीं और एक दूसरे की फिक्र में पडे मगर दाराशिकोह ने जो सब से बड़ा था और इसी लिये अपन को तख्त का मालिक समझता था आगर को न छोडा हरदम बादशाह के साथ रहने लगा।

अब हमको यह दिखाना चाहिये कि शाहजहा से अलग होकर औरंगजेब ने क्या किया और किस तरह बहाना करके बादशाह के जीत जी उसने आगरे पर चढाई कर दी जिसके सबब से आज हमारे इस उपन्यास के नायक उदयसिह को उसक सामने होने की तकलीफ उठानी पडी।

जब औरंगजेब अपनी हुकूमत पर दक्षिण चला गया तो वहा उस ने मीर जुमला ' ऐसे धूर्त और चालाक आदमी के साथ चालबाजी और एयारी का ढग लगाया। सच तो यों है कि 'मीर जुलमा ही की बदौलत औरंगजेब का सितारा चमक उठा।

औरंगजब की अमलदारी दक्खिन में ' गोलकुण्डा नाम का एक स्थान था जो आजकल हैदराबाद के अन्तगत है और जहा के हीरे की खान प्रसिद्ध है। 'मीरजुमला नामी एक शख्स उसी गालकुण्डा के बादशाह अब्दुल्लाह कुतुबशाह का वजीर और उसकी कुल फौज का सिपहसालार (सेनापति) था। वह अपनी बुद्धिमानी चालाकी और होशियारी के सबब तमाम हिन्दोस्तान में मशहूर था। यद्यपि वह खानदानी अमीर न था मगर उसने अपने हाथों ही अपने को इज्जतदार रोआबदार और बहुत बडा अमीर बना लिया था। वह जैसा सिपहगिरी में होशियार था वैसा ही रोजगार और सौदागरी धधे को भी अच्छी तरह समझता था। उसने केवल वजीर बन कर इतनी दौलत इकट्ठी नहीं की थी बल्कि सौदागरी और हीरे की खानों की बदौलत जो दूसरों के नाम से ठीके ले रक्खे थी इकट्ठी की थी। उन खानों में सं हीरे इतने ज्यादा निकलते थे कि उसके यहा उन हीरों क गिनन या तौलन का कोई कायदा ही न था बल्कि हीरों से भरी हुई टाट की थैलिया गिनवा ली जाती थीं।

बादशाही फौज के अतिरिक्त उसने एक अपनी फौज भी तैयार कर ली थी जिसमें एक तोपखाना भी शामिल था और जिसमें प्राय ईसाई लोग नौकर थे। इसी से समझ लेना चाहिऐ कि उसने चारो तरफ अपना कैसा रोबन्दाब बढा रक्खा होगा। उसने मुल्क कर्नाटक के फतह का बहाना कर हिन्दुओं क बड-बडे मदिरों और तीर्थ-स्थानों का लूट के बर्बाद कर दिया था और इस तर्कीब से भी उसन अपनी दौलत हद्द से ज्याद बढा ली थी।

मीरजुमला की ऐसी ताकत और दौलत देखकर खुद उसके मालिक अथात् शाह गोलकुण्डा को डाह होने लगा इसके अतिरिक्त और भी कई बातों को सोचकर उसने दिल में निश्चय कर लिया कि 'किसी न किसी तरह मीरजुमला का मार् डालना चाहिऐ । यद्यपि वह इस भेद को अपने दिल के अन्दर छिपाए हुए था मगर इत्तिफाक से एक मौके पर केवल मुसाहबों के सामने उसके मुँह स निकल पडा कि इस जबर्दस्त को उठा देना ही उच्ति है । उस समय यद्यपि मीरजुमला कर्नाटक दश में था मगर बहुत जल्द ही उसे इस बात की खबर लग गई क्योंकि दर्बार में विशष करके उसी के नातेदार लोग भरे हुए थे।

मीरजुमला ने उसी समय अपने लडके महम्मद अमीनखा को जो बादशाह के यहा हाजिर था, एक पत्र लिखा कि जिस बहाने से हो सके तुम तुरन्त मेरे पास चले आओ । परन्तु बादशाह की कडी हिफाजत में पड जाने के कारण वह निकल कर अपने बाप के पास न जा सका। उस समय गुस्से में आकर मीरजुमला ने ऐसी कारवाई की कि जिससे गोलकुण्डा एक तौर पर बर्बाद ही हो गया अर्थात उसने (मीरजुमला ने) एक चीठी औरङ्गजेब को जो उस समय दौलताबाद * में था इस मजमून की लिखी —

'तमाम जमाना जानता है कि मैंने रियासत गोलकुण्डा के साथ कैसी भलाई की है जिसके बदले में बादशाह को

* 'दौलताबाद — असल में इसका नाम देवगढ है। राजा भोज के जमाने में इसी का नाम धारानगरी' था। मुहम्मदशाह तुगलक ने जो सन् ७२९ हिजरी में हिन्दोस्तान का बादशाह बना था इसको फतह करके इसका नाम दौलताबाद रक्खा था। इसी के पास गोदावरी के किनारे औरङ्गजेब ने औरङ्गाबाद बसाया था जहा इस समय रेयासत हैदराबाद की तरफ से केवल एक ताल्लुकेदार रहता है।

मरा अहसानमन्द होना चाहिये था मगर वह मेरी और मेरे खान्दान की वर्बादी के लिए तैयार हो रहा है, इसलिए मैं अपने को वचाने के लिए आपके हजूर में हाजिर हुआ चाहता हूँ और इस अर्जी को कवूल करने के शुकराने में एक मन्सूवा अर्ज करता हूँ जिस के जरिये से आप सहज ही में उस वादशाह को गिरफ्तार करके उसके मुल्क पर कब्जा कर सकेंगे। मेरी इस प्रतिज्ञा पर आप विश्वास और भरोसा करें। इस काम में किसी तरह की कठिनाई या जोखिम का खयाल नहीं हो सकता। वह सलाह यह है कि आप केवल पाच हजार चुने हुए सवारों को साथ लेकर शीघ्र ही गोलकुण्डा की तरफ चले आवें जिसमें केवल सोलह दिन लगेंगे, और यह मशहूर कर दें कि 'बादशाह शाहजहा का एलची शाह गोलकुण्डा से कुछ जरूरी मामले में बातचीत करने के लिय भाग नगर *(हैदराबाद) जाता है और यह फौज उसकी अर्दली में है। शाह गोलकुण्डा के यहाँ ऐसे मामलों की खवर करने के लिए जो आदमी मुकर्रर है वह मेरा नातेदार है और उस पर मुझ पूरा भरासा है। वह इस मामले की खबर ऐसे ढङ्ग से करेगा कि बादशाह को किसी तरह का शक न होगा और आप वेखटक भागनगर के फाटक पर पहुच जायँगे उस समय नियमानुसार जब वह आपका इस्तकबाल (अगुवानी) करने के लिये वाहर आवेगा तब आप उसको सहज ही में गिरफ्तार कर लेंगे इसके अतिरिक्त आपकी इस चढाई का कुल खर्चा मैं अपने पास स दूँगा और इस काम के पूरा होने तक ५० हजार रूपये रोज देता रहूँगा।

इस चीठी को पढकर औरङगजेव बहुत खुश हुआ वह रोज ऐसी ही वातों के सोच-विचार में पडा रहता था इस समय तो मानों उसके मन की हुई। उसने मीरजुमला की दरखास्त कबूल कर ली और तुरन्त हर तरह का वन्दोवस्त करके गोलकुण्डा की तरफ रवाना हो गया। मीरजुमला की बदौलत यह काम ऐसी खूबी और होशियारी के साथ किया गया कि किसी को किसी तरह का शक न हुआ और औरङ्गजेब बिना रोक-टोक के भागनगर पहुच गया।

बादशाह शाहजहाँ के भजे हुए एलची की अगवानी का जो नियम था उसी नियमानुसार शाह गोलकुण्डा पालकी पर सवार होकर अगवानी के लिये अपने वाग की तरफ रवाने हुआ और उस जगह पहुचा ही चाहता था जहा उसके गिरफ्तार कर लने का पूरा-पूरा बन्दोवस्त था कि यकायक एक सर्दार को जो इस भेद को जानता था और मीरजुमला से मिला हुआ था, उस पर रहम आया और उसने जोर से चिल्ला कर कह दिया कि जहापनाह झटपट निकल जाइये नहीं तो आप फँस जायँगे यह बादशाह का एलची नहीं है वल्कि खुद औरङगजेव है।

उस सरदार की वात सुन कर शाह गालकुण्डा कैसा हैरान और वदहवास हुआ होगा इसका कहना कठिन हे अस्तु वह तुरन्त घोडे पर सवार होकर गालकुण्डा की तरफ जो हैदराबाद से केवल तीन कोस है, भाग निकला और गोलकुण्डा क किले में जा पहुचा।

औरङ्गजेब ने जब देखा कि शिकार उसक हाथ स निकल गया तो निराश होकर कुछ देर तक तो सोचता रहा। इसके बाद तुरन्त ही उसका खयाल वदल गया और उसने सोचा कि अब डरने का मौका नहीं है विना कुछ साचे-विचारे उसके गिरफ्तार करन की कार्रवाई जारी रखनी चाहिये, अस्तु उसने पहले यह काम किया कि भागनगर (हैदराबाद) के बादशाही महलों का लूट लिया और सब बेशकीमत चीजों और असबाबों तथा उम्दा-उम्दा किताबों को लूट कर उन पर अपना कब्जा कर लिया, लेकिन महल की औरतों को बादशाही नियम के अनुसार बडी हिफाजत के साथ बादशाह शाहजहाँ के पास भेज दिया। यद्यपि उस समय औरङ्गजेब के पास तोपें न थीं मगर इससे वह हताश न हुआ वल्कि उसने निश्चय कर लिया कि किले को घेर कर लडाई शुरू कर देनी चाहिए। ऐसी अवस्था में किले में रसद न पहुचने के कारण बादशाह को किले को बचा लेना मुश्किल होगा। आखिर ऐसा ही हुआ पर किला घेर लेने के दो महीने बाद वादशाह शाहजहाँ की तरफ से यह हुक्म औरगजव के पास पहुँचा कि इस लडाई से हाथ उठाकर तुरन्त दक्षिण की तरफ लौट जाओ'।

यद्यपि औरङ्गजेब इस बात को समझ गया कि यह हुक्मनामा दाराशिकोह और बेगम साहबा के बहकाने से लिखा गया है (क्योंकि दूरदर्शी दाराशिकोह को इस बात का खयाल था कि अगर औरङ्गजेब गोलकुण्डा को फतह कर लेगा तो उसकी ताकत बहुत बढ जायेगी) परन्तु इस समय उसने बादशाह का हुक्म टालना उचित न समझा और बेहुत चिढ जाने पर भी उसने फरमाबरदारी दिखाने के लिये यही जाहिर किया कि वह पिता की आज्ञा के विरुद्ध कोई काम करना नहीं चाहता और किले का मुहासरा उठा लिया मगर साथ ही इसके अपनी चढाई का कुल खर्च और हरजाना बादशाह गोलकुण्डा से वसूल कर लिया और यह एकरारनामा लिखा कि – (१) "मीरजुमला को बाल-बच्चे माल-असवाब और फौज समेत अपने शहर से निकल जाने देगा और किसी तरह की रोक-टोक न करेगा। (२) गोलकुण्डा के रूपये पर शाहजहा क नाम का सिक्का लगा करे। इसक अतिरिक्त बादशाह की वडी बेटी से अपने लडके मुहम्मद सुल्तान की शादी कर ली और दहेज में रामगढ का किला भी ले लिया।

औरङगजेब इन सब कामों से छुटटी पाकर मीरजुनला को साथ लिये हुए दक्खिन की तरफ लौटा मगर रास्ते में

*हैदराबाद का नाम पहिले भागनगर था सुलतान मुहम्मद अली कुतुबशाह ने (जिसके यहा नाचने-गाने के लिए एक हजार रडिया नौकर थीं) इस सन ९५० हिजरी से कुछ पहिले उन्हीं रडियों में से अपनी एक प्यारी रडी भागवती के नाम पर बसाया था मगर कुछ दिन बाद जब उसे शर्म आई तो बदल कर हैदराबाद नाम रख दिया इस समय भी गोलकुण्डा हैदराबाद में शरीक है।

उसने मीरजुमला की राय से 'बेदर' के किले को जो बीजापूर के इलाके में एक मजबूत जगह है, घेर कर फतह कर लिया और इसके बाद वे दोनों (औरङ्गजेब और मीरजुमला) दौलताबाद (धारानगरी) में पहुच कर बडी मुहब्बत के साथ रहने और अपनी हकूमत चलाने तथा ताकत बढाने का बन्दोबस्त करने लगे।

भारतवर्ष के इतिहास में इन दोनों की मोहब्बत को एक अनूठी घटना समझना चाहिये क्योंकि औरङजेब को नामवरी, इज्जत, ताकत और सल्तनत वगैरह जो कुछ मिली सब इसी मोहब्बत का नतीजा था मगर साथ ही इसके यह भी समझ रखना चाहिये कि इतना हो जाने पर भी औरङजेब और मीरजुमला गुप्त रीति पर अपनी-अपनी धूर्तता से बाज न रहे। दौलताबाद पहुचने पर मीरजुमला ने ऐसे मनसूबे दौडाये और ऐसी तर्कीबें कीं कि बादशाह शाहजहॉ की तरफ से उसके हाजिर होने के लिये बराबर पैगाम आने लगे यहॉ तक कि वह बादशाह के पास आगरे में जा पहुचा और बडे-बडे बेशकीमती हीरे नजर देकर कुछ दिन रहने के बाद बादशाह गोलकुण्डा के फतह के फायदे दिखाये और अर्ज किया कि 'कन्धार के पत्थर और चट्टानों की बनिस्बत, जिस पर हुजूर आजकल चढाई करना चाहते है गोलकुण्डा के जवाहिरात बडे ही बेशकीमत और ध्यान देने योग्य है अस्तु हुजूर को गोलकुण्डा पर चढाई की तदबीरें तब तक जारी रखनी चाहियें जब तक तमाम मुल्क रासकुमारी तक न फतह हो जाय।

ऐसी-ऐसी चिकनी-चुपडी बातें करके मीरजुमला ने बादशाह का दिल अपने हाथ में कर लिया। यहॉ तक कि शाहजहॉ ने उसकी सलाह मान ली और हुक्म दे दिया कि नई फौज भरती करके मीरजुमला की मातहती में दक्खिन (गोलकुण्डा) की तरफ रवाना की जाय अर्थात् इस काम के लिए मीरजुमला को तैनात किया।

इन दिनों बादशाह (शाहजहॉ) का दिन दाराशिकोह की बेअदबियों के सबब डर और रज में गुजरता था और वह दाराशिकोह से नाराज था क्योंकि दाराशिकोह खुदमुख्तार बन जाने के लिए तरह-तरह की कोशिशें कर रहा था और कई काम उसने खुल्लम खुल्ला ऐसे किये जिससे सभों को इस बात का विश्वास हो गया बल्कि एक काम तो उसने ऐसा किया कि कुल दर्बारियों को उससे खौफ और बादशाह को उससे नफरत हो गई अर्थात् उसने शाद अलाहखा को जिसे शाहजहा तमाम मुल्क एशिया में बडा बुद्धिमान और सुयोग्य वजीर समझता था और जिससे बादशाह को हद्द दरजे की मोहब्बत थी मरवा डाला। न मालूम वह कौन सा जुर्म था जिससे दाराशिकोह ने इसे इस योग्य समझा। लोगों का खयाल है कि दाराशिकोह को उससे इस बात का खटका था कि कहीं बादशाह के मरने के बाद वह मुझसे नाराज होकर मेरे किसी दूसरे भाई को तख्त पर न बैठा दे, क्योंकि सब कोई उसकी कदर करते हैं और वह इस काम को सहज ही में कर सकता है।

अस्तु कुछ तो दाराशिकोह की बेअदबियों को रोकने की नीयत से और कुछ हीरों की लालच में पड कर बादशाह ने यह हुक्म दिया। मगर दाराशिकोह को यह बात बुरी मालूम हुई क्योंकि वह जानता था कि इस फौज से औरङ्गजेब की ताकत और हिम्मत बढ जाएगी। अस्तु उसने इस मामले में बहुत हुज्जत की और बादशाह को इस कार्रवाई से रोकना चाहा मगर जब देखा कि बादशाह उसके रोकने से न रुकेगा तब समझा-बुझा कर नीचे लिखी शर्तें तै कराई गई–

(१) यह कि इस लडाई में औरङ्गजेब कुछ दखल न दे।

(२) यह कि औरगजेब दौलताबाद ही में बना रहे वहा से हिले नहीं।

(३) यह कि जो मुल्क औरङ्गजेब को दिया गया है वह उसी का इन्तजाम करे इस फौज या फतह से उसे कुछ सरोकार न रहे।

(४) यह फौज केवल मीरजुमला के मातहत और कब्जे में रहे मगर मीरजुमला अपनी नेकनीयती की जमानत में अपने लडके-बालों को यहां छोड जाय।

चौथी शर्त मीरजुमला को बहुत बुरी मालूम हुई मगर बादशाह ने उसे समझा-बुझा कर राजी कर लिया और कहा कि हम तुम्हारे बालबच्चों को तुम्हारे पास भेजवा देंगे।

आखिर मीरजुमला इस बहुत बडी फौज को लेकर दक्खिन की तरफ रवाना हो गया और दौडादौड़ बीजापूर के मुल्क में पहुच कर कल्यानी को घेर लिया जो एक मशहूर और मजबूत जगह है।

इस समय में जब कि बादशाही हुकूमत का यह रग-ढग था, शाहजहा की उम्र सत्तर वर्ष से ऊपर की हो चुकी थी यकायक वह ऐसा बीमार हो गया कि लोगों के खयाल में उसका बचना मुश्किल मालूम होता था। इसी खयाल से देहली (दिल्ली) और आगरे में तहलका पड गया और लोगों के दिल में तरह-तरह के खयालात पैदा होने लगे। इधर दाराशिकोह ने बहुत बडी और जबर्दस्त फौज जमा की। उधर बगाले में शुजा ने लडाई की तैयारियॉ शुरू कर दीं। दक्खिन और गुजरात में औरगजेब और मुरादबख्श लडाई की तैयारी करने लगे और ऐसी फौजें भरती कीं जिनसे उनका इरादा साफ मालूम होता था। मतलब यह कि शाहजहॉ के लडकों ने आगरे पर चढाई करने का बन्दोबस्त कर लिया और अपने दोस्त और मददगारों को बुला कर इकट्ठा करने और छिपे-छिपे रिश्वत देने-लेने का भी बन्दोबस्त करने लगे और तरह-तरह की चालबाजियॉ होने लगीं।

यद्यपि दाराशिकोह ने अपने भाइयों के पत्र पकड़ कर बादशाह (शाहजहॉ) को दिखाये और उनकी बदनीयती की शिकायत की मगर उसने कुछ न सुना क्योंकि बादशाह का दिल दाराशिकोह से फिर चुका था और दाराशिकोह पर उसे

कुछ भी एतवार न था। वल्कि वादशाह समझता था कि दाराशिकोह उसे जहर दिलवा देने की फिक्र में है इसी ख्याल से वह खाने पीने का भी बहुत खयाल रखता था।

इसी वीच में बादशाह की बीमारी इतनी बढ गई कि चारो तरफ उसक मरने की खबर फैल गई और तमाम दर्वार में अवतरी छा गई। आगरा निवासियों को यहाँ तक डर हो गया कि कई दिनों तक तमाम बाजार में हडताल रही और चारों शाहजादे भी मनमानती कार्यवाई करने लगे और साफ-साफ कह दिया कि अव इस मामले का फैसला तलवार ही से होगा और वास्तव में व अपने इस लडाई के इरादे को तोड नहीं सकते थे क्योंकि फतह पाने पर आगरे के तख्त पर बैठने की आशा थी और हारने अथवा लडाई से मुँह फर लेने की अवस्था में जान जाने का खौफ था। जिस तरह खुद शाहजहाँ अपने भाइयों के खून से हाथ रग कर तख्त पर बैठा था उसी तरह आज उसके सामने ही उसके लडक अपने भाइयों को मार तख्त पर वैठन का बन्दावस्त करन लग।

सबके पहिल शुजाउद्दौला (सुलतान शुजा) न जो बहुत से राजों को वर्वाद करके मालामाल हो गया था फौज जमा करक वडी तेजी के साथ आगरे की तरफ चढाई कर दी और यह इश्तहार दे दिया कि दाराशिकोह ने वादशाह (शाहजहाँ) को जहर देकर मार डाला है इसलिये हम इस खून का वदला उसस जरूर लेंगे और आगरे के तख्त पर जो इस समय खाली पडा हुआ है वैठकर हुकूमत करेंगे।

यद्यपि खुद बादशाह ने इस इश्तहार का जवाब दिया और उसको साफ-साफ लिखा कि मैं जीता-जागता हू बल्कि मरी बीमारी कुछ-कुछ आराम हो रही है अस्तु तुम्हें हुक्म दिया जाता है कि फौरन अपने सूबे की तरफ लौट जाओ। मगर इसका नतीजा कुछ भी न निकला क्योंकि शुजा के दोस्त लाग बराबर खबर दे रहे थे कि अब बादशाह की बीमारी आराम हाने लायक नहीं है और उनका बचना असम्भव है। अस्तु उसन यह हीला किया कि अगर मेरा बाप जीता है तो मै एक दफे उसका दशन करके अपने सूब की तरफ लौट जाऊँगा।

इसी तरह औरडगजेब ने भी वैस ही हील-बहान करक आगर की तरफ कूच किया। यद्यपि इसकी आमदनी बहुत कम थी और इसकी फौज में कुल तीस हजार सवार थे मगर हिम्मत में किसी तरह की कमी न थी। साथ ही इसके अपनी ताकत बढा लन का खयाल इसे ज्यादे था इस लिए मुरादबख्श और मीरजुमला की तरफ इसका ध्यान गया और इसने चाहा कि किसी तरह इन दोनों को अपना साथी बनाये आखिर औरगजब ने एक चीठी अपने छोटे भाई मुरादबख्श के पास भजी जिसका मतलब यह था –

प्यारे भाई 'तुम खुद जानते हो कि मरी तबीयत किस तरह की है और मैं हुकूमत की मेहनत को कैसा बुरा समझता हूँ। आज जब कि दाराशिकोह और शुजा बादशाही पाने के लिए जोर मार रहे है मेरी जान को फकीराना ढग पर रहने ही की फिक्र पडी हुई है। यद्यपि बादशाही हुकूमत और दौलत की तरफ मेरा ध्यान नहीं जाता तथापि मैं अपने प्यारे भाई, तुम) को राय दन से बाज नहीं रह सकता और एसा करना उचित समझता हू। दाराशिकोह बादशाही करने लायक नहीं है और उसने अपना मजहव भी छोड दिया है सल्तनत क बडे-बडे उमरा लोग भी उससे रज रहते है। इसी तरह शुजा में भी हुकूमत करने की अक्ल नहीं है और अधर्मी होने के साथ ही साथ हिन्दोस्तान का दुश्मन भी है। ऐसी अवस्था में इतने बडे हिन्दोस्तान की हुकूमत करने के लायक केवल आप ही है। वहाँ (आगरे) के बडे-बडे उमरा भी यही कह रहे है और आपक आने का इन्तजार करते है। मरे लिए आपको किसी तरह की फिक्र न करनी चाहिए। अगर आप इतना ही मुझसे करें कि जब आप बादशाह हा जायगे तो मुझ अपने मुल्क में कोई एकान्त स्थान ईश्वर का ध्यान करने के लिये देंदेंग क्यों कि मै फकीरी को बहुत पसन्द करता हूँ, तो इस काम में हर तरह से आपकी मदद करने के लिए तैयार हूँ,। अपने दोस्तों से भी मदद ले सकता हू और अपनी तमाम फौज भी आपके हवाले कर सकता हू। इस समय एक लाख रूपये बतौर नजर के आपके पास भेजता हू जिसे आप कबूल कीजिये और इस मौके को गनीमत समझकर जल्दी के साथ 'सूरत के किले पर कब्जा कर लीजिये। मुझे खूब मालूम है कि वहाँ बहुत से बादशाही खजाने गडे हैं जो इस समय आपके काम आवेंग।

भाई की चीठी पाकर मुरादबख्श बहुत ही खुश हुआ और बहादुरों तथा सौदागरों का (जिनसे कर्ज लेने की उम्मीद थी) खुश करके अपना साथी बनाने के लिए वह चीठी दिखाई और कई तरह की तर्कीबें करके उसने बहुत जल्द अपनी ताकत बढा ली और सूरत पर चढाई कर दी।

जब मुरादबख्श की तरफ से दिलजमई हो गई तब औरगजेब ने अपने बडे बेटे मुहम्मद सुलतान को मीरजुमला के पास भेजा और कहलाया कि एक बडा ही जरूरी काम है। मेहरबानी करके आप फौरन चले आवें और मुझसे मिलकर चल जाय। मगर मीरजुमला तो बडा ही चालाक आदमी था वह असल मतलब को समझ गया और आने से इनकार करक कहला भेजा कि 'कल्यानी की लडाई छाडकर इस वक्त मेरा फौज स बाहर होना अच्छा नहीं है आप विश्वास करें कि बादशाह (शाहजहा) अभी जीते है अभी हाल ही में मरा आदमी ताजी खबर लेकर आया है इसके अतिरिक्त जब

तक मेरे वालबच्चे वहा जमानत में फसे हुए है-तब तक मै आपका साथ नहीं दे सकता बल्कि मैं तो यही चाहता हूं कि इस बखेड़े में किसी का भी साथ न दूँ'।

आखिर मुहम्मद सुलतान नाराज होकर दौलताबाद लौट आया मगर इससे औरगजेब को किसी तरह की नाउम्मीदी न हुई और न उसका हौसला ही कम हुआ। उसने फिर अपने छोटे बेटे 'सुलतान मुअज्जिम" को उसके पास भेजा। इस लडके ने ऐसे ढग से बातचीत की और इस तरह से दोस्ती का ढग दिखाया कि मीरजुमला खुश हो गया और उसकी बातों से किसी तरह इनकार न कर सका। उसने "कल्यानी" के मुहासरे पर इतना जोर दिया कि आखिर किले वालों ने लाचार होकर किला खाली कर दिया। इस फतह के बाद वह अपनी चुनी हुई फौज को साथ लेकर औरगजेब के पास चला आया।

मुलाकात के समय औरगजेब ने उसकी बड़ी खातिर की और बात बात में भाईजान, बाबाजान और बाबाजी इत्यादि के नाम से सम्बोधन करके उसे कई दफे गले से लगाया और इसके बाद मीरजुमला को एकान्त में ले जाकर बातचीत करने लगा।

औरगजेब ने कहा, 'मुझे खूब मालूम है कि आपने मजबूरी की हालत में मेरे लड़के मुहम्मद सुलतान से यहा आने के बारे में इनकार किया था और मेरे बड़े-बड़े अक्लमन्द दर्बारी लोगों की भी यही राय है कि जब तक आपके बाल-बच्चे दाराशिकोह के काबू में है, आपको प्रकट में कोई ऐसा काम न करना चाहिये जिसमें लोग समझें कि हमारे-आपके बीच दोस्ती है या आपने किसी तरह पर मेरी मदद की है। खैर आप ऐसे अक्लमन्द आदमी को मै क्या समझाऊ, आप जानते ही है कि दुनिया में हर एक मुश्किल काम का कोई न कोई रास्ता निकल ही आता है, अस्तु मुझे एक तर्कीब सूझी है जिससे यद्यपि आपको ताज्जुब होगा मगर जब आप उसके ऊच-नीच को गौर के साथ सोचेंगे तब आपको मालूम होगा कि आपके बालबच्चों की सलामती के लिये यह बहुत अच्छा ढग है। वह यह है कि आप जाहिर में मेरे यहा कैद हो जाना कबूल कर लें, इससे दुनिया भर को मालूम हो जायेगा कि मेरे और आपके बीच दुश्मनी है, किसी को इस बात का शक भी न होगा कि आप ऐसे रुतबे का आदमी इस तरह सहज ही में कैद हो गया होगा। ऐसी अवस्था में हम लोग अपना काम बहुत अच्छी तरह निकाल लेंगे। इसके साथ ही मै आपकी फौज का एक हिस्सा, जिस तरह आप उचित समझेंगे, नौकर रख लूगा। इसके अतिरिक्त मुझे आशा है कि जिस तरह आप पहिले भी कई दफे मुझसे वादा करते रहे है, इस समय रूपयों की मदद देने से भी कभी इनकार न करेंगे, क्योंकि रूपयों की सख्त जरूरत है, आपके रूपयों और लश्कर से मै अपना नसीबा आजमाऊँगा। अब आज्ञा हो तो मैं इसी समय आपको दौलताबाद के किले में पहुचा दूँ, आप किसी तरह की चिन्ता न करें। वहा मेरा एक लड़का बराबर आपकी हिफाजत करता रहेगा। इसके बाद हम-आप मिल कर हर बात पर सलाह करते रहेंगे। ऐसी अवस्था में दाराशिकोह को आप पर कुछ शक न होगा और आपके बाल बच्चों को किसी तरह की तकलीफ न देगा क्योंकि वह तो आपको मेरा दुश्मन समझेगा।'

औरगजेब की ऐसी बातें सुनकर मीरजुमला दग हो गया। वह समझ गया कि औरगजेब ने मेरे साथ दगा की। साथ ही उसने यह भी देखा कि औरगजेब के दोनों लड़के तलवार लिये उसके सर पर खड़े है। उनमें से बड़ा लड़का तो (जो मीरजुमला के यहा से बैरग वापस आया था) बेतरह मूछों पर ताव दे रहा है मानों सर काट लेने के लिये तैयार है। उसे मौका-बेमौका देखकर सब कबूल कर लेना पड़ा और उसी दम कैद करके दौलताबाद के किले में भेज दिया गया। केवल इतना ही नहीं उसे रूपये पैसे से भी औरगजेब की मदद करनी पड़ी।

मीरजुमला के कैद हो जाने के बाद उसके फौजी लोग और बड़े-बड़े अफसर बिगड़ खड़े हुए और उन्होंने औरगजेब से कहा कि 'हमारे सर्दार मीरजुमला को आप छोड़ दें नहीं तो अच्छा न होगा। मगर औरगजेब ने उन लोगों को भी उसी तरह की बातें समझाकर राजी कर विश्वास करा दिया कि मीरजुमला अपनी खुशी से कैद होकर गया है। इसके बाद औरगजेब ने लोगों को खूब इनाम भी दिया और तनख्वाह बढ़ाकर सभों को खुद नौकर रख लिया बल्कि अपनी हिम्मत दिखाने के लिये तीन महीने की तनख्वाह पेशगी द दी। इस तौर पर मीरजुमला की फौज भी उस लड़ाई के लिए तैयार हो गई जिसकी औरगजेब को ज़रूरत थी। ऐसा होने से उसकी फौजी ताकत भी खासी हो गई।'

पाठक आप इस लम्बी-चौड़ी कहानी, नहीं नहीं बल्कि सच्ची ऐतिहासिक घटना को पढकर घबड़ा न जायें और यह न कहें कि 'व्यर्थ का पचड़ा निकाल दिया है जिसमें किसी तरह की दिलचस्पी नहीं है। इन बातों का लिखना बहुत जरूरी था क्योंकि इस किस्से के नायक उदयसिह और नायिका राजकुमारी धनवन्ती को जिस औरगजेब से पाला पड़ा है, उसके मिजाज की कैफियत और जमाने से सम्बन्ध है, उसके हाल से पूरा-पूरा जानकार हो जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त अगर हम इन सब बातों को एक साथ ही न लिख दिए होते तो आगे चलकर जगह-जगह पर जरा-जरा सी बात के लिए बहुत कुछ लिखना पड़ता।

इन सब कामों से छुट्टी पाकर औरगजेब ने सूरत की तरफ कूच किया जहा मुरादबख्श ने चढ़ाई की थी क्योंकि उसे खबर मिली थी कि अभी तक मुरादबख्श उस किले को फतह न कर सका। मगर कई मजिल जाने के बाद उसने सुना कि वह किला फतह हो गया परन्तु वहा से मुरादबख्श को कुछ विशेष रकम नहीं मिली। अस्तु औरगजेब ने मुबारकबाद के साथ मीरजुमला का सब हाल मुरादबख्श को लिख भेजा और यह भी लिख भेजा कि अब फौज और

रुपये की कुछ कमी नहीं है जहा तक जल्दी हो सके आगरे की तरफ कूच कर दो और मुझसे मिलन के लिये कोई ठिकाना मुकर्रर करके लिखो तो मै भी उसी जगह तुम्हारी फौज स आ मिलू।

मुरादवख्श का शहवाज नामी एक खाजसरा था। इसने इन सव वातो को देखकर मुरादवख्श को बहुत समझाया और बराबर समझाता रहा कि आप अपने नेमाजी भाई साहब की बातों में न पडिय और इनके फेर में आकर धोखा न खाइये। ऐसा ही जी चाहे तो उन्हें चिकनी चुपडी वातों में फसा रखिये और अकेल उन्हीं को आगरे की तरफ बढने दीजिये, आपका उनकी फौज मे मिल जाना अच्छा न होगा इत्यादि। मगर इसका नतीजा कुछ भी न हुआ क्योंकि बादशाह बन जाने के शौक में मुरादवख्श अन्धा हो रहा था और उसके भाई साहब का जादू उसपर चल चुका था खत पर खत आ रहे थे और सब्जबाग आखों के आग नाच रहा था। आखिर इसका नतीजा इसके लिए अच्छा न हुआ, जैसा कि आग चलकर मालूम होगा।

आखिर मुरादबख्श ने अपने मिलने का पता औरगजेब को लिखकर आगरे की तरफ कूच कर दिया और थोड ही दिनों में वहा जा पहुचा जहा औरगजव टिका हुआ उसका इन्तजार कर रहा था।

मुलाकात होने पर औरगजेब ने मुरादबख्श की बडी खातिर की और उसको फँसाने के लिए बहुत ही खूबसूरत जाल फैलाया जिसका खुलासा हाल इतिहासों के देखने से मालूम हो सकता है। हम इस छोटे से किस्सें में लिखना उचित नहीं समझते।

इसी तरह कूच दर कूच करता हुआ औरगजेब उज्जैन में आ पहुँचा था और इसी औरगजेब से हमारे उदयसिह को वास्ता था। अब हम भी इस बयान को यहा खतम करके अपने उदयसिह का हाल लिखते है।

पन्द्रहवां बयान

जब भरथसिह को मालूम हो गया कि फौजी सिपाहियों ने उसका खेमा घेर लिया है तब वह एक दफे तो घबराया सा होकर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये मगर तुरन्त ही कुछ ख्याल आजाने के कारण उसने चैतन्य होकर सिर उठाया और उदयसिह की तरफ देखकर बाला कोई चिन्ता नहीं भरथसिह क साथ दुश्मनी करना कोई मामूली बात नहीं मेरे मातहत में जितने सिपाही हैं व अपने को औरगजेब का नौकर नहीं समझते वल्कि अपने को मेरा नौकर समझते हैं। अस्तु अब तुम अपना नाम मत छिपाओ और रामसिह के नाम को भी मत छोडा। जो कुछ मै कहता हू, तुम उसी ढग पर काम करो। फिर देखो तो सही कि ईश्वर क्या करता है।

भरथसिह ने कुछ देर तक उदयसिह और रविदत्त को समझाया और चीठी लिखकर रविदत्त के हाथ में देने के बाद रविदत्त को तो उसी खेमे में छोडा और खुद उदयसिह का हाथ पकड हुए खेमे के बाहर निकला और लापरवाही की चाल चलता हुआ औरगजेब के खेमें की तरफ रवाना हुआ। साथ में वह चोबदार भी था।

जब य दोनों आदमी उस खेमे के दर्वाजे पर पहुचे तो इत्तिला होने पर खेमे के अन्दर बुलाए गए। उदयसिह ने इस खेमे को वैसा सजा हुआ न पाया जैसा बादशाहों या शाहजादों के लिए होना चाहिए और न उदयसिह को यह देखकर ताज्जुब ही हुआ कि साफ-सुथरा फर्श बिछा रहने पर भी ऊपर से एक-फूस की चटाई बिछाकर उस पर हाथ में तस्बीह (माला) लिए औरगजेब बैठा हुआ है क्योंकि यह औरगजेब की चालाकी का हाल खूब जानता था। दोनों ने झुक कर औरगजब को सलाम किया।

औरङ्ग – (भरथसिह से) भरथसिह! तुम ताज्जुब करोगे कि मैंने इस वक्त तुम्हें क्यों याद किया ?

भरथ – (हाथ जोड के) हुजूर मुझे तो इस बात का कोई ताज्जुब नहीं है क्योंकि लडाई का जमाना है और हमलोग हर वक्त चौकन्ने रहते हैं और रहना ही चाहिए। यह कोई नहीं कह सकता कि किस वक्त कैसा काम आ पडेगा या कैसी खबर सुनने में आवगी।

औरग – ठीक है।

भरथ – इसके अलावा मैं खुशखबरी के साथ एक शिकायत लेकर खुद हाजिर होने वाला था।

औरग – वह क्या ? और यह तुम्हारे साथ कौन है ?

भरथ – वह खुशखबरी या शिकायत जो मै अर्ज करूगा इन्हीं के बारे में है।

औरग – (अपने तस्बीह वाले हाथ से बैठने का इशारा करके) बैठ जाओ और कहो कि क्या मामला है।

इस समय कम से कम पचास आदमी नगी तलवारें लिए हुए खेमे के अन्दर निगहबानी के लिए खडे थे जिनमें से दस तो ऐसे जरूर होंगे जो भरथसिह को इज्जत के साथ प्यार करते थे। हुक्म के मुताबिक ये दोनों आदमी बैठ गए और इस तरह पर बातचीत होने लगी –

भरथ – (उदयसिह की तरफ इशारा करके) आप जानते ही होंगे कि इनके पिता सुजानसिह बादशाह सलामत (शाहजहाँ) के बहुत बड खैरखाह हैं।

औरग – बेशक बेशक मैं खूब जानता हू। तो क्या ये उदयसिह हैं ?

भरथ – जी हा।

औरग – मगर मैंने सुना था कि कोई रामसिह नाम का आदमी आज नया तुम्हार पास आया है।

भरथ – हुजूर इन्होंने थोडी देर के लिए अपना नाम रामसिह रख लिया था जिसमें मुझसे मुलाकात होने में किसी तरह की तकलीफ न हो।

औरग – ठीक है, तो इनका तुम्हारे यहा आना बड ताज्जुब की बात है।

भरथ – ताज्जुब की क्या बात है जब कि हुजूर खुद मुझे आज्ञा द चुके हैं कि 'आगरे में जिस पर तुम्हें भरोसा हो उसे अपना बनाने या बुलाने की फिक्र करो'।

औरग – मगर इनके बारे में कभी तुमने जिक्र भी नहीं किया था। जब इन पर तुम्हें भरोसा था ता जिक्र करना भी जरूर था।

भरथ – बेशक, इन पर मुझे भरोसा था, मगर इस बात की उम्मीद कम थी कि य मेरी बात मान जायगे क्योंकि य लोग अपने इरादे के बहुत पक्के और कट्टर है।

औरग – हा हो सकता है। इनके बाप इस वक्त कहा हैं ?

भरथ – वे काश्मीर की तरफ भेजे गए है, मगर दो-चार रोज में हाजिर हुआ चाहत हैं।

औरग–क्या इन्होंने इस बात का एकरार किया है कि ये लोग खुले दिल से हमारा साथ देंगे ?

भरथ – जी हा हुजूर !

औरग – इसकी जमानत में क्या

भरथ – मैंनें तो इनसे कह दिया है कि तुम बतौर जमानत के अपने बाल-बच्चों को 'सूरत' में या जहा हुजूर की मर्जी हो भेज दो।

औरग – इन्होंने मंजूर किया ? क्योंकि मुझसे बढ़कर इनाम देने वाला और कदर करने वाला इन्हें कोई नहीं मिल सकता।

भरथ – जी हा।

औरग–लेकिन ऐसी जमानत का बन्दोबस्त करने के लिये ये यहा से जाने की इजाजत चाहेंगे !!

भरथ – बेशक इनके गए बिना काम नहीं चल सकता। हा, अगर हुजूर जमानत का कुछ खयाल न करें ता

औरग – जब तुम खुद इनकी जमानत करने के लिये तैयार हो तो मैं और किसी बात का ज्यादे खयाल नहीं कर सकता, मगर खैर सोचकर इस बात का कल जवाब दूँगा।

अब तक तो उदयसिह चुपचाप बैठे दोनों की बातें सुन रहे थे मगर जब औरगजेब आखिरी बात कहकर चुप हो गया तब उदयसिह ने जुबान खोली। क्योंकि बातचीत से यह झलक रहा था कि अभी औरगजेब की तबीयत साफ नहीं हुई।

उदय – भरतसिहजी का मैं अपने चचा के बराबर समझता हू और इनकी इज्जत करता हू मगर इन्होंने कुछ तो चलाकी मेरे साथ जरूर की जिसका कि मुझे रज है, जब इन्होंने मुझे खत लिखा था तब इस बात का खयाल भी नहीं हुआ था कि यहा आने पर ऐसी कडी-कडी पाबन्दिया मेरे ऊपर लगाई जायेंगी। उस वक्त सिर्फ मैंने इतना ही सोचा था कि हम लोग क्षत्री और सिपाही आदमी हैं चाहे यहा रहें चाहे वहा रहें, लडने और जान देने के लिये तैयार रहना पडेगा। हा अगर मालिक कदरदान और सखी * होगा तो जीते रहने पर हम लोगों को भी मेहनत का पूरा बदला मिल जाएगा। इन्हीं चीठियों में हुजूर की तारीफें लिख-लिखकर विश्वास दिला दिया गया था कि यहा से बढकर बहादुरों की कदरदानी और हो ही नहीं सकती मगर इस बात का इशारा भी नहीं किया था कि यहा आकर तुम बेईमान समझे जाओगे और जान लडाने का पहिला इनाम यही मिलेगा कि तुम्हारे बालबच्चे जब्त कर लिये जायँगे। इसमें तो कोई शक नहीं कि मैं अपने बालबच्चों और रिश्तेदारों को उसी की अमलदारी में रखूगा जिसके साथ खुद रहूगा क्योंकि इससे बढकर और बेवकूफी हो ही क्या सकती है कि मैं उसी के मुकाबले में लड़ने के लिए जाऊ जिसके कब्जे में बालबच्चों को रख आया होऊ, मगर हा शर्त के नाम से कुछ रज होता ही है। भरथसिहजी ने मुझ से तो तरह-तरह की शर्तें करा ली है मगर खुद एक भी शर्त नहीं की और इतना भी न कहा कि तुम कोई अनूठा काम करके दिखादोगे तो तुम्हें क्या मिलेगा। (भरथसिह की तरफ देखकर) उस समय जो मैं आपसे कहता था कि मुझे जो कुछ कहना होगा हुजूर (औरगजेब) के सामने अर्ज करूगा वे ये ही बातें थीं। मैं खूब जानता हू कि इस वक्त मेरी मौत और जिन्दगी हुजूर के हाथ में है मगर इस बात की मुझे एक रत्ती भी पर्वाह नहीं है क्योंकि मैं जान लडाने के लिए तो आया ही हू मगर आप भी इस बात को खूब ही जानते हैं कि मैं उस बहादुर आदमी का लडका हू जो बडी-बड़ी लडाइयों में नाम पैदा कर चुका है। हा यह बात थोड़े दिन की होने के सबब से शायद आपको मालूम न हो कि आज मेरा बाप आगरे या दिल्ली में नहीं है बल्कि अपने बालबच्चे और औरतों को साथ लेकर किसी दूसरी जगह चला गया है और इस समय दो हजार सवारों का सर्दार बना हुआ है जो वक्त पर हुजूर के लिए जान लडा सकते है।

भरथ – यह बात भी मुझे मालूम है। आपके आने के घटे ही भर पहिले इस बात की भी खबर लग चुकी है।

* दानी।

बेशक औरगजेब का दिल उदयसिह की तरफ से साफ नहीं हुआ था। यद्यपि भरथसिह ने बहुत सी बातें बनाई मगर औरगजेब को विश्वास नहीं हुआ था और वह यही समझता था कि हमारे लश्कर में उदयसिह का आना नेकनीयती के साथ नहीं हुआ बल्कि किसी मतलब से है मगर उदयसिह की चलती-फिरती और बहादुरी से भरी हुई बातें सुनकर वह दग हो गया और उसे कुछ विश्वास हो गया कि यह जो कुछ कहता है सच है। आजकल औरगजेब को फौजी सिपाहियों और बहादुरों की सख्त जरूरत थी और वह अपनी ताकत बढाना चाहता था साथ ही इसके वह मतलबी भी हद दर्जे का जैसा कि ऊपर के बयान से मालूम हुआ होगा, था अतएव अब उसकी बातचीत का ढग बिलकुल ही बदल गया। पहिले यह बात भी उसके दिल में पैदा हुई थी कि उदयसिह को हिफाजत में कर ले मगर अब यह बात सुनकर रुक गया कि उसका बाप दो हजार सवारों का मालिक है जिसकी बहादुरी वह पहिले से जानता था। उदयसिह का चालाकी के साथ बात करना और साथ ही भरथसिह का हामी भर देना कि 'हा हम सुन चुके हैं' असर रखता था। इस समय उदयसिह की चालाकी पर भरथसिह ने भी दिल में तारीफ की और पुन उदयसिह से कहा–

भरथ – मरे प्यार भतीजे !तुम बहुत जल्द गुस्से में आ जाते हो और यह बात तुमनें लडकपन ही से है मगर यह नहीं सोचते कि मेर कहने का असल मतलब क्या है।

उदय – आप जा कुछ कहें ठीक है और मैं तो आपका लडका ही हू, आप जो हुक्म देंगे मानूहीगा मगर

औरग – नहीं नहीं उदयसिह तुम किसी बात की चिता मत करो ! जो कुछ भरतसिह तुम्हारे साथ वादा करेंगे मैं उसे दिलाजान स मजूर करूंगा।

भरथ – (औरगजेब स) हुजूर !अगर यह पहर दो पहर तक मेरी बातें सुनते तो मेरा मतलब समझ जाते और इतनी बातें न करते मगर इनकी मुलाकात को घटे भर से ज्यादे नहीं हुआ था कि हुजूर ने तलब फर्माया और हम लोग हाजिर हुए खैर रातभर में मैं इनकी दिलजमई कर दूँगा।

औरग – ठीक है अच्छा अब तुम लोग जाओ आराम करो। मेरे भी दोआ का वक्त हो गया।

दानों आदमी उठे और अपने डेरे की तरफ रवाना हुए। आधी दूर से ज्यादे न गये होंगे कि औरगजेब ने फिर भरथसिह को अपने पास बुलवा भेजा और जब वे आ गये तो औरगजेब ने अपने पास बैठाकर धीरे से कहा–

औरग – क्या तुम कह सकते हो कि उदयसिह तुम्हारी बातों को कबूल करेगा ?

भरथ – मुझ ता ऐसी ही उम्मीद है।

औरग – मैं समझता हू कि अगर वह तुम्हारी बात न माने तो उसे यहा से जाने न देनाचाहिये। क्यों तुम क्या सोचते हो ?

भरथ – (दबी जुबान से) मैं तो इस बात को पसन्द नहीं करता यही अच्छा समझता हू कि चाहे वह मेरी बात कबूल करे या न करे, दोनों हालातों में जहा तक जल्द हो सके यहा से उसे बिदा कर देना चहिये।

औरग – सो क्यों ?

भरथ – अव्वल तो यह कि उसे कैद कर लेने से हुजूर को कुछ फायदा न होगा बल्कि कुछ न कुछ नुक्सान ही हो सकता है क्योंकि उसका बाप बडा ही बहादुर आदमी है। दूसरे यह कि अगर वह रूठकर चला जायेगा तो मैं उसे फिर भी बुलवा सकता हू, उसको क्या उसके बाप को भी बुलवा सकता हू और समझा-बुझाकर अपना साथी बना सकता हू। तीसरे अभी तक उसको उस औरत का हाल मालूम नहीं है, अस्तु काम हो जाने के पहिले ही अगर वह हमारी बात मजूर कर ले तब भी उस यहा से चले जाना चाहिये। फिर उसके लौटकर आने तक देखा जायेगा।

औरग – तुम ठीक कहते हो अच्छा जाओ। जैसा मुनासिब समझना करना।

भरथसिह सलाम करके चला गया और बहुत जल्द उदयसिह के पास आ पहुचा और औरगजेब ने पुन बुला लेने का सबब बयान किया।

औरगजेब की चालाकी और होशियारी के बारे में कुछ मामूली बातचीत होने के बाद पुन उन दोनों में यों बातें होने लगीं –

भरथ – बेशक मैं औरगजेब का साथ छोड देता क्योंकि मुझे भी ऐसे धूर्त और खुदगरज के साथ रहना पसन्द नहीं है मगर क्या करू दो बातों का ख्याल करके अभी तक पडा हूँ।

उदय – बेशक।

भरथ – दूसरे यह कि इनको छोड़ के अगर मैं खुद बादशाह सलामत की तरफ जा मिलू तो वहा भी तो इसी तरह बेईमानी और चालाकियों का बाजार गरम रहता है, फिर जाऊ तो कहां जाऊ ? और बिना फौजी नौकरी किये जी भी नहीं मानता। इतना होने पर भी मै यह कहने से बाज न आऊगा कि समय आदमी से सब कुछ करा लेता है, ताज्जुब नहीं कि कोई ऐसा समय आ जाय जिसमें मै बिना कुछ सोचे एक दम इस नौकरी को तिलाजुली दे दूँ,

उदय – ([illegible]) और दक्खिन मे जाकर किसी बहादुर का साथ दूँ।

भरथ – ([illegible] सकता है।

उदय – [illegible] आज्ञा होती है ? उस औरत के विषय मे आपकी क्या राय है ?

भरथ – उस औरत के विषय में मेरी वही राय है जो पहिले थी अर्थात् उसे किसी तरह अवश्य छुडाना चाहिये।

उदय – कुछ आपका इस बात का भी पता लगा कि वह औरत कौन और कहॉ की रहने वाली है ?

भरथ – ठीक-ठीक नहीं मालूम हुआ मगर गुमान होता है कि वह जरूर किसी आपुस ही वाले की लडकी है। ऐसा मौका भी नहीं मिला कि उससे कुछ दरियाफ्त किया जाय और बिना विश्वास हुए वह किसी से कुछ कहेगी भी नहीं।

उदय – सो तो ठीक है अच्छा यह आपको जरूर मालूम हुआ होगा कि उसे यहा लाया कौन ?

भरथ – हा यह तो मालूम है, उसे देवीसिह और हरिदत्तसिह यहा लाए थे और जब वह किसी तरह भाग गई तो पुन उन्हीं दोनों ने गिरफ्तार भी करा दिया।

उदय – (ताज्जुब के साथ) देवीसिह और हरिदत्त ?

भरथ – हा।

उदय – और इन्हीं दोनों कम्बख्तों ने मेरे दोस्त रविदत्त के साथ भी दुश्मनी की थी।

भरथ – हा यह भी मुझे मालूम हो चुका है मैं बहुत ही खुश होता अगर उन दोनों को आप या आपके दोस्त गिरफ्तार कर लेते क्योंकि मै उनके साथ जाहिर में किसी तरह दुश्मनी का बर्ताव नहीं कर सकता।

उदय – बेशक ऐसा ही है मुझे उन दोनों के साफ निकल जाने का बडा रज है। इस समय न मालूम वे दोनों कहा और किस फिक्र में होंगे। खैर अब हमें उस औरत के विषय में बातचीत करनी चहिये और इस बात का भी निश्चय कर लेना चहिये कि इस काम के लिये हम लोगों को कहा तक कर गुजरने की हिम्मत बाध लेनी चहिये।

भरथ – मै तो इस नेक काम के लिये नौकरी तो क्या जान तक देने के लिये तैयार हू। हम लोगों के देखते-देखते एक क्षत्री की सूधी सादी लडकी क्या इस तरह मुसल्मानों के हाथ से बेइज्जत हो सकती है ?

उदय – शाबाश ! शाबाश !! अच्छा तो मुझे आप अपने से भी ज्यादे मुस्तैद पावेंगे।

इसके बाद बहुत देर तक उन लोगों में धीरे-धीरे बातें होती रहीं और जब रात थोडी सी बाकी रह गई तब रविदत्त और उदयसिह वहा से बिदा हुए और लश्कर के बाहर हो जगल की तरफ चल निकले।

सोलहवां बयान

उपर लिखी वारदात के दूसरे दिन हम पुन अपने पाठकों को औरगजेब के लश्कर में ले चल कर उस खेमे के अन्दर का कुछ तमाशा दिखाते हैं जिसमें वह बेचारी औरत हिफाजत के साथ रक्खी गई है जिसे छुडाने के लिये हमारे बहादुर नौजवान और भरथसिह ने बीडा उठा लिया है।

रात का समय है। एक छोटे से मगर खूबसूरत खेमें के अन्दर बहुत ही साफ सुथरा फर्श बिछा हुआ है और एक तरफ बेशकीमत काश्मीरी गलीचे के ऊपर किमख्वाब की ऊची गद्दी लगी हुई है, जो बेशक उसी दु खिनी बालिका के लिये होगी जो एक तार पर उस खेमे में कैद की गई है , जिसने वहा अपना नाम कुन्द बतलाया है और जिसे छुडाने के लिये हमारे उदयसिह और भरथ तैयारिया कर रहे हैं। मगर वह बेचारी दु खिनी कुन्द उस खूबसूरत गद्दी पर बैठना पसन्द नहीं करती इसलिये गद्दी की बगल में फर्श पर एक तकिये के सहारे सिर झुकाये बैठी गर्म-गर्म आसू बहा रही है।

यद्यपि यह सफर का मुकाम है मगर तो भी यह छोटा सा खूबसूरत खमा एक तौर पर अच्छे ढग से सजा हुआ है सभी तरह का जरूरी सामान यहा मौजूद है और खूबसूरत शीशों में मोमबत्तिया जल रही हैं, तथा दस खूबसूरत और अच्छे गहने-कपडों से सजी हुई लौंडिया कमर में कटार लगाये कुन्द की खिदमत के लिये-फुसलाने और बहकाने के लिये वहा मौजूद हैं जो कुन्द को चारों तरफ से घेर कर तरह-तरह की बातों से उसका दिल खुश किया चाहती हैं मगर कुन्द इन सब बातों की तरफ कुछ भी ध्यान नहीं देती और वह सर नीचे किये बराबर आसू गिरा रही है। यकायक कुन्द ने सर उठाया और एक लबी सास छोडकर धीरे से कहा, "हाय ! कहा वह उदय और कहा यह अस्त।

इसके जवाब में एक लौंडी ने तैश में आकर कुन्द से कहा।

लौंडी – फिर वे ही शब्द ! रानी साहेबा ! आप अपनी तरफ कुछ भी ध्यान न देतीं और इस बात को कुछ भी नहीं सोचती कि आप कितनी बडी दौलत और हश्मत को लात मार रही हैं और साथ ही इसके कम्बख्ती और बेइज्जती का अपने लिये बुला रही हैं। जिस नाम से हमारे सरकार को रज होता है वही नाम आप अपने मुँह से निकालती हैं और जरा भी नहीं

कुन्द – (चिढकर) मै ऐसी दौलत और हश्मत को लाख बार लानत भेजती हू, मुझे अपने धर्म की इज्जत बहुत ही प्यारी है चाहे उसके लिये कैसी ही तकलीफ क्यों न उठानी पडे, साथ ही इसके मै उस प्यारे नाम को कभी नहीं भूल सकती जिसकी उम्मीद में अभी तक जी रही हू नहीं तो मुझे जान देते क्या देर लगती है ? यद्यपि तुमने मेरे हर्बे छीन लिये हैं, यद्यपि तुम हर तरह से मुझे बेइज्जत करने पर तैयार हो मगर फिर भी मै

इतना कहते-कहते न मालूम क्या सोच कर रुक गइ और गुस्से स फडकते हुए होंठों को दबा कर चुप हो रही। लौंडी ने फिर कहा--

लौंडी -- खैर जो जी में आवे कहो और करो। मुझ कुछ कहने-सुनने का हक तो है नहीं मगर आपस एक तरह की मुहब्बत हो गई है इसलिए कभी-कभी कुछ कहे या समझाए बिना जी नहीं मानता।

दूसरी लौंडी -- बीबी ! न मालूम इनका खयाल कैसा ह और क्या सोचती है मर तो कुछ समझ ही में नही आता ! ये जान चुकी हैं कि हमारे हूजूर कैसे जिद्दी और अपने इरादे के पक्के हैं। जिस समय इन्हें बुला भेजेंगे झक मार के जाना ही पडेगा और कुछ करते बन न पडेगा। फिर जो काम हो ही नहीं सकता उसक लिए रोना काहे का ?

कुन्द -- (गुस्से में आकर) दुनिया म ऐसा कौन सा काम है जो आदमी क लिए नहीं हो सकता। धीरज धरना और ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिये। तुम लोग सोचती होवोगी कि इस खेम क चारो तरफ सैकडों मोगल पहरा दे रह हैं और हम लोग भी कटार लगाए हरदम घर रहती हे ऐसी अवस्था में कुन्द यहाँ स जान बचा कर नहीं निकल जा सकती हे। मगर यह सब तुम्हारा भ्रम है हमारा ईश्वर हजार हाथ से हमारी रक्षा करगा और किसी न किसी को हमारी मदद के लिए भज ही देगा।

लौंडी -- (मुस्कुरा कर) खैर हम लोगों को इस बहस से क्या मतलब? जो कुछ होगा दखा जायेगा।

इसके जवाब में दूसरी लौडी भी कुछ बोला ही चाहती थी कि खेमे क बाहर से कुछ खडखडाहट की आहट मालूम हुई और साथ ही इसके धरो-धरो पकडो-पकडो की आवाज भी सुनाई देने लगी। बात की बात में अन्दर वालों को निश्चय होगया कि उस खेमे पर डाका पडा और वास्तव में बात भी ऐसी ही थी। इस खेमे की हिफाजत पर डढ सौ मोगल तैयार थे जिनपर इस समय यकायक बहुत से आदमी आ टूटे और बतरह मारने लग। मोगलों ने बडे जोर के साथ उनका मुकाबला किया मगर उनकी हिम्मत और बहादुरी के सामने कुछ भी न कर सक थोडी ही देर म आधे से ज्यादे मारे गए और बाकी के भी हिम्मत हार कर छितर-बितर हो गए। उसी समय दुश्मनों को मारते हुए दस-ग्यारह आदमी खेमे के अन्दर आ घुसे और लौंडियों क दखत ही दखते एक न कुन्द को गोद में उठा लिया और बाकी साथियों के सहार बचते-बचाते खेमे से क्या बल्कि लश्कर से भी बाहर हो गए। सभों के चेहरे पर स्याह कपडे का नकाब पडा हुआ था इसलिए कोई पहिचान न सका कि कौन या किस जाति क आदमी थे जो यकायक इस तरह आ टूटे और अपना काम कर चल गए। लश्कर में इस बात का हल्ला मच गया हजारों फौजी सिपाही वहाँ आ जुट भरथसिह भी बहुत से आदमियों को लेकर वहाँ आ पहुँचा चारों तरफ मशालें रौशन हो गई मगर दुश्मनों का पता न लगा। अन्त में लाशों की जाँच होन लगी जिनमें बीस लाशें गैरों की पाई गई जिन पर राजपूत या क्षत्री होने का गुमान होता था मगर इस बात का पता न चला कि वे किसक साथी या सिपाही थे। भरथसिह बार-बार यही कहता था कि ये राजा जसवन्तसिह के सिपाही हें जो दाराशिकोह की तरफ से हमारे मुकाबल में आया हुआ है।

इस समय रात नाममात्र का बाकी रह गई थी। हो-हल्ला और लाशों की जाच होते-होते सुबह की सुफेदी निकल आई। जिस समय औरङगजेब का यह खबर लगी मारे गुस्से के वह आगबबूला हो गया और छूटते ही उसके मुँह से यह निकल पड़ा कि बेशक यह काम उदयसिह का है।

बहुत थोडी दर तक औरङगजेब कुछ सोचता रहा। इसके बाद खेमे के बाहर निकल आया। उसने भरथसिह को तलब किया। जब वह हाजिर हुआ तो दोनों में इस तरह बतचीत होने लगी --

औरङग -- (गुस्से में भरा हुआ) आज तो हमारे सिपाहियों ने बहुत ही बोदापन दिखाया ! थोड से आदमी इस तरह लश्कर में घुस आवें और जक देकर जले जायँ, आप लोगों के लिए कुछ न हो ! बडे अफसोस की बात है !!

भरथ -- बेशक अफसोस की बात है। उन पहरे वालों से यह भी न बन पडा कि मुझ तक खबर तो पहुँचा दते ! जब मै कोलाहल सुन कर वहाँ पहुँचा तब सब काम खतम हो चुका था।

औरङग -- (सिर हिला कर) जो हो मगर मुझ इस बात का गुमान होता है कि यह काम उदयसिह का है।

भरथ -- अगर यह काम उदससिह का हे तो मेर लिए बडे ही आश्चर्य की बात है क्योंकि मुझे उससे ऐसी उम्मीद नहीं हो सकती।

औरङ्ग -- (जिस तरह तुम्हारा दिल उसकी तरफ से साफ है खुदा कर मेरा दिल भी उसी तरह साफ हो जाय और मैं ऐसा करने की कोशिश करूँगा। (कुछ सोच कर) अच्छा जाओ, फिर जैसे होगा देखा जायेगा।

भरथसिह स ज्यादे देर तक बात करना औरङ्गजेब ने मुनासिब न समझा क्योंकि इस समय वह कई तरह क तरद्दुओं में पडा हुआ था और इसी सबब से मौका देख कर अपने फौजी अफसर को नाराज भी नहीं किया चाहता था और न किसी को सजा ही दे सकता था क्योंकि दुश्मनों की बेशुमार फौज सामने पडी हुई थी और हर वक्त लडाई का ढग बना रहता था ऐसी अवस्था में अपनी फौज में किसी तरह की अबतरी डालना या नाराजी फैलाना औरङ्गजेब जैसे चालाक और मतलबी आदमी का काम न था। उसने सिर्फ दो टप्पी बातें करके भरथसिह को विदा किया और अपन खेमे

म आकर कुछ सोचता हुआ टहलने लगा।

सत्रहवां बयान

बेचारी कुन्द बहुत ही बेढब फॅसी हुई थी। वह मुसल्मानों के हाथ से बेइज्जती उठाने की बनिस्बत तड़प-तड़प कर जान दे देना पसद करती थी। यद्यपि अब उसके पास कोई हर्बा न था, जो कुछ था वह छीन लिया गया था तथापि उसे विश्वास था कि धर्म नष्ट होने के पहिले ही किसी न किसी तरकीब से वह अपनी जान दे सकती है। साथ ही इसके वह इस फिक्र में भी थी कि यहाँ से निकल भागने की कोई तरकीब हाथ आ जाय। इन डाकुओं की तरह आ पहुँचने वाले बहादुरों को यद्यपि वह जानती न थी बल्कि उन सभों के चेहरों पर नकाब पड़ी रहने के सबब से यह भी नहीं समझ सकती थी कि ये किस जाति के आदमी हैं तथापि उनकी बदौलत यहाँ से छुटकारा मिलने को वह गनीमत समझती थी। हॉ इस बात की फिक्र उसे जरूर थी कि 'मुझे गोद में उठा कर ले भागने वाला बहादुर कौन है! कहीं ऐसा न हो कि यह गोद मेरे लिए दु खदायी बन जाय'।

उस समय रात बहुत कम बाकी थी जब एक नौजवान बहादुर उसे गोद में उठा कर ले भागा था। लश्कर के बाहर कुछ दूर पर एक आड़ में कई कसे-कसाए घोडे और पॉच-सात सवार मुस्तैद खडे थे। जब वह नौजवान वहाँ पहुँचा तो उसने कुन्द को एक घोडे पर बैठा दिया और आप भी उसी पर सवार होकर कुन्द को गोद में ले लिया। उसके साथियों में से भी कई आदमी उन खाली घोड़ों पर सवार हो गए तथा पहिले से जो सवार मुस्तैद थे उन सभों को साथ लिए हुए वह बहादुर जङ्गल और पहाड़ी की तरफ तेजी के साथ रवाना हो गया।

उस समय कुन्द डर, चिन्ता और घबडाहट के कारण कुछ बेहोश सी हो रही थी, जब मैदान में ठडी हवा के झपेटे लगे तब वह चैतन्य हुई और उसने गरदन घुमा कर आदमी के चेहरे पर निगाह डाली जो उसे गोद में लिए बैठा था और जिसने इस समय अपनी नकाब पीछे की तरफ उलट दी थी।

अहा! कोई कह सकता है कि इस समय कुन्द उसे पहिचान कर कितनी खुश हुई होगी? यद्यपि वह नौजवान कुन्द को नहीं पहिचानता था मगर कुन्द ने निगाह पड़ते ही पहिचान लिया कि यह बहादुर उदयसिह है।

चाहे इस समय कुन्द बहुत ही प्रसन्न हुई हो परन्तु लज्जा ने उससे बढ कर कुन्द पर अपना दखल जमा लिया। शर्म से उसकी गर्दन घूम कर नीची हो गई और ठडी हवा के झपेटे लगते रहने पर भी उसका चेहरा पसीने से भर गया। उदयसिह भी इस बात को समझ गया और चिन्ता करने लगा कि शीघ्र ही कोई आड की और स्वतन्त्र जगह मिल जाय जहाँ हम लोग ठहर कर दो घटे आराम करें और जानें कि यह सुशीला लड़की कौन है।

घटे भर दिन चढने तक ये लोग बराबर तेजी के साथ घोड़ा दौड़ाए चले गये और इसके बाद ऐसी जगह पहुँचे जहा दो पहाडियॉ आपस में मिली हुई थीं और वहाँ के पेड़ भी बहुत गुञ्जान तथा घने थे। मालूम होता है कि यह स्थान उनका जाना हुआ था और इसे वे अपने मतलब का समझते थे क्योंकि वहाँ पहुँचते ही इन लोगों ने अपने घोड़ों की तेजी रोकी और पथरीली जमीन पर धीरे-धीरे चल कर नीचे उतरे और कुन्द को भी सम्हाल कर उतारा तथा झरने के किनारे जीनपोश बिछा कर उसे बैठा दिया। उसके साथी सवारों ने कुछ हट कर पेड़ों की आड में अपना डेरा जमाया।

उदयसिंह ने अपना घोड़ा अपने साथियों के सुपुर्द कर दिया और इसके बाद कुन्द के पास आकर एक धोती तथा कुछ मेवा उसके पास रख कर कहा, 'अब तुम किसी तरह की चिन्ता न करो और यहाँ बेफिक्री के साथ जरूरी कामों से छुट्टी पाकर स्नान और जलपान कर लो। दो घण्टे के अन्दर ही अन्दर हमें सब कामों से छुट्टी पाकर यहाँ से चल देना चाहिए।'

उसकी बातों का कुन्द क्या जवाब देगी, इसका कुछ खयाल न करके उदयसिंह वहाँ से हट गया और आड़ में होकर अपने साथियों के साथ जा मिला, मगर इस बात का ध्यान रक्खा कि अकेली पड़ जाने के कारण कुन्द पर किसी तरह की आफत न आ जाय।

थोडी देर के बाद जब उदयसिह को मालूम हो गया कि कुन्द जरूरी कामों से छुट्टी पाकर चश्मे के किनारे अपने ठिकाने पर आकर बैठ गई है, तब वह उसके पास गया और बोला, 'मैं समझता हूँ कि अब तुम सब कामों से छुट्टी पा चुकी होगी।'

कुन्द – (सिर झुकाए हुए) जी हॉ, अब मैं चलने के लिए तैयार हूँ, मगर क्या फिर मुझे उसी ढङ्ग में सफर करना पड़ेगा?

उदय – (मुस्कुरा कर) अगर उसी तरह फिर मेरे साथ घोडे पर सवार होकर तुम सफर करोगी तो उसमें हर्ज क्या है?

कुन्द – (लज्जा के साथ) जी नहीं, उस समय की बात और थी और इस समय की बात और है, आखिर लज्जा को मैं क्योंकर तिलाजुली दे सकती हूँ।

उदय – क्या तुम स्वय घोडे पर सवार हो सकती हो?

कुन्द – जी हाँ, मै बखूबी सवार हो सकती हूँ।

उदय – अच्छा हो वैसा ही प्रवन्ध कर दिया जायेगा। इस समय मेरे दिल में कई तरह के खुटके पैदा हो रहे हैं इसलिए मै दो चार बातें तुमसे दरियाफ्त किया चाहता हूँ, क्या तुम मेरी बातों का ठीक-ठीक जवाब दोगी ?

कुन्द – मै भला आप से झूठ क्यों बोलने लगी जिसने इस आफत में मेरी इज्जत बचाई है ?

उदय – अच्छा पहिले यह बताओ कि इस औरगजेब के लश्कर में तुम कब से फँसी हुई हो ?

कुन्द – पाँच या छ दिन से।

उदय – इस बीच में खाने-पीने की तरफ से तुम्हारा धर्म क्योंकर बचा होगा ?

कुन्द–यदि मेरी इच्छा के विरुद्ध खाने-पीने में मेर साथ जबरदस्ती की जाती है तो क्या वास्तव में मेरा धर्म नष्ट हो जाता ? मै तो ऐसा नहीं समझती !तथापि मै ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ कि उसकी कृपा से मरथसिंह की बदौलत मेरे धर्म में किसी तरह का धब्बा नहीं लगा, उस महात्मा ने हर तरह से मेरी मदद की।

उदय – इसके लिए मै भी ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ। मैने मरथसिंह से सुना था कि तुम मुझे पहिचानती हो और वहाँ कई दफे तुम्हारे मुँह से मेरा नाम निकल चुका था। क्या यह बात सच है ?

कुन्द – जी हाँ, सच है।

उदय – (ताज्जुब से) तुम मुझे क्योंकर पहिचानती हो ? क्योंकि मै तुम्हें बिल्कुल नहीं जानता !!

कुन्द – इसका जवाब मै अभी नहीं दिया चाहती।

उदय – अगर ऐसा करोगी तो तुम बडा ही अनर्थ करोगी क्योंकि इस बात के जाने बिना मेरा जी बहुत ही बेचैन हो रहा है।

कुन्द – (कुछ सोच कर) अच्छा यह बताइये कि आप शकरसिह जी को जानते हैं ?

उदय – यद्यपि मैं उनस अच्छी तरह परिचित नहीं हूँ परन्तु उन्हें वखूबी जानता हूँ क्योंकि वे मेरे ससुर होत है।

कुन्द – मैंने तो सुना था कि आपकी शादी नहीं हुई है फिर वे आपके ससुर क्यों कर हुए ?

उदय – हॉ लोग तो ऐसा ही कहते है और मै भी अभी तक यही समझता था मगर

कुन्द – 'मगर क्या ? देखिए मै आपको ईश्वर की शपथ देकर कहती हूँ कि आप मुझसे झूठ कदापि न बोलें।

उदय – नहीं नहीं, मैं कदापि झूठ न बोलूँगा।

कुन्द – अच्छा तो बताइये कि 'मगर क्या ?

उदय – मगर अभी बहुत थोडे दिन हुए है मेरी माता ने मरते समय अकेले में मुझे बहुत सी बातें समझाई थीं, उसी के साथ यह भी कहा था कि 'तुम्हारी शादी बहुत बच्चेपन में जोधपुर के प्रसिद्ध वीर शकरसिह जी की लड़की से हो चुकी है, इस बात को हमारे यहाँ तीन-चार आदमी के सिवाय और कोई भी नहीं जानता तुम भी किसी से इस बात का जिक्र न करना और उचित समय पर अपनी स्त्री को अपने घर ले आना। खबरदार अपने बाप से भी इस विषय में कुछ न पूछना और न वे तुम्हें इस बात का कुछ जवाब ही देंगे'। इत्यादि इतनी ही बातें कहते कहते वह शान्त हो गई और उनकी आत्मा ने शरीर का साथ छोड दिया जिसका मुझे बड़ा ही दु ख है। अभी तक मुझे इस बात का भ्रम वना ही हुआ है कि उन्होंने ये बातें सच कही थीं या यों ही बेहोशी की अवस्था में बक गई थीं !!

कुन्द – (कुछ सोच कर) एक दफे मैने भी इसी ढग की बातें अपनी माता से सुनी थीं मगर उस पर मुझ पूरा भरोसा नहीं हुआ आज जब आपके मुँह से भी ऐसी वातें सुनीं तो मुझे विश्वास होता है कि मेरी माँ ने सच ही कहा होगा।

उदय – यह तो तुम और भी ताज्जुब की बात कह रही हो !अच्छा यह बताओ कि उन शकरसिह से तुम्हारा क्या सबध है ?

कुन्द – मै उनकी इकलौती लडकी हूँ, सिवाय मेरे उन्हें और कोई औलाद नहीं है।

उदय – (ताज्जुब के साथ घबड़ाकर) है !क्या तुम शकरसिहजी की लडकी हो !!

कुन्द – जी हाँ, मेरे साथ देवीसिह और हरिदत्तसिह *ने दगा की और औरगजेब के हाथ में ला फँसाया।

उदय – (कुछ देर तक सोचने के बाद) तुम्हारे माता और पिता दोनों जीते है ?

कुन्द – जी हाँ मगर इस समय न मालूम उन दोनों की क्या अवस्था होगी और मेरे विषय में कैसी बातें सोचते होंगे।

उदय – अच्छा तो अब तुम क्या चाहती हो ? तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा दिया जाय या,

कुन्द – यह आप ही की इच्छा पर निर्भर है, आप जो चाहें सो करें मै आपकी थी सो ईश्वर ने आपके हाथ में मुझे पहुँचा दिया। अब आपकी जो इच्छा हो सो करें, मै केवल इतना ही चाहती हूँ कि मेरे माता-पिता को मेरी खबर जरूर मिल जाए जिसमें उनकी चिन्ता दूर हो।

उदय – (प्रसन्नता के साथ) अच्छा तुम जरा ठहरो, मै अपने मित्र रविदत्त को इन बातों की खबर कर दूँ और उससे भी राय ले लूँ कि अब क्या करना चाहिए।

---

*जिन्होंने रविदत्त को मारा और बेहोश किया था।

इतना कहकर उदयसिंह वहाँ से उठा और अपने मित्र रविदत्त के पास चला गया और उसे एकान्त में ले जाकर बातें करने लगा।

रविदत्त को इस बात की कुछ खबर न थी कि उदयसिंह की शादी गुप्त रीति से शंकरसिंहजी की लड़की के साथ हो चुकी है, वह यही जानता था कि हमारा मित्र अभी तक कुँआरा है। यह बात एक भेद की तरह छिपी हुई थी जिसे इस समय सुनकर रविदत्त बहुत ही प्रसन्न हुआ और अपने मित्र को बधाई देकर उसकी स्त्री के विषय में सलाह करने लगा कि अब क्या करना चाहिए ! थोड़ी देर तक बातचीत करने के बाद दोनों आदमी कुन्द के पास चले आए। उदयसिंह ने कुन्द से कहा, 'मेरे मित्र से तुम्हें किसी तरह का पर्दा न करना चाहिए, मैं इनसे किसी तरह का भेद नहीं रखता इसलिए इन्हें तुम्हारे पास ले आया हूँ, इनकी राय है कि तुम्हारा इस समय अपने पिता के घर जाना मुनासिब न होगा क्योंकि ताज्जुब नहीं कि पुनः देवीसिंह और हरिदत्तसिंह की बदौलत तुम्हें किसी तरह की तकलीफ उठानी पड़े या तुम्हारे माता-पिता ही किसी आफत में पड़ जायें।'

कुन्द – जी हाँ अगर ऐसा खयाल है तो

उदय – और अपने घर ले चलना भी इस समय उचित नहीं जान पड़ता क्योंकि वहाँ भी आजकल खराबी मची हुई है और वहाँ से तरह-तरह की खबरें उड़ रही हैं अस्तु इस समय यही उचित जान पड़ता है कि तुम्हें उदयपुर अपने मामा के यहाँ कुछ दिन के लिए पहुँचा दूँ, शान्ति हो जाने पर और दुश्मनों से बदला ले चुकने के बाद अपने घर ले आऊँगा। तुम्हारी क्या राय है ?

कुन्द – जो आपकी मर्जी हो वही ठीक है नहीं तो मेरी राय तो यही है कि मुझे मरदानी पौशाक पहिरा दी जाय, क्योंकि मुझे इस तरह की शिक्षा भी दी गई है और मैं आपके साथ रहकर दुश्मनों का मुकाबला कर सकती हूँ।

उदय – तुम्हारे हौसले पर मुझे प्रसन्नता होती है, मगर इस समय जो कुछ मैं सोच चुका हूँ वही मुनासिब जान पड़ता है।

इसके बाद कुछ देर तक उदयसिंह कुन्द से मीठी-मीठी बातें करते रहे और पहर भर दिन चढ़ने के बाद सब कामों में छुट्टी पाकर जङ्गल ही जङ्गल और पहाड़ी ही पहाड़ी उदयपुर की तरफ रवाना हुए।

समाप्त

श्रीयुत् कृष्णचन्द्र बेरी,
हिन्दी प्रचारक संस्थान,
पिशाचमोचन वाराणसी,

पूजनीय भाई साहब, योग्य प्रणाम,

पूज्य दादाजी (स्व बाबू देवकीनन्दन खत्री) के सम्बन्ध में किन्ही राजनारायण शर्मा विशारद (रामपुर अयोध्या, पो. वैनी जिला समस्तीपुर) के लिखे तीन पत्र (१) १६ ३ ८८, (२) २८ ३ ८८, (३) २० ४ ८८ इस समय मेरे सामने हैं । यह तीनों पत्र आप म ही प्राप्त हुये हैं, जिनके सम्बन्ध मे आपने स्पष्टीकरण चाहा है ।

तीनों पत्रों में लिखित विवरण का अधिकांश भ्रामक है । तथा वे सर्वथा भिन्न होकर अल्पज्ञता का परिचायक भी हैं । पूज्य खत्री जी के परिवार से सम्बन्धित एक सदस्य के नाते मेरी जानकारी मे जो सत्य और प्रामाणिक हे, वह निम्नलिखित है ।

पूज्य खत्री जी के पिताश्री पूज्य लाला ईश्वरदास जी लगभग १७० वर्ष पूर्व मुलतान (आज के पाकिस्तान) से काशी आये थे । उस समय उनकी किशोरावस्था रही होगी । उनका विवाह पूसा के एक जमीदार परिवार में हुआ था । पूज्य खत्री जी अपने पिता, माता के एकमात्र पुत्र थे। इनका बाल्यकाल पूसा (बिहार) में बीता । अपने पैतृक व्यवसाय में इन्हें बिहार विशेष रूप से टिकारी राज्य से बहुत सम्बन्धित रहना पड़ा था । वहां इनकी व्यापारिक गद्दी थी और ये तत्कालीन नरेश के मित्र थे । चूकि टिकारी नरेश युवावस्था मे ही स्वर्गवासी हुये थे इस कारण यह भी वहां का कारबार समेट कर काशी चले आये थे ।

तत्कालीन काशी नरेश की बहिन उन टिकारी नरेश से ब्याही थीं, इस कारण से काशीनरेश भी खत्री जी का सम्मान करते थे । टिकारी से काशी आने पर खत्री जी ने राजा साहब बनारस से चकिया नौगढ के जगलों का ठीका ले लिया और लम्बी अवधि तक यह कार्य चला । तब खत्री युवक थे । जगल और ठीके का काम इनके सम्बन्धित कर्मचारी देखते थे, इनकी विशेष रुचि प्राकृतिक दृश्यों में, उसकी शोभा निरखने में थी । खत्री जी अपने कुछ मित्रों एव सेवकों के साथ स्वयं पालकी मे बैठे जंगल के मनोहारी दृश्य यथा-घाटियां, नदी, नाले, झरने, पुराने किले और खण्डहर देखने में अपना समय बिताते थे । कालान्तर में परिस्थितियो वश जंगल का ठीका छोडकर इन्हें काशी लौटना पडा और यहा वह अपने पैतृक निवास, लाहौरी टोला मे रहने लगे । उस समय पूज्य खत्री जी के पिता श्री जीवित थे ।

पूज्य खत्री जी कई भाषाओ के ज्ञाता और बहुपठित तो थे ही, ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा भी उनमें विलक्षण और भरपूर थी । फिर राजाओं और रियासतों से भरपूर निकटता भी थी, इसलिये उनके तौर तरीके, राजनीति षडयंत्र, रहस्यों का भी इन्हें ज्ञान था । खाली समय में बैठे बैठे जंगल, पहाड, जीवन के अनुभव, इन पर आधारित दृश्य, कल्पनालोक में विचरण करते हुये, मन लोक में "चन्द्रकान्ता" का कथानक बनने लगा । तभी लेखन मुद्रण प्रकाशन का आरम्भ किया । चूकि कहानी बहुत लम्बी हुई, क्रमश लिखी जाती रही, छपती रही, इसमें लम्बी अवधि बीती । उनके अन्तिम काल में (१) "भूतनाथ", (२) "गुप्त गोदना", (३) "वीरेन्द्र वीर और कटोरा भर खून" — तीन पुस्तकें अधूरी रह गई थीं । इनमें "चन्द्रकान्ता" सीरीज से

सम्बन्धित ''भूतनाथ'' पुस्तक सातवें भाग से २१वें भाग तक तथा इसी क्रम में रोहतास मठ ६ भाग लिख कर पूज्य खत्री जी के यशस्वी पुत्र स्व वावू दुर्गा प्रसाद खत्री जी ने पूर्ण किया।

पूज्य खत्री जी के परिवार सम्बन्धी तथ्य निम्नलिखित हैं

१ पूज्य लाला ईश्वरदास जी —के पुत्र

२ पूज्य बाबू देवकीनन्दन खत्री जी —के पुत्रगण

३ (क) वावू-दुर्गा प्रसाद खत्री (ख) वावू-परमानन्द खत्री, (ग) बाबू-मथुरा प्रसाद खत्री (घ) पुत्री-यशोदा देवी (यशोदा देवी माता पिता की प्रथम सन्तान थीं)

४ वावू दुर्गा प्रसाद खत्री जी की सन्तान —
(क) श्रीमती लक्ष्मीदेवी (इनके दो पुत्र) काशी निवास
(ख) श्री कमला पति खत्री (इनके तीन पुत्रियां, एक पुत्र), काशी निवास

५ वावू —परमानन्द खत्री जी की सन्तान–
(क) स्व कल्लोदेवी (कलकत्ता में विवाहित, दिवंगत, इनकी सन्तति हैं)
(ख) स्व कुसुम देवी (विवाहोपरान्त काशी में निवास, दिवगत,, इनकी सन्तति हैं)

६ वावू-मथुरा प्रसाद जी खत्री की सन्तान–
(क) श्री वैजनाथ प्रसाद खत्री (इनके एक पुत्र, तीन पुत्रियां) सम्प्रति पटना निवास
(ख) श्री श्रीकृष्ण प्रसाद खत्री (इनके एक पुत्र, दो पुत्रियां) विहार शासन में पदाधिकारी
(ग) श्री केशव प्रसाद खत्री (काशी निवास) एवं
(घ) श्रीमती मालती देवी (विवाहित, काशी निवास)

७ स्व यशोदा देवी की सन्तान–
(क) श्री किशोरीलाल खन्ना (इनके पांच पुत्र, एक पुत्री) सम्प्रति पटना निवास
(ख) श्री विश्वनाथ जी खन्ना (इनके कई सन्तान) सम्प्रति कलकत्ता निवास
(ग) स्व लालोदेवी (इनके कई पुत्र, पुत्रिया) अमृतसर निवास

द्रष्टव्य १ पूज्य वाबू देवकीनन्दन खत्री जी के तृतीय पुत्र (सन्तति संख्याक्रम में) स्व परमानन्द जी थे। भाई नहीं।

२ स्व खत्री जी की सन्तान-तीन पुत्र, १ पुत्री, सभी दिवंगत हो चुके हैं, उनके वशज जो विद्यमान हैं, विवरण उपरोक्त है।

३ स्व खत्री जी के मित्रों में तत्कालीन काशीनरेश, एवं प० नारायणपति जी त्रिपाठी (प० कमलापति जी त्रिपाठी के पिता श्री) उल्लेखनीय हैं। इनके परिवार से शंका समाधान या सत्यापन कराया जा सकता है।

और अन्त में ४ व्यक्ति पर ननिहाल और पैतृक दोनों के हक होते हैं। ५ खत्री जी का ननिहाल विहार, पूसा में था, इस नाते वह लोग इन्हें अपना मानें स्वाभाविक है, किन्तु पितृ कुल को भी जुडा रहने देने की कृपा करें।

अपनी निजी जानकारी के अनुसार सत्य और तथ्य उपरोक्त हैं। कुछ विशेष जानना चाहें तो पूछ लें। मेरे योग्य सेवा सूचित करें।

सविनय-आपका-

केदारनाथ खत्री

दूसरा बयान

कचनसिह के मारे जाने और कुँअर इन्द्रजीतसिह के गायब हो जाने से लश्कर मे बडी हलचल मच गई। पता लगाने के लिये चारो तरफ जासूस भेजे गये। ऐयार लोग भी इधर-उधर फैल गये और फसाद मिटाने के लिये दिलोजान से कोशिश करने लगे। राजा वीरेन्द्रसिंह से इजाजत लेकर तेजसिंह भी रवाना हुए और भेष बदलकर रोहतासगढ किले के अन्दर चले गये। किले के सदर दर्वाजे पर पहरे का पूरा इन्तजाम था मगर तेजसिह की फकीरी सूरत पर किसी ने शक न किया।

साधु की सूरत बने हुए तेजसिह सात दिन तक रोहतासगढ किले के अन्दर घूमते रहे। इस बीच में उन्होंने हर मोहल्ला बाजार गली रास्ता देवल धर्मशाला इत्यादि को अच्छी तरह देख लिया कई बार दर्बार में भी जाकर राजा दिग्विजयसिह और उनके दीवान तथा ऐयारों की चाल और बातचीत के ढग पर ध्यान दिया और यह भी मालूम किया कि राजा दिग्विजयसिह किस-किसको चाहता है किस-किस की खातिर करता है और किस-किस को अपना विश्वासपात्र समझता है। इस सात दिन के बीच में तेजसिंह को कई बार चोबदार और औरत बनने की भी जरूरत पडी और अच्छे-अच्छे घरो में घुस कर वहा की कैफियत और हालत को भी देख-सुन आये। एक दफे तेजसिह उस शिवालय में भी गये जिसमे भैरोसिंह और बद्रीनाथ ने ऐयारी की थी या जहा से कुँअर कल्याणसिह को पकड ले गये थे।

तेजसिह ने उस शिवालय के रहने वालो तथा पुजारियों की अजब हालत देखी। जब से कुअर कल्याणसिंह गिरफ्तार हुए थे तब से उन लोगों के दिल में ऐसा डर समा गया था कि वे बात-बात में चौंकते और डरते थे रात में एक पत्ती के खडकने से भी किसी ऐयार के आने का गुमान होता था साधु ब्राह्मणों की सूरत से उन्हें घृणा हो गई थी किसी सन्यासी-ब्राह्मण साधु को देखा और चट बोल उठे कि ऐयार है किसी मजदूर को भी अन्दर मन्दिर के आगे खडा पाते तो चट उसे ऐयार समझ लेते और जब तक गर्दन में हाथ दे हाते के बाहर न कर देते चैन न लेते। इत्तिफाक से आज तेजसिंह भी साधु की सूरत बने शिवालय में जा डटे। पुजारियों ने देखते ही गुल करना शुरू किया कि ऐयार है ऐयार है, धरो पकडो जाने न पाए! बेचारे तेजसिंह बडा घबडाये और ताज्जुब करने लगे कि इन लोगों को कैसे मालूम हो गया कि हम ऐयार हैं क्योंकि तेजसिंह को इस बात का गुमान भी न था कि यहा के रहने वाले कुत्ते बिल्ली को भी ऐयार समझते हैं मगर यकायकी वहा से भाग निकलना भी मुनासिब न समझकर रुके और बोले-

तेज-तुम कैसे जानते हो कि हम ऐयार हैं?

एक पुजारी अजी हम खूब जानते है कि सिवाय ऐयार के कोई दूसरा हमारे सामने आ नही सकता है! अजी तुम्ही लोग तो हमारे कुँअर साहब को पकड ले गये हो या कोई दूसरा? बस बस यहा से चले जाओ नहीं तो कान पकड के खा जायेंगे।

बस बस यहा से चले जाओ इत्यादि सुनते ही तेजसिंह समझ गये कि ये लोग बेवकूफ हैं अगर हमारे ऐयार होने का इन्हें विश्वास होता तो ये लोग चले जाओ कभी न कहते बल्कि हमें गिरफ्तार करने का उद्योग करते बस इन्हें भैरोसिह और बद्रीनाथ डरा गये है और कुछ नहीं।

तेजसिंह खडे सोच ही रहे थे कि इतने में एक लगडा भिखमगा हाथ मे ठीकरा लिये लाठी टेकता वहा आ पहुचा और पुजरीजी की जय जयकार मनाने लगा। सूरत देखते ही एक पुजेरी चिल्ला उठा और बोला "लो देखो एक दूसरा ऐयार भी आ पहुचा अबकी शैतान लगडा बनकर आया है जानता नही कि हमलोग बिना पहिचाने न रहेंगे भाग नहीं तो सर तोड डालूगा!"

अब तेजसिंह को पूरा विश्वास हो गया कि ये लोग सिडी हो गये हैं जिसे देखते है उसे ही ऐयार समझ लेते हैं। तेजसिह वहा से लौटे और सोचते हुए खिड़की की राह *दीवार के पार हो जगल में चले गए कि अब यहा के ऐयारों से

---

*रोहतासगढ किले की बडी चहारदीवारी में चारो तरफ छोटी-छोटी बहुत सी खिड़किया थीं जिनमें लोहे के मजबूत दर्वाजे लगे रहते थे और दो सिपाही बराबर पहरा दिया करते थे। फकीर मोहताज और गरीब रिआया अक्सर उन खिडकियों (छोटे दर्वाजों) की राह जगल में से सूखी लकडिया चुनने या जगली फल तोडने या जरूरी काम के लिए बाहर जाया करते थे मगर चिराग जलते ही ये खिडकिया बन्द कर दी जाती थीं।

मिलना चाहिए और देखना चाहिए कि वे कैसे है और ऐयारी के फन में कितने तेज है।

इस किले के अन्दर गाजा पिलाने वालों की कई दूकानें थीं जिन्हें यहा वाले अड्डा कहा करते थे। चिराग जलने के बाद ही से गजेडी लोग वहा जमा होते जिन्हें अडडे का मालिक गाजा बना कर पिलाता और उनसे एवज में पैसे वसूल करता। वहा तरह-तरह की गप्पें उडा करती थीं, जिनसे शहर भर का हाल झूठ-सच मिला-जुला लोगों को मालूम हो जाया करता था।

शाम होने के पहिले ही तेजसिह जगल से लौटे लकडहारों के साथ-साथ वैरागी के भेष में किले के अन्दर दाखिल हुए और सीधे अडडे पर चले जहा गजेडी दम पर दम लगा कर धूए का गुबार बाध रहे थे। यहा तेजसिह का बहुत कुछ काम निकला और उन्हें मालूम हो गया कि महाराज के यहा केवल दो ऐयार है एक का नाम रामानन्द दूसरे का नाम गोविन्दसिह है। गोविन्दसिह तो कुँअर कल्याणसिह को छुडाने के लिए चुनार गया हुआ है बाकी रामानन्द यहा मौजूद है।

दूसरे दिन तेजसिह ने दरबार में जाकर रामानन्द को अच्छी तरह देख लिया और निश्चय कर लिया कि आज रात को इसी के साथ ऐयारी करेंगे क्योंकि रामानन्द का ढाचा तेजसिह से बहुत कुछ मिलता था और यह भी जाना गयाथा कि महाराज सबसे ज्यादा रामानन्द को मानते और अपना विश्वासपात्र समझते है।

आधी रात के समय तेजसिह सन्नाटा देख रामानन्द के मकान में कमन्द लगा कर चढ गये। देखा कि धूर ऊपर वाले बगले में रामानन्द मसहरी के ऊपर पडा खर्राटे ले रहा है दर्वाजे पर पर्दे की जगह पर जाल लटक रहा है जिसमें छोटी-छोटी घटिया बधी हुई है। पहिले तो तेजसिह ने उसे एक मामूली पर्दा समझा मगर ये तो बडे ही चालाक और होशियार थे यकायक पर्दे पर हाथ डालना मुनासिब न समझ कर उसे गौर से देखने लगे। जब मालूम हुआ कि नालायक ने इस जालदार पर्दे में बहुत सी घटिया लटका रक्खी है तो समझ गए कि यह बडा ही बेवकूफ है समझता है कि इन घटियों के लटकाने से हम बचे रहेंगे इस घर में जब कोई पर्दा हटा कर आवेगा तो घंटियों की आवाज से हमारी आख खुल जायेगी मगर यह नहीं समझता कि ऐयार लोग बुरे होते है।

तेजसिह ने अपने बटुए में से कैंची निकाली और बहुत सम्हाल कर पर्दे में से एक एक करके घटी काटने लगे। थोडी ही देर में सब घटियों को काट के किनारे कर दिया और पर्दा हटा कर अन्दर चले गए। रामानन्द अभी तक खर्राटे ले रहा था। तेजसिह ने बेहोशी की दवा उसके नाक के आगे की हलका धूरा सास लेते ही दिमाग में चढ गया रामानन्द को एक छींक आई जिससे मालूम हुआ कि अब बेहोशी इसे घटो तक होश में न आने देगी।

तजसिह ने बटुए में से एक अस्तुरा निकाल कर रामानन्द की दाढी और मूछ मूड ली और उसके बाल हिफाजत से अपने बटुए में रख कर उसी रग की दूसरी दाढी और मूछ उसे लगा दी जो उन्होंने दिन ही में किले के बाहर जगल में तैयार की थी। तेजसिह इतने ही काम के लिए रामानन्द के मकान पर गए थे और इसे पूरा कर कमन्द के सहारे नीचे उतर आए तथा धर्मशाला की तरफ रवाना हुए।

तेजसिह जब बैरागी साधु के भेष में रोहतासगढ किले के अन्दर आए थे तो उन्होंने धर्मशाला * के पास एक बैठक वाले के मकान में छोटी सी कोठरी किराये पर ले ली थी और उसी में रह कर अपना काम करते थे। उस कोठरी का एक दर्वाजा सडक की तरफ था जिसमें ताला लगाकर उसकी ताली ये अपने पास रखते थे इसलिए उस कोठरी में आने-जाने के लिए उनको दिन और रात एक समान था।

रामानन्द के मकान से जब तेजसिह अपना काम करके उतरे उस वक्त पहर भर रात बाकी थी। धर्मशाला के पास अपनी कोठरी में गए और सवेरा हाने के पहिले ही अपनी सूरत रामानन्द की सी बना और वही दाढी और मूँछ जो मूड लाये थे, दुरुस्त करके खुद लगा, कोठरी से बाहर निकले और शहर में गश्त लगाने लगे सवेरा होते तक राजमहल की तरफ रवाना हुए और इत्तिला करा कर महाराज के पास पहुचे।

हम ऊपर लिख आए है कि रोहतासगढ में रामानन्द और गोविन्दसिह केवल दो ही ऐयार थे। इन दोनों के बारे में इतना लिख देना जरूरी है कि इन दोनों में से गोविन्दसिह तो ऐयारी के फन में बहुत ही तेज और होशियार था और वह

---

*रोहतासगढ में एक ही धर्मशाला थी।

दिन रात वही काम किया करता था। रामानन्द भी ऐयारी का फन अच्छी तरह जानता था मगर उसे अपनी दाढी और मूछ बहुत प्यारी थी इसलिए वह एयारी के वे ही काम करता था जिसमें दाढी और मूछ मुडाने की जरूरत न पडे और इसलिए महाराज ने भी उसे दीवान का काम दे रखा था। इसमें भी कोई शक नहीं कि रामानन्द बहुत ही खुशदिल मसखरा और बुद्धिमान था और उसने अपनी तदवीर से महाराज का दिल अपनी मुट्ठी में कर लिया था।

रामानन्द की सूरत बने हुए तेजसिंह महाराज के पास पहुचे मामूल से बहुत पहिले रामानन्द को आते देख महाराज ने समझा कि कोई नई खबर लाया है।

महाराज–आज तुम बहुत सवेरे आय ! क्या कोई नई खबर है ?

रामा–(खास कर) महाराज हमारे यहा कल तीन मेहमान आय है।

महा–कौन-कौन ?

रामा–एक तो खासी जिसने मुझे बहुत ही तग कर रक्खा है दूसरे कुँअर आनन्दसिह तीसरे उनके चार ऐयार जो आज ही कल में किशोरी को यहा से निकाल ले जाने का दावा रखते हैं।

महा–(हस कर) मेहमान तो बडे नाजुक है। इनकी खातिर का भी कोई इन्तजाम किया गया है या नहीं ?

रामा–इसीलिए तो सरकार मै आया हू। कल दर्बार में उनके ऐयार मौजूद थे। सबके पहिले किशोरी का बन्दोबस्त करना चाहिए उसकी हिफाज्त में किसी तरह की कमी न होनी चाहिए।

महा–जहा तक मै समझता हू वे लोग किशोरी को तो किसी तरह नहीं ले जा सकते हा बीरेन्द्रसिह के ऐयारों को जिस तरह भी हो सके गिरफ्तार करना चाहिये।

रामा–वीरेन्द्रसिह के एयार तो अब मेरे पजे से बच नहीं सकते वे लोग सूरत बदल कर दरबार में जरूर आयेंगे और ईश्वर चाहे तो आज ही किसी को गिरफ्तार करूगा मगर वे लोग बडे ही धूर्त और चालबाज है प्राय कैदखाने से भी निकल जाया करते हैं।-

महा–खैर हमारे तहखाने से निकल जायेंगे तो समझेगे कि चालाक और धूर्त है।

महाराज की इतनी ही बातचीत से तेजसिह को मालूम हो गया कि यहा कोई तहखाना है जिसमें कैदी लोग रक्खे जाते है अब उन्हें यह फिक्र हुई कि जहा तक हो सके इस तहखाने का ठीक-ठीक हाल मालूम करना चाहिए। यह सोच तेजसिह न अपनी लच्छेदार बातचीत मे महाराज को एसा उलझाया कि मामूली समय से भी आधे घण्टे की देर हो गई। ऐसा करने से तेजसिह का अभिप्राय यह था कि देर होने से असली रामानन्द अवश्य महाराज के पास आवेगा और मुझे देख चौंकेगा उसी समय मै अपना काम निकाल लूगा जिसके लिए उसकी दाढी मूछ लाया हू और आखिर तेजसिह का सोचना ठीक भी निकला।

तेजसिह रामानन्द की सूरत में जिस समय महाराज के पास आये थे उस समय डयोढी पर जितने सिपाही पहरा दे रहे थे सब बदल गए और दूसरे सिपाही अपनी बारी के अनुसार डयोढी के पहरे पर मुस्तैद हुए जो इस बात से बिल्कुल ही बेखबर थे कि रामानन्द महाराज से मिलने के लिये महल में गये हैं।

ठीक समय पर दरबार लग गया। बडे-बडे आहदेदार नायब दीवान तहसीलदार मुन्शी मुत्सद्दी इत्यादि और मुसाहब लोग दरबार में आकर जमा हो गये। असली रामानन्द अपनी दीवान की गद्दी पर आकर बैठ गया मगर अपनी दाढी की तरफ से बिल्कुल ही बेखबर था। उसे तेजसिह का मामला कुछ भी मालूम न था तो भी यह जानने के लिए वह बडी ही उलझन में पडा हुआ था कि उस दरवाजे के जालीदार पर्दे में की घटिया किसने काट डाली थीं। घर भर के आदमियों से उसने पूछा और पता लगाया मगर पता न लगा इससे दिल में शक पैदा हुआ कि इस मकान में जरूर कोई एयार आया मगर उसने आकर क्या किया सो नहीं जाना जाता हा मेरे इस खयाल को जरूर मटियामेट कर दिया कि घटियॉ लगे जालीदार पर्दे के अन्दर मेरे कमरे में चुपके से कोई नहीं आ सकता उसने बता दिया कि यों आ सकता है। बेशक मेरी भूल थी कि उस पर्दे पर इतना भरोसा रखता था पर तो क्या खाली यही बताने के लिये वह ऐयार आया था !

इन्हीं सब बातों को सोचता हुआ रामानन्द अपने जरूरी कामों से छुट्टी पा दरबारी कपडे पहिन बनठन कर दरबार की तरफ रवाना हुआ। बेशक आज उसे कुछ देरी हो गई थी। और वह सोच रहा था कि महाराज दरबार में जरूर आ गये होंगे मगर वहा पहुच कर उसने गद्दी खाली देखी और पूछने से मालूम हुआ कि अभी तक महाराज के आने की कोई खबर नहीं। रामानन्द क्या सभी दरबारी ताज्जुब कर थे कि आज महाराज को देर क्यो हुई !

रामानन्द को महाराज बहुत मानते थे यह उनका मुँहलगा था इसीलिए सभो ने वहा जाकर हाल मालूम करने के लिए इसको ही कहा। रामानन्द खुद भी घबराया हुआ था और महाराज का हाल मालूम किया चाहता था अस्तु थोडी

देर बैठ कर वहा से रवाना हुआ और ड्योढी पर पहुच कर इत्तिला करवाई।

रामानन्द रूपी तेजसिह बैठे महाराज से बातें कर रहे थे कि एक खिदमतगार आया और हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया। उसकी सूरत से मालूम होता था कि वह घबराया हुआ है और कुछ कहना चाहता है मगर आवाज मुँह से नहीं निकलती। तेजसिह समझ गये कि अब कुछ गुल खिला चाहता है आखिर खिदमतगार की तरफ देखकर बोले

तेज–क्यों क्या कहना चाहता है ?

खिद–मै ताज्जुब के साथ यह इत्तिला करते डरता हू कि दीवान साहब (रामानन्द) ड्योढी पर हाजिर है।

महा–रामानन्द !

खिद–जी हा।

महा–(तेजसिह की तरफ देखकर यह क्या मामला है ?

तेज–।(मुस्कुराकर)) महाराज बस अब काम निकला ही चाहता है। मै जो कुछ अर्ज कर चुका वही बात है। काई ऐयार मेरी सूरत बन आया है और आपको धोखा दिया चाहता है लीजिये इस कम्बख्त को तो मै अभी गिरफ्तार करता हू फिर दखा जायेगा, सरकार उसे हाजिर होने का हुक्म दे फिर देखें मै क्या तमाशा करता हूँ। मुझे जरा छिप जाने दें वह आकर बैठ जाय ता मै उसका पर्दा खोलू।

महा–तुम्हारा कहना ठीक है बेशक कोई ऐयार है अच्छा तुम छिप जाओ मै उसे बुलाता हू।

तेज–बहुत खूब मै छिप जाता हू, मगर ऐसा है कि सरकार उसकी दाढी मूछ पर खूब ध्यान दें, मै एकाएक पर्दे से निकलकर उसकी दाढी उखाड लूगा क्योंकि नकली दाढी जरा ही सा झटका चाहती है।

महा–(हस कर) अच्छा अच्छा (खिदमतगार की तरफ देखकर) देख उससे और कुछ मत कहिया केवल हाजिर होने का हुक्म सुना दे।

तेजसिह दूसरे कमरे में जाकर छिप रहे और असली रामानन्द धीरे-धीरे वहा पहुचा जहा महाराज विराज रहे थे। रामानन्द को ताज्जुब था कि आज महाराज ने देर क्यों लगाई इससे उसका चेहर भी कुछ उदास सा हो रहा था। दाढी तो वही थी जो तेजसिह ने लगा दी थी। तेजसिह ने दाढी बनाते समय जान बूझकर कुछ फर्क डाल दिया था जिस पर रामानन्द ने तो कुछ ध्यान न दिया मगर वही फर्क अब महाराज की आखों में खटकने लगा। जिस निगाह से कोई किसी बहुरूपिये को देखता है उसी निगाह से बिना कुछ बोले महाराज अपने दीवान साहब को देखने लगे। रामानन्द यह देख कर और भी उदास हुआ कि इस समय महाराज की निगाह में अन्तर क्यों पड गया है।

तरददुद और ताज्जुब के सबब रामानन्द के चेहरे का रग जैसे-जैसे बदलता गया, तैसे तैसे उसके ऐयार होने का शक भी महाराज के दिल में बैठता गया। कई सायत बीतने पर भी न तो रामानन्द ही कुछ पूछ सका और न महाराज ही ने उसे बैठने का हुक्म दिया। तेजसिह ने अपने लिए यह मौका बहुत अच्छा समझा झट बाहर निकल आये और हसते हुए एक फर्शी सलाम उन्होंने रामानन्द को किया। ताज्जुब, तरददुद और डर से रामानन्द के चेहरे का रग उड गया और वह एकटक तेजसिह की तरफ देखने लगा।

ऐयारी भी कठिन काम है। इस फन में सब से भारी हिस्सा जीवट का है। जो ऐयार जितना डरपोक होगा उतना ही जल्द फँसेगा। तेजसिह को देखिये किस जीवट का ऐयार है कि दुश्मन के घर मे घुसकर भी जरा भी नहीं डरता और दिन दोपहर सच्चे को झूठा बना रहा है ! ऐसे समय अगर जरा भी उसके चेहरे पर खौफ या तरद्दुद की निशानी आ जाय तो ताज्जुब नहीं कि वह खुद फस जाय !

तजसिह ने रामानन्द को बात करने की भी मोहलत न दी हसकर उसकी तरफ देखा और कहा 'क्योबे ! क्या महाराज दिग्विजयसिह के दर्बार को तैंने ऐसा वैसा समझ रक्खा है ? क्या तै यहा भी ऐयारी से काम निकालना चाहता है ? यहा तेरी कारीगरी न लगेगी देख तेरी गदहे की सी मुटाई मै पचकाता हू !

तेजसिह ने फुर्ती से रामानन्द की दाढी पर हाथ डाल दिया और महाराज को 'दिखाकर एक झटका दिया। झटका तो जोर से दिया मगर इस ढग से कि महाराज को बहुत हलका झटका मालूम हो। रामानन्द की नकली दाढी अलग हो गई।

इस तमाशे ने रामानन्द को पागल सा बना दिया। उसके दिल में तरह-तरह की बातें पैदा होने लगीं। यह समझकर कि यह ऐयार मुझ सच्चे को झूठा किया चाहता है, उसे क्रोध चढ आया और वह खजर निकालकर तेजसिह पर झपटा पर तेजसिह वार बचा गए। महाराज को रामानन्द पर और भी शक बैठ गया। उन्होंने उठकर रामानन्द की कलाई

जिसमें खजर लिए था मजबूती से पकड ली और एक घूसा उसके मुँह पर दिया। ताकतवर महाराज के हाथ का घूसा खाते ही रामानन्द का सर घूम गया और वह जमीन पर बैठ गया। तेजसिह ने जेब से बेहोशी की दवा निकाली और जबर्दस्ती रामानन्द को सुघा दी।

महा–क्यों इसे बेहोश कर दिया ?

तेज–महाराज गुस्से में आया हुआ और अपने को फसा जानकर ऐयार न मालूम कैसी-कैसी बेहूदी बातें बकता इसलिये इसे बेहोश कर दिया। कैदखाने में ले जाने के बाद फिर देखा जायेगा ।

महा–खैर यह भी अच्छा ही किया अब मुझसे ताली लो और तहखाने में ले जाकर इसे दारोगा के सुपुर्द करो।

महाराज की बात सुन तेजसिह घबडाये और सोचने लगे कि अब बुरी हुई। महाराज से तहखाने की ताली लेकर कहा जाऊ ? मैं क्या जानू तहखाना कहा है और दारोगा कौन है ! बडी मुश्किल हुई ! अगर जरा भी नानूकर करता हू तो उल्टी आते गले पडती है। आखिर कुछ सोच-विचार कर तेजसिह ने कहा—

तेज–महाराज भी साथ चलें तो ठीक है।

महा–क्यों ?

तेज–दारोगा साहब इस ऐयार को और मुझे देखकर घबडायेंगे और उन्हें न जाने क्या-क्या शक पैदा हो। यह पाजी अगर होश में आ जायेगा तो जरूर कुछ बात बनावेगा आप रहेंगे तो दारोगा को किसी तरह का शक न होगा।

महा–(हसकर) अच्छा चलो हम भी चलते हैं।

तेज–हा महाराज फिर मुझे पीठ पर यह भारी लाश लादे ताला खोलने और बन्द करने में भी मुश्किल होगी।

महाराज ने अपने कलमदान से ताली निकाली और खिदमतगार से एक लालटेन मगवाकर साथ ले ली। तेजसिह ने रामानन्द की गठरी बाध पीठ पर लादी। तेजसिह को साथ लिए हुए महाराज अपने सोने वाले कमरे में गये और दीवार में जडी हुई एक आलमारी का ताला खोला। तेजसिह ने देखा कि दीवार पोली है और उस जगह से नीचे उतरने का एक रास्ता है। रामानन्द की गठरी लिए हुए महाराज के पीछे-पीछे तेजसिह नीचे उतरे, एक दालान में पहुचने के बाद छोटी सी कोठरी में जाकर दर्वाजा खोला और बहुत बडी बारहदरी में पहुचे। तेजसिह ने देखा कि बारहदरी के बीचोबीच में छोटी सी गद्दी लगाए एक बूढा बैठा कुछ लिख रहा है जो महाराज को देखते ही उठ खडा हुआ और हाथ जोडकर सामने आया।

महा–दारोगा साहब देखिए आज रामानन्द ने दुश्मन के एक ऐयार को फासा है इसे अपनी हिफाजत में रखिये।

तेज–(पीठ से गठरी उतार और उसे खोलकर) लीजिये इसे सम्हालिए अब आप जानिए।

दारोगा–(ताज्जुब से) क्या यह दीवान साहब की सूरत बन कर आया था ?

तेज–जी हा इसने मुझी को फजूल समझा।

महा–(हसकर) खैर चलो अब दारोगा साहब इसका बन्दोबस्त कर लेंगे।

तेज–महाराज यदि आज्ञा हो तो मैं ठहर जाऊ और इस नालायक को होश में लाकर अपने मतलब की बातों का कुछ पता लगाऊ सरकार को भी अटकने के लिए मैं कहता परन्तु दर्बार का समय बिल्कुल निकल जाने और दर्बार न करने से रिआया के दिल में तरह-तरह के शक पैदा होंगे और आजकल ऐसा न होना चाहिए।

महा–तुम ठीक कहते हो अच्छा मैं जाता हू, अपनी ताली साथ लिए जाता हूँ और ताला बन्द करता जाता हूँ, तुम दूसरी राह से दारोगा के साथ आना। (दारोगा की तरफ देखकर) आप भी आइएगा और अपना रोजनामचा लेते आइएगा।

तेजसिह को उसी जगह छोड महाराज चले गए। रामानन्द रूपी तेजसिह को लिए दारोगा साहब अपनी गद्दी पर आये और अपनी जगह तेजसिह को बैठाकर आप नीचे बैठे। तेजसिह ने आधे घण्टे तक दारोगा को अपनी बातों में खूब ही उलझाया इसके बाद यह कहते हुए उठे अच्छा अब इस ऐयार को होश में लाकर मालूम करना चाहिए कि यह कौन है और ऐयार के पास आए। अपने जेब में हाथ डाल लखलखे की डिबिया खोजने लगे आखिर बोले ओफ ओह लखलखे की डिबिया तो दीवानखाने में ही भूल आये अब क्या किया जाय ?

दारोगा–मेरे पास लखलखे की डिबिया है हुक्म हो तो लाऊ ?

तेज–लाइए मगर आपके लखलखे से यह होश में न आयेगा क्योंकि जो बेहोशी की दवा इसे दी गई वह मैंने नए ढग से बनाई है और उसके लिए लखलखे का नुसखा भी दूसरा है खैर लाइये तो सही शायद काम चल जाय।

बहुत अच्छा कहकर दारोगा साहब लखलखा लेने चले गये, इधर निराला पाकर तेजसिह ने दूसरी डिबिया जेब से निकाली जिसमें लाल रग की कोई बुकनी थी एक चुटकी रामानन्द के नाक में साँस के साथ चढा दी और निश्चिन्त

होकर बैठे। अब सिवा तेजसिंह के दूसरे का बनाया लखलखा उसे कब होश में ला सकता है, हां दो एक रोज पड़े रहने पर वह आप से आप चाहे भले ही होश में आ जाय।

दम भर में दारोगा साहब लखलखे की डिबिया लिये आ पहुंचे तेजसिंह ने कहा "बस आप ही सुंघाइये और देखिये इस लखलखे से कुछ काम निकलता है या नहीं।

दारोगा साहब ने लखलखे की डिबिया बेहोश रामानन्द के नाक से लगाई पर क्या असर होना था लाचार तेजसिंह का मुँह देखने लगे।

तेज–क्यों व्यर्थ मेहनत करते हैं मैं पहिले ही कह चुका हूं कि इस लखलखे से काम नहीं चलेगा। चलिये महाराज के पास चलें इसे यों ही रहने दीजिये अपना लखलखा लेकर फिर लौटेंगे तो काम चलेगा।

दारोगा–जैसी मर्जी इस लखलखे से तो काम नहीं चलना।

दारोगा साहब ने रोजनामचे की किताब बगल में दाबी और तालियों का झब्बा और लालटेन हाथ में लेकर रवाना हुए। एक कोठरी में घुसकर दारोगा साहब ने दूसरा दर्वाजा खोला ऊपर चढ़ने के लिये सीढ़ियां नजर आईं। ये दोनों ऊपर चढ़ गये और दो-तीन कोठरियों से घुसते हुए एक सुरंग में पहुंचे। दूर तक चले जाने के बाद इनका सर छत से अड़ा। दारोगा ने एक सूराख में ताली लगाई और खटका दबाया एक पत्थर का टुकड़ा अलग हो गया और ये दोनों बाहर निकले। यहां तेजसिंह ने अपने को एक कब्रिस्तान में पाया।

इस सन्तति के तीसरे भाग के चौदहवें बयान में हम इस कब्रिस्तान का हाल लिख चुके हैं। इसी राह से कुँअर आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह उस तहखाने में गये थे। इस समय हम जो हाल लिख रहे हैं वह कुँअर आनन्दसिंह के तहखाने में जाने के पहिले का है सिलसिला मिलाने के लिए फिर पीछे की तरफ लौटना पड़ा। तहखाने के हर एक दर्वाजे में पहिले ताला लगा रहता था मगर जब से तेजसिंह ने इसे अपने कब्जे में कर लिया (जिसका हाल आगे चलकर मालूम होगा) तब से ताला लगाना बन्द हो गया केवल खटकों पर ही कार्रवाई रह गई।

तेजसिंह ने चारों तरफ निगाह दौड़ाकर देखा और मालूम किया कि इस जंगल में जासूसी करते हुए कई दफे आ चुके हैं और इस कब्रिस्तान में भी पहुंच चुके हैं मगर जानते नहीं थे कि यह कब्रिस्तान क्या है और किस मतलब से बना हुआ है। अब तेजसिंह ने सोच लिया कि हमारा काम चल गया दारोगा साहब को इसी जगह फंसाना चाहिये जाने न पावें

तेज–दारोगा साहब हकीकत में तुम बड़े ही जूतीखोर हो।

दारोगा–(ताज्जुब से तेजसिंह का मुँह देख के) मैंने क्या कसूर किया है जो आप गाली दे रहे हैं? ऐसा तो कभी नहीं हुआ था !!

तेज–फिर मेरे सामने गुर्राता है! कान पकड़ के उखाड़ लूंगा !!

दारोगा–आज तक महाराज ने भी कभी मेरी ऐसी बेइज्जती नहीं की थी !!

तेजसिंह ने दारोगा को एक लात ऐसी मारी कि बेचारा धम्म से जमीन पर गिर पड़ा। तेजसिंह उसकी छाती पर चढ़ बैठे और बेहोशी की दवा जबदस्ती नाक में ठूस दी। बेचारा दारोगा बेहोश हो गया। तेजसिंह ने दारोगा की कमर से और अपनी कमर से भी चादर खोली और उसी में दारोगा की गठरी बाँधी ताली का गुच्छा और रोजनामचे की किताब भी उसी में रख, पीठ पर लाद तेजी के साथ अपने लश्कर की तरफ रवाना हुए तथा दोपहर दिन चढ़ते राजा बीरेन्द्रसिंह के खेमे में जा पहुंचे। पहिले तो रामानन्द की सूरत देख बीरेन्द्रसिंह चौंके मगर जब बंधे हुए इशारे से तेजसिंह ने अपने को जाहिर किया तो वे बहुत ही खुश हुए।

तीसरा बयान

तेजसिंह के लौट आने से राजा बीरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए और उस समय तो उनकी खुशी और भी ज्यादे हो गई जब तेजसिंह ने रोहतासगढ़ आकर अपनी कारवाई करने का खुलासा हाल कहा। रामानन्द की गिरफ्तारी का हाल सुनकर हंसते-हंसते लोट गये मगर साथ ही इसके यह सुनकर कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह का पता रोहतासगढ़ में नहीं लगता बल्कि मालूम होता है कि रोहतासगढ़ में नहीं हैं राजा बीरेन्द्रसिंह उदास हो गये। तेजसिंह ने उन्हें हर तरह से समझाया और दिलासा दिया। थोड़ी देर बाद तेजसिंह ने अपने दिल की वे सब बातें कहीं जो वे किया चाहते थे बीरेन्द्रसिंह ने उनकी राय बहुत पसन्द की और बोले—

बीरेन्द्र–तुम्हारी कौन सी ऐसी तरकीब है जिसे मैं पसन्द नहीं कर सकता! हां यह कहो कि इस समय अपने साथ

किस ऐयार को ले जाओगे ?

तेज—मुझे तो इस समय कई ऐयारों की जरूरत थी मगर यहा केवल चार मौजूद हैं और बाकी सब कुँअर इन्द्रजीतसिह का पता लगाने गये हैं खैर कोई हर्ज नहीं। पण्डित बद्रीनाथ को तो इसी लश्कर में रहने दीजिये उन्हें किसी दूसरी जगह भेजना मै मुनासिव नहीं समझता क्योंकि यहाँ बडे ही चालाक और पुराने ऐयार का काम है बाकी ज्योतिषीजी भैरो और तारा को मैं अपने साथ ले जाऊगा।

बीरेन्द—अच्छी बात है इन तीनों से तुम्हारा काम बखूबी चलेगा।

तेज—जी नहीं मैं तीनों ऐयारों को अपने साथ नहीं रक्खा चाहता बल्कि भैरो और तारा को तो वहा का रास्ता दिखा-कर वापस कर दूँगा इसके बाद वे दोनों थोडे से लडाको को मेरे पास पहुचा कर फिर आपको या कुअर आनन्दसिह को लेकर मेरे पास आवेंगे तब वह सब कार्रवाई की जायगी जो मैं आपसे कह चुका हू।

बीरेन्द—और यह दारोगा वाली किताब जो तुम ले आये हो क्या होगी ?

तेज—इसे फिर अपने साथ ले जाऊगा और मौका मिलने पर शुरू से आखीर तक पढ जाऊगा, यही तो एक चीज हाथ लगी है।

बीरेन्द—बेशक उम्दा चीज है (किताब तेजसिह के हाथ से लेकर) रोहतासगढ तहखाने का कुल हाल इससे तुम्हें मालूम हो जायेगा बल्कि इसके अलावे वहा का और भी बहुत कुछ भेद मालूम होगा।

तेज—जी हा इसमे दारोगा ने रोज-रोज का हाल लिखा है मैं समझता हू वहा ऐसी-ऐसी और भी कई किताबें होंगी जो इसके पहिले के और दारोगाओं के हाथ से लिखी गई होंगी।

बीरेन्द—जरूर होंगी और इससे उस तहखाने के खजाने का भी पता लगता है।

तेज—लीजिए अब वह खजाना भी हमीं लोगों का हुआ चाहता है। अब हमें यहा देर न करके बहुत जल्द वहा पहुचना चाहिए क्योंकि दिग्विजयसिह मुझे और दारोगा को अपने पास बुला गया था देर हो जाने पर वह फिर तहखाने में आवेगा और किसी को न देखेगा तो सब काम ही चौपट हो जायेगा।

बीरेन्द—ठीक है अब तुम जाओ देर मत करो।

कुछ जलपान करने के बाद ज्योतिषीजी भैरोसिह और तारासिह को साथ लिए हुए तेजसिह वहा से रोहतासगढ की तरफ रवाना हुए और दो घण्टे दिन रहते ही तहखाने में जा पहुचे। अभी तक तेजसिह रामानन्द की सूरत में थे। तहखाने का रास्ता दिखाने के बाद भैरोसिह और तारासिह को तो वापस किया और ज्योतिषीजी को अपने पास रक्खा। अबकी दफे तहखाने से बाहर निकलने वाले दर्वाजे में तेजसिह ने ताला नहीं लगाया उन्हें केवल खटकों पर बन्द रहने दिया।

दारोगा वाले रोजनामचे के पढने से तेजसिह को बहुत सी बातें मालूम हो गई जिसे यहा लिखने की कोई जरूरत नहीं समय-समय पर आप ही मालूम हो जायेगा हा उनमें से एक बात यहा लिख देना जरूरी है। जिस दालान में दारोगा रहता था उसमें एक खम्भे के साथ लोहे की एक तार बधी हुई थीं जिसका दूसरा सिरा छत में सूराख करके ऊपर की तरफ निकाल दिया गया था। तेजसिह को किताब के पढने से मालूम हुआ कि इस तार को खैंचने या हिलाने से वह घण्टा बोलेगा जो खास दिग्विजयसिह के दीवानखाने में लगा हुआ है क्योंकि उस तार का दूसरा सिरा उसी घटे से बधा है। जब किसी तरह की मदद की जरूरत पडती थी तब दारोगा उस तार को छेडता था। उस दालान के बगल की एक कोठरी के अन्दर भी एक बडा सा घण्टा लटकता था जिसके साथ बधी हुई लोहे का तार का दूसरा हिस्सा महाराज के दीवानखाने मे था। महाराज भी जब तहखाने वालों को होशियार किया चाहते थे या और कोई जरूरत पडती थी तो ऊपरलिखी रीति से वह तहखाने का घटा भी बजाया जाता और यह काम केवल महाराज का था क्योंकि तहखाने का हाल बहुत गुप्त था तहखाना कैसा है और उसके अन्दर क्या होता है यह हाल सिवाय खास-खास आठ-दसआदमियों के और किसी को भी मालूम न था इसके भेद मन्त्र की तरह गुप्त रक्खे जाते थे।

हम ऊपर लिख आये हैं कि असली रामानन्द को ऐयार समझ कर महाराज दिग्विजयसिह तहखाने में ले आए और लौटकर' जाती समय नकली रामानन्द अर्थात तेजसिह और दारोगा को कहते गये कि तुम दोनों फुरसत पाकर हमारे पास आना।

महाराज के हुक्म की तामील न हो सकी क्योंकि दारोगा को कैदकर तेजसिह अपने लश्कर में ले गये और ज्यादा हिस्सा दिन का उधर ही बीत गया था जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं। जब तेजसिह लौटकर तहखाने में आय तो ज्योतिषीजी को बहुत सी बातें समझाई और उन्हें [illegible] कर गद्दी पर बैठाया उसी समय सामन की कोठरियों में से खटके की आवाज आई। तेजसिह समझ [illegible] रहे हैं ज्योतिषीजी को तो लिटा दिया और कहा कि

हाय हाय करो मै महाराज से बातचीत करूगा । थोडी देर में महाराज उस तहखाने में उसी राह से आ पहुचे जिस राह से तेजसिंह को साथ लाए थे ।

महा–(तेजसिह की तरफ दखकर) रामानन्द तुम दोनों को हम अपने पास आने के लिए हुक्म द गये थे क्यों नहीं आये और इस दारोगा को क्या हुआ जो हाय हाय कर रहा है ?

तेज–महाराज इन्हीं के सबब से तो आना नही हुआ। यकायक बेचारे के पेट में दर्द पैदा हो गई बहुत सी तर्कीबें करने के बाद अब कुछ आराम हुआ है ।

महा–(दारोगा के हाल पर अफसोस करने के बाद) उस ऐयार का कुछ हाल मालूम हुआ ?

तेज–जी नहीं उसने कुछ भी नही बताया खैर क्या हर्ज है दो एक दिन मे पता लग ही जायेगा। ऐयार लोग जिद्दी तो होते ही हैं।

थोडी देर बाद महाराज दिग्विजयसिह वहां से चले गये। महाराज के जाने के बाद तेजसिह भी तहखाने के बाहर हुए और महाराज के पास गये। दो घण्टे तक हाजिरी देकर शहर में गश्त करने के बहाने से विदा हुए। पहर रात से कुछ ज्यादा गई थी कि तेजसिह फिर महाराज के पास गये और बोले—

तेज–मुझे जल्द लौट आते देख महाराज ताज्जुब करते होंगे मगर एक जरूरी खबर देने के लिए आना पडा।

महा–वह क्या ?

तेज–मुझे पता लगा है कि मेरी गिरफ्तारी के लिए कई ऐयार आये हुए है महाराज होशियार रहें। अगर रात भर मै उनके हाथ से बच गया तो कल जरूर कोई तर्कीब करूगा यदि फस गया तो खैर ।

महा–तो आज रात भर तुम यही क्यों नही रहते ?

तेज–क्या उन लोगों के खौफ से बिना कुछ कार्रवाई किये अपने को छिपाऊँ ? यह नही हो सकता।

महा–शाबाश ऐसा ही मुनासिब है खैर जाओ जो होगा देखा जायगा ।

तेजसिह घर की तरफ लौटे रामानन्द के घर की तरफ नहीं बल्कि अपने लश्कर की तरफ। उन्होंने इस बहाने अपनी जान बचाई और चलते हुए। सवेरे जब दर्बार में रामानन्द न आए महाराज को विश्वास हो गया कि बीरेन्द्रसिह के ऐयारों ने उन्हें फसा लिया ।

चौथा बयान

अपनी कार्रवाई पूरी करने के बाद तेजसिह ने सोचा कि अब असली रामानन्द को तहखाने से ऐसी खूबसूरती के साथ निकाल लेना चाहिए जिसमें महाराज को किसी तरह का शक न हो और यह गुमान भी न हो कि तहखाने में बीरेन्दसिह के ऐयार लोग घुसे है या तहखाने का हाल किसी दूसरे को मालूम हो गया है यह काम तभी हो सकता है जब कोई ताजा मुर्दा हाथ लगे।

रोहतासगढ से चलकर तेजसिह अपने लश्कर में पहुचे और सब हाल बीरेन्द्रसिह से कहने के बाद कई जासूसों को इस काम के लिए रवाना किया कि अगर कहीं कोई ताजा मुर्दा जा सड न गया हो या फूल न गया हो मिले तो उठा लावें और लश्कर के पास ही कहीं रखकर हमें इत्तिला दें। इत्तिफाक से लश्कर से दो तीन कोस की दूरी पर नदी के किनारे एक लावारिस भिखमगा उसी दिन मरा था जिसे जासूस लोग शाम होते-होते उठा लाये और लश्कर से कुछ दूर रख तेजसिह को खबर की। भैरोसिह को साथ लेकर तेजसिह मुर्दे के पास गए और अपनी कार्रवाई करने लगे।

तेजसिह ने उस मुर्दे को ठीक रामानन्द की सूरत का बनाया और भैरोसिह की मदद *से उठाकर रोहतासगढ तहखाने के अन्दर ले गये और तहखाने के दारोगा (ज्योतिपीजी) के सुपुर्द कर और उसके बारे में बहुत सी बातें समझा-बुझा कर असली रामानन्द को अपने लश्कर में उठा लाये।

---

*मुर्दा अक्सर ऐंठ जाया करता है इसलिए गठरी में बध नहीं सकता लाचार दो आदमी मिलकर उठा ले गये।

तेजसिह के जाने के बाद हमारे नए दारोगा साहब ने खम्भे से बँधे हुए उस तार को खैंचा जिसके सबब से दिग्विजयसिह के दीवानखाने वाला घन्टा बोलता था। उस समय दो घण्टे रात जा चुकी थी महाराज अपने कई मुसाहबों को साथ लिए दीवानखाने में बैठे दुश्मन पर फतह पाने के लिए बहुत सी तरकीबें सोच रहे थे यकायक घण्टे की आवाज सुनकर चौके और समझ गये कि तहखाने में हमारी जरूरत है। दिग्विजयसिह उसी समय उठ खडे हुए और उन जल्लादों को बुलाने का हुक्म दिया जो जरूरत पडने पर तहखाने में जाया करते थे और जान के खौफ या नमकहलाली के सबब से वहा का हाल किसी दूसरे से कभी नहीं कहते थे।

महाराज दूसरे कमरे में गए जब तक कपडे बदल कर तैयार हो जल्लाद लोग भी हाजिर हुए। ये जल्लाद बडे ही मजबूत,ताकतवर और कद्दावर थे। स्याह रग मूछें चढी हुई पोशाक में केवल जाघिया मिर्जई और कन्टोप पहिरे हाथ में भारी तेगा लिए बडे ही भयकर मालूम होते थे। महाराज ने केवल चार जल्लादों को साथ लिया और उसी मामूली रास्ते से तहखाने में उतर गए। महाराज को आते देख दारोगा चैतन्य हो गया और सामने आ हाथ जोडकर बोला, 'लाचार महाराज को तकलीफ देनी पडी।

महाराज–क्या मामला है ?

दारो–वह ऐयार मर गया जिसे दीवान रामानन्दजी ने गिरफ्तार किया था।

महा–(चौक कर) है मर गया !

दारोगा–जी हा मर गया न मालूम कैसी जहरीली बेहोशी दी गई थी कि जिसका असर यहा तक हुआ !

महा–यह बहुत ही बुरा हुआ दुश्मन समझेगा कि दिग्विजयसिह ने जान-बूझ कर हमारे ऐयार को मार डाला जो कायदे के बाहर की बात है। दुश्मनों को अब हमसे जिदद हो जायेगी और वे भी कायदे के खिलाफ बेहोशी की जगह जहर का बर्ताव करने लगेंगे तो हमारा बडा नुकसान होगा और बहुत आदमी जान से मारे जायेंगे।

दारोगा–लाचारी है फिर क्या किया जाय ? भूल तो दीवान साहब की है।

महा–(कुछ जोश में आकर) रामानन्द तो पूरा उजडड है ! झक मारने के लिए उसने अपने को ऐयार मशहूर कर रक्खा है तभी तो बीरेन्द्रसिह का एक अदना ऐयार आया और उसे पकड़ कर ले गया चलो छुट्टी हुई !

महाराज की बात सुन कर मन ही मन ज्योतिषीजी हसते और कहते थे कि देखो कितना होशियार और बहादुर राजा इस जरा सी बात में बेवकूफ बना है ! वाह रे तेजसिह तू जा चाहे कर सकता है !

महाराज ने रामानन्द की लाश को खुद देखा और दूसरी जगह ले जाकर जमीन में गाड देने के लिए जल्लादों को हुक्म दिया। जल्लादों ने उसी तहखान में एक जगह जहा मुर्दे गाडे जाते थे लेजाकर उस लाश को दबा दिया। महाराज अफसोस करते हुए तहखाने के बाहर निकल आए और इस सोच में पडे कि देखें बीरेन्द्रसिह के ऐयार लोग इसका क्या बदला लेते हैं।

पांचवां बयान

ऊपर लिखी वारदात के तीसरे दिन दारोगा साहब अपनी गददी पर बैठे रोजनामचा देख रहे थे और उस तहखाने की पुरानी बातें पढकर ताज्जुब कर रहे थे यकायक पीछे की कोठरी में खटके की आवाज आई। घबरा कर उठ खडे हुए और पीछे की तरफ देखने लगे। फिर आवाज आई। ज्योतिषीजी दर्वाजा खोल कर अन्दर गये मालूम हुआ कि उस कोठरी के दूसरे दर्वाजे से कोई भागा जाता है। कोठरी में बिल्कुल अधेरा था ज्योतिषीजी कुछ आगे बढे ही थे कि जमीन पर पडी एक लाश उनके पैर में अडी जिसकी ठोकर खा वे गिर पडे मगर फिर सम्हल कर आगे बढे लेकिन ताज्जुब करते थे कि यह लाश किसकी है ! मालूम होता है यहा कोई खून हुआ है और ताज्जुब नही कि वह भागने ही वाला खूनी हो !

वह आदमी आगे-आगे सुरग में भागा जाता था और पीछे-पीछे ज्योतिषीजी हाथ में खजर लिए दौडे जा रहे थे मगर उसे किसी तरह पकड न सके। यकायक सुरग के मुहाने पर रोशनी मालूम हुई। ज्योतिषीजी समझे कि अब वह बाहर निकल गया। दम भर में ये भी वहा पहुचे और सुरग के बाहर निकल चारो तरफ देखने लगे। ज्योतिषीजी की पहिली निगाह जिस पर पडी, वह पण्डित बद्रीनाथ थे देखा कि एक औरत को पकडे हुए बद्रीनाथ खडे है और दिन आधी घडी से कम बाकी है।

बद्री–दारोगा साहब देखिये आपके यहा चोर घुसे और आपको खबर भी न हो !

ज्यो–अगर खबर न होती तो पीछे पीछे दौडा हुआ यहा तक क्यों आता !

बद्री–फिर भी आपके हाथ से तो चोर निकल ही गया था अगर इस समय हम न पहुच जाते तो आप इसे न पा सकते।

ज्यो–हा बेशक इसे मै मानता हू। क्या आप पहिचानते हैं कि यह कौन है ? याद आता है कि इस औरत को मैंने कभी देखा है।

बद्री–जरूर देखा होगा खैर इसे तहखाने में ले चलो फिर देखा जायेगा। इसका तहखाने से खाली हाथ निकलना मुझे ताज्जुब में डालता है।

ज्यो–यह खाली हाथ नहीं बल्कि हाथ साफ करके आई है। इसके पीछे आती समय एक लाश मेरे पैर में अडी थी मगर पीछा करने की धुन में मै कुछ जाच न कर सका।

पण्डित बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी उस औरत को गिरफ्तार किए हुए तहखान में आये और उस दालान या बारहदरी में जिसमें दारोगा साहब की गद्दी लगी रहती थी पहुचे। उस औरत को खम्भे के साथ बाध दिया और हाथ में लालटेन ले उस लाश को देखने गये जो ज्योतिषीजी के पैर में अडी थी। बद्रीनाथ ने देखते ही उस लाश को पहचान लिया और बोले यह तो माधवी है !

ज्योतिषी–यह यहा क्योंकर आई ! (माधवी की नाक पर हाथ रखकर) अभी दम है मरी नहीं। यह देखिए इसके पेट में जख्म लगा है। जख्म भारी नहीं है बच सकती है।

बद्री–(नब्ज देख कर) हा बच सकती है खैर इसके जख्म पर पट्टी बाधकर इसी तरह छोड दो फिर बूझा जायेगा। हा थोडा सा अर्क इसके मुह में डाल देना चाहिए।

बद्रीनाथ ने माधवी के जख्म पर पट्टी बाधी और थोडा सा अर्क भी उसके मुह में डालकर उसे वहा से उठा दूसरी कोठरी में ले गए। इस तहखाने में कई जगह से रोशनी और हवा पहुचा करती थी कारीगरों ने इसके लिए अच्छी तर्कीब की थी। बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी माधवी को उठाकर एक ऐसी कोठरी में ले गये जहा बादाकश की राह से ठण्डी ठण्डी हवा आ रही थी और उसे उसी जगह छोड आप बारहदरी में आए जहा उस औरत को, जिसने माधवी को घायल किया था खम्भेके साथ बाधा था। बद्रीनाथ ने धीरे से ज्योतिषीजी से कहा कि आज कुँअर आनन्दसिह और उनके थोडी ही देर बाद मै बीस पचीस आदमियों को साथ लेकर यहा आऊगा। अब मै जाता हू, वहा बहुत कुछ काम है केवल इतना की कहने के लिए आया था। मेरे जाने बाद तुम इस औरत से पूछताछ लेना कि यह कौन है मगर एक बात का खौफ है।

ज्योतिषी–वह क्या ?

बद्री–यह औरत हम लोगों को पहिचान गई है कहीं ऐसा न हो कि तुम महाराज को बुलाओ और वे आँ जाए तो यह कह उठें कि दारोगा साहब तो राजा बीरेन्द्रसिह के ऐयार हैं !

ज्योतिषी–जरूर ऐसा होगा इसका भी बन्दोबस्त कर लेना चाहिए।

बद्री–खैर कोई हर्ज नहीं मेरे पास मसाला तैयार है। (बटुए में से एक डिबिया निकालकर और ज्योतिषीजी के हाथ में देकर) इसे आप रक्खे जब मौका हो तो इसमें से थोडी सी दवा इसकी जुबान पर जबर्दस्ती मल दीजिएगा बात की बात में जुबान ऐंठ जायेगी फिर यह साफ तौर पर कुछ भी न कह सकेगी। तब जो आपके जी में आवे, महाराज को समझा दें।

बद्रीनाथ वहाँ से चले गये। उनके जाने के बाद उस औरत को डरा-धमका और कुछ मारपीट कर ज्योतिषीजी ने उसका हाल मालूम करना चाहा मगर कुछ न हो सका पहरों की मेहनत बर्बाद गई। आखिर उस औरत ने ज्योतिषीजी से कहा ज्योतिषीजी मै आपको अच्छी तरह से जानती हू। आप यह न समझिए कि माधवी को मैंने मारा है उसको घायल करने वाला कोई दूसरा ही था खैर इन सब बातों से कोई मतलब नहीं क्योंकि अब तो माधवी भी आपके कब्जे में नहीं रही।

ज्योतिषी–माधवी मेरे कब्जे में से कहा जा सकती है ?

औरत–जहा जा सकती थी वहा गई आप जहा रख आये थे वहा जाकर देखिये है या नहीं।

औरत की बात सुन कर ज्योतिषीजी बहुत घबराए और उठ खडे हुए वहा गए जहा माधवी को छोड आये थे। उस औरत की बात सच निकली माधवी का वहा पता भी न था। हाथ में लालटेन ले घण्टों ज्योतिषीजी इधर-उधर खोजते रहे मगर कुछ फायदा न हुआ आखिर लौटकर फिर उस औरत के पास आये और बोले 'तेरी बात ठीक निकली मगर अब मै तेरी जान लिये बिना नहीं रहता हा अगर सच-सच अपना हाल बता दे तो छोड दू।

ज्योतिषीजी ने हजार सिर पटका मगर उस औरत ने कुछ भी न कहा। इसी औरत के चिल्लाने या बोलने की

आवाज किशोरी और लाली ने इस तहखाने में आकर सुनी थी जिसका हाल इस भाग के पहिले बयान में लिख आये हैं क्योंकि इसी समय लाली और किशोरी भी वहा आ पहुची थीं।

ज्योतिषी जी ने किशोरी को पहिचाना किशोरी क साथ लाली का नाम लेकर भी पुकारा मगर अभी यह नहीं मालूम हुआ कि लाली को ज्योतिषीजी क्योंकर और कब से जानते थे हा किशोरी और लाली को इस बात का ताज्जुब था कि दारागा ने उन्हें क्योंकर पहिचान लिया क्योंकि ज्योतिषीजी दारोगा के भेष में थे।

ज्योतिषीजी ने किशोरी और लाली को अपने पास बुलाकर कुछ बात करना चाहा मगर मौका न मिला। उसी समय घण्टे के बजने कीआवाज आई और ज्योतिषीजी समझ गये कि महाराज आ रहे हैं। मगर इस समय महाराज क्यों आते है शायद इस वजह से कि लाली और किशोरी इस तहखाने में घुस आई हैं और इसका हाल महराज को मालूम हो गया है।

जल्दी के मारे ज्योतिषीजी सिर्फ दा काम कर सके एक तो किशोरी और लाली की तरफ देख कर बोले अफसोस अगर आधी घडी की भी मोहलत मिलती हो तुम्हें यहा से निकाल ले जाता क्योंकि यह सब बखेडा तुम्हारे ही लिए हो रहा है। दूसर उस औरत की जुबान पर मसाला लगा सके जिसमें वह महाराज के सामने कुछ कह न सके। इतने ही में मशालचियों और कई जल्लादों को लकर महाराज आ पहुचे और ज्योतिषीजी की तरफ देख कर बोले इस तहखाने में किशोरी ओर लाली आई हैं तुमने देखा है ?

दारोगा–(खडे होकर) जी अभी तक ता यहा नहीं पहुचीं।

राजा–खोजो कहा है यह औरत कौन है ?

दारोगा–मालूम नहीं कौन है और क्यों आई है ? मैंने इसी तहखाने में इसे गिरफ्तार किया है पूछने से कुछ नहीं बताती।

राजा–खैर किशोरी और लाली के साथ इसे भी भूतनाथ पर चढा देना (बलि देना) चाहिये क्योंकि यहा का बधा कायदा है कि लिखे आदमियों के सिवा दूसरा जो इस तहखाने को देख ले उसे तुरन्त बलि दे देना चाहिये।

सब लोग किशोरी और लाली को खोजने लगे। इस समय ज्योतिषीजी घबडाये और ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि कुँअर आनन्दसिह और हमारे ऐयार लोग जल्द यहा आवें जिसमें किशोरी की जान बचे।

किशोरी और लाली कहीं दूर न थीं तुरन्त गिरफ्तार कर ली गईं और उनकी मुश्कें बध गईं। इसके बाद उस औरत से महाराज ने कुछ पूछा जिसकी जुबान पर ज्योतिषीजी ने दवा मल दी थी पर उसने महाराज की बात का कुछ भी जवाब न दिया। आखिर खम्भे से खोल कर उसकी भी मुश्कें बाध दी गईं और तीनों औरतें एक दर्वाजे की राह दूसरी सगीन बारहदरी में पहुचाई गईं जिसमें सिहासन के ऊपर स्याह पत्थर की वह भयानक मूरत बैठी हुई थी जिसका हाल इस सन्तति के तीसरे भाग के आखिरी बयान में हम लिख आये है। इसी समय आनन्दसिह भैरोसिह और तारासिह वहा पहुचे और उन्होंने अपनी आखों से उस औरत के मारे जान का दृश्य देखा जिसकी जुबान पर दवा लगा दी गई थी। जब किशोरी के मारने की बारी आई तब कुँअर आनन्दसिह और दोनों ऐयारों से न रहा गया और उन्होंने खजर निकाल कर उस झुण्ड पर टूट पडने का इरादा किया मगर न हो सका क्योंकि पीछे स कई आदमियों ने आकर इन तीनों को पकड लिया।

छठवां बयान

अब हम अपन किस्से के सिलसिले को मोड कर दूसरी तरफ झुकते है और पाठकों को पुण्यधाम काशी में ले चल कर सध्या के समय गगा के किनारे बैठी हुई एक नौजवान औरत की अवस्था पर ध्यान दिलाते हैं।

सूर्य भगवान अस्त हो चुके है चारों तरफ अधेरी घिरी आती है। गगाजी शान्त भाव से धीरे-धीरे वह रही हैं। आसमान पर छोटे-छोटे बादल के टुकड पूरब की तरफ से चले आकर पश्चिम की तरफ इकट्ठे हो रहे हैं। गगा के किनारे ही पर एक नौजवान औरत जिसकी उम्र पन्द्रह बर्ष से ज्यादे न होगी, हथेली पर गाल रक्खे जल की तरफ देखती न मालूम क्या सोच रही है। इसमें कोई शक नहीं कि यह औरत नखसिख से दुरुस्त और खुबसूरत है मगर रग इसका सावला है तो भी इसकी खुबसूरती और नजाकत में किसी तरह का बट्टा नहीं लगता। थोडी-थोडी देर पर यह औरत सर उठा कर चारो तरफ देखती और फिर उसी तरह हथेली पर गाल रख कर कुछ सोचने लग जाती है।

इसके सामने ही गगाजी में एक छोटा सा बजडा खडा है जिस पर चार-पाच आदमी दिखाई दे रहे हैं और कुछ सफर का सामान और दो चार हर्बे भी मौजूद है।

थोडी देर में अधेरा हो जाने पर वह औरत उठी साथ ही बजडे पर से दो सिपाही उतर आए और सहारा देकर

बजडे पर ले गये। वह छत पर जा बैठीं और किनारे की तरफ देखने लगी जैसे किसी के आने की राह देख रही हो। बेशक ऐसा ही था क्योंकि उसी समय हाथ में गठरी लटकाये एक आदमी आया जिसे देखते ही दो मल्लाह किनारे पर उतर आये एक ने उसके हाथ से गठरी लेकर बजडे की छत पर पहुचा दिया और दूसरे ने उस आदमी को हाथ का हल्का सहारा देकर बजडे पर चढा लिया। वह भी छत पर उस औरत के सामने खडा हो गया और तब इशारे से पूछा कि अब क्या हुक्म होता है ? जिसके जवाब में इशारे ही से उस औरत ने गगा के उस पार की तरफ चलने को कहा। उस आदमी ने जो अभी आया था माझियों को पुकार कर कहा कि बजडा उस पार ले चलो, इसके बाद अभी आए हुए आदमी और उस औरत में दो चार बातें इशारे में हुईं जिसे हम कुछ नहीं समझे हा इतना मालूम हो गया कि यह औरत गूगी और बहरी है मुह से कुछ नहीं बोल सकती और न कान से कुछ सुन सकती है।

बजडा किनारे से खोला गया और पार की तरफ चला चार माझी डाडे लगाने लगे। वह औरत छत से उतर कर नीचे चली गई और मर्द भी अपनी गठरी जो लाया था लेकर छत से नीचे उतर आया। बजडे में नीचे दो कोठरिया थीं एक में सुन्दर फर्श बिछा हुआ था और दूसरी में एक चारपाई बिछी और कुछ असबाब पडा हुआ था। यह औरत हाथ से कुछ इशारा करके फर्श पर बैठ गई और मर्द ने एक पटिया लकडी की और छोटी सी टुकडी खडियें की उसके सामने रख दी और आप भी बैठ गया और दोनो में बातचीत होने लगी मगर उसी लकडी की पटिया पर खडिया से लिख कर। अब दोनों में जो बातचीत हुई हम नीचे लिखते है परन्तु समझ रक्खें कि कुल बातचीत लिखकर हुई।

पहिले उस औरत ने गठरी खोली और देखने लगी कि उसमें क्या है। पीतल का एक कलमदान निकला जिस उस औरत ने खोला। पाच सात चीठिया और पुर्जे निकले जिन्हें पढ कर उसी तरह रख दिया और दूसरी चीजें देखने लगी। दो चार तरह के रूमाल और कुछ पुराने सिक्के देखने बाद टीन का एक बडा सा डिब्बा खोला जिसके अन्दर कोई ताज्जुब की चीज थी। डिब्बा खोलने बाद कुछ कपडा हटाया जो बेठन की तौर पर लगा हुआ था इसके बाद झाक कर उस चीज को देखा जो उस डिब्बे के अन्दर थी।

न मालूम उस डिब्बे में क्या चीजे थी कि जिसे देखते ही उस औरत की अवस्था बिल्कुल बदल गई। झाक के देखते ही वह हिचकी और पीछे की तरफ हट गई, पसीने से तर हो गई बदन कापने लगा चेहरे पर हवाई उडने लगी और आखें बन्द हो गई। उस आदमी ने फुर्ती से बेठन का कपडा डाल दिया और उस डिब्बे को उसी तरह बन्द कर उस औरत के सामने से हटा लिया। उसी समय बजडे के बाहर से एक आवाज आई 'नानकजी!

नानकप्रसाद उसी आदमी का नाम था जो गठरी लाया था। उसका कद न लम्बा और न बहुत नाटा था। बदन मोटा रग गोरा और ऊपर के दात कुछ खुडबुडे से थे। आवाज सुनते ही वह आदमी उठा और बाहर आया मल्लाहों ने डाड लगाना बन्द कर दिया था और तीन सिपाही मुस्तैद दर्वाजे पर खडे थे।

नानक–(एक सिपाही से) क्या है ?

सिपाही–(पार की तरफ इशारा करके) मुझे मालूम होता है कि उस पार बहुत से आदमी खडे है। देखिये कभी कभी बादल हट जाने से जब चन्द्रमा की रोशनी पडती है तो साफ मालूम होता है कि वे लोग भी बहाव की तरफ हटे ही जाते हैं जिधर बजडा जा रहा है।

नानक–(गौर स देख कर) हा ठीक तो है।

सिपाही–क्या ठिकाना शायद हमारे दुश्मन ही हों।

नानक–कोई ताज्जुब नहीं अच्छा तुम नाव को बहाव की तरफ जाने दो पार मत चलो।

इतना कह कर नानकप्रसाद अन्दर गया तब तक औरत के भी हवास ठीक हो गये थे और वह उस टीन के डिब्बे की तरफ जो इस समय बन्द था बडे गौर से देख रही थी। नानक को देखकर उसने इशारे से पूछा क्या है ?

इसके जवाब में नानक ने लकड़ी की पटिया पर खडिया से लिख कर दिखाया कि पार की तरफ बहुत से आदमी दिखाई पड़ते है कौन ठिकाना शायद हमारे दुश्मन हों।

औरत–(लिखकर) बजडे को बहाव की तरफ जाने दो। सिपाहियों को कहो बन्दूक लेकर तैयार रहें अगर कोई जल में तैर कर यहा आता हुआ दिखाई पडे ता बेशक गोली मार दें।

नानक–बहुत अच्छा।

नानक फिर बाहर आया और सिपाहियों को हुक्म सुना कर भीतर चला गया। उस औरत ने अपने आचल से एक ताली खोलकर नानक के हाथ में दी और इशारे से कहा कि इस टिन के डिब्बे को हमारे सन्दूक में रख दो।

नानक ने वैसा ही किया दूसरी कोठरी जिसमें पलग बिछा हुआ था और कुछ असवाब और सन्दूक रखा हुआ था गया और उसी ताली से एक सन्दूक खोलकर वह टीन का डिब्बा रख दिया और उसी तरह ताला बन्दकर ताली उस औरत के हवाले की। उसी समय बाहर स बन्दूक की आवाज आई।

नानक ने तुरन्त बाहर जाकर पूछा 'क्या है ?

सिपाही–देखिये कई आदमी तैर कर इधर आ रहे है।

दूसरा–मगर बन्दूक की आवाज पाकर अब लौट चले।

नानक फिर अन्दर गया और बाहर का हाल पटिया पर लिख कर औरत को समझाया। वह भी उठ खडी हुई और बाहर आकर पार की तरफ देखने लगी। घंटा भर यों ही गुजर गया और अब वे आदमी जो पार दिखाई दे रहे थे या तैर कर इस बजडे की तरफ आ रहेथे कहींचले गये दिखाई नहीं देते। नानकप्रसाद को साथ आने का इशारा करके वह औरत फिर बजडे के अन्दर चली गई और पीछ नानक भी गया। उस गठरी में और जो-जो चीजें थीं वह गूगी औरत देखने लगी। तीन चार बेशकीमत मर्दाने कपडों के सिवाय और उस गठरी में कुछ भी न था। गठरी बाध कर एक किनारे रख दी गई और पटिया पर लिख-लिख कर दोनों में बातचीत होने लगी।

औरत–कलमदान में जो चीठिया है वे तुमने कहा मे पाई ?

नानक–उसी कलमदान में थीं।

औरत–और वह कलमदान कहा पर था ?

नानक–उसकी चारपाई के नीचे पडा हुआ था, घर में सन्नाटा था और कोई दिखाई न पडा जो कुछ जल्दी में पाया ले आया।

औरत–खैर कोई हर्ज नहीं। हमें केवल उस टीन के डिब्बे से मतलब था यह कलमदान मिल गया तो इन चीठी पुर्जो से भी बहुत काम चलेगा।

इसक अलावे और कई बातें हुई जिसके लिखने की यहा कोई जरूरत नहीं। पहर रात से ज्यादे जा चुकी थी जब वह औरत वहा स उठी और शमादान जो जल रहा था बुझाअपनी चारपाई पर जाकर लेट रही। नानक भी एक किनारे फर्श पर सो रहा और रात भर नाव बेखटके चली गई कोई बात ऐसी नहीं हुई जो लिखने योग्य हो।

जब थोडी रात बाकी रही, वह औरत अपनी चारपाई से उठी और खिडकी से बाहर झाककर देखने लगी। इस समय आसमान बिल्कुल साफ था चन्द्रमा के साथ ही साथ तारे भी समयानुसार अपनी चमक दिखा रहे थे और दो तीन खिडकियों की राह इस बजडे के अन्दर भी चादनी आ रही थी। बल्कि जिस चारपाई पर वह औरत सोई हुई थी, चन्द्रमा की रोशनी अच्छी तरह पड रही थी। वह औरत धीरे से चारपाई के नीचे उतरी और उस सन्दूक को खोला जिसमें नानक का लाया हुआ टीन का डिब्बा रखवा दिया था। डिब्बा उसमें से निकाल कर चारपाई पर रक्खा, सन्दूक बन्द करने के बाद दूसरा सन्दूक खोलकर उसमें से एक मोमबत्ती निकाली और चारपाई पर आकर बैठी रही। मोमबत्ती में से मोम लेकर उसने टीन के डिब्बे की दरारों को अच्छी तरह बन्द किया और हर एक जोड में मोम लगाया जिसमें हवा तक भी उसके अन्दर न जा सके। इस काम के बाद वह खिडकी के बाहर गर्दन निकालकर बैठी और किनारे की तरफ देखने लगी। दो माझी धीरे-धीरे डाड खे रहे थे जब वे थक जाते तो दूसरे दो को उठा कर उसी काम पर लगा देते और आप आराम करते।

सवरा होते-हाते वह नाव एक ऐसी जगह पहुची जहा किनारे पर कुछ आबादी थी, बल्कि गगा के किनारे ही एक ऊँचा शिवालय भी था और उतर कर गगाजी में स्नान करने के लिए सीढिया भी बनी हुई थीं। औरत ने उस मुकाम को अच्छी तरह देखा और जब वह बजडा उस शिवालय के ठीक सामने पहुचा तब उसने टीन का डिब्बा जिसमेंकोई अद्भुत वस्तु थी और जिसके सूराखों को उसने अच्छी तरह मोम से बन्द कर दिया था जल में फेंक दिया और फिर अपनी चारपाई पर लेट रही। यह हाल किसी दूसरे को मालूम न हुआ। थोडी ही देर में वह आबादी पीछे रह गई और बजडा दूर निकल गया।

जब अच्छी तरह सवेरा हुआ और सूय की लालिमा निकल आई तो उस औरत के हुक्म के मुताबिक बजडा एक जगल के किनारे पहुचा। उस औरत ने किनारे चलने का हुक्म दिया। यह किनारा इसी पार का था जिस तरफ काशी पडती है या जिस हिस्से से बजड़ा खोलकर सफर शुरू किया गया था।

बजडा किनारे-किनारे जाने लगा और वह औरत किनारे के दरख्तों को बडे गौर से देखने लगी। जगल गुजान और रमणीक था सुबह के सुहावने समय में तरह तरह के पक्षी बोल रहे थे हवा के झपेटों के साथ जगली फूलों की मीठी खुशबू आ रही थी। वह औरत एक खिडकी में सिर रक्खे जगल की शोभा देख रही थी। यकायक उसकी निगाह किसी

चीज पर पडी जिसे देखते ही वह चौकी और बाहर जाकर बजड़ा रोकने और किनारे लगाने का इशारा करने लगी।

बजडा किनारे लगाया गया और वह गूगी औरत अपने सिपाहियों को कुछ इशारा करके नानक को साथ लेकर नीचे उतरी।

घण्टे भर तक वह जगल में घूमती रही इसी बीच में उसने अपन जरूरी काम और नहाने धोने से छुट्टी पा ली और तब बजडे में आकर कुछ भोजन करने के बाद उसने अपनी मर्दानी सूरत बनाई। चुस्त पायजामा घुटने के ऊपर तक का चपकन कमरबन्द सर से बड़ा सा मुडासा बाधा और ढाल तलवार खञ्जर के अलावे एक छोटी सी पिस्तौल जिसमें गोली भरी हुई थी, कमर में छिपा और थोड़ी सी गोली-बारूद भी पास रख बजड़े से उतरने के लिए तैयार हुई।

नानक न उसकी ऐसी अवस्था देखी तो सामने अड़कर खडा हो गया और इशारे से पूछा कि अब हम क्या करें ? इसके जवाब में उस औरत ने पटिया और खडिया मागी और लिख-लिख कर दोनों में बातचीत होने लगी।

औरत–तुम इसी बजडे पर अपने ठिकाने चले जाओ। मै तुमसे आ मिलूगी !

नानक–मै किसी तरह तुम्हें अकेला नहीं छाड सकता तुम खूब जानती हो कि तुम्हार लिए मैंने कितनी तकलीफें उठाई है और नीच से नीच काम करने को तैयार रहा हू।

औरत–तुम्हारा कहना ठीक है मगर मुझ गूगी क साथ तुम्हारी जिन्दगी खुशी से नहीं बीत सकती हा तुम्हारी मुहब्बत के बदले मै तुम्हें अमीर किये देती हू जिसके जरिये तुम खूबसूरन से खूबसूरत औरत ढूढ कर शादी कर सकते हो।

नानक–अफसोस, आज तुम इस तरह की नसीहत करने पर उतारू हुई और मेरी सच्ची मुहब्बत का कुछ खयाल न किया। मुझ धन-दौलत की परवाह नहीं और न मुझे तुम्हार गूगी होने का रज है बस मै इस बारे में ज्यादे बातचीत नहीं करना चाहता यों तो मुझे कबूल करो या साफ जवाब दो ताकि मै इसी जगह तुम्हारे सामने अपनी जान देकर हमेशा के लिए छुट्टी पाऊँ। मै लोगों के मुह से यह नही सुना चाहता कि रामभोली के साथ तुम्हारी मुहब्बत सच्ची न थी और तुम कुछ न कर सके।

रामभोली–(गूगी औरत) अभी मै अपने कामों से निश्चिन्त नही हुई जब आदमी बेफिक्र होता है तो शादी ब्याह और हसी-खुशी की बातें सूझती हैं मगर इसमें शक नहीं कि तुम्हारी मुहब्बत सच्ची है और मै तुम्हारी कद्र करती हू।

नानक–जब तक तुम अपने कामों से छुट्टी नहीं पाती मुझे अपने साथ रक्खो मै हर काम में तुम्हारी मदद करूगा और जान तक दे देने को तैयार रहूगा।

रामभोली–खैर मै इस बात को मजूर करती हू, सिपाहियों को समझा दो कि बजडे को ले जाए और इसमें जो कुछ चीजें हैं अपना हिफाजत में रक्खें क्योंकि वह लोहे का डिब्बा भी जो तुम कल लाये थे मै इसी नाव में छोड़े जाती हू।

नानकप्रसाद खुशी के मारे ऐंठ गये। बाहर आकर सिपाहियों को बहुत कुछ समझाने-बुझाने के बाद आप भी हर तरह से लैस हो बदन पर हर्बे लगा साथ चलने को तैयार हो गए। रामभोली और नानक बजड़े के नीचे उतरे। इशारा पाकर माझियों ने बजडा खोल दिया और वह फिर बहाव की तरफ जाने लगा।

नानक को साथ लिए हुए रामभोली जगल में घुसी। थोडी ही दूर जाकर वह एक ऐसी जगह पहुँची जहा बहुत सी पगडण्डिया थीं खडी होकर चारों तरफ देखने लगी। उसकी निगाह एक कटे हुए साखू के पेड पर पडी जिसके पत्ते सूख कर गिर चुके थे। वह उस पेड के पास जाकर खडी हो गई और इस तरह चारो तरफ देखने लगी जैसे कोई निशान ढूढती हो। उस जगह की जमीन बहुत पथरीली और ऊँची-नीची थी। लगभग पचास गज की दूरी पर एक पत्थर का ढेर नजर आया जो आदमी के हाथ का बनाया हुआ मालूम होता था। वह उस पत्थर के ढेर के पास गई और दम लेने या सुस्ताने के लिए बैठ गई। नानक ने अपना कमरबन्द खोला और एक पत्थर की चट्टान झाड कर उसे बिछा दिया, रामभोली उसी पर जा बैठी और नानक को अपने पास बैठने का इशारा किया।

ये दोनों आदमी अभी सुस्ताये भी न थे कि सामने से एक सवार सुर्ख पौशाक पहिरे इन्हीं दोनों की तरफ आता हुआ दिखाई पडा। पास आने पर मालूम हुआ कि यह एक नौजवान औरत है जो बड़े ठाठ के साथ हर्बे लगाये मर्दों की तरह घोड़े पर बैठी बहादुरी का नमूना दिखा रही है। वह रामभोली के पास आकर खडी हो गई और उस पर एक भेद वाली नजर डाल कर हँसी। रामभोली ने भी उसकी हँसी का जवाब मुस्कुरा कर दिया और कनखियों से नानक की तरफ इशारा किया। उस औरत ने रामभोली को अपने पास बुलाया और जब वह घोडे के पास जाकर खडी हो गई तो आप घोडे से नीचे उतर पडी। कमर से छोटा सा बटुआ खोल एक चीठी और एक अगूठी निकाली जिस पर एक सुर्ख नगीना जडा हुआ था और रामभोली के हाथ में रख दिया।

राममोली का चेहरा गवाही दे रहा था कि वह इस अगूठी को पाकर हद्द से ज्यादे खुश हुई है। राममोली ने इज्जत देने के ढग पर उस अगूठी को सिर से लगाया और अपनी अँगुली में पहिर लिया चीठी कमर में खौसकर फुर्ती से उस घोड़े पर सवार हो गई और देखते ही देखते जगल में घुसकर नजरों से गायब हो गई।

नानकप्रसाद यह तमाशा देख भौंचक सा रह गया कुछ करते-धरते बन न पडा। न मुँह से कोई आवाज निकली और न हाथ के इशारे ही से कुछ पूछ सका पूछता भी तो किससे ? राममोली ने तो नजर उठा के उसकी तरफ देखा तक नही। नानक बिल्कुल नहीं जानता था कि यह सुर्ख पोशाक वाली औरत है कौन जो यकायक यहा आ पहुची और जिसने इशारेबाजी करके राममोली को अपने घोडे पर सवार कर भगा दिया। वह औरत नानक के पास आई और हस के बोली–

औरत–वह औरत जो तेरे साथ थी मेरेघोडे पर सवार होकर चली गई कोई हर्ज नही मगर तू उदास क्यों हो गया ? क्या तुझसे उससे कोई रिश्तेदारी थी ?

नानक–रिश्तेदारी थी तो नहीं मगर होने वाली थी तुमने सब चौपटकर दिया !

औरत–(मुस्कुरा कर) क्या उससे शादी करने की धुन समाई थी ?

नानक–बेशक ऐसा ही था। वह मेरी हो चुकी थी तुम नहीं जानती कि मैंने उसके लिए कैसी-कैसी तकलीफें उठाई। अपने बाप-दादे की जमींदारी चौपट की और उसकी गुलामी करने पर तैयार हुआ।

औरत–(बैठ कर) किसकी गुलामी ?

नानक–उसी रामभोली की जो तुम्हारे घोडे पर सवार होकर चली गई।

औरत–(चौंक कर) क्या नाम लिया जरा फिर तो कहो ?

नानक–रामभोली।

औरत–(हस कर) बहुत ठीक तू मेरी सखी अर्थात उस औरत को कब से जानता है !

नानक–(कुछ चिढ कर और मुह बना कर) उसे मैं लडकपन से जानता हू मगर तुम्हें सिवाय आज के कभी नहीं देखा वह तुम्हारी सखी क्योंकर हो सकती है ?

औरत–तू झूठा बेवकूफ और उल्लू बल्कि उल्लू का इत्रहै ! तू मरी सखी को क्या जाने जब तू मुझे नहीं जानता तो उसे क्योंकर पहिचान सकता है ?

उस औरत की बातों ने नानक को आपे से बाहर कर दिया। वह एकदम चिढ गया और गुस्से में आकर म्यान से तलवार निकाल कर बोला—

नानक–कम्बख्त औरत तै मुझे बेवकूफ बनाती है ! जली-कटी बातें कहती है और मेरी आखों में धूल डाला चाहती है ! अभी तेरा सर काट के फेंक देता हू !!

औरत–(हस कर) शाबाश क्यों न हो आप जवामर्द जा ठहर ! (नानक के मुह क पास चुटकिया बजा कर) चेत ऐंठासिह जरा होश की दवा कर !

अब नानकप्रसाद बर्दाश्त न कर सका और यह कह कर कि 'ले अपने किये का फल भोग ! उसने तलवार का वार उस औरत पर किया। औरत ने फुर्ती से अपने को बचा लिया और हाथ बढा नानक की कलाई पकड जोर से ऐसा झटका दिया कि तलवार उसके हाथ से निकल कर दूर जा गिरी और नानक आश्चर्य में आकर उसका मुँह देखने लगा। औरत हस कर नानक से कहा बस इसी जवामर्दी पर मेरी सखी से ब्याह करने का इरादा था ! बस जा और हिजडोंमें मिल कर नाचा कर !

इतना कह कर औरत हट गई और पश्चिम की तरफ रवाना हुई। नानक का क्रोध अभी शान्त नहीं हुआ था। उसने अपनी तलवार जो दूर पडी हुईथी उठाकर म्यान में रख ली और कुछ सोचता और दात पीसता हुआ उस औरत के पीछे-पीछे चला। वह औरत इस बात से भी होशियार थी कि नानक पीछे से आकर धोखे में तलवार न मारे वह कनखियों से पीछे की तरफ देखती जाती थी।

थोडी दूर जाने के बाद वह औरत एक कुए पर पहुची जिसका सगीन चबूतरा एक पुर्से से कम ऊचा न था। चारो तरफ चढने के लिए सीढियाँ बनी हुई थीं। कुआँ बहुत बडा और खूबसूरत था,वह औरत कुएँ पर चली गई और बैठकर धीरे-धीरे गाने लगी।

समय दोपहर का था धूप खूब निकली थी मगर इस जगह कूए के चारो तरफ घने पेडों की ऐसी छाया थी और ठडी ठडी हवा आ रही थी कि नानक की तबियत खुश हो गई क्रोध,रज और बदला लेने का ध्यान बिल्कुल ही जाता रहा तिस पर उस औरत की सुरीली आवाज में और भी रग जमाया। वह उस औरत के सामने जा कर बैठ गया और उसका

मुँह देखने लगा। दो ही तीन तान लेकर वह औरत चुप हो गई और नानक से बोली—

औरत–अब तू मेरे पीछे-पीछे क्यों घूम रहा है ? जहा तेरा जी चाहे जा और अपना काम कर, व्यर्थ समय क्यों नष्ट करता है ? अब तुझे तेरी रामभोली किसी तरह नहीं मिल सकती उसका ध्यान अपने दिल से दूर कर दे।'

नानक–रामभोली झख मारेगी और मेरे पास आवेगी, वह मेरे कब्जे में है। उसकी एक ऐसी चीज मेरे पास है जिससे वह जीते जी कभी नहीं छाड सकती।

औरत–(हस कर) इसमें कोई शक नहीं कि तू पागल है तेरी बातें सुनने से हसी आती है खैर तू जानू तेरा काम जाने मुझे इससे क्या मतलब।

इतना कह कर उस औरत ने कुएँ में झांका और पुकार-कर कहा 'कूपदेव मुझे प्यास लगी है जरा पानी तो पिला।

औरत की बात सुन कर नानक घबराया और जी मे सोचने लगा कि यह अजब औरत है। कुएँ पर हूकूमत चलाती है और कहती है कि मुझे पानी पिला। यह औरत मुझे पागल कहती है मगर मैं इसी को पागल समझता हूँ। भला कुआ इसे क्योंकर पानी पिलावेगा ? जो हो मगर यह औरत खूबसूरत है और इसका गाना भी बहुत उम्दा है।

नानक इन बातों को सोच ही रहा था कि कोई चीज देखकर चौक पडा बल्कि घवडाकर उठ खडा हुआ और कापते हुए तथा डरी हुई सूरत से कूए की तरफ देखने लगा। वह एक हाथ था जो चादी के कटोरे में साफ और ठडा जल लिये हुए कुए के अन्दर से निकला और इसी को देख-कर नानक घवडा गया था।

वह हाथ किनारे आया उस औरत ने कटोरा ले लिया और जल पीने बाद कटोरा उसी हाथ पर रख दिया हाथ कूएँ के अन्दर चला गया और वह औरत फिर उसी तरह गाने लगी। नानक ने अपने जी में कहा 'नहीं नहीं यह औरत पागल नहीं बल्कि मैं ही पागल हू, क्योंकि इसे अभी तक न पहिचान सका। बेशक यह कोई गन्धर्व या अप्सरा है नहीं नहीं देवनी है जो रूप बदल-कर आयी है तभी तो इसके बदन में इतनी ताकत है कि मेरी कलाई पकड और झटका देकर इसने तलवार गिरा दी। मगर रामभोली से इसका परिचय कहा हुआ ?

गाते-गात यकायक वह औरत उठ खडी हुई और वडे जोर से चिल्लाकर उसी कूएँ में कूद पडी।

सातवां बयान

लाल पोशाक वाली औरत की अद्भुत बातों ने नानक को हैरान कर दिया। वह घवडा-कर चारो तरफ देखने लगा और डर के मारे उसकी अजब हालत हो गई। वह उस कूएँ पर भी ठहर न सका और जल्दी-जल्दी कदम बढाता हुआ इस उम्मीद में गगाजी की तरफ रवाना हुआ कि अगर हो सके तो किनारे-किनारे चलकर उस बजडे तक पहुच जाय मगर यह भी न हो सका क्योंकि उस जगल मे बहुत सी पगडण्डिया थी जिनपर चलकर वह रास्ता भूल गया और किसी दूसरी ही तरफ जाने लगा।

नानक लगभग आध कोस के गया होगा कि प्यास के मारे बेचैन हो गया। वह जल खोजने लगा मगर उस जगल में कोई चश्मा या सोता ऐसा न मिला जिससे प्यास बुझाता। आखिर घूमते-घूमते उसे पत्ते की एक झोपड़ी नजर पडी जिसे वह किसी फकीर की कुटिया समझ-कर उसी तरफ चल पडा मगर पहुचने पर मालूम हुआ कि उसने धोखा खाया। उस जगह कई पेड ऐसे थे जिनकी डालिया झुककर और आपस में मिलकर ऐसी हो रही थीं कि दूर से झोपडी मालूम पडती थी, तो भी नानक के लिए वह जगह बहुत उत्तम थी क्योंकि उन्हीं पेडों में से एक चश्मा साफ पानी का बहता हुआ दिखाई पडा जिसके दोनों तरफ़ खुशनुमा सायेदार पेड लगे हुए थे जिन्होंने एक तौर पर उस चश्मे को भी अपने साये के नीचे कर रखा था। नानक खुशी-खुशी चश्मे के किनारे पहुचा और हाथ-मुँह धोने के वाद जल पीकर आराम करने के लिए बैठ गया।

थोडी देर चश्मे के किनारे बैठे रहने के वाद दूर से कोई चीज पानी में बहकर इसी तरफ आती हुई नानक ने देखी। पास आने पर मालूम हुआ कि कोई कपडा है। वह जल में उतर गया और कपडे को खैंच लाकर गौर से देखने लगा क्योंकि वह वही कपडा था जो बजडे से उतरते समय रामभोली ने अपने कमर में लपेटा था।

नानक ताज्जुब में आकर देर तक उस कपडे को देखता और तरह-तरह की बातें साचता रहा। रामभोली उसके देखते-देखते घोडे पर सवार हो चली गई थी फिर उसे क्योंकर विश्वास हो सकता था कि यह कपडा रामभोली का है। तो भी उसन कई दफे अपनी आखे मलीं और उस कपडे को देखा आखिर विश्वास करना ही पडा कि यह रामभोली की चादर है। रामभोली से मिलन की उम्मीद में वह चश्मे के किनारे-किनारे रवाना हुआ क्योंकि उसे इस बात का गुमान हुआ

कि घोडे पर सवार होकर चले जाने के बाद राममोली जरूर कहीं पर इसी चश्मे के किनारे पहुची होगी और किसी सबब से यह कपडा जल में गिर पडा होगा।

नानक चश्मे के किनारे-किनारे कोस भर के लगभग चला गया और चश्मे के दोनों तरफ उसी तरह सायेदार पेड मिलते गये यहाँ तक कि दूर से उसे एक छोटे से मकान की सफेदी नजर आई। वह यह सोचकर खुश हुआ कि शायद इसी मकान में राममोली से मुलाकात होगी कदम बढाता हुआ तेजी से जाने लगा और थोडी देर में उस मकान के पास जा पहुचा।

वह मकान चश्मे के बीचोबीच में पुल के तौर पर बना हुआ था। चश्मा बहुत चौडा न था उसकी चौडाई बीस-पचीस हाथ से ज्यादे न होगी। चश्मे के दोनों पार की जमीन इस मकान के नीचे आ गई थी और बीच में पानी बह जाने के लिए नहर की चौडाई के बराबर पुल की तरह का एक दर बना हुआ था जिसके ऊपर छोटा सा एक मजिला मकान निहायत खूबसूरत बना हुआ था। नानक इस मकान को देखकर बहुत ही खुश हुआ और सोचने लगा कि यह जरूर किसी मनचले शौकीन का बनवाया हुआ होगा। यहा से इस चश्मे और चारों तरफ के जगल की बहार खूब ही नजर आती है। इस मकान के अन्दर चलकर देखना चाहिये-खाली है या कोई इसमे रहता है। नानक उस मकान के सामने की तरफ गया। उसकी कुर्सी बहुत ऊँची थी, पन्द्रह सीढिया चढने के बाद दर्वाजे पर पहुचा। दर्वाजा खुला हुआ था बेधडक अन्दर घुस गया।

इस मकान क चारों कोनों में चार कोठरिया और चारों तरफ चार दालान बारामदे की तौर पर थे जिसके आगे कमर बराबर ऊँचा जगला लगा हुआ था अर्थात हर एक दालान के दोनों बगल कोठरिया पडती थी और बीचोबीच में एक भारी कमरा था। इस मकान में किसी तरह की सजावट न थी मगर साफ था।

दर्वाजे के अन्दर पैर रखते ही बीच वाले कमरे में बैठे हुए एक साधू पर नानक की निगाह पडी। वह मृगछाले पर बैठा हुआ था। उसकी उम्र अस्सी वर्ष से भी ज्यादे होगी। उसके बाल रूई की तरह सफेद हो रहे थे लम्बे लम्बे सर के बाल सूखे और खुले रहने के सबब खूब फैले हुए थे और दाढी नाभी तक लटक रही थी। कमर में मूज की रस्सी के सहारे कोपीन थी और कोई कपडा उसके बदन पर न था गले में जनेऊ पडा हुआ था और उसके दमकते हुए चहरे पर बुजुर्गी और तपोबल की निशानी पाई जाती थी। जिस समय नानक की निगाह उस साधू पर पड़ी वह पदमासन बैठा हुआ ध्यान में मग्न था, आखे बन्द थीं और हाथ जघे पर पडे हुए थे। नानक उसके सामने जाकर देर तक खडा रहा मगर उसे कुछ खबर न हुई नानक ने सर उठाकर चारो तरफ अच्छी तरह देखा मगर सिवाय बडी-बडी दो तस्वीरों के, जिन पर पर्दा पडा हुआ था और साधू के पीछे की तरफ दीवार के साथ लगी हुई थी और कुछ कही दिखाई न पडा।

नानक को ताज्जुब हुआ और वह सोचने लगा कि इस मकान में किसी तरह का सामान नहीं है फिर महात्मा का गुजर क्योंकर चलता होगा? और वे दोनों तस्वीरें कैसी है जिनका रहना इस मकान में जरूरी समझा गया! इसी फिक्र में वह चारो तरफ घूमने और देखने लगा। उसने हर एक दालान और कोठरी की सैर की मगर कही एक तिनका भी नजर न आया हा एक कोठरी में वह न जा सका जिसका दरवाजा बन्द था मगर जाहिर में कोई ताला या जजीर उस दरवाजे में दिखाई न दिया मालूम नहीं हुआ वह क्योंकर बन्द था। घूमता फिरता नानक बगल के दालान में आया और बारामदे से झाक कर नीचे की बहार देखने लगा और इसी में उसने घण्टा भर बिता दिया।

घूम-फिर-कर पुन बाबाजी के पास गया मगर उन्हें उसी तरह आखे बन्द किए बैठा पाया। लाचार इस उम्मीद में एक किनारे बैठ गया कि आखिर कभी तो आख खुलेगी। शाम होते-होते बगल की कोठरी से, जिसका दरवाजा बन्द था और जिसके अन्दर नानक न जा सका था, शख बजने की आवाज आई। नानक को बडा ही ताज्जुब हुआ मगर उस आवाज ने साधू का ध्यान तोड दिया। आखे खुलते ही नानक पर उसकी नजर पडी।

साधू-तू कौन है और यहाँ क्योंकर आया है?

नानक-मैं मुसाफिर हू, आफत का मारा भटकता हुआ इधर आ निकला। यहाँ आपके दर्शन हुए दिल में बहुत कुछ उम्मीद पैदा हुई।

साधू-मनुष्य से किसी तरह की उम्मीद न रखनी चाहिए खैर यह बता तेरा मकान कहा है और इस जगल में, जहा आकर वापस जाना मुश्किल है कैसे आया?

नानक-मैं काशी का रहने वाला हू, कार्य-वश एक औरत के साथ जो मेरे मकान के बगल ही में रहा करती थी, यहाँ आना हुआ इस जगल में उस औरत का साथ छूट गया और ऐसी विचित्र बातें देखने में आई जिनक डर से अभी तक मेरा कलेजा काप रहा है।

साधू-ठीक है तेरा किस्सा बहुत बडा मालूम होता है जिसके सुनने की अभी मुझे फुरसत नहीं है जरा ठहर मै एक

काम से छुट्टी पा लू तो तुझसे बाते करू। घबराइयो नही, मै ठीक एक घण्टे में आऊँगा।

इतना कह कर साधू वहाँ से चला गया। दर्वाजे की आवाज और अन्दाज से नानक को मालूम हुआ कि साधू उसी कोठरी में गया जिसका दर्वाजा बन्द था और जिसके अन्दर नानक न जा सका था। लाचार नानक बैठा रहा मगर इस बात से कि साधू को आने में घण्टे भर की देर लगेगी, वह घबराया और सोचने लगा कि तब तक क्या करना चाहिए। यकायक उसका ध्यान उन दोनों तस्वीरों पर गया जो दीवार के साथ लगी हुई थीं। जी में आया कि इस समय यहाँ सन्नाटा है साधू महाशय भी नहीं हैं, जरा पर्दा उठाकर देखे तो यह तस्वीर किसकी है। नहीं नहीं कहीं ऐसा न हो कि साधू आ जाय अगर देख लेंगे तो रज होंगे जिस तस्वीर पर पर्दा पडा हो उसे बिना आज्ञा कभी न देखना चहिए। लकिन अगर देख ही लेंगे तो क्या होगा ? साधू तो आप ही कह गए है कि हम घण्टे भर में आवेगे फिर डर किसका है ?

नानक एक तस्वीर के पास गया और डरते-डरते पर्दा उठाया। तस्वीर पर निगाह पड़ते ही वह खौफ से चिल्ला उठा हाथ से पर्दा गिर पडा हाफता हुआ पीछे हटा और अपनी जगह पर आकर बैठ गया यह हिम्मत न पडी कि दूसरी तस्वीर देखे।

वह तस्वीर दो औरत और एक मर्द की थी, नानक उन तीनों को पहिचानता था। एक औरत तो रामभोली और दूसरी वह थी जिसक घोड पर सवार हाकर रामभोली चली गई थी और जो नानक के देखते-देखते कूए में कूद पडी थी तीसरी तस्वीर नानक क पिता की थी। उस तस्वीर का भाव यह था कि नानक का पिता जमीन पर गिर पडा हुआ था दूसरी औरत उसके सर के बाल पकड हुए थी रामभोली उसकी छाती पर सवार गले पर छुरी फेर रही थी।

इस तस्वीर को देख कर नानक की अजब हालत हो गई। वह एक दम घबडा उठा और बीती हुई बातें उसकी ऑखों के सामने इस तरह मालूम होने लगी जैसे आज हुई है। अपने बाप की हालत याद कर उसकी आँखें डबडबा आई और कुछ दर तक सिर नीचा किए कुछ सोचता रहा। आखीर में उसने एक लम्बी सास ली और सिर उठाकर कहा ओफ! क्या मेरा बाप इन औरतों के हाथ से मारा गया ? नही कभी नही ऐसा नहीं हो सकता। मगर इस तस्वीर में ऐसी अवस्था क्यों दिखाई गई है ? बेशक दूसरी तरफ वाली तस्वीर भी कुछ ऐसे ढंग की होगी और उसका भी सम्बन्ध कुछ मुझ ही से होगा! जी घबराता है यहाँ बैठना मुश्किल है!। इतना कह नानक उठ खडा हुआ और बाहर बारामदे में जा कर टहलने लगा। सूर्य बिल्कुल अस्त हो गये शाम की पहिली अधेरी चारो तरफ फैल गई और धीरे-धीरे अधकार का नमूना दिखान लगी इस मकान में भी अधेरा हो गया और नानक सोचने लगा कि यहाँ रोशनी का कोई सामान दिखाई नहीं पडता क्या बाबाजी अधेरे में ही रहते है। ऐसा सुन्दर-साफ मकान मगर बालने के लिए दीया तक नहीं और सिवाय एक मृगछाला के, जिस पर बाबाजी बैठते है एक चटाई तक नजर नहीं आती। शायद इसका सबब यह हो कि यहाँ की जमीन बहुत साफ, चिकनी और धोई हुई है।

इस तरह के सोच-विचार में नानक को दो घण्टे बीत गए। यकायक उसे याद आया कि बाबाजी एक घण्टे का वादा करके गये थे अब वह अपने ठिकाने आ गये होंगे और वहा मुझे न देख न मालूम क्या सोचते होंगे। बिना उनसे मिले और बातचीत किए यहा का कुछ हाल मालूम न होगा चलें देखें तो सही वे आ गये या नहीं।

नानक उठ कर उस कमरे में गया जिसमें बाबाजी से मुलाक़ात हुई थी मगर वहाँ सिवाय अधकार के और कुछ दिखाई न पडा थोडी देर तक उसने ऑखे फाड कर अच्छी तरह देखा मगर कुछ मालूम न हुआ लाचार उसने पुकारा– बाबाजी!' मगर कुछ जवाब न मिला उसने और दो दफे पुकारा मगर कुछ फल न हुआ। आखिर टटोलता हुआ बाबाजी के मृगछाले तक गया मगर उसे खाली पाकर लौट आया और बाहर बारामदे में जिसके नीचे चश्मा बह रहा था, आकर बैठ रहा।

घण्टे भर तक चुपचाप सोच-विचार में बैठे रहने बाद बाबाजी से मिलने की उम्मीद में वह फिर उठा और उस कमरे की तरफ चला। अबकी उसने कमरे का दर्वाजा भीतर से बन्द पाया ताज्जुब और खौफ से कापता हुआ फिर लौटा और बारामदे में अपने ठिकाने आकर बैठ रहा। इसी फेर में पहर भर से ज्यादे रात गुजर गई और चारो तरफ से जगल में बोलते हुए दरिन्दे जानवरों की आवाजें आने लगी जिनके खौफ से वह इस लायक न रहा कि मकान के नीचे उतरे बल्कि बारामदे में रहना भी उसने नापसन्द किया और बगल वाली कोठरी में घुस कर किवाड बन्द करकें सो रहा। नानक आज दिन भर भूखा रहा और इस समय भी उसे खाने को कुछ न मिला फिर नींद क्यों आने लगी थी इसके अतिरिक्त उसने दिन भर में ताज्जुब पैदा करने वाली कई तरह की बातें देखी और सुनी थीं जो अभी तक उसकी ऑखों के सामने घूम रही थीं और नींद की बाधक हो रही थीं। आधी रात बीतने पर उसने और भी ताज्जुब की बातें देखीं।

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी थी जब नानक के कानों में दो आदमियों के बातचीत की आवाज आई। वह गौर से सुनने लगा क्योंकि जो कुछ बातचीत हो रही थी उसे वह अच्छी तरह सुन और समझ सकता था। नीचे लिखी बातें उसने सुनीं-आवाज बारीक होने से नानक ने समझा कि वे दोनों औरतें हैं–

एक–नानक ने इश्क को दिल्लगी समझ लिया।

एक–इस कम्बख्त को सूझी क्या जा अपना घर-बार छोड-कर इस तरह एक औरत के पीछे निकल पडा!

दूसरी–यह ता उसी से पूछना चाहिये।

एक–बाबाजी ने उसस मिलना मुनासिब न समझा, मालूम नहीं इसका क्या सबब है।

दूसरी–जा हा मगर नानक आदमी बहुत ही होशियार और चालाक है ताज्जुब नहीं कि उसने जो कुछ इरादा कर रक्खा है उसे पूरा करे!

एक–यह जरा मुश्किल है मुझे उम्मीद नहीं कि रानी इसे छोड दें क्योंकि वह इसके खून की प्यासी हा रही है, हॉ अगर यह उस बजडे पर पहुच-कर वह डिब्बा अपने कब्जे में कर लेगा तो फिर इसका कोई कुछ न कर सकेगा।

दूसरी–(हस-कर जिसकी आवाज नानक ने अच्छी तरह सुनी) यह तो हो नहीं सकता।

एक–खैर इन बातों से अपने को क्या मतलब ? हम लौंडियों की इतनी अक्ल कहॉ कि इन बातों पर बहस करें!

दूसरी–क्या लौंडी होने से अक्ल में बट्टा लग जाता है ?

एक–नहीं मगर असली बातों की लौंडियों का खबर ही कब हाती है!

दूसरा–मुझे तो खबर है।

एक–सो क्या ?

दूसरा–यही कि दम भर में नानक गिरफ्तार कर लिया जायगा। बस अब बातचीत करना मुनासिब नहीं हरिहर आता ही होगा।

इसके बाद फिर नानक ने कुछ न सुना मगर इन बातों ने उसे परेशान कर दिया डर के मारे कॉपता हुआ उठ बैठा और चुपचाप यहा से भाग चलने पर मुस्तैद हुआ। धीरे से किवाड खोल-कर काठरी के बाहर आया चारो तरफ सन्नाटा था। इस मकान से बाहर निकल-कर जगल में भालू-चीते या शेर के मिलने का डर जरूर था मगर इस मकान में रहकर उसने बचाव की कोई सूरत न समझी क्योंकि उन दोनों औरतों की बातों ने उसे हर तरह से निराश कर दिया था। हॉ बजडे पर पहुच उस डिब्बे पर कब्जा कर लेने के ख्याल ने उसे बेबस कर दिया था और जहा तक जल्द हो सके बजडे तक पहुचना उसने अपने लिए उत्तम समझा।

नानक बारामदे से होता हुआ सदर दर्वाजे पर आया और सीढी के नीचे उतरना ही चाहता था कि दूसरे दालान में से झपटते हुए कई आदमियों ने आकर उसे गिरफ्तार कर लिया। उन आदमियों ने जबर्दस्ती नानक की आखें चादर से बाध दीं और कहा जिधर हम ले चलें चुपचाप चला चल नहीं तो तेरे लिए अच्छा न होगा। लाचार नानक को ऐसा ही करना पडा।

नानक की आखें बन्द थीं और हर तरह से लाचार था तो भी वह रास्ते की चलाई पर खूब ध्यान दिये हुए था। आधे घण्टे तक वह बराबर चला गया पत्तों की खडखडाहट और जमीन की नमी से उसने जाना कि वह जगल ही जगल जा रहा है। इसके बाद एक ड्योढी लाघने की नौबत आई और उसे मालूम हुआ कि वह किसी फाटक के अन्दर जा-कर पत्थर पर या किसी पक्की जमीन पर चल रहा है। वहा से कई दफे बाईं और दाहिनी तरफ घूमना पडा। बहुत देर बाद फिर एक फाटक लाघने की नौबत आई और फिर उसने अपने को कच्ची जमीन पर चलते पाया। कोस भर जाने बाद फिर एक चौखट लाघ-कर पक्की जमीन पर चलने लगा। यहा पर नानक को विश्वास हो गया कि रास्ते का भुलावा देने के लिए हम बेफायदे घुमाये जा रहे हैं ताज्जुब नहीं कि यह वही जगह हो जहा पहिले आ चुके है।

थोडी दूर जाने के बाद नानक सीढी पर चढाया गया बीस-पचीस सीढिया चढे बाद फिर नीचे उतरने की नौबत आई और सीढिया खतम होने के बाद उसकी ऑखें खोल दी गईं।

नानक ने अपने को एक विचित्र स्थान में पाया। उसकी पीठ की तरफ एक ऊँची दीवार और सीढिया थीं सामने की तरफ खुशनुमा बाग था जिसके चारो तरफ ऊँची दीवारें थीं और उसमें रोशनी बखूबी हो रही थी। फलों के कलमी पेडों में लगी शीशे की छोटी-छोटी कन्दीलों में मोमबत्तिया जल रही थीं और बहुत से आदमी भी घूमते फिरते दिखाई दे रहे थे। बाग के बीचोबीच में एक आलीशान बगला था नानक वहॉ पहुचाया गया और उसने आसमान की तरफ देख कर मालूम किया कि अब रात बहुत थोडी रह गई है।

यद्यपि नानक बहुत होशियार चालाक बहादुर और ढीठ था मगर इस समय बहुत ही घबराया हुआ था। उसके

ज्यादे घबराने का सबब यह था कि उसके हरबे छीन लिये गए थे और वह इस लायक न रह गया कि दुश्मनों के हमला करने पर उनका मुकाबला करे या किसी तरह अपने को बचा सके। हाँ हाथ-पैर खुले रहने के सबब नानक इस ख्याल से भी बेफिक्र न था कि अगर किसी तरह भागने का मौका मिल तो भाग जाय।

बाहर ही से मालूम हुआ कि इस मकान में रोशनी बखूबी हो रही है। बाहर के सहन में कई दीवारगीरें जल रही थीं और चोबदार हाथ में सोने का आसा लिये नौकरी अदा कर रहे थे। उन्हीं के पास नानक खडा कर दिया गया और वे आदमी जा उसे गिरफ्तार कर लाए थे और गिनती में आठ थे, मकान के अन्दर चले गये मगर चोबदारों से यह कहते गए कि इस आदमी से होशियार रहना हम सरकार से खबर करने जाते हैं। नानक को आधे घण्टे तक वहा खडा रहना पडा।

अब वे लाग जो इसे गिरफ्तार कर लाये थे और खबर करने के लिए अन्दर गये थे, लौटे तो नानक की तरफ देख कर बोले इत्तिला कर दी गई अब तू अन्दर चला जा।

नानक–मुझे क्या मालूम है, कहाँ जाना होगा और रास्ता कौन है ?

एक–यह मकान तुझे आप ही रास्ता बतावेगा पूछने की जरूरत नहीं !

लाचार नानक ने चौखट के अन्दर पैर रक्खा और अपने को तीन दर के एक दालान में पाया फिर कर पीछे की तरफ देखा तो वह दर्वाजा बन्द हो गया था जिस राह से इस दालान में आया था। उसने सोचा कि वह इसी जगह में कैद हो गया और अब नहीं निकल सकता यह सब कारवाई केवल इसी के लिए थी। मगर नहीं उसका विचार ठीक न था क्योंकि तुरत ही उसके सामने का दर्वाजा खुला और उधर रोशनी मालूम होने लगी। डरता हुआ नानक आगे बढा और चौकठ के अन्दर पैर रक्खा ही था कि दो नौजवान औरतों पर नजर पडी जो साफ और सुथरी पोशाक पहिरे हुए थी दोनों ने नानक के दोनों हाथ पकड लिये और ले चलीं।

नानक डरा हुआ था मगर उसने अपने दिल को काबू में रक्खा तो भी उसका कलेजा उछल रहा था और दिल में तरह-तरह की बातें पैदा हो रही थीं। कभी तो वह अपनी जिन्दगी से नाउम्मीद हो जाता कभी यह सोच कर कि मैंने कोई कसूर नहीं किया ढाढस होती और कभी सोचता जो कुछ होना है वह तो होवेहीगा मगर किसी तरह उन बातों का पता तो लगे जिनके जाने बिना जी बेचैन हो रहा है ! कल से जो-जो बातें ताज्जुब की देखने में आई हैं, जब तक उनका असल भेद नहीं खुलता, मेरे हवास दुरूस्त नहीं होते।

वे दोनों औरतें उसे कई दालानों और कोठरियों में घुमाती-फिराती एक बारहदरी में ले गईं जिसमें नानक ने कुछ अजब ही तरह का समा देखा। यह बारहदरी अच्छी तरह से सजी हुई थी और यहा रोशनी बखूबी हो रही थी। दरबार का बिल्कुल सामान यहाँ मौजूद था। बीच में जडाऊ सिंहासन पर एक नौजवान औरत दक्षिणी ढग की बेशकीमत पोशाक पहिरे सिर से पैर तक जडाऊ जेवरों से लदी हुई बैठी थी। उसकी खूबसूरती के बारे में इतना ही कहना बहुत है कि अपनी जिन्दगी में नानक ने ऐसी खूबसूरत औरत कभी नहीं देखी थी। उसे इस बात का विश्वास होना मुश्किल हो गया कि यह औरत इस लोक की रहने वाली है। उसके दाहिने तरफ सोने की चौकी पर मृगछाला बिछाए हुए वही साधू बैठा था जिसे नानक ने शाम को नहर वाले कमरे में देखा था। साधू के बाद गोलाकार बीस जडाऊ कुर्सिया और थीं जिन पर एक से एक बढ के खूबसूरत औरतें दक्षिणी ढग की पोशाक पहिरे ढाल तलवार लगाये बैठी थीं। सिंहासन के बाई तरफ जडाऊ छोटे सिंहासन पर रामभोली को उन्हीं लोगों की सी पोशाक पहिरे ढाल तलवार लगाये बैठे देख नानक के ताज्जुब का कोई हद्द न रहा मगर साथ ही इसके यह विश्वास भी हो गया कि अब उसकी जान किसी तरह नहीं जाती। रामभोली के बगल में जडाऊ कुर्सी पर वह औरत बैठी थी जिसने नानक के सामने से रामभोली को भगा दिया था उसके बाद बीस जडाऊ कुर्सियों पर बीस नौजवान औरतें उसी ठाठ से बैठी हुई थी जैसी सिंहासन के दाहिने तरफ थीं।

सामने की तरफ बीस औरतें ढाल-तलवार लगाये जडाऊ आसा हाथ में लिये अदब से सिर झुकाए पर हुक्म बजाने के लिए तैयार दुपट्टी खडी थीं जिनके बीच में नानक को ले जाकर खडा कर दिया गया।

उस दर्बार को देख कर नानक की आँखों में चकाचौंध सी आ गई। वह एकदम घबडा उठा और अपने चारो तरफ देखने लगा। इस बारहदरी की जिस चीज पर उसकी नजर पर पडती उसे लासानी *पाता। नानक एक बडे अमीर बाप का लडका था और बडे-बडे राजदर्बारों को देख चुका था मगर उसकी आँखों ने यहाँ जैसी चीजें देखीं वैसी स्वप्न में भी न देखी थीं। आलों (ताकों) पर जो गुलदस्ते सजाए हुए थे वे बिल्कुल बनावटी थे और उनमें फूल-पत्तियों की जगह बेशकीमत जवाहिरात काम में लाये गये थे। केवल इन गुलदस्तों ही को देख कर नानक ताज्जुब करता था कि इतनी दौलत इन लोगों के पास कहा से आई ! इसके अतिरिक्त, और जितनी चीजें सजावट की मौजूद थीं, सभी इस योग्य थीं कि जिनका मिलना मनुष्यों को बहुत ही कठिन समझना चाहिए। उन औरतों की पोशाक और जेवरों का अन्दाज करना

*अनुपम।

तो ताकत से बाहर था।

सब तरफ से घूम-फिर कर नानक की आखे रामभोली कीतरफ जाकरअटक गई और एकटक उसकी सूरत देखने लगा।

उस औरत ने जो बड़े रोब के साथ जड़ाऊ सिहासन पर बैठी हुई थी एक नजर सिर से पैर तक नानक को देखा और फिर रामभोली की तरफ आखें फेरीं। रामभोली तुरन्त अपनी जगह से उठ खडी हुई और सामने की तरफ हट कर सिहासन के बगल में खड़ी हो हाथ जोडकर बोली यदि आज्ञा हो तो हुक्म के मुताबिक कार्रवाई की जाय ? इसके जवाब में उस औरत ने जिसे महारानी कहना उचित है, बड़े गरूर के साथ सिर हिलाया अर्थात् मना किया और उस दूसरी की तरफ देखा जो रामभोली के बगल में थी।

यह बात नानक के लिए बडे ताज्जुब की थी। आज उसके कानों ने एक ऐसी आवाज सुनी जो कभी सुनी न थी और न सुनने की उम्मीद थी। एक तो यही ताज्जुब की बात थी जो रामभोली उसके पड़ोस में रहती थी जिसे नानक लडकपन से जानता था और सिवाय उस दिन के जिस दिन बजडे पर सवार हो सफर में निकली जिसे कभी अपना घर छोडते नहीं देखा था और न कभी जिसके मा बाप ने उसे अपनी आखों से दूर किया था आज इस जगह ऐसी अवस्था और ऊँचे दर्जे पर दिखाई दी। दूसरे जो रामभोली जन्म से गूगी थी जिसके बाप-मा ने कभी उसे बोलते नहीं सुना आज इस तरह उसके मुह से मीठी आवाज निकल रही है ! इस आवाज ने नानक के दिल के साथ क्या काम किया इसे वही जानता होगा। इस बात को नानक क्योंकर समझ सकता था कि जिस रामभोली ने कभी घर से बाहर पैर भी नहीं निकाला वह इन लोगों में आपस के तौर पर क्यों पाई जाती है और ये सब औरतें कौन है !

नानक को इन सब बातों को अच्छी तरह सोचने का मौका न मिला। वह दूसरी औरत जो रामभोली के बगल में कुर्सी पर बैठी हुई थी और जिसको नानक ने पहिले भी देखा था इशारा पाते ही उठ खडी हुई और कुछ आगे बढ नानक से बातचीत करने लगी।

औरत–नानकप्रसाद इसके कहने की तो जरूरत नहीं कि तुम मुजरिम बना कर यहा लाये गये हो और तुम्हें किसी तरह की सजा दी जायेगी।

नानक–हा बेशक मै मुजरिम बना कर लाया गया हू मगर असल में मुजरिम नहीं हू और न मैंने कसूर ही किया है।

औरत–तुम्हारा कसूर यही है कि तुमने वह बडी तस्वीर जो बाबाजी के कमरे में थी और जिस पर पर्दा पड़ा हुआ था बिना आज्ञा के देखी। क्या तुम यह नहीं जानते कि जिस तस्वीर पर पर्दा पडा हो उसे बिना आज्ञा के देखना न चाहिए ?

नानक–(कुछ सोच कर) बेशक यह कसूर तो हुआ।

औरत–हमारे यहाँ का कानून यही है कि जो ऐसा कसूर करे उसका सिर काट लिया जाय।

नानक–अगर ऐसा कानून है तो इसे जुल्म कहना चाहिए !

औरत–जो हो मगर अब तुम किसी तरह बच नहीं सकते।

नानक–खैर, मे मरने से नहीं डरता और खुशी से मरना कबूल करता हू यदि आप कुछ सवालों का जवाब दे दें !

औरत–तुम मरने से तो किसी तरह इनकार कर नहीं सकते मगर मेहरबानी करके तुम्हारे एक सवाल का जवाब मिल सकता है, एक से ज्यादे सवाल तुम नहीं कर सकते, पूछो क्या पूछते हो ?

नानक–(कुछ देर तक सोच कर) खैर जब एक ही सवाल का जवाब मिल सकता है तो मै यह पूछता हू कि (रामभोली की तरफ इशारा करके) यह यहा क्योंकर आई और यहा इन्हें इतनी बडी इज्जत क्योंकर मिली ?

औरत–ये तो दो सवाल हुए ! अच्छा इनमें से एक सवाल का जवाब यह दिया जाता है कि जिनके बारे में तुम पूछते हो वह हमारी महारानी की छोटी बहिन हैं और यही सबब है कि उनके बगल मे सिहासन के ऊपर बैठी हैं।

नानक–मुझे क्योंकर विश्वास हो कि तुम सच कहती हो ?

औरत–मै धर्म की कसम खाकर कहती हू कि यह बात झूठ नहीं है मानने न मानने का तुम्हें अख्तियार है !

नानक–खैर अगर ऐसा है तो मै किसी प्रकार मरना पसन्द नहीं करता।

औरत–(हस कर) मरना न पसन्द करने से क्या तुम्हारी जान छोड दी जायेगी।

नानक–बेशक ऐसा ही है जब तक मै मरना मजूर न करूँगा, तुम लोग मुझे मार नहीं सकती।

औरत–यह तो हम लोग जानते हैं कि तुम एक भारी कुदरत रखते हो और उसके सबब से बडे-बडे काम कर सकते हो मगर इस जगह तुम्हारे किये कुछ नहीं हो सकता हा एक बात अगर तुम कबूल करो तो तुम्हारी जान छोड दी जायेगी

वल्कि इनाम के तौर पर तुम जो मागोगे सो दिया जायेगा।

नानक–वह क्या ?

औरत–कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह की जान तुम्हारे कब्जे में है वह महारानी के कब्जे में दे दो।

नानक–(क्रोध के मारे लाल आखे निकाल क) कम्वख्त खवरदार ! फिर ऐसी वात जुवान पर न लाइया ! मै नही जानता था कि ऐसी खूवसूरत मण्डली कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह की दुश्मन निकलेगी। तुम ऐसी हजारों को मै उन पर न्यौछावर करता हू ! वस मालूम हो गया, तुम लोग खेल की कठपुतलिया हो। किसकी ताकत है जो मुझे मारे या मेरे साथ किसी तरह की जवर्दस्ती करे !!

उस औरत का चहरा नानक की यह वात सुन कर क्रोध के मारे लाल हो गया वल्कि और औरतें भी जो वहा मौजूद थीं, नानक की दवगता देख क्रोध के मारे कापने लगीं मगर महारानी के चेहरे पर क्रोध की निशानी न थी।

औरत–(तलवार खींच कर) वेशक अव तुम मारे जाओगे। वीस-वीस मर्दों की ताकत (कुर्सियों की तरफ इशारा करके) इन एक एक औरतों में और मुझमें है। यह न समझना कि तुम्हारे हाथ-पैर खुले हैं तो कुछ कर सकोगे। क्या भूल गये कि मैने तुम्हारे हाथ से तलवार गिरा दी थी ?

नानक–इतनी ही ताकत अगर तुम लोगों में है तो दोनों कुमारों की जान मुझसे क्यों मागती हो खुद जाकर उन दोनों का सिर क्यों नही काट लाती ?

औरत–कोई खास सवव है कि हम लोग अपने हाथ से इस काम को नहीं करते कर भी सकते हैं मगर देर होगी इसलिए तुमसे कहते हैं। अव भी मन्जूर करो, नहीं तो मैं जान लिए विना न छोडूगी।

नानक–(रामभोली की तरफ इशारा करके) उस औरत की जान जिसे तुम महारानी की वहिन वताती हो मेरे कब्जे में है, जरा इसका भी ख्याल करना।

इतना सुनते ही रामभोली अपनी जगह स उठी और वोली यह कभी न समझना कि वह डिब्बा जिसे तुम लाये थे मैं वजडे में छोड आई और वह तुम्हारे या तुम्हारे सिपाहियों के कब्जे में है मैने उसे गगाजी में फेंक दिया था और अव मगा लिया (हाथ का इशारा करके) देखो उस कोने में छत स लटक रहा है।

नानक ने घूम कर दखा और छत से उस डिब्बे को लटकता पाया। यह देख वह एक दम घवडा गया उसके होश हवास जाते रहे उसके मुह से एक चीख की आवाज निकली और वह वदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ा।

आधी घडी तक नानक वेहोश पडा रहा इसके वाद होश में आया मगर उसने खडे होन की ताकत न थी। वह वैठा-वैठा इस तरह सोचने लगा जैसे कि अव वह जिन्दगी से विल्कुल ही नाउम्मीद हो चुका हो। वह औरत नगी तलवार लिए अभी तक उसके पास खडी थी। एकाएक नानक को कोई वात याद आई जिससे उसकी हालत विल्कुल ही वदल गई गई हुई ताकत वदन में फिर लौट आई और वह यह कहता हुआ कि "मै व्यर्थ सोच में पडा हू उठ खडा हुआ तथा उस औरत से फिर वातचीत करने लगा।

नानक–नही नही मै कभी नही मर सकता।

औरत–अव तुम्हें वचाने वाला कौन है ?

नानक–(रामभोली की तरफ देख के) उस कोठरी की ताली जिसमें किसी के खून से लिखी हुई पुस्तक रक्खी है।

इतना सुनत ही रामभोली चौंकी उसका चेहरा उतर गया, सिर घूमने लगा और वह यह कहती हुई सिहासन की वगली पर झुक गई आह गजव हो गया। भूल हुई वह ताली तो उसी जगह छूट गई ! कम्वख्त तेरा वुरा हो मुझे जवर्दस्ती अ प ने हा थ !

केवल रामभोली ही की ऐसी दशा नही हुइ वल्कि वहाँ जितनी औरतें थीं सभों का चेहरा पीला पड गया खून की लाली जाती रही और सव की सव एकटक नानक की तरफ देखने लगीं। अब नानक को विश्वास हो गया कि उसकी जान वच गई और जो कुछ उसने सोचा था, ठीक निकला कुछ देर ठहर कर नानक फिर वोला–

नानक–उस किताव को मै पढ भी चुका हूँ वल्कि एक दोस्त को भी इस काम में अपना साथी वना चुका हू (यदि तीन दिन के अन्दर मैं उससे न मिलूगा तो वह जरूर कोई काम शुरू कर देगा।

नानक की इस वात ने सभों की वेचैनी और वढा दी। महारानी ने आखों में आसू भर कर अपने वगल में वैठे वावाजी की तरफ इस ढग से देखा जैसे वह अपनी जिन्दगी से निराश हो चुकी हो। वावाजी ने इशारे से उसे ढाढस दिया और नानक की तरफ देख कर कहा—

वावा–शावाश वेटा तुमने खूव काम किया ! मै तुमसे वहुत प्रसन्न हू, चेला वनाने के लिए मै भी किसी ऐसे चतुर को

ढूढ रहा था।

इतना कह बाबाजी उठे और नानक का हाथ पकड कर दूसरी तरफ ले चले। बाबाजी का हाथ इतना कडा था कि नानक की कलाई दर्द करने लगी उसे मालूम हुआ मानों लोहे के हाथ ने उसकी कलाई पकडी हो जो किसी तरह नर्म या ढीला नहीं हो सकता। साफ सवेरा हो चुका था बल्कि सूर्य की लालिमा ने बाग को खुशनुमा पेडों के ऊपर वाली टहनियों पर अपना दखल जमा लिया था जब बाबाजी नानक को लिए एक कोठरी के दर्वाजे पर पहुचे जिसमें ताला लगा हुआ था। बाबाजी ने दूसरे हाथ से एक ताली निकाली जो उनके कमर में थी और उस कोठरी का ताला खोलकर उसके अन्दर ढकेल दिया और फिर दर्वाजा बन्द करके ताला लगा दिया।

चाहे दिन निकल चुका हो मगर उस कोठरी के अन्दर नानक को रात ही का समा नजर आया। बिल्कुल अंधेरा था कोई सूराख भी ऐसा नहीं था जिससे किसी तरह की रोशनी पहुचती। नानक को यह भी नहीं मालूम हो सकता था कि यह कोठरी कितनी बडी है हा उस कोठरी की पत्थर की जमीन इतनी सर्द थी घण्टे ही भर में नानक के हाथ पैर बेकार हो गये। घण्ट भर बाद नानक को चारो तरफ की दीवार दिखाई देने लगी। मालूम हुआ कि दीवारों में से किसी तरह की चमक निकल रही है और वह चमक धीरे-धीरे बढ रही है यहा तक कि थोडी देर मे वहा अच्छी तरह उजाला हो गया और उस जगह की हर एक चीज साफ दिखाई देने लगी।

यह कोठरी बहुत बडी न थी इसके चारो कोनों मे हडडियों के ढेर लगे थे चारो तरफ दीवारों में पुरसे भर ऊँचे चार मोखे (छेद) थे जो बहुत बडे न थे मगर इस लायक थे कि आदमी का सर उसके अन्दर जा सके। नानक ने देखा कि उसके सामने की तरफ वाले (मोखे) में कोई चीज चमकती हुई दिखाई दे रही है। बहुत गौर करने पर थोडी देर बाद मालूम हुआ कि बडी-बडी दो आखें है जो उसी की तरफ देख रही है।

उस अंधेरी कोठरी में धीरे-धीरे चमक पैदा होने और उजाला हो जाने ही से नानक डरा था अब उन आखों ने और भी डरा दिया। धीरे-धीरे नानक का डर बढता ही गया क्योंकि उसने कलेजा दहलाने वाली और भी कई बातें यहा पाई।

हम ऊपर लिख आये हैं कि उस कोठरी की जमीन पत्थर की थी। धीरे-धीरे यह जमीन गर्म होने लगी जिससे नानक के बदन में हरारत पहुची और वह सर्दी जिसके सबब से वह लाचार हो गया था जाती रही। आखिर वहाँ की जमीन यहाँ तक गर्म हुई कि नानक को अपनी जगह से उठना पडा मगर कहा जाता। उस कोठरी की तमाम जमीन एक सी गरम हो रही थी वह जिधर जाता उधर ही पैर जलता था। नानक का ध्यान फिर मोखे की तरफ गया जिसमें चमकती हुई आखें दिखाई दी थीं क्योंकि इस समय उसी मोखे में से एक हाथ निकलकर नानक की तरफ बढ रहा था। नानक दबककर एक कोने में हो रहा जिसमें वह हाथ उस तक न पहुचे मगर हाथ बढता ही गया यहा तक कि उसने नानक की कलाई पकड ली।

न मालूम वह हाथ कैसा था जिसने नानक की कलाई मजबूती से थाम ली। बदन के साथ छूते ही एक तरह की झुनझुनी पैदा हुई और बात की बात में इतनी बढी कि नानक अपने को किसी तरह सम्हाल न सका और न उस हाथ से अपने को छुडा ही सका यहा तक कि वह बेहोश होकर अपने आपको बिल्कुल भूल गया।

जब नानक होश मे आया उसने अपने आप को गगा के किनारे उसी जगह पाया जहा रामभोली के साथ बजडे से उतरा था। बगल में पक्के केले का एक घौद भी देखा। दिन बहुत कम बाकी था और सूर्य भगवान अस्ताचल की तरफ जा रहे थे।

आठवाँ बयान

अब हम फिर उस महारानी के दर्बार का हाल लिखते है जहा से नानक निकाला जाकर गगा के किनारे पहुचाया गया था।

नानक को कोठरी में ढकेलकर बाबाजी लौटे तो महारानी के पास न जाकर दूसरी ही तरफ रवाना हुए और एक बारहदरी में पहुँचे जहा कई आदमी बैठे कुछ काम कर रहे थे। बाबाजी को देखते ही ये लोग उठ खडे हुए। बाबाजी ने उन लोगों की तरफ देखकर कहा "नानक को मै ठिकाने पहुँचा आया हू, बडा भारी ऐयार निकला हम लोग उसका कुछ न कर सके। खैर उसे गगा किनारे उसी जगह पहुचा दो जहा बजडे से उतरा था उसके लिये कुछ खाने की चीज भी वहा रख देना।" इतना कहकर बाबाजी वहा से लौटे और महारानी के पास पहुचे। इस समय महारानी का दर्बार उस ढग का न था और न भीडभाड ही थी। सिहासन और कुर्सियों का नाम निशान न था केवल फर्श बिछा हुआ था जिस पर महारानी रामभोली और वह औरत जिसके घोडे पर सवार हो रामभोली नानक से जुदा हुई थी बैठी आपुस में कुछ बातें

कर रही थीं। बाबाजी ने पहुचते ही कहा मैं नहीं जानता था कि नानक इतना बडा धूर्त और चालाक निकलेगा। धनपति ने कहा था कि वह बहुत सीधा है सहज ही में काम निकल जायगा व्यर्थ इतना आडम्बर करना पडा !

पाठक याद रक्खें धनपति उसी औरत का नाम था जिसके घोडे पर सवार होकर रामभोली नानक के सामने से भागी थी। ताज्जुब नहीं कि धनपति के नाम से बारीक खयाल वाले पाठक चौंकें और सोचें कि ऐसी औरत का नाम धनपति क्यों हुआ ! यह सोचने की बात है और आगे चलकर यह नाम कुछ रग लावेगा।

धनपति–खैर जो होना था सो हो चुका इतना तो मालूम हुआ कि हम लोग नानक के पजे में फँस गये। अब कोई ऐसी तरकीब करनी चाहिए जिससे जान बचे और नानक के हाथ से छुटकारा मिले।

बाबाजी–मैं तो फिर भी नसीहत करूँगा कि आप लोग इस फेर में न पड़ें। कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह बडे प्रतापी हैं उन्हें अपने आधीन करना और उनके हिस्से की चीज छीन लेना कठिन है सहज नहीं। देखा पहिली ही सीढी में आप लोगों ने कैसा धोखा खाया। ईश्वर न करे यदि नानक मर जाय या उसे कोई मार डाले और वह किताब उसी के कब्जे में रह जाय और पता न लगे तो क्या आप लोगों के बचने की कोई सूरत निकल सकती है ?

रामभोली–कभी नहीं बेशक हम लोग बुरी मौत मारे जायेंगे !

बाबाजी–मैं बेशक जोर देता और ऐसा कभी होने न देता मगर सिवाय समझाने के और कुछ नहीं कर सकता।

महारानी–(बाबाजी की तरफ देखकर) एक दफे और उद्योग करूँगी, अगर काम न चलेगा तो फिर जो कुछ आप कहेंगे वही किया जायगा।

बाबाजी–मर्जी तुम्हारी मैं कुछ कह नहीं सकता।

महारानी–(धनपति और रामभोली की तरफ देखकर) सिवाय तुम दोनों के इस काम के लायक और कोई भी नहीं है।

धनपति–मैं जान लडाने से कब बाज आने वाली हूँ।

रामभोली–जो हुक्म होगा करूँगी ही।

महारानी–तुम दोनों जाओ और जो कुछ करते बने करो !

रामभोली–काम बाट दीजिए।

महारानी–(धनपति की तरफ देख के) नानक के कब्जे से किताब निकाल लेना तुम्हारा काम और (रामभोली की तरफ देख के) किशोरी को गिरफ्तार कर लाना तुम्हारा काम।

बाबाजी–मगर दो बातों का ध्यान रखना नहीं तो जीती न बचोगी !

दोनों–वह क्या ?

बाबाजी–एक तो कुँअर इन्द्रजीतसिह या आनन्दसिह को हाथ न लगाना दूसरे ऐसे काम करना जिसमें नानक को तुम दोनों का पता न लगे नहीं तो वह बिना जान लिए कभी न छोड़ेगा और तुम लोगों के किए कुछ न होगा। (रामभोली की तरफ देख के) यह न समझना कि अब वह तुम्हारा मुलाहिजा करेगा अब उसे असल हाल मालूम हो गया, हम लोगों की जड बुनियाद से खोदकर फेंक देने का उद्योग करेगा।

महारानी–ठीक है इसमें कोई शक नहीं। मगर ये दोनों चालाक है अपने को बचावेंगी। (दोनों की तरफ देखकर) खैर तुम लोग जाओ देखो ईश्वर क्या करता है। खूब होशियार और अपने को बचाए रहना।

दोनों–काई हर्ज नहीं !

नौवां बयान

अब हम रोहतासगढ की तरफ चलते हैं और तहखाने में बेबस पडी हुई बेचारी किशोरी और कुँअर आनन्दसिह इत्यादि की सुध लेते हैं।

जिस समय कुँअर आनन्दसिह भैरोसिह और तारासिह तहखाने के अन्दर गिरफ्तार हो गए और राजा दिग्विजयसिह के सामने लाये गये तो राजा के आदमियों ने उन तीनों का परिचय दिया जिसे सुन राजा हैरान रह गया और सोचने लगा कि ये तीनों यहाँ क्योंकर आ पहुच। किशोरी भी उसी जगह खडी थी। उसने सुना कि ये लोग फलाने हैं तो घबरा गई उसे विश्वास हो गया कि अब इनकी जान नहीं बचती। इस समय वह मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करने लगी कि जिस तरह हो सके इनकी जान बचाए इनके बदले में मेरी जान जाय तो कोई हर्ज नही परन्तु मैं अपनी आँखों से

जो हुक्म कहकर तारासिंह दिग्विजयसिंह को लाने के लिए चले गये और थोड़ी ही देर में उन्हें अपने साथ लेकर हाजिर हुए तब तक इधर उधर की बातें होती रहीं। दिग्विजयसिंह ने अदब के साथ राजा वीरेन्द्रसिंह को सलाम किया और हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया।

वीरेन्द्र–कहिये अब क्या इरादा है?

दिग्वि–यही इरादा है कि जन्म भर आपके साथ रहूं और ताबेदारी करूं।

वीरेन्द्र–नीयत में किसी तरह का फर्क तो नहीं है?

दिग्विजय–आप ऐसे प्रतापी राजा के साथ लड़ाई करने वाला पूरा कमबख्त है। वह पूरा बेवकूफ है जो किसी तरह पर आपसे जीतने की उम्मीद रखे। इसमें कोई शक नहीं कि आपके एक-एक ऐयार दस-दस राज्य गारत कर देने की सामर्थ्य रखते हैं। मुझे इस रोहतासगढ़ किले की मजबूती पर बड़ा भरोसा था मगर अब निश्चय हो गया कि वह मेरी भूल थी। आप जिस राजा को चाहें बिना लड़े फतह कर सकते हैं। मेरी तो अकल नहीं काम करती कुछ समझ में नहीं आता कि क्या हुआ और आपके ऐयारों ने क्या तमाशा कर दिया। सैकड़ों वर्षों से जिस तहखाने का हाल एक भेद के तौर पर छिपा चला आता था बल्कि सच तो यह है कि जिसका ठीक-ठीक हाल अभी तक मुझे भी मालूम न हुआ उसी तहखाने पर बात की बात में आपके ऐयारों ने कब्जा कर लिया, यह करामात नहीं तो क्या है! बेशक ईश्वर की आप पर कृपा है और यह सब सच्चे दिल से उपासना का प्रताप है। आपसे दुश्मनी रखना अपने हाथ से अपना सिर काटना है।

दिग्विजयसिंह की बात सुनकर राजा वीरेन्द्रसिंह मुस्कराये और उनकी तरफ देखने लगे। दिग्विजयसिंह ने जिस ढंग से ऊपर लिखी बातें कहीं उसमें सचाई की बू आती थी। वीरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए और दिग्विजयसिंह को अपने पास बैठाकर बोले—

वीरेन्द्र–सुनो दिग्विजयसिंह, हम तुम्हें छोड़ देते हैं और रोहतासगढ़ की गद्दी पर अपनी तरफ से तुम्हें बैठाते हैं मगर एक शर्त पर कि तुम हमेशा अपने को हमारा मातहत समझो और खिराज के तौर पर मालगुजारी दिया करो।

दिग्वि–मैं तो अपने को आपका ताबेदार समझ चुका अब क्या समझूंगा बाकी रही रोहतासगढ़ की गद्दी सो मुझे मन्जूर नहीं। इसके लिए आप कोई दूसरा नायब मुकर्रर कीजिए और मुझे अपने साथ रहने का हुक्म दीजिये।

वीरेन्द्र–तुमसे बढ़कर और कोई नायब रोहतासगढ़ के लिए मुझे दिखाई नहीं देता।

दिग्वि–(हाथ जोड़कर) बस मुझ पर कृपा कीजिये अब राज्य का जंजाल मैं नहीं उठा सकता।

आधे घण्टे तक यही हुज्जत रही। वीरेन्द्रसिंह अपने हाथ से रोहतासगढ़ की गद्दी पर दिग्विजयसिंह को बैठाया चाहते थे और दिग्विजयसिंह इन्कार करते थे लेकिन आखिर लाचार होकर दिग्विजयसिंह को वीरेन्द्रसिंह का हुक्म मंजूर करना पड़ा मगर साथ ही इसके उन्होंने वीरेन्द्रसिंह से इस बात का इकरार करा लिया कि महीने भर तक आपको मेरा मेहमान बनना पड़ेगा और इतने दिनों तक रोहतासगढ़ में रहना पड़ेगा।

वीरेन्द्रसिंह ने इस बात को खुशी से मन्जूर किया क्योंकि रोहतासगढ़ के तहखाने का हाल उन्हें बहुत कुछ मालूम करना था। वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को विश्वास हो गया था कि वह तहखाना जरूर कोई तिलिस्म है।

राजा दिग्विजयसिंह ने हाथ जोड़कर तेजसिंह की तरफ देखा और कहा, "कृपाकर मुझे समझा दीजिए कि आप और आपके मातहत ऐयार लोगों ने रोहतासगढ़ में क्या किया, अभी तक मेरी अक्ल हैरान है।"

तेजसिंह ने सब हाल खुलासे तौर पर कह सुनाया। दीवान रामानन्द का हाल सुन दिग्विजयसिंह खूब हंसे बल्कि उन्हें अपनी बेवकूफी पर भी हंसी आई और बोले, "आप लोगों से कोई बात दूर नहीं है।" इसके बाद दीवान रामानन्द भी उसी जगह बुलवाये गये और दिग्विजयसिंह के हवाले किए गये और दिग्विजयसिंह के लड़के कुंअर कल्याणसिंह को लाने के लिए भी कई आदमी चुनारगढ़ रवाना किए गए।

इन सब कामों से छुट्टी पाकर लाली के बारे में बातचीत होने लगी। तेजसिंह ने दिग्विजयसिंह से पूछा कि लाली कौन है और आपके यहां कब से है? इसके जवाब में दिग्विजयसिंह ने कहा कि लाली को हम बखूबी नहीं जानते। महीने भर से ज्यादा न हुआ होगा कि चार-पांच दिन के आगे पीछे लाली और कुन्दन दो नौजवान औरतें मेरे यहां पहुंचीं। उनकी चाल ढाल और पोशाक से मुझे मालूम हुआ कि किसी इज्जतदार घराने की लड़कियां हैं। पूछने पर उन दोनों ने अपने को इज्जतदार घराने की लड़की जाहिर भी किया और कहा कि मैं अपनी मुसीबत के दो-तीन महीने आपके यहां काटना चाहती हूं। रहम खाकर मैंने उन दोनों को इज्जत के साथ अपने यहां रखा, बस इसके सिवाय मैं कुछ नहीं जानता।

तेज–बेशक इसमें कोई भेद है वे दोनों साधारण औरतें नहीं हैं।

ज्योतिषी–एक ताज्जुब की बात मैं सुनाता हूं।

तेज–वह क्या।

ज्योतिषी–आपको याद हागा कि तहखाने का हाल कहते समय मैंने कहा था कि जब तहखान में किशोरी और लाली को मैंने देखा ता दानों का नाम ल कर पुकारा जिससे उन दोनों को आश्चर्य हुआ।

तेज–हा हा मुझे याद है मै यह पूछने ही वाला था कि लाली को आपने कैसे पहिचाना ?

ज्योतिषी–वस यही वह ताज्जुब की बात है जो अब मै आपसे कहता हू।

तेज–कहिए जल्द कहिए।

ज्योतिषी–एक दफे रोहतासगढ के तहखाने में बैठे-बैठे मेरी तबीयत घबराई तो मै कोठरियों को खोल-खोल कर देखने लगा। उस ताली के झब्बे में जो मेर हाथ लगा था एक ताली सबसे बडी है जा तहखाने की सब काठरियों में लगती है मगर बाकी वहुत सी तालियों का पता मुझ अभी तक नहीं लगा कि कहा की है।

तेज–खैर तब क्या हुआ ?

ज्योतिषी–सब कोठरियों में अधेरा था चिराग ले जाकर मै कहा तक देखता मगर एक कोठरी में दीवार के साथ चमकती हुई कोई चीज दिखाई दी। यद्यपि काठरी में बहुत अधेरा था तो भी अच्छी तरह मालूम हो गया कि यह कोई तस्वीर है। उस पर ऐसा मसाला लगा हुआ था कि अधेरे में भी वह तस्वीर साफ मालूम होती थी आख कान नाक बल्कि बाल तक साफ मालूम होते थे। तस्वीर के नीचे 'लाली ऐसा लिखा हुआ था। मैं बडी देर तक ताज्जुब से उस तस्वीर को देखता रहा आखिर कोठरी बन्द करके अपने ठिकाने चला आया उसके बाद जब किशोरी के साथ मैने लाली को देखा तो साफ पहिचान लिया कि वह तस्वीर इसी की है। मैंन तो सोचा था कि लाली उसी जगह की रहने वाली है इसीलिए उसकी तस्वीर वहा पाई गई मगर इस समय महाराज दिग्विजयसिह की जुबानी उसका हाल सुनकर ताज्जुब हाता है लाली अगर वहा की रहने वाली नहीं तो उसकी तस्वीर वहा कैसे पहुची !

दिग्वि–मैंने अभी तक वह तस्वीर नहीं दखी ताज्जुब है।

वीरेन्द–अभी क्या जब मै आपको साथ लेकर अच्छी तरह उस तहखाने की छानबीन करूगा तो बहुत सी बातें ताज्जुब की दिखाई पडेंगी।

दिग्वि–ईश्वर करे जल्द ऐसा मौका आये अब तो आपको बहुत जल्द रोहतासगढ चलना चाहिए।

वीरेन्द–(तजसिह की तरफ दख कर) इन्द्रजीतसिह के बारे में क्या बन्दोबस्त हो रहा है ?

तेज–मैं बेफिक्र नहीं हूँ, जासूस लोग चारो तरफ भजे गये है ? इस समय तक राहतासगढ की कारवाई में फसा हुआ था अब स्वय उनकी खोज में जाऊगा कुछ पता लगा भी है ?

वीरेन्द–हा ? क्या पता लगा है ?

तेज–इसका हाल कल कहूगा आज भर और सब्र कीजिए।

राजा वीरेन्द्रसिह अपने दोनों लडकों का बहुत चाहते थे इन्द्रजीतसिह के गायब होने का रज उन्हें बहुत था, मगर वह अपने चित्त के भाव को भी खूब ही छिपाते थे और समय का ध्यान उन्हें बहुत रहता था। तेजसिह का भरोसा उन्हें बहुत था और उन्हें मानते भी बहुत थे जिस काम में उन्हें तेजसिह रोकते थे उसका नाम फिर वह जुबान पर तब तक न लाते थे जब तक तेजसिह स्वय उसका जिक्र न छेडते यही सबब था कि इस समय व तेजसिह के सामने इन्द्रजीतसिह क बार में कुछ न बाले।

दूसर दिन महाराज दिग्विजयसिह सेना सहित तेजसिह का राहतासगढ किले में ले गये। कुँअर आनन्दसिह के नाम का डका बजाया गया। यह मौका एसा था खुशी के जलसे होते मगर कुँअर इन्द्रजीतसिह के खयाल से किसी तरह की खुशी न की गई।

राजा दिग्विजयसिह के वर्ताव और खातिरदारी से राजा वीरेन्द्रसिह और उनके साथी लोग बहुत प्रसन्न हुए। दूसर दिन दीवानखाने में थाडे आदमियों की कमेटी इसलिए की गई कि अब क्या करना चाहिए। इस कुमेटी में केवल नीचे लिख बहादुर और ऐयार लोग इकटठे थे—राजा वीरेन्द्रसिह कुँअर आनन्दसिह तजसिह दवीसिह पण्डित बदीनाथ ज्योतिषीजी राजा दिग्विजयसिह और रामानन्द। इनके अतिरिक्त एक और आदमी मुँह पर नकाब डाले मौजूद था जिसे तजसिह अपने साथ लाये थे और उसे अपनी जमानत पर कमेटी में शरीक किया था।

वीरेन्द–(तेजसिह की तरफ देखकर) इस नकाबपोश आदमी के सामन जिसे तुम अपने साथ लाये हो हम लोग भद की बात कर सकते हैं ?

तेज–हा हा कोई हर्ज की बात नही है।

वीरेन्द–अच्छा तो अब हम लोगों का एक तो किशोरी के पता लगाने का दूसरे यहा के तहखाने में जो बहुत सी बातें जानने और विचारने लायक हैं उनके मालूम करने का, तीसरे इन्द्रजीतसिह के खाजने का बन्दोबस्त सबसे पहिले करना चाहिये। (तेजसिह की तरफ देख कर) तुमने कहा था कि इन्द्रजीतसिह का कुछ हाल मालूम हो चुका है ?

तेज–जी हा बेशक मैंने कहा था और उसका खुलासा हाल इस समय आपको मालूम हुआ चाहता है मगर इसके पहले मै दो-चार बातें राजा साहब से (दिग्विजयसिह की तरफ इशारा करके) पूछा चाहता हू जो बहुत जरूरी हैं इसके बाद अपने मामले में बातचीत करूँगा।

वीरेन्द्र–कोई हर्ज नहीं।

दिग्विजय–हा-हा पूछिये।

तेज–आपके यहा शेरसिह* नाम का कोइ ऐयार था ?

दिग्विजय–हा था, बेचारा बहुत ही नेक ईमानदार और मेहनती आदमी था और ऐयारी के फन में पूरा ओस्ताद था रामानन्द और गोविन्दसिह उसी के चेले हैं। उसके भाग जाने का मुझे बहुत रज है। आज के दो-तीन दिन पहिले दूसरे तरह का रज था मगर आज और तरह का अफसोस है।

तेज–दो तरह के रज और अफसोस का मतलब मेरी समझ में नही आया कृपा कर साफ साफ कहिये।

दिग्वि–पहिले उसके भाग जाने का अफसास क्रोध के साथ था, मगर आज इस बात का अफसोस है कि जिन बातों को सोच कर वह भागा था वे बहुत ठीक थीं, उसकी तरफ से मेरा रज होना अनुचित था यदि इस समय वह होता तो बड़ी खुशी से आपके काम में मदद करता।

तेज–उससे आप क्यों रज हुए थे और वह क्यों भाग गया था ?

दिग्वि–इसका सबब यह था कि जब मैंने किशोरी को अपने कब्जे में कर लिया तो उसने मुझे बहुत कुछ समझाया और कहा कि आप ऐसा काम न कीजिए बल्कि किशोरी को राजा वीरेन्दसिह के यहा भेज दीजिये। यह बात मैंने मजूर न की बल्कि उससे रज होकर मैंने इरादा कर लिया कि उसे कैद कर लू। असल बात यह है कि मुझसे और रणधीरसिह से दोस्ती थी शेरसिह मेरे यहा रहता था और उसका छोटा भाई गदाधरसिह जिसकी लड़की कमला है आप उसे जानते होंगे।

तेज–हा-हा हम सब कोई उसे अच्छी तरह जानते हैं।

दिग्वि–खैर तो गदाधरसिह रणधीरसिह के यहा रहता था। गदाधरसिह को मरे बहुत दिन हो गये इसी बीच में मुझसे और रणधीरसिह से कुछ बिगड गई इधर जब मैंने रणधीरसिह की नतिनी किशोरी का अपने लडके के साथ ब्याहने का बन्दोबस्त किया तो शेरसिह को बहुत बुरा मालूम हुआ। मेरी तबीयत भी शेरसिह से फिर गई। मैंने सोचा कि शेरसिह की भतीजी कमला हमारे यहाँ से किशोरी को निकाल ले जाने का उद्योग करेगी और इस काम में अपने चाचा शेरसिह से मदद लेगी। यह बात मेरे दिल में बैठ गई और मैंने शेरसिह को कैद करने का विचार किया। उसे मेरा इरादा मालूम हो गया और वह चुपचाप न मालूम कहा भाग गया।

तेज–तब आप क्या सोचते हैं ! उसका कोई कसूर था या नही।

दिग्वि–नहीं नहीं वह बिल्कुल बेकसूर था बल्कि मेरी ही भूल थी जिसके लिए आज मै अफसोस करता हू, ईश्वर करे उसका पता लग जाय तो मै उससे अपना कसूर माफ कराऊ।

तेज–आप मुझे कुछ इनाम दें तो मैं शेरसिह का पता लगा दू।

दिग्वि–आप जो मांगेंगे मैं दूँगा और इसके अतिरिक्त आपका भारी अहसान मुझ पर होगा।

तेज–बस मैं यही इनाम चाहता हू कि यदि शेरसिह को ढूढ कर ले आऊ तो उसे आप हमारे राजा वीरेन्दसिह के हवाले कर दें। हम उसे अपना साथी बनाना चाहते है।

दिग्वि–मैं खुशी से इस बात को मन्जूर करता हू, वादा करने की क्या जरूरत है जब कि मै स्वय राजा वीरेन्दसिह का तावेदार हू।

इसके बाद तेजसिह ने उस नकाबपोश की तरफ देखा जो उनके पास बैठा हुआ था और जिसे वह अपने साथ इस कमेटी में लाये थे। नकाबपोश ने अपने मुँह पर से नकाब उतार कर फेंक दिया और यह कहता हुआ राजा दिग्विजयसिह

---

*शेरसिह कमला का चाचा जिसका हाल इस सन्तति के तीसरे भाग के तेरहवें बयान में लिखा गया है।

के पैरों पर गिर पड़ा कि 'आप मेरा कसूर माफ करें । राजा दिग्विजयसिह ने शेरसिह को पहिचाना बडी खुशी से उठा कर गले लगा लिया और कहा "नहीं-नहीं तुम्हारा कोई कसूर नहीं बल्कि मेरा कसूर है जो मैं तुमसे क्षमा कराया चाहता हू।

शेरसिह तेजसिह के पास जा बैठे। तेजसिह ने कहा "सुनो शेरसिह अब तुम हमारे हो चुके !

शेर–बेशक मैं आपका हो चुका हू, जब आपने महाराज से वचन ले लिया तो अब क्या उज्र हो सकता है ?

राजा बीरेन्द्रसिह ताज्जुब से ये बातें सुन रहे थे अन्त में तेजसिह की तरफ देख कर बोले "तुम्हारी मुलाकात शेरसिह से कैसे हुई ?"

तेज–शेरसिह ने मुझसे स्वय मिल कर सब हाल कहा, असल तो यह है कि हमलोगों पर भी शेरसिह ने भारी अहसान किया है।

बीरेन्द–वह क्या ?

तेज–कुँअर इन्द्रजीतसिह का पता लगाया है और अपने कई आदमी उनकी हिफाजत के लिए तैनात कर चुके हैं इस बात का भी निश्चय दिला दिया है कि कुँअर इन्द्रजीतसिह को किसी तरह की तकलीफ न होने पावेगी।

बीरेन्द–(खुश होकर और शेरसिह की तरफ देख कर) हा ! कहा पता लगा और किस हालत में है ?

शेर–यह सब हाल जो कुछ मुझे मालूम था मै दीवान साहब (तेजसिह) से कह चुका हू वह आपसे कह देंगे आप उसके जानने की जल्दी न करें। मैं इस समय यहा जिस काम के लिए आया था मेरा वह काम हो चुका अब मैं यहा ठहरना मुनासिब नहीं समझता। आप लोग अपने मतलब की बातचीत करें क्योंकि मदद के लिए मैं बहुत जल्द कुँअर इन्द्रजीतसिह के पास पहुचा चाहता हूँ। हा यदि आप कृपा करके अपना एक ऐयार मेरे साथ कर दें तो उत्तम हो और काम भी शीघ्र हो जाय।

बीरेन्द–(खुश होकर) अच्छी बात है आप जाइये और मेरे जिस ऐयार को चाहें लेते जाइये।

शेर–अगर आप मेरी मर्जी पर छोडते हैं तो मैं देवीसिह को अपने साथ के लिए मागता हू।

तेज–हा आप खुशी से उन्हें ले जाय। (देवीसिह की तरफ देख कर) आप तैयारी कीजिए।

देवी–मैं हरदम तैयार ही रहता हू। (शेरसिह से) चलिए अब इन लोगों का पीछा छोडिए।

देवीसिह को साथ लेकर शेरसिह रवाना हुए और इधर इन लोगों में विचार होने लगा कि अब क्या करना चाहिए। घण्टे भर में यह निश्चय हुआ कि लाली से कुछ विशेष पूछने की जरूरत नहीं है क्योंकि वह अपना हाल ठीक-ठीक कभी न कहेगी हा उसे हिफाजत में रखना चाहिए और तहखाने को अच्छी तरह देखना और वहा का हाल मालूम करना चाहिए

ग्यारहवां बयान

अब तो कुन्दन का हाल जरूर ही लिखना पड़ा पाठक महाशय उसका हाल जानने के लिए उत्कण्ठित हो रहे होंगे। हमने कुन्दन को रोहतासगढ़ महल के उसी बाग में छोड़ा है जिसमें किशोरी रहती थी। कुन्दन इस फिक्र में लगी रहती थी कि किशोरी किसी तरह लाली के कब्जे में न पड जाय।

जिस समय किशोरी को ले कर सींध की राह लाली उस घर में उतर गई जिसमें से तहखाने का रास्ता था और यह हाल कुन्दन को मालूम हुआ तो वह बहुत घबराई। महल भर में इस बात का गुल मचा दिया और सोच में पड़ी कि अब क्या करना चाहिये। हम पहिले लिख आये हैं कि किशोरी और लाली के जाने बाद धरो-पकड़ो की आवाज लगाते हुए कई आदमी सींध की राह उसी मकान में उतर गये जिसमें लाली और किशोरी गई थी।

उन्हीं लोगों में मिल कर कुन्दन भी एक छोटी सी गठरी कमर के साथ बाध उस मकान के अन्दर चली गई और यहा घबराहट और गुलशोर में किसी को मालूम न हुआ। उस मकान के अन्दर भी बिल्कुल अधेरा था। लाली ने दूसरी कोठरी में जाकर दर्वाजा बन्द कर लिया इस लिये लाचार होकर पीछा करने वालों को लौटना पड़ा और उन लोगों ने इस बात की इत्तिला महराज से की मगर कुन्दन उस मकान से न लौटी बल्कि किसी कोने में छिप रही।

हम पहिले लिख आये हैं और अब भी लिखते हैं कि उस मकान के अन्दर तीन दर्वाजे थे एक तो वह सदर दर्वाजा था जिसके बाहर पहरा पड़ा करता था दूसरा खुला पड़ा था तीसरे दर्वाजे को खोल कर किशोरी का साथ लिये लाली गई थी।

जो दर्वाजा खुला था उसके अन्दर एक दालान था, इसी दालान तक लाली और किशोरी की खोज कर पीछा करने वाले लौट गये थे क्योंकि कहीं आगे जाने का रास्ता उन लोगों को न मिला था। जब वे लोग मकान के बाहर निकल गये

तो कुन्दन ने अपनी कमर से गठरी खोली और उसमें से सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाने   याद चारो तरफ देखने लगी।

यह एक छोटा सा दालान था मगर चारो तरफ से बन्द था। इस दालान की दीवारों में तरह-तरह की भयानक तस्वीरें बनी हुई थीं मगर कुन्दन ने उन पर कुछ ध्यान न दिया। दालान के बीचोबीच में बित्ते भर के ग्यारह डिब्बे लोहे के रक्खे हुए थे और हर एक डिब्बे पर आदमी की खोपड़ी रक्खी हुई थी। कुन्दन उन्हीं डिब्बों को गौर से देखने लगी। ये डिब्बे गोलाकर एक चौकी पर सजाए हुए थे, एक डिब्बे पर आधी खोपड़ी थी और बाकी डिब्बों पर पूरी-पूरी। कुन्दन इस बात को देख कर ताज्जुब कर रही थी कि इसमें से एक खोपड़ी जमीन पर क्यों पड़ी हुई है औरों की तरह उसके नीचे डिब्बा नहीं है ? कुन्दन ने उस डिब्बे से जिस पर आधी खोपड़ी रखी हुई थी गिनना शुरू किया। मालूम हुआ कि सातवें नम्बर की खोपडी के नीचे डिब्बा नहीं है। यकायक कुन्दन के मुँह से निकला   ओफ ओह, बेशक इसके नीचे का डिब्बा लाली ले गई क्योंकि ताली वाला डिब्बा वही था मगर यह हाल उसे क्योंकर मालूम हुआ ?'

कुन्दन ने फिर गिनना शुरू किया और टूटी हुई खोपड़ी से पाचवें नम्बर पर रूक गई, खोपड़ी उठा कर नीचे रख दी और डिब्बे को उठा लिया तब अच्छी तरह गौर से देखकर जोर से जमीन पर पटका। डिब्बे के चार टुकड़े हो गए मानों चार जगहों से जोड़ लगाया हुआ हो। उसके अन्दर से एक ताली निकली जिसे देख कुन्दन हसी और खुश होकर आप ही आप बोली, 'देखो तो लाली को मैं कैसा छकाती हू !"

कुन्दन ने उस ताली से काम लेना शुरू किया। उसी दालान में दीगर के साथ एक आलमारी थी जिसे कुन्दन न उस ताली से खोला। नीचे उतरने के लिए सीढिया नजर आई और वह बेखौफ नीचे उतर गई। एक कोठरी में पहुची जहा एक छोटे सिहासन के ऊपर हाथ भर लम्बी और इससे कुछ कम चौड़ी ताब की एक पट्टी रक्खी हुई थी। कुन्दन ने उसे उठाकर अच्छी तरह देखा मालूम हुआ कि कुछ लिखा हुआ है, अक्षर खुदे हुए थे और उन पर किसी तरह का चिकना या तेल मला हुआ था जिसके सबब से पटिया अभी तक जग लगने से बची हुई थी। कुदन ने उस लेख को बड़े गौर से पढा और हस कर चारो तरफ देखने लगी। उस कोठरी की दीवार में दो तरफ दो दर्वाजे थे और एक पल्ला जमीन में था। उसने एक दर्वाजा खोला, ऊपर चढने के लिए सीढ़िया मिलीं, वह बेखौफ ऊपर चढ गई और एक ऐसी तग कोठरी में पहुची जिसमें चार पाच आदमी से ज्यादे के बैठने की जगह न थी; मगर इस कोठरी के चारो तरफ दीवार में छोटे-छोटे कई छेद थे जलती हुई बत्ती बुझा कर उन छेदों में से एक छेद में आख लगा कर कुन्दन ने देखा।

कुन्दन ने अपने को ऐसी जगह पाया जहा से वह भयानक मूर्ति जिसके आगे एक औरत की बलि दी जा चुकी थी और जिसका हाल ऊपर लिख आये हैं साफ दिखाई देती थी। थोड़ी देर में कुन्दन ने महाराज दिग्विजयसिह तहखाने के दारोगा लाली किशोरी और बहुत से आदमियों को वहा देखा। उसके देखते ही देखते एक औरत उस मूरत के सामने बलि दी गई और कुँअर आनन्दसिह ऐयारों सहित पकड़े गये। इस तहखाने में से किशोरी और कुँअर आनन्दसिह का भी जो कुछ हाल हम ऊपर लिख आये हैं वह सब कुन्दन ने देखा था। आखीर में कुन्दन नीचे उतर आई और उस पल्ले को जो जमीन में था उसी ताली से खोल कर तहखाने में उतरने के बाद बत्ती बाल कर देखने लगी। छत की तरफ निगाह करने से मालूम हुआ कि वह सिहासन पर बैठी हुई भयानक मूर्ति जो कि भीतर की तरफ से बिल्कुल (सिहासन सहित) पोली थी उसके सिर के ऊपर है।

कुन्दन फिर ऊपर आई और दीवार में लगे हुए दूसरे दर्वाजे को खोल कर एक सुरग में पहुची। कई कदम जाने बाद एक छोटी खिडकी मिली। उसी ताली से कुन्दन ने उस खिड़की को भी खोला। अब वह उस रास्ते में पहुच गई जो दीवानखाने और तहखाने में आने-जाने के लिए था और जिस राह से महाराज आते थे तहखाने से दीवानखाने में जाने तक जितने दर्वाजे थे सभी को कुन्दन ने अपनी ताली से बन्द कर दिया ताले के अलावे उन दर्वाजों में एक एक खटका और भी था उसे भी कुन्दन ने चढ़ा दिया। इस काम से छुट्टी पाने   बाद फिर वहा पहुची जहा से भयानक मूर्ति और आदमी सब दिखाई दे रहे थे। कुन्दन ने अपनी आँखों से राजा दिग्विजयसिह की घबड़ाहट देखी जो दर्वाजा बन्द हो जाने से उन्हें हुई थी।

मौका देख कर कुन्दन वहा से उतरी और उस तहखाने में जा उस भयानक मूर्ति के नीचे आ पहुची। थोड़ी देर तक कुछ बकने के बाद कुन्दन ने ही वे शब्द कहे जो उस भयानक मूर्ति के मुह से निकले हुए राजा दिग्विजयसिह और लोगों ने सुने थे और जिनके मुताबिक किशोरी बारह नम्बर की कोठरी में बन्द कर दी गई थी। असल में वे शब्द कुन्दन ही के कहे हुए थे जो सब लोगों ने सुने थे।

कुन्दन वहा से निकल कर यह देखने के लिए कि राजा किशोरी को उस कोठरी में बन्द करता है या नहीं, फिर उस छत पर पहुची जहा से सब लोग दिखाई पडते थे। जब कुन्दन ने देखा कि किशोरी उस कोठरी में बन्द कर दी गई तो वह नीचे तहखाने में उतरी। उसी जगह से एक रास्ता था जो उस कोठरी के ठीक नीचे पहुचता था जिसमें किशोरी बन्द की

गई थी। वहा की छत इतनी नीची थी कि कुन्दन को बैठ कर जाना पड़ा। छत में एक पेंच लगा हुआ था जिसके घुमाने से एक पत्थर की चट्टान हट गई और आँचल से मुँह ढाँप कुन्दन किशोरी के सामने जा खड़ी हुई।

बेचारी किशोरी तरह तरह की आफतों से आप ही बदहवास हो रही थी, अँधेरे में बत्ती लिए यकायक कुन्दन को निकलते देख घबरा गई। उसने घबराहट में कुन्दन को बिल्कुल नहीं पहिचाना बल्कि उसे भूत प्रेत या कोई आसेब समझ कर डर गई और एक चीख मार कर बेहोश हो गई।

कुन्दन ने अपनी कमर से कोई दवा निकाल कर किशोरी को सुँघाई जिससे वह अच्छी तरह बेहोश हो गई इसके बाद अपनी छोटी गठरी में से सामान निकाल कर वह परवा अर्थात् धनपति रग मचाया साध्यो काम इत्यादि लिख कर कोठरी में एक तरफ रख दिया और अपने कमर से एक चादर खाली जो महल से लेती आई थी उसी में किशोरी की गठरी बाँधी और नीचे घसीट ले गई। जिस तरह पेंच को घुमा कर पत्थर की चट्टान हटाई थी उसी तरह रास्ता बन्द कर दिया।

यह सुरंग कोठरी के नीचे खतम नहीं हुई थी बल्कि दूर तक चली गई थी और आगे से चौड़ी और ऊँची होती गई थी। किशोरी को लिए हुए कुन्दन उस सुरंग में चलने लगी। लगभग सौ कदम जाने बाद एक दर्वाजा मिला जिसे कुन्दन ने उसी ताली से खोला आगे फिर उसी सुरंग में चलना पड़ा। आधी घड़ी के बाद सुरंग का अन्त हुआ और कुन्दन ने अपने को एक खोह के मुँह पर पाया।

इस जगह पहुँच कर कुन्दन ने सीटी बजाई। थोड़ी देर में इधर उधर से पाँच आदमी आ मौजूद हुए और एक ने बढ़ कर पूछा कौन है? धनपतिजी!

कुन्दन—हाँ रामा तुम लोगों को यहाँ बहुत दुःख भोगना और कई दिन तक अटकना पड़ा।

रामा—जब हमारे मालिक ही इतने दिनों तक अपने को बला में डाले हुए थे जहाँ से जान बचाना मुश्किल था तो फिर हम लोगों की क्या बात है हम लोग तो खुले मैदान में थे।

कुन्दन—लो किशोरी तो हाथ लग गई अब इसे ले चलो और जहाँ तक जल्द हो सके भागो।

वे लोग किशोरी को लेकर वहाँ से रवाना हुए।

पाठक तो समझ ही गये होंगे कि किशोरी धनपति के काबू में पड़ गई। कौन धनपति? वही धनपति जिसे नानक और रामभोली के बयान में आप लोग जान चुके हैं। मेरे इस लिखने से पाठक महाशय चौकेंगे और उनका ताज्जुब घटेगा नहीं बल्कि बढ़ जायगा इसके साथ ही साथ पाठकों को नानक की वह बात कि "वह किताब भी जो किसी के खून से लिखी गई है" भी याद आयगी जिसके सबब से नानक ने अपनी जान बचाई थी। पाठक इस बात को भी जरूर सोचेंगे कि कुन्दन अगर असल में धनपति थी तो लाली जरूर रामभोली होगी क्योंकि धनपति को किसी के खून से लिखी हुई किताब का भेद मालूम था और यह भेद रामभोली को भी मालूम था। जब धनपति ने राहतासगढ़ महल में लाली के सामने उस किताब का जिक्र किया तो लाली काँप गई जिससे मालूम होता है कि वह रामभोली ही होगी। किसी के खून से लिखी हुई किताब का नाम सुन कर अगर लाली डर गई तो धनपति भी जरूर समझ गई होगी कि यह रामभोली है फिर धनपति (कुन्दन) लाली से मिल क्यों न गई क्योंकि वे दोनों तो एक ही के तुल्य थीं? ऐसी अवस्था में तो इस बात का शक होता है कि लाली रामभोली न थी। फिर तहखाने में धनपति के लिखे हुए परचे को सुन कर लाली क्यों हँसी? इत्यादि बातों को सोच कर पाठकों की चिन्ता अवश्य बढ़ेगी क्या किया जाय लाचारी है।

बारहवां बयान

दूसरे दिन दोपहर दिन चढ़े बाद किशोरी की बेहोशी दूर हुई। उसने अपने को एक गहन वन में पेड़ों की झुरमुट में जमीन पर पड़े पाया और अपने पास कुन्दन और कई आदमियों को देखा। बेचारी किशोरी इन थोड़े ही दिनों में तरह तरह की मुसीबतों में पड़ चुकी थी बल्कि जिस आफत से वह घर से निकली उस रोज से एक पल को भी सुखी न हुई मानों सुख तो उसके हिस्से ही में न था। एक मुसीबत से छूटी दूसरी में फँसी, दूसरी से छूटी तीसरी में फँसी। इस समय भी उसने अपने को बुरी अवस्था में पाया। यद्यपि कुन्दन उसके सामने बैठी थी परन्तु उसे उसकी तरफ से किसी तरह पर भलाई की आशा कुछ भी न थी। इसके अतिरिक्त यहाँ और भी कई आदमियों को देख तथा अपने को बेहोशी की अवस्था से चैतन्य होते पा उसे विश्वास हो गया कि कुन्दन ने उसके साथ दगा किया। रात की बातें स्वप्न की तरह याद करने लगी और इस समय भी वह इस बात का निश्चय न कर सकी कि उसके साथ कैसा बर्ताव किया जायगा। थोड़ी

देर तक वह अपनी मुसीबतों को सोचती और ईश्वर से अपनी मौत मॉगती रही। आखिर उस समय उसे कुछ होश आया जब धनपति (कुन्दन) ने उसे पुकार कर कहा किशोरी तू घवड़ा मत तेरे साथ कोई बुराई न की जायगी।

किशोरी--मेरी समझ मे नही आता कि तुम क्या कह रही हो। जो कुछ तुमने किया उससे वढ कर और वुराई क्या हो सकती है ?

धन--तेरी जान न मारी जायगी वल्कि जहॉ तू रहेगी हर तरह से आराम मिलेगा।

किशोरी--क्या इन्द्रजीतसिह भी वहॉ दिखाई देंगे ?

धन--हा अगर तू चाहेगी।

किशोरी--(चौंक कर) है क्या कहा ? अगर मैं चाहूगी ?

धन--हा यही वात है।

किशोरी--कैसे ?

धन--एक चीठी इन्द्रजीतसिह के नाम की लिख कर मुझे दे और उसमें जो कुछ मै कहू लिख दे !

किशोरी--उसमें क्या लिखना पडेगा ?

धन--केवल इतना ही लिखना पडेगा--- अगर आप मुझे चाहते है तो विना कुछ विचार किए इस आदमी के साथ मेरे पास चले आइये और जो कुछ यह मागे दे दीजिए नहीं तो मुझसे मिलने की आशा छोड़िए !

किशोरी--(कुछ देर सोचने के वाद) मै समझ गई कि तुम्हारी नीयत क्या है। नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता, मै ऐसी चीठी लिख कर प्यारे इन्द्रजीतसिह को आफत में नहीं फँसा सकती।

धन--तव तू किसी तरह छूट भी नहीं सकती।

किशोरी--जो हो।

धन--वल्कि तेरी जान भी चली जायगी।

किशोरी--वला से इन्द्रजीतसिह के नाम पर मैं जान देने को तैयार हूँ।

इतना सुनते ही धनपति (कुन्दन) का चेहरा मारे गुस्से के लाल हो गया, अपने साथियों की तरफ देख कर बोली, अव मै इसे नहीं छोड़ सकती लाचार हू। इसके हाथ पैर वाधो और मुझे तलवार दो ! हुक्म पाते ही उसके साथियों ने वडी वरहमी के साथ बेचारी किशोरी के हाथ पैर बाध दिए और धनपति तलवार लेकर किशोरी का सिर काटने के लिए आगे वढी। उसी समय धनपति के एक साथी ने कहा 'नहीं इस तरह मारना मुनासिव न होगा, हम लोग बात की बात में सूखी लकडिया वटोर कर ढेर करते है, इसे उसी पर रख कर फूक दो जल कर भस्म हो जायगी और हवा के झोकों में इसकी राख का भी पता न लगेगा।

इस राय को धनपति ने पसन्द किया और ऐसा ही करने के लिए हुक्म दिया। सगदिल हरामखोरों ने थोड़ी ही देर में जगल से चुन कर सूखी लकडियों का ढेर लगा दिया। हाथ पैर वाध कर बेबस की हुई किशोरी उसी पर रख दी गई। धनपति के साथियों में से एक ने बटुए से सामान निकाल कर एक छोटा सा मशाल जलाया और उसे धनपति ने अपने हाथ में लिया। मुह बन्द किए हुए किशोरी यह सब वात देख सुन और सह रही थी। जिस समय धनपति मशाल लिए चिता के पास पहुची किशोरी ने ऊँचे स्वर में कहा---

'हे अग्निदेव तुम साक्षी रहना ! मै कुँअर इन्द्रजीतसिह की मुहब्वत में खुशी खुशी अपनी जान देती हू। मै खूब जानती हू कि तुम्हारी ऑच प्यारे की जुदाई की आच से वढ कर नहीं है। जान निकलने में मुझे कुछ भी कष्ट न होगा। प्यारे इन्द्रजीत ! देखना मेरे लिए दु खी न होना बल्कि मुझे विल्कुल ही भूल जाना !!

हाय ! प्रेम से भरी हुई वेचारी किशोरी के दिल को टुकडे टुकडे कर देने वाली इन वातों से भी सगदिलों का दिल नरम न हुआ और हरामजादी कुन्दन ने नही नहीं धनपति ने चिता में मशाल रख ही दी।

॥ चौथा भाग समाप्त ॥

*श्री *

चन्द्रकान्ता सन्तति

पाँचवाँ भाग

पहिला बयान

बेचारी किशोरी को चिता पर बैठा कर जिस समय दुष्टा धनपति ने आग लगाई उसी समय बहुत से आदमी जो उसी जगल में किसी जगह छिपे हुए थे हाथों में नगी तलवारें लिए मारो मारो कहते हुए उन लोगों पर आ टूटे। उन लोगों ने सबसे पहले किशोरी को चिता पर से खैंच लिया और इसके बाद धनपति के साथियों को पकडने लगे।

पाठक समझते होंगे कि ऐसे समय में इन लोगों के आ पहुँचने और जान बचने से किशोरी खुश हुई होगी और इन्द्रजीतसिंह से मिलने की कुछ उम्मीद भी उसे हो गई होगी मगर नहीं अपने बचाने वाले को देखते ही किशोरी चिल्ला उठी और उसके दिल का दर्द पहिले से भी ज्यादे बढ गया। किशोरी ने आसमान की तरफ देख कर कहा मुझे तो विश्वास हो गया था कि इस चिता में जल कर ठडे ठडे बैकुण्ठ चली जाऊँगी क्योंकि इसकी ऑच कुँअर इन्द्रजीतसिंह की जुदाई की ऑच से ज्यादा गर्म न होगी मगर हाय इस बात का गुमान भी न था कि यह दुष्ट आ पहुँचेगा और मैं एक सचमुच की तपती हुई भट्ठी में झोंक दी जाऊँगी। मौत तू कहॉ है ? तू कोई वस्तु है भी या नहीं मुझे तो इसी में शक है।

वह आदमी जिसने ऐसे समय में पहुँच कर किशोरी को बचाया माधवी का दीवान अग्निदत्त था जिसके चगुल में फँस कर किशोरी ने राजगृह में बहुत दु ख उठाया था और कामिनी की मदद से--जिसका नाम कुछ दिनो तक किन्नरी था--छुट्टी मिली थी। किशोरी को अपने मरने की कुछ भी परवाह न थी और वह अग्निदत्त की सूरत देखने की बनिस्बत मौत को लाख दर्जे उत्तम समझती थी यही सबब था कि इस समय उसे अपनी जान बचने का रज हुआ।

अग्निदत्त और उसके आदमियों ने किशोरी को तो बचा लिया मगर जब उसके दुश्मनों को अर्थात धनपति और उसके साथियों को पकडने का इरादा किया तो लडाई गहरी हो पडी। मौका पाकर धनपति भाग गई और गहन वन में किसी झाडी के अन्दर छिप कर उसने अपनी जान बचाई। उसके साथियों में से एक भी न बचा सब मारे गये। अग्निदत्त भी केवल दो ही आदमियों के साथ बच गया। उस सगदिल ने रोती और चिल्लाती हुई बेचारी किशोरी को जबर्दस्ती उठा लिया और एक तरफ का रास्ता लिया।

पाठक आश्चर्य करते होंगे कि अग्निदत्त को तो राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने राजगृह में गिरफ्तार करके चुनार भेज दिया था वह यकायक यहाँ कैसे आ पहुँचा ? इसलिए अग्निदत्त का थोडा सा हाल इस जगह लिख देना हम मुनासिब समझते हैं।

राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने दीवान अग्निदत्त को गिरफ्तार करके अपने बीस सवारों के पहरे में चुनारगढ रवान कर दिया और एक चीठी भी सब हाल की महाराज सुरेन्द्रसिंह को लिख कर उन्हीं लोगों के मार्फत भेजी। अग्निदत्त हथकडी डाल घोडे पर सवार कराया गया और उसके पैर रस्सी से घोडे की जीन के साथ बाँध दिए गए घोडे की लम्बी बागडोर दोनों तरफ से दो सवारों ने पकड ली और सफर शुरू किया। तीसरे दिन जब वे लोग सोन नदी के पास पहुँचे अर्थात जब वह नदी दो कोस बाकी रह गई तब उन लोगों पर डाका पडा। पचास आदमियों ने चारो तरफ से घेर लिया। घण्टे भर की लडाई में राजा बीरेन्द्रसिंह के कुल आदमी मारे गये खबर पहुँचाने के लिए भी एक आदमी न बचा और अग्निदत्त को उन लोगों के हाथों से छुट्टी मिली। वे डाकू सब अग्निदत्त के तरफदार और उन लोगों में से थे जो गयाजी में फसाद मचाया करते और उन लोगों की जानें लेते और घर लूटते थे जो दीवान अग्निदत्त के विरुद्ध जाने जाते। इस तरह अग्निदत्त को छुट्टी मिली और बहुत दिन तक इस डाके की खबर राजा बीरेन्द्रसिंह या उनके आदमियों को न मिली।

यद्यपि दीवान अग्निदत्त के हाथ से गया की दीवानी जाती रही और वह एक साधारण आदमी की तरह मारा मारा फिरने लगा तथापि वह अपने साथी डाकुओं में मालदार गिना जाता था क्योंकि उसके पास जुल्म की कमाई हुई बहुत दौलत थी और वह उस दौलत को राजगृह से थोडी दूर पर एक मढी में जो पहाडी के ऊपर थी रखता था जिसका हाल दस बारह आदमियों के सिवाय और किसी को भी मालूम न था। उस दौलत को निकालने में अग्निदत्त ने विलम्ब न किया और उसे अपने कब्जे में लाकर साथी डाकुओं के साथ अपनी धुन में चारों तरफ घूमने तथा इस बात की टोह लने लगा कि राजा बीरेन्दसिह की तरफ क्या क्या होता है।

थोडे ही दिन बाद मौका समझ कर वह रोहतासगढ के चारों तरफ घूमने लगा और जिस तरह किशोरी स मिला उसका हाल आप ऊपर पढ ही चुके है।

जिस जगह अग्निदत्त किशोरी से मिला था उससे थोड़ी ही दूर पर एक पहाडी थी जिसमें कई खोह और गार थे। वह किशोरी को उठा कर उस पहाडी पर ले गया। रोते और चिल्लाते चिल्लाते किशोरी बेहोश हो गई थी। अग्निदत्त ने उसे खोह के अन्दर ले जा कर लेटा दिया और आप बाहर चला आया।

पहर रात जाते जाते जब किशोरी होश में आई तो उसने अपने को अजब हालत में पाया। ऊपर नीचे चारों तरफ पत्थर देखकर वह समझ गई कि मै किसी खोह में हूँ। एक तरफ चिराग जल रहा था। गुलाब के फूल से नाजुक किशोरी की अवस्था इस समय बहुत ही नाजुक थी। अग्निदत्त की याद से उस घडी घड़ी रोमाच होता था उसके धडकते हुए कलेजे में अजब तरह का दर्द था और इस सोच ने उसे बिल्कुल ही निकम्मा कर रक्खा था कि देखें चाण्डाल अग्निदत्त के पहुँचने पर मेरी क्या दुर्दशा होती है। घण्टों की मेहनत में बडी कोशिश करके उसने अपने होश हवास दुरुस्त किए और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए। उसने इस इरादे को तो पक्का कर ही लिया था कि अगर अग्निदत्त मेरे पास आवेगा तो पत्थर पर सर पटक्र कर अपनी जान दे दूँगी मगर यह भी सोचती थी कि पत्थर पर सर पटकने से जान नहीं जा सकती किसी तरह खोह के बाहर निकल कर ऐसा मौका ढूँढना चाहिए कि अपने को इस पहाड के नीचे गिरा कर बखेडा तय कर दिया जाय जिसमें हमेशा के लिए इस खिंचाखिंची से छुट्टी मिले।

किशोरी चिराग बुझाने के लिए उठी ही थी कि सामने से पैर की चाप मालूम हुई। वह डर कर उसी तरफ देखने लगी कि यकायक अग्निदत्त पर नजर पडी। देखते ही वह कॉप गई ऐसा मालूम हुआ कि रगों में खून की जगह पारा भर गया। वह अपने को किसी तरह सम्हाल न सकी और जमीन पर बैठ कर रोने लगी। अग्निदत्त सामने आकर खडा हो गया और बोला--

अग्नि--तुमने मुझको बडा ही धोखा दिया अपने साथ मेरी लडकी को भी मुझसे जुदा कर दिया। अभी तक मुझे इस बात का पता न लगा कि मेरी स्त्री पर क्या बीती और बीरेन्दसिह ने उसके साथ क्या सलूक किया और यह सब तुम्हारी बदौलत हुआ।

किशोरी--फिर भी मै कहती हूँ कि मुझे सता कर तुम सुख न पाओगे।

अग्नि--इस समय तुम्हें पाकर मै बहुत खुश हूँ, दीन दुनिया की फिक्र जाती रही आगे जो होगा देखा जायेगा।

किशोरी--मै तुमसे वादा करती हूँ कि यदि आप मुझे छोड दोगे तो मै राजा बीरेन्दसिह से कह कर तुम्हारा कसूर माफ करा दूँगी और तुम्हारी जीविका निर्वाह के लिए भी बन्दोबस्त हो जायेगा नहीं तो याद रखना तुम्हारी स्त्री भी

अग्नि--जो तुम कहोगी सो मै समझ गया। मेरी स्त्री पर चाहे जो बीते इसकी परवाह नहीं न मुझे बीरेन्दसिह का डर है। मुझे दुनिया में तुमसे बढ कर कोई चीज नहीं दिखाई देती है। देखो तुम्हारे लिए मैने कितना दु ख भोगा और भोगने के लिए तैयार हूँ, क्या अब भी तुमको मुझ पर तरस नहीं आता ! मै कसम खाकर कहता हूँ कि तुम्हें अपनी जान से ज्यादा प्यार करूँगा यदि मेरी होकर रहोगी।

किशोरी-- अरे दुष्ट चाण्डाल खबर्दार फिर ऐसी बात मुँह से न निकालियो !

अग्नि--चाहे जो हो मै तुम्हें किसी तरह नहीं छोड सकता !

किशोरी--जान जाय तो जाय मगर तेरी हवा अपने बदन से लगने न दूँगी।

अग्नि--(हस कर) देखूँ तो तू अपने को मुझसे क्योंकर बचाती है।

इतना कह कर अग्निदत्त किशोरी को पकडने के लिए आगे बढा। किशोरी घबरा कर उठ खड़ी हुई और दूर हट गई। थोडी देर तक तो इस तग जगह में दौड धूप कर किशोरी ने अपने को बचाया मगर कहाँ तक ? आखिर मर्द के सामने औरत की क्या पेश आ सकती थी ! अग्निदत्त को क्रोध आ गया। उसने किशोरी को पकड लिया और जमीन पर पटक दिया।

दूसरा बयान

पाठक अभी भूले न होंगे कि कुँअर इन्द्रजीतसिह कहाँ है। हम ऊपर लिख आए है कि उस मकान में जो तालाव के अन्दर वना हुआ था कुंअर इन्द्रजीतसिह दो'औरतों को देखकर ताज्जुव में आ गए। कुमार उन औरतों का नाम नही जानते थे मगर पहिचानते जरूर थे क्योंकि उन्हें राजगृही में माधवी के यहाँ देख चुके थे और जानते थे कि ये दोनों माधवी की लौंडिया हैं। परन्तु यह जानने के लिए कुमार व्याकुल हो रहे थे कि ये दोनों यहाँ क्योंकर आई, क्या इस औरत स जो इस मकान की मालिक है ओर उस माधवी से कोई सम्बन्ध है ? इसी समय उन दोनों औरतों के पीछे पीछे वह औरत भी आ पहुँची जिसने इन्द्रजीतसिह के ऊपर एहसान किया था ओर जो उस मकान की मालिक थी। अभी तक इस औरत का नाम भी मालूम नहीं हुआ मगर आगे इससे काम बहुत पडेगा इसलिए जव तक इसका असल नाम मालूम न हो काई वनावटी नाम रख दिया जाय तो उत्तम होगा मेरी समझ में तो कमलिनी नाम कुछ वुरा न हागा।

जिस समय कुँअर इन्द्रजीतसिह की निगाह उन दोनों औरतों पर पडी वे हैरान होकर उनकी तरफ दखने लगे उसी समय दौडती हुई कमलिनी भी आई और दूर ही से वोली–

कमलिनी–कुमार इन दोनों हरामखोरियों का कोई मुलाहिजा न कीजिएगा और न किसी तरह की जुवान ही दीजिएगा अपनी जान बचाने के लिए ही दोनों आपके पास आई है।

इन्द–क्या मामला है ये दोनों कौन है ?

कम–ये दोनों माधवी की लौंडिया हे आपकी जान लेने आई थीं मेर आदमियों के हाथ गिरफ्तार हो गई।

इन्द–तुम्हारे आदमी कहाँ है ? मैने तो इस मकान में सिवाय तुम्हारे किसी को नहीं देखा।

कम–वाहर निकल कर देखिये मेर सिपाही मोजूद है जिन्होंने इसे गिरफ्तार किया।

इन्द–अगर ये गिरफ्तार होकर आई है तो इनके हाथ पैर खुले क्यों है ?

कम–इसके लिए कोई हर्ज नहीं ये मेरा कुछ नहीं विगाड सकतीं जव तक कि मै जागती हू या अपने होश में हूँ।

इन्द–(उन दानों की तरफ देख कर) तुम क्या कहती हो ?

एक–(कमलिनी की तरफ इशारा करके) य जा कुछ कहती हैं ठीक हे परन्तु आप वीर पुरुष हैं आशा है कि हम लोगों का अपराध क्षमा करेंगे।

कुँअर इन्द्रजीतसिह इन वातों को सुनकर सोच में पड गये। उन्हें उन दोनों औरतों की और कमलिनी की वातों का विश्वास न हुआ वल्कि यकीन हो गया कि ये लाग किसी तरह का धोखा दिया चाहती है। आधी घडी तक सोचने के वाद कुमार वगले के वाहर निकल तो दखा क्या कि तालाव के वाहर लगभग वीस सिपाही खडे आपुस में कुछ वातें कर रहे और घडी घडी इसी तरफ देख रहे है। कुमार वहाँ से लौट आये और कमलिनी की तरफ देख कर वाले–

इन्द–खैर जो तुम्हारे जी मे आय करो हम इस वारे में कुछ नहीं कह सकते।

कम–करना क्या है इन दोनों का सिर काटा जायेगा।

इन्द–खुशी तुम्हारी। मै जरा इस तालाव के वाहर जाना चाहता हूँ।

कम–क्या ?

इन्द–यह समय मजेदार है जरा मैदान की हवा खाऊँगा और उस घाडे की भी खवर लूगा जिस पर सवार हाकर आया था।

कम–इस मकान की छत पर चढन स अच्छी और साफ हवा आपका मिल सकती है घोडे के लिए चिन्ता न करे या फिर ऐसा ही हे ता सवेर जाइयेगा।

न मालूम क्या सोचकर इन्द्रजीतसिह चुप ही रहे। कमलिनी ने उन दोनों औरतों का हाथ पकडा और धमकाती हुई न जाने कहाँ ल गइ इसका हाल कुमार को न मालूम हुआ और न उन्होंन जानने का उद्याग ही किया।

यद्यपि इस औरत अर्थात कमलिनी ने कुमार की जान वचाई थी तथापि उन्हें विश्वास हा गया कि कमलिनी न दास्ती की राह पर ये काम नहीं किया वल्कि किसी मतलव से किया है। उस मकान में गुलदस्त के नीचे स जो चीठी कुमार न पाई थी उसके पढन से होशियार हो गय थ तथा समझ गए थे कि यह मुझे मकर में लाया चाहती और किशोरी के साथ भी किसी तरह की वुराइ किया चाहती है। इसमें कोई शक नहीं कि कुमार इस चाहने लगे थे और जान वचाने का वदला चुकाने की फिक्र में थे मगर उस चीठी के पढते ही उनका रग वदल गया और वे किसी दूसरी ही धुन में लग गए।

कुमार चाहते तो शायद यहाँ से निकल भागते क्योंकि उस औरत की तरफ से होशियार हो चुके थे मगर इस काम में उन्होंने यह समझ कर जल्दी न की कि इस औरत का कुछ हाल मालूम करना चाहिए और जानना चाहिए कि यह कौन है। पर कमलिनी को कुमार के दिल की क्या खबर थी, उसने तो सोच रक्खा था कि मैंने कुमार पर एहसान किया है और वे किसी तरह पर मुझसे बदगुमान न होंगे।

कुमार के पास इस समय सिवाय कपड़ों के कोई चीज ऐसी न थी जिससे वे अपनी हिफाजत करते या समय पड़ने पर मतलब निकाल सकते।

कुछ दिन बाकी था जब कुमार उस मकान की छत पर चढ़ गए और चारों तरफ के पहाड़ जंगल तथा मैदान की बहार देखने लगे। कुमार को यह जगह बहुत ही पसन्द आई और उन्होंने दिल में कहा कि यदि ईश्वर की इच्छा हुई तो सब बखेड़ों से छुट्टी पा कर किशोरी के साथ रह कर कुछ दिनों तक इस मकान में जरूर रहूँगा। थोड़ी देर तक प्रकृति की शोभा देख कर दिल बहलाते रहे जब सूर्य अस्त हो गया तो कमलिनी भी वहाँ पहुँची और कुमार के पास खड़ी होकर बातचीत करने लगी।

कम–यहाँ से अच्छी बहार दिखाई देती है।

कुमार–ठीक है मगर यह छटा मेरे दिल को किसी तरह नहीं बहला सकती।

कम–सो क्यों ?

कुमार–तरह-तरह की फिक्रों और तरद्दुदों ने मुझे दुखी कर रक्खा है बल्कि यहाँ आने और तुम्हारे मिलने से तरद्दुद और भी ज्यादे हो गया।

कम–यहाँ आकर कौन सी फिक्र बढ़ गई ?

कुमार–यह तो तब कह सकता हूँ जब कुछ तुम्हारा हाल मालूम हो, अभी तो मैं यह भी नहीं जानता कि तुम कौन और कहा की रहने वाली हो और इस मकान में आ कर रहने का सबब क्या है।

कम–कुमार मुझे आपसे बहुत कुछ बातें कहना है। इसमें कोई शक नहीं कि मेरे बारे में आप तरह-तरह की बातें सोचते होंगे कभी मुझे खैरख्वाह तो कभी बदख्वाह समझते होंगे बल्कि बदख्वाह समझने का मौका ही ज्यादे मिलता होगा। अक्सर उन लोगों ने जो मुझे जानते हैं मुझे शैतान और लूती समझ रक्खा है, और इसमें उनका कोई कसूर भी नहीं। मैं उन लोगों का जिक्र इस समय केवल इसीलिए करती हूँ कि शायद उन लोगों ने जो केवल दो तीन ऐयार मात्र हैं कुछ चर्चा आपसे की हो।

कुमार–नहीं मैंने किसी से कभी तुम्हारा जिक्र नहीं सुना।

कम–खैर ऐसा मौका न पड़ा होगा पर मेरा मतलब यह है कि जब तक मैं अपने मुंह से कुछ न कहूँगी मेरे बारे में कोई भी अपनी राय ठीक नहीं कर सकता और

इतने ही में सीढ़ी पर किसी के पैर की धमधमाहट मालूम हुई जिसे सुन कर दोनों चौंके और उसी तरफ देखने लगे।

कुमार–इस मकान में तो केवल तुम्हीं रहती हो।

कम–नहीं और भी कई आदमी रहते हैं, मगर वे लोग उस समय नहीं थे जब आप आए थे।

दो लौंडियां आती हुई दिखाई पड़ीं। एक के हाथ में छोटा सा गलीचा था दूसरी के हाथ में शमादान और तीसरी पानदान लिए हुए थी। गालीचा बिछा दिया गया शमादान और पानदान रख कर लौंडियां हाथ जोड़े सामने खड़ी हो गईं। कमलिनी के कहने से कुमार गालीचे पर बैठ गए और कमलिनी भी पास बैठ गई। इस समय इन तीनों लौंडियों का वहाँ पहुंच कर बातचीत में बाधा डालना कुमार को बुरा मालूम हुआ क्योंकि वे बड़े ही गौर से कमलिनी की बातें सुन रहे थे और इस बीच में उनके दिल की अजीब हालत थी। कुमार ने कमलिनी की तरफ देख के कहा हाँ तुम अपनी बातों का सिलसिला मत तोड़ो।

कम–(लौंडियों की तरफ देख कर) अच्छा तुम लोग जाओ बहुत जल्द खाने का बन्दोबस्त करो।

कुमार–अभी खाने के लिए जल्दी न करो।

कम–खैर ये लोग अपना काम पूरा कर रक्खें आप जब चाहें भोजन करें।

कुमार–अच्छा हाँ तब ?

कम–(डब्बे से पान निकाल कर) लीजिए पान खाइए।

कुमार ने पान हाथ में रख लिया और पूछा "हाँ तब ?

कम–पान खाइए आप डरिए मत इसमें बेहोशी की दवा नहीं मिली है हाँ अगर आप ऐसा ख्याल करें भी तो कोई बेमौका नहीं।

कुमार–(हँस कर) इसमें कोई शक नही कि इतनी खैरख्वाही करन पर भी मै तुम्हारी तरफ से बदगुमान हूँ मगर तुम्हारी बाते अजब ढग पर चल रही है। (पान खाकर) अब जो हा जब तुमने मेरी जान बचाई है तो कब हो सकता है कि तुम अपने हाथ स मुझ जहर दो।

कम–(हँस कर) कुमार यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है कि आप मुझ पर शक करें। माधवी की दोनो लौंडियों का मामला भी जा अभी थोडी दर हुआ आप दख चुके है मुझ पर शक करने का मौका आपको दगा। मगर नहीं आप पूरा विश्वास रखिए कि मै आपके साथ कभी बुराई न करूँगी। कई आदमी मेरी शिकायत आपसे करेंगे आप ही के कई ऐयार असल हाल जानने के कारण मेरे दुश्मन हो जायेंगे मगर सिवाय कसम खाकर कहने के और किस तरह आपको विश्वास दिलाऊँ कि मै आपकी खैरख्वाह हूँ। आप यह भी सोच सकते है कि मै आपके साथ इतनी खैरख्वाही क्यों कर रही हूँ। दुनिया का कायदा है कि बिना मतलब कोई किसी का काम नहीं करता और मै भी दुनिया के बाहर नहीं हूँ, अस्तु मै भी आप से बहुत कुछ उम्मीद करती हूँ मगर उस जुबान से कह नहीं सकती। अभी आपको मुझसे वर्षो तक काम पडेगा जब आप हर तरह से निश्चिन्त हो जायेंगे आपकी किशोरी जो इस समय राहतासगढ़ में कैद है आपको मिल जायगी इसके अतिरिक्त एक और भी भारी काम आपके हाथ से हो लेगा तब कहीं मेरी मुराद पूरी होगी अर्थात् उस समय मुझे जो कुछ आपस मॉगना होगा मॉगूँगी। आप मेरी बात याद रखिएगा कि आप ही के एयार मेरे दुश्मन होंगे और अन्त में झख मार के मुझ ही से दोस्ती के तौर पर उन्हें सलाह लेनी पडेगी। आप यह भी न समझिए कि मै आज ही कल से आप की तरफदार बनी हूँ, नही बल्कि मै महीनों से आपका काम कर रही हूँ और इस सबब से सैकडों आदमी मेरे दुश्मन हो रहे है। दुश्मनों ही के डर से मै इस तालाब में छिप कर बैठी रहती हूँ क्योंकि जिन्हें इसका भेद मालूम नहीं है वे इस मकान के अन्दर पैर नहीं रख सकते। आप मुझे अकेली समझते होंग मगर मै अकली नहीं हूँ, लौंडी सिपाही और एयार मिला कर इस गई गुजरी हालत में भी पचास आदमी मेरी ताबेदारी कर रहे है।

कुमार–वे लोग कहॉ है ?

कम–उनमें स कई आदमियों को तो आप इसी जगह बैठे देखेंगे बाकी सभों को मैने काम पर भेजा है। जब मै आपकी खैरख्वाह हूँ तोकिशोरी की मदद भी जरूरही करनी पडेगी इसलिए मेरी एक ऐयारा रोहतासगढ किले के अन्दर भी घुस कर बैठी है और किशोरी के हाल चाल की खबर दिया करती है अभी कल ही उसने एक चीठी भेजी थी (कमरे से चीठी निकाल कर और कुमार के हाथ में देकर) लीजिए यही चीठी है पहिले आप इसे पढ लीजिए फिर और कुछ कहूँगी।

कुमार हाथ में चीठी लेकर गौर से पढने लगे। यह वही चीठी थी जिस पर पहिले कुमार की निगाह पड चुकी थी और जिसे एक गुलदस्ते के नीचे से निकाल कर कुमार पढ चुके थे। कुमार ने चोरी से उस चीठी को पढने का हाल कमलिनी स कहना मुनासिब न समझा और उसे इस तौर पर पढ गए जैसे पहली दफे वह चीठी उनके हाथ में पडी हो। परन्तु इस समय इस तरह कमलिनी के हाथ स इस चीठी को पाकर कुमार का ख्याल बिल्कुल बदल गया और कमलिनी उनकी दुश्मन नहीं है इस बात को वे अच्छी तरह समझ गए मगर साथ ही साथ उनके दिल में एक दूसरी ही तरह की उत्कण्ठा बढ गई और वे यह जानने के लिए व्याकुल हो गए कि कमलिनी और इसकी ऐयारा ने रोहतासगढ किले में पहुँच कर क्या किया।

पाठक शायद आप इस चीठी का मजमून भूल गए होंगे मगर आप उसे याद करें या पुन पढ जायें क्योंकि उसके एक एक शब्द का मतलब इस समय कमलिनी से कुमार पूछना चाहते है।

कुमार–मै नहीं कह सकता और न मुझे मालूम ही है कि तुम इतनी भलाई मरे साथ क्यों कर रही हो तो भी मै उम्मीद करता हूँ कि तुम इस समय मुझे चिन्ता में डाल कर दु ख न दोगी बल्कि जो मै पूछूँगा उसका ठीक-ठीक जवाब दागी।

कम–आप मरी तरफ स किसी तरह का बुरा खयाल न रक्खें। आज मै इस बात पर मुस्तैद हूँ कि अगर आपको कष्ट न हा ता रात भर जाग के बहुत कुछ हाल जो अब तक आपको मालूम नहीं है और आपके मतलब का है आपसे कहूँ और जा जो सवाल आप कर उसका जवाब दूँ।

कुमार–मुझ तुम्हार इस कहने स बडी खुशी हुई अच्छा पहिले इस बात का जवाब दो कि तुम्हारी वह ऐयारा जो रोहतासगढ में है और इस चीठी के पढने से जिसका नाम तारा मालूम होता है रोहतासगढ में किस तौर पर है ? जहॉ तक मै सोचता हूँ वह भष बदल कर नौकरी करती होगी ?

कम–नहीं उसन नौकरी नहीं की बल्कि वहॉ इस तौर पर छिप कर रहती है कि वहॉ क किसी आदमी को उसका पता लग जाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है।

कुमार–अच्छा तो उसने यह क्या लिखा है कि –किशोरी का आशिक भी यहां मौजूद है ।

कम–यह कटाक्ष माधवी के दीवान अग्निदत्त पर है क्योंकि इन लोगों के हिसाब से वह किशोरी पर आशिक है। सच्चा आशिक आपकी तरह नहीं है मगर बेईमान ऐयारों की तरह पर जरूर आशिक है।

कुमार–नहीं नहीं उसे तो हमारे आदमियों ने गिरफ्तार करके चुनार भेज दिया है।

कम–आपका यह खयाल गलत है। वह चुनार नहीं पहुंचा न मालूम उसने अपनी किस तरह जान बचा ली है। इसका हाल आपको लश्कर में जाने या किसी को चुनारगढ़ भेजने से मालूम होगा।

कुमार–तो क्या वह भी रोहतासगढ़ पहुंच गया ?

कम–पहुच ही गया तभी तो तारा ने लिखा है।

कुमार–अच्छा तो ये लाली और कुन्दन कौन हैं ?

कम– आपकी और मेरी दुश्मन इन दोनों को मामूली दुश्मन न समझिएगा।

कुमार–इसमें किशोरी के आशिक के बारे में लिखा है कि उसे किशोरी से बहुत कुछ उम्मीद भी है –इसका मतलब क्या है ?

कम–सो ठीक अभी मालूम नहीं हुआ।

कुमार–यह जवाब तुमने बड़े खुटके का दिया।

कम–(हंस कर) आप चिन्ता न करें किशोरी तन मन धन आपको समर्पण कर चुकी है वह किसी दूसरे की न होगी।

कुमार–खैर जब खुलासा हाल मालूम ही नहीं है तो जो कुछ सोचा जाय मुनासिब है इसमें लिखा है कि किशोरी ने भी पूरा धोखा खाया –सो क्या ?

कम–इसका भी हाल अभी नहीं मालूम हुआ। शायद आज कल में कोई दूसरी चीठी आवेगी तो मालूम होगा बल्कि और भी जो कुछ लिखा है इशारा ही भर है असल में क्या बात है सो मैं नहीं कह सकती।

कुमार–अच्छा अब मैं तुम्हारा पूरा हाल जानना चाहता हूं और इसी के साथ रोहतासगढ़ में रहने वाली लाली और कुन्दन का वृतान्त भी तुम्हारी जुबानी सुनना चाहता था।

कम–मैं सब हाल आपसे कहूंगी और इसके अलावे एक ऐसे भेद की खबर भी आपको दूंगी कि आप खुश हो जायगे मगर इसके लिए आपको तीन चार दिन और सब्र करना चाहिए इसी बीच में तारा भी रोहतासगढ़ से आ जायेगी या मैं खुद उसे बुलवा लूंगी।

कुमार–इन सब बातों को जानने के लिए मैं बहुत बेचैन हो रहा हूं कृपा करके जो कुछ तुम्हें कहना हो अभी कहो।

कम–नहीं नहीं आप जल्दी न करें मेरा दो चार दिन के लिए टालना भी आप ही के फायदे के लिए है। आप यह न समझें कि मैं आपको जान बूझ कर यहाँ अटकाया चाहती हूं। आप यदि मुझ पर भरोसा रक्खें और मुझे अपना दुश्मन न समझें तो यहां रहें। मैं लौंडियों की तरह आपकी तावेदारी करने को तैयार हूं, और यदि मुझ पर एतबार न हो तो आप लश्कर चले जायें चार पांच दिन के बाद मैं स्वयं आपसे मिलकर सब हाल कहूंगी।

कुमार–बेशक मैं तुम्हारे बारे में तरह तरह की बातें सोचता था और तुम पर विश्वास करना मुनासिब नहीं समझता था मगर अब तुम्हारी तरफ से मुझे किसी तरह का खुटका नहीं है। तुम्हारी बातों का मेरे दिल पर बड़ा ही असर हुआ। इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम सिवाय भलाई के मेरे साथ बुराई कभी न करोगी। मैं जरूर यहाँ रहूँगा और जब तक अपने दिल का शक अच्छी तरह न मिटा लूँगा न जाऊंगा।

कम–अहोभाग्य ! (हँस कर) मगर ताज्जुब नहीं कि इसी बीच में आपके ऐयार लोग यहां पहुंच कर मुझे गिरफ्तार कर लें !

कुमार–क्या मजाल !

तीसरा बयान

कुमार कई दिनों तक कमलिनी के यहां मेहमान रहे जिसने बड़ी खातिरदारी और नेकनीयती के साथ इन्हें रक्खा। इस मकान में कई लौंडिया भी थीं जो दिलोजान से कुमार की खिदमत किया करती थीं मगर कभी कभी वे सब दो दो पहर के लिए न मालूम कहाँ चली जाया करती थीं।

एक दिन शाम के वक्त उस मकान की छत पर कुमार और कमलिनी बैठे बातें कर रहे थे इसी बीच में कुमार ने पूछा–

कुमार–कमलिनी अगर किसी तरह का हर्ज न हो तो इस मकान के बारे में कुछ कहो। इन पुतलियों की तरफ जो इस मकान के चारों कोनों में तथा इस छत के बीचोबीच में है जब मेरी निगाह पड़ती है तो ताज्जुब से अजब हालत हो जाती है।

कम–बेशक इन्हें देख आप ताज्जुब करते होंगे। यह मकान एक तरह का छोटा सा तिलिस्म है जो इस समय बिल्कुल मेरे आधीन है मगर यहाँ का हाल बिना मेरे कहे थोड़े ही दिनों में आपको पूरा मालूम हो जायगा।

कुमार–उन दोनों औरतों के साथ जो माधवी की लौंडियाँ थीं तुमने क्या सलूक किया ?

कम–अभी तो वे दोनों कैद हैं।

कुमार–माधवी का भी कुछ हाल मालूम हुआ है ?

कम–उसे आपके लश्कर और रोहतासगढ़ के चारो तरफ घूमते कई दफे मेरे आदमियों ने देखा है। जहाँ तक मैं समझती हूँ वह इस धुन में लगी है कि किसी तरह आप दोनों भाई और किशोरी उसके हाथ लगें और वह अपना बदला ले।

कुमार–अभी तक रोहतासगढ़ का कुछ हाल मालूम नहीं हुआ न लश्कर का कोई समाचार मिला।

कम–मुझे भी इस बात का ताज्जुब है कि मेरे आदमी किस काम में फँसे हुए है क्योंकि अभी तक एक ने भी लौटकर खबर न दी। (चौंक कर और मैदान की तरफ देख कर) मालूम होता है कि इस समय कोई नया समाचार मिलेगा। मैदान की तरफ देखिए, दो आदमी एक बोझ लिए इसी तरफ आते दिखाई दे रहे हैं ताज्जुब नहीं कि ये मेरे ही आदमियो में से हों।

कुमार–(मैदान की तरफ देख कर) हाँ ठीक है इसी तरफ आ रहे है उस गट्ठर में शायद कोई आदमी है।

कम–बेशक ऐसा ही है (हँस कर) नहीं तो क्या मेरे आदमी माल असबाब चुरा कर लावेंगे। देखिए वे दोनों कितनी तेजी के साथ आ रहे है। (कुछ अटक कर) अब मैंने पहिचाना बेशक इस गठरी में माधवी होगी।

थोड़ी देर तक दोनों आदमी चुपचाप उसी तरफ देखते रहे जब वे लोग इस मकान के पास पहुँचे तो कमलिनी ने कुमार से कहा–

कम–मुझे आज्ञा दीजिए तो जाकर इन लोगों को यहाँ लाऊँ।

कुमार–क्या बिना तुम्हारे गये वे लोग यहाँ नहीं आ सकते ?

कम–जी नहीं जब तक मैं खुद उन्हें किश्ती पर चढ़ा कर यहाँ न लाऊँ वे लोग नहीं आ सकते वे क्या कोई भी नहीं आ सकता।

कुमार–क्या हर एक के लिए जब वह इस मकान में आना या जाना चाहे तो तुम्हीं को तकलीफ करनी पड़ती है ? मैं समझता हूँ कि जिस आदमी को तुम एक दफे भी किश्ती पर चढ़ा कर ले जाओगी उसे रास्ता मालूम हो जायेगा।

कम–अगर ऐसा ही होता तो मैं इस मकान में बेखटके क्योंकर रह सकती थी। आप जरा नीचे चलें मैं इसका सबब आपको बतला देती हूँ।

कुमार खुशी खुशी उठ खड़े हुए और कमलिनी के साथ नीचे उतर गए। कमलिनी उन्हें उस कोठरी में ले गई जो नहाने के काम में लाई जाती थी और जिसे कुमार देख चुके थे। उस कोठरी में दीवार के साथ एक आलमारी थी जिसे कमलिनी ने खोला। कुमार ने देखा कि उस दीवार के साथ चाँदी का एक मुट्ठा जो हाथ भर से छोटा न होगा लगा हुआ है। इसके सिवाय और कोई चीज उसमें नहीं थी।

कम–मैं पहिले भी आपसे कह चुकी हूँ कि इस तालाब में चारों ओर लोहे का जाल पड़ा हुआ है।

कुमार–हाँ ठीक है मगर उस रास्ते में जाल न होगा जिधर से तुम किश्ती लेकर आती जाती हो।

कम–ऐसा ख्याल न कीजिए उस रास्ते में भी जाल है मगर उसे यहाँ आने का दर्वाजा कहना चाहिए जिसकी ताली यह है। देखिये अब आप अच्छी तरह समझ जायेंगे। (उस चाँदी के मुट्ठे को कई दफे घुमा कर) अब उतनी दूर का या उस रास्ते का जाल जिधर से किश्ती लेकर मैं आती जाती हूँ हट गया मानों दर्वाजा खुल गया अब मैं क्या कोई भी जिसको आने जाने का रास्ता मालूम है किश्ती पर चढ़ के आ जा सकता है। जब मैं इसको उल्टा घुमाऊँगी तो वह रास्ता बन्द हो जायगा अर्थात वहाँ भी जाल फैल जायगा फिर किश्ती आ नहीं सकती।

कुमार–(हँस कर) बेशक यह एक अच्छी बात है।

इसके बाद कमलिनी किश्ती पर सवार होकर तालाब के बाहर गई और उन दोनों आदमियों को गठरी सहित सवार

करा के मकान में लें आई तथा तालाब में आन का रास्ता उसी रीति से जैसे कि हम ऊपर लिख चुके हैं बन्द कर दिया। इस समय यहाँ कई लौडियाँ भी मौजूद थीं उन्होंने कमलिनी के इशारे से छत के ऊपर रोशनी का बन्दोबस्त कर दिया और सब कोई छत के ऊपर चले गए। कुमार के पास ही कमलिनी गालीचे पर बैठ गई और वे दोनों आदमी भी गठरी सामने रखकर बैठ गये। इस छत की जमीन चिकने पत्थर की बहुत साफ और सुथरी बनी हुई थी अगर नजाकत की तरफ ख्याल न किया जाय तो फर्श या बिछावन बिछा कर वहाँ बैठने की कोई जरूरत न थी।

कम–कुमार देखिए इन दोनों आदमियों को मैंने माधवी को गिरफ्तार करने को भेजा था मालूम होता है कि ये लोग अपना काम पूरा कर आए हैं और इस गठरी में शायद माधवी को ही लाए हैं। (दोनों आदमियों की तरफ देखकर) क्यों जी माधवी ही है या किसी दूसरे को लाए हो ?

एक–जी माधवी को ही लाए हैं।

कम–गठरी खोलो जरा इसकी सूरत देखूँ।

उन दोनों ने गठरी खोली कमलिनी और कुमार ने बड़े चाव से माधवी की सूरत देखी परन्तु यकायक कमलिनी चौंकी और बोली "क्या यह जख्मी है ?

एक–जी हाँ मुझे उम्मीद नहीं कि इसकी जान बचेगी क्योंकि चोट भारी खाई है।

कुमार–इसे किसने जख्मी किया है ?

एक–किसी औरत ने रोहतासगढ़ के तिलिस्मी तहखाने में इसे चोट पहुँचाई है।

कुमार–(कमलिनी की तरफ देख कर) क्या रोहतासगढ़ में कोई तिलिस्मी तहखाना भी है ?

कम–जी हाँ पर उसका भेद बहुत आदमियों को मालूम नहीं है बल्कि जहाँ तक मैं समझती हूँ वहाँ का राजा दिग्विजयसिंह भी पूरा पूरा हाल न जानता होगा। वहाँ का मामला भी बड़ा विचित्र है किसी समय मैं आपसे उसका हाल कहूँगी।

एक–मगर अब उस तहखाने की रंगत बदल गई।

कम–सो क्या ?

एक–(कुमार की तरफ इशारा करके) आपके ऐयारों ने उसमें अपना दखल कर लिया बल्कि ऐसा कहना चाहिए कि रोहतासगढ़ ही ले लिया।

कम–(कुमार की तरफ देख कर) मुबारक हो खबर अच्छी आई है।

कुमार–बेशक इस खबर ने मुझे खुश कर दिया ईश्वर करे तुम्हारी तारा भी जल्द आ जाय और किशोरी का कुछ हाल मालूम हो। (माधवी को गौर से देख और चौंक कर) यह क्या ? माधवी की दाहिनी कलाई दिखाई नहीं देती।

कम–(हँस कर) इसका हाल आपको नहीं मालूम ?

कुमार–कुछ नहीं।

कम–पूरा हाल तो मुझे भी नहीं मालूम मगर इतना सुना है कि कहीं गयाजी में इससे और इसके दीवान अग्निदत्त की लड़की कामिनी से लड़ाई हो गई थी। उसी लड़ाई में यह अपनी दाहिनी कलाई खो बैठी। यह भी सुनने में आया है कि यह लड़ाई उसी मकान में हुई थी जिसमें आप लोग रहते थे और इसमें कमला भी शामिल थी।

कमलिनी की यह बात सुनकर कुमार को वे ताज्जुब की बातें याद आ गईं जो बीमारी की हालत में गयाजी में महल के अन्दर एक लाश और एक औरत की कलाई पाई गई थी।

कुमार–हाँ अब याद आया वह मामला भी बड़ा ही विचित्र हुआ था अभी तक उसका ठीक ठीक पता न लगा।

कम–क्या हुआ था जरा मैं भी सुनूँ ?

कुमार ने वह सब हाल कहा और जो कुछ देखने और सुनने में आया था वह भी बताया।

कम–कमला से मुलाकात हो तो कुछ और सुनने में आवे (दोनों आदमियों की तरफ देख कर) पहिले माधवी को यहाँ से ले जाओ लौंडियों के हवाले करो और कह दो इसे कैदखाने में रक्खें और होश में लाकर इसका इलाज करें इसके बाद आओ तो तुम्हारी जुबानी वहाँ का सब हाल सुनें। शाबाश तुम लोगों ने बेशक अपना काम पूरा किया जिससे मैं बहुत ही खुश हूँ।

बहुत अच्छा, कह कर दोनों आदमी माधवी को वहाँ से उठा कर नीचे ले गये और इधर कमलिनी और कुमार में बातचीत होने लगी।

कम–(मुस्करा कर) लीजिए आपकी मुराद पूरी हुआ चाहती है पहले पहिल यह खुशखबरी मेरे ही सबब से आपको मिली है सब से भारी इनाम मुझी को मिलना चाहिए।

कुमार–बेशक ऐसी ही बात है मरे पास कोई ऐसी चीज तो नहीं है जो तुम्हारी नजर के लायक हो खैर इसके बदल में मै खुद अपने को तुम्हारे हाथ में देता हूँ।

कम–वाह क्या खूब।

कुमार–सो क्यों ?

कम–आपको अपने बदन पर अख्तियार ही क्या है यह तो किशोरी की मिलकियत है।

कुमार लाजवाब हो गए और हँस कर चुप हो रहे। कमलिनी बडी ही खूबसूरत थी इसके साथ ही साथ उसकी अच्छी चालचलन मुरौवत अहसान और नेकियों ने कुमार को अपना ताबेदार बना लिया था। उसकी एक एक बात पर कुमार प्रसन्न होते और दिल में बराबर उसकी तारीफ करते थे।

कुमार–कमलिनी मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ मगर ईश्वर के लिए सच सच जवाब देना बात बना कर टालने की सही नहीं।

कम–कहिए तो सही क्या बात है ? रग-बेढंग मालूम होता है।

कुमार–अगर सच जवाब देने का वादा करो तो पूछूँ नहीं तो व्यर्थ मुँह क्यों दुखाऊँ।

कम–आपकी नजाकत तो औरतों से भी बढ गई जरा सी बात कहने में भी मुँह दुखा जाता है दम फूलने लगता है। खैर पूछिये मैं वादा करती हूँ कि सच्चा जवाब दूँगी अगर कहिए तो कागज पर लिख दूँ।

कुमार–(मुस्कुरा कर) यह तो तुम वादा कर चुकी हो कि अपना हाल पूरा पूरा मुझसे कहोगी मगर इस समय मैं तुमसे केवल इतना ही पूछता हूँ कि तुम्हारा कोई वली वारिस भी है या नहीं। तुम्हारे व्यवहार से स्वतन्त्रता मालूम होती है और यह भी जाना जाता है कि तुम कुँआरी हो।

कम–यह सवाल जवाब दने योग्य नहीं है (मुस्कुरा कर) परन्तु क्या किया जाय वादा करके चुप रहना भी मुनासिब नहीं। वास्तव में मैं स्वतन्त्र हूँ। कुँआरी तो हूँ परन्तु शीघ्र ही मेरी शादी होने वाली है।

कुमार–कब और कहाँ ?

कम–यह दूसरा सवाल है इसका सच्चा जवाब दने के लिए मैंने वादा नहीं किया है इसलिए आप इसका उत्तर न पा सकेंगे।

कुमार–अगर इसका भी जवाब दो तो क्या कोई हर्ज है ?

कम–हाँ हर्ज है बल्कि नुकसान है।

कुमार चुप रहे और जिद करना मुनासिब न जाना मगर यह सुन कर कि शीघ्र ही मेरी शादी होने वाली है कुमार को कुछ रज हुआ। क्यों रज हुआ ? इसमें कुमार की हानि ही क्या थी ? क्या कुछ दूसरा इरादा था ? नहीं नहीं कुमार यह नहीं चाहते थे कि हम ही इससे शादी करें वे किशोरी के सच्चे प्रेमी थे मगर खुबसूरती के अतिरिक्त कमलिनी के अहसानों ने कुमार को ताबेदार बना लिया था और अभी उन्हें कमलिनी से बहुत कुछ उम्मीद थी तथा यह भी सोचते थे कि ऐसी तर्कीब निकल आवे जिससे इस अहसान का बदला चुक जाय। मगर इन बातों से कुमार के रज होने का मतलब नहीं खुला। खैर जो हो पहिले यह तो मालूम हो कि कमलिनी है कौन।

वे दोनों आदमी भी छत पर आ पहुँचे जो माधवी को लाए थे हाथ जोड कर सामने बैठ गए। कमलिनी ने उनसे खुलासा हाल कहने के लिए कहा और उन दोनों में से एक ने इस तरह कहना शुरु किया –

दोनों–हम दोनों हुक्म के मुताबिक यहाँ से जाकर माधवी को खोजने लगे मगर उसका पता गयाजी और राजगृही के इलाकों में कहीं न लगा। लाचार होकर रोहतासगढ किले के पास पहुँचे और पहाडी के चारों तरफ घूमने लगे। कभी कभी रोहतासगढ की पहाडी के ऊपर भी जाते और घूम घूम कर पता लगाते कि वहाँ क्या हो रहा है। एक दिन रोहतासगढ पहाडी के ऊपर घूमते फिरते यकायक हम दोनों एक खोह के मुहाने पर जा पहुँचे और वहाँ कई आदमियों के धीरे धीरे बातचीत करन की आवाज सुन कर एक झाडी में जहाँ से उन लोगों की आवाज साफ सुनाई देती थी छिप रहे। अन्दाज से यह मालूम हुआ कि वे लोग कई आदमी हैं और उन्हीं के साथ एक औरत भी है। नीचे लिखी बातें हम लोगों ने सुनीं –

एक–न मालूम हम लोगों को कब तक यहाँ अटकना और राह देखना पडेगा।

दूसरा–अब हम लोगों को यहाँ ज्यादे दिन न रहना पडेगा या तो काम हो जायेगा या खाली ही लौट कर चले जाने की नौबत आवेगी।

तीसरा–रग तो ऐसा ही नजर आता है भाई जो हो हमें तो यही विश्वास होता है कि बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग तहखाने में घुस गये क्योंकि पहले कभी एक आदमी तहखाने में आता जाता नजर नहीं आता था बल्कि मैं तो यहाँ तक

कह सकता हूँ कि कल रात उस कब्रिस्तान में हम लोगों ने जिसे देखा था वह कोई ऐयार ही था।

चौथा–खैर और दो तीन दिन में मालूम हो जावेगा।

औरत–तुम लोगों का काम चाहे जब हो मगर मेरा काम तो आज हुआ ही चाहता है। माधवी और तिलोत्तमा को मैंने खूब ही धोखा दिया है। आज उसी कब्रिस्तान की राह से मैं उन दोनों को तहखाने में ले जाऊँगी।

एक–अब तुम्हें वहाँ जाना चाहिए शायद माधवी वहाँ पहुँच गई हो।

औरत–हाँ अब जाती हूँ पर अभी समय नहीं हुआ।

दूसरा–दम भर पहिले ही पहुँचना अच्छा है।

यह बातें सुन कर मैं उन लोगों को पहिचान गया। रामू वगैरह धनपतिजी के सिपाही लोग और औरत चमेला था।

इतना सुनते ही कमलिनी ने रोका और पूछा जिस खोह के मुहाने पर वे लोग बैठे थे वहाँ कोई सलई का पेड़ भी है?

इसके जवाब में उन दोनों ने कहा हाँ हाँ दो पेड़ सलई के वहाँ थे पर उनके सिवाय और दूर दूर तक कहीं सलई का पेड़ दिखाई नहीं दिया।

कम–बस मैं समझ गई वह खोह का मुहाना भी तहखाने से निकलने का एक रास्ता है, शायद धनपति ने अपने आदमियों को कह रक्खा होगा कि मैं किशोरी को लिए हुए इसी राह से निकलूँगी तुम लोग मुस्तैद रहना। इसी से वे लोग वहाँ बैठे थे।

एक–शायद ऐसा ही हो।

कुमार–धनपति कौन है?

कम–उसे आप नहीं जानते ठहरिए इन लोगों का हाल सुन लूँ तो कहूँगी। (उन दोनों की तरफ देख कर) हाँ तब क्या हुआ?

उसने फिर यों कहना शुरू किया –

थोड़ी ही देर में चमेला वहाँ से उठी और एक तरफ को रवाना हुई हम दोनों भी उसके पीछे पीछे चले और सुबह की सुफेदी निकलना ही चाहती थी कि उस कब्रिस्तान के पास पहुँच गये जो तहखाने में जाने का दर्वाजा है। हम दोनों एक आड़ की जगह छिप रहे और तमाशा देखने लगे उसी समय माधवी और तिलोत्तमा भी वहाँ आ पहुँचीं। तीनों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं जिसे दूर होने के सबब मैं बिल्कुल न सुन सका आखिर वे तीनों तहखाने में घुस गईं और पहरों गुजर जाने पर भी बाहर न निकलीं हम दोनों यह निश्चय कर चुके थे कि जब तक वे तहखाने से न निकलेंगी यहाँ से न टलेंगे। सवेरा हो गया बल्कि धीरे धीरे तीन पहर दिन बीत गया। आखिर हम दोनों तहखाने में घुसने के इरादे से कब्रिस्तान में गये। वहाँ पहुँच कर हमारे साथी ने कहा आखिर हम लोग दिन भर परेशान हो ही चुके हैं अब शाम हो लेने दो तो तहखाने में चलें। मैंने भी यही मुनासिब समझा और हम दोनों आदमी वहाँ से लौटा ही चाहते थे कि तहखाने का दर्वाजा खुला और चमेला दिखाई पड़ी हम दोनों को भी चमेला ने देखा और पहिचाना मगर उसको ठहरने या कुछ कहने का साहस न हुआ। वह कुछ परेशान मालूम होती थी और खून से भरा हुआ एक छूरा उसके हाथ में था। हम दोनों ने भी उसको कुछ टोकना मुनासिब न समझा और यह विचार कर कि शायद कोई और भी इस तहखाने से निकले एक कब्र की आड़ में छिप कर बिचली कब्र अर्थात तहखाने के दर्वाजे की तरफ देखने लगे। चमेला हम लोगों के देखते देखते भाग गई और थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा।

थोड़ी देर बाद हम लोगों ने दूर से राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयार पण्डित बद्रीनाथ को आते देखा। वह तहखाने के दर्वाजे पर पहुँचे ही थे कि अन्दर से तिलोत्तमा निकली और पण्डित बद्रीनाथ ने उसे गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद ही एक बूढ़ा आदमी तहखाने से निकला और पण्डित बद्रीनाथ से बातें करने लगा। हम लोगों को कुछ कुछ वे बातें सुनाई देती थीं। इतना मालूम हो गया कि तहखाने के अन्दर खून हुआ है और इन दोनों ने तिलोत्तमा को दोषी ठहराया है मगर हम लोगों ने खून से भरा हुआ छूरा हाथ में लिये चमेला को देखा था इसलिए विश्वास था कि अगर तहखाने में कोई खून हुआ है तो जरूर चमेला के ही हाथ से हुआ तिलोत्तमा निर्दोष है।

पण्डित बद्रीनाथ और वह बूढ़ा आदमी तिलोत्तमा को लेकर फिर तहखाने में घुस गये। हम लोगों ने भी वहाँ अटकना मुनासिब न समझा और थोड़ी ही देर बाद हम लोग भी तहखाने में घुस गये तथा तहखाने की पचासों कोठरियों में घूमने और देखने लगे कि कहाँ क्या होता है। बद्रीनाथ थोड़ी ही देर बाद तहखाने के बाहर निकल गये और हम लोगों

न तिलोत्तमा को एक खम्भे के साथ बँधे हुए पाया। हम्माम वाली कोठरी में माधवी को पड़े हुए पाकर हम लोग बड़े खुश हुए और उसे उठाकर ले भागे फिर न मालूम पीछे क्या हुआ और किस पर क्या गुजरी।*

कमलिनी–ताज्जुब नहीं कि वहाँ के दस्तूर के मुताबिक तिलोत्तमा बलि दे दी गई हो।

एक–जी हो।

इतने ही में नीचे से एक लौंडी दौड़ी हुई आई और हाथ जोड़ कर कमलिनी से बोली "तारा आ गई तालाब के बाहर खड़ी है।

तारा के आने की खबर सुन कर कमलिनी बहुत खुश हुई और खुशी के मारे कुअर इन्द्रजीतसिह की घबराहट का तो ठिकाना ही न रहा क्योंकि तारा ही की जुबानी रोहतासगढ का हाल और बेचारी किशोरी की खबर सुनने वाले थे और इसी के बाद कमलिनी का असल भेद उन्हें मालूम होने को था।

कम–(कुमार की तरफ देखकर) जिस तरह इन दोनों आदमियों को मै तालाब के बाहर लाई हूँ उसी तरह तारा को भी लाना पड़ेगा।

कुमार–हॉ हॉ उसे बहुत जल्द लाओ मै भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

कम–आप क्यों तकलीफ करते है। बैठिये मै उसे अभी लाती हूँ। (दोनों आदमियों की तरफ देखकर) चलो तुम दोनों को भी तालाब के बाहर पहुचा दूँ।

लाचार कुमार उसी जगह बैठे रहे। उन दोनों आदमियो को साथ लेकर कमलिनी वहॉ से चली गई तथा थोड़ी देर में तारा को लेकर आ पहुँची। कुँअर इन्द्रजीतसिह को देख कर तारा चौकी और बोली–

तारा– क्या कुमार यहाँ विराज रहे है।

कम–हॉ कई दिनों से यहाँ है और तुम्हारी राह देख रहे है। तुम्हारी जुबानी रोहतासगढ और किशोरी तथा लाली और कुन्दन का असल भेद और हाल सुनने के लिए बड़े बेचैन हो रहे हैं। आओ मेरे पास बैठ जाओ और कहो क्या हाल है ?

तारा–(ऊँची सॉस लेकर) अफसोस मै इस समय बैठ नहीं सकती और न कुछ वहाँ का हाल ही कह सकती हूँ क्योंकि हम लोगों का यह समय बड़ा ही अमूल्य है। कुमार को यहाँ देख मै बहुत खुश हुई अब वह काम बखूबी निकल जायगा। (कुमार की तरफ देखकर) बेचारी किशोरी इस समय बड़े ही सकट में पडी हुई है। अगर आप उनकी जान बचाना चाहते है तो इस समय मुझसे कुछ न पूछिए बस तुरत उठ खड़े होइए और जहाँ मै चलती हूँ चले चलिए हॉ यदि बन पड़ा तो रास्ते में मै वहाँ का हाल आपसे कहूँगी। (कमलिनी की तरफ देखकर) आप भी चलिए और कुछ आदमी अपने साथ लेती चलिए मगर सब कोई घोड़े पर सवार और लड़ाई के सामान से दुरुस्त रहें।

कम–ऐसा ही होगा।

कुमार–(खड़े होकर) मै तैयार हू।

तीनों आदमी छत के नीचे उतरे और तारा के कहे मुताबिक कार्रवाई की गई।

सुबह की सुफेदी आसमान पर निकलना ही चाहती है। आओ देखो हमारा बहादुर नौजवान कुँअर इन्द्रजीतसिह किस ठाठ से मुश्की घोड़े पर सवार मैदान की तरफ घोड़ा फेंके चला जा रहा है और उसकी पेटी से लटकती हुई जड़ाऊ नयाम (म्यान) की तलवार किस तरह उछल उछल कर घोड़े के पेट में थपकियॉ मार रही है मानों उसकी चाल की तेजी पर शाबाशी दे रही है। कुमार के आगे आगे घोड़े पर सवार तारा जा रही है कुमार के पीछे सब्ज घोड़े पर कमलिनी सवार है और घोड़े की तेजी को बढ़ा कर कुमार के बराबर हुआ चाहती है। उसके पीछे दस दिलावर और बहादुर सवार घोड़ा फेंके चले जा रहे है और इस जंगली मैदान के सन्नाटे को घोड़ों के टापों की आवाज से तोड़ रहे हैं।

चौथा बयान

हम ऊपर लिख आए है कि देवीसिह को साथ लेकर शेरसिह कुँअर इन्द्रजीतसिह को छुड़ाने के लिए रोहतासगढ से रवाना हुए। शेरसिंह इस बात को तो जानते थे कि कुँअर इन्द्रजीतसिह फलानी जगह हैं परन्तु उन्हें तालाब के गुप्त भेदों की कुछ भी खबर न थी। राह में आपुस में बातचीत होने लगी।

---

*यहाँ पर तो पाठक समझ ही गये होंगे कि तहखाने में बड़ी मूरत के सामने जो औरत बलि दी गई थी वह माधवी की ऐयारा तिलोत्तमा थी और माधवी की लाश को ले भागने वाले ये ही दोनों कमलिनी के नौकर थे।

देवी–लाली का भेद कुछ मालूम न हुआ।

शेरसिंह–अफसोस उसके और कुन्दन के बारे में मुझसे बड़ी भारी भूल हुई ऐसा धोखा खाया कि शर्म के मारे कुछ कह नहीं सकता।

देवी–इसमें शर्म की क्या बात है, ऐसा कोई ऐयार दुनिया में न होगा जिसने कभी धोखा न खाया हो, हम लोग कभी धोखा देते हैं कभी स्वयं धोखे में आ जाते हैं फिर इसका अफसोस कहाँ तक किया जाय।

शेर–आपका कहना बहुत ठीक है खैर इस बारे में मैंने जो कुछ मालूम किया है उसे कहता हूँ। यद्यपि थोड़े दिनों तक मैंने रोहतासगढ़ से अपना सम्बन्ध छोड़ दिया था तथापि मैं कभी कभी वहां जाया करता और गुप्त राहों से महल के अन्दर जाकर वहाँ की खबर भी लिया करता था। जब किशोरी वहाँ फँस गई तो अपनी भतीजी कमला के कहने से मैं वहाँ दूसरे तीसरे बराबर जाने लगा। लाली और कुन्दन को मैंने महल में देखा यह न मालूम हुआ कि ये दोनों कौन हैं। बहुत कुछ पता लगाया मगर कुछ काम न चला परन्तु कुन्दन के चेहरे पर जब मैं गौर करता तो मुझे शक होता कि वह सरला है।

देवी–सरला कौन ?

शेर–वही सरला जिसे तुम्हारी चम्पा ने चेली बना कर रक्खा था और जो उस समय चम्पा के साथ थी जब उसने एक खोह के अन्दर माधवी के ऐयार की लाश काटी थी।

देवी–हाँ वही छोकरी मुझे याद आया मालूम नहीं कि आज कल वह कहाँ है। खैर तब क्या हुआ ? तुमने समझा कि वह सरला है मगर उस खोह का और लाश काटने का हाल तुम्हें कैसे मालूम हुआ।

शेर–वह हाल स्वयं सरला ने कहा था वह मेरे आपुस वालों में से है इत्तिफाक से एक दिन मुझसे मिलने के लिए रोहतासगढ़ आई थी तब सब हाल मैंने सुना था मगर मुझे यह नहीं मालूम कि आज कल कहाँ है।

देवी–अच्छा तब क्या हुआ ?

शेर–एक दिन यही भेद खोलने की नीयत से मैं रात के समय रोहतासगढ़ महल के अन्दर गया और छिप कर सरला के सामने जाकर बोला 'मैं पहिचान गया कि तू सरला है फिर तू अपना भेद मुझसे क्यों छिपाती है ? इसके जवाब में कुन्दन ने पूछा 'तुम कौन हो ?

मैं–शेरसिंह।

सरला–मुझे जब तक निश्चय न हो कि तुम शेरसिंह ही हो मैं अपना भेद कैसे कहूँ ?

मैं–क्या तू मुझे नहीं पहिचानती ?

सरला–क्या जाने कोई ऐयार सूरत बदल के आया हो अगर तुम पहिचान गए कि मैं सरला हूँ तो कोई ऐसी छिपी हुई बात कहो जो मैंने तुमसे कही हो।

इसके जवाब में मैं वही खोह वाला अर्थात लाश काटने वाला किस्सा कह गया और अन्त में मैं बोला कि यह हाल स्वयम तूने मुझसे बयान किया था।

उस किस्से को सुन कर कुन्दन हँसी और बोली 'हाँ अब मैं समझ गई। मैं चम्पा के हुक्म से यहाँ का हाल चाल लेने आई थी और अब किशोरी को छुड़ाने की फिक्र में हूँ, मगर लाली मेरे काम में बाधा डालती है कोई ऐसी तर्कीब बताइये जिसमें लाली मुझसे दबे और डरे।

मैं उस समय यह कह कर वहाँ से चला आया कि अच्छा सोच कर इसका जवाब दूंगा।

देवी–तब क्या हुआ ?

शेर–मैं वहाँ से रवाना हुआ और पहाड़ी के नीचे उतरते समय एक विचित्र बात मेरे देखने और सुनने में आई।

देवी–वह क्या।

शेर–जब मैं अंधेरी रात में पहाड़ी के नीचे उतर रहा था तो जंगल में मालूम हुआ कि दो तीन आदमी जो पगडण्डी के पास ही हैं आपुस में बातें कर रहे हैं। मैं पैर दबाता हुआ उनके पास गया और छिपकर बातें सुनने लगा मगर उस समय उनकी बातें समाप्त हो चुकी थीं केवल एक आखिरी बात सुनने में आई।

देवी–फिर क्या हुआ।

शेर–एक ने कहा– भरसक तो लाली और कुन्दन दोनों उन्हीं में से हैं नहीं तो लाली तो जरूर इन्द्रजीतसिंह की दुश्मन है। मगर इसकी पहिचान तो सहज ही में हो सकती है। केवल 'किसी के खून से लिखी हुई किताब' और आँचल पर गुलामी की दस्तावेज इन दोनों जुमलों से अगर डर जाय तो हम समझ जायेंगे कि वीरेन्द्रसिंह की दुश्मन है। खैर बूझा जायगा पहिले महल में जाने का मौका भी तो मिले। इसके बाद और कुछ सुनने में न आया और वे लोग उठ कर न मालूम कहाँ चले गए। दूसरे दिन मैं फिर कुन्दन के पास गया और उससे बोला कि 'तू लाली के सामने किसी के खून से लिखी हुई किताब

और ऑचल पर गुलामी की दस्तावेज का जिक्र करके देख क्या होता है ।

देवी–फिर क्या हुआ ?

शेर–तीन चार दिन बाद जब मैं कुन्दन के पास गया तो उसकी जुबानी मालूम हुआ कि कुन्दन के मुँह से वे बातें सुन कर लाली बहुत डरी और उसने कुन्दन का मुकाबला करना छोड दिया। मगर मुझे थोड़े ही दिनों में मालूम हो गया कि कुन्दन सरला न थी उसने मुझे धोखा दिया और चालाकी से मेरी जुबानी कई भेद मालूम करके अपना काम निकाल लिया। मुझे इस बात की बडी शर्म है कि मैंने अपने दुश्मन को दोस्त समझा और धोखा खाया।

देवी–अक्सर ऐसा धोखा हो जाया करता है खैर लाली तो अभी हम लोगों के कैद ही में है कहीं जाती नहीं रही कुन्दन सो इन्द्रजीतसिंह को लेकर लौटने पर कोई तर्कीब ऐसी जरूर निकाली जायगी जिसमें बाकी लोगों का असल हाल मालूम हो।

इसी तरह की बातें करते हुए दोनों ऐयार चलते गये। रात को एक जगह दो घण्टे आराम किया और फिर चल पडे। सवेरा होते होते एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ एक छोटा सा टीला ऐसा था जिस पर चढ़ने से दूर दूर तक की जमीन दिखाई देती थी तथा वहा से कमलिनी का तालाब वाला मकान भी बहुत दूर न था। दोनों ऐयार उस टीले पर चढ गये और मैदान की तरफ देखने लगे। यकायक शेरसिंह ने चौंक कर कहा अहा हम लोग क्या अच्छे मौके पर आये हैं। देखो वह कुंअर इन्द्रजीतसिंह और वह औरत जिसने उन्हें फँसा रक्खा है घोडे पर सवार इसी तरफ चले आ रहे हैं।

देवी–हां ठीक तो है उनके साथ और भी कई सवार हैं।

शेर–मालूम होता है उस औरत ने उन्हें अच्छी तरह अपने वश में कर लिया है। बेचारे इन्द्रजीतसिंह क्या जानें कि यह उनकी दुश्मन है। चाहे जो हो इस समय इन लोगों को आगे न बढने देना चाहिए।

देवी–सबके आगे एक औरत घोडे पर सवार आ रही है। मालूम होता है कि उन लोगों को रास्ता दिखाने वाली यही है।

शेर–बेशक ऐसा ही है तभी तो सब कोई उसके पीछे पीछे चल रहे हैं। पहिले उसी को रोकना चाहिए मगर घोडों की चाल बहुत तेज है।

देवी–कोई हर्ज नहीं हम दोनों आदमी घोडे की राह पर अड कर खडे हो जाय और अपने को घोडे से बचाने के लिए मुस्तैद रहें अच्छी नसल का घोडा यकायक आदमी के ऊपर टाप न रक्खेगा वह लोगों को राह में देख जरूर अडेगा या झिझकेगा बस उसी समय घोडे की बाग थाम लेंगे।

दोनों ऐयारों ने बहुत जल्द अपनी राय ठीक कर ली और दोनों आदमी एक साथ घोडों की राह में अड के खड़े हो गये। बात की बात में वे लोग भी आ पहुंचे। तारा का घोडा रास्ते में आदमियों को खडा देख कर झिझका और आड दे कर बगल की तरफ घूमना चाहा उसी समय देवीसिंह ने फुर्ती से लगाम पकड़ ली। इस समय तारा का घोड़ा लाचार रुक गया और उसके पीछे आने वालों को भी रुकना पडा। कुंअर इन्द्रजीतसिंह शेरसिंह को तो नहीं जानते थे मगर देवीसिंह को उन्होंने पहिचान लिया और समझ गये कि ये लोग मेरी ही खोज में घूम रहे हैं आखिर देवीसिंह के पास आये और बोले–

कुमार–यद्यपि आप सब काम मेरी भलाई ही के लिए करते होंगे परन्तु इस समय हम लोगों को रोका सो अच्छा न किया।

देवी–क्या मामला है कुछ कहिए तो ?

कुमार–(जल्दी में घबड़ाए हुए ढँग से) बेचारी किशोरी एक आफत में फसी हुई है उसी को बचाने जा रहे हैं।

देवी–किस आफत में फँसी है ?

कुमार–इतना कहने का मौका नहीं है।

देवी–यह औरत आपको अवश्य धोखा देगी जिसके साथ आप जा रहे हैं।

कुमार–ऐसा नहीं हो सकता यह बडी ही नेक और मेरी हमदर्द है।

इतना सुनते ही कमलिनी आगे बढ आई और देवीसिंह से बोली–

कम–मैं खूब जानती हूँ कि आप लोगों को मेरी तरफ से शक है तथापि मुझे कहना ही पडता है कि इस समय आप हम लोगों को न रोकें नहीं तो पछताना पडेगा। यदि आप लोगों को मेरी और कुमार की बात का विश्वास न हो तो मेरे सवारों में से दो आदमी घोडों पर से उतर पडते हैं उनके बदले में आप दोनों आदमी घोडों पर सवार होकर साथ चलें और देख लें कि हम आपके खैरख्वाह हैं या बदख्वाह।

देवी–हाँ बेशक यह अच्छी बात है और मैं इसे मंजूर करता हूं।

कमलिनी के इशारा करते ही दो सवारों ने घोडों की पीठ खाली कर दी। उनके बदले में देवीसिंह और शेरसिंह सवार हो गए और फिर उसी तरह सफर शुरू हुआ। इस समय कुछ कुछ सूरज निकल चुका था और सुनहरी धूप ऊँचे ऊँचे पेडों के

ऊपर वाले हिस्सों पर फैल चुकी थी।

आधे घण्टे और सफर करने के बाद वे लाग उस जगह पहुच जहा धनपति न किशोरी को जला कर खाक कर डालन क लिए चिता तैयार की थी और जहाँ स दीवान अग्निदत्त लड़ भिड कर किशोरी को ल गया था। इस समय भी वह चिता कुछ बिगडी हुई सूरत में तैयार थी और इधर उधर बहुत सी लाशें पडी हुई थी उस जगह पहुच कर तारा न घोड़ा रोका और इसके साथ ही सब लोग रुक गये। तारा ने कमलिनी की तरफ देख कर कहा–

तारा–बस इसी जगह मै आप लोगों का लाने वाली थी क्योंकि इसी जगह धनपति क बहुत स आदमी मौजूद थ आर यहीं वह किशोरी को लेकर आने वाली थी। (लाशों की तरफ देखकर) मालूम होता है यहाँ बहुत खून खराबा हुआ है।

कम-तूने कैसे जाना कि किशोरी को लेकर धनपति इसी जगह आने वाली थी और धनपति को तून कहाँ छाड़ा था?

तारा–रात के समय छिप कर धनपति के आदमियों की बात मैन सुनी थी जिससे बहुत कुछ हाल मालूम हुआ था और धनपति को मैने उसी खोह के मुहाने पर छोडा था जो रोहतासगढ़ तहखाने से बाहर निकलने का रास्ता है। और जहा सलई के दो पेड लग है। उस समय बेहोश किशोरी धनपति के कब्जे में थी और धनपति के कई आदमी भी मौजूद थे। उन लागों की बातें सुनने से मुझे विश्वास हो गया था कि वे लोग किशोरी को लिए हुए इसी जगह आवेंगे। (एक लाश की तरफ देख के और चौक के) देखिए पहिचानिए।

कम–बेशक यह धनपति का नौकर है। (और लाशों को भी अच्छी तरह देखकर) बेशक धनपति यहा तक आई थी पर किसी से लडाई हो गई जो इन लाशों को देखने से जाना जाता है, मगर इनमें बहुत सी लाशें एसी हैं जिन्हें मै नहीं पहिचानती। न मालूम इस लडाई का क्या नतीजा हुआ धनपति गिरफ्तार हो गई या भाग गई और किशोरी किसक कब्जे में पड गई। (कुमार की तरफ देख कर) शायद आपके सिपाही या ऐयार लोग यहां आए हो?

कुमार–नहीं (देवीसिंह की तरफ देखकर) आप क्या खयाल करते हैं?

देवी–खयाल तो मैं बहुत कुछ करता हूँ, इसका हाल कहाँ तक पूछिएगा मगर इन लाशों में हमारे तरफ वालों की काइ लाश नहीं है जिससे मालूम हो कि वे लोग यहा आये होंगे।

सब लाग इधर उधर घूमन और लाशों को देखने लगे। यकायक देवीसिंह एक ऐसी लाश के पास पहुच जिसमें जान बाकी थी और वह धीरे धीरे कराह रहा था। उसके बदन में कई जगह जख्म लग हुए थे और कपड़े खून से तर थे। देवीसिंह न कुमार की तरफ देख के कहा 'इसमें जान बाकी है अगर बच जाय और कुछ बातचीत कर सके तो बहुत कुछ हाल मालूम होगा।

कई आदमी उस लाश क पास जा मौजूद हुए और उसे होश में लाने की फिक्र करने लगे। उसके जख्मों पर पट्टी बाँधी गई और ताकत देने वाली दवा भी पिलाई गई। घोडे नंगी पीठ करके दम लेने हरारत मिटाने और चरने के लिए लम्बी बागडोरों से बाँध कर छोड दिए गए।

आधे घण्टे बाद उस आदमी को होश आया और उसने कुछ बोलने का इरादा किया मगर जैसे ही उसकी निगाह कमलिनी पर पडी वह काप उठा और उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई। उसके दिल का हाल कमलिनी समझ गई और उसके पास जाकर मुलायम आवाज में बोली 'बाँकेसिंह डरो मत, मै वादा करती हूँ कि तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न दूँगी हाँ होश में आओ और मेरी बात का जवाब दो।

कमलिनी की बात सुन कर उसके चेहरे की रंगत बदल गई डर की निशानी जाती रही, और यह भी जाना गया कि वह कमलिनी की बातों का जवाब देने के लिए तैयार है।

कम–किशोरी को लेकर धनपति यहाँ आई थी?

बाँके–(सिर हिला कर धीरे से) हाँ मगर

कम–मगर क्या?

बाँके–उसने किशोरी को जला देना चाहा था मगर एकाएक अग्निदत्त और उसके साथी लोग आ पहुँचे और लड भिड़ कर किशोरी को ले गये हम लोग उन्हीं के हाथ स जख्मी

बाँकेसिंह ने इतनी बातें धीरे धीरे और रुक रुक कर कहीं क्योंकि जख्मों से ज्यादे खून निकल जाने के कारण वह बहुत ही कमजोर हो रहा था यहाँ तक कि बात पूरी न कर सका और गश में आ गया। इन लोगों ने उसे होश में लाने के लिए बहुत कुछ उद्योग किया मगर दो घण्टे तक होश न आया। इस बीच में देवीसिंह ने उसे कई दफे दवा पिलाई।

देवी–इसमें कोई शक नहीं कि यह बच जायगा।

तारा–(देवीसिंह की तरफ देखकर) हमने (कमलिनी की तरफ इशारा करके) इनके बारे में भी धोखा खाया वास्तव में यह कुमार के साथ नेकी कर रही है।

देवी–बेशक यह कुमार की दोस्त हैं मगर तुमने इनके बारे में कई बातें ऐसी कही थीं कि अब भी

कुमार–नहीं नहीं देवीसिंहजी मैं इन्हें अच्छी तरह आजमा चुका हूँ, सच तो यों है कि इन्हीं की बदौलत आज आप लोगों ने मेरी सूरत देखी।

इसके बाद कुमार ने शुरू से अपना किस्सा देवीसिंह से कह सुनाया और कमलिनी की बड़ी तारीफ की।

कम–आप लोगों ने मेरे बारे में बहुत सी बातें सुनी होंगी और वास्तव में मैंने जो जो काम किये हैं वे ऐसे नहीं कि कोई मुझ पर विश्वास कर सके हाँ जब आप लोग मेरा असल भेद जान जायेंगे तो अवश्य कहेंगे कि तुम्हारे हाथ से कभी कोई बुरा काम नहीं हुआ। अभी कुमार को भी मेरा हाल मालूम नहीं समय मिलने पर मैं अपना विचित्र हाल आप लोगों से कहूंगी और उस समय आप लोग कहेंगे कि बेशक शेरसिंह और उनकी भतीजी कमला ने मेरे बारे में धोखा खाया।

शेर–(ताज्जुब में आकर) आप मुझे और मेरी भतीजी कमला को क्योंकर जानती हैं ?

कम–मैं आप लोगों को बहुत अच्छी तरह जानती हूँ, हां आप लोग मुझे नहीं जानते और जब तक स्वयम् अपना हाल मैं न कहूँ जान भी नहीं सकते।

इसके बाद कुमार ने देवीसिंह से शेरसिंह का हाल पूछा और उन्होंने सब हाल कहा। इसी समय उस जख्मी ने आँखें खोलीं और पीने के लिए पानी माँगा जिसका इलाज ये लोग कर रहे थे।

अबकी दफे बाँकेसिंह अच्छी तरह होश में आया और कमलिनी के पूछने पर उसने इस तरह बयान किया–

इसमें कोई शक नहीं कि अग्निदत्त किशोरी को ले गया क्योंकि मैं उसे बखूबी पहिचानता हूँ मगर यह नहीं मालूम कि किशोरी की तरह धनपति भी उसके पंजे में फँस गई या निकल भागी क्योंकि लड़ाई खत्म होने से पहले ही मैं जख्मी होकर गिर पड़ा था। मैं जानता था कि अग्निदत्त बहुत से बदमाशों और लुटेरों के साथ यहाँ से थोड़ी दूर एक पहाड़ी पर रहता है और इसी सबब से धनपति को मैंने कहा भी था कि इस जगह आपका अटकना मुनासिब नहीं मगर होनहार को क्या किया जाय। (हाथ जोड़ कर) महारानी न मालूम क्यों आपने हम लोगों को त्याग दिया ? आज तक इसका ठीक पता हम लोगों को न लगा।

बाँकेसिंह की आखिरी बात का जवाब कमलिनी ने कुछ न दिया उससे उस पहाड़ी का पूरा पता पूछा जहाँ अग्निदत्त रहता था। बाँकेसिंह ने अच्छी तरह वहां का पता दिया। कमलिनी ने अपने सवारों में से एक को बाँकेसिंह के पास छोड़ा और बाकी सभी को ले वहाँ से रवाना हुई। इस समय कुँअर इन्द्रजीतसिंह की क्या अवस्था थी इसे अच्छी तरह समझना जरा कठिन था। कमलिनी की नेकी किशोरी की दशा इश्क की खिंचाखिंची और अग्निदत्त की कारवाई के सोच विचार में ऐसे मग्न हुए कि थोड़ी देर के लिए तनोबदन की भी सुध भुला दी केवल इतना जानते रहे कि कमलिनी के पीछे पीछे किसी काम के लिए कहीं जा रहे हैं। सूरज अस्त होने के बाद ये लोग पहाड़ी के नीचे पहुँचे जिस पर अग्निदत्त रहता था और जहां खोह के अन्दर किशोरी की अन्तिम अवस्था ऊपर के बयान में लिख आये हैं।

इन लोगों का दिल इस समय ऐसा न था कि इस पहाड़ी के नीचे पहुँच कर किसी जरूरी काम के लिए भी कुछ देर तक अटकते। घोड़े को पेड़ों से बांध तुरत चढ़ने लगे और बात की बात में पहाड़ी के ऊपर जा पहुँचे। सबसे पहिले जिस चीज पर इन लोगों की निगाह पड़ी वह एक लाश थी जिसे इन लोगों में से कोई भी नहीं पहिचानता था और इसके बाद भी बहुत सी लाशें देखने में आईं जिससे इन लोगों का दिल छोटा हो गया और सोचने लगे कि देखें किशोरी से मुलाकात होती है या नहीं।

इस पहाड़ी के ऊपर एक छोटी सी मढ़ी बनी हुई थी जिसमें बीस पचीस आदमी रह सकते थे और इसी के बगल में एक गुफा थी जो बहुत लम्बी और अंधेरी थी। पाठक यह वही गुफा थी जिसमें बेचारी किशोरी दुष्ट अग्निदत्त के हाथ से बेबस होकर जमीन पर गिर पड़ी थी।

इस पहाड़ी के ऊपर बहुत सी लाशें पड़ी हुई थीं किसी का सिर कटा हुआ था किसी को तलवार ने जनेवा काट गिराया था कोई कमर से दो टूकड़े था किसी का हाथ कट कर अलग हो गया था किसी के पेट खंजर ने फाड डाला था और आंतें बाहर निकल पड़ी थीं मगर किसी जीते आदमी का नाम निशान वहाँ न था। ऐसी अवस्था देखकर कुंअर इन्द्रजीतसिंह बहुत घबराये और उन्हें किसी के मिलने से ना उम्मीदी हो गई। ऐयारों ने बटुए से सामान निकाल कर बत्ती जलाई और खोह के अन्दर घुसकर देखा तो वहाँ भी एक लाश के सिवाय और कुछ न दिखाई दिया। निगाह पड़ते ही देवीसिंह ने पहिचान लिया कि यह अग्निदत्त की लाश है। एक खंजर उसके कलेजे में अभी तक चुभा हुआ मौजूद था केवल उसका कब्जा बाहर था और दिखाई दे रहा था उसके पास ही एक लपेटा हुआ कागज पड़ा था। देवीसिंह ने कागज उठा लिया और दोनों ऐयार उस लाश को बाहर लाये।

सभों ने अग्निदत्त की लाश को देखा और ताज्जुब किया।

शेर–इस हरामजादे को इसके कुकर्मों की सजा न जाने किसने दी।

कमलिनी–हाय इस कम्बख्त की बदौलत बेचारी किशोरी पर न मालूम क्या क्या आफतें आईं अब वह कहाँ या किस अवस्था में है।

देवी–(चीठी दिखा कर) इसकी लाश क पास यह चीठी भी मिली है शायद इससे कुछ पता चले।

कम–हाँ हाँ इसे पढ़ा तो सही देखें क्या लिखा है।

सभों का ध्यान उस चीठी पर गया। कुँअर इन्द्रजीतसिह ने वह चीठी देवीसिह के हाथ से ल ली और पढकर सभो का सुनाया यह लिखा था –

गरिर हरामजादी किशोरी मरे हाथ लगी। इसमें कोई शक नहीं कि अब यह अपने किये का फल भागेगी। इसकी शैतानी न मुझे जोते जी मार ही डाला था मगर मैंने भी पीछा न छोडा। कम्बख्त अग्निदत्त की क्या हकीकत थी जो मेरे हाथ स अपनो जान बचा ले जाता। मैं उन लागों को ललकारता हूँ जो अपने को बहादुर दिलर और राजा मानत हैं। कहाँ है वीरन्द्रसिह इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह जो अपनीको बहादुरी का दावा रखते हैं ? आवें और मेरा चरण छू कर माफी माँगें। कहाँ है उनके ऐयार जो अपने को विधाता ही समझ बैठे हे ? आवें और मरे ऐयारों के सामन सिर झुकावें। मुझ विश्वास है कि उन लोगों में से कोई न कोई किशारी को खोजता यहाँ जरूर आवेगा और इसलिए मैं यह चीठी लिखकर यहा रक्खे देती हूँ कि ऊपर लिख व्यक्ति या उनके साथी और मददगार लोग चाहे जा कोई भी हों अपनी अपनी जान बचावें क्योंकि उनको मौत आ चुकी है और अब व लोग मेरे हाथ स किसी तरह बच नहीं सकत। काई यह न कह कि मैं छिप कर अपना काम करता हूँ और किसी को अपनी सूरत नहीं दिखाता। जिसको मेरी सूरत दखनी हो मेर घर चला आवे मगर होशियार रहे क्योंकि मेरे सामने आने वाल की भी वही दशा होगी जो यहाँ वालों की हुई। लो मैं अपना पता भी बताये दता हूँ, जिसको आना हो मेरे पास चला आवे। यहाँ स पॉच कोस पूरब एक नाला है उसी क किनार दक्खिन रुख दो कोस तक चले जाने क बाद मेरा मकान दिखाइ पडेगा।

–बहादुरों का दादागुरु

इस चीठी न सभों को अपने आपे स बाहर कर दिया। मारे क्रोध क कुँअर इन्द्रजीतसिह की ऑखें कबूतर के खून की तरह सुर्ख हो गई। देवीसिह और शेरसिह दाँत पीसने लगे।

कुमार–चाहे जो हो मगर इस हरामजादे से मुकाबिला किय बिना मैं किसी तरह आराम नहीं कर सकता।

देवी–बेशक इसको इस ढिठाई की सजा दी जायेगी।

कुमार–अब यहा ठहरना व्यर्थ है चल कर उसे ढूँढ़ना चाहिए।

कम–बेशक उसने बडी बेअदबी की उसे जरूर सजा दना चाहिये। मगर आप लाग बुद्धिमान हैं मुझे विश्वास है कि बिना समझे बूझे किसी काम में जल्दी न करेगे।

कुमार–ऐसे समय मे विलम्ब करना अपनी बहादुरी में बट्टा लगाना है।

कम–आप इस समय क्रोध में है इसलिए ऐसा कहते है नहीं तो आप स्वय पहिले किसी ऐयार को भेजना मुनासिब समझते। इतनी बडी शखी के साथ पत्र लिखने वाले को मैं सच्चा नहीं समझ सकती। खुल्लमखुल्ला आप लागों का मुकाबला करना हँसी खेल है ? क्या यह केवल उन्हीं आदमियों का काम है जो दगाबाज नहीं बल्कि सच्चे बहादुर है ? कभी नहीं कभी नही बेशक वह कोई बेइमान और हरामजादा आदमी है। इसके अतिरिक्त आप जरा इस रात के समय और अपने घोडों की हालत पर तो ध्यान दीजिए कि अब व एक कदम भी चलने लायक नहीं रहे।

यद्यपि कुमार और उनके ऐयार इस समय बडे क्रोध में थे परन्तु कमलिनी की सच्ची हमदर्दी के साथ मीठी मीठी बातों ने उन्हे ठण्डा किया और इस लायक बनाया कि व नेक और बद को सोच सकें। कमलिनी के आदमियों के साथ और ऐयारों के बटुए मे बहुत कुछ खाने का सामान था। पहाडी के नीचे एक छोटा सा चश्मा बह रहा था वहाँ से जल मँगवाया गया और सभों न कुछ खाकर जल पीया इसके बाद फिर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

देवी–जिस मकान का इस चीठी में पता दिया गया है यदि वहाँ न जाना चाहिये तो यहाँ रहना भी मुनासिब नही क्योंकि व दगाबाज लोग इस जगह से भी बेफिक्र न होंगे। मेरी राय तो यही है कि शेरसिह के साथ कुमार विजयगढ जायें और मैं उस मकान की खोज में जाकर देखूँ कि वहाँ क्या है।

कम–आपका कहना बहुत ठीक है मैं भी यही मुनासिब समझती हूँ, इस बीच में मुझे भी दो एक दुश्मनों का पता लगा लेने का मौका मिलेगा क्योंकि जहाँ तक मैं समझती हूँ यह एक ऐसे आदमी का काम है जिसे सिवाय मेरे आप लोग नहीं जानते और न इस समय उसका नाम आप लोगों के सामने लेना हो मैं मुनासिब समझती हूँ।

कुमार–क्या नाम बताने में कोई हर्ज है ?

कमलिनी–बेशक हर्ज है हाँ यदि मेरा गुमान ठीक निकला तो अवश्य उन लोगों का नाम बताऊँगी और पता भी दूँगी।

कुमार–खैर मगर जो कुछ राय आप लोगों ने दी है उसके अनुसार चलने में कई दिन व्यर्थ लग जायेंगे, इसलिये मेरी राय कुछ दूसरी ही है।

देवी–वह क्या ?

कुमार–मैं खुद आपके साथ उस मकान की तरफ चलता हूँ जिसका पता इस चीठी में दिया गया है। यदि केवल उस मकान के अन्दर रहने वाले हमारे दुश्मन हैं तो हिम्मत हारने की कोई जरूरत नहीं इसी समय उन्हें जीत कर किशोरी को छुड़ा लाऊँगा और यदि उन लोगों के पास फौज होगी तो जरूर मकान के बाहर टिकी हुई होगी जिसका पता लगाना कुछ कठिन न होगा उस समय जो कुछ आप लोग राय देंगे किया जायगा।

इसी तरह की बातचीत करने में पहर रात बीत गई। आखिर वही निश्चय ठहरा जो कुमार ने सोचा था अर्थात् इसी समय सब कोई उस मकान की तरफ जाने के लिए मुस्तैद हुए और पहाड़ी के नीचे उतर आये। पर्दों के साथ बागडोर से बँधे हुए घोड़े वहीं पर चर रहे थे जो अपने सवारों को देख कर हिनहिनाने लगे जिससे जाना गया कि वे इस समय फिर सफर के लिए तैयार हैं और पहर भर चरने और आराम करने से उनकी थकावट कम हो चुकी है। सब लोग घोड़ों पर सवार होकर वहाँ से रवाना हुए।

जो कुछ उस चीठी में लिखा था वह ठीक मालूम होने लगा अर्थात् पूरब पाँच कोस चल जाने के बाद एक नाला मिला और उसी के किनारे किनारे दो कोस दक्खिन जाने के बाद एक मकान की सुफेदी दिखाई पड़ी। मालूम होता था कि यह मकान अभी नया बना है या आज ही कल में इसके ऊपर चूना फेरा गया है। रात दो पहर से ज्यादा जा चुकी थी चन्द्रमा अपनी पूर्ण कला से आकाश के बीच में दिखाई दे रहे थे शीतल किरणें चारों तरफ फैली हुई थीं और मालूम होता था कि जमीन पर चाँदी का पत्र जड़ा हुआ है। ये लोग घने जंगल पीछे छोड़ आये थे और इस जगह पेड़ बहुत कम और छोटे छोटे थे उस मकान के चारों तरफ दो सौ बिगहे के लगभग साफ मैदान था।

अच्छी तरह जाँच करने और खयाल दौड़ाने से मालूम हो गया कि इस जगह पर फौज नहीं है और न लड़ाई का कुछ सामान ही है अगर कुछ है तो उसी मकान के अन्दर होगा। आखिर थोड़ी देर तक सोच विचार कर ये लोग मकान के पास पहुँचे।

यह मकान बहुत बड़ा न था लगभग पचास गज के लम्बा और इसी कदर चौड़ा होगा। इसकी ऊँचाई भी पैंतीस गज से ज्यादे न होगी। चारों तरफ की दीवारें साफ थीं न तो किसी तरफ कोई दर्वाजा था और न कोई खिड़की। ये लोग चारों तरफ घूमे मगर अन्दर जाने का रास्ता न मिला आखिर सब लोग घोड़ों पर से उतर कर एक तरफ खड़े हो गये देवीसिंह ने कमन्द फेंका और उसके सहारे से दीवार पर चढ़ कर देखना चाहा कि अन्दर क्या है।

ऊपर की दीवार बहुत चौड़ी थी। सभों ने देखा कि देवीसिंह दीवार पर खड़े होकर अन्दर की तरफ बड़े गौर से देख रहे हैं। यकायक देवीसिंह खिलखिला कर हँसे और बिना कुछ कहे उस मकान के अन्दर कूद पड़े।

यह देख सभों को ताज्जुब हुआ कमलिनी ने तारा के कान में कुछ कहा जिसके जवाब में उसने सिर हिला दिया। थोड़ी देर तक देवीसिंह की राह देखी गई आखिर उसी कमन्द के सहारे शेरसिंह चढ़ गये और उनकी भी वही अवस्था देखने में आई अर्थात् कुछ देर तक गौर से देखने के बाद देवीसिंह की तरह हँस कर शेरसिंह भी उस मकान के अन्दर कूद गए।

अब तो कुमार के आश्चर्य का कोई हद न रहा वे ताज्जुब में आकर सोचने लगे कि यह क्या मामला है और इस मकान के अन्दर क्या है जिसे देख दोनों ऐयारों ने ऐसा किया ? "जो हो अब मैं भी ऊपर चढूँगा और देखूँगा कि क्या है।" –कह कर कुमार भी उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ने को तैयार हुए मगर कमलिनी ने हाथ पकड़ लिया और कहा "ऐसा नहीं हो सकता अभी हमारे कई आदमी मौजूद हैं पहिले इन्हें जाँच लीजिए।" लाचार कुमार को रुकना पड़ा। कमलिनी ने अपने उन सवारों की तरफ देखा जो उसके साथ आये थे और कहा "तुम लोगों में से एक आदमी ऊपर जाकर देखो कि क्या है।"

हुक्म पाकर उसी कमन्द के सहारे एक आदमी ऊपर गया और उसकी भी वही दशा हुई दूसरा गया वह भी कूद पड़ा तीसरा गया वह भी न लौटा यहाँ तक कि कमलिनी के कुल आदमी इस तरह उस मकान के अन्दर जा दाखिल हुए। कमलिनी ने बहुत रोका और मना किया मगर कुमार ने उसकी बात पर ध्यान न दिया वे भी उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गये और अपने साथियों की तरह गौर से थोड़ी देर तक देखने के बाद हँसते हुए मकान के अन्दर कूद पड़े।

अब सवेरा हो गया आसमान पर पूरब तरफ सूर्य की लालिमा दिखाई देने लगी कमलिनी ने हँस कर अपनी प्यारी तारा की तरफ देखा वह गर्दन हिलाकर हँसी और बोली "चलिए अब देर करने की कोई जरूरत नहीं।" बाकी घोड़े उसी तरह उसी जगह छोड़ दिये गये दो घोड़ों पर कमलिनी और तारा सवार हुईं और हँसती हुई एक तरफ को चली गईं।

पांचवां बयान

अब हम फिर रोहतासगढ़ की तरफ मुड़ते है और वहाँ राजा वीरेन्द्रसिंह के ऊपर जो जो आफतें आईं उन्हें लिखकर इस किस्से के बहुत से भेद जो अभी तक छिपे पड़े हैं खोलते हैं। हम ऊपर लिख आये हैं कि रोहतासगढ़ फतह करने के बाद राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह उसी किले में जाकर मेहमान हुए वहीं एक छोटी सी कमेटी की गई तथा उसी समय कुंअर इन्द्रजीतसिंह का पता लगाने और उन्हें ले आने के लिए शेरसिंह और देवीसिंह रवाना किए गए।

उन दोनों के चले जाने के बाद यह राय ठहरी कि यहां का हाल चाल और रोहतासगढ़ फतह होने का समाचार चुनारगढ़ महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास भेजना चाहिए। यद्यपि यह खबर उन्हें पहुंच गई होगी तथापि किसी ऐयार का वहां भेजना मुनासिब है और इस काम के लिए भैरोसिंह चुने गए। राजा वीरेन्द्रसिंह ने अपने हाथ से पिता को पत्र लिखा और भैरोसिंह को तलब करके चुनारगढ़ जाने के लिए कहा।

भैरो–मैं चुनारगढ़ जाने के लिए तैयार हूं परन्तु दो बातों की हवस जी में रह जायेगी।

वीरेन्द्र–वह क्या ?

भैरो–एक तो फतह की खुशी का इनाम बंटने के समय मैं न रहूंगा इसका।

वीरेन्द्र–यह हवस तो अभी पूरी हो जायगी दूसरी क्या है ?

तेज–यह लड़का बहुत ही लालची है यह नहीं सोचता कि यदि मैं न रहूंगा तो मेरे बदले का इनाम मेरे पिता तो पावेंगे।

भैरो–(हाथ जोड़ कर और तेजसिंह की तरफ देखकर) यह उम्मीद तो हई है परन्तु इस समय मैं आपसे भी कुछ इनाम लिया चाहता हूं।

वीरेन्द्र–अवश्य ऐसा होना चाहिए क्योंकि तुम्हारे लिए हम और ये एक समान हैं।

तेज–आप और भी शह दीजिए जिसमें यादे और कुछ न मिल सके तो मेरा ऐयारी का बटुआ ही ले ले।

भैरो–मेरे लिए वही बहुत है।

वीरेन्द्र–दो अब सस्ते में छुटते हो बटुआ दे दो मैं उज्र न करो।

तेज–जब आप ही इसकी मदद पर हैं तो लाचार होकर देना ही पड़ेगा। राजा वीरेन्द्रसिंह ने अपना खास सन्दूक मंगाया और उसमें से एक जड़ाऊ डिब्बा जिसके अन्दर न मालूम क्या चीज थी निकाल बिना खोले भैरोसिंह को दे दिया। भैरोसिंह ने इनाम पाकर सलाम किया और अपने पिता तेजसिंह की तरफ देखा उन्होंने भी लाचार होकर ऐयारी का बटुआ जिसे वे हरदम अपने पास रखते थे भैरोसिंह के हवाले कर ही दिया।

राजा वीरेन्द्रसिंह ने भैरोसिंह से कहा इनाम तो तुम पा चुके अब बताओ तुम्हारी दूसरी हवस क्या है जो पूरी की जाय ?

भैरो–मेरे जाने के बाद आप यहां के तहखानों की सैर करेंगे, अफसोस यही है कि इसका आनन्द मुझे कुछ भी न मिलेगा।

वीरेन्द्र–खैर इसके लिए भी हम वादा करते हैं कि जब तुम चुनारगढ़ से लौट आओगे तब यहां के तहखानों की सैर करेंगे मगर जहां तक हो सके तुम जल्द लौटना।

भैरोसिंह सलाम करके विदा हुए मगर दो ही चार कदम आगे बढ़े थे कि तेजसिंह ने पुकारा और कहा सुनो सुनो बटुए में से एक चीज मुझे ले लेने दो क्योंकि वह मेरे ही काम की है।

भैरो–(वापस लौटकर बटुआ तेजसिंह के सामने रखकर) बस अब मैं यह बटुआ न लूंगा जिसके लोभ से मैंने बटुआ लिया जब वही आप निकाल लेंगे तो इसमें रह ही क्या जायेगा।

वीरेन्द्र–नहीं जी ले जाओ अब तेजसिंह उसमें से कोई चीज न निकालने पायेंगे जो चीज यह निकालना चाहते हैं तुम भी उस चीज को रखने योग्य पात्र हो।

भैरोसिंह ने खुश होकर बटुआ उठा लिया और सलाम करने के बाद तेजी के साथ वहाँ से रवाना हो गये।

पाठक तो समझ ही गए होंगे कि इस बटुए में कौन सी ऐसी चीज थी जिसके लिए इतनी खिचाखिची हुई। खैर शक मिटाने के लिए हम उस भेद को खोल ही देना मुनासिब समझते हैं। इस बटुए में वे ही तिलिस्मी फूल थे जो चुनारगढ़ के इलाके में तिलिस्म के अन्दर से तेजसिंह के हाथ लगे थे और जिसे किसी प्राचीन वैद्य ने बड़ी मेहनत से तैयार किया था।

अब हम भैरोसिंह के चले जाने के बाद तीसरे दिन का हाल लिखते हैं। दिग्विजयसिंह अपने कमरे में मसहरी पर लेटा लेटा न मालूम क्या क्या सोच रहा है आधी रात से ज्यादे जा चुकी है मगर अभी तक उसकी आँखों में नींद नहीं है दर्वाजे के

तरफ मुँह किए हुए मालूम होता है किसी के आने की राह देख रहा है क्योंकि किसी तरह की जरा सी भी आहट आने पर चौंक जाता है और चैतन्य होकर दर्वाजे की तरफ देखने लगता है। यकायक चौखट के अन्दर पैर रखते हुए एक वृद्ध बाबाजी की सूरत दिखाई पडी। उनकी अवस्था अस्सी वर्ष से ज्यादे होगी, नाभी तक लम्बी दाढी और सर के फैले हुए बाल रुई की तरह सुफेद हो रहे थे कमर में केवल एक कोपीन पहिने और शेर की खाल ओढे कमरे के अन्दर आ पहुँचे। उन्हें देखते ही राजा दिग्विजयसिह उठ खडे हुए और मुस्कुराते हुए दण्डवत करके बोले, आज बहुत दिनों के बाद दर्शन हुए है समय टल जाने पर सोचता था कि शायद आज आना न हो।

बाबाजी ने आशीर्वाद देकर कहा— राह में एक आदमी से मुलाकात हो गई इसी से विलम्ब हुआ।

इस समय कमरे में एक सिहासन मौजूद था। दिग्विजयसिह ने उसी सिहासन पर साधु को बैठाया और स्वय नीचे फर्श पर बैठ गया इसके बाद यों बातचीत होने लगी —

साधु—कहा क्या निश्चय किया ?

दिग्वि—(हाथ जोड कर) किस विषय में।

साधु—यही बीरेन्द्रसिह के विषय में।

दिग्वि—सिवाय ताबेदारी कबूल करने के और कर ही क्या सकता हूँ ?

साधु—सुना है तुम उन्हें तहखाने की सैर कराना चाहते हो ? क्या यह बात सच है ?

दिग्वि—मैं उन्हें राक टी क्योंकर सकता हूँ ?

साधु—ऐसा कभी नहीं होना चाहिए। तुम्हें मेरी बातों का विश्वास है कि नहीं ?

दिग्वि—विश्वास क्यों न होगा ? आपको मैं गुरु के समान मा न त हूँ और आज तक कुछ जो मैंने किया आप ही की सलाह से किया।

साधु—केवल यही आखिरी काम बिना मुझसे राय लिए किया सो उसमें यहाँ तक धोखा खाया कि राज्य से हाथ धो बैठे।

दिग्वि—बेशक ऐसा ही हुआ खैर अब जा आज्ञा हो किया जाय।

साधु—मैं नहीं चाहता कि तुम वीरेन्द्रसिह के ताबेदार बनो इस समय वे तुम्हारे कब्जे में हैं और तुम उन्हें हर तरह से कैद कर सकते हो।

दिग्वि—(कुछ सोच कर) जैसी आज्ञा परन्तु मेरा लडका अभी तक उनके कब्जे में है।

साधु—उसे यहाँ लाने के लिए बीरेन्द्रसिह का आदमी जा ही चुका है बीरेन्द्रसिह वगैरह के गिरफ्तार होने की खबर जब तक चुनार पहुँचेगी उसके पहिले ही कुमार वहाँ से रवाना हो जायगा। फिर वह उन लोगों के कब्जे में नहीं फँस सकता उसका ले अना मेरा जिम्मा।

दिग्वि—हर एक बातों को विचार लीजिए मैं आज्ञानुसार चलने को तैयार हूँ।

इसक बाद घण्टे भर तक साधु महाराज और राजा दिग्विजयसिह में बातें होती रहीं जिसे यहाँ लिखने की कोई जरूरत नहीं है। पहर रात रहे बाबाजी वहाँ से विदा हुए।

उसके दूसरे ही दिन राजा वीरेन्द्रसिह को खबर मिली कि लाली का पता नहीं लगता न मालूम वह किस तरह कैद से निकल कर भाग गई, उसका पता लगाने के लिए कई जासूस चारों तरफ रवाना किये गये।

अब महाराज दिग्विजयसिह की नीयत खराब हो गई और वे इस बात पर उतारू हो गए कि राजा बीरेन्द्रसिह उनके लडके और दोस्तों को गिरफ्तार कर लेना चाहिए खाली गिरफ्तार नहीं मार डालना चाहिए।

राजा वीरेन्द्रसिह तहखाने में जाकर वहाँ का हाल देखा और जाना चाहते थे मगर दिग्विजयसिह हीले हवाले में दिन काटने लगा। आखिर यह निश्चिय हुआ कि कल तहखाने में अवश्य चलना चाहिए। उसी दिन रात को दिग्विजयसिह ने राजा विरेन्दसिह की फिर ज्याफत की और खाने की चीजों में बेहोशी की दवा मिलाने का हुक्म अपने एयार रामानन्द को दिया। बेचारे राजा वीरेन्द्रसिह इन बातों से बिल्कुल बेखबर थ और उनके ऐयारों को भी ऐसी उम्मीद न थी आखिर नतीजा यह हुआ कि रात को भोजन करन के बाद सभी पर दवा ने असर किया। उस समय तेजसिह चौंकेऔर समझ गये कि दिग्विजयसिह ने दगा दिया मगर अब क्या हो सकता था ? थोडी देर बाद राजा बीरेन्द्रसिह कुँअर आनन्दसिह तेजसिह पण्डित बदीनाथ ज्योतिषीजी और तारासिह वगैरह बेहोश होकर जमीन पर लेट गये और बात की बात में हथकडियों और बडियों से बेबस कर उसी तिलिस्मी तहखाने में कैद कर दिए गये। उस तहखाने से बाहर निकलने के लिए जो दो रास्ते थे उनका हाल पाठक जान टी गय होंगे क्योंकि ऊपर उसका बहुत कुछ हाल लिखा जा चुका है। उन दोनों रास्तों में से एक रास्ता जिससे हमारे ऐयार लोग और कुँअर आनन्दसिह गये थे बखूबी बन्द कर दिया गया मगर दूसरा रास्ता जिधर से कुन्दन (धनपति) किशोरी को लेकर निकल गई थी ज्यों का त्यों रहा क्योंकि उसकी खबर राजा दिग्विजयसिह को न थी

उस रास्ते का हाल वह कुछ भी न जानता था।

राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके लड़के और साथी लोग जब कैदखाने में भेज दिये गये उस समय राजा वीरेन्द्रसिंह के थोड़े से फौजी आदमी जो उनके साथ किले में आ चुके थे यह दगाबाजी देखकर जान देने के लिए तैयार हो गये। उन्होंने राजा दिग्विजयसिंह के बहुत से आदमियों को मारा और जब तक जीते रहे मालिक के नमक का ध्यान उनके दिल में बना रहा पर आखिर कहाँ तक लड़ सकते थे शेष में सब के सब बहादुरी के साथ लड़ कर बैकुण्ठ चले गये। राजा दिग्विजयसिंह ने किले का फाटक बन्द करवा दिया सफीलों पर तोपें चढ़वा दीं और राजा वीरेन्द्रसिंह के लश्कर से जो पहाड़ के नीचे था लड़ाई का हुक्म दिया। राजा वीरेन्द्रसिंह के लश्कर में दो सर्दार मौजूद थे जो अभी तक रोहतासगढ़ में नहीं आये थे एक नाहरसिंह और दूसरे फतहसिंह ये दोनों सेनापति थे।

पाठक देखिए जमाने ने कैसा पलटा खाया। किशोरी की धुन में कुँअर इन्द्रजीतसिंह अपने दो ऐयारों के साथ ऐसी जगह जा फँसे कि उनका पता लगना भी मुश्किल है इधर राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह की यह दशा हुई अगर भैरोसिंह चीठी लेकर चुनार न भेज दिये गये होते तो वह भी फँस जाते। आप भूले न होंगे कि रामनारायण और चुन्नीलाल चुनारगढ़ में हैं और पन्नालाल को राजा वीरेन्द्रसिंह गयाजी छोड़ आये हैं राजगृह भी उन्हीं के सुपुर्द है वे किसी तरह वहां से टल नहीं सकते क्योंकि वह शहर नया फतह हुआ है और वहां एक सर्दार का हर दम बने रहना बहुत ही मुनासिब है।

जिस समय रोहतासगढ़ किले से तोप की आवाज आई, दोनों सेनापति बहुत घबराए और पता लगाने के लिए जासूसों को किले में भेजा मगर उनके लौट आने पर दिग्विजय की दगाबाजी का हाल दोनों सेनापतियों को मालूम हो गया उन्होंने उसी समय इस हाल की चीठी लिख दो सवार चुनारगढ़ रवाना किये और इसके बाद सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए

छठवाँ बयान

आज बहुत दिनों के बाद हम कमला को आधी रात के समय रोहतासगढ़ पहाड़ी के ऊपर पूरब तरफ वाले जंगल में घूमते देख रहे हैं। यहां से किले की दीवार बहुत दूर और ऊँचे पर है। कमला न मालूम किस फिक्र में है या क्या ढूँढ़ रही है। यद्यपि रात चाँदनी थी परन्तु ऊँचे ऊँचे और घने पेड़ों के कारण जंगल में एक प्रकार से अन्धकार ही था। घूमते घूमते कमला के कानों में किसी के पैर की आहट मालूम हुई वह रुकी और एक पेड़ की आड़ में खड़ी होकर दाहिनी तरफ देखने लगी जिधर से आहट मिली थी। दस पन्द्रह कदम की दूरी से दो आदमी जाते हुए दिखाई दिये बात और चाल से दोनों औरत मालूम पड़ीं। कमला भी पैर दबाए और अपने को हर तरफ से छिपाए उन्हीं दोनों के पीछे पीछे धीरे धीरे रवाना हुई। लगभग आध कोस जाने के बाद ऐसी जगह पहुँची जहां पेड़ बहुत कम थे बल्कि उसे एक प्रकार से मैदान ही कहना चाहिए। थोड़ी थोड़ी दूर पर पत्थर के बड़े बड़े अनगढ़ ढोंके पड़े हुए थे जिनकी आड़ में कई आदमी छिप सकते थे। सघन पेड़ों की आड़ से निकलकर मैदान में कई कदम जाने के बाद वे दोनों अपने ऊपर से स्याह चादर उतार कर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गईं। कमला ने भी अपने को बड़ी चालाकी से उन दोनों के करीब पहुंचाया और एक पत्थर की आड़ में छिपकर उन दोनों की बातचीत सुनना चाहा। चन्द्रमा अपनी पूर्ण किरणों से उदय हो रहे थे और निर्मल चांदनी इस समय अपना पूरा जोबन दिखा रही थी हर एक चीज अच्छी तरह और साफ नजर आती थी। जब वे दोनों औरतें चादर उतार कर पत्थर की चट्टान पर बैठ गईं तब कमला ने उनकी सूरत देखी। बेशक वे दोनों नौजवान औरतें थीं जिनमें से एक तो बहुत ही हसीन थी और दूसरी के विषय में कह सकते हैं कि शायद उसकी लौंडी या ऐयारा हो।

कमला बड़े गौर से उन दोनों औरतों की तरफ देख रही थी कि इतने ही में सामने से एक लम्बे कद का आदमी आता हुआ दिखाई पड़ा जिसे देख कमला चौंकी और उस समय तो कमला का कलेजा बेहिसाब धड़कने लगा जब वह आदमी उन दोनों औरतों के पास आकर खड़ा हो गया और उनसे डपट कर बोला, "तुम दोनों कौन हो?" उस आदमी का चेहरा चन्द्रमा के सामने था विमल चाँदनी उसके नक्शे को अच्छी तरह दिखा रही थी इसीलिए कमला ने उसे तुरन्त पहिचान लिया और उसे विश्वास हो गया कि वह लम्बे कद का आदमी वही है जो खंडहर वाले तहखाने के अन्दर शेरसिंह से मिलने गया था और जिसे देख उनकी अजब हालत हो गई थी तथा जिद्द करने पर भी उन्होंने न बताया कि यह आदमी कौन है।

कमला ने अपने धड़कते हुए कलेजे को बाएँ हाथ से दबाया और गौर से देखने लगी कि अब क्या होता है। यद्यपि कमला उन दोनों औरतों से बहुत दूर न थी और इस रात के सन्नाटे में उनकी बातचीत बखूबी सुन सकती थी तथापि उसने अपने को बड़ी सावधानी से उस तरफ लगाया और सुनना चाहा कि दोनों औरतों और लम्बे व्यक्ति में क्या बातचीत होती है।

उस आदमी के डपटते ही ये दोनों औरतें चैतन्य होकर खड़ी हो गईं और उनमें से एक ने जो सरदार मालूम होती थी जवाब दिया—

औरत–(अपने कमर स खजर निकाल कर) हम लोग अपना परिचय नही द सकतीं और न हमें यही पूछने से मतलव है कि तुम कौन हा ?

आदमी–(हँसकर) क्या तू समझती है कि मै तुझे नहीं पहिचानता ? मुझे खूब मालूम है कि तेरा नाम गौहर है मै तेरी सात पुश्त को जानता हूँ मगर आजमाने के लिए पूछता था कि देखूँ तू अपना सच्चा हाल मुझे कहती है या नहीं। क्या कोई अपने का भूतनाथ से छिपा सकता है ?

भूतनाथ' नाम सुनते ही वह औरत घबडा गई डर से बदन कॉपने लगा और खजर उसके हाथ से गिर पडा। उसने मुश्किल से अपने को सम्हाला और हाथ जोड कर बोली' बेशक मेरा नाम गौहर है मगर

भूत–तू यहॉं क्यों घूम रही है ? शायद इस फिक्र में है कि इस किले में पहुँच कर आनन्दसिह से अपना बदला ले।

गौहर–(डरी हुइ आवाज से) जी हॉं।

भूत–पहिले भी तो तू उन्हें फँसा चुकी थी मगर उनका ऐयार देवीसिह उन्हें छुडा ले गया। हॉं तेरी छोटी वहिन कहॉं है ?

गौहर–वह तो गया की रानी माधवी के हाथ से मारी गई।

भूत–कब ?

गौहर–जब वह इन्द्रजीतसिह को फँसाने के लिए चुनारगढ के जगल में गई थी तो मैं भी अपनी छोटी वहिन को साथ लेकर आनन्दसिह की धुन में उसी जगल में गई थी। दुष्टा माधवी न व्यर्थ ही मेरी वहिन को मार डाला। जव वह जगल काटा गया तो वीरेन्द्रसिह के आदमी लाग उसकी लाश उठा कर चुनार ले गए थे मगर (अपनी साथिन की तरफ इशारा करके) वडी चालाकी से यह ऐयारा उस लाश का उटा लाई थी *

भूत–हॉं ठीक है अच्छा तो तू इस किले में घूसा चाहती ह और आनन्दसिह की जान लिया चाहती है।

गौहर–यदि आप अप्रसन्न न हों ता।

भूत–मैं क्यों अप्रसन्न होने लगा ? मुझे क्या गरज पडी है कि मना करूँ ? जो तेरा जी चाहे कर। अच्छा अब मैं जाता हूँ लेकिन एक दफे फिर तुझसे मिलूँगा।

वह आदमी तुरत चला गया और दखते देखते नजरों से गायव होगया। इसके बाद दोनों औरतों में वातचीत होन लगी।

गौहर–गिल्लन इसकी सूरत देखते ही मेरी जान निकल गई थी, न मालूम यह कम्बख्त कहॉं से आ गया।

गिल्लन–तुम्हारी तो वात ही दूसरी है मै ऐयारा होकर अपने को सम्हाल न सकी देखो अभी तक कलेजा धड धड करता है।

गौहर–मुझको तो यही डर लगा हुआ था कि कहीं वह मुझे आनन्दसिह से बदला लेने के वारे में मना न करे।

गिल्लन–सा तो उसन न किया मगर एक दफे मिलन के लिए कह गया है अच्छा अब यहॉं ठहरना मुनासिब नहीं।

वे दोनों औरतें अर्थात् गौहर तथा गिल्लन वहॉं से चली गई और कमला ने भी एक तरफ का रास्ता लिया। दो घण्टे के बाद कमला उस कब्रिस्तान में पहुँची जो रोहतासगढ के तहखाने में आने जाने का रास्ता था। इस समय चन्द्रमा अस्त हा चुका था और कब्रिस्तान में भी सन्नाटा था। कमला बीच वाली कब्र के पास गई और तहखाने में जाने के लिए दर्वाजा खोलने लगी मगर खुल न सका। आधे घण्टे तक वह इसी फिक्र में लगी रही पर कोई काम न चला लाचार होकर उठ खडी हुई और कब्रिस्तान के बाहर की तरफ चली। फाटक के पास पहुँचते ही वह अटकी क्योंकि सामने की तरफ थोडी ही दूर पर कोई चमकती हुई चीज उसे दिखाई पडी जो इसी तरफ वढी आ रही थी। आगे जाने पर मालूम हुआ कि यह बिजली की तरह चमकने वाली चीज एक नेजा है जो किसी औरत के हाथ में है। वह नेजा कभी तेजी के साथ चमकता है और इस सबब से दूर दूर तक की चीजें दिखाई दती हैं और कभी उसकी चमक बिल्कुल ही जाती रहती है और यह भी नहीं मालूम होता कि नेजा या नजे को हाथ में रखने वाली औरत कहॉं है। थोडी देर में वह औरत इस कब्रिस्तान के बहुत पास आ गई। नेजे की चमक न कमला को उस औरत की शक्ल सूरत अच्छी तरह दिख दी। उस औरत का रग स्याह था, सूरत डराव नी

*देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति पहिला भाग चौथा वयान।

और वडे वडे दो तीन दॉत मुँह के वाहर निकले हुए थे काली साडी पहिने हुए वह औरत पूरी राक्षसी मालूम होती थी। यद्यपि कमला ऐयारा और वहुत दिलेर थी मगर इसकी सूरत देखते ही थर थर कॉपने लगी। उसने चाहा कि कब्रिस्तान के बाहर निकल कर भाग जाय मगर वह इतना डर गई थी कि पैर न उठा सकी। देखते देखते वह भयकर मूर्ति कमला के सामन आ कर खडी हो गयी और कमला को डर के मारे कॉपते देख कर वोली "डरो मत होश ठिकाने कर और जो कुछ मै कहती हूँ ध्यान देकर सुन।

सातवॉ बयान

रोहतासगढ फतह होने की खवर लेकर भैरोसिह चुनार पहुचे और उसके दो ही तीन दिन वाद राजा दिग्विजयसिह की वेईमानी की खवर लिए हुए कई सवार भी जा पहुँचे। इस समाचार के पहुँचते ही चुनारगढ़ मे खलबली मच गई। फौज के साथ ही साथ रिआया भी राजा वीरेन्द्रसिह और उनके खानदान को दिल से चाहती थी क्योंकि उनके जमाने मे अमीर और गरीब सभी खुश थे। आलिम और कारीगरों की कदर की जाती थी, अदना से अदना भी अपनी फरियाद राजा के कानों तक पहुंचा सकता था उद्योगियों और व्यापारियों को दर्वार स मदद मिलती थी, ऐयार और जासूस लोग छिपे छिपे रिआया के दुख सुख का हाल मालूम करते और राजा को हर तरह की खवर पहुँचाते थे। शादी व्याह मे इज्जत के माफिक हर को मदद मिलती थी। और इसी से रिआया भी तन मन धन राजा के लिए अर्पण करने को तैयार मिलती थी। राजा वीरेन्द्रसिह कैद हो गये इस खवर को सुनते ही रिआया जोश मे आ गई और इस फिक्र मे हुई कि जिस तरह हो राजा को छुड़ाना चाहिए।

रोहतासगढ के वारे मे क्या करना चाहिए और दुश्मनों पर क्योंकर फतह पानी चाहिए यह सब सोचने विचारने के पहिले महाराज सुरेन्द्रसिह और जीतसिह ने भैरोसिह रामनारायण और चुन्नीलाल को हुक्म दिया कि तुम लोग तुरन्त रोहतासगढ जाओ और जिस तरह हो सके अपने को किले के अन्दर पहुंचा कर राजा वीरेन्द्रसिह को रिहा करो हम दोनों मे से भी कोई आदमी मदद लेकर शीघ्र पहुँचेगा।

हुक्म पाते ही तीनों ऐयार तेज और मजवूत घोडों पर सवार हो रोहतासगढ की तरफ रवाना हुए और दूसरे दिन शाम को अपनी फौज मे पहुँचे। राजा वीरेन्द्रसिंह की आधी फौज अर्थात पचीस हजार फौज तो पहाड़ी के नीचे किले के दर्वाजे की तरफ खडी हुई थी और वाकी आधी फौज पहाडी के चारों तरफ इसलिए फैला दी गयी थी कि राजा दिग्विजयसिंह को वाहर से किसी तरह की मदद न पहुँचने पाये। पॉच पॉच सात सात सौ वहादुरोंको लेकर नाहरसिंह कई दफे पहाड़ी पर चढा और किले के दर्वाजे तक पहुँचना चाहा मगर किले के बुर्जो पर से आए हुए तोप के गोलों ने उन्हें वहाँ तक पहुँचने न दिया और हर दफे लौटना पडा। जाहिर मे तो वे लोग सामने की तरफ अडे हुए थे और घड़ी घड़ी हमला करते थे, मगर नाहरसिंह के हुक्म से पॉच पॉच सात सात करके जगल ही जगल रात के समय छिपे हुए रास्तों से बहुत से सिपाही जासूस और सुरग खोदने वाले पहाड पर चढ गये थे तथा बराबर चढे चले जाते थे और उम्मीद पाई जाती थी कि दो ही तीन दिन मे हजार दो हजार आदमी पहाड के ऊपर हो जायेंगे। तव नाहरसिह छिप कर अकेला पहाड़ पर चढ जायेगा और अपने आदमियों को वटार कर किले के दर्वाजे पर हमला करेगा। पहाड पर पहुँच कर सुरग खोदने वाले सुरग खोद कर वारूद के जोर से किले का फाटक तोडने की धुन मे लगे हुए थे और इन बातों की खवर राजा दिग्विजयसिंह को विल्कुल न थी।

भैरोसिह ने पहुँच कर यह सब हाल सुना और खुश होकर सेनापतियों की तारीफ की तथा कहा कि "यद्यपि पहाड़ के ऊपर का घना जगल ऐसा वेढंग है कि मुसाफिरों को जल्दी रास्ता नहीं मिल सकता तथापि हमारे आदमी यदि ऊँचाई की तरफ ध्यान न देकर चढना शुरू करेंगे तो लुढ़कते पुडकते किले के पास पहुँच ही जायेंगे। खैर आप लोग जिस काम मे लगे हुए है लगे रहिए हम तीनों ऐयार पहाड पर जाते है और किसी तरह किले के अन्दर पहुंचन का बन्दोबस्त करते है।

पहर रात वीत गई थी जब भैरोसिह रामनारायण और चुन्नीलाल पहाड़ी के ऊपर चढने लगे। भैरोसिह कई दफे उस पहाडी पर जा चुके थे और उस जगल मे अच्छी तरह घूम चुके थे इसलिए इन्हें भूलने और धोखा खाने का डर न था। ये लोग वेधड़क पहाड पर चले गय और रोहतासगढ के रास्ते वाले कब्रिस्तान मे ठीक उस समय पहुँचे जिस समय कमला धडकते हुए कलेजे के साथ उस राक्षसी के सामने खड़ी थी जिसके हाथ मे बिजली की तरह चमकता हुआ नेजा था। जिस समय वह नेजा चमकता था देखने वाले की ऑख चौंधिया जाती थी। भैरोसिह ने दूर से चमकते हुए नेजे को देखा और उसके साथी दोनों ऐयार भी डर कर खडे हो गये। भैरोसिह चाहते थे कि जब वह औरत वहॉ से चली जाय तो कब्रिस्तान मे जायें मगर वे ऐसा न कर सके क्योंकि नेजे की चमक मे उन्होंने कमला की सूरत देखी थी जो उस समय जान से हाथ धो कर उस राक्षसी के सामने खडी थी।

हम ऊपर कई जगह इशारा कर आए है कि भैरोसिह कमला को चाहते थे और वह भी इनसे मुहब्बत रखती थी। इस समय कमला को एक राक्षसी के सामने देख उसकी मदद न करना भैरोसिह से कब हो सकता था ? वे लपक कर कमला के पास पहुँचे। दो ऐयारों को साथ लिए भैरोसिह को अपने पास मौजूद देखकर कमला का जी ठिकाने हुआ और उसने जल्दी से भैरोसिह का हाथ पकड़ के कहा-- 'खूब पहुँचे।

भैरो--तुम यहाँ क्यों खडी हो और तुम्हारे सामने यह औरत कौन है ?

कमला--मै इसे नही पहिचानती।

राक्षसी--मेरा हाल कमला से क्यों पूछते हो मुझसे पूछो। इस समय तुम्हें देखकर मै बहुत प्रसन्न हुई मै भी इसी फिक्र मे थी कि किसी तरह भैरोसिह से मुलाकात हो।

भैरो--तुमने मुझे क्योंकर पहिचाना क्योकि आज तक मैने तुम्हें कभी नहीं देखा।

इतना सुनकर वह औरत बडी जोर से हँसी और उसने नेजे को हिलाया। हिलाने के साथ ही नेजे में चमक पैदा हुई और उसकी डरावनी हँसी से कब्रिस्तान गूँज उठा इसके बाद उस औरत ने कहा--

राक्षसी--ऐसा कौन है जिसे मैं नहीं पहिचानती होऊँ ? खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं यह कहो कि अपने मालिकों के छुडाने की क्या फिक्र कर रहे हो ? दिग्विजयसिह दो ही तीन दिन में तुम्हारे मालिक को मार कर निश्चिन्त हुआ चाहता है।

भैरोसिह उस राक्षसी से बातें करने को तैयार थे परन्तु यह नहीं जानते थे कि वह इनकी दोस्त है या दुश्मन और उससे अपने भेदों को छिपाना चाहिए कि नही। यह सोच ही रहे थे कि इसकी बातों का क्या जवाब दिया जाय कि इतने में कई आदमियों के आने की आहट मालूम हुई। उस औरत ने घूम कर देखा तो चार आदमियों को इसी तरफ आते पाया। उन पर निगाह पडते ही वह क्रोध में आकर गरजी और नेजे को हिलाती हुई उसी तरफ लपकी। नेजे की चमक ने उन चारों की आँखें बन्द कर दीं। औरत ने बडी फुर्ती से उन चारों को नेजे से घायल किया। हिलाने के साथ की साथ उस नेजे मे गजब की चमक पैदा होती थी मालूम होता था कि आँखों के आगे बिजली दौड गई। वे बेचारे देख भी न सके कि उनको मारने वाला कौन या कहाँ पर है। मालूम होता है कि वह नेजा जहर में बुझाया हुआ था क्योंकि वे चारों जख्मी होकर जमीन पर ऐसा गिरे कि फिर उठने की नौबत न आई।

इस तमाशे को देखकर भैरोसिह डरे और सोचने लगे कि इस औरत के हाथ में तो बडा विचित्र नेजा है। इससे तो यह बात की बात में सैकडों आदमियों का नाश कर सकती है कहीं ऐसा न हो कि हम लोगों को भी सतावे।

उन चारों को जख्मी करने के बाद वह औरत फिर भैरोसिह की तरफ लौटी। अब उसने अपने नेजे को आडा किया अर्थात उसे इस तरह थामा कि उसका एक सिरा बाईं तरफ और दूसरा दाहिनी तरफ रहे तब तीनों ऐयारों और कमला को नेजे का धक्का देकर एक साथ पीछे की तरफ हटाना चाहा। यह नेजा एक साथ चारों के बदन में लगा उसके छूते ही बदन में एक तरह की झनझनाहट पैदा हुई और सब आदमी बदहवास होकर जमीन पर गिर पडे।

जब उन चारों अर्थात् भैरोसिह रामनारायण चुन्नीलाल और कमला की आँखें खुलीं तो उन्होंने अपने को किले के अन्दर राजमहल के पिछवाडे की तरफ एक दीवार की आड में पडे पाया। उस समय सुबह की सफेदी आसमान पर धीरे धीरे अपना दखल जमा रही थी।

आठवाँ बयान

बहुत दिनों से कामिनी का हाल कुछ भी मालूम न हुआ आज उसकी सुध लेना भी मुनासिब है। आपको याद होगा कि जब कामिनी को साथ लेकर कमला अपने चाचा शेरसिह से मिलने के लिए उजाड़ खडहर और तहखाने में गई थी तो वहाँ से बिदा होते समय शेरसिह ने कमला से कहा था कि कामिनी को मैं ले जाता हूँ अपने एक दोस्त के यहाँ रख दूँगा जब सब तरह का फसाद मिट जायगा तब यह भी अपनी मुराद को पहुँच जायगी'। अब हम उसी जगह से कामिनी का हाल लिखना शुरू करते है।

गयाजी से थोडी दूर पर लालगज नाम से मशहूर एक गाँव फलगू नदी के किनारे ही पर है। उसी जगह के एक नामी जमींदार के यहाँ जो शेरसिह का दोस्त था कामिनी रक्खी गई थी। वह जमींदार बहुत ही नेक और रहमदिल था तथा उसने कामिनी को बड़ी हिफाजत से अपनी लड़की के समान खातिर करके रक्खा मगर उस जमींदार का एक नौजवान और खूबसूरत लडका भी था जो कामिनी पर आशिक हो गया। उसके हाव भाव और कटाक्ष को देख कर कामिनी को उसकी

नीयत का हाल मालूम हो गया। वह कुँअर आनन्दसिंह के प्रेम में अच्छी रंगी हुई थी इसलिए उसे इस लड़के की चालढाल बहुत ही बुरी मालूम हुई। ऐसी अवस्था में उसने अपने दिल का हाल किसी से कहना मुनासिब न समझा बल्कि इरादा कर लिया कि जहाँ तक जल्द हो सके इस मकान को छोड़ ही देना मुनासिब है और अन्त में लाचार होकर उसने ऐसा ही किया।

एक दिन मौका पाकर आधी रात के समय कामिनी उस घर से बाहर निकली और सीधे रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुई। इस समय वह तरह तरह की बातें सोच रही थी। एक दफे उसके दिलमें आया कि बिना कुछ सोच विचारे वीरेन्द्रसिंह के लश्कर में चले चलना ठीक होगा मगर साथ ही यह भी सोचा कि यदि कोई सुनेगा तो मुझे अवश्य निर्लज्ज कहेगा और आनन्दसिंह की आखों में मेरी कुछ इज्जत न रहेगी।

इसके बाद उसने सोचा कि जिस तरह हो कमला से मुलाकात करनी चाहिए मगर कमला से मुलाकात क्योंकर हो सकती है ? न मालूम अपने काम की धुन में वह कहा घूम रही होगी ? हाँ अब याद आया जब मैं कमला के साथ शेरसिंह से मिलने के लिए उस तहखाने में गई थी तो शेरसिंह ने उससे कहा था कि मुझसे मिलने की जब जरूरत हो तो इसी तहखान में आना। अब मुझे भी उसी तहखाने में चलना चाहिए वहा कमला या शेरसिंह से जरूर मुलाकात होगी और वहाँ दुश्मनों के हाथ से भी निश्चिन्त रहूँगी। जब तक कमला से मुलाकात हो वहाँ टिके रहने में भी कोई हर्ज नहीं है वहां खाने के लिए जगली फल और पीने के लिए पानी की भी कोई कमी नहीं।

इन सब बातों को सोचती हुई बेचारी कामिनी उसी तहखाने की तरफ रवाना हुई और अपने को छिपाती हुई जगल ही जगल चल कर तीसरे दिन पहर रात जाते जाते वहाँ पहुँची। रास्ते में जगली फल और चश्मे के पानी के सिवाय और कुछ उसे न मिला और न उसे किसी चीज की इच्छा ही थी।

वह खडहर कैसा था और उसके अन्दर तहखाने में जाने के लिए छिपा हुआ रास्ता किस ढंग का बना हुआ था यह पहिले लिखा जा चुका है पुन यहाँ लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। कमला या शेरसिंह से मिलने की उम्मीद में उसी खडहर और तहखाने को कामिनी ने अपना घर बनाया और तपस्विनियों की तरह कुँअर आनन्दसिंह के नाम की माला जपती हुई दिन बिताने लगी। बहुत सी जरूरी चीजों के अतिरिक्त ऐयारी के सामान से भरा हुआ एक बाँस का पेटारा शेरसिंह का रक्खा हुआ उस तहखाने में मौजूद था जो कामिनी के हाथ लगा। यद्यपि कामिनी कुछ ऐयारी भी जानती थी परन्तु इस समय उसे एयारी के सामान की विशेषजरूरत न थी हाँ शेरसिंह की जायदाद में से एक कुप्पी तेल की कामिनी ने बेशक खर्च की क्योंकि चिराग जलाने की नित्य ही आवश्यकता पड़ती थी।

कमला और शेरसिंह से मिलने की उम्मीद में कामिनी ने उस तहखाने में रहना स्वीकार किया परन्तु कई दिन बीत जाने पर भी किसी से मुलाकात न हुई। एक दिन सूरत बदल कर कामिनी तहखाने से निकली और खडहर के बाहर हो सोचने लगी कि किधर जाय और क्या करे। एकाएक कई आदमियों के बातचीत की आवाज उसके कानों में पड़ी और मालूम हुआ कि वे लोग आपस में बातचीत करते हुए इसी खडहर की तरफ आ रहे हैं। थोडी ही देर में चार आदमी भी दिखाई पडे। उस समय कामिनी अपने को बचाने के लिये खडहर के अन्दर घुस गई और राह देखने लगी कि वे लोग आगे बढ़ जाय तो फिर निकलूँ मगर ऐसा न हुआ क्योंकि बात की बात में वे चारों आदमी एक लाश उठाए हुए इसी खडहर के अन्दर आ पहुँचे।

इस खडहर में अभी तक कई कोठरिया मौजूद थीं। यद्यपि अवस्था बहुत ही खराब थी किवाड के पल्ले तक उनमें न थे जगह जगह पर कंकड पत्थर कतवार के ढेर लगे हुए थे परन्तु मसाले की मजबूती पर ध्यान दे आँधी पानी अथवा तूफान में भी बहुत आदमी उन कोठरियों में रह कर अपनी जान की हिफाजत कर सकते थे। खडहर के चारों तरफ की दीवार यद्यपि कहीं कहीं से टूटी हुई थी तथापि बहुत ही मजबूत और चौडी थी। कामिनी एक कोठरी में घुस गई और छिप कर देखने लगी कि वे चारों आदमी उस खडहर में आकर क्या करते और उस लाश को कहाँ रखते हैं।

लाश उठाये हुए चारों आदमी इस खडहर में जाकर इस तरह घूमने लगे जैसे हर एक कोठरी दालान बल्कि यहा की बित्ता बित्ता भर जमीन उन लोगों की देखी हुई हो। चूने पत्थर के ढेरों में घूमते और रास्ता निकालते हुए वे लोग एक कोठरी के अन्दर घुस गए जो उस खडहर भर में सब कोठरियों से छोटी थी और दो घण्टे तक बाहर न निकले इसके बाद जब वे लोग बाहर आये तो खाली हाथ थे अर्थात् लाश न थी शायद उस कोठरी में गाड या रख आये हों।

जब वे आदमी खडहर से बाहर हो मैदान की तरफ चले गये बल्कि बहुत दूर निकल गये तब कामिनी भी कोठरी में से निकली और चारों तरफ देखने लगी। उसे आज तक यही विश्वास था कि इस खडहर का हाल शेरसिंह कमला मेरे और उस लम्बे आदमी के सिवाय जो शेरसिंह से मिलने के लिए यहाँ आया था किसी पाँचवें को मालूम नहीं है मगर आज की कैफियत देखकर उसका खयाल बदल गया और वह तरह तरह के सोच विचार में पड़ गई। थोडी देर बाद वह उसी कोठरी की तरफ बढी जिसमें वे लोग लाश छोड गये थे मगर उस कोठरी में एसा अधकार था कि अन्दर जाने का साहस न पडा।

आखिर अपने तहखाने में गई और शेरसिंह के पेटारे में से एक मोमबत्ती निकाल कर और बाल कर बाहर निकली। पहिले उसने रोशनी के आगे हाथ की आड देकर चारों तरफ देखा और फिर उस कोठरी की तरफ रवाना हुई। जब कोठरी के दरवाजे पर पहुँची तो उसकी निगाह एक आदमी पर पडी जिसे देखते ही चौंकी और डर कर दो कदम पीछे हट गई मगर उसकी होशियार आखों ने तुरन्त पहिचान लिया कि वह आदमी असल में मुर्दे से भी बढ कर है अर्थात पत्थर की एक खडी मूरत है जो सामने की दीवार केसाथ चिपकी हुई है। आज के पहिले इस कोठरी के अन्दर कामिनी नहीं आई थी इसलिए वह हर एक तरफ अच्छी तरह गौर से देखने लगी परन्तु उसे इस बात का खटका बराबर लगा रहा कि कहीं वे चारों आदमी फिर न आ जाय।

कामिनी को उम्मीद थी कि इस कोठरी के अन्दर वह लाश दिखाई देगी। जिसे चारों आदमी उठा कर लाये थे मगर कोई लाश दिखाई न पडी आखिर उसने खयाल किया कि शायद वे लोग लाश की जगह मूरत को लाये हों जो सामने दीवार के साथ खडी है। कामिनी उस कोठरी के अन्दर घुस कर मूरत के पास जा खडी हुई और उसे अच्छी तरह देखने लगी। उसे बडा ताज्जुब हुआ जब उसने अच्छी तरह जाच करने पर निश्चय कर लिया कि वह मूरत दीवार के साथ है अर्थात इस तरह पर जडी हुई है कि बिना टुकड़े टुकडे हुए किसी तरह दीवार से अलग नहीं हो सकती। कामिनी की चिन्ता और बढ गई अब उसे इसमें किसी तरह का शक न रहा कि वे चारों आदमी जरूर किसी की लाश को उठा लाए थे इस मूरत को नही मगर वो लाश गई कहाँ? क्या जमीन खा गई या किसी चूने के ढेर के नीचे दबा दी गई। नहीं मिट्टी या चूने के नीचे लाश दाबी नहीं गई। अगर ऐसा होता तो जरूर देखने में आता उन लोगों ने जो कुछ भी किया इसी कोठरी के अन्दर ही किया।

कामिनी उस मूरत के पास खडी देर तक सोचती रही आखिर वहाँ से लौटी और धीरे धीरे अपने तहखाने में आकर बैठ गई वहाँ एक ताक (आले) पर चिराग जल रहा था इसलिए मोमबत्ती बुझा कर बिछौने पर जा लेटी और फिर सोचने लगी।

इसमें कोई शक नहीं कि वे लोग कोई लाश उठा कर लाए थे मगर वह लाश कहाँ गई। खैर इससे कोई मतलब नहीं मगर अब यहाँ रहना भी कठिन हो गया क्योंकि यहाँ कई आदमियों की आमदरफ्त शुरू हो गई शायद कोई मुझे देखले तो मुश्किल होगी अब होशियार हो जाना चाहिए क्योंकि मुझे बहुत कुछ काम करना है। कमला या शेरसिंह भी अभी तक न आए अब उनसे भी मुलाकात होने की कोई उम्मीद न रही अच्छा दो तीन दिन और रहकर देखना चाहिए वे लोग फिर आते हैं या नहीं।

कामिनी इन सब बातों को सोच ही रही थी कि एक आवाज उसके कान में आई। उसे मालूम हुआ कि किसी औरत ने दर्दनाक आवाज में ये कहा क्या दुःख ही भोगने के लिए मेरा जन्म हुआ था। यह आवाज ऐसी दर्दनाक थी कि कामिनी का कलेजा कॉप गया। इस छोटी ही उम्र में वह भी बहुत तरह के दुःख भोग चुकी थी और उसका कलेजा जख्मी हो चुका था इसलिए बर्दास्त न कर सकी ऑखें भर आई और आसू की बुन्दे टपाटप गिरने लगी। फिर आवाज आई 'हाय मौत को भी मौत आ गई। अबकी दफे कामिनी बेतरह चौंकी और यकायक बोल उठी इस आवाज को तो मैं पहचानती हूँ, जरूर उसी की आवाज है।

कामिनी उठ खडी हुई और सोचने लगी कि यह आवाज किधर से आई? बन्द कोठरी में आवाज आना असम्भव है कहीं खिडकी सूराख या दीवार में दरार हुए बिना आवाज किसी तरह नहीं आ सकती। वह कोठरी में हर तरफ घूमने और देखने लगी। यकायक उसकी निगाह एक तरफ की दीवार के उसी हिस्से पर जा पडी और वहाँ एक सूराख जिसमें आदमी का हाथ बखूबी जा सकता था दिखाई पडा। कामिनी ने सोचा कि बेशक इसी सूराख में से आवाज आई है। वह सूराक की तरफ देखने लगी फिर आवाज आई– हाय न मालूम मैंने किसी का क्या बिगाडा है।

अब कामिनी का विश्वास हो गया कि यह आवाज उसी सूराख में से आई है। वह बहुत ही बेचैन हुई और धीरे धीरे कहने लगी बेशक यह उसी की आवाज है। हाय मेरी प्यारी बहिन किशोरी मैं तुझे क्योंकर देखूँ और किस तरह मदद करूँ? इस कोठरी के बगल में जरूर कोई दूसरी कोठरी है जिसमें तू कैद है मगर न मालूम उसका रास्ता किधर से है? मैं क्याकर तुझ तक पहुँचूँ और इस आफत से तुझे छुडाऊँ इस कोठरी की कम्बख्त संगीन दीवार भी ऐसी मजबूत है कि मेरे उद्योग से सेंध भी नहीं लग सकती। हाय अब मैं क्या करूँ? भला पुकार के देखूँ तो सही कि आवाज भी उसके कानों तक पहुँचती है या नहीं?

कामिनी ने मोखे (सूराख) की तरफ मुँह करके कहा क्या मेरी प्यारी बहिन किशोरी की आवाज आ रही है?'

जवाब–हाँ, क्या तू कामिनी है? बहिन कामिनी क्या तू भी मेरी ही तरह इस मकान में कैद है?

कामिनी–नहीं बहिन मैं कैद नहीं हूँ, मगर

कामिनी और कहना ही चाहती थी कि धमधमाहट की आवाज सुनकर रुक गई और डर कर सीढ़ी की तरफ देखने लगी। उसे मालूम हुआ कि कोई यहाँ आ रहा है।

नौवॉ बयान

गिल्लन का साथ लिए हुए वीवी गौहर राहतासगढ किले के अन्दर जा पहुँची। किले के अन्दर जाने मे किसी तरह का जाल फैलाना न पडा और न किसी तरह की कठिनाई हुई। वह वेधडक किले के उस फाटक पर चली आई जा शिवालय के पीछे की तरफ था और छोटी खिड़की के पास खडी होकर खिड़की (छोटा दरवाजा) खोलने के लिए दर्वान को पुकारा जब दर्वान ने पूछा 'तू कौन है ?' तो उसने जवाव दिया कि मै शेरअलीखॉ की लडकी गौहर हूँ।

उन दिनों शेरअलीखॉ नामी पटने का सूबदार था। वह शख्स वडा ही दिलर जवामर्द आर वुद्धिमान था साथ ही इसके दगावाज भी कुछ कुछ था मगर इसे वह राजनीति का एक अग मानता था। उसके इलाके भर में जा कुछ उसका राआव था इस कहॉ तक कहा जाय दूर दूर तक के आदमी उसका नाम सुनकर काप जाते थे। उसके पास फौज ता केवल पाच ही हजार थी मगर वह उससे पचीस हजार फौज का काम लता था क्योंकि उसन अपन ढग क आदमी चुन कर अपनी फौज मे भरती किए थ। गोहर उसी शेरअलीखा की लडकी थी और वह गोहर की मौसेरी वहन थी जो चुनारगढ के पास वाल जगल में माधवी क हाथ स मारी गई थी।

शेरअलीखा अपनी जारू को वहुत चाहता था और उसी तरह अपनी लड़की गौहर को भी हद्द स ज्यादा प्यार करता था। गोहर का दस वर्ष की छोड कर उसकी मा मर गई थी। मॉ के गम म गौहर दीवानी सी हो गई। लाचार दिल वहलाने क लिए शरअलीखॉ ने गोहर का आजाद कर दिया और वह थाड से आदमियों को साथ लकर दूर दूर तक सैर करती फिरती थी। पॉच वप तक वह इसी अवस्था में रही इसी वीच म आजादी मिलन के कारण उसकी चालचलन में भी काफी फर्क पड़ गया था। इस समय गौहर की उम्र पन्द्रह वप की है। शेरअलीखॉ दिग्विजयसिह का दिली दास्त था और दिग्विजयसिह भी उसका भरोसा वहुत रखता था।

गोहर का नाम सुनत ही दर्वान चौका और उसने उस अफसर का इत्तिला दी जो कई सिपाहियों को साथ लकर फाटक की हिफाजत पर मुस्तैद था। अफसर तुरन्त फाटक पर आया और उसने पुकार कर पूछा आप कौन है ?

गौहर—मै शरअलीखॉ की लडकी गोहर हूँ।

अफसर—इस समय आपको सकत वताना चाहिए।

गौहर—हा वताती हूँ — जोगिया।

जागिया सुनत ही अफसर ने दर्वाजा खालने का हुक्म दिया आर गिल्लन का साथ लिए हुए गौहर किले के अन्दर पहुँच गई। मगर गोहर विल्कुल नहीं जानती थी कि थोडी ही दूर पर एक लम्वे कद का आदमी दीवार के साथ चिपका खडा ह और उसकी वातें जा दर्वान क साथ हो रही थी सुन रहा है।

जव गौहर किले क अन्दर चली गई उसक आधे घण्टे वाद एक लम्व कद का आदमी जिसे अव भूतनाथ कहना उचित है उसी फाटक पर पहुचा और दर्वाजा खोलन के लिए उसन दर्वान को पुकारा।

दर्वान—तुम कौन हा ?

भूत—मै शरअलीखॉ का जासूस हूँ।

दर्वान—सकत वताओ।

भूत— जोगिया।

दवाजा तुरन्त खोल दिया गया और भूतनाथ भी किले के अन्दर जा पहुँचा। गौहर वही परिचय देती हुई राजमहल तक चली गई। जव उसके आने की खवर राजा दिग्विजयसिह को दी गई उस समय रात वहुत कम वाकी थी और दिग्विजयसिह मसहरी पर बैठा हुआ राजकीय विषयों में तरह तरह की वातें सोच रहा था। गौहर के आन की खवर सुनते ही दिग्विजयसिह ताज्जुव में आकर उठ खडा हुआ उसे अन्दर आन की आज्ञा दी वल्कि खुद भी दर्वाजे तक इस्तकवाल के लिए आया और वडी खातिरदारी से उसे अपने कमर में ले गया। आज पॉच वर्ष वाद दिग्विजयसिह ने गौहर को देखा इस समय इसकी खूवसूरती और उठती हुई जवानी गजव करती थी। उसे देखते ही दिग्विजयसिह की तवीयत डोल गई मगर शरअलीखॉ के डर से रग न वदल सका।

दिग्विजय—इस समय आपका आना क्योंकर हुआ और यह दूसरी आपके साथ कौन है ?

गौहर—यह मेरी ऐयारा है। कई दिन हुए केवल आपसे मिलने के लिए सौ सिपाहियों को साथ लेकर मै यहॉ आ रही थी इत्तिफाक से वीरेन्द्रसिह के जालिम आदमियों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया। मेरे साथियों में से कई मारे गए और कई कैद

हो गए। मैं भी चार दिन तक कैद रही आखिर इस चालाक ऐयारा ने जो कैद होने से वच गई थी मुझे छुडाया। इस समय सिवाय इसके कि मैं इस किले में आ घुसूँ और कोई तदवीर जान बचाने की न सूझी सुना है कि वीरेन्द्रसिंह वगैरह आजकल आपके यहाँ कैद हैं।

दिग्विजय–हाँ वे लोग आज कल कैद हैं। मैंने यह खवर आपके पिता को भी लिखी है।

गौहर–हाँ मुझे पता है। वे भी आपकी मदद को आने वाले है उनका इरादा है कि वीरेन्द्रसिंह के लश्कर पर जो इस पहाडी क नीचे है छापा मारें।

दिग्विजय–हाँ मुझे ता एक उन्हीं का भरोसा है।

यद्यपि शेरअलीखाँ के डर स दिग्विजयसिंह गौहर के साथ अदव का वर्ताव करता रहा मगर कम्वख्त गौहर को यह मजूर न था। उसने यहाँ तक हावभाव और चुलवुलापन दिखाया कि दिग्विजयसिंह की नीयत वदल गई और वह एकान्त खोजन लगा।

गौहर तीन दिन से ज्यादे अपने का न वचा सकी। इस वीच में उसने अपना मुँह काला करके दिग्विजयसिंह को कावू में कर लिया और दिग्विजयसिंह से इस वात की प्रतिज्ञा करा ली कि वीरेन्द्रसिंह वगैरह जितने आदमी यहाँ कैद है सभों का सिर काट कर किल के कँगूरों पर लटका दिया जायगा और इसका वन्दोवस्त भी होने लगा। मगर इसी वीच में भैरोसिंह रामनारायण और चुन्नीलाल ने जो किले के अन्दर पहुँच गए थे वह धूम मचाई कि लोगों की नाक में दम कर दिया और मजा तो यह कि किसी को कुछ पता न लगता था कि यह कारवाई कौन कर रहा है।

दसवॉं बयान

वीरेन्द्रसिंह के तीनों ऐयारों ने रोहतासगढ़ के किले के अन्दर पहुँचकर अन्धेर मचाना शुरू कर दिया। उन लोगों ने निश्चय कर लिया कि अगर दिग्विजयसिंह हमारे मालिकों को न छोडेगा तो ऐयारी के कायदे के बाहर काम करेंगे और रोहतासगढ का सत्यानाश करके छोडेंगे।

जिस दिन दिग्विजयसिंह की मुलाकात गौहर से हुई थी उसके दूसरे ही दिन दर्वार के समय दिग्विजयसिंह को खवर पहुँची कि शहर में कई जगह हाथ के लिखे हुए कागज दीवारों पर चिपके हुए दिखाई देते है जिनमें लिखा है – 'वीरेन्द्रसिंह के एयार लोग इस किले में आ पहुँचे। यदि दिग्विजयसिंह अपनी भलाई चाहें तो चौबीस घण्टे के अन्दर राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह को छोड दें नहीं तो देखते देखते रोहतासगढ सत्यानाश हो जायगा और यहाँ का एक आदमी जीता न बचेगा।

राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का हाल दिग्विजयसिंह अच्छी तरह जानता था। उन लोगों का मुकावला करने वाला दुनिया में कोई नहीं है। विज्ञापन का हाल सुनते ही वह कॉप गया और सोचने लगा कि अव क्या करना चाहिए। इस विज्ञापन की खवर की बात शहर भर में फैल गई मारे डर के वहाँ की रिआया का दम निकला जाता था। सब कोई अपने राजा दिग्विजयसिंह की शिकायत करते थे कि कम्बख्त ने बेफायदे राजा बीरेन्द्रसिंह से बैर बाढ़कर हम लोगों की जान ली

तीनों एयारों ने तीन काम बॉट लिए। रामनारायण ने इस वात का जिम्मा लिया कि किसी लोहार के यहाँ चोरी करके वहुत सी कीलें इकटठी करेंगे और रोहतासगढ में जितनी तोपें है सभों में कील ठोंक देंगे * चुन्नीलाल ने वादा किया कि तीन दिन के अन्दर रामानन्द ऐयार का सिर काट शहर के चौमुहाने पर रक्खेंगे और भैरोसिंह ने तो रोहतासगढ़ ही को चौपट करने का प्रण किया था।

हम ऊपर लिख आए हैं कि जिस समय कुन्दन (धनपति) ने तहखाने में से किशोरी को निकाल ले जाने का इरादा किया था तो वारह नम्बर की कोठरी में पहुँचने के पहले तहखाने के दर्वाजे में ताला लगा दिया था मगर राहतासगढ दखल होने के वाद तहखाने वाली किताव की मदद से जो दारोगा के पास रहा करती थी वे दरवाजे पुन खोल लिए गये थे और इसलिए दीवानखाने की राह से तहखाने में फिर आमदरफ्त शुरू हो गई थी।

*तोप में रञ्जक देने की प्याली होती है, उसके छेद में कील ठोंक देने से तोप वेकाम हो जाती है।

एक दिन आधी रात के बाद राजा दिग्विजयसिह के पलग पर बैठी हुई गौहर ने इच्छा प्रकट की कि मै तहखाने में चल कर बीरेन्द्रसिह वगैरह को देखा चाहती हूँ। राजा दिग्विजयसिह उनकी मुहब्बत में चूर हो रहे थे दीनदुनिया की खबर भूले हुए थे तहखाने के कायदे पर ध्यान न देकर गौहर को तहखाने में ले चले।

अभी पहिला दर्वाजा भी खोला न था कि यकायक भयानक आवाज आई। मालूम हुआ कि मानों हजारों तोपें एक साथ छूटी हैं तमाम किला हिल उठा गौहर बदहवास होकर जमीन पर गिर पडी दिग्विजयसिह भी खडा न रह सका।

जब दिग्विजयसिह को होश आया छत पर चढ गया और शहर की तरफ देखने लगा। शहर में बेहिसाब आग लगी हुइ थी सैकडों घर जल रहे थे अग्निदेव ने अपना पूरा दखल जमा लिया था आग के बडे बडे शोले आसमान की तरफ उठ रह थे। यह हाल देखते ही दिग्विजयसिह ने सर पीटा और कहा यह सब फसाद बीरेन्द्रसिह के ऐयारों का है। बेशक उन लोगों ने मेगजीन में आग लगा दी और वह भयकर आवाज मेगजीन के उडने की ही थी। हाय सैकडों घर तबाह हो गये होंगे। इस समय वह कम्बख्त साधू अगर मेरे सामने होता तो मै उसकी दाढी नोंच लेता जिसके बहकाने से बीरेन्द्रसिह वगैरह का कैद किया।

दिग्विजयसिह घबडा कर राजमहल के बाहर निकला और तब उसे निश्चय हो गया कि जो कुछ उसने सोचा था ठीक है। नौकरों ने खबर दी कि न मालूम किसने मेगजीन में आग लगा दी जिसके सबब से सैकडों घर तबाह हो गए उसी समय शहर में आग लग गई जो अभी तक बुझाए नहीं बुझती। इस खबर के सुनते ही दिग्विजयसिह अपने कमरे में लौट गया और बदहवास होकर गद्दी पर गिर पडा।

बेशक यह सब काम बीरेन्द्रसिह के ऐयारों का था। इस आगलगी में रामनारायण को भी तोपों में कीलें ठोंकने का खूब मौका हाथ लगा। रामानन्द दीवान घबडा कर घर के बाहर निकला और तहकीकात करने के लिए अकेला की शहर की तरफ चला। रास्ते में चुन्नीलाल ने हाथ पकड लिया और कहा "दीवानजी बन्दगी!" बेमौके की बन्दगी से रामानन्द कुढ उठा और उसने चुन्नीलाल पर तलवार चलाई। चुन्नीलाल उछल कर दूर जा खडा हुआ और उस वार को बचा गया मगर चुन्नीलाल के वार ने रामानन्द का काम तमाम कर दिया उसकी भुजाली रामानन्द की गर्दन पर ऐसी बैठी कि सर कट कर दूर जा गिरा।

अब हमको यह भी लिखना चाहिए कि भैरोसिह ने किस तरह मेगजीन में आग लगाई। भैरोसिह ने एक मोमबती एसा तैयार की जो कवल दो घण्ट तक जल सकती थी अर्थात् उसमें दो घण्टे से ज्यादे देर तक जलने लायक मोम न था और उस मोमबती के बीचोबीच में आतिशबाजी का एक अनार बनाया जिनमें आधी मोमबती जब जल जाय तो आप से आप अनार में आग लगे। जब इस तरह की मोमबत्ती तैयार हो गई तो उसने अपने दोनों साथियों से कहा कि मैं मेगजीन में आग लगाने जाता हूँ, अपनी फिक्र आप कर लूँगा। तुम लोग किसी ऐसी जगह जाकर छिपो जहाँ मैदान या किले की मजबूत दीवार हो मगर इसके पहिले शहर में आग लगा दो इसके बाद भैरोसिह मेगजीन के पास पहुँचे और इस फिक्र में लगे कि मौका मिले तो कमन्द लगा कर उसके अन्दर जाय।

यह इमारत बहुत बडी तो न थी मगर मजबूत थी दीवार बहुत चौडी और ऊँची थी फाटक बहुत बडा और लोहे का था पहरे पर पचास आदमी नगी तलवार लिए हर वक्त मुस्तैद रहते थे। इस मेगजीन के चारों तरफ से कोई आदमी आग लेकर जाने नही पाता था।

चन्द्रमा अस्त हो गया और पिछली रात की अन्धेरी चारों तरफ फैल गई निद्रादेवी की हुकूमत में सभी पडे हुए थे यहाँ तक कि पहरे वालों की ऑखे भी झिपी पडती थीं उस समय मौका पाकर भैरोसिह ने मेगजीन के पिछली तरफ कमन्द लगाइ। दीवार के ऊपर चढ जाने बाद कमन्द खैंच ली और फिर उसी के सहारे उतर गए। मेगजीन के अन्दर हजारों थैले बारूद के गजे हुए पडे थे तोप के गोलों का ढर लगा हुआ था बहुत सी तोपें भी पडी हुई थीं। भैरोसिह ने वह मोमबत्ती जलाई और बारूद के थैलों के पास जमीन पर लगा कर खडी कर दी इसके बाद फुर्ती से मेगजीन के बाहर हो गए और जहाँ तक दूर निकल जाते बना निकल गए। उसी के घण्टे भर बाद (जब मोमबत्ती का अनार छूटा होगा) बारूद में आग लगी और मेगजीन की इमारत जड बुनियाद से सत्यानाश हो गई हजारों आदमी मरे और सैकडों मकान गिर पडे बल्कि यों कहना चाहिए कि उसकी आवाज से रोहतासगढ का किला दहल उठा जरूर कई कोस तक इसकी भयानक आवाज गई होगी। पहाडी के नीचे बीरेन्द्रसिह के लश्कर में जब यह आवाज पहुँची तो दोनों सेनापति समझ गए कि मेगजीन में आग लगी क्योंकि ऐसी भयानक आवाज सिवाय मेगजीन उडने के और किसी तरह की नहीं हो सकती बेशक यह काम भैरोसिह का है।

मेगजीन उडने का निश्चय होते ही दोनों सेनापति बहुत प्रसन्न हुए और समझ गए कि अब रोहतासगढ़ का किला फतह कर लिया क्योंकि जब बारूद का खजाना ही उड गया तो किले वाले तोपों के जरिये से हमें क्योंकर रोक सकते है।

दोनों सनापतियों न यह सोच कर कि अव विलम्ब करना मुनासिब नहीं है किले पर चढाई कर दी और दो हजार आदमियों को साथ ले नाहरसिह पहाड पर चढने लगा। यद्यपि दोनों सेनापति इस बात को समझते थे कि मेगजीन उड गई है तो भी कुछ तापखाने में जरूर होगी मगर यह खयाल उनके बढे हुए हौसल को किसी तरह रोक न सका।

इधर दिग्विजयसिह अपनी जिन्दगी से बिल्कुल नाउम्मीद हो बेठा। जब उसे यह खबर पहुँची कि रामानन्द दीवान या ऐयार भी मारा गया और बहुत सी तोपें भी कील ठुक जाने के कारण बर्वाद हो गई तब वह और बेचैन हो गया और मालूम होन लगा कि मौत नगी तलवार लिए सामने खडी है। वह पहर दिन चढे तक पागलों की तरह चारों तरफ दौडता रहा और तब एकान्त में बैठ कर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए। जब उस जान बचाने की तरकीब ना सझी और यह निश्चय हो गया कि अब रोहतासगढ़ का किला किसी तरह नहीं रह सकता और दुश्मन लोग भी मुझे किसी तरह जीता नहीं छाड सकते तब वह हाथ में नगी तलवार लकर उठा और तहखाने की ताली निकाल कर यह कहता हुआ तहखाने की तरफ चला कि 'जब मेरी जान बच ही नहीं सकती तो बीरेन्द्रसिंह और उनके लडके वगैरह को क्यों जीता छाडूँ? आज मै अपने हाथ से उन लोगों का सिर काटूँगा।

दिग्विजयसिह हाथ में नगी तलवार लिए हुए अकेला ही तहखाने में गया मगर जब उस दालान में पहुँचा जिसमें हथकडियों और बेडियों से कसे हुए वीरन्दसिह बगैरह रक्खे गये थे तो उसको खाली पाया। वह ताज्जुब में आकर चारों तरफ दखने और साचने लगा कि क़ैदी लोग कहाँ गायब हो गए। मालूम होता है कि यहाँ भी ऐयार लोग आ पहुँचे मगर दखना चाहिए कि किस राह से पहुँच?

दिग्विजयसिह उस सुरग में गया जा कब्रिस्तान की तरफ निकल गई थी वहाँ का दर्वाजा उसी तरह बन्द पाया जैसा उसने अपने हाथ से बन्द किया था। आखिर लाचार सिर पीटता हुआ लौट आया और दीवानखाने में बदहवास हाकर गद्दी पर गिर पडा।

ग्यारहवाँ बयान

इस जगह मुख्तसर ही में यह भी लिख देना मुनासिब होता है कि रोहतासगढ तहखाने में से राजा बीरेन्द्रसिह कुँअर आनन्दसिह और उनके ऐयार लोग क्योंकर छूटे और कहाँ गए।

हम ऊपर लिख आए है कि जिस समय गौहर जोगिया का सकेत देकर रोहतासगढ किले में दाखिल हुई उसके थोडी ही देर बाद एक लम्बे कद का आदमी भी जो असल में भूतनाथ था 'जोगिया सकेत देकर किले के अन्दर चला गया। न मालूम उसने वहाँ क्या क्या कार्यवाई की मगर जिस समय मेगजीन उडाई गई थी उस समय वह एक चोबदार की सूरत बना राजमहल के आसपास घूम रहा था। जब राजा दिग्विजयसिह घबडा कर महल के बाहर निकला था और चारों तरफ कोलाहल मचा हुआ था वह इस तरह महल के अन्दर घुस गया कि किसी को गुमान भी न हुआ। इसके पास ठीक वैसी ही ताली मौजूद थी जैसी तहखाने की ताली राजा दिग्विजयसिह के पास थी। भूतनाथ जल्दी जल्दी उस घर में पहुँचा जिसमें तहखाने क अन्दर जाने का रास्ता था। उसने तुरन्त दर्वाजा खोला और अन्दर जाकर उसी ताली से फिर बन्द कर दिया। उस दर्वाजे में एक ही ताली बाहर भीतर दोनों तरफ से लगती थी। कई दर्वाजों को खोलता हुआ वह उस दालान में पहुँचा जिसमें वीरेन्द्रसिह वगैरह कैद थे और राजा वीरेन्द्रसिह के सामने हाथ जोड कर खडा हो गया। राजा वीरेन्द्रसिंह उस समय बडी चिन्ता में थे। मेगजीन उडने की आवाज उनके कान तक भी पहुँची थी वल्कि मालूम हुआ कि उस आवाज के सदमे से समूचा तहखाना हिल गया। वे भी यही साच रहे थे कि शायद हमारे ऐयार लोग किले के अन्दर पहुँच गए। जिस समय भूतनाथ हाथ जोड़कर उनके सामने जा खडा हुआ वे चौंके और भूतनाथ की तरफ देख कर बोले 'तू कौन है और यहाँ क्यों आया?'

भूत–यद्यपि मै इस समय एक चोबदार की सूरत में हूँ मगर मैं हूँ कोइ दूसरा ही मेरा नाम भूतनाथ है मै आप लोगों को इस कैद से छुडाने आया हूँ और इसका इनाम पहिले ही ले लिया चाहता हूँ।

वीरेन्द–(ताज्जुब में आकर) इस समय मेरे पास क्या है जो मै इनाम में दूँ?

भूत–जो मैं चाहता हूँ वह इस समय भी आपके पास मौजूद है।

वीरेन्द्र–यदि मेरे पास मौजूद है तो मै देन के लिए तैयार हूँ, माँग क्या माँगता है।

भूत–वस मै यही माँगता हूँ कि आप मेरा कसूर माफ कर दें और कुछ नहीं चाहता।

वीरेन्द्र–मगर मै कुछ नहीं जानता कि तू कौन है और तूने क्या अपराध किया है जिसे मैं माफ कर दूँ।

भूत–इसका जवाब मैं इस समय नहीं दे सकता वस आप देर न करें मेरा कसूर माफ कर दें जिससे आप लोगों को यहाँ से जल्द छुडाऊँ समय बहुत कम है विलम्ब करन से पछताना पडेगा।

तेज–पहिले तुम्हें कसूर साफ साफ कह देना चाहिए।

भूत–एसा नहीं हो सकता।

भूतनाथ की बातें सुनकर सभी हैरान थे और सोचते थे कि यह विचित्र आदमी है जो जबर्दस्ती अपना कसूर माफ करा रहा है और यह भी नही कहता कि उसने क्या किया है। इसमें शक नहीं कि यदि हम लोगों को यहाँ से छुड़ा देगा तो भारी एहसान करेगा मगर इसके बदले में यह केवल इतना ही माँगता है कि इसका कसूर माफ कर दिया जाय तो यह मामला क्या है। आखिर वहुत कुछ सोच कर राजा वीरेन्द्रसिह ने भूतनाथ से कहा "खैर जो हो मैंने तेरा कसूर माफ कर दिया।

इतना सुनते ही भूतनाथ हँसा और वारह नम्बर की कोठरी के पास जाकर उसी ताली से जो उसके पास थी कोठरी का दरवाजा खोला। पाठक महाशय भूले न होंगे, उन्हें याद होगा कि इसी कोठरी में किशोरी को दिग्विजयसिह ने डाल दिया था और इसी कोठरी में से उसे कुन्दन ले भागी थी।

कोठरी का दर्वाजा खुलते ही हाथ में नेजा लिए वही राक्षसी दिखाई पड़ी जिसका हाल ऊपर लिख चुके है और जिसके सवव स कमला भैरोसिह रामनारायण और चुन्नीलाल किले के अन्दर पहुँचे थे। इस समय तहखाने में केवल एक चिराग जल रहा था जिसकी कुछ राशनी चारो तरफ फैली हुई थी मगर जव वह राक्षसी कोठरी के बाहर निकली तो उसके नेजे की चमक से तहखाने में दिन की तरह उजाला हो गया। भयानक सूरत के साथ उसके नेजे ने सभों को ताज्जुव में डाल दिया। उस औरत ने भूतनाथ से पूछा 'तुम्हारा काम हो गया? इसके जवाव में भूतनाथ ने कहा–हॉ।

उस राक्षसी ने राजा वीरेन्द्रसिह की तरफ देख कर कहा सभों को लेकर आप इस कोठरी में आवें और तहखाने के वाहर निकल चलें मैं इसी राह से आप लोगों को तहखाने से वाहर कर देती हूँ। यह वात सभी को मालूम ही थी कि इसी वारह नम्बर की कोठरी में से किशोरी गायव हो गई थी इसलिए सभों को विश्वास था कि इस कोठरी में से कोई रास्ता वाहर निकल जाने क लिए जरूर है।

सभों की हथकडी बेड़ी खोल दी गई इसके वाद सव कोई इस कोठरी में घुसे और राक्षसी की मदद से तहखाने के वाहर हो गये। जाते समय राक्षसी ने उस कोठरी को वन्द कर दिया। वाहर होते ही राक्षसी और भूतनाथ राजा वीरेन्द्रसिह वगैरह से विना कुछ कहे चले गए और जगल में घुस कर देखते ही देखते नजरों से गायव हो गए। उन दोनों के वारे में सभों का शक वना ही रहा।

बारहवां बयान

दो पहर दिन चढने क पहिल ही फौज लेकर नाहरसिह रोहतासगढ पहाडी से ऊपर चढ़ गया।उस समय दुश्मनों ने लाचार हाकर फाटक खाल दिया और लड भिड कर जान दन पर तैयार हा गय। किले की कुल फौज फाटक पर उमड आई और फाटक के वाहर मैदान में घार युद्ध हाने लगा। नाहरसिह की वहादुरी दखने योग्य थी। वह हाथ में तलवार लिए जिस तरफ निकल जाता था सफाई कर दता था। उसकी वहादुरी देखकर उसके मातहत फौज की भी हिम्मत दूनी हो गई और ककडी की तरह दुश्मनों को काटने लग। उसी समय पॉच सौ वहादुरों को साथ लिए राजा वीरेन्दसिह कुँअर आ[illegible]दसिह और तेजसिह वगैरह भी आ पहुँचे और उस फौज में मिल गये जा नाहरसिह की मातहती में लड रही थी। ये [illegible]च [illegible]ा आदमी उन्हीं की फौज क थ जा दो दो चार चार करके पहाड के ऊपर चढाये गए थे। तहखाने से वाहर निकल[illegible] पर राजा वीरेन्द्रसिह से मुलाकात हुई थी और सव एक जगह हा गय थे।

जिस समय किल वालों को यह मालूम हुआ कि राजा वीरन्दसिह वगैरह भी उस फौज में आ मिल उस समय उनकी हिम्मत विल्कुल जाती रही। विना दिल का हौसला निकाले ही उन लोगों ने हथियार रख दिए और सुलह का डका वजा दिया। पहाडी क नीच स और फौज भी पहुँच गई और रोहतासगढ म राजा वीरेन्दसिह की अमलदारी हा गई। जिस समय राजा वीरेन्दसिह दीवानखाने में पहुँचे वहॉ राजा दिग्विजयसिह की लाश पाई गई। मालूम हुआ कि उसने आत्मघात कर लिया। उसकी हालत पर राजा वीरेन्द्रसिह देर तक अफसोस करते रह।

राजा वीरन्दसिह न कुँअर आनन्दसिह को गद्दी पर वैठाया। सभों ने नजरें दीं। उसी समय कमला भी आ पहुँची। उसन किल में पहुँच कर काई एसा काम नहीं किया था जो लिखने लायक हा हॉ गिल्लन के सहित गौहर को जरूर गिरफ्तार कर लिया था। दिग्विजयसिह की रानी अपने पति के साथ सती हुई। रामानन्द की स्त्री भी अपने पति के साथ जल मरी। शहर म कुमार के नाम की मुनादी करा दी गई और यह कहला दिया गया कि जा रोहतासगढ से निकल

जाना चाहे वह खुशी से चला जाय। दिग्विजयसिह के मरने से जिसे कष्ट हुआ हो वह यदि हमारे भरोसे पर यहॉ रहेगा तो उसे किसी तरह का दु ख न होगा हर एक की मदद की जायगी और जो जिस लायक है उसकी खातिर की जायगी। इन सब कामों क बाद राजा वीरेन्द्रसिह ने कुल हाल की चीठी लिख कर अपने पिता के पास रवाना की।

दूसरे दिन राजा बीरेन्द्रसिह ने एकान्त में कमला को बुलाया। उस समय उनके पास कुँअर आनन्दसिह तेजसिह भैरासिह तारासिह वगैरह ऐयार लोग ही बैठे थे अर्थात सिवाय आपुस वालों के बाहरी आदमी कोई भी न था। राजा बीरेन्द्रसिह ने कमला स पूछा कमला तू इतने दिनों तक कहॉ रही तेरे ऊपर क्या क्या मुसीबतें आई और तू किशोरी का क्या क्या हाल जानती है सो मै सुना चाहता हूँ।

कमला–(हाथ जोड कर) जो कुछ मुसीबतें मुझ पर आई और जो कुछ किशोरी का हाल मैं जानती हूँ सब अर्ज करती हूँ। अपनी प्यारी किशारी से छूटने के बाद मैं बहुत ही परेशान हुई। अग्निदत्त की लडकी कामिनी ने जब किशोरी का अपने बाप के पजे से छुडाया और खुद भी निकल खडी हुई तो पुन मैं उन लोगों से जा मिली और बहुत दिनों तक गयाजी में रही और वहीं बहुत सी विचित्र बातें हुई।

वीरेन्द–हॉ गयाजी का बहुत कुछ हाल तुम लोगों के बारे में दवीसिह की जुबानी मुझे मालूम हुआ था और यह भी जाना गया था कि जिन दिनों इन्द्रजीत बीमार था उसके कमरे में जो जो अद्भुत बातें देखने सुनने में आई वह सब कामिनी की ही कार्रवाई थी मगर उनमें से कई बातों का भेद अभी तक मालूम नहीं हुआ।

कमला–वह क्या ?

बीरेन्द–एक तो यह कि तुम लाग उस कोठरी में किस रास्ते से आती जाती थी दूसरे लडाई किससे हुई थी वह कटा हाथ जो काठरी में पाया गया था किसका था और बिना सिर की लाश किसकी थी ?

कमला–वह भेद भी मैं आपसे कहती हूँ। गयाजी में फलगू नदी के किनारे एक मन्दिर श्री राधाकृष्ण जी का है। उसी मन्दिर म स एक रास्ता महल में जाने का है जो उस कोठरी में निकला है जिसका हाल माधवी अग्निदत्त और कामिनी के सिवाय किसी को मालूम नहीं कामिनी की बदौलत मुझे और किशोरी को मालूम हुआ। उसी रास्ते से हम लोग आते जाते थे। वह रास्ता बडा ही विचित्र है उसका हाल मै जुबानी नहीं समझा सकती गयाजी चलने बाद जब मौका मिलेगा तो ले चल कर उसे दिखाऊँगी। हम लोगों का उस मकान में आना जाना नेकनीयती के साथ होता था मगर जब माधवी गयाजी में पहुँची तो बदला लेने की नीयत से एक आदमी और अपनी ऐयारा को साथ ले उसी राह से महल की तरफ रवाना हुई। उसे उस समय तक शायद हम लागों का हाल मालूम न था। इत्तिफाक से हम तीनों आदमी भी उसी समय सुरग में घुसे आखिर नतीजा यह हुआ कि उस कोठरी में पहुँच कर लडाई हो गई माधवी के साथ का आदमी मारा गया। वह कलाई माधवी की थी और मेरे हाथ से कटी थी। अन्त में उसकी ऐयारा उस आदमी का सर और माधवी को लेकर चली गई हम लोगों ने उस समय रोकना मुनासिब न समझा।

वीरेन्द–हॉ ठीक है एसा ही हुआ है यह हाल मुझे मालूम था मगर शक मिटाने के लिए तुमसे पूछा था।

कमला–(ताज्जुब में आकर) आपको कैसे मालूम हुआ ?

बीरेन्द–मुझसे देवीसिह ने कहा था और देवीसिह को उस साधु ने कहा था जो रामशिला पहाडी के सामने फलगू नदी के बीच वाले भयानक टीले पर रहता था। देवीसिह की जुबानी बाबाजी ने मुझे एक सन्देशा भी कहला भेजा था मौका मिलने पर मै जरुर उनके हुक्म की तामील करूँगा।

कमला–वह सन्देशा क्या था ?

वीरेन्द–सो इस समय न कहूँगा। हॉ यह तो बता कि कामिनी का और उन डाकुओं का साथ क्योंकर हुआ जो गयाजी की रिआया को दु ख देते थे।

, **कमला**–कामिनी का उन डाकुओं से मिलना केवल उन लोगों को धोखा देने के लिए था। वे डाकू सब अग्निदत्त की तरफ से तनख्वाह और लूट के माल में कुछ हिस्सा भी पाते थे। वे लोग कामिनी को पहिचानते थे और उनकी इज्जत करते थे। उस समय उन लोगों को यह नहीं मालूम था कि कामिनी अपन बाप से रज होकर घर से निकली है इसलिए उससे डरते थे और जो वह कहती थी करते थे। आखिर कामिनी ने धोखा देकर उन लोगों को मरवा डाला और मेरे ही हाथ स उन डाकुओं की जानें गईं। वे डाकू लोग जहॉ रहते थे आपको मालूम हुआ ही होगा।

वीरेन्द–हॉ मालूम हुआ है जो कुछ मेरा शक था मिट गया अब उस विषय में विशेष कुछ मालूम करने की कोई जरूरत नहीं है। अब मैं यह पूछता हूँ कि इस रोहतासगढ वाले आदमी जब किशोरी को ले भागे तब तेरा और कामिनी का क्या हाल हुआ ?

कमला–कामिनी को साथ लेकर मैं उस खडहर से जिसमें नाहरसिंह से और कुँअर इन्द्रजीतसिंह से लडाई हुई थी बाहर निकली और किशोरी को छुडाने की धुन में रवाना हुई मगर कुछ कर न सकी बल्कि यों कहना चाहिए कि अभी तक मारी फिरती हूँ। यद्यपि इस रोहतासगढ के महल तक पहुँच चुकी थी मगर मेरे हाथ से कोई काम न निकला।

वीरेन्द–खैर कोई हर्ज नहीं अच्छा यह बता कि अब कामिनी कहाँ है ?

कमला–कामिनी को मेरे चाचा शेरसिंह ने अपने एक दोस्त के घर में रक्खा है मगर मुझे यह नहीं मालूम कि वह कौन है और कहाँ रहता है।

वीरेन्द–शेरसिंह से कामिनी क्योंकर मिली ?

कमला–यहाँ से थोडी ही दूर पर एक खडहर है। शेरसिंह से मिलने के लिए कामिनी को साथ लेकर मैं उसी खडहर में गई थी। मगर अब सुनने में आया है कि शेरसिंह ने आपकी तावेदारी कबूल कर ली और आपने उन्हें कहीं भेजा है।

वीरेन्द–हाँ वह देवीसिंह को साथ लेकर इन्द्रजीत को छुडाने के लिए गये हैं मगर न मालूम क्या हुआ कि अभी तक नहीं लौटे।

कमला–कुँअर इन्द्रजीतसिंह तो यहाँ से दूर न थे और चाचा को वह जगह मालूम थी अब तक उन्हें लौट आना चाहिए था।

वीरेन्द–क्या तुझे भी यह जगह मालूम है ?

कमला–जी हाँ यहाँ से शायद पच्चीस या तीस कोस से ज्यादे दूर न होगा। एक छोटा सा तालाब है जिसके बीच में एक खूबसूरत मकान बना हुआ है कुमार उसी में हैं।

वीरेन्द–क्या तू वहाँ तक मुझे ले जा सकती है ?

कमला–जी हाँ आप जब चाहें चलें मुझे रास्ता बखूबी मालूम है।

इस समय कुँअर आनन्दसिंह न जो सिर झुकाए सब बातें सुन रहे थे अपने पिता की तरफ देखा और कहा यदि आज्ञा हो तो मैं कमला के साथ भाई की खोज में जाऊँ ? इसके जवाब में राजा इन्द्रजीतसिंह ने सिर हिलाया अर्थात् उनकी अर्जी नामजूर कर दी।

राजा वीरेन्द्रसिंह और कमला में जो कुछ बातें हो रही थीं सब कोई गौर से सुन रहे थे। यह कहना जरा मुश्किल है कि उस समय कुँअर आनन्दसिंह की क्या दशा थी। कामिनी के वे सच्चे आशिक थे मगर वाह रे दिल इस इश्क को उन्होंने जैसा छिपाया उन्हीं का काम था। इस समय वे कमला की बातें बडे गौर से सुन रहे थे। उन्हें निश्चय था कि जिस जगह शेरसिंह ने कामिनी को रक्खा है वह जगह कमला को मालूम है मगर किसी कारण से बताती नहीं इसलिए कमला के साथ भाई की खोज में जाने के लिए पिता से आज्ञा माँगी। इसके सिवाय कामिनी के विषय में और भी बहुत सी बातें कमला से पूछा चाहते थे मगर क्या करें लाचार कि उनकी अर्जी नामजूर की गई और वे कलेजा मसोस कर रह गए

इसके बाद आनन्दसिंह फिर अपने पिता के सामने गए और हाथ जोड कर बोले "मैं एक बात और अर्ज किया चाहता हूँ।

वीरेन्द–वह क्या ?

आनन्द–इस रोहतासगढ की गद्दी पर मैं बैठाया गया हूँ परन्तु मेरी इच्छा है कि बतौर सूबेदार के यहाँ का राज्य किसी के सुपुर्द कर दिया जाय।

आनन्दसिंह की बात सुन राजा वीरेन्द्रसिंह गौर में पड़ गये और कुछ देर तक सोचने के बाद बोले," हाँ मै तुम्हारी इस राय को पसन्द करता हूँ और इसका बन्दोबस्त तुम्हारे ही ऊपर छोड़ता हूँ, तुम जिसे चाहो इस काम के लिए चुन लो।

आनन्दसिंह ने झुक कर सलाम किया और उन लोगों की तरफ देखा जो वहाँ मौजूद थे। इस समय सभों के दिल में खुटका पैदा हुआ और सभी इस बात से डरने लगे कि कहीं ऐसा न हो कि यहाँ का बन्दोबस्त मेरे सुपुर्द किया जाय, क्योंकि उन लोगों में से कोई भी ऐसा न था जो अपने मालिक का साथ छोडना पसन्द करता। आखिर आनन्दसिंह ने सोच समझ कर अर्ज किया–

आनन्द–मैं इस काम के लिए पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी को पसन्द करता हूँ।

वीरेन्द–अच्छी बात है कोई हर्ज नहीं।

ज्योतिषीजी ने बहुत कुछ उज्र किया बावेला मचाया, मगर कुछ सुना नहीं गया। उसी दिन से मुद्दत तक रोहतासगढ़ ब्राह्मणों की हुकूमत में रहा और यह हुकूमत हुमायूँ के जमाने में ९४४ हिजरी तक कायम रही इसके बाद ९४५ में दगाबाज शेरखा ने (यह दूसरा शेरखा था) रोहतासगढ के राजा चिन्तामन ब्राह्मणों को धोखा देकर किले पर अपना कब्जा कर लिया।

तेरहवॉ बयान

तहखाने में वैठी हुई कामिनी का जबकिसी के आने की आहट मालूम हुई तव वह सीढी की तरफ देखने लगी मगर आने वाले अभी छत पर ही थे। उसने समझा कि कमला या शेरसिह आते होंगे मगर जब उसे कई आदमियों के पैर की घमघमाहट मालून हुई तब वह घबराई। उसका खयाल दुश्मनों की तरफ गया और वह अपन बचाव का ढग करने लगी।

ऊपर के कमरे से तहखाने में उतरने क लिए जो सीढ़ियॉ थी उसके नीचे एक छोटी कोठरी बनी हुई थी। इसी कोठरी में शेरसिह का असबाव रहा करता था और इस समय भी उनका असबाव इसी के अन्दर था। इसके अन्दर जाने क लिए एक छाटा दर्वाजा था और लोहे का मजबूत मगर हलका पल्ला लगा हुआ था। दर्वाजा वन्द करने के लिए बाहर की तरफ कोई जजीर या कुण्डी न थी मगर भीतर की तरफ एक अडानी लगी हुई थी जो दर्वाजा बन्द करने के लिए काफी थी। दवाज के पल्ले में एक सूराख था जिस पर गौर करने से मालूम हुआ कि वह ताली लगाने की जगह है।

कामिनी न तुरन्त चिराग वुझा दिया और अपने बिछावन को बगल में दबा कर उसी कोठरी के अन्दर चले जाने बाद भीतर से दर्वाजा वन्द कर लिया। यह काम कामिनी ने बडी जल्दी और दब पैर किया। थोडी ही देर में कामिनी को मालूम हुआ कि आने वाले अब सीढी उतर रह है और साथ ही इसके ताली लगाने वाले छेद में से मशाल की रोशनी भी उस कोठरी के अन्दर पहुची जिसमें कामिनी छिपी हुई थी। वह छेद में ऑख लगा कर दखने लगी कि कौन आया है और क्या करता है।

सिपाहियाना ठाठ के पॉच आदमी ढाल तलवार लगाये हुए दिखाई पडे। एक के हाथ म मशाल थी और चार आदमी एक सन्दूक को उठा कर लाये थे। जमीन पर सन्दूक रख देने बाद पॉचों आदमी बैठ कर दम लेने और आपस में यो बातचीत करने लग –

मशाल वाला–जहन्नुम में जाय एसी नौकरी दौडते दौडते हैरान हो गये ओफ।

दूसरा–खैर दौडना और हैरान होना भी सुफल होता अगर कोई नक काम हम लागों क सुपुर्द हाता।

तीसरा–भाई चाह जो हो मगर बेगुनाहों का खून नाहक मुझसे तो नहीं किया जाता।

चौथा–मुश्किल ता यह है कि हम लाग इनकार भी नहीं कर सकत और भाग भी नहीं सकते।

पॉचवां–परसों जो हुक्म हुआ है सो तुमने सुना या नही।

मशाल–हॉ मुझ मालूम है।

तीसरा–मैन नहीं सुना क्योंकि मै नानक का पता लगान गया था।

पॉचवा–परसो यह हुक्म दिया गया है कि जो कोई कामिनी का पकड लायेगा या पता लगा दगा उसे मुँहमॉगी चीज इनाम में दी जायगी।

तीसरा–हम लागों की ऐसी किस्मत कहॉ कि कामिनी हाथ लगे।

दूसरा–(चौक कर) चुप रहो देखा किसी की आवाज आ रही है।

किशारी से बात करत करते जव किसी के आने की आहट मालूम हुइ तो कामिनी चुप कर गई थी। किशोरी को ताज्जुब मालूम हुआ कि यकायक कामिनी चुप क्यों हो गई ? थाडी देर तक राह देखती रही कि शायद अब बोले मगर जब दर हो गई ता उसन खुद पुकारा और कहा क्यों बहिन चुप क्यों हो गई ? यही आवाज उन पॉचों आदमियों ने सुनी थी। उन लागों न बातें करना छाड दिया और आवाज की तरफ ध्यान लगाया। फिर आवाज आई– बहिन कामिनी कुछ कहो तो सही तुम चुप क्यों हो गई ? क्या ऐसे समय में तुमने भी मुझे छोड दिया। बात करना भी बुरा मालूम होता है।

किशोरी की बातें सुन कर पॉचों आदमी ताज्जुब में आ गए और उन लोगों को एक प्रकार की खुशी हुई।

एक–उसी किशारी की आवाज है मगर वह कामिनी को क्यों पुकार रही है ? क्या कामिनी उसके पास पहुँच गई।

दूसरा–क्या पागलपन की बातें कर रहे हो ? कामिनी अगर किशोरी के पास पहुँच जाती तो वह पुकारती क्यों धीरे धीरे आपुस में बात करती या इस तरह उसे लानत देती।

तीसरा–अजी यह ता वही है मै समझता हूँ कि कामिनी इस कोठरी में जरूर आई थी।

दूसरा–आई थी तो गई कहॉ ?

चौथा–हम लागो के आने के पहिले ही कही चली गई होगी।

दूसरा–(हँस कर) क्या खूब। अजी किशोरी का यह कहना कि – क्यों बहिन चुप क्यों हो गई। इस बात को साबित करता है कि वह अभी अभी इस कोठरी में मौजूद थी।

पॉचवॉं–तुम्हारा कहना ठीक है मगर यहॉ तो कामिनी की बू तक नहीं आती।

दूसरा–(चारों तरफ देख और उस कोठरी की तरफ इशारा करके) इसी में होगी।

पॉचों ही यह कहने लगे कि कामिनी जरूर इसी कोठरी में होगी हम लोगों के आने की आहट पाकर छिप गई है। आखिर सब उस कोठरी के पास गए। एक ने दर्वाजे में धक्का मारा और किवाड बन्द पाकर कहा– 'है है जरूर इसी में है।

कोठरी के अन्दर छिप कर बैठी बेचारी कामिनी सब बातें सुन रही थी और ताली के छेद में से सभी को देख रही थी। ऊपर लिखी बातों ने उसका कलेजा दहला दिया यहॉ तक कि वह अपनी जिनदगी से ना उम्मीद हो गई और उसे निश्चय हो गया कि अब ये लोग मुझे गिरफ्तार कर लेंगे।

पॉचों आदमी इस फिक्र में लगे कि किस तरह दर्वाजा खुले और कामिनी को गिरफ्तार कर लें। एक ने कहा दर्वाजा तोड दो। दूसरे ने हँस कर जवाब दिया– 'शायद यह तुम्हारे किए हो सकेगा।'

उन पॉचों ने बहुत कुछ जोर मारा कामिनी को पुकारा दिलासा दिया धमकी दी जान बचा देने का वादा किया और समझाया मगर कुछ काम न चला। कामिनी बोली तक नहीं। आखिर उनमें से एक ने जो सभों से चालाक और होशियार था कहा अगर इस दर्वाजे को हम पहिले कभी बन्द देखते तो जरूर समझते कि किसी जानकार ने बाहर से ताला लगा कर बन्द किया है मगर अभी थोडे ही दिन हुए इस कोठरी को मैने खुला देखा था इसमें किसी का असबाब पडा हुआ था। जो हो यह ता निश्चय हो गया कि कामिनी इस कोठरी के अन्दर घुस कर बैठी है अब बाबाजी आवें तो इस कोठरी का दर्वाजा खुले। (कुछ सोच कर) अब तो यही मुनासिब है कि हम लोगों में से एक आदमी जाय और चार बाकी आदमी बारी बारी से यहॉ पहरा दे जिसमें कामिनी निकल कर भाग न जाय। आखिर इस कोठरी में कब तक छिप कर बैठी रहेगी या अपनी भूख प्यास का क्या बन्दोबस्त करेगी ?

सभों ने इस राय को पसन्द किया। एक आदमी अपने मालिक को खबर करने चला गया एक तहखाने में उसी जगह बैठा रहा और तीन आदमी बाहर खण्डहर में निकल आए और इधर उधर टहलने लगे। सवेरा हो गया और पूरब तरफ सूर्य की लालिमा दिखाई देने लगी।

बेचारी कामिनी की जान आफत में फॅस गई, देखा चाहिए क्या होता है मगर उसने निश्चय कर लिया कि भूख और प्यास से चाहे जान निकल जाय मगर कोठरी के बाहर न निकलूँगी।

उस बेचारी को कोठरी के अन्दर घुस कर बैठे तीन दिन हो गए। भूख और प्यास से उस बेचारी की क्या अवस्था हो गई होगी यह पाठक स्वय समझ सकते है लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।

हम ऊपर लिख आए है कि उन पाचों में से एक आदमी अपने मालिक को खबर करने चला गया और बाकी चार इसलिए रह गए कि बारी बारी से पहरा दें जिसमें कामिनी निकल कर भाग न जाय।

तीसरे दिन इनमें से तीन आदमी आपुस में बातें करते और घूमते फिरते खण्डहर के बाहर निकले और फाटक पर खडे होकर बातें करने लगे।

एक–इसमें कोई शक नहीं कि हम लोगों का नसीब जाग गया।

दूसरा–नसीब जागा तो हम नहीं कह सकते हॉ इतनी बात है कि रकम गहरी हाथ लगेगी।

तीसरा–मुँहमॉगा इनाम क्या हम लोग नहीं पा सकते ?

दूसरा–नहीं।

तीसरा–सो क्यो ?

दूसरा–हम लोग कामिनी को अगर पकड ले जाते तो मुँहमॉगा इनाम पाते सो तो हुआ नही कामिनी कोठरी के अन्दर घुस बैठी और हम लोग दर्वाजा खोल कर उसे निकाल न सके लाचार बाबाजी को बुलाना पडा ऐसी अवस्था में जो कुछ इनाम मिल जाय वही बहुत है।

पहिला–इतना तो कहला भेजा कि हम लोगों ने कामिनी को इस तहखाने में फॅसा रक्खा है।

दूसरा–खैर जो होगा देखा जायगा इस समय तो हम लोगों की जीत ही जीत है कामिनी और किशोरी दोनों ही को हमारे मालिक की किस्मत ने इस तहखाने में कैद कर रक्खा है।

तीसरा–(चौंक कर) जरा इधर तो देखो ये लोग कौन है मालूम होता है कि इन लोगों ने हमारी बातें सुन ली।

खण्डहर के बाहर बाऍं तरफ कुछ हट कर एक नीम का पेड था और उस पेड के नीचे एक कुऑं था। इस समय दो

साधु उस कूएँ पर बैठे इन तीनों की बातें सुन रहे थे। जब उन तीनों का यह बात मालूम हुई तो डरे और उन साधुओं के पास जाकर बातचीत करने लगे–

एक आदमी–तुम दोनों यहा क्यों बैठे हो ?

एक साधु–हमारी खुशी।

एक आदमी–अच्छा अब हम कहते हैं कि उठो और यहा से चले जाओ।

एक साधु–तू है कौन जो तेरी बात मानें ?

एक आदमी–(तलवार खैंच कर) यह न जानना कि साधु समझ के छोड दूँगा नाहक गुस्सा मत दिलाओ।

साधु–(हँस कर) वाह रे बन्दर घुडकी। अबे क्या तू हम लोगों को साधु समझ रहा है ?

इतना सुनत ही तीनों आदमियों न गौर करके साधुओं को देखा और यकायक यह कहते हुए कि हाय गजब हो गया यहाँ से भागो वहाँ से भागे। जहाँ तक हो सका उन लोगों ने भागने में कसर न की। दोनों साधुओं ने उन लोगों को रोकना मुनासिब न समझा और भागने दिया।

अब वे दोनों साधु वहाँ से उठे और बातें करते हुए खण्डहर के अन्दर घुसे। घूमते फिरते दालान में पहुँचे और दर्वाजा खोलते हुए उस तहखाने में उतर गए जिसमें कामिनी थी। इस तहखाने और दर्वाजे का हाल हम ऊपर लिख आए है पुन लिखने की कोई जरूरत नहीं मालूम होती, हॉं इतना जरूर कहेंगे कि रग ढग से मालूम होता था कि ये दोनों साधु तहखाने और उसके रास्ते को बखूबी जानते हैं। नहीं तो ऐसा आदमी जो दर्वाजे का भेद न जानता हो उस तहखाने में किसी तरह नही पहुँच सकता था।

जब दोनों साधु तहखाने में पहुँचे तो वहाँ एक सिपाही को पाया और सन्दूक पर भी नजर पडी। एक मोमबत्ती आले पर जल रही थी। वह सिपाही इन दोनों को देख कर चौका और तलवार खैंच कर सामना करने पर मुस्तैद हुआ। एक साधु ने झपट कर उसकी कलाई पकड ली और दूसरे ने उसकी गर्दन में एक ऐसा घूसा जमाया कि वह चक्कर खा कर गिर पडा। उसकी तलवार छीन ली गई और बेहोश कर चादर से जो कमर में लपेटी हुई थी उसकी मुश्के बॉंध दी इसके बाद दोनों साधु उस सन्दूक की तरफ बढे। सन्दूक में ताला लगा हुआ न था बल्कि एक रस्सी उसके चारों तरफ लपेटी हुई थी। रस्सी खोली गई और उस सन्दूक का पल्ला उठाया गया, एक साधु ने मोमबत्ती हाथ में ली और झाक कर सन्दूक के अन्दर देखा देखते ही हाय कहकर जमीन पर गिर पडा। इसके बाद दूसरे ने देखा उसकी भी यही अवस्था हुई।

॥ पॉंचवा भाग समाप्त ॥

श्री

चन्द्रकान्ता सन्तति

छठवा भाग

पहिला बयान

वे दोनों साधुजो सन्दूक के अन्दर झाक न मालूम क्या देख कर वहोश हो गये थे थोडी देर वाद होश में आए और चीख चीख कर राने लगे। एक ने कहा हाय इन्दजीतसिंह तुम्हें क्या हा गया। तुमन तो किसी के साथ बुराई न की थी फिर किस कमवख्त ने तुम्हारे साथ वदी की ? प्यारे कुमार तुमने वडा वुरा धोखा दिया हम लोगों को छोड कर चले गये क्या दोस्ती का हक इसी तरह अदा करते है ? हाय अव हम लोग जी कर क्या करेंगे अपना काला मुह ले कर कहाँ जायेंगे ? हमको अपने भाई से वढ़कर मानने वाला अव दुनिया मे कौन रह गया। तुम हमें किसके सुपुर्द करके चले गये।

दूसरा वोला– प्यारे कुमार कुछ तो वोलो जरा अपने दुश्मन का नाम तो वताओ कुछ कहा तो सही कि किस वेईमान ने तुम्हें मार कर इस सन्दूक में डाल दिया ? हाय अब हम तुम्हारी मा वेचारी चन्द्रकान्ता के पास कौन मुह लेकर जाएग ? किस मुह से कहेंगे कि तुम्हारे प्यारे होनहार लडके को किसी ने मार डाला। नहीं नहीं ऐसा न होगा हम लाग जीते जी लौट कर घर न जायँगे इसी जगह जान दे देंगे ? नहीं नहीं अभी तो हमें उससे वदला लेना है जिसने हमारा सर्वनाश कर डाला। प्यारे कुमार जरा तो मुँह से वोलो जरा आँखें खोल कर देखो तो सही तुम्हारे पास कौन खडा रो रहा है। क्या तुम हमें भूल गए ? हाय यह यकायक कहाँ से गजव आकर टूट पडा।

अव तो पाठक समझ गए होंगे कि इस सन्दूक में कुँअर इन्द्रजीतसिंह की लाश थी और ये दोनों साधु उनके दोस्त भैरोसिंह और तारासिंह थे। इन दोनों के रोने से कामिनी असल बात समझ गई झट कोठरी के वाहर निकल आई और मोमवत्ती की रोशनी में कुमार की लाश देख कर जोर जोर से रोने लगी। किशोरी इस तहखाने के वगल वाली कोठरी में थी। उसने जो कुँअर इन्द्रजीतसिंह का नाम ले लेकर रोने की आवाज सुनी तो उसकी अजव हालत हो गई। उसका पका हुआ दिल इस लायक न था कि इतनी ठेस सम्हाल सके बस एक दफे 'हाय की आवाज तो उसके मुह से निकली मगर फिर तनोवदन की सुध न रही। वह ऐसी जगह न थी कि कोई उसके पास जाय या उसे सम्हाले और देख कि उसकी क्या हालत है।

भैरोसिंह और तारासिंह ने जो कामिनी को देखा तो वे लोग फूट फूटकर रोने लगे। तहखाने में हाहाकार मच गया। घण्टे भर यही हालत रही। जव कामिनी ने रोकर यह कहा कि इसी के वगल वाली कोठरी में वेचारी किशोरी भी है हाय हम लोगों का रोना सुन कर वेचारी की क्या अवस्था हुई होगी तव तारासिंह और भैरोसिंह चुप हुए और कामिनी का मुह देखने लगे।

भैरो–तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि यहाँ किशोरी है ? **कामिनी–**मै उससे वातें कर चुकी हूँ।

तारा–क्या तुम वडी देर से इस तहखाने में हो ?

कामिनी–देर क्या मै तो कई दिनों से भूखी प्यासी इस तहखाने में कैद हूँ। (उस आदमी की तरफ इशारा करके) यह मरा पहरा देता था।

भैरो–खैर जो होना था सो हो गया अव हम लोग अगर रोने धोने में लगे रहेंगे तो इनके दुश्मन का पता न लगा सकेंगे और न उससे वदला ही ले सकेंगे। यो तो जन्म भर रोना है । परन्तु जव इनके दुश्मन से वदला ले लेंगे तो कलेजे में कुछ ठण्डक पडेगी। तुम यहाँ कैसे आई और इन दुष्टों के हाथ क्योंकर फँसी,खुलासा कहो तो शायद कुछ पता लगे।

कामिनी ने अपना खुलासा हाल कहा और इसके वाद पूछा तुम दोनों का आना कैसे हुआ ?

भैरो–कमला ने इस तहखाने का पता देकर हम लोगों को भेजवाया है थोडी ही देर में राजा वीरेन्द्रसिंह और कुँअर आनन्दसिंह भी वहुत से आदमियों को साथ लिए आया ही चाहते हैं कमला भी उनके साथ होगी हम लोग कुँअर इन्द्रजीतसिंह को छुडाने के लिए किसी दूसरी जगह जाने वाले थे मगर हाय यह क्या खवर थी कि रास्ते में ही हम लोगों पर यह पहाड टूट पडेगा। हाय जव महाराज यहाँ आएगे तो हम किस मुह से कहेंगे कि तुम्हारे प्यारे लडके की लाश इस तहखाने में पाई गई।

इसके वाद भैरोसिंह ने इस तहखाने में आने का पूरा हाल कहा तथा यह भी बताया कि जव,खडहर के वाहर कूए पर हम दोनों आदमी वैठे थे तभी तीन आदमियों की वातचीत से मालूम हो गया कि तुमको उन लोगों ने कैद कर लिया है परन्तु यह आशा न थी कि तुम्हें इस अवस्थामें देखेंगे। उन लोगों ने मुझे देखा तो पहिचान कर डरे और भाग गये मगर मुझे यह न मालूम हुआ कि वे लोग कौन हैं और उन्होंने मुझे कैसे पहिचाना ?

कामिनी–(हाथ का इशारा करके) उन्हीं लोगों में से एक यह भी है जिसे तुमने बाध रक्खा है।

भैरो–(उस आदमी से) वता तू कौन है ?

आदमी–वतान को तो मैं सव कुछ वता सकता हूँ परन्तु मेरी जान किसी तरह नहीं वचेगी।

भैरो–क्या तुझे अपने मालिक का डर है ? आदमी–जी हाँ।

भैरो–मैं वादा करता हूँ कि तेरी जान वचाऊँगा और तुझे बहुत कुछ इनाम भी दिलाऊँगा।

आदमी–इस वाद से मेरी तवीयत विल्कुल भी नही भरती क्योंकि मुझे तो आप लोगों ही के वचने की उम्मीद नहीं। हाय क्या आफत ने जान आ फँसी है। अगर कुछ कहें तो मालिक क हाथ स मारे जाय और न कहें तो इन लोगों क हाथ से दु ख भोगें।

भैरो–तेरी वातों स मालूम होता है कि तेरा मालिक वहुत जल्द यहा आया चाहता है ?

आदमी–वशक एसा ही है।

यह सुनते ही भैरोसिह ने तारासिह क कान में कुछ कहा और उनका ऐयारी का वटुआ लेकर अपना वटुआ उन्हें दे दिया जिस ले वे तुरन्त वहाँ से रवाना हुए और तहखाने के वाहर निकले। तारासिह ने जल्दी जल्दी खडहर के वाहर हाकर उस कूए मे ने एक लुटिया पानी खींचा और वटुए में से काई चीज निकाल कर पत्थर पर रगड जल में घोल कर पीया फिर एक लूटिया जल निकाल कर वही चीज पत्थर पर घिस उस पानी में मिलाई और बहुत जल्द तहखाने में पहुँचे जल की लुटिया भैरोसिह के हाथ में दी भैरोसिह ने वटुए से कुछ खाने की चीज निकाली और कामिनी से कहा 'इसे खाकर यह जल पी लो।

कामिनी–भला खाने और जल पीने का यह कौन सा मौका है ? यद्यपि मै कई दिनों से भूखी हूँ परन्तु क्या कुमार की लाश के सिरहाने वैठ कर खा सकूगी क्या यह अन्न मेरे गले के नीचे उतरेगा ?

भैरो–हाय इस वात का मै कुछ भी जवाव नहीं दे सकता। खैर इस पानी में से थोडा तुम्हें पीना ही पडगा। अगर इससे इन्कार कराागी तो हम सव लोग मारे जायँगे (धीरे से कुछ कह कर) वस देर न करो।

कामिनी–अगर एसा है ता मै इन्कार नहीं कर सकती।

भैरोसिह ने उस लुटिया में से आधा जल कामिनी का पिलाया और आधा आप पीकर लुटिया तारा सिह के हवाले कर दी। तारासिह तुरन्त तहखाने में से बाहर निकल आए और जहाँ तक जल्द हो सका इधर उधर से सूखी हुइ लकडियाँ और कण्ड वटोर कर खण्डहर के वीच मे एक जगह रक्खा तव वटुए में से चकमक पत्थर निकाला और उसमें से आग झाड कर गोठों और लकडियों को सुलगाया।

तारासिह यह सव काम वडी फुर्ती से कर रहे थे और घडी घडी खण्डहर के वाहर मैदान की तरफ देखते भी जाते थे। आग सुलगान के वाद जव तारासिह ने मैदान की तरफ दखा तो बहुत दूर पर गर्द उडती हुई दिखाई दी। वह अपने काम में फिर जल्दी करने लग। वटुए में से एक शीशी निकाली जिसमें किसी प्रकार का तेल था वह तेल आग में डाल दिया आग पर दो तीन दफे पानी का छींटा दिया फिर मैदान की तरफ देखा। मालूम हुआ कि दस पन्दह आदमी घोड़ों पर सवार वडी तेजी से इसी तरफ आ रहे है। उस समय तारासिह के मुँह से यकायक निकल पडा– ओफ अगर जरा भी दर हाती ता काम विगड ही चुका था खैर अव ये लोग कहाँ जा सकते है।

आग मे से वहुत ज्यादे धूआँ निकला और खडहर भर में फैल गया। इसके वाद तारासिह खडहर के वाहर निकले और कूए के पास जा कर नीम के पड पर चढ गये तथा अपने को घन पतों की आड़ में छिपा लिया। वह पेड इतना ऊँचा था कि उस पर स खडहर क भीतर का मैदान साफ नजर पडता था। वे सवार जिन्हें तारासिह ने दूर से देखा था अव खडहर के पास आ पहुँच तारासिह ने पेड पर चढे चढे गिना तो मालुम हुआ कि वारह सवार है। उनमें सव के आगे एक साधु था जिसकी दाढी नाभी तक पहुँच रही थी।

पाटक यह वही वावाजी हैं जिन्होंने राहतासगढ में राजा दिग्विजयसिह के पास रात के समय पहुँच कर उन्हें भडकाया और राजा वीरेन्दसिह वगैरह को कैद कराया था।

खडहर के पास पहुँच कर वे लोग रुके। घोडो की वागडोरें पत्थरों से अटका कर दस आदमी तो खडहर के अन्दर घुस और दा आदमी घोडों की हिफाजत के लिए वाहर रह गय।

खडहर के अन्दर धूआ देख कर वुडढे साधु ने कहा 'यह धूआ कैसा है।

एक–किसी मुसाफिर न आकर रसोई वनाई होगी। दूसरा–मगर धूँआ बहुत कडुआ है।

तीसरा–ओफ आँख नाक से पानी वहने लगा।

साधु–अगर किसी मुसाफिर ने यहाँ आकर रसोई पकाई हाती ता हाँडी पत्तल और पानी का वतन इत्यादी कुछ और भी तो यहाँ दिखाई देता। (एक आदमी की तरफ देख कर) हमें इस धूएँ का रग वेढग मालूम होता है इसकी

कड़वाहट इसकी रगत और इसकी बू कहे देती है कि धूएँ में बहोशी का असर है। है है जरूर ऐसा ही है कुछ अमल भी आ चला और सिर भी घूमने लगा। (जोर से) अरे बहादुरों बेशक तुम लोग धोखे में डाले गए, यहाँ कोई ऐयार आ पहुँचा है क्या ताज्जुब है अगर तहखाने में से कामिनी को निकाल कर ले गया हो।

नीम के पेड पर बैठे हुए तारासिह उस साधु, की सब बातें सुन रहे थे क्योंकि वह नीम का पेड़ खडहर के फाटक के पास ही था। साधु की बातें अभी पूरी न होने पाई थी कि खडहर के पिछवाडे की तरफ से एक आदमी दौड़ता हुआ आया मालूम होता है कि साधु की आखिरी बात उसने सुन ली थी क्योंकि पहुँचने के साथ ही उसने पुकार कर कहा "नहीं नहीं, कामिनी को कोई निकाल कर नहीं ले गया मगर इसमें सन्देह नहीं कि वीरेन्द्रसिह के दो ऐयार यहाँ आये है, एक तहखाने के अन्दर है दूसरा (हाथ का इशारा करके) उस नीम के पेड़ पर चढा हुआ है।'

साधु–बस तब तो मार लिया। बेशक हम लोग आफत में फँस गए है परन्तु कामिनी और इन्दजीत जिन्हें तुम लोग तहखाने में पहुँचा चुके हो अब बाहर नहीं जा सकते। ताज्जुब नहीं कि इन ऐयारों ने इन्द्रजीत को मुर्दा समझ लिया हो। देखो मैं शाह दर्वाजे को अभी ऐसा बन्द करता हूँ कि फिर ऐयार का बाप भी तहखाने में न जा सकेगा।

इसके जवाब में उस आदमी ने जो अभी दौड़ता हुआ आया था कहा, हमारा एक आदमी भी तहखाने में है।

साधु–खैर अब तो उसका भी उसी तहखाने में घुट कर मर जाना बेहतर है।

तारासिह ने उस आदमी को पहिचान लिया जो खडहर के पिछवाडे की तरफ दौड़ता हुआ आया था। यह उन्हीं दोनों आदमियों में से था जो भैरोसिंह और तारासिह को कूए पर देखकर डर के मारे भाग गये थे, न मालूम कहा छिप रहा था जो इस समय बाबाजी को देखकर बेधडक आ पहुँचा।

साधु ने धूए का ख्याल बिल्कुल ही न किया और खडहर के अन्दर जाकर न मालूम किस कोठरी में घुस गया।

तारासिह को कुँअर इन्दजीतसिह के मरने का जितना गम था उसे पाठक स्वय समझ सकते है परन्तु उनको उस समय बडा ही आश्चर्य हुआ। जब साधु के मुँह से यह सुना कि ताज्जुब नहीं कि ऐयारों ने इन्द्रजीतसिह को मुर्दा समझ लिया हो। बल्कि यों कहना चाहिए कि इस बात ने तारासिह को खुश कर दिया। वे अपने दिल में सोचने लगे कि बेशक हम लोगों ने धोखा खाया मगर न मालूम उन्हें कैसी दवा खिलाई गई जिसने बिल्कुल मुर्दा ही बना दिया। यदि इस समय भैरोसिह के पास पहुँचकर यह खुशखबरी सुनाई जाती तो क्या ही अच्छी बात थी, मगर कमबख्त साधु तो कहता है कि मै शाहदर्वाजा बन्द कर देता हूँ जिसमें फिर कोई आदमी तहखाने में न जा सके। यदि ऐसा हुआ तो बडी मुश्किल होगी इन्द्रजीतसिह अगर जीते भी हैं तो अब मर जायेंगे। न मालूम यह दर्वाजा कौन है और किस तरह खुलता और बन्द होता है।

वे लोग तो सुन ही चुके थे कि बीरेन्द्रसिह का एक ऐयार नीम के पेड़ पर चढ़ा हुआ है। बाबाजी शाहदर्वाजा बन्द करने चले गये मगर तारासिह को इसकी कुछ भी चिन्ता नहीं थी क्योंकि वे इस बात को बखूबी जानते थे कि बेहोशी का धूआ जो इस खडहर में फैला हुआ है अब इन लोगों को ज्यादा देर तक ठहरने न देगा थोड़ी ही देर में बेहोशी आ जायगी और फिर किसी योग्य न रहेंगे और आखिर वैसा ही हुआ।

यद्यपि वे लोग ज्यादे धूए में नहीं फँसे थे तो भी जो कुछ उन लोगों की आखों में लगा था और नाक की राह से पेट में गया था वही उन लोगों को बेदम करने के लिए काफी था। वे लोग कूए पर आ पहुचे और चारों तरफ से उस नीम के पेड को घेर लिया। इस समय उन लोगों की अवस्था शराबियों की सी हो रही थी। उसी समय तारासिह ने पेड़ पर से चिल्लाकर कहा ओ हो हो हो क्या अच्छे वक्त पर हमारा मालिक आ पहुँचा। अब जरूर इन कम्बख्तों की जान जायगी।

तारासिह की बात सुनते ही वे लोग ताज्जुब में आ गये और मैदान की तरफ देखने लगे। वास्तव में पूरब की तरफ गर्द उठ रही थी और मालूम होता था कि किसी राजा की सवारी इस तरफ आ रही है। उन लोगों के दिमाग पर अब बेहोशी का असर अच्छी तरह हो चुका था। वे लोग बैठ गए और फिर जमीन पर लेट कर दीन दुनिया से बेखबर हो गये।

तारासिह की निगाह उसी गर्द की तरफ थी। धीरे धीरे आदमी और घोड़े दिखाई देने लगे और जब थोड़ी दूर रह गये तो साफ मालूम हो गया कि कई सवारों को साथ लिए राजा बीरेन्द्रसिह आ पहुंचे। ऐयारों में तेजसिह और पडित बद्रीनाथ उनके साथ थे और मुश्की घोडे पर सवार कमला आगे आगे आ रही थी। जब तक वे लोग खडहर के पास आवें तब तक तारासिह पेड के नीचे उतरे कूए में से एक लुटिया जल निकाल कर मुह हाथ धोया और कुछ आगे बढ कर उन लोगों से मिले। वीरेन्द्रसिह ने तारासिह से पूछा कहो क्या हाल है?

तारा–विचित्र हाल है। वीरेन्द–सो क्या। भैरोसिह कहाँ है?

तारा–भैरोसिह इसी खडहर के तहखाने में है और किशोरी कामिनी तथा इन्द्रजीतसिह भी इसी तहखाने में कैद है।

तारासिह ने कुँअर इन्द्रजीतसिह का जो कुछ हाल तहखाने में देखा था वह किसी से कहना मुनासिब न समझा।

क्योंकि सुनते ही ये लोग अधमरे हो जाते और किसी काम लायक न रहते और वीरेन्द्रसिंह की तो न मालूम क्या हालत होती सिवाय इसके यह भी मालूम हो ही चुका था कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह मरे नहीं है। ऐसी अवस्था में इन लोगों को बुरी खबर सुनाना बुद्धिमानी के बाहर था इस लिए तारासिंह ने इन्द्रजीतसिंह के बारे में बहुत सी बातें बना कर कहीं जैसा कि आगे चल कर मालूम होगा।

कुँअर आनन्दसिंह ने जब तारासिंह की जुबानी यह सुना कि कामिनी भी इसी तहखाने में कैद है तो बहुत ही खुश हुए और सोचने लगे कि अब थोडी देर में माशूका से मुलाकात हुआ ही चाहती है, ईश्वर ने बडी कृपा की कि ढूढने और पता लगाने की नौबत न पहुँची। उन्होंने सोचा कि बस अब हमारे दु खान्त नाटक का अन्त हुआ ही चाहता है?

वीरेन्द्रसिंह ने फिर तारासिंह से पूछा, क्या तुमने अपनी आँखों से उन लोगों को इस तहखाने में कैद देखा है?'

तारा–जी हाँ कुँअर इन्द्रजीतसिंह और कामिनी से तो हम दोनों आदमी मिल चुके है और भैरोसिंह उन दोनों के पास ही है मगर किशोरी को हम लोग न देख सके कामिनी की जुबानी मालूम हुआ कि जिस तहखाने में वह है उस के बगल वाली कोठरी में किशोरी भी कैद है। पर कोई तर्कीब ऐसी न निकली जिससे हम लोग किशोरी तक पहुँच सकते।

वीरेन्द–क्या यहाँ की कोठरियों और दर्वाजों में किसी तरह का भेद है?

तारा–भेद क्या मुझ तो यह एक छोटा तिलिस्म ही मालूम होता है।

वीरेन्द–भला तुम और भैरोसिंह इन्द्रजीतसिंह के पास तक पहुँच गए तो उसे तहखाने के बाहर क्यों न ले आए?

तारा–(कुछ अटक कर) मुलाकात होने पर हम लोग उसी तहखाने में बैठ कर बातें करने लगे। दुश्मन का एक आदमी उस तहखाने में कैदियों की निगहबानी कर रहा था। कैदी हथकडी और बेडी के सबब से बेबस थे। जब हम दोनों ने उस आदमी को गिरफ्तार किया और हाल जानने के लिए बहुत कुछ मारा पीटा तब वह राह पर आया। उसकी जुबानी मालूम हुआ कि हम लोगों का दुश्मन अर्थात् उसका मालिक बहुत से आदमियों को साथ ले यहाँ आया ही चाहता है। तब भैरोसिंह ने मुझे कहा कि इस समय हम लोगों का इस तहखाने से बाहर निकलना मुनासिब नहीं है, कौन ठिकाना बाहर निकल कर दुश्मनों से मुलाकात हो जाय। वे लोग बहुत होंगे और हम लोग केवल तीन आदमी हैं। ताज्जुब नहीं कि तकलीफ उठानी पडे इससे यही बेहतर है कि तुम बाहर जाओ और जब दुश्मन लोग इस खंडहर में आ जावें तो उन्हें किसी तरह गिरफ्तार करो। उन्हीं की आज्ञा पाकर मै अकेला तहखाने के बाहर निकल आया और मैंने दुश्मनों को गिरफ्तार भी कर लिया।

तेज–(खुश होकर और हाथ का इशारा करके) मालूम होता है कि वे लोग जो उस पेड के नीचे पडे है और कुछ खंडहर के दर्वाजे पर दिखाई देते हैं सब तुम्हारी ही कारीगरी से बेहोश हुए है उन्हें किस तरह बेहोश किया?

तारा–खंडहर के अन्दर आग सुलगाई और उसमें बेहोशी की दवा डाली जब तक वे लोग आवें तब तक धूआं अच्छी तरह फैल गया ऐसी कडी दवा से वे लोग क्योंकर बच सकते थे जरा सा धूआँ आख में लगना बहुत था। दुश्मनों के केवल दो आदमी बच गये (घोडों की तरफ देखकर) है मालूम होता है आपको आते देख वे लोग भाग गए यह क्या हुआ।

तेज–(चारों तरफ देखकर) खैर जाने दो क्या हर्ज है हाँ तो अब हम लोगों को तहखाने में चलना चाहिए।

तारा–शायद अब हम लोग तहखाने में न जा सकें।

कमला–क्यों?

तारा–उन लोगों में एक साधु भी था वह बडा ही चालाक और होशियार था। आख में धूआ लगते ही समझ गया कि इसमें बेहोशी का असर है अब दम के दम में हम लोग बेहोश हो जायेंगे। उसी समय एक आदमी ने जो पहिले हम लोगों को देख कर भाग गया था और छिप कर मेरी कार्रवाई देख रहा था पहुँच कर उन्हें हम लोगों के आने की खबर दे दी और यह भी कह दिया कि अभी तक कामिनी किशोरी और इन्द्रजीतसिंह तहखाने में है बल्कि राजा वीरेन्द्रसिंह का ऐयार भी तहखाने में है। यह सुनते ही वह कुछ खुश हुआ और बोला अब हम लोग तो बेहोश हुआ ही चाहते है धोखे में पड ही चुके हैं मगर अब हम यहाँ के शाहदर्वाजे को बन्द कर देते है फिर किसी की मजाल नहीं कि तहखाने में जा सके और उन लोगों को निकाल सके जो तहखाने के अन्दर अभी तक बैठे हुए है। इस बात को सुनकर उस जासूस ने कहा कि हम लोगों का एक आदमी भी उसी तहखाने में है। साधु ने जवाब दिया कि अब उसको भी उसी में घुट कर मर जाना बेहतर होगा। फिर न मालूम क्या हुआ और उस साधु ने क्या किया अथवा शाहदर्वाजा कौन है और किस तरह खुलता या बन्द होता है!

तारासिंह की इस बात ने सभों को तरद्दुद में डाल दिया और थोडी देर तक वे लोग सोच विचार में पड रहे इसके बाद कमला ने कहा पहिले खंडहर में चल कर तहखाने का दरवाजा खोलना चाहिए देखें खुलता है या नहीं अगर

खुल गया तो सोच विचार की कुछजरूरत नहीं यदि न खुल सका तो देखा जायगा।

इस बात को सभों ने पसन्द किया और राजा बीरेन्द्रसिंह ने कमला कोआगे चलने और तहखाना का दरवाजा खोलने के लिए कहा। खंडहर में इस समय धूऑ कुछ भी न था सब साफ हो चुका था। कमला सभों को साथ लिए हुए उस दालान में पहुँची जहाँ से तहखाने में जाने का रास्ता था। मामबत्ती जला कर हाथ में ली और बगलवाली कोठरी में जाकर मोमबत्ती तारासिंह के हाथ में दे दी। इस कोठरी में एक आलमारी थी जिसके पल्लों में दो मुट्ठे लगे हुए थे इन्हीं मुट्ठों के घुमाने से दर्वाजा खुल जाता था और फिर एक कोठरी में पहुँच जाने से तहखाने में उतरने के लिए सीढ़ियाँ मिलती थीं। इस समय कमला ने इन्हीं दोनों मुट्ठों को कई बार घुमाया, वे घूम तो गए पर दर्वाजा न खुला। इसके बाद तारासिंह ने और फिर तेजसिंह न उद्योग किया मगर कोई काम न चला। तब तो सभों का जी बेचैन हो गया और विश्वास हो गया कि उस बेईमान साधु ने जो कुछ कहा सो किया। इस खंडहर में कोई शाहदर्वाजा जरूर है जिसे साधु ने बन्द कर दिया और जिसके सबब से यह दर्वाजा अब नहीं खुलता।

सब लोग उस कोठरी से बाहर निकले और साधु को ढूढने लगे। खंडहर में और नीम के पेड के नीचे आठ आदमी बेहोश पडे हुए थे जो सब इकट्ठे किए गए। दो आदमी जो घोडों की हिफाजत करने के लिए रह गये थे और बेहोश नहीं हुए थे वे तो न मालूम कहाँ भाग ही गए थे अब साधु रह गए सो उनके शरीर का कहीं पता न लगा। चारों तरफ खोज होने लगी।

राजा बीरेन्द्रसिंह तेजसिंह और तारासिंह को साथ लिए हुए कमला उस कोठरी में पहुँची जिसमें दीवार के साथ लगी हुई पत्थर की मूरत थी जिसमें एक दफे रात के समय कामिनी जा चुकी थी और जिसका हाल ऊपर के किसी बयान मे लिखा जा चुका है। इसी कोठरी में पत्थर की मूरत के पास ही साधु महाशय बेहोश पडे हुए थे।

तेज–(मूरत को अच्छी तरह देख कर) मालूम होता है कि शाहदर्वाजे से इस मूरत का कोई सम्बन्ध है।

बीरेन्द्र–शायद ऐसा ही हो क्योंकि मुझे यह खंडहर तिलिस्मी मालूम होता है। हाय, बेचारा लडका इस समय कैसी मुसीबत में पडा हुआ है। अब दर्वाजा खुलने की तर्कीब किससे पूछी जाय और उसका पता कैसे लगे ? मेरी राय तो यह है कि इस खंडहर में जो कुछ मिट्टी चूना पडा है सब बाहर फिंकवा कर जगह साफ करा दी जाय और दीवार तथा जमीन भी खोदी जाय।

तेज–मेरी भी यही राय है।

तारा–जमीन और दीवार खुदने से जरूर काम चल जायगा। तहखाने की दीवार खोद कर हम लोग अपना रास्ता निकाल लेंगे बल्कि और भी बहुत सी बातों का पता लग जायगा।

बीरेन्द–(तेजसिंह की तरफ देख के) बहुत जल्द बन्दोबस्त करो और दो आदमी रोहतासगढ भेज कर एक हजार आदमी की फौज बहुत जल्द मँगवाओ। वह फौज ऐसी हो कि सब काम कर सके अर्थात जमीन खोदने सेंध लगाने सडक बनाने इत्यादि का काम बखूबी जानती हो।

तेज–बहुत खूब।

राजा बीरेन्द्रसिंह के साथ साथ सौ आदमी आये हुए थे वे सब के सब काम में लग गये। बेहोश दुश्मनों के पैर बाँध दिये गये और उन्हें उठाकर एक दालान में रख देने के बाद सब लोग खंडहर की मिट्टी उठा उठा कर बाहर फेंकने लगे जल्दी के मारे मालिकों ने भी काम में हाथ लगाया।

रात हो गई कई मशाल भी जलाये गये मिट्टी की सफाई बराबर जारी रही मगर तारासिंह का विचित्र हाल था घडी घडी रुलाई आती थी और उसे वे बडी मुश्किल से रोकते थे। यद्यपि तारासिंह ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह का हाल बहुत कुछ झूठ सच मिला कर राजा बीरेन्द्रसिंह से कहा था मगर वे बखूबी जानते थे कि इन्द्रजीतसिंह की अवस्था अच्छी नहीं है उनकी लाश तो अपनी ऑखों से देख ही चुके थे परन्तु साधु की बातों ने उनकी कुछ तसल्ली कर दी थी। वे समझ गये थे कि इन्द्रजीत सिंह मरे नहीं बल्कि बेहोश हैं मगर अफसोस तो यह है कि यह बात केवल तारासिंह ही को मालूम है भैरोसिंह को भी यदि इस बात की खबर होती तो तहखाने में बैठे बैठे कुमार को होश में लाने का कुछ उद्योग करते। कहीं ऐसा न हो कि बेहोशी में ही कुमार की जान निकल जाय ऐसी कडी बेहोशी का नतीजा अच्छा नहीं होता है इसके अतिरिक्त कई दिनों से कुमार बेहोशी की अवस्था में पड़े है बेहोशी भी ऐसी है कि जिसने बिल्कुल ही मुर्दा बना दिया क्या जाने जीते भी है या वास्तव मे मर ही गये।

ऐसी बातों के विचार से तारासिंह बहुत ही बेचैन थे मगर अपने दिल का हाल किसी से कहते नहीं थे।

यहाँ से थोडी दूर पर एक गाँव था कई आदमी दौड गये और कुदाल फरसा इत्यादी जमीन खोदने का सामान वहाँ से ले आये और बहुत से मजदूरों को साथ लिवाते आये। रात भर काम लगा रहा और सवेरा होते होते तक खंडहर साफ हो गया।

अव उस दालान की खुदाई हुई जिसके बगल वाली कोठरी के अन्दर से तहखान में जा1 का रास्ता था। हाथ भर तक जमीन खोदने के ब्राद लाहे की सतह निकल आई जिसमें छेद हाना भी मुश्किल था। यह देख वीरेन्द्रसिह को भी वहुत रज हुआ और उन्होने खडहर क वीच की जमीन अर्थात चौक खादन का हुक्म दिया।

दूसरे दिन चोक की खुदाई से छुट्टी मिली खुद जाने पर वहाँ एक छोटी सी खूबसूरत वावली निकली जिसके चारों तरफ छोटी छोटी सगमरमर की सीढियाँ थीं। यह वावली दस गज से ज्यादे गहरी न थी और इसके नीचे की सतह तीन गज चौडी और इतनी ही लम्बी होगी। दो पहर दिन चढते चढत उस वावली की मिट्टी निकल गई और नीचे की सतह में पीतल की एक मूरत दिखाई दी। मूरत बहुत बडी न थी एक हिरन का शर ने शिकार किया था, हिरन की गर्दन का आधा हिस्सा शेर क मुह में था।-मूरत बहुत ही खूवसूरत और कीमती थी मगर मिट्टी के अन्दर वहुत दिनों तक दवे रहने से मैली और खराव हो रही थी। वीरेन्द्रसिह न उसे अच्छी तरह झाडपोछ कर साफ करने का हुक्म दिया।

वीरन्द्रसिह ने तज सिह से कहा इस खुदाई में समय भी वहुत नष्ट हुआ और कुछ काम भी न चला।

तेज--मै इस मूरत पर अच्छी तरह गौर कर रहा हूँ, मुझे आशा है कि कोई अनूठी वात जरूर दिखाई देगी।

वीरेन्द--(ताज्जुव में आकर) देखो देखो शर की आखे इस तरह घूम रही हैं जैसे वह इधर उधर देख रहा हो।

आनन्द--(अच्छी तरह देख कर) हॉ ठीक तो है।

इसी समय एक आदमी दौडता हुआ आया और हाथ जोड कर वोला महाराज चारा तरफ से दुश्मन की फौज न आकर हम लागों को घेर लिया दो हजार सवारों के साथ शिवदत्त आ पहुँचा जरा मैदान की तरफ देखिए।

न मालूम शिवदत्त इतन दिनों तक कहा छिपा हुआ था और क्या कर रहा था। इस समय दो हजार फौज के साथ उसका यकायक आ पहुँचना और चारों तरफ स खडहर को घेर लेना बडा ही दु खदायी हुआ क्योंकि वीरेन्दसिह क पास इस समय केवल सौ सिपाही थे।

सूय अस्त हो चुका था चारों तरफ से अन्धेरी घिरी चली आती थी। फौज सहित राजा शिवदत्त जव तक खडहर के पास पहुँचे तव तक रात हो गई। राजा शिवदत्त को यह तो मालूम हो गया कि केवल सौ सिपाहियों के साथ राजा वीरन्द्रसिह कुँअर आनन्दसिह और उनके ऐयार लाग इसी खडहर में हैं परन्तु राजा वीरेन्दसिह कुमार और उनके ऐयारों की वीरता और साहस को भी वह अच्छी तरह जानता था इसलिए रात के समय खुडहर के अन्दर घुसने की उसकी हिम्मत न पडी। यद्यपि उसके साथ दो हजार सिपाही थे मगर खडहर के अन्दर डेढ दो सौ सिपाहियों से ज्यादे नही जा सकते थे क्योंकि उसके अन्दर ज्यादे जमीन न थी और वीरेन्दसिह तथा उनके साथी इतने आदमियों को कुछ भी न समझत थे इसलिए शिवदत्त ने साचा कि रात भर इस खडहर को घेर कर चुपचाप पडे रहना ही उत्तम हागा। वास्तव में शिवदत्त का विचार बहुत ठीक था और उसन ऐसा ही किया। राजा वीरेन्दसिह को भी रात भर सोचने विचारने की माहलत मिली। उन्होंने कई सिपाहियों को फाटक पर मुस्तैद कर दिया और उसके बाद अपने बचाव का ढग सोचने लगे।

दूसरा बयान

इस समय शिवदत्त की खुशी का अन्दाज करना मुश्किल है और यह काई ताज्जुव की बात नहीं है क्योंकि लडकों और दास्त एयारों के सहित राजा वीरेन्दसिह का उसने ऐसा वेवस कर दिया कि उन लोगों को जान बचाना कठिन हो गया है। शिव्दत्त के आदमियों ने उस खडहर का चारों तरफ से घेर लिया और उसे निश्चय हो गया कि अव हम पुन चुनार की गद्दी पावेंगे और इसके साथ नौगढ विजयगढ गयाजी और रोहतासगढ की हुकूमत भी विना परिश्रम हाथ लगगी।

एक घने वटवृक्ष क नीचे अपने दोस्तों और एयारों को साथ लिये वैठा शिवदत्त गप्पें उडा रहा है। ऊपर एक सफेद चन्दवा तना हुआ है। विछावन और गद्दी उसी प्रकार की है जैसी मामूली सरदार अथवा डाकुओं के भारी गिरोह के अफसर की होनी चाहिए। दो मशालची हाथ में मशाल लिये सामने खडे है और इधर उधर कई जगह आग सुलग रही है। वाकरअली खुदावक्श यारअली और अजायबसिह ऐयार शिवदत्त के दानों तरफ वैठे है और सभों की निगाह उन शराव की वोतलों और प्यालों पर वरावर पड रही है जो शिवदत्त के सामने काठ की चौकी पर रक्खी हुई हैं। धीरे धीरे शराव पीने के साथ साथ सब कोई शखी बघार रह है। कोई अपनी वहादुरी की तारिफ कर रहा हैतो कोई वीरेन्दसिह वगैरह को सहज में गिरफ्तार करने की तर्कीव वता रहा है। शिवदत्त ने सिर उठाया और वाकरअली ऐयार की तरफ देख कर कुछ कहना चाहा परन्तु उसी समय उसकी निगाह सामने मैदान की तरफ जा पडी और वह चौक उठा। एयारों ने भी

पीछे फिर कर देखा और देर तक उसी तरफ देखते रह।

दो मशालों की रोशनी जो कुछ दूर पर थी इसी तरफ आती दिखाई पड़ी। वे दोनों मशाल मामूली न थे वल्कि मालूम होता था कि लम्बे नेजे या छोट से वॉस क सिरे पर बहुत सा कपडा लपट कर मशाल का काम लिया गया है और उस हाथ में लिए वल्कि ऊँचा किए हुए दो सवार घोडा दौडाते इसी तरफ आ रहे है। उन्हीं मशालों को देखकर शिवदत्त चौका था।

वाकरअली एयार पेड से ऊपर चढ़ गया और थोड़ी देर में नीचे उतर कर वोला मशाल लेकर केवल दो सवार ही नही है बल्कि और भी कई सपार उनके साथ मालूम होते है।

थोडी देर में शिवदत्त के कई आदमी उन सवारों को अपने साथ लिये हुए वहीं आ पहुँचे जहाँ शिवदत्त वैठा हुआ था। उन सवारों में से एक ने घाड पर से उतरने में शीघ्रता की। शिवदत्त ने पहिचान लिया कि वह उसका लडका भीमसेन है। भीमसेन दौड़कर शिवदत्त के कदमों पर गिर पडा। शिवदत्त ने प्रेम के साथ उठा कर गले लगा लिया दानों की ऑखों में ऑसू भर आये और देर तक मुहव्वत भरी निगाहों से एक दूसरे का दखते रहे। इसके वाद लडके का हाथ थाम हुए शिवदत्त अपनी गददी पर जा वैठा और भीमसेन से वातचीत करने लगा। उन सवारों न भी कमर खाली जो साथ आये थे।

भीम–(गदगद् स्वर में) इन चरणों के दशन की कदापि आशा न थी।

शिव–ठीक है केवल मरी ही भूल ने यह सव किया परन्तु आज मुझ पर इश्वर की दया हुई है जिसका सबूत इससे बढ कर और क्या हो सकता है कि वीरेन्द्रसिह को मैंने फॉस लिया और मरा प्यारा लडका भी मुझस आ मिला। हॉ यह कहो तुम्हें छुट्टी क्याकर मिली ?

भीम–(अपने साथियों में से एक की तरफ इशारा करके) केवल इनकी बदौलत मेरी जान वची।

भीमसेन ने उस आदमी को जिसकी तरफ इशारा किया था अपने पास वुलाया और वैठने का इशारा किया वह अदव के साथ सलाम करन के वाद वैठ गया। उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष के होगी शरीर दुवला और कमजार था। रग यद्यपि गोरा और ऑखे वडी थीं परन्तु चेहरे से उदासी और लाचारी पाई जाती थी और यह भी मालूम होता था कि कमजोर हाने पर भी क्रोध ने उसे अपना सेवक वना रक्खा है।

भीम–इसी न मरी जान वचाइ है। यद्यपि यह दुवला और कमजोर मालूम होता है परन्तु परले सिरे का दिलावर और वात का धनी है और मैं दृढतापूर्वक कह सकता हूँ कि इसके ऐसा चतुर और वुद्धिमान होना आजकल के जमाने में कठिन है। यह ऐयार नहीं है मगर ऐयारों को कोई चीज नहीं समझता। यह राहतासगढ का रहने वाला है वीरेन्द्रसिह के कारिन्दों के हाथ से दु खी हो कर भागा और इसने कसम खा ली है कि जव तक वीरेन्द्रसिह और उनके खानदान का नाम निशान न मिटा दूँगा अन्न न खाऊँगा केवल कन्दमूल खा कर जान वचाऊगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह जो कुछ चाहे कर सकता है। रोहतासगढ के तहखाने और (हाथ का इशारा करके) इस खण्डहर का भेद भी यह बखूवी जानता है जिसमें वीरेन्दसिह वगैरह लाचार और आपक सिपाहियों से घिरे पडे है। इसन मुझे जिस चालाकी से निकाला उसका हाल इस समय कह कर समय नष्ट करना उचित नही जान पडता क्योंकि आज ही इस थोडी सी वची हुई रात में इसकी मदद स एक भारी काम निकलने की उम्मीद है। अव आप स्वय इससे वातचीत कर लें।

भीमसेन की वात जो उस आदमी की तारीफ से भरी हुई थी सुन कर शिवदत्त खुशी के मारे फूल उठा और उससे स्वय वातचीत करने लगा।

शिव–सब से पहिले मै आपका नाम सुनना चाहता हूँ।

वह–(धीरे से कान की तरफ झुक कर) मुझे लोग वॉकेसिह कह के पुकारते थे परन्तु अव कुछ दिनों के लिए मैंने अपना नाम वदल दिया है। आप मुझे रुहा कह कर पुकारा कीजिए जिसमें किसी को मेरा असल नाम मालूम न हो।

शिव–जैसा आपने कहा वैसा ही होगा। इस समय तो हमने वीरेन्द्रसिह को अच्छी तरह घेर लिया है उनके सिपाही भी बहुत कम है जिन्हें हम लोग सहज गिरफ्तार कर लेंगे। आपका प्रण भी अब पूरा हुआ ही चाहता है।

रुहा–(मुस्कुरा कर) इस बन्दोबस्त से आप वीरेन्द्रसिह का कुछ भी नहीं कर सकते।

शिव–सो क्यों ?

रुहा–क्या आप इस वात को नहीं जानते कि इस खण्डहर की दीवार वडी मजवूत है ?

शिव–बेशक मजबूत है मगर इससे क्या हा सकता है ?

रूहा–क्या इस खण्डहर के भीतर घुसकर आप उनका मुकाबला कर सकेंगे ?

शिव–क्यों नहीं !

रूहा–कभी नहीं इसके अन्दर सौ आदमियों से ज्यादे के जाने की जगह नहीं है और इतने आदमियों को बीरेन्द्रसिह के साथी सहज ही में काट गिरावेंगे !

शिव–हमार आदमी दीवारों पर चढ कर हमला करेंग और सबसे भारी बात यह है कि वे लोग दा ही तीन दिन में भूख प्यास स तग होकर लाचार बाहर निकलेंगे उस समय उनको मार लना काई बडी बात नहीं है।

रूहा–सा भी नहीं हो सकता क्योंकि यह खडहर एक छोटा सा तिलिस्म है जिसका रोहतासगढ के तहखाने वाले तिलिस्म स सम्बन्ध है। इसके अन्दर घुसना और दीवारों पर चढना खेल नहीं है। बीरेन्द्रसिह और उनके लडकों को इस खण्डहर का बहुत कुछ भेद मालूम है और आप कुछ भी नहीं जानते इसी से समझ लीजिए कि आपमें उनमें क्या फक है इसके अतिरिक्त इस खण्डहर में बहुत से तहखान ओर सुरगें भी हैं जिनसे वे लोग बहुत फायदा उठा सकत हैं।

शिव–(कुछ सोचकर) आप बडे बुद्धिमान हैं और इस खण्डहर का हाल अच्छी तरह जानते हे। अब मैं अपना बिल्कुल काम आप ही की राय पर छोडता हूँ, जो आप कहेंग मैं वही करूँगा अब आप ही कहिये क्या किया जाय ?

रूहा–अच्छा मैं आपकी मदद करूँगा आर राय दूगा पहिल आप बतावें कि बीरन्द्रसिह के यहा आने का सबब आप जानते है ?

शिव–नहीं।

रूहा–इसका असल हाल मुझे मालूम हो चुका है। (भीमसेन की तरफ दखकर) उस आदमी का कहना बहुत ठीक है।

भीम–बेशक ऐसा ही है वह आपका शागिर्द होकर आपसे झुठ कभी नहीं बोलेगा।

शिव–क्या बात है ?

रूहा–हम लोग यहाँ आ रहे थे तो रास्ते में मेरा एक चेला मिला था जिसकी जुबानी बीरेन्द्रसिह के यहाँ आने का सबब हम लोगों को मालूम हो गया।

शिव–क्या मालूम हुआ ?

रूहा–इस खण्डहर के तहखाने में कुँअर इन्द्रजीतसिह न मालूम क्योंकर जा फँसे है जो किसी तरह निकल नहीं सकते उन्हीं को छुडाने के लिये ये लोग आये हैं। मैं खण्डहर के हर एक तहखाने और उसके रास्ते को जानता हूँ, अगर चाहू तो कुँअर इन्द्रजीतसिह को सहज ही में निकाल लाऊँ।

शिव–आ हा यदि ऐसा हो तो क्या बात है। परन्तु आपको इस खण्डहर में कोई जाने क्यों देगा और बिना खण्डहर में गये आप तहखान के अन्दर पहुच नहीं सकते।

रूहा–नहीं नहीं खण्डहर में जाने की कोई जरूरत नहीं है मै बाहर ही बाहर अपना काम कर सकता हूँ।

शिव–तो फिर ऐसे काम में क्यों न जल्दी की जाय ?

रूहा–मरी राय है कि आप या आपके लडके भीमसेन पॉच सौ बहादुरों को साथ लेकर मेरे साथ चलें यहाँ से लगभग दो कोस जाने के बाद एक छाटा सा टूटा फूटा मकान मिलेगा पहिले उसे घेर लेना चाहिए।

शिव–उसे घेरने से क्या फायदा होगा ?

रूहा–इस खण्डहर में से एक सुरग गई है जो उसी मकान में निकली है ताज्जुब नहीं है कि बीरेन्द्रसिह वगैरह उस राह से भाग जायें इसलिये उस पर कब्जा कर लेना चाहिए। सिवाय इसके एक बात और है।

शिव–वह क्या ?

रूहा–उसी मकान में से दूसरी सुरग उस तहखाने में गई है जिसमें कुँअर इन्द्रजीतसिह है। यद्यपि उस सुरग की राह स इस तहखाने तक पहुँचते पहुँचते पाच दर्वाजे लोहे के मिलते हैं जिनका खोलना अति कठिन है परन्तु उनक खोलने की तर्कीब मुझे मालूम है। वहा पहुँच कर मै और भी कई काम करूँगा।

शिव–(खुश होकर) तब तो सबके पहिले हमें वहा पहुँचना चाहिए।

रूहा–बेशक ऐसा ही होना चाहिए पाच सौ सिपाही लेकर आप मेरे साथ चलिए या भीमसेन चलें फिर देखिये मै

क्या करता हूँ।

शिव–अब भीमसेन को तकलीफ देना तो मैं पसन्द नहीं करता।

रूहा–यह बहुत थक गये हैं और कैद की मुसीबत उठा कर कमजोर भी हो गये हैं यहा का इन्तजाम इन्हें सुपुर्द कीजिये और आप मेरे साथ चलिये।

इसके कुछ देर बाद शिवदत्त पाँच सौ फौज लेकर रूहा के साथ उत्तर की तरफ रवाना हुआ। इस समय पहर भर रात बाकी थी चाँद ने भी अपना चेहरा छिपा लिया था मगर रहमदिल तारे डबडबाई हुई आँखों से दुष्ट शिवदत्त और उसके साथियों की तरफ देख देख अफसोस कर रहे थे।

ये पाँच सौ लड़ाके घोड़ों पर सवार थे। रूहा और शिवदत्त अरबी घोड़ों पर सवार सबके आगे आगे जा रहे थे। रूहा केवल एक तलवार कमर में लगाये हुए था मगर शिवदत्त पूरे ठाठ से था। कमर में कटार और तलवार तथा हाथ में नेजा लिये हुए बड़ी खुशी से घुल घुल कर बातें करता जाता था। सड़क पथरीली और ऊँची नीची थी इसलिये ये लोग पूरी तेजी के साथ नहीं जा सकते थे तिस पर भी घंटे भर चलने के बाद एक छोटे से टूटे फूटे मकान की दीवार पर रूहा की नजर पड़ी और उसने हाथ का इशारा करके शिवदत्त से कहा, "बस अब हम लोग ठिकाने आ पहुँचे यही मकान है।"

शिवदत्त के साथी सवारों ने उस मकान को चारों तरफ से घेर लिया।

रूहा–इस मकान में कुछ खजाना भी है जिसका हाल मुझे अच्छी तरह मालूम है।

शिव–(खुश होकर) आजकल मुझे रुपये की जरुरत भी है।

रूहा–मैं चाहता हूँ कि पहिले केवल आपको इस मकान में ले चल कर दो एक जगह निशान और वहा का कुछ भेद बता दूँ फिर जैसा मुनासिब होगा वैसा किया जायगा। आप मेरे साथ अकेले चलने के लिये तैयार है, डरते तो नहीं ?

शिव–(घमण्ड के साथ) क्या तुमने मुझे डरपोक समझ लिया है ? और फिर ऐसी अवस्था में जबकि हमारे पाँच सौ सवारों से यह मकान घिरा हुआ है ?

रूहा–(हँसकर) नहीं नहीं मैंने इसलिए टोका कि शायद इस पुराने मकान में आपको भूत-प्रेत का गुमान पैदा हो।

शिव–छि मैं ऐसे खयाल का आदमी नहीं हूँ, बस देर न कीजिए चलिए।

रूहा ने पथरी से आग झाड़ कर मोमबत्ती जलाई जो उसके पास थी और शिवदत्त को साथ लेकर मकान के अन्दर घुसा। इस समय उस मकान की अवस्था बिल्कुल खराब थी केवल तीन कोठरियाँ बची हुई थीं जिनकी तरफ इशारा करके रूहा ने शिवदत्त से कहा, यद्यपि यह मकान बिल्कुल टूट फूट गया है मगर इन तीनों कोठरियों को अभी तक किसी तरह का सदमा नहीं पहुँचा है मुझे केवल इन्हीं कोठरियों से मतलब है। इस मकान की मजबूत दीवारें अभी दो तीन बरसातें सम्हालने की हिम्मत रखती है।

शिव- मैं देखता हूँ कि वे तीनों कोठरियाँ एक के साथ एक सटी हुयी हैं और इसका भी कोई सबब जरूर होगा।

रूहा–जी हाँ मगर इन तीन कोठरियों से इस समय तीन काम निकलेंगे।

इसके बाद रूहा एक कोठरी के अन्दर घुसा। इसमें एक तहखाना था और नीचे उतरने के लिए सीढियाँ नजर आती थीं। शिवदत्त ने पूछा 'मालूम होता है इसी सुरंग की राह आप मुझे ले चलेंगे ?' इसके जवाब में रूहा ने कहा 'हाँ इन्द्रजीतसिंह को गिरफ्तार करने के लिए इसी सुरंग में चलना होगा मगर अभी नहीं मैं पहिले आपको दूसरी कोठरी में ले चलता हूँ जिसमें खजाना है मेरी तो यही राय है कि पहिले खजाना निकाल लेना चाहिए, आपकी क्या राय है ?

शिव–(खुश होकर) हाँ हाँ पहिले खजाना अपने कब्जे में कर लेना चाहिए कहिए तो कुछ आदमियों को अन्दर बुलाऊँ ?

रूहा–अभी नहीं पहिले आप स्वयं चल कर उस खजाने को देख तो लीजिए !

शिव– अच्छा चलिये।

अब ये दोनों दूसरी कोठरी में पहुँचे। इसमें भी एक वैसा ही तहखाना नजर आया जिसमें उतरने के लिए सीढ़ियाँ मौजूद थीं। शिवदत्त को साथ लिए हुए रूहा उस तहखाने में उतर गया। यह ऐसी जगह थी कि यदि सौ आदमी एक साथ मिल कर चिल्लाए तो भी मकान के बाहर आवाज न जाय। शिवदत्त को उम्मीद थी कि अब रुपये और अशर्फियों से भरे हुए देग दिखाई देंगे मगर उसके बदले यहाँ दस सिपाही ढाल तलवार लिए मुँह पर नकाब डाल दिखाई दिये और साथ ही इसके एक सुरंग पर भी नजर पडी जो मालूम होता था कि अभी खोद कर तैयार की गई है। शिवदत्त एकदम काँप उठा उसे निश्चय हो गया कि रूहा ने मेरे साथ दगा की, और ये लोग मुझे मार कर इसी गड्ढे में दबा देंगे। उसने एक लाचारी की निगाह रूहा पर डाली और कुछ कहना चाहा मगर खौफ ने उसका गला ऐसा दबा दिया कि एक शब्द भी मुँह से न निकल सका।

उन दसों ने शिवदत्त को गिरफ्तार कर लिया और मुश्कें बाध लीं। रुहा ने कहा, "बस अब आप चुपचाप इन लोगों के साथ सुरग में चले चलिए नहीं तो इसी जगह आपका सिर काट लिया जायगा।"

इस समय शिवदत्त रुहा और उसके साथियों का हुक्म मानने के सिवाय और कुछ भी न कर सकता था। सुरग में उतरने के बाद लगभग आध कोस के चलना पडा इसके बाद सब लोग बाहर निकले और शिवदत्त ने अपने को एक सूनसान मैदान में पाया। यहाँ पर कई साईसों की हिफाजत में बारह घोडे कसे कसाय तैयार थे। एक पर शिवदत्त को सवार कराया गया और नीचे से उसके दोनों पैर बाध दिए गये बाकी पर रुहा और वे दसों नकाबपोश सवार हुए और शिवदत्त को लेकर एक तरफ को चलते हुए।

कुँअर इन्द्रजीतसिह पर आफत आने से वीरेन्द्रसिह दुखी होकर उनको छुडाने का उद्योग कर ही रहे थे परन्तु बीच में शिवदत्त का आ जाना बडा ही दुखदाई हुआ। ऐसे समय में जब कि यह अपनी फौज से बहुत ही दूर पड़े है सौ दो सौ आदमियों को लेकर शिवदत्त की दो हजार फौज से मुकाबला करना बहुत ही कठिन मालूम पडता था, साथ ही इसके यह सोच कर कि जब तक शिवदत्त यहाँ है कुँअर इन्दजीतसिह के छुडाने की कार्रवाई किसी तरह नहीं हो सकती वे और भी उदास हो रहे थे। यदि उन्हें कुँअर इन्द्रजीतसिह का खयाल न होता तो शिवदत्त का आना उन्हें न गढाता और वे लडने से बाज न आते मगर इस समय राजा बीरेन्द्रसिह बड़े फिक्र में पड गये और सोचने लगे कि क्या करना चाहिए। सबसे ज्यादा फिक्र तारासिह को थी क्योंकि वह कुँअर इन्दजीतसिह का मृत शरीर अपनी आँखों से दख चुका था। राजा बीरेन्द्रसिह और उनके साथी लोग तो अपनी फिक्र में लगे हुए थे और खण्डहर के दरवाजे पर तथा दीवारों पर से लडने का इन्तजाम कर रहे थे परन्तु तारासिह उस छोटी सी बावली के किनार जो अभी जमीन खोदने से निकली थी बैठा अपने खयाल में ऐसा डुबा था कि उसे दीन दुनिया की खबर न थी। वह नहीं जानता था कि हमारे सगी साथी इस समय क्या कर रहे है। आधी रात से ज्यादे जा चुकी थी मगर वह अपने ध्यान में डूबा हुआ बावली क किनारे बैठा है। राजा बीरेन्द्रसिह ने भी यह सोच कर कि शायद वह इसी बावली के विषय में कुछ सोच रहा है तारासिह को कुछ न टोका और न कोई काम उसके सुपुर्द किया।

हम ऊपर लिख आये है कि इस बावली में से कुल मिट्टी निकल जाने पर बावली के बीचोबीच में पीतल की मूरत दिखाई पडी। उस मूरत का भाव यह था कि एक हिरन का शेर ने शिकार किया है और हिरन की गर्दन का आधा भाग शेर क मुह में है। मूरत बहुत ही खूबसूरत बनी हुई थी।

जिस समय का हाल हम लिख रहे है अर्थात आधी रात गुजर जाने के बाद यकायक उस मूरत म एक प्रकार की चमक पैदा हुई और धीरे धीरे वह चमक यहा तक बढ़ी कि तमाम बावली बल्कि तमाम खण्डहर में उजियाला हो गया जिसे देख सब के सब घबरा गए। बीरेन्दसिह तेजसिह और कमला तीनों आदमी फुर्ती के साथ उस जगह पहुचे जहाँ तारासिह बैठा हुआ ताज्जुब में आकर उस मूरत को देख रहा था।

घण्टा भर बीतते बीतते मालूम हुआ कि वह मूरत हिल रही है। उस शेर की दोनों आखें ऐसी चमक रही थीं कि निगाह नहीं ठहरती थी। मूरत को हिलते देख सभों को बडा ताज्जुब हुआ और निश्चय हो गया कि अब तिलिस्म की कोई न कोई कार्रवाई हम लाग जरूर देखेंगे।

यकायक मूरत बडे जोर से हिली और तब एक भारी आवाज के साथ जमीन के अन्दर धस गई। खण्डहर में चारों तरफ अन्धेरा हो गया। कायदे की बात है कि आखों के सामने जब थोडी देर तक कोई तेज रोशनी रहे और वह यकायक गायब हो जाय या बुझा दी जाय तो आँखों में मामूली से ज्यादा अधेरा छा जाता है वही हालत इस समय खण्डहर वालों की हुई। थोडी देर तक उन लोगों को कुछ भी नहीं सूझता था। आधी घडी गुजर जाने के बाद वह गड़हा दिखाई देने लगा जिसके अन्दर मूरत धस गई थी। उस गडहे के अन्दर भी एक प्रकार की चमक मालूम होने लगी और देखते देखते हाथ में चमकता हुआ नेजा लिए वही राक्षसी उस गड़हे में से बाहर निकली जिसका जिक्र ऊपर कई दफे किया जा चुका है।

हमारे बीरेन्दसिह और उनके ऐयार लोग उस औरत को कई दफे देख चुक थे और वह औरत इनके साथ अहसान भी कर चुकी थी इसलिये उसे यकायक दख कर वे लोग कुछ प्रसन्न हुए और उन्हें विश्वास हो गया कि इस समय यह औरत जरूर हमारी कुछ न कुछ मदद करेगी और थोडा बहुत यहा का हाल भी हम लोगों को जरूर मालूम होगा।

उस औरत ने नजे को हिलाया। हिलने के साथ ही बिजली सी चमक उसमें पैदा हुई और तमाम खण्डहर में उजाला हो गया। वह बीरेन्द्रसिह के पास आई और बाली आपको पहर भर की मोहलत दी जाती है। इसके अन्दर इस खण्डहर क हर एक तहखाने में यदि रास्ता मालूम है तो आप घूम सकते हैं। शाहदवाजा जो बन्द हो गया था उसे आपकी खातिर से पहर भर के लिये मैंने खोल दिया। इससे विशेष समय लगाना अनर्थ करना है।

इतना कह वह राक्षसी उसी गड़हे में घुस गई और वह पीतल वाली मूरत जो जमीन के अन्दर धँस गई थी फिर अपने स्थान पर आ कर बैठ गई, इस समय उसमें किसी तरह की चमक न थी।

अब वीरेन्द्रसिंह और आनन्दसिंह वगैरह को कुंअर इन्द्रजीतसिंह से मिलने की उम्मीद हुई।

वीरेन्द्र–कुछ नहीं मालूम होता कि यह औरत कौन है और समय समय पर हम लोगों की सहायता क्यों करती है।

तारा–जब तक वह स्वयं अपना हाल न कहे हम लोग उसे किसी प्रकार नहीं जान सकते परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह औरत तिलिस्मी है और कोई भारी सामर्थ्य रखती है।

कमला–परन्तु सूरत इसकी भयानक है।

तेज–यदि यह सूरत बनावटी हो तो भी कोई आश्चर्य नहीं।

वीरेन्द–हो सकता है खैर अब हमको तहखाने के अन्दर चलना और इन्द्रजीत को छुड़ाना चाहिए, पहर भर का समय हम लोगों के लिये कम नहीं है मगर शिवदत्त के लिये क्या किया जाय? यदि वह इस खंडहर में घुस आने और लड़ने का उद्योग करेगा तो यह अमूल्य समय पहर भर यों ही नष्ट हो जायगा।

तेज–इसमें क्या सन्देह है? ऐसे समय में इस कम्बख्त का चढ़ आना बड़ा ही दुःखदायी हुआ।

इतना कह कर तेजसिंह गौर में पड़ गये और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये। इसी बीच में खण्डहर के फाटक की तरफ से सिपाहियों के चिल्लाने की आवाज आई और यह भी मालूम हुआ कि वहाँ लड़ाई हो रही है।

जिस समय शिवदत्त के चढ़ आने की खबर मिली थी उसी समय राजा वीरेन्द्रसिंह के हुक्म से पचास सिपाही खण्डहर के फाटक पर मुस्तैद कर दिये गये थे और उन सिपाहियों ने आपस में निश्चय कर लिया था कि जब तक पचास में से एक भी जीता रहेगा फाटक के अन्दर कोई घुसने न पावेगा।

फाटक पर कोलाहल सुनकर तेजसिंह और तारासिंह दौड़ गये और थोड़ी देर में वापस आकर खुशी भरी आवाज में तेजसिंह ने वीरेन्द्रसिंह से कहा "बेशक फाटक पर लड़ाई हो रही है। न मालूम हमारे किस दोस्त ने किस ऐयारी से शिवदत्त को गिरफ्तार कर लिया जिससे उसकी फौज हताश हो गई। थोड़े आदमी तो फाटक पर आकर लड़ रहे है और बहुत से भागे जा रहे हैं। मैंने एक सिपाही से पूछा तो उसने कहा कि "मैं अपने साथियों के साथ फाटक पर पहरा दे रहा था कि यकायक कुछ सवार इसी तरफ से मैदान की ओर भागे जाते दिखाई दिये। वे लोग चिल्ला चिल्ला कर यह कहते जाते थे कि तुम लोग भागो और अपनी जान बचाओ। शिवदत्त गिरफ्तार हो गया, अब तुम उसे किसी तरह से नहीं छुड़ा सकते। इसके बाद बहुत से तो भाग गये और भाग रहे है मगर थोड़े आदमी यहाँ आ गये जो लड़ रहे है।

तेजसिंह की बात सुन कर वीरेन्द्रसिंह वीर भाव से यह कहते हुए फाटक की तरफ लपके कि "तब तो पहिले उन्हीं लोगों को भगाना चाहिए जो भागने से बच रहे हैं जब तक दुश्मन का कोई आदमी गिरफ्तार न होगा खुलासा हाल मालूम न होगा।

खण्डहर के फाटक पर से लौट कर तेजसिंह ने जो कुछ हाल राजा वीरेन्द्रसिंह से कहा वह बहुत ठीक था। जब रूहा अपनी बातों में फँसा कर शिवदत्त को ले गया उसके दो घण्टे बाद भीमसेन ने अपने साथियों को तैयार होने और घोड़े कसने की आज्ञा दी। शिवदत्त के ऐयारों को ताज्जुब हुआ उन्होंने भीमसेन से इसका सबब पूछा जिसके जवाब में भीमसेन ने केवल इतना ही कहा कि हम क्या करते है सो अभी मालूम हो जायगा। जब घोड़े तैयार हो गये तो साथियों को कुछ इशारा करके भीमसेन घोड़े पर सवार हो गया और म्यान से तलवार निकाल शिवदत्त के आदमियों को जख्मी करता और यह कहता हुआ कि तुम लोग भागो और अपनी जान बचाओ तुम्हारा शिवदत्त गिरफ्तार हो गया अब तुम उसे किसी तरह नहीं छुड़ा सकते मैदान की तरफ भागा। उस समय शिवदत्त के ऐयारों की आँखें खुली और वे समझ गये कि हम लोगों के साथ ऐयारी की गई तथा यह भीमसेन नहीं है बल्कि कोई ऐयार है। उस समय शिवदत्त की फौज हर तरह से गाफिल और बेफिक्र थी। शिवदत्त के ऐयारों के हुक्म से यद्यपि कई आदमियों ने घोड़ों की नंगी पीठ पर सवार होकर नकली भीमसेन का पीछा किया मगर अब क्या हो सकता था, बल्कि उसका नतीजा यह हुआ कि फौजी आदमी अपने साथियों को भागता हुआ समझ खुद भी भागने लगे। ऐयारों ने रोकने के लिए बहुत उद्योग किया परन्तु बिना मालिक की फौज कब तक रुक सकती थी बड़ी मुश्किल से थोड़े आदमी रुके और खण्डहर के फाटक पर आकर हुल्लड़ मचाने लगे परन्तु उस समय उन लोगों की हिम्मत भी जाती रही जब बहादुर वीरेन्द्रसिंह आनन्दसिंह उनके ऐयार तथा शेरदिल साथी और सिपाही हाथों में नंगी तलवार लिये उन लोगों पर आ टूटे। राजा वीरेन्द्रसिंह और कुँअर आनन्दसिंह शेर की तरह जिस तरफ झपटते थे सफाई हो जाती थी जिसे देख शिवदत्त के आदमियों में से बहुतों की तो यह अवस्था हो गई कि खड़े होकर उन दोनों की बहादुरी देखने के सिवाय कुछ भी न कर सकते थे। आखिर यहाँ तक नौबत पहुँची कि सभों ने पीठ दिखा दी और मैदान का रास्ता लिया।

इस लडाई में जो घटे भर स ज्याद देर तक होती रही राजा बीरेन्द्रसिह के दस आदमी मारे गये और बीस जख्मी हुए। शिवदत्त के चालीस मारे गए और साठ जख्मी हुए जिनसे दरियाफ्त करने पर राजा बीरेन्द्रसिह को भीमसेन और शिवदत्त का खुलासा हाल जैसा कि हम ऊपर लिख आए हैं मालूम हा गया मगर इसका पता न लगा कि शिवदत्त को किसने किस रीति से गिरफ्तार कर लिया।

बीरेन्द्रसिह न अपने कई आदमी लाशों को हटान और जख्मियों की हिफाजत के लिए तैनात किया और इसके बाद कुँअर इन्द्रजीतसिह का छुडाने के लिए खण्डहर के तहखाने में जाने का इरादा किया।

जिस तहखाने में कुँअर इन्द्रजीतसिह थे उसके रास्ते का हाल कइ दफे लिखा जा चुका है पुन लिखने की कोइ जरूरत नहीं इसलिए केवल इतना ही लिखा जाता है कि वे दर्वाजे जिनका खुलना शाहदवाजा बन्द हो जाने के कारण कठिन हा गया था अव सुगमता से खुल गए जिसमें सभों को खुशी हुइ और केवल बीरेन्द्रसिह आनन्दसिह तेजसिह कमला और तारासिह मशाल लकर उस तहखाने के अन्दर उतर आए।

इस समय तारासिह की अजब हालत थी। उसका कलेजा कापता और उछलता था। वह सोचता था कि देखें कुँअर इन्द्रजीतसिंह भैरोसिह और कामिनी को किस अवस्था में पाते हैं। ताज्जुब नहीं कि हमारे पाठकों की भी इस समय वही अवस्था हा और वे भी इसी सोच विचार में हों मगर वहाँ तहखाने में तो मामला ही दूसरे ढग का था।

तहखाने में उतर जाने के बाद राजा बीरेन्द्रसिह आनन्दसिह और एयारों ने चारों तरफ दखना शुरू किया मगर काई आदमी दिखाई न पडा और न कोई एसी चीज नजर पडी जिससे उन लोगों का पता लगता जिनकी खोज में वे लोग तहखाने क अन्दर गए थे। न तो वह सन्दूक था जिसमें इन्द्रजीतसिह की लाश थी और न भैरोसिह कामिनी या उस सिपाही की सूरत नजर आई जो उस सदूक के साथ तहखाने में आया था जिसमें कुँअर इन्द्रजीतसिह की लाश थी।

बीरेन्द्र–(तारासिंह की तरफ देख कर) यहा तो काई भी नहीं है। क्या तुमने उन लोगों का किसी दूसर तहखाने में छोडा था।

तारा–जी नहीं मैंन उन सभों को इसी जगह छोडा। (हाथ स इशारा करके) इसी कोठरी में कामिनी ने अपने को वन्द कर रक्खा था।

बीरेन्द्र–कोठरी का दवाजा खुला हुआ है उसक अन्दर जाकर देखो तो शायद कोई हो।

कमला ने कोठरी का दर्वाजा खोला और अन्दर झाक कर देखा इसके बाद कोठरी के अन्दर घुस कर उसने आनन्दसिह और तारासिंह को पुकारा और उन दोनों ने भी कोठरी के अन्दर पैर रक्खा।

कमला तारासिंह और आनन्दसिह को कोठरी के अन्दर घुसे आधी घडी से ज्यादे गुजर गई मगर उन तीनों में स एक भी वाहर न निकला। आखिर तेजसिह ने पुकारा परन्तु जवाव न मिलने पर लाचार हो हाथ में मशाल लेकर तेजसिह खुद कोठरी के अन्दर गए और इधर उधर ढूढने लगे।

वह कोठरी बहुत छोटी और सगीन थी। चारों तरफ पत्थर की दीवारों पर खूब ध्यान देने से कोई खिडकी या दर्वाजे का निशान नहीं पाया जाता था हा ऊपर की तरफ एक छोटा सा छेद दीवार में था मगर वह भी इतना छोटा था कि आदमी का सिर किसी तरह उसके अन्दर नहीं जा सकता था और दीवार में काई ऐसी रुकावट भी न थी जिस पर चढ के या पैर रख कर कोई आदमी अपना हाथ उस मोखे (छेद) तक पहुचा सके। ऐसी कोठरी में से यकायक कमला तारासिह और आनन्दसिह का गायब हा जाना वडे ही आश्चर्य की वात थी। तजसिह ने इसका सबब बहुत कुछ सोचा मगर अक्ल ने कुछ मदद न की। बीरेन्द्रसिह भी कोठरी के अन्दर गये और तलवार के कब्जे से हर एक दीवार को ठोंक ठोंक कर दखने लगे जिससे मालूम हो जाय कि किसी जगह से दीवार पोली तो नहीं है मगर इसस भी कोई काम न चला। थोडी देर तक दानों आदमी हैरान हो चारो तरफ दखते रहे। आखिर किसी आवाज ने उन्हें चोकन्ना कर दिया और वे दोनों ध्यान दकर उस छेद की तरफ देखने लगे जो उस कोठरी के अन्दर ऊची दीवार में था और जिसमें से आवाज आ रही थी। वह आवाज यह थी –

"वस जहा तक जल्द हो सके तुम दोनों आदमी इस तहखाने स वाहर निकल जाओ नहीं तो व्यर्थ तुम दोनों की जान चली जायगी अगर वचे रहोगे तो दोनों कुमारों को छुडाने का उद्योग करोगे और पता लगा ही लागे। मैं वही बिजली की तरह चमकने वाला नेजा हाथ में रखने वाली औरत हू, पर लाचार इस समय किसी तरह तुम्हारी मदद नहीं कर सकती। अब तुम लोग बहुत जल्द रोहतासगढ चले जाओ उसी जगह आकर मैं तुमसे मिलूगी और सब हाल खुलासा कहूगी। अव मैं जाती हू क्योंकि इस समय मुझे भी अपनी जान की पडी है।

इस वात को सुन कर दानों आदमी ताज्जुव में आ गए और कुछ दर तक सोचने क वाद तहखाने के वाहर िकल आए।

डवडवाइ आखों के साथ उसास लेते हुए राजा वीरन्दसिह राहतासगढ की तरफ रवाना हुए। कैदियों और अपन कुल आदमियों का साथ लते गए मगर तेजसिंह ने न मालूम क्या कह सुन कर और क्यों छुट्टी ले ली और राजा वीरन्द्रसिह क साथ राहतासगढ न गय।

राजा वीरन्द्रसिह राहतासगढ की तरफ रवाना हुए तेजसिह ने दक्खिन का रास्ता लिया। इस वारदात को कइ महीन गुजर गय और इस वीच में कोई वात ऐसी नहीं हुई जा लिखन याग्य हो।

तीसरा बयान

अव हम अपने पाठकों का फिर उसी मदान क वीच वाल अद्भुत मकान क पास ल चलत है जिसक अन्दर इन्द्रजीतसिह देवीसिह शरसिह और कमलिनी के सिपाही लाग जा फस थ अर्थात् कमन्द क सहार दीवार पर चढ कर अन्दर की तरफ झाकने के वाद हसत हसत उस मकान में कूद पडे थे। हम लिख आए है कि जव व लाग मकान के अन्दर कूद गए तो न मालूम क्या समझ कर कमलिनी हसी और अपनी ऐयारा तारा को साथ ले वहा से रवाना का गइ।

तारा का साथ लिए और वात करती हुई कमलिनी दक्खिन की तरफ रवाना हुई जिधर का जगल घना और साहावना था। लगभग दा कास चल जान क वाद जगल वहुत ही रमणीक मिला वल्कि यों कहना चाहिय कि जैस जैस वे दोनों वढती जाती थी जगल सुहावना आर खुशवूदार जगली फूलो की महक स वसा हुआ मिलता जाता था यहा तक कि दानों एक ऐस सुन्दर चश्क क किनार पहुची जिसका जल विल्लौर की तरह साफ था और जिसके दानों किनारों पर दूर दूर तक मौलसिरी के पड लगे हुए थ। इस चश्म का पाट दस हाथ का हागा आर गहराइ दो हाथ स ज्याद न हागी। यहा की जमीन पथरीली और पहाडी थी।

अव ये दोनों उस चश्मे के किनारे किनारे जाने लगी। ज्यों ज्यों आग जाती थीं जमीन ऊची मिलती जाती थी जिमस समझ लना चाहिए कि यह मुकाम किसी पहाडी की तराई में है। लगभग आधा कोस जाने के वाद वे दोनों ऐसी जगह पहुचीं जहाँ चश्म के किनार वाले मौलसिरी* क पेड झुक कर आपुस में मिल गए थे और जिसके सबब से चश्मा अच्छी तरह से ढक कर मुसाफिरों का दिल लुभा लेने वाली छटा दिखा रहा था। इस जगह चश्मे के किनारे एक छोटा सा चवूतरा था जिसकी ऊचाई पुर्सा भर से कम न हागी। चवूतरे पर एक छोटी सी पिण्डी इस ढंग से बनी हुई थी जिसे दखते ही लागों को विश्वास हा जाय कि किसी साधु की समाधि है।

इस ठिकाने पहुँच कर वे दोनों रुकीं और घोड़े से नीचे उतर पड़ी। तारा ने अपने घोडे का असवाव नहीं उतारा अर्थात् उसे कसा कसाया छोड दिया परन्तु कमलिनी ने अपन घोडे का चारजामा उतार लिया और लगाम उतार कर घोड का यों ही छोड दिया। घोडा पहिले ता चश्मे के किनार आया और पानी पीने के वाद कुछ दूर जाकर सब्ज जमीन पर चरने और खुशी खुशी घूमन लगा। तारा ने भी अपने घोडे को पानी पिलाया और वागडोर के सहारे एक पेड़ से बाध दिया। इसके वाद कमलिनी और तारा चश्मे क किनारे पत्थर की एक चट्टान पर वैठ गईं और यों वातचीत करने लगीं -

कम–अव इसी जगह से मैं तुमसे अलग होऊँगी।

तारा–अफसोस यह दुश्मनी अव हद से ज्यादे वढ चली ?

---

*इसका नाम 'मालश्री' भी है।

कम–फिर क्या किया जाय तू ही बता इसमें मेरा क्या कसूर है ?

तारा–तुम्हें कोई भी दोषी नहीं ठहरा सकता इसमें कोई सन्देह नहीं कि महारानी अपने पैर में आप कुल्हाडी मार रही है।

कम–हर एक लक्षण पर ध्यान देने स महारानी को भी निश्चय हा गया है कि ये ही दोनों भाई तिलिस्म के मालिक होंगे फिर उसके लिए जिद करना और उन दोनों की जान लेने का उद्योग करना भूल नहीं तो क्या है ?

तारा–वेशक भूल है और इसकी वह सजा पावेंगी। तुमने वहुत अच्छा किया कि उनका साथ छोड दिया। (मुस्करा कर) इसके वदले में जन्र तुम्हारी मुराद पूरी होगी।

कम–(ऊँची सास लेकर) दखें क्या होता है।

तारा–हाना क्या है। क्या उनकी ऑखों ने उनके दिल का हाल तुमसे नहीं कह दिया ?

कम–हा ठीक है खैर इस समय तो उन पर भारी मुसीवत आ पडी है जहा तक जल्द हो सके उन्हें बचाना चाहिए।

तारा–मगर मुझे ताज्जुब मालूम पडता है कि उनके छुडाने का कोई उद्याग किए बिना ही तुम यहा चली आई ?

कम–क्या तुझ मालूम नहीं कि नानक ने इसी ठिकाने मुझसे मिलने का वादा किया है ? उसने कहा था कि जब मिलना हा इसी ठिकाने आना।

तारा–(कुछ सोच कर) हॉ हॉ ठीक है अव याद आया तो क्या वह यही जगह है ?

कम–हा यही जगह है।

तारा–मगर तुम तो इस तरह घोडा फेंके चली आई जैसे कई दफे आने जाने के कारण यहॉ का रास्ता तुम्हें बखूबी याद हो।

कम–बेशक मैं यहा कइ दफे आ चुकी हूँ बल्कि नानक का इस ठिकाने का पता पहिले मैंने ही बताया था और यहा का भेद भी कहा था।

तारा–अफसोस इस जगह का भेद तुमने आज तक मुझसे कुछ नहीं कहा।

कम–यद्यपि तू ऐयारा है और मैं तुझे चाहती हूँ परन्तु तिलिस्मी कायदे के मुताबिक मेरे भेदों को तू नहीं जान सकती।

तारा–सो ता मैं भी जानती हूँ मगर अफसास इस वात का है कि मुझसे तो तुमने छिपाया और नानक को यहॉ का भद बता दिया। न मालूम नानक की कौन सी वात पर तुम रीझ गई हा।

कम–(कुछ हँस कर और तारा के गाल पर धीरे से चपत मार कर) बदमाश कहीं की मैं नानक पर क्यों रीझने लगी ?

तारा–(झुझला कर) तो फिर ऐसा क्यों किया ?

कम–अरे उससे उस कोठरी की ताली न लेनी है जिसमें खून से लिखी हुई किताब रक्खी है।

तारा–तो फिर ताली लेने के पहिले ही यहा का भेद उसे क्यों बता दिया ? अगर वह ताली न दे तब ?

कम–ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि भूतनाथ ने मेरी दिलमजई कर दी है और वह भूतनाथ के कब्जे में है।

हा हा वह मेरे कब्जे में है– उसी समय यह आवाज पेडों के झुरमुट में स जो कमलिनी के पीछे की तरफ था आई और कमलिनी ने फिर कर देखा तो भूतनाथ की सूरत दिखाई पडी।

कम–अजी आओ भूतनाथ तुम कहा थे ? मै बडी देर से यहा बैठी हूँ, नानक कहा है ?

भूत–(पास आकर) आ ही तो गये (हाथ का इशारा करके) वह देखो नानक भी आ रहा है।

वात की वात में नानक भी वहा आ पहुँचा और कमलिनी को सलाम करके खडा हो गया।

कम–कहो जी नानकप्रसाद अव वादा पूरा करने में क्या देर है ?

नानक–कुछ दर नहीं मैं तैयार हूँ, परन्तु आप भी अपना वादा पूरा कीजिए और समाधि पर हाथ रख कर कसम खाइये।

कम– हॉ हॉ लो मै अपना वादा पूरा करती हू।

भूत–मेरा भी ध्यान रखना।

कम–अवश्य।

कमलिनी उठी और समाधि के पास जाकर खडी हो गई। पहिले तो उसने समाधि के सामने अदव से सिर झुकाया और तब उस पर हाथ रखकर यों बोली–

मैं उस महात्मा की समाधि पर हाथ रख कर कसम खाती हूँ जो अपना सानी नहीं रखता था हर एक शास्त्र का पूरा पण्डित पूरा योगी भूत भविष्य और वर्तमान का हाल जानने वाला और ईश्वर का सच्चा भक्त था। यद्यपि यह

उसकी समाधि है परन्तु मुझे विश्वास है कि योगिराज सजीव हैं और मेरी रक्षा का ध्यान उन्हें सदैव बना रहता है। (हाथ जोड कर) योगीराज से मैं प्रार्थना करती हूँ कि मेरी प्रतिज्ञा को निवाहें। (समाधि पर हाथ रख कर) यदि नानक मुझे वह ताली दे देगा तो मैं उस के साथ कभी दगा न करूँगी उसे अपने भाई के समान मानूगी और उसी काम में उद्योग करूँगी जिसमें उसकी खुशी हो। मैं उस आदमी के लिये भी कसम खाती हूँ जिसने अपना नाम भूतनाथ रक्खा हुआ है। उसे मैं अपने सहोदर भाई के समान मानूगी और जब तक वह मेरे साथ बुराई न करेगा मैं उसकी भलाई करती रहूगी।

इतना कह कर कमलिनी समाधि से अलग हो गई। नानक ने एक छोटी सी डिबिया कमलिनी के हाथ में दी और उसके पैरों पर गिर पडा। कमलिनी ने पीठ ठोंक कर उसे उठाया और उस डिबिया को इज्जत के साथ सिर से लगाया। इसके बाद चारों आदमी फिर उस पत्थर की चट्टान पर आ कर बैठ गये और बातचीत होने लगी।

भूत–(कमलिनी से) जब आपने मुझे और नानक को अपने भाई के समान मान लिया तो मुझे जो कुछ आपसे कहना हो दिल खोल कर कह सकता हू और जो कुछ मागना हो माग सकता हूँ चाहे आप दें अथवा न दें।

कम–(मुस्कुरा कर) हा हा जो कुछ कहना हो कहो और मागना हो मागो।

कम–इसके कहने की तो कोई जरूरत न थी मैं स्वय चाहती थी कि तुम दोनों को कोई अनमोल वस्तु दूँ, खैर ठहरो मैं अभी ला देती हूँ।

भूत–इसमें कोई सदेह नहीं कि आप के पास एक से एक बढकर अनमोल चीजें होंगी अस्तु मुझे और नानक को कोई ऐसी चीज दीजिए जो समय पर काम आये और दुश्मनों को धमकाने और उन पर फतह पाने के लिए बनजीर हो।

इतना कह कर कमलिनी उठी और चश्मे के जल में कूद पडी। उस जगह जल बहुत गहरा था इसलिए मालूम न हुआ कि वह कहाँ चली गई। कमलिनी के इस काम ने सभों को ताज्जुब में डाल दिया और तीनों आदमी टकटकी बाध कर उसी तरफ देखने लगे।

आध घण्टे बाद कमलिनी जल के बाहर निकली। उसके एक हाथ में छोटी सी कपडे की गठरी और दूसरे हाथ में लोहे की जजीर थी। यद्यपि कमलिनी जल में से निकली थी और उसके कपडे गीले हो रहे थे तथापि उस कपडे की गठरी पर जल ने कुछ भी असर न किया था जिसे कमलिनी लाई थी।

कमलिनी ने कपडे की गठरी पत्थर की चट्टान पर रख दी और लोहे की जजीर भूतनाथ के हाथ में देकर बोली इसे तुम दोनों आदमी मिल कर खींचो। उस जजीर के साथ एक छोटा सा लोहे का मगर हलका सन्दूक बधा था जिसे भूतनाथ और नानक ने खेंच कर बाहर निकाला।

कमलिनी ने एक खटका दबा कर सन्दूक खोला। इसके अन्दर चार खजर एक नेजा और पाच अगूठियां थीं। कमलिनी ने पहिले एक अगूठी निकाली और अपनी अगुली में पहिर लिया, इसके बाद एक खजर निकाला और उसे म्यान से बाहर कर तारा भूतनाथ और नानक को दिखा कर बोली "देखो इस खजर का लोहा कितना उम्दा है!

भूत–बेशक बहुत उम्दा लोहा है!

कम–अब इसके गुण सुनो। यह खजर जिस चीज पर पड़ेगा उसे दो टुकड़े कर देगा चाहे वह चीज लोहा पत्थर अष्टधातु या फौलादी हर्बा क्यों न हो। इसके अतिरिक्त जब इसका कब्जा दबाओगे तो इसमें बिजली की तरह चमक पैदा होगी उस समय यदि सौ आदमी भी तुम्हें घेरे हुए होंगे तो चमक से सभी की आखें बन्द हो जायगी। यद्यपि इस समय दिन है और किसी तरह की चमक सूर्य का मुकाबला नहीं कर सकती तथापि इसका मजा मैं तुम्हें दिखाती हूँ।

इतना कह कर कमलिनी ने खजर का कब्जा दबाया, यकायक इतनी ज्याद चमक उसमें से पैदा हुई कि दिन का समय होने पर भी उन तीनों की आखें बन्द हो गई मालूम हुआ कि एक बिजली सी ऑख के सामने चमक गई।

कम–सिवाय इसके इस खजर का जो भी कोई छूएगा या जिसके बदन से यह खजर छुआ दोगे उसके खून में एक प्रकार की बिजली दौड़ जायगी और वह तुरन्त बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ेगा। लो इसे तुम लोग छू कर देखो यही अद्भुत खजर तुम लोगों को दूगी।

कमलिनी ने खजर भूतनाथ के आगे रख दिया भूतनाथ ने उसे उठाना चाहा मगर हाथ लगने के साथ ही वह कापा और बदहवास होकर जमीन पर गिर पडा। कमलिनी ने अपना दूसरा हाथ जिसमें अगूठी थी उसके बदन पर फेरा तब उसे होश आया।

भूत–चीज तो बहुत अच्छी है मगर इसका छूना गजब है।

कम–(सन्दूक में से कई अगूठियां निकाल कर) पहले इन अगूठियों को तुम लोग पहिरो तब इस खजर को हाथ में ले सकोगे और तब इसकी तेज चमक भी तुम्हारी आखों पर अपना पूरा असर न कर सकेगी अर्थात् जो कोई मुकाबले में

या तुम्हारे चारो तरफ होगा। उसकी आखें तो बन्द हो जायेंगी मगर तुम्हारी आखें खुली रहेंगी और तुम दुश्मन को बखूबी मार सकोगे।

इतना कह कर कमलिनी ने एक एक अगूठी तीनों को पहिरा दी और इसके वाद एक एक खजर तीनों के हवाले किया। तारा भूतनाथ और नानक एसा अदभूत खजर पाकर हद से ज्यादे खुश हुए और घडी घडी उसका कब्जा दबा कर उसकी चमक का मजा लेते रहे।

कम–अव एक खजर और एक अगूठी वच गई सो कुँअर इन्द्रजीतसिह के लिए अपने पास रक्खूँगी जिस समय उनसे मुलाकात होगी उनके हवाले करूँगी और यह अगूठी जो मेरी उगली में है और यह नेजा जो अपने वास्ते लाई हूँ, इसमें भी वही गुण है जा खजर में है मगर फर्क इतना है कि बनिस्वत खजर के इस नेजे में बिजली का असर बहुत ज्यादे है।

उस नेज के चार टुकडे थे जो पेंच पर चढा कर एक कर दिये जाते थे। कमलिनी ने इन चारों टुकडों को एक कर दिया और अव वह पूरा नेजा हा गया।

भूत–इसमें काई सन्देह नहीं कि आपने हम लोगों को अद्भूत और अनमोल चीज दी इसकी बदौलत हम लोगों के हाथ से वड बडे काम निकलेंगे।

इसक वाद कमलिनी ने वह कपडे की गठरी खोली। इसमें स्याह रग की एक साडी एक चोली और एक बोतल थी। कमलिनी उठ कर समाधि क पीछे गई और गीले कपडे उतार कर वही काली साडी और चोली पहिर कर अपने ठिकाने आ बैठी। वह साडी और चोली रेशमी थी और उसमें एक प्रकार का रोगन चढा हुआ था जिसके सबब उस कपडे पर पानी का असर नहीं होता था। कमलिनी ने वह गीली साडी और चोली तारा के सामने रख दी और बोली 'इसे तू पेड पर डाल दे जिसमें झटपट सूख जाय इसके बाद तू कमलिनी बन जा अर्थात मेरी तरह अपनी सूरत बना ले और इसी साडी और चोली का पहिर कर मेरे घर अर्थात उस तालाब वाले मकान में जाकर बैठ जिसमें नौकरों को मेरे गायब होने का हाल मालूम न हो वे यही समझ कि तारा कहीं गई हुई है।

तारा–वहुत अच्छा मगर आप कहाँ जायगी।

कम–मेरा काई ठिकाना नहीं मुझे वहुत काम करना है। (भूतनाथ और नानक की तरफ देख कर) आप लोग भी जाइये और जहाँ तक हो सक राजा वीरेन्द्रसिह की भलाई का उद्योग कीजिये।

नानक–वहुत अच्छा। (हाथ जोड कर) मेरी एक बात का जवाब दीजिये तो बड़ी कृपा होगी।

कम–वह क्या ?

नानक–इस प्रकार का खजर उन लोगों के पास भी है या नहीं ?

कम–(हँस कर) क्या उन लोगों के पास पुन जाने की इच्छा है ? अपनी रामभोली को देखा चाहता है।

नानक–हॉ यदि मौका मिलेगा तो।

कम–अच्छा जा काई हर्ज नहीं, इस प्रकार की कोई वस्तु उन लोगों के पास नहीं है और न इसका पता ही मिल सकता है मगर जो कुछ कीजिये होशियारी के साथ।

इसके याद कमलिनी ने वह बोतल खोली जो कपडे की गठरी में थी। उसमें किसी प्रकार का अर्क था। समाधि के पीछे जाकर कमलिनी ने वह अर्क अपने तमाम बदन में लगाया जिससे वात की बात में उसका रग बहुत ही काला हो गया तब वह फिर तारा के पास आई और उससे दो लम्बे बनावटी दात लेकर अपने मुह में लगाने के बाद नेजा हाथ में लेकर खड़ी हो गई।

तारा ने भी अपनी सूरत बदली और कमलिनी बन कर तैयार हो गई। इस काम में भूतनाथ ने उसकी मदद की। कमलिनी के हुक्म से वह सन्दूक और जजीर पानी में डाल दी गई।

कमलिनी ने अपने घोडे को आवाज दी। यद्यपि वह कुछ दूर पर चर रहा था परन्तु मालिक की आवाज के साथ ही दौड़ता हुआ पास आ गया। तारा ने उसे पकड लिया और चारजामा कस कर उस पर सवार हो गई तथा कमलिनी तारा के घोड़े पर सवार हुई। अन्त में चारों आदमी कुछ सलाह करके अलग हुए और चारों ने अपना अपना रास्ता लिया अर्थात् उसी जगह से चारों आदमी जुदा हो गए।

इस वारदात के कई दिन याद कमलिनी इसी राक्षसी वेष में नेजा लिए रोहतासगढ की पहाडी पर कब्रिस्तान में कमला से मिली थी इसी ने राजा वीरेन्द्रसिह वगैरह को कैद से छुडाया और फिर भी कई दफे उनके काम आई थी जिसका हाल पिछले बयानों में लिखा जा चुका है।

चौथा बयान

अव ता मौसम में फक पड गया। ठडी ठडी हवा जा कलेजे को दहला देती थी और जदन में कपकपी पैदा करती थी अव भली मालूम पडती है। वह धूप जिसे देख चित्त प्रसन्न होता था और जो वदन में लग कर रग रग से सर्दी निकाल देती थी अव वुरी मालूम हाती है। यद्यपि अभी आसमान पर वादल के टुकडे दिखाई नहीं देते तथापि मध्या क समय मैदान वाग और तराई की ठण्डी ठण्डी और शीतल तथा मन्द मन्द वायु सेवन करने का जी चाहता है। यहॉ से हिलत हुए पडों की कोमल कोमल पत्तियों की वहार ऑखों की राह घुस कर अन्दर स दिल को अपनी तरफ खेंच लेती ह तथा टकटकी बॅधी हुई ऑखों का दूसरी तरफ दखने का यकायक मौका नहीं मिलता। यद्यपि सूर्य अस्त हुआ ही चाहता है और आसमान पर उडने वाल परिन्दों के उतार और जमीन की तरफ झुक हुए एक ही तरफ उडे जाने से मालूम होता है कि वात की वात में चारों तरफ अधेरा छा जायगा तथापि हम अपने पाठकों को किसी पहाड की तराई में ले चल कर एक अनूठा रहस्य दिखाया चाहते है।

तीन तरफ ऊंचे ऊॅचे पहाड और बीच म कासों तक का नैदान रमणीक ता है परन्तु रात की अवाई और सन्नाटे ने उसे भयानक वना दिया है। सूर्य अस्त होने में अभी विलम्ब है परन्तु ऊॅचे ऊॅचे पहाड सूर्य की आखिरी लालिमा को इस मैदान म पहुॅचने नहीं देते। चारों तरफ सन्नाटा है जहॉ तक निगाह काम करती है इस मैदान में आदमी की सूरत दिखाई नहीं पडती हॉ पश्चिम तरफ वाले पहाड के नीचे एक छोटा चमडे का खेमा दिखाई पडता है। इस समय हमें इसी खमे से मतलव है और हम इसी के दरवाज पर पहुच कर अपना काम निकाला चाहते हैं।

इस खेमे क दर्वाजे पर केवल एक आदमी कमर में खजर लगाए टहल रहा है। यद्यपि इसकी जवानी ने इसका साथ छोड दिया है और फिक्र ने इसे दुवल कर दिया है मगर फुर्ती मजबूती और दिलेरी ने अभी तक इसक साथ दुश्मनी नहीं की और वे इस गई गुजरी हालत में भी इसका साथ दिए जाती है। इस आदमी की सूरत शक्ल के बारे में हमें कुछ विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमारे पाठक इसे पहिचानते हैं और जानत है कि इसका नाम भूतनाथ है।

भूतनाथ का खेम के दर्वाजे पर टहलते हुए दर हो गई। वह न मालूम किस सोच में डूवा हुआ था कि सिर नीचा किए हुए सिवाय टहलन के इधर उधर दखने की उसे विल्कुल फुरसत न थी हॉ कभी कभी वह सिर उठाता और एक लम्बी सॉस लेकर केवल उत्तर की तरफ देखता और सिर नीचा कर उसी तरह टहलने लगता। अब सूर्य ने अपना मुह अच्छी तरह जमीन क पर्दे में छिपा लिया और भूतनाथ ने कुछ बेचैन हाकर उत्तर की तरफ देख धीरे से कहॉ, अव ता वहुत ही विलम्ब हा गया क्या वेमौके जान आफत में फॅसी है।

यकायक तेजी के साथ घोडा दौडता हुआ एक सवार उत्तर की तरफ स आता हुआ दिखाई पडा। कुछ और पास आने से मालूम हो गया कि वह औरत है मगर सिपाहियाना ठाठ में ढाल तल्वार के सिवाय उसके पास कोई हर्वा न था। इस औरत की उम्र लगभग चालीस वर्ष की होगी। सूरत शक्ल से मालूम होता था कि किसी समय में यह बहुत ही हसीन और दिल लुभाने वाली रही हागी। वात की वात में यह औरत खेमे के पास आ पहुॅची और घोडे से उतर कर उसकी लगाम खेमे की एक डोरी से अटका देने के बाद भूतनाथ के पास आकर वोली 'शावास भूतनाथ वेशक तुम वादे के सच्चे हो।

भूत–मगर अभी तक मरी समझ में यह न आया कि तुम मुझसे दुश्मनी रखती हो या दोस्ती ?

औरत–(हॅस कर) अगर तुम एसे ही समझदार होते ता जीते जागते और निराग रहने पर भी मुर्दों में क्यों गिन जाते ?

भूत–(कुछ सोच कर) खैर जो हुआ सो हुआ अब मुझसे क्या चाहती हो ?

औरत–तुमसे एक काम कराया चाहती हूँ।

भूत–वह कौन काम है जिस तुम स्वय नहीं कर सकती ?

औरत–केवल यही एक काम।

भूत–(आश्चर्य की रीति स गर्दन हिला कर) खैर कहो तो सही यदि करने लायक होगा तो करूँगा।

औरत–मैं वखूवी जानती हूँ कि तुम उस काम को सहज ही में कर सकते हो।

भूत–तव कहन म दर क्यों करती हो ?

औरत–अच्छा सुनो यह ता जानते ही हा कि कमलिनी को ईश्वर ने अद्‌भुत वल दे रक्खा है।

भूत–हॉ बेशक उसमें कोई दैवी शक्ति है वह जो कुछ चाहे सो कर सकती है। जो कोई उसे जानता है वह कहेगा कि कमलिनी का कोई जीत नहीं सकता।

औरत–हॉ ठीक है परन्तु मै खूब जानती हूँ कि तुम कमलिनी से ज्यादे ताकत रखते हो।

भूत–(चौक और काप कर) इसका क्या मतलब ?

औरत–यैही मतलब कि तुम अगर चाहो तो उसे मार सकते हो।

भूत–मगर मै एसा क्यों करने लगा ?

औरत–केवल मेरी आज्ञा स।

इतना सुनत ही भुतनाथ के चेहरे पर मुर्दनी छा गइ उसका कलजा कापने लगा और सिर कमजोर होकर चक्कर खाने लगा यहॉ तक कि वह अपन को सभाल न सका और जमीन पर बैठ गया। मालूम होता था कि उस औरत की आखिरी बात न उसका खून निचाड लिया है। न मालूम क्या सवब धा कि निडर होकर भी एक साधारण और अकेली औरत की बातों का जवाब नहीं द सकता और उसकी सूरत से मजबूरी और लाचारी झलक रही है।

भूतनाथ की ऐसी अवस्था दख कर उस औरत को किसी तरह का रज नहीं हुआ वल्कि वह मुस्कुराई और उसी जगह घास पर बैठ कर न मालूम क्या सोचने लगी। थोडी दर बाद जब भूतनाथ का जी ठिकाने हुआ ता उसने उस औरत की तरफ दखा और हाथ जोड कर कहा 'क्या सचमुच मुझे एसा हुक्म लगाया जाता है ?'

औरत–हॉ कमलिनी का सिर लेकर मेरे पास हाजिर होना पडेगा और यह काम सिवाय तेरे और काई भी नहीं कर सकता क्योंकि वह तुझ पर विश्वास रखती है।

भूत–(कुछ साच कर) नहीं नहीं मेरे किए यह काम न होगा। जो कुछ कर चुका हूँ उसी के प्रायश्चित से आज तक छुट्टी नहीं मिलती।

औरत–क्या तू मरा हुक्म टाल सकता है ? क्या तुझमें इतनी ताकत है ?

यह सुन भूतनाथ वहुत ही वचैन हुआ। वह उठ खडा हुआ और सिर नीचा किए इधर उधर टहलने और नीचे लिखी बातें धीर धीरे वोलन लगा -

आह मुझ सा वदनसीव भी दुनिया में कोई न होगा। मुद्दत तक मुर्दों में अपनी गिनती कराई, अब ऐसा सयोग हा गया कि अपने को जीता जागता साबित करूँ मगर अफसोस करी कराई मेहनत मिट्टी हुआ चाहती है। हाय उस आदमी के साथ जिसमें नकी कूट कूट कर भरी है मै वदी करने के लिए मजबूर किया जा रहा हूँ। क्या उसके साथ वदी करने वाला कभी सुख भाग सकता है ? नहीं नहीं कभी नहीं फिर मै ऐसा क्यों करूँ ? मगर मेरी जान क्योंकर बच सकती है। इसका हुक्म न मानना मेरी कुदरत के वाहर है। हाय एक दफे की भूल जन्म भर के लिए दु खदाई हो जाती है। शेरसिह सच कहता था इन्हीं वातों का साच कर उसने मरा नाम 'काल रख दिया था और उसे मेरी सूरत से घृणा हो गई थी। (कुछ देर तक चुप रह कर) ओफ मै भी व्यर्थ के विचार में पडा हूँ, आखिर जान तो जायेगी ही इसका हुक्म मानूगा तो भी मारा जाऊँगा और यदि न मानूगा तो भी मौत की तकलीफ उठाऊँगा और तमाम दुनिया में मेरी बुराई फैलेगी। (चौक कर) राम राम मुझे क्या हो गया जो

भूत–(उस औरत की तरफ देख के) अच्छा मै कमलिनी को मारने के लिय तैयार हूँ, मगर इसके वदले में मुझे इनाम क्या मिलेगा ?

औरत–(हस कर) तू इस लायक नहीं कि तुझे इनाम दिया ज़ाय।

भूत–क्या मै इस दर्जे को पहुँच गया !!

औरत–वेशक।

भूत–नहीं कभी नहीं। जा मै तेरा हुक्म नहीं मानता देखू तू मेरा क्या कर लेती है !

औरत–भूतनाथ देख खूब सोच कर कोई बात मुह से निकाल ऐसा न हो कि अन्त में पछताना पडे।

भूत–जा जा जो करते बने कर ले।

भूतनाथ की आखिरी बात सुन कर वह औरत क्रोध में आकर कापने लगी। उसके होठ काप रहे थे मगर कुछ कहना मुश्किल हो रहा था।

इस समय चारो तरफ अधेरा छा चुका था अर्थात् रात बखूबी हा चुकी थी। थोडी देर के लिए दोनों आदमी चुप हो गये यकायक घोड़ों के टापों की आवाज (जो बहुत दूर से आ रही थी) भूतनाथ के कान में पडी और साथ ही इसके वह औरत भी बोल उठी अच्छा देख मै तेरी ढिठाई का मजा चखाती हूँ।

भूतनाथ पहिले तो कुछ घवडाया मगर उसने तुरन्त ही अपने को सभाला और कमर से खजर निकालकर उस औरत के सामने खडा हो गया। वह खजर वही था जो कमलिनी ने उसे दिया था। कब्जा दबाते ही खजर में से बिजली की चमक पैदा हुई जिसके सबब से उस औरत की आँखें बन्द हो गई और वह बावली सी हो गई तथा उस समय तो उसे तनोबदन की सुध न रही जब भूतनाथ ने खजर उसके बदन से छुला दिया।

भूतनाथ ने बडी हाशियारी से उस बेहोश औरत का उसके घोडे पर लादा और आप भी उसी पर सवार हो तेजी के साथ मैदान का रास्ता लिया। थोडी दूर जा कर भूतनाथ ने बहोशी की तेज दवा उसे सुघाई जिसस वह औरत बहुत देर के लिए मुर्दे की सी हा गई। हमको इससे कोई मतलब नहीं कि वे सवार जिनके घोडों के टापों की आवाज भूतनाथ के कान में पडी थी कौन थे और उन्होने वहाँ पहुँचकर क्या किया जहाँ से भूतनाथ उस औरत कोलेभागा था हम केवल भूतनाथ के साथ चलते है जिसमें उस औरत का और भूतनाथ का हाल मालूम हो।

यद्यपि रात अधेरी और रास्ता पथरीला था तथापि भूतनाथ न चलने में कसर न की। थाडी थाडी दूर पर घाडा ठोकर खाता था जिससे भूतनाथ को तकलीफ होती थी और वह बडी मुश्किल से उस बहोश औरत को सभाले लिए जाता था मगर यह तकलीफ ज्यादे देर के लिए न थी क्योंकि पहर भर के बाद आसमान पर कुदरती माहताबी जलने लगी और उसकी (चन्द्रमा की) रोशनी ने चारों तरफ ठढक और खूबसूरती क साथ उजाला कर दिया। ऐसी अवस्था में भूतनाथ न रुकना उचित न समझा और सवेरा हाने तक तेजी क साथ बराबर चला गया। जिस समय आसमान पर सुबह की सुफेदी फैल रही थी घाडे ने यहाँ तक हिम्मत हार दी कि दस कदम भी चलना उसके लिए कठिन हो गया। लाचार भूतनाथ घाडे स नीचे उतरा और उस औरत को भी उतार लिया। घोडा उसी समय जमीन पर गिर पडा मगर भूतनाथ न उसकी कुछ परवाह न की।

कमर स चादर खोल उसने औरत की गठरी बाधी और पीठ पर लाद आगे का रास्ता लिया।

पहर भर चल जाने बाद भूतनाथ एक ऐसी पहाडी क नीचे पहुँचा जिसकी ऊँचाई बहुत ज्यादे न थी मगर खुशनुमा और सायेदार दरख्त पहाडी के ऊपर तथा उसकी तराई में बहुत थे। पहाडी की चाटी पर सलई का एक ऊँचा पड था और उसक ऊपर लम्बी काडी में लगा हुआ एक लाल फरहरा (ध्वजा) दूर से दिखाई दे रहा था। यह निशान कमलिनी का लगाया हुआ था। भूतनाथ तारा और नानक से मिलन के लिए कमलिनी ने एक यह जगह भी मुकर्रर की थी और निश्चय कर रक्खा था कि जब इन चारों में किसी को किसी से मिलने की आवश्यकता पड तो वह इसी जगह आये और यदि किसी से मुलाकात न हो तो इस झडे को झुका दे और उन चारों में से जो कोई इस झड को झुका हुआ देखे तुरत इस पहाडी के नीचे आय और नियत स्थान पर अपने साथी का दूढे। यह फरहरा बहुत दूर से दिखाई देता था और यह पहाडी रोहतासगढ और गयाजी के बीच में पडती थी।

उस औरत को पीठ पर लादे हुए भूतनाथ पहाडी के ऊपर चढने लगा। लगभग दो सौ कदम जाने के बाद रास्ता छाड कर दाहिनी तरफ घूमा जिधर छोटे छोटे जगली पेडों की गुजान झाडी दूर तक चली गई थी। उस झाडी में आदमी बखूबी छिप सकता था अर्थात उस झाडी के पड यद्यपि छोटे थे परन्तु आदमी की ऊँचाई से उन पेडों की ऊँचाई कुछ ज्यादे थी। भूतनाथ दोनों हाथ से पडों को हटाता हुआ कुछ दूर तक चला गया। आखिर उसे एक गुफा मिली जिसका मुह जगली लताआ न अच्छी तरह ढाँक रक्खा था। भूतनाथ उस गुफा के अन्दर चला गया और अपना बोझ अर्थात उस औरत का गुफा के अन्दर छोड बाहर निकल आया। इसके बाद पहाडी की चोटी पर चढ गया और सलई क पेड पर चढ कर लाल फरहरे (झण्डे) को झुकाने का इरादा किया परन्तु उसी समय सलई क पेड पर चढी हुई कमलिनी उस दिखाइ पडी जो फरहरा झुकाने का उद्याग कर रही थी। इस समय भी कमलिनी उसी राक्षसी के भेष में थी जैसा कि ऊपर क बयानों में लिख आए है। भूतनाथ ने कमलिनी को पहिचाना और उसने भी भूतनाथ को देखा। कमलिनी पेड के नीच उतर आई और बोली –

कम–खूब पहुँचे मैं तुमसे मिला चाहती थी इसी लिए झण्डा झुकाने का उद्योग कर रही थी।

भूत–मैं खुद तुमस मिला चाहता था और इसी लिए यहा तक आया हू यदि इस समय तुम न मिलती तो मै इस पेड पर चढ कर फरहरा झुकाता।

कम–कहा क्या बात है और कौन सी जरूरत आ पडी ?

भूत–पहिले तुम कहो कि मुझस मिलने की क्या आवश्यकता थी ?

कम–नहीं नहीं पहिले तुम्हारा हाल सुन लूगी तब कुछ कहूँगी क्योंकि तुम्हारे चेहरे पर घबराहट और उदासी हद से ज्यादा पाई जाती है।

भूत–वेशक एसा ही है और मैं तुमसे आखिरी मुलाकात करने आया हू क्योंकि अब जीने की उम्मीद नही रही और खुली बदनामी बल्कि कलक मजूर नहीं।

कम–क्यों क्यों एसी क्या आफत आ गई कुछ कहो तो सही ?

भूत–मेर साथ पहाडी क नीच चलो। मै एक औरत को बेहोश करके लाद लाया हूँ जो उसी खोह के अन्दर है पहिले उसे दख लो तब मरा हाल सुनो।

कम–खैर ऐसा ही सही चलो।

भूतनाथ क साथ ही साथ कमलिनी पहाडी क नीचे उतरी और उस खोह क मुहान पर आ कर बैठ गई जिसके अन्दर भूतनाथ न उस औरत को रक्खा था। भूतनाथ उस बेहोश औरत को खोह क बाहर निकाल लाया। कमलिनी उस औरत का देखत ही चौंकी और उठ खडी हुई।

भूत–इसी के मारे मरी जिन्दगी जबाल हो रही है मगर तुम इसे देख कर चौंकी क्यों ? क्या इस औरत को पहिचानती हो ?

कम–हॉ मैं इस पहिचानती हूँ। यह वह काली नागिन है कि जिसक डसने का मन्त्र ही नहीं। जिस इसने काटा वह पानी तक नही मागता तुमने इसके साथ दुश्मनी की सो अच्छा नही किया।

भूत–मैने जान बूझ कर इसके साथ दुश्मनी नहीं की। तुम खुद जानती हो कि मै इसक काबू में हू किसी तरह इसका हुक्म टाल नहीं सकता मगर कल इसन जो कुछ काम करने के लिए मुझ कहा वह मैं किसी तरह नहीं कर सक्ता था और इनकार की भी हिम्मत न थी लाचार इसी खजर की मदद स गिरफ्तार कर लाया हू।अब कोई ऐसी तर्कीब निकालो जिसमे मेरी जान बचे और मै वीरेन्द्रसिह का मुह दिखाने लायक हो जाऊँ।

कम–मेरी समझ मे नही आता कि तुम क्या कह रहे हो। मुझ कुछ भी नही मालूम कि तुम इसके कब्जे में क्योंकर फसे हो न तुमने इसके बारे में कभी मुझसे कुछ कहा ही।

भूत–बेशक मै इसका हाल तुमसे कह चुका हू कि इसी की बदौलत मुझे मरना पडा बल्कि तुमने वादा किया था कि इसके हाथ से तुम्हें छुट्टी दिला दूगी।

कम–हॉ वह बात मुझे याद है मगर तुमने तो श्यामा का नाम लिया था।

भूत–ठीक है वह यही श्यामा।

कम–(हँस कर) इसका नाम श्यामा नही है मनोरमा है। मै इसकी सात पुश्त को जानती हू। बेशक इसने अपने नाम में भी तुझको धोखा दिया। खैर अब मालूम हुआ कि तुम्हें इसी न सता रक्खा है तुम्हारे हाथ की लिखी हुई दस्तावेज इसी क कब्ज में है और इस सबब से तुम इस जान स मार भी नही सकत। इसन मुझे भी कई दफे धोखा देना चाहा था मगर मै कब इसके पजे में आने वाली हू। हॉ यह तो कहो कि इसन क्या काम करने क लिए कहा था।

भूत–इसने कहा था कि तू कमलिनी का सिर काट कर मेरे पास ल आ यह काम तुझसे बखूबी हो सकेगा क्योंकि वह तुझ पर विश्वास करती है।

कम–(कुछ देर तक सोच कर) खैर कोई हर्ज नहीं पहिले तो मुझे इसकी कोई विशेष फिक्र न थी परन्तु अब इसके साथ चाल चले बिना काम नहीं निकालता। दखो तो मैं इसे कैसा दुरूस्त करती हूँ और तुम्हारे कागजात भी इसके कब्जे से कैसे निकालती हूँ।

भूत–मगर इस काम मे देर न करनी चाहिए।

कम–नही नही देर न होगी क्योंकि कुँअर इन्दजीतसिह को छुडाने के लिए भी मुझे इसी के मकान पर जाना पड़ेगा बस दोनो काम एक साथ ही निकल जायेंगे।

भूत–मगर अब क्या करना चाहिए ?

कम–(हाथ का इशारा करके) तुम इस झाडी मे छिप रहो मैं इसे होश मे लाकर कुछ बातचीत करना चाहती हू। आज वह मुझे किसी तरह से नहीं पहिचान सकती।

भूतनाथ झाड़ी के अन्दर छिप रहा कमलिनी न अपने बटुए मे से लखलखे की डिबिया निकाली और सुघा कर उस औरत को होश में लाई। मनोरमा जब होश में आई उसने अपने सामने एक भयानक रूपधारी औरत को देखा। वह घबडा कर उठ बैठी और बोली –

मनो–तुम कौन हो और मै यहा क्योंकर आई ?

कम–मै जगल की रहने वाली भिल्लनी हू तुम्हें एक लम्बे कद का आदमी पीठ पर लादे लिये जाता था। मैं इस

पहाडी के नीचे सूअर का शिकार कर रही थी जब वह मेरे पास पहुँचा मैंन उस ललकारा और पूछा कि पीठ पर क्या लादे लिये जाता है। जब उसन कुछ न बताया तो लाचार (नेजा दिखा कर) इसी जहरीले नेजे से उसे जख्मी किया। जब वह बेहोश हाकर गिर पडा तब मैंने गठरी खोली जब तुम्हारी सूरत नजर आई तो हाल जानन की इच्छा हुई लाचार इस जगह उठा लाई और होश में लान का उद्योग करने लगी। अब तुम्ही बताओ कि वह आदमी कौन था और तुम्हें इस तरह क्यों लिए जाता था।

मनो--मैं अपना हाल तुमसे जरूर कहूँगी मगर पहिले यह बताओ कि वह आदमी तुम्हारे इस जहरील नेजे के असर से मर गया या जीता है।

कम--वह मर गया और मेरे साथी लोग उसे जला देने के लिए ले गए।

मनो--(ऊँची सास लेकर) अफसास यद्यपि उसने मेरे साथ बहुत बुरा वर्ताव किया तथापि उसकी मोहब्बत मेरे दिल से किसी तरह नहीं जा सकती क्योंकि वह मेरा प्यारा पति था। अफसास अफसोस तुमन उसके हाथ स मुझ व्यर्थ छुडाया।

पाठक झाडी के अन्दर छिपा हुआ भूतनाथ भी मनोरमा की बातें सुन रहा था। मनोरमा ने जो कुछ कमलिनी से कहा न मालूम उसमें क्या तासीर थी कि सुनने के साथ ही भूतनाथ का कलेजा कापने लगा और उसे चक्कर सा आ गया। बहुत मुश्किल से उसने अपने को सम्हाला और कान लगा कर फिर दोनों की बातें सुनने लगा।

कम--(कुछ सोच कर) मैं कैसे विश्वास करूँ कि तुमने जो कहा वह सच है।

मनो--पहिले यह सोचो कि मैं तुमसे झूठ क्यों बोलूगी ?

कम--इसक कइ सबब हो सकते हैं सब से भारी सबब यह है कि तुम्हारा भेद एक गैर के सामने खुल जायेगा जिससे तुम्हें कोई मतलब नहीं। मगर मुझे विश्वास नहीं होता कि जो आदमी तुम्हें इतना कष्ट दे और बेहोश करे गठरी में बाध कर कहीं ले जाने का इरादा रक्खे उसे तुम प्यार करो और अपना पति कह कर सम्बोधित करो।

मनो--नहीं नहीं यों तो शक की दवा नहीं परन्तु मैं इतना अवश्य कहूँगी कि उस आदमी के बारे में मैंने जो कुछ कहा वह सच है।

कम--खैर ऐसा ही होगा मुझ इससे कोई मतलब नहीं चाहें वह आदमी तुम्हारा पति हो अथवा नहीं अब तो वह मरचुका किसी तरह जी नहीं सकता। खैर यह तो बताओ कि अब तुम क्या किया चाहती हो और कहा जान की इच्छा रखती हो ?

मनो--मुझ गयाजी का रास्ता बता दो। मेरे मॉ बाप उसी शहर म रहते हैं अब मैं उन्हीं के पास जाऊँगी।

कम--अच्छा पहाडी के नीचे चलो मैं तुम्हें गयाजी का रास्ता बता देती हूँ। हॉ मैं तुम्हारा नाम पूछना तो भूल ही गई।

मनो--मेरा नाम इमामन है।

कम--(जोर से हँस कर) क्या ठगने के लिए मैं ही थी !

मनो--(चौक कर और कमलिनी को सिर से पैर तक अच्छी तरह देख कर) मुझे तुम पर शक होता है।

कम--यह कोई ताज्जुब की बात नहीं मगर शक होने ही से क्या हो सकता है ? आज तक तुमने मुझे कभी नहीं देखा और न फिर देखोगी।

मनो--तब मैं अवश्य ही कह सकती हूँ कि तुम कमलिनी हो।

कम--नहीं नहीं मैं कमलिनी नहीं हो सकती हॉ कमलिनी को पहिचानती जरूर हूँ क्योंकि वह बीरेन्द्रसिंह और उनके खानदान की दोस्त है इसलिए मेरी दुश्मन।

मनो--अब मैं तुम्हारी बातों का विश्वास नहीं कर सकती।

कम--तो इसमें मेरा कोई भी हर्ज नहीं। (आहट पाकर और दाहिनी तरफ देखकर) लो देखो अब तो मैं सच्ची हुई ? वह कमलिनी आ रही है।

सयोग से उसी समय तारा भी आ पहुँची जो कमलिनी की सूरत में उसके कहे मुताबिक सब काम किया करती थी। कमलिनी ने गुप्त रीति से तारा को कुछ इशारा किया जिससे वह कमलिनी का मतलब समझ गई। कमलिनी रूपी तारा लपक कर उन दोनों के पास पहुँची और कमर से खजर निकाल कर और उसे चमका कर बोली, "इस समय तुम दोनों भले ही मौके पर मुझे मिल गई हो। आज मेरा मनोरथ पूर्ण हुआ अब मैं तुम दोनों से बिना बदला लिए टलने वाली नहीं।

तारा की यह बात सुन कमलिनी जान बूझ कर कापन लगी मालूम होता था कि वह डर से काप रही है। मनोरमा भी यकायक कमलिनी को मौजूद देख कर घबडा गई इसके अतिरिक्त उस चमकते हुए खजर को देख कर उसे विश्वास

हा गया कि अव किसी तरह जान नहीं वचती क्योंकि इसी तरह का खजर भूतनाथ के हाथ में वह देख चुकी थी और उसके प्रवल प्रताप का नमूना उसे मालूम हो चुका था साथ ही उसे इस वात का भी विश्वास हो गया कि राक्षसी (कमलिनी) जिम्न उसे भूतनाथ के हाथ से छुडाया सच्ची और उसकी खैरखाह है।

कमलिनी ने तारा को फिर इशारा किया जिसे मनारमा न नहीं जाना पर तारा ने वह खजर मनोरमा के बदन से लगा दिया और वह बात की बात मं बेहोश होकर जमीन पर गिर गई। झाडी में छिपा हुआ भूतनाथ भी निकल आया और कमलिनी स बोला– भूत–जो हो मगर मरा काम कुछ भी न हुआ।

कम–इसमें काई शक नहीं कि तुम बडे बुद्धिमान हा परन्तु कभी कभी तुम्हारी अक्ल भी हवा खाने चली जाती है। तुम इस वात का नही जानते कि तुम्हारा काम पूरा हो गया है। यकायक तारा के पहुँच जाने से मालूम हुआ कि तुम्हारी किस्मत तज हे नहीं ता मुझे वहुत कुछ वखेडा करना पडता।

भूत–सा क्या मुझे साफ समझा दा ता जी ठिकाने हो।

कम–मरे पास वैठ जाओ मै अच्छी तरह समझा देती हूँ। (तारा की तरफ दख कर) कहो तुम्हारा आना क्योंकर हुआ ?

तारा–मुझ एक एसा काम आ पडा कि विना तुमरा मिल कठिनता दूर होने की आशा न रही लाचार झण्डी टेढी करके मिलने की उम्मीद में यहाँ आई थी।

कम–अच्छा हुआ कि तुम आई इस समय तुम्हारे आने से बडा ही काम चला अच्छा बैठ जाआ और जो कुछ मै कहती हू उसे सुनो।

इसके बाद कमलिनी तारा और भूतनाथ में दर तक बानचीत होती रही जिसे यहा पर लिखना हम मुनासिब नहीं समझते क्योंकि इन लोगों न जो कुछ करना विचारा है वह आग के बयान में स्वय खुल जायेगा। जब बातचीत से छुट्टी मिली तो मनारमा का उठा तीनों आदमी पहाडी के नीचे उतरे मनारमा एक पेड के साथ बाध दी गई और इसके बाद कमलिनी भी कैदियों की तरह एक पड के साथ बाध दी गई। इस काम से छुट्टी पाकर तारा और भूतनाथ वहा से अलग हो गए और किसी झाडी में छिप कर दूर से इन दानों का देखते रहे। थोडी देर के बाद मनारमा होश में आई और अपने को बेवश पाकर चारों तरफ देखने लगी। पास ही में पेड से बँधी हुई कमलिनी पर भी उसकी निगाह पडी और वह अफसोस के साथ कमलिनी की तरफ दख कर बोली–

मनो–बशक तुम सच्ची हो मरी भूल थी जो तुम पर शक करती थी।

कम–खैर इस समय तो तुम्हारे ही सवब से मुझे भी कष्ट भागना पडा।

मनो–इसमें कोइ सन्दह नहीं।

कम–तुम्हारा छूटना तो मुश्किल है मगर मैं किसी न किसी तरह धोखा देकर छूट ही जाऊँगी और तब कमलिनी से समझूगी अब बिना उसकी जान लिए चैन कहाँ ?

मनो–तुम्हारी भी तो वह दुश्मन है फिर तुम्हें क्योंकर छोड देगी ?

कम–मेरी उसकी दुश्मनी भीतर ही भीतर की है इसके अतिरिक्त एक और सबब ऐसा है कि जिससे मैं अवश्य छूट जाऊगी तब तुम्हारे छुडाने का उद्योग करूँगी।

कम–तुम्हारा छूटना तो मुश्किल है मगर मै किसी न किसी तरह धोखा देकर छूट ही जाऊँगी और तब कमलिनी से समझूगी अब बिना उसकी जान लिए चैन कहाँ ?

मनो–तुम्हारी भी तो वह दुश्मन है फिर तुम्हें क्योंकर छोड देगी ?

कम–मेरी उसकी दुश्मनी भीतर ही भीतर की है इसके अतिरिक्त एक और सबब ऐसा है कि जिससे मैं अवश्य छूट जाऊगी तब तुम्हारे छुडाने का उद्योग करूँगी। मनो–वह कौन सा सबब है ?

कम–सो मै अभी नहीं कह सकती तुम्हें स्वय मालूम हो जायगा। (चारो तरफ देख कर) न मालूम वह कम्बख्त कहाँ गई ! मनो–क्या तुम्हें भी नहीं मालूम ?

कम–नहीं मुझे जब होश आया मैंने अपने को इसी तरह बेबस पाया।

मनो–खैर कही भी हो आवेहीगी हाँ तुम्हें यदि अपने छूटने की उम्मीद है तो कब तक ?

कम–उसके आने पर दो चार बातें करने से ही मुझे छुट्टी मिल जायगी और मैं तुम्हें भी अवश्य छुडाऊगी हाँ अकली होन के कारण विलम्ब जो कुछ हो। यदि तुम्हारा कोई मददगार हो तो बताओ ताकि छुट्टी मिलने पर मै तुम्हारे हाल की उसे खबर दूँ।

मनो–(कुछ सोच कर) यदि कष्ट उठा कर तुम मेरे घर तक जाओ और मेरी सखी को मेरा हाल कह सको तो वह सहज ही में मुझे छुडा लेगी।

कम–इसम तो काई सन्देह नहीं कि मै अवश्य छूट जाऊँगी। तुम अपने घर का पता और अपनी सखी का नाम वताओ मैं जरूर उसस मिल कर तुम्हारा हाल कहूँगी और स्वय भी जहाँ तक हो सकेगा तुम्हें छुडाने के लिए उसका साथ दूगी।

मनो–यदि एसा करा ता मे जन्म भर तुम्हारा ऐहसान मानूगी। जव उसके कान तक मेरा हाल पहुँच जायगा ता तुम्हारी मदद की आवश्यकता न रहगी।

कम–खर ला अव पता और नाम वतान मे विलम्व न करो कही ऐसा न हो कि कमलिनी आ जाय तव कुछ न हा सकगा।

मनो–हाँ ठीक हे–काशीजी मे त्रिलोचनश्वर महादेव के पास लाल रग का मकान एक छोट से वाग क अन्दर है। मछली क निशान की स्याह रग की झण्डी दूर स ही दिखाई दगी। मरी सखी का नाम नागर है समझ गई ?

कम–मै खूव समझ गइ मगर उसे मरी वात का विश्वास कव हागा ?

मनो–इसमें विश्वास की कोई जरूरत नहीं है वह मुझ पर आफत आने का हाल सुनते ही वैचन हो जायगी ओर किसी तरह न रुकगी।

कम–तथापि मुझ हर तरह स दुरुस्त रहना चाहिए शायद वह समझे कि यह मुझ धोखा देने आई है और चाहती है कि मै घर के वाहर जाऊँ तो काई मतलव निकाले।

मनो–(कुछ साच कर) हाँ ऐसा हा सकता हे अच्छा मे तुम्हें एक परिचय देती हूँ, जव वह वात उसके कान मे कहागी तव वह तुम्हारा पूरा विश्वास कर लेगी परन्तु उस परिचय का वडी होशियारी स अपने दिल में रखना खवरदार दूसरा जानने न पावे नहीं ता मुश्किल होगी और मेरी जान किसी तरह न वचेगी।

कम–तुम विश्वास करो कि वह शब्द सिवाय एक दफे के जब मै तुम्हारी सखी के कान में कहूँगी दूसरे दफे मेरे मुह से न निकलगा। (इधर उधर देख कर) जल्द कहो अब देर न करो।

मनो–(कमलिनी की तरफ झुक कर धीरे से) 'विकट शब्द कहना, फिर सन्देह न करेगी और तुम्हे मेरा विश्वासपात्र समझगी।

कम–ठीक है अव जहाँ तक जल्द हा सकेगा मै तुम्हारी सखी के पास पहुचूगी और अपना मतलव निकालूगी।

मनो–पहिले तो मुझे यह देखना है कि कमलिनी तुम्हें क्योंकर छोड़ती है। जब तुम छूट जाओगी तब कहीं जाकर मुझे अपने छूटने की उम्मीद होगी।

कम–(हँस कर) मे उतनी ही देर में छूट जाऊँगी जितनी देर में तुम एक से लेकर निन्यानबे तक गिन सको।

इतना कह कर कमलिनी ने सीटी वजाई। सीटी की आवाज सुनते ही तारा और भूतनाथ जो वहा से थोड़ी दूर पर एक झाडी के अन्दर छिपे हुए थे कमलिनी के पास आ पहुँचे। कमलिनी ने मुस्कराते हुए उनकी तरफ देखा और कहा मुझ छाड दो।

भूतनाथ ने कमलिनी का जो पड से वँधी हुई थी खोल दिया। कमलिनी उठ कर मनोरमा के पास आई और वोली क्यों मै अपने कहे मुताविक छूट गई या नहीं।

कमलिनी की चालाकी क साथ ही भूतनाथ की सूरत देख कर मनोरमा सन्न हो गई और ताज्जुब वे साथ उन तीनों की तरफ देखने लगी। इस समय भूतनाथ के चेहरे पर उदासी के वदले खुशी की निशानी पाई जाती थी। भूतनाथ ने हँसकर मनोरमा की तरफ देखा और कहा क्या अव भी भूतनाथ तेरे कब्जे में है ? अगर हो ता कह इसी समय कमलिनी का सर काट कर तेरे आगे रख दूँ क्योंकि वह यहाँ मौजूद है।

मनोरमा ने क्रोध के मारे दात पीसा और सर नीचा कर लिया। थोडी देर वाद वोली अफसोस मै धोखा खा गइ।

कम–(तारा से) अव समय नष्ट करना ठीक नहीं। इस हरामजादी को तुम ले जाओ और लोहे वाले तहखाने में वन्द करो फिर देखा जायगा। (अपने हाथ का नेजा देकर) इस नेजे को अपने पास रक्खो और वह खजर मुझे दे दो अव नेज क वदले खजर ही रखना मै उचित समझती हूँ, यद्यपि एक खजर मेरे पास है परन्तु वह कुँअर इन्दजीतसिह के लिए हे।

तारा–मे भी यही कहा चाहती थी क्योंकि खजर और नेजे मे गुण तो एक ही हैं फिर ढोढा लेकर घूमन से क्या फायदा यह लो खजर अपने पास रक्खो।

कम–(भूतनाथ से) तुम भी तारा क साथ जाओ और इस हरामजादी को हमार घर पहुँचा कर बहुत जल्द लौट आओ तव तक मै इसी जगह रहूँगी और तुम्हारे आते ही तुम्हें साथ लेकर काशीजी जाऊँगी। पहिले तुम्हारा काम करके कुँअर इन्दजीत सिह से मिलूँगी और मायारानी की मडली को जिसने दुनिया में अन्धेर मचा रक्खा है जहन्नुम में भेजूगी।

भूत–(सिर झुका कर) जो हुक्म।

पॉचवॉ बयान

आधी रात स कुछ ज्याद जा चुकी है। चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है कभी कभी कुत्तों के भूकने की आवाज के सिवाय और किसी तरह की आवाज सुनाई नहीं देती। ऐस समय में काशी की तग गलियों में दो आदमी जिनमें एक औरत और दूसरा मर्द है घूमते हुए दिखाई देते है। ये दोनों कमलिनी और भूतनाथ हैं जो त्रिलोचनेश्वर महादेव के पास मनोरमा के मकान पर पहुँचने की धुन में कदम बढाये हुए तेजी के साथ जा रहे हैं। जब व दोनों एक चौमुहानी के पास पहुँचे तो देखा कि दाहिनी तरफ से एक आदमी पीठ पर गट्ठर लादे आया और उसी तरफ को घूमा जिधर ये दोनों जाने वाले थे। कमलिनी ने धीरे से भूतनाथ के कान में कहा इस गठरी में जरूर कोई आदमी है।

भूत–बेशक ऐसा ही है। इस आदमी की चाल पर भी मुझे कुछ शक जान पडता है ताज्जुब नहीं कि यह मनोरमा का नौकर श्यामलाल हो।

कम–तुम्हारा शक ठीक हो सकता है क्योंकि तुम वहुत दिनों तक मनारमा के मकान पर रह चुके हा और वहॉ के हर एक आदमी को बखूबी जानते हा।

भूत–कहो तो इसे रोकूँ ?

कम–हॉ हॉ रोको जाने न पावे।

भूतनाथ लपक कर उस आदमी के सामने गया और कमर से खजर निकाल उसके सामने चमकाया। उसकी चमक में भूतनाथ और कमलिनी न उस आदमी को पहिचान लिया मगर वह इन दोनों को अच्छी तरह न देख सका क्योंकि विजली की तरह चमकने वाली राशनी ने उसकी आखें बन्द कर दी और वह घवडा कर बैठ गया। भूतनाथ ने खजर उसके बदन से लगाया जिसकी तासीर से वह एक दफे कापा और वेहोश होकर जमीन पर गिर पडा। भूतनाथ ने उसे उसी जगह पर छोड दिया और गठरी का कोना खोल कर देखा तो उसमें एक कमसिन औरत बधी हुई पाई। कमलिनी के हुक्म से भूतनाथ न वह गठरी अपनी पीठ पर लाद ली और मनोरमा के घर का रास्ता छोड दोनों आदमी गगा किनार की तरफ रवाना हुए।

वात की वात में दोनों गगा के किनारे जा पहुँचे। इस समय चन्द्रमा की रोशनी अच्छी तरह फैली हुई थी। एक मढी के ऊपर वैठने के वाद भूतनाथ ने वह गठरी खाली। उस वेहोश औरत के चेहरे पर चन्द्रमा की रोशनी पडते ही भूतनाथ चौंक कर बोला ओफ यह तो कमला है।

कमला होश में लाई गई। जव उसकी निगाह भूतनाथ के ऊपर पडी तो वह एकदम काप उठी। कमला को उस दिन की वात याद आ गई जिस दिन खण्डहर के तहखाने में अपने चाचा शेरसिह के पास भूतनाथ को देखा था कमला को शक हा गया कि इस समय वह जिसके हुक्म से बेहाश करके लाई गई वह भूतनाथ ही है। कमला की दूसरी नजर कमलिनी पर पडी मगर वह कमलिनी को पहिचान न सकी। यद्यपि कमला कमलिनी को रोहतासगढ पहाडी पर देख चुकी थी परन्तु इस समय कमलिनी उस भयानक राक्षसी के भेष में न थी रग काला जरूर था परन्तु लम्बे लम्बे दात उसके मुह में न थे इसी से वह कमलिनी को पहिचान न सकी।

कमलिनी ने जब देखा कि कमला वहुत ही डरी हुइ और हैरान मालूम पडती है तो उसने कमला का हाथ पकड लिया और धीरे से दवा कर कहा कमला तू डर मत। हम लोगों ने इस समय तुझे एक दुश्मन के हाथ से छुडाया है।

कमला–अव मरा जी ठिकाने हुआ मुझे उम्मीद है कि आप लोगों की तरफ स मुझे तकलीफ न पहुँचेगी। परन्तु आप लागों का जानने के लिए मेरा जी वेचैन हो रहा है।

कम–ठीक है जरूर तरा जी चाहता हागा कि हम लोगों का हाल जाने और इसी तरह मै भी तुझसे वहुत कुछ पूछा चाहती हूँ मगर इस समय केवल चार घण्टे के लिए तुझस जुदा हाती हूँ तव तक तू (भूतनाथ की तरफ इशारा करके) इनके साथ रह। किसी तरह से डर मत सवेरा होने के पहिले ही मैं तुझसे आकर मिलूगी और बातचीत के वाद कुँअर इन्दजीतसिह के छुडाने का उद्योग करूँगी।

कमला–मैं आपके हुक्म के खिलाफ कुछ न करूगी। मै आपस हर तरह पर भलाई की आशा रखती हूँ क्योंकि आपन मुझे एक ऐसे दुश्मन के हाथ स छुडाया है जिसका हाल मैं ही जानती हूँ।

कम–अच्छा तो अव वार्तो मे समय नष्ट करना ठीक नहीं है। (भूतनाथ की तरफ देख कर) भूतनाथ यहॉ छोटी छोटी वहुत सी डोंगिया वधी हुई हैं सन्नाटा और मौका देखकर कोई एक डोंगी खोल लो और कमला को साथ लेकर गगा पार चले जाओ। मै मनोरमा के घर पर जाती हूँ, वहा से अपना मतलव साध कर सवेरा होने के पहिले ही तुमसे आ मिलूगी।

कमला–(चौक कर) क्या नाम लिया मनोरमा। हाय हाय वह तो वडी शैतान है हम लोगों को तो उसने तवाह कर डाला। क्या तुम उसके

कम–डर मत मनोरमा को मैंने कैद कर लिया है और अब एक जरूरी काम के लिए उसके घर जा रही हूँ। (आसमान की तरफ देखकर) ओफ बहुत विलम्ब हुआ खैर अब मै विदा होती हूँ, पुन मिलने पर सब हाल कहूँगी।

कमलिनी वहाँ से रवाना हुई और थोडी देर में उस बाग के फाटक पर जा पहुँची जिसमें मनोरमा का मकान था। फाटक के साथ लोहे की एक जजीर लगी हुई थी जिसे हिलाने से दरबान ने एक छोटे से सूराख में से बाहर की तरफ देखा जो इसी काम के लिए बना हुआ था केवल एक औरत को दर्वाजे पर मौजूद पाकर दरबान ने फाटक खोल दिया और जब कमलिनी अन्दर चली गई तो फाटक उसी तरह बन्द कर दिया गया और तब कमलिनी से पूछा तुम कौन हो और यहाँ किस लिए आई हो ?

कमलिनी–मुझे मनोरमाजी ने पत्र देकर अपनी सखी नागर के पास भेजा है तुम मुझे नागर के पास बहुत जल्द ले चलो।

दरवान–वह तो यहाँ नहीं है किसी दूसरी जगह गई है।

कमलिनी–कब आवगी ? दरबान–सा तो मैं ठीक नहीं कह सकता।

कमलिनी–क्या तुम यह भी नहीं कह सकते कि वे आज या कल तक लौट आवेंगी या नहीं ?

दरबान–हाँ यह तो मै कह सकता हूँ कि पाच चार दिन तक वे न आवेंगी इसके बाद चाहे जब आवें।

कमलिनी–अफसोस अब बेचारी मनोरमा नहीं बच सकती।

दरबान–(चौक कर) क्यों क्यों उन पर क्या आफत आई ?

कमलिनी–यह एक गुप्त बात है जो मै तुमसे नहीं कह सकती हाँ इतना कहने में कोई हर्ज नहीं कि यदि तीन दिन के अन्दर उन्हें बचाने का उद्योग न किया जायगा तो चौथे दिन कुछ नहीं हो सकता, वे अवश्य मार डाली जायगी।

दरबान–अफसोस यदि आप एक दिन तक यहाँ अटकना मजूर करें तो मै नागरजी क पास जाकर उन्हें बुला लाऊँ आपको यहाँ किसी तरह की तकलीफ न होगी।

कमलिनी–(कुछ सोच कर) मुझे एक जरूरी काम है इसलिए अटक तो नहीं सकती परन्तु कल शाम तक अपना काम करके लौट आ सकती हूँ।

दरबान–यदि आप ऐसा भी करें तो काम चल सकता है परन्तु आप अटक न जाय। यदि आपका काम ऐसा हो जिसे हम लोग कर सकते है तो आप कहें उसका बन्दोबस्त कर दिया जायगा।

कमलिनी–नहीं बिना मेरे गए वह काम नहीं हो सकता मगर कोई चिन्ता नहीं मै कल शाम तक अवश्य आ जाऊँगी।

दरबान–जैसी मर्जी आपकी मेहरबानी से यदि हमारे मालिक की जान बच जायगी तो हम लोग जन्म भर के लिए गुलाम रहेंगे।

कमलिनी–मै अवश्य आऊँगी और उनके लिए हर तरह का उद्योग करूगी तुम जाती समय इसका बन्दोबस्त कर जाना कि यदि तुम्हारे लौट आने के पहले मैं यहाँ पहुँच जाऊँ तो मुझे यहाँ रहने में किसी तरह का तरद्दुद न हो।

दरबान–इससे आप बफिक्र रहें मैं पूरा पूरा इन्तजाम करके जाऊँगा और नागरजी को लेकर बहुत जल्द लौटूँगा।

फाटक खोल दिया गया और कमलिनी बाग के बाहर हो गई। वह अभी बीस कदम भी आगे न गई होगी कि एक आदमी बदहवास और दौडता हुआ उसी बाग के फाटक पर पहुँचा और दरवाजा खुलवाने का उद्योग करने लगा। कमलिनी जान गई यह वही आदमी है जिसके हाथ से अभी थोड़ी ही देर हुई है कमला को छुडाया है। कमलिनी उसी जगह आड में खड़ी होकर उसे देखने और कुछ सोचने लगी। जब बाग का फाटक खुल गया और वह आदमी अन्दर चला गया तो न मालूम क्या सोचती विचारती कमलिनी भी वहाँ से रवाना हुई और थोडी रात बाकी थी जब कमला और भूतनाथ के पास पहुची जो गगा पार उसके आने की राह देख रहे थे। कमलिनी को बहुत जल्द लौट आते देख भूतनाथ को ताज्जुब हुआ और उसने कहा–

भूत–मालूम होता है कि कुछ काम न हुआ और आपको खाली ही लौट आना पडा।

कम–हाँ इस समय तो खाली ही लौटना पडा मगर काम हो जाएगा। नागर घर पर मौजूद न थी उसका आदमी उसे बुलाने के लिए गया है। मैं कल शाम तक फिर वहाँ पहुँचने का वादा कर आई हूँ, इच्छा तो यही थी कि वहाँ अटक जाऊँ क्योंकि ऐसा करने से और भी कुछ काम निकलने की उम्मीद थी परन्तु कमला के खयाल से लौट आना पडा। मै चाहती हूँ कि कमला को रोहतासगढ रवाना कर दूँ क्योंकि उसकी जुबानी कुछ हाल सुनकर राजा बीरेन्द्रसिह को ढाढस होगी और लड़कों के सोच में बहुत व्याकुल न रहेंगे। (कमला की तरफ देखकर) तेरी क्या राय है ?

कमला–जो कुछ आप हुक्म दें मैं करने को तैयार हूँ परन्तु इस समय मैं बहुत सी बातों का भेद जानने के लिए बेचैन हो रही हूँ और सिवाय आपके कोई दूसरा मेरी दिलजमई नहीं कर सकता।

कम–कोई हर्ज नहीं मैं हर तरह से तेरी दिलजमई कर दूगी।

इतना सुन कर कमला भूतनाथ की तरफ देखने लगी। कमलिनी समझ गई कि यह निराल में मुझसे कुछ पूछा चाहती है अस्तु उसने भूतनाथ को वहाँ से हट जाने के लिए कहा और जब वह कुछ दूर चला गया तो कमला से बोली अब निराला हो गया जो कुछ

कमला–मुझे आपका कुछ हाल भूतनाथ की जुबानी मालूम हुआ है परन्तु उससे पूरी दिलजमइ नहीं होती। मुझे पूरा पूरा पता लग चुका था कि कुँअर इन्द्रजीतसिह आपके यहाँ कैद है फिर न मालूम उन पर क्या आफत आई और उनके साथ आपने क्या सलूक किया। यद्यपि उस समय हम लोग आप के नाम से डरते थे परन्तु जब आपने कई दफे हम लोगों के साथ नेकी की जिसका हाल आज मालूम हुआ है तो वह बात अब मेरे दिल से जाती रही फिर भी कुँअर इन्द्रजीतसिह के बारे मे शक बना ही रहा है।

कम–सुन मैं तुझसे पूरा पूरा हाल कहती हूँ। यह तो तुझे मालूम ही हो चुका कि मैं कमलिनी हूँ।

कमला–जी हाँ यह तो (भूतनाथ की तरफ इशारा करके) इनकी कृपा से मालूम हो गया और इन्हीं के जुबानी यह भी जान गई कि रोहतासगढ में उस कब्रिस्तान के अन्दर हाथ में चमकता हुआ नेजा लेकर आप ही ने हम लोगों की मदद की थी और बेहोश करके रोहतासगढ किले के अन्दर पहुँचा दिया था दूसरी दफे राजा बीरेन्द्रसिह वगैरह को रोहतासगढ कैदखाने से आप ही ने छुड़ाया था और तीसरी दफे उस खण्डहर में यक[illegible] विचित्र रीति से आप ही को पहुँचते हम लोगों ने देखा था।

कम–यद्यपि कुछ लोगों ने मुझे बदनाम कर रक्खा है परन्तु वास्तव में मैं वैसी नहीं हूँ। मैं नेकों के साथ नेकी करने के लिए हरदम तैयार रहती हूँ, इसी तरह दुष्टों को मजा चखाने की भी नीयत रहती है। मैंने कुँअर इन्द्रजीतसिह के साथ किसी तरह की बुराई नहीं की बल्कि उनके साथ नेकी की और उन्हें एक बहुत बडे दुश्मन के हाथ से छुड़ाया। जब वे तुम लोगों से मिलेंगे और मेरा हाल कहेंगे तब मालूम होगा कि कमलिनी ने सच कहा था।

इसके बाद कमलिनी ने इन्द्रजीतसिह का अपने लश्कर से गायब होना और उन्हें दुश्मन के हाथ से छुडाना कई दिनों तक अपने मकान में रखना माधवी को गिरफ्तार करना किशोरी का रोहतासगढ के तहखाने से निकलना और धनपति के कब्जे में पडना तारा के खबर पहुँचाने पर इन्द्रजीतसिह को साथ लेकर किशोरी को छुडाने के लिए जाना रास्ते में शेरसिह और देवीसिह से मिलना अग्निदत्त का हाल और अन्त में उस तिलिस्मी मकान के अन्दर सभी का कूद जाना कमला से पूरा पूरा बयान किया। कमला ताज्जुब से सब बातें सुनती रही और कमलिनी पर उसे पूरा पूरा विश्वास हो गया।

कमला–फिर किशोरी और कुँअर इन्द्रजीतसिह उस खण्डहर वाले तहखाने में क्योंकर पहुँचे ?

कम–वह खण्डहर एक छोटे से तिलिस्म से सम्बन्ध रखता है। एक औरत जो मायारानी के नाम से पुकारी जाती है और जिसका हाल कुछ दिन बाद तुम लोगों को मालूम होगा उस तिलिस्म पर राज्य करती है। मैं उसकी सगी बहन हूँ। हमारी तिलिस्मी किताब से साबित होता है कि कुँअर इन्द्रजीत सिह और आनन्दसिह उस तिलिस्म को तोड़ेंगे क्योंकि तिलिस्म तोडने वालों के जो लक्षण उस किताब में लिखे हैं वे सब इन दोनों भाइयों में पाए जाते हैं परन्तु मायारानी चाहती है कि तिलिस्म टूटने न पावे और इसीलिए वह दोनों कुमारों को अपने कैद में रखने अथवा मार डालने का उद्योग कर रही है। मैंने उसे बहुत कुछ समझाया और कहा कि तिलिस्म बनाने वालों के खिलाफ चलने और इन दोनों भाइयों से दुश्मनी रखने का नतीजा अच्छा न होगा परन्तु उसने न माना बल्कि मेरी भी दुश्मन बन बैठी अन्त में लाचार होकर मुझे उसका साथ छोड देना पडा। मैंने उस तालाब वाले मकान पर अपना कब्जा कर लिया और उसी में रहने लगी। उस मकान में मैं बेफिक्र रहती हूँ। मायारानी के कई आदमियों ने जो नेक और इमानदार थे मेरा साथ दिया। तिलिस्म का जितना हाल उसे मालूम है उतना ही मुझे भी मालूम है यही सबब है कि वह अर्थात तिलिस्मी महारानी (मायारानी) बीरेन्द्रसिह और उनके खानदान के साथ दुश्मनी कर रही है और मैं हर तरह से उसकी मदद कर सकती हूँ। उस तिलिस्मी मकान के अन्दर इन्द्रजीतसिह और उनके साथियों तथा मेरे नौकरों का हसते हसते कूद जाना उसी तिलिस्मी महारानी की कार्रवाई थी और उस खण्डहर वाले तहखाने में जो कुछ तुम लोगों ने देखा वह सब भी उसी की बदौलत था। अफसोस गुप्त राह से मायारानी के बहुत से आदमियों के पहुँच जाने के कारण मैं कुछ कर न सकी। खैर कोई हर्ज नहीं कुँअर इन्द्रजीतसिह आनन्दसिह और किशोरी तथा कामिनी वगैरह का मायारानी कुछ भी नहीं बिगाड सकती क्योंकि उसकी असल जमा पूजी जो थी वह मेरे हाथ लग चुकी है जिसका खुलासा हाल इस समय मैं नहीं कह सकती हाँ इतना प्रतिज्ञा-पूर्वक कहती हूँ कि उन लोगों को मैं बहुत जल्द कैद से छुडाऊँगी।

कमला–मै समझती हूँ कि वह मकान भी तिलिस्मी होगा जिसके अन्दर कुँअर इन्द्रजीतसिह वगैरह हसते हँसत कूद पडे थे।

कम–नहीं उस मकान का तिलस्मी से कोई सम्बन्ध नही वह नया बनाया गया है। मुझे उसकी खबर न थी इसी से मै धोखे में आ गई, पीछे पता लगाने स मालूम हुआ कि वह भी मायारानी की कार्रवाई थी।

कमला–अब मेरा जी ठिकाने हुआ और आपकी बदौलत अपनी प्यारी सखी किशोरी और कुँअर इन्द्रजीतसिह वगैरह के छूटने की उम्मीद हुई। अब आशा है कि आपकी कृपा से एक दफे मायारानी को भी देखूगी।

कम–इसके लिए जल्दी करना मुनासिब नहीं मै आज ही कल में तुझे अपन साथ मायारानी के घर ले चलती क्योंकि मुझे वहाँ जाने की बहुत जल्दी है परन्तु इस समय तेरा रोहतासगढ लौट जाना ही ठीक है क्योंकि राजा वीरेन्द्रसिह लडकों की जुदाई में हद से ज्यादे दु खी होंगे तेरे लौट जाने से उन्हें ढाढस होगा और मरी जुबानी जोकुछ तूने सुना है जब उनसे बयान करेगी ता उन्हें एक प्रकार की आशा हो जायगी, हाँ एक बात तुझसे पूछना मै भूल गई।

कमला–वह क्या ?

कम–तू कहती है कि मै मायारानी को देखना चाहती हू, ता क्या तून उसे नहीं देखा ? उसी के आदमी तुझे गिरफ्तार करके ले गये थे जहाँ तक मै समझती हूँ तू उसके पास जरूर पहुँचाई गई हागी।

कमला–हाँ हाँ मै एक जनाने दर्बार में पहुँचाई गई थी मगर यह नही कह सकती कि वह मायारानी ही का दर्बार था या कोई दूसरा और यदि मायारानी ही का दर्बार था तो

कम–पहिले तू अपना हाल कह जा कि जब खण्डहर क अन्दर तहखाने में घुसी तो क्या हुआ और क्योंकर गिरफ्तार होकर कहाँ गई ?

कमला–जब हम लाग राजा वीरन्दसिह के साथ कुमार को निकालने के लिए उस खण्डहर वाल तहखाने म गय तो वहाँ किसी को न पाया। सीढी क नीच एक छाटी कोठरी थी मै उसमें घुस गई। देखा कि पत्थर की एक सिल्ली दीवार से अलग होकर जमीन पर पडी हुई है और उस जगह एक आदमी क जाने लायक रास्ता है। उस दवाज के दूसरी तरफ एक और कोठरी नजर आई जिसमें चिराग जल रहा था। मैंन आनन्दसिह और तारासिह को पुकारा जब वे आ गये तो तीनों आदमी उस काठरी क अन्दर घुसे जब दो तीन कदम आगे गये ता यकायक पीछे से खटके की आवाज आई घूम कर देखा तो रास्ते को बन्द पाया जिधर से आये थे। ताज्जुब में आकर हम लोग सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। यकायक कई आदमी एक तरफ से निकल आये और उन लोगो ने फुर्ती के साथ एक एक चादर हम लोगों के ऊपर डाल दी। मुझे उस चादर की तेज महक कभी न भूलगी। सिर पर चादर पड़ते ही अजब हालत हा गई एक प्रकार की तेज महक नाक के अन्दर घुसी और उसन तनोबदन की सुध भुला दी। न मालूम उसी दिन या कई दिन के बाद जब मै हाश में आई ता अपन का रात क समय एक जनान दर्बार म पाया।

कम–वह दर्बार कैसा था ?

कमला–वह दबार एक बारहदरी में था। जडाऊ सिहासन पर एक नौजवान औरत दक्षिणी ढग की पौशाक पहिने बैठी थी मै कह सकती हूँ कि सिवाय किशोरी के उसके मुकाबले की खूबसूरत औरत आज तक किसी ने न देखी होगी।

कम–वह बस बस मै समझ गई वही मारारानी थी हाँ और क्या देखा ?

कमला–उसक दाहिनी तरफ सोने की एक चौकी पर मृगछाला बिछा हुआ था मगर उस पर काई बैठा न था।

कम–वह तिलिस्म के दरोगा की जगह थी जा वृद्ध साधु के वेष में रहता है, मगर आज कल उसे राजा वीरेन्द्रसिह ने कैद कर लिया है।

कमला–(ताज्जुब स) राजा वीरेन्द्रसिह ने कब और किस द्वरोगा को कैद किया है ?

कम–उस तिलिस्मी खण्डहर में जब तुम लाग गये तो किसी साधू को बहाश पाया था या नहीं ?

कमला–(कुछ सोच कर) हाँ हाँ एक कोठरी क अन्दर जिसमें एक मूरत थी। क्या वही तिलिस्मी दारोगा है ?

कम–हाँ यह वही दारोगा है वही बहुत से आदमियों को साथ लेकर तहखाने में से कुमार को उठा लाने के लिए उस खण्डहर में आया था मगर तारासिह की चालाकी से अपने साथियों क सहित बेहोश हो गया। उस समय वेष बदले मेरा भी एक आदमी वहा मौजूद था मगर दूर ही से सब कुछ देख रहा था। हाँ तो उस दर्बार में और क्या देखा ?

कमला–उस मृगछाला बिछी हुई चौकी के पास अर्धगोलाकार बीस जडाऊ कुर्सिया और थीं और उसी तरह सिहासन के बाई तरफ छाटे जडाऊ सिहासन पर एक खूबसूरत औरत बैठी हुई थी जिसके बाद फिर बीस या इक्कीस

जडाऊ कुर्सियाँ थीं और दोनों तरफ वाली जडाऊ कुर्सियों पर नौजवान और खूबसूरत औरतें बडे ठाठ से बैठी हुई थीं*
मैं उस दर्बार को कभी न भूलूगी।

कम–ठीक ह ता अब तुझ मायारानी को देखने की जरूरत नहीं खैर मुख्तसर में कह कि फिर क्या हुआ ?

कमला–पहिले यह बता दीजिए कि मायारानी के बगल में छोटे सिहासन पर कौन औरत थी क्योंकि वह भी बडी ही खूबसूरत थी।

कम–वह मेरी छोटी बहिन थी। सब स बडी मायारानी उससे छोटी मैं और मुझसे छोटी वही औरत है उसका नाम लाडिली है।

कमला–आपकी और भी कोई बहिन है ?

कम–नहीं हम तीनों के सिवाय और कोई भाई या बहिन नहीं है। अब अपना हाल कह फिर क्या हुआ ?

कमला–मायारानी के सिहासन के पीछे मनोरमा खडी थी। उन्हीं सभों की बातचीत से मुझे मालूम हुआ कि उसका नाम मनोरमा है। वह बडी दुष्ट थी ?

कम–थी नहीं बल्कि है हाँ खैर तब क्या हुआ ?

कमला–ऐसे दर्बार को देख मैं घबडा गई। जिधर निगाह पडती थी उधर ही एक से एक बढकर जडाऊ चीजें नजर आती थीं। मैं हैरान थी कि इतनी दौलत इन लोगों के पास कहाँ से आई और ये लोग कौन है। मैं ताज्जुब में आकर चारों तरफ देखने लगी। यकायक मेरी निगाह कुँअर आनन्दसिह और तारासिह पर पडी। कुँअर आनन्दसिह हथकडी और बेडी से लाचार मेरे पीछे की तरफ बैठे थे उनके पास उन्हीं की तरह हथकड़ी बेडी से बेबस तारासिह भी बैठे थे फर्क इतना था कि कुँअर आनन्दसिह जख्मी न थे मगर तारासिह बहुत ही जख्मी और खून से तरबतर हो रहे थे। उनकी पौशाक खून स रगी हुई मालूम पडती थी। यद्यपि उनके जख्मों पर पट्टी बधी हुई थी मगर सूरत देखने से साफ मालूम पडता था कि उनके बदन से खून बहुत निकल गया है और इसी से वे सुस्त और कमजोर हो रहे हैं। कुमार की अवस्था देख कर मुझे क्रोध चढ़ आया मगर क्या कर सकती थी क्योंकि हथकडी और बेडी ने मुझे भी लाचार कर रक्खा था। हाथ में नगी तलवारें लिए कई औरतें कुँअर आनन्दसिह तारासिह और मुझको घेरे हुए थीं। यह जानने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा था कि जब हम लोग बेहोश करके यहाँ लाए गये तो तारासिह को जख्मी करने की आवश्यकता क्यों पडी। मायारानी ने मनोरमा की तरफ देखा और कुछ इशारा किया मनोरमा तुरन्त मेरे पास आई। उसके एक हाथ में कोई चीठी थी और दूसरे हाथ में कलम और दावात। मनोरमा ने वह चीठी मेरे आगे रख दी और उस पर हस्ताक्षर कर देने के लिए मुझे कहा मैंने चीठी पढी और क्रोध के साथ हस्ताक्षर करने से इन्कार किया।

कम–उस चीठी मे क्या लिखा था ?

कमला–वह चीठी मेरी तरफ से राजा बीरेन्द्रसिह के नाम लिखी गई थी और उसमें यह लिखा हुआ था –

आप चीठी देखते ही केवल एक ऐयार को लेकर इस आदमी के साथ बेखौफ चले आइए। कुँअर इन्द्रजीतसिह आनन्दसिह और किशोरी वगैरह इसी जगह कैद हैं। उनको छुडाने का पूरा पूरा उद्योग कर चुकी हूँ केवल आपके आने की देर है। यदि आप तीन दिन के अन्दर यहाँ न पहुँचेंगे तो इन लोगों में से एक की भी जान न बचेगी।'

कम- अच्छा फिर क्या हुआ ?

कमला–जब मैंने दस्तखत करने से इन्कार किया तो मनोरमा बहुत बिगडी और बोली कि 'यदि तू हस्ताक्षर न करेगी तो तेरे सामने ही कुँअर आनन्दसिह और तारासिह का सिर काट लिया जायगा और उसके बाद तुझे भी सूली दे दी जायगी । यह सुनकर मैं घबडा गई और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए इतने में ही तारासिह ने मुझे पुकार कर कहा 'कमला उस चीठी में जो कुछ लिखा है मैं अन्दाज से कुछ कुछ समझ गया खबरदार इन लोगों के धमकाने में न आइयो और चाहे जो हो उस चीठी पर दस्तखत न कीजियो। तारासिह की बात सुन कर मायारानी की तो भृकुटी ही चढ गई परन्तु मनोरमा बहुत ही उछली कूदी और बकझक करने लगी। उसने मायारानी की तरफ देख कर कहा, कम्बख्त तारासिह को अवश्य सूली देनी चाहिए उसने यहाँ का रास्ता भी देख लिया है इसलिए उसका मारना आवश्यक हो गया है और इस नालायक कमला को सरकार मेरे हवाले करें मैं इसे अपने घर ले जाऊँगी। मायारानी के इशारे से मनोरमा की बात मजूर की। मनोरमा ने एक चोबदार औरत की तरफ देख कर कहा 'कमला को ले जाकर कैद में रक्खो। चार पाँच दिन बाद काशीजी में हमारे घर भिजवा देना क्योंकि इस समय मुझे एक जरूरी काम के लिए जाना है जहाँ से तीन चार दिन के अन्दर शायद न लौट सकूँगी। हुक्म के साथ ही मुझ पर पुन चादर डाल दी गई जिसकी तेज महक ने मुझको बेहोश कर दिया और फिर जब मैं होश में आई अपने को एक अन्धेरी कोठरी में कैद पाया।

* इसी दर्बार में रामभोली का आशिक नानक गया था।

कई दिन तक उसी कोठरी में कैद रही और इस बीच में जो कुछ रंज और तकलीफ उठानी पड़ी उसका कहना व्यर्थ है। आखिर एक दिन भोजन में मुझे बेहोशी की दवा दी गई और बेहोश होने के बाद जब मैं होश में आई तो अपने को आपके कब्जे में पाया। अब न मालूम कुँअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह किशोरी और उनके ऐयार लोगों पर क्या मुसीबत आई और वे लोग किस अवस्था में पड़े हुए हैं।

यहा तक कह कर कमला चुप हो गई मगर उसकी आखों से आसू की बूदें बराबर जारी थीं। कमलिनी भी बड़े गौर और अफसोस के साथ उसकी बातें सुनती जाती थी और जब वह चुप हो गई तो बोली –

कम–कमला सब्र कर घबडा मत देख मै उन लोगों को कैसा छकाती हू। उन लोगों की क्या मजाल जो मेरे हाथ से बचकर निकल जायँ। तिलिस्मी मकान के अन्दर जब कुअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह हसते हसते कूद गये थे तो उन लोगों के पहिले मैने अपने कई आदमी उस मकान के अन्दर कुदाए थे जिसका हाल थोड़ी देर हुई मै तुझसे कह चुकी हूँ। मैंने उन आदमियों का बेसबब दुश्मनों के हाथ में नही फसाया कुछ समझ बूझ के ही ऐसा किया। वे लोग साधारण मनुष्य न थे आशा है कि थोडे दिन में तू सुन लेगी कि उन लोगों ने क्या कार्रवाई की।

कमला–आज आपके मिलने से और बहुत सी बातें सुनकर मेरा जी ठिकाने हुआ। आप सरीखा मददगार पाकर मै भी अपने जी का हौसला निकाला चाहती हूँ और

कम–नहीं नही इस समय तू और कुछ मत सोच और सीधे रोहतासगढ चली जा। तेरे वहाँ जाने से दो काम निकलेंगे एक तो तेरी जुबानी सब हाल सुन कर राजा बीरेन्द्रसिंह को बहुत ढाढस होगी दूसरे तू इस बात से होशियार रहियो और सभों को भी होशियार कर दीजियो कि वह तिलिस्मी दारोगा अर्थात बूढ़ा साधू कहीं धोखा देकर निकल न जाय। इसमें कोई शक नहीं कि मायारानी ने उसे छुड़ाने के लिए कई आदमी रोहतासगढ भेजे होंगे।

कमला–बहुत अच्छा मैं रोहतासगढ जाती हू और उस बुड्ढे कम्बख्त से होशियार रहूँगी मगर एक भेद बहुत दिनों से मेरे दिल में खटक रहा है यदि आप चाहें तो मेरे दिल से वह खुटका निकाल सकती हैं।

कम–वह क्या है।

कमला–(भूतनाथ की तरफ इशारा करके) यह कौन है? इसका असल भेद मुझको बता दीजिये।

कम–(हस कर) इसमें सन्देह नही कि भूतनाथ के बारे में तरह तरह की बातें तू सोचती होगी परन्तु लाचार हूँ कि इस समय इनका असल भेद तुझसे नहीं कह सकती थोडे ही दिनों में इनका हाल तुझे बल्कि सभों को मालूम हो जायगा। हॉ इतना अवश्य कहूगी कि तुझे अपने चाचा शेरसिंह की तरह इनसे डरने की कोई जरूरत नही ये तुझे किसी तरह की तकलीफ न देंगे बल्कि जहा तक हो सकेगा मदद करेंगे।

कमलिनी से अपने सवाल का पूरा पूरा जवाब न पाकर कमला चुप हो रही और कमलिनी की आज्ञानुसार उसको उसी समय रोहतासगढ चले जाना पडा।

छठवां बयान

दूसरे दिन कुछ रात बीते कमलिनी फिर मनोरमा के मकान पर पहुची। बाग के फाटक पर उसी दर्बान को टहलते पाया जिससे कल बातचीत कर चुकी थी। इस समय बाग का फाटक खुला हुआ था और उस दर्बान के अतिरिक्त और भी कई सिपाही वहा मौजूद थे। दर्बान कमलिनी को देखते ही खुशी से आगे बढ़ा और बोला आइये आइये मै कब से राह देख रहा हूँ। नागरजी को आये दो घण्टे से ज्यादे हो गये और वे आपसे मिलने के लिए बेताब हो रही हैं।

दर्बान के साथ ही साथ कमलिनी बाग के अन्दर गई और उस आलीशान मकान के सहन में पहुची जो इस बाग के बीचोबीच में बना हुआ था। इस मकान के कमरों दालानों कोठरियों तहखानों और पेचीले रास्तों का यदि यहाँ पूरा पूरा बयान किया जाय तो पाठकों का बहुत समय नष्ट होगा क्योंकि इस हिकमती मकान के हर एक दर्जे और हर एक हिस्से कारीगरी और मतलब के साथ बनाये गये हैं। यदि हमारे पाठकों को तीन चार बार इस मकान के अन्दर आने और रात भर रहने का मौका मिल जायगा तो उन्हें यहाँ का बहुत भेद मालूम हो जायगा।

कमलिनी ने नागर को सहन में टहलते हुए पाया। वह सिर नीचा किए किसी सोच में डूबी हुई टहल रही थी कमलिनी के पैर की आहट पाकर चौंकी और बोली–

नागर–क्या मेरी सखी मनोरमा का सन्देशा लेकर तुम ही आई हो?

कम–हॉ।

नागर–तुम कौन और कहाँ की रहने वाली हो? मैंने तुम्हें सिवाय आज के पहिले कभी नहीं देखा।

कम–हॉं ठीक है परन्तु मै अपना परिचय किसी तरह नहीं दे सकती।

नागर–यदि ऐसा है तो मै तुम्हारी बातों पर क्योंकर विश्वास करूगी?

कम–यदि मेरी बातों पर विश्वास न करोगी तो मेरा कुछ भी न विगडेगा अगर कुछ बिगडेगा तो तुम्हारा या तुम्हारी सखी मनोरमा का। जब मनोरमा न मुझे तुम्हारे पास भेजा तो मुझ भी इस बात का तरद्दुद हुआ और मैंने उनसे कहा कि तुम मुझे भेजती तो हो मगर जाने से कोई काम न निकलेगा क्योंकि मै किसी तरह अपना परिचय किसी को नहीं दे सकती और विना मुझे अच्छी तरह जान नागर मेरी बातों पर विश्वास न करेंगी। इसके जवाब में मनोरमा ने कहा कि मैं लाचार हूँ, सिवाय तेरे यहाँ पर मेरा हित कोई नहीं जिसे नागर के पास भेजूँ, यदि तू न जायगी तो मेरी जान किसी तरह नहीं वच सकती। खैर तुम्हें मैं एक शब्द बताती हूँ मगर खबरदार वह शब्द सिवाय नागर के किसी दूसरे के सामने जुबान से न निकालियो। जिस समय नागर तेरी जुबान से वह शब्द सुनेगी उस समय उसका शक जाता रहेगा और जो कुछ तू उसे कहेगी वह अवश्य करेगी। आखिर मनोरमा ने वह शब्द मुझे बताया और उसी के भरोसे मै यहाँ तक आई हूँ।

नागर–(कुछ सोच कर) वह शब्द क्या है ?

कम–(चारों तरफ दख कर और किसी को न पाकर) विकट ।

नागर–(कुछ देर तक सोचने के बाद) खैर मुझे तुम पर भरोसा करना पडा अब कहो मनोरमा किस अवस्था में है और मुझे क्या करना चाहिए ?

कम–मनोरमा भूतनाथ से मिलने गई थी मगर उससे मुलाकात होने पर मालूम कौन सा ऐसा सबब आ पडा कि उसने भूतनाथ का सिर काट लिया।

नागर–(चौक कर) भूतनाथ को मार ही डाला।

कम–हॉ उस समय मै मनोरमा के साथ मगर कुछ दूर पर खडी यह हाल देख रही थी।

नागर–अफसोस मनोरमा ने बहुत ही बुरा किया आज कल भूतनाथ से बहुत कुछ काम निकालने का जमाना था खैर तब क्या हुआ ?

कम–मनोरमा को मालूम न था कि राजा बीरेन्द्रसिह का ऐयार तेजसिह इस समय थोडी ही दूर पर एक पेड की आड में खडा भूतनाथ और मनोरमा की तरफ देख रहा है।

नागर–ओफ तेजसिह को भूतनाथ के मरने का सख्त रज हुआ होगा क्योंकि इन दिनों भूतनाथ दिलोजान से उन लागों की मदद कर रहा था अच्छा तब ?

कम–तेजसिह बडी फुर्ती से उस जगह जा पहुँचा जहाँ मनोरमा खडी थी और एक लात ऐसी मनोरमा की छाती पर लगाई कि वह बदहवास हो जमीन पर गिर पडी। तेजसिह ने उसकी मुश्कें बाध लीं और जफील बजाई जिसकी आवाज सुन कई आदमी वहाँ आ पहुँचे। उन लोगों ने मनोरमा के साथ मुझे भी गिरफ्तार कर लिया। उसी समय मनोरमा के कई सवार दूर से आते हुए दिखाई पड मगर उन लोगों के पहुँचने के पहिले ही तेजसिह और उसके साथी हम दोनों का लकर वहाँ से थोडी दूर पर पेडों की आड में जा छिपे। दूसरे दिन हम दोनों न अपने को राहतासगढ किले क अन्दर पाया। मनोरमा ने अपने छूटने की बहुत कुछ कोशिश की मगर कोई काम न चला। आखिर उसने तेजसिह से कहा कि भूतनाथ बडा ही शैतान नालायक और खूनी आदमी था उसका असल हाल आप लोग नहीं जानते यदि जानत ता आप लोग खुद भूतनाथ का सिर काट डालते'। इसके जवाब में तेजसिह ने कहा कि यदि इस बात को तू साबित कर दे तो मैं तुझे छोड दूँगा। मनोरमा ने मेरी तरफ इशारा करके कहा कि यदि आप इसे छोड़ दें और पाँच दिन की मोहलत दें तो इसे मैं अपने घर भेजकर भूतनाथ के लिखे कागजात ऐसे मगा दू कि जिन्हें पढ़ते ही आपको मेरी बातों पर विश्वास हो जायें और भूतनाथ का बहुत कुछ विचित्र हाल भी जिसे आप लोग नहीं जानते मालूम हो। यदि मैं झूठी निकलूँ तो जो कुछ चाहें मुझे सजा दीजिएगा। तेजसिह ने कुछ देर सोच विचार कर कहा कि हो सकता है मुझसे बहाना करके इसे तुम अपने घर भेजो और किसी तरह की मदद मगाओ मगर मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं मैं तुम्हारी बात मजूर करता हूँ और इसे (मेरी तरफ इशारा करके) छोड देता हूँ, जो कुछ चाहे इसे समझा बुझा कर अपने घर भेजो। इसके बाद मुझसे निराले में बातचीत करने के लिए आज्ञा मागी गई और तेजसिह ने उसे भी मजूर किया आखिर मनोरमा ने मुझे बहुत कुछ समझा-बुझा कर तुम्हारे पास रवाना किया। अब मैं तो रोहतासगढ जाने वाली नहीं क्योंकि बडी मुश्किल से जान बची है मगर तुम्हें मुनासिब है कि जहाँ तक जल्द हो सके भूतनाथ के कागजात लेकर रोहतासगढ जाओ और अपनी सखी के छुडाने का बन्दोबस्त करो।

कमलिनी की बातें सुनकर नागर सोच-सागर में डूब गई। न मालूम उसके दिल में क्या क्या बातें पैदा हो रही थीं मगर लगभग आधी घड़ी के वह चुपचाप बैठी रही। इसके बाद उसने सिर उठाया और कमलिनी की तरफ देखकर कहा 'खैर अब

कमलिनी ने अपना वादा पूरा किया और कागजों के सहित तुझे मेरे हाथ फसाया। अव तू मुझे धोखा नहीं दे सकती और न तलाशी लेने की नीयत से मैं तुझे कब्जे से छोड ही सकता हूँ। तेरा जमीन से उठना मेरे लिए काल हो जायगा क्योंकि फिर तू हाथ नहीं आवेगी।

नागर--(चौक कर और ताज्जुव से) हैं ता क्या वह कम्बख्त कमलिनी थी जिसन मुझे धोखा दिया ! अफसास शिकार घर म आकर निकल गया। खैर जो तेरे जी में आवे कर यदि मरे मारने ही में तेरी भलाई हो तो मार मगर मेरी एक वात सुन ल।

भूत--अच्छा कह क्या कहती है ? थोडी दर तक ठहर जाने में मेरा कोई भी हर्ज नहीं।

नागर--इसमें ता काई शक नही कि अपने कागजात जिसे तरा जीवन चरित्र कहना चाहिए लेन के लिए ही तू मुझे मारना चाहता है।

भूत--बेशक ऐसा ही है यदि वह मुट्ठा मरे हाथ का लिखा हुआ न हाता तो मुझे उसकी परवाह न होती।

नागर--हा ठीक है, परन्तु इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि मुझे मार कर तू वे कागजात न पावेगा। खैर जव मैं इस दुनिया से जाती हीं हू ता क्या जरूरत है कि तुझे भी वर्वाद करती जाऊ ? मैं तेरी लिखी चीजें खुशी से तेरे हवाले करती हू, मरा दाहिना हाथ छोड मैं तुझ वता दू कि मुझे मारने के वाद व कागजात तुझे कहा से मिलेंगे।

भूतनाथ इतना डरपोक और कमजार भी न था कि नागर का केवल दाहिना हाथ जिससे हर्बे की किस्म स एक काटा भी न था छाडने से डर जाय दूसर उसने यह भी सोचा कि जव यह स्वय ही कागजात देने को तैयार है तो क्यों न ले लिया जाय कौन ठिकाना इसे मारने के वाद कागजात हाथ न लगें। थोडी दर तक कुछ साच विचार कर भूतनाथ ने नागर का दाहिना हाथ छोड दिया जिसके साथ ही उसने फुर्ती से वह हाथ भूतनाथ के गाल पर दवा कर फेरा। भूतनाथ को ऐसा मालूम हुआ कि नागर ने एक सुई उसके गाल में चुभो दी मगर वास्तव में एसा न था। नागर की उगली में एक अगूठी थी जिस पर नगीने की जगह स्याह रग का कोई पत्थर जडा हुआ था वही भूतनाथ के गाल में गडा जिससे एक लकीर सी पड गई और जरा खून भी दिखाई देने लगा। पर मालूम होता है कि वह नोकीला स्याह पत्थर जो अगूठी में जडा हुआ था किसी प्रकार का जहर हलाहल था जो खून के साथ मिलते ही अपना काम कर गया क्योंकि उसने भूतनाथ को वात करने की मोहलत न दी। वह एक दम चक्कर खा कर जमीन पर गिर पडा और नागर उसके कब्ज से छूटकर अलग हा गई।

नागर ने घाडे की वागडार जा चारजाम से वधी हुई थी खोली और उसी से भूतनाथ के हाथ पैर वाधने के वाद एक पड के साथ कस दिया इसके वाद उसने अपने ऐयारी के वटुए में से एक शीशी निकाली जिसमें किसी प्रकार का तेल था। उसन थोडा तेल उसमें स भूतनाथ के गाल में उसी जगह जहा लकीर पडी हुई थी मला। देखते ही दखत उस जगह एक वडा फफोला पड गया। नागर ने खजर की नोक से उस फफोले में छेद कर दिया जिससे उसके अन्दर का विल्कुल पानी निकल गया और भूतनाथ होश में आ गया।

नागर--क्यो वे कम्बख्त अपने किये की सजा पा चुका या कुछ कसर है ? तून देखा मेर पास कैसी अद्भुत चीज है। अगर हाथी भी हा ता इस जहर को बर्दाश्त न कर सके और मर जाय तेरी क्या हकीकत है !

भूतनाथ--बेशक ऐसा ही है और अब मुझे निश्चय हो गया कि मेरी किस्मत में जरा भी सुख भोगना बदा नहीं है।

नागर--साथ ही इसके तुझे यह भी मालूम हो गया कि इस जहर को मैं सहज ही में उतार भी सकती हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि तू मर चुका था मगर मैंने इसलिए तुझे जिला दिया कि अपने लिखे हुए कागजों का हाल दुनिया में फैला हुआ तू स्वयम देख और सुन ले क्योंकि उससे वढ कर कोइ दु ख तरे लिए नहीं है पर यह भी देख ले कि उस कम्बख्त कमलिनी के साथ मैने क्या किया जिसने मुझे धोखे में डाला था। इस समय वह मेरे कब्जे में है क्योंकि कल वह मेरे घर में जरूर आकर टिकेगी ! अहा अव मैं समझ गई कि रात वाले अद्भुत मामले की जड भी वही है। जरूर ही इस मुर्दे शेर को रास्ते में तूने ही वैठाया होगा !

भूतनाथ--(आखों में आसू भर कर)अवकी दफे मुझे माफ करा जो कुछ हुक्म दो मैं करने को तैयार हूँ।

नागर--मै अभी कह चुकी हूँ कि तुझ मारुगी नहीं फिर इतना क्यों डरता है ?

भूतनाथ--नहीं नहीं मैं वैसी जिन्दगी नहीं चाहता जैसी तुम देत हो हॉ यदि इस वात का वादा करा कि वे कागजात किसी दूसरे को न दोगी तो मैं वे सव काम करने को तैयार हूँ जिनसे पहिले इनकार करता था।

नागर--मै ऐसा कर सकती हूँ क्योंकि आखिर तुझे जिन्दा छोड़ूँगी ही और यदि मेरे काम से तू जी न चुरावेगा तो मै तेरे कागजात भी वडी हिफाजत से रक्खूँगी। हॉ खूव याद आया--उस चीठी को तो जरा पढना चाहिए जो उस कम्बख्त कमलिनी न यह कह कर दी थी कि मुलाकात होने पर मनोरमा को दे देना।

चन्द्रकान्ता सन्तति

सातवां भाग

पहिला बयान

नागर थोडी दूर पश्चिम जा कर घूमी और उस सडक पर चलने लगी जा रोहतासगढ़ की तरफ गई थी।

पाठक स्वयम समझ सकते है कि नागर का दिल कितना मजबूत और कठोर था। उन दिनों जा रास्ता काशी से राहतासगढ का जाता था वह बहुत ही भयानक और खतरनाक था। कहीं कहीं ता बिल्कुल ही मैदान में जाना पड़ता था और कहीं गहन वन में होकर दरिन्द जानवरों की दिल दहलाने वाली आवाजें सुनते हुए सफर करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त उस रास्ते मे लुटेरों और डाकुओं का डर तो हरदम बना ही रहता था। मगर इन सब बातों पर जरा भी ध्यान न देकर नागर न अकेले ही सफर करना पसन्द किया इसी स कहना पड़ता है कि वह बहुत ही दिलावर निडर और सगदिल औरत थी। शायद उसे अपनी ऐयारी का भरासा या घमण्ड हो क्योंकि ऐयार लोग यमराज से भी नहीं डरते और जिस एयार का दिल इतना मजबूत न हा उसे ऐयार कहना भी न चाहिए।

नागर एक नोजवान मर्द की सूरत बना कर तज और मजबूत घोड़े पर सवार तेजी के साथ रोहतासगढ़ की तरफ जा रही थी। उसकी कमर में ऐयारी का बटुआ खज़र कटार और एक पथरकला *भी था। दापहर होते हात उसने लगभग पचीस कोस के रास्ता तय किया और उसके बाद एक ऐसे गहन वन में पहुँची जिसके अन्दर सूर्य की रौशनी बहुत कम पहुचती थी कवल एक पगडडी सड़क थी जिस पर बहुत सम्हल कर सवारों को सफर करना पड़ता था क्योंकि उसके दोनों तरफ कटील दरख्त और झाड़िया थी। इस जगल क बाहर एक चौड़ी सड़क भी थी जिस पर गाडी और छकड़े वाले जाते थे मगर घुमाव और चक्कर पडन के कारण उस रास्त को छोड़ कर घुड़सवार और पैदल लाग अक्सर इसी जगल में हाकर जाया करत थे जिसमें इस समय नागर जा रही है क्योंकि इधर स कई कोस का बचाव पडता था।

यकायक नागर का घाड़ा भड़का और रूक कर अपने दोनों कान आगे की तरफ करके देखने लगा। नागर शहसवारी का फन बखूबी जानती और अच्छी तरह समझती थी, इसलिए घाड़े के भड़कन और रूकन स उसे किसी तरह का रज न हुआ बल्कि वह चौकन्नी हो गई और बड़े गौर से चारों तरफ देखने लगी। अचानक सामन की तरफ पगड़डी के बीचोंबीच में बैठे हुए एक शेर पर उसकी निगाह पड़ी जिसका पिछला भाग नागर की तरफ था अर्थात् मुह उस तरफ था जिधर नागर जा रही थी। नागर बडे गौर से शेर को देखने और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए। अभी उसने कोई राय पक्की नहीं की थी कि दाहिनी बगल की झाड़ी में स एक आदमी निकलकर बढा और फुर्ती के साथ घोड़े के पास जा पहुँचा जिस दखत ही वह चौंक पड़ी और घबराहट के मारे बोल उठी "ओफ मुझे बड़ा भारी धोखा दिया गया !" साथ की इसके वह अपना हाथ पथरकले पर ले गई मगर इस आदमी ने इसे कुछ भी करने न दिया। उसने नागर का हाथ पकड़कर अपनी तरफ खींचा और एक झटका ऐसा दिया कि वह घोड़े के नीचे आ रही। वह आदमी तुरत उसकी छाती पर सवार हो गया और उसके दोनों हाथ कब्जे में कर लिये।

यद्यपि नागर का विश्वास हा गया कि अब उसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती तो भी उसने बडी दिलेरी से अपने दुश्मन की तरफ देखा और कहा—

नागर—बेशक उस हरामजादी ने मुझ पूरा धाखा दिया, मगर भूतनाथ तुम मुझे मार कर जरूर पछताओगे। वह कागज जिसके मिलने की उम्मीद में तुम मुझे मार रहे हो तुम्हारे हाथ कभी न लगेगा क्योंकि मै उसे अपने साथ नहीं लाई हूँ, यदि तुम्हें विश्वास न हो तो मेरी तलाशी ले लो, और बिना वह कागज पाए मेरे या मनोरमा के साथ बुराई करना तुम्हारे हक में ठीक नहीं है इसे तुम अच्छी तरह जानते हो।

भूतनाथ—अब मै तुझे किसी तरह छोड नहीं सकता। मुझ विश्वास है कि वे कागजात जिनके सबब से मै तुझ ऐसे कमीनों की तावेदारी करने पर मजबूर हो रहा हूँ इस समय जरूर तेरे पास है तथा इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि

*पथरकला उस छोटी सी बन्दूक को कहत हैं जिसके घोड़े में चकमक लगा होता है जो रजक पर गिर कर आग पैदा करता है।

कमलिनी ने अपना वादा पूरा किया और कागजों के सहित तुझे मेरे हाथ फसाया। अब तू मुझे धोखा नहीं दे सकती और न तलाशी लेने की नीयत से मैं तुझे कब्जे से छोड ही सकता हूँ। तेरा जमीन से उठना मेरे लिए काल हो जायगा क्योंकि फिर तू हाथ नहीं आवेगी।

नागर–(चौंक कर और ताज्जुब से) है तो क्या वह कम्बख्त कमलिनी थी जिसने मुझे धोखा दिया ! अफसोस शिकार घर मे आकर निकल गया। खैर जो तेरे जी में आवे कर यदि मेरे मारने ही में तेरी भलाई हो तो मार मगर मेरी एक बात सुन ले।

भूत–अच्छा कह क्या कहती है ? थोडी देर तक ठहर जाने में मेरा कोई भी हर्ज नहीं।

नागर–इसमें तो कोई शक नहीं कि अपने कागजात जिसे तेरा जीवन चरित्र कहना चाहिए लेने के लिए ही तू मुझे मारना चाहता है।

भूत–बेशक ऐसा ही है यदि वह मुट्ठा मेरे हाथ का लिखा हुआ न होता तो मुझे उसकी परवाह न होती।

नागर–हा ठीक है, परन्तु इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि मुझे मार कर तू वे कागजात न पावेगा। खैर जब मैं इस दुनिया से जाती ही हू तो क्या जरूरत है कि तुझे भी बर्बाद करती जाऊ ? मैं तेरी लिखी चीजें खुशी से तेरे हवाले करती हू, मेरा दाहिना हाथ छोड मैं तुझे बता दू कि मुझे मारने के बाद वे कागजात तुझे कहा से मिलेंगे।

भूतनाथ इतना डरपोक और कमजोर भी न था कि नागर का केवल दाहिना हाथ जिसमें हर्बे की किस्म से एक काटा भी न था छोडने से डर जाय दूसरे उसने यह भी सोचा कि जब यह स्वय ही कागजात देने को तैयार है तो क्यों न ले लिया जाय कौन ठिकाना इसे मारने के बाद कागजात हाथ न लगें। थोड़ी देर तक कुछ सोच विचार कर भूतनाथ ने नागर का दाहिना हाथ छोड दिया जिसके साथ ही उसने फुर्ती से वह हाथ भूतनाथ के गाल पर दबा कर फेरा। भूतनाथ को ऐसा मालूम हुआ कि नागर ने एक सुई उसके गाल में चुभो दी मगर वास्तव में ऐसा न था। नागर की उगली में एक अगूठी थी जिस पर नगीने की जगह स्याह रग का कोई पत्थर जडा हुआ था वही भूतनाथ के गाल में गड़ा जिससे एक लकीर सी पड गई और जरा खून भी दिखाई देने लगा। पर मालूम होता है कि वह नोकीला स्याह पत्थर जो अगूठी में जडा हुआ था किसी प्रकार का जहर हलाहल था जो खून के साथ मिलते ही अपना काम कर गया क्योंकि उसने भूतनाथ को बात करने की मोहलत न दी। वह एक दम चक्कर खा कर जमीन पर गिर पडा और नागर उसके कब्जे से छूटकर अलग हो गई।

नागर ने घोडे की बागडोर जो चारजामे से बधी हुई थी खोली और उसी से भूतनाथ के हाथ पैर बाधने के बाद एक पेड के साथ कस दिया इसके बाद उसने अपने ऐयारी के बटुए में से एक शीशी निकाली जिसमें किसी प्रकार का तेल था। उसने थोडा तेल उसमें से भूतनाथ के गाल में उसी जगह जहा लकीर पडी हुई थी मला। देखते ही देखते उस जगह एक बडा फफोला पड गया। नागर ने खजर की नोक से उस फफोले में छेद कर दिया जिससे उसके अन्दर का बिल्कुल पानी निकल गया और भूतनाथ होश में आ गया।

नागर–क्यों बे कम्बख्त अपने किये की सजा पा चुका या कुछ कसर है ? तूने देखा मेरे पास कैसी अद्‌भुत चीज है। अगर हाथी भी हो तो इस जहर को बर्दाश्त न कर सके और मर जाय तेरी क्या हकीकत है !

भूतनाथ–बेशक ऐसा ही है और अब मुझे निश्चय हो गया कि मेरी किस्मत में जरा भी सुख भोगना बदा नहीं है।

नागर–साथ ही इसके तुझे यह भी मालूम हो गया कि इस जहर को मैं सहज ही में उतार भी सकती हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि तू मर चुका था मगर मैंने इसलिए तुझे जिला दिया कि अपने लिखे हुए कागजों का हाल दुनिया में फैला हुआ तू स्वयम देख और सुन ले क्योंकि उससे बढ कर कोई दुःख तेरे लिए नहीं है पर यह भी देख ले कि उस कम्बख्त कमलिनी के साथ मैने क्या किया जिसने मुझे धोखे में डाला था। इस समय वह मेरे कब्जे में है क्योंकि कल वह मेरे घर में जरूर आकर टिकेगी ! अहा अब मैं समझ गई कि रात वाले अद्‌भुत मामले की जड भी वही है। जरूर ही इस मुर्दे शेर को रास्ते में तूने ही बैठाया होगा !

भूतनाथ–(आखों में आसू भर कर)अबकी दफे मुझे माफ करो जो कुछ हुक्म दो मैं करने को तैयार हूँ।

नागर–मैं अभी कह चुकी हूँ कि तुझे मारूगी नहीं फिर इतना क्यों डरता है ?

भूतनाथ–नहीं नहीं मैं वैसी जिन्दगी नहीं चाहता जैसी तुम देती हो हॉ यदि इस बात का वादा करो कि वे कागजात किसी दूसरे को न दोगी तो मैं वे सब काम करने को तैयार हूँ जिनसे पहिले इनकार करता था।

नागर–मैं ऐसा कर सकती हूँ क्योंकि आखिर तुझे जिन्दा छोडूँगी ही और यदि मेरे काम से तू जी न चुरावेगा तो मैं तेरे कागजात भी बडी हिफाजत से रक्खूँगी। हॉ खूब याद आया–उस चीठी को तो जरा पढना चाहिए जो उस कम्बख्त कमलिनी ने यह कह कर दी थी कि मुलाकात होने पर मनोरमा को दे देना।

यह सोचते ही नागर ने बटुए में से वह चीठी निकाली और पढने लगी। यह लिखा हुआ था–

जिस काम के लिए आई थी ईश्वर की कृपा से वह काम बखूबी हो गया। वे कागजात इसके पास है ले लेना। दुनिया में यह बात मशहूर है कि उस आदमी का जहान से उठ जाना ही अच्छा है जिससे भलों को कष्ट पहुँचे। मैं तुमसे मिलने के लिए यहा बैठी हूँ।

नागर–देखो नालायक ने चीठी भी लिखी तो ऐसे ढग से कि यदि मैं चोरी से पढूँ भी तो किसी तरह का शक न हो और इसका पता भी न लगे कि यह भूतनाथ के नाम लिखी गई है या मनोरमा के स्त्रीलिग और पुल्लिग को भी बचा ले गइ है। उसने यही सोच के चीठी मुझे दी होगी कि जब यह भूतनाथ के कब्जे में आ जायगी और वह इसकी तलाशी लेगा तो यह चीठी उसके हाथ लग जायगी और जब वह पढेगा तो नागर को अवश्य मार डालेगा और फिर तुरत आकर मुझसे मिलेगा जिसमें वह किशोरी को छुडा ले। अच्छा कम्बख्त देख मैं तेरे साथ क्या सलूक करती हूँ।

भूत– अच्छा इतना वादा तो मैं कर ही चुका हूँ कि हर तरह से तुम्हारी ताबेदारी करूँगा और जो कुछ तुम कहोगी बेउज्र बजा लाऊँगा अब इस समय मैं तुम्हें एक भेद की बात बताता हूँ जिसे जान कर तुम बहुत प्रसन्न होवोगी।

नागर–कहो क्या कहते हो ? शायद तुम्हारी नेकचलनी का सबूत मिल जाय।

भूत–मेरे हाथ तो बधे हैं खैर तुम हो आओ मेरी कमर से खजर निकालो। उसके साथ एक पुर्जा बधा है खोल कर पढो देखो क्या लिखा है ?

नागर भूतनाथ के पास गई और उसकी कमर से खजर निकालना चाहा मगर खजर पर हाथ पडते ही उसके बदन में बिजली दौड गई और वह कॉप कर जमीन पर गिरते ही बेहोश हो गई। भूतनाथ पुकार उठा– वह मारा। उस तिलिस्मी खजर का हाल जो कमलिनी ने भूतनाथ को दिया था पाठक बखूबी जानते ही हैं कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं। इस समय वही खजर भूतनाथ की कमर में था। उसकी तासीर से नागर बिल्कुल बेखबर थी। वह नहीं जानती थी कि जिसके पास उसके जोड की अँगूठी न हो वह उस खजर को छू नहीं सकता।

अब भूतनाथ का जी ठिकाने हुआ और वह अपने छूटने का उद्योग करने लगा परन्तु हाथ पैर बध रहने के कारण कुछ कर न सका। आखिर वह जोर जोर से चिल्लाने लगा जिससे किसी आते जाते मुसाफिर के कान में आवाज पडे तो वहाँ आकर उसको छुडावे।

दो घन्टे बीत गए मगर किसी मुसाफिर के कान में भूतनाथ की आवाज न पडी और तब तक नागर भी होश में आकर उठ बैठी।

दूसरा बयान

हम ऊपर लिख आए हैं कि राजा बीरेन्द्रसिह तिलिस्मी खण्डहर से (जिसमें दोनों कुमार तारासिह इत्यादि गिरफ्तार हो गए थे) निकल कर रोहतासगढ की तरफ रवाना हुए तो तेजसिह उनसे कुछ कह कर अलग हो गए और उनके साथ रोहतासगढ न गए। अब हम यह लिखना मुनासिब समझते हैं कि राजा बीरेन्द्रसिह से अलग होकर तेजसिह ने क्या किया।

एक दिन और रात उस खण्डहर के चारों तरफ जगल और मैदान में तेजसिह घूमते रहे मगर कुछ काम न चला। दूसरे दिन वह एक छोटे से पुराने शिवालय के पास पहुँचे जिसके चारों तरफ बेल और पारिजात के पेड बहुत ज्यादे थे जिसके सबब से वह स्थान बहुत ठडा और रमणीक मालूम होता था। तेजसिह शिवालय के अन्दर गए और शिवजी का दर्शन करने के बाद बाहर निकल आए उसी जगह से बेलपत्र तोडकर शिवजी की पूजा की और फिर उस चश्मे के किनारे जो मन्दिर के पीछे की तरफ बह रहा था बैठ कर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। इस समय तेजसिह एक मामूली जमींदार की सूरत में थे और यह स्थान भी उस खण्डहर से बहुत दूर न था।

थोडी देर बाद तेजसिह के कान में आदमियों के बोलने की आवाज आई। बात साफ समझ में नहीं आती थी इससे मालूम हुआ कि वे लोग कुछ दूर पर हैं। तेजसिह ने सिर उठा कर देखा तो कुछ दूर पर दो आदमी दिखाई पडे जो उसी शिवालय की तरफ आ रहे थे। तेजसिह चश्मे के किनारे से उठ खडे हुए और एक झाडी के अन्दर छिप कर देखने लगे कि वे लोग कहा जाते और क्या करते हैं। इन दोनों की पोशाकें उन लोगों से बहुत कुछ मिलती थी जो तारासिह की चालाकी से तिलिस्मी खण्डहर में बेहोश हुए थे और जिन्हें राजा बीरेन्द्रसिह साधू बाबा (तिलिस्मी दारोगा)के सहित कैदी बना कर रोहतासगढ ले गए थे इसलिए तेजसिह ने सोचा कि ये दोनों आदमी भी जरूर उन्हीं लोगों में से हैं जिनकी

बदौलत हम लाग दुख भाग रह है अस्तु इन लागों में स किसी को फसा कर अपना काम निकालना चाहिए।

तजसिह के दखत ही देखते व दोनों आदमी वहाँ पहुँच कर उस शिवालय के अन्दर घुस गय और लगभग दा घडी के बीत जान पर भी बाहर न निकल। तेजसिह ने छिप कर राह दखना उचित न जाना। वह झाड़ी में से निकल कर शिवालय में आय मगर झाक कर देखा ता शिवालय के अन्दर किसी आदमी की आहट न मिली। ताज्जुब करते हुए शिवलिग के पास तक चले गये मगर किसी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी। तेजसिह तिलिस्मी कारखान और अद्‌भुत मकानों तथा तहखानों की हालत से बहुत कुछ वाकिफ हो चुके थे इसलिए समझ गए कि इस शिवालय के अन्दर कोई गुप्त राह सुरग या तहखाना अवश्य है और इसी सबब से ये दोनों आदमी गायब हो गये है।

शिवालय के सामने की तरफ बेल का एक पड था। उसी के नीचे तेजसिह यह निश्चय करके बैठ गए कि जब तक वे लोग अथवा उनमें से कोई बाहर न आयेगा तब तक यहा से न टलेंगे। आखिर घण्टे भर बाद उन्हीं में से एक आदमी शिवालय के अन्दर से बाहर आता हुआ दिखाई पडा। उसे देखते ही तेजसिह उठ खडे हुए निगाह मिलते ही झुक कर सलाम किया और तब कहा ईश्वर आपका भला कर मर भाई की जान बचाइए!

आदमी–तू कौन है और तेरा भाई कहाँ ह?

तेज–मै जमींदार हूँ, (हाथ का इशारा करके) उस झाड़ी के दूसरी ओर मेरा भाई है बेचारे को एक बुढिया व्यर्थ मार रही है। आप पुजारीजी है धर्मात्मा है किसी तरह मेरे भाई को बचाइए। इसीलिए मै यहाँ आया हूँ। (गिडगिड़ा कर) बस अब देर न कीजिए ईश्वर आपका भला करे!

तजसिह की बातें सुन कर उस आदमी को बडा ही ताज्जुब हुआ और बेशक ताज्जुब की बात भी थी क्योंकि तेजसिह बदन के मजबूत और निराग मालूम होते थे, देखने वाला कह सकता था कि बेशक इसका भाई भी वैसा ही होगा फिर ऐस दो आदमियों के मुकाबले में एक बूढी औरत का जबर्दस्त पडना ताज्जुब नहीं तो क्या है!

आखिर बहुत सोच विचार कर उस आदमी ने तेजसिह से कहा "खैर चलो देखें वह बुढिया कैसी पहलवान है।

उस आदमी को साथ लिए हुए तेजसिह शिवालय से कुछ दूर चले गये और एक गुजान झाडी के पास पहुच कर इधर उधर घूमन लगे।

आदमी–तुम्हारा भाई कहाँ है?

तेजसिह–उसी का तो ढूँढ रहा हूँ।

आदमी–क्या तुम्हें मालूम नहीं कि उसे किस जगह छोड गए थे?

तेजसिह–राम राम कैसे बेवकूफ से पाला पडा है! अरे कम्बख्त जब जगह याद नही ता यहाँ तक कैसे आए!

आदमी–पाजी कहीं का! हम तो तेरी मदद को आए और तू हमें ही कम्बख्त कहता है!!

तेज–बेशक तू कम्बख्त बल्कि कमीना है, तू मेरी मदद क्या करेगा जब तू अपने ही को नहीं बचा सकता?

इतना सुनते ही वह आदमी चौकन्ना हो गया और बडे गौर से तेजसिह की तरफ देखन लगा। जब उसे निश्चय हो गया कि यह कोई ऐयार है तब उसने खजर निकाल कर तेजसिह पर वार किया। तेजसिह ने एक वार बचा कर उसकी कलाई पकड ली और एक झटका ऐसा दिया कि खजर उसके हाथ से छूट कर दूर जा गिरा। वह और कुछ चोट करने की फिक्र ही में था कि तेजसिह ने उसकी गर्दन में हाथ डाल दिया और बात की बात में जमीन पर दे मारा! वह घबडा कर चिल्लाने लगा मगर इससे भी कुछ काम न चला क्योंकि उसके नाक में बेहोशी की दवा जबर्दस्ती ठूँस दी गई और एक छींक मार कर वह बेहोश हो गया।

उस बेहोश आदमी को उठाकर तजसिह एक ऐसी झाडी में घुस गए जहाँ से आते जाते मुसाफिरों को वे बखूबी देख सकते मगर उन पर किसी की निगाह न पड़ती। उस बेहोश आदमी को जमीन पर लेटा देने के बाद तेजसिह चारों तरफ देखने लगे और किसी को न पाया ता धीरे से बोल अफसोस इस समय मै अकेला हूँ यदि मेरा कोई साथी होता तो इसे रोहतासगढ़ भिजवा कर बेखौफ हो जाता और बेफिक्री के साथ काम करता! खैर कोई चिन्ता नहीं अब किसी तरह काम तो निकालना ही पडेगा।

तजसिह न ऐयारी का बटुआ खोला और आईना निकाल कर सामने रक्खा अपनी सूरत ठीक वैसी ही बनाई जैसा कि वह आदमी था इसके बाद अपने कपडे उतार कर रख दिए और उसके बदन स कपड़े उतार कर पहिन लने के बाद उसकी सूरत बदलने लगे। किसी तेज दवा से उसके चेहरे पर कई जख्म के दाग ऐसे बनाए कि सिवाय तजसिह के दूसरा कोई छुडा ही नहीं सकता था और मालूम ऐसा होता था कि ये जख्म के दाग कई वर्षो से उसके चेहरे पर मौजूद है। इसके बाद उसका तमाम बदन एक स्याह मसाले से रग दिया। इसमें यह गुण था कि जिस जगह लगाया जाय वह

आबनूस के रंग की तरह स्याह हो जाय और जब तक केले के अर्क से न धोया जाय वह दाग किसी तरह न छूटे चाहे वर्षों बीत जाय।

वह आदमी गोरा था मगर अब पूर्ण रूप से काला हो गया, चेहरे पर कई जख्म के निशान भी बन गए। तेजसिंह ने बड़े गौर से उसकी सूरत देखी और इस ढंग से गर्दन हिला कर उठ खड़े हुए कि जिससे उनके दिल का भाव साफ झलक गया। तेजसिंह ने सोच लिया कि बस इसकी सूरत बखूबी बदल गई, और कोई कारीगरी करने की आवश्यकता नहीं है और वास्तव में ऐसा ही था भी दूसरे की बात तो दूर रही यदि उसकी मां भी उसे देखती तो अपने लड़के को कभी न पहिचान सकती।

उस आदमी की कमर के साथ ऐयारी का बटुआ था तेजसिंह ने उसे खोल लिया और अपने बटुए की कुल चीजें उसमें रख अपना बटुआ उसकी कमर से बांध दिया और वहां से रवाना हो गए।

तेजसिंह फिर उसी शिवालय के सामने आए और एक पेड़ के नीचे बैठ कर कुछ गाने लगे। दिन केवल घण्टे भर बाकी रह गया था जब वह दूसरा आदमी भी शिवालय के बाहर निकला। तेजसिंह को जो उसके साथी की सूरत में थे पेड़ के नीचे मौजूद पाकर वह गुस्से में आ गया और उनके पास आकर कड़ी आवाज में बोला "वाहजी बिहारीसिंह अभी तक आप यहाँ बैठे गीत गा रहे हैं।

तेजसिंह को इतना मालूम हो गया कि हम जिसकी सूरत में हैं उसका नाम बिहारीसिंह है। अब जब तक ये अपनी असली सूरत में न आवें हम भी इन्हें बिहारीसिंह के ही नाम से लिखेंगे, हां कहीं कहीं तेजसिंह लिख जाय तो कोई हर्ज भी नहीं।

बिहारीसिंह ने अपने साथी की बात सुनकर गाना बन्द किया और उसकी तरफ देख के कहा—

बिहारी—(दो तीन दफे खांस कर) बोलो मत इस समय मुझे खांसी हो गई है आवाज भारी हो रही है जितना कोशिश करता हूँ उतना ही गाना बिगड़ जाता है खैर तुम भी आ जाओ और जरा सुर में सुर मिला कर साथ गाओ तो!

वह—क्या बात है! मालूम होता है तुम कुछ पागल हो गये हो मालिक का काम गया जहन्नुम में और हम लोग बैठे गीत गाया करें!!

बिहारी—वाह जरा सी बूटी ने क्या मजा दिखाया। अहा हा जीते रहो पट्ठे ईश्वर तुम्हारा भला करे खूब सिदधी पिलाई।

वह—बिहारीसिंह यह तुम्हें क्या हो गया? तुम तो ऐसे न थे!

बिहारी—जब न थे तब बुरे थे जब हैं तो अच्छे हैं। तुम्हारी बात ही क्या है सत्रह हाथी जलपान करके बैठा हूँ। कम्बख्त ने जरा नमक भी नहीं दिया फोका ही उडाना पड़ा। ही ही ही ही आओ एक गदहा तुम भी खा लो नहीं नहीं सूअर, अच्छा कुत्ता ही सही। आ हो हो हा क्या दूर की सूझी! बचाजी ऐयारी करने बैठे हैं हल जोतना आता नहीं जिन्न पकड़ने लगे। हा हा हा हा वाह रे बूटी अभी तक जीभ चटचटाती है—लो देख लो (जीभ चटचटा कर दिखाता है)।

वह—अफसोस!

बिहारी—अब अफसोस करने से क्या फायदा? जो होना था वह तो हो गया। जा के पिण्डदान करो। हाँ यह तो बताओ पितर मिलौनी कब करोगे? मैं जाता हूँ तुम्हारी तरफ से ब्राह्मणों को नेवता दे आता हूँ।

वह—(गर्दन हिला कर) इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम पूरे पागल हो गए हो। तुम्हें जरूर किसी ने कुछ खिला या पिला दिया है।

बिहारी—न इसमें सन्देह न उसमें सन्देह पागल की बातचीत तो बिल्कुल जाने दो क्योंकि तुम लोगों में केवल मैं ही हूं सो हूं, बाकी सब पागल। खिलाने वाले की ऐसी तैसी पिलाने वाले का बोला बाला। एक लोटा भांग दो सौ पैंतीस साढे तेरह आना लोटा निशान। ऐयारी के नुस्खे एक से एक बढ के याद हैं जहाज की पाल भी खूब ही उडती है। वाह कैसी अंधेरी रात है। बाप रे बाप सूरज भी अस्त हुआ ही चाहता है। तुम भी नहीं हम भी नहीं, अच्छा तुम भी सही बड़े अक्लमन्द हो अकिल अकिल अकिल मन्द मन्द मन्द। (कुछ देर तक चुप रह कर) अरे बाप रे बाप, मैया रे मैया, बड़ा ही गजब हो गया मैं तो अपना नाम भी भूल गया! अभी तक तो याद था कि मेरा नाम बिहारीसिंह है मगर अब भूल गया तुम्हारे सिर की कसम जो कुछ भी याद हो। भाई यार दोस्त मेरे जरा बता तो दो मेरा नाम क्या है?

वह—अफसोस रानी मुझी को दोष देंगी कहेंगी कि हरनामसिंह अपने साथी की हिफाजत न कर सका।

बिहारी—ही ही ही ही वाह रे भाई हरनामसिंह, अलिफ बे ते टे से च छ ज झ उल्लू की दुम फाख्ता!

हरनामसिंह को विश्वास हो गया कि जरूर किसी ऐयार की शैतानी से जिसने कुछ खिला या पिला दिया है हमारा

साथी विहारीसिह पागल हो गया इसमें कोई सन्देह नही। उसने सोचा कि अव इससे कुछ कहना सुनना उचित नहीं इसे इस समय किसी तरह फुसला कर घर ले चलना चाहिए।

हरनाम–अच्छा यार अब देर हा गई चलो घर चलें।

विहारी–क्या हम औरत है कि घर चलें ! चलो जगल में चलें शेर का शिकार खेलें रडी का नाच देखे तुम्हारा गाना सुनें ओर सव के अन्त म तुम्हारे सिरहान वैठ कर रोएँ। ही ही ही ही !

हरनाम–खैर जगल ही में चलो।

विहारी–हम क्या साधू वैरागी या उदासी हैं कि जगल में जाय ! वस इसी जगह रहेंगे भग पीएगे चैन करेंगे यह भी जगल ही है। तुम्हार जैसे गदहों का शिकार करेंगे गदह भी कैसे कि बस पूरे अन्धे ! (इधर उधर दख कर) सात पॉच वारह पॉच तीन तीन घण्टे वीत गए अभी तक भग लेकर नहीं आया पूरा झूठा निकला मगर मुझसे बढ के नहीं ! वदमाश है लुच्चा है अव उसकी राह या सडक नहीं देखूंगा ! चलो भाई साहव चलें घर ही की तरफ मुँह करना उत्तम है मगर मेरा हाथ पकड लो मुझे कुछ सूझता नहीं।

हरनामसिह ने गनीमत समझा और विहारीसिह का हाथ पकड घर की तरफ अर्थात् मायारानी के महल की तरफ ले चला। मगर वाह रे तेजसिह पागल बन के क्या काम निकाला है ! अव ये चाहे दो सौ दफे चूकें मगर किसी की मजाल नहीं कि शक करे। बिहारीसिह को मायारानी बहुत चाहती थी क्योंकि इसकी ऐयारी खूब चढी बढी थी इसलिए हरनामसिह उस एसो अवस्था में छाड कर अकेला जा भी नहीं सकता था। मजा तो उस समय होगा जब नकली विहारीसिह मायारानी के सामने होंगे ओर भूत की सूरत बन असली बिहारीसिह भी पहुँचेंगे।

विहारीसिह को साथ लिए हुए हरनामसिह जमानिया *की तरफ रवाना हुआ। मायारानी वास्तव म जमानिया की रानी थी इसके वाप दाद भी इस जगह हुकूमत कर गए थे। जमानिया के सामने गगा के किनारे से कुछ दूर हट कर एक वहुत ही खुशनुमा अगर लम्बा चौड़ा वाग था जिस वहा वाल 'खास बाग' क नाम से पुकारते थे। इस बाग में राजा अथवा राज्य कर्मचारियों के सिवाय कोई दूसरा आदमी जाने नहीं पाता था। इस बाग के बार में तरह तरह की गप्पें लोग उडाया करते थे मगर असल भेद यहाँ का किसी को मालूम न था। इस बाग के गुप्त भेदों को राजखानदान ओर दीवान तथा एयारों क सिवाय कोई गैर आदमी नहीं जानता था और न कोई जानने की कोशिश कर सकता था यदि कोइ गैर आदमी इस वाग में पाया जाता तो तुरन्त मार डाला जाता था और यह कायदा वहुत पुराने जमान स चला आता था।

जमानिया में जिस छोटे किले के अन्दर मायारानी रहती थी उसमें से गगा के नीचे एक सुरग भी इस बाग तक गई थी और इसी राह से मायारानी वहॉ आती जाती थी इस सवव से मायारानी का इस वाग में आना या यहॉ से जाना खास आदमिया के सिवाय किसी गैर को न मालूम होता था। किले और इस वाग का खुलासा हाल पाठकों को स्वय मालूम हो जायगा इस जगह विशेष लिखने की कोई आवश्यकता नहीं हॉ इस जगह इतना लिख देना मुनासिब मालूम होता है कि रामभोली के आशिक नानक तथा कमला ने इसी वाग में मायारानी का दरबार देखा था।

जमानिया पहुँचने तक बिहारीसिह ने अपने पागलपन से हरनामसिह को बहुत ही तग किया और साबित कर दिया कि पढा लिखा आदमी किस ढग का पागल होता है। यदि मायारानी का डर न होता ता हरनामसिह अपने साथी को बेशक छोड देता और हजार खरावी के साथ घर ले जाने की तकलीफ न उठाता।

कई दिन के वाद विहारीसिह को साथ लिए हुए हरनामसिह जमानिया के किले में पहुँच गया। उस समय पहर भर रात जा चुकी थी। किल के अन्दर पहुँचने पर मालूम हुआ कि इस समय मायारानी वाग में है लाचार बिहारीसिह को साथ लिए हुए हरनामसिह का उस बाग में जाना पडा और इसलिए विहारीसिह (तेजसिह) ने किले और सुरग का रास्ता भी बखूबी देख लिया। सुरग के अन्दर दस पन्द्रह कदम जाने के बाद बिहारीसिह ने हरनामसिह से कहा–

बिहारी–सुनो जी इस सुरग के अन्दर सैकडों दफे हम आ चुके और आज भी तुम्हारे मुलाहिजे से चले आए मगर आज के बाद फिर कभी यहाँ लाओगे तो मे तुम्हें कच्चा ही खा जाऊँगा और सुरग को भी बर्वाद कर दूँगा अच्छा यह बताओ कि मुझे लिए कहाँ जात हो ?

---

*जमानिया–इसे लोग जमनिया भी कहते हैं। काशी के पूरब गगा के दाहिन किनार पर आवाद है।

हरनाम—मायारानी के पास।

बिहारी—तब तो मैं न जाऊंगा क्योंकि मैं सुन चुका हूं कि मायारानी आजकल आदमियों को खाया करती है तुम भी तो कल तीन गदहियां खा चुके हो ! मायारानी के सामने चलो तो सही देखो मैं तुम्हें कैसे छकाता हूं, ही ही ही बच्चा तुम्हें छकाने से क्या होगा मायारानी को छकाऊं तो कुछ मजा मिले ! भज मन राम चरन सुखदाई !! (भजन गाता है)।

बड़ी मुश्किल से सुरंग खतम किया और बाग में पहुंचे। उस सुरंग का दूसरा सिरा बाग में एक कोठरी के अन्दर निकलता था। जिस समय वे दोनों कोठरी के बाहर हुए तो उस दालान में पहुंचे जिसमें मायारानी का दर्बार होता था। इस समय मायारानी उसी दालान में थी मगर दर्बार का सामान वहां कुछ न था केवल अपनी बहन और सखी सहेलियों के साथ बैठी दिल बहला रही थी। मायारानी पर निगाह पड़ते ही उसकी पोशाक और गम्भीर भाव ने बिहारीसिंह (तेजसिंह)को निश्चय करा दिया कि यहां की मालिक यही है।

हरनामसिंह और बिहारीसिंह को देखकर मायारानी को एक प्रकार की खुशी हुई और उसने बिहारीसिंह की तरफ देख कर पूछा कहो क्या हाल है ?

बिहारी—रात अँधेरी है पानी खूब बरस रहा है कोई फंस गई दुश्मन ने सिर निकाला मार ने पर दबा लिया भूख के मारे पेट फूल गया तीन दिन से भूखा हूं कल का खाना अभी तक हजम नहीं हुआ। मुझ पर बड़े अन्धेर का पत्थर आ टूटा, बचाओ बचाओ !!

बिहारीसिंह के बेतुके जवाब से मायारानी घबड़ा गई सोचने लगी कि इनको क्या हो गया जो बेमतलब की बात कर गया। आखिर हरनामसिंह की तरफ देख कर पूछा बिहारी क्या कह गया मेरी समझ में न आया !"

बिहारी—अहा हा क्या बात है ! तुमने मारा हाथ पसारा छुरा लगाया खंजर आया सर लगाया गेंडा आया ! राम लिखाया नहीं मिटाया फांस लगाया आप बुनाया लाड लुभाया खून बहाया समझ खिला ही बूझ नर लल्लू, हा हा हा भला समझो तो !

मायारानी और भी घबड़ाई बिहारीसिंह का मुंह देखने लगी। हरनामसिंह मायारानी के पास गया और धीरे से बोला इस समय मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि बेचारा बिहारीसिंह पागल हो गया है मगर ऐसा पागल नहीं है कि हथकड़ी बेड़ी की जरूरत पड़े क्योंकि किसी को दुख नहीं देता केवल बक बक करता है और अपना पराया पहचानता नहीं है कभी बहुत अच्छी तरह भी बातें करता है। मालूम होता है कि वीरेन्द्रसिंह के किसी ऐयार ने धोखा देकर इसे कुछ खिला दिया।

माया—तुम्हारा और इसका साथ क्योंकर छूटा और क्या हुआ कुछ खुलासा कहो तो हाल मालूम हो।

हर—पहले इनके लिए कुछ बन्दोबस्त कर दीजिए फिर सब हाल कहूंगा वैद्यजी को बुला कर जहां तक जल्द हो इनका इलाज कराना चाहिये !

बिहारी—यह कानाफुसकी अच्छी नहीं मैं समझ गया कि तुम मेरी चुगली खा रहे हो। (चिल्ला कर) दोहाई रानी साहिबा की इस कम्बख्त हरनामसिंह ने मुझे मार डाला जहर खिला कर मार डाला मैं जिन्दा नहीं हूं मैं तो मरने के बाद भूत बन कर आया हूं, तुम्हारी कसम खाकर कहता हूं मैं अब वह बिहारीसिंह नहीं हूं, मैं कोई दूसरा ही हूं। हाय हाय बड़ा गजब हुआ। या ईश्वर उन लोगों से तू ही समझियो जो भले आदमियों को पकड़ कर पिंजरे में बन्द किया करते हैं।

माया—अफसोस इस बेचारे की क्या दशा हो गई मगर हरनामसिंह यह तो तुम्हारा ही नाम लेता है कहता है हरनामसिंह ने जहर खिला दिया !

हरनाम—इस समय मैं इसकी बातों से रंज नहीं हो सकता क्योंकि इस बेचारे की अवस्था ही दूसरी हो रही है।

माया—इसकी फिक्र जल्द करना चाहिये तुम जाओ वैद्यजी को बुला लाओ।

हर—बहुत अच्छा।

माया—(बिहारी से) तुम मेरे पास आकर बैठो। कहो तुम्हारा मिजाज कैसा है ?

बिहारी—(मायारानी के पास बैठकर) मिजाज ? मिजाज है बहुत है अच्छा है क्यों अच्छा है सो ठीक है !

माया—क्या तुम्हें मालूम है कि तुम कौन हो ?

बिहारी—हां मालूम है मैं महाराजाधिराज श्री वीरेन्द्रसिंह हूं। (कुछ सोच कर) नहीं वह तो अब बुड्ढे हो गये मैं कुंअर इन्द्रजीतसिंह बनूंगा क्योंकि वह बड़े खूबसूरत हैं औरतें देखने के साथ ही उन पर रीझ जाती हैं अच्छा अब मैं कुंअर इन्द्रजीतसिंह हूं। (सोच कर) नहीं नहीं नहीं वह तो अभी लड़के हैं और उन्हें ऐयारी भी नहीं आती और मुझे बिना ऐसारी के चैन नहीं अतएव मैं तेजसिंह बनूंगा। बस यही बात पक्की रही मुनादी फिरवा दीजिए कि लोग मुझे

तेजसिह कह के पुकारा करें।

माया–(मुस्कुरा कर) बेशक ठीक है अव हम भी तुमको तेजसिह ही कह के पुकारेंगे।

विहारी–ऐसा ही उचित है। जो मजा दिन भर भूखे रहने में है वह मजा आपकी नौकरी में है जो मजा डूब मरने में है वह मजा आपका काम करने में है।

माया–सो क्यों ?

विहारी–इतना दु ख भोगा लडे झगड सर क वाल नाच डाले सव कुछ किया मगर अभी तक ऑख से अच्छी तरह न देखा। यह मालूम ही न हुआ कि किसक लिए किसको फासा और फसाई से फसने वाले की सूरत अब कैसी है !

माया–मेरी समझ में न आया कि इस कहन से तुम्हारा क्या मतलव है ?

विहारी–(सिर पीट कर) अफसोस हम ऐस नासमझ के साथ है। एसी जिन्दगी ठीक नहीं ऐसा खून किसी काम का नहीं जो कुछ मै कह चुका हूँ जब तक उसका काई मतलव न समझेगा और मरी इच्छा पूरी न होगी तव तक मै किसी से न वालूँगा न खाऊँगा न साऊँगा न एक न दा न चार हजार पॉच सौ कुछ नहीं चाहे जो हो मैं तो देखूगा !

माया–क्या देखोगे ?

विहारी–मुँह से तो मैं वालने वाला नहीं आपको समझन की गों हा ता समझिए।

माया–भला कुछ कहो भी सही।

विहारी–समझ जाइए।

माया–कोन सी चीज एसी है जा तुम्हारी दखी नहीं है ?

विहारी–देखी है मगर अच्छी तरह दखूगा।

माया–क्या देखोगे ?

विहारी–समझिए !

माया–कुछ कहो भी कि समझिए समझिए ही वकते जाओगे।

विहारी–अच्छा एक हर्फ कहा तो कह दूँ।

माया–खेर यही सही।

विहारी–कै कै कै कै !!

माया–(मुस्कुरा कर) कैदियों को दखोगे ?

विहारी–हा हा हा उस वस वस वही वही वही।

माया–उन्हें ता तुम देख ही चुके हो तुम्हीं लागों ने ता गिरफ्तार ही किया है।

विहारी–फिर दखेंगे सलाम करेंगे नाच नचावेंगे ताक धिनाधिन नाचो भालू (उठ कर कूदता है)।

मायारानी विहारीसिह का वहुत मानती थी। मायारानी के कुल ऐयारों का वह सर्दार था और वास्तव में बहुत ही तेज और ऐयारी के फन में पूरा ओस्ताद भी था। यद्यपि इस समय वह पागल है तथापि मायारानी को उसकी खातिर मजूर है। मायारानी हस कर उठ खडी हुई और बिहारीसिह को साथ लिए हुए उस कोठरी में चली गइ जिसमें सुरग का रास्ता था। दर्वाजा खोल कर सुरग क अन्दर गइ। सुरग में कई शीशे की हाडियॉ लटक रही थीं और रोशनी बखूबी हो रही थी। मायारानी लगभग पचास कदम के जाकर रुकी उस जगह दीवार में एक छाटी सी आलमारी बनी हुई थी। मायारानी की कमर में जा सोने की जजीर थी उसके साथ तालियों का एक छोटा सा गुच्छा लटक रहा था। मायारानी ने वह गुच्छा निकाला और उसमें की एक ताली लगा कर यह आलमारी खोली। आलमारी के अन्दर निगाह करने से सीढियॉ नजर आई जा नीचे उतर जाने के लिए थीं। वहाँ भी शीशे की कन्दील में रोशनी हो रही थी। विहारीसिह को साथ लिए हुए मायारानी नीचे उतरी। अव विहारीसिह ने अपने का ऐसी जगह पाया जहाँ लोहे के जगले वाली कई कोठरिया थीं और हर एक काठरी का दर्वाजा मजबूत ताले स बन्द था। उन कोठरियों में हथकडी बेडी से बेबस उदास और दु खी कवल चटाई पर लेट अथवा बैठे हुए कई कैदियों की सूरत दिखाई द रही थी। ये कोठरिया गोलाकार ऐसे ढग स बनी हुइ थीं कि हर एक कोठरी में अलग अलग कैद करने पर भी कैदी लोग आपस में बातें कर सकते थे।

सबसे पहिले विहारीसिह की निगाह जिस कैदी पर पडी वह तारासिह था जिसे दखते ही विहारीसिह खिलखिला कर हसा और चारों तरफ देख न मालूम क्या क्या बक गया जिसे मायारानी कुछ भी न समझ सकी इसके बाद विहारीसिह न मायारानी की तरफ दखा और कहा–

छि: छि.. मुझे आप इन कम्बख्तों के सामने क्यों लाई ? मैं इन लोगों की सूरत नहीं देखा चाहता। मैं तो कै देखूँगा कै बस केवल कै देखूँगा और कुछ नहीं आप जब तक चाहें यहीं रहें मगर मैं दम भर नहीं रह सकता अब कै देखूगा कै बस कै देखूगा बस कै केवल कै !

कै कै बकता हुआ बिहारीसिंह वहां से भागा और उस जगह आकर बैठ गया जहां मायारानी से पहिल पहल मुलाकात हुई थी। बिहारीसिंह की बदहवासी देखकर मायारानी घबराई और जल्दी जल्दी सीढ़ियां चढ़ कैदखाने का ताला बन्द करने बाद अपनी जगह पर आई जहां लम्बी लम्बी सांसें लेते बिहारीसिंह को बैठ हुए पाया। मायारानी की वे सहेलियां भी उसी जगह बैठी थीं जिन्हें छाड़ कर मायारानी कैदखाने की तरफ गई थी।

मायारानी ने बिहारीसिंह से भागने का सबब पूछा मगर उसने कुछ जवाब न दिया। मायारानी न कई तरह के प्रश्न किए मगर बिहारीसिंह ने ऐसी चुप्पी साधी कि जिसका कोई हिसाब ही नहीं। मालूम होता था कि यह जन्म का गूंगा और बहिरा है न सुनता है न कुछ बोल सकता है। मायारानी की सहेलियों ने भी बहुत कुछ जार मारा मगर बिहारीसिंह ने मुँह न खाला। इस परेशानी में मायारानी का बिहारीसिंह की हालत पर अफसोस करते हुए घटा भर बीत गया और तब तक वैद्यजी को जिनकी उम्र लगभग अस्सी वर्ष के होगी अपने साथ लिए हुए हरनामसिंह भी आ पहुंचा।

वैद्यराज ने इस अनोखे पागल की जांच की और अन्त में यह निश्चय किया कि बेशक इसे कोई ऐसी दवा खिलाई गई है जिसके असर से यह पागल हो गया है और यदि इसी समय इसका इलाज किया जाय तो एक ही दो दिन में आराम हो सकता है। मायारानी ने इलाज करने की आज्ञा दी और वैद्यराज ने अपने पास से एक जड़ाऊ डिबिया निकाली जो कई तरह की दवाओं से भरी हुई हमेशा उनके पास रहा करती थी।

वैद्यराज को उस अनोखे पागल की जाँच में कुछ भी तकलीफ न हुई। बिहारीसिंह ने नाड़ी दिखाने में उज्र न किया और अन्त में दवा की वह गोली भी खा गया जो वैद्यराज ने अपने हाथ से उसके मुंह में रख दी थी। बिहारीसिंह ने अपने को ऐसे बनाया जिससे देखने वालों को विश्वास हो कि वह दवा खा गया परन्तु उस चालाक पागल ने गोली दांतों के नीचे छिपा ली और थोड़ी देर बाद मौका पा इस ढंग से थूक दी कि किसी को गुमान तक न हुआ।

आधी घड़ी तक उछल कूद करने बाद बिहारीसिंह जमीन पर गिर पड़ा और सबेरा होने तक उसी तरह पड़ा रहा। वैद्यराज ने नब्ज देख कर कहा कि यह दवा की तासीर से बेहोश हो गया है इसे कोई छेड़े नहीं आशा है कि जब इसकी आंख खुलेगी तो अच्छी तरह बातचीत करेगा। बिहारीसिंह चुपचाप पड़ा ये बातें सुन रहा था। मायारानी बिहारीसिंह की हिफाजत के लिए कई लौंडियां छोड़ दूसरे कमरे में चली गई और एक नाजुक पलंग पर जो वहां बिछा हुआ था सो रही।

सूर्योदय से पहिले ही मायारानी उठी और हाथ मुंह धो कर उस जगह पहुंची जहां बिहारीसिंह को छोड़ गई थी। हरनामसिंह पहिले ही वहाँ जा चुका था। बिहारीसिंह को जब मालूम हो गया कि मायारानी उसके पास आकर बैठ गई है तो वह भी दो तीन करवटें लेकर उठ बैठा और ताज्जुब से चारों तरफ देखने लगा।

माया–अब तुम्हारा क्या हाल है ?

बिहारी–हाल क्या कहूं मुझे ताज्जुब मालूम होता है कि मैं यहां क्योंकर आया मेरी आवाज क्यों बैठ गई और इतनी कमजोरी क्यों मालूम होती है कि मैं उठ कर चल फिर नहीं सकता !

माया–ईश्वर ने बड़ी कृपा की जो तुम्हारी जान बच गई तुम तो पूरे पागल हो गये थे वैद्यराज ने भी ऐसी दवा दी कि एक ही खूराक में फायदा हो गया। बेशक उन्होंने इनाम पाने का काम किया। तुम अपना हाल तो कहो तुम्हें क्या हो गया था ?

बिहारी–(हरनामसिंह की तरफ देख कर) मैं एक ऐयार के फेर में पड़ गया था मगर पहिले आप कहिए कि मुझे इस अवस्था में कहाँ पाया ?

हरनाम–आप मुझसे कह कर कि तुम थोड़ा सा काम जो बच रहा है उसे पूरा करके जमानिया चले जाना मैं कमलिनी से मुलाकात करके और जिस तरह होगा उसे राजी करके जमानिया आऊँगा–खंडहर वाले तहखाने से बाहर चले गए परन्तु काम पूरा करने के बाद मैं सुरंग के बाहर निकला तो आपको शिवालय के सामने एक पेड़ के नीचे विचित्र दशा में पाया। (पागलपने की बातचीत और मायारानी के पास तक आने का खुलासा हाल कहने के बाद) मालूम होता है आप कमलिनी के पास नहीं गए ?

बिहारी–(मायारानी से) जैसा धोखा मैंने अबकी खाया आज तक नहीं खाया था। हरनामसिंह का कहना सही है। जब मैं सुरंग से निकल कर शिवालय से बाहर हुआ तो एक आदमी पर नजर पड़ी जो मामूली जमींदार की सूरत में था। वह मुझे देखते ही मेरे पैरों पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ा कर कहने लगा कि पुजारीजी! महाराज, किसी तरह मेरे भाई की

जान बचाइए ! मैने उससे पूछा कि 'तेरे भाई का क्या हुआ है ? उसने जवाब दिया कि 'उसे एक बुढ़िया बेतरह मार रही है किसी तरह उसके हाथ से छुड़ाइये । वह जमींदार बहुत ही मजबूत और मोटा ताजा था। मुझे ताज्जुब मालूम हुआ कि वह कैसी बुढिया है जो एसे ऐसे दो भाइयों से नहीं हारती ! आखिर मैं उसके साथ चलने पर राजी हो गया। वह मुझे शिवालय से कुछ दूर एक झाडी में ले गया जहा कई आदमी छिपे हुए बैठे थे। उस जमींदार के इशारे से सभों ने मुझे घेर लिया और एक ने चॉदी की लुटिया मेरे सामने रख कर कहा कि यह भग है इसे पी जाओ'। मुझे मालूम हो गया कि यह वास्तव में कोई ऐयार है जिसने मुझे धोखा दिया। मैंने भग पीने से इनकार किया और वहॉ से लौटना चाहा मगर उन सभों ने भागने न दिया। थोडी दर तक मैं उन लोगों से लडा मगर क्या कर सकता था क्योंकि वे लोग गिनती में पन्द्रह से कम न थे। आखिर में उन लोगों ने पटक कर मुझे मारना शुरू किया और जब मैं बेदम हो गया हो भग या दवा जो कुछ हो मुझे जबर्दस्ती पिला दी बस इसके बाद मुझे कुछ भी खबर नहीं कि क्या हुआ।

थोडी देर तक इसी तरह की ताज्जुब की बातें कह कर बिहारीसिह ने मायारानी का दिल बहलाया और इसके बाद कहा मेरी तबीयत खराब हो रही है यदि कुछ देर तक बाग में टहलू तो बेशक जी प्रसन्न हो मगर कमजोरी इतनी बढ गई है कि स्वय उठने और टहलने की हिम्मत नही पडती। मायारानी ने कहा कोई हर्ज नही हरनामसिह सहारा देकर तुम्हें टहलावेंगे मै समझती हूँ कि बागकी ताजी हवा खाने और फूलों की खूशबू सूघने से तुम्हें बहुत कुछ फायदा पहुँचेगा।

आखिर हरनामसिह ने बिहारीसिह का हाथ पकड के बाग में अच्छी तरह टहलाया और इस बहाने से तेजसिह ने उस बाग को तथा वहा की इमारतों को अच्छी तरह देख लिया। ये लोग घूम फिर कर मायारानी के पास पहुँचे ही थे कि एक लौडी ने जो चाबदार थी मायारानी के सामने आ कर और हाथ जोडकर कहा 'बाग के फाटक पर एक आदमी आया है और सरकार में हाजिर हुआ चाहता है। बहुत ही बदसूरत और काला कलूटा है परन्तु कहता है कि मैं बिहारीसिह हूँ, मुझे किसी ऐयार ने धोखा दिया और चहरे तथा बदन को ऐसे रग से रग दिया कि अभी तक साफ नहीं होता !

माया–यह अनोखी बात सुनने में आई कि ऐयारों का रगा हुआ रग और धोने से न छूटे ! कोई कोइ रग पक्का जरूर होता हे मगर उसे भी ऐयार लोग छुडा सकते हैं। (हॅस कर) बिहारीसिह ऐसा बेवकूफ नहीं कि अपने चहरे का रग न छुडा सके !

बिहारी–रहिये रहिये मुझे शक पडता है कि शायद यह वही आदमी हो जिसने मुझे धोखा दिया बल्कि ऐसा कहना चाहिए कि मेरे साथ जबर्दस्ती की। (लौंडी की तरफ देख कर) उसके चेहरे पर जख्म के दाग भी हैं ?

लौंडी–जी हॉ पुराने जख्म के कई दाग हैं।

बिहारी–भौं के पास भी कोई जख्म का दाग है ?

लौंडी–एक आडा दाग है मालूम होता है कि कभी लाटी की चोट खाई है।

बिहारी–बस बस यह वही आदमी है देखो जाने न पावे। चडूल को यह खबर ही नही कि बिहारीसिह यहॉ पहुँच गया है। (मायारानी की तरफ देख कर)यहॉ पर्दा करवा कर उसे बुलवाइये मैं भी पर्दे के अन्दर रहूगा देखिए क्या मजा करता हू। हा हरनामसिह पर्दे के बाहर रहें देखें पहिचानता है या नहीं।

माया–(लौंडी की तरफ देख कर) पर्दा करने के लिए कहो और नियमानुसार ऑख में पटटी बॉध कर उसे यहा लिवा आओ।

वह–यहा की हर एक चीजों का पूरा पूरा पता देता है और जरूर इस बाग के अन्दर आ चुका है।

बिहारी–पक्का चोर है ताज्जुब नहीं कि यहा आ चुका हो ! खैर तुम लोगों को अपना नियम पूरा करना चाहिए।

हुक्म पाते ही लौंडियों ने पर्दे का इन्तजाम कर दिया और वह लौंडी जिसने बिहारीसिह के आने की खबर दी थी इसलिए फाटक की तरफ रवाना हुई कि नियमानुसार ऑख पर पटटी बाधकर बिहारीसिह को बाग के अन्दर ले आवे और मायारानी के सामने हाजिर करे।

इस जगह इस बाग का कुछ थोडा सा हाल लिख देना मुनासिब मालूम होता है। यह दो सौ बिगहे का बाग मजबूत चहारदीवारी के अन्दर था। इसके चारों तरफ की दीवारें बहुत मोटी मजबूत और लगभग पचीस हाथ के ऊची थीं। दीवार के ऊपरी हिस्से में तेज नोंक और धार वाले लोहे के काटे और फाल इस ढग से लगे हुए थे कि काबिल एयार भी दीवार लाघ कर बाग के अन्दर जाने का साहस नहीं कर सकते थे। काटों के सबब यद्यपि कमन्द लगाने में सुबीता था परन्तु उसके सहारे ऊपर चढना बिल्कुल ही असम्भव था। इस चहारदीवारी के अन्दर की जमीन जिसे हम बाग कहते हैं चार हिस्सों में बटी हुई थी। पूरब तरफ आलीशान फाटक था जिसके अन्दर जाकर एक बाग जिसे पहिला हिस्सा कहना

चाहिए मिलता था। इसकी चौडा चौडी रविशें ईट और चूने स बनी हुई थीं। पश्चिम तरफ अर्थात इस हिस्स के अन्त म बीस हाथ मोटी और इसस ज्यादे ऊँची दीवार बाग की पूरी चौड़ाई तक बनी हुइ थी जिसके नीच बहुत सी काठरिया थीं जो सिपाहियों क काम में आती थीं। उस दीवार के ऊपर चढने क लिए खूबसूरत सीढिया थीं जिन पर जान स बाग का दूसरा हिस्सा दिखाई दता था आर इन्हीं सीढियों की राह दीवार क नीचे उतर कर उस हिस्से म जाना पडता था। सिवा इसके और काई दूसरा रास्ता उस बाग म जिस हम दूसरा हिस्सा कहत है जा। क लिए नहीं था। बाग क इसी दूसरे हिस्स म वह इमारत या काठी थी जिसमें मायारानी दर्बार किया करती थी या जिसमें पहुच कर गनक न मायारानी का दखा था। पहिल हिस्स की अपेक्षा यह हिस्सा विशप खूबसूरत और सजा हुआ था। बाग क तीसरे हिस्स में जाने का रास्ता उसी मकान क अन्दर स था जिसमें मायारानी रहा करती थी। बाग के तीसर हिस्से का हाल लिखना जरा मुश्किल है तथापि इमारत क बार में इतना कह सकत है कि इस तीसरे हिस्स के बीचोंबीच में एक बहुत ऊचा बुर्ज था। उस बुर्ज के चारों तरफ कई मकान थ जिनके दालानों काठरियों कमरों और बारहदरियों तथा तहखानों का हाल इस जगह लिखना कठिन है क्योंकि उन सभी का तिलिस्मी बातों स विशप सम्बन्ध है। हा इतना कह सकत है कि उसी बुर्ज में स बाग के चौथे हिस्स म जानेका रास्ता था मगर इस बाग के चौथे हिस्स म क्या है उसका हाल लिखत कलजा कॉपता है। इस जगह हम उसका जिक्र करना मुनासिब नहीं समझत आग जाकर किसी मौके पर वह हाल लिखा जायगा।

जब वह लौंडी असली बिहारीसिंह को जो बाग के फाटक पर आया था लेने चली गई तो नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेजसिंह ने मायारानी स कहा इस ईश्वर की कृपा ही कहनी चाहिए कि वह शैतान ऐयार जिसन मेर साथ जबदस्ती की और ऐसी दवा खिलाई कि जिसक असर स मै पागल हो हा गया था घर बैठ फदे म आ गया।

माया—ठीक है मगर दखा चाहिए यहा पहुँच कर क्या रग लाता है।

बिहारी—जिस समय वह यहा पहुँचे सब के पहिले हथकड़ी और बेड़ी उसके नजर करनी चाहिए जिसमें मुझे देखकर भागन का उद्योग न करे।

माया—जा मुनासिब हा करा मगर मुझ यह आश्चर्य जरूर मालूम होता है कि वह ऐयार जब तुम्हार साथ बुरा बर्ताव कर ही चुका आर तुम्हें पागल बना कर छाड ही चुका था ता बिना अपनी सूरत बदल यहा क्यों चला आया। ऐयारों स ऐसी भूल न हानी चाहिए उस मुनासिब था कि तुम्हारी या मर किसी और आदमी की सूरत बना कर आता।

बिहारी—ठीक है मगर जो कुछ उसन किया वह भी उचित ही किया। मरी या यहा क किसी और नौकर की सूरत बन कर उसका यहा आना तब अच्छा हाता जब मुझ गिरफ्तार रखता।

माया—मै यह भी साचती हूँ कि तुम्हें गिरफ्तार करके पागल ही बना कर छाड दन में उसन क्या फायदा साचा था? मरी समझ में ता यह उसन भूल की।

इतना कहकर मायारानी न टटालने की नीयत स नकली बिहारीसिंह अर्थात तजसिंह भी समझ गए कि मायारानी को मरी तरफ स कुछ शक हा गया है और इस शक का मिटाने के लिए वह किसी तरह की जाँच जरूर करेगी तथापि इस समय बिहारीसिंह (तेजसिंह) न ऐसा गम्भीर भाव धारण किया कि मायारानी का शक बढन न पाया। थाडी दर तक इधर उधर की बातें होती रहीं और इसक बाद लौंडी असली बिहारीसिंह को लेकर आ पहुँची। आज्ञानुसार असली बिहारीसिंह पर्दे के बाहर बैठाया गया। अभी तक उसकी आँखों पर पट्टी बधी हुई थी।

असली बिहारीसिंह की आँखों स पट्टी खोली गई और उसन चारों तरफ अच्छी तरह निगाह दौडाने बाद कहा बड़ी खुशी की बात है कि मै जीता जागता अपने घर में आ पहुँचा। (हाथ का इशारा करके) मै इस बाग को और अपने साथियों का खुशी की निगाह से देखता हू। इस बात का अफसास नहीं है कि मायारानी ने मुझसे पर्दा किया क्योंकि जब तक मै अपना बिहारीसिंह हाना साबित न कर दूँ तब तक इन्हें मुझ पर भरासा न करना चाहिए मगर मुझ (हरनामसिंह की तरफ दख कर और इशारा करक) अपन इस अनूठ दोस्त हरनामसिंह पर अफसोस हाता है कि इन्होंने मेरी कुछ भी परवाह न की और मुझे ढूँढने का भी कष्ट न उठाया। शायद इसका सबब यह हा कि वह ऐयार मेरी सूरत बन कर इनके साथ हा लिया हो जिसने मुझे धोखा दिया। अगर मेरा खयाल ठीक है तो वह ऐयार यहा जरूर आया हागा मगर ताज्जुब की बात है कि मै चारों तरफ निगाह दौडान पर भी उस नहीं दखता। खैर यदि यहा आया तो देख ही लूँगा कि बिहारीसिंह वह है या मैं हू। केवल इस बाग के चौथे भाग क बारे में थाड सवाल करने से ही सारी कलई खुल जायगी।

असली बिहारीसिंह की बातों ने जा इस जगह पहुचन के साथ ही उसने कही सभों पर अपना असर डाला। मायारानी के दिल पर तो उसका बहुत ही गहरा असर पडा मगर उसन बडी मुश्किल से अपन को सम्हाला और तब एक निगाह तेजसिंह के ऊपर डाली। तेजसिंह को यह क्या खबर थी कि यहा कोई ऐसा विचित्र बाग देखने में आवेगा और उसके

भाग अथवा दर्जों के बारे में सवाल किये जायगे। उन्होंने सोच लिया कि अब मामला बेढब हो गया काम निकालना अथवा राजकुमारों को छुडाना तो दूर रहा कोई दूसरा उद्योग करने के लिए मेरा बच कर यहाँ से निकल जाना भी मुश्किल हो गया क्योंकि मैं किसी तरह उसके सवालों का जवाब नहीं दे सकता और न उस बाग के गुप्त भेदों की मुझे खबर ही है।

असली बिहारीसिह अपनी बात कह कर चुप हो गया और फिक्र में हुआ कि मेरी बात का कोई जवाब दे ले तो मै कुछ कहूँ, मगर मायारानी की आज्ञा बिना कोई भी उसकी बातों का जवाब न दे सकता था। चालाक और धूर्त मायारानी न मालूम क्या सोच रही थी कि आधी घडी तक उसने सिर न उठाया। इसके बाद उसने एक लौंडी की तरफ देख कर कहा 'हरनामसिह को यहाँ बुलाओ।

हरनामसिह पर्दे के अन्दर आया और मायारानी के सामने खडा हो गया।

माया–यह एयार जो अभी आया है और बडी तेजी से बाल कर चुप बैठा है बडा ही शैतान और धूर्त मालूम देता है। मै इसस बहुत कुछ पूछना चाहती हूँ परन्तु इस समय मेर सर में दर्द है बात करना या सुनना मुश्किल है। तुम इस ऐयार को ले जाओ चार नम्बर के कमरे में इसके रहने का बन्दोबस्त कर दो जब मेरी तबीयत ठीक होगी तो देखा जायगा।

हर–*बहुत मुनासिब है और मै सोचता हूँ कि बिहारी सिह का भी*

माया–हॉ बिहारीसिह भी दो चार दिन इसी बाग में रहें तो ठीक हे क्योंकि यह इस समय बहुत ही कमजोर और सुस्त हो रहे है यहाँ कि आबहवा से दो तीन दिन में यह ठीक हो जायगे। इनके लिए बाग के तीसरे हिस्से का दो नम्बर वाला कमरा ठीक है जिसमें तुम रहा करते हो।

हरनाम–मै सोचता हूँ कि पहल बिहारीसिह का बन्दोबस्त कर लूँ तब शैतान ऐयार की फिक्र करू।

माया–हॉ ऐसा ही होना चाहिये।

हरनाम–(नकली बिहारीसिह अर्थात तेजसिह की तरफ देख कर) चलिए उठिए।

यद्यपि तेजसिह को विश्वास हा गया कि अब बचाव की सूरत मुश्किल है तथापि उन्होंने हिम्मत न हारी और कार्रवाई सोचने से बाज न आए। इस समय चुपचाप हरनामसिह के साथ चले जाना ही उन्होंने मुनासिब जाना।

तेजसिह को साथ लेकर हरनामसिह उस कोठरी में पहुँचा जिसमें सुरग का रास्ता था। इस कोठरी में दीवार के साथ लगी हुई छोटी छोटी कई आलमारियाँ थीं। हरनामसिह ने उनमें से एक आलमारी खोली मालूम हुआ कि यह दूसरी कोठरी में जाने का दर्वाजा है। हरनामसिह और तेजसिह दूसरी कोठरी में गये। यह कोठरी बिल्कुल अधेरी थी अस्तु तेजसिह को मालूम न हुआ कि यह कितनी लम्बी और चौडी है। दस बारह कदम आगे बढ़ कर हरनामसिह ने तेजसिह की कलाई पकडी और कहा, 'बैठ जाइये।' यहाँ की जमीन कुछ हिलती हुई मालूम हुई और इसके बाद इस तरह की आवाज आई जिससे तेजसिह ने समझा कि हरनामसिह ने किसी कल या पुर्जे को छेड़ा है।

वह जमीन का टुकडा जिस पर दोनों ऐयार बैठे थे यकायक नीचे की तरफ धसने लगा और थोडी दर के बाद किसी दूसरी जमीन पर पहुँच कर ठहर गया। हरनामसिह ने हाथ पकड़ कर तेजसिह को उठाया और दस कदम आगे बढा कर हाथ छोड दिया इसके बाद फिर घडघडाहट की आवाज आई जिससे तेजसिह ने समझ लिया कि वह जमीन का टुकडा जो नीचे उतर आया था फिर ऊपर की तरफ चढ गया। यहाँ तेजसिह को ऊपर की तरफ कुछ उजाला मालूम हुआ ये उसी तरफ बढे मगर अपने साथ हरनामसिह के आने की आहट न पाकर उन्होंने हरनामसिह को पुकारा पर कुछ जवाब न मिला। अब तेजसिह को विश्वास हो गया कि हरनामसिह मुझे इस जगह कैद करके चलता बना लाचार वे उसी तरफ रवाना हुए जिधर कुछ उजला मालूम होता था। लगभग पचास कदम के जाने बाद दर्वाजा मिला और उसके पार होने पर तेजसिह ने अपने को एक बाग में पाया।

यह बाग भी हरा भरा था, और मालूम होता था कि इसकी रविशों पर अभी छिड़काव किया गया है मगर माली या किसी दूसरे आदमी का नाम भी न था। इस बाग में बनिस्बत फूलों के मेवों के पेड बहुत ज्यादे थे और एक छोटी सी नहर भी जारी थी जिसका पानी मोती की तरह साफ था सतह की ककड़ियाँ भी साफ दिखाई देती थीं। बाग के बीचोंबीच में एक ऊँचा बुर्ज था और उसके चारों तरफ कई मकान कमरे और दालान इत्यादि थे जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं। तेजसिह सुस्त और उदास होकर नहर के किनारे बैठ गए और न मालूम क्या क्या सोचने लगे। और चाहे जो कुछ भी हो मगर अब तेजसिह इस योग्य न रहे कि अपने को बिहारीसिह कहें। उनकी बची बचाई कलई भी हरनामसिह के साथ इस बाग में आने से खुल गई। क्या बिहारी सिह तेजसिह की तरह चुपचाप हरनामसिह के साथ अनजान आदमियों की तरह चला

आता ? क्या मायारानी अथवा उसका कोई ऐयार अब तेजसिह को बिहारीसिह नहीं समझ सकता है ? कभी नहीं कभी नहीं ! इन सब बातों को तेजसिह भी बखूबी समझ सकते थे और उन्हें विश्वास हो गया कि अब हम कैद कर लिए गये

थोडी देर बाद यहॉ के मकानों को घूम घूम कर देखने के लिए तेजसिह उठे मगर सिवाय एक कमरे के जिसके दर्वाजे पर मोटे अक्षर में (२) का अक लिखा हुआ था बाकी सब कमरे और मकान बन्द पाए। दो का नम्बर देखते ही तेजसिह को ध्यान आया कि मायारानी ने इसी कमरे में मुझे रखने को हुक्म दिया है। उस कमरे में एक दर्वाजा और छोटी छोटी कई खिडकिया थीं अन्दर फर्श बिछा हुआ और कई तकिये भी मौजूद थे। तेजसिह को भूख लगी हुई थी बाग में मेवों की कमी न थी उन्हीं से पेट भरा और नहर का पानी पी कर उसी दो नम्बर वाले कमरे को अपना मकान या कैदखाना समझा।

तीसरा बयान

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है। तेजसिह उसी दो नम्बर वाले कमरे के बाहर सहन में तकिया लगाये सो रहे हैं। चिराग बालनेकाकोई सामानयहॉ मौजूद नहीं जिससे रोशनी करते पास में कोई आदमी नहीं जिससे दिल बहलाते बाग से बाहर निकलने की उम्मीद नहीं कि कुमारों को छुडाने के लिए कोई बन्दोबस्त करते, लाचार तरह तरह के तरद्दुदों में पडे उन पेडों पर नजर दौडा रहे थे जो सहन के सामने बहुतायत से लगे हुए थे।

यकायक पेडों की आड में रोशनी मालूम पडीतेजसिह घबडा कर ताज्जुब के साथ उसी तरफ देखने लगे। थोड़ी ही देर में मालूम हुआ कि कोई आदमी हाथ में चिराग लिए तेजी के साथ कदम बढाता उनकी तरफ आ रहा है। देखते देखते वह आदमी तेजसिह के पास आ पहुँचा और चिराग एक तरफ रख कर सामने खड़ा हो के बोला, " जय माया की।

यह आदमी सिपाहियाना ठाठ मे था। छोटी छोटी स्याह दाढी से इसके चेहरे का ज्यादा हिस्सा ढका हुआ था। मेयाना कद और शरीर से हृष्ट पुष्ट था। तेजसिह ने भी यह समझ कर कि कोई ऐयार है जवाब में कहा, 'जय माया की !'

सिपाही–(जा अभी आया है) ओस्ताद तुमने चालाकी तो खूब की थी मगर जल्दी करके काम बिगाड़ दिया।

तेज–चालाकी क्या और जल्दी कैसी ?

सिपाही–इसमें तो कोई शक नहीं कि मायारानी के बाग में रूप बदल कर आने वाला ऐयार पागल बने बिना किसी दूसरी रीति से काम चला ही नहीं सकता था परन्तु आपने जल्दी कर दी, दो चार दिन और पागल बने रहते तो ठीक था असली बिहारीसिह की बातों का जवाब आपको देना न पडता और इस बाग के तीसरे या चौथे हिस्से का भेद भी आपसे पूछा न जाता अब तो सभी को मालूम हो गया कि आप असली बिहारी सिह नहीं बल्कि कोई ऐयार हैं।

तेज–सब लोग जो चाहे समझें मगर तुम मेरे पास क्यों आए हो ?

सिपाही–इसीलिए कि आपका हाल जानू और जहॉ तक हो सके आपकी मदद करूँ।

तेज–मैं अपना हाल सिवाय इसके और क्या कहू कि मैं वास्तव में बिहारीसिह हू।

सिपाही–(हस कर) क्या खूब अभी तक आपका मिजाज ठिकाने नहीं हुआ ! मगर मैं फिर कहता हू कि मुझ पर भरोसा कीजिए और अपना ठीक ठीक नाम बताइए।

तेज–जब तुम यह समझते हो कि मै ऐयार हू तो क्या यह नहीं जानते कि ऐयार लोग किसी ऐसे बतोलिए पर जैसे कि आप है यकायकी कैसे भरोसा कर सकते है ?

सिपाही–हा आपका कहना ठीक है ऐयारों को यकायक किसी का विश्वास न करना चाहिए मगर मेरे पास एक ऐसी चीज है कि आपको झख मार कर मुझ पर भरोसा करना पडेगा ?

सिपाही–नेमची रिक्तग्रन्थ !*

---

* नेमची रिक्तग्रन्थ–यह ऐयारी भाषा का शब्द है, इसका अर्थ है–खून से लिखी किताब का घर।

नेमची रिक्तग्रन्थ इस शब्द में न मालूम कैसा असर था कि सुनते ही तेजसिंह के रोंगटे खड़े हो गए सिर नीचे कर लिया और न जाने क्या सोचने लगे। थोडी देर तक तो ऐसा मालूम होता था कि वह तेजसिह नहीं हैं बल्कि पत्थर की कोई मूरत है। आखिर वे एक लम्बी सास लेकर उठ खडे हुए और सिपाही का हाथ पकड कर बोले अब कहो तुम्हें मैं अपने साथियों में से कोई समझू या अपना पक्का दुश्मन जानू ?

सिपाही–दानों में से काई भी नहीं।

तेज–यह और भी ताज्जुब की बात है ! (कुछ साच कर) हा ठीक है यदि तुम चोर होते तो इतनी दिलावरी के साथ मुझसे बातें न करते बल्कि मरे सामने ही न आते लेकिन यह ता मालूम होना चाहिए कि तुम हो कौन ? क्या रिक्तग्रन्थ तुम्हारे पास है ?

सिपाही–जी नहीं यदि वह मेर पास होता तो अब तक राजा वीरेन्द्रसिह के पास पहुँच गया होता।

तेज–फिर यह शब्द तुमन कहाँ से सुना ?

सिपाही–यह वही शब्द है जिसे आप लोग समय पडने पर आपस में कह कर इस बात का परिचय देते है कि हम राजा वीरेन्दसिह के दिली दोस्तों में से कोई हैं।

तेज–हा बेशक यह वही शब्द है तो क्या तुम राजा बीरेन्दसिह के दिली दोस्तों में से कोई हो ?

सिपाही–नहीं हा होंगे।

तेज–(चिढ कर) तुम अजब मसखरे हो जी साफ साफ क्यों नहीं कहते कि तुम कौन हो ?

सिपाही– (हस कर) क्या उस शब्द के कहने पर भी आप मुझ पर भरोसा न करेंगे ?

तेज–(मुँह बना कर और बात पर जोर देकर) हाये हाय कह ता दिया कि भरोसा किया भरोसा किया भरोसा किया ! झख मारा आर भरोसा किया ! अब भी कुछ कहोगे या नही ? अपना नाम बताओगे या नहीं ?

सिपाही–अच्छा तो आप ही पहिले अपना परिचय दीजिए।

तेज–मैं तेजसिह हूँ– बस हुआ ? अब भी तुम अपना कुछ परिचय दोगे या नहीं ?

सिपाही–हा हा अब मैं अपना परिचय दूगा मगर पहिले एक बात का जवाब दे दीजिए।

तेज–अभी एक आच की कसर रह गई अच्छा पूछिए !

सिपाही–यदि कोई ऐसा आदमी आपके सामने आवे जो आपसे मुहब्बत रक्खे आपके काम में दिलोजान से मदद दे आपकी भलाई के लिए जान तक देने को तैयार रहे मगर उसके बाप दादा चाचा भाई इत्यादि में से कोई एक आदमी आपके साथ पूरी पूरी दुश्मनी कर चुका हो तो आप उसके साथ कैसा बर्ताव करेंगे ?

तेज–जा मेरे साथ नेकी करगा उसके साथ मैं दोस्ती का बर्ताव करूँगा चाहे उसके बाप दादे मेरे साथ पूरी दुश्मनी क्यों न कर चुके हों।

सिपाही–ठीक है ऐसा ही करना चाहिए अच्छा तो फिर सुनिये–मेरा नाम नानक है और मकान काशीजी।

तेज–नानक !

सिपाही–जी हा और मेरा किस्सा बहुत ही आश्चर्यजनक है।

तेज–मैने यह नाम कहीं सुना है मगर याद नहीं पडता कि कब और क्यों सुना। इसमें काई सन्देह नही कि तुम्हारा हाल आश्चर्य और अद्‌भुत घटनाओं से भरा हागा। मेरी तबीयत घबडा रही है जहाँ तक जल्दी हो सके अपना ठीक हाल कहो।

नानक–दिल लगा कर सुनिये मैं कहता हूँ, यद्यपि उस काम में देर हो जायेगी जिसके लिए मैं आया हू तथापि मेरा किस्सा सुनकर आप अपना काम बहुत आसानी से निकाल सकेंगे और यहाँ की बहुत सी बातें भी आपको मालूम हो जायगी।

नानक का किस्सा

लडकपन में बडे चैन से गुजरती थी। मेरे घर में किसी चीज की कमी न थी। खाने के लिए अच्छी से अच्छी चीज पहिरन के लिए एक से एक बढ के कपडे और वे सब चीजें मुझे मिला करती जिसकी मुझे जरूरत होती या जिनके लिए मैं जिद किया करता। माँ से मुझे बहुत ज्यादे मुहब्बत थी और बाप से कम क्योंकि मेरा बाप किसी दूसरे शहर में किसी राजा के यहाँ नौकर था चौथे पाँचवें महीने और कभी कभी साल-भर पीछे घर में आता और दस पाँच दिन रह कर चला जाता था। उसका पूरा हाल आगे चल कर आपको मालूम होगा। मेरा बाप मेरी माँ को बहुत चाहता था और जब घर आता तो

बहुत सा रुपया और अच्छी अच्छी चीजें उसे दे जाया करता था और इसलिए हम लोग अमीरी ठाठ के साथ अपना दिन बिताते थे।

जिस बुड्ढी दाई की गोद में मैं खेला करता था वह बहुत ही नेक थी और उसकी बहिन एक जमींदार के यहाँ जिसका घर मेरे पडोस में था रहती और उसकी लडकी को खिलाया करती थी। मेरी दाई कभी मुझे लेकर उस जमींदार के घर जा बैठा करती और कभी उसकी बहिन उस लडकी को लेकर जिसके खिलाने पर वह नौकर थी मेरे घर आ बैठा करती इसलिए मेरा और उस लड़की का रोज साथ रहता तथा धीरे धीरे हम दोनों में मुहब्बत दिन दिन बढ़ने लगी। उस लडकी का नाम जो मुझसे उम्र में दो वर्ष कम थी रामभोली था और मेरा नाम नानक मगर घर वाले मुझे ननकू कह के पुकारा करते। वह लडकी बहुत खूबसूरत थी मगर जन्म की गूगी बहरी थी तथापि हम दोनों की मुहब्बत का यह हाल था कि उसे देखे बिना मुझे और मुझे देखे बिना उसे चैन न पड़ता। गुरु के पास बैठकर पढना मुझे बहुत बुरा मालूम होता और उस लड़की से मिलने के लिए तरह-तरह के बहाने करने पडते।

धीरे धीरे मेरी उम्र दस वर्ष की हुई और मैं अपने पराये का अच्छी तरह समझने लगा। मेरे पिता का नाम रघुबरसिंह था। बहुत दिनों पर उसका घर आया करना मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ और मैं अपनी माँ से उसका हाल खोद खोद के पूछने लगा। मालूम हुआ कि वह अपना हाल बहुत छिपाता है यहाँ तक कि मेरी माँ भी उसका पूरा हाल नहीं जानती तथापि यह मालूम हो गया कि मेरा बाप ऐयार है और किसी राजा के यहाँ नौकर है। यह भी सुना कि वहाँ मेरी एक सौतेली मा भी रहती है जिससे एक लडका और एक लडकी भी है।

मेरा बाप जब आता तो महीने दो महीने या कभी कभी केवल आठ ही दस दिन रह कर चला जाता और जितने दिन रहता मुझे ऐयारी सिखाने में विशेष ध्यान देता। मुझे भी पढ़ने लिखने से ज्यादा खुशी ऐयारी सीखने में होती क्योंकि रामभोली से मिलने तथा अपना मतलब निकालने के लिए ऐयारी बडा काम देती थी। धीरे धीरे लडकपन का जमाना बहुत कुछ निकल गया और वे दिन आ गये कि जब लडकपन नौजवानी के साथ ऊधम मचाने लगा और मैं अपने को नौजवान और ऐयार समझने लगा।

एक रात मैं अपने घर में नीचे के खण्ड में कमरे के अन्दर चारपाई पर लेटा हुआ रामभोली के बारे में तरह तरह की बातें सोच रहा था। इश्क के चपेट में नींद हराम हो गई थी दीवार के साथ लटकती हुई तस्वीरों की तरफ टकटकी बाँध कर देख रहा था यकायक ऊपर की छत पर घमघमाहट की आवाज आने लगी। मैं यह सोच कर निश्चिन्त हो रहा कि शायद कोई लौंडी जरूरी काम के लिए उठी होगी उसी के पैरों की घमघमाहट मालूम होती है मगर थोडी देर बाद ऐसा मालूम हुआ कि सीढ़ियों की राह कोई आदमी नीचे उतरा चला आता है। पैर की आवाज भारी थी जिससे साफ मालूम हुआ कि यह कोई मर्द है। मुझे ताज्जुब मालूम हुआ कि इस समय मर्द इस मकान में कहाँ से आया क्योंकि मेरा बाप घर में न था उसे नौकरी पर गये हुए दो महीने से ज्यादा हो चुके थे।

मैं आहट लेने और कमरे से बाहर निकल कर देखने की नियत से उठ बैठा। चारपाई की चरमराहट और मेरे उठने की आहट पाकर वह आदमी फुर्ती से उतर कर चौक में पहुँचा और जब तक मैं कमरे के बाहर हो कर उसे देखूँ तब तक वह सदर दर्वाजा खोल कर मकान के बाहर निकल गया। मैं हाथ में खंजर लिए हुए मकान के बाहर निकला और उस आदमी को जाते हुए देखा। उस समय मेरे नौकर और सिपाही जो दर्वाजे पर रहा करते थे बिल्कुल गाफिल सो रहे थे मगर मैं उन्हें सचेत करके उस आदमी के पीछे रवाना हुआ।

मैं नहीं कह सकता कि उस आदमी को जो स्याह कपडा ओढे मेरे घर से निकला था यह खबर थी या नहीं कि मैं उसके पीछे पीछे आ रहा हूँ क्योंकि वह बडी बेफिक्री से कदम बढाता हुआ मैदान की तरफ जा रहा था।

थोडी दूर जाने बाद मुझे यह भी मालूम हुआ कि यह आदमी अपनी पीठ पर एक गठरी लादे हुए है जो एक स्याह कपडे के अन्दर है। अब मुझे विश्वास हो गया कि यह चोर है और इसने जरूर मेरे यहाँ चोरी की है। जी में तो आया कि गुल मचाऊं जिसमें बहुत से आदमी इकट्ठे होकर उसे गिरफ्तार कर लें मगर कई बातें सोच कर चुप ही रहा और उसके पीछे पीछे जाना ही उचित समझा।

घण्टे भर तक बराबर मैं उस आदमी के पीछे पीछे चला गया यहाँ तक कि वह शहर के बाहर मैदान में एक ऐसी जगह जा पहुँचा जहाँ इमली के बडे बडे पेड इतने ज्यादे लगे हुए थे कि उनके सबब से मामूली से विशेष अंधकार हो रहा था। जब मैं उन घने पेड़ों के बीच पहुँचा तो मालूम हुआ कि यहाँ लगभग दस बारह ~~आदमियों के~~ और भी हैं जो एक

समाधि के बगल में बैठें धीरे धीरे बातें कर रहे थे। वह आदमी उसी जगह पहुँचा और उन लोगों में से दो ने बढ कर पूछा कहा अबकी दफे किसे लाए ? इसके जवाब में उस आदमी ने कहा नानक की माँ को।

आप ख्याल कर सकत है कि इस शब्द को सुन कर मेरे दिल पर कैसी चोट लगी होगी। अब तक तो मैं यही समझ रहा था कि वह चोर मेरे यहाँ से माल असबाब चुरा कर लाया है जिसकी मुझे विशेष परवाह न थी और मैं उसका पूरा पूरा हाल जानने की नीयत से चुपचाप उसके पीछ पीछे चला गया था मगर जब यह मालूम हुआ कि वह कम्बख्त मेरी माँ को चुरा लाया है ता मुझ बडा ही रज हुआ और मै इस बात पर अफसोस करने लगा कि उसे यहाँ तक आने का मौका क्यों दिया क्योंकि अब इस समय यहाँ मेरे किये कुछ भी नहीं हो सकता था। चारों तरफ ऐसा सन्नाटा था कि अगर गला फाड कर चिल्लाता ता भी मेरी आवाज किसी के कान तक न पहुँचती इसके अतिरिक्त वे लोग गिनती में भी ज्यादे थे किसी तरह उनका मुकाबला नहीं कर सकता था लाचार उस समय बडी मुश्किल स मैंने अपने दिल को सम्हाला और चुपचाप एक पड की आड में खडे रह कर उन लागों की कार्रवाई दखने और यह सोचने लगा कि क्या करना चाहिए।

वह समाधि जा औंधी हाडी की तरह थी बहुत बडी तथा मजबूत बनी हुई थी और मुझे उसी समय यह भी मालूम हो गया कि उसके अन्दर जाने के लिए कोई रास्ता भी है क्योंकि मरे देखते देखते वे सब के सब उस समाधि के अन्दर घुस गए और जब तक मैं रहा बाहर न निकले।

घण्टे भर तक राह देख कर मै उस समाधि के पास गया और उसके चारों तरफ घूम घूम कर अच्छी तरह देखने लगा मगर कोई दर्वाजा या छेद ऐसा न दिखाई दिया जिस राह से कोई उसके अन्दर जा सकता और न मैंने उस जगह कोई दर्वाजे का निशान ही पाया। मै उस समाधि को अच्छी तरह जानता था उसके बारे में कभी कोई बुरा ख्याल किसी के दिल में न हुआ होगा। देहाती लोग वहाँ तरह तरह की मन्नतें मानते और प्राय पूजा करने के लिए आया करते थे परन्तु मुझे आज मालूम हुआ कि वह वास्तव में समाधि नहीं बल्कि खूनियों का अडडा है।

मैन बहुत सिर पीटा मगर कुछ काम न निकला लाचार यह सोच कर घर की तरफ लौटा कि पहिले लोगों को इस मामल की खबर करूँ और इसके बाद आदमियों को साथ ला कर इस समाधि को खुदवा अपनी माँ और बदमाशों का पता लगाऊँ।

रात बहुत थोडी रह गई थी जब मैं घर पहुँचा। मैं चाहता था कि अपनी परेशानी का हाल नौकरों से कहूँ मगर वहाँ ता मामला ही दूसरा था। वह बूढी दाई जिसने मुझे गोद में खिलाया था और अब बहुत ही बूढी और कमजोर हो रही थी इस समय दर्वाज पर बैठी नौकरों पर खफा हो रही थी और कह रही थी कि आधी रात के समय तुमने लडके को अकेले क्यो जान दिया ? तुम लोगों में से कोई आदमी उसके साथ क्यों न गया ? इतने ही में मुझे देख नौकरों ने कहा लो ननकू बाबू आ गये खफा क्यों हाती हो !

मैंन पास जाकर कहा क्या है जो हल्ला मचा रही हो ?

दाई–है क्या चुपचाप न जाने कहाँ चले गये न किसी से कुछ कहा न सुना !तुम्हारी माँ बेचारी रो रो कर जान दे रही है !एसा जाना किस काम का कि एक आदमी भी साथ न ले गए जा के अपनी माँ का हाल तो देखो।

मैं–माँ कहाँ है !

दाई–घर में और कहाँ है तुम जाओ तो सही !

दाई की बात सुनकर मैं बडी हैरानी में पड गया। वहाँ उस चोर ऐयार की जुबानी जो कुछ सुना था उससे तो साफ मालूम हुआ था कि वह मेरी माँ को गिरफ्तार करके ले गया है मगर घर पहुँच कर सुनता हूँ कि माँ यहाँ मौजूद है खैर मैंने अपने दिल का हाल किसी से न कहा और चुपचाप मकान के अन्दर उस कमरे में पहुँचा जिसमें मेरी माँ रहती थी। देखा कि वह चारपाई पर पडी रो रही है उसका सिर फटा हुआ है और उसमें से खून बह रहा है एक लौडी हाथ में कपडा लिए खून पोंछ रही है। मैंने घबडा कर पूछा यह क्या हाल है !सिर कैसे फट गया ?

माँ–मैंने जब सुना कि तुम घर में नहीं हो ता तुम्हें ढूढने के लिए घबरा कर नीचे उतरी अकस्मात सीढ़ी पर गिर पडी। तुम कहाँ गये थे ?

मैं–हाँ घर में से एक चोर को कुछ असबाब लेकर बाहर जाते दख मै उसके पीछे पीछे चला गया था।

माँ–(कुछ घबडा कर) क्या यहाँ से किसी चोर को बाहर जाते देखा था ?

मैं–हाँ कहा तो कि उसी के पीछ पीछे मै गया था।

माँ–तुम उसके पीछे पीछे कहाँ तक गए ? क्या उसका घर देख आए ?

मैं–नहीं थोडी दूर जाने के बाद गलियों में घूम फिर कर न मालूम वह कहाँ गायब हो गया मैंने बहुत ढूढ़ा मगर पता न लगा आखिर लाचार होकर लौट आया। (लौंडी की तरफ देख कर) कुछ मालूम हुआ घर में से क्या चीज चोरी गई ?

लौंडी–(ताज्जुब में आकर और चारों तरफ देख कर) यहाँ से तो कोई चीज चोरी नहीं गई।

यह जवाब सुन मैं चुपचाप नीचे उतर आया और घर में चारो तरफ घूम घूम कर देखने लगा। जिस घर में खजाना रहता था उसमें भी ताला बन्द पाया और कई कीमती चीजें जो मामूली तौर पर भण्डेरियों और खुली आलमारियों में पडी रहा करती थीं ज्यों की त्यों मौजूद पाई लाचार मैं अपनी चारपाई पर जाकर लेट रहा और तरह तरह की बातें सोचने लगा। उस समय रात बीत चुकी थी और सुबह की सुफेदी घर में घुस कर कह रही थी कि अब थोडी ही देर में सूर्य भगवान निकला चाहते है।

इस बात का कई महीने बीत गए। मैंने अपने दिल का हाल और वे बातें जो देखी सुनी थीं किसी से न कहीं हाँ छिप छिपे तहर्कीकात करता रहा कि असल मामला क्या है। चाल चलन बातचीत और मुहब्बत की तरफ ध्यान देने से मुझे निश्चय हो गया कि मेरी माँ जो घर में है वह असल में मेरी माँ नहीं है बल्कि कोई ऐयारा है। मैं छिप छिप अपनी माँ की खोज करने लगा और इस विषय पर ध्यान देने लगा कि वह ऐयारा घर मे मेरी माँ बन कर क्यों रहती है और उसकी नीयत क्या है? इसके अलावे मैं अपनी जान की हिफाजत भी अच्छी तरह करने लगा। इस बीच में रामभोली ने मुझसे मुहब्बत ज्यादा बढा दी। यद्यपि उसकी चाल चलन में भी मुझे कुछ फर्क मालूम होता था परन्तु मुहब्बत ने मुझे अन्धा बना रक्खा था और मैं उसका पूरा आशिक बन गया था।

एक पढी लिखी बुद्धिमान नौजवान औरत ने जिम्मा लिया हुआ था कि यद्यपि रामभोली गूगी और बहरी है परन्तु वह उसे इशारे ही में समझा बुझा कर पढना लिखना सिखा देगी और वास्तव में उस औरत ने बडी चालाकी से रामभोली को पढना लिखना सिखा दिया। उसी औरत के हाथ रामभोली की लिखी चीठी मेरे पास आती और मैं उसी के हाथ जवाब भेजा करता था। ऊपर कही वारदात के कुछ दिन बाद जो चीठियां रामभोली की मेरे पास आने लगी उनके अक्षरों का ढग और गढन कुछ निराले ही तौर का था परन्तु मैंने उस समय उस पर कुछ विशेष ध्यान न दिया।

अब ऊपर वाले मामले को छ महीने से ज्यादे गुजर गए। इस बीच में मेरा बाप कई दफे घर में आया और थोडे थोडे दिन रह कर चला गया। घर की वार्ता में सिर्फ इतना फर्क पडा कि मेरा बाप मेरी माँ से मुहब्बत ज्यादे करने लगा मगर मेरी नकली माँ तरह तरह की बेढब फरमाइशों से उसे तग करने लगी।

एक दिन जब मेरा बाप घर में ही था आधी रात के समय मेरे बाप और मेरी माँ में कुछ खटपट होने लगी। उस समय मैं जागता था। मेरे जी में आया कि किसी तरह इस झगडे का सबब मालूम करना चाहिए। आखिर ऐसा ही किया मैं चुपके से उठा और धीरे धीरे उस कमरे के पास गया जिसके अन्दर वे दोनों जली कटी बाते कर रहे थे। उस कमरे में तीन दर्वाजे थे जिनमें से एक खुला हुआ मगर उसके आगे पर्दा गिरा हुआ था और दो दर्वाजे बन्द थे। मैं एक बन्द दर्वाजे के आगे जाकर (जो खुले दर्वाजे के ठीक दूसरी तरफ था) लेट रहा और उन दोनों की बातें सुनने लगा। जो कुछ मैंने सुना उसे ठीक ठीक बयान करता हूँ–

माँ–जब तुम्हें मेरी विश्वास नहीं तो किस मुँह से कहते हो कि मैंने तेरे लिए यह किया और वह किया?

बाप–बेशक मैंने तेरे लिए अपनी जान खतरे मे डाली और जनम भर के लिए अपने नाम पर धब्बा लगाया और अब तू चाहती है कि मैं न मरने लायक रहूँ और न जीते रह कर किसी को मुँह दिखा सकूँ।

माँ–अपने मुँह से तुम जो चाहे कहो मगर मैं ऐसा नहीं चाहती जो तुम कहते हो। क्या मैं वह किताब खा जाऊँगी या किसी दूसरे को दे दूँगी? जाओ अपनी किताब ले जाओ और अपनी चहेती बेगम को नजर कर दो!

बाप–मेरी वह जोरू जिसे तुम ताना देकर बेगम कहती हो तुम्हारे ऐसी जिद्दी नहीं। उसने मुझे राजा वीरेन्द्रसिंह के यहाँ चोरी करने के लिए नहीं कहा और न वह तिलिस्म का तमाशा ही देखा चाहती है।

माँ–उसको इतना दिमाग ही नहीं कगाल की लडकी का हौसला ही कितना!

बाप–हाँ बेशक उसका इतना बडा हौसला नहीं कि मेरी जान की ग्राहक बन बैठे।

इसके बाद थोडी सी बातें बहुत ही धीरे धीरे हुई जिन्हें मैं अच्छी तरह सुन न सका। अन्त में मेरा बाप इतना कह कर चुप हो रहा– खैर फिर जो कुछ भाग्य में लिखा है वह भोगूँगा। लो यह खूनी किताब तुम्हारे हवाले करता हूँ, पाँच रोज में लौट के आऊँगा तो तिलिस्म का तमाशा दिखा दूँगा और फिर यह किताब राजा वीरेन्द्रसिंह के यहाँ किसी ढग से पहुँचा दूँगा।

मैं यह सोच कर कि अब मेरा बाप बाहर निकलना ही चाहता है उठ खडा हुआ और चुपचाप नीचे उतर अपने कमरे में चला आया। मगर मेरे दिल की अजब हालत थी मैं खूब जानता था कि वह मेरी माँ नहीं है और अब तो मालूम हो गया कि उस कम्बख्त के फेर में पडकर मेरा बाप अपने ऊपर कोई आफत लाया चाहता है इसलिए यह सोचने लगा कि

किसी तरह अपने बाप को इसके फरेब से बचाना और अपनी असली माँ का पता लगाना चाहिए।

दो घण्टे बीत गए मगर मेरा बाप नीचे न उतरा। मेरी चिन्ता और भी बढ़ गई। मैं सोचने लगा कि शायद फिर कुछ खटपट होने लगी। आखिर मुझसे रहा न गया मैंने अपने कमरे से बाहर निकल के बाप को आवाज दी। आवाज सुनते ही वे मेरे पास चले आये और धीरे से बोले क्यों बेटा क्या है ?

मैं–आपसे एक बात कहना चाहता हूँ मगर बहुत छिपा कर।

बाप–कहो यहाँ तो कोई भी सुनने वाला नहीं है ऐसा ही डर है तो ऊपर चले चलो।

मैं–(धीरे से) नहीं मैं उस दुष्टा के सामने कुछ भी कहा नहीं चाहता जिसे आप मेरी माँ समझते हैं।

बाप–(ताज्जुब में आकर) क्या वह तुम्हारी माँ नहीं है !

मैं–नहीं।

बाप–आज क्या है जो तुम ऐसी बातें कर रहे हो ? क्या उसने तुम्हें कुछ तकलीफ दी है ?

मैं–आप इस जगह मुझसे कुछ भी न पूछिये निराले में जब मेरी बातें सुनियेगा तो असल भेद मालूम हो जायगा !

इतना सुनते ही मेरे बाप ने घबडा कर मेरा हाथ पकड लिया और मकान के बाहर अपने खास बैठके में ले जाकर दर्वाजा बन्द करने के बाद पूछा 'कहो क्या बात है ? मैंने वे कुल बातें जो देखी सुनी थीं और जो ऊपर बयान कर चुका हूँ कह सुनाई जिनके सुनते ही मेरे बाप की अजब हालत हो गई चेहरे पर उदासी और तरद्दुद की निशानी मालूम होने लगी थोडी देर तक चुप रहने और कुछ गौर करने के बाद बोले बेशक धोखा हो गया !अब जो गौर करता हूँ तो इस कम्बख्त की बातचीत और चाल चलन में बेशक कुछ फर्क पाता हूँ। मगर अफसोस तुमने इतने दिनों तक न मालूम क्या समझ कर यह बात छिपा रक्खी और अपनी माँ की तरफ से भी गाफिल रहे ! न जाने वह बेचारी जीती भी है या इस दुनिया से ही उठ गई !

मैं–जरा सा गौर करने पर आप खुद समझ सकते है कि इस बात को इतने दिनों तक मैं क्यों छिपाये रहा। माँ की तरफ से भी गाफिल न रहा जहाँ तक हो सका पता लगाने के लिए परेशान हुआ मगर अभी तक कोई अच्छा नतीजा न निकला। तथापि मुझे विश्वास है कि वह इस दुनिया में जीती जागती मौजूद है।

बाप–तुम्हारा खयाल ठीक है और इसका सबूत इससे बढ़कर और क्या होगा कि एक ऐयारा उसकी सूरत बन कर अपना काम निकाला चाहती है और इस घर में अभी तक मौजूद है जब तक इसका काम न निकलेगा बेशक उसकी जान बची रहेगी। मगर अफसोस मैंने बडा धोखा खाया और अपने को किसी लायक न रक्खा। अच्छा यह कहो कि इस समय तुम्हें क्या सूझी जो यह सब कहने के लिए तैयार हो गए ?

मैं–खुटका तो बहुत दिनों से लगा हुआ था मगर इस समय कुछ तकरार की आहट पाकर मैं ऊपर चढ गया और बडी देर तक छिप कर आप लोगों की बातें सुनता रहा ज्यादे तो समझ में न आया मगर इतना मालूम हो गया कि आप उसकी खातिर से राजा वीरेन्द्रसिंह के यहाँ से कोई किताब चुरा लाये हैं और अब कोई काम ऐसा किया चाहते हैं जो आपके लिये बहुत बुरा नतीजा पैदा करेगा अस्तु ऐसे समय में चुप रहना मैंने उचित न जाना। अब आप कृपा करके यह कहिए कि वह किताब जो आप चुरा लाये है कैसी है ?

बाप–इस समय खुलासा हाल कहने का मौका तो नहीं है परन्तु संक्षेप में कुछ हाल कह तुम्हें होशियार कर देना भी बहुत जरूरी है क्योंकि अब मेरी जिन्दगी का कोई ठिकाना नहीं हाँ अगर यह औरत तुम्हारी माँ होती तो कोई हर्ज न था वह एक प्राचीन समय की किसी के खून से लिखी हुई किताब है जो राजा वीरेन्द्रसिंह को विक्रमी तिलिस्म से मिली थी। उस तिलिस्म में स्याह पत्थर के दालान में एक सिंहासन के ऊपर छोटा सा पत्थर का सन्दूक था जिसके छूने से आदमी बेहोश हो जाता था।

मैं–हाँ यह किस्सा आप पहिले भी मुझसे कह चुके हैं बल्कि आपने यह भी कहा था कि सिंहासन के ऊपर जो पत्थर था और जिसके छूने से आदमी बेहोश हो जाता था वास्तव में वह एक सन्दूक था और उसके अन्दर से कोई नायाब चीज राजा वीरेन्द्रसिंह को मिली थी।

बाप–ठीक है ठीक है इस समय मेरी अक्ल ठिकाने नहीं इसी से बहुत सी बातें भूल रहा हूँ, हाँ तो उसी पत्थर के टुकडे में से जिसे छोटा सन्दूक कहना चाहिए यह किताब और हीरे का एक सरपेंच निकला था।

मैं–उस किताब में क्या बात लिखी है ?

बाप–उस किताब में उस तिलिस्म के भेद लिखे हुए है जो राजा वीरेन्द्रसिंह के हाथ से न टूट सका और जिसके विषय में मशहूर है कि राजा वीरेन्द्रसिंह के लड़के उस तिलिस्म को तोड़ेंगे।

मैं—यदि उस पुस्तक में उस भारी तिलिस्म के भेद लिखे हुए थे तो राजा वीरेन्द्रसिंह ने उस तिलिस्म को क्यों छोड दिया ?

बाप—केवल उस किताब की सहायता से यह तिलिस्म टूट नहीं सकता हॉं जिसके पास वह पुस्तक हो उसे तिलिस्म का कुछ हाल जरूर मालूम हो सकता है और यदि वह चाहे तो तिलिस्म में जाकर वहॉं की सैर भी कर सकता है। इस कमबख्तऔरत ने यही कहा कि मुझे तिलिस्म की सैर करा दो। उसी जिद् ने मुझसे यह अपराध कराया लाचार मैंने वह किताब चुराई। मैंने सोच लिया था कि इसकी इच्छा पूरी करने के बाद मैं वह पुस्तक जहॉं की तहॉं रख आऊँगा मगर जब यह औरत कोई दूसरी ही है तो बेशक मुझे धोखा दिया गया तथा इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि यह औरत उस तिलिस्म से कोई सम्बन्ध रखती है और यदि ऐसा है तो अब उस पुस्तक का मिलना मुश्किल है। अफसोस जब मैं किताब चुरा कर राजा बीरेन्द्रसिंह के शीशमहल से बाहर निकल रहा था तो उनके एक ऐयार ने मुझे देख लिया था। मैं मुश्किल से निकल भागा और यह सोचे हुए था कि यदि मैं पुस्तक फिर वहीं रख आऊँगा तो फिर मेरी खोज न होगी, मगर हाय यहॉं तो कोई दूसरा ही रग निकला।

मैं—आपने उस पुस्तक को पढा भी था ?

बाप—(ऑखों में ऑंसू भर कर) उसका पहला पृष्ठ देख सका था जिसमें इतना ही लिखा था कि जिसके कब्जे में यह पुस्तक रहेगी उसे तिलिस्मी आदमियों के हाथ से दु ख नहीं पहुँच सकता। जो हो परन्तु अब इन सब बातों का समय नहीं है यदि हो सके तो उस औरत के हाथ से किताब ले लेना चाहिए उठो और मरे साथ चलो।

इतना कह कर मेरा बाप उठा और मकान के अन्दर चला मैं भी उसके पीछे पीछे था। अन्दर से मकान का दर्वाजा बन्द कर लिया गया मगर जब मेरा बाप ऊपर के कमरे में जाने लगा जहॉं मेरी मॉं रहा करती थी तो मुझे सीढी के नीचे खडा कर गया और कहता गया कि देखो जब मैं पुकारूँ तो तुरत चले आना।

घण्टे भर तक मैं खडा रहा। इसके बाद छत पर घमघमाहट मालूम होने लगी मानों कइ आदमी आपस में लड रहे हैं। अब मुझसे रहा न गया हाथ में खजर लेकर मैं ऊपर चढ गया और बेधडक उस कमरे में घुस गया जिसमें मेरा बाप था। इस समय घमघमाहट की आवाज बन्द हो गई थी और कमरे के अन्दर सन्नाटा था। भीतर की अवस्था देख कर मैं घबडा गया। वह औरत जो मरी मॉं बनी हुई थी वहॉं न थी। मेरा बाप जमीन पर पडा हुआ था और उसके बदन से खून बह रहा था। मैं घबडा कर उसके पास गया और देखा कि वह बेहोश पडा है और उसके सिर और बाएँ हाथ में तलवार की गहरी चोट लगी हुई है जिसमें से अभी तक खून निकल रहा है। मैंने अपनी धोती फाडी और पानी से जख्म धोकर बॉंधने के बाद बाप को होश में लाने की फिक्र करने लगा। थोडी देर बाद वह होश में आया और उठ बैठा।

मैं—मुझे ताज्जुब है कि एक औरत के हाथ स आप चोट खा गए !

बाप—केवल औरत ही न थी यहॉं आने पर मैंने कई आदमी देखे जिनके सबब से यहॉं तक नौबत आ पहुँची। अफसोस वह किताब हाथ न लगी और मेरी जिन्दगी मुफ्त में बर्बाद हुई !

मैं—ताज्जुब है कि इस मकान में लोग किस राह से आकर अपना काम कर जाते हैं पहिले भी कई दफे यह बात देखने में आई !

बाप—खैर जो हुआ सो हुआ अब मैं जाता हूँ गुमनाम रह कर अपने किये का फल भोगूँगा यदि वह किताब हाथ लग गई और अपने माथे से बदनामी का टीका मिटा सका तो फिर तुमसे मिलूँगा नहीं तो हरि-इच्छा। तुम इस मकान को मत छोड़ना और जो कुछ देख सुन चुके हो उसका पता लगाना। तुम्हारे घर में जो कुछ दौलत है उसे हिफाजत से रखना और होशियारी से रह कर गुजारा करना तथा बन पडे तो अपनी मॉं का भी पता लगाना।

बाप की बातें सुन कर मेरी अजब हालत हो गई दिल धड़कने लगा गला भर आया आसुओं ने ऑंखों के आगे पर्दा डाल दिया। मैं बहुत कुछ कहा चाहता था मगर कह न सका। मेरे बाप ने देखते देखते मकान के बाहर निकल कर न मालूम किधर का रास्ता लिया। उस समय मेरे हिसाब से दुनिया उजड गई थी और मैं बिना मॉं बाप के मुर्दे से बदतर हो रहा था। मेरे घर में जो उपद्रव हुआ था उसका कुछ हाल नौकरों और लौडियों को मालूम हो चुका था, मगर मेरे समझाने से उन लोगों ने छिपा लिया और बडी कठिनाई से मैं उस मकान में रहने और बीती हुई बातों का पता लगाने लगा।

प्रतिदिन आधी रात के समय में ऐयारी के सामान से दुरुस्त होकर उस समाधि के पास जाया करता जहॉं पहिले दिन उस आदमी के पीछे पीछे गया था जो मेरी मॉं को चुरा कर ले गया था। अब यहॉं से मैं अपने किस्से को बहुत ही सक्षेप में कहा चाहता हूँ क्योंकि समय बहुत कम है।

एक दिन आधी रात के समय उसी समाधि के पास एक इमली के पेड़ पर चढ कर बैठा हुआ था और अपनी

बदकिस्मती पर रो रहा था कि इतने मे उस समाधि के अन्दर से एक आदमी निकला और पूरब की तरफ रवाना हुआ। मै झटपट पेड से उतरा और पैर दबाता हुआ उसके पीछे पीछे जाने लगा इसलिए उसे मेरे आने की आहट कुछ भी मालूम न हुई। उस आदमी के हाथ में एक लिफाफा कपडे का था। उस लिफाफे की सूरत ठीक उस खलीते की तरह थी जैसा प्राय राजे और बडे जमींदार लाग राजों महाराजों के यहॉ चीठी भेजते समय लिफाफे की जगह काम में लाते हैं। यकायक मेरे जी में आया कि किसी तरह यह लिफाफा इसके हाथ से ले लेना चाहिए इससे मेरा मतलब कुछ न कुछ जरुर निकलेगा।

वह लिफाफा अँधेरी रात के सबब मुझे दिखाई न देता मगर राह चलते चलते वह एक ऐसी दूकान के पास से होकर निकला जा बास की जफरीदार टट्टी से बन्द थी मगर भीतर जलते हुए चिराग की रोशनी बाहर सडक पर आने जाने वाले के ऊपर बखूबी पडती थी। उसी रोशनी ने मुझे दिखा दिया कि इसके हाथ में एक लिफाफा या खलीता मौजूद है। मेंने उसके हाथ से किसी तरह लिफाफा ले लेने के बारे में अपनी राय पक्की कर ली और कदम बढा कर उसके पास जा पहुँचा। मेंने उसे धोखे में इस जोर से धक्का दिया कि वह किसी तरह सम्हल न सका और मुँह के बल जमीन पर गिर पडा। लिफाफा उसके हाथ से छटक कर दूर जा रहा जिसे मैंने फुर्ती से उठा लिया और वहॉ से भागा। जहॉ तक हो सका मैंने भागने में तेजी की। मुझे मालूम हुआ कि वह आदमी भी उठ कर मुझे पकडने के लिए दौडा पर मुझे पा न सका। गलियों में घूमता और दौडता हुआ मैं अपने घर पहुँचा और दर्वाजे पर खडा होकर दम लेने लगा। उस समय मेरे दर्वाजे पर रामधनसिंह नामी मेरा एक सिपाही पहरा दे रहा था। यह सिपाही नादे कद का बहुत मजबूत और चालाक था थोडे ही दिनों से चौकीदारी के काम पर मेरे बाप ने इसे नौकर रक्खा था।

मुझे उम्मीद थी कि रामधनसिह दौडते हुए आने का कारण मुझसे पूछेगा मगर उसने कुछ भी न पूछा। दर्वाजा खुलवा कर मै मकान के अन्दर गया और दरवाजा बन्द करके अपने कमरे में पहुँचा। शमादान अभीं तक जल रहा था। उस लिफाफे को खोलने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा था आखिर शमादान के पास जाकर लिफाफा खोला। उस लिफाफे में एक चीठी और लोहे की एक ताली थी। वह ताली विचित्र ढग की थी उसमें छोटे छोट कइ छेद और पत्तियॉ बनी हुई थीं वह ताली जेब में रख लेने के बाद मै चीठी पढने लगा यह लिखा हुआ था —

श्री १०८ मनोरमाजी की सेवा में—

महीनों की मेहनत आज सफल हुई। जिस काम पर आपने मुझे तैनात किया था वह ईश्वर की कृपा से पूरा हुआ। रिक्तग्रन्थ मेरे हाथ लगा। आपने लिखा था कि — हारीत *सप्ताह में मै रोहतासगढ के तिलिस्मी तहखाने में रहूँगी इस बीच में यदि रिक्तग्रन्थ (खून से लिखी हुई किताब) मिल जाय तो उसी तहखाने के बलिमण्डप में मुझसे मिल कर मुझे देना। आज्ञानुसार रोहतासगढ के तहखाने में गया परन्तु आप न मिलीं। रिक्तग्रन्थ लेकर लौटने की हिम्मत न पडी क्योंकि तेजसिंह की गुप्त अमलदारी तहखाने में हो चुकी थी और उनके साथी ऐयार लोग चारो तरफ ऊधम मचा रहे थे। मैंने यह सोच कर कि यहॉ से निकलते समय शायद किसी ऐयार के पाले पड जाऊँ और यह रिक्तग्रन्थ छिन जाय तो मुश्किल होगी रिक्तग्रन्थ को चौबीस नम्बर की कोठरी में जिसकी ताली आपने मुझे दे रक्खी थी रख दिया और खाली हाथ बाहर निकल आया। ईश्वर की कृपा से किसी ऐयार से मुलाकात न हुई परन्तु दस्त की बीमारी ने मुझे बेकार कर दिया, मै आपके पास आने लायक न रहा लाचार अपने एक दोस्त के हाथ जिससे अचानक मुलाकात हो गई यह ताली आपके पास भेजता हूँ। मुझे उम्मीद है कि वह आदमी चौबीस नम्बर की कोठरी को कदापि नहीं खोल सकता जिसके पास यह ताली न हो अस्तु अब आपको जब समय मिले रिक्तग्रन्थ मगवा लीजिएगा और बाकी हाल पत्र ले जाने वाले के मुँह से सुनियेगा। मुझमें अब कुछ लिखने की ताकत नहीं बस अब साधोराम को इस दुनिया में रहने की आशा नहीं अब साधोराम आपके चरणों को नहीं देख सकता। यदि आराम हुआ तो पटने से होता हुआ सेवा में उपस्थित होऊँगा यदि ऐसा न हुआ तो समझ लीजिएगा कि साधोराम नहीं रहा। इस पत्र को पाते ही नानक की मॉ को निपटा दीजिएगा।

आपका—साधोराम।

इस चिटठी क पाते ही मेरे दिल की मुरझाई कली खिल गई। निश्चय हो गया कि मेरी मॉ अभी जीती है यदि यह चीठी ठिकाने पहुँच जाती तो उस बेचारी का बचना मुश्किल था। अब मैं यह सोचने लगा कि जिसके हाथ से यह चीठी मैंने ली है वह साधोराम था या कोई उसका मित्र। परन्तु मेरी विचारशक्ति ने तुरन्त ही उत्तर दिया कि नहीं वह साधोराम नहीं था यदि वह होता तो अपने लिखे अनुसार उस सडक से आता जो पटने की तरफ से आती है। साधोराम के मरने

---

*ऐयारी भाषा में 'हारीत' देवीपूजा को कहते हैं।

का दूसरा सबूत यह भी है कि यह चीठी और ताली काले खलीते (कपडे के लिफाफे) के अन्दर है।

चीठी के ऊपर मनोरमा का नाम लिखा था इससे निश्चय हो गया कि यह बिल्कुल बखेडा मनोरमा ही का मचाया हुआ है। मै मनोरमा को अच्छी तरह जानता था। त्रिलोचनेश्वर महादेव के पास उसका आलीशान मकान देखन से यही मालूम होता था कि वह किसी राजा की लडकी होगी मगर ऐसा नहीं था हॉ उसका खर्च हद स ज्यादे वढा हुआ था और आमदनी का ठिकाना कुछ मालूम नहीं होता था। दूसरी वात यह कि वह प्रचलित रीति पर ध्यान न देकर बेपर्द खुले आम पालकी तामझाम और कभी कभी घोड पर सवार हो कर वडे ठाठ से घूमा करती और इसीलिए काशी के छोटे बड़े सभी मनुष्य उसे पहिचानते थे। उस चीठी के पढने से मुझे विश्वास हो गया कि मनोरमा जरूर तिलिस्म से कुछ सम्वन्ध रखती है और मेरी मॉ उसी के कब्जे में है।

इस सोच में कि किस तरह अपनी मॉ को छुडाना और रिक्तग्रन्थ पर कब्जा करना चाहिए कई दिन गुजर गये और इस वीच में उस ताली को मै अपने मकान के वाहर किसी दूसरे ठिकाने हिफाजत से रख आया।

यहॉ तक अपना हाल कह कर नानक चुप हो रहा और झुक कर वाहर की तरफ देखने लगा।

तेज–हा हॉ कहो फिर क्या हुआ तुम्हारा हाल वडा ही दिलचस्प है विल्कुल बातें हमारे ही सम्वन्ध की है।

नानक–ठीक है परन्तु अफसोस इस समय मै जो कुछ आप से कह रहा हूँ उससे मेरे वाप का कसूर और

तेज–मै समझ गया जो कुछ तुम कहा चाहते हो मगर मै सच्चे दिल से कहता हूँ कि यद्यपि तुम्हारे वाप ने भारी जुर्म किया है और उसके विषय में हमारे तरफ से विज्ञापन दिया गया है कि जो कोई रिक्तग्रन्थ के चोर को गिरफ्तार करेगा उसे मुँहमागा इनाम दिया जायगा तथापि तुम्हारे इस किस्से का सुन कर जिसे तुम सच्चाई के साथ कह रहे हा मै वादा करता हूँ कि उसका कसूर माफ कर दिया जायगा और तुम जो कुछ नेकी हमारे साथ किया चाहते हो या करोगे उसके लिए धन्यवाद के साथ पूरा पूरा इनाम दिया जायगा। मै समझता हूँ कि तुम्हें अपना किस्सा अभी वहुत कुछ कहना है और इसमें भी कोई सन्दह नहीं कि जो कुछ तुम कहोगे मेरे मतलव की वात होगी परन्तु इस वात का जवाव मै सव से पहिले सुना चाहता हूँ कि वह रिक्तग्रन्थ तुम्हारे कब्ज में है या नही ? अथवा हम लोग उसके पीन की आशा कर सकते है या नहीं ?

इसके पहिले कि तेजसिह को आखिरी वात का कुछ जवाव नानक दे बाहर से यह आवाज आई–यद्यपि रिक्तग्रन्थ नानक के कब्जे में अव नहीं है तथापि तुम उसे उस अवस्था में पा सकते हो जव अपने को उसके पाने योग्य साबित करो। इसके वाद खिलखिला कर हॅसने की आवाज आई।

इस आवाज न दानों ही को परशान कर दिया दोनों ही को दुश्मन का शक हुआ। नानक ने सोचा कि शायद मायारानी का कोई एयार आ गया और उसने छिप कर मेरा किस्सा सुन लिया अव यहॉ से निकलना या जान बचाकर भागना वहुत मुश्किल है तेजसिह को भी यह निश्चय हो गया कि नानक द्वारा जो कुछ भलाई की आशा हुई थी अव निराशा के साथ वदल गई।

दोनों एयार उसे ढूँढने के लिए उठे जिसकी आवाज ने यकायक उन दोनों को चौका और होशियार कर दिया था। दो कदम भी आगे न वढे थे कि फिर आवाज आई क्यों कष्ट करते हो मै स्वय तुम्हारे पास आता हूँ। साथ ही इसके एक आदमी इन दोनों की तरफ आता हुआ दिखाई पडा। जव यह पास पहुँचा तो वोला ऐ तेजसिह और नानक तुम दोनों मुझे अच्छी तरह देख और पहिचान लो मै तुमसे कई दफे मिलूँगा देखो भूलना मत।

तेजसिह और नानक ने उस आदमी को अच्छी तरह दखा। उसका कद नाटा और रग सावला था। घनी और स्याह दाढी और मूछों ने उसका आधा चेहरा छिपा रक्खा था। उसकी ऑखें वडी वडी मगर वहुत ही सुर्ख और चमकीली थीं हाथ पैर से मजवूत और फुर्तीला जान पडता था। माथे पर सफेद चार अगुल जगह घेरे हुए रामानन्दी तिलक था जिस पर दखन वाले की निगाह सव से पहिले पड सकती थी परन्तु ऐसी अवस्था होने पर भी उसका चेहरा नमकीन और खूवसूरत था तथा देखने वाले का दिल उसकी तरफ खिंच जाना कोई ताज्जुब न था। उसकी पोशाक बेशकीमत और चुस्त मगर कुछ भूडी थी। स्याह पायजामा सुर्ख अगा जिसमें बडे बड़े कई जेव किसी चीज से भरे हुए थे और सब्ज रग के मुडासे की तरफ ध्यान देने से हॅसी आती थी एक खजर बगल में और दूसरा हाथ में लिए हुए था।

तेजसिह ने वडे गौर स उस देखा और पूछा क्या तुम अपना नाम बता सकते हो ? जिसके जवाव में उसने कहा नहीं मगर चण्डूल के नाम से आप मुझे वुला सकते है।

तेज–जहॉ तक मै समझता हूँ आप इस नाम के योग्य नहीं हैं।

चण्डूल–चाह न हों।

तेज–खैर यह भी कह सकत हो कि तुम्हारा आना यहा क्यों हुआ ?

चण्डूल–इसलिए कि तुम दानों को होशियार कर दूँ कि कल शाम के वक्त आठ आदमियों के खून से इस बाग की क्यारियॉ रगी जायगी जो फॅस कर यहॉ आ चुके है।

तेज–क्या उनके नाम भी बता सकते हो ?

चण्डूल–हॉ सुना–राजा वीरेन्द्रसिह एक रानी चन्द्रकान्ता दो इन्द्रजीतसिह तीन आनन्दसिह चार किशोरी पॉच कामिनी छ तेजसिह सात नानक आठ।

तेजसिह–(घबडा कर) यह तो मैं भी जानता हूँ कि दोनों कुमार और उनके ऐयार मायारानी के फॅदे में फॅसकर यहॉ आ चुके है मगर राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता तो

चण्डूल–हॉ हॉ वे दोनों भी फॅस कर यहॉ आ चुके हैं पूछो नानक से।

नानक–(तेजसिंह की तरफ देख कर) हॉ ठीक है अपना किस्सा कहने के बाद राजा वीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता का हाल मैं आपसे कहने ही वाला था मगर मुझे यह बात अच्छी तरह मालूम नहीं है कि वे लोग क्योंकर मायारानी के फन्दे में फॅसे !

चण्डूल–(नानक से) अब विशेष बातों का मौका नहीं है तेजसिंह से जो कुछ करते बनेगा कर लेंगे मैं इस समय तुम्हारे लिए आया हूँ, आओ और मेरे साथ चलो।

नानक–मैं तुम पर विश्वास करके तुम्हारे साथ क्योंकर चल सकता हूँ ?

चण्डूल–(कडी निगाह से नानक की तरफ देख के और हुकुमत के साथ) लुच्चा कहीं का। अच्छा सुन एक बात मैं तेरे कान में कहा चाहता हूँ।

"इतना कह कर चण्डूल चार पॉच कदम पीछे हट गया। उसकी डपट और बात ने नानक के दिल पर कुछ ऐसा असर किया कि वह अपने को उसके पास जाने से रोक न सका। नानक चण्डूल के पास गया मगर अपने को हर तरह सम्हाले और अपना दाहिना हाथ खजर के कब्जे पर रक्खे हुए था। चण्डूल ने झुक कर नानक के कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही नानक दो कदम पीछे हट गया और बडे गौर से उसकी सूरत देखने लगा। थोडी देर तक यही अवस्था रही इसके बाद नानक ने तेजसिह की तरफ देखा और कहा 'माफ कीजिएगा लाचार होकर मुझे इनके साथ जाना ही पडा अब मैं बिल्कुल इनके कब्जे में हूँ यहॉ तक कि मेरी जान भी इनके हाथ में है। इसके बाद नानक ने कुछ न कहा। वह चण्डूल के साथ चला गया और पेडों की आड में घूम फिर कर देखते देखते नजरों से गायब हो गया।

अब तेजसिह फिर अकेले पड गए। तरह तरह के खयालों ने चारों तरफ से आकर उन्हें घेर लिया। नानक की जुबानी जो कुछ उन्होंने सुना था उससे बहुत सी भेद की बातें मालूम हुई थीं और अभी बहुत कुछ मालूम होने की आशा थी परन्तु नानक अपना किस्सा पूरा कहने भी न पाया था कि इस चण्डूल ने आ कर दूसरा ही रग मचा दिया जिससे तरद्दुद और घबराहट सौ गुनी ज्यादे बढ गई। बिछावन पर पडे पडे वे तरह तरह की बातें सोचने लगे।

नानक की बातों से विश्वास होता है कि उसने अपना हाल जो कुछ कहा सही सही कहा मगर उसके किस्से में कोई ऐसा पात्र नहीं आया जिसके बारे में चण्डूल होने का अनुमान किया जाय। फिर यह चण्डूल कौन है जिसकी थोडी सी बात से जो उसने झुक कर नानक के कान में कही नानक घबडा गया और उसके साथ जाने पर मजबूर हो गया ! हाय यह कैसी भयानक खबर सुनने में आई कि अब शीघ्र ही राजा वीरेन्द्रसिह रानी चन्द्रकान्ता तथा दोनों राजकुमार और ऐयार लोग इस बाग में मारे जायगे। बेचारे राजा बीरेन्द्रसिह और रानी चन्द्रकान्ता के बारे में भी अब ऐसी बातें ! ओफ न मालूम अब ईश्वर क्या किया चाहता है ! मगर हिम्मत न हारनी चाहिए आदमी की हिम्मत और बुद्धि की जॉच ऐसी ही अवस्था में होती है। ऐयारी का बटुआ और खजर अभी मेरे पास मौजूद है कोई न कोई उद्योग करना चाहिए और वह भी जहॉ तक हो सके शीघ्रता के साथ।

इन्हीं सब विचारों और गम्भीर चिन्ताओं में तेजसिह डूबे हुए थे और सोच रहे थे कि अब क्या करना उचित है कि इतने में सामने से आती हुई मायारानी दिखाई पडी। इस समय वह असली बिहारीसिह (जिसकी सूरत तेजसिह ने बदल दी थी और अभी तक खुद जिसकी सूरत में थे) और हरनामसिह तथा और भी कई ऐयारों और लौंडियों से घिरी हुई थी। इस समय सवेरा अच्छी तरह हो चुका था और सूर्य की लालिमा ऊॅचे ऊॅचे पेडों की डालियों पर फैल चुकी थी।

मायारानी तेजसिह के पास आई और असली बिहारीसिह ने आगे बढ कर तेजसिह से कहा धर्मावतार बिहारीसिह जी मिजाज दुरुस्त है या अभी तक आप पागल ही है।"

तेज–अब मुझे बिहारीसिंह कह कर पुकारने की आवश्यकता नहीं क्योंकि आप जान गए है कि यह पागल असल में राजा बीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार है और अब आपको यह जान कर हद्द दर्जे की खुशी होगी कि यह पागल बिहारीसिंह वास्तव में ऐयारों के गुरुघंटाल तेजसिंह है जिनकी बढ़ी हुई हिम्मतों का मुकाबला करने वाला इस दुनिया में कोई नहीं है और जो इस कैद की अवस्था में भी अपनी हिम्मत और बहादुरी का दावा करके कुछ कर गुजरने की नीयत रखता है।

बिहारी–ठीक है मगर अब आप ऐयारों के गुरुघंटाल की पदवी नहीं रख सकते क्योंकि आपकी अनमोल ऐयारी यहाँ मिट्टी में मिल गई और अब शीघ्र ही हथकड़ी बेड़ी भी आपके नजर की जायगी।

तेज–अगर तुम मेरी ऐयारी चौपट कर चुके थे तो ऐयारी का बटुआ और खंजर भी ले लिए होते। यह गुरुघंटाल ही का काम था कि पागल होने पर भी ऐयारी का बटुआ और खंजर किसी के हाथ में जाने न दिया। बाकी रही बेड़ी सो मेरा चरण कोई छू नहीं सकता जब तक हाथ में खंजर मौजूद है। (हाथ में खंजर लेकर और दिखा कर) वह कौन सा हाथ है जो हथकड़ी लेकर इसके सामने आने की हिम्मत रखता है।

बिहारी–मालूम होता है कि इस समय तुम्हारी आँखें केवल मुझी को देख रही है उन लोगों को नहीं देखतीं जो मेरे साथ है अतएव सिद्ध हो गया कि तुम पागल होने के साथ साथ अन्धे भी हो गए नहीं तो

बिहारीसिंह की बात पूरी न हुई थी कि बगल की एक कोठरी का दर्वाजा खुला और वही चण्डूल फुर्ती के साथ निकल कर सभों के बीच में आ खड़ा हुआ जिसे देखतेही मायारानी और उसके साथियों की हैरानी का कोई ठिकाना न रहा। केवल इतना ही नहीं बल्कि यह भी मालूम हुआ कि उस कोठरी में और भी कई आदमी है जिसके अन्दर से चण्डूल निकला था क्योंकि उस कोठरी का दर्वाजा चण्डूल ने खुला छोड़ दिया था और उसके अन्दर के आदमी कुछ कुछ दिखाई पड़ रहे थे।

चण्डूल–(मायारानी और उसके साथियों की तरफ देख कर) यह कहने की कोई जरूरत नहीं कि मैं कौन हूँ, हाँ अपने आने का सबब जरूर कहूँगा। मुझे एक लौंडी और एक गुलाम की जरूरत है कहो तुम लोगों में से किसे चुनूँ ? (मायारानी की तरफ इशारा करके) मैं समझता हूँ कि इसी को अपनी लौंडी बनाऊँ और (बिहारीसिंह की तरफ इशारा करके) इसे गुलाम की पदवी दूँ।

बिहारी–तू कौन है जो इस बेअदबी के साथ बातें कर रहा है ? (मायारानी की तरफ इशारा करके) तू जानता नहीं कि ये कौन हैं ?

चण्डूल–(हँस कर) मेरी शान में चाहे कोई कैसी ही कड़ी बात कहे मगर मुझे क्रोध नहीं आता क्योंकि मैं जानता हूँ कि सिवा ईश्वर के कोई दूसरा मुझसे बड़ा नहीं है और मेरे सामने खड़ा होकर जो बातें कर रहा है वह तो गुलाम के बराबर भी हैसियत नहीं रखता। मैं क्या जानूँ कि (मायारानी की तरफ इशारा करके) यह कौन है ? हाँ यदि मेरा हाल जानना चाहते हो तो मेरे पास आओ और कान में सुनो कि मैं क्या कहता हूँ।

बिहारी–हम ऐसे बेवकूफ नहीं हैं कि तुम्हारे चकमे में आ जायँ।

चण्डूल–क्या तू समझता है कि मैं उस समय तुझ पर वार करूँगा जब तू कान झुकाए हुए मेरे पास आ कर खड़ा होगा ?

बिहारी–बेशक ऐसा ही है।

चण्डूल–नहीं नहीं यह काम हमारे ऐसे बहादुरों का नहीं है अगर डरता है तो किनारे चल मैं दूर ही से जो कुछ कहना है कह दूँ जिसमें कोई दूसरा न सुने।

बिहारी–(कुछ सोच कर) ओफ मैं तुझ ऐसे कमजोर से डरने वाला नहीं कह क्या कहता है।

यह कह कर बिहारीसिंह उसके पास गया और झुक कर सुनने लगा कि वह क्या कहता है।

न मालूम चण्डूल ने बिहारीसिंह के कान में क्या कहा न मालूम उन शब्दों में कितना असर था न मालूम वह बात कैसे कैसे भेदों से भरी हुई थी जिसने बिहारीसिंह को अपने आपे से बाहर कर दिया। वह घबड़ा कर चण्डूल को देखने लगा उसके चेहरे का रंग जर्द हो गया और बदन में थरथराहट पैदा हो गई।

चण्डूल–क्यों अगर अच्छी तरह न सुन सका हो तो जोर से पुकार के कहूँ जिसमें और लोग भी सुन लें।

बिहारी–(हाथ जोड़ कर) बस बस क्षमा कीजिए मैं आशा करता हूँ कि आप अब दोहरा कर उन शब्दों को श्रीमुख से न निकालेंगे मुझे यह जानने की भी आवश्यकता नहीं कि आप कौन है, चाहे जो भी हों।

माया– (बिहारी से)। उसने तुम्हारे कान में क्या कहा जिससे तुम घबड़ा गए ?

बिहारी–(हाथ जोड़ कर) माफ कीजिए मैं इस विषय में कुछ भी नहीं कह सकता।

माया–(कड़ी आवाज में) क्या मैं वह बात सुनने योग्य नहीं हूँ ?

बिहारी–कह तो चुका कि उन शब्दों को अपने मुँह से नहीं निकाल सकता।

माय–(ऑखें लाल करके) क्या तुझे अपनी ऐयारी पर घमड हो गया ? क्या तू अपने को भूल गया या इस वात को भूला गया कि मै क्या कर सकती हूँ और मुझमें कितनी ताकत है ?

विहारी–मै आपका और अपने को खूब जानता हूँ, मगर इस विषय में कुछ नही कह सकता। आप व्यर्थ खफा होती है इसमे काई काम न निकलेगा।

माया–मालूम हो गया कि तू भी असली विहारीसिह नहीं है। खैर क्या हर्ज है समझ लूँगी (चण्डूल की तरफ देख के) क्या तू भी दूसरे को वह वात नहीं कह सकता ?

चण्डूल–जो कोई मेरे पास आवेगा उसके कान में मै कुछ कहूँगा मगर इसका वादा नहीं कर सकता कि वही बात कहूँगा या हर एक को नई नई वात का मजा चखाऊँगा।

माया–क्या यह भी नही कह सकता कि तू कौन है और इस बाग में किस राह से आया है ?

चण्डूल–मेरा नाम चण्डूल है आने के विषय में ता केवल इतना ही कह देना काफी है कि मै सर्वव्यापी हूँ, जहॉ चाहूँ पहुँच सकत हूँ, हॉ काई नई वात सुना चाहती हो तो मेरे पास आओ और सुनो।

हरनाम–(मायारानी से) पहिले मुझे उसके पास जाने दीजिए (चण्डूल के पास जाकर) अच्छा लो कहो क्या कहते हो ?

चण्डूल न हरनामसिह क कान में भी कोई बात कही। उस समय हरनामसिह चण्डूल की तरफ कान झुकाए जमीन को देख रहा था। चण्डूल कान में कुछ कह के दो कदम पीछे हट गया मगर हरनामसिह ज्यों का त्यों झुका हुआ खडा ही रह गया। यदि उस समय उसे कोई नया आदमी देखता तो यही समझता कि यह पत्थर का पुतला है। मायारानी को बडा आश्चर्य हुआ कई सायत बीत जाने पर भी जब हरनामसिह वहॉ से न हिला तो उसने पुकारा "हरनाम" उस समय वह चौका और चारों तरफ देखने लगा जब चण्डूल पर निगाह पडी तो मुँह फेर लिया और बिहारीसिह के पास जा सिर पर हाथ रख कर बैठ गया।

माया–हरनाम, क्या तू भी बिहारी का साथी हा गया ? वह वात मुझसे न कहेगा जो अभी तून सुनी है ?

हरनाम–मै इसी वास्त यहॉ आ बैठा हूँ कि आखिर तुम रज होकर मेरा सिर काट लेने का हुक्म दोगी ही क्योंकि तुम्हारा मिजाज बडा क्रोधी है मगर लाचार हूँ, मै वह बात कदापि नहीं कह सक्ता।

माया–मालूम होता है कि यह आदमी कोई जादूगर है अस्तु मै हुक्म देती हूँ कि यह फौरन गिरफ्तार किया जाय!

चण्डूल–गिरफ्तार होने क लिए तो मै आया ही हूँ, कष्ट उठाने की क्या आवश्यकता है ? लीजिए स्वय मै आपके पास आता हूँ, हथकडी बेडी कहॉ है लाइए।|वह अपने को सम्भाले झुक कर उसके कान में न मालूम क्या कह दिया

इतना कह कर चण्डूल तेजी के साथ मायारानी के पास गया और जब तक वह अपने को सम्हाले झुक कर उसके कान में न मालूम क्या कह दिया कि उसकी अवस्था बिल्कुल ही बदल गई। बिहारीसिह और हरनामसिह तो बात सुनने के बाद इस लायक भी रहे थे कि किसी की बात सुनें और उसका जवाब दें मगर मायारानी इस लायक भी न रही। उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई तथा वह घूम कर जमीन पर गिर पडी और बेहोश हो गई। बिहारीसिह और हरनामसिह को छोडकर बाकी जितने आदमी उसके साथ आये थे सभों में खलबली मच गई और सभों को इस बात का डर बैठ गया कि चण्डूल उसके कान में भी कोई ऐसी बात न कह दे जिससे मायारानी की सी अवस्था हो जाय।

घण्टा भर वीत गया पर मायारानी होश में न आई। चण्डूल तेजसिह के पास गया और उसके कान में भी कोई बात कही जिसके जवाव में तेजसिह ने केवल इतना कहा "मै तैयार हूँ!"

तेजसिह का हाथ पकडे हुए चण्डूल उसी कोठरी में चला गया जिसमें स बाहर निकला था। अन्दर जाने के बाद दर्वाजा बखूबी बन्द कर लिया। मायारानी के साथियों में से किसी की भी हिम्मत न पडी कि चण्डूल को या तेजसिह को जाने से राके। जिस समय चण्डूल यकायक कोठरी का दर्वाजा खोल कर बाहर निकला था उस समय मालूम होता था कि उस कोठरी के अन्दर और भी कई आदमी हैं मगर उस समय तेजसिह ने वहाँ सिवाय अपने और चण्डूल के और किसी को भी न पाया। उधर मायारानी जब होश में आई तो बिहारीसिह हरनामसिह तथा अपने और साथियों को लेकर खास महल में चली गई। उसके दोनों ऐयार बिहारीसिह और हरनामसिह अपने मालिक के वैसे ही तावेदार और खैरखाह बने रहे जैसे थे मगर चण्डूल की कही हुई बात वे दोनों अपने मुँह से कभी भी निकाल नही सकते थे। जब जब चण्डूल का ध्यान आता बदन के रोंगटे खडे हो जाते थे और ठीक यही अवस्था मायारानी की भी थी। मायारानी को यह भी निश्चय हो गया कि चण्डूल नकली बिहारीसिह अर्थात तेजसिह को छुडा ले गया।

चौथा बयान

शाम का वक्त है। सूर्य भगवान अस्त हो गये है तथापि पश्चिम तरफ आसमान पर कुछ कुछ लाली अभी तक दिखाई दे रही है। ठण्डी हवा मन्द गति से चल रही है। गरमी तो नहीं मालूम होती लेकिन इस समय की हवा बदन में कॅपकपी पैदा नहीं कर सकती। हम इस समय आपको एक ऐसे मैदान की तरफ ध्यान देने के लिए कहते हैं जिसकी लम्बाई और चौडाई का अन्दाजा करना कठिन है। जिधर निगाह दौडाइये सन्नाटा नजर आता है कोई पेड भी ऐसा नहीं है जिसके पीछे या जिस पर चढ कर काई आदमी अपने को छिपा सके हॉ पूरब तरफ निगाह कुछ ठोकर खाती है और धुँधली चीज को देखकर गौर करने वाला कह सकता है कि उस तरफ शायद कोई छोटी सी पहाडी या पुरान जमाने का काई ऊँचा टीला है।

एसे मैदान में तीन औरते घोडियों पर सवार धीरे धीरे उसी तरफ जा रही हैं जिधर उस टीले या छोटी पहाडी की स्याही मालूम हो रही है। यद्यपि उन औरतों की पोशाक जनाना वजा की है मगर फिर भी चुस्त और दक्षिणी ढग की है। तीनों क चहरे पर नकाव पडी हुइ है तथापि बदन की सुडौली और कलाई तथा नाजुक उगलियों पर ध्यान देने से देखने वाल क दिल में यह बात जरूर पैदा हागी कि ये तीनों ही नाजुक नौजवान और खूबसूरत हैं। इन औरतों के विषय में हम अपन पाठकों को ज्यादा देर तक खुटके में न डाल कर इसी समय इनका परिचय दे दना उत्तम समझते है। वह देखिए ऊँची और मुश्की घोडी पर जो सवार है वह मायारानी है चोगर ऑखों वाली सुफेद पचकल्यान घोडी पर जो पटरी जमाय है वह छोटी वहन लाडिली है जिस अभी तक हम रामभोली के नाम से लिखते चले आये हैं और सब्ज घोडी पर सवार चारों तरफ निगाह दौडा दौडा कर देखने वाली धनपति है। ये तीनों आपस में धीरे धीरे बातें करती जा रही हैं। लीजिए तीनों ने अपने चेहरों पर से नकावें उलट दीं अव हम इन तीनों की बातों पर ध्यान देना उचित है।

माया—न मालूम वह चण्डूल कम्वख्त तीसरे नम्बर के बाग में क्योंकर जा पहुँचा ! इसमें तो कुछ सन्देह नहीं कि जिस राह से हम लाग आते जाते रहते है उस राह से वह नहीं गया था।

लाडिली—तिलिस्म बनाने वालों न वहॉ पहुँचन के लिए और कई रास्ते वनाए है शायद उन्हीं रास्तों में से कोई रास्ता उसे मालूम हो गया हो।

धनपति—मगर उन रास्तों का हाल किसी दूसरे को मालूम हो जाना तो वडी भयानक बात है।

माया—और यह एक ताज्जुव की वात है कि उन रास्तों का हाल जव मुझको जो तिलिस्म की रानी कहलाती हूँ नहीं मालूम तो किसी दूसरे को कैस मालूम हूआ !!

लाडिली—ठीक है तिलिस्म की वहुत सी बातें ऐसी हैं जा तुम्हें मालूम है मगर नियमानुसार तुम मुझसे भी नहीं कह सकती हा हॉ उन रास्तों का हाल जीजाजी *का जरूर मालूम था। अफसोस उन्हें मरे पॉच वर्ष हो गये अगर जीते हाते तो

माया—(कुछ घवडा कर और जल्दी से) तुम कैसे जानती हो कि उन रास्तों का हाल उन्हें मालूम था ?

लाडिली—हॅसी हॅसी में उन्होंन एक दिन मुझसे कहा था कि बाग के तीसरे दर्जे में जाने के लिए पॉच रास्ते हैं बल्कि व मुझ अपने साथ वहॉ ले चल कर नया रास्ता दिखाने को तैयार भी थे मगर मै तुम्हारे डर से उनके साथ न गई।

माया—आज तक तूने यह हाल मुझस क्यों न कहा !

लाडिली—मेरी समझ में यह कोई जरूरी बात न थी जो तुमस कहती।

लाडिली की वात सुन मायारानी चुप हो गई और वड गौर में पड गई। उसकी अवस्था औरउसकी सूरत पर ध्यान देने से मालूम हाता था कि लाडिली की बात से उसके दिल पर एक सख्त सदमा पहुँचा है और वह थोडी देर के लिए अपने को बिल्कुल ही भूल गई है। मायारानी की ऐसी अवस्था क्यों हो गई और इस मामूली सी बात से उसके दिल पर क्यों चोट लगी इसका सवव उसकी छाटी वहन लाडिली भी न समझ सकी। कदाचित यह कहा जाय कि वह अपने पति को याद करक इस अवस्था में पड गई सो भी नहीं हा सकता क्योंकि लाडिली खूव जानती थी कि मायारानी अपने खूबसूरत

---

* जीजाजी से मतलव मायारानी क पति से है जो लाडिली का वहनोई था।

हसमुख और नेक चाल चलन वाले पति को कुछ भी नहीं चाहती थी। इस समय लाडिली के दिल में एक तरह का खुटका पैदा हुआ और शक की निगाह से मायारानी की तरफ देखने लगी मगर मायारानी कुछ भी नहीं जानती थी कि उसकी छोटी बहिन उसे किस निगाह से देख रही है। लगभग दो सौ कदम चल जाने बाद वह चौंकी और लाडिली की तरफ जरा सा मुह फेर कर बोली हॉ तो वह उन रास्तों का हाल जानता था।'

लडिली के दिल में और भी खुटका हुआ बल्कि इस बात का रज हुआ कि मायारानी ने अपने पति या लाडिली के प्यारे बहनोई की तरफ ऐसे शब्दों में इशारा किया जो किसी नीच या खिदमतगार तथा नौकर के लिए बर्ता जाता है। लाडिली का ध्यान धनपति की तरफ गया जिसके चेहरे पर उदासी और रज की निशानी मामूली से कुछ ज्यादे पाई जाती थी और जिसकी घोडी भी पाँच सात कदम पीछे रह गई थी। मगर मायारानी और धनपति की ऐसी अवस्था ज्यादे देर तक न रही उन दानों ने वहुत जल्द अपने को सम्हाला और फिर मामूली तौर पर वातचीत करने लगीं।

धन-अब वह टीला भी आ पहुँचा देखा चाहिए वावा जी से मुलाकात होती है या नहीं।

मायरानी—मुलाकात अवश्य होगी क्योंकि वे कहीं जाते नहीं मगर अब मेरा जी नहीं चाहता कि वहॉ तक जाऊँ या उनस मिॡूँ।

लाडिली—सो क्यों 'तुम तो बडे उत्साह से उनसे मिलने के लिए आई हो।

माय—ठीक है मगर अब जो मै सोचती हूँ तो यही जान पडता है कि बेचारे बाबाजी इन सब बातों का जवाब कुछ भी न दे सकगे।

लाडिली—खैर जब इतनी दूर आ चुकी हो तो अब लौट चलना भी उचित नहीं।

माया—नहीं अब मैं वहॉ न जाऊँगी।

इतना कह कर मायारानी ने घोडा फेरी लाचार होकर लाडिली और धनपति को भी घूमना पडा मगर इस कार्रवाई से लाडिली के दिल का शक और भी ज्यादा हुआ और उसे निश्चय हो गया कि मेरी बात से मायारानी के दिल पर गहरी चोट वैठी है मगर इसका सबब क्या है सो कुछ भी नहीं मालूम होता।

मयारानी ने जैसे ही घाडी की वाग फेरी वैस ही उसकी निगाह तेजसिंह पर पडी जो तीर और कमान हाथ में लिए वहुत दूर से कदम वढाए इन तीनों के पीछे पीछे आ रहे थे। मायारानी तेजसिंह को अच्छी तरह जानती थी। यद्यपि इस साय कुछ अन्धेरा हो गया था परन्तु मायारानी की तेज निगाहों ने तेजसिंह को तुरन्त ही पहिचान लिया और इसके साथ हीवह तलवार खैंच कर तेजसिंह पर झपटी।

मायारानी को नगी तलवार लिए झपटते देख तेजसिंह ने ललकार के कहा खबरदार आगे न वढना नहीं तो एक ही तीर में काम तमाम कर दूगा।

तेजसिंह के ललकारने से मायारानी रुक गई मगर धनपति से न रहा गया। वह तलवार खैंच कर यह कहती हुई आगे वढी मैं तेरे तीर से डरने वाली नहीं।

तेजसिंह—मालूम होता है तुझे अपनी जान प्यारी नहीं है इसे खूब समझ लीजियो कि तेजसिंह के हाथ से छूटा हुआ तीर खाली न जायगा।

धन—मालूम होता है कि तू केवल एक तीर ही से हम तीनों को डरा कर अपना काम निकालना चाहता है। अफसोस इस समय मेरे पास तीर कमान नहीं है यदि होता तो तुझे जान पड़ता कि तीर चलाना किसे कहते हैं ?

तेज—(हँस कर) न मालूम तूने औरत होने पर भी अपने को क्या समझ रक्खा है ? खैर अब मै एक कमसिन औरत पर तीर नहीं चलाऊँगा।

इतना कह कर तेजसिंह ने तीर तरकस में रख लिया तथा कमान वगल में लटकाने बाद ऐयारी के बटुए में से एक छोटा सा लोहे का गोला निकाल कर सामने खडे हो गये और धनपति को वह गोला दिखा कर बोले तुम लोगों के लिए यही वहुत है मगर मै फिर कहे देता हूँ कि मुझ पर तलवार चला कर भलाई की आशा मत रखियो।

धन—(मायारानी की तरफ इशारा करके) क्या तू जानता नहीं कि यह कौन है ?

तेज—मैं तुम तीनों को खूब जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि मायारानी सैंतालीस नम्बर की कोठरी को पवित्र करके बेवा हो गई और इस बात को पॉच वर्ष का जमाना हो गया।

इतना कह कर मुस्कराते हुए तेजसिंह ने एक भेद की निगाह मायारानी पर डाली और देखा कि मायारानी का चेहरा पीला पड गया और शर्म से उसकी ऑखें नीचे की तरफ झुकने लगीं मगर यह अवस्था उसकी बहुत देर तक न रही,

तेजसिंह के मुँह से बात निकलने के बाद जैसे ही लाडिली की ताज्जुब भरी निगाह मायारानी पर पड़ी वैसे ही मायारानी ने अपने को सम्हाल कर धनपति की तरफ देखा।

अब धनपति अपने को रोक न सकी, उसने घोड़ी बढ़ा कर तेजसिंह पर तलवार का वार किया। तेजसिंह ने फुर्ती से वार खाली देकर अपने को बचा लिया और वही लोहे का गोला धनपति की घोड़ी के सर में इस जोर से मारा कि वह सम्हल न सकी और सर हिला कर जमीन पर गिर पड़ी। लोहे का गोला छटक कर दूर जा गिरा और तेजसिंह ने लपक कर उसे उठा लिया।

आशा थी कि घोडी के गिरने से धनपति को भी कुछ चोट लगेगी मगर वह घोड़ी पर से उछल कुछ दूर जा रही और बडी चालाकी से गिरते गिरते उसने अपने को बचा लिया। तेजसिह फिर वही गोला लेकर सामने खड़े हो गए।

तेज–(गोला दिखा कर) इस गोले की करामात देखी ? अगर अबकी फिर वार करने का इरादा करेगी तो यह गोला तेरे घुटने पर बैठेगा और तुझे लगड़ी होकर मायारानी का साथ देना पडेगा। मै यह नहीं चाहता कि तुम लोगों को इस समय जान से मारूँ, मगर हॉ इस समय जिस काम के लिए आया हूँ उसे किए बिना लौट जाना भी मुनासिब नहीं समझता।

माया–अच्छा बताओ तुम हम लोगों के पीछे पीछे क्यों आए हो और क्या चाहते हो ?

तेज–(लाडिली की तरफ इशारा कर के) केवल इनसे एक बात कहनी है और कुछ नहीं।

लाडिली–कहो क्या कहते हो ?

तेज–मै इस तरह नही कहा चाहता कि तुम्हारे सिवाय कोई दूसरा सुने इन दोनों से अलग होकर सुन लो फिर मै चला जाऊँगा। डरो मत मै दगाबाज नहीं हूँ, यदि चाहूँ तो ललकार कर तुम तीनों को यमलोक पहुँचा सकता हूँ मगर नहीं तुमसे केवल एक बात कहने के लिए आया हूँ जिसके सुनने का अधिकार सिवाय तुम्हारे और किसी को नहीं है।

कुछ सोच कर लाडिली वहॉ से हट गई और कुछ दूर जाकर तेजसिह की तरफ देखने लगी मानों वह तेजसिंह की बात सुनने के लिए तैयार हो। तेजसिह लाडिली के पास गए और बटुए में से एक चीठी निकाल उसके हाथ में देकर बोले, इसे जल्द पढ लो देखो मायारानी को इसका हाल न मालूम हो।"

लाडिली ने बड गौर से वह चीठी पढी और इसके बाद टुकड़े टुकड़े कर फेंक दी।

तेज–इसका जवाब ?

लाडिली–केवल इतना ही कह देना कि 'बहुत अच्छा'।

अब तेजसिह को ठहरने की कोई जरूरत न थी। उन्होंने उत्तर का रास्ता लिया मगर घूम घूम कर देखते जाते थे कि पीछे कोई आता तो नहीं। तेजसिह के जाने बाद मायारानी ने लाडिली से पूछा वह चीठी किसकी थी और उसमें क्या लिखा था ? लाडिली ने असल भेद तो छिपा रक्खा मगर कोई विचित्र बात गढ कर उस समय मायारानी की दिलजमई कर दी।

पॉचवॉ बयान

पाठकों को याद होगा कि भूतनाथ को नागर ने एक पेड़ के साथ बाध रक्खा है। यद्यपि भूतनाथ ने अपनी चालाकी और तिलिस्मी खजर की मदद से नागर को बेहोश कर दिया मगर देर तक उसके चिल्लाने पर भी वहॉ कोई उसका मददगार न पहुँचा और नागर फिर होश में आकर उठ बैठी।

नागर–अब मुझे मालूम हुआ कि तेरे पास भी एक अद्भूत वस्तु है।

भूत–जो अब तुम्हारी होगी।

नागर–नहीं जिसके छूने से मै बेहोश हो गई उसे अपने पास क्योंकर रख सकती हूँ ? मगर मालूम होता है कि कोई ऐसी चीज भी तेरे पास जरूर है जिसके सबब से इस खजर का तुझ पर असर नहीं होता। खैर मै तेरा यह तीसरा कसूर भी माफ करूँगी यदि तू यह खजर मुझे दे दे और वह दूसरी चीज भी मेरे हवाले कर दे जिसके सबब से इस खजर का असर तुझ पर नहीं होता।

भूत–मगर मुझे क्योंकर विश्वास होगा कि तुमने मेरा कसूर माफ किया।

नागर–और मुझे क्योंकर विश्वास होगा कि तूने वास्तव में वही चीज मुझे दी जिसके सबब से खजर की करामात से तू बचा हुआ है ?

भूत–बेशक मै वही चीज तुम्हें दूगा, और तुम आजमाने के बाद मुझे छोड सकती हो।

नागर–मगर ताज्जुब नहीं कि आजमाते आजमाते मैं फिर बेहोश हो जाऊँ क्योंकि तू धोखा देने में मुझसे किसी तरह कम नहीं हो।

भूत–इसका जवाब तुम खुद समझ सकती हो !

नागर–हॉ ठीक है यदि मैं थोडी देर के लिए बहोश भी हो जाऊँगी तू मेरा कुछ कर नहीं सकता क्योंकि पेड के साथ बधा हुआ है और तेरे हाथ पैर भी खुले नहीं हैं।

भूत–और मेरे चिल्लाने से भी यहॉ कोई मददगार न पहुँचेगा।

नागर–हॉ इसका प्रमाण भी

कहते कहते नागर रुक गई क्योंकि पत्तों के खडखडाने की आवाज उसने सुनी और किसी के आने का उसे शक हुआ। नागर ने पीछे घूम कर दखा तो कमलिनी पर नजर पडी जो नागर के दिए घोडे पर सवार इसी तरफ आ रही थी। कमलिनी इस समय भी उसी सूरत में थी जिस सूरत में नागर के यहॉ गई थी और उसका पहिचानना मुश्किल था मगर भूतनाथ की जुबानी नागर को पता लग चुका था इसलिए उसने कमलिनी को तुरत पहिचान लिया और भूतनाथ को उसी तरह छोड फुर्ती से घोड़े पर सवार हो गई। कमलिनी भी पास पहुँची और नागर की तरफ देख कर बोली–

कम–तुझे तो विश्वास हो गया होगा कि मै मिर्जापुर चली गई !

नागर–बेशक तुमने मुझे धोखा दिया खैर अब मेरे हाथ से बचकर कहॉ जा सकती हो ? यद्यपि तुम मायारानी की बहिन हो और इस सबब से मुझे तुम्हारा अदब करना चाहिए मगर तुम्हारी बुराइयों पर ध्यान देकर मायारानी ने हुक्म दे रक्खा है कि जो कोई तुम्हारा सिर काट कर उनके पास ले जायेगा वह मुँह मागा इनाम पाएगा अस्तु अब मैं तुम्हें किसी तरह छोड नहीं सकती, हॉ अगर तुम खुशी से मायारानी के पास चली चलो तो अच्छी बात है !

कम–(मुस्कुरा कर) ठीक है मालूम होता है कि तू अभी तक अपने को अपने मकान में मौजूद समझती है और चारों तरफ अपने नौकरों को देख रही है।

नागर–(कुछ शर्मा कर) मैं खूब जानती हूँ कि इस मैदान में मैं अकेली हूँ लेकिन यह भी देख रही हूँ कि तुम्हारे साथ भी कोई दूसरा नहीं है। अगर तुम अपने को हर्बा चलाने और ताकत में मुझसे बढ कर समझती हो तो यह तुम्हारी भूल है और इसका फैसला हाथ मिलाने ही स हो सकता है (हाथ बढाकर) आइए !

कम–(हॅस कर) वाह तू समझती है कि मुझे उस अगूठी की खबर नहीं जो तेरे इस बढे हुए हाथ में देख रही हूँ, अच्छा ले !

अच्छा ले कह कर कमलिनी ने दिखा दिया कि उसमें कितनी तेजी और फुर्ती है। घोडा आगे बढाया और तिलिस्मी खजर निकाल कर इतनी तेजी के साथ नागर के हाथ पर रख दिया कि वह अपना हाथ हटा भी न सकी और खजर के तासीर से बदहवास हाकर जमीन पर गिर पडी। कमलिनी ने घोडे से उतर कर भूतनाथ को कैद से छुटटी दी और कहा 'वाह तुम इतने बडे चालाक होकर भी इसके फन्दे में आ गये !'

भूत–मैं इसके फदे में न आता यदि इस अगूठी का गुण जानता जो इसकी उगली में चमक रही है वास्तव में यह अनमोल वस्तु है और कठिन समय पर काम दे सकती है।

कम–इस कम्बख्त के पास यही तो एक चीज है जिसके सबब से मायारानी की ऑखों में इसकी इज्जत है। इसके जहर से कोई बच नहीं सकता, हॉ यदि यह चाहे तो जहर उतार भी सकती है। न मालूम यह अगूठी और इसका जहर उतारने की तर्कीब मनोरमा ने कहॉ से पाई।

भूत–मायारानी स और उससे क्या सम्बन्ध ?

कम–मनोरमा उसकी सखियों में सब से बडा दर्जा रखती है और वह इस कम्बख्त को अपनी बहिन से बढ़ के मानती है। यह अगूठी भी मनोरमा ही की है।

भूत–तो मायारानी ने यह अगूठी क्यों न ले ली ? उसके तो बडे काम की चीज थी !

कम– उसको भी मनोरमा ने ऐसी ही अगूठी बना दी है और जहर उतारने की दवा भी तैयार कर दी है मगर इसके बनाने की तर्कीब नहीं बताती।

भूत–खैर अब यह अगूठी आप ले लीजिए।

कम–यद्यपि यह मेरे काम की चीज नहीं है वल्कि इसका अपने पास रखने में मैं पाप समझती हूँ तथापि जव तक मायारानी से खटपट चली जाती है तव तक यह अगूठी अपने पास जरूर रक्खूगी (तिलिस्मी खजर की तरफ इशारा कर के) इसके सामने यह अगूठी कोई चीज नहीं है।

भूत–वेशक वेशक जिसके पास यह खजर है उसे दुनिया में किसी चीज की परवाह नहीं और वह अपने दुश्मन से चाहे वह कैसा जवरदस्त क्यों न हो कभी नहीं डर सकता। आपने मुझ पर वडी कृपा की जो ऐसा खजर थोड़े दिन के लिए मुझे दिया। आह वह दिन भी कैसा होगा जिस दिन यह खजर हमेशा अपने पास रखने की आज्ञा आप मुझे देंगी।

कम–(मुस्करा कर) खैर वह दिन आज ही समझ लो मैं हमेशे के लिए यह खजर तुम्हें देती हूँ, मगर नानक के लिए एसा करने की सिफारिश मत करना।

भूतनाथ ने खुश होकर कमलिनी को सलाम किया। कमलिनी ने नागर की उँगली से जहरीली अगूठी उतार ली और उसके वटूए में से खोज कर उस दवा की शीशी भी निकाल ली जो उस अगूठी के भयानक जहर को वात की वात में दूर कर सकती थी। इसके वाद कमलिनी ने भूतनाथ से कहा 'नागर को हमारे अद्भुत मकान में ले जाकर तारा के सुपुर्द करो और फिर मुझसे आकर मिलो। मैं फिर वहीं अर्थात् मनोरमा के मकान पर जाती हूँ। अपने कागजात भी उसके वटुए में से निकाल लो और इसी समय उन्हे जला कर सदैव के लिए निश्चिन्त हो जाओ।"

छठवॉ बयान

मायारानी का डेरा अभीं तक खास वाग (तिलिस्मी वाग) में है। रात आधी से ज्यादे जा चुकी है चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है पहरे वालों के सिवाय सभी को निद्रादेवी ने वेहोश करके डाल रक्खा है मगर उस वाग में दो औरतों की ऑखों में नींद का नाम निशान भी नहीं। एक तो मायारानी की छोटी वहिन लाडिली जो अपने सोने वाले कमरे में मसहरी पर पडी कुछ सोच रही है और थोडी थोडी दर पर उठ कर वाहर निकलती और सन्नाटे की तरफ ध्यान देकर लौट जाती है मालूम होता है कि वह मकान या वाग के वाहर जाकर किसी से मिलने का मौका ढूंढ रही है और दूसरी मायारानी जो निद्रा न आने के कारण अपने कमरे में टहल रही है' उसे भी तरह तरह के ख्यालों ने सता रक्खा है। कभी कभी उसका सिर हिला जाता हे जो उसके दिल की परेशानी को पूरी तरह से छिपा रहने नहीं देता उसके हांठ भी कभी कभी अलग होकर दिल का दर्वाजा खोल देते है जिससे दिल के अन्दर कैद रहने वाले कई भेद शब्द रूप होकर धीरे से वाहर निकल पडते है।

जव चारों तरफ अच्छी तरह सन्नाटा हो गया तो लाडिली ने काले कपडे पहिरे और ऐयारी का बटुआ कमर से लगाने वाद कमरे के बाहर निकल कर इधर उधर टहलना शुरू किया। वह उस कमरे के पास आई जिसके अन्दर मायारानी तरद्दुद और घवराहट से निद्रा न आने के कारण टहल रही थी। लाडिली छिप कर देखने लगी कि मायारानी क्या कर रही है। थोडी देर के वाद मायारानी के मुँह से निकले हुए शब्द लाडिली ने सुने और वे शब्द ये थे–

वह इस रास्ते को जानता है वह भेद जिसे लाडिली नहीं जानी आह धनपत की मुहब्बत ने

इन शब्दों को सुन कर लाडिली घवडा गई और वेचैनी से अपने कमरे में लौट आने के लिए तैयार हुई मगर उसके दिल ने उसे वहाँ से लौटने न दिया इच्छा हुई कि मायारानी के मुँह से और भी कोई शब्द निकले तो सुने परन्तु इसके वाद मायारानी कुछ ज्यादे वेचैन मालूम हुई और अपनी महसरी पर जाकर लेट रही। आधी घडी से ज्यादे न बीती थी कि मायारानी की सास ने लाडिली को उसके सो जाने की खबर दी और लाडिली वहाँ से लौट कर वाग में टहलने लगी। घूमती फिरती और अपने को पेडों की आड में वचाती हुई वह वाग के पिछले कोने में पहुँची जहाँ एक छोटा सा मगर मजवूत वुर्ज वना था। इसके अन्दर जाने के लिए छोटा सा लोहे का दर्वाजा था जिसे उसने धीरे से खोला और अन्दर जाने के वाद फिर वन्द कर लिया। भीतर विल्कुल अँधेरा था। वटुए में से सामान निकाल कर मोमवती जलाई और उस कोठरी की हालत अच्छी तरह देखने लगी। यह वुर्ज वाली कोठरी वर्षो से ही वन्द थी और इस सवव से इसके अन्दर मकडों ने अच्छी तरह अपना घर वना लिया था मगर लाडिली ने इस कोठरी को गन्दी हालत पर कुछ ध्यान न दिया। इस कोठरी की जमीन चौखूटे पत्थरों से वनी हुई थी और छत में छोटे छोटे दो तीन सूराख थे जिनमें से आसमान में जडे हुए तारे दिखाई दे रहे थे। पहिले तो लाडिली इस विचार में पडी कि वहुत दिनों से वन्द रहने के कारण इस कोठरी की हवा खराव होकर जहरीली हो गई होगी शायद किसी तरह का नुकसान पहुँचे मगर छत के सूराखों को देख निश्चिन्त हो गई और मोमवत्ती एक किनारे जमा कर जमीन पर बैठ गई। आधी घडी तक वह सोच विचार में पडीरही इसके वाद

हल्की सी आवाज के साथ कोन की तरफ जमीन का एक चौखूटा पत्थर किवाड के पल्ले की तरह खुल कर अलग हो गया और नीचे से अपनी असली सुरत में कमलिनी निकल कर लाडिली क सामने खडी हो गई। कमलिनी को देखते ही लाडिली उठ खडी हुई और वडी मुहब्वत से उसके साथ लिपट कर रोन लगी तथा कमलिनी की ऑखें भी आसू की बूँदें गिराने लगीं कुछ देर वाद दोनों अलग हुई और जमीन पर बैठ कर वातचीत करने लगीं।

लाडिली--मेरी प्यारी वहिन इस समय मेरी खुशी का अन्दाजा कोई भी नहीं कर सकता। मुझे तो इस बात का वडा ही रज था कि तुमने मुझे अपने दिल से मुला दिया जिसकी आशा कदापि न थी मगर आज शाम को तुम्हारे हाथ की लिखी हुई उस चीठी ने मुझमें जान डाल दी जो तेजसिह के हाथ मुझ तक पहुँचाई गइ थी।

कम--नहीं नहीं अभी तक मै तुझे उतना ही प्यार करती हूँ जितना यहॉ रहने पर करती थी परन्तु इस समय आशा कम थी कि मेरे लिखे अनुसार यहॉ आकर तू मुझसे मिलेगी क्योंकि वडी वहिन मायारानी मेरी जान की ग्राहक हो रही है और तू पूरी तरह उसक कब्जे में है।

लाडिली--प्यारी बहिन चाहे मायारानी का दिल तुम्हारी दुश्मनी से भरा हुआ क्यों न हो मगर मरा दिल तुम्हारी मुहब्वत से िनी तरह खाली नहीं हो सकता। तुम्हारी चीठी पाते ही मैं बेचैन हो गई और हजारों आफतों की तरफ ध्यान न देकर बेखटके यहॉ वली आई। क्या अव भी तुम्हें

कम--हॉ हॉ मुझे विश्वास है और मै खूव जानती हूँ कि अगर तेरे दिल में मेरी मुहब्बत न होती तो तू मेरे लिखने पर यकायक यहॉ न आती।

लाडिली--मुझे इस वात की शिकायत करने का मौका आज मिला कि तुमने इस घर को तिलाजुली देते समय अपने इरादे से मुझे वेखवर रक्खा।

कम--ता क्या मेरा इरादा जानन पर तू मेरा साथ देती ?

लाडिली--(जोर दकर) जरूर साथ देती हाय यहॉ रह कर जैसी तकलीफ में दिन काट रही हूँ वह मेरा ही जी जान रहा है। ऐसे ऐसे भयानक काम मुझसे लिए जाते है कि जिसे मै मुख्तसर में कह नहीं सकती लाचार हो कर और झख मार कर सव कुछ करना पडता है क्योंकि इस वात को मै अच्छी तरह जानती हूँ कि मायारानी के गुस्से मे पड़ कर मै अपनी जान भारतवर्ष क किसी घने जगल में छिप कर भी नहीं बचा सकती।

कम--इसका सबव यही है कि तू तिलिस्मी हाल से बिल्कुल बेखबर और भोली है बल्कि वास्तव में रामभोली है।

लाडिली--(चौंक कर) क्या तुम जानती हो कि मै रामभोली वनने पर लाचार की गई थी ?

कम--मुझे अच्छी तरह मालूम है अमी तक नानक मेरे साथ रह कर मेरा काम कर रहा है।

लाडिली--हाय जव वह तुम्हारे साथ है तो जरूर एक दिन सामना होगा। उस समय शर्म से मेरी ऑखें ऊँची न होंगी उस वेचारे के साथ मैंने वडी बुराई की।

कम--लेकिन मै खूव अच्छी तरह जानती हूँ कि इसमें तेरा कोई कसूर नहीं। खैर इस बात को जाने दे मुझे तेरी मुहब्वत यहॉ तक खैच लाई है मैं इस समय यह पूछने आई हूँ कि अव तेरा क्या इरादा है क्योंकि इस तिलिस्म की उम्र अव तमाम हो गई और मायारानी अपने बुरे कर्मो का फल मोगा ही चाहती है।

लाडिली--(हाथ जोड कर) मैं यही चाहती हूँ कि तुम मुझे अपने साथ रक्खो जिसमें मायारानी का मुँह देखना नसीव न हो। मैं जानती हूँ कि यह तिलिस्म अव टूटा ही चाहता है क्योंकि इधर थोडे दिनों से बड़ी वड़ी अद्‌भुत बातें देखने में आ रही हैं जिनसे खुद मायारानी की अक्ल चक्कर में है, मगर शक है तो इतना ही कि तिलिस्म तोड़ने वाले कुँअर इन्दजीतसिह और आनन्दसिंह इस समय मायारानी के कैदी हो रहे है और कल उन दोनों का सिर जरूर काटा जायगा।

कम--यह बात मुझे भी मालूम है मगर सवेरा होने के पहिले ही मै उन दोनों को छुडा कर ले जाऊँगी।

लाडिली--यदि ऐसा हो तो क्या बात है। वे दोनों कैसे नेक और खूबसूरत है। जिस समय मैंने आनन्दसिह को देखा।

इतना कह कर लाडिली चुप हो रही उसकी ऑखें नीची हा गई और उसके गालों पर शर्म की सुर्खी दौड गई। कमलिनी समझ गई कि यह आनन्दसिह को चाहती है।

कम--मगर उन दोनों को छुडान के लिए कुछ तुझसे भी मदद चाहती हूँ।

लाडिली--तुम्हारी आज्ञा मानने के लिए मै हर तरह से तैयार हूँ।

कम--तू उस कैदखाने की ताली मुझे ला दे जिसमें दोनों कुमार कैद है।

लाडिली—मै उद्योग कर सकती हू, मगर वह तो हरदम मायारानी की कमर में रहती है !

कम—उसके लेने की सहज तर्कीब मै बताती हूँ।

लाडिली—क्या ?

कम—(कमर से तिलिस्मी खजर निकाल और दिखा कर) यह तिलिस्म की सौगात है, हाथ में लेकर जब इसका कब्जा दबाया जायगा तो बिजली की सी चमक पैदा होगी जिसके सामने किसी की ऑख खुली नहीं रह सकती। इसके अतिरिक्त इसमें और भी दो गुण हैं एक तो यह कि जिसके बदन से यह लगा दिया जाय उसके बदन में बिजली दौड़ जाती है और वह तुरत बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ता है और दूसरे यह हर एक चीज को काट डालने की ताकत रखता है।

कमलिनी ने खजर का कब्जा दबाया। उसमें से ऐसी चमक पैदा हुई कि लाडिली ने दोनों हाथों से आँखें बन्द कर लीं और कहा बस बस इस चमक को दूर करो तो ऑखें खोलूँ !"

कम—(कब्जा ढीला करके) लो चमक बन्द हो गई ऑखें खोलो।

लाडिली—(ऑखें खोल कर) मेरे हाथ में दो तो मै भी कब्जा दबा कर देखूँ मगर नहीं तुम तो कह चुकी हो कि यह जिसके बदन से छुलाया जायगा वह बेहोश हो जायगा तो मै इसे कैसे ले सकूँगी और तुम पर इसका असर क्यों नहीं होता ?

हम ऊपर लिख आये है कि कमलिनी के कमर में दो तिलिस्मी खजर थे और उनके जोड़ की दो अगूठियाँ भी उसकी उगलियों में थीं। उसने एक अँगूठी लाडिली की उँगली में पहिरा कर उसका गुण अच्छी तरह समझा दिया और कह दिया कि जिसके हाथ में यह अगूठी रहेगी केवल वही इस खजर को अपने पास रख सकेगा।

लाडिली—जब ऐसी चीज तुम्हारे पास है तो वह ताली तुम स्वय उससे ले सकती हो।

कम—हाँ मैं यह काम खुद भी कर सकती हूँ मगर ताज्जुब नहीं कि मायारानी के कमरे तक जाते आते मुझे कोई देख ले और गुल करे तो मुशिकल होगी। यद्यपि मेरा कोई कुछ कर नहीं सकता और मै इस खजर की बदौलत सैकड़ों को मार कर निकल जा सकती हूँ, मगर जहाँ तक बिना खून खराबा किए काम निकल जाय तो उत्तम ही है।

लाडिली—हा ठीक है तो अब विलम्ब न करना चाहिए।

कम—तो फिर जा मै इसी जगह बैठी तेरी राह देखूँगी।

खजर के जोड की अगूठी हाथ में पहिरने बाद लाडिली ने तिलिस्मी खजर ले लिया और बुर्ज का दरवाजा खोल वहाँ से रवाना हुई। कमलिनी को आधे घण्टे से ज्यादे राह न देखना पडा इसके भीतर ही ताली लिए हुए लाडिली आ पहुँची और अपनी बडी बहिन के सामने ताली रख कर बोली इस ताली के लेने में कुछ भी कठिनाई न हुई। मुझे किसी ने भी न देखा। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था मायारानी बेखबर सो रही थी ताली लेते समय वह जाग न उठे इससे यह तिलिस्मी खजर एक दफे उसके बदन से लगा देना पड़ा बस तुरत ही उसका बदन कॉप उठा मगर वह आँखें न खोल सकी मुझे विश्वास हो गया कि वह बेहोश हो गई। बस मै ताली लेकर चली आई मगर अब यहाँ ठहरना उचित नहीं।

कम—हॉ अब यहाँ से चलना और उन कैदियों को छुडाना चाहिए।

लाडिली—मगर उन कैदियों को छुडाने के लिए तुमको इसी बाग की राह कैदखाने तक जाना होगा !

कम—नहीं वहाँ जाने के लिए दूसरी राह भी है जिसे मै जानती हूँ !

लाडिली—(ताज्जुब से कमलिनी का मुँह देख के) जीजाजी यहाँ के बहुत से रास्तों और सुरगों तथा तहखानों को जानते थे मालूम होता है तुमने उन्हीं से इसका हाल जाना होगा ?

कम—नहीं यहाँ की बहुत सी बातें किसी दूसरे ही सबब से मुझे मालूम हुई जिसे सुन कर तू बहुत ही खुश होगी हाँ यदि जीजाजी हम लोगों से जुदा न किए जाते तो यहाँ की अजीब बातों के देखने का आनन्द मिलता। मायारानी को भी यहाँ के भेद अच्छी तरह मालूम नहीं हैं।

लाडिली—जीजाजी हम लोगों से जुदा किये गये इसका मतलब मै नहीं समझी।

कम—क्या तू समझती है कि गोपालसिहजी (मायारानी के पति) अपनी मौत से मरे ?

लाडिली—(कुछ सोच कर) मुझे तो यही विश्वास है कि उन्हें जहर दिया गया। मैने स्वय देखा कि मरने पर उनका रग काला हो गया था और चेहरा ऐसा बिगड़ गया था कि मै पहिचान न सकी। हाय हम दोनों बहिनों पर उनकी बडी ही कृपा रहती थी !

कम–उनकी कृपा किस पर नहीं रहती थी ! (कुछ सोच कर) खैर आज मैं तुझे इस बाग मे चौथे दर्जे में ले चल कर एक तमाशा दिखलाऊँगी।

लाडिली–(ताज्जुब से) क्या चौथे दर्जे मे तुम जा सकती हो ?

कम–हाँ मै यहाँ के भेदों को जान गई हूँ और सब जगह घूम फिर सकती हूँ।

लाडिली–अहा तब ता मै जरूर चलूँगी ! जीजाजी अक्सर कहा करते थे कि इस बाग के चौथे दर्जे में अगर कोई जाय तो उसे मालूम हो कि दुनिया क्या चीज है और ईश्वर की सृष्टि मे कैसी विचित्रता दिखाई दे सकती है।

कम–अच्छा अब चल कर पहिले कैदियों को छुड़ाना चाहिए।

इतना कह कर कमलिनी उठी और मोमबती हाथ में लिए हुए उस सुरग के मुहाने पर गई जिसका मुँह चौखूटे पत्थर के हट जाने से खुल गया था और जिसमें से वह कुछ ही दर पहिले निकली थी। नीचे उतरने के लिए सीढियाँ मौजूद थीं दानों वहिनें नीचे उतर गई। आखिरीसीढी पर पहुँचने के साथ ही वह चौखूटा पत्थर एक हलकी आवाज के साथ अपने ठिकाने पहुँच गया और उस सुरग का मुँह बन्द हो गया।

॥ सातवाँ भाग समाप्त ॥

* श्री *

चन्द्रकान्ता सन्तति

आठवाँ भाग

पहिला बयान

मायारानी की कमर मे स ताली लेकर जब लाडिली चली गई ता उसके घटे भर बाद मायारानी होश में आ कर उठ बैठी। उसके बदन में कुछ दर्द हो रहा था जिसका सबब वह समझ नहीं सकती थी। उसे फिर उन्हीं खयालों ने आकर घर लिया जिनकी बदौलत दा घण्ट पहिले वह बहुत ही परेशान थी। न वह बैठ कर आराम पा सकती थी। और न ही काई उपन्यास इत्यादि पढकर ही अपना जी बहला सकती थी। उसने अपनी आलमारी में से नाटक की किताब निकाली और शमादान क पास जाकर पढना शुरू किया पर नान्दी पढते पढते ही उसकी आखों पर पलकों का पर्दा पड गया और फिर आधे घण्ट तक वह गम्भीर चिन्ता में डूबी रह गई इसके बाद किसी क आन की आहट ने उस चौका दिया और वह घूम कर दर्वाज की तरफ देखन लगी। धनपत उसके सामन जाकर खडी हो गइ और बाली–

धनपत–मरी प्यारी रानी मै दखती हूँ कि इस समय तू बहुत ही उदास और किसी गम्भीर चिन्ता में डूबी हुई है शायद अभी तक तेरी आखों में निद्रादेवी का डेरा नहीं पड़ा।

माया–बशक ऐसा ही है मगर तर चहर पर भी

धनपत–मै ता बहुत घबरा गइ हूँ क्योकि अब यह बात लोगो का मालूम हुआ चाहती है मै खूब जानती हू कि तुम्हारी

कट्टर रिआया उसे जी जान स

माया–वस वस आग कहन की काई आवश्यकता नहीं इसी साच न ता मुझे बेकाम कर दिया है।

धनपत–मै थाड दिनों के लिए तुमस जुदा हा जाना उचित समझती हूँ और यही कहन के लिए मै यहा तक आई हू।

माया–(घवडा कर) तुझ क्या हा गया है ? मुँह से वात भी सम्भाल कर नहीं निकालती !

धनपत–हॉ हॉ मुझस भूल हो गई इस समय तरद्दुद और डर न मुझे बेकाम कर रक्खा है।

माया–अच्छा ता तू मुझस जुदा हा कर कहाँ जायगी ?

धनपत–जहा कहा।

माया–(कुछ साच कर) अभी जल्दी न करो इन्दजीतसिह और आनन्दसिह कब्ज मे आ चुक है सूर्योदय क पहिल ही मै उनका काम तमाम कर दूगी।

धनपत–मगर उसका क्या वन्दोवस्त किया जायगा जिसक विषय मं चण्डूल न तर कान म

माया–आह उसकी तरफ स भी अव मुझे निराशा हा गई वह वड़ा जिद्दी है।

धनपत–तो क्यों नहीं उसकी तरफ से निश्चित हा जाती हा ?

माया–हॉ अव यही हागा।

धनपत–फिर दर करन की क्या जरूरत है ?

माया–मै अभी जाती हू क्या तू भी मर साथ चलगी !

धनपत–मै चलन क लिए तैयार हू, मगर न मालूम उस (चण्डूल का) यह वात क्योंकर मालूम हा गइ।

माया–खैर अव चलना चाहिए।

अव मायारानी का ध्यान कैदखान की ताली पर गया। अपनी कमर मं ताली न दख कर वहुत हैरान हुइ। थोडी देर क लिए वह अपन को विल्कुल ही भूल गइ पर आखिर एक लम्बी सास लेकर धनपत स वाली –

माया–आफत आने की यह दूसरी निशानी है !

धनपत–सा क्या ? मरी समझ में कुछ भी न आया कि यकायक तेरी अवस्था क्या वदल गइ और किस नई घटना ने आकर मुझे घर लिया।

माया–कैदखान की ताली जिस मै सदा अपनी कमर म रखती थी गायव हा गई।

धनपत–(घवडा कर) कहीं दूसरी जगह न रख दी हा।

माया–नहीं नहीं जरूर मर पास ही थी। चल लाडिली से पूछूँ शायद वह इस विषय में कुछ कह सक।

मायारानी धनपत का साथ लिए लाडिली के कमर मे गइ मगर वहा लाडिली थी कहाँ जा मिलती। अव उसकी घवराहट का कोइ हदद न रहा। एक दम वाल उठी वेशक लाडिली न धाखा दिया।

धनपत–उसे ढूढना चाहिए।

माया–(आसमान की तरफ देख कर और लम्बी सास लेकर) आह यह पहर भर के लगभग रात जो वाकी है मेर लिए वडी ही अनमोल है। इसे मै लाडिली की खाज में व्यर्थ नहीं खोना चाहती। इतने ही समय में मुझे उस जिद्दी के पास पहुँचना और उसका सिर काट कर लौट आना है। कैदियों से भी ज्यादे तरद्दुद मुझे उसका है। हाय अभी तक वह आवाज मर कानों मं गूज रही है जा चण्डूल ने कही थी खैर वहाँ जात जाते कैदखाने का भी देखती चलूगी। (जाश में आकर) कैदी चाहे कैदखाने के वाहर हा जाय मगर इस वाग की चहारदीवारी का नहीं लाघ सकते। जा विहारीसिह और हरनामसिह को वहुत जल्द वुला ला।

धनपत दौडी हुई गई और थोडी ही देर में दोनों एयारों को साथ लिए हुए लौट आई। वे दोनों एयारी के सामान स दुरुस्त और हर काम के लिए मुस्तैद थे। यद्यपि विहारीसिह के चेहरे का रग अच्छी तरह साफ नहीं हुआ था तथापि उसकी काशिशों न उसके चेहरे की सफाई आधी स ज्यादे कर दी थी आशा थी कि दा ही एक दिन में वह आइने में अपनी असली सूरत देख लेगा।

कैदखाने का रास्ता पाठकों को मालूम है क्योंकि तेजसिह जव विहारीसिह की सूरत में आए थे तो मायारानी क साथ कैदियों को देखन गये थे।

लाडिली के कमर में स दस वारह तीर और कमान ले क धनपत तथा दोनों ऐयारों को साथ लिए हुए मायारानी सुरग में घुसी। जव कैदखाने के दर्वाजे पर पहुँची तो दर्वाजा ज्यों का त्यों वन्द पाया। कैदखाने की ताली लाडिली के गायव होने का हाल कह के विहारीसिह और हरनामसिह को ताकीद कर दी कि जव तक मै लौट कर न आऊ तव तक तुम दोनों वडी होशियारी से इस दर्वाजे पर पहरा दो। इसके वाद धनपत को साथ लिए हुए मायारानी वाग के तीसरे दर्जे

मे उसी रास्ते से गई जिस राह से नजसिह भज गये थे।

हम पहिले लिख आय है कि वाग के तीसरे दर्जे में एक वुर्ज है और उसके चारों तरफ वहुत से मकान कमरे और कोठरियॉ है। वाग में एक छाटा सा चश्मा वह रहा था जिसमें हाथ भर से ज्यादे पानी कहीं नहीं था। मायारानी उसी चश्मे के किनारे किनारे थोडी दूर तक गई यहॉ तक कि वह एक मौलसिरी के पेड स नीचे पहुची जहॉ सगमर्मर का एक छोटा सा चबूतरा वना हुआ था और उस चबूतरे पर पत्थर की मूरत आदमी के बरावर की वैठी हुई थी। रात पहर भर से कम वाकी थी। चन्दमा धीरे धीरे निकल कर अपनी सुफेद रोशनी आसमान पर फैला रहा था। मायारानी ने उस मूरत की कलाई पकड कर उमेठी साथ ही मूरत ने मुँह खोल दिया। मायारानी ने उसके मुँह में हाथ डाल कर कोई पेंच घुमाना शुरु किया। थोडी दर में चबूतरे क सामने की तरफ का एक वडा सा पत्थर हलकी आवाज के साथ हट कर अलग हा गया और नीच उतरन के लिए सीढियॉ दिखाई दी। अपने पीछे पीछे धनपत को आने का इशारा करके मायारानी उस तहखान मे उतर गइ। यद्यपि तहखाने में अधेरा था मगर मायारानी ने टटोल कर एक आले पर से लालटन और उसके बालने का सामान उतारा और वत्ती वाल कर चारो तरफ दखने लगी। पूरव तरफ सुरग का एक छोटा सा दर्वाजा खुला हुआ था दानों उसके अन्दर घुसीं और सुरग में चलने लगीं। लगभग सौ कदम के जाने बाद वह सुरग खत्म हुई और ऊपर चढन के लिए सीढियॉ दिखाई दीं। दानों औरतें ऊपर चढ गई और उस वुर्ज के निचल हिस्से में पहुँची जा वहुत से मकानों स घिरा हुआ था। यहॉ भी उसी तरह का चबूतरा और उस पर पत्थर का आदमी वैठा हुआ था। वह भी किसी सुरग का दर्वाजा था जिसे मायारानी ने पहिली रीति से खोला। यह सुरग चौथे दर्जे में जाने के लिए थीं।

दोनों औरतें उस सुरग मे घुसीं। दो सौ कदम के लगभग जाने बाद वह सुरग खतम हुई और ऊपर चढने के लिए सीढियॉ नजर आई। दानों औरतें ऊपर चढ कर एक काठरी में पहुँची जिसका दर्वाजा खुला हुआ था। कोठरी के बाहर निकल कर धनपत और मायारानी के अपने को वाग के चौथे हिस्से मे पाया। इस वाग का पूरा पूरा नक्शा हम आगे चल कर खैंचेग यहॉ केवल मायारानी की कार्रवाई का हाल लिखते है।

काठरी स आठ दस कदम की दूरी पर पक्का मगर सूखा कूऑ था जिसके अन्दर लोहे की एक मोटी जजीर लटक रही थी। कूए के ऊपर डोल और रस्सा पडा था। डोल में लालटेन रख कर कूए के अन्दर ढीला और जव वह तह में पहुँच गया ता दोनों औरतें जजीर थाम कर कूए के अन्दर उतर गई। नीच कूए की दीवार के साथ छाटा सा दर्वाजा था जिस खाल कर धनपत को पीछे आने का इशारा करके मायारानी हाथ में लालटेन लिए हुए अन्दर घुसी। वहॉ पर छाटी छाटी कई काठरियॉ थीं। विचली कोठरी में जिसके आगे लाहे का जगला लगा हुआ था एक आदमी हाथ में फौलादी ढाल लिए टहलता हुआ दिखाई पडा। यहॉ बिल्कुल अधेरा था मगर मायारानी के हाथ वाली लालटेन ने उस कोठरी की हर एक चीज और उस आदमी की सूरत बखूवी दिखा दी। इस समय उस आदमी की उम्र का अन्दाज करना मुश्किल है क्योंकि रज और गम ने उसे सुखा कर काटा कर दिया है वडी वडी आखों क चारो तरफ स्याही दौड गई है और उसके चहर पर झुर्रियॉ पडी हुई हैं तो भी हर एक हालत पर ध्यान देकर कह सकते हें कि वह किसी जमाने में वहुत ही हसीन और नाजुक रहा होगा मगर इस समय कैद ने उसे मुर्दा वना रक्खा है। उसके वदन के कपडे विल्कुल फटे और मैले थे और वह बहुत ही मजहूल हा रहा था। काठरी के एक तरफ ताबे का घडा लोटा और कुछ खाने का सामान रक्खा हुआ था ओढने और विछाने के लिए दो कम्वल थे। कोठरी की पिछली दीवार में खिडकी थी जिसके अन्दर से वदबू आ रही थी।

मायारानी और धनपत को देख कर वह आदमी ठहर गया और इस अवस्था में भी लाल लाल ऑखें कर के उन दोनों की तरफ देखने लगा।

माया–यह आखिरी दफे मैं तेरे पास आई हूँ।

कैदी–ईश्वर करे ऐसा ही हो और फिर तेरी सूरत दिखाई न दे।

माया–अब भी अगर वह भेद मुझे वता दे तो तुझे छोड दूगी।

कैदी–हरामजादी कमीनी औरत दूर हो मेरे सामने से !!

माया–मालूम होता है वह भेद तू अपने साथ ले जायगा ?

कैदी–वेशक ऐसा ही है।

माया–यह ढाल तेर हाथ में कहाँ से आई ?

कैदी–तुझ चाण्डालिन को इस बात का जवाब मै क्यों दूँ ?

माया–मालूम होता है कि तुझे अपनी जान प्यारी नहीं है और अव तू मौत के पजे में पडा चाहता है !

कैदी–बेशक पहिले मुझे अपनी जान प्यारी न थी पाँच दिन पीछे भोजन करना मुझे पसन्द न था, कभी कभी तेरी सूरत देखने की बनिस्बत मौत को हजार दर्जे अच्छा समझता था मगर अब मै मरने के लिए तैयार नहीं हूँ।

माया–(हँस कर) तुझे मेरे हाथ से बचाने वाला कौन है ?

कैदी–(ढाल दिखा कर) यह !

धनपत–(मायारानी के कान में) न मालूम यह ढाल इसे क्योंकर मिल गई क्या चण्डूल यहाँ पहुँच तो नहीं गया ?

माया–(धनपत से) कुछ समझ में नहीं आता। यह ढाल भविष्य बुरा बता रही है !

धन–मेरा कलेजा डर के मारे काँप रहा है।

माया–(कैदी से) यह तुझे किसी तरह बचा नहीं सकती और मै तेरी जान लिए बिना नहीं जा सकती।

कैदी–खैर जो कुछ तू कर सके कर ले।

माया–तू बड़ा जिद्दी और बेहया है।

कैदी–हरामज़ादी की बच्ची बेहया तो तू है जो घड़ी घड़ी मेरे सामने आती है।

इस बात के जवाब में मायारानी ने एक तीर कैदी को मारा जिसे उसने बड़ी चालाकी से ढाल पर रोक लिया, दूसरा तीर चलाया वह भी बेकार हुआ तीसरा तीर चलाया, उससे भी कोई काम न चला। लाचार मायारानी कैदी का मुह देखने लगी।

कैदी–तेरे किए कुछ भी न होगा।

माया–खैर देखूँगी तू कब तक अपनी जान बचाता है।

कैदी–मेरी जान कोई भी नहीं ले सकता बल्कि मुझे निश्चय हो गया कि अब तेरी मौत आ गई।

इसका जवाब मायारानी कुछ दिया ही चाहती थी कि एक आवाज ने उसे चौंका दिया। कैदी की बात पूरी होने के साथ ही किसी ने कहा बेशक मायारानी की मौत आ गई !

दूसरा बयान

कैदखाने का हाल हम ऊपर लिख चुके है पुन लिखने की कोई आवश्यकता नही। उस कैदखाने में कई कोठरियाँ थीं जिनमें से आठ कोठरियों में तो हमारे बहादुर लोग कैद थे और बाकी कोठरियाँ खाली थी। कोई आश्चर्य नहीं यदि हमारे पाठक महाशय उन बहादुरों के नाम भूल गये हों जो इस समय मायारानी के कैदखाने में बेबस पड़े है अस्तु एक दफे पुन याद दिला देते है। उस कैदखाने में कुँअर इन्द्रजीतसिह, कुँअर आनन्दसिह तारासिह भैरोसिह देवीसिह के अतिरिक्त एक कुमारी भी थी जिसके मुख की सुन्दर आभा ने उस कैदखाने को उजाला कर रक्खा था। पाठक समझ ही गये होंगे कि हमारा इशारा कामिनी की तरफ है। यद्यपि वह ऐसी कोठरी मे बन्द थी जिसके अन्दर मर्दों की निगाह नहीं जा सकती थी तथापि कुअर अनन्दसिंह को इस बात पर ढाढ़स थी कि उनकी प्यारी कामिनी उनसे दूर नहीं है, मगर कुँअर इन्द्रजीतसिह के रज का कोई ठिकाना न था। वे कुछ भी नहीं जानते थे कि उनकी प्यारी किशोरी कहाँ और किस अवस्था में है।

इस कैदखाने से छत के सहारे शीशे की एक कन्दील लटक रही थी। उसी में मायारानी का एक आदमी रोज जाकर रोशनी ठीक कर देता था। ठीक कर देना हम इसलिए कहते है कि उस कैदखाने में अधेरा रहने के कारण दिन रात बत्ती जला करती थी और ठीक समय पर आदमी जाकर उसे दुरुस्त कर दिया करता था। खाने पीने का सामान आठ पहर में एक दफे कैदियों को दिया जाता था। कैदखाने की भयानक अवस्था लिखने मे विशेष समय नष्ट करना हम नही चाहते क्योंकि हमें किस्सा बहुत लिखना है और जगह कम है।

अब हम उस सध्या का हाल लिखते है जिस दिन मायारानी से और चण्डूल से बातचीत हुई थी या जब कमलिनी से लाडिली मिली थी। यों तो तहखाने के अन्दर दिन रात समान था और कैदियों को इस बात का ज्ञान बिल्कुल नहीं हो सकता था कि सूर्य कब उदय और कब अस्त हुआ तथापि बाहरी हिसाब से हमें समय लिखना ही पड़ता है।

सध्या होने के बाद एक आदमी कैदखाने में आया और कैदियों की तरफ देख कर बोला मायारानी की तरफ से इस समय आप लोगों के पास यह कहने के लिए मै आया हूँ कि पहर दिन चढने के पहिले ही आप लोग इस दुनिया से उठा दिए जायगे। इसके अतिरिक्त अपनी तरफ से अफसोस के साथ आपको इत्तिला देता हूँ कि राजा वीरेन्द्रसिह और रानी चन्द्रकान्ता को भी हमारी मायारानी ने गिरफ्तार कर लिया है। उन्हीं के सामने आप लोग मारे जायगे और इसके बाद उन दोनों की भी जान ली जायगी।

इस आदमी के आने के पहिले कैदी लोग सुस्त और उदास बैठे हुए थे मगर जब इस आदमी ने आकर ऊपर लिखी बातें कहीं तो सभी की अवस्था बदल गई। क्रोध से सभों का चेहरा लाल हो गया और बदन काँपने लगा लेकिन उस आदमी की बात का जवाब किसी ने भी कुछ न दिया।

कैदियों को सन्देशा देने के बाद मायारानी का आदमी उस कोठरी में गया जिसमें हथकड़ी और बेड़ी से बेबस बेचारी कामिनी कैद थी। थोड़ी ही देर बाद कामिनी को साथ लिए हुए वह आदमी बाहर निकला। उस समय सभों की निगाह उस बेचारी पर पड़ी। देखा कि रंज गम और दुःख के मारे वह सूख कर कांटा हो गई है, मालूम होता है मानों वर्षों से बीमार है सिर के बाल खुले और फैले हुए हैं साड़ी मैली और खराब हो गई है मगर भोलापन खूबसूरती और नजाकत ने इस अवस्था में भी उसका साथ नहीं छोड़ा है। उसके दोनों हाथ बंधे थे और वह बेड़ी के सबब से अच्छी तरह कदम नहीं उठा सकती थी।

सभों के देखते कामिनी का साथ लिए हुए मायारानी का आदमी कैदखाने के बाहर चला गया और कैदखाने का दर्वाजा फिर बन्द हो गया। ताली भरने की आवाज भी बहादुर कैदियों के कानों में पड़ी। यों तो यहां जितने कैदी थे सभी क्रोध के मारे कांप रहे थे मगर हमारे आनन्दसिंह की अवस्था कुछ और ही थी। एक तो अपने मां बाप का हाल सुनकर जोश में आ ही चुके थे दूसरे कामिनी को जो इस बेबसी के साथ कैदखाने के बाहर जाते देखा और भी उबल पड़े क्रोध सम्हाल न सके उठ के खड़े हो गये और जंगले वाली कोठरी में जिसमें कैद थे टहलने लगे। जिस जंगले वाली कोठरी में कुँअर इन्द्रजीतसिंह थे वह आनन्दसिंह के ठीक सामने थी और ऐयार लोग भी उन्हें अच्छी तरह देख सकते थे। टहलने के साथ आनन्दसिंह के पैर की जंजीर बोली जिससे सभों का ध्यान उनकी तरफ जा रहा।

इन्द्रजीत–आनन्द !

आनन्द–आज्ञा ?

इन्द्र–क्या यह बेबसी हम लोगों का साथ न छोड़ेगी !

आनन्द–बेशक छोड़ेगी अब हम लोग इस अवस्था में कदापि नहीं रह सकते। हम लोग जंगली शेर नहीं हैं जो जंगले के अन्दर बन्द पड़े रहें !

इन्द्रजीत–(खड़े होकर) हाँ ऐसा ही है यह लोहे की तार अब हमें रोक नहीं सकती !

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह ने इष्टदेव का ध्यान कर अपनी कलाई उमेठी और जोर करके हथकड़ी तोड़ डाली। बड़े भाई की देखादेखी आनन्दसिंह ने भी वैसा ही किया। हथकड़ी तोड़ने के बाद दोनों ने अपने पैरों की बेड़ियां खोली और तब जंगले के बाहर निकलने का उद्योग करने लगे। दोनों हाथों से लोहे का छड़ जो जंगले में लगा हुआ था पकड़ के और लात अड़ा के खींचने लगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि दोनों कुमार बड़े बहादुर और ताकतवर थे। छड़ टेढ़े हो होकर छेदों से बाहर निकलने लगे और बात की बात में दोनों शेर जंगले वाली कोठरी के बाहर निकल के खड़े हो गये। दोनों गले गले मिले और इसके बाद हर एक जंगले के छड़ों को निकाल कर दोनों भाइयों ने अपने ऐयारों को भी छुड़ाया और जोश में आकर बोले 'उद्योग से बढ़ के दुनिया में कोई पदार्थ नहीं !

आनन्द–ईश्वर चाहेगा तो अब थोड़ी देर में हम लोग इस कैदखाने के बाहर भी निकल जायंगे।

इन्द्रजीतसिंह–हाँ अब हम लोगों को इसके लिए भी उद्योग करना चाहिये।

भैरो–हम लोग जोर करके तहखाने का दर्वाजा उखाड़ डालेंगे और इसी समय कम्बख्त मायारानी के सामने जा खड़े होंगे।

ऐयारों को साथ लिए हुए दोनों भाई सदर दर्वाजे के पास गये जो बाहर से बन्द था। यह दर्वाजा चार अंगुल मोटे लोहे का बना था और इसकी मजबूत चूल भी जमीन में बहुत गहरी घुसी हुई थी इसलिए पूरे दो घण्टे तक मेहनत करने पर भी कोई नतीजा न निकला। क्रोध में आकर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने लोहे का छड़ जो जंगले में से निकला था उठा लिया और बाईं तरफ की दीवार जो चूना और ईंटों से बनी हुई थी तोड़ने लगे। उस समय ऐयारों ने दोनों भाइयों के हाथ से छड़ ले लिया और दीवार तोड़ना शुरू किया।

पहर भर की मेहनत से दीवार में इतना बड़ा छेद हो गया कि आदमी उसकी राह बखूबी निकल जाय। भैरोसिंह ने झांक कर देखा उस तरफ बिल्कुल अंधेरा था और इस बात का ज्ञान जरा भी नहीं हो सकता था कि दीवार के दूसरी तरफ क्या है। हम ऊपर लिख आये हैं कि इस कैदखाने में छत के सहारे शीशे की एक कन्दील लटकती थी। इस समय ऐयारों ने उसी कन्दील की रोशनी से काम लेना चाहा। तारासिंह ने भैरो के कन्धे पर चढ़ कर कन्दील उतार ली और उसे हाथ में लिए हुए उस सूराख की राह दूसरी तरफ निकल गये। इनके पीछे दोनों कुमार और ऐयार लोग भी गए। अब मालूम हुआ कि यह कोठरी है जो लगभग तीस हाथ के लम्बी और पन्द्रह हाथ से कम चौड़ी है। कुमार या ऐयार

लोग अगर विना राशनी के इस काठरी में आते तो जरूर दुख भोगते क्योंकि यहा जमीन वरावर न थी वीचोंवीच में एक कूँआ था और उसके चारों तरफ चार दर्वाजे वने हुए थे जिनके देखने से मालूम होता था कि यहाँ कइ तहखान है और ये दर्वाजे नहीं तहखानों के रास्ते है। इस समय उन दर्वाजों के पल्ले जो लकड़ी के थे अच्छी तरह देखने से मालूम हुआ कि नीचे उतरने के लिये सीढिया वनी हुई है और उस कूएं में भी लाहे की एक जजीर लटक रही थी। इसके अतिरिक्त चारो तरफ की दीवारें वरावर थीं अर्थात् किसी तरफ कोई दर्वाजा न था जिसे खोल कर ये लोग वाहर जाने की इच्छा करते।

इन्द–मालूम होता है कि यहाँ आने या यहा से जाने के लिए इन तहखानों के सिवाय कोई राह नही है।

आनन्द–मै भी यही समझता हू।

देवी–इन तहखानों मे उतर विना काम न चलेगा।

तारा–आज्ञा हो तो मैं राशनी लेकर एक तहखाने मे उतरू और देखू कि क्या है।

इन्द्रजीत–खैर जाओ कोई हर्ज नही।

आज्ञा पाकर तारासिंह एक तहखाने के मुह पर गये मगर जव नीचे उतरने लगे तो कुछ देख कर रुक गये। कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने रुकने का सवव पूछा जिसके जवाव मे तारासिंह ने कहा इस तहखाने मे राशनी मालूम होती है और धीरे धीरे वह राशनी तेज होती जाती है। मालूम होता है कि सुरग है और कोई आदमी हाथ मे वत्ती लिये इसी तरफ आ रहा है।

दोनों कुमार और ऐयार लाग भी वहाँ गये और झाक कर देखने लगे। थोडी देर मे दो कमसिन औरतें नजर पड़ी जो सीढी के पास आकर ऊपर चढने का इरादा कर रही थी। एक के हाथ में मोमवत्ती थी जिसे देखते ही कुमार ने पहिचान लिया कि यह कमलिनी है साथ में लाडिली भी थी मगर उसे पहिचानते न थे हा जव कैदी वन कर मायारानी के दवार में लाए गये थे तो मायारानी के वगल में वैठे हुए उसे देखा था और समझते थे कि वह भी इन लोगों की दुश्मन है। इस समय कमलिनी के साथ उसे देख कर कुमार को शक मालूम हुआ क्योंकि इन्द्रजीतसिंह कमलिनी को दोस्त समझते थे और दोस्त के साथ दुश्मन का होना वेशक खुटके की वात है।

कमलिनी जव सीढी के पास पहुची तो ऊपर रोशनी देख कर रुक गई साथ ही कुमार ने पुकार कर कहा डरो मत ऊपर चली आओ मैं हूँ इन्द्रजीतसिंह।

कमलिनी कुमार की आवाज पहिचान गई और लाडिली को साथ लिये ऊपर चली आई मगर दोनों कुमारों और उनके ऐयारों को यहाँ देख कर ताज्जुव करने लगी।

कमलिनी–आप लोग यहाँ कैसे आये?

इन्द्रजीतसिंह–यही वात मै तुमसे पूछने वाला था!

कमलिनी–मै तो आपको छुडाने के लिए आई हू मगर मालूम होता है कि मेरे आने के पहिले ही किसी ने पहुँच कर आप लोगों को छुडा दिया।

देवी–कोई दूसरा नही आया दोनों कुमारों ने स्वय अपनी अपनी हथकडी तोड डाली जगले का सींखचा खैंच कर वाहर निकल आये और हम लोगों को भी कैद से छुडाया इसके वाद दीवार तोड कर हम लोग अभी थोडी देर हुई इधर आये है!

कमलिनी–(हँसकर) वहादुर है यह न ऐसा करेंगे तो दूसरा कौन करेगा!

इन्द–हम एक वात तुमसे और पूछा चाहते है।

कमलिनी–आपका मतलव मैं समझ गई। (लाडिली की तरफ देख कर) शायद इसके वारे में आप कुछ पूछेंगे!

इन्द्रजीत–हाँ ठीक है क्योंकि इन्हें हमने उसके पास वैठे देखा था जिसके फरेव ने हमारी यह दशा की है, और लोगों की वातों से यह भी मालूम हुआ कि उसका नाम मायारानी है।

कमलिनी–वहुत दिनों तक साथ रहने पर भी आपको मेरा भेद कुछ मालुम नहीं हुआ मगर इस समय मैं इतना कह देना उचित समझती हू कि यह मेरी छोटी वहिन है और मायारानी वडी वहिन है। हम तीनों वहिनें है लेकिन अनवन होने के कारण मै उससे अलग हो गई और आज इसने भी उसका साथ छोड दिया। आज से पहले वह मेरी ही दुश्मन थी मगर आज से इसकी भी जिसका नाम लाडिली है जान की प्यासी हो गई मगर इतना सुनने पर भी मैं समझती हू कि आप मुझे अपना दुश्मन न समझते होंगे।

इन्द्रजीत–नहीं नहीं कदापि नहीं, मै तुम्हे अपना हमदर्द समझता हूँ, तुमने मेरे साथ वहुत कुछ नेकी की है।

कमलिनी–आप लोगों को छुड़ाने के लिए तेजसिंह भी यहाँ आये थे मगर गिरफ्तार हो गये।

इन्द–क्या तेजसिंह भी गिरफ्तार हो गये? लेकिन वे उस कैदखाने में नही लाये गये जहाँ हम लोग थे!

कमलिनी–वह दूसरी जगह रक्खे गये थे। मैंने उन्हें भी कैद से छुड़ाया है अब थोड़ी ही देर में आप उनसे मिला चाहते है।

आनन्दसिंह चुपचाप इन दोनों की बातें सुन रहे थे और छिपी निगाहों से लाडिली के रूप की अलौकिक छटा का भी आनन्द ले रहे थे। लाडिली भी प्रेम की निगाहों से उन्हें देख रही थी। इस बात को कमलिनी ने भी जान लिया मगर वह तरह दे गई। जब आनन्दसिंह ने तेजसिंह का हाल सुना तब चौंके और कमलिनी की तरफ देख कर बोले -

आनन्द–सुना है कि हमारे माता पिता भी

कमलिनी–हा उन दोनों को भी कम्बख्त मायारानी ने फंसा लिया है। हाय मैंने सुना है कि वे दोनों बेचारे बड़े ही संकट में है और सहज ही में उन दोनों का छूटना मुश्किल है तथापि उद्योग में विलम्ब न करना चाहिए। अब आप कोई सवाल न कीजिए और यहा से जल्द निकल चलिये।

राजा वीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता का हाल सुन कर सब के सब घबड़ा गये और आगे कुछ सवाल करने की हिम्मत न पड़ी। कुमार कमलिनी के साथ चलने के लिए तैयार हो गए और सभों को साथ लिए हुए कमलिनी फिर उसी तहखाने में उतर गई जहाँ से आई थी। कुँअर इन्द्रजीतसिंह किशोरी का और आनन्दसिंह कामिनी का हाल पूछने के लिए बेचैन थे मगर मौका न समझ कर चुप रह गये।

नीचे जाने पर मालूम हुआ कि वह एक सुरंग का रास्ता था मगर यह सुरंग साधारण न थी। इसकी चौड़ाई केवल इतनी थी कि दो आदमी बराबर मिल कर जा सकते थे। ऊंचाई की यह अवस्था थी कि हर एक मर्द हाथ ऊंचा करके उसकी छत छू सकता था। दोनों तरफ की दीवार स्याह पत्थर की थी। जिस पर तरह तरह की खूबसूरत भयानक और कहीं कहीं आश्चर्यजनक तस्वीरें मुसौवरों की कारीगरी का नमूना दिखा रही थी अर्थात रंगों से बनी पत्थर गढ़कर नहीं बनाई गई थी परन्तु उन तस्वीरों के रंग की भी यह अवस्था थी कि अभी दो चार दिन की बनी मालूम होती थी जिन्हें देखके हमारे कुमारों और ऐयारों को बहुत ही ताज्जुब हो रहा था।

कम–(इन्द्रजीतसिंह से) आप चाहते होंगे कि इन विचित्र तस्वीरों को अच्छी तरह देखें।

इन्द–बेशक ऐसा ही है इस दौड़धूप में ऐसी उत्तम तस्वीरों के देखने का आनन्द कुछ भी नहीं मिल सकता और यहा की एक एक तस्वीर ध्यान देकर देखने योग्य है परन्तु क्या किया जाय जब से अपने माता पिता का हाल तुम्हारी जुबानी सुना है जी बेचैन हो रहा है यही इच्छा होती है कि जहा तक जल्द हो सके उनके पास पहुंचे और उन्हें कैद से छुड़ावें। तुम स्वयं कह चुकी हो कि वह बड़े संकट में पड़े हैं परन्तु यह न जाना गया कि उन्हें किस प्रकार का संकट है।

कम–आपका कहना बहुत ठीक है इन तस्वीरों को देखने के लिए बहुत समय चाहिए बल्कि इनका हाल और मतलब जानने के लिए कई दिन चाहिए और यह समय यहाँ अटकने का नहीं है मगर साथ ही इसके यह भी याद रखिये कि आप दो चार या दस घंटे के अन्दर ठिकाने पहुँच कर अपने माता पिता को नहीं छुड़ा सकते। मुझे ठीक ठीक मालूम नहीं कि वह किस कैदखाने में कैद है पहिले तो इसी बात का पता लगाने के लिए कई दिन नहीं तो कई पहर चाहिये।

इन्द–तो क्या तुमने उन्हें अपनी आंखों से नहीं देखा ?

कमलिनी–नहीं मगर इतना जानती हूं कि इस बाग के चौथे दर्जे में किसी ठिकाने वे कैद है।

इन्द–क्या इस बाग के कई दर्जे है जिसमें मायारानी रहती है और जहा हम लोग बेहोश करके लाये गये थे ?

कम–हा इस बाग के चार दर्जे है। पहिले दर्जे में तो सिपाहियों और नौकरों के ठहरने का ठिकाना है दूसरे दर्जे में स्वयं मायारानी रहती है तीसरे और चौथे दर्जे में कोई नहीं रहता हा यदि कोई ऐसा कैदी हो जिसे बहुत ही गुप्त रखना मंजूर हो तो वहा भेज दिया जाता है। तीसरे और चौथे दर्जे को तिलिस्म कहना चाहिए बल्कि चौथा दर्जा तो (कांप कर) आफ बड़ी बड़ी भयानक चीजों से भरा हुआ है।

इन्द–तो उसी चौथे दर्जे में हमारे माता पिता कैद है ?

कमलिनी–जी हा।

आनन्द–शायद तुम्हारी छोटी बहिन कुछ जानती हो जो तुम्हारे साथ है ?

कमलिनी–नहीं नहीं यह बेचारी तीसरे चौथे दर्जे का हाल कुछ भी नहीं जानती।

लाडिली–बल्कि तीसरे और चौथे दर्जे का पूरा पूरा हाल मायारानी को भी नहीं मालूम। कमलिनी बहिन को भी कुछ मालूम न था मगर दो ही चार महीनों में न मालूम क्योंकर वहा का विचित्र हाल इन्हें मालूम हो गया। देखिये इसी सुरंग को जिसमें हमलोग जा रहे है मायारानी भी नहीं जानती थी और मुझे तो इसका कुछ गुमान भी न था।

यहाँ पर कमलिनी के हाथ की वह मोमबत्ती जल कर पूरी हो गई और कमलिनी ने उसे जमीन पर फेंक दिया। अब इस सुरंग में केवल उस कन्दील की रोशनी रह गई जो ये लोग कैदखाने में से लाये थे और इस समय तारासिंह उसे

अपने हाथ में लटकाये सभों के पीछे पीछे आ रहे थे। कमलिनी के कहे मुताबिक तारासिह अब कन्दील लिए हुए आगे आगे चलने लगे। लगभग बीस कदम जाने बाद एक चौमुहानी मिली अर्थात् वहा से चारो तरफ सुरगें गई हुई थी। कमलिनी ने रुक कर इन्दजीतसिह की तरफ देखा और कहा   अब यहा से अगर हम लोग चाहें तो इस तिलिस्मी मकान के बाहर निकल जा सकते है।

इन्दजीतसिह–यह सामने वाला रास्ता कहाँ गया है ?

कमलिनी–बाग के तीसरे और चौथे दर्जे में जाने का यही रास्ता है और बाई तरफ वाली सुरग उस दूसरे दर्जे मे गई है जिसमें मायारानी रहती है।

आनन्द–और दाहिनी तरफ जाने से हम लोग कहाँ पहुचेंगे ?

कमलिनी–इस तिलिस्मी मका‌ या बाग के बाहर हो जान के लिए वही राह है।

इन्दजीत–तो अब तुम हम लोगों को कहा ले जाना चाहती हो ?

कमलिनी–जहा आप कहिये।

आनन्द–अगर मायारानी के बाग में ले चलो तो हम उसे इसी समय गिरफ्तार कर लें इसके बाद सब काम सहज ही में हो जायगा।

कमलिनी–यह काम सहज नही है और इसके सिवाय जहा तक मै समझती हू मायारानी इस समय अप‌ कमरे में न होगी या यदि होगी भी तो हर तरह से होशियार होगी। केवल इतना ही नही वहा जाने से और भी क‌ प्रकार का धोखा है। एक तो उस बाग की चहारदीवारी के बाहर कूद कर या कमन्द लगा कर निकल जाना असम्भव है दूसरे उस बाग की हिफाजत के लिए पाच सौ सिपाही मुकर्रर है जो हमेशा मुस्तैद और सहज ही में मायारानी के पास पहुंच जान के लिए तैयार रहते है मायारा‌ी को गिरफ्तार करके बाग के बाहर ले जाना कठिन है। मेरी समझ में तो आपको एक दफे यहा से बाहर निकल जा‌ा चाहिए।

इन्दजीत–मगर मै कुछ और ही चाहता हूं।

कमलिनी–वह क्या ?

इन्दजीत–यदि तुझसे हो सके तो हमें किसी ऐसी जगह ले चलो जो इस बाग की सरहद के अन्दर हो और जहा दो तीन रोज तक गुप्त रीति स हम लाग रह भी सकें।

कमलिनी–(कुछ सोच कर) हा यह हो सकता है। और इस राय को मै भी पसन्द करती हू।

लाडिली–(कमलिनी से) तुमने कौन सी ऐसी जगह सोची है।

कम–ऐसी जगह बाग के तीसरे दर्जे में तो हई है बल्कि चौथे दर्जे मे भी है।

लाडिली–चौथे दर्जे में जाकर दो तीन दिन तक रहना उचित नही क्योकि वह बडी भयानक जगह है क्या तुम वहा के भेद अच्छी तरह जानती हो ?

कम–हरे कृष्ण गोविन्द 'वहा का हाल जानना क्या खिलवाड़ है ? हा एक मकान के अन्दर जाने का रास्ता जरूर मालूम है जहा कोई दूसरा नही पहुँच सकता।

इन्दजीत–तो फिर उसी जगह हम लोगों को क्यों नहीं ले चलती हो ?

कम–(कुछ सोचकर) हा मुझे अब याद आया, इतनी देर से व्यर्थ भटक रही हू, अच्छा आप लोग मेरे पीछे पीछे चले आइये।

सभों को साथ लिए हुए कमलिनी रवाना हुई। थाड़ी दूर जाने बाद एक बन्द दर्वाजा मिला। वह दवाजा लोहे का था मगर यह नही मालूम होता था कि वह किस तरह खुलेगा क्योंकि न तो उसमें कही ताली लगाने की जगह थी और न काई जजीर या कुडी ही दिखाई देती थी। दर्वाजे के दोनों बगल दीवार में तीन तीन हाथ ऊचे दो हाथी बने हुए थे। ये हाथी चादी के थे और इनके धड़ का अगला हिस्सा कुछ आगे की तरफ बढ़ा हुआ था। एक हाथी के सूड में दूसरे हाथी की सूड गुथी थी। इन दोनों हाथियों के अगले एक एक पैर आगे बढ़े और कुछ जमीन की तरफ इस प्रकार मुडे हुए थे जिसके देखने से मालूम होता था कि दो सुफेद हाथी क्रोध में आकर सूड मिला रहे है और लड़ने के लिए तैयार है।

कम–एक ग्रन्थ के पढने से मुझे मालूम हुआ है कि यह दर्वाजा कमानी के सहारे से खुलता और बन्द होता है और इसकी कमानी इन दोनों हाथियों के पेट में है जिस पर दोनों सूडों के दबाने से दबाव पहुँचता है अस्तु यहा   ताकत का काम है। इन दोनों सूडों को जोर के साथ यहा तक झुकाना और दबाना चाहिए कि दर्वाजे के साथ लग जाय। मै देखा चाहती हू कि आपके ऐयारों में कितनी ताकत है।

देवी–अगर किसी आदमी के झुकाये यह झुक सकता है तो पहिले मुझे उद्योग करने दीजिए।

कमलिनी–आइए आइए लीजिए मै हट जाती हू।

देवीसिह ने दोनों सूडों पर हाथ रख और छाती से अडा कर जोर किया मगर एक बित्ते से ज्यादे न दबा सके और दर्वाजा दो हाथ की दूरी पर था इसलिए दो हाथ दबा कर ले जाने की आवश्यकता थी। आखिर देवीसिह यह कहते हुए पीछे हटे 'यह राक्षसी काम है।

इसके बाद और ऐयारों ने भी जोर किया मगर देवीसिह से ज्यादे काम न कर सके। तब कमलिनी कुमारों की तरफ देख कर हसी और बोली सिवाय आप दोनों के यह काम किसी तीसरे से न हो सकेगा !

आनन्द--(इन्दजीतसिह की तरफ देख कर) यदि आज्ञा हो तो मै भी जोर करू ?

इन्द्रजीत--क्या हर्ज है तुम यह काम बखूबी कर सकते हो !

आज्ञा पाते ही कुअर आनन्दसिह ने दोनों सूडों पर हाथ रख के जोर किया और पहिले ही जोर में दर्वाजे के साथ लगा दिया। यह हाल देखते ही लाडिली ने जोश में आकर कहा 'वाह वाह ! कैद की मुसीबत उठा कर कमजोर होने पर भी यह हाल है !

दर्वाजे के साथ सूडों का लगना था कि हाथियों के चिग्घाडने की हलकी आवाज आई और दर्वाजा जो एक ही पल्ले का था सरसर करता जमीन के अन्दर घुस गया। कमलिनी ने आनन्दसिह से कहा अब सूड को पीछे की तरफ हटाइए मगर पहिले सूड के नीचे से या उसक ऊपर से लाघ कर दूसरी तरफ निकल चलिए।

हाथ में कदील लिए हुए पहिले तारासिह टप गये और दर्वाजे के उस पार जा खडे हुए तब इन्द्रजीतसिह दर्वाजे के उस पार पहुचे उसके बाद कुअर आनन्दसिह जाया ही चाहते थे कि एक नई घटना ने सब खेल ही बिगाड दिया।

दर्वाजे के उस पार एक आदमी न मालूम कब से छिपा बैठा था। उसने फुर्ती से आगे बढ कर एक लात उस कदील में मारी जो तारासिह के हाथ में थी। कदील हाथ से छूट कर जमीन पर तो न गिरी मगर बुझ गई और एक दम अधकार हो गया। यद्यपि यह काम उसने बडी फुर्ती से किया तथापि इन लोगों की निगाह उस पर पड ही गई लेकिन उसकी असली सूरत नजर न पडी क्योंकि वह काला कपडा पहिने और अपने चेहरे को नकाब से छिपाए हुए था।

अधेरा होते ही उसने दूसरा काम किया। भुजाली उसके पास थी जिसका एक भरपूर हाथ उसने कुअर इन्द्रजीतसिह के सर पर जमाया। अधेरे के सबब से निशाने में फर्क पड गया। तो भी कुमार के बायें मोढे पर गहरी चोट बैठी। चोट खाते ही कुमार ने पुकार कर कहा सब कोई होशियार रहना ! दुश्मन के हाथ में हर्बा है और वह मुझे जख्मी भी कर चुका है !

यह हाल देख और सुन कर कमलिनी ने झट अपने तिलिस्मी खजर से काम लिया। हम ऊपर लिख आये है कि उसके कमर में दो तिलिस्मी खजर है। उसने एक खजर हाथ मे लेकर उसका कब्जा दबाया और उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई जिससे कमलिनी के सिवाय जो आदमी वहा थे कोई भी उस चमक को न सह सका और सभों ने अपनी अपनी आखें बन्द कर लीं।

दर्वाजे के उस पार भी उसी तरह की सुरग थी। कमलिनी ने देखा कि दुश्मन अपना काम करके सामने की तरफ भागा जा रहा है मगर खजर की चमक ने उसे भी चौंधिया दिया था जिसका नतीजा यह हुआ कि कमलिनी बहुत जल्द ही उसके पास पहुँची और खजर उसके बदन से लगा दिया जिसके साथ ही वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पडा। खजर कमर में रख कर कमलिनी लौटी और उसने अपने बटुए में से सामान निकाल कर एक मोमबत्ती जलाई तथा इतने में हमारे ऐयार लोग भी दर्वाजे के दूसरी तरफ जा पहुँचे।

कुअर इन्द्रजीतसिह के मोढे से खून निकल रहा था। यद्यपि कुमार को उसकी कुछ परवाह न थी और उनके चेहरे पर भी किसी प्रकार का रज न मालूम होता था तथापि देवीसिह ने जख्म बाधने का इरादा किया मगर कमलिनी ने रोक कर अपने बटुए में से किसी प्रकार के तेल की एक शीशी निकाली और अपने नाजुक हाथों से घाव पर तेल लगाया जिससे तुरन्त ही खून बन्द हो गया। इसके बाद अपने आचल में से थोडा कपडा फाड कर जख्म पर बाधा। उसके एहसान ने कुअर इन्द्रजीतसिह को पहिले ही अपना कर लिया था अब उसकी मुहब्बत और हमदर्दी ने उन्हें अच्छी तरह अपने काबू में कर लिया।

इन्द्रजीत--(कमलिनी से) तुम्हारे अहसानों के बोझ से मैं दबा ही जाता हूँ। (मुस्करा कर और धीरे से) देखना चाहिये। सिर उठाने का दिन भी कभी आता है या नहीं।

कमलिनी--(मुस्करा कर) बस रहने दीजिये बहुत बातें न बनाइये।

आनन्द--मालूम होता है वह शैतान भाग गया ?

कमलिनी--नही नहीं मेरे सामने से भाग कर निकल जाना जरा मुश्किल है आगे चल कर आप उसे जमीन पर बेहोश पड़ा हुआ देखेंगे।

इन्द्रजीत–इस समय तो तुमने वह काम किया जिसे करामात कहना चाहिये !

कमलिनी–मैं बेचारी क्या कर सकती हूँ, इस समय तो (खजर की तरफ इशारा करके) इसने बड़ा काम किया।

इन्द्रजीत–बेशक यह अनूठी चीज है, इसकी चमक ने तो आखें बन्द कर दीं कुछ देख भी न सके कि तुमने क्या किया ?

कमलिनी–यह तिलिस्मी खजर है और इसमें बहुत से गुण हैं।

इन्द्रजीत–मैं सुना चाहता हूँ कि इस खजर में क्या क्या गुण है। बल्कि और कई बातें पूछा चाहता हूँ मगर यकायक दुश्मन के पहुँचने से

कमलिनी–खैर ईश्वर की मर्जी मैं खूब जानती हूँ कि सिवाय इस शैतान के और कोई यहा तक नहीं आ सकता तिस पर भी इस दर्वाजे को खोलने की इसे सामर्थ्य न थी इसी से चुपचाप दबका हुआ था। मगर फिर भी इसका यहा तक पहुँच जाना ताज्जुब मालूम होता है।

इन्द्रजीत–क्या तुम उसे पहिचानती हो ?

कमलिनी–हा कुछ कुछ शक तो होता है मगर निश्चय किये बिना कुछ नहीं कह सकती।

इन्द्रजीत–जो हो मगर अब हम लोगों को यहा से निकल चलने के लिए जल्दी करना चाहिये।

कमलिनी–पहिले इस दर्वाजे को बन्द कर लीजिये नहीं तो इस राह से दुश्मन के आ पहुचने का डर रहेगा।

दर्वाजे के दूसरी तरफ भी उसी प्रकार के दो हाथी बने हुए थे। कमलिनी के कहे मुताबिक आनन्दसिह ने जोर से सूड को दर्वाजे की तरफ हटाया जिससे उस तरफ वाले हाथियों की सूड ज्यों की त्यों सीधी हो गई और दर्वाजा भी बन्द हो गया।

इन्द्रजीत–मालूम होता है कि इस तरफ से कोई दर्वाजा खोलना चाहे तो इन हाथियों की सूडों को जो इस समय दर्वाजे के साथ लगी हुई हैं अपनी तरफ खैंच कर सीधा करना पड़ेगा और ऐसा करने से उस तरफ के हाथियों की सूडें दर्वाजे के पास आ लगेंगी।

कमलिनी–आपका सोचना बहुत ठीक है वास्तव में ऐसा ही है।

इन्द्रजीत–अच्छा अब यहा से चल देना चाहिए, चलते चलते इस खजर का गुण भी कहो जिसकी करामात मैं अभी देख चुका हू।

कमलिनी–चलते चलते कहने की कोई जरूरत नहीं मैं इसी जगह अच्छी तरह समझा कर एक खजर आपके हवाले करती हूँ।

उस खजर में जो जो गुण था उसके विषय में ऊपर कई जगह लिखा जा चुका है कमलिनी ने कुअर इन्द्रजीतसिह को सब समझाया और इसके बाद खजर के जोड़ की अगूठी उनके हाथ में पहिना कर एक खजर उनके हवाले किया जिसे पाकर कुमार बहुत प्रसन्न हुए।

लाडिली–(कमलिनी से) एक खजर छोटे कुमार को भी देना चाहिए।

कमलिनी–(मुस्करा कर) आपके सिफारिश की कोई जरूरत नहीं मैं खुद एक खजर छोटे कुमार को दूगी।

आनन्द–कब ?

कमलिनी–यह दूसरा खजर उसी तरह का मेरे पास है। इसे मैं आपको अभी दे देती मगर इसलिए रख छोड़ा है कि आप ही के लिए इस घर में अभी कई तरह का काम करना है शायद कभी दुश्मनों के

आनन्द–नहीं नहीं जो यह खजर तुम्हारे पास रह गया है लेकर मैं तुम्हें खतरे में नहीं डाल सकता कल परसों या दस दिन में जब मौका हो तब मुझे देना।

कमलिनी–जरूर दूगी अच्छा अब यहा से चलना चाहिये।

दोनों कुमारों और ऐयारों को साथ लिए हुए कमलिनी वहा से रवाना हुई और उस ठिकाने पहुची जहा वह शैतान बेहोश पड़ा हुआ था जिसने कन्दील बुझा कर कुमार को जख्मी किया था। चेहरे पर से नकाब हटाते ही कमलिनी चौंकी और बोली है यह तो कोई दूसरा ही है ! मैं समझे हुए थी कि दारोगा है किसी तरह राजा बीरेन्द्रसिह की कैद से छूट कर आ गया होगा मगर इसे तो मैं बिल्कुल नहीं पहिचानती। (कुछ रुक कर) उसने मेरे साथ दगा तो नहीं की कौन ठिकाना ऐसे आदमी का विश्वास न करना चाहिए मगर मैंने तो उसके साथ

ऊपर लिखी बातें कह कमलिनी चुप हो गई और थोडी देर तक किसी गम्भीर चिन्ता में डूबी सी दिखाई पड़ी। आखिर कुअर इन्द्रजीतसिह से रहा न गया, धीरे से कमलिनी की उगली पकड़ कर बोले–

इन्दजीत–तुम्हें इस अवस्था में दख कर मुझे जान पड़ता है कि शायद कोई नयी मुसीबत आने वाली है जिसके विषय में तुम कुछ सोच रही हो

कमलिनी–हा ऐसा ही है मेरे कामों में विघ्न पड़ता दिखाई दता है। अच्छा मर्जी परमेश्वर की !आपके लिए कष्ट उठाना क्या जान तक देने को तैयार हू। (कुछ रुक कर) अव दर करना उचित नहीं यहा से निकल ही जाना चाहिए।

इन्द–क्या मायारानी के इस अनूठे वाग के वाहर निकलने को कहती हो ?

कमलिनी–हा।

इन्द–मै तो सोचे हुए था कि माता पिता को छुडा कर तभी यहा से जाऊगा।

कमलिनी–मैंने भी यही निश्चय किया था परन्तु क्या किया जाय सब के पहिले अपने को बचाना उचित है यदि आप ही आफत में फसे रहेंगे तो उन्हें कौन छुडायेगा !

इन्दजीत–यहा की अद्‌भुत वातों से मैं अजान हू इसलिए जो कुछ करने को कहोगी करना ही पड़गा नहीं तो मेरी राय तो यहा से भागने की न थी क्योंकि जव मेर हाथ पैर खुले है और सचेत हू तो एक क्या पाच सौ से भी डर नहीं सकता। जिस पर तुम्हारा दिया हुआ यह अनूठा तिलिस्मी खजर पाकर एक दफे साक्षात काल का भी मुकावला करने से वाज न आऊगा।

कम–आपका कहना ठीक है मैं आपकी वहादुरी को अच्छी तरह जानती हू, परन्तु इस समय नीति यही कहती है कि यहा से निकल जाओ।

इन्दजीत–अगर ऐसा ही है ता चलो मैं चलता हू। (धीरे स कान में) तुम्हारी बुद्धिमानी पर मुझे डाह हाता है।

कमलिनी–(धीरे से) डाह कैसा ?

इन्दजीत–(दो कदम आगे ले जाकर) डाह इस वात का कि वह वडा ही भाग्यशाली होगा जिसके तुम पाले पड़ोगी।

इसके जवाव में कमलिनी ने कुमार को एक हलकी चुटकी काटी और धीरे से कहा मुझे तो तुमसे वढ कर भाग्यशाली कोई दिखाई नहीं पडता मगर

आह कमलिनी की इस वात ने ता कुमार को फडका दिया लाकेन इस मगर के शब्द ने भी बड़ा अन्धेर किया जिसका सवव हमारे मनचल पाठक स्वय समझ जायेंगे क्योंकि व कमलिनी और कुअर इन्दजीतसिह की पहली वातें अभी भूले न होंगे जो तालाव के वीच वाल उस मकान में हुई थीं जहा कमलिनी रहा करती थी।

कमलिनी–(देवीसिह से) इस आदमी को जो वेहोश पडा है उठा के ले चलना चाहिए।

देवी–हा हा इसे मै उठा कर ले चलूगा।

इन्दजीत–शायद हमलोगों को फिर लौटना पडे क्योंकि वाहर निकलने का रास्ता पीछे छोड आये है।

कमलिनी–हा सुगम रास्ता ता यही था मगर अब मैं उधर न जाऊगी कौन ठिकाना हाथी वाले दर्वाजे के उस तरफ दुश्मन लोग आ गये हों क्योंकि कैदखाने की दीवार आप तोड ही चुके है और उधर वाली सुरग का मुह खुला रहने के कारण किसी का आना कठिन नहीं है।

इन्दजीत–तव दूसरी राह कौन सी है ? क्या उधर चलोगी जिघर से यह दुश्मन आया है।

कमलिनी–नहीं उधर भी दुश्मनों का गुमान है आइये मैं एक और ही राह से ले चलती हूँ।

आगे आग कमलिनी और उसक पीछे दोनों कुमार और ऐयार लोग रवाना हुए।

यहा भी दोनों तरफ दीवारों में सुन्दर तस्वीरें वनी हुई थीं। दस बारह कदम आगे जाने वाद वगल की दीवार में एक छोटा सा खुला हुआ दर्वाजा था जिसे दख कर कमलिनी ने इन्दजीतसिह से कहा यह आदमी इसी राह से आया होगा क्योंकि अभी तक दर्वाजा खुला हुआ है मगर मै दूसरी ही राह से चलूगी जो जरा कठिन है।'

कुमार–मैं तो कहता हू कि इसी राह से चला दर्वाजे पर दस वारह दुश्मन मिल ही जायगे तो क्या होगा।

कमलिनी–खैर तव चलिये।

सब कोई उस राह से वाहर हुए और कमलिनी न उस दर्वाजे को जा एक खटके क सहारे खुलता और बन्द होता था वन्द कर दिया। उस तरफ भी थोडी दूर सुरग में ही जाना पड़ा। जव सुरग का अन्त हुआ तो छोटी छोटी सीढिया ऊपर चढ़ने के लिए मिलीं। कमलिनी ने ऊपर की तरफ दखा और कहा यहा का दर्वाजा वन्द है। सवके आगे कमलिनी और फिर दोनों कुमार और ऐयार लोग ऊपर चढे। ये सीढिया घूमती हुई ऊपर गई थी मालूम होता था कि किसी वुर्ज पर चढ़ रहे है।

जब सीढियों का अन्त हुआ तो एक चक्कर पहिए की तरह वना हुआ दिखाइ दिया जिसे कमलिनी ने चार पाच दफे

घुमाया। खटके की आवाज के साथ पत्थर की चट्टान अलग हो गई और सभी लोग उस राह से निकल कर बाहर मैदान में दिखाई देने लगे। बाहर सन्नाटा देख कर कमलिनी ने कहा शुक्र है कि यहा हमारा दुश्मन कोई नहीं दिखाई देता।

जिस राह से कुमार और ऐयार लोग बाहर निकले वह पत्थर का एक चबूतरा था जिसके ऊपर महादेव का लिग स्थापित था। चबूतरे के नीचे की तरफ का बगल वाला पत्थर खुल कर जमीन के साथ सट गया था और वही बाहर निकलने का रास्ता बन गया था। लिग के बगल में ताबे का बड़ा सा नन्दी (बैल) बना हुआ था और उसके मोढे पर लोहे का एक सर्प गुडेड़ी मारे बैठा था। कमलिनी ने साप के सिर को दोनों हाथ से पकड़ कर उभाड़ा और साथ ही नन्दी ने मुह खोल दिया तब कमलिनी ने उसके मुह में हाथ डाल कर कोई पेंच घुमाया। वह पत्थर की चट्टान जो अलग हो गई थी फिर ज्यों की त्यों हो गई और सुरग का मुह बन्द हो गया। कमलिनी ने साप के फन को फिर दबा दिया और बैल ने भी अपना मुह बन्द कर लिया।

इन्द्रजीत—(कमलिनी से) यह दर्वाजा भी अजब तरह से खुलता और बन्द होता है।

कमलिनी—हा बड़ी कारीगरी से बनाया गया है।

इन्द्रजीत—इसके खोलने और बन्द करने की तर्कीब मायारानी को मालूम होगी ?

कमलिनी—जी हा बल्कि (लाडिली की तरफ इशारा करके) यह भी जानती है, क्योंकि बाग के तीसरे दर्जे में जाने के लिए यह भी एक रास्ता है जिसे हम तीनों बहिनें जानती है मगर उस हाथी वाले दर्वाजे का हाल जिसे आपने खोला था सिवाय मेरे और कोई भी नहीं जानता।

आनन्द—यह जगह बड़ी भयानक मालूम पड़ती है !

कमलिनी—जी हा यह पुराना मसान है और गगाजी भी यहा से थोडी ही दूर पर है। किसी जमाने में जब का यह मसान है, गगाजी इसी जगह पास ही बहती थीं मगर अब कुछ दूर हट गईं और इस जगह बालू पड़ गया है।

आनन्द—खैर अब क्या करना और कहा चलना चाहिये ?

कमलिनी—अब हमको गगा पार होकर जमानिया में पहुँचना चाहिये। वहा मैंने एक मकान किराये पर ले रक्खा है जो बहुत ही गुप्त स्थान में है उसी में दो तीन दिन रह कर कार्रवाई करूँगी।

इन्द्रजीत—गगा पार किस तरह जाना होगा ?

कमलिनी—थोड़ी ही दूर पर गगा के किनारे एक किश्ती बधी हुई है जिस पर मै आई थी मै समझती हू वह किश्ती अभी तक वहा ही होगी।

सवेरा होने में कुछ विलम्ब न था। मन्द मन्द दक्षिणी हवा चल रही थी और आसमान पर केवल दस पॉच तारे दिखाई पड रहे थे जिनके चेहरे की चमक दमक चलाचली की उदासी के कारण मन्द पडती जा रही थी जब कि कमलिनी और कुमार इत्यादि सब कोई वहा से रवाना हुए और उसी किश्ती पर सवार होकर जिसका जिक्र कमलिनी ने किया था गगा पार हो गये।

तीसरा बयान

मायारानी उस बेचारे मुसीबत के मारे कैदी को रञ्ज डर और तरद्दुद की निगाहों से देख रही थी जब कि यह आवाज उसने सुनी बेशक मायारानी की मौत आ गई। इस आवाज ने मायारानी को हद से ज्यादे बेचैन कर दिया। वह घबड़ा कर चारों तरफ देखने लगी मगर कुछ मालूम न हुआ कि यह आवाज कहा से आई। आखिर वह लाचार होकर धनपत को साथ लिए हुए वहा से लौटी और जिस तरह वहा गई थी उसी तरह बाग के तीसरे दर्जे से होती हुई कैदखाने के दर्वाजे पर पहुँची जहा अपने दोनों ऐयार बिहारीसिह और हरनामसिह को छोड़ गई थी। मायारानी को देखते ही बिहारीसिह बोला —

बिहारी—आप हम लोगों को यहा व्यर्थ ही छोड गई !

माया—हा अब मै भी यही सोचती हू क्योंकि अगर तुम दोनों को अपने साथ ले जाती तो इसी समय टण्टा तै हो जाता। यद्यपि धनपत मेरे साथ थी और तुम लोग भी जानते हो कि यह बहुत ताकतवर है तथापि मेरा हौसला न पड़ा कि उसे बाहर निकालती।

बिहारी—(चौक कर) तो क्या आप अपने कैदी को देखने के लिए चौथे दर्जे में गई थी ! मगर मैंने जो कुछ कहा वह कुछ दूसरे मतलब से कहा था।

माया—हा मैं उसी दुश्मन के पास गई थी जिसके बारे में चण्डूल ने मुझे होशियार किया था मगर तुमने यह किस मतलब से कहा कि आप हम लोगों को यहा व्यर्थ ही छोड़ गई थी ?

बिहारी—मैंने इस मतलब से कहा कि हम लोग यहा बैठे बैठे जान रहे थे कि इस कैदखाने के अन्दर ऊधम मच रहा

है मगर कुछ कर नहीं सकते थे

माया—ऊधम कैसा ?

बिहारी—इस कैदखाने के अन्दर से दीवार तोडने की आवाज आ रही थी मालूम होता है कि कैदियों के हथकडी बेडी किसी ने खोल दी।

माया—मगर तुम्हारी बातों से यह जाना जाता है कि अभी कैदी लोग इसके अन्दर ही हैं। मै सोच रही थी कि जब ताली लेकर लाडिली चली गई तो कहीं कैदियों को भी छुडा न ले गई हो।

बिहारी—नहीं नहीं कैदी बेशक इसके अन्दर थे और आपके जाने बाद कैदियों के बातचीत की कुछ कुछ आवाज भी आ रही थी कुछ देर बाद दीवार तोडने की आहट मालूम होने लगी मगर अब मैं नहीं कह सकता कि कैदी इसके अन्दर है या निकल गये क्योंकि थोडी देर से भीतर सन्नाटा सा जान पडता है न तो किसी की बातचीत की आहट मिलती है न दीवार तोडने की।

माया—(कुछ सोच कर) दीवार तोड कर इस बाग के बाहर निकल जाना जरा मुश्किल है मगर मुझे ताज्जुब मालूम होता है कि उन कैदियों की हथकडी बेडी किसने खोली और दीवार तोडने का सामान उन्हें क्योंकर मिला शायद तुम्हें धोखा हुआ हो।

बिहारी—नहीं नहीं मुझे धोखा नहीं हुआ मै पागल नहीं हूँ !

हरनाम—क्या हम लोग इतना भी नहीं पहिचान सकते कि यह दीवार तोडने की आवाज है ?

माया—(ऊँची सांस लेकर) हाय न मालूम मेरी क्या दुर्दशा होगी खैर कैदियों के बारे में मै पीछे सोचूंगी पहिले तुम लोगों से एक दूसरे काम में मदद लिया चाहती हूँ !

बिहारी—वह कौन सा काम है ?

माया—मैंने जिस काम के लिए उसे कैद किया था वह न हुआ और न आशा ही है कि वह कोई भेद बताएगा अस्तु अब उसे मार कर टण्टा मिटाया चाहती हू।

बिहारी—हॉ आपने उसे जिस तरह की तकलीफ दे रक्खी है उससे तो उसका मर जाना ही उत्तम है। हाय वह बेचारा इस योग्य नहीं था। हाय आपकी बदौलत मेरा भी लोक परलोक दोनों बिगड गया एसे नेक और होनहार मालिक के साथ आपके बहकाने से जो कुछ मैने किया उसका दु ख जन्म भर न भूलूगा।

माया—और उन नेकियों को याद न करोगे जो मैंने तुम लोगों के साथ की थीं।

बिहारी—खैर अब इस विषय पर हुज्जत करना व्यर्थ है जब लालच में आकर बुरा कर ही चुके तो अब रोना काहे का है।

हरनाम—मुझे भी इस बात का बहुत ही दु ख है देखा चाहिए क्या होता है। आज कल जो कुछ देखने सुनने में आ रहा है उसका नतीजा अवश्य ही बुरा होगा।

माया—(लम्बी सांस लेकर) खैर जो होगा देखा जायगा मगर इस समय यदि सुस्ती करोगे तो मेरी जान तो जायगी ही तुम लोग भी जीते न बचोगे।

बिहारी—यह तो हम लोगों को पहिले ही मालूम हो चुका है कि अब उन बुरे कर्मो का फल शीघ्र ही भोगना पडेगा मगर खैर आप यह कहिए कि हम लोग क्या करें ? जान बचाने की क्या कोई सूरत दिखाई पडती है ?

माया—मेरे साथ बाग के चौथे दर्जे में चल कर पहिले उस कैदी को मार कर छुट्टी करो तो दूसरा काम बताऊ।

हरनाम—नहीं नहीं नहीं यह काम मुझसे न हो सकेगा। बिहारीसिंह से हो सके तो इन्हें ले जाइए। मैं उनके ऊपर हर्बा नहीं उठा सकता। नारायण नारायण इस अनर्थ का भी कोई ठिकाना है।

माया—(चिढ कर) हरनाम क्या तू पागल हो गया है जो मेरे सामने ऐसी बेतुकी बातें करता है ? अदब और लेहाज को भी तूने एकदम चूल्हे में डाल दिया क्या तू मेरी सामर्थ्य को भूल गया ?

हरनाम—नहीं मैं आपकी सामर्थ्य को नहीं भूला बल्कि आपकी सामर्थ्य ने स्वय आपका साथ छोड दिया।

बिहारीसिंह और हरनामसिंह की बातें सुनकर मायारानी को क्रोध तो बहुत आया परन्तु इस समय क्रोध करने का मौका न देख कर वह तरह दे गयी। मायारानी बड़ी ही चालबाज और दुष्ट औरत थी समय पडने पर वह एक अदने को बाप बना लेती और काम न होने से किसी को एक तिनके बराबर भी न मानती। इस समय अपने ऊपर सकट आया हुआ जान उसने दोनों ऐयारों को किसी तरह राजी रखना ही उचित समझा।

माया—क्यों हरनामसिंह तुमने कैसे जाना कि मेरी सामर्थ्य ने मेरा साथ छोड दिया ?

हरनाम—वह तो इसी से जाना जाता है कि बेबस कैदी की जान लेने के लिए हम लोगों को ले जाया चाहती हो। उस बेचारे को तो एक अदना लडका भी मार सकता है।

विहारी–हरनामसिह का कहना ठीक है, वाहर खडे हाकर आपक हाथ से चलाई हुई एक तीर उसका काम तमाम कर सकती है।

माया–नही यदि एसा होता तो मै उसे विना मारे लौट न आती मेरे कई तीर व्यर्थ गय और नतीजा कुछ भी न निकला !

विहारी–(चौक कर) सो क्यों ?

माया–उसक हाथ में एक ढाल है। न मालूम वह ढाल उस किसने दी जिस पर वह तीर रोक कर हसता है और कहता है कि अव मुझे कोई मार नहीं सकता।

विहारी–(कुछ साच कर) अव अनर्थ हाने में काई सन्देह नही, यह काम वशक चण्डूल का हे। कुछ समझ में नही आता कि वह कौन कम्वख्त है ?

माया–अव साच विचार में विलम्ब करना उचित नहीं जो हाना था सो हो चुका अव जान वचाने की फिक्र करनी चाहिए।

विहारी–आपने क्या विचारा ?

माया–तुम लोग यदि मेरी मदद न कराग तो मेरी जान न वचगी और जव मुझ पर आफत आवेगी तो तुम लोग भी जीते न वचोग।

विहारी–हॉ यह तो ठीक ह जान वचाने के लिए कोइ न कोई उद्योग तो करना ही होगा।

माया–अच्छा तो तुम लोग मर साथ चलो और जिस तरह हा उस कैदी को यमलोक पहुचाओ। मुझे विश्वास हो गया कि उस कैदी की जान क साथ हम लोगों की आधी वला टल जायगी और इसके वदले में मै तुम दानों को एक लाख दूगी।

हर–काम ता वडा कठिन हे ?

यद्यपि विहारीसिह और हरनामसिह अपने हाथ से उस कैदी का मारा नहीं चाहत थे तथापि मायारानी की मीठी मीठी वातों स और रुपये की लालच तथा जान के डर से व लाग यह अनर्थ करन के लिए तैयार हो गये। धनपत और दोनों ऐयारों को साथ लिए हुए मायारानी फिर वाग क चौथे दर्जे की ओर रवाना हुई। सूर्य भगवान के दर्शन ता नहीं हुए थे मगर सवरा हो चुका था और मायारानी के नौकर नींद स उठ कर अपने अपने कामों में लग चुके थे। लेकिन मायारानी का ध्यान उस तरफ कुछ भी न था उसन उस वचारे कैदी की जान लेना ही सव से जरूरी काम समझ रक्खा था।

थोडी ही देर में चारा आदमी वाग क चौथ दर्जे म जा पहुचे और कूए के अन्दर उतर कर उस कैदखाने में गये जिसमें मायारानी का वह अनूठा कैदी बन्द था। मायारानी का उम्मीद थी कि उस कैदी को फिर उसी तरह हाथ में ढाल लिए हुए देखगी मगर एसा न हुआ। उस जगल वाली काठरी का दर्वाजा खुला हुआ था और उस कैदी का कहीं पता न था।

वहा की ऐसी अवस्था देख कर मायारानी अपन रज और गम को सम्हाल न सकी और एकदम हाय करके जमीन पर गिर कर वेहोश हा गई। धनपत और दानों ऐयारों के भी होश जाते रहे उनके चेहरे पीले पड गए और निश्चय हो गया कि अव जान जाने में कोई कसर नहीं है। कवल इतना ही नहीं वल्कि डर के मारे वहा ठहरना भी वे लोग उचित न समझते थ मगर वेहाश मायारानी को वहा से उठा कर वाग क दूसरे दर्जे में ले जाना भी कठिन था इसलिए लाचार हाकर उन लागों का वहॉ ठहरना पडा।

विहारीसिह न अपन वटुए में से लखलखा निकाल कर मायारानी को सुघाया और कोई अर्क उसक मुह में टपकाया। थोडी दर में मायारानी हाश में आई और पड पडे नीचे लिखी वातें प्रलाप की तरह वकने लगी –

हाय आज मरी जिन्दगी का दिन पूरा हा गया और मरी मौत आ पहुँची। हाय मुझ तो अपनी जान का धाखा उसी दिन हा चुका था जिस दिन कम्वख्त नानक ने दवार में मेरे सामने कहा था कि काठरी की ताली मरे पास है जिसमें किसी के खून से लिखी हुई किताव रक्खी हे *। इस समय उसी किताव ने धोखा दिया। हाय उस किताव के लिए नानक का छाड दना ही वुरा हुआ। यह काम उसी हरामजाद का है लाडिली और धनपत के किए कुछ भी न हुआ। (धनपत की तरफ देख कर) सच ता यों है कि मेरी मात तेरे ही सवव से हुई। तरी मुहव्वत ने मुझे गारत किया तर ही सवव से मैंने पाप की गठरी सिर पर लादी तरे ही सवव मेंने अपना धर्म खोया तेरे ही सवव से मै वुरे कामो पर उतारू हुइ तेर ही सवव म मैंने अपने पति क साथ वुराई की तरे ही सवव स मैंने अपना सर्वस्व विगाड दिया। तरे ही सवव स मै वीरन्दसिह के लडकों के साथ वुराई करने के लिए तैयार हुई तेरे ही सवव से कमलिनी मेरा साथ छाड कर

*देखिए चौथा भाग सातवा वयान।

चली गई और तेरे ही सबब से आज मैं इस दशा को पहुंची। हाय इसमें कोई सन्देह नहीं कि बुरे कर्मों का बुरा फल अवश्य मिलता है। हाय मुझ सी औरत जिसे ईश्वर ने हर प्रकार का सुख दे रक्खा था आज बुरे कर्मों की बदौलत इस अवस्था को पहुंची। आह मैंने क्या सोचा था और क्या हुआ? क्या बुरे कर्म करके भी कोई सुख भोग सकता है 'नहीं नहीं कभी नहीं दृष्टान्त के लिये स्वयं मैं मौजूद हूं!

मायारानी न मालूम और भी क्या क्या बकती मगर एक आवाज ने उसके प्रलाप में विघ्न डाल दिया और उसके होश हवास दुरुस्त कर दिए। किसी तरफ से यह आवाज आई-- अब अफसोस करने से क्या होता है बुरे कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा।

बहुत कुछ विचारने और चारों तरफ निगाह दौड़ाने पर भी किसी के समझ में न आया कि बोलने वाला कौन या कहां है। डर के मारे सभों के बदन में कंपकंपी पैदा हो गई। मायारानी उठ बैठी और धनपत तथा दोनों ऐयारों को साथ लिए और कांपते हुए कलेजे पर हाथ रक्खे वहां से अपने स्थान अर्थात बाग के दूसरे दर्जे की तरफ भागी।

चौथा बयान

कमलिनी की आज्ञानुसार बेहोश नागर की गठरी पीठ पर लादे हुए भूतनाथ कमलिनी के उस तिलिस्मी मकान की तरफ रवाना हुआ जो एक तालाब के बीचोबीच में था। इस समय उसकी चाल तेज थी और वह खुशी के मारे बहुत ही उमंग और लापरवाही के साथ बड़े बड़े कदम मारता जा रहा था। उसे दो बातों की खुशी थी एक तो उन कागजों को वह अपने हाथ से जला कर खाक कर चुका था जिनके सबब से वह मनोरमा व नागर के आधीन हो रहा था और जिनका भेद लोगों पर प्रकट होने के डर से अपने को मुर्दे से भी बदतर समझे हुए था दूसरे उस तिलिस्मी खञ्जर ने उसका दिमाग आसमान पर चढ़ा दिया था, और ये दोनों बातें कमलिनी की बदौलत उसे मिली थीं एक तो भूतनाथ पहिले ही भारी मक्कार ऐयार और होशियार था अपनी चालाकी के सामने किसी को कुछ गिनता ही न था दूसरे आज खंजर का मालिक बन के खुशी के मारे अन्धा हो गया। उसने समझ लिया कि अब न तो उसे किसी का डर है और न किसी की परवाह।

अब हम उसके दूसरे दिन का हाल लिखते हैं जिस दिन भूतनाथ नागर की गठरी पीठ पर लादे कमलिनी के मकान की तरफ रवाना हुआ था। भूतनाथ अपने को लोगों की निगाहों से बचाए हुए आबादी से दूर दूर जंगल मैदान पगडंडी और पथरीले रास्ते पर सफर कर रहा था। दोपहर के समय वह एक छोटी सी पहाड़ी के नीचे पहुँचा जिसके चारों तरफ मकोय और बेर इत्यादि कटीले और झाड़ी वाले पेड़ों ने एक प्रकार का हलका सा जंगल बना रक्खा था। उसी जगह एक छोटा सा 'चूआ' *भी था और पास ही में जामुन का एक छोटा सा पेड़ था। थकावट और दोपहर की धूप से व्याकुल भूतनाथ ने दो तीन घण्टे के लिए वहां आराम करना पसन्द किया। जामुन के पेड़ के नीचे गठरी उतार कर रख दी और आप भी उसी जगह जमीन पर चादर बिछाकर लेट गया। थोड़ी देर बाद जब सुस्ती जाती रही तो उठ बैठा कूए के जल से हाथ मुंह धोकर कुछ मेवा खाया जो उसके बटुए में था और इसके बाद लखलखा सुंघा नागर को होश में लाया। नागर होश में आकर उठ बैठी और चारों तरफ देखने लगी। जब सामने बैठे भूतनाथ पर नजर पड़ी तो समझ गई कि कमलिनी की आज्ञानुसार यह मुझे कहीं लिए जाता है।

नागर--यह तो मैं समझ ही गई कि कमलिनी ने मुझे गिरफ्तार कर लिया और उसी की आज्ञा से तू मुझे लिए जाता है मगर यह देख कर मुझे ताज्जुब होता है कि कैदी होने पर भी मेरे हाथ पैर क्यों खुले हैं और मेरी बेहोशी क्यों दूर की गई?

भूत--तेरी बेहोशी इसलिए दूर की गयी कि जिसमें तू भी इस दिलचस्प मैदान और यहां की साफ हवा का आनन्द उठा ले। तेरे हाथ पैर बंधे रहने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि अब मैं तेरी तरफ से होशियार हूँ, तू मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती दूसरे तेरे पास वह अंगूठी भी अब नहीं रही जिसके भरोसे तू फूली हुई थी तीसरे (खंजर की तरफ इशारा करके) यह अनूठा खंजर भी मेरे पास मौजूद है फिर किसका डर है? इसके इलावे उन कागजों को भी मैं जला चुका जो तेरे पास थे और जिनके सबब से मैं तुम लोगों के आधीन हो रहा था।

---

*चूआ--छोटा सा (हाथ दो हाथ का) गड़हा जिसमें से पहाड़ी पानी धीरे धीरे दिन रात बारहो महीना निकला करता है।

नागर—ठीक है, अब तुझे किसी का डर नहीं है मगर फिर भी मैं इतना कहे बिना न रहूँगी कि तू हमलोगों के साथ दुश्मनी करके फायदा नहीं उठा सकता और राजा वीरेन्द्रसिंह तेरा कसूर कभी माफ न करेंगे।

भूत—राजा वीरेन्द्रसिंह अवश्य मेरा कसूर माफ करेंगे और जब मैं उन कागजों को जला ही चुका तो मेरा कसूर साबित भी कैसे हो सकता है?

नागर—ऐसा होने पर भी तुझे सच्ची खुशी इस दुनिया में नहीं मिल सकती और राजा वीरेन्द्रसिंह के लिए जान दे देने पर भी तुझे उनसे कुछ विशेष लाभ नहीं हो सकता।

भूत—सो क्यों? वह कौन सच्ची खुशी है जो मुझे नहीं मिल सकती?

नागर—तेरे लिए सच्ची खुशी यही है कि तेरे पास इतनी दौलत हो कि तू बेफिक्र होकर अमीरों की तरह जिन्दगी काट सके और तेरे पास तेरी वह प्यारी स्त्री भी हो जो काशी में रहती थी और जिसके पेट से नानक पैदा हुआ है।

भूत—(चौंक कर) तुझे यह कैसे मालूम हुआ कि वह मेरी ही स्त्री थी?

नागर—वाह वाह क्या मुझसे कोई बात छिपी रह सकती है? मालूम होता है नानक ने तुझसे वह गुप्त हाल नहीं कहा जो तेरे निकल जाने बाद उसे मालूम हुआ था और जिसकी बदौलत नानक को उस जगह का पता लग गया जहां किसी के खून से लिखी हुई किताब रक्खी हुई थी?

भूत—नहीं नानक ने मुझसे वह सब हाल नहीं कहा बल्कि वह यह भी नहीं जानता कि मैं ही उसका बाप हूं हां खून से लिखी किताब का हाल मुझे जरूर मालूम है।

नागर—शायद वह किताब अभी तक नानक ही के कब्जे में है।

भूत—उसका हाल मैं तुझसे नहीं कह सकता।

नागर—खैर मुझे उसके विषय में कुछ जानने की इच्छा भी नहीं है।

भूत—हां तो मेरी स्त्री का हाल तुझे मालूम है?

नागर—बेशक मालूम है।

भूत—क्या अभी तक वह जीती है?

नागर—हां जीती है मगर अब पांच चार दिन के बाद जीती न रहेगी।

भूत—सो क्यों? क्या बीमार है?

नागर—नहीं बीमार नहीं है जिसके यहां वह कैद है उसी ने उसके मारने का विचार किया है।

भूत—उसे किसने कैद कर रक्खा है?

नागर—यह हाल तुझसे मैं क्यों कहूं? जब तू मेरा दुश्मन है और मुझे कैदी बनाकर लिए जाता है तो मैं तेरे साथ नेकी क्यों करूं?

भूतनाथ—इसके बदले में मैं भी तेरे साथ कुछ नेकी कर दूंगा

नागर—बेशक इसमें कोई सन्देह नहीं कि तू हर तरह से मेरे साथ नेकी कर सकता है और मैं भी तेरे साथ बहुत कुछ भलाई कर सकती हूं, सच तो यों है कि तुझ पर मेरा दावा है।

भूत—दावा कैसा

भूत—(हंस कर) उस चांदनी रात में तेरी चुटिया के साथ फूल गूंथने का दावा! उस महसरी के नीचे रूठ जाने का दावा! नाखून के साथ खून निकालने का दावा! और उस कसम की सच्चाई का दावा जो राहतसगढ़ जाती समय नर्मी लिए हुए कठोर पिन्डी पर ! क्या और कहूं?

भूत—बस बस बस मैं समझ गया विशेष कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह सब कारवाई तुम्हीं लोगों की तरफ से हुई थी। जरूर नानक की मॉ के गायब होने बाद तू ही उसकी शक्ल बन के बहुत दिनों तक मेरे घर रही, और तेरे ही साथ बहुत दिनों तक मैंने ऐश किया।

नागर—और अन्त में वह रिक्तगन्थ तुमने मेरे ही हाथ में दिया था।

भूत—ठीक है ठीक है तो तेरा दावा मुझ पर उतना ही हो सकता है जितना किसी बेइमान और बेमुरौवत रंडी का अपने यार पर।

नागर—खैर उतना ही सही मैं रंडी तो हूं ही मुझे चालाक और अपने काम का समझ कर मनोरमा ने अपनी सखी बना लिया और इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि उसकी बदौलत मैंने बहुत कुछ सुख भोगा।

भूत—खैर तो मालूम हुआ कि यदि तू चाहे तो मेरी स्त्री को मुझसे मिला सकती है?

नागर—बेशक ऐसा ही है मगर इसके बदले में तू मुझे क्या देगा?

भूत–(खजर की तरफ इशारा करके) यह तिलिस्मी खजर छाड कर जा मागे सो तुझ दू।

नागर–मै तेरा खजर नहीं चाहती मै कवल इतना ही चाहती हू कि तू वीरेन्द्रसिह की तरफदारी छाड द और हम लोगों का साथी बन जा। फिर तुझे हर तरह की खुशी मिल सकती है। तू करोड़ों रुपये का धनी हो जायगा और दुनिया में बडी खुशी से अपनी जिन्दगी बितावेगा।

भूत–यह मुश्किल बात है ऐसा करने से मेरी सख्त बदनामी ही नहीं हागी बल्कि मे बडी दुर्दशा क साथ मारा जाऊगा।

नागर–तुम्हारा कुछ न बिगडेगा मैं खूब जानती हू कि इस समय जिस सूरत में तुम हा वह तुम्हारी असली सूरत नही है और कमलिनी से तुम्हारी नइ जान पहिचान है जरूर कमलिनी तुम्हारी असली सूरत से वाकिफ न होगी इसलिए तुम सूरत बदल कर दुनिया में घूम सकते हा और कमलिनी तुम्हारा कुछ भी नहीं कर सकती।

भूत–(हस कर) कमलिनी को मेरा सब भेद मालूम है और कमलिनी के साथ दगा करना अपनी जान के साथ दुश्मनी करना है क्योंकि वह साधारण औरत नहीं। वह जितनी ही खूबसूरत है उतनी ही बडी चालाक धूर्त विद्वान और एयार भी है और साथ ही इसके नक और दयावान भी। ऐसे के साथ दगा करना बुरा ह। ऐसा करने से दूसरों की क्या कहूँ खास मेरा लडका नानक ही मुझ पर घृणा करेगा।

नागर–नानक जिस समय अपनी माँ का हाल सुनेगा बहुत ही प्रसन्न होगा बल्कि मेरा अहसान मानेगा रहा तुम्हारा कमलिनी से डरना तो वह बहुत बडी भूल है महीने दो महीने के अन्दर ही तुम सुन लागे कि कमलिनी इस दुनिया से उठ गई और यदि तुम हम लोगों की मदद कराग तो आठ ही दस दिन में कमलिनी का नाम निशान मिट जायगा। फिर तुम्हें किसी तरह का डर नहा रहेगा। और तुम्हारे इस खजर का मुकाबिला करने वाला भी इस दुनियाँ में कोई न रहेगा। तुम विश्वास करो कि कमलिनी बहुत जल्द मारी जायगी और तब उसका साथ देने से तुम सूखे ही रह जाओगे। मैं तुम्हें फिर समझा कर कहती हूँ कि हमलोगों की मदद करो। तुम्हारी मदद स हम लोग थोडे ही दिनों मे कमलिनी राजा वीरेन्द्रसिह और उनके दोनों कुमारों का मौत की चारपाई पर सुला देंगे। तुम्हारी खूबसूरत प्यारी जोरू तुम्हारे बगल में होगी करोडों रुपये की सम्पति के तुम मालिक होग और मै भी तुम्हारी रडी बनकर तुम्हारी बगल गर्म करूँगी क्योंकि मैं तुम्हें दिल से चाहती हूँ, और ताज्जुब नहीं कि तुम्हें विजयगढ का राज्य दिला दूँ। मै समझती हूँ कि तुम्हें मायारानी की ताकत का हाल मालूम हागा।

भूत–हा हा मैं मशहूर मायारानी को अच्छी तरह जानता हू, परन्तु उसके गुप्त भेदों का हाल कुछ कुछ सिर्फ कमलिनी की जुबानी सुना है अच्छी तरह नहीं मालूम।

नागर–उसका हाल मैं तुमसे कहूँगी वह लाखों आदमियों को इस तरह मार डालने की कुदरत रखती है कि किसी को कानों कान मालूम न हो। उसक एक जरा से इशारे पर तुम दीन दुनिया से बेकार कर दिये गये तुम्हारी जोरू छीन ली गइ और तुम किसी को मुहँ दिखाने लयाक न रहे। कहो जो मै कहती हूँ वह ठीक है या नहीं ?

भूत–हा ठीक है मगर इस बात को मै नहीं मान सकता कि वह गुप्त रीति से लाखों आदमियों को मार डालने की कुदरत रखती है अगर ऐसा ही होता तो वीरेन्द्रसिह इत्यादि तथा मुझे मारने में कठिनता ही काहे की थी ?

नागर–यह कौन कहता है कि वीरेन्द्रसिह इत्यादि के मारने में उस कठिनता है इस समय वीरेन्द्रसिह उनके दोनों कुमार किशोरी कामिनी और तेजसिह इत्यादि कई ऐयारों को उसने कैद कर रक्खा है जब चाहे तब मार डाले और तुम्हें तो वह एसा समझती है जैसे तुम एक खटमल हा हा कभी कभी उसके ऐयार धोखा खा जाय तो यह बात दूसरी है। यही सबब था रिक्तगंथ हम लोगों के हाथ में आकर इत्तिफाक स निकल गया परन्तु क्या हर्ज है आज ही कल में वह किताब फिर मायारानी क हाथ में दिखाई देगी। यदि तुम हमारी बात न मानोगें तो कमलिनी तथा बीरेन्द्रसिह इत्यादि के पहिल ही मारे जाओगे हम तुम से कुछ काम निकालना चाहते है इसलिए तुम्हें छोडे जा रहे है। फिर जरा सी मदद के बदले में क्या तुम्हें दिया जाता है इस पर भी ध्यान दो और यह मत सोचो की कमलिनी ने मुझे और मानोरमा को कैद कर लिया तो कोई बडा काम किया इससे मायारानी का कुछ भी न बिगडेगा और हम लोग भी ज्यादे दिन तक कैद में न रहेगें। जा कुछ मैं कह चुकी हू उस पर अच्छी तरह विचार करो और कमलिनी का साथ छोडो नहीं पछताओगे और तुम्हारी जोरू भी बिलख बिलख के मर जायगी। दुनिया में ऐश व आराम से बढकर कोई चीज नहीं है सो सब कुछ तुम्हें दिया जाता है और यदि यह कहो कि तेरी बातों का मुझे विश्वास क्योंकर हो तो इसका जवाब अभी से यह देती हू कि मै तुम्हारी दिलजमई ऐसी अच्छी तरह से कर दूँगी कि तुम स्वय कहा कि हॉ मुझे विश्वास हो गया। (मुस्करा कर और नखरे के साथ भूतनाथ की अगुली दबा कर) मै तुम्हें चाहती हू इसलिए इतना कहती हू नहीं तो मायारानी को तुम्हारी परवाह न थी तुम्हारे साथ रह कर मैं भी दुनिया का कुछ आनन्द ले लूगी।

नागर की बातें सुन कर भूतनाथ चिन्ता में पड गया और देर तक कुछ सोचता रह गया। इसके बाद वह नागर की

तरफ देखकर बोला खैर तुम जो कुछ कहती हो मै करूगा और अपनी प्यारी स्त्री के साथ तुम्हारी मुहब्बत की भी कदर करूंगा।

इतना सुनते ही नागर ने झट भूलनाथ के गल मे हाथ डाल दिया और तब दोनो प्रेमी हसते हुए उस छाटी सी पहाड़ी के ऊपर चढ गये।

पॉचवॉ बयान

दिन दोपहर से ज्यादे चढ चुका है मगर मायारानी को खाने पीने की कुछ भी सुध नही है। पल पल मे उसकी परेशानी बढती ही जाती है। यद्यपि बिहारीसिह हरनामसिह और धनपत ये तीनो उसके पास मोजूद है परन्तु समझाने बुझाने की तरफ किसी का भी ध्यान नहीं है। उसे कोई भी नही दिलासा देता कोई धीरज नही बधाता और कोई भी या विश्वास नही दिलाता कि तुझ पर आई हुई बला टल जायेगी यहा तक कि किसी के मुह स या भी नही निकलता की सब्र कर हमलोग ऐयारी के फन मे होशियार है कोई न कोई काम अवश्य करेंगे।

ऊपर के बयानो को पढ कर पाठक समझ गय होंगे कि मायारानी की तरह उसकी धनपत और उसके दोनो यार बिहारीसिह तथा हरनामसिह भी किसी भारी पाप के बोझ से दबे हुए है और ऊपर की घटनाओं ने उन तीनों का भी जान सुखा दी है। य तीनों ही बदहोस और परेशान हो रहे है इन तीनों को भी अपनी अपनी फिक्र पड़ी है और इस समय इन तीनों के अतिरिक्त कोई चौथा आदमी मायारानी के सामने नही है फिर उसे कौन समझावे-बुझावे ? इनके सिवाय कोई चौथा आदमी उसके भेदो को जानता भी नही और न वह किसी का अपना भेद बताने का साहस कर सकती है। मायारानी की उदासी से चारो तरफ उदासी फैली हुई है। लौडियो नौकरो और सिपाहियों को भी चिन्ता ने आकर घेर लिया और कोई भी नही जानता कि क्या हुआ या क्या होने वाला है।

बहुत देर तक चुप रहने बाद बिहारीसिह ने सिर उठाया और मायारानी की तरफ देख कर कहा-

बिहारी-एक तो वीरेन्दसिह के ऐयार स्वय धुरधर है जिनका मुकाबला कोई कर नही सकता दूसरे कमलिनी के मदद से उन लोगों का साहस और भी बढ गया है।

धनपत-इसमें कोई सन्देह नही कि आज कल जो खराबी हो रही है वह सब कमलिनी ही की बदौलत है जिसका हम लोग कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।

माया-अफसोस वह कम्बख्त इस तिलिस्मी बाग के अन्दर आकर अपना काम कर जाय और किसी को कानो कान खबर न हो। हाय न मालूम हम लोगों की क्या दुर्दशा होने वाली है। क्या करु कहा भाग कर जाऊ अपनी जान बचाने के लिए क्या उद्याग करूं।

धनपत-अभी एक दम स हताश न हो जाना चाहिए बल्कि देखना चाहिए कि इस मुनादी का क्या असर रिआया के दिल पर होता है।

माया-हा मुझे जरा फिर से समझा के कह तो सही कि मुनादी वाले को क्या कह के पुकारने की आज्ञा मेरी तरफ से दी गई है ? उस समय मै आपे मे बिल्कुल न थी इससे कुछ समझ मे न आया।

धनपत-आपकी तरफ से मैंने दीवान साहब को हुक्म दिया जिसका बन्दोबस्त उन्होंने पूरा पूरा किया। मेरे सामने ही उन्होंने चार डुग्गी वालों को तलब किया और समझा कर कह दिया कि वे लोग शहर भर मे पुकार कर इस बात की मुनादी कर दे कि सरकारी ऐयारो को मालूम हुआ है कि वीरेन्दसिह का एक ऐयार राजा गोपालसिह की सूरत बन कर शहर मे आया है जिन्हे बैकुण्ठ पधारे पाच वर्ष के लगभग हो चुके है और रिआया को भडकाया चाहता है। जो कोई उस कम्बख्त का सिर काट कर लावेगा उसे एक लाख रुपया इनाम दिया जायगा।

माया-ठीक है मगर देखा चाहिए इसका नतीजा क्या निकलता है।

बिहारी-दो दिन के अन्दर ही अन्दर कुछ काम न चला तो समझ लेना चाहिए की इस मुनादी का असर उल्टा ही होगा।

माया-खैर जो कुछ नसीब मै लिखा है भोगूगी इस समय बदहवास होने से तो काम नही चलेगा। मगर यह तो कहो कि तुम दोनों ऐयार ऐसी अवस्था मे मेरी सहायता किस रीति से करोगे ?

बिहारी-मेरे किये तो कुछ न होगा। मै खूब समझ चुका हू कि वीरेन्दसिह के ऐयारो तथा कमलिनी का मुकाबला मैं किसी तरह नहीं कर सकता। देखो तेजसिह ने मेरा मुँह ऐसा काला किया कि अभी तक रग साफ नहीं होता। न मालूम उसे कैसे

कैसे मशाल याद है। इसके अतिरिक्त तुम्हें अपने लिए शायद कुछ उम्मीद हो मगर मैं तो बिल्कुल ही नाउम्मीद हो चुका हू और अब एक घण्टे के लिए भी यहां ठहरना बुरा समझता हू।

माया–क्या तुम वास्तव में वैसा ही करोगे जैसा कह चुके हो?

बिहारी–हा बेशक मैं अपनी राय पक्की कर चुका हू, मैं इसी समय यहा से चला जाऊगा और फिर मेरा पता कोई भी न लगा सकेगा।

माया–(हरनामसिंह की तरफ देख कर) और तुम्हारी क्या राय है?

हर–मेरी भी वही राय है जो बिहारीसिंह की है।

माया–खूब समझ बूझकर मेरी बातों का जवाब दो।

हरनाम–जो कुछ समझना था समझ चुका।

माया–(कुछ सोच कर) अच्छा मैं एक तर्कीब बताती हू, अगर उससे कुछ काम न चले तो फिर जो कुछ तुम्हारी समझ में आवे करना या जहा जी चाहे जाना।

बिहारी–अब उद्योग करना वृथा है मेरे किये कुछ भी न होगा।

माया–नहीं नहीं घबराओ मत तुम जानते हो कि मैं इस तिलिस्म की रानी हू और इस तिलिस्म में बहुत सी अद्भुत चीजे हैं मैं तुम दोनों को एक चीज देती हूँ जिसे देख कर और जिसका मतलब समझ कर तुम दोनों स्वय कहोंगे कि 'कोई हर्ज नहीं अब हम लोग बात बात में लाखों आदमियों की जान ले सकते है।

हरनाम–बेशक तुम इस तिलिस्म की रानी हो और तुम्हारे अधिकार में बहुत सी चीजे है परन्तु जब तक हम लोग उस वस्तु को देख नहीं लें जिसके विषय में तुम कह रही हो तब तक किसी तरह का वादा नहीं कर सकते।

माया–मैं भी तो यही कह रही हू तुम दोनों मेरे साथ चलो और उस चीज को देख लो फिर अगर मन भरे तो मेरा साथ दो नहीं तो जहा जी चाहे चले जाओ।

हरनाम–खैर पहले देख तो सही वह कौन सी अनूठी चीज है जिसपर तुम्हें इतना भरोसा है।

माया–हा मेरे साथ चलो मैं अभी वह चीज तुम दोनों के हवाले करती हू। मायारानी उठ खडी हुई और धनपत तथा दोनों ऐयारों को साथ लिए हुए वहा से रवाना हुई। बाग मे घूमती हुई वह उस बुर्ज के पास गई जो बाग के पिछले कोने मे था और जिसमें लाडिली और कमलिनी की मुलाकात हुई थी। उस बुर्ज के बगल ही में एक और कोठरी स्याह पत्थर से बनी हुई थी मगर यह मालूम न होता था कि उसका दर्वाजा किधर से है क्योंकि पिछली तरफ तो बाग की दीवार थी और तीनों तरफ वाली कोठरी की स्याह दीवारो मे दर्वाजे का कोई निशान न था। मायारानी ने बिहारी से कहा कमन्द लगाओ क्योंकि हम लोगों को इस कोठरी की छत पर चलना होगा। बिहारी सिंह ने वैसा ही किया। सबके पहिले मायारानी कमन्द के सहारे उस कोठरी पर चढ गई और उसके बाद धनपत और दोनो ऐयार भी उसी छत पर जा पहुचे।

ऊपर जाकर दोनों ऐयारो ने देखा कि छत के बीचों बीच में एक दर्वाजा ठीक वैसा ही है जैसा प्रायः तहखानों के मुह पर रहता है। वह दर्वाजा लकडी का था मगर उस पर लोहे की चादर मढी हुई थी और उसमें एक साधारण ताला लगा हुआ था। मायारानी ने हरनामसिंह से कहा 'यह ताला मामूली है इसे किसी तरह खोलना चाहिए।

बिहारीसिंह अपने ऐयारी के बटुए में से लोहे की एक टेढी सलाई निकाली और उसे ताले के मुहँ में डाल कर ताला खोल डाला इसके बाद दर्वाजे का पल्ला हटा कर किनारे किया। मायारानी ने दोनों ऐयारों को अन्दर जाने के लिए कहा मगर बिहारी ने इनकार किया और कहा पहले आप इसके अन्दर उतरिये तब हम लोग इसके अन्दर जायेगे क्योंकि यहा की अद्भुत बातों से हम लोग अब बहुत डर गये" है लाचार होकर मायारानी कमन्द के सहारे उस कोठरी के अन्दर उतर गई और इसके बाद धनपत और दोनों ऐयार भी नीचे उतर गये। ऊपर का दर्वाजा खुला रहने उस से कोठरी के अन्दर चादनी पहुच रही थी। यह कोठरी लगभग बीस हाथ चौडी और इससे कुछ ज्यादे लम्बी थी यहा की जमीन लकड़ी की थी और उस पर किसी तरह का मसाला चढा हुआ था कोठरी के बीचों बीच में एक छोटा सा सन्दूक पडा हुआ था। धनपत का हाथ पकड़े मायारानी एक किनारे खडी हो गई और ऐयारो की तरफ देख कर बोली 'तुम दोनों मिल कर इस सन्दूक को मेरे पास लाओ।

हुक्म के मुताबिक दोनों ऐयार उस सन्दूक के पास गए मगर सन्दूक का कुण्डा पकड के उठाने का इरादा किया ही था की उस जमीन का एक गोल हिस्सा जिस पर दोनों ऐयार खडे थे किवाड के पले की तरह एक तरफ से अन्दर की तरफ यकायक धस गया और वे दोनों ऐयार जमीन के अन्दर जा रहे साथ ही एक आवाज ऐसी आई जिसके सुनने से धनपत को मालूम होगया कि दोनों ऐयार नीचे जल की तह तक पहुच गये।

इसक वाद जमीन का वह हिस्सा जो लकडी का था फिर वरावर हा गया और सन्दूक भी उसी तरह दिखाइ देने लगा।

यह हाल दख धनपत डर के मार कॉपन लगी और मायारानी की तरफ देख क वोली क्या यह काई कुआ है ?

माया–हा यह कुआ है और एसे नमक हरामों को सजा दन क लिए वनाया गया है। दोनों वेईमान ऐयार मेरा साथ छोड क अपनी ज़ान वचाया चाहत थे हरामजादे पाजी नालायक अव अपनी सजा को पहुचे।

धन–इतने दिनों तक आपके साथ रहन पर भी इस कुए का हाल मुझे मालूम न था।

माया–यहा के वहुत से भेद अभी तुम्हें मालूम नहीं खैर अव यहा से चलना चाहिए।

धनपत का साथ लिय मायारानी उस काठरी के वाहर निकली और दर्वाजा वन्द करने वाद कमन्द के साहर उतर कर अपने खास सान वाल कमर में चली आई। मायारानी की लौडियों ने मायारानी को दोनों एयारों और धनपत के साथ उस कोठरी की तरफ जात देखा था मगर अव कवल धनपत का साथ लिए लौटते देख उनका ताज्जुव हुआ लेकिन डर क मार कुछ पूछ न सकी।

सध्या का समय हा गया मायारानी अपन कमरे में जा कर मसहरी पर लेट गई। उस समय वहुत सी लौडिया उसक सामने थी मगर इशारा पा कर सव वाहर चली गई कवल धनपत वहा रह गई।

धनपत–आपने वहुत जल्दी की विचारे ऐयारों की जान व्यर्थ ही गई।

माया–वे दानों कमीनेंइसीलायक थ। इस लिए मैं उन से वार वार पूछ रही थी जव दख लिया कि य अपन विचार पर दृढ हैं ता लाचार

धन–खैर जा कुछ हुआ सो अच्छा हुआ लेकिन अव क्या करना चाहिए ? अफसोस यह है कि ऐस समय में वेचारी मनोरमा भी नहीं है।

माया–(लम्वी सास लकर) हाय वेचारी मनोरमा मरी सच्ची सहायक थी पर उसे भी तेजसिह ने गिरफ्तार कर लिया। इसी खवर के साथ नागर न कहला भेजा था कि भूतनाथ के कागजात अपने साथ लेकर उस छुडाने जाती हू, मगर उस वात को भी वहुत दिन वीत गये और अभी तक मालूम न हुआ कि नागर के जाने का क्या नतीजा निकला। उस भी गिरफ्तार कर लिया हा तो ताज्जुव नहीं सच तो यह है कि भूतनाथ के मारने में मनारमा ने वड़ी जल्दी की।

धन–वशक भूतनाथ के मारन में उसने भूल की भूतनाथ से वहुत कुछ काम निकालने की आशा थी।

इतन ही में वाहर स आवाज आई थी नहीं वल्कि है। मायारानी न दर्वाजे की तरफ देखा तो नागर पर निगाह पडी।

माया–आह इस समय तरा आना वहुत ही अच्छा हुआ आ मेरे पास वैठ जा।

नागर–(मायारानी के पास वैठकर) मैं देखती हू की आज आपकी अवस्था विल्कुल वदली हुई है कहिय मिजाज ता अच्छा है।

माया–अच्छा क्या है वस दम निकलन की दर है।

नागर–(घवडा कर) सा क्या ?

माया–अव आई है लो सव कुछ सुन ही लेगी पर पहिले अपना हाल तो कह कि मरी प्यारी सखी मनोरमा को छुडा लाई या नहीं और चोखट क अन्दर पैर रखत ही तैने यह क्या कहा कि थी नहीं वल्कि है। क्या भूतनाथ मारा नहीं गया ? क्या वह खवर झूठ थी ?

नागर–हॉ वह खवर झूठ थी मनोरमा ने भूतनाथ की जान नही ली और न उसे तेजसिह ने गिरफ्तार किया है वल्कि वह कमलिनी की कैदी है।

माया–तो वह औरत जो मनोरमा की खवर लकर तेरे पास आई थी झूटी थी ?

नागर–वह स्वय कमलिनी थी मनोरमा को कैद कर चुकी थी और मुझे भी गिरफ्तार किया चाहती थी वह ता असल में भूतनाथ क कागजात ले लेने का वन्दावस्त कर रही थी वल्कि यों कहना चाहिए कि मै उसके धोखे में आ भी गयी। उसने मुझ गिरफ्तार कर लिया और भूतनाथ के विल्कुल कागजात ही मुझसे लेकर जला दिए।

माया–यह वहुत ही वुरा हुआ अव भूतनाथ विल्कुल हम लागों के कब्जे से वाहर हो गया खैर जीता है यही वहुत है। यह कह कि तरी जान कैस वची ?

इसक वाद नागर न अपना पूरा पूरा हाल मायारानी के सामने कहा और उसने वड गौर से सुना। अन्त में नागर न कहा इस समय भूतनाथ को अपने साथ ले आई जो जी जान से हम लागों की मदद करने के लिए तैयार है।

यह सुनकर कि भूतनाथ अब हम लोगों का पक्षपाती हो गया और नागर के साथ आया है मायारानी बहुत ही खुश हुइ और उसे एक प्रकार की आशा वध गइ। उसने धनपत की तरफ देखकर कहा "ताज्जुब नहीं कि अब वह वला मेरे सिर से टल जाए जिसके टलने की आशा न थी।

नागर–आपने अपना हाल तो कुछ कहा ही नहीं। यह जानने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा है कि आप क्यों उदास हो रही है और आप पर क्या बला आई है ?

माया–थोडी देर में तुझे सब कुछ मालूम हो जाएगा पहिले भूतनाथ को मेरे पास बुला ला मैं स्वय उससे कुछ बात किया चाहती हू !

नागर–नहीं नहीं पहिले आप अपना कुल हाल मुझसे कहिये क्योंकि मेरी तबीयत घबडा रही है।

मायारानी ने अपना बिल्कुल हाल अर्थात तेजसिह का पागल बन के जाना उन्हें बाग के तीसरे दर्जे में कैद करना चण्डूल का यकायक पहुचना और उसकी बातें तथा लाडली का दगा दे जाना आदि नागर से कहा मगर अपने पुराने कैदी के छूटने का और दोनों ऐयारों के मार डालने का हाल छिपा रक्खा हा उसके बदले में इतना कहा कि "वीरेन्द्रसिह का एक ऐयार मेरे पति की सूरत बन कर आया है जिन्हें मरे पाच वर्ष के लगभग हुए उसी को गिरफ्तार करने के लिए बिहारीसिह और हरनामसिह गये हैं।

नागर–मगर यह तो कहिए कि चण्डूल ने आपके तथा बिहारीसिह और हरनामसिह के कान में क्या कहा।

माया–बहुत पूछने पर भी बिहारीसिह और हरनामसिह ने नहीं बताया कि चण्डूल ने उनके कान में क्या कहा था।

नागर–और आपके कान में उसने क्या कहा ?

माया–मेरे कान में तो उसने केवल इतना ही कहा था कि आठ दिन के अन्दर ही यह राज्य इन्दजीतसिह का हो जाएगा और तू मारी जाएगी। खैर जो होगा देखा जाएगा अब भूतनाथ को यहा ले आ उससे मिलने की बहुत जरूरत है।

नागर–बहुत अच्छा तो क्या इसी जगह बुला लाऊ ?

माया–हा हा इसी जगह बुला ला। वह तो ऐयार है उससे पर्दा काहेका।

नागर कुछ सोचती विचारती वहा से रवाना हुई और भूतनाथ को जिसे बाग के फाटक पर छोड गई थी साथ लेकर बाग के अन्दर घुसी। पहरे वालों ने किसी तरह का उज्र न किया और भूतनाथ इस बाग की हर एक चीज को अच्छी तरह देखता और ताज्जुब करता हुआ मायारानी के पास पहुचा। नागर ने मायारानी की तरफ इशारा करके कहा "यही हम लोगों की मायारानी है। और भूतनाथ ने यह कह कर कि मैं बखूबी पहचानता हू। मायारानी को सलाम किया।

मायारानी ने भूतनाथ की उतनी ही खातिरदारी और चापलूसी की जितनी कोई खुदगर्ज आदमी उसकी खातिरदारी करता है जिससे कुछ मतलब निकलने की आवश्यकता होती है।

माया–तुम्हारी स्त्री तुम्हें मिल गई ?

भूत–जी हा मिल गइ और यह उस इनाम का पहिला नमूना है जो आपकी ताबेदारी करने पर मुझे मिलने की आशा है।

माया–नागर ने जो कुछ प्रतिज्ञा तुमसे की है मैं अवश्य पूरी करूगी बल्कि उससे बहुत ज्यादे इनाम हर एक काम के बदले में दिया करूगी।

भूत–मैं दिलोजान से आपके काम में उद्योग करूँगा और कमलिनी को बुरा धोखा दूगा। वह जितना मुझ पर विश्वास रखती है उतना ही पछताएगी परन्तु आप को भी कइ बातों का ख्याल रखना चाहिए।

माया–वह क्या ?

भूत–एक तो जाहिर में कमलिनी का दोस्त बना रहूगा जिसमें उसे मुझ पर किसी तरह का शक न हो यदि आपका कोइ जासूस मेरे विषय में आपको इस बात का सबूत दे कि मैं कमलिनी से मिला हुआ हू तो आप किसी तरह की चिन्ता न कीजिएगा।

माया–नहीं नहीं ऐसी छोटी छोटी बातें मुझे समझाने की जरूरत नहीं है मैं खूब जानती हू कि बिना उससे मिले किसी तरह पर काम न चलेगा।

भूत–बेशक बेशक और इसी वजह से मैं बहुत छिपकर आपके पास आया करूँगा।

माया–ऐसा होना ही चाहिए, और दूसरी बात कौन सी है ?

भूत–दूसरे यह कि मुझसे आप अपने भेद न छिपाया कीजिए क्योंकि ऐयारों का काम बिना ठीक ठीक भेद जाने नहीं चल सकता।

माया—मुझे तुम पर पूरा भरासा है इसलिए मैं अपना कोइ भद तुमसे न छिपाऊगी।

भूत—अच्छा अव एक वात मैं आपसे और कहूगा।

माया—कहा !

भूत—नागर की जुवानी यह ता आपका मालूम ही हुआ हागा कि काशी मे मनोरमा के तिलिस्मी मकान के अन्दर किशारी क रखने का हाल कमलिनी जान गई है।

माया—हा नागर वह सव हाल मुझसे कह चुकी ह।

भूत—ठीक है तो आपन यह भी विचारा होगा कि किशोरी को उस मकान स निकाल कर किसी दूसरे मकान में रखना चाहिय।

माया—हा मेरी ता यही राय ह।

भूत—मगर नहीं आप किशारी को उसी मकान में रहने दीजिय इस वात की खवर मैं किशारी के पक्षपातियों को दूगा जिस सुन कर व लोग किशारी को छुडाने की नीयत से अवश्य उस मकान के अन्दर जायग उस समय उन लागों का एस ढग स फसा लूगा कि किसी का पता न लगगा और न इसी वात का शक किसी को हागा कि मैं आपका तरफ़दार हू

माया—तुम्हारी यह राय वहुत अच्छी है मे इसे पसन्द करती हू और एसा ही करूँगी।

भूत—अच्छा ता अव आप यह वताइये कि कुअर इन्दजीतसिह वगैरह के साथ आपन क्या वर्ताव किया जा आपक यहा कैद हे ?

माया—(ऊची सास लकर) अफसोस कमलिनी उन लागों को यहा से छुडा ल गई और मरी छाटी वहिन लाडिली भी मुझ धाखा दे गई जिसका खुलासा हाल मैं तुमसे कहती हू।

मायारानी न अपना कुल हाल जो नागर से कहा था भूतनाथ को कह सुनाया मगर अपन पुरान कैदी का हाल और यह वात कि चण्डूल ने उसके कान में क्या कहा था भूतनाथ से भी छिपा रक्खा और उसके वदल में वह कहा जा नागर स कहा था मगर भूतनाथ ने उस जगह मुस्कुरा दिया जिससे मायारानी समझ गइ कि भूतनाथ को मरी वातों में कुछ शक हुआ।

माया—जा कुछ मै कह चुकी हू उसमें वात झूठ थी और एक मेन छिपा लिया।

भूत—(हस कर) वह वात शायद मुझसे कहने योग्य नहीं है !

माया—हा मगर अव ता मै वादा कर चुकी हू कि तुमसे काई वात न छिपाऊँगी इसलिये यद्यपि उस वात का भेद अभी तक मैंने नागर का भी नहीं दिया मगर तुमसे जरूर कहूगी परन्तु इसके पहिले एक वात तुमसे पूछूगी क्योंकि बहुत दर से उसक पूछने की इच्छा लगी है पर वातों का सिलसिला दूसरी तरफ हो जाने के कारण पूछ न सकी।

भूत—खैर अव पूछ लीजिए।

माया—मनारमा को कमलिनी की कैद से छुडाने के लिए तुमने क्या विचारा है ?

भूत—मनोरमा को यद्यपि मैं सहज ही में छुडा सकता हू परन्तु उसे भी इस ढग से छुडाया चाहता हू कि कमलिनी को मुझ पर शक न हो अगर उसे जरा भी शक हो जायगा तो वह सम्हल जायगी क्योंकि वह वडी ही धूर्त और शैतान है।

माया—सा ता ठीक है मगर काई वन्दोवस्त तो करना ही चाहिये।

भूत—हा हा उसका वन्दोवस्त वहुत जल्द किया जायगा।

माया—अच्छा तो अव वह भेद की वात भी तुमसे कहती हू जिसे मैं अभी तक वडी कोशिश से छिपाये हुए थी यहा तक कि अपनी प्यारी सखी मनारमा से भी उस विषय में आज तक मैंने कुछ नही कहा था। (नागर की तरफ देखकर) ला सुन लो तुम भी सुन ला।

मायारानी दो घण्टे तक अपने गुप्त भद की वात भूतनाथ स कहती रही और वह बड गौर से सुनता रहा और अन्त में मायारानी को कुछ समझा वुझा कर और इनाम में हीरे की एक माला पाकर वहा से रवाना हुआ।

छठवां बयान

रात आधी जा चुकी है चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है हवा भी एक दम वन्द है यहा तक कि किसी पेड की एक पत्ती भी नही हिलती। आसमान में चाद तो नहीं दिखाई देता मगर जगल मैदान में चलने वाले मुसाफिरों को तारों की जमानिया की तरफ जा रहे हैं। जमानिया अव वहुत दूर नहीं है और ये दोनों मुसाफिर शहर के वाहरी प्रान्त में पहच चुके हैं। अव वे दोना आदमी शहर के पास पहुच गये मगर शहर के अन्दर न जाकर वाहर ही वाहर मैदान के उस हिस्से की

तरफ जाने लगे जिधर पुराने जमाने की आबादी का कुछ कुछ निशान मौजूद था। यहा बहुत से टूटे फूटे मकानों के कोई कोई हिंस्से बचे हुए थे जो बदमाशों तथा चोरों के काम में आते थे। यहा के निस्बत शहर के कमजोर दिमाग वालों और डरपोक आदमियों में तरह तरह की गप्पें उडा करती थीं। कोई कहता था कि वहाँ किसी जमाने में बहुत से आदमी मारे गये है और वे लोग भूत होकर अभी तक मौजूद है और उधर से आने जाने वालों को सताया करते है कोई कहता था कि उस जमीन में जिन्नों ने अपना घर बना लिया है और जो कोई उधर से जाता है उसे मार कर अपनी जात में मिला लिया। करते है इत्यादि तरह तरह की बातें लोग करते थे मगर उन दोनों मुसाफिरों को जो इस समय उसी तरफ कदम बढ़ाये। जा रहे है इन बातों की कुछ परवाह न थी।

थोडी ही देर में ये दोनों आदमी जिनमें से एक बहुत ही कमजोर और थका हुआ जान पडता था उस हिस्से में जा पहुचे और खडे होकर चारों तरफ देखने लगे। पास ही में एक पुराना मकान दिखाई दिया जो तीन हिस्से से ज्यादे टूट चुका था और उसके चारों तरफ जगली पेडों और लताओं ने एक भयानक सादृश्य बना रक्खा था। उसी जगह एक आदमी टहलता हुआ नजर आया जो उन दोनों को देखते ही पास आया और बोला 'हमारे साथियों ने उस नियत जगह पर ठहरना उचित न जाना और राय पक्की हुई कि एक नाव पर सवार होकर सब लोग काशी की तरफ रवाना हो जाय और उसी जगह से कायवाई करें। वे लोग नाव पर सवार हा चुके है और कमलिनी जी यह कह कर मुझे इस जगह छोड गइ है कि तेजसिह राजा गोपालसिह को साथ लेकर आवें तो उन्हें लिए हुए वालाघाट की तरफ जहा हम लोगों की नाव खडी होगी बहुत जल्द चले आना।

पाठक समझ ही गये होंगे कि ये दोनों मुसाफिर तेजसिह और राजा गोपालसिह (मायारानी के पुराने कैदी) थे हा उस आदमी का परिचय हम दिए देते है जो उन दोनों को इस भयानक स्थान में मिला था। वह तेजसिह के प्यारे दास्त देवीसिह थे।

देवीसिह की बात सुनकर तेजसिह अपने साथी राजा गोपालसिह को साथ लिए हुए वहा से रवाना हुए और थोडी देर में गगा के किनारे पहुच कर उस नाव पर जा सवार हुए जिस पर कमलिनी लाडिली इन्द्रजीतसिह आनन्दसिह तारासिह भैरोसिह और शेरसिह सवार थे। वह किश्ती बहुत छोटी तो न थी मगर हल्की व तेज जाने वाली थी। मालूम होता है कि उसको उन लोगों ने खरीद लिया था क्योंकि उस पर कोई मल्लाह न था और केवल ऐयार लोग खेकर ले जाने के लिए तैयार थे। तेजसिह को और राजा गोपालसिह को देखते ही सब उठ खडे हुए। कुअर इन्द्रजीतसिह ने खातिर के साथ राजा गोपालसिह को अपने पास बैठा कर किश्ती किनारे से हटाने की आज्ञा दी और बात की बात में नाव किनारा छोड कर दूर दिखाई देने लगी।

इन्द्र–(राजा गापाल सिह से) मै इस समय आपको अपने पास देखकर बहुत ही प्रसन्न हू, ईश्वर ही ने आपकी जान बचाई।

गोपाल–मुझे अपने बचने की कुछ भी आशा न थी यह तो सब आपके चरणों का प्रताप है कि कमलिनी वहा गई और उसे इत्तिफाक से मेरा हाल मालूम हो गया।

कमलिनी–मुझे आशा थी कि आपको साथ लिए तेजसिह सूर्य निकलने के साथ ही हम लोगों से आ मिलेंगे मगर दो दिन की देर हो गई और यह दो दिन का समय बडी मुश्किल से बीता क्योंकि हम लोगों को बडी चिन्ता इस बात की थी कि आपके आने में देर क्यों हुई। अब सबके पहिले इस विलम्ब का कारण हम लोग सुना चाहते है।

गोपाल–तेजसिह जिस समय मुझे कैद से छुडा कर उस तिलिस्मी बाग के बाहर हुए उस समय उन्होंने राजा बीरेन्द्रसिह का जिक्र किया और कहा कि हरामजादी मायारानी ने राजा बीरेन्द्रसिह और रानी चन्द्रकान्ता को भी इस तिलिस्म में कहीं पर कैद कर रक्खा है जिनका पता नहीं लगता। यह सुनते ही मैं उन्हें साथ लिए हुए फिर उसी तिलिस्म बाग में चला गया। जहाँ-जहाँ मैं जा सकता था जाकर अच्छी तरह पता लगाया क्यों कि कैद से छूट जाने पर मै बिल्कुल ही लापरवाह और निडर हो गया था।

इन्द्र–यह काम आपने बहुत ही उत्तम किया। हा तो उनका कहीं पता लगा ?

गोपाल–(सिर हिला कर) नहीं वह खबर बिल्कुल झूठी थी। उसने आप लोगों को धोखा देने के लिए अपने ही दो आदमियों को राजा बीरेन्द्रसिह और रानी चन्द्रकान्ता की सूरत में रग के कैद कर रक्खा है।

कमलिनी–यह आपको कैसे निश्चय हुआ ?

गोपाल–हमने स्वय उन दोनों को अच्छी तरह आजमा कर देख लिया।

इन्द्र–यह खबर सुन कर हम लोगोंको हद से ज्यादे खुशी हुई अब हम लोग उनकी तरफ से निश्चिन्त हो गये और केवल किशोरी और कामिनी की फिक्र रह गई।

तेज–बेशक हम लोग उनकी तरफ से निश्चिन्त हो गये। (राजा गोपालसिह की तरफ इशारा करके) इनके साथ

दो दिन तक उस बाग में रहने और गुप्त स्थानों में घूमने का मौका मिला। ऐसी ऐसी चीजें देखने में आई कि होश दग हो गये। यद्यपि राजा वीरेन्दसिह के साथ विक्रमी तिलिस्म में मैं बहुत कुछ तमाशा देख चुका हू परन्तु अब यही कहते बन पडता है कि इस तिलिस्म के आगे उसकी कोई हकीकत न थी

कमलिनी--यह उस तिलिस्म के राजा ही ठहरे फिर इनसे ज्यादे वहा का हाल कौन जान सकता था और किसकी सामर्थ्य थी कि दो दिन तक उस बाग में आपको रख कर घुमाये ? वहा का जितना हाल ये जानते हैं उसका सोलहवा हिस्सा मायारानी नहीं जानती। ये बेचारे बडे नेक और धर्मात्मा हैं पर न मालूम क्योंकर उस कम्बख्त के धोखे में पड गये।

आनन्द --बेशक इनका किस्सा बहुत ही दिलचस्प होगा।

गोपाल--मैं अपना अनूठा किस्सा आपसे कहूँगा। जिसे सुन कर आप अफसोस करेंगे। (लाडिली की तरफ देख के) क्यों लाडिली तू अच्छी तरह से तो है ?

लाडिली -(गद्गद स्वर से) इस समय मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं। क्या स्वप्न में भी गुमान हो सकता था कि इस जिन्दगी में पुन आपको देखूगी ? यह दिन आज कमलिनी बहिन की बदौलत देखने में आया।

गोपाल -बेशक-बेशक और ये पाच वर्ष मैंने किस मुसीबत में काटे हैं सो बस मैं ही जानता हू (कमलिनी की तरफ देख कर) मगर तुझे उस तिलिस्मी बाग के अन्दर घुसने का साहस कैसे हुआ ?

कमलिनी-- रिक्तग्रन्थ मेरे हाथ लग गया इसी से मै इतना काम कर सकी।

गोपाल--ठीक है तब तो तू मुझसे भी ज्यादे वहा का हाल जान गई होगी।

इन्द्रजीत--(चौंकर कर और कमलिनी की तरफ देख कर) क्या रिक्तग्रन्थ तुम्हारे पास है ?

कमलिनी--(हस कर) जी हा मगर इससे यह न समझ लीजिएगा कि मैंने आपके यहा चोरी की थी ?

तेज --नहीं-नहीं मै खूब जानता हू कि रिक्तग्रन्थ का चोर कोई दूसरा ही है आपको नानक की बदौलत वह किताब हाथ लगी

कमलिनी--जो हा जिस समय तिलिस्मी बाग में नानक अपना किस्सा आपसे कह रहा था मैं छिप कर सुन रही थी।

इन्द्रजीत--नानक का किस्सा कैसा है ? **तेज** --मैं आपसे कहता हू जरा सब्र कीजिए।

इस समय उस किश्ती पर जितने आदमी थे सभी खुश थे केवल इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह को किशोरी और कामिनी का ध्यान था। तेजसिह ने अपने पागल बनने का हाल और उसी बीच में नानक का किस्सा जितना उसकी जुबानी सुना था कह सुनाया। तेजसिह के पागल बनने का हाल सुन कर सभों को हसी आ गई। दोनों कुमारों ने नानक का बाकी हाल कमलिनी से पूछा जिसके जवाब में कमलिनी ने कहा-- यद्यपि नानक का कुछ हाल मुझे मालूम है मगर मैं इस समय कुछ भी न कहूगी क्योंकि उसका हाल उसी की जुबानी सुनने में आपको मजा मिलेगा और उसका किस्सा सुने बिना इस समय कोई हर्ज भी नहीं हा इस समय थोडा सा अपना हाल मैं आपसे कहूगी।

कमलिनी ने भूतनाथ का मनोरमा और नागर का तथा अपना हाल जितना हम ऊपर लिख आये है सभों के सामने कहना शुरू किया। अपना हाल कहते कहते जब कमलिनी ने मनोरमा के मकान का अद्भुत हाल कहना शुरू किया तो सभों को बडा ही ताज्जुब हुआ और किशोरी की अवस्था पर इन्द्रजीतसिह को रूलाई आ गई। उनके दिल पर बडा ही सदमा गुजरा मगर तेजसिह के लिहाज से जिन्हें वे चाचा के बराबर समझते थे अपने को सम्हाला। गोपालसिह ने दिलासा देकर कहा आप लोग घबडाइए नहीं कम्बख्त मनोरमा के मकान का पूरा पूरा भेद मैं जानता हू इसलिए मैं बहुत जल्द किशोरी को उसकी कैद से छुडा लूगा।

लाडिली--कामिनी भी उसी के मकान में भेज दी गई है।

गोपाल--यह और अच्छी बात है एक पथ दो काज हो जायगा !

इन्द्रजीत--(कमलिनी से) अब यह रिक्तग्रन्थ मुझे कब मिलेगा ?

कमलिनी--वह मेरे पास है उसी की बदौलत मैं आपको उस कैदखाने से छुडा सकी और उसी की बदौलत आपको तिलिस्म तोडने में सुगमता होगी मैं बहुत जल्द वह किताब आपके हवाले करूंगी।

गोपाल--(चारों तरफ देख के कमलिनी से) ओफ बात की बात में हम लोग बहुत दूर निकल आये ! क्या तुम्हारा इरादा काशी चलने का है ?

कमलिनी--जी हॉ हम लोगों ने तो यही इरादा कर लिया है कि काशी चल कर किसी गुप्त स्थान में रहेंगे और उसी जगह से अपनी कार्रवाई करेंगे।

गोपाल--मगर मेरी राय तो कुछ दूसरी है।

कम--वह क्या ? मुझे विश्वास है कि आप बनिस्बत मेरे बहुत अच्छी राय देंगे।

गोपाल--यद्यपि मै इस शहर जमानिया का राजा हू और इस शहर को फिर कब्जे में कर सकता हू परन्तु पाच वर्ष तक मेरे मरने की झूठी खबर लोगों में फैली रहने के कारण यहा की रिआया के मन में बहुत कुछ फर्क पड गया होगा।

यदि एसा न भी हो तो भी मैं अभी अपने को जाहिर नहीं किया चाहता और न मायारानी को ही अभी जान से मारूगा क्योंकि यदि वह मर ही जायगी तो अपने किये का यथार्थ फल मरे देखते कौन भोगेगा ? इसलिए मैं थोडे दिनों तक छिप रह कर उसे सजा देना उचित समझता हू।

कम–जैसी मर्जी।

गोपाल–(कमलिनी से) इसलिए मै चाहता हू कि कुअर साहब अपना एक ऐयार मुझे दें मै उसे साथ लेकर काशी जाऊगा और किशोरी तथा कामिनी को जो मनोरमा के मकान में कैद हैं बहुत जल्द छुडा लाऊगा तब तक तुम दोनों कुमारों और लाडिली को अपने साथ लेकर मायारानी के उस तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जाकर देवमन्दिर में रहो। वहा खाने के लिए मेवों की बहुतायत है और पानी का चश्मा भी जारी है। मायारानी को तुम लोगों का हाल मालूम न होगा क्योंकि उसे वह स्थान मालूम नहीं है और न वहा तक जा ही सकती है। उसी जगह रह कर दोनों कुमारों को एक दो दफे रिक्तगन्थ शुरू से आखिर तक अच्छी तरह पढ जाना चाहिए जो बातें इनकी समझ में न आवें तुम समझा देना और इसी बीच में वहा की बहुत सी अदभुत बातें भी ये देख लगे इसलिए कि इनको बहुत जल्द वह तिलिस्म तोडना होगा जैसा कि हम बुजुर्गो की लिखी किताबों में देख चुके है वह इन्हीं लोगों के हाथ से टूटेगा।

कम–बेशक बेशक।

गोपाल–और एक ऐयार को राहतासगढ भेज दो कि वहा जाकर महाराज बीरेन्द्रसिह को कुमारों के कुशल मगल का हाल कहे और थोडी सी फौज अपने साथ ले आकर जमानिया के मुकाबिले में लडाई शुरू कर दे मगर वह लडाई जोर के साथ शीघ्र बखेडा निपटाने की नीयत से न की जाय जब तक कि हम लोग दूसरा हुक्म न दें। बस इसके बाद जब मैं अपना काम करके अर्थात किशोरी और कामिनी को छुडा कर लौटूगा और तुमसे मिलूगा तो जो कुछ मुनासिब होगा किया जायगा। हा देवमन्दिर म रह कर मौका मिले तो मायारानी को गुप्त रूप से छेडती रहना।

कम–आपकी राय बहुत ठीक है मगर आप कैद की तकलीफ उठाने के कारण बहुत ही सुस्त और कमजोर हो रहे है इतनी तकलीफ क्योंकर उठा सकेंगे।

गोपाल–तुम इसकी चिन्ता मत करो (कुमारों की तरफ देखकर) आप लोग मेरी राय पसन्द करते हैं या नहीं ?

कुमार–बेशक आपकी राय उत्तम है।

कमलिनी–अच्छा तो अपना तिलिस्मी खजर जिसका गुण आपसे कह चुकी हू, आपको देती हू यह आपकी बहुत सहायता करेगा।

गोपाल–हा बेशक यह खजर एसी अवस्था में मेरे साथ रहने योग्य है। परन्तु वह जब तक तुम्हारे पास है तुम्हें किसी तरह का खतरा नहीं पहुच सकता इसलिए खजर को मैं तुमसे जुदा न करूगा।

इन्द्रजीत–उस खजर का जोडा जो कमलिनी ने मुझे दिया है मैं आपको देता हू, आप इसे अवश्य अपने साथ रखें।

गोपाल–नहीं नही इसकी कोई आवश्यकता नहीं।

इन्द्रजीत–आपको मेरी यह बात अवश्य माननी पडेगी।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिह ने वह खजर जबर्दस्ती गोपालसिह के हवाले किया और किश्ती किनारे लगाने का हुक्म दिया।

गोपाल–अच्छा तो मेरे साथ कौन ऐयार चलेगा ?

इन्द्रजीत–जिसे आप पसन्द करें केवल तेजसिह चाचा को मैं अपने पास रखना चाहता हू इसलिए कि उनकी जुबानी उन घटनाओं का हाल सुनूगा जो आपको कैद से छुडाने के समय हुई होंगी।

गोपाल–(हस कर) बेशक वे बातें सुनने योग्य है।

देवी–आपके साथ मैं चलूगा।

गोपाल–अच्छी बात है।

इन्द्र–भैरोसिह को राहतासगढ भेजता हू।

गोपाल–बहुत मुनासिब मगर तेजसिह के अतिरिक्त और दोनों ऐयारों को अर्थात तारासिह और शेरसिह को अपने साथ मत फसाये रहियेगा।

इन्द्रजीत–नहीं नहीं उन दोनों को अपने रहने का ठिकाना दिखा कर छोड देंगे ये दोनों चारों तरफ घूम घूम कर खबर लगाते रहेंगे।

गोपाल–और मै भी यही चाहता हू। (कमलिनी की तरफ देख कर) बाग के चौथे दर्जे में जो देवमन्दिर है वहा जाने का रास्ता तुझे अच्छी तरह मालूम है या नहीं ?

कमलिनी– रिक्तग्रंथ की बदौलत वहा का रास्ता मैं अच्छी तरह जानती हू।

इतने में किश्ती किनारे लगी और सब कोई उतर पडे।

सातवां बयान

राजा गोपालसिह और देवीसिह को काशी की तरफ और भैरोसिंह को रोहतासगढ की तरफ रवाना करके कमलिनी अपने साथियों को साथ लिए हुए मायारानी के तिलिस्मी बाग की तरफ रवाना हुई। इस समय रात नाम मात्र को बाकी थी। प्राय सुबह को चलने वाली दक्षिणी हवा ताजी खिली हुई खूशबूदार फूलों की कलियों में से अपने हिस्से की सबसे पहिली खुशबू लिए हुए अठखेलिया करती सामने से चली आ रही थी। हमारे बहादुर कुमार और ऐयार लोग भी धीरे धीरे उसी तरफ जा रहे थे। यद्यपि मायारानी का तिलिस्मी बाग यहा से बहुत दूर था मगर वह खूबसूरत बगला जो चश्मे के ऊपर बना हुआ था और जिसमें पहिले पहल नानक और बाबाजी (मायारानी के दारोगा) से मुलाकात हुई थी थोड़ी ही दूर पर था बल्कि उसकी स्याही दिखाई दे रही थी। हमारे पाठक इस बगले को अभी भूले न होंगे और उन्हें यह बात भी याद होगी कि नानक रामभोली को ढूढता हुआ चश्मे के किनारे चल कर इसी बगले में पहुचा था और इसी जगह से बेबस करके मायारानी के दर्बार में पहुँचाया गया था।

इन्द–(कमलिनी से) सूर्योदय के पहिले ही हम लोगों का अपना सफर पूरा कर लेना चाहिए क्योंकि दूसरे राज्य में बल्कि यों कहना चाहिए कि एक दुश्मन के राज्य में लापरवाही के साथ घूमना उचित नहीं है।

कम–ठीक है मगर हमें अब बहुत दूर जाना नहीं है। (हाथ का इशारा करके) वह जो मकान दिखाई देता है बस वहीं तक चलना है।

लाडिली–वह तो दारोगा वाला बगला है!

कम–हा और मैं समझती हू कि जब से कम्बख्त दारोगा कैद हो गया है तब से वह खाली ही रहता होगा?

लाडिली–हा वह मकान आजकल बिल्कुल खाली पड़ा है। यहा से एक सुरग मायारानी के बाग तक गई है मगर उसका हाल सिवाय दारोगा के और किसी को मालूम नहीं है और दारोगा ने आज तक उसका भेद किसी से नहीं कहा।

कम–ठीक है मगर मुझे उस सुरग से कोई मतलब नहीं उस मकान के पास ही चश्मे के दूसरी तरफ एक टीला है मैं वहा चलूगी क्योंकि आज दिन भर उसी टीले पर बिताना होगा।

लाडिली–यदि मायारानी का कोई आदमी मिल गया तो?

कम–एक नहीं अगर दस भी हों तो क्या परवाह!

थोडी ही देर में यह मण्डली उस मकान के पास जा पहुची जिसमें दारोगा रहा करता था। कमलिनी ने चाहा कि उस मकान के बगल से हो कर चश्मे के पार चली जाय और उस टीले पर पहुचे जहा जाने की आवश्यकता थी मगर बगले के बरामदे में एक लम्बे कद के आदमी को टहलते देख वह रुकी और उसी तरफ गौर से देखने लगी कमलिनी के रुकने से दोनों कुमार और ऐयार लोग भी रुक गये और सभों का ध्यान उसी तरफ जा रहा। सवेरा तो हो चुका था मगर इतना साफ नहीं हुआ था कि सौ कदम की दूरी से कोई किसी को पहिचान सके।

उस आदमी ने भी कुअर इन्दजीतसिंह की मण्डली को देखा और तेजी से इन लोगों की तरफ बढा। कुछ पास आते ही कमलिनी ने उसे पहिचाना और कहा यह तो भूतनाथ है! भूतनाथ का नाम सुनते ही शेरसिह काप उठा मगर दिल कडा करके चुपचाप खडा हो गया।

कम–(भूतनाथ से) वाह वाह वाह! तुम्हारे भरोसे पर अगर कोई काम छोड दिया जाय तो वह बिल्कुल ही चौपट हो जाय!!

भूत–(हाथ जोड कर) माफ कीजिएगा मुझसे एक भूल हो गई और इसी सबब से मैं आज्ञानुसार काशी में आपसे मिल न सका।

कम–भूल कैसी?

भूत–नागर को लिए हुए मैं आपके मकान की तरफ जा रहा था। एक दिन तो बखूबी चला गया दूसरे दिन जब बहुत थक गया तो एक पहाडी के नीचे घने जगल में उसकी गठरी रख कर सुस्ताने के लिए जमीन पर लेट गया यकायक कम्बख्त नींद ने धर दबाया और मैं सो गया। जब आख खुली तो नागर को अपने पास न देख कर घबरा गया और उसे चारों तरफ ढूढने लगा मगर कहीं पता न लगा।

कम–अफसोस!

भूत–कई दिन तक ढूढता रहा आखिर भेष बदल कर जब काशी में आया तो खबर लगी कि नागर अपने मकान में

मौजूद है। इसके बाद मैं गुप्त रीति से मायारानी के तिलिस्मी बाग के चारों तरफ घूमने लगा वहां पता लगा कि दोनों कुमार और उनके ऐयारों को जिन्हें मायारानी ने कैद कर रक्खा था कोई छुड़ा कर ले गया मैं उसी समय समझ गया कि यह काम आपका है, बस अनों से आपको ढूंढ रहा हूं, इस समय इत्तिफाक से इधर आ निकला।

कम–(कुछ सोचकर) तुम अपने को बड़ा होशियार लगाते हो मगर वास्तव में कुछ भी नहीं हो खैर हम लोगों के साथ चले आओ।

भूतनाथ को भी साथ लिए हुए कमलिनी वहां से रवाना हुई और चश्मे के पास से होकर उस टीले के पास पहुंची जिसके ऊपर जाने का इरादा था। कमलिनी जब अपने साथियों को पीछे पीछे आने के लिए कह कर टीले के ऊपर चढ़ने लगी तब शेरसिंह ने टोक दिया और कहा यदि कोई हर्ज न हो तो मेरी एक बात पहिले सुन लीजिये।

कम–आप जो कुछ कहेंगे मैं पहिले ही समझ गई आप चिन्ता न कीजिये और चले आइये।

शेर–ठीक है मगर जब तक मैं कुछ कह न लूंगा जी न मानेगा।

कम–(हंस कर) अच्छा कहिये।

शेरसिंह को अपने साथ आने का इशारा करके कमलिनी टीले के दूसरी तरफ चली और दोनों कुमार तेजसिंह तारासिंह लाडिली और भूतनाथ को टीले के ऊपर धीरेधीरे चढ़ने के लिए कह गई। टीले के पीछे निराले में पहुंचने पर शेरसिंह ने अपने दिल का हाल कहना शुरू किया–

शेर–चाहे आप भूतनाथ को कैसा ही नेक और ईमानदार समझती हों मगर मैं इतना कहे बिना नहीं रह सकता कि आप उस बेईमान शैतान पर भरोसा न कीजिये।

कम–मैं पहिले ही समझ गई थी कि आप यही बात मुझसे कहेंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि भूतनाथ ने जो कुछ काम किये हैं वह उसकी नेकनामी ईमानदारी और ऐयारी में बट्टा लगाते हैं परन्तु आप कोई तरद्दुद न कीजिए मैं बड़े बड़े बेईमानों से अपना मतलब निकाल लेती हूं, मेरे साथ वह अगर जरा भी दगा करेगा तो उसे बेकाम करके छोड़ दूंगी।

शेर–मैं समझता हूं कि आप उसका पूरा पूरा हाल नहीं जानतीं।

कम–भूतनाथ यद्यपि तुम्हारा भाई है मगर मैं उसका हाल तुमसे भी ज्यादे जानती हूं। तुम्हें अगर डर है तो इसी बात का न कि यदि कुमारों को मालूम हो जायगा कि वह तुम्हारा भाई है तो तुम्हारी तरफ से उसका मन मैला हो जायगा या भूतनाथ अगर कोई बुराई कर बैठेगा तो मुफ्त में तुम भी बदनाम किये जाओगे।

शेर–हां हां बस इसी सोच में मैं मरा जाता हूं!

कम–तो तुम निश्चिन्त रहो तुम्हारे सिर कोई बदनामी न आवेगी जो कुछ होगा मैं समझ लूंगी।

शेर–अख्तियार आपका है, मुझे जो कुछ कहना था कह चुका।

दोनों कुमार और उनके साथी लोग टीले पर चढ़ चुके थे इसके बाद शेरसिंह को अपने साथ लिए हुए कमलिनी भी वहां जा पहुंची। टीले के ऊपर की अवस्था देखने से मालूम होता था कि किसी जमाने में वहां पर जरूर कोई खूबसूरत मकान बना हुआ होगा मगर इसी समय तो एक कोठरी के सिवाय वहां और कुछ भी मौजूद न था। यह कोठरी बीस पचास आदमियों के बैठने योग्य थी। कोठरी के बीचोबीच पत्थर का एक चबूतरा बना हुआ था और उसके ऊपर पत्थर ही का शेर बैठा था। कमलिनी ने उसी जगह सभों को बैठने के लिए कहा और भूतनाथ की तरफ देख कर बोली इसी जगह से एक रास्ता मायारानी के तिलिस्मी बाग में गया है। तुम्हें छोड़ सब लोगों को लेकर मैं वहां जाऊंगी और कुछ दिनों तक उसी बाग में रह कर अपना काम करूंगी। तब तक के लिए एक दूसरा काम तुम्हारे सुपुर्द करती हूं, आशा है कि तुम बड़ी होशियारी से उस काम को करोगे।

भूत–जो कुछ आज्ञा हो मैं करने के लिए तैयार हूं मगर इस समय सबके पहिले मैं दो चार बातें आपसे कहा चाहता हूं, यदि आप एकान्त में सुन लें तो ठीक है।

कम–कोई हर्ज नहीं तुम जो कुछ कहोगे मैं सुनने के लिए तैयार हूं।

इतना कह कर भूतनाथ को साथ लिए कमलिनी उस कोठरी के बाहर निकल आई और दूसरी तरफ एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर भूतनाथ से बातचीत करने लगी। दो घड़ी से ज्यादा दोनों में बातचीत होती रही जिसे इस जगह लिखना हम मुनासिब नहीं समझते। अन्त में भूतनाथ ने अपने बटुए में से कलम दावात और कागज का टुकड़ा निकाल कर कमलिनी के सामने रख दिया। कमलिनी ने एक चीठी अपने बहनोई राजा गोपालसिंह के नाम लिखी और उसमें यह लिखा कि भूतनाथ को यह चीठी देकर हम तुम्हारे पास भेजते हैं। इसे बहुत ही नेक और ईमानदार समझना और हर एक काम में इसकी राय और मदद लेना। यदि यह किसी जगह ले जाय तो बेखटके चले जाना और यदि अपनी

इच्छानुसार कोई काम करने के लिये कहे तो उसमें किसी तरह का शक न करना। मैं इससे अपना भेद नहीं छिपाती और इसे अपना विश्वासपात्र समझती हू। इसके बाद हस्ताक्षर और एक निशान करके वह चीठी भूतनाथ के हवाले की और कहा कि "बस तुम इसी समय मनोरमा के मकान की तरफ चले जाओ और राजा गोपालसिंह से मिलकर काम करो या जो मुनासिब हो करो मगर देखो खूब होशियारी से काम करना मामला बहुत नाजुक है और तुम्हारे ईमान में जरा सा फर्क पडेगा तो मैं बहुत बुरी तरह पेश आऊगी !

आप हर तरह से बेफिक्र रहिए ! कह कर भूतनाथ टीले के नीचे उतर आया और देखते देखते सामने के जगल में घुस कर गायब हो गया।

आठवां बयान

अपनी बहिन लाडिली ऐयारों और दोनों कुमारों को साथ लेकर कमलिनी राजा गोपालसिंह के कहे अनुसार मायारानी के तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जाकर देवमन्दिर में कुछ दिन रहेगी। वहा रह कर ये लोग जो कुछ करेंगे उसका हाल पीछे लिखेंगे इस समय भूतनाथ का कुछ हाल लिख कर हम अपने पाठकों के दिल में एक प्रकार का खुटका पैदा करते है।

भूतनाथ कमलिनी से विदा होकर सीधे काशीजी की तरफ नहीं गया बल्कि मायारानी से मिलने के लिए उसके खास (तिलिस्मी बाग) की तरफ रवाना हुआ और दो पहर दिन चढने के पहिले ही बाग के फाटक पर जा पहुँचा। पहरे वाले सिपाहियों में से एक की तरफ देख कर बोला जल्द इत्तिला कराओ कि भूतनाथ आया है। इसके जवाब में उस सिपाही ने कहा आपके लिए रुकावट नहीं है आप चले जाइए जब दूसरे दर्जे के फाटक पर जाइयेगा तो लौंडियों से इत्तिला कराइयेगा।

भूतनाथ बाग के अन्दर चला गया। जब दूसरे दर्जे के फाटक पर पहुचा तो लौंडियों ने उसके आने की इत्तिला की और वह बहुत जल्द मायारानी के सामने हाजिर किया गया।

माया–कहो भूतनाथ कुशल से तो हो ? तुम्हारे चेहरे पर खुशी की निशानी पाई जाती है इससे मालूम होता है कि कोई खुशखबरी लाये हो और तुम्हारे शीघ्र लौट आने का भी यही सबब है। तुम जो चाहो कर सकते हो हा क्या खबर लाये ?

भूत–अब तो मैं बहुत कुछ इनाम लूगा क्योंकि वह काम कर आया हू जो सिवा मेरे दूसरा कोई कर ही नहीं सकता था।

माया–बेशक तुम ऐसे ही हो भला कहो तो सही क्या कर आये ?

भूत–वह बात ऐसी नहीं है कि किसी के सामने कही जाय।

माया–(लौंडियों को चले जाने का इशारा करके) बेशक मुझसे भूल हुई कि इन सभों के सामने तुमसे खुशी का सबब पूछती थी। हा अब तो सन्नाटा हो गया।

भूत–आपने अपने पति गोपालसिंह के लिए जो उद्योग किया था वह तो बिल्कुल ही निस्फल हुआ। मैं अब कमलिनी के पास से चला आ रहा हू। उसे मुझ पर पूरा भरोसा और विश्वास है और वह मुझसे कोई भेद नहीं छुपाती उनकी जुबानी जो कुछ मुझे मालूम हुआ है उससे जाना जाता है कि गोपालसिंह अभी किसी के सामने अपने को जाहिर नहीं करेगा बल्कि गुप्त रहकर आपको तरह-तरह की तकलीफें पहुचावेगा और अपना बदला लेगा।

माया–(काप कर) बेशक वह मुझे तकलीफ देगा। हाय मैंने दुनिया का सुख कुछ भी नहीं भोगा खैर तुम कौन सी खुशखबरी सुनाने आये हो सो तो कहो।

भूत–कह तो रहा हू– पर आप स्वय बीच में टोक देती हैं तो क्या करूं। हा तो इस समय आपको सताने के लिए बडी बडी कार्रवाइया हो रही है और रोहतासगढ से फौज चली आ रही है क्योंकि गोपालसिंह और तेजसिंह ने कुमारों की दिलजमई करा दी है कि राजा वीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता को मायारानी ने कैद नहीं किया बल्कि धोखा देने की नीयत से दो आदमियों को नकली चन्द्रकान्ता और वीरेन्द्रसिंह बना कर कैद किया है। अब कुअर इन्द्रजीतसिंह के दो ऐयारों को साथ लेकर गोपालसिंह किशोरी और कामिनी को छुडाने के लिए मनोरमा के मकान में गये हैं।

माया–बिना बोले रहा नहीं जाता मैं न तो कुअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह या उनके ऐयारों से डरती हू और न रोहतासगढ की फौज से डरती हू, मैं अगर डरती हू तो केवल गोपालसिंह से बल्कि उसके नाम से क्योंकि मैं उसके साथ बुराई कर चुकी हू और वह मेरे पंजे से निकल गया है। खैर यह खबर तो तुमने अच्छी सुनाई कि वह किशोरी और

कामिनी को छुडान क लिय मनोरमा के मकान में गया है। मैं आज ही यहा से काशीजी की तरफ रवाना हो जाऊगी और जिस तरह हागा उसे गिरफ्तार करूँगी ।

भूत–नहीं नहीं आप उस कदापि गिरफ्तार नहीं कर सकती आप क्या वल्कि आप सी अगर दस हजार एक साथ हा जाय ता भी उसका कुछ नहीं विगाड सकती है।

माया–(चिढ कर) सो क्यों ?

भूत–कमलिनी ने उसे एक ऐसी अनूठी चीज दी है कि वह जो चाह कर सकता हे और आप उसका कुछ नही विगाड़ सक्ती।

माया–वह कौन एसी अनमाल चीज है ?

इसके जवाव में भूतनाथ ने उस तिलिस्मी खजर का हाल और गुण वयान किया जो कमलिनी ने कुअर इन्द्रजीतसिह को दिया था और कुअर साहव ने गोपालसिह को दे दिया था। अभी तक उस खजर का पूरा हाल मायारानी का मालूम न था इसलिये उसे वडा ही ताज्जुव हुआ और वह कुछ देर तक साचने के वाद वाली–

माया–अगर ऐसा खजर उसके हाथ लग गया है तो उसका कोई भी कुछ विगाड नहीं सकता। वस मैं अपनी जिन्दगी से निराश हो गई। परन्तु मुझे विश्वास नहीं होता कि ऐसा तिलिस्मी खजर कहीं से कमलिनी के हाथ लगा हो। यह असम्भव है वल्कि ऐसा खजर हो ही नहीं सकता। कमलिनी ने तुमसे झूठ कहा होगा।

भूतनाथ–(हस कर) नही नही वल्कि उसी तरह का एक खजर कमलिनी ने मुझे भी दिया है। (कमर से खजर निकाल कर और हर तरह पर दिखा कर) देखिये यही है।

माया–(ताज्जुव से) हा हा अव मुझे याद आया। नागर ने अपना और तुम्हारा हाल वयान किया था तो ऐसे खजर क जिक्र किया था और मैं इस वात को विल्कुल भूल गई थी। खैर तो अव मैं उस पर किसी तरह फतह नहीं पा सक्ती।

भूत–नहीं घवडाइये मत उसके लिय भी मै वन्दोवस्त करके आया हू।

माया–वह क्या ?

भूतनाथ ने वह कमलिनी वाली चीठी बटुए में से निकाल कर मायारानी के सामने रक्खी जिसे पढ ही वह खुश हो गई और वाली शावाश भूतनाथ तुमने वडा ही काम किया ! अव तो तुम उस नालायक को मेरे पजे में इस तरह फसा सकते हो कि कमलिनी को तुम पर कुछ भी शक न हो।

भूत–वशक एसा ही है मगर इसलिए अव हम लोगों को अपनी राय वदल देनी पडेगी अर्थात पहिले जो यह वात सोची गई थी कि किशारी को छुडाने के लिए जो कोई वहा जायेगा उसे फसाते जायेंग सो न करना पडेगा।

माया–तुम जैसा कहोगे वैसा ही किया जायगा वेशक तुम्हारी अक्ल हम लोगों से तेज है। तुम्हारा ख्याल बहुत ठीक है अगर उसे पकडने की कोशिश की जायगी तो वह कई आदमियों को मार कर निकल जायगा और फिर कब्जे में न आवेगा और ताज्जुव नहीं कि इसकी खवर भी लोगों को हो जाय जो हमारे लिए वहुत बुरा होगा।

भूतनाथ–हा अस्तु आप एक चीठी नागर के नाम की लिखकर मुझे दीजिए और उसमें केवल इतना ही लिखिए कि किशोरी और कामिनी को निकाल ले जाने वाले स रोक टोक न करें बल्कि तरह दे जाय और उसके मकान के तहखानों का भेद मुझे वता दें फिर जव ये दोनों किशारी और कमलिनी का ले जायगें तो उसके वाद मै उन्हें धोखा देकर दारोगा वाल वगल में नहर के ऊपर है ल जाकर झट फसा लूगा। वहा के तहखानों की ताली आप मुझे दे दीजिये। कमलिनी की जुवानी मैंने सुना है कि वहा का तहखाना वडा ही अनूठा हे इसलिए मैं समझता हू कि मेरा काम उस मकान से वखूबी चलेगा। जव मैं गोपालसिह को वहा फसा लूगा तो आपको खवर दूगा फिर आप जा चाहे कीजियेगा।

माया–वस वस तुम्हारी यह राय बहुत ठीक है अव मुझे निश्चय हो गया कि मेरी मुराद पूरी हो जायगी !

मायारानी ने दारोगा वाले वगले तथा तहखान की ताली भूतनाथ के हवाले करके उसे वहा का भेद बता दिया और भूतनाथ के कहे वमूजिव एक चीठी भी नागर के नाम की लिख दी। दोनों चीजें लेकर भूतनाथ वहा से रवाना हुआ और काशी जी की तरफ तेजी के साथ चल निकला।

नौवां बयान

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है। काशी में मनोरमा के मकान के अन्दर फर्श पर नागर बैठी हुई है और उसक पास ही एक नौजवान खूबसूरत आदमी छोटे छोटे तीन चार तकियों का सहारा लगाये अधलेटा सा पडा जमीन की तरफ

देखता हुआ कुछ सोच रहा है। इन दोनों के सिवाय कमरे में कोई तीसरा नहीं है।

नागर–मैं फिर भी तुम्हें कहती हू कि किशोरी का ध्यान छाड दो क्योंकि इस समय मौका समझ कर मायारानी ने उसे आराम के साथ रखने का हुक्म दिया है।

जवान–ठीक है मगर मैं उसे किसी तरह की तकलीफ तो नहीं देता फिर उसके पास मेरा जाना तुमने क्यों बन्द कर दिया ?

नागर–बडे अफसोस की बात है कि तुम मायारानी की तरफ कुछ भी ध्यान नहीं देते जब भी तुम किशोरी के सामने जाते हो वह जान देने के लिये तैयार हो जाती है। तुम्हारे सबब से वह सूख कर काटा हो गई है। मुझे निश्चय है कि दो तीन दफे अगर तुम और उसके सामने आओगे तो वह जीती न बचेगी क्योंकि उसमें अब बात करने कीभी ताकत नहीं रही और उसका मरना मायारानी के हक में बहुत ही बुरा होगा। जब तक किशोरी को यह निश्चय न हागा कि तुम इस मकान से निकाल दिए गये तब तक वह मुझसे साधी तरह बात भी न करेगी। ऐसी अवस्था में मायारानी की आज्ञानुसार मैं उसे कैद रखने कीअवस्था मे भी क्या कर खुश रख सकती हूं ?

जवान–(कुछ चिढ कर) यह बात तो तुम कई दफे कह चुकी हो फिर घडी घड़ी क्यों कहती हो ?

नागर–खैर न सही सौ की सीधी एक ही कहे देती हू कि किशोरी के बारे में तुम्हारी मुराद पूरी न होगी और जहा तक जल्द हो सके तुम्हें मायारानी के पास चले जाना पड़ेगा।

जवान–यदि ऐसा ही है तो लाचार होकर मुझे मायारानी के साथ दुश्मनी करनी पडेगी। मैं उसके कई ऐसे भेद जानता हू कि जिन्हें प्रकट करने में उसकी कुशल नहीं है।

नागर–अगर तुम्हारी यह नीयत है तो तुम अभी जहन्नुम में भेज दिये जाओगे।

जवान–तुम मेरा कुछ भी नहीं कर सकती मैं तुम्हारी जहरीली अगूठी से डरने वाला नहीं हू।

इतना कह कर वह नौजवान उठ कर खडा हुआ और कमरे के बाहर निकला ही चाहता था कि सामने का दर्वाजा खुला और भूतनाथ आता हुआ दिखाई दिया। नागर ने जवान की तरफइशारा करके भूतनाथ से कहा 'देखो इस नालायक को मैं पहरों से समझा रही हू मगर कुछ भी नहीं सुनता और जान बूझ कर मायारानी को मुसीबत में डालना चाहता है। इसके जवाब में भूतनाथ ने कहा हा मैं भी पिछले दर्वाजे की तरफ खड़ा खडा इस हरामजादे की बातें सुन रहा था।

हरामजादे का शब्द सुनतेही उस नौजवान को क्रोध चढ आया और वह हाथ में खजर लेकर भूतनाथ की तरफ झपटा। भूतनाथ ने चालाकी से उसकी कलाई पकड ली और कमरबन्द में हाथ डाल के ऐसी अडानी मारी कि वह धम्म से जमीन पर गिर पडा। नागर दौडी हुई बाहर चली गई और एक मजबूत रस्सी ले आई जोउस नौजवान के हाथ पैर बाधने के काम में आई। भूतनाथ उस नौजवान को घसीटता हुआ दूसरी कोठरी में ले गया और नागर भी भूतनाथ के पीछे पीछे चली गई।

आधे घण्टे के बाद नागर और भूतनाथ फिर उसी कमरे में आये ओर दोनों प्रेमी मसनद पर बैठ कर खुशी खुशी हसी दिल्लगी की बातें करने लग। अन्दाज से मालूम होता है कि ये दोनों उस नौजवान को कहीं कैद कर आये हैं।

थोडी देर तक हसी दिल्लगी होती रही इसके बाद मतलब की बातें होने लगी। नागर के पूछने पर भूतनाथ ने अपना हाल कहा और सब के पहिले वह चीठी नागर को दिखाई जो राजा गोपालसिह के लिए कमलिनी ने लिख दी थी इसके बाद मायारानी के पास जाने और बातचीत करने का खुलासा हाल कह के वह दूसरी चीठी भी नागर को दिखाई जो मायारानी ने नागर के नाम की लिखकर भूतनाथ के हवाले की थी। यह सब हाल सुनकर नागर बहुत खुश हुई और बोली यह काम सिवाय तुम्हारे और किसी से नहीं हो सकता था और यदि तु मायारानी की चीठी न भी लाते तो भी तुम्हारी आज्ञानुसार काम करने को मैं तैयार थी।

भूतनाथ–सो तो ठीक है मुझे भी यही आशा थी परन्तु यों ही एक चीठी तुम्हारे नाम की लिखा ला।

नागर–पर ताज्जुब है कि राजा गोपालसिह और देवीसिह आज के पहिले से इस शहर में आए हुए है मगर अभी तक इस मकान के अन्दर उन दोनों के आने की आहट नहीं मिली। न मालूम वे दोनों कहा और किस धुन में हैं खैर जो होगा देखा जायगा अब यह कहिये कि आप क्या करना चाहते है ?

भूतनाथ–(कुछ देर सोच कर) अगर ऐसा है तो मुझे स्वय उन दोनों को ढूढना पडेगा। मुलाकात होने पर दोनों को काम करने के लिये कह कर किशोरी और कामिनी का रोहतासगढ पहुचाने का वादा कर ले जाऊगा और उस गुप्त खोह में जिसे मैं अपना मकान समझता हूँ और तुम्हें दिखा चुका हूँ अपने आदमियों के सुपुर्द करके गोपालसिह से आ मिलूँगा और फिर उसे कैद कर के मायारानी के पास पहुचा दूगा जिसमें वह अपने हाथ से उसे मार कर निश्चिन्त हो जाय।

गुप्त रीति से इस मकान के अन्दर ले आऊँगा और किशोरी कामिनी को छुडाकर यहाँ से निकाले जाऊँगा फिर धोखा देकर किशोरी और कामिनी को अपने कब्जे में कर लूगा अर्थात उन्हें कोई दूसरा

नागर–बस बस तुम्हारी राय बहुत ठीक है अगर इतना काम हो जाय तो फिर क्या चाहिय। मायारानी से मुहमागा इनाम मिले क्योंकि इस समय वह राजा गोपालसिह के सबब से बहुत ही परेशान हो रही है, यहा तक कि कुअर इन्दजीतसिह वगैरह के हाथ से तिलिस्म को बचाने का ध्यान तक भी उसे बिल्कुल ही जाता रहा। यदि वह गोपालसिह को मार क निश्चिन्त हो जाय तो अपने से बढ कर भाग्यवान दुनिया में किसी को नहीं समझेगी जैसा कि थाडे दिन पहिले समझती थी।

भूतनाथ–जो मै कह चुका हू वही होगा इसमें कोई सन्देह नहीं। अच्छा अब तुम इस मकान का पूरा पूरा भेद मुझे बता दो जिसमें किसी तहखाने कोठरी रास्ते या चोर दर्वाजे का हाल मुझसे छिपा न रहे।

नागर–बहुत अच्छा चलिए उठिए जहा तक जल्द हो सके इस काम से भी निपट ही लेना चाहिए।

नागर ने उस मकान का पूरा पूरा भेद भूतनाथ को बता दिया हर एक कोठरी तहखाना रास्ता और चोरदर्वाजा तथा सुरग दिखा दिया और उनक खोलने और बन्द करने की विधि भी बता दी। इस काम से छुट्टी पाकर भूतनाथ नागर से बिदा हुआ ओर राजा गोपालसिह तथा देवीसिह की खोज में चारों और घूमने लगा।

दसवां बयान

दूसरे दिन आधी रात जाते जाते भूतनाथ फिर उसी मकान में नागर के पास पहुचा। इस समय नागर आराम से सोई न थी बल्कि न मालूम किस धुन और फिक्र में मकान की पिछली तरफ नजरबाग में टहल रही थी। भूतनाथ को देखत ही वह हसती हुई पास आई और बोली।

नागर–कहो कुछ काम हुआ ?

भूत–काम तो बखूबी हो गया उन दोनों स मुलाकात भी हुई और जो जो कुछ मैने कहा दोनों ने मजूर भी किया। कमलिनी की चीठी जब मैंने गोपालसिह के हाथ में दी तो वे पढ कर बहुत खुश हुए और बोले कमलिनी ने जो कुछ लिखा है मै उसे मजूर करता हू। वह तुम पर विश्वास रखती है तो मै भी रखूगा और जो तुम कहोगे वही करुगा।

नागर–बस तब काम बखूबी बन गया अच्छा अब क्या करना चाहिये ?

भूत–अब वे दोनों आते ही होंगे तुम टहलना बन्द करो और कमरे में जाकर किवाड बन्द करके सो रहो और सिपाहियों को भी हुक्म दे दो कि आज कोई सिपाही पहरा न दे बल्कि सब आराम से सो रहें यहा तक कि अगर किसी को इस बाग में देखें भी तो चुपके हो रहें।

नागर 'बहुत अच्छा' कह कर अपने कमरे में चली गई और भूतनाथ के कहे मुताबिक सिपाहियों को हुक्म देकर अपने कमरे का दर्वाजा बन्द करके चारपाई पर लेट रही। भूतनाथ उसी बाग में घूमता फिरता पिछली दीवार के पास जहा एक चोरदर्वाजा था जा पहुचा और उसी जगह बैठ कर किसी के आने की राह देखने लगा।

आधे घण्टे तक सन्नाटा रहा इसके बाद किसी ने दर्वाजे पर दो दफे हाथ से थपकी लगाई। भूतनाथ ने उठ कर झट दर्वाजा खोल दिया और दो आदमी उस राह से आ पहुचे। बधे हुए इशारे के होने से मालूम हो गया कि ये दोनों राजा गोपालसिह और देवीसिह हैं। भूतनाथ उन दोनों को अपने साथ लिए हुए धीरे धीरे कदम रखता हुआ नजरबाग के बीचोबीच आया जहा एक छोटा सा फौवारा था।

गोपाल--(भूतनाथ स) कुछ मालूम है कि इस समय किस तरफ पहरा पड रहा है ?

भूत--कहींभी पहरा नही पडता चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है। इस मकान मे जितने आदमी रहते है सभों का मैन बेहोशी की दवा द दी है और सब के सब उठने क लिए मुर्दो से बाजी लगा कर पड है।

गोपाल--तब तो हम लोग बडी लापरवाही से अपना काम कर सकते है ?

भूत--बेशक !

गोपाल--अच्छा मेरे पीछे पीछे चले आओ। (हाथ का इशारा करके) हम इस समय उस हम्माम की राह तहखाने मे घुसा चाहत है। क्या तुम्हें मालूम है कि इस समय किशोरी और कामिनी किस तहखान में कैद है।

भूत--हा जरूर मालूम है। किशोरी और कामिनी दानो एक ही साथ 'वायु-मण्डप मे कैद है।

गोपाल--तब तो हम्माम में जाने की कोई जरुरत नहीं अच्छा तुम ही आगे चलो।

भूतनाथ आगे आग रवाना हुआ और उसक पीछे राजा गोपालसिह और दवीसिह चलने लगे। तीनों आदमी उत्तर तरफ के दालान में पहुच जिसके दानों तरफ दो कोठरिया थी और इस समय दानों कोठरियों का दवाजा खुला हुआ था। तीनों आदमी दाहिनी तरफ वाली कोठरी में घुसे और अन्दर जाकर कोठरी का दर्वाजा बन्द कर लिया। बटुए मे स सामान निकाल कर मामवत्ती जलाई और देखा कि सामन दीवार में एक आलमारी है जिसका दवाजा एक खटक पर खुला करता था। भूतनाथ उस दर्वाज को खोलना जानताथा इसलिए पहिल उसी न खटक पर हाथ रक्खा। दर्वाजा खुल जाने पर मालूम हुआ कि उसके अन्दर सीढ़िया बनी हुई है। तीनों आदमी उस सीढ़ी की राह से नीचे तहखाने मे उतर गए और एक कोठरी में पहुचे जिसका दूसरा दर्वाजा बन्द था। भूतनाथ ने उस दर्वाजे का भी खोला और तीनों आदमियों ने दूसरी कोठरी में पहुँच कर देखा कि एक चारपाई पर बेचारी किशोरी पड़ी हुई है सिर्हाने की तरफ कामिनी बैठी धीरे-धीरे उसका सिर दबा रही थी। कामिनी का चेहरा जर्द और सुस्त था मगर किशोरी तो वर्षों की बीमार जान पडती थी। जिस चारपाई पर वह पड़ी थी उसका बिछावन बहुत मैला था और उसी के पास एक दूसरी चारपाई बिछी हुई थी जो शायद कामिनी के लिए हो। कोठरी के एक कोने में पानी का घडा लोटा गिलास और कुछ खाने का सामान रक्खा हुआ था।

किशोरी और कामिनी दवीसिह का बखूबी पहिचानती थी मगर भूतनाथ का केवल कामिनी ही पहिचानती थी जब कमला क साथ शेरसिह स मिलन के लिए कामिनी तिलिस्मी खडहर मे गई थी तब उसन भूतनाथ को देखा था और यह भी जानती थी कि भूतनाथ को दखकर शेरसिह डर गया था मगर इसका सबब पूछन पर भी उसन कुछ न कहा था। इस समय वह फिर उसी भूतनाथ को यहा देखकर डर गई और जी में सोचने लगी की एक बला मे तो फसी ही थी यह दूसरी बला कहा से आ पहुची मगर उसी के साथ देवीसिह को देख उसे कुछ ढाढस हुई और किशोरी को तो पूरी उम्मीद हो गई कि ये लोग हमको छुडाने ही आये है। वह भूतनाथ और राजा गोपालसिह को पहिचानती न थी मगर सोच लिया की शायद ये दानों भी राजा वीरेन्द्रसिह के एयार होंगे। किशोरी यद्यपि बहुत ही कमजोर बल्कि अधमरी सी हो रही थी मगर इस समय यह जान कर कि कुअर इन्दजीतसिह क एयार हमें छुडाने आ गये है और अब शीघ्र ही इन्द्रजीतसिह स मुलाकात होगी उसकी मुरझाई हुई आशालता हरी हो गई और उसमें जान आ गई। इस समय किशोरी का सिर कुछ खुला हुआ था जिस उसन हाथ से ढक लिया और दवीसिह की तरफ देखकर बोली--

किशोरी-- मै समझती हूँ आज ईश्वर को मुझ पर दया आई है इसी से आप लोग मुझे यहा से छुडाकर ले जाने के लिए आए है।

देवी-- जी हा हम लोग आपको छुडाने के लिए आये है मगर आपकी दशा देख कर रुलाई आती है। हाय, क्या दुनिया में भलों और नेकों को यही इनाम मिला करता है !!

किशोरी-- मैंने सुना था कि राजा साहब के दोनों लड़कों और ऐयारों को मायारानी ने कैद कर लिया है ?

देवी-- जी हा उन कैदी ऐयारों में मै भी था परन्तु ईश्वर की कृपा से सब कोई छूट गए और अब हमलोग आपको और

(कामिनी की तरफ इशारा करके) इनको छुड़ाने आये है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप बहुत कुछ मुझसे पूछा चाहती है और मेरे पेट में भी बहुत सी बातें कहने योग्य भरी है परन्तु यह अमूल्य समय बातों में नष्ट करने योग्य नहीं है इसलिए जो कुछ कहने सुनने की बातें हैं फिर होती रहेंगी इस समय जहा तक जल्द हो सके यहा से निकल चलना ही उत्तम है।

हा ठीक है कह कर किशोरी उठ बैठी उसमें चलने फिरने की ताकत न थी परन्तु इस समय की खुशी ने उसके खून में कुछ जोश पैदा कर दिया और वह इस लायक हो गई कि कामिनी के मोढ़े पर हाथ रख के तहखाने से ऊपर आ सके और वहा से बाग की चहारदीवारी के बाहर जा सके। कामिनी यद्यपि भूतनाथ को देख कर सहम गई थी मगर देवीसिह के भरोसे से उसने इस विषय में कुछ कहना उचित न जाना, दूसरे उसने यह सोच लिया कि इस कैदखाने से बढ कर और कोई दु ख की जगह न होगी अतएव यहा से तो निकल चलना ही उत्तम है।

किशोरी और कामिनी को लिए हुए तीनों आदमी तहखाने से बाहर निकले। इस समय भी उस मकान के चारो तरफ तथा नजरबाग में सन्नाटा ही था इसलिए ये लोग बिना रोक टोक उसी दर्वाजे की राह यहा से बाहर निकल गये जिससे राजा गोपालसिह बाग के अन्दर आये थे। थोड़ी दूर पर तीन घोड़े और एक रथ जिसके आगे दो घोडे जुते हुए थे मौजूद था। रथ पर किशोरी और कामिनी को सवार कराया गया और तीनों घोड़ों पर राजा गोपालसिह देवीसिह और भूतनाथ ने सवार होकर रथ को तेजी के साथ हाकने के लिए कहा। बात की बात में वे लोग शहर के बाहर हो गये बल्कि सुबह की सुफेदी निकलने के पहिले ही लगभग पाच कोस दूर निकल जाने के बाद एक चौमुहानी पर रुक कर विचार करने लगे कि अब रथ को किस तरफ ले चलना या रथ की हिफाजत किसके सुपुर्द करना चाहिये।

ग्यारहवां बयान

ऊपर के बयान में जो कुछ लिख आये है उस बात को कई दिन बीत गये आज भूतनाथ को हम फिर मायारानी के पास बैठे हुए देखते है। रग ढग से जाना जाता है कि भूतनाथ की कार्रवाइयों से मायारानी बहुत प्रसन्न है और वह भूतनाथ को कद्र और इज्जत की निगाह से देखती है। इस समय मायारानी के सामने सिवाय भूतनाथ के कोई दूसरा आदमी मौजूद नहीं है।

माया–इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुमने मेरी जान बचा ली।

भूतनाथ–गोपालसिह को धोखा देकर गिरफ्तार करने में मुझे बडी बडी कठिनाइयों का सामना करना पडा। आज दो दिन से केवल पानी के सहारे मैं जान बचाये हू। अभी तक तो कोई ऐसी बात नहीं हुई जिसमें कमलिनी या राजा वीरेन्द्रसिह के पक्ष वाले किसी को मुझ पर शक हो। राजा गोपालसिह के साथ केवल देवीसिह था जिसको मैंने किसी जरूरी काम के लिए रोहतासगढ जाने की सलाह दे दी और उसके जाने बाद गोपालसिह को बातों में उलझा कर दारोगा वाले मकान में ले जाकर कैद कर दिया।

माया–तो उसे तुमने खतम ही क्यों न कर दिया ?

भूत–केवल तुम्हारे विश्वास के लिये उसे जीता रख छोडा है।

माया–(हस कर) केवल उसका सिर ही काट लाने से मुझे पूरा विश्वास हो जाता। पर जो हुआ सो हुआ अब उसके मारने में विलम्ब न करना चाहिये।

भूत–ठीक है जहा तक हो अब इस काम में जल्दी करना ही उचित है क्योंकि अबकी दफे यदि वह छूट जायगा तो मेरी बडी दुर्गति होगी।

माया–नहीं नहीं अब वह किसी तरह नहीं बच सकता। मैं तुम्हारे साथ चलती हू और अपने हाथ से उसका सिर काट कर सदैव के लिए टटा मिटाती हू। घण्टे भर और ठहर जाओ, अच्छी तरह अधेरा हो जाने पर ही यहा से चलना उचित होगा बल्कि तब तक तुम भोजन भी कर लो क्योंकि दो तीन दिन के भूखे हो, या कहो कि किशोरी और कामिनी को तुमने कहा छोडा ?

भूत–किशोरी और कामिनी को मैं एक ऐसी खोह में रख आया हू जहा से सिवाय मेरे कोई दूसरा उन्हें निकाल ही नहीं सकता। बहुत दिनों से मैं स्वय उस खोह में रहता हू और मेरे आदमी भी अभी तक वहा मौजूद है। अब केवल एक बात का खुटका मेरे जी मे लगा हुआ है।

माया–वह क्या ?

भूत–यदि कमलिनी मुझसे पूछेगी कि किशोरी और कामिनी को कहा रख आये तो मैं क्या जवाब दूगा। यदि यह

पालिश की हुई थी। पलग के पयताने की तरफ दीवार में एक आदमी के घुसने लायक रास्ता हो गया था अर्थात् लकडी का तख्ता पल्ले की तरह घूम कर बगल में हट गया था। उस आदमी ने बेहोश मायारानी को धीरे से उठा कर उसकी चारपाई पर डाल दिया इसके बाद कमरे के दरवाजे में जो ताला लगा हुआ था खोल कर अपने पास रक्खा और फिर पयताने की तरफ जाकर उसी दरार की राह दीवार के अन्दर घुस गया। उसके जाने के साथ ही लकडी का तख्ता भी बराबर हो गया।

घण्टे भर के बाद मायारानी होश में आई और आख खोल कर देखने लगी मगर अभी तक कमरे में अंधेरा ही था।

हाथ से टटोलने और जाच करने से मालूम हो गया कि वह चारपाई पर पडी हुई है। डर के मारे देर तक चारपाई पर पडी रही जब किसी के पैर की आहट न मालूम हुई तो जी कडा कर के उठी और दर्वाजे के पास आई। कुडी खुली हुई थी झट दर्वाजा खोल कर कमरे के बाहर निकल आई। कई लौंडियों को नगी तलवार लिए दर्वाजे पर पहरा देते पाया। उसने लौंडियों से पूछा "कमरे के अन्दर कौन गया था ! जिसके जवाब में उन्होंने ताज्जुब के साथ कहा "कोई नहीं।

लौंडियों के कहने का विश्वास मायारानी को न हुआ वह देर तक उन लोगों पर गुस्सा करती और बकती झकती रही। उसे शक हो गया कि इन लोगों ने मेरे साथ दगा की और कुल लौंडिया दुश्मनों से मिली हुई हैं मगर कसूर साबित किये बिना उन सभों को सजा देना भी उसने उचित न जाना।

डर के मारे मायारानी उस कमरे के अन्दर न गई बाहर ही एक आराम कुर्सी पर बैठ कर उसने बची हुई रात बिताई। रात तो बीत गई मगर सुबह की सुफेदी ने आस्मान पर अपना दखल अभी नहीं जमाया था कि एक मालिन का हाथ पकडे धनपत आ पहुची और मायारानी को बाहर बैठे हुए देख ताज्जुब के साथ बोली "इस समय आप यहा क्यों बैठी है ?"

माया—(घबडाई हुई आवाज में) क्या कहू, आज ईश्वर ने ही मेरी जान बचाई नहीं तो मरने में कुछ बाकी न था !

धनपत—(ताज्जुब के साथ चौंक कर) सो क्या ?

माया—पहिले यह तो कहो कि इस मालिन को कैदियों की तरह पकड कर यहा लाने का क्या सबब है ?

धनपत—नहीं मैं पहिले आपका हाल सुन लूगी तो कुछ कहूगी।

मायारानी ने धीरे धीरे अपना पूरा हाल विस्तार के साथ धनपत से कहा जिसे सुन कर धनपत भी डरी और बोली "इन लौंडियों पर शक करना मुनासिब नहीं है हा जब इस कम्बख्त मालिन का हाल आप सुनेंगी जिसे मैं गिरफ्तार कर लाई हूँ तो आप का जी अवश्य दुखेगा और इस पर शक करना बल्कि यह निश्चय कर लेना अनुचित न होगा कि यह दुश्मनों से मिली हुई है। ये लौंडिया जिनके सुपुर्द पहरे का काम है और जिन पर आप शक करती है बहुत ही नेक और ईमानदार है मैं इन लोगों को अच्छी तरह आजमा चुकी हूँ।

माया—खैर मैं इस विषय में अच्छी तरह सोच कर और इन सभों को आजमा कर निश्चय करूँगी तुम यह कहो कि इस मालिन ने क्या कसूर किया है ? यह तो अपने काम में बहुत तेज और होशियार है !

धनपत—हा बाग की दुरुस्ती और गूलबूटों के सवारने का काम तो यह बहुत ही अच्छी तरह जानती है मगर दिल नुकीले और विषैले काटो से भरा हुआ है। आज रात को नींद न आने और कई तरह की चिन्ता के कारण मैं चारपाई पर आराम न कर सकी और यह सोचकर बाहर निकली कि बाग में टहल कर दिल बहलाऊगी। मैं चुपचाप बाग में टहलने लगी मगर मेरा दिल तरह तरह के विचारों से खाली न था यहा तक कि सिर नीचे किये टहलते मैं हम्माम के पास जा पहुची और वहा अगूर की टट्टी में पत्तों की खडखडाहट पाकर घबडा के रुक गई। थोडी ही देर में जब चुटकी बजाने की आवाज मेरे कान में पडी तब तो मैं चौंकी और सोचने लगी कि बेशक यहा कुछ दाल में काला है।

माया—उस समय तू अगूर की टट्टी से कितनी दूर और किस तरफ थी ?

धनपत—मैं टट्टी के पूरब तरफ पास ही वाली चमेली की झाडी तक पहुच चुकी थी जब पत्तों की खडखडाहट सुनी तो रुक गई और जब चुटकी की आवाज कानों में पडी तो झट झाडी के अन्दर छिप गई और बडे गौर से अगूर की टट्टी की तरफ ध्यान देकर देखने लगी। यद्यपि रात अधेरी थी मगर मेरी आखों ने चुटकी की आवाज के साथ ही दो आदमियों को टट्टी के अन्दर घुसते देख लिया।

माया—चुटकी बजाने की आवाज कहा से आई थी ?

धनपत—अगूर की टट्टी के अन्दर से।

माया—अच्छा तब क्या हुआ ?

धनपत—मैं जमीन पर लेट कर धीरे धीरे टट्टी की तरफ घसकने लगी और उसके बहुत पास पहुच गई अन्त में किसी की आवाज भी मेरे कान में पडी और मैं ध्यान देकर सुनने लगी। बातें धीरे धीरे हो रही थीं मगर मैं बहुत पास पहुच जाने के कारण साफ साफ सुन सकती थी। सबसे पहिले जिसकी आवाज मेरे कानों में पडी वह यही कम्बख्त मालिन थी।

माया–हा ! अच्छा इसन क्या कहा ?

धनपत–इसने केवल इतना कहा कि "मै बडी देर से तुम लोगों की राह देख रही हूँ। इसके जबाव में आये हुए दोनों आदमियों में स एक ने कहा 'बेशक तून अपना वादा पूरा किया जिसका इनाम मै इसी समय तुझे दूँगा मगर आज किसी कारण से कमलिनी यहा न आ सकी हम लोग कवल इतना ही कहने आए है कि कल आधी रात को आज ही की तरह फिर चोर दर्वाजा खोल दीजियो तुझ आज से ज्यादे इनाम दिया जायगा। यह कम्बख्त 'बहुत अच्छा कह कर चुप हो गई और फिर किसी क बातचीत की आवाज न आइ। थोडी ही देर में उन दोनों आदमियों को अगूर की टट्टी स निकल कर दक्खिन की तरफ जाते हुए मैंने देखा उन्ही के पीछे पीछे यह मालिन भी चली गई और चुपचाप उसी जगह पडी रही।

माया–तुमन गुल मचा कर उन दोनों का गिरफ्तार क्यों न किया ?

धनपत–मै यह सोच कर चुप हो रही कि यदि दोनों आदमी गिरफ्तार हा जायेंगे तो कल रात को इस बाग में कमलिनी का आना न होगा।

माया–ठीक है तुमन बहुत अच्छा सोचा हा तब क्या हुआ ?

धनपत–थोडी देर बाद मै वहा से उठी और पीछे की तरफ लौट कर बाग में होशियारी क साथ टहलन लगी। आधी घडी न बीती थी कि यह मालिन लौट कर आपके डेर की तरफ जाती हुई मिली। मैने झट इसकी कलाई पकड ली और यह देखने के लिए दवाज की तरफ गई कि इसने दर्वाजा बन्द कर दिया या नहीं। वहा पहुच कर मैंने दर्वाजा बन्द पाया तब इस कनीनी को लिए हुए आपके पास आई।

माया–(मालिन की तरफ देखकर) क्यों रे ! तुझ पर जो कुछ दाष लगाया गया है यह सच है या झूठ ?

मालिन ने मायारानी की बात का कुछ जवाब न दिया। तब मायारानी ने पहरा देने वाली लौडियों की तरफ देख के कहा आज रातका'तुम लोगों की मदद से अगर कमलिनी गिरफ्तार हो गई तो ठीक है नहीं तो मे समझूगी कि तुम लोग भी इस मालिन की तरह नमकहराम होकर दुश्मनों से मिली हुई हा।

पहरा देन वाली लौडियों ने मायारानी को दण्डवत् किया और एक ने कुछ आग बढ कर और हाथ जोड कर कहा 'बेशक आप हम लागों को नेक और ईमानदार पावेंगी ! (धनपत की तरफ इशारा करके) आपकी बात स निश्चय होता है कि आज रात को कमलिनी जी इस बाग में जरूर आवेंगी। अगर ऐसा हुआ तो हम लाग उन्हें गिरफ्तार किए बिना कदापि न रहेंगे ॥

मायारानी ने कहा हा एसा ही होना चाहिए ! मै खुद भी इस काम में तुम लोगों का साथ दूँगी और आधी रात के समय अपने हाथ से चार दर्वाजा खोल कर उसे बाग के अन्दर आने का मौका दूँगी। देखो होशियार और खबरदार यह बात किसी के कान में न पडने पावे !

॥ आठवा भाग समाप्त ॥

दोनों कुमारों को देवमन्दिर मे टिके हुए आज तीसरा दिन है। ओढन और बिछावन का कोई सामान न होने पर भी उन दोनों को किसी तरह की तकलीफ नहीं मालूम होती। रात आधी से ज्यादा जा चुकी है। तिलिस्मी बाग के दूसरे दर्जे से होती और वहाँ के खुशबूदार फूलों मे बसी हुई मन्द चलने वाली हवा ने नर्म थपकियाँ लगा कर दोनो नौजवान सुन्दर और सुकुमार कुमारों को सुला दिया है। ताज्जुब नहीं कि दिन रात ध्यान बने रहने के कारण दोनों कुमार इस समय स्वप्न मे भी अपनी अपनी माशूका से लाड प्यार की बातें कर रहे हो और उन्हें इस बात का गुमान भी न हो कि पलक उठते ही रग बदल जायगा और नये कलाइयों का आनन्द लेने वाला हाथ सर तक पहुचने का उद्योग करेगा।

यकायक घडघडाहट की आवाज ने दोनो को जगा दिया। वे चौंक कर उठ बैठे और ताज्जुब भरी निगाहों से चारो तरफ देखने और सोचने लगे कि यह आवाज कहा से आ रही है। ज्यादे ध्यान देने पर भी यह निश्चय न हो सका कि आवाज किस चीज की है हा इतनी बात मालूम हो गई कि देवमन्दिर के पूरब तरफ वाले मकान के अन्दर से यह आवाज आ रही है। दोनों राजकुमारों को देवमन्दिर से नीचे उतर कर उस मकान के पास जाना उचित न मालूम हुआ इसलिए वे देवमन्दिर की छत पर चढ गये और बडे गौर से उस तरफ देखने लगे।

आधे घटे तक यह आवाज एक रग से बराबर आती रही और इसके बाद धीरे-धीरे कम होकर बन्द हो गई। उस समय दर्वाजा खोलकर अन्दर से आता हुआ एक आदमी उन्हें दिखाई पडा। वह आदमी धीरे धीरे देवमन्दिर के पास आया और थोडी देर तक खडा रह कर उस कूएँ की तरफ लौटा जो पूरब की तरफ वाले मकान के साथ और उससे थोडी ही दूर पर था। कूए के पास पहुच कर थोड़ी देर तक वहा भी खडा रहा और फिर आगे बढा यहा तक कि घूमता फिरता छोटे छोटे मकानों की आड मे जाकर वह न जाने कहाँ नजरों से गायब हो गया और इसके थोडी ही देर बाद उस तरफ से एक कमसिन औरत के रोने की आवाज आई।

इन्द्रजीत– जिस तौर से यह आदमी इस चौथे दर्जे में आया है वह बेशक ताज्जुब की बात है।

आनन्द–तिस पर इस रोने की आवाज ने और भी ताज्जुब मे डाल दिया है। मुझे आज्ञा हो तो जाकर देखूं कि क्या मामला है ?

इन्द–जाने मे कोई हर्ज तो नहीं है मगर खैर तुम इसी जगह ठहरो मै जाता हू।

आनन्द–यदि ऐसा ही है तो चलिये हम दोनों आदमी चले।

इन्द–नहीं एक आदमी का यहाँ रहना बहुत जरूरी है। खैर तुम ही जाओ तो कोई हर्ज नहीं मगर तलवार लेते जाओ।

दोनो भाई छत के नीचे उतर आये। आनन्दसिंह ने खूटी से लटकती हुई अपनी तलवार ले ली और कमर के बीचोबीच वाले गोल खम्भे के पास पहुचे। हम ऊपर लिख आये है कि उस खम्भे में तरह तरह की तस्वीरें बनी हुई थीं। आनन्दसिंह ने एक मूरत पर हाथ रखकर जोर से दबाया साथ ही एक छोटी सी खिडकी अन्दर जाने के लिए दिखाई दी।

छोटे कुमार उसी खिडकी की राह उस गोल खम्भे के अन्दर घुस गये और थोडी ही देर बाद उस नकली बाग में दिखाई देने लगे। खम्भे के अन्दर रास्ता कैसा था और वह नकली बाग के पास क्योंकर पहुचें इसका हाल आगे चलकर दूसरी दफे किसी और के आने या जाने के समय बयान करेंगे यहाँ मुख्तसर ही में लिख कर मतलब पूरा करते हैं।

आनन्दसिंह उस तरफ गये जिधर वह आदमी गया था या जिधर से किसी औरत के रोने की आवाज आई थी। घूमते फिरते एक छोटे मकान के आगे पहुचे जिसका दर्वाजा खुला हुआ था। वहा औरत तो कोई दिखाई न दी मगर उस आदमी को दर्वाजे पर खड़े हुए जरूर पाया।

आनन्दसिंह को देखते ही वह आदमी झट मकान के अन्दर घुस गया और कुमार भी तेजी के साथ उसका पीछा किए बखौफ मकान के अन्दर चले गये। वह मकान दो मजिल का था उसके अन्दर छोटी छोटी कई कोठरियाँ थी और हर एक कोठरी मे दो दो दर्वाजे थे जिससे आदमी एक कोठरी के अन्दर जाकर कुल कोठरियों की सैर कर सकता था।

यद्यपि कुमार तेजी के साथ पीछा किए हुए चले गये मगर वह आदमी एक कोठरी के अन्दर जाने के बाद कई कोठरियों में घूम फिर कर कहीं गायब हो गया। रात का समय था और मकान के अन्दर तथा कोठरियों में बिलकुल अधकार छाया हुआ था ऐसी अवस्था में कोठरियों के अन्दर घूम घूम कर उस आदमी का पता लगाना बहुत ही मुशकिल था दूसरे इसका भी शक था कि वह कहीं हमारा दुश्मन न हो लाचार होकर कुमार वहाँ से वापस लौटे मगर मकान के बाहर न निकल सके क्योंकि वह दर्वाजा बन्द हो गया था जिस राह से कुमार मकान के अन्दर घुसे थे। कुमार ने दर्वाजा उतारने का भी उद्योग किया मगर उसकी मजबूती के आगे कुछ बस न चला। आखिर दुखी होकर फिर मकान के अन्दर घुसे और एक कोठरी के दर्वाजे पर जाकर खडे हो गये। थोडी देर के बाद ऊपर छत पर से फिर किसी औरत के रोने की आवाज आई गौर करने से कुमार को मालूम हुआ कि यह बेशक उसी औरत की आवाज है जिसे सुनकर यहाँ तक आये

थे उस आवाज की सीध पर कुमार ने ऊपर की दूसरी मंजिल पर जाने का इरादा किया मगर सीढ़ियों का पता न लगा।

इस समय कुमार का दिल कैसा बेचैन था यह वही जानते होंगे। हमारे पाठकों में भी जो दिलेर और बहादुर होंगे वह उनके दिल की हालत कुछ समझ सकेंगे। कुंअर आनन्दसिंह हर तरह से उद्योग करके रह गये पर कुछ भी न बन पड़ा। न तो वे उस आदमी का पता लगा सकते थे जिसके पीछे पीछे मकान के अन्दर घुसे थे न उस औरत का हाल मालूम कर सकते थे जिसके गाने की आवाज से दिल पागल हो रहा था और न उस मकान ही से बाहर होकर अपने भाई इन्द्रजीतसिंह को इन सब बातों की खबर कर सकते थे बल्कि यों कहना चाहिए कि सिवाय चुपचाप खड़े रहने या बैठ जाने के और कुछ भी नहीं कर सकते थे।

जो कुछ रात थी खड़े खड़े बीत गई। सुबह की सुफेदी ने जिधर से रास्ता पाया मकान के अन्दर घुस कर उजाला कर दिया जिससे कुंअर आनन्दसिंह को वहाँ की हर एक चीज साफ साफ दिखाई देने लगी। यकायक पीछे की तरफ से दर्वाजा खुलने की आवाज कुमार के कान में पड़ी। कुमार ने घूम कर देखा तो एक कोठरी का दर्वाजा जो इसके पहिले बन्द था खुला हुआ पाया। वे बेधड़क उसके अन्दर घुस गए और वहाँ ऊपर की तरफ गई हुई छोटी छोटी खूबसूरत सीढ़ियाँ देखीं। धड़धड़ाते हुए दूसरी मंजिल पर चढ़ गए और हर तरफ गौर करके देखने लगे। इस मंजिल में कई कोठरियाँ एक ही रंग ढंग की देखने में आईं। हर एक कोठरी में दो दर्वाजे थे, एक दर्वाजा कोठरी के अन्दर घुसने के लिए और दूसरा अन्दर की तरफ से दूसरी कोठरी में जाने के लिए था। इस तरह पर किसी एक कोठरी के अन्दर घुस कर कुल कोठरियों में आदमी घूम आ सकता था। धीरे धीरे अच्छी तरह उजाला हो गया और वहाँ की हर एक चीज बखूबी देखने का मौका कुमार को मिला। छोटे कुमार एक कोठरी के अन्दर घुसे और देखा वहाँ सिवाय एक चबूतरे के और कुछ भी नहीं है। यह चबूतरा स्याह पत्थर का बना हुआ था और उसके ऊपर एक कमान और पाँच तीर रक्खे हुए थे। कुमार ने तीर और कमान हाथ में रक्खा मालूम हुआ कि यह पत्थर का बना हुआ है और किसी काम में आने लायक नहीं है। दूसरे दर्वाजे से दूसरी कोठरी में घुसे तो वहाँ एक लाश पड़ी देखी जिसका कटा हुआ सिर पास ही पड़ा हुआ था और वह लाश भी पत्थर ही की थी। उसे अच्छी तरह देखभाल कर तीसरी कोठरी में पहुँचे।

इसके अन्दर चारों तरफ दीवार में कई खूँटियाँ थीं और हर एक खूँटी में एक एक नंगी तलवार लटक रही थी। ये तलवारें नकली न थीं बल्कि असली लोहे की थीं मगर हर एक पर जंग चढ़ा हुआ था। जब चौथी कोठरी में पहुँचे तो वहाँ चाँदी के सिंहासन पर बैठी हुई एक मूरत दिखाई पड़ी। यह मूरत किसी प्रकार की धातु की बनी हुई खूबसूरत और ठीक बनी हुई थी जिसे देखने के साथ ही कुमार ने पहिचान लिया कि यह मायारानी की छोटी बहिन लाडिली की मूरत है। कुमार मुहब्बत भरी निगाह उस मूरत पर डालने लगे। [illegible] तरह अपने माशूक को देखने का उन्हें अच्छा मौका मिला। यद्यपि वह माशूक असली नहीं केवल उसकी एक छवि मात्र थी तथापि इस सबब से कि वहाँ पर कोई दूसरा आदमी न था जिसका लिहाज या खयाल होता उन्हें एक निराले ढंग की खुशी हुई और वे देर तक उसके हर एक अंग की खूबसूरती को देखते रहे। इसी बीच में बगल वाली कोठरी में से यकायक एक खटके की आवाज आई। कुमार चौंक पड़े और यह सोचते हुए उस कोठरी की तरफ झपटे कि शायद वह आदमी उसमें मिले जिसके पीछे पीछे इस मकान के अन्दर आए हैं मगर इस कोठरी में भी किसी की सूरत दिखाई न दी।

इस कोठरी में जिसमें कुमार पहुँचे चाँदी का केवल एक सन्दूक था जिसके बीच में हाथ डालने के लायक एक छेद भी बना हुआ था और छेद के ऊपर सुनहले हर्फों में यह लिखा हुआ था —

इस छेद में हाथ डाल कर देखो क्या अनूठी चीज है।

कुंअर आनन्दसिंह ने बिना सोचे विचारे उस छेद में हाथ डाल दिया मगर फिर हाथ निकाल न सके। सन्दूक के अन्दर हाथ जाते ही मानो लोहे की हथकड़ी पड़ गई जो किसी तरह हाथ बाहर निकालने की इजाजत नहीं देती थी। कुमार ने झुककर सन्दूक के नीचे की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि सन्दूक जमीन से अलग नहीं है और इसलिये उसे किसी तरह खिसका भी नहीं सकते थे।

तीसरा बयान

कुंअर आनन्दसिंह के जाने के बाद इन्द्रजीतसिंह देर तक उनके आने की राह देखते रहे। जैसे जैसे देर होती थी जी बेचैन होता जाता था। यहाँ तक कि तमाम रात बीत गई सवेरा हो गया और पूरब तरफ से सूर्य भगवान दर्शन देकर धीरे धीरे आसमान पर चढ़ने लगे। जब पहर भर से ज्यादा दिन चढ़ गया तब इन्द्रजीतसिंह बहुत बेताब हुए और उन्हें निश्चय हो गया कि आनन्दसिंह जरूर किसी आफत में फंस गए।

कुअर इन्द्रजीतसिह सोच ही रहे थे कि स्वय चल के आनन्दसिह का पता लगाना चाहिए कि इतने ही में लाडिली को साथ लिए हुए कमलिनी वहॉ आ पहुँची। इन्हें देख कुमार का बेचैनी कुछ कम हुई और आशा की सूरत दिखाई देने लगी। कमलिनी ने जब कुमार को उस जगह अकले और उदास देखा तो उसे ताज्जुब हुआ मगर वह बुद्धिमान औरत तुरन्त समझ गई इनके छोटे भाई आनन्दसिह इनके साथ नहीं दिखाई देते जरुर वे किसी मुसीबत में पड गए हैं और ऐसा होना कोई ताज्जुब की बात नही है क्योंकि यह तिलिस्म का मौका है और यहॉ रहने वाला थोडी भूल में तकलीफ उठा सकता है।

कमलिनी ने इन्द्रजीतसिह से उदासी का कारण और कुँअर आनन्दसिह के न दिखने का सबब पूछा जिसके जवाब में इन्द्रजीतसिह ने जो कुछ हुआ था बयान करके कहा कि आनन्द को गये हुए नौ घटे के लगभग हो गये हैं।

इस समय कोई लाडिली की सूरत गौर से देखता तो बेशक समझ जाता कि आनन्दसिह का हाल सुन कर उसको हद से ज्यादा रज हुआ है। ताज्जुब नहीं कि कमलिनी और इन्द्रजीतसिह भी उसके दिल की हालत जान गये हों क्योंकि वह अपने आखों को डबडबाने और आसू के निकलने को बडे परिश्रमपूर्वक रोक रही थी। यद्यपि उसे निश्चय था कि दोनों कुमार इस तिलिस्म को अवश्य तोडेंगे तथापि उसका दिल दु ख गया था। कौन ऐसा है जो अपने प्यार पर आई हुई मुसीबत का हाल सुनकर बैचेन न हो ?

कमलिनी–(सब बातें सुन कर) किसी का आना ताज्जुब नहीं है हॉ किसी औरत का आना बेशक ताज्जुब है क्योंकि (इन्द्रजीतसिह की तरफ इशारा करके) आप कहते है कि एक औरत के रोने की आवाज आई थी।

लाडिली–ठीक है जहॉ तक मैं समझती हूँ सिवाय तुम्हारे मायारानी के और मेरे किसी चौथी औरत को यहॉ आने का रास्ता मालूम नहीं है हॉ मर्दों में जरुर कोई ऐसे है जो यहॉ आ सकते हैं।

कमलिनी–मगर इस देवमन्दिर के अन्दर हम लोगों के अतिरिक्त राजा गोपालसिह के सिवाय और कोई भी नहीं आ सकता। खैर इन बातों को जाने दो अब यहॉ से चलकर कुअर साहब का पता लगाना बहुत जरूरी है। यद्यपि यहॉ किसी दुश्मन का आना बहुत कठिन है तथापि खुटका लगा ही रहता है। जब दोनों कुमारों को मायारानी के कैदखाने से छुडा कर हम लोग सुरग ही सुरग तिलिस्मी बाग से बाहर हो रहे थे तो उस हरामजादे के आ पहुचने की कौन उम्मीद थी जिसने कुमार को जख्मी किया था ! इसी तरह कौन ठिकाना यहॉ भी कोई दुष्ट आ पहुचा हो !

आखिर कुअर आनन्दसिह को खोजने के लिए तीनों वहा से रवाना हुए और देवमन्दिर के नीचे उतर उसी तरफ गये जहा आनन्दसिह गये थे। जब एक मकान का दर्वाजा पर पहुचे तो बडेकमलिनी रुकी और बढ गौर से उस दर्वाजा को जो बद था देखने लगी इसके बाद फिर आगे बढी, दूसरे मकान के दर्वाजे पर पहुच कर उसे भी गौर से देखा और सिर हिलाती हुई फिर आगे बढी। इसी तरह कुअर इन्द्रजीतसिह और लाडिली को साथ लिए हुए कमलिनी सात आठ मकानों के दर्वाजे पर गई। हर एक मकान का दर्वाजा बद था और हर एक दर्वाजे को कमलिनी ने गौर से देखा लेकिन कुछ काम न चला मगर जब उस मकान के दर्वाजे पर पहुँची जिसमें कुअर आनन्दसिह गये थे तो रुककर मामूली तौर पर उसकेदर्वाजे को भी बडे गौर से देखने लगी और थोडी ही देर में बोल उठी बेशक कुअर आनन्दसिह इसी मकान के अन्दर हैं। (ऊगली से दर्वाजे के उपर वाले चौखटे की तरफ इशारा करके) देखिये यह स्याह पत्थर की तीन खूटीया नीचे की तरफ झुक गई हैं।

कुमार–इन खूटियों से क्या मतलब है ?

कम–इस मकान के अन्दर जितने आदमी जायगे उतनी खूटिया नीचे की तरफ झुक जायगी।

कुमार–(ऊपर वाले चौखट की तरफ इशारा करके) ऊपर कुल बारह खूटियॉ हैं मान लिया जाय कि बारहों खूँटियॉ उस समय झुक जायगी जब बारह आदमी इस मकान के अन्दर जा पहुँचेंगे मगर जब बारह से ज्यादे आदमी इस मकान के अन्दर जायगे तब क्या होगा ?

कम–बारह से ज्यादे आदमी इस मकान के अन्दर जा ही नहीं सकते। तिलिस्मी बातों में किसी की जबर्दस्ती नहीं चल सकती।

कुमार–ठीक है मगर तुमने यह कैसे जाना कि आनन्दसिह इसी मकान के अन्दर है ?

कम–सिर्फ अन्दाज से समझती हू कि आनन्दसिह इसी मकान में होंगे क्योंकि इस बाग में एक आदमी का आना आपने बयान किया था इसके बाद कहा था कि किसी औरत के रोने की आवाज आई थी दो तो हो चुके तीसरे आनन्दसिह भी पीछा किए हुए इधर ही आये हैं और इस तरह से मकान के अन्दर तीन आदमियो का होना साबित होता है। इन्हीं सब बातों से मुझे विश्वास होता है कि वे ही तीन आदमी इस मकान के अन्दर हैं।

कुमार–तुम्हारा सोचना बहुत ठीक है मगर जहातक जल्द हो सके इस बात का निश्चय करके आनन्द को छुडाना

चाहिए न मालूम वह किस आफत में फंस गया है।

कम–देखिए मैं बहुत जल्द इसका बन्दोबस्त करती हूँ।

इसके बाद कमलिनी ने कुअर इन्द्रजीतसिंह से कहा इस मकान का दर्वाजा खोलना तो जरा मुश्किल है, मगर चौखट के ऊपर जो बारह खूटियाँ हैं उनमें से तीन नीचे की तरफ झुक गई हैं और बाकी नौ ऊपर की तरफ उठी हुई हैं उनमें से किसी एक को आप उछल कर थाम लीजिए और जोर करके नीचे की तरफ झुकाइए देखिए क्या होता है। कुअर इन्द्रजीतसिंह ने वैसा ही किया। उछल कर एक खूटी को थाम लिया और झटका देकर उसे नीचे की तरफ झुकाया तथा जब वह नीचे को झुक गई तो उसे छोड कर अलग हो गये। यकायक मकान के अन्दर से इस तरह की आवाज आने लगी जैसे बडे बडे कल पुर्जे और चरख घूमते हों या कई गाडियां मकान के अन्दर दौड रही हों। तीनों आदमी दर्वाजे से हट कर खडे हो गये और राह देखने लगे कि अब क्या होता है।

थोड़ी ही देर बाद मकान की छत पर से एक आवाज आई– इधर देखो जिसे सुनते ही तीनों आदमी चौंके और ऊपर की तरफ देखने लगे। एक आदमी जो अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए था छत पर से नीचे की तरफ झांकता हुआ दिखाई दिया। उसने कमलिनी लाडिली और कुअर इन्द्रजीतसिंह को अपनी तरफ देखते देख एक लपटा हुआ कागज नीचे गिरा दिया जिसे कमलिनी ने झट उठा लिया और बढ कर कुअर इन्द्रजीतसिंह से कहा "बस अब जिस तरह हो सके आप इस खूटी को जिसे झुकाया है ज्यों का त्यों सीधा कर दीजिए।

इन्द्र–आखिर इसका क्या सबब है ? इस पुर्जे में क्या लिखा है ?

कम–पहिले आप उसे कीजिए जो मैं कह चुकी हूं, देर करने में हमारा ही हर्ज होगा।

लाचार कुअर इन्द्रजीतसिंह ने वैसा ही किया। उछल कर नीचे की तरफ से एक झटका ऐसा दिया कि खूँटी सीधी हो गई और इसके साथ ही मकान के अन्दर सन्नाटा छा गया अर्थात् वह जोर शोर की आवाज जो खूटी झुकने के साथ ही आने लगी थी एक दम बन्द हो गई। इसके बाद कमलिनी ने वह कागज का पुर्जा जो मकान की छत पर से गिराया गया था कुमार के हाथ में दे दिया। कुमार ने उसे देखा यह लिखा हुआ था –

१	२	३	४	५	६
एच	मेमचे	काटनी	केअरिया	उहं	नेपो
७	८	९	१०	११	१२
किमटू	च्वाला	मेम	कुम	नीपो	इच्चो
१३	१४	१५			
लव	कचीचा	टेप			

इस चीठी का मतलब तो कुमार तुरन्त समझ गये क्योंकि यह ऐयारी भाषा में लिखी हुई थी और कुमार ऐयारी भाषा बखूबी जानते थे मगर यह उनकी समझ में न आया कि चीठी लिखने वाला कौन है क्योंकि उसने अपना नाम 'टेप' लिखा था। कुमार ने कमलिनी से टेप का अर्थ पूछा जिसके जवाब में उसने कहा थोडी देर सब्र कीजिए आप से आप उस आदमी का पता लग जायगा। कुमार चुप हो रहे और दर्वाजे की तरफ देखने लगे। हमारे पाठक महाशय ऐयारी भाषा शायद न जानते होंगे अस्तु उन्हें समझाने के लिए उस चीठी का अर्थ हम नीचे लिखे देते हैं–

१	२	३	४	५	६
यहां	मैं हूं	डरो मत	कुमार को	तकलीफ	न होगी
७	८	९	१०	११	१२
थोडी देर	सब्र करो	मैं	स्वयं	नीचे	आता हूँ
१३	१४	१५			
यही	दिलजला	टप			

चौथा बयान

मायारानी आज यह विचार कर वहुत खुश है कि आधी रात के समय कमलिनी इस बाग में आयेगी और मैं उस अवश्य गिरफ्तार करुगी मगर इस बात को जानने के लिए उसका जी बेचैन हो रहा है कि उसके सोने वाले कमरे में रात को कौन आया था। वह चारों तरफ खयाल दौडाती थी मगर कुछ समझ में न आता था और आखिर दिल में यही कहती थी कि आने वाला चाहे कोई हो मगर काम कमलिनी ही का है, आज अगर कमलिनी गिरफ्तार हो जायगी तो सब टण्टा मिट जायगा जितनी बेफिक्री राजा गोपालसिह के मारने से मिली है उतनी ही कमलिनी के भी मारने से मिलेगी क्योंकि उसके मरन के बाद मेरे साथ दुश्मनी करने का साहस फिर कोई भी नहीं कर सकता।

आधी रात जाने के पहिले ही मायारानी धनपत का साथ लिए हुए उस दर्वाजे के पास जा पहुँची जिधर से कमलिनी के आने की खबर सुनी थी। मायारानी के कहे मुताविक पहरा देने वाली कई औरतें भी नगी तलवार लिए उस चोर दर्वाजे क पास पहुँच कर इधर उधर पेडों और झाडियों की आड में दबक रही थीं और धनपत भी उस चोरदर्वाजे क बगल ही में एक झाडी के अन्दर घुस गई थी। मायारानी अपने को हर बला से बचाए रहने की नीयत से कुछ दूर पर छिप कर बैठ रही

जब वह समय आ गया कि चोरदर्वाज की राह से कमलिनी बाग के अन्दर आये इसलिए धनपति अपने छिपे रहने वाले स्थान से उठ कर चोरदर्वाजे के पास आई और यह विचार कर बैठ गई कि बाहर से कोई आदमी दर्वाजा खोलने का इशारा करे तो मैं झट से दरवाजा खोल दू। इस समय धनपति अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए थी और हाथ में खजर लिए मौका पडने पर लडने के लिए भी तैयार थी। थोडी ही देर बाद बाहर से किसी ने चोरदर्वाजे पर थपकी मारी। धनपति खुश हो कर उठी और झट स दर्वाजा खोल कर एक किनारे हो गई। दो आदमी बाग के अन्दर दाखिल हुए। इन दोनों ही का बदन स्याह कपडों मे ढका हुआ था और दोनों ही के चहरों पर नकाब पडी हुई थी जिससे रात के समय यह जानना बहुत ही कठिन था कि य औरतें हैं या मर्द हा एक का कद कुछ लम्बा था इसलिए उस पर मर्द होने का गुमान हो सकता था।

जब दोनों नकाबपोश बाग के अन्दर आ गए तो धनपति ने चोरदर्वाजा बन्द कर दिया और उन दोनों को अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया। मालूम होता था कि वे दोनों नकाबपोश बेफिक्र है और उन्हें इस बात की जरा भी खबर नहीं कि यहाँ का रग बदला हुआ है। उन दानों को साथ लिए धनपति जब उस जगह पहुची जहा पहरा देने वाली लौंडिया नगी तलवारें लिए हुए छिपी हुई थीं तो खडी हो गई और उन दोनों की तरफ देख कर बोली॰ आपकी आज्ञानुसार मैंने अपना काम पूरा कर दिया अब मुझे इनाम मिलना चाहिए ! इसके जवाब में उस नकाबपोश ने जिसका कद बनिस्बत दूसरे के छोटा था जवाब दिया धनपत को जो मर्द होकर औरत की सूरत में मायारानी के साथ रहता है, किसी से इनाम लेने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह स्वय मालदार है मगर मैं समझता हू कि कम्बख्त मायारानी भी हम लोगों को गिरफ्तार करने की नीयत से इसी जगह आकर कहीं छिपी हागी उस जल्द बुला क्योंकि खास उसी को इनाम देने के लिए हम लाग यहा आए हैं।

धनपत वास्तव मे मर्द था मगर यह हाल किसी को मालूम न था इसलिए हम भी उसे अभी तक औरत ही लिखते चल आए मगर अब पूरी तरह से निश्चय हो गया कि वह मर्द है और हमारे पाठकों को भी यह बात मालूम हो गई इसलिए अब हम उसके लिए उन्हीं शब्दों का बर्ताव करेंगे जो मर्दों के लिए उचित है।

उस आदमी की बात सुनकर धनपत परेशान हो गया उसे यह फिक्र पैदा हुई कि अब हमारा भेद खुल गया और इसलिए जान बचना मुश्किल है। केवल धनपत ही नहीं बल्कि मायारानी और उन कुल लौंडियोंने भी उस आदमी की बातें सुन ली जो उसी क आस पास पेडों के नीचे छिपी हुई थीं। मायारानी के दिल में भी तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं। उसने पहचानने की नीयत से उस नकाबपोश की आवाज पर ध्यान दिया मगर कुछ काम न चला क्योंकि उसकी आवाज फसी हुई थी और इस समय हरक आदमी जो उसकी बात सुनता कह सकता था कि वह अपनी आवाज को बिगाड कर बातें कर रहा है।

धनपत यद्यपि इस फिक्र में था कि दोनों नकाबपोशो को गिरफ्तार करना चाहिए मगर इस नकाबपोश की गहरी और भेद स भरी हुई बात ने उसका कलेजा यहाँ तक दहला दिया कि उसके लिए बात का जवाब देना भी कठिन हो गया मगर वे लौंडियाँ जो उस जगह छिपी हुई थीं चारों तरफ से आकर जरूर वहाँ जुट गईं और उन्होंने दोनों नकाबपोशों को घेर लिया। धनपत सोचे रहा था कि मायारानी भी इसी जगह आ पहुँचेगी लेकिन यह आशा उसकी वृथा ही हुई क्योंकि उस नकाबपोश की आवाज का सबसे ज्यादे असर मायारानी ही पर हुआ। वह घबडा कर वहाँ से भागी और अपने दीवानखाने में जाकर बैठ रही जहा कई लौंडिया पहरा दे रही थी। आते ही उसने एक लौंडी की जुबानी अपने सिपाहियों

मायारानी कोठरी के अन्दर गई। वहा एक दूसरी कोठरी में जाने के लिए दर्वाजा था उस दर्वाजे को खोलकर दूसरी कोठरी में गई। वहा एक छोटा सा कूआ था जिसमें उतरने के लिए जजीर लगी हुई थी। वह इस कूए के अन्दर उतर गई और एक लम्बे चौडे स्थान में पहुची जहॉ बिल्कुल ही अधकार था। मायारानी टटोलती हुई एक कोन की तरफ चली गई और वहा उसन कोई पेंच घुमाया जिसक साथ ही उस स्थान मेंबखूबी रोशनी हो गई और वहॉ की हर एक चीज साफ साफ दिखाई देने लगी। यह रोशनी शीशे के एक गोले में से निकल रही थी जो छत के साथ लटक रहा था। यह स्थान जिसे एक लम्बा चौडा दालान या चारों तरफ दीवार होने के कारण कमरा कहना चाहिए अद्भुत चीजों और तरह तरह के कल पुर्जो स भरा हुआ था। बीच बीच में कतार बाध कर चौबीस खमभे सगर्ममर के खड़े थे और हर दो खम्भों के ऊपर एक एक महराबदार पत्थर चढ़ा हुआ था जिसे मामूली तौर पर आप बिना दर्वाजे का फाटक कह सकत है। इन महराबी पत्थरों के बीचा बीच बडे बडे घटे लटक रह थे और हर एक घटे के नीचे एक गडारीदार पहिया था।

मायारानी ने हर एक महराब को जिस पर मोटे माटे अक्षर लिखे हुए थे गौर से देखना शुरु किया और एक महराब के नीचे पहुच कर खडी हो गई जिस पर यह लिखा हुआ था-- दूसरे दर्जे का तिलिस्मी दर्वाजा। मायारानी न उस पहिये का घुमाना शुरु किया जो उस महराब में लटकत हुए घटे के नीचे था। पहिया चार पाच दफे घूम कर रुक गया तब मायारानी वहा स हटी और यह कहती हुई घूम कर सामने वाली दीवार के पास गई कि देखें अब वे कम्बख्त क्योंकर बाग के बाहर जाते हैं दीवार में नम्बरवार बिना पल्ले की पॉच आलमारियॉ थीं और हर एक आलमारी में चार दर्जे बने हुए थे पहिली आलमारी में शीश का सुराहिया थी दूसरी म ताबे के बहुत से डिब्बे थे तीसरी कागज के मुट्ठों से भरी हुई थी जिन्हे दीमकों न बबाद कर डाला था चौथी में अष्टधातु की छोटी छोटी बहुत सी मूरतें थीं और पाचवीं आलमारी में कवल चार ताम्रपत्र थ जिनमें खूबसूरत उभड हुए अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था।

मायारानी उस आलमारी क पास गई जिसमें शीश की सुराहिया थीं और एक सुराही उठा ली। शायद उसमें किसी तरह का अर्क था जिस थोडा सा पीने के बाद सुराही हाथ में लिय हुए वहा से हटी और दूसरी आलमारी क पास गई जिसमे ताब के डिब्ब थ। एक डिब्बा उठा लिया और वहा से रवाना हुई। जिस तरह उसका जाना हम लिख आये है उसी तरह घूमती हुइ वह अपन दीवानखान म पहुची जिसके आगे तरह तरह के खुशनुमा पत्तों वाले खूबसूरत गमले सजाये हुए थे। वहॉ पहुँच कर उसने वह डिब्बा खोला। उसके अन्दर एक प्रकार की बुकनी भरी हुई थी। उसमें से आधी बुकनी अपने हाथ से खूबसूरत गमलों में छिडकने के बाद बची हुई आधी बुकनी डिब्बे में लिये हुए वह दीवानखान की छत पर चढ गइ और अपन साथ कवल एक लौडी को जिसका नाम लीला था और जो उसकी सब लौडियो की सरदार थी लती गइ। यह सब काम जो हम ऊपर लिख आये है मायारानी ने बडी फुर्ती से उसके पहिले ही कर लिया जब तक कि उसक बागी सिपाही धनपत का लिये हुए बाग के दूसरे दर्जे के बाहर जाय।

जब मायारानी लीला का साथ लिय हुए दीवानखान की छत पर चढ गई तबउसने सुराही दिखा कर लीला से कहा चिल्लू कर इसमें से थोडा सा अर्क तुझे दती हूँ उसे पी जा और उस आफत स बची रह जो थोडी ही दर में यहा के रहन वाला पर आन वाली ह।

लीला--(हाथ फैला कर) मै खूब जानती हू कि आपकी मेहरबानी जितनी मुझ पर रहती है उतनी और किसी पर नहीं।

माया--(लीला की अजुली मे अर्क डाल कर) इसे जल्दी पी जा और जो कुछ मै कहती हू उसे गौर से सुन।

लीला--बेशक मै ध्यान दकर सुनूगी क्योंकि इस समय आपकी अवस्था बिल्कुल ही बदल रही है और यह जानने क लिए मरा जी बहुत बेचैन है कि अब क्या किया जायगा ?

माया--मै अपन भेद तुझसे छिपा नही रखती जा कुछ मै कर चुकी हूँ तुझ सब मालूम है केवल दो भेद मैने तुझस छिपाए थ जिनम स एक तो आज खुल ही गया और एक का हाल मै तुझसे फिर किसी समय कहूगी। इन भेदों के विषय में मरा विश्वास था कि यदि किसी का मालूम हा जायगा तो मरी जान आफत में फॅस जायगी और आखिर वैसा ही हुआ। तू दख ही चुकी है कि दा कम्बख्त नकाबपाशों ने यहॉ पहुँच कर क्या गजब मचा रक्खा है। अब जहॉ तक मै समझती हू धनपत का भद छिपा रहना बहुत ही मुश्किल है और साथ ही इसके कम्बख्त सिपाहियों का भी मिजाज बिगड गया है। मान लिया जाय कि अगर मैने किसी तरह की बुराई की भी तो उनको मेरे खिलाफ होना मुनासिब न था। खैर सिपाही लाग तो उजड्ड हुआ ही करत है मगर मुझसेबुराई करने का नतीजा कदापि अच्छा न होगा। अफसोस, उन लोगों न इस बात

जाओगे पर तुम्हार लिए कुछ भी न होगा। मैं तुम लोगों का समझती हू और कहती हू कि अपने मालिक क पास चलो और उससे माफी माग कर अपनी जान बचाओ।

इसी तरह की उँच नीच की बहुत सी बातें लीला उन सिपाहियों से दर तक कहती रही और सिपाही लाग भी लीला की बात पर गौर कर ही रह थे कि यकायक बाई तरफ स एक शख के बजने की आवाज आई घूम कर देखा ता व ही दोनों नकाबपाश दिखाई पडे जो हाथ के इशारे से उन सिपाहियो का अपनी तरफ बुला रह थे। उन्हें दखते ही सिपाहियों की अवस्था बदल गई आर उनके दिल क अन्दर उम्मीद रज डर और तरद्दुद का चर्खा तेजी क साथ घूमन लगा। लीला की बातों पर जा कुछ सोच कर रह थे उसे छोड दिया आर धनपत को साथ लिए हुए इस तरह दानों नकाबपोशा की तरफ बढे जैसे प्यास पसाल (पौसर) की तरफ लपकत है।

जब उन दोनों नकाबपोशों के पास पहुच ता एक नकाबपाश न पुकार कर कहा इस बात से मत घबराओ कि मायारानी ने तुम लोगों का मजबूर कर दिया और इस बाग स बाहर जान लायक नही रक्खा। आओ हम तुम सभा का इस बाग स बाहर कर दते है मगर इसके पहिले तुम्हे एक एसा तमाशा दिखाया चाहते है जिस देख कर तुम बहुत ही खुश हा जाओगे और हद स ज्यादे बेफिक्री तुम लोगों के भाग मं पडगी, मगर वह तमाशा हम एक दम स सभों का नहीं दिखाया चाहते। मैं एक कोठरी मं (हाथ का इशारा करके) जाता हूँ, तुम लाग बारी बारी से पाच पाच आदमी आआ और अद्भुत अद्वितीय अनूठा तथा आश्चर्यजनक तमाशा दखा।

इस समय दानों नकाबपाश जिस जगह खडे थ उसक पीछ की तरफ एक दीवार थी जो बाग क दूसर और तीसर दर्जे की हद को अलग कर रही थी और उसी जगह पर एक मामूली काठरी भी थी। बात पूरी होत ही दोनों नकाबपाश पाच सिपाहियों का अपन साथ आन के लिए कह कर उस काठरी क अन्दर घुस गए। इस समय इन सिपाहियों की अवस्था कैसी थी इसे दिखाना जरा कठिन है। न तो इन लोगों का दिल उन दोनों नकाबपोशों के साथ दुश्मनी करन की आज्ञा दता था और न यही कहता था कि उन दानों को छाड दा और जिधर जाए जान दा।

जब दोनों नकाबपाश काठरी के अन्दर घुस गए ता उसक बाद पाच सिपाही जा दिलावर और ताकतवर थ काठरी में घुस और चौथाई घड़ी तक उसके अन्दर रहे। इसके बाद जब व उस कोठरी के बाहर निकले तो उनके साथियों न दखा कि उन पाँचों के चहरे से उदासी झलक रही है आखों स आसू की बूदे टपक रही हैं और सिर झुकाए अपन साथियो की तरफ आ रह है। जब पास आए ता उन पाँचों की अवस्था एकदम बदल जान का सबब सिपाहियों न पूछा जिसके जवाब म उन पाचो ने कहा पूछन की काई आवश्यकता नहीं है तुम लाग पाच पाच आदमी बारी बारी से जाआ और जा कुछ है अपनी आँखों स दख ला हम लागो से पूछोग तो कुछ भी न बतावेंगे हाँ इतना अवश्य कहेंग कि वहाँ जाने मे किसी तरह का हर्ज नही ह।

आपुस में ताज्जुब भरी बातें करन के बाद और पाच सिपाही उस काठरी क अन्दर घुसे जिसमे दानो नकाबपोश थे और पहिले पाचों की तरह य पाचों भी चौथाई घडी तक उस काठरी के अन्दर रहे। इसके बाद जब बाहर निकले ता इन पाचो भी वही अवस्था थी जसी उन पाँचों की जा इनके पहिले काठरी के अन्दर स हा कर आए थे। इसके बाद फिर पाच सिपाही कोठरी के अन्दर घुस और उनकी भी वही अवस्था हुई यहा तक कि जितन सिपाही वहा मौजूद थे पाच पाच करके सभी कोठरी के अन्दर स हा आए और सभों ही की वही अवस्था हुई जैसी पहिल गए हुए पाचों सिपाहियों की हुई थी। धनपत ताज्जुब भरी निगाहों से यह तमाशा देख और असल भेद जान के लिये बेचैन हो रहा था मगर इतनी हिम्मत न पडती थी कि किसी से कुछ पूछता क्योकि नकाबपोशों कि आज्ञानुसार सिपाहियों की तरह वह उस कोठरी के अन्दर जाने नहीं पाया था जिसमें दाना नकाबपोश थे। अन्त मं सब सिपाहिया न आपुस में बातें करके इशार से इस बात का निश्चय कर लिया कि कोठरी क अन्दर उन सभा ने एक ही रग ढग का तमाशा दखा था।

थोडी देर बाद दोनों नकाबपाश उस कोठरी के बाहर निकल आए और उनमें स नाटे नकाबपाश ने सिपाहियों की तरफ देख कर कहा धनपत को मेरे हवाले करा। सिपाहियों न कुछ भी उज्र न किया बल्कि अदब क साथ आगे बढ कर धनपत को नकाबपाश के हवाले कर दिया। दानों नकाबपोश उस साथ लिए हुए फिर काठरी क अन्दर घुस गय और आधे घटे तक वहा रह इसके बाद जब कोठरी के बाहर निकले ता नाटे नकाबपोश ने सिपाहियों स कहा धनपत को हमने ठिकाने पहुचा दिया अब आओ तुम लोगों को भी इस बाग के बाहर कर दें। सिपाहियों न कुछ भी उज्र न किया और दो तीन झुण्डों म होकर नकाबपोश के साथ उस काठरी क अन्दर गए और गायब हो गय। दोनों नकाबपोश भी उसी कोठरी के अन्दर जाकर गायब हो गये और उस कोठरी का दर्वाजा भीतर से बन्द हो गया।

इस पचड़े में दो पहर दिन चढ आया लीला दूर से खडी यह तमाशा देख रही थी जब सन्नाटा हो गया ता वह लौटी और उसने इन बातों की खबर मायारानी तक पहुचाई।

छि १

छठवां बयान

लीला की जुबानी दोनों नकाबपोशों सिपाहियों और धनपत का हाल सुन कर मायारानी बहुत ही उदास और परेशान हो गई। वह आशा जो तिलिस्मी दवाजा बन्द करने और बेहोशी का अद्‌भुत धूरा छिड़कने पर उसे बधी थी बिल्कुल जाती रही। तिलिस्म में जाकर तिलिस्मी दर्वाजे का बन्द करना तिलिस्मी दवा पीना और लीला को पिलाना बेहोशी की बुकनी फूलों के गमलो में डालना सब बिल्कुल ही व्यर्थ हो गया। धनपत दोनों नकाबपोशों के कब्जे में पड़ गया और सब सिपाही भी सहज ही में बाग के बाहर हो गये। इस समय उन दोनों नकाबपोशों की कार्रवाइयों ने उसे इतना बदहवास कर दिया कि वह अपने बचाव की कोई अच्छी सूरत सोच नहीं सकती थी। आखिर वह हर तरह से दु खी होकर फिर उसी तहखाने के अन्दर गई जिसमें पहिली दफे जाकर बाग के दूसरे दर्जे का दवाजा तिलिस्मी रीति से बन्द किया था। हम ऊपर लिख आये है कि वहा दीवार में बिना दवाजे की पाच आलमारियॉं थी और एक आलमारी में ताबे के बहुत से डिब्बे रक्खे थे। इस समय मायारानी ने उन्हीं डिब्बों को खोल खाल कर देखना शुरु किया। ये डिब्बे छोटे और बडे हर प्रकार के थे। कई डिब्बे खोल खोल कर देखने के बाद मायारानी ने एक डिब्बा खोला जिसका पटा एक हाथ से कम न होगा। उस डिब्बे में एक हाथीदांत का तमचा बारह अगुल का और छोटी छोटी बहुत सी गोलिया रक्खी हुई थीं। उन गोलियों का रग लाल था और उनके अलाव एक ताम्रपत्र भी उस डिब्बे के अन्दर था। मायारानी इस डिब्बे को लेकर वहा से रवाना हुई और तहखाने का दवाजा बन्द करती हुई अपने स्थान पर उस जगह पहुची जहॉं उसकी लौडिया उसकी राह देख रही थी। उसने सब लौडियों के सामने ही उस डिब्बे को खोला और ताम्रपत्र हाथ में लेकर पढने लगी जब पूरी तरह पढ चुकी तो लीला की तरफ देख कर बोली "तू देखती है कि मैं किस बला में फस गई हूँ?"

लीला–जी हा मैं बखूबी देख रही हू। दोनों नकाबपोशों की तरफ जब ध्यान देती हू तो कलेजा काप जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अब कोई भारी उपद्रव उठने वाला है क्योंकि नकाबपोशों की बदौलत इस बाग के सिपाही भी बागी हो गए हैं।

माया–बेशक ऐसा ही है और ताज्जुब नहीं कि वे सिपाही लोग जो इस समय मेरे पजे से निकल गए हैं मेरे बाकी फौजी सिपाहियों को भी भडकावें।

लीला–इसमें कुछ भी सन्देह नहीं बल्कि इन सिपाहियों की बदौलत आपकी रिआया भी बागी हो जायगी और तब जान बचाना मुश्किल हो जायगा। अफसोस आपने व्यर्थ ही अपने दोनों भेद मुझसे छिपा रक्खे नहीं तो मैं इस विषय में कुछ राय देती!

माया–(ताज्जुब से) दोनों भेद कौन से ?

लीला–एक तो यही धनपत वाला।

माया–हा ठीक है और दूसरा कौन ?

लीला–(मायारानी के कान की तरफ झुक कर धीरे से) राजा गोपालसिह वाला जिन्हें भूतनाथ की मदद से आपने मार डाला!

लीला की बात सुन कर मायारानी चौंक पडी अपनी जगह से उठ खड़ी हुई और लीला का हाथ पकड के किनारे ले जाकर धीरे से बोली, "देख लीला तू केवल मेरी लौंडियों की सर्दार ही नहीं है बल्कि बचपन की साथी और मेरी सखी भी है। सच बता गोपालसिह वाला भेद तुझे कैसे मालूम हुआ ?

लीला–आप जानती ही हैं कि मुझे कुछ ऐयारी का भी शौक है।

माया–हॉं मैं खूब जानती हू कि तू ऐयारी भी कर सकती है लेकिन इस किस्म का काम मैंने तुझसे कभी लिया नहीं।

लीला–यह मेरी बदकिस्मती थी नहीं तो मैं अब तक ऐयारा की पदवी पा चुकी होती।

माया–ठीक है खैर तो इससे मालूम हुआ कि तूने ऐयारी से गोपालसिह वाला भेद मालूम कर लिया ?

लीला–जी हा ऐसा ही है मैंने ऐयारी से और भी बहुत से भेद मालूम कर लिये हैं जिनकी खबर आपको भी नहीं और जिनको इस समय कहना मैं उचित नहीं समझती मगर शीघ्र ही उस विषय में मैं आप से बातचीत करुगी। इस समय तो मुझे केवल इतना ही कहना है कि किसी तरह अपनी जान बचाने की फिक्र कीजिए क्योंकि मुझे भूतनाथ की दोस्ती पर शक है।

माया–क्या तू समझती है कि भूतनाथ ने मुझे धोखा दिया ?

लीला–जी हॉ बल्कि मै तो यही समझती हू कि राजा गोपालसिह मारे नहीं गये बल्कि जीते है।

माया–अगर ऐसा है तो बडी ही गजब हो जायगा मगर इसका कोई सबूत भी नहीं ?

लीला–आज तो नहीं मगर कल तक मै इसका सबूत आपको दे सकूंगी।

माया–अफसोस अफसोस !मै इस समय किले में जा कर अपने दीवान से राय लेने वाली थी मगर अब तो कुछ और ही सोचना पडा।

लीला–(उस डिब्बे की तरफ इशारा करके जो अभी तिलिस्मी तहखाने में से मायारानी लाई थी) पहिले यह बताइये कि इस डिब्बे को आप किस नीयत से लाई है ? यह हाथीदात का तमचा कैसा है और ये गोलिया क्या काम दे सकती है ?

माया–ये गोलियॉ इसी तमचे में रख कर चलाई जायगी। इसके चलाने में किसी तरह की आवाज नहीं होती और गोली भी आधी,कोस तक जा सकती है। जब यह गोली के बदन पर लगेगी या जमीन पर गिरेगी तो एक आवाज देकर फ. जायगी और इसके अन्दर से बहुत सा जहरीला धूँआ निकलेगा। वह धूँआ जिस जिस के नाक मे जायगा। वह आदमी फौरन ही बेहोश हो जायगा। अगर हजार आदमियों की भीड़ आ रही हो तो उन सभों को बेहोश करने के लिए कवल दस पाच गोलिया काफी है।

लीला–बशक यह बहुत अच्छी चीजे है और ऐसे समय में आपको बड़ा काम दे सकती है मगर मै समझती हू कि उस डिब्बे म पाच सौ से ज्यादे गोलियॉ न होंगी इसके बाद कदाचित् वह ताम्रपत्र *कुछ काम दे सके जो उस डिब्बे में है और जिस आपने हम लोगों के सामने पढा था।

माया–वाह तुम बहुत समझदार हो। बेशक ऐसा ही है। इस ताम्रपत्र में उन गोलियों के बनाने की तरकीब लिखी है। इस तिलिस्म में ऐसी हजारों चीजे है मगर लाचार हू कि तिलिस्म का पूरा हाल मुझे मालूम नहीं है बल्कि चौथे दर्जे के विषय मे तो मै कुछ भी नहीं जानती। फिर भी जो कुछ मै जानती हू या जहॉ तक तिलिस्म में मै जा सकती हू वहा ऐसी और भी कितनी ही चीजें है जा समय पर मेरे काम आ सकती है।

लीला–अब यही समय है कि उन चीजों को लकर आप यहॉ से चल दीजिए क्योंकि इस बाग तथा आपके राज्य पर अब आफत आया ही चाहती है। मैने सुना है कि राजा बीरेन्द्रसिह की बेशुमार फौज जमानिया की तरफ आ रही है बल्कि यो कहना चाहिए कि आज कल में पहुचा ही चाहती है।

माया–हा यह खबर मैंने भी सुनी है। यदि गोपालसिह का और धनपत का मामला न बिगड़ा होता तो मै मुकाबिला करन क लिए तैयार हा जाती परन्तु इस समय तो मुझे अपनी रियाआ में से किसी का भी भरोसा नहीं है।

लीला–भरासे के साथ ही साथ आप समझ रखिए कि आप अपने किसी नौकर पर हुकूमत की लाल आख भी अब नहीं दिखा सकती। मगर इन बातों में वृथा देर हो रही है। इस विषय को बहुत जल्द तय कर लेना चाहिए कि अब क्या करना और कहा जाना मुनासिब होगा।

माया–हा ठीक है मगर इसके भी पहिले मै तुमसे यह पूछनी हू कि तुम इस मुसीबत में मेरा साथ देने के लिए कब तक तैयार रहोगी ?

लीला–जब तक मेरी जिन्दगी है या जब तक आप मुझ पर भरोसा करेंगे।

माया–यह जवाब तो साफ नहीं है बल्कि टेढा है।

लीला–इस पर आप अच्छी तरह गौर कीजिएगा मगर यहा से निकल चलने के बाद।

माया–अच्छा यह तो बताओ कि मेरी और लौडियों का क्या हाल है ?

लीला–आपकी लौडियों में कवल चार पॉच ऐसी है जिन पर मै भरोसा कर सकती हू, बाकी लौडियों के विषय में मै कुछ भी नहीं कह सकती और न उनके दिल का हाल ही जाना जा सकता है।

माया–(ऊँची सास लेकर) हाय, यहॉ तक नौबत पहुच गई। यह सब मेरे पापों का फल है। अच्छा जो होगा देखा जायगा। इस अनूठे तमचे और गोलियों को मै सम्हालती हूँ और थोड़ी देर के लिए पुन तिलिस्मी तहखाने में जाकर देखती हू कि मेरे काम की ऐसी कौन सी चीज है जिसे सफर में अपने साथ ले जा सकू। जो कुछ हाथ लगे सो ले आती हू और बहुत जल्द तुमको और उन लौडियों को साथ लेकर निकल भागती हू जिन पर तुम भरोसा रखती हो। कोई हर्ज नहीं इस गई गुजरी हालत में भी मे एक दफे लाखों दुश्मनों को जहन्नुम में पहुचाने की हिम्मत रखती हूँ !!

---

*ताम्रपत्र–तॉबे की तख्ती जिस पर कुछ लिखा या खुदा हुआ हो।

इसके जवाब में पीछे की तरफ से किसी गुप्त मनुष्य ने कहा–'वेशक वेशक तुम मरते मरते भी हजारों का घर चौपट करोगी।

सातवां बयान

ऐयारी भाषा की चीठी पढने और कमलिनी के ढाढस दिलाने पर कुअर इन्द्रजीतसिह की दिलजमई तो हो गई परन्तु 'टेप का परिचय पाने के लिए वे बैचेन हो रहे थे अस्तु उससे मिलने की आशा में दर्वाजे की तरफ ध्यान लगा कर थोडी देर तक खडे हो गए। यकायक उस मकान का दर्वाजा खुला और धनपत की कलाई पकडे 'टेप महाशय अपने चेहरे पर नकाव डाले हुए आते दिखाई दिये। दर्वाजे के बाहर निकलते ही 'टेप' ने अपने चेहरे पर से नकाब हटा दी, सूरत देखत ही कुँअर इन्द्रजीतसिह हस पडे और लपक के उनकी कलाई पकड कर बोले अहा यह किसे आशा थी कि यहा पर राजा गोपालसिह से मुलाकात होगी ? (कमलिनी की तरफ देख कर) तो क्या इन्हीं ने अपना नाम 'टेप रक्खा है ?

कमलिनी–जी हॉ।

इन्द्रजीतसिह–(गोपालसिह से) क्या आनन्दसिह इसी मकान के अन्दर है ?

गोपाल–जी हॉ आप मकान के अन्दर चलिए और उनसे मिलिए।

इन्द्रजीत–एक औरत के रोने की आवाज हम लोगों ने सुनी थी शायद वह भी इसी मकान के अन्दर हो ?

गोपाल–जी नही वह कम्बख्त औरत (धनपत की तरफ इशारा करके) यही है। न मालूम ईश्रर न इस हरामजादे का कैसा मर्द वनाया है कि आवाज से भी कोई इसे मर्द नहीं समझ सकता।

कमलिनी–इसे आपने कव पकडा ?

गोपाल–यह कल से मेरे कब्जे में है और मैं कल ही इसे इस मकान में कैद कर गया था वल्कि आज छुडान के लिए आया था।

इन्दजीत–तो आप कल भी इस मकान में आ चुके हें। मगर मुझसे मिलने क लिए शायद कसम खा चुके थे।

गोपाल–(हस कर) नहीं नहीं मेरा वह समय वडा ही अनमोल था एक एक पल की दर वुरी मालूम होती थी इसी से आपसे मिलने के लिए मैं रुक न सका। इसका खुलासा हाल आप सुनेंगे तो वहुत ही हसगे और खुश होंगे। मगर पहिले मकान के अन्दर चल कर आनन्दसिह से मिल लीजिए तव यह अनूठा किस्सा आपसे कहूगा।

इन्दजीत–क्या आनन्द यहॉ तक नहीं आ सकता ?

गोपाल–नहीं वे यहा नही आ सकते। वे तिलिस्मी कार खान में फस चुके हैं इस लिए छूटने का उधाग नहीं कर सकते वल्कि तिलिस्म के अन्दर जा सकते है और उसे तोड कर निकल आ सकत है। मगर अब उनसे मिलने में देर न कीजिए।

इन्दजीत–आप जिस काम के लिए गये थे वह हुआ ?

गोपाल–वह काम वखूवी हो गया उसका खुलासा हाल थोडी देर में आपस कहूगा।

कमलिनी–भूतनाथ को आपने कहॉ छोडा ?

गोपाल–वह भी आता ही होगा। वास्तव में वह वडा ही चालाक और धूर्त ऐयार है। उसने जो काम किए है सुनोगी ता हसते हसते लोटन कवूतर बन जाओगी (इन्द्रजीतसिह की तरफ दखकर) आप आनन्दसिह के फसने से दु खी न होइए क्योंकि आप दानों भाइयों के लिए इस तिलिस्म का ताडना जरुरी हो चुका है।

इन्दजीत–ठीक है मगर रिक्तग्रन्थ का पूरा पूरा मतलव उसकी समझ में नहीं आया हे और इससे तिलिस्म के काम में उसे तकलीफ होना सम्भव है। उसमें दस वारह शब्द ऐसे है जिनका अर्थ नहीं लगता और इन शब्दों का अर्थ जाने विना वहुत सी वातों का मतलव समझ में नहीं आता।

गोपाल–(हस कर) आपका कहना ठीक मगर मै एक वात आपको ऐसी वताता हूँ कि जिससे आप हर एक तिलिस्मी ग्रन्थ को अच्छी तरह पढ और समझ लेंगे और उनमें चाहे कैसे ही टेढे शब्द क्यों न हो मगर मतलव समझने में कठिनता न होगी।

इन्दजीत–वह क्या ?

गोपाल–केवल एक छोटी सी वात है।

इन्द–मगर उसके वताने में आप हुज्जत वडी कर रहे है।

गोपालसिह ने झुक कर इन्द्रजीतसिह के कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही कुमार हस पड़े 'बेशक बड़ी चतुराई की गई है 'जरा सा फ़ेर में मतलब कैसा विगड जाता है 'आपका कहना वहुत ठीक है। अव कोई शब्द ऐसा नहीं निकलता जिसका अर्थ मै न लगा सकू 'क्यों न हो आखिर आप तिलिस्म के राजा ही ठहरे।

कमलिनी से इस समय चुप न रहा गया वह ताने के तौर पर सिर नीचा करके वोली 'वेशक राजा ही ठहरे इसी से तो बेमुरौवती कूट-कूट कर भरी है 'इसके जवाव में गोपालसिह ने कहा 'नहीं नहीं ऐसा मत ख्याल करो। तुम्हारा उदास चेहरा कह देता है कि तुम्हे इस वात का रज है कि हमने जो कुछ कुमार के कान में कहा उससे तुमको जान वूझ कर वचित रखा मगर नहीं (धनपत की तरफ इशारा करके) इस कम्वख्त के ख्याल से मैंने ऐसा किया। आखिर वह भेद तुमसे छिपा न रहगा।

इस पर कुँअर इन्द्रजीतसिह ने एक विचित्र निगाह कमलिनी पर डाली जिसे देखते ही वह हस पडी और मकान के अन्दर जाने के लिए दर्वाजे के तरफ वढी। कुँअर इन्द्रजीतसिह कमलिनी लाडिली और उनके साथ धनपर का हाथ पकडे राजा गोपालसिह उस मकान के अन्दर चले।

इस मकान की हालत हम ऊपर लिख आये है इसलिए पुन नहीं लिखते। राजा गोपालसिह सभों को साथ लिए हुए उस कोठरी में पहुँच जिसमें कुँअर आनन्दसिह फसे हुए थे मगर इस समय वहॉं की अवस्था वैसी न थी जैसी की हम ऊपर लिख आये है अर्थात वह तिलिस्मी सदूक जिसमें आनन्दसिह का हाथ फस गया था वहा न था और न आनन्दसिह वहॉं थे, हॉं उस कोठरी की जमीन का वह हिस्सा जिस पर सदूक था ज़मीन के अन्दर धस गया था और वहॉं एक कुए की शक्ल दिखाई दे रही थी। यह देख राजा गोपाल सिह ताज्जुव में आ गये और उस कुए की तरफ देखकर कुछ सोचने लगे। आखिर कुँअर इन्द्रजीतसिह ने उन्हे टोका और चुप रहने का सवव पूछा।

इन्द्रजीत--आप क्या सोच रहे है ? शायद आनन्दसिह का आपने इसी कोठरी में छोडा था ?

गोपाल--जी हा, इस जगह जहॉं आप कुएँ की तरफ का गड़हा देखते हैं एक सन्दूक था और उसमें एक छेद था, उसी छद के अन्दर हाथ डाल कर कुमार न अपने को फसा लिया था। मालूम होता है कि अव वे तिलिस्म के अन्दर चले गये। इसी ख्याल से मैंने आपस कहा था कि कुँअर आनन्दसिह अपने को छुडा नहीं सकते वल्कि तिलिस्म के अन्दर जा सकते है।

इन्द्रजीत--अफसोस खैर मर्जी परमेश्वर की ? इस समय मेरा दिमाग परेशान हो रहा है। धनपत का मै इस अवस्था में क्यों देख रहा हू ? यकायक आपका इस वाग में आना कैसे हुआ ? आप मुझसे मिले विना सीधे इस मकान में क्यों आए ? आनन्द का इस मकान में आपने ठहरने क्यों दिया अथवा उसे वचाने का उद्योग क्यों न किया ? इत्यादि वहुत सी वातें जानने के लिए मै इस समय परेशान हो रहा हू मगर इसके पहिले मै इस कूए की अवस्था जानने का उद्योग करूँगा (कमलिनी की तरफ देखकर) जरा तिलिस्मी खॅंजर मुझे दो उसके जरिये से इस कुए में उजाला करके मै देखूगा कि इसके अन्दर क्या है ?

कमलिनी--(तिलिस्मी खजर और अँगूठी कुमार के सामने रख कर) लीजिए शायद इससे कुछ काम चले '

कुअर इन्द्रजीतसिह ने अगूठी पहिर खजर हाथ म लिया और धीरे धीरे उस गडहे के किनारे गये जो ठीक कूएँ की तरह का हो रहा था। खजर वाला हाथ कुमार ने कूए के अन्दर डाला और उसका कब्जा दवाकर उजाला करने के वाद झाक कर देखा कि उसके अन्दर क्या हे।

न मालूम कुअर इन्द्रजीतसिह ने कुए के अन्दर क्या देखा कि वे यकायक बिना किसी से कुछ कहे तिलिस्मी खजर हाथ में लिये हुए उस कूए के अन्दर कूद पडे। यह देखते ही कमिलिनी और लाडिली परेशान हो गई और राजा गोपालसिह को भी वहुत ताज्जुव हुआ। इन्द्रजीतसिह की तरह राजा गोपालसिह ने भी अपना तिलिस्मी खजर हाथ में लेकर कूए के अन्दर किया और उसका कब्जा दवा रोशनी करने बाद झाक कर देखा कि क्या वात है मगर कुछ दिखाई न पडा।

कमलिनी--कुछ मालूम हुआ कि इस गडहे मे क्या है ?

गोपाल--कुछ भी मालूम नहीं होता न जाने क्या देखकर कुमार इसमें कूद गये।

कमलिनी--खैर आप यहॉं से हटिये और सोचिए कि अव क्या करना होगा ?

गोपाल--यद्यपि मैं जानता हूँ कि यहाँ का तिलिस्म कुमार के हाथ से टूटेगा परन्तु इस रीति से दोनों कुमारों का तिलिस्म के अन्दर जाना ठीक न हुआ। देखा चाहिए इश्वर क्या करता है ? चलो अव यहॉं रहना उचित नहीं है और न कुमार से मुलाकात होने की ही कोई आशा है।

कमलिनी--(अफसोस के साथ) चलिये।

गोपाल-(बाहर की तरफ चलते हुए) अफसोस ! कुमार से कई बातें कहने की आवश्यकता थी मगर लाचार !

कम-(धनपत की तरफ इशारा करके) इसे आप कहाँ कहाँ लिये फिरेंगे और यहाँ क्यों लाए थे ?

गोपाल-इसे कल गिरफ्तार करके इसी मकान के अन्दर छाड गया था। मुझे आशा थी कि यह स्वय इस मकान से बाहर न निकल सकेगा मगर आज इस मकान में आकर देखा तो बडा ही आश्चर्य हुआ। इस मकान के तीन दर्वाजे यह खोल चुका था और चौथा दर्वाजा खोला ही चाहता था। न मालूम इस मकान का भेद इसे क्योंकर मालूम हुआ।

कम-इसे आपने किस रीति स गिरफ्तार किया ?

गोपाल-पहले इस कम्बख्त का इतजाम कर लू तो इसका अनूठा किस्सा कहूँ।

कमलिनी और लाडिली के साथ धनपत का हाथ पकडे हुए राजा गोपालसिह उस मकान के बाहर आये और देवमन्दिर की तरफ रवाना हो कर उसके पश्चिम तरफ वाले मकान के पास पहुचे। हम ऊपर लिख आये हैं कि देवमन्दिर के पश्चिम तरफ वाले मकान के पास दर्वाजे पर हड्डियों का एक ढेर था और उसके बीचों बीच में लोहे की एक जजीर पड़ी हुई थी जिसका दूसरा सिरा उसके पास वाले कूए के अन्दर गया हुआ था।

धनपत को घसीटते हुए राजा गोपाल उसी कूए पर गये और उस हरामजादे स्त्री रूपधारी मर्द को जबर्दस्ती उसी कूए के अन्दर ढकेल दिया। इसके साथ ही उस कूए के अन्दर से धनपत के चिल्लान की आवाज आने लगी परन्तु राजा गोपालसिह कमलिनी और लाडिली ने उस पर कुछ ध्यान न दिया। तीनों आदमी देवमन्दिर में आकर बैठ गये और बातचीत करने लगे।

धनपत को घसीटते हुए राजा गोपालसिह उसी कूए पर गये और उस हरामजादे स्त्री रूपधारी मर्द को जबर्दस्ती उसी
उसने अपना काम ईमानदारी से किया या नहीं !

गोपाल-बेशक भूतनाथ ने अपना काम हद से ज्यादा ईमानदारी के साथ किया। वह जाहिर में मायारानी से साथ ऐसा मिला कि उसे भूतनाथ पर विश्वास हो गया और वह समझने लगी कि भूतनाथ इनाम की लालच से मेरा काम उद्योग क साथ करगा।

कम-हाँ उसन मायारानी के साथ मेल पैदा करने का हाल मुझसे कहा था। (मुस्कुरा कर)अजीब ढग से उसने मायारानी का धोखा दिया। हमारी तरफ की मामूली सच्ची बातें कह कर उसने अपना काम पूरा पूरा निकाला मगर मै उसक बाद का हाल पूछती हू जब उस आपके पास काशी में मैने भजा था क्योंकि उसके बाद अभी तक वह मुझसे नहीं मिला।

गोपाल-उसके बाद भूतनाथ न दो तीन काम बडे अनूठे किये जिनका खुलासा हाल मै तुमसे कहूगा लेकिन उन कामों में एक काम सबस बढ चढ के हुआ !

कम-वह क्या ?

गोपाल-उसने मायारानी से कहा कि मै गापालसिह को गिरफ्तार करके दारोगा वाले मकान में कैद कर देता हू, तुम उसे अपने हाथ से मार कर निश्चिन्त हो जाओ। यह सुन कर मायारानी बहुत ही खुश हुई और भूतनाथ ने भी वह काम बडी खूबी क साथ किया बल्कि इसके इनाम में अजायबघर की ताली मायारानी से ले ली !

कम-क्या अजायबघर की ताली भूतनाथ ने ले ली ?

गोपाल-हॉ।

कम-यह बडा काम हुआ और इस काम के लिए मैंने उसे सख्त ताकीद की थी। अब वह ताली किसके पास है ?

गोपाल-ताली मेरे पास है मुझे आशा न थी कि भूतनाथ मुझे देगा मगर उसने कोई उज्र न किया।

कम-वह आपसे किसी तरह उज्र नहीं कर सकता क्योंकि मैने उसे कसम देकर कह दिया था कि जितना मुझे मानते हो उतना ही राजा गोपालसिह को मानना। असल बात तो यह है कि भूतनाथ बडे काम का आदमी है। इसमें कोई सन्देह नही कि वह राजा वीरेन्द्रसिह का गुनहगार है और उसने सजा पाने लायक काम किया है मगर वह कसूर उससे धोखे में हुआ। इश्क का भूत उसके ऊपर सवार था और उसी ने उसे वह काम कराया, पर वास्तव में उसकी नीयत साफ है और उस कसूर का उसे सख्त रज है ऐसी अवस्था में जिस तरह हो उसका कसूर माफ होना ही चाहिए।

गोपाल-बशक बेशक और उसके बाद तुम्हारी बदौलत उसके हाथ स कई ऐस काम निकले है जिनके आगे वह कसूर कुछ भी नही है।

कम-अच्छा अब खुलासा कहिए कि भूतनाथ ने आप से मारने के विषय में किस तरह मायारानी का धोखा दिया और अजायबघर की ताली क्योंकर ली ?

राजा गोपालसिह के विषय मे भूतनाथ ने जिस तरह मायारानी को धोखा दिया था उसका हाल हम ऊपर के बयानों मे लिख आये है। इस समय वही हाल राजा गोपालसिह ने अपने तौर पर कमलिनी से बयान किया। ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ के विषय में हमारे पाठकों को धोखा हुआ हो और वे समझ बैठें हो कि भूतनाथ वास्तव में मायारानी से मिल गया मगर नहीं उन्हें अब मालूम हुआ होगा कि भूतनाथ ने मायारानी से मिल कर केवल अपना काम साधा और मायारानी को हर तरह से नीचा दिखाया।

आठवां बयान

अहा ईश्वर की महिमा भी कैसी विचित्र है। बुरे कर्मो का बुरा फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। जो मायारानी अपने सामने किसी को कुछ समझती ही न थी वही आज किसी के सामने जाने या किसी को मुँह दिखानेका साहस नहीं कर सकती। जो मायारानी कभी किसी से डरती ही न थी वही आज एक पत्ते के खडखडाने से भी डर कर बदहवास हो जाती है। जो मायारानी दिन रात हसी खुशी में बिताया करती थी वह आज रो रो कर अपनी आखें सुजा रही है। सध्या के समय भयानक जगल में उदास और दु खी मायारानी केवल पॉच लौंडियों के साथ सिर झुकाए अपने किये हुए बुरे कर्मो को याद कर करके पछ्ता रही है। रात की अवाई के कारण जैसे अधेरा होता जाता है तैसे तैसे उसकी घबराहट भी बढती जाती है। इस समय मायारानी और उसकी लौंडियॉ मर्दाने भेष मे है। लौंडियों के पास नीमचा तथा तीर कमान मौजूद है परन्तु मायारानी केवल तिलिस्मी तमचा कमर में छिपाये हुए है। वह घबड़ा घबडा कर बार-बार पूरब की तरफ देख रही है जिससे मालूम होता है कि इस समय उधर से कोई उसके पास आने वाला है। थोडी ही देर बाद अच्छी तरह अधेरा हो गया और इसी बीच मे पूरब तरफ से किसी आने की आहट मालूम हुई। यह लीला थी जो मर्दाने भेष में पीतल की जालदार लालटेन लिए हुए कहीं दूर से चली आ रही थी। जब वह पास आई मायारानी ने घबराहट के साथ पूछा कहा क्या हाल है ?

लीला–हाल बहुत ही खराब है अब तुम्हें जमानिया की गद्दी कदापि नही मिल सकती।

माया–यह तो मै पहिले ही से समझ बैठी हू। तू दीवान साहब के पास गई थी ?

लीला–हा गई थी उस समय उन सिपाहियों में से कई सिपाही वहॉ मौजूद थे जो आपके तिलिस्मी बाग में रहते हैं और जिन्होने दोनो नकाबपोशों का साथ दिया था। उस समय वे सिपाही दीवान साहब से दोनों नकाबपोशों का हाल बयान कर रहे थे मगर मुझे देखते ही चुप हो गये।

माया–तब क्या हुआ ?

लीला–दीवान साहब ने मुझे एक तरफ बैठने का इशारा किया और पूछा कि 'तू यहा क्यों आई है ? इसके जवाब में मैंने कहा कि मायारानी हम लोगों को छोड कर न मालूम कहा चली गई। जब चारों तरफ ढूढने पर भी पता न लगा तो इत्तिला के लिए आपके पास आई हू। यह सुन कर दीवान साहब ने कहा कि अच्छा ठहर मैं इन सिपाहियों से बातें कर लू तब तुझसे करूँ।

माया–अच्छा तब तूने उन सिपाहियों से बातें सुनीं ?

लीला–जी नहीं सिपाहियों ने मेरे सामने बात करने से इनकार किया और कहा कि हम लोगों को लीला पर विश्वास नहीं है आखिर दीवान साहब ने मुझे बाहर जाने का हुक्म दिया। उस समय मुझे अन्दाज से मालूम हुआ कि मामला बेढब हो गया और ताज्जुब नहीं कि मैं गिरफ्तार कर ली जाऊँ इसलिए पहरे वालों से बात बना कर मैंने अपना पीछा छुडाया और भाग कर मैदान का रास्ता लिया।

माया–सक्षेप में कह कि उन दोनों नकाबपोशो का कुछ भेद मालूम हुआ कि नही।

लीला–दोनोंनकाबपोशोंको असल भेद कुछ भी मालूम न हुआ हा उस आदमी का पता लग गया जिसने बाग से निकल भागने का विचार करती समय गुप्त रीति से कहा था 'बेशक-बेशक तुम मरते-मरते भी हजारों घर चौपट करोगी'

माया–हॉ कैसे पता लगा ? वह कौन था ?

लीला–वह भूतनाथ था। जब मै दीवान साहब के यहा से भाग कर शहर के बाहर हो रही थी तब यकायक उससे मुलाकात हुई उसने स्वय मुझसे कहा कि फलानी बात का कहने वाला मै हूँ, तू मायारानी से कह दीजियो कि अब तेरे दिन खोटे आए है अपने किये का फल भोगने के लिए तैयार हो रहे हॉ यदि मुझे कुछ देने की सामर्थ्य हो तो मैं तेरा साथ दे सकता हूँ।

माया–(ऊँची सास लेकर) हाय ! अच्छा और क्या-क्या मालूम हुआ ?

लीला–हाल क्या कहूँ ? राजा वीरेन्दसिह की बीस हजार फौज आ गई हे जिसकी सरदारी नाहरसिह कर रहा है। दीवान साहब ने एक सर्दार को पत्र देकर नाहरसिह के पास भेजा था मालूम नहीं इस पत्र में क्या लिखा था मगर नाहरसिह ने उसका यह जवाव जुवानी कहला भेजा कि हम केवल मायारानी को गिरफ्तार करने के लिए आए हैं। इसके वाद पता चला कि दीवान साहब ने आपकी खोज में कई जासूस रवाना किए है।

माया–तो इससे निश्चित होता है कि कम्बख्त दीवान भी मेरा दुश्मन हो गया !

लीला–क्या इस बात में अब भी शक है ?

माया–(लम्बी सास लेकर) अच्छा और क्या मालूम हुआ ?

लीला–एक बात सबसे ज्यादा ताज्जुव की मालूम हुई।

माया–वह क्या ?

लीला–रात के समय भेष बदलकर मै राजा वीरेन्दसिह के लश्कर में गई थी। घूमते फिरते ऐसी जगह पहुची जहा से नाहरसिह का खेमा सामन दिखाई दे रहा था और उस खेमे के दर्वाजे पर मशाल हाथ में लिय हुए पहरा देने वाले सिपाहियों की चाल साफ साफ दिखाई दे रही थी। मैंने देखा कि खेमे के अन्दर से दा नकावपोश निकले और जहा मैं खडी थी उसी तरफ आन लगे।

मै किनारे हट गई। जब वह मरे पास से होकर निकले तो उनकी चाल और उनके कदम से मुझे निश्चय हो गया कि वे दोनों नकाबपोश वहीं है जो हमारे बाग में आये थे और जिन्होंने धनपत को पकड़ा था।

माया–हॉ !

लीला–जी हॉ !

माया–अफसोस इसका पता कुछ भी न लगा कि वे दोनों आखिर हैं कौन मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे खास बाग के तिलिस्मी भेदों को जानते है और इस समय तेरी जुवानी सुनने से यह जाना जाता है कि व दोनों राजा वीरेन्दसिह के पक्षपाती भी हैं।

लीला–इसका निश्चय नही हो सकता कि वे दोनों नकाबपोश राजा बीरेन्दसिह के पक्षपाती हैं शायद वे नाहरसिह से मदद लेने गये हों।

माया–ठीक है यह भी हो सकता है। लेकिन वात तो यह है कि मैं सिवाय गोपालसिह के और किसी से नहीं डरती न मुझे रिआया के बिगडने का डर है न सिपाहियों और फौज के बागी होने का खौफ न दीवान मुत्सद्दियों के बिगडने का अदेशा और न कमलिनी और लाडिली की बेवफाई का रज–क्योंकि मै इन सभी को अपनी करामात से नीचा दिखा सकती हूँ, हाँ यदि गोपालसिह के वारे में कम्बख्त भूतनाथ ने मुझे धाखा दिया है जैसा कि तू कह चुकी है तो बेशक खौफ की बात है। अगर वह जीता है तो मुझे बुरी तरह हलाल करेगा। वह इस बात से कदापि नहीं डरेगा कि मेरा भेद खुलने स उसकी बदनामी होगी क्योंकि मैंने उसके साथ बहुत बुरा सलूक किया है। जिस समय कम्बख्त कमलिनी और वीरेन्दसिह के ऐयारों ने गोपालसिह को कैद से छुडाया था यदि गोपालसिह चाहता तो उसी समय मुझे जहन्नुम में मिला सकता था मगर उसका ऐसा न करना मेरा कलेजा और भी दहला रहा है शायद मौत से भी बढ कर कोई सजा उसने मेरे लिये सोच ली है हाय अफसोस ! मैंने तिलिस्मी भेद जानने के लिये उसे क्यों इतने दिनों तक कैद में रख छोड़ा ! उसी समय उसे मार डाला होता तो यह बुरा दिन क्यों देखना पडता ? हाय अब तो मौत से भी काई भारी सजा मुझे मिलने वाली है। (राती है)

लीला–अब रोने का समय नहीं है किसी तरह जान बचाने की फिक्र करनी चाहिए।

माया–(हिचकी लकर) क्या करू ? कहॉ जाऊ ? किससे मदद मॉगू ? ऐसी अवस्था में कौन मेरी सहायता करेगा हाय आज तक मैंने किसी के साथ किसी तरह की नेकी नही की किसी को अपना दोस्त न बनाया और किसी पर अहसान का बोझ न डाला फिर किसी को क्या गरज पडी है जो ऐसी अवस्था में मेरी मदद करे ! बीरेन्दसिह के लडकों के साथ दुश्मनी करना मेरे लिए और भी जहर हो गया।

लीला–खैर जो हो गया सो हो गया इस समय इन सब बाता का सोच विचार करना और भी बुरा है। मैं इस मुसीबत में हर तरह तुम्हारा साथ देने के लिए तैयार हू और अब भी तुम्हारे पास एसी एसी चीजें है कि उनसे कठिन से कठिन काम निकल सकता है रुपये पैसे की तरफ स कुछ तकलीफ हा ही नहीं सकती क्योंकि सेरों जवाहिरात पास में मौजूद है फिर इतनी चिन्ता क्यों कर रही हो ?

माया–चिन्ता क्यों न की जाय ? एक मनोरमा का मकान छिप कर रहने योग्य था सो वहाँ भी वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के चरण जा पहुचे। तू ही कह चुकी है कि किशोरी और कामिनी को ऐयार लोग छुडा कर ले गये। नागर को भी उन लोगों ने फसा लिया होगा। अब सबसे पहला काम तो यह है कि छिप कर रहने के लिए कोई जगह खोजी जाय इसके बाद जो कुछ करना होगा किया जायगा। हाय अगर गोपालसिंह की मौत हो गई होती तो न मुझे रिआया के बागी होने का डर था और न राजा वीरेन्द्रसिंह की दुश्मनी का।

लीला–छिप कर रहने के लिए मै जगह का बन्दोबस्त कर चुकी हूँ। यहा से थोडी ही दूर पर

लीला इससे ज्यादे कुछ कहने न पाई थी कि पीछे की तरफ से कई आदमियों के दौडते हुए आने की आहट मालूम हुई। बात की बात में वे लोग जो वास्तव में चोर थे, चोरी का माल लिये हुए उस जगह आ पहुँचे जहा मायारानी और उसकी लौडियाँ बैठी बातें कर रही थीं। यह चोर गिनती मे पाच थे और उनके पीछे पीछे कई सवार भी उनकी गिरफ्तारी के लिए चले आ रहे थे जिनके घोडों के टापों की आवाज बखूबी आ रही थी। जब वे चोर माया रानी के पास पहूँचे तो यह सोच कर कि पीछा करने वालेसवारों के हाथ से बचना मुश्किल है चोरी का माल उसी जगह पटक कर आगे की तरफ भाग गये और इसके थोडी ही देर बाद ही कई सवार ही उसी जगह (जहा मायारानी थी) आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि कई आदमी *बैठे हुए है बीच में एक लालटेन जल रही है और चोरी का माल भी उसी जगह पडा हुआ है। उन्हें निश्चय हो गया कि यह चोर हे अस्तु उन्होंने मायारानी तथा उसकी लौडियों को चारों तरफ से घेर लिया।

नौवां बयान

आधी रात का समय है चादनी खिली हुई है। मौसम मे पूरा-पूरा फर्क पड गया है। रात की ठडी ठडी हवा अब प्यारी मालूम होती है। ऐसे समय में उस सडक पर जो काशी से जमानिया की तरफ गई है दो मुसाफिर धीरे-धीरे काशी की तरफ जा रहे है ये दोनों मुसाफिर साधारण नही है बल्कि अमीर बहादुर और दिलावर मालूम पडते है। दोनों की पोशाक बेश कीमत और सिपाहियाना ठाठ की है तथा दोनों ही की चाल से दिलेरी और लापरवाही मालूम होती है। खजर कटार तलवार तीरकमान और कमन्द से दोनों ही सजे हुए है। इस समय मस्तानी चाल से धीरे- धीरे टहलते हुए जा रहे है इनके पीछे-पीछे दो आदमी दो घोडों की बागडोर थामे हुए जा रहे है मगर ये दोनों साईस नही है बल्कि सिपाही और सवार मालूम होते है।

दोनों मुसाफिर जाते जाते ऐसी जगह पुहचे जहा सडक से कुछ हट कर पाच सात पेडों का एक झुड था। दोनों खडे हो गये और उनमें से एक ने जोर से सीटी बजाई जिसकी आवाज सुनते ही पेडों की आड में से दस आदमी निकल आये और दूसरी सीटी की आवाज के साथ ही वे उन दोनों आदमियों के पास पहुच कर हाथ जोड कर खड़े हो गये उन सभी की पोशाक उस समय के डाकूओं की सी थी। जाघिया पहरे हुए बदन में केवल एक मोटे कपडे की नीमास्तीन ढाल तलवार लगाये और हाथों में एक एक गडासा लिये हुए थे, और सभी के बगल में एक एक छोटा बटुआ भी लटक रहा था। इन दसों के आ जाने पर उन दो बहादुरों में से एक ने उनकी तरफ देखा और पूछा 'उसका कुछ पता लगा ?

एक डाकू–(हाथ जोड कर) जी हॉ बल्कि वह काम भी बखूबी कर आये है जो हम लोगों के सुपुर्द किया गया था और जिसका होना कठिन था।

जवान–उसके साथ और कौन-कौन है ?

डाकू–लीला के अतिरिक्त केवल पाच लौडिया और थीं।

जवान–उसे तुमने किस इलाके में पाया और क्या किया सो खुलासा कहो।

डाकू–उसने जमानिया की सरहद को छोड दिया और काशी रहने का विचार करके उसी तरफ का रास्ता लिया। जब काशीजी की सरहद में पहुची तो गगापुर नामक एक स्थान मे पास वाले जगल में एक दिन तक उसे अटकना पडा क्योंकि वह लीला को हालचाल लेने और कई भेदों का पता लगाने के लिए पीछे छोड आई थी। हम लोगों को उसी समय अपना काम करने का मौका मिला। मै कई आदमियों को साथ लेकर काशीराज की तहसील में जा गगापुर में है घुस गया और कुछ असवाब चुरा कर इस तरह भागा कि पहरे वालों को पता लग गया और कई सवारों ने हम लोगों का पीछा किया। आखिर हम लोग उन सवारों को धोखा देकर घुमाते हुए उसी जगल में ले गए जिसमें मायारानी थी। जब हम

*मायारानी और उसकी लौडिया मर्दाने वेष में थीं।

लाग मायारानी क पास पहुच ता चोरी का माल उसी के पास पटक कर भाग गये और सवारों न वहा पहुच और चोरी का माल मायारानी के पास देखकर उन्ही लागों को चार या चोरों का साथी समझा और उन्हें चारोंतरफ से घर लिया।

जवान–वहुत अच्छा हुआ शावाश तुम लागों न अपना काम खूबी स साथ पूरा किया। अच्छा इसके वाद क्या हुआ!

डाकू–इसके वाद की हम लोगों को कुछ भी खवर नही ह क्योंकि आज्ञानुसार आपके पास हाजिर होने का समय वहुत कम वच गया था इसलिए फिर उन लोगा का पीछा न किया।

जवान–काइ हर्ज नहीं हमें इतने स ही मतलव था अच्छा अव तुम जाओ जमानिया के पास गगा के किनार जो झाडी है उसी म परसों रात को किसी समय हम तुम लोगों से मिलेंगे कदाचित कोई काम पडे (अपने साथी की तरफ देख कर) कहिए देवीसिहजी अव इन दानों सवारों के लिए क्या आज्ञा होती है जो हम लोगों के साथ आय हैं ?

देवी–मगर ये लाग जासूसी का काम दे सकें तो इन्हें काशी भेजना चाहिए।

जवान–ठीक है और इसक वाद जहाँ तक जल्द हा सके कमलिनीजी से मिलना चाहिए ताज्जुब नहीं वे कहती हों कि भूतनाथ वडा ही वेफिक्रा है।

पाठक तो समझ ही गय होंग कि य दोना बहादुर दवीसिह और भूतनाथ है। डाकुआं और दोनों सवारों को विदा करने के बाद दोनों ऐयार लौट और तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुए। इस जगह से जमानिया केवल चार कोस की दूरी पर था इसलिए ये दानों एयार सवेरा होन के पहिले ही उस टीले पर जा पहचे जा दारोगा वाले वगले के पीछे की तरफ था और जहाँ से दानों ऐयारों और कुमारों को साथ लिए हुए कमलिनी मायारानी के तिलिस्मी बाग वाले देवमदिर मे गई थी। हम पहिल लिख आये हैं कि इस टीले पर एक काठरी थी जिसमें पत्थर के चवूतरे पर पत्थर ही का एक शर वैठा हुआ था। वह चवूतरा और शेर देखने में पत्थर का मालूम होता था मगर वास्तव में किसी मसाले का वना हुआ था। दानों ऐयार उस शेर के पास जकर खड हो गये और बातचीत करने लगे। भूतनाथ और देवी सिह को इस समय इस बात का गुमान भी न था कि उनके पीछे पीछे दो औरतें कुछ दूर से आ रही हैं और इस समय भी कोठरी के वाहर छिप कर खडी उन दोनों की बातें सुनने के लिए तैयार हैं। इन दोनों औरतों में सेएक तो मायारानी और दूसरी नागर है। पाठकों को शायद ताज्जुब हो कि मायारानी की तो चोरी की इल्लत में काशीराज के सवारा न गिरफ्तार कर लिया था फिर वह यहाँ क्योंकर आई ? इसलिए थाडा हाल मायारानी का इस जगह लिख देना उचित जान पडता है।

जब उन सवारों न चारों तरफ से मायारानी का घेर लिया तव एक दफे तो वह बहुत ही परेशान हुई मगर तुरन्त ही सम्हल वैठी ओर फुर्ती के साथ उसने अपने तिलिस्मी तमच स काम लिया। उसने तमचे में तिलिस्मी गोली भर कर उसी जगह जमीन पर मारी जहाँ आप वैठी हुई थी। एक आवाज हुई और गोली में से बहुत सा धूआँ निकल कर धीरे धीर फैलने लगा मगर सवारों ने इस बात पर कुछ ध्यान न दिया और मायारानी तथा उसकी नौडियों को गिरफ्तार कर लिया। मायारानी के तमचा चलाने पर सवारों को क्रोध आ गया था इस लिए कई सवारों ने मायारानी की जूते और लात रा खातिरदारी भी की यहाँ तक कि वह वेताव होकर जमीन पर गिर पडी उसके साथ ही साथ लीला तथा और लौडियों ने भी खूब मार खाई मगर इस वीच मे तिलिस्मी गाली का धूआ हल्का हाकर चारों तरफ फैल गया और सभों के आख नाक में घुस कर अपना काम कर गया। मायारानी और लीला को छोड बाकी जितने वहाँ थे सवके सब वेहोश हो गये थे न सवारों को दीन दुनिया की खबर रही और न मायारानी की लौडियों को तनोवदन की सुध रही। पाठकों का याद होगा कि वेहाशी का असार न हाने के लिए मायारानी ने तिलिस्मी अर्क पी लिया था और वही अर्क लीला को पिलाया था। अभी वक इस अर्क का असर बाकी था जिसने मायारानी और लीला को वेहाश होने से वचाया।

मार क सदमे से आधी घडी तक तो मायारानी में उठने की सामर्थ्य न रही इसके बाद जान के खौफ से वह किसी तरह उठी और लीला को साथ लेकर वहाँ से भागी। वेचारी लौडियों को जिन्होंने ऐसे दु ख के समय में भी मायारानी का साथ दिया था मायारानी ने कुछ न पूछा हाँ लीला का ध्यान उस तरफ जा पडा। उसने अपने ऐयारी के वटुए में से लखलखा निकाला और लौडियों को सुघा कर होश में लाने के वाद सभों को भाग चलने के लिए कहा।

लौडियों को साथ लिए हुए लीला और मायारानी वहा से भागीं मगर घवराहट के मारे इस बात को न सोच सकीं कि कहाँ छिप कर अपनी जान वचानी चाहिए अस्तु, व सव पीधे दायोग वाले वगले के तरफ रवाना हुईं। उस समय सवेरा हाने में कुछ बिलम्ब था वे खौफ के मारे छिपती छिपाती दिन भर वराबर चली गईं और रात का भी कहीं ठहरने की नौवत न आइ। आधी रात स कुछ ज्यादे जा चुकी थी जब वेवस दारोगा वाले वगले पर जा पहुचीं। इत्तिफाक से नागर भी रास्त ही में इन लोगों से मिली जो मायारानी से मिलने के लिए मुश्की घोडी पर सवार खास बाग की तरफ जा रही थी।

सुरग के अन्दर आकर दर्वाजा बन्द कर दिया था और अब मुझसे वह दर्वाजा किसी तरह नहीं खुल रहा है। ईश्वर ने बडी कृपा की जा इस समय आपको यहा भेज दिया चलिए पीछे हटिए पहिले मुझे दर्वाजा खोलने की तर्कीब बता दीजिए ता और कुछ बातचीत होगी !

दारोगा-(हस कर) अब तो मैं आ ही चुका हूँ, तुम क्यों घबड़ाती हो ? पहिल यह तो बताओ कि वे दोनों ऐयार कहा है जिनके पीछे पीछे तुम यहाँ आई थीं ?

इस समय मायारानी की विचित्र अवस्था थी। वह मुँह से बातें तो कर रही थी मगर दिल में यही सोच रही थी किसी तरह राजा गोपालसिह का भेद छिपाना चाहिए जिसमें बाबाजी (दारोगा) को यह न मालूम हो कि मैंने वर्षों से गोपालसिह को कैद कर रक्खा था मगर इसके बचाव की कोई सूरत ध्यान में नहीं आती थी। वह अपने उछलते हुए कलेजे को दबाने की कोशिश कर रही थीं मगर वह किसी तरह दम नहीं लेता था। उसके चेहरे पर भी खौफ और तरद्दुद की निशानी पाई जाती थी जो उस समय और भी ज्यादे हो गई जब बाबाजी ने यह कहा- 'वे दोनो ऐयार कहाँ है जिनके पीछे पीछे तुम यहाँ आई थीं ? आखिर लाचार होकर मायारानी ने बातें बना कर अपना काम निकालना चाहा और अपने को अच्छी तरह सभाल कर बात चीत करने लगी।

माया-(पीछे की तरफ इशारा करके) वे दोनों ऐयार उधर पड़े हुए है। मैंने अपनी हिकमत से उन्हें बेहोश करके छोड़ दिया है। केवल ए दोनों ही नहीं बल्कि कमलिनी और लाडिली भी मय एक ऐयार के मेरे फन्दे में आ पड़ी है जिनसे यकायक इसी सुरग में मुलाकात हो गई थी।

बाबा-(चौंक कर) कमलिनी और लाडिली !

माया-जी हॉ शायद आपने अभी तक सुना नहीं कि लाडिली भी कमलिनी से मिल गई।

बाबा-आफ 'यह खबर मुझे क्योंकर मिल सकती थी, क्योंकि मै ऐसे तहखाने में कैद था जहॉ हवा का भी जाना मुश्किल से हो सकता था। खैर चलो मै जरा उन ऐयारों की सूरत तो देखू।

अब बाबाजी उस तरफ बढे जहॉ राजा गोपालसिह कमलिनी लाडिली और दोनों ऐयार बेहोश पडे थे ? बाबाजी के पीछे पीछे मायारानी और नागर भी स्याह पत्थरों को बचाती हुई उसी तरफ बढीं। वहॉ की जमीन में बनिस्बत सुफेद पत्थरों के स्याह पत्थर की पटरियॉ (सिल्ली) बहुत कम चौड़ी थीं। यद्यपि बाबाजी से मायारानी डरती दबती और साथ ही इसके उनकी इज्जत और कदर भी करती थी परन्तु इस समय उसकी अवस्था में फर्क पड गया था। वह धड़कत हुए कलेजे के साथ चुपचाप बाबाजी के पीछे जा रही थी मगर अपना दाहिना हाथ तिलिस्मी खजर के कब्जे पर जो अब उसकी कमर में था इस तरह रक्खे हुए थी जैसे उसे म्यान से निकाल कर काम में लाने के लिए तैयार है। शायद इसका सबब यह हो कि वह बाबाजी पर वार करने का इरादा रखती थी क्योंकि उसे निश्चय था कि राजा गोपालसिह को देखते ही बाबाजी बिगड़ खड़े होंगे और एक गुप्त भेद का जिसकी उन्हें खबर तक न थी पता लग जाने के कारण उसकी लानत और मलामत करेंगे। साथ ही इसके बाबाजी की चाल भी बेफिक्री की न थी वह भी कनखियों से आगे पीछे अगल बगल देखते जात थे और हर तरह से चौकन्ने मालूम पड़ते थे।

जब बाबाजी उन लोगों के पास आ पहुँचे तो मोमबत्ती की रोशनी में एक एक को अच्छी तरह देखने लगे। जब उनकी निगाह राजा गोपालसिह पर पड़ी तो वे चौके और मायारानी की तरफ देख कर बोले 'है यह क्या मामला है मैं अपनी ऑखों के सामने किसे बेहोश पड़ा देख रहा हू !!

माया-(लड़खड़ाई आवाज से) इसी के बारे में मैंने कहा था कि एक ऐयार भी आ फसा है !

बाबा-आफ य ता राजा गोपालसिह है जिन्हें मरे कई वर्ष हो गए नही नही मरा हुआ आदमी कभी लौट कर नही आता। (कुछ रुक कर) यद्यपि दु ख या रज क सबब से इनकी सूरत में फर्क पड गया है परन्तु मेरे पहिचानने में फर्क नहीं है। बेशक यह हमारे मालिक राजा गोपालसिह ही है जिनकी नेकिय ने लागों को अपना ताबेदार बना लिया था जिनकी बुद्धिमानी और मिलनसारी प्रसिद्ध थी और जिसके सबब से इनकी ताबेदारी में रहना लोग अपनी इज्जत समझते थे 'ओफ तुमने इनके बारे में हम लोगों को धोखा दिया 'यद्यपि तुम्हारी बुरी चाल चलन को मै खूब जानता था और जान बूझ कर कई कारणों से तरह दिए जाता था मगर मुझे यह खबर न थी कि उस चालचलन की हद यहाँ तक पहुच चुकी है '(गोपालसिह की नब्ज देख कर) शुक्र है शुक्र है कि मैं अपने मालिक को जीता पाता हू।

माया-बाबाजी आप जल्दी न कीजिए और बिना समझे बूझे अपनी बातों से मुझे दुख न दीजिए। जो मै कहती हू उसे मानिय और विश्वास कीजिए कि यह बीरेन्दसिह का ऐयार है और राजा की सूरत बन कर कई दिनों से रिआया को भडका रहा है। इसकी खबर मुझको बहुत पहिले लग चुकी थी और मैंने मुनादी भी करा दी थी कि एक ऐयार राजा की

सूरत बनकर लागों का भडकाने के लिए आया है जा कोई उसका सिर काट कर मरे पास लावेगा उसे एक लाख रुपये इनाम दूगी। आज इत्तिफाक ही स यह कम्बख्त मरे हाथ आ फसा है।

बाबा—(कुछ सोच कर) शायद ऐसा ही हा मगर तुमने ता कहा था कि मै भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे पीछे इस सुरग मे आइ हू, फिर य लाग तुम्हें कैसे मिल ? क्या ये लाग पहिले ही स सुरग में मौजूद थे ?

माया—हा जब मै सुरग में आ चुकी और भूतनाथ तथा दवीसिह का वहाश कर चुकी उसके बाद शायद य लाग (हाथ का इशारा करके) इस तरफ से यहाँ आ पहुचे। उस समय बेहाशी वाली बारुद से निकला हुआ धूआ यहाँ भरा हुआ था जिसक सबब स य लोग भी बहाश हाकर लेट गए।

बाबा—बहाशी वाली बारूद से निकला हुआ धुआ क्या तुमने इन लोगों का किसी नई रीति से बेहोश किया है ?

माया—जब मैं दु खी हाकर अपने घर स भागी तो (तिलिस्मी तमचा और गाली दिखा कर) यह तिलिस्मी तमचा और गोली निकाल कर लती आई थी इसी क जरिए स चलाई हुई तिलिस्मी गाली न अपना काम किया आप ता इसका हाल जानत ही है।

बाबा—ठीक है (राजा गापालसिह की तरफ देख कर) मगर मैं दास कहू कि यह वीरन्दसिह का ऐयार ह ! अच्छा दखा में अभी इसका पता लगाए लेता हू।

बाबाजी ने अपने झाले में स एक शीशी निकाली जिसम किसी तरह का अर्क था। उस अर्क से अपनी उगली तर करक राजा गापालसिह क गाल में जहा एक तिल का दाग था लगाया और कुछ ठहर कर कपडे स पोंछ डाला तथा फिर गौर करन के बाद बोले-

बाबा—नहीं नहीं यह वीरेन्द्रसिह के ऐयार नहीं है इन्होने अपने चेहरे को रगा नहीं है और न नकली तिल का दाग ही बनाया है। अगर ऐसा होता है तो इस दवा के लगने से छूट जाता। यह बेशक राजा गोपालसिह है और तुमने इनके बारे में नि सदेह हम लोगो को धोखा दिया !

माया—एसा न समझिए वीरन्दसिह क एयार लाग अपने चेहर पर कच्चा रग नहीं लगाते। अभी हाल ही मे तेजसिह ने मेर एयार बिहारी सिह का धोखा दिया उसने उसका चहरा एसा रग दिया था कि हजार उद्योग करने पर भी बिहारीसिह उस साफ न कर सका। इसका खुलासा हाल आप सुनेंग नो ताज्जुब करेंगे। वीरेन्द्रसिह के एयार लोग बडे धूत और चालाक हैं !

बाबा—मगर नहीं मरी दवा बेकार जान वाली नहीं है हॉ एक बात हा सकती है।

माया—वह क्या ?

बाबा—शायद तुमने राजा गोपालसिह क बार में हम लोगों को धाखा न दिया हो और खुद ये ही हम लोगों को धाखा दकर कहीं चले गए हों।

माया—नहीं यह भी नहीं हा सकता।

बाबा—बशक नहीं हा सक्ता। अच्छा मै इन्हें हाश म लाता हू, जो कुछ है इनकी बातचीत से आप ही मालूम हो जायगा।

माया—नहीं नही ऐसा न कीजिए पहिले इन सबों को इसी तरह बेहाश ल जाकर अपने बगले में कैद कीजिए फिर जा होगा देखा जायगा।

बाबा—मैं यह बात नहीं मान सकता !

माया—(जार दकर) जो मैं कहती हू वही करना होगा !

बाबा—कदापि नहीं मुझे इस विषय में बहुत कुछ शक है और राजा साहब क साथ ही साथ मैं कमलिनी और लाडिली का भी होश में लाऊगा।

इतना सुनत ही मायारानी की हालत बदल गई क्रोध के मारे उसके होंठ कॉपन लगे उसकी ऑखें लाल हो गई और वह तिलिस्मी खजर म्यान से निकाल कर क्रोध भरी आवाज में बाबाजी से बोली क्या तुम्हें किसी तरह की शेखी हो गई है ? क्या तुम मेरा हुक्म काट सकते हो ? क्या तुम अपने को मुझसे बढकर समझते हो ? क्या तुम नहीं जानते कि मैं तिलिस्म की रानी हूँ, जो चाहू सा कर सकती हूँ और तुम मेरा कुछ भी नहीं विगाड सकते ? लो मैं साफ साफ कहे देती हू कि बेशक यह गोपालसिह है। धनपत से साथ सुख भागने और इनको सता कर तिलिस्म का भेद जानने के लिए मैने इन्हें कैद कर रक्खा था मगर कम्बख्त कमलिनी ने इन्हें कैद से छुडा दिया। अब मैं तुम्हारे सामने इन सभों का सिर काट कर अपना गुस्सा मिटाऊगी और तुम मरा कुछ भी नहीं कर सकते अगर ज्यादे सिर उठाओगे तो (खजर दिखाकर) इसी खजर से पहिले तुम्हारा काम तमाम करूँगा !

सुरग के अन्दर आकर दर्वाजा बन्द कर दिया था और अब मुझसे वह दर्वाजा किसी तरह नहीं खुल रहा है। ईश्वर ने बडी कृपा की जा इस समय आपको यहा भेज दिया चलिए पीछे हटिए पहिले मुझे दर्वाजा खोलने की तर्कीब बता दीजिए ता और कुछ बातचीत होगी !

दारोगा–(हस कर) अब सो मैं आ ही चुका हूँ, तुम क्यों घबड़ाती हो ? पहिले यह तो बताओ कि वे दोनों ऐयार कहा है जिनके पीछे पीछे तुम यहाँ आई थीं ?

इस समय मायारानी की विचित्र अवस्था थी। वह मुँह से बातें तो कर रहीं थीं मगर दिल में यही सोच रही थी किसी तरह राजा गोपालसिह का भेद छिपाना चाहिए जिसमें बाबाजी (दारोगा) को यह न मालूम हो कि मैंने वर्षों से गोपालसिह को कैद कर रक्खा था मगर इसके बचाव की कोई सूरत ध्यान में नहीं आती थी। वह अपने उछलते हुए कलेजे को दबाने की कोशिश कर रही थीं मगर वह किसी तरह दम नहीं लता था। उसके चेहरे पर भी खौफ और तरद्दुद की निशानी पाई जाती थी जो उस समय और भी ज्यादे हो गई जब बाबाजी ने यह कहा- 'वे दोनो ऐयार कहाँ है जिनके पीछे पीछे तुम यहाँ आई थीं ? आखिर लाचार होकर मायारानी ने बातें बना कर अपना काम निकालना चाहा और अपन को अच्छी तरह समाल कर बात चीत करने लगी।

माया–(पीछे की तरफ इशारा करके) वे दोनों ऐयार उधर पडे हुए हैं। मैंने अपनी हिकमत से उन्हें बेहोश करके छोड़ दिया है। केवल ए दोनों ही नहीं बल्कि कमलिनी और लाडिली भी मय एक ऐयार के मेरे फन्दे में आ पड़ी है जिनसे यकायक इसी सुरग में मुलाकात हो गई थी।

बाबा–(चौंक कर) कमलिनी और लाडिली !

माया–जी हॉ शायद आपने अभी तक सुना नहीं कि लाडिली भी कमलिनी से मिल गई।

बाबा–आफ !यह खबर मुझे क्योंकर मिल सकती थी क्योंकि मैं ऐसे तहखाने में कैद था जहॉ हवा का भी जाना मुश्किल से हो सकता था। खैर चलो मैं जरा उन ऐयारों की सूरत तो देखू।

अब बाबाजी उस तरफ बढे जहाँ राजा गोपालसिह कमलिनी लाडिली और दोनों ऐयार बेहोश पडे थे ? बाबाजी क पीछे पीछे मायारानी और नागर भी स्याह पत्थरों को बचाती हुई उसी तरफ बढीं। वहाँ की जमीन में बनिस्बत सुफेद पत्थरों के स्याह पत्थर की पटरियॉ (सिल्ली) बहुत कम चौड़ी थीं। यद्यपि बाबाजी से मायारानी डरती दबती और साथ ही इसके उनकी इज्जत और कदर भी करती थी परन्तु इस समय उसकी अवस्था में फर्क पड गया था। वह धड़कते हुए कलेजे के साथ चुपचाप बाबाजी के पीछे जा रही थी मगर अपना दाहिना हाथ तिलिस्मी खजर के कब्जे पर जा अब उसकी कमर में था इस तरह रक्खे हुए थी जैसे उसे म्यान से निकाल कर काम में लाने के लिए तैयार है। शायद इसका सबब यह हो कि वह बाबाजी पर वार करने का इरादा रखती थी क्योंकि उसे निश्चय था कि राजा गोपालसिह को देखते ही बाबाजी बिगड़ खड़े होंगे और एक गुप्त भेद का जिसकी उन्हें खबर तक न थी पता लग जाने के कारण उसकी लानत और मलामत करेंगे। साथ ही इसके बाबाजी की चाल भी बेफिक्री की न थी वह भी कनखियों से आगे पीछे अगल बगल देखते जात थे और हर तरह से चौकन्ने मालूम पड़ते थे।

जब बाबाजी उन लोगों के पास आ पहुँचे तो मोमबत्ती की रोशनी में एक एक को अच्छी तरह देखने लगे। जब उनकी निगाह राजा गोपालसिह पर पडी तो वे चौंके और मायारानी की तरफ देख कर बोले 'है यह क्या मामला है !मैं अपनी ऑखों के सामने किसे बेहोश पड़ा देख रहा हू !!

माया–(लड़खडाई आवाज स) इसी के बारे में मैंने कहा था कि एक ऐयार भी आ फसा है !

बाबा–आफ य ता राजा गोपालसिह हें जिन्हें मरे कई वर्ष हो गए नहीं नहीं मरा हुआ आदमी कभी लौट कर नहीं आता। (कुछ रुक कर) यद्यपि दु ख या रज क सबब से इनकी सूरत म फर्क पड गया है परन्तु मेरे पहिचानने में फर्क नही हे। बेशक यह हमार मालिक राजा गोपालसिह ही हैं जिनकी नेकि न लोगों का अपना तावेदार बना लिया था जिनकी बुद्धिमानी और मिलनसारी प्रसिद्ध थी और जिसके सबब से इनकी तावेदारी में रहना लोग अपनी इज्जत समझते थ !आफ तुमने इनक बारे में हम लोगों का धोखा दिया !यद्यपि तुम्हारी बुरी चाल चलन को मैं खूब जानता था और जान बूझ कर कई कारणों से तरह दिए जाता था मगर मुझे यह खबर न थी कि उस चालचलन की हद यहाँ तक पहुच चुकी ह !(गोपालसिह की नब्ज दख कर) शुक्र है शुक्र है कि म अपने मालिक का जीता पाता हू।

माया–बाबाजी आप जल्दी न कीजिए और बिना समझे बूझे अपनी बातों से मुझे दुख न दीजिए। जो मे कहती हू उसे मानिय और विश्वास कीजिए कि यह बीरेन्द्रसिह का ऐयार है और राजा की सूरत बन कर कई दिनों से रिआया को भडका रहा ह। इसकी खबर मुझको बहुत पहिले लग चुकी थी और मैंने मुनादी भी करा दी थी कि एक ऐयार राजा की

लक्ष्मीदेवी का बच के निकल जाना आपके लिए द् खदायी न होगा ? और जब इस बात की खबर गोपालसिह को होगी तो क्या वे आपको छाड देंगे ? बेशक जो कुछ आज तक मैंने किया है सब आप ही का कसूर समझा जायगा। मैंने इस बात का पता न लग जाय कि दारोगा की करतूत ने लक्ष्मीदेवी की जगह

इतना कह कर मायारानी चुप हो गई और वडे गौर से बाबाजी की सूरत देखने लगी मानों इस बात का पता लगाना चाहती है कि बाबाजी के दिल पर उसकी बातों का क्या असर हुआ। दारोगा साहब भी मायारानी की बातें सुन कर तरद्दुद म पड गए और न मालूम क्या सोच । लगे। थोडी देर बाद दारोगा ने सिर उठाया और मायारानी की तरफ देख कर कहा अच्छा अब विशष बातों की कोई जरूरत नहीं है मैं वादा करता हू कि गोपालसिह के बार में तुम पर किसी तरह का दबाव न डालूगा और इससे ज्यादे कुछ न कहूँगा कि इनके मारने का विचार न करके थोडे दिनों तक इन्हें कैद ही में रखना आवश्यक है बल्कि कमलिनी लाडिलो भूतनाथ और देवीसिह को भी कैद ही में रखना चाहिए। हाँ जब मै उन आफता का दूर कर लू जिनके कारण तुम्हें अपना राज्य छाडना पडा और तुम्हें फिर उसी दर्जे पर पहुचा दू तब जो तुम्हारे जी में आव करना। बस बस इसमें दखल मत दो और जो मैंने कहा है उसे करो नहीं तो तुम्हें पूरा पूरा सुख कदापि न मिलगा ।

माया–खैर ऐसा ही सही मगर यह तो कहिये कि इन लोगों को कैद कहाँ कीजिएगा ?

बाबा–इसके लिए मरा बगला बहुत मुनासिब है।

माया–और मर रहन के लिए कौन सा ठिकाना सोच रक्खा है ?

बाबा–वाह क्या तुम समझती हो कि तुम्हें बहुत दिनों तक अपने राज्य से अलग रहना पडेगा ? नहीं दा ही तीन दिन में मैं उन सबों का मुह काला करूँगा जो तुम्हारे नौकर होकर तुमसे खिलाफ हो रहे हैं आर तुम्हे फिर उसी दर्जे पर बिठाऊगा जिस पर मेरे सामने तुम थीं हॉ एक चीज के बिना हर्ज जरूर हागा।

माया–वह क्या ? शायद आपका मतलब अजायबघर की ताली से है ।

बाबा–हाँ मेरा मतलब अजायबघर की ताली ही से है क्या तुम उसे अपने महल ही में छोड आई हो ?

माया–जी नहीं वह मरे पास है जब मैं लाचार होकर अपने घर से भागी ता एक वही चीज थी जिसे मै अपन साथ ला सकी।

बाबा–वाह वाह यह बडी खुशी की बात तुमने कही। अच्छा वह ताली मरे हवाले करा ता और कुछ बातें होंगी।

माया–(अजायबघर की ताली बाबाजी को दकर) लीजिए तैयार है अब जहॉ तक जल्द हो सके यहॉ से निकल चलना चाहिए।

बाबा–हॉ हॉ मैं भी यही चाहता हू, भला यह तो कहा कि यह तिलिस्मी खजर तुमने कहॉ से पाया ?

माया–यह तिलिस्मी खजर कमलिनी ने भूतनाथ और गापालसिह को दिया था जो इस समय इन सभों के बेहोश हो जाने पर मुझे मिला। एक तो मैंने ले लिया और दूसर नागर का दे दिया ह। मैंने सुना है कि इसी तरह के और भी कई खजर कमलिनी न अपन साथियों को बॉट हैं मगर मालूम नहीं इस समय वे कहॉ हैं।

बाबा–ठीक है खैर यह काम तुमने बहुत ही अच्छा किया कि अजायबघर की ताली अपने साथ लेती आई नहीं तो बडा हर्ज होता।

माया–जी हॉ।

मायारानी अजायबघर की ताली के बारे में भी दारोगा से झूठ बोली। यद्यपि उसने यह ताली भूतनाथ को दे दी और इस समय गोपालसिह के पास से पाई थी परन्तु भूतनाथ का नाम लेना उसने उचित न जाना क्योंकि उसने यह ताली भूतनाथ का राजा गापालसिह की जान लने के बदले में दी थी और यह बात बाबाजी से कहना उसे मजूर न था इससे वह इस समय बहाना कर गई।

मायारानी और नागर को साथ लिए हुए बाबाजी वहॉ से रवाना हुए। और उस खम्भे के पास पहुचे जिस पर गड़ारीदार पहिया लगा हुआ था। अब मायारानी बडी उत्कण्ठा से देखने लगी कि बाबाजी किस तरह से दवाजा खोलते है और इसलिए जब बाबाजी ने गडारीदार पहिये को घुमा कर सुरग का दर्वाजा खोला तो माया रानी को बडा आश्चर्य हुआ क्योंकि इसी पहिये को वह कई दफे उलट फेरकर घुमा चुकी थी मगर दर्वाजा नहीं खुला था मायारानी ने बडे आग्रह से इसका सबब बाबा जी से पूछा और कहा कि इसी पहिये को मै पहिले कई दफे घुमा चुकी थी मगर दर्वाजा न खुला इस समय क्योंकर खुल गया ? इसके जवाब में बाबाजी हस कर बोले 'इसका सबब किसी दूसरे वक्त तुमसे कहूँगा क्योंकि समझाने में बहुत देर लगेगी और पहिले उन कामों को बहुत जल्द कर लेना चाहिए जिनका करना आवश्यक है।

बाबा–(हस कर) बस बस बहुत उछल कूद न करो। यद्यपि मैं बुड्ढा हू तथापि तुम दो औरतों से किसी तरह हार नहीं सकता। मे वही करुंगा जो मरे जी में आवेगा। यदि तुम इस तिलिस्म की रानी हो तो मै भी तिलिस्म का दारोगा हू, मेरे पास भी बहुत सी अनूठी चीचें है इसके अतिरिक्त तुम मुझसे बिगाड करके कुछ फायदा भी नहीं उठा सकती और अब तो तुमने साफ कबूल ही दिया कि

माया–(बात काट कर) हॉ हॉ कबूल दिया और फिर भी कहती हू कि तुम्हारे बिना मेरा कुछ हर्ज नहीं हो सकता। तुम्हें अपने दारोगापन की शेखी है तो देखो मै अपनी ताक़त तुमको दिखाती हू।

इतना कह कर मायारानी ने तिलिस्मी खजर का कब्जा दबाया। उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई और जब कब्जा ढीला किया तो चमक बन्द हो गई मगर बाबाजी पर इसका कुछ असर न हुआ जिससे मायारानी को बडा ताज्जुब हुआ। आखिर उसने बेहोश करने की नीयत से तिलिस्मी खजर बाबाजी के बदन से लगाया मगर इससे भी कुछ नतीजा न निकला, बाबाजी ज्यों के त्यों खडे रह गए। अब तो मायारानी के ताज्जुब का काई ठिकाना न रहा और वह घबरा कर बाबाजी का मुह देखने लगी। अगर तिलिस्मी खजर में से चमक न पैदा होती तो उसे शक होता कि यह तिलिस्मी खजर शायद वह नहीं है जिसकी तारीफ भूतनाथ ने की थी मगर अब वह इस खजर पर किसी तरह का शक भी नहीं कर सकती थी।

बाबा–(हस कर) कहो मरा घमण्ड वाजिब है या नहीं !

माया–(तिलिस्मी खजर की तरफ देख कर) शायद इसमें कुछ

बाबा–(बात काट कर) नहीं नहीं इस खजर के गुण में किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा। मैं इस खजर को खूब जानता हू। यद्यपि तुम्हारे लिए यह एक नई चीज है परन्तु मे अपने (राजा गोपालसिह की तरफ इशारा करके) इस मालिक की बदौलत इसी प्रकार और गुण के कई खजर कटार तलवार और नेजे देख चुका हू और उनस काम भी ले चुका हू, मगर जब मै तिलिस्मी कामों मे सिद्ध के बराबर हा गया तब मेरे दिल से ऐसी तुच्छ चीजों की कदर और इज्जत जाती रही। तुम देखती हो कि इस खजर का मुझपर कुछ भी असर नहीं हाता। असल तो यह है कि तुम मेरी ताकत को नहीं जानती हो तुम्हें नहीं मालूम है कि खाली हाथ रहने पर भी मै क्या कर सकता हू। बस मै अपनी ताकत का हाल खालना उचित नहीं समझता परन्तु अफसोस तुम मुझी को मारने के लिए तैयार हो गई। खैर कोई चिन्ता नहीं आज तक मै तुम्हारी इज्जत करता रहा और तुमने जा कुछ भला बुरा किया उस देखकर भी तरह देता गया मगर अब देखता हू तो तुम

माया–(बात काट कर) सुनिए सुनिए आप जो कुछ कहेंगे मैं समझ गई। मेरी यह नीयत न थी और न है कि आपकी जान लू क्योंकि कंवल आप ही के भरोसे पर मै कूद रही हू, और आप ही की मदद से बडे बडे बहादुरों को मैं कुछ नहीं समझती। यह तो साफ जाहिर है कि थोडे ही दिन आप मुझस अलग रहे और इसी बीच में मेरी सब दुदशा हा गई। मे आपको पिता के समान मानती हू इसलिए आशा है कि (हाथ जोडकर) इस समय जो कुछ मुझसे भूल हो गई उस आप बाल बच्चों की भूल के समान मान कर क्षमा करेंगे मगर इस कसूर से मेरा असल मतलब सिर्फ इतना ही था कि किसी तरह राजा गोपालसिह के मारने पर आप का राजी करूँ।

बाबाजी पर तिलिस्मी खजर का कुछ भी असर न होते देख मायारानी का कलजा धडकने लगा वह बहुत डरी और उसे विश्वास हो गया है कि तिलिस्मी कारखाने में जितना बाबाजी को दखल और जानकारी है उसका सोलहवॉ हिस्सा भी उसका नहीं है और उसी के साथ तिलिस्मी चीजों स बाबाजी न बहुत कुछ फायदा भी उठाया है। यह भी उसी फायदे का असर है कि राजा बीरेन्द्रसिह की कैद से सहज ही में छूट आए और एसे अदभुत तिलिस्मी खजर को तुच्छ समझते है तथा इसका असर इन पर कुछ भी नहीं होता। अब वह इस बात को साचने लगी कि उसे बाबाजी से बिगाड करना उचित नहीं बल्कि जिस तरह हो सक उन्हें राजी करना चाहिए फिर मौका मिलन पर जैसा होगा देखा जाएगा। ऐसी एसी बहुत सी बातें मायारानी तेजी के साथ साच गई और उसी सबब से वह अधीनता के साथ बाबाजी से बातें करने लगी। जब अपनी बात खतम करके चुप हो गई तो बाबाजी ने मुस्कुरा दिया और कुछ सोचकर कहा 'खैर मै तुम्हार इस कसूर को माफ करता हू मगर यह नहीं चाहता कि राजा गोपालसिह को किसी तरह की तकलीफ हा जिन्हें मुद्दत के बाद आज मै इस अवस्था मे देख रहा हू।

माया–तब आपने माफ ही क्या किया ? यद्यपि आपको इस बात का रज है कि मैंने गोपालसिह के साथ दगा किया और यह भेद आपसे छिपा रक्खा मगर आप भी तो जरा पुरानी बातों को याद कीजिए। खास करके उस अधेरी रात की बात जिसमें मेरी शादी और पुतले की बदलौवल हुई थी वह सब कर्म तो आप ही का है। आप ही ने मुझे यहॉ पहुचाया। अब अगर मेरी दुर्दशा हागी ता आप बच पाएगे ? फिर मान लिया जाय कि आप गोपालसिह को बचा भी ले तो क्या

और भी था। थोडी ही देर पहले उसे इस बात का रंज था कि कम्बख्त दारोगा ने यकायक पहुच कर हमारे काम में विघ्न डाल दिया नहीं तो गोपालसिह तथा कमलिनी और लाडिली को मार कर मै हमेशा के लिए निश्चिन्त हो जाती मगर अब उसे इन बातों का रज नहीं है और यह उसकी मुस्कराहट से साफ जाहिर हो रहा है।

बारहवॉ बयान

शाम होने मे कुछ भी विलम्ब नहीं है। सूर्य भगवान अस्त हो गये केवल उनकी लालिमा आसमान में पश्चिम तरफ दिखाई दे रही है। दारोगा वाले बगले में रहने वालों के लिए यह अच्छा समय है परन्तु आज उस बगले में जितने आदमी दिखाई दे रहे है वे सब इस योग्य नहीं हैं कि बेफिक्री के साथ इधर उधर घूमे और इस अनूठे समय का आनन्द ले। यद्यपि राजा गोपालसिह कमलिनी और लाडिली की तरफ से मायारानी निश्चिन्त हो गई बल्कि उनके साथ ही साथ दो ऐयारों को भी उसने गिरफ्तार कर लिया है मगर अभी तक उसका जी ठिकाने नहीं हुआ वह नहर के किनारे बैठी हुई बाबा जी से बातें कर रही है और इस फिक्र में है कि कोई ऐसी तरकीब निकल आवे कि जमानिया कि गद्दी पर बैठ कर उसी शान के साथ हुकूमत करे जैसे कि आज के कुछ दिन पहले कर रही थी। उसके पास केवल नागर बैठी हुई दोनों कि बातें सुन रही है।

माया—जिस दिन से आपको बीरेन्द्रसिह ने गिरफ्तार कर लिया उसी दिन से मेरी किस्मत ने ऐसा पलटा खाया कि जिसका कोई हद्दहिसाब नहीं मानों मेरे लिए जमाना ही और हो गया। एक दिन भी सुख के साथ सोना नसीब न हुआ। मुझ पर जो मुसीबतें आई और तिलिस्मी बाग के अन्दर जो जो अनहोनी बातें हुई उनका खुलासा हाल आज मै आपसे कह चुकी हू। इस समय यद्यपि राजा गोपालसिह कमलिनी और लाडिली की तरफ से निश्चिन्त हू मगर फिर भी अपनी अमलदारी में या तिलिस्मी बाग के अन्दर जा कर रहने का हौसला नहीं पडता क्योंकि तिलिस्मी बाग के अन्दर दोनों नकाबपोशों के आने और धनपत का भेद खुल जाने से हमारे सिपाहियों की हालत बिल्कुल ही बदल गई है और मुझे उनके हाथों से दुःख भोगने के सिवाय और किसी तरह कि उम्मीद नहीं है। यह भी सुनने में आया है कि दीवान साहब मुझे गिरफ्तार करने की फिक्र में पडे हुए हैं।

बाबा—दीवान जो कुछ कर रहा है उससे मालूम होता है कि या तो उसे राजा गोपालसिह का असल असल हाल मालूम हो गया है और वह उन्हें फिर जमानिया की गद्दी पर बैठाना चाहता है या वह स्वयम् राजा साहब के बारे में धोखा खा रहा है और चाहता है कि तुम्हें गिरफ्तार कर राजा बीरेन्द्रसिह के हवाले करके और उनकी मेहरबानी के भरोसे पर स्वयम जमानिया का राजा बन बैठे। तुम कह चुकी हो कि राजा बीरेन्द्रसिह की हजार फौज मुकाबले में आ चुकी है जिसका अफसर नाहरसिह है। अब सोचना चाहिये कि नाहरसिह के मुकाबले में आ जाने पर भी चुपचाप बैठे रहना बेसबब नहीं है और

माया—शायद इसका सबब यह हो कि दीवान ने मुझे गिरफ्तार करके बीरेन्द्रसिह के हवाले कर देने की शर्त पर उनसे सुलह कर ली हो ?

बाबा—ताज्जुब नहीं कि ऐसा ही हो मगर घबडाओ नहीं मैं दीवान के पास जाऊगा और देखूगा कि वह किस ढग पर चलने का इरादा करता है। अगर बदमाशी करने पर उतारु है तो मै उसे ठीक करूँगा। हॉ यह तो बताओ कि दीवान को तुम्हारी तिलिस्मी बातों या तिलिस्मी कारखाने का भेद तो किसी ने नही दिया ?

माया—जहॉ तक मै समझती हू उसे तिलिस्मी कारखाने में कुछ दखल नही है मगर इस बात को मै जोर देकर नही कह सकती क्योंकि वे दोनों नकाबपोश हमारे तिलिस्मी बाग के भेदों से बखूबी वाकिफ हैं जिनका हाल मैं आपसे कह चुकी हू, बल्कि ऐसा कहना चाहिए कि बनिस्बत मेरे वे ज्याद जानकार है क्योंकि अगर ऐसा न होता तो वे मेरी उन तरकीबों को रद्द न कर सकते जो उनके फसाने के लिए की गई थी ताज्जुब नहीं कि उन दोनों ने दीवान से मिल कर तिलिस्म का कुछ हाल भी उससे कहा हो।

बाबा—खैर कोई हर्ज नहीं देखा जायगा, मै कल जरूर वहॉ जाऊगा और दीवान से मिलूँगा।

माया—नहीं बल्कि आप आज ही जाइये और जहॉ तक जल्दी हो सके कुछ बन्दोबस्त कीजिये, क्योंकि अगर दीवान के भेजे हुए सौ पचास आदमी मुझे ढूँढते हुए यहॉ आ जायेगे तो सख्त मुश्किल होगी। यद्यपि यह तिलिस्मी खजर मुझे मिल गया है और तिलिस्मी गोली से भी मैं सैकडों की जान ले सकती हू मगर उस समय मेरे किए कुछ भी न होगा जब किसी ऐसे से मुकाबिला हो जायगा जिसके पास कमलिनी का दिया हुआ इसी प्रकार का खजर मौजूद होगा।

बाबा—तथापि इस बगले में आकर तुम्हें कोई सता नहीं सकता।

माया—ठीक है मगर मै कब तक इसके अन्दर छिप कर बैठी रहूगी आखिर भूख प्यास भी तो कोई चीज है।

बाबा—मगर ऐसा होना बहुत मुश्किल है ।

माया—तो हर्ज ही क्या है अगर आप इसी समय दीवान के पास जाय ? मै खूब जानती हू कि वह आपकी सूरत दखते ही डर जायेगा ।

बाबा—क्या तुम्हारी यही मर्जी है कि इसी समय जाऊ ?

माया—हा जाइए और अवश्य जाइये ।

बाबा—अच्छा यही सही मैं जाता हू ।

बाबाजी उसी समय उठ खडे हुए और जमानिया की तरफ रवाना हो गए । मायारानी तब तक बराबर देखती रही जब तक कि वे पेडों की आड में हाकर नजरों से गायब न हो गये, इसके बाद हस कर नागर की तरफ देखा और कहा—

माया—तुम समझती हो कि बाबाजी को मैंने जिद्द करके इसी समय यहा स क्यों धता बताया * ?

नागर—जाहिर में जो कुछ तुमने बाबाजी से कहा है और जिस काम के लिए उन्हें भेजा है यदि उसके सिवाय और कोई मतलब है तो में कह सकती हू कि मेरी समझ में कुछ न आया ।

माया—(हस कर) अच्छा तो अब मै समझा देती हू । बाबाजी के सामने मैंने अपने को जितना बताया वास्तव में मेर दिल में उतना दु ख और रज नहीं है क्योंकि जिसका डर था जिसके निकल जाने से मैं परेशान थी जिसका प्रकट हाना मेरे लिए मौत का सबब था और जो मुझसे बदला लिए बिना मानने वाला न था अर्थात गोपालसिह वह मेरे कब्जे में आ चुका । अब अगर दु ख है तो इतना ही कि कम्बख्त दारोगा ने उसे मारने न दिया मगर मैं बिना उसकी जान लिए कब मानने वाली हू, इसलिए मैंने किसी तरह बाबाजी को यहा से धता बताया ।

नागर—तो क्या तुम्हारा मतलब था कि बाबाजी यहा से बिदा हो जाय तो अपने कैदियों को मार डालो?

माया—बेशक इसी मतलब से मैंने बाबाजी को यहा से निकाल बाहर किया क्योंकि अगर वह रहता तो कैदियों को मारने न देता और उसमें जो कुछ करामात है सो तुम देख ही चुकी हो । अगर ऐसा न होता तो मै सुरग ही में उन सभों को मार कर निश्चिन्त हो जाती ।

नागर—मगर बाबाजी ने उस कोठरी की ताली तो तुम्हें दी नहीं जिसमें कैदियों को रक्खा है ।

माया—ठीक है बाबाजी इस बात में चालाकी कर गए । कैद्खाने की कोठरी क्योंकर खुलती है सो मुझे नहीं बताया और न कोइ ताली वहा की मुझे दी मगर यह मै पहिले ही समझे हुई थी कि बाबाजी कैदियों को जरूर किसी ऐसी जगह रक्खेंगे जहा मैं जा नहीं सकती इसीलिए तो बाबाजी से मैंने कहा कि कैदियों को मेगजीन के बगल वाली कोठरी में कैद करो । बाबाजी मेरा मतलब न समझ सके और धोख में आ गये ।

नागर—यह कहने से तो यही जाहिर होता है कि उस कोठरी में तुम जा सकती हो ।

माया—नहीं उस कोठरी में मैं नहीं जा सकती मगर मेगजीन की कोठरी तक जा सकती हू ।

नागर—(जोर से हस कर) अहा हा अब में समझी 'तुम्हारा मतलब यह है कि मेगजीन में जहॉ बारूद का खजाना रक्खा है वहॉ जाओ और उसमें आग लगा कर इस

माया—बस बस यही है कैदी और कैदखाने की क्या बात इस बगले को ही सत्यानाश कर दूँगी । कैदियों की हडडी तक का तो पता लगेगा ही नहीं 'अच्छा अब इस काम में विलम्ब न करना चाहिए उठो और मेरे साथ चल कर उस कोठरी में अर्थात मेगजीन में कोई ऐसी चीज रक्खो जो उस वक्त बारूद में आग लगावे जब हम लोग यहा से निकल कर कुछ दूर चली जाय ।

नागर—एसा ही होगा यह कोई मुश्किल बात नहीं है ।

तेरहवॉ बयान

कल शाम को बाबाजी जमानिया गये थे और आज शाम होने के दो घटे पहिले ही लौट आये । दूर ही से अपने बगले की हालत देख सिर हिला कर बोले मैं उसी समय समझ गया था जब मायारानी ने कहा था कि कैदियों को मेगजीन के बगल वाले तहखाने में कैद करना चाहिए ।

बाबाजी का बगला जो बहुत ही खूबसूरत और शौकीनों के रहन लायक था बिल्कुल बर्बाद हो गया था बल्कि यों कहना चाहिए कि उसकी एक एक ईट अलग हो गई थी । बाबाजी धीरे धीरे उसके पास पहुँच और कुछ देर तक गौर से

*अर्थात् विदा किया ।

देखने के बाद यह कहते हुए घूम पड़े कि 'जो हो मगर अजायबघर किसी तरह बर्बाद नहीं हो सकता ।

बाबाजी के बँगले के बर्बाद होने का सबब पाठक समझ ही गये होंगे क्योंकि ऊपर के बयान में मायारानी और नागर की बातचीत से वह भेद साफ साफ खुल चुका है। अब बाबाजी इस विचार में पड़े कि मायारानी को ढूँढना और उससे दो दो बातें करनी चाहिए।

ऐसा करने में बाबाजी को विशेष तकलीफ उठानी न पड़ी क्योंकि थोड़ी ही दूर पर उन्हें उन लौंडियों में से एक लौंडी मिली जो उस समय मायारानी के साथ थी जब बाबाजी कैदियों को तहखाने में बन्द करके दीवान से मिलने के लिए जमानिया की तरफ रवाना हुए थे। बाबाजी ने उस लौंडी से केवल इतना ही पूछा मायारानी कहाँ है ?

लौंडी–जब आप जमानिया की तरफ चले गये तो मायारानी हम लोगों को साथ लेकर दिल बहलाने के लिए इस जंगल में टहलने लगीं और धीरे धीरे वहाँ से कुछ दूर चली गई। ईश्वर ने बड़ी कृपा की कि रानी साहब के दिल में यह बात पैदा हुई नहीं तो हम लोग भी टुकड़े-टुकड़े होकर उड़ गये होते क्योंकि थोड़ी ही देर बाद एक भयानक आवाज सुनने में आई और जब हम लोग इस बंगले के पास आए तो मिट्टी और गर्द के सबब से अंधकार हो रहा था। हम लोग डर कर पीछे की तरफ हट गये और अन्त में इस बंगले की ऐसी अवस्था देखने में आई जो आप देख रहे हैं। लाचार मायारानी ने यहाँ ठहरना उचित न समझा और नागर के साथ काशीजी की तरफ रवाना हो गईं।

बाबा–और तुझे इसलिए यहाँ छोड़ गई कि जब मैं आऊँ तो बातें बना मेरे क्रोध को बढ़ावे !

लौंडी–जी ई ई ई

बाबा–और तुझे इसलिए यहाँ छोड़ गई कि जब मैं आऊँ तो बातें बना कर मेरे क्रोध को बढ़ावे ! दे कि जो कुछ तूने किया बहुत अच्छा किया मगर इस बात को खूब याद रखियो कि नेकी का नतीजा नेक है और बद को कदापि सुख की नींद सोना नसीब नहीं होता। अच्छा ठहर मैं एक चीठी लिख देता हूँ सो लेती जा और जहाँ तक जल्द हो सके मिल कर मायारानी के हाथ में दे दे।

इतना कहकर बाबाजी बैठ गए और अपने बटुए से सामान निकाल कर चीठी लिखने लगे जब चीठी लिख चुके तो उस लौंडी के हाथ में दे दिया और आप उत्तर तरफ रवाना हो गये।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह लौंडी बाबाजी की चीठी लिए हुए काशीजी जाएगी और मायारानी से मिल कर चीठी उसके हाथ में देगी मगर हम आपको अपने साथ लिए हुए पहले ही काशीजी पहुँचते हैं और देखते हैं कि मायारानी किस धुन में कहाँ बैठी है या क्या कर रही है।

पहर रात से ज्यादे जा चुकी है। काशी में मनोरमा वाले मकान के अन्दर एक सजे हुए कमरे में मायारानी नागर के साथ बैठी हुई कुछ बात कर रही है। इस समय कमरे के सिवाय नागर और मायारानी के और कोई नहीं है। कमरे में यद्यपि बहुत से बेशकीमत शीशे करीने के साथ लगे हुए हैं मगर रोशनी दो दीवारगीरों में और एक सब्ज कँवल वाले शमादान में जो मायारानी के सामने गद्दी के नीचे रक्खा हुआ है हो रही है। मायारानी सब्ज मखमल की गद्दी पर गाव तकिये के सहारे बैठी है। इस समय उसका खूब–सूरत चेहरा जो आज के तीन चार दिन पहिले उदासी और बदहवासी के कारण बेरौनक हो रहा था खुशी और फतहमन्दी की निशानियों के साथ दमक रहा है और वह किसी सवाल का इच्छानुसार जवाब पाने की आशा में मुस्कुराती हुई नागर की तरफ देख रही है।

नागर–इसमें तो कोई सदेह नहीं कि बड़ी भारी बला आपके सिर से टली परंतु यह ना समझना चाहिए कि अब आप को किसी आफत का सामना न करना पड़ेगा।

माया–इस बात को मैं जानती हूँ कि जमानिया की गद्दी पर बैठने के लिए अब भी बहुत कुछ उद्योग करना पड़ेगा मगर मैं यह कह रही हूँ कि सबसे भारी बला जो थी वह टल गई। कम्बख्त कमलिनी ने भी बड़ा ही उधम मचा रक्खा था अगर वह वीरेन्द्रसिंह की पक्षपाती न होती तो मैं कभी की दोनों कुमारों को मौत की नींद सुला चुकी होती।

नागर–बेशक बेशक।

माया–और भूतनाथ का मारा जाना भी बहुत अच्छा हुआ, क्योंकि उसे इस मकान का बहुत कुछ भेद मालूम हो चुका था और इस सबब से इस मकान के रहने वाले भी बेफिक्र नहीं रह सकते थे। मगर देखो तो सही हरामजादे दीवान को क्या हो गया जो एक दम मुझसे फिर गया बल्कि मुझको गिरफ्तार करने का उद्योग करने लगा।

नागर–जरूर यह बात भी उन्हीं नकाबपोशों की बदौलत हुई है।

माया–ठीक है पहिले तो मैं बेशक ताज्जुब में थी कि न मालूम वे दोनों नकाबपोश कौन थे और कहाँ से आये थे और दीवान तथा सिपाहियों के बिगड़ने का सबब केवल यही ध्यान में आता था कि धनपत का भेद खुल जाने से उन लोगों ने मुझे बदकार समझ लिया मगर अब मुझे निश्चय हो गया कि उन दोनों नकाबपोशों में से एक तो जरूर गोपालसिंह था।

नागर–मुझे भी यही निश्चय है बल्कि अभी यही बात अपने मुह से निकालने वाली थी। उसके सिवाय और कोई ऐसा नहीं हो सकता कि केवल सूरत दिखा कर लोगों को अपने वश में कर ले। सिपाहियों को और दीवान को जरूर इस बात का निश्चय हो गया कि गोपालसिंह को तुमने कैद कर रक्खा था। खैर जो होना था सो हो गया अब तो राजा गोपालसिंह का नाम निशान ही न रहा जो फिर जाकर अपना मुह उन लोगों को दिखावेंगे, अब थोड़े ही दिनों में उन लोगों को निश्चय करा दिया जायगा कि वह राजा वीरेन्द्रसिंह का कोई एयार था।

माया–तुम्हारा कहना बहुत ठीक है और मेरे नजदीक अब यह कोई बड़ी बात नहीं है कि बेईमान दीवान को गिरफ्तार कर लू या मार डालू, मगर एक बात का खुटका जरूर है।

नागर–वह क्या ?

माया–केवल इतना ही कि दीवान को मारने या गिरफ्तार करने के साथ ही साथ राजा वीरेन्द्रसिंह की उस फौज का भी मुकाबला करना पडेगा जो सरहद पर आ चुकी है।

नागर–इसमें तो कुछ भी नहीं है और इस बात का भी विश्वास नहीं हो सकता कि तुम्हारी फौज तुम्हारा पक्ष लेकर लड़ने के लिए तैयार हो जाएगी। फौजी सिपाहियों के दिल से गोपालसिंह का ध्यान दूर होना दो एक दिन का काम नहीं है।

माया–(कुछ सोच कर) तो क्या मै अकेली राजा वीरेन्द्रसिंह की फौज को नहीं हटा सकती।

नागर–सो तो तुम्हीं जानो।

माया–बेशक मै ऐसा कर सकती हू मगर अफसोस, मेरा प्यारा धनप

धनपत का नाम लेते ही मायारानी की आखें डबडबा आई। नागर ने अपने आचल से उसकी आखे पोछी और बहुत कुछ धीरज दिया। इसी समय दर्वाजा के बाहर से चुटकी बजाने की आवाज आई, जिसे सुन नागर समझ गई कि कोई लौंडी यहा आया चाहती है। नागर ने पुकार कर कहा 'कौन है चली आओ।'

वही लौंडी भीतर आती हुई दिखाई पडी जो बर्बाद भये हुए बगले के पास बाबाजी से मिली थी और जिसके हाथ बाबाजी ने मायारानी के पास चीठी भेजी थी। उसको देखते ही मायारानी चैतन्य हो बैठी और बोली 'कहो दारोगा से मुलाकात हुई थी।

लौंडी–जी हॉ।

माया–(मुस्कुरा कर) वह तो बहुत ही बिगड़ा होगा।

लौंडी–हा, बहुत झुझलाये और उछले कूदे आपकी शान मे कड़ी-कड़ी बातें कहने लगे मगर मै चुपचाप खडी सुनती रही अन्त में बोले अच्छा मैं एक चीठी लिख कर देता हू, ले जाकर अपनी मायारानी को दे दीजियो।

माया–तो क्या उसने चीठी लिख कर दी ?

लौंडी–जी हा, यह मौजूद है लीजिए।

लौंडी ने चीठी मायारानी के हाथ मे दे दी और मायारानी ने यह कह कर चीठी ले ली कि 'देखना चाहिए इसमें दारोगा साहब क्या रग लाये है' इसके बाद वह चीठी नागर के हाथ मे देकर बोली 'लो इसे तुम ही पढो।

नागर चीठी खोल कर पढ़ने लगी। उस समय मायारानी की निगाह नागर के चेहरे पर थी। आधी चीठी पढने के बाद नागर के चेहरे पर हवाई उडने लगी और डर के मारे उसका हाथ कापने लगा। मायारानी ने घबड़ा कर पूछा 'क्यों क्या हाल है कुछ कहो तो ?'

इसके जवाब में नागर ने लम्बी सास लेकर चीठी मायारानी के सामने रख दी और बोली ओह, मेरी सामर्थ्य नहीं कि इस चीठी को आखिर तक पढ सकू। हाय नि सन्देह वीरेन्द्रसिंह के एयारो का मुकाबला करना पूरा पूरा पागलपन है।

मायारानी ने घबड़ा कर चीठी उठा ली और स्वय पढने लगी पर वह भी उस चीठी को आधे से ज्यादा न पढ सकी। पसीना छूटने लगा शरीर कापने लगा दिमाग में चक्कर आने लगे यहा तक कि अपने को किसी तरह सम्हाल न सकी और बदहवास होकर जमीन पर गिर पडी।

॥ नौवा भाग समाप्त ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

दसवां भाग

पहिला बयान

अब हम थोडा सा हाल तिलिस्म का लिखना उचित समझते है। पाठकों को याद होगा कि कुँअर इन्द्रजीतसिह कमलिनी के हाथ से तिलिस्मी खजर लेकर उस गडहे या कुएँ में कूद पडे जिसमें अपने छोटे भाई आनन्दसिह को देखा चाहते थे। जिस समय कुमार न तिलिस्मी खजर कूएँ के अन्दर किया और उसका कब्जा दबाया तो उसकी रोशनी से कूएँ के अन्दर की पूरी पूरी कैफियत दिखाई देने लगी। उन्होंने देखा कि कूएँ की गहराई ज्याद नहीं है बनिस्पति ऊपर के नीचे की जमीन बहुत चौडी मालूम पडी और किनारे की तरफ एक आदमी किसी को अपने नीचे दबाये हुए बैठा उसके गले पर खजर फेरा ही चाहता है।

कुँअर इन्द्रजीतसिह को यकायक खयाल गुजरा कि यह जुल्म कहीं कुँअर आनन्दसिंह पर ही न हो रहा हो। छोटे भाई की सच्ची मोहब्बत ने एसा जोश मारा कि वह अपने को एक पल के लिए भी रोक न सके क्योंकि साथ ही इस बात का भी गुमान था कि देर होने से कहीं उसका काम तमाम न हो जाय इसलिए बिना कुछ सोचे और बिना किसी से कहे सुने इन्द्रजीतसिह उस गडहे में कूद पडे। मालूम हुआ कि वह किसी धातु की चादर पर जो जमीन की तरह से मालूम होती थी गिरे है क्योंकि उनके गिरने के साथ ही वह जमीन तीन दफे लचकी और एक प्रकार की आवाज भी हुई। चमकता हुआ एक तिलिस्मी खजर उनके हाथ में था जिसकी रोशनी से और टटोलने से मालूम हुआ कि वे दोनों आदमी वास्तव में पत्थर के बने हुए है जिन्हें देखकर वे गडहे के अन्दर कूदे थे। इसके बाद कुमार ने इस विचार से ऊपर की तरफ देखा कि कमलिनी या राजा गोपालसिह का पुकार कर यहाँ का कुछ हाल कहें मगर गडहे का मुँह बन्द पाकर लाचार हो रहे। ऊँचाई पर ध्यान देने से मालूम हुआ कि इस गड्हे का उपर वाला मुँह बन्द नहीं हुआ बल्कि बीच में कोई चीज ऐसी आ गई है जिससे रास्ता बन्द हो गया है।

कुमार ने तिलिस्मी खजर का कब्जा इसलिए ढीला किया कि वह रोशनी बन्द हा जाय जो उसमें से निकल रही है और मालूम हो कि इस जगह बिल्कुल अन्धेरा ही है या कहीं से कुछ चमक या रोशनी भी आती है पर वहाँ पूरा अन्धकार था हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता था, अस्तु लाचार हाकर कुमार ने फिर तिलिस्मी खजर का कब्जा दबाया और उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई। उसी रोशनी में कुमार ने चारों तरफ इस आशा से देखना शुरू किया कि किसी तरफ आनन्दसिंह की सूरत दिखाई पडे सिवाय एक चांदी की सन्दूक के जो उसी जगह पडा हुआ था और कुछ दिखाई न दिया। यहाँ तीन तरफ पक्की दीवार थी जिसमें छोटे छोटे दर्वाजे और एक तरफ जाने का रास्ता इस ढग का था कि हर तौर पर सुरग कह सकते है कुमार उसी सुरग की राह आगे की तरफ बढे मगर ज्यों ज्यों आगे जाते थे सुरग पतली होती जाती थी और मालूम होता था कि हम ऊँची जमीन पर चढ़े चले जा रह है। लगभग सौ कदम जाने के बाद सुरग खत्म हुई और अन्त में एक दर्वाजा मिला जो जजीर से बन्द था और कुडे में एक ताला लगा हुआ था। कुमार ने खजर मार के जजीर काट डाली और धक्का देकर दर्वाजा खोला तो सामने उजाला नजर आया। अब तिलिस्मी खजर की कोई आवश्यकता नहीं थी इसलिए उसका कब्जा ढीला किया और दर्वाजा लाघ कर दूसरी तरफ चले गये। कुमार ने अपने को एक हरे-भरे बाग में पाया और देखा कि वह बाग मामूली तौर का नहीं है बल्कि उसकी बनावट विचित्र ढग की है फूलों के पेड बिल्कुल न थे पर तरह तरह के मेवों के पेड़ लगे हुए थे। हर एक पेड के चारों तरफ दो दो हाथ ऊँची दीवार घिरी हुई थी और बीच में मिट्टी भरने के कारण खासा चबूतरा मालूम पडता था इसके अतिरिक्त अर्थात पेड़ों के चबूतरों को छोड कर बाकी जितनी जमीन उस बाग में थी सब पर सगमरमर का फर्श था। पूरब तरफ से एक नहर बाग के अन्दर आई हुई थी और पन्द्रह बीस हाथ के बाद छोटी-छोटी शाखों में फैल गइ थी। जो नहर बाग के अन्दर आई थी उसकी चौडाई ढाई हाथ से कम न थी मगर बाग के अन्दर सगमरमर की छोटी-छोटी सैकडों नालियों में उसका जल फैल गया था उन नालियों के दोनों तरफ की दीवार तो सगमरमर की थी मगर बीच की जमीन पक्की न थी और इसी सबब से यहाँ की जमीन बहुत तर थी और पेड सूखने नहीं पाते थे बाग के चारों तरफ ऊँची दीवार तथा पूरब तरफ एक दालान और कई कोठरियाँ थीं पश्चिम तरफ की दीवार के पास एक सगीन कूआँ था और बाग के बीचोबीच में एक मन्दिर था।

कुमार ने पेड़ों से कई फल तोड़ के खाए और चश्मे का पानी पीकर भूख,प्यास की शान्ति की और इसके बाद घूम घूम कर देखने लगे। उन्हें कुँअर आनन्दसिंह के विषय में चिन्ता थी और चाहते थे कि किसी तरह शीघ्र उनसे मुलाकात हो।

चारों तरफ घूम फिर कर देखने बाद कुमार उस मन्दिर में पहुंचे जो बाग के बीचोबीच में था। वह मन्दिर बहुत छोटा था और उसके आगे का सभामंडप भी चार पांच आदमियों से ज्यादे के बैठने के लायक न था। मन्दिर में प्रतिमा या शिवलिंग की जगह एक छोटा सा चबूतरा था और इसके ऊपर एक भेड़िए की मूरत बैठाई हुई थी। कुमार उसे अच्छी तरह देख भाल कर बाहर निकल आए और सभामंडप में बैठ कर खून से लिखी हुई किताब पढ़ने लगे। अब उन्हें उस किताब का मतलब साफ साफ समझ में आता था। जब तक बखूबी अँधेरा नहीं हुआ और निगाह ने काम दिया तब तक वे उस किताब को पढ़ते रहे इसके बाद किताब सम्हाल कर उसी जगह लेट गए और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

उस बाग में कुँअर इन्द्रजीतसिंह को दो दिन बीत गए। इस बीच में वे कोई ऐसा काम न कर सके जिससे अपने भाई कुँअर आनन्दसिंह को खोज निकालते या बाग से बाहर निकल जाते या तिलिस्म तोड़ने में ही हाथ लगाते हाँ इन दो दिन के अन्दर वे खून से लिखी हुई तिलिस्मी किताब को अच्छी तरह पढ़ और समझ गये बल्कि उसके मतलब को इस तरह दिल में बैठा लिया कि अब उस किताब की उन्हें कोई जरूरत न रही। ऐसा होने से तिलिस्म का पूरा पूरा हाल उन्हें मालूम हो गया और वे अपने को तिलिस्म तोड़ने लायक समझने लगे। खाने पीने के लिए उस बाग में मेवों और पानी की कुछ कमी न थी।

तीसरे दिन दो पहर दिन चढ़े बाद कुछ कार्रवाई करने के लिए कुमार फिर उस भेड़िये की मूरत के पास गए जो मन्दिर में चबूतरे के ऊपर बैठाई हुई थी। वहाँ कुमार को अपनी कुछ ताकत खर्च करनी पड़ी उन्होंने दोनों हाथ लगा कर भेड़िये को बाईं तरफ इस तरह घुमाया जैसे कोई पेंच घुमाया जाता है। तीन चक्कर घूमने बाद वह भेड़िया चबूतरे से अलग हो गया और जमीन के अन्दर से घरघराहट की आवाज आने लगी। कुमार उस भेड़िये को एक किनारे रख कर बाहर निकल आए और राह देखने लगे कि अब क्या होता है। घण्टे भर तक बराबर वह आवाज आती रही और फिर धीरे धीरे कम होकर बन्द हो गई। कुमार फिर उस मन्दिर के अन्दर गए और देखा कि वह चबूतरा जिस पर भेड़िया बैठा हुआ था जमीन के अन्दर धँस गया है और नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ दिखाई दे रही है। कुमार बेधड़क नीचे उतर गए। वहाँ पूरा अन्धकार था इसलिए तिलिस्मी खंजर से चाँदनी करके चारों तरफ देखने लगे। यह एक कोठरी थी जिसकी चौड़ाई बीस हाथ और लम्बाई पच्चीस हाथ से ज्यादे न होगी। चारों तरफ की दीवारों में छोटे छोटे कई दर्वाजे थे जो इस समय बन्द थे। कोठरी के चारों कोनों में पत्थर की चार मूरत थीं। ये चारों मूरतें एक ही रंग ढंग की और एक ही ठाठ से खड़ी थीं सूरत शक्ल में कुछ भी फर्क न था या था भी तो केवल इतना ही कि एक मूरत के हाथ में खंजर और बाकी तीन मूरतों के हाथ में कुछ भी न था।

कुमार पहिले उसी मूरत के पास गए जिसके हाथ में खंजर था पहिले उसकी उँगलियों की तरफ ध्यान दिया। बाएं हाथ की उँगली में अँगूठी थी जिसे निकाल कर पहिन लेने के बाद खंजर ले लिया और कमर में लगा कर धीरे से बोले इस तिलिस्म में ऐसे तिलिस्मी खंजर के बिना वास्तव में काम नहीं चल सकता अब आनन्दसिंह मिल जाय तो यह खंजर उसे दे दिया जाय।

पाठक समझ ही गये होंगे कि मूरत के हाथ से जो खंजर कुमार ने लिया वह उसी प्रकार का तिलिस्मी खंजर था जैसा कि पहिले से एक कमलिनी की बदौलत कुमार के पास था। इस समय कुंअर इन्द्रजीतसिंह जो कुछ कार्रवाई कर रहे है वह बिना जाने बूझे नहीं कर रहे हैं बल्कि खून से लिखी हुई तिलिस्मी किताब के मतलब को समझ अपनी निर्मलबुद्धि से जाँच और ठीक करके करते है तथा आगे के लिए भी पाठकों को ऐसा ही समझना चाहिए।

अब कुमार उन दरवाजों की तरफ गौर से देखने लगे जो चारों तरफ की दीवारों में दिखाई दे रहे थे। उन दरवाजों में केवल चार दरवाजे चार तरफ असली थे और बाकी के दरवाजे नकली थे अर्थात् चार दरवाजों को छोड़कर बाकी दरवाजों के केवल निशान दीवारों में थे मगर ये निशान भी ऐसे थे कि जिन्हें देखने से आदमी पूरा पूरा धोखा खा जाय।

कुमार पूरब तरफ की दीवार की तरफ गये और उस तरफ जो दर्वाजा था उसे जोर से लात मारकर खोल डाला। इसके बाद बाए तरफ के कोने में जो मूरत थी उसे बगल में दाब उठाना चाहा मगर वह उठ न सकी क्योंकि उसके दाहिने हाथ में वह चमकता हुआ तिलिस्मी खंजर था। आखिर कुमार ने खंजर कमर में रख लिया। यद्यपि ऐसा करने से वहाँ पूर्ण रूप से अन्धकार हो गया मगर कुमार ने इसका कुछ विचार न करके अंधेरे ही में दोनों हाथ उस मूरत की कमर में फंसा कर जोर किया और उसे जमीन से उखाड़ कर धीरे धीरे उस दर्वाजे के पास लाए जिसे लात मार कर खोला था।

जब चौखट के पास पहुँचे तो उस मूरत को जहाँ तक जोर से बन पडा दर्वाज के अन्दर फेंक दिया और फुर्ती से तिलिस्मी खजर हाथ में ले रोशनी करके सीढी की राह कोठरी के बाहर निकल आय अर्थात् फिर उसी बाग में चले आये और मन्दिर से कुछ दूर हट कर खड हो गये।

थोडी देर तो कुमार को ऐसा मालूम हुआ कि जमीन काप रही है और उसके अन्दर बहुत सी गाडियाँ दौड रही है। आखिर धीरे धीरे कम होकर ये दोनों बातें जाती रहीं। इसके बाद कुमार फिर मन्दिर के अन्दर हो गए और सीढियो की राह उस तहखाने में उतर गए जहाँ पहिल गए थे। इस समय वहाँ तिलिस्मी खजर की रोशनी की कोई आवश्यकता न थी क्योंकि इस समय कई छोटे छोट सूराखों में से रोशनी बखूबी आ रही थी जिसका पहिल नाम निशान भी न था। कुमार चारो तरफ देखने लगे मगर पहिल की बनिस्बत कोई नई बात दिखाई न दी। आखिर पूरब तरफ की दीवार के पास गए और उस दर्वाजे के अन्दर झाँक के देखा जिसे लात मार कर खोला था या जिसके अन्दर मूरत को जोर से फेंका था। इस समय इस कोठरी के अन्दर भी चाँदनी थी और वहाँ की हर एक चीज दिखाई दे रही थी। यह कोठरी बहुत लम्बी चौड़ी न थी मगर दीवारों में छोटे छोटे कई खुले दर्वाजे दिखाई दे रहे थे जिससे मालूम होता था कि यहाँ से कई तरफ जाने के लिए सुरग या रास्ता है। कुमार ने उस मूरत को गौर से देखा जिसे उस कोठरी के अन्दर फेंका था। उस मूरत की अवस्था ठीक वैसी हो रही थी जैसी कि चूने की कली की उस समय होती है जब थोडा सा पानी उस पर छोडा जाता है अर्थात टूट फूट के वह बिल्कुल ही बर्बाद हो चुकी थी। उसके पेट में एक चमकती हुई चीज दिखाई दे रही थी जो पहिले तो उसके पेट के अन्दर रही होगी मगर अब पेट फट जाने के कारण बाहर हो रही थी। कुमार ने यह चमकती हुई चीज उठा ली और तहखाने के बाहर निकल मन्दिर के मण्डप में बैठ कर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

थोडी ही देर बाद धमधमाहट की आवाज से मालूम हुआ कि मन्दिर के अन्दर तहखाने वाली सीढियों पर कोई चढ रहा है। कुमार उसी तरफ देखने लगे। यकायक कुँअर आनन्दसिह आते हुए दिखाई पड़े। बडे कुमार खुशी के मारे उठ खडे हुए और आखों में प्रेमाश्रु की दो तीन बूंदें दिखाई देने लगीं। आनन्दसिह दौड कर अपने बडे भाई के पैरों पर गिर पडे। इन्द्रजीतसिह ने झट से उठा कर गले लगा लिया। जब दोनो भाई खुशी खुशी उस जगह बैठ गए तब इन्द्रजीतसिह ने पूछा, "कहो तुम किस आफत में फँस गए थे और क्योंकर छूटे ? कुअर आनन्दसिह ने अपने फँस जाने और तकलीफ उठाने का हाल अपने बडे भाई के सामने कहना शुरू किया।

तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में कुँअर आनन्दसिह जिस तरह अपने बडे भाई से विदा होकर खूटियों वाले तिलिस्मी मकान के अन्दर गए थे और चादी वाले सन्दूक में हाथ डालने के कारण फँस गये थे उसका इस जगह दोहराना पाठकों का समय नष्ट करना है हाँ वह हाल कहने बाद फिर जो कुछ हुआ और कुमार ने अपने बडे भाई से बयान किया उसका लिखना आवश्यक है।

छोटे कुमार ने कहा— जब मेरा हाथ सन्दूक में फँस गया तो मैंने छुड़ाने के लिए बहुत कुछ उद्योग किया मगर कुछ न हुआ और घण्टों तक फँसा रहा इसके बाद एक आदमी चेहरे पर नकाब डाले हुए मेरे पास आया और बोला घबडाइए मत थोडी देर और सब्र कीजिए मैं आपको छुडाने का बन्दोबस्त करता हूँ। इस बीच में वह जमीन हिलने लगी जहाँ मैं था बल्कि तमाम मकान तरह तरह के शब्दों से गूज उठा ऐसा मालूम होता था मानो जमीन के नीचे सैकडों गाड़ियाँ दौड रही है। वह आदमी जो मेरे पास आया था यह कहता हुआ ऊपर की तरफ चला गया कि मालूम होता है कुमार और कमलिनी ने इस मकान के दर्वाजे पर बखेडा मचाया है मगर यह काम अच्छा नहीं किया। थोडी देर बाद वह नकाबपोश नीचे उतरा और बराबर नीचे चला गया मैं समझता हू कि दर्वाजा खोल कर आपसे मिलने गया होगा अगर वास्तव में आप ही दरवाजे पर होंगे।

इन्द्रजीतसिह—हा दरवाजे पर उस समय मैं ही था और मेरे साथ कमलिनी और लाडिली भी थीं अच्छा तब क्या हुआ ?

आनन्दसिह—तो क्या आपने कोई कारवाई की थी ?

इन्द्रजीतसिह—की थी उसका हाल पीछे कहूगा पहिले तुम अपना हाल कह जाओ।

आनन्दसिह ने फिर कहना शुरू किया—

उस आदमी को नीचे गए हुए चौथाई घड़ी भी न हुई होगी कि जमीन यकायक जोर से हिली और मुझे लिए हुए सन्दूक जमीन के अन्दर घुस गया उसी समय मेरा हाथ छूट गया और सन्दूक से अलग होकर इधर उधर टटोलने लगा क्योंकि वहाँ बिल्कुल ही अन्धकार था यह भी न मालूम होता था कि किधर दीवार है और किधर जाने का रास्ता है। ऊपर की तरफ जहाँ सन्दूक धस जाने से गड्ढा हो गया था देखने से भी कुछ मालूम न होता था लाचार मैंने एक तरफ का रास्ता लिया और बराबर

ही चले जाने का विचार किया परन्तु सीधा रास्ता न मिला कभी ठोकर खाता कभी दीवार में अड़ता कभी दीवार थामे घूम कर चलना पडता जब दुखी हो जाता तो पीछे की तरफ लौटना चाहता था मगर लौट न सकता था क्योंकि लौटते समय तबीयत और भी घबड़ाती और गर्मी मालूम होती थी लाचार आगे की तरफ बढना पड़ता। इस बात को खूब समझता था कि मै आगे ही की तरफ बढता हुआ बहुत दूर नही जा रहा हू बल्कि चक्कर खा रहा हू मगर क्या करूँ लाचार था अक्ल कुछ काम न करती थी। इस बात का पता लगाना बिल्कुल ही असम्भव था कि दिन है कि रात सुबह है या शाम बल्कि वही दिन है या दूसरा दिन मगर जहा तक मै सोच सकता हू कि इस खराबी मे आठ-दस पहर बीत गये होगे। कभी तो मै जीवन से निराश हो जाता कभी यह सोच कर कुछ ढाढस होती कि आप मेरे छुडाने का जरूर कुछ उद्योग करेगे। इसी बीच में मुझे कई खुले हुए दर्वाजों के अन्दर पैर रखने और फिर उसी या दूसरे दर्वाजे की राह से बाहर निकलने की भी नौबत आई मगर छुटकारे की कोई सूरत नजर न आई। अन्त मे एक कोठरी के अन्दर पहुचकर बदहवास हो जमीन पर गिर पडा क्योंकि भूख-प्यास के मारे दम निकला जाता था। इस अवस्था में भी कई पहर बीत गये आखिर इस समय से घडी भर पहिले मेरे कान में एक आवाज आई जिससे मालूम हुआ कि इस कोठरी के बगल वाली कोठरी का दर्वाजा किसी ने खोला है। मुझे यकायक आपका ख्याल हुआ। थोड़ी ही देर बाद जमीन हिली और तरह तरह के शब्द होने लगे। आखिर यकायक उजाला हो गया तब मेरे जान मे जान आई बडी मुश्किल से मै उठा सामने का दर्वाजा खुला हुआ पाया निकल के दूसरी कोठरी मे पहुचा जहाँ दर्वाजे के पास ही देखा कि पत्थर का एक आदमी पडा है जिसका शरीर पानी पडे हुए चुन की कली की तरह फूला फटा हुआ है। इसके बाद मै तीसरी कोठरी में गया और फिर सीढियां चढ कर आपके पास पहुचा।

कुँअर इन्दजीतसिह ने अपने छोटे भाई के हाल पर बहुत अफसोस किया और कहा – यहाँ मेवों की और पानी की कमी नहीं है पहिले तुम कुछ खा पी लो तो मैं अपना हाल तुमसे कहूगा।

दोनों भाई वहाँ से उठे और खुशी खुशी मेवदार पेडों के पास जाकर पके हुए और स्वादिष्ट मेवे खाने लगे। छोटे कुमार बहुत भूखे और सुस्त हो रहे थे मेवे खाने और पानी पीने से उनका जी ठिकाने हुआ और फिर दोनों भाई उसी मन्दिर के सभामण्डप में आ बैठे तथा बातचीत करने लगे। कुअर इन्दजीतसिह ने अपना पूरा पूरा हाल अर्थात जिस तरह यहाँ आये थे और जो कुछ किया था आनन्दसिंह से कह सुनाया और इसके बाद कहा खून से लिखी इस किताब को अच्छी तरह पढ जाने से मुझे बहुत फायदा हुआ। यदि तुम भी इसे इस तरह पढ़ जाओ और याद कर जाओ कि फिर इसकी आवश्यकता न रहे तो दोनों भाइ शीघ्र ही इस तिलिस्मी को तोड के नाम और दौलत पैदा करें। साथ ही इसके इस बात को भी समझ रक्खो कि बाग में आकर तुम्हारा पता लगाने की नीयत से जो कुछ मैंने किया उससे इतना नुकशान अवश्य हुआ कि अब बिना तिलिस्म तोडे हम लोग यहा से निकल नहीं सकते।

आनन्द–(कुछ सोचकर) यदि ऐसा ही है और आपको निश्चय है कि रिक्तग्रन्थ के पढ़ जाने से हम लोग अवश्य तिलिस्म तोड सकेंगे तो मै इसी समय इसका पढना आरम्भ करता हू, परन्तु इसमें बहुत से लेख ऐसे है जिसका मतलब समझ में नहीं आता।

इन्द–ठीक है मगर मैं अभी कह चुका हू कि तुम्हे खोजता हुआ जब मै खटियों वाले मकान के पास पहुचा तो राजा गोपालसिह ने

आनन्दसिह–(बात काट कर) जी हा मुझे बखूबी याद है आपने कहा था कि राजा गोपालसिह ने कोई ऐसी तर्कीब आपको बताई है कि जिससे केवल रिक्तगन्थ ही नही बल्कि हर एक तिलिस्मी किताब को पढ कर उसका मतलब आप बखूबी समझ सकेगे अस्तु मेरे कहने का मतलब यह था कि जब तक आप वह मुझे न बताएगे तब तक

इन्दजीतसिह–(हस कर) इतनी उलझन डालने की क्या जरूरत थी ! तो स्वयम वह भेद तुमसे कहने को तैयार हू, अच्छा सुनो।

कुँअर इन्दजीतसिह ने तिलिस्मी किताबों को पढ कर समझने का भेद जो राजा गोपालसिह से सुना था आनन्दसिह को बताया। इतने ही मे मन्दिर के पीछे की तरफ चिल्लाने की आवाज आई दोनों भाइयों का ध्यान एकदम उस तरफ चला गया और तब यह आवाज सुनाई पड़ी अच्छा अच्छा, तू मेरा सिर काट ले। मैं भी यही चाहती हूँ कि अपनी जिन्दगी में इन्दजीतसिह और आनन्दसिह को दुखी न देखू। हाय इन्दजीतसिह अफसोस इस समय तुम्हें मेरी खबर कुछ भी न होगी !

इस आवाज को सुन कर इन्दजीतसिह बेचैन और बेताब हो गये और जल्दी से आनन्दसिंह से यह कहते हुए कि कमलिनी की आवाज मालूम पड़ती है ! मन्दिर के पीछे की तरफ झपटे और आनन्दसिह भी उनके पीछे पीछे चले।

दूसरा बयान

अब हम फिर मायारानी की तरफ लौटते है और उस का हाल लिख कई गुप्त भेदों को खोलते है। मायारानी भी उस चीठी को पूरा पूरा पढ न सकी और बदहवास होकर जमीन पर गिर पडी। नागर तुरन्त उठी और भडरिये में से एक सुराही निकाल लाइ जिसमें बदमुश्क का अर्क था। वह अर्क मायारानी के मुँह पर छिडका जिससे थोडी देर बाद वह होश में आइ और नागर की तरफ देख कर बोली हाय अफसोस क्या सोचा था और क्या हो गया !

नागर–खैर जो होना था सो हो गया अब इस तरह बदहवास होने से काम नहीं चलेगा उठो और अपने को सम्हालो सोचो विचारो और निश्चय करो कि अब क्या करना चाहिए।

माया–अफसोस उस कम्बख्त ऐयार ने बडा भारी धोखा दिया और मुझसे भी बडी भारी भूल हुई कि लक्ष्मीदेवी वाला भेद उसके सामने जुबान से निकाल बैठी ! यद्यपि उस इशारे से वह कुछ समझ न सकेगा परन्तु जिस समय गोपालसिह के सामने लक्ष्मीदेवी का नाम लेगा और वे बातें कहेगा जो मैंने उस दारोगा रूपधारी ऐयार से कही थी तो वह बखूबी समझ जायगा और मेरे विषय में उसका क्रोध सौगुना हो जायगा। यदि मेरे बारे में वह किसी तरह की बदनामी समझता भी था तो अब न समझेगा। हाय अब जिन्दगी की कोइ आशा न रही।

नागर–लक्ष्मीदेवी का नाम ले के जो कुछ तुमने कहा उससे मुझे भी शक हो गया। क्या असल में

माया–आफ यह भेद सिवाय असली दारोगा के किसी को भी मालूम नहीं। आज –(कुछ रुक कर) नहीं अब भी मैं उस भेद को छिपाने का उद्योग करूँगी और तुझसे कुछ भी न कहूगी बस अब लक्ष्मीदेवी का नाम तुम मेरे सामने मत लो। (चीठी की तरफ इशारा करके) अच्छा इस चीठी को तुम एक दफे फिर से पढ जाओ।

नागर ने वह चीठी उठा ली जिसके पढने से मायारानी की वह हालत हुई थी और पुन उसे पढने लगी–

चीठी–

बुरे कामों का करने वाला कदापि सुख नहीं भोग सकता। तू समझती होगी कि मैं राजा गोपालसिह देवीसिह भूतनाथ कमलिनी और लाडिली को मार के निश्चिन्त हो गइ अब मुझे सताने वाला कोई भी न रहा। इस बात का तो तुझे गुमान भी न होगा कि मै सुरग मे असली दारोगा से नहीं मिली बल्कि ऐयारों के गुरुघण्टाल तेजसिह से मिली जो दारोगा के भेष में था और यह बात भी तुझे सूझी न होगी कि दारोगा वाले मकान के उड जाने से कैदियों की कुछ भी हानि नहीं हुई बल्कि वे लोग अजायबघर की ताली की बदौलत जो सुरग में मैंने तुझसे ले ली थी और भोजन तथा जल पहुचाने के समय कैदियों को होश में लाकर दे दी थी निकल गये। अहा परमात्मा तू धन्य है ! तेरी अदालत बहुत सच्ची है। ऐ कम्बख्त मायारानी अब तू सब कुछ इसी से समझ जा कि मैं वास्तव में तेजसिंह हू। तेरा

जो कुछ तू समझे –तेजसिह।

इस चीठी को सुनते ही मायारानी का सिर घूमने लगा और वह डर के मारे थर थर कॉपने लगी। थोडी देर चुप रहने बाद वह उठ बैठी और नागर की तरफ देख कर बोली–

माया–यह तेजसिह भी बडा ही शैतान है इसने दो दफे भारी धोखा दिया। अफसोस अजायबघर की ताली हाथ आकर फिर निकल गई केवल ये दोनों तिलिस्मी खजर मेरे हाथ में रह गये मगर इनसे मेरी जान नहीं बच सकती। सबसे ज्यादे अफसोस तो इस बात का है कि लक्ष्मी देवी वाला भेद अब खुल गया और यह बात मेरे लिए बहुत ही बुरी हुई। (कुछ सोच कर) हाय अब मै समझी कि इस तिलिस्मी खजर का असर तेजसिंह पर इसलिए नहीं हुआ कि उसके पास भी जरूर इसी तरह का खजर और ऐसी ही अगूठी होगी।

नागर–बेशक यही बात है खैर अब यह बहुत जल्द सोचना चाहिये कि हम लोगों की जान कैसे बच सकती है।

मायारानी इसका कुछ जवाब दिया ही चाहती थी कि सामने का दर्वाजा खुला और मायारानी के दारोगा साहब अन्दर आते हुए दिखाई पडे। उन्हें देखते ही मायारानी क्रोध के मारे लाल हो गई और कडक कर बोली 'तुझ कम्बख्त को यहाँ किसने आने दिया ! खैर अच्छा ही हुआ तू आ गया। मुझे मालूम हो गया कि तेरी मौत तुझे यहाँ लाई है हॉ अगर तेरी चीठी मुझे न मिली रहती तो मैं फिर धोखे में आ जाती। कम्बख्त नालायक तूने मुझे बडा भारी धोखा दिया ! अब तू मेरे हाथ से बच कर नहीं जा सकता !

दरोगा–तू अपने होश में भी है या नहीं ? क्या अपने को बिल्कुल भूल गई ! क्या तू नहीं जानती कि किससे क्या कह रही है ? मेरी मौत नहीं बल्कि तेरी मौत आई है जो तू जुबान सम्हाल कर नहीं बोलती।

माया–(खडी होकर और तिलिस्मी खजर हाथ में लेकर) हॉ ठीक है, यदि मैं अपने होश में रहती तो तुझ कम्बख्त के फेर में पडती ही क्यों ? बेईमान कहीं का तैने मुझे बडा भारी धोखा दिया देख अब मै तेरी क्या दुर्गति करती हू।

नागर– ताज्जुब है कि इतनी बडी बदमाशी करने पर भी तू निडर होकर यहा कैसे चला आया । मालूम होता है अपनी जान से हाथ धो बैठा। कोई हर्ज नही अगर तिलिस्मी खजर का असर तुझ पर नहीं होता तो मैं दूसरी तरह से तेरी खबर लूगी।

इस समय मायारानी की फुर्ती देखने ही योग्य थी। वह बाघिन की तरह झपट कर दारोगा के पास पहुची। इस समय उसकी उँगली में एक जहरीली अँगूठी उसी तरह की थी जैसी नागर के हाथ में उस समय थी जब उसने सुनसान जगल में भूतनाथ को अँगूठी गाल में रगड कर बेहोश किया था। इस समय मायारानी ने भी वही काम किया अर्थात् वह अगूठी जिस पर जहरीलानाकदार नगीना जडाहुआ था दारोगा के गाल में इस फुर्ती और चालाकी से रगड दी कि वह बेचारा कुछ भी न कर सका। उस नगीने की रगड से गाल जरा ही सा छिला था मगर जहर का असर पल भर में अपना काम कर गया। दारोगा चक्कर खाकर जमीन पर गिर पडा और बहोश होगया। मायारानी ने नागर की तरफ देखा और कहा अब इसके हाथ पैर जकड के बॉध दो और तब होश में लाकर पूछो कि कहिये तेजसिह आपका मिजाज कैसा है ? इसके जवाब में नागर ने कहा– केवल हाथ पैर ही बॉध कर के नहीं छोड दो बल्कि थोडी सी नाक काट लो और नकली दाढी उखाड कर फेंक दो और तब होश में लाकर पूछो कि कहिए ऐयारों के गुरुघण्टाल तेजसिह आप का मिजाज कैसा है ?

इस समय मायारानी यही समझ रही थी कि यह दारोगा वास्तव में वही तेजसिह है जिसने उस अनूठी रीति से धोखा दिया था बल्कि वह उसके शक पर बागीचे में घूमते समय हर एक पत्ते से डरती फिरे तो ताज्जुब नहीं परन्तु हमारे पाठक जरूर समझते होंगे कि तेजसिह ऐसे बेवकूफ नहीं हैं जो मायारानी को धोखा देकर बल्कि अपने धाक का परिचय देकर फिर उसके सामने उसी सूरत में आवें जिस सूरत में उन्होंने धोखा दिया था और वास्तव में बात भी ऐसी ही है। यह तेजसिह नहीं थे बल्कि मायारानी के असली दारोगा साहब थे मगर अफसोस इस समय उनकी दाढी नोचने तथा नाक काटने के लिये वही तैयार हैं जिनके वे पक्षपाती है।

नागर ने जो कुछ कहा मायारानी ने स्वीकार किया। नागर ने पहिले तिलिस्मी खजर से दारोगा साहब की नाक काट ली और फिर दाढी नोचने के लिए तैयार हुइ। मगर यह दाढी नकली न थी जो एक ही झटके में अलग हो जाती इसलिए इसके नोचने में बेचारी नागर को विशेष तकलीफ उठानी पडी। नागर दाढी नोचती जाती थी और यह कहती जाती थी– तेजसिह बडे मजबूत मसाले से बाल जमाता है !

आधी दाढी नुचते नुचते दारोगा का चेहरा खून से लालोलाल हो गया। उस समय मायारानी ने चौंक कर नागर से कहा ठहर ठहर बेशक धोखा हुआ यह तेजसिह नहीं वास्तव में बेचारा दारोगा है।

नागर–(रुक कर) हॉ ठीक तो जान पड़ता है। हाय बहुत बुरी भूल हो गई !

माया–भूल क्या गजब हो गया ! इस बेचारे ने सिवाय नेकी के मेरे साथ बुराई कभी नहीं की, अब यह जहर के मारे मरा जा रहा है पहिले जहर दूर करने की फिक्र करनी चाहिए।

नागर–जहर तो बात की बात में दूर हो जायगा मगर अब हम लोग इसे अपना मुँह कैसे दिखायेंगे !

माया–मैंने तो केवल दाढी नोचने की राय दी थी तू ही ने नाक काटने के लिए कहा और अपने हाथ से बेचारे की नाक काट भी ली।

नागर–क्या खूब ? इस गालियॉ भी मैंने ही दी थीं ! क्या तुम्हारी आज्ञा के बिना मैंने इनकी नाक काट ली ? अब कसूर मेरे सिर पर थोप आप अलग हुआ चाहती हो ? सच ही तुम्हें लोग बदनाम करते हैं। तुम्हारी दोस्ती पर भरोसा करना बेशक मूर्खता है जब मेरे सामने तुम्हारा यह हाल है तो पीछे न मालूम तुम क्या करतीं ! खैर क्या हर्ज है, जैसी खुदगर्ज हो मैं जान गई।

इतना कह कर नागर वहा से चली गई और जहर दूर करने वाली दवा की शीशी ले आई। थोडी सी दवा उस जगह लगाई जहॉं अँगूठी के सबब से छिल गया था। दवा लगाने के थोडी दर बाद उस जगह छाला पड गया और उस छाले को नागर ने फाड दिया। पानी निकल जाने के साथ ही दारोगा होश में आकर उठ बैठा और अपनी हालत देख कर अफसोस करने लगा। यद्यपि वह कुछ भी नही जानता था कि मायारानी ने उसके साथ ऐसा सलूक क्यों किया तथापि उसे इतना क्रोध चढा हुआ था कि मायारानी से कुछ भी न पूछ कर वह चुपचाप उसका मुँह देखता रहा।

माया–(दारोगा से) माफ कीजिए मैंने केवल यह जानने के लिए आपको बेहोश किया था कि यह वीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार तो नहीं है इसके सिवाय और जो कुछ किया नागर ने किया।

नागर–ठीक है बाबाजी इस बात को बखूबी समझते हैं। मैंने ही तो जहरीली अँगूठी से इनकी जान लेने का इरादा किया था ! (बाबाजी की तरफ देख कर) मायारानी की दोस्ती पर भरोसा करना बडी भारी भूल है। जब इसने अपने पति ही
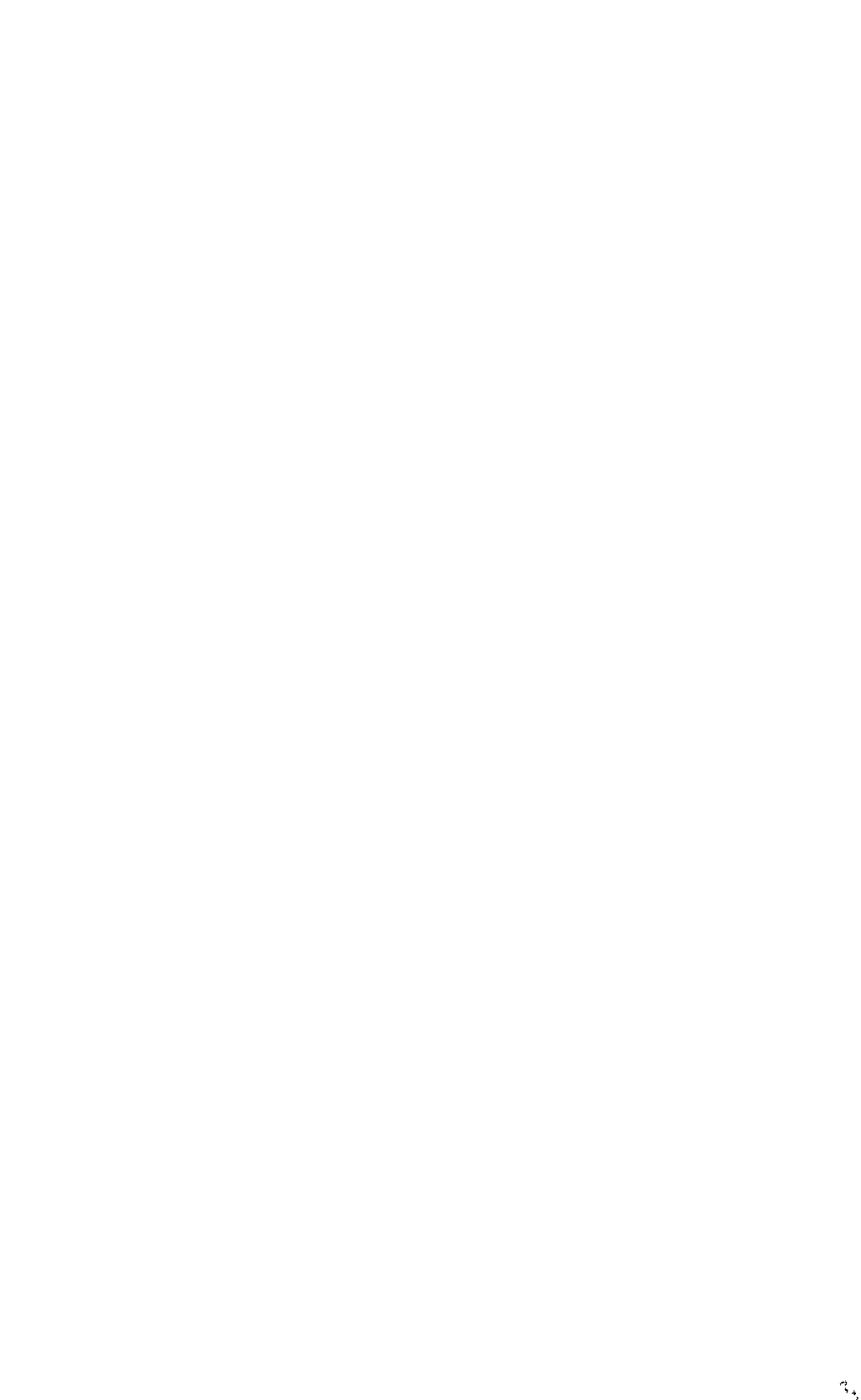
नागर की बातें सुन कर मायारानी रुक गई और थोडी देर तक कुछ सोचती रही अन्त में तिलिस्मी खजर कमर में रख शीघ्रता से कमरे के बाहर हो हाते से निकल गई और न मालूम कहाँ चली गई नागर ने इधर उधर देखा तो दारोगा को भी न पाया। आखिर मालूम हुआ कि वह भी मौका देख कर भाग निकला और न जाने कहाँ चला गया।

तीसरा बयान

अब जरा उन कैदियों की सुध लेनी चाहिए जिन्हें नकली दारोगा ने दारोगा वाले बँगले में मेगजीन की बगल वाली कोठरी में बन्द किया था। वास्तव में वह तेजसिह ही थे जो दारोगा की सूरत बन कर मायारानी से मिलने और उसके दिल का भेद लेने जा रहे थे मगर जब दारोगा वाले बँगले पर पहुचे तो मायारानी की लौंडियों तथा लीला की जुबानी मालूम हुआ कि कुछ आदमियों के पीछे पीछे मायारानी और नागर टीले पर गई है। तेजसिह उस टीले का हाल बखूबी जानते थे और सुरग की राह बाग के चौथे दरवाजे में आने जाने का भेद भी उन्हें बता दिया गया था इसलिए उन्हें शक हुआ और वे सोच ने लगे कि मायारानी जिन दो आदमियों के पीछे पीछे टीले पर गई है कहीं वे दोनों हमारी तरफ के ऐयार ही न हो जो बाग के चौथे दर्जे में जाने का इरादा रखते हों यदि वास्तव में ऐसा हो तो नि सन्देह मायारानी क हाथ से उन्हें कष्ट पहुचेगा। यह सोचते ही तेजसिह भी उसी टीले की तरफ रवाना हुए और यही सबब था कि सुरग में दारोगा की शक्ल बने हुए तेजसिह की मायारानी से मुलाकात हुई थी और उसके बाद जो कुछ हुआ ऊपर लिखा ही जा चुका है।

मैगजीन की बगल वाली कोठरी में कैदियों को कैद करनके बाद जब खाने पीने का सामान लेकर तेजसिह उस तहखाने में गये तो कैदियों को होश में लाकर सक्षेप में सब हाल कह दिया था और अजायबघर की ताली जो मायारानी से वापस ली थी राजा गोपालसिह को देकर कहा कि इस ताली की मदद से जहाँ तक हो सके आप लोग यहाँ से निकल जाइये। राजा गोपालसिह ने जवाब दिया था कि यदि यह ताली न मिलती तो भी हम लोग यहाँ से निकल जात क्योंकि मुझे यहां का पूरा पूरा हाल मालूम है और अब आप हम लोगों की तरफ से निश्चिन्त रहिए मगर चौबीस घण्टे के अन्दर मायारानी का साथ न छोडिए और न उसे कोई काम इस बीच में करने दीजिए इसके बाद हम लोग स्वय आपको ढूढ लेंगे।

इस दारोगा वाले बँगले का हाल केवल तेजसिह ही को नहीं बल्कि हमारे और भी कई ऐयारों को मालूम था क्योंकि कमलिनी ने जो कुछ भी वह जानती थी सभों को बता दिया था।

अब जब तेजसिह दारोगा वाले बँगले से चले तो राजा गोपालसिह और कमलिनी इत्यादि को ढूढने के लिए उत्तर की तरफ रवाना हुए। वे जानते थे कि मैगजीन की बगल वाली कोठरी से निकल कर वे लोग उत्तर कीतरफ ही किसी ठिकाने बाहर हागे।

तेजसिह कास भर से ज्यादे नहीं गये होंगे कि रात की पहली अँधेरी ने चारो तरफ अपना दखल जमा लिया जिसके सबब से वे उन लोगों को बखूबी ढूढन सकते थे और न उन लोगों का ठीक पता ही था तथापि उन्हें विशेष कष्ट उठाना न पडा क्योंकि थोडी ही दूर जाने बाद देवीसिह से मुलाकात हो गई जो इन्हीं को ढूढने के लिए जा रहे थे। देवीसिह के साथ चलकर तेजसिह थोडी ही देर में वहाँ जा पहुचे जहाँ गोपालसिह इत्यादि घन जगल में एक पेड के नीचे बैठ इनके आने की राह देख रहे थे। तेजसिह को देखते ही सब लोग उठ खडे हुए और खातिर की तौर पर दो चार कदम आगे बढ आये।

देवी–देखिये इन्हें कितना जल्द ढूँढ लाया हू।

गोपाल–(तेजसिह से) आइए आइए।

तेज–इतनी दूर आये तो क्या दो चार कदम के लिए रुक रहेंगे ?

गोपाल–(हँस के और तेजसिह का हाथ पकड़ के) आज आप ही की बदौलत हम लोग जीते जागते यहाँ दिखाई दे रहे हैं।

तेज–यह सब तो भगवती की कृपा से हुआ और उन्हीं की कृपा से इस समय मै इसके लिए अच्छी तरह तैयार भी हो रहा हू कि मेरी जितनी तारीफ आपके किये हो सके कीजिए और मै फूला नहीं समाता हुआ चुपचाप बैठा सुनता रहू और घण्टों बीत जाय मगर तिस पर भी आपकी की हुई तारीफ को उस काम के बदले में न समझू जिसकी वजह से आप लोग छूट गये बल्कि एक दूसरे ही काम के बदले में समझू जिसका पता खुद आप ही की जुबान से लगेगा और यह भी जाना जायेगा कि मैं कौन सा अनूठा काम करके आया हू जिसे खुद नहीं जानता मगर जिसके बदले में तारीफों की बौछार सहने को चुप्पी का छाता लगाये पहिले ही से तैयार था। साथ ही इसके यह भी कह देना अनुचित न होगा कि मै केवल आप ही को तारीफ करने के लिए मजबूर न करुगा बल्कि आपसे ज्यादा कमलिनी और लाडिली को मेरी तारीफ करनी पडेगी।

गोपाल–(कुछ सोचकर और हँसी के ढग से) अगर गुस्ताखी और बेअदबी मे न गिनिये तो मै पूछ लू कि आज आपने भग के बदल मे ताडी तो नहीं छानी है।

यद्यपि यह जगल बहुत ही घना और अधकार मय हो रहा था मगर तेजसिह को साथ लिए देवीसिह के आने की आहट पाते ही भूतनाथ ने बटुए मे से एक छोटी सी अबरख की लालटेन जो मोडमाड के बहुत छोटी और चिपटी कर ली जाती थी निकाल ली थी और रोशनी के लिए तैयार बैठा था। देवीसिह की आवाज पाते ही उसने बत्ती बाल कर उजाला कर दिया था जिसस सभों की सूरत साफ साफ दिखाई दे रही थी। तेजसिह की इज्जत के लिए सब कोई उठ कर दो चार कदम आग बढ गये और इसके बाद मायारानी का समाचार जानने की नीयत स सभों ने उन्हें घेर लिया था। तेजसिह के चेहरे पर खुशी की निशानियॉ मामूली से ज्यादा दिखाई दे रही थीं इसलिए गोपालसिह इत्यादि किसी भारी खुशखबरी के सुनने की लालसा मिटाने का उद्योग किया चाहते थे मगर तेजसिह की रेशम की गुत्थी की तरह उलझी हुई बातों का सुन कर गोपालसिह भौंचक स हागए और सोचन लगे कि वह कैसी खुशखबरी है कि जिसे तेजसिह स्वय नहीं जानते बल्कि मुझस ही सुनकर मुझी को सुनान और खुश करके तारीफों की बौछार सहने के लिए तैयार हैं और यही सबब था कि राजा गोपालसिह ने दिल्लगी के साथ तेजसिह पर भग के बदले मे ताडी पीने की आवाज कसी।

तेज–(हस कर) ताडी और शराब पीना तो आप लागों का काम, जिन्हें अपने बेगाने की कुछ खबर ही नहीं रहती मै यह बात दिल्लगी मे नहीं कहता बल्कि साबित कर दूगा कि आप भी उन्हीं मे अपनी गिनती करा चुके है। सच तो यों है कि इस समय आपक पेट मे चूहे कूदत होंगे और यह जानने के लिए आप बहुत बेताब होंगे कि मै आपसे क्या पूछूगा और क्या कहूगा! अच्छा यह बताइए कि 'लक्ष्मीदेवी किसका नाम है ?

गोपाल–क्या आप नहीं जानते ? यह तो उसी कम्बख्त मायारानी का नाम है !

तेज–बस बस अब आपकी जुबानी उस बात का पता लग गया जिसे मै एक भारी खुशखबरी समझता हू। अब आप सुनिए (कुछ रुक कर) मगर नहीं पहिले आपसे इनाम पाने का एकरार तो करा ही लेना चाहिए क्योंकि खाली तारीफों की बौछार स काम न चलेगा।

गोपाल–मै आपका कुछ इनाम देने याग्य तो हू नहीं पर यदि आप मुझे इस याग्य समझते ही है तो इनाम का निश्चय भी आप ही कर लीजिए मुझे जी जान स उसे पूरा करने के लिए तैयार पाइएगा।

तेज–(हाथ फैला कर) अच्छा ता आप हाथ पर हाथ मारिये मैं अपना इनाम जब चाहूगा मॉग लूगा और आप उस समय उसे दने याग्य होंग।

गोपाल–(तेजसिह के हाथ पर हाथ मार के) लीजिए अब तो कहिए आप तो हम लोगों की बेचैनी बढाते ही जा रहे हैं।

तेज–हॉ हॉ सुनिए (कमलिनी और लाडिली से) तुम दोनों भी जरा पास आ जाओ और ध्यान देकर सुनो कि मै क्या कहता हू। (हँस कर) आप लाग बडे खुश होंगे हॉ अब सब कोई बैठ जाइये।

गोपाल–(बैठ कर) तो आप कहते क्यों नहीं इतना नखरा तिल्ला क्यों कर रहे हैं ?

तेज–इसलिए कि खुशी के बाद आप लागों को रज भी हागा और आप लोग एक तरददुद में फॅस जायेंगे।

गोपाल–आप ता उलझन पर उलझन डाले जाते है और कुछ कहते भी नहीं।

तेज–कहता तो हू सुनिए–यह जो मायारानी है वह असल मे आपकी स्त्री लक्ष्मीदेवी नहीं है।

इतना सुनते ही राजा गोपालसिह कमलिनी और लाडिली को हद से ज्याद खुशी हुई यहॉ तक कि दम रुकने लगा और थाडी देर तक कुछ कहन की सामर्थ्य न रह गयी इसके बाद अपनी अवस्था ठीक करके कमलिनी ने कहा।

कम–आफ आज मर सिर से बडे भारी कलक का टीका मिटा। मै इस ताने के सोच मे मरी जाती थी कि तुम्हारी बहिन जब इतनी दुष्ट है तो तुम न जान कैसी होवेगी !

गोपाल–मै जिस खयाल स लागों को मुह दिखाने से हिचकिचाता था आज वह जाता रहा। अब मै खुशी से जमानिया क राजकर्मचारियों के सामने मायारानी का इजहार लूगा 'मगर यह तो कहिए कि इस बात का निश्चय आप का क्योंकर हुआ ?

तेज–मैं सक्षेप मे आपसे कह चुका हू कि जब मै दारागा की सूरत मे सुरग के अन्दर पहुचा और मायारानी से मुलाकात हुई ता आपको होश मे लाने के लिए मायारानी स खूब हुज्जत हुई !

गोपाल–हॉ आप कह चुके हैं।

तेज–उस समय जो जो बातें मायारानी से हुई वह तो पीछे कहूगा मगर मायारानी की थोडी सी बात जिसे मैने इस तरह अक्षर अक्षर याद कर रखा है जैसे पाठशाला के लडके अपना पाठ याद कर रखते हैं आप लोगों से कहता हू उसी

स आप लाग उस भद का मतलब निकाल लेंगें। मायारानी ने मुझे समझाने की रीति से कहा था कि –

यद्यपि आपका इस बात का रज है कि मैंन गोपालसिह के साथ दगा की और यह भेद आपसे छिपा रक्खा मगर आप भी ता जरा पुरानी बातों को याद कीजिए। खास करके उस अँधेरी रात की बात जिसमें मेरी शादी और पुतले की बदलौवल हुई थी। आप ही ने ता मुझे यहाँ तक पहुचाया अब अगर मेरी दुर्दशा होगी तो क्या आप बच जायेगें। मान लिया जाय कि अगर गोपालसिह को बचा लें तो लक्ष्मी देवी का बच के निकल जाना आपके लिए दु खदाई न होगा ? और जब इस बात की खबर गोपालसिह को लगेगी तो क्या वह आपको छोड देगा ? बेशक जो कुछ आज तक मैंने किया है सब आप ही का कसूर समझा जायेगा। मैंने इसे इसीलिए कैद किया था कि लक्ष्मीदेवी वाला भेद इसे मालूम न होने पावे या इसे इस बात का पता न लग जाय कि दारोगा की करतूत ने लक्ष्मीदेवी की जगह

बस इतना कह कर वह चुप हो गई और मैंने भी इस भेद को सोचते हुए यह समझ कर इन बातों का कुछ जवाब देना उचिन न जाना और चुप हो रहा कि कहीं बात की बात में मेरा अनजानपन झलक न जावे और मायारानी को यह न मालूम हो जाय कि मै वास्तव में दारोगा नहीं हूँ।

गोपाल–बस बस। मायारानी के मुँह से निकली हुई इतनी ही बातें सबूत के लिए काफी हैं और बेशक वह कम्बख्त मेरी स्त्री नहीं है। अब मुझे ब्याह के दिन की कुछ बातें धीरे धीरे याद आ रही है जो इस बात को और भी मजबूत कर रही है और इसमें भी कोई शक नहीं कि हरामखोर दारोगा ही सब फसाद की जड है।

कम–मगर उस हरामजादी की बातों से जैसा कि आपने अभी कहा यह भी साबित होता है कि दारोगा की मदद से अपना काम पूरा करने के बाद वह मेरी,बहिन लक्ष्मीदेवी की जान लिया चाहती थी मगर वह किसी तरह बच के निकल गई।

तेज–बेशक ऐसा ही है और मेरा दिल गवाही देता है कि लक्ष्मीदेवी अभी तक जीती है यदि उसकी खोज की जाय तो वह अवश्य मिलेगी।

गोपाल–मेरा भी दिल यही गवाही देता है मगर अफसोस की बात है कि उसने मुझ तक पहुँचने या इस भेद को खोलने के लिए कुछ उद्योग न किया।

कम–यह आप कैसे कह सकते हैं कि उसने काई उद्योग न किया होगा ? कदाचित उसका उद्योग सफल न हुआ हो ? इसके अतिरिक्त मायारानी और दारोगा की चालाकी कुछ इतनी कच्ची न थी कि किसी की कलई चल सकती फिर उस बेचारी का क्या कसूर ? जब मै उसकी सगी बहिन होकर धोखे में फँस गई और इतने दिनों तक उसके साथ रही तो दूसरे की क्या बात है ? उसके ब्याह के चार वर्ष बाद जब मैं माता पिता के मर जाने के कारण लाडिली को साथ ले आपके घर आई तो मायारानी की सूरत देखते ही मुझे शक पडा परन्तु इस खयाल ने उस शक को जमने न दिया कि कदाचित चार वर्ष के अन्तर ने उसकी सूरत शक्ल में इतना फर्क डाल दिया हो और यह आश्चर्य की बात है भी नहीं बहुतेरी कुँआरी लडकियों की सूरत शक्ल ब्याह होने के तीन ही चार वर्ष बाद ऐसी बदल जाती है कि पहिचानना कठिन होता है।

तेज–प्राय ऐसा होता है यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

कम–और कम्बख्त ने हम दोनों बहिनों की उतनी ही खातिर की जितनी बहिन बहिन की खातिर कर सकती है मगर यह बात तभी तक रही जब तक उसने (गोपालसिह के तरफ इशारा करके) इनको कैद न कर लिया था।

गोपाल–मर साथ तो रस्म और रिवाज ने दगा की। ब्याह के पहिले मैंने उसे देखा ही न था फिर पहिचानता क्योंकर ?

कम–बेशक बडी चालाकी खेली गई। हाय अब मैं बहिन लक्ष्मीदेवी को कहाँ ढूढू और क्योंकर पाऊँ ?

तेज–जिस ढग से मायारानी ने मुझे समझाया था उससे तो मालूम होता है कि यह चालाकी करने के साथ ही दारोगा ने लक्ष्मीदेवी को केद करके किसी गुप्त स्थान में रख दिया था मगर कुछ दिनों के बाद वह किसी ढग से छूट के निकल गई। शायद इसी सबब से वह कमलिनी या लाडिली से मिल न सकी हो।

गोपाल–बिना दारोगा को सताए इसका पूरा हाल न मालूम होगा।

तेज–दारागा तो रोहतासगढ में ही कैद है।

इतने ही में एक तरफ से आवाज आई दारोगा अब रोहतासगढ में कैद नहीं है निकल भागा। तेजसिह ने घूम कर दखा तो भैरोसिह पर निगाह पडी। भैरोसिंह ने बाप का चरण छूआ और राजा गोपालसिह को भी प्रणाम किया, इसके बाद आज्ञा पाकर बैठ गया।

तेज–(भैरो से) क्या तुम बडी देर से खडे खड़े हम लोगों की बातें सुन रहे थे। हम लोग बातों में इतना डूबे हुए थे कि तुम्हारा आना जरा भी मालूम न हुआ।

भैरो–जी नहीं मैं अभी चला आ रहा हूँ और सिवाय इस आखिरी बात के जिसका जवाब दिया है आप लोगों की और कोई बात मैंने नहीं सुनी।

तेज–तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि हम लोग यहा है ?

भैरो–मैं तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जा रहा था मगर जब दारोगा वाले बगले के पास पहुचा तो उसकी बिगडी हुई अवस्था देख कर जी व्याकुल हो गया क्योंकि इस बात का विश्वास करने में किसी तरह का शक नहीं हो सकता था कि उस बगले की बरबादी का सबब बारूद और सुरग है और यह कारवाई बेशक हमारे दुश्मनों की है अस्तु तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जानेके पहिले इस मामले का असल हाल जानने की इच्छा हुई और किसी से मिलने की आशा में मैं इस जगल में घूमने लगा मगर इस लालटेन की रोशनी ने जो यहाँ बल रही है मुझे ज्यादे देर तक भटकने न दिया। अब सबके पहिले मैं उस बगले की बर्बादी का सबब जानना चाहता हू, यदि आपको मालूम हो तो कहिए।

तेज–मैं भी यही चाहता हू कि राजा वीरेन्द्रसिंह का कुशल क्षेम पूछने के बाद जो कुछ कहना है सो तुमसे कहू और उस बगले की कायापलट का सबब तुमसे बयान करू क्योंकि इस समय एक बडा ही कठिन काम तुम्हारे सुपुर्द किया जायगा जो कितना जरूरी है सो उस बगले का हाल सुनते ही तुम्हें मालूम हो जायगा।

भैरो–राजा वीरेन्द्रसिंह बहुत अच्छी तरह है इधर का हाल सुन कर उन्हें बहुत क्रोध आता है और चुपचाप बैठे रहने की इच्छा नहीं होती परन्तु आपकी वह बात उन्हें बराबर याद रहती है जो उनसे विदा होने के समय अपनी कसम का बोझ देकर आप कह आये थे। नि सन्देह वे आपको सच्चे दिल से चाहते है और यही सबब है कि बहुत कुछ कर सकने की शक्ति रख कर भी कुछ नहीं कर रहे है।

तेज–हा मैं उनसे ताकीद कर आया था कि चुपचाप चुनार जाकर बैठिए और देखिए कि हम लोग क्या करते है। तो क्या राजा वीरेन्द्रसिंह चुनार गये !

भैरो–जी हा वे चुनार गये और मैं अबकी दफे चुनार ही से चला आ रहा हू। रोहतासगढ में केवल ज्योतिषीजी है और उन्हें राज्य सम्बन्धी कार्यों से बहुत कम फुरसत मिलती है इसी सबब से दारोगा धोखा देकर न मालूम किस तरह कैद से निकल भागा। जब यह खबर चुनार पहुची तो यह सोच कर कि भविष्य में कोई गडबड न होने पाये चुन्नीलाल ऐयार रोहतासगढ भेजे गये और जब तक कोई दूसरा हुक्म न पहुचे उन्हें बराबर रोहतासगढ ही में रहने की आज्ञा हुई और मैं इधर का हालचाल लेने के लिए भेजा गया।

तेज–अच्छा तो मैं दारोगा वाले बगले की बर्बादी का सबब बयान करता हू।

इसके बाद तेजसिंह ने सब हाल अर्थात अपना सुरग में जाना मायारानी से मुलाकात और बातचीत राजा गोपालसिंह और कमलिनी इत्यादि का गिरफ्तार होना और फिर उन्हें छुडाना तथा दारोगा वाले बगले के उड़ने का सबब और इसके बाद का पूरा पूरा हाल कह सुनाया जिसे भैरोसिंह बडे गौर से सुनता रहा और जब बातें पूरी हो गई तो बोला–

भैरो–यह एक विचित्र बात मालूम हुई कि मायारानी वास्तव में कमलिनी की बहिन नहीं है। (कुछ सोच कर) मगर मैं समझता हूँ कि असल बातों का पूरा पूरा पता लगाने के लि ए उसे बहुत जल्द गिरफ्तार करना चाहिए केवल उसी को नहीं बल्कि कम्बख्त दारोगा को भी ढूँढ निकालना चाहिए।

गोपाल–बेशक ऐसा ही होना चाहिए और अब मैं भी अपने को गुप्त रखना नहीं चाहता जैसा कि आज के पहिले सोचे हुए था।

तेज–सब से पहिले यह तै कर लेना चाहिए कि अब हम लोगों का करना क्या है। (गोपालसिंह से) आप अपनी राय दीजिए।

गोपाल–राय और बहस में तो घटों बीत जायेंगे इसलिए यह काम भी आप ही की मर्जी पर छोड़ा जो कहिए वही किया जाए।

तेज–(कुछ सोच कर) अच्छा तो फिर आप कमलिनी और लाडिली को लेकर जमानिया जाइए और तिलिस्मी बाग में पहुच कर अपने को प्रकट कीजिए मैं समझता हू कि वहाँ आपका विपक्षी (खिलाफ) कोई भी न होगा।

गोपाल–आप खिलाफ कह रहे है। मेरे नौकरों को मुझसे मिलने की खुशी है अपने नौकरों में मैं अपने को प्रकट भी कर चुका हू !

तेज–(ताज्जुब से) यह कब ? मैं तो इसका हाल कुछ भी नहीं जानता !

गोपाल–इधर आपसे मुलाकात ही कब हुई जो आप जानते ? हा कमलिनी लाडिली भूतनाथ और देवीसिंह को मालूम है।

तेज– खैर कह तो जाइए कि क्या हुआ ?

गोपाल–बड़ा ही मजा हुआ। मैं आपसे खुलासा कह दूँ सुनिए। एक दिन रात के समय भूतनाथ को साथ लिए हुए गुप्त राह से तिलिस्मी बाग के उस दर्जे में पहुचा जिसमें मायारानी सो रही थी। हम दोनों नकाब डाले हुए थे। उस समय इसके सिवाय और कोइ काम न कर सके कि कुछ रुपये देकर एक मालिन को इस बात पर राजी करें कि कल रात के समय तू चुपके से चोर दर्वाजा खोल दीजियो क्योंकि कमलिनी इस बाग में आना चाहती है। यह काम इस मतलब से नही किया गया कि वास्तव में कमलिनी वहाँ जाने वाली थी बल्कि इस मतलब से था कि किसी तरह से कमलिनी के जाने की झूठी खबर मायारानी को मालूम हो जाय और वह कमलिनी को गिरफ्तार करने के लिए पहिले से तैयार रहे जिसके बदले में हम और भूतनाथ जाने वाले थे क्योंकि आगे जो कुछ मैं कहूँगा उससे मालूम होगा कि वह मालिन तो इस भेद को छिपाया चाहती थी और हम लोग हर तरह से प्रकट करके अपने को गिरफ्तार कराया चाहते थे। इसी सबब से दूसरे दिन आधी रात के समय हम दोनों फिर उस बाग मे उसी राह से पहुचे जिसका हाल मेरे सिवाय और कोई भी नही जानता–बाग ही में नहीं बल्कि उस कमरे में पहुचे जिसमें मायारानी अकेली सो रही थी। उस समय वहाँ केवल एक हांडी जल रही थी जिसे जाते ही मैने बुझा दिया और इसके बाद दर्वाजे मे ताला लगा दिया जो अपने साथ ले गया था यद्यपि दर्वाजे पर पहरा पड़ रहा था मगर मै दर्वाजे की राह नहीं गया था बल्कि एक सुरंग की राह से गया था जिसका सिरा उसी कोठरी में निकला था। उस कोठरी की दीवार आबनूस की लकड़ी की थी और इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि दीवार मे कोई दर्वाजा है। यह दर्वाजा केवल एक तख्ते के हट जाने से खुलता है और तख्ता एक कमानी के सहारे पर है। खैर ताला बन्द कर देने के बाद मैने जानबूझ कर एक शीशा जमीन पर गिरा दिया जिसकी आवाज से मायारानी चौंक उठी। अंधेरे के कारण सूरत तो दिखाई नहीं देती थी इसलिए मै नहीं कह सकता कि उसने क्या क्या किया मगर इसमें कोइ सन्देह नही कि वह बहुत ही घबराई होगी और वह घबराहट उसकी उस समय और भी बढ़ गई होगी जब दर्वाजे के पास पहुँच कर उसने देखा होगा कि वहा ताला बन्द है। मै पैर पटक पटककर कमरे में घूमने लगा। थोडी देर में टटोलता हुआ मायारानी के पास पहुच कर मैने उसकी कलाई पकड ली और जब वह चिल्लाई तो एक तमाचा जड़ के अलग हो गया। तब मैने एक चोर लालटेन जलाई जो मेरे पास थी। उस समय मायारानी डर और मार खाने के कारण बेहोश हो चुकी थी। मैने दर्वाजे का ताला खोल दिया और उसे उठा कर चारपाई पर लिटा देने के बाद वहाँ से चलता बना। यह कार्रवाई इसलिए की गई थी कि मायारानी घबड़ा कर बाहर निकले और उसकी लौंडियाँ इस घटना का पता लगाने के लिए चारों तरफ घूमें जिससे आगे हम लोग जो कुछ करेंगे उसकी खबर मायारानी को लग जाय। इसके बाद मै और भूतनाथ एक नियत स्थान पर उस मालिन से जाकर मिले और उससे बोले कि आज तो कमलिनी न आ सकी मगर कल आधी रात को जरूर आवेगी चोर दर्वाजा खुला रखियो। बेशक इस बात की खबर मायारानी को लग गई जैसा कि हम लोग चाहते थे क्योंकि दूसरे दिन जब हम लोग चोर दर्वाजे की राह बाग में पहुचे तो हम लोगों को गिरफ्तार करने के लिए कई आदमी मुस्तैद थे।

ऊपर लिखे हुए बयान से पाठक इतना तो जरूर समझ गये होंगे कि मायारानी के बाग में पहुचने वाले दोनों नकाबपोश जिनका हाल सन्तति के नौवें भाग के चौथे और सातवें बयान में लिखा गया है ये ही राजा गोपालसिह और भूतनाथ थे इसलिए उन दोनों ने और जो कुछ काम किया उसे इस जगह दोहरा कर लिखना हम इसलिए उचित नही समझते कि वह हाल पाठकगण पढ़ ही चुके हैं और उन्हे याद होगा। अस्तु यहा केवल इतना ही कह देना काफी है कि ये दोनों गोपालसिह और भूतनाथ थे और राजा गोपालसिह ने ही कोठरी के अन्दर बारी बारी से पाच पाँच आदमियों को बुलाकर अपनी सूरत दिखाई और कुछ थोड़ा सा हाल भी कहा था।

राजा गोपालसिह ने यह सब पूरा पूरा हाल तेजसिंह और भैरोसिंह से कहा और देर तक वे सुन सुन कर हँसते रहे। इसके बाद देवीसिंह और भूतनाथ ने भी अपनी कार्रवाई का हाल कहा और फिर इस विषय मे बातचीत होने लगी कि अब क्या करना चाहिए।

तेज–(गोपालसिह) अब आप खुले दिल से अपने महल में जाकर राज्य का काम कर सकते हैं इसलिए अब जो कुछ आपको करना है हुकूमत के साथ कीजिए। ईश्वर की कृपा से अब आपको किसी तरह की चिन्ता न रही इसलिए इधर उधर

गोपाल–यह आप नहीं कह सकते कि अब मुझे किसी तरह की चिन्ता नहीं मगर हाँ बहुत सी बातें जिनके सबब से मैं अपने महल में जाने से हिचकता था जाती रहीं इसलिए मेरी भी राय है कि कमलिनी और लाडिली को साथ लेकर मैं अपने घर जाऊँ और वहाँ से दोनों कुमारों को मदद पहुचाने का उद्योग करूँ जो इस समय तिलिस्म के अन्दर जा पहुचे

है क्योंकि यद्यपि तिलिस्म का फैसला उन दोनों के हाथों होना ब्रह्मा की लकीर सा हो रहा है तथापि मेरी मदद पहुंचने से उन्हें विशेष कष्ट न उठाना पड़ेगा। इसके साथ मैं यह भी चाहता हूं कि किशोरी और कामिनी को भी अपने तिलिस्मी बाग ही में बुलाकर रक्खू

कम–जी नहीं मैं तिलिस्मी बाग में तब तक नहीं जाऊंगी जब तक कम्बख्त मायारानी से अपना बदला न ले लूंगी और अपनी बहन को यदि वह अभी तक इस दुनिया में है न ढूंढ निकालूंगी। किशोरी और कामिनी का भी आपके यहाँ रहना उचित नहीं है इसे आप अच्छी तरह गौर करके सोच ले। उनकी तरफ से आप निश्चिन्त रहें तालाब वाले मकान में जो आज कल मेरे दखल में है उन्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं होगी। मैं हाथ जोड़ कर प्रार्थना करती हूं कि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करें और मुझे अपनी राय पर छोड़ दें।

गोपाल–(कुछ सोच कर) तुम्हारी बातों का बहुत सा हिस्सा सही और वाजिब है मगर बेइज्जती के साथ तुम्हारा इधर उधर मारे मारे फिरना मुझे पसन्द नहीं। यद्यपि तुम्हें ऐयारी का शौक है और तुम इस फन को अच्छी तरह जानती हो मगर मेरी और इसी के साथ किसी और की इज्जत पर भी ध्यान देना उचित है। यह बात मैं तुम्हारी गुप्त इच्छा को अच्छी तरह समझ कर कहता हूं। मैं तुम्हारी अभिलाषा में बाधक नहीं होता बल्कि उसे उत्तम और योग्य समझता हूं

कमलिनी–(कुछ शर्मा कर) उस दिन आप जो चाहें मुझे सजा दें जिस दिन किसी की जुबानी जो ऐयार या उन लोगों में से न हो जिनके सामने मैं हो सकती हूं, आप यह सुन पावें कि कमलिनी या लाडिली की सूरत किसी ने देखली या दोनों ने ऐसा कोई काम किया जो बेइज्जती या बदनामी से सबंध रखता है।

गोपाल–(तेजसिंह से) आपकी क्या राय है ?

तेज–मैं इस विषय में कुछ भी न बोलूंगा हां इतना अवश्य कहूंगा कि यदि आप कमलिनी की प्रार्थना स्वीकार कर लेंगे तो मैं अपने दो ऐयारों को इनकी हिफाजत के लिए छोड़ दूंगा।

गोपाल–जब आप ऐसा कहते हैं तो मुझे कमलिनी की बात माननी पड़ी और थोड़े से सिपाही इनकी मदद के लिए मैं भी मुकर्रर कर दूंगा।

कमलिनी–मुझे उससे ज्यादे आदमियों की जरूरत नहीं है जितने मेरे पास थे हाँ आप उन लोगों को एक चीठी मेरे जाने के बाद अवश्य लिख दें कि हम इस बात से खुश हैं कि तुम इतने दिनों से कमलिनी के साथ रहे और रहोगे। हां इसके साथ एक काम और भी चाहती हूं।

गोपाल–वह क्या ?

कमलिनी–जब मैंने अपना किस्सा आपसे बयान किया था तो यह भी कहा था कि मायारानी ने तिलिस्मी मकान के जरिए से कुमार और उनके ऐयारों के साथ ही साथ मेरे कई बहादुर सिपाहियों को गिरफ्तार कर लिया था।

गोपाल–हाँ मुझे याद है जिस मकान में बारी बारी हंस कर वे लोग कूद गये थे !

कमलिनी–जी हां सो कुमार और उनके ऐयार तो छूट गये मगर मेरे सिपाहियों का अभी तक पता नहीं है बेशक वे भी तिलिस्मी बाग में किसी ठिकाने कैद होंगे जिसका पता आप लगा सकते हैं। मुझे आज तक यह न मालूम हुआ कि उनके हँसने और कूद पड़ने का क्या कारण था। इस विषय में कुमार से भी कुछ पूछने का मौका न मिला।

गोपाल–मैं वादा करता हूं कि उन आदमियों का यदि वे मारे नहीं गए हैं तो अवश्य ढूंढ निकालूंगा और इसका कारण कि वे लोग हंसते हँसते उस मकान के अन्दर क्या कूद पड़े सो तुम इसी समय देवीसिंह से भी पूछ सकती हो जो यहां मौजूद हैं और उन हंसते हंसते कूद पड़ने वालों में शरीक थे।

देवीसिंह–माफ कीजिए मैं उस विषय में तब तक कुछ भी न कहूंगा जब तक इन्द्रजीतसिंह मेरे सामने मौजूद न होंगे क्योंकि उन्होंने उस बात को छिपाने के लिए मुझे सख्त ताकीद की है बल्कि कसम दे रक्खी है।

कमलिनी–यह और भी आश्चर्य की बात है खैर जाने दीजिए फिर देखा जायगा। हाँ आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार की ? लाडिली मेरे साथ रहेगी ?

गोपाल–हां स्वीकार की मगर देखो जो कुछ करना होशियारी से करना और मुझे बराबर खबर देती रहना।

तेज–मैं प्रतिज्ञानुसार अपने दो ऐयार तुम्हारे सुपुर्द करता हूं जिन्हें तुम चाहो अपनी मदद के लिए ले लो।

कमलिनी–अच्छा तो आप कृपाकर भूतनाथ और देवीसिंह को दे दीजिए।

तेजसिंह–भूतनाथ तो तुम्हारा ही ऐयार है उस पर अभी मेरा कोई अख्तियार नहीं है वह अवश्य तुम्हारे साथ रहेगा उसके अतिरिक्त दो ऐयार तुम और ले लो।

कमलिनी–निःसन्देह आपका बड़ा अनुग्रह मुझ पर है मगर मुझे विशेष ऐयारों की आवश्यकता नहीं है।

तेजसिंह–खैर यही सही फिर देखा जायगा। (देवीसिंह से) अच्छा तो तुम कमलिनी का काम करो और इनके

साथ रहा।

देवीसिंह–बहुत अच्छा।

तेजसिंह–खैर तो अब सभा विसर्जित होनी चाहिए, देखिए आसमान का रंग बदल गया। कमलिनी और लाडिली के लिए सवारी का क्या इन्तजाम होगा?

कमलिनी–थोडी दूर जाकर मैं रास्ते में इसका इन्तजाम कर लूँगी आप बेफिक्र रहिये।

थोड़ी सी और बातचीत के बाद सब कोई उठ खड़े हुए। कमलिनी लाडिली भूतनाथ तथा देवीसिंह ने दक्खिन का रास्ता पकड़ा और कुछ दूर जाने के बाद सूर्य भगवान की लालिमा दिखाई देने के पहिले ही एक जंगल में गायब हो गये।

चौथा बयान

रात पहर भर से ज्यादे हो चुकी है। आज की रात मामूली से ज्यादे अंधेरी मालूम होती है क्योंकि आबोताब से चमक कर पाँचों सवारों में गिनती कराने वाले तारों की थोड़ी रोशनी को दिन भर तेजी के साथ चले हुए हवा के झपेटों की सहायता से ऊपर की तरफ उठे हुए गर्द गुबार ने अपना गंदला शमियाना खैंच कर जमीन तक आने से रोक रक्खा है। दिन भर के काम काज से थके और आँधी के झोंको तथा गर्द गुब्बार से दुःखी आदमी इस समय सड़कों पर घूमना पसन्द न करके अपने अपने झोपड़ों मकानों और महलों में आराम कर रहे हैं इसलिए काशीपुरी के बाहरी प्रान्त की सड़कों पर कुछ विचित्र सा सन्नाटा छाया हुआ है। केवल एक आदमी शहर की हद पर बहने वाली वरना नदी पार करके त्रिलोचन महादेव की तरफ तेजी के साथ बढ़ा चला जाता है और उसे टोकने या देखने वाला कोई भी नहीं। यह आदमी आधी रात के पहिले ही मनोरमा के मकान के पास जा पहुंचा जिसमें इस समय केवल नागर रहती थी। यहाँ पहुंच वह सीधे फाटक की तरफ चला गया। देखा कि फाटक बन्द है मगर उसकी छोटी खिड़की अभी तक खुली हुई है और उस राह से झाँककर देखने से मालूम होता है कि भीतर की तरफ दो आदमी टहल टहल कर पहरा दे रहे हैं।

वह आदमी बेधड़क छोटी खिड़की की राह से भीतर घुस गया और दोनों पहरा देने वालों से बिना साहब सलामत किये या बिना कुछ कहे अपने जेब टटोलने लगा। एक पहरे वाले ने ताज्जुब में आकर उससे पूछा तुम कौन हो और क्या चाहते हो? इसके जवाब में आगन्तुक ने एक चीठी उसके हाथ पर रख कर कहा 'यह चीठी बहुत जल्द उसके हाथ में दो जो इस मकान में सबका सर्दार मौजूद हो।

सिपाही–पहिले तुम अपना नाम बताओ और यह कहो कि तुम किसके भेजे हुए आये हो इस चीठी का मतलब क्या है?

आगन्तुक–तुम अपनी बातों का जवाब मुझसे नहीं पा सकते और न इस चीठी के पहुंचाने में विलम्ब कर सकते हो ताज्जुब नहीं कि तुम सफाई के साथ यह कहो कि मकान मालिक इस समय आराम के साथ खर्राटे ले रहा है और हम उसे जगा नहीं सकते मगर याद रक्खो कि यह समय बड़ा ही नाजुक बीत रहा है और एक पल भी व्यर्थ जाने देने लायक नहीं है अगर तुम मुझसे कुछ पूछताछ करोगे तो मैं बिना कुछ जवाब दिये यहाँ से चला जाऊँगा और इसका नतीजा बहुत बुरा होगा क्योंकि सवेरा होने से पहिले इस मकान में रहने वाले जितने हैं सब के सब यमलोक को सिधार जायेंगे और सब कसूर तुम्हारा ही समझा जायगा। खैर मुझे इन बातों से क्या मतलब लो मैं जाता हूं।

सिपाही–सुनो सुनो लौट क्यों जाते हो मैं यह चीठी अभी अपने मालिक के पास पहुंचाए देता हूं मगर यह बताओ कि ऐसी कौन सी आफत आने वाली है और उसका क्या सबब है?

आगन्तुक–मैं पहिले ही कह चुका हूं कि तुम्हारी बातों का कुछ जवाब नहीं दिया जायेगा तुमने पुनः पूछने में जितना समय नष्ट किया समझ रक्खो कि उतने समय में दो आदमियों का बेड़ा पार हो गया। बस मैं फिर कहता हूं कि अभी चले जाओ मैं जो कुछ कहता हूं तुम लोगों के भले ही के लिए कहता हूं।

इस आये हुए आदमी की धमकी लिए हुए जल्दबाजी ने उस पहरेवाले को बल्कि और सिपाहियों को भी जो उस समय वहाँ मौजूद थे और उसकी बातें सुन रहे थे बदहवास कर दिया–फिर उससे कुछ पूछने की हिम्मत किसी की न पड़ी। वह सिपाही जिसके हाथ में चीठी दी गई थी कुछ सोचता विचारता बाग के अन्दर वाले मकान की तरफ रवाना हुआ और नजरों से गायब होकर आध घण्टे तक न आया। तब तक वह आदमी जो चीठी देने आया था फाटक ही में एक किनारे चुपचाप खड़ा रहा। सिपाहियों ने कुछ पूछना चाहा मगर उसने किसी की बात का जवाब न दिया और सिर नीचा किये इस ढंग से जमीन की तरफ देखता रहा जैसे बड़े गौर और फिक्र में कुछ विचार कर रहा हो।

आधे घण्टे बाद जब वह सिपाही लौट कर आया तो उसने आगन्तुक से कहा चलिए आपको नागरजी बुला रही हैं।

आगन्तुक–(ताज्जुब से) नागरजी! क्या इस समय इस मकान में वही मालिक की तौर पर है? मैं तो मायारानी से मिलने की आशा रखता था!

सिपाही–इस समय नागर जी के सिवाय यहाँ मालिक लोग नहीं है। क्या तुम्हारी चीठी इस लायक न थी कि नागरजी के हाथ में दी जाती? क्योंकि मैंने देखा कि चीठी पढ़ने के साथ ही फिक्र और तरद्दुद ने उसकी सूरत बदल दी।

आगन्तुक–नहीं कोई विशेष हानि नहीं है चैर चलो मैं चलता हूँ।

वह आगन्तुक सिपाही के पीछे पीछे उस मकान की तरफ रवाना हुआ जो इस बाग के बीचोबीच में था और क्यारियों में बीच बनी हुई प्यारी सड़कों पर घूमता हुआ मकान के पिछली तरफ जा पहुंचा। इस जगह मकान के दोनों तरफ दो कोठरियां थी दाहिनी तरफ वाली कोठरी तो बन्द थी मगर बायीं तरफ वाली कोठरी का दर्वाजा खुला हुआ था और भीतर चिराग जल रहा था। दोनों आदमी उस कोठरी के भीतर गये। वहां ऊपर की छत पर जाने के लिए सीढ़ियां बनी थीं उसी राह से दोनों ऊपर की छत पर चले गये और एक कमरे में पहुंचे जहां सिवाय सफेद फर्श के और कोई सामान जमीन पर न था। सामने की दीवार में दो जोड़ी दीवारगीरों की जिनमें मोटी मोटी मोमबत्तियाँ जल रही थीं और उनकी रोशनी से इस कमरे में अच्छी तरह उजाला हो रहा था इस कमरे में बायीं तरफ एक कोठरी थी जिसके दर्वाजे पर लाल साटन का पर्दा पड़ा हुआ था। वह आदमी उसी पर्दे की तरफ मुँह करके खड़ा हो गया क्योंकि इस कमरे में सिवाय इन दो आदमियों के और कोई भी न था।

इन दोनों आदमियों को बहुत थोड़ी देर तक वहां खड़े रहना पड़ा और इसी बीच में उस आदमी को जो चीठी लाया था मालूम हो गया कि पर्दे के अन्दर से किसी ने उसे अच्छी तरह देखा है। थोड़ी देर में पर्दे के अन्दर से दो लौंडियाँ चुस्त और साफ पोशाक पहिने हाथ में नंगी तलवार लिए बाहर निकलीं और इसके बाद उसी तरह की मगर बेशकीमत पोशाक पहिरे नागर भी पर्दे के बाहर आई। उसकी कमर में वही तिलिस्मी खंजर था और उंगली में उसके जोड़ की अंगूठी मौजूद थी। नागर ने उस आये हुए आदमी की तरफ देख के कहा– "तुम किसके भेजे हुए आए हो और तुम्हारा क्या नाम है? मुझे ख्याल आता है कि मैंने तुम्हें कहीं देखा है मगर याद नहीं पड़ता कि कब और कहाँ!

इस आदमी की उम्र लगभग चालीस या पैंतालिस वर्ष के होगी। इसका कद लम्बा और शरीर दुबला मगर गठीला रंग गोरा चेहरा खूबसूरत और रोबीला था। बड़ी बड़ी मूछ दोनों किनारों से ऐंठी और घूमी हुई थीं। आँखें बड़ी और इस समय कुछ लाल थीं। पोशाक यद्यपि बेशकीमत न थी मगर साफ और अच्छे ढंग की थी। चुस्त पायजामा घुटने के चार अंगुल नीचे तक का चपकन और उस पर से एक ढीला चोगा पहिरे और सिर पर भारी मुँडासा बांधे हुए था। सरसरी निगाह से देखने पर वह कोई छोटा या बदराब आदमी नहीं कहा जा सकता था।

नागर की बात सुनकर यह आदमी कुछ मुस्कुराया और बोला "केवल इतना ही नहीं आप अभी बहुत कुछ मुझसे पूछेंगी मगर मैं किसी के सामने आपकी बातों का जवाब नहीं दिया चाहता क्योंकि मैं एक नाजुक काम के लिए आया हूं। यदि किसी तरह का खौफ न हो तो (सिपाही और लौंडियों की तरफ इशारा करके) इनको हट जाने के लिए कहिये और फिर जो कुछ चाहे पूछिए मैं साफ जवाब दूंगा।

उस आदमी की बात सुन कर नागर ने अपने तिलिस्मी खंजर की तरफ देखा जो कमर से लटक रहा था मानों उसे उस खंजर पर बहुत भरोसा है और इसके बाद सिपाही तथा लौंडियों को वहाँ से हट जाने का इशारा करके बोली "नहीं नहीं मुझे तुमसे खौफ खाने का कोई सबब मालूम नहीं होता।

आदमी–(सिपाही और लौंडियों के हट जाने के बाद) हाँ अब जो कुछ आपको पूछना हो पूछिये मैं जवाब दूँगा।

नागर–मैं फिर पूछती हूं कि तुम किसके भेजे हुए आये हो और तुम्हारा नाम क्या है? मैंने तुम्हें कहीं न कहीं अवश्य देखा है।

आदमी–मेरा नाम श्यामलाल है और तुमने मुझे उस समय देखा होगा जब तुम्हारा नाम "मोतीजान" था और तुम बाजार में कोठे के ऊपर बैठ कर अपने कटाक्षों से सैकड़ों को घायल किया करती थी रंडियों के लिए यह मामूली बात है कि जब विशेष दौलत हो जाती है तब उन दोस्तों को भूल जाती है जिनसे किसी जमाने में थोड़ी रकम पाई हो चाहे वह उस समय कितना ही गाढ़ा मुलाकाती क्यों न रह चुका हो! मैं यह ताने के ढंग पर नहीं कहता बल्कि इस उम्मीद पर कहता हूं कि पुरानी मुलाकात को याद कर मुझे माफ करोगी क्योंकि इस समय तुम एक ऊँचे दर्जे पर हो।

नागर–(नाक भौं सिकोड़ कर जिससे मालूम होता था कि श्यामलाल की बातों से वह कुछ चिढ़ गई है) हां खैर मैंने तुम्हें पहिचाना अच्छा बताओ कि तुम क्या चाहते हो?

श्यामलाल–(मुस्कुरा कर) बस यही चाहता हूं कि मुझे बिदा करो और चुपचाप यहाँ से चले जाने दो।

नागर–नहीं नहीं मेरा यह मतलब नहीं मैं उस चीठी का भेद जानना चाहती हूं जो मेरे सिपाही के हाथ तुमने भेजी है

और जिसमें कवल इतना ही लिखा है कि लक्ष्मीदेवी के प्रकट हो जाने से अनर्थ हो गया अब मायारानी और उसके पक्षपातियों को एक दम भाग कर अपनी जान बचाना उचित है । (चीठी दिखा कर) देखो यही है न !

श्यामलाल—हॉ यही है मगर इसमें यह भी लिखा है कि नही तो बारह घटे के बाद फिर कुछ करते धरते न बन पडगा।

नागर—हॉ ठीक है यह भी लिखा है मगर यह बताओ कि लक्ष्मीदेवी कौन है और उसके प्रकट हा जाने से हमारा क्या नुकसान है ?

श्यामलाल—(ताज्जुब से नागर का मुह देख कर) क्या तुम लक्ष्मीदेवी वाला भेद नहीं जानती हो ? क्या यह भेद मायारानी ने तुमसे छिपा रक्खा ह ? खैर अगर यह बात है तो मैं भी इस भेद को खोलना उचित नहीं समझता। अच्छा यह तो बताओ मायारानी कहॉ है मै उससे कुछ कहा चाहता हू !

नागर—क्या मायारानी तुम्हारे सामने हो सकती है ? क्या तुम नहीं जानते कि उनका दर्जा कितना बडा है और उन्हें कोई गैर मर्द नहीं दख सकता !

श्यामलाल—मै सब कुछ जानता हू और यह भी जानता हू कि वह मुझसे पर्दा न करेगी।

नागर—शायद ऐसा ही हो, लेकिन इस समय वह किसी काम से गई है यहॉ नहीं है।

श्याम—अगर ऐसा ही है तो मै भी जाता हू और तुमसे कहे जाता हू कि जहा तक जल्द हो सके भाग कर अपनी जान बचाओ।

यह कह कर श्यामलाल पीछे की तरफ लौटा मगर नागर ने उसे रोक कर कहा सुनो तुम अभी कह चुके हो कि हमार पुराने दोस्त हा तो क्या तुम मुझ पर कृपा करके और पुरानी दोस्ती को याद करके लक्ष्मीदेवीवाला भेद मुझे नहीं वता सकते ? क्या तुम साफ साफ नहीं कह सकते कि हम लोगों पर क्या आफत आने वाली है ?

श्याम—बेशक मै तुम्हारी दोस्ती का एकरार कर चुका हू और अब भी यह कहता हू कि अभी तक तुम्हारी मोहब्बत ने मेरा साथ नही छोडा है मगर (कुछ सोच के) अच्छा ला मैं एक चीठी देता हू इसके पढने से तुम्हें सब हाल मालूम हो जायेगा मगर (काठरी के दर्वाजे पर पडे हुए परद की तरफ देख के) मुझे शक है कि इस परदे के अन्दर कोई लौडी छिप कर देखती न हा।

नागर—नहीं नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता लो मै तुम्हारा शक दूर किये देती हू।

यह कह कर नागर ने बढ कर वह पर्दा किनारे कर दिया और कोठरी का दर्वाजा बन्द कर लिया। श्यामलाल ने नागर की तरफ चीठी बढा कर कहा "देखो मैं निश्चय करके आया था कि यह चीठी सिवाय मायारानी के और किसी के हाथ में न दूगा क्योंकि उसे मै दिल से चाहता हू और उसी की खातिर इतना कष्ट उठा कर आया भी हू सच तो यह है कि वह भी मुझे जी जान स मानती और प्यार करती है।

नागर—अफसोस और ताज्जुब की बात यह है कि तुम मायारानी की शान मे ऐसी बात कह रहे हो !नि सन्देह तुम झूठे और दगाबाज हो मायारानी को क्या पडी है कि वह तुमसे मुहब्बत करें !क्या वह भी मेरी तरह से गन्धर्व कुल को रानक देन वाली है !

श्याम—(हस कर और चीठी वाला हाथ अपनी तरफ खींच कर) ह ह ह जब तुम असल बातों को जानती ही नहीं हो तो मेरी बातें क्योंकर समझ सकती हो ? तुम मायारानी की सखी कहलाने का दावा रखती हो मगर मैं दखता हू कि मायारानी तुम्हें एक लौंडी के बराबर भी नहीं समझती यही सबब है कि उसने अपना असली हाल तुमस कुछ भी नहीं कहा। अफसोस तुम्हें इतनी खबर भी नहीं है कि मायारानी मेरी सगी साली है।

नागर—(चौंक कर) मायारानी तुम्हारी साली है !- और लक्ष्मीदेवी ?

श्यामलाल—लक्ष्मीदेवी वह है जिसकी जगह मायारानी मेरी और दारोगा की मदद मगर नहीं, ओफ मैं भूलता हू जब मायारानी ने खुद अपना हाल तुमस छिपाया तो मैं क्यों कहू ? अच्छा मायारानी आवे तो कह देना कि श्यामलाल आया था और कह गया है कि मैंने लक्ष्मीदेवी और गोपालसिह का बन्दोबस्त कर लिया है अब तू बेफिक्र हो के बैठ और जहॉ तक जल्द हो सके मुझसे मिल। लेकिन अफसास तो यह है कि इस मकान में रहने वाले आज गिरफ्तार कर लिए जायेंगे और मायारानी को यहॉ आने का मौका ही न मिलेगा। तब मै यह सब बातें तुमसे क्यों कह रहा हूँ !अच्छा खैर जाने दो जहॉ तक जल्द हो भाग कर तुम अपनी जान बचाओ और जो कुछ दौलत यहॉ से निकाल कर ले जा सको लेती जाओ लो अब मै जाता हू।

नागर—सुना सुनो वह चीठी जा तुम मुझे दिखाया चाहते थे सो तो दिखा दो और इसके बाद मेरी एक बात का जवाब द के तब जाआ।

श्यामलाल–(कुछ सोच कर और नागर की तरफ चीठी बढा कर) खैर ला तुम ही पढ लो देखा ता सही अपनी साली की खातिर से कैसे खुशबूदार अतरों से बसी हुई चीठी तैयार करके मै लाया था अच्छा कोई हर्ज नहीं किसी जमाने म तुम भी मुझे खुश कर चुकी हा। इसक पढने से आन वाली आफत का पूरा पूरा हाल मिल जायगा। मै यह चीठी इसलिए लिख लाया था कि शायद किसी सबब से मै स्वय मायारानी रा मिल न सकूगा तो यह चीठी भेज कर उसे आने वाली आफत स होशियार कर दूगा और फिर वह स्वय मुझसे मिल लगी मगर अफसोस उससे तो मुलाकात ही न हुई। खैर इस चीठी कोपढो मगर वैठ जाओ और मुझे भी वैठने के लिए कहो क्योंकि मै खडा खडा थक गया हू।

नागर ने अपन हाथ में चीठी लेकर श्यामलाल को वैठने के लिए कहा और तव खुद भी उसी जगह बैठ कर लिफाफा खाला। लिफाफे और चीठी का कागज खुशबूदार चीजों से ऐस वसा हुआ था कि लिफाफा हाथ में लेने और खोलन के साथ ही नागर का जी खुश हा गया। ऐसी मीठी और भली खुशवू उसके दिमाग में शायद आज तक न पहुची हागी। चीठी पढने के पहिले ही उसने कई दफे उसे सूघा और आँखें वन्द करके 'वाह वाह कहने लगी। मगर उस खुशबू का काम कवल इतना ही न था कि दिल और दिमाग को खुश करे बल्कि उसमें मजेदार और आनन्द देने वाली वेहोशी पैदा करन का भी गुण था इसलिए चीठी पढन के पहिले ही नागर के दिमाग की ताकत जिसे चैतन्यता और विचार-शक्ति से सम्बन्ध है विल्कुल जाती रही और वह वेहोश होकर दीवार साथ उठग गई उसकी हालत देख कर श्यामलाल आगे वढा और पास जाकर बिना कुछ साच विचारे उसकी उँगली से वह अँगूठी निकाल ली जो तिलिस्मी खजर के जाड की और मामूली तौर की विल्कुल सादी थी। अगूठी लेकर श्यामलाल ने मुह म रख ली और उसी रग की दूसरी अगूठी अपने जेब से निकाल कर नागर की उगली में पहिरा दी। इसके वाद अपनी कमर से एक खजर निकाला जा चपकन आर अबा के अन्दर छिपा हुआ था।यह खजर नागर की कमर में खोंसा और उसकी कमर से तिलिस्मी खजर लेकर अपनी कमर मे चपकन के अन्दर छिपा लिया। श्यामलाल ये दोनों चीजें नि सन्देह इसी काम के लिए तैयार करक ल आया था क्योंकि वह खजर और अगूठी ठीक तिलिस्मी खजर और अगृठी के रग के ही थे बहुत गौर करने पर भी किसी तरह का शक नहीं हो सकता था।

खजर और अगूठी बदल लने के वाद श्यामलाल न वह खुशबूदार चीठी भी नागर क हाथ स ले ली और उसक वदले में उसी तरह की दूसरी चीठी उसके हाथ में रख दी। इस चीठी में से भी उसी तरह की खुशवू आ रही थी फर्क सिर्फ इतना ही था कि उसकी खूशबू बेहोशीपैदा करने वाली थी और इसकी खुशबू बेहोशी दूर करने की ताकत रखती थी अथात लखलख का काम देती थी।

इस काम स छुट्टी पाकर श्यामलाल पीछे हटा और अपने ठिकाने वैठ कर नागर के चैतन्य होने की राह देखन लगा। थोडी ही देर में नागर चैतन्य हो गई और आँख खोल कर श्यामलाल की तरफ देख और उस चीठी को पुन सूँघ कर वोली वशक खुशवू वहुत ही अच्छी और प्रिय मालूम होती है, मगर मुझे क्या हो गया था! क्या मैं बेहाश हो गई थी ?

श्यामलाल–(हँस कर) वाह क्या खूब। कवल एक दफे आँख वन्द करके खोल देने का ही अर्थ अगर वेहोशी है तो वस हो चुका क्योंकि मेरी समझ में तुमने चार पल से ज्यादे देर तक आँख बन्द नही की सो भी इस खुशवू से पैदा हुई मस्ती क सवव था।

नागर–(मुस्कुरा कर) अगर तुम मायारानी के बहनोई न होत तो मैं कुछ कह बैठती क्योंकि ऐसे समय में जब कि जान वचाने की फिक्र पड रही है जैसा कि तुम स्वय कह रहे हो तो इस तरह की दिल्लगी अच्छी नहीं मालूम पडती। अच्छा अव मै इस चीठी को पढ कर देखती हू कि तुमने क्या लिखा है। (चीठी को पढ कर) वाह वाह इसका मतलव तो मेरी समझ म कुछ भी नहीं आता मालूम होता है कि बहुत सी पहेलियाँ लिख कर रक्खी हुई है।

श्यामलाल–बस बस अब मुझे और भी निश्चय हो गया कि मायारानी तुम लोगों से केवल मुँहदेखी मुहब्बत रखती है क्योंकि अगर वह तुम लोगों की कदर करती तो अपना भेद जरूर कहती और अपना भेद कहती तो इस चीठी का मतलव भी तुम जरूर समझ जातीं–मगर उसने अदना से अदना भेद भी छिपा रक्खा जिसके वताने में कोई हानि न थी।

नागर–ठीक है मुझे भी यही विश्वास होता है। मगर जब मुझ पर दया करके यह कह रहे हो कि जल्दी यहा से भाग कर अपनीजान बचाओ तो कृपा कर इसका सवव भी वता दो क्योंकि मुझे कुछ भी नहीं सूझता कि मै भाग कर कहा जाऊ और इस जायदाद के बचाने का क्या उद्योग करूँ ?

श्याम–इसका जवाब मै कुछ नहीं दे सकता क्योंकि मै अगर तुम्हें कोई तर्कीब बताऊँ या अपने साथ चलने के लिए कहूगा ता तुम्हें मुझ पर अविश्वास होगा क्योंकि तुम वहुत दिनों के बाद मुझे आज देख रही हो सो भी ऐसे समय में जब तुम्हारा दिल राजकीय विषयों की उलझन में हद से ज्यादे उलझा हुआ है परन्तु इतना कह दने में मेरी कोई भी हानि नहीं

है कि राजा गोपालसिंह के लिखे बमूजिब काशिराज इस मकान को अपने कबजे में कर लेने के बाद यहाँ के रहने वालों को कैद कर लेंगे। गोपालसिंह ने सुना था कि मायारानी इस मकान में टिकी हुई है इसलिए यह कारवाई और भी जोर के साथ की गई, मगर इतनी खैरियत है कि अभी तक वह आदमी इस शहर में नहीं पहुचा जिसे राजा गोपालसिंह ने चीठी देकर काशिराज के पास भेजा है हाँ आशा है कि सवेरा होते होते वह शहर में आ पहुचेगा (कुछ सोच कर) क्या करें आज तुम्हे देख कर तुम्हारी मुहब्बत फिर से नई हो गई। खैर अगर तुम चाहोगी तो मै तुम्हारी कुछ मदद इस समय भी कर सकूगा।

नागर–अगर इस समय तुम मेरी सहायता करोगे तो मै जन्म भर तुम्हारा अहसान न भूलूगी। मै कसम खाकर कहती हू कि मैं तुम्हारी हो जाऊँगी और जो कुछ तुम कहोगे करूँगी।

श्यामलाल–अच्छा तो अब मै बयान करता हू कि इस समय तुम्हारी क्या मदद कर सकता हू सुनो और अच्छी तरह ध्यान देकर सुनो। मै उस आदमी को अच्छी तरह पहिचानता हू जो गोपलसिंह की चीठी लेकर काशिराज के पास आ रहा है मुझसे उसकी बहुत दिनों की जान पहिचान है। मैं उम्मीद करता हू कि सवेरा होते ही वह आदमी बरना के किनारे आ पहुँचेगा। यदि वह किसी तरह गिरफ्तार कर लिया जाय तो बेशक कई दिनो तक तुम्हें सोचने विचारने का मौका मिलेगा क्योंकि राजा गोपालसिंह कई दिनों तक बैठे राह देखेंगे कि हमारा आदमी पत्र का जवाब लेकर अब आता होगा।

नागर–बात तो बहुत अच्छी है। क्या तुम उसे गिरफ्तार नहीं कर सकते ?

श्यामलाल–(हस कर) वाह वाह वाह कहते शर्म तो नहीं आती! हाँ इतना कर सकता हू कि तुम थोड़े से सिपाही अपने साथ लेकर इस समय मेरे साथ चलो और शहर के बाहर होकर रास्ता रोक के बैठो जब वह आदमी आवेगा तो मै इशारे से बता दूगी कि यही है फिर जो तुम्हारे जी में आवे करना मगर मै उसका सामना न करूँगा क्योंकि अभी कह चुका हू कि मेरी उसकी जान पहिचान बहुत पुरानी है।

नागर–जब तुम पर कृपा कोल इतना काम कर सकते हो तो मेरे जाने की क्या जरूरत है ? मै थोडी से सिपाही तुम्हारे साथ कर देती हू समय पडने पर तुम

श्याम–बस बस बस अब मत बोलो मैं समझ गया कि तुम्हारी नीयत साफ नहीं है। मै खुदगर्जो का साथ देना उचित नहीं समझता केवल तुम्हारे ही बारे में नहीं बल्कि मायारानी के बारे में भी जो मेरी साली होती है मेरा यही ख्याल है कि वह परले सिरे की खुदगर्ज है, दूसरे को फँसा कर अपना काम निकालना और आप अलग रहना खूब जानती है मगर मै क्या करूँ अपनी स्त्री से लाचार हू जो मुझसे भी ज्यादे मायारानी के साथ मुहब्बत रखती है और मैं उसे जान से ज्यादे चाहता हू।

श्यामलाल की बातचीत कुछ अजब ढग की थी जिसमे हर जगह से सचाई की बू पाई जाती थी। बात करने के समय वह अपने चेहरे के उतार चढाव को ऐसा दुरुस्त करता था कि होशियार से होशियार आदमी को भी उस पर किसी तरह का शक नहीं हो सकता था। नागर को उसकी बातों पर पूरा विश्वास होगया और वह इस उम्मीद पर कि राजा गोपालसिंह के भेजे हुए आदमी को अवश्य गिरफ्तार कर लेगी अपने साथ केवल थोडे सिपाहियों को लेकर जाने के लिए तैयार हो गई। इसके बाद उसने अपनी कमर से लटकते हुए तिलिस्मी खंजर पर पुन गम्भीर निगाह डाली मानों अपने सिपाहियो से ज्यादे उस खंजर पर भरोसा रखती है मगर उसे इस बात का गुमान भी न था कि वह खंजर बडी खूबी के साथ बदल दिया गया है।

नागर ने अपनी समझ में श्यामलाल को बहुत कुछ कह सुन कर मदद के लिए राजी किया और आप उसके साथ जाने के लिए तैयार होगई। उसने श्यामलाल से आधी घडी की छुट्टी ली और उस कोठरी के अन्दर चली गई जिसके दर्वाजे पर पर्दा पडा हुआ था। आधी घडी के बाद वह बाहर आई और श्यामलाल से बोली अब मैं हर तरह से तैयार हो गई आप चलिए। इस समय भी नागर उसी पोशाक में थी जिसमें घडी भर पहिले देखी गई थी, फर्क इतना ही था कि एक चादर उसके हाथ में थी जिसे फाटक के बाहर आते ही अपने को सिर से पैर तक ढाँक लेने की नीयत से वह अपने साथ लाई थी।

श्यामलाल को साथ लिए हुए नागर नीचे उतरी और चक्कर खाती हुई सदर फाटक के पास पहुची। यहाँ उसने स्याह चादर में अपने को छिपा लिया और फाटक के बाहर रवाना हुई। श्यामलाल ने इस समय मामूली पहरा देने वाले सिपाहियों के अतिरिक्त आठ सिपाही हर्बो से दुरुस्त वहाँ मौजूद पाये जो फाटक के बाहर होते ही नागर और श्यामलाल के पीछे पीछे रवाना हुए नागर को इसके लिए कुछ कहने की जरूरत न पड़ी जिससे श्यामलाल समझ गया कि आधी घडी में नागर ने यह इन्तजाम किया है।

ये दसों आदमी गगा के किनारे उतरे और वहा से तेजी के साथ काशी के छोर पर बहने वाली बरना नदी की तरफ रवाना होकर आधे घण्टे से कुछ ज्यादा देर में वहाँ जा पहुचे। इस समय आधी रात से ज्यादे जा चुकी और चन्द्रदेव

उदय हो रहे थे। बरना नदी पार करने के लिए नदी से बीस गज ऊंचा एक मजबूत पुल बना हुआ था। इस पुल के दोनों बगल मुसाफिरों के आराम क लिए बारह दालान बने हुए थे और उसी जगह से पुल के नीचे उतरने के लिए छोटी छोटी सीढ़ियाँ भी बनी हुई थीं। ये दसों आदमी जब उस पुल पर पहुँचे तो नागर ने श्यामलाल से पूछा, 'कहिये इसी पार ठहरने का इरादा ह या उस पार चल कर ? जिसके जवाब में श्यामलाल ने कहा बिना उस पार गये ठीक न होगा।

अब ये लोग पुल के उस पार रवाना हुए मगर आधी दूर से ज्यादे न गये होंगे कि सामने से आते हुए दो घोड़ों की आहट मिलन लगी जिसे सुनते ही श्यामलाल ने कहा 'लीजिए हम लागों को ज्यादे ठहरना न पडा।नि सन्देह ये वे ही सवार हैं जिन्हें हम लोग गिरफ्तार किया चाहते हैं। बस अब जल्दी करना चाहिए,कहीं ऐसा न हो कि वे लोग तेजी क साथ निकल जायें क्योंकि वे घोडों पर सवार हैं और हम लोग पैदल।

नागर ने अपनी कमर से खजर निकाल लिया जिसे वह तिलिस्मी समझे हुए थी और इसके बाद अपने आदमिया की तरफ देख क बोली 'देखो ये सवार जाने न पावें इन्हीं को गिरफ्तार करने के लिए हम लोग आये हैं !

बात की बात में वे दोनों सवार पास आ गये। नागर के सिपाही म्यान से तलवार निकाल कर खडे हो गए और ललकार कर बोले खबरदार, आगे मत बढना ! मगर इतने में ही मालूम हुआ कि पीछे की तरफ से भी कई आदमी दौडे आ रहे हैं। उस समय नागर घबडा गई और उसे निश्चय हो गया कि अब यहाँ से बच कर निकल जाना मुश्किल है क्योंकि हम लोग दोनों तरफ स घिर गये हाँ तिलिस्मी खजर की बदौलत अलबत्ते बच सकते हैं। नागर ने तिलिस्मी खजर का (जो वास्तव में असली न था) कब्जा दबाया मगर किसी तरह की चमक पैदा न हुई। उसने फिर कर श्यामलाल की तरफ देखा मगर उसे कहीं न पाया। अब उसके ताज्जुब की हद्द न रही और घबराहट के मारे वह ऐसा बौखला गई कि थोडी देर तक तनोबदन की भी सुध जाती रही। इस बीच में वे आदमी भी जो पीछे से आ रहे थे आ पहुचे और नागर के सिपाहियों पर टूट पडे। वे लोग भी गिनती में उतने ही थे जितने नागर के सिपाही थे मगर नागर के सिपाही इतने दिलावर और मजबूत न थ कि उन आठों के मुकाबले में ठहर सकते। नागर डर के मारे चिल्ला कर एक किनारे हट गई और भागना चाहती थी मगर मौका न मिला। वे दानों सवार नागर की आवाज़ सुन कर पहिचान गये कि वह औरत है। एक न घोडे से उतर कर उसे गोद में उठा लिया और उसके हाथ से खजर छीन कर उसे दूसरे सवार के आगे बैठा दिया। इसके बाद खुद भी अपने घोडे पर सवार होकर उसने ऊँची आवाज में न मालूम किससे पूछा– 'यहाँ केवल एक नागर ही औरत है या और भी कोई औरत है ? इसके जवाब में किसी ने कुछ दूर से पुकार कर कहा अगर कोइ औरत हाथ आ गई तो ले भागो और समझो कि यही नागर है। इस जवाब को नागर ने भी सुना और पहिचान गई कि यह श्यामलाल की आवाज है। अपने सवाल का जवाब पाते ही वे सवार उत्तर की तरफ रवाना हो गये।

इस समय चन्द्रदेव पूरी तरह से निकल कर अपनी सुफेद चाँदनी चारों तरफ फैला रहे थे। नागर के सिपाहियों को जब मालूम हुआ कि नागर गिरफ्तार कर ली गई तो उनकी ताकत और भी जाती रही। दो सिपाही तो जख्मी होकर जमीन पर गिर पड और बाकी छ अपनी जान लेकर भागे। उस समय श्यामलाल भी आकर उन आठों बहादुरों के पास खडा हो गया और उन लोगों की तरफ देख के बोला 'शाबाश तुम लोगों ने अपना काम बडी खूबी के साथ पूरा किया मैं बहुत खुश हू, अब बताओ मेरे लिए घोडा कहाँ है ?

श्यामलाल को देखते ही उन लोगों ने हाथ जोड कर सिर झुकाया और एक यह कह कर उत्तर की तरफ बढा कि 'ठहरिये मैं घोडा लेकर अभी आता हू। थोडी देर तक सन्नाटा रहा और जब वह आदमी घोडा लकर आ गया तो श्यामलाल घोडे पर सवार हो गया तथा उन आठों स बोला अच्छा अब तुम लोग रमापुर जाओ मैं अपना काम करके तुमसे मिलूँगा।

श्यामलाल भी उत्तर की तरफ रवाना हुआ और पुल के पार होकर उसने अपने घोडे को तेज किया। जब लगभग एक कोस के चला गया तो देखा कि वे दोनों सवार जो नागर को उठा लाये थे सड़क पर खडे हैं। उन लोगों को देख कर श्यामलाल ने कहा 'शाबाश मेरे दोस्तों तुम लोगों की जितनी तारीफ की जाय थोडी है अच्छा अब यहाँ ठहरने का मौका नहीं है चल चलो।

पांचवां बयान

अब हम अपने पाठकों को उस तिलिस्मी मकान की तरफ ले चलते हे जो कमलिनी के अधिकार में है अर्थात् वह तालाब के बीचोबीच वाला मकान जिसमें कुछ दिन तक कुअर इन्द्रजीतसिंह को कमलिनी के वश में पड रहना पडता था।

आजकल इस मकान में कमलिनी की प्यारी सखी तारा रहती है। नौकर मजदूरनी प्यादे सिपाही सब उसी के आधीन हैं क्योंकि वे लोग इस बात को बखूबी जानते हैं कि कमलिनी तारा को अपनी सगी बहिन से बढ़ कर मानती है और तारा के कहे को टालना कदापि पसन्द नहीं करती। कमलिनी के कहे अनुसार तारा कुछ दिनों तक कमलिनी ही की सूरत बन कर उस मकान में रही और इस बीच में वहां के नौकर चाकरों को इसका गुमान भी न हुआ कि कमलिनी कहीं बाहर गई है और यह तारा है बल्कि उन लोगों का यही विश्वास था कि तारा को कमलिनी ने किसी काम के लिए भेजा है, मगर उस दिन से जब से कमलिनी ने मनोरमा को गिरफ्तार किया था और अपने तिलिस्मी मकान में भिजवा दिया था तारा अपनी असली सूरत में ही रहती है और समय समय पर कमलिनी के हाल चाल की खबर भी उसे मिला करती है।

देवीसिंह और भूतनाथ को साथ लिए हुए राजा गोपालसिंह ने जब किशोरी और कामिनी को कैद से छुड़ाया था तो उन दोनों को भी कमलिनी की इच्छानुसार इसी तिलिस्मी मकान में पहुंचा दिया था। पहुंचाने के समय देवीसिंह और भूतनाथ को साथ लिए हुए स्वयं राजा गोपालसिंह किशोरी तथा कामिनी के संग आये थे। उस समय का थोड़ा सा हाल यहां लिखना उचित जान पड़ता है।

किशोरी और कामिनी को लिए हुए जब राजा गोपालसिंह उस मकान के पास पहुंचे तो खबर करने के लिए भूतनाथ को तारा के पास भेजा। उस समय तारा किसी काम के लिए तालाब के बाहर आई हुई थी जब उसकी भूतनाथ से मुलाकात हुई। भूतनाथ को देख कर तारा खुश हुई और उससे कमलिनी का समाचार पूछा जिसके जवाब में भूतनाथ ने उस दिन से जिस दिन कमलिनी तारा से आखिरी मर्तबे जुदा हुई थी आज तक का हाल कह सुनाया जिसमें राजा गोपालसिंह का भी हाल था और अन्त में यह भी कहा कि किशोरी और कामिनी को कैद से छुड़ा कर कमलिनी की इच्छानुसार उन दोनों को यहां पहुंचा देने के लिए स्वयं राजा गोपालसिंह आये हैं थोड़ी ही दूर पर हैं, और तुमसे मिलना चाहते हैं।

तारा को इसका गुमान भी न था कि राजा गोपालसिंह अभी तक जीते हैं या मायारानी के कैदखाने में हैं। आज भूतनाथ की जुबानी यह हाल सुन कर खुशी के मारे तारा की अजब हालत हो गई। भूतनाथ ने उसके चेहरे की तरफ देख कर गौर किया तो मालूम हुआ कि राजा गोपालसिंह के छूटने की खुशी बनिस्बत कमलिनी के तारा को बहुत ज्यादा हुई बल्कि वह सोचने लगा कि ताज्जुब नहीं कि खुशी के मारे तारा की जान निकल जाय और वास्तव में यही बात थी भी तारा के खूबसूरत भोले चेहरे पर हंसी तो साफ दिखाई दे रही थी मगर साथ ही हंसी से गला फंस जाने के कारण उसकी आवाज रुक सी गई थी वह भूतनाथ से कुछ कहना चाहती थी मगर कह नहीं सकती थी। आंखों से आंसुओं की बूंदें गिर रही थीं और बदन में पल पल भर में हलकी कपकंपी हो रही थी।

जब भूतनाथ ने तारा की यह हालत देखी तो उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ मगर यह बात कर उसने अपने ताज्जुब को दूर किया कि अक्सर ऐसा भी हुआ करता है कि अगर घर के स्वामी पर आई हुई कोई बला टल जाती है तो बनिस्बत सगे रिश्तेदारों के तावेदारों को विशेष खुशी होती है। मगर इतना सोचने पर भी भूतनाथ की यह इच्छा हुई कि तारा की इस बढ़ी हुई खुशी को किसी तरह कम कर देना चाहिए नहीं तो ताज्जुब नहीं कि इसे किसी तरह का शारीरिक कष्ट उठाना पड़े। इसी विचार से भूतनाथ ने तारा की तरफ देख के कहा—

भूतनाथ—राजा गोपालसिंह छूट गये सही मगर अभी उनकी जिन्दगी का भरोसा न करना चाहिये।

तारा—(चौंक कर) सो क्या सो क्या ?

भूत—यह बात मैं इस विचार से कहता हूं कि मायारानी कुछ न कुछ फसाद जरूर मचावेगी और इसके अतिरिक्त तमाम रिआया को राजा गोपालसिंह के मरने का विश्वास हो चुका है जिसे कई वर्ष बीत चुके हैं अब देखना चाहिए उन लोगों के दिल में क्या बात पैदा होती है। खैर जो होगा देखा जाएगा अब तुम विलम्ब न करो वे राह देख रहे होंगे।

भूतनाथ की बातों का जवाब देने का तारा को मौका न मिला और वह बिना कुछ कहे भूतनाथ के साथ रवाना हुई। राजा गोपालसिंह बहुत दूर न थे इसलिए आधी घड़ी से कम ही देर में तारा वहां पहुंच गई और उसने अपनी आंखों से गोपालसिंह किशोरी कामिनी और देवीसिंह को देखा। तारा के दिल में खुशी का दरिया जोश के साथ लहरें ले रहा था। निःसन्देह उसके दिल में इतनी ज्यादे खुशी थी कि उसके समाने की जगह अन्दर न थी और बहुतायत के कारण रोमांच द्वारा तारा के एक एक रोंगटे से खुशी बाहर हो रही थी। तारा के दिल में तरह तरह के ख्याल पैदा हो रहे थे और वह अपने को बहुत सम्हाल रही थी। तिस पर भी राजा गोपालसिंह के पास पहुंचते ही वह उनके कदमों पर गिर पड़ी।

गोपाल—(तारा को जल्दी से उठा कर) तारा मैं जानता हूं कि तुम्हें मेरे छूटने की हद से ज्यादे खुशी हुई है मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं खास कर इस सबब से कि तुमने कमलिनी का साथ बड़ी नेकनीयती और मुहब्बत के साथ दिया और कमलिनी के ही सबब से मेरी जान बची नहीं तो मैं मर ही चुका था बल्कि यों कहना चाहिए कि मुझे मरे हुए पांच वर्ष बीत

चुके थे। (लम्बी साँस लेकर) ईश्वर की भी विचित्र माया है। अच्छा अब जो मैं कहता हूँ उसे सुनो क्योंकि मैं यहाँ ज्यादे देर तक नहीं ठहर सकता।

तारा–(ताज्जुब के साथ) तो क्या आप अभी यहाँ से चले जायगे। मकान में न चलेंगे?

गोपाल–नहीं मुझे इतना समय नहीं मैं बहुत जल्द कुँअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह और कमलिनी के पास पहुँचा चाहता हूँ।

तारा–क्या वे लोग अभी निश्चिन्त नहीं हुए?

गोपाल–हुए मगर वैसे नहीं जैसे होना चाहिए।

गोपालसिंह की बात सुन कर तारा गौर में पड़ गई और देर तक कुछ सोचती रही। इसके बाद उसने सिर उठाया और कहा अच्छा कहिये क्या आज्ञा होती है? (किशोरी और कामिनी की तरफ इशारा करके) इनके छूटने की मुझे बहुत खुशी हुई इनके लिए मुद्दत तक मुझे रोहतासगढ़ में छिप कर रहना पड़ा था अब तो कुछ दिन तक यहाँ रहेंगी न।

गोपाल–हाँ बेशक रहेंगी इन्हीं दोनों को पहुँचाने के लिए मैं आया हूँ। इन दोनों को मैं तुम्हारे हवाले करता हूँ और ताकीद के साथ कहता हूँ कि कमलिनी के लौट आने तक इन्हें बड़ी खातिर के साथ रखना देखो किसी तरह की तकलीफ न होने पावे आशा है कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह और कमलिनी को साथ लिए हुए मैं बहुत जल्दी यहाँ आऊँगा।

तारा–मैं इन दोनों को अपनी जान से ज्यादे मानूँगी क्या मजाल कि मेरी जान रहते इन्हें किसी तरह की तकलीफ हो।

गोपाल–बस यही चाहिए हाँ एक बात और कहना है!

तारा–वह क्या?

गोपाल–मेरा हाल अभी तुम किसी से न कहना क्योंकि अभी मैं गुप्त रह कर कई काम किया चाहता हूँ, इसी सबब से मैं तुम्हारे मकान में न आया तुम्हें यहाँ बुलाकर जो कुछ कहना था कहा।

तारा–बहुत अच्छा जैसा आपने कहा है वैसा ही होगा।

गोपाल–अच्छा तो हम लोग जाते हैं।

किशोरी और कामिनी को तारा उस तिलिस्मी मकान में लिवा लाई भूतनाथ और देवीसिंह पहुँचाने के लिए साथ आये और फिर चले गये।

तारा ने किशोरी और कामिनी को बड़ी इज्जत और खातिरदारी के साथ रक्खा। उन बेचारियों को अपनी जिन्दगी में तरह तरह की तकलीफें उठानी पड़ीं इसलिए बहुत दुबली दुःखी और कमजोर हो रही थीं। तरह तरह की चिन्ताओं ने उन्हें अधमूआ कर डाला था। अब मुद्दत के बाद यह दिन नसीब हुआ कि वे दोनों बेफिक्री के साथ अपनी हालत पर गौर करें और तारा को उसके मोहब्बतआमेज बर्ताव पर धन्यवाद दें।

किशोरी पर कामिनी का और कामिनी पर किशोरी का बड़ा ही स्नेह था इस समय दोनों एक साथ हैं और यह भी सुन चुकी हैं कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह मायारानी की कैद से छूट गए और अब कुशलपूर्वक हैं इसलिए एक प्रकार की प्रसन्नता ने उनकी जिन्दगी की मुर्झाई हुई लता पर आशा रूपी पानी के दो चार छींटे डाल दिए थे और अब उन्हें ईश्वर की कृपा पर बहुत कुछ भरोसा हो चला था परन्तु यह जानने के लिए दोनों ही का जी बेचैन हो रहा था कि मायारानी को हम लोगों से इतनी दुश्मनी क्यों है और वह स्वयं कौन है क्योंकि कैद के बाद देवीसिंह से यह बात पूछ न सकी थी और न इसका मौका ही मिला था।

उस तिलिस्मी मकान में दो दिन और रात आराम से रहने के बाद तीसरे दिन सन्ध्या के समय जब किशोरी और कामिनी को मकान की छत पर ले जाकर तारा दिलासा और तसल्ली देने के साथ ही साथ चारों तरफ की छटा दिखा रही थी किशोरी को मायारानी का हाल पूछने का मौका मिला और इस बात की भी उम्मीद हुई कि तारा सब बात अवश्य सच सच कह देगी अस्तु किशोरी ने तारा की तरफ देखा और कहा–

किशोरी–बहिन तारा निःसन्देह तुमने हमारी बड़ी खातिर और इज्जत की तुम्हारी बदौलत हम लोग यहाँ बड़े चैन और आराम से हैं जिसकी अपनी भूडी किस्मत से कदापि आशा न थी और ईश्वर की कृपा से कुछ कुछ यह भी आशा हो गई है कि हम लोगों के दिन अब शीघ्र ही फिरेंगे। इस समय मेरे दिल में बहुत सी बातें ऐसी हैं जिनका असल भेद मालूम न होने के कारण जी बेचैन हो रहा है अगर तुम बताओ तो

तारा–वे कौन सी बातें हैं कहिए जो कुछ मैं जानती हूँ अवश्य बताऊँगी।

किशोरी–पहिले यह बताओ कि मायारानी कौन है और हम लोगों के साथ दुश्मनी क्यों करती है ?

'तारा–मायारानी जमानिया की रानी है जमानिया में एक भारी तिलिस्म है जिसके विषय में जाना गया है कि वह कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के हाथ से टूटेगा, मगर मायारानी चाहती है कि वह तिलिस्म टूटने न पावे, इसी सबब से वह इतना बखेड़ा मचा रही है।

किशोरी–और कमलिनी कौन है ? मैं उसका नाम कई दफे सुन चुकी हूँ और यह भी जानती हूँ कि वह हम लोगों की मदद कर रही है।

तारा–मायारानी की दो बहिनें और है। (ऊँची साँस लेकर) एक तो ये कमलिनी है जिनके मकान में आप इस समय बैठी है मायारानी की चाल चलन से रञ्ज होकर उससे अलग हो गई है और दोनों कुमारों की मदद कर रही है और दूसरी सबसे छोटी बहिन लाडिली है जो मायारानी के साथ रहती है मगर अब सुनने में आया है कि वह भी मायारानी से अलग होकर कमलिनी का साथ दे रही है।

किशोरी–और ये राजा गोपालसिंह और भूतनाथ कौन है ?

तारा–भूतनाथ कमलिनी का ऐयार है और राजा गोपालसिंह जमानिया के राजा है, मायारानी इन्हीं की स्त्री है। पांच वर्ष हुए जब यह बात मशहूर हुई थी कि राजा गोपालसिंह का देहान्त हो गया यहाँ तक कि कमलिनी को भी इस बात में शक न रहा क्योंकि उसके देखते ही देखते राजा गोपालसिंह को दाह क्रिया की गई थी हां हम लोगों को अगर किसी तरह का कुछ शक था तो केवल इतना कि राजा गोपालसिंह को मायारानी ने जहर दे दिया। खैर, जमाने से राजा गोपालसिंह की जगह मायारानी जमानिया का राज्य कर रही है। इधर जब मायारानी ने दोनों कुमारों को कैद कर लिया तो कमलिनी उन्हें छुड़ाने के लिये जमानिया गई। उस समय कमलिनी को किसी तरह मालूम हुआ कि राजा गोपालसिंह के विषय में मायारानी ने लोगों को धोखा दिया था और वे मरे नहीं बल्कि मायारानी ने उन्हें कैद कर रक्खा है। तब कमलिनी ने बडे उद्योग से गोपालसिंहजी को कैद से छुड़ाया मगर राजा साहब की यह राय हुई कि हमारे छूटने का हाल अभी किसी को मालूम न होना चाहिये किसी मौके पर हम अपने को जाहिर करेंगे। मैंने यह जो कुछ आपसे कहा बहुत ही मुख्तसर में कहा नहीं तो इस बीच में ऐसे ऐसे काम हुए है कि सुनने से आश्चर्य होता है। मैंने जब भूतनाथ की जुबानी सब हाल सुना तो आश्चर्य और हंसी से मेरी अजब हालत थी।

किशोरी- तो तुम खुलासा क्यों नहीं कहती ! क्या कहीं जाना है या कोई जरूरी काम है ?

तारा–(हंस कर) जाना कहां है और काम ही क्या है ? अच्छा मैं कहती हूं सुनिये।

तारा ने भूतनाथ का खुलासा हाल कह सुनाया। वह जिस तरह नागर और मायारानी को धोखा देकर उनसे मिल गया और जिस खूबसूरती से किशोरी और कामिनी को नागर की कैद से छुड़ा लाया उसे कहने बाद यह भी कहा कि भूतनाथ मायारानी को और भी धोखा देगा। वह मायारानी से वादा कर आया है कि राजा गोपालसिंह को जो तुम्हारे कैद से छूट गये है बहुत जल्द गिरफ्तार करके तुम्हारे पास ले आऊंगा तुम उन्हें अपने हाथ से मारकर निश्चिन्त हो जाना। निःसन्देह बडी ही दिल्लगी होगी जब मायारानी को विश्वास हो जायगा कि कैद से छूट जाने पर भी राजा गोपालसिंह जीते न बचे।

तारा की जुबानी भूतनाथ का हाल सुन कर किशोरी और कामिनी को बड़ा ताज्जुब हुआ और उसके विषय में देर तक तीनों में बातचीत होती रही। अन्त मे किशोरी ने तारा से पूछा जब तुम राजा गोपालसिंह के पास गई थी और उन्होंने मुझे तुम्हारे सुपुर्द किया था उस समय तुमने मेरी तरफ देख कर कहा था कि इनके लिए मुझे मुद्दत तक छिप कर रोहतासगढ़ के किले में रहना पड़ा था तो क्या वास्तव में तुम रोहतासगढ़ के किले में उस समय थीं जब मैं वहाँ बदकिस्मती के दिन काट रही थी ? अगर तुम वहाँ थी तो लाली और कुन्दन का हाल भी तुम्हें जरूर मालूम होगा।'

किशोरी की बातों का तारा कुछ जवाब दिया ही चाहती थी कि एक प्रकार की आवाज सुन कर चौंक पडी और घबडा कर उस पुतली की तरफ देखने लगी जो वहां छत पर एक छोटे से चबूतरे के ऊपर सिर नीचे और पैर ऊपर किये खड़ी थी।

पाठक इस मकान की अवस्था को भूल न गये होंगे क्योंकि इस मकान और पुतलियों का हाल हम सन्तति के तीसरे भाग में लिख चुके है। इस समय जब तारा ने इस पुतली को तेजी के साथ नाचते हुए पाया तो घबड़ा गई बदहवास होकर उठ खड़ी हुई और कहने लगी– हाय बडा अनर्थ हुआ अब हम लोगों की जान बचती नजर नहीं आती ! हाय हाय बहिन कमलिनी न जाने इस समय तू कहां है। हाय, अब मैं क्या करूं !!

छठवां बयान

हम ऊपर किसी बयान में लिख आए हैं कि तिलिस्मी दारोगा की बदौलत जब नागर और मायारानी में लड़ाई हो गई तो उसी समय मौका पाकर कम्बख्त दारोगा वहाँ से निकल भागा और उसके थोडी ही देर बाद मायारानी भी नागर के धमकाने से डर कर वहाँ से चली गई।

यद्यपि दारोगा और मायारानी में लडाई हो गई थी मगर मेल होने में भी कुछ देर न लगी। कायदे की बात है कि चोर बदमाश बेईमान आदि जितने बुरे कर्म करने वाले हैं प्रकृत्यानुसार कभी कभी आपुस में लड भी जाते हैं और लड़ाई यहाँ तक बढ जाती है कि एक के खून का दूसरा प्यासा हो जाता है बल्कि जान का नुकसान भी हो जाता है मगर थोडे ही अर्से के बाद फिर आपुस में मन मिलाप हो जाता है। इसका असल सबब यही है कि बुरे मनुष्यों के हृदय में लज्जा शान मान और आन की जगह नहीं होती। उन्हें इस बात का ध्यान नहीं होता है कि फलाने ने मुझे ताना मारा था फलाने ने मेरी किसी प्रकार बेइज्जती की अतएव कदापि उसके सामने न जाना चहिये या किसी तरह उसे अवश्य नीचा दिखाना चाहिए क्योंकि बुरे मनुष्य तो नीच होते ही हैं उन्हे अपने नीच कर्मों या अपने साथियों के ताने या लडाई से शर्म ही क्यों आने लगी? और यही सबब है कि उनकी लडाई बहुत दिनों के लिये मजबूत नहीं होती। अगर ऐसा होता तो फूट और तकरार के कारण स्वयं बदमाशों का नाश हो जाता और भले आदमियों को बुरे मनुष्यों से दुःख पाने का दिन नसीब न होता। परमेश्वर की इस विचित्र माया ही ने मायारानी और दारोगा में फिर से मेल करा दिया और राजा वीरेन्द्रसिंह तथा उनके खानदान की बदनसीबी के वृक्ष में पुनः फल लगने लगे जिसका हाल आगे चल कर मायारानी और दारोगा की बातचीत से मालूम होगा।

जिस समय नागर की धमकी से डर कर कुछ सोचती विचारती मायारानी सदर फाटक के बाहर निकली और गंगा के किनारे की तरफ चली तो थोडी ही दूर जाने के बाद तिलिस्मी दारोगा से जो नाक कटा कर अपनी बदकिस्मती पर रोता कलपता धीरे धीरे गंगाजी की तरफ जा रहा था उसकी मुलाकात हुई। जब अपने पीछे किसी के आने की आहट पा दारोगा ने फिर कर देखा तो मायारानी पर निगाह पडी। यद्यपि उस समय वहाँ पर अंधेरा था परन्तु बहुत दिनों तक साथ रहने के कारण दोनों ने एक दूसरे को बखूबी पहिचान लिया। मायारानी तुरन्त दारोगा के पैरों पर गिर पडी और आँसुओं से उसके नापाक पैरों को भिगोती हुई बोली–

"दारोगा साहब निःसन्देह इस समय आपकी बडी बेइज्जती हुई और आप मुझसे रंज हो गये परन्तु मैं कसम खाकर कहती हूं कि इसमें मेरा कसूर नहीं है। थोडी सी बात जो मैं आपसे कहा चाहती हूं आप कृपा कर सुन लीजिए इसके बाद यदि आपका दिल गवाही दे कि बेशक मायारानी का दोष है तो आप बेखटके अपने हाथ से मेरा सर काट डालिए मुझे कोई उज्र न होगा बल्कि मैं प्रतिज्ञापूर्वक कहती हूं कि मैं उस समय अपने हाथ से कलेजे में खंजर मार कर मर जाऊंगी जब मेरी बात सुनने के बाद आप अपने मुंह से कह देंगे कि बेशक कसूर तेरा है क्योंकि आपको रंज करके मैं इस दुनिया में रहना नहीं चाहती। आप खूब जानते हैं कि इस दुनिया में मेरा सहायक सिवाय आपके दूसरा नहीं अतएव जब आप ही मुझसे अलग हो जायेंगे तो दुश्मनों के हाथों सिसक सिसक कर मरने की अपेक्षा अपने हाथ से आप ही जान दे देना मैं उत्तम समझती हूं।

दारोगा–यद्यपि अभी तक मेरा दिल यही गवाही देता है कि आज तू ही ने मेरी बेइज्जती की और तू ही ने मेरी नाक काटी परन्तु जब तू मेरे पैरों पर गिर कर साबित किया चाहती है कि इसमें तेरा कोई कसूर नहीं है तो मुझे भी उचित है कि तेरी बातें सुन लूँ और इसके बाद जिसका कसूर हो उसे दण्ड दूँ।

माया–(खडी होकर और हाथ जोड कर) बस बस बस मैं इतना ही चाहती हूं।

दारोगा–अच्छा तो इस जगह खडे होकर बातें करना उचित नहीं। किसी तरह शहर के बाहर निकल चलना चाहिए बल्कि उत्तम तो यह होगा कि गंगा के पार हो जाना चाहिए फिर एकान्त में जो कुछ कहोगी मैं सुनूंगा।

दोनों वहाँ से रवाना होकर बात की बात में गंगा के किनारे जा पहुंचे। वहाँ दारोगा ने खूब अच्छी तरह अपनी नाक धोकर मरहम की पट्टी बाँधी जो उसके बटुए में मौजूद थी और इसके बाद मल्लाह को कुछ देकर मायारानी को साथ लिए दारोगा साहब गंगा पार हो गये। दारोगा ने वहाँ भी दम न लिया और लगभग आध कोस के सीधे जाकर एक गाँव में पहुंचे जहाँ घोडों के सौदागर लोग रहा करते थे और उनके पास हर प्रकार के कमकीमत और बेशकीमत घोडे मौजूद रहा करते थे। वहाँ पहुँच कर दारोगा ने मायारानी से पूछा कि 'तेरे पास कुछ रुपया अशर्फी है या नहीं'? इसके जवाब में मायारानी ने कहा कि 'रुपये तो नहीं हैं मगर अशर्फियाँ हैं और जवाहिरात का एक डिब्बा भी जो तिलिस्मी बाग से भागती समय साथ लाई थी मौजूद है।

आसमान पर सुबह की सुफेदी अच्छी तरह फैली न थी। गाव में बहुत कम आदमी जागे थे। मायारानी स पचास अशर्फी लेकर और उसे एक पड के नीचे बैठा कर दारोगा साहब सराय में गये और थोड़ी ही दर में दो घाड़ मय साज के खरीद लाए। मायारानी और दारोगा दानों घोड़ों पर सवार होकर दक्खिन की तरफ इस तजी के साथ रवाना हुए कि जिससे जाना जाता था कि इन दोनों का अपने घोड़ों के मरन की कोई परवाह नहीं है इसके बाद जब एक जगल में पहुचे तो दोनों ने अपने अपने घोडों की चाल कम की और बातचीत करते हुए जाने लगे।

दारोगा—अब हम लोग ऐसी जगह आ पहुचे है जहाँ किसी तरह का डर नहीं है अब तुम्हें जो कुछ कहना हो कहो।

माया—इसके पहिले कि आपके छूटने का हाल आपसे पूछू, जिस दिन स आप मुझसे अलग हुए हैं उस दिन से लेकर आज तक का अपना किस्सा मै आपस कहा चाहती हू जिसके सुनने से आपको पूरा पूरा हाल मालूम हो जायगा और आप स्वय कहेंगे कि मैं हर तरह से बेकसूर हू।

दारोगा—ठीक है जितने विस्तार के साथ तुम कहना चाहो कहो मै सुनने के लिए तैयार हू।

मायारानी ने ब्योरेवार अपना हाल दारोगा से कहना शुरू किया जिसमें तेजसिह का पागल बन के तिलिस्मी बाग में आना चडूल का पहुचना राजा गोपालसिह का कैद स छूटना लाडिली का मायारानी से अलग होना धनपत की गिरफ्तारी अपना भागना तिलिस्म का हाल सुरग में राजा गोपालसिह कमलिनी लाडिली भूतनाथ और देवीसिह का आना नकली दारोगा का पहुचना और उससे बातचीत करके धोखा खाना इत्यादि जो कुछ हुआ था सच सच दारोगा से कह सुनाया इसके बाद दारोगा की चीठी पढना और फिर असली दारोगा के विषय में धोखा खाना भी कुछ बनावट के साथ बयान किया जिसे बडे गौर से दारोगा साहब सुनते रहे और जब मायारानी अपनी बात खतम कर चुकी तो बोले—

दारोगा—अब मुझे मालूम हुआ कि जो कुछ किया हरामजादी नागर ने किया और तू बेकसूर है या अगर तुझसे किसी तरह का कसूर हुआ भी तो धोखे में हुआ मगर तेरी जुबानी सब हाल सुन कर मुझे इस बात का बहुत रज हुआ कि तूने राजा गोपालसिह के बारे मे मुझे धोखा दिया।

माया—बेशक यह मेरा कसूर है मगर वह कसूर पुराना हो गया और धोखे मे लक्ष्मीदेवी का भेद खुल जाने पर तो अब वह क्षमा के योग्य भी हो गया। अगर आप उस कसूर को भूल कर बचने का उद्योग न करेगे तो बेशक मेरी और आपकी दोनों ही की जान दुर्गति के साथ जायगी क्योंकि मैं फिर भी दिढाइ के साथ कहती हू कि उस विषय में मेरा और आपका कसूर बराबर है।

दारोगा—बेशक ऐसा ही है खैर मै तेरा कसूर माफ करता हू क्योंकि तूने इस समय उसे साफ साफ कह दिया और यह भी निश्चय हो गया कि आज केवल नागर की हरामजदगी ने

माया—(अपने घोडे को पास ले जाकर और दारोगा का पैर छूकर) केवल माफ ही नहीं बल्कि उद्योग करना चाहिए जिसमें राजा गोपालसिह बीरेन्द्रसिह उनके दोनो लड़के और एयार गिरफ्तार हो जायें या दुनिया से उठा दिए जाए।

दारोगा—ऐसा ही होगा और शीघ्र ही इसके लिए मैं उत्तम उद्योग करूँगा। (कुछ सोच कर)मगर मैं देखता हू कि इस काम के लिए रुपये की बहुत जरूरत है।

माया—रुपये पैसे की किसी तरह कमी नहीं हो सकती मेरे पास लाखों रुपये के जवाहिरात है बल्कि देवगढी का खजाना ऐसा गुप्त है कि सिवा मेरे कोई दूसरा पा ही नहीं सकता क्योंकि गोपालसिह को उसकी कुछ भी खबर नहीं है।

दारोगा—(ताज्जुब से) देवगढी का खजाना कैसा ? मैं भी उस विषय में कुछ नहीं जानता।

माया—वाह आप क्यों नही जानते ! वह मकान आप ही ने तो धनपत को दिया था।

दारोगा—ओह दवगढी क्यों कहती हो शिवगढी कहो !

माया—हॉ हा शिवगढी शिवगढी मै भूल गई थी नाम में गलती हुई। उसमें बडी दौलत है। जो कुछ मैंने धनपत को दिया सब उसी में मौजूद है धनपत बेचारा कैद ही हो गया फिर निकालता कौन ?

दारोगा—बेशक वहा बडी दौलत होगी। इसके सिवाय मुझे भी तुम दौलत से खाली न समझना अस्तु कोई चिन्ता नहीं देखा जायगा।

माया—मगर अभी तक यह न मालूम हुआ कि आप कहाँ जा रहे है ? घोडे बहुत थक गये है अब ये ज्यादे नहीं चल सकते।

दारोगा—हमें भी अब बहुत दूर नहीं जाना है (उगली के इशारे से बता कर) वह देखो सामने जो पहाडी है उसी पर मेरा गुरुभाई इन्द्रदेव रहता है इस समय हम लोग उसी के मेहमान होंगे।

माया—ओहो अब याद आया इन्ही का जिक्र आप अक्सर किया करते थे और कहते थे कि बडे चालाक और प्रतापी है ! आपने एक दफे यह भी कहा था कि इन्द्रदेव भी किसी तिलिस्म के दारोगा है।

दारोगा–वेशक ऐसा ही है और मैं उसका बहुत भरोसा रखता हू। उसकी बदौलत मैं अपनेको राजा से भी बढ के अमीर समझता हू और बीरेन्दसिह की कैद से छूट कर आजादी के साथ घूमने का दिन भी उसी के उद्योग से मिला जिसका हाल मै फिर कभी तुमसे कहूगा। वह बडा ही धूर्त एव वुद्धिमान और साथ ही इसके ऐयाश भी है।

माया–उम्र में आपसे वडे है या छोटे ?

दारोगा–ओह मुझसे बहुत छोटा है बल्कि यों कहना चाहिए कि अभी नौजवान है बदन में ताकत भी खूब है रहने का स्थान भी बहुत ही उत्तम और रमणीक है मेरी तरह फकीरी भेष में नहीं रहता बल्कि अमीराना ठाट के साथ रहता है।

दारोगा की बात सुन करमायारानी के दिल में एक प्रकार की उम्मीद और खुशी पैदा हुई, ऑखों में विचित्र चमक और गालों पर सुर्खी दिखाई देने लगी जो क्षण भर के लिए थी, इसके बाद फिर मायारानी ने कहा–

माया–वह आपकी कृपा है कि ऐसी बुरी अवस्था तक पहुचने पर भी मैं किसी तरह निराश नहीं होसकती।

दारोगा–जब तक मै जीता और तुझसे खुश हू तब तक तो तू किसी तरह निराश कभी भी नहीं हो सकती मगर अफसोस अभी तीन ही चार दिन हुए हैं कि इसके पास से तेरी खोज में गया था आज मेरी नाक कटी देखेगा तो क्या कहेगा ?

माया–वेशक उन्हें वडा क्रोध आवेगा जब आपकी जुबानी यह सुनेंगे कि नागर ने आपकी यह दशा की।

दारोगा–क्रोध। अरे तूदेखगी कि नागर को पकडवा मगवावेगा और बडी दुर्दशा से उसकी जान लेगा। उसके आगे यह कोई बडी बात नहीं है ! लो अब हम लोग ठिकाने आ पहुँचे अब घोडे से उतरना चाहिए।

इस जगह पर एक छोटी सी पहाडी थी जिसके पीछे की तरफ और दाहिने बाए कुछ चक्कर खाता हुआ पहाडियों का सिलसिला दूर तक दिखाई दे रहा था। जब ये दोनों आदमी उस पहाडी के नीचे पहुँचे तो घोडे से उतर पडे क्योंकि पहाडी के ऊपर घोडा ले जाने का मौका न था और इन दोनों को पहाड़ी के ऊपर जाना था। दोनों घोडे लम्बी लम्बी बागडोरों के सहारे एक पेड के साथ बाध दिये गये और इसके बाद मायारानी को साथ लिए हुए दारोगा ने उस पहाडी के ऊपर चढना शुरू किया। उस पहाडी पर चढने के लिए केवल एक पगडण्डी का रास्ता था और वह भी बहुत पथरीला और ऐसा ऊबड-खाबड था कि जाने वाले को बहुत सम्हल कर चढना पडता था। यद्यपि पहाडी बहुत ऊची न थी मगर रास्ते की कठिनाइ के कारण इन दोनों को ऊपर पहुँचने तक पूरा एक घटा लग गया।

जब दोनों पहाडी के ऊपर पहुचे तो मायारानी ने एक पेड के नीचे खडे होकर देखा कि सामने की तरफ जहा तक निगाह काम करती है पहाड ही पहाड दिखाई दे रहे हैं जिनकी अवस्था आसाढ के उठते हुए बादलों सी जान पडती है। टीले पर टीला पहाड पर पहाड, क्रमश बराबर ऊचा ही होता गया है। यह वही विंध्य की पहाडी है जिसका फैलाव सैकडो कोस तक चला गया है। इस जगह से जहा इस समय मायारानी खडी होकर पहाडी के दिलचस्प सिलसिले को बडे गौर से देख रही है राजा वीरेन्द्रसिह की राजधानी नौगढ बहुत दूर नहीं है परन्तु यह जगह नौगढ की हद से बिल्कुल बाहर है।

धूप बहुत तेज थी और भूख प्यास ने भी सता रक्खा था इसलिये दारोगा ने मायारानी से कहा मै समझता हू कि इस पहाड पर चढने की थकावट अब मिट गई होगी यहाँ देर तक खडे रहने से काम न चलेगा क्योंकि अभी हम लोगों को कुछ दूर और चलना है और भूख प्यास से जी बेचैन हो रहा है।'

माया–क्या अभी हम लोगों कोऔर आगे जाना पडेगा ? आपने तो इसी पहाडी पर इन्द्रदेव का घर बताया था।

दारोगा–ठीक है मगर उसका मतलब यह न था कि पहाड पर चढने के साथ ही कोई मकान मिल जायगा।

माया–खैर चलिए अब कितनी देर में ठिकाने पहुँचने की आशा कर सकती हू ?

दारोगा–अगर तेजी के साथ चलें तो घण्टे भर में।

माया–ओफ !

आगे आगे दारोगा और पीछे पीछे मायारानी दोनों आगे की तरफ बढे। ज्यों ज्यों आगे बढते जाते थे जमीन ऊँची मिलती जाती थी और चढाव चढने के कारण मायारानी का दम फूल रहा था। वह थोडी थोड़ी दूर पर खडी होकर दम लेती थी और फिर दारोगा के पीछे पीछे चल पडती थी यहाँ तक कि दोनों एक गुफा के मुँह पर जा पहुँचे जिसके अन्दर खडे होकर बराबर दो आदमी बखूबी जा सकते थे। बाबाजी ने मायारानी से कहा कि अब हम लोगों को इसके अन्दर चलना पडेगा जिसके जवाब में मायारानी ने कहा कि 'क्या हर्ज है मैं चलने को तैयार हू मगर जरा दम ले लूँ।

गुफा के दोनों तरफ चौडे चौडे दो पत्थर थे जिनमें से एक पर दारोगा और दूसरे पर मायारानी बैठ गई। इन दोनों को बैठे अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी कि गुफा के अन्दर से एक आदमी निकला जिसने पहिली निगाह में मायारानी को और दूसरी निगाह में दारोगा को देखा। मायारानी को देख कर उसे ताज्जुब हुआ मगर जब दारोगा को देखा तो झपट कर उसके पैरों पर गिर पडा और बोला आश्चर्य है कि आज मायारानी को लेकर आप यहाँ आये है !

दारोगा—जा एक भारी आवश्यकता पड जाने के कारण ऐसा करना पड़ा। कहो तुम अच्छे तो हो ? बहुत दिन पर दिखाई दिये।

आदमी—जी आपकी कृपा से बहुत अच्छा हू हाल ही मे जब आप यहा आये थे तो मै एक जरूरी काम के लिए भेजा गया था इसी से आपके दर्शन न कर सका जब मै लौट कर आया तो मालूम हुआ कि बाबाजी आये थे पर एक ही दिन रह कर चल गये (आश्चर्य के ढग से) मगर यह नाक मे पट्टी कैसे बधी है !

दारोगा—कल लडाई मे एक आदमी ने बेकसूर मुझे जख्मी किया इसी से पट्टी बाधने की आवश्यकता हुई।

आदमी—(क्रोध मे आकर) किसकी मौत आई है जिसने हम लोगों के होते आपके साथ ऐसा किया ! जरा नाम तो बताइये !

दारोगा—अब आया हू तो अवश्य सब कुछ कहूगा पहिले यह बताओ कि इस समय तुम जाते कहा हो ?

आदमी—एक काम के लिए महाराज ने भेजा है, सध्या होने के पहिले ही लौट आऊगा, यदि आज्ञा हो तो महाराज के पास जाकर आपके आने का सवाद दू ?

दारोगा—नहीं नहीं इसकी आवश्यकता नही है मै चला जाऊगा तुम जाओ जब लौटोगे तो रात को बातचीत होगी।

आदमी—जो आज्ञा।

दारोगा का पैर छूकर वह आदमी वहा से तेजी के साथ चला गया और इसके बाद मायारानी ने दारोगा से कहा अफसोस यहा तक नौबत आ पहुची कि अब हर एक आदमी बारह परदे के अन्दर रहने वाली मायारानी को खुल्लम-खुल्ला देख सकता है जैसा कि अभी इस गैर आदमी ने देखा।'

दारोगा—तुझे इस बात का अफसोस न करना चाहिए। समय ने जब तुझे अपने घर से बाहर कर दिया रिआया से बदतर बना दिया, हुकूमत छीन कर बेकार कर दिया बल्कि यों कहना चाहिए कि वास्तव मे छिप कर जान बचाने लायक कर दिया तो परदे और इज्जत का ख्याल कैसा। किस जात बिरादरी के वास्ते ? क्या तुझे आशा है कि राजा गोपालसिंह अब तुझे अपनी बनाकर रक्खेगा ? कभी नहीं। फिर लज्जा का ढकोसला क्यों ? हा समय ने अगर तेरा नसीब चमकाया और तू हम लोगों की मदद से गोपालसिंह वीरेन्द्रसिंह तथा उसके लड़कों पर फतह पाकर पुन तिलिस्म की रानी हो गई तो तुझे उस समय आज की निर्लज्जता की परवाह न रहेगी क्योंकि रुपये वालों का ऐब जमाना नहीं देखता, रुपये वाले की खातिर में कमी नहीं होती रुपये वाले को कोई दोष नहीं लगता और रुपये वालों की पहिली अवस्था पर कोई ध्यान नहीं देता फिर इसके लिए सोचने विचारने से क्या फायदा ? तू आज से अपने को मर्द समझ ले और मर्दो की ही तरह जो कुछ मै सलाह दू कर।

मायारानी—बात तो आपने ठीक कही वास्तव में ऐसा ही है ! अब आज से मै ऐसी तुच्छ बातों पर ध्यान न दूगी। अच्छा जहा चलना हो चलिए मै बखूबी आराम कर चुकी हा यह तो बताइये कि वह आदमी कौन था और उसने मुझे पहिचाना कैसे ?

दारोगा—वह इन्द्रदेव का ऐयार है मुझसे मिलने के लिए बराबर आया करता था यही सबब है कि तुझे पहिचानता है और फिर ऐयारों से यह बात कुछ दूर नही है कि तुझ सी मशहूर को पहिचान लिया !

इसके बाद दारोगा उठ खडा हुआ और मायारानी को अपने पीछे पीछे आने के लिए कह कर गुफा के अन्दर रवाना हुआ।

सातवां बयान

मायारानी इस गुफा को साधारण और मामूली समझे हुए थी मगर ऐसा न था। थोड़ी दूर जाने के बाद पूरा अँधकार मिला जिससे वह घबडा गई मगर दारोगा के ढाढस देने से उसका कपडा पकडे हुए धीरे धीरे रवाना हुई। लगभग सौ कदम जाने के बाद दारोगा रुका और बाई तरफ घूम कर चलने लगा। अब मायारानी पहिले के बनिस्बत ज्यादे डरी और उसने घबडा कर दारोगा से पूछा क्या हम लोग चादने मे न पहुचेंगे ? कहीं ऐसा न हो कि कोई दरिन्दा जानवर मिल जाय और हम लोगों को फाड खाये।

दारोगा-(जोर से हँस कर) क्या इतने ही में तेरी हिम्मत ने जवाब दिया? तिलिस्म की रानी होकर इतना छोटा दिल आश्चर्य है!

माया-(अपने डरे हुए दिल को सम्हाल कर) नहीं नहीं मैं डरी और घबराई नहीं हूं हां भूख प्यास और थकावट के कारण बेहाल हो रही हूं इसी से मैंने पूछा कि यह गुफा जिसे सुरंग कहना चाहिये किस तरह समाप्त भी होगी या नहीं?

दारोगा-घबड़ा मत अब हम लोग बहुत जल्द इस अंधेरे से निकल कर ऐसे दिलचस्प मैदान में पहुंचेंगे जिसे देख कर तू बहुत ही खुश होगी।

माया-इन्द्रदेव के मकान में जाने के लिए यही एक राह है या और भी कोई?

दारोगा-बस इस रास्ते के सिवाय और रास्ता नहीं है।

माया-अगर ऐसा है तो मालूम होता है कि आपके इन्द्रदेव बहुत से दुश्मन रखते हैं जिनके डर से उन्हें इस तरह छिपा कर रहना पड़ता है।

दारोगा-(हँस कर) नहीं नहीं ऐसा नहीं है इन्द्रदेव इस योग्य है कि अपने दुश्मनों को बात की बात में बर्बाद कर दे वह इस स्थान में जान कर नहीं रहता बल्कि मजबूर होकर उसे यहां रहना पड़ता है क्योंकि जिस तिलिस्म का वह दारोगा है वह तिलिस्म भी इसी स्थान में है।

माया-ठीक है तो क्या इस तिलिस्म का कोई राजा नहीं है?

दारोगा-नहीं जिस समय वह तिलिस्म तैयार हुआ था उस समय इसके मालिक ने इस बात का प्रबन्ध किया था कि उसके खानदान में जो कोई हो वह तिलिस्म का राजा नहीं बने बल्कि दारोगा की तरह रहे। उसी के खानदान में यह इन्द्रदेव है। इसे तिलिस्म की हिफाजत करने के सिवाय और किसी तरह का अधिकार तिलिस्म पर नहीं मगर दौलत की इसे किसी तरह की कमी नहीं है।

माया-अगर पुराने प्रबन्ध को तोड़ कर वह तिलिस्मी चीजों पर अपना दखल जमावे तो उसे कौन रोक सकता है?

दारोगा-रोकने वाला तो कोई नहीं है मगर वह तिलिस्म का भेद कुछ भी नहीं जानता न मालूम यह तिलिस्म इतना गुप्त किस लिये रक्खा गया है।

माया-मैं तो अपने तिलिस्म से बहुत फायदा उठाती थी।

दारोगा-बेशक ऐसा ही है मगर उस तिलिस्म में भी जो खास खास अलभ्य वस्तुएं हैं उनका मालिक तिलिस्म तोड़ने वाले के सिवाय और कोई नहीं हो सकता। अच्छा अब ठहर जा हम लोग ठिकाने पहुंच गये हैं यहां एक दर्वाजा है जिसे खोल कर आगे चलना होगा।

दारोगा की बात सुनकर मायारानी रुक गई। मगर अंधेरे में उसे यह न मालूम हुआ कि बाबाजी क्या कर रहे हैं। दस बारह पल से ज्यादे देर न लगी होगी कि एक आवाज ठीक उसी प्रकार की आई जैसी लोहे का हल्का दर्वाजा खुलने के समय आती है। बाबाजी ने मायारानी का हाथ पकड़ के उसे दो तीन कदम आगे कर दिया तथा स्वयं पीछे रह गये और फिर उस दर्वाजे के बन्द होने की आवाज आई। इसके बाद बाबाजी ने मोमबत्ती जलाई जिसका सामान दर्वाजे के पास ही किसी ठिकाने पर था।

बहुत देर तक अंधेरे में रहने के कारण मायारानी बहुत घबड़ा गई थी। अब रोशनी हो जाने से वह चैतन्य हो गई और आंखें फाड़ कर चारों तरफ देखने लगी। केवल उधर की तरफ जिधर से वह आई थी लोहे का एक तख्ता दिखलाई दिया जिसमें दर्वाजे का कोई आकार न था इसके अतिरिक्त सब तरफ पत्थर दिखाई पड़ता था और साफ मालूम होता था कि मानवीय उद्योग ने पहाड़ काट कर यह रास्ता या सुरंग तैयार की गई है मगर यह सुरंग इसी जगह पर नहीं समाप्त हुई थी बल्कि बाईं तरफ तीन चार सीढ़ियां नीचे उतर के और भी कुछ दूर तक गई हुई थी। मायारानी ने आश्चर्य से चारों तरफ देखने के बाद बाबाजी से कहा "यह लोहे की दीवार जो सामने दिखाई पड़ती है निःसन्देह दर्वाजा है परन्तु इसमें दर्वाजे का कोई आकार मालूम नहीं पड़ता आपने इसे किस तर्कीब से खोला या बन्द किया था?" इसके जवाब में दारोगा ने कहा "इस दर्वाजे का खोलने और बन्द करने की तर्कीब नियमानुसार इन्द्रदेव की आज्ञा बिना मैं नहीं बता सकता और यह मोमबत्ती भी मैंने इसलिए जलाई है कि (सीढ़ियों की तरफ इशारा करके) इन सीढ़ियों को तू अच्छी तरह देख ले जिसमें उतरते समय ठोकर न लगे।" इतना कहते ही दारोगा ने मोमबत्ती बुझा कर उसे उसी ठिकाने रख दिया और मायारानी का हाथ पकड़ के सीढ़ियों के नीचे उतरा। मायारानी को अपनी बातों का जवाब न पाने से रंज हुआ मगर वह कर ही क्या सकती थी क्योंकि इस समय वह हर तरह से दारोगा के आधीन थी।

सीढ़ियां उतरने के साथ ही सामने की तरफ थोड़ी दूर पर उजाला दिखाई दिया और मालूम हुआ कि उस ठिकाने सुरंग समाप्त हुई है। आश्चर्य डर चिन्ता और आशा के साथ मायारानी ने यह रास्ता भी तै किया और सुरंग के आखिरी दर्वाजे के बाहर कदम रखने के साथ ही एक रमणीक स्थान की छटा देखने लगी।

इन्द्र–मै समझता हू कि इस समय आप अपना हाल बखूबी कह सकेंगे जिसके सुनने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा है।

दारोगा–वह कहने के लिए इस समय मैं स्वय ही तुम्हारे पास आने वाला था अच्छा हुआ कि तुम आ गये।

दारोगा न अपना और मायारानी का हाल जोकुछ हम ऊपर लिख आये है इन्द्रदेव से पूरा पूरा बयान किया। इन्द्रदेव चुपचाप सुनता गया पर अन्त में जब नागर द्वारा बाबाजी की नाक काटने का हाल सुना तो उसेयकायक क्रोध चढ़ आया। उसका चेहरा लाल हो गया होंठ हिलने लगे और वह बिना कुछ कहे बाबाजी के पास से उठ कर चला गया। यह हाल देख कर मायारानी को ताज्जुब मालूम हुआ और उसने दारोगा से पूछा 'क्या आप कह सकते है कि इन्द्रदेव आपकी बातों का कोई जवाब दिये बिना ही क्यों चला गया ?

दारोगा–मालूम होता है कि मेरा हाल सुन कर उसे हद्द से ज्यादे क्रोध चढ आया और वह कोई कार्रवाई करने के लिये चला गया है।

माया–इन्द्रदेव नागर को जानता है ?

दारोगा–बहुत अच्छी तरह बल्कि नागर का जितना भेद इन्द्रदेव को मालूम है उतना तुमको भी मालूम न होगा।

माया–सो कैसे ?

दारोगा–जिस जमाने में नागर रण्डियों की तरह बाजार में बैठती थी और मोतीजान के नाम से मशहूर थी उस जमाने में इन्द्रदेव भी कभी कभी उसके पास भेष बदल कर गाना सुनने की नीयत से जाया करता था और उसकी हर एक बातो की इसे खबर थी मगर इन्द्रदेव का ठीक ठीक हाल बहुत दिनों तक सोहबत करने पर भी नागर को मालूम न हुआ वह इन्द्रदेव को केवल एक सरदार और रुपये वाला ही जानती थी।

आध घण्टे तक इसी किस्म की बातें होती रहीं और इसके बाद इन्द्रदेव के ऐयार सर्यूसिह ने कमरे के अन्दर आकर कहा इन्द्रदेवजी आपको बुलाते है आप अकेले जाइये और नजरबाग में मिलिये जहाँ वह अकेले टहल रहे है।

इस सन्देश को सुन कर दारोगा उठ खडा हुआ और मायारानी को अपने कमरे में जाने के लिए कह इन्द्रदेव के पास चला गया।

इस मकान के पीछे की तरफ एक छोटा सा नजरबाग था जो अपनी खुशनुमा क्यारियों और गुलबूटों की बदौलत बहुत ही भला मालूम पडता था। जब दारोगा वहा पहुचा तो उसने इन्द्रदेव को उसी जगह टहलते हुए पाया।

इन्द्रदेव–भाइ सहाब आज आपकी जुबान से मैने वह बात सुनी है जिसके सुनने की कदापि आशा न थी।

दारोगा–बेशक नागर की बदमाशी का हाल सुन कर आपको बहुत ही रञ्ज हुआ होगा।

इन्द्रदेव–नहीं मेरा इशारा नागर की तरफ नहीं है। इसमें तो कोइ सन्देह नहीं कि नागर ने आपके साथ जो कुछ किया बहुत बुरा किया और मैं उसे गिरफ्तार कर लेने के लिये एक ऐयार और कई सिपाही रवाना भी कर चुका हू मगर मै उन बातों की तरफ इशारा कर रहा हू जो राजा गोपालसिह से सम्बन्ध रखती है। मुझे इस बात का गुमान भी न था कि राजा गोपालसिह अभी तक जीते है ! मुझे स्वप्न में भी इस बात का ध्यान नही आ सकता था कि मायारानी वास्तव में गोपालसिह की स्त्री नहीं है और आपकी कृपा से लक्ष्मीदेवी की गददी पर जा बैठी है ! ओफ ओह, दुनिया भी अजब चीज है और उसमें विहार करने वाले दुनियादार भी कैसे मनसूबे गॉठते है।

इन्द्रदेव की बातें सुन कर दारोगा चौंक पडा और उसे विश्वास हो गया कि हमारी आशालता में अब कोई नये ढग का फूल खिला चाहता है। उसने घबडा कर इन्द्रदेव की तरफ देखा जिसका जमीन की तरफ झुका हुआ चेहरा इस समय बहुत ही उदास हो रहा था।

दारोगा–बेशक मायारानी को लक्ष्मी बनाने में मेरा कसूर था मगर राजा गोपालसिह के बारे में मैं बिल्कुल निर्दोष हू। मुझे इस बात का गुमान भी न था कि राजा साहब को मायारानी ने कैद कर रक्खा है मै वास्तव में उन्हें मरा हुआ समझता था।

इन्द्रदेव–(इस ढग से जैसे दारोगा की बात उसने सुनी ही नही) क्या आप कह सकते है कि राजा गोपालसिह ने आपके साथ कोई बुराई की थी ?

दारोगा–नहीं नहीं उस बेचारे ने मेरे साथ कोई बुराई नहीं की !

इन्द्रदेव –क्या आप कह सकते हैं कि गोपालसिह के बाद आप विशेष धनी हो गए है ?

दारोगा–नहीं।

इन्द्रदेव–क्या आप इतना भी कह सकते है कि राजा साहब के समय की बनिस्बत आज ज्यादे प्रसन्न है ?

दारोगा–(ऊची सास लेकर) हाय, प्रसन्नता ता मानों मेरे लिये सिरजी ही नहीं गई !

इन्द्रदेव–नहीं नहीं आप एसा कदापि नहीं कह सकते बल्कि ऐसा कहिये कि ईश्वर की दी हुई प्रसन्नता का आपने लात मार कर घर से निकाल दिया।

दारोगा–बशक ऐसा ही है।

इन्द्रदेव–(जोर देकर) और आज नाक कटा कर भी दुनिया म मुह दिखाने के लिये आप तैयार है और पिछली बातों पर जरा भी अफसोस नहीं करते ! जिस कम्बख्त मायारानी ने अपना धर्म नष्ट कर दिया जो मायारानी लोकलाज को एकदम लि ..अली द बेठी जिस दुष्टा ने अपने सिरताज राजा गोपालसिह के साथ घात किया जिस पिशाचिनी ने अपने माता पिता की जान ली, जिसकी बदौलत आ पको कारागार (कैदखाना) का मजा चखना पडा और जिसके सतसग से आप अपनी नाक कटा बैठे आज पुन उसी की सहायता करने के लिए आप तैयार हुए है और इस पाप में मुझसे सहायता लेकर मुझ भी नष्ट किया चाहत है ! वाह भाई साहब वाह आपने गुरु का अच्छा नाम रोशन कि किया मुझे भी अच्छा उपदश कर रहे है ! बड अफसोस की बात है कि आप सा एक अदना आदमी जो एक रण्डी के हाथ से अपनी नाक नहीं बचा सका राजा बीरेन्दसिह ऐसे प्रतापी राजा नामोनिशान मिटाने के लिए तैयार हो जाय ! मैने तो राजा बीरेन्दसिह का कवल इतना ही कसूर किया कि आपको उनके कैदखाने स निकाल लाया और अब इसी अपराध को क्षमा करान के उद्योग में लगा हू, मगर आप जिसकी बदौलत में अपराधी हुआ हूँ अब फिर

इतना कहत कहते इन्द्रदेव रुक गया क्योंकि पल पल भर में बढत जाने वाले क्रोध ने उसका कठ बन्द कर दिया। उसका चेहरा लाल हो रहा था और होंठ काप रहे थे।

दारोगा का चेहरा जर्द पड गया, पिछले पापों ने उसके सामन आकर अपनी भयानक मूर्ति दिखा के डराना शुरू किया और वह दोनों हाथों से अपना मुह ढाक रोने लगा।

थाडी दर तक सन्नाटा रहा इसके बाद इन्द्रदेव ने फिर कहना शुरू किया–

इन्द्रदेव–हाय मुझे रह रह कर वह जमाना याद आता है जिस जमाने में दयावान और धर्मात्मा राजा गोपालसिह की बदौलत आपकी कदर और इज्जत होती थी। जब कोइ सौगात उनके पास आती थी तब वह लीजिए बड़े भाई कह कर आपके सामने रखते थे। जब कोई नया काम करना होता था तो 'कहिये बडे भाई क्या आज्ञा दते है ? कह कर आपसे राय लेते थे और जब उन्हे क्रोध चढता था और उनके सामने जाने की किसी की हिम्मत नहीं पडती थी तब आप की सूरत दखते ही सिर झुका लत थे और बड उद्योग से अपन क्रोध का दबा कर हस दते थे। क्या कोइ कह सकता है कि आपस डर कर या दब कर वे एसा करत थ ? नहीं कदापि नहीं इसका सबब केवल प्रेम था। व आपको चाहत थे और आप पर विश्वास रखते थे कि स्वामीजी ने (जिनके आप शिष्य है) आपको अच्छी दीक्षा और शिक्षा दी होगी। उन्हें यह मालूम न था कि आप इतने बडे विश्वासघाती है ! हाय, उनके साथ आपका ऐसा बर्ताव ! छि छि धिक्कार है ऐसी जिन्दगी पर ! किसके लिए ? किस दुनिया में मुह दिखाने के लिए ? क्या आप नहीं जानते कि ईश्वर भी कोई वस्तु है ! खैर जाइये इस समय मै विशेष बात नहीं कर सकता। आप यह न समझिये कि मै अपने घर में से चले जाने के लिए आपसे कहता हू बल्कि यह कहता हू कि अपन कमरे में जाकर आराम कीजिय। आपको चार दिन की मोहलत दी जाती है इस बीच में अच्छी तरह सोच लीजिए कि किस तरह से आपकी भलाई हो सकती है और आपको किस रास्ते पर चलना उचित है। मगर खबरदार इस समय जो कुछ बातें हुई है उनका जिक्र मायारानी से न कीजिएगा और इस चार दिन के अन्दर मुझसे मिलने की भी आशा न रखिएगा।

आठवां बयान

दारोगा जिस समय इन्द्रदेव क सामन से उठा तो बिना इधर उधर देखे अपने कमरे में चला गया और चादर से मुह ढाप कर पलग पर सो रहा। घण्ट भर रात गई होगी जब मायारानी यह पूछन के लिए कि इन्द्रदेव ने आपको क्यों बुलाया था बाबाजी के कमरे में आई मगर जब बाबाजी को चादर से मुह छिपाए हुए देखा तो उसे आश्चय हुआ। वह उनके पास गई और चादर हटा कर देखा ता बाबाजी को जागते पाया। इस समय बाबाजी का चेहरा जर्द हो रहा था और ऐसा मालूम पडता था कि उनके शरीर में खून का नाम भी नहीं है या महीनों से बीमार है।

बाबाजी की अवस्था देख कर मायारानी सन्न हो गई और बाबाजी का मुह देखने लगी।

दारोगा–इस समय जाओ सो रहो मरी तबीयत ठीक नहीं है।

माया–मैं कवल इतना ही पूछने आई थी कि इन्द्रदेव ने आपको क्यों बुलाया था और क्या कहा !

दारोगा—कुछ नही उसन कवल धीरज दिया और कहा कि चार पॉच दिन ठहरो मै तुम लोगों का बन्दोबस्त कर देता हू, तब तक नागर भी गिरफ्तार होकर आ जाती है लाग उस पकड़ने के लिए गये है।

माया—मगर आपकी अवस्था तो कुछ और कह रही है !

दारोगा—बस इस समय और कुछ न पूछो मै अभी कह चुका हू कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है मै इस समय बात भी मुश्किल से कर सकता हू।

मायारानी और कुछ भी न पूछ सकी उलट पैर लौट कर अपने कमरे में चली गई और पलग पर लट के सोचने विचारने लगी मगर थकावट मादगी और चिन्ता ने उसे विशेष देर तक चैतन्य न रहने दिया और शीघ्र ही वह नींद की गोद में जाकर खर्राटे लेने लगी।

रात बीत गइ। सवेरा होन पर दारोगा न दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि इन्द्रदेव यहा नहीं है। एक आदमी ने कहा कि तीन चार दिन के बाद आन का वादा करके कहीं चले गये है और यह कह गए है कि आप और मायारानी तब तक यहॉ स जाने का इरादा न करें। अब बाबाजी को मालूम हुआ कि दुनिया में उनका साथी कोई भी नहीं है और उनक बुरे कर्मो पर ध्यान देकर कोई भी उनकी मदद नही कर सकता। उन्हें अपन कर्मो का फल अवश्य भोगना ही होगा।

नौवां बयान

दारोगा साहब के मकान मे बैठ कर झक मारते हुए चार दिन बडी मुश्किल से बीते और आज पाचवा दिन है। जैसे ही बाबाजी अपनी चारपाई पर स उठ कर बाहर निकले वैसे ही एक आदमी ने आकर सदेश दिया कि 'इन्द्रदेवजी आपको बुलाते है मायारानी को साथ लेकर नजरबाग म जाइये'। यह सुनते ही बाबाजी लौट कर मायारानी के कमरे में गये और मायारानी को साथ लिए हुए उसी नजरबाग में पहुचे जहॉ पहिले दिन उनकी नसीहत की गई थी। बाबाजी और मायारानी ने देखा कि इन्द्रदेव एक कुर्सी पर बैठा हुआ है और उसके बगल में दो कुर्सियॉ खाली पडी है उसके सामने दो आदमी नागर के दोनों बाजू पकड़ खड़े है। नागर का हाथ पीठ पीछे मजबूती के साथ बधा हुआ है। इन्द्रदेव ने दारोगा और मायारानी को बैठने का इशारा किया और वे दोनों उन कुर्सियों पर बैठ गये जो इन्द्रदेव के बगल में खाली पडी हुई थीं।

बाबाजी की अवस्था देख कर मायारानी को निश्चय हो गया था कि इन्द्रदेव ने मदद से साफ साफ इनकार कर दिया है और इसी से बाबाजी उदास और बेचैन है मगर इस समय नागर को अपने सामने बेबस खडी देख कर मायारानी को कुछ ढाढस हुई और उसने सोचा कि बाबाजी की उदासी का कोइ दूसरा ही कारण होगा इन्द्रदेव हम लागों की मदद अवश्य करेगा।

पाठक महाशयसमझ ही गये होंगे कि नागर की गिरफ्तारी करान वाला इन्द्रदेव ही है जिसका हाल ऊपर के एक बयान में लिख चुके है और जिस श्यामलाल ने नागर को गिरफ्तार किया था वह इन्द्रदेव ही का कोई ऐयार होगा या इन्द्रदेव ही होगा।

इन्द्रदेव के बगल में जब मायारानी और दारोगा बैठ गए तो इन्द्रदेव न नागर से पूछा क्या बाबाजी की नाक तूने ही काटी ?

नागर—जी हा मैने मायारानी की आज्ञा पाकर इनकी नाक काटी है।

इन्द्रदेव—(अपने आदमी से) अच्छा तुम इस कम्बख्त नागर की नाक और उसके साथ कान भी काट लो और यदि कुछ बोल तो जुबान भी काट लो !

हुक्म की देर थी नौकर मानों पहिले ही से नाक कान काटने के लिए तैयार था अस्तु, इस समय जो कुछ होना था हो गया और इसके बाद नागर कैदखाने में भेज दी गइ। मायारानी भी इन्द्रदेव की आज्ञानुसार अपने कमरे में चली गई और इन्द्रदेव तथा दारोगा अकेले ही रह गए।

इन्द्रदेव—आप देखते है कि जिसने आप के साथ बिना कारण के बुराई की थी उसे बुराई का बदला ईश्वर ने कुछ विशेषता के साथ दे दिया। आपको भी इसी तरह विचारना चाहिए कि क्या राजा वीरेन्द्रसिंह और राजा गोपालसिंह के साथ जो बड़े नेक और बिल्कुल बेकसूर है बुराइ करने वाला अपनी सजा को न पहुँचेगा ?

दारोगा—नि सन्देह आपका कहना ठीक है परन्तु,

दारोगा परन्तु से आगे कहने भी न पाया था कि इन्द्रदेव फिर जोश म आ गया और कडी निगाह से बाबाजी की तरफ देख के बोला—

इन्द्रदेव—मै इतना बक गया मगर अभी तक 'परन्तु' का डेरा आपके दिल से न निकला। बीरेन्द्रसिंह के एयारों से

उलझने की इच्छा आपकी अभी तक बनी ही है। खैर जो आपके जी में आवे कीजिए मगर मुझसे इस बारे में किसी तरह की आशा न रखिए। आप चाहे मुझे कोई भारी वस्तु समझे बैठे हों परन्तु मैं अपने को उन लोगों के मुकाबले में एक भुनगे के बराबर भी नहीं समझता। मुझे अच्छी तरह विश्वास है कि जहाँ हवा भी नहीं घुस सकती वहाँ वीरेन्द्रसिंह के ऐयार पहुचते हैं। (बगल से एक चीठी निकाल कर और दारोगा की तरफ बढा कर) लीजिए पढिए और सुन कर चौंक जाइए कि प्रात काल जब मैं सो कर उठा तो इस पत्र को अपने गले के साथ तावीज की तरह बँधा हुआ देखा। ओफ जिसके ऐसे ऐसे ऐयार तावेदार है उनके साथ उलझने की नीयत रखने वाला पागल या यमराज का मेहमान नहीं तो और क्या समझा जायगा !

बाबाजी ने डरते डरते वह पत्र इन्द्रदेव के हाथ से ले लिया और पढा यह लिखा हुआ था –

इन्द्रदेव–

'तुम यह मत समझो कि ऐसे गुप्त स्थान में रह कर हम लोगों की नजरों से भी छिपे हुए हो। नहीं नहीं ऐसा नहीं है। हम लोग तुम्हें अच्छी तरह जानते है ओर हमें यह भी मालूम है कि तुम अच्छे ऐयार बुद्धिमान और वीर पुरुष हो, परन्तु बुराई करना तो दूर रहा हम लोग बिना कारण या बिना बुलाए किसी के सामने भी कभी नहीं जाते इसी से हमारा तुम्हारा सामना अभी तक नहीं हुआ। तुम यह मत समझो कि तुम बिल्कुल बेकसूर हो कम्बख्त दारोगा को रोहतासगढ के कैदखाने से निकाल लाने का कसूर तुम्हारी गर्दन पर है मगर तुमने यह बडी बुद्धिमानी की कि हमारे किसी आदमी को दु ख नहीं दिया और इसी से तुम अभी तक बचे हुए हो। हम तुम्हें मुबारकबाद देते है कि श्री तेजसिंहजी ने तुम्हारा कसूर जो हरामखोर और विश्वासघाती दारोगा को कैद से छुडाने के विषय में था माफ किया। इसका कारण यही था कि वह तुम्हारा गुरुभाई है अतएव उसकी कुछ न कुछ मदद करना तुम्हें उचित ही था चाहे वह निमकहराम तुम्हारा गुरुभाई कहलाने योग्य नहीं है। खैर तुमने जो कुछ किया अच्छा मगर इस समय तुम्हें चेताया जाता है कि आज से मायारानी दारोगा या और किसी भी हमारे दुश्मन का यदि तुम साथ दोगे पक्ष करोगे हमारी कैद से निकाल ले जाने का उद्योग करोगे या केवल राय देकर भी सहायता करोगे तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा। तुम चुनारगढ के तहखाने में अपने को हथकडी बेडी से जकडे हुए पाओगे बल्कि आश्चर्य नहीं कि इससे भी बढ कर तुम्हारी दुर्दशा की जाय। हाँ यदि तुम दुनिया में नेकी ईमानदारी और योग्यता के साथ रहोगे तो ईश्वर भी तुम्हारा भला करेगा। हम लोग ईमानदार नेक और योग्य पुरुष का साथ देने के लिए हर दम कमर कसे तैयार रहते हैं। इसके सिवाय एक बात और कहना है सो भी सुन लो। दो अदद तिलिस्मी खंजर जो हम लोगों की मिलकियत है मायारानी और नागर के कब्जे में चला गया है इस समय दारोगा को साथ लेकर मायारानी तुम्हारे यहाँ मदद मांगने के लिए आई है सो खैर उससे तो कुछ मत कहो उसके पास जो हमारा खंजर है हम ले लेंगे कोई चिन्ता नहीं मगर नागर के पास जो तिलिस्मी खंजर था वह तुम्हारे एक ऐयार के पास है जो श्यामलाल बन कर नागर को गिरफ्तार करने गया था और उसे गिरफ्तार कर लाया है। बेशक वह खंजर तुम्हारे पास दाखिल किया जायगा, मगर तुम्हें मुनासिब है कि उसको हमारे हवाले करो। कल ठीक दोपहर के समय हम खोह के मुहाने पर मिलने के लिए तैयार रहेंगे जो तुम्हारे इस मकान में आने के पहिले दर्वाजे के समान है। यदि उस समय तिलिस्मी खंजर लिए तुम हमसे न मिलोगे तो हम समझेंगे कि तुम मायारानी और दारोगा का साथ देने के लिए तैयार हो गए फिर जो कुछ होगा देखा जायगा।

मिती १३ प्रथम ऋतु।
सवत ४१२ कु०।

तुमको होशियार करने वाला
एक बालक–
भैरोसिंह ऐयार

पत्र पढ कर दारोगा ने इन्द्रदेव के हाथ में दे दिया। उस समय दारोगा का चेहरा डर चिन्ता और निराशा के कारण पीला पड गया था और भविष्य पर ध्यान देने ही से वह अधमूआ हो गया था। भैरोसिंह के पत्र में तिलिस्मी खंजर का जिक्र था इसलिए दारोगा ने इन्द्रदेव की उँगलियों पर निगाह दौड़ा कर उसी समय देख लिया था कि तिलिस्मी खंजर के जोड की अँगूठी उसकी उँगली में मौजूद है अतएव उसे निश्चय हो गया कि भैरोसिंह से कोई बात छिपी नहीं है इन्द्रदेव सहायता करते दिखाई नहीं देते और अपना भविष्य बुरा नजर आता है। दारोगा इसी विचार में सिर झुकाए हुए कुछ देर तक खड़ा रहा और इन्द्रदेव उसके चेहरे के उतार चढाव को गौर से देखता रहा। आखिर इन्द्रदेव ने कहा–"मैं समझता हू कि इस चीठी के प्रत्येक शब्द पर आपने गौर किया होगा और मतलब पूरा पूरा समझ गये होंगे !

दारोगा–जी हाँ।

इन्द्रदेव–खैर तो अब मुझे इतना ही कहना है कि यदि इस समय आपके बदले में कोई दूसरा आदमी मेरे सामने होता तो मैं उसे तुरन्त ही निकलवा देता परन्तु आप मेरे गुरुभाई हैं इसलिए तीन दिन की मोहलत देता हू इस बीच में

आप यहाँ रह कर अपने भले बुरे को अच्छी तरह सोच लें और फिर जो कुछ करने का इरादा हो मुझसे कहें साथ ही इसके इस बात पर भी ध्यान रहे कि यदि आपकी नीयत अच्छी रही तो आपका कसूर क्षमा कराने के लिए मैं उद्योग करूँगा नहीं तो राजा वीरेन्द्रसिंह के विषय में मुझसे मदद पाने की आशा आप कदापि न रक्खें।

दारोगा–क्या आप भैरोसिंह से मिल कर तिलिस्मी खंजर उसके हवाले करेंगे ?

इन्द्रदेव–क्या आपको इसमें शक है ? अफसोस !

दारोगा ने फिर कुछ न पूछा और चुपचाप वहाँ से उठ अपने कमरे में चला गया। मायारानी यह जानने के लिए कि इन्द्रदेव में और दारोगा में क्या बातें हुई पहिले ही से दारोगा के कमरे में बैठी हुई थी। जब दारोगा लम्बी साँस लेकर बैठ गया तो उसने पूछा–

माया–कहिए क्या हुआ ? कम्बख्त नागर से तो खूब बदला लिया गया !

दारोगा–ठीक है मगर इससे यह न समझना चाहिए कि इन्द्रदेव हमारी मदद करेगा।

माया– (चौंक कर) तो क्या उसने इशारे में कुछ इन्कार किया।

दारोगा–इशारे में क्या बल्कि साफ साफ जवाब दे दिया।

माया–तब तो वह बड़ा ही डरपोक निकला ! अच्छा कहिये तो क्या क्या बातें हुई ?

इन्द्रदेव और दारोगा में जो कुछ बातें हुई थीं इस समय उसने मायारानी से साफ कह दी और भैरोसिंह की चीठी का हाल भी सुना दिया।

माया–(ऊँची साँस लेकर और यह सोच कर) इन्द्रदेव की बातों में पड़ कर दारोगा कहीं मेरा साथ छोड़ न दे अफसोस इन्द्रदेव कुछ भी न निकला। वह निरा डरपोक और कमहिम्मत है घर में बैठे बैठे खाना पीना और सो रहना जानता है उद्योग की कदर कुछ भी नहीं जानता। ऐसा मनुष्य दुनिया में क्या खाक नाम और इज्जत पैदा कर सकता है ! मगर हम लोग ऐसे सूरत और भूंडी किस्मत पर भरोसा करके चुप बैठे रहने वाले नहीं हैं। हम लोग उनमें से है जो गरीब और लाचार होकर भी और चक्रवर्ती होने के लिए कृतकार्य न होने पर भी उद्योग किये ही जाते है और अन्त में सफल मनोरथ होकर ही पीछा छोड़ते है। जरा गौर तो कीजिए और सोचिए तो सही कि मैं कौन थी और उद्योग ने मुझे कहाँ पहुचा दिया ? तो क्या ऐसे समय में जब किसी कारण से दुश्मन हम पर बलवान हो गया उद्योग को तिलाजुली दे बैठना उचित होगा ? नहीं कदापि नहीं। क्या हुआ यदि इन्द्रदेव डरपोक और कमहिम्मत निकला मैं तो हिम्मत हारने वाली नहीं हू और न आप ऐसे हैं। देखिए तो सही मैं क्या हिम्मत करती हू और दुश्मनों को कैसा नाच नचाती हू ! आप मेरी और अपनी हिम्मत पर भरोसा करें और इन्द्रदेव की आशा छोड मौका देख कर चुपचाप यहाँ से निकल चलें।

अफसोस ! दुनिया में अच्छी नसीहत का असर बहुत कम होता है और बुरे सोहबत की बुरी शिक्षा शीघ्र अपना असर करके मनुष्य को बुराई के दलदल में फसा कर सत्यानाश कर डालती है। मगर यह बात उन लोगों के लिए नहीं है जिनके दिमाग में सोचने समझने और गौर करने की ताकत है। सन्तति के इस बयान में दोनों रंग के पात्र मौजूद हैं अतएव पाठकों को आश्चर्य न करना चाहिए।

दूसरे दिन इन्द्रदेव ने अपने दोनो मेहमानों दारोगा और मायारानी को अपने घर में न पाया और पता लगाने से मालूम हुआ कि वे दोनो रात ही को किसी समय मौका पाकर वहाँ से निकल भागे।

दसवां बयान

दोपहर की कड़ाके की धूप से व्याकुल होकर कुछ आराम पाने की इच्छा से दो आदमी एक नहर के किनारे जिसके दोनों तरफ घने और गुँजान जंगली पेड़ों ने छाया कर रक्खा है बैठ कर आपस में धीरे धीरे कुछ बातें कर रहे हैं। इनमें से एक तो बुड्ढा नकटा दारोगा है और दूसरी किस्मत से मुकाबिला करने वाली कम्बख्त मायारानी जो इस अवस्था को पहुच कर भी हिम्मत हारने की इच्छा नहीं करती। ये दोनों इन्द्रदेव के मकान से चुपचाप भाग निकले हैं और बड़े बड़े मनसूबे गाँठ रहे हैं। इसके साथ ही वे इन्द्रदेव को भी बिगाड़ने की तर्कीब सोच रहे हैं यह भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है। बुरे मनुष्य जब किसी भले आदमी से मदद माँगने जाते है और बेचारा बुरे कामों का नतीजा सोच कर बुराई में उनका साथ देने से इन्कार करता है तो वे दुष्ट उसके भी दुश्मन हो जाते है।

माया–क्या हर्ज है ? जरा मुझे बन्दोबस्त कर लेने दीजिए फिर मैं इन्द्रदेव से समझे बिना न रहूँगी।

दारोगा–बेशक मुझे भी इन्द्रदेव पर बड़ा ही क्रोध है नालायक ने ऐसे नाजुक समय में साथ देने से इनकार किया !

खैर देखा जायगा इस समय तो इस बात पर विचार करना चाहिए कि वीरेन्द्रसिंह के दुश्मन कौन कौन है और उन लोगों को किस तरह अपना साथी बनाना चाहिए क्योंकि हम लोगों का पहिला काम यही है कि अपनी मण्डली को बढ़ावें।

माया–बेशक ऐसा ही है अच्छा आप उन लोगों का नाम तो जरा ले जायें जो हम लोगों का साथ दे सकते हैं और यह भी कह जाय कि इस समय वे लोग कहां हैं।

दारोगा–(सोचता हुआ) महाराज शिवदत्त भीमसेन और उनके साथी एक माधवी दो दिग्विजयसिंह का लड़का कल्याणसिंह तीन शेरअलीखां जिसकी लड़की को वीरेन्द्रसिंह ने कैद कर रक्खा है चार और उनके पक्षपाती लोग, जिनका कुछ हिसाब नहीं।

माया–बेशक इन लोगों का साथ हो जाने से हम लोग वीरेन्द्रसिंह और उनके पक्षपातियों को तहस नहस कर सकते हैं और ये लोग खुशी से हमारा साथ देंगे भी मगर अफसोस यह है कि शेरअलीखाँ को छोड़कर बाकी के सभी लोग कैद में हैं। हाँ यह तो कहिए कि महाराज शिवदत्त को किसने गिरफ्तार किया था और अब वह कहाँ है?

दारोगा–मुझे ठीक ठीक पता लग चुका है कि भूतनाथ ने रूहा बन कर शिवदत्त को धोखा दिया और अब शिवदत्त कमलिनी के तालाब वाले मकान में कैद है माधवी और मनोरमा भी उसी मकान में कैद हैं।

माया– उस मकान में से उन लोगों को छुड़ाना जरा मुश्किल है वह भी ऐसे समय में जबकि हमारे पास कोई ऐयार नहीं।

दारोगा–(यकायक कोई बात याद आने से चौंक कर) हां मैं यह पूछना तो भूल ही गया कि तुम्हारे दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह कहां हैं? मालूम होता है कि तुम्हारी इस आफत का हाल उन लोगों को मालूम नहीं है। मगर नहीं ऐसा नहीं हो सकता जमानिया में इतना फसाद मच जाना और तुम्हारा निकल भागना कोई साधारण बात नहीं है जिसकी खबर तुम्हारे ऐयारों को न होती शायद इसका कोई और सबब हो!

अब मायारानी इस सोच में पड़ गई कि दारोगा की बात का क्या जवाब दिया जाय। उसने और सब हाल तो दारोगा से कह दिया था मगर उन दोनों ऐयारों की जानें लेने का हाल अब तक नहीं कहा था। उसने सोचा कि यदि दारोगा को यह मालूम हो जायगा कि मैंने दोनों ऐयारों को मार डाला तो उसे बड़ा ही रंज होगा क्योंकि ऐयारों का मारना बहुत बुरा होता है तिस पर खास अपने ऐयारों की जान लेना और सो भी बिना कसूर लेकिन फिर क्या कहा जाय? क्या उनके मारने का हाल ठीक ठीक न कह कर कुछ बहाना कर देना उचित होगा? नहीं बहाना करने और छिपा जाने से काम न चलेगा अन्त में यह बात प्रकट हो ही जायगी क्योंकि लाला को यह बात मालूम हो चुकी है और कम्बख्त लीला भी इस समय मेरा साथ छोड़ कर अलग हो गई है इस लिये आश्चर्य नहीं कि वह भंडा फोड़ दे और सभों के साथ बाबाजी को भी उन बातों का पता लग जाय। मगर नहीं उस समय जो होगा देखा जायगा अभी तो छिपाना ही उचित है।

मायारानी सिर झुकाए हुए इन बातों को सोच रही थी और दारोगा इस आश्चर्य में था कि मायारानी ने मेरी बात का जवाब क्यों नहीं दिया या क्या सोच रही है! आखिर दारोगा चुपचाप रह न सका और उसने पुनः मायारानी से कहा-

दारोगा–तुम क्या सोच रही हो मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देती?

माया–मैं यही सोच रही हूँ कि आपकी बात का क्या जवाब दूं जब कि मैं स्वयम् नहीं जानती कि मेरे ऐयारों ने ऐसे समय में मेरा साथ क्यों छोड़ दिया और कहाँ चले गये!

दारोगा–अस्तु मालूम हुआ कि उन दोनों ने स्वयम् तुम्हारा साथ छोड़ दिया।

माया–बेशक ऐसा ही कहना चाहिए। अच्छा अब विशेष समय नष्ट न करना चाहिये। अब आप जल्दी यह बताइए कि हम कहाँ जाकर ठहरें और क्या करें!

दारोगा–अब जहाँ तक मैं समझता हूं यही उचित जान पड़ता है कि शेरअलीखाँ के पास चलें और मदद लें। यह तो सब कोई जानते हैं कि शेरअलीखाँ बड़ा जबदस्त और लड़ाका है मगर उसके पास दौलत नहीं है।

माया–ठीक है मगर जब मैं दौलत से उसका घर भर दूँगी तो वह बहुत ही खुश होगा और एक जबदस्त फौज तैयार करके हमारा साथ देगा। मैं आपसे कह चुकी हूं कि इस अवस्था में भी दौलत की मुझे कमी नहीं है।

दारोगा–हाँ मुझे याद है तुमने शिवगढ़ी के बारे में कहा था अच्छा तो अब विलम्ब करने की आवश्यकता ही क्या है? (चौंक कर) है यह क्या! (हाथ का इशारा करके) वह कौन है जो सामने की झाड़ी में से निकल कर इसी तरफ आ रहा है? शिवदत्त की तरह मालूम पड़ता है! (कुछ रुक कर) बेशक शिवदत्त ही तो है! हाँ देखो तो वह अकेला नहीं है उसके पीछे उसी झाड़ी में से और भी कई आदमी निकल रहे हैं।

मायारानी ने भी चौंक कर उस तरफ देखा और हंसती हुई उठ खड़ी हुई।

॥ दसवां भाग समाप्त ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

ग्यारहवा भाग

पहिला बयान

अब हम अपने पाठको को पुन कमलिनी के तिलिस्मी मकान की तरफ ले चलते हैं जहा बेचारी तारा को बदहवास और घबराई हुई छोड़ आये है।

हम उस बयान में लिख चुके हैं कि छत के ऊपर जो पुतली थी उसे तेजी के साथ नाचते हुए देख कर तारा घबरा गई और बदहवास होकर कमलिनी को याद करने लगी। इसका सबब यह था कि यद्यपि बेचारी तारा उस तिलिस्मी मकान का पूरा पूरा हाल नहीं जानती थी मगर फिर भी बहुत से भेद उसे मालूम थे और कमलिनी से सुन चुकी थी कि जब इस मकान पर कोई आफत आने वाली होगी तब वह पुतली (जिसके नाचने का हाल लिखा जा चुका है) तेजी के साथ घूमने लगेगी उस समय समझना चाहिए कि हम मकान में रहने वालों की कुशल नहीं है। यही सबब था कि तारा बदहवास होकर इधर उधर देखने लगी और उसकी अवस्था देख कर किशोरी और कामिनी का भी निश्चय हो गया कि बदकिस्मती ने अभी तक हम लोगों का पीछा नहीं छोड़ा और अब यहा भी कोई नया गुल खिला चाहता है।

जिस समय तारा घबरा कर इधर उधर देख रही थी उसकी निगाह यकायक पूरब की तरफ जा पड़ी जिधर दूर तक साफ मैदान था। तारा ने देखा कि लगभग आध कोस की दूरी पर सैकड़ो आदमी दिखाई दे रहे हैं और वे लोग तेजी के साथ तारा के इसी मकान की ओर बढ़ चले आ रहे हैं। इसी के साथ ही साथ तारा की तेज निगाह ने यह भी बता दिया कि वे लोग जिनकी गिनती चार सौ से कम न होगी या तो फौजी सिपाही हैं या लड़ाई के फन में होशियार लुटेरों का कोई गिरोह है जो दुश्मनी के साथ थोड़ी ही देर में इस मकान को घेर कर उपद्रव मचाना चाहता है। इसके बाद तारा की निगाह तालाब पर पड़ी जिस पर उसे पूरा पूरा भरोसा था और जानती थी कि इस जल को तैर कर कोई भी इस मकान में घुस आने का दावा नहीं कर सकता मगर अफसोस इस समय तालाब की अवस्था भी बदली हुई थी अर्थात उसमें का जल तेजी के साथ कम हो रहा था और लोहे की जालियां जाल या फन्दे जो जल के अन्दर छिपे हुए थे अब जल कम होते जाने के कारण धीरे धीरे उसके ऊपर निकलते चले आ रहे थे इन्हीं जालियों और फन्दों के कारण कोई आदमी उस तालाब में घुस कर अपनी जान नहीं बचा सकता था और इनका खुलासा हाल हम पहिले लिख चुके हैं।

तारा ने जब तालाब का जल घटते और जालों को जल के बाहर निकलते देखा तो उसकी आशा भी जाती रही मगर उसने अपने दिल को सम्हाल कर इस आने वाली आफत से किशोरी और कामिनी को होशियार कर देना उचित जाना। उसने किशोरी और कामिनी की तरफ देख कर कहा— बहिन अब मुझे एक आफत का हाल तो मालूम हो गया जो हम लोगों पर आना चाहती है। (उन फौजी आदमियों की तरफ इशारा करके जो दूर से इसी तरफ आते हुए दिखाई दे रहे थे) वे लोग हमारे दुश्मन जान पड़ते हैं जो शीघ्र ही यहाँ आकर हम लोगों को गिरफ्तार कर लेंगे। मुझे पूरा पूरा भरोसा था कि इस तालाब मे तैर कर या घरनाई अथवा डोंगी के सहारे कोई इस मकान तक नहीं आ सकता क्योंकि जल के अन्दर लोहे के जाल इस ढंग से बिछे हुए हैं कि इसमें तैरने वाली चीज बिना फसे और उलझे नहीं रह सकती मगर वह बात भी जाती रही। देखो तालाब का जल कितनी तेजी के साथ घट रहा है और जब सब जल निकल जायगा तो इस बीच वाले जाल को तोड़ या बिगाड़ कर यहाँ तक चले आने में कुछ भी कठिनता न रहेगी। मालूम होता है कि दुश्मनों ने इसका बन्दोबस्त पहिले ही से कर रक्खा था अर्थात सुरंग खोद कर जल निकालने और तालाब सुखाने का बन्दोबस्त किया गया है और निःसन्देह वे अपने काम में कृतकार्य हुए। (कुछ सोच कर) बड़ी कठिनाई हुई। (आस्मान की तरफ देख के) माँ जगदम्बे सिवाय तेरे हम अबलाओं की रक्षा करने वाला कोई भी नहीं और तेरी शरण आए हुए को दुःख देने वाला भी जगत में कोई नहीं। इतना दुःख भोग कर आज तक केवल तेरे ही भरोसे जी रही हू और मुझे इस बात की प्रसन्नता हुई कि आज तक तेरा ध्यान धर के जान बचाये रहना वृथा न हुआ तो अब यह जान ? यह क्या ? क्यों ? किसके साथ ? क्या उसके साथ जो तुम पर भरोसा रक्खे ! नहीं नहीं इसमें भी अवश्य तेरी कुछ माया है ?

भगवती की प्रार्थना करते करते तारा की आखें बन्द हो गई मगर इसके बाद तुरन्त ही वह चौकी तथा किशोरी और कामिनी की तरफ देख के बोली नि सन्देह महामाया हम अबलाओं की रक्षा करेंगी। हमें हताश न होना चाहिए उन्हीं की कृपा से इस समय जो कुछ करना चाहिए वह भी सूझ गया।शुक्र है कि इस समय दो एक को छोड़ कर बाकी सब आदमी मेरे घर के अन्दर ही है। अच्छा देखो तो सही कि मै क्या करती हू। यह कहती हुई तारा छत के नीचे उतर गई।

हमारे पाठकों को याद होगा कि यह मकान किस ढग का बना हुआ था। वे भूले न होंगे कि इस मकान के चारो तरफ जो छोटा सा सहन है उसके चारो कोनो मे चार पुतलिया हाथो मे तीर कमान लिए इस ढग से खड़ी है मानों अभी तीर छोडा ही चाहती है। इस समय बेचारी तारा छत पर से उतर कर उन्हीं पुतलियो मे से एक पुतली के पास आई। उसने इस पुतली का सिर पकड कर पीठ की तरफ झुकाया और पुतली बिना परिश्रम झुकती चली गई यहा तक कि जमीन के साथ लग गई। इस समय तालाब का जल करीब चौथाई के सूख चुका था। पुतली झुकने के साथ ही जल मे खलबली पैदा हुई। उस समय तारा ने प्रसन्न हो पीछे की तरफ फिर कर देखा तो किशोरी और कामिनी पर निगाह पडी जो तारा के साथ ही साथ नीचे उतर आई थी और उसके पीछे खडी यह कारवाई देख रही थी। कई लौडिया भी पीछे की तरफ नजर पडी जो इत्तिफाक से इस समय मकान के अन्दर ही थी। तारा ने कहा कोई हर्ज नही दुश्मन हमारे पास नही आ सकते।

किशोरी–मेरी समझ मे कुछ भी नही आया कि तुम क्या कर रही हो और इस पुतली के झुकने से जल मे खलबली क्यों पैदा हुई ?

तारा–ये पुतलियाँ इसी काम के लिए बनी है कि जब दुश्मन किसी तर्कीब से इस तालाब को सुखा डाले और इस मकान मे आने का इरादा करे तो इन चारो पुतलियो से काम लिया जाय। इस मकान की कुरसी गोल है और इसमें चार चक्र लगे हुए है जिनकी धार तलवार की तरह और चौडाई सात हाथ से कुछ ज्यादे होगी हाथ भर की चौडाई तो मकान की दीवार मे चारो तरफ घुसी हुई है जिसका सम्बन्ध किसी कल पुर्जे मे है और छ हाथ की चौड़ाई मकान की दीवार से बाहर की तरफ निकली हुई है। ये चारो चक्र जल के अन्दर छिपे हुए है और इस मकान को इस तरह घेरे हुए है जैसे छल्ला या सादी अगूठी उगली को। अब इन चारो पुतलियो मे से एक पुतली झुका कर जमीन के साथ सटा दी जायगी तो एक चक्र तेजी के साथ घूमने लगेगा इसी तरह दूसरी पुतली झुकाने से दूसरा तीसरी पुतली झुकने से तीसरा और चौथी पुतली झुकने से चौथा चक्र भी घूमने लगेगा। उस समय किसी की मजाल नहीं कि इस मकान के पास फटक जाय जो आवेगा उसके चार टुकड़े हो जाएगे। मैंने जो इस पुतली को झुका दिया है इस सबब से एक चक्र घूमने लगा है और उसी की तेजी से जल में खलबली पैदा हो गई है। पहिले मुझे यह हाल मालूम न था, कमलिनी के बताने से मालूम हुआ है। विशेष कहने की कोई आवश्यकता नही है तुम स्वयम् देखती हो कि जल किस तेजी के साथ कम हो रहा है। हाथ भर जल कम होने दो फिर स्वयम् देख लेना कि कैसा चक्र है और किस तेजी के साथ घूम रहा है।

किशोरी–(आश्चर्य से) मकान की हिफाजत के लिए अच्छी तर्कीब निकाली है।

तारा–इन चक्रो के अतिरिक्त इस मकान की हिफाजत के लिए और भी कई चीजे है मगर उनका हाल मुझे मालूम नहीं है।

किशोरी ने गौर से जल की तरफ देखा जो चक्र के घूमने की तेजी से मकान के पास की तरफ खलबला रहा था और उसमे पैदा भई हुई लहरें किनारे तक जा जा कर टक्कर खा रही थी। जल बहुत ही साफ था इसलिए शीघ्र ही कोई चमकती हुई चीज भी दिखाई देने लगी। जैसे जैसे जल कम होता जाता था वह चक्र साफ साफ दिखाई देता था। थोड़ी ही देर बाद जल विशेष घट जाने के कारण चक्र साफ निकल आया जो बहुत ही तेजी के साथ घूम रहा था। किशोरी ने ताज्जुब में आकर कहा, 'बेशक अगर इसके पास लोहे का आदमी भी आवेगा तो कट कर दो टुकड़े हो जायगा ! वह बड़े गौर से उस चक्र को देख रही थी कि आदमियों के शोरगुल की आवाज आने लगी। तारा समझ गई कि दुश्मन पास आ गये। उसने किशोरी और कामिनी की तरफ देख के कहा 'बहिन अब तीन पुतलियाँ और रह गई है, उन्हें भी झटपट झुका देना चाहिए क्योंकि दुश्मन आ पहुँचे। एक पुतली को तो मैं झुकाती हूँ और दो पुतलियों को तुम दोनों झुका दो, फिर छत पर चल कर देखो तो सही ईश्वर क्या करता है और इन दुश्मनों की क्या अवस्था होती है।

तीनों पुतलियों का झुकाना थोडी देर का काम था जो किशोरी कामिनी और तारा ने कर दिया और इसके बाद तीनों छत के ऊपर चढ गई। तारा ने एक और काम किया अर्थात कमान और बहुत से तीर भी अपने साथ छत के ऊपर ले गी गई।

चारों पुतलियों के झुक जाने से जल में बहुत ज्यादे खलबली पैदा हुई मालूम होता था कि जल तेजी के साथ मथा जा रहा है जिसमें झाग और फेन पैदा हो रहा था।

अपने यहा की लौडियों और नौकरो को कुछ समझा कर कामिनी तथा किशोरी का साथ लिए हुए तारा छत के

ऊपर चढ गई और वहा से जब दुश्मनों की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि वे लोग जो गिनती में चार सौ से किसी तरह कम न होंग तालाब के पास पहुच गय हैं और तालाब के खौलत हुए जल तथा उस एक चक्र का जो इस समय जल क बाहर निकला हुआ तेजी क साथ घूम रहा था हैरत की निगाह से देख रहे हैं।

तारा--किशोरी बहिन दखो अगर इस समय उन चारों पुतलियों का हाल मालूम न होता तो हम लोगों की तबाही में कुछ बाकी न था !

किशोरी--बेशक इस समय तो उन चारों चक्रो ही ने हम लोगों की जान बचा ली। दुश्मन लोग इस समय उन चक्रों का आश्चर्य से ही देख रहे हैं और इस तरफ कदम बढाने की हिम्मत नही करते।

कामिनी--मगर हम लोग कब तक इस अवस्था में रह सकते हैं? क्या वे चारों चक्र इसी तरह बहुत दिनों तक घूमते रह सकते है।

तारा--हा अगर हम लाग स्वयं न राक दे ता एक महीने तक बराबर घूमते रहेंगे इसके बाद इन चक्रों के घुमाने के लिए कोइ दूसरी तर्कीब करनी होगी जो मुझे मालूम नहीं।

किशोरी--अगर एसा है ता महीन भर तक हम लाग बेखौफ रह सकते है और क्या इस बीच मे हमारी मदद करने वाला काइ भी नहीं पहुचेगा?

तारा--क्यों नहीं पहुचगा ! मान लिया जाय कि हमारा साथी इस बीच में कोई न आवे ता भी रोहतासगढ से मदद जरुर आवेगी क्योंकि यह जमीन रोहतासगढ की अमलदारी में है और राहतासगढ यहाँ से बहुत दूर भी नहीं है अस्तु एसा नहीं हो सकता कि राजा की अमलदारी में इतने आदमी मिल कर उपद्रव मचावें और राजा को कुछ खबर न हो।

कामिनी--ठीक है मगर यह ता कहो कि बहुत दिनों तक काम चलने के लिये गल्ला इस मकान मे है?

तारा--आह गल्ले की क्या कमी है साल भर से ज्यादे दिन तक काम चलाने के लिए गल्ला मौजूद है !

कामिनी--और जल के लिय क्या बन्दोवस्त होगा ! क्योंकि जितनी तेजी के साथ इस तालाब का जल निकल रहा है उससे तो मालूम होता है कि पहर भर के अन्दर तालाब सूख जायगा।

कामिनी की इस बात ने तारा का चौंका दिया। उसके चेहर से बेफिक्री की निशानियाँ जो चारों पुतलियों की करामात स पैदा हो गई थीं जाती रही और उसके बदले मे घबराहट और परेशानी ने अपना दखल जमा लिया। तारा की यह अवस्था देख कर किशोरी और कामिनी को विश्वास हो गया कि इस तालाब का जल सूख जानेपर बेशक हम लोगों को प्यासे रह कर जान देनी पडगी क्योंकि अगर ऐसा न होता तो तारा घबडा कर चुप न हो जाती जरुर कुछ जवाब देती। आखिर तारा का चिन्ता में डूबे हुए देख कर कामिनी ने पुन कुछ कहना चाहा मगर मौका ना मिला क्योंकि तारा यकायक कुछ सोच कर उठ खडी हुई और कामिनी तथा किशोरी को अपने पीछे पीछे आने का इशारा करके छत के नीचे उतर कमरों में घूमती फिरती उस कोठरी में पहुँची जिसमें नहाने के लिये छोटा सा हौज बना हुआ था जिसमें एक तरफ स तालाब में पानी कम हो जान के कारण हौज का जल भी कुछ कम हो गया था। तारा ने वहा पहुचने के साथ ही फुर्ती से उन दानों रास्तों को बन्द कर दिया जिनसे हौज में जल आता और निकल जाता था इसके बाद एक ऊँची सास लेकर उसन कामिनी की तरफ दखा और कहा--

तारा--ओफ इस समय बडा ही गजब हा चला था ! अगर तुम पानी के विषय में याद न दिलातीं तो इस हौज की तरफ से मैं बिल्कुल बफिक्र थी इसका ध्यान भी न था कि तालाब का जल कम हो जाने पर यह हौज भी सूख जायगा और तब हम लोगों को प्यासे रह कर जान देनी पड़ेगी।

किशोरी--ता इससे जाना जाता है कि तालाब सूख जाने पर सिवाय इस छोटेस हौज के और कोई चीज ऐसी नही है जो हम लोगों की प्यास बुझा सके।

कामिनी--और यह हौज तीन चार दिन से ज्यादे काम नहीं चला सकता एसी अवस्था में उन चक्रों का महीने भर तक घूमना ही वृथा है क्योंकि हम लोग प्यास के मारे मौत के मेहमान हो जायेंगे। अफसोस जिस कारीगरने इस मकान की हिफाजत के लिए ऐसी ऐसी चीजें बनाई और जिसने यह सोच कर कि तालाब का जल सूख जाने पर भी इस मकान में रहने वालों पर मुसीबत न आवे ये घूमने वाले चक्र बनाये उसने इतना न सोचा कि तालाब सूखने पर यहा के रहने वाले जल कहा से पीयेंगे? उसे इस मकान में एक कूआ भी बना देना था।

तारा--ठीक है मगर जहा तक मैं ख्याल करती हू इस मकान के बनान वाल कारीगर ने इतनी बडी भूल न की होगी। उसने काई कूआ अवश्य बनाया होगा लकिन मुझ उसका पता मालूम नहीं। खैर देखा जायगा मैं उसका पता अवश्य लगाऊंगी।

कामिनी–मुझे एक बात का खतरा और भी है।

तारा–वह क्या ?

कामिनी–वह यह है कि तालाब सूख जाने पर ताज्जुब नहीं कि यहां तक पहुंचने के लिए इस मकान के नीचे सुरंग खोदने और दीवार तोड़ने की कोशिश दुश्मन लोग करें।

तारा–ऐसा तो हो ही नहीं सकता इस मकान की दीवार किसी जगह से किसी तरह टूट नहीं सकती।

इसी बीच में तालाब के बाहर से विशेष कोलाहल की आवाज आने लगी जिसे सुन तारा किशोरी और कामिनी मकान के ऊपर चली गई और छिप कर दुश्मनों का हाल देखने लगीं। वे लोग इस मकान में पहुंचना कठिन जान कर शोरगुल मचा रहे थे और कई आदमी हाथ में तीर कमान लिए इस वास्ते भी तैयार दिखाई दे रहे थे कि कोई आदमी इस मकान के बाहर निकले तो उस पर तीर चलावें। किशोरी ने बड़े गौर से दुश्मनों की तरफ देख कर तारा से कहा बहिन तारा इन दुश्मनों में बहुत से लोग ऐसे हैं जिनको मैं बखूबी पहिचानती हूं क्योंकि जब मैं अपने बाप के घर थी तो ये लोग मेरे बाप के नौकर थे।

तारा–ठीक है मैं भी इन लोगों को पहिचानती हूं, बेशक ये लोग तुम्हारे बाप के नौकर हैं और उन्हीं को छुड़ाने के लिए यहां आये हैं।

किशोरी– (चौंक कर) तो क्या मेरे पिता इसी मकान में कैद हैं ?

तारा–हां वे इसी मकान में कैद हैं।

किशोरी को जब यह मालूम हुआ कि उसका बाप इस मकान में कैद है तो उसके दिल पर एक प्रकार की चोट सी बैठी। यद्यपि उसने अपने बाप की बदौलत बहुत तकलीफें उठाई थीं बल्कि यों कहना चाहिए कि अभी तक अपने बाप की बदौलत दुःख भोग रही है और दर दर मारी मारी फिरती है मगर फिर भी किशोरी का दिल पाक साफ और शीघ्र ही पसीज जानेवाला था। वह अपने बाप का हाल सुनते ही कुछ देर के लिए वे सब बातें भूल गई जिनकी बदौलत आज तक दुर्दशा की छतरी उसके सर पर से नहीं हटी थी। इसके साथ ही पल भर के लिए उसकी आंखों के सामने वह खंडहर वाला दृश्य भी घूम गया जहाँ उसके सगे भाई ने खंजर से उसकी जान लेने के लिये वीरता प्रकट की थी *मगर रामशिला वाले साधु के पहुंच जाने से कुछ न कर सका था। वह यह भी जानती थी कि उसका भाई भीमसेन पिता की आज्ञा पा कर मेरी जान लेने के लिए आया था और अब भी अगर पिता का बस चले तो मेरी जान लेने में विलम्ब न करें मगर फिर भी कोमल हृदया किशोरी के दिल में बाप के दर्शन की इच्छा प्रकट हुई और उसने डबडबाई हुई आंखों से तारा की तरफ देख कर गद्गद स्वर से कहा–

किशोरी–बहिन तुम्हें आश्चर्य होगा यदि मैं पिता को देखने की इच्छा प्रकट करूं मगर लाचार हूं जी नहीं मानता।

तारा–हाँ यदि कोई दूसरी बेकसूर लड़की ऐसे पिता से मिलने की इच्छा प्रकट करती तो अवश्य आश्चर्य की जगह थी मगर तेरे लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि मैं तेरे स्वभाव को अच्छी तरह जानती हूं परन्तु बहिन किशोरी मुझे निश्चय है कि तू अपने पिता को देख कर प्रसन्न न होगी बल्कि तुझे दुःख होगा वह तुझे देखते ही बेबस रहने पर भी हजारों गालियां देगा और कच्चा ही खा जाने के लिए तैयार हो जायगा।

किशोरी–तुम्हारा कहना ठीक है परन्तु मैं माता पिता की गाली को आशीर्वाद समझती हूं, यदि वे कुछ कहेंगे तो कोई हर्ज नहीं और मैं ज्यादे देर तक उनके पास ठहरूंगी भी नहीं केवल एक नजर देख कर पिछले पैर लौट आऊंगी। मुझे विश्वास है कि दुश्मन लोग जो तालाब के बाहर खड़े हैं इस समय मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते और यदि तुम्हारी कृपा होगी तो मैं ऐसे समय में भी बेफिक्री के साथ अपने पिता को एक नजर देख सकूंगी।

तारा–खैर जब ऐसा कहती हो तो लाचार मैं तुम्हें कैदखाने में ले चलने के लिए तैयार हूं, चल कर अपने पिता को देख लो।

कामिनी–क्या मैं भी तुम लोगों के साथ चल सकती हूं।

तारा–हां हां कोई हर्ज नहीं तू भी चल कर अपनी रानी माधवी को एक नजर देख ले।

लौंडियों को बुला कर हाजत के विषय में तथा और भी किसी विषय में समझा बुझा कर किशोरी और कामिनी को साथ लिए हुए तारा वहाँ से रवाना हुई और एक कोठरी में से लालटेन तथा खंजर ले दूसरी कोठरी में गई जिसमें किसी तरह

---

*चन्द्रकान्ता सन्तति दूसरे भाग के आखिरी बयान में इसका हाल लिखा गया है।

का सामना न था। इस कोठरी में मजबूत ताला लगा हुआ था जो खोला गया और तीनों कोठरी के अन्दर गईं। कोठरी बहुत छोटी थी और इस योग्य न थी कि वहा का कुछ हाल लिखा जाय। इस कोठरी के नीचे एक तहखाना था जिसमें जाने के लिए छोटा सा मगर लोहे का और मजबूत दवाजा जमीन में दिखाई दे रहा था। तारा ने लालटन जमीन पर रख कर कमर में से ताली निकाली और तहखाने का दवाजा खोला। नीचे बिल्कुल अन्धकार था इसलिए तारा ने जब लालटेन उठा कर दिखाया तो छोटी छोटी सीढ़िया नजर पडीं। किशोरी कामिनी को पीछे पीछे आने का इशारा करके तारा तहखाने में उतर गई मगर जब नीचे पहुची तो यकायक चौंक कर ताज्जुब भरी निगाह के साथ इस तरह चारों तरफ देखने लगी जैसे किसी की कोई अनमोल अलभ्य और अनूठी चीज यकायक सामने से गुम हो जाय और वह आश्चर्य से चारों तरफ देखने लगे।

यह तहखाना दस हाथ चौडा और पन्द्रह हाथ लम्बा था। इसकी अवस्था कहे देती थी कि यह जगह केवल हथकडी बेडी से सुशोभित कैदियों की खातिरदारी के लिये ही बनाई गई है। बिना चौकठ दर्वाजे की छोटी छोटी दस कोठरियाँ जो एक के साथ दूसरी लगी हुई थीं एक तरफ और उसी ढंग की उतनी ही कोठरियाँ उसके सामने दूसरी तरफ बनी हुई थीं। इतनी कम जमीन में बीस कोठरियो के ध्यान ही से आप समझ सकते हैं कि कैदियों का गुजारा किस तकलीफ से होता होगा।

दोनो तरफ तो कोठरियों की पंक्ति थी और बीच में थोडी से जगह इस योग्य बची हुई थी कि यदि कैदियों को रोटी पानी पहुचाने या देखने के लिये कोई जाय तो अपना काम बखूबी कर सके। इसी बची हुई जमीन के एक सिरे पर तहखाने में आने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। जिस राह से इस समय तारा किशोरी और कामिनी आई थीं उसी के सामने अर्थात दूसरे सिर पर लोहे का एक छोटा मजबूत दवाजा था जो इस समय खुला था और एक बडा सा खुला हुआ ताला उसके पास ही जमीन पर पडा हुआ था जो बेशक उसी दवाजे में उस समय लगा होगा जब वह दरवाजा बन्द होगा। इसी दरवाजे का खुला हुआ और अपने कैदियों को न देख कर तारा चौंकी और घबरा कर चारों तरफ देखने लगी थी।

तारा–बडे आश्चर्य की बात है कि हथकडी बेडी से जकडे हुए कैदी क्योंकर निकल गये और इस दरवाजे का ताला किसने खोला। निःसन्देह या तो हमारे नौकरों में से किसी ने कैदियों की मदद की या कैदियों का कोई मित्र इस जगह आ पहुचा। मगर नहीं इस दवाजे को दूसरी तरफ से कोई खोल नहीं सकता परन्तु

किशोरी–क्या यह किसी सुरंग का दवाजा है?

तारा–समय पडने पर आने जाने के लिए यह एक सुरंग है जो यहाँ से बहुत दूर जाकर निकली है। वर्षों हो गये कि इस सुरंग से कोई काम नहीं लिया गया केवल उस दिन यह सुरंग खोली गई थी जिस दिन तुम्हारे पिता गिरफ्तार हुए थे क्योंकि वे इसी सुरंग की राह से यहा लाए गये थे।

कामिनी–मैं समझती हूं कि इस सुरंग के दर्वाजे को बन्द करने में जल्दी करना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि इस राह से दुश्मन लोग आ पहुचे और हमारा बना बनाया खेल बिगड जाय।

किशोरी– मेरी तो यह राय है कि इस सुरंग के अन्दर चल कर देखना चाहिए शायद कैदियों का कुछ

तारा– मेरी भी यही राय है मगर इस तरह खाली हाथ सुरंग के अन्दर जाना उचित न होगा शायद दुश्मनों का सामना हो जाय अच्छा ठहरो मैं तिलिस्मी नेजा लेकर आती हूँ।

इतना कह कर तारा तिलिस्मी नेजा लेने के लिए चली मगर अफसोस उसने बडी भारी भूल की कि सुरंग के दर्वाजे को बिना बन्द किए ही चली आई और इसके लिए उसे बहुत रंज उठाना पड़ा अर्थात जब वह तिलिस्मी नेजा लेकर लौटी और तहखाने में पहुची तो वहाँ किशोरी और कामिनी को न पाया निश्चय हो गया कि उसी सुरंग की राह से जिसका दरवाजा खुला हुआ था दुश्मन आये और किशोरी तथा कामिनी को पकड के ले गये।

दूसरा बयान

किशोरी और कामिनी के गायब हो जाने का तारा को बडा रंज हुआ यहाँ तक कि उसने अपनी जान की कुछ भी परवाह न की और तिलिस्मी नेजा हाथ में लिए हुए बेधडक उस सुरंग में घुस गई। यह वही तिलिस्मी नेजा था जो कमलिनी ने उसे दिया था और जिस पर तारा को बहुत भरोसा था।

आज से पहिले तारा को इस सुरंग के अन्दर जाने का अवसर नहीं पडा था इसलिए वह नहीं जानती कि वह सुरंग कैसी है अस्तु उसने तिलिस्मी नेजे का कब्जा दबाया उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई और उसी रोशनी में तारा ने दवाजे के अन्दर कदम रक्खा। दो ही कदम जाने बाद नीचे उतरने के लिए कई सीढियाँ दिखाई दीं और जब तारा नीचे उतर गई तो सीधी सुरंग मिली।

तारा तेजी के साथ बल्कि यो कहना चाहिए कि दौडती हुई उस सुरग में रवाना हुइ और जब वह थोडी दूर चली गई तो उस कई आदमी दिखाई पड जो आगे की तरफ जा रहे थे मगर अपने पीछे तिलिस्मी नेजे की अ‹ ›‹ चमक देख कर रुक गये और ताज्जुब भरी निगाहो स उस चमक को देख रह थे जो पल भर में पास होकर उनकी आखो मे चकाचौंध पैदा कर रही थी।

ये लोग वे ही थ जो किशोरी और कामिनी को जबर्दस्ती पकड क ले गये थे। व लोग बुहत दूर जान न पाये थे जब तिलिस्मी नेजा लिए हुए तारा लौट आई थी उसके अतिरिक्त किशोरी और कामिनी को जबर्दस्ती घसीटते लिए जा रहे थे इसलिए तेज भी नहीं चल सकत थ यही सबब था कि तारा ने बुहत जल्द उन्हें जा पकडा। उन लोगो के साथ एक लालटन थी मगर नेजे की चमक ने उसे बेकार कर दिया था। जब उन लोगों ने दूर से तारा को देखा तो एक दफे उनकी यह इच्छा हुइ कि तारा को भी पकड लेना चाहिए परन्तु नेजे की अदभुत करामात ने उनका दिल तोड दिया और चमक से उनकी ऑख ऐसी बेकार हुई कि भागने का भी उद्योग न कर सके।

बात की बात में तारा उन लोगो के पास जा पहुची जो गिनती में चार थे। यदि तारा के हाथ में तिलिस्मी नेजा न होता तो वे लोग उसे भी अवश्य पकड लेते मगर यहा तो मामला ही और था। नेजे की चमक से लाचार होकर वे स्वय **दोनों हाथों से अपनी अपनी ऑखें बन्द कर के बैठ गये थे तथा किशोरी और कामिनी की भी यही अवस्था थी।**

तारा ने फुर्ती से तिलिस्मी नेजा चारो आदमियों के बदन से लगा दिया जिससे वे लोग काप कर बात की बात में बेहोश हो गये। अब तारा ने नेजे का मुट्ठा ढीला किया उसकी चमक बन्द हो गई और उस समय किशोरी और कामिनी ने ऑख खोल कर तारा को देखा।

किशोरी और कामिनी का हाथ रस्सी से बॅधा हुआ था जिसे तारा ने तुरन्त खोल दिया। किशोरी और कामिनी बडी मुहब्बत के साथ तारा से लिपट गई और तीनो की आखों से गर्म आसू गिरने लगे। तारा ने किशोरी और कामिनी से कहा बहिन तुम जरा यहॉ ठहरो मैं थोडी दूर तक आगे बढ कर देखती हू कि क्या हाल है अगर कोई दुश्मन न मिला तो भी सुरग के दूसरे किनारे पर पहुच कर दर्वाजा बन्द कर देना आवश्यक है। मुझे निश्चय है कि बाहरी दुश्मन इस दरवाजे को नही खोल सकते मगर ताज्जुब है कि कैदियों ने क्योंकर ये दर्वाजे खोले।

किशोरी–ठीक है मगर मेरी राय नहीं है कि तुम आगे बढो कहीं ऐसा न हो कि दुश्मनों का सामना हो जाय इससे यही उचित होगा कि यहा से लौट चलो और सुरग तथा तहखाने का मजबूत दर्वाजा बन्द करके चुपचाप बैठो फिर जो ईश्वर करेगा देखा जायगा।

तारा–(कुछ सोच कर) बेहतर होगा कि तुम दोनों चली जाओ और सुरग तथा तहखाने का दर्वाजा बन्द करके चुपचाप बैठो और मुझे इस सुरग की राह से इसी समय निकल जाने दो क्योंकि कैदियों का भाग जाना मामूली बात नहीं है नि सन्देह वे लोग भारी उपद्रव मचावेंगे और मुझे कमलिनी के आगे शर्मिन्दगी उठानी पडेगी। यह तो कहो ईश्वर ने बडी कृपा की कि बहिन तुम दोनों शीघ्र ही मिल गई नहीं तो अनर्थ हो ही चुका था और मैं कमलिनी को मुहॅ दिखाने लायक नही रही थी अब जब तक कैदियों का पता न लगा लूगी मेरा जी ठिकाने न होगा।

कामिनी–बहिन तुम कह क्या रही हो ! जरा सोचो तो सही कि इतने दुश्मनों में तुम्हारा अकेले जाना उचित होगा और क्या इस बात को हम लोग मान लेंगे।

तारा–(तिलिस्मी नेजे की तरफ इशारा करके) यह एक ऐसी चीज मेरे पास है कि मैं हजार दुश्मनो के बीच में भी अकेली जा कर फतह के साथ लौट आ सकती हू। यद्यपि तुम दोनों ने इस समय इस नेजे की करामात देख ली मगर फिर भी मैं कहती हू कि इस नेजे का असल हाल तुम्हे मालूम नहीं है इसी से मुझे रोकती हो।

किशोरी–बेशक इस नेजे की करामात मैं देख चुकी हू और यह नि सन्देह एक अनूठी चीज है मगर फिर भी मैं तुमको अकेले न जाने दूँगी अगर जिद्द करोगी तो हम दोनों भी तुम्हारे साथ चलेंगी।

तारा ने बहुत समझाया और जोर मारा मगर किशोरी और कामिनी ने एक न मानी और तारा को मजबूर हो कर उन दोनों की बात माननी पडी। अन्त में यह निश्चय हुआ कि सुरग के किनारे पर चल कर उसका दर्वाजा बन्द कर देना चाहिये और इन बदमाशों को भी घसीट कर ले चलना और सुरग के बाहर कर देना चाहिये अदने आदमियों को कैद करने की आवश्यकता नहीं है– आखिर ऐसा ही किया गया।

किशोरी कामिनी और तारा कैदियों को घसीटती हुई गईं और आध घटे में सुरग के दूसरे मुहाने पर पहुचीं। यह मुहाना पहाडी के एक खोह से सम्बन्ध रखता था और वहॉ लोहे का छोटा सा दर्वाजा लगा हुआ था जो इस समय खुला था। तारा ने कैदियों को बाहर फेंक कर दर्वाजा बन्द कर दिया और इसके बाद तीनों वहा से लौट पडीं। रास्ते में तारा ने तिलिस्मी नेजे और खजर का पूरा पूरा हाल किशोरी और कामिनी को समझाया।

तहखाने में पहुच कर सुरग का दूसरा दर्वाजा बन्द किया गया और फिर ऊपर पहुच कर तारा न तहखाने का दवाजा भी बन्द करक ताला लगा दिया।

इधर तालाब का जल तजी क साथ सूख रहा था क्याकि तालाब क ऊपरी हिस्से में लम्बान चौडान ज्यादे हाने के कारण जल भी ज्याद अँटता है इसी तरह निचले हिस्से में लम्बान चाडान कम होने के कारण जल कम रहता है इसीलिए बनिस्यत ऊपरी हिस्स के तालाँव क निचले हिस्सा का जल क्रमश तजी के साथ कम होता गया यहाँ तक कि जब तारा सुरग और तहखान से निकल कर मकान की छत पर पहुची तो उसने तालाब को सूखा हुआ पाया। मकान के चारों तरफ घूमन वाल लोह क चक्र तजी के साथ घूम रह थे आर दुश्मन लोग यह सोच कर कि उन चक्रों की बदौलत मकान तक पहुचना बहुत कठिन बल्कि असम्भव है उन चक्रों को ताज्जुब के साथ देख और उनको रोकने की तर्कीब साच रह थ। इधर किशारी कामिनी और तारा भी उनकी इस अवस्था का मकान की छत पर से दीवार के उन छेदों की राह दख रही थीं जा दुश्मनों पर ताप बरसान क लिए बने हुए थे।

इस समय रात दा घण्ट स ज्याद जा चुकी थी मगर पहर ही भर तक दर्शन देकर अस्त हो जाने वाले चन्द्रमा की राशनी दुश्मना की किसी कार्रवाइ को अन्धेरे क पर्दे में छिपी रहन नहीं देती थी।

दुश्मनों न जब दखा कि चक्रा क सबब से मकान तक पहुचना असम्भव है तो उन्होंने उद्योग का एक मजदार ढग निकाला जिस देख तारा किशारी और कामिनी के दिल मे खौफ पैदा हुआ अर्थात दुश्मनों ने तालाब को मिट्टी से पाटना शुरु किया। बशक यह तर्कीब बहुत ही अच्छी थी क्योंकि तालाब पट जाने पर उन चक्रों का घूमना न घूमना बराबर था और आश्चय नही कि मिट्टी के अन्दर दब जान के कारण व रुक भी जाते मगर इस काम के लिए दुश्मनों को मामूली से बहुत ज्याद समय नष्ट करना पडा क्योंकि उन लागों के पास जमीन खादन क लिए फर्सा या कुदाली के किस्म की काई चीज न थीं खजर तलवार और नेजा ही स व लोग जा कुछ कर सकते थे करन लग।

दुश्मनों के इस उद्याग का दख कर तारा का कलजा दहल गया और उसने अफसास के साथ किशोरी की तरफ दख क कहा—

तारा—कहो अब इस उद्योग का क्या जवाब दिया जाय ?

किशोरी—यद्यपि वे लोग एक दिन में तालाब नहीं पाट सकते मगर हम लोगों को बचाव के लिए अब कोई तर्कीब सोचना चाहिए क्योंकि तालाब पट जाने पर ये चारों चक्र जमीन क अन्दर हो जायँगे और उस समय इस मकान में दुश्मनों का घुस आना कुछ कठिन न होगा।

कामिनी—उस सुरग की राह भाग जाने के सिवाय हम लाग और कुछ भी नहीं कर सकेंगे।

तारा—क्या दुश्मन लोग सुरग के उस मुहाने को सूना छोड देंगे जिसका पूरा पूरा हाल उन लोगों को मालूम हो चुका है ?

कामिनी—इसकी आशा भी नही हो सकती बेशक भागना मुश्किल हा जायगा। खैर जा कुछ होगा देखा जायगा इस समय तो मै यही मुनासिब समझती हू कि तीर मार कर दुश्मनों की गिनती कम करनी चाहिए। वे लोग हम लोगों पर कोई हवा नहीं चला सकते।

तारा—हा इस समय ता यही करना मुनासिब होगा इसके बाद जो राय होगी किया जायगा मगर बहिन मै फिर भी कहती हू कि तुम मुझे तिलिस्मी नेजा हाथ में लेकर सुरग की राह से निकल जाने दो फिर देखो तो सही कि मै अकेली इतन दुश्मनों को क्याकर बात की बात में मार गिराती हू, तुम्हें इस नेजे का हाल पूरा पूरा मालूम हो ही चुका है अतएव उस पर भरासा करक तुम्हें उचित है कि मुझे न रोको मैं नहीं चाहती कि यह तालाब पट जाय और फिर सफाई कराने के लिए तकलीफ उठानी पड।

कामिनी—तुम्हारा कहना ठीक है इस नेजे की जहाँ तक तारीफ की जाय कम है और तुम उन सभी को जहन्नुम में पहुचा सकोगी जो दुश्मनी की नीयत से तुम्हारे पास आयेगे मगर उनका तुम क्या बिगाड सकोगी जो दूर ही से तुम्हें तीर का निशाना बनावग।

तारा—(कुछ साच कर) बेशक यह एक एसी बात तुमने कही जिस पर विचार करना चाहिए अच्छा खूब याद आया। इस मकान में फौलाद का एक कवच ऐसा है जो बदन पर ठीक आ सकता है मै उसे पहिर कर जाऊगी और तीर की चाट स बेफिक्र रहूगी। यद्यपि इस पर भी तुम कह सकती हो कि आख नाक मुहँ इत्यादि किस किस जगह की तुम हिफाजत कर सकती हा मगर इसके साथ ही इस बात को भी सोचना चाहिए कि अगर तालाब पाट कर दुश्मन यहा घुस आवेंगे और हम लोगा को पकड लेंगे तो क्या होगा ? अपनी बेइज्जती कराना और बेहुर्मती के साथ जान देना अच्छा होगा या बहादुरी के साथ सौ पचास का मार कर लडाई के मैदान में मिट जाना उचित होगा।

किशोरी—जब ऐसा ही है और तुम प्राण देने के लिए मुस्तैद होकर जाती हो तो हम दोनों को क्यों छोड़ जाती हो ? क्या इसलिए कि तुम्हारे बाद हम लोगों की दुर्दशा और बेइज्जती हो !

इस विषय में किशोरी कामिनी और तारा में देर तक हुज्जत और बहस होती रही अन्त में यही निश्चय हुआ कि सूरत बदलने और कवच पहिरने के बाद हाथ में तिलिस्मी नेजा लेकर तारा सुरंग की राह से जाय और दुश्मनों का मुकाबला करे किशोरी और कामिनी दोनों में से या दोनों तारा के साथ सुरंग में जाय और जब तारा सुरंग के बाहर हो जाय तो हर एक दरवाजे को बन्द करती हुई लौट आवें। इसके बाद दुश्मनों के भाग जाने पर मकान में तारा का लौट आना कोई मुश्किल न होगा।

यह बात तै पाई गई और तीनों नौजवान औरतें जिन्हें आपस में बहिनों से भी बढ़ कर मुहब्बत हो गई थी छत के नीचे उतर आई और एक कोठरी में चली गई। तारा ने एयारी के मसाले से अपने को रंगा और अपनी ऐसी भयानक सूरत बनाई कि देखने वाला कैसे ही जीवट का क्यों न हो मगर एक दफे तो अवश्य ही डर जाय। इसके बाद कवच पहिरा और तिलिस्मी नेजा हाथ में लेकर सुरंग में रवाना हुई हाथ में एक लालटेन लिए किशोरी और कामिनी भी साथ हुई।

पहले तहखाने वाली कोठरी का दर्वाजा खोला गया फिर सुरंग का दरवाजा खोलकर तीनों बहिनें सुरंग में दाखिल हो गईं। ये तीनों बीस पचीस कदम से ज्यादा न गई होंगी कि पीछे की तरफ से यकायक दरवाजा बन्द कर लेने की आवाज आई जिसे सुनते ही तीनों चौंक पड़ी और खड़ी हो गई। तारा ने किशोरी और कामिनी की तरफ देखकर कहा— है यह क्या बात है ? मालूम होता है कि हमारा दुश्मन हमारे घर ही में है ! यह कहती हुई किशोरी और कामिनी के साथ तारा पीछे की तरफ लौटी और जब सुरंग के दर्वाजे के पास आई तो दर्वाजा बन्द पाया। खटखटाया धक्का दिया जोर किया मगर दर्वाजा न खुला। इस समय उन तीनों अबलाओं के दिल की क्या हालत हुई होगी सो हमारे बुद्धिमान पाठक स्वयं सोच सकते है। कामिनी ने घबरा कर तारा से कहा तुम्हारा कहना ठीक है बेशक हमारा दुश्मन हमारे घर ही में है।

किशोरी—चाहे कोई हमारा नौकर हमारा दुश्मन हो या दुश्मन का कोई एयार हमारे नौकर की सूरत में यहाँ आकर टिका हो।

तारा—अब शक दूर हो गया और निश्चय हो गया कि कैदियों को इसी कम्बख्त ने निकाल दिया है। मैं ताज्जुब में थी कि यह दर्वाजा जो दूसरी तरफ से किसी तरह नहीं खुल सकता क्योंकर खुला और कैदी लोग क्योंकर निकल गये मगर अब जो कुछ असल बात थी जाहिर हो गई। अब उस शैतान ने (चाहे वह कोई भी हो) इसलिए यह दर्वाजा बन्द कर दिया कि हम लोग पुनः लौट कर घर में न आ पावें। अफसोस बड़ा ही धोखा हुआ कि इतने पर भी हम लोग उससे बेफिक रहे और इस समय भी छिप कर हम लोगों के साथ ही साथ कैदखाने में उतरा मगर कुछ मालूम न हुआ (कुछ रुककर) हमारे नौकरों और लौंडियों को क्या मालूम हो सकता है कि इस समय हम लोगों के साथ किस दुष्ट ने कैसा बर्ताव किया !

कामिनी—क्या इस तरफ से इस दर्वाजे को खोलने की कोई तर्कीब नहीं है ?

तारा—कोई नहीं।

कामिनी—और अगर दुश्मनों ने सुरंग के मुहाने का दर्वाजा बाहर से बन्द कर दिया हो तो क्या होगा ?

तारा—उस दर्वाजे के दूसरी तरफ कोई ऐसी चीज नहीं है जो दर्वाजा बन्द करने के काम में आवे मगर फिर भी दुश्मन होशियार हो तो हर तरह से वह मुहाना बन्द कर सकता है। उस दर्वाजे के ऊपर मिट्टी पत्थर या चूने का ढेर लगा सकता है ईंट पत्थर की जुड़ाई कर सकता है या उस खोह भर को ईंट पत्थर से बन्द कर सकता है।

किशोरी—हाय अब हम लोग बेमौत मारे गये ! ताज्जुब नहीं कि इस बात का बन्दोबस्त पहिले से ही कर लिया गया हो।

कामिनी—बस अब हम लोगों को यहाँ जरा भी न अटक कर सुरंग के बाहर निकल चलना चाहिए शायद उधर का रास्ता अभी बन्द न हुआ हो।

तारा किशोरी और कामिनी तेजी के साथ सुरंग के दूसरे मुहाने की तरफ रवाना हुई और थोड़ी ही देर में वहां जा पहुँचीं! इस सुरंग में मकान की तरफ जिस तरह की सीढ़ियां बनी हुई थी उसी तरह की सीढ़ियां सुरंग के दूसरा तरफ भी थी। जब तारा ने दर्वाजे की कुण्डी खोली और उसे धक्का देकर खोलना चाहा तो दर्वाजा न खुला उस समय तारा हाय करके बैठ गई और बोली—

'बहिन बस जो कुछ हम लोगों को शक था वही हुआ। इस समय दुश्मनों की बन पड़ी और हम लोग बेमौत मारे गये। यह दर्वाजा अगर भीतर की तरफ हटता होता तो खुल जाता और हमें मालूम हो जाता कि आगे रास्ता किस चीज से बन्द किया गया है ईंट पत्थर और चूने से या खाली मिट्टी से और हम लोग इस तिलिस्मी नेजे से उसमें रास्ता बनाकर निकल जाने का उद्योग करते क्योंकि यह नेजा हर एक चीज में घुस जाने की ताकत रखता है मगर अफसोस तो यह है कि यह लोहे का मजबूत दर्वाजा

खुलने के समय बाहर की तरफ खुलता है। यह भी कारीगर की भूल है। भूलों का मजा समय पडने पर ही मालूम होता है अब मुझे मालूम हुआ कि मकान बनाने वाले को दर्वाजे की अवस्था पर विशेष ध्यान देना चाहिये कोई दर्वाजा ऐसा न बनाना चाहिये जो खुलते समय बाहर की तरफ खुलता हो जिसे बाहर वाला मामूली तौर पर मिट्टी का ढेर लगा कर भी बन्द कर सकता है। हाय अब मैं क्या करूं ? मुझे अपने मरने का तो कुछ भी रंज नहीं है अगर रंज है तो केवल इतना ही कि तुम दोनों को कमलिनी ने हिफ़ाजत से रखने के लिए मेरे पास भेजा और मेरी बदौलत तुम्हें यह दिन देखना नसीब हुआ !

मामूली तौर पर जैसा कि अक्सर मौका पड़ने पर लोग कह दिया करते हैं इस समय किशोरी और कामिनी यह बात तारा को कह सकती थीं कि बहिन हम लोग तो तुम्हें मना करते थे कि सुरंग की राह से बाहर मत जाओ मगर तुमने न माना अगर मान जाती तो यह दुःख भोगना क्यों नसीब होता ?

मगर नहीं बेचारी किशोरी और कामिनी बडी ही नेकदिल थीं वे जानती थीं कि जो होना था सो तो हो चुका अब ऐसी बातें कह कर तारा का दिल दुखाना नादानी है और इससे कोई फायदा नहीं तारा ने जो कुछ किया उसे भला ही समझ के किया मगर जब ईश्वर ही की ऐसी मर्जी हो तो क्या किया जाय।

इस सुरंग के दोनों तरफ की दीवारें बहुत ही मजबूत थीं और उस पर फौलादी मोटी चादर चढी हुई थी। यद्यपि तिलिस्मी नेजा उस फौलादी मोटी चादर में भी घुस सक्ता था मगर इसमें कोई फायदा न था तिलिस्मी नेजा ऐसे स्थान से सुरंग खोद कर रास्ता बनाने का काम नहीं दे सकता था तिस पर भी तारा ने उद्योग में कोई बात उठा न रक्खी मगर नतीजा कुछ भी न निकला।

तीसरा बयान

इस तालाब के बीच वाले तिलिस्मी मकान में कमलिनी दस लौंडियों के साथ रहती थी। नौकर और सिपाही भी उसके साथ बहुत थे मगर उनके रहने के लिए स्थान इस मकान में नहीं था वे लोग काम काज करते थे और समय पडने पर जान देने के लिए इकट्ठे हो जाते थे मगर कमलिनी और तारा को छोड के कोई यह भी नहीं जानता था कि वे लोग कहां रहते हैं और क्या करते हैं। उन सिपाहियों में से कई तो मायारानी के कैदी हो गये थे और जो दस बारह बचे हुए थे सो इधर उधर घूम फिर कर कमलिनी का काम कर रहे थे। उन्हीं बचे हुए सिपाहियों में से चार पांच सिपाही इस समय मकान में मौजूद थे जो किसी काम के सम्बन्ध में तारा के पास आये थे और दुश्मनों का हंगामा देख कर बाहर जा न सके थे। कमलिनी की लौंडियां जितनी थीं वे सब जमानिया से कमलिनी के साथ उस समय आई थीं जब मायारानी से लडकर कमलिनी अलग हो गई थी। इन लौंडियों में से एक लौंडी जिसका नाम भगवानी था बडी ही शैतान और दिल की खोटी थी। यद्यपि वह जाहिर में अपने को बहुत ही बनाये हुए रहती थी और बात बात में खैरखाही जताती थी मगर वास्तव में वह ऐसी काली नागिन थी जिसके काटे का कोई मन्त्र ही न था। उसे रुपये की लालच हद से ज्यादे थी मगर इतने दोष रहने पर भी वह अपनी चालाकी से अपने मालिक तथा तारा को खुश रखती थी और उन दोनों के आगे अपने अवगुण जाहिर नहीं होने देती थी। यही लौंडी प्रायः कैदियों को खाना पानी भी पहुंचाया करती थी।

कमलिनी के कैदखाने को पहिले माधवी और शिवदत्त ने आबाद किया था और उसके बाद मनोरमा इस कैदखाने में आई थी। मायारानी की सखी होने के कारण मनोरमा भगवानी को बखूबी जानती थी और इसी तरह भगवानी भी उसे अच्छी तरह पहिचानती थी। खाना पानी पहुंचाने के लिये जब भगवानी कैदखाने में जाती तो मनोरमा उसे अपनी लच्छेदार बातों में घडियों उलझा कर भविष्य के लिए सब्जबाग दिखाती और तरह तरह की उम्मीदों से ललचाया करती यहां तक कि उस तीन लाख रुपये की लालच दिखा कर उसने अपनी माधवी और शिवदत्त की मदद पर राजी कर लिया। माधवी देवा इलाज की बदौलत वहां आकर तन्दुरुस्त हो गई थी।

भगवानी इस बात पर राजी हो गई कि मौका मिलने पर कैदियों की मदद करे और जिस तरह हो कैदियों को तहखाने के बाहर निकाल दे। भगवानी ने माधवी शिवदत्त और मनोरमा से कहा कि तुम लोगों को छुडाने के लिए मुझे बहुत कुछ उद्योग करना पड़ेगा और तुम्हारे नौकरों तथा सिपाहियों से मिलने और उनसे कुछ काम लेने की आवश्यकता पडेगी इसलिए उचित होगा कि तुम लोग मुझे एक परवाना लिख दो जिसमें तुम लोगों के आदमी मुझे तुम्हारा मददगार समझें और जो कुछ मैं कहूं करें और खर्च के लिए आवश्यकतानुसार मुझे दिया भी करें। आखिर तीनों कैदियों ने भगवानी की बात मंजूर कर ली। भगवानी मौका पा कर कलम दावात और कागज छिपा कर तहखाने में ले गई और तीनों कैदियों से अपने मतलब की बातें लिखवा ली।

कमलिनी के जाने के बाद केवल तारा की मौजूदगी में भगवानी को अपना काम करने का बहुत अच्छा मौका मिला। उसने गुप्त रीति से कई नौकर रक्खे और उनके जरिये से माधवी मनोरमा और शिवदत्त के आदमियों को जो छितिर

बितिर हो गये थे इकट्ठा कराया तथा इस बात से होशियार कर दिया कि तुम्हारे मालिक लोग यहा कैद है।

धीरे धीर बन्दोबस्त करके भगवानी ने सामान दुरुस्त कर लिया और एक दिन सुरग की राह से तीनों कैदियों को निकाल बाहर किया। आज जो इतने दुश्मन इस मकान को घेरे हुए है या जो कुछ वे लोग कर रहे है सब भगवानी ही की करामात है। इस समय भगवानी ही ने किशोरी कामिनी और तारा को सुरग में बन्द कर दिया है। वह चाहती है कि दुश्मन लोग इस मकान में घुस आवें और मनमानी चीजें लूट ले जाय मगर कीमती चीजें जवाहिर इत्यादि मै पहिले ही से बटोर कर अलग रख दू और जब दुश्मन लोग यहा घुस आवें तो उन्हें लेकर चल दू। शिवदत्त माधवी और मनोरमा के हाथ का लिखा हुआ परवाना मौजूद टी है अस्तु कमलिनी के दुश्मनों में मुझे कोई भी नहीं रोक सकता। यह भगवानी का थाडा सा हाल इस जगह हमने इसलिए लिख दिया कि बीती बहुत सी बातें समझने में हमारे पाठकों को कठिनाई न पड।

किशारी कामिनी और तारा का सुरग में बन्द कर के जब भगवानी कैदखाने के बाहर निकली तो कोठरी में ताला लगा दिया और ताली अपने कब्जे में रखी इसके बाद हाथ में लालटेन लेकर मकान की छत पर चढ गई और लालटेन को घुमा फिरा कर दुश्मनों को इशारे ही इशारे में कुछ कहा। मालूम होता है कि पहिले ही से इशारे की बातचीत पक्की हो चुकी थी क्योंकि लालटेन का इशारा पाते ही दुश्मनों ने खुश होकर अपना काम तेजी से करना शुरु किया अर्थात् तालाब पाटने में बहुत फुर्ती दिखाने लगे। एक दफे तो भगवानी के दिल में यह बात पैदा हुई कि चारों पुतलियों को खडी करके घूमत हुए चारो चक्रों को रोक द जिसमें दुश्मन लोग यहा शीघ्र ही आ जाय मगर तुरन्त ही उसने अपना इरादा बदल दिया। उसे यह बात सूझ गई कि यदि मै घूमते हुए चारों चक्रों को रोक दूगी तो कमलिनी के नौकरों को मुझ पर शक हा जायगा और फिर बना बनाया मामला बिगड जायगा।

अब कम्बख्त भगवनिया (भगवानी) इस फिक्र में लगी कि दुश्मनों के घर मे आन के पहिले ही यहा से अच्छी अच्छी कीमती चीज बटोर ली जाय और जब दुश्मन इस मकान में घुस आवें तो ले लपेट के चलती बनू क्योंकि शिवदत्त माधवी और मनोरमा की चीठियो की बदौलत जो मेरे पास है मुझे कोई भी न रोकेगा।

कमलिनी की लौंडियों और नौकरों को इस बात का गुमान भी न था कि नमकहराम भगवानी यहा वालों को चौपट कर रही है या उसने किशोरी कामिनी और तारा को सुरग में बन्दकर दिया है। वे लोग यही जानते थे कि किशोरी और कामिनी को किसी खास काम के लिए तारा अपने साथ लेती गई है।

रात बीत गई दूसरा दिन समाप्त हा गया बल्कि दूसरे दिन की रात भी गुजर गई और तीसरा दिन आ पहुचा। आज दुश्मनों का मनारथ पूरा हुआ अर्थात उन्होंने तालाब को दो तरफ से बखूबी भर दिया और उस मकान में पहुचे।

लौंडियों और नौकरों को इतनी हिम्मत कहा कि सैकड़ों दुश्मनों का मुकाबला करते। व लोग चुपचाप अलग हो गये और अपनी तथा अपने मालिक की बदकिस्मती पर विचार करते रहे जिस पर भी कई बेचारे दुश्मनों के हाथों से मारे गये। दुश्मनों ने मनमानी लूट मचाई और जो जिसने पाया अपने बाप दादे का माल समझ हथिया लिया। कमकीमत चीज या ऐसी चीजें जो वे लोग अपने साथ ले जाना पसन्द नहीं करते थे तोड फोड बिगाड या जला कर सत्यानाश कर दी गई और घटे ही भर में ऐसी सफाई कर दी गई मानों उस मकान में कोई बसता ही न था या कोई चीज वहा थी ही नहीं। इस काम के बाद किशोरी कामिनी और तारा की खोज शुरु हुई क्योंकि दुष्टों ने जब उस तीनों को वहा न पाया तो उन्हें आश्चर्य हुआ और वे इस फिक्र में हुए कि भगवानी से उन तीनों का हाल पूछना चाहिये मगर भगवानी वहा कहा वह तो अपना काम करके निकल भागी और ऐसा गायब हुई कि किसी को कुछ गुमान तक न हुआ। हाय बेचारी किशोरी कामिनी और तारा का हाल किसी का भी मालूम नहीं कोई भी नहीं जानता कि वे बेचारिया कहा और किस आफत में पडी है या कई दिनों तक दाना पानी न मिलने के कारण जीती भी हैं या मर गई। उनकी लौडियों और नौकरों को भी इसका पता नहीं इसी से वे लोग अपनी जान लेकर जिस तरफ भाग सके भाग गये और इस तिलिस्मी मकान पर दुश्ममों को पूरा पूरा कब्जा करने दिया क्योंकि इतने आदमियों का मुकाबला करके जान देना दूसरे उद्योग का भी रास्ता रोकना था।

चौथा बयान

पाठक महाशय अब आप यह जानना चाहते हागे कि हरामजादी भगवनिया के मेल से जो दुश्मन लोग इस मकान पर चढ आये व लोग शिवदत्त माधवी और मनोरमा को छुडाने की नियत से आये थे या इन तीनों के छूट कर निकल जाने का हाल उन्हें मालूम हो चुका था और वे लोग इस समय केवल किशोरी कामिनी और तारा को गिरफ्तार करने आये थे?

नही इस समय दुश्मन यह नहीं जानते थे कि इस मकान में कोई सुरग है और भगवानी की मदद से उसी सुरग की राह राजा शिवदत्त वगैरह बाहर हो गये। भगवानी ने जब उन लोगों को खबर पहुँचाई थी तो यही कहा था कि तुम्हारा

मालिक इस मकान में कैद है तुम जिस तरह बने उसे छुडा लो और इसके बाद जो उन लोगों ने किया वह बहुत बुद्धिमानी से किया। तालाब सुखाने के लिए सुरग खोदन मे उन्हें बहुत दिन महनत करनी पडी इस बीच में भगवानी भी उन लोगों से मिलती रही मगर उसन यह नहीं कहा कि शिवदत्त का छुडाने के ने भी उद्योग कर रही हू, यदि मौका मिला तो सुरग की राह निकाल दूगी क्योंकि भगवानी को यह आशा नहीं थी कि मै स्वय उद्योग करके कैदियों को बाहर कर सकूगी उसे कैदियों का छुडाने का मौका उस दिन दोपहर के लगभग मिला था जिस दिन सध्या के समय बलवाइयों ने आकर तालाब को घेर लिया था और उनके बनाए हुए सुरग की राह स तालाब का जल निकला जा रहा था।

रुपये की लालच न कम्बख्त भगवानी को एसा अधा बना दिया था कि उसे भलाई का रास्ता कुछ भी न सूझा। वह इस बात को न सोच सकी कि अगर तारा कैदियों को न देखेगी तो बेशक मुझ पर शक करेगी क्योंकि कैदखाने और सुरग की ताली सिवाय मेरे और किसी के हाथ में तारा नहीं देती थी। उसने बेधडक कैदियों को बाहर कर दिया मगर इसके दो ही घटे बाद उसके दिल में हौल पैदा हो गया और वह सोचने लगी कि यदि तारा मुझसे पूछेगी कि कैदखाने की ताली तो सिवाय तेरे मैं और किसी के हाथ में नहीं देती फिर कैदी क्योंकर निकल गये तो मैं क्या जवाब दूगी ? इस विषय मे उसने बहुत कुछ विचार किया मगर सिवाय भाग जाने के और कोई बात न सूझी। उसने भाग जाने के लिए भी उद्योग किया मगर न हो सका क्योंकि तालाब क बाहर स किसी को इस मकान मे लाने या इस मकान से किसी को बाहर करने के लिए रास्ता खोलना या बन्द करना केवल तारा के आधीन था। जब इस बात को दोपहर बीत गये और दुश्मनों ने तालाब को घेर लिया तब उसे यह सूझा कि दुश्मनो को इस बात की खबर न देना चाहिए कि शिवदत्त को मैने छुडा दिया ऐसा करने से दुश्मन उद्योग करके इस मकान में जरूर आवेंगे और उस समय मुझे यहा से निकल भागने का अच्छा मौका मिलेगा। इस बीच में भगवानी को इस बात का मौका मिल गया कि उसने तारा किशोरी और कामिनी को सुरग में बन्द कर दिया और तब उसके दिल में अपने भाग जाने की पूरी पूरी आशा हुई। यही कारण हुआ कि दुश्मनों को शिवदत्त के निकल जाने का हाल मालूम न हुआ और उन्होंने उद्योग करके मकान को अपने दखल में कर लिया जिससे भगवानी को भागने का अच्छा मौका मिला।

अब यह प्रश्न हो सकता है कि क्या तारा इतनी बेवकूफ थी कि कैद खाने में कैदियों को न देखकर और सुरग का दर्वाजा खुला हुआ पा कर भी उसे किसी पर कुछ शक न हुआ तो भी एसी अवस्था में जब कि कैदखाने की ताली सिवाय भगवानी के और किसी के हाथ में देती ही न थी ? इस सवाल का जवाब भी इसी जगह दे देना उचित जान पडता है।

तारा ने जब कैदियों को कैदखाने में न देखा तो सबके पहिले उसके दिल में यही शक पैदा हुआ कि यह काम हमारे ही किसी आदमी का है। थोडे ही सोच विचार में उसने भगवानी को दोषी ठहरा लिया क्योंकि सिवाय उसके वह कैदखाने की ताली किसी दूसरे के हाथ में देती न थी। यह सब कुछ था परन्तु भगवानी की जॉच करने और उसे सजा देने के विषय में जल्दी करना तारा ने उचित न जाना और इस हो हल्ला के समय इसका मौका भी न था तथापि तारा ने इस शक का श्यामसुन्दरसिह नामी अपने एक विश्वासी खैर ख्वाह बहादुर से इसी दौड धूप के समय ही जाहिर कर दिया और यह भी कह दिया कि मुझे इस मकान के बचाव की तर्कीब के सिवाय और कोई काम करने की फुर्सत नहीं है मगर तुम इस विषय में जो कुछ उचित जान पडे अवश्य करो।

श्यामसुन्दरसिह बहुत ही होशियार चालाक बुद्धिमान और बहादुर आदमी था। यह कमलिनी के कुल सिपाहियो का सरदार था और इसकी अच्छी चाल चलन तथा बहादुरी की कदर कमलिनी दिल से करती थी तथा यह भी कमलिनी की भलाई के लिए जान तक दे देने को हरदम तैयार रहता था। यद्यपि काम काज के सबब से श्यामसुन्दरसिह यहाँ बराबर नहीं रहता था परन्तु जिस समय दुश्मनों ने इस मकान को घेरा था उस समय वह मौजूद था। जब उसने तारा की जुबानी कैदियो के निकल जाने का हाल सुना तो उसने भी अपनी राय वही कायम की जो तारा ने की थी।

श्यामसुन्दरसिह भगवानी की तरफ से होशियार हो गया और उसके कार्यों को विशेष ध्यान से देखने लगा मगर इस बात का तो उसको गुमान भी न हुआ कि भगवानी ने किशोरी कामिनी और तारा को भी सुरग में बन्द कर दिया है।

श्यामसुन्दरसिह इस बात को तो समझ ही गया था कि अब यह मकान दुश्मनो के हमले से किसी तरह बच नहीं सकता तथापि उसे कुछ कुछ आशा इस बात की थी कि जिस समय तिलिस्मी नेजा हाथ में लेकर तारा इस झुण्ड में पहुचेगी तो ताज्जुब नहीं कि दुश्मनों का जी टूट जाय परन्तु बहुत समय निकल जाने पर भी जब तारा वहा तक न पहुची तो श्यामसुन्दरसिह को आश्चर्य हुआ और वह तरह तरह की बातें सोचने लगा।

पांचवां बयान

कीमती जवाहिरात के चीजों की गठरी लादे हुए मालिक को चौपट करने वाली हरामजादी भगवानी जब भागी तो उसने फिर के देखा भी नही कि पीछे क्या हो रहा है या कौन आ रहा है।

रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी और चांदनी खूब निखरी हुई थी जब हांफती और कांपती हुई भगवानी एक घने जगल के अन्दर जिसमे चारों तरफ परले सिरे का सन्नाटा छाया हुआ था पहुच कर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ और तब इस तरह लेट गई जैसे कोई हताश होकर गिर पडता है। वह अपनी बिसात से ज्यादे चल और दौड चुकी थी और इसीलिए बहुत सुस्त हो गई थी,इस पत्थर की चट्टान पर पहुँचकर उसने सोचा था कि दूर निकल आये हैं कोई धरने पकडने वाला है नहीं अतएव थोडी देर तक बैठ कर आराम कर लेना चाहिए मगर बैठने के साथ ही पहिले जिस पर उसकी निगाह पडी वह श्यामसुन्दरसिह था जिसे देखते ही उसका कलेजा धक से हो गया और चेहरे पर मुर्दनी छा गई। उसकी तेजी के साथ चलती सास दो चार पल के लिए रुक गयी और वह घबडा कर उसका मुह देखने लगी।

श्याम– क्यों ? तूने तो समझा होगा कि बस अब मै बच कर निकल आई और जवाहिरात की गठरी नरम चारे की तरह हजम हो गई !

भगवानी – (कुछ सोच कर) नहीं नहीं मै इसमे से तुम्हें आधा बाट देने के लिए तैयार हू। आखिर दुश्मन लोग इसे भी लूट कर ले ही जाते अगर मै बचा कर ले आई तो क्या बुरा हुआ ? सो भी बाट देने के लिए तैयार हू !

श्याम – ठीक है मगर मै आधा बाट कर नहीं लिया चाहता बल्कि सब लिया चाहता हू।

भगवानी – सो कैसे होगा ? जरा सोचो तो सही कि मै दुश्मनों के हाथ से कितनी मेहनत कर के इसे बचा लाई हूँ और सब तुम्हीं ने लोगे तो मुझे क्या फायदा होगा ?

श्याम – तो क्या तू कुछ फायदा उठाना चाहती है ? अगर ऐसा ही है तो मालिक के साथ निमकहरामी या दगा करने और दुश्मनों को बचा कर कैदखाने के बाहर कर देने में जो उचित लाभ होना चाहिये वह तुझे होगा !

भगवानी – (चौंक कर) आपने क्या कहा सो मै न समझी ! क्या आपको मुझ पर किसी तरह का शक है ?

श्यामा–नहीं शक तो कुछ भी नहीं है या अगर है भी तो केवल दो बातो का-एक तो कैदियों को बचाकर निकाल देने का और दूसरे मालिक के साथ दगा करने का।

भगवानी–नहीं नहीं कैदी लोग किसी और ढग से निकल गये होंगे मुझे तो उनकी कुछ खबर नहीं और तारा के साथ दगा करने के विषय मे जो कुछ आप कहते है सो वह काम मेरा न था बल्कि एक दूसरी लौंडी का था जिसके सबब से बेचारी तारा मौत

इतना कह कर भगवानी रुक गई। उसके ढग से मालूम होता था कि जल्दी में आकर वह कोई ऐसी बात मुह से निकाल बैठी है जिसे वह बहुत छिपाती थी। श्यामसुन्दरसिह को भी उसकी आखिरी बात पर निश्चय हो गया कि हरामजादी भगवानी ने दुश्मनों से मिल कर बेचारी तारा को मौत के पजे में फसा दिया अस्तु बिना असल भेद का पता लगाए इसे कदापि न छोडना चाहिए।

श्याम–हा हा कहती चल रुकी क्यों ?

भगवानी–यही कि मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे मालिक का नुकसान हो।

श्याम–अच्छा यह बता कि कैदियों को निकालने वाला और तारा को फसाने वाला कौन है ?

भगवानी–यह काम निमकहराम लालन लौंडी का है।

श्याम–यदि मै इस समय के लिए तेरा ही नाम लालन रख दू तो क्या हर्ज है क्योंकि मेरी समझ मे बेचारी लालन निर्दोष है जो कुछ किया तू ही ने किया। कैदियों ने तुझी को अपना विश्वासपात्र समझा तुझी से काम लिया और तेरी ही मदद से निकल भागे इतने दुश्मनों को भी तू ही बटोर कर लाई है और इतने पर भी सतोष न पाकर बेचारी तारा को भी तू ही ने

भगवानी–(हाथ जोड कर) नहीं नहीं आप मुझे व्यर्थ दोषी न ठहरायें भला ऐसे मालिक के साथ मै विश्वासघात करूगी जो मुझे दिल से चाहे ?

श्याम–(कमर से एक चीठी निकाल कर और भगवानी को दिखाकर) और यह क्या है ? क्या इसमे भी लालन का नाम लिखा है ? कोई हर्ज नहीं अपने हाथ मे लेकर अच्छी तरह देख ले क्योंकि यद्यपि यह रात का समय है फिर भी चन्द्रदेव ने अपनी किरणो से दिन की तरह बना रक्खा है।

यह चीठी उन्हीं दोनों चीठियों में से थी जो शिवदत्त माधवी और मनोरमा ने लिख कर भगवानी को दी थी। न मालूम

श्यामसुन्दरसिंह के हाथ यह चीठी क्योंकर लगी। भगवनिया इस चीठी को देखते ही जर्द पड़ गई कलेजा धकधक करने लगा मौत की भयानक सूरत सामने दिखाई देने लगी, गला रुक गया और वह कुछ भी जवाब न दे सकी। अब श्यामसुन्दरसिंह बर्दाश्त न कर सका उसने एक तमाचा भगवानी के मुंह पर जमाया और कहा - कम्बख्त ! अब बोलती क्यों नहीं ?"

जब भगवानी ने इस बात का भी जवाब न दिया तब श्यामसुन्दरसिंह ने म्यान से तलवार निकाल ली और हाथ ऊंचा करके कहा अब भी अगर साफ साफ भेद न बतावेगी तो मैं एक ही हाथ में दो टुकड़े कर दूंगा।

भगवानी को निश्चय हो गया कि अब जान किसी तरह नहीं बच सकती इसके अतिरिक्त डर के मारे उसकी अजब हालत हो गई और कुछ तो न कर सकी हां एक दम जोर से चिल्ला उठी और इसके साथ ही एक तरफ से आवाज आई कौन है जो मर्द होकर एक स्त्री की जान लिया चाहता है ?

श्यामसुन्दरसिंह ने फिर कर देखा तो दाहिनी तरफ थोड़ी ही दूर पर एक नौजवान को हाथ मे खंजर लिए मौजूद पाया। उस नौजवान ने श्यामसुन्दरसिंह से पुनः कहा यह काम मर्दों का नहीं है जो तुम किया चाहते हो ! जिसके जवाब में श्यामसुन्दरसिंह ने कहा 'बेशक यह काम मर्दों का नहीं मगर लाचार हूं कि यह नमकहराम मेरी बातों का जवाब नहीं देता और मैं बिना जवाब पाये इसे किसी तरह नहीं छोड़ सकता।

यह आदमी श्यामसुन्दरसिंह के पास यकायक आ पहुंचा था हमारा ऐयार भैरोसिंह था जो कमलिनी के मकान के दुश्मनों से घिर जाने की खबर पाकर उसी तरफ जा रहा था और इत्तिफाक से यहां आ पहुंचा था मगर वह श्यामसुन्दरसिंह और भगवनिया को नहीं पहिचानता था और वे दोनों भी इस सूरत बदले हुए और रात का समय होने के कारण न पहिचान सके। भैरोसिंह ने पुनः कहा--

भैरो--यदि हर्ज न हो तो मुझे बताओ कि यह तुम्हारी किन बातों का जवाब नहीं देती ?

श्याम--बता देने में हर्ज तो कोई नहीं अगर आप उन लोगों में से नहीं हैं जिन्हें हम लोग अपना दुश्मन समझते हैं क्योंकि यह भेद की बात है और अपना भेद दुश्मनों के सामने प्रकट करना नीति के विरुद्ध है। उत्तम तो यह होगा कि हमारा भेद जानने के पहिले आप अपना परिचय दें।

भैरो--तो तुम्हीं अपना परिचय क्यों नहीं देते ?

श्याम--इसलिए कि ऐयार लोग भेद जानने के लिए समय पड़ने पर उसी पक्ष वाले बन जाते हैं जिससे अपना काम निकालना होता है।

भैरो--ठीक है मगर बहादुर राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों में से कोई भी ऐसा कमहिम्मत नहीं है जो खुले मैदान में एक औरत और एक भेद से अपने को छिपाने का उद्योग करे।

श्याम--(खुश होकर) अहा अब मालूम हो गया कि आप राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों में से कोई हैं। ऐसी अवस्था में मैं भी यह कहने में विलम्ब न लगाऊंगा कि मैं श्यामसुन्दरसिंह नामी कमलिनीजी का सिपाही हूं और यह भगवानी नाम की उन्हीं की बेईमानी लौंडी है जिसकी नमकहरामी और बेईमानी का यह नतीजा निकला कि दुश्मनों ने तालाब वाले तिलिस्मी मकान पर कब्जा कर लिया और किशोरी कामिनी तथा तारा का कुछ पता नहीं लगता। अब तक जो मालूम हुआ है उससे जाना जाता है कि इसी कम्बख्त ने उन तीनों को भी किसी आफत में फंसा दिया है जिसका खुलासा भेद मैं इससे पूछ रहा था कि आपकी आवाज आई और आपसे बातचीत करने की प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

भैरो--(जोश के साथ) आह यह तो एक ऐसा भेद है जिसके जानने का सबसे पहिला हकदार मैं हूं। मैं उन्हीं तीनों से मिलने के लिए जा रहा था जब रास्ते में मुझे यह मालूम हुआ कि उस तिलिस्मी मकान को दुश्मनों ने घेर लिया है इसलिए जल्द पहुंचने की इच्छा से जंगल ही जंगल दौड़ा जा रहा था कि यहां तुम लोगों से भेंट हो गई

श्याम--यदि ऐसा है तो अब कृपा कर आप अपनी असली सूरत शीघ्र दिखायें जिससे मैं आपको पहिचान कर अपने दिल के बचे बचाए खुटके को निकाल डालूं क्योंकि राजा वीरेन्द्रसिंह के कुल ऐयारों को मैं पहिचानता हूं,

श्यामसुन्दरसिंह की बात सुन कर भैरोसिंह ने बटुए में से सामान निकाल कर बत्ती जलाई और बनावटी बालों को अलग करके अपना चेहरा साफ दिखा दिया। श्यामसुन्दरसिंह यह कहकर कि 'अहा मैंने बखूबी पहिचान लिया कि आप

भैरासिह जी है भैरासिह के पैरों पर गिर पडा और भैरासिह ने उसे उठा कर गले से लगा लिया। इसके बाद श्यामसुन्दरसिह ने अपनी तरफ का पूरा पूरा हाल इस समय तक का कह सुनाया।

भैरो–अफसोस बात ही बात में यहा तक नौबत जा पहुची। लोग सच कहते है कि घर का एक गुलाम बैरी बाहर के बादशाह बैरी से भी जबर्दस्त होता है जिसकी तावदारी में हजारों दिलावर पहलवान और ऐयार लोग रहा करते है। खैर जो होना था सो तो हो गया अब इस (भगवनिया की तरफ इशारा करके) कम्बख्त से किशोरी कामिनी और तारा का सच्चा सच्चा हाल मै बात ही बात में पूछ लेता हू। यह औरत है इसलिए मै खजर को तो म्यान में कर लेता हूँ और हाथ में उस दुष्टदमन को लेता हू जिसके भरोसे एस जगल में काटों से निर्भय रह कर चलता रहा चलता हू और यदि इसकी खातिरदारी से यह बच गया,तो चलूगा हा एक बात तो मैने कहा ही नहीं।

श्याम–वह क्या ?

भैरो–वह यह कि मै यहा अकेला नहीं हू बल्कि दो एयारों का साथ लिए हुए कमलिनी रानी भी इसी जगल में मौजूद है।

श्याम–आहा यह तो आपने भारी खुशखबरी सुनाई बताइये वे कहा है मै उनसे मिलना चाहता हू।

कम्बख्त भगवनिया अब अपनी मौत अपनी आखों के सामने देख रही थी। भैरासिह के पहुचने से उसकी आधी जान जा ही चुकी थी अब यह खबर सुन के कि कमलिनी भी यहा मौजूद है वह एकदम मुर्दा सी हो गई। उसे निश्चय हो गया कि अब उसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती। भैरोसिह ने जोर से जफील बजाई और इसके साथ ही थोडी दूर से सूखे पत्तों की खडखडाहट के साथ ही घोडों के टापों की आवाज आने लगी और उस आवाज ने क्रमश नजदीक होकर भूतनाथ तथा देवीसिह और घोडों पर सवार कमलिनी रानी तथा लाडिली की सूरत पैदा कर दी।

छठवां बयान

दुश्मन जब तालाब वाले तिलिस्मी मकान पर कब्जा कर चुके और लूटपाट से निश्चिन्त हुए तो शिवदत्त माधवी और मनोरमा को छुडाने की फिक्र करने लगे। तमाम मकान छान डाला मगर उनका पता न लगा तब थोडे सिपाही जो अपने को होशियार और बुद्धिमान लगाते थे एक जगह जमा होकर सोच विचार करने लगे। वे लोग इस बात का तो गुमान भी नहीं कर सकते थे कि हमारे मालिक लोग यहा कैद नहीं है या भगवनिया ने हम लोगों को धोखा दिया क्योंकि भगवनिया द्वारा वे लोग शिवदत्त माधवी और मनोरमा के हाथ की लिखी हुई चिट्ठी देख चुके थे। अब अगर तरद्दुद था तो यही कि कैदी लोग कहा है और भगवनिया हम लोगों से बिना कुछ कहे चुपचाप भाग क्यों गई। केवल इतना ही नहीं किशोरी कामिनी और तारा यकायक कहा गायब हो गई जिनके इस मकान मे होने का हम लोगों को पूरा विश्वास था बल्कि दौड धूप करते जिन्हें अपनी आखों से देख चुके है।

जब तमाम मकान ढूढ डाला और अपने मालिकों का तथा किशोरी कामिनी या तारा को न पाया तो उन लोगों को निश्चय हो गया कि इस मकान में कोई तहखाना अवश्य है जहा हमारे मालिक लोग कैद है और जहा अपनी जान बचाने के लिए किशोरी लाडिली और तारा भी छिप कर बैठ गई है।

इस लिखावट से हमारे पाठक अवश्य इस सोच में पड जायेंगे कि यदि इन दुश्मनों को इस मकान में तहखाना और सुरग होने का हाल मालूम न था तो क्या वे लोग किसी दूसरे गिरोह के आदमी थे जिन्होंने तहखाने के अन्दर से किशोरी और कामिनी को गिरफ्तार कर लिया था या जिन्होंने सुरग का दूसरा मुहाना बन्द कर दिया था जिसके सबब से बेचारी किशोरी कामिनी और तारा को सुरग के अन्दर बेबसी के साथ पडी रह कर अपनी ग्रहदशा का फल भोगना पडा ?

बेशक ऐसा ही है। जिस समय भगवानी की कृपा से माधवी मनोरमा और शिवदत्त ने कैदखाने से छुट्टी पाई और सुरग की राह से बाहर निकले तो माधवी के कई आदमी वहा मौजूद मिले और वे लोग आज्ञानुसार माधवी के साथ वहा से चले गये उनमें से किसी से भी उन लोगों की मुलाकात नहीं हुई जिन्होंने तालाब वाले मकान पर हमला किया था। ये ही लोग थे जिन्होंने तहखाने में से किशोरी और कामिनी को भी निकाल ले जाने का इरादा किया था। परन्तु कृतकार्य न हुए थे और इन्हीं लोगों ने भागते भागते सुरग का दूसरा मुहाना ईंट पत्थरों से बन्द कर दिया था।

उन दुश्मनों में जिन्होंने इस मकान को फतह किया था तीन सिपाही ऐसे थे जो उनमें सरदार गिने जाते थे और सब काम उन्हीं की राय पर होता था वही तीनों खोज ढूँढ कर तहखाने का पता लगाने लगे।

बचा हुआ दिन और रात का बहुत बड़ा हिस्सा खोज ढूँढ में बीत गया और सुबह हुआ ही चाहती थी जब हाथ में लालटेन लिये हुए तीनों सिपाही उस कोठरी के दर्वाजे पर जा पहुचे जिसमें से कैदखाने वाले तहखाने के अन्दर जाने का

रास्ता था। ताला ताडा गया और वे तीनों उस कोठरी के अन्दर पहुचे। तहखाने के अन्दर जाने वाला रास्ता दिखाई पडा जिसका दर्वाजा जमीन के साथ सटा हुआ और ताला भी लगा हुआ था। उस जगह खडे होकर तीनों सिपाही आपुस में बातचीत करन लगे।

एक—बेशक इसी तहखाने में महाराज शिवदत्त कैद होंगे बडी मुश्किल से इसका पता लगा।

दूसरा—मगर हम लाग जा यह साचे हुए थे कि किशोरी कामिनी और तारा भी उसी तहखाने में छिप कर बैठी होगी यह बात अब दिल से जाती रही क्योंकि व भी अगर इसी तहखाने में होती तो हम लोगों को ताला तोडना न पडता।

तीसरा—ठीक है मै भी यही सोचता हू कि वे लाग किसी दूसरे गुप्त स्थान में छिप कर बैठी होंगी, खैर पहिलेअपने मालिक को तो छुडाओ फिर उन तीनों को भी ढूढ निकालेंगे, आखिर इस मकान के अन्दर ही तो होंगी।

दूसरा—हा जी दखा जायगा बस अब इस ताल को भी झटपट ताड डालो।

वह ताला भी ताडा गया और हाथ म लालटन लकर एक आदमी उसके अन्दर उतरा तथा दो उसके पीछे चले। पाच चार सीढियों से ज्याद न उतरे होंगे कि कइ आदमियों के टहलने और बातचीत करने की आहट मिली जिससे ये तीनों बड गौर स नीच की तरफ देखन लगे मगर जो सिपाही सबसे आगे था उसके सिवाय और किसी को भी कुछ दिखाई न दिया। उसने तहखाने में तीन आदमियों को देखा जो इन सिपाहियों के आने की आहट पाकर और लालटेन की राशनी देखकर ठिठके हुए ऊपर की तरफ दख रह थे। इनमें एक मर्द और दो औरतें थी। तीनों सिपाहियों को निश्चय को गया कि बेशक यही तीनों माधवी मनारमा और शिवदत्त है। इन सिपाहियों ने छठी सीढी पर पैर नहीं रखा था कि नीचे स आवाज आइ ठहरो हम लाग खुद ऊपर आत है।

उन सिपाहियों में स एक आदमी जिसका नाम रामचन्दर था शिवदत्त का पुराना खैरख्वाह मुलाजिम था और बाकी के दानों सिपाही मनोरमा के नौकर थे। आवाज सुन कर तीनों सिपाही ऊपर चले आये और तहखाने के अन्दर वाले तीनो व्यक्ति भी जिन्ह सिपाहियों ने अपना मालिक समझ रक्खा था बाहर हाकर क्रमश उस कमरे में पहुचे जिसमें कमलिनी रहा करती थी और जिस एक तौर पर दीवानखाना भी कह सकते हैं। यद्यपि लूट खसौट का दिन था मगर फिर भी वहा इस समय रोशनी बखूबी हो रही थी और उस राशनी में सभों ने बखूबी पहिचान लिया कि वे वास्तव में माधवी मनारमा और शिवदत्त है।

इस समय दुश्मनों की खुशी का अन्दाजा करना बडा ही कठिन है क्योंकि जिसे छुडाने के लिए उन लोगों ने उद्योग किया था उस अपन सामने मौजूद देखते है लाखो रुपए का माल जो लूट में मिला था अब पूरा पूरा हलाल समझते है इसक अतिरिक्त इनाम पाने की प्रबल अभिलाषा और भी प्रसन्न किये देती है। चारों तरफ से भीड उमडी पड़ती है और शिवदत्त क पैरों पर गिरन क लिए सभी उतावले हो रह है। शिवदत्त न सभों की तरफ देखा और नर्म आवाज में कहा शाबाश मर बहादुर सिपाहियों आज जो काम तुमने किया वह मुझ जन्म भर याद रहगा। नि सन्दह तुमने मेरी जान बचाई। दखा इस कैद की सख्ती न मेरी क्या अवस्था कर दी है मेरी आवाज कैसी कमजोर हो रही है मेरा शरीर कैसा दुर्बल और बलहीन हा गया है मगर खैर काई चिन्ता नही जान बची है ता ताकत भी हो रहेगी 'यह मत समझो कि मैं इस समय हर तरह स लाचार हा रहा हूँ अतएव तुम्हारी आज की कारवाई के बदले मे कुछ इनाम नही दे सकूगा। नहीं नहीं एसा कदापि न सोचना। तुम लाग स्वय दखोगे कि कल जितनी दौलत मैं इनाम में तुम लोगों को दूगा वह उस लूट क माल से सौगुना ज्याद हागी जो तुमन मकान में से पाई हागी। मैं मर्द हू और तुम लाग खूब जानत हो कि मर्दो की हिम्मत कभी कम नहीं हाती जिसन हिम्मत ताड दी वह मर्द नहीं औरत है। इसमें तुम इस बात पर भी विश्वास रखना कि मै अपने पुराने दुश्मन वीरन्दसिह का पीछा कदापि न छोडूगा सा भी ऐसी अवस्था में कि जब तुम लोगों ऐसे मर्द दिलावर और निमकहलाल सिपाही मरे साथी हैं। अच्छा यह सब बातें तो फिर हो रहेंगी इस समय मैं मकान से बाहर निकल कर अपन वीरों का देखा और उनस मिलना चाहता हूँ क्योंकि यह मकान इतना बडा नहीं है कि सब सिपाही इसमें समा जाय और मै इस जगह बैठा बैठा सबसे मिल लू। चला तुम लाग तालाब के पार चलो मै भी आता हूँ'

शिवदत्त की बातें सुन कर ये सिपाही लाग बहुत ही प्रसन्न हुए और जल्दी के साथ उम मकान स निकल कर तालाब के बाहर हो गये जहा और सिपाही सब खडे बेचैनी के साथ इन लागों की राह देख रहे थे और यह जानन के लिए उत्सुक थे कि मकान क अन्दर क्या हा रहा है।

सिपाहियों के बाहर हा जाने बाद शिवदत्त भी मकान से निकला और तालाब से बाहर हो गया। माधवी और मनोरमा उस मकान क अन्दर ही रह गई।

अब सवेरा हा चुका था। पूरब तरफ आसमान पर भगवान सूर्यदेव का लाल पेशखेमा दिखाई देने लगा। शिवदत्त मैदान में खडा हा गया और खुशी के मार उसकी जयजयकार करते उसके सिपाहियों ने चारा तरफ से उस घेर लिया तथा यह सुनने के लिए उत्सुक होने लगे कि देखें अब हमारी तारीफ में हमारे राजा साहब क्या कहते है।

पर इसी समय पूरब तरफ से बाजे की आवाज इन लोगों के कानों में पहुची। सिपाहियों के साथ साथ शिवदत्त भी चौकन्ना हो गया और गौर के साथ पूरब तरफ देखता हुआ बोला "यह तो फौजी बाजे की आवाज है। वह देखो इसकी गत साफ कहे देती है कि राजा वीरेन्द्रसिह की फौज आ रही है क्योंकि वीरेन्द्रसिह जब चुनार की गद्दी पर बैठे थे तो तेजसिह ने अपने फौजी बाजे वालों के लिए यह खास गत तैयार की थी। तब से उनकी फौज में प्राय यह गत बजाई जाती है। मै इसे अच्छी तरह जानता हू। देखो वह गर्द भी दिखाई देने लगी अब क्या करना चाहिये ? जहा तक मै समझता हू तुम्हारे हमले की खबर रोहतासगढ पहुची है और वह फौज रोहतासगढ से आ रही है मगर दो तीन सौ से ज्यादे आदमी न होगे।

इसके बाद पश्चिम की तरफ से बाजे की आवाज आई और गौर करने पर मालूम हुआ कि पश्चिम तरफ से भी फौज आ रही है।

शिवदत्त के सिपाही बहुत मेहनत कर चुके थे न भी मेहनत किये हो तो क्या था राजा वीरेन्द्रसिह की फौज की खबर पाकर अपने कलेजे को मजबूत रखना ऐसे सिपाहियो का काम न था जो वर्षों बिना तनख्वाह के सिर्फ मालिक के नाम पर अपने सिपाहीपन को टेरे जाते हो। उन लोगों ने घबडा कर शिवदत्त की तरफ देखा। यद्यपि कैद की सख्ती ने शिवदत्त की सूरतशकल और आवाज में भी फर्क डाल दिया था मगर इस समय राजा वीरेन्द्रसिह की फौज के आने से उसके चेहरे पर किसी तरह की घबराहट या उदासी नहीं पाई गई। शिवदत्त ने अपने सिपाहियों की तरफ देखा और हिम्मत दिलाने वाले शब्दों में कहा "घबराओ मत हिम्मत न हारो हौसले के साथ भिड जाओ और इन सभों का असबाब भी लूट लो मगर इस बात का खूब ध्यान रक्खो कि भाग कर इस मकान के अन्दर न घुस जाना नहीं तो चारो तरफ से घेर कर सहज ही में मार डाले जाओगे। यदि मैदान मे डटे रहोगे तो कठिन समय पड जाने पर भागने को भी जगह मिलेगी – इत्यादि।

क्या करें ? लडे या न लडे रुकें या भाग जाय ? इत्यादि सोच विचार और सलाह में ही बहुत सा अमूल्य समय निकल गया और धावा करते हुए राजा वीरेन्द्रसिह के फौजी सिपाहियों ने पूरब और पश्चिम तरफ से आ कर दुश्मनों को घेर लिया। यद्यपि शिवदत्त के सिपाही भागने के लिये तैयार थे मगर शिवदत्त के हिम्मत दिलाने वाले शब्दो की बदौलत जिन्हे वह बार बार अपने मुँह से निकाल रहा था थोडी देर के लिए अड गये और राजा वीरेन्द्रसिह की फौज से जो गिनती में दो सौ से ज्यादे न होगी जी तोड के लडने लगे। उनके अटल रहने और जी तोड कर लडने का एक यह भी सबब था कि उन लोगो ने राजा वीरेन्द्रसिह के फौजी सिपाहियो को जो वास्तव में रोहतासगढ से आये थे गिनती मे अपने से बहुत कम पाया था।

यह थोडी सी फौज जो रोहतासगढ से आई थी चुन्नीलाल ऐयार के अधीन थी। चुन्नीलाल ने जासूसों को भेज कर इस बात का पता पहिले ही लगा लिया था कि तालाब वाले तिलिस्मी मकान पर हमला करने वाले दुश्मन कितने और किस ढग के है इसके बाद उसने अपनी फौज को फैला कर दुश्मनों को चारों तरफ से घेर लेने का उद्योग किया था और जो कुछ सोच रक्खा था वही हुआ।

चुन्नीलाल की मातहत फौज ने दुश्मनों को घेर कर बेतरह मारा। चुन्नीलाल स्वय तलवार ले कर मैदान में अपनी बहादुरी दिखाता हुआ अपने सिपाहियों की हिम्मत बढा रहा था और जिधर धॅस जाता था उधर ही दस पॉच को खीर ककडी की तरह काट गिराता था। यह हाल देख दुश्मन बगले झाकने लगे मगर लडाई इस ढग से हो रही थी कि यहॉ से बच कर निकल भागना भी मुश्किल था। दो घटे की लडाई में आधे से भी ज्यादे दुश्मन मारे गये और बाकी भाग कर अपनी जान बचा ले गये। वीरेन्द्रसिह के केवल बीस बहादुर काम आये। इस घमासान लडाई के अन्त में इस बात का कुछ भी पता न लगा कि शिवदत्त बहादुरी के साथ लड कर मारा गया या मौका मिलने पर निकल भागा।

जब दुश्मनों में से सिवाय उन सभो के जो मौत की गोद में सो चुके थे या जमीन पर पडे सिसक रहे थे और कोई भी न रहा सब भाग गये तब केवल दस बारह आदमियों को साथ लेकर चुन्नीलाल तिलिस्मी मकान की तरफ बढा मगर मकान में पहुचनें के पहिले ही सिपाही सूरत का एक आदमी जो उसी मकान में से निकल कर इनकी तरफ आ रहा था उसे मिला। उसके हाथ में लिफाफे के अन्दर बन्द एक चीठी थी जो उसने चुन्नीलाल के हाथ में दे दी और चुपचाप खडा हो गया। चुन्नीलाल ने भी उसी जगह अटक कर लिफाफा खोला और बडे ध्यान से चीठी पढने लगा। समाप्त होने तक कई दफे चुन्नीलाल के चेहरे पर हॅसी दिखाई दी और अन्त में वह बडे गौर से उस आदमी की सूरत देखने लगा जिसने चीठी दी थी तथा इसके बाद इशारे से सिर हिलाया मानो उस आदमी को वहा से बेफिक्री के साथ चले जाने के लिये कहा और वह आदमी भी बिना सलाम किये झूमता हुआ वहॉ से चला गया।

चुन्नीलाल कई आदमियो को साथ लेकर तिलिस्मी मकान के अन्दर गया। उसने वहा अच्छी तरह घूम घूम कर

देखा मगर किसी को न पाया तब बाहर निकला और अपने मातहत सिपाहियों को लेकर रोहतासगढ की तरफ लौट गया।

सातवां बयान

ऊपर का बयान पढ कर हमारे प्रेमी पाठक ताज्जुब करते होंगे कि यह क्या हुआ और क्या लिखा गया। और बातो को जाने दीजिए मगर अन्त म यह क्या आश्चर्य की बात हो गइ कि चुन्नीलाल तिलिस्मी मकान के अन्दर आया और मामूली तौर पर देख भाल कर चला गया बेचारी किशोरी कामिनी और तारा की कुछ सुध न ली। खैर सब्र कीजिये और जरा हमारे साथ फिर उस जगह चलिये जहा श्यामसुन्दर भगवनिया भैरोसिह कमलिनी लाडिली देवीसिह और भूतनाथ को छोड आये हैं।

जिस समय भगवनिया ने कमलिनी को अपने सामने देखा वह बदहवास हो गई कलेजा कापने लगा सास में रुकावट पैदा हुई और उसे मौत की सी तकलीफ मालूम होने लगी। उसने चाहा कि कमलिनी के पैरों पर गिर कर अपना कसूर माफ करावे मगर डर के मारे उसके खून की हरकत बिल्कुल बन्द हो गई थी इसलिये वह कुछ भी न कर सकी बल्कि क्रमश बढते ही जाने वाले खौफ के सबब बेदम होकर पीछे की तरफ जमीन पर गिर पडी।

भगवानी की यह अवस्था देखकर कमलिनी को आश्चर्य मालूम हुआ क्यों उसने अभी तक श्यामसुन्दरसिह और भगवानी का हाल न जाना था। भैरोसिह ने भूतनाथ को रोशनी करने के लिये कह कर सक्षेप में वह सब हाल कमलिनी को कह सुनाया जो भगवानी के विषय में श्यामसुन्दर से सुना था कमलिनी को हद से ज्यादा क्रोध चढ आया मगर वह बुद्धिमान थी और इस बात को खूब समझती थी कि ऐसे मौके पर क्रोध के ऊपर अधिकार न कर लेने से प्राय तकलीफ और नुकसान हुआ करता है कहीं ऐसा न हो कि डर के मारे या विशेष धमकाने से भगवानी का दम निकल जाय या वह जिसका दिल और दिमाग बहुत ही कमजोर है पागल हो जाय जैसा कि प्राय हुआ करता है तो बडी ही मुश्किल होगी और किशोरी कामिनी तथा तारा का कुछ भी पता न लगेगा।

रोशनी हो जाने पर जब कमलिनी ने भगवानी की सूरत देखी तो मालूम हुआ कि उस पर हद से ज्याद खौफ पड चुका है। आखें बन्द है चेहरे पर जर्दी छाई हुइ है और बदन कॉप रहा है। कमलिनी ने कुछ ऊँची आवाज में कहा होश में आ और मेरी बातें सुन एक दम नाउम्मीद न हो कदाचित तेरी जान बच जाय!

इस आवाज ने बेशक अच्छा असर किया जैसा कि कमलिनी ने सोचा था। कदाचित तेरी जान बच जाय यह सुन कर भगवानी ने ऑखें खोल दीं। कमलिनी ने फिर कहा यद्यपि तूने बहुत बडा कसूर किया है मगर मैं वादा करती हू कि यदि तू झटपट सच्चा हाल कह देगी तो तेरी जान छोड दी जायगी।

अब भगवानी उठ बैठी और अपने को सम्हाल कर हाथ जोड के कापती हुई आवाज के साथ बोली क्या मेरी जान छोड दी जायगी ?

कम–हॉ छोड दी जायगी यदि सच्चा हाल कह कर अपना दोष स्वीकार कर लेगी और किशोरी कामिनी तथा तारा का ठीक ठीक पता बता देगी।

भग–(कमलिनी के पैरों पर गिर कर और फिर खडी होकर) बेशक मैं कसूरवार हू। जो कुछ मैंने किया है मैं साफ कह दूँगी। अफसोस लालच में पड कर मैंने बहुत बुरा किया था। मुझे शिवदत्त ने धोखा दिया वे समझे बूझे मैं

कमलिनी–बस बस ज्यादे बात बढाने की कोई जरूरत नहीं जो कुछ कहना है जल्दी से कह दे, विलम्ब होना तेरे लिये अच्छा नहीं है।

भगवानी ने सब हाल अर्थात जो कुछ उसने कसूर किया था सच सच कह दिया और अन्त में फिर कमलिनी के पैरों पर गिर कर बोली मैंने कोई बात नहीं छिपाई अब अपनी प्रतिज्ञानुसार मुझे छोड दीजिये।

हा छोड दूँगी। कह कर कमलिनी ने भूतनाथ और श्यामसुन्दरसिह की तरफ देखा और कहा इसकी मुश्के बॉध लो और जहॉ उचित समझो ले जाकर अपनी हिफाजत में रक्खो। हम लोग मकान की तरफ न जाकर पहिले किशोरी कामिनी और तारा को छुडाने का उद्योग करते है और इसके बाद जैसा मौका होगा किया जायगा। कल इसी समय इसी जगह हम लोग या हम लोगों में से कोई आवेगा तुम मौजूद रहना भगवानी की बात सच निकली तो ठीक है नहीं तो एक बात भी झूठी निकलने पर कल इसी जगह इसका सिर उतार लिया जायगा। बस अब मैं एक पल भी नहीं रुक सकती।

भूतनाथ और भगवानी को इसी जगह छोड़ भैरोसिंह देवीसिंह और लाडिली को साथ लिए हुए कमलिनी वहाँ से रवाना हुई। इस समय उसके पास तिलिस्मी खंजर मौजूद था वही तिलिस्मी खंजर जो भैरोसिंह का पत्र पा कर इन्द्रदेव ने उसे दे दिया था।

वहाँ से थोड़ी दूर पर एक पहाड़ी थी जिससे मिली जुली छोटी बड़ी पहाड़ियों का सिलसिला पीछे की तरफ दूर तक चला गया था। कमलिनी अपने साथियों को लिये हुए उसी तरफ रवाना हुई। कमलिनी को अपने मकान के बर्बाद होने और लूटे जाने का इतना रंज न था जितना किशोरी कामिनी और तारा की अवस्था पर रंज था। वह आपुस में निम्नलिखित बातें करती हुई तेजी से उस पहाड़ी की तरफ जा रही थी –

कमलिनी – अफसोस तारा ने बड़ा धोखा खाया। अब देखा चाहिए उन तीनों को मैं जीता पाती हूँ कि नहीं।

लाडिली–किशोरी और कामिनी बेचारी ने न मालूम विधाता का क्या बिगाड़ा है कि सिवा दुःख के सुख तो उन्हें

कमलिनी – दुःख ने तो पहिले ही उन्हें अधमूआ कर दिया था अब देखा चाहिए कि कई दिन की भूख प्यास ने उन्हें जीता भी छोड़ा है या नहीं? (रो कर) सच तो यह है कि यदि वे जीती जागती अब न मुझे मिलीं तो मैं दोनों कुमारों को मुँह दिखाने लायक न रहूँगी और जब इस योग्य न हो जाऊँगी तो फिर जी कर ही क्या करूँगी। (कुछ सोच कर) निःसन्देह अगर ऐसा हुआ तो आज मुझे भी उसी जगह मर कर रह जाना होगा। हे ईश्वर तेरी सृष्टि में एक से एक बढ़ कर खूबसूरत गुलबूटे मौजूद हैं इन दोनों के लिए कमी नहीं है क्या तू नहीं जानता कि उन कुमारों की जिन्दगी के लिए जिनकी प्रसन्नता पर हमारी प्रसन्नता निर्भर है केवल ये ही दोनों हैं? अफसोस यद्यपि कम्बख्त भगवानी से मैं खटकी रहती थी मगर यह आशा न थी कि वह यहाँ तक कर गुजरेगी।

भैरो –क्या आप जानती थीं कि भगवानी दिल की खोटी है?

कमलिनी -मुझे इस बात का निश्चय तो न था कि वह खोटी है मगर उसके बात बात पर कसमें खाने से मैं खटकी रहती थी क्योंकि मैं खूब जानती हूँ कि जो आदमी लापरवाही के साथ बात बात पर कसमें खाया करता है वह वास्तव में झूठा और खोटा होता है। मायारानी के सदमे के सबब से यदि वह मेरे इस तिलिस्मी मकान के तहखाने के भेद से अनजान रहती तो मैं स्वयं उसे यह भेद कदापि न बताती। तिस पर भी खुटका बना रहने के कारण मैं स्वयं जब ताला खोल कर उस तहखाने और सुरंग में जाती थी तो ताले को जमीन पर नहीं रख देती थी बल्कि कुण्डी में लगा कर ताली अपने पास रख लेती थी। जिससे तहखाने या सुरंग में जाने के बाद पीछे से कोई आदमी ताला बन्द करता तो दूर रहे जंजीर भी न चढ़ा सके।

देवी –बेशक यह बड़ी चालाकी की बात है जब खाली कुण्डी में ताला लगा रहेगा तो किसी तरह कोई जंजीर नहीं चढ़ा सकता।

कमलिनी –और यह बात तारा को मालूम थी मगर अफसोस उसने इस पर कुछ ध्यान न दिया और धोखा खा गई। मैं बहुत दिनों से इस फिक्र में थी कि भगवानी को अच्छी तरह जाँच कर खटका मिटा लिया जाय लेकिन इतनी फुर्सत न मिली। दस दिन निश्चिन्त होकर घर में बैठने की कभी नौबत ही न आई। मगर आश्चर्य की बात है कि भगवानी ने इतनी खोटी होने पर भी हमारे यहाँ की कोई बात मायारानी के कान तक न पहुँचाई क्योंकि अभी तक कोई ऐसी बात पाई नहीं गई जिससे मैं समझती कि मेरा फलाना भेद मायारानी को मालूम हो गया है।

भैरो–यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि मौका मिलने पर आदमी की तबीयत एकाएक बदल जाय। एक पुरानी मसल चली आती है कि आदमी को शैतान आदमी होता है। इसका मतलब यही है कि चालाक और धूर्त आदमी अपनी लच्छेदार बातों में फंसा कर किसी भी आदमी की तबीयत को बदल सकता है। मन बड़ा ही चंचल है इसे स्वाधीन रखना कोई मामूली बात नहीं है। बड़े बड़े ऋषि मुनियों का सैकड़ों वर्षों का उद्योग भी जो केवल मन को स्वाधीन करने के विषय में किया गया था बात की बात में वृथा हो चुका है। हाँ नेक और बदआदमियों के मन में इतना भेद अवश्य होता है कि भाव बदल जाने या धोखे में पड़ कर किसी बुराई के हो जाने पर नेक आदमी तुरन्त चौकन्ना हो जाता है और सोचता है कि बेशक यह काम मुझसे बुरा हो गया मगर बुरे मनुष्य में जिसने अपने मन पर अधिकार जमाने के लिए कुछ उद्योग न किया हो यह बात नहीं होती। जो आदमी इस बात को सोचता है कि मन क्या वस्तु है इसकी चंचलता कैसी है ये कितनी जल्दी बदल जाने की सामर्थ्य रखता है या उसे अधिकार में न रखने से क्या क्या खराबियां हो सकती हैं उसके हृदय में एक ऐसी ताकत पैदा हो जाती है जिसकी उत्पत्ति तो विचार शक्ति से है मगर यह कहना बहुत कठिन है कि वह स्वयं क्या पदार्थ है? उसका काम यह है कि मन की चंचलता या शिथिलता के कारण यदि कोई बुराई होना चाहती है तो वह विचित्र ढंग का खुटका पैदा करके तुरन्त खबर दे देता है कि यह काम बुरा है या तूने बुरा किया। यह विषय बड़ा गंभीर है ऐसे समय में अर्थात् राह चलते चलते इस विषय को स्पष्ट रूप से मैं नहीं दिखा सकता मगर मेरे कहने का मतलब केवल यही है कि

आदमी का शैतान आदमी होता है। आदमी अपने हमजिन्स की तबीयत को बेशक बदल सकता है हाँ यह बात विचार शक्ति की दृढ़ता और स्थिरता पर निर्भर है कि किसका मन कितनी देर में बदल सकता है। भगवानी औरत की जात है जिनका मन बनिस्बत मर्दों के बहुत कमजोर होता है। ऐसे को यदि तीन धूर्तों की लच्छेदार बातों ने जो आपके यहा कैद थे मौका पा कर बदल दिया तो कोई आश्चर्य की बात नहीं इससे इस बात को निश्चित नहीं कह सकते कि भगवानी अवश्य पहिले से ही खोटी थी या पहिले अच्छी थी बीच में खोटी बना दी गई।

कमलिनी -(भैरोसिह के विचार से प्रसन्न होकर) बेशक तुम्हारा कहना बहुत ठीक है मैं स्वीकार करती हूँ।

देवी -(भैरोसिह की पीठ मुहब्बत से ठोंक कर) शाबाश ! मै यह जानकर प्रसन्न हुआ कि तुम मन की अवस्था का अच्छी तरह समझते हो जिसका नतीजा भविष्य में बहुत अच्छा निकलेगा। ईश्वर हमारे उस मनोरथ का पूरा करे जिसके लिए इस समय तेजी और घबडाहट के साथ हम लोग जा रहे है तो किसी समय इस विषय पर बहुत सी बातें मै तुमसे कहूगा।

इन लोगो को राह चलने या स्थान खोजने में किसी तरह की कठिनता न हो इसलिए विधाता ने आसमान पर कुदरती माहताब जला दी थी और वह क्रमश ऊची होकर पृथ्वी के इस खण्ड की उन तमाम चीजों को जो किसी आड़ में न थी साफ दिखाई देने में सहायता कर रही थी। यही सबब था कि इन लोगों को उन कठिन रास्तों पर चलने में विशेष कष्ट न हुआ जो बहुत ही पथरीला खराब और चकावू के नक्शे की तरह पेचीला था।

पहाडियों पर घूम फिर कर चढते उतरते हुए ये लोग एक ऐसे स्थान पर पहुचे जिसके दोनों तरफ ऊचे पहाड और बीच में एक बारीक पगडण्डी थी जिसके देखने से साफ मालूम होता था कि कारीगरों ने बडे बडे ढोकों को काटकर यह रास्ता तैयार किया होगा। यहाँ पर कमलिनी और लाडिली घोड़ो पर से उतर पड़ीं और उन्हें एक पेड से बाध आगे की तरफ रवाना हुईं कमलिनी आगे आगे जा रही थी उसके पीछे लाडिली और फिर दोनों ऐयार आश्चर्य से चारों तरफ देखते और यह सोचते हुए जा रहे थे कि नि सन्देह अनजान आदमी जिसे इस रास्ते का हाल मालूम न हो यहा कदापि न हीआ सकता।

इस पगडण्डी पर दो सौ कदम जाने बाद साफ पानी से भरा हुआ एक पतला चश्मा मिला जो इन लोगोंकी राह काटता हुआ दाहिने से बाईं तरफ का बह रहा था। अब कमलिनीउसी नहर के किनारे किनारे बाईं तरफ जाने लगी मगर अपनी तेज निगाह उन छोटे छोटे जगली पेडों पर बडी सावधानी से डालती जाती थी जो उस चश्में के दोनों किनारो पर बडी खूबी और खूबसूरती के साथ खडे इस समय की ठडी ठंडी हवा के नर्म झोकों मे नए शराबियों की तरह धीरे धीरे झूम रहे थे।

यकायक कमलिनी की निगाह एक ऐसे पेड पर पडी जिसके दोनों तरफ पत्थरो के ढोके इस तौर पर पडे हुए थे मानों किसी ने जानबूझ कर इकट्ठे किये हों। यहा पर कमलिनी रुकी और कुछ सोचने बाद अपने साथियों को लिये चश्में के पार उतर गई जिसके आगे थोड़ी ही दूर जाने बाद ढालवी जमीन मिली मगर लाडिली और दोनो ऐयार कमलिनी के पीछे पीछे चले ही गये। दो सौ कदम से ज्यादे न गये होंगे कि ये लोग एक गुफा के मुहाने पर पहुच कर रुक गये। कमलिनी ने देवीसिह से मोमबत्ती जलाने के लिए कहा और जब मोमबत्ती जल चुकी तो सब उस खोह के अन्दर घुसे। खोह की अवस्था देखने से जाना जाता था कि वर्षों से इसकी जमीन ने किसी आदमी के पैर न चूमे होंगे बल्कि कह सकते हैं कि शायद किसी जगली जानवर ने भी इसके अन्दर आने का साहस न किया होगा। थोडी ही दूर पर खोह का अन्त हुआ और इन लोगो ने अपने सामने लोहे का एक बन्द दर्वाजा देखा। कमलिनी ने लाडिली पर एक भेद भरी निगाह डाली और कहा इस दर्वाजे का हाल राजा गोपालसिह के सिवाय कोई भी नहीं जानता। मुझे तो खून से लिखी किताब की बदौलत इसका हाल मालूम हुआ है इसकी चाबी भी इसी जगह मौजूद है। यह कह कर कमलिनी ने तिलिस्मी खजर के कब्जे से दर्वाजे के दाहिनी तरफ बीचों बीच की जमी ठोंकी जो वास्तव में किसी धातु की थी मगर मुद्दत से काम में न आने के कारण उसका रग पत्थर के रग में मिल गया था।

ठोंकने साथ ही बित्ते भर का एक पल्ला अलग हो गया और उसके अन्दर हाथ डाल कर कमलिनी ने कोई पेंच दबाया और इसके साथ ही हल्की आवाज देता हुआ दर्वाजा खुल गया। कमलिनी ने उस खिडकी को बन्द कर दिया जिसके अन्दर हाथ डालकर पेच घुमाया था और इसके बाद सभों को लिए हुए दर्वाजे के अन्दर चली गई।

दर्वाजा खोलने के लिए जिस तरह की चाभी इस तरफ थी उसी तरह की दर्वाजे के दूसरी तरफ भी थी अर्थात दूसरी तरफ भी उसी तरह की ताली और पेच मौजूद थी जिसेघुमा कर कमलिनी ने दर्वाजा बन्द किया और साथियों को साथ लिए हुए आगे की तरफ बढी। इन सभों को घंटे भर तेजी के साथ जाना पडा और इसके बाद मालूम हुआ कि सुरग के दूसरे मुहाने पर पहुच गये क्योंकि यहा भी उसी रग ढग का दर्वाजा बना हुआ था। कमलिनी ने उस दर्वाजे को भी खोला और सभो को साथ लिये हुए अन्दर चली गई। यहा पर रास्ता दो हो गया था अर्थात एक सुरग बाईं तरफ गई हुई थी

और दूसरी दाहिनी तरफ। कमलिनी ने भैरोसिह और देवीसिह की तरफ देख के कहा मुझे मालूम है कि दाहिनी तरफ जाने से हम लोग उस कोठरी में पहुचेंगे जिसमें कैदी लोग कैद थे या जो कैदखाने के नाम से पुकारी जाती है और बाई तरफ जाने से हम लोग उस सुरग के बीचाबीच में पहुचेंगे जिसमें किशोरी कामिनी और तारा को भगवनिया ने फॅसा रक्खा है। आप लोगों की क्या राय है किधर चलना चाहिये ?

देवी –हम लोगों को पहिले उस सुरग ही में चलना चाहिए जिसमें किशोरी कामिनी और तारा को जल्द देखें।

इस बात को सभों ने पसन्द किया और कमलिनी ने बाइ तरफ का रास्ता लिया। दो चार कदम जाने के बाद भैरोसिह ने कहा मैं समझता हू कि अब बीस पचीस कदम से ज्यादे न चलना होगा और उस ठिकाने पहुच जायगें जहा शीघ्र पहुचने की इच्छा है।

कमलिनी –यह बात तुमको कैसे मालूम हुई ?

भैरो – (छत और दोनों तरफ की दीवार की तरफ इशारा करके) देखिये छत और दीवार नम मालूम होती है कही कहीं पानी की बूदे भी टपक रही है इससे निश्चित होता है कि इस समय हम लोग तालाब के नीचे पहुच गये हैं।

कमलिनी ने कहा ठीक है तुम्हारा सबूत ऐसा नहीं है कि कोई काट सके।

थोडी ही दूर आगे जाने बाद एक छोटी सी खिडकी मिली। इसका दर्वाजा भी उसी ढग से खुलने वाला था जैसा कि पहिला और दूसरा दर्वाजा जिनका हाल हम ऊपर लिख आये हैं। कमलिनी ने दर्वाजा खोला।

इस समय इन चारों का कलेजा धकधक कर रहा था क्योंकि अब ये लोग किशोरी कामिनी और तारा की किस्मतों का फैसला देखने वाले थे और उनके दिलों का यह खुटका क्रमश बढता ही जाता था कि देखे बेचारी किशोरी कामिनी और तारा को हम लोग किस अवस्था में पाते है। कहीं ऐसा न हुआ हो कि वे तीनों भूख प्यास के दु ख को न सह कर इस दुनिया से कूच कर गई हों और इस समय उनकी लाशें सामने पड कर हम लोगों को भी दीन दुनिया के लायक न रक्खें।

यहॉ पर एक मोमबत्ती और जला ली गइ। दर्वाजा खुला और ये चारों उसके अन्दर गये। आह यहॉं यकायक जमीन पर सामने की तरफ तीन लाशें पडी हुई दिखाई दीं जिन पर नजर पडते ही कमलिनी के मुहॅ से एक चीख निकल पडी और वह हाय करके उन लोगों के पास जा पहुची।

ये तीनों लाशें किशोरी कामिनी और तारा की थी जो भूख और प्यास की सताई हुई इस अवस्था को पहुच गई थीं। तारा के बगल में तिलिस्मी नेजा जमीन पर पड़ा हुआ था और उसके जोड की अगूठी उसकी खूबसूरत उगली में पडी हुई थी

कमलिनी ने सबसे पहिले किशोरी के कलेजे पर हाथ रक्खा। कलेजे की धडकन बन्द थी और शरीर मुर्दे की तरह ठडा था। कमलिनी की आखों से आसू की बूदें गिरने लगी मगर उसने किशोरी की नब्ज पर हाथ रक्खा और साथ ही इसके खुश होकर बोल उठी अहा अभी नब्ज चल रही है ! आशा है कि ईश्वर मेरी मेहनत सफल करेगा !!

कमलिनी ने तारा और कामिनी की भी जाच की दोनों ऐयारों ने भी सभों को गौर से देखा। किशोरी कामिनी और तारा तीनों की अवस्था खराब थी होश हवास कुछ भी न था सास बिल्कुल मालूम नहीं पडती थी हा नब्ज का कुछ कुछ पता लगता था जो बहुत ही बरीक और सुस्त चल रही थी। यद्यपि यह जान कर सभों का कुछ प्रसन्नता हुई कि ये तीनों अभी जीती है मगर फिर भी उन तीनों की अन्तिम अवस्था इस बात का निश्चय नहीं कर सकती थी कि इनकी जान नि सन्देह बच ही जायगी और यही कारण था कि जिससे कमलिनी लाडिली देवीसिह और भैरोसिह का कलेजा काप रहा था और आखें डबडबाइ हुई थीं।

देवीसिह ने अपने बटुए में से एक शीशी निकाली जिसमें लाल रग का कोई अर्क था। उसी में से थोडा थोडा अर्क उन तीनों के मुह में (जो पहिले ही से खुला हुआ था) डाला और थोडी देर बाद नब्ज पर हाथ रक्खा। नब्ज पहिले से कुछ तेज मालूम हुई और सास भी कुछ चलने लगी।

भैरो –इन तीनों को यहा से बाहर निकाल कर मैदान में ले चलना चाहिये क्योंकि जब तक ठण्डी और ताजी हवा न मिलेगी इनकी अवस्था ठीक न होगी।

देवी – बेशक ऐसा ही है इस सुरग की बन्द हवा हमारे इलाज को सफल न होने देगी।

कमलिनी –तो पहिले यही काम करना चाहिये।

इतना कह कर कमलिनी ने तारा की उगली से तिलिस्मी नेजे के जोड की अगूठी निकाल ली और भैरोसिह को देकर कहा इस अगूठी को तुम पहिर लो जिसमें इस तिलिस्मी नेजे को अपने पास रख सको क्योंकि इन तीनों को बाहर ले जाने के बाद लाडिली और देवीसिह को साथ लेकर थोडी देर के लिए मैं तुमसे अलग हो जाऊगी और किशोरी कामिनी तथा तारा की हिफाजत के लिए तुम अकेले रह जाओगे।

मैं आपका मतलब समझ गया। कहकर भैरोसिंह ने अंगूठी लेकर अपनी उंगली में पहिर ली।

कमलिनी – मेरे इस कहने से तुमने क्या मतलब निकाला ? मेरा इरादा क्या समझे ?

भैरो – यही कि आप लोग माधवी मनोरमा और शिवदत्त बन कर उन दुश्मनों को धोखा दिया चाहते है क्योंकि वे लोग अभी तक बेहद उथल पुथल मचाने पर भी आपके मकान के बाहर न हुए होंगे।

कमलिनी –शाबाश ! तुम्हारी बुद्धि बडी तेज है बेशक मेरा यही इरादा है।

दो दफे करके हिफाजत के साथ चारों आदमियों ने किशोरी कामिनी और तारा को सुरंग के बाहर निकाला और देवीसिंह तथा भैरोसिंह बडी मुस्तैदी से किशोरी कामिनी और तारा का इलाज करने लगे। जब कमलिनी को इस बात का निश्चय हो गया कि अब इन तीनों की जान का खौफ नहीं है तब वह देवीसिंह और लाडिली को साथ लेकर फिर उसी सुरंग में घुसी। अबकी दफे वह कैदखाने वाली कोठरी में गई और वहां कारवाई का पूरा मौका पाकर इन तीनों ने माधवी मनोरमा और शिवदत्त बन जो कुछ किया उसका हाल हम ऊपर के बयानों में लिख चुके हैं !

पाठक महाशय अब आप यह तो समझ ही गये होंगे कि दुश्मनों ने खोज ढूंढ कर तहखाने में से जिन कैदियों को निकाला वे वास्तव में माधवी मनोरमा और शिवदत्त न थे बल्कि कमलिनी लाडिली और देवीसिंह थे। खैर अब इस तरफ आइए और किशोरी कामिनी तथा तारा का हाल देखिये जिनकी हिफाजत के लिए केवल भैरोसिंह रह गये थे।

ताकत पहुंचाने वाली दवाओं की बरकत से किशोरी कामिनी और तारा ने उस समय आंख खोली जब आसमान पर सुबह की सुफैदी फैल चुकी थी। पूरब से निकल कर क्रमशः फैल जाने वाली लालिमा रात भर तेजी के साथ चमकने वाले सितारों और सरदार चन्द्रदेव को सूर्यदेव के अवाई की सूचना दे रही थी और इसी सबब से तारों समेत तारापति भी नौ दो ग्यारह होने के उद्योग में लगे हुए थे तथा भैरोसिंह आसमान की तरफ मुंह किये बडी दिलचस्पी के साथ इस शोभा को देख कर सोच रहा था कि 'वाह ईश्वर की भी क्या विचित्र गति है ? करोडों आदमी ऐसे होंगे जो चन्द्रदेव की यह अवस्था देख सूर्यदेव ही के ऊपर इनसे बैर रखने का कलंक लगाते होंगे जिनकी बदौलत चन्द्रमा में रोशनी है और वह खूबसूरती तथा उद्दीपन का मसाला गिना जाता है।

इस समय भैरोसिंह को यह देख कर कि किशोरी कामिनी और तारा ने आँखें खोलदी है बडी खुशी हुई और उसने समझा कि अब मेरी मेहनत ठिकाने लगी मगर अफसोस उसे इस बात की कुछ खबर न थी कि बदकिस्मती ने अभी तक उन लोगों का पीछा नहीं छोडा या विधाता अभी भी उन लोगों के अनुकूल नहीं हुआ।

आठवां बयान

भगवानी को भूतनाथ के हवाले कर के जब कमलिनी चली गई तो भूतनाथ एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर सोचने लगा। श्यामसुन्दरसिंह किसी काम के लिए चला गया था और भगवानी उसके सामने दूसरी चट्टान पर सिर पकडे बैठी हुई थी। उसके हाथ पैर खुले थे मगर भूतनाथ के सामने से भाग जाने की हिम्मत उसे न थी। भूतनाथ क्या सोच रहा था या किस विचार में डूबा हुआ था इसका पता अभी न लगता था मगर उसके ढंग से इतना जरूर मालूम होता था कि वह किसी गम्भीर चिन्ता में डूबा हुआ है जिसमें कुछ कुछ लाचारी और बेबसी की झलक भी मालूम होती थी। वह घन्टों तक न जाने क्या क्या सोचता रहा और बहुत देर बाद लम्बी सांस लेकर धीरे से बोला 'बेशक वही था और अगर वही था तो उसने मुझे अपनी आँखों की ओट होने न दिया होगा

यह बात भूतनाथ ने इस ढंग से कही मानों वह स्वयं अपने दिल को सुना रहा और आगे भी कुछ कहा चाहता है मगर पास ही से किसी ने उसकी अधूरी बात का यह जवाब दे दिया– हां आंखों की ओट नहीं होने दिया !

भूतनाथ चौंक पडा और मुड कर पीछे की तरफ देखने लगा। उसी समय एक आदमी भूतनाथ की तरफ बढता हुआ दिखाई दिया जो तुरन्त भूतनाथ के सामने आकर खडा हो गया। चन्द्रदेव जिनको उदय भये अभी आधी घडी भी नहीं हुई थी इस नये आये हुए मनुष्य की सूरत शक्ल को अच्छी तरह नहीं तो भी बहुत कुछ दिखा रहे थे। इसका कद नाटा बदन गठीला और मजबूत था रंग यद्यपि काला तो न था मगर गोरा भी न था। चेहरा कुछ लम्बा सिर पर बडे बडे घुंघराले बाल इतने चमकदार और खूबसूरत थे कि ऐयारों को उन पर नकली या बनावटी होने का गुमान हो सकता था। चुस्त पायजामा और घुटने तक का चपकन जिसमें बहुत से जेब थे पहिरे और उस पर रेशमी कमरबन्द बांधे हुए था केवल कमरबन्द ही नहीं बल्कि कमरबन्द के ऊपर बेशकीमत कमन्द इस खूबसूरती के ढंग से लपेटे हुए था कि देखने से औरों को तो नहीं मगर ऐयारों को बहुत ही खूबसूरत जचती होगी। कमर में बाईं तरफ लटकने वाली तरवार की म्यान साफ कह रही थी कि मैं एक हलकी पतली तथा नाजुक तलवार की हिफाजत कर रही हूं पीठ पर गैंडे की एक छोटी सी ढाल

भी लटक रही थी और हाथ में कोई चीज थी जो कपडे के अन्दर लपेटी हुई थी। यह सब कुछ था मगर उसके सर पर टोपी पगडी या मुँडासा इत्यादि कुछ भी न था अर्थात वह सिर से नगा था। यह आदमी जिस ढग और चाल से घूम कर भूतनाथ के सामन आ खडा हुआ उससे मालूम होता था कि इसके बदन में फूर्ती और चालाकी कूट कूट कर भरी हुई है। कई सायत तक भूतनाथ चुपचाप गौर से उसकी तरफ देखता रहा और वह भी काठ की तरह खड़ा रहा। आखिर भूतनाथ ने कहा 'क्या तुम बहुत देर से हमारे साथ हो ?

आदमी – बहुत दर ही नही बल्कि बहुत दूर स भी।

भूत – ठीक है मैने रास्त में तुम्हे एक झलक दखा भी था।

आदमी – मगर कुछ बोले नहीं और मैं भी यह साच कर छिप गया कि कमलिनी क सामन कहीं तुम्हारी बेइज्जती न हो।

भूत – और ताज्जुब नहीं कि यह भी सोच लिया हा कि इस समय भूतनाथ अकेला नहीं है।

आदमी – शायद यह भी हा '(हस कर) मगर सच कहना क्या तुम्हे विश्वास था कि कभी मुझे फिर अपने सामने देखोग ?

भूत – नहीं कभी नही स्वप्न में भी नहीं

आदमी – अच्छा तो फिर आज का दिन बहुत मुबारक समझना चाहिय।

यह कह कर वह बड जार स हसा।

भूत – आज का दिन शायद तुम्हार लिए मुबारक हो मगर मेर लिए ता बडा ही मनहूस है।

आदमी – इसलिए कि तुम मुझ मरा हुआ समझते थ ?

भूतनाथ – कवल मरा ही हुआ नहीं बल्कि पञ्चतत्व म मिल गया हुआ !

आदमी – और इसी स तुमनिश्चिन्तथ नथा समझत थ कि तुम्हार सच्चे दाषो का जानने वाला दुनिया में कोई नही रहा !

भूतनाथ – अब मुझ अपन दाषा क प्रकट हान का डर नही है क्योंकि राजा वीरेन्द्रसिह और उनक लडकों तथा एयारों की तरफ से मुझे माफी मिल गई है।

आदमी – किसकी बदौलत ?

भूत – कमलिनी की बदौलत।

आदमी – ठीक है मगरउस साहानि की तरफ से तुम्हें माफी न मिली हागी जिसने अपना नाम तारा रक्खा हुआ है बल्कि उसे इस बात की खबर भी न होगी कि तुम उसक

भूत – ठहरा ठहरो तुम्हें इसका खयाल रख क काई नाजुक बात कहनी चाहिये कि मेर सिवाय कोई और सुनन वाला तो नहीं है !

आदमी – कोई जरूरत नहीं कि मै इस बात का ध्यान रक्खू। मै अन्धा नहीं हू इसलिए इतना ता तुम्हे विश्वास ही होना चाहिय कि भगवानी मेरी ऑखो की आड में न हागी !

भूत – खैर ता भगवानी क सामन जरा सम्हल क बातें करा।

आदमी – सो कैसे हा सकता है ? मै बिना बाते किय टल नही सकता और तुम कमलिनी क डर से भगवानी का बिदा नहीं कर सकत। अच्छा देखो मैं तुम्हारी इज्जत का ख्याल करके भगवानी को बिदा कर दता हू '(भगवानी से) 'जा रे तू यहा से चली जा 'जहा तेरा जी चाहे चली जा !

भूत – (काप कर) नहीं नहीं एसा न करो !

आदमी – मैं तो ऐसा ही करूगा '(भगवानी स) जा रे 'तै जाती क्यों नही ? क्या मौत के पजे से बचना तुझे अच्छा नहीं लगता !!

भूत – मै हाथ जोडता हू, माफ करो जरा सोचो ता सही।

आदमी – तुमने उस वक्त क्या साचा था कि अब मै सोचू ?

भूत – अच्छा तबएक काम करा इसक हाथ पैर बाध कर अलग कर दो फिर हम बातें कर लेंगे।

आदमी – (भगवानी से) क्यों रे हाथ पैर बधवा के जान दना मजूर है या भाग जाना पसन्द करती है ?

इस आदमी और भूतनाथ की बातें सुन भगवानी को बडा आश्चर्य हो रहा था। वह सोच रही थी कि क्या सबब है जो यह अद्भुत मनुष्य बात बात में भूतनाथ को दबाये जाता है। इसके मुँह से जितने शब्द निकलते हैं सब हुकूमत और

लापरवही के ढग के होते हैं और इसके विपरीत भूतनाथ के मुह से निकले हुए शब्द उसकी बेबसी लाचारी और कमजारी की सूचना देते हैं। साफ साफ जान पडता है कि भूतनाथ इससे दबता है और इसका इस समय यहा आना भूतनाथ को बहुत बुरा मालूम हुआ है। नि सन्देह इसमें और भूतनाथ में काई भद की बात गुप्त है जिस भूतनाथ प्रकट नहीं करना चाहता। जो हो पर मुझे इन बातो स क्या मतलब ? सच तो यों है कि इस समय इसका यहा आना मेरे लिये बहुत मुबारक है। साफ देख रहीं हू कि वह मुझे चले जाने का हुक्म दे रहा है और भूतनाथ जार करके उसका हुक्म टाल नहीं सकता अतएव विलम्ब करना नादानी है जहा तक जल्द हा सके यहा से भाग जाना चाहिए यद्यापि कमलिनी ने वादा किया है कि किशारी कामिनी और तारा क मिल जाने पर तेरी जान छोड दी जायेगी—फिर भी पराधीन और खतरे में ता पडी ही रहूगी। कौन ठिकाना तारा कामिनी और किशारी भूख प्यास की तकलीफ से मर गई हों और इस सबब मे कमलिनी क्रोध में आकर मेरा सिर उतार ले ! नहीं नहीं एसा न हाना चाहिये। इस समय ईश्वर ही ने मेरी मदद की है जा इस आदमी को यहा भेज दिया है अस्तु जहा तक हो सके भाग जाना ही उचित है।

इन बातां का सोचकर भगवानी उठ खडी हुई और घन जगल की तरफ रवाना हो गई। फिर फिर कर देखती जाती थी कि कहीं भूतनाथ मेरे पीछे ता नहीं आता मगर एसा न था और इसलिए वह खुशी खुशी कदम बढाने लगी। उसने यह भी साच लिया था कि माधवी मनोरमा और शिवदत्त मेरी बदौलत छूट गये हैं इसलिये उन तीनों में से चाहे जिसके पास मैं चली जाऊगी मेरी कदर होगी और मुझे किसी बात की परवाह न रहेगी। भगवानी स्वयम् तो चली गई मगर घबराहट में उसने उन कीमती जेवरों और जवाहिरात की चीजों की गठरी उसी जगह छोड दी जो कमलिनी के घर से लूट कर लाई थी। यह गठरी अभी तक उसी जगह एक पत्थर क ढोंके पर पडी हुई थी और इस पर किशोरी कामिनी तथा तारा को छुडाने की जल्दी में कमलिनी ने भी विशष ध्यान न दिया था तो भी एक तौर पर यह गठरी भी भूतनाथ के ही सुपुर्द था।

भगवानी को इस तरह चले जाते दख भूतनाथ की आँखों में खून उतर आया और क्रोध के मारे उसका बदन काँपने लगा। उसन जोर से जफील (सीटी) बुलाई और इसके बाद उस आदमी की तरफ देख के बोला—

भूत—बेशक तुमन बहुत बुरा किया कि भगवानी का यहा स विदा कर दिया मैं तुम्हारी इतनी जबदस्ती किसी तरह बर्दाश्त नहीं कर सकता !

आदमी—(जाश केसाथ) तो क्या तुम मरा मुकाबला कराग ? कह दा कह दो—हॉ कह दो !!

भूत -आखिर तुममें क्या सुरखाब का पर लगा हुआ है जो इतना बढे चले जाते हो ! मै भी ता मर्द हू !!

आदमी—(बहुत जोर से हस कर —जिससे मालूम होता था कि बनावटी हसी है) हॉ हॉ मैं जानता हू कि तुम मर्द हो और इस समय मेरा मुकाबला किया चाहते हो !

यह कह कर उसने पीछ की तरफ दखा क्योंकि पत्तों की खडखडाहट तेजी के साथ किसी के आने की सूचना दने लगी थी।

पाठकों का याद हागा कि कमलिनी यहा पर अकेले भूतनाथ को नही छोड गइ थी बल्कि श्यामसुन्दरसिह को भी छाड गयी थी। कमलिनी क चले जाने बाद श्यामसुन्दरसिह भूतनाथ की आज्ञानुसार यह देखने के लिए वहा से चला गया था कि जगल में थोडी दूर पर कहीं काई ऐसी जगह है जहा हम लोग आराम से एक दिन रह सकें और किसी आने जाने वाल मुसाफिर को मालूम न हा। यही सबब था कि इस समय श्यामसुन्दरसिह यहाँ मौजूद न था और भूतनाथ ने उसी को बुलाने के लिए जफील दी थी जिसके आन की आहट इन लागों को मिली।

आदमी—(भूतनाथ स) मैं ता पहिले ही समझ चुका था कि तुम श्यामसुन्दरसिह हो बुला रहे हो म गर तुम विश्वास करा कि उसक आने से मैं डरता नहीं हू बल्कि तुम्हारी बेवकूफी पर अफसोस करता हू। मर्द आदमी तुमने इतना न सोचा कि जब भगवानी के सामन तुम मेरी बातों को सुन नहीं सकते थे तो श्यामसुन्दरसिह के सामने कैसे सुनाग ? खैर मुझ इन बातो से क्या मतलब तुम्हें अख्तियार है चाहे दो सौ आदमी इकटठे कर ला !

भूत—(घबराहट की आवाज से) तुम ता इस तरह की बातें कर रहे हो जैसे अपने साथ एक फौज लकर आये हो !

आदमी—बेशक एसा ही है (दो कदम आग बढ कर और अपने हाथ की वह गठरी दिखा कर जिसमेंकाई चीज लपटी हुई थी) इसक अन्दर एक एसी चीज है जिसका होना मेरेसाथ वैसा ही है जैसा तुम्हारे साथ एक हजार बहादुर सिपाहियों का हाना। क्या तुम नहीं जानते कि इसके अन्दर क्या चीज है ? नहीं नहीं तुम बेशक समझ गये होगे कि इस कपडे कोअन्दर (कुछ रुक कर) हा ठीक है पहिला नाम चाहे कुछ भी हो मगर अब हमको उसे तारा ही कह कर बुलाना चाहिये—अच्छा तो हम क्या कह रह थ ? हॉ याद आया इस कपडे के अन्दर तारा की किस्मत बन्द है। क्या तुम इसे खोलन के लिए हुक्म देत हो ? मगर याद रक्खा कि खुलन के साथ ही इसमें से इतनी कडी ऑच पैदा हागी कि

जिसे देखते ही तुम भस्म हो जाओगे चाहे वह अपने मन दिल को कितना ही ठण्डा क्यों न करे।

भूत–(काँप कर और दो कदम पीछे हट कर) ठहरो जल्दी न करो मैं हाथ जोड़ता हूँ, जरा सब्र करो!

आदमी–अच्छा क्या चाहते हो जल्दी कहो?

भूत–पहिले यह बताओ कि आज ऐसे समय में, तुम मेरे पास क्यों आए हो?

आदमी–(जोर से हंस कर) क्या बेवकूफ आदमी है! अरे मैं इतना नहीं सोच सकता कि मैं उसी दिन से तुझे खोज रहा होऊंगा जिस दिन तूने मुझ पर सफाई का हाथ फेरा था मगर लाचार था कि तेरा पता ही नहीं लगता था। मैं नहीं जानता था कि भूतनाथ के चोले के अन्दर वही हरामी सूरत छिपी हुई है जिसे मैं वर्षों से ढूंढ रहा हूं अगर जानता तो कभी का तुझसे मिल चुका होता इतने दिन मुफ्त में गंवा कर आज की नौबत न आई होती। अच्छा पूछो और क्या पूछते हो।

भूत–(बहुत देर तक सोचने के बाद सिर नीचा करके) क्या मैं आशा कर सकता हूं कि थोड़े दिन तक तुम मुझे और छोड़ दोगे? मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि इसके बाद स्वयं तुमसे मुलाकात करूंगा। उस समय तुम खुशी से मेरा सिर उतार लेना मुझे कुछ भी रंज न होगा।

आदमी–सिर उतार लेना!

भूत–हां मेरा सिर उतार लेना मुझे कुछ भी दुःख न होगा।

आदमी–क्या सिर उतार लेने से बदला पूरा हो जायगा?

भूत–क्यों नहीं क्या इससे भी बढ़ के कोई सजा है?

आदमी–मैं समझता हूं कि यह कुछ भी सजा नहीं है! क्या तुम नहीं जानते कि प्रायः बुद्धिमान लोग जिन्हें नादान भी कह सकते हैं जरा सी बात पर अपनी जान अपने हाथ से बर्बाद कर देते हैं और अपनी बेइज्जती सहना नहीं चाहते तथा ऐसा करते समय उन्हें कुछ भी दुःख नहीं होता!

भूत–(काँप कर) तो क्या तुमने इससे भी कड़ी कोई सजा मेरे लिए सोच रक्खी है?

आदमी–बेशक! बदला उसी को कहते हैं जो उसके बराबर हो जिसका बदला लिया जाय।

भूतनाथ–(लम्बी सांस लेकर) वास्तव में तुम ठीक कहते हो? मैं भी इसी फेर में मुद्दत से पड़ा हुआ हूं (रुक कर) खैर यह बताओ कि हमारे तुम्हारे बीच में किसी तरह का मामला तै हो सकता है या तुम थोड़े दिन के लिए मुझे छोड़ सकते हो जैसा कि मैं पहिले कह चुका हूं?

आदमी–नहीं बल्कि तुम्हें इसी समय हमारे साथ चलना होगा।

भूत–कहाँ?

आदमी–जहाँ मैं ले चलूं।

भूत–जबर्दस्ती!

आदमी–हां जबर्दस्ती!

भूत–ऐसा नहीं हो सकता!

आदमी–ऐसा ही होगा!

भूत–तुम अपनी ताकत पर भरोसा करते हो?

आदमी–हां अपनी ताकत पर और तदबीर पर भी!

भूत–अच्छा फिर देखेंगे!

आदमी–अच्छा तो श्यामसुन्दरसिंह के सामने (गठरी दिखा कर) इसे खोलूं, तुम डरोगे तो नहीं?

भूत–कोई हर्ज नहीं मैं श्यामसुन्दरसिंह को तुम्हारी भूल समझा दूँगा।

आदमी–(हंस कर) आ हो हा तब तो मुझे इससे बढ़ कर कोई तदबीर करनी चाहिए! अच्छा देखो!

इतना कह कर उस अद्भुत आदमी ने तीन दफे ताली बजाई और साथ ही इसके बगल वाले पेड़ों के झुरमुट में से एक आदमी आता हुआ दिखाई दिया जिसने काले कपड़े से सिर से पैर तक अपने को ढाक रक्खा था। भूतनाथ काँप कर कई कदम पीछे हट गया और बड़े गौर से उसकी तरफ देखने लगा और इसके बाद श्यामसुन्दर की तरफ निगाह फेरी यह जानने के लिए कि देखें इन बातों का असर उसके ऊपर क्या हुआ है मगर रात का समय और कुछ दूर होने के कारण श्यामसुन्दरसिंह के चेहरे का उतार चढ़ाव भूतनाथ देख न सका।

भूत–(जी कड़ा करके) मैं कैसे जान सकता हूं कि इस खोल के अन्दर कौन छिपा हुआ है?

नया आदमी–ठीक है तब यदि कहो तो मैं इस कपड़े को उतार दूं, मगर ताज्जुब नहीं कि मेरी आवाज तुम्हारे कानों में

भूत–(चौंक कर) बस बस यह आवाज ऐसी नहीं है जिसे मैं भूल जाऊं हाय बेबसी और मजबूरी इसे कहते हैं। (श्यामसुन्दरसिंह से) अच्छा तुम थोडी देर के लिए यहा से चले जाओ जब मैं जफील बुलाऊंगा तब फिर आ जाना।

श्यामसुन्दरसिंह ने इस समय एक ऐसा नाटक देखा था जिसका उसे गुमान भी न था। उन दोनों आदमियों के आने से भूतनाथ की क्या हालत हो गई थी इसे वह खूब समझ रहा था मगर उसे इस बात का आश्चर्य था कि भूतनाथ जिसके नाम से लोगों के दिल में हौल पैदा होता है इस समय ऐसा मजबूर और बबस क्यों हो रहा है? यद्यपि भूतनाथ का हुक्म वह टाल नहीं सकता था और उसे वहाँ से टल जाना ही आवश्यक था मगर साथ ही इस के वह इस सीन को भी छोड नहीं सकता था। भूतनाथ की आज्ञा पाकर वह वहा से चला तो गया मगर घूम फिर कर बिल्ली की तरह कदम रखता हुआ लौट आया और एक पेड की आड में छिप कर खडा हो गया जहा से वह उन तीनों को देख सकता था और उनकी बातचीत भी बखूबी सुन सकता था।

जब भूतनाथ ने देखा कि श्यामसुन्दरसिंह चला गया तो उसने उस आदमी से कहा जो पहिले आया था क्या हमारे और तुम्हारे बीच में मेल नहीं हो सकता?

आदमी–नहीं।

भूत–फिर तुम मुझसे क्या चाहते हो?

आदमी–यही कि चुपचाप हमारे साथ चले चलो।

इस बात को सुन कर भूतनाथ ने सिर झुका लिया और कुछ सोचने लगा। यह अवस्था देख कर उस आदमी ने कहा 'भूतनाथ मालूम होता है कि तुम भागने की तदबीर सोच रहे हो मगर इस बात को खूब याद रक्खो कि मेरे सामने से तुम्हारा भाग जाना बिल्कुल ही वृथा है जब तक कि यह चीज मेरे पास मौजूद है और मेरे साथी जीते हैं। मैं तुम्हें फिर कहता हूं कि चुपचाप मेरे साथ चले चलो और जो कुछ मैं कहूं करो!

भूत – नहीं नहीं मैं भागना पसन्द नहीं करता बल्कि इसके बदले में तुम्हारे साथ लड कर जान दे देना उचित समझता हू।

आदमी – अगर यही इरादा है तो आओ मैं मुस्तैद हू!

यह कह कर उस आदमी ने अपने हाथ की गठरी उस दूसरे आदमी के हाथ में दे दी जो सिर से पैर तक काले कपडे से अपने को ढाके हुए था और उसे वहा से चले जाने के लिये कहा। वह व्यक्ति वहा से हट कर पेडों की आड में गायब हो गया और उस विचित्र मनुष्य ने तलवार म्यान से बाहर खैंच ली। भूतनाथ ने भी तलवार खैंच ली और उसके सामने पैंतरा बदल कर आ खडा हुआ और दोनों में लडाई शुरू हो गई। निःसन्देह भूतनाथ तलवार चलाने के फन में बहुत होशियार और बहादुर था मगर श्यामसुन्दरसिंह ने जो छिप कर यह तमाशा देख रहा था मालूम कर लिया कि उसका वैरी इस काम में उससे बहुत बढ चढ के है क्योंकि घन्टे भर की लडाई में उसने भूतनाथ को सुस्त कर दिया और अपने बदन में एक जख्म भी लगने न दिया इसके विपरीत भूतनाथ के बदन में छोटे छोटे कई जख्म लग चुके थे और उनमें से खून निकल रहा था। केवल इतना ही नहीं। श्यामसुन्दरसिंह ने यह भी मालूम कर लिया कि उस अद्भुत ने जो लडाई के फन में भूतनाथ से बहुत ही बढ चढ के है कई मौकों पर जान बूझ के तरह दे दिया और भूतनाथ को छोड दिया नहीं तो अब तक भूतनाथ को कब का खतम कर चुका होता।

मगर क्या भूतनाथ इस बात को नहीं समझता था? बेशक समझता था। वह खूब जानता था कि आज मेरा दुश्मन मुझसे बहुत जबदस्त है और उसने कई मौकों पर जब कि वह मेरी जान ले सकता था जान बूझ कर तरह दे दिया या अगर जख्म पहुंचाया भी तो बहुत कम।

सुबह हो चुकी थी। अब वहा की चीजें बिल्कुल साफ साफ दिखाई देने लगी थीं। भूतनाथ बहुत ही थक गया था इसलिए वह सुस्ताने के लिए ठहर गया और बडे गौर से अपने वैरी की सूरत देखने लगा जिसके चेहरे पर थकावट या उदासी का कोई चिन्ह नहीं दीख पडता था बल्कि वह मन्द मन्द मुस्करा रहा था और उसकी आखें भूतनाथ के चेहरे पर इस ढंग से पड रही थीं जैसे उस्तादों की निगाहें अपने नौसिखे शागिर्दों पर पड़ा करती हैं।

भूतनाथ ठहर गया और उसने धीमी आवाज में अपने वैरी से कहा अब मैं लडने की हिम्मत नहीं कर सकता विशेष करके इसलिये कि तुम मुझसे उस तरह नहीं लडते जैसे दुश्मनों को लडना चाहिये। मैं खूब जानता हूं कि तुमने कई मौके पर मुझे उड़ा दिया। खैर अब मैं अपनी भलाई के लिए सिवाय इसके और कोई उपाय नहीं देखता कि अपने हाथ से अपनी जान दे दू।

आदमी – नहीं नहीं भूतनाथ तुम अपने हाथ से अपनी जान नहीं दे सकते क्योंकि तुम्हारी एक बहुत ही प्यारी चीज मेरे कब्जे में है जो तुम्हारे बाद बड़ी तकलीफ में पड़ जायगी और जिसे तुम 'लामाघाटी' में छोड़ आये थे। मुझे विश्वास है कि तुम उसकी बेइज्जती कबूल न करोगे!

यह एक ऐसी बात थी जिसने भूतनाथ के दिल को एक दम से ही मसल डाला और इस तकलीफ को वह सह न सका। उसका सिर घूमने लगा वह धीरे से जमीन पर बैठ गया और वह विचित्र आदमी इस ढग से उसे देखने लगा जैसे ब्याध अपने शिकार को काबू में कर लेने के बाद आशा और प्रसन्नता की दृष्टि से उसकी तरफ देखता है।

श्यामसुन्दरसिह इस दृश्य को गौर से और ताज्जुब से देख रहा था। बीच में एक दफे उसकी यह इच्छा भी हुई कि झाडी में से बाहर निकले और भूतनाथ के पास पहुच कर उसकी मदद करे मगर दो बातों को सोच कर वह रुक गया एक तो यह कि भूतनाथ ने उसे वहा से बिदा कर दिया था और कह दिया था कि जब हम जफील बुलाए तब आना मगर इतनी लडाई होने और हार मानने पर भी भूतनाथ ने उसे नहीं बुलाया इससे साफ मालूम होता है कि भूतनाथ श्यामसुन्दरसिह का उस जगह आना पसन्द नहीं करता दूसरे यह कि उसने कमलिनी की जुबानी भूतनाथ की बहुत तारीफ सुनी थी कमलिनी जोर देकर कहती थी कि लड़ाई के फन में भूतनाथ बहुत ही तेज और होशियार है, मगर इस जगह उस विचित्र मनुष्य के सामने उसने भूतनाथ को ऐसा पाया जैसे काबिल ओस्ताद के सामने एक नौसेखा लडका। इससे यह नहीं कहा जा सकता कि भूतनाथ नादान है बल्कि भूतनाथ ने जिस चालाकी और तेजी से अपने वैरी का मुकाबला किया वह साधारण आदमी का काम नहीं था असल तो यह है कि भूतनाथ का वैरी ही कोई विचित्र व्यक्ति था। उसकी चालाकी फुर्ती और वीरता देख कर श्यामसुन्दरसिह यद्यपि सिपाही था मगर डर गया और मन में कहने लगा कि यह मनुष्य नहीं है इसके सामने जाकर मै भूतनाथ की कुछ भी मदद नहीं कर सकता।

इन्हीं दो बातों को सोच कर श्यामसुन्दरसिह जहा का तहा रह गया और कुछ न कर सका।

श्यामसुन्दरसिह छिपा हुआ इन सब बातों को सोच रहा था भूतनाथ हताश होकर जमीन पर बैठ गया था और उसका बैरी आशा और प्रसन्नता की दृष्टि से उसे देख रहा था कि इसी बीच में एक आदमी ने श्यामसुन्दरसिह के मोढे पर हाथ रक्खा।

श्यामसुन्दरसिह चौक पड़ा और उसने फिर कर देखा तोएक नकाबपोश पर निगाह पडी जिसका कद नाटा तो न था मगर बहुत लम्बा भी न था। उसका चेहरा स्याह रग के नकाब से ढका हुआ था और उसके बदन का कपडा इतना चुस्त था कि बदन की मजबूती गठन और सुडौली साफ मालूम होती थी। उसका कोई अग ऐसा न था जो कपडे के अन्दर छिपा हुआ न हो। कमर में खजर तलवार और पीठ पर लटकती हुई एक छोटी सी ढाल के अतिरिक्त वह हाथ में दो हाथ का एक डडा भी लिए हुए था। हा यह कहना तो हम भूल ही गये कि उसकी कमर में कमन्द और ऐयारी का बटुआ भी लटकता दिखाई दे रहा था।

श्यामसुन्दरसिह ने बडे गौर से उसकी तरफ देखा और कुछ बोला ही चाहता था कि उसने चुप रहने और अपने पीछे पीछे चले आने का इशारा किया। श्यामसुन्दरसिह चुप तो रहगयामगर उसके पीछे पीछे जाने की हिम्मत न पडी। यह देख उस नकाबपोश ने धीरे से कहा डरो मत हमको अपना दोस्त समझो और चुपचाप चले आओ। देखो देर मत करो नहीं तो पछताओगे। इतना कह कर नकाबपोश ने श्यामसुन्दरसिह की कलाई पकड ली और अपनी तरफ खैचा।

श्यामसुन्दर सिहको ऐसा मालूम हुआ कि जैसे लोहे के हाथ ने कलाई पकड ली हो जिसका छुडाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था। अब श्यामसुन्दरसिह में इनकार करने की हिम्मत न रही और वह चुपचाप उसकेपीछे पीछे चला गया। दस बारह कदम से ज्यादे न गया होगा कि नकाबपोश रुका और उसने श्यामसुन्दरसिह से कहा इतना देखने पर भी तुम कमलिनी के नमक की इज्जत करते हो या नहीं ?

श्यामसुन्दर – बेशक इज्जत करता हू।

नकाबपोश – अच्छा तो तुम उस मैदान में जाओ जहा भूतनाथ बैठा अपनी बदनसीबी पर विचार कर रहा है और उस गठरी को उठा लाओ जिसे भगवनिया चुरा लाई थी। तुम जानते हो कि उसमें लाखों रुपये का माल है। कहीं ऐसा न हो कि वैरी उसे उठा ले जाय। अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारे मालिक का बहुत नुकसान होगा।

श्यामसुन्दर–ठीक है मगर मै डरता हू कि ऐसा करने से कहीं भूतनाथ रज न हो जाय।

नकाबपोश–तुम्हें भूतनाथ के रज होने का खयाल न करना चाहिये बल्कि अपने मालिक के नफा नुकसान को विचारना चाहिये। इसके सिवाय मै तुम्हें विश्वास दिलाता हू कि भूतनाथ कुछ भी न कहेगा हा उसका वैरी कुछ बोले तो ताज्जुब नहीं मगर नहीं जहाँ तक मै सोचता हू वह भी कुछ न बोलेगा क्योंकि वह नहीं जानता कि इस गठरी में क्या चीज है।

श्यामसुन्दर–अगर रोके तो ?

नकाबपोश–मैं छिप कर देखता रहूगा अगर वह तुम्हें रोकना चाहेगा तो मैं झट से पहुच जाऊगा और उससे लडने

लगूगा तब तक तुम गठरी उठा कर चल देना।

श्यामसुन्दर–अगर ऐसा ही है तो आप पहिले वहाँ जाकर उससे लडिये बीच में मै पहुच कर गठरी उठा लूगा।

नकाबपोश–(हस कर) मालूम होता है कि तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास नही और तुम उस आदमी स बहुत डरते हो ?

श्यामसुन्दर–बशक एसा ही है क्योंकि मै देख चुका हू कि भूतनाथ ऐसे जवामर्द और बहादुरको उसने कैसा नीचा दिखाया और जहा तक मैं समझता हू आप भी उसका मुकाबला नहीं कर सकते। मालूम होता है कि आपने उसकी लडाई नहीं देखी अगर देखते ता लडने की हिम्मत न करते।

नकाबपोश–नहीं नहीं मै उसकी लडाई देख चुका हू और इसी से उसके साथ लड़न की इच्छा होती है।

श्यामसुन्दर–अगर ऐसा है तो विलब न कीजिये जाकर उससे लडाई शुरू कर दोजिए फिर मैं जा कर गठरी उठा लूगा और चल दूगा। मगर यह तो बताइये कि आप कौन है और कमलिनीजी के लिए इतनी तकलीफ क्यों उठा रहे है ?

नकाबपोश–इसका जवाब मै कुछ भी न दूँगा (कुछ सोच कर) अच्छा तो अब यह बताओ कि गठरी उठा लने के बाद तुम कहा चले जाओगे ?

श्यामसुन्दर–इसका जवाब मैं क्या दे सकता हू ? जहा मौका मिलेगा चल दूगा।

नकाबपोश–नहीं ऐसा न करना जहाँ तुम्हें जाना चाहिये मै बताता हू।

श्यामसुन्दर–(चौक कर) अच्छा बताइय !

नकाबपोश–तुम यहा से सीधे दक्खिन की तरफ चले जाना थोडी दूर जाने बाद एक पीपल का पेड दिखाई देगा उसके नीचे पहुच कर बाईं तरफ घूम जाना एक पगडडी मिलेगी उसी को अपना रास्ता समझना थोडी दूर जाने बाद फिर एक पीपल का पेड दिखाई देगा उसके नीचे चले जाना वहा एक नकाबपाश बैठा हुआ दिखाई देगा और उसी के पास हाथ पैर बधी हुई हरामजादी भगवानी को भी देखागे जो मौका पाकर यहा से भाग गई थी।

श्यामसुन्दर–(ताज्जुब में आकर) अच्छा फिर ?

नकाबपोश–फिर तुम भी उसके पास जाकर बैठ जाना जब मैं उस जगह आऊगा तो देखा जायगा या जैसा वह नाकाबपोश कहेगा वैसा ही करना। डरना मत उसे अपना दोस्त समझना। तुम देखते हो कि मैं जो कुछ कहना या करता हू उसस तुम्हारे मालिक ही की भलाई है।

श्यामसुन्दर–मालूम तो ऐसा ही हाता है।

नकाबपोश–मालूम होता है नहीं बल्कि यह कहो कि बेशक ऐसा है। अच्छा अब तुम्हें एक बात और कहना है।

श्यामसुन्दर–वह क्या ?

नकाबपोश–यह ता तुम दख ही चुके हो कि उस अदभुत आदमी ने भूतनाथ को अपने कब्जे में कर लिया है।

श्यामसुन्दर–सो तो प्रकट ही है।

नकाबपोश–अब वह भूतनाथ का अपने साथ ल जायगा।

श्याम -अवश्य ले जायगा इसी के लिये तो इतना बखेडा मचाये हुए है।

नकाबपोश–उस समय मै भी उसके साथ साथ चला जाऊगा।

श्यामसुन्दर–अच्छा तब ?

नकाबपोश -न.द रात को तुम अपने साथी नकाबपोश और भगवानी को लेकर उस समय इसी जगह आ जाना जिस समय कमलिनी ने तुमसे मिलने की प्रतिज्ञा की है और सब हाल ठीक ठीक उससे कह देना और यह भी कह दना कि कल शाम को अपने तिलिस्मी मकान के पास मरी बाट जोहे।

श्यामसुन्दर–अच्छा ऐसा ही करूगा मगर आप भी तो विचित्र आदमी मालूम पडते हैं।

नकाबपोश–जो हो तो अब मेरे साथ साथ चले आओ मैं उसके मुकाबिले में जाता हू।

नकाबपोश और श्यामसुन्दरसिह की बातचीत बहुत जल्द हुई थी इसमे आधी घडी से ज्यादे न लगी हागी बल्कि इससे भी कम समय लगा होगा। आखिरी बात कह कर नकाबपाश उस तरफ रवाना हुआ जहा भूतनाथ बैठा हुआ सोच रहा था कि अब क्या करना चाहिये श्यामसुन्दरसिह भी उसके पीछे पीछे गया मगर आगे जाकर पड़ों की आड में छिप कर खडा हो गया जहा से वह सब कुछ देख और सुन सकता था।

भूतनाथ अभी तक उसी तरह अपने विचार में निमग्न था और वह अद्भुत व्यक्ति उसकी तरफ बडे गौर से देख रहा था। इसी बीच नकाबपोश भी उस जगह जा पहुचा और उस चट्टान पर बैठ गया जिस पर गठरी रक्खी हुई थी। पहिले तो भूतनाथ ने समझा कि यह भी उसी विचित्र मनुष्य का साथी होगा जिसने मुझे हर तरह स दबा रक्खा है मगर जब उस आदमी को भी नकाबपोश के यकायक आ जाने स अपनी तरह आश्चर्य में डूबे हुए देखा तो उसे बडा ही

अब उस आदमी को हर तरह से नाउम्मीदी हो गई और उसने समझ लिया कि इस बहादुर नकाबपोश का मुकाबिला मैं किसी तरह नहीं कर सकता और न यह नकाबपोश मुझे जान से मारने की ही इच्छा करेगा। वह आश्चर्य लज्जा और निराशा की निगाह से नकाबपोश की तरफ देखने लगा।

नकाबपोश–मैं पुनः कहता हूं कि मुझसे मुकाबला करने का इरादा छोड़ दो और जो कुछ मैं हुक्म दे चुका हूं उसे मानो अर्थात् यहाँ से चले जाओ। हां तुम्हारे और भूतनाथ के मामले में मैं किसी तरह की रुकावट न डालूंगा तुम दोनों में जो कुछ पटे पटा लो।

आदमी–अच्छा ऐसा ही होगा।

यह कह कर वह भूतनाथ के पास गया और बोला अब कहो मेरे साथ चलोगे या नहीं जो कुछ कहना हो साफ साफ कह दो !!

भूत–मैं तुम्हारे साथ चलने पर राजी नहीं हूं।

आदमी–अच्छा तो फिर मुझे भी जो कुछ कहना है इस बहादुर नकाबपोश के सामने ही कहे डालता हूँ क्योंकि ऐसा बहादुर गवाह मुझे फिर न मिलेगा।

यह कह कर उसने बड़े जोर से ताली बजाई भूतनाथ समझ गया कि इसने फिर उस आदमी को बुलाया है जो सिर से पैर तक अपने को ढाँक हुए था और जिसके हाथ में वह पुलिन्दा भी इसने दे दिया है जिसमें इसके कथनानुसार तारा की किस्मत बन्द है।

जो कुछ भूतनाथ ने सोचा वास्तव में वही बात थी मगर थोड़ी देर तक राह देखने पर भी वह आदमी न आया जिस उस विचित्र मनुष्य ने ताली बजा कर बुलाया था इसलिये उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा और वह स्वयम उसकी खोज में चला गया। थोड़ी देर तक चारों तरफ खोजता रहा इसके बाद उसने एक झाड़ी के अन्दर उस आदमी को विचित्र अवस्था में देखा अर्थात अब वह कपड़ा उसके ऊपर न था जिसने सिर से पैर तक उसे छिपा रक्खा था और इस लिये वह साफ औरत मालूम पड़ती थी। वह जमीन पर पड़ी हुई थी रस्सी से हाथ पैर बंधे हुए थे एक कपड़ा उसके मुँह पर इस तरह बँधा हुआ था कि हजार उद्योग करने पर भी वह कुछ बोल नहीं सकती थी और वह गठरी भी उसके पास इधर उधर कहीं नहीं दिखाई देती थी जिसमें तारा की किस्मत बन्द थी और जो उस आदमी ने लड़ाई करती समय उसके हाथ में दे दी थी।

विचित्र मनुष्य ने झटपट उसके हाथ पैर खोले मुँह पर से कपड़ा दूर किया और उसकी इस बेइज्जती का कारण पूछा। कुछ शान्त होने पर उसने कहा जिस समय तुम भूतनाथ से लड़ रहे थे उसी समय एक नकाबपोश यहाँ आया और उसने एक कपड़ा इस फुर्ती के साथ मेरे मुँह पर डाल दिया और मुझे बेकाबू कर दिया कि मैं कुछ भी न कर सकी न तो तुम्हें बुला सकी और न चिल्ला सकी। इसके बाद उसने मेरे मुँह पर मजबूती से कपड़ा बाँधा और फिर रस्सी से हाथ पैर बाँधने बाद वह गठरी लेकर चला गया जो तुमने मुझे दी थी और जो इस घबराहट में मेरे हाथ से छूट कर जमीन पर जा रही थी।

आदमी–आह तो मुझे अब मालूम हुआ कि वह शैतान नकाबपोश मेरा बहुत कुछ नुकसान करने के बाद मैदान में गया और मुझसे लड़ा था। हाय शैतान ने तो मुझे चौपट ही कर दिया भूतनाथ पर काबू पाने को जो कुछ जरिया मेरे पास था उसे इस तरह खोना जाता रहा।

औरत–शायद ऐसा ही हो क्योंकि मैं नहीं जानती कि किस नकाबपोश से तुमसे लड़ाई हुई और नतीजा क्या निकला।

आदमी–जो नकाबपोश मुझसे लड़ा था वह अभी तक अखाड़े में बैठा हुआ है। जहाँ तक मुझे विश्वास होता है मैं कह सकता हूं कि उसी ने तुम्हें तकलीफ दी है मगर अफसोस लड़ाई का नतीजा अच्छा न निकला क्योंकि वह मुझसे बहुत जबरदस्त है।

औरत–(आश्चर्य से) क्या लड़ाई में उसने तुम्हें दबा लिया।

आदमी–बेशक ऐसा ही हुआ और इस समय मैं उसका कुछ भी नहीं कर सकता।

औरत–तो क्या वह भूतनाथ का पक्षपाती है।

आदमी–कहता तो वह यही है कि मैं तुम्हारे और भूतनाथ के बीच में कुछ भी न बोलूंगा तुम अगर चाहो तो भूतनाथ को ले जाओ या जैसा चाहो उसके साथ बर्ताव करो

औरत–मगर मेरे प्यारे मजनू! तुम किसी बात की चिन्ता मत करो क्योंकि मैं उसे पहिचान गई हूं, इसलिए आज नहीं तो फिर कभी जब तुम्हें मौका मिलेगा तुम इस बेइज्जती का बदला उससे ले सकोगे।

आदमी–(खुश होकर) हा तुमने उसे पहिचान लिया ।किस तरह पहिचाना ?

औरत–जब वह मेरे हाथ पैर बाध रहा था उसी समय इत्तिफाक स उसके चहरे पर से नकाब हट गया और मैने उस अच्छी तरह पहिचान लिया।

आदमी–यह बहुत अच्छा हुआ हा तो वह कौन हे ?

इसके जवाब में औरत ने धीर से उसके कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही वह चौंक पडा और सिर नीचा करके कुछ साचन लगा। कई पल के बाद यह बोला आह मुझे गुमान भी न था कि उस नकाब के अन्दर एक ऐसे की सूरत छिपी हुई है जो अपना सानी नहीं रखता मगर बहुत बुरा हुआ। वह चीज मेरे हाथ में होती तो भूतनाथ को इतना डर न था, जितना अब है। खैर क्या हज है जब पता लग गया तो जाता कहा है आज नही कल कल नही परसो एक न एक दिन बदला ल लूगा। मगर सुनो तो सही मुझे एक नई बात सूझी है।

विचित्र मनुष्य ने उस औरत स धीरे धीरे कुछ कहा जिसे वह बडे गौर से सुनती रही और जब बात पूरी हा गई तो बाली ठीक है ठीक है में अभी जाती हू, निश्चय रक्खो कि मरी सवारी का घोडा घटे भर के अन्दर अपनी पीठ खाली कर दगा आर बहुत जल्द

आदमी–बस बस मै समझ गया तुम जाओ और मै भी अब उसके पास जाता हू।

उस औरत को विदा कर क वह विचित्र मनुष्य फिर उसी जगह आया जहाँ भूतनाथ अभी तक सिर झुकाये हुए बैठा था मगर उस नकाबपोश का कहीं पता न था।

आदमी–(भूतनाथ से) वह नकाबपाश कहाँ गया ?

भूत–(इधर उधर देख कर) मालूम नहीं कहाँ चला गया।

आदमी–क्या तुम उसे जानते हो ?

भूत–नही।

आदमी–मगर वह तुम्हारा पक्ष क्यों करता है ?

भूत–मैंन तो कोई ऐसी बात नही देखी जिससे मालूम हो कि वह मेरा पक्ष करता था।

आदमी–तुमन काइ एसी बात नहीं देखी तो मै कह देना उचित समझता हूँ कि वह नकाबपोश वह गठरी बेगम के हाथ से जबरदस्ती ल गया जिसमें तारा की किस्मत बन्द थी।

भूत–चलो अच्छा हुआ एक बला से तो छुटकारा मिला।

आदमी–छुटकारा नहीं मिला, बल्कि तुम और आफत में फँस गये यदि वास्तव में तुम उसे नहीं जानते ।

भूतनाथ–हाँ ऐसा भी हो सकता है खैर जो कुछ किस्मत मे बदा है होगा मगर तुम यह बताओ कि अब मुझस क्या चाहते हो ? किसी तरह मेरा पिण्ड छाडागे या नहीं ?

आदमी–क्या हुआ अगर वह गठरी चली गई मगर फिर भी तुम खूब समझते होगे कि अभी तक तुम पूरी तरह से मेरे कब्जे में हो और तुम्हारी वह प्यारी चीज भी मेरे कब्जे में है जिसका इशारा में पहिले कर चुका हू अस्तु मै हुक्म देता हू कि तुम उठो और मेरे साथ चलो ।

भूत–खैर चलो मै चलता हूँ।

इतना कहकर भूतनाथ न आसमान की तरफ देखा और एक लम्बी साँस ली।

इस समय दिन अनुमान पहर भर के चढ चुका था और धूप में हरारत क्रमश बढती जाती थी। भूतनाथ को साथ लिये हुए वह विचित्र मनुष्य पूरब की तरफ रवाना हो गया।

नौवां बयान

दिन बहुत ज्यादे चढ चुका था जब कमलिनी अपना काम करके सुरग की राह से लौटी और किशोरी कामिनी तथा तारा को भैरोसिह के साथ बातचीत करते पाया। कमलिनी लाडिली और देवीसिह बहुत प्रसन्न हुए और क्यों न होते, जिस आदमी की मेहनत ठिकाने लगती है उसकी खुशी का अन्दाजा करना उसी आदमी का काम है जो कठिन मेहनत कर क किसी अमूल्य वस्तु का लाभ कर चुका हो। किशोरी कामिनी और तारा का इस तरह पाना कम खुशी की बात न थी जिनके मिलने के विषय में आशा की भी आशा टूटी हुई थी।

किशोरी कामिनी और तारा जमीन पर पडी बातें कर रही थीं क्योंकि उनमें उठने की सामर्थ्य बिल्कुल न थी उन्होंने अपने बचाने वालों की तरफ खास कर के कमलिनी की तरफ–अहसान शुक्रगुजारी और मुहब्बत भरी निगाहों स देर तक

खटका पाने के साथ ही झाडियों में घुस कर छिप जाने वाले *कई तीतरों को पकड लाया और शोरवा पकाने का बन्दोवस्त करन लगा। इधर कमलिनी और दवीसिह में वातचीत होने लगी।

देवी – उन दानों घाडों की भी सुध लेनी चाहिए जिन्हें यहा से थोडी ही दूर पर एक पेड से वॉध कर छोड आये है।

कमलिनी – हॉ उन घोडों को भी जिस तरह बने धीरे धीरे यहॉ तक ले आना चाहिये नहीं तो बेचारे जानवर भूख और प्यास क मारे मर जायेंग। एक ता यहॉ का रास्ता एसा खराव है कि घोडों पर सवार होकर मै आ नहीं सकती थी दूसर रात का समय था इसलिए लाचार हाकर उनका उसी जगह छोड देना पडा पर अव हम लोगों को वहा तक जाने की कोई आवश्यकता नहीं जान पडती।

देवी – ठीक है अगर कहिये ता मैं उन दानों घाडों को यहॉ ले आऊँ अब तो दिन का समय है और जब तक भैरोसिह खान की तैयारी करता है तब तक वकार वैठे रहन स कुछ काम ही करना अच्छा है।

कमलिनी – अगर ले आइए ता अच्छी बात है मगर हॉ सुनिये तो सही भूतनाथ और श्यामसुन्दरसिह को कहा गया था कि आज रात क समय हम लागो स मिलन क लिये उसी ठिकाने तैयार रहें जहॉ भगवानी उनके हवाले की गई थी।

देवी – जी हॉ कहा गया था मगर म समझता हू कि अब हम लोगों का वहा जाना वृथा ही है अगर आप कहिये तो मै उन लोगों क पास जाऊ और यदि इस समय मुलाकात हो जाय तो इस बात की इत्तिला भी देता आऊ या उन लोगों का इसी जगह लेता आऊ ?

कमलिनी – एक तो रात हान क पहिल उन लोगो से मुलाकात ही नही हा सकती कौन ठिकाना वहा हों या दूसरी जगह चले गये हों दूसरी वात यह है कि मै उन लोगों को यह जगह दिखाया नहीं चाहती और न यहा का भेद वताया चाहती हू क्योंकि आजकल की अवस्था देख कर श्यामसुन्दरसिह पर से भी विश्वास उठा जाता है बाकी रहा भूतनाथ। वह यद्यपि मेरे आधीन है और इस बात का उद्योग भी करता है कि हम लोगोंकोप्रसन्न रक्खे मगर वह कई ऐसी भयानक घटनाओं का शिकार हा रहा है कि वहुत लायक और खैरख्वाह होने पर भी मै उसे किसी भी योग्य नहीं समझती और न इसी बात का विश्वास है कि उसका दिल वैसा ही रहगा जैसा आज है बल्कि मै कह सकती हू कि वह अपने दिल का मालिक आप नहीं है।

देवी – यह ता आप एक ऐसी वात कहती है जिस पहेली की तरह उल्टी भूमिका कहने की इच्छा होती है।

कमलिनी – बेशक ऐसा ही है। इस जगह तिनके की ओट पहाड वाली कहावत ठीक वैठती है। न मालूम वह कौन सा भद है जिसका जानन के लिए पहाड ऐसे पचासों दिन नष्ट करने की आवश्यकता होगी।

देवी – ता क्या आप भूतनाथ को अच्छी तरह नहीं जानती ?

कमलिनी – मै भूतनाथ क रग्त पुश्त को जानती हू जिसका परिचय आप लोगों को भी आप से आप मिल जायगा। नि सन्दह भूतनाथ दिल स हम लागों का खैरखाह है परन्तु उसका दिल निरोग नहीं है और उसके भीतर का लगर जो फौलाद की तरह ठस है किसी चुम्बक की समीपता के कारण सीधी चाल नही चलता। मै इस फिक्र में हू कि उसे हर तरह स स्वतन्त्र कर दूँ मगर उसक मुँह पर किसी जबर्दस्त घटना के हाथ की लगी हुई मोहर उसके द्वारा कोई भेद प्रकट होन नहीं दती नि सन्दह उस पर किसी अनुचित कार्य का काला धब्बा ऐसा मजूबत लगा है कि वह केवल आसुओं के जल स धुल कर साफ नही हो सकता। हाय एक दफे की चूक जन्म भर के लिए बवाल हो जाती है। आप स्वय चालाक है यदि मेरी तरह खोज में लग रहेंगे तो वहुत कुछ पता पा जायेगे। वह बेशक हम लोगों का खैरखाह है निमकहराम नहीं मगर जिसका दिल इश्क का लवलेश न होने पर भी अपने अख्तियार में न हो उसका क्या विश्वास।

कमलिनी की कही इन भेद भरी बातों ने केवल दवीसिह ही को नहीं बल्कि किशोरी कामिनी और तारा को भीहैरानी में डाल दिया जो असाध्य रागियों की तरह जमीन पर पडी हुई थी और उनसे थोडी ही दूर पर दैठे हुए भैरासिह न भी कमलिनी की वातो को अच्छी तरह सुना और समझा मगर जिस तरह देवीसिह के दिल पर उन बातों ने असर किया उस तरह भैरोसिह के दिल पर उन बातों ने मालूम होता है असर नही किया क्योंकि भैरोसिह के चेहरे पर उन बातों को सुनने स आश्चर्य या उत्कण्ठा की काई निशानी नहीं पाई जाती थी।

कुछ देरतक साचने के वाद देवीसिह यह कह कर उठ खडे हुए अच्छा मैं पहिले घोडों की फिक्र मे जाता हू, फिर जैसा हागा दखा जायगा।

---

*तीतरों और बटेरों की प्रकृति है कि यदि उनके पीछे दौडिये तो वे भी आगे आगे पहिल तो दौडते है और इसक बाद अगल वगल की झाडी में एसा घुस वैठते है कि जल्दी पता नहीं लगता हा जबसाफ मैदान पाते है अर्थात पास में कोई छोटी या वडी झाडी नहीं होती ता उड भी जाते है।

आधा घण्टा सफर करने के बाद देवीसिह उस जगह पहुचे जहाँ एक पेड के साथ दोनों घोडे बधे हुए थे वहा से थोड़ी दूर पर एक चश्मा बह रहा था देवीसिह दोनों घोड़ों को वहाँ ले गये और पानी पिलाने के बाद लम्बी बागडोर के सहारे पेडों के साथ बाँध दिया जहा उनके चरने के लिए लम्बी घास बहुतायत के साथ जमी हुई थी।

देवीसिह ने सोचा कि यद्यपि कुसमय है मगर फिर भी वहा अवश्य चलना चाहिए जहा भगवानी को छोड आये थे शायद, भूतनाथ या श्यामसुन्दरसिह से मुलाकात हो जाय अगर किसी स मुलाकात हो गई तो कह देंगे कि आज प्रतिज्ञानुसार इस जगह कमलिनी से मुलाकात न होगी। अगर यह काम हो गया तो रात के समय पुन बीमारों को छोड के इस तरफ आने की आवश्यकता न पड़ेगी।

इन बातों को सोच कर देवीसिह वहा से आगे की तरफ बढे मगर सौ कदम से ज्यादे दूर न गये होंगे कि सामने की तरफ से किसी के आने की आहट मालूम पड़ी। देवीसिह ठहर गये और बडे गौर से उधर देखने लगे जिधर से किसी के आने की आहट मिल रही थी। थोडी ही देर में दो आदमी निगाह के सामने आ पहुचे जिनमें से एक को देवीसिह पहिचानते थे और दूसरे को नहीं। पाठक समझ गये होंगे कि उन दोनों में से एक तो भूतनाथ था और दूसरा वही विचित्र आदमी जिसने भूतनाथ पर अपना अधिकार कर लिया था और जो उसे इस समय अपने साथ न मालूम कहा लिये जाता था।

देवीसिह ने भूतनाथ के उदास और मुर्झाये चेहरे को बडे गौर स देखा और फिर आगे बढ कर उससे पूछा—

देवी—क्यों साहब आप कहा जा रहे हैं और वह आपका साथी कौन है ?

भूत—(अपने साथी की तरफ इशारा करके) इन्हें आप नहीं जानते इनके साथ मैं एक जरूरी काम के लिये जा रहा हू, आप कमलिनीजी से कह दीजियेगा कि आज रात को प्रतिज्ञानुसार मैं उनसे मिल नहीं सकता।

देवी—सो क्यों ?

भूत —इसलिए कि इनके साथ जाता हू, क्या जाने कब छुट्टी मिले !

देवी — इनके साथ कहाँ जाते हो ?

भूत—(घबराहट और लाचारी के ढग से) सो तो मुझे मालूम नही ! इतना कहके उसने एक लम्बी साँस ली। अब देवीसिह के दिमाग में वे बातें घूमने लगीं जो भूतनाथ के विषय में कमलिनी ने कही थी। देवीसिह ने भूतनाथ की कलाई पकड ली और एक तरफ ले जाकर पूछा "दोस्त क्या तुम इतना भी नहीं बता सकते कि कहा जा रहे हो ? ऐयार लोगों का आपुस में क्या ऐसा ही बर्ताव होता है। क्या तुम और हम दोनों एक ही पक्ष के नहीं हैं और क्या तुम अपने दिल की बातें मुझस भी नहीं कह सकते ? बोलो-बोलो मेरी बातों का कुछ जवाब दो ! वाह-वाह यह क्या तुम रो क्यों रहे हो ?

भूत — (आखों से आसू पोछ कर) हाय मैं कुछ भी नहीं कह सकता कि मेरे दिल की क्या अवस्था है। (मुहब्बत से देवीसिह का हाथ पकड के) मैं तुमको अपना बडा भाई समझता हू, और तुम इस बात का अपने दिल में ध्यान भी न लाना कि भूतनाथ तुम्हारे साथ चालबाजी की बातें करेगा मगर हाय मैं मजबूर हू कुछ नहीं कह सकता !(विचित्र मनुष्य की तरफ इशारा करके) मे और मेरा सर्वस्व इस हरामजादेकी मुट्ठी में है और छुटकारे की कोई आशा नहीं !अफसोस ! अच्छा दोस्त अब मुझे बिदा दो अगर जीता रहा तो फिर मिलूगा !

देवी — भूतनाथ तुम कैसी बे सिर पैर की बातें कर रहे हो कुछ समझ में नहीं आता !आश्चर्य है कि तुम्हारे ऐसा बहादुर आदमी और इस तरह कीबातें करे। साफ-साफ कहो तो कुछ मालूम हो कदाचित् मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकू।

भूत — नहीं तुम कुछ भी मदद नहीं कर सकते मेरा नसीब बिगडा हुआ है और इसे वही ठीक कर सकता है जिसने इसे बनाया है।

देवी— मैं इस बात को नहीं मानता नि सन्देह ईश्वर सबके ऊपर है परन्तु साथ ही इसके यह भी समझना चाहिए कि वह किसी को बनाने और बिगाडने के लिए अपने हाथ पैर से काम नहीं लेता यदि ऐसा करे या हो तो उसमें और मनुष्य में कोई भेद कहने के लिए भी बाकी न रह जाय अतएव कह सकते हैं कि केवल उसकी इच्छा ही इतनी प्रबल है कि वह किसी तरह टल नहीं सकती और वह इस पृथ्वी का काम इसी पर रहने वालों से कराता रहता है। इसका तत्व यह है कि वह जिस मनुष्य द्वारा अपनी इच्छा पूरी किया चाहता है उसके अन्दर उस बुद्धि और साहस का सचार करता है जिसका मुकाबला करने वाला पृथ्वी मे सिवाय बुद्धि और साहस के और कोई नहीं इसके साथ ही साथ जिससे वह रुष्ट होता है उससे बुद्धि और साहस छीन लेता है। बस इन्हीं दो बातों द्वारा वह अपनी इच्छा पूरी करके नित्य नवीन नाटक देखा करता है और यही उसकी कारीगरी है। मै इस समय जब अपनी तरफ ध्यान देता हूँ तो ईश्वर की कृपा से अपने में साहस की कमी नहीं देखता और दिल को तुम्हारी मदद के लिए व्याकुल पाता हूँ और इससे निश्चय होता है कि मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हू और यही ईश्वर की इच्छा भी है। तुम एकदम हताश मत हो जाओ और जान बूझ के अपनी जान के दुश्मन मत बनो असल-असल हाल कहो फिर देखो कि मैं क्या करता हू।

भूत – तुम्हारा कहना बहुत ठीक है परन्तु मुझे निश्चय है कि जब मैं अपना असल भेद तुमसे कह दूँगा तो तुम स्वय मुझसे घृणा करोगे और चाहोगे कि यह दुष्ट किसी तरह मेरे सामने से दूर हो जाय। प्यारे दोस्त जब से मैंने अपनी प्रकृति बदलने का उद्योग किया है और ईश्वर के सामने कसम खाई है कि अपने माथे से बदनामी का टीका दूर करके नेक ईमानदार सच्चा और सुयोग्य बनूगा तब से मेरे हृदय की विचित्र अवस्था होगई है। जब मुझे यह मालूम होता है कि मेरी पिछली बातें अब प्रकट हुआ चाहती हैं तब मुझे मौत से भी बढ के कष्ट होता है और जब यह चाहता हू कि अपनी जान देकर भी किसी तरह इन बातों से छुटकारा पाऊ तो उसी समय मुझे मालूम होता हैकि मेरे अन्दर दिल के पास ही बैठा हुआ कोई कह रहा है कि खबरदार ऐसा न कीजियो। तू कसम खा चुका है कि अपने सिर से बदनामी का टीका दूर करेगा। यदि एसा किये बिना मर जायगा तो ईश्वर के सामने झूठा होने के कारण नर्क का भागी होगा अर्थात तेरी आत्मा जोकभी मरने वाली नहीं है बडा कष्ट भोगेगी और हजारों वर्ष तक बिना पानी के मछली की तरह तडपा करेगी। हाय ये बातें ऐसी हैं कि मुझे बेचैन किए देती है ऐसी अवस्था में तुम स्वय सोच सकते हो कि अपनी बुराइयों को मै अपने ही मुँह से कैसे प्रकट करू और तुमसे क्या कहू। यदि जी कडा करके कुछ कहूगा भी तो नि सन्देह तुम मुझसे घृणा करोगे जैसा कि मैं तुमसे कह चुका हू।

देवी – नही नहीं कदापि नहीं मै शपथपूर्वक कहता हू कि यदि मुझे यह भी मालूम हो जायगा कि तुम मेरे पिता के घातक हो जिन पर मेरा बडा ही स्नेह था तो मैं तुम्हें इसी तरह मुहब्बत की निगाह से देखूगा जैसा कि अब देख रहा हू। कहो अब इससे ज्याद मै क्या कह सकता हू।

इतना सुन के भूतनाथ जिसने अपनी पीठ विचित्र मनुष्य की तरफ इसलिए कर रक्खी थी कि चेहरे के उतार चढाव से वह उसकी बातों का कुछ भेद न पा सके देवीसिह के पैरों पर गिर पडा और रोने लगा। देवीसिह ने उसे उठा कर गले से लगा लिया और कहा– देखो जी कडा करो घबडाओ मत ईश्वर जो कुछ करेगा अच्छा ही करेगा क्योंकि नेकी की राह चलने वालों की वह सहायता किया ही करता है और उनके पिछले ऐबों पर ध्यान नही देता यदि वह जान जाय कि यह भविष्य में नेक और सच्चा निकलेगा।

विचित्र मनुष्य जो दूर खडा यह तमाशा देख रहा था जी में बहुत ही कुढा और उसने भूतनाथ से ललकार के कहा भूतनाथ यह क्या बात है? तुम राह चलते हर एक ऐरे गैरे के सामने खडे होकर घण्टों कलपा करोगे और मैं खडा पहरा दिया करूँगा? यह नहीं हो सकता। मै तुम्हारा तावेदार नहीं हू बल्कि तुम तावेदार हो चलो जल्दी करो अब मैं नहीं रुक सकता।

भूतनाथ ने लाचारी और मजबूरी की निगाह देवीसिह पर डाली और सिर नीचा करके चुप रहा। देवीसिह ने पहिले तो भूतनाथ के कान मे धीरे से कुछ कहा और इसके बाद विचित्र मनुष्य की तरफ बढ कर बोले–

देवी– क्यों बे क्या तूने मुझे एरे गैरों मे समझ लिया है? जुबान सभाल के नहीं बोलता। क्या तू नहीं जानता कि मै कौन हू?

विचित्र–मै खूब जानता हूँ कि तुम्हारा नाम देवीसिह है और तुम राजा वीरेन्द्रसिह के एयार हो मगर मुझे इससे क्या मतलब? तुमने मेरे आसामी को इतनी देर तक क्यों रोक रक्खा?

देवी– भूतनाथ तेरा आसामी नहीं बल्कि मेरा साथी ऐयार है। कदाचित अपने पागलपन में तूने इसे अपना आसामी समझ लिया हो तो भी जो कुछ कहना हो भूतनाथ से कह तुझे पागल समझ कर मै कुछ न कहूँगा छोड दूँगा मगर तू इतना हौसला नहीं कर सकता कि राजा वीरेन्द्रसिह के ऐयारों को ऐरे गैरे कह कर सम्बोधन करे। क्या तू नहीं जानता कि ऐयार की इज्जत राजदीवान से कम नहीं होती? मैं बेशक तुझे इस बेअदबी की सजा दूँगा।

विचित्र मनुष्य–तुम मुझे क्या सजा दोगे मै तुम्हें समझता ही क्या हूँ!

देवी –तो मै दिखाऊँ तमाशा तुझे और बता दूँ कि राजा वीरेन्द्रसिह के ऐयार लोग कैसे होते है?

विचित्र–हा हा जो कुछ करते बने करो मै तैयार हूँ, तुमसे डरने वाला नहीं।

इतना कह कर विचित्र मनुष्य ने म्यान से तलवार निकाल ली और देवीसिह ने भी जमीन पर से पत्थर का एक टुकडा उठा लिया। विचित्र मनुष्य ने झपट कर देवीसिह पर तलवार का वार किया। देवीसिह उछल कर दूर जा खडे हुए और उस पत्थर के टुकडे से अपने बैरी पर वार किया मगर उसने भी पैतरा बदल कर अपने को बचा लिया और देवीसिह पर झपटा। अबकी दफे देवीसिह ने फुर्ती के साथ पत्थर के दो टुकडे दोनों हाथों में उठा लिया और दुश्मन के वार को खाली देकर एक पत्थर चलाया। जब तक विचित्र मनुष्य उस वार को बचाए तब तक देवीसिह ने दूसरा टुकडा चलाया जो उसके घुटने पर बैठा और उसे सख्त चोट लगी। देवीसिह ने विलम्ब न किया फिर एक पत्थर उठा लिया और अपने बैरी को दूर से ही मारा। पैर में चोट लग जाने के कारण वह उछल कर अलग न हो सका और देवीसिह का चलाया हुआ

दूसरा पत्थर उसके दूसरे घूटने पर इस जोर स लगा कि वह चलने लायक न रहा इसके बाद देवीसिह का चलाया हुआ फिर एक पत्थर उसकी दाहिनी कलाई पर बैठा और तलवार उसके हाथ से छूट कर जमीन पर गिर पडी। विचित्र मनुष्य की कलाई नकावपोश की लडाई में पहिले ही चोट खा चुकी थी अबकी दफे तो वह ऐसी बेकाम हुई कि उसे विश्वास हा गया कि कइ महीने तक तलवार का कब्जा न थाम सकेगी। वह घबराहट के साथ देवीसिह की तरफ दख ही रहा था कि देवीसिह का चलाया हुआ एक और पत्थर आया जिसने उसका सिर तोड दिया और उसने त्योरा कर जमीन पर गिरते गिरते यह सुना 'देखा राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार की करामात !

देवीसिह तुरन्त उस विचित्र मनुष्य के पास पहुचे जो जमीन पर बहोश पडा हुआ था। अपने बटुए में से बेहोशी की दवा निकाल कर उसे सुघाई और उसके हाथ पैर बाधने के बाद पुन भूतनाथ के पास आये और बोले 'तुम मेरी इस कार्रवाई से किसी तरह की चिन्ता मत करो और देखा कि मै इस कम्बख्त को कैसा छकाता हूँ।

भूत–मे आपकी जितनी तारीफ करूँ थाडी है। कोई जमाना ऐसा था कि ऐसे दुष्ट लाग मर नाम से कॉपा करते थे परन्तु अब ता बात ही उल्टी हो गइ। अब यह जब मेरे सामने आता है तो 'बालि बन कर आता है अर्थात् इसकी सूरत देखते ही मरी ताकत फुर्ती और चालाकी हवा खाने चली जाती हे या इसी दुष्ट का साथ देती है। अच्छा तो अब मुझे क्या करना चाहिये ? हा इस बात पर भी विचार कर लेना कि मेरी इज्जत अर्थात् मेरी स्त्री इसके कब्जे में है न मालूम इसने उसे कहा कैद कर रक्खा है !

देवी – (आश्चर्य से भूतनाथ का मुँह देख के) खैर पहिले यह बताओ कि यह कौन है इससे तुमसे कब मुलाकात हुई और क्या हुआ ?

भूतनाथ ने यह ता नही बताया कि वह विचित्र मनुष्य कौन है मगर जिस समय से वह मिला और उसके बाद जो जो हुआ सब पूरा पूरा कह सुनाया और देवीसिह आश्चय के साथ सुनते रहे।

देवीसिह कुछ देर तक सोचते रहे। भगवनिया के छूट जाने का उन्हें बहुत रज था क्योंकि उन्हें या भूतनाथ को इस बात की खबर नहीं थी किभगवनिया भूतनाथ के कब्ज से निकल कर नकाबपाश के कब्जे में जा फॅसी है। देवीसिह इस बात पर दर त्क गौर करते रहे कि नकाबपोश कौन होगा तारा की किस्मत क्या चीज होगी जो गठरी में थी और वह घूमती फिरती नकाबपाश के कब्जे में कैसे जा पहुँची ? देवीरिह को विश्वास तो था कि तारा की किस्मत के विषय मे भूतनाथ स बढ कर साफ कोई नहीं समझा सकता मगर साथ ही इसके यह भी निश्चय था कि भूतनाथ अपने मुँह से इन भेदों को इस समय कदापि न खोलगा और ऐसा करने के लिए जोर देने से उसे कष्ट होगा।

देवी – अच्छा भूतनाथ यह बताओ कि तुम मुझ पर विश्वास कर सकते हो ? मै इस दुष्ट के पजे से तुम्हें छुडाने का उद्योग करूँगा। तुम इस बात की चिन्ता न करो कि मै इस मार डालूगा या बहुत दिनों तक कैद कर रक्खूगा क्योंकि ऐसा करने से तुम्हारी स्त्री को कष्ट हागा और यह बात मुझे मजूर नहीं है !

भूत–मै शपथ-पूर्वक कहता हूँ कि अपनी जिन्दगी का सबस नाजुक और कीमती हिस्सा आपके हवाले करता हूँ, आप जैसा चाहें उसके साथ बर्ताव करें मगर मेरी एक प्रार्थना अवश्य स्वीकार करें।

देवीसिह – वह क्या ?

भूत–यही कि इस भेद के विषय में मेरी जुबान से कुछ कहलाने का उद्योग न करें और तहकीकात करने पर जो कुछ भेद आपको मालूम हों उन भेदों को भी बिना मेरी इच्छा के राजा वीरेन्दसिह उनके दोनों कुमार, राजा गोपालसिह तारा और कमलिनी पर प्रकट न करें। बस इससे ज्यादे कुछ न कह कर आशा करता हूँ कि मुझे अपना कनिष्ठ भ्राता समझ कर इस दुष्ट के पजे से छुटकारा दिलावेंगे। हा एक बात कहना भूल गया वह यह है कि इस दुष्ट को कैद करके आप बेफिक्र न रहियेगा इसके मददगार लोग बड ही शैतान और पाजी हैं।

देवी – जो कुछ तुमने कहा मुझे मजूर है मै वादा करता हू कि जब तक तुम आज्ञा न दोगे तुम्हारे भेद अपने दिल के अन्दर रक्खूगा और उद्योग करूँगा जिसमें तुम्हारी आत्मा निरोग हो और तुम स्वतन्त्र होकर विचार कर सका–अच्छा एक काम करो।

भूत–कहिये।

देवी – इस दुष्ट का तो मैं अपने कब्जे में करता हूँ, जहा मुनासिब समझूगा ले जाऊगा तुम यहा से जाओ कल सबरे तालाब वाले तिलिस्मी मकान में जिसे दुश्मनों ने खराब कर डाला है मुझसे और कमलिनी से मुलाकात करो इस बीच में अगर हो सके तो श्यामसुन्दरसिह को खोज निकालो और उसे भी अपने साथ उसी जगह लेते आओ फिर जो कुछ मुनासिब हागा किया जायगा।

भूत–(चौंक कर) तो क्या ये सब बातें आप कमलिनी से कहेंगे ?

देवी– हा यदि आवश्यकता होगी तो कहूँगा और इसमें तुम्हारा कुछ हर्ज नहीं है परन्तु विश्वास रक्खो कि इन बातों का असल भेद जिनका पता भविष्य में मैं लगाऊगा अपनी प्रतिज्ञानुसार किसी से न कहूगा।

भूत–(मजबूरी के ढग से) बहुत अच्छा मैं जाता हू।

भूतनाथ वहा से चला गया। देवीसिह ने उस विचित्र मनुष्य की गठरी बाधी और उस जगह आये जहा दोनों घोडों को छोडा था। घोड़ों पर जीन कसने के बाद एक पर उस आदमी को लादा और दूसरे पर आप सवार होकर उस तरफ रवाना हुए जहा कमलिनी किशोरी कामिनी इत्यादि को छोडा था।

दसवां बयान

दिन ढल चुका था जब देवीसिह विचित्र मनुष्य की गठरी और दोनो घोडो को लिए हुए वहा पहुचे जहा किशोरी कामिनी तारा कमलिनी लाडिली और भैरोसिंह का डेरा था। तीतर का शोरबा पीने से किशोरी कामिनी और तारा की तबीयत ठहरी हुई थी और वे इस योग्य हो गई थी कि दीवार के सहारे कुछ देर तक बैठ सकें अस्तु इस समय जब देवीसिह वहा पहुचे तो वे तीनों पत्थर की चट्टान के सहारे बैठी हुई कमलिनी और भैरोसिह से बातचीत कर रही थी। वहा जगली पेडों की घनी छाया थी जिनकी टहनिया तेज हवा के झपटों से झोंके खा रही थी और पत्तों की खडखड़ाहट की मधुर ध्वनि बहुत ही भली मालूम देती थी।

जिस समय भैरोसिह ने देखा कि देवीसिह के साथ दोनों घोडे ही नहीं हैं बल्कि एक गठरी भी है वह उठ कर आगे बढ गया और विचित्र मनुष्य की गठरी अपनी पीठ पर लाद कर कमलिनी के पास ले आया। उस समय सभी की आश्चर्य भरी निगाहें उसी गठरी की तरफ पड रही थीं। दोनों घोडो को पेड से बाध कर जब देवीसिह कमलिनी के पास पहुचे तो उन्होंने अपने पास की गठरी खोली और सभों ने बडे गौर से विचित्र मुनुष्य के चेहरे पर नजर डाली। यद्यपि देवीसिह ने उसके फटे हुए सिर पर कपडा बाध दिया था मगर थोडा थोडा खून अभी तक बह रहा था।

कमलिनी–इसे आप कहा से लाए और यह कौन है ?

देवी–मुझे अभी तक मालूम न हुआ कि यह कौन है।

कमलिनी–(आश्चर्य से) क्या खूब ! अगर ऐसा ही था तो इसे कैद क्यो कर लाये ?

देवी–इसका किस्सा बडा ही विचित्र है। मुझे अब निश्चय हो गया कि भूतनाथ नि सन्देह किसी भारी घटना का शिकार हो रहा है जैसा कि आपने कहा था।

कमलिनी –अच्छा अब मैं टूटी फूटी बातें नहीं सुना चाहती जो कुछ हाल हो खुलासा खुलासा कह जाइये।

इस जगह पुन उन बातों को दोहराना पाठकों का समय नष्ट करना है अतएव इतना ही कह देना काफी है कि देवीसिह ने अपना पूरा हाल तथा भूतनाथ की जुबानी इस विचित्र मनुष्य और नकाबपोश वगैरह का जो कुछ हाल सुना था कमलिनी से कह सुनाया जिसे सुन कर कमलिनी को बडा ही ताज्जुब हुआ। कमलिनी से भी ज्यादा ताज्जुब तारा को हुआ जब उसने सुना कि इस विचित्र मनुष्य के हाथ में एक गठरी थी जिसके विषय में यह कहता था कि इसके अन्दर तारा की किस्मत बन्द है और गठरी घूमती फिरती किसी नकाबपोश के हाथ में चली गई मालूम नहीं वह नकाबपोश कौन था या कहाँ चला गया।

कमलिनी–(तारा से) जब तुम्हारी किस्मत की गठरी इस आदमी के हाथ में थी तो मालूम होता है कि तुम इसे जानती भी होगी।

तारा–कुछ भी नहीं बल्कि जहा तक मैं कह सकती हू मालूम होता है कि मैंने इसकी सूरत भी कभी नहीं देखी होगी।

कमलिनी–ठीक है इस समय इसके विषय में तुमसे कुछ पूछना भूल है क्योंकि साफ मालूम होता है कि इस आदमी की सूरत वास्तव में वैसी नहीं है जैसी हम देख रहे हैं। जरूर इसने अपनी सूरत बदली है और इसके बाल भी असली नहीं बल्कि बनावटी हैं जब वे अलग किए जायेंगे और इसका चेहरा धोया जायगा तब शायद तुम इसे पहिचान सको।

तारा–कदाचित्‌ ऐसा ही हो।

कमलिनी–अच्छा तो पहिले इसका चेहरा साफ करना चाहिए।

देवी–मैं भी यही मुनासिब समझता हू, इसके बाद इसे होश मे ला कर जो कुछ पूछना हो पूछा जायगा।

इतना कह कर देवीसिह ने बटुए मे म लोटा निकाला भैरोसिह का लोटा भी उठा लिया और जल भरने के लिए चश्में के किनारे गये। चश्मा बहुत दूर न था इसलिए बहुत जल्द लौट आये और बाल दूर करके उसका चेहरा धोने लगे। आश्चर्य की बात है कि जैस जैसे उस विचित्र मनुष्य का चहरा साफ होता जाता था तैसे तैसे तारा क चहर की रगत बदलती जाती थी यहा तक कि उसका चेहरा अच्छी तरह साफ हुआ भी न था कि तारा ने एक चीख मारी और 'हाय कह के गिरन के साथही बेहोश हो गई। उस वक्त सभों का ख्याल तारा की तरफ जा रहा और कमलिनी ने कहा नि सन्देह इस मनुष्य को तारा पहिचानती है ।

उसी समय भैरोसिह की निगाह सामन की तरफ जा पडी और एक नकाबपोश को अपनी तरफ आते हुए देख कर उसने कहा देखिये एक नकाबपोश हम लोगों की तरफ आ रहा है । आश्चर्य है कि उसने यहा का रास्ता कैसे देख लिया । कदाचित चाचाजी के पीछे छिप कर चला आया हो। बेशक ऐसा ही है नहीं तो इस भूलभलैया रास्त का पता लगाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है । जा हो मगर मैं कसम खा कर कह सकता हू कि यह वही नकाबपाश है । जिसका हाल इस समय सुनने में आया है। और दखो उसके हाथ में एक गठरी भी है हा यह वही गठरी होगी जिसक विषय मे कहा जाता है कि इसमें तारा की किस्मत। बन्द है ॥

कमलिनी–बेशक ऐसा ही है ॥

देवी– हा इसके लिए तो मैं भी कसम खा सकता हू।

॥ ग्यारहवा भाग समाप्त ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

बारहवां भाग

पहिला बयान

हम ग्यारहवें भाग के अन्त में लिख आये हैं कि जब देवीसिंह ने उस विचित्र मनुष्य का चेहरा धोकर साफ किया तो शायद तारा ने उसे पहिचान लिया और इस घटना उस पर ऐसा असर हुआ कि वह चिल्ला उठी,उसका सिर घूमने लगा और वह जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गई। उसी समय सामने से वह नकाबपोश भी आता हुआ दिखाई दिया जिसने उस विचित्र मनुष्य को हैरान और परेशान कर दिया था और उस गठरी को भी अपने कब्जे में कर लिया था जिसमें विचित्र मनुष्य के कहे मुताबिक तारा की किस्मत बन्द थी। इस बयान में भी हम उसी सिलसिले को जारी रखना उचित समझते हैं।

बात की बात मे नकाबपोश उस जगह आ पहुँचा जहाँ वह विचित्र मनुष्य और उसके सामने एक पत्थर की चट्टान पर तारा बेहोश पडी हुई थी तथा कमलिनी बडी मुहब्बत से तारा का सर थामे ताज्जुब भरी निगाहों से हर एक को देख रही थी।

देवी--(नकाबपोश से) आप यहा कैसे आये ? क्या यहा का रास्ता आपको मालूम था ?

नकाब--नहीं नहीं मैं तुम्हारे पीछे पीछे यहाँ तक आया हूँ।

इतना कह कर नकाबपोश ने अपने चेहरे से नकाब उठाकर पीछे की तरफ उलट दी और सभों ने तेजसिंह को पहिचान कर बडा ही आश्चर्य किया। भैरोसिंह ने दौड कर अपने पिता का चरण छूआ, देवीसिंह भी तेजसिंह के गले मिले और किशोरी कामिनी लाडिली तथा कमलिनी ने भी उन्हें प्रणाम किया।

देवी--(तेजसिंह से) क्या आप ही वह नकाबपोश हैं जिसका विचित्र हाल भूतनाथ की जुबानी मैंने सुना है ?

तेज--हॉ मै ही था मगर भूतनाथ को इस बात का शक भी न हुआ होगा की नकाबपोश वास्तव में तेजसिंह है। (विचित्र मनुष्य की तरफ इशारा करके) इसके और भूतनाथ के बीच में जो जो बातें या घटनाए हुई वह भूतनाथ की जुबानी तुमने सुनी ही होगी ?

देवी--हॉ सुनी तो है मगर मुझे विश्वास नहीं है कि भूतनाथ ने जो कहा सब सच कहा होगा।

तेज--ठीक है रात से मेरा ख्याल भी भूतनाथ की तरफ से ऐसा ही हो रहा है खैर मै स्वय सब हाल तुम लोगों से कहता हू मैं तारा सिंह को साथ लिए हुए रोहतासगढ गया था। उस समय मैं रोहतासगढ ही में था जब यह खबर पहुँची कि कमलिनी के तिलिस्मी मकान को दुश्मनों ने घेर लिया है और उस पर अपना दखल जमाया ही चाहते है। मैंने तुरन्त थोडे से फौजी सिपाहियों को दुश्मन से मुकाबला करने के लिए रवाना किया और दो घण्टे बाद तारासिंह को साथ लेकर सूरत बदले हुए खुद भी उसी तरफ रवाना हुआ। रात की पहली अंधेरी थी जब हम दोनों एक जगल में पहुँचे और उसी समय घोडे के टापों की आवाज आने लगी यह आवाज पीछे की तरफ से आ रही थी और क्रमश पास होती जाती थी। हम दोनों यह सोचकर पेड की आड में खडे हो गये कि जब यह सवार आगे निकल जाय तब हम लोग चलेंगे मगर जब यह घोडा उस पेड के पास पहुँचा जिसकी आड में हम दोनों छिपे खडे थे तो हमने देखा कि उस घोड़े पर एक नहीं बल्कि दो आदमी सवार हैं जिनमें से एक औरत है जो पीछे की तरफ बैठी हुई है। उसका औरत होना मुझे इस तरह मालूम हुआ कि जब घोडा पेड के पास पहुँचा जिसकी आड में हम लोग छिपे हुए थे तो उस औरत ने कहा जरा ठहर जाइये मैं इस जगह उतरूगी और दस बारह पल के लिए आपसे जुदा होऊगी। बस इस आवाज ही से मुझे निश्चय हो गया कि वह औरत है। घोडा रोककर सवार उतर पडा और हाथ का सहारा देकर उस औरत को भी उसने उतारा।

इतना कह कर तेजसिंह रुक गये और कमलिनी की तरफ देख कर बोले मगर मुझे इस समय अपना किस्सा कहते अच्छा नहीं मालूम होता।

कम--सो क्यों ?

तेज–इसलिए कि मै एक तरफ बेचारी तारा को बेहोश देखता हूँ और दूसरी तरफ किशोरी और कामिनी को ऐसी अवस्था में पाता हूँ जैसे वर्षो की बीमार हो और तुमको भी सुस्त और उदास देखता हूँ इन कारणों से मेरी यह इच्छा होती है कि पहिले इस तरफ का हाल सुन लू।

कम–आपका कहना बहुत ठीक है फिर भी मै यही चाहती हूँ कि पहले आपका हाल सुन लू।

तेज–खैर मै भी अपना किस्सा मुख्तसर ही में पूरा करता हूँ।

इतना कह कर तेजसिह ने फिर कहना शुरू किया–

'जब वह औरत उस काम से छुट्टी पा चुकी जिसके लिए उतरी थी तो घोडे के पास आई और अपने साथी से बोली भूतनाथ ने जिस समय आपको देखा उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई। इसका जबाब उस आदमी ने जो वास्तव में (विचित्र मनुष्य की तरफ इशारा करके) यही हजरत थे यों दिया 'बेशक ऐसा ही है क्योंकि भूतनाथ मुझे मुर्दा समझे हुए था। देखो तो सही आज मेरे और उसके बीच कैसी निपटती है। मै उसे अवश्य अपने साथ ले जाऊगा और नहीं तो आज ही उसका भण्डा फोड दूँगा जो वडा अच्छा नेक और बहादुर बना फिरता है' इतना कह दोनों पुन घोडे पर सवार हुए और आगे की तरफ चले। मेरे दिल में तरह तरह के खुटके पैदा हो रहे थे ओर मै अपने को उनके पीछे पीछे जाने से किसी तरह रोक नहीं सकता था। लाचार हम दोनों भी उनके पीछे तेजी के साथ रवाना हुए। इस बात की फिक्र मेरे दिल से बिल्कुल जाती रही कि हमारे फौजी सिपाही दुश्मनों के मुकाबले में कब पहुचेगे और क्या करेंगे। अब तो यह फिक्र पैदा हुई कि यह आदमी कौन है और इससे तथा भूतनाथ से क्या सम्बन्ध है इस बात का पता लगाना चाहिए और इसीलिए हम लोग अपना रास्ता छोड कर घोडे के पीछे पीछे रवाना हुए मगर हम लोगों को बहुत देर तक सफर करना न पडा और शीघ्र ही हमलोग उस जगल में जा पहुचे जिसमें भगवानी और श्याम सुन्दर की कहा सुनी हो रही थी और थोडी ही देर बाद आप लोग भी पहुच गए थे। मै जानबूझ कर आप लोगों से नहीं मिला और इस विचित्र मनुष्य के पीछे पडा रहा यहा तक कि आप लोग चले गये और मुझे वह विचित्र घटना देखनी पडी।

इसके बाद तेजसिह ने वह सब हाल कहा जिसे हम ऊपर लिख आए है और पुन इस जगह दोहरा कर लिखना वृथा समझते है हा उस दूसरे नकाबपोश के विषय में कदाचित पाठकों को भ्रम होगा इस लिए साफ लिख देना आवश्यक है कि वह दूसरा नकाबपोश जिसने भगवानी को भागने से रोक रक्खा था और जिसके पास पहुचने के लिये तेजसिह ने श्यामसुन्दरसिह को नसीहत की थी वास्तव में तारासिह था जिसका हाल इस समय तेजसिह के बयान करने से मालूम हुआ।

जो कुछ हम ऊपर लिख आये है उतना बयान करने के बाद तेजसिह ने कहा जब यह विचित्र मनुष्य भूतनाथ को लेकर रवाना हुआ तो मै भी इसके पीछे पीछे चला पर बीच ही में उससे और देवीसिह से मुलाकात हो गई देवीसिह उसे पकड के यहा ले आये और मै भी देवीसिह के पीछे पीछे चुपचाप यहा तक चला आया।

इतना कह कर तेजसिह चुप हो गये और तारा की तरफ देखने लगे।

कम–यह घटना तो बडी ही विचित्र है नि सन्देह इसके अन्दर कोई गुप्त रहस्य छिपा हुआ है।

तेज–जहा तक मै समझता हू मालूम होता है कि आज बडी बडी गुप्त बातों का पता लगेगा। अब कोई ऐसी तर्कीब करनी चाहिये जिसमें यह (विचित्र मनुष्य की तरफ इशारा करके) अपना सच्चा हाल कह दे।

देवी–तो इसे होश में लाना चाहिए।

तेज–नहीं इसे अभी इसी तरह पडा रहने दो कोई हर्ज नहीं और पहिले तारा को होश में लाने का उद्योग करो।

देवी–बहुत अच्छा।

अब देवीसिह तारा को होश में लाने का उद्योग करने लगे और तेजसिह ने कमलिनी से कहा जब तक तारा होश में आवें तब तक तुम अपना हाल और इस तरफ जो कुछ बीता है सो सब हाल कह जाओ। कमलिनी ने ऐसा ही किया अर्थात अपना और किशोरी कामिनी तथा तारा का सब हाल सक्षेप में कह सुनाया और इसी बीच में तारा भी होश में आकर बातचीत करने योग्य हो गई।

कम–(तारा से) क्यों बहिन अब तबीयत कैसी है ?

तारा–अच्छी है।

कम–तुम इस विचित्र मनुष्य को देख कर इतना डरीं क्यों ? क्या इसे पहिचानती हो ?

तारा–हा मै इसे पहिचानती हू मगर अफसोस कि इसका असल भेद अपनी जुबान से नही कह सकती। (विचित्र मनुष्य की तरफ देख के) हाय इस बेचारे ने तो किसी का कुछ भी नुकसान नहीं किया फिर आप लोग क्यों इसके पीछे पडे है ?

कम–बहिन मेरी समझ में नहीं आता कि तुम इसका भेद जान के भी इतना क्यों छिपाती हो ? क्या तुमने अभी नहीं सुना कि इसके और भूतनाथ के बीच में क्या बातें हुई है ? मगर फिर भी ताज्जुब है कि इसे तुम अपनायत के ढग से देख रही हो !!

तारा–(लम्बी सास लेकर) हाय अब मै अपने दिल को नहीं रोक सकती। उसमें अब इतनी ताकत नहीं है कि उन भेदों को छिपा सके जिन्हें इतने दिनों तक अपने अन्दर इसलिये छिपा रक्खा था कि मुसीबत के दिन निकल जाने पर प्रकट किए जायेंगे। नही नही अब मै नही छिपा सकती ! बहिन कमलिनी तू वास्तव में मेरी बहिन है और सगी बहिन है मै तुझसे बडी हू, मेरा ही नाम लक्ष्मीदेवी है।

कम–(चौंक कर और तारा को गले लगा कर) आह ! मेरी प्यारी बहिन ! क्या वास्तव में तुम लक्ष्मीदेवी हो ?

तारा–हा और यह विचित्र मनुष्य हमारा बाप है !

कम–हमारा बाप बलभद्रसिह !!

तारा–हा यही हमारे, तुम्हारे और लाडिली के बाप बलभद्रसिह है। कम्बख्त मायारानी की बदौलत मेरे साथ मेरे बाप भी कैदखाने की अधेरी कोठरी में सडते रहे। हरामजादा दारोगा इस पर भी सन्तुष्ट न हुआ और उसने इनको जहर दे दिया मगर ईश्वर ने एक सहायक भेज दिया जिसकी बदौलत जान बच गई। पर फिर भी उस जहर के तेज असर ने इनका बदन फोड दिया और रग बिगाड दिया बल्कि इस योग्य तक नही रक्खा कि तुम इन्हें पहिचान सको। इतना ही नहीं और भी बडे बडे कष्ट भोगने पडे। (रो कर) हाय ! अब मेरे कलेजे में दर्द हो रहा है। मै उन मुसीबतों को बयान नहीं कर सकती ! तुम स्वयं अपने पिता ही से सब हाल पूछ लो जिन्हें मै कई वर्षों के बाद इस अवस्था में देख रही हू !

पाठक आप समझ सकते है कि तारा की इन बातों ने कमलिनी के दिल पर क्या असर किया होगा तेजसिह और भैरोसिह की क्या अवस्था हुई होगी और देवीसिह कितने शर्मिंदा हुए होंगे जिन्होंने पत्थर मार कर उस विचित्र मनुष्य का सर तोड डाला था। कमलिनी दौडी हुई अपने बाप के पास गई और उसके गले से चिपट कर रोने लगी। तेजसिह भी लपक कर उनके पास गये और लखलखे की डिबिया उनके नाक से लगाई। बलभद्रसिह होश मे आकर उठ बैठे और ताज्जुब भरी निगाहों से चारों तरफ देखने लगे। तारा कमलिनी और लाडिली पर निगाह पडते ही उद्योग करने पर भी न रुकने वाले आसू उनकी आखों में डबडबा आये और उन्होंने कमलिनी की तरफ देख कर कापती हुई आवाज में कहा क्या तारा ने मेरे या अपने विषय में कोई बात कही है ? तुम लोग जिस निगाह से मुझे देख रही हो उससे साफ मालूम होता है कि तारा ने मुझे पहिचान लिया और मेरे तथा अपने विषय में कुछ कहा है !!

कम–(गद्गद होकर) जी हा तारा ने अपना और आपका परिचय देकर मुझे बडा ही प्रसन्न किया है।

बल–तो बस अब मैं अपने को क्योंकर छिपा सकता हू और इस बात से क्योंकर इनकार कर सकता हू कि मै तुम तीनों बहिनों का बाप हू। आह ! मै अपने दुश्मनों से अपना बदला स्वय लेने की नीयत से थोडे दिन तक और अपने को छिपाना चाहता था मगर समय ने ऐसा करने न दिया ! खैर मर्जी परमात्मा की ! अच्छा कमलिनी सच कहियो क्या तुझे इस बात का गुमान भी था कि तेरा बाप जीता है ?

कम–मै अफसोस के साथ कहती हू कि कई पितृपक्ष ऐसे बीत गए जिसमें मै आपके नाम तिलाजली दे चुकी हू क्योंकि मुझे विश्वास दिलाया गया था कि हम लोगों के सर पर से हमारे प्यारे बाप का साया जाता रहा और इस बात को भी एक जमाना गुजर गया। जो हो मगर आज हमारी खुशी का अन्दाजा कोई भी नहीं कर सकता।

बलभद्रसिह उठ कर तारा के पास गये जिसमें चलने फिरने की ताकत अभी तक नहीं आई थी तारा उनके गले से लिपट गई और फूट फूट कर रोने लगी। उसके बाद लाडिली की नौबत आई और उसने भी रो रो कर अपने कपडे भिगोय और मायारानी को गालिया देती रही। आधे घण्टे तक यही हालत रही अन्त में तेजसिह ने सभों को समझा बुझा कर शान्त किया और फिर बातचीत होने लगी।

देवी–(बलभद्रसिह से) मै आप से माफी मागता हू, मुझसे जो कुछ भूल हुई वह अनजाने में हुई है !

बल–(हस कर) नही नही मुझे इस बात का रज कुछ भी नहीं है बल्कि सच तो यों है कि अब मुझे केवल आप ही लोगों का भरोसा रह गया मगर अफसोस इतना ही है कि भूतनाथ आप लोगों का दोस्त है और मैं उसे किसी तरह भी माफ नहीं कर सकता।

तेजसिह–हम लोगों को बडा ही आश्चर्य हो रहा है और बिल्कुल समझ में नही आता कि आपके और भूतनाथ के बीच मे किस बात की ऐंठन पडी हुई है।

बल–(तेजसिह से) मालूम होता है कि अभी तक आपने वह गठरी नहीं खोली जो आपने एक औरत के हाथ से छीनी थी और जो इस समय भी मै आपके पास देख रहा हू।

तेज–(गठरी दिखा कर) नहीं मैंने इस अभी तक नहीं खोला।

वल–तभी आप ऐसा पूछते है अच्छा अव इसे खोलिये।

कम–वह औरत कौन थी ?

वल–उसका भी हाल मालूम हा जायगा जरा सब्र करा !(तजसिह स) हा साहव अव वह गठरी खोलिये।

वहुत अच्छा कह कर तेजसिह उठ और गठरी लिये हुए उस तरफ वढ गए जहा किशोरी कामिनी और तारा पडी थी। इसके वाद स नों की तरफ दख के वोले इस गठरी में क्या है सो देखने के लिए सभों का जी वेचैन हो रहा होगा वल्कि मैं कह सकता हू कि तारा सवसे ज्यादे बेचैन होगी इसलिए मैं किशोरी कामिनी और तारा ही के पास वैठ कर यह गठरी खोलता हू जिन्हें उठने और चलन में तकलीफ होगी आइये आप लोग भी इसी जगह आ वैठिये।

इतना कह कर तेजसिह वैठ गए वलभद्रसिह उनके वगल में जा वैठे और वाकी सभों ने तेजसिह को इस तरह घेर लिया जैसे किसी मदारी को खल करते समय मनचल लडक घर लेते हैं। तजसिह ने गठरी खाली और सभों की निगाह उसके अन्दर की चीजों पर पडी।

इस गठरी में पीतल की एक छाटी सी सन्दूकडी थी जिस कमलदान भी कह सकते है और एक मुट्ठा कागजों का था। वलभद्रसिह न कहा पहिले इस कागज के मुटठे का खोलो। तेजसिह ने ऐसा ही किया और जव कागज का मुट्ठा खाला गया ता मालूम हुआ कि कई चीठियों को आपस में एक दूसरे के साथ जोड के वह मुट्ठा तैयार किया गया है।

तेज–(मुट्ठा खालते हुए) इसे शैतान की आत कहें या विधाता की जन्मपत्री !

वल–[illegible] कह सकते है। इन चीठिया और पुर्जो का मैंने क्रम के साथ जोडा है आप शुरू से एक एक करक पढना आरम्भ कीजिए।

तजसिह न पहिला पुर्जा पढा उसमें ऊपर की तरफ यह लिखा हुआ था –

श्रीयुत रघुवरसिह याग्य लिखी हलासिह का राम राम। और वाद में यह मजमून था –

मर प्यार दास्त -

आपका मालूम है कि राजा गापालसिह की शादी वलभद्रसिह की लडकी लक्ष्मीदेवी के साथ होने वाली है मगर मैं चाहता हू कि आप कृपा करके कोई ऐसा वन्दावस्त कर जिसमें वह शादी टूट जाय और उसके बदले में मेरी लडकी मुन्दर की शादी राजा गोपालसिह के साथ हो जाय। अगर ऐसा हुआ ता मैं जन्म भर आपका अहसान मानूगा और जो कुछ आप कहेंग करुगा। मुझे आपकी दोस्ती पर वहुत भरासा है। शुभम।

वलभद्र – लीजिए पहिल नम्वर की चीठी समाप्त !

तारा – रघुवरसिह किसका नाम है ?

तेज – इस भूतनाथ का नाम रघुबरसिह है और नानक इसी का लडका है (वलभद्रसिह से) क्या हेलासिह मायारानी के वाप का नाम है ?

बलभद्र – जी हा और मायारानी का असल नाम मुन्दर है।

कमलिनी – अच्छा आगे पढिये।

तेजसिह ने दूसरी चीठी पढी। उसमें यह लिखा था –

'मेरे प्यारे दोस्त हेलासिह

आपका पत्र पहुचा। मैं इस वात का उद्योग कर सकता हूँ मगर इस काम में हद से ज्यादा मेहनत करनी पडेगी। खुल्लम खुल्ला तो आपकी लडकी की शादी राजा गोपालसिह से नहीं हो सकती क्योंकि राजा गोपालसिह को आपकी लडकी का विधवा होना मालूम है हा उनका दारोगा अगर हमारे साथ मिल जाय तो कोई तर्कीब निकल सकती है लेकिन उसमें भी यह कठिनाई है कि दारोगा लालची है और आप गरीव हैं'।

रघुवरसिह

देवीसिह – वाह वाह भूतनाथ ता वडा शैतान मालूम होता है ! यह सव काटे क्या उसी के वोए हुए हैं !

कमलिनी–मगर अफसोस है कि आप उसे अपना दोस्त बनाने के लिए करार कर चुके है !

वलभद्र–मैं ठीक कहता हूँ कि थोडी देर वाद देवीसिहजी का अपने किये पर पछताना पडेगा।

लाडिली–खैर जो होगा देखा जायगा आप तीसरी चीठी पढिये।

वलभद्र–मालूम नहीं है कि भूतनाथ की चीठी का जवाब हेलासिह ने क्या दिया था क्योंकि वह चीठी मेरे हाथ नहीं लगी। यह तीसरी चीठी जो आप पढेंगे वह भी भूतनाथ ही की लिखी हुई है।

तेजसिह तीसरी चीठी पढने लगे उसमें लिखा हुआ था–

प्रियवर हेलासिह--

आपने लिखा कि यद्यपि मुन्दर विधवा है और उसकी उम्र भी ज्यादे हे परन्तु नाटी होने क सबब वह ज्यादे उम्र की मालूम नही पडती ठीक है मगर बहुत सी बातें ऐसी हैं जो औरों को चाहे मालूम न हों मगर उससे किसी तरह छिपी नहीं रह सकती जिसकसाथ उसकी शादी होगी और इसी बात से राजा गोपालसिह का दारोगा भी डरता है मगर मैने भविष्य के लिए उसक ख्याल में एसे ऐसे सरसब्ज बाग पैदा कर दिए हैं कि जिसकी बेसुध और मदहोश कर देन वाली खुशबू को वह अभी से सूघने लग गया है तिस पर भी मै इस बात का तुम्हें विश्वास दिलाता हू कि यह शादी प्रकट रूप से नहीं हो सकती। इसके लिए उस ब्याह वाले दिन ही कोई अनोखी चाल चलनी पडेगी। अस्तु दारोगा साहब ने यह कहा है कि आज के आठवें दिन गुरूवार को सन्ध्या समय दारोगा साहब के बगले में आप उनसे मिलें मै भी वहा मौजूद रहूगा फिर जो कुछ तै हो जाय वही ठीक है।

वही रघुबर।

कम--मुझे यह नहीं मालूम था कि भूतनाथ के हाथ से ऐसे ऐसे अनुचित कार्य हुए है। उसने यही कहा था कि मैं राजा वीरेन्द्रसिह का दोषी हू और इस बात का सबूत मायारानी और उसकी सखी मनोरमा के कब्जे में है। जहा तक मुझसे बना मैने भूतनाथ का पक्ष करके उन सबूतों को गारत कर दिया मगर मैं हैरान थी कि भूतनाथ को धमकाने कब्जे में रखन या तबाह करने के लिए मायारानी ने इतने सबूत क्यों बटोर रक्खें हैं या उसे भूतनाथ की परवाह इतनी क्यों हुई। मगर आज उस बात का असल भेद खुल गया। इस समय मालूम हो गया कि लक्ष्मीदेवीऔर गोपालसिह के साथ दगा करने में भूतनाथ शरीक था और इस बात का डर केवल भूतनाथ और दारोगा ही को नही था बल्कि मायारानी को भी था और वह भी अपने को भूतनाथ और दारोगा के कब्जे में समझती थी। राजागोपालसिह को कैद करने के बाद यह डर और भी बढ गया होगा और भूतनाथ ने भी उसे कुछ डराया धमकाया या रुपए वसूल करने के लिए तग किया होगा और उस समय भूतनाथ को अपने आधीन करने के लिए मायारानी ने यह कार्रवाई की होगी अर्थात् भूतनाथ को राजा वीरेन्द्रसिह का दोषी ठहरान के लिए बहुत से सबूत इकटठे किए होंगे।

भैरो-- मै भी यहीसोचता हू।

तेज-- नि सन्देह ऐसा ही है।

कम-- ओफ ओह! अगर मै पहिले ही ऐसा जान गई होती तो भूतनाथ का इतना पक्ष न करती और न उसे अपना साथी ही बनाती।

देवी -- मगर इधर तो उसने आपके कामों में बडी मेहनत की है इसलिए कुछ मुरौवत तो करनी पडेगी!

कम--नहीं नहीं मै उसका कसूर कभी माफ नहीं कर सकती चाहे जो हो!

देवी--मगर फिर वह भी आप ही लोगों का दुश्मन होजायगा। जहा तक मै समझता हू इस समय वह अपने किए पर आप पछता रहा है।

कमलिनी--जो होमगर यह कसूर ऐसानहीं हैजिसे मै माफ कर सकू। ओह आह! क्रोध के मारे मेरा अजब हाल हो रहा है!

तेज--उसने कसूर भी भारी किया है।

बल--अभी क्या है अभी तो कुछ देखा ही नहीं! उसने जो किया है उसका हजारवा भाग भी अभी तक आपको मालूम नहीं हुआ है! जरा आगे की चीठिया तो पढिए और इसके बाद जब वह पीतल वाला कमलदान खुलेगा तब हम दवीसिहजी से पूछेंगे कि 'कहिये भूतनाथ के साथ कैसा सलूक करना चाहिए'!!

इस समय बेचारी तारा (जिसको आगे से हम लक्ष्मीदेवी के नाम से लिखा करेंगे) चुपचाप बैठी लम्बी लम्बी सासे ले रही थी। बाप के शर्म से वह इस विषय में कुछ बोल नहीं सकती थी मगर भूतनाथ से बदला लेने का ख्याल उसके दिल मे मजबूती के साथ जड पकडता जा रहा था और क्रोध की आच उसके अन्दर इतनी ज्यादे तेज होकर सुलग रहीं थीं कि उसका तमाम बदन गर्म हो रहा था इस तरह जैसे बुखार चढ आया हो। आज के पहिले वह भूतनाथ कोलायक और नेक समझती थी मगर इस समय यकायक जो बातें मालूम हुई उन्होंने उसे अपन आपे से बाहर कर दिया था।

तजसिह ने चौथी चीठी पढी उसमें लिखा हुआ था --

प्रिय बन्धु हेलासिह

बहुत दिनों स पत्र न भेजन क कारण आपको उदास न होना चाहिए। मै इस फिक्र में लगा हुआ हूँ कि किसी तरह बलभद्रसिह और लक्ष्मीदेवी कोखपा डालू मगर अभी तक मै कुछ न कर सका क्योंकि एक तो बलभद्रसिह स्वय ऐयार है दूसर आजकलराजा गोपालसिह की आज्ञानुसार बिहारीसिह और हरनामसिह भी उसके घर की हिफाजत कर रहे हैं। खैर कोई चिन्ता नहीं देखिए तो सही क्या होता है! मैने बलभद्रसिह के पडोस में हलवाई की एक दुकान खोली है और

अच्छ अच्छ कारीगर हलवाई नोकर रक्खे है। बहुत सी मिठाइया मैने ऐसी तैयार की है जिनमें दारोगा साहब का दिया हुआ अनूठा जहर बडी खूबी के साथ मिलाया गया है। यह जहर ऐसा है कि जिसे खाने के साथ ही आदमी नहीं मर जाता बल्कि महीनों तक बीमार रहके जान देता है। जहर खाने वाले का बिल्कुल बदन फूट जायगा और वैद्य लोग उस देख के सिवाय इसके और कुछ भी नहीं कह सकेंगे कि यह गर्मी की बीमारी से मरा है जहर का तो किसी को गुमान भी न होगा। मैने उस घर की लौडियों और नौकरों से भी मेलजाल पैदा कर लिया है अस्तु चाहे वे लोग कैसे होशियार और धूर्त क्यों न हों मगर एक न एक दिन हमारी जहरीली मिठाई बलभद्रसिह के पेट में उतर ही जायगी। आपकी लडकी बडी ही होशियार और चागली है वह सुजान के घर में बहुत अच्छ ढग से रहती है। सुजान ने उसे अपनी भतीजी कहके मशहूर किया है और उसकी भी बातचीत चल रही है मगर गोपालसिह का बूढा बाप ही शैतान है। दारोगा साहब उसका नाम निशान भी मिटाने के उद्योग में लगे हुए है। सब्र करो घबडाओ मत काम अवश्य बन जायेगा। आज स मै अपना नाम बदल देता हू, मुझ अब भूतनाथ कह के पुकारा करना।

वही–भूत।

इस चीठी न सभों के दिल पर बडा ही भयानक असर किया यहाँ तक कि देवीसिह की आखे भी मारे क्रोध के लाल हो गई और तमाम बदन कापन लगा।

तेज–बेईमान !दुष्ट ! इतनी बडी चढी बदमाशी !

भैरो–इस हरमजदगी का कुछ ठिकाना है !!

लाडिली–इस समय मरा कलेजा फुका जाता है। यदि भूतनाथ यहाँ मौजूद हाता तो इसी समय अपने हृदय की आच में उस आहुति दे दती। परमेश्वर ऐसे ऐस पापियों के साथ तू

कमलिनी– हाय !कम्बख्त भूतनाथ ने ता एसा काम किया है कि यदि वह कुत्ते से भी नुचवाया जाय ता उसका बदला नहीं हा सकता।

बलभद–ठीक है मगर में उसकी जान कदापि न मारुगा। मैं वही काम करूंगा जिसस मेरे कलेजे की आग ठढी हो आफ

देवीसिह–इधर हम लागों के साथ मिल के भूतनाथ ने जो जो काम लिए है उनसे विश्वास हा गया था कि वह हम लोगों का खैरख्वाह है। हम लोग उससे बहुत ही प्रसन्न थे और

बलभद–नहीं नही वह एसे काले साप का जहरीला बच्चा है जिसके काट मन्त्र ही नहीं। उसका कोई ठिकाना नहीं। बेशक वह कुछ दिन में आप लोगों को अपने आधीन करके मायारानी से मिल जाता। यह काम भी वह कभी का कर चुका होता मगर जब से उसने मरी सूरत देखली है और उस निश्चय हा गया कि मै मरा नहीं बल्कि जीता हू तब से उसकी अक्ल ठिकाने नहीं है वह घबडा गया है और अपने बचाव की तर्कीब सोच रहा है। (तेजसिह स) खैर आगे पढिए दखिए और क्या बात मालूम होती है।

तजसिह न अगली चीठी पढी उसमें यह लिखा हुआ था – मेरे लगोटिया यार हेलासिह–

मालूम हाता है तुम्हारा नसीबा बडाजबदस्तहै। राजा गोपालसिह का बुडढा बाप बडा ही चागला और काइया था। वह कम्बख्त अपने ही मन की करता था। अगर वह जीता रहता तो लक्ष्मीदेवी की शादी गोपालसिह से अवश्य हो जाती क्योंकि वह बलभद्रसिह की बहुत इज्जत करता था। बलभद्रसिह की जाति उत्तम है और वह जाति पाति का ख्याल बहुत करता था खैर आज तुम्हें इस बत की बधाई दता हूँ कि मेरी और दारागा की मेहनत ठिकाने लगी और वह इस दुनिया से कूच कर गया। सच ता यों है कि बडा भारी काटा निकल गया। अब साल भर के लिए शादी रुक गई और इस बीच में हम लाग बहुत कुछ कर गुजरेंगे।

वही–भूत।

चीठी पूरी करन के साथ ही तेजसिह की आखों स आसू की बूदे टपकने लगीं और उन्होने एक लम्बी सास लकर कहा अफसोस !यह बात किसी को भी मालूम न हुई कि राजा गोपालसिह का बाप इन दुष्टों की चालबाजियों का शिकार हुआ। बेचारा बडा ही लायक और बात का धनी था।

तारा यद्यपि बडी मुश्किल से अपन दिल को रोके हुए यह सब तमाशा देख और सुन रही थी मगर इस चीठी ने उसके साहस में विघ्न डाल दिया और उसे सभों की आखे बचा कर आचल के कोने से अपन आसू पोंछन पड। किशोरी कामिनी लाडिली कमलिनी और ऐयारों का दिल भी हिल गया और भूतनाथ की सूरत घृणा के साथ आखों के सामने घूमने लगी। तेजसिह ने कागज का मुट्ठा जमीन पर रख दिया और अपने दिल को सम्हालने की नीयत से सर उठा कर सरसब्ज पहाडियों की तरफ देखने लग। थोडी देर तक सन्नाटा रहा इसक बाद तेजसिह ने कागज का मुट्ठा उठा लिया और पढने लगे। 'मेर भाग्यशाली मित्र हलासिह

मुबारक हा !आज हमारी जहरीली मिठाई बलभद्रसिह के घर में जा पहुची। इसका जो कुछ नतीजा देखूगा

अगली चीठी में लिखूगा वास्तव में तुम किस्मतवर हो ।

नही–भूत ।

कमलिनी–हाय कम्बख्त तेरा सत्यानाश हो ।

लाडिली–चाण्डाल कहीं का ऐसा सत्यानाशी और हमलोगों के साथ रहे । छी छी ॥

तारा–(तेजसिह से) हाय मेरा जी डूबा जाता है मै हाथ जोड़ती हू इसके याद वाली चीठी शीघ्र पढिये जिसमें मालूम हो कि उस विश्वासघाती की मिठाई का क्या नतीजा निकला ।

सब–हा हा यहाँ पर हम लोग नहीं रुक सकते शीघ्र पढिये ।

तेज–मै पढता हू–

श्रीमान प्यारे बन्धु हलासिह

खुशी मनाइये कि मेरी मिठाई ने लक्ष्मीदेवी की मा लक्ष्मीदेवी के छोटे भाई और दो लौंडियों का काम तमाम कर दिया । बलभदरसिंह और उसकी तीनों लड़कियों ने मिठाई नहीं खाई थी इसीलिए बच गई और फिर सही, जाता कहा है ।

नही–भूत ।

इस चीठी ने तो अन्धेर कर दिया । कोई भी ऐसा नहीं था जिसकी आख से आसू न निकलते हों । कमलिनी और लाडिली रोने लगीं और लक्ष्मीदेवी तो चिल्ला कर बोली हाय इस समय मुझे लड़कपन की सब बातें याद आ रही हैं । वह समा मेरी आखों के सामने घूम रहा है । मेरे घर में वैद्यों की धूम मची हुई थी मेरी प्यारी मा अपने लडके की लाश पर पछाड़ें खा रही थी अन्त में वह भी मर गई । हम लोग रो रो कर लाश के साथ चिमटते थे और हमारा बाप हम लागों को खैंच खैंच कर अलग करताथा । हाय । क्या दुनिया में कोई ऐसी सजा है जो इस बात का पूरा बदला कहला सके ॥

किशोरी–(रो कर) कोई नहीं कोई नहीं ।

कम–हाय । मेरे कलेजे में दर्द होने लगा । किस दुष्ट का जीवनचरित्र मैं सुन रही हू । बस अब मुझमें सुनने की सामर्थ्य नहीं रही (रो कर) आफ इतना जुल्म । इतना अन्धेर ।

भैरो–बस रहने दीजिये अब इस समय आगे न पढ़िये ।

तेज–इस समय मै आगे पढ ही नहीं सकता ।

तेजसिह ने कागज का मुट्ठा लपेट कर रख दिया और सभों को दिलासा और तसल्ली देने लगे । तेजसिह का इशारा पाकर भैरोसिह और देवीसिह कई तीतर और बटेर शिकार कर लाये और उसका कबाब तथा शोरबा बनाने लगे जिसमें सभों को खिला पिला कर शान्त करें ।

आज खाने पीने की इच्छा किसी की भी न थी मगर तेजसिह के समझाने बुझाने से सभों ने कुछ खाया और जब शान्त हुए तो तेजसिह ने कहा अब हमको तालाब वाले मकान में चलना चाहिये ।

बलभद– हा अब इस जगह रहना ठीक न होगा मकान में चल कर जो कुछ पढना या देखना हो पढियेगा ।

कम–मेरी भी यही राय है । मैं देवीसिहजी से कह चुकी हू कि यदि मै उस मकान में रहती तो दुश्मन हमारा कुछ भी न बिगाड सकते और तालाब का पाट देना तो असम्भव ही था । खैर अब भी मै बिना परिश्रम के उस तालाब की सफाई कर सकती हूँ ।

इतना कह कर कमलिनी ने तालाब वाले मकान का बहुत सा भेद तेजसिह को बताया और जिस तरह से तालाब की सफाई हो सकती थी वह भी कहा जो कि हम ऊपर भी लिख आये है । अन्त में सभों ने निश्चय कर लिया कि घण्टे भर के अन्दर इस जगह को छोड देना और तालाब वाले मकान में चले जाना चाहिये ।

दूसरा बयान

सुबह का सुहावना समय है । पहिले घण्टे की धूप ने ऊचे पेडों की टहनियों मकान के कगूरों और पहाडों की चोटियों पर सुनहली चादर बिछा दी है । मुसाफिर लोग दो तीन कोस की मजिल मार चुके हैं । तारासिह और श्यामसुन्दरसिह अपने साथ भगवनिया और भूतनाथ को लिये हुए तालाब वाले तिलिस्मी मकान की तरफ जा रहे हैं । उनके दोनों साथी अर्थात भगवनिया और भूतनाथ अपने अपने गम में सिर नीचा किए चुपचाप पीछे पीछे जा रहे हैं । भूतनाथ के चेहरे पर उदासी और भगवनिया के चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई है । कदाचित भूतनाथ के चेहरे पर भी मुर्दनी छाई हुई होती या वह इन लोगों में न दिखाई देता यदि उसे इस बात की खबर होती कि तारा की किस्मत वाली गठरी तेजसिह के हाथ लग गई है और तारा तथा बलभदरसिह का भेद खुल गया है । वह तो यही सोचे हुए था कि तारा अपने

बाप को नहीपहिचानेगी बलभदरसिह अपने को छिपावेगा और देवीसिह मेरे भेदों का गुप्त रखने का उद्योग करेगा। बस इतनी ही बात थी जिससे वह एकदम हनाश नहीं हुआ था और इन लोगों के साथ कमलिनी से मिलने के लिए चुपचाप सिर झुकाये हुए कुछ सोचता विचारता जा रहा था। वह अपनी धुन में ऐसा डूबा हुआ था कि उसे अपने चारों तरफ की कुछ भी खबर न थी और उसकी वह धुन उस समय टूटी जव तारासिह ने कहा वह देखो तालाव वाला तिलिस्मी मकान दिखाई दने लगा। कई आदमी भी नजर पडते है। मालूम पडता है कि उसमें कमलिनी का डेरा आ गया। अगर मेरी निगाह धाखा नहीं देती तो में कह सकता हू कि वह चबूतरे के दक्षिणी कोने पर खडे होकर जो इसी तरफ देख रहे है हमारे चाचा तेजसिह है !

तजसिह के नाम ने भूतनाथ को चौंका दिया और उसके दिल में एक नया शक पैदा हुआ। इसके साथ ही उसके चेहरे की रगत न पुन पल्टा खाया अथात जर्दी के वाद सुफेदी ने अपना कुदरती रग दिखाया और भूतनाथ का कापता हुआ पेर धीरे धीरे आग की तरफ बढने लगा। जब ये लोग मकान के पास पहुचे तो भूतनाथ ने देखा कि भैरोसिह और देवीसिहभी अन्दर स निकल आय है और नफरत की निगाह से उसे देख रहे हैं। जब ये लोग तालाब के किनारे पहुच तो भगवनिया न दखा कि तालाव की मिट्टी न मालूम कहा गायव हो गई हे तालाब स्वच्छ है और उसमें माती की तरह साफ जल भरा हुआ दिखाई दता है। वह वडे आश्चर्य से तालाव के जल और उसक बीच वाले मकान को देखने लगी।

भैरासिह उन लोगों को टहरन का इशारा कर क मकान के अन्दर गया और थोडी देर वाद वाहर निकला इसके वाद डोंगी खाल कर कि ारे पर ले गया और चारों आदमियों को सवार करा के मकान के अन्दर ले आया।

श्यामसुन्दरसिह और भगवानी को विश्वास था कि यह मकान हर तरह के सामान से खाली होगा यहा तक कि चारपाई विछावन और पानी पीने के लिए लोटा गिलास तक न हागा मगर नहीं इस समय यहा जो कुछ सामान उन्होंने देखा वह बनिस्वत पहिले के वेशकीमत और ज्याद था। इसका कारण यहथाकि दुश्मन लोग इस मकान में से वही चीजें ले गये थे जिन्हें व लाग देख और पा सकते थ मगर इस मकान के तहखानों और गुप्त कोठरियों का हाल उन्हें मालूम न था जिनमें एक से बढ के उमदा चीजें तथा बेशकीमत असवाव मकान सजाने के लिये भरा हुआ था और जिन्हें इस समय कमलिनी ने निकाल कर मकान को पहिले स ज्यादे खूबसूरती के साथसजा डाला था और भागे हुए आदमियों में से दो सिपाही और दो नौकर भी आ गय थे जा भाग जान के वाद भी छिपे छिपे इस मकान की खोज खबर लिया करते थे।

तारासिह श्यामसुन्दरसिह भगवनिया ओर भूतनाथ उस मकरे में पहुचाए गए जिसमें किशोरी कामिनी लक्ष्मीदेवी कमलिनी लाडिली और बलभदसिह वगैरह वैठे हुए थे और किशोरी कामिनी और लक्ष्मीदेवी सुन्दर मसहरियों पर लेटी हुई थीं।

वलभदसिह को असली सूरत में देखते ही भूतनाथ चौंका और घवडा कर दो कदम पीछे हटा मगर भैरोसिह ने जो उसके पीछे था रोक लिया। बलभदसिह को असली सूरत में देख कर भूतनाथ को विश्वास होगया कि उसका सारा भेद खुल गया और इस वारे में उस समय ता कुछ भीशक न रहा जब उस कागज के मुटठे और पीतल की सन्दूकडी को भी कमलिनी के सामने देखा जो भूतनाथ की विचित्र जीवनी का पता दे रही थी। जिस समय भूतनाथ की निगाह उनके चहरे पर गौर के साथ पडी जिनसे रज और नफरत साफ जाहिर हाती थी उस समय उसके दिल में एक हौल सा पैदा हो गयाऔर उसकी सूरत देखने वालों को ऐसा मालूम हुआ कि वह थोडी ही देर में पागल हो जायगा क्योंकि उसके हवास में फर्क पड गया था और वह वडी ही वेचैनी के साथ चारों तरफ देखने लगा था।

वलभद–भूतनाथ मैं अफसोस करता हू कि तुम्हारे भदों को कुछ दिन तक और छिपा रखने का मौका मुझे न मिला !!

देवी–जिस गठरी में तारा की किस्मत बन्द थी और जिसे तुम अपने सामने देख रहे हो वह वास्तव में तेजसिह के कब्ज में आ गई थी।

वलभद्र–जिसनकाबपोशने तुम्हार सामने मुझे पराजित किया था वह तजसिह थे और इस समय तुम्हार वगल में खडे है। है है !देखो सम्हलो !पागल मत वनो।

भूत – (लडखडाई आवाज से) ओह !उस औरत को धाखा हुआ !उसने नकावपोश को वास्तव में नहीं पहिचाना !

भूतनाथ पागलों की तरह हाथ मुँह फैला और आखें फाड फाड कर चारों तरफ देखन लगा और फिर चक्कर खाकर जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हा गया।

तेज–वुरे कामों का यही नतीजा निकलता है।

देवी–इससे कोई पूछे कि एसे एस खोटे कर्म करके दुनिया मे तूने क्या मजा पाया ? मै समझता हू कि यह अपनी जान दे देगा या यहा से भाग जाना पसन्द करेगा।

बलभद्र–हा यदि इसकी एक बहुत ही प्यारी चीज मेरे कब्जे मे न होती तो बेशक यह अपनी जान दे देता या भाग ही जाता मगर अब यह ऐसा नहीं कर सकता है।

कमलिनी–वह कौन सी चीज है ?

बलभद–जल्दी न करो उसका हाल भी मालूम हो जायगा।

तेज–खैर आप यह तो बताइए कि इसके साथ क्या सलूक करना चाहिये ?

बलभद–कुछ नहीं इसे इसी तरह उठा कर तालाब के बाहर रख आओ और छोड दो जहा जी चाहे चला जाय।

कमलिनी–(तेजसिह से) क्या आपको मालूम है कि इसका लडका नानक आजकल कहा है ?

तेज–मुझे नहीं मालूम।

किशोरी – इसका केवल एक ही लडका है ?

तेज–क्या तुम्हे अभी तक किसी ने नही कहा कि भूतनाथ की पहली स्त्री से एक लडकी भी है जिसका नाम कमला है और जो तुम्हारी प्यारी सखी है ? हाय मै अफसोस करता हू कि इस दुष्ट का हाल सुन कर उस बेचारी को बडा ही दुख होगा। मै सच कहता हू कि कमला एसी लायक लडकी बहुत कम देखने सुनने मे आवेगी।

इतना सुनते ही भैरोसिहके चेहरे पर खुशी की निशानी दिखाई देने लगी जिसे उसने बडी होशियारी से तुरन्त दबा दिया और किशोरी सिर नीचा करके न मालूम क्या सोचने लगी।

तेज–(बलभदसिह से) अच्छा तो यह निश्चय हो गया कि इसे तालाब के बाहर छोड़ आया जाय ?

बलभद–हा मेरी राय मे तो एसा ही होना चाहिए।

कमलिनी–क्या इसे कुछ भी सजा न दी जायगी ? इसका तो इसी समय सिर उतार लेना चाहिए ?

बलभद–(ताज्जुब से कमलिनी की तरफ देख के) तुम ऐसा कहती हो ? मुझे आश्चर्य होता है। शायद गम ने तुम्हारी अक्ल मे फर्क डाल दिया है। इसे मार डालने से क्या हमारा बदला पूरा हो जायगा ?

कमलिनी ने शर्मा कर सिर झुका लिया और तेजसिह का इशारा पाकर भैरोसिह और देवीसिह ने भूतनाथ को तालाब के बाहर पहुँचा दिया। तारासिह और श्यामसुन्दर सिह आश्चर्य से सभी का मुह देख रहे थे कि यह क्या मामला है क्योंकि इधर जो कुछ गुजरा था उसका हाल उन्हे कुछ भी मालूम न था।

ऊपर लिखे कामों मे छुटटी पाकर तेजसिह ने तारासिह को एक किनारे ले जाकर वह हाल सुनाया जो इधर गुजर चुका था औरफिरअपने ठिकाने आ बैठे। इसके बाद कमलिनी ने बलभदसिह से कहा– "मेरा जी इस बात को जानने के लिए बेचैन हो रहा है कि इतने दिनो तक आप कहा रहे किस स्थान मे रहे और क्या करते रहे ? आप पर क्या क्या मुसीबतें आई और हमलोगों का हाल जानकर भी आपने इतने दिनों तक हमलोगो से मुलाकात क्यों नहीं की ? क्या आप नही जानते थे कि हमारी लडकिया कहा और किस मुसीबत मे पडी हुई है ?

बलभद–इन सब बातों का जवाब मिल जायगा जरा सब्र करो और घबडाओ मत। पहिले उन चीठियों को सुन जाओ फिर इसके बाद जो कुछ तुम्हें पूछना हो पूछना और मुझे भी जो कुछ तुम्हारे विषय मे मालूम नहीं है पूछूगा। (तेजसिह से) यदि इस समय कोई आवश्यक काम न हो तो आप उन चीठियो को पढिए या पढने के लिए किसी को दीजिए।

तेजसिह–नहीं नहीं (कागज के मुट्ठे की तरफ देख के) इन चीठियों को मै स्वय पढूगा और इस समय हम लोग सब कामों से निश्चिंत भी है हॉ तारासिह को यदि कुछ

तारा – नहीं मुझे कोई काम नहीं है केवल भगवनिया के विषय में पूछना है कि इसके साथ क्या सलूक किया जाय ?

तेज–इसका जवाब कमलिनी के सिवाय और कोई नहीं दे सकता।

यह कह उन्होंने कमलिनी की तरफ देखा।

कमलिनी–(भैरोसिह से) आपको यहा का सब हाल मालूम हो चुका है इसलिए आप ही तहखाने तक जाने की तकलीफ उठाइये।

बहुत अच्छा कहकर भैरोसिह उठ खडा हुआ और भगवानी की कलाई पकडे हुए बाहर चला गया। कमलिनी ने श्यामसुन्दरसिह से कहा अब तुम्हें भी यहा न ठहरना चाहिए बस तुरन्त चले जाओ और हमारे आदमियो को जो दुश्मन के सलूक से इधर उधर भाग गए हैं जहा तक हो सके ढूढो तथा हमारे यहा आ जाने की खुशखबरी सुनाओ। बस चले हो जाओ यहा अटकने की कोई जरूरत नहीं।

श्यामसुन्दरसिह चाहता था कि वह यहा रहे और उन घटनाओं का हाल पूरा पूरा जान जो बलभद्रसिह और भूतनाथ से सम्बन्ध रखती है क्योंकि बलभद्रसिह को दख क भूतनाथ की जो हालत हुई थी उसे वह अपनी आखों से दख चुका था और उसका सबब जानन के लिए बहुत ही बेचैन भी था--मगर कमलिनी की आज्ञा सुनकर उसका अथाह उत्साह टूट गया और वहा से चल जानेक लिए मजबूर हुआ वह अपने दिल म समझे हुए था कि उसने भगवानी को पकड क बडा काम किया है इसके बदले में कमलिनी उससे खुश होगी और उसकी तारीफ करके उसका दर्जा बढावेगी मगर यह बातें तो दूर ही रहीं कमलिनी ने उसे वहा स चले जान क लिए कहा। इस बात का सुन्दरसिह को बहुत रज हुआ मगर क्या कर सकता था। लाचार मुँह बना कर पीछे की तरफ मुडा इसके साथ ही दवीसिह भी कमलिनी का इशारा पाकर उठे और श्यामसुन्दरसिह को तालाब के बाहर पहुचाने को चले।

जब श्यामसुन्दरसिह को पहुचाने के लिए देवीसिह तालाब के बाहर गए तो उन्होंने देखा कि भूतनाथ जिसे बेहोशी की अवस्था में तालाब के बाहर पहुचा दिया गया था अब होश में आकर तालाब के ऊपर वाली सीढी पर चुपचाप बैठा हुआ है।

देवीसिह को इस पार आत हुए देख कर वह उठा और पास आकर देवीसिह की कलाई पकड कर बोला जो कुछ मै चाहता हू उसे सुन लो तब यहा से जाना।

देवीसिह ने कहा 'बहुत अच्छा कहो मै सुनने के लिए तैयार हू। (श्यामसुन्दरसिह से) तुम क्यों खडे हो गये ? जाआ जो काम तुम्हारे सुपुर्द हुआ है उसे करो। देवीसिह की बात सुन कर श्यामसुन्दरसिह को और भी रज हुआ और वह मुह बना कर चला गया।

देवी--(भूतनाथ) अब जो कुछ तुम्हें कहना हा कहो।

भूत--पहिल आप यह बताइये कि मुझे इस बेइज्जती के साथ बगले के बाहर क्यों निकाल दिया ?

देवी -- क्या तुम स्वयम इस बात को नहीं साच सके ?

भूत -- क्योंकर समझ सकता था ? हॉं इतना मैंने अवश्य देखा कि सभों की जो निगाह मुझ पर पड रही थी वह रज और घृणा से खाली न थी मगर कुछ सबब मालूम न हुआ।

देवी--क्या तुमने बलभद्रसिह को नहीं देखा ? क्या उस गठरी पर तुम्हारी निगाह नहीं गई जो तेजसिह के सामने रक्खी गई थी ? और क्या तुम नहीं जानते कि उस कागज के मुट्ठे में क्या लिखा हुआ है ?

भूत--तब नहीं तो अब मैं इतना समझ गया कि उस आदमी ने जो अपने को बलभद्रसिह बताता है मेरी चुगली खाई होगी और मेरे झूठे दोष दिखला कर मुझ पर बदनामी का धब्बा लग गया होगा--मगर मैं आपको होशियार कर देता हूँ कि वह वास्तव में बलभद्रसिह नहीं है बल्कि पूरा जालिया और धूर्त है नि सन्देह वह आप लोगों को धोखा देगा। यदि मेरी बातों का विश्वास न हो तो मै इस बात के लिए तैयार हू कि आप लोगों में से कोई एक आदमी मेरे साथ चले मै असली बलभद्रसिह को जोवास्तव में लक्ष्मीदेवी का बाप है और अभी तक कैदखाने में पडा हुआ है दिखला दूँगा। मै सच कहता हू कि उस कागज के मुट्ठे में जो कुछ लिखा हुआ है यदि उसमें किसी तरह की मेरी बुराई है तो बिल्कुल झूठ है।

देवी--मै केवल तुम्हारे कहने पर क्योंकर विश्वास कर सकता हू मै तुम्हारे अक्षर अच्छी तरह पहिचानता हू जो उस कागज म मुट्ठे की लिखावट से बखूबी मिलते है। खैर इसे भी जाने दा मै यह पूछता हू कि बलभद्रसिह को वहॉं देख कर तुम इतना डरे क्यों ? यहॉं जब कि डर ने तुम्हें बेहोश कर दिया।

भूत--यह ता तुम जानते ही हो कि मै उससे डरता हू, मगर, इस सबब से नहीं डरता कि वह कमलिनी का बाप बलभद्रसिह है बल्कि उसस डरने का कोई दूसरा ही सबब है जिसके विषय में मै कह चुका हू कि आप मुझसे न पूछेंगे और यदि किसी तरह मालूम हो जाय तो बिना मुझस पूछ किसी पर प्रकट न करेंग।

देवी--अच्छा इस बात का जवाब तो दो कि अगर तुम्हें यह मालूम था कि कमलिनी का बाप किसी जगह कैद है और तारा वास्तव में लक्ष्मीदवी है जैसाकि तुम इस समय कह रहे हो तो आज तक तुम्ने कमलिनी को इस बात की खबर क्यों न दी ? या यह बात क्यों न कही कि मायारानी वास्तव में तुम्हारी बहिन नहीं है।

भूत--इसका सबब यही था कि असली बलभद्रसिह न जा अभी तक कैद है और जिनके छुडाने की मै फिक्र कर रहा हू मुझस कसम ल ली है कि जब तक वे कैद से न छूटें म उनके और लक्ष्मीदेवी क विषय में किसी से कुछ न कहू और वास्तव मे अगर मुझ पर इतनी विपत्ति न आ पडती ता मै किसी से कहता भी नहीं। मुझे इस बात का बड़ा ही दुख है कि मै तो अपनी जान हथली पर रख क आप लागों का काम करु और आप लाग बिना समझे बूझे और असल बात को बिना जाचे दूध की मक्खी की तरह मुझ निकाल फेंक। क्या मुरौवत नेकी और धर्म इसी को कहते है क्या यही जवाम्र्दों का काम ह। आखिर मुझ पर इलजाम तो लग ही चुका था मगर मेरी और उस दुष्ट की जो कमलिनी का बाप बन क मकान के

अन्दर बैठा हुआ है दो दो बातें तो हो लेने दते !

भूतनाथ की वात सुन कर दवीसिह का वडा ही आश्चर्य हुआ और वह कुछ देर तक सिर नीचा किए हुए साचते रहे इसके वाद कुछ याद करके वाले अच्छा मरी एक वात का और जवाव दो।

भूत–पूछिए।

देवी–यदि तुम्हें उस कागज क मुट्ठे से कुछ डर न था और वास्तव में जो कुछ उस मुटठ में तुम्हारे खिलाफ लिखा हुआ हे वह झूठ है जैसाकि तुम अभी कह चुके हों तो तुम उस गठरी को दख के उस समय क्यों डरे थे जव वलभद्रसिह ने रात क समय उस जगल में तुम्हें वह गठरी दिखाइ थी और पूछा था कि यदि कहो तो भगवानी के सामने इसे खोलूँ ? मै सुन चुका हू कि उस समय इस गठरी का देख कर तुम काप गए थे और नहीं चाहते थे कि भगवानी के सामने वह खाली जाय !

भूत–ठीक है मगर मैं उस कागज के मुटठे को याद करके नहीं डरा था जो वल्कि मुझे इस बात का गुमान भी न था कि इस गठरी में कोई कागज का मुटठा भी हे सच तो यों है कि मै उस पीतल की सन्दूकडी को याद करके डरा था जो उस समय तजसिह से सामने पडी हुई थी। मै यही समझे हुए था कि उस गठरी के अन्दर केवल एक पीतल की सन्दूकडी है और वास्तव में उसकी याद से ही मै काप जाता हू। उसकी सूरत देखने से जो हालत मेरी होती है सो मै ही जानता हू मगर साथ ही इसके मैं यह भी कहे देता हू कि उस पीतल की सन्दूकडी के अन्दर जा चीज है उससे कमलिनी तारा और लाडिली या असली वलभद्रसिह का काई सम्बन्ध नहीं है। इसका विश्वास आपको उसी समय हो जायगा जव वह सन्दूकडी खोली जायेगी।

भूतनाथ की वातों ने देवीसिह का चक्कर में डाल दिया। वह कुछ भी नही समझ सकते थे कि वास्तव में क्या वात है। देवीसिह ने जो बातें भूतनाथ स पूछीं उनका जवाव भूतनाथ ने वडी खूबी के साथ दिया न तो कहीं अटका और न किसी तरह का शक रहने दिया और य ही वातें थीं जिन्होंन देवीसिह को तरददुद परेशानी और आश्चय में डाल दिया था। वहुत देर गौर करन के वाद देवीसिह ने पुन भूतनाथ से पूछा।

देवी–अच्छा अव तुम क्या चाहत हो सा कहो ?

भूत–मै कवल इतना ही चाहता हू कि आप मुझ इस मकान में ले चलिए और तजसिह तथा तीनों वहिना से कहिये कि मेर मुकदम की पूरी पूरी जाच करें आप लागों क आगे निर्दोप हाने के विपय में जो कुछ मैं सवूत दू उसे अच्छी तरह सुनें समझें और देखें तथा इसके वाद जा दगावाज ठहर उस सजा द वस।

देवी–अच्छा मैं जाकर तजसिह आर कमलिनी स य बातें कहता हू, फिर जैसा व कहेंग किया जायगा।

भूत–ता आप एक काम और कीजिए।

देवी–वह क्या।

इसक जवाव म भूतनाथ न अपन एयारी क बटुए में स एक तस्वीर निकाल कर देवीसिह के हाथ मे दी और कहा आप यह तस्वीर लक्ष्मीदवी (तारा) को दिखाए और पूछें कि तुम्हारा वाप यह है या वह दगावाज जो सामने वैठा हुआ अपन का वलभद्रसिह वताता है ?

दवीसिह न वड गौर से उस तस्वीर का देखा। यह तस्वीर पूरी तो नहीं मगर फिर भी वलभद्रसिह की सूरत स वहुत कुछ मिलती थी। भूतनाथ की वातों ने और उसके सवाल जवाव के ढग ने देवीसिह के दिल पर मामूली असर पैदा नही किया था वल्कि सच ता यह ह कि उसने थाडी दर क लिय दवीसिह की राय वदल दी थी। देवीसिह ने सोचा कि ताज्जुव नहीं भूतनाथ वहुत कुछ सच कहता हा और वलभद्रसिह वास्तव में असली वलभद्रसिह न हो क्योंकि जहा तक मैंन देखा है वलभदसिह के मिलन स जितना जोश कमलिनी लाडिली और तारा के दिल में पैदा हुआ था उतना वलभद्रसिह के दिल में अपनी तीनों लड़कियों को देख कर पैदा नही हुआ यह एक ऐसी वात है जो मेरे दिल में शक पैदा कर सकती है मगर उस कागज के मुट्ठे में जितनी चीठियॉ भूतनाथ के हाथ की लिखी कही जाती हे वे अवश्य भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई है इसमें कोई सन्देह नहीं क्योंकि जव मैंने भूतनाथ से कहा था कि तुम्हारे अक्षर इन चीठियों के अक्षरों से मिलते है ता इस वात का काइ जवाव उसने नहीं दिया अस्तु उन दुष्ट कर्मो का करने वाला तो अवश्य भूतनाथ है मगर क्या यह वलभद्रसिह भी वास्तव में असली वलभद्रसिह नहीं है ? अजव तमाशा हे कुछ समझ में नहीं आता कि क्या निश्चय किया जाय।

इस सव वातों को सोचत हुए दवीसिह वहा से रवाना हुए और डोंगी पर सवार हो मकान के अन्दर गए जहा तेजसिह उस कागज के मुट्ठे का हाथ में लिए हुए देवीसिह के वापस आने की राह देख रहे थ।

तेज–दवीसिह तुमने इतनी दर क्यों लगाई ? मे कव स राह देख रहा हू कि तुम आ जाआ तो इस मुट्ठे का खोलू।

देवी–हा हा आप पढ़िये मै भी आ गया।

तेज–मगर यह तो कहो कि तुम्हें इतनी देर क्यों लगी ?

देवी–भूतनाथ ने मुझे रोक लिया और कहा कि पहिले मेरी बातें सुन लो तो यहां से जाओ।

बलभद्र–क्या भूतनाथ तालाब के बाहर अभी तक बैठा है ?

देवी–हां अभी तक बैठा है और बैठा रहेगा।

बलभद्र–सो क्या क्या कहता है ?

देवी–वह कहता है कि मुझे कमलिनी ने बिना समझे व्यर्थ निकाल दिया उन्हें चाहिये था कि नकली बलभद्रसिंह के सामने मेरा इन्साफ करती।

बलभद्र–नकली बलभद्रसिंह कैसा ?

देवी–वह आपको नकली बलभद्रसिंह बताता है और कहता है कि असली बलभद्रसिंह अभी तक एक जगह कैद है अगर किसी को शक हो तो मुझसे सवाल जवाब कर ले।

बलभद्र–नकली और असली होने में सबूत की जरूरत है या सवाल जवाब करने की ?

देवी–ठीक है मगर उसने आपको बुलाया है और कहा है कि बलभद्रसिंह मेरी एक बात आकर सुन जाय फिर जो कुछ उनके जी में आवे करें।

बलभद्र–मारो कम्बख्त को मैं अब उसकी बातें सुनने के लिए क्यों जाने लगा ?

देवी–क्या हर्ज है अगर आप उसकी दो बातें सुन लें कदाचित कोई नया रहस्य ही मालूम हो जाय।

बलभद्र–नहीं मैं उसके पास न जाऊंगा।

तेज–तो भूतनाथ को इसी जगह क्यों न बुला लिया जाय ?

कमलिनी–हाँ मैं भी यही उचित समझती हूँ।

देवी–नहीं नहीं इससे यह उत्तम होगा कि बलभद्रसिंह खुद उससे मिलने के लिए तालाब पर जायें।

इतना कह कर देवीसिंह ने तेजसिंह की तरफ देखा और कोई गुप्त इशारा किया।

बलभद्र–उसका इस मकान में आना मुझे भी पसन्द नहीं। अच्छा मैं स्वयं जाता हूं, देखूं वह नालायक क्या कहता है।

तेज–अच्छी बात है आप भैरोसिंह को अपने साथ लेते जाइये।

बलभद्र–सो क्यों ?

देवी–कौन ठीक कम्बखत चोट कर बैठे आखिर गम और डर ने उसे पागल तो बना ही दिया है।

इतना कह कर देवीसिंह ने फिर तेजसिंह की तरफ देखा और इशारा किया जिसे सिवाय तेजसिंह के और कोई नहीं समझ सकता था।

बलभद्र–अजी उस कम्बख्त गीदड की इतनी हिम्मत कहां जो मेरा मुकाबला करे।

तेज–ठीक है मगर भैरोसिंह को साथ लेकर जाने में हर्ज भी क्या है ? (भैरोसिंह से) जाओ जी भैरो तुम इनके साथ जाओ।

लाचार भैरोसिंह को साथ लेकर बलभद्रसिंह बाहर चला गया। इसके बाद कमलिनी ने देवीसिंह से कहा, मुझे मालूम होता है कि आपने मेरे पिता को जबर्दस्ती भूतनाथ के पास भेजा है।

देवी–हां इसलिए कि ये थोडी देर के लिये अलग हो जायं तो मैं एक अनूठी बात आप लोगों से कहूं।

कम–(चौंक कर) क्या भूतनाथ ने कोई नई बात बताई है ?

देवी–हां भूतनाथ ने यह बात बहुत जोर देकर कही कि असली बलभद्रसिंह अभी तक कैद में है और यदि किसी को शक हो तो मेरे साथ चल मैं दिखला सकता हूं। उसने बलभद्रसिंह की तस्वीर भी मुझे दी है और कहा है कि यह तस्वीर तीनों बहिनों को दिखाओ पहिचानें कि असली बलभद्रसिंह यह है या वह।

लक्ष्मीदेवी ने हाथ बढाया और देवीसिंह ने वह तस्वीर उसके हाथ पर रख दी।

तारा–(तस्वीर देख कर) आह ! यह तो मेरे बाप की असली तस्वीर है ! इस चेहरे में तो कोई ऐसा फर्क ही नहीं है जिससे पहिचानने में कठिनाई हो। (कमलिनी की तरफ तस्वीर बढा कर) लो बहिन तुम भी देख लो मैं समझती हूं यह सूरत तुम्हें भी न भूली होगी।

कमलिनी–(तस्वीर देखकर) वाह ! क्या इस सूरत को मैं अपनी जिन्दगी में कभी भूल सकती हूं ! (देवीसिंह से) क्या भूतनाथ ने इसी सूरत को दिखाने का वादा किया है ?

देवी–हां इसी को।

कमलिनी–तो क्या आपने पूछा नहीं कि अगर तुम यह हाल पहिल ही जानत थे ता अब तक इन लोगों से क्यों न कहा ? देवी– केवल यही नहीं बल्कि मैने कई बातें उससे पूछी।

तेज– तुममें और भूतनाथ में जो-जो बातें हुई सब कह जाओ।

वह तस्वीर एक एक करके सभों ने देखी और तब दवीसिंह उन बातों को दोहरा गय जो उनके और भूतनाथ के बीच में हुइ थी। उनके सुनन से सभो का ताज्जुब हुआ और सभी कोई सोचने लग कि अब क्या करना चाहिये।

कमलिनी–(तारा स) बहिन बेशक तुम इस विषय में हम लोगों स बहुत ज्याद गौर कर सकती हो फिर भी इतना मैं कह सकती हू कि मेरे पिता में जो भूतनाथ से मिलन गय हैं और इस तस्वीर में बहुत ज्याद फर्क नहीं है

तारा–क्या कहू अक्ल कुछ काम नहीं करती मैं उन्हें भी अच्छी तरह पहिचानती हू और इस तस्वीर का भी अच्छी तरह पहिचानती हू। इस तस्वीर को तो हम तीनों में से जो देखेगा वही कहेगा कि हमारे पिता की है मगर इनको केवल मैं ही पहिचानती हू। जिस जमाने में मे और ये एक कैदखाने में थे उसी जमाने में इनकी सूरत शक्ल में बहुत फर्क पड गया था। (चौक कर) आह मुझे एक पुरानी बात याद आई है जो इस भेद को तुरन्त साफ कर देगी!

कमलिनी–वह क्या ?

तारा–तुम्हें याद होगा कि जब हम लोग छोट छोट थे और लाडिली बहुत ही छोटी थी तो उसे एक दफे बुखार आया था और वह बुखार बहुत ही कडा था यहा तक कि सरसाम हो गया था और उसी पागलपन में उसन पिताजी के मोढ पर दात काट लिया था।

कम–ठीक है अब मुझे भी वह बात याद पडी। इतन जोर स दात काटा था कि सरो खून निकल गया था। जब तक वे हम लोगों के साथ रहे तब तक मैं बराबर उस निशान को देखती थी मुझे विश्वास है कि सौ वर्ष बीत जान पर भी वह दाग मिट नहीं सकता।

तारा–बेशक ऐसा ही था और हमने तुमने मिल कर यह सलाह गांठी थी कि दात काटन के बदले में लाडिली को खूब मारेंगे। आखिर लडकपन का जमाना ही तो था!

कमलिनी–हां और यह बात हमारी मा को मालूम हो गई थी और उसने हम दोनों को समझाया था।

तारा की यह बात कुछ ऐसी थी कि इसने लडकपन जमाने की याद दिला दी और कमलिनी तथा लाडिली का तो इस बात में कुछ भी शक न रहा कि तारा बेशक लक्ष्मीदेवी है मगर बलभद्रसिह के विषय में जरूर कुछ शक हो गया और उनके विषय में दोनों ने यह निश्चय कर लिया कि बलभद्रसिह भूतनाथ से मिल कर लौटें तो किसी बहाने से उनका मोढा देखा जाय साथ ही यह भी निश्चय कर लिया कि इसके बाद ही कोई आदमी भूतनाथ के साथ जायऔरउस कैदी को भी देखें बल्कि जिस तरह बने उसे छुडा कर ले आवे।

इतने ही में तालाब के बाहर से कुछ शोरगुल की आवाज आइ। तेजसिंह ने पता लगाने के लिये तारासिंह को बाहर भेजा और तारासिंह ने लौटकर खबर दी कि भूतनाथ और बलभद्रसिह में लडाई बल्कि यों कहना चाहिए कि जबर्दस्त कुश्ती हो रही है।

यह सुनते ही कमलिनी लाडिली देवीसिंह और तेजसिंह बाहर चले गए और देखा कि वास्तव में वे दोनों लड रहे हैं और भैरोसिंह अलग खडा तमाशा देख रहा है। भूतनाथ और बलभद्रसिंह की लडाई तेजसिंह पहिले ही देख चुके थे और उन्हें मालूम हो चुका था कि बलभद्रसिह भूतनाथ से बहुत जबदस्त है मगर इस समय जिस खूबी और बहादुरी के साथ भूतनाथ लड रहा था उसे देख कर तेजसिंह को ताज्जुब मालूम हुआ और उन्होंने तारा सिंह की तरफ देखके कहा इस समय तो भूतनाथ बडी बहादुरी से लड रहा है। मैं समझता हू कि पहिले दफे जब हमने भूतनाथ की लडाई देखी थी तो उस समय डर और घबराहट ने भूतनाथ की हिम्मत तोड दी थी मगर इस समय क्रोध ने उसकी ताकत दूनी कर दी है लेकिन भैरो चुपचाप खडा तमाशा क्यों देख रहा है!

देवी–जो हो पर इस समय उचित है कि पास चलके इन लोगों को अलग कर देना चाहिये मगर अफसोस डोंगी एक ही है जो इस समय उस पार गई हुई है।

कमलिनी–सब्र कीजिये मैं दूसरी डोंगी ले आती हू, यहाँ डोंगियों की कमी नहीं है।

इतना कह कर कमलिनी चली गई और थोडी देर में मोटे और रोगनी कपडे की एक तोशक उठा लाई जिसमें हवा भरने के लिये एक कोन पर सोने का पेंचदार मुह बना हुआ था और उसी के साथ एक छोटी भाथी भी थी। तेजसिंह ने उसी भाथी से बात की बात में हवा भरके उसे तैयार किया और उस पर तेजसिंह और देवीसिंह बैठ कर पार जा पहुचे।

तेजसिंह और देवीसिंह को यह देख कर बडा ही ताज्जुब हुआ कि दोनों आदमियों का खंजर और ऐयारी का बटुआ भैरोसिंह के हाथ में है और वे दोनों बिना हर्बे के लड रहे हैं। तेजसिंह ने बलभद्रसिंह को और देवीसिंह ने भूतनाथ को पकड

कर अलग किया।

बल–इस नालायक कमीने को इतना पाप करने पर भी शर्म नहीं आती चूल्लू भर पानी में डूब नहीं मरता और मुकाबला करने के लिये तैयार होता है !

भूत–मैं कसम खा कर कहता हू कि यह असली बलभद्रसिह नहीं है। वह बेचारा अभी तक कैदा में है और इसी की बदौलत कैद में है। जिसका जी चाहे मेरे साथ चले मै दिखाने के लिये तैयार हूँ।

बल–साथ ही इसके यह भी क्यो नहीं कह दता कि वे चीठियॉ भी तेरे हाथ की लिखी हुई नहीं है !

भूत–हॉ हॉ तेरे हाथ की लिखी वे चीठियॉ भी मेरे पास मौजूद है जिनकी बदौलत बेचारा बलभद्रसिह अभी तक मुसीजत झेल रहा है।

यह कह कर भूतनाथ ने अपना एयारी का बटुआ लेने के लिए भैरोसिह की तरफ हाथ बढाया।

तीसरा बयान

जिस समय भूतनाथ ने बलभद्रसिह से यह कह कर कि तेरे हाथ की लिखी हुई वे चीठियॉ भी मेरे पास मौजूद है जिनकी बदौलत बेचारा बलभद्रसिह अभी तक मुसीवत झेल रहा है भैरोसिह की तरफ ऐयारी का बटुआ लेने के लिए हाथ बढाया उस समय तजसिह को विश्वास हो गया कि बेशक भूतनाथ बलभद्रसिह को दोषी ठहरावेगा मगर भैरोसिह के हाथ से ऐयारी का बटुआ लेने क बाद भूतनाथ ने कुछ सोचा और फिर तेजसिह की तरफ देख कर कहा–

भूत–नहीं इस समय मै उन चीठियों को नहीं निकालूगा क्योंकि यह झट इनकार कर जायगा और कह देगा कि मेरे हाथ की लिखी ये चीठियॉ नहीं हैं आपलोगों का इसके हाथ की लिखावट देखन का मौका अभी तक नहीं मिला है।

बलभद्–नहीं नहीं, मै इनकार न करुगा बल्कि स्वीकार करुगा तू काई चीठी निकाल भी तो सही।

भूत–हॉ हॉ मे चीठियॉ निकालूगा मगर इस थोडी दर में मै इस बात का अच्छी तरह सोच चुका हू कि तेरे हाथ की लिखी हुई चीठियों को निकालना इस समय की अपेक्षा उस समय विशेष लाभदायक होगा जब मै तेजसिह या और किसी का लेजाकर असली बलभद्रसिह का सामना करा दूगा। (तजसिह स) कहिए आप मेरे साथ चलन के लिए तेयार है या किसी को साथ भेजेंगे ?

तेज–इस बात का फैसला कमलिनी या लक्ष्मीदेवी करेंगी मै तुमको पुन इस मकान में चलने की आज्ञा देता हू मगर साथ साथ यह भी कह देता हूँ कि देखो भूतनाथ तुम बडे बडे जुर्म कर चुके हो और इस समय भी अपने हाथ की लिखी हुई चीठियों से इनकार नहीं करते मगर अब मै देखता हू कि तुम पुन कोई नया पातक किया चाहते हो !

इतना कहकर तेजसिह ने बलभद्रसिह का हाथ पकड लिया और देवीसिह तथा भैरोसिह को यह कह कर मकान की तरफ रवाना हुए कि 'हम दोनों के जाने बाद थोडी देर में जब हम कहला भेजें तो भूतनाथ को लिए मकान में आना।

बलभद्रसिह को साथ लिए हुए तेजसिह मकान के अन्दर आए और कमलिनी किशोरी तथा तारा इत्यादि सब हाल कहा।

तारा–इसमें कोई शक नहीं कि भूतनाथ झूठा दगाबाज और परले सिरे का बेईमान साबित हो चुका है।

तेज–बेशक ऐसा ही है मगर इस समय हम लागों को सबस पहिले उसी बात का निश्चय कर लेना चाहिये जिसके बारे में लक्ष्मीदेवी ने इशारा किया था।

कमलिनी–ठीक है। (बलभद्रसिह की तरफ देखके) आप बहुत सुस्त और पसीने पसीने हो रहे है अतएव कपडे उतारकर आराम कीजिए और ठडे होइये।

बलभद–हा मै भी यही चाहता हू।

इतना कहकर बलभद्रसिह ने कपडे उतार डाले। उस समय लोगों का ध्यान बलभद्रसिह के मोडे की तरफ गया और सभी ने उस निशान को बहुत अच्छी तरह देखा जिसे लक्ष्मीदेवी ने याद दिलाया था।

कमलिनी–(खुशी से बलभद्रसिह का हाथ पकड के और लक्ष्मीदेवी की तरफ दखके) देखो बहिन यह पुराना निशान अभी तक मौजूद है। ऐसी अवस्था में मुझ कोइ धोखा दे सकता है ? कभी नहीं !

बलभद–(हस कर) इस निशान का लाडिली अच्छी तरह पहिचानती हागी क्योंकि इसी न बीमारी की अवस्था में दॉत काटा था ? (लबी सॉस लेकर) अफसास आज और उस जमाने के बीच में जमीन आसमान का फर्क पड गया है। इश्वर तेरी महिमा कुछ कही नहीं जाती।

बलभदसिह के मोढे का निशान देखकर कमलिनी लाडिली और लक्ष्मीदेवी का शक जाता रहा और इस साथ हो साथ तेजसिह इत्यादि ऐयारों को भी निश्चय होगया कि यह वेशक कमलिनी लक्ष्मीदेवी और लाडिली का बाप है और भूतनाथ अपनी बदमाशी और हरमजदगी से हमलोगों को धाखे में डाल कर दु ख दिया चाहता है।

थोडी देर तक बाप बेटियों के बीच में वैसी ही मुहब्बत भरी बातें हाती रहीं जैसी कि बाप बेटियों में होनी चाहिये और बीच ही बीच में ऐयार लोग भी हा, हीं ठीक है वेशक इत्यादि करत रहे। इसक बाद इस विषय पर विचार हाने लगा कि भूतनाथ क साथ इस समय क्या सलूक करना चाहिए। बहुत वादाविवाद हाने पर यह निश्चय ठहराकि भूतनाथ को कैदकर रोहतासगढ भज दना चाहिए जहा उसके किए हुए दोषों की पूरी पूरी तहकीकात समय मिलन पर हा जायगी हा लगे हाथ उस कागज क मुट्ठे को अवश्य पढ कर समाप्त कर देना चाहिए जिससे भूतनाथ की बदमाशियों तथा पुरानी घटनाओं का पता लगता है-तथा इन सब बाता से छुट्टी पाकर किशोरी कामिनी लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली को राहतासगढ में चल कर आराम के साथ रहना चाहिए।

ऊपर लिखी बातों में जा त पा चुकी थी कइ बात कमलिनी की इच्छानुसार न थी मगर तेजसिह की जिद स जिन्हें सब लोग बडा बुजुर्ग और बुद्धिमान मानते थ लाचार हाकर उसे मानना ही पडा।

तेजसिह उसी समय कमरे के बाहर चले गए और सफील बुलाकर देवीसिह तथा भैरोसिह का अपनी तरफ ध्यान दिलाया जब दोनों ऐयारा ने इधर देखा तो तेजसिह ने कुछ इशारा किया जिससे व दोनों समझ गए कि भूतनाथ को कैदियों की तरह बेबस करके मकान के अन्दर ल आने की आज्ञा हुइ है। देवीसिह ने यह बात भूतनाथ स कही भूतनाथ ने कुछ सोचकर सिर झुका लिया और तब हथकडी पहिनने के लिए अपने दानों हाथ देवीसिह की तरफ बढाए। देवीसिह ने हथकडी और बेडी से भूतनाथ को दुरुस्त किया और इसके बाद दोनों ऐयार उस डोंगी पर चढाकर मकान के अन्दर ले आए। इस समय भूतनाथ की निगाह फिर उस कागज क मुट्ठे और पीतल की सन्दूकडी पर पडी और पुन उसके चेहर पर मुर्दनी छा गइ।

तेज-भूतनाथ तुम्हारा कसूर अब हम सब लागों को मालूम हो चुका है। यद्यपि यह कागज का मुट्ठा अभी पूरा पूरा पढा नही गया केवल चार पाच चीठिया ही इसमे का पढी गई परन्तु इतने ही स सभा का कलेजा काप गया है। नि सन्देह तुम बहुत कडी सजा पाने के अधिकारी हो अतएव तुम्हें इस समय कैद करने का हुक्म दिया जाता है फिर जो होगा देखा जायगा।

भूत-(कुछ साचकर) मालूम हाता है कि मेरी अर्जी पर किसी ने ध्यान नहीं दिया और इस बलभदसिह को सभा ने सच्चा समझ लिया है।

तेज-वेशक बलभदसिह सच्चे है और इस विषय म अब तुम हम लोगो का धाखा दने का उद्योग मत करो हा यदि कुछ कहना है तो इन चीठियों के बारे मे कहो जो वेशक तुम्हारे हाथ की लिखी हुई है और तुम्हारे दोषों को आईने की तरह साफ खोल रही है।

भूत-हा इन चीठियों के विषय मे भी मुझ बहुत कुछ कहना है परन्तु आप लोगो के सामने कुछ कहना उचित नही समझता क्योंकि आप लोग मेरा फैसला नहीं कर सकते है।

तेज-सो क्या क्या हम लोग तुम्हे सजा नहीं द सकत ?

भूत-यदि आप धर्म की लकीर को बेपरवाही के साथ लाघने से कुछ भी सकोच कर सकते है तो मेरा कहना सही है क्योंकि आप लोगों क मालिक राजा बीरेन्द्रसिह मरे पिछले कसूरों का माफ कर चुके है और इधर राजा बीरेन्द्रसिह का जो जो काम मै कर चुका हू उस पर ध्यान दने योग्य व ही है। इसी से मै कहता हू कि बिना मालिक के कोई दूसरा मेरे मुकदमे का देख नहीं सकता।

तेजसिह-(कुछ दर सोचने के बाद) तुम्हारा यह कहना सही है खैर जैसा तुम चाहते हो वैसाही हागा और राजा साहब ही तुम्हारे मामले का फैसला करेंग मगर मुजरिम को गिरफ्तार और कैद करना तो हम लोगों का काम है।

भूत-वेशक कैद करके जहा तक जल्द हा सके मालिक के पास ले जाना जरूर आप लोगों का काम है मगर कैद में बहुत दिनों तक रख कर किसी को कष्ट देना आपका काम नहीं है क्योंकि कदाचित् वह निदोष ठहरे जिसे आपने दोषी समझ लिया हो।

तेज-क्या तुम फिर भी अपने को बेकसूर साबित करने का उद्योग करेंगे ?

भूत-वेशक मै बेकसूर बल्कि इनाम पाने योग्य हू परन्तु आप लोगों के सामने जिन पर अक्ल की परछाई तक नहीं पडी है मै अब कुछ भी न कहूगा। आप यह न समझिए कि मै केवल इसी बुनियाद पर अपने को छुडा लूगा कि महाराज ने मेरा कसूर माफ कर दिया है। नही बल्कि मुकद्दमा कोई अनूठा रग पैदा करके मेरे बदले में किसी दूसरे ही को

कैदखाने की कोठरी का महमान बनावेगा।

तेज – खैर मे भी तुम्हें बहुत जल्द राजा बीरेन्द्रसिह के सामन हाजिर करन का उद्योग करूगा।

इतना कह कर तेजसिह न दवीसिह की तरफ दखा और दवीसिह ने भूतनाथ को तहखान की कोठरी में ले जाकर बन्द कर दिया।

इस काम स छुट्टी पाकर तेजसिह न चाहा कि किसी एयार के साथ भूतनाथ और भगवनिया को आज ही राहतासगढ रवाना करें और इसके बाद कागज के मुट्ठ को पुन पढना आरम्भ करें मगर उन्हें शीघ्र ही मालूम हो गया कि काइ एयार तब तक भूतनाथ का लकर राहतासगढ जाना खुशी से पसन्द न करगा जब तक भूतनाथ की जन्मपत्री पढ या सुन न लगा। अस्तु तजसिह की यही इच्छा हुई कि लगे हाथ सब कोई रोहतासगढ चले चलें और जो कुछ हा वहा ही हा। अन्त में एसा ही हुआ अर्थात तजसिह की आज्ञा सभों का माननी पडी।

चौथा बयान

नानक को तो हमने इस तरह भला दिया जैसे अमीर लोग किसी से कुछ वादा करके उसे भुला देते हैं। आज अकस्मात नानक की याद आयी है अकस्मात काहे बल्कि यों कहना चाहिए कि यकायक आ पडने वाली आवश्यकता ने नानक की याद दिला दी है।

जमानिया प्रान्त स भाग हुए स्वार्थी नानक ने वहा से बहुत दूर जाकर अपना डेरा बसाया और यही सबब है कि आज मिथिलश की अमलदारी में एक छोटे से शहर के मामूली महल्ले में मगनी का मकान लेकर लापरवाही के साथ दिन बितात हुए नानक को हम देखते हैं। यह शहर यद्यपि छोटा है मगर दो तीन पढे लिखे विद्यानुरागी रईसों और अमीरों के कारण जिन पर यहा की रिआया का बहुत बडा प्रम है अगूठी का सुडौल नगीना हो रहा है।

नानक यद्यपि कगाल नहीं था मगर बहुत ही खुदगर्ज और साथ साथ कजूस भी हाने के कारण अपने को छिपाये हुए बहुत ही साधारण ढग से रहा करता था अर्थात उसके घर में (कुत्ते बिल्ली को छोड) एक नौकर एक मजदूरनी और एक उसकी जारू के सिवाय जिसे वह न मालूम कहाँ से उठा लाया या ब्याह लाया था और कोई भी नहीं रहता था। लागों का कथन तो यही था कि नानक न ब्याह करके अपनी गृहस्थी बसाई है मगर कई आदमियों को जो नानक के साथ ही साथ रामभोली के किस्स से भी अच्छी तरह जानकार थे इस बात का विश्वास नहीं होता था।

नानक क लिए यह शहर नया नहीं है। जब से उसका नाम इस किस्स में आया है उसके पहिले भी समय समय पर कई दफे वह इस शहर में आकर रह चुका है। अबकी दफे यद्यपि उसे इस शहर में आए बहुत दिन नहीं हुए मगर वह इस ढग स रह रहा हे जैसे पुराना बाशिन्दा हो। वह यह भी साचे हुए है कि उसका गुमनाम बाप अर्थात् भूतनाथ जिसका असल हाल थोडे ही दिन हुए उसे मालूम हुआ है बहुत जल्द बीरेन्द्रसिह की बदौलत मालामाल हो कर शहर में आवेगा और उस समय हमलोग बडी खुशी से जिन्दगी बितावेंग मगर उसकी इस आशा को बडा भारी धक्का लगा जैसा कि आग चल कर मालूम हागा।

रात पहर भर के लगभग जा चुकी है। नानक अपने मकान के अन्दर वाल दालान का बिछावन आसन और रोशनी क सामान स इस तरह सजा रहा हे जैसे किसी नए या बहुत ही प्यारे मेहमान की अवाई सुन कर जाहिरदारी के शौकीन लाग सजाया करते हे। उसकी स्त्री भी खाने पीने के सामान की तैयारी में चारों तरफ मटकती फिरती है और थालियों का तरह तरह के खान तथा कई प्रकार क मास स सजा रही है। उसकी सूरत शक्ल और चाल ढाल से यह भी पता लगता हे कि उसे अपन मेहमान क आने की खुशी नानक से भी ज्यादे है। खैर इस टीमटाम के बयान का तो जाने दीजिये मुख्तसर यह है कि बात की बात में सब सामान दुरुस्त हो गया और नानक की स्त्री ने अपनी लौडी स कहा– अरे जरा आग बढ के दख ता सही गज्जू बाबू आत है या नहीं ॥

लौंडी–(धीर से जिसमें दूसरा काई सुनने न पावे) बीबी जल्दी क्यों करती हो वे ता यहाँ आन क लिए तुमसे भी ज्याद बेचैन हा रह होंग।

बीबी–(मुस्कुरा कर धीर स) कम्बख्त–यह तू कैस जानती हे ?

लौडी–तुम्हारी और उनकी चाल स क्या मे नहीं जानती ? क्या उस एकादशी के रात वाली बात भूल जाऊगी ? (अपना बाजू दिखाकर) दखा यह तुम्हार।

लौंडी अपनी पूरी बात भी न कर पाइ थी कि मटकत हुए नानक भी उसी तरफ आ पहुचे और लाचार होकर लौडी

का चुप रह जाना पडा।

नानक-(सजी हुई थालियों की तरफ देख के) अरे इसमें मुरब्बा तो रक्खा ही नही !

बीबी-मुरब्बा क्या खाक रखती ! न मालूम कहा से सडा हुआ मुरब्बा उठा लाये ! वह उनके खाने लायक भी है ? लखपती आदमी की थाली में रखते शर्म तो नही मालूम पडती !

नानक-मरा तो दो आना पैसा उसमें लग गया और तुम्हें पसन्द ही नहीं। क्या मै अन्धा था जो सडाहुआ मुरब्बा उठा लाता !

बीबी-तुम्हारे अन्धे होने में शक ही क्या है ? ऐसे ही ऑख वाले होते तो रामभोली अपनी मा और अपने बाप के पहिचानने में वर्षो तक काहे झख मारते रहते।

नानक -(चिढ कर) तुम्हारी बातें तो तीर की तरह लगती है ! तुम्हारे तानों ने ता कलेजा पका दिया। रोज रोज की किच किच ने तो नाकों दम कर दिया ! न मालूम कहा की कम्बख्ती आयी थी जो तुम्हें मै अपन घर में ले आया।

बीबी-(अपने मन में) कम्बख्ती नहीं आई थी बल्कि तुम्हारा नसीब चमका था जो मुझे अपने घर में लाए ! अगर मै न आती तो ऐसे ऐसे अमीर तुम्हार दर्वाजे पर थूकने भी नहीं आते ! (प्रकट) तुम्हारी कम्बख्ती तो नहीं मेरी कम्बख्ती आई थी जो इस घर में आई ! जने के सामने मुह दिखाना पडता है। तुम्हें तो ऐसा मकान भी न जुडा जिसमें मर्दानी बैठक तो होती और तुम्हारे दोस्तों की खिदमत से मेरी जान छूटती। अच्छा तो तभी होता जो वही गगी तुम्हारे घर आती और दिन में तीन दफे झाडू दिलवाती। चलो दूर हो जाओ मेरे सामने से नहीं तो अभी भण्डा फोड़ के रख दूँगी।

लौंडी-बीबी-रहने भी दो तुम तो बडी भोली हो जरा सी बात में रज हो जाती हो !

बडी मुश्किल से लौंडी ने लडाई बन्द करवाई और इतने ही में दर्वाजे पर से किसी के पुकारने की आवाज आयी। नानक दौडा हुआ बाहर गया। दर्वाजा खोलने पर मालूम हुआ कि पाच सात नौकरों के साथ गज्जू बाबू आ पहुँचे है। इनका असल नाम गजेमेन्दुपाल था मगर अमीर होने कारण लोग इन्हें गज्जू बाबू के नाम से पुकारा करते थे।

नौकरो को तो बाहर छोडा और अकेले गज्जू बाबू आगन में पहुचे नानक ने बडी खातिरदारी स इन्हें बैठाया और थोडी देर तक गपशप के बाद खाने की सामग्री उनके आगे रक्खी गई।

गज्जू-अरे तो मै अकेला ही खाऊगा ?

नानक-और क्या ?

गज्जू-नहीं सो तों नहीं होगा तुम अपनी थाली भी लाओ मेरे सामने बैठो।

नानक-भला खाइए तो सही मैं आपके सामने ही तो हूँ, (बैठ कर) लीजिए बैठ जाता हू।

गज्जू-कभी नहीं हरगिज नहीं मुमकिन नहीं ! ज्यादे जिद्द करागे तो मै उठ कर चला जाऊगा !

नानक-अच्छा आप खफा न होइए लीजिए मै भी अपनी थाली लाता हूँ।

लाचार नानक को भी अपनी थाली लानी पडी। लौंडी ने गज्जू बाबू के सामन नानक के लिए आसन बिछा दिया और दोनों आदमियों ने खाना शुरू किया।

गज्जू-वाह गोश्त तो बहुत ही मजदार बना है-जरा और मगाना।

नानक-(लौंडी से) अरे जा जल्दी गोश्त का बरतन उठा ला।

गज्जू-वाह वाह क्या दाई परोसेगी ?

नानक-क्या हर्ज है ?

गज्जू-वाह अरे हमारी भाभी साहब कहा है ? बुलाओ साहब। जब हमारे आपके दोस्ती है तो पर्दा काहे का ?

नानक-पदा तो कुछ नहीं है मगर उसे आपके सामने आते शर्म मालूम होगी।

गज्जू-व्यर्थ ! भला इसमे शर्म काहे की ? हा अगर आप कुछ शर्माते हों तो बात दूसरी है !

नानक-नही भला आपसे शर्म काहे की ? आप हम तो एक दिल एक जान ठहरे ! आपकी दोस्ती के लिए मैंने बेरादरी के लोगों तक की परवाह न की।

गज्जू-ठीक है और मैंने भी अपने भाई साहब के नाक भौं चढाने का कुछ ख्याल न किया और तुम्हें साथ लेकर अजमेर और मक्के चलने के लिए तैयार हो गया।

नानक-ठीक है (अपनी स्त्री से) अजी सुनो तो सही जरा गोश्त का बर्तन यहॉ आओ।

गज्जू-हा हा चली आओ हर्ज क्या है। तुम तो हमारी भाभी ठहरीं-अगर जिद हो तों हमसे मुह दिखाई ले लेना !

इतना सुनते ही छमछम करती हुई बीबी साहबा पर्दे से बाहर निकलीं और गोश्त का बर्तन बडी नजाकत से लिए दोनों महापुरुषों के पास आ खडी हुई।

हम यहा पर बीबी साहब का हुलिया लिखना उचित नहीं समझते और सच तो यों है कि लिख भी नही सकते क्योंकि

उनके चेहर का खास हिस्सा नाम मात्र घूघट में छिपा हुआ था। खेर जाने दीजिए ऐस तम्बाकू पीने के लिए छप्पर फूकन वाले लोगों का जिक्र जहा तक कम आय अच्छा हे। हम तो आज नानक का ऐसी अवस्था में देखकर हैरान हैं और कमलिनी तथा तजसिह की भूल पर अफसास करते हैं यह वही नानक है जिसे हमारे ऐयार लाग नेक और होनहार समझते थे और अभी तक समझते होगे मगर अफसोस इस समय यदि किसी तरह कमलिनी को इस बात की खबर होजाती कि नानक के धर्म तथा नेक चाल चलन के लम्बे चौड दस्तावेज का दीमक चाट गए अब उसका विश्वास करना या उसे सच्चा ऐयार समझना अपनी जान के साथ दुश्मनी करना तो बहुत अच्छा होता। यद्यपि किशोरी कामिनी लाडिली लक्ष्मीदेवी और बीरेन्द्रसिह के एयारों का दिल भूतनाथ से फिर गया है मगर नानक पर कदाचित अभी तक उनकी दयादृष्टि बनी हुइ है।

नानक की स्त्री ने बर्तन में से दो टुकडा गाश्त निकाल कर गज्जू बाबू की थाली में रखा और पुन निकाल कर थाली में रक्खनेके लिये झुकी थी बाहर किसी न किसी आदमी ने वडे जोर से पुकारा। अजी नानक हा जी इस आवाज का सुनत ही नानक चौंक गया और उसने दाई की तरफ देख के कहा जल्दी जा देख तो सही कौन पुकार रहा है ?

दाई दौडी हुइ दर्वाजे पर गइ दर्वाजा खाल कर जब उसने बाहर की तरफ दखा तो एक नाकाबपोश पर उसकी निगाह पडी जिसने चेहरे की तरह अपने तमाम बदन का भी काले कपड से ढक रक्खा था। उसक तमाम कपडे इतन ढीले थे कि उसके अग प्रत्यग का पता लगाना या इतना भी जान लना कि यह बुड्ढा हे या जवान बडा ही कठिन था।

दाई उस देख कर डरी। यदि गज्जू बाबू के कई सिपाही उसी जगह दवाजे पर मौजूद न होत तो वह नि सन्देह चिल्ला कर मकान क अन्दर भाग जाती मगर गज्जू बाबू क नौकरों पर निगाह पढने से उसे कुछ साहस हुआ और उसने नकाबपोशसे पूछा–

दाई–तुम कौन हो और क्या चाहत हो ?

नकाबपोश–मैं आदमी हूँ और नानक परसाद से मिला चाहता हूँ।

दाई–अच्छा तुम बाहर बैठो वह भोजन कर रहे हैं जब हाथ मुँह धो लेगें तब आवेगें।

नकाबपोश–ऐसा नहीं हो सकता तू जाकर कह द कि भोजन छोड कर जल्दी से मेरे पास आवें। जा देर मत कर। यदि थाली की चीजें बहुत स्वादिष्ट लगतीं हों और जूठा छोडने की इच्छा न हाती हो तो कह दीजियो कि रोहतासमठ पुजारी आया है।

यह बात नकाबपोश न इस ढग स कही कि दाई ठहरने या पुन कुछ पूछने का साहस न कर सकी। किवाड बन्द करक दौडती हुई नानक के पास गई और सब हाल कहा। रोहतासमठ का पुजारी आया है इस शब्द ने नानक का बेचैन कर दिया। उसक हाथ मे इतनी भी ताकत न रही कि गोश्त क टुकडे को उठा कर उसके मुँह तक पहुँचा दता। लाचार उसने घबडाइ आवाज में गज्जू बाबू से कहा– आध घण्टे के लिए मुझे माफ कीजिय। उस आदमी स बातचीत करना कितना आवश्यक है सो आप इसी से समझ सकते है कि घर में आप ऐसा दोस्त और सामने की भरी थाली छोडकर जाता हूँ। आपकी भाभी साहिबा आपको खुले दिल से खिलावेंगी। (अपनी स्त्री से) दो चार गिलास आसव का भी इन्हें दना।

इतना कह कर अपनी बात का बिना कुछ जवाब सुने ही नानक उठ खडा हुआ। अपने हाथ से गगरी उडल हाथ मुँह धो दवाजे पर पहुँचा और किवाड खोलकर बाहर चला गया। यद्यपि इस समय नानक न तकल्लुफ की टाग तोड डाली थी तथापि इसके चले जाने का गज्जू बाबू को किसी तरह का रज न हुआ बल्कि एक तरह की खुशी हुई और उन्होंनेअपन दिल में कहा चलो इनसे भी छुट्टी मिली।

दर्वाज के बाहर पहुँच कर नानक न उस नकाबपोश को दखा और बिना कुछ कहे उसका हाथ पकड कर मकान से कुछ दूर ल गया। जब ऐसी जगह पहुँचा जहा उन दोनों की बातें सुनने वाला काई दिखाई नहीं देता था तब नानक ने बातचीत आरम्भ की।

नानक–मै तो आवाज ही से पहचान गया था कि मरे दोस्त आ पहुँचे मगर लौंडी को इसलिए दवाजे पर भजा था कि मालूम हो जाय कि आप किस ढग स आए है और किस प्रकार की खबर लाए हे। जब लौंडी ने आपकी तरफ से रोहतासमठ क पुजारी का परिचय दिया बस कलेजा दहल उठा मालूम हो गया कि खबर भयानक है

नकाब–बेशक एसी ही बात है। कदाचित तुम्हें यह सुनकर आश्चय होगा कि तुम्हारा बहुत दिनों से खोया हुआ बाप अर्थात भूतनाथ अब मैदान की ताजी हवा खाने योग्य नहीं रहा।

नानक–सो क्यों ?

नकाबपोश–उसका दुर्दैव जो बहुत दिनों तक पत्थर मे चादी की तरह छिपा हुआ था एक दम प्रकट हो गया। उसन

तुम्हारी मा को भी अष्टम चन्द्रमा की तरह कृपा दृष्टि से दख लिया और साढेसाती के कठिन शनि को भी तुमस जैगापाल करने के लिए कहला भेजा है पर इससे यह न समझना कि ज्योतिपियों के बताए हुए दान का फल बन कर मै तुम्हारी रक्षा के लिए आया हूँ। अब तुम्हें भी यह उचित है कि आजकल के ज्यातिषियों क कर्म–भण्डार से फलित विद्या की तरह जहा तक जल्द हो सके अन्तर्ध्यान हो जाओ।

नानक–(डर कर) अफसास तुम्हारी पुरानी आदत किसी तरह कम नही हाती। दा शब्दों में पूरी हो जाने वाली बात को भी बिना हजार शब्दों का लपेट दिये तुम नहीं रहते। साफ क्यों नहीं कहते कि क्या हुआ।

नकाब–अफसास अभी तक तुम्हारी बुद्धि की कतरनी का चाटने के लिए शान का पत्थर नहीं मिला। अच्छा तब मैं साफ साफ ही कहता हूँ सुना। तुम्हारे बाप का छिपा हुआ दोप बरसात की बदली मे छिपे हुए चन्दमा की तरह यकायक प्रकट हो गया इसी स तुम्हारी मॉ भी दुश्मन क काबू में शेर के पज में बेचारी हिरनी की तरह पड गई और उसी कारण से तुम पर भी उल्लू के पीछे शिकारी बाज की तरह धावा हुआ ही चाहता है। सम्भव है कि चारपाई के खटमल की तरह जब तक काई ढूढन क लिए तैयार हा तुम गायब हो जाओ मगर मेरी समझ में फिर भी गर्म पानी का डर बना ही रहगा।

नानक–(चिढ कर) आखिर तुम न मानाग ! खैर मै समझ गया कि मर बाप का कसूर वीरन्दसिह को मालूम हो गया। परन्तु उनक तजसिह के और कमलिनी के मुँह स निकल हुए क्षमा शब्द पर मुझे बहुत कुछ भरासा था यद्यपि दोष जान लेने के पहिले ही उन्होंने एसा किया था।

नकाब–नही नहीं तुम्हारे बाप ने वीरेन्दसिह का जो कसूर किया था वह तो उनके एयारो का पहिल से ही मालूम हो गया था मगर इन नये प्रकट भये हुए दोपों के सामन व दोप ऐसे थे जैस सूय क सामन दीपक चन्द्रमा के सामन जुगनू दिन के आग रात या मरे मुकाबल म तुम !

नानक–अगर तुममें वह ऐब न होता तो तुम बडे काम के आदमी थे। दख रहे हो कि हम लोग सडक पर बमौके खडे है मगर फिर भी सक्षप में बात पूरी नहीं करते !

नकाब–इसका सबब यही है कि मेरा नाम सक्षप मे या अकले नहीं है गापी और कृष्ण इन दानों शब्दों से मेरा नाम बडे लोगों ने ठोंक मारा है अस्तु बड़े लागों की इज्जत का ध्यान करके मै अपने नाम को स्वार्थ की पदवी देन के लिए सदैव उद्याग करता रहता हूँ। इसी स गोपियों क प्रेम की तरह मेरी बातों का तौल नहीं होता और जिस तरह कृष्ण जी त्रिभगी थे उसी तरह मेरे मुख से निकले हुए शब्द भी त्रिभगी होते है। हा यह तुमने ठीक कहा कि सडक पर खड रहना भले मनुष्यो का काम नहीं है अस्तु थाडी दूर आगे बढ चला और नदी के किनारे बैठ कर मरी बात इस तरह ध्यान देकर सुनो जैसे बीमार लोग वैद्य के मुँह से अपनी दवा का अनुपात सुनते है। बस जल्दी बढो देर न करो क्योंकि समय बहुत कम है कही एसा न हो कि विलम्ब हो जाने के कारण वीरेन्दसिह के ऐयार लाग आ पहुचें और उस चरणानुरागी पात्र की मजबूती का इल्जाम तुम्हारे माथे ठोंकें जिसके कारण जगली काटों और ककडियों से बच कर यहा तक वे लोग पहुचेंगे।

नानक–(झुझलाकर) बस माफ कीजिए बाज आये आपकी बातें सुनने स। जिस सबब से हम पर आफत आने वाली है उसका पता हम आप लगा लेंगे मगर द्रौपदी के चीर की तरह समाप्त न होने वाली तुम्हारी बातें न सुनेंगे।

नकाब–(हस कर) शाबाश शाबाश जीत रहा अब मै तुमसे खुश हा गया क्योंकि अब तुम भी अपनी बातों में उपमालकार की टाग ताडन लगे। सच तो यों है कि तुम्हारा झुझलाना मुझे उतना ही अच्छा लगता है जितना इस समय भूख की अवस्था में फजली आम और अधावट दूध स भरा हुआ चौसेरा कटोरा मुझे अच्छा लगता।

नानक–ता साफ साफ क्यों नहीं कहत कि हम भूखे है जब तक पेट भर के खा न लेंग तब तक असल मतलब न कहग।

नकाब–शाबाश खूब समझ। बेशक मैंने यही साचा था कि तुम्हारे यहा दक्षिणा के सहित भोजन करूगा और उन बातों का रत्ती रत्ती भेद बता दूँगा जिनकी बदौलत तुम कुम्भीपाक में पडने से भी ज्यादी दु ख भोगा चाहते हो मगर नहीं दर्वाज पर पहुँचत ही दखता हू कि फाडा फूट गया और सडा मवाद बह निकला है। अब तुम इस लायक न रह कि तुम्हारा छूआ पानी भी पीया जाव। खैर तुम्हारे दोस्त है जिस काम के लिये आये है उसे अवश्य ही पूरा करेंगे। (कुछ साच कर)कभी नहीं छि छि, तुझ नालायक स अब हम दोस्ती रखना नही चाहते जो कुछ ऊपर कह चुक है उसी से जहा तक अपना मतलब निकाल सको निकाल ला और जो कुछ करते बने करा हम जात है !

इतना कह कर नकाबपाश वहा से रवाना हा गया। नानक न उसे बहुत समझाया और राकना चाहा मगर उसने एक न सुनी और सीधे नदी के किनारे का रास्ता लिया तथा नानक भी अपनी बदकिस्मती पर रोता हुआ घर पहुँचा। उस समय मालूम हुआ कि उसके नौजवान अमीर दोस्त को अच्छी तरह अपनी नायाब ज्याफत का आनन्द लकर गए हुए आधी घडी के लगभग हो चुके है।

पांचवां बयान

सन्तति के छठवें भाग के पांचवें बयान में हम लिख आए हैं कि कमलिनी ने जब कमला को मायारानी की कैद से छुड़ाया तो उसे ताकीद कर दी कि तू सीधे राहतासगढ़ चली जा और किशोरी की खोज में इधर उधर घूमना छोड़ के बराबर उसी किले में बैठी रह। कमला ने यह बात स्वीकार कर ली और वीरेन्द्रसिंह के चुनारगढ़ चले जाने के बाद भी कमला ने राहतासगढ़ को नहीं छोड़ा ईश्वर पर भरोसा करके उसी किले में बैठी रही।

यद्यपि उस किले का जनाना हिस्सा बिल्कुल सूना हो गया था मगर जब से कमला ने उसमें अपना डेरा जमाया तब से बीस पचीस औरतें जो कमला की खातिर के लिए राजा वीरेन्द्रसिंह की आज्ञानुसार लौंडियों के तौर पर रख दी गई थीं वहां दिखाई देने लगी थीं। जब राजा वीरेन्द्रसिंह यहां से चुनारगढ़ की तरफ रवाना होने लगे तब उन्होंने भी कमला को ताकीद कर दी कि तू अपनी ऐयारी को काम में लाने के लिए इधर उधर दौड़ना छोड़ के बराबर इसी किले में बैठी रहियो और यदि चारों तरफ की खबर लिए बिना तेरा जी न माने तो हमारे जासूसों को जो ज्योतिषीजी के मातहत में हैं जहां जी चाहे भेजा कीजियो। इसी तरह ज्योतिषीजी को भी ताकीद कर दी थी कि कमला की खातिरदारी में किसी तरह की कमी न होने पावे और यह जिस समय जो कुछ चाहे उसका इन्तजाम कर दिया करना इसमें भी कोई शक नहीं कि पंडित जगन्नाथ ज्योतिषी ने कमला की बड़ी खातिर की। कमला बड़े आराम से यहां रहने लगी और जासूसों के जरिये से जहां तक हो सकता था चारों तरफ की खबर भी लेती रही।

आज बहुत दिनों बाद कमला के चेहरे पर हंसी दिखाई दे रही है। आज वह बहुत खुश है बल्कि यों कहना चाहिए कि आज उसकी खुशी का अन्दाजा करना बहुत ही कठिन है क्योंकि पंडित जगन्नाथ ज्योतिषी ने तेजसिंह के हाथ की लिखी चीठी कमला के हाथ में दी और जब कमला ने उसे खोल कर पढ़ा तो यह लिखा हुआ पाया –

मेरे प्यारे दोस्त ज्योतिषीजी

आज हमलोगों के लिए बड़ी खुशी का दिन है इसलिए कि हम ऐयार लोग किशोरी कामिनी कमलिनी लाडिली और तारा को एक साथ लिए हुए राहतासगढ़ की तरफ आ रहे हैं अस्तु जहां तक हो सके पालकियों और सवारियों के अतिरिक्त कुछ फौजी सवारों को भी साथ लेकर तुम स्वयं पहना पहाड़ी के नीचे हम लोगों से मिलो।

तुम्हारा दोस्त–

तेजसिंह।

इस चीठी के पढ़ते ही कमला हद्द से ज्यादे खुश हो गई और उसकी आंखों से गर्म गर्म आंसुओं की बूंदें गिरने लगीं गला भर आया और कुछ देर तक बोलने या कुछ पूछने की सामर्थ्य न रही। इसके बाद अपने को सम्हाल के उसने कहा

कमला–यह चीठी आपको कब मिली ? आप अभी तक गए क्यों नहीं ?

ज्योतिषी–यह चीठी अभी मुझे मिली है मैं तेजसिंह के लिखे बमूजिब इन्तजाम करने का हुक्म देकर तुम्हारे पास खबर करने के लिए आया हूं और अभी चला जाऊंगा।

कमला–आपने बहुत अच्छा किया मैं भी उनसे मिलने के लिए ऐसे समय अवश्य चलूंगी मगर मेरे लिए भी पालकी का बन्दोबस्त कर दीजिए क्योंकि ऐसे समय में दूसरे ढंग पर वहां जाने से मालिक की इज्जत में बट्टा लगेगा।

ज्योतिषी–बेशक ऐसा ही है पहिले ही से सोच चुका था कि तुम हमारे साथ चले बिना न रहोगी इसलिए तुम्हारे वास्ते भी इन्तजाम कर चुका हूं पालकी ड्योढ़ी पर आ चुकी होगी बस तैयार हो जाओ देर मत करो।

कमला झटपट तैयार हो गई और ज्योतिषीजी ने भी तेजसिंह के लिखे बमूजिब सब तैयारी बात की बात में कर ली। घण्टे भर बाद रोहतासगढ़ पहाड़ के नीचे पांच सौ सवार चौंदा सोने के काम की पालकियों को बीच में लिए हुए पहना पहाड़ी की तरफ जाते हुए दिखाई दिए और पहर भर के बाद वहां जा पहुंचे जहां तेजसिंह किशोरी इत्यादि को एक गुफा के अन्दर बैठा कर ऐयारों तथा बलभद्रसिंह को साथ लिए ज्योतिषीजी का इन्तजार कर रहे थे। तेजसिंह तथा ऐयार लोग खुशी खुशी ज्योतिषीजी से मिले। कमला की पालकी उस गुफा के पास पहुंचाई गई जिसमें किशोरी और कमलिनी इत्यादि थीं और कहार सब वहां से अलग कर दिए गये।

वह गुफा जिसमें कमलिनी और किशोरी इत्यादि थीं ऐसी तंग न थी कि उनको किसी तरह की तकलीफ होती बल्कि वह एक आड़ की जगह में और बहुत ही लम्बी चौड़ी थी और उसमें बादशाही चद्दबो पहुंचता था। तारासिंह की जुबानी जब किशोरी ने यह सुना कि कमला भी आई है तो उससे मिलने के लिए बेचैन हो गई और जब तक वह पालकी के अन्दर से

निकले तब तक किशोरी स्वयं खोह के बाहर निकल आई। कमला ने किशोरी को देखा तो बड़े जोश और मुहब्बत से लपक के किशोरी के गले से लिपट गई और किशोरी ने भी बड़े प्रेम से उसे दबा लिया तथा दोनों की आखों से आसुओं की बूंदें टपाटप गिरने लगीं। कमलिनी ने दोनों को अलग किया और कमला को अपने गले से लगा लिया, इसके बाद कामिनी लाडिली और तारा भी बारी बारी कमला से मिलीं। उस समय सभों के चेहरे खुशी से दमक रहे थे और सभों के दिल की कली खिली जाती थी। किशोरी कामिनी तारा और लाडिली को मालूम हो चुका था कि कमला भूतनाथ की लडकी है और वे सब भूतनाथ से बहुत रंज थीं मगर कमला की तरफ से किसी का दिल मैला न था बल्कि कमला को देखने के साथ ही उन पाचों के दिल में ऐसी मुहब्बत पैदा हो गई जैसी सच्चे प्रेमियों के दिल में हुआ करती है। मगर अफसोस कि अभी तक कमला को इस बात की खबर नहीं हुई कि भूतनाथ उसका बाप है और उसने बड़े बड़े कसूर किये है।

किशोरी कमलिनी और कमला इत्यादि की मुहब्बत भरी बातचीत कदापि पूरी न होती यदि तेजसिंह वहा पहुच कर यह न कहते कि अब तुम लोगों को यहा से बहुत जल्द चल देना चाहिये जिससे सूर्यास्त के पहिले ही रोहतासगढ़ पहुच जाय। पालकिया गुफा के आगे रक्खी गईं कमलिनी किशोरी कामिनी कमला लाडिली और तारा उन पर सवार हुईं। कहारों को आकर पालकी उठाने का हुक्म दिया गया और खुशी खुशी सब कोई रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए।

सूर्य अस्त होने के पहिले ही सवारी रोहतासगढ़ किले के अन्दर दाखिल हो गई। किले का जनाना भाग आज फिर रौनक हो गया मगर जनाने महल में पैर रखते ही एक दफे किशोरी का कलेजा दहल उठा क्योंकि इस समय उसने पुन अपने को उसी मकान में पाया जिसमें कुछ दिन पहिले बेबसी की अवस्था में रह कर तरह तरह की तकलीफें उठा चुकी थी और इसके साथ ही साथ उसको लाली और कुन्दन की वे बातें याद आ गईं। केवल किशोरी ही को नहीं बल्कि लाडिली को भी वह जमाना याद आ गया क्योंकि यही लाडिली लाली बन कर उन दिनों इस महल में रहती थी जिन दिनों किशोरी यहा मुसीबत के दिन काट रही थी। लाडिली तो किशोरी को पहिचानती थी मगर किशोरी को इस बात का गुमान भी न था कि वह लाली वास्तव में यही लाडिली थी जो आज हमारे महल में दाखिल है।

महल में पैर रखने के साथ ही किशोरी को वे पुरानी बातें याद आ गईं और इस सबब से उसके खूबसूरत चेहरे पर थोडी देर के लिये उदासी छा गई साथ ही पुरानी बात याद आ जाने के कारण लाडिली की निगाह भी किशोरी के चेहरे पर जा पडी। वह उसकी अवस्था को देख कर समझ गई कि इस समय इसे पुरानी बातें याद आ गई है। उन्हीं बातों को खुद भी याद करके इस समय अपने को और किशोरी को मालिक की तरह या दूसरे ढंग से इस मकान में आए देख के और किशोरी के चेहरे पर ध्यान पडने से लाडिली को हसी आ गई। उसने चाहा कि हसी रोके परन्तु रोक न सकी और खिलखिला कर हस पडी जिससे किशोरी को ताज्जुब हुआ और उसने लाडिली से पूछा ?

किशोरी–क्यों तुम्हें हसी किस बात पर आई ?

लाडिली–यो ही हसी आ गई।

किशोरी–ऐसा नहीं है इसमें जरूर कोई भेद है क्योंकि कई दिनों से हमारा तुम्हारा साथ है पर इस बीच में व्यर्थ हसते हुए हमने तुम्हें कभी नही देखा। बताओ तो सही क्या बात है ?

लाडिली–तुम्हें विचित्र ढंग से घबडाए हुए चारों तरफ देखते देख मुझे हसी आ गई।

किशोरी–केवल यही बात नहीं है जरूर कोई दूसरा सबब भी इसके सौथ है।

कमलिनी–मै समझ गई बहिन मुझसे पूछो, मैं बताऊंगी ! बेशक लाडिली के हसने का दूसरा सबब है जिसे वह शर्म के मारे नहीं कहा चाहती।

किशोरी–(कमलिनी की कलाई पकड कर) अच्छा बहिन तुम ही बताओ कि इसका क्या सबब है ?

कमलिनी–इसके हसने का सबब यही है कि जिन दिनों तुम इस मकान में बेबसी और मुसीबत के दिन काट रही थीं उन दिनों यह लाडिली भी यहा रहती थी और इससे तुमसे बहुत मेल मिलाप था।

किशोरी– (ताज्जुब से) तुम भी हसी करती हो। क्या मै ऐसी बेवकूफ हूं जो महीनों तक इस महल में लाडिली मेरे साथ रहे और मैं उसे पहिचान न सकू।

कमलिनी–(हस कर) यह तो मै नहीं न कहती कि उन दिनों इस महल में लाडिली अपनी असली सूरत में थी ! मेरा मतलब लाली से है वास्तव में यह लाडिली उन दिनों लाली बन कर यहा रहती थी।

किशोरी–(ताज्जुब से घबरा कर और लाडिली का हाथ पकड कर) है –क्या वास्तव में तुम ही थी !

लाडिली–इसके जवाब में हा कहते मुझे शर्म मालूम होती है। अफसोस उन दिनों मेरी नीयत आज की तरह साफ

न थी क्योंकि मैं दुष्टा मायारानी के आधीन थी। उसे मैं अपनी बडी बहिन समझती थी और उसी की आज्ञानुसार एक काम के लिए यहा आई थी।

किशोरी–ओफ ओह ! तब ता आज वडे वडे भेदों का पता चलेगा जिन्हें याद करके मेरा जी बेचैन हो जाता था और इस सवव से मै और परशान थी कि उन भेदों का असल मतलब कुल मालूम न होता था अब ता मै बहुत कुछ तुमसे पूछूगी और तुम्हें वतानो पडगा।

कमलिनी–हा हा तुम्हें सव कुछ मालूम हो जायगा मगर घबराती क्यों हो इस समय हम लागों का केवल यही काम है कि ईश्वर को धन्यवाद दें जिसकी कृपा से हम लोग हजारों दु ख उठा कर ऐसी जगह आ पहुँचे हैं जहा हमारे दुश्मन रहत थे और जिसे अव हम अपना घर समझते हैं।

लाडिली–(किशोरी से) बेशक ऐसा ही है केवल एक यही वात नहीं और भी कइ अदभुत बातें तुम्हें मालूम होगी। जरा सब्र करो सफर की हरारत मिटाओ और आराम करो जल्दी क्यों करती हो !

छठवां बयान

रात का समय है और चॉदनी छिटकी हुई है। आसमान पर कहीं कहीं छोटे वादलों के टुकडे दौडते हुए दिखाई द रह है जिसमें कभी कभी चन्द्रमा छिपता और फिर तजी क साथ निकल आता है। इस समय रोहतासगढ किले के चारों तरफ की मनभावन छटा बहुत ही भली मालूम पडती है। महल की छत पर किशोरी कामिनी कमलिनी लाडिली लक्ष्मीदेवी और कमला टहलती हुइ चारो तरफ की कैफियत देख रही हैं। इस समय की शाभा छटा या प्राकृतिक अवस्था जो कुछ भी कहे उन सभों क दिल पर जुदे ढग का असर कर रही है। कमलिनी अपने ध्यान में डूबी हुई है लक्ष्मीदवी कुछ और ही सोच रही है लाडिली किसी दूसर ही सभव असभव के विचार में पडी है किशोरी और कामिनी अलग ही मन क लडडू वना रही है। मगर कमला के दिल का कोई ठिकाना नहीं। उसने जब से यह सुन लिया है कि भूतनाथ गिरफ्तार करक रोहतासगढ के कैदखाने में डाल दिया गया तब से वह तरह तरह की वातें सोच रही है। भूतनाथ वास्तव में कौन है ? उसने क्या कसूर किया ? वीरन्द्रसिह के एयार लोग उससे खुश थ–फिर यकायक रज क्यों हो गए ? और यह तारा कभी-कभी लक्ष्मीदेवी क नाम से क्यों पुकारी जाती है ? कमलिनी तारा का अदब क्यों करने लग गई ? इत्यादि बातों को जानने के लिए उसका जी बेचैन हो रहा है मगर अभी तक किसी ने इन बातों का जिक्र उससे न किया है। हा इस समय इन्ही विषयों पर वात करने का वादा है अस्तु कमला इसी बात का मौका ढूढ रही है कि ये सब एक ठिकाने बैठ जाय तो बातों का सिलसिला छेडा जाय।

घण्टे भर तक टहल टहल कर चारों तरफ देखने के बाद सबकी सब एक ठिकाने फर्श पर बैठ गई और कमला ने बातचीत करना आरम्भ कर दिया।

कमला–(किशोरी से) क्यों बहिन– भूतनाथ तो राजा वीरेन्द्रसिह के ऐयारों के साथ मिल जुल कर काम करता था और सब कोइ उससे खुश थे फिर यकायक यह हो क्या गया कि उसे कैदखाने की गम हवा खानी पडी ?

किशोरी–इसका हाल कमलिनी बहिन से पूछो।

कामिनी–क्योंकि वह इन्ही का ऐयार था और इन्हीं की आज्ञानुसार काम करता था।

कमलिनी–(हस कर) किसी का एयार था या किसी का बाप था इससे क्या मतलव ? जो था सो था–अब न कोई उसे अपना ऐयार बनाना पसन्द करेगा और न कोइ अपना बाप कहना स्वीकार करेगा।

किशोरी–(मुस्कुरा कर) जिस तरह अब तुम मायारानी को अपनी बहिन कहना उचित नहीं समझती।

कमलिनी–नहीं नहीं इस तरह और उस तरह में बडा फर्क है। कम्बख्त मायारानी तो वास्तव में हमारी बहिन है ही नहीं !

कमला–(ताज्जुब से) मायारानी तुम्हारी बहिन नही है ! फिर तुमने मुझसे क्यो कहा था कि मायारानी हमारी बडी बहिन है।

कमलिनी–तव तक मै उसका असल हाल नहीं जानती थी उसी तरह जिस तरह तुम भूतनाथ का असल हाल नहीं जानतीं और जब जान जाओगी तो न मालूम तुम्हारे दिल का क्या हाल होगा। खैर वह सब जो कुछ हो लेकिन भूतनाथ का सच्चा सच्चा हाल कभी न कभी तुम्हें मालूम हो ही जायगा। मगर देखो बहिन दुनिया में कोई किसी के दोष का भागी नहीं हो सकता। जिस तरह ईमानदार बाप बदनीयत लडके के दोष से दोषी नहीं हो सकता उसी तरह धर्मात्मा लडका अपने कपटी कुटिल तथा कुचाली बाप के कामों का उत्तरदाता नहीं हो सकता है। हर एक आदमी अपने किए का फल

आप ही भोगेगा उसके बदले में उसका कोई नातेदार या मित्र दण्ड नहीं पा सकता पर हा बचाव में मदद जरूर कर सकता है इसी के साथ ही साथ यह भी बधी हुई बात है कि अच्छ और बुरे का साथ बहुत दिनों तक निभ नहीं सकता चाहे वह आपुस में दास्त हों या भाई हो या बाप बेटे हों क्योंकि दानों की प्रकृति में भेद रहता है और जब तक दानों की प्रकृति एक या कुछ कुछ मिलती जुलती न हा प्रेम नहीं हा सकता।

कमला–क्षमा करना क्योंकि मैं बीच ही में टोकती हूँ, तब लोग एसा क्यों कहत हैं कि बुरे की सोहबत करने स अच्छा आदमी भी बुरा हो जाता है ?

कमलिनी–ठीक है जहा तक मै समझती हू किसी एक बुरे आदमी की सोहबत में कोई एक भला आदमी बुरा नही हो सकता बल्कि एक बुरा आदमी किसी एक भलेआदमी के साथ से कुछ सुधर सकता है–क्योंकि मन एक एसा शुद्ध पदार्थ है कि यदि वह किसी तरह के दबाव में न पड़ जाय या किसीतरह की जरूरियात उसे मजबूर न करे ना वह बराबर सचाई ही की तरफ ढुलकता रहता है-हॉ यदि काई एक अच्छे चालचलन का आदमी चार पाच या दस बीस बदमाशों की सोहबत में बैठे तो नि सन्देह वह कुचाली हा ही जायगा क्योंकि बहुत से नापाक दिल मिल-जुल कर उस पाक दिल पर जबर्दस्त हो जायग–और सच तो यों है कि सोहबत एक आदमी के सग को नहीं कहत बल्कि कई आदमियों के झुण्ड मे मिल कर बैठने का नाम सोहबत है। हॉं तो मै क्या कह रही थी जब तुमने टोका था–बिल्कुल ही भूल गई ! इसी स कहत है कि बातो के सिलसिले में टोकना अच्छा नहीं होता।

कमला–ठीक है तभी तो मैन पहिले ही क्षमा माग ली थी। खैर जाने दो मैं तुम्हारी बातो का मतलब पा गई कि तुम भूतनाथ को मेरा नातेदार बनाया चाहती हो।

कम–मै क्यों बनाया चाहती हूँ ईश्वर ही ने तुम्हारा नातदार बनाया है खैर मै सब के पहिले तुमसे नानक का हाल कहती हूँ। नानक न अपना हाल स्वय ही तजसिह स कहा था और मैं उस समय छिप कर सुन रही थी इसके बाद और लोगों को भी वह हाल मालूम हुआ।

कमलिनी ने पिछला बहुत सा हाल जो गुजर चुका था वह कह सुनाया और तब तजसिह का पागल बन के मायारानी के बाग में जाना वहा की कैफियत नानक का हाल तदूल की दिल्लगी *भूतनाथ और शेरसिह का रग ढग तथा बाकी का सब हाल भी कहा जिसे बड गौर और आश्चर्य से सब सुनती रही। इस समय कमला के दिल की अजब हालत थी उसकी आखों के सामन उसके लडकपन का जमाना घूम रहा था। वह उस समय की बातों को अच्छी तरह याद कर के साच रही थी जब उसकी मा जीती थी और उसका बाप बहुत दिनों तक गैरहाजिर रहा करता था। अन्त म उसका बाप यकायक गायब हो गया था और किसी अनजान आदमी न उसके मरने की खबर कमला के नाना को पहुचाई थी। उन दिनो कमला क बाप के बारे में तरह तरह की खबरें उड़ रही थी। आखिर जब कमला का चाचा शेरसिंह कमला के घर गया और उसने स्वय कहा कि बेशक कमला का बाप मेरे सामने मरा और मैं ही न उसकी दाह क्रिया की है तब सभों को उसके मरने का विश्वास हुआ था।

कमला–हा ता इस किस्से से साबित हाता है बल्कि मेरा दिल गवाही दता है कि भूतनाथ मेरा रिश्तेदार है।

कमलिनी–बेशक ऐसा ही है।

कमला–ता साफ साफ जल्दी क्यों नही कह दती कि वह मेरा कौन है? यद्यपि मैं समझ गई हूँ तथापि अपने मुँह स कुछ कह नहीं सक्ती।

कमलिनी–अच्छा ता मै कह दती हूँ कि वह तुम्हारा बाप है और नानक तुम्हारा भाइ।

कमला–ता उसने अपने मरने की झूठी खबर क्या मशहूर की थी? नानक के किस्से से ता केवल इतना ही जाना जाता है कि राजा बीरेन्द्रसिह के यहा चोरी करने के कारण उसे एसा करना पडा था।

कमलिनी–पहिले तो मैं भी ऐसा ही समझती थी और भूतनाथ ने भी इसके सिवा और कोई सबब अपने गायब होने का नहीं कहा था मगर अब जो बातें मालूम हुई हैं वे बहुत ही भयानक है और इस याग्य है कि उनका फल भोगने के डर स उसका जहा तक हो अपने का छिपाना उचित ही था। ओफ–भूतनाथ न मुझे बडा धोखा दिया। अगर भूतनाथ के कागजात जो मनोरमा के कब्जे में थ और जा मेरे उद्योग स भूतनाथ का मिल गये थे इस समय मौजूद होते ता बेशक बहुत सी बाता का पता लगता मगर अफसोस–अपनी भूल का दण्ड सिवाय अपने और किसको दूं?

---

*पाठका का मालूम हागा कि कमलिनी ही चडूल बनी हुई थी।

कमला—बहिन चाहे जो हो मैं अपनी मा की नसीहत कदापि भूल नहीं सकती और न उसके विपरीत ही कुछ कर सकती हू। ईश्वर उसकी आत्मा को सुखी करे वह बडी ही नक थी। जिस समय चाचा न मेरे बाप के मरने की खबर पहुँचाई थी उस समय वह बहुत ही बीमार थी। सब लोग तो रोने पीटन लगे मगर उसकी आखों में आँसू की बूद भी दिखाई नहीं दती थी। इसका कारण लोगों ने यही बताया कि रज बहुत ज्यादे है जिससे यह बेसुध हा रही है मगर मेरी मा ने मुझे चुपके से बुला क समझाया और यह भी कहा कि बेटी—मै खूब समझती हूँ कि तेरा बाप मरा नहीं है बल्कि कहीं छिपा बैठा है और वास्तव में उसकी चाल चलन ऐसा नहीं कि वह लागों को अपना मुह दिखाए मगर क्या किया जाय वह मरा पति है किसी क आगे उसकी निन्दा करना मेरा धर्म नहीं है। मैं खूब समझती हूँ कि अबकी दफे की बीमारी से मैं किसी तरह बच नहीं सकती इसीलिए तुझे समझाती हूँ कि यदि कदाचित तरा बाप तुझे मिल जाय तो तू उससे किसी तरह की भलाई की आशा न रखियो हॉं तरा चाचा बहुत ही लायक है वह सिवाय भलाई के तेर साथ बुराई कभी न करेगा मगर मेरी समझ में नहीं आता कि उसने स्वय अपने भाई के मरने की झूठी खबर क्यों उडाई। खैर जो हो मैं तुझे अपने सर की कसम दकर कहती हूँ कि तू अपनी चाल चलन को बहुत सम्भाले रहियो और वही काम कीजियो जिसमें किशोरी का भला हो क्योंकि उसका नमक मेरे और तेर रोम रोम में भीना हुआ है — और साथ ही मुझे इस बात का भी पूरा विश्वास है कि किशारी तुझे जी स चाहती है और वह जोकुछ करगी तेरे लिये अच्छा ही करगी। बाकी रहीकिशोरी की मा और किशोरी का नाना सा किशोरी की मा एक ऐसे आदमी के पाले पडी है कि जिसके मिजाज का कोई ठिकाना नहीं ताज्जुब नहीं कि किसी न किसी दिन उस खुद अपनी जान दे दनी पड जाय और किशारी का नाना पर ले सिरे का क्रोधी है अतएव सिवाय किशोरी के तुझ सहारा दन वाला मुझे कोई दिखाई नहीं दता ।

इतना सुनते किशारी को अपनी मा याद आ गई और उसकी आखों से टपाटप आसू की बूदे गिरने लगीं। कमला का भी यही हाल था। कमलिनी न दानो के ऑसू पोंछ और समझा कर शान्त किया। थाडी देर तक बातचीत बन्द रही इसके बाद फिर शुरू हुई।

कमला—(कमलिनी से) तो क्या मैं सुन सकती हूँ कि मेरे बाप न क्या काम किये हैं जिनके लिये आज उसे यह दिन देखना पडा ?

कम—हा हा मै वह सब हाल तुमस कहूगी मगर कमला तुम यह न समझना कि भूतनाथ के सबब स हम लोगा क दिल में तुम्हारी मुहब्बत कम हो जायगी।

किशोरी—नहीं नहीं ऐसा कदापि नहीं हा सकता मै तुम्हारी नेकियों को कदापि नहीं भूल सकती। तुमने मेरी जान बचाई तुमने दु ख के समय मेरा साथ दिया और तुम्हारे ही भरासे पर मैने जो जी में आया किया।

लक्ष्मी—(कमला से) यद्यपि मेरातुम्हारासाथनही हुआ है परन्तु मै तुम्हारे दिल को इन्ही दो चार दिनों में अच्छी तरह समझ गइ हूँ। नि सन्दह तुम्हारी दोस्ती कदर करने लायक है और इस बात का ता हम लोग अच्छी तरह जानती ह कि तुमन किशारी के लिए बहुत तकलीफ उठाइ इससे ज्यादे कोई किसी के लिय नहीं कर सकता ?

कमला—मैन किशारी क लिए कुछ भी नहीं किया जा कुछ किया किशोरी की मुहब्बत ने किया है। मैं तो केवल

इतना जानती हूँ कि मरी जिन्दगी किशोरी की जिन्दगी के साथ है। यदि वह खुश है तो मै भी खुश हू, इस दु ख है ता मुझे भी रज है। और फिर मै किस लायक हूँ मगर उस समय बेशक मुझे बडा दु ख होगा जब किसी को यह कहते सुनूगी कि 'कमला का बाप दुष्ट था। हाय जिसके साथ मै जान देने के लिये तैयार हूँ उसी के साथ ... बाप बुराइ करें।

कम — नहीं नहीं कमला—तुम्हार बाप ने किशारी के साथ बुराई नहीं की बल्कि उसन हम तीनों बहिनों क साथ बुराई की है जिन्हें तुम थोडे दिन पहिले जानती भी नहीं थी अतएव तुम्हें रज न करना चाहिए फिर मै यह भी उम्मीद करती हू कि राजा बीरेन्द्रसिह भूतनाथ का कसूर माफ कर देंग।

लक्ष्मीदेवी — बहिन इन बातों को जाने भी दा चाहे भूतनाथ ने हमलागों के साथ कैसी ही बुराई क्यों न की हा मगर हम लाग उसे अवश्य माफ करेंगे क्योंकि कमला का किसी तरह उदास नहीं दख सकत। कमला तू मेरी सगी बहिन से बढकर है। जबकि किशारी तुम्हें अपना मानती है ता नि सदेह हम लोग उससे बडकर मानेंगी। सच ता यों है कि आज हम लोग जिन सुखों की आशा कर रहे है वे सब किशारी के चरणों की बदौलत है।

इतना कह कर लक्ष्मीदेवी ने कमला को गले लगा लिया और उसके आसू पोंछे क्योंकि इस समय उसकी आँखों से बेअन्दाज आसू बह रहे थे। किशोरी भी रो रही थी लक्ष्मीदेवी लाडिली और कमलिनी की आखे भी सूखी न थीं। कमलिनी ने सभों को समझाया और बातों का रंग ढंग बदल देने की कोशिश की। थोड़ी देर तक सन्नाटा रहने के बाद सभों ने एक एक करके अपना हाल कहना शुरू किया यहा तक कि आज की तीन पहर रात बातचीत में ही बीत गई और इसके बाद एक नई घटना ने सभों को चौंका दिया।

सातवां बयान

रात पहर भर से कम रह गई थी जब किशोरी कामिनी कमला लक्ष्मीदेवी लाडिली और कमलिनी की बातें पूरी हुई और उन्होंने चाहा कि अब उठ कर नीचे चलें और दो घंटे आराम करें। इस समय महल में बिल्कुल सन्नाटा था। लौंडिया बेफिक्री के साथ खुर्राटे ले रही थीं क्योंकि कमलिनी ने सभों को अपने सामने से विदा कर दिया था और कह दिया था कि बिना बुलाये कोई हम लोगों के पास न आवे।

इस समय ये सब जिस महल में है वह राजमहल के नाम से पुकारा जाता था। महाराज दिग्विजयसिंह की रानी इसी में रहा करती थी। इसके बगल में पीछे की तरफ महल का वह दूसरा भाग था जिसमें किशोरी उन दिनों में रहती थी जब दिग्विजयसिंह की जिन्दगी में जबर्दस्ती इस मकान के अन्दर लाई गई थी और लाली तथा कुन्दा भी किशोरी की हिफाजत के लिये उसी मकान में रहा करती थी जिसका हाल सन्तति तीसरे भाग के आठवें बयान में लिख आये हैं।

पाठक भूले न होंगे कि उसी महल या बाग में (जिसमें पहिले किशोरी रहा करती थी) एक कोने पर वह इमारत थी जिसका दर्वाजा हमेशा बन्द रहता था और जिसकी छत फोडकर किशोरी को साथ लिए लाली उसके अन्दर चली गई थी। यद्यपि महल का यह भाग अलग था मगर राजमहल की छत पर से वह मकान बखूबी दिखाई देता था। किशोरी कमला लाडिली कामिनी लक्ष्मीदेवी और कमलिनी की बात जब समाप्त हुई और वे सब नीचे जाने के इरादे से उठ कर खडी हुई तो यकायक लाडिली की निगाह उस इमारत पर पडी जिसके अन्दर किशोरी को लेकर वह (लाली) चली गई थी। आज भी उस मकान का दर्वाजा उसी तरह बन्द था जैसे दिग्विजयसिंह के समय में बन्द रहा करता था हा पहिले की तरह आज उसके दर्वाजे पर पहरा नहीं पडता था उस मकान की छत जिसमें लाली ने सेंध लगाई थी दुरुस्त कर दी गई थी। बाग में चारों तरफ सन्नाटा था क्योंकि आजकल उसमें कोई रहता न था और यह बात कमलिनी और लाडिली इत्यादि को मालूम थी।

जिस समय लाडिली की निगाह उस मकान की छत पर पडी उसे एक आदमी दिखाई दिया जो बडी मुस्तैदी के साथ चारों तरफ घूम घूम और देख देख कर शायद इस बात की टोह ले रहा था कि कोई आदमी दिखाई तो नहीं देता मगर किशोरी और कामिनी इत्यादि ऐसे ठिकाने थीं कि ये सब चारों तरफ बखूबी देखती मगर इन्हें कोई नहीं देख सकता था क्योंकि जिस मकान की छत पर ये सब थी उसके चारो तरफ पुर्से भर ऊंची कनाती दीवार थी और उसमें बहुत से सूराख देखने और तीर मारने के लायक बने हुए थे और इस समय लाडिली ने भी उस आदमी को ऐसे ही एक सूराख की राह से ही देखा था।

लाडिली ने कमलिनी का हाथ पकड लिया और उस इमारत की तरफ देखने का इशारा किया। कमलिनी ने और इसके बाद एक एक करके सभों ने उस आदमी को देखा और अब वह क्या करेगा यह जानने के लिए सभी की निगाह उसी तरफ अटक गई।

थोडी देर बाद उस छत पर नीचे की तरफ से आती हुई रोशनी दिखाई दी जिससे मालूम हुआ कि उसकी छत इस समय पुन तोडी गई है और नीचे की कोठरी में और भी कई आदमी हैं। रोशनी दिखाई देने के बाद दो आदमी और निकल आये और तीन आदमी उस छत पर दिखाई देने लगे। अब पूरी तरह निश्चय हो गया कि उस मकान की छत तोडी गई है। उन तीनो आदमियों ने बडे गौर से उस तरफ देखा जहा किशोरी कामिनी इत्यादि खडी थीं मगर कुछ दिखाई न दिया इसके बाद उन तीनों ने झुक कर छत के नीचे से एक भारी गठरी निकाली। उसके बाद नीचे से दो आदमी और निकल कर छत पर आ गये तथा अब वहा पाच आदमी दिखाई देने लगे।

कमलिनी ने कमला का हाथ पकड के कहा "बहिन इन शैतानों की कार्रवाई बेशक देखने और जाचने योग्य है ताज्जुब नहीं कि कोई अनूठी बात मालूम हो अस्तु तू जाकर जल्दी से तेजसिंह को इस मामले की खबर कर दे फिर जो कुछ उनके जी में आवेगा करेंगे। इतना सुनते ही कमला तेजसिंह की तरफ चली गई और वे सब फिर उसी तरफ देखने लगीं।

थोडी देर तक वे पॉचों आदमी बैठ कर उस गठरी के साथ न मालूम क्या करते रहे इसके कमन्द के जरिये वह गठरी बाहर की तरफ बाग में उतार दी गई। उसके पीछे वे पाचों आदमी भी बाग में उतर आये और गठरी को लिए हुए बाग के बीचोबीच वाले उस कमरे की तरफ चल गए जिसमें पहिले किशोरी रहा करती थी। उसी समय कमला भी लौट कर आ पहुचा और बोली तेजसिहजी को खबर कर दी गई और वे देवीसिंह वगैरह ऐयारों को साथ लेकर किसी गुप्त बाग में गए हैं।

कमलिनी–मुझे भी वहा जाना उचित है।

किशोरी–क्यों ?

कमलिनी–उस मकान के गुप्त भेद की खबर तेजसिंह को नहीं है कदाचित कोई आवश्यकता पडे।

किशोरी–कोई आवश्यकता न पडेगी बस चुपचाप खडी तमाशा देखो।

लक्ष्मीदेवी–इनमें से अगर एक आदमी को भी तेजसिंह पकड लेंगे तो सब भेद खुल जायगा।

कमलिनी–हा सो तो है।

कमला–मैं समझती हू कि उस मकान के अन्दर और भी कई आदमी होंगे। अगर वे सब गिरफ्तार हो जाते तो बहुत ही अच्छा होता।

कमलिनी–इसी से तो मैं कहती हू कि मुझे वहा जाने दो। मेरे पास तिलिस्मी खजर मौजूद है मैं बहुत कुछ कर गुजरूगी।

किशोरी–नहीं बहिन मैं तुम्हें कदापि न जाने दूगी मुझे डर लगता है तुम्हारे बिना मैं यहा नहीं रह सकती।

कमलिनी–खैर मैं न जाऊगी तुम्हारे ही पास रहूगी।

अब हम बाग के उस हिस्से का हाल लिखते हैं जिसमें वे पाचों आदमी गठरी लिए दिखाई दे चुके हैं।

वे पाचो आदमी गठरी लिए हुए बाग के बीचोबीच वाले उस मकान में पहुचे जिसमें पहिले किशोरी रहती थी जब उस मकान के अन्दर पहुच गये तो उन लोगों ने चकमक से आग झाड मशाल जलाई और गठरी को बधी बधाई जमीन पर छोड कर आपुस में यों बातचीत करने लगे –

एक–अच्छा अब क्या करना चाहिए ?

दूसरा–गठरी को इसी जगह छोड कर राजमहल में पहुचना और अपना काम करना चाहिये।

तीसरा–नहीं नहीं पहिले इस गठरी को ऐसी जगह रखना या पहुँचाना चाहिये जिससे सवेरा होते ही किसी न किसी की निगाह इस पर अवश्य पडे।

चौथा–बाग के इस हिस्से में कोई रहता तो है नहीं फिर किसी की निगाह इस पर क्यों पडने लगी ?

पाचवा–अगर ऐसा है तो इसे भी अपने साथ ही राजमहल में ले चलना।

पहिला–अजब आदमी हो राजमहल में अपना जाना तो कठिन हो रहा है तुम कहते हो गठरी भी लेते चलो।

दूसरा–फिर इस बाग मे इस गठरी का रखना बेकार ही है जहा कोई आदमी रहता ही नहीं।

चौथा–बस अब इसी हुज्जत में रात बिता दो। अभी पहिले अपना असल काम तो कर लो जिसके लिये आये हो। चलो पहिले तहखाना खोलो।

दूसरा–ठीक है मैं भी यही उचित समझता हू।

इतना कहकर वह खडा हो गया और अपने साथियों को भी उठने का इशारा किया।

आठवां बयान

उन लोगों ने वधी वधाई गठरी को उसी जगह छोड दियाऔरवीच वाले कमरे के दर्वाजे पर पहुचे जिसमें ताला बन्द था,एक आदमी ने लोहे की सलाई के सहारे ताला खोला और इसके वाद सव के सव उस कमरे क अन्दर जा पहुचे। यह कमरा इस समय भी हर तरह स सजा और अमीरों क रहने लायक वना हुआ था। पहिले तो उन आदमियों ने मशाल की रोशनी में वहा की हरएक चीज को अच्छी तरह गौर से देखा और इसके वाद राभी ने मिल कर वहाँ का फर्श जो जमीन पर विछा हुआ था उठा डाला। यहाँ की जमीन सगमर्मर के चौखूट पत्थर के टुकड़ों से वनी हुइ थी जिसे देख एक ने कहा–

एक–अगर हम लोगों का अन्दाज ठीक है और वास्तव में इसी कमर का पता हम लोगों को दिया गया है तो यहाँ की जमीन में सूराख करना कोई वडी वात नहीं है दो चार पत्थर उखाड़न से सहज ही में काम चल जायेगा।

दूसरा–वेशक ऐसा ही है मगर मै समझता हू कि थोड़ी दर रुक कर वावाजी की राह देखना उचित होगा।

तीसरा–अजी अपना काम करो इस तरह रुकारुकी में रान वीत जायेगी तो मुफ्त में मार पड़ेंगे।

पहिला–मारे क्या पडेंगे ? यहा है ही कौन जो हम लागों का गिरफ्तार करेगा।

तीसरा–(कुछ रुक कर और वाहर की तरफ कान लगा कर) किसी क आने की आहट मालूम होती है।

चौथा–(ध्यान देकर) ठीक ता है मगर सिवाय वावाजी के और होगा ही कौन ?

तीसरा–लीजिए आ ही तो गए।

चौथा–हमने कहा था कि वावाजी होंगे।

इतने ही में दो आदमियों को साथ लिये वावाजी भी वहाँ आ पहुचे वही वावाजी जो मायारानी के तिलिस्मी दारोगा थ। उसक साथ में एक तो मायारानी थी और दूसरा आदमी वही शेरअलीखा पटने का सूवेदार था जिसकी लड़की गौहर का हाल ऊपर के किसी हाल में लिखा जा चुका है। मायारानी इस समय अपने चेहरे पर नकाव डाले हुए थी मगर उसकी पोशाक जनाने ढग की और उसी शानशौकत की थी जैसीकि उन दिनों पहिरा करती थीं जव तिलिस्म की रानी कहलाने का उसे हक था और अपने ऊपर किसी तरह की आफत आने का शानागुमान भी न था।

हम इस जगह थाडा सा हाल तेजसिह का लिख दना भी उचित समझते है। कमला की जुवानी समाचार पाकर तेजसिह तुरन्त तैयार हो गये और तारासिह वगैरह एयारों का साथ लिये हुए महल के उस हिस्से में पहुँचे जिसमें ऊपर लिखी कार्रवाई हो रही थी। उन पाचों वदमाशों का कमर के अन्दर जाते हुए तेजसिह ने देख लिया था इसलिए वे छिपते हुए पिछली राह से कमरे की छत पर चढ गये। छत के वीचोवीच में एक रोशनदान जमीन से दो हाथ ऊचा बना हुआ था जिसके जरिये कमरे के अन्दर रोशनी और कुछ धूप भी पहुँचा करती थी। उस रोशनदान में चारों तरफ विल्लौरी शीशे इस ढग के लगे हुए थे जिन्हें जव चाहें खोल और बन्द कर सकते थे'तारासिह तो हिफाजत के लिए हाथ में नगी तलवार लिए सीढी पर खड़े हो गए और तेजसिह देवीसिह तथा भैरोसिह उसी राशनदान की राह से कमरे के अन्दर का हाल देखन और उन शैतानों की वातचीत सुनने लगे।

अव हम फिर कमरे के अन्दर का हाल लिखते है। वावाजी ने आने के साथ ही उन पाचों आदमियों की तरफ देख के कहा–

वावा–अभी तक तुम लोग सोच विचार में ही पडे हो ?

एक–अनजान जगह में हम लोग कौन काम जल्दी के साथ कर सकते है ? खैर अव यह वताइये कि यही जमीन खोदी जायगी या कोई और ?

वावा–हा यही जमीन खोदी जायगी वस जल्दी करो, रात वहुत कम है। सिर्फ आठ दस पत्थर उखाड डालो दो हाथ से ज्यादे मोटी छत नहीं है।

दूसरा–वात की वात में सव काम ठीक किये देता हू, कोई हर्ज नहीं।

इतना कह कर उन लोगों ने जमीन खोदने में हाथ लगा दिया और बावाजी मायारानी तथा शेरअलीखा में यों वात्चीत होने लगी –

माया–जिस राह से हमलोग आये है उसी राह से अपने फौजी सिपाहियों को भी ले आते तो क्या हर्ज था ?

वावा–तुम तो वाज दफे वच्चों कीसी वात करती हो। एक तो वह तिलिस्मी रास्ता इस लायक नहीं कि उस राह स हम फौजी सैकडों आदमियों को ला सकें क्या जाने किससे क्या गलती हो जाय या कैसी आफत आ पडे सिवाय

इसके सैकडों बल्कि हजारों आदमियों पर तिलिस्मी गुप्त भेदों का प्रकट कर देना क्या मामूली बात है ? अगर ऐसा होता तो बुजुर्ग लोग जिन्होंने इस किले और तिलिस्म को तैयार किया है यह रास्ता क्यों बनाते जिसे इस समय हमलोग खोद रहे हैं ? इस भी जाने दो सबसे भारी बात साचन की यह है कि इस तिलिस्मी रास्ते से जिधर से हम लोग आये हैं हमारी फौज इस किले में तब पहुच सकती है जब वह इस पहाड के ऊपर चढ आये मगर यह कब हो सकता है कि हजारों आदमी इस पहाड पर चढ आवें और किले वालों को खबर तक न हा। ऐसा होना बिल्कुल असम्भव है मगर जब हम इस रास्ते का खोल देंग तो हमारे फौजी सिपाहियों का पहाड पर चढने की जरूरत न रहेगी क्योंकि इसका दूसरा मुहाना जस नदी क किनार पडता है जा इस पहाड के नीचे कुछ हट कर बहती है।

माया–ता क्या यहाँ से उस नदी तक जाने के लिए पहाड क अन्दर ही अन्दर सीढियाँ बनी हुई हैं ?

बाबा–बशक ऐसा ही है। रास्ते क बार में इस किले की अवस्था ठीक देवगढ *की तरह समझना चाहिये। मै जहाँ तक ख्याल करता हू यह राहतासगढ का किला और वह देवगढ का किला एक ही आदमी का बनवाया हुआ है।

माया–ता क्या फौज के सिपाही भीतर ही भीतर इस छत को नही ताड सकते थे जो दूसरी राह से आकर हम लोगों को यह काम करना पडा।

बाबा–नहीं इसका एक खास सबब और भी है जो इस समय छत के नीचे जाने ही से तुम्हें मालूम हो जायगा। (शेरअलीखाँ की तरफ देख के) मै समझता हू आपकी फौज उस नदी के किनारे नियत स्थान पर पहुच गई होगी ?

शेर– जरूर पहुँच गई होगी केवल हमलोगों के जाने की देर है मगर अफसोस यही है कि अब रात बहुत कम रह गई है।

बाबा– कोई हर्ज नहीं आजकल इस बाग में बिल्कुल सन्नाटा रहता है कोई झाँकने के लिए भी नही आता अगर पहर दिन चढे तक भी हमारी फौज यहाँ तक आ पहुँचे ता किसी को पता न लगेगा और बातकी बात में यह किला अपन कब्जे में आ जायेगा। बडी खुशी की बात ता यह है कि आजकल किशोरी कामिनी लाडिली और तारा भी इस किले में मौजूद हे।

इतने ही में बाहर की तरफ स आवाज आई 'तारा मत कहा लक्ष्मीदेवी कहो क्योंकि अब तारा और लक्ष्मीदेवी में कोई भद नही रहा।

आश्चर्य स बाबाजी मायारानी शरअलीखाँ और उन पाँचों आदमियों की निगाह जो जमीन खोदने में लगे हुए थे दर्वाजे की तरफ घूम गई और उन्होंन एक विचित्र आदमी को कमरे के अन्दर आते देखा। हमारे ऐयार लोग भी जो छत के ऊपर रोशनदान की राह से झाँककर दख रह थ ताज्जुब के साथ उस आदमी की तरफ देखने लगे।

इस विचित्र आदमी का तमाम बदन बेशकीमत स्याह पोशाक और फौलादी जेरे पोजे और जाली इत्यादि से ढका हुआ था केवल चेहरे का हिस्सा फौलादी जालीदार बारीक नकाब के अन्दर से झलक रहा था मगर वह इतना ज्यादे काला था और लाल तथा बडी बडी आँखें ऐसी चमक रही थीं कि देखने से डर मालूम होता था। यह आदमी बहुत ही ताकतवर है इसका अन्दाज तो केवल इतने ही से मिल सकता था कि उसके बदन पर कम स कम दो मन लोहे का

---

*'देवगढ' का किला हैदराबाद (दक्षिण) से लगभग तीन सौ मील के उत्तर और पश्चिम के कोने में है। यह किला बहुत ऊची पहाडी के ऊपर विचित्रढग का बना हुआ है जिसके देखने से आश्चर्य होता है पहाड का बहुत बडा भाग छील छाल कर दीवार की जगह कायम किया गया है। पहाड के चारो तरफ एक खाई है उसके बाद तेहरी दीवार है अन्दर जाने का रास्ता किसी तरफ से मालूम नही होता। शहर उन तीनों दीवारों के बाहर बसा हुआ है और शहर के शहरपनाह की बडी मजबूत दीवार है। पहाड काट कर अन्दर किले मे जाने के लिये उसी तरह की सीढियाँ बनी हुई हैं जैसे किसी बुर्ज या धरहरे के ऊपर चढने के लिए होती हैं उस राहसे जानकार आदमी का भी बिना मशाल की रोशनी के सीढियाँ चढ करकिले केअन्दर जाना बहुत मुश्किल है। किले के अन्दर जहा वह रास्ता समाप्त हुआ है उसके मुँह पर भारी लोहे का तवा इसलिए रक्खा हुआ है कि यदि कदाचित दुश्मन इस रास्ते से घुस भी आवे तो तवे के ऊपर सैकडों मन लकडियाँ रख कर आग जला दी जाय जिसमें उसकी गर्मी से दुश्मन अन्दर ही अन्दर जल मरें। इस किले में पानी के कई हौज हैं और एक सौ साठ फीट ऊचा एक बुर्ज भी है जिस पर से दूर दूर तक की छटा दिखाई देती है। यह किला अभी तक देखने लायक है देखने से अक्ल दग होती है मुमकिन नहीं कि कोई इसे लडकर फतह कर सके। चौदहवीं सदी में दिल्ली का बादशाह 'मुहम्मद तुगलक दिल्ली उजाड के वहाँ की रिआया को इसी देवगढ में बसाने के लिए ले गया था और देवगढ का नाम दौलताबाद रख कर इसे अपनी राजधानी कायम किया था परन्तु अन्त में उसे पुन लौटकर आना पडा। देवगढ के इर्दगिर्द में कई स्थान अब भी देखने योग्य हैं जैसे कि एलोरा की गुफा इत्यादि जिसका आनन्द देशाटन करने वालों को ही मिल सकता है।

सामान था और उसकी चाल बहुत ही गम्भीर तथा निडर बहादुरों की सी थी। ढाल तलवार और एक खञ्जर के सिवाय और कोई हर्बा उसके पास दिखाई न देता था।

इस विचित्र आदमी के आते ही ताज्जुब के साथ ही साथ डर भी सभों के दिल पर छा गया और बाबाजी ने घबराई आवाज में इस आदमी से पूछा आप कौन हैं ?

आदमी—हम जिन्न हैं।

बाबा—मैं नहीं समझता कि जिन्न किसे कहते हैं।

आदमी—जिन्न उसका कहते हैं जो सब जगह पहुँच सके भूत भविष्य वर्तमान तीनों का हाल जाने काई हर्बा उस पर असर न कर और जो किसी के मारने से न मरे।

बाबा—(ताज्जुब से) तो क्या ये सब गुण आप में है ?

जिन्न—बेशक !

बाबा—मैं कैसे समझू !

जिन्न—आजमा के देख लो !!

बाबाजी तो उस जिन्न से बातें कर रहे थे मगर मायारानी और शेरअलीखाँ का डर के मारे कलेजा सूख रहा था। मायारानी तो औरत ही थी मगर शेरअलीखाँ बहादुर होकर भी डरके मारे काँप रहा था इसका सबब शायद यह हो कि मुसलमान लोग जिन्न का होना वास्तविक और सच मानते हैं। जो हो मगर बाबाजी अर्थात दारोगा को जिन्न की बात का विश्वास नहीं हो रहा था फिर भी जिस समय उसने कहा कि आजमा के देख लो तो उस समय दारोगा भी बेचैन हो गया और सोचने लगा कि इसे किस तरह आजमावें ?

जिन्न—शायद तुम सोच रहे हो कि इस जिन्न को किस तरह आजमावें क्योंकि तुम्हारे पास कोई जरिया आजमाने का नही है अच्छा हम खुद अपनी बात का सबूत देते हैं लो सम्हल जाओ !

इतना कहकर उस जिन्न ने अपना बदन झाडा और अगडाई ली इसके बाद ही उसके तमाम बदन में से आग की चिनगारिया निकलने लगीं और इतनी ज्यादा चमक पैदा हुई कि सभों की आखें चौंधिआने लगीं। यह चिनगारिया और चमक उस फौलादी जेर्र और जाल में से निकल रही थी जो वह अपने बदन में पहिरे हुए था। यह हाल देख कर मायारानी शेरअलीखा और पाचों आदमी घबडा गये मगर दारोगा को फिर भी विश्वास न हुआ तिलिस्मी खजर की तरह उसके जर्र और जाल में भी किसी प्रकार का तिलिस्मी असर ख्याल करके उसने अपने दिल को समझा लिया और कहा।

दारोगा—खैर इससे कोई मतलब नहीं आप यह कहिये कि यहा क्यों आये हैं ?

जिन्न—(चिनगारियों और चमक को बन्द कर के) तुम लोगों की हरमजदगी का तमाशा देखने और तुम लोगों के कामों में विघ्न डालने के लिए।

दारोगा—यह तो मैं खूब जानता हू कि तुम न तो जिन्न हो और न शैतान ही बल्कि कोई धूर्त ऐयार हो यह सामान जो तुम्हारे बदन पर है तिलिस्मी है और सहज में तुम्हें कोई गिरफ्तार नहीं कर सकता मगर साथ ही इसके यह भी समझ रक्खो कि मैं तिलिस्म का दारोगा हू और चालीस वर्ष तक तिलिस्म का इन्तजाम करता रहा हू।

जिन्न—(जोर से हस कर) बेईमान हरामखोर उल्लू का पट्ठा कहीं का !

दारोगा—(गुस्से से) बस जुबान सम्हाल कर बातें करो।

जिन्न—अबे जा दूर हो सामने से। चालीस वर्ष तक तिलिस्म का इन्तजाम करता रहा !ऐसे ऐसे बेईमान और मालिक की जान लेने वाले भी अगर तिलिस्मी कारखाने को जानने की डींग हाँकें तो बस हो चुका। बस अब बेहतरी इसी में है कि तुम यहाँ से चले जाओ और जो किया चाहते है उसका ध्यान छोडो नहीं तो अच्छा न होगा।

इतना कह कर उसने शेरअलीखाँ मायारानी और उन पाचों आदमियों की तरफ देखा जो इस मकान में पहिले आये थे।

दारोगा ने क्षण भर तो कुछ सोचा और फिर शेरअलीखा की तरफ देख के बोला, "क्या एक अदना ऐयार मक्कारी करके हम लोगों का बना बनाया खेल चौपट कर देगा ? देख क्या रहे हो !मारो इस कम्बख्त को बचकर जाने न पावे।

शेरअलीखा पहिले तो कुछ सहमा हुआ था मगर दारोगा की बातचीत ने उसे निडर कर दिया और जिन्न का खयाल छोड उसने भी कुछ कुछ यकीन कर लिया कि यह कोई ऐयार है। आखिर उसने म्यान से तलवार निकाल ली और उन पाचों आदमियों की तरफ जो जमीन खोदने के लिए आये थे कुछ इशारा करके जिन्न के ऊपर हमला किया। जिन्न ने

इसकी कुछ भी परवाह न की और बड़े गभीर भाव से चुप खडा रहा तथा शेरअलीखा के हमले को बर्दाश्त कर गया मगर शेरअलीखा के हमले का नतीजा कुछ भी न निकला क्योंकि उसकी तलवारजिन्न के फौलादी जेर्र (कवच) पर वडे जोर से बैठी और टूट कर झन्नाटे की आवाज देती हुई जमीन पर गिर पडी। इसके साथ ही उन पाचों आदमियों ने भी जिन्न पर हमला किया मगर जिन्न ने इसकी भी कुछ परवाह न की बल्कि शेरअलीखा के गले में हाथ डाल तथा पैर की आड लगा कर ऐसा झटका दिया कि वह किसी तरह सम्हल न सका और जमीन पर गिर पडा। जिन्न उसकी छाती पर सवार हो गया और जोर से बोला 'खबरदार मुझ पर कोई हमला न करे। कोई मेरी तरफ बढा और मैंने शेरअलीखा का सरकाटकर अलग किया।

मालूम होता है कि वे पाचों आदमी शेरअलीखा के ही नौकर थे क्योंकि उसी के इशारे से जिन्न पर हमला करने के लिए तैयार हो गये थे और जब उसी को जिन्न के नीचे मजबूर देखा तो यह सोचकर कि कदाचित् हमलोगों के हमला करने से नाराज हाकर जिन्न उसका सर काट ही न ले हमला करने से रुक गये और पीछे हट कर ताज्जुब की निगाहों स उस विचित्र व्यक्ति को देखने लगे जिसने अपना नाम जिन्न रक्खा था साथ ही इसके डर और आश्चर्य ने मायारानी और दारोगा के पैर भी जमीन के साथ चिपका दिये।

जब हमला करने वाले अलग हो गये तो जिन्न ने नर्मी के साथ शेरअलीखा से कहा जो उसके नीचे दबा हुआ मजबूर पडा था और जीवन की आशा छोड चुका था–

जिन्न–मुझे आपसे किसी तरह की दुश्मनी नहीं और न मै आपकी जान ही लिया चाहताहूं, सिर्फ दो बात आपसे पूछा चाहता हू लेकिन अगर इसमें किसी तरह के हीले और हुज्जत को जगह मिलेगी तो लाचार रहम भी न कर सकूँगा।

शेर–वे कौन सी दो बातें हैं।

जिन्न–एक तो जा कुछ मै आपस पूछू उसका जवाब सच सच दीजिये।

शेरअलीखा ने सिर हिला दिया मानों स्वीकार किया।

जिन्न–दूसर्रा बात मैं अपने सवालों के अन्त में कहूगा।

शेर–बहुत अच्छा इन्हें भी पूछ डालिये ?

जिन्न–आपने इस कम्बख्त 'मुन्दर का साथ क्यों दिया जिसने अपने को मायारानी के नाम से मशहूर कर रक्खा है।

'मुन्दर' के शब्द में जादू का असर था जिसने मायारानी और दारोगा के कलेजे को दहला दिया। यह एक ऐसी गुप्त और भेद की बात थी जिसके सुनने के लिये दोनों तैयार न थे और न यहाँ सुनने की उन दोनों को आशा ही थी।

शेर–(ताज्जुब से) मुन्दर !

जिन्न–हा मुन्दर आप यह न समझिये कि यह आपके दोस्त बलभदसिह की लड़की है।

शेर–तो क्या यह हमारे दोस्त के दुश्मन हेलासिह की लडकी मुन्दर है ?

जिन्न–जी हा।

शेर–(जोश के साथ) बस आप मेहरबानी करके मुझे छोड़ दीजिए। अगर आप बहादुर हैं और आपको बहादुरी का दावा है तो मुझे छोडिये मै कसम खाकर कहता हू कि अगर आपकी बात सच निकली तो आपकी गुलामी अपनी इज्जत का सबब समझूगा।

जिन्न तुरन्त उसकी छाती पर से उठ कर अलग खड़ा हो गया और मायारानी तथा दारोगा की सूरत गौर से देखने लगा जिनके चेहरे का रग गिरगिट की तरह बदल रहा था।

शेर अलीखाँ उठ कर खडा हो गया और गुस्से भरी आँखों से मायारानी की तरफ देखकर बोला 'इस बहादुर ने (जिन्न की तरफ इशारा करके) जो कुछ कहा क्या वह ठीक है ?

माया–झूठ बिल्कुल झूठ !

जिन्न–शायद मुन्दर को इस बात की खबर नहीं कि असली मायारानी अर्थात् लक्ष्मीदेवी का बाप प्रकट हो गया और बीरेन्दसिह के ऐयारों के सामने ही वह अपनी लडकी लक्ष्मीदेवी से मिला जो तारा के नाम से कमलिनी के मकान में इस तरह रहती थी कि कमलिनी को भी अब तक उसका हाल मालूम न होने पाया था और इस समय बलभदसिह और लक्ष्मीदेवी इस रोहतासगढ़ किले के अन्दर मौजूद भी है। (शेरअलीखा से) मै समझता हू कि तुम उनसे मिलना खुशी से पसन्द करोगे और मुलाकात होने पर सच झूठ में किसी तरह का शक भी न रहेगा अच्छा अब मै जाता हू, तुम जो

मुनासिब समझो करो।'

शेर–सुनिये वह दूसरी बात तो आपने कही ही नहीं।

जिन्न–अब इस समय उसके कहने की काई जरूरत नहीं मालूम पडती है फिर देखा जायेगा।

इतना कह जिन्न तो वहाँ से रवाना हो गया और इन सभों को परेशानी की हालत में छोड़ गया। मायारानी और दारोगा की इस समय अजब हालत थी। मौत की भयानक सूरत उनकी आँखों के सामने दिखाई दे रही थी, तमाम बदन सनसना रहा था सर में चक्कर आ रहे थे और पैरों में इतनी कमजोरी आ गई थी कि खडा रहना मुश्किल हो गया था यहाँ तककि दोनों जमीन पर बैठ गये और अपनी बदकिस्मती का इन्तजार करने लगे।

जिन्न के चले जाने के बाद शेरअलीखाँ ने मायारानी की तरफ देखके कहा–

शेर–तूने तो केवल एक ही कलक का टीका अपने माथे पर दिखाया था जिस पर मैंने इसलिये विशेष ध्यान नही दिया कि तू मेरे दोस्त की लडकी है मगर अब तो एक ऐसी बात मालूम हुई है जिसने मुझे तडपा दिया मेरे कलेजे में दर्द पैदा कर दिया और रजोगम का पहाड मेरे ऊपर डाल दिया। अफसोस बलभद्रसिह मेरा लगोटिया दोस्त और लक्ष्मीदेवी मेरी मुहबोली लडकी ! हॉ राजा गोपालसिह से मुझसे कोई ऐसा सरोकार न था सिवाय इसके वह मेरे दोस्त का दामाद था। नि सन्देह यह सब काम इसी कम्बख्त दारोगा की मदद से किया गया होगा !

मुन्दर–(खडी होकर) बडे अफसोस की बात है कि तुमने एक मामूली आदमी की झूठी बातों पर विश्वास कर के मेरी तरफ कुछ भी ध्यान न दिया और न अपनी तथा उसकी बर्बादी का ही कुछ ख्याल किया जिसके साथ तुमने कई काम करने के लिए कसमे खाई थीं !

शेर–खैर मै थोडी देर के लिए तेरी बात मान लेता हू कि वह एक मामूली आदमी और झूठा भी था मगर इस बात का पता लगाना कौन कठिन है कि इस वक्त इस किले के अन्दर बलभद्रसिह है या नहीं।

मुन्दर–उस बनावटी जिन्न ने तुम्हें धोखा दिया जब उसने देखाकि वह अकेले हमलोगों को गिरफ्तार नहीं कर सकता तो यह चालबाजी खेली जिसमें तुम मेरे बाप बलभद्रसिह का पता लगाने के लिये जिसे मरे हुए एक जमाना बीत गया है इस किले वालों से मिल कर गिरफ्तार हो जाओ और अपने साथ हम लोगों को भी बर्बाद करो। अगर तुमको उसकी सचाई पर ऐसा ही दृढ विश्वास है तो हम लोगों को इस किले के बाहर पहुचा दो और तब जो जी में आवे करो।

शेर–जब मुझे उसकी बातों पर विश्वास ही है तो तुझे यहाँ से राजी खुशी के साथ क्यों जाने दूगा जिसने हजारों आदमियों को धोखे में डालकर बर्बाद किया और मुझे प्रतापी राजा बीरेन्द्रसिह के साथ दुश्मनी करने के लिये तैयार किया ?

मुन्दर–तुमने मुफ्त में मेरा साथ देना स्वीकार नहीं किया तुमने मेरे बाप बलभद्रसिह की दोस्ती पर खयाल नहीं किया बल्कि तुमने उस दौलत की लालच में पडकर मेरा साथ दिया जिसने तुम्हें अमीर ही नहीं बल्कि जिन्दगी भर के लिय लापरवाह कर दिया– मेरे बाप बलभद्रसिह के साथ तुमको मुहब्बत थी यह बात तो मै तबसमझूँ जब मेरी दौलत मुझे वापस कर दो। यह भला कौन भलमनसी की बात है कि मेरी कुल जमा पूजी लेकर मुझे कगाल बना दो और अन्त में यों धोखा देकर बर्बाद करो !

शेर–(हँसकर) यह किसी बडे बेवकूफ का काम है कि अपने घर में आई दौलत को फिर निकाल बाहर करे तिस पर भी ऐसे नालायक की दौलत जिसने एक नहीं बल्कि सैकडों खून किये हों !

मुन्दर–(क्रोध में आकर) तो क्या तुम अपने मन की ही करोगे ?

शेर–बेशक !

मुन्दर–अच्छा तो मै जाती हू, जो तुम्हारे जी में आवे करो।

शेर–ऐसा नहीं हो सकता।

इतना सुनते ही मायारानी ने तिलिस्मी खञ्जर कमर से निकाल लिया और शेरअलीखॉं की तरफ बढा ही चाहती थी कि सामने के दर्वाजे स आता हुआ फिर वही जिन्न दिखाई पड़ा।

जिन्न–(मायारानी की तरफ इशारा कर के) इसके कब्जे से तिलिस्मी खञ्जर ले लेना मै भूल गया था क्योंकि जब तक यह खञ्जर इसके पास रहेगा यह किसी के काबू मे न आएगी।

यह कह कर उसने मायारानी की तरफ हाथ बढ़ाया और मायारानी ने वह खञ्जर उसके बदन के साथ लगा दिया मगर उसे इसका असर कुछ भी न हुआ। जिन्न ने मायारानी के हाथ से खञ्जर छीन लिया तथा अँगूठी भी निकाल ली और इसके बाद फिर बाहर का रास्ता लिया।

दारोगा और जितने आदमी वहॉं मौजूद थे सब आश्चर्य और डर के साथ मुह देखते ही रह गये, कोई एक शब्द भी मुँह से निकाल न सका।

अब इस जगह हम पुन थोडा सा हाल उन ऐयारों का लिखना चाहते हैं जो इस कमरे के छत पर बैठे सब तमाशा देख और सभी की बातें सुन रहे थे।

शेर अलीखॉं को छोड कर जब वह जिन्न कमरे क बाहर निकला तो उसी समय तेजसिह छत के नीचे उतरे और इस फिक्र में आगे की तरफ बढे कि जिन्न का पीछा करें मगर जब ये छिपते हुए सदर दर्वाजा के पास पहुँचे जिधर से वह जिन्न आया और फिर लौट गया था तो उन्होंने और भी कई बातें ताज्जुब की देखीं। एक तो यह कि वह जिन्न लौट कर चला नहीं गया बल्कि अभी तक छिपा हुआ दर्वाजे के बगल में खड़ा है और कान लगा कर सब बातें सुन रहा है दूसरे यह कि जिन्न अकेला नहीं है बल्कि उसके साथ एक आदमी और भी है जो स्याह नकाब से अपने को छिपाये हुए और हाथ में नगी तलवार लिए है। जब यह जिन्न दोहरा कर कमरे के अन्दर गया और मायारानी से तिलिस्मी खञ्जर छीन कर फिर बाहर चला आया तो अपने साथी को लिये हुए बाग की तरफ चला और कुछ दूर जाने के बाद अपने साथी से बोला आओ भूतनाथ अब तुमको फिर उसी कैदखाने छोडआवें जिसमें राजा बीरेन्द्रसिह के ऐयारों ने तुम्हें कैद किया था और उसी तरह हथकडी बेडी तुम्हें पहिरा दें जिसमें उन लोगों को इस बात का गुमान भी न हो कि भूतनाथ को कोई छुडा ले गया था।

भूत–बहुत अच्छा मगर यह तो कहिये कि अब मेरी क्या दशा होगी ?

जिन्न–दशा क्या होगी ? मै तो कह चुका कि तुम हर तरह से बेफिक्र रहो ठीक समय पर मै तुम्हारे पास पहुच जाऊगा।

भूत–जैसी आपकी मर्जी मगर मै समझता हू कि राजा बीरेन्द्रसिह के आने मे अब विलम्ब नहीं और उनके साथ ही मेरा मुकदमा पेश हो जायगा।

जिन्न–क्या हर्ज है मुझे तुम हर वक्त अपन पास मौजूद समझो और बेफिक्र रहो।

भूत–जो मर्जी।

तेजसिह ने जो छिपे हुए उन दोनों के पीछे जा रहे थे ये बातें भी सुन लीं और उन्हें हद से ज्यादे आश्चर्य हुआ। जिन्न और भूत दोनों उस मकान के पास पहुचे जिसकी छत फोड़ी गई थी और जो तिलिस्मी तहखाने के अन्दर जाने का दर्वाजा था। भूतनाथ ने कमन्द लगाई और उसी के सहारे जिन्न तथा भूतनाथ उसके ऊपर चढ़ गए और टूटी हुई छत की राह से अन्दर उतर गए। तेजसिह ने भी उसके अन्दर जाने का इरादा किया मगर फिर कुछ सोच कर लौट आए और उसी कमरे की छत पर चले गए जहॉं अपने साथियों को छोडा था।

अब हम पुन कमरे के अन्दर का हाल लिखते हैं। जब मायारानी से तिलिस्मी खञ्जर छीन कर वह जिन्न कमरे के बाहर चला गया तो मायारानी बहुत ही डरी और जिन्दगी से नाउम्मीद होकर सोचने लगी कि अब जान बचनी मुश्किल है बड़ी नादानी की जो यहा आई भाग निकलने पर भी धनपत वाली करोड़ों रुपये की जमा मेरे हाथ में थी। अगर चाहती या आज के दिन की खबर होती तो किसी और मुल्कमें चलीजाती और जिन्दगी भर अमीरी के साथ आनन्द करती। मगर दुश्मनी की डाह में वह भी न होने पाया असभव बातों की लालच में पड कर शेरअलीखा के घर में वह सब माल रख दिया और उस स्वार्थी और मतलबी ने ऐसे समय में मेरे साथ दगा की। अब क्या किया जाय ? मै कहीं कीन रही। एक तो अब मुझे बचने की आशा ही नहीं रही फिर अगर मान भी लिया जाय कि पहिले की तरह यदि अब भी राजा गोपालसिह मुझे छोड़ देंगे तो मै कहा जाकर रहूगी और किस तरह अपनी जिन्दगी बिताऊगी ? हाय इस समय मेरा मददगार कोई भी नही दिखाई देता।

मायारानी इन सब बातों को सोच रही थी और शेरअलीखा क्रोध मे भरा हुआ लाल आखों से उसे देख रहा था कि यकायक कई आदमियों के आने की आहट पा कर वे दोनों चौंके और दर्वाजे की तरफ घूम गये। हमारे बहादुर ऐयारों पर

नजर पडी और सब के सब आश्चर्य से उनकी तरफ देखने लगे।

सुबह की सुफेदी ने रात की स्याही को धोकर अपना रग इतना जमा लिया था कि बाग के हर एक गुलबुटे साफ साफ दिखाई देने लग गये थे जब तेजसिह देवीसिह भैरोसिह और तारासिह कमरे की छत पर से नीचे उतरे और शेरअली मायारानी और उनके आदमियों के सामने जा खडे हुए।

तेजसिह ने मुस्कुराते हुए मायारानी की तरफ देखा और आगे की तरफ बढ कर कहा–

तेज–केवल राजा गोपालसिह ही नहीं बल्कि हम लोगों ने भी उनकी आज्ञा पाकर इसलिये कई दफे तुझे छोड दिया था कि देखें न्यायी ईश्वर तुझे तेरे पापों का फल क्या देता है मगर ईश्वर की मर्जी का पता लग गया। वह नहीं चाहता कि तू एक दिन भी आराम के साथ कहीं रह सके और हम लोगों के सिवाय किसी दूसरे या गैर पर अपनी जिन्दगी की आखिरी नजर डाले। केवल तू ही नहीं दारोगा की तरफ देखकर) इस नकटे की बदकिस्मती भी इसे किसी दूसरी जगह जाने नहीं देती और घुमा फिरा कर घर बैठे हम लोगों के सामने ले आती है। हा यह एक (शेरअलीखॉ की तरफ देख के) नये बहादुर हैं जो हम लोगों के साथ दुश्मनी करने के लिए तैयार हुए हैं।

शेर–(हाथ जोड कर) नहीं नहीं मैं खुदा की कसम खाकर कहता हू कि आप लोगों के साथ दुश्मनी का बर्ताव नहीं रक्खा चाहता और न मुझमें इतनी सामर्थ्य है। मुझे तो इस बदकार ने धोखा दिया। मुझे इसका असल हाल मालूम न था। बहुतों से सुन चुका हू कि आप लोग बडे बहादुर और दिल खोल के खैरात देने वाले हैं इसलिये भीख के ढग पर अपने उन कसूरों की माफी मागता हू जो इस वक्त तक कर चुका हू।

तेज–अगर तुम्हारा दिल साफ है और आगे कसूर करने का इरादा नहीं है तो हमने माफ किया। अच्छा आओ और इन दोनों बदकारों को लिये हुए हमारे साथ चलो। हॉ यह तो बताओ कि ये पाचों तुम्हारे आदमी हैं या इस दारोगा के हैं ?

शेर–जी हा ये पाचो आदमी मेरे ही है।

तेज–और भी तुम्हारा कोई आदमी इस बाग में आया या आने वाला है ?

शेर–जी नहीं मगर थोडी सी फौज इस पहाडी के नीचे नदी किनारे मौजूद है जिसका

तेज–(बात काट कर) उसका हाल हमे मालूम है, खैर देखा जायगा तुम हमारे साथ आओ।

तेजसिह की आज्ञानुसार सब के सब कमरे के बाहर निकले। मायारानी और दारोगा के लिये इस वक्त मौत का सामान था मगर लाचार कोई बस नहीं चल सकता था और न वे दोनों यहा से भाग ही सकते थे। तेजसिह ने भैरोसिह को कुछ समझा कर उसी बाग में छोड दिया। और बाकी सभों को साथ लिये हुए अपने स्थान का रास्ता लिया। रास्ते में शेरअलीखा से यो बातचीत होने लगी –

तेज–आज की रात केवल हम लोगों के लिये नहीं बल्कि तुम्हारे लिये भी अनूठी ही रही।

शेर–बेशक ऐसा ही है जिस राह से मै इस बाग मे आया हू और यहा आकर जो कुछ देखा जन्म भर याद रहेगा। मै निश्चिन्त होने पर सब हाल आपसे कहूगा, आप सुनकर आश्चर्य करेंगे।

तेज–हमें सब हाल मालूम है। रास्ते के बारे में हम लोगों के लिये कोई नई बात नही है क्योंकि जिस तहखाने की राह से तुम लोग आये हो उसी राह से हमलोग कई दफे आ चुके है बाकी रही जिन्न वाली बात सो वह भी हम लोगों से छिपी नहीं है।

शेर–(ताज्जुब से) क्या आप लोग बहुत देर से यहॉ आये हुए थे ?

तेज–देरी से 'बल्कि हमारे' सामने तुम इस बाग में आये हो हॉ तुम्हारे पाचों नौकर पहिले आ चुके थे बल्कि यों कहना चाहिये कि उन्हीं के आने की खबर पाकर हम लोग आए थे।

शेर–आप लोग हम लोगों को कहा से देख रहे थे ?

तेज–सो नहीं कह सकते मगर कोई मामला ऐसा नहीं हुआ जिसे हम लोगों ने न देखा हो या जिसे हम लोग न जानते हों। (मायारानी और दारोगा की तरफ इशारा करके) हम लोगों का सामना होने के पहिले तक ये दोनों कम्बख्त सोचते होंगे कि जिन्न ने पहुच कर काम में बाधा डाल दी नहीं तो कमरे की जमीन खुद जाती और सुरग की राह से तुम्हारी फौज यहा पहुच कर किले को दखल कर लेती।

शेर–बेशक ऐसा ही है और मैं भी इसका पक्ष लिए ही जाता अगर उस जिन्न ने चाहे वह कोई भी हो मुझे कह न दिया होता कि यह मायारानी असल में तुम्हारे दोस्त की लडकी लक्ष्मीदेवी नहीं है बल्कि तुम्हारे दोस्त के दुश्मन हेलासिह की लडकी मुन्दर है।

तेज–मगर यह ख्याल झूठा था क्योंकि तुम्हारी फौज के आने की खबर हम लोगों को मिल चुकी थी और हमलोग उसके रोकने का बन्दोबस्त कर चुके थे। केवल इतना ही नहीं बल्कि तुम्हारी फौज के सेनापति महबूबखा को हमारे एक ऐयार ने गिरफ्तार करके पहर रात जाने के पहिले ही इस किले में पहुचा भी दिया था।

शेर–(आश्चर्य से) तो क्या महबूबखॉ यहा कैद है ?

तेज–बेशक !

शेर–ओफ आप लोगों के साथ दुश्मनी करना आप ही अपनी मौत को बुलाना है !

तेज–(मायारानी की तरफ देख के) बडी खुशी की बात है कि आज तुम अपनी दोनों नालायक बहिनों को भी इसी महल के अन्दर देखोगी।

मायारानी ने इसका जवाब कुछ भी न दिया और सिर झुका लिया मगर भीतर से उसका रज और भी बढ गया क्योंकि कमलिनी तथा लाडिली के यहा होने की खबर उसे बहुत बुरी मालूम हुई।

तेजसिह सभों को लिए अपने कमर में पहुचे। शेरअलीखा के लिए एक मकान का बन्दोबस्त किया गया दारोगा को कैदखाने की अधेरी कोठरी नसीब हुई और कमलिनी की इच्छानुसार मायारानी कैदियों की सूरत में महल के अन्दर पहुचाई गई।

नौवाँ बयान

दिन पहर भर से ज्यादे चढ चुका है। रोहतासगढ के महल में एक कोठरी के अन्दर जिसके दर्वाजे में लोहे के सींखचे लगे हुए है मायारानी सिर नीचा किये हुए गर्म गर्म आसुओं की बूदों से अपने चेहरे की कालिख धोने का उद्योग कर रही है मगर उसे इस काम में सफलता नहीं होती। दर्वाजे के बाहर सोने की पीढियों पर जिन्हें बहुत सी लौडिया घेरे हुई है कमलिनी किशोरी कामिनी लाडिली लक्ष्मीदेवी और कमला बैठी हुई मायारानी पर बातों के अमोघ बान चला रही है।

किशोरी–(कमलिनी से) तुम्हारी बहिन मायारानी है बडी खूबसूरत !

कमला–केवल खूबसूरत ही नहीं भोली और शमाऊ भी हद से ज्यादे है दखिये सिर ही नहीं उठाती बात करना तो दूसरी बात है।

कामिनी–इन्हीं गुणों न तो राजा गोपालसिह को लुभा लिया था।

कमलिनी–मगर मुझे इस बात का रज है कि ऐसी नेक बहिन की सोहबत में ज्यादे दिन तक रह न सकी।

किशोरी–बेशक इसका रज तुम्हें और लाडिली को भी होना चाहिए।

कमला–जो हो मगर एक छोटी सी भूल तो मायारानी से भी हो गई।

कामिनी–वह क्या ?

कमलिनी–यही कि राजा गोपालसिह को इन्होंने कोठरी में बन्द करके कैदियों की तरह रख छोडा था।

किशोरी–इसका कोई न कोई सबब तो जरूर होगा। मैने सुना है कि राजा गोपालसिह इधर उधर आखें बहुत लडाया करते थे, यहा तक कि धनपति नामी एक वेश्या को अपने घर के अन्दर डाल रक्खा था। (मायारानी से) क्यों बीबी यह बात सच है ?

लक्ष्मी–ये तो बोलती ही नहीं मालूम होता है हम लोगों से कुछ खफा है।

कमला–हम लोगों ने इनका क्या बिगाडा है जो हम लोगों से खफा होंगी, हा अगर तुमसे रज हों तो कोई ताज्जुब की बात नहीं क्योंकि तुम मुद्दत तक तो तारा के भेष में रहीं और आज लक्ष्मीदेवी बन कर इनका राज्य छीनना चाहती हो। बीबी चाहे जो हो मैं तो महाराज़ के सामने जरूर इन्हीं की सिफारिश करूगी तुम चाहे भला मानो चाहे बुरा।

कामिनी–तुम भले ही सिफारिश कर लो मगर राजा गोपालसिह के दिल को कौन समझावेगा ?

कमला–उन्हें भी मै समझा लूगी कि आदमी से भूल चूक हुआ ही करती है ऐसे छोटे छोटे कसूरों पर ध्यान देना भले आदमियों का काम नहीं है देखो बेचारी ने कैसी नेकनामी के साथ उनका राज्य इतने दिनों तक चलाया।

किशोरी–गोपालसिह तो बेचारे भोले भाले आदमी ठहरे उन्हें जो कुछ समझा दोगी समझ जायेंगे मगर ये तारारानी मानें तब तो ! ये जो हकनाहक लक्ष्मीदेवी बन कर बीच में कूदी पडती है और इस बेचारी भोली औरत पर जरा रहम नहीं खाती !!

लक्ष्मी–अच्छा रानी लो मैं वादा करती हूँ कि कुछ न बोलूगी बल्कि धनपति को छुडवा देने के लिये भी उद्योग करूगी क्योंकि मुझे भी इस बेचारी पर दया आती है।

कमला–हॉ देखो तो सही राजा गोपालसिह की जुदाई में कैसा बिलख बिलख कर रो रही है कम्बख़्त मक्खिया भी ऐसे समय में इसके साथ दुश्मनी कर रही है। किसी से कहो नारियल का चवर लाकर इसकी मक्खिया तो झले।

किशोरी—इस काम के लिये तो भूतनाथ को बुलाना चाहिये।

कमला – इस बारे में तो मैं खुद शर्माती हूं।

इतना सुनते ही सब की सब मुस्कुरा पडीं और कमलिनी तथा लक्ष्मीदेवी ने मुहब्बत की निगाह से कमला को देखा।

लक्ष्मी—मेरा दिल गवाही देता है कि भूतनाथ का मुकदमा एकदम से पलट जायगा।

कमलिनी—ईश्वर करे ऐसा ही हो बल्कि मैं तो चाहती हूँ कि मायारानी का मुकदमा भी एकदम से औंधा हो जाय और तारा बहिन तारा की तारा ही बनी रह जाय।

ये सब बडी देर तक बैठी हुई मायारानी के जख्मों पर नमक छिडकती रहीं और न मालूम कितनी देर तक बैठी रहती अगर इनके कानों में यह खुशखबरी न पहुचती कि राजा बीरेन्द्रसिह की सवारी इस किले में दाखिल हुआ ही चाहती है।

दसवां बयान

आज रोहतासगढ़ किले के अन्दर राजा बीरेन्द्रसिह की सवारी आई है जिससे यहा की रिआया बहुत ही प्रसन्न है। छोटे छोटे बच्चे भी उनके आने की खुशी में मग्न हो रहे है। इसका सबब यही है कि राजा बीरेन्द्रसिह जब जहा रहते है खैरात का दरवाजा वहा खुला रहता है। यों तो जहाँ इनकी अलमदारी है बराबर खैरात हुआ ही करती है मगर जहा ये स्वय मौजूद रहते है खैरात ज्यादे हुआ करती है। खैरात का मकान और बन्दोबस्त अलग है। कोई आदमी वापस नहीं जाने पाता और जिसको जिस चीज की जरूरत होती है दी जाती है तीन वर्ष से ऊपर और बारह वर्ष से कम उम्र वाले लडकों को मिठाई बाटने का हुक्म है और तीन वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों को चीनी के खिलौने बाटे जाते हैं। चीनी क खिलौने मिठाइयों और साथ ही इसके कपडों का बाटना तभी तक जारी रहता है जब तक राजा बीरेन्द्रसिह स्वय मौजूद रहत है और अन्न तो हमेशा बटा करता है। यही सबब है कि आज रोहतासगढ के छोटे छाटे बच्चों को भी हद से ज्यादा खुशी चढी हुई है और वे झुण्ड के झुण्ड इधर उधर घूमते दिखाई दे रहे हैं।

आज यह खबर बहुत अच्छी तरह मशहूर हो रही कि मायारानी नामी एक औरत और 'दारोगा बाबा' नामी एक मर्द इस किले में गिरफ्तार हुए हैं जो बीरेन्द्रसिह के दुश्मन है और भूतनाथ नामी कोई ऐयार गिरफ्तार किया गया है जिसका मुकदमा फैसला करने के लिए राजा साहब स्वय आये हैं। ये खबरें किसी एक ढग पर मशहूर नहीं हैं बल्कि तरह तरह का पलेथन लगा कर लोग इनकी चर्चा कर रहे हैं और राजा बीरेन्द्रसिह के दुश्मनों को जी जान से गालिया दे रहे हैं।

राजा बीरेन्द्रसिह के आने के साथ ही उनके ऐयारों ने एक एक करके वे कुल बातें बयान कर दीं जो आज के पहिले हो चुकी थीं और जिन्हें राजा बीरेन्द्रसिह नहीं जानते थे। भूतनाथ का हाल सुन कर उन्हें बडा ही रज हुआ क्योंकि कमला को वे अपनी लडकी की तरह प्यार करते थे। खैर सब बातों को सुन सुना कर राजा बीरेन्द्रसिह महल में गए और कमलिनी लाडिली और कमला इत्यादि से इस तरह मिले जैसे बडे लोग अपनी लडकियों और भतीजियों से मिला करते है और उन सभों ने भी वैसी ही मुहब्बत और इज्जत का बर्ताव किया जैसा नेकचलन लडकिया अपने बाप और चाचा के साथ करती हैं।

सभों को प्यार और दिलासा देकर राजा बीरेन्द्रसिह बाहर आये और आज का दिन तेजसिह से सलाह विचार करने में बिताया। दूसरे दिन दोपहर के बाद शेरअलीखा से मुलाकात की और घटे भर रात जाने बाद भूतनाथ का मुकदमा सुनने का विचार प्रकट करक कहा कि मायारानी तथा दारोगा का मुकदमा भूतनाथ के मुकदमे के बाद सुना जायगा।

राजा बीरेन्द्रसिह ने तेजसिह से यह भी कह दिया कि भूतनाथ का मुकदमा महल के अन्दर सुना जायगा और उस समय हमारे ऐयारों के सिवाय यहा किसी गैर के रहने की जरूरत नहीं है। औरतों में भी सिवाय लडकियों के जो चिक के अन्दर बैठाई जायगी कोई लौंडी इतना नजदीक न रहने पाव कि हम लोगों की बातें सुने, और बलभद्रसिह की गद्दी हमारे पास ही बिछाई जाय।

हमारे पाठक सवाल कर सकते है कि जब मुकदमा सुनने के समय ऐयारों के सिवाय किसी गैर आदमी के मौजूद रहने की मनाही कर दी गई तो किशोरी कमलिनी और लक्ष्मीदेवी इत्यादि को पर्दे के अन्दर बैठने की क्या जरूरत थी? इसका जवाब यह हो सकता है कि ताज्जुब नहीं राजा बीरेन्द्रसिह ने सोचा हो कि जिस समय भूतनाथ का मुकदमा सुना जायगा और उसके ऐबों की पोटलियाँ खोलने के साथ साथ सबूत की चीठिया अर्थात वह जन्मपत्री पढी जायगी जो बलभद्रसिह ने दी तो बशक लडकियों के दिल पर चोट बैठगी और उनके चेहरे तथा अगों से उनकी अवस्था अवश्य प्रकट होगी कौन ठिकाना कोई चीख उठे कोई बदहवास हो के गिर पडे या किसी से किसी तरह की बेअदबी हो जाय तो यह अच्छी बात न होगी। बडों के सामने अनुचित काम बेबसी की अवस्था में हो जाने से दिल को रज पहुचेगा और

यदि ऐसा न भी हुआ तो भी दिल की अवस्था छिपाने के लिए वहुत उद्योग करना पडेगा तथा उनके नाजुक कलेजे को तकलीफ पहुचेगी जिसस वह लज्जित होंगी। इससे इन लोगों का परदे के अन्दर हो वैठना उचित होगा। वेशक यही वात हैं और वडो का ऐसा ख्याल होना ही चाहिये।

रात पहर भर स ज्यादे हो चुकी है। महल के एक छोटे से मगर दोहरे दालान में राशनी अच्छी तरह हो रही है। दालान के पहिले हिस्से में वारीक चिक का परदा गिरा हुआ है और भीतर पूरा अधकार है। किशोरी कामिनी लक्ष्मीदेवी कमलिनी लाडिली और कमला उसी के अन्दर वैठी हुई हैं। वाहरी हिस्से में जिसमें रोशनी वखूवी हो रही है राजा वीरेन्द्रसिह की गद्दी लगी हुई है उनके वगल में वलभदसिह वैठे हुए हैं दूसरे वगल में कागजों की गठरी लिए हुए तजसिह विराजमान है और वाकी के ऐयार लोग (भैरोसिह को छोड के) दोनों तरफ दिखाई दे रहे है तथा सभी की निगाहें सामने क मैदान पर पड रही हैं जिधर से हथकडी वेडी से मजबूर भूतनाथ को लिए हुए देवीसिह चले आ रहे है।

भूतनाथ ने आने क साथ ही झुक कर राजा वीरेन्द्रसिह का सलाम किया और कहा–

भूत–व्यर्थ ही वात का वतगड वना कर मुझे सासत में डाल रक्खा गया है मगर भूतनाथ ने भी जिसने आप लागों को खुश रखने के लिये कोई वात उठा नही रक्खी इस वात का प्रण कर लिया था कि जव तक राजा वीरेन्द्रसिह का सामना न होगा अपने मुकदमे की उलझन को खुलने न देगा।

वीरेन्द्र–वेशक इस वात का मुझे भी वहुत रज है कि उस भूतनाथ के ऊपर एक भारी जुर्म ठहराया गया है जिसकी कारवाइयों को सुन सुन कर हम खुश हाते थे और जिसे मुहब्वत की निगाह से देखने की अभिलाषा रखते थे।

भूत–अगर महाराज को इस वात का रज है तो महाराज निश्चय रक्खें कि भूतनाथ महाराज की नजरों से दूर किए जाने लायक सावित न होगा। (इधर उधर और पीछे की तरफ देख के) मगर अफसोस हमारा मददगार अभी तक नहीं पहुचा न मालूम कहा अटक रहा !

इतने में सामने की तरफ से वही जिन्न आता हुआ दिखाई पडा जिसे तेजसिह पहिले देख चुके थे और जिसका हाल राजा वीरेन्द्रसिंह से भी कह चुके थे। इस जिन्न की चाल आजाद वेफिक्र और निडर लोगों की सी थी जो धीरे धीर चल कर उसी दालान में आ पहुचा और चुपचाप एक किनार खडा हो गया।

उसके रग ढग और उसकी पाशाक का हाल हम एक जगह वयान कर आए है इसलिए पुन लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। यद्यपि जिन्न आश्चर्यजनक रीति से यकायक वहा आ पहुचा था और उसको इस वात का गुमान था कि हमारा आना लोगों को वडा ही आश्चर्यजनक मालूम होगा मगर ऐसा न था क्योंकि तेजसिह को इस वात की खवर पहिले ही दिन हो चुकी थी जव वे जिन्न और भूतनाथ के पीछ पीछे जा कर उनकी वातें सुन आये थे और तेजसिह न यह हाल राजा वीरेन्दसिह अपने साथियों और कमलिनी लक्ष्मीदवी वगैरह से भी कह दिया था अतएव जिन्न के आने का सव कोई इन्तजार ही कर रह थे और जव वह आ गया तो उसकी सूरत गौर स दखने लगे। वीरन्दसिह का इशारा पा कर देवीसिह न उस जिन्न स पूछा–

देवी–महाराज की इच्छा है कि तुम अपना नाम और यहॉ आन का सवव वताओ।

जिन्न–मरा नाम कृष्णाजिन्न है और मैं भूतनाथ का विचित्र मुकद्दमा सुनने तथा अपने एक पुराने मित्र से मिलने आया हू।

देवी–(आश्चय से) क्या भूतनाथ क अतिरिक्त कोई दूसरा आदमी भी तुम्हारा मित्र है ?

जिन्न–हा।

देवी–और वह है कहा ?

जिन्न–इसी जगह आप लोगों के वीच ही में।

देवी–अगर ऐसा है तो तुम उस अपने पास वुलाओ और वातचीत करो।

जिन्न–इससे आपको कोई मतलव नहीं जव मौका आवेगा ऐसा किया जायगा।

देवी–ताज्जुव है कि तुम किसी का कुछ ख्याल न करक वेअदवी स वातचीत करते हो क्या हम लोगों के साथ तुम्हें किसी तरह की दुश्मनी या रज है ? या दुश्मनी पैदा किया चाहते हो ?

जिन्न–दुश्मनी विना डाह डर और रज के पैदा नहीं होती और हमारे में ये तीनों वातें छू नहीं गई हैं। न तो हमें किसी का डर है न किसी को डराने की इच्छा है न किसी का कुछ देते हैं और न किसी से कुछ चाहते हैं न कोई हमारा कुछ विगाड सकता है न हम किसी का कुछ विगाडत है न हमें किसी वात की कमी है न लालसा है फिर ऐसा अवस्था म किसी से दुश्मनी या रज की नौवत हो भी क्योंकर सकती है ? अस्तु आप लोगों को यही चाहिए कि हमारा ख्याल छोड कर अपना काम करें और हमारा हाना न हाना एक वरावर समझें।

जिन्न की बातों से सभों को बडा ही आश्चर्य और रज हुआ बल्कि हमारे कई एयारा को क्रोध भी चढ आया मगर राजा वीरेन्दसिह का इशारा पा कर सभों को चुप और शान्त होना ही पडा। वीरेन्दसिह ने तजसिह की तरफ देख कर भूतनाथ का मुकदमा शुरू करने के लिए कहा और तेजसिह ने एसा ही किया।

तजसिह ने भूमिका के तौर पर थोड़ा सा पिछला हाल कह कर वह गठरी खोली जिसमें पीतल की एक सन्दूकड़ी और कागज का वह मुट्ठा था जिसमें की चीठिया कमलिनी वगैरह के सामने पढी जा चुकी थीं। तेजसिह उन चीठियों को पढ गये जिनका हाल हमारे पाठका को मालूम हो चुका है और इसके बाद अगली चीठी पढने का इरादा किया मगर जिन्न न उसी समय टाक दिया और कहा "यदि महाराज साहब उचित समझ तो दारोगा और मुन्दर को भी जिसने अपने को मायारानी के नाम से मशहूर कर रक्खा है और जा इस समय सरकार क कब्जे में है इसी जगह बुलवा लें और चीठियों को उनक सामने पुन पढन की आज्ञा दें।यद्यपि यहा पर शेरअलीखा के आने की भी आवश्यकता है परन्तु मौके मौके पर कई बातें ऐसी प्रकट होंगी जिनका हाल शरअलीखा को मालूम होने दना हम उचित नही समझत।

यद्यपि जिन्न ने बमोके टाक दिया था और राजा वीरन्दसिह तथा हमार ऐयारों को इस बात का रज होना चाहिए था मगर ऐसा नहीं हुआ बल्कि सभों न जिन्न की बात पसन्द की और महाराज न मायारानी को हाजिर करने का हुक्म दिया। तारासिह गए और थाड़ी ही देर में मायारानी और दारोगा को इस तरह लिए हुए आ पहुचे जिस तरह अपनी जान स हाथ धोए और जिद्दी कैदियों का घसीटत हुए लाना पडता है। जिस समय मुन्दर वहा आई उसने घबराहट के साथ चारो तरफ देखा। सब से ज्याद दर तक उसकी निगाह जिस पर अड़ी रही वह बलभद्रसिह था और बलभद्रसिह ने भी मायारानी को बड़ गौर स दर तक दखा। जिन्न ने इस समय पुन टोका और राजा वीरेन्दसिह से कहा आशा है कि हमारे हाशियार और नीतिकुशल महाराज मुन्दर और बलभद्रसिह की आखों को बड़ ध्यान और गूढ विचार से देख रहे होंगे।

जिन्न की इस बात ने हाशियारों और बुद्धिमानों के दिल में एक नया ही रग पैदा कर दिया और तेजसिह तथा वीरेन्दसिह न मुस्कुराते हुए जिन्न की तरफ दखा। इसी समय भैरासिह भी आ पहुचे जिन्हें तेजसिह कुछ समझा बुझा कर आज दो दिन हुए बाग के उस हिस्से में छाड कर आये थ जिसमें मायारानी गिरफ्तार की गई थी। भैरोसिह के हाथ में एक छाटा सा पुर्जा था जिसे उन्होंने तेजसिह के हाथ में रख दिया तब मुस्कुराते हुए जिन्न की तरफ देखा। भैरोसिह को देख जिन्न के दात भी हसी से दिखाई द गए मगर उसन अपन को राका और भैरासिह की तरफ से मुँह फेर लिया। तजसिह न इस पुर्जे का पढा और हस कर राजा वीरेन्द्रसिह के हाथ में द दिया। राजा वीरेन्दसिह भी पढ कर हस पडे और जिन्न तथा भैरासिह की तरफ देखने लगे।

इस समय सभों की इच्छा यह जानने की हो रही थी कि भैरोसिह ने जो पुर्जा तेजसिह को दिया उसमें क्या लिखा हुआ था और राजा वीरन्दसिह उसे पढ कर और जिन्न की तरफ दख कर क्यों हस पडे ? और इसी तरह जिन्न भैरोसिह का ओर भैरासिह जिन्न को दख कर क्यों हस ? मगर इसका असल भेद किसी का मालूम न हुआ और न कोई पूछ ही सका।

जिस समय जिन्न ने मायारानी और बलभदसिह की देखादेखी के बार में आवाज कसी उस समय मायारानी ने बलभद्रसिह की तरफ से ऑखे फेर ली मगर बलभद्रसिह केवल ऑख बचा कर चुप न रह गया बल्कि उसने क्रोध में आकर जिन्न स कहा–

बलभद – एक ता तुम बिना बुलाए यहाँ पर चल आए जहा आपुस की गुप्त बातों का मामला पश है दूसरे तुमसे जा कुछ पूछा गया उसका जवाब तुमन बेअदबी और ढिठाई के साथ दिया तीसरे अब तुम बात बात पर टोका टाकी करने और आवाज कसने लगे।आखिर कोई कहा तक बरदाश्त करेगा ? तुम हम लोगों की बातों में बोलने वाले कौन ?

जिन्न – (क्राध और जोश में आकर) हमें भूतनाथ ने अपना मुख्तार बनाया है इसलिये हम इस मामल में बालन का अधिकार रखते हैं हॉ यदि राजा साहब हमें चुप रहन की आज्ञा दें ता हम अपनी जुबान बन्द कर सकते है। (कुछ रुक कर) मगर मैं अफसास क साथ कहता हू कि क्राध और खुदगर्जी ने तुम्हारी बुद्धि के आईने का गदला कर दिया है और निर्लज्जता की सहायता से तुम बोलन में तज हो गयेही इतना भी नहीं साचत कि इतने बडे राहतासगढ किले के अन्दर बल्कि महल के बीच में जो बेखोफ घुस आया है वह किसी तरह की ताकत भी रखता होगा या नहीं।(राजा वीरेन्दसिह और एयारों की तरफ इशारा करक) जा ऐसे ऐसे बहादुरों और बुद्धिमानों के सामने बिना बुलाए आने पर भी ढिठाई के साथ वादाविवाद कर रहा है वह किसी तरह की कुदरत भी रखता हागा या नहीं।मैं खूब जानता हू कि नेक इमानदार निर्लोभ और लापरवाह आदमी का राजा वीरन्दसिह एसे बहादुर और तजसिह ऐसे चालाक आदमी भी कुछ नहीं कह सकत तुम्हार एसों की ता हकीकत ही क्या जिसन बईमानी लालच दगाबाजी और बशर्मी के साथ ही साथ पाप की भारी गठरी अपन सिर पर उठा रक्खी है और उसक बाझ स घुटने तक जमीन के अन्दर गडा हुआ है। मै इस बात का भी खूब समझता हूँ कि मरी इस समय की बातचीत लक्ष्मीदवी कमलिनी और लाडिली को जो इस पर्दे के अन्दर बैठी हुई सब कुछ

देख सुन रही है बहुत बुरी मालूम होती होगी मगर उन्हें धीरज के साथ देखना चाहियेकि हम क्या करते हैं। हाँ मुझे अभी बहुत कुछ कहना है और मैं चुप नही रह सकता क्योंकि तुमने लज्जा से सिर झुका लने के बदले मे बशर्मी अख्तियार कर ली है और जिस तरह अबकी दफे टोका है उसी तरह आगे भी बात बात में मुझे टोकने का इरादा कर लिया है मगर खूब समझ रक्खो कि राजा बीरेन्द्रसिह और उनके ऐयारों की बातें मै इसलिये सह लूगा कि ये लोग किसी के साथ सिवाय भलाई के बुराई करने वाले नहीं है जब तक कोई कम्बख्त इन लोगों को व्यर्थ न सतावे और ये नेक तथा बद को पहिचानने की भी बुद्धि रखते हैं मगर तुम्हारे ऐसे बेईमान और पापी की बातें मै सह नहीं सकता। भूतनाथ पर एक भारी इल्जाम लगाया गया है और भूतनाथ का मैं मुख्तार हू इससे मेरी इज्जत में कमी नहीं आ सकती। तुम लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली के बाप बन कर अपने को बराबरी का दर्जा दिया चाहते हो मगर ऐसा नही हो सकता, अगर भूतनाथ दोषी है तो तुम भी मुँह दिखाने लायक नही हो समझ रक्खो और खूब समझ रक्खो कि चाहे आज हो या दो दिन के बाद हो भूतनाथ की इज्जत तुमसे बढी ही रहेगी ! (भूतनाथ की तरफ देख कर) क्यों जी भूतनाथ तुम क्यों इससे दबे जाते हो ? तुम्हें किस बात का डर है ?

भूत – (पीतल की सन्दूकड़ी की तरफ इशारा करके) बस केवल इसी का डर है और इस कागज के मुट्ठे को तो मैं कुछ भी नहीं समझता इसकी इज्जत तो मेरे सामने इतनी ही हो सकती है जितनी आज के दिन मायारानी की उस चीठी की होती जो वह अपने हाथ से लिख कर राजा गोपालसिह के सामने इस नीयत से रखती कि उसका कसूर माफ किया जाय और लक्ष्मीदेवी का ख्याल कुछ न करके वह पुन राजा गोपालसिह की रानी बनाई जाय।

जिन्न – नि सन्देह ऐसा ही है और इसी सन्दूकडी के सबब से बलभद्रसिह तुम्हारे सामने ढिठाई कर रहा है। अच्छा इस सन्दूकडी का जादू दूर करने के लिये इसी के पास मैं एक तिलिस्मी कलमदान रखे देता हू जिसमे बलभद्रसिह पुन तुम्हारे सामने बोलने का साहस न कर सके और तुम्हारा मुकदमा बिना किसी रोकटोक के सुना जाकर शीघ्र समाप्त हो जाय।

इतना कह कर जिन्न ने अपने कपडो के अन्दर से एक सोने का कलमदान निकाल कर उस सन्दूकडी के बगल में रख दिया जो राजा बीरेन्द्रसिह के सामने रक्खी हुई और भूतनाथ के कागजात की गठरी में से निकाली गई थी अथवा जिसका हाल हमारे पाठक पहिले के किसी बयान में पढ चुके है।

यह कलमदान जिसका ताला बन्द था बहुत ही अनूठा और सुन्दर बना हुआ था। इसके ऊपर की तरफ मीनाकारी के काम की तीन तस्वीरें बनी हुई थी और उनकी चमक इतनी तेज और साफ थी कि कोई देखने वाला इन्हें पुरानी नही कह सकता था।

इस कलमदान को देखते ही भूतनाथ खुशी के मारे उछल पड़ा और जिन्न की तरफ देख के तथा हाथ जोड के बोला माफ करना, मैंने आपकी कुदरत के बारे में शक किया था मैं नहीं जानता था कि आपके पास एक ऐसी अनूठी चीज है। यद्यपि मैंने अभी तक आपको नहीं पहिचाना तथापि कह सकता हू कि आप साधारण मनुष्य नही है। आप यह न समझे कि यह कलमदान मुझसे दूर है और मै इसे अच्छी तरह से देख नहीं सकता। नहीं नहीं ऐसा नहीं है इसकी एक झलक ने ही मेरे दिल के अन्दर इसकी पूरी पूरी तस्वीर खैच दी है !(आसमान की तरफ हाथ उठा के) ईश्वर तू धन्य है ! भूतनाथ के विपरीत बलभद्रसिह पर उस कलमदान का उलटा ही असर पडा। वह उसे देखते ही चिल्ला उठा ओर उठ कर मैदान की तरफ भागा मगर जिन्न ने फुर्ती के साथ लपक कर उसे पकड लिया और बीरेन्द्रसिह के सामने लाकर कहा भलमनसी के साथ यहा चुपचाप बैठो तुम भाग कर अपनी जान किसी तरह नहीं बचा सकते !

केवल भूतनाथ और बलभद्रसिह ही पर नही बल्कि तिलिस्मी दारोगा पर भी उस कमलदान का बहुत बुरा असर पडा ओर डर के मारे वह इस तरह कापने लगा जैसे जडैया बुखार चढ आया हो। बीरेन्द्रसिह तेजसिह और बाकी के ऐयारों को भी बडा ही आश्चर्य हुआ और वे लोग ताज्जुब भरी निगाहों से उस कलमदान की तरफ देखने लगे। इतने में चिक के अन्दर से आवाज आई इस कलमदान को मै भी जरा देखा चाहती हू ! यह आवाज कमलिनी की थी जिसे सुन कर राजा बीरेन्द्रसिह ने जिन्न की तरफ देखा और जिन्न ने जोश के साथ कहा हा हा आप बेशक इस कलमदान को पर्दे के अन्दर भेजवा दें क्योंकि लक्ष्मीदेवी और कमलिनी को इस कलमदान का देखना आवश्यक है। (तेजसिंह से) आप स्वयम इसे लेकर चिक के अन्दर जाइये।

तेजसिंह कलमदान को लेकर उठ खडे हुए और चिक के अन्दर जा कर कलमदान कमलिनी के हाथ में रख दिया। वहा किसी तरह की रोशनी नहीं थी और पूरा अंधकार था इसलिए उन सभों को कलमदान अच्छी तरह देखने के लिए दूसरे कमरे में जाना पडा जो दीवारगीरों की रोशनी से दिन की तरह उजाला हो रहा था।

सिवाय लक्ष्मीदेवी के और किसी औरत ने कलमदान को नहीं पहिचाना और न किसी पर उसका असर ही पडा

मगर लक्ष्मीदेवी ने जिस समय उसे उजाले में देखा उसकी अजब हालत हो गई। वह सिर पकड कर जमीन पर वैठने के साथ ही वेहोश हाकर जमीन पर गिर पडी।

लक्ष्मीदेवी के वेहोश होने से एक हलचल सी पड गई और कमलिनी तथा कमला इत्यादि उसे होश में लाने का उद्योग करने लगीं। तेजसिह कलमदान उठा कर और यह कह कर कि लक्ष्मीदेवी की तवीयत ठीक हो जाने के साथ ही बाहर खवर देना वीरेन्द्रसिह के पास चले आय और कलमदान सामने रख कर लक्ष्मीदेवी का हाल कहा।

इस मामले से सभों का ताज्जुव और वढ गया और वीरेन्द्रसिह ने तेजसिह से कहा–

वीरेन्द–इन भेदों को खोल कर आज अवश्य फैसला कर ही देना चाहिए।

तेज–मै भी यही चाहता हू। (जिन्न की तरफ देख के) मगर यह वात विना आपकी मदद के किसी तरह नहीं हा सकती।

जिन्न–जव तक राजा वीरन्दसिह आज्ञा न दग मै यहा से न जाऊगा क्योंकि मै भी इस मामल को आज खत्म कर दना आवश्यक समझता हू मगर तव तक सव्र कीजिए जव तक लक्ष्मीदेवी की तवीयत ठिकाने न हो जाय और वे सव पर्दे के पास आकर वेठ न जाय। हा वलभद्रसिह को कहिए कि वह उठ कर अपन ठिकाने जाय और भाग जाने का ध्यान भूल कर चुपचाप वैठ।

वलभदसिह की ताकत विल्कुल निकल गइ थी और वह सुस्त जहा का तहा वैठा रह गया था। तेजसिह ने उसे उठा कर अपने वगल में वैठा लिया और थोडी दर तक सन्नाटा रहा।

आधी घडी के वाद खवर आई कि लक्ष्मीदेवी की तवीयत ठीक हो गई और वे सव पर्दे के पास आकर वैठ गई है।

*वारहवा भाग समाप्त *

चन्द्रकान्ता सन्तति

तेरहवॉं भाग

पहिला बयान

अब हम अपने पाठकों का ध्यान जमानिया के तिलिस्म की तरफ फेरते हैं क्योंकि कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को वहॉं छोडे बहुत दिन हो गये और अब बीच में उनका हाल लिखे बिना किस्से का सिलसिला ठीक नहीं होता।

हम लिख आये है कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने तिलिस्मी किताब को पढ कर समझने का भेद आनन्दसिंह को बताया और इतने ही में मन्दिर के पीछे की तरफ से चिल्लाने की आवाज आई। दोनों भाईयों का ध्यान एक दम उस तरफ चला गया और फिर यह आवाज सुनाई पडी अच्छा अच्छा तू मेरा सर काट ले मै भी यही चाहती हूँ कि अपनी जिन्दगी में इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को दु खी न देखूँ। हाय इन्द्रजीतसिंह अफसोस, इस समय तुम्हें मेरी खबर कुछ भी न होगी! इस आवाज को सुन कर इन्द्रजीतसिंह बेचैन और बेताब हो गये और आनन्दसिंह से यह कहते हुए कि 'कमलिनी की आवाज मालूम पडती है मन्दिर के पीछे की तरफ लपके। आनन्दसिंह भी उनके पीछे पीछे चले गये।

जब कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह मन्दिर के पीछे की तरफ पहुँचे तो एक विचित्र वेषधारी मनुष्य पर उनकी निगाह पडी। उस आदमी की उम्र अस्सी वर्ष से कम न होगी। उसके सर मोंछ दाढी और भौं इत्यादि के तमाम बाल बर्फ की तरफ सुफेद हो रहे थे मगर गरदन और कमर पर बुढापे ने अपना दखल जमाने से परहेज कर रक्खा था अर्थात तो उसकी गरदन हिलती थी और न कमर झुकी हुई थी। उसके चेहरे पर झुर्रियॉं बहुत कम पडी थीं मगर फिर भी उसका गोरा चेहरा रौनकदार और रोबीला दिखाई पडता था और दोनों तरफ के गालों पर अब भी सुर्खी मौजूद थी। एक नहीं बल्कि हर अगों की किसी न किसी हालत से वह अस्सी बरस का बुडढा जान पडता था परन्तु कमजोरी पस्तहिम्मती, बुजदिली और आलस्य इत्यादि के धावों से उसका शरीर बचा हुआ था।

उसकी पोशाक राजों महाराजों की पोशाकों की तरह बेशकीमत तो न थी मगर इस योग्य भी न थी कि उससे गरीबी और कमलियाकत जाहिर होती। रेशमी तथा मोटे कपडे की पोशाक हर जगह से चुस्त और फौजी अफसरों के ढग की मगर सादी थी। कमर में एक भुजाली लगी हुई थी और बॉए हाथ में सोने की एक बडी डलिया या चगेर लटकाए हुए था। जिस समय वह कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की तरफ देखकर हॅसा उस समय यह भी मालूम हो गया कि मुँह में जवानों की तरह कुल दॉंत अभी तक मौजूद है और मोती की तरह चमक रहे हैं।

कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को आशा थी कि व इस जगह कमलिनी को नहीं तो किसी न किसी औरत को अवश्य देखेंगे मगर आशा के विपरीत एक ऐसे आदमी को देख उन्हें बडा ही ताज्जुब हुआ। इन्द्रजीतसिंह ने वह तिलिस्मी खजर जो मन्दिर के नीचे वाले तहखाने में पाया था आनन्दसिंह के हाथ में दे दिया और आगे बढ कर उस आदमी से पूछा 'यहॉं से एक औरत के चिल्लाने की आवाज आई थी वह कहॉं है?

बुड्ढा—(इधर उधर देख क) यहॉं तो कोई औरत नहीं है।

इन्द—अभी अभी हम दोनों ने उसकी आवाज सुनी थी।

बुड्ढा—बेशक सुनी होगी मगर में ठीक कहता हूँ कि यहा पर कोइ औरत नही है।

इन्द—तो फिर वह आवाज किसकी थी?

बुड्ढा—वह मेरी ही आवाज थी।

आनन्द—(सिर हिला कर) कदापि नही।

इन्द–मुझे इस बात का विश्वास नहीं हो सकता। आपकी आवाज वैसी नहीं है जैसी वह आवाज थी।

बुड्ढा–जो मैं कहता हूँ उसे आप विश्वास करें या यह बतावें कि आपको मेरी बात का विश्वास क्योंकर होगा ? क्या मैं फिर उसी तरह से बोलूँ ?

इन्द–हाँ यदि ऐसा हो तो हम लोग आपकी बात मान सकते हैं।

बुड्ढा–(उसी तरह से और वे ही शब्द अर्थात्– अच्छा-अच्छा तू मेरा सर काट ले – इत्यादी बोल कर) देखिए वे ही शब्द और उसी ढंग की आवाज है या नहीं ?

आनन्द– (ताज्जुब से) बेशक वही शब्द और ठीक वैसी ही आवाज है।

इन्द–मगर इस ढंग से बोलने की आपको क्या आवश्यकता थी ?

बुड्ढा–मैं इस तिलिस्म में कल से चारों तरफ घूम घूम कर आपको खोज रहा हूँ। सैकड़ों आवाजें दीं और बहुत उद्योग किया मगर आप लोगों से मुलाकात न हुई तब मैंने सोचा कदाचित आप लोगों ने यह सोच लिया हो कि इस तिलिस्म के कारखाने में किसी की आवाज का उत्तर देना उचित नहीं है और इसी से आप मेरी आवाज पर ध्यान नहीं देते। आखिर मैंने यह तर्कीब निकाली और इस ढंग से बोला जिसमें सुनने के साथ ही आप बेताब हो जॉय और स्वयं ढूँढ कर मुझसे मिलें और आखिर जो कुछ मैंने सोचा था वही हुआ।

इन्द–आप कौन हैं और मुझे क्यों बुला रहे थे ?

आनन्द–और इस तिलिस्म के अन्दर आप कैसे आए ?

बुड्ढा–मैं एक मामूली आदमी हूँ और आपका गुलाम हूँ, इसी तिलिस्म में रहता हूँ और यही तिलिस्म मेरा घर है। आप लोग इस तिलिस्म में आए हैं तो मेरे घर में आए हैं अतएव आप लोगों की मेहमानी और खातिरदारी करना मेरा धर्म है इसीलिए मैं आप लोगों को ढूँढ रहा था।

इन्द–अगर आप इसी तिलिस्म में रहते हैं और यह तिलिस्म आपका घर है तो हम लोगों को आप दोस्ती की निगाह से नहीं देख सकते क्योंकि हम लोग आपका घर अर्थात यह तिलिस्म तोड़ने के लिए यहाँ आए है और कोई आदमी किसी ऐसे की खातिर नहीं कर सकता जो उसका मकान तोडने आया हो तब हम क्यों कर विश्वास कर सकते हैं कि आप हमें अच्छी निगाह से देखते होंगे या हमारे साथ दगा या फरेब न करेंगे।

बुड्ढा–आपका ख्याल बहुत ठीक है ऐसे समय पर इन सब बातों को सोचना और विचार करना बुद्धिमानी का काम है परन्तु इस बात का आप दोनों भाइयों को विश्वास करना ही होगा कि मैं आपका दोस्त हूँ भला सोचिए तो सही कि मैं दुश्मनी करके आपका क्या बिगाड सकता हूँ हाँ आपकी मेहरबानी से अवश्य फायदा उठा सकता हूँ।

इन्द–हमारी मेहरबानी से आपका क्या फायदा होगा और आप इस तिलिस्म के अन्दर हमारी क्या खातिर करेंगे ? इसके अतिरिक्त यह भी बतलाइये कि क्या सबूत पाकर हम लोग आप को अपना दोस्त समझ लेंगे और आपकी बात पर विश्वास कर लेंगे ?

बुड्ढा–आपकी मेहरबानी से मुझे बहुत कुछ फायदा हो सकता है। यदि आप चाहेंगे तो मेरे घर को अर्थात इस तिलिस्म का बिल्कुल चौपट न करेंगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि आप इस तिलिस्म को न तोडे और इससे फायदा न उठाए बल्कि मैं यह कहता हूँ कि इस तिलिस्म को उतना ही तोडिए जितने से आपको गहरा फायदा पहुँचे और कम फायदे के लिए व्यर्थ उन मजेदार चीजों का चौपट न कीजिए जिनके बनाने में बडे बडे बुद्धिमानों ने वर्षों मेहनत की है और जिसका तमाशा देखकर बडे बडे होशियारों की अक्ल भी चकरा सकती है। अगर इसका थोडा सा हिस्सा आप छोड देंगे तो मेरा खेल तमाशा बना रहेगा और इसके साथ ही साथ आपके दोस्त गोपालसिंह की इज्जत और नामवरी में भी फर्क न पडेगा और वह तिलिस्म के राजा कहलाने लायक बने रहेंगे। मैं इस तिलिस्म में आपकी खातिरदारी अच्छी तरह कर सकता हूँ तथा ऐसे ऐसे तमाशे दिखा सकता हूँ जो आप तिलिस्म तोडने की ताकत रखने पर भी बिना मेरी मदद के नहीं देख सकते हाँ उसका आनन्द लिए बिना उसको चौपट अवश्य कर सकते हैं। बाकी रही यह बात कि आप मुझ पर भरोसा किस तरह कर सकते हैं इसका जवाब देना अवश्य ही जरा कठिन है।

इन्द–(कुछ सोच कर) तुमसे और राजा गोपालसिंह से जान पहिचान है ?

बुड्ढा–अच्छी तरह जान पहिचान है बल्कि हम दोनों में मित्रता है।

इन्द–(सिर हिला कर) यह बात तो मेरे जी में नहीं बैठती।

बुड्ढा–सो क्यों ?

इन्द–इसलिए कि एक तो यह तिलिस्म तुम्हारा घर है कहो हाँ।

बुडढा–जी हाँ।

इन्द–जब यह तिलिस्म तुम्हारा घर है तो यहाँ का एकएक कोना तुम्हारा देखा हुआ होगा बल्कि आश्चर्य नहीं कि राजा गोपालसिंह की बनिस्बत इस तिलिस्म का हाल तुमको ज्यादा मालूम हो।

बुडढा–जी हाँ बेशक ऐसा ही है। इन्द–(मुस्कुरा कर) तिस पर राजा गोपालसिह से और तुमसे मित्रता है।

बुडढा–अवश्य।

इन्द–तो तुमने इतने दिनों तक राजा गोपालसिह को मायारानी के कैदखाने में क्यों सडने दिया ? इसके जवाब में तुम यह नहीं कह सकते कि मुझे गोपालसिंह के कैद होने का हाल मालूम न था या मै उस सीखचेवाली कोठरी तक नही जा सकता था जिसमें वे कैद थे।

इन्द्रजीतसिंह के इस सवाल ने बुडढे को लाजवाब कर दिया और वह सिर नीचा करके कुछ सोचने लगा। कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने समझ लिया कि यह झूठा है और हम लोगों को धोखा दिया चाहता है। बहुत थोडी देर तक सोचने के बाद बुडढे ने सिर उठाया और मुस्कुरा कर कहा वास्तव में आप बडे होशियार हैं बातों की उलझन में भुलावा देकर मेरा हाल जानना चाहते है मगर ऐसा नहीं हो सकता हाँ जब आप तिलिस्म को तोड लेंगे तो मेरा परिचय भी आपको मिल जायगा, लेकिन यह बात झूठी नहीं हो सकती कि राजा गोपालसिह मेरे दोस्त हैं और वह तिलिस्म मेरा घर है।

इन्द–आप स्वय अपने मुँह से झूठे बन रहे हैं इसमें मेरा क्या कसूर है। यदि गोपालसिह आपके दोस्त हैं तो आप मेरी बात का पूरा पूरा जवाब देकर मेरा दिल क्यों नहीं भर देते हैं ?

बुडढा–नहीं आपकी इस बात का जवाब मै नहीं दे सकता कि गोपालसिंह को मैने मायारानी के कैदखाने से क्यों नहीं छुडाया।

इन्द–ता फिर मेरा दिल कैसे भरेगा और मै कैसे आप पर विश्वास करूँगा ?

बुडढा–इसके लिए मै दूसरा उपाय कर सकता हूँ।

इन्द–चाहे कोई उपाय कीजिए परन्तु इस बात का निश्चय अवश्य होना चाहिए कि यह तिलिस्म आपका घर है और गोपालसिह आप के मित्र है।

बुडढा–आपको तो केवल इसी बात का विश्वास होना चाहिए कि मै आपका दुश्मन नहीं हूँ।

आनन्द–नहीं नहीं हम लोग और किसी बात का सबूत नहीं चाहते केवल वह दो बात आप साबित कर दें जो भाईजी चाहते हैं।

बुडढा–तो इस समय मेरा यहाँ आना व्यर्थ हुआ (चगेर की तरफ इशारा करके) देखिए आप लोगों के खाने के लिए मै तरह तरह की चीजें लेता आया था मगर अब लौटा ले जाना पडा क्योंकि जब आपको मुझ पर विश्वास ही नही है तो इन चीजों को कब स्वीकार करेंगे।

इन्द–बेशक मै इन चीजों को स्वीकार नहीं कर सकता जब तककि मुझे आपकी बातों का विश्वास न हो जाय।

आनन्द–(मुस्कुरा कर) क्या आपके लडके बाले भी इसी तिलिस्म में रहते है ? ये सब चीजें आपके घर की बनी हुई है या बाजार से लाए है ?

बुडढा जी मेरे लडके बाले नहीं हैं न दुनियादार ही हूँ यहाँ तक कि कोई नौकर भी मेरे पास नहीं है–ये चीजें तो बाजार से खरीद लाया हूँ।

आनन्द–तो इससे यह भी जाना जाता है कि आप दिन रात इस तिलिस्म में नहीं रहते जब कभी खेल तमाशा देखने की इच्छा होती होगी तो चले आते होंगे।

इन्द– खैर जो हो इन सब बातों से कोई मतलब नहीं हमारे सामने जब ये अपने सच्चे होने का सबूत लाकर रक्खेंगे तब हम इनमे बातें करेंगे और इनके साथ चल कर इनका घर भी देखेंगे।

इस बात का जवाब उस बुडढे ने कुछ न दिया और सिर झुकाये वहाँ से चला गया। इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह भी यह देखने के लिए कि वह कहाँ जाता है और क्या करता है उसके पीछे चले। बुडढे ने घूम कर इन दोनों भाइयों को अपने पीछे पीछे आते देखा मगर इस बात की उसने कुछ परवाह न किया और बराबर चलता गया।

हम पहिले के किसी बयान में लिख आये है कि इस बाग में पश्चिम की दीवार के पास एक कूआ था। वह बुडढा उसी कुएँ की तरफ चला गया और जब उसके पास पहुँचा तो बिना कुछ रुके एक दम उसके अन्दर कूद पडा। इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिह भी उस कुए के पास पहुँच और झाँककर देखने लगे मगर सिवाय अन्धकार के और कुछ भी दिखाई न दिया।

आनन्द–जब वह बुड्ढा बेधडक इसके अन्दर कूद गया तो यह कुआँ जरूर किसी तरफ निकल जाने का रास्ता होगा !

इन्द–मै भी यही समझता हूँ।

आनन्द–यदि कहिये तो मै इसके अन्दर जाऊँ ?

इन्द–नहीं नहीं ऐसा न करना बडी नादानी होगी, तुम इस तिलिस्म का हाल कुछ भी नहीं जानते हाँ मै इसके अन्दर बेखटके जा सकता हूँ क्योंकि तिलिस्मी किताब पढ चुका हूँ और वह मुझे अच्छी तरह याद भी है मगर मै नहीं चाहता कि तुम्हें इस जगह अकेला छोड़ कर जाऊँ।

आनन्द–तो फिर अब क्या करना चाहिए ?

इन्द्र–बस सब के पहिले तुम इस तिलिस्मी किताब को पढ जाओ और इस तरह याद कर जाओ कि पुन इसके देखने की आवश्यकता न रहे फिर जो कुछ करना होगा किया जायगा। इस समय इस बुडढे का पीछा करना हमें स्वीकार नहीं है। जहाँ तक मै समझता हूँ यह दगाबाज बुडढा खुद हम लोगों का पीछा करेगा और फिर हमारे पास आयेगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि अबकी दफे कोई नया रग लावे।

आनन्द–जैसी आज्ञा अच्छा तो वह किताब मुझे दीजिए मै पढ जाऊँ।

दोनों भाई लौट कर फिर उसी मन्दिर के पास आये और आनन्दसिंह तिलिस्मी किताब को पढने में लौलीन हुए।

दोनों भाई चार दिन तक उसी बाग में रहे। इस बीच में उन्होंने न तो कोई कार्रवाई की और न कोई तमाशा देखा हाँ आनन्दसिह ने उस किताब को अच्छी तर पढ डाला और सब बातें दिल में बैठा ली। वह खून से लिखी हुई तिलिस्मी किताब बहुत बडी न थी और उसके अन्त में यह बात लिखी हुई थी –

नि सन्देह तिलिस्म खोलने वाले का जेहन तेज होगा !उसे चाहिए कि इस किताब को पढकर अच्छी तरह याद कर ले क्योंकि इसके पढने से ही मालूम हो जाएगा कि यह तिलिस्म खोलने वाले के पास बची न रहेगी किसी दूसरे काम में लग जायगी ऐसी अवस्था में अगर इसके अन्दर लिखी हुई कोई बात भूल जायगी तो तिलिस्म खोलने वाले की जान पर आ बनेगी। जो आदमी इस किताब को आदि से अन्त तक याद न कर सक वह तिलिस्म के काम में कदापि हाथ न लगावे नहीं तो धोखा खायेगा।

दूसरा बयान

दिन लगभग पहर भर के चढ चुका है। दोनों कुमार स्नान ध्यान पूजा से छुट्टी पाकर तिलिस्म तोडने में हाथ लगाने के लिए जा ही रहे थे कि रास्ते में फिर उसी बुडढे से मुलाकात हुई। बुडढे ने झुक कर दोनों कुमारों को सलाम किया और अपनी जेब में से एक चीठी निकाल कुँअर इन्दजीतसिह के हाथ में देकर बोला 'देखिए राजा गोपालसिह के हाथ की सिफारिशी चीठी ले आया हूँ इसे पढ कर तब कहिए कि मुझ पर भरोसा करने में अब आपको क्या उज्र है ? कुमार ने चीठी पढी और आनन्दसिह को दिखाने के बाद हँस कर उस बुडढे की तरफ देखा।

बुड्ढा–(मुस्कुरा कर) कहिए अब आप क्या कहते हैं ? क्या इस पत्र को आप जाली या बनावटी समझते हैं ?

इन्द–नही-नही, यह चीठी जाली नही हो सकती मगर देखो तो सही–(आनन्दसिह के साथ से चीठी लेकर और चीठी में लिखे हुए एक निशान को दिखा कर) इस निशान को तुम पहिचानते हो या इसका मतलब तुम जानते हो ?

बुडढा–(निशान देखकर) इसका मतलब तो आप जानिए या गोपालसिह जानें मुझे क्या मालूम यदि आप बतलाइये तो "'

इन्द–इसका मतलब यही है कि यह चीठी बेशक सच्ची है मगर इसमें जो कुछ लिखा है उस पर ध्यान न देना !

बुड्ढा–| क्या गोपालसिह ने आपसे कहा था कि हमारी लिखी जिस चीठी पर ऐसा निशान हो उसकी लिखावट पर ध्यान न देना।

इन्द–हॉ मुझसे उन्होंने ऐसा ही कहा था इस लिए जाना जाता है कि यह चीठी उन्होंने अपनी इच्छा से नहीं लिखी बल्कि जबर्दस्ती किये जाने के सबब से लिखी है।

बुडढा–नहीं नही ऐसा कदापि नही हो सकता आप भूलते है उन्होंने आपसे इस निशान के बारे में कोई दूसरी बात कही होगी।

कुमार–नहीं नहीं मै ऐसा भुलक्कड़ नहीं हूँ, अच्छा आप ही बताइये यह निशान उन्होंने क्यों बनाया।

बुडढा–यह निशान उन्होंने इस लिए स्थिर किया है कि कोई ऐयार उनके दोस्तों को उनकी लिखावट का धोखा न

दे सके। (कुछ सोच कर और हँस कर) मगर कुमार तुम भी बड़े बुद्धिमान और मसखरे हो !

कुमार–कहो अब मैं तुम्हारी दाढी नोच लूँ ?

आनन्द–(हस कर और ताली बजा कर) या मैं नोच लूँ ?

बुडढा–(हँसते हुए) अब आप लोग तकलीफ न कीजिए मैं स्वयम इस दाढी को नोच कर अलग फेंक देता हूँ !

इतना कह उस बुडढे ने अपने चेहरे से दाढ़ी अलग कर दी और इन्दजीतसिंह के गले से लिपट गया।

पाठक यह बुड्ढा वास्तव में राजा गोपालसिंह थे जो चाहते थे कि सूरत बदल कर इस तिलिस्म में कुँअर इन्दजीतसिंह और आनन्दसिंह की मदद करें, मगर कुमार की चालाकियों ने उनकी हिकमत लडने न दी और लाचार होकर उन्हें प्रकट होना ही पड़ा।

कुँअर इन्द्रजीतसिह आनन्दसिह दोनों भाई राजागोपालसिंह के गले मिले और उनका हाथ पकड़े हुए नहर के किनार गये जहाँ पत्थर की एक चट्टान पर बैठ कर तीनों आदमी बातचीत करने लगे।

तीसरा बयान

अब हम रोहतासगढ़ का हाल लिखते है। जिस समय बाहर यह खबर आई कि लक्ष्मीदेवी की तबीयत ठीक हो गई और वे सब पर्दे के पास आकर बैठ गई उस समय राजा बीरेन्द्रसिह ने तेजसिह की तरफ देखा और कहा, 'लक्ष्मीदेवी से पूछना चाहिए कि उसकी तबीयत यह कलमदान देखने के साथ की क्यों खराब हो गई ?

इसके पहिले कि तेजसिंह राजा बीरेन्द्रसिह की बात का जवाब दें या उठने का इरादा करें जिन्न ने कहा आश्चर्य है कि आप इसके लिये जल्दी करते है।

जिन्न की बात सुन राजा बीरेन्द्रसिह मुस्कुरा कर चुप हो रहे और भूतनाथ का कागज पढने के लिए तेजसिह को इशारा किया। आज भूतनाथ का मुकदमा फैसला होने वाला है इसलिए भूतनाथ और कमला का रज और तरद्दुद तो वाजिब ही है मगर इस समय भूतनाथ से सौगुनी बुरी हालत बलभद्रसिह की हो रही है। चाहे सभों का ध्यान उस कागज के मुद्दे की तरफ ही लगा हो जिसे अब तेजसिंह पढा चाहते है मगर बलभद्रसिह का ख्याल किसी दूसरी तरफ है। उसके चेहरे पर बदहवासी और परेशानी छाई है और वह छिपी निगाहों से चारों तरफ इस तरह देख रहा है जैसे कोई मुजरिम निकल भागने के लिए रास्ता ढूँढ़ता हो मगर भैरोसिह को मुस्तैदी के साथ अपने ऊपर तैनात पाकर सिर नीचा कर लेता है।

हम यह लिख चुके है कि तेजसिंह पहिले उन चीठीयों को पढ गये जिनका हाल हमारे पाठको को मालूम हो चुका है अब तेजसिह ने उसके आगे वाला पत्र पढना आरम्भ किया जिसमें यह लिखा था –

'मेरे प्यारे दोस्त

आज मैं बलभद्रसिह की जान ले ही चुका था मगर दारोगा साहब ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया। मैंने सोचा था कि बलभद्रसिंह के खतम हो जाने पर लक्ष्मीदेवी की शादी रुक जायगी और उसके बदले में मुन्दर को भरती कर देने का अच्छा मौका मिलेगा मगर दारोगा साहब की यह राय न ठहरी। उन्होंने कहा कि गोपालसिंह को भी लक्ष्मीदेवी के साथ शादी करने की जिद्द हो गयी है ऐसी अवस्था में यदि बलभद्रसिह को तुम मार डालोगे तो राजा गोपालसिह दूसरी जगह शादी करने के बदले में बरस दिन अटक जाना मुनासिब समझेंगे और शादी का दिन टल जाना अच्छा नहीं है इससे यही उचित होगा कि बलभद्रसिह को कुछ न कहा जाय लक्ष्मीदेवी की माँ को मरे ग्यारह महीने हो ही चुके हैं महीना भर और बीत जाने दो जो कुछ करना होगा शादी वाले दिन किया जायगा। शादी वाले दिन जो कुछ किया जायगा उसका बन्दोबस्त भी हो चुका है। उस दिन मौके पर लक्ष्मीदेवी गायब कर दी जायेगी और उसकी जगह मुन्दर बैठा दी जायेगी और उसके कुछ देर पहिले ही बलभद्रसिंह ऐसी जगह पहुँचा दिया जायगा जहाँ से पुन लौट आने की आशा नहीं है बस फिर किसी तरह का खटका न रहेगा। यह सब तो हुआ मगर आपने अभी तक फुटकर खर्च के लिए रुपये न भेजे। जिस तरह हो सके उस तरह बन्दोबस्त कीजिए और रूपये भेजिए नहीं तो सब काम चौपट हो जायेगा आगे आपको अख्तियार है।

वही भूतनाथ

बीरेन्द–(भूतनाथ की तरफ देख के) क्यों भूतनाथ यह चीठी तुम्हारे हाथ की लिखी हुई है !

भूत–(हाथ जोड कर) जी हाँ महाराज यह कागज मेरे हाथ का लिखा हुआ है।

बीरेन्द–तुमने यह पत्र हेलासिंह के पास भेजा था ?

भूत– जी नहीं।

बीरेन्द– तुम अभी कह चुके हो कि यह पत्र मेरे हाथ का लिखा है और फिर कहते हो कि नहीं !

भूत–जी मैं नहीं कहता कि यह कागज मेरे हाथ का लिखा हुआ नहीं बल्कि मैं यह कहता हूँ कि यह पत्र हेलासिंह के पास मैंने नहीं भेजा था।

बीरेन्द–तब किसने भेजा था ?

भूत–(बलभद्रसिंह की तरफ इशारा कर के) इसने भेजा था और इसी ने अपना नाम भूतनाथ रक्खा था क्योंकि यह वास्तव में लक्ष्मीदेवी का बाप बलभद्रसिंह नहीं है।

बीरेन्द–अगर यह चीठी (बलभद्रसिंह की तरफ इशारा करके) इन्होंने हेलासिंह के पास भेजी थी तो फिर तुमने अपने हाथ से क्यों लिखा ? क्या तुम इनके नौकर या मुहर्रिर थे ?

भूत०–जी नहीं, इसका कुछ दूसरा ही सबब है मगर इसके पहिले कि मैं आपकी बातों का पूरा पूरा जवाब दूँ बलभद्रसिंह से दो चार बातें पूछने की आज्ञा चाहता हूँ।

बीरेन्द–क्या हर्ज है जो कुछ पूछना चाहते हो पूछो।

भूत–(बलभद्रसिंह की तरफ देख के) इस कागज के मुट्ठे को तुम शुरू से आखिर तक पढ़ चुके हो या नहीं !

बलभद–हां पढ़ चुका हूँ।

भूत–जो चीठी अभी पढ़ी गई है इसके आगे वाली चीठियाँ जो अभी पढ़ी नहीं गई तुम्हारे इस मुकदमे से कुछ सम्बन्ध रखती हैं !

बलभद–नहीं।

भूत–सो क्यों !

बलभद–आगे की चीठियों का मतलब हमारी समझ में नहीं आता।

भूत–तो अब आगे वाली चीठियों को पढ़ने की कोई आवश्यकता न रही !

बलभद–तेरा कसूर साबित करने के लिए क्या इतनी चीठिया कम हैं जो पढ़ी जा चुकी हैं !

भूत–बहुत है बहुत है अच्छा तो अब मैं यह पूछता हूँ कि लक्ष्मीदेवी की शादी के दिन तुम कैद कर लिये गये।

बलभद–हां।

भूत–उस समय बालासिंह कहाँ था और अब बालासिंह कहाँ है !

भूतनाथ के इस सवाल ने बलभद्रसिंह की अवस्था फिर बदल दी। वह और भी घबड़ाया सा होकर बोला इन सब बातों के पूछने से क्या फायदा निकलेगा ? इतना कह कर उसने दारोगा और मायारानी की तरफ देखा। मालूम होता था कि बालासिंह के नाम ने मायारानी और दारोगा पर भी अपना असर किया जो मायारानी के बगल ही में एक खम्भे के साथ बधा हुआ था। बीरेन्द्रसिंह और उनके बुद्धिमान ऐयारों ने भी बलभद और दारोगा तथा मायारानी के चेहरे और उन तीनों की इस देखा-देखी पर गौर किया और बीरेन्द्रसिंह ने मुस्कुरा कर जिन्न की तरफ देखा।

जिन्न–मैं समझता हूँ कि इस बलभद्रसिंह के साथ आपको बेमुरौवती करनी होगी।

बीरेन्द–बेशक मगर आप कह सकते हैं कि यह मुकद्दमा आज फैसला हो जायगा ?

जिन्न–नहीं यह मुकद्दमा इस लायक नहीं है कि आज फैसला हो जाय। यदि आप इस मुकद्दमे की कलई अच्छी तरह खोला चाहते है तो इस समय इसे रोक दीजिये और भूतनाथ को छोड़ कर आज्ञा दीजिए कि महीने भर के अन्दर जहाँ से हो सके वहाँ से असली बलभद्रसिंह को खोज लावे नहीं तो उसके लिए बेहतर न होगा।

बीरेन्द–भूतनाथ को किसकी जमानत पर छोड दिया जाय।

जिन्न–मेरी जमानत पर।

बीरेन्द–जब आप ऐसा कहते हैं तो हमें कोई उज्र नहीं है यदि लक्ष्मीदेवी और लाडिली तथा कमलिनी इसे स्वीकार करें।

जिन्न–उन सभों को भी कोई उज्र नहीं होना चाहिए।

इतने में पर्दे के अन्दर से कमलिनी ने कहा हम लोगों को कोई उज्र न होगा हमारे महाराज को अधिकार है जो चाहें करें।

बीरेन्द–(जिन्न की तरफ देखके) तो फिर कोई चिन्ता नहीं हम आपकी बात मान सकते हैं। (भूतनाथ से) अच्छा

तुम यह तो बताओ कि जब वह चीठी तुम्हारे ही हाथ की लिखी हुई है तो तुम इसे हेलासिंह के पास भेजने से क्यों इन्कार करते हो।

भूत–इसका हाल भी उसी समय मालूम हो जायगा जब मैं असली बलभद्र को छुडा कर ले आऊँगा।

जिन्न–आप इस समय इस मुकद्दमे को रोक ही दीजिए जल्दी न कीजिये क्योंकि इसमें अभी तरह तरह के गुल खिलने वाले हैं।

बलभद्र–नहीं नहीं भूतनाथ को छोड़ना उचित न होगा यह बडा भारी बेइमान जालिया धूर्त और बदमाश है। यदि इस समय छूट कर चल देगा फिर कदापि न आवेगा।

तेज–(घुड़क कर बलभद से) बस चुप रहो तुमसे इस बारे में राय ही नहीं ली जाती।

बलभद–(खडे हो कर) तो फिर मैं जाता हूँ जिस जगह ऐसा अन्याय हो वहाँ ठहरना भले आदमियों का काम नहीं।

बलभद्रसिंह उठकर खडा हुआ ही था कि भैरोसिंह ने उसकी कलाई पकड़ ली और कहा, 'ठहरिये आप भले आदमी है आपको क्रोध न करना चाहियेअगर ऐसा कीजियेगा तो मलमनसी में बट्टा लग जायगा। यदि आपको हम लागों की सोहबत अच्छी मालूम नहीं पड़ती ता आप मायारानी और दारोगा की सोहबत में रक्खे जायेंगे जिसमें आप खुश रहें हम लोग वही करेगें।

भैरोसिंह न बलभद्रसिंह की कलाई पकड के कोई नस ऐसी दबाई कि वह बेताब हो गया उसे ऐसा मालूम हुआ मानों उसके तमाम बदन की ताकत किसी ने खैंच ली हो और वह बिना कुछ बोले इस तरह बैठ गया जैसे कोई गिर पडता है। उसकी यह अवस्था देख सभों ने मुस्कुरा दिया।

जिन्न–(वीरेन्द्रसिंह से) अब मैं आपसे और तेजसिंहजी से दो चार बातें एकान्त में कहा चाहता हूँ।

वीरेन्द–हमारी भी यही इच्छा है।

राजा वीरेन्द्रसिंह तेजसिंह और जिन्न आधे घण्टे तक एकान्त में बैठ कर बातचीत करते रहे। सभों को जिन्न के विषय में जितना आश्चर्य था उतना ही इस बात का निश्चय भी हो गया था कि जिन्न का हाल राजा वीरेन्द्रसिंह तेजसिंह और भैरोसिंह का मालूम हो गया है परन्तु वह किसी से न कहेंगे और न कोई उनसे पूछ सकेगा।

आधे घण्टे के बाद तीनों आदमी कमरे के बाहर निकल कर अपने-अपने ठिकाने आ पहुँचे और तेजसिंह ने देवीसिंह की तरफ देख के कहा भूतनाथ को छोड देने की आज्ञा हुई है। तुम भूतनाथ और जिन्न के साथ जाओ और हिफाजत के साथ पहाड के नीचे पहुँचा कर लौट आओ।

इतना सुनते ही देवीसिंह ने भूतनाथ की हथकड़ी बेडी खोल दी और उसको तथा जिन्न को साथ लिये वहाँ से बाहर चले गये। इसके बाद तेजसिंह पर्दे के अन्दर गये और लक्ष्मीदेवी कमलिनी तथा लाडिली को कुछ समझा बुझा कर बाहर निकल आए। बलभद्रसिंह को खातिरदारी और चौकसी के साथ हिफाजत में रखने के लिए भैरोसिंह के हवाले किया गया और बाकी कैदियों को कैदखाने में पहुँचाने की आज्ञा देकर राजा वीरेन्द्रसिंह बाहर चले आए तथा अदालत बरखास्त कर दी गई।

चौथा बयान

जब जिन्न और भूतनाथ को पहाड के नीचे पहुँचा कर देवीसिंह चले गये तो दोनों आपुस में नीचे लिखी बातें करते हुए पूरब की तरफ रवाना हुए –

भूत–नि सदेह आपने मुझ पर बडी कृपा की यदि आज आप मेरे सहायक न होते तो मैं तबाह हो चुका था।

जिन्न–सो सब तो ठीक है मगर देखो आज हमने तुमको अपनी जमानत पर इसलिए छुडा दिया है कि तुम जिस तरह होअसली बलभद्रसिंह की खोज निकालो और उन्हें अपने साथ लेकर राजा वीरेन्द्रसिंहके पास हाजिर हो जाओ लेकिन ऐसा न करना कि बलभद्रसिंह का पता लगाने के बदले तुम स्वयं अन्तर्ध्यान हो जाओ और हमको राजा वीरेन्द्रसिंह के आगे झूठा करो।

भूत–नहीं नहीं ऐसा कदापि नहीं होगा। यदि मुझे नेकनामी के साथ राजा वीरेन्द्रसिंह का ऐयार बनने का शौक न होता तोमैं इन बखेड़ो मे क्यों पड़ता ? बिना कुछ पाये इतना काम क्यों करता ? रुपये की मुझे कुछ परवाह न थी मैं किसी दूसरे देश में चला जाता और खुशी के साथ जिन्दगी बिताता। मगर नहीं मुझे राजा वीरेन्द्रसिंह के साथ रहने का

वडा उत्साह है और जिस दिन से राजा गोपालसिंह का पता लगा है उसी दिन से मै उनके दुश्मनों की खोज में लगा हूँ और वहुत सी वातों का पता लगा भी चुका हूँ।

जिन्न--(वात काट कर) तो क्या तुमको इस वात की खवर न थी कि मायारानी ने गोपालसिह को कैद कर के किसी गुप्त स्थान में रख दिया है ?

भूत–नही विल्कुल नहीं।

जिन्न–और इस वात की भी खवर न थी कि मायारानी वास्तव में लक्ष्मीदेवी नहीं है ?

भूत–इस वात को तो मै भी अच्छी तरह जानता था।

जिन्न–तो तुमने राजा गोपालसिह के आदमियों को इस वात की खवर क्यों नहीं की ?

भूत–मैने इसलिए मायारानी का असल हाल किसी से नहीं कहा कि मुझे राजा गोपालसिंह के मरने का पूरा-पूरा विश्वास हो चुका था और उसके पहिले मै रणधीरसिहजी के यहॉ नौकर था तव मुझे दूसरे राज्य के भले वुरे कामों से मतलव ही क्या था।

जिन्न–तुमसे और हेलासिह से जव दोस्ती थी तव तुम किसके नौकर थे ?

भूत–मुझसे और हेलासिह से कभी दोस्ती थी ही नहीं ! मै तो आपसे कैदखाने के अन्दर ही कह चुका हूँ कि राजा गोपालसिह के छूटने के वाद मैंने उन कागजों का पता लेगाया है जो इस समय मेरे ही साथ दुश्मनी कर रहे है और

जिन्न--हॉ हॉ जो कुछ तुमने कहा था मुझे वखूवी याद है अच्छा अव,यह वताओ कि इस समय तुम कहॉ जाओगे और क्या करोगे ?

भूत–मै खुद नही जानता कि कहॉ जाऊगा और क्या करूँगा वल्कि यहै वात मै आप ही से पूछने वाला था।

जिन्न–(ताज्जुव से) क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि वलभद्रसिह को किसने कैद किया और अव वह कहॉ है ?

भूत--इतना तो मै जानता हूँ कि वलभद्रसिह को मायारानी के दारोगा ने कैद किया था मगर यह नहीं मालूम कि इस समय वह कहॉ है।

जिन्न--अगर ऐसा ही है तो कमलिनी के तिलिस्मी मकान के वाहर तुमने तेजसिह से क्यों कहा था कि मेरे साथ काई चले तो मै असली वलभद्रसिह को दिखा दूँगा ? इस वात से तो तुम खुद झूठे सावित होत हो !

भूत–वेशक मैंने नादानी की जो ऐसा कहा मगर मुझे इस वात का निश्चय हो चुका है कि वलभद्रसिह अभी तक जीता है और उसे तिलिस्मीदारोगा ने कैद कर लिया था।

जिन्न–इसी से तो मै पूछता हूँ कि अव तुम कहा जाओगे और क्या करोगे ?

भूत–अगर वह दारोगा मेरे कावू में होता तव तो मै सहज ही में पता लगा लेता मगर अव मुझे इसके लिए बहुत कुछ उद्योग करना हागा तथापि इस समय मै जमानिया में राजा गोपालसिह के पास जाता हूँ, यदि उन्होंने मेरी मदद की तो अपना काम बहुत जल्द कर सकूँगा मगर आशा नहीं है कि वे मेरी मदद करेंगे क्योंकि जव वे मेरे मुकदमें का हाल सुनेंगे तो जरूर मुझको नालायक वनायेंगे (कुछ सोच कर) अभी तक यह भी मुझे मालूम नहीं हुआ कि आप कौन है, अगर जानता तो कहता कि राजा गोपालसिंह के नाम की आप एक चीठी लिख दें।

जिन्न--मेरा परिचय तुम्हें सिवाय इसके और कुछ नहीं मिल सकता कि मैं जिन्न हूँ और हर जगह पहुचने की ताकत रखता हू। खैर तुम राजा गोपालसिंह के पास जाओ और उनसे मदद मागो मै तुम्हें एक सिफारिशी चीठी देता हू तुम्हारे पास कागज कलम है ?

भूत–जी हॉ आपकी कृपा से मुझे मेरा ऐयारी का वटुआ मिल गया है और उसमें सव सामान मौजूद है।

इतना कह कर भूतनाथ रुक गया और एक पेड के नीचे वैठने के लिए जिन्न को कहा मगर जिन्न ने ऐसा करने से इनकार कर दिया और आगे की तरफ इशारा करके कहा 'उस पेड़ के नीचे चलकर हम ठहरेंगे क्योंकि वहॉ हमारा घोडा मौजूद है।

थोडी ही देर में दोनों आदमी उस पेड के नीचे जा पहुँचे। भूतनाथ ने देखा कि कसे कसाये दो उम्दा घोडे उस पड की जड के साथ वागडोर के सहारे वधे है और जिन्न ही की सूरत-शक्ल ढाल का एक आदमी उनके पास टहल रहा है जो जिन्न के वहॉ पहुचते ही सलाम करके एक किनारे खड़ा हो गया। जिन्न ने भूतनाथ से कलम-दवात और कागज लकर कुछ लिखा और भूतनाथ को देकर कहा यह चीठी राजा गोपालसिह को दना वस अव तु जाओ। इतना कह कर जिन्न एक घोड़े पर सवार हो गया जिन्न ही की सूरत का दूसरा आदमी जो वहॉ मौजूद था दूसरे घोडे पर सवार हो गया,और भूतनाथ के देखते ही देखते दूर जाकर वे दोनों उसकी नजरों से गायब हो गये। भूतनाथ तरद्दुद और परेशानी के सवव से उदास और सुस्त हो गया था इसलिए थोड़ी देर तक आराम करने की नीयत से उसी पेड के नीचे वैठ जाने वाद उस पत्र को पढने लगा जो जिन्न ने राजा गोपालसिह के लिए लिख दिया था।

मगर हजार कोशिश करने पर भी उससे वह चीठी पढी न गई क्योंकि सिवाय टेढी मेढी और पेचीली लकीरों के किसी साफ अक्षर का उसके अन्दर भूतनाथ को पता ही न लगा।

आधे घण्टे तक आराम करने के बाद भूतनाथ उठ खडा हुआ और 'लामा' घाटी की तरफ रवाना हुआ।

पॉचवॉं बयान

भूतनाथ अब बिल्कुल आजाद हो गया। इस समय उसकी ताकत उतनी ही है जितनी आज के दस दिन पहिले थी और जितने आज के दस दिन पहले उसके ताबेदार थे उतने ही आज भी हैं। पाठक जानते ही हैं कि भूतनाथ अकेला नहीं है बल्कि बहुत से आदमी उसके नौकर भी है जो इधर उधर घूम फिर कर उसका काम किया करते है। भूतनाथ ने जब से नकली बलभद्रसिह से यह सुना कि 'उसकी बहुत ही प्यारी चीज मेरे कब्जे में है जिसे वह लामाघाटी * में छोड आया था तब से वह और भी परेशान हो गया था। वह बहुत प्यारी चीज क्या थी ? बस वही उसकी स्त्री जिसके पेट से नानक पैदा हुआ था और जिसे उसने नागर की मेहरबानी से पुन पा लिया था। वास्तव में भूतनाथ अपनी उस प्यारी स्त्री को लामाघाटी में ही छोड आया था।

भूतनाथ इस समय जमानिया जाने के बदले लामाघाटी ही की तरफ रवाना हुआ और तीसरे दिन सध्या समय उस घाटी में जा पहुँचा जिसे वह अपना घर समझता था।

यहॉ पर हम पाठकों के दिल में लामाघाटी की तस्वीर खैंचकर भूतनाथ की ताकत और उसके स्वभाव या ख्याल का कुछ अन्दाज करा देना मुनासिब समझते हैं। लामाघाटी में किसी अनजान आदमी का जाना बहुत कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था। ध्यानशक्ति की सहायता से यदि आप वहॉ जॉय तो सब के पहिले एक छोटी सी पहाड़ी मिलेगी जिस पर चढने के लिए एक बारीक पगडण्डी दिखाई देगी। जब उस पगडण्डी की राह से पहाड़ी के ऊपर चढ जायेंगे तो तीन तरफ नैदान और पश्चिम तरफ केवल आधा कोस की दूरी पर एक बहुत ऊँचा पहाड मिलेगा। उसके पास जाने पर मालूम होगा कि ऊपर चढने के लिए कोई रास्ता या पगडण्डी नहीं है और न पहाड़ के दूसरी तरफ उतर जाने का ही मौका है। मगर खोजन की कोई आवश्यकता नहीं आप उस पहाडी के नीचे पहुँचकर दाहिनी तरफ घूम जाइय और जब तक पानी का एक छोटा सा झरना आपको न मिले बराबर चले ही जाइये। वह दोतीन हाथ चौडा झरना आपका रास्ता काट के बहता होगा उसे लॉघने की कोई आवश्यकता नहीं आप बाई तरफ ऑख उठा कर देखेंगे तो बीस पचीस हाथ की ऊँचाई पर एक छोटी सी गुफा दिखाई देगी आप बेधडक उस गुफा में चले जाइये जिसके अन्दर बिल्कुल अन्धकार होगा और बनिस्बत बाहर के अन्दर गर्मी कुछ ज्यादे होगी। कोस भर तक बराबर गुफा के अन्दर ही अन्दर चलने के बाद जब आप बाहर निकलेंगे तो एक छोटा सा मैदान नजर आएगा। वह मैदान छोटे छोटे जगली फलों और लताओं से ऐसा भरा होगा कि दूर से देखने वालों को तो आनन्द मगर उसके अन्दर जाने वाले के लिए आफत समझिये। उसमें जाने वाला तीस चालीस कदम मुश्किल से जाने के बाद इस तरह से फॅस जयगा कि निकलना कठिन होगा। उस मैदान के किनारे किनारे दाहिनी तरफ और फिर बाई तरफ घूम जाना होगा और जब आप पश्चिम और उत्तर के कोने में पहुँचेंगे तो और एक गुफा मिलेगी। आप उस गुफा के अन्दर चले जाइये। लगभग दो सौ कदम जाने के बाद जब आप बाहर निकलेंगे तो अनगढ और मोटे मोटे पत्थर के ढोकों से बनी हुई दीवारें मिलेंगी जिसके बीचोबीच में एक बहुत बड़ा लडकी का दर्वाजा लगा है। यदि दर्वाजा खुला है तो आप दीवार के उस पार चले जाइये और एक पुरानी बहुत बडी इमारत पर नजर डालिए। यद्यपि यह मकान बहुत पुराना है और कई जगह से टूट भी गया है तथापि जो कुछ बचा है बहुत मजबूत और पचासों बरसात सहने योग्य है जिसमें अब भी कई बडे दालान और कोठरियॉ मौजूद हैं और उस स्थान का नाम लामाघाटी है। भूतनाथ के आदमी या नौकर चाकर इसी मकान में रहते है और अपनी स्त्री को भी वह इसी जगह छोड़ गया था। उसके सिपाही जो बडे ही दिमागदार बहुत कट्टर और साथ ही इसके ईमानदार भी थे गिनती में पचास से कम न थ और भूतनाथ क खजाने की हिफाजत बडी मुस्तैदी और नेकनीयती क साथ करत थे तथा बडे कठिन कामों को पूरा करने के लिए भूतनाथ की आज्ञा पाते ही मुस्तैद हो जाते थे। उस मकान के चारों तरफ बहुत मैदान छोटे छोटे जगली खूबसूरत पौधों से हरा भरा बहुत ही खूबसूरत मालूम पडता था और उसके बाद भी चारों तरफ की पहाडियों के ऊपर जहॉ तक निगाह काम कर सकती थी छोटे छाटे खूबसूरत पड पौधे दिखाई पडते थ।

भूतनाथ इसी लामाघाटी में पहुचा। पहुचने के साथ ही चारों तरफ से उसके आदमियों ने खुशी-खुशी उसे घेर लिया और कुशल मगल पूछने लगे। भूतनाथ सभों से हॅस कर मिला और 'हॉ सब ठीक है बहुत अच्छा है मेरा आना

* 'लामाघाटी एक पहाडी स्थान का नाम है।

जिस लिए हुआ उसका हाल जरा ठहर कर कहूगा इत्यादि कहता हुआ अपनी स्त्री के पास चला गया जो बहुत दिनों स उसे देखे बिना बेताब हो रही थी। हँसी खुशी से मिलने के बाद दोनों में यों बातचीत होने लगी--

स्त्री--तुम बहुत दुबले और उदास मालूम पडते हो !

भूत--हॉ इधर कई दिन मुसीबत ही मे कटे है।

स्त्री--(चौक कर) सो क्या कुशल तो है ?

भूत--कुशल क्या जान बच गई यही गनीमत है।

स्त्री--सो क्या ? तुम्हारा भेद खुल गया ?

भूत--(ऊँची सॉस लेकर) हॉ कुछ खुल ही गया।

स्त्री--(हाथ मल कर) हाय हाय यह तो बड़ा ही गजब हुआ !

भूत--बेशक गजब हो गया।

स्त्री--फिर तुम बच कर,कैसे निकल आये ?

भूत--ईश्वर ने एक सहायक भेज दिया जिसने अपनी जमानत पर महीन भर के लिए मुझे छुड़ा दिया।

स्त्री--तो क्या महीने भर के बाद तुम्हे फिर हाजिर होना पडेगा ?

भूत--हॉ।

स्त्री--किसके आगे ?

भूत--राजा बीरेन्द्रसिंह के आगे।

स्त्री--राजा बीरेन्द्रसिह से क्या सरोकार ? तुमने उनका तो कुछ बिगाडा नहीं था।

भूत--इतनी ही तो कुशल है कि वह दूसरी जगह जाने के बदले सीधा लक्ष्मीदेवी के पास चला गया।

स्त्री--(चौंक कर) है क्या लक्ष्मीदेवी जीती है ?

भूत--हा जती है। मुझ इस बात की खबर है कुछ भी न थी कि कमलिनी क साथ जो तारा रहती है वह वास्तव में लक्ष्मीदेवी है और बालासिह को यह बात मालूम हो गई थी इसलिए वह सीधा लक्ष्मीदेवी क पास चला गया। यदि मुझे पहिले लक्ष्मीदेवी की खबर लग गई होती ता आज मै राजा बीरेन्द्रसिह के आग अपनी तारीफ सुनता हाता।

स्त्री--तुम तो कहते थे कि बालासिह मर गया।

भूत--हॉ मै ऐसा जानता था।

स्त्री--उसी ने तो तुम्हारी सन्दूकडी चुराई थी !

भूत--हॉ जब उसन सन्दूकडी चुराई थी तभी मै अधमुआ हो चुका था मगर यह सुनकर कि वह मर गया मै निश्चिन्त भी हो गया था परन्तु जिस समय वह यकायक मेरे सामने आ खड़ा हुआ मुझे बडा ही आश्चर्य हुआ। उसके हाथ में वह गठरी उसी कपडे मे बँधी उसी तरह लटक रही थी जैसी तुम्हारे सन्दूक से चोरी गई थी और जिसे देखने के साथ ही मै पहिचान गया। ओफ मै नही कह सकता कि उस समय मेरी क्या हालत थी। मेरे होशोहवास दुरुस्त न थे और मै अपने को जिन्दा नहीं समझता था। इस बात के दो चार दिन पहले जब मै राजा गोपालसिह के साथ किशोरी और कामिनी को कमलिनी के मकान में पहुचाने गया था तो उसी समय तारा पर मुझे शक हो गया मगर अपनी भलाई का कोई दूसरा ही रास्ता सोचकर मै उस समय चुप रहा परन्तु जिस समय बालासिह से यकायक मुलाकात हो गई और उसने उस गठरी की तरफ इशारा कर के मुझसे कहा कि इसमें सोहागिन तारा की किस्मत बन्द है उसी समय मुझे विश्वास हो गया कि तारा वास्तव में लक्ष्मीदेवी है और वह कागज का मुट्ठा भी इसी ने चुरा लिया है जिसे मैंने बडी मेहनत से बटोर कर नकल करके रक्खा था। मै उस समय बदहवास हो गया और अफसोस करने लगा कि जिन कागजों से मै फायदा उठाने वाला था वही कागज अब मुझे चौपट करेंगे क्योकि वह उन्हीं कागजों से मुझी को दोषी ठहराने का उद्योग करेगा। यदि वह सन्दूकडी उसके पास न होती तो मै हताश न होकर और कोई बन्दोबस्त करता परन्तु उस सन्दूकडी के ख्याल ही से मै पागल हो गया और उस समय तो मै बिल्कुल ही मुर्दा हो गया जब उसकी बेगम पर मेरी निगाह पड़ी।

स्त्री--(चौक कर) क्या बेगम भी जीती है !

भूत--हॉ उस समय वह उसके साथ थी और थोडी ही दूर पर एक झाडी के अन्दर छिपी हुई थी।

स्त्री--यह बडा ही अंधेर हुआ अगर तुम्हे मालूम होता कि वह जीती है तो तुम अपना नाम भूतनाथ काहे को रखते।

भूत--नहीं अगर उसके मरने में कुछ भी शक होता तो मै अपना नाम भूतनाथ न रखता। केवल इतना ही नहीं उसने तो मुझे उस समय एक ऐसी बात कही थी जिससे मेरी बची बचाई जान भी निकल गई और मै ऐसा कमजोर हो गया

कि उसके साथ लड़ने योग्य भी न रहा।

स्त्री–सो क्या ?

भूत–उसने तुम्हारी तरफ इशारा करके मुझसे कहा कि तुम्हारी बहुत ही प्यारी चीज मेरे कब्जे में है जो तुम्हारे बाद बड़ी तकलीफ में पड़ जायेगी और जिसे तुम लामाघाटी में छोड़ आये थे और यही सबब है कि छुटने के साथ ही सबसे पहिले मैं इस तरफ आया मगर ईश्वर को धन्यवाद देता हूं कि तुम उस शैतान के हाथ से बची रहीं और तुम्हें मैं इस जगह राजी खुशी देख रहा हूं।

स्त्री–उसकी क्या मजाल कि यहां आ सके उसे स्वप्न में भी यहां का रास्ता मालूम नहीं हो सकता।

भूत–सो तो मैं समझता हूं। परन्तु लामाघाटी का नाम लेने से मुझे उसकी बात पर विश्वास हो गया मैंने सोचा कि यदि वह लामाघाटी तक न गया होता तो लामाघाटी का नाम भी उसे मालूम न होता और ठ

स्त्री–नहीं नहीं लामाघाटी का नाम किसी दूसरे सबब से उसे मालूम हुआ होगा।

भूत–बेशक ऐसा ही है खैर तुम्हारी तरफ से तो मैं निश्चिन्त हो गया मगर अब अपनी जान बचाने के लिए मुझे असली बलभद्रसिंह का पता लगाना चाहिए।

स्त्री–अब तुम अपना खुलासा हाल उस दिन से कह जाओ जिस दिन से तुम मुझसे जुदा हुए हो।

भूतनाथ ने अपना कुल हाल अपनी स्त्री को कह सुनाया और इसके बाद थोड़ी देर तक बातचीत करके बाहर निकल आया। एक दालान में जिसमें सुन्दर बिछावन बिछा हुआ था और रोशनी बखूबी हो रही थी उसके संगी साथी या सिपाही सब बैठे उसके आने की राह देख रहे थे। भूतनाथ के आते ही वे सब अदब के तौर पर उठ खड़े हुए तथा बैठन के बाद उसकी आज्ञा पाकर बैठ गये और बातचीत होने लगी।

भूत–कहो तुम लोग अच्छे तो हो ?

सब–जी आप के अनुग्रह से हम लोग अच्छे हैं।

भूत–ऐसा ही चाहिए।

एक–आप इतने दुबले और उदास क्यों हो रहे हैं ?

भूत–मैं एक भारी आफत में फंस गया था बल्कि अभी तक फँसा ही हुआ हूं।

सब–सो क्या सो क्या ?

भूत–मैं तुमसे सब कुछ कहता हूं क्योंकि तुम लोग मेरे खैरख्वाह हो और मुझे तुम लोगों का बहुत सहारा रहता है।

सब–हम लोग आपके तावेदार हैं और एक अदने इशारे पर जान देने के लिए तैयार हैं औरों की तो दूर रहे खास राजा वीरेन्द्रसिंह से भिड़ जाने की हिम्मत रखते हैं।

भूत–बेशक ऐसा ही है और इसीलिए मैं कोई बात तुम लोगों से नहीं छिपाता।

इतना कह कर भूतनाथ ने अपना हाल कहना आरम्भ किया। जो कुछ अपनी स्त्री से कह चुका था वह तथा बहुत सी बातें उसने उन लोगों से कहीं और इसके बाद कई बहादुरों को कई तरह के काम करने की आज्ञा दे फिर अपनी स्त्री के पास चला गया।

दूसरे दिन सवेरे जब भूतनाथ बाहर आया तब मालूम हुआ कि उसके बहादुर सिपाहियों में से पचीस आदमी उसकी आज्ञानुसार लामाघाटी के बाहर जा चुके हैं। भूतनाथ भी वहाँ से रवाना होने के लिए तैयार ही था और अपनी स्त्री से बिदा होकर निकला था अस्तु वह भी एक आदमी को ले कर चल पड़ा और दो घण्टे बाद लामाघाटी के बाहर मैदान में जमानिया की तरफ जाता हुआ दिखलाई देने लगा।

छठवाँ बयान

जो कुछ हम ऊपर लिख आये हैं उसके कई दिन बाद जमानिया में दोपहर दिन के समय जब राजा गोपालसिंह भोजन इत्यादि से छुट्टी पाकर अपने कमरे में चारपाई पर लेटे हुए एक एक करके बहुत सी चीठियों को पढ़ कर कुछ सोच रहे थे उसी समय चोबदार ने भूतनाथ के आने की इत्तिला की। गोपालसिंह ने भूतनाथ को अपने सामने हाजिर करने की आज्ञा दी। भूतनाथ हाजिर हुआ और सलाम करके चुपचाप खड़ा हो गया उस समय वहां पर इन दोनों के सिवाय और कोई न था।

गोपाल–कहो भूतनाथ ! अच्छे तो हो इतने दिनों तक कहां थे और क्या करते थे ?

भूत–आपसे बिदा होकर मैं बड़ी मुसीबत में पड़ गया।

गोपाल–सो क्या !

भूत–कमलिनीजी के मकान की बर्बादी का हाल तो आपको मालूम हुआ ही होगा।

गोपाल–हाँ मैं सुन चुका हू कि कमलिनी क मकान को दुश्मनों न उजाड कर दिया और उसके यहाँ जो कैदी थे वे भाग गय।

भूत–ठीक है ता आप किशोरी कामिनी और तारा का हाल भी सुन चुके है जो उस मकान में थी।

गोपाल–उनका खुलासा हाल तो मुझे नहीं मालूम हुआ मगर इतना सुन चुका हूँ कि अव वे सब कमलिनी के साथ राहतासगढ में जा पहुची हैं।

भूत–ठीक है मगर उन पर कैसी मुसीवत आ पडी थी उसका हाल आपका शायद मालूम नहीं।

गोपाल–नहीं वल्कि उसका खुलासा हाल दरियाफ्त करने क लिए मैंन एक आदमी रोहतासगढ में ज्योतिषीजी के पास भेजा है और एक पत्र भी लिखा है मगर अभी तक जवाव नहीं आया। ता क्या कमलिनी के साथ तुम भी वहाँ गये थे।

भूत–जी हॉ मैं कमलिनीजी क साथ था।

गोपाल–तव ता मुझे सव खुलासा हाल तुम्हारी ही जुवानी मालूम हो सकता है अच्छा कहो कि क्या हुआ ?

भूत–मैं सव हाल आपस कहता हूँ और उसी क वीच में अपनी तवाही और ववादी का हाल भी कहता हूँ।

इतना कह भूतनाथ ने किशोरी कमलिनी लक्ष्मीदेवी भगवानिया श्यामसुन्दरसिह और वलभद्रसिह का कुल हाल जा ऊपर लिखा जा चुका है कहा और इसके वाद रोहतासगढ़ किल क अन्दर जो कुछ हुआ था और कृष्णा जिन्न न जो कुछ काम किया था वह सव भी कहा।

पलग पर पडे राजा गापालसिह भूतनाथ की कुल वातें सुन गय और जव वह चुप हो गया ता उठ कर एक ऊची गद्दी पर जा वैठे जा पलग के पास ही विछी हुई थी। थोडी देर तक कुछ सोचने के वाद व वोले हॉ ता इस ढग स मालूम हुआ की तारा वास्तव म लक्ष्मीदवी है।

भूत–जी हा मुझ इस वात की कुछ भी खवर न थी।

गोपाल–यह हाल वडा ही दिलचस्प है अच्छा जिन्न की चीठी मुझे दा मैं देखूँ।

भूत–(चीठी दकर) आशा है कि इसमें कोइ वात मरे विरुद्ध लिखी हुई न होगी।

गोपाल–(चीठी देख कर) नहीं इसमें तो तुम्हारी सिफारिश की है और मुझे मदद देन क लिए लिखा है।

भूत–कृष्णा जिन्न का आप जानत है ?

गोपाल–वह मेरा दास्त है लडकपन ही स मैं उसे जानता हूँ, उसे मेरे कैद हाने की कुछ भी खवर न थी पॉच सात दिन हुए हैं जव वह मुवारकवाद देन के लिए मर पास आया था।

भूत–ता मैं उम्मीद करता हूँ कि इस काम मं आप मरी मदद करेंगे ?

गोपाल–हॉ हॉ मैं इस काम में हर तरह से मदद देने क लिए तैयार हूँ क्योंकि यह काम वास्तव में मेरा ही काम है मगर मरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या मदद कर सकूगा क्योंकि मुझे इन वातों की कुछ भी खवर न थी और न है।

भूत–जिस तरह की मदद मैं चाहता हूँ अर्ज करूंगा मगर उनक पहिले मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या आप राजा वीरन्द्रसिह और कमलिनी इत्यादि स मिलने के लिए राहतासगढ जायेंगे ?

गोपाल–जव तक राजा वीरेन्द्रसिह मुझ न वुलावेंगे मैं अपनी मर्जी से न जाऊँगा और न मुझे कमलिनी या लक्ष्मीदेवी से मिलने की जल्दी ही है जव तुम्हारे मुकदमे का फैसला हा जायगा तव जैसा होगा देखा जायगा।

गोपालसिह की वात सुन कर भूतनाथ को वडा ताज्जुव हुआ क्योंकि लक्ष्मीदेवी की खवर सुनकर न तो उनके चेहरे पर किसी तरह की खुशी दिखाई दी और न वलभद्रसिह का हाल सुन कर उन्हें रज ही हुआ। कमरे क अन्दर पैर रखते ही भूतनाथ ने जिस शान्त भाव में उन्हें देखा था वैसी ही सूरत अव भी देख रहा था। आखिर वहुत कुछ सोचने विचारने के वाद भूतनाथ ने कहा आपन खास वाग में मायारानी के कमर की तलाशी ली थी ?

गोपाल–तुम भूलते हो। खास वाग के किसी कमरे या कोठरी की तलाशी लेने से काई काम नहीं चल सकता। या ता तुम हेलासिह के किसी पक्षपाती को जो उस काम में शरीक रहा हो गिरफ्तार करो या दारोगा कम्बख्त का दुःख देकर पुछो मगर अफसोस इतना ही है कि दारागा राजा वीरेन्द्रसिंह के कब्ज में है और उसके विषय में उनको कुछ लिखना मैं पसन्द नहीं करता।

गोपालसिह की इस वात स भूतनाथ को और भी आश्चर्य हुआ और उसने कहा तलाशी से मेरा और कोई मतलव नहीं है मुझे ठीक पता लग चुका है कि मायारानी के पास तस्वीरों की एक किताब थी और उसमें उन लोगों की तस्वीरें थीं जो इस काम में उसके मददगार थे वस मेरा मतलव उसी किताब के पाने से है और कुछ नहीं ?

गोपाल–हाँ ठीक है मुझे इस प्रकार की एक किताव मिली थी मगर उस समय मै बडे क्रोध में था इसलिए कम्बख्त नकली मायारानी का असवाव कपडा लत्ता इत्यादि जो कुछ मेरे हाथ लगा उसी में उस तस्वीर वाली किताब को भी रखकर मैने आग लगा दी मगर अव मुझे यह जान कर अफसोस होता है कि यह किताव बडे मतलब की थी।

अव भूतनाथ को निश्चय हो गया कि राजा गोपालसिह मुझसे बहाना करते है और मेरी मदद करना नहीं चाहते। तब क्या करना चाहिए ? इसके लिए भूतनाथ सिर झुकाए हुए कुछ साच रहा था कि राजा गोपालसिह ने कहा–

गोपाल–मगर भूतनाथ मुझे याद पडता है कि तस्वीर वाली किताव में तुम्हारी तस्वीर भी थी।

भूत–शायद हो।

गोपाल–खैर अव तो वह किताव ही जल गई उसके वारे में कुछ भी कहना वृथा है।

भूत–(उदासी के साथ) मेरी किस्मत मै लाचार हूँ। वस मदद के लिए केवल एक वही किताब थी जिसे पाने की उम्मीद में मै आपके पास आया था खैर अव जाता हूँ जो कुछ हैरानी वदी है उसे उठाऊँगा और जिस तरह बनेगा असली वलभद्रसिह का पता लगाऊँगा।

गोपाल–मै जानता हूँ कि इस समय जमानिया के वाहर होकर तुम कहाँ जाओगे और बलभद्रसिह का पता क्योंकर लगाओगे। क्या करोगे!

भूत–(ताज्जुव से) वह क्या ?

गोपाल–वस काशी में मनोरमा का मकान तुम्हारा सब स पहिला ठिकाना हागा।

भूत–बस वस ठीक है आपन खूव समझा और अव मुझे विश्वास हो गया कि इस काम में आप मेरी वहुत कुछ मदद कर सकते है मगर आश्चर्य है कि आप किसी तरह की सहायता नहीं करते।

गापाल–खैर अव हम तुमसे साफ-साफ कह दना ही अच्छा समझते है। कृष्णाजिन्न से और मुझसे नि सन्देह दोस्ती थी और वह अव भी मुझसे प्रेम रखता है मगर इसी कारण से मेरी तवीयत उससे खट्टी हो गई और मै कसम खा चुका हूँ कि जिस काम में वह पडेगा उसमें मै दखल न दूगा चाहे वह काम मेरे ही फायदे का क्यों न हो या मदद न देने के सबब से मेरा कितना ही बड़ा नुकसान क्यों न हो या मेरी जान ही क्यों न चली जाय। बस यही सबब है कि मै तुम्हारी मदद नहीं करता।

भूत–(कुछ सोचकर) अच्छा तो फिर मुझे आज्ञा दीजिए कि मै जाउँ और वलभद्रसिह का पता लगाने क लिए उद्योग करूँ।

गोपाल–जाओ ईश्वर तुम्हारी मदद करे।

भूतनाथ सलाम करके कमरे के वाहर चला गया। उसके जाने के वाद गोपालसिंह को हँसी आई और उन्होंने आप ही आप धीरे से कहा 'इसने जरूर सोचा होगा कि गोपालसिंह पूरा बेवकूफ या पागल है!

भूतनाथ महल की डयोढी पर आया जहाँ अपने साथी को छोड गया था और उसे साथ लेकर शहर के वाहर निकल गया। जव वे दोनों आदमी मैदान में पहुचे जहाँ चारों तरफ सन्नाटा था तो भूतनाथ के साथी ने पूछा कहिये राजा गोपालसिह की मुलाकात का क्या नतीजा निकला ?

भूत–कुछ भी नहीं मै व्यर्थ ही आया।

आदमी–सो क्या ?

भूत–उन्होंने किसी प्रकार की मदद देने से इनकार किया।

आदमी–वडे आश्चर्य की वात है यह काम तो वास्तव में उन्हीं का है।

भूत–सव कुछ है मगर

आदमी–तो क्या लक्ष्मीदेवी का पता लगन से वे खुश नहीं है ?

भूत–मेरी समझ मे कुछ नहीं आता कि वे खुश है या नाराज न तो उनके चेहरे पर किसी तरह की खुशी दिखाई दी न रज। हँसना तो दूर रहा वे लक्ष्मीदेवी वलभद्रसिह मायारानी और कृष्णा जिन्न का किस्सा सुनकर मुस्कुराये भी नहीं, यद्यपि कई वातें ऐसी थी कि जिन्हें सुनकर उन्हें अवश्य हँसना चाहिए था।

आदमी–क्या उनके मिजाज में कुछ फर्क पड गया है।

भूत–मालूम तो ऐसा ही होता है वल्कि मै तो समझता हूँ कि वे पागल हो गये है। जब मैंने उनसे पूछा कि 'राजा वीरेन्द्रसिह या लक्ष्मीदेवी से मिलने के लिए आप रोहतासगढ जायेंगे' ? तो उन्होंने कहा 'नहीं जव तक राजा वीरेन्द्रसिह न वुलावेंगे मै न जाऊँगा भला यह भी कोई वुद्धिमानी की वात है!

आदमी—मालूम होता है वे सनक गये है।

भूत—या तो सनक ही गये है या फिर कोई भारी धूर्तता करना चाहते है। खैर जाने दो इस समय तो भूतनाथ स्वतन्त्र है फिर जा होगा देखा जायेगा। अब मुझे किसी ठिकाने वैठकर अपने आदमियों का इन्तजार करना चाहिए।

आदमी—तब उसी कुटी में चलिए किसी न किसी से मुलाकात हो ही जायगी।

भूत—(हॅस कर) अच्छा देखो तो सही भूतनाथ क्या करता है और कैसे-कैसे खेल दिखाता है।

सातवॉ बयान

अब हम थोडा हाल लक्ष्मीदेवी की शादी का लिखना आवश्यक समझते है।

जब लक्ष्मीदेवी की मॉ जहरीली मिठाई के असर से मर गई (जैसा कि ऊपर के लेख से हमारे पाठकों को मालूम हुआ होगा) तब लक्ष्मीदेवी की सगी मौसी जा विधवा थी और अपने ससुराल मे रहा करती थी बुला ली गई और उसने बडे लाड-प्यार स लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली की परवरिश शुरू की और बडी दिलजभई तथा दिलासे से उन तीनों को रखा। परन्तु बलभद्रसिह स्त्री के मरने से बहुत उदास और विरक्त हो गया। उसका दिल गृहस्थी तथा व्यापार की तरफ नहीं लगता था और वह दिन रात इसी विचार में पडा रहता था कि किसी तरह तीना लडकियों की शादी हा जाय और वे सब अपने-अपन ठिकाने पहुँच जाय तो उत्तम हा। लक्ष्मीदवी की बातचीत ता राजा गोपालसिंह के साथ तय हो चुकी थी परन्तु कमलिनी और लाडिली के विषय मे अभी तक कुछ निश्चय नहीं हा पाया था।

लक्ष्मीदेवी की मॉ को मर जब लगभग सोलह महीने हा चुके तब उसकी शादी का इन्तजाम होने लगा। उधर राजा गापालसिह और उधर बलभद्रसिंह तैयारी करने लगे। यह बात पहिले ही से तै पा चुकी थी कि राजा गोपालसिह बारात सजाकर बलभद्रसिह के घर न आवेंगे बल्कि बलभद्रसिह को अपनी लडकी उसके घर ल जाकर ब्याह देनी हागी और आखिर ऐसा ही हुआ।

सावन का महीना और कृष्णपक्ष की एकादशी का दिन था जब बलभद्रसिह अपनी लडकी को लेकर जमानिया पहुचे। उसके दूसर या तीसरे दिन शादी हान वाली थी और उधर कम्बख्त दारोगा न गुप्त रीति से हलासिह और उसकी लडकी मुन्दर को बुलाकर अपन मकान में छिपा रखा था। बलभद्रसिह और दारोगा से बडी दोस्ती थी और बलभद्रसिह दारोगा का बडा विश्वास करता था मगर अफसोस रुपया जो चाहे सो करावे। इसकी ठण्डी ऑच का बरदाश्त करना किसी ऐसे-वैसे दिल का काम नहीं। इसके सबब से बडे-बडे मजबूत कलजे हिल जाते हैं और पाप और पुण्य के विचार को तो यह इसी तरह से उडा देता है जैसे गन्धक का धूँआ कनेर पुष्प के लाल रग का। यद्यपि दारोगा और बलभद्रसिंह में दोस्ती थी परन्तु हेलासिह के दिखाए हुए सब्जबाग न दारोगा को ईश्वर और धर्म की तरफ कुछ भी विचार करने न दिया और वह बडी दृढता के साथ विश्वासघात करने के लिए तैयार हा गया।

बलभद्रसिह अपनी लडकी तथा कई नौकर और सिपाहियों को लेकर जमानिया में पहुचे और एक किराए के बाग में डेरा डाला जो कि दारोगा ने उनके लिए पहिले से ही ठीक कर रखा था। जब हर तरह का सामान ठीक हो गया तो उन्होंने दोस्ती के ढग पर दारोगा को अपने पास बुलाया और उन चीजों को दिखाया जो शादी के लिए बन्दोबस्त कर अपने साथ ले आए थे उन कपडों और गहनों को भी दिखाया जो अपने दामाद को देने के लिए लाए थे फिहरिस्त के सहित वे चीजें उसके सामने रक्खीं जो दहेज में देने के लिए थीं और सब के अन्त में वे कपडे भी दिखाये जो शादी के समय अपनी लडकी लक्ष्मीदेवी को पहिराने के लिए तैयार कराकर लाए थे। दारोगा ने दोस्ताने ढग पर एक एक करके सब चीज़ों को देखा और तारीफ करता गया मगर सबस ज्यादा देर तक जिन चीजों पर उसकी निगाह ठहरी वह शादी के समय पहिराए जाने वाले लक्ष्मीदेवी के कपडे थे। दारागा ने उन कपडों को उससे भी ज्यादे बारिक निगाह से देखा जिस निगाह से कि रहन रखने वाला कोई चालाक बनिया उन्हें देखता आया या जाच करता।

दारोगा अकेला बलभद्रसिह के पास नहीं आया था बल्कि अपने दो नौकरों तथा सिपाहियों के साथ जिनको वह दरवाजे पर ही छोड आया था और भी दो आदमियों को लाया था जिन्हें बलभद्रसिह नहीं पहिचानते थे और दारोगा ने जिन्हें अपना दोस्त कहकर परिचय दिया था। इस समय इन दोनों ने भी उन कपडों को अच्छी तरह देखा जिनके देखने में दारागा न अपने समय का बहुत हिस्सा नष्ट किया था।

थोडी देर तक गपशप और तारीफ करने के बाद दारागा उठकर अपने घर चला आया। यहॉ उसने सब हाल हलासिह से कहा और यह भी कहा कि मै दो चालाक दर्जियों को अपने साथ लिये चला गया था जिन्होंने वे कपडे बहुत अच्छी तरह देखभाल लिए है जो लक्ष्मीदेवी को विवाह के समय पहिराए जाने वाले हैं और उन दर्जियों को ठीक उसी तरह के कपडे तैयार करने के लिए आज्ञा दे दी गई है इत्यादि।

जिस दिन शादी होने वाली थी केवल रात ही अंधेरी न थी बल्कि बादल भी चारों तरफ से इतने घिर आए थे कि हाथ को हाथ भी न्हीं दिखाई देता था। ब्याह का काम उसी खास बाग में ठीक किया गया था जिसमें मायारानी के रहने का हाल हम कई मर्तबे लिख चुके हैं। इस समय इस बाग का बहुत बडा हिस्सा दारोगा ने शादी का सामान वगैरह रखने के लिए अपने कब्जे में कर लिया था। जिसमें कई दालान कोठरियाँ कमरे और तहखाने भी थे और साथ-साथ उसने हेलासिह की लडकी मुन्दर को भी लौडियो से कपडे पहना के अन्दर एक तहखाने में छिपा रक्खा था।

कन्यादान का समय तीन पहर रात बीते पण्डितों ने निश्चय किया था और जो पण्डित विवाह कराने वालों का मुखिया था उसे दारागा ने पहिले ही मिला लिया था। दो पहर रात बीतने के पहिले ही लक्ष्मीदेवी को साथ लिए हुए बलभदसिंह बाग के अन्दर कर लिए गये और विवाह का कार्य आरम्भ कर दिया गया। बाग का जो हिस्सा दारोगा ने अपने अधिकार में रक्खा उसमें एक सुन्दर सजी हुई कोठरी भी थी जिसके नीचे एक तहखाना था। दारोगा की इच्छा से गोपालसिह के कुलदवता का स्थान उसी में नियत किया गया था और उसके नीचे वाले तहखाने में दारोगा ने हेलासिह की लडकी मुन्दर को ठीक वैसे ही कपडे पहिना कर छिपा रक्खा था जैसे कि बलभदसिह ने लक्ष्मीदेवी के लिए बनवाये थे और जिन्हें चालाक दर्जियो के सहित दारोगा अच्छी तरह देख आया था।

बल न्दसिह का दोस्त केवल दारोगा ही न था बल्कि दारागा के गुरुभाई इन्ददेव से भी उनकी मित्रता थी और उन्हें निश्चय था कि इस विवाह में इन्ददेव भी अवश्य आवेगा क्योंकि राजा गोपालसिह भी इन्ददेव को मानते और उसकी इज्जत करते थे परन्तु बलभदसिह को बडा ही आश्चर्य हुआ जब विवाह का समय निकट आ जाने पर भी उन्होंने इन्ददेव को वहाँ न देखा। जब उसने दारागा से पूछा तो दारोगा ने इन्ददेव की चीठी दिखाई जिसमें यह लिखा था कि 'मै बीमार हूँ इसलिए विवाह मे उपस्थित नहीं हो सकता और इसलिए आपस तथा राजा साहब से क्षमा माँगता हूँ।

जब कन्यादान हो गया तो पण्डित की आज्ञानुसार लक्ष्मीदेवी को लिए हुए राजा गोपालसिंह उस कोठरी में आए जहाँ कुलदवता का स्थान बनाया गया था और वहाँ भी पण्डित ने कई तरह की पूजा कराई। इसके बाद पण्डित की आज्ञानुसार लक्ष्मीदेवी को छोड गोपालसिह उस कोठरी से बाहर आए और वे लौडियाँ भी बाहर कर दी गईं जो लक्ष्मीदेवी के साथ थीं। उस समय पानी बडे जोर से बरसने लगा और हवा बडी तेज चलने लगी इस सबब से जितने आदमी वहाँ थे सब छितर-बितर हो गए और जिसका जहाँ जगह मिली वहाँ जा घुसा। दारोगा तथा पण्डित की आज्ञानुसार बलभदसिह पालकी में सवार हो अपने डेरे की तरफ रवाना हो गए इधर गोपालसिह दूसरे कमरे में जाकर गद्दी पर बैठ रहे और रडियों का नाच शुरू हुआ जितने आदमी उस बाग में थे उसी महफिल की तरफ जा पहुचे और नाच देखने लगे और इस सबब से दारोगा को भी अपना काम करने का बहुत अच्छा मौका मिल गया। वह उस कोठरी में घुसा जिसमे लक्ष्मीदेवी थी उसे पूजा कराने के बहाने से तहखाने के अन्दर ले गया और तहखाने में से मुन्दर को लाकर लक्ष्मीदेवी की जगह बैठा दिया। उस समय लक्ष्मीदेवी को मालूम हुआ कि चालबाजी खेली गई और बदकिस्मती ने आकर उसे घेर लिया। यद्यपि वह बहुत चिल्लाई और रोई मगर उसकी आवाज तहखाने और उसके ऊपर वाली कोठरी को भेद कर उन लोगों के कानों तक न पहुँच सकी जो कोठरी के बाहर दालान में पहरा दे रहे थे या महफिल में बैठे रडी का नाच देख रहे थे। तहखान के अन्दर से एक रास्ता बाग के बाहर निकल जाने का था जिसके खुले रहने का इन्तजाम दारागा ने पहिले स कर रक्खा था और दारोगा क आदमी गुप्त रीति से बाहरी दर्वाजे के आसपास मौजूद थे। दारोगा ने लक्ष्मीदेवी के मुँह में कपडा ठूँस कर उसे हर तरह से लाचार कर दिया और इस सुरग की राह बाग के बाहर पहुचा और अपने आदमियों के हवाले कर दर्वाजा बन्द करता हुआ लौट आया। घण्टेहीभर के बाद लक्ष्मीदेवी ने अपने को अजायबघर की किसी कोठरी में बन्द पाया और यह भी वहाँ उसके सुनने में आया कि बलभदसिह पर जो पानी बरसते में अपने डेरे की तरफ जा रहे थे डाकुओं ने छापा मारा और उन्हें गिरफ्तार कर ले गए। जब यह खबर राजा गोपालसिह के कान में पहुची तो महफिल बरखास्त कर दी गई अकेली लक्ष्मीदेवी (मुन्दर) महल के अन्दर पहुचाई गई और राजा साहब की आज्ञानुसार सैकडों आदमी बलभदसिह को खोजने के लिए रवाना हो गए। उस समय पानी का बरसना बन्द हो गया था और सुबह की सुफेदी आसमान पर अपना दखल जमा चुकी थी। बलभदसिह को खोजन के लिए राजा साहब के आदमियों ने दो दिन तक बहुत कुछ उद्योग किया। मगर कुछ काम न चला अथात् बलभदसिह का पता न लगा और पता लगता भी क्योंकर? असल तो यह है कि बलभदसिह भी दारोगा के कब्जे में पडकर अजायबघर में पहुच चुके थे।

बलभदसिह पर डाका पडने और उनके गायब होने का हाल लेकर जब उनके आदमी लोग घर पहुँचे तो घर में हाहाकार मच गया। कमलिनी लाडिली और उसकी मौसी रात रोते बेहाल थीं मगर क्या हो सकता था। अगर कुछ हो सकता था तो केवल इतना ही कि थोडे दिन में धीरे धीरे गम कम होकर केवल सुनने सुनाने के लिए रह जाता और माया के फेर में पडे हुए

जीव अपने-अपने काम-धंधे में लग जाते। खैर इस पचड़े का छोड़कर हम बलभद्रसिंह और लक्ष्मीदेवी का हाल लिखते है जिससे हमारे किस्से का बड़ा भारी सम्बन्ध है।

दारोगा की यह नीयत नहीं थी कि लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह उसकी कैद में रहें बल्कि वह यह चाहता था कि महीने बीस दिन के बाद जब हो हल्ला कम हो जाय और व लोग अपने घर चले जाय जो विवाह के न्योते में आए है तो उन दानों को मार कर टन्टा मिटा दिया जाए। परन्तु ईश्वर की मर्जी कुछ और ही थी। वह चाहता था कि लक्ष्मीदवी और बलभद्रसिंह जिन्दा रह-कर बड़े-बड़े कष्ट भोगें और मुद्दत तक मुर्दो से बदतर बने रहें क्योकि थोड़े ही दिन बाद दारोगा की राय बदल गई और उसने लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह को हमेशा के लिए अपनी कैद में रखना ही उचित समझा। उसे निश्चय हा गया कि हेलासिंह बड़ा ही बदमाश और शैतान आदमी है और मुन्दर भी सीधी औरत नहीं है। अतएव आश्चर्य नहीं कि लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह के मरने के बाद वे दानों बेफ्रिक हो जाय और यह समझ ले कि अब दारोगा हमारा कुछ नहीं कर सकता। मुझे दूध की मक्खी की तरह निकाल बाहर करे तथा जो कुछ मुझे देने का वादा कर चुके हैं उसके बदले में अँगूठा दिखा दें। उसने सोचा कि यदि लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह हमारी कैद में बन रहेंगे तो हेलासिंह और मुन्दर भी कब्जे के बाहर न जा सकेंगे क्योकि व समझेंगे कि अगर दारागा से बेमुरौवती की जाएगी तो वह तुरन्त बलभद्रसिंह और लक्ष्मीदवी को प्रकट कर दगा और खुद राजा का खैरख्वाह बना रहेगा उस समय लन के दने पड जायेंगे इत्यादि।

वास्तव में दरोगा का ख्याल बहुत ठीक था। हेलासिंह यही चाहता था कि दारोगा किसी तरह लक्ष्मीदवी और बलभद्रसिंह को खपा डाले ता हम लोग निश्चिन्त हो जाय मगर जब उसन देखा कि दारोगा एसा नहीं करगा ता लाचार चुप हो रहा। दारागा न हेलासिंह के साथ ही साथ मुन्दर को भी यह कह रक्खा था कि 'देखो बलभद्रसिंह और लक्ष्मीदेवी मेरे कब्जे में है जिस दिन तुम मुझसे बेमुरौवती करागी या मेरे हुक्म से सर फेरागी उसी दिन मै लक्ष्मीदवी और बलभद्रसिंह को प्रकट करके तुम दोनों को जहन्नुम मे मिला दूगा।

नि सन्देह दोनों कैदियों को कैद रख कर दारोगा ने बहुत दिनों तक फायदा उठाया और मालोमाल हो गया मगर साथ ही इसके मुन्दर की शादी के महीने ही भर बाद दारोगा की चालाकियों ने लोगों को विश्वास दिला दिया कि बलभद्रसिंह डाकुओं क हाथ मारा गया। यह खबर जब बलभद्रसिंह के घर पहुची तो उसकी साली और दोनों लडकियों के रज का हद न रहा। बरसों बीत जाने पर भी उनकी आंखें सदा तर रहा करती थीं मगर मुन्दर जो लक्ष्मीदेवी के नाम से मशहूर हो रही थी लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए कि मै वास्तव में कमलिनी और लाडिली की बहन हूँ उन दोनों के पास हमेशा तोहफा और सौगात भेजा करती थी। और कमलिनी और लाडिली भी जो यद्यपि बिना माँ बाप की हो गई थीं परन्तु अपनी मौसी की बदौलत जो उन दोनों को अपने से बढकर मानती थी और जिसे वे दोनों भी अपनी माँ की तरह मानती थीं, बराबर सुख के साथ रहा करती थीं। मुन्दर की शादी क तीन वर्ष बाद कमलिनी और लाडिली की मौसी भी कुटिल काल के गाल में जा पड़ी। इसके थोडे ही दिन बाद मुन्दर ने कमलिनी और लाडिली को अपने यहाँ बुला लिया और इस तरह खातिरदारी के साथ रखा कि उन दोनों के दिल में इस बात का शक तक न होने पाया कि मुन्दर वास्तव में हमारी बहिन लक्ष्मीदेवी नहीं है। यद्यपि लक्ष्मीदेवी की तरह मुन्दर भी बहुत खुबसूरत और हसीन थी मगर फिर भी सूरत शक्ल में बहुत कुछ अन्तर था लेकिन कमलिनी और लाडिली ने इसे जमाने का हेर फेर समझा जैसा कि हम ऊपर के किसी बयान में लिख आए है।

यह सब कुछ हुआ मगर मुन्दर के दिल में जिसका नाम राजा गोपालसिंह की बदौलत मायारानी हो गया था दारोगा का खौफ बना ही रहा और वह इस बात से डरती ही रही कि कहीं किसी दिन दारोगा मुझसे रज होकर सारा भेद राजा गोपालसिंह के आगे खोल न दे। इस बला से बचने के लिए उसे इससे बढ कर कोई तर्कीब न सूझी कि राजा गोपालसिंह को ही इस दुनिया से उठा दे और स्वय राजरानी बन कर दारोगा पर हुकूमत करे। उसकी ऐयाशी ने उसके इस ख्याल को और भी मजबूत कर दिया और यही वह जमाना था कि एक छोकरे पर जिसका परिचय धनपत के नाम से पहिले के बयानों में दिया जा चुका है उसका दिल आ गया और उसके विचार की जड़ बड़ की तरह मजबूती पकड़ती चली गई थी। उधर दारोगा बेफिक्र न था उसे भी रग चोखा करने की फिक्र लग रही थी। यद्यपि उसने लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह को एक ही कैदखाने में कैद किया हुआ था। मगर वह लक्ष्मीदेवी को भी धोखे में डाल कर एक नया काम करने की फिक्र में पडा हुआ था और चाहता था कि बलभद्रसिंह को लक्ष्मीदेवी से इस ढग से अलग कर दे कि लक्ष्मीदेवी को किसी तरह का गुमान तक न होने पावे। इस काम में उसने एक दोस्त की मदद ली जिसका नाम जैपालसिंह था और जिसका हाल आगे चल कर मालूम होगा।

आठवाँ बयान

हम ऊपर लिख आए हैं कि लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिह अजायबघर के किसी तहखाने में कैद किए गए थे। मगर मायारानी और हेलासिह इस बात को नहीं जानते थे कि उन दोनों को दारोगा ने कहाँ कैद कर रक्खा है।

इसके कहने सुनने की कोई आवश्यकता नहीं कि बलभद्रसिह और लक्ष्मीदेवी कैदखाने में क्योंकर मुसीबत के दिन काट रहे थे। ताज्जुब की बात तो यह थी कि दारोगा अक्सर इन दोनों के पास जाता और बलभद्रसिंह के ताने और गालियाँ बरदाश्त करता। मगर उसे किसी तरह की शर्म नहीं आती थी। जिस घर में दोनों कैद थे उसमें रात और दिन का विचार करना कठिन था। उन दोनों से थोडी ही दूर पर एक चिराग दिन रात जला करता था जिसकी रोशनी में वे एक दूसरे के उदास और रजीदे चेहरे को बराबर देखा करते थे।

जिस कोठरी में वे दोनों कैद थे उसके आग लोहे का जगला लगा हुआ था तथा सामने की तरफ एक दालान और दाहिने तरफ एक कोठरी तथा बाई तरफ ऊपर चढ जाने का रास्ता था। एक दिन आधी रात के समय खटके की आवाज सुनकर लक्ष्मीदेवी जो एक मामूली कम्बल पर सोई हुई थी उठ बैठी और सामन की तरफ देखने लगी। उसने देखा कि सामने सीढिया उतर कर चेहरे पर नकाब डाले एक आदमी आ रहा है। जब लोहे वाले जगले के पास पहुँचा तो उसकी तरफ देखने लगा कि दोनों कैदी सोये हुए है या जागते मगर जब उसने लक्ष्मीदेवी को बैठे हुए पाया तो बोला 'बेटी मुझे तुम दोनों की अवस्था पर बडा ही रज होता है मगर क्या करूँ लाचार हूँ, अभी तक तो काई मौका मेरे हाथ नहीं लगा मगर फिर भी मै यह कहे बिना नहीं रह सकता कि किसी न किसी दिन तुम दोनों को मैं इस कैद से जरूर छुडाऊँगा। आज इस समय मै केवल यह कहने के लिए आया हूँ कि आज दारोगा ने बलभद्रसिह को जो खाने की चीजें दी उसमें जहर मिला हुआ था। अफसोस कि बेचारा बलभद्रसिंह उसे खा गया ताज्जुब नहीं कि वह इस दुनिया से घटे ही दो घटे में कूच कर जाये लेकिन यदि तू उसे जगा दे और जो कुछ मै कहूँ करे तो नि सन्देह उसकी जान बच जायेगी।

बेचारी लक्ष्मीदेवी के लिए पहिले की मुसीबतें क्या कम थीं और इस खबर ने उसके दिल पर क्या असर किया, सो वही जानती होगी। वह घबराई हुई अपने बाप के पास गई जो एक कम्बल पर सो रहा था। उसने उसे उठाने की कोशिश की मगर उसका बाप न उठा तब उसने समझा कि बेशक जहर ने उसके बाप की जान ले ली मगर जब उसने नब्ज पर उँगली रक्खी तो नब्ज को तेजी के साथ चलता पाया। लक्ष्मीदेवी की आँखों से बेअन्दाज आँसू जारी हो गये। वह लपक कर जगले के पास आई और उस आदमी स हाथ जोड कर बोली नि सन्देह तुम कोई देवता हो जो इस समय मेरी मदद के लिए आए हो ! यद्यपि मै यहाँ मुसीबत के दिन काट रही हूँ मगर फिर भी अपने पिता को अपने पास देखकर मैं मुसीबत को कुछ नहीं गिनती थी अफसोस दारोगा मुझे इस सुख से भी दूर किया चाहता है। जा कुछ तुमने कहा सो बहुत ठीक है इसमें कुछ सन्देह भी नहीं कि दारोगा ने मेरे बाप को जहर दे दिया मगर मैं तुम्हारी दूसरी बात पर भी विश्वास करती हूँ जो तुम अभी कह चुके हो कि यदि तुम्हारी बताई हुई तर्कीब की जायेगी तो इनकी जान बच जायगी।

नकाबपोश—बेशक एसा ही है (एक पुडिया जगले के अन्दर फेंक कर) यह दवा तुम उनके मुँह में डाल दो घण्टे ही भर में जहर का असर दूर हो जायगा और मैं प्रतिज्ञापूर्वक कहता हूँ कि इस दवा की तासीर से भविष्य में इन पर किसी तरह के जहर का असर न हो पावेगा।

लक्ष्मीदेवी—अगर ऐसा हो तो क्या बात है !

नकाबपोश—बेशक ऐसा ही है पर अब विलम्ब न करो वह दवा शीघ्र अपने बाप के मुँह में डाल दो लो अब मै जाता हूँ ज्यादे देर तक ठहर नहीं सकता।

इतना कह कर नकाबपोश चला गया और लक्ष्मीदेवी ने पुडिया खोल कर अपने बाप के मुँह में वह दवा डाल दी।

इस जगह यह कह देना हम उचित समझते है कि यह नकाबपोश जो आया था दारोगा का वही मित्र जैपालसिह था और इसे दारोगा ने अपने इच्छानुसार खूब सिखा पढा कर भेजा था। वह अपने चेहरे और बदन को विशेष कर के इस लिए ढाँके हुए था कि उसका चेहरा और तमाम बदन गर्मी के जख्मों से गन्दा हो रहा था और उन्हीं जख्मों की बदौलत वह दारोगा का एक भारी काम निकालना चाहता था।

दवा देने के घण्टे भर बाद बलभद्रसिह होश में आया। उस समय लक्ष्मीदेवी बहुत खुश हुई और उसने अपने बाप स मिजाज का हाल पूछा। बलभद्रसिह ने कहा 'मैं नहीं जानता कि मुझे क्या हो गया था और अब मेरे बदन में चिंगारिया क्यों छूट रही हैं। लक्ष्मीदेवी ने सब हाल कहा जिसे सुन कर बलभद्रसिह बोला 'ठीक है, तुम्हारी खिलाई हुई

दवा ने मेरी जान तो बचा ली परन्तु मैं देखता हूं जहर का असर मुझे साफ छोड़ा नहीं चाहता निसन्देह इसकी गर्मी मेरे तमाम बदन को बिगाड़ देगी ! इतना कहकर बलभद्रसिंह चुप हो गया और गर्मी की बेचैनी से हाथ पांव मारने लगा। सुबह होते होते उसके तमाम बदन में फफोले निकल आये जिसकी तकलीफ से वह बहुत ही बेचैन हो गया। बेचारी लक्ष्मीदेवी उसके पास बैठकर सिवा रोने के और कुछ भी नहीं कर सकती थी। दूसरे दिन जब दारोगा उस तहखाने में आया तो बलभद्रसिंह का हाल देखकर पहिले तो लौट गया मगर थोड़ी ही देर बाद पुन दो आदमियों को साथ लेकर आया और बलभद्रसिंह को हाथों हाथ उठवा कर तहखाने के बाहर ले गया। इसके आठ दस दिन तक बेचारी लक्ष्मीदेवी ने अपने बाप की सूरत भी नहीं देखी। नवें दिन कम्बख्त दारोगा ने बलभद्रसिंह की जगह अपने दोस्त जैपालसिंह को उस तहखाने में डाला और ताला बन्द करके चला गया। जैपालसिंह को देख कर लक्ष्मीदेवी ताज्जुब में आ गई और बोली तुम कौन हो यहां पर क्यों लाये गये ?

जैपाल —बेटी क्या तू मुझे इसी आठ दिन में ही भूल गई। क्या तू नहीं जानती कि जहर के असर ने मेरी दुर्गति कर दी है ? क्या तेरे सामने ही मेरे तमाम बदन में फफोले नहीं उठ आये थे ? ठीक है बेशक तू मुझे नहीं पहिचान सकी होगी क्योंकि मेरा तमाम बदन जख्मों से भरा हुआ है चेहरा बिगड गया है मेरी आवाज खराब हो गई है और मैं बहुत ही दुखी हो रहा हूँ !

लक्ष्मीदेवी को यद्यपि अपने बाप पर शक हुआ था मगर माढ़े पर का वही दाँत काटा निशान जो इस समय भी मौजूद था और जिसे दारोगा ने कारीगर जर्राह की बदौलत बनवा दिया था ,देखकर चुप हो रही और उसे निश्चय हो गया कि मेरा बाप बलभद्रसिंह यही है। थोड़ी देर बाद लक्ष्मीदेवी ने पूछा तुम्हें जब दारोगा यहाँ से ले गया तब उसने क्या किया ?

नकली बलभद्र–तीन दिन तक तो मुझे तनोबदन की सुध नहीं रही।

लक्ष्मी–अच्छा फिर।

नकली बलभद्र–चौथे दिन जब मेरी आंख खुली तो मैंने अपने को एक तहखाने में कैद पाया जहाँ सामने चिराग जल रहा था कुर्सी पर बेईमान दारोगा बैठा हुआ था और एक जर्राह मेरे जख्मों पर मरहम लगा रहा था।

लक्ष्मी–आश्चर्य है कि जब दारोगा ने तुम्हारी जान लेने के लिए जहर ही दिया तो

नकली बलभद्र—मैं खुद आश्चर्य कर रहा हूँ कि जब दारोगा मेरी जान ही लिया चाहता था और इसलिए उसने मुझको जहर दिया था तो यहाँ से ले जाकर उसने मुझे जीता क्यों छोड़ा मेरा सिर क्यों नहीं काट डाला बल्कि मेरा इलाज क्यों कराने लगा ?

लक्ष्मी–ठीक है मैं भी यही सोच रही हूं अच्छा तब क्या हुआ ?

नकली बलभद्र–जब जर्राह मरहम लगा के चला गया और निराला हुआ तब दारोगा ने मुझसे कहा देखो बलभद्रसिंह निसन्देह तुम मेरे दोस्त थे मगर दौलत की लालच ने मुझे तुम्हारे साथ दुश्मनी करने पर मजबूर किया। जो कुछ मैं किया चाहता था सो मैं यद्यपि कर चुका अर्थात तुम्हारी लडकी की जगह हेलासिंह की लड़की मुन्दर को राजरानी बना दिया मगर फिर मैंने सोचा कि अगर तुम दोनों बच कर निकल जाओगे तो मेरा भेद खुल जायगा और मैं मारा जाऊँगा इसलिए मैंने तुम दोनों को कैद किया। फिर हेलासिंह ने राय दी कि बलभद्रसिंह को मार कर सदैव के लिए टन्टा मिटा देना चाहिए और इसलिए मैंने तुमको जहर दिया मगर आश्चर्य है कि तुम मरे नहीं। जहां तक मैं समझता हूँ मेरे किसी नौकर ने ही मेरे साथ दगा की अर्थात मेरे दवा के सन्दूक में से सजीवनी की पुडिया जो केवल एक ही खुराक थी और जिसे वर्षो मेहनत करके मैंने तैयार किया था निकाल कर तुम्हें खिला दी और तुम्हारी जान बच गई।बेशक यही बात है और यह शक मुझे तब हुआ जब मैंने अपने सन्दूक में सजीवनी की पुडिया न पाई और यद्यपि तुम उस सजीवनी की बदौलत बच गये मगर फिर भी तेज जहर के असर से तुम्हारा बदन तुम्हारी सूरत और तुम्हारी जिन्दगी खराब हुए बिना नहीं रह सकती। ताज्जुब नहीं कि आज नहीं तो दो चार वर्षो के अन्दर तुम मर जाओ अतएव मैं तुम्हारे मारने के लिए कष्ट नहीं उठाता बल्कि तुम्हारे इन जख्मों का आराम करने का उद्योग करता हूँ और इसमें अपना फायदा भी समझता हूँ। इतना कह दारोगा चला गया और मुझे कई दिनों तक उसी तहखाने में रहना पड़ा। इस बीच में जर्राह दिन में तीन चार दफे मेरे पास आता और जख्मों को साफ कर के पट्टी लगा जाता। जब मेरे जख्म दुरुस्त होने पर आये और जर्राह ने कहा कि अब पट्टी बदलने की जरूरत न पडेगी तो मैं पुन इस जगह पहुंचा दिया गया।

लक्ष्मी–(ऊँची साँस लेकर) न मालूम हम लोगों ने ऐसे कौन पाप किये हैं जिनका फल यह मिल रहा है।

इतना कह लक्ष्मी रोने लगी और नकली बलभद्रसिंह उसको दम दिलासा देकर समझाने लगा।

हमारे पाठक आश्चर्य करते होंगे कि दारोगा ने ऐसा क्यों किया और उसे नकली बलभद्रसिंह बनाने की क्या

आवश्यकता थी। अस्तु इसका सबब भी इसी जगह लिख देना उचित समझते है।

कम्बख्त दारोगा ने सोचा कि लक्ष्मीदेवी की जगह में मुन्दर को राजरानी बना तो दिया मगर कहीं ऐसा न हो कि दो चार वर्ष बाद या किसी समय में लक्ष्मीदेवी के रिश्तेदारी में कोई या उसकी दोनों बहिनें मुन्दर से मिलने आवें और लक्ष्मीदेवी के लडकपन का जिक्र छेड दे तो अगर उस समय मुन्दर उसका जवाब न दे सकी तो उनका शक हो जायगा। सूरत-शक्ल के बारे में तो कुछ चिन्ता नहीं जैसी लक्ष्मीदेवी खूबसूरत है वैसी ही मुन्दर भी है और औरतों की सूरत-शक्ल प्राय विवाह होने के बाद शीघ्र ही बदल जाती है अस्तु सूरत-शक्ल के बारे मे कोई कुछ कह नही सकेगा परन्तु जब पुरानी बाते निकलेंगी और मुन्दर कुछ जवाब न दे सकेगी तब कठिन होगा। अतएव लक्ष्मीदेवी का कुछ हाल उसके लडकपन की कैफियत उसके रिश्तेदारों और सखी सहेलियों के नाम और उनकी तथा उनके घरों की अवस्था से मुन्दर का पूरी तरह जानकारी हो जानी चाहिए। अगर वह सब हाल हम बलभद्रसिह से पूछेंगे तो वह कदापि न बतायेगा, हॉ अगर किसी दूसरे आदमी का बलभद्रसिह बनाया जाय और वह कुछ दिनों तक लक्ष्मीदेवी के साथ रह कर इन बातों का पता लगावे तब चल सकता है इत्यादि बातों को सोच कर ही दारोगा ने उपरोक्त चालाकी की और कृतार्थ भी हुआ अर्थात दो ही चार महीनों में नकली बलभद्रसिह को लक्ष्मीदेवी का पूरा पूरा हाल मालूम हो गया। उसने सब हाल दारोगा से कहा और दारोगा ने मुन्दर को सिखा पढा दिया।

जब इन बातों से दारोगा की दिलजमई हो गई तो उसने नकली बलभदसिह को कैदखाने से बाहर कर दिया और फिर मुद्दत तक लक्ष्मीदेवी को अकेले ही कैद की तकलीफ उठानी पडी।

नौवॉ बयान

एक दिन लक्ष्मीदेवी उस कैदखाने में बैठी हुई अपनी किस्मत को रो रही थी कि दाहिनी तरफ वाली कोठरी में से एक नकाबपोश को निकलते देखा। लक्ष्मीदेवी ने समझा कि यह वही नकाबपोश है जिसने मेरे बाप की जान बचाई थी मगर तुरन्त ही उसे मालूम हो गया कि यह कोई दूसरा है क्योंकि उसके और इसके डील डौल में बहुत फर्क था। जब नकाबपोश जगले के पास आया तब लक्ष्मीदेवी ने पूछा तुम कौन हो और यहाँ क्यों आये हो ?

नकाबपोश–मैं अपना परिचय तो नहीं दे सकता परन्तु इतना कह सकता हूँ कि बहुत दिनों से मैं इस फिक्र में था कि इस कैदखाने से किसी तरह तुमको निकाल दू मगर मौका न मिल सका आज उसका मौका मिलने पर यहाँ आया हूँ, बस विलम्ब न करो और उठो।

इतना कह नकाबपोश ने जगला खोल दिया।

लक्ष्मी–और मेरे पिता ?

नकाबपोश–मुझे मालूम नहीं कि वे कहाँ कैद है या किस अवस्था में हैं ? यदि मुझे उनका पता लग जायगा तो मैं उन्हें भी छुडाऊँगा।

यह सुन कर लक्ष्मीदेवी चुप हो रही और कुछ सोच-विचार कर ऑखों से ऑसू टपकाती हुई जगले के बाहर निकली। नकाबपोश उसे साथ लिए हुए उसी कोठरी में घुसा जिसमें से वह स्वयं आया था अब लक्ष्मीदेवी को मालूम हुआ कि यह एक सुरंग का मुहाना है। बहुत दूर तक नकाबपोश के पीछे जा और कई दर्वाजे लाघ कर उसे आसमान दिखाई दिया और मैदान की ताजी हवा भी मयस्सर हुई। उस समय नकाबपोश ने पूछा "कहो अब तुम क्या करोगी और कहाँ जाओगी ?

लक्ष्मी–मै नहीं कह सकती कि कहाँ जाऊँगी और क्या करूँगी बल्कि डरती हूँ कि कहीं फिर दारोगा के कब्जे में न पड़ जाऊँ हॉ यदि तुम मेरे साथ कुछ और भी नेकी करो और मुझे मेरे घर तक पहुँचाने का बन्दोबस्त कर दो तो अच्छा हो।

नकाबपोश–(ऊँची सॉस लेकर) अफसोस तुम्हारा घर बर्बाद हो गया और इस समय वहाँ कोइ नहीं है। तुम्हारी दूसरी मॉ अर्थात तुम्हारी मौसी मर गई तुम्हारी दोनों छोटी बहिनें राजा गोपालसिह के यहाँ आ पहुँची है और मायारानी को जो तुम्हारे बदले में गोपालसिंह के गले मढी गई है, अपनी सगी बहिन समझकर उसी के साथ रहती है।

लक्ष्मी–मैंने तो सुना था कि मेरे बदले में मुन्दर मायारानी बनाई गई है।

नकाब–हॉ वही मुन्दर अब मायारानी के नाम से प्रसिद्ध हो रही है।

लक्ष्मी–तो क्या मै अपनी बहिनों से या राजा गोपालसिह से मिल सकती हूँ ?

नकाब–नही।

लक्ष्मी–क्यों ?

नकाब–इसलिए कि अभी महीना भर भी नहीं हुआ कि राजा गोपालसिंह का भी इन्तकाल हो गया। अब तुम्हारी फरियाद सुनने वाला वहाँ कोई भी नहीं है और यदि तुम वहाँ जाओगी और मायारानी को कुछ मालूम हो जायगा तो तुम्हारी जान कदापि नहीं बचेगी।

इतना सुन कर लक्ष्मीदेवी अपनी बदकिस्मती पर रोने लगी और नकाबपोश उसे समझाने लगा। अन्त में लक्ष्मीदेवी ने कहा अच्छा फिर तुम्हीं बताओ कि मैं कहाँ जाऊँ और क्या करूँ ?

नकाब–(कुछ सोचकर) तो तुम मेरे ही घर चलो मैं तुम्हें अपनी ही बेटी समझूँगा और परवरिश करूँगा।

लक्ष्मी–मगर तुम तो अपना परिचय तक नहीं देते !

नकाब–(ऊँची साँस लेकर) खैर अब परिचय देना ही पडा और कहना ही पडा कि मैं तुम्हारे बाप का दोस्त इन्द्रदेव हूँ।

इतना कह कर नकाबपोश ने चेहरे से नकाब उतारी और पूर्ण चन्द्र की रोशनी ने उसके चेहरे के हर एक रग-रेशे को अच्छी तरह दिखा दिया। लक्ष्मीदेवी उसे देखते ही पहिचान गई और दौड कर उसके पैरों पर गिर पडी। इन्द्रदेव ने उठा कर उसका सिर छाती से लगा लिया और तब उसे अपने घर ले आकर गुप्त रीति से बडी खातिरदारी के साथ अपने यहाँ रक्खा।

लक्ष्मीदेवी का दिल फोडे की तरह पका हुआ था। वह अपनी नई जिन्दगी में तरह-तरह की तकलीफें उठा चुकी थी। अब भी वह अपने बाप को खोज निकालने की फिक्र में लगी हुई थी और इसके अतिरिक्त उसका ज्यादा ख्याल इस बात पर था कि किसी तरह अपने दुश्मनों से बदला लेना चाहिए। इस विषय पर उसने बहुत कुछ विचार किया और अन्त में यह निश्चय किया कि इन्द्रदेव से ऐयारी सीखनी चाहिए क्योंकि वह खूब जानती थी कि इन्द्रदेव ऐयारी के फन में बडा ही होशियार है। आखिर उसने अपने दिल का हाल इन्द्रदेव से कहा और इन्द्रदेव ने भी उसकी राय पसन्द की तथा दिलोजान से कोशिश करके उसे ऐयारी सिखाने लगा। यद्यपि वह दारोगा का गुरुभाई था तथापि दारोगा की करतूतों ने उसे हद से ज्यादा रंजीदा कर दिया था और उसे इस बात की कुछ भी परवाह न थी कि लक्ष्मीदेवी ऐयारी के फन में होशियार होकर दारोगा से बदला लेगी। नि सन्देह इन्द्रदेव ने बडी मर्दानगी की और दोस्ती का हक जैसा चाहिए वैसा ही निबाहा। उसने बडी मुस्तैदी के साथ लक्ष्मीदेवी को ऐयारी की विद्या सिखाई बडे-बडे ऐयारों के किस्से सुनाये एक से एक बडे चढे नुस्खे सिखलाये और ऐयारी के गूढ तत्वों का उसके दिल में नक्श (अंकित) कर दिया। थोडे ही दिनों में लक्ष्मीदेवी पूरी ऐयार हो गई और इन्द्रदेव की मदद से अपना नाम तारा रख कर मैदान की हवा खाने और दुश्मनों से बदला लेने की फिक्र में घूमने लगी।

लक्ष्मीदेवी ने तारा बन कर जो-जो काम किया सब में इन्द्रदेव की राय लेती रही और इन्द्रदेव भी बराबर उसकी मदद और खबरदारी करते रहे।

यद्यपि इन्द्रदेव ने लक्ष्मीदेवी की जान बचाई उसे अपनी लडकी के समान पाल कर सब लायक किया और बहुत दिनों तक अपने साथ रक्खा मगर उनके दो एक सच्चे प्रेमियों के सिवाय लक्ष्मीदेवी का हाल और किसी को मालूम न हुआ और इन्द्रदेव ने भी किसी को उसकी सूरत तक देखने न दी। इस बीच में पचीसों दफे कम्बख्त दारोगा इन्द्रदेव के घर गया और इन्द्रदेव ने भी अपने दिल का भाव छिपा कर हर तरह से उसकी खातिरदारी की मगर दारोगा तक को इस बात का पता न लगा कि जिस लक्ष्मीदेवी को मैंने कैद किया था वह इन्द्रदेव के घर में मौजूद है और इस लायक हो रही है कि कुछ दिनों के बाद हमीं लोगों से बदला ले।

लक्ष्मीदेवी का तारा नाम इन्द्रदेव ही ने रक्खा था। जब तारा हर तरह से होशियार हो गई और वर्षों की मेहनत से उसकी सूरत शक्ल में भी बहुत बडा फर्क पड गया तब इन्द्रदेव ने उसे आज्ञा दी कि तू मायारानी के घर जाकर अपनी बहिन कमलिनी से मिल जो बहुत ही नेक और सच्ची है मगर अपना असली परिचय न देकर उसके साथ मोहब्बत पैदा कर और ऐसा उद्योग कर कि उसमें और मायारानी में लडाई हो जाय और वह उस घर से निकल कर अलग हो जाय फिर जो कुछ होगा देखा जायगा। केवल इतना ही नहीं इन्द्रदेव ने उसे एक प्रशंसापत्र भी दिया जिसमें यह लिखा हुआ था –

मैं तारा को अच्छी तरह जानता हूँ यह मेरी धर्म की लडकी है इसका चाल चलन बहुत ही अच्छी है और नेक तथा धार्मिक लोगों के लिए यह विश्वास करने योग्य है।

इन्द्रदेव ने तारा को यह भी कह दिया कि मेरा यह पत्र सिवाय कमलिनी के और किसी को न दिखाइयो और जब इस बात का निश्चय हो जाय कि वह तुझ पर मुहब्बत रखती है तब उसको एक दफे किसी तरह से मेरे घर ले आइयो फिर जैसा होगा मैं समझ लूँगा।

इतना कह कर वह आदमी लौट गया। एक घण्टे के बाद वह और भी दो आदमियों को अपने साथ लिए हुए आया और भूतनाथ से बोला 'चलिए मगर आँखों पर पट्टी बँधवानें की तकलीफ,आपको उठानी पड़ेगी।' इसके जवाब मे भूतनाथ यह कह कर उठ खडा हुआ 'सो तो मैं पहिले ही स जानता हूँ।

भूतनाथ की आँखों पर पट्टी बाँध दी गई और वे तीनों आदमी उस अपने साथ लिए हुए इन्द्रदेव के पास जा पहुँचे। इन्द्रदव के स्थान और उसक मकान की कैफियत हम पहिले | लिख चुके है इसलिए यहाँ पुन न लिख कर असल मतलव पर ध्यान दते है।

जिस समय भूतनाथ इन्द्रदव के सामने पहुँचा उस समय इन्ददव अपने कमरे में मसनद के सहारे बैठे हुए कोई ग्रथ पढ रहे थे। भूतनाथ को देखते ही उन्होंन मुस्कुराकर कहा, आओ-आओ भूतनाथ अवकी तो वहुत दिनों पर मुलाकात हुई है!

भूतनाथ-(सलाम करक) वेशक वहुत दिनों पर मुलाकात हुई है। क्या कहें जमाने के हेर-फेर न एसे ऐसे कुढंगे फँसा दिया और अभी तक फँसा रक्खा है कि मेरी कमजोर जान को किसी तरह छुटकारे का दिन नसीव नहीं होता और इसी से आज वहुत दिनों पर आपके भी दर्शन हुए हैं।

इन्द्र-(हँस कर) तुम्हारी कमजोर जान! जो भूतनाथ मजवूत आदमियों को नीचा दिखाने की ताकत रखता है वह कहे कि 'मेरी कमजोर जान'!

भूत-वेशक ऐसा ही है। यद्यपि मैं अपन को वहुत कुछ कर गुजरने लायक समझता था मगर आज कल ऐसी आफत में जान फँसी हुइ है कि अक्ल कुछ काम नहीं करती।

इन्द्र-क्या कुछ कहा भी तो?

भूत-मैं यही सव कहने और आप स मदद माँगन के लिए तो आया ही हूँ।

इन्द्र-मदद माँगने क लिए!

भूत-जी हाँ आपसे वहुत वड़ी मदद की मुझे आशा है।

इन्द्र-सो कैसे? क्या तुम नहीं जानते कि मायारानी का तिलिस्मी दारागा मेरा गुरुभाई है और वह तुम्हें दुश्मनी की निगाह से देखता है?

भूत-इन वातों को मै खूव जानता हूँ और इतना जानने पर भी आपसे मदद लेने के लिए आया हूँ।

इन्द्र-यह तुम्हारी भूल है।

भूत-नहीं मरी भूल कदापि नहीं है यद्यपि आप दारोगा के गुरुभाई हे मगर मै इस वात को भी अच्छी तरह जानता हूँ कि आपके और उसके मिजाज में उलटे-सीधे का फर्क है और मैं जिस काम में आपसे मदद लिया चाहता हू वह नेक और धर्म का काम है।

इन्द्र-(कुछ सोच कर) अगर तुम यह समझ कर कि मैं तुम्हारी मदद न करूँगा अपना मतलव कह सकते हो ता कहो जैसा हागा मैं जवाव दूँगा।

भूत-यह तो मै समझ ही नहीं सकता कि आपसे किसी तरह की मदद नहीं मिलेगी, मदद मिलेगीऔर जरूर मिलेगी क्योंकि आपस और वलभद्रसिह स दोस्ती थी और उस दोस्ती का वदला आप उस तरह नहीं अदा कर सकते जिस तरह दारागा साहव ने किया था।

इस समय उस कमरे में वे तीनों आदमी भी मौजूद थे जो भूतनाथ को अपने साथ यहाँ तक लाये थे इन्द्रदेव ने उन तीनों को विदा करने के वाद कहा-

इन्द्र-क्या तुम उस वलभद्रसिह क वारे में मुझसे मदद लिया चाहत हो जिसे मरे आज कई वर्ष वीत चुके है?

भूत-जी हाँ, उसी वलभद्रसिह क वारे में जिसकी लडकी तारा वन कर कमलिनी के साथ रहने वाली लक्ष्मीदेवी है और जिसे आप चाहे मरा हुआ समझते है मगर मैं मरा हुआ नहीं समझता।

इन्द्र-(आश्चय) क्या तारा ने अपना भेद प्रकट कर दिया! और तुम्हें कोई ऐसा सवूत मिला हे जिससे समझा जाय कि वलभद्रसिंह अभी तक जीता है?

भूत-जी तारा का भेद यकायक प्रकट हो गया है जिसे मै भी नहीं जानता था कि वह लक्ष्मीदेवी है, और वलभद्रसिह के जीते रहने का सवूत भी मुझे मिल गया मगर आपने तारा का नाम इस ढग से लिया जिससे मालूम होता है कि आप असल भेद पहिले ही से जानते थे।

इन्द्र-नहीं नहीं मै भला क्योंकर जान सकता था कि तारा लक्ष्मीदवी है यह तो आज तुम्हारे ही मुँह से मालूम हुआ

है। अच्छा तुम पहिले यह तो कह जाओ कि तारा का भेद क्योंकर प्रकट हुआ तुम किस मुसीबत में गडे हो, और इस बात का क्या सबूत तुम्हारे पास है कि बलभद्रसिंह अभी तक जीते है ? क्या बलभद्रसिंह जान-बूझ कर कहीं छिपे हुए है या किसी की कैद में है ?

भूत–नहीं नहीं बलभद्रसिंह जान बूझ कर छिपे हुए नहीं है बल्कि कहीं कैद है। मै उन्हें छुड़ाने की फिक्र में लगा हूँ और इसी काम में आपसे मदद लिया चाहता हूँ क्योंकि अगर बलभद्रसिंह का पता लग गया तो आपको दो जानें बचाने का पुण्य मिलेगा।

इन्द्र–दूसरा कौन ?

भूत–दूसरा मैं क्योंकि अगर बलभद्रसिंह का पता न लगेगा तो निश्चय है कि मैं भी मारा जाऊँगा।

इन्द्र–अच्छा तुम पहिले अपना पूरा हाल कह जाओ।

इतना सुन कर भूतनाथ ने अपना हाल उस जगह से जब नगवनिया के सामने नकली बलभद्रसिंह से उससे मुलाकात हुई थी कहना शुरू किया और इन्द्रदेव बडे गौर से उसे सुनते रहे। भूतनाथ ने अपना कैदियों की हालत में रोहतासगढ पहुँचना, कृष्णाजिन्न से मुलाकात होना मायारानी और दारोगा इत्यादि की गिरफ्तारी राजा बीरेन्द्रसिंह के आगे मुकदमें की पेशी कृष्णाजिन्न से पेश किये हुए अनूठे कलमदान की कैफियत असली बलभदसिंह को खोज लिए अपनी रिहाई और राजा गोपालसिंह के पास से बिना कुछ मदद पाये बैरग लौट आने का हाल सब पूरा-पूरा इन्द्रदेव से कह सुनाया। इन्द्रदेव थोडी देर तक चुपचाप कुछ सोचते रहे। भूतनाथ ने देखा कि उनके चेहरे का रंग थोडी-थोडी देर में बदलता है और कभी लाल कभी सफेद और कभी जर्द होकर उनके दिल की अवस्था का थोडा बहुत हाल प्रकट करता है।

इन्द्र–(कुछ देर बाद) मगर तुम्हारे इस किस्से में कोई ऐसा सबूत नहीं मिला जिससे बलभद्रसिंह का अभी तक जीते रहना साबित होता हो।

भूत–क्या मैंने आपसे अभी नहीं कहा कि असली बलभद्रसिंह के जीते रहने का मुझे शक हुआ और कृष्णाजिन्न ने मेरे उस शक को यह कहकर विश्वास के साथ बदल दिया कि बेशक असली बलभद्रसिंह अभी तक कहीं कैद है और तू जिस तरह हो सके उसका पता लगा।

इन्द्र–हाँ यह तो तुमने कहा मगर मैं यह नहीं जानता कि कृष्णाजिन्न कौन है और उसकी बातों पर कहाँ तक विश्वास करना चाहिये।

भूत–अफसोस आपने कृष्णाजिन्न की कार्रवाई पर अच्छी तरह ध्यान नहीं दिया जो मैं अभी आपसे कह चुका हूँ। यद्यपि मैं स्वयं उसे नहीं जानता परन्तु जिस समय कृष्णाजिन्न ने वह अनूठा कलमदान पेश किया जिसे देखने के साथ ही नकली बलभद्रसिंह की आधी जान निकल गई जिस पर निगाह पडते ही लक्ष्मीदेवी बेहोश हो गई जिसे एक झलक ही में मैं पहिचान गया जिस पर मीनाकारी की तीन तस्वीरें बनी हुई थीं और जिस पर बिचली तस्वीर के नीचे मीनाकारी के मोटे खूबसूरत अक्षरों में 'इन्दिरा' लिखा हुआ था उसी समय मैं समझ गया कि यह साधारण मनुष्य नहीं है।

इन्द्र–(चौंक कर) क्या कहा ! क्या लिखा हुआ था ? –'इन्दिरा' !

और यह कहने के साथ ही इन्द्रदेव के चेहरे का रंग उड गया तथा आश्चर्य ने उन पर अपना रोआब जमा लिया।

भूत–हाँ हाँ 'इन्दिरा'–बेशक यही लिखा हुआ था।

अब इन्द्रदेव अपने को किसी तरह सम्हाल न सका। वह घबडा कर उठ खडा हुआ और धीरे-धीरे निम्नलिखित बातें कहता हुआ इधर-उधर घूमने लगा–

आफ मुझे धोखा हुआ वाह रे दारोगा तैने इन्द्रदेव ही पर अपना हाथ साफ किया जिसने तेरे सैकड़ों कसूर माफ किये और फिर भी तेरे रोने पीटने और बडी-बड़ी कसमें खाने पर विश्वास करके तुझे राजा बीरेन्द्रसिंह की कैद से छुडाया ! वाह रे जैपाल तुझे तो इस तरह तडपा तडपा कर मारूँगा कि गन्दगी पर बैठने वाली मक्खियों को भी तेरे हाल पर रहम आवेगा ! लक्ष्मीदेवी का बाप बन कर चला था मायारानी और दारोगा की मदद करने ! वाह रे कृष्णाजिन्न ईश्वर तेरा भला करे ! मगर इसमें भी कोई शक नहीं कि तुझको यह हाल हाल ही में मालूम हुआ है। आह मैंने वास्तव में धोखा खाया। लक्ष्मीदेवी की बहुत ही प्यारी इन्दिरा ! अच्छा-अच्छा ठहर जा देख तो सही मैं क्या करता हूँ। भूतनाथ ने यद्यपि बहुत से बुरे काम किये है परन्तु अब वह उनका प्रायश्चित भी बड़ी खूबी के साथ कर रहा है। (भूतनाथ की तरफ देख कर) अच्छा-अच्छा मैं तुम्हारा साथ दूँगा मगर अभी नहीं जब तक मैं उस कलमदान को अपनी आँखों से न देख लूँगा तब तक मेरा जी ठिकाने न होगा।

भूतनाथ-(जो बड़े गौर से इन्द्रदव का बडबडाना सुन रहा था) हॉ-हॉ आप उसे देख सकते है मेरे साथ रोहतासगढ चलिये ।

इन्द-तुम्हारे साथ चलने की कोई आवश्यकता नहीं तुम इसी जगह रहो मै अकेला ही जाऊँगा और बहुत जल्द ही लौट आऊँगा ।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने ताली बजाई और आवाज के साथ ही अपने दा आदमियों को कमरे के अन्दर आते देखा। इन्ददेव अपने आदमियों से यह कह कर कि तुम लोग भूतनाथ को खातिरदारी के साथ यहाँ रक्खो जब तक कि मै एक छोटे सफर से न लौट आऊँ कमरे के बाहर हो गये और तब दूसरे कमरे में जिसकी ताली वे अपने पास ही रक्खा करते थे ताला खोल कर चले गये। इस कमरे में खूटियों के सहारे तरह-तर, के कपड़े ऐयारी के बहुत से बटुए रग-बिरग के नकाब, एक से एक बढ़ कर नायाब और बेशकीमत हर्बे और कमरबन्द वगैरह लटक रहे थे और एक तरफ लोहे तथा लकड़ी के छोटे-बड़े कई सन्दूक भी रक्खे हुए थे। इन्द्रदेव न अपन मतलब का जोडा (बेशकीमत पौशाक)खूटी से उतार कर पहिन लिया और जो कपडे पहिरे हुए थे उतार कर एक तरफ रख दिये। सुर्ख रग की नकाब उतार कर चेहरे पर लगाई ऐयारी का बटुआ बगल में लटकाने के बाद बेशकीमत हर्बो से अपने को दुरुस्त किया और इसके बाद लोहे के एक सन्दूक में से कुछ निकालकर कमरे में रख कमरे के बाहर निकल आये कमरे का ताला बन्द किया और तब बिना भूतनाथ से मुलाकात किये ही वहाँ से रवाना हा गये ।

ग्यारहवॉ बयान

रोहतासगढ में महल के अन्दर खूबसूरत सजे हुए कमरे म राजा वीरेन्दसिह ऊँची गद्दी के ऊपर बैठे हुए हैं बगल में तजसिह और देवीसिह बैठे है तथा सामने की तरफ किशोरी कमलिनी लक्ष्मीदवी, कमलिनी लाडिली और कमला अदब के साथ सिर झुकाये बैठी है। आज राजा वीरेन्द्रसिह अपने दोनों ऐयारों के सहित यहाँ बैठ कर उन सभों की बीती हुई दु ख भरी कहानी बडे गौर से कुछ सुन चुके है और बाकी सुन रहे है। दर्वाजे पर भैरोसिह और तारासिह खड़े पहरा दे रहे है। किसी लौडी तक का भी वहाँ आने की आज्ञा नहीं है। किशोरी कामिनी कमलिनी कमला और लक्ष्मीदेवी का हाल सुन चुके है इस समय लाडिली अपना किस्सा कह रही है ।

लाडिली अपना किस्सा कहते-कहते बोली-

लाडिली-जब मायारानी की आज्ञानुसार धनपत और मै नानक और किशोरी के साथ दुश्मनी करने के लिए जमानिया से निकली तो शहर के बाहर होकर हम दोनों अलग हो गए। इत्तिफाक की बात है कि धनपत सूरत बदल के इसी किले म आ रही और मै भी घूमती-फिरती भेष बदले हुए किशोरी का यहा होना सुन कर इसी किले में आ पहुँची और हम दोनों ही ने रानी साहिबा की नौकरी कर ली। उस समय मेरा नाम लाली था। यद्यपि इस मकान में मेरी और धनपत की मुलाकात हुई और बहुत दिनों तक हम दोनों आदमी एक ही जगह रहे भी मगर न तो मैंने धनपत को पहिचाना जो कुन्दन क नाम से यहाँ रहती थी और न धनपत ही ने मुझ पहिचना। (ऊची सास लेकर) अफसोस मुझे उस समय का हाल कहते हुए शर्म मालूम होती है क्योकि मै बेचारी निर्दोष किशोरी के साथ दुश्मनी करने के लिये तैयार थी। यद्यपि मुझे किशोरी की अवस्था पर रहम आता था मगर मै लाचार थी क्योंकि मायारानी के कब्जे में थी और इस बात को खूब समझती थी कि यदि मै मायारानी का हुक्म न मानूगी तो नि सन्देह वह मेरा सिर काट लेगी ।

इतना कह कर लाडिली रोने लगी ।

वीरेन्द-(दिलासा देते हुए) बटी अफसोस करने को कोई जगह नहीं है। यह तो बनी-बनाई बात है कि यदि काई धर्मात्मा या नेक आदमी शैतान के कब्जे में पडा हुआ होता है तो उसे झक मार कर शैतान की बात माननी पड़ती है। मै खूब समझता हूँ और विश्वास दिलाया जा चुका हूँ कि तू नेक है तेरा कोई दोष नहीं जो कुछ किया कम्बख्त दारोगा तथा मायारानी ने किया अस्तु तू कुछ चिन्ता मत कर और अपना हाल कह ।

ऑचल से ऑसू पोंछ कर लाडिली ने फिर कहना शुरू किया-

लाडिली-मै चाहती थी कि किशोरी को अपने कब्जे में कर लूँ और तिलिस्मी तहखाने की राह से बाहर होकर इसे मायारानी के पास ले जाऊँ तथा धनपत का भी इरादा यही था। इस सबब से कि यहाँ का तहखाना एक छोटा सा तिलिस्म है और जमानिया क तिलिस्म से समबन्ध रखता है यहाँ तहखाने का बहुत कुछ हाल मायारानी को मालूम है और उसने मुझे और धनपत को बता दिया था अस्तु किशारी को लेकर यहाँ के तहखाने की राह से निकल जाना मेरे या धनपत के लिए कोई बडी बात न थी। इसके अतिरिक्त यहाँ एक बुढ़िया रहती थी जो रिश्ते में राजा दिग्विजयसिह की

बुआ होती थी। वह बडी ही सूधी नेक धर्मात्मा थी और बडी सीधी चाल बल्कि फकीरी ढग पर रहा करती थी। मैने सुना है कि वह मर गई अगर जीती होती तो आप से मुलाकात करा देती खैर मुझे यह बात मालूम हो चुकी थी कि वह बुढिया यहाँ के तहखाने का हाल बहुत ज़्यादे जानती है अतएव मैने उससे दोस्ती पैदा कर ली और तब मुझे मालूम हुआ कि वह किशोरी पर दया करती है और चाहती है कि वह किसी तरह यहाँ से निकल कर राजा बीरेन्द्रसिंह के पास पहुँच जाय। मैने उसके दिल में विश्वास दिला दिया कि किशोरी को यहाँ से निकाल कर चुनार पहुँचा देने के विषय में जी जान से कोशिश करूँगी और इसीलिये उस बुढिया ने भी यहाँ के तहखाने का बहुत सा हाल मुझसे कहा बल्कि उस राह से निकल जाने की तर्कीब भी बताई मगर धनपत जो कुन्दन के नाम से यहीं रहती थी बराबर मेरे काम में बाधा डाला करती और मैं भी इस फिक्र में लगी हुई थी कि किसी तरह उसे दबाना चाहिये जिसमें वह मेरा मुकाबला न कर सके।

एक दिन आधी रात के समय मैं अपन कमरे से निकल कर कुन्दन के कमरे की तरफ चली। जब उसके पास पहुँची तो किसी आदमी के पैर की आहट मिली जो कुन्दन की तरफ जा रहा था। मै रूक गई और जब वह आदमी आगे बढकर कुन्दन के मका न के अन्दर चला गया तब मै धीरे-धीरे कदम रख कर उस मकान के पास पहुँची जिसमें कुन्दन रहती थी। उसकी कुर्सी बहुत ऊँची थी पॉच सीढियॉ चढ कर सहन में पहुँचना होता था और उसके बाद कमरे के अन्दर जाने का दर्वाजा था वह कमरा अभी तक मौजूद है शायद आप उसे देखें। सीढियों के दोनों बगल चमेली की घनी टट्टी थी मै उसी टट्टी में छिपकर उस आदमी के लौटने की राह देखने लगी जो मेरे सामने ही उस मकान में गया था। आधा घण्टे के बाद वह आदमी कमरे के बाहर निकला उस समय कुन्दन भी उसके साथ थी। जब वह सहन की सीढियाँ उतरने लगा तो कुन्दन ने उसे रोक कर धीरे से कहा 'मै फिर कहे देती हूँ कि आप स मुझे बडी उम्मीद है। जिस तरह आप गुप्त राह से इस किले के अन्दर आते हैं उसी तरह मुझ किशोरी के सहित निकाल तो ले जायेंगे ? इसके जवाब में उस आदमी ने कहा 'हा हा इस बात का तो मै तुमसे वादा ही कर चुका हूँ, अब तुम किशोरी को अपने काबू में करने का उद्योग करो मैं तीसरे चौथे यहा आकर तुम्हारी खबर ल जाया करूगा। इस पर कुन्दन ने फिर कहा मगर मुझे इस बात की खबर पहिले ही हो जाया करे कि आज आप आधी रात के समय यहा आवेंगे तो अच्छा हो। इसके जवाब में उस आदमी ने अपनी जेब में से एक नारगी निकाल कर कुन्दन के हाथ में दी और कहा 'इसी रग की नारगी उस दिन तुम बाग के उत्तर और पश्चिम वाले कोने में सध्या के समय देखोगी जिस दिन तुमसे मिलने के लिए मैं यहा आने वाला होऊगा।' कुन्दन ने वह नारगी उसके हाथ स ले ली। सीढियों के दोनों तरफ फूलों के गमले रक्खे हुए थे उनमें से एक गमल में कुन्दन ने वह नारगी रख दी और उस आदमी के साथ ही साथ थोडी दूर तक उसे पहुचाने की नीयत से आगे की तरफ बढ गई। मैं छिपे छिपे सब कुछ देख सुन रही थी। जब कुन्दन आगे बढ गई और उस जगह निराला हुआ तब मैं झाडी के अन्दर से निकली और गमले से उस नारगी का लेकर जल्दी जल्दी कदम बढाती हुई अपने मकान में चली आई। किशोरी अपना हाल कहते समय आपसे कह चुकी है कि एक दिन मैंने नारगी दिखाकर कुन्दन को दबा लिया था। यह वही नारगी थी जिसे देख कर कुन्दन समझ गई कि मेरा भेद लाली को मालूम हो गया यदि वह राजा साहब को इस बात की इत्तिला दे देगी और उस आदमी को पुन मेरे पास आने वाला है और जिसे इस बात की ख़बर नहीं है गिरफ्तार करा देगी तो मै मारी जाऊगी अस्तु उसे मुझसे दबना ही पडा क्योंकि वास्तव में यदि मैं चाहती तो कुन्दन के मकान में उस आदमी को गिरफ्तार करा देती और उस समय महाराज दिग्विजयसिह दोनों का सिर काटे बिना नहीं रहते।

बीरेन्द्र–ठीक है अब मै समझ गया, अच्छा तो फिर यह भी मालूम हुआ कि वह आदमी जो कुन्दन के पास आया करता था कौन था ?

लाडिली–पीछे तो मालूम हो ही गया कि वह शेरसिह थे और उन्होंने कुन्दन के बारे में धोखा खाया।

देवीसिह–(बीरेन्द्रसिह से) मैने एक दफे आपसे अर्ज किया था कि शेरसिह ने कुन्दन के बारे में धोखा खाने का हाल मुझसे खुद बयान किया था। और लाली को नीचा दिखाने या दबाने की नीयत से खून से लिखी किताब तथा ऑचल पर गुलामी की दस्तावेज वाला जुमला भी शेरसिह ही ने कुन्दन को बताया था और शेरसिह ने छिपकर किसी आदमी की बातचीत से वह हाल मालूम किया था।

बीरेन्द–ठीक है मगर यह नहीं मालूम हुआ कि शेरसिह ने छिप कर जिन लोगों की बातचीत सुनी थी वे कौन थे ?

देवी–हॉ इसका हाल मालूम न हुआ शायद लाडिली जानती हो।

लाडिली–जी हॉ जब मै यहाँ से लौट कर मायारानी के पास गई तब मुझे मालूम हुआ कि वे लोग मायारानी के दोनों ऐयार बिहारीसिह और हरनामसिह थे जो हम लोगों का पता लगाने तथा राजकुमारों को गिरफ्तार करने कीनीयत से इस तरफ आये हुए थे।

बीरेन्द–ठीक है अच्छा तो अब हम यह सुनना चाहते है कि 'खून से लिखी किताब' और गुलामी की दस्तावेज' से क्या

मतलब था और तू इन शब्दों को सुन कर क्यों डरी थी ?

लाडिली–खून से लिखी किताब को आप जानते ही है जिसका दूसरा नाम रिक्तग्रन्थ' है, और जो आजकल आपके कुअर इन्द्रजीतसिहजी के कब्जे में है।

बीरेन्द–हॉ-हॉ सो क्यों न जानेंगे वह तो हमारी ही चीज है और हमारे ही यहॉ से चोरी गई थी।

लाडिली–जी हॉ तो उन शब्दों के विषय में भी मैन बहुत बडा धोखा खाया। अगर कुन्दन को पहिचान जाती तो मुझे उन शब्दों से डरने की आवश्यकता न थी। खून से लिखी किताब अर्थात् रिक्तग्रन्थ से जितना सम्बन्ध मुझे था उतना ही कुन्दन को भी मगर कुन्दन ने समझा कि मै भूतनाथ के रिश्तेदारों में से हूँ जिसने रिक्तगन्थ की चोरी की थी और मैंने यह सोचा कि कुन्दन को मेरा असल हाल मालूम हो गया वह जान गई थी कि मै मायारानी की बहिन लाडिली हूँ और राजा दिग्विजयसिह को धोखा देकर यहाँ रहती हू। मै इस बात को खूब जानती थी कि यह रोहतासगढ का तहखाना जमानिया के तिलिस्म से सम्बन्ध रखता है और यदि राजा दिग्विजयसिह के हाथ रिक्तग्रन्थ लग जाय तो वह बडा ही खुश हो क्योंकि वह रिक्तग्रन्थ का मतलब खूब जानता है। और उसे यह भी मालूम था कि भूतनाथ न रिक्तग्रन्थ की चोरी की थी और उसके हाथ से मायारानी रिक्तग्रन्थ ले लेने के उद्योग में लगी हुई थी और उस उद्योग में सबसे भारी हिस्सा मैने लिया था। यह सब हाल उसे कम्बख्त दारोगा की जुबानी मालूम हुआ था क्योंकि वह राजा दिग्विजयसिह से मिलने के लिए बराबर आया करता था और उससे मिला हुआ था। निसन्देह अगर मेरा हाल राजा दिग्विजयसिह को मालूम हो जाता तो वह मुझे कैद कर लेता और रिक्तग्रन्थ के लिए मेरी बडी दुर्दशा करता। बस इसी ख्याल ने मुझे बदहवास कर दिया और मै ऐसा डरी कि तनोबदन की सुध जाती रही। क्या दिग्विजयसिह कभी इस बात को सोचता कि उसकी दारोगा से दोस्ती है और दारोगा लाडिली का पक्षपाती है ? कभी नहीं वह बडा ही मतलबी और खोटा था।

बीरेन्द–बेशक ऐसा ही है और तुम्हारा डरना बहुत वाजिब था मगर हॉ एक बात तो तुमने कही ही नहीं।

लाडिली–वह क्या ?

बीरेन्द– ऑचल पर गुलामी का दस्तावेज से क्या मतलब था ?

राजा बीरेन्द्रसिह की यह बात सुनकर लाडिली शर्मा गई और उसने अपने दिल की अवस्था को रोक कर सर नीचे कर लिया। जब राजा बीरेन्द्रसिंह ने पुन टोका तब हाथ जोडकर बोली आशा है कि महाराजा साहब इसका जवाब चाहने के लिए जिद न करेंगे और मेरा यह अपराध क्षमा करेंगे। मै इसका जवाब अभी नहीं दिया चाहती और बहाना करना या झूठ बोलना भी पसन्द नहीं करती !

लाडिली की बात सुनकर राजा बीरेन्द्रसिह चुप हो रहे और कोई दूसरी बात पूछना ही चाहते थे कि भैरोसिह ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा।

बीरेन्द–(भैरों से) क्या है ?

भैरो–बाहर से खबर आई है कि मायारानी के दारोगा के गुरुभाई इन्द्रदेव जिनका हाल मै एक दफे अर्ज कर चुका हूँ महाराज का दर्शन करने के लिए हाजिर हुए है। उन्हें ठहराने की कोशिश की गई थी मगर वह कहते है कि मै पल भर भी नहीं अटक सकता और शीघ्र ही मुलाकात की आशा रखता हूँ तथा मुलाकात भी महल के अन्दर लक्ष्मीदेवी के सामने करूँगा। यदि इस बात में महाराज साहब को उज्र हो तो लक्ष्मीदेवी से राय ले और जैसा वह कहे वैसा करें।

इसके पहिले कि बीरेन्द्रसिह कुछ सोचें या लक्ष्मीदेवी से राय लें लक्ष्मीदेवी अपनी खुशी को रोक न सकी, उठ खडी हुई और हाथ जोड़ कर बोली महाराज से मैं सविनय प्रार्थना करती हूँ कि इन्द्रदेवजी को इसी जगह आने की आज्ञा दी जाय। वे मेरे धर्म पिता है, मै अपना किस्सा कहते समय अर्ज कर चुकी हूँ कि उन्होंने मेरी जान बचाई थी वे हम लोगों के सच्चे खैरखाह और भला चाहने वाले है।

बीरेन्द–बेशक बेशक, हम उन्हें बुलायेंगे हमारी लड़कियों को उनसे पर्दा करने की कोई आवश्यकता नहीं है (भैरोसिह की तरफ देखकर) तुम स्वय जाओ और उन्हें शीघ्र इसी जगह ले आओ।

'बहुत अच्छा कहकर भैरोसिह चला गया और थोड़ी ही देर में इन्द्रदेव को अपने साथ लिये आ पहुँचा। लक्ष्मीदेवी उन्हें देखते ही उनके पैरों पर गिर पड़ी और ऑसू बहाने लगी। इन्द्रदेव ने उसके सर पर हाथ फेर कर आशीर्वाद दिया कमलिनी और लाडिली ने भी प्रणाम किया और राजा बीरेन्द्रसिह ने सलाम का जवाब देने के बाद उन्हें खातिर से अपने पास बैठाया।

बीरेन्द–(मुस्कुराते हुए) कहिए आप कुशल से तो है ! राह में कुछ तकलीफ तो नहीं हुई ?

इन्द्रदेव–(हाथ जोड़ कर) आपकी कृपा से मै बहुत अच्छा हूँ, सफर में हजार तकलीफ उठाकर आने वाला भी

आपके दर्शन पाते ही कृतार्थ हो जाता है फिर मेरी क्या बात है जिसे इस सफर पर ध्यान देने की छुट्टी अपने ख्यालों के उलझन की बदौलत बिल्कुल ही न मिली।

बीरेन्द्र–तो मालूम होता है कि आप किसी भारी काम के लिए आये है।(हँस कर) क्या अबकी फिर दारोगा साहब को छुडा कर ले जाने का इरादा है !

इन्द्रदेव–(शर्मिन्दगी के साथ हंस कर) जी नहीं अब मै उस कम्बख्त की कुछ भी मदद नहीं कर सकता जिसे गुरुभाई समझकर आपके कैदखाने से छुडाया था और आइन्दे नेकनीयती के साथ जिन्दगी बिताने की जिससे मैने कसम ले ली थी। अफसोस दिन-दिन उसकी शैतानी का पता लगता ही जाता है।

बीरेन्द्र–इधर का हाल तो आपने न सुनाया होगा ?

इन्द्रदेव–जी भूतनाथ की जुबानी मै सब सुन चुका हूँ और इस सबब से ही हाजिर हुआ हूँ। मुझे यह देखकर बडी खुशी हुई कि लक्ष्मीदेवी को अपनायत के ढग पर आपके सामने बैठने की इज्जत मिली है और वह बहुत तरह के दु ख सहने के बाद अब हर तरह से प्रसन्न और सुखी हुआ चाहती है।

बीरेन्द्र–नि सन्देह मै लक्ष्मीदेवी को अपनी लडकी के समान देख रहा हूँ और उसके साथ तुमने जो कुछ नेकी की है उसका हाल भी उसी की जुबानी सुनकर बहुत प्रसन्न हूँ। इस समय मेरे दिल में तुमसे मिलने कि इच्छा हो रही थी और किसी को तुम्हारे पास भेजने के विचार में था कि तुम आ पहुँचे। बलभद्रसिंह और भूतनाथ के मामले नें तो हम लोगों को अजब दुविधा मे डाल रखा है अब कदाचित्त तुम्हारी जुबानी उनका खुलासा हाल मालूम हो जाय।

इन्ददेव–नि सन्देह वह एक आश्चर्य की घटना हो गई है जिसकी मुझे कुछ आशा न थी।

लक्ष्मीदेवी–(इन्ददेव से) मेरे प्यारे चाचा (क्योंकि वह इन्ददेव को चाचा कहके ही पुकारा करती थी) जब भूतनाथ की जुबानी आप सब हाल सुन चुके हैं तो नि सन्देह मेरी तरह आपको भी इस बात का विश्वास हो गया होगा कि मेरे बदकिस्मत पिता अभी तक जीते हैं मगर कहीं कैद है।

इन्ददेव–बेशक ऐसा ही है।

बीरेन्द्र–तो क्या भूतनाथ उन्हें खोज निकालेगा ?

इन्ददेव–इसमें मुझे सन्देह है क्योंकि वह सब तरफ से लाचार होकर मुझसे मदद माँगने गया था और उसी की जुबानी सब हाल सुन कर मै यहाँ आया हूँ।

बीरेन्द्र–तो तुम इस काम में उसको मदद दोगे ?

इन्ददेव–अवश्य मदद दूँगा ! असल तो यों है कि इस समय बलभद्रसिंह को खोज निकालने की चाह बनिस्बत भूतनाथ के मुझको बहुत ज्यादे है और उनके जीते रहने का विश्वास भी सभों से ज्यादे मुझी को हुआ इसी तरह से बलभद्रसिह का पता लगाने में मेरी बुद्धि जितना काम कर सकती है उतनी भूतनाथ की नहीं (ऊँची साँस लेकर) अफसोस आज के दो दिन पहले मुझे इस बात का स्वप्न में भी गुमान न था कि अपने प्यारे दोस्त बलभद्रसिह के जीते रहने की खबर मेरे कानों तक पहुँचेगी और मुझे उनका पता लगाना होगा !

बीरेन्द्र–तुम्हारे इस कहने से पाया जाता है कि बनिस्बत हम लोगों के तुमको भूतनाथ की बातों का ज्यादे यकीन हुआ है और अगर ऐसा ही है तो आज के बहुत दिन पहले तुमको या किसी और को इस बात की इत्तिला न देने का इलजाम भी भूतनाथ पर लगाया जायगा !

इन्ददेव–जी नहीं, इस घटना के पहिले भूतनाथ को भी बलभद्रसिह के जीते रहने का विश्वास न था, हाँ कुछ शक सा हो गया था उस शक को यकीन के दर्जे तक पहुँचाने के लिए भूतनाथ ने बहुत उद्योग किया और वही उद्योग इस समय उसका दुश्मन हो रहा है। सच तो यह है कि अगर इसके पहिले बलभद्रसिह के जीते रहने की खबर भूतनाथ देता भी तो मुझे विश्वास न होता और मै उसे झूठा या दगाबाज समझता।

बीरेन्द्र–(मुस्कुराकर) तुम्हारी बातें तो और भी उलझन पैदा करती है ! मालूम होता है कि भूतनाथ की बातों के अतिरिक्त और भी कोई सच्चा सबूत बलभद्रसिंह के जीते रहने के बारे में तुमको मिला है और भूतनाथ वास्तव में उन दोषों का दोषी नहीं है जो कि उसकी दस्तखती चीठ्ठियों के पढ़ने से मालूम हुआ है।

इन्ददेव–बेशक ऐसा ही है।

लक्ष्मीदेवी–(ताज्जुब से) तो क्या किसी और ने भी मेरे पिता के जीते रहने की खबर आपको दी है।

इन्ददेव–नहीं।

लक्ष्मी–तो आज कैसे भूतनाथ के कहने का इतना विश्वास आपको हुआ जब कि आज के पहिले उसके कहने का

कुछ भी असर न होता ?

बीरेन्द–मैं भी यही सवाल तुमसे करता हूँ।

इन्ददेव–भूतनाथ के इस कहने ने कि कृष्णाजिन्न ने एक कलमदान आपके सामने पेश किया था जिस पर मीनाकारी की तीन तस्वीरें बनी हुई थीं और उसे देखत ही नकली वलभद्रसिह बदहवास हो गया था–मुझे असल वलभद्रसिह के जीते रहने का विश्वास दिला दिया। क्या यह बात ठीक है ? क्या कृष्णाजिन्न ने कोई कलमदान पेश किया था ?

बीरेन्द–हॉं एक कलमदान

लक्ष्मी–(वात काट-कर) हॉं हॉं मेरे प्यारे चाचा, वही कलमदान जो मेरी बहुत ही प्यारी चाची ने मुझे विवाह के

इतना कहते-कहते लक्ष्मीदेवी का गला भर आया और वह रोन लगी।

इन्ददेव–(व्याकुलता से) मै उस कलमदान को शीघ्र ही देखना चाहता हूँ, (तजसिह से) आप कृपा कर उसे शीघ्र मगवाइए।

तेज–(अपने वटुए में से कलमदान निकालकर और इन्ददेव के हाथ में दकर) लीजिए तैयार है। मै इसे हर वक्त अपने पास रखता हूँ और उस समय की राह देखता हू जव इसके अद्‌भूत रहस्य का पता हम लोगों को लगेगा।

इन्ददेव–(कलमदान अच्छी तरह देखकर) नि सन्देह भूतनाथ ने जो कुछ कहा ठीक है। अफसोस, कम्बख्तों ने बड़ा घोखा दिया। अच्छा इश्वर मालिक है !!

लक्ष्मी–क्यों यह वही कलमदान है न ?

इन्ददेव–हॉं तुम वही कलमदान समझो (क्रोध से लाल-लाल ऑंखें करके) आफ अब मुझसे वरदाश्त नहीं हो सकता और न मै ऐसे काम में विलम्ब कर सकता हूँ (वीरेन्द्र से) क्या आप इस काम में मेरी सहायता कर सकते है ?

बीरेन्द–जो कुछ मर किये हो सकता है-उसे करने के लिए मै तैयार हूँ, मुझे वडी खुशी होगी जव मै अपनी ऑंखों से बलभद्रसिह को सही सलामत देखूँगा।

इन्ददेव–और आप मुझ पर विश्वास भी कर सकते है ?

बीरेन्द–हॉं मै तुम पर उतना ही विश्वास करता हूँ जितना इन्द्रजीत और आनन्द पर।

इन्ददेव–(हाथ जोड और गद्‌गद होकर) अव मुझे विश्वास हो गया कि अपन दानों प्रेमियों को शीघ्र देखूँगा।

वीरेन्द–(आश्चर्य स) दूसरा कौन ?

लक्ष्मी–(चौंक कर) आह मै समझ गई हे ईश्वर यह क्या, क्या मै अपनी बहुत ही प्यारी 'इन्दिरा को भी दखूँगी !

इन्ददेव–हॉं, यदि ईश्वर चाहेगा तो ऐसा ही हागा।

वीरेन्द–अच्छा यह वताओ कि अव तुम क्या चाहते हो ?

इन्ददेव–मै नकली वलभद्रसिह दारोगा और मायारानी का दखना चाहता हू और साथ ही इसके इस बात की आज्ञा चाहता हूँ कि उन लोगों के साथ मै जैसा वर्ताव चाहे कर सकूँ या उन तीनों मे स किसी को यदि आवश्यकता हो तो अपने साथ ल जा सकूँ।

इन्ददेव की वात सुन कर वीरेन्द्रसिंह ने ऐसे ढग से तेजसिह की तरफ देखा और इशारे से कुछ पूछा कि सिवाय उनेक और तेजसिह के किसी दूसरे को मालूम न हुआ और जव तेजसिह ने भी इशारे में ही कुछ जवाव दे दिया तव इन्द्रदेव की तरफ देखकर कहा, 'वे तीनों कैदी सवसे वढ कर लक्ष्मीदेवी की गुनाहगार है जो तुम्हारी और हमारी धर्म की लडकी है। इस लिये उन कैदियों के विषय में जो कुछ तुमका पूछना या करना हो उसकी आज्ञा लक्ष्मीदेवी से ल लो हमें किसी तरह का उज्र नहीं हे।

लक्ष्मी–(प्रसन्न हाकर) यदि महाराज की मुझ पर इतनी कृपा है तो मै कह सकती हूँ कि उन कैदियों में से जिनकी बदौलत मरी जिन्दगी का सब से कीमती हिस्सा बर्बाद हा गया जिसे मरे चाचा चाहे ल जाय।

वीरेन्द–वहुत अच्छा (इन्ददव स) क्या उन कैदियों का यहॉं हाजिर करन के लिए हुक्म दिया जाय ?

इन्द–वे सब कहॉं रक्खे गए है ?

वीरेन्द–यहा के तिलिस्मी तहखाने में।

इन्ददेव–(कुछ साच कर) उत्तम यही होगा कि मै उस तहखाने ही मे उन कैदियों का दखू और उनस बातें करूँ तब जिसकी आवश्यकता हो उसे अपन साथ ले जाऊँ।

वीरेन्द–जैसी तुम्हारी मर्जी अगर कहो तो हम भी तुम्हारे साथ तहखाने में चलें।

इन्द्रदेव—आप जरूर चलें यदि यहाँ क तहखाने की कैफियत आपने अच्छी तरह देखी न हो तो मैं आपको तहखाने की सैर भी कराऊँगा बल्कि ये लडकियाँ भी साथ रहें तो कोई हर्ज नहीं परन्तु यह काम मैं रात्रि के समय किया चाहता हूँ और इस समय केवल इसी बात की जाँच किया चाहता हूँ कि भूतनाथ ने मुझसे जो बातें कहीं थीं वे सब सच है या झूठ।

बीरेन्द्र—ऐसा ही होगा।

इसके बाद बहुत देर तक इन्द्रदेव लक्ष्मीदेवी कमलिनी किशोरी लाडिली तेजसिह और बीरेन्दसिह इत्यादि में बातें होती रहीं और बीती हुई बातों को इन्द्रदेव बडे गौर से सुनते रहे। इसके बाद भोजन का समय आया और दो तीन घण्टे के लिए सब कोई जुदा हुए। राजा बीरेन्दसिंह की इच्छानुसार इन्द्रदेव की बडी खातिर की गई और वह जब तक अकेले रहे बलभद्रसिह और कृष्णाजिन्न के विषय में गौर करते रहे। जब सध्या हुई सब कोई फिर उसी जगह इकटठे हुए और बातचीत होने लगी। इन्द्रदेव ने राजा बीरेन्दसिह से पूछा 'कृष्णाजिन्न का असल हाल आपको मालूम हुआ या नहीं ? क्या उसने अपना परिचय आपको दिया ?

बीरेन्द—पहले तो उसने अपने को बहुत छिपाया मगर भैरोसिह ने गुप्त रीति से पीछा करके उसका हाल जान लिया जब कृष्णाजिन्न को मालूम हो गया कि भैरोसिह ने उसे पहिचान लिया तब उसने भैरोसिह को बहुत कुछ ऊँच-नीच समझा कर इस बात की प्रतिज्ञा करा ली कि सिवाय मेरे और तेजसिह के वह कृष्णाजिन्न का असल हाल किसी से न कहे और न हम तीनों मैं से कोई किसी चौथे को उसका भेद बतावे। पर अब मैं देखता हूँ तो कृष्णाजिन्न का असल हाल तुमको भी मालूम होना उचित जान पडता है पर साथ ही मैं अपने ऐयार की की हुई प्रतिज्ञा को भी तोडना नहीं चाहता।

इन्द्रदेव—नि सन्देह कृष्णाजिन्न का हाल जानना मेरे लिए आवश्यक है परन्तु मैं भी यह नहीं पसन्द करता कि भैरोसिह या आपकी मडली में से किसी की प्रतिज्ञा भग हो। आप इसके लिए चिन्ता न करें मैं कृष्णाजिन्न को पहिचाने बिना नहीं रह सकता बस एक दफे सामना हान की दर है।

बीरेन्द—मेरा भी यही विश्वास है।

इन्द्रदेव—अच्छा तो अब उन कैदियों के पास चलना चाहिये।

बीरेन्द—चलो हम तैयार है (तेजसिह देवीसिह, लक्ष्मीदेवी कमलिनी और किशोरी इत्यादि की तरफ इशारा करके) इन सभों को भी लेते चलें ?

इन्द्रदेव—जी हॉ मैं तो पहिले ही अर्ज कर चुका हूँ, बल्कि ज्योतिषीजी तथा भैरोसिंह को भी लेते चलिये।

इनता सुनते ही राजा बीरेन्दसिह उठ खडे हुए और सभों को साथ लिये हुए तहखाने की तरफ रवाना हुए। जगन्नाथ ज्योतिषी को बुलाने के लिए देवीसिंह भेज दिये गये।

ये लोग धीरे-धीरे जब तक तहखाने के दर्वाजे पर पहुँचे तब तक जगन्नाथ ज्योतिषी भी आ गये और सब कोई एक साथ मिलकर तहखाने के अन्दर गये।

इस तहखाने के अन्दर जाने वाले रास्ते का हाल हम पहिले लिख चुके है इसलिए पुन लिखने की आवश्यकता न जान कर केवल मतलब की बाते ही लिखते है।

ये सब लोग तहखाने के अन्दर जाकर उसी दालान में पहुँचे जिसमें तहखाने के दारोगा रहा करते थे और जिसके पीछे की तरफ कई कोठरियाँ थीं। इस समय भैरोसिह और देवीसिह अपने हाथ में मशाल लिए हुए थे जिसकी रोशनी से बखूबी उजाला हो गया था और वहाँ की हर चीज साफ-साफ दिखाई दे रही थी। वे लोग इन्द्रदेव के पीछे पीछे एक कोठरी के अन्दर घुसे जिसमें सदर दर्वाजे के अलावे एक दर्वाजा और भी था। सब लोग उस दर्वाजे मे घुसकर दूसरे खण्ड में पहुँचे जहाँ बीचोबीच में छोटा सा चौक था उसके चारों तरफ दालान और दालानों के बाद बहुत सी लोहे क सीखचों से बनी जगलदार एसी कोठरियाँ थीं जिनके देखने से साफ मालूम होता था कि यह कैदखाना है और इन कोठरियों में रहने वाले आदमियों को स्वप्न में भी रोशनी नसीब न होती होगी।

इन्हीं सीखचेवाली कोठरियों में से एक में दारोगा दूसरे में मायारानी तीसरी में नकली बलभद्रसिह कैद था। जब ये लोग यकायक उस कैदखाने में पहुँचे और उजाला हुआ तो तीनों कैदी जो अब तक एक-दूसरे को नहीं देख सकते थे ताज्जुब की निगाहों से उन लोगों को देखने लगे। जिस समय दारोगा की निगाह इन्द्रदेव पर पडी उसके दिल में यह ख्याल पैदा हुआ कि या तो अब हमको इस कैदखाने से छुटटी ही मिलेगी या इससे भी ज्यादे दु ख भोगना पडेगा।

इन्द्रदेव पहिले मायारानी की तरफ गया जिसका रग एक दम से पीला पड गया था और जिसकी ऑखों के सामने मौत की भयानक सूरत हर दम फिरा करती थी। दो तीन पल तक मायारानी को देखने बाद इन्द्रदेव उस कोठरी के सामने आया जिसमें नकली बलभद्रसिह कैद था। उसकी सूरत दखते ही इन्द्रदेव ने कहा ऐ मेरे लडकपन के दोस्त

बलभद्रसिंह मै तुम्हे सलाम करता हूँ। आ ऐसे भयानक कैदखाने में तुम्हें देखकर मुझे बड़ा रंज होता है। तुमने क्या कसूर किया था जो यहाँ भेजे गए ?

नकली बलभद्रसिंह--मै कुछ नही जानता कि मुझ पर क्या दोष लगाया गया है। मै तो अपनी लड़कियों से मिलकर खुश हुआ था मगर अफसोस राजा साहब ने इन्साफ करने के पहिले ही मुझे कैदखाने भेज दिया।

भैरो--राजा साहब ने तुम्हें कैदखाने नहीं भेजा बल्कि तुमने खुद कैदखाने आने का बन्दोबस्त किया। महाराज ने तो मुझे ताकीद की थी कि तुम्हे इज्जत और खातिरदारी के साथ रक्खूँ मगर जब तुमने इन्साफ होने के पहिले भागने का उद्योग किया तो लाचार ऐसा करना पड़ा।

इन्द्रदेव--नही-नहीं, अगर ये वास्तव में मेरे दोस्त बलभद्रसिंह है तो इनके साथ ऐसा करना चाहिए।

बलभद्र--मै वास्तव में बलभद्रसिंह हूं। क्या लक्ष्मीदेवी मुझे नही पहिचानती जिसके साथ मै एक ही कैदखाने मे कैद था ?

इन्द्रदेव--लक्ष्मीदवी तो खुद तुमसे दुश्मनी कर रही है, वह कहती है कि यह बलभद्रसिह नही है बल्कि जैपालसिंह है।

इतना सुनते ही नकली बलभद्रसिंह चौक उठा और उसके चेहरे पर डर तथा घबराहट की निशानी दिखाई देने लगी। वह समझ गया कि इन्ददेव मुझ पर दया करने के लिए नहीं आया बल्कि मुझे सताने के लिए आया है। कुछ देर तक सोचने के बाद उसने इन्द्रदेव से कहा --

बलभद्र--यह बात लक्ष्मीदेवी तो नही कह सकती बल्कि तुम स्वय कहते हो।

इन्द्रदेव--अगर ऐसा भी हो तो क्या हर्ज है ? तुम इस बात का क्या जवाब देते हो ?

बलभद्र--झूठी बात का जो कुछ जवाब दिया जा सकता हो वही मेरा जवाब है।

इन्द्रदेव- तो क्या तुम जैपालसिंह नही हो ?

बलभद्र--मै जानता भी नही कि जैपाल किस जानवर का नाम है।

इन्द्रदेव--अच्छा जैपाल नही तो बालेसिंह !

बालेसिंह का नाम सुनकर नकली बलभद्रसिह फिर घबड़ा गया और मौत की भयानक सूरत उसकी आँखों के सामने दिखाई देने लगी। उसने कुछ जवाब देने का इरादा किया मगर बोल न सका। उसकी ऐसी अवस्था देखकर इन्द्रदव ने तेजसिह स कहा दारागा और मायारानी को भी इस कोठरी में लाना चाहिए जिसमे मेरी बातों से तीनो बेइमानों के दिल का पता लगे। यह बात तेजसिंह ने भी पसन्द की और बात की बात में तीनों कैदी एक साथ कर दिये गये और तब इन्द्रदेव ने दारोगा से पूछा आपको इस आदमी का नाम बताना होगा जो आपके बगल में कैदियों की तरह बैठा हुआ है।

दारोगा--मै इसे नही जानता और जब वह स्वय कह रहा है कि बलभद्रसिंह है तो मुझसे क्यों पूछते हो ?

इन्द्रदेव--तो क्या आप बलभद्रसिंह की सूरत शक्ल भूल गये जिसकी लड़की को आपने मुन्दर के साथ बदल कर हद्द से ज्यादे दुःख दिया ?

दारोगा--मुझे उसकी सूरत याद है मगर जब वह मेरे यहाँ कैद था तब आप ही ने इसे जहर की पुड़िया खिलाई थी जिसक असर से नि सन्देह इसे इसे मर जाना चाहिए था मगर न मालूम क्योंकर बच गया फिर भी उस जहर की तासीर ने इसका तमाम बदन बिगाड़ दिया और इस लायक न रक्खा कि कोई पहिचाने और बलभ्रसिह के नाम से इसे पुकारे।

दारोगा की बातें सुन कर इन्द्रदेव की आँखें मारे क्रोध के लाल हो गई और उसने दाँत पीस कर कहा--

इन्द्रदेव--कम्बख्त बेईमान ! तू चाहता है कि अपने साथ मुझे भी लपेटे ! मगर ऐसा नही हो सकता, तेरी इन बातों से लक्ष्मीदेवी और राजा बीरेन्द्रसिंह का दिल मुझसे नही फिर सकता। इसका सबब अगर तू जानता तो ऐसी बातें कदापि न कहता। खैर वह मै तुझसे बयान करता हूँ, सुन तेरे दिये हुए जहर से मैने ही बलभद्रसिह की जान बचाई थी, और अगर तू बलभद्रसिंह को किसी और जगह न छिपा दिए होता या उसका हाल मुझे मालूम हो जाता तो बेशक मैं उसे भी तेरे कैदखाने से निकाल लेता मगर फिर भी वह शख्स मै ही हूँ जिसने लक्ष्मीदेवी को तुझ बेईमान और विश्वासघाती के पजे से छुड़ा कर वर्षो अपने घर में इस तरह से रक्खा कि तुझे कुछ भी मालूम न हुआ और मेरे ही सबब से आज लक्ष्मीदेवी इस लायक हुई कि तुझसे अपना बदला ले।

दारोगा--मगर ऐसा नही हो सकता।

यद्यपि इन्द्रदेव की बात सुन कर आश्चर्य और डर से दारोगा के रोंगटे खडे हो गय मगर फिर भी न मालूम किस भरोसे पर वह बोल उठा कि मगर ऐसा नहीं हो सकता और इस |कहने ने सभी को आश्चर्य में डाल दिया।

,**इन्द्रदेव**–(दारोगा से) मालूम होता है कि तेरा घमण्ड अभी टूटा नहीं तुझे अब भी किसी की मदद पहुँचने और अपने बचने की आशा है।

दारोगा–बेशक ऐसा ही है।

अब इन्द्रदेव अपने क्रोध को बर्दाश्त न कर सका और उसने कोठरी के अन्दर घुस कर दारागा के बाए गाल पर ऐसी चपत लगाई कि वह तिलमिला कर जमीन पर लुढक गया क्योंकि हथकडी और बेडी के कारण उसके हाथ और पैर मजबूर हो रहे थे। इसके बाद इन्द्रदेव ने नकली बलभद्रसिंह का बदन नगा कर डाला और अपने कमर से चमडे का एक तस्मा खोलकर मारना और पूछना शुरू किया बता तू जैपाल है या नहीं और बलभद्रसिंह कहाँ है?

यद्यपि तस्मे की मार खाकर नकली बलभद्रसिह बिना जल की मछली की तरह तडपन लगा मगर मुँह स सिवाय हाय' के कुछ न बोला। इन्द्रदेव उसे और भी मारा चाहता था मगर इसी समय एक गम्भीर आवाज ने उसका हाथ राक दिया और वह ध्यान देकर उसे सुनने लगा आवाज यह थी– होशियार होशियार !!

इस आवाज ने केवल इन्द्रदेव ही को ही बल्कि उन सभों को चौका दिया जो वहाँ मौजूद थे। इन्द्रदेव कैदखाने की कोठरी में से बाहर निकल आया और छत की तरफ सिर उठा कर देखने लगा जिधर स वह आवाज आई थी। मशाल की रोशनी बखूबी हो रही थी जिससे छत का एक सूराख जिसमें आदमी का सर बखूबी जा सकता था साफ दिखाई पडता था। सभों को विश्वास हो गया कि वह आवाज इसी में से आई है।

दो चार पल तक सभी ने राह देखा मगर फिर आवाज सुनाई न दी। आखिर इन्द्रदेव ने पुकार कर कहा ' अभी कौन बोला था?

फिर आवाज आई– हम !

इन्द्रदेव–तुमने क्या कहा था?

आवाज–होशियार होशियार। **इन्द्रदेव**–क्यों?

आवाज–दुश्मन आ पहुँचा और तुम लोग मुसीबत म फसा चाहते हो।

इन्द्रदेव–तुम कौन हो?

आवाज–कोई तुम लोगों का हिती।

इन्द्र–कैसे समझा जाय कि तुम हम लोगों के हिती हो और जो कुछ कहते हा वह सच है?

आवाज–हिती होने का सबूत इस समय देना कठिन है मगर इस बात का सबूत मिल सकता है कि हमने जो कुछ कहा है वह सच है।

इन्द्र–इसका क्या सबूत है?

आवाज–बस इतना ही कि इस तहखाने स निकलन के सब दर्वाजे बन्द हो गये और अब आप लोग बाहर नहा जा सकते।

अब तो सभों का कलेजा दहल उठा और आश्चर्य से एक दूसरे का मुँह देखने लगे। तेजसिह देवीसिह और भैरोसिंह की तरफ देखा और वे दोनों उसी समय इस बात का पता लगाने चले गये कि तहखाने के दर्वाजे वास्तव में बन्द हो गए या नहीं इसके बाद इन्द्रदेव ने फिर छत की तरफ मुँह करके कहा, हॉ तो क्या तुम बता सकते हो कि वे लोग कौन है जिन्होंने इस तहखाने में हम लोगों को घेरने का इरादा किया है?

आवाज–हॉ बता सकत है।

इन्द्रदेव–अच्छा उनके नाम बताओ।

आवाज–कमलिनी के तिलिस्मी मकान से छूटकर भागे शिवदत्त माधवी और मनोरमा तथा उन्हीं तीनों की मदद से छूटा हुआ दिग्विजयसिह का लडका कल्याणसिह जो इस तिलिस्मी तहखाने का हाल उतना ही जानता है जितना उसका बाप जानता था।

इन्द्रदेव–वह तो चुनार में कैद था।

आवाज–हॉ कैद था मगर छुडाया गया जैसा कि मैने कहा।

इन्द्रदेव–तो क्या वे लोग हम सभों का नुकसान पहुचा सकते है?

आवाज–सो तो तुम्हीं लोग जानो मैने कवल तुम लोगो को होशियार कर दिया अब जिस तरह अपने का बचा सको बचाओ।

इन्ददेव–(कुछ सोचकर) उन चारों क साथ कोई और भी है ?

आवाज–हॉ, एक हजार के लगभग फौज भी इसी तहखाने की किसी गुप्त राह से किले के अन्दर घुस कर अपना दखल जमाया चाहती है।

इन्ददेव–इतनी मदद उन सभों को कहॉ से मिली ?

आवाज–इसी कम्बख्त मायारानी की बदौलत।

इन्ददेव–क्या तुम भी उन्हीं लोगों के साथ हो ?

आवाज–नहीं।

इन्ददेव–तब तुम कौन हो !

आवाज–एक दफे तो कह चुका कि तुम्हारा कोई हिती हू।

इन्ददेव–अगर हिती हो तो हम लोगों की कुछ मदद भी कर सकते हो !

आवाज–कुछ भी नहीं।

इन्ददेव–क्यों ?

आवाज–मजबूरी से।

इन्ददेव–मजबूरी कैसी !

आवाज–वैसी ही।

इन्ददेव–क्या तुम हम लागों की मदद किए बिना ही इस तहखाने के बाहर चले जाओग।

आवाज–नहीं क्योंकि रास्ता बन्द है।

इतना सुनकर इन्ददेव चुप हो गया और कुछ देर तक सोचता रहा इसके बाद राजा वीरेन्दसिह का इशारा पाकर फिर बातचीत करने लगा।

इन्ददेव–तुम अपना नाम क्यों नही बताते ?

आवाज–व्यर्थ समझ कर।

इन्ददेव–क्या हम लोगों के पास भी नहीं आ सकते ?

आवाज–नहीं।

इन्ददेव–क्यों।

आवाज–रास्ता नहीं है।

इन्ददेव–तो क्या तुम यहा से निकल कर बाहर भी नही जा सकते ?

इस बात का जवाब भी कुछ मिला इन्ददेव न पुन पूछा मगर फिर भी जवाब न मिला। इतने ही में छत पर धमधमाहट की आवाज इस तरह आने लगी जैसे पचासों आदमी चारों तरफ दौड़ते या उछलते हों। उसी समय इन्ददेव ने राजा वीरेन्दसिह की तरफ देखकर कहा अब मुझे निश्चय हो गया कि इस गुप्त मनुष्य का कहना ठीक है और इस छत के ऊपर वाले खड में ताज्जुब नहीं कि दुश्मन आ गय हों और यह उन्हीं के पैरों की धमधमाहट हो। राजा वीरेन्दसिह इन्ददेव की बात का कुछ जवाब दिया चाहते थे कि उसी मोखे में से जिसमें से गुप्त मनुष्य के बातचीत की आवाज आ रही थी रग-बिरगे की और बहुत से आदमियों के बोलने की आवाजें आने लगीं। साफ सुनाई देता था कि बहुत से आदमी आपस में लड-भिड रहे हैं और तरह तरह की बातें कर रह है।

कहॉ है ? कोई तो नहीं ! जरूर है ! यही है पकड़ो ! पकडो ! तेरी ऐसी की तैसी तू क्या हमें पकड़ेगा ? नहीं अब तू बच के कहॉ जा सकता है ! इत्यादि आवाजें कुछ देर तक सुनाई देती रहीं और इसके बाद उसी मोखे में से बिजली की तरह चमक दिखाई देने लगी। उसी समय हाय रे यह क्या जले-जले मरे-मरे देव-देव भूत है भूत देवता काल है काल अग्निदेव है अग्निदव कुछ नही जान दो हम नहीं हम नहीं ! इत्यादि की आवाजें सुनाई देने लगी जिससे बेचारी किशोरी और कामिनी का कामल कलेजा दहलने लगा और थरथर कॉपने लगीं। राजा वीरेन्दसिह और तेजसिह वगैरह भी घबडाकर सोचने लग कि अब क्या करना चाहिए।

इन्ददेव–दुश्मनों के आन में काई शक नहीं !

वीरेन्द्र–खैर क्या हर्ज है लडाइ स हम लोग डरत नहीं अगर कुछ खयाल है तो केवल इतना ही कि तहखाने में पडे रह कर बबसी की हालत में जान द देनी न पडे क्योंकि दर्वाजों के बन्द हाने की खबर सुनाई देती है। अगर दुश्मन लाग आ गय तब कोई हर्ज नही क्योंकि जिस राह स वे लाग आवेंग वही राह हम लागों क निकल जाने के लिए होगी हा पता

लगाने में जो कुछ विलम्ब हो। (रुक कर) लो भैरो और देवीसिंह भी आ गए ! (दोनों ऐयारों से) कहो क्या खबर है।

देवी–दर्वाजे बन्द है।

भैरो–किले के बाहर निकल जाने वाला दर्वाजा भी बन्द है।

तेज–खैर कोई चिन्ता नहीं अब तो दुश्मन का आ जाना ही हमारे लिए बेहतर है।

इन्द्रदेव–कहीं ऐसा न हो कि हम लाग तो दुश्मनों से लडने के फेर में रह जाय और दुश्मन लोग तीनों कैदियों को छुडा ले जाय अस्तु पहिले कैदियों का बन्दोवस्त करना चाहिए और इससे भी ज्यादे जरूरी (किशोरी कामिनी इत्यादि की तरफ इशारा करके) इन लडकियों की हिफाजत है।

कमलिनी–मुझे छोडकर और सभी की फिक्र कीजिए क्योंकि तिलिस्मी खजर अपने पास रख कर भी छिपे रहना मै पसन्द नहीं करती मै लडूँगी और अपन खजर की करामात देखूगी।

वीरेन्द–नहीं नहीं हम लोगों के रहते हमारी लडकियों को हौसला करने की कोई जरूरत नहीं है।

इन्द्रदेव–कोई हर्ज नही आप कमलिनी के लिए चिन्ता न करें मै खुशी से देखना चाहता हूँ कि वर्षो मेहनत करके मैने जो कुछ विद्या इसे सिखाई है उससे यह कहा तक फायदा उठा सकती है खैर दखिये मै सभों का बन्दोवस्त कर दता हूँ।

इतना कहकर इन्द्रदव ने ऐयारों की तरफ देखा और कहा, इन कैदियों की ऑखों पर शीघ्र पट्टी बाधिये। सुनने के साथ ही बिना कुछ सबब पूछ भैरोसिह तारासिंह और देवीसिह जगले के अन्दर चले गये और बात की बात में तीनों कैदियों की ऑखों पर पट्टियॉ बॉध दीं। इसके बाद इन्द्रदेव ने छत की तरफ देखा जहॉं लोहे की बहुत सी कडियॉ लटक रही थीं। उन कडियों में से एक कडी को इन्द्रदव ने उछल कर पकड लिया और लटकते ही हुए तीन चार झटके दिये जिससे वह कडी नीचे की तरफ खिच आई और इन्द्रदेव का पैर जमीन के साथ लग गया। वह कडी लोहे की एक जजीर के साथ बधी हुई थी जो खैंचने के साथ ही नीचे तक खिच आई और जजीर खिच जाने से एक कोठरी का दवाजा ऊपर की तरफ चढ गया जैसे पुल का तख्ता जजीर खैंचने से ऊपर की तरफ चढ जाता है। यह कोठरी उसी दालान में दीवार के साथ इस ढग से बनी हुई थी कि दर्वाजा बन्द रहने की हालत मे इस बात का कुछ भी पता नहीं लग सकता था कि यहॉं पर कोठरी है।

जब कोठरी का दर्वाजा खुल गया तब इन्द्रदव ने कमलिनी को छोड के बाकी औरतों को उस कोठरी के अन्दर कर दने के लिए तेजसिंह से कहा और तेजसिह ने ऐसा ही किया। जब सब औरतें कोठरी के अन्दर चली गईं तब इन्द्रदेव ने हाथ से कडी छोड दी। तुरन्त ही उस कोठरी का दर्वाजा बन्द हो गया और वह कडी छत के साथ इस तरह चिपक गई जैसे छत में कोई चीज लटकाने के लिए जडी हो।

इसके बाद इन्द्रदेव ने तीनों कैदियों को भी वहा से निकाल ले जाकर किसी दूसरी जगह बन्द करने का इरादा किया मगर ऐसा करने का समय न मिला क्योंकि उसी समय पुन 'सावधान सावधान ! की आवाज आई और कैदखाने वाली कोठरी के बाहर बहुत से आदमियों के आ पहुचने की आहट मिली अतएव हमारे बहादुर लोग कमलिनी के सहित बाहर निकल आये। राजा वीरेन्दसिह और तेजसिह ने म्यान से तलवारें निकाल ली कमलिनी ने तिलिस्मी खजर सम्हाला ऐयारों ने कमन्द और खजर को दुरुस्त किया और इन्द्रदेव ने अपने बटुए में से छोटे-छोटे चार गेंद निकाले और लड़ने के लिए हर तरह से मुस्तैद होकर सभी के साथ कोठरी के बाहर निकल आया।

राजा वीरेन्दसिह उनके ऐयारों और इन्द्रदेव का विश्वास हो गया था कि उस गुप्त मनुष्य ने जो कुछ कहा वह सब ठीक है और शिवदत्त माधवी और मनोरमा के साथ ही साथ दिग्विजयसिह का लडका कल्याणसिह भी अपने मददगारों को लिए हुए इसी तहखाने में दिखाई देगा इसलिए इन्द्रदव और ऐयार लाग इस बात की फिक्र में थे कि जिस तरह हो सके चारों ही को नहीं तो कल्याणसिंह और शिवदत्त को तो जरूर ही पकड लेना चाहिए परन्तु वे लोग ऐसा न कर सके क्यों कि कोठरी के बाहर निकलते ही जिन लोगों ने उन पर वार किया था वे सब के सब अपने चेहरों पर नकाब डाले हुए थे और इसलिए उनमें से अपने मतलब के आदमियों को पहिचानना बडा कठिन था। इन्द्रदेव ने जल्दी के साथ कमलिनी से कहा 'तू हम लोगों के पीछे इसी दर्वाजे के बीच में खडी रह जब कोई तुझ पर हमला करे या इस कैदखाने के अन्दर जाने लगे तो अपने तिलिस्मी खजर से उसको रोकियो और कमलिनी ने ऐसा ही किया।

जब हमारे बहादुर लोग कैदखाने वाली कोठरी से बाहर निकले तो देखा कि उन पर हमला करने वाले सैकडो नकाबपोश हाथों में नगी तलवारें लिए आ पहुचे और 'मार-मार कहकर तलवारें चलाने लगे तथा हमारे बहादुर लाग भी जो यद्यपि गिनती में उनसे बहुत कम थे दुश्मनों के वारों का जवाब दने और अपने वार करने लगे। हमारे दानों ऐयारों ने मशालें जमीन पर फेंक दीं क्योंकि दुश्मनों के साथ बहुत सी मशालें थीं जिनकी रोशनी से दुश्मनों के साथ ही साथ हमारे

बहादुरों का काम भी अच्छी तरह चल सकता था।

इसमें कोई शक नहीं कि दुश्मनों ने जी तोड कर लडाई की और राजा वीरेन्द्रसिह वगैरह को गिरफ्तार करने का बहुत उद्योग किया मगर कुछ न कर सके और हमारे बहादुर वीरेन्द्रसिह तथा आफत के परकाले उनके ऐयारों ने एसी बहादुरी दिखाई कि दुश्मनों के छक्के छूट गय। राजा वीरेन्द्रसिह की न रुकने वाली तलवार ने तीस आदमियों को उस लोक का रास्ता दिखाया ऐयारों ने कमन्दों की उलझन में डाल कर पचासों को जमीन पर सुलाया जो अपने ही साथियों के पैरों तले रौंदे जाकर नेकाम हो गये। इन्द्रदेव ने जो चार गेंद निकाले थे उन्होंने तो अजीब ही तमाशा दिखाया। इन्द्रदेव ने उन गेंदों को बारी-बारी से दुश्मनों के बीच में फेंका जो ठेस लगने के साथ ही आवाज देकर फट गए और उनमें से निकले हुए आग के शोलों ने बहुतों को जलाया और बेकाम किया। जब दुश्मनों ने देखा कि हम राजा वीरेन्द्रसिह और उनके साथियों का कुछ भी न कर सके और उन्होंने हमारे बहुत से साथियों को मारा और बेकाम कर दिया तो वे लोग भागने की फिक्र में लगे मगर भाग जाना भी असम्भव था क्योंकि वहा से निकल भागने का रास्ता उन्हें मालूम न था। कल्याणसिह जिस राह से उन सभों को इस तहखाने में लाया था उसे बन्द न भी कर देता तो उस घूमघुमौवे और पेंचीले रास्ते का पता लगा कर निकल जाना कठिन था।

आधी घडी से ज्यादे देर तक मौत का बाजार गर्म रहा। दुश्मन लोग मारे जाते थे और ऐयारों को सर्दारों के गिरफ्तार करने की फिक्र थी इसी में तहखाने के ऊपरी हिस्से से किसी औरत के चिल्लाने की आवाज आने लगी और सभों का ध्यान उसी तरफ चला गया। तेजसिह ने भी उसे कान लगा कर सुना और कहा "ठीक किशोरी की आवाज मालूम पडती है"।

"हाय रे मुझे बचाओ अब मेरी जान न बचेगी दोहाई राजा वीरेन्द्रसिह की!"

इस आवाज ने केवल तेजसिंह ही को नहीं बल्कि राजा वीरेन्द्रसिह को भी परेशान कर दिया। वह ध्यान देकर उस आवाज को सुनने लगे। इसी बीच में एक दूसरे आदमी की आवाज भी उसी तरफ से आने लगी। राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके साथियों ने पहिचान लिया कि वह उसी की आवाज है जो कैदखाने की कोठरी में कुछ देर पहिले गुप्त रीति से बातें कर रहा था और जिसने दुश्मनों के आने की खबर दी थी। वह आवाज यह थी —

"होशियार होशियार देखो यह चाण्डाल बेचारी किशोरी को पकड़े लिये जाता है। हाय बेचारी किशोरी को बचाने की फिक्र करो! रह तो जा नालायक पहिले मेरा मुकाबला कर ले!!"

इस आवाज ने राजा वीरेन्द्रसिंह तेजसिह इन्द्रसिंह और उसके साथियों को बहुत ही परेशान कर दिया और वे लोग घबडा कर चारों तरफ देखने तथा सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

बारहवाँ बयान

हम ऊपर लिख आये है कि इन्द्रदेव ने भूतनाथ को अपने मकान से बाहर जाने न दिया और अपने आदमियों को यह ताकीद करके कि भूतनाथ को हिफाजत और खातिरदारी के साथ रक्खें, रोहतासगढ की तरफ रवाना हो गया।

यद्यपि भूतनाथ इन्द्रदेव के मकान में रोक लिया गया और वह भी उस मकान से बाहर जाने का रास्ता न जानने के कारण लाचार और चुप हो रहा मगर समय और आवश्यकता ने वहाँ उसे चुपचाप बैठने न दिया और मकान से बाहर निकलने का मौका उसे मिल ही गया।

जब इन्द्रदेव रोहतासगढ की तरफ रवाना हो गया, उसके दूसरे दिन दोपहर के समय सर्यूसिंह जो इन्द्रदेव का बडा विश्वासी ऐयार था भूतनाथ के पास आया और बोला "क्यों भूतनाथ तुम चुपचाप बैठे क्या सोच रहे हो?

भूत—बस अपनी बदनसीबी पर रोता और झख मारता हू, मगर इसके साथ ही इस बात को सोच रहा हू कि आदमी को दुनिया में किस ढग से रहना चाहिये।

सर्यू—क्या तुम अपने को बदनसीब समझते हो?

भूत—क्यों नहीं! तुम जानते हो कि वर्षों से मैं वीरेन्द्रसिह का काम कैसी ईमानदारी और नेकनीयती के साथ कर रहा हू? और क्या यह बात तुमसे छिपी हुई है कि उस सेवा का बदला आज मुझे क्या मिल रहा है?

सर्यू- (पास बैठकर) मैं सब जानता हूँ मगर भूतनाथ मैं फिर भी यह कहने से बाज न आऊँगा कि आदमी को कभी हताश नहीं होना चाहिए और हमेशा बुरे कामों की तरफ से अपने दिल को रोककर नेक काम में तन-मन-धन से लगे रहना चाहिए। ऐसा करने वाला निःसन्देह सुख भोगता है चाहे बीच-बीच में थोड़ी-बहुत तकलीफ भी क्यों न उठानी पड़े

अस्तु आज कल के दु खों से तुम हताश मत हो जाओ और राजा बीरेन्दसिह तथा उनकी तरह सज्जन लोगों के साथ नकी करने स अपन दिल को मत रोको। तुम तो ऐयार हो और ऐयारों में भी नामी ऐयार फिर भी दो चार दुष्टों की अनोखी कार्रवाइयों से आ पडने वाली आफतों को न महकर उदास हा जाओ तो बडे आश्चर्य की बात है।

भूत–नहीं मेरे दोस्त मै हताश हाने वाला आदमी नहीं हूँ मै तो केवल समय का हेर फेर देख कर अफसोस कर रहा हूँ। नि सन्देह मुझसे दो एक काम बुरे हो गये और उसका बदला भी मै पा चुका हूँ मगर फिर भी मेरा दिल यह कहने से बाज नहीं आता कि तेरे माथे से कलक का टीका अभी तक साफ नहीं हुआ अतएव तू नेकी करता जा और भूलता जा।

सर्यू–शाबाश मै केवल तुम्हीं को नहीं बल्कि तुम्हारे दिल को भी अच्छी तरह जानता हू और वे बातें भी मुझसे छिपी हुई नहीं है जिनका इल्जाम तुम पर लगाया गया है। यद्यपि मै एक ऐसे सर्दार का एयार हू जो किसी के नेक-बद से सरोकार नहीं रखता और इस स्थान को देखने वाला कह सकता है कि वह दुनिया के पर्दे के बाहर रहता है मगर फिर भी मै काम ज्यादे न होने के सबब से घूमता-फिरता और नामी ऐयारों की कार्रवाइयों को देखा-सुना करता हू और यही सबब है कि मै उन भेदों को भी कुछ जानता हूँ जिसका इल्जाम तुम पर लगाया गया है।

भूत–(आश्चर्य से) क्या तुम उन भेदों को जानते हो ?

सर्यू–बखूबी तो नहीं मगर कुछ-कुछ।

भूत–तो मेरे दोस्त तुम मेरी मदद क्यों नहीं करते ? तुम मुझे इस आफत से क्यों नहीं छुड़ाते। आखिर हम तुम एक ही पाठशाला के पढे लिखे है क्या लडकपन की दोस्ती पर ध्यान देते तुम्हें शर्म आती है या क्या तुम इस लायक नहीं हो ?

सर्यू–(हसकर) नहीं नहीं ऐसा ख्याल न करो मै तुम्हारी मदद जरूर करूँगा अभी तक तो तुम्हें किसी से मदद लेने की आवश्यकता भी नहीं पडी थी और जब आवश्यकता आ पडी है तो मदद करने के लिए हाजिर भी हो गया हूँ।

भूत–(मुस्कुराकर) तब तो मुझे खुश होना चाहिये मगर जब तक तुम्हारा मालिक रोहतासगढ से लौट कर न आ जाय तब तक हम लोग कुछ भी न कर सकेंगे।

सर्यू–क्यों न कर सकेंगे।

भूत–इसलिए कि तुम्हारा मालिक मुझे यहा कैद कर गया है। मै इसे कैद ही समझता हू जब कि यहाँ से बाहर निकलने की आज्ञा नहीं है।

सर्यू–यह कोई बात नहीं है अगर जरुरत आ पडे तो मै तुम्हें इस मकान के बाहर कर दूँगा चाहे बाहर होने का रास्ता अपने मालिक के नियमानुसार न बताऊ।

भूत–(प्रसन्नता से हाथ उठाकर) ईश्वर तू धन्य है। अब आशालता ने जिसमें सुन्दर और सुगन्धित फूल लगे हुए है, मुझे फिर घेर लिया। (सर्यू से) अच्छा दोस्त तो अब बताओ कि मुझे क्या करना चाहिये ?

सर्यू–सब के पहिले मनोरमा को अपने कब्जे में लाना चाहिए।

भूत–(कुछ सोचकर) ठीक कहते हो मेरी भी एक दफे यही इच्छा हुई थी मगर क्या तुम इस बात को नहीं जानते कि शिवदत्त मनोरमा और ।

सर्यू बात काटकर) मै खूब जानता हूँ कि शिवदत्त माधवी औरमनोरमा को कमलिनी के कैदखाने से निकल भागने का मौका मिला और वे लोग भाग गए। भूत–तब ?

सर्यू–मगर आज एक खबर ऐसी सुनने में आई है जो आश्चर्य और उत्कठा बढाने वाली है और हम लोगों को चुपचाप बैठे रहने की आज्ञा नहीं देती। भूत–वह क्या ?

सर्यू–यही कि कम्बख्त मायारानी की मदद पाकर शिवदत्त,माधवी और मनोरमा जो पहले से ही अमीर थे अपनी ताकत बहुत बढा ली और सबके पहिले उन्होंने यह काम किया कि राजा दिग्विजयसिह के लडके कल्याणसिह को कैद से छुडा लिया जिसकी खबर राजा बीरेन्द्रसिंह को अभी तक नहीं हुई और यह भी तुम जानते ही हो कि रोहतासगढ के तहखाने का भेद कल्याणसिंह उतना ही जानता है जितना उसका बाप जानता था।

भूत–बेशक-बेशक अच्छा तब ?

सर्यू–अब उन लोगों ने यह सुनकर कि राजा बीरेन्द्रसिह तेजसिह इत्यादि ऐयार तथा किशोरी कामिनी कमलिनी कमला और लाडिली वगैरह सभी रोहतासगढ़ में मौजूद है, गुप्त रीति से रोहतासगढ़ पहुचने का इरादा किया है।

भूत–बेशक कल्याणसिह उन लोगों को तहखाने की गुप्त राह से किले के अन्दर ले जा सकता है और इसका नतीजा नि सन्देह बहुत बुरा होगा।

सर्यू–मै भी यही सोचता हूँ, तिस पर मजा यह है कि वे लोग अकेले नहीं है बल्कि हजार फौजी सिपाहियों को भी उन लोगों ने अपना साथी बनाया है।

भूत–और रोहतासगढ के तहखाने में इससे दूने आदमी भी हों तो सहज ही में समा सकते हैं मगर मेरे दोस्त यह खबर तुमने कहा से और क्योंकर पाई ?

सर्यू–मेरे चेलों ने जो प्राय बाहर घूमा करते हैं यह खबर मुझे सुनाई है।

भूत–तो क्या यह मालूम नहीं हुआ कि शिवदत्त माधवी मनोरमा और कल्याणसिंह तथा उनके साथी किस राह से जा रहे है और कहा है ?

सर्यू–हा यह भी मालूम हुआ है, वे लोग बराबर घाटी की राह से और जगल ही जगल जा रहे हैं।

भूत–(कुछ देर तक गौर करके) मौका तो अच्छा है !

सर्यू–बेशक अच्छा है।

भूत–तब ?

सूर्य–चलो हम तुम दोनों मिलकर कुछ करें !

भूत–मैं तैयार हू मगर इस बात को सोच लो कि ऐसा करने पर तुम्हारा मालिक रज तो न होगा !

सर्यू–सब सोचा समझा है हमारा मालिक भी रोहतासगढ ही गया हुआ है और वह भी राजा वीरेन्द्रसिंह का पक्षपाती है।

भूत–खैर तो अब विलम्ब करना अपने अमूल्य समय को नष्ट करना है। (ऊची सास लेकर) ईश्वर न करे शिवदत्त के हाथ कहीं किशोरी लग जाय अगर ऐसा हुआ तो अबकी दफे वह बेचारी कदापि न बचेगी।

सर्यू–मैं भी यही सोच रहा हू अच्छा तो अब तैयार हो जाओ मगर नियमानुसार तुम्हारी आँखों पर पट्टी बाध कर बाहर ले जाऊगा।

भूत–कोइ चिन्ता नहीं हा यह तो कहो कि मेरे ऐयारी के बटुए में कई मसाले की कमी हो गई क्या तुम उसे पूरा कर सकते हो ?

सर्यू–हा हा, जिन-जिन चीजों की जरूरत हो ले लो यहा किसी बात की कमी नहीं है।

तेरहवां बयान

दोपहर दिन का समय है। गर्म-गर्म हवा के झपेटों से उड़ी हुई जमीन की मिट्टी केवल आसमान ही को गदला नहीं कर रही है बल्कि पथिकों के शरीरों को भी अपना सा करती और आखों को इतना खुलने नहीं देती है जिससे रास्ते को अच्छी तरह देखकर तेजी के साथ चलें और किसी घने पेड के नीचे पहुँच कर अपने थके मादे शरीर को आराम दें। ऐसे ही समय में भूतनाथ सर्यूसिंह और सर्यूसिंह का एक चेला आखों को मिट्टी और गर्द से बचाने के लिए अपने-अपने चेहरों पर बारीक कपडा डाले रोहतासगढ की तरफ तेजी के साथ कदम बढाये चले जा रहे है। हवा के झपेटे आगे बढने में रोक-टोक करते हैं मगर तीनों अपनी धुन के पक्के इस तरह चले जा रहे है कि बात तक नहीं करते हा उस सामने के घने जगल की तरफ उनका ध्यान अवश्य है जहाँ आधी घडी के अन्दर ही पहुचकर सफर की हरारत मिटा सकते है। उन तीनों ने अपनी चाल और भी तेज की और थोडी ही देर बाद उसी जगल में एक घने पेड के नीचे बैठ कर थकावट मिटाते दिखाई देने लगे।

सर्यू-(रूमाल से मुँह पोंछ कर) यद्यपि आज का सफर दु खदाई हुआ परन्तु हम लोग ठीक समय पर ठिकाने पहुँच गये।

भूत–अगर दुश्मनों का डेरा अभी तक इसी जगल में हो तो मैं भी ऐसा ही कहूगा।

सर्यू–बेशक वे लोग अभी तक इसी जगल में होंगे क्योंकि मेरे शागिर्द ने उनके दो दिन तक यहा ठहरने की खबर दी थी और वह जासूसी का काम बहुत अच्छे ढग से करता है।

भूत–तब हम लोगों को कोई ऐसा ठिकाना ढूढना चाहिये जहा पानी हो और अपना भेष अच्छी तरह बदल सकें।

सर्यू–जरा सा और आराम कर लें तब उठें।

भूत–क्या हर्ज है।

थोडी देर तक ये तीनों उसी पेड के नीचे बैठे बातचीत करते रहे और इसके बाद उठ कर ऐसे ठिकाने पहुँचे जहा साफ जल का सुन्दर चश्मा बह रहा था। उसी चश्मे के जल से बदन साफ करने के बाद तीनों ऐयारों ने आपुस में कुछ सलाह करके अपनी सूरतें बदलीं और वहा से उठ कर दुश्मनों की टोह में

इधर-उधर घूमने लगे तथा सध्या होने के पहले ही उन लोगों का पता लगा लिया जो दो सौ आदमियों के साथ उसी जगल में टिके हुए थे। तब रात हुई और अधकार न अपना दखल चारों तरफ अच्छी तरह जमा लिया तो ये तीनों उस लश्कर की तरफ रवाना हुए।

शिवदत्त और कल्याणसिह तथा उनके साथियों ने जगल के मध्य में डेरा जमाया हुआ था। खेमा या कनात का नाम निशान न था वडे-वड और घने पेडों के नीचे शिवदत्त और कल्याणसिह मामूली बिछावन पर बैठे हुए बातें कर रहे थे और उनसे थोडी ही दूर पर उनके सगी-साथी और सिपाही लोग अपने-अपने काम तथा रसोई बनाने की फिक्र में लगे हुए थे। जिस पेड के नीचे शिवदत्त और कल्याणसिह थे उस्से तीस या चालीस गज की दूरी पर दो पालकिया पेडों की झुरमुट के अन्दर रक्खी हुइ थीं और उनमें माधवी तथा मनोरमा विराज रही थीं और इन्हीं के पीछे की तरफ बहुत से घोड पेडों के साथ बधे हुए घास चर रहे थे।

शिवदत्त और कल्याणसिह एकान्त में बैठ बातचीत कर रहे थे। उनसे थोडी ही दूर पर एक जवान जिसका नाम धन्नूसिह था हाथ में नगी तलवार लिए हुए पहरा दे रहा था और यही जवान उन दो सौ सिपाहियों का अफसर था जो इस समय जगल में मौजूद थे। रात हो जाने के कारण कहीं-कहीं पर रोशनी हो रही और एक लालटन उस जगह जल रही थी जहा शिवदत्त और कल्याण बैठे हुए आपुस में बातें कर रहे थे।

शिवदत्त–हमारी फौज ठिकाने पहुच गई होगी।

कल्याण–वेशक।

शिवदत्त–क्या इतने आदमियों को रोहतासगढ तहखाने के अन्दर समा जाना सम्भव है ?

कल्याण–(हॅसकर) इसके दूने आदमी भी अगर हों तो उस तहखाने में अट सकते है।

शिवदत्त–अच्छा तो उस तहखाने में घुसने के बाद क्या क्या करना होगा ?

कल्याण–उस तहखाने के अन्दर चार कैदखाने है पहिले उन कैदखानों को देखेंगे अगर उनमें कोई कैदी होगा तो उसे छुडा कर अपना साथी वनावेंगे। मायारानी और उसका दारोगा भी उन्हीं कैदखानों में से किसी में जरूर होंगे और छूट जाने पर उन दोनों से वडी मदद मिलेगी।

शिवदत्त–वेशक बडी मदद मिलेगी अच्छा तब ?

कल्याण–अगर उस समय वीरेन्द्रसिह वगैरह तहखाने की सैर करते हुए मिल जायॅगे तो मै उन लोगों के बाहर निकलने का रास्ता वन्द करके फॅसाने की फिक्र करूंगा तथा आप फौजी सिपाहियों को लेकर किले के अन्दर चले जाइयगा और मर्दानगी के साथ किले में अपना दखल कर लीजियेगा।

शिवदत्त–ठीक है मगर यह कब सभव है कि उस समय बीरेन्द्रसिह बगैरह तहखाने की सैर करते हुए हम लोगों को मिल जाय।

कल्याण–अगर न मिलेंगे तो न सही उस अवस्था में हम लोग एक साथ किले के अन्दर अपना दखल जमावेंगे और बीरेन्द्रसिह तथा उनके ऐयारों को गिरफ्तार कर लेगे। यह तो आप सुन ही चुके है कि इस समय रोहतासगढ किले में फौजी सिपाही पाच सौ से ज्यादे नहीं है सो भी वेफिक्र बैठे होंगे और हम लोग यकायक हर तरह से तैयार जा पहुचेगे। मगर मेरा दिल यही गवाही देता है कि वीरेन्द्रसिह वगैरह को हम लोग तहखाने मे सैर करते हुए अवश्य देखेंगे क्योंकि वीरेन्द्रसिह ने जहा तक सुना गया है अभी तक तहखाने की सैर नहीं की अबकी दफे जो वह वहा गए है तो जरूर तहखाने की सैर करेंगे और तहखाने की सैर दो एक दिन में नहीं हो सकती आठ दस दिन अवश्य लगेंगे और सैर करन का समय भी रात ही को ठीक होगा इसी से कहत हैं कि अगर वे लोग तहखाने में मिल जाय तो ताज्जुब नहीं।

शिवदत्त–अगर ऐसा हो तो क्या वात है मगर सुनो तो कदाचित बीरेन्द्रसिह तहखाने मे मिल गए ता तुम तो उनके फसाने की फिक्र में लगोगे और मुझे किले के अन्दर घुसकर दखल जमाना होगा। मगर मै उस तहखाने के रास्ते को जानता नही तुम कह चुके हो कि तहखाने में आने-जाने के लिए कई रास्ते हैं और वे पेचीले है अस्तु ऐसी अवस्था में मै क्या कर सकूगा !

कल्याण–ठीक है मगर आपको तहखाने के कुछ रास्तों का हाल और वहा आने-जाने की तर्कीब मै सहज ही में समझा सकता हू।

शिवदत्त–सा कैसे ?

कल्याणसिह ने अपन पास पड हुए एक बटुए म से कलम दावातऔर कागज निकाला और लालटेन को जो कुछ हटकर जल रही थी पास रखने क बाद कागज पर तहखान का नक्शा खींचकर समझाना शरू किया। उसन ऐसे ढग

से समझाया कि शिवदत्त को किसी तरह का शक न रहा और उसने कहा अब मै बखूबी समझ गया। उसी समय बगल से यह आवाज आई 'ठीक है मैं भी समझ गया।

वह पेड बहुत मोटा और जगली लताओं के चढे होने से घना हो रहा था। शिवदत्त और कल्याणसिह की पीठ जिस पेड की तरफ थी उसी की आड में कुछ दर से खडा एक आदमी उन दोनों की वातचीत सुन रहा और छिप कर उस नक्शे को भी देख रहा था। जब उसने कहा कि 'ठीक है, मै भी समझ गया' तब ये दोनों चौके और घूमकर पीछे की तरफ दखने लगे मगर एक आदमी के भागने की आहट के सिवाय और कुछ भी मालूम न हुआ।

कल्याण--लीजिये श्रीगणेश हो गया नि सन्देह बीरेन्द्रसिह के ऐयारों को हमारा पता लग गया।

शिवदत्त--वात तो ऐसी ही मालूम होती है लेकिन कोई चिन्ता नहीं देखो हम बन्दोबस्त करते है।

कल्याण--अगर हम ऐसा जानते तो आपके ऐयारों को दूसरा काम सुपुर्द करके आग बढने की राय कदापि न देते।

शिवदत्त-- धन्नूसिंह को बुलाना चाहिए।

इतना कहकर शिवदत्त ने ताली बजाई मगर कोई न आया और न किसी ने कुछ जवाब दिया। शिवदत्त को ताज्जुब मालूम हुआ और उसने कहा, अभी तो हाथ में नगी तलवार लिये यहा पहरा दे रहा था चला कहा गया ? कल्याणसिह ने जफील बजाई आवाज सुनकर कई सिपाही दौड आये और हाथ जोडकर सामने खडे हो गये। शिवदत्त ने एक सिपाही से पूछा धन्नू कहा गया है !

सिपाही--मालूम नहीं हुजूर अभी तो इसी जगह पर टहल रहे थे।

शिवदत्त--देखो कहा है, जल्द बुलाओ।

हुक्म पाकर वे सब चले गए और थोडी ही देर में वापस आकर बाले 'हूजूर करीब में तो कहीं पता नहीं लगता !

शिव--बड़े आश्चर्य की बात है। उसे दूर जाने की आज्ञा किसने दी ?

इतने ही में हाफता हाफता धन्नूसिह भी आ मौजूद हुआ जिसे देखते ही शिवदत्त ने पूछा ' तुम कहा चले गये थे !

धन्नू महाराज कुछ न पूछिये मैं तो बडी आफत में फस गया था !

शिवदत्त--सो क्या ! और तुम बदहवास क्यों हो रहे हो ?

धन्नू मैं इसी जगह पर घूम-घूम कर पहरा दे रहा था कि एक लडके न जिसे मैंने आज के सिवाय पहिले कभी देखा न था। आकर कहा, ' एक औरत तुमसे कुछ कहना चाहती है।' यह सुनकर मुझे ताज्जुब हुआ और मैंने उससे पूछा 'वह औरत कौन है कहा है और मुझसे क्या कहा चाहती है ? ' इसके जवाब में लडका वाला 'सो सब मैं कुछ नहीं जानता तुम खुद चलो और जो कुछ वह कहती है सुन लो इसी जगह पास ही में तो है। ' इतना सुन कर ताज्जुब करता हुआ मैं उस लड़के के साथ चला और थोड़ी ही दूर पर एक औरत को देखा। (कापकर) क्या कहू ऐसा दृश्य तो आज तक मैने देखा ही न था।

शिव--अच्छा अच्छा कहो वह औरत कैसी और किस उम्र की थी !

धन्नू --कृपानिधान वह बडी भयानक औरत थी। काला रग बडी-बड़ी और लाल आखें हाथ में लोहे का एक डडा लिये हुए थी जिसमें बड़े बड़े काटे लगे थे और उसके चारों तरफ बड़े-बड़े और भयानक सूरत के कुत्ते मौजूद थे जो मुझे देखते ही गुर्राने लगे। उस औरत ने कुत्तों को डाटा जिससे वे चुप हो रहे मगर चारों तरफ से मुझे घेर कर खडे हो गये। डर के मारे मेरी अजब हालत हो गई। उस औरत ने मुझसे कहा अपने हाथ की तलवार म्यान में कर ले नहीं तो ये कुत्ते तुझे फाड खायेंगे। इतना सुनते ही मैंने तलवार म्यान में कर ली और इसके साथ ही वे कुत्ते मुझसे कुछ दूर हटकर खडे हो गए। (लबी सास लेकर) ओफ आह ! इतने भयानक और बडे कुत्ते मैंने आज तक नहीं देखे थे !

शिवदत्त--(आश्चर्य और भय से) अच्छा अच्छा आगे चलो, तब क्या हुआ ?

धन्नू -मैने डरते-डरते उस औरत से पूछा-- आपने मुझे यहाँ क्यों बुलाया ? उस औरत ने कहा मैं अपनी बहिन मनोरमा से मिला चाहती हू उसे बहुत जल्द मेरे पास ले आ !

शिवदत्त--(आश्चर्य से) अपनी बहिन मनोरमा से !

धन्नू -जी हा। मुझे यह सुन कर बडा आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे स्वपन में भी इस बात का गुमान न हो सकता था कि मनोरमा की बहिन ऐसी भयानक राक्षसी होगी ! और महाराज उसने आपको और कुँअर साहब को भी अपने पास बुलाने के लिए कहा।

कल्याण--(चौककर) मुझे और महाराज को?

धन्नू जी हा।

शिव--अच्छा तब क्या हुआ ?

धन्नू–मैंने कहा कि तुम्हारा सन्देशा मनोरमा को अवश्य दे दूगा मगर महाराज और कुँअर साहव तुम्हारे कहने से यहा नहीं आ सकते ।

कल्याण–तब उसने क्या कहा ?

धन्नू–वस मेरा जवाब सुनते ही वह बिगड गई और डाट कर बोली खवरदार ओ कम्बख्त ! जो मै कहती हू वह तुझे और तेरे महाराज को करना ही होगा !! (काप कर) महाराज उसके डाटने के साथ ही एक कुत्ता उछल कर मुझ पर चढ बैठा । अगर वह औरत अपने कुत्ते को न डाटती और न रोकती तो बस मै आज ही समाप्त हो चुका था ! (गर्दन और पीठ के कपडे दिखा कर) देखिए मेरे तमाम कपड़े उस कुत्ते के वडे बडे नाखूनों की वदौलत फट गए और वदन भी छिल गया, देखिये यह मेरे ही खून स मेरे कपडे तर हो गये हैं ।

शिवदत्त–(भय और घबराहट स) आफ ओह धन्नूसिह तुम तो जख्मी हो गये ! तुम्हारे पीठ पर के कपडे सव लहू से तर हो रहे है !!

धन्नू–जी हा महाराज बस आज मै काल के मुहँ से निकल कर आया हू मगर अभी तक मुझे इस वात का विश्वास नहीं होता कि मेरी जान बचेगी ।

कल्याण–सो क्यों ?

धन्नू–जवाव देने के लिए लौट कर मुझे फिर उसके पास जाना होगा ।

कल्याण–सो क्या ! अगर न जाओ तो क्या हो ? क्या हमारी फौज में भी आ कर वह उत्पात मचा सकती है ?

इतने ही में दो तीन भयानक कुत्तों के भौंकने की आवाज थोड़ी ही दूर पर से आई जिसे सुनते ही धन्नूसिह थर थर कापने लगा । शिवदत्त तथा कल्याणसिह भी डरकर उठ खड़े हुए और कापते हुए उस तरफ देखने लगे । उसी समय बदहवास और घबडाई हुई मनोरमा भी वहा आ पहुची और बोली अभी मैंन भूतनाथ की सूरत देखी है वह बेखौफ मेरी पालकी के पास आकर कह गया है कि आज तुम लोगों की जान लिये विना मै नहीं रह सकता ! अब क्या होगा ? उसका वेखौफ यहा चले आना मामूली बात नहीं है !

॥ तेरहवा भाग समाप्त ॥

* श्री *

चन्द्रकान्ता सन्तति

चौदहवां भाग

पहिला बयान

धन्नूसिह की बातों ने शिवदत्त और कल्याणसिह को ऐसा बदहवास कर दिया कि उन्हें बात करना मुश्किल हो गया । शिवदत्त सोच रहा था कि कुछ देर की सच्ची मोहलत मिले तो मनोरमा से उसकी वहिन का हाल पूछे मगर उसी समय घबराई हुई मनोरमा खुद ही वहा आ पहुची और उसने जो कुछ कहा वह और भी परेशान करने वाली वात थी। आखिर शिवदत्त ने मनोरमा से पूछा क्या तुमने अपनी आखों से भूतनाथ को देखा ?

मनोरमा–हॉ मैने स्वय देखा और उसने यह वात मुझी से कही थी जो मै आपसे कह चुकी हूँ ?

शिवदत्त–क्या वह तुम्हारी पालकी के पास आया था ?

मनोरमा–हॉ मै माधवी से बातें कर रही थी कि वह निडर होकर हम लोगों के पास आ पहुँचा और धमका कर चला गया ।

शिवदत्त–तो तुमने आदमियों को ललकारा क्यों नहीं ?

मनोरमा–क्या आप भूतनाथ को नही जानते कि वह कैसा भयानक आदमी है ? क्या वे तीन-चार आदमी भूतनाथ को गिरफ्तार कर लेते जो मेरी पालकी के पास थे ?

शिवदत्त–ठीक है वह बडा ही भयानक ऐयार है दो चार क्या दस पॉच आदमी भी उसे गिरफ्तार नही कर सकते। मै तो उसके नाम से कॉप जाता हू। ओफ वह समय मुझे कदापि नहीं भूल सकता जब उसने रूहा बन कर मुझे अपने चगुल में फसा लिया था !* अपने चेले को भीमसेन की सूरत ऐसा बनाया कि मै भी पहिचान न सका। मगर बड़े आश्चर्य की बात यह है कि आज वह असली सूरत में तुम्हें दिखाई पडा। उसका इस तरह चले आना मामूली बात नहीं है !

मनोरमा–जितना मै उसका हाल जानती हू आप उसका सोलहवा हिस्सा भी न जानते होंगे और यही सबब है कि इस समय डर के मारे मेरा कलेजा काप रहा है, फिर जहा तक मै ख्याल करती हू वह अकेला भी नहीं है।

शिवदत्त–नहीं नहीं वह अकेला कदापि न होगा। (धन्नूसिह की तरफ इशारा करके) इसने भी एक ऐसा ही भयानक खबर मुझे सुनाई है।

मनोरमा–(ताज्जुब से) वह क्या ?

शिवदत्त–इसका हाल धन्नूसिह की जुबानी ही सुनना ठीक होगा। (धन्नूसिह से) हा तुम जरा उन बातों को दोहरा तो जाओ !

धन्नूसिह–बहुत खूब।

इतना कहकर धन्नूसिह उन बातों को ऐसे ढग से दोहरा गया कि मनोरमा का कलेजा काप उठा और शिवदत्त तथा कल्याणसिह पर पहिले से भी ज्यादे असर पडा।

शिवदत्त–(मनोरमा से) क्या वास्तव में वह तुम्हारी बहिन है ?

मनोरमा–राम राम ऐसी भयानक राक्षसी मेरी बहिन हो सकती है ? असल तो यह है कि मै अकेली हू, न कोई बहिन है न भाई।

धन्नू-तब जरा खडे खडे उसके पास चली चलो और जो कुछ वह पूछे उसका जवाब दे दो।

मनोरमा–(रज होकर) मै क्यों उसके पास जाने लगी ! जाकर कह दो कि मनोरमा नहीं आती।

धन्नू–(खैरखाही दिखाने के ढग से) मालूम होता है कि तुम अपने साथ ही साथ हमारे मालिक पर भी आफत लाया चाहती हौ। (शिवदत्त से) महाराज उस राक्षसी ने जितनी बातें मुझसे कहीं मै अदब के ख्याल से अर्ज नहीं कर सकता तथापि एक बात केवल आप ही से कहने की इच्छा है।

धन्नूसिह की बात सुनकर मनोरमा को डर के साथ ही साथ क्रोध भी चढ आया और वह कडी निगाह से धन्नूसिह की तरफ देखकर बोली महाराज के खैरखाह एक तुम्हीं तो दिखाई देते हौ ! इतनी बडी फौज की अफसरी करने के लिए क्यों मरे जाते हौ जो एक औरत के सामने जाने की हिम्मत नही है ?'

धन्नू–हिम्मत तो लाखों आदमियों के बीच घुस कर तलवार चलाने की है मगर केवल तुम्हारे सबब से अपने मालिक पर आफत लाने और अपनी जान देने का हौसला कोई बेवकूफ आदमी भी नहीं कर सकता। (शिवदत्त से) तिस पर भी महाराज जो आज्ञा दें उसे करने के लिए मै तैयार हू, यदि आग में कूद पड़ने के लिए भी कहें तो क्षण भर देर लगाने वाले पर लानत भेजता हूँ, परन्तु मेरी बात सुनकर तब जो चाहें आज्ञा दें !

इतना सुनकर शिवदत्त उठ खड़ा हुआ और धन्नूसिह को अपने पीछे आने का इशारा करके कुछ दूर चला गया जहा से उनकी बातचीत कोई दूसरा नहीं सुन सकता था।

शिवदत्त–हा धन्नूसिह कहो अब क्या कहते हो ?

धन्नू–महाराज क्षमा करें रज न हों ! मै सरकार का नमकख्वार गुलाम हू इसलिए सिवाय सरकार की भलाई के मुझे और कुछ भी नहीं सूझता। मै यह नहीं चाहता कि मनोरमा के सबब से जो आपकी कुछ भी भलाई नहीं कर सकती बल्कि आपके सबब से अपने को फायदा पहुचा सकती है आप किसी आफत में फस जाय। मै सच कहता हू कि वह भयानक औरत साधारण नहीं मालूम होती। उसने कसम खाकर कहा था कि मै केवल एक पहर तक राजा शिवदत्त का मुलाहिजा करूगी इसके अन्दर अगर मनोरमा मेरे पास न भेजी जायगी या अलग न कर दी जायगी तो राजा शिवदत्त को

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति छठवॉं भाग दूसरा बयान।

इस दुनिया से उठा दूँगी और अपने कुत्तों को जा आदमी के खून के हर दम प्यासे रहते है । बस महाराज अब आगे कहने से अदब जबान रोकती है। (कापकर) ओफ ये भयानक कुत्ते जो शेर का कलेजा फाड़कर खा जाय ! (रुककर) फिर मनोरमा की जुबानी भी आप सुन ही चुके हैं कि भूतनाथ यकायक यहा पहुँचकर मनोरमा से क्या कह गया है

इसलिए (हाथ जोडकर)मै अर्ज करता हू कि किसी बहाने मनोरमा को अपने से अलग करें। सरकार खूब समझ रखते हैं कि जिस काम के लिए जा रहे हैं उसमें सिवाय कुँअर कल्याणसिह के और कोई भी मदद नहीं कर सकता फिर एक मामूली औरत के लिए अपना हर्ज या नुकसान करना उचित नहीं आगे महाराज मालिक है जो चाहें करें।

शिवदत्त--तुम्हारा कहना बहुत ठीक है मैं भी यही सोच रहा हू।

जिस जगह ये दोनों खडे होकर बातें कर रहे थे वहा एक दम निराला था कोई आदमी पास न था। शिवदत्त ने अपनी बात पूरी भी न की थी कि यकायक भूतनाथ वहा आ पहुचा और कड़ाई के ढग से शिवदत्त की तरफ देखकर बोला इस अंधेरे में शायद तुम मुझे न पहिचान सको इसलिए मैं अपना नाम भूतनाथ बता कर तुम्हें होशियार करता हू कि घण्टे भर के अन्दर मेरी खूराक मनोरमा को मेरे हवाले करो या अपने साथ से अलग कर दो नहीं तो जीता न छोडूगा इतना कहकर बिना कुछ जवाब सुने भूतनाथ वहा से चला गया और शिवदत्त उसकी तरफ देखता ही रह गया।

शिवदत्त एक दफे भूतनाथ के हाथ में पड चुका था और भूतनाथ ने जो सलूक उसके साथ किया था उसे वह कदापि भूल नहीं सकता था बल्कि भूतनाथ के नाम ही से उसका कलेजा कापता था इसलिए वहा यकायक भूतनाथ के आ पहुँचने से वह काप उठा और धन्नूसिह की तरफ देखकर बोला, निःसदेह यह बड़ा ही भयानक ऐयार है !

धन्नू--इसीलिए मैं अर्ज करता हू कि एक साधारण औरत के लिए इस भयानक ऐयार और उस राक्षसी को अपना दुश्मन बना लेना उचित नही है।

शिवदत्त--तुम ठीक कहते हो अच्छा आओ मै कल्याणसिह से राय मिला कर इसका बन्दोबस्त करता हू।

धन्नूसिह को साथ लिए हुए शिवदत्त अपने ठिकाने पहुचा जहा कल्याणसिह और मनोरमा को छोड गया था। मनोरमा को यह कह कर वहा से बिदा कर दिया कि-- तुम अपने ठिकाने जाकर बैठो हम यहा से कूच करने का बन्दोबस्त करते हैं और निश्चय हो जाने पर तुमको बुलावेंगे और जब वह चली गई और वहा केवल ये ही तीन आदमी रह गये तब बातचीत होने लगी।

शिवदत्त ने धन्नूसिह की जुबानी जो कुछ सुना था और धन्नूसिह की जो कुछ राय हुई थी वह सब तथा बातचीत के समय यकायक भूतनाथ के आ पहुचने और धमका कर चले जाने का पूरा हाल कल्याणसिह से कहा और पूछा कि -- अब आपकी क्या राय होती है ? कुँअर कल्याणसिह ने कहा, 'मैं धन्नूसिह की राय पसन्द करता हू। मनोरमा के लिए अपने को आफत में फसाना बुद्धिमानी का काम नही है अस्तु किसी मुनासिब ढग से उसे अलग ही कर देना चाहिए।'

शिवदत्त--तिस पर भी अगर जान बचे तो समझें कि ईश्वर की बडी कृपा हुई।

कल्याण--सो क्या ?

शिवदत्त--मैं यह सोच रहा हू कि भूतनाथ का यहा आना केवल मनोरमा ही के लिए नहीं है। ताज्जुब नहीं कि हम लोगों का कुछ भेद भी उसे मालूम हो और वह हमारे काम में बाधा डाले।

कल्याण--ठीक है मगर काम आधा हो चुका है केवल हमारे और आपके वहा पहुचने भर की देर है। यदि भूतनाथ हम लोगों का पीछा भी करेगा तो रोहतासगढ तहखाने के अन्दर हमारी मर्जी के बिना वह कदापि नहीं जा सकता और जब तक वह मनोरमा को ले जाकर कहीं रखने या अपना कोई काम निकालने का बन्दोबस्त करेगा तब तक तो हम लोग रोहतासगढ से पहुच कर जो कुछ करना है कर गुजरेंगे।

शिवदत्त--ईश्वर करे ऐसा ही हो अच्छा अब यह कहिये कि मनोरमा को किस ढंग से अलग करना चाहिए ?

कल्याण--(धन्नूसिह से) तुम बहुत पुराने और तजुर्बेकार आदमी हो तुम ही बताओ कि क्या करना चाहिए ?

धन्नू--मेरी तो यही राय है कि मनोरमा को बुलाकर समझा दिया जाय कि अगर तुम हमारे साथ रहोगी तो भूतनाथ तुम्हें कदापि न छोडेगा सो तुम मर्दानी पोशाक पहिर कर धन्नूसिह के (हमारे) साथ शिवदत्तगढ की तरफ चली जाओ यह तुम्हें हिफाजत के साथ वहा पहुचा देगा जब हम लौट कर तुमसे मिलेंगे तो जैसा होगा किया जायगा। अगर तुम अपने आदमियों का साथ ले जाना चाहोगी तो भूतनाथ को मालूम हो जायगा अतएव तुम्हारा अकेले ही यहा से निकल जाना उत्तम है।

शिवदत्त--ठीक है लेकिन अगर वह इस बात को मजूर कर ले तो क्या तुम भी उसी के साथ चले जाओगे ? तब तो हमारा बड़ा हर्ज होगा !

धन्नू–जी नहीं मै पाच-चार कोस तक उसके साथ जाऊगा इसके बाद भुलावा देकर उसे अकेला छोड आपसे आ मिलूगा।

शिवदत्त–(आश्चर्य से) धन्नूसिह क्या तुम्हारी अक्ल में कुछ फर्क पड गया है या तुम्हें निसयान (भूल जाने) की बीमारी हो गई है अथवा तुम कोई दूसरे धन्नूसिह हो गए हो !! क्या तुम नहीं जानते कि मनोरमा ने मुझे किस तरह से रुपये की मदद की है और उसके पास कितनी दौलत है ? तुम्हारी ही मार्फत मनोरमा से कितने ही रुपये मगवाये थे ? तो क्या इस हीरे की चिडिया को मै छोड सकता हू ? अगर ऐसा ही करना होता तो तरद्दुद की जरूरत ही क्या थी इसी समय कह देते कि हमारे यहा से निकल जा !

धन्नू–(कुछ सोचकर) आपका कहना ठीक है मै इन बातों को भूल नहीं गया, मै खूब जानता हू कि वह बेइन्तहा खजाने की चाभी है मगर मैंने यह बात इसलिए कही कि जब उसके सबब से हमारे सर्कार ही आफत में फस जायेंगे तो वह हीरे की चिडिया किसके काम आवेगी !

शिवदत्त–नहीं नहीं तुम इसके सिवाय कोई और तर्कीब ऐसी सोचो जिसमें मनोरमा इस समय हमारे साथ से अलग तो जरूर हो जाय मगर हमारी मुट्ठी से न निकल जाय।

धन्नू–(सोचकर) अच्छा तो एक काम किया जाय।

शिवदत्त–वह क्या ?

धन्नू–इसे तो आप निश्चय जानिये कि यदि मनोरमा इस लश्कर के साथ रहेगी तो भूतनाथ के हाथ से कदापि न बचेगी और जैसा कि भूतनाथ कह चुका है वह सरकार के साथ भी बेअदबी जरूर करेगा इस लिए यह तो अवश्य है कि उसे अलग जरूर किया जाय मगर वह रहे अपने कब्जे ही में। तो बेहतर यह होगा कि वह मेरे साथ की जाय मै जगल ही जगल एक गुप्त पगडण्डी से जिसे मै बखूबी जानता हू रोहतासगढ तक उसे ले जाऊ और जहा आप या कुँअर साहब आज्ञा दे ठहर कर राह देखू। भूतनाथ को जब मालूम हो जायगा कि मनोरमा अलग कर दी गई तब वह उसके खोजने की धुन में लगेगा मगर मुझे नहीं पा सकता। हा एक बात और है आप भी यहा से शीघ्र ही डेरा उठायें और मनोरमा की पालकी इसी जगह छोड दें जिससे मनोरमा को अलग कर देने का विश्वास भूतनाथ को पूरा पूरा हो जाय।

कल्याण–हा यह राय बहुत अच्छी है मै इसे पसन्द करता हू।

शिवदत्त–मुझे भी पसन्द है मगर धन्नूसिह को टिककर राह देखने का ठिकाना बताना आप ही का काम है।

कल्याण–हा हा मै बताता हू सुनो धन्नूसिह !

धन्नू–सरकार !

कल्याण–रोहतासगढ पहाडी के पूरब तरफ एक बहुत बडा कूआ है और उस पर टूटी-फूटी इमारत भी है।

धन्नू–जी हा मुझे मालूम है !

कल्याण–अच्छा तो अगर तुम उस कूए पर खडे होकर पहाड़ की तरफ देखोगे तो टीले के ढग का एक खण्ड पर्वत दिखाई देगा जिसके ऊपर सूखा हुआ पुराना पीपल का पेड़ है और उसी पेड के नीचे एक खोह का मुहाना है। उसी जगह तुम हम लोगों का इन्तजार करना क्योंकि उसी खोह की राह से हम लोग रोहतासगढ तहखाने के अन्दर घुसेंगे अगर उस खोह तक पहुचने का रास्ता जब तक हम न बतावें तुम वहा नहीं जा सकते। (शिवदत्त से) आप मनोरमा को बुलवाकर सब हाल कहिये अगर वह मजूर करे तो हम धन्नूसिह को रास्ते का हाल समझा दें।

शिवदत्त–(धन्नूसिह से) तुम ही जाकर उसे बुला लाओ।

बहुत अच्छा कह कर धन्नूसिह चला गया और थोडी ही देर में मनोरमा को साथ लिये हुए आ पहुचा। उसके विषय में जो कुछ राय हो चुकी थी उसे कल्याणसिह ने ऐसे ढग से मनोरमा को समझाया कि उसने कबूल कर लिया और धन्नूसिह के साथ चले जाना ही अच्छा समझा। कुअर कल्याणसिह ने उस टीले तक पहुचने का रास्ता धन्नूसिह को अच्छी तरह समझा दिया। दो घोडे चुप चुपाते तैयार किये गये मनोरमा ने मर्दानी पोशाक पालकी के अन्दर बैठ कर पहिरी और घोडे पर सवार हो धन्नूसिह के साथ रवाना हो गई। धन्नूसिह की सवारी का घोडा बनिस्बत मनोरमा के घोडे से तेज और ताकतवर था।

दूसरा बयान

मनोरमा और धन्नूसिह घोड़ों पर सवार होकर तेजी के साथ वहा से रवाना हुए और चार कोस तक बिना कुछ बातचीत किए चले आए। जब ये दोनों एक ऐसे मैदान में पहुचे जहा बीचोबीच में एक बहुत बड़ा आम का पेड़ और उसके

चारो तरफ आधा कास का साफ मैदान था यहा तक कि सरपत, जगली वैर या पलास का भी काई पड न था जिसका होना जगल या जगल के आस पास अवश्यक समझा जाता है तब धन्नूसिह ने अपने घाडे का मुँह उसी आम के पेड की तरफ यह कह क फेरा– मेरे पट मे कुछ दर्द हो रहा है इसलिए थाडी देर तक इस पेड के नीचे ठहरने की इच्छा होती है।'

मनोरमा – क्या हर्ज है ठहर जाओ मगर खौफ है कि कहीं भूतनाथ न आ पहुचे।

धन्नू–अब भूतनाथ क आन की आशा छाड़ा क्योंकि जिस राह से हम लाग आय है वह भूतनाथ का कदापि मालूम न हागी मगर मनारमा तुम ता भूतनाथ से इतना डरती हो कि

मनो–(बात काटकर) भूतनाथ नि सन्देह ऐसा ही भयानक एयार है। पर थाड़ी ही दिन की बात है कि जिस तरह आज मै भूतनाथ स डरती हू उसस ज्यादे भूतनाथ मुझस डरता था।

धन्नू–हा जब तक उसके कागजात तुम्हारे या नागर के कब्जे मे थे !

मनो–(चौककर ताज्जुब से) क्या यह हाल तुमको मालूम है ?

धन्नू–बहुत अच्छी तरह।

मना–सा कैस ?

इतने ही में व दोनों उस पडके नीच पहुँच गय और धन्नूसिह यह कहकर घोडे के नीच उतर गया कि अब जरा बैठ जाय ता कह।

मनोरमा भी घाड़ से नीच उतर पडी, दानों घोडे लम्बी बागडार क सहारे डाल के साथ बाध दिए गए और जीनपोश बिछा कर दोनों आदमी जमीन पर बैठ गय। रात आधी स ज्यादे जा चुकी थी और चन्दमा की विमल चादनी जिसका थाडी दर पहल कहीं नाम निशान भी न था बडी खूबी क साथ चारों तरफ फैल रही थी।

मनो–हा अब बताआ कि भूतनाथ के कागजात का हाल तुम्हें कैस मालूम हुआ ?

धन्नू–मैंने भूतनाथ की ही जुबानी सुना था।

मनो–है ! क्या तुमस और भूतनाथ से जान पहिचान है ?

धन्नू–बहुत अच्छी तरह।

मनो–ता भूतनाथ न तुमस यह भी कहा हागा कि उसने अपने कागजात नागर के हाथ से कैसे पाये !

धन्नू–हा, भूतनाथ ने मुझस वह किस्सा भी बयान किया था, क्या तुमको वह हाल मालूम नहीं हुआ ?

मनो– मुझ वह हाल कैस मालूम हाता ? मै ना मुद्दत तक कमलिनी के कैदखाने में सडती रही और जब वहा से छूटी ता दूसर ही फेर मे पड गयी मगर तुम जब सब हाल जानते ही हो तो फिर जान-बूझ कर ऐसा सवाल क्यों करत हा ?

धन्नू–ओफ पट का दद ज्याद होता जा रहा है ! जरा ठहरो तो मैं तुम्हारी बातों का जवाब दू।

इतना कह कर धन्नूसिह चुप हा गया और घण्ट भर से ज्याद दर तक बाता का सिलसिला बन्द रहा। धन्नूसिह यद्यपि इतनी दर तक चुप रहा मगर बैठा ही रहा और मनोरमा की तरफ से इस तरह होशियार और चौकन्ना रहा जैसे किसी दुश्मन की तरफ हाना वाजिब था साथ ही इसके धन्नूसिह की निगाह मैदान की तरफ भी इस ढग स पडती रही जैसे किसी के अने की उम्मीद हा। मनारमा उसक इस ढग पर आश्चर्य कर रही थी। यकायक उस मैदान में दो आदमी बड़ी तजी के साथ दौडत हुए उसी तरफ आत दिखाई पड जिधर मनारमा और धन्नूसिह का डेरा जमा हुआ था।

मनो–य दानों कौन है जो इस तरफ आ रह है ?

धन्नू–यही बात मैं तुमसे पूछना चाहता था मगर जब तुमने पूछ ही लिया तो कहना पडा कि इन दोनों में एक तो भूतनाथ है।

मनो–क्या तुम मुझस दिल्लगी कर रह हो ?

धन्नू–नहीं, कदापि नहीं।

मनो–ता फिर एसी बात क्यो कहते हो ?

धन्नू–इसलिए कि मै वास्तव में धन्नूसिह नही हू।

मनो–(चौंक कर) तब तुम कौन हो ?

धन्नू–भूतनाथ का दोस्त और इन्द्रदेव का ऐयार सर्यूसिह ।

इतना सुनते ही मनोरमा का रग बदल गया और उसने बडी फुर्ती से अपना दाहिना हाथ सर्यूसिह के चेहरे की तरफ वढाया मगर सर्यूसिह पहिले ही से होशियार और चौकन्ना था उसने चालाकी से मनोरमा की कलाई पकड़ ली।

मनोरमा की उगली में उसी तरह के जहरीले नगीने वाली अगूठी थी जैसी नागर की उगली में थी और जिसने भूतनाथ को मजवूर कर दिया था तथा जिसका हाल इस उपन्यास क सातवें भाग में हम लिख आये हैं। उसी अगूठी से मनोरमा ने नकली धन्नूसिह को मारना चाहा मगर न हो सका क्योंकि उसने मनोरमा की कलाई पकड़ ली और उसी समय भूतनाथ और सर्यूसिह का शागिर्द वहा आ पहुचे। अव मनारमा ने अपने को कालक मुंह में समझा और वह इतना डरी कि जो कुछ उन ऐयारों ने कहा वउज्र करने के लिए तैयार हो गई। भूतनाथ ने हाथ से क्षमा -प्रार्थना की सहायता से छूटने की आशा मनोरमा का कुछ भी न थी इसीलिए जव तक भृतनाथ न उससे किसी तरह का सवाल न किया वह भी कुछ न वोली और वेउज्र हाथ पैर वधवा कर कैदियों की तरह मजवूर हो गई। इसके वाद भूतनाथ तथा सर्यूसिह में यों वातचीत होने लगी –

भूत–अव क्या करना होगा ?

सर्यू–अब यही करना होगा कि तुम इसे अपने घोडे पर सवार करा क घर ले जाओ और हिफाजत के साथ रख कर शीघ्र लौट आओ।

भूत–और उस धन्नूसिह के बारे में क्या किया जाय जिसे आप गिरफ्तार करने के वाद वेहोश करके डाल आए है ?

सर्यू–(कुछ सोच कर) अभी उसे अपने कब्जे ही में रखना चाहिए क्योंकि मैं धन्नूसिह की सूरत में राजा शिवदत्त के साथ रोहतासगढ़ तहखाने के अन्दर जाकर इन दुष्टों की चालबाजियों को जहा तक हो सके बिगाड़ना चाहता हूँ, ऐसी अवस्था में अगर वह छूट जायगा तो कवल काम ही नहीं विगडेगा वल्कि मैं खुद आफत में फस जाऊगा यदि शिवदत्त के साथ रोहतासगढ के तहखान में जान का साहस करूगा।

इस्के वाद सर्यूसिह न भूतनाथ से वे वातें कहीं जो उसमें और शिवदत्त तथा कल्याणसिह से हुइ थीं और हम ऊपर लिख आए है। उस समय मनारमा को मालूम हुआ कि नकली धन्नूसिह न जिस भयानक कुत्त वाली औरत का हाल शिवदत्त से कहा और जिसे मनोरमा की वहिन बताया था वह सव विल्कुल झूठ और वनावटी किस्सा था।

भूत–(सर्यूसिह से) तव तो आपको दुश्मनों के साथ मिल जुल कर राहतासगढ तहखान के अन्दर जाने का वहुत अच्छा मौका है।

सर्यू–हा इसी से मैं कहता हू कि उस धन्नूसिह को अभी अपने कब्जे में ही रखना चाहिए जिसे हम लोगों ने गिरफ्तार किया है।

भूत–कोई चिन्ता नहीं में लगे हाथ किसी तरह उसे भी अपने घर पहुँचा दूँगा। (शागिर्द की तरफ इशारा करके) इसे तो आप मनोरमा बना कर अपने साथ ले जाएग ?

सर्यू–जरूर ले जाऊगा और कल्याणसिह के बताये हुए ठिकाने पर पहुच कर उन लागों की राह दखूगा।

भूत–और मुझको क्या काम सुपुर्द किया जाता है ?

सर्यू–मुझ इस वात का पता ठीक-ठीक लग चुका है कि शेरअलीखा आजकल रोहतासगढ में है और कुअँर कल्याणसिह उससे मदद लिया चाहता है। ताज्जुब नहीं कि अपने दोस्त का लड़का समझ कर शेरअलीखा उसकी मदद करे और अगर एसा हुआ ता राजा वीरेन्द्रसिह को बडा नुकसान पहुचेगा।

भूत–मै आपका मतलव समझ गया अच्छा तो इस काम से छुट्टी पाकर मै बहुत जल्द रोहतासगढ पहुचूगा और शेरअलीखा की हिफाजत करूगा। (कुछ सोच कर) मगर इस वात का खौफ है कि अगर मेरा वहा जाना राजा वीरेन्द्रसिह पर खुल जायगा तो कहीं मुझे बिना वलभद्रसिह का पता लगाय लौट आने के जुर्म में सजा तो न मिलगी ? (इतना कह कर भूतनाथ ने मनोरमा की तरफ देखा)

सर्यू–नहीं नहीं ऐसा न हागा और अगर हुआ भी तो मैं तुम्हारी मदद करूगा।

वलभद्रसिह का नाम सुन कर मनोरमा जो सव वातचीत सुन रही थी चौंक पडी और उसके दिल में एक हौल सा पैदा हो गया। उसने अपने को रोकना चाहा मगर रोक न सकी और घवडा कर भूतनाथ से पूछ बैठी 'वलभद्रसिह कौन !

भूत–(मनोरमा स) लक्ष्मीदेवी का बाप जिसका पता लगान के लिए ही हम लोगों ने तुझे गिरफ्तार किया है।

मनो–(घबडा कर) मुझसे और उससे भला क्या सम्बन्ध ? मै क्या जानू वह कौन है या कहा है और लक्ष्मीदेवी किसका नाम है !

भूत–खैर जब समय आवेगा तो सब कुछ मालूम हो जायगा। (हस कर) लक्ष्मीदेवी से मिलने के लिए तो तुम लोग रोहतासगढ जाते ही थे मगर बलभद्रसिह और इन्दिरा से मिलने का बन्दोबस्त अब मै करूगा घबडाती काहे को हो !

मनो–(घबराहट के साथ बेचैनी से) इन्दिरा कैसी इन्दिरा ? आफ ! नही नही मै क्या जानू कौन इन्दिरा ! क्या तुम लोगों से उसकी मुलाकात हो गई ? क्या उसने मेरी शिकायत की थी ! कभी नहीं वह झूठी है मै तो उसे प्यार करती थी और अपनी बेटी समझती थी ! मगर उसे किसी ने बहका दिया है या बहुत दिनों तक दु ख भोगने के कारण वह पागल हो गई है या ताज्जुब नही कि मेरी सूरत बन कर किसी ने उसे धोखा दिया हो। नही नहीं वह मै न थी कोइ दूसरी थी मै उसका भी नाम बताऊगी!(ऊची सास लेकर) नही नही इन्दिरा नहीं, मै तो मथुरा गई हुई थी वह कोई दूसरी ही थी भला मै तेरे साथ क्यों ऐसा करने लगी थी ! ओफ ! मेरे पेट मे दर्द हो रहा है आह आह मै क्या करू !

मनोरमा की अजब हालत हो गई उसका बोलना और बकना पागलों की तरह मालूम पडता था जिसे देख भूतनाथ और सर्यूसिह आश्चर्य करने लगे मगर दोनों ऐयार इतना तो समझ ही गये कि दर्द का बहाना करके मनोरमा अपने असली दिली दर्द को छिपाना चाहती है जो होना कठिन है।

सर्यू–(भूतनाथ से) खैर अब इसका पाखड कहा तक देखोगे बस झटपट ले जाओ और अपना काम करो। यह समय अनमोल है और इसे नष्ट न करना चाहिए। (अपने शागिर्द की तरफ इशारा करके) इसे हमारे पास छोड जाओ मै भी अपने काम की फिक्र में लगू।

भूतनाथ ने बेहोशी की दवा सुँघा कर मनोरमा को बेहोश किया और जिस घोडे पर वह आई थी उसी पर उसे लाद आप भी सवार हो पूरब का रास्ता लिया उधर सर्यूसिह अपने चेले को मनोरमा बनाने की फिक्र में लगा।

तीसरा बयान

हम ऊपर लिख आए है कि शेरअलीखा खातिरदारी और इज्जत के साथ रोहतासगढ मे रक्खा गया क्योंकि उसने अपने कसूरों की माफी मागी थी और तेजसिह ने उसे माफी दे भी दी थी। अब हम उस रात का हाल लिखते है जिस रात राजा वीरेन्द्रसिह तेजसिह और इन्द्रदेव वगैरह तहखाने के अन्दर गये थे और यकायक आ पड़ने वाली मुसीबत में गिरफ्तार हो गये थे। उन लोगों का किसी काम के लिए तहखाने के अन्दर जाना शेरअलीखा को मालूम था मगर उसे इन बातों से कोई मतलब न था उसे तो सिर्फ इसकी फिक्र थी कि भूतनाथ का मुकदमा खतम होले तो वह अपनी राजधानी पटना की तरफ पधारे और इसी लिए वह राजा वीरेन्द्रसिह की तरफ से रोका भी गया था।

जिस कमरे में शेर अलीखा का डेरा था वह बहुत लम्बा चौडा और कीमती असबाब से सजा हुआ था। उसके दोनों तरफ दो कोठरियाँ थी और बाहर दालान तथा दालान के बाद एक चौखूटा सहन था। उन दोनों कोठरियों मे से जो कमरे के दोनों तरफ थी ,एक में तो सोने के लिए बेशकीमत मसहरी बिछी हुई थी और दूसरी कोठरी में पहिरने के कपडे तथा सजावट का सामान रहता था। इस कोठरी में एक दर्वाजा और था जो उस मकान के पिछले हिस्से मे जाने का काम देता था मगर इस समय वह बन्द था और उसकी ताली दारोगा के पास थी।जिस कोठरी में सोने की मसहरी थी। उसमें सिर्फ एक ही दर्वाजा था और दर्वाजे वाली दीवार को छोड के उसकी बाकी तीनों तरफ की दीवार आबनूस की लकडी की बनी हुई थी जिस पर बहुत चमकदार पालिस किया हुआ था। वही अवस्था उस कमरे की भी थी जिसमे शेर अलीखॉ रहता था।

रात डेढ पहर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी। शेरअलीखॉ अपने कमरे मे मोटी गद्दी पर लेटा हुआ किताब पढ रहा था और सिरहाने की तरफ सगमरमर की छोटी सी चौकी के ऊपर एक शमादान जल रहा था इसके अतिरिक्त कमरे में और कोई रोशनी न थी। यकायक सोने वाली कोठरी के अन्दर से एक ऐसी आवाज आई जैसे किसी ने मसहरी के साथ ठोकर खाई हो। शेर अलीखा चौक पड़ा और कुछ देर तक उसी कोठरी की तरफ जिसके आगे पर्दा गिरा हुआ था ,देखता रहा। जब पर्दे को भी हिलते देखा तो किताब जमीन पर रख कर बैठ गया और उसी समय कल्याणसिह को पर्दा हटाकर बाहर

निकलते देखा। शेरअलीखॉं घबड़ाकर उठ खड़ा हुआ और बड़ गौर से उसे देखकर बोला, हं क्या तुम कुँअर कल्याणसिह हो !

कल्याण–(सलाम करके) जी हा।

शेरअली–तुम इस कमरे में कब आये और कब इस कोठरी में गये मुझे कुछ भी नहीं मालूम !!

कल्याण–मै बाहर से इस कमर में नहीं आया बल्कि इसी कोठरी में से आ रहा हू।

शेरअली–सो कैसे ? इस कोठरी में तो कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

कल्याण–जी हॉं एक रास्ता है जिसे शायद आप नहीं जानत मगर पहिले मै दर्वाजा बन्द कर लू।

इतना कह कर कल्याणसिह दर्वाज की तरफ बढ़ गया और इस कमर के तीनों दर्वाजे बन्द करके शेरअलीखॉं के पास लौट आया।

शेरअली–दर्वाज क्यों बन्द कर दिए ? क्या डरते हो ?

कल्याण–जी हा यदि कोई देख लेगा ना मुश्किल हागी।

शेरअली–तो इससे मालूम होता है कि तुम राजा बीरेन्दसिह की मर्जी से नहीं छूट बल्कि किसी की मदद और चारी से निकल भागे हो क्योंकि चुनारगढ में तुम्हारे कैद होन का हाल मै अच्छी तरह जानता हू।

कल्याण–जी हा ऐसी ही बात है।

शेरअली–(बैठकर) अच्छा आओ मेरे पास बैठ जाओ और कहो कि तुम कैसे छूटे और यहॉं क्योंकर आ पहुचे?

कल्याण–(बैठकर) खुलासा हाल कहने का तो इस समय मौका नहीं है परन्तु इतना कहना जरूरी है कि मदद क लिए मुझे राजा शिवदत्त ने छुडाया है और अब मै सहायता लने के लिए आपक पास आया हू। यदि आप मदद देंगे तो मै आज ही राजा बीरेन्द्रसिह से अपने बाप का बदला ल लूँगा।

शेरअली–(हसकर) यह तुम्हारी नादानी है। तुम अभी लडके हो एसे मामलों पर गौर नहीं कर सकत। राजा बीरेन्दर्सिह के साथ दुश्मनी करना अपने पैर में आप कुल्हाडी मारना है, उनसे लड़कर कोई जीत नहीं सकता और न उनके ऐयारों के सामने किसी की चालाकी ही लग सकती है।

कल्याण–आपका कहना ठीक है मगर इस समय हम लोगों ने राजा बीरेन्द्रसिह और उनके ऐयारों को हर तरह से मजबूर कर रक्खा है।

शेरअली–सो कैसे ?

कल्याण–क्या आप नहीं जानते कि बीरेन्द्रसिह और उनके ऐयार किशोरी कामिनी इत्यादि को लकर तहखाने के अन्दर गए हैं ?

शेरअली–हा सो तो जानते हैं मगर इससे क्या ?

कल्याण–जिस समय बीरेन्द्रसिह वगैरह तहखाने में गए है उसके पहिले ही हम लाग अपनी छोटी सेना सहित तहखाने में पहुच चुके थे और गुप्त राह से यकायक इस किले में पहुच कर अपना दखल जमाना चाहते थे मगर ईश्वर ने उन लोगों को तहखाने ही में पहुचा दिया जिससे हम लोगों को बड़ा सुभीता हुआ। शिवदत्तसिंह ने तो सेना सहित दुश्मनों को घेर लिया है और मै एक सुरग की राह से जिसका दूसरा मुहाना (सोने वाली कोठरी की तरफ इशारा करके) इस कोठरी में निकला है आपके पास मदद के लिए आया हू आशा है कि उधर शिवदत्तसिह ने दुश्मनों को काबू में कर लिया होगा या मार डाला होगा और इधर मै आपकी मदद से किले में अपना अधिकार जमा लूगा।

शेरअली–(कुछ सोच कर) मै खूब जानता हू कि इस तहखाने का और यहॉं के पेचीले तथा कई रास्तों का हाल तुमसे ज्यादा जानने वाला अब और कोई नहीं है इसलिए तुम लोगों का तहखाने में राजा बीरेन्द्रसिह वगैरह को मार डालना तो यद्यपि मुश्किल है हा घेर लिया हो तो ताज्जुब की बात नहीं है मगर साथ ही इसके इस बात का भी ख्याल करना चाहिए कि यद्यपि राजा बीरेन्द्रसिंह वगैरह इस तहखाने का हाल बखूबी नहीं जानते परन्तु आज इन्द्रदेव उनके साथ है जिसे हम तुम अच्छी तरह जानते है। क्या तुम्हें उस दिन की बात याद नहीं जिस दिन तुम्हारे पिता ने हमारे सामन तुमसे कहा था कि यहॉं के तहखाने का हाल हमसे ज्यादा जानने वाला इस दुनिया में यदि कोई है तो केवल इन्द्रदेव !

कल्याण–(ताज्जुब से) हा मुझे याद है मगर क्या इन्द्रदेव राजा बीरेन्द्रसिंह के साथ तहखाने में गए है और क्या बीरेन्द्रसिह ने उन्हें अपना दोस्त बना लिया ?

शेरअली–हा अस्तु यह आशा नहीं हो सकती कि बीरेन्दसिह वगैरह तुम लोगो के काबू में आ जायेंगे दूसरी बात यह कि तुम अकेले या दो एक मददगारो को लेकर इस किले में कर ही क्या सकते हो ?

कल्याण–मैं आपके पास अकेला नहीं आया हूँ बल्कि सौ सिपाही भी साथ लाया हू जिन्हें आप आज्ञा देने के साथ ही

इसी कोठरी में से निकलते दख सकते है। क्या ऐसी हालत म जब की मालिकों या अफसरों में से यहा कोई भी न हो और यहा रहने वाली केवल पाच सात सौ की फौज बेफिक्र पडी हो हम और आप सौ बहादुरो को साथ लेकर कुछ नही कर सकते ? इन्ददेव का इस समय वीरेन्द्रसिह वगैरह के साथ तहखाने में होना बेशक हमारे काम में विघ्न डाल सकता है मगर मुझे इसकी भी विशेष चिन्ता नहीं है क्योंकि यदि दुश्मन लो। कावू में न आवेंगे तो हर तरफ से रास्ता बन्द हो जाने के कारण तहखाने के बाहर भी न निकल सकेंगे और भूखे-प्यास उसी में रह-कर मर जायगे और इधर जब आप किले में अपना दखल जमा लेगे

शेरअली–(बात काट कर) ये सब बातें फिजूल है, मैं जानता हू कि तुम अपन को बहादुर और होनहार समझते हो मगर राजा बीरेन्द्रसिंह के प्रबल प्रताप के चमकते हुए सितारे की राशनी का अपने हाथ की ओट लगा क र नहीं रोक सकते और न उनकी सचाई सफाई और नेकियों को भूलकर इस किले का रहने वाला कोई तुम्हारा साथ नहीं दे सकता है। बुद्धिमानों को तो जाने दा, यहा का एक बच्चा भी राजा वीरन्द्रसिट का निकल जाना पसन्द नहीं करेगा। आह क्या ऐसा जबान का सच्चा रहमदिल और ेक राजा कोई दूसरा होगा ? यह राजा वीरेन्द्रसिह ही का काम था कि उसने मेरे कसूरों को माफ ही नहीं किया वल्कि इज्ज्त और आबरू के साथ मुझे अपना मेहमान बनाया। मेरी रग-रग में उनके एहसान का खून भरा है मेरा बाल-बाल उन्हें दुआ देता है मरे दिल में उनकी हिम्मत-मर्दानगी इन्साफ और रहमदिली का दरिया जोश मार रहा है। ऐसे बहादुर शेरदिल राजा के साथ शरअली कभी दगाबाजी या बेईमानी नहीं कर सकता वल्कि ऐसे की तावदारी अपनी इज्जत-हुर्मत और नामवरी का बायस सनझता हूँ। तुम मेरे दोस्त के लडके हो मगर मै यह जरूर कहूगा कि तुम्हारे वाप न वीरेन्द्रसिंह के साथ दगाबाजी की ! खैर जा कुछ हुआ सो हुआ अब तुम तो ऐसा न करो ! मै तुम्हें पुरानी मोहब्बत और दोस्ती का वास्ता दिलाता हूँ कि ऐसा मत करो। राजा बीरेन्द्रसिह दुश्मनी करने योग्य राजा नहीं वल्कि दर्शन करने योग्य है ! मै वादा करता हू कि तुम्हारा भी कसूर माफ करा दूँगा और अगर तुम को रोहतासगढ की लालच है तो इसे भी तुम राजा वीरेन्द्रसिट की ताबेदारी करके ल सकते हो ! वह बडा उदार दाता हे यह राज्य दे दना उनके सामने काई बात नहीं है।

कल्याण–अफसोस ! मुझ इन शब्दों के सुनने की कदापि आशा न थी जा इस समय आपके मुँह से निकल रहे हैं। मुझे इस बात का ध्यान भी न था कि आज आपको हिम्मत ओर मर्दानगी से इस तरह खाली देखूगा। मै किसी क कहने पर भी विश्वास नहीं कर सकता था कि आपकी रग में बुजदिली का खून पाऊँगा। मुझे स्वप्न में भी इस बात का विश्वास न हो सकता था कि आज आपको उसी राजा बीरेन्द्रसिंह की खुशामद करते पाऊँगा जिसके लडके ने आपकी लडकी को हर तरह स वेइज्जत किया।

शेरअली–ओफ तुम्हारी जली-कटी बातें मेर दिल को हिला कर मुझे बेईमान दगाबाज या विश्वासघाती की पदवी नहीं दिला सकतीं। उस गौहर की याद मेरे दिल की सच्ची तथा इन्साफ पसन्द ऑखों को फोड कर नेकों की दुनिया में मुझको अन्धा नहीं बना सकती जो बुजुर्गों की इज्जत को मिट्टी में मिला मेरी बदनामी का झडा बन जहरीली हवा में उडती हुई आसमान की तरफ बढती ही जाती थी और जिसका गिरफ्तार होकर सजा पाना वल्कि इस दुनिया से उठ जाना मुझे पसन्द है। किसी नालायक के लिए लायक के साथ बुराई करना किसी अधर्मी के लिए धर्मी का खून करना, किसी बेईमान के लिए ईमान का सत्यनाश करना और किसी अविश्वासी के लिए विश्वासघात करना शेरअलीखाँ का काम नहीं है ! मै समझता था कि तुम्हारे दिल का प्याला सच्ची बहादुरी की शराब से भरा हुआ होगा और तुम दुनिया में नामवरी पैदा कर सकोगे इस लिए मैं तुम्हारी सिफारिश करने वाला था, मगर अब निश्चय हो गया कि तुम्हारी किस्मत का जहाज शिवदत्त क तूफान में पड कर एक भारी पहाड से टक्कर खाया चाहता है अस्तु तुम यहा से चले जाओ और मुझसे किसी तरह की उम्मीद मत रक्खो अगर मै तुम्हारे बाप का दोस्त न होता और तुम मेरे दोस्त के लडके न होते तो

कल्याण–अफसोस मैं इस सनय आपकी यह लम्बी-चौड़ी वक्तृता नहीं सुन सकता क्योंकि समय कम है और काम बहुत करना है, बस आप इतना ही बताइए कि मैं आपस किसी तरह की आशा रक्खू या नहीं ?

शेरअली–नहीं बल्कि इस बात की भी आशा मत रक्खो कि तुम्हें राजा वीरेन्द्रसिह के साथ दुश्मनी करते देख कर मैं चुपचाप बैठा रहूगा।

कल्याण–(क्रोध में आकर) क्या आप मेरी मदद न करेंगे तो चुपचाप भी न बैठे रहेंगे ?

शेरअली–हरगिज नहीं !

कल्याण–तो आप मेरे साथ दुश्मनी करेंगे ?

शेरअली–अगर ऐसा करें तो हर्ज ही क्या है ? जिसकी लोग इज्जत करत हो या जिसे दुनिया मोहब्बत की निगाह से

दखती हो उसके साथ दुश्मनी करना बेशक बुरा है मगर एस के साथ बेमुरौवती करन में कुछ भी हर्ज नही है जिसके हृदय की ऑख फूट गई हा जिसे दुनिया में किसी तरह की इज्जत हासिल करने का शौक न हा, और जिस लोग हमदर्दी की निगाह से न देखते हों।

कल्याण–(दॉत पीस कर) तो फिर सबसे पहिले मुझे आप ही का बन्दोबस्त करना पड़ा !!

इसके पहिले कि कल्याणसिह की बात का शेरअलीखॉ कुछ जवाब दे बाहर स एक आवाज आई– हा यदि तेर किए कुछ हो सके !

इस आवाज ने दोनों को चौका दिया मगर कल्याणसिह न ज्याद देर तक राह देखना मुनासिब न जाना और कोठरी का तरफ बढ़ कर जोर से ताली बजाई। शेरअलीखॉ समझ गया कि कल्याणसिह अपने साथियों को बुला रहा है क्योंकि वह थोडी ही देर पहिले कह चुका था कि मेरे साथ सौ सिपाही भी आए है जो हुक्म दने के साथ ही इस कोठरी में स मरी तरफ निकल सकते है।

कल्याणसिह ताली बजाता हुआ कोठरी की तरफ बढ़ा और उसका मतलब समझकर शेरअलीखॉ न भी शीघ्रता से कमरे का दर्वाजा अपने मददगारों को बुलाने की नीयत से खाल दिया तथा उसी समय एक नकाबपोश को हाथ में खंजर लिए कमरे क अन्दर पैर रखते देखा। शेरअलीखॉ ने पूछा तुम कौन हो ? नकाबपोश ने जवाब दिया तुम्हारा मददगार !

इससे ज्यादे बातचीत करन का मौका न मिला क्योंकि कोठरी के अन्दर स कई आदमी हाथ में नगी तलवार लिए हुए निकलते दिखाई दिए जिन्हें कल्याणसिह ने अपनी मदद के लिए बुलाया था।

चौथा बयान

अब हम अपने पाठकों को कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह की तरफ ले चलते है जिन्हें जमानिया के तिलिस्म में नगर के किनारे पत्थर की चट्टान पर बैठकर राजा गोपालसिह से बातचीत करते छोड़ आए है।

दोनों कुमार बड़ी देर तक राजा गोपालसिह से बातचीत करते रहे। राजा साहब ने बाहर का सब हाल दोनों भाइयों से कहा और यह भी कहा कि किशोरी और कामिनी लाली कुशी के साथ कमलिनी के तालाब वाले मकान में जा पहुँची अब उनके लिए चिन्ता करन की आवश्यकता नहीं है।

किशोरी और कामिनी का शुभ समाचार सुनकर दोनों भाई बड़े प्रसन्न हुए। राजा गोपालसिह स इन्द्रजीतसिह ने कहा हम चाहते है कि इस तिलिस्म स बाहर होकर पहिले अपने मॉ बाप से मिल आवें क्योंकि उनका दर्शन किए बहुत दिन हो गए और व भी हमारे लिए उदास होंगे।

गोपाल–मगर यह तो हो नहीं सकता।

इन्द–सो क्यों ?

गोपाल–जब तक आप बाहर जाने के लिए रास्ता न बना लेंगे बाहर कैसे जायगे और जब तक इस तिलिस्म को आप तोड न लेंगे बाहर जाने का रास्ता कैसे मिलेगा ?

इन्द–जिस रास्ते स आप यहा आए है या आप जायगे उसी रास्ते से आपके साथ अगर हम लोग भी चले जॉय ता कौन रोक सकता है ?

गोपाल–वह रास्ता केवल मेरे ही आने-जाने के लिए है आप लोगों के लिए नहीं।

इन्द–(हसकर) क्योंकि आपसे हम लोग मोटे-ताजे ज्यादे है दर्वाजे में अट न सकेंगे !

गोपाल–(हसकर) आप भी बड मसखरे है मरा मतलब यह नहीं है कि मै जान-बूझकर आपको नहीं ल जाता बल्कि यहा के नियमों का ध्यान करके मैने ऐसा कहा था आपने तो तिलिस्मी किताब में पढा ही होगा।

इन्द–हा हम पढ ता चुके है और उससे यहा मालूम भी होता है कि हम लोग बिना तिलिस्म तोडे बाहर नहीं जा सकते मगर अफसोस यही है कि उस किताब को लिखने वाला हमारे सामने मौजूद नहीं है अगर होता तो पूछते कि क्यों नहीं जा सकते ? जिस राह से राजा साहब आए उसी राह से उनके साथ जाने मे क्या हर्ज है ?

गोपाल–किसी तरह का हर्ज हागा तभी बुजुर्गों ने ऐसा लिखा है ! कौन ठिकाना किसी तरह की आफत आ जाय तो जनम भर के लिए मै बदनाम हो जाऊँगा अस्तु आपको भी इसके लिए जिद न करनी चाहिए हा यदि अपने उद्योग से आप बाहर जाने का रास्ता बना ले तो बेशक चले जाय।

महाराज सूर्यकान्त और उनके गुरू सोमदत्त जिन्होंने इस तिलिस्म का बनाया और इसके कई हिस्से किये। महाराज क दो लडके थे। एक का नाम धीरसिह,दूसरे का नाम जयदेवसिह। जव इस हिस्से की उम्र समाप्त होने पर आवेगी तव धीरसिह के खानदान में गोपालसिंह और जयदेवसिंह के खानदान में इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह होंगे और नाते में वे तीनों भाई होंगे। इसलिए इसके दो हिस्से किये गए जिनमें स आधे का मालिक गोपालसिह होगा और आधे क मालिक इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह होंगे लेकिन यदि उन तीनों में मेल न होगा तो इस तिलिस्म से सिवाय हानि के किसा का भी फायदा न होगा अतएव चाहिए कि वे तीनों भाई आपुस में मेल रक्खें और इस तिलिस्म से फायदा उठावे इन तीनों के हाथ से इस तिलिस्म के कुल वारह दर्जो में से सिर्फ तीन टूटेंगे और वाकी के नौ दर्जो क मालिक उन्हीं खानदान में कोई दूसरे होंगे। इसी तिलिस्म में से कुअरइन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिह को एक ग्रन्थ प्राप्त होगा जिसकी वदौलत वे दोनों भाई चर्णादि (चुनारगढ) के तिलिस्म को तोड़ेंगे।

इसके वाद कुछ और भी लिखा हुआ था मगर अक्षर इतने वारीक थे कि पढा नहीं जाता था। यद्यपि उसक पढन का शौक आनन्दसिह को बहुत हुआ मगर लाचार होकर रह गए। उस तस्वीर के वाईं तरफ जो तस्वीर थी उसके नीच केवल धीरसिह लिखा हुआ था और दाहिनी तरफ वाली तस्वीर के नीचे जयदेवसिह लिखा हुआ था। उन दोनों की तस्वीरें नौजवानी के समय की थीं। उसके वाद क्रमश और भी तस्वीरें थीं और सभी के नीच नाम लिखा हुआ था। कुँअर आनन्दसिह वाजे की सुरीली आवाज सुनते जाते थे और तस्वीरों को भी देखते जाते थे। जव इन तस्वीरों को देख चुके तो अन्त में राजा गोपालसिह अपनी और अपने भाई की तस्वीर भी दखी और इस काम में उन्हें कई घटे लग गए।

इस कमरे में जिस दर्वाजे से कुँअर आनन्दसिह गये थे उसी के ठीक सामने एक दर्वाजा ओर था जो वन्द था और उसकी जजीर में ताला लगा हुआ था। जव वे घूमते हुए उस दर्वाजे के पास गए तव मालूम हुआ कि इसकी दूसरी तरफ से कोई आदमी उस दर्वाजे को ठोकर दे रहा है या खोलना चाहता है। कुमार को इन्द्रजीतसिह का ख्याल हुआ और सोचने लगे कि ताज्जुव नहीं कि किसी राह से घूमते-फिरते भाई साहब यहॉ तक आ गए हों। यह ख्याल उनके दिल में वैठ गया ओर उन्होंन तिलिस्मी खजर से उस दर्वाजे का जजीर काट डाली। दर्वाजा खुल गया और एक औरत कमर के अन्दर आती हुई दिखाई दी जिसके हाथ में एक लालटन थी और उसमें तीन मोमवत्तियॉं जल रही थीं। यह नौजवान और हसीन औरत इस लायक थी कि अपनी सुघराई खूवसूरती,नजाकत,सादगी और बाकपन की वदौल्त जिसका दिल चाहे मुट्ठी में कर ले। यद्यपि उसकी उम्र सत्रह-अट्ठारह वर्ष से कम न होगी मगर वुद्धिमानों और विद्वानों की वारीक निगाह जाच कर सकती थी कि इसने अभी तक मदनमहीप की पचरगी वाटिका म पैर नहीं रक्खा और इसकी रसीली कली को समीर के सत्सग से गुदगुदा कर खिल जाने का अवसर नहीं मिला इसके सतीत्व की अनमोल गठरी पर किसी ने लालच में पड कर मालिकाना दखल जमाने की नीयत से हाथ नहीं डाला और न इसने अपनी अनमोल अवस्था का किसी के हाथ सट्टा-ठीका या बीमा किया,इसके रूप के खजाने की चौकसी करने वाली वड़ी वडी आखों के निचले हिस्से में अभी तक ऊदी डोरी पडने नहीं पाई थी और न उसकी गदन में स्वर-घटिकाका उभार ही दिखाई देता था। इस गारी नायिका को देख कर कुँअर आनन्दसिह भौचक्के से रह गए और ललचौंह निगाह से इसे देखने लगे। इस औरत ने भी इन्हे एक दफे तो नजर भर कर देखा मगर साथ ही गर्दन नीची कर ली और पीछ की तरफ हटने लगी तथा धीरे-धीरे कुछ दूर जाकर किसी दीवार या दर्वाजे के ओट में हो गई जिससे उसजगह फिर अधेरा हो गया। आनन्दसिह आश्चर्य लालच और उत्कठा के फेर में पड़ रहे इसलिए खजर की रोशनी की सहायता से दर्वाजा लॉघ कर वे भी उसी तरफ गए जिधर वह नाजनीन गई थी। अव जिस कमरे में कुँअर आनन्दसिह ने पैर रक्खा वह वनिस्वत तस्वीरों वाले कमरे के कुछ वडा था और उसके दूसरे सिरे पर भी वैसा ही एक दूसरा दर्वाजा था जैसा तस्वीर वाले कमरे में था। कुँअर साहव विना इधर-उधर देखे,उस दर्वाजे तक चल गये मगर जव उस पर हाथ रक्खा तो वन्द पाया। उस दर्वाजे मे कोई जजीर या ताला दिखाई न दिया जिसे खोल या तोड कर दूसरी तरफ जाते। इससे मालूम हुआ कि इस दर्वाजे का खोलना या वद करना उस दूसरी तरफ वाले के आधीन है। वडी देर तक आनन्दसिह उस दर्वाजे के पास खडे होकर सोचत रहे मगर इसके वाद जव पीछे की तरफ हटने लगे तो उस दर्वाजे के खोलने की आहट सुनाई दी। आनन्दसिह रूके और गौर से देखने लगे। इतन ही में एक आवाज इस ढग की आइ जिसने आनन्दसिंह को विश्वास दिला दिया कि उस तरफ की जजीर किसी ने तलवार या खजर से काटा है। थोडी ही देर वाद दर्वाजा खुला और कुँअर इन्द्रजीतसिह दिखाई पडे। आनन्दसिह को उस औरत के देखने की लालसा हद्द से ज्यादे थी और कुछ कुछ विश्वास हो गया था कि अवकी दफे पुन उसी औरत को देखेंगे मगर उसके वदले में अपने वडे भाई को देखा और देखते ही खुश होकर वोले "मैंने तो समझा था कि आपसे जल्द मुलाकात न होगी परन्तु ईश्वर ने वडी कृपा की।

साकरा खति गलि घस्मड तो चड छनेज
काझ खञ या लठ नड कढ रोण औत
रथ इद सध तिन लिप स्मफ कीब ताभ
लीम किय सीर चल लब तीश फिष
रस तीह *से कप्रा खप्तग कघ
रोड इच सछ बाज जेझ में अवेट
सठ बड बाढ तेंण भत रीथ हैद
जिघ नन कीप तुफ म्हेंव जभ रूम
रथ तर हैल ताब लीश लष गास
याह *कक रोख औग रध सुड
नाच कछ रोज अझ गञ रट एठ
कड हीढ दण फेत सुथ न द नेध सेन
सप मफ झब में भन म आय वेर
तोल दोव हश राष कस रह *के
क भीख सुग नध सड कच तेछ हौज
इझ सञ कीट तठ कींड बढ औण
रत ताथ लीद इध सीन कष मफ
रेब में भहैम ढूयढोर।

इसके बाद बाजे का बोलना बन्द हो गया और फिर किसी तरह की आवाज न आई। कुँअर इन्द्रजीतसिंह जो कुछ लिख चुके थे उस पर गौर करने लगे। यद्यपि ये बातें बेसिर पैर की मालूम हो रही थीं मगर थोड़ी ही देर में उनका मतलब इन्द्रजीतसिंह समझ गए जब आनन्दसिंह को समझाया तो वे भी बहुत खुश हुए और बोले अब कोई हर्ज नहीं हम लोगों का कोई काम अटका न रहेगा मगर वाह रे कारीगरी !

इन्द–नि सन्देह ऐसी ही बात है मगर जब तक हम लोग उस ताली को पा न लें इस कमरे ही बाहर न होना चाहिए कौन ठिकाना अगर किसी तरह दरवाजा बन्द हो गया और यहाँ न आ सके तो बड़ी मुश्किल होगी।

आनन्द–मैं भी यही मुनासिब समझता हूं।

इन्द–अच्छा तब इस तरफ आओ।

इतना कह कर कुँअर इन्द्रजीतसिंह उस बड़ी तस्वीर की तरफ बढ़े और आनन्दसिंह उनके पीछे चले।

उस आवाज का मतलब जो बाजे में से सुनाई दी थी इस जगह लिखने की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती क्योंकि हमारे पाठक यदि उन शब्दों पर जरा भी गौर करेंगे तो मतलब समझ जॉयगे कोई कठिन बात नहीं है।

पांचवां बयान

कल्याणसिंह के ताली बजाने के साथ ही बहुत से आदमी हाथों में नंगी तलवारें लिए हुए उसी कोठरी में से निकल आये जिसमें से कल्याणसिंह निकला था मगर शेरअलीखां की मदद के लिए केवल एक वही नकाबपोश उस कमरे में था जो दरवाजा खोलने के साथ ही उन्हें दिखाई दिया था। विशेष बातचीत का समय तो न मिला मगर नकाबपोश ने इतना शेर अलीखाँ से अवश्य कह दिया कि आप अपनी मदद के लिए अभी किसी को भी न बुलाइए इन लोगों के लिए अकेला मैं ही बहुत हूं यदि मेरी बात पर आपको विश्वास न हो तो जल्दी से इस कमरे के बाहर हो जाइए।

यद्यपि सैकड़ों आदमियों के मुकाबले में केवल एक नकाबपोश का इतना बड़ा हौसला दिखाना विश्वास करने योग्य न था मगर शेरअलीखॉं खुद भी जवॉंमर्द और दिलेर आदमी था इस सबब से या शायद और किसी सबब से उसने नकाबपोश की बातों पर विश्वास कर लिया और किसी को बुलाने के लिए उद्योग न करके अपने बिछावन के नीचे से तलवार निकाल कर लड़ने के लिए स्वयम् भी तैयार हो गया।

यह नकाबपोश असल में भूतनाथ था जो सर्यूसिंह के कहे मुताबिक शेरअलीखॉं के पास आया था। उसे विश्वास था कि शेरअलीखॉं कल्याणसिंह की मदद के लिए तैयार हो जायगा मगर जब उसने कमरे के बाहर से उन दोनों की बातें सुनीं और शेरअलीखॉं को नेक ईमानदार और इन्साफपसन्द और सच्चा बहादुर पाया तो बहुत प्रसन्न हुआ और जी जान से उसकी मदद करने के लिए तैयार हो गया। हमारे पाठक यह तो जानते ही हैं कि भूतनाथ के पास भी कमलिनी की दिया हुआ एक तिलिस्मी खंजर है जिसे भूतनाथ पर कई तरह का शक और मुकदमा कायम होने पर भी कमलिनी ने अपनी बात को याद करके अभी तक नहीं लिया था। आज उस खंजर की बदौलत भूतनाथ ने इतना बड़ा हौसला किया और बेईमानों के हाथ से शेरअलीखॉं को बचा लिया।

जिस समय कल्याणसिंह ने भूतनाथ का मुकाबिला करना चाहा उस समय भूतनाथ ने फुर्ती से अपने चेहरे की नकाब उलट दी और ललकार कर कहा आज बहुत दिनों पर तुम लोग भूतनाथ के सामने आये हो जरा समझ कर लड़ना।

इतना कहकर भूतनाथ ने तिलिस्मी खंजर से दुश्मनों पर हमला किया इस नियत से कि किसी की जान भी न जाय और सब के सब गिरफ्तार कर लिए जाय।

सबसे पहिले उसने खंजर का एक साधारण हाथ कल्याणसिंह पर लगाया जिससे उसकी दाहिनी कलाई जिसमें नंगी तलवार का कब्जा था कट कर जमीन पर गिर पड़ी साथ ही इसके तिलिस्मी खंजर की तासीर ने उसके बदन में बिजली पैदा कर दी और वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।

जिस समय कल्याणसिंह और उसके साथियों ने भूतनाथ का नाम सुना उसी समय उनकी हिम्मत का बॅंटवारा हो गया। आधी हिम्मत तो लाचारी के हिस्से में पड़कर उनके पास रह गई और आधी हिम्मत उत्साह के साथ निकल कर वायुमण्डल की तरफ पधार गई। भूतनाथ चाहे परले सिरे का बहादुर हो या न हो मगर उसके कर्मों ने उसका नाम बहादुरी और ऐयारी की दुनिया में बड़े रोब और दाब के साथ मशहूर कर रक्खा था। चाहे कैसा ही बहादुर और दिलेर आदमी क्यों न हो मगर अपने मुकाबिले में भूतनाथ का नाम सुनते ही उसकी हिम्मत टूट जाती थी। यहाँ भी वही मामला हुआ और दुश्मनों की पस्तहिम्मती ने उनकी किस्मत का फैसला भी शीघ्र ही कर दिया।

जिस समय कल्याणसिंह बेहोश होकर जमीन पर गिरा उसी समय एक सिपाही ने भूतनाथ पर तलवार का वार किया। भूतनाथ ने उसे तिलिस्मी खंजर पर रोका और इसके बाद खंजर उसके बदन से छुला दिया जिसका नतीजा यह निकला कि दुश्मन की तलवार दो टुकड़े हो गई और वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। इसी बीच में बहादुर शेरअलीखॉं ने दो सिपाहियों को जान से मार गिराया जिन्होंने उस पर हमला किया था। निःसन्देह कल्याणसिंह के साथी इतने ज्यादे थे कि शेरअलीखॉं को मार डालते या गिरफ्तार कर लेते मगर भूतनाथ की मुस्तैदी ने ऐसा होने न दिया। उस कमरे में खुल कर लड़ने की जगह न थी और इस सबब से भी भूतनाथ को फायदा भी पहुँचा। जितनी देर में शेरअलीखॉं ने हिम्मत और मर्दानगी से चार आदमियों को बेकाम किया उतनी देर में भूतनाथ की चालाकी और फुर्ती की बदौलत भूतनाथ को इस बात का भी विश्वास हो गया कि शेरअलीखॉं जो कई जख्म खा चुका था ज्यादे देर तक इन लोगों के मुकाबले में ठहर न सकेगा अतएव उसने सोचा कि जहां तक जल्द हो सके इस लड़ाई का फैसला कर ही देना चाहिये ताज्जुब नहीं कि अपने साथियों को गिरते देख दुश्मनों का जोश बढ़ जाय मगर उधर तो मामला ही दूसरा हो गया। अपने साथियों को बिना जख्म खाये गिरते और बेहोश होते देख दुश्मनों को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और उन्होंने सोचा कि भूतनाथ केवल ऐयार बहादुर और लड़ाका ही नहीं है बल्कि किसी देवता का प्रबल इष्ट भी रखता है जिससे ऐसा हो रहा है। इस खयाल के आने के साथ ही उन लोगों ने भागने का इरादा किया मगर ताज्जुब की बात थी कि वह रास्ता, जिधर से वे लोग आये थे एक दम बन्द हो गया था इस सबब से पीठ दिखाकर भागने वालों की जान पर भी आफत आई। इधर तो शेरअलीखॉं की तलवार ने कई सिपाहियों का फैसला किया और उधर भूतनाथ ने तिलिस्मी खंजर का कब्जा दबाया जिससे बिजली की तरह चमक पैदा हुई और भागनेवालों की आंखें एकदम बन्द हो गई। फिर क्या था भूतनाथ ने थोड़ी ही देर में तिलिस्मी खंजर की बदौलत बाकी बचे हुओं को भी बेहोश कर दिया और उस समय गिनती करने पर मालूम हुआ कि दुश्मन सिर्फ पैंतालीस आदमी थे कल्याणसिंह ने यह बात झूठ कही थी कि मेरे साथ सौ सिपाही इस मकान में मौजूद हैं या आया ही चाहते हैं।

इतनी बडी लडाई और कोलाहल का चुपचाप निपटारा हाना असम्भव था। गुल शोर मार काट और धरो-पकड़ो की आवाज न मकान के बाहर तक खबर पहुँचा दी। पहर वाले सिपाहियों में से एक सिपाही ऊपर चढ आया और यहाँ का हाल देख घबडा कर नीचे उतर गया और अपने साथियों को खबर की। उसी समय यह बात चारों तरफ फैल गई और थोडी ही देर में राजा बीरेन्द्रसिंह के बहुत से सिपाही शेरअलीखा के कमरे में आ मौजूद हुए। उस समय लड़ाई खत्म हो चुकी थी और शेरअलीखा तथा भूतनाथ जिसने पुन अपने चेहरे पर नकाब डाल ली थी बहोश जख्मी और मरे हुए दुश्मनों को खुशी की निगाहों स देख रहे थे। शेरअलीखा ने राजा बीरेन्द्रसिंह के आदमियों को देख कर कहा "तहखाने की एक गुप्त राह से राजा बीरेन्द्रसिंह का दुश्मन कल्याणसिंह इतने आदमियों का लेकर बुरी नीयत से यहाँ आया था मगर (भूतनाथ की तरफ इशारा करके) इस बहादुर की मदद से मेरी जान बच गई और राजा बीरेन्द्रसिंह का भी कुछ नुकसान न हुआ। अब तुम लोग जहा तक जल्द हो सके,जिनमें जान है उन्हे कैदखाने भेजवाने का और मुर्दों के जलवा देने का बन्दोबस्त करो और इस कमरे का भी साफ करा दो।

इसके बाद उस कोठरी मे जिसमें से कल्याणसिंह और उसके साथी लोग निकले थे,ताला बन्द करके शेरअलीखा भूतनाथ का हाथ पकडे हुए कमरे के बाहर सहन में निकल आया और एक किनारे खडा होकर बातचीत करने लगा।

शेरअली–इस समय आपके आ जाने से केवल मेरी जान ही नहीं बची बल्कि राजा बीरेन्द्रसिंह का भी बहुत कुछ फायदा हुआ हा यह तो कहिए आप यहा कैसे आ पहुचे ? किसी ने रोका नहीं !

भूत–मुझे कोई भी नहीं रोक सकता, तेजसिंह ने मुझे एक ऐसी चीज दे रक्खी है जिसकी बदौलत मैं राजा बीरेन्द्रसिंह की हुकूमत के अन्दर महल छोडकर जहा चाहे वहा जा सकता हू कोई रोकने वाला नहीं। यहा मेरा आना कैसे हुआ इसका जवाब भी देता हू। मुझे और इन्द्रदेव के ऐयार सर्यूसिंह को किसी तरह इस बात की खबर लग गई कि राजा शिवदत्त और कल्याणसिंह कैद से छूट गये है और बहुत से लडाकों को लेकर तहखाने के रास्ते से रोहतासगढ में पहुच फसाद मचाया चाहते हैं। इस खबर ने हम दोनों का होशियार कर दिया। सर्यूसिंह तो दुश्मनों के साथ भेष बदले हुए तहखाने में जा घुसा और मैं बाहर से इन्तजाम करने के लिए आया था। यह न समझियेगा कि मैं सीधा आप ही के पास चला आया नहीं मैं हर तरह का इन्तजाम करने बाद यहाँ आया हू। इस समय इस किले के अन्दर वाली फौज लडने के लिए तैयार और मुस्तैद है बहादुर लोग चौकन्ने और महल के सब दर्वाजों पर मुस्तैद हैं तोपें गोले उगलने के लिए तैयार हैं और ऐयारों के जाल भी हर तरफ फैले हुए हैं। मगर इस बात की खबर मुझे कुछ भी नहीं है कि तहखाने के अन्दर क्या हो रहा है या क्या हुआ !

शेरअली–बेशक तहखाने के अन्दर दुश्मनों ने जरूर गहरा उत्पात मचाया होगा। अफसोस आज ही के दिन राजा बीरेन्द्रसिंह वगैरह को तहखाने के अन्दर जाना था !

भूत–इस खबर ने तो मुझे और भी बदहवास कर रक्खा है। क्या करू तहखाने का कुछ भी भेद मुझे मालूम नहीं है और न उसके पेचीले तथा मकडी के जाले की तरह उलझन डालने वाले रास्तों की ही मुझे अच्छी तरह खबर है नहीं तो इस समय मैं अवश्य तहखाने के अन्दर पहुँचता और अपनी बहादुरी तथा ऐयारों का तमाशा दिखलाता !

शेरअली–बेशक ऐसा ही है। इस समय मेरा दिल भी इस खयाल से बेचैन हो रहा है कि तहखाने के अन्दर जाकर राजा साहब की कुछ भी मदद नहीं कर सकता। अभी थोडी ही देर हुई जब मेरे दिल में यह बात पैदा हुई कि जिस राह से कल्याणसिंह और उसके मददगार इस कमरे में आये हैं उसी राह से हम लोग भी तहखाने के अन्दर जाकर कोई काम करें मगर बडे ताज्जुब की बात है कि वह रास्ता बन्द हो गया। लेकिन जहा तक मैं खयाल करता हूँ कि यह काम कल्याणसिंह के किसी पक्षपाती का नहीं है।

भूत–मैं भी ऐसा ही समझता हू। (कुछ सोच कर) हा एक बात और भी मेरे ध्यान में आती है।

शेरअली–वह क्या ?

भूत–यह तो निश्चय हो ही गया कि इस हम लोग किसी तरह तहखाने के अन्दर जाकर मदद नहीं कर सकते और न इस किले में रहने में ही किसी तरह का फायदा है।

शेरअली–बेशक ऐसा ही है।

भूत–तब हमको खोह के उस मुहाने पर पहुचना चाहिये जिस राह से दुश्मन लोग इस तहखाने में आये हैं। ताज्जुब नहीं कि दुश्मन लोग अपना काम करके या भाग के उसी राह से तहखाने के बाहर निकलें। यदि ऐसा हुआ तो नि सन्देह हम लोग कोई अच्छा काम कर सकेंगे।

शेरअली– (खुश होकर) ठीक है बेशक ऐसा ही होगा तो अब विलम्ब करना उचित नही है चलिए और जल्दी चलिए।

भूत–चलिए मै तैयार हू।

इतना कहकर भूतनाथ और शेरअलीखा ने राजा वीरेन्दसिह के आदमियों की लाशों को उठवाने और जिन्दों को कैद करने के विषय में पुन समझा-बुझा कर तथा और भी कुछ कह-सुन कर किले के बाहर का रास्ता और बहुत जल्द उस ठिकाने जा पहुचे जहा के लिए इरादा कर चुके थे।

छठवां बयान

कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह फिर उस बडी तस्वीर के पास आये जिसके नीचे महाराज सूर्यकान्त का नाम लिखा हुआ था। दोनों कुमार उस तस्वीर पर फिर से गौर करने और उस लिखावट को पढने लगे जिसे पहिले पढ चुके थे। हम ऊपर लिख आए है कि इस तस्वीर में कुछ लेख ऐसा भी था जो बहुत बारीक हर्फों में लिखा होने के कारण कुमार से पढा नहीं गया। अब दोनों कुमार उसी को पढने के लिए उद्योग करने लगे क्योंकि उसका पढना उन दोनों ने बहुत ही आवश्यक समझा।

इस कमरे में जितनी तस्वीरें थी, वे सब दीवार में बहुत ऊचे पर न थी बल्कि इतनी नीचे थी कि देखने वाला उनके मुकाबले में खडा हो सकता था। यही सबब था कि महाराज सूर्यकान्त की तस्वीर में जो कुछ लिखा था उसे दोनों कुमारो ने बखूबी पढ लिया था मगर कुछ लेख वास्तव में बहुत ही बारीक अक्षरों में लिखा हुआ था और इसी से ये दोनों भाई उसे पढ न सके। दोनों भाइयों ने तस्वीर की बनावट और उसके चौकठे (फ्रेम) पर अच्छी तरह ध्यान दिया तो चारों कोनों में छोटे-छोटे चार गोल शीशे जड़े हुए दिखाई पड़े जिनमें तीन शीशे तो पतले और एक ही रग-ढग के थे, मगर चौथा शीशा मोटा दलदार और बहुत साफ था। इन्दजीतसिह ने उस मोटे शीशे पर उगली रक्खी तो वह हिलता हुआ मालूम पड़ा और जब कुमार ने दूसरा हाथ उसके नीचे रख कर उगली से दबाया तो चौखट से अलग होकर हाथ में आ रहा। इस समय आनन्दसिह तिलिस्मी खजर हाथ में लिए रोशनी कर रहे थे उन्होंने इन्द्रजीतसिह से कहा मेरा दिल गवाही देता है कि यह शीशा उन अक्षरों के पढने में अवश्य कुछ सहायता देगा जो बहुत बारीक होने के सबब से पढ़े नहीं जाते।'

इन्द–मेरा भी यही खयाल है और इसी सबब से मैने इसे निकाला भी है।

आनन्द–इसीलिए यह मजबूती के साथ जडा हुआ भी नहीं है।

इन्द–देखा सब मालूम ही हुआ जाता है।

इतना कहकर इन्दजीतसिह ने उस शीशे को उन बारीक अक्षरों पर रक्खा और वे अक्षर बडे-बडे मालूम होने लगे। अब दोनो भाई बड़ी प्रसन्नता से उस लेख को पढने लगे। यह लिखा था–

स्व गिवर नर्ग दै कै पै

खूब समझ के तब आगे पैर रक्खो

६	–	३	–	अ	५	–	३	–	ग
३	–	३	–	ए	८	–	४	–	०
७	–	४	–	अ	८	–	३	–	ए
७	–	३	–	ए	१	–	१	–	०
३	–	१	–	औ	७	–	३	–	०
५	–	१	–	०	२	–	३	–	०
७	–	२	–	ए	६	–	५	–	०
६	–	५	–	ए	५	–	१	–	०

५ –	१ –	अ	२ –	१ –	०
७ –	३ –	ई	७ –	२ –	ओ
२ –	२ –	ओ	५ –	५ –	०
३ –	३ –	ओ	८ –	४ –	ई
५ –	१ –	इ	५ –	१ –	ओ
७ –	३ –	०	३ –	३ –	अ
८ –	३ –	०	५ –	५ –	०
६ –	५ –	ई	६ –	१ –	०
२ –	२ –	अं	७ –	२ –	०
३ –	३ –	०	१ –	१ –	आ
७ –	२ –	०	६ –	३ –	०
१ –	१ –	०	५ –	५ –	ए
६ –	१ –	०	२ –	३ –	ई
५ –	५ –	ए	– –	– –	–

थोडी देर तक तो इस लेख का मतलब समझ में न आया लेकिन बहुत सोचने पर आखिर दोनों कुमार उसका मतलब समझ गए *और प्रसन्न होकर आनन्दसिह बोले--

आनन्द--देखिये तिलिस्मी के सम्बन्ध में कितनी कठिनाइयॉं रक्खी हुई हैं !

इन्द--यदि ऐसा न हो तो हर एक आदमी तिलिस्म के भेद को समझ जाय।

आनन्द--अच्छा तो अब क्या करना चाहिए ?

इन्द्रजीत--सबसे पहिले बाजे की ताली खोजनी चाहिए इसके बाद बाजे की आज्ञानुसार काम करना होगा।

दोनों भाई बाजे वाले चबूतरे के पास गये और घूम-घूमकर अच्छी तरह देखने लगे। उसी समय पीछे की तरफ से आवाज आई 'हम भी आ पहुचे! दोनों भाइयों ने ताज्जुब के साथ घूमकर देखा तो राजा गोपालसिह पर निगाह पडी।

यद्यपि कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह को राजा गोपालसिह के साथ पहिल ही मोहब्बत ज्यादे हो गई थी म ।र जब स यह मालूम हुआ कि रिश्ते में व इनके भाई हैं तब से मुहब्बत ज्यादे हो गई थी और इसीलिए इस समय उन्हें देखते ही इन्द्रजीतसिह दौडकर उनके गले से लिपट गये तथा उन्होंने भी बडे प्रेम से दबाया। इसके बाद आनन्दसिह अपने भाई की तरह गले मिले और जब अलग हुए तो गोपालसिह ने कहा मालूम होता है कि महाराज सूर्यकान्त की तस्वीर के नीचे जो कुछ लिखा है उसे आप दोनों भाई पढ चुके हैं !

इन्द--जी हा और यह मालूम करके हमें बड़ी खुशी हुई कि आप हमारे भाई हैं !मगर मै समझता हू कि आप इस बात को पहिले ही स जानते थे।

गोपाल -बेशक इस बात को मै बहुत दिनों से जानता हू क्योंकि इस जगह कई दफे आ चुका हू लेकिन इसके अतिरिक्त तिलिस्म सम्बन्धी एक ग्रन्थ भी मेरे पास है जिसमें भी यह बात लिखी हुई है।

आनन्द--तो इतने दिनों तक आपने हम लोगों से कहा क्यों नहीं ?

गोपाल--उस किताब में जो मेरे पास है ऐसा करने की मनाही थी मगर अब मैं कोई बात आप लोगों से नहीं छिपा सकता और न आपही मुझसे छिपा सकते हैं।

इन्द--क्या आप इसी राह स आते-जाते है और आज भी इसी राह से हम लोगों को छोड कर निकल गये थे ?

गोपाल--नहीं नहीं मेरे आने-जाने का रास्ता दूसरा ही है। उस कूए में आपने कई दर्वाजे देखे होंगे उनमें जो सबसे छोटा दर्वाजा है,मै उसी राह से आता-जाता हू, यहा दूसरे ही काम के लिए कभी-कभी आना पडता है।

इन्द--यहा आने की आपको क्या जरुरत पडा करती है।

गोपाल--इधर तो मुद्दत से मैं आफत में फसा हुआ था आप ही ने मेरी जान बचाई है इसलिए दो दफे से ज्यादे आने की नौबत नहीं आई हा इसके पहिले महीने में एक दफे अवश्य आता और इन कमरों की सफाई अपने हाथ से करनी पडती थी। जो किताब मेरे पास है और जिसका जिक्र मैंने अभी किया उसके पढने से इस तिलिस्म का कुछ हाल

---

*पाठकों के सुभीते के लिए इन दोनों मजमूनों का आशय इस भाग के अन्तिम पृष्ठ पर दे दिया गया है पर उन्हें अपनी चेष्टा से मतलब समझने की कोशिश अवश्य करनी चाहिए।

और जमानिया की गद्दी पर बैठने वालों के लिए बड़े लोग जो-जो आज्ञा और नियम लिख गये है आपको मालूम होगा। उसी नियमानुसार हर महीने की अमावस्या को मै यहा आया करता था। आपकी आनन्दसिह की और अपनी तस्वीरें मैने ही नियमानुसार इस कमरे में लगाई है और इसी तरह बडे लोग अपने-अपने समय में अपनी और अपने भाइयों की तस्वीरें गुप्त रीति से तैयार करा के इस कमरे में रखते चले आये है। नियमानुसार यह एक आवश्यक बात थी कि जब तक आप लोग स्वय इस कमरे में न आ जाय मै हर-एक बात आप लोगों से छिपाऊ और इसीलिए मै इस तिलिस्म के बाहर भी आपको ले नहीं गया जबकि आपने बाहर जाने की इच्छा प्रकट की थी मगर अब कोई बात छिपाने की आवश्यकता न रही। इन्द-इस बाजे का हाल भी आपका मालूम होगा ?

गोपाल-केवल इतना ही कि इसमें तिलिस्म के बहुत से भेद भरे हुए है मगर इसकी ताली कहाँ है सो मै नहीं जानता। इन्द-क्या आपके सामने यह बाजा कभी बोला ?

गोपाल-इस बाजे की आवाज कई दफे मैंने सुनी है। (जमीन में गडे एक पत्थर की तरफ इशारा करके) इस पर पैर पडने के साथ ही बाजा बजने लगता है दो-तीन गत के बाद कुछ बातें कहता और फिर चुप हो जाता है अगर इस पत्थर पर पैर न पडे तो कुछ भी नहीं बोलता।

इन्द-(वह किताब जिस पर बाजे की आवाज लिखी थी दिखा कर) यह आवाज भी आपने सुनी होगी ?

गोपाल-हा सुन चुका हू मगर इसके लिए उद्योग करना सबसे पहिले आप का काम है।

आनन्द-महाराज सूर्यकान्त की तस्वीर के नीचे बारीक अक्षरों में जो कुछ लिखा है उसे भी आप पढ चुके है ?

गोपाल-नहीं क्योंकि अक्षर बहुत बारीक हैं पढे नहीं जाते।

इन्द-हम लोग इसे पढ चुके है ?

गोपाल-(ताज्जुब से) सो कैसे ?

कुअर इन्दजीतसिह ने शीशे वाला हाल गोपालसिह से कहा और जिस तरह स्वयम् उन बारीक अक्षरों को पढ चुके थे, उसी तरह उन्हें भी पढाया।

गोपाल-आखिर समय ने इस बात को आप लोगों के लिए रख ही छोडा था।

इन्द-इसका मतलब आप समझ गये ?

गोपाल-जी हा समझ गया।

इन्द-अब आप हम लोगों को बडाई के शब्दों से सम्बोधन न किया कीजिए क्योंकि आप बडे है और हमलोग छोटे है इस बात का पता लग चुका है।

गोपाल-(हस कर) ठीक है अब ऐसा ही होगा अच्छा तो बाजे वाले चबूतरे में से ताली निकालनी चाहिए।

इन्द-जी हाँ हम लोग इसी फिक्र में थे कि आप आ पहुचे लेकिन मुझे और भी बहुत सी बातें आपसे पूछनी है।

गोपाल-खैर पूछ लेना पहिले ताली के काम से छुट्टी पा लो।

आनन्द-मैंने इस कमरे में एक औरत को आते हुए देखा था मगर वह मुझ पर निगाह पडने के साथ ही पिछले पैर लौट गई और दूसरी कोठरी में जाकर गायब हो गई। इस बात का पता न लगा कि वह कौन थी या यहा क्योंकर आई ?

गोपाल-औरत ! यहाँ पर !!

आनन्द-जी हा।

गोपाल-यह तो एक आश्चर्य की बात तुमने कही ! अच्छा खुलासा कह जाओ।

आनन्दसिह अपना हाल खुलासा बयान कर गये जिसे सुन कर गोपालसिह को बडा ही ताज्जुब हुआ और वे बोले "खैर थोडी देर के बाद इस पर गौर करेंगे। किसी औरत का यहा आना निःसन्देह आश्चर्य की बात है।

इन्द-(खून से लिखी किताब दिखा कर) मेरी राय है कि आप इस किताब को पढ जाय और जो तिलिस्मी किताब आपके पास है उसे पढने के लिए मुझे दे दें।

गोपाल-निःसन्देह यह किताब आपके पढने लायक है उससे आपको बहुत फायदा पहुचेगा और खाने-पीने तथा समय पडने पर इस तिलिस्म से बाहर निकल जाने के लिए अण्डस न पडेगी और यहा के कई गुप्त भेद भी आप लोगों को मालूम हो जायेंगे। आप इस बाजे की ताली निकालने का उद्योग कीजिए तब तक मै जाकर वह किताब ले आता हू।

इन्द-बहुत अच्छी बात है मगर बाजे की ताली निकालने के समय आप यहा मौजूद क्यों नहीं रहते ? आपसे बहुत कुछ मदद हम लोगों को मिलेगी।

गोपाल-क्या हर्ज ऐसा ही सही आप लोग उद्योग करें।

यह तो मालूम ही हो चुका था कि बाजे की ताली उसी चबूतरे में है जिस पर बाजा रक्खा या जडा हुआ है अस्तु

तीनों भाई उसी चबूतरे की तरफ बढे। राजा गोपालसिंह के पास भी तिलिस्मी खंजर मौजूद था जिसे उन्होंने हाथ में ले लिया और कब्जा दबा कर रोशनी करने के बाद कहा   आप दोनों आदमी उद्योग करें मैं रोशनी दिखाता हू।

आनन्द–(आश्चर्य से) आप भी अपने पास तिलिस्मी खंजर रखते है ?

गोपाल–हा इसे प्राय अपने पास रखता हू और जब तिलिस्म के अन्दर आने की आवश्यकता पडती है तब तो अवश्य ही रखना पडता है क्योकि बड लोग एसा करने के लिए लिख गये है।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह दोनों भाइ बाजे वाले चबूतरे के चारों तरफ घूमने और उसे ध्यान देकर देखने लगे। वह चबूतरा किसी प्रकार की धातु का और चौखुंटा बना हुआ था। उसके दो तरफ तो कुछ भी न था मगर बाकी दो तरफ मुट्ठे लगे हुए थे जिन्हे देख इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा 'मालूम होता है कि ये दोनों मुट्ठे पकड कर खींचने के लिए बने हुए हैं।

आनन्द–मैं भी यही समझता हू।

इन्द्र–अच्छा खैंचो तो सही।

आनन्द–(मुट्ठे का अपनी तरफ खैंच और घुमाकर) यह तो अपनी जगह से हिलता नहीं ! मालूम होता है कि हम दोनों का एक साथ उद्योग करना पडेगा और इसीलिए इसमें दो मुट्ठे बने हुए हैं।

इन्द्र–बेशक ऐसा ही है अच्छा हम भी दूसरे मुट्ठे का खींचते हैं दोनों आदमियों का जोर एक साथ ही लगना चाहिये।

दोनों भाइयों ने आमने सामने खडे होकर दोनों मुट्ठों को खूब मजबूती से पकडा और बायें-दाहिने दोनों तरफ उमेठा मगर वह बिल्कुल न घूमा। इसके बाद दोनों ने उन्हें अपनी तरफ खींचा और कुछ खिंचते देखकर दोनों भाइयों ने समझा कि इसमें अपनी पूरी ताकत खर्च करनी पडेगी। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात दोनों भाइयों के खूब जोर करने पर वे दोनों मुट्ठे खिंच कर बाहर निकल आये और इसके साथ ही उस चबूतरे की एक तरफ की दीवार (जिधर मुट्ठा नहीं था) पल्ले की तरह खुल गई। राजा गोपालसिंह ने झुककर उसके अन्दर तिलिस्मी खंजर की रोशनी दिखाई और दोनों भाई बड़े गौर से अन्दर देखने लगे। एक छोटी सी चौकी नजर आई जिस पर छोटी सी तांबे की तख्ती के ऊपर एक चाभी रक्खी हुई थी। इन्द्रजीतसिंह ने अन्दर की तरफ हाथ बढाकर चौकी खैंचना चाहा मगर वह अपनी जगह से न हिली तब उन्होंने तांबे की तख्ती और ताली उठा ली और पीछे की तरफ हट कर उस खुले हुए पल्ले को बन्द करना चाहा मगर वह भी बन्द न हुआ लाचार उसी तरह छोड दिया। तांबे की तख्ती पर दोनों भाइयों ने निगाह डाली तो मालूम हुआ कि उस पर बाजे में ताली लगाने की तरकीब लिखी हुई है और ताली वही है जो उस तख्ती के साथ थी।

गोपाल–(इन्द्रजीतसिंह से) ताली तो आपको मिल ही गई मगर मैं उचित समझता हूँ कि थोडी देर के लिए आप लोग यहाँ से चलकर बाहर की हवा खाएं और सुस्ताने के बाद फिर जो कुछ मुनासिब समझें करें।

इन्द्र–हा मेरी भी यही इच्छा है इस बन्द जगह में बहुत देर तक रहने से तबीयत घबडा गई और सर में चक्कर आ रहा है।

आनन्द–मेरी भी यही हालत है और प्यास बडे जोर की मालूम होती है।

गोपाल–बस तो इस समय यहा से चल चलना ही बेहतर है। हम आप लोगों को एक बाग में ले चलते हैं जहा हर तरह का आराम मिलेगा और खाने-पीने का भी सुबीता होगा !

इन्द्र–बहुत अच्छा चलिये किस रास्ते से चलना होगा।

गोपाल–उसी राह से जिससे आप आये है।

इन्द्र–तब तो वह कमरा भी आनन्द के देखने में आ जायेगा जिसे मैं स्वय इन्हें दिखाया चाहता था अच्छा चलिये।

राजा गोपालसिंह अपने दोनों भाइयों को साथ लिए हुए वहा से रवाना हुए और उस कोठरी में गये जिसमें से आनन्दसिंह ने अपने भाई इन्द्रजीतसिंह को आते देखा था। उस जगह इन्द्रजीतसिंह ने राजा गोपालसिंह से कहा 'क्या आप इसी राह से यहा आते थे ! मुझे तो इस दर्वाजे की जंजीर खंजर से काटनी पडी थी !

गोपाल–ठीक है मगर हम इस ताले को हाथ लगाकर एक मामूली इशारे से खोल लिया करते थे।

आनन्द–इस तिलिस्म में जितने ताले है क्या वे सब इशारे ही से खुला करते है या किसी खटके पर है ?

गोपाल–सब तो नहीं मगर कई ऐसे ताले हैं जिनका हाल हमें मालूम है।

इतना कह गोपालसिंह आगे बढे और उस विचित्र कमरे में पहुँचे जिसके बारे में इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से

कहा था कि उस कमरे मे जो कुछ मैंने देखा सो कहने योग्य नहीं बल्कि इस योग्य है कि तुम्हें अपने साथ ले चल कर दिखाऊ।

वास्तव में वह कमरा ऐसा ही था और उसके देखने से आनन्दसिह को भी बड़ा आश्चर्य हुआ। मगर अवश्य ही वह राजा गोपालसिह के लिए कोई नई बात न थी क्योंकि वे कई दफे उस कमरे को देख चुके थे। तिलिस्मी खजर की तेज रोशनी के कारण वहाँ की कोई चीज ऐसी न थी जो साफ साफ दिखाई न देती हो और इसीलिए वहाँ की सब चीजों को दोनों भाइयों ने खूब ध्यान देकर देखा।

इस कमरे की लम्बाई लगभग पचीस हाथ के होगी और यह इतना ही चौड़ा भी होगा। चारों कोनों में चार जड़ाऊ सिंहासन रक्खें हुए थे और उन पर बडे-बड़े चमकदार हीरे मानिक पन्ने और मोतियों के ढेर लगे हुए थे। उनके नीचे सोने की थालियों में कई प्रकार के जडाऊ जेवर रक्खे हुए थे जो औरतों और मर्दों के काम में आ सकते थे। चारों सिहासनों के बगल से लोहे के महराबदार खम्भे निकले हुए थे जो कमरे क बीचोबीच में आकर डेढ पुर्से की ऊचाई पर मिल गये थे और उनके सहारे एक आदमी लटक रहा था जिसके गले में लोहे की जजीर फासी के ढग पर लगी हुई थी। देखने से यही मालूम होता था कि यह आदमी इस तौर पर फासी लटकाया गया है। उस आदमी के नीचे एक हसीन औरत सर के बाल खोले इस ढग से बैठी हुई थी जैसे उस लटकते हुए आदमी का मातम कर रही हो, तथा उसके पास ही एक दूसरी औरत हाथ में लालटेन लिए खडी थी जिसे देखने के साथ ही आनन्दसिह बोल उठे "यह वही औरत है जिसे मैंने उस कमरे में देखा और जिसका हाल आप लोगों से कहा था फर्क केवल इतना ही है कि इस समय इसके हाथ वाली लालटेन बुझी हुई है।

गोपाल--तुम भी तो अनोखी बात कहते हो भला ऐसा कभी हो सकता है।

आनन्द--हो सके चाहे न हो सके मगर यह औरत नि सन्देह वही है जिसे मैं देख चुका हू, अगर आपको विश्वास न हो तो इससे पूछ कर देखिये।

गोपाल--(हस कर) क्या तुम इसे सजीव समझते हो !

आनन्द--तो क्या यह निर्जीव है ?

गोपाल--बेशक ऐसा ही है। तुम इसके पास जाओ और हिला-डुला कर दखो।

आनन्दसिह उस औरत के पास गये और कुछ देर तक खडे होकर देखते रहे मगर बड़ों के लिहाज से यह सोच कर हाथ नहीं लगाते थे कि कहीं यह सजीव न हो। राजा गोपालसिह इनका मतलब समझ गये और स्वय उस पुतली के पास जा कर बोले "खाली देखने से पता न लगेगा इसे हिला-डुला और ठोक कर देखो !!

इतना कह उन्होंने उस पुतली के सर पर दो तीन चपत जमाई जिससे एक प्रकार की आवाज पैदा हुई जैसे किसी धातु की पोली चीज को ठोंकने से निकलती है उस समय आनन्दसिह का शक दूर हुआ और वे बोले "नि सन्देह यह निर्जीव है मगर वह औरत भी ठीक ऐसी ही थी डील-डौल रग-ढग कपड़ा-लत्ता किसी बात में फर्क नहीं है ! ईश्वर जाने क्या मामला है !

गोपाल--ईश्वर जाने क्या भेद है !परन्तु जब से तुमने यह बात कही है हमारे दिल का एक खुटाका सा लग गया है जब तक उसका ठीक-ठीक पता न लगेगा जी को चैन न पड़गा। खैर इस समय तो यहा से चलना चाहिए।

राजा गापालसिह उस लटकते हुए आदमी के पास गए और उसका एक पैर पकड़ कर नीचे की तरफ दो-तीन झटका दिया तब वहा से हट कर इन्द्रजीतसिह के पास चले आये। झटका देने के साथ ही वह आदमी जोर-जोर स झोके खाने लगा और कमरे में किसी तरह की भयानक आवाज आने लगी मगर यह नहीं मालूम हाता था कि आवाज किधर से आ रही है हर तरफ वह भयानक आवाज गूज रही थी। यह हालत चौथाई घड़ी तक रही इसके बाद जोर की आवाज हुई और सामने की तरफ एक छोटा सा दर्वाजा खुला हुआ दिखाई दिया। उस समय कमरे में किसी तरह की आवाज सुनाई न देती थी, हर तरह स सन्नाटा हो गया था।

दोनों भाइयों को साथ लिए राजा गोपालसिह दर्वाजे के अन्दर गए जो अभी खुला था। उसके अन्दर ऊपर चढने के लिए सीढिया बनी हुई थीं जिस राह से तीनों भाई ऊपर चढ गये और अपने को एक छोटे से नजर बाग में पाया। यह बाग यद्यपि छोटा था मगर बहुत ही खूबसूरत और सूफियान किते का बना हुआ था। सगमर्मर की बारीक नालियों में नहर का जल चकाबू के नक्शे की तरह घूम-फिर कर बाग की खूबसूरती को बढ़ा रहा था। खुशबूदार फूलों की महक हवा के हलके-हलके झपटों के साथ आ रही थी सूर्य अस्त हो चुका था रात के समय खिलने वाली कलियों को चन्द्रदेव की आशा लग रही थी। कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह बहुत देर तक अधेरे में रहने तथा भूख-प्यास के कारण, बहुत परेशान हो रहे थे, नहर के किनारे साफ पत्थर पर बैठ गए कपडे उतार दिये और मोती सरीखे साफ जल से हाथ-मुँह

धोने बाद दो-तीन चुल्लू जल पीकर हरारत मिटाई।

गोपाल–अब आप लोग इस बाग में बेफिक्री के साथ अपना काम करें मैदान जाय और स्नान सध्या पूजा से छुट्टी पाकर बाग की सैर करें तब तक मैं खास बाग में जाकर कुछ खाने का सामान और तिलिस्मी किताब जो मेरे पास है ले आता हू। इस बाग में मेवे के पेड भी बहुतायत से है यदि इच्छा हो तो आप उनके फल खाने के काम में ला सकते है।

इन्द्र–बहुत अच्छी बात है आप जाइये मगर जहा तक हो सके जल्द आइएगा।

आनन्द–क्या हम लोग आपके साथ बाग में नहीं चल सकते ?

गोपाल–क्यों नहीं चल सकते मगर मैं इस समय आप लोगों को तिलिस्म के बाहर ले जाना पसन्द नही करता और तिलिस्मी किताब में भी ऐसा करने की मनाही है।

इन्द–खैर कोई चिन्ता नहीं आप जाइए और जल्द लौटकर आइए। जब तिलिस्मी किताब जो आपके पास है हम लोग पढ लेंगे और आप भी इस रिक्तग्रन्थ को जो मेरे पास है पढ लेंगे तब जैसी राय होगी किया जायेगा।

गोपाल–ठीक है अच्छा तो अब मैं जाता हू।

इतना कहकर राजा गोपालसिंह एक तरफ चले गये और कुँअर इन्दजीतसिंह तथा आनन्दसिंह जरूरी कामों से छुट्टी पाने की फिक्र मे लगे।

सातवां बयान

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है, चन्द्रदेव उदय हो चुके है मगर अभी इतने ऊंचे नहीं उठे है कि बाग के पूरे हिस्से पर चादनी फैली हुई दिखाई देती हा बाग के उस हिस्से पर चादनी का फर्श जरूर बिछ चुका था जिधर कुअर इन्दजीतसिंह और आनन्दसिंह एक चट्टान पर बैठे हुए बातें कर रहे थे। ये दोनों भाई अपने जरूरी कामों से छुट्टी पा चुके थे और सन्ध्या-वन्दन करके दो चार फलों से आत्मा को सन्तोष देकर आराम से बैठे बातें करते हुए राजा गोपालसिंह के आने का इन्तजार कर रहे थे। यकायक बाग के उस कोने में जिधर चादनी न होने तथा पेड़ों के झुरमुट के कारण अंधेरा था दिये की चमक दिखाई पडी। दोनों भाई चौकन्ने होकर उस तरफ देखने लगे और दोनों को गुमान हुआ कि राजा गोपालसिंह आते होंगे मगर उनका शक थोड़ी ही देर बाद जाता रहा जब एक औरत को हाथ में लालटन लिए अपनी तरफ आते देखा।

इन्दजीत–यह औरत इस बाग में क्योंकर आ पहुँची ?

आनन्द–ताज्जुब की बात है। मगर मैं समझता हू कि इसे हम दोनों भाइयों के यहां होने की खबर नहीं है अगर होती तो इस तरह बेफिक्री के साथ कदम बढाती हुई न आती।

इन्द–मै भी यही समझता हू अच्छा हम दोनों को छिपकर देखना चाहिए यह कहाँ जाती और क्या करती है।

आनन्द–मेरी भी यही राय है।

दोनों भाई वहा से उठे और धीरे-धीरे चलकर पेड़ की आड़ में छिप रहे जिसे चारों तरफ से लताओं ने अच्छी तरह घेर रक्खा था और जहा से उन दोनों की निगाह बाग के हर एक हिस्से और कोने में बखूबी पहुच सकती थी। जब वह औरत घुमती हुई उस पेड के पास से होकर निकली तब आनन्दसिंह ने धीरे से कहा यह वही औरत है।

इन्दजीत–कौन ?

आनन्द–जिस तिलिस्म के अन्दर बाजे वाले कमरे में मैंने देखा था और जिसका हाल आपसे तथा गोपाल भाई से कहा था।

इन्द–हां ! अगर वास्तव में ऐसा है तो फिर इसे गिरफ्तार करना चाहिए।

आनन्द–जरूर गिरफ्तार करना चाहिए।

दोनो भाई सलाह करके उस पेड की आड़ में से निकले और उस औरत को घेर कर गिरफ्तार करने का उद्योग करने लगे। थोडी देर बाद नजदीक होने पर इन्दजीतसिंह ने भी देखकर निश्चय कर लिया कि हाथ में लालटेन लिए हुए यह वही औरत है जिसे तिलिस्म में फांसी लटकते हुए आदमी के साथ-साथ निर्जीव खडे देखा था।

उस औरत को भी मालूम हो गया कि दो आदमी उसे गिरफ्तार किया चाहते है अतएव वह चैतन्य हो गई और चमेली की टट्टियों में घूम फिर कर कहीं गायब हो गई। दोनों भाइयों ने बहुत उद्योग और पीछा किया मगर नतीजा कुछ

भी न निकला वह औरत ऐसा गायब हुई कि काइ निशान भी न छोड गई न मालूम वह चमेली की टटियों में लीन हो गई या जमीन के अन्दर समा गई। दोनों भाई लज्जा के साथ ही साथ निराश होकर अपनी जगह लौट आये और उसी समय राजा गोपालसिह को भी एक हाथ में चगर और दूसरे हाथ में तेज रोशनी की अद्‌भूत लालटेन लिए हुए आते देखा। गोपालसिह दोनों भाइयों के पास आए और लालटन तथा चगेर जिसमें खाने की चीजें थीं,जमीन पर रखकर इस तरह वैठ गये जैसे बहुत दूर का चला आता हुआ मुसाफिर परेशान और बदहवासी की हालत में आगे सफर करने से निराश हो कर पृथ्वी की शरण लेता है या कोई धनी अपनी भारी रकम खो देने के बाद चोरों की तलाश से निराश और हताश होकर बैठ जाता है। इस समय राजा गोपालसिह के चेहरे का रग उडा हुआ था और वे बहुत ही परशान और बदहवास मालूम होत थे। कुँअर इन्दर्जीतसिह और आनन्दसिह को बडा आश्चर्य हुआ और उन्होंने घबराकर पूछा। कहिए कुशल ता है ?

गोपाल-(घबराहट के साथ) कुशल नही है।

इन्दजीत-सा क्या ?

गोपाल-मालूम होता है कि हमारे घर में किसी जबर्दस्त दुश्मन ने पैर रक्खा है और हमारे यहाँ से वह चीज ले गया जिसके भरोसे पर हम अपने को तिलिस्म का राजा समझते थे और तिलिस्म तोडने के समय आपकी मदद देने का हौसला रखते थे।

आनन्द-वह कौन सी चीज थी ?

गोपाल-वही तिलिस्मी किताब जिसका जिक्र आप लोगों से कर चुके हैं और जिसे लाने के लिए हम इस समय गए थे।

इन्दजीत-(रज के साथ) अफसोस ! क्या आप उसे छिपाकर नही रखते थे ?

गोपाल-छिपाकर ता ऐसा रखते थे कि हमे वर्षो तक कैदखाने में सडाने और मुर्दा बनाने पर भी मुन्दर जिसने अपने को मायारानी बना रक्खा था उसे पा न सकी ?

इन्द-तो आज वह एकाएक गायब कैसे हो गई ?

गोपाल-न मालूम क्योंकर गायब हो गई मगर इतना जरूर कह सकते है कि जिसने यह किताब चुराई है वह तिलिस्म के भेदों के कुछ जानकार अवश्य हो गया है। इसे आप लोग साधारण बात न समझिए !इस चोरी से हमारा उत्साह भग हो गया और हिम्मत जाती रही हम आप लोगों को इस तिलिस्म में किसी तरह की मदद देने लायक न रहे और हमें अपनी जान जान का भी खौफ हो गया। इतना ही नही सबसे ज्यादे तरद्दुद की बात तो यह है कि वह चोर आश्चर्य नही कि आप लोगों को भी दुःख दे।

इन्दजीत-यह तो बहुत बुरा हुआ।

गोपाल-बेशक बुरा हुआ। हाँ यह तो बताइये इस बाग में लालटेन लिए कौन घूम रहा था ?

आनन्द-वही औरत जिसे मैने तिलिस्म के अन्दर बाजे वाले कमरे में देखा था और जो फाँसी लटकते हुए मनुष्य के पास निर्जीव अवस्था में खडी थी। (इन्दजीत की तरफ इशारा करके) आप भाईजी से पूछ लीजिए मै सच्चा था या नही।

इन्द-बेशक उसी रग-रूप और चाल-ढाल की औरत थी।

गोपाल-बडे आश्चर्य की बात है ! कुछ अक्ल काम नही करती !!

इन्द-हम दोनों ने उसे गिरफ्तार करने के लिए बहुत उद्योग किया मगर कुछ बन न पडा। इन्ही चमेली की टटियों में वह खुशबू की तरह हवा के साथ मिल गई कुछ मालूम न हुआ कि कहा चली गई !!

गोपाल-(घबड़ाकर) इन्हीं चमेली की टटियों में ? वहा से ता देवमन्दिर में जाने का रास्ता है जो बाग के चौथे दर्जे में है !

इन्द-(चौंककर) देखिए देखिए वह फिर निकली !

आठवां बयान

इस जगह हमें भूतनाथ के सपूत लडके तथा खुदगर्ज और मतलबी ऐयार नानक का हाल पुन लिखना पडा।

हम ऊपर के किसी बयान में लिख आये हैं कि जिस समय नानक अपने मित्र की ज्याफत में तन-मन और आधे शरीर से लौलीन हो रहा था उसी समय उस पर वज्रपात हुआ अर्थात एक नकाबपोश ने उसके बाप की दुर्दशा का हाल बता कर उसे अध कूए में ढकेल दिया। लोग कहते है कि उसे अपने बाप की मुहब्बत कुछ भी न थी हा अपनी माँ को कुछ कुछ जरूर चाहता था जिस पर उसकी नई नवेली दुलहिन ने उसे कुछ ऐसा मुट्ठी में कर लिया था कि उसी को सब कुछ तथा इष्टदेव समझे हुए था और उसकी उपासना से विमुख होना हराम समझता था। यद्यपि वह अपने बाप की कुछ परवाह नहीं रखता था और न उसको उससे कुछ प्रेम ही था मगर वह अपने बाप से डरता उतना ही था जितना लम्पट लोग काल से डरते हैं। जिस समय वह लौट कर घर आया उसकी अनाखी स्त्री थकावट और सुस्ती क कारण चारपाई का सहारा ले चुकी थी। उसन नानक से पूछा 'कहो क्या मामला है ? तुम कहा गये थे ?

नानक–(धीरे स) अपने नापाक बाप के आफत में फसने की खबर सुनने गया था। अच्छा होता जो उसके मौत की खबर सुनने मे आती और मै सदैव के लिए निश्चिन्त हो जाता !

स्त्री–(आश्चर्य से) अपने प्यारे ससुर के बारे में एसी बात तो आज तक तुम्हारी जुबान से कभी सुनने में न आई थी !!

नानक–क्योंकर सुनने में आती जब कि अपन इस सच्चे भाव को मै आज तक मत्र की तरह छिपाए हुए था ? आज यकायक मेरे मुँह से ऐसी बात तुम्हारे सामने निकल गई इसके बाद फिर कभी कोई शब्द एसा मेरे मुँह से न निकलेगा जिससे कोई समझ जाय कि मै अपने बाप को नही चाहता। तुम्हें मै अपनी जान समझता हूँ और आशा है कि इस बात को जो यकायक मेरे मुह से निकल गई है तुम भी जान ही की तरह हिफाजत करागी जिससे कोई सुनने न पावे। अगर काई सुन लेगा तो मेरी बडी खराबी होगी क्योंकि मै अपने बाप को यद्यपि मानता तो कुछ नही हू मगर उससे डरता बहुत हू क्योंकि वह बडा ही शैतान और भयानक आदमी है। यदि वह जान जायेगा कि मै उसके साथ खुदगर्जी का बर्ताव करता हू तो वह मुझे जान ही से मार डालगा।

स्त्री–नहीं नहीं मै एसी बात कभी किसी के सामन नहीं कह सकती जिससे तुम पर मुसीबत आय (हस कर) हा अगर तुम मुझे कभी रज कराग़े तो जरूर प्रकट कर दूँगी।

नानक–उस समय मै भी लोगों से कह दूगा कि मेरी स्त्री व्यभिचारिणी हो गई है मुझ पर तूफान जोडती है। भला दुनिया में कोई भी ऐसा आदमी हे जो अपन बाप को न चाहता हो ? यदि ऐसा होता तो क्या मै चुपचाप बैठा रह जाता ! मगर नहीं मैं अपने बाप का छुडाने के लिए इसी वक्त जाऊँगा और इस उद्योग में अपनी जान तक लडा दूँगा।

स्त्री–(मन में) ईश्वर करे तुम किसी तरह इस शहर से बाहर निकलो या किसी दूसरी दुनिया में चल जाओ (प्रकट) जब वह फस ही चुका है तो चुपचाप बैठे रहो समय पड़ने पर कह देना कि मुझे खबर ही नहीं थी !

नानक–नहीं मै ऐसा कदापि नहीं कह सकता क्योंकि गोपीकृष्ण (नकाबपोश) जिससे इस बात की मुझे खबर पहुँची है बडा दुष्ट आदमी है समय पडने पर वह अवश्य कह देगा कि मैने इस बात की इत्तिला नानक को दे दी थी !

स्त्री–अच्छा तुम खुलासा कह तो जाओ कि क्या-क्या खबर सुनने में आई !

नानक ने नकाबपोश की जुबानी जो कुछ सुना था अपनी प्यारी स्त्री से कहा। इसके बाद उसे बहुत कुछ समझा-बुझाकर सफर की पूरी तैयारी करके अपने बाप को छुडाने की फिक्र में वहाँ से रवाना हो गया।

भूतनाथ के सगी-साथी लोग मामूली न थे बल्कि बड़े ही बदमाश लड़ाकू शैतान और फसादी लोग थे तथा चारों तरफ ऐसे ढग से घूमा करते थे कि समय पडने पर जब भूतनाथ उन लोगों की खोज करता तो विशेष परिश्रम किए बिना ही उनमें से कोई न कोई मिल ही जाता था इसके अतिरिक्त भूतनाथ ने अपने लिए कई अड्डे भी मुकर्रर कर लिए थे जहाँ उसके सगी-साथियों में से कोई न काई अवश्य रहा करता था और उन अड्डों में कई अड्डे एसे थे जिनका ठिकाना नानक को मालूम था। ऐसा ही एक अड्डा गयाजी से थोडी दूर पर बराबर की पहाडी के ऊपर था जहाँ अपने बाप का पता लगाता हुआ नानक जा पहुँचा। उस समय भूतनाथ के साथियों में स तीन आदमी वहाँ मौजूद थे।

नानक ने उन लोगों से अपने बाप का हाल पूछा और जो कुछ उन लोगों को मालूम था उन्होंने कहा। इत्तिफाक से

उसी समय मनोरमा को लिए हुए भूतनाथ भी वहाँ आ पहुँचा और अपने सपूत लडके को देखकर बहुत खुश हुआ। भूतनाथ ने मनोरमा को तो अपने आदमियों के हवाले किया और नानक का हाथ पकड के एक किनारे ले जाने के बाद जो कुछ उस पर बीता था सब ब्योरेवार कह सुनाया।

नानक–(अफसोस के साथ मुह बनाकर) अफसोस! आपने इन बातों की मुझे कुछ भी खबर न दी! अगर गोपीकृष्ण आपकी परेशानी का कुछ हाल मुझसे न कहते तो मुझे गुमान न होता।

भूत–खैर जो कुछ होना था वह हो गया अब तुम मनोरमा को लेकर वहाँ जाओ जहाँ तुम्हारी माँ रहती है और जिस तरह हो सके मनोरमा से पूछ कर बलभद्रसिह का पता लगाओ मगर एक आदमी को साथ जरूर लिए जाओ क्योंकि आजकल तुम्हारी माँ जिस ठिकाने रहती है यद्यपि वहाँ का हाल तुमसे हमने कह दिया मगर रास्ता इतना खराब है कि बिना आदमी साथ ले गए तुम्हें कुछ भी पता न लगेगा।

नानक–जो आज्ञा तो क्या इस समय आप सीधे रोहतासगढ जायेंगे?

भूत–हाँ जरूर जायेंगे क्योंकि ऐसे समय में शेरअलीखाँ से मिलना आवश्यक है मगर जबतक हम न आवें तुम अपनी माँ के पास रहना और जिस तरह हो सके बलभद्रसिह का पता लगाना।

इसके बाद नानक को लिए हुए भूतनाथ फिर अपने आदमियों के पास चला आया और एक आदमी को धन्नूसिह का पता बताकर (जिसे कैद करके कहीं रख आया था) कहा कि तुम धन्नूसिह को वहाँ से लाकर हमारे घर पहुचा दो और फिर इसी ठिकाने आकर रहो।

इन कामों से छुट्टी पाने के बाद भूतनाथ रोहतासगढ शेरअलीखाँ के पास गया और वहाँ जो कुछ हुआ सो हमारे प्रेमी पाठक पढ चुके हैं।

नौवां बयान

दोपहर का समय है। हवा खूब तेज चल रही है। मैदान में चारों तरफ बगुले उडते दिखाई दे रहे हैं। ऐसे समय में एक बहुत फैले हुए और गुंजान आम के पेड के नीचे नानक और भूतनाथ का सिपाही जिसने अपना नाम दाऊ बाबा रक्खा हुआ था बैठे हुए सफर की हरारत मिटा रहे हैं। पास ही में मनोरमा भी बैठी है जिसके हाथ पैर कमर से बधे हुए हैं। थोडी ही दूर पर एक घोडी चर रही थी जिसकी लम्बी बागडोर एक डाल के साथ बधी हुई थी और जिस पर मनोरमा को लाद के वे लोग लाये थे। इस समय सफर की हरारत मिटाने और धूप का समय टाल देने के लिए वे लोग इस पेड के नीचे बैठे हुए बात कर रहे हैं।

नानक–(मनोरमा से) मुझे तुम्हारी सूरत शक्ल पर रहम आता है तुम नाहक ही एक बदकार और नकली मायारानी के लिए अपनी जान दे रही हो।

मनोरमा–(लम्बी सास लेकर) बात तो ठीक है मगर अब जान बचने की कोई उम्मीद भी नहीं है। सच कहती हूँ कि इस जिन्दगी का मजा मैंने कुछ भी नहीं पाया। मेरे पास करोड़ों रुपये की जमा मौजूद है मगर वह इस समय मेरे किसी अर्थ की नहीं न मालूम उस पर किसका कब्जा होगा और उसे पाकर कौन आदमी अपने को भाग्यवान मानेगा या शायद लावारिसी माल समझ राजा ही

नानक–तुम रोती क्यों हो आँखें पोंछो तुम्हारा रोना मुझे अच्छा नहीं मालूम होता। मैं सच कहता हूँ कि तुम्हारी जान बच सकती है और तुम अपनी दौलत का आनन्द अच्छी तरह भोग सकती हो यदि बलभद्रसिह और इन्दिरा का पता बता दो!

मनोरमा–मैं बलभद्रसिह और इन्दिरा का पता भी बता सकती हू और अपनी कुल दौलत भी तुमको दे सकती हू यदि मेरी जान बच जाय और तुम एक सलूक मेरे साथ करो।

नानक–वह कौन सा सलूक है जो तुम्हारे साथ करना होगा? हाय मुझे तुम्हारी सूरत पर दया आती है। मै नहीं चाहता कि एक ऐसी खूबसूरत परी दुनिया से उठ जाय।

मनोरमा–यह बात बहुत गुप्त है इसलिए मै नहीं चाहती कि इसे सिवाय तुम्हारे कोई और सुने।

दाऊबाबा–लो हम आप ही अलग हो जाते है तुम लोग अपना मजे में बातें करो हमें इन सब बखेडों से कोई मतलब नहीं हमें तो मालिक का काम होने से मतलब है तब तक दो एक चिलम गाजा उडा के सफर की थकावट मिटाते हैं।

इतना कहकर दाऊ बाबा जो वास्तव में एक मस्त आदमी था उठकर कुछ दूर चला गया और अपने सफरी बटुए

में से चकमक निकाल कर सुलगाने के बाद आनन्द के साथ गाजा मलने लगा इधर नानक उठकर मनोरमा के पास जा बैठा।

नानक—लो कहो अब क्या कहती हो !

मनोरमा—यह तो तुम जानते ही हो कि मेरे पास बडी दौलत है !

नानक—हा सो मै खूब जानता हू कि तुम्हार पास करोडों रुपये की जमा मौजूद है।

मनोरमा— और यह भी जानते हो कि तुम्हारी प्यारी रामभोली भी मेरे ही कब्जे में है !

नानक—(चौक कर) नहीं सो तो मैं नहीं जानता ! क्या वास्तव में रामभोली भी तुम्हारे ही कब्जे में है ? हाय यद्यपि वह गूगी और बहरी औरत है मगर मै उसे दिल से प्यार करता हू। यदि वह मुझे मिल जाय तो मैं अपने को बड़ा ही भाग्यवान समझू !

मनोरमा—हॉ वह मेरे ही कब्जे में है और तुम्हें मिल सकती है। मैं अपनी तमाम दौलत भी तुम्हें देने को तैयार हू और बलभद्रसिह तथा इन्दिरा का पता भी बता सकती हू यदि इन सब कामों के बदले में तुम एक उपकार मेरे साथ करो !

नानक—(खुश होकर) वह क्या ?

मनोरमा—तुम मेरे साथ शादी कर लो क्योंकि मैं तुम्हें जी जान से प्यार करती हू और तुम पर मरती हू।

नानक—यद्यपि तुम्हारी उम्र मेरे बराबर है मगर मै तुम्हें अभी तक नई-नवेली ही समझता हू और तुम्हें प्यार भी करता हू क्योंकि तुम खूबसूरत हो लेकिन तुम्हारे साथ शादी मैं कैसे कर सकता हू, यह बात मेरा बाप कब मजूर करेगा !

मनोरमा—इस बात से अगर तुम्हारा बाप रज हो तो बडा ही बेवकूफ है। बलभद्रसिह के मिलने से उसकी जान बचती है और इन्दिरा के मिलने से वह इन्द्रदेव का प्रेम-पात्र बन कर आनन्द के साथ अपनी जिन्दगी बितायेगा। तुम्हारे अमीर होने से भी उसको फायदा ही पहुचेगा। इसके अतिरिक्त तुम्हारी रामभोली तुम्हें मिलगी और मैं तुम्हारी होकर जिन्दगी भर तुम्हारी सेवा करुगी। तुम खूब जानते हो कि मायारानी के फेर में पडे रहने के कारण अभी तक मेरी शादी नहीं हुई।

नानक—(मुस्कुरा कर) मगर दो चार प्रेमियों से प्रेम जरूर कर चुकी हो !

मनोरमा—हॉ इस बात से मैं इनकार नहीं कर सकती मगर क्या तुम इसी से हिचकते हो ? बडे बेवकूफ हो ! इस बात से भला कौन बचा है ! क्या तुम्हारी अनोखी स्त्री ही जो आज कल तुम्हारे सिर चढी हुई है ! तुम इस बारे में कसम खा सकते हो ! क्या तुम दुनियाँ भर के भेद जानते हो और अन्तर्यामी हो ! ये सब बातें तुम्हारे जैसे खुशदिल आदमियों के सोचने के लायक नहीं। हा इतना मैं प्रतिज्ञापूर्वक कह सकती हू कि इस काम से तुम्हारा बाप कभी नाखुश न होगा। जरा ध्यान देकर देखो तो सही, कि तुम्हारे बाप ने इस जिन्दगी में कैसे-कैसे काम किए है। उसका मुँह नहीं कि तुम्हें कुछ कह सके और फिर दुनिया में मेरा तुम्हारा साथ और करोडों रुपये की जमा क्या यह मामूली बात है ! हमसे-तुमसे बढ कर भाग्यवान कौन दिखाई दे सकता है ! हॉ इस बात की भी मैं कसम खाती हूँ कि तुम्हारी आज-कल वाली स्त्री और रामभोली से सच्चा प्रेम करुँगी और चाहे ये दोनों मुझसे कितना ही लडें मगर मैं उनकी खातिर ही करुँगी।

मनोरमा की मीठी-मीठी और दिल लुभा लेने वाली बातों ने नानक को ऐसा बेकाबू कर दिया कि वह स्वर्ग सुख का अनुभव करने लगा। थोडी देर तक चुप रहने के बाद उसने कहा "मगर इस बात का विश्वास कैसे हो कि जितनी बात तुम कह गई हो उसे अवश्य पूरा करोगी !

इसके जवाब में मनोरमा ने हजारों कसमें खाईं और नानक के मन में अपनी बात का विश्वास पैदा कर दिया। इसके बाद उसने अपना हाथ-पैर खोल देने के लिए नानक से कहा नानक ने उसका हाथ-पैर खोल दिया और मनोरमा ने अपनी उगली से वह जहरीली अगूठी जिसको निकाल लेना भूतनाथ भूल गया था उतार कर नानक की उगली में पहिरा देने के बाद नानक का मुह चूम कर कहा "इसी समय से मैंने तुम्हें अपना पति मान लिया। अब तुम मेरे घर चलो बलभद्रसिह और इन्दिरा को लेकर अपने बाप के पास भेज दो मेरे घरबार के मालिक बनो और इसके बाद जो कुछ मुझे कहो मैं करने को तैयार हू। अब इससे बढकर सतोष दिलाने वाली बात मैं क्या कह सकती हूँ !

इतना कहकर मनोरमा ने नानक के गले में हाथ डाल दिया और पुन उसका मुह चूम-कर कहा "प्यारे मैं तुम्हारी हो चुकी अब तुम जो चाहो, करो !

अहा स्त्री भी दुनिया में क्या चीज है ! बडे-बडे होशियारों-चालाकों, ऐयारों, अमीरों, पहलवानों और बहादुरों को बेवकूफ बनाकर मटियामेट कर देने की शक्ति जितनी स्त्री में है उतनी किसी में नहीं। इस दुनिया में वह बडा ही भाग्यवान है जिसके गले में दुष्टा और धूर्त स्त्री की फासी नहीं लगी। देखिए दुर्दैव के मारे कम्बख्त नानक ने क्या मुह की खाई है और धूर्ता मनोरमा ने कैसा उसका मुह काला किया है ! मजा तो यह है कि स्त्री-रत्न पाने के साथ ही दौलत भी पाने की खुशी

ने उसे और भी अन्धा बना दिया और जिस समय मनोरमा ने जहरीली अँगूठी नानक की उगली में पहिराकर उसके गुण की प्रशसा की उस समय तो नानक का निश्चय हो गया कि बस अब यह हमारी हो चुकी। उसने सोचा कि इसे अपनाने में अगर भूतनाथ रज भी हो जाय तो कोई परवाह की बात नहीं है और रज होने का सबब ही क्या है बल्कि उसे तो खुश होना चाहिए क्योंकि मेरे ही सबब से उसकी जान बचेगी।

नानक ने भी मनोरमा के गले में हाथ डाल के उससे कुछ ज्यादे ही प्रेम का बर्ताव किया जो मनोरमा ने नानक के साथ किया था और तब कहा अच्छा तो अब मै भी तुम्हारा हो चुका तुम भी जहा तक जल्द हो सके अपना वादा पूरा करो।

मनोरमा–मै तैयार हू अपने साथी लण्ठाधिराज को विदा करो और मेरे साथ जमानिया के तिलिस्मी बाग की तरफ चलो।

नानक–वहा क्या है ?

मनोरमा–बलभद्रसिह और इन्दिरा उसी में कैद है पहिले उन्हीं को छुडाकर तुम्हारे बाप को खुश करना मैं उचित समझते हूँ।

नानक–हा यह राय बहुत अच्छी है मैं अभी अपने साथी को समझा बुझा कर विदा करता हू।

इतना कह कर नानक अपने साथी के पास चला गया जो गाजे का दम लगा रहा था। मनोरमा का हाल नमक मिर्च लगाकर उससे कहा और समझा बुझाकर उसी अडडे पर जहा से आया था चले जाने के लिए राजी किया बल्कि उसे विदा करके पुन मनोरमा के पास चला गया।

मनोरमा–तुम्हारा साथी तो सहज ही में चला गया।

नानक–आखिर वह मेरे बाप का नौकर ही तो है अस्तु जो कुछ मै कहूगा उसे मानना ही पडेगा। हा तो अब तुम भी चलने के लिए तैयार हो जाओ।

मनोरमा–(खडी होकर) मै तैयार हू, आओ।

नानक–ऐसे नहीं मेरे बटुए में कुछ खाने की चीजें मौजूद है लोटा-डोरी भी तैयार है वह देखो सामने कूआ भी है अस्तु कुछ खापी कर आत्मा को हरा कर लेना चाहिए जिसमें सफर की तकलीफ मालूम न पडे।

मनोरमा–जो आज्ञा।

नानक ने बटुए में से कुछ खाने का निकाला और कूए मे से जल खींचकर मनोरमा के सामने रक्खा।

मनो–पहिले तुम खा लो फिर तुम्हारा जूठा जो बचेगा उसे मै खालूगी।

नानक–नहीं नहीं ऐसा क्या तुम भी खाओ और मै भी खाऊ !

मनो–ऐसा कदापि नहीं होगा अब मै तुम्हारी स्त्री हो चुकी और सच्चे दिल से हो चुकी फिर जैसा मेरा धर्म है वैसा ही करुगी।

नानक ने बहुत कहा मगर मनोरमा ने कुछ भी न सुना। आखिर नानक को पहिले खाना पडा। थोडा सा खाकर नानक ने जो कुछ छोड दिया, मनोरमा उसी को खाकर चलने को तैयार हो गई। नानक ने घोडा कसा और दोनों आदमी उसी पर सवार होकर जगल ही जगल पूरब की तरफ चल निकले। इस समय जिस राह से मनोरमा कहती थी नानक उसी राह से जाता था। शाम होते-होते ये दोनों उसी खडहर के पास पहुच जिसमें हम पहिले भूतनाथ और शेरसिह का हाल लिख आए है जहा राजा वीरेन्द्रसिह को शिवदत्त ने घेर लिया था जहा से शिवदत्त को रुहा ने चकमा देकर फसाया था या जिसका हाल ऊपर कई दफे लिखा जा चुका है।

मनो–अब यहाँ ठहर जाना चाहिये !

नानक–क्यों ?

मनो–यह तो आपको मालूम हो ही चुका होगा कि इस खण्डहर में से एक सुरग जमानिया के तिलिस्मी बाग तक गई हुई है।

नानक–हा इसका हाल मुझे अच्छी तरह मालूम हो चुका है। इसी सुरग की राह से मायारानी या उसके मददगारों ने पहुँच कर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह के साथ और भी कई आदमियों को गिरफ्तार कर लिया था।

मनो–तो अब मै चाहती हूँ कि उसी राह से जमानिया वाले तिलिस्मी बाग के दूसरे दर्जे में पहुँचू और दोनों कैदियों को इस तरह निकाल बाहर करू कि किसी को किसी तरह का गुमान न होने पावे। मै इस सुरग का हाल अच्छी तरह

जानतीं हू इस राह से कई दफे आई और गई हूँ। इतना नहीं बल्कि इस सुरग की राह से जान में और भी एक बात का सुबीता है।

नानक–वह क्या ?

मनो–इस सुरग में बहुत सी चीजें ऐसी है जिन्हें हम लोग हजारों रूपये खर्चने और वर्षों परेशान होन पर भी नहीं पा सकते और वे चीजें हम लोगों के बड़े काम की है जैसे ऐयारी के काम में आने लायक तरह-तरह की रोगनी पोशाकें जो न तो पानी में भींगें और न आग में जलें एक से एक बढ के मजबूत और हलके कमन्द पचासों तरह के नकाब तरह तरह की दवाइयाँ पचासों किस्म के अनमोल इत्र जो अब मयस्सर नहीं हो सकते इसके अतिरिक्त ऐश व आराम की भी सैकडों चीजें तुमको दिखाई देंगी जिन्हें अपने साथ लेते चलेंगे (धीरे से) और मायारानी का एक जवाहिरखाना भी इस सुरग में है।

नानक–वाह वाह तब तो जरूर इसी सुरग की राह चलना चाहिये इससे बढकर एक पन्थ दो काज हो ही नहीं सकता !

मनो–और इन सब चीजों की बदौलत हम लोग अपनी सूरत भी अच्छी तरह बदल लेंगे और दो चार हर्बे भी ले लेंगे।

नानक–ठीक है मै इस राह से जाने के फायदों को अच्छी तरह समझ गया मगर हरबों की हमें कुछ भी जरूरत नही है क्योंकि कमलिनी का दिया हुआ एक खजर ही मेरे पास ऐसा है जिसके सामने हजारों लाखों बल्कि करोडों हरबे झख मारें !!

मनो–(आश्चर्य से) सो क्या ? वह कैसा खजर है और कहा है ?

नानक–(खजर दिखा कर) यह मेरे पास मौजूद है जिस समय तुम इसके गुण सुनोगी तो आश्चर्य करोगी।

इतना कह कर नानक घोडे के नीचे उतर पड़ा और सहारा देकर मनोरमा को भी नीचे उतारा। मनोरमा ने एक पेड़ के नीचे बैठ जाने की इच्छा प्रकट की और कहा कि घोडे को छोड़ देना चाहिए क्योंकि इसकी अब हम लोगों को जरूरत नही रही।

नानक ने मनोरमा की बात मजूर की अर्थात् घोड़े को छोड़ दिया और कुछ देर तक आराम लेने की नीयत से दोनों आदमी एक पेड़ के नीचे बैठ गये। मनोरमा ने तिलिस्मी खजर का गुण पूछा और नानक ने शेखी के साथ बखान करना शुरू किया और अन्त में खजर का कब्जा दबा कर बिजली की रोशनी भी पैदा कर मनोरमा को दिखाया। चमक से मनोरमा की आखें चौंधिया गई और उसने दोनों हाथों से अपना मुह ढाप लिया। जब वह चमक बन्द हो गई तो नानक के कहने से मनोरमा ने आखें खोली और खजर की तारीफ करने लगी।

थोडी देर तक आराम करने बाद दोनों आदमी खण्डहर के अन्दर गये और उसी मामूली रास्ते से जिसका हाल कई दफे लिखा जा चुका है। उसी तहखाने के अन्दर गये जिसमें शेरसिह रहा करते थे या जिसमें से इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह गायब हुए थे। यह तो पाठकों को मालूम ही है कि राजा वीरेन्द्रसिह की सवारी आने के कारण इस खण्डर की अवस्था बहुत कुछ बदल गई थी और अभी तक बदली हुई है मगर इस तहखाने की हालत में किसी तरह का फर्क नहीं पडा था।

हमारे पाठक भूले न होंगे कि इस तहखाने में उतरने के लिए जो सीढिया थीं उनके नीचे एक छोटी सी कोठरी थी जिसमें शरेसिह अपना असबाब रक्खा करते थे और जिसमें से आनन्द कमला और तारासिह गायब हुए थे। मनोरमा की आज्ञानुसार नानक ने अपने ऐयारी के बटुए मेंसे मोमबत्ती निकालकर जलाई और मनोरमा के पीछे-पीछे उसी कोठरी में गया। यह कोठरी बहुत ही छोटी थी और इसके चारों तरफ की दीवार बहुत साफ और सगीन थी। मनोरमा ने एकतरफ की दीवार पर हाथ रख के कोई खटका या किसी पत्थर को दबाया जिसका हाल नानक को कुछ भी मालूम न हुआ मगर एक पत्थर की चट्टान भीतर की तरफ हट कर बगल में हो गई और अन्दर जाने के लिए रास्ता निकल आया। मनोरमा के पीछे-पीछे नानक उस कोठरी के अन्दर चला गया और इसके साथ ही वह पत्थर की सिल्ली बिना हाथ लगाये अपने ठिकाने चली गई तथा दर्वाजा बन्द हो गया। मनोरमा से नानक ने उस दर्वाजे को खोलने और बन्द करने की तर्कीब पूछी और मनोरमा ने उसका भेद बता दिया बल्कि उस दर्वाजे को एकदफे खोल के और बन्द करके भी दिखा दिया। इसके बाद दोनों आगे की तरफ बढे। इस समय जिस जगह ये दानों थे वह एक लम्बा-चौडा कमरा था मगर उसमें किसी तरफ जाने के लिए कोई दर्वाजा दिखाई नहीं देता था, हा एक तरफ दीवार में एक बहुत बडी आलमारी जरूर बनी हुई थी और उसका पल्ला किसी खटके के दबाने से खुला करता था। मनोरमा ने उसके खोलने की तर्कीब भी नानक को बताई और नानक ही के हाथ से उसका पल्ला भी खुलवाया। पल्ला खुलने पर मालूम हुआ कि यह भी एक

दरवाजा है और इसी जगह से सुरग में घुसना होता है। दोनों आदमी सुरग के अन्दर रवाना हुए। यह सुरग इस लायक थी कि तीन आदमी एक साथ मिल कर जा सकें।

लगभग पचास कदम जाने के बाद फिर एक कोठरी मिली जो पहली कोठरियों की बनिस्बत ज्यादे लम्बी-चौड़ी थी। इसमें चारों तरफ कई खुली आलमारियाँ थीं जो पचासों किस्म की चीजों से भरी हुई थीं। किसी में तरह-तरह के हरबे थे किसी में एयारी का सामान किसी में रगबिरग के बनावटी दाढ़ी,मूछ और नकाब इत्यादि थे और कई अलमारिया बोतलों और शीशियों से भरी हुई थीं। इनसामानों को देखकर नानक ने मनोरमा से कहा, "यह सब तो है मगर उस जवाहिरखाने का भी कहीं पता निशान है जिसका होना तुमने बयान किया था !

मनो–मैंने आपसे झूठ नहीं कहा था, वह जवाहिरखाना भी इसी सुरग में मौजूद है ।

नानक–मगर कहा है ?

मनोरमा–इस सुरग में और थोड़ी दूर जाने के बाद इसी तरह का एक कमरा पुन मिलेगा उसी कमरे में आप उन सब चीजों को देखेंगे। इस सुरग में जमानिया पहुँचने तक इस तरह के ग्यारह अड्डे या कमरे मिलेंगे जिनमें करोड़ों रुपये की सम्पत्ति देखने में आवेगी !

नानक–(लालच के साथ) जब कि तुम्हें यहा रास्ता मालूम है और ऐसी नादिर चीजें तुम्हारी जानी हुई है तो इन सभों को उठा कर अपने घर में क्यों नहीं ले जातीं !!

मनो–मायारानी की बदौलत मुझे किसी चीज की कमी नहीं है। रुपये, पैसे गहने, जवाहिरात और दौलत से मेरी तबीयत भरी हुई है इन सब चीजों की मैं कोई हकीकत नहीं समझती।

नानक–बेशक ऐसा ही है !

मनो–(बोतल और शीशियों से भरी हुई एक अलमारी की तरफ इशारा करके) देखो ये बोतले ऐशोआराम की जान खुशबूदार चीजों से भरी हुई हैं।

इतना कह मनोरमा फुर्ती के साथ उस आलमारी के पास चली गई और एक बोतल उठाकर उसका मुँह खोल और खूब सूघ कर बोली अहा सिवाय मायारानी के और तिलिस्म के राजा के ऐसी खुशबूदार चीजें और किसे मिल सकती है ?

इतना कह कर वह बोतल उसी जगह मुह बन्द करके रख दी और दूसरी बोतल उठा कर नानक के पास ले चली मगर वह बोतल उसके हाथ से छूट कर जमीन पर गिर पड़ी या शायद उसने जान-बूझकर ही गिरा दी। बोतल गिरने के साथ ही टूट गई और उसमें का खुशबूदार तेल चारों तरफ जमीन पर फैल गया। मनोरमा बहुत रज और अफसोस करने लगी और उसकी मुरौवत से नानक ने भी रज दिखाया। उस बोतल में जो तेल था वह बहुत ही खुशबूदार और इतना तेज था कि गिरने के साथ ही उसकी खुशबू तमाम कमरे में फैल गई और नानक उस खुशबू की तारीफ करने लगा।

नि सन्देह मनोरमा ने नानक को पूरा उल्लू बनाया। पहिले जो बोतल खोल के मनोरमा ने सूघी थी उसमें भी एक प्रकार की खुशबूदार चीज थी मगर उसमें यह असर था कि उसके सूघने बाद दो घण्टे तक किसी तरह की बेहोशी का असर सूघने वाले पर नही हो सकता था और जो दूसरी बोतल उसने हाथ से गिरा दी थी उसमें बहुत तेज बेहोशी का असर था जिसने नानक को तो चौपट ही कर दिया। वह उस खुशबू की तारीफ करता-करता ही जमीन पर लम्बा हो गया मगर मनोरमा पर उस दवा का कुछ भी असर न हुआ क्योंकि वह पहिले ही से एक दूसरी दवा सूघकर अपने दिमाग का बन्दोबस्त कर चुकी थी। नानक के हाथ से मनोरमा ने मोमबत्ती ले ली और एक किनारे जमीन पर जमा दी।

जब नानक अच्छी तरह बेहोश हो गया तो मनोरमा ने उसके हाथ से अगूठी उतार ली और फिर तिलिस्मी खजर के जोड की अगूठी उतार लेने के बाद तिलिस्मी खजर भी अपने कब्जे में कर लिया और और इसके बाद एक लम्बी सास लेकर कहा अब कोई हर्ज की बात नहीं है !

थोड़ी देर कुछ सोचने विचारने बाद मनोरमा ने एक हाथ में मोमबत्ती ली और दूसरे हाथ से नानक का पैर पकड़ घसीटती हुई बाहर कोठरी में ले आई। उस कोठरी का जिसमें से निकली थी दरवाजा बन्द कर दिया और साथ ही इसके एक तर्कीब ऐसी और भी कर दी कि नानक पुन उस दरवाजे को खोल न सके।

इन कामों से छुट्टी पाने बाद मनोरमा ने नानक की मुश्कें बाधी और हर तरह से बेकाबू करने बाद लखलखा सुघा कर होश में लाने का उद्योग करने लगी। थोडी ही देर बाद नानक होश में आ गया और अपने को हर तरह से मजबूर और सामने हाथ में उसी का जूता लिए मनोरमा को मौजूद पाया।

नानक–(आश्चर्य से) यह क्या ! तुमने मुझे धोखा दिया !!

मनो–(हंस कर) जी नहीं यह तो दिल्लगी की जा रही है ! क्या तुम नहीं जानते कि ब्याह-शादी में लोग दिल्लगी करते है ? मेरा कोई ऐसा नातेदार तो है नहीं जो तुमसे दिल्लगी करके ब्याह की रस्म पूरी करे इसलिए मै स्वय ही इस रस्म को पूरा किया चाहती हूं !!

इतना कह कर मनोरमा तेजी के साथ ब्याह की रस्म पूरी करने लगी। जब नानक सिर की खुजलाहट से दुःखी हो गया तो हाथ जोड़ कर बोला, ' ईश्वर के लिए मुझ पर दया करो, मैं ऐसी शादी से बाज आया मुझसे बड़ी भूल हुई।

मनो–(रुक कर) नहीं घबड़ाने की कोई बात नहीं है। मै तुम्हारे साथ किसी तरह की बुराई न करूंगी बल्कि भलाई करूंगी। मै देखती हूँ कि तुम्हारे हमजोली लोग सच्ची दिल्लगी से तुम्हे बड़ा दुःख देते है और तुम्हारी स्त्री भी यद्यपि तुम्हारे ही नातेदारों और मित्रों को प्रसन्न करके गहने कपड़े तथा सौगात से तुम्हारा घर भरती है मगर तुम्हारी नाक का कुछ भी मुलाहिजा नहीं करती अतएव तुम्हारी नाक पर हरदम शामत आती ही रहती है, इसलिए मैं दया करके तुम्हारी नाक ही को जड़ से उड़ा देना पसन्द करती हूं जिसमें आइन्दे के लिए तुम्हें कोई कुछ कह न सके। हां इतना ही नहीं बल्कि तुम्हारे साथ मे एक नेकी और भी किया चाहती हूं जिसका ब्योरा अभी कह देना उचित नहीं समझती।

नानक–क्षमा करो क्षमा करो, मै हाथ जोड़ कर कहता हूँ कि मुझे माफ करो! मैं कसम खा कर कहता हूं कि आज से मैं अपने को तुम्हारा गुलाम समझूंगा और जो कुछ तुम कहोगी वही करूंगा।

मनो–(हंस कर) अच्छा तो आज से तू मेरा गुलाम हुआ !

नानक–बेशक मैं आज से तुम्हारा गुलाम हुआ असली मर्द होऊंगा तो तुम्हारे हुक्म से मुंह न मोड़ूंगा।

मनो–(हंसती हुई) इसी मे तो मुझको शक है कि तेरी जात क्या है ! अस्तु कोई चिन्ता नहीं मै तुझे हुक्म देती हूं कि दो महीने तक अपने घर न जाइयो और बीच में अपने बाप या किसी दोस्त-नातेदार से भी न मिलियो इसके बाद जो इच्छा हो कीजियो मैं कुछ न बोलूंगी मगर मुझसे और मेरे पक्षपातियों से दुश्मनी का इरादा कभी न कीजियो !

नानक–ऐसा ही होगा।

मनो–अगर मेरी आज्ञा के विरुद्ध कोई काम करेगा तो तुझे जान से मार डालूंगी इसे खूब याद रखियो।

नानक–मै खूब याद रखूंगा और तुम्हारी आज्ञा के विरुद्ध कोई काम न करूंगा परन्तु कृपा करके मेरा खंजर तो मुझे दे दो !

मनो–(क्रोध से) अब यह खंजर तुझे नहीं मिल सकता खबरदार इसके मांगने या लेने की इच्छा न कीजियो अच्छा अब मैं जाती हूं।

इतना कह कर मनोरमा ने तिलिस्मी खंजर नानक के बदन से लगा दिया और जब वह बेहोश हो गया तो उसके हाथ पैर खोल दिये जलती हुई मोमबत्ती एक कोने में खड़ी कर दी और वहां से रवाना होकर खण्डहर के बाहर निकल आई। घोड़े को अभी तक खण्डहर के पास चरते देखा उसके पास चली गई अयाल पर हाथ फेरा दो चार दफे थपथपाया और फिर सवार होकर पश्चिम की तरफ रवाना हो गई।

इधर नानक भी थोड़ी देर बाद होश में आया। मोमबत्ती एक किनारे जल रही थी उसे उठा लिया और अपनी किस्मत को धिक्कार देता हुआ खण्डहर के बाहर होकर डरता और कांपता हुआ एक तरफ को चला गया।

दसवां बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह और राजा गोपालसिंह बात कर ही रहे थे कि वही औरत चमेली की टटटियों में फिर दिखाई दी और इन्द्रजीतसिंह ने चौंक कर कहा "देखिए वह फिर निकली !"

राजा वीरेन्द्रसिंह ने बड़े गौर से उस तरफ देखा और यह कहते हुए उस तरफ रवाना हुए कि आप दोनों भाई इसी जगह बैठे रहिये मैं इसकी खबर लेने जाता हूं।

जब तक राजा गोपालसिंह चमेली की टटटी के पास पहुंचे तब तक वह औरत पुनः अन्तर्ध्यान हो गई। गोपालसिंह थोड़ी देर तक उन्हीं पेड़ों में घूमते-फिरते रहे इसके बाद इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के पास लौट आए।

इन्द्रजीत–कहिए क्या हुआ ?

गोपाल–हमारे पहुंचने के पहिले ही वह गायब हो गई गायब क्या हो गई बस उसी दर्जे में चली गई जिसमें देवमन्दिर है। मेरा इरादा तो हुआ कि उसका पीछा करूं मगर यह सोचकर लौट आया कि उसका पीछा करके उसे गिरफ्तार करना घण्टे दो घण्टे का काम नहीं है बल्कि दो चार पहर या दो एक दिन का काम है क्योंकि देवमन्दिर वाले

दर्जे का वहुत वडा विस्तार है तथा छिप रहने योग्य स्थानों की भी वहा कमी नही है और मुझे इस समय इतनी फुर्सत नहीं। इसका खुलासा हाल तो इस समय आप लोगों स न कहूँगा हॉ इतना जरूर कहूगा कि जिस समय मै अपनी तिलिस्मी किताब लेने गया था और उसके न मिलने से दु खी होकर लौटना चाहता था उसी समय एक और भी दु खदायी खबर सुनने में आई जिसके सवव स मुझे कुछ दिन के लिए जमानिया तथा आप दोनों भाइयों का साथ छोड़ना आवश्यक हो गया है और दो घण्ट के लिए भी यहाँ रहना मै पसन्द नहीं करता फिर भी कोई चिन्ता की वात नहीं है आप लोग शौक से इस तिलिस्म के जिस हिस्से को तोड सकें तोडें मगर इस औरत का जो अभी दिखाई दी थी वहुत ध्यान रक्खें मेरा दिल यही कहता है कि मेरी तिलिस्मी किताव इसी औरत ने चुराई है क्योंकि यदि ऐसा न हो तो वह यहा तक कदापि नहीं पहुच सकती थी।

इन्द–यदि ऐसा हो तो कह सकते हैं कि वह हम लोगों के साथ भी दगा किया चाहती है।

गोपाल–नि सन्देह एसा है परन्तु यदि आप लोग उसकी तरफ से बेफिक्र न रहेंगे तो वह आप लागों का कुछ भी बिगाड न सकेगी साथ ही इसके यदि आप उद्योग में लगे रहेंगे तो वह किताब भी जो उसने चुराई है हाथ लग जायेगी।

इन्द–जो कुछ आपने आज्ञा दी है मै उस पर विशेष ध्यान रक्खूगा मगर मालूम होता है कि आपने कोई वहुत दुखदाई खवर सुनी है क्योंकि यदि ऐसा न होता तो इस अवस्था में अपनी तिलिस्मी किताव खो जाने की तरफ ध्यान न दे कर आप यहा से जाने का इरादा न करते।

आनन्द–और जब आप कही चुके हैं कि उसका खुलासा हाल न कहेंगे तो हम लोग पूछ भी नहीं सकते।

गोपाल–नि सन्देह ऐसा ही है मगर कोई चिन्ता नही आप लोग वुद्धिमान हैं और जैसा उचित समझें करे हा एक वात मुझे और भी कहनी है।

इन्द–वह क्या ?

गोपाल–(एक लपटा हुआ कागज लालटेन के सामने रखकर) जब मै उस औरत के पीछे चमेली की टट्टियों में गया तो वह औरत तो गायब हो गई मगर उसी जगह यह लपेटा हुआ कागज ठीक दर्वाजे के ऊपर ही पडा हुआ मुझे मिला पढो तो सही इसमें क्या लिखा है।

इन्दजीतसिंह ने उस कागज को खोल कर पढा यह लिखा हुआ था –

'यह कोई आश्चर्य की वात नहीं है कि न तो आप लोग मुझे जानते हैं और न मै आप लोगों को जानती हू, इसके अतिरिक्त जव तक मुझे इस वात का निश्चय न हो जाय कि आप लोग मेरे साथ किसी तरह की वुराई न करेंगे तव तक मै आप लोगों को अपना परिचय भी नहीं दे सकती हॉ इतना अवश्य कह सकती हू कि मै बहुत दिनों से कैदियों की तरह इस तिलिस्म में पड़ी हू। यदि आप लोग दयावान और सज्जन हैं तो मुझे इस कैद से अवश्य छुडावेंगे।

–कोई दु खिनी।

गोपाल–(आश्चर्य से) यह तो एक दूसरी ही वात निकली !

इन्द–ठीक है मगर इसके लिखने पर हम लोग विश्वास ही क्यों कर सकते हैं ?

गोपाल–आप सच कहते हैं हम लोगों को इसके मिलने पर यकायक विश्वास न करना चाहिए। खैर मैं जाता हू आप जो उचित समझेंगे करेंगे। आइए इस समय हम लोग एक साथ बैठ के भोजन तो कर लें फिर क्या जाने कव और क्योंकर मुलाकात हो।

इतना कहकर गोपालसिंह ने वह चगेर जो अपने साथ लाए थे और जिसमें खाने की अच्छी अच्छी चीजें थीं आगे रक्खीं और तीनों भाई एक साथ भोजन और वीच वीच में बातचीत भी करने लगे। जव खाने से छुट्टी मिली तो तीनों भाइयों ने नहर में से जल पीया और मुह धोकर निश्चिन्त हुए इसके बाद कुअर इन्दजीतसिंह और आनन्दसिंह को बहुत कुछ समझा बुझा और वहा से देवमन्दिर में जाने का रास्ता बताकर राजा गोपालसिंह वहाँ से रवाना हो गये।

ग्यारहवां बयान

राजा गोपालसिंह के चले जाने के बाद दोनों कुमारों ने बातचीत करते-करते ही रात बिता दी और सुबह को दोनों भाई जरूरी कामों से छुट्टी पाकर फिर उस बाजे वाले कमरे की तरफ रवाना हुए। जिस राह से इस बाग में आये थे वह दरवाजा अभी तक खुला हुआ था उसी राह से होते हुए दोनों तिलिस्मी बाजे के पास पहुँचे। इस समय आनन्दसिंह अपने तिलिस्मी खंजर से रोशनी कर रहे थे।

दानों भाइयों की राय हुई कि इस बाजे में जो भी कुछ बातें भरी हुई है उन्हें एक दफे अच्छी तरह सुन कर याद कर लेना चाहिए, फिर जैसा होगा देखा जायगा आखिर ऐसा ही किया। बाजे की ताली उनके हाथ लग ही चुकी थी और ताली लगाने के तरकीब उस तख्ती पर लिखी हुइ थी जो ताली के साथ मिली थी अस्तु इन्द्रजीतसिह ने बाजे में ताली लगाई और दोनों भाई उसकी आवाज गौर से सुनने लगे। जब बाजे का बोलना बन्द हुआ तो इन्द्रजीतसिह ने आनन्दसिह से कहा मैं बाज में ताली लगाता हू और तिलिस्मी खजर से रोशनी भी करता हू और तुम इस बाजे में से जो कुछ आवाज निकले सक्षेप रीति से लिखते चले जाओ। आनन्दसिह ने इसे कबूल किया और उसी किताब में जिसमें पहिले इन्द्रजीतसिह इस बाजे की कुछ आवाज लिख चुके थे,लिखने लगे। पहिले वह आवाज लिख गये जो अभी बाजे में से निकली थी इसके बाद इन्द्रजीतसिह ने इस बाजे का एक खटका दबाया और फिर ताली देकर आवाज सुनने तथा आनन्दसिह लिखने लगे।

इस बाजे में जितनी आवाजें भरी हुई थीं उनका सुनना और लिखना दो चार घण्टे का काम न था बल्कि कई दिन का काम था क्योंकि बाजा बहुत धीरे-धीरे चल कर आवाज देता था - और जो बात कुमार के समझ में न आती थीं उसे दोहरा कर सुनना पडता था अस्तु आज चार घण्टे तक दोनों कुमार उस बाजे की आवाज सुनने और लिखने में लगे रहे इसके बाद फिर उसी बाग में चले आये जिसका जिक्र ऊपर आ चुका है। बाकी का दिन और रात उसी बाग में बिताया और दूसरे दिन सवेरे जरूरी कामों स छुट्टी पाकर फिर तहखाने में घुसे तथा बाजे वाले कमरे में आकर फिर बाजे की आवाज सुनने और लिखने के काम में लगे। इसी तरह दोनों कुमारों को बाजे की आवाज सुनने और लिखने के काम में कई दिन लग गए और इस बीच में दोनों कुमारों ने तीन दफे उस औरत को देखा जिसका हाल पहिले लिखा जा चुका है और जिसकी लिखी एक चीठी राजा गोपालसिह के हाथ लगी थी। उस औरत के विषय में जो बातें लिखने योग्य हुई उन्हें हम यहाँ पर लिखते है।

राजा गोपालसिह क जाने के बाद पहिली दफे जब वह औरत दिखाई दी उस समय दोनों भाई नहर के किनारे बैठे बातचीत कर रह थे। समय सध्या का था और बाग की हर एक चीज साफ-साफ दिखाई दे रही थी। यकायक वह औरत उसी चमेली की झाडी में से निकलती दिखाई दी। वह दोनों कुमारों की तरफ तो नही आई मगर उन्हें दिखा कर कपडे का टुकडा जमीन पर रखने के बाद पुन चमेली की झाडी में घुसकर गायब हो गई।

इन्द्रजीतसिह की आज्ञा पाकर आनन्दसिह वहा गये और उस टुकडे का उठा लाए उस पर किसी तरह के रग से यह लिखा हुआ था —

'सत्पुरुषों के आगमन से दीन-दुखिया प्रसन्न होत हैं और सोचते है कि अब हमारा भी कुछ-कुछ भला होगा। मुझ दुखिया को भी इस तिलिस्म में सत्पुरुषों की बाट जोहते और ईश्वर से प्रार्थना करते बहुत दिन बीत गये परन्तु अब आप लोगों क आने से भलाई की आशा जान पडन लगी है। यद्यपि मेरा दिल गवाही देता है कि आप लोगों के हाथ से सिवाय भलाई के मेरी बुराइ नही हो सकती तथापि इस कारण से कि बिना समझे दोस्त-दुश्मन का निश्चय कर लेना नीति क विरुद्ध है मैं आपकी सेवा में उपस्थित न हुइ। अब आशा है कि आप अनुग्रह पूर्वक अपना परिचय देकर मेरा भ्रम दूर करेंगे।

—इन्दिरा।

इस पत्र के पढन से दोनों कुमारों को बडा ताज्जुब हुआ और इन्द्रजीतसिह की आज्ञानुसार आनन्दसिह ने उसके पत्र का यह उत्तर लिखा —

हम लोगों की तरफ से किसी तरह का खुटका न रक्खो। हम लोग राजा बीरेन्द्रसिह के लडके है और इस तिलिस्म को तोडने के लिए यहा आये है। तुम बेखटके अपना हाल हमसे कहो, हम लोग नि सन्देह तुम्हारा दु ख दूर करेंगे।

यह चीठी चमेली की झाडी में उसी जगह हिफाजत के साथ रख दी गई जहाँ स उस औरत की चीठी मिली थी। दो दिन तक वह औरत दिखाई न दी मगर तीसरे दिन जब दोनों कुमार बाज वाले तहखाने में से लौटे और उस चमेली की टटटी के पास गए ता ढूढन पर आनन्दसिह को अपनी लिखी हुई चीठी का जवाब मिला। यह जवाब भी एक छोटे से कपडे पर लिखा हुआ था जिसे आनन्दसिह न पढा मतलब यह था —

यह जान कर मुझ बडी प्रसन्नता हुई कि आप राजा बीरेन्द्रसिह क लडके है जिन्हें मैं बहुत अच्छी तरह जानती हूँ, इसलिए आपकी सेवा में बेखटके उपस्थित हो सकती हूँ मगर राजा गोपालसिह से डरती हूँ जो आपके पास आया करते है।

—इन्दिरा।

पुन कुअर इन्द्रजीतसिह की तरफ से यह जवाब लिखा गया -

'हम प्रतिज्ञा करते है कि राजा गोपालसिह भी तुम्हे किसी तरह का कष्ट न देंगे।

यह चीठी भी उसी मामूली ठिकाने पर रख दी गई और फिर दो रोज तक इन्दिरा का कुछ हाल मालूम न हुआ। तीसरे दिन सध्या होने के पहिले जब कुछ कुछ दिन बाकी था और दोनों कुमार उसी बाग में नहर के किनारे बैठे बातचीत कर रहे थे, यकायक उसी चमेली की झाडी में स हाथ मे लालटन लिए निकलती हुई इन्दिरा दिखाई पडी। वह सीधे उस तरफ रवाना हुई जहॉ दोनों कुमार नहर के किनारे बैठ हुए थे जब उनके पास पहुची लालटेन जमीन पर रख कर प्रणाम किया और हाथ जाड कर सामने खडी हो गई। इसकी सूरत-शक्ल के बारे में हमें जो कुछ लिखना था ऊपर लिख चुके है यहा पर पुन लिखने की आवश्यकता नहीं है हा इतना जरुर कहेंगे कि इस समय इसकी पोशाक में फर्क था। इन्द्रजीतसिह ने बडे गौर से इसे दखा और कहा बैठ जाओ और निडर होकर अपना हाल कहो।

इन्दिरा-(बैठ कर) इसीलिए तो मै सवा में उपस्थित हुई हू कि अपना आश्चर्यजनक हाल आपसे कहूँ। आप प्रतापी राजा बीरेन्द्रसिह के लडके है और इस योग्य है कि हमारा मुकदमा सुनें इन्साफ करें दुष्टों को दण्ड दें और हम लोगों को दु ख के समुद से निकाल कर बाहर करें।

इन्द्र-(आश्चय से) हम लोग ! क्या तुम अकली नहीं हो ! क्या तुम्हारे साथ कोई और भी इस तिलिस्म में दु ख भोग रहा है ?

इन्दिरा-जी हॉ मेरी मॉ भी इस तिलिस्म क अन्दर बुरी अवस्था में पडी है। मै तो चलन फिरने याग्य भी हू परन्तु वह बेचारी तो हर तरह से लाचार है। आप मेरा किस्सा सुनेंगे ता आश्चर्य करेंगे और नि सन्देह आपको हम लोगों पर दया आयेगी।

इन्द्र-हा हा हम सुनने के लिए तैयार है कहो और शीघ्र कहो।

इन्दिरा अपना किस्सा शुरू किया ही चाहती थी कि उसकी निगाह यकायक राजा गोपालसिह पर जा पडी जो उसके सामन और दोनों कुमारों के पीछ की तरफ से हाथ में लालटेन लिए हुए आ रहे थे। वह चौंक कर उठ खडी हुई और उसी समय कुँअर इन्द्रजीतसिह तथा आनन्दसिह ने भी घूम कर राजा गोपालसिह को देखा। जब राजा साहब दानों कुमारों के पास पहुँचे तो इन्दिरा ने प्रणाम किया और हाथ जाड कर खडी हा गई। कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह भी बड भाई का लिहाज करके खड हा गय। इस समय राजा गोपालसिह का चहरा खुशी के दमक रहा था और वे हर तरह से प्रसन्न मालूम होते थे।

इन्द्र-(गापालसिह से) आपने तो कई दिन लगा दिए !

गोपाल-हा एक ऐसा ही मालला आ पडा था कि जिसका पूरा पता लगाये बिना यहॉ आ न सका पर आज मै अपने पेट मे ऐसी खबरें भर के लाया हूँ कि जिन्हें सुन कर आप लोग बहुत प्रसन्न होंगे और साथ ही इसके आश्चर्य भी करेंग। मै सब हाल आपसे कहूँगा मगर (इन्दिरा की तरफ इशारा करक) इस लड़की का हाल सुन लेने के बाद (अच्छी तरह दख कर) नि सन्देह इसकी सूरत उस पुतली की ही तरह है।

आनन्द-कहिए भाई जी अब तो मैं सच्चा ठहरा न !

गोपाल-बेशक तो क्या इसने अपना हाल आप लोगों स कहा ?

इन्द्र-जी यह अपना हाल कहा ही चाहती थी कि आप दिखाई पड गये। यह यकायक हम लोगों के पास नहीं आई बल्कि पत्र द्वारा इसन पहिले मुझसे प्रतिज्ञा करा ली कि हम लोग इसका दु ख दूर करेंगे और आप (राजा गोपालसिह) भी इस पर खफा न होंगे।

गोपाल-(ताज्जुब से) मै इस पर क्यों खफा होने लगा ! (इन्दिरा से) क्यों जी तुम्हें मुझसे डर क्यों पैदा हुआ ?

इन्दिरा-इसलिए कि मेरा किस्सा आपके किस्से से बहुत सम्बन्ध रखता है और हा इतना भी मै इसी समय कह देना उचित समझती हूँ कि मेरा चेहरा जिसे आप लोग देख रहे है असली नहीं बल्कि बनावटी है। यदि आज्ञा हा तो इसी नहर के जल से मै मुह धो लू तब आश्चर्य नहीं कि आप मुझे पहिचान लें।

गोपाल-(ताज्जुब से) क्या मै तुम्हें पहिचान लूगा ?

इन्दिरा-यदि ऐसा हो ता आश्चर्य नहीं।

गोपाल-अच्छा अपना मुह धो डालो।

इतना कह कर राजा गोपालसिह लालटेन जमीन पर रख कर बैठ गए और कुअर इन्द्रजीतसिह तथा आनन्दसिह को भी बैठने क लिए कहा। जब इन्दिरा अपना चेहरा साफ करने के लिए नहर के किनारे चल कर कुछ आगे बढ गई तब इन तीनों में यों बातचीत होन लगी -

इन्द–हा यह तो कहिए आप क्या खबर लाए हे ?

गोपाल–यह किस्सा वहुत वडा है पहिले इस लडकी का हाल सुन ले तव कहें हा इसने अपना नाम क्या वताया था?

इन्द–इन्दिरा ।

गोपाल–(चौंक कर) इन्दिरा !

इन्द–जी हाँ ।

गोपाल–(सोचते हुए धीरे से) कौन सी इन्दिरा ? वह इन्दिरा तो नही मालूम पड़ती कोइ दूसरी होगी मगर शायद वही हो हाँ तो कह चुकी है कि मेरी सूरत वनावटी है आश्चर्य नही कि चेहरा साफ करने पर वही निकले अगर वही हो तो वहुत अच्छा है !

इन्द–खैर वह आती ही है सव हाल मालूम हो जायगा तव तक अपनी अनूठी खवरों में से दो एक सुनाइये।

गोपाल–यहा से जाने के वाद मुझे रोहतासगढ का पूरा पूरा हाल मालूम हुआ है क्योंकि आजकल राजा वीरेन्दसिह तेजसिह देवीसिह भैरोसिह तारासिह किशोरी कामिनी लाडिली और मेरी स्त्री लक्ष्मीदेवी इत्यादि सव कोई वहीं ही जुटे हुए हैं और एक अजीवागरीव मुकदमा पेश है ।

इन्द–(चौंक कर) लक्ष्मीदेवी !क्या उनका पता लग गया ?

गोपाल–हा लक्ष्मीदेवी वही तारा निकली जो कमलिनी के यहा उसकी सखी वन के रहती थी और जिसे आप जानते हैं ।

इन्द–(आश्चर्य से) वह लक्ष्मीदेवी थीं !

गोपाल–हा वह लक्ष्मीदेवी ही थी जो वहुत दिनों से अपने को छिपाए हुए दुश्मनों से वदला लेने का मौका ढूढ रही थी और समय पाकर अनूठे ढग से यकायक प्रकट हो गई । उसका किस्सा भी वडा अनूठा है ।

आनन्द–तो क्या आप रोहतासगढ गये थे ।

गोपाल–नहीं ।

इन्द–सो क्या ? इतना सव हाल सुन कर भी आप लक्ष्मीदेवी को देखने के लिए वहा क्या नहीं गये ?

गोपाल–वहा न जाने का सवव भी वतावेंगे ।

इन्द–खैर यह वताइये कि लक्ष्मीदेवी यकायक किस अनूठे ढग से प्रकट हो गई और रोहतासगढ में कौन सा अजीवोगरीव मुकदमा पेश है ?

गोपाल–मै सव हाल आपसे कहूगा देखिये वह इन्दिरा आ रही है पर कोइ चिन्ता नही अगर यह वही इन्दिरा है जो मैं सोच हुआ हू तो उसके सामने भी सव हाल वखटके कह दूगा ।

इतने ही में अपना चेहरा साफ करके इन्दिरा भी वहा आ पहुँची । चेहरा धोने और साफ करने से उसकी खूवसूरती में किसी तरह की कमी नहीं आई थी वल्कि वह पहिले से ज्यादे खूवसूरत मालूम पड़ती थी हा अगर कुछ फर्क पडा था तो केवल इतना ही कि वनिस्वत पहिलेके अव वह कम उम्र की मालूम पडती थी ।

इन्दिरा के पास आते ही और उसकी सूरत देखते ही गोपालसिह झट उठ खडे हुए और उसका हाथ पकड कर वोले है इन्दिरा !वेशक तू वही इन्दिरा है जिसके होने की मै आशा करता था !यद्यपि कई वर्षों के वाद आज किस्मत ने तेरी सूरत दिखाइ है और जव मैंने आखिरी मर्तव तेरी सूरत देखी थी तव तू निरी लडकी थी मगर फिर भी आज मै तुझे पहिचाने विना नहीं रह सकता। तू मुझसे डर मत और अपने दिल में किसी तरह का खुटका भी मत ला मुझे खूव मालूम हो गया है कि मेरे मामले में तू विल्कुल वेकसूर है। मै तुझे धर्म की लडकी समझता हू और समझूगा मेरे सामने वैठ जा और अपना अनूठा किस्सा कह। हा पहिले यह तो वता कि तेरी माँ कहाँ है ? कैद से छूटने पर मैंने उसकी वहुत खोज की मगर कुछ पता न लगा। निःसन्देह तेरा किस्सा वडा ही अनूठा होगा।

इन्दिरा–(वैठने के वाद आसू से भरी हुई आखों को आचल से पोंछती हुई) मेरी माँ वेचारी भी इसी तिलिस्म में कैद है !

गोपाल–(ताज्जुव से) इसी तिलिस्म में कैद है !

इन्दिरा–जी हा इसी तिलिस्म में कैद है। वड़ी कठिनाइयों से उसका पता लगाती हुई मैं यहा तक पहुची। अगर मैं यहा तक पहुचकर उससे न मिलती तो निःसन्देह वह अव तक मर गई होती। मगर न तो मैं उसे कैद से छुडा सकती हू और न स्वयं इस तिलिस्म के वाहर ही निकल सकती हू। दस-पन्द्रह दिन के लगभग हुए होंगे कि अकस्मात एक किताव मेरे हाथ लग गई जिसके पढने से इस तिलिस्म का कुछ-कुछ हाल मुझे मालूम हो गया है और मै यहा घूमने फिरने लायक भी हो गइ हू, मगर इस तिलिस्म के वाहर नही निकल सकती। क्या कहू उस किताव का मतलव पूरा-पूरा समझ में नहीं

आता यदि मै उसे अच्छी तरह समझ सकती तो नि सन्देह यहाँ से बाहर जा सकती और आश्चर्य नही कि अपनी माँ को छुडा लती।

गोपाल–वह किताव कौन सी है और कहा है ?

इन्दिरा–(कपड के अन्दर से एक छाटी सी किताव निकाल कर और गोपालसिह के हाथ में देकर) लीजिए यही है।

यह किताव लम्वाई-चौडाई में वहुत छाटी थी और उसके अक्षर भी वडे ही महीन थे मगर इसे देखते ही गोपालसिह का चेहरा खुशी से दमक उठा और उन्होंने इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह की तरफ देखकर , यही मरी वह किताव है जो खा गई थी। (किताब चूमकर) आह इसके खो जाने से तो मै अधमूआ सा हो गया था !(इन्दिरा से) यह तरे हाथ कैसे लग गई ?

इन्दिरा–इसका हाल भी वडा विचित्र है अपना किस्सा जव मे कहूगी तो उसी के वीच म वह भी आ जायगा।

इन्द–(गोपालसिह स) मालूम होता है कि इन्दिरा का किस्सा वहुत वडा है इसलिए आप पहिल रोहतासगढ का हाल सुना दीजिये तो एक तरफ से दिलजमयी हो जाय।

कमलिनी के मकान की तवाही किशोरी,कामिनी और तारा की तकलीफ नकली वलभदसिह के कारण भूतनाथ की परशानी लक्ष्मीदेवी,दारोगा और शेरअलीखाँ का राहतासगढ में गिरफ्तार होना राजा बीरेन्द्रसिह का वहा पहुचना भूतनाथ के मुकदमे की पशी कृष्णाजिन्न का पहुचकर इन्दिरा वाले कलमदान का पश करना और असली वलभदसिह का पता लगाने के लिए भूतनाथ को छुट्टी दिला देना इत्यादि जो कुछ बातें हम ऊपर लिख आय हैं वह सब हाल राजा गोपालसिह ने इन्दिरा के सामने ही दोनों कुमारों से वयान किया आर सभी न वडे गौर स सुना।

इन्दिरा–वडे आश्चर्य की बात है कि वह कलमदान जिस पर मेरा नाम लिखा हुआ था कृष्णाजिन्न के हाथ क्योंकर लगा ! हाँ उस कलमदान का हमारे कब्जे से निकल जाना वुहत ही बुरा हुआ। यदि आज वह मेरे पास होता तो मै वात की वात में भूतनाथ क मुकदम का फैसला करा देती मगर अव क्या हा सकता है !

गोपाल–इस समय वह कलमदान राजा वीरेन्द्रसिह के कब्जे में है इसलिए उसका तुम्हारे हाथ लगना कोई बडी वात नहीं है।

इन्दिरा–ठाक है मगर उन चीजों का मिलना तो अव कठिन हो गया जो उसके अन्दर थीं और उन्हीं चीजों का मिलना सवसे ज्यादे जरुरी था।

गोपाल–ताज्जुब नहीं कि वे चीजें भी कृष्णाजिन्न क पास हों और वह महाराज के कहन स तुम्हें द दें।

इन्द–या उन चीजों से स्वयम कृष्णाजिन्न वह काम निकालें जो तुम कर सकती हो ?

इन्दिरा–नहीं उन चीजों का मतलव जितना मे बता सकती हू उतना काई दूसरा नहीं बता सकता !

गोपाल–खैर जो कुछ होगा देखा जायगा।

आनन्द–(गोपालसिह से) यह सब हाल आपको कैसे मालूम हुआ ? क्या आपन कोई आदमी रोहतासगढ भेजा था ? या खुद पिताजी ने यह सब हाल कहला भेजा है ?

गोपाल–भूतनाथ स्वय मेरे पास मदद लेने के लिए आया था मगर मैंने मदद देने स इनकार किया ?

इन्द–(ताज्जुब से) ऐसा क्यों किया ?

गोपाल–(ऊची सास लेकर) विधाता क हाथों से मै वहुत सताया गया हू। सच तो यों है कि अभी तक मरे होशहवास ठिकान नहीं हुए इसलिए मै कुछ मदद करन लायक नहीं हू। इसके अतिरिक्त मै खुद अपनी तिलिस्मी किताव खा जाने के गम में पडा हुआ था मुझ किसी की वात कव अच्छी लगती थी।

इन्द–(मुस्कुरा कर) जी नहीं ऐसा करन का सवव कुछ दूसरा ही है मै कुछ-कुछ समझ गया खैर देखा जायगा अव इन्दिरा का किस्सा सुनना चाहिए।

गोपाल–(इन्दिरा स) अव तुम अपना हाल कहा यद्यपि तुम्हारा ओर तुम्हारी माँ का हाल मे वहुत कुछ जानता हू मगर इन दोनों भाइयों का उनकी कुछ भी खवर नहीं है वल्कि तुम दाना का कभी नाम भी शायद इन्होंने न सुना हागा ?

इन्द–वशक एसा ही है।

गोपाल–इसलिए तुम्हें चाहिए कि अपना और अपनी माँ का हाल शुरु से कह सुनाओ मै समझता हू कि तुम्हें अपनी माँ का कुछ हाल मालूम हागा ?

इन्दिरा–जो हाँ मै अपनी माँ का हाल खुद उसकी जुवानी आर कुछ इधर-उधर स भी पूरी तरह सुन चुकी हू।

गोपाल–अच्छा ता अव कहना आरम्भ करा।

इस समय रात घटे भर से कुछ ज्याद जा चुकी थी। इन्दिरा ने पहिले अपनी मॉ का और फिर अपना हाल इस तरह बयान किया —

इन्दिरा—मेरी मा का नाम सर्यू और पिता का नाम इद्रदेव है।

इन्द्र—(ताज्जुब से) कौन इन्द्रदेव ?

गोपाल—वही इन्द्रदेव जो दारोगा का गुरुभाई है जिसन लक्ष्मी देवी की जान बचाई थी और जिसका जिक्र मै अभी कर चुका हू।

इन्द्र—अच्छा तब !

इन्दिरा—मेरे नाना बहुत अमीर आदमी थे। लाखों रूपये की मौरूसी जायदाद उनके हाथ लगी थी और वह खुद भी बहुत पैदा करते थे मगर सिवाय मरी मॉ के उनको और कोई औलाद न थी इसलिए वह मेरी मा को बहुत प्यार करते थे और धन दौलत भी बहुत ज्यादे दिया करते थे। इसी कारण मेरी मा का रहना बनिस्यत ससुराल के नेहर में ज्यादे होता था। जिस जमाने का मै जिक्र करती हूँ उस जमाने में मेरी उम्र लगभग सात आठ वर्ष के होगी मगर मै बातचीत और समझबूझ में होशियार थी और उस समय की बात आज भी मुझे इस तरह याद है जैसे कल ही की बातें हों।

जाडे का मौसम था जब से मेरा किस्सा शुरू हाता है। मै अपने ननिहाल मे थी। आधी रात का समय था मैं अपनी मॉ के पास पलग पर सोई हुई थी। यकायक दरवाजा खुलने की आवाज आई और किसी आदमी को कमरे में आते देख मेरी मॉ उठ बैठी साथ ही इसके मेरी नींद भी टूट गई। कमरे के अन्दर इस तरह यकायक आने वाले मेरे नाना थे जिन्हें देख मेरी मॉ को बडा ही ताज्जुब हुआ और वह पलग के नीचे उतर कर खड़ी हो गई।

आनन्द—तुम्हारे नाना का क्या नाम था ?

इन्दिरा—मेरे नाना का नाम दामोदरसिह था और वे इसी शहर जमानिया मे रहा करते थे।

आनन्द—अच्छा तब क्या हुआ ?

इन्दिरा—मेरी मॉ को घबडाई हुई देखकर नाना साहब न कहा "सर्यू, इस समय यकायक मेरे आने से तुझे ताज्जुब होगा और नि सन्देह यह ताज्जुब की बात है भी मगर क्या करू किस्मत और लाचारी मुझसे ऐसा कराती है। सर्यू, इस बात को मै खूब जानता हू कि लड़की की अपनी मर्जी से ससुराल की तरफ विदा कर देना सभ्यता के विरुद्ध और लज्जा की बात है मगर क्या करु आज ईश्वर ही ने ऐसा करने के लिए मुझे मजबूर किया है। बटी आज मै जबर्दस्ती अपने हाथ से अपने कलेजे को निकाल कर बाहर फेंकता हू अर्थात् अपनी एक मात्र औलाद को (तुझको) जिसे दखे बिना कल नहीं पडती थी जबर्दस्ती उसके सुसराल की तरफ विदा करता हु। मैंने सभों की चोरी बालाजी को बुलवा भेजा है और मुझे खबर लगी हे कि दो घण्टे क अन्दर ही वह आया चाहते है। इस समय तुझे यह इतिला देने आया हूँ कि इसी घण्टे दो घण्टे के अन्दर तू भी अपने जाने की तैयारी कर ले ! इतना कहते-कहते नाना साहब का जी उमड़ आया गला भर गया, और उनकी ऑखों से टपाटप आसू की बूदे गिरन लगी—

इन्द्र—बालाजी किसका नाम है ?

इन्दिरा—मेरे पिता को मेरे ननिहाल में सब कोई बालाजी कहकर पुकारा करते थे।

इन्द्र—अच्छा फिर ?

इन्दिरा—उस समय अपने पिता की ऐसी अवस्था देखकर मेरी मॉ बदहवास हो गई और उखडी हुई आवाज मे बोली पिताजी यह क्या ? आप की ऐसी अवस्था क्यों हो रही है ? मै यह बात क्यों देख रही हूँ ? जो बात मैंने आज तक नहीं सुनी थी वह क्यों सुन रही हू। मैंनें ऐसा क्या कसूर किया है जो आज इस घर से निकाली जाती हू ?

दामोदरसिह ने कहा 'बेटी तूने कुछ कसूर नहीं किया, सब कसूर मेरा है। जो कुछ मैंने किया है उसी का फल भोग रहा हूँ बस इससे ज्यादे और मै कुछ नहीं कहा चाहता हॉ तुझसे मै एक बात की अभिलाषा रखता हू, आशा है कि तू अपने बाप की बात कभी न टालेगी। तू खूब जानती है कि इस दुनिया में तुझस बढकर मै किसी को नहीं मानता हू और न तुझसे बढकर किसी पर मेरा स्नेह है अतएव इसके बदले में केवल इतना ही चाहता हू कि इस अन्तिम समय में जो कुछ मै तुझ कहता हू उसे तू अवश्य पूरा करे और मेरी याद अपने दिल में बनाये रहे

इतना कहते-कहते मेरे नाना की बुरी हालत हा गई। आसुओं ने उनके रोआबदार चेहरे का तर कर दिया और गला ऐसा भर गया कि कुछ कहना कठिन हो गया। मेरी मॉ भी अपने पिता की विचित्र बातें सुनकर अधमुई सी हो गई। पितृस्नेह ने उसका कलेजा हिला दिया, न रुकने वाले ऑसुओं को पोंछकर और मुश्किल से अपने दिल को सम्हाल कर वह बोली पिताजी कहो शीघ्र कहो कि आप मुझसे क्या चाहते है ? मै आपके चरणों पर जान देने के लिए तैयार हू।

इसके जवाब में दामोदरसिह ने यह कह कर कि मैं भी तुझसे यही आशा रखता हू अपने कपडों के अन्दर से एक

नी यह नही जानता था कि आज दामोदरसिंह इतने बदहवास हो रहे है और अपनी लडकी को किसी लाचारी से इसी समय विदा कर रहे है।

थोड़ी देर बाद हम लोग विदा कर दिये गये। मेरी मा रोती हुई मुझे साथ लेकर रथ मे रवाना हुई जिसमें दो मजबूत घोड़े जुते हुए थे और इसी तरह के दूसरे रथ पर बहुत सा सामान लेकर मेरे पिता सवार हुए और हम लोग वहा से रवाना हुए। हिफाजत के लिए कई हथियारबन्द भी हम लोगों के साथ थे।

जमानिया से मेरे पिता का घर केवल तीस-पैंतीस कोस की दूरी पर होगा। जिस वक्त हम लोग घर से रवाना हुए, उस वक्त दो घण्टे रात बाकी थी और जिस समय हम घर पहुचे उस समय पहर भर से भी ज्यादे दिन बाकी था। मेरी मा तमाम रास्ते रोती गई और घर पहुचने पर भी कई दिनों तक उसका रोना बन्द न हुआ। मेरे पिता के रहने का स्थान बडा ही सुन्दर और रमणीक है मगर उसके अन्दर जाने का रास्ता बहुत ही गुप्त रक्खा गया है।

इस समय इन्दिरा ने इन्द्रदेव के मकान और रास्ते का थोडा सा हाल बयान किया और उसके बाद अपना किस्सा कहने लगी--

इन्दिरा--मेरे पिता तिलिस्म के दारोगा है और यद्यपि खुद भी बडे भारी ऐयार हैं तथापि उनके यहाँ कई नौकर है। उन्होंने अपने दो ऐयारो को इसलिए जमानिया भेजा कि वे एक साथ मिलकर या अलग-अलग होकर दामोदरसिंह जी की बदहवासी और परेशानी का पता गुप्त रीति से लगावें और यह मालूम करें कि वह कौन से दुश्मनों की चालबाजियों के शिकार हो रहे हैं। इस बीच मेरे पिता ने पुन मेरी माँ से कलमदान का हाल पूछा जो उसके पिता ने उसे दिया था और मेरी माँ ने उसका हाल साफ-साफ कह दिया अर्थात् जो कुछ उस कलमदान के विषय में दामोदरसिंह जी ने नसीहत इत्यादि की थी वह साफ-साफ कह सुनाया।

जिस दिन मै अपनी मा के साथ पिता के घर गई उसके ठीक पन्द्रहवे दिन सध्या के समय मेरे पिता के एक ऐयार ने यह खबर पहुचाई कि जमानिया में प्रात काल सरकारी महल के पास वाले चौमुहाने पर दामोदरसिंहजी की लाश पाई गई जो लहू से भरी हुई थी और सर का पता न था। महाराज ने उसको अपने पास उठवा मगाया और तहकीकात हो रही है। इस खबर को सुनते ही मेरी मा जोर जोर से रोने और अपना माथा पीटने लगी। थोडी देर बाद मेरे ननिहाल का भी एक दूत आ पहुँचा और उसने भी यही खबर सुनाई। पिताजी ने मेरी माँ को बहुत समझाया और कहा कि कमलदान देते समय तुम्हारे पिता ने तुमसे कहा था कि मेरे मरने के बाद इस कलमदान को खोलना मगर मेरे मरने का अच्छी तरह निश्चय कर लेना। उनका ऐसा कहना बेसबब न था। 'मरने का निश्चय कर लेना' यह बात उन्होंने नि सन्देह इसीलिए कही होगी कि उनके मरने के विषय में लोग हम सभों को धोखा देंगे यह बात उन्हें अच्छी तरह मालूम थी, अस्तु तुम अभी से रो रो कर अपने को हलकान मत करो और पहिले मुझे जमानिया जाकर उनके मरने के विषय में निश्चय कर लेने दो। यह जरूर ताज्जुब और शक की बात है कि उन्हे मार कर कोई उनका सर ले जाय और धड उसी तरह रहने दे। इसके अतिरिक्त तुम्हारी मा का भी बन्दोबस्त करना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वह किसी दूसरे ही की लाश के साथ सती हो जाये।

मेरी माँ ने जमानिया जाने की इच्छा प्रकट की परन्तु पिता ने स्वीकार न करके कहा कि यह बात तुम्हारे पिता को भी स्वीकार न थी नहीं तो अपनी जिन्दगी ही में तुम्हें यहाँ विदा न कर देते इत्यादि बहुत कुछ समझा-बुझा कर उसे शान्त किया और स्वय उसी समय दो तीन ऐयारों को साथ लेकर जमानिया की तरफ रवाना हो गए।

इतना कह कर इन्दिरा रुक गई और एक लम्बी सांस लेकर फिर बोली--

इन्दिरा--उस समय मेरे पिता पर जो कुछ मुसीबत बीती थी उसका हाल उन्हीं की जुबानी सुनना अच्छा मालूम होगा तथापि जो कुछ मुझे मालूम है मै बयान करती हू। मेरे पिता जब जमानिया पहुचे तो सीधे घर चले गए। वहाँ पर देखा तो मेरी नानी को अपने पति की लाश के साथ सती होने की तैयारी करते पाया क्योंकि देखभाल करने के बाद राजा साहब ने उनकी लाश उनके घर भेजवा दी थी। मेरे पिता ने मेरी नानी को बहुत कुछ समझाया और कहा कि इस लाश के साथ तुम्हारा सती होना उचित नहीं है कौन ठिकाना यह कार्रवाई धोखा देने के लिए की गई हो और यदि यह दूसरे की लाश निकली तो तुम स्वय विचार सकती हो कि तुम्हारा सती होना कितना बुरा होगा अस्तु तुम इसकी दाह-क्रिया होने दो और इस बीच में मै इस मामले का असल पता लगा लूंगा अगर यह लाश वास्तव में उन्हीं की होगी तो खूनी का या उनके सर का पता लगाना कोई कठिन न होगा, इत्यादि बहुत सी बातें समझा कर उनको सती होने से रोका और स्वय खूनियों का पता लगाने का उद्योग करने लगे।

आधी रात का समय था सर्दी खूब पड़ रही थी। लोग लेहाफ के अन्दर मुह छिपाये अपने अपने घरों में सो रहे थे। मेरे पिता सूरत बदले और चेहरे पर नकाब डाल घूमते-फिरते उसी चौमुहाने पर जा पहुचे जहा मेरे नाना की लाश पाई गई थी। उस समय चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था वे एक दुकान की आड मे खडे होकर कुछ सोच रहे थे कि दाहिनी

तरफ से एक आदमी को आते देखा। वह आदमी भी अपने चेहरे को नकाब से छिपाए हुए था। मेरे पिता को देखते ही देखते वह उस चौमुहाने पर कुछ रखकर पीछे की तरफ मुड गया। मेरे पिता ने पास जाकर देखा तो एक लिफाफे पर नजर पड़ी उसे उठा लिया और घर लौट आये। शमादान के सामने लिफाफा खोला उसके अन्दर एक चिट्ठी थी और उसमें यह लिखा था –

दामोदरसिंह के खूनी का जो पता लगाना चाहे उसे अपनी तरफ से भी होशियार रहना चाहिए। ताज्जुब नहीं कि उसकी भी वही दशा हो जो दामोदरसिंह की हुई।

इस पत्र को पढकर मेरे पिता तरद्दुद में पड गये और सवेरा होने तक तरह-तरह की बातें सोचते-विचारते रहे, उन्हें आशा थी कि सवेरा होने पर उनके ऐयार लोग घर लौट आयेंगे और रात भर में जो कुछ उन्होंने किया है उसका हाल कहेंगे क्योंकि ऐसा करने के लिए उन्होंने अपने ऐयारों को ताकीद कर दी थी मगर उनका विचार ठीक न निकला अर्थात उनके ऐयार लौट कर न आये दूसरा दिन भी बीत गया और तीसरे दिन भी दो पहर रात जाते जाते तक मेरे पिता ने उन लोगों का इन्तजार किया मगर सब व्यर्थ था उन ऐयारों का हाल कुछ भी मालूम न हुआ। आखिर लाचार होकर स्वयं उनकी खोज में जाने के लिए तैयार हो गये और घर से बाहर निकला ही चाहते थे कि कमरे का दर्वाजा खुला और महाराज के एक चोबदार को साथ लिए हुए नाना साहब का एक सिपाही कमरे के अन्दर दाखिल हुआ। पिता को बडा ताज्जुब हुआ और उन्होंने चोबदार से वहां आने का सबब पूछा चोबदार ने जवाब दिया कि आपको कुंअर साहब (गोपालसिंह) ने शीघ्र ही बुलाया है और अपने साथ लाने के लिए मुझे सख्त ताकीद की है।

गोपाल–हां ठीक है मैंने उन्हें अपनी मदद के लिए बुलाया था क्योंकि मेरे और इन्द्रदेव के बीच दोस्ती थी और उस समय मैं दिली तकलीफों से बहुत बेचैन था। इन्द्रदेव से और मुझसे अब भी वैसी ही दोस्ती है वह मेरा सच्चा दोस्त है चाहे बर्षों हम दोनों में पत्र व्यवहार न हो मगर दोस्ती में किसी तरह की कमी नहीं आ सकती।

इन्दिरा–बेशक ऐसा ही है। तो उस समय का हाल और उसके बाद मेरे पिता से और आपसे जो जो बातें हुई थीं सो आप अच्छी तरह बयान कर सकते हैं।

गोपाल–नहीं नहीं जिस तरह तुम और हाल कह रही हो उसी तरह वह भी कह जाओ मैं समझता हूं कि इन्द्रदेव ने यह सब हाल तुमसे कहा होगा।

इन्दिरा–जी हां इस घटना के कई वर्ष बाद पिताजी ने मुझसे सब हाल कहा था जो अभी तक मुझे अच्छी तरह याद है मगर मैं उन बातों को मुख्तसर ही में बयान करती हूं।

गोपाल–क्या हर्ज है तुम मुख्तसर में बयान कर जाओ जहां भूलोगी मैं बता दूंगा यदि वह हाल मुझे भी मालूम होगा।

इन्दिरा–जो आज्ञा। मेरे पिता जब चोबदार के साथ राजमहल में गये तो मालूम हुआ कि कुंअर साहब घर में नहीं है कहीं बाहर गये हैं। आश्चर्य में आकर उन्होंने कुंअर साहब के खास खिदमतगार से दरियाफ्त किया तो उसने जवाब दिया कि आपके पास चोबदार भेजने के बाद बहुत देर तक अकेले बैठकर आपका इन्तजार करते रहे मगर जब आपके आने में देर हुई तो घबडा कर खुद आपके मकान की तरफ चले गए। यह सुनते ही मेरे पिता घबडा कर वहां से लौटे और फौरन ही घर पहुँचे मगर कुंअर साहब से मुलाकात न हुई। दरियाफ्त करने पर पहरेदार ने कहा कि कुंअर साहब यहां नहीं आए है। वे पुनः लौटकर राजमहल में गये परन्तु कुंअर साहब का पता न लगना था और न लगा। मेरे पिता की वह तमाम रात परेशानी में बीती और उस समय उन्हें नाना साहब की बात याद आई जो उन्होंने मेरे पिताजी से कही थी कि अब जमानिया में बडा भारी उपद्रव उठा चाहता है।

तमाम रात बीत गई दूसरा दिन चला गया तीसरा दिन गुजर गया मगर कुंअर साहब का पता न लगा सैकडों आदमी खोज में निकले तमाम शहर में कोलाहल मच गया। जिसे देखिए वह इन्हीं के विषय में तरह-तरह की बातें कहता और आश्चर्य करता था। उन दिनों कुंअर साहब (गोपालसिंह) की शादी लक्ष्मीदेवी से लगी हुई थी और तिलिस्मी दारोगा साहब शादी के विरुद्ध बातें किया करते थे इस बात की चर्चा भी शहर में फैली हुई थी।

चौथे दिन आधी रात के समय मेरे पिता नाना साहब वाले मकान में फाटक के ऊपर वाले कमरे के अन्दर पलंग पर लेटे हुए कुँअर साहब के विषय में कुछ सोच रहे थे कि यकायक कमरे का दर्वाजा खुला और आप (गोपालसिंह) कमरे के अन्दर आते हुए दिखाई पडे। मुहब्बत और दोस्ती में बडाई-छुटाई का दर्जा कायम नहीं रहता। कुंअर साहब को देखते ही मेरे पिता उठ खडे हुए और दौडकर उनके गले से लिपट कर बोले क्यों साहब आप इतने दिनों तक कहां थे ?

उस समय कुंअर साहब की आंखों से आंसू की बूंदें टपटपा कर गिर रही थी चेहरे पर उदासी और तकलीफ की निशानी पाई जाती थी और उन तीन दिनों में ही उनके बदन की यह हालत हो गई थी कि महीनों के बीमार मालूम। पहले

थे। मेरे पिता ने हाथ-मुह धुलवाया तथा अपन पलग पर बैठा कर हाल-चाल पूछा और कुअर साहब ने इस तरह अपना हाल बयान किया –

'उस दिन मैने तुमको बुलाने क लिए चोबदार भेजा, तुम्हारे यहा से लौट कर आये उसके पहिले ही मेरे एक खिदमतगार ने मुझे इत्तिला दी कि इन्ददेव ने आपको अपने घर अकेले ही बुलाया है। मै उसी सम्य उठ खड़ा हुआ और अकेले तुम्हारे मकान की तरफ रवाना हुआ। जब आध रास्ते में पहुँचा तो तुम्हारे यहा का अर्थात् दामोदरसिह का खिदमतगार जिसका नाम रामप्यारे है मिला और उसने कहा कि इन्ददेव गगा किनारे की तरफ गये है और आपको उसी जगह बुलाया है। मैं क्या जानता था कि एक अदना खिदमतगार मुझसे दगा करेगा। मैं बेधड़क उसके साथ गगा के किनारे की तरफ रवाना हुआ। आधी रात से ज्यादे तो जा ही चुकी थी अतएव गगा किनारे बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ था। मैंने वहा पहुचकर जब किसी को न पाया तो उस नौकर से पूछा कि इन्द्रदेव कहा है ! उसने जवाब दिया कि ठहरिए आते होंगे। उस घाट पर केवल एक डोंगी बधी हुई थी मै कुछ विचारता हुआ उस डोंगी की तरफ देख रहा था कि यकायक दोनों तरफ से दस बारह आदमी चेहरे पर नकाब डाले हुए आ पहुँचे और उन सभों ने फुर्ती के साथ मुझे गिरफ्तार कर लिया। वे सब बडे मजबूत और ताकतवर थे और सब के सब एक साथ मुझसे लिपट गये, एक ने मेरे मुह पर एक मोटा सा कपडा डालकर ऐसा कस दिया कि न तो मै बोल सकता था और न कुछ देख सकता था। बात की बात मे मेरी मुश्कें बाध दी गई और जबर्दस्ती उसी डोंगी पर बैठा दिया गया जो घाट के किनारे बधी हुई थी। डोंगी किनारे से खोल दी गई और बडी तेजी से चलाई गई। मै नहीं कह सकता कि वे लोग कै आदमी थे और दो ही घण्टे में जब तक कि मै उस उर सवार था डोंगी को लेकर कितनी दूर ले गये। जब लगभग दो घण्टे के बीत गये तब डोंगी किनारे लगी और मै उस पर स उतार कर एक घोड़े पर चढाया गया मेरे दानों पैर नीचे की तरफ मजबूती के साथ बॉध दिये गये हाथ की रस्सी ढीली कर दी जिसमें मै घोडे की काठी पकड सकूँ और घोड़ा तेजी के साथ एक तरफ को दौड़ाया गया। मै दोनों हाथों से घोडे की काठी पकडे हुए था। यद्यपि मै देखने और बोलने से लाचार कर दिया गया था मगर अन्दाज से और घोडे की टापों की आवाज से मालूम हो गया कि मुझे कई सवार घेरे हुए जा रहे है और मेरे घोड़े की भी लगाम किसी सवार के हाथ में है। कभी तेजी स और कभी धीरे-धीरे चलते-चलते दो पहर से ज्यादे बीत गए, पैरों में दर्द होने लगा और थकावट ऐसी जान पडने लगी कि मानों तमाम बदन चूर चूर हो गया है। इसके बाद घोड़ रोके गये और मै नीचे उतार कर एक पेड के साथ कस के बॉध दिया गया और उस समय मरे मुह का कपड़ा खोल दिया गया। मैने चारों तरफ निगाह दौडाई तो अपने को एक घने जगल में पाया। दस आदमी मोटे मुसडे और उनकी सवारी के दस घोड़े सामने खड़े थे। पास ही में पानी का एक चश्मा बह रहा था कई आदमी जीन खोलकर घोड़ों को ठडा करने और चराने की फिक्र में लगे और बाकी के शैतान हाथ मे नगी तलवार लेकर मेरे चारों तरफ खडे हो गये। मै चुपचाप सभों की तरफ देखता था और मुह से कुछ भी न बोलता था और न वे लाग ही मुझस कुछ बात करते थे। (लम्बी सॉस लेकर) यदि गर्मी का दिन होता तो शायद मेरी जान निकल जाती क्योंकि उन कम्बख्तों न मुझे पानी तक के लिए नहीं पूछा और स्वय खा पीकर ठीक हो गये अस्तु पहर भर के बाद फिर मेरी वही दुर्दशा की गई अर्थात् देखने और बोलने से लाचार करके घोड़े पर उसी तरह बैठाया गया और फिर सफर शुरु हुआ। पुन दो पहर से ज्यादे देर तक सफर करना पड़ा और इसके बाद मै घोड़े से नीचे उतारकर पैदल चलाया गया। मेरे पैर दर्द और तकलीफ से बेकार हो रहे थे मगर लाचारी ने फिर भी चौथाई कोस तक चलाया और इसके बाद चौखट लाघने की नौबत आई तब मैने समझा कि अब किसी मकान में जा रहा हूँ। मुझे चार दफे चौखट लाधनी पडी जिसके बाद मे एक खम्भे के साथ बाध दिया गया। तब मेरे मुह पर से कपड़ा हटाया गया।

*चौदहवा भाग समाप्त *

तिलिस्मी लेख

बाजे से निकली आवाज का मतलब यह है –

सारा तिलिस्म तोडने का खयाल न करो और इस तिलिस्म की ताली किसी चलती-फिरती से प्राप्त करो। इस बाजे में वे सब बातें भरी है जिनकी तुम्हें जरूरत है ताली लगाया करो और सुना करो। अगर एक ही दफ सुनने से समझ में न आवे तो दोहरा करके भी सुन सकते हो। इसका तर्कीब और ताली इसी कमरे में है ढूँढो। (देखिए–पृष्ठ ६४२)

महाराज सूर्यकान्त की तस्वीर के नीचे लिखे हुए बारीक अक्षरों वाले मजमून का अर्थ यह है –

खूब समझ के तब आगे पैर रक्खो

बाजे वाले चौतरे में खोजो तिलिस्मी खजर अपने देह से अलग मत करो नहीं तो जान पर आ बनेगी। (देखिए–पृष्ठ ६४५)

चन्द्रकान्ता सन्तति

पन्द्रहवाँ भाग

पहिला बयान

इन्दिरा वाली–कुँअर साहब ने एक लम्बी साँस लेकर फिर अपना हाल कहना शुरू किया और कहा–

कुँअर—जब मुह पर से कपडा हटा दिया गया तब मैने अपने को एक सजे हुए कमरे में देखा। वे ही आदमी जो मुझे यहाँ तक लाये थे अब भी मुझे चारो तरफ से घेरे हुए थे। छत के साथ बहुत सी कन्दीलें लटक रही थी और उनमें मोमबत्तियाँ जल रही थीं दीवारगीरों में रोशनी हो रही थी जमीन पर फर्श बिछा हुआ था और उस पर पचीस–तीस आदमी अमीराना ढंग की पोशाक पहिरे और सामने नंगी तलवारें रक्खे बैठे हुए थे मगर सभों का चेहरा नकाब से ढका हुआ था। तमाम रास्ते में और उस समय मेरे दिल की क्या हालत थी सो मैं ही जानता हूँ। एक आदमी ने जो सबसे ऊँची गद्दी पर बैठा हुआ था और शायद उस सभा का सभापति था,मेरी तरफ मुँह करके कहा "कुँअर गोपालसिंह तुम समझते होंगे कि मैं जमानिया के राजा का लड़का हूँ, जो चाहे सो कर सकता हूँ, मगर अब तुम्हें मालूम हुआ होगा कि हमारी सभा इतनी जबर्दस्त है कि तुम्हारे ऐसे के साथ भी जो चाहे सो कर सकती है। इस समय तुम हम लोगों के कब्जे में हो मगर नहीं हमारी सभा ईमानदार है। हम लोग ईमानदारी के साथ दुनिया का इन्तजाम करते है। तुम्हारा बाप बड़ा ही बेवकूफ है और राजा होने के लायक नहीं है। जिस दिन से वह अपने को महात्मा और साधू बनाये हुए है दयावान कहलाने के लिये मरा जाता है। दुष्टों को उतना दण्ड नहीं देता जितना देना चाहिए। इसी से तुम्हारे शहर में अब खूनखराबा ज्यादे होने लगा गया है मगर खूनी के गिरफ्तार हो जाने पर भी वह फिर खूनी को दया के वश में पड़कर प्राणदण्ड नहीं देता। इसी से अब हम लोगों को तुम्हारे यहां के बदमाशों का इन्साफ अपने हाथ में लेना पड़ा। तुम्हें खूब मालूम है कि जिस खूनी को तुम्हारे बाप ने केवल देशनिकाले का दण्ड देकर छोड़ दिया था उसकी लाश तुम्हारे ही शहर में किसी चौमुहाने पर पाई गई थी। आज तुम्हें यह भी मालूम हो गया कि यह कारवाई हमीं लोगों की थी। तुम्हारे शहर का रहने वाला दामोदरसिंह भी हमारी सभा का सभासद (मम्बर) था। एक दिन इस सभा ने लाचार होकर यह हुक्म जारी किया कि जमानिया के राजा को अर्थात तुम्हारे बाप को इस दुनिया से उठा दिया जाय क्योंकि वह गद्दी चलाने लायक नहीं है और तुमको जमानिया की गद्दी पर बैठाया जाय। यद्यपि दामोदरसिंह को भी नियमानुसार हमारा साथ देना उचित था मगर वह तुम्हारे बाप का पक्ष करके बेईमान हो गया अतएव लाचार होकर हमारी सभा ने उसे प्राणदण्ड दिया। अब तुम लोग दामोदरसिंह के खूनी का पता लगाना चाहते हो मगर इसका नतीजा अच्छा नहीं निकल सकता। आज इस सभा ने इसलिए तुम्हें बुलाया है कि तुम्हें हर बात से होशियार कर दिया जाय। इस सभा का हुक्म टल नहीं सकता तुम्हारा बाप अब बहुत जल्द इस दुनिया से उठा दिया जायगा और तुमको जमानिया की गद्दी पर बैठने का मौका मिलेगा। तुम्हें उचित है कि हम लोगों का पीछा न करो अर्थात यह जानने का उद्योग न करो कि हम लोग कौन हैं या कहाँ रहते हैं और अपने दोस्त इन्द्रदेव को भी ऐसा करने के लिए ताकीद कर दो नहीं तो तुम्हारे और इन्द्रदेव के लिए भी प्राणदण्ड का हुक्म दिया जायगा। बस केवल इतना ही समझाने के लिए तुम इस सभा में बुलाये गये थे और अब बिदा किये जाते हो।

इतना कहकर उस नकाबपोश ने ताली बजाई और उन्हीं दुष्टों ने जो मुझे वहां ले गये थे,मेरे मुँह पर कपड़ा डाल कर फिर उसी तरह कस दिया। खम्भे से खोल कर मुझे बाहर ले आये कुछ दूर पैदल चला कर घोड़े पर लादा और उसी तरह दोनों पैर कस कर बाँध दिये। लाचार होकर मुझे फिर उसी तरह का सफर करना पड़ा और किस्मत ने फिर उसी तरह मुझे तीन पहर तक घोड़े पर बैठाया। इसके बाद एक जंगल में पहुँच कर घोड़े पर से नीचे उतार दिया हाथ-पैर खोल दिये मुँह पर से कपड़ा हटा लिया और जिस घोड़े पर मैं सवार कराया गया था उसे साथ लेकर वे लोग वहां से रवाना हो गये। उस तकलीफ ने ऐसा बेदम कर दिया था कि दस कदम चलने की भी ताकत न थी और भूख-प्यास के मारे बुरी हालत हो गई थी दिन पहर भर से ज्यादे चढ़ चुका था पानी का बहता हुआ चश्मा मेरी आँखों के सामने था मगर मुझमे उठकर वहां तक जाने की ताकत न थी। घण्टे भर तक यों ही पड़ा रहा इसके बाद धीरे-धीरे चश्मे के पास गया खूब पानी पीया तब जी ठिकाने हुआ। मैं नहीं कह सकता कि किन कठिनाइयों से दो दिन में यहाँ तक पहुँचा हूँ। अभी तक घर नहीं गया पहिले तुम्हारे पास आया हूँ। हा धिक्कार है मेरी जिन्दगी और राजकुमार कहलाने पर ! जब मेरी रियाआ का इन्साफ बदमाशों के आधीन है तो मैं यहाँ का हाकिम क्योंकर कहलाने लगा? जब मैं अपनी हिफाजत

आप नहीं कर सकता तो प्रजा की रक्षा कैसे कर सकूगा ? बड खेद की बात है कि अदन दर्जे के बदमाश लोग हम पर मुकदमा करें और हम उनका कुछ भी न कर सकें हमारे हितैषी दामादरसिंह मार डाले गये और अब मेरे प्यारे पिता के मारन की फिक्र की जा रही है।

गोपालसिह–नि सन्देह उस समय मुझे बडा ही रज हुआ था। आज जब मै उन बातों का याद करता हूँ तो मालूम होता है कि उन लोगों को यदि मुन्दर की शादी मेरे साथ करना मन्जूर न होता तो नि सन्देह मुझ भी मार डालते और या फिर गिरफ्तार ही न करते।

इन्द्रजीत–ठीक है (इन्दिरा से) अच्छा तब !

इन्दिरा–मेरे पिता ने जब यह सुना कि दामोदरसिह के नौकर रामप्यारे ने कुँअर साहब का धोखा दिया तो उन्हें निश्चय हो गया कि रामप्यारे भी जरूर उस कमेटी का मददगार है। वे कुँअर साहब की आज्ञानुसार तुरन्त उठ खडे हुए और रामप्यारे की खोज में फाटक पर आये मगर खोज करने पर मालूम हुआ कि रामप्यार का पता नहीं लगता। लौटकर कुँअर साहब के पास गये और बाले जो सोचा था वही हुआ। रामप्यारे भाग गया आपका खिदमतगार भी जरूर भाग गया होगा।

इसके बाद कुअर साहब और मेरे पिता देर तक बातचीत करते रहे। पिता ने कुँअर साहब को कुछ खिला-पिला कर और समझा-बुझा कर शान्त किया और वादा किया कि मै उस सभा तथा उसके सभासदों का पता जरूर लगाऊगा। पहर भर रात बाकी होगी जब कुअर साहब अपने घर की तरफ रवाना हुए। कई आदमियों को सग लिए हुए मेरे पिता भी उनके साथ गए। राजमहल के अन्दर पैर रखते ही कुअर साहब को पहिले अपने पिता अर्थात बडे महाराज से मिलने की इच्छा हुई और वे मेरे पिता का साथ लिये हुए सीधे बडे महाराज के कमरे में चले गए मगर अफसोस उस समय बडे महाराज का देहान्त हो चुका था और यह बात सबसे पहिले कुँअर साहब ही को मालूम हुई थी। उस समय बडे महाराज पलग के ऊपर इस तरह पडे हुए थे जैसे कोई घोर निद्रा मे हो मगर जब कुअर साहब ने उन्हें जगाने के लिए हिलाया तब मालूम हुआ कि वे महानिद्रा के आधीन हो चुके हैं।

इन्दिरा के मुह से इतना हाल सुनते-सुनते राजा गोपालसिंह की आँखों में आसू भर आए और दोनों कुमारों के नेत्र भी सूखे न रहे। राजा साहब ने एक लम्बी सास लेकर कहा मेरी मा का देहान्त पहिले ही हो चुका था उस समय पिता के भी परलोक सिधारने से मुझे बडा ही कष्ट हुआ। (इंदिरा से) अच्छा आगे कहो।

इन्दिरा–बडे महाराज के देहान्त की खबर जब चारों तरफ फैली तो महल और शहर में बडा ही कोलाहल मचा मगर इस बात का खयाल कुअर साहब और मेरे माता-पिता के अतिरिक्त और किसी को भी न था कि बडे महाराज की जान भी उसी गुप्त कुमेटी ने ली है और न इन दोनों ने अपने दिल का हाल किसी से कहा ही। इसके दो-तीन बाद कुअर साहब जमानिया की गददी पर बैठे और राजा कहलाने लगे। इस बीच में मेरे पिता ने उस कुमेटी का पता लगाने के लिए बहुत उद्योग किया मगर कुछ पता न लगा। उन दिनों कई रजवाड़ो से मातमपुर्सी के खत आ रहे थे। रणधीरसिहजी (किशोरी के नाना) के यहा से मातमपुर्सी का खत लेकर उनके ऐयार गदाधरसिह* आये थे। गदाधरसिंह से और पिता से कुछ नातेदारी भी है जिसे मैं भी ठीक ठीक नहीं जानती और इस समय मातमपुर्सी की रसम पूरी करने के बाद मेरे पिता की इच्छानुसार उन्होंने भी मेरे ननिहाल ही में डेरा डाला जहा मेरे पिता रहते थे और इस बहाने से कई दिनों तक दिन रात दोनों आदमियों का साथ रहा। मेरे पिता ने यहाँ का हाल तथा उस गुप्त कुमेटी में कुँअर साहब के पहुँचाये जाने का भेद कह के गदाधरसिह से मदद मागी जिसके जवाब में गदाधरसिह ने कहा कि मैं मदद देने के लिये जी जान से तैयार हूँ परन्तु अपने मालिक की आज्ञा बिना ज्यादे दिन तक यहाँ ठहर नहीं सकता और यह काम दो चार दिन का नहीं। तुम राजा गोपालसिह से कहो कि वे मुझे मेरे मालिक से थोडे दिनों के लिए माँग लें तब मुझे कुछ उद्योग करने का मौका मिलेगा। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात आपने (गोपालसिह की तरफ बताकर) अपना एक सवार पत्र देकर रणधीरसिहजी के पास भेजा और उन्होंने गदाधरसिह के नाम राजा साहब का काम कर देने के लिए आज्ञापत्र भेज दिया।

---

*इसी गदाधरसिह ने जब नानक की मा से संयोग किया तो रघुबरसिह के नाम से अपना परिचय दिया था और इसके बाद भूतनाथ के नाम से अपने को मशहूर किया।

गदाधरसिह जव जमानिया में आए थे तो अकेले न थे वल्कि अपने तीन चार चलों को भी साथ लाये थे अस्तु अपने उन्हीं चेलों को साथ लेकर वे उस गुप्त कमेटी का पता लगाने के लिए तैयार हो गए। उन्होंने मेरे पिता से कहा कि इस शहर में रघुवरसिंह नामी एक आदमी रहता है जो वडा ही शैतान रिश्वती और वेईमान है मैं उसे फसा कर अपना काम निकालना चाहता हूँ मगर अफसोस यह है कि वह तुम्हारे गुरुभाई अर्थात तिलिस्मी दारोगा का दोस्त है और तिलिस्मी दारोगा को तुम्हारे राजा साहव वहुत मानत है खैर मुझे ता उन लोगों का कुछ खयाल नहीं है मगर तुम्हें इस वात की इत्तिला पहले से ही दिये देता हूँ। इसके जवाव में मेरे पिता ने कहा कि उस शैतान को मैं भी जानता हूँ यदि उसे फॉसने से कोई काम निकल सकता है तो निकालो और इस बात का कुछ ख्याल न करो कि वह मेरे गुरुभाई का दोस्त है। इसके बाद मेरे पिता और गदाधरसिह बहुत देर तक आपुस में सलाह करते रहे और दूसरे दिन गदाधरसिह ने लोगों के देखने में महाराज से विदा होकर अपने घर का रास्ता लिया। गदाधरसिह के जाने के बाद मेरे पिता भी उन्हीं लोगों का पता लगाने के लिए घूमने-फिरने और उद्योग करने लगे। एक दिन रात के समय मेरे पिता भेष बदल कर शहर में घूम रहे थे, अकस्मात घूमते-फिरते गगा किनारे उसी ठिकाने जा पहुँचे जहाँ (गोपालसिह की तरफ इशारा कर) इन्हें दुश्मनों ने गिरफ्तार कर लिया था। मेरे पिता ने भी एक डोंगी किनारे पर बँधी हुई देखी। उस समय उन्हें कुँअर साहब की बात याद आ गई और वे धीरे-धीरे चल कर डोंगी के पास जा खडे हुए। उसी समय कइ आदमियों ने यकायक पहुँच कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया। वे लोग हाथ में तलवारें लिये और अपने चेहरों को नकाब से ढके हुए थे। यद्यपि मेरे पिता के पास भी तलवार थी और उन्होंने अपने आपको बचाने के लिए बहुत कुछ उद्योग किया बल्कि दो एक आदमियों को जख्मी भी किया मगर नतीजा कुछ भी न निकला क्योंकि दुश्मनों ने एक मोटा कपड़ा बडी फुर्ती से उनके सर और मुँह पर डालकर उन्हें हर तरह से बेकार कर दिया। मुख्तसर यह कि दुश्मनों ने उन्हें गिरफ्तार करने के बाद हाथ-पैर बांध के डोंगी में डाल दिया डोंगी खोली गई और एक तरफ को तेजी के साथ रवाना हुइ। पिता के मुँह पर कपडा कसा हुआ था इसलिये वे देख नहीं सकते थे कि डोंगी किस तरफ जा रही है और दुश्मन गिनती में कितने हैं। दो घण्टे तक उसी तरह चले जाने के बाद वे किश्ती के नीचे उतारे गये और जबर्दस्ती एक घोडे पर चढाये गये दोनों पैर नीचे से कस के बाँध दिये गए और उसी तरह उस गुप्त कुमेटी में पहुँचाए गये जिस तरह कुँअर अर्थात गोपालसिह वहाँ पहुँचाए गय थ। उसी तरह मेरे पिता भी खम्भे के साथ कस के बाँध दिए गये और उनके मुँह पर से वह आफत का पर्दा हटाया गया। उस समय एक भयानक दृश्य उन्हें दिखाई दिया। जैसा कि कुँअर ने उनसे वयान किया था ठीक उसी तरह का सजा सजाया कमरा और वैसे ही बहुत से नकाबपोश वडे ठाठ क साथ वैटे हुए थे। पिता ने मेरी माँ का भी एक खम्भ के साथ वधी हुई और उस कलमदान को जो मेरे नाना ने दिया था सभापति के सामने एक छोटी सी चौकी के ऊपर रक्खे देखा। पिता को वडा ही आश्चर्य हुआ और अपनी स्त्री को भी अपनी तरह मजबूर देख कर मारे क्रोध के कॉपने लगे मगर कर ही क्या सकते थे साथ ही इसक उन्हें इस बात का भी निश्चय हो गया कि वह कलमदान भी कुछ इसी सभा से सम्बन्ध रखता है। सभापति ने मेरे पिता की तरफ देख कर कहा 'क्यों जी इन्द्रदेव तुम तो अपने को बहुत होशियार और चालाक समझते हो! हमने राजा गोपालसिह की जुवानी क्या कहला भेजा था? क्या तुम्हें नहीं कहा गया था कि तुम हम लोगों का पीछा न करो? फिर तुमने ऐसा क्यों किया? क्या हम लोगों से कोई वात छिपी रह सकती है! खैर अब बताओ तुम्हारी क्या सजा की जाय? देखो तुम्हारी स्त्री और यह कलमदान भी इस समय हम लोगों के आधीन है वेईमान दामोदरसिह ने तो इस कलमदान को गढे में डाल कर हम लोगों को फँसाना चाहा था मगर उसका अन्तिम वार खाली गया। इसके जवाब में मेरे पिता ने गभीर भाव से कहा नि सन्देह मै आप लोगों का पता लगा रहा था मगर वदनीयती के साथ नहीं बल्कि इस नीयन से कि मै भी आप लोगों की इस सभा में शरीक हो जाऊँ।

सभापति ने हँस कर कहा वहुत खासे! अगर ऐसा ही हम लोग धाखे में आने वाले हाते तो हम लोगों की सभा अव तक रसातल को पहुँच गई होती। क्या हम लोग नहीं जानते कि तुम हमारी सभा के जानी दुश्मन हो? वईमान दामादरसिह ने तो हम लोगों को चौपट करने में कुछ बाकी नहीं रक्खा था मगर वडी खुशी की वात है कि यह कलमदान हम लोगों को मिल गया और हमारी सभा का भद छिपा रह गया!

सभापति की इस वात से मेरे पिता को मालूम हा गया कि उस कलमदान में नि सन्देह इसी सभा का भेद वन्द है अस्तु उन्होंने मुस्कुराहट के साथ सभापति की वातों का यों जवाब दिया मुझे दुश्मन समझना आप लागों की भूल है अगर मै सभा का दुश्मन हाता तो अब तक आपलोगों को जहन्नुम म पहुँचा दिये होता। मै इस कलमदान को खोल कर इस सभा के भेदों से अच्छी तरह जानकार हो चुका हूँ और इन भेदों को एक दूसरे कागज पर लिख कर अपने एक मित्र को भी दे चुका हू। मै

पिता ने केवल इतना ही कहा था कि सभापति ने जिसकी आवाज स जाना जाता था कि घबडा गया है पूछा 'क्या

इन्दजीत–हाँ कह चुकी हो अच्छा तब ?

इन्दिरा–इन्ही दोनों ऐयारों की सूरत बन दुश्मनो ने हम लागों का धोखा दिया।

इन्दजीत–दुश्मन उस मकान के अन्दर गये कैसे ? तुम कह चुकी हो कि वहाँ का रास्ता बहुत टेढा और गुप्त है ?

इन्दिरा–ठीक है मगर कम्बख्त दारोगा उस रास्ते का हाल बखूबी जानता था और वही उस कमेटी का मुखिया था ताज्जुब नहो कि उसी ने उन आदमियों को भेजा हो।

इन्दजीत–ठीक है नि सन्देह ऐसा ही होगा अच्छा तब क्या हुआ ? उन्होंने क्योंकर तुम लोगों को धोखा दिया ?

इन्दिरा–सध्या का समय था जब मैं अपनी मा के साथ उस छोटे से नजरबाग में टहल रही थी जो बगले के बगल ही मे था। यकायक मेरे पिता के वे ही दोनों ऐयार वहाँ आ पहुँचे जिन्हें देख मेरी माँ बहुत खुश हुई और देर तक जमानिया का हालचाल पूछती रही। उन ऐयारों न बयान किया कि इन्ददेव ने तुम दोनों का जमानिया बुलाया है। हमलोग रथ लेकर आये हैं मगर साथ ही इसके उन्होंन यह भी कहा है कि यदि वे खुशी से आना चाहें तो ले आना नही तो लौट आना। मरी माँ का जमानिया पहुच कर अपनी माँ का देखने की बहुत ही लालसा थी वह कब देर करने लगी थी तुरन्त ही राजी हो गई और घण्टे भर के अन्दर ही सब तैयारी कर ली। ऐयार लोग मातबर समझे ही जाते हैं अस्तु ज्यादे खोज करने की काई आवश्यकता न समझी केवल दा लौंडियों को और मुझे साथ लेकर चल पडी कलमदान भी साथ ले लिया। हमारे दूसरे एयारों ने भी कुछ मना न किया क्योंकि वे भी धोखे में पड गये थे और उन ऐयारों का सच्चा समझ बैठे थे। आखिर हमलोग खोह के बाहर निकले और पहाडी के नीचे उतरने की नीयत से थोडी ही दूर आगे बढ़े थे कि चारो तरफ से दस पन्दरह दुश्मनों ने घेर लिया। अब उन ऐयारों ने भी रगत पलटी, मुझे और मेरी माँ को जबर्दस्ती बेहोशी की दवा सुघा दी। हम दानों तुरन्त ही बेहोश हो गए मैं नहीं कह सकती कि दोनों लौडियों की क्या दुर्दशा हुई मगर जब मैं होश में आई तो अपने को एक तहखाने में कैद पाया और अपनी माँ को अपने पास देखा जो मरे पहिले ही होश में आ चुकी थी और मेरा सर गाद में लकर रो रही थी। हम लोगों के हाथ पैर खुले हुए थे जिस कोठरी में हम लोग कैद थे वह लम्बी-चौडी थी और सामने की तरफ दर्वाजे की जगह लोह का जगला लगा हुआ था। जगले के बाहर दालान था और उसमें एक तरफ चढ़ने क लिए सीढियाँ बनी हुई थीं तथा सीढी के बगल ही में एक आले के ऊपर चिराग जल रहा था। मैं पहिले बयान कर चुकी हू कि उन दिनों जाड का मौसम था इसलिए हम लोगों को गर्मी की तकलीफ न थी। जब मैं होश में आई मेरी माँ ने रोना बन्द किया और मुझे बडी दर तक धीरज और दिलासा देने के बाद बोली 'बेटी अगर काई तुमस उस कलमदान के बारे में कुछ पूछे तो कह दीजियो कि कलमदान खोला जा चुका है मगर मैं उसके अन्दर का हाल नहीं जानती हा मरी मा तथा और भी कई आदमी उसका भेद जान चुके हैं। अगर उन आदमियों का नाम पूछे तो कह दीजियो कि मैं नाम नहीं जानती मेरी माँ को मालूम होगा। मैं यद्यपि लडकी थी मगर समझ-बूझ बहुत थी और उस बात को मेरी माँ ने कई दफे अच्छी तरह समझा दिया था। मेरी माँ ने कलमदान के विषय में ऐसा कहने के लिए मुझसे क्यों कहा सो मैं नहीं जानती शायद उसमे और दुष्टों स पहिले कुछ बातचीत हो चुकी हो मगर मुझे जो कुछ माँ ने कहा था उसे मैंने अच्छी तरह निबाहा। थोड़ी दर बाद पाँच आदमी उसी सीढी की राह से धडधडाते हुए नीचे उतर आए और मेरी माँ को जबर्दस्ती ऊपर ले गए। मैं जोर-जोर से रोती और चिल्लाती रह गई मगर उन लोगों ने मेरा कुछ भी ख्याल न किया और अपना काम करके चले गए।

मै उन लोगों की सूरत शक्ल के बारे में कुछ भी नहीं कह सकती क्योंकि वे लोग नकाब से अपने चेहरे छिपाये हुए थ। थोड़ी देर के बाद फिर एक नकाबपोश मेरे पास आया जिसके कपडे और कद पर ख्याल करके मैं कह सकती हू कि वह उन लोगों में स नहीं था जो मरी मा को ले गए थे बल्कि कोई दूसरा ही आदमी था। वह नकाबपाश मेरे पास बैठ गया और मुझे धीरज और दिलासा देता हुआ कहन लगा कि 'मैं तुझे इस कैद से छुडाऊगा'। मुझे उसकी बातों पर विश्वास हो गया और इसके बाद वह मुझसे बातचीत करने लगा।

नकाबपोश–क्या तुझे उस कलमदान के अन्दर का हाल पूरा-पूरा मालूम है ?

मैं–नहीं ?

नकाब–क्या तेरे सामने कलमदान खाला नही गया था ?

मैं–खोला गया था मगर उसका हाल मुझ नहीं मालूम हा मेरी माँ तथा कई आदमियों को मालूम है जिन्हें मेरे पिता ने दिखाया था।

नकाब–उन आदमियों के नाम तू जानती है ?

मैं–नहीं।

उसने कई दफे कई तरह से उलट फेर कर पूछा मगर मैंने अपनी बातों में फर्क न डाला और तब मैंने उससे अपनी माँ का हाल पूछा लेकिन उसने कुछ भी न बताया और मेरे पास से उठकर चला गया। मुझे खूब याद है कि उसके दो पहर बाद मैं जब प्यास के मारे बहुत दु खी हो रही थी तब फिर एक आदमी मेरे पास आया। वह भी अपने चेहरे को नकाब से छिपाए हुए था। मैं डरी और समझी कि फिर उन्हीं कम्बख्तों में से कोई मुझे सताने के लिए आया है मगर वह वास्तव में गदाधरसिह थे और मुझे उस कैद से छुडाने के लिए आए थे। यद्यपि मुझे उस समय यह खयाल हुआ कि कहीं यह भी उन दोनों ऐयारों की तरह मुझे धोखा न देते हों जिनकी बदौलत मैं घर से निकल कर कैदखाने में पहुँची थी मगर नहीं वे वास्तव में गदाधरसिह ही थे और उन्हें मैं अच्छी तरह पहिचानती थी। उन्होंने मुझे गोद में उठा लिया और तहखाने के ऊपर निकल कई पेचीले रास्तों से घूमते-फिरते मैदान में पहुँचे। वहा उनके दो आदमी एक घोडा लिए तैयार थे। गदाधरसिह मुझे लेकर घोडे पर सवार हो गये अपने आदमियों को ऐयारी भाषा में कुछ कह कर बिदा किया और खुद एक तरफ रवाना हो गए। उस समय रात बहुत कम बाकी थी और सवेरा हुआ चाहता था। रास्ते में मैंने उनसे अपनी मा का हाल पूछा उन्होंने उसका कुछ हाल अर्थात् मेरी मा का उस सभा में पहुँचना मेरे पिता का भी कैद होकर वहा जाना कलमदान की लूट तथा मेरे पिता का अपनी स्त्री को लेकर निकल जाना बयान किया और यह भी कहा कि कलमदान को लूट कर ले भागने वाले का पता नहीं लगा। लगभग चार-पाँच कोस चले जाने के बाद वे एक छोटी सी नदी के किनारे पहुँचे जिसमें घुटने बराबर से ज्यादा जल न था। उस जगह गदाधरसिह घोडे के नीचे उतरे और मुझे भी उतारा खुर्जी से कुछ मेवा निकाल कर मुझे खाने को दिया। मैं उस समय बहुत भूखी थी अस्तु मेवा खाकर पानी पिया इसके बाद वह फिर मुझे लेकर घोडे पर सवार हुए और नदी पार होकर एक तरफ को चल निकले। दो घण्टे तक घोडे को धीरे-धीरे चलाया और फिर तेज किया। दो पहर दिन के समय हम लोग एक पहाडी के पास पहुचे जहा बहुत ही गुन्जान जगल था और गदाधरसिह के चार-पाच आदमी भी वहा मौजूद थे। हम लोगों के पहुँचते ही गदाधरसिह के आदमियों ने जमीन पर कम्बल बिछा दिया कोई पानी लेने के लिए चला गया कोई घोडे को ठढा करने लगा और कोई रसोई बनाने की धुन में लगा क्योंकि चावल दाल इत्यादि उन आदमियों के पास मौजूद था। गदाधरसिह भी मेरे पास बैठ गये और अपने बटुए में से कागज कलम दावात निकालकर कुछ लिखने लगे। मेरे देखते ही देखते तीन चार घण्टे तक गदाधरसिह ने बटुए में से कई कागजों को निकाल कर पढा और उनकी नकल की तब तक रसोई भी तैयार हो गई। हम लोगों ने भोजन किया और जब बिछावन पर आकर बैठे तो गदाधरसिह ने फिर उन कागजों को देखना और नकल करना शुरू किया। मैं रात भर की जगी हुई थी इसलिए मुझे नींद आ गई। जब मेरी आँखें खुलीं तो घण्टे भर रात जा चुकी थी उस समय गदाधरसिंह फिर मुझे लेकर घोडे पर सवार हुए और अपने आदमियों को कुछ समझा-बुझा कर रवाना हो गये। दो तीन घण्टे रात बाकी थी जब हम लोग लक्ष्मीदेवी के बाप बलभद्रसिह के मकान पर जा पहुँचे। बलभदसिह और मेरे पिता में बहुत मित्रता थी इसलिए गदाधरसिंह ने मुझे वहीं पहुँचा देना उत्तम समझा। दरवाजे पर पहुँचने के साथ ही बलभदसिहजी को इत्तिला करवाई गई। यद्यपि वे उस समय गहरी नींद में सोये हुए थे मगर सुनने के साथ ही निकल आए और बडी खातिरदारी के साथ मुझे और गदाधरसिह को घर के अन्दर अपने कमरे में ले गए जहाँ सिवाय उनके और कोई भी न था। बलभद्रसिह ने मेरे सर पर हाथ फेरा और बडे प्यार से अपनी गोद में बैठाकर गदाधरसिह से हाल पूछा। गदाधरसिंह ने सब हाल जो मैं बयान कर चुकी हूँ उनसे कहा और इसके बाद नसीहत की कि इन्दिरा को बडी हिफाजत से अपने पास रखिये जब तक दुश्मनों का अन्त न हो जाय तब तक इसका प्रकट होना उचित नहीं है मैं फिर जमानिया जाता हू और देखता हूँ कि वहाँ क्या हाल है। इन्द्रदेव से मुलाकात होने पर मैं इन्दिरा को यहाँ पहुँचा देना बयान कर दूँगा बलभद्रसिह ने बहुत ही प्रसन्न होकर गदाधरसिह को धन्यवाद दिया और वे थोडी देर तक बातचीत करने के बाद सवेरा होने के पहिले ही वहाँ से रवाना हो गये। गदाधरसिह के चले जाने के बाद बलभद्रसिहजी मुझसे बातचीत करते रहे और सवेरा हो जाने पर मुझे लेकर घर के अन्दर गये। उनकी स्त्री ने मुझे बडे प्यार से गोद में ले लिया और लक्ष्मीदेवी ने तो मेरी ऐसी कदर की जैसी कोई अपनी जान की कदर करता है। मुझे वहाँ बहुत दिनों तक रहना पडा था इसलिए मुझसे और लक्ष्मीदेवी से हद से ज्यादे मुहब्बत हो गई थी। मैं बडे आराम से उनके यहाँ रहने लगी। मालूम होता है कि गदाधरसिह ने जमानिया में जाकर मेरे पिता से मेरा सब हाल कहा क्योंकि थोडे ही दिन बाद मेरे पिता मुझे देखने के लिए बलभद्रसिह के यहा आये और उस समय उनकी जुबानी मालूम हुआ कि मेरी माँ पुन मुसीबत में गिरफ्तार हो गई अर्थात् महल में पहुँचने के साथ ही गायब हो गई। मैं अपनी माँ के लिए बहुत रोई मगर मेरे पिता ने मुझे दिलासा दिया। केवल एक दिन रह के मेरे पिता जमानिया की तरफ चले गये और मुझे वहाँ ही छोड गए।

मैं कह चुकी हूँ कि मुझसे और लक्ष्मीदेवी से बडी मुहब्बत हो गयी थी इसीलिए मैंने अपने नाना साहब और उस कलमदान का कुल हाल उससे कह दिया था और यह भी कह दिया था कि उस कलमदान पर तीन तस्वीरें बनी हुई है, दो

मगर वहा राजा साहब के बदले दारोगा को बैठे हुए पाया। मेरी सूरत देखते ही एक दफ दारागा क चेहर का रग उड गया मगर तुरन्त ही उसने अपने को सम्हाल कर मुझसे पूछा 'क्यों इन्दिरा क्या हाल है ? तू इतन दिनों तक कहा थी ? मुझे उस चाण्डाल की तरफ से कुछ भी शक न था इसलिये मै उसी से पूछ बैठी कि लक्ष्मीदेवी क बदले में मैं किसी दूसरी औरत का देखती हू, इसका क्या सबब है ।'यह सुनते ही दारोगा घबडा उठा और बोला 'नही नही तूने वास्तव में किसी दूसरे का देखा होगा लक्ष्मीदेवी ता उस बाग वाले कमरे में है। चल मै तुझे उसके पास पहुचा आऊ ।' मैने खुश होकर कहा कि चलो पहुचा दा ।'दारोगा झट उठ खडा हुआ और मुझे साथ लेकर भीतर ही भीतर बाग वाले कमर की तरफ बढा। वह रास्ता बिल्कुल एकान्त था। थाडी ही दूर जाकर दारागा ने एक कपडा मेरे मुह पर डाल दिया। आह उसमे किसी प्रकार की महक आ रही थी जिसके सबब दो तीन दफे से ज्यादे मै सास न ल सकी और बेहोश हा गई। फिर मुझे कुछ भी खबर न रही कि दुनियां के परद पर क्या हुआ और क्या हा रहा है।

गापाल—इन्दिरा की कथा के सम्बन्ध मे गदाधरसिंह (भूतनाथ) का हाल छूटा जाता है क्योकि इन्दिरा उस विषय में कुछ भी नही जानती इसलिये बयान नहीं कर सकती मगर बिना उसका हाल जाने किस्से का सिलसिला ठीक न होगा इसलिय मे स्वयम गदाधरसिंह का हाल बीच ही में बयान कर दना उचित समझता हूँ।

इन्द्र—हा हा जरूर कहिय कलमदान का हाल जाने बिना आनन्द नहीं मिलता।

गोपाल—उस गुप्त सभा में यकायक पहुच कर कलमदान को लूटने वाला वही गदाधरसिंह था। उसने कलमदान को खोल डाला और उसके अन्दर जो कुछ कागजात थ उन्हें अच्छी तरह पढा। उसमें एक ता वसीयतनामा था जा दामोदरसिंह ने इन्दिरा के नाम लिखा था और उसमें अपनी कुल जायदाद का मालिक इन्दिरा को ही बनाया था। इसके अतिरिक्त और सब कागज उसी गुप्त कुमेटी के और सब सभासदों के नाम लिखे हुए थे साथ ही इसके एक कागज दामोदरसिंह न अपनी तरफ स उस कुमेटी के विषय में लिख कर रख दिया था जिसके पढे स मालूम हुआ कि दामोदरसिंह उस सभा के मंत्री थे दामोदरसिंह के खयाल से वह सभा अच्छे कामों के लिए स्थापित हुई थी और उन आदमियों का सजा देना उसका काम था जिन्हें मेरे पिता दोष साबित होने पर भी प्राणदण्ड न देकर कवल अपने राज्य से निकाल दिया करते थे और एसा करने से रियाआ में नाराजी फैलती जाती थी। कुछ दिनों के बाद उस सभा में बेइमानी शुरू हा गई और उसके सभासद लाग उसके जरिये स रुपया पैदा करने लगे तभी दामोदरसिंह को भी उस सभा से घृणा हो गई परन्तु नियमानुसार वह उस सभा का छाड नहीं सकते थ और छोड दने पर उसी सभा द्वारा प्राण जान का डर था। एक दिन दारोगा ने सभा में प्रस्ताव किया कि बडे महाराज का मार डालना चाहिए। इस प्रस्ताव का दामोदरसिंह ने अच्छी तरह खण्डन किया मगर दारोगा की बात सबसे भारी समझी जाती थी इसलिए दामोदरसिंह की किसी ने भी न सुनी और बडे महाराज को मारना निश्चय हो गया। ऐसा करने से दारोगा और रघुबरसिंह का फायदा था क्योंकि वे दोनों आदमी लक्ष्मीदेवी के बदले में हलासिंह की लडकी मुन्दर के साथ भरी शादी कराया चाहते थ और बडे महाराज के रहते यह बात बिल्कुल असम्भव थी। आखिर दामोदरसिंह ने अपनी जान का कुछ ख्याल न किया और सभा सम्बन्धी मुख्य कागज और सभा के सभासदों (मेम्बरों) का नाम तथा अपना वसीयतनामा लिख कर कलमदान में बन्द किया और कलमदान अपनी लड़की के हवाल कर दिया जैसा कि आप इन्दिरा की जुबानी सुन चुके है। जब गदाधरसिंह को सभा का कुल हाल जितने आदमियों को सभा मार चुकी थी उनके नाम और सभा के मेम्बरों के नाम मालूम हो गये तब उसे लालच ने घेरा और उसने सभासदों से रूपये वसूल करने का इरादा किया। कलमदान में जितने कागज थे उसने सभों की नकल ले ली और असल कागज तथा कलमदान कहीं छिपा कर रख आया। इसके बाद गदाधरसिंह दारोगा के पास गया और उससे एकान्त में मुलाकात करके बोला कि 'तुम्हारी गुप्त सभा का हाल अब खुला चाहता है और तुम लोग जहन्नुम में पहुचा चाहते हो वह दामोदरसिंह का कलमदान तुम्हारी सभा से लूट ले जाने वाला मै ही हू, और मैने उस कलमदान के अन्दर का बिल्कुल हाल जान लिया। अब वह कलमदान मैं तुम्हारे राजा साहब के हाथ में देने के लिए तैयार हू। अगर तुम्हें विश्वास न हो तो इन कागजों को देखा जो मैं अपने हाथ से नकल करके तुम्हें दिखाने के लिए ले आया हूँ।

इतना कह कर गदाधरसिंह ने कागज दारागा के सामने फेंक दिये। दारोगा के तो होश उड गये और मौत भयानक रुप से उसकी आंखों के सामने नाचने लगी। उसने चाहा कि किसी तरह गदाधरसिंह को खपा (मार) डाले मगर यह बात असम्भव थी क्योंकि गदाधरसिंह बहुत ही काइया और हर तरह से होशियार तथा चौकन्ना था अतएव सिवाय उसे

का तो मैं नहीं जानती मगर बिचली तस्वीर मेरी है और उसके नीचे मेरा नाम लिखा हुआ है। जमानिया जाकर मेरे पिता ने क्या क्या काम किया सो मैं नहीं कह सकती परन्तु यह अवश्य सुनने में आया था कि उन्होंने बड़ी चालाकी और ऐयारी से उन कमेटी वालों का पता लगाया और राजा साहब ने उन सभों को प्राणदण्ड दिया।

गोपाल–निःसन्देह उन दुष्टों का पता लगाना इन्द्रदेव ही का काम था। जैसी-जैसी ऐयारियां इन्द्रदेव ने की वैसी कम ऐयारों को सूझेंगी। अफसोस उस समय वह कलमदान हाथ न आया नहीं तो सहज ही में सब दुष्टों का पता लग जाता और यही सबब था कि दुष्टों की सूची में दारोगा हेलासिंह या जैपालसिंह का नाम न चढ़ा और वास्तव में ये ही तीनों उस कुमेटी के मुखिया थे जो मेरे हाथ से बच गये और फिर उन्हीं की बदौलत मैं गारत हुआ।

इन्द्रजीत–ताज्जुब नहीं कि दारोगा के बारे में इन्द्रदेव ने सुस्ती कर दी हो और गुरुभाई का मुलाहिजा कर गये हों।

गोपाल–हो सकता है।

आनन्द–(इन्दिरा से) क्या उस कलमदान के अन्दर का हाल तुम्हें भी मालूम न था ?

इन्दिरा–जी नहीं अगर मुझे मालूम होता तो ये तीनों दुष्ट क्यों बचने पाते ? हाँ मेरी माँ उस कलमदान को खोल चुकी थी और उसे उसके अन्दर का हाल मालूम था मगर वह तो गिरफ्तार ही कर ली गई थी फिर उन भेदों को खोलता कौन ?

आनन्द–आखिर उस कलमदान के अन्दर का हाल तुम्हें कब मालूम हुआ ?

इन्दिरा–अभी थोड़े ही दिन हुए जब मैं कैदखाने में अपनी माँ के पास पहुँची तो उसने उस कलमदान का भेद बताया था।

आनन्द–मगर फिर उस कलमदान का पता न लगा ?

इन्दिरा–जी नहीं इसके बाद आज तक उस कलमदान का हाल मुझे मालूम न हुआ मैं नहीं कह सकती कि उसे कौन ले गया था ? वह क्या हुआ ? हाँ इस समय राजा साहब की जुबानी सुनने में आया कि वही कलमदान कृष्णाजिन्न ने राजा बीरेन्द्रसिंह के दरबार में पेश किया था।

गोपाल–उस कलमदान का हाल मैं जानता हूँ। सच तो यह है कि सारा बखेड़ा कलमदान ही के सबब से हुआ। यदि वह कलमदान मुझे या इन्द्रदेव को उस समय मिल जाता तो लक्ष्मीदेवी की जगह मुन्दर मेरे घर न आती और मुन्दर तथा दारोगा की बदौलत मेरी गिनती मुर्दों में न होती और न भूतनाथ ही पर आज इतने जुर्म लगाये जाते। वास्तव में उस कलमदान को गदाधरसिंह ही ने उन दुष्टों की सभा में से लूट लिया था जो आज भूतनाथ के नाम से मशहूर है। इसमें कोई शक नहीं कि उसने इन्दिरा की जान बचाई मगर कलमदान को छिपा लिया और उसका हाल किसी से न कहा। बड़े लोगों ने सच कहा है कि विशेष लोभ आदमी को चौपट कर देता है। वही हाल भूतनाथ का हुआ। पहिले भूतनाथ बहुत नेक और ईमानदार था और आजकल भी वह अच्छी राह पर चल रहा है मगर बीच में थोड़े दिनों तक उसके ईमान में फर्क पड़ गया था जिसके लिए आज वह अफसोस कर रहा है। आप इन्दिरा का और हाल सुन लीजिए फिर कलमदान का भेद मैं आपसे बयान करूँगा।

इन्द्रजीत–जो आज्ञा। (इन्दिरा से) अच्छा तुम अपना हाल कहो कि बलभद्रसिंह के यहां जाने बाद फिर तुम पर क्या बीती ?

इन्दिरा–मैं बहुत दिनों तक उनके यहां आराम से अपने को छिपाए हुए बैठी रही और मेरे पिता कभी-कभी वहां जाकर मुझसे मिल आया करते थे। यह मैं नहीं कह सकती कि पिता ने मुझे बलभद्रसिंह के यहां क्यों छोड़ रक्खा था। जब बहुत दिनों के बाद लक्ष्मीदेवी की शादी का दिन आया और बलभद्रसिंहजी लक्ष्मीदेवी को लेकर यहां आये तो मैं भी उनके साथ आई। (गोपालसिंह की तरफ इशारा करके) आपने जब मेरे आने की खबर सुनी तो मुझे अपने यहां बुलवा भेजा अस्तु मैं लक्ष्मीदेवी का जो दूसरी जगह टिकी हुई थी, छोड़ कर राजमहल में चली आई। राजमहल में चले आना ही मेरे लिए काल हो गया क्योंकि दारोगा ने मुझे देख लिया और अपने पिता तथा राजा साहब की तरह मैं भी दारोगा की तरफ से बेफिक्र थी। इस शादी में मेरे पिता मौजूद न थे। मुझे इस बात का ताज्जुब हुआ मगर जब राजा साहब से मैंने पूछा तो मालूम हुआ कि वे बीमार हैं इसीलिए नहीं आये। जिस दिन मैं राजमहल में आई उसी दिन रात को लक्ष्मीदेवी की शादी थी। शादी हो जाने पर सवेरे जब मैंने लक्ष्मीदेवी की सूरत देखी तो मेरा कलेजा धक से हो गया क्योंकि लक्ष्मीदेवी के बदले मैंने किसी दूसरी औरत को घर में पाया। हाय उस समय मेरे दिल की जो हालत थी मैं बयान नहीं कर सकती। मैं घबराई हुई बाहर की तरफ दौड़ी जिसमें राजा साहब को इस बात की खबर दूँ और इनसे इसका सबब पूछूँ। राजा साहब जिस कमरे में थे उसका रास्ता जनाने महल से मिला हुआ था अतएव मैं भीतर ही भीतर उस कमरे में चली गई

मगर वहा राजा साहब क बदले दारोगा को बैठे हुए पाया। मेरी सूरत देखते ही एक दफ दारागा क चहर का रग उड गया मगर तुरन्त ही उसने अपने को सम्हाल कर मुझसे पूछा क्यों इन्दिरा क्या हाल है ? तू इतने दिनों तक कहा थी ? मुझे उस चाण्डाल की तरफ से कुछ भी शक न था इसलिये मै उसी से पूछ बैठी कि लक्ष्मीदेवी क बदले में मै किसी दूसरी औरत का देखती हू, इसका क्या सबब है' ! यह सुनते ही दारोगा घबड़ा ... तूने वास्तव म किसी दूसरे को देखा होगा लक्ष्मीदेवी तो उस बाग वाले कमरे में है। चल मै तुझे उसक पास पहुचा आऊ ! मैने खुश होकर कहा कि चलो पहुचा दा ! दारागा झट उठ खडा हुआ और मुझे साथ लेकर भीतर ही भीतर बाग वाले कमर की तरफ बढा। वह रास्ता बिल्कुल एकान्त था। थाडी ही दूर जाकर दारोगा ने एक कपडा मेरे मुह पर डाल दिया। ओह उसमें किसी प्रकार की महक आ रही थी जिसके सबब दो तीन दफे से ज्यादे मै सास न ल सकी और बहोश हो गई। फिर मुझे कुछ भी खबर न रही कि दुनियॉ के परदे पर क्या हुआ और क्या हा रहा है।

गोपाल–इन्दिरा की कथा के सम्बन्ध मे गदाधरसिह (भूतनाथ) का हाल छूटा जाता है क्योकि इन्दिरा उस विषय में कुछ भी नहीं जानती इसलिये बयान नहीं कर सकती मगर बिना उसका हाल जाने किस्से का सिलसिला ठीक न होगा इसलिय मै स्वयम गदाधरसिह का हाल बीच ही में बयान कर देना उचित समझता हूँ।

इन्द्र–हा हा जरूर कहिये कलमदान का हाल जाने बिना आनन्द नहीं मिलता।

गोपाल–उस गुप्त सभा में यकायक पहुच कर कलमदान को लूटने वाला वही गदाधरसिह था। उसने कलमदान को खाल डाला और उसक अन्दर जा कुछ कागजात थ उन्हें अच्छी तरह पढा। उसमें एक ता वसीयतनामा था जा दामोदरसिह ने इन्दिरा के नाम लिखा था और उसमें अपनी कुल जायदाद का मालिक इन्दिरा को ही बनाया था। इसके अतिरिक्त और सब कागज उसी गुप्त कुमेटी के और सब सभासदों के नाम लिखे हुए थे साथ ही इसके एक कागज दामोदरसिह न अपनी तरफ स उस कुमेटी क विषय में लिख कर रख दिया था जिसक पढ से मालूम हुआ कि दामोदरसिह उस सभा के मत्री थे दामोदरसिह क खयाल से वह सभा अच्छ कामों क लिए स्थापित हुई थी और उन आदमियों का सजा देना उसका काम था जिन्हें मरे पिता दोष साबित होन पर भी प्राणदण्ड न देकर कवल अपन राज्य से निकाल दिया करते थे और एसा करमे से रियाआ में नाराजी फैलती जाती थी। कुछ दिनों के बाद उस सभा में बेइमानी शुरू हो गई और उसके सभासद लाग उसक जरिये स रुपया पैदा करन लगे तभी दामोदरसिह को भी उस सभा से घृणा हो गई परन्तु नियमानुसार वह उस सभा का छोड नहीं सकते थ और छोड दने पर उसी सभा द्वारा प्राण जान का डर था। एक दिन दारोगा ने सभा में प्रस्ताव किया कि बडे महाराज का मार डालना चाहिए। इस प्रस्ताव का दामोदरसिह ने अच्छी तरह खण्डन किया मगर दारोगा की बात सबसे भारी समझी जाती थी इसलिए दामोदरसिह की किसी ने भी न सुनी और बड महाराज को मारना निश्चय हो गया। ऐसा करने से दारागा और रघुबरसिह का फायदा था क्योकि ये दोनों आदमी लक्ष्मीदेवी के बदल में हलासिह की लडकी मुन्दर के साथ मरी शादी कराया चाहते थ और बडे महाराज के रहने यह बात बिल्कुल असम्भव थी। आखिर दामोदरसिह ने अपनी जान का कुछ ख्याल न किया ओर सभा सम्बन्धी मुख्य कागज और सभा के सभासदों (मेम्बरों) का नाम तथा अपना वसीयतनामा लिख कर कलमदान में बन्द किया और कलमदान अपनी लड़की के हवाले कर दिया जैसा कि आप इन्दिरा की जुबानी सुन चुके है। जब गदाधरसिह को सभा का कुल हाल, जितने आदमियों को सभा मार चुकी थी उनके नाम और सभा के मेम्बरों के नाम मालूम हो गये तब उसे लालच ने घेरा ओर उसने सभासदों से रुपये वसूल करन का इरादा किया। कलमदान में जितने कागज थे उसने सभों की नकल ले ली और असल कागज तथा कलमदान कहीं छिपा कर रख आया। इसके बाद गदाधरसिह दारोगा के पास गया और उससे एकान्त में मुलाकात करके बोला कि 'तुम्हारी गुप्त सभा का हाल अब खुला चाहता है और तुम लोग जहन्नुम में पहुचा चाहते हो, वह दामोदरसिह का कलमदान तुम्हारी सभा से लूट ले जाने वाला मै ही हू, और मैने उस कलमदान के अन्दर का बिल्कुल हाल जान लिया। अब वह कलमदान मै तुम्हारे राजा साहब के हाथ में देने के लिए तैयार हू। अगर तुम्हें विश्वास न हो तो इन कागजों को देखा जो मै अपने हाथ स नकल करके तुम्हें दिखाने के लिए ले आया हूँ।

इतना कह कर गदाधरसिह ने कागज दारागा के सामने फेंक दिये। दारोगा क तो होश उड गये और मौत भयानक रूप से उसकी आखों के सामने नाचने लगी। उसने चाहा कि किसी तरह गदाधरसिह को खपा (मार) डाले मगर यह बात असम्भव थी क्योंकि गदाधरसिह बहुत ही काइया और हर तरह से होशियार तथा चौकन्ना था अतएव सिवाय उसे

राजी करने के दारोगा को और काई वात न सूझी। आखिर वीस हजार अशर्फी चार राज के अन्दर दे देने के वाद पर दारागा न अपनी जान वचाई और कलमदान भूतनाथ से मॉगा भूतनाथ न वीस हजार अशर्फी लेकर दारोगा की जान छोड दने का वादा किया और कलमदान देना भी स्वीकार किया अस्तु दारोगा न उतने ही को गनीमत समझा और चार दिन क वाद वीस हजार अशर्फी गदाधरसिह का अदा करके आप पूरा कगाल वन वैठा। इसके वाद गदाधरसिंह ने और मम्वरों स भी कुछ वसूल किया और कलमदान दारागा का द दिया मगर दारोगा स इस वात का इकरारनामा लिखा लिया कि वह किसी एस काम में शरीक न हागा और न खुद ऐसा काम करगा जिसमें इन्द्रदेव सर्यू इन्दिरा और मुझ (गापालसिंह) को किसी तरह का नुकसान पहुच। इन सव कामों स छुट्टी पाकर गदाधरसिंह दारोगा स अपने घर के लिय विदा हुआ मगर वास्तव म वह फिर भी घर न गया और भष वदल कर इसलिए जमानिया में घूमने लगा कि रघुवरसिह क भेदों का पता लगाय जा वलभद्रसिंह के साथ विश्वासघात करने वाला था। वह फकीरी सूरत में रोज रघुवरसिह क यहा जाकर नौकर और सिपाहियों में वैठन और हलमेल वढान लगा। थोड ही दिनों में उसे मालूम हो गया कि रघुवरसिह अभी तक हलासिह से पत्र व्यवहार करता है और पत्र ल जान और पत्र ले आन का काम केवल वेनीसिंह करता है जो रघुवरसिह का मातवर सिपाही है। जव एक दफे वनीसिह हलासिह के यहा गया ता गदाधरसिंह ने उसका पीछा किया और मौका पाकर उस गिरफ्तार करना चाहा लकिन वनीसिह इस वात का समझ गया और दानों मे लडाई हा गई। गदाधरसिह क हाथ मे वनीसिंह मारा गया और गदाधरसिह वेनीसिह वन कर रघुवरसिह क यहा रहन तथा हलासिह के यहा पत्र लेकर जाने और जवाव ल आन लगा। इस हीले से तथा कागजों की चारी करन से थोड़ ही दिनों मे रघुवरसिह का सव भद उस मालूम हा गया और तव उसन अपने का रघुवरसिह पर प्रकट किया, लाचार हो रघुवरसिंह न भी उस वहुत सा रुपया देकर अपनी जान वचाई। यह किस्सा वहुत वडा है और इसका पूरा-पूरा हाल मुझे भी मालूम नहीं है जव भूतनाथ अपना किस्सा आप वयान करेगा तव पूरा हाल मालूम हागा फिर भी मतलव यह कि उस कमलदान की वदौलत भूतनाथ न रुपया भी वहुत पैदा किया और साथ ही अपन दुश्मन भी वहुत वनाए जिसका नतीजा यह अव भाग रहा है और कई नेक काम करन पर भी उसकी जान का अभी तक छुट्टी नहीं मिलती। केवल इतना ही नहीं जव भूतनाथ असली वलभद्रसिह का पता लगावगा तव और भी कई विचित्र वातों का पता लगगा। मैन ता सिर्फ इन्दिरा क किस्से का सिलसिला वैठान के लिए वीच ही म इतना वयान कर दिया।

इन्द्र–यह सव हाल आपका कव और कैस मालूम हुआ ?

गोपाल–जव आप ने मुझे कैद स छुडाया उसके वाद हाल ही म य सव वातें मुझ मालूम हुई हैं और जिस तरह मालूम हुई सा अभी कहन का मौका नहीं अव आप इन्दिरा का किस्सा सुनिए फिर जो कुछ शका रहेगी उसके मिटाने का उद्याग किया जायगा।

इन्दिरा–जो आज्ञा। दारोगा ने मुझे वेहोश कर दिया और जव मैं होश में आई ता अपने का एक लम्वे चौड कमरे में पाया। मरे हाथ-पैर खुले हुए थ और वह कमरा भी वहुत साफ और हवादार था। उसके दो तरफ की दीवार लकड़ी की थी और एक तरफ की ईंट और चून स वनी हुई थी। एक तरफ की दीवार में दो दर्वाज थे और दूसरी तरफ की पक्की दीवार में छाटी-छोटी तीन खिडकिया वनी हुई थीं जिनमें से हवा वखूवी आ रही थी मगर वे खिडकिया इतनी ऊची थीं कि उन तक मरा हाथ नहीं जा सकता था। वाकी दा तरफ की दीवारों में जो लकडी की थीं तरह-तरह की सुन्दर और वड़ी तस्वीरें वनी हुई थी और छत म दा रोशनदान थे जिनमें से सूर्य की चमक आ रही थी तथा उस कमरे में अच्छी तरह उजाला हा रहा था। एक तरफ की पक्की दीवार म जा दर्वाज थ उनमें स एक दर्वाजा खुला हुआ और दूसरा वन्द था। मै जव हाश में आई ता अपना सिर किसी की गोद में पाया। मै घवडा-कर उठ वैठी और उस औरत की तरफ देखन लगी जिसकी गाद म मेरा सिर था। वह मरे ननिहाल की वही दाई थी जिसन मुझे गाद म खिलाया था और जा मुझ वहुत प्यार करती थीं यद्यपि मै कैद म थी और मा-वाप की जुदाई में अधमुई हा रही थी फिर भी अपनी दाई को देखते ही थाडी देर के लिए सव दु ख भूल गई और ताज्जुव क साथ मैने उस दाइ से पूछा अन्ना तू यहा कैसे आई ? क्योंकि मै उस दाई को अन्ना कह क पुकारा करती थी।

अन्ना–वटी मै यह तो नही जानती कि तू यहा कव से है मगर मुझे आये अभी दो घण्टे स ज्यादा नहीं हुए। मुझे कम्वख्त दारोगा न धोखा देकर गिरफ्तार कर लिया और वेहाश करक यहा पहुचा दिया मगर इस तरह तुझे देखकर मै अपना दु ख विल्कुल भूल गई तू अपना हाल तो वता कि यहा कैसे आई ?

मैं–मुझ भी कम्वख्त दारोगा ही न वहोश करके यहाँ पहुँचाया है। राजा गापालसिहजी की शादी हो गई मगर जव मैन अपनी प्यारी लक्ष्मीदवी के वदले में किसी दूसरी औरत को वहा देखा तो घवड़ा कर इसका सवव पूछने के लिए राजा साहव क पास गई मगर उनक कमरे में केवल दारागा वैठा हुआ था, मै उसी से पूछ वैठी। वस यह सुनते ही वह मेरा दुश्मन हा गया धोखा देकर दूसर मकान की तरफ ल चला और रास्ते में एक कपडा मेरे मुह पर डाल कर वेहोश कर

दिया। उसके बाद की मुझे कुछ भी खबर नहीं है। दारोगा ने तुझे क्या कह के कैद किया ?

अन्ना–मैं एक काम के लिए बाजार में गई थी। रास्ते में दारोगा का नौकर मिला। उसने कहा कि इन्दिरा दारोगा साहब के घर में आई है उसने मुझे तुमको बुलाने के लिए भेजा है और बहुत ताकीद की है कि खडे-खडे सुनती जाओ। मैं उसकी बात सच समझ उसी वक्त दारोगा के घर चली गई मगर उस हरामजादे ने मेरे साथ भी बेईमानी की बेहोशी की दवा मुझे जबर्दस्ती सुघाई। मैं नहीं कह सकती थी कि एक घण्टे तक बेहोश रही या एक दिन तक पर जब मैं यहाँ पहुची तब मैं होश में आई उस समय केवल दारोगा नगी तलवार लिए सामने खडा था। उसने मुझसे कहा देख तू वास्तव में इन्दिरा के पास पहुचाई गई है। यह लडकी अकेले कैदखाने में रहने योग्य नहीं है इसलिए तू भी इसके साथकैद की जाती है और तुझे हुक्म दिया जाता है कि हर तरह इसकी खातिर और तसल्ली करियो और जिस तरह हो इस खिलाइयो पिलाइयो। देख उस कोने में खाने-पीने का सब सामान रक्खा है।

मैं–मरी नानी का क्या हाल है ? अफसोस। मैं तो उससे मिल भी न सकी और इस आफत में फॅस गई !

अन्ना–तेरी नानी का क्या हाल बताऊ, वह तो नाममात्र को जीती है अब उसका बचना कठिन है।

अन्ना की जुबानी अपनी नानी का हाल सुन के मैं बहुत रोई-कलपी। अन्ना ने मुझे बहुत समझाया और धीरज देकर कहा कि –ईश्वर का ध्यान कर उसकी कृपा से हम लाग जरूर इस कैद से छूट जायेंगे। मालूम होता है कि दारोगा तेरे जरिये से कोई काम निकालना चाहता है अगर ऐसा न होता ता वह तुझे मार डालता और तेरी हिफाजत के लिए मुझे यहाँ न लाता अस्तु जहाँ तक हो उसका काम पूरा न होन दना चाहिए। खैर-जब वह यहाँ आकर तुझसे कुछ कहे सुने तो तू मुझ पर टाल दिया कीजिया। फिर जो कुछ भी होगा मैं समझ लूगी। अब तू कुछ खा पी ले फिर जो कुछ होगा देखा जायगा।

अन्ना के समझान स मैं खाना-खाने के लिए तैयार हो गई। खाने-पीन का सामान सब उस घर में मौजूद था मैंने भी खाया-पीया इसके बाद अन्ना के पूछने पर मैंने अपना सब हाल शुरू से आखीर तक उसे कह सुनाया इतने में शाम हो गई। मैं कह चुकी हू कि उस कमरे की छत में रोशनदान बना हुआ था जिसमें से रोशनी बखूबी आ रही थी इसी रोशनदान के सबब से हम लोगों को मालूम हो गया कि सध्या हो गई है। थोडी ही देर बाद दर्वाजा खालकर दा आदमी उस कमरे में आये एक ने चिराग जला दिया और दूसरे ने खाने-पीने का ताजा सामान रख दिया और बासी बचा हुआ उठा कर ले गया। उसके जाने के बाद फिर मुझसे और अन्ना से बातचीत होती रही और दो घण्टे के बाद मुझे नींद आ गई।

इन्द–(गोपालसिह से) इस जगह मुझे एक बात का सन्देह हो रहा है। गोपाल–वह क्या ?

इन्द–इन्दिरा लक्ष्मीदेवी को पहिचानती थी इसलिए दारोगा ने उसे तो गिरफ्तार कर लिया मगर इन्द्रदेव का उसने क्या बन्दोबस्त किया क्योंकि लक्ष्मीदवी को तो इन्द्रदेव भी पहिचानते थे ?

गोपाल–इसका सबब शायद यह है कि ब्याह के समय इन्द्रदेव यहा मौजूद न थे और उसके बाद भी लक्ष्मीदेवी को देखने का उन्हें मौका न मिला। मालूम होता है कि दारोगा ने इन्द्रदेव से मिलने के बारे में नकली लक्ष्मीदेवी को कुछ समझा दिया था जिससे वर्षा तक मुन्दर ने इन्द्रदेव के सामने से अपने को बचाया और इन्द्रदेव ने भी इस बात की कुछ परवाह न की। अपनी स्त्री और लडकी के गम में इन्द्रदेव ऐसा डूबे कि वर्षो बीत जाने पर भी वह जल्दी घर से नहीं निकलते थे, इच्छा हाने पर कभी-कभी मैं स्वय उनसे मिलन के लिए जाया करता था। कई वर्ष बीत जाने पर जब मैं कैद हो गया और सभों ने मुझ मरा हुआ जाना तब इन्द्रदेव के खोज करने पर लक्ष्मीदेवी का पता लगा और उसने लक्ष्मीदेवी को कैद से छुडाकर अपने पास रक्खा। इन्द्रदेव का भी मेरा मरना निश्चय हो गया था इसलिए मुन्दर के विषय में उन्होंने ज्यादे बखेडा उठाना व्यर्थ समझा और दुश्मनों से बदला लेने के लिए लक्ष्मीदेवी को तैयार किया। कैद से छूटने के बाद मैं खुद इन्द्रदेव से मिलने के लिए गुप्त रीति से गया था तब उन्होंने लक्ष्मीदेवी का हाल मुझसे कहा था।

इन्द्र–इन्द्रदेव ने लक्ष्मीदेवी को कैद से क्योंकर छुडाया था और उस विषय में क्या किया सो मालूम न हुआ !

राजा गोपालसिह ने लक्ष्मीदेवी का कुल हाल जो हम ऊपर लिख आए हैं बयान किया और इसके बाद फिर इन्दिरा ने अपना किस्सा कहना शुरू किया।

इन्दिरा–उसी दिन आधी रात के समय जब मैं सोई हुई थी और अन्ना भी मेरे बगल में लेटी हुई थी यकायक इस तरह की आवाज आई जैसे किसी ने अपने सर पर से कोई गठरी उतार कर फॅकी हो। उस आवाज ने मुझे तो न जगाया मगर अन्ना झट उठ बैठी और इधर-उधर देखने लगी। मैं बयान कर चुकी हू कि इस कमरे में दो दर्वाजे थे। उनमें से एक दर्वाजा तो लोगों के आने-जाने के लिए था और वह बाहर से बन्द रहता था मगर दूसरा खुला हुआ था जिसके अन्दर मैं तो नहीं गई थी मगर अन्ना हो आई थी और कहती थी कि उसके अन्दर तीन कोठरिया हैं एक पायखाना है और दो कोठरिया खाली पडी हैं। अन्ना को शक हुआ कि उसी कोठरी के अन्दर स आवाज आई है। उसने सोचा कि शायद दारोगा का कोई आदमी यहा आकर उस कोठरी में गया हो। थोडी देर तक तो वह उसके अन्दर से किसी के निकलने की राह देखती रही मगर इसके बाद उठ खडी हुई। अन्ना थी तो औरत मगर उसका दिल बडा ही मजबूत था वह मौत

से भी जल्दी डरन वाली न थी। उसने हाथ में चिराग उठा लिया और उस कोठरी के अन्दर गई। पैर रखने के साथ ही उसकी निगाह एक गठरी पर पडी मगर इधरउधर दखा तो कोई आदमी नजर न आया। दूसरी कोठरी के अन्दर गई और तीसरी कोठरी म भी झाक के दखा मगर कोई आदमी नजर न आया तब उसन चिराग एक किनार रख दिया और उस गठरी को खोला। इतन ही में मेरी आख खुल गई और घर में अधेरा देखकर मुझे डर मालूम हुआ। मैंने हाथ फैला कर अन्ना को उठाना चाहा मगर वह तो वहा थी ही नहीं। मै घबराकर उठ बैठी। यकायक उस कोठरी की तरफ मेरी निगाह गई और उसके भीतर चिराग की रोशनी दिखाई दी। मैं घबराकर जोर-जोर से अन्ना अन्ना पुकारने लगी। मेरी आवाज सुनते ही वह चिराग और गठरी लिए बाहर निकल आई और बोली ले बेटी मै तुझे एक खुशखबरी सुनाती हू। मैं खुश होकर बोली क्या है अन्ना !

अन्ना ने यह कह कर गठरी मेरे आगे रख दी कि देख इस में क्या है ! मैंने बडे शौक से वह गठरी खोली मगर उसमें अपनी प्यारी मा के कपडे दख कर मुझे रुलाई आ गई। ये वही कपडे थे जो मेरी मा पहिन कर घर से निकली थी जब उन दोनों ऐयारों ने उसे गिरफ्तार कर लिया था और ये ही कपडे पहिरे हुए कैदखाने में मेरे साथ थी जब दुश्मनों ने जबर्दस्ती उसे मुझसे जुदा किया था। उन कपडों पर खून के छींटे पडे हुए थे और उन्हीं छींटों को देख कर मुझे रुलाई आ गई अन्ना ने कहा तू रोती क्या है मैं कह जो चुकी कि तेरे लिए खुशखबरी लाई हू, इन कपडों को मत देख बल्कि इसमें एक चीठी तेरी मा के हाथ की लिखी हुई है उसे देख ! मैंने उन कपडों को अच्छी तरह खोला और उसके अन्दर से वह चीठी निकाली मालूम होता है जब मैं अन्ना से यह कह के चिल्लाई तब वह जल्दी में इन सभों को लपेट कर बाहर निकल आई थी और जो हो मगर वह चीठी वह पढ चुकी थी क्योंकि वह पढीलिखी थी। मैं बहुत कम पढीलिखी थी केवल नाम लिखना जानती थी मगर अपनी मा के अक्षर अच्छी तरह पहिचानती थी क्योंकि वही मुझे पढना लिखना सिखाती थी। अस्तु चीठी खोल कर मैंने अन्ना को पढने के लिये कहा और अन्ना ने पढ कर मुझे सुनाया। उसमें यह लिखा हुआ था

मेरी प्यारी बेटी इन्दिरा

जितना मैं तुझे प्यार करती थी उससे ज्यादे तू भी मुझे उतना ही चाहती थी मगर अफसोस विधाता ने हम दोनों को जुदा कर दिया और मुझे तेरी भोली सूरत देखने के लिये तरसना पडा। परन्तु कोई चिन्ता नहीं यद्यपि मेरी तरह तू भी दुःख भोग रही है मगर तू चाहेगी तो मैं कैद से छूट जाऊगी और साथ ही इसके तू भी कैदखाने से बाहर होकर मुझसे मिलेगी। अब मेरा और तेरा दोनों का कैद से छूटना तेरे ही हाथ है और छूटने की तरकीब केवल यही है कि दारोगा साहब जो कुछ तुझे कहें उसे बेखटके कर दे।

अगर ऐसा करने में इनकार करेगी तो मेरी और तेरी दोनों की जान मुफ्त में जाएगी।

तेरी प्यारी मा–

सरयू

दूसरा बयान

अब हम रोहतासगढ किले के तहखाने में दुश्मनों से घिरे हुए राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह का कुछ हाल लिखते है।

जिस समय राजा वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह इत्यादि ने तहखाने के ऊपरी हिस्से से आई यह आवाज सुनी कि होशियार होशियार ! देखो यह चाण्डाल बेचारी किशोरी को पकडे लिए जाता है इत्यादि तो सभी की तबीयत बहुत बेचैन हो गई। राजा वीरेन्द्रसिंह तेजसिंह, इन्द्रदेव और देवीसिंह वगैरह घबडाकर चारों तरफ देखने और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये !

कमलिनी हाथ में तिलिस्मी खजर लिए हुए कैदखाने वाले दर्वाजे के बीच ही में खडी थी। उसने इन्द्रदेव से कहा–– मुझे भी उसी कोठरी के अन्दर पहुचाइये जिसमें किशोरी को रक्खा था फिर मैं उसे छुडा लूगी।

इन्द्रदेव–बेशक उस कोठरी के अन्दर तुम्हारे जाने से किशोरी को मदद पहुचेगी मगर किसी ऐयार को भी अपने साथ लेती जाओ।

देवीसिंह–मुझे साथ जाने के लिए कहिये।

इन्द्रदेव–(वीरेन्द्रसिंह से) आप देवीसिंहजी को साथ जाने की आज्ञा दीजिये।

वीरेन्द्र–(देवीसिंह से) जाइये।

तेज–नहीं कमलिनी के साथ मैं खुद जाऊगा क्योंकि मेरे पास भी राजा गोपालसिंह का दिया हुआ तिलिस्मी

खजर है।

इन्द–राजा गोपालसिह न आपको तिलिस्मी खजर कव दिया ?

तेज–जव कमलिनी की सहायता से मैन उन्हें मायारानी की कैद स छुडाया था तव उन्होंने उसी तिलिस्मी वाग के चौथे दर्जे में से एक तिलिस्मी खजर निकाल कर मुझ दिया था जिसे मै हिफाजत स रखता हू। कमलिनी क साथ दवीसिह के जान से कोई फायदा न हागा क्योंकि जव कमलिनी तिलिस्मी खजर स काम लेगी तो उसकी चमक से और लोगों की तरह दवीसिह की आखे वन्द हो जायगी

इन्ददेव–(वात काट कर) ठीक है ठीक है मैं समझ गया अच्छा ता आप ही जाइये दर न कीजिय।

इतना कह कर इन्ददव वडी फुर्ती स कैदखान क अन्दर चला गया और उस कोठरी का दर्वाजा जिसमें किशोरी कामिनी,लक्ष्मीदेवी,लाडिली और कमला का रख दिया था पुन उसी ढग से खोला जैसे पहिले खोला था। दर्वाजा खुलने के साथ ही तजसिह को साथ लिए हुए कमलिनी उस कोठरी के अन्दर घुस गई और वहा कामिनी,लक्ष्मीदेवी,लाडिली और कमला को मौजूद पाया मगर किशारी का पता न था। कमलिनी ने उन औरतों का तुरन्त कोठरी के वाहर निकाल कर राजा बीरन्दसिह क पास चल जाने के लिए कहा और आप दूसरे काम का उद्योग करने लगी। वाकी औरतों के वाहर होते ही इन्ददेव ने जजीर छोड दी और कोठरी का दर्वाजा बन्द हो गया। कमलिनी ने अपने तिलिस्मी खजर की रोशनी में चारा तरफ गौर स दखा। बगल वाली दीवार में एक छाटा सा दर्वाजा खुला हुआ दिखाई दिया जिसमें ऊपर के हिस्से में जाने के लिए सीढिया थीं। दोनों उस दर्वाजे के अन्दर चले गये और सीढिया चढ कर छत के ऊपर जा पहुचे अव तजसिह का मालूम हुआ कि इसी जगह से उस गुप्त मनुष्य के वोलने की आवाज आ रही थी।

इस ऊपर वाल हिस्से की छत वहुत लम्बी-चौडी थी और वहा कई बडे-वड दालान और उन दालानों में से कई तरफ निकल जाने के रास्ते थे। तेजसिह और कमलिनी ने दखा कि वहा पर बहुत सी लाशें पडी हुई हैं जिनमें से शायद दा ही चार म दम हा और जमीन भी वहा की खून स तरवतर हो रही थी। अपने पैर को खून और लाशों से बचा कर किसी तरफ निकल जाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था अस्तु कमलिनी ने इस बात का कुछ भी खयाल न किया और लाशों पर पैर रखती हुई वरावर चली गई। आखिर एक दालान में पहुची जिसमें स दूसरी तरफ निकल जाने के लिय एक खुला हुआ दवाजा था। दर्वाजे के उस पार पैर रखते ही दोनों की निगाह कृष्णाजिन्न पर पडी जिसे दुश्मन चारो तरफ स घर हुए थ और वह तिलिस्मी तलवार स सभी का काट कर गिरा रहा था। यद्यपि वह तिलिस्मी फौलादी जाल की पौशाक पहिरे हुए था और इस सवव से उसक ऊपर दुश्मनों की तलवारें कुछ काम नहीं करती थीं,तथापि ध्यान देने स मालूम हाता था कि तलवार चलाते-चलात उसका हाथ थक गया है और थोडी देर में हर्बा चलाने या लडने लायक न रहगा। इतना हाने पर भी दुश्मनों का उस पर फतह पान की आशा न थी और मुकाविला करने से डरते थे। जिस समय कमलिनी और तजसिह तिलिस्मी खजर चमकाते हुए उसके पास जा पहुचे उस समय दुश्मनों का जी बिल्कुल ही टूट गया और व तलवारें जमीन पर फेंक-फेंक शरण शरणागत इत्यादि पुकारने लग।

अगर दुश्मनों को यहा से निकल जाने का रास्ता मालूम हाता और वे लोग भाग कर अपनी जान बचा सकते तो कृष्णाजिन्न का मुकाविला कदापि न करते लेकिन जव उन्होंन देखा कि हम लाग रास्ता न जानने के कारण भाग कर जा ही नहीं सकत तव लाचार होकर मरने-मारन के लिए तैयार हो गये थे मगर कृष्णाजिन्न ने भी उन लोगों को अच्छी तरह यमलाक का रास्ता दिखाया क्योंकि उसक हाथ में तिलिस्मी तलवार थी। जब तेजसिह और कमलिनी भी तिलिस्मी खजर चमकाते हुए वहा पहुच गय तव ता दुश्मना न एक दम ही तलवार हाथ से फेंक दी और त्राहि-त्राहि शरण-शरण पुकारन लग। उस समय कृष्णाजिन्न न भी हाथ राक लिया और तेजसिह तथा कमलिनी की तरफ देख कर कहा— वहुत अच्छा हुआ जा आप लाग आ गय !

तेज–मालूम होता है कि आप ही न दुश्मनों के आने से हम लागों का सचेत किया था।

कृष्णा–हॉ यह आवाज मेरी ही थी और मुझी से आप लोग वातचीत कर रहे थे।

तेज–ता क्या आप ही न यह कहा था कि काई शैतान वेचारी किशोरी को पकडे लिए जाता है ?

कृष्णा–हा यह मैन ही कहा था किशोरी को ले जाने वाला स्वयम उसका वाप शिवदत्त था और मेरे हाथ से मारा गया।

कृष्णाजिन्न और भी कुछ कहा चाहता था कि कोई आवाज उसक तथा कमलिनी और तजसिह के कानों में पडी। आवाज यह थी– 'हरी हरी तुम लोग भागो और हमारे पीछे-पीछे चले आआ धन्नूसिह की मदद से हम लोग निकल जायेंगे। इस आवाज को सुन कर वे लोग भी पीछे की तरफ भाग गये जिन्होंने कृष्णाजिन्न और तेजसिह के

आग तलवारें फेंक दी थी मगर कृष्णाजिन्न और तेजसिह ने उन लोगों को रोकना या मारना उचित न जाना और चुपचाप खड़ रह कर भागन वालों का तमाशा देखते रहे। थोडी देर में उनके सामने की जमीन दुश्मनों से खाली हो गई और सामने स आती हुई मनोरमा दिखाई पडी। मनोरमा को देखते ही कमलिनी तिलिस्मी खजर उठाकर उसकी तरफ झपटी और उस पर वार किया ही चाहती थी कि मनोरमा ने कुछ पीछे हट कर कहा 'हैं हैं श्यामा ज़रा देख समझ के !

मनोरमा की बात और श्यामा *का शब्द सुनकर कमलिनी रुक गई और बडे गौर से मनोरमा का मुह देखने के बाद बाली तू कौन है ?

मनोरमा—वीरूसिह !

कमलिनी—निशान ?

मनोरमा—चन्दकला।

कमलिनी—तुम अकेले हो या और भी कोई है ?

वीरू—शिवदत्त के सिपाही धन्नूसिह की सूरत बने हुए मेरे गुरु सर्यूसिह भी आये हैं। उन्होंने दुश्मनों को बाहर निकलने का रास्ता बताया है। इस तहखाने में जितने दर्वाजे कल्याणसिह ने बन्द किये थे वे सब भी गुरुजी ने खोल दिये क्योंकि उनके सामन ही कल्याणसिह ने सब दर्वाजे बन्द किये थे और उन्होंन उसकी तर्कीब देख ली थी।

कृष्णा—शाबाश ! (कमलिनी स) अच्छा इन लोगों का किस्सा दूसरे समय सुनना इस समय तुम किशोरी को लकर राजा वीरेन्द्रसिह के पास चली जाओ जिसे हमने शिवदत्त के पजे से छुडाया है और जो (हाथ का इशारा करके) उस तरफ जमीन पर बदहवास पडी है बस अब इस काम में देर मत करो। मैं यहा स पुकार कर कह देता हू, जिस राह स तुम आई हो उस कोठरी का दर्वाजा इन्द्रदव खोल देंगे तेजसिह और वीरूसिह को मैं थोडी दर के लिए अपने साथ लिए जाता हू ये लाग किले में तुम लोगों क पास आ जायेंगे।

कमलिनी—क्या आप राजा वीरेन्द्रसिह के पास न चलेंग ?

कृष्णा—नहीं।

कमलिनी—क्यों ?

कृष्णा—हमारी खुशी। राजा वीरेन्द्रसिह से कह दीजियो कि सभों को लिए हुए इसी समय तहखाने के बाहर चले जाय।

इतना कह कर कृष्णाजिन्न उस जगह कमलिनी को ले गया जहा बचारी किशोरी बदहवास पडी हुई थी। दुश्मन लाग सामन स बिल्कुल भाग गये थे सिवाय जख्मियों और मुर्दों के वहा पर कोई भी मुकाबला करने वाला न था और दुश्मनों क हाथों स गिरी हुई मशालें इधर-उधर पडी हुई कुछ बल रही थीं और कुछ ठडी हा गई थीं। बेचारी किशोरी बिल्कुल बदहवास पडी हुई थी मगर तेजसिह की तर्कीब से वह बहुत जल्द होश में आ गई और कमलिनी उसे अपने साथ लकर राजा वीरेन्द्रसिह के पास चली गई। कृष्णाजिन्न ने उसी सूराख में से इन्द्रदेव का दर्वाजा खोलने के लिए आवाज दे दी और तेजसिह तथा वीरूसिह को लिए दूसरी तरफ का रास्ता लिया।

किशोरी को साथ लिए हुए थोडी ही देर में कमलिनी राजा बीरेन्द्रसिह के पास जा पहुची और जो कुछ उसने देखा सुना था सब कहा। वहा से भी बचे-बचाये दुश्मन लोग भाग गये थे और मुकाबला करने वाला कोई मौजूद नहीं था।

इन्द्रदेव—(राजा वीरेन्द्रसिह से) कृष्णाजिन्न ने जो कुछ कहला भेजा है उसे मैं पसन्द करता हू, सभों को लेकर इस समय तहखाने क बाहर ही हो जाना चाहिए।

वीरेन्द्र—मेरी भी यही राय है ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि आज की ग्रहदशा सहज में कट गई। नि सन्देह आपक दोनों ऐयारों ने दुश्मनों के साथ यहा आकर कोई अनूठा काम किया होगा और कृष्णाजिन्न ने मानों पूरी सहायता ही की और किशोरी की जान बचाई।

इन्द्रदेव—नि सन्दह ईश्वर ने बडी कृपा की मगर इस बात का अफसोस है कि कृष्णाजिन्न यहा न आकर ऊपर ही ऊपर चले गये और मैं उन्हें दख न सका तथा इस तहखाने की सैर भी इस समय आपको न करा सका।

वीरेन्द—काई चिन्ता नहीं फिर देखा जायेगा इस समय तो यहा से चल ही देना चाहिये।

---

* श्यामा कमलिनी का असली नाम था मगर लोगों में वह कमलिनी के नाम से ही प्रसिद्ध हो गई और हमारा बनावटी नाम भी एक प्रकार से ठीक निकला।

राजा बीरेन्द्रसिह की इच्छानुसार कैदियों को भी साथ लिए हुए सब कोई तहखाने के बाहर हुए। कैदियों को कैदखाने भेजा औरतें महल में भेज दी गई और उनकी हिफाजत का विशेष प्रबन्ध किया गया क्योंकि अब राजा बीरेन्दसिह को इस बात का विश्वास न रहा कि रोहतासगढ किले के अन्दर और महल में दुश्मनों के आने का खटका नहीं है क्योंकि तहखाने के रास्तों का हाल दिन-दिन खुलता ही जाता था।

इन्द्रदेव को राजा बीरेन्दसिह ने अपने कमरे के बगल में डेरा दिया और बडी इज्जत के साथ रक्खा। आज की बची हुई रात सोच-विचार और तरद्दुद ही में बीती। शेरअलीखा भूतनाथ और कल्याणसिह का हाल भी सभों को मालूम हुआ और यह भी मालूम हुआ कि कल्याणसिह और उसके कई आदमी कैदखाने में बन्द हैं।

दूसरे दिन सवेरे राजा बीरेन्द्रसिह ने कैदखाने में से कल्याणसिह को अपने पास बुलाया तो मालूम हुआ कि रात ही को होश में आने के बाद कल्याणसिह ने जमीन पर सिर पटक कर अपनी जान दे दी। बीरेन्द्रसिह नेउसकी अवस्था पर शोक प्रकट किया और उसकी लाश को इज्जत के साथ जलाकर हडिडया गगाजी में डलवा देने का हुक्म दिया और यही हुक्म शिवदत्त की लाश के लिए भी दिया।

पहर दिन चढने के बाद जब राजा बीरेन्दसिह स्नान और सध्या पूजा से छुट्टी पा कुछ जल खाकर निश्चिन्त हुए तो महल में अपने आने की इत्तिला करवाई और उसके बाद इन्ददेव को साथ लिए हुए महल में जाकर एक सजे हुए सुन्दर कमरे में बैठे। उनकी इच्छानुसार किशोरी कामिनी कमला कमलिनी लाडिली और लक्ष्मीदेवी अदब के साथ सामने बैठ गई। किशोरी का चेहरा उसके बाप के गम में उदास हो रहा था राजा बीरेन्द्रसिह ने उसे समझाया और दिलासा दिया। इसी समय तारासिह ने राजा साहब के पास पहुच कर तेजसिह भूतनाथ, सर्यूसिह और बीरूसिह के आने की इत्तिला की और मर्जी होने पर ये लोग राजा बीरेन्द्रसिह के सामने हाजिर हुए तथा सलाम करने के बाद हुक्म पाकर जमीन पर बैठ गये। इन लोगों के आने का सभों को इन्तजार था शिवदत्त और कल्याणसिह की कार्रवाई तथा उनके काम में विघ्न पडने का हाल सभी कोई सुना चाहते थे।

बीरेन्द–(भूतनाथ से) सुना था कि शेरअलीखा को तुम अपने साथ ले गए थे ?

भूत–जी हा, शेरअलीखा को मैं अपने साथ ले गया था और साथ लेता भी आया, तेजसिह की आज्ञा से वे अपने डेरे पर चले गए जहा रहते थे।

बीरेन्द्र–(तेजसिह से) कृष्णाजिन्न तुमको अपने साथ क्यों ले गए थे ?

तेज–कुछ काम था जो मैं आपसे किसी दूसरे समय कहूँगा आप पहिले सर्यूसिह और भूतनाथ का हाल सुन लीजिए।

बीरेन्द–अच्छी बात है आज के मामले में नि सन्देह सर्यूसिह ने बडी मदद पहुँचाई और भूतनाथ की होशियारी ने भी दुश्मनों का बहुत कुछ नुकसान किया।

तेज–जिस तरफ से दुश्मन लोग इस तहखाने के अन्दर आये थे भूतनाथ और शेरअलीखा उसी मुहाने पर जाकर बैठ गए और भाग कर जाते हुए दुश्मनों को खूब ही मारा, यहा तक कि एक भी जीता बच कर न जा सका।

इन्द–(सर्यूसिह से) अच्छा तुम अपना हाल कह जाओ।

इन्द्रदेव की आज्ञा पाकर सर्यूसिंह ने अपना और भूतनाथ का हाल बयान किया। मनोरमा और धन्नूसिह का हाल सुनकर सब कोई हसने लगे, इसके बाद भूतनाथ ने मनोरमा को अपने लडके नानक के साथ घर भेजकर शेरअलीखा के पास आना कल्याणसिह और उसके आदमियों का मुकाबिला करना, फिर शेरअलीखा कोअपनेसाथ लेकर सुरग के मुहाने पर जाकर बैठना और दुश्मनों का सत्यानाश करना इत्यादि बयान किया। इसके बाद तेजसिंह ने एक चीठी राजा बीरेन्द्रसिह के हाथ में दी और कहा 'कृष्णाजिन्न ने यह चीठी आपके लिए दी है।'

राजा बीरेन्द्रसिह ने यह चीठी ले ली और मन में पढ जाने के बाद इन्द्रदेव के हाथ में देकर कहा– आप इसे जोर से पढ जाइये जिसमें सब कोई सुन लें !

इन्द्रदेव ने चीठी पढ कर सभों को सुनाई। उसका मतलब यह था –

इत्तिफाक से आज इस तहखाने में पहुच गया और किशोरी की जान बच गई। सर्यूसिह और भूतनाथ ने नि सन्देह बडी मदद की सच तो यों है कि आज उन्हीं के बदौलत दुश्मनों ने नीचा देखा, मगर भूतनाथ ने एक काम बड़ी बेवकूफी का किया अर्थात् मनोरमा को नानक के हाथ में दे दिया और उसे घर ले जाकर असली बलभद्रसिह का पता लगाने के लिए कहा। यह भूतनाथ की भूल है कि वह नानक को किसी काम के लायक समझता है यद्यपि नानक के हाथ से आज तक कोई काम ऐसा न निकला जिसकी तारीफ की जाय, वह निरा बेवकूफ और गदहा है, कोई नाजुक काम उसके हाथ में देना भी भारी भूल है। मनोरमा को उसके हाथ में देकर भूतनाथ ने बुरा किया। नानक कमीने को मालिक के

काम का कुछ भी ख्याल न रहा और मनोरमा के साथ शादी की धुन सवार हो गई जिसका नतीजा यह निकला कि मनोरमा ने नानक को खूब जूतियां लगाई औ तिलिस्मी खजर भी ले लिया मै बहुत खुश होता यदि मनोरमा नानक का कान नाक भी काट लेती। आपको और आपके एयारों को होशियार करता हू और कहे देता हू कि औरत के गुलाम नानक बेईमान पर कोई भी कभी भरोसा न करे। आप जरूर अपने एक ऐयार को नानक के घर तहकीकात करने के लिए भेजें तब आपको नानक और नानक के घर की हालत मालूम होगी। अस्तु अब आपका रोहतासगढ में रहना ठीक नहीं है आप कैदियों और किशोरी, कामिनी, कमलिनी और लक्ष्मीदेवी इत्यादि सभी को लेकर चुनार चले जायें। मै यह बात इस ख्याल से नहीं कहता कि यहा आपको दुश्मनों का डर है नहीं नहीं औवल तो अब आपका कोई ऐसा दुश्मन ही नहीं रहा जो रोहतासगढ तहखाने का रत्ती बराबर भी हाल जानता हो दूसरे उस तहखाने के कुल दर्वाजे (दीवानखाने वाले एक सदर दर्वाजे को छोड कर) जो गिनती में ग्यारह थे मैंने अच्छी तरह बन्द कर दिये और उनका हाल तेजसिह को बता दिया है। मै समझता हू इनसे ज्यादे रास्ते तहखाने में आने-जाने के लिए नहीं हैं इतने रास्तों का हाल यहा का राजा दिग्विजयसिह भी न जानता होगा हा कमलिनी जरूर जानती होगी क्योंकि वह रिक्तग्रन्थ पढ चुकी है। यदि आप तहखाने की सैर किया चाहते हं तो इस इरादे को अभी रोक दीजिये कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह के आने पर यह काम कीजियेगा क्योंकि यहा का सबसे ज्यादे हाल उन्हीं दोनों भाइयों को मालूम होगा हा बलभद्रसिह का पता लगाने का उद्योग करना चाहिए और यहा के तहखाने की भी अच्छी तरह सफाई हो जानी चाहिए जिसमें एक भी मुर्दा इसके अन्दर रह न जाय। यदि इन्द्रदेव चाहें तो नकली बलभद्रसिह को आप इन्द्रदेव के हवाले कर दीजिएगा और उसकी बलभद्रसिह तथा इन्दिरा का पता लगाने का बोझ इन्द्रदेव ही के ऊपर डालियेगा। भूतनाथ को भी चाहिये कि इन्द्रदेव के साथ रहकर अपनी खैरख्वाही दिखाये और पुरानी कालिख अपने चेहरे से अच्छी तरह धो डाले नहीं तो उसके हक में अच्छा न होगा और आप अपने एक एयार को हरामखोर नानक की तरफ रवाना कीजिये। मै आपका ध्यान पुन मनोरमा की तरफ दिलाता हू और कहता हू कि तिलिस्मी खजर का उसके हाथ लग जाना बहुत ही बुरा हुआ। मनोरमा साधारण औरत नहीं है उसकी तारीफ आप सुन ही चुके होंगे। तिलिस्मी खजर पाकर अब वह जो न कर डाले वही आश्चर्य है। उसके कब्जे से खजर निकालने का शीघ्र उद्योग कीजिये और इस काम को सबसे ज्यादे जरूरी समझिये। इसके अतिरिक्त तेजसिह की जुबानी जो कुछ मैने कहला भेजा है उस पर भी ध्यान दीजिये।

इस चीठी को सुनकर सभी को ताज्जुब हुआ। राजा वीरेन्द्रसिह तो चुप ही रहे सिर्फ इन्द्रदेव के हाथ से चीठी लेकर तेजसिह को दे दी और बोले कि सब काम इसी के मुताबिक होना चाहिए। इसके बाद एक एक के चेहरे को गौर से देखने लगे। भूतनाथ का चेहरा मारे क्रोध के लाल हो रहा था नानक की अवस्था और नालायकी पर उसे बडा ही रज हुआ था। लक्ष्मीदेवी के चहरे पर भी हद्द से ज्यादे उदासी छाई हुई थी, बाप की फिक्र के साथ ही साथ उसे इस बात का बडा रज और ताज्जुब था कि राजा गोपालसिह ने सब हाल सुनकर भी उसकी कुछ खबर न ली न तो मिलने के लिए आये और न कोई चीठी ही भेजी। वह हजार सोचती और गौर करती थी मगर इसका सबब कुछ भी उसके ध्यान में न आता था और न उसका दिल इसी बात को कबूल करता था कि राजा गोपालसिह उसे इसी अवस्था में छोड देंगे। ज्यादे ताज्जुब तो उसे इस बात का था कि राजा गोपालसिह ने मायारानी के बारे में भी कोई हुक्म नहीं लगाया जिसकी बदौलत वह हद्द से ज्यादे तकलीफ उठा चुके थे। अब इस ख्याल ने उसे और सताना शुरू किया हम लोगों को चुनार जाना होगा जहाँ गोपालसिह का पहुचना और भी कठिन है इत्यादि तरह तरह की बातें वह सोच रही थी और न रुकने वाले आसुओं को रोकने में जी जान से उद्योग कर रही थी। कमलिनी का चेहरा भी उदास था राजा गोपालसिह के विषय में वह भी तरह तरह की बातें सोच रही थी और उनसे तथा नानक से स्वय मिला चाहती थी मगर राजा वीरेन्द्रसिह की मर्जी के खिलाफ कुछ करना भी उचित नहीं समझती थी।

राजा वीरेन्द्रसिह ने इन्द्रदेव की तरफ देख कर कहा आप क्या सोच रहे हैं? कृष्णाजिन्न पर मुझे बहुत बडा विश्वास है और उसने जो कुछ लिखा है उसे करने के लिए तैयार हू।

इन्द्रदेव–आप मालिक हैं आपको हर तरह पर अख्तियार है जो चाहे करें और मुझे भी जो आज्ञा दें करने के लिए तैयार हू। कृष्णाजिन्न की तो मैंने सूरत भी नहीं देखी है इसलिये उनके विषय में कुछ भी नहीं कह सकता मगर मुझे अफसोस इस बात का है कि मै यहा आकर कुछ भी न कर सका न तो बलभद्रसिह ही का पता लगा और न इन्दिरा के विषय में ही कुछ मालूम हुआ।

वीरेन्द्र–नकली बलभद्रसिह जब तुम्हारे कब्जे में हो जाएगा तो मै उम्मीद करता हू कि तुम इन दोनों ही का पता लगा सकोगे और कृष्णाजिन्न के लिखे मुताबिक मै नकली बलभद्रसिह को तुम्हारे हवाले करने के लिए तैयार हू। मैं तुम पर भी बहुत विश्वास रखता हूँ और तुम्हे अपना समझता हू। अगर कृष्णाजिन्न ने न भी लिखा होता और तुम नकली बलभद्रसिह को मागते तो भी मै तुम्हें दे देता अब भी अगर तुम मायारानी या दारोगा को लिया चाहो तो मैं देने को तैयार

हू, केवल इतना ही नहीं इसके अतिरिक्त तुम अगर और भी कोई बात कहो तो करने के लिए तैयार हूं।

राजा बीरेन्द्रसिंह की बात सुनकर इन्द्रदेव उठ खड़ा हुआ और झुक कर सलाम करने बाद हाथ जोड़कर बोला यह जान कर बहुत ही प्रसन्न हुआ कि महाराज मुझ पर विश्वास रखते हैं और नकली बलभद्रसिंह का मेरे हवाले करने के लिए तैयार हैं तथा और भी जिसे मैं चाहूं ले जाने की प्रार्थना कर सकता हूं। यदि महाराज की मुझ पर इतनी ही कृपा है तो मैं कह सकता हूं कि सिवाय नकली बलभद्रसिंह के और किसी कैदी को ले जाना नहीं चाहता मगर लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली को अपने साथ ले जाने की प्रार्थना करता हूं अपनी धर्म की प्यारी लड़की लक्ष्मीदेवी पर बहुत स्नेह रखता हूं और अभी बहुत कुछ उसके हाथ से (रुक कर) हां तो यदि महाराज मुझ पर विश्वास कर सकते हैं तो इन लोगों को और उस कलमदान को मुझे दें जिस पर 'इन्दिरा' लिखा हुआ है। भूतनाथ के कागजात अपने साथ लेने जाता मैं असली बलभद्रसिंह का पता लगाकर सेवा में उपस्थित होऊंगा और उस समय आपके सामने भूतनाथ का मुकदमा का फैसला कराऊंगा। आप भूतनाथ को आज्ञा दें कि कृष्णाजिन्न ने उसके विषय में जो कुछ लिखा है उसे नेकनीयती के साथ पूरा करे।

इन्द्रदेव की बात सुन कर राजा बीरेन्द्रसिंह सोच में पड़ गये। वे लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली को अपने साथ चुनार ले जाना चाहते थे और कृष्णाजिन्न ने भी ऐसा करने को लिखा था मगर इन्द्रदेव की अर्जी भी नामंजूर नहीं कर सकते थे क्योंकि इन्द्रदेव का लक्ष्मीदेवी पर हक था और उसी ने लक्ष्मीदेवी की रक्षा की थी। कमलिनी और लाडिली पर राजा बीरेन्द्रसिंह का कोई अधिकार न था क्योंकि वे बिल्कुल स्वतन्त्र थीं। बीरेन्द्रसिंह ने कुछ देर तक गौर करने बाद इन्द्रदेव से कहा मुझे कुछ उज्र नहीं है लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडिली यदि आपके साथ रहने में प्रसन्न हैं तो आप उन्हें ले जाय और वह कलमदान भी आपको मिल जायगा।

इन्द्रदेव और राजा बीरेन्द्रसिंह की बातें सुनकर लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडिली बहुत प्रसन्न हुई और हाथ जोड़ कर राजा बीरेन्द्रसिंह से बोलीं हम लोग अपने धर्म के पिता इन्द्रदेव के घर जाने में बहुत प्रसन्न हैं वहां हमें अपने बाप का पता लगाने का हाल बहुत जल्द मिलेगा।

बीरेन्द्र–बहुत अच्छा (तेजसिंह से) यह कलमदान इन्द्रदेव को दे दो और इन लोगों के तथा नकली बलभद्रसिंह के जाने का बन्दोबस्त करो। हम भी आज चुनारगढ़ की तरफ कूच करेंगे। भैरोसिंह को मनोरमा की गिरफ्तारी के लिए रवाना करो और तारासिंह को नानक के घर भेजो। (देवीसिंह की तरफ देख के) एक बहुत नाजुक काम तुम्हारे सुपुर्द करने की इच्छा है जो तुम्हारे कान में कहेंगे।

देवीसिंह राजा बीरेन्द्रसिंह के पास चले गए और उनकी तरफ सिर झुका दिया। बीरेन्द्रसिंह ने देवीसिंह के कान में कहा "लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली की निगहबानी तुम्हारे जिम्मे मगर गुप्त।

देवीसिंह सलाम करके पीछे हट गए और दरबार बरखास्त हो गया।

तीसरा बयान

शेरअलीखां बड़ी इज्जत और आबरू के साथ घर भेजे गये उनके सेनापति महबूबखां को भी छुट्टी मिली भैरोसिंह मनोरमा की फिक्र में गए तारासिंह नानक के घर चले और कुछ फौजी सिपाहियों के साथ नकली बलभद्रसिंह लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडिली को लिए हुए इन्द्रदेव ने अपने गुप्त स्थान की तरफ प्रस्थान किया। भूतनाथ बातें करता हुआ उन्हीं के साथ चल पड़ा और थोड़ी दूर जाने के बाद आज्ञा लेकर अपने अड्डे की तरफ रवाना हुआ जो बराबर की पहाड़ी पर था और देवीसिंह ने न मालूम किधर का रास्ता लिया। राजा बीरेन्द्रसिंह की सवारी भी उसी दिन चुनारगढ़ की तरफ चली और तेजसिंह राजा साहब के साथ गये।

हम सब के पहिले तारासिंह के साथ चल कर नानक के घर पहुंचते हैं और उसकी जगतप्रिय स्त्री की अवस्था पर ध्यान देते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि लड़कपन में नानक उत्साही था और उसे नाम पैदा करने की बड़ी लालसा थी परन्तु रामभोली के प्रेम ने उसका खयाल बदल दिया और उसमें खुदगर्जी का हिस्सा कुछ ज्यादे हो गया। आखीर में जब उसने श्यामा नामी एक स्त्री से शादी कर ली जिसका जिक्र कई दफे लिखा जा चुका है तबसे तो उसकी बुद्धि बिल्कुल ही भ्रष्ट हो गई। नानक की स्त्री श्यामा बड़ी चतुर लालची और कुलटा थी मगर नानक उसे पतिव्रता और साध्वी जानकर माता के समान उसकी इज्जत करता था। नानक के नातेदार और दोस्तों की आमदरफ्त उसके घर में विशेष थी। श्यामा को रुपये-पैसे की कमी न थी और वह अपनी दौलत जमीन के अन्दर गाड़कर रक्खा करती थी जिसका हाल सिवाय एक नौजवान खिदमतगार के जिसका नाम हनुमान था और कोई भी नहीं जानता था। हनुमान

यद्यपि नानक का नौकर था परन्तु इस सबब से कि उसकी माँ कुछ दिनों तक भूतनाथ की खिदमत में रह चुकी थी वह अपने का नौकर नहीं समझता था बल्कि घर का मालिक समझता था। नानक की स्त्री उसे बहुत चाहती थी यहा तक कि एक दिन उसन अपन मुह स उस अपना दवर स्वीकार किया था इस सबब से वह और भी सिर चढ गया था। नानक के यहा एक मजदूरनी भी थी वह नानक के काम की चाह न हा मगर उसकी स्त्री के लिए उपयोगी पात्र थी और उसके द्वारा नानक की स्त्री का बहुत काम निकलता था।

तारासिह अपन दा चलों का साथ लिए राहतासगढ से रवाना होकर भेष बदले हुए तीसरे ही दिन नानक के घर पहुचा। ठीक दापहर का समय था और नानक अपने किसी दास्त के यहा गया हुआ था मगर उसका प्यारा खिदमतगार हनुमान दर्वाज पर बैठा अपन पडोसी साईसों और कोचवानों क साथ गप्पें लडा रहा था। तारासिह थोडी देर तक इधर उधर टहलता और टाह लेता रहा। जब उस मालूम हो गया कि हनुमान नानक का प्यारा नौकर है और उम्र में भी अपने म वडा नहा है ता वहा से लौटा और कुछ दूर जाकर किसी सूनसान अधेरी गली में मकान किराए पर लेने का बन्दोबस्त करन लगा। सध्या होने के पहिले ही इस काम से भी निश्चिन्ती हो गइ अर्थात उसने एक बहुत बडा मकान किराये पर ले लिया जा मुद्दत स खाली पडा हुआ था क्योंकि लाग उसमें भूत-प्रेतों का वास समझत थे और कोई उसमें रहना पसन्द नहीं करता था। उसमे जान के लिए तीन रास्ते थे और उसके अन्दर कई काठरिया एसी थीं कि यदि उसमें किसी को वन्द कर दिया जाय ता हजार चिल्लान और ऊधम मचान पर भी किसी बाहर वाल को खबर न हो। तारासिह ने उसी मकान म डेरा जमाया और बाजार जाकर दो ही घण्ट में व सब चीजें खरीद लाया जिनकी उसने जरूरत समझी और जो एक अमीराना ढग से रहने वाल आदमी क लिए आवश्यक थीं। इस काम स भी छुट्टी पाकर उसन मोमवत्ती जलाई और आईना तथा ऐयारी का बटुआ सामन रख कर अपनी सूरत बदलने का उद्योग करने लगा। शीघ्र ही एक खूबसूरत नौजवान अमीर की सूरत बना कर वह घर स बाहर निकला और मकान में एक चेले को छोड कर नानक के घर की तरफ रवाना हुआ। दूसरा चेला जो तारासिह के साथ था, उसे बहुत सी बातें समझा कर दूसरे काम के लिए भेजा।

जब तारासिह नानक के मकान पर पहुचा तो उसने हनुमान को दर्वाजे पर बैठा पाया। इस समय हनुमान अकेला था और हुक्का पीने का बन्दोबस्त कर रहा था। उसके पास ही ताक (आला) पर एक चिराग जल रहा था जिसकी रोशनी चारो तरफ फैल रही थी। तारासिह हनुमान के पास जाकर खडा हा गया। हनुमान ने बडे गौर से उसकी सूरत देखी और रोब में आकर हुक्का छोड के खडा हो गया। उस समय चिराग की रोशनी में तारासिह बडे शान शौकत का आदमी मालूम पड रहा था। खूबसूरती बनाने की तारासिह को जरूरत न थी क्योंकि वह स्वय खूबसूरत और नौजवाना आदमी था परन्तु रूप बदलने की नीयत से उसने अपने चेहरे पर रोगन जरूर लगाया था जिससे वह इस समय और भी खूबसूरत और शौकीन जच रहा था।

तारासिह को देखते ही हनुमान उठ खडा हुआ और हाथ जोड कर बाला 'हुक्म !

तारा—हमारे साथ एक नौकर था वह राह भूल कर न मालूम कहाँ चला गया उम्मीद थी कि वह हमको ढूँढने के बाद सीधा घर पर चला जायेगा मगर इस समय प्यास के मारे हमारा गला सूखा जा रहा है।

हनुमान—(एक छोटी चौकी की तरफ इशारा करके) सरकार इस चौकी पर बैठ जाय मै अभी पानी लाता हूँ

इतना सुन कर तारासिह चौकी पर बैठ गया और तारा पानी लाने के लिए अन्दर चला गया। थोडी देर में पानी का भरा हुआ एक लोटा और गिलास लिए तारा बाहर आया और तारासिह को पीने के लिए पानी गिलास में ढाल कर दिया उसी समय तारासिह ने दर्वाजे का पर्दा हिलते हुए दखा और यह भी मालूम किया कि कोई औरत भीतर से झॉक रही है। पानी पीने के बाद तारासिह ने पॉच रुपये तारा के हाथ में दिये और वहाँ से उठ कर दूसरी तरफ का रास्ता लिया।

हनुमान केवल एक गिलास पानी पिलाने के बदले में पॉच रुपये पाकर बडा ही प्रसन्न हुआ और दाता की अमीरी पर आश्चर्य करने लगा। उसे विश्वास हो गया कि यह कोई बडा भारी अमीर आदमी या कोई राजकुमार है और साथ ही इसके, दिल का अमीर तथा जी खोल कर देने वाला भी है।

दूसरे दिन सध्या के पहिले ही हनुमान ने तारासिह को अपने दर्वाजे के सामने से आते देखा और उसके साथ एक नौकर को भी देखा जो बडे शान के साथ कीमती कपडे पहिरे और तलवार लगाए तारासिह के पीछे-पीछे जा रहा था।

हनुमान ने उठकर तारासिह को बडे अदब के साथ सलाम किया। तारासिह ने अपने नौकर को जो वास्तव में उसका चेला था कुछ कहकर हनुमान के पास छोडा और आगे का रास्ता लिया।

तारासिह के नौकर में और हनुमान में दो घण्टे तक खूब बातचीत हुई जिसे हम यहाँ लिखना नापसन्द करते हैं हाँ इस बातचीत का जो कुछ नतीजा निकला वह अवश्य दिखाया जायेगा क्योंकि नानक के घर की जॉच करने ही के लिए

तारासिह का आना इस शहर में हुआ था।

बहुत दर तक बातचीत करने के बाद तारासिह का नौकर उठ खडा हुआ और हनुमान के हाथ में कुछ देकर घर का रास्ता लिया जहॉं तारासिह उसके आने का इन्तजार कर रहा था। जब तारासिंह ने नौकर को आते देखा तो पूछा–

तारा–कहा क्या हुआ ?

नौकर–सब ठीक है वह तो आपको देख भी चुकी है।

तारा–हॉं रात को जब मैं वहॉं पानी पी रहा था,टाट का पर्दा हिलते हुए देखा था, तो और भी कुछ हालचाल मालूम हुआ ?

नौकर–जी हॉं बडी बाते हुई। वह तो पूरी खानगी है कल दोपहर के पहिले मै आपको उन लोगों के नाम भी बताऊँगा जिनसे उसका ताल्लुक है और उम्मीद है कि कल वह स्वय बन ठन कर आपके पास आव।

तारा–ठीक है तो क्या तुम्हें उसका नाम भी मालूम हुआ ?

नौकर–जी हॉं उसका नाम श्यामा है और अपने पति अर्थात नानक के लिए तो वह रूपगर्विता नायिका है।

तारा–बड अफसास की बात है। नि सन्देह भूतनाथ के लिए यह एक कलक है। एसी औरत का पति इस योग्य नहीं कि हम लोग उस अपने पास बैठावें या उसका छूआ पानी भी पीएँ। खैर अब तुम घर में बैठो मैं गस्त लगाने के लिए जाता हू।

दूसरे दिन दापहर के समय तारासिह का वही नौकर नानक के घर सें निकला तथा इधर उधर से घूमता फिरता तारासिह क पास आया और बोला आज श्यामा के कई प्रेमियों के नाम मैं लिख लाया हू।

तारा–अच्छा बताआ ता सही शायद उन लोगों में स किसी को मैं जानता हाऊँ या किसी का नाम भी सुना हो।

नौकर–श्यामा क एक प्रेमी का नाम 'जलशायी बाबू है।

तारा–(गौर करक) जलशायी बाबू को तो मैं जानता हू, वे तो बडे नक और बुद्धिमान है।

नौकर–जी हॉं वही लम्बे और गोरे से वे तरह-तरह के कपड राजधानी स लाकर उसे दिया करते हैं दूसरे प्रेमी का नाम त्रिभुवन नायक है और उन्हें महत्व की पदवी भी है और तीसरे पेमी का नाम मायाप्रसाद है जो राजा साहब के काषाध्यक्ष है और चौथ प्रेमी का नाम आनन्दवन बिहारी है और पॉंचवें

तारा–बस बस बस मैं विशेष नाम सुनना पसन्द नहीं करता।

नौकर–जो हुक्म (एक कागज दिखाकर) मैं तो पचीसों नाम लिख लाया हू।

तारा–ठीक है तुम इस फिहरिस्त को अपने पास रक्खो आवश्यकता पडने पर महाराज को दिखाई जायगी, हमारा काम तो उसके आज यहॉं आ जाने से ही निकल जायेगा।

नौकर–जी हॉं आज वह यहॉं जरूर आवगी हनुमान मेरे साथ आकर घर देख गया है।

चौथा बयान

रात लगभग घण्टे भर के जा चुकी है। नानक के घर में उसकी स्त्री श्रृगार कर चुकी है और कपडे बदलने की तैयारी कर रही है। वह एक खुले हुए सन्दूक के पास खडी तरह तरह की साडियों पर नजर दौडा रही है और उनमें से एक साडी इस समय पहिरने के लिए चुना चाहती है। हाथ में चिराग लिए हुए हनुमान उसके पास खडा है।

हनुमान–मेरी प्यारी भावज यह काली साडी बडी मजेदार है बस इसी को निकाल लो और यह चोली भी अच्छी है।

श्यामा–नहीं यह मुझे पसन्द नहीं मगर तू घडी-घड़ी मुझे भावज क्यों कहता है ?

हनुमान–क्या तुम मेरी भावज नहीं हो ?

श्यामा–भावज तो जरूर हू, यदि तू दूसरी मॉं का बेटा होता तो हमारी आधी दौलत बटवा लेता और ऐसा न हाने पर भी मैं तुझे देवर समझती हू, मगर भावज पुकारन की आदत अच्छी नहीं अगर कोई सुन लेगा तो क्या कहेगा।

हनुमान–यहॉं इस समय सुनने वाला कौन है ?

श्यामा–इस समय यहॉं चाहे कोई न हो मगर पुकारने की आदत पडी रहने से कभी न कभी किसी के सामने

हनुमान–नहीं नहीं मैं ऐसा बेवकूफ नहीं हू। देखो इतने दिनों से मुझसे तुमसे गुप्त प्रेम है मगर आज तक किसी को मालूम न हुआ। अच्छा देखो यह साडी बढिया है इसको जरूर पहिनो।

श्यामा–अरे बाबा, इस साडी को तो देखते ही मुझे क्रोध चढ आता है। उस दिन यह साडी पहिर कर मैं बिरादरी में उनके यहॉं गई थी बस एक ने झट स टाक ही तो दिया कहने लगी कि 'यह साडी फलाने की दी हुई है। इतना सुनतेही

में लाल हो गई मगर कर क्या सकती थी क्योंकि बात सच थी। आखिर चुपचाप उठ कर अपने घर चली आई। मैं यह साडी कभी न पहिरूँगी।

हनुमान—अच्छा यह हरी साडी पहिरो।

श्यामा—हाँ इसे पहिरुंगी और यह चोली।

हनुमान—लाओ चोली मैं पहिरा दूँ।

श्यामा—(हनुमान के गाल में चपत लगा कर) चल दूर हो।

हनुमान—(चौंक कर) अरे हाँ देखो तो सही कैसी भूल होगई !

श्यामा—(ताज्जुब से) सो क्या ?

हनुमान—तुम्हें तो मर्दाना कपडा पहिर के चलना चाहिए।

श्यामा—हाँ है तो ऐसा ही मगर वहाँ क्या करूँगी ?

हनुमान—यह साडी मैं बगल में दबा कर लिए चलता हूँ, वहाँ पहिर लेना।

श्यामा—अच्छा यही सही।

थोडी देर बाद मर्दाने कपडे पहिर और सर पर मुडासा बांधे हुए श्यामा सडक पर दिखाई देने लगी। आगे-आगे उसका प्यारा नौकर हनुमान बगल में कपडे की गठरी दबाए हुए जा रहा था। इस जगह से वह मकान बहुत दूर न था जिसमें तारासिंह ने डेरा डाला था इसलिए थोडी ही देर में वे दोनों उस मकान के पिछले दरवाजे पर जा पहुंचे। दरवाजा खुला हुआ था और तारासिंह का नौकर पहिले ही से दरवाजे पर बैठा हुआ था। उसने दोनों को मकान के अन्दर करके दरवाजा बन्द कर लिया।

तारासिंह एक कोठरी के अन्दर फर्श पर बैठा हुआ तरह तरह की बातों पर विचार कर रहा था जब उसके नौकर ने पहुंच कर श्यामा के आने की इत्तिला की और कहा कि वह मर्दानी पोशाक पहिर कर आ गई है और अब पूरब वाले कमरे में कपडे बदल रही है।

तारासिंह का नौकर (चेला) तो इतना कह कर चला गया मगर तारासिंह बडे फेर में पड गया। वह सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये ? उसकी चाल-चलन का पता तो पूरा-पूरा लग गया मगर अब उसे यहाँ से क्यों कर टालना चाहिए। उसके साथ अधर्म करना तो उचित न होगा हम ऐसा कदापि नहीं कर सकते मगर अफसोस ! वाह रे निर्लज्ज नानक क्या तुझे इन बातों की खबर न होगी ? जरूर होगी तू इन सब बातों को जरूर जानता होगा मगर आमदनी का रास्ता खुला देख बेहयाई की नकाब डाले बैठा है। परन्तु भूतनाथ को इन बातों की खबर नहीं वह हयादार आदमी है अपनी थोडी सी भूल के लिए कैसे-कैसे उद्योग कर रहा है और तेरी यह दशा ! लानत है तेरी औकात पर और तुफ है तेरी शौकीनी पर !

तारासिंह इन बातों को सोच ही रहा था कि श्यामारानी मटकती हुई उसके पास जा पहुंची। तारासिंह ने बडी खातिर से उसे अपने पास बैठाया और उसके रूप-गुण की प्रशंसा करने लगा।

श्यामारानी को बैठे अभी कुछ भी देर न हुई थी कि कोठरी के बाहर से चिल्लाने की आवाज आई। यह आवाज नानक के प्यारे नौकर हनुमान की थी और साथ ही उसके किसी औरत के बोलने की आवाज आ रही थी।

पांचवां बयान

किशोरी, कामिनी, कमला इत्यादि तथा और बहुत से आदमियों को लिए हुए राजा वीरेन्द्रसिंह चुनार की तरफ रवाना हुए। किशोरी और कामिनी की खिदमत के लिए साथ में एक सौ पन्द्रह लौडियाँ थीं जिनमें से बीस लौडियाँ तो उनमें से थीं जो राजा दिग्विजयसिंह की रानी के साथ रोहतासगढ में रहा करती थीं और रोहतासगढ के फतह हो जाने के बाद राजा वीरेन्द्रसिंह की ताबेदारी स्वीकार कर चुकी थीं बाकी लौडिया नई रक्खी गई थीं। इसके अतिरिक्त रोहतासगढ से बहुत सी चीजें भी राजा वीरेन्द्रसिंह ने साथ ले ली थीं जिन्हें उन्होंने बेशकीमत या नायाब समझा था। रवाना होने के समय राजा साहब ने उन ऐयारों को भी अपने चुनारगढ जाने की इत्तिला दिलवा दी थी जो राजगृह तथा गयाजी का इन्तजाम करने के लिए मुकर्रर किये गये थे।

जिस समय राजा वीरेन्द्रसिंह चुनारगढ की तरफ रवाना हुए रात घण्टे भर से कुछ ज्यादे बाकी थी और पांच हजार फौज के अतिरिक्त चार हजार दूसरे काम काज के आदमी भी साथ में थे। इसी भीड में मिली जुली साधारण लौंडी का

भेष धारण किए मनोरमा भी जाने लगी। उसे अपना काम पूरा होने की पक्की उम्मीद थी और वह इस धुन में लगी हुई थी कि किशोरी और कामिनी की लौंडियों में से कोई लौंडी किसी तरह पीछे रह जाय तो काम चले।

पहर दिन चढ़ तक राजा बीरेन्द्रसिंह का लश्कर बराबर चला गया। जब धूप हुई तो एक हरे-भरे जंगल में पड़ाव डाला गया जहाँ डेरे खेमे का इन्तजाम पहिले ही से हो चुका था। पड़ाव पड़ जाने के थोड़ी देर बाद डेरे-खेमों से लदे हुए सैकड़ों ऊँट आगे की तरफ रवाना हुए जिनसे दूसरे दिन के पड़ाव का इन्तजाम होने वाला था। बाकी का दिन और तीन पहर रात तक वह जंगल गुलजार रहा और पहर रात रहते फिर वहाँ से लश्कर कूच हुआ।

इसी तरह कूच दर कूच करते बीरेन्द्रसिंह का लश्कर चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुआ। तीन दिन तक तो मनोरमा का काम कुछ भी न हुआ पर चौथे दिन उसे अपना काम निकालने का मौका मिला जब किशोरी की एक लौंडी जिसका नाम दया था, हाथ में लोटा लिए मैदान जाने की नीयत से पड़ाव के बाहर निकली। उस समय घड़ी भर रात जा चुकी थी और चारों तरफ अन्धकार छाया हुआ था। दया रोहतासगढ़ के राजा दिग्विजयसिंह की लौंडियों में से थी और किशोरी उसे मानती थी क्योंकि उस जमाने में जब किशोरी कैदियों की तरह रोहतासगढ़ में रहती थी, दया ने उसकी खिदमत बड़ी हमदर्दी के साथ की थी।

दया को मैदान की तरफ जाते देख मनोरमा ने उसका पीछा किया। दबे पाँव उसके साथ बराबर चली गई और जब जाना कि अब वह आगे न बढ़ेगी तो एक पेड़ की आड़ देकर खड़ी हो गई। थोड़ी देर बाद जब दया जरूरी काम से छुट्टी पाकर लौटी तो मनोरमा बेधड़क उसके पास चली गई और फुर्ती के साथ तिलिस्मी खंजर उसके मोढ़े पर रख दिया। उसी दम दया काँपी और थरथरा कर जमीन पर गिर पड़ी। मनोरमा ने उसे घसीट कर एक झाड़ी के अन्दर डाल दिया और निश्चय कर लिया कि जब राजा बीरेन्द्रसिंह का लश्कर यहाँ से कूच कर जायगा और दिन निकल आवेगा तब सुभीते से दया की सूरत बन कर इसको जान से मार डालूंगी और फिर तेजी के साथ चल कर लश्कर में जा मिलूंगी आखिर ऐसा ही हुआ।

थोड़ी रात रहे राजा बीरेन्द्रसिंह का लश्कर वहाँ से कूच कर गया और जब पहर दिन चढ़े अगले पड़ाव पर पहुंचा तो किशोरी ने दया की खोज की मगर दया का पता क्योंकर लग सकता था। बहुत सी लौंडियाँ चारों तरफ फैल गईं और दया को ढूंढने लगीं। दोपहर होते तक दया भी लश्कर में आ पहुंची जो वास्तव में मनोरमा थी। किशोरी ने पूछा दया कहाँ रह गई थी ? तेरी खोज में सब लौंडियाँ अभी तक परेशान हो रही हैं।

नकली दया ने जवाब दिया जिस समय लश्कर कूच हुआ तो मेरे पेट में कुछ गड़गड़ाहट मालूम हुई। थोड़ी दूर तक तो मैं जी कड़ा कर चली गई आखिर जब गड़गड़ाहट ज्यादे हुई और रास्ते में एक कूआ भी नजर आया तो लोटा-डोरी लेकर वहां ठहर गई। दो दफे तो टट्टी गई और तीन दफे कै हुई कै में बहुत सा खट्टा पानी निकला। मैंने समझा कि बस अब किसी तरह लश्कर के साथ नहीं मिल सकती और यहाँ पड़ी बहुत दुःख भोगूंगी मगर ईश्वर ने कुशल की थोड़ी देर तक मैं उसी कूएँ पर लेटी रही आखिर मेरी तबीयत ठहरी तो मैं धीरे-धीरे रवाना हुई और मुश्किल से यहाँ तक पहुंची। कै करने में मुझे बहुत तकलीफ हुई और मेरा गला भी बैठ गया।

किशोरी ने दया की अवस्था पर दुःख प्रकट किया और उसे दया की बातों पर विश्वास हो गया। अब दया को किशोरी के साथ मेल जोल पैदा करने में किसी तरह का खुटका न रहा और दो ही चार दिन में उसने किशोरी को अपने ऊपर बहुत ज्यादे मेहरबान बना लिया।

रोहतासगढ़ से चुनारगढ़ जाने के लिए यद्यपि भली-चंगी सड़क बनी हुई थी मगर राजा बीरेन्द्रसिंह का लश्कर सीधी सड़क छोड़ जंगल और मैदान ही में पड़ाव डालता चला जा रहा था क्योंकि हजारों आदमियों को आराम जंगल और मैदान ही में मिलता था सड़क के किनारे उतनी ज्यादे जगह नहीं मिल सकती थी।

एक दिन जब राजा बीरेन्द्रसिंह का लश्कर एक बहुत रमणीक और हरे-भरे जंगल में पड़ाव डाले हुए था संध्या के समय राजा बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह टहलते हुए अपने खेमे से कुछ दूर निकल गये और एक छोटे से टीले पर चढ़ कर अस्त होते हुए सूर्य की शोभा देखने लगे। यकायक उनकी निगाह एक सवार पर पड़ी जो बड़ी तेजी के साथ घोड़ा दौड़ाता हुआ बीरेन्द्रसिंह के लश्कर की तरफ आ रहा था। दोनों की निगाहें उसी की तरफ उठ गईं और उसे बड़े गौर से देखने लगे। थोड़ी ही देर में वह सवार टीले के पास पहुंच गया और उस समय उस सवार की भी निगाह राजा बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह पर पड़ी। सवार ने तुरन्त घोड़े का मुँह फेर दिया और बात की बात में राजा बीरेन्द्रसिंह के पास पहुंच कर घोड़े के नीचे उतर पड़ा। जिस टीले पर वह दोनों खड़े थे वह बहुत ऊँचा न था अतएव उस सवार ने नेजा गाड़ कर घोड़े की लगाम उसमें अटका दी और बेखौफ टीले के ऊपर चढ़ गया। इस सवार के हाथ में एक चीठी थी जो

उसने सलाम करने के बाद राजा वीरेन्द्रसिंह को दे दी। राजा साहब ने चीठी खोल कर बड़े गौर से पढ़ी और तेजसिंह के हाथ में दे दी। तेजसिंह ने भी उसे पढ़ा और राजा साहब की तरफ देख कर कहा 'निःसन्देह ऐसा ही है।'

वीरेन्द्र–तुमने तो इस विषय में मुझसे कुछ भी नहीं कहा था।

तेज–कुछ कहने की आवश्यकता न थी और अभी मैं इन बातों का निश्चय ही कर रहा था।

वीरेन्द्र–इस राय को तो मैं पसन्द करता हू।

तेजसिंह–राय पसन्द करने योग्य है और इसका जवाब भी लिख देना चाहिए।

वीरेन्द्र–हॉ इसका जवाब लिख दो।

'बहुत अच्छा' कहकर तेजसिंह ने अपने जेब से जस्ते की एक कलम निकाली और उस चीठी की पीठ पर जवाब लिखकर वीरेन्द्रसिंह को दिखाया। राजा साहब ने उसे पसन्द किया और चीठी उसी सवार के हाथ में दे दी गई। सवार सलाम करके टीले से नीचे उतर आया और घोडे पर सवार होकर उसी तरफ चला गया जिधर से आया था। सवार के चले जाने बाद राजा वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह भी टीले से नीचे उतरे और गुप्त विषय पर बातें करते हुए लश्कर की तरफ रवाना होकर थोडी ही देर में अपने खेमे के अन्दर जा पहुचे।

इस सफर में राजा वीरेन्द्रसिंह का कायदा था कि दिन-रात में एक दफे किसी समय किशोरी और कामिनी के डेरे में जरूर जाते, थोडी देर बैठते और हर तरह के ऊच-नीच समझा-बुझा कर तथा दिलासा देकर अपने डेरे में लौट आते। इसी तरह उन दोनों के पास दो दफे तेजसिंह के जाने का भी मामूल था। जिस समय किशोरी और कामिनी के पास राजा साहब या तेजसिंह जाते उस समय प्राय सब लौडियॉ अलग कर दी जातीं, केवल कमला उन दोनों के पास रह जाती थी। आज भी टीले पर से लौटने के बाद थोडी देर दम लेकर राजा वीरेन्द्रसिंह किशोरी और कामिनी के खेमे में गये और दो घडी तक वहॉ बैठे रहे, कुल लौडिया हटा दी गई थीं केवल कमला मौजूद थी जो उन दोनों के दुःख सुख की साथी बन चुकी थी और थी।

दो घडी तक वहॉ ठहरने के बाद राजा साहब अपने खेमे में लौट आये और तेजसिंह के साथ बैठ कर तरह तरह की बातें करने लगे। जब रात ज्यादे चली गई तो राजा साहब ने चारपाई की शरण ली। तेजसिंह भी अपने खेमे में चले गये और खा पीकर सो रहे।

तेजसिंह को चारपाई पर गये आधा घण्टा भी न बीता था कि चोबदार ने किशोरी की लौडियों के आने की इत्तिला की। तेजसिंह तुरन्त उठ बैठे और इन लौडियों को अपने पास हाजिर करने की आज्ञा दी। थोडी ही देर में दो लौडिया तेजसिंह के सामने आई जिनमें से एक वही दया थी जिसे वास्तव में मनोरमा कहना चाहिए।

तेज–(लौडियों से) इस समय तुम लोगों के आने से आश्चर्य मालूम होता है।

दया–किशोरीजी ने हम लोगों को आपके पास भेजा है और कहा है कि यहा से थोडी दूर पर कोई ऐसी इमारत है जिसके अन्दर तिलिस्म होने का शक है। जब मैं कैदियों की तरह रोहतासगढ़ में रहती थी तो यह बात राजा दिग्विजयसिंह की जुबानी सुनने में आई थी। यदि यह बात ठीक है तो आपकी कृपा से मैं उस इमारत को देखा चाहती हूँ।

तेज–किशोरी का कहना तो ठीक है, निःसन्देह यहा से थोडी ही दूर पर एक इमारत है जिसमें तरह-तरह की अद्भुत बातें देखने में आती है और मैं उस इमारत को देख चुका हूँ, मगर एक साथ कई आदमियों का उस इमारत के अन्दर जाना बहुत कठिन है। (कुछ सोचकर) अच्छा तुम लोग चलो मैं महाराज से वहा जाने की आज्ञा लेकर बहुत जल्द किशोरी के पास आता हू।

दया–जो आज्ञा।

दोनों लौडिया सलाम करके किशोरी के पास चली गई और जो कुछ तेजसिंह ने उनसे कहा था वह किशोरी के सामने अर्ज किया। इस समय वहा किशोरी, कामिनी और कमला एक साथ बैठी हुई थीं और कई लौडिया भी मौजूद थीं।

थोडी देर बाद तेजसिंह के आने की इत्तिला मिली और कमला उनको लेने के लिए खेमे के बाहर गई। जब तेजसिंह खेमे के अन्दर आए तो उन्हें देख किशोरी और कामिनी उठ खड़ी हुईं और जब तेजसिंह बैठ गए तो अदब के साथ उनके सामने बैठ गईं।

तेज–(किशोरी से) उस इमारत की याद यकायक कैसे आ गई ?

किशोरी–अकस्मात् उस इमारत की याद आ गई। कामिनी बहिन को भी उसके देखने का बहुत शौक है। मैंने सोचा कि ऐसा मौका फिर काहे को मिलेगा। वह इमारत रास्ते ही में पडती है, यदि आपकी कृपा होगी तो हम लोग उसे देख लेंगी।

तेज–बात तो ठीक है और वह इमारत भी देखने योग्य है मै तुम्हें वहाँ ले जा सकता हू और महाराज से आज्ञा भी ले आया हू मगर तुम अपने साथ किसी लौंडी को वहाँ न ले जा सकोगी।

किशोरी–कामिनी बहिन और कमला का चलना तो आवश्यक है और ये दोनों न जायँगी तो मुझे उसके देखने का आनन्द ही क्या मिलेगा ?

तेज–इन दोनों के लिए मै मना नहीं करता मै रथ जोतने के लिए हुक्म दे आया हू अभी आता होगा तुम तीनो उस रथ पर सवार हो जाओ घोडे की रास मै लूगा और तुम लोगों को वहाँ ले चलूगा सिवाय हम चार आदमियों के और कोई भी न जायेगा।

किशोरी–जब स्वय आप हम लोगों के साथ है तो हमें और किसी की जरूरत क्या है ?

तेज–यदि इस समय हम लोग रथ पर सवार होकर रवाना होंगे तो घण्टे भर के अन्दर ही वहाँ जा पहुचेगे छ सात घन्टे मैं उस इमारत को अच्छी तरह से देख लेंगे इसके बाद यहाँ लौटने की कोई जरूरत नहीं है अगले पडाव की तरफ चले जायेंगे जब तक हमारा लश्कर यहाँ से कूच करके अगल पडाव पर पहुचेगा तब तक हम लोग भी वहाँ पहुच जायँगे।

किशोरी–जैसी मर्जी।

थोडी ही देर बाद इत्तिला मिली कि दो घोडों का रथ हाजिर है। तेजसिह उठ खडे हुए पर्दे का इन्तजाम किया गया किशोरी, कामिनी और कमला उस पर सवार कराई गईं तेजसिह ने घोडों की रास सम्हाली और रथ तेजी के साथ वहाँ से रवाना हुआ।

छठवां बयान

रात बीत गई पहर भर दिन चढने बाद बीरेन्द्रसिह का लश्कर अगले पडाव पर जा पहुचा और उसके घण्टे भर बाद तेजसिह भी रथ लिये हुए आ पहुचे। रथ जनाने डेरे के आगे लगाया गया, पर्दा करके जनानी सवारी (किशोरी, कामिनी और कमला) उतारी गईं और रथ नौकरों के हवाले करके तेजसिह राजा साहब के पास चले गये।

आज के पडाव पर हमारे बहुत दिनों के बिछुडे हुए ऐयार लोग अर्थात पन्नालाल, रामनारायण, चुन्नीलाल और पण्डित बद्रीनाथ भी आ मिले क्योंकि इन लोगों को राजा साहब के चुनारगढ जाने की इत्तिला पहिले ही से दे दी गई थी। ये लोग उसी समय उस खेमे में चले गये जहाँ कि राजा बीरेन्द्रसिह और तेजसिह एकान्त में बैठे बातें कर रहे थे। इन चारों ऐयारों को आशा थी कि राजा बीरेन्द्रसिह के साथ ही साथ चुनारगढ जायँगे मगर ऐसा न हुआ इसी समय कई काम उन लोगों के सुपुर्द हुए और राजा साहब की आज्ञानुसार वे चारों ऐयार वहाँ से रवाना होकर पूरब की तरफ चले गये।

राजा बीरेन्द्रसिह और तेजसिह को इस बात की आहट लग गई थी कि मनोरमा भेष बदले हुए हमारे लश्कर के साथ चल रही है और धीरे-धीरे उसके मददगार लोग भी रूप बदले हुए लश्कर में चले आ रहे है मगर तेजसिह को उसके गिरफ्तार करने का मौका नहीं मिलता था। उन्हें इस बात का पूरा-पूरा विश्वास था कि मनोरमा नि सन्देह किसी लौंडी की सूरत में होगी मगर बहुत सी लौंडियों में से मनोरमा को जो बडी धूर्त और ऐयार थी छाट कर निकाल लेना कठिन काम था। मनोरमा के न पकडे जाने का एक सबब और भी था, तेजसिह इस बात को तो सुन ही चुके थे कि मनोरमा ने बेवकूफ नानक से तिलिस्मी खजर ले लिया है अस्तु तेजसिह का यही ख्याल था कि मनोरमा तिलिस्मी खजर अपने पास अवश्य रखती होगी। यद्यपि राजा साहब की बहुत सी लौंडियाँ खजर रखती थीं मगर तिलिस्मी खजर रखने वालों को पहिचान लेना तेजसिंह मामूली काम समझते थे और उनकी निगाह इस लिए बार-बार तमाम लौंडियों की उगलियों पर पडती थी कि तिलिस्मी खजर के जोड की अगूठी किसी न किसी की उँगली में जरूर दिखाई देगी उसे ही मनोरमा समझ के तुरन्त गिरफ्तार कर लेंगे।

यह सब कुछ था मगर मनोरमा भी कुछ कम चागली न थी और उसकी होशियारी और चालाकी ने तेजसिह को पूरा धोखा दिया। इस बात को मनोरमा भी पहले ही से विचार चुकी थी कि मेरे हाथ में तिलिस्मी खजर के जोड की अँगूठी अगर तेजसिह देखेंगे तो मेरा भेद खुल जायगा, अतएव उसने बडी मुस्तैदी और हिम्मत का काम किया अर्थात् इस लश्कर में आ मिलने के पहले ही उसने इस बात को आजमाया कि तिलिस्मी खजर के जोड की अँगूठी केवल उगली ही में पहिरने से काम देती है या बदन के किसी भी हिस्से के साथ लगे रहने से उसका फायदा पहुचता है। परीक्षा करने पर जब उसे मालूम हुआ कि वह तिलिस्मी अँगूठी केवल उँगली ही में पहिरने के लिए नहीं है बल्कि बदन के किसी भी हिस्से के साथ लगे रहने ही से अपना काम कर सकती है तब उसने अपनी जघा चीर के तिलिस्मी खजर के जोड की अँगूठी उसमें भर दी और ऊपर से सी-कर तथा मरहम-पट्टी लगाकर आराम कर लिया। इसी सबब से आज तिलिस्मी खजर

रहने पर भी तेजसिंह उसे पहिचान नहीं सके, मगर तेजसिंह का दिल इस बात का भी कबूल नहीं कर सकता था कि मनोरमा इस लश्कर में नहीं है बल्कि मनोरमा के मौजूद होने का विश्वास उन्हें उतना ही था जितना पढ़े-लिखे आदमी को एक और एक दो होने का विश्वास होता है।

आज तेजसिंह ने यह हुक्म जारी किया कि किशोरी-कामिनी और कमला के खेमे में *उस समय कोई लौंडी न रहे और न जाने पावे जब वे तीनों निद्रा की अवस्था में हों अर्थात् जब ये तीनों जागती रहें तब तो लौंडियाँ उनके पास रहें और आ जा सकें परन्तु जब वे तीनों सोने की इच्छा करें तब एक भी लौंडी खेमे में न रहने पावे और जब तक कमला घण्टी बजाकर किसी लौंडी को बुलाने का इशारा न करें तब तक कोई लौंडी खेमे के अन्दर न जाय, और उस खेमे के चारों तरफ बड़ी मुस्तैदी के साथ पहरा देने का इन्तजाम रहे।

इस आज्ञा को सुनकर मनोरमा बहुत ही चिटकी और मन में कहने लगी कि 'तेजसिंह' भी बड़ा बेवकूफ आदमी है भला ये सब बातें मनोरमा के हौसले को कभी कम कर सकती हैं ? बल्कि मनोरमा अपने काम में अब और शीघ्रता करेगी। क्या मनोरमा केवल इसी काम के लिए इस लश्कर में आई है कि किशोरी को मार कर चली जाय ? नहीं नहीं वह इससे भी बढ़कर काम करने के लिए आई है। अच्छा अच्छा तेजसिंह को इस चालाकी का मजा आज ही न चखाया तो कोई बात नहीं। किशोरी-कामिनी और कमला को या इन तीनों में से किसी एक को आज ही न मार खपाया तो मनोरमा नाम नहीं। रह तो जा नालायक देखें तेरी होशियारी कहा तक काम करती है। ऐसी-ऐसी बहुत सी बातें मनोरमा ने सोचीं और अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का उद्योग करने लगी।

सातवां बयान

रात आधी से ज्यादा जा चुकी है। उस लम्बे चौड़े खेमे के चारों तरफ बड़ी मुस्तैदी के साथ पहरा फिर रहा है जिसमें किशोरी,कामिनी और कमला गहरी नींद में सोई हुई हैं। उसके दोनों बगल और भी दो बड़े-बड़े डेरे हैं जिनमें लौंडियां हैं और उन दोनों डेरों के चारों तरफ भी दो फौजी सिपाही घूम रहे हैं। मनोरमा चुपचाप अपने बिछावन पर से उठी कनात उठाकर चोरों की तरह खेमे के नीचे से बाहर निकल गई और पैर दबाती हुई किशोरी के खेमे की तरफ चली। दूर से उसने देखा कि चार फौजी सिपाही हाथ में नंगी तलवारें लिए हुए घूम-घूम कर पहरा दे रहे हैं। वह हाथ में तिलिस्मी खंजर लिए हुए खेमे के पीछे चली गई। जब पहरा देने वाले टहलते हुए कुछ आगे निकल गए तब उसने कदम बढ़ाया और तिलिस्मी खंजर म्यान से निकाल कर उनके रास्ते में रख दिया इसके बाद पीछे हटकर पुनः आड़ में खड़ी हो गई तथा पहरा देने वाले की तरफ ध्यान देकर देखने लगी। जब पहरा देने वाले लौटकर उस खंजर के पास पहुँचे तो एक की निगाह उस खंजर पर जा पड़ी जिसका लोहा तारों की रोशनी से चमक रहा था। उसने झुक कर खंजर उठाना चाहा मगर छूने के साथ ही बेहोश होकर औंधे मुह जमीन पर गिर पड़ा। उसकी यह अवस्था देख उसके साथियों को भी आश्चर्य हुआ। दूसरे ने झुककर उसे उठाना चाहा और जब खंजर पर उसका हाथ पड़ा तो उसकी भी वही दशा हुई जो पहिले सिपाही की हुई थी। तिलिस्मी खंजर का हाल और गुण गिने हुए आदमियों को मालूम था और जिन्हें मालूम था वे भी उसे बहुत छिपा कर रखते थे। बेचारे फौजी सिपाहियों को इस बात की कुछ खबर न थी और धोखे में पड़ कर जैसा कि ऊपर लिख चुके हैं एक दूसरे के बाद चारों सिपाही खंजर छू छू कर बेहोश हो गये। उस समय मनोरमा पेड़ की आड़ से बाहर निकलकर चारों बेहोश सिपाहियों के पास पहुँची, अपना खंजर उठा लिया और उसी खंजर से खेमे के पीछे कनात में बड़ा सा छेद करने के बाद बड़ी होशियारी से खेमे के अन्दर घुस गई। उस समय किशोरी,कामिनी और कमला गहरी नींद में खुर्राटे ले रही थी जिन्हें एक दम दुनिया से उठा देने की फिक्र में मनोरमा लगी हुई थी। मनोरमा उनके सिर्हाने की तरफ खड़ी हो गई और सोचने लगी, 'निःसन्देह इस समय मेरा वार खाली नहीं जा सकता, तिलिस्मी खंजर के एक ही वार में सिर कटकर अलग हो जायगा मगर एक के सिर कटने की आहट पाकर बाकी दोनों जग जायगी, ऐसा न होना चाहिए, इस समय इन तीनों ही को मारना मेरा काम है, अच्छा पहिले इस तिलिस्मी खंजर से इन तीनों को बेहोश कर देना चाहिए। इतना सोचकर मनोरमा ने तिलिस्मी खंजर बदन से लगाकर उन तीनों को बेहोश कर दिया और फिर सिर काटने के लिये तैयार हो गई। उसने तिलिस्मी खंजर का एक भरपूर हाथ किशोरी की गर्दन पर जमाया जिससे सिर कटकर अलग हो गया दूसरा हाथ उसने कामिनी की गर्दन पर जमाया और उसका सिर काटने के बाद कमला का सिर भी धड़ से अलग कर दिया इसके बाद खुशी भरी निगाहों से तीनों लाशों की तरफ देखने लगी और बोली, "इन्हीं तीनों ने

* किशोरी,कामिनी और कमला एक खेमे में रहा करती थीं।

दुनिया में उधम मचा रक्खा था। जिस तरह इस समय इन तीनों को मार कर मैं खुश हो रही हूँ उसी तरह बहुत जल्द वीरेन्द्र इन्द्रजीतसिंह, आनन्द और गोपाल क. भी मार कर खुशी भरी निगाहों से उनकी लाशों का दखूगी। तब दुनिया में मायारानी और मनोरमा के सिवाय कोई भी प्रतापी दिखाई न देगा! मनोरमा इतना कह ही चुकी थी कि पीछे की तरफ से आवाज आई– "नहीं नहीं, ऐसा न हुआ है और न कभी होगा!"

आठवां बयान

अब हम थोड़ा सा हाल इन्द्रदेव का बयान करते हैं जो लक्ष्मीदेवी, कमलिनी, लाडिली और नकली बलभद्रसिंह को साथ लेकर अपने घर की तरफ रवाना हुए थे और जिनके साथ कुछ दूर तक भूतनाथ भी गया था।

नकली बलभद्रसिंह हथकड़ी-बेड़ी से जकड़ा हुआ एक डोली पर सवार कराया गया था और कुछ फौजी सिपाही उसे चारों तरफ से घेरे हुए जा रहे थे। लक्ष्मीदेवी, कमलिनी तथा लाडिली पालकियों पर सवार कराई गई थीं और उन तीनों पालकियों के आगे-पीछे बहुत से सिपाही जा रहे थे। इन्द्रदेव एक उम्दा घोड़े पर सवार थे और भूतनाथ पैदल उनके साथ-साथ जा रहा था। दोपहर दिन चढ़े बाद जब इन लोगों का डेरा एक सुहावने जंगल में पड़ा तो भूतनाथ ने इन्द्रदेव से बिदा मांगी। इन्द्रदेव ने कहा मुझे तो कोई उज्र नहीं है मगर लक्ष्मीदेवी और कमलिनी से पूछ लेना जरूरी है। तुम मेरे साथ उनके पास चलो मैं उन लोगों से तुम्हें छुट्टी दिला देता हूँ।

लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली की पालकी एक घने पेड़ के नीचे आमने-सामने रक्खी हुई थी और उनके चारों तरफ कनात घिरी हुई थी। बीच में उम्दा फर्श बिछा हुआ था और तीनों बहिनें उस पर बैठी बातें कर रही थीं। इन्द्रदेव अपने साथ भूतनाथ को लिए हुए उन तीनों के पास गये और कमलिनी की तरफ देखकर बोले भूतनाथ बिदा होने की आज्ञा मांगता है।

इन्द्रदेव को देख कर तीनों बहिनें उठ खड़ी हुईं और कमलिनी ने भूतनाथ को भी अपने सामने फर्श पर बैठने का इशारा किया। भूतनाथ बैठ गया तो बातें होने लगीं–

कमलिनी–(भूतनाथ से) भूतनाथ तुम्हारे मामले ने तो हम लोगों को बहुत परेशान कर रक्खा है। पहिले तो यही विश्वास हो गया था कि तुम ही मेरे पिता के घातक हो और यह जैपालसिंह वास्तव में हमारा पिता है वह खयाल तो अब जाता रहा मगर तुम अभी तक बेकसूर साबित न हुए।

भूत–कसूरवार तो मैं जरूर हूँ, पहिले ही तुमसे कह चुका हूँ कि मेरे हाथ से कई बुरे काम हो चुके हैं जिनके लिए मैं पछता रहा हूँ और अब नेक काम करके दुनियाँ में नेकनाम हुआ चाहता हूँ और तुमने मेरी सहायता करने की प्रतिज्ञा भी की थी। तब से तुम स्वयं देख रही हो कि मैं कैसे-कैसे काम कर रहा हूँ। यह सब कुछ है मगर मैंने तुम्हारे पिता-माता या तुम तीनों बहिनों के साथ कभी कोई बुराई नहीं की, इसे तुम निश्चय समझो शायद यही सबब है कि ऐसे नाजुक समय में भी कृष्णाजिन्न ने मेरी सहायता की मालूम होता है कि वह मेरा हाल अच्छी तरह जानता है।

कमलिनी–खैर यह तो जब तुम्हारा मुकदमा होगा तब मालूम हो जायगा क्योंकि मैं बिल्कुल नहीं जानती कि कृष्णाजिन्न कौन है उसने तुम्हारा पक्ष क्यों लिया और राजा वीरेन्द्रसिंह ने क्यों कृष्णाजिन्न की बात मान कर तुम्हें कैद से छुट्टी दे दी।

लक्ष्मीदेवी–(भूतनाथ से) मगर मैं जहां तक समझती हूँ यही जान पड़ता है कि तुम कृष्णाजिन्न को अच्छी तरह पहिचानते हो।

भूत–नहीं नहीं कदापि नहीं। (खंजर हाथ में लेकर) मैं कसम खा कर कहता हूँ कि कृष्णाजिन्न को बिल्कुल नहीं पहिचानता मगर उसकी कुदरत देख कर आश्चर्य करता हूँ और उससे डरता हूँ। यद्यपि उसने मुझे कैद से छुड़ा दिया मगर तुम देखती हो कि भाग कर जान बचाने की नीयत मेरी नहीं है। कई दफे स्वतन्त्र हो जाने पर भी मैंने तुम्हारे काम से मुंह नहीं फेरा और समय पड़ने पर जान तक देने को तैयार हो गया।

कमलिनी–ठीक है ठीक है और अबकी दफे रोहतासगढ़ में पहुँच कर भी तुमने बड़ा काम किया मगर इस बारे में मुझे एक बात का आश्चर्य मालूम होता है।

भूतनाथ–वह क्या?

कमलिनी–तुमने अपना हाल बयान करते समय कहा था कि मैंने तिलिस्मी खंजर से शेरअलीखां की सहायता की थी।

भूत–हां बेशक कहा था।

कमलिनी—तुम्हें जो तिलिस्मी खजर मैंने दिया था वह तो मायारानी ने उस समय अपने कब्जे में कर लिया था जब जमानिया तिलिस्म के अन्दर जाने वाली सुरग में उसने तुम लोगों को बेहोश किया था। उसने राजा गोपालसिह का तिलिस्मी खजर लेकर नागर को दे दिया था। नागर वाला तिलिस्मी खजर ता भैरोसिह ने (इन्द्रदेव की तरफ इशारा कर) आपसे ल लिया था जो मेरी इच्छानुसार अब तक भैरोसिह क पास है परन्तु तुम्हारे पास तिलिस्मी खजर कहा से आ गया जिससे तुमने काम लिया और जो अव तक तुम्हारे पास है।

भूतनाथ—आपको मालूम हुआ होगा कि मेरा खजर जो मायारानी ने ल लिया था उसे कृष्णाजिन्न ने रोहतासगढ किल के अन्दर उस समय मायारानी से छीन लिया था जब वह शेरअलीखा को लेकर वहा गई थी।

कमलिनी—हा ठीक है तो क्या वही खजर कृष्णाजिन्न ने फिर तुम्हें दे दिया ?

भूतनाथ—जी हा (तिलिस्मी खजर और उसके जोड की अगूठी कमलिनी के आगे रख कर) अब यदि मर्जी हो तो ले लीजिये यह हाजिर है।

कम—(कुछ सोच कर) नहीं अब यह खजर तुम अपने ही पास रक्खो, जब कृष्णाजिन्न ने जिन्हें राजा वीरेन्द्रसिह और तेजसिह मानते हैं तुम्हें दे दिया हो,अब बिना उनकी इच्छा क छीन लेना मैं उचित नहीं समझती (ऊची सास लेकर) क्या कहा जाय तुम्हारे मामले में अक्ल कुछ भी काम नहीं करती।

इन्द्रदेव—भूतनाथ तुम देखते हो कि नकली बलभद्रसिह को मैं अपने साथ लिये जाता हूँ, अगर तुम भी मेरे साथ चल के उससे बातचीत करते तो

भूत—नहीं नहीं आप मुझे अपने साथ ले चल कर उसका मुकाबला न कराइये, उसका सामना होने से ही मेरी जान सूख जाती है। यह तो मैं जानता ही हूँ कि एक न एक दिन मेरा और उसका सामना धूमधाम के साथ हागा और जो कुछ कसूर मैंने किया है या उसका बिगाडा है खुले बिना न रहेगा परन्तु अभी आप क्षमा करें थोड दिनों में मैं अपने बचाव का सामान इकट्ठा कर लूगा और तब तक बलभद्रसिह का भी पता लग जायेगा उनसे भी सहायता मिलने की मुझ आशा है हा यदि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार न करें तो लाचार मैं साथ चलने के लिए हाजिर हूँ।

इन्द्रदेव—(कुछ सोच कर) खैर चिन्ता नहीं तुम जाओ बलभद्रसिह की खोज निकालने का उद्योग करो और इन्दिरा का भी पता लगाओ। अब मुझसे कब मिलोगे ?

भूत—आठ-दस दिन के वाद आपसे मिलूगा फिर जैसा मौका हो।

कम—अच्छा जाओ मगर जो कुछ करना है उसे दिल लगा के करो।

भूत—मै कसम खाकर कहता हूँ कि बलभद्रसिह को खोज निकालने की फिक्र सबसे ज्यादे दुनियां में जिस आदमी को है वह मैं हूँ।

इतना कह कर भूतनाथ उठ खडा हुआ और अपने अडडे की तरफ रवाना हो गया। तीसरे दिन अपने अडडे पर पहुँचा जो 'बराबर' की पहाडी पर था। वहा उसने अपने आदमी दाऊ बाबा की जुबानी नानक का हाल सुना और क्रोध में भरा हुआ केवल दो घण्टे वहा रहने के बाद पहाडी के नीचे उतरकर उस जगल की तरफ रवाना हो गया जहा पहिले-पहल श्यामसुन्दरसिह और भगवनिया के सामने नकली बलभद्रसिह से उसकी मुलाकात हुई थी।

नौवां बयान

लक्ष्मीदेवी कमलिनी लाडिली और नकली बलभद्रसिह को लिए हुए इन्द्रदेव अपने गुप्त स्थान में पहुँच गये। दोपहर का समय है। एक सजे हुए कमरे के अन्दर ऊची गद्दी के ऊपर इन्द्रदेव बैठे हुए हैं पास ही में एक दूसरी गद्दी बिछी हुई है जिस पर लक्ष्मीदेवी,कमलिनी और लाडिली बैठी हुई हैं उनके सामने हथकडी बेडी और रस्सियों से जकडा हुआ नकली बलभद्रसिह बैठा है और उसके पीछे हाथ में नगी तलवार लिए इन्द्रदेव का ऐयार सर्यूसिह खडा है।

नकली बलभद्र—(इन्द्रदेव से) जिस समय मुझसे और भूतनाथ से मुलाकात हुई थी उस समय भूतनाथ की क्या दशा हुई सो स्वयम् तेजसिह देख चुके हैं। अगर भूतनाथ सच्चा होता तो मुझसे क्यों डरता। मगर बडे अफसोस की बात है कि राजा बीरेन्द्रसिह ने कृष्णाजिन्न के कहने से भूतनाथ को छोड दिया और जिस सन्दूकडी को मैंने पेश किया था उसे न खोला वह खुलती तो भूतनाथ का बाकी भेद छिपा न रहता।

इन्द्रदेव—जो हो मै राजा साहब की बातों में दखल नहीं दे सकता मगर इतना कह सकता हूँ कि भूतनाथ ने चाहे तुम्हारे साथ हद से ज्यादे बुराई की हो मगर लक्ष्मीदेवी के साथ कोई बुराई नहीं की थी, इसके अतिरिक्त छोड दिये जाने

पर भी भूतनाथ भागने का उद्योग नहीं करता और समय पड़ने पर हम लोगों का साथ देता है।

नकली बलभद्र–अगर भूतनाथ आप लोगों का काम न करे तो आप लोग उस पर दया न करेंगे, यही समझ कर वह

इन्द्रदेव–(चिढ़ कर) ये सब वाहियात बातें हैं मैं तुमसे बकवास करना पसन्द नहीं करता तुम यह बताओ कि तुम जेपाल हो या नहीं।

नकली बलभद्र–मैं वास्तव में बलभद्रसिंह हूँ।

इन्द्र–(क्रोध के साथ) अब भी तू झूठ बोलने से बाज नहीं आता मालूम होता है कि तेरी मौत आ चुकी है अच्छा देख मैं तुझे किस दुर्दशा के साथ मारता हूँ ! (सर्यूसिंह से) तुम पहिले इसकी दाहिनी आंख उंगली डाल कर निकाल लो।

नकली बलभद्र–(लक्ष्मीदेवी से) देखो तुम्हारे बाप की क्या दुर्दशा हो रही है !

लक्ष्मी–मुझे अब अच्छी तरह से निश्चय हो गया कि तू हमारा बाप नहीं है। आज जब मैं पुरानी बातों को याद करती हूँ तो तेरी और दारोगा की बेईमानी साफ मालूम हो जाती है। सबसे पहिले जिस दिन तू कैदखाने में मुझसे मिला था उसी दिन मुझे तुझ पर शक हुआ था मगर तेरी इस बात पर कि जहरीली दवा के कारण मेरा बदन खराब हो गया है मैं धोखे में आ गई थी।

नकली बलभद्र–और यह मांढे वाला निशान ?

लक्ष्मी–यह भी बनावटी है अच्छा अगर तू मेरा बाप है तो मेरी एक बात का जवाब दे।

नकली बलभद्र–पूछो।

लक्ष्मी–जिन दिनों मेरी शादी होने वाली थी और जमानिया जाने के लिये मैं पालकी पर सवार होने लगी थी तब मेरी क्या दुर्दशा हुई थी और मैं किस ढंग से पालकी पर बैठाई गई थी ?

नकली बलभद्र–(कुछ सोच कर) अब इतनी पुरानी बात तो मुझे याद नहीं है मगर मैं सच कहता हूँ कि मैं ही बलभद्र

इन्द्रदेव–(क्रोध से सर्यूसिंह से) बस अब विलम्ब करने की आवश्यकता नहीं।

इतना सुनते ही सर्यूसिंह ने धक्का देकर नकली बलभद्र को गिरा दिया और औजार डाल कर उसकी दाहिनी आंख निकाल ली। नकली बलभद्रसिंह जिसे अब हम जैपाल के ही नाम से लिखेंगे दर्द से तड़पने लगा और बोला, ' अफसोस मेरे हाथ पैर बंधे हुए हैं अगर खुले होते तो इस बेदर्दी का मजा चखा देता !

इन्द्रदेव–अभी अफसोस क्या करता है थोड़ी देर में तेरी दूसरी आंख भी निकाली जायगी और उसके बाद तेरा एक-एक अंग काट कर अलग किया जायगा ! (सर्यूसिंह से) हां सर्यूसिंह अब इसकी दूसरी आंख भी निकाल लो और इसके बाद दोनों पैर काट डालो।

जैपाल–(चिल्ला कर) नहीं नहीं जरा ठहरो, मैं तुम्हें बलभद्रसिंह का सच्चा हाल बताता हूँ।

इन्द्रदेव–अच्छा बताओ।

जैपाल–पहिले मेरी आंख में कोई दवा लगाओ जिसमें दर्द कम हो जाय तब मैं तुमसे सब हाल कहूँगा।

इन्द्रदेव–ऐसा नहीं हो सकता बताना हो तो जल्द बता नहीं तेरी दूसरी आंख भी निकाल ली जायगी।

जैपाल–अच्छा मैं अभी बताता हूँ। दारोगा ने उसे अपने बंगले में कैद कर रक्खा था मगर अफसोस मायारानी ने उस बंगले को बारूद के जोर से उड़ा दिया उम्मीद है कि उसी में उस बेचारे की हड्डी पसली भी उड़ गई होगी।

इन्द्रदेव–(सर्यूसिंह से) सर्यूसिंह, यह हरामजादा अपनी बदमाशी से बाज न आवेगा अस्तु तुम एक काम करो इसकी जो आंख तुमने निकाली है उसके गड़हे में पिसी हुई लाल मिर्च भर दो।

इतना सुनते ही जैपाल चिल्ला उठा और हाथ जोड़ कर बोला–

जैपाल–माफ करो माफ करो अब मैं झूठ न बोलूंगा मुझे जरा दम ले लेने दो जो कुछ हाल है मैं सच-सच कह दूँगा इस तरह तड़प तड़प कर जान देना मुझे मंजूर नहीं। मुझे क्या पड़ी है जो दारोगा का पक्ष करके इस तरह अपनी जान दूँ, कभी नहीं अब मैं कदापि तुमसे झूठ न बोलूंगा।

इन्द्रदेव–अच्छा अच्छा दम ले ले कोई चिन्ता नहीं जब तू बलभद्रसिंह का हाल बताने को तैयार ही है तो मैं तुझे क्यों सताने लगा।

जैपाल–(कुछ ठहर कर) इसमें कोई शक नहीं कि बलभद्रसिंह अभी तक जीता है और इन्दिरा तथा इन्दिरा की मां

क विषय में भी मे आशा करता हू कि जीती होंगी।

इन्द्रदेव—बलभद्रसिंह के जीते रहने का तो तुझे निश्चय है मगर इन्दिरा और उसकी मा के बारे में आशा है से क्या मतलब ?

जैपाल—इन्दिरा और इन्दिरा की मा को दारोगा ने तिलिस्म में बन्द करना चाहा था, उस समय न मालूम किस ढग से इन्दिरा तो छूट कर निकल गई मगर उसकी मा जमानिया तिलिस्म के चौथे दर्जे में कैद कर दी गई इसी से उसके बारे में निश्चय रूप से नहीं कह सकता। मगर बलभद्रसिंह अभी तक जमानिया में उस मकान के अन्दर कैद है जिसमें दारोगा रहता था। यदि आप मुझे छुट्टी दें या मेरे साथ चलें तो मैं उसे बाहर निकाल दूँ या आप खुद जाकर जिस ढग से चाहे, उसे छुडा लें।

इन्द्रदेव—मुझे तेरी बात ही सच नहीं जान पडती।

जैपाल—नहीं नहीं अबकी दफे मैंने सच ही सच बता दिया है।

इन्द्रदेव—यदि मैं वहा जाऊँ और बलभद्रसिंह न मिले तो !

जैपाल—मिलने न मिलने से मुझे कोई मतलब नहीं क्योंकि उस मकान में से ढूढ निकालना आपका काम है, अगर आप ही पता लगाने में कसर कर जायेंगे तो मेरा क्या कसूर ! हा एक बात और है इधर थोडे दिन के अन्दर दारोगा ने किसी दूसरी जगह उन्हें रख दिया हो तो मैं नहीं जानता मगर दारोगा का रोजनामचा यदि आपको मिल जाय और उसे पढ सके तो बलभद्रसिंह के छूटने में कुछ कसर न रहे।

इन्द्रदेव—क्या दारोगा रोजनामचा बराबर लिखा करता था ?

जैपा—जी हा वह अपना रत्ती-रत्ती हाल रोजनामचे में लिखा करता था।

इन्द्रदेव—वह रोजनामचा क्योंकर मिलेगा ?

जैपाल—जमानिया के पक्के घाट के ऊपर ही एक तेली रहता है उसका मकान बहुत बडा है और दारोगा की बदौलत वह भी अमीर हो गया है उसका नाम भी जैपाल है और उसी के पास दारोगा का रोजनामचा है यदि आप उससे ले सके तो अच्छी बात है नहीं तो कहिये मैं उसके नाम की एक चीठी लिख दूगा।

इन्द्रदेव—(कुछ सोचकर) बेशक तुझे उसके नाम की एक चीठी लिख देनी होगी मगर इतना याद रखियो कि यदि तेरी बात झूठ निकली तो मैं बडी दुर्दशा के साथ तेरी जान लूगा !

जैपाल—और अगर सच निकली तो क्या मैं छोड दिया जाऊगा ?

इन्द्रदेव—(मुस्कुराकर) हा अगर तेरी मदद से हम बलभद्रसिंह को पा जायगे तो तेरी जान छोड़ दी जायगी मगर तेरे दोनों पैर काट डाले जायेंगे यह तेरी दूसरी आख भी बेकाम कर दी जायेगी।

जैपाल—सो क्या ?

इन्द्रदेव—इसलिए कि तू फिर किसी काम लायक न रहे और न किसी के साथ बुराई कर सके।

जैपाल फिर मुझे खाने को कौन देगा ?

इन्द्रदेव—मैं दूगा।

जैपाल—खैर जैसी मर्जी आपकी मुझे स्वीकार है मगर इस समय तो मेरी आख में कोई दवा डालिये। नहीं तो मैं मर जाऊगा।

इन्द्रदेव—हा हा तेरी आख का इलाज भी किया जायगा, मगर पहिले तू उस तेली के नाम की चीठी लिख दे।

जैपाल—अच्छा मैं लिख देता हूँ, हाथ खोल कर कलम दावात कागज मेरे आगे रक्खो।

यद्यपि आख की तकलीफ बहुत ज्याद थी मगर जैपाल भी बड़े ही कड़े दिल का आदमी था। उसका एक हाथ खोल दिया गया, कलम-दावात-कागज उसके सामने रक्खा गया और उसने जयपाल तेली के नाम एक चीठी लिख कर अपनी निशानी कर दी। चीठी में यह लिखा हुआ था —

मेरे प्यारे जैपाल चक्री,

दारोगा बाबा वाला रोजनामचा इन्हें दे देना नहीं तो मेरी और दारोगा की जान न बचेगी। हम दोनों आदमी इन्हीं के कब्जे में है।

इन्द्रदेव ने वह चीठी लेकर अपने जेब में रक्खी और सर्यूसिंह को जैपाल को दूसरी कोठरी में ले जाकर कैद करने का हुक्म दिया तथा जैपाल की ऑख में दवा लगाने के लिए भी कहा।

धूर्तराज जैपाल ने नि सन्देह इन्द्रदेव को धोखा दिया। उसने जो तेली के नाम चीठी लिख कर दी उसके पढने से

दानों मतलव निकलते हैं। हम दोनों आदमी इन्ही के कब्जे में हैं ये ही शब्द इन्द्रदेव का फसाने के लिए काफी थे अस्तु देखा चाहिए वहा जान पर इन्द्रदेव की क्या हालत होती है।

लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली का हर तरह स समझा-बुझा कर दूसरे दिन प्रात काल इन्द्रदेव जमानिया की तरफ रवाना हुए।

दसवां बयान

अव हम अपने पाठकों को काशीपुरी में एक चौमंजिले मकान के ऊपर ले चलते हैं। यह निहायत संगीन और मजबूत बना हुआ है। नीचे से ऊपर तक गेरू से रंगे रहने के कारण देखने वाला तुरन्त कह देगा कि यह किसी गोसाई का मठ है। काशी के मठधारी गोसाईं नाम ही के साधु या गोसाईं होते हैं वास्तव में उनकी दौलत उनका व्यापार उनका रहन सहन और वर्ताव किसी तरह गृहस्थों और बनियों से कम नहीं होता बल्कि दो हाथ ज्यादे ही होता है। अगर किसी ने धर्म और शास्त्र पर कृपा करके गुसाईपन की कोई निशानी रख भी ली तो केवल इतना ही है कि एक टोपी गेरुए रंग की सिर पर या गेरुए रंग का एक दुपट्टा कन्धे पर रख लिया सो भी भरसक रेशमी और वेशकीमत तो होना ही चाहिए, वस। अस्तु इस समय जिस मकान में हम अपने पाठकों को ले चलते हैं देखने वाले उस मकान को भी किसी ऐसे ही साधु या गोसाईं का मठ कहेंगे पर वास्तव में ऐसा नहीं है मकान के अन्दर कोई विचित्र मनुष्य रहता है और उसके काम भी बड़े ही अनूठे है।

यह मकान कई मंजिल का है। नीचे वाली तीनों मंजिलों को छोड़कर इस समय हम ऊपर वाली चौथी मंजिल पर चलते हैं जहाँ एक छोटे से कमरे में तीन औरत बैठी हुई आपुस में बातें कर रही हैं। रात दो पहर से कुछ ज्यादे जा चुकी है। कमरे के अन्दर यद्यपि बहुत से शीशे लगे हैं मगर रोशनी सिर्फ एक शमादान और एक दीवारगीर की ही हो रही है। शमादान फर्श के ऊपर जल रहा है जहाँ तीनों औरतें बैठी हैं। उनमें एक औरत तो निहायत हसीन और नाजुक है और यद्यपि उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष के पहुँच गई होगी मगर नजाकत, सुडौली और चेहरे का लोच अभी तक कायम है उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में अभी तक गुलाबी डोरिया और मस्तानापन मौजूद है सर के बड़े-बड़े और घने बालों में चांदी की तरह चमकने वाले बाल दिखाई नहीं देते और न अच्छी तरह से देखने से ज्यादा उम्र की ही मालूम पड़ती है साथ ही इसके काली पत्ती गोप सिकरी कड़े छन्द और अंगूठियों की तरफ ध्यान देने से वह रुपये वाली भी मालूम पड़ती है। उसके पास बैठी हुई दोनों औरतें भी उसी की तरह कमसिन और खूबसूरत नहीं तो बदसूरत भी नहीं हैं। जो बहुत हसीन और इस मकान की मालिक औरत है उसका नाम बेगम *है और बाकी की दोनों औरतों का नाम नौरतन और जमालो है।

बेगम–चाहे जैपालसिंह गिरफ्तार हो गया हो मगर भूतनाथ उसका मुकाबला नहीं कर सकता और न भूतनाथ उसे अपनी हिफाजत ही में रख सकता है।

जमालो–ठीक है मगर जब लक्ष्मीदेवी और राजा बीरेन्द्रसिंह को यह मालूम हो गया कि यह असली बलभद्रसिंह नहीं और इसने बहुत बड़ा धोखा देना चाहा था तो उसे जीता कब छोड़ेंगे!

बेगम–तो क्या वह खाली इतने ही कसूर पर मारा जायगा कि उसने अपने को बलभद्रसिंह जाहिर किया?

जमालो–क्या यह छोटा सा कसूर है! फिर असली बलभद्रसिंह का पता लगाने के लिए भी तो लोग उसे दिक करेंगे।

बेगम–अगर इन्साफ किया जायेगा तो जैपालसिंह गदाधरसिंह से ज्यादे दोषी न ठहरेगा ऐसी अवस्था में मुझे यह आशा नहीं होती कि राजा बीरेन्द्रसिंह उसे प्राणदण्ड देंगे।

नौरतन–राजा बीरेन्द्रसिंह चाहे उसे प्राणदण्ड की आज्ञा न भी दें मगर इन्द्रदेव उसे कदापि जीता न छोड़ेगा और यह बात बहुत ही बुरी हुई कि राजा बीरेन्द्रसिंह ने उसे इन्द्रदेव के हवाले कर दिया।

बेगम–जो हो मगर जिस समय मैं उन लोगों के सामने जा खड़ी होऊँगी उस समय जैपाल को छुड़ा ही लाऊँगी क्योंकि उसी के बदौलत अमीरी कर रही हूँ और उसके लिये नीच से नीच काम करने को भी तैयार हूँ।

जमालो–सो कैसे? क्या तुम असली बलभद्रसिंह के साथ उसका बदला करोगी।

बेगम–हाँ मैं इन्द्रदेव और लक्ष्मीदेवी से कहूँगी कि तुम जैपालसिंह को मेरे हवाले करो तो असली बलभद्रसिंह को तुम्हारे हवाले कर दूँगी। अफसोस तो इतना ही है कि गदाधरसिंह की तरह जैपाल सिंह दिलावर और चीवट का आदमी नहीं है। अगर जैपालसिंह के कब्जे में बलभद्रसिंह होता तो वह थोड़ी ही तकलीफ में इन्द्रदेव या लक्ष्मीदेवी को उसका

*बेगम नाम से मुसलमान न समझना चाहिए।

हाल बता देता।

जमालो–ठीक है मगर जब बलभद्रसिह तुम्हारे कब्जे स निकल जायेगा तब जैपालसिह तुम्हारी इज्जत और कदर क्यों करेगा और क्यों दबेगा ? सिवाय इसके अब तो दारोगा भी स्वतन्त्र नहीं रहा जिसके भरोसे पर जैपालसिह कूदता था और तुम्हारा घर भरता था।

बेगम–(कुछ सोच कर) हा बहिन सो तो तुम सच कहती हो। और बलभद्रसिह को छोडने के पहिले ही मुझे अपना घर ठीक कर लेना चाहिये मगर ऐसा करने में भी दो बातों की कसर पडती है।

जमालो–वह क्या ?

बेगम–एक तो वीरेन्द्रसिह के पक्ष वाले मुझ पर यह दोष लगायेंगे कि तूने बलभद्रसिह को क्यों कैद कर रक्खा था दूसरे जब से मनोरमा के हाथ तिलिस्मी खजर लगा है तब से उसका दिमाग आसमान पर चढ गया है वह मुझसे कसम खाकर कह गई है कि थोडे ही दिनों में राजा वीरेन्द्रसिह और उनके पक्ष वालों को इस दुनियां से उठा दूँगी। अगर उसका कहना सच हुआ और उसने फिर मायारानी को जमानिया की गद्दी पर ला बैठाया तो मायारानी मुझ पर दोष लगायेगी कि तूने जैपाल को इतने दिनों तक क्यों छिपा रक्खा और दारोगा से मिलकर मुझे धोखे में क्यों डाला।

नौरतन–बेशक ऐसा ही होगा मगर इस बात को मैं कभी नहीं मान सकती कि अकेली मनोरमा एक तिलिस्मी खजर पाकर राजा वीरेन्द्रसिह के ऐयारों का मुकाबला करेगी और उनके पक्ष वालों को इस दुनिया से उठा देगी। क्या उन लोगों के पास तिलिस्मी खजर न होगा।

जमालो–मैं भी यही कहने वाली थी मैंने इस विषय पर बहुत गौर किया मगर सिवा इसके मेरा दिल और कुछ भी न कहता कि राजा वीरेन्द्रसिह उनके लडके और उनके ऐयारों का मुकाबला करने वाला आज दिन इस दुनियां में कोई भी नहीं है और एक बड़े भारी तिलिस्म के राजा गोपालसिह भी प्रकट हो गये हैं। ऐसी अवस्था में मायारानी और उनके पक्ष वालों की जीत कदापि नहीं हो सकती।

बेगम–ऐसा ही है और गदाधरसिह भी किसी न किसी तरह अपनी जान बचा ही लेगा ? देखा इतना बखेडा हो जाने पर भी लोगों ने गदाधरसिह को जिसने अपना नाम अब भूतनाथ रख लिया है छोड दिया और अब वह चारो तरफ उपद्रव मचा रहा है। ताज्जुब नहीं कि वह जमीन की मिट्टी सूंघता हुआ मेरे घर में भी आ पहुचे ! यद्यपि उसे मेरा पता कुछ भी मालूम नहीं है मगर वह विचित्र आदमी है मिट्टी और हवा में मिल गई चीज का भी पता लगा लेता है। (ऊँची साँस लेकर) अगर मुझसे और उससे लडाई न हो गई होती तो आज मैं भी तीन हाथ की ऊँची गद्दी पर बैठने का साहस करती मगर अफसोस भूतनाथ ने मेरे साथ बहुत ही बुरा सलूक किया ! (कुछ सोच कर) यदि बलभद्रसिह को लेकर मैं राजा वीरेन्द्रसिह के पास चली जाऊँ और भूतनाथ के ऊपर नालिश करूँ तो मैं बहुत अच्छी रहूँ ? मेरे मुकदमे की जवाबदही भूतनाथ कदापि नहीं कर सकता और राजा साहब उसे जरूर प्राणदण्ड की आज्ञा देंगे। बलभद्रसिह को छिपा रखने का यदि मुझ पर दोष लगाया जायेगा तो मैं कह सकूँगी कि जिस जमाने में जो राजा होता है प्रजा उसी का पक्ष करती है अगर मैंने मायारानी और दारोगा के जमाने में उन लोगों का पक्ष किया तो कोई बुरा नहीं किया, मैं इस बात को बिल्कुल नहीं जानती थी बल्कि दारोगा भी नहीं जानता था कि गोपालसिह को मायारानी ने कैद कर रक्खा है अस्तु अब आपका राज्य हुआ है तो मैं आपकी सेवा में उपस्थित हुइ हूँ।

जमालो–बात तो बहुत अच्छी है, फिर इस बात में देर क्यों कर रही हो ? इस काम को जहा तक जल्द करोगी तुम्हारा भला होगा।

बेगम–(कुछ सोच कर) अच्छी बात है ऐसा करने के लिए मैं कल ही यहा से रवाना हो जाऊगी।

इतने ही में दर्वाजे के बाहर से यह आवाज आई मगर भूतनाथ को भी तो अपनी जान प्यारी है वह ऐसा करने के लिए तुम्हें जाने कब देगा ?

तीनों ने चौंक कर दरवाजे की तरफ निगाह की और भूतनाथ को कमरे के अन्दर आते हुए देखा।

बेगम–(भूतनाथ से) आओ जी मेरे पुराने दोस्त भला तुमने मेरे सामने आने का साहस तो किया !

भूतनाथ–साहस और जीवट तो हमारा असली काम है।

बेगम–(अपनी बाईं तरफ बैठने का इशारा करके) मालूम होता है कि पुरानी बातों को तुम बिल्कुल ही भूल गये।

भूतनाथ (बेगम की दाहिनी तरफ बैठ कर)हम दुनिया में आने से भी छ महीने पहले की बात याद रखने वाले आदमी है आज वह दिन नहीं है जिस दिन तुम्हें और जैपाल को देखने के साथ ही डर से मेरे बदन का खून रगों के अन्दर ही जम जाता था बल्कि आज का दिन उसके बिल्कुल विपरीत है।

बेगम—अर्थात् आज तुम मुझे देख कर खुश होते हो !

भूतनाथ—बशक !

बेगम—क्या आज तुम मुझसे बिल्कुल नहीं डरते ?

भूतनाथ—रत्ती भर नहीं।

बेगम—क्या अब मैं अगर राजा वीरेन्द्रसिह के यहा तुम पर नालिश करूँ तो मेरा मुकदमा सुना न जायेगा और तुम साफ छूट जाओगे ?

भूतनाथ—मगर अब तुम्हें राजा वीरेन्द्रसिह के सामने पहुँचने ही कौन देगा ?

बेगम—(क्रोध से) राकेगा ही कौन ?

भूतनाथ—गदाधरसिह जो तुम्हें अच्छी तरह सता चुका है और आज फिर सताने के लिए आया है !

बेगम—(क्रोध को पचा कर और कुछ सोच कर) मगर यह तो बताओ कि तुम बिना इत्तिला कराये यहाँ चले क्यों आये और पहरे वाल सिपाहियों ने तुम्हें आने कैसे दिया ?

भूतनाथ—तुम्हारे दरवाजे पर कौन है जिसकी जुबानी मैं इत्तला करवाता या जो मुझे यहा आने से रोकता ?

बेगम—क्या पहर के सिपाही सब मर गय ?

भूतनाथ—मर ही गये होंगे !

बेगम—क्या सदर दरवाजा खुला हुआ और सूनसान है ?

भूतनाथ—सूनसान तो है मगर खुला हुआ नहीं है कोई चोर न घुस आये इस ख्याल से आती समय सदर दरवाजा मैं अन्दर से बन्द करता आया हूं। डरो मत, कोई तुम्हारी रकम उठा कर न ले जायेगा।

वेगम—(मन ही मन चिढ के) जमालो जरा नीचे जाकर देख तो सही कम्बख्त सिपाही सब क्या कर रहे हैं।

भूतनाथ—(जमालो से) खबरदार यहाँ से उठना मत इस समय इस मकान में मेरी हुकूमत है बेगम या जैपाल की नहीं ! (बेगम से) अच्छा अब सीधी तरह से बता दो कि बलभद्रसिह को कहाँ पर कैद कर रक्खा है।

बेगम—मैं बलभद्रसिह को क्या जानूँ ?

भूतनाथ—तो अभी किसको लेकर राजा बीरन्द्रसिंह के पास जाने के लिए तैयार हो गई थी।

बेगम—तेरे बाप को लेकर जाने वाली थी !

इतना सुनते ही भूतनाथ ने कस के एक चपत बेगम के गाल पर जमाई जिससे वह तिलमिला गई और कुछ ठहरने के बाद तकिये के नीचे से छूरा निकाल कर भूतनाथ पर झपटी। भूतनाथ ने बाएँ हाथ से उसकी कलाई पकड ली और दाहिने हाथ से तिलिस्मी खजर निकाल कर उसके बदन में लगा दिया, साथ ही इसके फुर्ती से नौरतन और जमालो के बदन में भी तिलिस्मी खजर लगा दिया जिससे बात ही बात में सभी बेहोश होकर जमीन पर लम्बी हो गई। इसके बाद भूतनाथ ने बडे गौर से चारो तरफ देखना शुरु किया। इस कमरे में दो आलमारिया थी जिनमें बडे बडे ताले लगे हुए थे, भूतनाथ ने तिलिस्मी खजर मार कर एक आलमारी का कब्जा काट डाला और आलमारी खोल कर उसके अन्दर की चीजें देखन लगा। पहिल एक गठरी निकाली जिसमें बहुत से कागज बँधे हुए थे। शमादान के सामने वह गठरी खोली और एक एक करके कागज दखने और पढने लगा यहाँ तक कि सब कागज देख गया और शमादान में लगा-लगा कर सब जला के खाक कर दिये। इसके बाद एक सन्दूकडी निकाली जिसमें ताला लगा हुआ था। इस सन्दूकडी में भी कागज भरे हुए थे। भूतनाथ ने उन कागजों को जला दिया। इसके बाद फिर आलमारी में ढूढना शुरु किया मगर और कोई चीज उसके काम की न निकली।

भूतनाथ ने अब दूसरी आलमारी का कब्जा भी खजर से काट डाला और अन्दर की चीजों को ध्यान देकर देखना शुरु किया। इस आलमारी में यद्यपि बहुत सी चीजें भरी हुई थीं मगर भूतनाथ ने केवल तीन चीजें उसनें से निकाल लीं। एक तो दस-बारह पन्ने की छोटी सी किताब थी जिसे पाकर भूतनाथ बहुत खुश हुआ और चिराग के सामने जल्दी जल्दी उलट-पलट कर दो तीन पन्ने पढ गया, दूसरा एक ताली का गुच्छा था भूतनाथ ने उसे भी ले लिया और तीसरी चीज एक हीरे की अगूठी थी जिसके साथ एक पुर्जा भी बँधा हुआ था। यह अगूठी एक डिबिया के अन्दर रक्खी हुई थी। भूतनाथ ने अगूठी में से पुरजा खोल कर पढा और इसके पाने से बहुत प्रसन्न होकर धीरे से बोला 'बस और मुझे किसी चीज की जरुरत नहीं है।

इन कामों से छुट्टी पाकर भूतनाथ बेगम के पास आया जो अभी तक बेहोश पडी हुई थी और उसकी तरफ देख-कर बोला अब यह मेरा कुछ बिगाड नहीं सकती ऐसी अवस्था में एक औरत के खून से हाथ रगना व्यर्थ है।"

भूतनाथ हाथ में शमादान लिये निचले खण्ड में उतर गया जहां उसके साथी दो आदमी हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मौजूद थे। उसने अपने साथियों की तरफ देख कर कहा, "बस हमारा काम हो गया। बलभद्रसिंह इसी मकान में कैद है उसे निकाल कर यहां से चल देना चाहिये।" इतना कह कर भूतनाथ ने शमादान एक साथी के हाथ में दे दिया और एक कोठरी के दर्वाजे पर जा खड़ा हुआ जिसमें ताला लगा हुआ था। ताली का गुच्छा जो ऊपर से लाया था उसी में से ताली लगा कर ताला खोला और अपने साथियों को साथ लिये हुए कोठरी के अन्दर घुसा। वह कोठरी खाली थी मगर उसमें से एक दूसरी कोठरी में जाने के लिए दरवाजा था और उसकी जंजीर में ताला लगा हुआ था। ताली लगा कर उस ताले को भी खोला और दूसरी कोठरी के अन्दर गये। इसी कोठरी में लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडिली का बाप बलभद्रसिंह कैद था। दरवाजा खोलते समय जंजीर खटकने के साथ ही बलभद्रसिंह चैतन्य हो गया था। जिस समय उसकी निगाह यकायक भूतनाथ पर पड़ी वह चौंक उठा और ताज्जुब भरी निगाहों से भूतनाथ को देखने लगा। भूतनाथ ने भी ताज्जुब की निगाह से बलभद्रसिंह को देखा और अफसोस किया क्योंकि बलभद्रसिंह की अवस्था बहुत ही खराब हो रही थी। शरीर सूख कर काँटा हो गया था, चेहरे पर और बदन में झुर्रियां पड़ गई थीं, सर मूछ और दाढ़ी के बाल और नाखून इतने बढ़ गये थे कि जंगली मनुष्य और उसमें कोई भेद न जान पड़ता था, अंधेरे में रहते रहते बदन पीला पड़ गया था, सूरत-शक्ल से भी बहुत ही डरावना मालूम पड़ता था। एक कम्बल, मिट्टी की टिलिया और पीतल का लोटा, बस यही उसकी बिसात थी, कोठरी में और कुछ भी न था। भूतनाथ को देख कर वह जिस ढंग से चौंका और काँपा उसे देख भूतनाथ ने गर्दन नीची कर ली और तब धीरे से कहा, "आप उठिये और निकल चलिये, मैं आपको छुड़ाने के लिए आया हूं।"

बलभद्र--(आश्चर्य से) क्या तू मुझे छुड़ाने के लिए आया है! क्या यह बात सच है?

भूतनाथ--जी हां।

बलभद्र--मगर मुझे विश्वास नहीं होता।

भूत--खैर इस समय आप यहां से निकल चलिये फिर जो कुछ सवाल-जवाब या सोच विचार करना हो कीजियेगा।

बलभद्र--(खड़े होकर) कदाचित् यह बात सच हो! और अगर झूठ भी हो तो कोई हर्ज नहीं, क्योंकि मैं इस कैद में रहने के बनिस्बत जल्द मर जाना अच्छा समझता हूं!

भूतनाथ ने इस बात का कुछ जवाब न दिया और बलभद्रसिंह को अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया। बलभद्रसिंह इतना कमजोर हो गया था कि उसे मकान के नीचे उतरना कठिन पड़ता था इसलिये भूतनाथ ने उसका हाथ थाम लिया और नीचे उतार कर दर्वाजे के बाहर ले गया। मकान के दर्वाजे के बाहर वाली गली भर में सन्नाटा छाया हुआ था क्योंकि यह मकान ऐसी अंधेरी और सन्नाटे की गली में था कि वहां शायद महीने में एक दफे किसी भले आदमी का गुजर नहीं होता होगा। दर्वाजे पर पहुँच कर भूतनाथ ने बलभद्रसिंह से पूछा, "आप घोड़े पर सवार हो सकते हैं?"

इसके जवाब में बलभद्रसिंह ने कहा, "मुझे उचक कर सवार होने की ताकत तो नहीं है, अगर घोड़े पर बैठा दोगे तो गिरूंगा नहीं!"

भूतनाथ ने शमादान मकान के भीतर चौक में रख दिया और तब बलभद्रसिंह को आगे बढ़ा ले गया। थोड़ी ही दूर एक आदमी दो कसे कसाये घोड़ों की बागडोर थामे बैठा हुआ था। भूतनाथ एक घोड़े पर बलभद्रसिंह को सवार करा के दूसरे घोड़े पर आप जा बैठा और अपने तीनों आदमियों को कुछ कह कर वहाँ से रवाना हो गया।

ग्यारहवां बयान

रात बहुत कम बाकी थी जब बेगम नौरतन और जमालो की बेहोशी दूर हुई।

बेगम--(चारों तरफ देख कर) हैं, यहाँ तो बिल्कुल अन्धकार हो रहा है! जमालो तू कहां है?

नौरतन--जमालो नीचे गई है।

बेगम--क्यों?

नौर--जब हम दोनों होश में आईं तो यहाँ बिल्कुल अन्धकार देख कर घबराने लगीं। नीचे चौक में कुछ रोशनी मालूम होती थी, जमालो ने झांक कर देखा तो यहाँ वाला शमादान चौक में जलता पाया, आहट लेने पर जब मालूम हुआ कि नीचे कोई भी नहीं है तो शमादान लेने के लिए नीचे गई है।

बेगम--हाय यह क्या हुआ?

नौरतन–पहिले रोशनी आने दो तो कहूंगी लो जमालो आ गई।

बेगम–क्यों बहिन जमालो क्या नीचे बिल्कुल सन्नाटा है ?

जमालो–(शमादान जमीन पर रखकर) हां बिल्कुल सन्नाटा है तुम्हारे सब आदमी भी न मालूम कहॉ गायब हो गये।

बेगम–हाय हाय यहॉ तो दोनों आलमारिया टूटी पडी हैं ! हे हे मालूम होता है कि कागज सभी जला कर राख कर दिये गये ! (एक आलमारी के पास जाकर और अच्छी तरह देखकर) बस सर्वनाश हो गया ! ताज्जुब यह है कि उसने मुझ जीता क्यों छोड दिया !

दोनों आलमारिया और उनकी चीजों की खराबी देखकर बेगम की दशा पागलों जैसी हो गइ। उसकी आखों में ऑसू जारी था और वह घबरा कर चारो तरफ घूम रही थी। थोड़ी ही देर में सवेरा हो गया और तब वह मकान के नीचे आई। एक कोठरी के अन्दर से कई आदमियों के चिल्लाने की आवाज सुनाइ पडी। आवाज से वह पहिचान गई कि उसके सिपाही लोग उसमें बन्द हैं। जब जजीर खोली तो वे सब बाहर निकल और घबराहट के साथ चारो तरफ देखने लगे। बेगम के पास जाने के पहिले ही भूतनाथ ने इन आदमियों को तिलिस्मी खजर की मदद से बेहोश करके इस कोठरी के अन्दर बन्द कर दिया था।

बेगम ने सभों से बेहोशी का सबब पूछा जिसके जवाब में उन्होने कहा कि 'एक आदमी ने आकर एक खजर यकायक हम लोगों के बदन से लगाया, हम लोग कुछ भी न सोच सके कि वह पागल है या चोर बस एकदम बेहोश हो गये और तनाबदन की सुध जाती रही। फिर क्या हुआ यह हम नहीं जानते जब होश में आये तो अपने को कोठरी के अन्दर पाया ।

इसके बाद बेगम ने उन लोगो से कुछ भी न पूछा और नौरतन तथा जमालो को साथ लकर ऊपर वाले उस खण्ड में चली गई जहॉ बलभद्रसिह कैद था। जब बेगम ने उस कोठरी को खुला पाया और बलभद्रसिह को उसमें न देखा तब और हताश हो गइ और जमालो की तरफ देख कर बोली, "बहिन तुमने सच कहा था कि राजा वीरेन्द्रसिह के पक्षपातियों का मनोरमा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती ! देखो भूतनाथ के पास भी वैसा ही तिलिस्मी खजर मौजूद है और उस खजर की बदौलत उसने जो काम किया उसे भी तुम देख चुकी हो ? अगर मैं इसका बदला भूतनाथ से लिया भी चाहू तो नहीं ले सकती क्योंकि अब न तो मेरे कब्जे में बलभद्रसिह रहा और न वे सबूत रह गये जिनकी बदौलत मै भूतनाथ को दबा सकती थी। हाय, एक दिन वह था कि मेरी सूरत देख कर भूतनाथ अधमूआ हो जाता था और एक आज का दिन है कि मैं भूतनाथ का कुछ भी नहीं कर सकती। न मालूम इस मकान का और मेरा पता उसे कैसे मालूम हुआ और इतना कर गुजरने पर भी उसने मेरी जान क्यों छोड दी ? नि सन्देह इसमें भी कोई भेद है। अगर उसने मुझ छोड दिया तो सुखी रहने के लिए नहीं बल्कि इसमें भी उसने कुछ अपना फायदा सोचा होगा।"

जमालो–बेशक ऐसा ही है शुक्र करो कि वह तुम्हारी दौलत नहीं ले गया नहीं तो बड़ा ही अन्धेर हो जाता और तुम टुकडे-टुकडे को मोहताज हो जाती अब तुम [illegible] कि जैपालसिह की जान कदापि नहीं बच सकती।

बेगम–बेशक ऐसा ही है, अब तुम्हारी क्या राय है ?

जमालो–मेरी राय तो यही है कि अब तुम एक पल भी इस मकान में न ठहरो और अपनी जमा पूजी लेकर यहॉ से चल दो। तुम्हारे पास इतनी दौलत है कि किसी दूसरे शहर मे आराम से रहकर अपनी जिन्दगी बिता सको जहा बीरेन्द्रसिह के ऐयारों को जाने की जरूरत न पडे !

बेगम–तुम्हारी राय बहुत ठीक है तो क्या तुम दोनों मेरा साथ दोगी ?

जमालो–मैं जरूर तुम्हारा साथ दूगी।

नौरतन–मैं भी ऐसी अवस्था में तुम्हारा साथ नहीं छोड सकती। जब सुख के दिनों में तुम्हारे साथ रही तो क्या अब दु ख के जमाने में तुम्हारा साथ छोड दूगी ? ऐसा नहीं हो सकता।

बेगम–अच्छा तो अब निकल भागने की तयारी करनी चाहिये।

जमालो– जरूर।

इतने ही में मकान के बाहर बहुत से आदमियों के शोरगुल की आवाज इन तीनों को मालूम पडी। बेगम की आज्ञानुसार पता लगाने के लिए जमालो नीचे उतर गई और थोडी ही देर में लौट आकर बोली हे हे, गजब हो गया ! राजा साहब के सिपाहियों ने मकान को घेर लिया और तुम्हें गिरफ्तार करने के लिए आ रहे है !' जमालो इससे ज्यादे न कहने पाई थी कि धडधडाते हुए बहुत से सरकारी सिपाही मकान के ऊपर चढ आए और उन्होंने बेगम नौरतन और जमालो को गिरफ्तार कर लिया।

बारहवां बयान

काशीपुरी से निकल कर भूतनाथ ने सीधे चुनारगढ का रास्ता लिया। पहर दिन चढे तक भूतनाथ और वलभद्रसिह घोडे पर सवार बरावर चले गये और इस वीच में उन दोनों में किसी तरह की वातचीत न हुई। जब वे दोनों जगल के किनारे पहुचे ता वलभद्रसिह ने भूतनाथ से कहा, अव मै थक गया हू, घोड़ पर मजबूती के साथ नहीं बैठ सकता। वर्षों की कैद ने मुझे विल्कुल वेकार कर दिया। अव मुझमे दस कदम चलने की हिम्मत न रही, अगर कुछ देर तक कहीं ठहर कर आराम कर लेते तो अच्छा होता।'

भूत–वहुत अच्छा थोड़ी दूर और चलिये, इसी जगल में किसी अच्छे ठिकाने जहाँ पानी भी मिल सकता हो,ठहर कर आराम कर लेंगे।

वलभद्र–अच्छा तो अव घोडे को तेज मत चलाओ।

भूतनाथ–(घोडे की तेजी कम करके) वहुत खूव।

वलभद्र–क्यों भूतनाथ, क्या वास्तव में तुमने मुझे कैद से छुडाया है या मुझे धोखा हा रहा है ?

भूत–(मुस्कुरा कर) क्या आपको इस मैदान की हवा मालूम नहीं होती ? या आप अपने को घोड पर सवार स्वतन्त्र नहीं देखते ? फिर ऐसा सवाल क्यों करते है ?

वलभद्र–यह सव कुछ ठीक है मगर अभी तक मुझे विश्वास नहीं होता कि भूतनाथ क हाथों से मुझ मदद पहुचेगी यदि तुम मेरी मदद किया ही चाहते ता क्या आज तक मै कैदखाने ही में पड़ा सडा करता ! क्या तुम नहीं जानत थे कि मै कहा और किस अवस्था में हू ?

भूतनाथ–वेशक मै नहीं जानता था कि आप कहाँ और कैसी अवस्था में है। उन पुरानी वातों को जाने दीजिय मगर इधर जव से मैंने आपकी लडकी श्यामा (कमलिनी) की तावेदारी की है तव से वल्कि इससे भी वरस डढ वरस पहिले ही स मुझे आपकी खवर न थी। मुझे अच्छी तरह विश्वास दिलायागयाकि अव आप इस दुनिया में नहीं रहे। यदि आज के दो महीने पहिले भी मुझे मालूम हो गया होता कि आप जीते हैं और कहीं कैद हैं तो मै आपको कैद से छुड़ा कर कृतार्थ हा गया होता।

वलभद्र–(आश्चर्य से) क्या श्यामा जीती है ?

भूतनाथ–हा जीती है।

वलभद्र–तो लाडिली भी जीती होगी ?

भूत–हॉ वह भी जीती है।

वल–ठीक है, क्योंकि वे दोनों मेरे साथ उस समय जमानिया में न आई थीं जव लक्ष्मीदेवी की शादी होने वाली थी। पहिले मुझ लक्ष्मीदेवी के भी जीते रहने की आशा न थी, मगर कैद होने के थोडे ही दिन बाद मैंने सुना कि लक्ष्मीदेवी जीती है और जमानिया की रानी तथा मायारानी कहलाती है।

भूत–लक्ष्मीदेवी के वारे में जो कुछ आपने सुना सव झूठ है जमाने में वहुत वडा उलट फेर हो गया जिसकी आपको कुछ भी खवर नहीं। वास्तव में मायारानी कोई दूसरी ही औरत थी और लक्ष्मीदवी ने भी वड़े वडे दु ख भोगे परन्तु ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए जिसने दु ख के अथाह समुद्र में डूवते हुए लक्ष्मीदेवी के वेड को पार कर दिया। अव आप अपनी तीनों लडकियों को अच्छी अवस्था में पावेंगे। मुझे यह वात पहिले मालूम न थी कि मायारानी वास्तव में लक्ष्मीदेवी नहीं है।

वलभद्र–क्या वास्तवमें ऐसी ही वात है ? क्या सचमुच मै अपनी तीनों वेटियों को देखूगा ? क्या तुम मुझ पर किसी तरह का जुल्म न करोगे और मुझे छोड़ दोगे ?

भूत–अव मै किस तरह अपनी वातों पर आपको विश्वास दिलाऊ ! क्या आपके पास कोई ऐसा सबूत है जिससे मालूम हो कि मैंने आपके साथ बुराई की ?

बलभद्र–सवूत तो मरे पास कोई भी नहीं मगर मायारानी के दारोगा और जैपाल की जुवानी मैंने तुम्हारे विषय में वडी-वडी वातें सुनी थीं और कुछ दूसरे जरिये से भी मालूम हुआ है।

भूत–तो वस या तो आप दुश्मनों की वातों को मानिए या मेरी इस खैरखाही को दखिए कि कितनी मुश्किल से आपका पता लगाया और किस तरह जान पर खेल कर आपको छुडा ले चला हू।

बलभद्र–(लम्बी सास लेकर) खैर जो हो आज तुम्हारी वदौलत मै किसी तरह की तकलीफ न पाकर अपनी तीनों

लड़कियों से मिलूगा तो तुम्हारा कसूर यदि कुछ हो तो भी मै माफ करता हूँ।

भूत–इसके लिए मै आपको धन्यवाद देता हू। लीजिए यह जगह बहुत अच्छी है घने पेडों की छाया है और पगडण्डी से वहुत हटकर भी है !

बलभद्र–ठीक तो है अच्छा तुम उतरो और मुझे भी उतारो।

दोनों ने घोडा रोका, भूतनाथ घोडे से नीचे उतर पडा और उसकी वागडोर एक डाल से अडाने के बाद धीरे से वलभद्रसिह को भी नीचे उतारा। जीनपोश बिछाकर उन्हें आराम करने के लिए कहा और तब दोनों घोड़ों की पीठ खाली करके लम्बी वागडोर के सहारे एक पेड के साथ वाध दिया जिसस वे भी लोट-पोट कर थकावट मिटा लें और घास चरें।

यहाँ पर भूतनाथ ने वलभद्रसिह की बडी खातिर की। ऐयारी के बटुए में मे उस्तुरा निकाल कर अपन हाथ से इनकी हजामत वनाई, दाढी मूड़ी, कैची लगाकर सर क बाल दुरुस्त किए इसक वाद स्नान कराया और वदलने के लिए यज्ञोपवीत दिया। आज वहुत दिनों के वाद वलभद्रसिह ने चश्मे के किनारे वैठकर सन्ध्यावन्दन किया और देर तक सुर्य भगवान की स्तुति करते रहे। जब सब तरह स दोनों आदमी निश्चिन्त हुए तो भूतनाथ न खुर्जी * में से कुछ मेवा निकाल कर खाने के लिए वलभद्रसिह को दिया और आप भी खाया। अब वलभद्रसिह को निश्चय हो गया कि भूतनाथ मर साथ दुश्मनी नहीं करता और उसने नेकी की राह से मुझे भारी कैदखाने से छुडाया है।

वलभद्र–गदाधरसिह शायद तुमने थोडे ही दिनों से अपना नाम भूतनाथ रक्खा है ?

भूतनाथ–जी हा, आज कल मैं इसी नाम से मशहूर हूँ।

बलभद्र–अस्तु मै वडी खुशी से तुम्हें धन्यवाद देता हू क्योंकि अव मुझे निश्चय हो गया कि तुम मरे दुश्मन नहीं हो।

भूत–(धन्यवाद के वदले सलाम करके) मगर मेरे दुश्मनों ने मेरी तरफ से आपके कान वहुत भरे हैं और वे बातें एसी है कि यदि आप राजा वीरेन्द्रसिह के सामन उन्हें कहेंगे तो मैं उनकी आँखों से उतर जाऊगा।

वलभद्र–नहीं नही मैं प्रतिज्ञापूर्वक कहता हू कि तुम्हारे विपय में कोई ऐसी बात किसी के सामने न कहूगा जिसस तुम्हारा नुकसान हो।

भूतनाथ–(पुन सलाम करके) और मैं आशा करता हू कि समय पडने पर आप मेरी सहायता भी करेंगे ?

बलभद्र–मै सहायता करने योग्य तो नहीं हू मगर हा यदि कुछ कर सकूगा तो अवश्य करुगा।

भूत–इत्तिफाक से राजा बीरेन्द्रसिह के ऐयारों ने जैपालसिह का गिरफ्तार कर लिया है जो आपकी सूरत बन कर लक्ष्मीदेवी को धोखा देने गया था। जब उसे अपने बचाव का कोई ढग न सूझा तो उसने आपके मार डालने का दोष मुझ पर लगाया। मै स्वप्न में भी नही सोच सकता था कि आप जीते है परन्तु ईश्वर को ध्यान देना चाहिये कि यकायक आपके जीते रहने का शक मुझे हुआ और धीरे-धीरे वह पक्का होता गया तथा मैं आपकी खोज करने लगा। अव आशा है कि आप स्वयम् मेरी तरफ से जैपालसिह का मुँह तोडगे।

वलभद्र–(क्रोध से) जैपाल मेरे मारने का दोष तुम पर लगा क आप वचा चाहता है ?

भूतनाथ–जी हॉ।

वलभद्र–उसकी ऐसी की तैसी ! उसने तो मुझ ऐसी-ऐसी तकलीफें दी है कि मेरा ही जी जानता है। अच्छा यह वताओ इधर क्या-क्या मामले हुए और राजा वीरेन्द्रसिह को जमानिया तक पहुचने की नावत क्यों आई ?

भूतनाथ न जब से कमलिनी की तावेदारी कवूल की थी कुछ हाल कुँअर इन्द्रजीतसिह आनन्दसिह मायारानी, दारोगा कमलिनी, दिग्विजयसिह और राजा गापालसिह वगैरह का वयान किया मगर अपने और जैपालसिह के मामले भ कुछ घटा-वढा कर कहा। वलभद्रसिह ने बडे गौर और ताज्जुव से सब वातें सुनीं और भूतनाथ की खैरखाही तथा मर्दानगी की बड़ी तारीफ की। थोडी देर तक और बातचीत होती रही इसके बाद दोनों आदमी घोडे पर सवार हो चुनारगढ की तरफ रवाना हुए और पहर भर के वाद उस तिलिस्म के पास पहुच जो चुनारगढ से थोडी दूरी पर था और जिसे राजा वीरेन्द्रसिह ने फतह किया (तोडा) था।

काशी से चुनारगढ़ वहुत दूर न होने पर भी इन दोनों को वहा पहुचने में दर हो गई। एक तो इसलिए कि दुश्मनों के डर से सदर राह छोड़ भूतनाथ चक्कर दता हुआ गया था दूसरे रास्ने में ये दोनों वहुत देर तक अटके रहे तीसरे कमजोरी के सबब स बलभद्रसिह घाडे को तेज चला भी नहीं सकने थे।

---

* एक विशेष प्रकार का थैला।

पाठक इस तिलिस्मी खण्डहर की अवस्था आज दिन वैसी नहीं है जैसी आपने पहिले देखी जब राजा वीरेन्द्रसिंह ने इस तिलिस्म का तोड़ा था। आज इसके चारो तरफ राजा वीरेन्द्रसिंह की आज्ञानुसार बहुत बड़ी इमारत बन गई है और अभी तक बन रही है। इस इमारत को जीतसिंह ने अपने ढंग का बनवाया था। इसमें बड़े-बड़े तहखाने सुरंग और गुप्त कोठरिया, जिनके दर्वाजों का पता लगाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था बनकर तैयार हुई हैं और अच्छे-अच्छे कमरे सहन बालाखाने *इत्यादि जीतसिंह की बुद्धिमानी का नमूना दिखा रहे है। बीच में एक बहुत बड़ा रमना छूटा हुआ है जिसके बीचाबीच में तो वह खण्डहर है और उसके चारो तरफ बाग लग रहा है। खण्डहर की टूटी हुई इमारत की भी मरम्मत हो चुकी है और अब वह खण्डहर नहीं मालूम होता। भीतर की इमारत का काम बिल्कुल खतम हो चुका है, केवल बाहरी हिस्से में कुछ काम लगा हुआ है सो भी दस पन्द्रह दिन से ज्यादे का काम नहीं है। जिस समय बलभद्रसिंह को लिए भूतनाथ वहा पहुचा उस समय जीतसिंह भी वहाँ मौजूद थे और पन्नालाल, रामनारायण और बद्रीनाथ को साथ लिए हुए फाटक के बाहर टहल रहे थे। पन्नालाल, रामनारायण और पण्डित बद्रीनाथ तो भूतनाथ को बखूबी पहिचानते थे हा जीतसिंह ने शायद उसे नहीं देखा था मगर तेजसिंह ने भूतनाथ की तस्वीर अपने हाथ से तैयार करके जीतसिंह और सुरेन्द्रसिंह के पास भेजी थी और उसकी विचित्र घटना का समाचार भी लिखा था।

भूतनाथ को दूर से आते हुए देख कर पन्नालाल ने जीतसिंह से कहा "देखिये, भूतनाथ चला आ रहा है।

जीतसिंह—(गौर से भूतनाथ को देखकर) मगर यह दूसरा आदमी उसके साथ कौन है ?

पन्ना—मै इस दूसरे को तो नही पहिचानता।

जीत—(बद्रीनाथ से) तुम पहिचानते हो ?

इतने में भूतनाथ और बलभद्रसिंह भी वहा पहुच गये। भूतनाथ ने घोडे पर से उतरकर जीतसिंह को सलाम किया क्योंकि वह जीतसिंह को बखूबी पहिचानता था, इसके बाद धीरे से बलभद्रसिंह को भी घोड़े से नीचे उतारा और जीतसिंह की तरफ इशारा करके कहा, यह तेजसिंह के पिता जीतसिंह हैं और दूसरे ऐयारों का भी नाम बताया। बलभद्रसिंह का भी परिचय सभों को देकर भूतनाथ ने जीतसिंह से कहा यही बलभद्रसिंह हैं जिनका पता लगाने का बोझ मुझ पर डाला गया था। ईश्वर ने मेरी इज्जत रख ली और मेरे हाथों इन्हें कैद से छुडाया ! आप तो सब हाल सुन ही चुके होंगे ?

जीत—हा मुझे सब हाल मालूम है तुम्हारे मुकदमे ने तो हम लोगों का दिल अपनी तरफ ऐसा खींच लिया है कि दिन-रात उसी का ध्यान रहता है मगर तुम यकायक इस तरफ कैसे आ निकले और इन्हें कहाँ पाया ?

भूत—मैं इन्हें काशीपुरी से छुडा कर लिये आ रहा हू, दुश्मनों के खौफ से दक्खिन देखता हुआ चक्कर देकर आना पड़ा इसी से अब यहाँ पहुचने की नौबत आई नहीं तो अब तक कब का चुनार पहुच गया होता। राजा वीरेन्द्रसिंह की सवारी चुनार की तरफ रवाना हो गई थी इसलिए मैं भी इन्हें लेकर सीधे चुनार ही आया।

जीत—बहुत अच्छा किया कि यहाँ चले आये कल राजा वीरेन्द्रसिंह भी यहा पहुच जायगे और उनका डेरा भी इसी मकान में पडेगा। किशोरी कामिनी और कमला वाला हृदय-विदारक समाचार तो तुमने सुना ही होगा ?

भूतनाथ—(चौंक कर) क्या क्या ? मुझे कुछ भी नहीं मालूम !

जीत—(कुछ सोचकर) अच्छा आप लोग जरा आराम कर लीजिये तो सब हाल कहेंगे क्योंकि बलभद्रसिंह कैद की मुसीबत उठाने के कारण बहुत सुस्त और कमजोर हो रहे हैं। (पन्नालाल की तरफ देखकर) पूरब वाले नम्बर दो के कमरे में इन लोगों को डेरा दिलवाओ और हर तरह के आराम का बन्दोबस्त करो, इनकी खातिरदारी और हिफाजत तुम्हारे ऊपर है।

पन्ना—जो आज्ञा।

हमारे ऐयारों को इस बात की उत्कण्ठा बहुत ही चढी-बढी थी कि किसी तरह भूतनाथ के मुकदमे का फैसला हो और उसकी विचित्र घटना का हाल जानने में आये क्योंकि इस उपन्यास भर में जैसा भूतनाथ का अद्भुत रहस्य है वैसा और किसी पात्र का नहीं है। यही कारण था कि उनको इस बात की बहुत बडी खुशी हुई कि भूतनाथ असली बलभद्रसिंह को छुडा कर ले आया और कल राजा वीरेन्द्रसिंह के यहाँ आ पहुचने पर इसका विचित्र हाल भी मालूम हो जायेगा।

*पन्द्रहवा भाग समाप्त *

---

*अट्टालिका।

*श्री *

चन्द्रकान्ता सन्तति

सोलहवॉ भाग

पहिला बयान

अब हम अपने पाठकों को पुन जमानिया के तिलिस्म में ले चलते है और इन्दिरा का बचा हुआ किस्सा उसी की जुबानी सुनवाते हैं जिसे छोड दिया गया था।

इन्दिरा ने एक लम्बी सॉस लेकर अपना किस्सा यों कहना शुरू किया –

इन्दिरा–जब मै अपनी मॉ की लिखी चीठी पढ चुकी तो जी में खुश होकर सोचने लगी कि ईश्वर चाहेगा तो अब मै बहुत जल्द अपनी मॉ से मिलूॅगी और हम दोनों को इस कैद से छुटकारा मिलेगा, अब केवल इतनी ही कसर है कि दारोगा साहब मेरे पास आवें और जो कुछ वे कहें मै उसे पूरा कर दू। थोड़ी देर तक सोच कर मैने अन्ना से कहा, "अन्ना, जो कुछ दारोगा साहब कहें उसे तुरन्त करना चाहिये।'

अन्ना–नहीं बेटी तू भूलती है, क्योंकि इन चालबाजियों को समझने लायक अभी तेरी उम्र नहीं है। अगर तू दारोगा के कहे मुताबिक काम कर देगी तो तेरी माँ और साथ ही इसके तू भी मार डाली जायेगी, क्योंकि इस में कोई सन्देह नही कि दारोगा ने तेरी मॉ से जबर्दस्ती यह चीठी लिखवाई है।

मै–तब तुमने इस चीठी के बारे में यह कैसे कहा कि मै तेरे लिये खुशखबरी लाई हू ?

अन्ना–'खुशखबरी से मेरा मतलब यह न था कि अगर तू दारोगा के कहे मुताबिक काम कर देगी तो तुझे और तेरी मॉ को कैद से छुट्टी मिल जायेगी बल्कि यह था कि तेरी मॉ अभी तक जीती-जागती है इसका पता लग गया। क्या तुझे यह मालूम नहीं कि स्वयम् दारोगा ही ने तुझे कैद किया है ?

मै–यह तो मैं खुद तुझ से कह चुकी हू कि दारोगा ने मुझे धोखा देकर कैद कर लिया है।

अन्ना–तो क्या तुझे छोड देने से दारोगा की जान बच जायगी ? क्या दारोगा साहब इस बात को नहीं समझते कि अगर तू छूटेगी तो सीधे राजा गोपालसिह के पास चली जायगी और अपना तथा लक्ष्मीदेवी का भेद उनसे कह देगी ? उस समय दारोगा का क्या हाल होगा।

मै–ठीक है, दारोगा मुझे कभी न छोडेगा।

अन्ना–बेशक कभी न छोडेगा। वह कम्बख्त तो अब तक तुझे मार डाले होता, मगर अब निश्चय हो गया कि उसे तुम दोनों से अपना कुछ मतलब निकालना है, इसीलिए अभी तक कैद किये हुए है, जिस दिन उसका काम हो जायगा उसी दिन तुम दोनों को मार डालेगा। जब तक उसका काम नहीं होता तभी तक तुम दोनों की जान बची है। (चीठी की तरफ इशारा करके) यह चीठी उसने इसी चालाकी से लिखवाई है जिसे तू उसका काम जल्द कर दे।

मै–अन्ना तू सच कहती है, अब मै दारोगा का काम कभी न करूॅगी चाहे जो हो।

अन्ना–अगर तू मेरे कहे मुताबिक करेगी तो नि सन्देह तुम दोनों की जान बच रहेगी और किसी न किसी दिन तुम दोनों को कैद से छुट्टी भी मिल जायेगी।

मै–बेशक जो तू कहेगी वही मै करूॅगी।

अन्ना–मगर मै डरती हू कि अगर दारोगा तुझे धमाकाएगा या मारे पीटेगा तो तू मार खाने के डर से उसका काम जरूर कर देगी।

मै–नहीं नहीं कदापि नहीं, अगर वह मेरी बोटी-बोटी काट कर फेंक दे तो भी मै तेरे कहे बिना उसका कोई काम न करूगी।

अन्ना–ठीक है, मगर साथ ही इसके यह भी कह न दीजियो कि अन्ना कहेगी तो मै तेरा काम कर दूगी।

मै–नहीं सो तो न कहूगी मगर कहूगी क्या सो तो बताओ ?

अन्ना–बस जहाँ तक हो टालमटोल करती जाइये। आजकल के वादे पर दो तीन दिन टाल जाना चाहिये, मुझे आशा है कि इस बीच में हमलोग छूट जायेंगे।

सुबह की सुफेदी खिड़कियों में दिखाई देने लगी और दर्वाजा खोलकर दारोगा कमरे के अन्दर आता हुआ दिखाई दिया वह सीधे आकर बैठ गया और बोला इन्दिरा तू समझती होगी कि दारोगा साहब ने मेरे साथ दगाबाजी की और मुझे गिरफ्तार कर लिया मगर मैं धर्म की कसम खाकर कहता हूँ कि वास्तव में यह बात नहीं है, बल्कि सच तो यों है कि स्वयं राजा गोपालसिंह तेरे दुश्मन हो रहे हैं। उन्होंने मुझे हुक्म दिया था कि इन्दिरा को गिरफ्तार करके मार डालो और उन्हीं की आज्ञानुसार मैं उनके कमरे में बैठा हुआ तुझे गिरफ्तार करने की तर्कीब सोच रहा था कि यकायक तू आ गई और मैंने तुझे गिरफ्तार कर लिया। मैं लाचार हूँ कि राजा साहब का हुक्म टाल नहीं सकता मगर साथ ही इसके जब तुझे मारने का इरादा करता हूँ तो मुझे दया आ जाती है और तेरी जान बचाने की तर्कीब सोचने लगता हूँ। तुझे इस बात का ताज्जुब होगा कि गोपालसिंह तेरे दुश्मन क्यों हो गये मगर मैं तेरा यह शक भी मिटाय देता हूँ। असल बात यह है कि राजा साहब को लक्ष्मीदेवी के साथ शादी करना मंजूर न था और जिस खूबसूरत औरत के साथ वे शादी किया चाहते थे वह विधवा हो चुकी थी और लोगों की जानकारी में वे उसके साथ शादी नहीं कर सकते थे इसलिये लक्ष्मीदेवी के बदले में यह दूसरी औरत उलटफेर कर दी गई। उनकी आज्ञानुसार लक्ष्मीदेवी तो मार डाली गई मगर उन लोगों को भी चुपचाप मार डालने की आज्ञा राजा साहब ने दे दी जिन्हें यह भेद मालूम हो चुका था या जिनकी बदौलत इस भेद के खुल जाने का डर था। तेरे सबब से भी लक्ष्मीदेवी का भेद अवश्य खुल जाता इसलिए तू भी उनकी आज्ञानुसार कैद कर ली गई।

इन्दिरा–जी हाँ और यह बात उसने ऐसे ढंग से अफसोस के साथ कही कि मुझे और मेरी अन्ना को भी थोड़ी देर के लिये उसकी बातों पर पूरा विश्वास हो गया बल्कि यह उसके बाद भी बहुत देर तक आपकी शिकायत करती रही।

गोपाल–और मुझे वह बहुत दिनों तक तेरी बदमाशी का विश्वास दिलाता रहा था। अस्तु, अब मुझे मालूम हुआ कि तू मेरा सामना करने से क्यों डरती थी। अच्छा तब क्या हुआ?

इन्दिरा–दारोगा की बात सुनकर अन्ना ने उससे कहा कि जब आपको इन्दिरा पर दया आ रही है तो कोई ऐसी तर्कीब निकालिये जिसमें इस लड़की और इसकी माँ की जान बच जाय।

दारोगा–मैं खुद इसी फिक्र में लगा हुआ हूँ। इसकी माँ को बदमाशों ने गिरफ्तार कर लिया था मगर ईश्वर की कृपा से वह बच गई मैंने उसे उन शैतानों के हाथ से बचा लिया।

अन्ना–मगर वह भी लक्ष्मीदेवी को पहिचानती है और उसकी बदौलत लक्ष्मीदेवी का भेद खुल जाना सम्भव है।

दारोगा–हाँ ठीक है मगर इसके लिये भी मैंने एक बन्दोवस्त कर लिया है।

अन्ना–वह क्या?

दारोगा–(एक चीठी दिखाकर) देख सर्यू से मैंने यह चीठी लिखवा ली है पढ़िये इसे पढ़ ले।

मैंने और अन्ना ने वह चीठी पढ़ी। उसमें यह लिखा हुआ था— 'मेरी प्यारी लक्ष्मीदेवी मुझे इस बात का बड़ा अफसोस है कि तेरे ब्याह के समय मैं न आ सकी। इसका बहुत बड़ा कारण है जो मुलाकात होने पर तुमसे कहूँगी मगर अपनी बेटी इन्दिरा की जुबानी यह सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि वह ब्याह के समय तेरे पास थी बल्कि ब्याह होने के एक दिन बाद तक तेरे साथ खेलती रही।'

जब मैं चीठी पढ़ चुकी तो दारोगा ने कहा कि बस अब तू भी एक चीठी लक्ष्मीदेवी के नाम से लिख दे और उसमें यह लिख कि मुझे इस बात का रंज है कि तेरी शादी होने के बाद एक दिन से ज्यादे मैं तेरे पास न रह सकी मगर मैं तेरी उस छवि को नहीं भूल सकती जो ब्याह के दूसरे दिन देखी थी। मैं ये दोनों चीठियाँ राजा गोपालसिंह को दूँगा और तुम दोनों को छोड़ देने के लिए उनसे जिद्द करके उन्हें समझा दूँगा कि अब सर्यू और इन्दिरा की जुबानी लक्ष्मीदेवी का भेद कोई नहीं सुन सकता अगर ये दोनों कुछ कहेंगी तो इन चीठियों के मुकाबिले में स्वयं झूठी बनेंगी।

मैंने दारोगा की बात का यह जवाब दिया कि 'बात तो आपने बहुत ठीक कही अच्छा मैं आपके कहे मुताबिक चीठी कल लिख दूँगी'।

दारोगा–यह काम देर करने का नहीं है इसमें जहाँ तक जल्दी करोगी तहाँ तक तुम्हें छुट्टी जल्दी मिलेगी।

मैं–ठीक है मगर इस समय मेरे सर में बहुत दर्द है मुझसे एक अक्षर भी न लिखा जायगा।

दारोगा–अच्छा क्या हर्ज है कल सही।

इतना कहकर दारोगा कमरे के बाहर चला गया और फिर मुझसे और अन्ना में बातचीत होने लगी। मैंने अन्ना से कहा क्यों अन्ना तू क्या समझती है? मुझे तो दारोगा की बात सच जान पड़ती है?

अन्ना–(कुछ सोचकर) जैसी चीठी दारोगा तुमसे लिखाया चाहता है वह केवल इस योग्य ही नहीं कि यदि राजा गोपालसिंह दोषी है तो लोकनिन्दा से उनको बचावे बल्कि वह चीठी बनिस्बत उनके, दारोगा के काम की ज्यादे होगी अगर वह स्वयं दोषी है तो।

मैं–ठीक है मगर ताज्जुब की बात है कि जो राजा साहब मुझे अपनी लडकी से बढकर मानते थे वे ही मेरी जान के ग्राहक बन जाय।

अन्ना–कौन ठिकाना कदाचित ऐसा ही हो।

मैं–अच्छा तो अब क्या करना चाहिये ?

अन्ना–(कुछ सोचकर) चीठी तो कभी न लिखनी चाहिये चाहे राजा गोपालसिंह दोषी हों या दारोगा दोषी हों इसमें कोई सन्देह नहीं कि चीठी लिख देने के बाद तू मार डाली जायगी।

अन्ना की बात सुनकर मैं रोने लगी और समझ गई कि अब मेरी जान नहीं बचती और ताज्जुब नहीं कि दारोगा के मतलब की चीठी लिख देने के कारण मेरी मा इस दुनिया से उठा दी गई हो। थोडी देर तक तो अन्ना ने रोने में मेरा साथ दिया लेकिन इसके बाद उसने अपने को सम्हाला और सोचने लगी अब क्या करना चाहिये। कुछ देर के बाद अन्ना ने मुझसे कहा कि 'बेटी मुझे कुछ आशा हो रही है कि हम लोगों को इस कैदखाने से निकल जाने का रास्ता मिल जायगा। मैं पहिले कह चुकी हू और अब भी कहती हू कि रात को (कोठरी की तरफ इशारा करके) उस कोठरी में सर पर से गठरी फेंक देने की तरह धम्माके की आवाज सुनकर मैं जाग उठी थी और जब उस कोठरी में गई तो वास्तव में एक गठरी पर निगाह पडी। अब जब मैं सोचती हू तो विश्वास होता है कि उस कोठरी में कोई ऐसा दर्वाजा जरूर है जिसे खोलकर बाहर वाला उस कोठरी में आ सके या उसमें से बाहर जा सके। इसके अतिरिक्त इस कोठरी में भी तख्तबन्दी की दीवार है जिसमें कहीं न कहीं दर्वाजा होने का शक हर एक ऐसे आदमी को हो सकता है जिस पर हमारी तरह मुसीबत आई हो अस्तु आज का दिन तो किसी तरह काट ले रात को मैं दर्वाजा ढूँढने का उद्योग करूँगी।

अन्ना की बातों से मुझे भी कुछ ढाढस हुई। थोडी देर बाद कमरे का दर्वाजा खुला और कई तरह की चीजें लिये हुए तीन आदमी कमरे के अन्दर आ पहुचे। एक के हाथ में पानी का भरा घडा लोटा और गिलास था दूसरा कपडे की गठरी लिये हुए था तीसरे के हाथ में खाने की चीजें थीं। तीनों ने सब चीजें कमरे में रख दीं और पहिले की रक्खी हुई चीजें और चिरागदान वगैरह उठा ले गये और जाते समय कह गये कि तुम लोग स्नान कर के खाओ-पीओ, तुम्हारे मतलब की सब चीजें मौजूद हैं।

ऐसी मुसीबत में खाना-पीना किसे सूझता है परन्तु अन्ना के समझाने-बुझाने से जान बचाने के लिये सब कुछ करना पडा। तमाम दिन बीत गया सध्या होने पर फिर हमारे कमरे के अन्दर खाने-पीने का सामान पहुचाया गया और चिराग भी जलाया गया मगर रात को हम दोनों ने कुछ भी न खाया।

कैदखाने से निकल भागने की धुन में हम लोगों को नींद बिल्कुल न आई। शायद आधी रात बीती होगी जब अन्ना ने उठकर कमरे का दर्वाजा अन्दर से बन्द कर लिया जिस राह से वे लोग आते थे और इसके बाद मुझे उठने और अपने साथ उस कोठरी के अन्दर चलने के लिये कहा जिसमें से कपडे की गठरी और मेरी मा के हाथ की लिखी हुई चीठी मिली थी। मैं उठ खडी हुई और अन्ना के पीछे-पीछे चली। अन्ना ने चिराग हाथ में उठा लिया और धीरे-धीरे कदम रखती हुई कोठरी के अन्दर गई। मैं पहिले बयान कर चुकी हू कि उसके अन्दर तीन कोठरियां थीं एक में पायखाना बना हुआ था और दो कोठरियां खाली थीं। उन दोनों कोठरियों के चारो तरफ की दीवारें भी तख्तों की थीं। अन्ना हाथ में चिराग लिए एक कोठरी के अन्दर गई और उन लकडी वाली दीवारों को गौर से देखने लगी। मालूम होता था कि दीवार कुछ पुराने जमाने की बनी हुई है क्योंकि लकडी के तख्ते खराब हो गए थे और कई तख्तों को घुन ने ऐसा बरबाद कर दिया था कि एक कमजोर लात खाकर भी उनका बच रहना कठिन जान पडता था। यह सब कुछ था मगर जैसा कि देखने में वह खराब और कमजोर मालूम होती थी वैसी वास्तव में न थी क्योंकि दीवार की लकडी पाच या छ अगुल से कम मोटी न होगी जिसमें से सिर्फ अगुल डेढ अगुल के लगभग घुनी हुई थी। अन्ना ने चाहा कि लात मारकर एक दो तख्तों को तोड़ डाले मगर ऐसा न कर सकी।

हम दोनों आदमी बड़े गौर से चारो तरफ की दीवार को देख रहे थे कि यकायक एक छोटे से कपडे पर अन्ना की निगाह पड़ी जो लकडी के दो तख्तों के बीच में फसा हुआ था। वह वास्तव में एक छोटा रुमाल था जिसका आधा हिस्सा तो दीवार के उस पार था और आधा हिस्सा हम लोगों की तरफ था। उस कपडे को अच्छी तरह देखकर अन्ना ने मुझसे कहा 'बेटी देख यहा एक दर्वाजा अवश्य है। (हाथ से निशान बताकर) यह चारो तरफ की दरार दर्वाजे का साफ बता रही है। कोई आदमी इस तरफ आया है मगर लौटकर जाती दफे जब उसने दर्वाजा बन्द किया तो उसका

रुमाल इसमें फसकर रह गया शायद अधेरे में उसने इस बात का ख्याल न किया हो, और देख इस कपडे के फस जाने के कारण दर्वाजा भी अच्छी तरह बैठा नहीं है ताज्जुब नहीं कि वह दर्वाजा खटके पर बन्द होता हो और तख्ता अच्छी तरह न बैठने के कारण खटका भी बन्द न हुआ हो।

वास्तव में जो कुछ अन्ना ने कहा वही बात थी क्योंकि जब उसने उस रुमाल को अच्छी तरह पकडकर अपनी तरफ खैंचा तो उसके साथ लकडी का तख्ता भी खिंच कर हम लोगों की तरफ चला आया और दूसरी तरफ जाने के लिये रास्ता निकल आया। हम दोनों आदमी उस तरफ चले गये और एक कमरे में पहुचे। उस लकडी के तख्ते में जो पेंच पर जडा हुआ था और जिसे हटा कर हम लोग उस पार चले गये थे दूसरी तरफ पीतल का एक मुट्ठा लगा हुआ था अन्ना ने उस पकड कर खैंचा और वह दर्वाजा जहा का तहा खट से बैठ गया। अब हम दोनों आदमी जिस कमरे में पहुचे वह बहुत बडा था। सामने की तरफ एक छोटा सा दर्वाजा नजर आया और उसके पास जाने पर मालूम हुआ कि नीचे उतर जाने के लिए सीढिया बनी हुई हैं। दाहिनी और बाईं तरफ की दीवार में छोटी छोटी कई खिडकियां बनी हुई थीं दाहिनी तरफ की खिडकियों में से एक खिडकी कुछ खुली हुई थी मैंने और अन्ना न उसमें झाककर देखा तो एक मरातिब नीचे छोटा सा चौक नजर आया जिसमें साफ सुथरा फर्श लगा हुआ था। ऊची गद्दी पर कम्बख्त दारोगा बैठा हुआ था उसके आगे एक शमादान जल रहा था और उसके पास ही में एक आदमी कलम-दवात और कागज लिये बैठा हुआ था।

हम दोनों आदमी दारोगा की सूरत देखते ही चौंके और डर कर पीछे हट गए। अन्ना ने धीरे से कहा, 'यहा भी वही बला नजर आती है कहीं ऐसा न हो कि वह कम्बख्त हम लोगें को देख ले या ऊपर चढ आवे।

इतना कहकर अन्ना सीढी की तरफ चली गई और धीरे से सीढी का दर्वाजा खेंच कर जञ्जीर चढा दी। वह चिराग जा अपने कमरे में से लेकर यहा तक आये थे, एक कोने मे रख कर हम दोनों फिर उसी खिडकी के पास गये और नीचे की तरफ झाक कर देखने लग कि दारोगा क्या कर रहा है। दारोगा के पास जो आदमी बैठा था उसने एक लिखा हुआ कागज हाथ में उठा कर दारोगा से कहा, जहा तक मुझसे बन पडा मैंने इस चीठी के बनाने में बडी मेहनत की।'

दारोगा–इसमें कोई शक नहीं कि तुमने ये अक्षर बहुत अच्छे बनाये हैं और इन्हें देख कर कोई यकायक नहीं कह सकता कि यह सर्यू का लिखा हुआ नहीं है। जब मैंने वह पत्र इन्दिरा को दिखाया तो उसे भी निश्चय हो गया कि यह उसकी मा के हाथ का लिखा हुआ है मगर जो गौर करके देखता हू तो सर्यू की लिखावट में और इसमें थोडा फर्क मालूम पड़ता है। इन्दिरा लडकी है, वह इस बात को नहीं समझ सकती मगर इन्द्रदेव जब इस पत्र को देखेगा तो जरूर पहिचान जायगा कि सर्यू के हाथ का लिखा नहीं है बल्कि जाल बनाया गया है।

आदमी–ठीक है अच्छा तो मै इसके बनाने में एक दफे और मेहनत करूंगा क्या करू सर्यू की लिखावट ही ऐसी टेढी-मेढी है कि ठीक नकल नहीं उतरती तिसमें इस चीठी में कई अक्षर ऐसे लिखने पडे जो कि मरे देखे हुए नहीं है' केवल अन्दाज हीं से लिखे हैं।

दारोगा–ठीक है ठीक है इसमें शक नहीं कि तुमने बडी सफाई से इसे बनाया है, खैर एक दफे और मेहनत करो मुझे आशा है अबकी दफे बहुत ठीक हो जायगा। (लम्बी सास लेकर) क्या कहें कम्बख्त सर्यू किसी तरह मानती ही नहीं। उसे मेरी बातों पर कुछ भी विश्वास नहीं होता यद्यपि कल मैं उसे फिर दिलासा दूँगा अगर उसने मेरे दम में आकर अपने हाथ से चीठी लिख दी तो इस काम को हो गया समझो, नहीं तो तुम्हें पुन मेहनत करनी पडेगी। सर्यू और इन्दिरा ने मेरे कहे मुताबिक चीठी लिख दी तो मै बहुत जल्द उन दोनों को मार कर बखेडा तै करूगा क्योंकि मुझे गदाधरसिह (भूतनाथ) का डर बराबर बना रहता है, वह सर्यू और इन्दिरा की खोज में लगा हुआ है और उसे घडी-घडी मुझी पर शक होता है। यद्यपि मै उससे कसम खा कर कह चुका हू कि मुझे दोनों का हाल कुछ भी मालूम नहीं है मगर उसे विश्वास नहीं होता। क्या करू, लाखों रूपये दे देने पर भी मै उसकी मुट्ठी में फसा हुआ हू, यदि उसे जरा भी मालूम हो जायगा कि सर्यू और इन्दिरा को मैंने कैद कर रक्खा है तो वह बडा ही ऊधम मचावेगा और मुझे बर्बाद किये बिना न रहेगा।

आदमी–गदाधरसिह तो मुझे आज भी मिला था।

दारोगा–(चौक कर) क्या वह फिर इस शहर में आया है! मुझसे तो कह गया था कि मै दो-तीन महीने के लिये जाता हू, मगर वह तो दो-तीन दिन भी गैरहाजिर न रहा।

आदमी–वह बडा शैतान है उसकी बातों का कुछ भी विश्वास नहीं हो सकता और इसका जानना तो बडा ही कठिन है कि वह क्या करता है क्या करेगा या किस धुन में लगा हुआ है।

दारोगा—अच्छा तो मुलाकात होने पर उससे क्या क्या बात हुई ?

आदमी—मै अपने घर की तरफ जा रहा था कि उसने पीछे से आवाज दी ' ओ रघुबरसिह, ओ जैपालसिह ! *

दारोगा—बडा ही बदमाश है किसी का अदब लेहाज करना तो जानता ही नहीं ! अच्छा तब क्या हुआ !

रघुबर—उसकी आवाज सुनकर मै रुक गया, जब वह पास आया तो बोला, आज आधी रात के समय मै दारोगा साहब से मिलने जाऊगा उस समय तुम्हें भी वहा मौजूद रहना चाहिये। बस इतना कह कर चला गया।

दारोगा—तो इस समय वह आता ही होगा !

रघुबर—जरूर आता होगा।

दारोगा—कम्बख्त ने नाकों दम कर दिया है।

इतने ही में बाहर से घटी बजने की आवाज आई, जिसे सुन दारोगा ने रघुबरसिह स कहा 'देखो दरबान क्या कहता है मालूम होता है गदाधरसिह आ गया।

रघुबरसिह उठकर बाहर गया और थोडी ही देर में गदाधरसिह को अपने साथ लिये हुए दारोगा के पास आया। गदाधरसिह को देखते ही दारोगा उठ खडा हुआ और बडी खातिरदारी और तपाक के साथ मिलकर उसे अपने पास बैठाया।

दारोगा—(गदाधरसिह स) आप कब आये !

गदाधर—मै गया कब और कहा था !

दारोगा—आपही ने कहा था कि मै दो-तीन महीने के लिये कहीं जा रहा हू !

गदाधर—हा कहा तो था मगर एक बहुत बडा सबब आ पडने से लाचार होकर रुक जाना पडा।

दारोगा—क्या वह सबब मै भी सुन सकता हू।

गदाधर—हा हा आप ही के सुनने लायक तो वह सबब है क्योंकि उसके कर्ता-धर्ता भी आप ही हैं।

दारोगा—तो जल्द कहिये।

गदाधर—जाते ही जाते एक आदमी ने मुझे निश्चय दिलाया कि सर्यू और इन्दिरा आपही के कब्जे में है अर्थात् आपही ने उन्हें कैद करके कहीं छिपा रक्खा है।

दारोगा—(अपने दानों कानों पर हाथ रख के) राम राम ! किस कम्बख्त ने मुझ पर यह कलक लगाया ? नारायण नारायण ! मेरे दोस्त, मै तुम्हें कई दफे कसमें खाकर कह चुका हू कि सर्यू और इन्दिरा के विषय में कुछ भी नहीं जानता मगर तुम्हें मेरी बातों का विश्वास ही नहीं होता।

गदाधर—न मेरी बातों पर आपको विश्वास करना चाहिए और न आपकी कही हुई बातों को मै ही ब्रह्मवाक्य समझ सकता हू। बात यह है कि इन्द्रदेव को मैं अपने सगे भाई से बढ के समझता हू, चाहे मैंने आप से रिश्वत लेकर बुरा काम क्यों न किया हो मगर अपने दोस्त इन्द्रदेव को किसी तरह का नुकसान पहुचने न दूगा। आप सर्यू और इन्दिरा के बारे में बार बार कसमें खाकर अपनी सफाई दिखाते हैं और मैं जब उन लोगों के बारे में तहकीकात करता हू तो बार-बार यही मालूम पडता है कि वे दोनों आपके कब्जे में है अस्तु आज मैं एक आखिरी बात आपसे कहने आया हू, अबकी दफे आप खूब अच्छी तरह समझ बूझ कर जवाब दें।

दारोगा—कहो कहो क्या कहते हो ? मैं सब तरह से तुम्हारी दिलजमई करा दूगा

गदाधर—आज मैं इस बात का निश्चय कर के आया हू कि इन्दिरा और सर्यू का हाल आपको मालूम है अस्तु साफ साफ कहे देता हू कि यदि वे दोनों आपके कब्जे में हों तो ठीक-ठीक बता दीजिए उनको छोड देने पर इस काम के बदले में जो कुछ आप कहें, मैं करने को तैयार हू लेकिन यदि आप इस बात से इनकार करेंगे और पीछे साबित होगा कि आप ही ने उन्हें कैद किया था तो मैं कसम खाकर कहता हू कि सबसे बढ कर बुरी मौत जो कही जाती है वही आपके लिए कायम की जायगी।

दारोगा—जरा जुबान सम्हाल कर बातें करो। मै तो दोस्ताना ढग पर नरमी के साथ तुमसे बातें करता हू और तुम तेज हुए जाते हो ?

गदाधर—जी मैं आपके दोस्ताना ढग को अच्छी तरह समझता हू, अपनी कसमों का विश्वास तो उसे दिलाइए जो आपको केवल बाबाजी समझता हो ! मै तो आपको पूरा झूठा-बेईमान और विश्वासघाती समझता हू और आपका कोई हाल मुझसे छिपा हुआ नहीं है। जब मैंने कलमदान आपको वापस किया था तब भी आपने कसम खाई थी कि तुम्हारे

* जैपालसिह बालासिह और रघुबरसिंह ये सब नाम उसी नकली बलभद्रसिह के हैं।

और तुम्हारे दोस्तों के साथ कभी किसी तरह की बुराई न करूंगा मगर फिर भी आप चालबाजी करने से बाज न आये !

दारोगा—यह सब कुछ ठीक है मगर मै जब एक दफे कह चुका कि सर्यू और इन्दिरा का हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं है तब तुम्हें अपनी बात पर ज्यादे खींच न करना चाहिय हा अगर तुम इस बात को साबित कर सको तो जो कुछ कहो मै जुर्माना देने के लिए तैयार हू, यों अगर बेफायदे का तकरार बढाकर लडने का इरादा हो तो बात ही दूसरी है। इसके अतिरिक्त अब तुम्हें जो कुछ कहना हो इसको खूब सोच-समझ कर कहो कि तुम किसके मकान में और कितने आदमियों को साथ लेकर आये हो।

इतना कह कर इन्दिरा रुक गई और एक लम्बी सास लेकर उसने राजा गोपालसिह और दोनों कुमारों से कहा—

इन्दिरा—गदाधरसिह और दारोगा में इस ढग की बातें हो रही थीं और हम दोनों खिडकी में से सुन रहे थ। मुझे यह जानकर बडी खुशी हुई कि गदाधरसिह हम दोनों मा-बेटियों को छुडाने की फिक्र में लगा हुआ है। मैने अन्ना के कान में मुह लगा के कहा कि देख अन्ना दारोगा हम लोगों के बारमें कितना झूठ बोल रहा है ! नीचे उतर जाने के लिए रास्ता मौजूद ही है चलो हम दोनों आदमी नीचे पहुच कर गदाधरसिह के सामने खडे हो जाय। अन्ना ने जवाब दिया कि मैं भी यही सोच रही हू, मगर इस बात का खयाल है कि अकेला गदाधरसिंह हम लोगों को किस तरह छुडा सकेगा कहीं ऐसा न हो कि हम लोगों को अपने सामने देखकर दारोगा गदाधरसिह को भी गिरफ्तार करले फिर हमाराछुडाने वाला कोई भी न रहेगा ! अन्ना नीचे उतरने से हिचकती थी मगर मैंने उसकी बात न मानी, आखिर लाचार होकर मेरा साथ पकड़े हुए वह नीचे उतरी और गदाधरसिह के पास खडी होकर बोली ' दरोगा झूठा है इस लडकी को इसी ने कैद कर रक्खा है और इसकी माँ को भी न मालूम कहीं छुपाए हुए है।

मेरी सूरत देखते ही दारोगा का चहरा पीला पड गया और गदाधरसिह की आखें मारे क्रोध के लाल हो गई। गदाधरसिह ने दरोगा से कहा क्यों बे हरामजादे के बच्चे ! क्या अब भी तू अपनी कसमों पर भरोसा करने के लिए मुझसे कहेगा !!

गदाधरसिह की बातों का जवाब दारोगा ने कुछ भी न दिया और इधर-उधर झाकने लगा। इत्तिफाक से वह कलमदान भी उसी जगह पडा हुआ था जिसके ऊपर मेरी तस्वीर थी और जो गदाधरसिह ने रिश्वत लेकर दारोगा को दे दिया था। दारोगा असल में यह देख रहा था कि गदाधरसिह की निगाह उस कलमदान पर तो नहीं पडी मगर वह कलम्दान गदाधरसिह की नजरों से दूर न था अस्तु उसने दारोगा की अवस्था देख कर फुर्ती के साथ वह कलमदान उठा लिया और दूसरे हाथ से तलवार खीच कर सामने खडा हो गया। उस समय दारोगा को विश्वास हो गया कि अब उसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती। यद्यपि रघुवरसिह उसके पास बैठा हुआ था मगर वह इस बात को खूब जानता था कि हमारे ऐसे दस आदमी भी गदाधरसिह को काबू में नहीं कर सकते इसलिए उसने मुकाबला करने की हिम्मत न की और अपनी जगह से उठकर भागने लगा परन्तु जा न सका गदाधरसिह ने उसे एक लात ऐसी जमाई कि वह धम्म से जमीन पर गिर पडा और बोला मुझे क्या मारते हो मैने क्या बिगाडा है ? मैं तो खुद यहा से चले जाने को तैयार हू !

गदाधरसिह ने कलमदान कमरबन्द में खोंस कर कहा मैं तेरे भागने को खूब समझता हू, तू अपनी जान बचाने की नीयत से नहीं भागता बल्कि बाहर पहरेवाले सिपाहियों को होशियार करने के लिए भागता है। खबरदार अपनी जगह से हिलेगा तो अभी भुट्टे की तरह सर उडा दूगा। (दारोगा से) बस अब तुम भी अगर अपनी जान बचाया चाहते हो तो चुपचाप बैठ रहो !

गदाधरसिह की डपट से दोनों हरामखोर जहा के तहा रह गये, अपनी जगह से हिलने या मुकाबला करने की हिम्मत न पडी। हम दोनों को साथ लिये हुए गदाधरसिह उस मकान के बाहर निकल आया। दरवाजे पर कई पहरेदार सिपाही मौजूद थे मगर किसी ने रोकटोक न की और हम लोग तजी के साथ कदम बढ़ाते हुए उस गली के बाहर निकल गय। उस समय मालूम हुआ कि हम लोग जमानिया के बाहर नहीं है।

गली के बाहर निकल कर जब हम लोग सडक पर पहुचे तो दो घोडों का एक रथ और दो सवार दिखाई पडे। गदाधरसिह ने मुझको और अन्ना को रथ पर सवार कराया और आप ही उसी रथ पर बैठ गया। 'हू' करने के साथ ही रथ तेजी के साथ रवाना हुआ और पीछे-पीछे दोनों सवार भी घोडा फेकते हुए जाने लगे। उस समय मेरे दिल में दो बातें पैदा हुईं एक तो यह कि गदाधरसिह ने दारोगा को जीता क्यों छोड़ दिया दूसरे,यह कि हम लोगों को राजा गोपालसिह के पास न लेजाकर कहीं और क्यों लिये जाता है ! मगर मुझे इस विषय में कुछ पूछने की आवश्यकता न पडी क्योंकि शहर के बाहर निकल जाने पर गदाधरसिह ने स्वय मुझसे कहा "बेटी इन्दिरा नि सन्देह कम्बख्त दारोगा ने तुझे बडा ही कष्ट

दिया होगा और तू सोचती होगी कि मैंने दारोगा को जीता क्यों छोड दिया तथा मुझे राजा गोपालसिह के पास न ले जाकर अपने घर क्यों लिये जाता हूँ, अस्तु मै इसका जवाब इसी समय दे देना उचित समझता हूँ। दारोगा को मैंने यह सोचकर छोड दिया कि अभी तेरी मॉ का पता लगाना है और नि सन्देह वह भी दारोगा ही के कब्जे में है जिसका पता मुझे लग चुका है तथा राजा साहब के पास मैं तुझे इसलिए नहीं ले गया कि महल में बहुत से आदमी ऐसे हैं जो दारोगा के मेली हैं राजा गोपालसिह तथा मैं भी उन्हें नहीं जानता। ताज्जुब नहीं कि वहा पहुचने पर तू फिर किसी मुसीबत में पड जाय।'

मैं–आपका सोचना बहुत ठीक है मेरी मॉ भी महल ही में से गायब हो गई थी तो क्या आप इस बात की खबर भी राजा गोपालसिह को न करेंगे ?

गदा–राजा साहब को इस मामले की खबर जरूर की जायेगी मगर अभी नहीं।

मैं–तब कब ?

गदाधर–जब तेरी मा को भी कैद से छुडा लूगा तब। हा अब तू अपना हाल कह कि दारोगा ने तुझे कैसे गिरफ्तार कर लिया और यह दाई तेरे पास कैसे पहुची ?

मैं अपना और अपनी अन्ना का किस्सा शुरू से आखीर तक पूरा-पूरा कह गई जिसे सुन कर गदाधरसिह का बचा बचाया शक भी जाता रहा और उसे निश्चय हो गया कि मेरी मॉ भी दारोगा ही के कब्जे में है।

सवेरा हो जाने पर हम लोग सुस्ताने और घोडों को आराम देने के लिए एक जगह कुछ देर तक ठहरे और फिर उसी तरह रथ पर सवार हो रवाना हुए। दोपहर होते-होते हम लोग एक ऐसी जगह पहुँचे जहा दो पहाडियों की तलहटी (उपत्यका) एक साथ मिली थी। वहाँ सभों को सवारी छोड कर पैदल चलना पडा। मैं यह नहीं जानती कि सवारी साथ वाले और घोडे किधर रवाना किये गये या उनके लिये अस्तबल कहा बना हुआ था। मुझे और अन्ना को घुमाता और चक्कर देता हुआ गदाधरसिह पहाड के दर्रे में ले गया जहा एक छोटा सा मकान अनगढ पत्थर के ढोकों से बना हुआ था, कदाचित् वह गदाधरसिह का अड्डा हो। वहाँ उसके कई आदमी थे जिनकी सूरत आज तक मुझे याद है। अब जो मैं विचार करती हू तो यही कहने की इच्छा होती है कि वे लोग बदमाशी-बेरहमी और डकैती के सॉचे में ढले हुए थे तथा उनकी सूरत-शक्ल और पोशाक की तरफ ध्यान देने से डर मालूम होता था।

वहा पहुचकर गदाधरसिंह ने मुझसे और अन्ना से कहा कि तुम दोनों बेखौफ होकर कुछ दिन तक आराम करो, मैं सर्यू को छुड़ाने की फिक्र में जाता हू जहा तक होगा बहुत जल्द लौट आऊँगा। तुम दोनों को किसी तरह की तकलीफ न होगी, खाने-पीने का सामान यहाँ मौजूद ही है और जितने आदमी यहाँ है सब तुम्हारी खिदमत करने के लिए तैयार हैं इत्यादि बहुत सी बातें गदाधरसिंह ने हम दोनों को समझाई और अपने आदमियों से भी बहुत देर तक बातें करता रहा। दो पहर दिन और तमाम रात गदाधरसिह वहा रहा तथा सुबह के वक्त फिर हम दोनों को समझाकर जमानिया की तरफ रवाना हो गया।

मैं तो समझती थी कि अब मुझे पुन किसी तरह की मुसीबत का सामना न करना पड़ेगा और मैं गदाधरसिह की बदौलत अपनी मा तथा लक्ष्मीदेवी से भी मिलकर सदैव के लिये सुखी हो जाऊगी, मगर अफसोस मेरी मुराद पूरी न हुई और उस दिन के बाद मैंने गदाधरसिह की सूरत भी न देखी। मैं नहीं कह सकती कि वह किसी आफत में फस गया या रुपये की लालच ने उसे हम दोनों का भी दुश्मन बना दिया। इसका असल हाल उसी की जुबानी मालूम हो सकता है–यदि वह अपना हाल ठीक-ठीक कह दे तो। अस्तु अब मैं यह बयान करती हू कि उस दिन के बाद मुझ पर क्या मुसीबतें गुजरीं और मैं अपनी मॉ के पास तक क्यों कर पहुची।

गदाधरसिह के चले जाने के बाद आठ दिन तक तो मैं बेखौफ बैठी रही, पर नौवें दिन से मेरी मुसीबत की घडी फिर शुरू हो गई। आधी रात का समय था, मैं और अन्ना एक कोठरी में सोई हुई थी, यकायक किसी की आवाज सुनकर हम दोनों की ऑखें खुल गई और तब मालूम हुआ कि कोई दर्वाजे के बाहर किवाड खटखटा रहा है। अन्ना ने उठकर दर्वाजा खोला तो पण्डित मायाप्रसाद पर निगाह पड़ी। कोठरी के अन्दर चिराग जल रहा था और मैं पण्डित मायाप्रसाद को अच्छी तरह पहचानती थी।

दूसरा बयान

इन्दिरा ने जब अपना किस्सा कहते-कहते पडित मायाप्रसाद का नाम लिया तो राजा गोपालसिह चौंक गये और उन्होंने ताज्जुब में आकर इन्दिरा से पूछा, 'पडित मायाप्रसाद कौन ?

इन्दिरा—आपके कोषाध्यक्ष (खजानची)।

गोपाल—क्या उसने भी तुम्हारे साथ दगा की ?

इन्दिरा—सो मै ठीक नहीं कह सकती, मेरा हाल सुनकर कदाचित आप कुछ अनुमान कर सकें। क्या मायाप्रसाद अब भी आप के यहा काम करते है ?

गोपाल—हा है तो सही मगर आज कल मैंने उसे किसी दूसरी जगह भेजा है। अस्तु अब मै इस बात को बहुत जल्द सुनना चाहता हू कि उसने तेरे साथ क्या किया ?

हमारे पाठक महाशय पहले भी मायाप्रसाद का नाम सुन चुके है। सन्तति पन्द्रहवें भाग के तीसरे बयान में इसका जिक्र आ चुका है, तारासिह के एक नौकर ने नानक की स्त्री श्यामा के प्रेमियों के नाम बताये थे उन्हीं में इनका नाम भी दर्ज हो चुका है। ये महाशय जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और अपने को ऐयार भी लगाते थे।

इन्दिरा ने फिर अपना किस्सा कहना शुरू किया—

इन्दिरा—उस समय मै मायाप्रसाद को देखकर बहुत खुश हुई और समझी कि मेरा हाल राजा साहब (आप) को मालूम हो गया है और राजा साहब ही न इन्हें मेरे पास भेजा है। मैं जल्दी से उठकर उनके पास गई और मेरी अन्ना ने मेरी दण्डवत करके काठरी में आने के लिए कहा जिसके जवाब में पडितजी बोले "मै कोठरी के अन्दर नहीं आ सकता और न इतनी मोहलत है।

मै—क्यों ?

मायाप्रसाद—मै इस समय केवल इतना ही कहने आया हू कि तुम लोग जिस तरह बन पडे अपनी जान बचाओ और जहा तक जल्दी हो सके यहा से निकल भागो क्योंकि गदाधर दुश्मनों के हाथ में फस गया है और थोड़ी ही देर में तुम लोग भी गिरफ्तार होना चाहती हो।

मायाप्रसाद की बात सुनकर मेरे तो होश उड़ गये। मैंने सोचा कि अब अगर किसी तरह दारोगा मुझे पकड़ पायेगा तो कदापि जीता न छोडेगा। आखिर अन्ना ने घबडा कर पडितजी से पूछा, 'हम लोग भागकर कहा जाये और किसके सहारे पर भागें। पडितजी ने क्षण भर सोच कर कहा 'अच्छा तुम दोनों मेरे पीछे चली आओ।उस समय हम दोनों ने इस बात का जरा भी ख्याल न किया कि पडितजी सच बोलते है या दगा करते है। हम दोनों आदमी पडितजी को बखूबी जानते थे और उन पर विश्वास करते थे अस्तु उसी समय चलने के लिए तैयार हो और कोठरी के बाहर निकल कर उनके पीछे-पीछ रवाना हुए। जब मकान के बाहर निकले तो दरवाजे के दोनों तरफ कई आदमियों को टहलते हुए देखा मगर अधेरी रात होने और जल्दी-जल्दी निकल भागने की धुन में लगे रहने के कारण उन लोगों को पहचान न सकी इसलिये नहीं कह सकती कि वे लाग गदाधरसिह के आदमी थे या किसी दूसर के। उन आदमियों ने हम लोगों स कुछ नहीं पूछा और हम दोनों विना किसी रुकावट के पडितजी के पीछे-पीछे जान लग। थोडी दूर जाकर दो आदमी और मिले एक के हाथ मे मशाल थी और दूसरे के हाथ में नगी तलवार। नि सन्देह वे दोनों आदमी मायाप्रसाद के नौकर थे। जो हुक्म पाते ही हम लोगों के आगे-आगे रवाना हुए। उस पहाड़ी से नीचे उतरने का रास्ता बहुत ही पेचीला और पथरीला था। यद्यपि हम दानों आदमी एक दफे उस रास्ते को देख चुके थे मगर फिर भी किसी के राह दिखाये बिना वहा से निकल जाना कठिन ही नही बल्कि असम्भव था, पर एक तो हम लोग मायाप्रसाद के पीछे-पीछे जा रहे थे दूसरे मशाल की रोशनी साथ-साथ थी इसलिये शीघ्रता से हम लोग पहाडी के नीचे उतर आये और पडितजी की आज्ञानुसार दाहिनी तरफ घूमकर जगल ही जगल चलने लगे। सवेरा होते-होते हम लोग एक खुले मैदान में पहुचे और वहा एक छोटा सा बगीचा नजर पडा। पडितजी ने हम दोनों से कहा कि तुम लोग बहुत थक गई हो इसलिए थोड़ी देर तक बागीचे में आराम कर लो तब तक हम लोग सवारी का बन्दोबस्त करते है जिसमें आजही तुम राजा गोपालसिह के पास पहुच जाओ।

मुझे उस छोट से बागीचे में किसी आदमी की सूरत दिखाई न पडी। न तो वहा का कोई मालिक नजर आया और न किसी माली या नौकर ही पर नजर पडी मगर बागीचा बहुत साफ और हरा-भरा था। पडितजी ने अपने दोनों आदमियों को किसी काम के लिए रवाना किया और हम दोनों का उस बागीचे में बेफिक्री के साथ रहने की आज्ञा देकर खुद भी आधी घडी के अन्दर ही लौट आने का वादा करके कहीं चले गये। पडितजी और उनके आदमियों को गए हुए अभी चौथाई घडी भी न बीती होगी कि दो आदमियों को साथ लिए हुए कम्बख्त दारोगा बाग के अन्दर आता हुआ दिखाई पडा।

तीसरा बयान

दारोगा की सूरत दखते ही मेरी और अन्ना की जान सूख गइ और हम दोनों को विश्वास हो गया कि पण्डितजी ने हमारे साथ दगा की। उस समय सिवा जान देने के और मै कर क्या सकती थी ? इधर उधर देखा पर जान देन का कोई जरिया दिखाई न पडा। अगर उस समय मेर पास कोई हर्बा होता तो मै जरूर अपने को मार डालती। दारोगा ने मुझ दूर से देखा और कदम बढाता हुआ हम दानों के पास पहुचा। मार क्रोध के उसकी आखे लाल हो रही थीं और होंठ काप रहे थ। उसन अन्ना की तरफ देखकर कहा क्यों री कम्यख्त लौडी अब तू मेरे हाथ से बचकर कहा जायगी ? यह सारा फसाद तरा ही उठाया हुआ है न तू दर्वाजा खोल कर दूसरे कमरे में जाती न गदाधरसिह को इस बात की खबर होती। तूने ही इन्दिरा को ले भागने की नीयत से मेरी जान आफत में डाली थी अस्तु अब मैं तेरी जान लिए बिना नहीं रह सकता क्योंकि तुझ पर मुझे बडा ही क्रोध है।

इतना कह दारोगा न म्यान से तलवार निकाल ली और एक ही हाथ में बेचारी अन्ना का सर धड से अलग कर दिया उसकी लाश तडपने लगी और मैं चिल्ला कर उठ खडी हुई।

इतना हाल कहत-कहते इन्दिरा की ऑखों में ऑसू भर आया। इन्दजीतसिह, आनन्दसिह और राजा गोपालसिह को भी उसकी अवस्था पर बडा दु ख हुआ और बेईमान नमकहराम दारोगा को क्रोध से याद करने लगे। तीनों भाइयों ने इन्दिरा को दिलासा दिया और चुप करा के अपना किस्सा पूरा करने के लिए कहा। इन्दिरा न ऑसू पोंछ कर कहना शुरु किया—

इन्दिरा—उस समय मैं समझती थी कि दारोगा मेरी अन्ना को तो मार ही चुका है अब उसी तलवार से मेरा भी सर काट के बखडा तै करगा मगर एसा न हुआ। उसने रूमाल से तलवार पोंछ कर म्यान में रख ली और अपने नौकर के हाथ से चाबुक ले मरे सामने आकर बोला अब बुला गदाधरसिह को, आकर तेरी जान बचाये।

इतना कह उसने मुझ उसी चाबुक से मारना शुरु किया। मै मछली की तरह तडप रही थी लेकिन उसे कुछ भी दया नहीं आती थी और वह बार-बार यही कहके चाबुक मारता था कि अब बता मेरे कहे मुताबिक चीठी लिख देगी या नहीं ? पर मैं इस बात का दिल में निश्चय कर चुकी थी कि चाह कैसी ही दुर्दशा से मेरी जान क्यों न ली जाय मगर उसके कहे मुताबिक चीठी कदापि न लिखूँगी।

चाबुक की मार खाकर मैं जोर-जोर स चिल्लाने लगी। उसी समय दाहिनी तरफ से एक औरत दौडती हुई आई जिसने डपट कर दारोगा से कहा 'क्यों चाबुक मार मार कर इस बेचारी की जान ले रहे हो ? ऐसा करने से तुम्हारा मतलब कुछ भी न निकलेगा। तुम जो कुछ चाहते हौ मुझे कहो मैं बात की बात में तुम्हारा काम करा देती हू।

उस औरत की उम्र का पता बताना कठिन था न तो वह कमसिन थी और न बूढी ही थी, शायद तीस-पैंतीस वर्ष की अवस्था हो या इससे कुछ कम ज्यादे हो। उसका रग काला और बदन गठीला तथा मजबूत था घुटने से कुछ नीचे तक का पायजामा और उसक ऊपर दक्षिणी ढग की साडी पहिरे हुए थी जिसकी लाग पीछे की तरफ खुसी थी। कमर में एक मोटा कपडा लपेटे हुए थी जिसमें शायद कोई गठरी या और कोई चीज बधी हुई हो।

उस औरत की बात सुन कर दारोगा ने चाबुक मारना बन्द किया और उसकी तरफ देख कर कहा, "तू कौन है ?"

औरत—चाहे मै कोई हाऊ इससे कुछ मतलब नहीं तुम जा कुछ चाहते हो मुझसे कहो मैं तुम्हारी ख्वाहिश पूरी कर दूँगी। चाबुक मारत समय जो कुछ तुम कहते हो उससे मालूम होता है कि इस लडकी से तुम कुछ लिखाया चाहते हो ! इससे जो कुछ लिखवाना हो मुझे बताओ मैं लिखवा दूँगी, इस समय मारने-पीटने से कोई काम न चलेगा क्योंकि इसके एक पक्षपाती ने जिसने अभी तुम्हारे आने की खबर दी थी इसे समझा बुझा के बहुत पक्का कर दिया है और वह खुद (हाथ का इशारा करके) उस कूए में जा छिपा है वह जरूर तुम पर वार करेगा। मेरे साथ चलो मैं दिखा दू। पहिले उसे दुरुस्त करो तब उसके बाद जो कुछ इस लडकी को कहोगे वह झख मार के कर देगी इसमें कोई सन्देह नहीं।

दारोगा—क्या तूने खुद उस आदमी को देखा था।

औरत—हॉ हॉ कहती तो हूँ कि मेरे साथ उस कूए पर चलो मैं उस आदमी को दिखा देती हू। दस-बारह कदम पर कूऑ है कुछ दूर तो है नहीं।

दारोगा—अच्छा चल कर मुझे बताओ (अपने दोनों आदमियों से) तुम दोनों इस लडकी के पास खडे रहो।

वह औरत कूए की तरफ बढी और दारोगा उसके पीछे-पीछे चला। वास्तव में वह कूऑ बहुत दूर न था। जब दारोगा को लिये हुए वह औरत कूए पर पहुची तो अन्दर झॉक कर बोली 'देखा वह छिप कर बैठा है !

दारोगा ने ज्यों ही झॉक कर कूए के अन्दर देखा उस औरत ने पीछे से धक्का दिया और वह कम्बख्त धड़ाम से कूए के अन्दर जा रहा। यह कैफियत उसके दोनों साथी दूर से देख रहे थे और मैं भी देख रही थी। जब दारोगा के दोनों साथियों ने देखा कि उस औरत ने जान-बूझ कर हमारे मालिक को कूए में ढकेल दिया है तो दोनों आदमी तलवार खैंच कर उस औरत की तरफ दौडे। जब पास पहुंचे तो वह औरत जोर से हसी और एक तरफ को भाग चली। उन दोनों ने उसका पीछा किया मगर वह औरत दौड़ने में इतनी तेज थी कि वे दोनों उसे पा न सकते थे। उसी बागीचे के अन्दर वह औरत चक्कर देने लगी और उन दोनों के हाथ न आई। वह समय उन दोनों के लिए बड़ा ही कठिन था, वे दोनों इस बात को जरूर सोचते होंगे कि अगर अपने मालिक को बचाने की नीयत से कूए पर जाते है तो वह औरत भाग जायगी या ताज्जुब नही कि उन्हें भी उसी कूए में ढकेल दे। आखिर जब उस औरत ने उन दोनों को खूब दौडाया तो उन दोनों ने आपस में कुछ बात की और एक आदमी तो उस कूए की तरफ चला गया तथा दूसरे ने उस औरत का पीछा किया। जब उस औरत ने देखा कि अब दो में से एक ही रह गया तो वह खडी हो गई और जमीन पर से ईट का टुकडा उठा कर उस आदमी की तरफ जोर से फेंका। उस औरत का निशाना बहुत सच्चा था जिससे वह आदमी बच न सका और ईट का टुकडा इस जोर से उसके सर में लगा कि सर फट गया और वह दोनों हाथों से सर को पकडकर जमीन पर बैठ गया उस औरत ने पुन दूसरी ईट मारी तीसरी मारी और चौथी ईट खाकर तो वह जमीन पर लेट गया। उसी समय उसने खञ्जर निकाल लिया जो उसकी कमर में छिपा हुआ था और दौडती हुई उसके पास जाकर खञ्जर से उसका सर काट डाला मैं यह तमाशा दूर से देख रही थी। जब वह एक आदमी को समाप्त कर चुकी तो उस दूसरे के पास आई जो कूए पर खडा अपने मालिक को निकालने की फिक्र कर रहा था। एक ई ट का टुकड़ा उसकी तरफ जोर से फेंका जो गरदन में लगा। वह आदमी हाथ में नगी तलवार लिये उस औरत पर झपटा मगर उसे पा न सका। उस औरत ने फिर उस आदमी को दौडाना शुरू किया और बीच-बीच में ईंट और पत्थरों से उसकी भी खबर लेती जाती थी। वह आदमी भी ईंट और पत्थर के टुकडे उस औरत पर फेंकता था मगर औरत इतनी तेज और फुर्तीली थी कि उसके सब वार बराबर बचाती चली गई मगर उसका वार एक भी खाली न जाता था। आखिर उस आदमी ने भी इतनी मार खाई कि खडा होना मुश्किल हो गया और वह हताश होकर जमीन पर बैठ गया। बस जमीन पर बैठने की देर थी कि उस औरत ने धडा-धड पत्थर मारना शुरू किया, यहा तक कि वह अधमूआ होकर जमीन पर लेट गया। उस औरत ने उसके पास पहुचकर उसका सर भी धड से अलग कर दिया, इसके बाद दौडती हुई मेरे पास आई और बोली बेटी, तूने देखा कि मैंने तेरे दुश्मनों की कैसी खबर ली ? मैं तो उस कम्बख्त (दारोगा) को भी पत्थर मार मारकर मार डालती मगर डरती हू कि विलम्ब हो जाने से उसके और भी सगी-साथी न आ पहुचे अगर ऐसा हुआ तो बडी मुश्किल होगी अस्तु उसे जाने दे और मेरे साथ चल मैं तुझे हिफाजत से तेरे घर जहा कहेगी पहुचा दूगी।

यद्यपि चाबुक की मार खाने से मेरी बुरी हालत हो गई थी मगर अपने दुश्मनों की ऐसी दशा देख मैं खुश हो गई और उस औरत को साक्षात् माता समझकर उसके पैरों पर गिर पड़ी। उसने मुझे बडे प्यार से उठाकर गले से लगा लिया और मेरा हाथ पकडे हुए बाग के पिछले तरफ ले चली। बाग के पीछे की तरफ बाहर निकल जाने के लिये एक खिडकी थी और उसके पास सरपत का एक साधारण जगल था। वह औरत मुझे लिये हुए उसी सरपत के जगल में घुस गई। उस जगल में उस औरत का घोडा बधा हुआ था। उसने घोडा खोला चारजामा इत्यादि ठीक करके उस पर मुझे बैठाया और पीछे आप भी सवार हो गई घोडा तेजी के साथ रवाना हुआ और तब मैं समझी कि मेरी जान बच गई।

वह औरत पहर भर तक बराबर घोडा फेंके चली गई और जब एक घने जगल में पहुची तो घोडे की चाल धीमी कर देर तक धीरे-धीरे चलकर एक कुटी के पास पहुची जिसके दर्वाजे पर दो तीन आदमी बैठे आपुस में कुछ बातें कर रहे थे। उस औरत को देखते ही वे लोग उठ खडे हुए और अदब के साथ सलाम करके घोडे के पास चले आए। औरत ने घोडे के नीचे उतर मुझे भी उतार दिया। उन आदमियों में से एक ने घोडे की लगाम थाम ली और उसे टहलाने ले गया दूसरे आदमी ने कुछ इशारा पाकर कुटी से एक कम्बल ला जमीन पर बिछा दिया और एक आदमी हाथ में घडा लोटा और रस्सी लेकर जल भरने के लिए चला गया। औरत ने मुझे कम्बल पर बैठने का इशारा किया और आप भी कमर हलकी करने के बाद उसी कम्बल पर बैठ गई तब उसने मुझसे कहा कि अब तू अपना सच्चा हाल बता कि तू कौन है और इस मुसीबत में क्योंकर फसी तथा वह बुड्ढा शैतान कौन था जब तक मेरा आदमी पानी लाता है और खाने-पीने का बन्दोबस्त करता है।

उस औरत ने दया करके मेरी जान बचाई थी और जहाँ मै चाहती थी वहाँ पहुँचा देने के लिए तैयार थी और मेरे दिल ने भी उसे माता के समान मान लिया था इसलिए मैंने उससे कोई बात नहीं छिपाई और अपना सच्चा हाल शुरू से आखीर तक कह सुनाया। उसे मेरी अवस्था पर बहुत तरस आई और वह बहुत देर तक तसल्ली और दिलासा देती रही। जब मैंने उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम चम्पा बताया।

इतना हाल कह इन्दिरा क्षणभर के लिए रुक गई और कुअर आनन्दसिह ने चौंक-कर पूछा 'क्या नाम बताया, चम्पा !

इन्दिरा–जी हॉ।

आनन्द–(गौर से इन्दिरा की सूरत देख-कर) ओफ अब मैंने तुझे पहिचाना।

इन्दिरा–जरूर पहिचाना होगा, क्योंकि एक दफे आप मुझे उस खोह में देख चुके हैं जहॉ चम्पा ने छ से लटकते हुए आदमी की देह काटी थी आपने उसमें बाधा डाली थी और योगिनी का वेष धरे हाथ में अगीठी लिए ने आकर आपको और देवीसिंह को बेहोश कर दिया था।

इन्दजीत–(ताज्जुब से अनन्दसिह की तरफ देख-कर) तुमने वह हाल मुझसे कहा था, जब तुम मेरी खोज में निकले थे और मुसलमानिन औरत की कैद से तुम्हें देवीसिह ने छुड़ाया था, उस समय का हाल है।

आनन्द–जी हॉ यह वही लडकी है।

इन्द–मगर मैंने तो सुना था कि उसका नाम सरला है !

इन्दिरा–जी हॉ उस सम्य चम्पा ही ने मेरा नाम सरला रख दिया था।

इन्दजीत–वाह वाह वर्षों वाद इस बात का पता लगा।

गोपाल–जरा उस किस्से को मैं भी सुना चाहता हू।

आनन्दसिंह ने उस समय का विल्कुल हाल राजा गोपालसिह से कह सुनाया और इसके बाद इन्दिरा को फिर अपना हाल कहने क लिए कहा।

चौथा बयान

भूतनाथ और असली बलभद्रसिह तिलिस्मी खॅडहर की असली इमारत वाले नम्वर दो के कमरे में उतारे गए। जीतसिह की आज्ञानुसार पन्नालाल ने उनकी बडी खातिर की और सब तरह के आराम का बन्दोबस्त उन की इच्छानुसार कर दिया। पहर रात वीतने पर जब वे लाग हर तरह से निश्चिन्त हो गये तो जीतसिह को छोड कर बाकी सब ऐयार जा उस खडहर में मौजूद थे, भूतनाथ से गपशप करने के लिए उसके पास आ बैठे और इधर-उधर की बातें होने लगीं। पन्नालाल ने किशोरी कामिनी और कमला की मौत का हाल भूतनाथ से बयान किया जिसे सुन कर बलभद्रसिह ने हद्द से ज्यादे अफसोस किया और भूतनाथ भी उदासी के साथ बडी देर तक सोच सागर में गोते खाता रहा। जब लगभग आधी रात के जा चुकी तो सब एयार बिदा होकर अपने-अपने ठिकाने चले गये और भूतनाथ तथा बलभद्रसिह भी अपनी-अपनी चारपाई पर जा बैठे। बलभद्रसिंह तो बहुत जल्द निद्रादेवी के आधीन हो गया मगर भूतनाथ की ऑखों में नींद का नाम निशान न था। कमर में एक शमादान जल रहा था और भूतनाथ अन्दर वाले कमरे की ओर निगाह किए हुए बैठा कुछ साच रहा था।

जिस कमरे में ये दोनों आराम कर रहे थे, उसमें भीतर सहन की तरफ तीन खिडकियॉ थीं। उन्हीं में से एक खिडकी की तरफ मुह किए हुए भूतनाथ बैठा हुआ था। उसकी निगाह रमन में से होती हुई ठीक उस दालान में पहुँच रही थी जिसमें वह तिलिस्मी चबूतरा था जिस पर पत्थर का आदमी सोया हुआ था। उस दालान में एक कन्दील जल रही थी जिसकी रोशनी में वह चबूतरा तथा पत्थर वाला आदमी साफ दिखाई दे रहा था।

भूतनाथ को उस दालान और चबूतरे की तरफ दखते हुए घण्टे भर से ज्यादा बीत गया। यकायक उसने देखा कि उस चबूतरे का बगलवाला पत्थर जो भूतनाथ की तरफ पडता था पूरा का पूरा किवाड़ के पल्ले की तरह खुल कर जमीन के साथ लग गया और उसके अन्दर किसी तरह की रोशनी मालूम पडने लगी जो धीरे धीरे तेज होती जाती थी।

भूतनाथ को यह मालूम था कि वह चबूतरा किसी तिलिस्म से सम्बन्ध रखता है और उस तिलिस्म को राजा बीरेन्द्रसिह के दोनों लडके तोडेंगे, अस्तु इस समय उस चबूतरे की एसी अवस्था देख उसका वडा ही ताज्जुब हुआ और वह ऑखें मल मल कर उस तरफ देखने लगा। थोड़ी दर बाद चबूतरे के अन्दर से एक आदमी निकलता हुआ दिखाई पडा मगर यह निश्चय नहीं हो सका कि वह मर्द है या औरत क्योंकि वह एक स्याह लबादा सर से पैर तक ओढे हुए था और उसके वदन का कोई भी हिस्सा दिखाई नहीं देता था। उसके बाहर निकलने के साथ ही चबूतरे के अन्दर वाली रोशनी बन्द हो गई मगर वह पत्थर जो हट कर जमीन के साथ लग गया था ज्यों का त्यों खुला ही रहा। वह आदमी बाहर निकल कर इधर-उधर देखने लगा और थोडी देर तक कुछ सोचने के बाद बाहर रमने में आ गया। धीरे-धीरे चल-कर उसने एक दफे चारो तरफ का चक्कर लगाया। चक्कर लगाते समय वह कई दफे भूतनाथ की निगाहों की ओट

हुआ, मगर भूतनाथ ने उठकर उसे देखने का उद्योग इसलिए नहीं किया कि कहीं उसकी निगाह मुझ पर न पड़ जाय। जिस कमरे में भूतनाथ सोया था वह एक मजिल ऊपर था और वहा से रमना तथा दालान साफ-साफ दिखाई दे रहा था।

वह आदमी घूम-फिर कर पुन उसी तिलिस्मी चबूतरे के पास जा खडा हुआ और कुछ दम लेकर चबूतरे के अन्दर घुस गया मगर थोडी देर बाद पुन वह चबूतरे के बाहर निकला। अबकी दफे वह अकेला न था बल्कि उसी ढग का लबादा ओढे चार आदमी और भी उसके साथ थे अर्थात् पॉच आदमी चबूतरे के बाहर निकले और पूरब तरफ वाले कोने में जाकर सीढियों की राह ऊपर की मजिल पर गये। ऊपर की मजिल में चारो तरफ इमारत बनी हुई थी इसलिए भूतनाथ को यह न जान पडा कि वे लोग किधर गए या किस कोठरी में घुसे मगर इस बात का शक जरूर हो गया कि कहीं वे लोग कोठरी ही कोठरी घूमते हुए हमारे कमरे में न आ जाय, अस्तु उसने एक महीन चादर मुह पर ओढ ली और इस ढग से लेट गया कि दर्वाजा तथा तिलिस्मी चबूतरा इन दोनों की तरफ जिधर चाहे बिना सर हिलाये देख सके। आधे घण्टे के बाद भूतनाथ के कमरे का दर्वाजा खुला और उन्हीं पॉचों में से एक आदमी ने कमरे के अन्दर झॉक कर देखा। जब उसे मालूम हो गया कि दोनों आदमी बेखबर सो रहे हैं, तो वह धीरे से कमरे के अन्दर चला आया और उसके बाद बाकी के चारो आदमी भी कमरे में चले आये। पॉचों आदमी (या जो हों) एक ही रग-ढग का लबादा या बुर्का ओढ़े हुए थे, केवल ऑख की जगह जाली बनी हुई थी जिससे देखने में किसी तरह की अण्डस न पडे। उन पॉचों ने बडे गौर से बलभद्रसिंह की सूरत देखी और एक ने कागज का एक लिफाफा उनके सिर्हाने की तरफ रख दिया, फिर भूतनाथ के पास आया और उसके सिर्हाने भी एक लिफाफा रखकर अपने साथियों के पास चला गया। कई क्षण और ठहरकर ये पॉचों आदमी कमरे के बाहर निकल गये और दर्वाजे को भी उसी तरह घुमा दिया जैसा पहिले था। उसी समय भूतनाथ भी उन पॉचों में से किसी को पकड लेने की नीयत से चारपाई पर से उठ खडा हुआ और कमरे के बाहर निकला मगर कोई दिखाई न पडा। उसी जगह नीचे उतर जाने के लिए सीढिया थी, भूतनाथ ने समझा कि ये लोग इन्हीं सीढियों की राह नीचे उतर गए होंगे, अस्तु वह भी शीघ्रता के साथ नीचे उतर गया और घूमता हुआ बीच वाले रमने में पहुचा मगर उन पॉचों में से कोई भी दिखाई न दिया। भूतनाथ ने सोचा कि आखिर वे लोग घूम-फिरकर उसी तिलिस्मी चबूतरे के पास पहुचेगे इसलिए पहिले ही से वहॉ चलकर छिप रहना चाहिए। वह अपने को छिपाता हुआ उस तिलिस्मी चबूतरे के पास जा पहुचा, और पीछे की तरफ जाकर इसकी आड में छिप कर बैठ गया।

भूतनाथ को आड में छिपकर बैठे हुए आधे घण्टे से ज्यादा बीत गया मगर किसी की सूरत दिखाई न पडी तब वह उठकर चबूतरे के सामने की तरफ आया जिधर का मुह खुला हुआ था। वह पत्थर का तख्ता जो हट कर जमीन के साथ लग गया था, अभी तक खुला हुआ था। भूतनाथ ने उसके अन्दर की तरफ झॉककर देखा मगर अधकार के सबब से कुछ दिखाई न पडा, हॉ उसके अन्दर से कुछ बारीक आवाज जरूर आ रही थी जिसे समझना कठिन था। भूतनाथ पीछे की तरफ हट गया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए। इतने ही में अन्दर की तरफ से कुछ खडखडाहट की आवाज आई और वह पत्थर का तख्ता हिलने लगा जो चबूतरे के पल्ले की तरह अलग हो गया था। भूतनाथ उसके पास से हट गया और वह पल्ला चबूतरे के साथ धीरे से लग कर ज्यों का त्यों हो गया। उस समय भूतनाथ यह कहता हुआ वहॉ से रवाना हुआ मालूम होता है वे लोग किसी दूसरी राह से इसके अन्दर पहुच गये!

भूतनाथ घूमता हुआ फिर अपने कमरे में चला आया और अपनी चारपाई पर से उस लिफाफे को उठा लिया जो उन लोगों मे से एक ने उसके सिर्हाने रख दिया था। शमादान के पास जाकर लिफाफा खोला और उसके अन्दर से खत निकाल कर पढने लगा। यह लिखा हुआ था –

'कल बारह बजे रात को इसी कमरे में मेरा इन्तजार करो और जागते रहो।

भूतनाथ ने दो-तीन दफे उस लेख को पढा और फिर लिफाफे में रखकर कमर में खोंस लिया, इसके बाद बलभद्रसिह की चारपाई के पास गया और चाहा कि उनके सिर्हाने जो पत्र रक्खा गया है उसे भी उठाकर पढे मगर उसी समय बलभद्रसिह की ऑख खुल गई और चारपाई पर किसी को झुके हुए देख वह उठ बैठा। भूतनाथ पर निगाह पडने से वह ताज्जुब में आकर बोला 'क्या मामला है?

भूत–इस समय एक ताज्जुब की बात देखने में आई है।

बलभद्र–वह क्या?

भूत–तुम जरा सावधान हो जाओ और मुझे अपने पास बैठने दो तो कहू।

बलभद्र–(भूतनाथ के लिए अपनी चारपाई पर जगह करके) आओ और कहो कि क्या मामला है?

भूतनाथ बलभद्रसिह की चारपाई पर बैठ गया और उसने जो कुछ देखा था पूरा-पूरा बयान किया तथा अन्त में
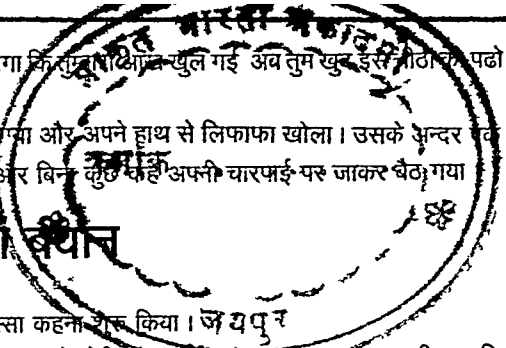
कहा कि पढने के लिए मैं तुम्हारे सिर्हाने से चीठी उठाने लगा कि तुम्हारी आख खुल गई अब तुम खुद इसे चीठी को पढो तो मालूम हो कि क्या लिखा है ।

बलभद्रसिह लिफाफा उठा शमादान के पास चला गया और अपने हाथ से लिफाफा खोला। उसके अन्दर एक अगूठी थी जिस पर निगाह पडते ही वह चिल्ला उठा और बिना कुछ कहे अपनी चारपाई पर जाकर बैठ गया

पांचवा बयान

कुमार की आज्ञानुसार इन्दिरा ने पुन अपना किस्सा कहना शुरू किया।

इन्दिरा—चम्पा ने मुझे दिलासा देकर बहुत कुछ समझाया और मेरी मदद करने का वादा किया और यह भी कहा कि आज से तू अपना नाम बदल दे। मैं तुझे अपने घर लें चलती हू मगर इस बात का खूब ध्यान रखियो कि यदि कोई तुझसे तेरा नाम पूछे ता 'सरला' बताइयो और यह सब हाल जो तूने मुझसे कहा है अब और किसी से बयान न कीजियो। मैंने चम्पा की बात कबूल कर ली और वह मुझे अपने साथ चुनारगढ ले गई। वहा पहुचने पर जब मुझे चम्पा की इज्जत और मर्तबे का हाल मालूम हुआ तो मैं अपनें दिल में बहुत खुश हुई और विश्वास हो गया कि वहा रहने में मुझे किसी तरह का डर नहीं है और इनकी मेहरबानी से अपने दुश्मनों से बदला ले सकूँगी।

चम्पा न मुझे हिफाजत और आराम से अपने यहा रक्खा और मेरा सच्चा हाल अपनी प्यारी सखी चपला के सिवाय और किसी से भी न कहा। नि सन्देह उसने मुझे अपनी लडकी के समान रक्खा और ऐयारी की विद्या भी दिल लगा कर सिखलाने लगी मगर अफसोस किस्मत ने मुझे बहुत दिनों तक उसके पास रहने न दिया और थोडे ही जमाने के बाद (इन्द्रजीतसिह की तरफ इशारा करके) आपको गया की रानी माधवी ने धोखा देकर गिरफ्तार कर लिया। चम्पा और चपला आपकी खोज में निकलीं मुझे भी उनके साथ जाना पडा और उसी जमाने में मेरा और चम्पा का साथ छूटा।

आनन्द—तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि भैया को माधवी ने गिरफ्तार कराया था ?

इन्दिरा—माधवी क दो आदमियों को चम्पा और चपला ने अपने काबू में कर लिया। पहिले छिपकर उन दोनों की बातें सुनीं जिससे विश्वास हो गया कि दोनों माधवी के नौकर हैं और कुअर साहब को गिरफ्तार कर लेने में दोनों शरीक थे मगर यह समझ में न आया कि जिसके ये लोग नौकर है वह माधवी कौन है और कुअर साहब को ले जाकर उसने कहा रक्खा है। लाचार चम्पा ने धोखा देकर उन लोगों को अपने काबू में किया और कुअर साहब का हाल उनसे पूछा। मैंने उन दानों क ऐसा जिद्दी आदमी कोई भी न देखा होगा। आपने स्वयम् देखा था कि चम्पा ने उस खोह में उसे कितना दु ख दकर मारा मगर उस कम्बख्त ने ठीक-ठीक पता नहीं दिया। उस समय वहा चम्पा का नौकर भी हबशी के रूप में काम कर रहा था आपको याद होगा।

आनन्द—वह माधवी ही का आदमी था ?

इन्दिरा—जी हा और उसकी बातों का आपने दूसरा ही मतलब लगा लिया था।

आनन्द—ठीक है अच्छा फिर उस दूसरे आदमी की क्या दशा हुई क्योंकि चम्पा ने तो दो आदमियों को पकडा था ?

इन्दिरा—वह दूसरा आदमी भी चम्पा के हाथ से उसी रोज उसके थोडी देर पहिले मारा गया था।

आनन्द—हा ठीक है उसके थाडी देर पहिले चम्पा ने एक और आदमी को मारा था। जरूर यह वही होगा जिसके मुह से निकले हुए टूटे-फूटे शब्दों ने हमें धोखें में डाल दिया था। अच्छा उसके बाद क्या हुआ ? तुम्हारा साथ उनसे कैसे छूटा ?

इन्दिरा—चम्पा और चपला जब वहा से जाने लगीं तो ऐयारी का बहुत कुछ सामान और खाने पीने की चीजें उसी खोह में रखकर मुझसे कह गईं कि जब तक हम दोनों या दोनों में से कोई एक लौटकर न आवे तब तक तू इसी जगह रहियो—इत्यादि मगर मुझे बहुत दिनों तक उन दोनों का इन्तजार करना पडा यहाँ तक कि जी ऊब गया और मैं ऐयारी का कुछ सामान लेकर उस खोह से बाहर निकली क्योंकि चम्पा की बदौलत मुझे कुछ-कुछ ऐयारी भी आ गई थी। जब मैं उस पहाड और जगल को पार करके मैदान में पहुँची तो सोचन लगी कि अब क्या करना चाहिए क्योंकि बहुत सी बधी हुई उम्मीदों का उस समय खून हो रहा था और अपनी मा की चिन्ता के कारण मैं बहुत ही दुखी हो रही थी। यकायक मेरी निगाह एक ऐसी चीज पर पडी जिसने मुझे चौंका दिया और मैं घबडा कर उस तरफ देखने लगी

इन्दिरा और कुछ कहा ही चाहती थी कि यकायक जमीन के अन्दर से बडे जोर-शोर के साथ घडघडाहट की

एक खुला हुआ दर्वाजा लाघ कर एक छाटी सी कोठरी में पहुच जिसके ऊपर चढ जाने के लिए दस-बारह सीढ़िया बनी हुई थी। दोना भाइ सीढ़ियों पर चढकर ऊपर के कमरे में पहुचे जिसकी लम्बाइ पचास हाथ और चौडाइ चालीस हाथ स कम न हागी। यह कमरा काहे का था एक छोटा सा बनावटी बागीचा मन मोहने वाला था। यद्यपि इसमें फूल-बूटों के जितने पेड लगे हुए थ, सब बनावटी थे मगर फिर भी जान पडता था कि फूलों की खुशबू से वह कमरा अच्छी तरह बसा हुआ है। इस कमरे की छत में बहुत मोटे-मोटे शीशे लगे हुए थ जिसमें स वे रोक-टोक पहुचने वाली रोशनी के कारण कमरे भर में उजाला हो रहा था। वे शीशे चौडे या चिपटे न थे बल्कि गोल गुम्बज की तरह बने हुए थे।

इस छोटे बनावटी बगीचे में छोटी छोटी बहुत खूबसूरत क्यारिया बनी हुई थी और उन क्यारियों के चारो तरफ की जमीन पत्थर के छोटे छोटे रंग बिरंगे टुकडों से बनी हुई थी। बीच में एक गोलाम्बर (चबूतरा) बना हुआ था और उसके ऊपर एक औरत खडी हुई मालूम पडती थी जिसके बाए हाथ में एक तलवार दाहिने में हाथ भर लम्बी एक ताली थी।

कुअर इन्दजीतसिह ने तिलिस्मी खजर की रोशनी बन्द करके आनन्दसिह की तरफ देखा और कहा यह औरत निःसन्देह लोहे या पीतल की बनी हुई होगी और यह ताली भी वही होगी जिसकी हम लोगों को जरूरत है मगर तिलिस्मी बाजे ने तो यह कहा था कि 'ताली किसी चलती फिरती से प्राप्त कराग यह औरत तो चलती फिरती नहीं है खडी है!'

आनन्द—उसके पास तो चलिए देखें वह ताली कैसी है।

इन्द्रजीत—चलो।

दोनों भाई उस गोलाम्बर की तरफ बढ मगर उसके पास न जा सके। तीन चार हाथ इधर ही थे कि एक प्रकार की आवाज के साथ वहा की जमीन हिली और गोलाम्बर (जिस पर पुतली थी) तेजी से चक्कर खाने लगा और उसी के साथ वह नकली औरत (पुतली) भी घूमने लगी जिसके हाथ में तलवार और ताली थी। घूमने के समय उसका ताली वाला हाथ ऊचा हो गया और तलवार वाला हाथ आगे की तरफ बढ गया जो उसके चक्कर की तेजी में चक्र का काम कर रहा था।

आनन्द—कहिए भाई जी अब यह औरत या पुतली चलती फिरती हो गई या नहीं ?

इन्द्रजीत—हा हो तो गई।

आनन्द—अब जिस तरह हो सके इसके हाथ से ताली ले लेनी चाहिये गोलाम्बर पर जाने वाला तो तुरन्त दो टुकडे हो जायगा।

इन्द्रजीत—(पीछे हटते हुए) देखें हट जाने पर इसका घूमना बन्द होता है या नहीं।

आनन्द—(पीछे हट कर) देखिये गोलाम्बर का घूमना बन्द हो गया! बस यही काला पत्थर चार हाथ के लगभग चौडा जो इस गोलाम्बर के चारो तरफ लगा है असल करामात है इस पर पैर रखने ही से गोलाम्बर घूमने लगता है। (काले पत्थर के ऊपर जाकर) देखिये घूमने लग गया (हट कर) अब बन्द हो गया। अब समझ गया इस पुतली के हाथ से ताली और तलवार ले लेना कोई बडी बात नहीं।

इतना कह कर आनन्दसिह ने एक छलाग मारी और काले पत्थर पर पैर रक्खे बिना ही कूद कर गोलाम्बर के ऊपर चले गये। गोलाम्बर ज्यों का त्यों अपने ठिकाने जमा रहा और आनन्दसिह पुतली के हाथ से ताली तथा तलवार लेकर जिस तरह वहा गए थे उसी तरह कूद कर अपने भाई के पास चले आये और बाले— 'कहिये क्या मजे में ताली ले आए!

इन्द्रजीत—बेशक! (ताली हाथ में लेकर) यह अजब ढग की बनी हुई है। (गौर से देख कर) इस पर कुछ अक्षर भी खुदे मालूम पडते है। मगर बिना तेज रोशनी के इनका पढा जाना मुश्किल है!

आनन्द—मैं तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी करता हू आप पढिये।

इन्द्रजीतसिह ने तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी में उसे पढा और आनन्दसिह को समझाया इसके बाद दोनों भाइ कूद कर उस गोलाम्बर पर चले गये जिस पर हाथ में ताली लिए हुए वह पुतली खडी थी। ढूँढने और गौर से देखने पर दोनों भाइयों को मालूम हुआ कि उसी पुतली के दाहिने पैर में एक छेद ऐसा है जिसमें वह तलवार जो पुतली के हाथ से ली गई थी बखूबी घुस जाय। भाई की आज्ञानुसार आनन्दसिह ने वही पुतली वाली तलवार उस छेद में डाल दी यहा तक कि पूरी तलवार छेद के अन्दर चली गई और केवल उसका कब्जा बाहर रह गया। उस समय दोनों भाइयों ने मजबूती के साथ उस पुतली को पकड लिया। थोडी देर बाद गोलाम्बर के नीचे से आवाज आई और पहिले की तरह पुनः वह गोलाम्बर पुतली सहित घूमने लगा। पहिले धीरे धीरे मगर फिर क्रमशः तेजी के साथ वह गोलाम्बर घूमने लगा। उस समय दोनों भाइयों के हाथ उस पुतली के साथ ऐसे चिपक गये कि मालूम होता था छुडाने से भी नहीं छूटेंगे। यह

गोलाम्बर घूमता हुआ जमीन के अन्दर धसने लगा और सर में चक्कर आने के कारण दोनों भाई बेहोश हो गए।

जब वे होश में आये तो आँखें खोलकर चारो तरफ देखने लगे मगर अन्धकार के सिवाय और कुछ भी दिखाई न दिया उस समय इन्द्रजीतसिंह ने अपने तिलिस्मी खञ्जर के जरिये से रोशनी की और इधर-उधर देखने लगे। अपने छोटे भाई को पास ही में बैठे पाया और उस पुतली को भी टुकडे-टुकडे भई उसी जगह देखा जिसके टुकडे कुछ गोलाम्बर के ऊपर और कुछ जमीन पर छितराये हुए थे।

इस समय भी दोनों भाइयों ने अपने को उसी गोलाम्बर पर पाया और इससे समझे कि यह गोलाम्बर ही धसता हुआ इस नीचे वाली जमीन के साथ आ लगा है मगर जब छत की तरफ निगाह की तो किसी तरह का निशान या छेद न देखकर छत को बराबर और बिल्कुल साफ पाया। अब जहां पर दोनों भाई थे वह कोठरी बनिस्बत ऊपर वो (या पहिले) कमरे के बहुत छोटी थी। चारो तरफ तरह-तरह के कल पुर्जे दिखाई दे रहे थे जिनमें से निकल कर फैले हुए लोहे के तार और लोहे की जंजीरें जाल की तरह बिल्कुल कोठरी को घेरे हुए थीं। बहुत सी जंजीरें ऐसी थीं जो छत में बहुत सी दीवार में और बहुत सी जमीन के अन्दर घुसी हुई थीं। इन्द्रजीतसिंह के सामने की तरफ एक छोटा सा दर्वाजा था जिसके अन्दर दोनों कुमारों को जाना पडता अस्तु दोनों कुमार गोलाबर के नीचे उतरे और तारों तथा जंजीरों से बचते हुए उस दर्वाजे के अन्दर गये। यह रास्ता एक सुरंग की तरह था जिसकी छत जमीन और दोनों तरफ की दीवारें मजबूत पत्थर की बनी हुई थीं। दोनों कुमार थोडी दूर तक उसमें बराबर चलते गये और इसके बाद एक ऐसी जगह पहुंचे जहाँ ऊपर की तरफ निगाह करने से आसमान दिखाई देता था। गौर करने से दोनों कुमारों को मालूम हुआ कि यह स्थान वास्तव में कूएँ की तरह है। इसकी जमीन (किसी कारण से) बहुत ही नरम और गुदगुदी थी। बीच में एक पतला लोहे का खंभा था और खंभे के नीचे जञ्जीर के सहारे एक खटोली बँधी हुई थी जिस पर दो तीन आदमी बैठ सकते थे। खटोली से अढाई तीन हाथ ऊँचे (खंभे में) एक चर्खी लगी हुई थी और चर्खी के साथ एक ताम्रपत्र बँधा हुआ था। इन्द्रजीतसिंह ने ताम्र पत्र को पढा बारीक-बारीक हरफों में यह लिखा था –

यहाँ से बाहर निकल जाने वाले को खटोली के ऊपर बैठकर यह चर्खी सीधी घूमानी चाहिए। चर्खी सीधी तरफ घूमने से यह खंभा खटोली को लिए हुए ऊपर जायेगा और उल्टी तरफ घूमाने से वह नीचे उतरेगा। पीछे हटने वाले को अब वह रास्ता खुला नहीं मिलेगा जिधर से वह आया होगा।

पत्र पढकर इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा यहाँ से बाहर निकल चलने के लिए यह बहुत अच्छी तर्कीब है अब हम दोनों को भी इसी तरह बाहर हो जाना चाहिए। लो तुम भी इसे पढ लो।

आनन्द–(पत्र पढकर) आइये इस खटोली में बैठ जाइये!

दोनों कुमार उस खटोली में बैठ गये और इन्द्रजीतसिंह चर्खी घूमाने लगे। जैसे-जैसे चर्खी घुमाते थे वैसे-वैसे वह खंभा खटोली को लिए हुए ऊपर की तरफ उठता जाता था। जब खंभा कूएँ के बाहर निकल आया तब अपने चारो तरफ की जमीन और इमारतों को देखकर दोनों कुमार चौंके और इन्द्रजीतसिंह की तरफ देखकर आनन्दसिंह ने कहा –

आनन्द–यह तो तिलिस्मी बाग का वही चौथा दर्जा है जिसमें हम लोग कई दिन तक रह चुके हैं!

इन्द्रजीत–बेशक वही है मगर यह खंभा हम लोगों को (हाथ का इशारा करके) उस तिलिस्मी इमारत तक पहुंचावेगा।

पाठक हम सन्तति के नौवें भाग के पहिले बयान में इस बाग के चौथे भाग का हाल जो कुछ लिख चुके हैं शायद आपको याद होगा यदि भूल गये हों तो उसे पुनः पढ जाइए। उस बयान में यह भी लिखा जा चुका है कि इस बाग के पूरब तरफ वाले मकान के चारो तरफ पीतल की दीवार थी इसलिये उस मकान का केवल ऊपर वाला हिस्सा दिखाई देता था और कुछ मालूम नहीं होता था कि उसके अन्दर क्या है, हां छत के ऊपर लोहे का एक पतला महराबदार खंभा था जिसका दूसरा सिरा उसके पास वाले कूए के अन्दर गया था। उस मकान के चारो तरफ पीतल की जो दीवार थी उसमें एक बन्द दर्वाजा भी दिखाई देता था और उसके दोनों तरफ पीतल के दो आदमी हाथ में नंगी तलवार लिए खडे थे इत्यादि।

यह उसी मकान के साथ वाला कूआ था जिसमें से इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह निकले थे। धीरे-धीरे ऊंचे उठकर दोनों भाई उस मकान की छत पर जा पहुंचे जिसके चारो तरफ पीतल की दीवार थी। खटोली को मकान की छत पर पहुंचा कर वह खम्भा अड गया और दोनों कुमारों को उस पर से उतर जाना पडा। पहिले जब दोनों कुमार इस बाग

के (चौथे दरजे के) अन्दर आये थे, तब इस मकान के अन्दर का हाल कुछ जान नहीं सके थे मगर अब तो इत्तिफाक ने खुद ही इन दोनों को उस मकान में पहुचा दिया इसलिए बडे उत्साह से दोनों भाई उस जगह का तमाशा दखने के लिए तैयार हो गये।

इस मकान की छत पर एक रास्ता नीच उतर जाने के लिए था उसी राह से दोनों भाई नीचे वाली मजिल में उतर कर एक छाटे से कमरे में पहुचे जहॉ की छत जमीन और चारो तरफ की दीवारों में कलई किये हुए दलदार शीशे बडी कारीगरी के जडे हुए थे। अगर एक आदमी भी उस कमरे में जाकर खडा हो तो अपनी हजारों सूरतें *देख कर घबडा जाय। सिवाय इस बात के उस कमरे में और कुछ भी न था और न यही मालूम होता था कि यहा से किसी और जगह जाने के लिए कोई रास्ता है। उस कमरे की अवस्था देख कर इन्द्रजीतसिह हसे और आनन्दसिह की तरफ देख कर बोले—

इन्द्रजीत—इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस कमरे में इन शीशों की बदौलत एक प्रकार की दिल्लगी है मगर आश्चर्य इस बात का होता है कि तिलिस्म जनाने वालों ने यह फजूल कार्रवाई क्यों की है ! इन शीशों के लगाने से कोई फायदा या नतीजा तो मालूम नहीं होता !

आनन्द—मैं भी यही सोच रहा हू मगर विश्वास नहीं होता कि तिलिस्म बनानेवालों ने इसे व्यर्थ ही बनाया होगा कोई न कोई बात इसमें जरूर होगी। इस मकान में इसके सिवाय अभी तक कोई दूसरी अनूठी बात दिखाई नहीं दी अगर यहॉ कुछ है तो केवल यही कमरा है अस्तु इस कमरे को फजूल समझना इस इमारत भर को फजूल समझना होगा मगर ऐसा हो नहीं सकता। देखिये इसी मकान से उस लोहे वाले खम्भे का सम्बन्ध है जिसकी बदौलत हम (रुककर) सुनिए सुनिए, यह आवाज कैसी और कहा से आ रही है ?

बात करते-करते आनन्दसिह रुक गये और ताज्जुब भरी निगाहों से अपने भाई की तरफ देखने लगे क्योंकि उन्हे दा आदमियों के जोर-जोर से बातचीत करने की आवाज सुनाई देने लगी। वह आवाज यह थी —

एक—तो क्या दोनों कुमार उस कुए से निकल कर यहा आ जायगे !

दूसरा—हा जरूर आ जायगे। उस कूए में जो लोहे का खम्भा गया हुआ हे उसमें एक खटोली बॅधी है उस खटोली पर दैठ कर एक कल घुमाते हुए दोनों आदमी यहा आ जायगे।

पहिला—तब तो बडी मुश्किल होगी, हमलोगों को यह जगह छोड देनी पडेगी।

दूसरा—हम लोग इस जगह को क्यों छोडने लगे ? जिसके भरोसे पर हम लोग यहा बैठे हैं क्या वह दोनों राजकुमारों से कमजोर हैं ? खैर उसे जाने दो पहिले तो हमीं लोग उन्हें तग करने के लिए बहुत हैं।

पहिला—इसमें तो कोई शक नहीं कि हम लोग उनकी ताकत और जवामर्दी को हवा खिला सकते हैं मगर एक काम जरूर करना चाहिए।

दूसरा—वह क्या ?

पहिला—इस कमरे का वह दर्वाजा खोल देना चाहिए जिसमें भयानक अजगर रहता है जब दोनों उसे खुला देख उसके अन्दर जायेगे तो नि सन्देह वह अजगर उन दोनों को निगल जायेगा।

दूसरा—और बाकी के दर्वाज मजबूती के साथ बन्द कर देना चाहिए जिसमें वे और किसी तरफ न जा सकें।

पहिला—बेशक इसके अतिरिक्त एक काम और भी करना चाहिए जिसमें वे दोनों उस दर्वाजे के अन्दर जरूर जाय अर्थात उन दोनों लडकियों को भी उस अजगर वाली कोठरी में हाथ-पैर बॉध कर पहुचा देना चाहिए जिन पर दोनों कुमार आशिक हैं।

दूसरा—यह तुमने बहुत अच्छी बात कही। जब वह अजगर उन लडकियों को निगलना चाहेगा तो वे जरूर चिल्लायेंगी उस समय आवाज पहिचानने पर वे दोनों अपने को किसी तरह रोक न सकेंगे और उस दर्वाजे के अन्दर जाकर अजगर की खुराक बनेंगे।

पहिला—यह भी अच्छी बात कही। अच्छा उन दोनों को पकड लाओ और हाथ-पैर बाधकर उस कोठरी में डाल दो अगर इस कार्रवाई से काम न चलेगा तो दूसरी कार्रवाई की जायेगी मगर उन्हें इस मकान के बाहर न जाने देंगे।

---

*यदि दो बडे शीशे आमने-सामने रखकर देखिये तो शीशों में दो चार ही नहीं बल्कि हजारों शीशे एक दूसरे के अन्दर दिखाई देंगे।

इसके बाद वह बातचीत की आवाज बन्द हो गई और यकायक सामने वाले आइने में कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने अपने प्यारे एयार भैरोसिंह और तारासिंह की सूरत देखी सो भी इस ढंग से कि दोनों एयार अकडते हुए एक तरफ से आये और दूसरी तरफ को चले गये। इसके बाद दो औरतों की सूरत नजर आई। पहिले तो पहिचानने में कुछ शक हुआ मगर तुरत ही मालूम हो गया कि वे दोनों कमलिनी और लाडिली हैं। उन दोनों की कमर में लोहे की जंजीरें बंधी हुई थी और एक मजबूत आदमी उन्हें अपने हाथ में लिए हुए उन दोनों के पीछे-पीछे जा रहा था। यह भी देखा कि कमलिनी और लाडिली चलते-चलते रुकीं और उसी समय पिछले आदमी ने उन दोनों को धक्का दिया जिससे वे झुक गई और सर हिलाकर आगे बढती हुई नजरों से अलग हो गई।

भैरोसिंह और तारासिंह यहाँ कैसे आ पहुचे? और कमलिनी तथा लाडिली को कैदियों की तरह ले जाने वाला यह कौन था? इस शीशे के अन्दर उन सभों की सूरत कैसे दिखाई पडी? चारो तरफ से बन्द रहने पर भी यहाँ आवाज कैसे आई इन बातों को सोचते हुए दोनों कुमार बहुत ही दुखी हुए।

आनन्द–भैया यह तो बडे आश्चर्य की बात मालूम पडती है। यह लोग (अगर वास्तव मे कोई हों तो) कहते है कि अजगर कुमारों को निगल जायेगा। मगर हम लोग तो खुद ही अजगर के मुह में जाने के लिए तैयार हैं क्योंकि तिलिस्मी बाजे की यही आज्ञा है। अब कहिए तिलिस्मी बाजे की बात झूठी है या वे लोग कोई धोखा देना चाहते है?

. इन्द्रजीत–मैं भी इन्हीं बातों को सोच रहा हू। तिलिस्मी बाजे की आवाज को झूठा समझना तो बुद्धिमानी की बात नहीं होगी क्योंकि उसी आवाज के भरोसे पर हम लोग तिलिस्म तोडने के लिए तैयार हुए हैं मगर हाँ इस बात का पता लगाए बिना अजगर के मुह में जाने की इच्छा नहीं होती कि यह आवाज आखिर थी कैसी और इस आइने में जिन लोगों के बातचीत की आवाज सुनाई दी है वे वास्तव में कोई है भी या सब बिल्कुल तिलिस्मी खेल ही है? कलई किए हुए आइने में किसी ऐसे आदमी की सूरत भला क्योंकर दिखाई दे सकती है जो उसके सामने न हो।

आनन्द–बेशक यह एक नई बात है। अगर किसी के सामने हम यह किस्सा बयान करें तो वह यही कहेगा कि तुमको धोखा हुआ। जिन लोगों को तुमने आइने मे देखा था वे तुम्हारे पीछे की तरफ से निकल गये होंगे और तुमने उस बात का खयाल न किया होगा। मगर नहीं अगर वास्तव में ऐसा होता तो आइने में भी हम उन्हें अपने पीछे की तरफ से जाते हुए देखते। जरूर इसका सबब कोई दूसरा ही है जो हम लोगों की समझ में नहीं आ रहा है।

इन्द्र–खैर फिर अब किया क्या जाय? इस मंजिल से नीचे उतर जाने या किसी और तरफ जाने के लिए रास्ता भी तो दिखाई नहीं देता। (उंगली का इशारा करके) सिर्फ वह एक निशान है जहा से अपने आप एक दर्वाजा पैदा होगा या हम लोग दर्वाजा पैदा कर सकते हैं मगर वह दर्वाजा उसी अजगर वाली कोठरी का है जिसमे जाने के लिए हम लोग यहा आए हैं।

आनन्द–ठीक है मगर क्या हम लोग तिलिस्मी खंजर से इस शीशे को तोड या काट नहीं सकते?

इन्द्रजीत–जरूर काट सकते है मगर यह कारवाई अपने मन की होगी।

आनन्द–तो क्या हर्ज है आज्ञा दीजिये तो मै एक हाथ शीशे पर लगाऊ!

इन्द्रजीत–खैर ही कर देखो मगर कहीं कोई बखेडा न पैदा हो?

'अब जो होना हो सो हो!' इतना कहकर आनन्दसिंह तिलिस्मी खंजर लिए हुए आइने की तरफ बढे। उसी वक्त एक आवाज हुई और बाएं तरफ की शीशे वाली दीवार में ठीक उसी जगह एक छोटा सा दर्वाजा निकल आया जहाँ कुमार ने हाथ का इशारा करके आनन्दसिंह को बताया था मगर दोनों कुमारों के उसके अन्दर जाने का ख्याल भी न किया और आनन्दसिंह ने तिलिस्मी खंजर का एक भरपूर हाथ अपने सामने वाले शीशे पर लगाया, जिसका नतीजा यह हुआ कि शीशे का एक बहुत बडा टुकडा भारी आवाज देकर पीछे की तरफ हट गया और आनन्दसिंह इस तरह उसके अन्दर घुस गये जैसे हवा के किसी खिंचाव या बवन्डर ने उन्हें अपनी तरफ खींच लिया हो इसके बाद वह शीशे का टुकडा फिर ज्यों का त्यों बराबर मालूम होने लगा।

हवा के खिंचाव का असर कुछ-कुछ इन्द्रजीतसिंह पर भी पडा मगर वे दूर खडे थे इसलिए खिंचकर वहा तक न जा सके पर आनन्दसिंह उसके पास होने के कारण खिंच कर अन्दर चले गये।

आनन्दसिंह का यकायक इस तरह आफत में फस जाना बहुत ही बुरा हुआ इस बात का जितना रंज इन्द्रजीतसिंह को हुआ सो वे ही जान सकते हैं। उनकी आखों में आसू भर आया और वे बेचैन होकर धीरे से बोले— अब जब तक कि मैं इस शीशे के अन्दर न चला जाऊगा अपने भाई को छुडा न सकूँगा और न इस बात का ही पता लगा सकूगा कि उस पर क्या मुसीबत आई। इतना कह वे तिलिस्मी खंजर लिए हुए शीशे की तरफ बढे मगर दो ही कदम जाकर रुक गये और फिर सोचने लगे 'कहीं ऐसा न हो कि जिस मुसीबत में आनन्द पड गया है उसी मुसीबत में मैं भी फस जाऊ। यदि

ऐसा हुआ तो हम दोनों इसी तिलिस्म में मरकर रह जायगे। यहा कोई ऐसा भी नहीं जो हम लोगों की सहायता करेगा लेकिन अगर ईश्वर की कृपा से तिलिस्म के इस दर्जे को मै अकेला तोड सकू तो नि सन्देह आनन्द को छुडा लूगा। मगर कही ऐसा न हो कि जब तक हम तिलिस्म तोडें तब तक आनन्द की जान पर आ बने ? बेशक इस आवाज ने हम लोगों को धोखे में डाल दिया हमें तिलिस्मी बाजे पर भरोसा करके बेखौफ अजगर के मुह में चले जाना चाहिये था। इत्यादि तरह-तरह की बातें सोचकर इन्द्रजीत रुक गये और आनन्दसिंह की जुदाई में आसू गिराते हुए उसी अजदहे वाली कोठरी में चले गये जिसका दर्वाजा पहिले ही खुल चुका था।

उस कोठरी में सिवाय एक अजदहे के और कुछ भी न था। इस अजदहे की मोटाई दो गज घेरे से कम न होगी। उसका खुला मुह इस लायक था कि उद्योग करने से आदमी उसके पेट में बखूबी घुस जाय। वह एक सोने के चबूतरे के ऊपर कुण्डली मारे बैठा था और अपने डील-डौल और खुले हुए भयानक मुह के कारण बहुत ही डरावना मालूम पडता था। झूठा और बनावटी मालूम हो जाने पर भी उसके पास जाना या खडा होना बडे जीवट का काम था।

इन्द्रजीतसिंह बेखौफ उस अजदहे के मुह में घुस गए और कोशिश करके आठ या नौ हाथ के लगभग नीचे उतर गए। इस बीच में उन्हें गर्मी तथा सास लेने की तगी से बहुत तकलीफ हुई और उसके बाद उन्हें नीचे उतर जाने के लिए दस बारह सीढिया मिलीं। नीचे उतरने पर कई कदम एक सुरग में चलना पडा और उसके बाद वे उजाले में पहुचे।

अब जिस जगह इन्द्रजीतसिंह पहुचे वह एक छोटा सा तिमजिला मकान सगमर्मर के पत्थरों से बना हुआ था जिसका ऊपरी हिस्सा बिल्कुल खुला हुआ था अर्थात चौक में खडे होने से आसमान दिखाई देता था। नीचे वाले खण्ड में जहा इन्द्रजीतसिंह खडे थे चारो तरफ चार दालान थे और चारो दालान अच्छे बेशकीमत सोने के जडाऊ नुमाइशी बरतनों तथा हर्बो से भरे हुए थे। कुमार उस बेहिसाब दौलत तथा अनमोल चीजों को देखते हुए जब बाई तरफ वाले दालान में पहुचे तो यहा की दीवार में भी उन्होंने एक छोटा सा दर्वाजा देखा। झाकने से मालूम हुआ कि ऊपर के खण्ड में जाने के लिए सीढिया हैं। कुअर इन्द्रजीतसिंह सीढियों की राह ऊपर चढ गये। उस खण्ड में भी चारो तरफ दालान थे। पूरब तरफ वाले दालान में कल पुरजे लगे हुए थे उत्तर तरफ वाले दालान में एक चबूतरे के ऊपर लोहे का एक सन्दूक ठीक उसी ढग का था जैसा कि तिलिसमी बाजा कुमार देख चुके थे। दक्खिन तरफ वाले दालान में कई पुतलिया खडी थीं जिनके पैरों में गडारीदार पहिये की तरह बना हुआ था जमीन में लोहे की नालिया जडी हुई थीं और नालियों में पहिया चढा हुआ था अर्थात वह पुतलिया इस लायक थीं कि पहियों पर नालियों की बरकत से बधे हुए (महदूद) स्थान तक चल फिर सकती थीं और पश्चिम तरफ वाले दालान में सिवाय एक शीशे की दीवार के और कुछ भी दिखाई नहीं देता था।

उन पुतलियों में कुमार ने कई अपने जान-पहिचान वाले और सगी-साथियों की मूरतें भी देखीं। उन्हीं में भैरोसिंह तारासिंह कमलिनी लाडिली राजा गोपालसिंह और अपनी तथा अपने छोटे भाई की भी मूरतें देखी जो डील-डौल और नक्श में बहुत साफ बनी हुई थीं। कमलिनी और लाडिली की मूरतों की कमर में लोहे की जजीर बधी हुई थी और एक मजबूत आदमी उसे थामे हुए था। कुमार ने मूरतों को हाथ का धक्का देकर चलाना चाहा मगर वह अपनी जगह से एक अगुल भी न हिला। कुमार ताज्जुब से उनकी तरफ देखने लगे।

इन सब चीजों को गौर और ताज्जुब की निगाह से कुमार देख ही रहे थे कि यकायक दो आदमियों के बातचीत की आवाज उनके कान में पडी। वे चौककर चारों तरफ देखने लगे मगर किसी आदमी की सूरत न दिखाई पडी थोडी ही देर में इतना जरूर मालूम हो गया कि उत्तर तरफ वाले दालान में चबूतरे के ऊपर जो लोहे वाला सन्दूक है उसी में से यह आवाज निकल रही है। कुमार समझ गये कि वह सन्दूक उसी तरह का कोई तिलिस्मी बाजा है जैसा कि पहिले देख चुके हैं अस्तु वे तुरत उस बाजे के पास चले आये और आवाज सुनने लगे। वह बातचीत या आवाज ठीक वही थी जो कुँअर इन्द्रजीतसिंह शीशे वाले कमरे में सुन चुके थे अर्थात एक ने कहा 'तो क्या दोनों कुमार कुए में से निकल कर यहा आ जायेंगे ! उसी के बाद दूसरे आदमी के बोलने की आवाज आई मानों दूसरे ने जवाब दिया 'हॉ जरूर आ जायगे उस कुए में लोहे का खम्भा गया हुआ है उसमें एक खटोली बधी हुई है उस खटोली पर बैठ सुनी थी ठीक वही बातें उसी ढग की आवाज में कुमार ने इस बाजे में भी सुनीं। उन्हें बडा ताज्जुब हुआ और उन्होंने इस बात का निश्चय कर लिया कि अगर वह शीशे वाला कमरा इस दीवार के बगल में है तो नि सन्देह यही आवाज हम दोनों भाइयों ने सुनी थी। इसके साथ ही कुमार की निगाह पश्चिम तरफ वाले दालान में शीशे की दीवार के ऊपर पडी और वे धीरे से बोल उठे बेशक इसी दीवार के उस तरफ वह कमरा है और ताज्जुब नहीं कि उस कमरे में उस तरफ यही शीशे की दीवार हम लोगों ने देखी भी हो।

इतने ही में दक्खिन तरफ वाले दालान में से धीरे-धीरे कुछ कल-पुर्जो के घूमने की आवाज आने लगी। कुमार ने उस तरफ देखा तो भैरोसिह और तारासिह की मूरत को अपने ठिकाने से चलते हुए पाया। उन दोनों मूरतों की अकड़-कर चलने वाली चाल भी ठीक वैसी ही थी जैसी कुमार उस शीशे के अन्दर देख चुके थे। जिस समय वे दोनों मूरतें चलती हुई उस शीशे वाली दीवार के पास पहुची उसी समय दीवार में एक दर्वाजा निकल आया और दोनों मूरतें उसके अन्दर घुस गई। इसके बाद कमलिनी और लाडिली की मूरतें चलीं और उनके पीछे वाला आदमी जो जजीर थामे हुए था पीछे-पीछे चला ये सब उसी तरह शीशे वाली दीवार के अन्दर जाकर थोडी देर के बाद फिर अपने ठिकाने लौट आये और वह दर्वाजा ज्यों का त्यों बन्द हो गया। अब कुअर इन्द्रजीतसिह के दिल मे किसी तरह का शक नहीं रहा, उन्हें निश्चय हो गयाकि उस शीशे वाले कमरे में जोकुछ हम दोनों ने सुना और देखा वह वास्तव में कुछ भी न था, या अगर कुछ था तो वही जो कि यहा आने से मालूम हुआ है, साथ ही इसके कुमार यह भी सोचने लगे कि 'ये हमारे सगी साथियों मुलाकातियों की मूरतें पुरानी बनी हुई हैं या उन तस्वीरों की तरह इन्हें भी राजा गोपालसिह ने स्थापित किया है और इन मूरतों का चलना-फिरना तथा इस बाजे का बोलना किसी खास वक्त पर मुकर्रर है या घण्टे-घण्टे, दो-दो घण्टे पर ऐसा ही हुआ करता है? मगर नहीं घड़ी-घडी व्यर्थ ऐसा होना अनुचित है। तो क्या जब शीशे वाले कमरे में कोई जाता है तभी ऐसी बातें होती हैं ! क्योंकि हम लोगों के भी वहा पहुचने पर यही दृश्य देखने में आया था। अगर मेरा यह खयाल ठीक है तो अब भी उस शीशे वाले कमरे में कोई पहुचा होगा। गैर आदमी का वहा पहुचना तो असम्भव है अगर कोई वहा पहुचता है तो चाहे वह आनन्दसिंह हो या राजा गोपालसिह हों। कौन ठिकाना फिर किसी कारण से आनन्दसिह वहा जा पहुचा हो। अगर ऐसा हो तो जिस तरह इस बाजे की आवाज उस कमरे में पहुचती है उसी तरह मेरी आवाज भी वहा वाला सुन सकता है'। इत्यादि बातें कुमार ने जल्दी-जल्दी सोचीं और इसके बाद ऊचे स्वर में बोले 'शीशे वाले कमरे में कौन है?'

जवाब—मै हू आनन्दसिह, क्या मै भाई साहब की आवाज सुन रहा हू?

इन्द्रजीत—हा मै यहा आ पहुचा हू, तुम भी जहा तक जल्दी हो सके उस अजदहे के मुह में चले जाओ और हमारे पास पहुचो।

जवाब—बहुत अच्छा।

सातवां बयान

किस्मत जब चक्कर खिलाने लगती है तो दम भर भी सुख की नींद सोने नहीं देती। इसकी बुरी निगाह के नीचे पडे हुए आदमी को तभी कुछ निश्चिन्ती होती है जब इसका पूरा दौर (जो कुछ करना हो करके) बीत जाता है। इस किस्से को पढकर पाठक इतना तो जान ही गए होंगे कि इन्द्रदेव भी सुर्खियों की पक्ति में गिने जाने लायक नहीं है। वह भी जमाने के हाथों से अच्छी तरह सताया ज़ा चुका है परन्तु उस जवामर्द की आखों में बहुत सी रातें उन दिनों की भी बीत चुकी है जब कि उसका मजबूत दिल कई तरह की खुशियों से नाउम्मीद होकर 'हरि इच्छा' का मन्त्र जपता हुआ एक तरह से बेफिक्र हो बैठा था, मगर आज उसके आगे फिर बडी दु खदाई घडी पहिले से दूना विकराल रूप धारण करके आ खड़ी हुई है। इतने दिन तक वह यह समझ कर कि उसकी स्त्री और लडकी इस दुनिया से कूच कर गई सब्र करके बैठा हुआ था, लेकिन जब से उसे अपनी स्त्री और लड़की के इस दुनिया में मौजूद रहने का कुछ हाल और आपस वालों की बेईमानी का पता मालूम हुआ है तब से अफसोस रज और गुस्से से उसके दिल की अजब हालत हो रही है।

लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली को समझा बुझा कर जब इन्द्रदेव बलभद्रसिंह को छुडाने की नीयत से जमानिया की तरफ रवाना हुए तो पहाड़ी के नीचे पहुच कर उन्होंने अपने अस्तबल से एक उम्दा घोड़ा खोला और उस पर सवार हो पाच ही सात कदम आगे बढे थे कि राजा गोपालसिह का भेजा हुआ एक सवार आ पहुचा जिसने सलाम कर के एक चीठी उनके हाथ में दी और उन्होंने उसे खोल कर पढा।

इस चीठी में राजा गोपालसिंह ने यही लिखा था "यह सुनकर आपको बड़ा आश्चर्य होगा कि आज कल इन्दिरा मेरे घर में है और उसकी मा भी जीती है जो यद्यपि तिलिस्म में फसी हुई है मगर उसे अपनी आखों से देख आया हू। अस्तु आप पत्र पढते ही अकेले मेरे पास चले आइये।'

इस चीठी को पढकर इन्द्रदेव कितना खुश हुए होंगे यह हमारे पाठक स्वयम् समझ सकते हैं। अस्तु वे तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुए और समय से पहिले ही जमानिया जा पहुचे। जब राजा गोपालसिह को उनके आने की

खबर हुई तो वे दर्वाजे तक आकर बडी मुहब्बत से इन्द्रदेव को घर के अन्दर ले गये और गले से मिल कर अपने पास बैठाया तथा इन्दिरा को बुलवा भेजा। जब इन्दिरा को अपने पिता के आने की खबर मिली, दौड़ती हुई राजा गोपालसिंह के पास आई और अपने पिता के पैरों पर गिर कर रोने लगी। इस समय कमरे के अन्दर राजा गोपालसिह इन्द्रदेव और इन्दिरा के सिवाय और कोई भी न था। कमरा एकान्त कर दिया गया था, यहा तक कि जो लौडी इन्दिरा को बुला कर लाई थी वह भी बाहर कर दी गई थी।

इन्दिरा के रोने ने राजा गोपालसिह और इन्द्रदेव का कलेजा भी हिला दिया और वे दोनों भी रोने से अपने को बचा न सके। आखिर उन्होंने बडी मुश्किल से अपने को सम्हाला और इन्दिरा को दिलासा देने लगे। थाडी देर बाद जब इन्दिरा का जी ठिकाने हुआ तो इन्द्रदेव ने उसका हाल पूछा और उसने अपना दर्दनाक किस्सा कहना शुरू किया।

इन्दिरा का हाल जो कुछ ऊपर के बयान में लिख चुके है वह और उसके बाद का अपना तथा अपनी मां का बचा हुआ किस्सा भी इन्दिरा ने बयान किया जिसे सुनकर इन्द्रदेव की ऑखें खुल गईं और उन्होंने एक लम्बी सास लेकर कहा--

अफसोस, हरदम साथ रहने वालों की जब यह दशा है तो किस पर विश्वास किया जाय ! खैर कोई चिन्ता नहीं।"

गोपाल--मेरे प्यारे दोस्त, जो कुछ होना था सो हो गया, अब अफसोस करना वृथा है। क्या मै उन राक्षसों से कुछ कम सताया गया हू ? नहीं ईश्वर न्याय करने वाला है और तुम देखोगे कि उनका पाप उन्हें किस तरह खाता है। रात बीत जाने पर मै इन्दिरा की मा से भी तुम्हारी मुलाकात कराऊगा। अफसोस दुष्ट दारोगा ने उसे ऐसी जगह पहुचा दिया है कि जहा से वह स्वयम् तो निकल ही नहीं सकती मै खुद तिलिस्म का राजा कहला कर भी उसे छुडा नहीं सकता। लेकिन अब कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह वह तिलिस्म तोड रहे हैं आशा है कि वह बेचारी भी बहुत जल्द इस मुसीबत से छूट जायेगी।

इन्द्रदेव--क्या इस समय मैं उसे नहीं देख सकता ?

गोपाल--नहीं, यदि दोनों कुमार तिलिस्म तोडने में हाथ न लगा चुके होते तो शायद मैं ले भी चलता मगर अब रात के वक्त वहा जाना असम्भव है !

जिस समय इन्द्रदेव और गोपालसिह की मुलाकात हुई थी चिराग जल चुका था। यद्यपि इन्दिरा ने अपना किस्सा सक्षेप में बयान किया था मगर फिर भी इस काम में डेढ पहर का समय बीत गया था। इसके बाद राजा गोपालसिह ने अपने सामने इन्द्रदेव को खिलाया और इन्द्रदेव ने अपना तथा रोहतासगढ का हाल कहना शुरू किया तथा इस समय तक जो मामले हो चुके थे सब खुलासा बयान किया। तमाम रात बातचीत में बीत गई और सवेरा होने पर जरूरी कामों से छुट्टी पाकर तीनों आदमी तिलिस्म के अन्दर जाने के लिए तैयार हुए।

इस जगह हमें यह कह देना चाहिए कि इन्दिरा को तिलिस्म के अन्दर से निकाल कर अपने घर में ले आना राजा गोपालसिह ने बहुत गुप्त रक्खा था और ऐयारी के ढग पर उसकी सूरत भी बदलवा दी थी।

आठवां बयान

आनन्दसिह की आवाज सुनने पर इन्द्रजीतसिंह का शक जाता रहा और वे आनन्दसिह के आने का इन्तजार करते हुए नीचे उतर आए जहा थोड़ी ही देर बाद उन्होंने अपने छोटे भाई को उसी राह से आते देखा जिस राह से वे स्वय इस मकान में आये थे।

इन्द्रजीतसिह अपने भाई के लिए बहुत ही दु खी थे। उन्हें विश्वास हो गया था कि आनन्दसिह किसी आफत में फस गये और बिना तरद्दुद के उनका छूटना कठिन है मगर थोडी ही देर में बिना झझट के उनके आ मिलने से उन्हें कम ताज्जुब न हुआ। उन्होंने आनन्दसिह को गले से लगा लिया और कहा--

इन्द--मैं तो समझता था कि तुम किसी आफत में फस गए और तुम्हारे छुडाने के लिए बहुत ज्यादा तरद्दुद करना पडेगा।

आनन्द--जी नहीं, वह मामला तो बिल्कुल खेल ही निकला। सच तो यह है कि इस तिलिस्म में दिल्लगी और मसखरेपन का भाग भी मिला हुआ है।

इन्द--तो तुम्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं हुई ?

आनन्द--कुछ भी नहीं, हवा के खिचाव के कारण जब मै शीशे के अन्दर चला गया तो वह शीशे का टुकडा जिसे

दर्वाजा कहना चाहिए बन्द हो गया आर मैन अपने को पूरे अन्धकार में पाया। तिलिस्मी खञ्जर का कब्जा दबाकर रोशनी की तो सामने एक छोटा सा दवाजा एक पल्ले का दिखाई पडा जिसमें खैंचने के लिए लोहे की दो कड़िया लगी हुई थीं। मैंने वाए हाथ स एक कडी पकडकर दर्वाजा खैचना चाहा मगर वह थोडा सा खिंच कर रह गया सोचा कि इसमें दो कडिया इसीलिए लगी है कि दोनों हाथों से पकडकर दर्वाजा खींचा जाय अस्तु तिलिस्मी खञ्जर म्यान में रख लिया जिससे पुन अधकार हो गया और इसके वाद दोनों हाथ से दोनों कडियों को पकड कर अपनी तरफ खींचना चाहा मगर मेर दोनों हाथ उन कडियों मे चिपक गये और दर्वाजा भी न खुला। उस समय मै बहुत ही घवडा गया और हाथ छुड़ान क लिए जोर करने लगा। दस वारह पल के वाद वह कडी पीछे की तरफ हटी और मुझ खींचती हुई दूर तक ल गई। मैं यह कह नहीं सकता कि कडियों के साथ ही दर्वाजा का कितना वडा भाग पीछ की तरफ हटा था, मगर इतना मालूम हुआ कि म ढालुवीं जमीन की तरफ जा रहा हू। आखिर जब उन कडियों का पीछे हटना वन्द हो गया तो मर दोनों हाथ भी छूट गए इसके वाद थोडी देर तक घडघडाहट की आवाज आती रही और तब तक मैं चुपचप खडा रहा।

जब घडघडाहट की आवाज वन्द हो गइ ता मैंने तिलिस्मी खजर निकाल कर रोशनी की और अपन चारा तरफ गोर करके देखा। जिधर से ढालुवीं जमीन उतरती हुई वहा तक पहुची थी उस तरफ अर्थात् पीछे की तरफ विना चोखट का एक बन्द दर्वाजा पाया जिससे मालूम हुआ कि अव मै पीछे की तरफ नहीं हट सकता मगर दाहिनी तरफ एक और दर्वाजा देखकर मे उसके अन्दर चला गया और दो कदम के वाद घूमकर फिर मुझे ऊची जमीन अर्थात् चढाव पडा जिसस साफ मालूम हा गया कि मै जिधर से उतरता हुआ आया था अव उसीतरफ पुन जा रहा हू। कई कदम जाने के वाद पुन एक बन्द दर्वाजा मिला मगर वह आपस आप खुल गया। जब मै उसक अन्दर गया तो अपने को उसी शीशे वाले कमर में पाया और घूमकर पीछे की तरफ देखा ता साफ दीवार नजर पडी। यह नहीं मालूम होता था कि मै किसी दर्वाजे को लाघ कर कमर में आ पहुचा हू, इसी से मे कहता हू कि तिलिस्म बनान वाले मसखरे भी थे क्योंकि उन्हीं की चालाकियों ने मुझे घुमा-फिरा कर पुन उसी कमरे में पहुचा दिया जिसे एक तरह की जबर्दस्ती कहना चाहिए।

मैं उस कमरे में खडा हुआ ताज्जुव से उसी शीशे की तरफ देख रहा था कि पहिले की तरह दो आदमियों के बातचीत की आवाज सुनाई दी। मै आपके साथ उस कमरे मे था तब तक जो वातें सुनने में आई थीं वे ही पुन सुनीं और जिन लोगों का उस आईने क अन्दर आते-जाते दखा था उन्ही को पुन देखा भी। नि सन्दह मुझे वडा ही ताज्जुव हुआ और मै बडे गौर से तरह-तरह की वातां को साच रहा था कि इतने ही में आपको आवाज सुनाई दी और आपकी आज्ञानुसार अजदहे के मुह में जाकर यहा तक आ पहुचा। आप यहा किस राह से आए है?

इन्द्र–मे भी उसी अजदहे क मुह में स होता हुआ आया हू ओर यहा आने पर मुझे जो-जो वातें मालूम हुई हैं उनसे शीशेवाल कमरे का कुछ भेद मालूम हो गया।

आनन्द–सो क्या?

इन्द्रजीत–मरे साथ आओ मे सब तमाशा तुम्हें दिखाता हू।

अपने छोटे भाइ को साथ लिये कुअर इन्द्रजीतसिह नीचे के खण्ड वाली सब चीजों को दिखाकर ऊपर वाले खण्ड में गये और वहा का विल्कुल हाल कहा। बाजा और मूरत इत्यादि भी दिखाया और बाजे क बोलने तथा मूरत के चलन-फिरने क विषय में भी अच्छी तरह समझाया जिससे इन्दजीतसिह की तरह आनन्दसिह का भी शक जाता रहा इसके बाद आनन्दसिह ने पूछा अब क्या करना चाहिय?

इन्दजीत–यहा स बाहर निकलने के लिये दर्वाजा खोलना चाहिये। मै यह निश्चय कर चुका हू कि इस खण्ड के ऊपर जाने के लिये कोई रास्ता नहीं है और न ऊपर जाने से कुछ काम ही चलेगा अतएव हमें पुन नीचे वाल खण्ड में चलकर दर्वाजा ढूँढना चाहिये या तुम ने अगर कोई और वात सोची हो तो कहो।

आनन्द–मैं तो यह सोचता हूँ कि हम आखिर तिलिस्म तोडने के लिये ही तो यहा आए है इसलिये जहा तक बन पडे यहा की चीजों को तोड-फोड और नष्ट-भ्रष्ट करना चाहिये इसी बीच में कहीं न कहीं कोई दर्वाजा दिखाई दे ही जायगा।

इन्द्रजीत–(मुस्कुराकर) यह भी एक बात है खैर तुम अपने ही खयाल के मुताबिक कार्रवाई करो हम तमाशा देखते है।

आनन्द–बहुत अच्छा तो आइये पहिले, उस दर्वाजे का खोलें जिसके अन्दर पुतलिया जाती हैं।

इतना कहकर आनन्दसिह उस दालान में गये जिसमें कमलिनी-लाडिली तथा और ऐयारों की मूरतें थीं। हम ऊपर लिख चुके है कि ये मूरतें लोहे की नालियों पर चल कर जव शीशे वाली दीवार के पास पहुचती थीं तो वहा का दर्वाजा आप से आप खुल जाता था। आनन्दसिह भी उसी दर्वाजे के पास गये और कुछ सोचकर उन्हीं नालियों पर पैर रक्खा जिन पर पुतलिया चलती थीं।

नालियों पर पैर रखने के साथ ही दर्वाजा खुल गया और दोनों भाई उस दर्वाजे के अन्दर चले गए। इन्हें वहा दो रास्ते दिखाई पडे, एक दर्वाजा तो बन्द था और जजीर में एक भारी ताला लगा हुआ था और दूसरा रास्ता शीश वाली दीवार की तरफ गया हुआ था जिसमें पुतलियों के आने-जाने के लिए नालिया भी बनी हुई थीं। पहिले दोनों कुमार पुतलियों के चलने का हाल मालूम करने की नीयत से उसी तरफ गए और वहा अच्छी तरह घूम-फिर कर देखने और जॉच करने पर जो कुछ उन्हें मालूम हुआ उसका तत्व हम नीचे लिखते है।

वहॉ शीशे की तीन दीवारें थीं और हर एक के बीच में आदमियों के चलने-फिरने लायक रास्ता छूटा हुआ था। पहिली शीशे की दीवार जो कमरे की तरफ थी सादी थी अर्थात् उस शीशे के पीछे पारे की कलई की हुई न थी हा उसके बाद वाली दूसरी शीश वाली दीवार में कलई की हुई थी और वहॉ जमीन पर पुतलियों के चलने के लिए नालिया भी कुछ इस ढग से बनी हुई थीं कि बाहर वालों को दिखाई न पडे और पुतलियॉ कलई वाले शीशे के साथ सटी हुई चल सकें। यही सबब था कि कमरे की तरफ से देखने वाले को शीशे के अन्दर आदमी चलता हुआ मालूम पडता था और उन नकली आदमियों की परछाई भी जो शीशें में पडती थी साथ सटे रहने के कारण देखने वाले को दिखाई नहीं पडती थी। मूरतें आगे जाकर घूमती हुई दीवार के पीछे चली जाती थीं जिसके बाद फिर शीशे की दीवार थी और उस पर नकली कलई की हुई थी। इस गली में भी नाली बनी हुई थी और उसी राह से मूरतें लौटकर अपने ठिकाने जा पहुचती थी।

इन सब चीजों को देखकर जब कुमार लौटे तो बन्द दर्वाजे के पास आये जिसमें एक बडा सा ताला लगा हुआ था। खजर से जजीर काट कर दोनों भाई उसके अन्दर गये, तीन-चार कदम जाने के बाद नीचे उतरन के लिये सीढियॉ मिलीं। इन्द्रजीतसिह अपने हाथ में तिलिस्मी खजर लिए हुए रोशनी कर रहे थे।

दोनों भाई सीढियॉ उतरकर नीचे चले गए और इसके बाद उन्हें एक बारीक सुरग में चलना पडा। थोडी देर बाद एक और दर्वाजा मिला, उसमें भी ताला लगा हुआ था। आनन्दसिह ने तिलिस्मी खजर से उसकी भी जजीर काट डाली और दर्वाजा खोल कर दोनों भाई उसके भीतर चले गये।

इस समय दोनों कुमारों ने अपने को एक बाग में पाया। वह बाग छोटे-छोटे जगली पेडों और लताओं से भरा हुआ था। यद्यपि यहॉ की क्यारियॉ निहायत खूबसूरत और सगमर्मर के पत्थर से बनी हुई थीं मगर उनमें सिवाय झाड झखाड के और कुछ न था। इसके अतिरिक्त और भी चारो तरफ एक प्रकार का जगल हो रहा था हॉ दो-चार पेड फल के वहॉ जरूर थे और एक छोटी सी नहर भी एक तरफ से आकर बाग में घूमती हुई दूसरी तरफ निकल गई थी। बाग के बीचोबीच में एक छोटा सा बगला बना हुआ था जिसकी जमीन दीवार और छत इत्यादि सब पत्थर की और मजबूत बनी हुई थी मगर फिर भी उसका कुछ भाग टूट-फूट कर खराब हो रहा था।

जिस समय दोनों कुमार इस बाग में पहुचे उस समय दिन बहुत कम बाकी था और ये दोनों भाई भी भूख-प्यास और थकावट से परेशान हो रहे थे अस्तु नहर के किनारे जाकर दोनों ने हाथ-मुह धोया और जरा आराम ले कर जरूरी कामों के लिये चले गये। उससे छुट्टी पाने के बाद दो-चार फल तोडकर खाये और नहर का जल पीकर इधर-उधर घूमने-फिरने लगे। उस समय उन दोनों को यह मालूम हुआ कि जिस दर्वाजे की राह से वे दोनों इस बाग में आये थे वह आप से आप ऐसा बन्द हो गया कि उसके खुलने की कोई उम्मीद नहीं।

दोनों भाई घूमते हुए बीचवाले बगले में आये। देखा कि तमाम जमीन कूडा-कर्कट से खराब हो रही है। एक पेड से बडे बडे पत्ते वाली छोटी डाली तोड जमीन साफ की और रात भर उसी जगह गुजारा किया।

सुबह को जरूरी कामों से छुट्टी पाकर दोनों भाइयों ने नहर में दुपट्टा (कमरबन्द) धोकर सूखने को डाला और जब वह सूख गया तो स्नान-पूजा से निश्चिन्त हो दो चार फल खाकर पानी पीया और पुन बाग में घूमने लगे।

इन्द्रजीत–जहॉ तक मैं सोचता हू यह वही बाग है जिसका हाल तिलिस्मी बाजे से मालूम हुआ था मगर उस पिण्डी का पता नहीं लगता।

आनन्द–नि सन्देह यह वही बाग है। यह बीचवाला बगला हमारा शक दूर करता है और इसीलिये जल्दी करके इस बाग के बाहर हो जाने की फिक्र न करनी चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि 'मनुवाटिका' यही जगह हो और हम धोखे में आकर इसके बाहर हो जाय। बाजे ने भी यही कहा था कि यदि अपना काम किये बिना 'मनुवाटिका' के बाहर हो जाओगे तो तुम्हारे किये कुछ भी न होगा न तो पुन 'मनुवाटिका' में जा सकोगे और न अपनी जान बचा सकोगे।

इन्द्र–रिक्तग्रन्थ में तो यही बात लिखी है इसीलिये मैं भी यहॉ से बाहर निकल चलने के लिये नहीं कह सकता मगर अब जिस तरह हो उस पिण्डी का पता लगाना चाहिये।

पाठक, तिलिस्मी किताब (रिक्तग्रन्थ) और तिलिस्मी बाजे से दानों कुमारों को यह मालूम हुआ था कि मनुवाटिका में किसी जगह, जमीन पर एक छोटी सी पिण्डी बनी हुई मिलेगी। उसका पता लगाकर उसी को अपने मतलब का दर्वाजा समझना। यही सबब था कि दोनों कुमार उस पिण्डी का खोज निकालने की फिक्र में लगे हुए थे मगर उस पिण्डी का पता नहीं लगता था। लाचार उन्हें कई दिनों तक उस बाग में रहना पडा, आखिर एक घनी झाडी क अदर उस पिण्डी का पता लगा। वह करीब हाथ भर के ऊंची और तीन हाथ क घर में होगी और यह किसी तरह भी मालूम नहीं हो रहा था कि वह पत्थर की है या लोहे-पीतल इत्यादि किसी धातु की बनी हुई है। जिस चीज से वह पिण्डी बनी हुई थी उसी चीज से बना हुआ सूर्यमुखी का एक फूल उसके ऊपर जडा हुआ था और यही उस पिण्डी की पूरी पहिचान थी। आनन्दसिह ने खुश होकर इन्द्रजीतसिंह से कहा—

आनन्द–बारे किसी तरह ईश्वर की कृपा से इस पिण्डी का पता तो लगा। मैं समझता हू इसमें आपको किसी तरह का शक न हागा ?

इन्द्र–मुझ किसी तरह का शक नहीं है यह पिण्डी नि सन्देह वही है जिसे हम लोग खोज रह थे। जब इस जमीन को अच्छी तरह साफकर के अपने सच्चे सहायक रिक्तग्रन्थ से हाथ धा बैठने क लिये तैयार हो जाना चाहिये।

आनन्द–जी हॉ ऐसा ही होना चाहिये यदि रिक्तग्रन्थ में कुछ सदेह हो ता उसे पुन देख जाइये।

इन्द्र–यद्यपि इस ग्रन्थ में मुझे किसी तरह का सन्देह नहीं है और जो कुछ उसमें लिखा है मुझे अच्छी तरह याद है मगर शक मिटाने के लिये एक दफे उलट-पलट कर जरूर दख लूँगा।

आनन्द–मेरा भी यही इरादा है। यह काम घण्टे दो घण्ट के अन्दर हो भी जायगा। अस्तु आप पहिले रिक्तग्रन्थ दख जाइय तब तक मैं इस झाड़ी को साफ किये डालता हू।

इतना कह कर आनन्दसिह ने तिलिस्मी खञ्जर से काट के पिण्डी के चारों तरफ के झाड-झखाड को साफ करना शुरू किया और इन्द्रजीतसिंह नहर क किनार बैठकर तिलिस्मी किताब को उलट-पुलट कर दखने लग। थोडी दर बाद इन्द्रजीतसिह आनन्दसिह क पास आये और बोल– ला अब तुम भी इस दखकर अपना शक मिटा लो और तब तक तुम्हारे काम को मैं पूरा कर डालता हूँ !

आनन्दसिह ने अपना काम छाड दिया और अपने भाई के हाथ से रिक्तग्रन्थ लेकर नहर क किनारे चले गये तथा इन्द्रजीतसिंह न तिलिस्मी खजर से पिण्डी के चारो तरफ की सफाई करनी शुरू कर दी। थोडी ही दर में जो कुछ घास फूस झाड-झखाड़ पिण्डी क चारो तरफ था साफ हा गया और आनन्दसिह भी तिलिस्मी किताब देखकर अपने भाई के पास चल आये और बोले, अब क्या आज्ञा है ?

इसके जवाब में इन्द्रजीतसिह न कहा बस अब नहर के किनारे चला और रिक्तग्रन्थ का आटा गूधा।

दोनों भाई नहर के किनारे आये और एक ठिकान साएदार जगह दखकर बैठ गय। उन्होंने नहर के किनारेवाल एक पत्थर की चट्टान का जल से अच्छी तरह धाकर साफ किया और इसके बाद रिक्तग्रन्थ पानी में डुबो कर उस पत्थर पर रख दिया। देखते ही देखते जो कुछ पानी रिक्तग्रन्थ में लगा था सब उसी में पच गया। फिर हाथ से उस पर डाला वह भी पच गया। इसी तरह बार-बार चुल्लू भर भर कर उस पर पानी डालने लगे और ग्रन्थ पानी पी पी कर मोटा होने लगा। थोड़ी देर के बाद वह मुलायम हो गया और तब आनन्दसिह ने उसे हाथ से मल के आटे की तरह गूथना शुरू किया। शाम हान तक उसकी सूरत ठीक गूथे हुए आटे की तरह हा गई मगर रग इसका काला था। आनन्दसिह ने इस आटे को उठा लिया और अपने भाई के साथ उस पिण्डी के पास आकर उसकी आज्ञानुसार तमाम पिण्डी पर उसका लेप कर दिया। इसी के बाद दोनों भाई यहा से किनारे हो गये और जरूरी कामों में छुट्टी पाने के काम में लगे।

नौवां बयान

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है और दोनों कुमार बाग क बीच वाले उसी दालान में सोये हुए है। यकायक किसी तरह की भयानक आवाज सुनकर दोनों भाइयों की नींद टूट गई और वे दोनों उठकर जगले के नीचे चले आयें चारों तरफ देखने पर जब इनकी निगाह उस तरफ गई जिधर वह पिण्डी थी तो कुछ रोशनी मालूम पडी, दोनों भाई उसके पास गये ता देखा कि उस पिण्डी में से हाथ भर ऊँची लाट निकल रही है। यह लाट (आग की ज्योति) नीले और कुछ पीले रग की मिली-जुली थी। साथ ही इसके यह भी मालूम हुआ कि लाह या राल की तरह वह पिण्डी गलती हुई जमीन क अन्दर धसती चली जा रही है। उस पिण्डी में से जो धूआ निकल रहा था उसमें धूप या लोबान की भी खूशबू आ रही थी।

थोडी देर तक दोनों कुमार वहा खडे रह कर यह तमाशा देखते रहे, इसके बाद इन्द्रजीतसिह यह कहते हुए बगले की तरफ लौटे ऐसा तो होना ही था मगर उस भयानक आवाज का पता न लगा शायद इसी में स वह आवाज भी निकली हो। इसके जवाब में आनन्दसिंह ने कहा, शायद ऐसा ही हो।

दोनों कुमार अपने ठिकाने चले आए और बची हुई रात बातचीत में काटी क्योंकि खुटका हो जाने के कारण फिर उन्हें नींद न आई। सवेरा होने पर जब वे दोनों पुन उस पिण्डी के पास गए तो देखा कि आग बुझी हुई है और पिण्डी की जगह बहुत सी पीले रग की राख मौजूद है। यह देख दोनों भाई वहा से लौट आए और अपने नित्यकर्म से छुट्टी पा पुन वहा जाकर उस पीले रग की राख को निकाल वह जगह साफ करने लगे। मालूम हुआ कि वह पिण्डी जो जल कर राख हो गई है लगभग तीन हाथ के जमीन के अन्दर थी और इसीलिए राख साफ हो जाने पर तीन हाथ का गडहा इतना लम्बा-चौडा निकल आया कि जिसमें दो आदमी बखूबी जा सकते थे। गडहे के पेंदे में लोहे का एक तख्ता था जिसमें कडी लगी हुई थी। इन्द्रजीतसिह ने कडी में हाथ डाल कर वह लोहे का तख्ता उठा लिया और आनन्दसिह को देकर कहा 'इसे किनारे रख दो।

लोहे का तख्ता हटा देने के बाद ताले के मुह की तरह एक सूराख नजर आया जिसमें इन्द्रजीतसिह ने वही तिलिस्मी ताली डाली जो पुतली के हाथ में से ली थी। कुछ तो वह ताली ही विचित्र बनी हुई थी और कुछ ताला खोलते समय इन्द्जीतसिह को बुद्धिमानी से भी काम लेना पडा। ताला खुल जाने बाद जब दर्वाजे की तरह का एक पल्ला हटाया गया तो नीचे उतरने के लिए सीढिया नज़र आईं। तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी के सहारे दोनों भाई नीचे उतरे और भीतर से दर्वाजा बन्द कर लिया क्योंकि ताल का छेद दोनों तरफ था और वही ताली दोनों तरफ काम देती थी।

पन्द्रह या सोलह सीढिया उतर जाने के बाद दोनों कुमारों को थोडी दूर तक एक सुरग में चलना पडा। इसके बाद ऊपर चढने के लिए पुन सीढिया मिलीं और तब उसी ताली से खुलने लायक एक दर्वाजा। सीढिया चढने और दर्वाजा खोलने के बाद कुमारों को कुछ मिट्टी हटानी पडी और इसके बाद वे दोनों जमीन के बाहर निकले।

इस समय दोनों कुमारों ने अपने को एक और ही बाग में पाया जो लम्बाई-चौडाई में उस बाग से कुछ छोटा था जिसमें से कुमार आये थे। पहिले बाग की तरह यह बाग भी एक प्रकार से जगल हो रहा था। इन्दिरा की मा अर्थात् इन्द्रदेव की स्त्री इसी बाग में मुसीबत की घडिया काट रही थी और इस समय भी इसी बाग में मौजूद थी इसलिए बनिस्बत पहिले बाग के इस बाग का नक्शा कुछ खुलासे तौर पर लिखना आवश्यक है।

इस बाग में किसी तरह की इमारत न थी, न तो कोई कमरा था और न कोई बगला या दालान था, इसलिए बेचारी सर्यू को जाडे के मौसिम की कलेजा दहलाने वाली सर्दी, गर्मी की कडकडाती हुई धूप और बरसात का मूसलाधार पानी अपने कोमल शरीर के ऊपर बर्दाश्त करना पडता था। हा कहने के लिए ऊँचे बड और पीपल के पेडों का कुछ सहारा हो तो हो मगर बडे प्यार से पाली जाकर दिन-रात सुख ही से बिताने वाली एक पतिव्रता के लिए जगलों और भयानक पेडों का सहारा सहारा नहीं कहा जा सकता बल्कि वह भी उसके लिए डराने और सताने का सामान माना जा सकता है हा वहा थोडे से पेड ऐसे भी जरूर थे जिनके फलों को खाकर पति-मिलाप की आशालता में उलझी हुई अपनी जान को बचा सकती थी और प्यास दूर करने के लिए उस नहर का पानी भी मौजूद था जो मनुवाटिका में से होती हुई इस बाग में भी आकर बेचारी सर्यू की जिन्दगी का सहारा हो रही थी। पर तिलिस्म बनाने वालों ने उस नहर को इस योग्य नहीं बनाया था कि कोई उसके मुहाने को दम भर के लिए सुरग मान कर एक बाग सेदूसरे बाग में जा सके। इस बाग की चहारदीवारी में भी विचित्र कारीगरी की गई थी। दीवार कोई छू भी नहीं सकता था कई प्रकार की धातुओं से इस बाग की सात हाथ ऊँची दीवार बनाई गई थी। जिस तरह रस्सियों के सहारे कनात खडी की जाती है शक्ल-सूरत में वह दीवार वैसी ही मालूम पडती थी अर्थात् एक-एक दो-दो कहीं-कहीं तीन-तीन हाथ की दूरी पर दीवार में लोहे की जजीरें लगी हुई थीं जिसका एक सिरा तो दीवार के अन्दर घुस गया था और दूसरा सिरा जमीन के अन्दर। चारो तरफ की दीवार में से किसी भी जगह हाथ लगाने से आदमी के बदन में बिजली का असर हो जाता था और वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पडता था। यही सबब था कि बेचारी सर्यू उस दीवार के पार हो जाने के लिए कोई उद्योग न कर सकी बल्कि इस चेष्टा में उसे कई दफे तकलीफ भी उठानी पडी।

इस बाग के उत्तर की दीवार के साथ सटा हुआ एक छोटा सा मकान था। इस बाग में खडे होकर देखने वालों को तो यह मकान ही मालूम पडता था मगर हम यह नहीं कह सकते कि दूसरी तरफ से उसकी क्या सूरत थी। इसकी सात खिडकिया इस बाग की तरफ थीं जिनसे मालूम होता था कि यह इस मकान का एक खुलासा कमरा है। इस बाग में आने पर सबके पहिले जिस चीज पर कुअर इन्द्रजीतसिंह की निगाह पडी, वह यही कमरा था और उसकी तीन

खिडकियो में से इन्दिरा इन्द्रदेव और राजा गोपालसिंह इस बाग की तरफ झांक रहे थे और इसके बाद जिस पर उनकी निगाह पडी वह जमाने के हाथों से सताई हुई बेचारी रानी थी मगर उसे दोनों कुमार पहिचानते न थे।

जिस तरह कुअर इन्द्रजीतसिंह और उनके बयान से आनन्दसिंह ने राजा गोपालसिंह, इन्द्रदेव और इन्दिरा को देखा, उसी तरह उन तीनों ने भी दोनों कुमारों को देखा और दूर ही से साहब सलामत की।

इन्दिरा ने हाथ जोडकर और अपने पिता की तरफ बताकर कुमारों से कहा! "आप ही के चरणों की बदौलत मुझे अपने पिता के दर्शन हुए ?

दसवां बयान

अब हम अपने पाठकों को फिर उसी सफर में ले चलते है जिसमें चुनार जाने वाले राजा वीरेन्द्रसिंह का लश्कर पडा हुआ है। पाठको को याद होगा कि कम्बख्त मनोरमा ने तिलिस्मी खंजर से किशोरी कामिनी और कमला का सिर काट डाला और खुशी भरी आवाज में कुछ कह रही थी कि पीछे की तरफ से आवाज आई "नहीं नहीं, ऐसा न हुआ है न होगा !"

आवाज देने वाला भैरोसिंह था जिसे मनोरमा के खोज निकालने का काम सुपुर्द किया गया था। वह मनोरमा की खोज में चक्कर लगाता और टोह लेता हुआ उसी जगह जा पहुंचा था मगर उसे इस बात का बड़ा ही अफसोस था कि उन तीनों का सर कट जाने के बाद वह खेमे के अन्दर पहुंचा।

हमारे ऐयार की आवाज सुनकर मनोरमा चौंकी और उसने घूम कर पीछे की तरफ देखा तो हाथ में खञ्जर लिए हुए भैरोसिंह पर निगाह पडी। यद्यपि भैरोसिंह पर नजर पडते ही वह जिन्दगी से नाउम्मीद हो गई मगर फिर भी उसने तिलिस्मी खंजर का वार भैरोसिंह पर किया। भैरोसिंह पहिले ही से होशियार था और उसके पास भी तिलिस्मी खंजर मौजूद था अस्तु, उसने अपने खंजर पर इस ढंग से मनोरमा के खंजर का वार रोका कि मनोरमा की कलाई भैरोसिंह के खंजर पर पडी और वह कटकर तिलिस्मी खंजर सहित दूर जा गिरी। भैरोसिंह ने इतने ही पर सब्र न करके उसी खंजर से मनोरमा की एक टांग काट डाली और इसके बाद जोर से चिल्लाकर पहरे वालों को आवाज दी।

पहरे वाले तो पहिले ही से बेहोश पडे हुए थे मगर भैरोसिंह की आवाज ने लौंडियों को होशियार कर दिया और बात की बात में बहुत सी लौंडिया उस खेमे के अन्दर आ पहुंची जो वहां की अवस्था देखकर जोर-जोर से रोने और चिल्लाने लगीं।

थोडी देर में उस खेमे के अन्दर और बाहर भीड लग गई। जिधर देखिए उधर मशाल जल रही है और आदमी पर आदमी टूटा पडता है। राजा वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह भी उस खेमे में गये और वहां की अवस्था देखकर अफसोस करने लगे। तेजसिंह ने हुक्म दिया कि तीनों लाशे उसी जगह ज्यों का त्यों रहने दी जाय और मनोरमा (जो कि चेहरा धुल जाने के कारण पहिचानी जा चुकी थी) वहां से उठवा कर दूसरे खेमे में पहुंचाई जाय उसके जख्म पर पट्टी लगाई जाय और उस पर सख्त पहरा रहे। इसके बाद भैरोसिंह और तेजसिंह को साथ लिए हुए राजा वीरेन्द्रसिंह अपने खेमे में आये और बातचीत करने लगे। उस समय खेमे के अन्दर सिवाय इन तीनों के और कोई भी न था। भैरोसिंह ने अपना हाल बयान किया और कहा "मुझे इस बात का बडा दुःख है कि किशोरी, कामिनी और कमला का सर कट जाने के बाद मैं उस खेमे के अन्दर पहुंचा !"

तेज--अफसोस की कोई बात नहीं है, ईश्वर की कृपा से हम लोगों को यह बात पहिले ही मालूम हो गई थी कि मनोरमा हमारे लश्कर के साथ है।

भैरो--अगर यह बात मालूम हो गई थी तो आपने इसका इन्तजाम क्यों नहीं किया और इन तीनों की तरफ से बेफिक्र क्यों रहे।

तेज--हम लोग बेफिक्र नहीं रहे बल्कि जो कुछ इन्तजाम करना वाजिब था किया गया। तुम यह सुन कर ताज्जुब करोगे कि किशोरी, कामिनी और कमला मरी नहीं बल्कि ईश्वर की कृपा से जीती हैं और लौंडी की सूरत में हर दम पास

रहन पर भी मनोरमा ने धोखा खाया।

भैरो–मनोरमा ने धोखा खाया और वे तीनों जीती है ?

तेज–हा ऐसा ही है। इसका खुलासा हाल हम तुमसे कहते है मगर पहिले यह बताओ कि तुमने मनोरमा को कैसे पहिचाना ? हम तो कई दिनों से पहिचानने की फिक्र में लगे हुए थे मगर पहिचान न सके क्योंकि मनोरमा के कब्जे में तिलिस्मी खजर का होना हमें मालूम था और हम हर लौडी की उगलियों पर तिलिस्मी खजर के जोड की अगूठी देखने की नीयत से निगाह रखते थे।

भैरो–मै उसका पता लगाता हुआ इसी लश्कर में आ पहुचा था। उस समय टोह लेता हुआ जब मै किशोरी के खेमे के पास पहुचा तो पहरे के सिपाही को बेहोश और खेमे का पर्दा हटा हुआ देख मुझे किसी दुश्मन के अन्दर जाने का गुमान हुआ और मै भी उसी राह से खेमे के अन्दर चला गया। जब वहा की अवस्था देखी और उसके मुंह से निकली हुई बातें सुनी तब शक हुआ कि यह मनोरमा है मगर निश्चय तब ही हुआ जब उसका चेहरा साफ किया गया और आपने भी पहिचाना। अब आप कृपा कर यह बताइए कि किशोरी कामिनी और कमला क्योंकर जीती बची और जो तीनों मारी गईं वे कौन थीं।

तेजसिंह–हमें इस बात का पता लग चुका था कि भेष बदले हुए मनोरमा हमारे लश्कर के साथ है मगर जैसा कि तुमसे कह चुके है, उद्योग करने पर भी हम उसे पहिचान न सके। एक दिन हम और राजा साहब सन्ध्या के समय टहलते हुए खेमे से दूर चल गये और एक छोटे टीले पर चढकर अस्त होते सूर्य की शोभा देखने लगे। उस समय कृष्णाजिन्न का भेजा हुआ एक सवार हमारे पास आया और उसने एक चीठी राजा साहब के हाथ में दी, राजा साहब ने चीठी पढकर मुझे दिया। उसमें लिखा हुआ था— मुझे इस बात का पूरा-पूरा पता लग चुका है कि कई सहायकों को साथ लिए और भेष बदले हुए मनोरमा आपके लश्कर में मौजूद है और उसके अतिरिक्त और भी कई दुष्ट किशोरी और कामिनी के साथ दुश्मनी किया चाहते हैं। इसलिए मेरी राय है कि बचाव तथा दुश्मनों को धोखा देने केलिए किशोरी, कामिनी और कमला को कुछ दिन तक छिपा देना चाहिये और उनकी जगह सूरत बदल कर दूसरी लौडियों को रख देना चाहिए। इस काम के लिए मेरा एक तिलिस्मी मकान जो आपके रास्ते में ही कुछ दूर हटकर पडेगा मुनासिब है, और मैंने इस काम के लिए वहा पूरा इन्तजाम भी कर दिया है। लौडिया भी सूरत बदलने और खिदमत करने के लिए भेज दी है क्योंकि आपकी लौडियों की सूरत बदलना ठीक न होगा और लश्कर में लौंडियों की कमी से लोगों को शक हो जायगा। अस्तु आप बहुत जल्द इन्तजाम करके उन तीनों को वहा पहुचाइए मै भी इन्तजाम करने के लिये पहिले ही से उस मकान में जाता हू— इत्यादि इसके बाद उस मकान का पूरा-पूरा पता लिख कर अपना दस्तखत एक निशान के साथ कर दिया था जिसमें हम लोगों को चीठी लिखने वाले पर किसी तरह का शक न हो और उस मकान के अन्दर जाने की तर्कीब भी लिख दी थी।

कृष्णाजिन्न की राय को राजा साहब ने स्वीकार किया और पत्र का उत्तर देकर वह सवार बिदा कर दिया गया। रात के समय किशोरी, कामिनी और कमला को ये बातें समझा दी गई और उन्होंने उसी दुष्ट मनोरमा की जुबानी दोपहर के बाद यह कहला भेजा कि हमने सुना है कि यहा से थोडी ही दूर पर कोई तिलिस्मी मकान है यदि आप चाहें तो हम लोग उस मकान की सैर कर सकती है इत्यादि। मतलब यह कि इसी बहाने से मैं खुद उन तीनों को रथ पर सवार करा के उस मकान में ले गया और कृष्णाजिन्न को वहा मौजूद पाया। उसने अपने हाथ से अपनी तीन लौडियों को किशोरी, कामिनी और कमला बना हमारे रथ पर सवार कराया और हम उन्हें लेकर इस लश्कर में लौट आये। तुम जानते ही हो कि कृष्णाजिन्न कितना बडा बुद्धिमान और होशियार तथा हम लोगों का दोस्त आदमी है।

भैरो–बेशक, उनकी हिफाजत में किशोरी, कामिनी और कमला को किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती और यह आपने बडी खुशी की बात सुनाई मगर मै समझता हू कि इन भेदों को अभी आप गुप्त रक्खेंगे और यह बात जाहिर न होने देंगे कि वे तीनों जो मारी गई है वास्तव में किशोरी कामिनी और कमला न थी।

तेज –नहीं, नहीं, अभी इस भेद का खुलना उचित नहीं है। सभों को यही मालूम रहना चाहिए कि वास्तव में किशोरी कामिनी और कमला मारी गई। अच्छा अब दो-चार बातें तुम्हें और कहनी है वह भी सुन लो।

तेज–कृष्णाजिन्न तो कामकाजी आदमी ठहरा और वह ऐसे-ऐसे बखेडों में फसा है कि उसे दम मारने की फुर्सत नहीं।

भैरो–नि सन्देह ऐसा ही है। इतना काम जो वह करते हैं सो भी उन्हीं की बुद्धिमानी का नतीजा है, दूसरा नहीं कर सकता।

तेज–अस्तु कृष्णाजिन्न तो ज्यादे दिनों तक उस मकान में रह नहीं सकता, जिसमें किशोरी, कामिनी और कमला है। वह अपने ठिकाने चला गया होगा। मगर उन तीनों की हिफाजत का पूरा पूरा बन्दोवस्त कर गया होगा। अव तुम भी इसी समय उस मकान की तरफ चले जाओ और जव तक हमारा दूसरा हुक्म न पहुचे या कोई आवश्यक काम न आ पडे तब तक उन तीनों के साथ रहो हम उस मकान का पता तथा उसके अन्दर जाने की तर्कीव तुम्हें बता देते है।

भैरो–जो आज्ञा, मै अभी जाने के लिए तैयार हू।

तेजसिह ने उस मकान का पूरा पूरा हाल भैरोसिह को बता दिया और भैरोसिह उसी समय अपने बाप का चरण छूकर बिदा हुए।

भैरोसिह के जाने के बाद सवेरा होने पर एक ब्राह्मण द्वारा नकली किशोरी कामिनी और कमला के मृत देह की दाह-क्रिया कर दी गई। इसके पहिले ही लश्कर में जितने पढे लिखे ब्राह्मण थे सभी को बटोर कर तेजसिह ने यह व्यवस्था करा ली थी कि इन तीनों का काई नातदार यहा मौजूद नहीं है, इस लिए किसी ब्राह्मण द्वारा इनकी क्रिया करा देनी चाहिए। इस काम से छुट्टी पाने के बाद लश्कर कूच कर दिया गया और सब कोई धीरे-धीरे चुनारगढ की तरफ रवाना हुए।

ग्यारहवां बयान

दोनों कुमार यद्यपि सर्यू को पहिचानते न थे मगर इन्दिरा की जुबानी उसका हाल सुन चुके थे, इसलिए उन्हें शक हो गया कि यह सर्यू है। दूसरे राजा गोपालसिह ने भी पुकार कर दोनों कुमारों से कहा कि इन्दिरा की मा सर्यू यही है और इन्द्रदेव ने कुमारों की तरफ बता कर सर्यू से कहा कि 'राजा बीरेन्द्रसिह के दोनों लडके यही कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिह है जो तिलिस्म तोडने के लिए यहा आए है इन्हीं की बदौलत तुम आफत से छूटोगी'।

दोनों कुमारों को देखत ही सर्यू दौड कर पास चली आई और कुअर इन्द्रजीतसिह के पैरों पर गिर पडी। सर्यू उम्र में कुअर इन्द्रजीतसिह से बहुत बडी थी मगर इज्जत और मर्तबे के खयाल से दोनों को अपना-अपना हक अदा करना पडा। कुमार ने उसे पैर से उठाया और दिलासा देकर कहा, सर्यू, इन्दिरा की जुबानी मै तुम्हारा हाल पूरा पूरा तो नहीं मगर बहुत कुछ सुन चुका हू और हम लोगों को तुम्हारी अवस्था पर बहुत ही रज है। परन्तु अब तुम्हें चाहिए कि अपने दिल से दु ख को दूर कर के ईश्वर को धन्यवाद दो क्योंकि तुम्हारी मुसीबत का जमाना अब बीत गया और ईश्वर तुम्हें इस कैद से बहुत जल्द छुडाने वाला है। जब तक हम इस तिलिस्म में है तुम्हे बराबर अपने साथ रक्खेंगे और जिस दिन हम दोनों भाई तिलिस्म के बाहर निकलेंगे उस दिन तुम भी इस दुनिया की हवा खाती हुई मालूम करोगी कि तुम्हे सताने वालों में से अब कोई भी स्वतन्त्र नहीं रह गया और न अब तुम्हें किसी तरह का दु ख भोगना पड़ेगा। तुम्हें ईश्वर को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहिए कि दुष्टों के इतना ऊधम मचाने पर भी तुम अपने पति और अपनी प्यारी लडकी को सिवाय अपनी जुदाई के और किसी तरह के रज और दु ख से खाली पाती हो। ईश्वर तुम लोगों का कल्याण करें।

इसके बाद कुमार ने कमरे की तरफ सर उठा कर देखा। राजा गोपालसिह ने इन्द्रदेव की तरफ इशारा कर के कहा, 'इन्दिरा के पिता इन्द्रदेव को हमने बुलवा भेजा है। शायद आज के पहिले आपने इन्हें न देखा होगा।'

उस समय पुन इन्द्रदेव ने झुक कर कुमार को सलाम किया और कुअर इन्दजीतसिंह ने सलाम का जवाब देकर कहा 'आपका आना बहुत अच्छा हुआ। आप इन दोनों को अपनी आखों से देख कर प्रसन्न हुए होंगे। कहिए रोहतासगढ का क्या हाल है ?'

इन्द्रदेव–सब कुशल है। मायारानी और दारोगा तथा और कैदियों को साथ लेकर राजा बीरेन्द्रसिह चुनारगढ़ की तरफ रवाना हो गये, किशोरी, कामिनी और कमला को अपने साथ लेते गए। लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली तथा नकली बलभद्रसिह को उनसे माग कर मै अपने घर ले गया और उन्हें उसी जगह छोड कर राजा गोपालसिह की आज्ञानुसार यहा चला आया हू। यह हाल सक्षेप में मैंने इस लिए बयान किया कि राजा गोपालसिह की जुबानी वहा का कुछ हाल आपको मालूम हो गया है यह मै सुन चुका हू।

इन्द्रजीत–लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडिली को आप यहा क्यों न ले आए ?

इसका जवाब इन्द्रदेव ने तो कुछ भी न दिया मगर राजा गोपालसिह ने कहा "ये असली बलभद्रसिह का पता लगाने के लिए अपने मकान से रवाना हो चुके थे, जब रास्ते में मेरा पत्र इन्हें मिला। परसों एक पत्र मुझे कृष्णाजिन्न का भेजा

हुआ मिला था। उसके पढने से मालूम हुआ कि मनोरमा भेष बदल कर राजा साहब के लश्कर में जा मिली थी जिसका पता लगाना बहुत ही कठिन था और वह किशोरी, कामिनी को मार डालनेकी सामर्थ्य रखती थी क्योंकि उसके पास तिलिस्मी खजर भी था। इसलिए कृष्णाजिन्न ने राजा साहब को लिख भेजा था कि बहाना करके गुप्त रीति से किशोरी कामिनी और कमला को हमारे फलाने तिलिस्मी मकान में (जिसका पता, ठिकाना और हाल भी लिख भेजा था) शीघ्र भेज दीजिए मैं वहा मौजूद रहूगा और उनके बदले में अपनी लौंडियों को किशोरी, कामिनी और कमला बनाकर भेज दूँगा जो आपके लश्कर में रहेंगी ? ऐसा करने से यदि मनोरमा का वार चल भी गया तो हमारा बहुत नुकसान न होगा। राजा साहब ने भी यह बात पसन्द कर ली और कृष्णाजिन्न के कहे मुताबिक कामिनी और कमला का खुद तेजसिह रथ पर सवार करा के कृष्णाजिन्न के तिलिस्मी मकान में छोड आए तथा उनकी जगह भेष बदली हुई लौंडियों को अपने लश्कर में ले गये। आज रात को कृष्णाजिन्न का दूसरा पत्र मुझे मिला जिरासे मालूम हुआ कि राजासाहब के लश्कर में नकली किशोरी कामिनी और कमला, मनोरमा के हाथ से मारी गई और मनोरमा गिरफ्तार हो गई। आज के पत्र में कृष्णाजिन्न ने यह भी लिखा है कि तुम इन्द्रदेव को एक पत्र लिख दो कि वह लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडिली को भी बहुत जल्द उसी तिलिस्मी मकान में पहुचा दें जिसमें किशारी, कामिनी और कमला हैं, मैं (कृष्णाजिन्न) स्वय वहा मौजूद रहूगा और दो-तीन दिन के बाद दुश्मनो का रग ढग देखकर किशोरी कामिनी कमला, लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडिली को जमानिया पहुचा दूगा। इसक बाद जब राजा बीरेन्द्रसिह की आज्ञा होगी या जब उचित होगा तो सभों को चुनार पहुचाया जायेगा और उन लोगों के सामने वहा भूतनाथ का मुकद्दमा हागा। कृष्णाजिन्न का यह लिखना मुझ बहुत पसन्द आया वह बडा ही बुद्धिमान और नेक आदमी है जा काम करता है उसमें कुछ न कुछ फायदा समझ लेता है अस्तु मैं चाहता हू कि (इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके) इन्हें आज ही यहा से बिदा कर दू जिसमें ये उन तीनो औरतों का ले जाकर कृष्णाजिन्न के तिलिस्मी मकान में पहुचा दें। वहा दुश्मनों का डर कुछ भी नहीं है और किशोरी तथा कामिनी को भी इन लोगों से मिलने की बडी चाह है जैसा कि कृष्णाजिन्न के पत्र से मालूम होता है।

ये बातें जो राजा गोपालसिह ने कहीं दोनों कुमारों को खुश करने के लिए वैसी ही थीं जैस चातक के लिए स्वाती की बूँद। दाना कुमारों को किशोरी और कामिनी क मिलने की आशा ने हद से ज्यादा प्रसन्न कर दिया। इन्द्रजीतसिह ने मुस्कुरा कर गोपालसिह से कहा 'कृष्णाजिन्न की बात मानना आपके लिए उतना ही आवश्यक है जितना हम दोनों भाइयों के लिए तिलिस्म तोड कर चुनारगढ पहुचना। आप बहुत जल्द इन्द्रदेव को यहा से रवाना कीजिए।,

गोपाल–एसा ही हागा।

आनन्द–कृष्णाजिन्न का वह तिलिस्मी मकान कहा पर है और यहा स कै दिन की राह

गोपाल–यहा से कुल पन्द्रह सोलह कास पर है।

इन्द–वाह वाह तब तो बहुत ही नजदीक है (इन्द्रदेव से) मेरी तरफ से कृष्णाजिन्न को प्रणाम करके बहुत धन्यवाद दीजियेगा क्योंकि उन्होंने बडी चालाकी स किशोरी, कामिनी और कमला का बचा लिया।

इन्द्रदेव–बहुत अच्छा।

इन्द–आप तो असली बलभद्रसिह का पता लगाने के लिए घर से निकले थे उनका

इन्द–(राजा गोपालसिह की तरफ इशारा करके) आप कहते हैं कि नकली बलभद्रसिह ने तुम्हें धोखा दिया तुम अब उनकी खोज मत करो क्योंकि भूतनाथ न असली बलभद्रसिह का पता लगा लिया और उन्हें छुडाकर चुनारगढ ले गया।

इन्द–(गोपालसिह से) क्या यह बात सच है ?

गोपाल–हा कृष्णाजिन्न ने मुझे यह भी लिखा था।

इन्द–(मुस्कुराकर) तब तो इस खबर में किसी तरह का शक नहीं हो सकता।

इसके बाद दुनिया के पुरान नियमानुसार और बहुत दिनों से बिछुडे हुए प्रेमियों के मिलने पर जैसा हुआ करता है उसी के मुताबिक इन्द्रदेव और सर्यू में कुछ बातें हुई, इन्दिरा ने भी मा से कुछ बातें की, और तब इन्दिरा और इन्द्रदेव को साथ लेकर राजा गोपालसिह कमरे के बाहर हो गए।

बारहवां बयान

किशोरी, कामिनी और कमला जिस मकान में रक्खी गई थीं वह नाम ही को तिलिस्मी मकान था। वास्तव में न तो उस मकान में कोई तिलिस्म था और न किसी तिलिस्म से उसका सम्बन्ध ही था। तथापि वह मकान और स्थान बहुत

सुन्दर और दिलचस्प था। ऊची-ऊची चार पहाडियों के बीच में बीस-बाईस बिगहे के लगभग जमीन थी जिसमें तरह तरह के कुदरती गुलबूटे लगे हुए थे जो केवल जमीन ही की तरावट से सरसब्ज बने रहते थे। पूरब की तरफ वाली पहाडी के ऊपर स साफ और मीठे जल का झरना गिरता था जो उस जमीन म चक्कर देता हुआ पश्चिम की पहाड़ी के नीचे जाकर लोप हो जाता था और इस सबब से वहा की जमीन हमेशा तर बनी रहती थी।

बीच (एक छोटा सा दो मजिल का मकान बना हुआ था और उत्तर तरफ वाली पहाडी पर सौ सवा सौ हाथ ऊच जाकर एक छोटा सा बग्गला और भी था। शायद बनाने वाले ने इसे जाडे के मौसिम के लिए आवश्यक समझा हो क्योंकि नीचे वाले मकान में तरी ज्यादा रहती थी। किशोरी, कामिनी और कमला इसी बगले में रहती थीं और उनकी हिफाजत के लिए जो दो चार सिपाही और लौंडिया थीं उन सभों का डेरा नीचे वाले मकान में था, खाने-पीने का सामान तथा बन्दाबस्त भी उसी मे था।

उन तीनों की हिफाजत के लिए जो सिपाही और लौंडिया वहा थीं उन सभों की सूरत भी ऐयारी ढग स बदली हुई थी और यह बात किशोरी-कामिनी तथा कमला स कह दी गई थी जिसमें इन तीनों को किसी तरह का खुटका न रहे।

ये तीनों जानती थी कि ये सिपाही और लौंडिया हमारी नहीं है फिर भी समय की अवस्था पर ध्यान देकर इन्हें इन सभों पर भरोसा करना पडता था। इस मकान में आने के कारण इन तीनों की तबीयत बहुत ही उदास थी। रोहतासगढ स रवाना होते समय इन तीनों को निश्चय हो गया था कि हम लोग बहुत जल्द चुनारगढ़ पहुचने वाले हैं जहा न तो किसी दुश्मन का डर रहेगा और न किसी तरह की तकलीफ ही रहेगी इससे भी बढकर बात यह होगी कि उसी चुनारगढ में हम लोगों की मुराद पूरी होगी। मगर निराशा ने रास्ते ही में पल्ला पकड लिया और दुश्मन के डर से इन्हें इस विचित्र स्थान में आकर रहना पडा जहा सिवाय गैर के अपना कोई भी दिखाई नहीं पडता था।

जिस दिन ये तीनों यहा आई थीं उस दिन कृष्णाजिन्न भी यहा मौजूद था। ये तीनों कृष्णाजिन्न को बखूबी जानती थीं और यह भी जानती थीं कि कृष्णाजिन्न हमारा सच्चा पक्षपाती तथा सहायक है तिस पर तेजसिंह ने भी उन तीनों को अच्छी तरह समझाकर कह दिया था कि यद्यपि तुम लोगों को यह नहीं मालूम कि वास्तव में कृष्णाजिन्न कौन है और कहा रहता है तथापि तुम लोगों को उस पर उतना ही भरोसा रखना चाहिये जितना हम पर रखती हो और उसकी आज्ञा भी उतनी ही इज्जत के साथ माननी चाहिए जितनी इज्जत के साथ हमारी आज्ञा मानने की इच्छा रखती हो। किशोरी, कामिनी और कमला ने यह बात बडी प्रसन्नता स स्वीकार की थी।

जिस समय ये तीनों इस मकान म आई थीं उसके दो ही घण्टे बाद सब सामान ठीक करके कृष्णाजिन्न और तेजसिंह चल गये थे और जाते समय इन तीनों को कृष्णाजिन्न कहता गया कि तुम लोग अकेले रहने के कारण घबराना नहीं मैं बहुत जल्द लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडिली को तुम लोगों के पास भेजवाऊगा और तब तुम लोग बडी प्रसन्नता के साथ यहा रह सकोगी। मैं भी जहा तक जल्द हो सकेगा तुम लोगों को लेने के लिए आऊंगा।

तीसरे ही दिन भैरोसिंह भी उस विचित्र स्थान म आ पहुचे जिन्हें देख किशोरी, कामिनी और कमला बहुत खुश हुई।

हमारे प्रेमी पाठक जानते ही हैं कि कमला और भैरोसिंह का दिल घुल-मिलकर एक हो रहा था अस्तु इस समय यह स्थान उन्हीं दोनों के लिए मुबारक हुआ और उन्हीं का यहा आने की विशेष प्रसन्नता हुई मगर इन दोनों को अपने से ज्यादा अपने मालिकों का ख्याल था। उनकी प्रसन्नता के बिना अपनी प्रसन्नता वे नहीं चाहते थे और उनके मालिक भी इस बात को अच्छी तरह जानते थे।

उस स्थान म पहुचकर भैरोसिंह ने यहा के रास्ते की बडी तारीफ की और कहा कि इन्द्रदेव के मकान म जाने का रास्ता जैसा गुप्त और टेढा है वैसा ही यहा का भी है अनजान आदमी यहा कदापि आ नहीं सकता। इसके बाद भैरोसिंह ने राजा बीरेन्द्रसिंह के लश्कर का हाल बयान किया।

भैरोसिंह की जुबानी लश्कर का हाल और मनोरमा के हाथ से भेष बदली हुई तीनों लौंडियों के मारे जाने की खबर सुनकर किशोरी और कामिनी के रोंगटे खडे हो गए। किशोरी ने कहा निःसन्देह कृष्णाजिन्न देवता है। उनकी अदभुत शक्ति उनकी बुद्धि और उनके विचार की जहा तक तारीफ की जाय उचित है। उन्होंने जो कुछ सोचा ठीक ही निकला।

भैरो—इसमें कोई शक नहीं। तुम लोगों को यहा बुलाकर उन्होंने बडा ही काम किया। मनोरमा तो गिरफ्तार हो ही गई और भाग जाने लायक भी न रही और उसके मददगार भी अगर लश्कर के साथ होंगे तो अब गिरफ्तार हुए बिना नहीं रह सकते इसके अतिरिक्त

कमला—हम लोगों को मरा जानकर कोई पीछा भी न करेगा और जब दोनों कुमार तिलिस्म तोडकर चुनारगढ में

आ जायगे तब तो यही दुनिया हम लोगों के लिए स्वर्ग हो जायगी।

बहुत दर तक इन चारों में बातचीत होती रही। इसके बाद भरोसिह ने वहा की अच्छी तरह सैर की और खा-पीकर निश्चिन्त होने बाद इधर-उधर की बातों से उन तीनों का दिल बहलाने लगे और जब तक वहा रहे उन लोगों को उदास होन न दिया।

तेरहवां बयान

सध्या होने में अभी दो घट से ज्यादे देर है मगर सूर्य भगवान पहाड की आड में हो गए इसलिए उस स्थान में जिसमें किशोरी-कामिनी और कमला हैं पूरब तरफ वाली पहाडी के ऊपरी हिस्से के सिवाय और कहीं धूप नहीं है। समय अच्छा और स्थान बहुत ही रमणीक मालूम पडता है। भैरोसिह एक पेड के नीचे बैठे हुए कुछ बना रहे हैं और किशोरी, कामिनी तथा कमला जगले से कुछ दूर पर एक पत्थर की चट्टान पर बैठी बातें कर रही हैं।

कमला ने कहा "बैठे-बैठे मेरा जी घबडा गया!"

कामिनी–तो तुम भी भैरोसिंह के पास जा बैठो और पेड की छाल छील-छील कर रस्सी बटो।

कमला–जी मैं ऐसे गन्द काम नहीं करती। मेरा मतलब यह था कि अगर हुक्म हो तो मैं इस पहाडी के बाहर जाकर इधर-उधर की कुछ खबर ले आऊँ या जमानिया में जाकर इसी बात का पता लगाऊँ कि राजा गोपालसिह के दिल से लक्ष्मीदेवी की मुहब्बत एक दम क्यों जाती रही जो आज तक उस बेचारी को पूछने के लिए एक चिडिया का बच्चा भी नहीं भेजा।

किशोरी–बहिन इस बात का तो मुझे भी बडा रज है। मैं सच कहती हूँ कि हम लोगों में से कोई भी ऐसा नहीं है जो उसके दुःख की बराबरी करे। राजा गोपालसिह ही की बदौलत उसने जो-जो तकलीफें उठाई उसे सुनने और याद करने से कलेजा काप जाता है। मगर अफसोस राजा गोपालसिह ने उसकी कुछ भी कदर न की।

कामिनी–मुझे सबसे ज्यादे केवल इस बात का ध्यान रहता है कि बेचारी लक्ष्मीदेवी ने जो-जो कष्ट सहे हैं उन सभों से बढ़कर उसके लिए यह दुःख है कि राजा गोपालसिह ने पता लग जाने पर भी उसकी कुछ सुध न ली। सब दुःखों को तो वह सह गई मगर वह दुःख उससे सहे न सहा जावेगा। हाय हाय गोपालसिह का भी कैसा पत्थर का कलेजा है!

किशोरी–ऐसी मुसीबत कहीं मुझे सहनी पडती तो मैं पल भर भी इस दुनिया में न रहती। क्या जमाने से मुहब्बत एक दम जाती रही? या राजा गोपालसिह ने लक्ष्मीदेवी में कोई ऐब देख लिया है?

कमला–राम राम वह बेचारी ऐसी नहीं है कि किसी ऐब को अपने पास आने दे। देखो अपनी छोटी बहिन की लौंडी बन कर मुसीबत के दिन किस ढग से बिताए। मगर उसके पतिव्रत धर्म का नतीजा कुछ न निकला।

किशोरी–इस दुःख से बढ़कर दुनिया में कोई भी दुःख नहीं है। (पेड पर बैठे हुए एक काले कौवे की तरफ इशारा करके) देखो बहिन यह काग हमीं लोगों की तरफ मुह करके बारम्बार बोल रहा है। (जमीन पर से एक तिनका उठाकर) यह कहता है कि तुम्हारा कोई प्रेमी यहा चला आ रहा है।

कामिनी–(ताज्जुब से) सो तुम्हें कैसे मालूम? क्या कौवे की बोली तुम पहिचानती हो या इस तिनके में कुछ लिखा है या यों ही दिल्लगी करती हो?

किशोरी–मैं दिल्लगी नहीं करती सच कहती हूँ, इसका पहिचानना कोई मुश्किल बात नहीं है।

कामिनी–बहिन मुझे भी बताओ। तुम्हें इसकी तर्कीब किसने सिखाई थी?

किशोरी–मेरी मा ने मुझे एक श्लोक याद करा दिया था। उसका मतलब यह है कि जब काले कौवे (काग) की बोली सुने तो एक बडा सा साफ तिनका जमीन पर से उठा ले और अपनी उगलियों से नाप के देखे कि कै अगुल का है जै अगुल हो उसमें तेरह और मिला सात-सात करके जहा तक उसमें से निकल सकें और जो कुछ बचे उसका हिसाब लगाये। एक बचे तो लाभ होगा, दो बचे तो कुछ नुकसान होगा तीन बचे तो सुख मिलेगा चार बचे तो भोजन की कोई चीज मिलेगी पाच बचे तो किसी मित्र का दर्शन होगा छ बचे तो कलह होगी सात बचे या यों कहो कि कुछ भी न बचे तो समझो कि अपना या अपने किसी प्रेमी का मरना होगा बस इतना ही तो हिसाब है।

कामिनी–तुम तो इतना कह गई लेकिन मेरी समझ में कुछ भी न आया। यह तिनका जो तुमने उगली से नापा है इसका हिसाब करके समझा दो तो समझ जाऊगी।

किशोरी–अच्छा देखो यह तिनका जो मैंने नापा था छ अगुल का है, इसमें तेरह मिला दिया तो कितना हुआ।

कामिनी–उन्नीस हुआ।

किशोरी–अच्छा इसमें से कै सात निकल सकते है ?

कामिनी–(सोच-कर) सात और सात चौदह दो सात निकल गए और पाच बचे। अच्छा अब मै समझ गई, तुम अभी कह चुकी हो कि अगर पाच बचे तो किसी मित्र का दर्शन हो। अच्छा अब वह श्लोक सुना दो क्योंकि श्लोक बडी जल्दी याद हो जाया करता है।

किशोरी–सुनो–

काकस्य वचन श्रुत्वा ग्रहीत्वा तृणमुत्तमम्
त्रयोदश समायुक्ता मुनिभि भागमाचरेत्
१ २ ३ ४ ५
लाभ कष्ट महासौख्य भोजन प्रियदर्शनम
६ ७
कलहो मरण चैव काकौ*वदति नान्यथा

कमला–(हस कर) श्लोक तो अशुद्ध है !

किशोरी–अच्छा अच्छा रहने दीजिये अशुद्ध है तो तुम्हारी बला से, तुम बडी पण्डित बन कर आई हो तो अपना शुद्ध करा लेना !

कामिनी–(कमला से) खैर तुम्हारे कहने से मान लिया जाय कि श्लोक अशुद्ध है मगर उसका मतलब तो अशुद्ध नहीं है।

कमला–नहीं नहीं मतलब को कौन अशुद्ध कहता है, मतलब तो ठीक और सच है।

कामिनी–तो बस फिर हो चुका। बीवी दुनिया में श्लोक की बडी कदर होती है पण्डित लोग अगर कोई झूठी बात भी समझाना चाहते हैं तो झट श्लोक बना कर पढ देते हैं सुनने वाले को विश्वास हो जाता है और यह तो वास्तव में सच्चा श्लोक है।

कामिनी ने इतना कहाही था कि सामने से किसी को आते देख चौक पडी और बोली, आहा हा देखो किशोरी बहिन की बात कैसी सच निकली ! लो कमला रानी देख लो और अपना कान पकडो !

जिस जगह किशोरी-कामिनी और कमला बैठी बातें कर रही थीं उसकेसामने ही की तरफ इस स्थान में आने का रास्ता था। यकायक जिस पर निगाह पडने से कामिनी चौंकी वह लक्ष्मीदेवी थी उसके बाद कमलिनी और लाडिली दिखाई पडी और सबके बाद इन्द्रदेव पर नजर पडी।

किशोरी–देखो बहिन हमारी बात कैसी सच निकली।

कामिनी–बेशक बेशक।

कमला–कृष्णाजिन्न सच ही कह गये थे कि उन तीनों को भी यहीं भेजवा दूँगा।

किशोरी–(खडी होकर) चलो हम लोग आगे चल कर उन्हें ले आवें।

ये तीनों लक्ष्मीदेवी,कमलिनी और लाडिली को देख कर बहुत ही खुश हुई और वहा से उठ कर कदम बढाती हुई उनकी तरफ चली। वे तीनों बीच वाले मकान के पास पहुचने न पाईं थी कि ये सब उनके पास जा पहुँचीं और इन्द्रदेव को प्रणाम करने के बाद आपुस में बारीबारी से एक दूसरे के गले मिलीं। भैरोसिंह भी उसी जगह आ पहुँचे और कुशलक्षेम पूछकर बहुत प्रसन्न हुए इसके बाद सब कोई मिलकर उसी बँगले में आए जिसमें किशोरी,कामिनी और कमला रहती थीं और इन्द्रदेव बीच वाले दोमजिले मकान में चले गये जिसमें भैरोसिंह का डेरा था।

यद्यपि वहा खिदमत करने के लिए लौडियों की कमी न थी तथापि कमला ने अपने हाथ से तरह-तरह की खाने की चीजें तैयार करके सभों को खिलाया-पिलाया और मोहब्बत भरी हँसी-दिल्लगी की बातों से सभों का दिल बहलाया। रात के समय जब हर एक काम से निश्चिन्त होकर एक कमरे में सब बैठीं तो बातचीत होने लगी।

किशोरी–(लक्ष्मीदेवी से) जमाने ने तो हम लोगों को जुदा कर दिया था मगर ईश्वर ने कृपा करके बहुत जल्द मिला दिया।

लक्ष्मीदेवी–हा बहिन इसके लिए मैं ईश्वर का धन्यवाद देती हूं। मगर मेरी समझ में अभी तक नहीं आता कि कृष्णाजिन्न कौन है जिसके हुक्म से कोई भी मुह नहीं मोड़ता। देखा तुम भी उसी की आज्ञानुसार यहा पहुँचाई गई और हमलोग भी उसी की आज्ञा से यहा लाए गए। जो हो मगर इसमें कोई शक नहीं कि कृष्णाजिन्न बहुत ही बुद्धिमान और दूरदर्शी है। यह सुन कर हमलोगों को बडी खुशी हुई कि कृष्णाजिन्न की चालाकियों ने तुम लोगों की जान बचा ली।

कामिनी–यह खबर तुम्हें कब मिली ?

लक्ष्मीदेवी–इन्द्रदेवजी जमानिया गये थे। उसी जगह कृष्णाजिन्न की चीठी पहुँची जिससे सब हाल मालूम हुआ और उसी चीठी के मुताबिक हम लोग यहा पहुँचाये गए ।

किशोरी–जमानिया गए थे। राजा गोपालसिंह ने बुलाया होगा ?

लक्ष्मीदेवी–(ऊँची सांस लेकर) वे क्या बुलाने लगे थे उन्हें क्या गर्ज पडी थी, हा हमारे पिता का पता लगाने गए थे सो वहा जाने पर कृष्णाजिन्न की चीठी ही से यह भी मालूम हुआ कि भूतनाथ उन्हें छुडा कर चुनारगढ़ ले गया। ईश्वर उसका भला करे भूतनाथ बात का धनी निकला।

किशोरी–(खुश होकर) भूतनाथ ने यह बहुत बडा काम किया। फिर भी उसके मुकदमे में बडी उलझन निकलेगी।

कामिनी–इसमें क्या शक है ?

किशोरी–अच्छा तो जमानिया में जाने से और भी किसी का हाल मालूम हुआ ?

कमलिनी–हा दोनों कुमारों से दूर की मुलाकात और बातचीत हुई क्योंकि वे तिलिस्म तोडने की कार्रवाई कर रहे थे और वहीं इन्द्रदेव ने अपनी लडकी इन्दिरा को पाया और अपनी स्त्री सर्यू को भी देखा।

किशोरी–(चौंक कर और खुश होकर) यह बडा काम हुआ ! वे दोनों इतने दिनों तक कहा थीं और कैसे मिलीं ?

लक्ष्मी–वे दोनों तिलिस्म में फसी हुई थीं दोनों कुमारों की बदौलत उनकी जान बची।

इस जगह लक्ष्मीदेवी ने सर्यू और इन्दिरा का किस्सा पूरा-पूरा बयान किया जिसे सुन कर वे तीनो बहुत प्रसन्न हुई और कमला ने कहा विश्वासघातियों और दुष्टों के लिए उस समय जमानिया बैकुण्ठ हो रहा था !

लक्ष्मी–तभी तो मुझे ऐसे-ऐसे दु ख भोगने पडे जिनसे अभी तक छुटकारा नहीं मिला, मगर मैं नहीं कह सकती कि अब मेरी क्या गति होगी और मुझे क्या करना होगा।

किशोरी–क्या जमानिया में इन्द्रदेव से राजा गोपालसिंह ने तुम्हारे विषय में कोई बातचीत नहीं की ?

लक्ष्मी–कुछ भी नहीं सिर्फ इतना कहा कि तुम उन तीनों बहिनों को कृष्णाजिन्न की आज्ञानुसार वहा पहुचा दो जहा किशोरी, कामिनी और कमला है, वहा स्वय कृष्णाजिन्न जायगे उसी समय जो कुछ वे कहें सो करना। शायद कृष्णाजिन्न उन सभों को यहा ले आवें।

कामिनी–(हाथ मल कर) बस !

लक्ष्मी–बस और कुछ भी नहीं पूछा और न इन्द्रदेवजी ही ने कुछ कहा क्योंकि उन्हें भी इस बात का रंज है।

किशोरी–रंज हुआ ही चाहे जो कोई सुनेगा उसी को इस बात का रंज होगा वे तो बेचारे तुम्हारे पिता ही के बराबर ठहरे क्यों न रंज करेंगे ! (कमलिनी से) तुम तो अपने जीजाजी के मिजाज की बडी तारीफ करती थीं !

कम–बेशक वे तारीफ के लायक है मगर इस मामले में तो मैं आप हैरान हो रही हूँ कि उन्होंने ऐसा क्यों किया ! उनके सामने ही दोनों कुमारों ने बड़े शौक से तुम लोगों का हाल इन्द्रदेव से पूछा और सभों को जमानिया में बुलालेने के लिए कहा मगर उस पर भी राजा साहब ने हमारी दुखिया बहिन को याद न किया आशा है कि कल तक कृष्णाजिन्न भी यहा आ जायगे देखें वह क्या करते है ?

लक्ष्मी–करेंगे क्या ? अगर वह मुझे जमानिया चलने के लिए कहेगे भी तो मैं इस बेइज्जती के साथ जाने वाली नहीं हूँ। अब मेरा मालिक मुझे पूछता ही नहीं तो मैं कौन सा मुह लेकर उसके पास जाऊं और किस सुख के लिए या किस आशा पर इस शरीर को रक्खूं !

कमला–नहीं नहीं, तुम्हें इतना रंज न करना चाहिए

कामिनी–(बात काट कर) रंज क्यों न करना चाहिए ! भला इससे बढ़ कर भी कोई रंज दुनिया में है ! जिसके सबब से और जिसके ख्याल से इस बेचारी ने इतने दु ख भोगे और ऐसी अवस्था में रही, वही जब एक बात न पूछे तो कहो रंज हो कि न हो ? और नहीं तो इस बात का ख्याल करते कि इसी की बहिन या उनकी साली की बदौलत उनकी जान बची नहीं तो दुनिया से उनका नाम-निशान ही उठ गया था !

लाडिली–बहिन, ताज्जुब तो यह कि इनकी खबर न ली तो न सही अपनी उस अनोखी मायारानी की सूरत तो

आकर देख जाते जिसने उनके साथ

कामिनी--(जल्दी से) हॉ और क्या ? उसे भी देखने न आए ! उन्हें तो चाहिए था कि रोहतासगढ पहुँचकर उसकी बाटी-बेटी अलग कर देते !

इस तरह से ये सब बडी देर तक आपुस मं बातें करती रही। लक्ष्मीदेवी की अवस्था पर सभों का रज,अफसोस और ताज्जुब था। जब रात ज्यादे बीत गई तो सभों ने चारपाई की शरण ली। दूसरे दिन उन्हें कृष्णाजिन्न के आने की खबर मिली।

चौदहवां बयान

किशोरी,कामिनी,कमलिनी,लक्ष्मीदेवी,कमला और लाडिली सभी का कृष्णाजिन्न के आने का इन्तजार था। सभी क दिल में तरह-तरह की बातें पैदा हा रही थीं और सभों को इस बात की आशा लग रही थी कि कृष्णाजिन्न के आने पर इस बात का पता लग जायेगा कि कृष्णाजिन्न कौन है और राजा गोपालसिह ने लक्ष्मीदेवी की सुध क्यों भुला दी।

आखिर दूसरे दिन कृष्णाजिन्न भी वहा आ पहुचा। यद्यपि वह एक ऐसा आदमी था जिसकी किसी को भी खबर न थी कोइ भी नहीं कह सकता था कि वह कौन और कहा का रहने वाला है न कोई उसकी जात बता सकता था और न काई ताकत और सामर्थ्य क विषय में ही कुछ वादविवाद कर सकता था तथापि उसकी हमदर्दी और कार्रवाई स सभी खुश थ और इसलिए कि राजा बीरेन्द्रसिह उस मानते थे,सभी उसकी कदर करते थे। गुप्त स्थान मं पहुँच वह सभों को चौकन्ना कर चुका था इसलिए किशोरी और लक्ष्मीदेवी इत्यादि का उससे पर्दा करने की कोई आवश्यकता न थी और न एसा करन का उन्हें हुक्म था अस्तु कृष्णाजिन्न के आने की खबर पाकर सब खुश हुई और बीच वाले दो मजिले मकान में जिसमें सबक पहिले आकर उसने इन्ददव स मुलाकात की थी,चलने के लिए तैयार हो गई मगर उसी समय भैरोसिह न बगले पर आकर लक्ष्मीदेवी इत्यादि से कहा कि कृष्णाजिन्न स्वयम् यहीं चले आ रहे है।

थोडी देर बाद कृष्णाजिन्न बगले पर आ पहुँचा। लक्ष्मीदवी,कमलिनी,लाडिली,किशोरी,कामिनी और कमला ने आग बढ कर उसका इस्तकबाल (अगवानी) किया और इज्जत के साथ लाकर एक ऊची गद्दी के ऊपर बैठाया। उसकी आज्ञानुसार इन्द्रदेव और भैरोसिह गद्दी के नीच दाहिनी तरफ बैठे और लक्ष्मीदवी इत्यादि को सामने बैठन के लिए कृष्णाजिन्न ने आज्ञा दी और सभों न खुशी से उसकी आज्ञा स्वीकार की। कृष्णाजिन्न ने सभों का कुशलमगल पूछा और फिर यों बातचीत होने लगी —

किशोरी--आपकी बदौलत हम लागो की जान बच गई मगर उन लौंडियों के मारे जाने का रज है।

कृष्णा--यह सब इश्वर की माया है वह जो चाहता है,करता है। यद्यपि मनोरमा न कई शैतानों को साथ लेकर तुम लागों का पीछा किया था मगर उसके गिरफ्तार हो जान ही स उन सभों का खौफ जाता रहा। अब जो मै ख्याल करके देखता हूँ ता तुम लोगों का दुश्मन काई भी दिखाई नहीं देता क्योंकि जिन दुष्टों की बदौलत लोग दुश्मन हो रह थे या यों कहो कि जो लोग उनक मुखिया थे गिरफ्तार हो गए यहा तक कि उन लोगों का कैद स छुडाने वाला भी कोई न रहा।

कमलिनी--ठीक है तो अब हम लोगों को छिपकर यहा रहने की क्या जरुरत है ?

कृष्णा--(हसकर) तुम्हें तो तब भी छिप कर रहने की जरूरत नहीं पडी जब चारो तरफ दुश्मनों का जोर बधा हुआ था,आज की कौन कहे ? मगर हा (हाथ का इशारा करक) इन बेचारियों को अब यहा रहने की कोई जरूरत नहीं और अब इसीलिए मै यहा आया हूँ कि तुम लागों को जमानिया ले चलू, वहा से फिर जिसको जिधर जाना होगा चला जायगा।

लक्ष्मी--तो आप हम लोगों का चुनारगढ क्यों नहीं ले चलते या वहा जाने की आज्ञा क्यों नहीं देते ?

कृष्णा--नहीं नहीं तुम लोगों को पहिले जमानिया चलना चाहिए। यह केवल मेरी आज्ञा ही नहीं बल्कि मै समझता हू कि तुम लोगों को भी यही इच्छा हागी (लक्ष्मीदवी से) तुम तो जमानिया की रानी ही ठहरीं तुम्हारी रिआया खुशी मनाने के लिए उस दिन का इन्तजार कर रही है जिस दिन तुम्हारी सवारी शहर के अन्दर पहुँचेगी और कमलिनी तथा लाडिली तुम्हारी बहिन ही ठहरीं

लक्ष्मीदेवी--(बात काटकर) बस बस, मै बाज आई जमानिया की रानी बनने से ! वहा जाने की मुझे कोई जरूरत नहीं और मेरी दोनों बहिनें भी,जहा मैं रहूँगी वहीं मर साथ रहेंगी।

कृष्णा--क्यों क्यों ऐसा क्यों ?

लक्ष्मी--मैं इसलिए विशेष बात कहना नहीं चाहती कि आपने यद्यपि हम लोगों की बडी सहायता की है और हम लोग

जन्म भर आपकी तावेदारी करके भी उसका बदला नहीं चुका सकते तथापि आपका परिचय न पाने के कारण

कृष्णा–ठीक है ठीक है अपरिचित पुरुष से दिल खोल कर बातें करना कुलवती स्त्रियों का धर्म नहीं है मगर मैं यद्यपि इस समय अपना परिचय नहीं दे सकता तथापि यह कहे देता हूँ कि नाते में राजा गोपालसिंह का छोटा भाई हूँ इसलिए तुम्हें भावज मान कर बहुत कुछ कहने और सुनने का हक रखता हूँ। तुम निश्चय रक्खो कि मेरे विषय में राजा गोपालसिंह तुम्हें कभी उलाहना न देंगे चाहे तुम मुझसे किसी तरह पर बातचीत क्यों न करो ! (कुछ सोच कर) मगर मैं समझ रहा हूँ कि तुम जमानिया जाने से क्या इनकार करती हो। शायद तुम्हें इस बात का रंज है कि यकायक तुम्हारे जीते रहने की खबर पाकर भी गोपालसिंह तुम्हें देखने के लिए न आए

कमलिनी–देखने के लिए आना तो दूर रहा अपने हाथ से एक पुर्जा लिख कर यह भी न पूछा कि तेरा मिजाज कैसा है ?

लाडिली–आने-जाने वाले आदमी तक से भी हाल न पूछा !

लक्ष्मी–(धीरे से) एक कुत्ते की भी इतनी बेकदरी नहीं की जाती !

कमलिनी–ऐसी हालत में रंज हुआ ही चाहे जब आप यह कहते हैं कि हम राजा गोपालसिंह के छोटे भाई हैं और मैं समझती हूँ कि आप झूठ भी नहीं कहते होंगे तभी हम लोगों को इतना कहने का हौसला भी होता है। आप ही कहिए कि राजा साहब को क्या यही उचित था ?

कृष्णा–मगर तुम इस बात का क्या सबूत रखती हो कि राजा साहब ने इनकी बेकदरी की ? औरतों की भी विचित्र बुद्धि होती है ! असल बात तो जानती नहीं और उलाहना देने पर तैयार हो जाती हैं।

कमलिनी–सबूत अब इससे बढ़ कर क्या होगा जो मैं कह चुकी हूँ ? अगर एक दिन के लिए चुनारगढ़ आ जाते तो क्या पैर की मेंहदी छूट जाती !

कृष्णा–अपने बड़े लोगों के सामने अपनी स्त्री को देखने के लिए आना क्या उचित होता ! मगर अफसोस तुम लोगों को इस बात की खबर ही नहीं कि राजा गोपालसिंह महाराज वीरेन्द्रसिंह के भतीजे होते हैं और इसी सबब से लक्ष्मीदेवी को अपने घर में आ गई जान कर उन्होंने किसी तरह की जाहिरदारी न की।

सब–(ताज्जुब से) क्या महाराज उनके चाचा होते हैं ?

कृष्णा–हां यह बात पहिले केवल हमीं दोनों आदमियों को मालूम थी और तिलिस्म तोड़ते समय दोनों कुमारों को मालूम हुई या आज मेरी जुबानी तुम लोगों ने सुनी ? खुद महाराज वीरेन्द्रसिंह को भी अभी तक यह बात मालूम नहीं है।

लक्ष्मी–अच्छा अच्छा जब नातेदारी इतनी छिपी हुई थी तो

कमलिनी–(लक्ष्मीदेवी को रोक कर) बहिन तुम रहने दो मैं इनकी बातों का जवाब दे लूंगी ! (कृष्णाजिन से) तो क्या गुप्त रीति से वह एक चीठी भी नहीं भेज सकते थे ?

कृष्णा–चीठी भेजना तो दूर रहे गुप्त रीति से खुद कई दफे आ कर वे इनको देख भी गये हैं।

लाडिली–अगर ऐसा ही होता तो रंज काहे का था !

कमलिनी–इस बात को तो वह कदापि साबित नहीं कर सकते !

कृष्णा–यह बात बहुत सहज में साबित हो जायेगी और तुम लोग सहज ही में मान भी जाओगी मगर जब उनका और तुम्हारा सामना होगा तब।

कमलिनी–तो आपकी राय है कि बिना सन्तोष हुए और बिना बुलाये बेइज्जती के साथ हमारी बहिन जमानिया चली जाय ?

कृष्णा–बिना बुलाये कैसे ? आखिर मैं यहां किस लिए आया हूं। (जेब से एक चीठी निकाल कर और लक्ष्मीदेवी के हाथ में देकर) देखो उनके हाथ की लिखी चीठी पढ़ो।

चीठी में यह लिखा हुआ था —

चिरंजीव कृष्णा योग्य लिखी गोपालसिंह का आशीर्वाद—आज तीन दिन हुए एक पत्र तुम्हें भेज चुका हूँ। तुम छोटे भाई हो इसलिए विशेष लिखना उचित नहीं समझता केवल इतना लिखता हूँ कि चीठी देखते ही चले आओ और अपनी भावज को तथा उनकी दोनों बहिनों को जहां तक जल्दी हो सके यहां ले आओ।

इस चीठी को बारी-बारी से सभों ने पढ़ा।

कमलिनी–मगर इस चीठी में कोई ऐसी बात नहीं लिखी है जिससे लक्ष्मीदेवी के साथ हमदर्दी पाई जाती हो ! जब हाथ दुखाने बैठे ही थे तो एक चीठी इनके नाम की भी लिख डाली होती ! इन्हें नहीं तो मुझी को कुछ लिख भेजा होता मेरा उनका सामना हुए भी तो बहुत दिन नहीं हुए। मालूम होता है कि थोड़े ही दिनों में वे बेमुरौवत और कृतघ्न भी हो गए।

कृष्णा–कृतघ्न का शब्द तुमने बहुत ठीक कहा ! मालूम होता है कि तुम उन पर अपनी कारवाइयों का अहसान डाला चाहती हो ?

कमलिनी–(क्रोध से) क्यों नहीं ? क्या मैंने उनके लिये थोड़ी मेहनत की है ? और इसका क्या यही बदला था ?

कृष्णा–जब अहसान और उसके बदले का ख्याल आ गया तो मुहब्बत कैसी और प्रेम कैसा ? मुहब्बत और प्रेम में अहसान और बदला चुकाने का तो खयाल ही नहीं होना चाहिए। यह तो रोजगार और लेने-देने का सौदा हो गया ! और अगर तुम इसी तरह बदला चुकाने वाली कारवाई को प्रेमभाव समझती हो तो घबराती क्यों हो ? समझ लो कि दूकानदार नादेहन्द है मगर बदला देने योग्य है कभी न कभी बदला चुक ही जायेगा। हाय हाय औरतें भी कितना जल्द अहसान जताने लगती हैं ! क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि तुम पर किसने अहसान किया और तुम उसका बदला किस तरह चुका सकती हो ? अगर तुम्हारा ऐसा ही मिजाज है और बदला चुकाये जाने की तुम ऐसी ही भूखी हौ तो बस हो चुका। तुम्हारे हाथों से किसी गरीब असमर्थ या दीन-दुखिया का भला कैसे हो सकता है क्योंकि उसे तो तुम बदला चुकाने लायक समझोगी ही नहीं !

कम–(कुछ शर्मा कर) क्या राजा गोपालसिंह भी असमर्थ और दीन हैं ?

कृष्णा–नहीं है। तो तुमने राजा साहब के उन पर अहसान किया था ? अगर ऐसा है तो मैं तुम्हें उनसे बहुत से रूपया दिलवा सकता हूँ।

कमलिनी–जी मैं रूपये की भूखी नहीं हूँ।

कृष्णा–बहुत ठीक तब तुम प्रेम की भूखी होगी !

कमलिनी–बेशक !

कृष्णा–अच्छा तो जो आदमी प्रेम का भूखा है उसे दीन, असमर्थ और समर्थ में अहसान करते समय भेद क्यों दिखने लगा और इसके देखने की जरूरत ही क्या है ? ऐसी अवस्था में भी यही जान पड़ता है कि तुम्हारे हाथों से गरीब और दुखिया को लाभ नहीं पहुंच सकता क्योंकि वे न तो समर्थ है और न तुम उनसे उस अहसान के बदले में प्रेम ही पाकर खुश हो सकती हौ।

कमलिनी–आपके इस कहने से मेरी बात नहीं कटती। प्रेमभाव का बर्ताव करके तो अमीर और गरीब आदमी भी अहसान का बदला उतार सकता है ! और कुछ नहीं तो वह कम से कम अपने ऊपर अहसान करने वाले का कुशलमंगल ही चाहेगा। इसके अतिरिक्त अहसान और अहसान का जस माने बिना दोस्ती भी तो नहीं हो सकती। दोस्ती की तो बुनियाद ही नेकी है ! क्या आप उसके साथ दोस्ती कर सकते हैं जो आपके साथ बदी करे ?

कृष्णा–अगर तुम केवल उपकार मान लेन ही से खुश हो सकती हौ तो चल कर राजा साहब से पूछो कि वह तुम्हारा उपकार मानते हैं या नहीं या उनको कहो कि उपकार मानते हों तो इसकी मुनादी करवा दें जैसा कि लक्ष्मीदेवी ने इन्द्रदेव का उपकार मान के किया था।

लक्ष्मी–(शर्मा कर) मैं भला उनके अहसान का बदला क्यों कर अदा कर सकती हूँ और मुनादी कराने से होता ही क्या है ?

कृष्णा–शायद राजा गोपालसिंह भी यही सोच कर चुप बैठ रहे हों और दिल में तुम्हारी तारीफ करते हों।

लक्ष्मी–(कमलिनी से) तुम व्यर्थ की बातें कर रही हौ इस वाद-विवाद से क्या फायदा होगा। मतलब तो इतना ही है कि मैं उस घर में नहीं जाना चाहती जहां अपनी इज्जत नहीं पूछ नहीं चाह नहीं और जहां एक दिन भी रही नहीं।

कृष्णा–अच्छा इन सब बातों को जाने दो, मैं एक दूसरी बात कहता हूँ उसका जवाब दो।

कमलिनी–कहिए।

कृष्णा–जरा विचार करके देखो कि तुम उनको तो बेमुरौवत कहती हौ इसका खयाल भी नहीं करतीं कि तुम लोग उनसे कहीं बढ़ कर बेमुरौवत हो ! राजा गोपालसिंह एक चीठी अपने हाथ से लिख कर तुम्हारे पास भेज देते तो तुम्हें सन्तोष हो जाता मगर चीठी के बदले में मुझे भेजना तुम लोगों को पसन्द न आया ! अच्छा अहसान जताने का रास्ता तो तुमने खोल ही दिया है खुद गोपालसिंह पर अहसान बता चुकी हो, तो अगर मैं भी कहूं कि मैंने तुम लोगों पर अहसान किया है तो क्या बुराइ है ?

कमलिनी–कोई बुराई नहीं है और इसमें कोई सन्देह भी नहीं है कि आपने हम लोगों पर बहुत बडा अहसान किया है और बडे वक्त पर ऐसी मदद की है कि कोई दूसरा कर ही नहीं सकता था। हम लोगों का बाल-बाल आपके अहसान से बधा हुआ है।

कृष्णा–तो अगर मैं ही राजा गोपालसिह बन जाऊ तो !!

कृष्णाजिन्न की इस आखिरी बात ने सभों को चौका दिया। लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली कृष्णाजिन्न का मुह देखने लगी। कृष्णाजिन्न इस समय भी ठीक उसी सूरत में था जिस सूरत में अब के पहिले कई दफे हमारे पाठक उसे देख चुके हैं।

कृष्णाजिन्न ने अपने चेहरे पर से एक झिल्ली सी उतारकर अलग रख दी और उसी समय कमलिनी ने चिल्लाकर कहा अहा ये तो स्वय राजा गोपालसिह है ? और तब यह कहकर उनके पैरों पर गिर पडी आपने तो हम लोगों को अच्छा धोखा दिया !!

* सोलहवा भाग समाप्त *

चन्द्रकान्ता सन्तति

सत्रहवां भाग

पहिला बयान

हमारे पाठक 'लीला को भूले न होंगे। तिलिस्मी दरोगा वाले बगले की बर्बादी के पहिले तक इसका नाम आया है जिसके बाद फिर इसका जिक्र नहीं आया *।

लीला को जमानिया की खबरदारी पर मुकर्रर करके मायारानी काशी वाले नागर के मकान में चली गई थी और वहाँ दारोगा के आ जाने पर उसके साथ इन्द्रदेव के यहाँ चली गई। जब इन्द्रदेव के यहाँ से भी वह भाग गई और दारोगा तथा शेरअलीखाँ की मदद से रोहतासगढ़ के अन्दर घुसने का प्रबन्ध किया गया जैसा कि सन्तति के बारहवें भाग के तेरहवें बयान में लिखा गया हैउसी समयलीला भी मायारानी के साथ थी मगर रोहतासगढ में जाने के पहिले मायारानी ने उसे अपनी हिफाजत का जरिया बना कर पहाड़ के नीचे ही छोड दिया था। मायारानी मे अपना तिलिस्मी तमचा जिससे बहोशी के बारूद की गोली चलाई जाती थी लीला को देकर कह दिया था कि मै शेरअलीखाँ की मदद से और उन्हीं के भरोसे पर रोहतासगढ के अन्दर जाती हू मगर ऐयारों के हाथ मेरा गिरफ्तार हो जाना कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि वीरेन्द्रसिह के ऐयार बडे ही चालाक है। यद्यपि उनसे बचे रहने की पूरी-पूरी तर्कीब की गई है मगर फिर भी मै बेफिक्र नहीं रह सकती अस्तु यह तिलिस्मी तमचा तू अपने पास रख और इस पहाड के नीचे ही रह कर हम लोगों के बारे में टोह लेती रह, अगर हम लोग अपना काम करके राजी खुशी के साथ लौट आये तब तो कोई बात नहीं, ईश्वर न करे कहीं मैं गिरफ्तार हो गई तो तू मुझे छुड़ाने का बन्दोबस्त कीजियो और इस तमचे से काम निकालियो। इसमें चलाने वाली गोलिया और वह ताम्रपत्र भी मै तुझे दिये जाती हू जिसमें गोली बनाने की तर्कीब लिखी हुई है।

जब दारोगा और शेरअलीखॉ सहित मायारानी गिरफ्तार हुई और वह खबर शेरअलीखाँ के लश्कर में पहुची जो पहाड के नीचे था तो लीला ने भी सब हाल सुना और वह उसी समय वहा से टल कर कहीं छिप रही फिर भी जब तक राजा वीरेन्द्रसिह वहॉ से चुनारगढ की तरफ रवाना हुए वह भी उस इलाके के बाहर न गई और इसी से शिवदत्त और कल्याणसिह (जो बहुत से आदमियों को लेकर रोहतासगढ के तहखाने में घुसे थे) वाला मामला भी उसे बखूबी मालूम हो गया था।

माधवी मनोरमा और शिवदत्त ने जब ऐयारों की मदद से कल्याणसिह को छुडाया था तो भी भीमसेन भी उसी के साथ ही छुडाया गया मगर भीमसेन कुछ बीमार था इसलिए शिवदत्त के साथ मिलजुल कर रोहतासगढ के तहखाने में न जा सका था शिवदत्त ने अपने ऐयारों की हिफाजत में उसे शिवदत्तगढ भेज दिया था।

सब बखेडों से छुट्टी पाकर जब राजा बीरेन्द्रसिह कैदियों को लिए हुए चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए तो मायारानी को कैद से छुड़ाने की फिक्र में लीला भी भेष बदले हुए उन्हीं के लश्कर के साथ रवाना हुई। लश्कर में नकली किशोरी कामिनी और कमला के मारे जाने वाला मामला उसके सामने ही हुआ और तब तक उसे अपनी कार्रवाई करने का कोई मौका न मिला मगर जब नकली किशोरी कामिनी और कमला की दाहक्रिया करके राजा साहब आगे बढे और दुश्मनों की तरफ से कुछ बेफिक्र हुए तब लीला को भी अपनी कार्रवाई का मौका मिला और वह उस खेमे के चारों तरफ ज्यादे फेरे लगाने लगी जिसमे मायारानी कैद थी और चालीस आदमी नगी तलवार लिये बारी-बारी से उसके चारों तरफ पहरा दिया करते थे। एक दिन इत्तिफाक से आधी-पानी का जोर हो गया और इसी से उस कम्बख्त को अपने काम का अच्छा मौका मिला।

---

*देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति नौवा भाग, आठवा बयान।

बीरेन्द्रसिह का लश्कर एक सुहावने जगल में पडा हुआ था। समय बहुत अच्छा था सध्या होने के पहिले ही से बादलों का शामियाना खडा हो गया था बिजली चमकने लग गई थी, और हवा के झपेटे पेड-पत्तों के साथ हाथापाई कर रहे थे। पहर रात जाते-जाते पानी अच्छी तरह बरसने लग गया और उसके बाद तो आधी-पानी न एक भयानक तूफान का रूप धारण कर लिया। उस समय लश्कर वालों को बहुत ही तकलीफ हुई। हजारों सिपाही गरीब बनिये घसियारे और शागिर्द पेश वाले जो मैदान में सोया करते थे इस तूफान से दुखी होकर जान बचाने की फिक्र करने लगे। यद्यपि राजा बीरेन्द्रसिह की रहमदिली और रिआयापरवरी ने बहुतों को आराम दिया और बहुत से आदमी खेमों और शामियानों के अन्दर घुस गये यहाँ तक कि राजा बीरन्दरसिह और तजसिह के खेमों से भी सैकडों को पनाह मिल गई मगर फिर भी हजारों आदमी ऐसे रह गये थे जिनकी भूडी किस्मत में दु ख भोगना बदा था। यह सब कुछ था मगर लीला को ऐसे समय भी चैन न था और वह दु ख को दु ख नहीं समझती थी क्योंकि उसे अपना काम साधने के लिए बहुत दिनों बाद आज यही एक मौका अच्छा मालूम हुआ।

जिस खेमे में मायारानी और दारोगा वगैरह कैद थे उससे चालीस या पचास हाथ की दूरी पर सलई का एक बडा और पुराना दरख्त था। इस आधी-पानी और तूफान का खौफ न करके लीला उसी पेड पर चढ गई और कैदियों के खेमे की तरफ मुँह करके तिलिस्मी तमचे का निशाना साधने लगी। जब-जब बिजली चमकती तब-तब वह अपने निशाने को ठीक करन का उद्योग करती। सम्भव था कि बिजली की चमक में कोई उसे पेड पर चढा हुआ देख लेता मगर जिन सिपाहियों क पहरे में वह खेमा था उस (कैदियों वाल) खेमे के आस-पास जो लोग रहते थे सभी इस तूफान से घबडा कर उसी खेमे के अन्दर घुस गये थे जिसमें मायारानी और दा रोगा वगैरह कैद थे। खेमे के बाहर या उस पेड के पास कोई भी न था जिस पर लीला चढी हुई थी।

लीला जब अपने निशाने को ठीक कर चुकी तब उसने एक गोली (बेहोशी वाली) चलाई। हम पहिले के किसी बयान में लिख चुके हैं कि इस तिलिस्मी तमचे के चलाने से किसी तरह की आवाज नहीं होती थी मगर जब गोली जमीन पर गिरती थी तब कुछ हलकी सी आवाज पटाखे की तरह होती थी।

लीला की चलाई हुई गोली खेमे को छेद के अन्दर चली गई और एक सिपाही के बदन पर गिर कर फूटी। उस सिपाही का कुछ नुकसान नहीं हुआ जिस पर गोली गिरी थी। न तो उसका कोई अग-भग हुआ और न कपडा जला केवल हलकी सी आवाज हुई और बेहोशी का बहुत ज्यादे धूआ चारों तरफ फैलने लगा। मायारानी उस वक्त बैठी हुई अपनी किस्मत पर रो रही थी। पटाखे की आवाज से वह चौंक कर उसी तरफ देखने लगी। और बहुत जल्द समझ गई कि यह उसी तिलिस्मी तमचे से चलाई गई गोली है जो मैं लीला के सुपुर्द कर आयी थी।

मायारानी यद्यपि जान से हाथ धो बैठी थी और उसे विश्वास हो गया था कि अब कैद से किसी तरह छुटकारा नहीं मिल सकता मगर इस समय तिलिस्मी तमचे की गोली ने खेमे के अन्दर पहुच कर उसे विश्वास दिला दिया कि अब भी तेरा एक दोस्त मदद करने लायक मौजूद है जो यहा आ पहुचा और कैद से छुडाया ही चाहता है।

वह मायारानी जिसकी ऑखों के आगे मौत की भयानक सूरत घूम रही थी और हर तरह से नाउम्मीद हो चुकी थी चौंक कर सम्हल बैठी। बेहोशी का असर करने वाला धूआँ बच रहने की मुबारकबाद देता हुआ आखों के सामने फैलने लगा और तरह-तरह की उम्मीदों ने उसका कलेजा ऊँचा कर दिया। यद्यपि वह जानती कि यह धूआ मुझे भी बेहोश कर देगा मगर फिर भी वह खुशी की निगाहों से चारों तरफ देखने लगी और इतने में ही एक दूसरी गोली भी उसी ढंग की वहाँ आकर गिरी।

मायारानी और दारोगा का छोड कर जितने आदमी उस खेमे में थे, सभों को उन दोनों गोलियों ने ताज्जुब में डाल दिया। अगर गोली चलाती समय तमचे में से किसी तरह की आवाज निकल कर उनके कानों तक पहुचती तो शायद कुछ पता लगान की नीयत से दो-चार आदमी खेमे के बाहर निकलत मगर उस समय सिवाय एक दूसरे का मुँह देखने के किसी को किसी तरह का गुमान न हुआ और धूँए ने तेजी के साथ फैल कर अपना असर जमाना शुरू कर दिया। बात की बात में जितने आदमी उस खेम के अन्दर थे सभों का सर घूमने लगा और एक दूसरे के ऊपर गिरते हुए सबके सब बेहोश हो गए मायारानी और दारोगा को भी दीन दुनिया की सुध न रही।

पेड पर चढी हुई लीला ने थोडी देर तक इन्तजार किया। जब खेमे के अन्दर से किसी को निकलते न देखा और उसे विश्वास हो गया कि खेमे के अन्दर वाले अब बेहोश हो गये होंगे तब वह पेड से उतरी और खेमे के पास आई। आधी पानी का जोर अभी तक वैसा ही था मगर लीला ने इसे अच्छी तरह सह लिया और कनात के नीचे से झाक कर खेमे के अन्दर देखा तो सभों को बेहोश पाया।

पाठकों को यह मालूम है कि लीला ऐयारी भी जानती थी। कनात काट कर वह खेमे के अन्दर चली गई। आदमी बहुत ज्यादे भरे हुए थे इसलिए उसे मायारानी के पास तक पहुचने में बडी कठिनाई हुई, आखिर उसके पास पहुची और हाथ-पैर खोलने के बाद लखलखा सुंघा कर होश में लाई। मायारानी ने होश में आकर लीला को देखा और धीरे से कहा शाबाश खुब पहुची। बस दारोगा को छुडाने की कोई जरूरत नहीं।' इतना कह कर मायारानी उठ खडी हुई और लीला के हाथ का सहारा लेती हुई खेमे के बाहर निकल गयी।

लीला न चाहा कि लश्कर में से दो घोडे भी सवारी के लिए चुरा लावे मगर मायारानी ने स्वीकार न किया और उसी तूफान में दोनों कम्बख्तों ने एक तरफ का रास्ता लिया।

दूसरा बयान

पाठकों को मालूम है कि शिवदत्त और कल्याणसिह ने जब राहतासगढ पर चढाई की थी तब उनके साथ मनोरमा और माधवी भी मौजूद थी। भूतनाथ और सर्यूसिह ने शिवदत्त और कल्याणसिह को डरा-धमका-कर मनोरमा को तो गिरफ्तार कर लिया *परन्तु माधवी कहा गई या क्या हुई इसका हाल कुछ लिखा नहीं गया अस्तु अब हम थोडा सा हाल माधवी का लिखना उचित समझते हैं।

जिस जमाने में माधवी गया और राजगृही की रानी कहलाती थी उस जमाने में उसका राज्य केवल तीन ही आदमियों के भरोसे पर चलता था—एक दीवान अग्निदत्त दूसरा कोतवाल धर्मसिह और तीसरा सेनापति कुबेरसिह। बस यहा तीनों उसके राज्य का आनन्द लेते थे और इन्हीं तीनों का माधवी को भरोसा था। यद्यपि ये तीनों ही माधवी की चाह में डूबने वाले थे मगर कुबेरसिह और धर्मसिह प्यासे ही रह गये जिसका उन दोनों को बराबर बहुत ही रज बना रहा।

जब राजगृही और गया की किस्मत ने पलटा खाया तब धर्मसिह कोतवाल को तो चपला ने माधवी की सूरत बन और धोखा दे गिरफ्तार कर लिया और दीवान अग्निदत्त बहुत दिनों तक बचा रह कर अन्त में किशोरी के कारण एक खोह के अन्दर मारा गया परन्तु अभी तक यह न मालूम हुआ कि उसके मर जाने का सबब क्या था। हा सेनापति कुबेरसिह, जिसने माधवी के राज्य में सबसे ज्यादे दौलत पैदा की थी बचा रह गया क्योंकि उसने जमाने को पलटा खाते देख चुपचाप अपने घर (मुशिदाबाद) का रास्ता लिया मगर माधवी के हालचाल की खबर लेता रहा, क्योंकि यद्यपि उसने माधवी का राज्य छोड दिया था मगर माधवी के इश्क ने उसके दिल में से अपना दखल नहीं उठाया था।

माधवी की बिगडी हुई अवस्था देखकर भी उसकी मुहब्बत से हाथ न धोने का दो सबब था, एक तो माधवी वास्तव में खूबसूरत हसीन और नाजुक थी, दूसरे राजगृही और गया के राज्य से खारिज हो जाने पर भी वह माधवी को अमीर और बेहिसाब दौलत का मालिक समझता था और इसलिये वह समय पर ध्यान रख कर माधवी के हालचाल की बराबर खबर लेता रहा और वक्त पर काम देने के लिये थोडी सी फौज का मालिक भी बना रहो।

मनोरमा के गिरफ्तार हो जाने के बाद शिवदत्त और कल्याणसिह के साथ जब माधवी रोहतासगढ की तराई में पहुची ता एक आदमी ने गुप्त रीति पर उसे एक चीठी दी और बहुत जल्द उसका जवाब मागा। यह चीठी कुबेरसिह की थी और उसमें यह लिखा हुआ था—

मुझे आपकी अवस्था पर बहुत रज और अफसोस है। यद्यपि आपकी हालत बदल गई है और आप मुझसे बहुत दूर हैं मगर मैं अभी तक आपकी खयाली तस्वीर अपने दिल के अन्दर कायम रखकर दिन-रात उसकी पूजा किया करता हू। यही सबब है कि बहुत दिनों तक मेहनत करके मैंने इतनी ताकत पैदा कर ली है कि आपकी मदद कर सकू और आपको पुन राजगृही की गद्दी का मालिक बनाऊ। आप अपने ही दिल से पूछ देखिये कि अग्निदत्त, जिसके साथ आपने सब कुछ किया कैसा बेईमान और बेमुरौवत निकला और मैं जिसे आपने हद स ज्यादे तरसाया कैसी हालत में आपकी मदद करने को तैयार हू यदि आप मुनासिब समझें तो इस आदमी के साथ मेरे पास चली आवें या मुझी को अपने पास बुला लें। यह आदमी जो चीठी लेकर जाता है मेरा ऐयार है।

आपका— कुबेर।'

---

*देखिये चौदहवा भाग दूसरा बयान।

माधवी ने उस चीठी को बडे गौर से दोहरा कर पढा और देर तक तरह-तरह की बातें सोचती रही। हम नहीं जानते कि उसका दिल किन-किन बातों का फैसला करता रहा या वह किस विचार में देर तक डूबी रही हां थोडी देर बाद उसने सिर उठा चीठी लाने वाले की तरफ देखा और कहा 'कुबेरसिंह कहा पर है ?'

ऐयार–यहाँ से थोडी दूर पर।

माधवी–फिर वह खुद यहाँ क्यों न आया ?

ऐयार–इसीलिए कि आप इस समय दूसरों के साथ है जिन्होंने आपको न मालूम किस तरह का भरोसा दिया होगा या आप ही ने शायद उनसे किस तरह का एकरार किया हो, ऐसी अवस्था में आपसे दरियाफ्त किये बिना इस लश्कर में आना उन्होंने मुनासिब नहीं समझा।

माधवी–ठीक है अच्छा तुम जाकर उसे बहुत जल्द मेरे पास ले आओ, कितनी देर में आओगे।

ऐयार–(सलाम करके) आधे घटे के अन्दर।

वह ऐयार तेजी के साथ दौड़ता हुआ वहाँ से चला गया और माधवी उसी जगह टहलती हुई उसका इन्तजार करने लगी।

दिन आधे घन्टे से कुछ ज्यादे बाकी था और इस समय माधवी कुछ खुश मालूम होती थी। शिवदत्त और कल्याणसिंह का लश्कर एक जगल में छिपा हुआ था और माधवी अपने डेरे से निकल कर सौ कदम की दूरी पर चली गइ थी। माधवी कुबेरसिंह के अक्षर अच्छी तरह पहिचानती थी इसलिए उसे किसी तरह का धोखा खाने का शक कुछ भी न हुआ और वह बेखौफ उसके आने का इन्तजार करने लगी।

सध्या होने के पहिले ही उसी ऐयार को साथ लिए हुए कुबेरसिंह माधवी की तरफ आता दिखाई दिया जो थोडी ही देर पहिले उसकी चीठी लेकर आया था। इस समय वह ऐयार भी एक घोडे पर सवार था और कुबेरसिंह अपनी सूरत शक्ल तथा हैसियत को अच्छी तरह सजाये हुए था। माधवी के पास पहुच कर दोनों आदमी घोडे से नीचे उतर पडे और कुबेरसिंह ने माधवी को सलाम करके कहा आज बहुत दिनों के बाद ईश्वर ने मुझे आपसे मिलाया 'मुझे इस बात का बहुत रज है कि आपने लौंडियों के भडकाने पर चुपचाप घर छोड जगल का रास्ता लिया और अपने खैरखाह कुबेरसिंह (हम) को याद तक न किया। मैं खूब जानता हू कि आपने अपने दीवान अग्निदत्त से डर कर ऐसा किया था मगर उसके बाद भी तो मुझे याद करने का मौका जरूर मिला होगा।'

माधवी–(मुस्कराती हुई कुबेरसिंह का हाथ पकड के) मैं घर से निकलने के बाद ऐसी मुसीबत में पड गयी थी कि अपनी भलाई-बुराई पर कुछ भी ध्यान न दे सकी और जब मैंने सुना कि गया और राजगृही में वीरेन्द्रसिंह का राज्य हो गया तब और भी हताश हो गई फिर भी मै अपने उद्योग की बदौलत बहुत कुछ कर गुजरती मगर गया जी में अग्निदत्त की लडकी कामिनी ने मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया और मुझे किसी लायक न रक्खा। (अपनी कटी हुई कलाई दिखाकर)यह उसी की बदौलत है।

कुबेर–यह खानदान का खानदान ही निमकहराम निकला और इसी फेर में अग्निदत्त मारा भी गया।

माधवी–हॉ उसके मरने का हाल मायारानी की सखी मनोरमा की जुबानी मैंने सुना था। (पीछे की तरफ देखकर) कौन आ रहा है ?

कुबेर–आप ही के लश्कर का कोई आदमी है शायद आपको बुलाने आता हो, नहीं वह दूसरी तरफ घूम गया मगर अब आपको कुछ सोच-विचार करना किसी से मिलना या इस जगह खडे-खडे बातों में समय नष्ट करना न चाहिये और यह मौका भी बातचीत करने का नहीं है। आप (घोडे की तरफ इशारा करके) इस घोडे पर शीघ्र सवार होकर मेरे साथ चली चले मै आपका ताबेदार सब लायक और सब कुछ करने लिये तैयार हूँ, फिर किसी की खुशामद की जरूरत ही क्या है ? यदि कल्याणसिंह के लश्कर में आपका कुछ असबाब हो तो उसकी परवाह न कीजिए।

माधवी– नहीं अब मुझे किसी की परवाह नही रही मै तुम्हारे साथ चलने को तैयार हू।

इतना कहकर माधवी कुबेरसिंह के घोडे पर सवार हो गइ कुबेरसिंह अपने ऐयार के घोडे पर सवार हुआ तथा पैदल ऐयार को साथ लिए हुए दोनों एक तरफ को रवाना हुए।

यही सबब था कि शिवदत्त वगैरह के साथ माधवी रोहतासगढ के तहखाने में दाखिल नही हुई।

तीसरा बयान

कैद से छुटकारा मिलने के बाद बीमारी के सबब से यद्यपि भीमसेन को घर जाना पडा और वहॉ उसकी बीमारी बहुत जल्दी जाती रही मगर घर में रहने का जो सुख उसको मिलना चाहिए वह न मिला क्योंकि एक तो माँ के मरने का रज और गम उसे हद्द से ज्यादे था और अब वह घर काटने को दौडता था दूसरे थोड़े ही दिन बाद बाप के मरने की खबर भी उसे पहुची जिससे वह बहुत ही उदास और बेचैन हो गया। इस समय उसके ऐयार लोग भी वहीं मौजूद थे जो बाहर से यह दु खदाई खबर लेकर लौट आये थे। पहिले तो उसके ऐयारों ने उसे बहुत समझाया और राजा बीरेन्द्रसिह स सुलह कर लेने में बहुत सी भलाइया दिखाई मगर उस नालायक के दिल में एक भी न बैठी और वह राजा बीरेन्द्रसिह से बदला लेने तथा किशोरी को जान से मार डालने की कसम खाकर घर से बाहर निकल पडा। बाकरअली खुदाबक्श अजायबसिह और यारअली इत्यादि उसके लालची ऐयारों ने भी लाचार होकर उसका साथ दिया।

अबकी दफे भीमसेन ने अपने ऐयारों के सिवाय और किसी को भी साथ न लिया, हाँ रुपै अशर्फियॉ,जवाहिरात की किस्म में से जहाँ तक उससे बना या जो कुछ उसके पास था लेकर अपने ऐयारों को लालच भरी उम्मीदों का सब्जबाग दिखाता रवाना हुआ और थोडी दूर जाने के बाद ऐयारों के साथ उसने अपनी भी सूरत बदल ली।

'राजा बीरेन्द्रसिह को किस तरह नीचा दिखाना चाहिये और क्या करना चाहिये ? इस विषय पर तीन दिन तक उन लोगों में बहस होती रही और अन्त में यह निश्चय किया गया कि राजा बीरेन्द्रसिह और उनके खानदान तथा आपुस वालों का मुकाबला करने के पहिले उनके दुश्मनों से दोस्ती बढा कर अपना बल पुष्ट कर लेना चाहिये। इस इरादे पर वे लोग बहुत कुछ कायम भी रहे और माधवी,मायारानी तथा तिलिस्मी दारोगा वगैरह से मुलाकात करने की फिक्र करने लगे।

कई दिनों तक सफर करने और घूमने फिरने के बाद एक दिन ये लोग दोपहर होते होते एक घने जगल में पहुँचे। चार-पाच घटे आराम कर लेना इन लोगों को बहुत जरूरी मालूम हुआ क्योंकि गर्मी के चलाचली का जमाना था और धूप बहुप कडी और दु खदाई थी। मुसाफिरों को तो जाने दीजिये जगली जानवरों और आकाश में उडने तथा बात की बात में दूर-दूर की खबर लाने वाली चिडियाओं को भी पत्तों की आड से निकलना बुरा मालूम होता था।

इस जगल में एक जगह पानी का झरना भी जारी था और उसके दोनों तरफ पेड़ों की घनाहट के सबब बनिस्बत और जगहों के ठढक ज्यादे थी। ये पाचों मुसाफिर भी झरने के किनारे पत्थर की साफ चट्टान देख कर बैठ गए और आपुस में इधर-उधर की बातें करने लगे। इसी समय बातचीत की आहट पाने और निगाह दौडाने पर इन लोगों की निगाह दस बारह सिपाहियों पर पडी जिन्हें देख भीमसेन चौंका और उनका पता लगाने के लिए अजायबसिह से कहा क्योंकि दोस्तों और दुश्मनों के ख्याल से उसका जी एक दम के लिए भी ठिकाने नहीं रहता था और पत्ता खडका बन्दा भडका की कहावत का नमूना बन रहा था।

भीमसेन की आज्ञानुसार अजायबसिह.ने उन आदमियों का पीछा किया और दो घण्टे तक लौट कर न आया। तब दूसरे ऐयारों को भी चिन्ता हुई और वे अजायबसिह की खोज में जाने के लिए तैयार हुए मगर इसकी नौबत न पहुची क्योंकि उसी समय अजायबसिह अपने साथ कई सिपाहियों को लिए भीमसेन की तरफ आता दिखाई दिया।

अजायबसिह के इस तरह आने ने पहिले तो सभों को खुटके में डाल दिया मगर जब अजायबसिह ने दूर ही से खुशी का इशारा किया तब सभों का जी ठिकाने हुआ और उसके आने का इन्तजार करने लगे। पास आने पर अजायबसिह ने भीमसेन से कहा, इस जगल में आकर टिक जाना हम लोगों के लिए बहुत अच्छा हुआ क्योंकि रानी माधवी से मुलाकात हो गई। आज ही उनका डेरा भी इस जगल में आया है। कुबेरसिह सेनापति और चार-पॉच सौ सिपाही उनके साथ है। जिन लोगों का मैंने पीछा किया था वे भी उन्हीं के सिपाहियों में से थे और ये भी उन्ही के सिपाही हैं जो मेर साथ आपको बुलाने के लिए आए हैं।

माधवी की खबर सुन कर भीमसेन उतना ही खुश हुआ जितना अजायबसिह की जुबानी भीमसेन के आने की खबर पाकर माधवी खुश हुई थी। अजायबसिह की बात सुनते ही भीमसेन उठ खडा हुआ और अपने ऐयारों का साथ लिए हुए घडी भर के अन्दर ही अपनी नेहया बहिन माधवी से जा मिला। ये दोनों एक दूसरे को देख कर बहुत खुश हुए मगर उन दोनो की मुलाकात कुबेरसिह को अच्छी न मालूम पडी जिसका सबब क्या था सो हमारे पाठक लोग खुद ही समझ सकते है।

थोडी देर तक भीमसेन और माधवी ने कुशल-मगल पूछने में बिताया। माधवी ने खाने पीने की चीजे तैयार करने का हुक्म दिया क्योंकि उसे अपने अनूठे भाई की खातिरदारी आज मजूर थी और इसलिए बडी मुहब्बत के साथ देर तक बातें होती रहीं।

माधवी को इस जगल में आये आज पाच दिन हो चुके है। पाचवे दिन दोपहर के समय भीमसेन से मुलाकात हुई थी। उसका (कुबेरसिह का) ऐयार दुश्मनों की खोज-खबर लगाने के लिए कहीं गया हुआ था क्योंकि माधवी और कुबेरसिह ने इस जगल में पहुचकर निश्चय कर लिया था कि पहिले दुश्मनों का हाल-चाल मालूम करना चाहिए, इसके बाद जो कुछ मुनासिब होगा किया जायगा।

चौथा बयान

कैद से छूटने के बाद लीला को साथ लिए हुए मायारानी ऐसा भागी कि उसने पीछे की तरफ फिर के भी नहीं दखा। ऑधी और पानी के कारण उन दोनों को भागने में बडी तकलीफ हुई कई दफे वे दोनों गिरीं और चोट भी लगी मगर प्यारी जान को बचाकर ले भागने के ख्याल ने उन्हें किसी तरह दम लेने न दिया। दो घण्टे के बाद ऑधी पानी काजोर जातारहा आसमान साफ हो गया और चन्दमा भी निकल आया उस समय उन दोनों को भागने में सुबीता हुआ और सवेरा होते तक ये दोनों बहुत दूर निकल गई।

मायारानी यद्यपि खूबसूरत थी, नाजुक थी और अमीरी परले सिरे की कर चुकी थी मगर इस समय ये बातें हवा हो गई। पैरों में छाले पड जाने पर भी उसने भागने मे कसर न की और सवेरा हो जान पर भी दम न लिया बराबर भागती ही चली गई। दूसरा दिन भी उसके लिये बहुत अच्छा था आसमान पर बदली छाई हुई थी और धूप को जमीन तक पहुचने का मौका नहीं मिलता था। अब मायारानी बातचीत करती हुई और पिछली बातें लीला को सुनाती हुई रुक कर चलने लगी। थोड़ी दूर जाती फिर जरा दम लेती पुन उठकर चलती और कुछ दूर बाद दम लेने के लिए बैठ जाती। इसी तरह दूसरा दिन भी मायारानी ने सफर ही में बिता दिया और खाने-पीने की कुछ विशेष परवाह न की। सध्या होन के कुछ पहिले वे दोनों एक पहाडी की तराई में पहुँची जहॉ साफ पानी का सुन्दर चश्मा बह रहा था और जगली बैर तथा मकोय के पेड़ भी बहुतायत से थे। यहॉ पर लीला न मायारानी से कहा कि अब डरने तथा चलते-चलते जान देने की कोई जरूरत नहीं, हम लोग बहुत दूर निकल आये हैं और ऐसे रास्ते से आये है कि जिधर से किसी मुसाफिर की आमदरफ्त नहीं होती अस्तु अब हम लोगों को बेफिक्री के साथ आराम करना चाहिए। यह जगह इस लायक है कि हम लोग खा-पी कर अपनी आत्मा को सन्तोष दे लें और अपनी-अपनी सूरतें भी अच्छी तरह बदल कर पहिचाने जाने का खटका मिटा लें।

लीला की बात मायारानी ने स्वीकार की और चश्मे के पानी से हाथ मुह धोने और जरा दम लेने के बाद सबके पहिल सूरत बदलने का बन्दोबस्त करने लगी क्योंकि दिन नाममात्र को रह गया था और रात हो जाने पर बिना रोशनी के सहारे यह काम अच्छी तरह नही हो सकता था।

सूरत शक्ल के हेर फेर से छुट्टी पाने बाद दोनों ने जगली बैर और मकोय को अच्छे से अच्छा मेवा समझकर भोजन किया और चश्मे का जल पीकर आत्मा को सन्तोष दिया तब निश्चित हो कर बैठी और यों बातचीत करने लगीं –

माया–अब जरा जी ठिकाने हुआ, मगर शरीर चूर-चूर हो गया। खैर किसी तरह तेरी बदौलत जान बच गई नहीं तो मैं हर तरह से नाउम्मीद हो चुकी थी और राह देखती थी कि मेरी जान किस तरह ली जाती है।

लीला–चाहे तुम्हारे बिल्कुल नौकर-चाकर तुम्हारे अहसानों को भूल जायें और तुम्हारे नमक का ख्याल न करें मगर मैं कब ऐसा कर सकती हू, मुझे दुनिया में तुम्हारे बिना चैन कब पड सकता है जब तक तुम्हें कैद से छुडा न लिया अन्न का दाना मुँह में न डाला बल्कि अभी तक जगली बैर और मकोय पर ही गुजारा कर रही हू।

माया–शाबाश मैं तुम्हारे इस अहसान को जन्म भर नहीं भूल सकती जिस तरह आप रहूँगी उसी तरह तुम्हें भी रक्खूँगी यह जान तुमने बचाई है इसलिए जब तक इस दुनिया में रहूगी इस जान का मालिक तुम्हीं को समझूगी।

लीला–(तिलिस्मी तमचा और गोली मायारानी के सामने रखकर) यह अपनी अमानत आप लीजिए और अब इसे अपने पास रखिये, इसने बड़ा काम किया।

माया–(तमचा उठाकर और थोडी सी गोली को देकर) इन गोलियों को अपने पास रक्खो बिना तमचे के भी ये बडा काम देंगी जिस तरफ फेंक दोगी या जहॉ जमीन पर पटकोगी उसी जगह ये अपना गुण दिखलावेंगी।

लीला—(गोली रखकर) बेशक ये बड़े वक्त पर काम दे सकती है। अच्छा यह कहिये कि अब हम लोगों को क्या करना और कहाँ जाना चाहिये ?

माया—इसका जवाब भी तुम्हीं बहुत अच्छा दे सकती हो मै केवल इतना ही कहूगी कि गोपालसिह और कमलिनी को इस दुनिया से उठा देना सबसे पहिला और जरूरी काम समझना चाहिए। किशोरी-कामिनी और कमला को मार कर मनोरमा ने कछ भी न किया, उतनी ही मेहनत अगर गोपालसिह और कमलिनी को मारने के लिए करती तो इस समय मै पुन तिलिस्म की रानी कहलाने लायक हो सकती थी।

लीला—ठीक है मगर मुझे (कुछ रुककर) देखो तो वह कौन सवार जा रहा है ! मुझे तो उस छोकरे रामदीन की छटा मालूम पड़ती है। यह पचकल्यान मुश्की घोडी भी आप ही के अस्तबल की मालूम पडती है। बल्कि

माया—(गौर से देखकर) वही है जिस पर मै सवार हुआ करती थी और बेशक वह सवार भी रामदीन ही है। उसे पकड़ो तो गोपालसिह का ठीक हाल मालूम हो।

लीला—पकडना तो कोई कठिन काम नहीं है क्योंकि तिलिस्मी तमचा तुम्हारे पास मौजूद है, मगर यह कम्बख्त कुछ बताने वाला नहीं है।

माया—खैर जो हो मै गोली चलाती हू।

इतना कह कर मायारानी ने फुर्ती से तिलिस्मी तमचे में गोली भर कर सवार की तरफ चलाई। गोली घोडी की गर्दन में लगी और तुरन्त फट गई घोडी भडकी और उछली-कूदी मगर गोली से निकले हुए बेहोशी के धुँए ने अपना असर करने में उससे भी ज्यादे तेजी और फुर्ती दिखाई। घोडी और सवार दोनों ही पर बेहोशी का असर हो गया। सवार जमीन पर गिर पडा और दो कदम आगे बढ़कर घोडी भी लेट गई। मायारानी और लीला ने दूर से यह तमाशा देखा और दौडती हुई सवार के पास पहुची।

लीला—पहिले इसकी मुश्कें बॉधनी चाहिए।

माया—क्या जरूरत है ?

लीला—क्यों फिर इसे बेहोश किस लिये किया ?

माया—तुम खुद ही कह चुकी हो कि यह कुछ बताने वाला नहीं है फिर मुश्कें बॉधने से मतलब ?

लीला—आखिर फिर किया क्या जायगा ?

माया—पहिले तुम इसकी तलाशी ले लो फिर जो कुछ करना होगा मै बताऊँगी।

लीला—बहुत खूब यह तुमने ठीक कहा।

इस समय सध्या पूरे तौर पर हो चुकी थी परन्तु चन्द्रदेव के दर्शन हो रहे थे इसलिए यह नहीं कह सकते कि अन्धकार पल-पल में बढता जाता था। लीला उस सवार की तलाशी लेने लगी और पहिले ही दफे जेब में हाथ डालने से उसे दो चीजें मिलीं। एक तो हीरे की कीमती अगूठी जिस पर राजा गोपालसिह का नाम खुदा हुआ था और दूसरी चीज एक चीठी थी जो लिफाफे के तौर पर लपेटी हुई थी।

चाहे अन्धकार न हो मगर चीठी और अगूठी पर खुदे हुए नाम को पढने के लिए रोशनी की जरूरत थी और जब तक चीठी का हाल मालूम न हो जाय तब तक कुछ काम करना या आगे तलाशी लेना उन दोनों को मजूर न था अस्तु लीला ने अपने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी पैदा की और मायारानी ने सबके पहिले अँगूठी पर निगाह दौड़ाई। अँगूठी पर श्री गोपाल खुदा हुआ देख उसके रोंगटे खड़े हो गये फिर भी अपनी तबीयत सम्हाल कर वह चीठी पढनी पडी, चीठी में यह लिखा हुआ था –

बेनीराम जोग लिखी गोपालसिह –

आज हमने अपना पर्दा खोल दिया कृष्णाजिन्न के नाम का अन्त हो गया जिनके लिये यह स्वाग रचा गया था उन्हें मालूम हो गया कि गोपालसिह और कृष्णाजिन्न में कोई भेद नहीं है अस्तु अब हमने कामकाज के लिए इस छोकरे को अपनी अगूठी देकर विश्वास का पात्र बनाया है। जब तक यह अँगूठी इसके पास रहेगी तब तक इसका हुक्म हमारे हुक्म के बराबर सभों को मानना होगा। इसका बन्दोबस्त कर देना और दो सौ सवार तथा चार रथ बहुत जल्द पिपलिया

घाटी में भेज देना। हम किशोरी-कामिनी-लक्ष्मीदेवी और कमलिनी वगैरह को लेकर आ रहे हैं। थोडा सा जलपान का सामान उम्दा अलग भेजना। परसों रविवार की शाम तक हम लोग वहाँ पहुच जायेंगे।

इस चीठी ने मायारानी का कलेजा दहला दिया और उसने घबडा कर इसे पढने के लिए लीला के हाथ में दे दिया।

माया–ओफ ! मुझे स्वप्न में भी इस बात का गुमान न था कि कृष्णाजिन्न वास्तव में गोपालसिह है ! आह जब मै पिछली बातें याद करती हू तो कलेजा कॉप जाता है और मालूम होता है कि गोपालसिह ने मेरी तरफ से लापरवाही नहीं की वल्कि मुझे बुरी तरह से दु ख देने का इरादा कर लिया था। किशोरी-कामिनी और कमला के बारे में भी ओफ ! बस अब मै इस जगह दम भर भी नहीं ठहर सकती और ठहरना उचित भी नहीं है।

लीला–बेशक ऐसा ही है मगर कोई हर्ज नहीं आज यदि कृष्णाजिन्न का भेद खुल गया है तो यह (अँगूठी और चीठी दिखा कर) चीजें भी बडी ही अनूठी मिल गई है। तुम बहुत जल्द देखोगी कि इस चीठी और अँगूठी की बदौलत मैं कैसे-कैसे नामी ऐयारों की ऑखों में धूल डालती हू और गोपालसिह तथा उसके सहायकों को किस तरह तडपा-तडपा कर मारती हू। तुम यह भी देखोगी कि तुम्हारे उन लोगों ने जो ऐयारी का बाना पहिने हुए थे और नामी ऐयार कहलाते थे उसका पासगा भी नहीं किया जो मै अब कर दिखाऊँगी। तो अब यहॉ से चलना चाहिये।

माया–बहुत जल्द ही चलना चाहिये, मगर क्या इस छोकरे को जीता ही छाड जाओगी ?

लीला–नहीं नहीं कदापि नहीं। क्या इसे मै इमलिये जीता छोड जाऊँगी कि यह होश में आकर जमानिया या गोपालसिह के पास चला जाय और मेरी कार्रवाइयों में बट्टा लगाए !

इतना कह कर लीला ने खजर निकाला और एक ही हाथ में बेचारे रामदीन का सिर काट दिया तब लाश को उसी तरह छोड घोडी को होश में लाने का उद्योग करने लगी।

थोडी देर में घोडी भी चैतन्य हो गई उस समय लीला के कहे अनुसार मायारानी उस घोडी पर सवार हुई और दोनों ने वहॉ से हट कर एक घने जगल का रास्ता लिया। लीला घोडी की रिकाब थामे साथ-साथ बातें करती हुई जाने लगी।

माया–यह मदद मुझे गैब से मिली है, यकायक रामदीन का मिल जाना और उसकी जेब में से अँगूठी तथा चीठी का निकल आना कह देता है कि मेरे बुरे दिन बहुत जल्द खत्म हुआ चाहते हैं।

लीला–इसमें क्या शक है ! अबकी दफे तो राजा गोपालसिह सचमुच हमारे कब्जे में आ गए हैं। अफसोस इतना ही है कि हमलोग अकेले है, अगर सौ पचास आदमियों की भी मदद होती तो आज गोपालसिह तथा किशोरी-लक्ष्मीदेवी और कमलिनी वगैरह को सहज ही में गिरफ्तार कर लेते।

माया–अब उन लोगों को गिरफ्तार करने का ख्याल तो बिल्कुल जाने दे और एकदम से उन लोगों को मार कर बखेडा निपटा डालने की ही फिक्र कर। इस अँगूठी और चीठी के मिल जाने पर यह काम कोई मुश्किल नही हैं।

लीला–ठीक है जो कुछ तुम चाहती हो मैं पहिले से समझे बैठी हू। मेरा इरादा है कि तुम्हें किसी अच्छी और हिफाजत की जगह पर छोड कर मैं जमानिया जाऊँ और दीवान साहब से मिलू जिसके नाम गोपालसिह ने यह चीठी लिखी है।

माया–बस रामदीन छोकरे की सूरत बना ले और इसी घोडी पर सवार होकर चीठी लेकर जा। इस चीठी के अलावे भी तू जो कुछ दीवान को कहेगी वह उससे इन्कार न करेगा। गोपालसिह के लिखे अनुसार जो कुछ खाने-पीने की चीजें लेकर तू उस घाटी की तरफ जायेगी उसमें जहर मिला देना तो तेरे लिए कोई मुश्किल न होगा और इस तरह एक साथ ही कई दुश्मनों की सफाई हो जायगी मगर इसमें भी मुझे एक बात का खुटका होता है।

लीला–वह क्या ?

माया–जिस वक्त से मुझे यह मालूम हुआ है कि गोपालसिह ही ने कृष्णाजिन्न का रूप धारण किया था उस वक्त से मैं उसे बहुत ही चालाक और धूर्त ऐयार समझने लग गई हू, ताज्जुब नहीं कि वह तेरा भेद मालूम कर ले या वे खाने-पीने की चीजें जो उसने मँगाई है उनमें से स्वय कुछ भी न खाय।

लीला–यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है। मेरा दिल भी यही कहता है कि उसने खाने पीने का बहुत बडा ध्यान रक्खा होगा सिवाय अपने हाथ के और किसी का बनाया कदापि न खाता होगा क्योंकि वह तकलीफें उठा चुका है, अब उसे धोखा देना जरा टेढी खीर है, मगर फिर भी तुम देखोगी कि इस अगूठी की बदौलत मैं उसे कैसा धोखा देती हू और किस तरह अपने पजे में फँसाती हूँ।

माया–खैर जो मुनासिब समझ कर, मगर इसमें तो कोई शक नहीं है कि रामदीन छोकरे की सूरत बन और घोडी

पर सवार होकर तू दीवान साहब के पास जायगी !

लीला–जाऊँगी और जरूर जाऊंगी, नहीं तो इस अगूठी और चीठी के मिलने का फायदा ही क्या हुआ !बस तुम्हें किसी अच्छे ठिकाने पर रख देने भर की देर है।

माया–मगर मै एक बात और कहा चाहती हू।

लीला–वह क्या ?

माया–मैं इस समय बिल्कुल कगाल हो रही हू और ऐसे मौके पर रूपये की बड़ी जरुरत है। इसलिए मै चाहती हूं कि दीवान साहब के पास तुझे न भेजकर खुद ही जाऊँ और किसी तरह तिलिस्मी बाग में घुसकर कुछ जवाहिरात और सोना जहाँ तक ला सकू ले आऊ क्योंकि मुझे वहा के खजाने का हाल मालूम है और यह काम तेरे किये नहीं हो सकता। जब मुझे रूपये की मदद मिल जायेगी सब कुछ सिपाहियों का भी बन्दोबस्त कर सकूगी और

लीला–यह सब कुछ ठीक है मगर मैं तुम्हें दीवान साहब के पास कदापि न जानेदूँगी। कौन ठिकाना कहीं तुम गिरफ्ता रहो जाओ तो फिर मेरे किए कुछ भी न हो सकगा। बाकी रही रुपै पैसे वाली बात सो इसके लिए तरद्दुद करना वृथा है क्या यह नही हो सकता कि जब मै दीवान साहब के पास जाऊं और सवारी इत्यादि तथा खाने पीने की चीजें लू तो एक रथ पर थोडी सी अशर्फिया और कुछ जवाहिरात भी रख देने के लिए कहू ?क्या वह इसअगूठी के प्रताप से मेरी बात न मानगा ? और अगर अशर्फिया और जवाहिरात का बन्दोबस्त कर देगा तो क्या मै उन्हें रास्ते में से गुम नहीं कर सकती ? इस भी जाने दो, अगर तुम पता-ठिकाना ठीक-ठीक बताओ तो क्या मै तिलिस्मी बाग में जाकर जवाहिरात और अशर्फिया को नही निकाल ला सकती ?

माया–निकाल ला सकती है और दीवान साहब से भी जो कुछ मागेगी,सम्भव है कि बिना कुछ विचारे दे दें, मगर इसमें मुझे दो बातों की कठिनाई मालूम पडती है।

लीला–वह क्या ?

माया–एक तो दीवान साहब के पास अन्दाजे से ज्यादे रुपये अशर्फियों की तहवील नहीं रहती और जवाहिरात तो बिल्कुल ही उसके पास नहीं रहता शायद आज कल गोपालसिह के हुक्म से रहता हो मगर मुझे उम्मीद नहीं है, अस्तु, जो चीज तू उससे मागेगी वह अगर उसके पास न हुई तो उसे तुझ पर शक करने की जगह मिलेगी और ताज्जुब नहीं कि काम में विघ्न पड जाय।

लीला–अगर ऐसा है तो जरूर खुटके की बात है अच्छा दूसरी बात क्या है ?

माया–दूसरे यह कि तिलिस्मी बाग के खजाने में घुसकर वहा से कुछ निकाल लाना नये आदमी का काम नहीं है। खैर मैं तुझे रास्ता बता दूँगी फिर जो कुछ करते बने कर लीजियो।

लीला–खैर जैसा होगा देखा जायगा मगर मै यह राय कभी नहीं दे सकती कि तुम दीवान साहब के सामने या खास बाग में जाओ ज्यादे नहीं तो थोडा-बहुत मैं ले ही आऊगी।

माया–अच्छा यह बता कि मुझे कहा छोड़ जायेगी और तेरे जाने के बाद मै क्या करूगी ?

लीला–इतनी जल्दी में कोई अच्छी जगह तो मिलती नहीं किसी पहाड़ की कन्दरा में दो दिन गुजारा करो और चुपचाप बैठी रहो इसी बीच में मैं अपना काम करके लौट आऊँगी। मुझे जमानिया जाने में अगर देर हो जायगी तो काम चौपट हो जायगा। ताज्जुब नहीं कि देर हो जाने के कारण गोपालसिह किसी दूसरे को भेज दें और अगूठी का भेद खुल जाय।

इत्तिफाक अजब चीज है। उसने यहाँ भी एक बेढब सामान खड़ाकर दिया। इत्तिफाक से लीला और मायारानी भी उसी जगल में पहुचीं जिसमें माधवी और भीमसेन का मिलाप हुआ था और वे लोग अभी तक वहा टिके हुए थे।

पांचवां बयान

आधी रात का समय था जब लीला और मायारानी उस जगल में पहुची जिसमें माधवी और भीमसेन टिके हुए थे। जब ये दोनों उसके पास पहुची और लीला को वहा टिके हुए बहुत से आदमियों की आहट मिली तो वह मायारानी को एक ठिकाने खडा करके पता लगाने के लिए उनकी तरफ गई।

हम ऊपर बयान कर चुके है कि सेनापति कुबेरसिह के साथ थोडी सी फौज भी थी – अस्तु लीला को थोडी ही कोशिश से मालूम हो गया कि यहा सैकडों आदमियों का डेरा पडा हुआ है और वे लोग इस ढग से घने जगल में आड देख टिके हुए है जैसे डाकुओं का गिरोह या छिप कर धावा मारने वाले टिकते है और हर वक्त होशियार रहते है। लीला खूब जानती थी कि राजा बीरेन्द्रसिह और उनके साथी या सम्बन्धी अगर किसी काम के लिए कहीं जाते है या लडाई करते है तो छिप कर या आड पकड कर डेरा नहीं डालते,हा अगर अकेले या ऐयार लोग हों तो शायद ऐसा करेंगे, मगर जब उनके साथ सौ पचास आदमी या कुछ फौज होगी तब कदापि ऐसा न करेंगे, इसलिए उसे गुमान हुआ कि ये लोग जरूर कोई गैर है बल्कि ताज्जुब नहीं कि हमारा साथ देने वाले हों अस्तु बहुत सी बातों को सोच-विचार और अपनी ऐयारी पर भरोसा करके लीला,माधवी की फौज में घुस गई और वहा बहुत से सिपाहियों को होशियार तथा पहरा देते हुए देखा।

पहिले लिखा जा चुका है कि लीला भेष बदले हुए थी और यह भी दर्शाया गया कि माधवी और कुबेरसिह अपनी असली सूरत में सफर करते थे।

लीला को कई सिपाहियों ने देखा और एक ने टोका कि कौन है ?

लीला–एक मुसाफिर परदेसी औरत।

सिपाही–यहा क्यों चली आ रही है ?

लीला–अपनी भलाई की आशा से।

सिपाही–क्या चाहती है।

लीला–आपके सरदार से मिलना।

सिपाही–अपना परिचय दे तो सरदार के पास भेजवा दूँ।

लीला–परिचय देने में कोई हर्ज तो नही है मगर डरती हूँ कि आप लोग भी कहीं उन्हीं में से न हों जिन्होंन मुझे लूट लिया है, यद्यपि अब मै बिल्कुल खाली हो रही हू मगर

इतने में और भी कई सिपाही वहा जुट आये और सभों ने लीला को घेर कर सवाल करना शुरु किया और लीला ने भी गौर करके जान लिया कि ये लोग राजा बीरेन्द्रसिह के दल वाले नहीं है क्योंकि उनके फौजी सिपाही अक्सर जर्द पोशाक काम में लाते है इसी तरह से जमानिया वाले भी नहीं मालूम हुए क्योंकि उनकी बातचीत और चाल-ढाल को लीला खूब पहिचानती थी अस्तु कुछ और बातचीत होने पर लीला को विश्वास हो गया कि ये लोग उनमें से नहीं है जिनका मुझे डर है।

उन सिपाहियों को भी एक अकेली औरत से डरने की कोई जरुरत न थी इसलिए उन्होंने अपने मालिक का नाम जाहिर कर दिया और लीला को लिये हुए उस जगह जा पहुचे जहा माधवी और भीमसेन का बिस्तर लगा हुआ था और ये दोनो इस समय भी बैठे बातचीत कर रहे थे। लालटेन जलाया गया और लीला की सूरत अच्छी तरह देखी गयी, लीला ने भी उसी रोशनी में माधवी को पहिचान लिया और खुश होकर बोली "अहा आप तो गया रानी माधवीदेवी है !!

माधवी–और तू कौन है?

लीला–मै प्रसिद्ध मायारानी की ऐयारा हू और उन्हीं के साथ यहा तक आई भी हू। यह दुनिया का कायदा है कि एक से दूसरे को मदद पहुँचती है अस्तु जिस तरह आपको मायारानी से मदद पहुच सकती है उसी तरह आप मायारानी की भी मदद कर सकती है। वाह वाह यह समागम तो बहुत ही अच्छा हुआ ! अगर आजकल मायारानी मुसीबत के दिन काट रही है तो क्या हुआ? मगर फिर भी वह तिलिस्म की रानी रह चुकी है और जो कुछ वह कर सकती है किसी दूसरे से नहीं हो सकता।आपलोगों का मिल कर एक हो जाना बहुत ही मुनासिब होगा और तब आप लोग जो चाहेंगी कर सकेंगी।

माधवी–(खुश होकर) मायारानी कहा है ? उन्हें तो राजा बीरेन्द्रसिह कैद करके चुनार ले गये थे।

लीला–जी हा मगर मै अभी कह चुकी हू कि मायारानी आखिर तिलिस्म की रानी है इसलिए जो कुछ वह कर सकती है किसी दूसरे के किए नहीं हो सकता। राजा बीरेन्द्रसिह ने उन्हें कैद किया तो क्या हुआ उनका छूटना कोई मुश्किल न था !

माधवी–बेशक बेशक, अच्छा बताओ वह कहा है ?

लीला–यहा से थोडी दूर पर खडी है किसी सरदार को भेजिये उनका इस्तकबाल करके यहा ले आवे, दो तीन सौ कदम से ज्यादे न चलना पडेगा।

माधवी–मै खुद उन्हें लेने के लिए चलूगी।

लीला–इससे बढ कर और क्या हो सकता है ? अगर आप उनकी इज्जत करेंगी तो वह भी आपके लिए जान तक

देना जरूरी समझूंगी।

लीला ने अपनी लम्बी चौडी बातों में माधवी को खूब उलझाया यहा तक कि माधवी अपने साथ भीमसेन और कुबेरसिह तथा कई सिपाहियों को ले कर मायारानी के पास गई और इज्जत के साथ अपने डेरे पर ले गई। जल मगवा कर हाथ मुँह धुलवाया और फिर बातचीत करने लगी।

माधवी–(मायारानी से) आपको वीरेन्द्रसिंह की कैद से छूट जाने पर मै मुबारकबाद देती हूँ यद्यपि आपके लिए यह कोई बडी बात न थी।

माया–बेशक यह कोई बडी बात न थी इस काम को तो अकेली मेरी सखी या ऐयारा लीला ही ने कर दिखाया। इस समय आपसे मिल कर मै बहुत खुश हुई और इसमें अब शक करने की कोई जगह न रही कि आप पुन गया की रानी और मै जमानिया की मालिक बन जाऊगी। दुनियाँ में एक का काम दूसरे से हुआ ही करता है और जब हम आप एक दिल हो जायगे तो वह कौन सा काम है जिसे नहीं कर सकते ! मुझे आपके कैद होने की भी खबर लगी थी और मुझे इस बात का बहुत रज था कि आपको मेरी छोटी बहिन कमलिनी ने कैदखाने की सूरत दिखाई थी।

माधवी--इधर तो यह सुनने मे आया है कि आपसे और कमलिनी से कोई नाता नही है और लक्ष्मीदेवी भी प्रकट हो गई है तथा उसे राजा वीरेन्द्रसिह चुनार ले गये है।

माया–(मुस्कुरा कर) बेशक एसा ही है, मगर जिस जमाने का मै जिक्र कर रही हू उस जमाने में वह मेरी ही बहिन कहलाती थी, और लक्ष्मीदेवी को राजा वीरेन्द्रसिह चुनार नहीं ले गये है वह तो किशोरी, कामिनी, कमलिनी लाडिली और कमला के सहित किसी दूसरी ही जगह छिपाई गई है मगर इसमें भी कोई सन्देह नहीं है कि कल शाम को गोपालसिह उन सभों को जमानिया की तरफ ले जायेंगे और हम लोग उन्हें गोपालसिह के सहित रास्ते ही में गिरफ्तार कर लेंग।

माधवी–(ताज्जुब से) हा ! क्या कल मै दुष्टा किशोरी की नापाक सूरत देख सकूंगी ! उस पर मुझे बडा रज है और कमलिनी ने तो मुझे कैद ही किया था।

माया–बेशक कल किशोरी और कमलिनी इत्यादि तुम्हारे कब्जे में होंगी और गोपालसिह भी तुम्हारे काबू में होगा जो वीरेन्द्रसिह और उनके लडकों की बदौलत तुम्हारा सबसे बडा दुश्मन हो रहा है !

माधवी–नि सदेह वह मेरा और तुम्हारा सबसे बडा दुश्मन है तो क्या उसकी गिरफ्तारी का इन्तजाम हो चुका है ?

माया–हा चौदह आना इन्तजाम हो चुका और जो दो आना बाकी है सो वह भी हो जायगा।

माधवी–क्या बन्दोबस्त हुआ है और किस समय तथा किस तरह वे लोग गिरफ्तार किये जायगे ?

माधवी–(इधर-उधर देख कर) बहुत सी बाते ऐसी है जो मै केवल तुम्हीं से कहूगी क्योंकि कोई दूसरा उसके सुनने का अधिकारी नही है।

माधवी–बहुत अच्छा यह कोई बडी बात नहीं है।

इतना कह कर माधवी ने भीमसेन और कुबेरसिह की तरफ देखा क्योंकि माधवी मायारानी और लीला के सिवाय केवल ये ही दो आदमी वहा मौजूद थे। भीमसेन ने कहा हम दोनों यहा से हट जाते है तुम लोग बेधडक बातें करो मगर (मायारानी से) मेरे एक सवाल का जवाब पहिले मिलना चाहिए।

माया–वह क्या ?

भीम–आप अभी कह चुकी हैं कि कल किशोरी कामिनी और लक्ष्मीदेवी वगैरह गिरफ्तार हो जायगी मगर मैंने सुना था कि राजा वीरेन्द्रसिह के लश्कर में पहुच कर मनोरमा ने किशोरी, कामिनी और कमला को जान से मार डाला अब इस समय कोई और ही बात सुनने में आ रही है।

माधवी–हा यह सवाल मै भी करने वाली थी लेकिन बातों का सिलसिला दूसरी तरफ चला गया और मै पूछना भूल गई।

माया–हा यह बात अच्छी तरह सुनने में आई थी और मुझे विश्वास भी हो गया था कि वास्तव मे ऐसा ही हुआ है। मगर आज यह बात खुद गोपालसिह की लिखावट से खुल गई कि वास्तव में वे तीनों मारी नहीं गईं परन्तु मुझे यह मालूम नहीं है कि इस विषय में किस तरह की चालाकी खेली गयी या मनोरमा ने जिन्हें मारा वह कौन थीं।

भीम–तो निश्चय है कि वे तीनों मारी नहीं गईं ?

माया–बेशक वे तीनों जीती है। (गोपालसिह वाली चीठी दिखा कर) देखो एक ही सबूत में मै तुम्हारी दिलजमई कर देती हू, इसे पढो और माधवी रानी को सुनाओ। (माधवी से) देखो बहिन तुम इस बात का ख्याल न करना कि मै

तुम्हे आप दर कर मन्दाश्त नहीं करती मेरा तुम्हारा अब दोस्ती और मुहब्बत का नाता हो चुका इसलिए अब इन बातों का ख्याल नहीं हो सकता

माधवी–मैं भी यह पसन्द करती हू और इस बारे में अपने लिए भी तुमसे पहिले ही माफी मांग लेती हू ।

भीमसेन ने पत्र पढ़ा और माधवी को सुनाया ।

भीम–इस पत्र से बड़ा काम निकल सकता है ! यह कब का लिखा है और तुम्हारे हाथ क्योंकर लगा तथा जिस अगूठी का इसमें जिक्र किया गया है वह कहा है ?

माया–(अगूठी दिखा कर) अगूठी भी मुझे मिल गई है और यह चीठी आज ही लिखी और आज ही मेरे हाथ लगी है । अभी इसकी कारवाई बिल्कुल बाकी है ।

भीम–अफसोस इतना ही है कि मेरे ऐयारों में से कोई भी रामदीन को नहीं जानता

माया–क्या हर्ज है यह मेरी ऐयारा लीला बखूबी उसकी तरह बन कर काम निकाल सकती है तुम्हारे ऐयार इसकी मदद पर मुस्तैद रह सकते हैं और यह जब रामदीन की सूरत बनेगी तो इसे अच्छी तरह देख भी सकते हैं ।

भीम–(चीठी मायारानी के हाथ में देकर) अच्छा अब तुम दोनों को जो कुछ गुप्त बातें करनी है कर लो पीछे मैं इस विषय में कुछ कहूं-सुनूगा।

इतना कह कर भीमसेन उठ खड़ा हुआ और कुबेरसिह को साथ लिए हुए कुछ दूर चला गया और मौका समझ कर लीला भी कुछ पीछे हट गई ।

माया–जो कुछ पीछे कहो-सुनोगी उसे मैं पहिले ही निपटा देना चाहती हू । सच पूछो तो मेरी और तुम्हारी अवस्था बराबर है तुम भी विधवा हो और मैं भी विधवा हू, क्योंकि मैं वास्तव में गोपालसिह की स्त्री नहीं हू और यह बात सभों को मालूम हो गई बल्कि तुम भी सुन ही चुकी होगी ।

माधवी–हा मैं सुन चुकी हू, और मैंने यह भी सुना था कि तुमने राजा गोपालसिह को वर्षों तक कैद कर रक्खा था पर आखिर कमलिनी ने उन्हें छुड़ा दिया । तो तुमने ऐसा क्यों किया और उन्हें मार ही क्यों न डाला ?

माया–यही मुझसे भूल हो गई । तिलिस्म के दो-चार भेद जो मुझे मालूम न थे जानने के लिए मैंने ऐसा किया था मुझे उम्मीद थी कि वह कैद की तकलीफ उठा कर बता देगा । तब उसे मार डालती तो आज यह दिन देखना नसीब न होता, मैं तिलिस्म की बदौलत अकेली ही राजा वीरेन्द्रसिह जैसे दस को जहन्नुम में पहुचा देने की ताकत रखती थी । अब भी अगर गोपालसिह को मैं पकड़ पाऊ और मार सकू तो पुन तिलिस्म की रानी होने से मुझे कोई भी नहीं रोक सकता और तब मैं बात की बात में तुम्हें राजगृही और गया की रानी बना सकती हू, मगर उस बात का सिलसिला तो टूटा ही जाता है। तुम भी विधवा हो और मैं भी विधवा हू, तुम भी नौजवान और आशिक-मिजाज हो तथा मैं भी नौजवान और आशिक-मिजाज हू, तुम भी इन्द्रजीतसिह के फेर में पड़ कर दुख भोग रही हो और मैं भी आनन्दसिह की मुहब्बत में इस दशा तक आ पहुची हू, अब भी मेरी और तुम्हारी किस्मतों का फैसला एक साथ और एक ही ठिकाने हो सकता है क्योंकि इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह भी आजकल जमानिया ही में तिलिस्म तोड़ रहे है अगर आज हम तुम एक होकर काम करें तो बहुत जल्द दुश्मनों का नामोनिशान मिटा कर अपने प्यारों के साथ दुनिया का सुख भोग सकती हैं मगर मुझे इस समय तुम्हारे दो कटक दिखाई देते है ।

माधवी–हा एक तो मेरा भाई भीमसेन और दूसरा मेरा सेनापति कुबेरसिह मगर तुम इन दोनों का कुछ भी खयाल न करो इस समय हमें इन दोनों को मिलाजुला कर काम ले लेना चाहिए,फिर तुम जैसा कहोगी वैसा किया जायगा ।

माया–शाबाश-शाबाश ! यही मालूम करने के लिए मैं तुमसे निराले में बातचीत करना चाहती थी क्योंकि ये बातें ऐसी है कि सिवाय मेरे और तुम्हारे किसी तीसरे को न जानना ही अच्छा है ।

माधवी–निःसन्देह ऐसा ही है, हम दोनों के दिल की बातें हवा को भी न मालूम होनी चाहिए । आज बड़ी खुशी का दिन है कि हम दोनों जो एक ही तरह का दिल रखती है यहा पर आ मिली है अब हम दोनों को हमेशा मेल मिलाप रखने और समय पड़ने पर एक दूसरे की मदद करने के लिए कसम खाकर मजबूत हो जाना चाहिए ।

पाठक मायारानी और माधवी दोनों ही अपना मतलब देख रही है । दोनों ही धूर्त दोनों ही खुदगरज और दोनों ही विश्वासघातिनी हैं । इस समय कुछ देर तक दोनों में घुलघुल कर बातें होती रहीं कसमें भी हुए और कसमें भी खाई गई । इसके बाद फिर भीमसेन और कुबेरसिह बुलाए गए तथा लीला भी आ गई और आपस में बातें होने लगीं

भीम–अच्छा तो अब क्या निश्चय किया जाता है ? राजा गोपालसिह की चीठी लेकर जमानिया कौन जायगा और क्या होगा ?

माया–पहिले तुम अपनी राय दो।

भीम–मेरी राय ता यह है कि लीला रामदीन की सूरत वन, दीवानसाहब के पास जाय और वहा से उनकी फरमाइश लेकर पिपलिया घाटी पहुचे और हम लाग भी अपनी फौज लेकर वहीं मौजूद रहें। लीला को यह करना चाहिए कि उन दो सौ सवारों को जिन्हें जमानिया से अपने साथ लायेगी किसी वहाने से पीछे टिकवा दे जिसमें गोपालसिह के पहुचते ही हम लोग बात ही वात में उन सभों को गिरफ्तार कर लें या मार डालें।

माया–मगर यह बात मुझे नापसन्द है क्योंकि एक तो उसके लिखे अनुसार फौज 'पिपलिया घाटी, तक जरुर जायगी, अगर मान लिया जाय कि नकली रामदीन के हुक्म से फौज पीछे रह भी जाय और तुम लोग उन सभों का गिरफ्तार कर लो,तो भी हमारा काम न निकल सकेगा क्योंकि राजा गोपालसिह के पकड़े या मारे जाने की खबर दीवान को तुरन्त लग जायगी और वह अपनी फौज को दुरुस्त करके लडने के लिये तैयार हो जायगा और हम लोगों को जमानिया के अन्दर कभी घुसने न देगा। कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह भी जमानिया ही में तिलिस्म क अन्दर है, वे दोनों भी लड़ने भिडने के लिए तैयार हो जायग और उस समय हम लोग फिर लडूरे ही रह जायगे इतना बखेडा करने का कुछ फायदा न निकलेगा, न तो जमानिया की गद्दी मिलेगी और न गया का राज्य।

भीम–तब आप ही कहिए कि क्या करना चाहिये ?

माया–(कुवेर से) इस वक्त आपके पास कितनी फौज है।

कुबेर–पाच सौ।

माया–(माधवी से) ऐसा करना चाहिए किहम, तुम भीमसेनऔर कुवेरसिह चारों आदमी जमानिया वाले तिलिस्मी बाग के अन्दर जा घुसें और इन पाच सौ आदमियों को इस तरह तिलिस्मी बाग के अन्दर ले चले और छिपा रक्खें कि किसी को कानों कान खबर न हो क्योंकि उस वाग में इतने आदमियों को छिपा रखने की जगह है और वह बाग भी इस लायक है कि अगर मै उसके अन्दर मौजूद रहू तो चाहे कैसा ही जर्वदस्त दुश्मन हो और चाहे कितनी हीज्यादे फौज लेकर क्यों न चढ आवे मगर वाग के अन्दर किसी की नजर तक पहुचने न दूँ।

माधवी–बेशक वह वाग एसा ही सुनने में आया हे और तुम तो वहा की रानी ही ठहरीं तथा तुम्हें वहा के सव भेद मालूम भी है अच्छा तब ?

माया–जब किशोरी और कमलिनी इत्यादि को लेकर गोपालसिह जमानिया जायगा तो नि सन्देह सभों को लिए हुए उसी बाग में पहुँचेगा बस उस समय हम लोग जो छिप हुए रहेंगे निकल आवेंग और वात की वात में सभों को मार लेंगे। ऐसा होने से जमानिया में दखल भी बना रहेगा और इन्दजीतसिह तथा आनन्दसिह भी कब्जे में आ जायगें।

माधवी–(खुश होकर) वात तो वहुत ठीक है मगर हमलोग इतने आदमियों को लकर चुपचाप उस बाग के अन्दर किस तरह पहुच सकते है ?

माया–इसका बन्दोबस्त इस तरह हो सकता हे कि हम तुम भीमसेन और कुबेरसिह एक साथ ही भेष बदल कर लीला क साथ जमानिया जाय और लीला दीवान साहब से कहे कि गोपाल सिह ने इन सभों अर्थात हम लागों को खास बाग के अन्दर पहुँचा देने का हुक्म दिया है। वस इतना कहकर हम लोगों को उस वाग के अन्दर पहुँचा दे क्योंकि दीवान इस नकली रामदीन की वात अगूठी की वरकत से टाल न सकेगा और रामदीन पहिले भी खास बाग के अन्दर आता जाता था यह वात दीवान जानता है। जब हम लोग उस बाग क अन्दर जा पहुँचेंगे तो एक गुप्त रास्ते से कुल फौज को वाग के अन्दर ले लेंग। इन फौजी सिपाहियों को उस सुरग के मुहाने का पता बता दिया जायगा जिसकी राह से हम सभों को खास बाग के अन्दर पहुँचावेंग।

माधवी–यह वात तो तुमने वहुत ही अच्छी सोची !

भीम–इससे बढकर और कोई तरकीब फतह पाने के लिए हो ही नहीं सकती !

कुवेर–और ऐसा करने में कोई टण्टा भी नहीं है।

लीला–बस अब इसी राय को पक्की रखिए।

इसके बाद फिर सभों में वातचीत और राय होती रही यहा तक कि सवेरा हो गया। मायारानी माधवी भीमसेन और कुबेरसिह ने सूरतें बदल लीं और लीला भी रामदीन बन बैठी। भीमसेन के चारों एयारों को सुरग का पता ठिकाना अच्छी तरह बता दिया गया और कह दिया गया कि उसी ठिकाने सुरग के मुहाने पर फौजी सिपाहियों को लेकर इन्तजार करना, इसके बाद मायारानी माधवी भीमसेन कुवेरसिह और लीला ने घोडों पर सवार होकर जमानिया का रास्ता लिया।

छठवां बयान

दिन दो पहर से कुछ ज्यादे ढल चुका था,जब जमानिया में दीवान साहब को रामदीन के आने की इत्तिला मिली। दीवान साहब ने रामदीन को अपने पास बुलाया और उसने दीवान साहब के सामने पहुच कर गोपालसिह की चीठी उनके हाथ में दी तथा जब वे चीठी पढ चुके तो अगूठी भी दिखाई। दीवान साहब ने नकली रामदीन से कहा महाराज का हुक्म हम लोगों के सर आखों पर तुम अगूठी को पहिन लो और हम लोगों को अपने हुक्म का पाबन्द समझो ! सवारी और सवारों का इन्तजाम दोघडी के अन्दर हो जायगा। तुम यहा रहोगे या सवारों के साथ जाओगे ?"

रामदीन ने कहा 'मैं सवारों के साथ ही राजा साहब के पास जाऊगा मगर इस समय चार आदमियों को खास बाग के अन्दर पहुचा कर उनके खाने पीने का इन्तजाम कर देना है जैसा कि हमारे राजा साहब का हुक्म है।'

दीवान–(ताज्जुब से) खास बाग के अन्दर ?

रामदीन–जी हा।

दीवान–और वे चारों आदमी है कहा पर ?

रामदीन–उन्हें मैं बाहर छोड आया हू।

दीवान–(कुछ सोच कर) खैर जो राजा साहब ने हुक्म दिया हो या जो तुम्हारे जी में आवे करो अब हम लोगों को तो रोकने-टोकने का अधिकार ही नहीं रहा।

रामदीन सलाम करके उठ खडा हुआ और अपने चारों साथियों को लेकर तिलिस्मी बाग के अन्दर चला गया जहा इस समय बिल्कुल ही सन्नाटा था। अगूठी के खयाल से उसे किसी ने भी नहीं रोका और मायारानी बेखटके अपने ठिकाने पहुच गई तथा लुकने छिपने और दरवाजों को बन्द करने लगी।

अब हम रामदीन के साथ राजा गोपालसिह की तरफ रवाना होते है और देखते हैं कि बनी बनाई बात किस तरह चौपट होती है।

सध्या होने से पहिले खाने पीने का सामान चार रथ और दो सौ सवारों को लेकर नकली रामदीन पिपलिया घाटी की तरफ रवाना हुआ और दूसरे दिन दोपहर के बाद वहा पहुचा।

आज ही सध्या होने के पहिले राजा गोपालसिह यहा पहुचने वाले थे यह बात रामदीन की जुबानी सभों को मालूम हो चुकी थी और सभी आदमी उनके आने का इन्तजार कर रहे थे।

सध्या हो गई चिराग जल गया, पहर रात गई दो पहर रात गुजरी आखिर तमाम रात बीत गई मगर राजा गोपालसिह न आये इसलिए नकली रामदीन के ताज्जुब का तो कहना ही क्या ? सनके दिल में तरह तरह की बातें पैदा होन लगीं, मगर इसके अतिरिक्त जितने फौजी सवार तथा लोग साथ आये थे उन सभों को बहुत ताज्जुब हुआ और वे घडी-घडी राजा साहब के न आने का सबब उससे पूछने लगे, मगर रामदीन क्या जवाब देता ? उसे इन बातों की खबर ही क्या थी !

दूसरे दिन सध्या के समय राजा गोपालसिह घोडे पर सवार यहा आ पहुचे, मगर अकले थे साईस तक साथ में न था। सिपाहियाना ठाठ से बेशकीमत कपडों के ऊपर तिलिस्मी कवच,खजर और ढाल तलवार लगाये बहुत ही सुन्दर तथा रोआबदार मालूम होते थे। सभों ने झुक कर सलाम किया और नकली रामदीन ने आगे बढ कर घोड़े की लगाम थाम ली तथा उसकी गर्दन पर दो चार थपकी देकर कहा 'आश्चर्य है कि आपके आने में पूरे आठ पहर की देर हो गई और फिर भी अकेले ही है !

यह सुन कर राजा साहब ने कई पल तक रामदीन का मुहं देखा और तब कहा हा किशोरी,कामिनी और लक्ष्मीदेवी वगैरह ने हमारे साथ आने से इन्कार किया इसलिए हम अकेले ही आये है और हमारे जाने में रात भर की देर है। इस समय हम किसी काम को जाते हैं सवेरे यहा आयेगे तब तक तुम सभों को इस घाटी में टिके रहना होगा !

रामदीन–घोडों का दाना तो सिर्फ एक दिन का आया था, और सवार लोग भी

गोपाल–खैर क्या हर्ज है घोडे चराई पर गुजारा कर लेंगे और सवार लोग रात भर फाका करगे।

इतना कह कर राजा गोपालसिह ने घोडे की बाग मोडी और जिधर से आये थे उसी तरफ तेजी के साथ रवाना हो गये। रामदीन चुपचाप ज्यों का त्यों खड़ा उनकी तरफ देखता ही रह गया और जब वे नजरों की ओट हो गये तब उसने

सभों को राजा साहब का हुक्म सुनाया और इसके बाद अपने बिछावन पर जाकर सोचने लगा–

गोपालसिह की बातें कुछ समझ में नहीं आतीं और न उनके इरादे का ही पता लगता है ! लक्ष्मीदेवी और कमलिनी वगैरह को न मालूम क्यों छोड आये और जब उन्होंने इनके साथ आने से इनकार किया तो इन्होंने मान क्यों लिया ? क्या अब लक्ष्मीदेवी का ओर इनका साथ न होगा ? अगर ये अकेले जमानिया गए तो क्या केवल इन्हीं के साथ वह सलूक किया जायगा जो हम सोच चुके हैं ? मगर कमलिनी वगैरह का बचे रह जाना तो अच्छा नहीं होगा। लेकिन फिर क्या किया जाय लाचारी है हा एक बात का इन्तजाम तो कुछ किया ही नहीं गया और न पहिले इस बात का विचार ही हुआ। जमानिया पहुचने पर जब दीवान साहब की जुबानी गोपालसिह को यह मालूम होगा कि रामदीन ने चार आदमियों को खास बाग के अन्दर पहुचाया है तब यह क्या सोचेंगे और पूछने पर मुझसे क्या जवाब पावेंगे ? कुछ भी नहीं। इस बात का जवाब देना मेरे लिए कठिन हो जायगा। तब फिर खास बाग पहुचने के पहिले ही मेरा भाग जाना उचित होगा ? आफ बडी भूल हो गई यह बात पहिले न सोच ली ! दीवान साहब को बिना कुछ कहे ही उन सभों को खास बाग में पहुचा देना मुनासिब होता। मगर ऐसा करने पर भी तो काम नहीं चलता। अगर दीवान साहब को नहीं तो खास बाग के पहरेदारों को तो मालूम ही हो जाता कि रामदीन चार आदमियों को बाग के अन्दर छोड गया है और उन्हीं की जुबानी यह बात राजा साहब को भी मालूम हो जाती। बात एक ही थी सबसे अच्छा तो तब होता जब लोग किसी गुप्त राह से बाग के अन्दर जाते मगर यह असम्भव था क्योंकि जरुर भीतर से सभी रास्ते गोपालसिह ने बन्द कर रक्खे होंगे। तब क्या करना चाहिये ? हा भाग ही जाना सबसे अच्छा होगा। मगर मायारानी को भी तो इस बात की खबर कर देनी चाहिए। अच्छा तब जमानिया होकर और मायारानी को कह सुन कर भागना चाहिए। नहीं अब तो यह भी नहीं हो सकता क्योंकि मायारानी फौजी सिपाहियों को बाग के अन्दर करके,साथियों समेत कहीं छिप गई होगी और मैं उस भाग के गुप्त भेदों को न जानने के कारण इस लायक नहीं हू कि मायारानी को खोज निकालू और अपने दिल का हाल उनसे कहू या उन्हीं के साथ आप भी छिप रहू। आफ ! वह तो मजे में अपने ठिकाने पहुच गई मगर मुझे आफत में डाल गई। खैर अभी तो नहीं मगर गोपालसिह को जमानिया की हद्द में पहुचा कर जरुर भाग जाना पडेगा। फिर जब मायारानी उन्हें मार कर अपना दखल जमा लेंगी तब फिर उनसे मुलाकात होती रहेगी।

इन्हीं विचारों में लीला (नकली रामदीन) ने तमाम रात आखों में बिता दी। सवेरा होने के पहिले ही वह जरूरी कामों से छुट्टी पाने लिए घोडे पर सवार होकर दूर चली गई और घण्ट भर बाद लौट आई।

सातवां बयान

दिन अनुमान से दो घडी चढ चुका होगा जब राजा गोपालसिह दो आदमियों को साथ लिए हुए धीरे धीरे आते दिखाई पडे। वे दोनों भैरोसिह और इन्द्रदेव थे और पैदल थे। जब तीनों उस ठिकाने पहुच गये जहा राजा साहब के रथ और सवार लोग थे तब राजा साहब ने अपना घोडा छोड दिया और उस पर भैरोसिंह को सवार होने के लिए कहा तथा और सवारों को भी घोडों पर सवार हो जाने के लिए इशारा किया, इसके बाद स्वय एक रथ पर सवार हो गये और इन्द्रदेव को भी उसी पर अपने साथ बैठा लिया बाकी तीन रथ खाली ही रह गये। सवारी धीरे धीरे जमानिया की तरफ रवाना हुई और फौजी सवार खूबसूरती के साथ राजा साहब को घेरे हुए धीरे धीरे जैसा कि रथ जा रहा था जाने लगे। भैरोसिह अपना घोडा बढा कर नकली रामदीन के पास चला गया जो उसी पचकल्यान घोडी पर सवार था और उसके साथ जाने लगा। यह बात लीला को बहुत बुरी मालूम हुई क्योंकि वह राजा वीरेन्द्रसिह के ऐयारों से बहुत डरती थी। थोडी देर तक चुप रहने के बाद वह बोली –

लीला-(भैरो से) आपने राजा साहब का साथ क्यों छोड दिया ?

भैरो–(हस कर) तुम्हारा साथ करने के लिये, क्योंकि मैं अपने दोस्त रामदीन को अकेला नहीं छोड सकता।

लीला-और जब मुझे राजा साहब ने अकेले जमानिया भेजा था तब आप कहा डूब गये थे ?

भैरो–तब भी मैं तुम्हारे साथ था मगर तुम्हारी नजरों से छिपा हुआ था।

लीला-(डर कर मगर अपने को सम्हाल कर) परसों तुम कहा थे ? कल कहा थे और आज सवेरा होने के पहिले तक कहा गायब थे ? क्यों झूठी बात बना रहे हो ?

भैरो–परसों भी कल भी और आज भर भी मैं तुम्हारे साथ ही था।मगर तुम्हारी नजरों से छिपा हुआ था हा जब दो घण्टे रात बाकी थी तब मैंने तुम्हारा साथ छोड दिया और राजा साहब से जा मिला। अब मैं फिर तुम्हारे साथ जा रहा हू

क्योंकि राजा साहब का ऐसा ही हुक्म है (हस कर) क्योंकि राजा साहब ने सुना है कि तुम्हारा इरादा जमानिया पहुचने के पहिले ही भाग जाने का है !

लीला-(अपने उछलते कलेज को राक कर) यह उनसे किसने कहा ?

भैरो—मैंने ?

लीला-और तुम्हें किसने खबर दी ?

भैरो—तुम्हारे दिल ने।

लीला-मानों मरे दिल क आप भेदिया ठहरे !

भैरो—वेशक एसा ही है। अगर तुम्हें ऐयारी का ढग पूरा पूरा मालूम होता तब तुम्हारा दिल मजबूत होता मगर तुम्हारी ऐयारी अभी बिल्कुल कच्ची है। अहा एक वात तुमसे कहना तो मै भूल ही गया जिस रात मायारानी राजा वीरन्द्रसिह के लश्कर से भाग गई थी उसी रोज सवेरा होने के पहिले ही यह खबर राजा गोपालसिह को मालूम हो गई।

लीला-(कापती हुई और लडखडाती आवाज में) यह तो मुझे भी मालूम है, मगर तुम्हारे इस कहने का मतलव क्या है सो समझ में नहीं आता।

भैरो—मतलव यही है कि तुम अपनी सूरत साफ करो और मरे साथ राजा साहब के पास चलो क्योंकि असली रामदीन के सामने तुम्हारा रामदीन वन रहना मुनासिव नहीं है।

लीला-असली रामदीन अव कहा !

जल्दी में लीला इतना कह तो गई मगर फिर उसने जुबान वन्द कर ली। भैरोसिह की चलती फिरती बातों ने उसका कलजा हिला दिया और वह समझ गई कि अब मेरा नसीब मुझे धोखा दिया चाहता है मेरा भेद खुल गया और अव मेरे कैद होने में ज्यादे देर नहीं है। अव उसके दिल ने भी कहा कि वास्तव में कल ही राजा साहव को तुझ पर शक हो गया था अगर तू कल ही भाग जाती तो अच्छा था, मगर अव तेरा भागना भी कठिन है। लीला ने कुछ और सोच-विचार क भैरासिह से कहा तुम जरा निराले में चल कर मेरी एक वात सुन लो बेहतर होगा कि हम दोनों आदमी घोडा बढा कर जरा आगे निकल चलें मैं जो वात कहा चाहती हूँ उसे सुन कर तुम बहुत खुश होवोगे।

भैरो—न ता मैं तुम्हारी कुछ सुन सकता हू और न तुम्हें छोड सकता हू, हा एक वात तुम्हें और भी कहे देता हू जिसे सुन कर तुम्हारे दिल का खुटका निकल जायगा वह यह है कि जव राजा साहब ने दीवान साहब के नाम की चीठी देकर असली रामदीन को जमानिया भेजा था तो जुवानी कह दिया था कि इस चीठी में हमने दो सौ सवार भेजने के लिए लिखा है मगर तुम केवल बीस सवार अपने साथ लाना और जिस दिन हमने मागा है उसके एक दिन वाद आना। कहो, अव तो बहुत सी बातें तुम्हारी समझ में आ गई होंगी ?

इतना कह भैरोसिह ने लीला का हाथ पकड लिया और राजा साहब की तरफ चलने के लिए कहा मगर लीला को उधर जाना मजूर न था इसलिए उसने अपनी घोडी को न रोका और झटका देकर अपना हाथ छुडाना चाहा मगर ऐसा न कर सकी भैरोसिह न उसे खैंच कर जमीन पर गिरा दिया। उस समय भैरोसिह को मालूम हुआ कि यह मर्द नहीं औरत है।

भैरोसिह की यह कार्रवाई देखकर सभों के कान खडे हो गये। सवारों ने घोडा रोक दिया। राजा साहब की सवारी (रथ) खडी हो गई कई सवार अपने घोडे पर से कूद कर भैरोसिह के पास चले आये और इन्द्रदेव भी रथ पर से उतर कर उसके पास जा पहुचे। आज्ञानुसार लीला की मुश्के वाध ली गई और पानी मगा कर उसका चेहरा साफ किया गया और तव लीला को सभों ने पहिचान लिया। लीला राजा गोपालसिह के पास लाई गई और भैरोसिह ने सब हाल कहा, जिसे सुन राजा साहब हस पडे और बोले अव इन्द्रदेव जैसा कहें वैसा करो।

इन्द्रदेव की आज्ञानुसार लीला रस्सियों से जकड कर एक खाली रथ पर बैठा दी गई और कई सवार उसकी निगरानी पर मुस्तैद किये गये।

अव सवारी तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुई। दोपहर के बाद जब सवारी जमानिया के पास पहुची तब इन्द्रदेव ने राजा साहब से धीरे धीरे कुछ कहा और रथ से उतर कर पैदल ही मैदान का रास्ता लिया और देखते देखते न मालूम कहाँ चले गये। सवारी खास बाग के दर्वाजे पर पहुची और राजा साहब रथ से उतर कर भैरोसिह को साथ लिए हुए बाग के अन्दर चले गये।

आठवां बयान

कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह तिलिस्म तोडन की धुन में लग हुए थे। मगर उनके दिल से किशोरी और कमलिनी तथा कामिनी और लाडिली की मुहब्बत एक सायत के लिये भी बाहर नहीं होती थीं। जब दोनों कुमारों ने बाग के उत्तर तरफ वाले मकान की खिडकी (छोटे दरवाजे) में से झाकते हुए राजा गोपालसिंह की जुबानी किशोरी कमलिनी तथा कामिनी लौर लाडिली का सब हाल सुना और यह भी सुना कि अब वे सब बहुत जल्द जमानिया में लाई जाएगी, तब बहुत खुश हुए और उन लोगों से जल्द मिलने के लिए तिलिस्म तोड्ने की फिक्र उन्हें बहुत ज्याद हो गई। जब गोपालसिंह इन्दिरा और इन्ददेव बातचीत करके चले गये तब बडे कुमार ने सर्यू से कहा "सर्यू, हम लोग अब बहुत जल्द तुम्हें अपने साथ लिए हुए इस तिलिस्म के बाहर होंगे। हम लागों को तिलिस्म तोड़ने और दौलत पाने का उतना ख्याल नहीं है जितना तिलिस्म से बाहर निकलने का ध्यान है। इस तिलिस्म स हमलोगों को एक किताब मिलने वाली है जिसके लिए हम लोग जरूर उद्योग करेंगे उसी किताब की बदौलत हम लोग चुनारगढ़ का वह भारी तिलिस्म ताड़ सकेंगे जिसे हमारे पिता ने हमारे लिए छोड रक्खा है और जिसका तोड़ना हम दोनों भाइयों को आवश्यक कहा जाता है।

सर्यू—मेरे दिल ने उम्मीदों स भर कर उसी समय विश्वास दिया कि अब तेरा दुर्दैव सदैव के लिए तेरा पीछा छोड़ देगा जब आप दोनों भाइयों के दर्शन हुए तथा आप लोगों का परिचय मिला। अब मैं अपना दु ख भूल कर बिल्कुल बेफिक्र हो रही हू और सिवाय आपकी आज्ञा मानने के कोई दूसरा खयाल मेरे दिल में नहीं है।

इन्द्रजीत—अच्छा तो अब तुम हम लोगों के लिए फल तोडो और तब तक हम लोग इस बाग में घूम कर कोई दर्वाजा ढूढते है। ताज्जुब नहीं कि हम लोगों को इस बाग में कई दिन रहना पड़े।

सर्यू— जो आज्ञा।

इतना कह कर सयू फल ताडने और नहर के किनारे छाया देख कर कुछ जमीन साफ करने के ख्याल में पडी और दोनों कुमार बाग में इधर उधर घूम कर दर्वाजा खोजने का उद्योग करने लगे।

पहर भर से ज्यादे देर तक घूमने और पता लगाने के बाद जब कुमार उत्तर तरफ वाली दीवार के नीचे पहुचे जिधर मकान था तब उन्हें पूरब तरफ के कोने की तरफ हट कर जमीन में एक हौज का निशान मालूम हुआ। उसी के पास दीवार में एक छाटे से दर्वाज का चिन्ह भी दिखा जिससे निश्चय हो गया कि उन लोगों का काम इन्हीं दोनों निशानों से चलेगा। इतना सोच कर वे दोनों भाई वहा चले आये,जहा सर्यू फल तोड और जमीन साफ करके बैठी हुई दोनों भाइयों के आने का इन्तजार कर रही थी। सर्यू ने अच्छे-अच्छे और पके हुए फल दोनों भाइयों के लिए तोडे और जल से धोकर साफ पत्थर की चट्टान पर रक्खे थ। दोनों भाइयों ने उसे खाकर, नहर का जल पिया और इसके बाद सर्यू को भी खाने के लिए कह के उसी ठिकाने चले गए जहा हौज और दर्वाजे का निशान पाया था। हौज में मिट्टी भरी हुई थी जिसे दोनों भाइयों ने खजर से खोद-खोदके निकालना शुरु किया और थोड़ी देर में सर्यू भी उनके पास पहुच कर मिट्टी फेंकने में मदद करने लगी। सध्या हो जाने पर सभों ने उस काम से हाथ खींचा और नहर के किनारे जाकर आराम किया। हौज की सफाई में इन लोगों को चार दिन लग गए पाचवें दिन दोपहर होते-होते वह हौज साफ हुआ और मालूम होने लगा कियह वास्तव में एक फौवारा है।वह हौज सगमर्मर का बना हुआ था और फौवारा सोने का। अब दोनों कुमारों ने खजर के सहारे उस हौज की जमीन का पत्थर उखाडना शुरु किया और जब दो-तीनदिन की मेहनत में सब पत्थर उखड गये तब वह फौवारा भी सहज ही में निकल गया और उसके नीचे एक दर्वाजे का निशान दिखाई दिया। दर्वाजे में पल्ला हटाने के लिए कडी लगी हुई थी और जिस जगह ताला लगा हुआ था,उसके मुँह पर लोहे की एक पतली चादर रक्खी हुई थी जिसे कुअर इन्द्रजीतसिंह ने हटा दिया और उसी तिलिस्मी ताली से ताला खोला जो पुतली के हाथ में से उन्हें मिली थी।

दवाजा हटाने पर नीचे उतरने के लिए सीढियाँ दिखाई पडी। आनन्दसिंह तिलिस्मी खजर हाथ में लेकर रोशनी करते हुए नीचे उतरे और उनके पीछे-पीछे इन्द्रजीतसिंह और सर्यू भी गए। नीचे पहुच कर उन्होंने अपने को एक छोटी

सी कोठरी में पाया जिसके बीचो बीच में एक हौज बना हुआ था। उस हौज के चारों तरफ वाली दीवार कई तरह की धातुओं से बनी हुई थी और हौज के बीच में किसी तरह की राख भरी हुई थी। कोठरी की चारों तरफ की दीवारों में से तांबे की बहुत सी तारें आई थी। और वे सब एक साथ होकर उसी हौज क बीच में चली गई थी। इन्द्रजीतसिह ने सर्यू से कहा जब ये सब तारे काट दी जायगी तब बाग के चारों तरफ की दीवार करामात से खाली हो जायगी अर्थात् उसमें यह गुण न रहेगा कि उसके छूने से किसी को किसी तरह की तकलीफ हो इसके बाद हम लोग उस दीवार वाले दर्वाज को साफ करके रास्ता निकालेंगे और इस बाग से निकल कर किसी दूसरी ही जगह जायेंगे अस्तु तुम यहा से निकल कर ऊपर चली जाओ तब हम लोग तार काटने में हाथ लगावें।

इन्द्रजीतसिह की आज्ञानुसार सर्यू कोठरी से बाहर निकल गई और दोनों कुमारों ने तिलिस्मी खजर से शीघ्र ही उन तारों को काट डाला और बाहर निकल आये। दरवाजा पहिले की तरह बन्द कर दिया और ऊपर से मिट्टी डाल दी, फिर नहर के किनारे आकर तीनों आदमी बैठ गए और बातचीत करने लगे।

सर्यू–अब दीवार छूने में किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती ?

इन्द्र–अभी नहीं धीरे-धीरे दो पहर में उसका गुण जायगा और तब तक हम लोगों को व्यर्थ बैठे रहना पड़ेगा।

आनन्द–तब तक (सर्यू की तरफ बता कर) इनका बचा हुआ हिस्सा सुन लिया जाता तो अच्छा होता।

इन्द्र–नहीं अब इनका किस्सा पिताजी के सामने सुनेंगे।

सर्यू–अब ता मैं आपके साथ ही रहूगी इसलिए तिलिस्म तोड़ते समय जो कुछ कार्रवाई आप करेंगे या जो तमाशा दिखाई देगा देखूगी मगर यदि आज के पहिले का हाल जब से आप इस तिलिस्म में आये हैं सुना देते तो बडी कृपा होती। मैं भी समझती कि आपकी बदौलत इस तिलिस्म का पूरा-पूरा तमाशा देख लिया।

इन्द्र–अच्छी बात है (आनन्दसिह से) तुम इस तिलिस्म का हाल इन्हें सुना दो।

थोडी देर आराम करने तथा जरूरी कामों से छुट्टी पाने के बाद भाई की आज्ञानुसार आनन्दसिह ने अपना और तिलिस्म का हाल तथा जिस ढग से इन्दिरा की मुलाकात हुई थी वह सब सर्यू से कह सुनाया इसके साथ ही साथ तिलिस्म के बाहर आज-कल का जैसा जमाना हो रहा था वह सब भी बयान किया। वह सब हाल कहते-सुनते रात आधी से कुछ ज्यादा चली गई और उस समय इन लोगों ने एक विचित्र तमाशा देखा।

इस बाग के उत्तर तरफ जो सटा हुआ मकान था और जिसमें से राजा गोपालसिह और कुमार में बातचीत हुई थी, हम पहिले लिख आये हैं कि उसमें आगे की तरफ सात खिडकिया थीं इस समय यकायक एक आवाज आने से दोनों कुमारों और सर्यू की निगाह उस तरफ चली गई। देखा कि बीच वाली बडी खिडकी (दरवाजा) खुली है और उसके अन्दर रोशनी मालूम होती है। इन लोगों को ताज्जुब हुआ और इन्होंने साचा कि शायद राजा गोपालसिह आये हैं और हम लोगों से बातचीत करने का इरादा हे मगर ऐसा न था, थोडी ही देर बाद उसके अन्दर दो तीन नकाबपोश चलते फिरते दिखाई दिये और इसके बाद एक नकाबपोश खिडकी में कमन्द अडा कर नीचे उतरने लगा। पहिले तो दोनों कुमारों और सर्यू को गुमान हुआ कि खिडकी में राजा गोपालसिह या इन्द्रदेव दिखाई देंगे या होंगे मगर जब एक नकाबपोश कमन्द के सहारे नीचे उतरने लगा तब उनका ख्याल बदल गया और वे सोचने लगे कि यह काम इन्ददेव या गोपालसिह का नहीं बल्कि किसी ऐसे आदमी का है जो इस तिलिस्म का हाल नहीं जानता क्योंकि गोपालसिह और इन्ददेव तथा इन्दिरा को भी मालूम हुई है कि इस बाग की दीवार छूने या बदन के साथ लगाने लायक नही है तभी तो इन्दिरा अपनी मा के पास नहीं पहुच सकी थी औ सर्यू ने यह बात इन्दिरा से कही होगी।

इन्दजीतसिह ने इसी समय सर्यू से पूछा कि इस बाग की दीवार का हाल इन्दिरा को मालूम है। इसके जबाव में सर्यू ने कहा जरूर मालूम हे मैंने खुद इन्दिरा से कहा था और इसी सबब से तो वह मेरे पास आज तक न आ सकी नि सन्देह इन्दिरा ने यह बात राजा गोपालसिह से कही होगी बल्कि वह खुद जानते होंगे इसी से मैं सोचती हू कि ये लोग कोई दूसरे ही है जो इस भेद को नहीं जानते मगर अब तो इस दीवार का गुण जाता ही रहा।

तीनों को ताज्जुब हुआ और तीनों आदमी टकटकी लगा कर उस तरफ देखने लगे। जब वह नकाबपोश कमन्द के सहारे नीच उतर आया तब दूसरे नकाबपोश ने वह कमन्द ऊपर खैंच ली और उसी कमन्द में एक गठरी बॉध कर नीचे लटकाई। दोनों कुमारों और सर्यू को विश्वास हा गया कि इस गठरी में जरूर कोई आदमी है।

जो नकाबपोश नीच आ चुका था उसने गठरी थाम ली और खोल कर कमन्द खाली कर दी मगर जिस कम्बल मे वह गठरी बधी हुई थी उसे इसी के साथ बॉध दिया और ऊपर वाले नकाबपोश ने खैंच लिया। थोडी देर बाद दूसरी गठरी लटकाई गई और नीचे वाले नकाबपोश न पहिले की तरह उसे भी थाम लिया और खोल कर फिर कम्बल कमन्द के साथ बॉध दिया।

इसी तरह वारी-वारीसे सात गठरियॉ नीचे उतारी गई इसक बाद वह नकाबपोश जो सबस पहिले नीचे उतरा था उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ गया और खिडकी बन्द हो गई।

नौवां बयान

जिस समय राजा गोपालसिह खास बाग के दर्वाजे पर पहुचे उस समय उनके दीवान साहब भी वहॉ हाजिर थे। नकली रामदीन अर्थात लीला इनके हवाले कर दी गई। भेरासिह के सवाल करने पर उन्होंने कहा कि इस लीला ने चार आदमियों को खास बाग के अन्दर पहुचाया है मगर हम नहीं कह सकते कि वास्तव म वे कौन थे। अस्तु राजा साहब और भैरोसिह को यह तो मालूम हो गया कि चार आदमी भी इस बाग के अन्दर घुसे हैं जो हमार दुश्मन ही होंगे मगर उन्हें उन पॉच सौ फौजी सिपाहियों की शायद ही खबर हो जिन्हें मायारानी ने गुप्त रीति से बाग के अन्दर कर लिया था। पहिली दफे जब मायारानी को गोपालसिह ने छकाया था तब खुले तौर पर बाग में रहती थी मगर अबकी दफ तो वह उस भूल भूलैया बाग में जाकर ऐसा गायब हुई है कि उसका पता लगाना भी कठिन होगा। दीवान साहब ने पूछा भी कि अगर हुक्म हा तो बाग में तलाशी ली जाय और उन आदमियों का पता लगाया जाय जिन्हें लीला ने इस बाग मे पहुचाया है मगर राजा साहब ने इसके जवाब में सिर हिला कर जाहिर कर दिया कि यह बात उन्हें स्वीकार नहीं है।

कुछ दिन रहते ही राजा गोपालसिह बाग के दूसरे दर्जे में केवल भैरोसिह को साथ लेकर गये और बाग के अन्दर चारों तरफ सन्नाटा पाया। इस समय भैरोसिह और राजा गोपालसिह दोनों ही के साथ में तिलिस्मी खजर मौजूद थे।

खास बाग के दूसर दर्जे में दा कुऍ थे जिनमें पानी बहुत ज्यादे रहता था यहॉ तक कि इस बाग के पेड पत्तों को सींचने और छिडकाव का काम इन दोनों में से किसी एक कुऍ ही से चल सकता था मगर सींचने के समय दूर और नजदीक का ख्याल करके या शायद और किसी सबब से बनवाने वाले ने दो बडे बडे जगी कूए बनवाये थे, परन्तु ये दोनों कूऍ भी कारीगरी और ऐयारी से खाली न थे।

भैरोसिह और गोपालसिह छिपते और घूमते हुए पूरब तरफ वाले कूऍ पर पहुचे जिसका घेरा बहुत बडा था और नीचे उतरने तथा चढने के लिए कूऍ की दीवार में लोहे की कडियॉ लगी हुई थीं। भैरोसिह और गोपालसिह दोनों आदमी कडियों के सहारे इस कूऍ में उतर गये।

किसी ठिकाने छिपी हुए मायारानी इस तमाशे को दख रही थी। गोपालसिह और भैरोसिह को आते देख वह बहुत खुश हुई और उसे निश्चय हो गया कि अब हम लाग गोपालसिह को मार लेगे। जिस जगह वह बैठी हुई थी वहॉ पर माधवी कुबेरसिह भीमसेन और ऐयारों के अतिरिक्त बोस आदमी फौजी सिपाहियों में से भी मौजुद थे और बाकी फौजी सिपाही तहखानों में छिपाये हुए थे। पहिले तो मायारानी ने चाहा कि केवल हम ही लाग बीस सिपाहियों के साथ जाकर गोपालसिह को गिरफ्तार कर लें मगर जब उसे कृष्णाजिन्न वाली बात याद आई और यह ख्याल हुआ कि गोपालसिह के पास वह तिलिस्मी खजर और कवच जरुर होगा जो कि रोहतासगढ में उनके पास उस समय मौजूद था जब शेरअली और दारोगा के साथ हम लोग वहॉ गये थे तब उसकी हिम्मत टूट गई और बिना कुल फौजी सिपाहियों को साथ लिए गोपालसिह के पास जाना उचित न जाना। इसी बीच में उसके देखते-देखते गोपालसिह कूऍ के अन्दर चले गये।

इस तिलिस्मी बाग के अन्दर आने तथा यहॉ से बाहर जाने वाला दर्वाजा जिस तरह बन्द होता है इसका हाल उस समय लिखा जा चुका है जब पहिले दफा इस बाग में मायारानी के ऊपर आफत आई थी और मायारानी ने सिपाहियों के बागी हो जाने पर बाहर जाने का रास्ता बन्द कर दिया था अस्तु इस समय भी उसी ढग से मायारानी ने बाग का दरवाजा बन्द कर दिया और इसके बाद कुल सिपाहियों को तहखान में से निकाल कर माधवी भीमसेन और कुबेरसिह तथा ऐयारों को साथ लिए उस कुऍ पर पहुची, जिसके अन्दर भैरोसिह को साथ लिए हुए राजा गोपालसिह उतर गए थे।

मायारानी ने सोचा था कि आखिर गोपालसिह उस कुऍ से बाहर निकलेंगे ही, उस समय हम लोग उन्हें सहज ही में मार लेंगे बल्कि कूऍ से बाहर निकलने की मोहलत ही न देंगे—इत्यादि मगर जब बहुत देर हो गई और रात हो जाने पर भी गोपालसिह कूऍ के बाहर न निकले तो उसे बडा ही ताज्जुब हुआ। यह खुद कूऍ के अन्दर झॉक कर देखने लगी और उसी समय चौक कर माधवी से बोली—

माया—क्यों बहिन आज ही तुमने भी देखा था कि इस कूऍ में पानी कितना ज्यादा था!

माधवी—बशक मैने देखा था कि बीस हाथ से ज्यादे दूरी पर पानी नहीं है तो क्या इस समय पानी कम जान पडता है?

माया–कम क्या ? मैं तो समझती हूँ कि इस समय इसमें कुछ भी पानी नहीं है और कूआँ सूखा पडा है।

माधवी–(ताज्जुब से) ऐसा नहीं हा सकता। एक पत्थर इसमें फेंक कर देखो।

माया–आओ तुम ही देखो।

माधवी ने अपने हाथ से ईंट का टुकड़ा कूएँ के अन्दर फेंका और उसकी आवाज पर गौर करके बोली–

माधवी–बेशक इसमें पानी कुछ भी नहीं है केवल कीचड़ मात्र है। तो क्या तुम नहीं जानतीं कि इसके अन्दर पानी क निकास का कोई रास्ता तथा आदमियों के आने जाने के लिए कोई सुरग या दर्वाजा है या नहीं ?

माया–मुझे एक दफे गोपालसिह ने कहा था कि इस कूएँ के नीचे एक तहखाना है जिसमें तरह-तरहके तिलिस्मी हर्बे और ऐयारी के काम की अपूर्व चीजें है।

माधवी–बेशक यही बात ठीक होगी और उन्हीं चीजों में से कुछ लाने के लिये गोपालसिह गये होंगे।

माया–शायद ऐसा ही हा !

माधवी–तो बस इससे बढकर और कोई तरकीब नहीं हो सकती कि यह कूआ पाट दिया जाय जिसमें गोपालसिह को फिर दुनिया का मुँह देखना नसीब न हो।

माया–नि सन्देह यह बहुत अच्छी राय है अस्तु जहाँ तक हो सके इसे कर ही देना चाहिए।

इस समय कुबेरसिह की फौज टिड्डियों की तरह इस बाग में सब तरफ फैली हुई हुक्म का इन्तजार कर रही थी। माधवी ने अपनी राय भीमसेन और कुबेरसिह से कही और उनकी आज्ञानुसार फौजी आदमियों ने जमीन खोद कर मिट्टी निकालने और कूआ पाटने में हाथ लगा दिया।

पहर रात जात तक कूआँ बखूबी पट गया और उस समय मायारानी के दिल में यह बात पैदा हुई कि अब मुझे गोपालसिह का कुछ भी डर न रहा।

फौजी सिपाहियों को खुले मैदान बाग में पड रहने की आज्ञा देकर भीमसेन कुबेरसिह और माधवी तथा एयारों का साथ लिए हुए मायारानी अपने उस खास कमरे की छत पर बेफिक्री और खुशी के साथ चली गई जिसमें आज के कुछ दिन पहिले मालिकाना ढग से रहती थी।

दसवां बयान

रात अनुमान दा पहर क जा चुकी है। खास बाग के दूसरे दर्जे में दीवान खाने की छत परकुबेरसिह, भीमसन और उसके चारों ऐयार तथा माधवी के साथ वैठी हुई मायारानी बडी प्रसन्नता से बातें कर रही है। चॉदनी खूब छिटकी हुई है और बाग की हर एक चीज जहाँ तक निगाह बिना ठोकर खाये जा सकती है साफ दिखाई दे रही है। बात चीत का विषय अब यह था कि 'राजा गोपालसिह से तो छुट्टी मिल गई अब राज्य तथा राजकर्मचारियों के लिये क्या प्रबन्ध करना चाहिए ?

जिस छत पर ये लोग बैठ हुए थे उसके दाहिनी तरफ वाली पट्टी में भी एक सुन्दर इमारत और उसके पीछे ऊची दीवार के बाद तिलिस्मी बाग का तीसरा दर्जा पडता था। इस समय मायारानी का मुँह ठीक उसी इमारत और दीवार की तरफ था और उस तरफ की चॉदनी दर्वाजों के अन्दर घुस कर बडी बहार दिखा रही थी। बात करते-करते मायारानी चौंकी और उस तरफ हाथ का इशारा करके बोली– 'है !उस छत पर कौन जा पहुचा है ? '

माधवी–हाँ एक आदमी हाथ में नगी तलवार लेकर टहल तो रहा है।

भीम–चहरे पर नकाब डाले हुए है।

कुबेर–हमारे फौजी सिपाहियों में से शायद कोई ऊपर चला गया होगा मगर उन्हें बिना हुक्म ऐसा करना नहीं चाहिये !

माया–नहीं नहीं उस मकान मे सिवा मेरे और कोई नहीं जा सकता।

माधवी–तो फिर वहाँ गया कौन ?

माया–यही तो ताज्जुब है !देखिए एक और भी आ पहुचा, तीसरा भी आया मामला क्या है ?

अजायब–कहीं राजा गोपालसिह कूएँ में घुस कर वहाँ न जा पहुचे हों !मगर वे तो केवल दो ही आदमी थे !!

माया–और ये तीन है !(कुछ रुक कर) लीजिए अब पॉच हो गये।

मायारानी और उसके सगी साथियों के देखते-देखते उस छत पर पचीस आदमी हा गये। उन सभों ही के हाथों में नगी तलवारें थीं। जिस छत पर वे सब थे वहा पर से ऊपर मायारानी के पास तक आने में यद्यपि कई तरह की रुकावटें

थीं मगर ऐयारों के लिए यह कोई मुश्किल बात न थी इसीलिए मायारानी के पक्ष वालों को भय हुआ और उन्होंने चाहा कि अपने फौजी आदमियों में से कुछ को ऊपर बुला लें और ऐसा करने के लिए अजायबसिह को कहा गया।

अजायबसिह फौजी सिपाहियों को लाने के लिए चला गया मगर मकान क नीचे न जा सका और तुरन्त लौट आकर बोला, जाने का हर दरवाजा बन्द है कोई तरकीबमायारानी करें तो शायद वहाँ तक पहुचने की नौबत आवे ?

अजायबसिह की इस बात ने सभों को चौंका दिया और साथ ही इसके सभों को अपनी-अपनी जान की फिक्र पड गई। मायारानी के दिलाये हुए भरोसे स जो कुछ उम्मीद की जड इन लोगों के दिलों में जमी थी वह हिल गई और अब अपने किए पर पछताने की नौबत आई मगर मायारानी अब भी बात बनाने से न चूकी यह कहती हुई अपनी जगह से उठी कि 'कुँअर इन्दजीतसिह और आनन्दसिह इस तिलिस्म को तोड़ रहे है इसलिए ताज्जुब नहीं कि ये सब बातें कुछ उन्हीं से सम्बन्ध रखती हों'।

मायारानी स्वय नीचे उतरी मगर जा न सकी और अजायबसिह की तरह लाचार होकर बैरग लौट आई। उस समय उसके दिल में भी तरह तरह के खुटके पैदा हुए और वह ताज्जुब की निगाह से उन लोगों की तरफ देखने लगी जो उनके मुकाबले मे एकाएक आकर अब गिनती में पचीस हो गए थे।

थोडी देर बाद वे ऊपर से कूदते-फादते मायारानी की तरफ आते हुए दिखाई दिए। उस समय मायारानी और उसके सगी-साथी सभी उठ खडे हुए और अपनी-अपनी जाने बचाने की नीयत से तलवारें खैंच-खैंच मुस्तैद हो गये।

बात की बात में वे पचीसों आदमी उस छत पर चले आए जिस पर मायारानी थी मगर मायारानी या उसके साथियों से किसी ने कुछ भी न कहा बल्कि उनकी तरफ ऑख उठा कर देखा भी नहीं और मस्तानी चाल से चलते हुए छत के नीचे उतर गए। इन लोगों ने भी यह सोच कर कि वे लोग गिनती मे हमसे ज्याद है रोक-टोक न किया मगर इस बात का ख्याल जरुर रहा कि नीचे जाने के रास्ते तो सब बन्द है खुद मायारानी भी न जा सकी और लौट आई इन सभों को भी नि सन्देह लौट आना पडेगा, मगर थोडी देर में यह गुमान जाता रहा जब कि पचीसों नीचे उतर कर बाग के बीच में चलते हुए दिखाई दिए।

माधवी ने समझा कि हमारे फौजी सिपाही उन लोगों को जरूर टोकेंगे और वास्तव में बात ऐसी ही थी। उन पचीसों को बाग में देख फौजी सिपाहियों में खलबली मच गई और बहुतो ने उठ कर उन लोगों को रोकना चाहा मगर वे लोग देखते ही देखते पेडों की झुरमुट में घुस कर ऐसा गायब हुए कि किसी का पता भी न लगा और सब लोग आश्चर्य से देखते रह गए। उस समय माधवी ने मायारानी से कहा बहिन यहा तो मामला बेढब नजर आता है !,

माया–कुछ समझ में नहीं आता कि ये लोग कौन थे, यहा क्यों आये और हमलोगों को बिना रोके-टोकेइस तरह क्यों और कहॉं गायब हो गये !

माधवी–यह तो ठीक ही है मगर मै पूछती हू कि आप तिलिस्म की रानी कहला कर भी इस बाग का हाल क्या जानती है ? मैं तो समझती हू कि कुछ भी नहीं जानती !खास अपने कमरे का मामूली दरवाजाभी आपसे नहीं खुलता और हमलोगों की जान मुफ्त में जाया चाहती है !!

भीम–अब आपकी कोई कार्रवाई हमलोगों को भरोसा नहीं दिला सकती।

माया–इस समय मै मजबूर हो रही हू इसलिए टेढी सीधी जो जी में आवे सुनाओ लेकिन अगर इस मकान के नीचे उतरने की नौबत आयेगी तो दिखा दूँगी कि मैं क्या कर सकती हू।

कुबेर–नीचे जाने की नौबत ही क्यों आवेगी !गैर लोग आवें और चले जाय मगर यहाँ की रानी होकर तुम कुछ न कर सको यह बडे शर्म की बात है।

मायारानी इसका जवाब कुछ दिया ही चाहती थी कि सीढ़ी की तरफ से आवाज आई, 'तुम लोगों के कलपने पर मुझे दया आती है अच्छा आओ हम दर्वाजा खोल देते हैं, तुम लोग नीचे उतर आओ और अपनी जान बचाओ !' इसके बाद सीढी वाले दर्वाजे के खुलने की आवाज आई।

सभों को ताज्जुब हुआ और सीढी की तरफ जाते डर मालूम हुआ मगर यह सोच कर कि यहाँ पडे रहने से भी जान बचने की आशा नहीं है सभों ने जी कड़ा करके नीचे उतरने का इरादा किया।

वास्तव में दरवाजे जो बन्द हो गये थे खुले हुए दिखाई दिये और सब कोई जल्दी के साथ नीचे उतर गये, उस समय मायारानी ने एक लम्बी सॉस लेकर कहा, अब कोई चिन्ता नहीं।"

बाकर–मगर यह न मालूम हुआ कि दरवाजाखोलने वाला कौन था ?

यारअली–और उसने हम लोगों के साथ यह नेकी का बर्ताव क्यों किया ?

इतने ही में ऊपर से आवाज आई," दर्वाजा खोलने वाला मै हू।"

सभों ने घबरा कर ऊपर की तरफ देखा। एक आदमी मुँह पर नकाब डाले ब'रामदे से झॉंकता हुआ दिखाई दिया।

कुबेरसिंह ने उससे पूछा 'तुम कौन हो ?'

नकाबपोश – मैं इस तिलिस्म का दारोगा हूं।

माया–इस तिलिस्म का दारोगा तो राजा बीरेन्दसिंह के कब्जे में है।

नकाब - वह तुम्हारा द रोगा था और मैं राजा गोपालसिंह का दारोगा हूं, आजकल यह बाग मेरे ही कब्जे में है।

माया–जिस समय हम लोग यहाँ आये तुम कहाँ थे ?

नकाब–इसी बाग में।

माया– फिर हम लोगों को रोका क्यों नहीं ?

नकाब–रोकने की जरूरत ही क्या थी ? यह तो मैं जानता ही था कि तुम लोग अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मार रहे हो। तुम लोगों की बेवकूफी पर मुझे हँसी आती है।

माया–बेवकूफी काहे की ?

नकाब–एक तो यही कि तुम लोगों ने इतनी फौज को बाग के अन्दर घुसेड़ तो लिया मगर यह न साचा कि इतने आदमी यहाँ आकर खायेंगे क्या ? अगर घास और पेड़ पत्तों को भी खाकर गुजारा किया चाहें तो भी दो एक दिन से ज्यादा का काम नहीं चल सकता। क्या तुम लोगों ने समझा था कि बाग में पहुचते ही राजा गोपालसिंह को मार लेंगे ?

माया–गोपालसिंह को ता हमलोगों ने मार ही लिया, इसमें शक ही क्या है ? बाकी रही हमारी फौज सो एक दिन का खाना अपने साथ रखती है कल तो हम लोग इस बाग के बाहर ही हो जायेंगे।

नकाब–दोनों बातें शेखचिल्ली की सी हैं। न तो राजा गोपालसिंह का तुम लोग कुछ बिगाड सकते हो और न इस बाग के बाहर की हवा ही खा सकते हो।

माया–तो क्या गोपालसिंह किसी दूसरी राह से निकल जायेंगे ?

नकाब–बेशक।

माया–और हम लोग बाहर न जा सकेंगे ?

नकाब–कदापि नहीं क्योंकि मैंने सब दर्वाजे अच्छी तरह बन्द कर दिए हैं। तुम तो तिलिस्म की रानी बनने का दावा व्यर्थ ही कर रही हो ! तुम्हें तो यहाँ का हाल रुपये में पैसा भी नहीं मालूम है। अभी मैंने तुम लोगों के उतरने की राह रोक दी थी सो तुम्हारे किये कुछ भी न बन पडा ! जब तुम लोग छत पर थे पचीस आदमी तुम्हारे सामने से होकर नीचे चले आये अगर तुम्हें तिलिस्म की रानी होने का दावा था तो उन्हें रोक लेतीं ! मगर राजा साहब के हौसले को देखो कि तुम लोगों के यहाँ आने की खबर पाकर भी अकले सिर्फ भैरोसिंह को साथ लेकर इस बाग में चले आए ?

माया–उन्हें हमारे आने की खबर कैसे मिली ?

नकाब–(जोर से हँस कर) इसके जवाब में तो इतना ही कहना काफी है कि तुम्हारी लीला इस बाग मेंआने के पहिले ही गिरफ्तार कर ली गई।

माधवी–तो क्या हमलोग किसी तरह अब इस बाग के बाहर नहीं जा सकते ?

नकाब–जीते तो नहीं जा सकते मगर जब तुम लोग मर जाओगे तब सभों की लाशें जरूर फेंक दी जायेंगी !

जिस मकान में मायारानी उतरी थी उसी के बारामदे में वह नकाबपोश टहल रहा था। बारामदे के आगे किसी तरह की आड या रुकावट न थी। मायारानी उससे बातें करती जाती और छिपे ढग से अपने तिलिस्मी तमचे को भी दुरुस्त करती जाती थी तथा रात होने के सबब यह बात उस नकाबपोश को मालूम न हुई जब वह माधवी से बातें करने लगा उस समय मौका पाकर मायारानी ने तिलिस्मी तमचा उस पर चलाया। गोली उसकी छाती में लग कर फट गई और बेहोशी का धूँआ बहुत जल्द उसके दिमाग में चढ गया साथ ही वह आदमी बेहोश हाकर जमीन पर लुढकता हुआ मायारानी के आगे आ पडा। भीमसेन ने झपट कर उसकी नकाब हटा दी और चौंक कर बोल उठा, "वाह वाह !यह तो राजा गोपालसिंह है।

ग्यारहवां बयान

कुँअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह और सर्यू को बड़ा ही ताज्जुब हुआ जब उन्होंने एक-एक करके सात आदमियों को तिलिस्मी बाग में पहुचाए जाते देखा। जब उस मकान की खिडकी बन्द हो गई और चारो तरफ सन्नाटा छा गया तब इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा "उस तरफ चल कर देखना चाहिए कि ये लोग कौन है।'

आनन्द – जरूर चलना चाहिये।

सर्यू – कहीं हम लागों के दुश्मन न हो।

आनन्द – अगर दुश्मन भी होंगे तो हमें कुछ परवाह न करना चाहिए, हम लोग हजारों में लड़ने वाले है।

इन्द – अगर हम लोग दस बीस आदमियों से डर कर चलेंगे तो कुछ भी न कर सकेंगे।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिह ने उस तरफ कदम बढ़ाया। आनन्दसिंह उनके पीछे पीछ रवाना हुए मगर सर्यू को साथ आने की आज्ञा न दी और वह उसी जगह खड़ी रह गई।

पास पहुच कर कुमारों ने देखा कि सात आदमी जमीन पर बेहोश पडे है। सभों के बदन पर स्याह लबादा और चेहरों पर स्याह नकाब था थोडी देर तक दोनों भाई ताज्जुब की निगाह से उन सभों की ओर देखते रहे और इसके बाद एक के चेहरेपर से नकाब हटाने का इरादा किया मगर उसी समय ऊपर से पुन दरवाजाया खिड़की खुलने की आवाज आई। आनन्द– मालूम होता है कि और भी दो चार आदमी यहा उतारे जायग।

इन्द – शायद ऐसा ही हो, यहाँ से हट कर और आड में होकर देखना चाहिए।

आनन्द – (सातों बेहोशों की तरफ इशारा करके) यदि इन लोगों को इनके किसी दुश्मन ने यहा पहुचाया हो और अबकी दफे कोई आकर इनकी जान

इन्द – नहीं नहीं, अगर ये लोग मारे जाने लायक होते और जिन लोगों ने इन्हें नीचे उतारा है वे इनके जानी दुश्मन होते तो धीरे से उतारने के बदले ऊपर से धक्का देकर नीचे गिरा देते। खैर ज्यादे बातचीत का मौका नहीं है इस पेड की आड में हो जाओ फिर देखो हम सब पता लगा लेते है, बस हटो जल्दी करो।

बेचारे आनन्दसिंह कुछ जवाब न दे सके और वहाँ से दूर हट कर एक पेड की आड में हो गए। इस समय चन्द्रदेव अपनी छावनी की तरफ जा रहे थे और पेडों की आड़ पड जाने के कारण उस जगह कुछ अन्धकार सा छा गया था जहाँ वे सातों बेहोश पडे हुए थे और इन्द्रजीतसिह खडे थे।

इन्द्रजीतसिह हाथ में तिलिस्मी खजर लेकर फुर्ती से इन सातों के बीच में छिप कर लेट रहे दोनों तरफ से दो आदमियों के लबादे को भी अपने बदन पर ले लिया और पड-पड़े ऊपर की तरफ देखने लगे। एक आदमी कमन्द के सहारे नीचे उतरते हुआ दिखाई दिया। जब वह जमीन पर उतर कर उन सातो आदमियो की तरफ आया तो इन्द्रजीतसिंह ने फुर्ती से हाथ बढा कर तिलिस्मी खजर उसके पैर से लगा दिया साथ ही वह आदमी काँपा और बेहोश होकर जमीन पर गिर पडा। इन्द्रजीतसिंह पुन उसी तरह लेट ऊपर की तरफ देखने लगे। थोडी देर बाद और एक आदमी उसी कमन्द के सहारे नीचे उतरा और घूम-घूम के गौर से उन सातों को देखने लगा। जब वह कुमार के पास आया कुमार ने उसके पैर से भी तिलिस्मी खजर लगा दिया और वह भी पहिले की तरह बेहोश होकर जमीन पर गिर पडा। कुँअर इन्द्रजीतसिंह लेटे-लेटे और किसी के आने का इन्तजार करने लगे मगर कुछ देर हो जाने पर भी कोई तीसरा दिखाई न पडा। कुमार उठ खडे हुए और आनन्दसिंह भी उनके पास चले आये।

इन्द्रजीत–तुम इसी जगह मुस्तैद रह कर इन सभों की निगहबानी करो हम इसी कमन्द के सहारे ऊपर जाकर देखते हैं कि वहाँ क्या है?

आनन्द–आपका अकेले ऊपर जाना ठीक न होगा कौन ठिकाना वहाँ दुश्मनों की बारात लगी हो।

इन्द्रजीत–कोई हर्ज नहीं जो कुछ होगा देखा जायगा मगर तुम यहाँ से मत हिलना।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिह उसी कमन्द के सहारे बहुत जल्द ऊपर चढ़ गये और खिड़की के अन्दर जाकर एक लम्बे चौडे कमरे में पहुचे जहाँ यद्यपि बिल्कुल सन्नाटा था मगर एक चिराग जल रहा था। इस कमरे में दूसरी तरफ बाहर निकल जाने के लिए एक बडा सा दर्वाजा था, कुमार वहाँ चले गये और एक पैर दर्वाजे के बाहर रख झाँकने लगे। एक दूसरा कमरा नजर पडा जिसमें चारों तरफ छोटे-छोटकई दर्वाजे थे मगर सब बन्द थे और सामने की तरफ एक बडा सा खुला हुआ दर्वाजा था। कुमार उस खुले हुए दर्वाजे में चले गये और झाक कर देखने लगे। एक छोटा सा नजर बाग दिखाईदिया जिसके चारो तरफ ऊँची-ऊँची इमारतें और बीच में एक छोटी सी बावली थी। बाग भी दो बिगहे से ज्यादे जमीन न थी और फूल पत्तों के पेड भीकमथे। बावली के पूरब तरफ एक आदमी हाथ में मशाल लिये खडा था और उस मशाल में से बिजली की तरह बहुत ही तेज रोशनी निकल रही थी। वह रोशनी स्थिर थी अर्थात् हवा लगने से हिलती न थी और केवल उस एक ही रोशनी से तमाम बाग ऐसा उजाला हो रहा था कि वहा का एक-एक पत्ता साफ साफ दिखाई दे रहा था। कुँअर इन्द्रजीतसिह ने बडे गौर से उस आदमी को देखा जिसके हाथ में मशाल थी और उनको निश्चय हो गया कि यह आदमी असली नहीं है बनावटी है अस्तु ताज्जुब से कुछ देर तक वे उसकी तरफ देखते रहे, इसी बीच में बाग के उत्तर वाले दालान में से एक आदमी निकल कर बावली की तरफ आता हुआ दिखाई पडा और कुमार ने उसे देखते ही पहिचान लिया कि यह राजा गोपालसिह है। कुमार ने उन्हें पुकारने का इरादा किया ही था कि उसी दालान में से और चार आदमी आते हुए दिखाई दिये और इनकी सूरत शक्ल भी पहिले आदमी के समान ही थी अर्थात् ये चारों भी राजा

गोपालसिंह ही मालूम पडते थे जिससे कुँअर इन्द्रजीतसिंह को बहुत आश्चर्य हुआ और वे बड़े गौर से इनकी तरफ देखने लगे।

वे चारों आदमी जो पीछे आये थे खाली हाथ न थे, बल्कि दो आदमियों की लाशें उठाए हुए थे। धीरे-धीरे चल कर वे चारों आदमी उस बनावटी मूरत के पास पहुँचे जिसके हाथ में मशाल थी वे दोनों लाशें उसी के पास जमीन पर रख दी और तब पाचों गोपालसिंह मिल कर धीरे-धीरे कुछ बातें करने लगे जिसे कुँअर इन्द्रजीतसिंह किसी तरह सुन नहीं सकते थे।

पहिले आदमी को देख कर और गोपालसिंह समझ कर कुमार ने आवाज देना चाहा था मगर जब और भी चार गोपालसिंह निकल आए तब उन्हें ताज्जुब मालूम हुआ और यह समझ कर कि कदाचित इन पाचों में से एक भी गोपालसिंह न हो, वे चुप रह गये। उन पाचों गोपालसिंह की पोशाके एक ही रंग ढंग की थीं, बल्कि उन दोनों लाशों की पोशाक भी ठीक उन्हीं की तरह थी। यद्यपि उन लाशों का सर कटा हुआ और वहा मौजूद न था मगर उन पाचों गोपालसिंह की तरफ ख्याल करके देखने वाला उन लाशों को भी गोपालसिंह बता सकता था।

कुमार को चाहे इस बात का खयाल हो गया हो कि इन सभों में से कोई भी असली गोपालसिंह न होंगे मगर फिर भी वे उन सभों को बड़े ताज्जुब और गौर की निगाह से देखते हुए सोच रहे थे कि इतने गोपालसिंह बनने की जरुरत क्या पडी और उन दोनों लाशों के साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया गया या किसने किया !

जिस दर्वाजे में कुँअर इन्द्रजीतसिंह खड़े थे उसी के आगे बाईं तरफ घूमती हुई छोटी सीढियाँ नीचे उतर जाने के लिए थीं। कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने कुछ सोच विचार कर चाहा कि इन सीढियों की राह नीचे उतर कर पाचों गोपालसिंह के पास जाय और उन्हें जबर्दस्ती रोक कर असल बात का पता लगावें मगर इसके पहले ही किसी के आने की आहट मालूम हुई और पीछे घूम कर देखने से कुँअर आनन्दसिंह पर निगाह पडी।

इन्द्रजीत–तुम क्यों चले आये ?

आनन्द–आपको मैंने कई दफे नीचे से पुकारा मगर आपने कुछ जवाब न दिया तो लाचार यहाँ आना पड़ा।

इन्द्रजीत–क्यों ?

आनन्द–राजा गोपालसिंह की आज्ञा से। इन्द्रजीत–राजा गोपालसिंह कहाँ है ?

आनन्द–उन दोनों आदमियों में से जो नीचे उतरे थे और जिन्हें आपने बेहोश कर दिया था एक राजा गोपालसिंह थे। जब आप ऊपर चढ आए तब मैंने एक की नकाब हटाया और तिलिस्मी खंजर की रोशनी में चेहरा देखा तो मालूम हुआ कि गोपालसिंह हैं। उस समय मुझे इस बात का अफसोस हुआ कि बेहोश करने बाद आपने उनकी सूरत नहीं देखी अगर देखते तो उन्हें छोड कर यहा न आते। खैर जब मैंने उन्हें पहिचाना तो होश में लाने के लिये उद्योग करना उचित जाना अस्तु तिलिस्मी खंजर के जोडे की अंगूठी उनके बदन में लगाई जिससे थोडी ही देर बाद वह होश में आये और उठ बैठे। होश में आने बाद पहिले-पहिले जो कुछ उनके मुँह से निकला वह यह था कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने धोखा खाया मुझे बेहोश करने की क्या जरूरत थी ? मैं तो खुद उनसे मिलने के लिए यहाँ आया था इतना कहकर उन्होंने मेरी तरफ देखा, यद्यपि उस समय चाँदनी वहाँ से हट गई थी मगर उन्होंने मुझे बहुत जल्द पहिचान लिया और पूछा कि 'तुम्हारे बड़े भाई कहाँ हैं ? मैंने उनसे कुछ छिपाना उचित न जाना और कह दिया कि इसी कमन्द के सहारे ऊपर चले गए है'। सुन कर वे बहुत रंज हुए और क्रोध से बोले कि 'सब काम लड़कपन और नादानी का किया करते है उन्हें बहुत जल्द ऊपर से बुला लो। मैंने आपको कई दफे पुकारा मगर आप न बोले तब उन्होंने घुडक के कहा कि 'क्यों व्यर्थ देर कर रहे हो, तुम खुद ऊपर जाओ और जल्द बुला लाओ'। मैंने कहा कि मुझे यहाँ से हटने की आज्ञा नहीं है, आप खुद जाइये और बुला लाइये मगर इतना सुन कर वे और भी रंज हुए और बोले, 'अगर मुझमें ऊपर जाने की ताकत होती तो मैं तुम्हें इतना कहता ही नहीं बेहोशी के कारण मेरी रग-रग कमजोर हो रही है तुम अगर उनको बुला लाने में विलम्ब करोगे तो पछताओगे बस अब मैं इससे ज्यादे और कुछ न कहूंगा जो ईश्वर की मर्जी होगी और जो तुम लोगों के भाग्य में लिखा होगा सो होगा।' उनकी बातें ऐसी न थीं कि मैं सुनता और चुपचाप खड़ा रह जाता आखिर लाचार होकर आपको बुलाने के लिए आना पडा। अब आप जल्द चलिए देर न कीजिए।

आनन्दसिंह की बातें सुन कर इन्द्रजीतसिंह को बहुत रंज हुआ और उन्होंने क्रोध भरी आवाज में कहा–

इन्द–आखिर तुमसे नादानी हो ही गई ?

आनन्द–(आश्चर्य से) सो क्या ?

इन्द–तुमने उस दूसरे के चेहरे पर की भी नकाब हटा कर देखा कि वह कौन था ?

आनन्द–जी नहीं।

इन्द–तब तुम्हे कैसे विश्वास हुआ कि यह राजा गोपालसिंह ही है ? जब चेहरे पर से नकाब हटा कर देखा ही था तो पानी से मुहँ धोकर भी देख लेना था?क्या तुम भूल गये कि राजा गोपालसिंह के पास भी इसी तरह का तिलिस्मी खजर मौजूद है अस्तु उनके ऊपर इस खजर का असर क्यों होने लगा था ?

आनन्द–(सिर नीचा करके) बेशक मुझसे भूल हुई !

इन्द–भारी भूल हुई !(छोटे बाग की तरफ बता कर) देखो यहाँ पॉच राजा गोपालसिंह हैं क्या तुम कह सकते हो कि ये पॉचों राजा गोपालसिंह हैं ?

आनन्दसिंह ने उस छोटे बगीचे की तरफ झाक कर देखा और कहा "बेशक मामला गड़बड़ है !

इन्द–खैर अब तो हमे लौटना ही पडा हम चाहते थे कि इन सभों का कुछ भेद मालूम करें मगर खैर।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह लौट पडे और उस कमरे को लाघ कर दूसरे कमरे मे पहुचे जिसमें व सातों खिडकियाँ थीं। यकायक इन्द्रजीतसिंह की निगाह एक लिफाफे पर पडी जिसे उन्होंने उठा लिया और चिराग के पास ले जाकर पढा। लिफाफा बन्द था और उस पर यह लिखा हुआ था– इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह जोग लिखी गोपालसिंह।

कुमार ने लिफाफा फाड कर चीठी निकाली और देखते ही कहा इस चीठी पर किसी तरह का शक नहीं हो सकता बेशक यह भाई साहब के हाथ की लिखी है और मामूली निशान भी है। इसके बाद वे चीठी पढने लगे।

आनन्दसिंह ने देखा कि चीठी पढते-पढते इन्द्रजीतसिंह के चेहरे का रग कई दफे बदला और जैसे-जैसे पढ़ते जाते थे रज की निशानी बढती जाती थी। वे जब कुल चीठी पढ चुके तो एक लम्बी सास लेकर बोले अफसोस बडी भूल हुई और चीठी वह पढने के लिए आनन्दसिंह के हाथ मे दे दी।

आनन्दसिंह ने चीठी पढी यह लिखा हुआ था –

किशोरी कामिनी लक्ष्मीदेवी कमला लाडिली और इन्दिरा को आपके पास तिलिस्म मे भजते है। देखिये इन्हें सम्हालिए और एक क्षण के लिए भी इनसे अलग न होइए। सुन्दर हमारे तिलिस्मी बाग में घुसी हुई है, हम आठ आना उसके कब्जे में आ गये है। लीला ने धोखा देकर हमारे कुछ भेद मालूम कर लिए जिसका सबब और पूरा-पूरा हाल लक्ष्मीदेवी या कमलिनी की जुबानी आपको मालूम होगा जिन्हें हमने सब कुछ बता और समझा दिया है। कई बातों के ख्याल से सभों को बेहोश करके कमन्द द्वारा आपके पास पहुचाते है खबरदार एक क्षण के लिए भी इन लोगों से अलग न हों और किसी बनावटी गोपालसिंह का विश्वास न करें। आज कम से कम बीस-पचीस आदमी गोपालसिंह बने हुए कारवाई कर रहे है। हम जरा तरद्दुद में पडे हुए है मगर कोई चिन्ता नहीं भैरोसिंह हमारे साथ है। आप बाग के इस दर्जे को तोड कर दूसरी जगह पहुँचिये और यह काम रात भर के अन्दर होना चाहिये।

– शिवराम गोपाल भैरावशि सुलेख।

चीठी पढ कर आनन्दसिंह को भी बडा अफसोस हुआ और अपने किए पर पछताने लगे। सच तो यों है कि दोनों ही भाइयों को इस बात का अफसोस हुआ कि किशोरी कामिनी इत्यादि को अपने पास आ जाने पर भी देखे और होश में लाये बिना छोड कर इधर चले आये और व्यर्थ की झझट मे पडे क्योंकि दोनों कुमार किशोरी और कामिनी की मुलाकात से बढकर दुनिया में किसी चीज को पसन्द नहीं करते थे।

दोनों कुमार जल्दी-जल्दी उस कमरे के बाहर हुए और उस खिडकी मे पहुँचे जिसमें कमन्द लगा हुआ छोड आये थे मगर आश्चर्य और अफसोस की बात है कि अब उन्होंने उस कमन्द का खिडकी में लगा हुआ न पाया जिसके सहारे वे नीचे उतर जाते शायद किसी नीचे वाले ने उस कमन्द को छुडा लिया था।

बारहवॉ बयान

राजा गोपालसिंह ने जब रामदीन को चीठी और अगूठी देकर जमानिया भेजा था तो यद्यपि चीठी में लिख दिया था कि परसों रविवार को शाम तक हमलोग वहाँ (पिपलिया घाटी) पहुच जायगे मगर रामदीन को समझा दिया था कि रविवार को पिपलिया घाटी पहुचना, हमने यों ही लिख दिया है। वास्तव में हम वहा सोमवार को पहुचेंगे। अस्तु तुम भी सोमवार को पिपलिया घाटी पहुचना, जिसमें ज्यादे देर तक हमारे आदमियों को वहां ठहर कर तकलीफ न उठानी पड़े और दो सौ सवारों की जगह केवल बीस सवार लाना। यह बात असली रामदीन को तो मालूम थी और वह मारा न जाता तो बेशक रथ और सवारों को लेकर राजा साहब की आज्ञानुसार सोमवार को ही पिपलिया घाटी पहुचता मगर नकली रामदीन अर्थात लीला तो उन्हीं बातों को जान सकती थी जो चीठी में लिखी हुई थी,अस्तु वह रविवार ही को रथ और दो सौ फौज लेकर पिपलिया घाटी जा पहुची और जब सोमवार को राजा साहब वहा पहुचे तो बोली 'आश्चर्य है कि आपके

आने में पूरे आठ पहर की देर हुई ! "

यह सुनते ही राजा साहब समझ गये कि यह असली रामदीन नहीं है, उसी समय से उन्होंने अपनी कार्रवाई का ढग बदल दिया और लीला तथा मायारानी का सब वदोबस्त मिट्टी में मिल गया। वे उसी समय दो चार बातें करके पीछे लौट गए और दूसरे दिन औरतों को अपने साथनलाकर केवल भैरोसिह और इन्द्रदेव को साथ लिए हुए पिपलिया घाटी में आए।

इस जगह यह भी लिख देना उचित जान पड़ता है कि दूसरे दिन पिपलिया.घाटी में पहुच कर लीला के लाए हुए सवारों के साथ रथ पर चढ कर जमानिया पहुचने वाले गोपालसिह असली न थे,बल्कि नकली थे और भैरोसिह ने लीला के साथ जो सलूक किया वह असली राजा गोपालसिह के इशारे से था। अब हमार पाठक यह जानना चाहते होंगे कि यदि वह राजा गोपालसिह नकली थे तो असली गोपालसिह कहा गये या वह किस सूरत में गय ? तो इसके जवाब में केवल इतना ही कह देना काफी होगा कि असली गोपालसिह नकली गोपाल, के साथ इन्द्रदेव की सूरत बन कर रथ परसवार हुएथेऔर जमानिया पहुचने के पहिले ही नकली गोपालसिह को समझा बुझा कर रथ से उतर किसी तरफ चले गय थे। यह सब हाल यद्यपि पिछले के बयानों से पाठकों को मालूम हो गया होगा परन्तु शक मिटाने के लिये यहा पुन लिख दिया गया।

राजा गोपालसिह के होशियार हो जाने के कारण मायारानी ने तिलिस्मी बाग में तरह तरह के तमाशे देखे जिसका कुछ हाल तो लिखा जा चुका है और बाकी आगे चल कर लिखा जायगा क्योंकि इस समय हम इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह का हाल लिखना उचित समझते है।

कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह ने जब खिडकी में कमन्द लगा हुआ न पाया तो उन्हें ताज्जुब और रज हुआ। थोडी देर तक खडे उसी बाग की तरफ देखते रहे और तब आनन्दसिह से बोले ' क्या हम लोग यहा से कूद नहीं सकते ?'

आनन्द--क्यों नहीं कूद सकते ! अगर इस बात का ख्याल हो कि नीचा बहुत है तो कमरबन्द खोल कर इस दरवाजे के सींकचे में बाध और उसके सहारे कुछ नीचे लटक कर कूदने में मालूम भी न पडेगा।

इन्द--हा तुमने यह बहुत ठीक कहा, कमरबन्दों के सहारे हमलोग आधी दूर तक तो जरूर ही लटक सकते है मगर खराबी यह है कि दोनों कमरबन्दों से हाथ धोना पडेगा और इस तिलिस्म में नहाने धोने का सुभीता इन्हीं की बदौलत है। खैर कोई चिन्ता नहीं लगौटे से भी काम चल सकता है, अच्छा लाओ कमरबन्द खोलो।

दोनों भाइयों ने कमरबन्द खोलने के बाद दोनों को एक साथ जोडा और उसका एक सिरा दर्वाजे में लगे हुए सींकचे के साथ बाध कर दोनों भाई बारी बारी से नीचे लटक गये।

कमरबन्द न आधी दूर तक दोनों भाइयो को पहुँचा दिया, इसके बाद दोनों भाइयों को कूद जाना पडा। कूदने के साथ ही नीचे एक झाडी के अन्दर से आवाज आई, 'शाबाश ! इतनी ऊचाई से कूद पडना आप ही लोगों का काम है। मगर अब किशोरी, कामिनी इत्यादि से मुलाकात नहीं हो सकती।

जितने आदमी कमन्द के सहारे इस बाग में लटकाये गये थे और जिन सभों को यहा छोड आनन्दसिह अपने भाई को बुलाने के लिए ऊपर गय थे उन सभों का मौजूद न पाकर और इस शाबाशी देने वाली आवाज को सुन कर दोनों को बडा आश्चर्य हुआ। दोनों भाई चारो तरफ घूम-घूमकर देखने लगे मगर किसी की सूरत नजर न पडी, हा एक पेड के नीचे सर्यू को बेहोश पडे हुए जरुर देखा जिससे उन दोनों का ताज्जुब और भी ज्यादे हो गया।

इन्द--(आनन्दसिह से) यह सब खराबी तुम्हारी जरा सी भूल के सबब से हुई !

आनन्द--नि सन्देह ऐसा ही है।

इन्द--पहिले सर्यू को होश में लाने की फिक्र करो शायद इसकी जुबानी कुछ मालूम हो।

इतना कह कर आनन्दसिह सर्यू को होश में लान का उद्योग करने लगे। थोडी देर में सर्यू की बेहोशी जाती रही और इतने ही में सुबह की सुफेदी ने भी अपनी सूरत दिखाई।

इन्द्रजीत--(सर्यू से) तुम्हे किसने बेहोश किया ?

सर्यू--एक नकाबपोश ने आकर एक चादर जबर्दस्ती मेरे ऊपर डाल दी,जिससे मैं बेहोश हो गई। मै दूर से सब तमाशा देख रही थी। जब आप कमन्द के सहारे ऊपर चढ गय और उसके कुछ देर बाद छोटे कुमार भी आपको कई दफे पुकारने बाद उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ गये तब उन्हीं में से एक नकाबपोश ने उन सभों सचेत किया,जो (हाथ का इशारा करके) उस जगह बेहोश थे या जो ऊपर से लटकाए गये थे। इसके बाद सब कोई मिल कर उस

(हाथ से बता कर) दीवार की तरफ गए और कुछ देर तक आपस में बातें करते रहे। इसी बीच में छिप कर उनकी बातें सुनने की नीयत से मैं भी धीरे-धीरे अपने को छिपाती हुई उस तरफ बढ़ी मगर अफसोस वहा तक पहुचने भी न पाई थी। कि एक नकाबपोश मेरे सामने आ पहुचा और उसने उसी ढग से मुझे बेहोश कर दिया जैसा कि मैं अभी कह चुकी हू। शायद उसी बेहोशी की अवस्था में मै इस जगह पहुचाई गई।

सर्यू की बातें सुन कर दोनों कुमार कुछ देर तक सोचते रहे, इसके बाद सर्यू का साथ लिए उसी दीवार की तरफ गये जिधर उन लोगों का जाना सर्यू ने बताया था जो कमन्द के सहारे इस बाग में उतरे या उतारे गये थे। जब वहा पहुचे तो देखा कि दीवार की लम्बाई के बीचो-बीच में एक दर्वाजे का निशान बना हुआ है और उसके पास ही में नीचे की जमीन कुछ खुदी हुई है।

आनन्द—(इन्द्रजीतसिह से) देखिए यहा की जमीन उन लोगों ने खोदी और तिलिस्म के अन्दर जाने का दरवाजा निकाला है क्योंकि दीवार में अब वह गुण तो रहा नहीं जो उन लोगों को ऐसा करने से रोकता।

इन्द्र—बेशक यह वही दर्वाजा है जिस राह से हम लोग तिलिस्म के दूसरे दर्जे में जाने वाले थे। मगर इससे तो जाना जाता है कि वे लोग तिलिस्म के अन्दर घुस गये!

आनन्द—जरूर ऐसा ही है और यह काम सिवाय गोपाल भाई के दूसरा कोई नहीं कर सकता अस्तु अब मै जरूर यह कहने की हिम्मत करूगा कि वह कोई दूसरा नही था जिसके कहे मुताबिक मैं आपको बुलाने के लिए मकान के ऊपर चला गया था।

इन्द्र—तुम्हारी बात मान लने की इच्छा तो होती है मगर क्या तुम उस खास निशान को देख कर भी कह सकते हो कि वह चीठी गोपाल भाई की नहीं थी, जो मुझे उस मकान में कमरे के अन्दर मिली थी!

आनन्द—जी नहीं यह तो मैं कदापि नहीं कह सकता कि वह चीठी किसी दूसरे की लिखी हुई थी, मगर यह ख्याल भी मेरे दिल से दूर नहीं हो सकता कि उन्हीं (गोपालसिह) की आज्ञा से आपको बुलाने गया था।

इन्द्र—हो सकता है तो क्या उन्होंने हमलोगों के साथ चालाकी की?

आनन्द—जो हो।

इन्द्र—यदि ऐसा ही है तो उनकी लिखावट पर भरोसा करके यह हम कैसे कह सकते हैं कि किशोरी, कामिनी इत्यादि इस बाग में पहुच गई थी।

आनन्द—क्या यह हो सकता है कि वह तिलिस्मी किताब जो गोपाल भाई के पास थी हमारे किसी दुश्मन के हाथ लग गई और वह उस किताब की मदद से अपने साथियों सहित वहा पहुच कर हम लोगों का नुकसान पहुचाने की नीयत से तिलिस्म के अन्दर चला गया है?

इन्द्र—यह तो हो सकता है कि उनकी किताब किसी दुश्मन ने चुरा ली हो मगर यह नहीं हो सकता कि उसका मतलब भी हर कोई समझ ले। खुद मैं तो 'रिक्तग्रन्थ' का मतलब ठीक ठीक नहीं समझ सकता था, आखिर जब उन्होंने बताया तब कहीं तिलिस्म के अन्दर जाने लायक हुआ (कुछ रुक कर) आज के मामले तो कुछ अजब बेढंगे दिखाई दे रहे खैर कोई चिन्ता नही, आखिर हम लोगों को इस दर्वाजे की राह तिलिस्म के अन्दर जाना ही है, चलो फिर जो कुछ होगा देखा जायगा!

आनन्द—यद्यपि सूर्योदय हो जाने के कारण प्रातःकृत्य से छुट्टी पा लेना आवश्यक जान पड़ता है यह सोच कर कि क्या जाने कैसा मौका आ पड़े तथापि आज्ञानुसार तिलिस्म के अन्दर चलने के लिए तैयार हू, चलिए।

आनन्दसिह की बात सुन कर इन्द्रजीतसिह कुछ गौर में पड़ गए और कुछ सोचने के बाद बोले 'कोई चिन्ता नहीं जो कुछ होगा देखा जायगा।'

दीवार के नीचे जो जमीन खुदी हुई थी उसकी लम्बाई चौड़ाई पाच-पाच गज से ज्यादे न थी। मिट्टी हट जाने के कारण एक पत्थर की पटिया (ताज्जुब नहीं कि वह लोहे या पीतल की हो) दिखाई दे रही थी और उसे उठाने के लिए बीच में लोहे की कड़ी लगी हुई थी, जिसका एक सिरा दीवार के साथ सटा हुआ था। इन्द्रजीतसिह ने कड़ी में हाथ डाल कर जोर किया और उस पटिया (छोटी चट्टान) को उठा कर किनारे पर रख दिया। नीचे उतरने के लिए सीढ़िया दिखाई दीं और दोनों भाई सर्यू को साथ लिए नीचे उतर गए।

लगभग बीस सीढ़ी के नीचे उतर जाने बाद एक छोटी कोठरी मिली जिसकी जमीन किसी धातु की बनी हुई थी और खूब चमक रही थी। ऊपर दो तीन सूराख (छेद) भी इस ढग से बने हुए थे जिससे दिन भर उस कोठरी में कुछ

कुछ रोशनी रह सकती थी। आनन्दसिंह ने चारों तरफ गौर से देखकर इन्द्रजीतसिंह से कहा 'भैया रिक्तग्रन्थ में लिखा था कि यह कोठरी तुम्हें तिलिस्म के अन्दर पहुचावेगी मगर समझ में नहीं आता कि यह कोठरी किस तरह से हम लोगों को तिलिस्म के अन्दर पहुचावेगी क्योंकि इसमें न तो कहीं दर्वाजा दिखाई देता है और न कोई ऐसा निशान ही मालूम पडता है जिसे हमलोग दर्वाजा बनाने के काम में लावें।

इन्द्र–हम भी इसी सोच विचार में पडे हुए है मगर कुछ समझ में नहीं आता है।

इसी बीच में दोनों कुमार और सर्यू के पैरों में झुनझुनी और कमजोरी मालूम होने लगी और वह बात की बात में इतनी ज्यादे बढी कि वे लोग वहा स हिलने लायक भी न रहे। दखते-देखते तमाम बदन में सनसनाहट और कमजोरी ऐसी बढ गई कि व तीनों बेहोश होकर जमीन पर गिर पडे और फिर तनोबदन की सुध न रही।

घण्टे भर के बाद कुँअर इन्द्रजीतसिंह की बेहोशी जाती रही और वह उठ कर बैठ गए मगर चारो तरफ घोर अन्धकार छाया रहने क कारण यह नहीं जान सकते थे कि वे किस अवस्था में या कहा पडे हुए है। सब से पहिले उन्हें तिलिस्मी खजर की फिक्र हुई कमर में हाथ लगानेपर उसे मौजूद पाया अस्तु उसे निकाल कर और उसका कब्जा दबाकर रोशनी पैदा की और ताज्जुब की निगाह स चारो तरफ देखने लगे।

जिस स्थान में इस समय कुमार थे वह सुर्ख पत्थर से बना हुआ था और यहा की दीवारों पर पत्थर के गुलबूटों का काम बहुत खूबसूरती और कारीगरी का अनूठा नमूना दिखाने वाला बना हुआ था। चारों तरफ की दीवार में चार दर्वाजे थे मगर उनमें किवाड के पल्ल लग हुए न थे। पास ही कुँअर आनन्दसिंह भी पडे हुए थे, परन्तु सर्यू कहीं पता न था जिससे कुमार को बहुत ही ताज्जुब हुआ। उसी समय आनन्दसिंह की बेहोशी भी जाती रही और वे उठ कर घबराहट क साथ चारों तरफ दखते हुए कुँअर इन्द्रजीतसिंह के पास आकर बोले –

आनन्द–हम लोग यहा क्योंकर आये ?

इन्द्रजीत–मुझे मालूम नहीं तुमसे थाडी ही देर पहिले मैं होश में आया हूँ और ताज्जुब के साथ चारों तरफ देख रहा हू।

आनन्द–और सर्यू कहा चली गई ?

इन्द्रजीत–यह भी नहीं मालूम तुम चारों तरफ की दीवारों में चार दर्वाजे देख रहे हो, शायद वह हमसे पहिले होश में आकर इन दर्वाजो में से किसी एक के अन्दर चली गई हो।

आनन्द–शायद ऐसा ही हो चल कर देखना चाहिए। रिक्तग्रन्थ का कहा बहुत ठीक निकला आखिर उसी कोठरी ने हम लोगों को यहा पहुचा दिया मगर किस ढग से पहुचाया सो मालूम नहीं होता ! (छत की तरफ देख कर) शायद वह कोठरी इसके ऊपर हो और उसकी छत ने नीचे उतर कर हमलोगों को यहा लुढका दिया हो !

इन्द्रजीत–(कुछ मुस्कुरा कर) शायद ऐसा ही हो मगर निश्चय नहीं कह सकते, हा व्यर्थ न खडे रह कर सर्यू और नकाबपोशों का पता लगाना चाहिए।

इन्द्रजीतसिंह ने इतना कहा ही था कि दीवार वाले एक दर्वाजे के अन्दर से आवाज आई "बेशक बेशक !!"

तेरहवां बयान

'बेशक-बेशक की आवाज ने दोनों कुमारों को चौका दिया। वह आवाज सर्यू की न थी और न किसी ऐसे आदमी की थी जिसे कुमार पहिचानते हों यह सबब उनके चौंकने का और भी था। दोनों कुमारों को निश्चय हो गया कि वह आवाज नकाबपोशों में से किसी की है जो तिलिस्म के अन्दर लटकाये गये थे और जिन्हें हमलाग खोज रहे है। ताज्जुब नहीं कि सर्यू भी इन्हीं लोगों के सबब से गायब हो गई हो क्योंकि एक कमजोर औरत की बेहोशी हम लोगों की बनिस्बत जल्द दूर नहीं हो सकती।

दोनों भाइयों के विचार एक से थे अतएव दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा और इसके बाद इन्द्रजीतसिंह और उनके पीछे-पीछे आनन्दसिंह उस दर्वाजे के अन्दर चले गये जिसमें से किसी के बोलने की आवाज आई थी। –

कुछ आगे जाने पर कुमार को मालूम हुआ कि रास्ता सुरग के ढग का बना हुआ है-मगर बहुत छोटा और केवल एक ही आदमी के जाने लायक है अर्थात् इसकी चौडाई डेढ हाथ से ज्यादे नहीं है।

लगभग बीस हाथ जाने बाद दूसरा दर्वाजा मिला जिसे लाघ कर दोनों भाई एक छोटे बाग में गये जिसमें सब्जी की बनिस्बत इमारत का हिस्सा बहुत ज्यादे था अर्थात् उसमें कई दालान कोठरिया और कमरे थे जिन्हें देखते ही

इन्द्रजीतसिह ने आनन्दसिह से कहा, ' इसक अन्दर थाड़े आदमियों का पता लगाना भी कठिन होगा।

दोनों कुमार दो ही चार कदम आगे बढ़े थे कि पीछे से दर्वाजे के बन्द होने की आवाज आई घूम कर दखा ता उस दर्वाजे को वन्द पाया जिस लाघ कर इस वाग म पहुँचे थे। दर्वाजा लोहे का और एक ही पल्ले का था जिसने चूहदानी की तरह ऊपर से गिर कर दर्वाज का मुँह वन्द कर दिया। उस दर्वाजे के पल्ले पर मोटे-मोटे अक्षरों में यह लिखा हुआ था –

'तिलिस्म का यह हिस्सा टूटने लायक नही है, हा तिलिस्म को तोडने वाला यहा का तमाशा जरुर दख सकता है।"

इन्द्रजीत–यद्यपि तिलिस्मी तमाशे दिलचस्प होते है मगर हमारा यह समय वड़ा नाजुक है और तमाशा दखने योग्य नहीं क्योंकि तरह-तरह के तरद्दुदों ने दु खी कर रक्खा है। देखनाचाहिए इस तमाशवीनी स छुट्टी कव मिलती है।

आनन्द–मेरा भी यही ख्याल है वल्कि मुझे तो इस वात का अफसोस है कि इस वाग में क्यों आए, अगर किसी दूसरे दर्वाजे के अन्दर गये होते तो अच्छा होता।

इन्द्रजीत–(कुछ आगे वढ कर ताज्जुव से) देखा तो भाई उस पड के नीच कौन वैठा है ! कुछ पहिचान सकते हो ?

आनन्द–यद्यपि पौशाक में वहुत वड़ा फर्क है मगर भैरोसिह की सी मालूम पड़ती है !

इन्द्रजीत–मेरा भी यही ख्याल है आओ उसके पास चल कर देखें।

आनन्द–चलिये।

इस वाग के वीचा-वीच में एक कदम का वहुत वड़ा पेड था जिसके नीचे एक आदमी गाल पर हाथ रक्खे बैठा हुआ कुछ सोच रहा था। उसी को देख कर दानों कुमार चौंके थे और उस पर भैरोसिह के होन का शक हुआ था। जब दोनों भाई उसके पास पहुचे तो शक जाता रहा और अच्छी तरह पहिचान कर इन्द्रजीतसिह ने पुकारा और कहा "क्यों यार भैरोसिह, तुम यहा कैसे आ पहुचे ?

उस आदमी ने सर उठा कर ताज्जुव से दोनों कुमारों की तरफ दखा और तब हलकी आवाज में जवाव दिया, 'तुम दोनों कौन हो ? मै तो सात वर्ष से यहा रहता हू मगर आज तक किसी ने भी मुझसे यह न पूछा कि 'तुम यहा कैस आ पहुचे ?

आनन्द–कुछ पागल तो नहीं हो गये हो ?

इन्द–क्योंकि तिलिस्म की हवा बड़े-वडे चालाकों और ऐयारों को पागल बना देती है।

भैरो–(शायद वह भैरोसिह ही हो) कदाचित् ऐसा ही हो मगर मुझे आज तक किसी ने भी यह नही कहा कि तू पागल हो गया है ! मेरी स्त्री भी यहाँ रहती है, वह भी मुझ बुद्धिमान ही समझती है।

आनन्द–(मुस्कुरा कर) तुम्हारी स्त्री कहा है ? उसे मरे सामने वुलाओं, मै उससे पूछूगा कि वह तुम्हें पागल समझती है या नहीं।

भैरो–वाह-वाह तुम्हारे कहने से मै अपनी स्त्री को तुम्हारे सामने वुलालू ! कही तुम उस पर आशिक हो जाओ या वही तुम पर मोहित हो जाय तो क्या हो ?

इन्द्रजीत–(हस कर) वह भले ही मुझ पर आशिक हा जाय मगर मै वादा करता हू कि उस पर मोहित न होऊगा।

भैरो–सम्भव है कि मै तुम्हारी वातों पर विश्वास करलू मगर उसकी नौजवानी मुझे उस पर विश्वास नहीं करने देती। अच्छा ठहरों मैं उसे वुलाता हू। अरी ए री मेरी नौजवान स्त्री भोली ई ई ई !

एक तरफ से आवाज आई, 'मै आप ही चली आ रही हू तुम क्यों चिल्ला रहे हो ? कम्बख्त को जब देखो भोली-भोली' करके चिल्लाया करता है !

भैरो–देखो कम्बख्त को ! साठ घड़ी मे एक पल भी सीधी तरह से बात नहीं करती। खैर, नौजवान औरतें ऐसी हुआ ही करती है !

इतने में दोनों कुमारों ने देखा कि बाईं तरफ से एक नब्बे वर्ष की बुढिया छड़ी टेकती धीरे-धीरे चली आ रही है जिसे देखते ही भैरोसिह उठा और यह कहता हुआ उसकी तरफ बढ़ा, "आओ मेरी प्यारी भोली। तुम्हारी नौजवानी तुम्हें अकड़ कर चलने नहीं देती, तो मै अपने हाथों का सहारा देने के लिए तैयार हू।'

भैरोसिह ने वुढिया को हाथ का सहारा देकर अपने पास ला वैठाया और आप भी उसी जगह बैठ कर बोला, "मेरी प्यारी भोली देखा ये दो नये आदमी आज यहा आये है जो मुझे पागल बताते है। तू ही बता कि क्या मै पागल हू ?

वुढिया–राम-राम ऐसा भी कभी हो सकता है ? मै अपनी नौजवानी की कसम खा कर कहती हू कि तुम्हारे ऐसे वुद्धिमान वुड्ढे का पागल कहने वाला स्वय पागल है ! (दोनों कुमारों की तरफ देख कर) ये दोनों उजड्ड यहा कैसे आ

पहुचे ? क्या किसी ने इन्हें रोका नहीं ?

भैरो–मैंने इनसे अभी कुछ भी नहीं पूछा कि ये कौन हैं और यहा कैसे आ पहुचे क्योंकि मैं तुम्हारी मुहब्बत में डूबा हुआ तरह-तरह की वातें सोच रहा था अव तुम आई हो तो जो कुछ पूछना हो स्वय पूछ लो।

वुढिया–(कुमारों से)तुम दोनों कौन हो ?

भैरो–(कुमारों स) बताओ-बताओ सोचते क्या हो ? आदमी हो जिन्न हो भूत हो, प्रेत हैं कौन हो कहते क्यों नही ! क्या तुम देखते नहीं कि मेरी नौजवान स्त्री को तुमसे बात करने में कितना कष्ट हो रहा है ?

भैरासिह और उस बुढिया की बातचीत और अवस्था पर दोनों कुमारों को वडा ही आश्चर्य हुआ और कुछ सोचने के बाद इन्द्रजीतसिह न भैरोसिह से कहा अब मुझे निश्चय हो गया कि जरूर तुम्हें किसी ने इस तिलिस्म में ला फसाया है और कोई ऐसी चीज खिलाई या पिलाई है कि जिससे तुम पागल हो गए हो ताज्जुब नहीं कि यह सब बदमाशी इसी वुढिया की हो, अव अगर तुम हाश में न आओगें तो मै तुम्हें मार पीट कर होश में लाऊँगा। इतना कह कर इन्द्रजीतसिह भैरोसिह की तरफ वढे मगर उसी समय वुढ़िया ने यह कह कर चिल्लाना शुरु किया दौडियों दौडिया हाय रे मारा रे मारा रे चोर-चोर, डाकू दौडो-दौडो ले गया ले गया ले गया !

वुढिया चिल्लाती रही मगर कुमार न उसकी एक भी न सुनी और भैरोसिह का हाथ पकड के अपनी तरफ खैच ही लिया मगर वुढिया का चिल्लाना भी व्यर्थ न गया। उसी समय चार पाच खूबसूरत लडके दौडते हुए वहा आ पहुचे जिन्होंने दोनों कुमारों को चारो तरफ से घेर लिया। उन लडकों के गले मे से छोटी-छाटी झोलिया लटक रही थीं और उनमें आटे की तरह की कोई चीज भरी हुई थी। आन के साथ ही इन लडकों ने अपनी झोली मे से वह आटा निकाल कर दोनों कुमारों की तरफ फेंकना शुरु किया।

नि सन्देह उस वुकनी में तज वेहोशी का असर था जिसने दोनों कुमारों को वात की बात में बहोश कर दिया और दोनों चक्कर खाकर जमीन पर लट गय। जव आख खुली तो दोनों ने अपने को एक सजे सजाये कमरे में फर्श के ऊपर पड पाया।

चौदहवां बयान

जिस कमरे में दोनों कुमारों की वेहोशी दूर हो जाने के कारण आख खुली थी वह लम्वाई में बीस और चौडाई में पन्द्रह गज स कम न था। इस कमरे की सजावट कुछ विचित्र ढग की थी और दीवारों में भी एक तरह का अनूठापन था। रोशनी के शीशों (हाण्डी और कन्दीलों) की जगह उसमें दो दो हाथ लम्बी तरह-तरह की खूबसूरत पुतलिया लटक रही थीं और दीवार गीरों की जगह पचासों किस्म के जानवरों के चेहरे दीवारों में लगे हुए थे। दीवारें इस कमरे की लहरदार वनी हुई थीं और उन पर तरह-तरह की चित्रकारी की हुई थी। ऊपर की तरफ छत से कुछ नीचे हट कर चारों तरफ कोई गुलामगर्दिश या मकान है मगर इस समय सब खिडकियाँ वन्द थीं और इस कमरे में से काई रास्ता ऊपर जाने का नहीं दिखाई देता था।

कुँअर आनन्दसिह ने इन्द्रजीतसिह से कहा, "भैया, वह बुढ़िया तो अजब आफत की पुड़िया मालूम होती है। और उन लडकों की तेजी भी भूलने योग्य नहीं है।'

इन्द्रजीत–बेशक ऐसा ही है ! ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि उन्होंने हमलोगों को जीता छोड़ दिया। मगर हमें भैरोसिह की बातों पर आश्चर्य मालूम होता है ! क्या हम वास्तव में कोई ऐयार समझें ?

आनन्दसिह–यदि वह ऐयार होता तो नि सन्देह हम लोगों को धोखा देने के लिए भैरोसिह बना होता और साथ ी इसके पौशाक भी वैसी ही रखता जैसी भैरोसिह पहिरा करता है, इसके सिवाय वह स्वय अपने को भैरोसिह प्रकट करके हम लोगों का साथी बनता ऐसा न कहता कि भेरोसिह नहीं हूँ। मगर उसकी नौजवान औरत (बुढिया) के विषय में

इन्द्रजीत–उस बुढिया की बात जाने दो, अगर वह वास्तव में भैरोसिह है तो ताज्जुब नहीं कि मसखरापन करता है या पागल हो गया है और अगर वह पागल हो गया है तो नि सन्देह उस बुढ़िया की बदौलत जो उसको आखों में अभी तक नौजवान बनी हुई है।

आनन्द–उस बुढ़िया को जिस तरह हो गिरफ्तार करना चाहिए।

इन्द्रजीत–मगर उसके पहिले अपने को बेहोशी से बचाने का बन्दोबस्त कर लेना चाहिए,क्योंकि लड़ गई दगे से नो

हम लोग डरते ही नहीं।

आनन्द–जी हा जरूर ऐसा करना चाहिए। दवा तो हम लोगों के पास मौजूद ही है और ईश्वर की कृपा से कमरे का दर्वाजा भी खुला है।

दोनों भाइयों ने कमर से एक डिबिया निकाली जिसमें किसी तरह की दवा थी और उसे खाने के बाद कमरे के बाहर निकला ही चाहते थे कि ऊपर वाले छोटे छोटे दर्वाजों में से एक दर्वाजा खुला और पुन उसी नौजवान बुढ़िया के खसम भैरोसिह की सूरत दिखाई दी। दोनों भाई रुक गये और आनन्दसिह ने उसकी तरफ देख कर कहा, "अब आप यहा क्यो आ पहुच ?

भैरो–आपके हाल-चालकी खबर लेने और साथ ही इसके अपनी नौजवान औरत की तरफ से आपको ज्याफत का न्योता देने आया हू। मालूम होता है कि वह तुम लोगों पर आशिक हो गई है तभी खातिरदारी का बन्दोबस्त कर रही है। उसने तुम लोगों के लिये कितनी अच्छी-अच्छी चीजें खाने की तैयार की हैं और अभी तक बनाती ही जाती है।

आनन्द–(हस कर) और उन चीजों में जहर कितना मिलाया है ?

भैरो–केवल डेढ छटाक, मैं उम्मीद करता हू कि इतने से तुम लोगों की जान न जायगी।

आनन्द–आपकी इस कृपा के लिए मै धन्यवाद देता हूं और आपसे बहुत ही प्रसन्न होकर आपको कुछ इनाम दिया चाहता हूँ, आप मेहरबानी करके जरा यहा आइय तो अच्छी बात है।

भैरो–बहुत अच्छा, इनाम लेने में देर करना भले आदमियों का काम नहीं है।

इतना कह कर भैरोसिह वहा से हट गया और थोड़ी ही देर बाद सदर दर्वाजे की राह से कमरे के अन्दर आता हुआ दिखाई दिया। जब कुँअर आनन्दसिह के पास आया तो बोला, "लाइये क्या इनाम देते है।"

आनन्दसिह ने फुर्ती से तिलिस्मी खजर उसके हाथ पर रख दिया जिसके असर से वह एक दफे कापा और बेहोश होकर जमीन पर लम्बा हो गया। तब आनन्दसिह ने अपने भाई से कहा 'अब इसे अच्छी तरह जाच कर देख लेना चाहिये कि यह भैरोसिह ही है या कोई और ?'

इन्द्रजीत–हा अब बखूबी पता लग जायगा, पहिले इसके दाहिनी बगल वाला [illegible] देखो।

आनन्दसिह(भैरोसिह की बगल देख कर) देखिये मसा मौजुद है। अब कमर वाला दाग देखिये – लीजिए यह भी मौजूद है। इसके भैरोसिह होने में अब मुझे तो किसी तरह का सन्देह नहीं रहा।

इन्द्रजीत–अब सन्देह हो ही नहीं सकता, मैंने इस मसे को अच्छी तरह खैंच कर भी देख लिया अच्छा इसे होश में लाना चाहिये।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिह ने अपना वह हाथ जिसमें तिलिस्मी खजर के जाड़े की अगूठी थी भैरोसिंह के बदन पर फेरा। भैरोसिह तुरन्त होश में आकर उठ बैठा और ताज्जुब से चारों तरफ देखता हुआ बोला, 'वाह-वाह ! मैं यहा क्योंकर आ गया और आप लोगों ने मुझे कहा पाया ?'

आनन्द–मालूम होता है अब आपका पागलपन उतर गया ?

भैरो–(ताज्जुब से) पागलपन कैसा ?

इन्द्रजीत–इसके पहिले तुम किस अवस्था में थे और क्या करते थे, कुछ याद है ?

भैरो–मुझे कुछ भी याद नहीं ?

इन्द्रजीत–अच्छा बताओ कि तुम इस तिलिस्म के अन्दर कैसे आ पहुचे।

भैरो–केवल मुझी को नहीं बल्कि किशोरी, कामिनी, कमला, लक्ष्मीदेवी लाडिली, कमलिनी और इन्दिरा को भी राजा गोपालसिह ने इस तिलिस्म के अन्दर पहुचा दिया है, बल्कि मुझे तो सबके आखीर में पहुचाया है। आपके नाम की एक चीठी भी दी थी मगर अफसोस ! आपसे मुलाकात होने न पाई और मेरी अवस्था बदल गई।

इन्द्रजीत–वह चीठी कहा है ?

भैरो– (इधर-उधर देख कर) जब मेरे बटुए ही का पता नहीं तो चीठी के बारे में क्या कह सकता हू !

आनन्द–मगर यह तो तुम्हें याद होगा कि उस चीठी में क्या लिखा था ?

भैरो–क्यों नहीं, मेरे सामने ही तो वह लिखी गई थी। उसमें कोई विशेष बात न थी केवल इतना ही लिखा था कि उस गुप्त स्थान से किशोरी कामिनी इत्यादि को लेकर मै जमानिया जा रहा था,मगर मायारानी की कुटिलता के कारण अपने इरादे में बहुत कुछ उलट फेर करना पडा। जब यह मालूम हुआ कि मायारानी तिलिस्मी बाग के अन्दर घुस गई है,तब लाचार सब औरतों को तिलिस्म के अन्दर पहुचाताहूँ। बाकी हाल भैरोसिह से सुन लेना –बस इतना लिखा था। मालूम होता है कि पहिले का हाल वह आपसे कह चुके हैं।

इन्द्रजीत–हा पहिले का बहुत कुछ हाल वह हमसे कह चुके है।

भैरो–क्या यह भी कहा था कि कृष्णाजिन्न का रुप भी उन्हीं कृपानिधान ने धारण किया था ?

आनन्द–नही सा तो साफ नहीं कहा था मगर उनकी बातों से हम लोग कुछ-कुछ समझ गये थे कि कृष्णाजिन्न वही बने थे खैर अव तुम खुलासा बताओ कि क्या हुआ ?

भैरोसिहने वह सब हाल दोनों कुमारों से कहा जो ऊपर के बयानों में लिखा जा चुका है और जिसमें का वहुत कुछ हाल राजा गोपालसिह की जुबानी दोनों कुमार सुन चुके थे। इसके बाद भैरोसिह ने कहा – 'जव राजा गोपालसिह को मालूम हो गया कि मायारानी वहुत स आदमियों को लेकर तिलिस्मी बाग के अन्दर जा छिपी है तब वे एक गुप्त राह से छिप कर सव औरतों को साथ लिए हुए उस मकान में पहुचे जिससें कमन्द के सहारे सभो को लटकाते हुए शायद आपने देखा होगा

इन्द्रजीत–हा देखा था, तो क्या उस समय वे औरतें बेहोश थीं ?

भैरो–जी हा न मालूम किस ख्याल में उन्होंने सब औरतों को बेहोश कर दिया था मगर इसके पहिल यह कह दिया था कि तुम्हें तिलिस्म के अन्दर पहुचा दते है जहा दोनों कुमार है यद्यपि वहा पहुचना बहुत कठिन था, मगर अब एक दीवार वाले तिलिस्म को दोनों कुमार तोड चुके है इसलिए वहा तक पहुचा देने में कोई कठिनता न रही ।

इन्द–तो क्या तुम भी उन औरतों के साथ ही उस बाग में उतारे गये थे ?

भैरो–पहिले ता उन्होंने इन्द्रदेव को बहुत सी बातें समझाई-बुझाई जिन्हें मै समझ न सका। इसके बाद इन्द्रदेव को तो गोपालसिह बनाया और इन्द्रदेव के एक ऐयार को भैरोसिह बना कर दोनों को खास बाग के अन्दर भेजा। इस काम से छुट्टी पाकर सव औरतों को और मुझे साथ लिए उस मकान में आयें। सभों को तो उस कमरे में बैठा दिया जिसमें से कमन्द के सहारे सबको लटकाया था और मुझे उनकी हिफाजत के लिए छोडनेकेबाद कमलिनी को साथ लिए हुए कहीं चले गय और घन्टे भर के बाद वापस आये। उस समय कमलिनी के हाथ में एक छोटी सी किताब थी जिसे उन्होंन कई दफे तिलिस्मी किताब के नाम से सम्बोधन किया था। इसके बाद उन्होंने सभी को बेहोश करके नीचे लटका दिया। इस काम स छुट्टी पाकर उन्होंने आपके नाम की दो चीठिया लिखीं एक तो उसी कमरे में रक्खी और दूसरी चीठी जिसका मै अभी जिक्र कर चुका हू मुझे देकर कहा कि जब कुमारों से तुम्हारी मुलाकात हो तो यह चीठी उन्हें देना और सव काम कमलिनी की आज्ञानुसार करना यहा तक कि यदि कमलिनी तुम्हें सामना हो जाने पर भी कुमारों से मिलने के लिए मना करे ता तुम कदापि न मिलना इत्यादि कह कर मुझे नीचे उतर जाने के लिए कहा। (कुछ रुक कर) नहीं-नहीं मैं भूलता हूँ, मुझे उन्होंने पहिले ही नीचे उतार दिया था क्योंकि सभों की गठरी मै हीं ने नीचे से थामी थी सभों को नीचे उतार देने के बाद जव मै उनकी आज्ञानुसार पुन ऊपर गया तब उन्होंन ये सब बातें मुझे समझाई और आपके इन्द्रदेव भी वहा आ पहुचे जो गोपालसिह की सूरत बने हुए थे। इन्द्रदेव ने राजा गोपालसिह से कुछ कहना चाहा, मगर उन्होंने राक दिया और मुझसे कहा कि अब तुम भी कमद के सहारे नीचे उतर जाओ और इन्द्रदेव के आने का इन्तजार करो। मै उनकी आज्ञानुसार नीचे उतर आया। मैं अन्दाज से कहता हू कि उन बेहोशों में आप या छाटे कुमार छिप थे और आप ही दोनों में से किसी ने मेरे बदन के साथ तिलिस्मी खजर लगाया था जिससे मै बेहोश हो गया।

इन्द–हा ठीक है ऐसा ही हुआ था।

भैरो–फिर तो मै बेहोश हो ही गया मुझे कुछ भी नहीं मालूम कि इन्द्रदेव जो गोपालसिह की सूरत में थे कब नीचे आये या क्या हुआ !

आनन्द–ठीक है, वह भी थोडी देर बाद नीचे उतरे और तुम्हारी तरह से वह भी बेहोश किए गए। (इन्दजीतसिह) से अब मालूम हुआ कि इन्द्रदेव ही के कहे मुताबिक मैं आपको बुलाने के लिए ऊपर गया था।

भैरो–हा जब हम लोगों को उन्होंने चैतन्य किया तो कहा था कि दोनों कुमार ऊपर गए हैं। आखिर इन्द्रदेव ने कमन्द खीचली और हम लोगों को लिए हुए दूसरी दीवार की तरफ गये। वहा कमलिनी ने जमीन खोद कर एक दर्वाजा पैदा किया। ताज्जुब नहीं कि उसी दर्वाजे की राह से आप लोग भी यहा तक आये हों और अगर ऐसा है तो उस कोठरी में भी अवश्य पहुचे होंगे, जहा की जमीन लोगों को बेहोश करके तिलिस्म के अन्दर पहुचा देती है ।

आनन्द–हमलोग भी उसी रास्ते से यहा तक आये है अच्छा तो क्या इन्द्रदेव भी तुम लोगों के साथ यहा आये है ?

भैरो–जी नहीं वह तो ऊपर ही रह गये बोले कि मुझे तिलिस्म के अन्दर जाने की आज्ञा नहीं है तुम लोग जाओ मै इसी बाग में छिप कर रहूगा, जब दोनों कुमार यहा आ जायेंगे तव उनसे छिप कर पुन कमन्द के सहारे ऊपर जाऊगा और राजा गापालसिह के साथ मिल कर काम करूगा।

आनन्द–(इन्द्रजीतसिह से) तव ताज्जुब नहीं कि इन्द्रदेव ने ही सर्यू को बेहोश किया हो ?

इन्द–जरूर ऐसा ही है (भैरो से) अच्छा तब क्या हुआ !

भैरो–नीच उतर कर जब हम लोग उस कोठरी में पहुचे जहा की जमीन थोडी देर में लोगों को बेहोश कर देती है तव

नियमानुसार सभों के साथ मैं भी बेहोश हो गया। उस समय से इस समय तक का हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं है, मैं बिल्कुल नहीं जानता कि उसके बाद क्या हुआ और मैं किस अवस्था में होकर क्यों इस तरह अपने को यहा पाता हू ?

पन्द्रहवां बयान

भैरोसिह की बातें सुन कर दोनों कुमार देर तक तरह-तरह की बातें सोचते रहे और तब उन्होंने अपना किस्सा भैरोसिह से कह सुनाया। बुढिया वाली बात सुन कर भैरोसिह हस पडा और बोला, मुझे कुछ भी ज्ञान नही है कि वह बुढिया कौन और कहा है यदि अब मै उसे पाऊ तो जरुर उसकी बदमाशी का मजा उसे चखाऊ। मगर अफसोस तो यह है कि मेरा ऐयारी का बटुआ मेरे पास नहीं है, जिसमें बडी-बडीअनमाल चीजें थीं। हाय वे तिलिस्मी फूल भी उसी बटुए में थे जिनके देने से मेरा बाप भी मुझे टल्ली बताया चाहता था मगर महाराज ने दिलवा दिया। इस समय बटुए का न होना मेरे लिए बडा दुखदाई है क्योंकि आप कह रहे है कि उन लडकों न एक तरह की बुकनी उडा कर हमें बेहोश कर दिया । कहिए अब मै क्योंकर अपने दिल का हौसला निकाल सकता हू ?

इन्द–नि सन्देह उस बटुए का जाना बहुत ही बुरा हुआ ? वास्तव में उसमें बडी अनूठी चीजें थीं मगर इस समय उनके लिए अफसोस करना फजूल है हा इस समय मै दो चीजों से तुम्हारी मदद कर सकता हू।

भैरो–वह क्या ?

इन्द–एक तो वह दवा हम दोनों के पास मौजुद है जिसके खाने से बेहोशी असर नहीं करती और वह मैं तुम्हें खिला सकता हू, दूसरे हम लोगों के पास दो-दो हर्बे मौजुद है बल्कि यदि तुम चाहों तो तिलिस्मी खजर भी द सकता हू।

भैरो–जी नहीं तिलिस्मी खजर मैं न लूगा क्याकि आपके पास उसका रहना तब तक बहुत ही जरुरी है जब तक आप तिलिस्म तोडने का काम समाप्त न कर ले। मुझे बस मामूली तलवार दे दीजिये मैं अपना काम उसी से चला लूगा और वह दवा खिला कर मुझे आज्ञा दीजिए कि मै उस बुढिया के पास से अपना बटुआ निकालन का उद्योग करु।

दोनों कुमारों के पास तिलिस्मी खजर के अतिरिक्त एक-एक तलवार भी थी। इन्दजीतसिह ने अपनी तलवार भैरोसिह को दी और डिबिया में से निकाल कर थोडी सी दवा भी खिलाने के बाद कहा "मैं तुमसे कह चुका हू कि जब हम दोनों भाई इस बाग में पहुचे तो चूहेदानी के पल्ले की तरह वह दर्वाजा बन्द हो गया जिस राह से हम दोनों आये थे और उस दर्वाज पर लिखा हुआ था कि यह तिलिस्म टूटने लायक नहीं है।

भैरो–हा आप कह चुके है।

आनन्द–(इन्दजीत से) भैया मुझे तो उस लिखावट पर विश्वास नहीं होता।

इन्दजीत–यही मैं भी कहने को था क्योंकि रिक्तग्रन्थ की बातों से तिलिस्म का यह हिस्सा भी टूटने योग्य जान पडता है (भैरोसिह से) इसी से मैं कहता हू कि इस बाग में जरा समझ बूझ के घूमना।

भैरो–खैर इस समय तो मैं आपके साथ चलता हू, चलिए बाहर निकलिए।

आनन्द–(भैरो से) तुम्हें याद है कि तुम ऊपर से उतर कर इस कमरे में किस राह से आए थे ?

भैरो–मुझे कुछ भी याद नहीं।

इतना कह कर भैरोसिह उठ खड़ा हुआ और दोनों कुमार भी उठ कर कमरे के बाहर निकलने के लिए तैयार हो गय।

सोलहवां बयान

तीनों आदमी कमरे के बाहर निकल कर सहन में आय उस समय कुमार को मालूम हुआ था कि यह कमरा बाग के पूरब तरफ वाली इमारत के सब से निचले हिस्से में बना हुआ है और इस कमरे के ऊपर और भी दो मजिल की इमारत है मगर वे दोनों मजिलें बहुत छोटी थीं और उनके साथ ही दोनों तरफ इमारतों का सिलसिला बराबर चल गया था। दिन चढ आया था और नित्यकर्म न किए जाने के कारण कुमारों की तबीयत कुछ भारी हो रही थी।

जिस तरह इस तिलिस्म में पहिले दूसरे बाग के अन्दर नहर की बदौलत पानी की कमी न थी उसी तरह इस बाग में भी नहर का पानी छोटी नालियों के जरिये चारों ओर घूमता हुआ आता और दस-पाच मेवोंके पेड भी थे, जिनमें बहुतायत के साथ मेवे लगे हुए थे।

दोनों कुमार और भैरोसिह टहलते हुए बाग के बीचो-बीच से उसी कदम्ब के पेड़ तले आए जिसके नीचे पहिले-पहल

गेरोसिह के दर्शन हुए थ। वातचीत करन के बाद तीनों ने जरुरी कामों से छुट्टी पा हाथ मुह धोकर स्नान किया और सध्योपासन से छुट्टी पाकर के बाग के मेवे और नहर के जल से सन्तोष करने के बाद बैठ कर यों बातचीत करने लगे –

इन्द्रजीत–मैं उम्मीद करता हू कि कमलिनी किशोरी और कामिनी वगैरह से इसी बाग में मुलाकात होगी।

आनन्द–नि सन्देह ऐसा ही है इस बाग में अच्छी तरह घूमना और यहाँ की हर एक बातों का पूरा-पूरा पता लगाना हम लोगों के लिए जरुरी है।

भैरो–मेरा दिल भी यही गवाही देता है कि वे सब जरूर इसी बाग में होंगी मगर कहीं ऐसा न हुआ हो कि मेरी तरह से उन लोगों का दिमाग भी किसी कारण विशेष से बिगड गया हो।

इन्द्रजीत–कोई ताज्जुब नहीं अगर ऐसा ही हुआ हो मगर तुम्हारी जुबानी मै सुन चुका हू कि राजा गोपालसिह ने कमलिनी को बहुत कुछ समझा बुझा कर एक तिलिस्मी किताब भी दी है।

भैरो–हा बेशक मैं कह चुका हू और ठीक कह चुका हू।

इन्द्रजीत–तो यह भी उम्मीद कर सकता हू कि कमलिनी को इस तिलिस्म का कुछ हाल मालूम हो और वह किसी क फ्दे में न फसे।

भैरो–इस तिलिस्म में और है ही कौन जो उन लोगों के साथ दगा करेगा ?

आनन्द–बहुत ठीक ! शायद आप अपनी नौजवान स्त्री और उसके हिमायती लड़कों को बिल्कुल ही भूल गए या हम लोगों की जुबानी सब हाल सुन कर भी आपको उसका कुछ खयाल न रहा !

भैरो–(मुस्कुरा कर) आपका कहना ठीक है मगर उन सभों को

इतना कह कर भैरोसिह चुप हो गया औ र कुछ सोचने लगा। दोनों कुमार भी किसी बात पर गौर करने लगे और कुछ देर बाद भैरोसिह ने इन्द्रजीतसिह से कहा –

भैरो–आपको याद होगा कि लडकपन में एक दफे मैंने पागलपन की नकल की थी।

इन्द–हा याद है तो क्या आज भी तुम जान बुझकर पागल बने हुए थे ?

भैरो–नहीं-नहीं मेरे कहने का मतलब यह नहीं बल्कि मै यह कहता हू कि इस समय भी उसी तरह का पागल बन के शायद कोई काम निकाल सकू।

आनन्द–हा ठीक तो है आप पागल बन के अपनी नौजवान स्त्री को बुलाइए जिस ढग से मै बताता हू।

कुमार के बताये हुए ढग से भैरोसिह ने पागल बन के अपनी नौजवान स्त्री को कई दफे बुलाया मगर उसका नतीजा कुछ न निकला न तो कोई उसके पास आया और न किसी ने उसकी बात का जवाब ही दिया ,आखिर इन्द्रजीतसिह ने कहा 'बस करो उसे मालूम हो गया कि तुम्हारा पागलपन जाता रहा अब हम लोगों को फसाने के लिए वह जरुर कोई दूसरा ही ढग लावेगी।

आखिर भैरोसिह चुप हो रहे और थोडी देर बाद तीनों आदमी इधर-उधर का तमाशा देखने के लिए यहा से रवाना हुए। इस समय दिन बहुत कम बाकी था।

तीनों आदमी बागके पश्चिम तरफ गये जिधर सगर्ममर की एक बारहदरी थी। उसके दोनों तरफ दो इमारतें और थी जिनके दर्वाजे बन्द रहने के कारण यह नहीं जाना जाता था कि उसके अन्दर क्या है,मगर बारहदरी खुले ढग की बनी हुई थी अर्थात् उसके पीछे की तरफ दीवानखान और आगे की तरफ केवल तेरह खम्भे लगे हुए थे जिनमें दर्वाजा चढाने की जगह न थी।

इस बारहदरी के मध्य में एक सुन्दर चबूतरा बना हुआ था जिस पर कम से कम पन्द्रह आदमी बखूबी बैठ सकते थे। चबूतरे के ऊपर बीचो-बीचमें लोहे का चौखूटा तख्त था जिसमें उठाने के लिए कडी लगी हुई थी और चबूतरे के सामने की दीवार में एक छोटा दर्वाजा था जो इस समय खुला हुआ था और उसके अन्दर दो-चार हाथ के बाद अन्धकार सा जान पडता था। भैरोसिह ने कुअर इन्द्रजीतसिह से कहा 'यदि आज्ञा हो तो इस छोटे से दर्वाजे के अन्दर जाकर देखू कि इसमें क्या है ?

इन्द्रजीत–यह तिलिस्म का मुकाम है खिलवाड नहीं है कहीं ऐसा न हो कि तुम अन्दर जाओ और दर्वाजा बन्द हो जाय ! फिर तुम्हारी क्या हालत होगी सो तुम्हीं सोच लो।

आनन्द–पहिले यह तो देखो कि दर्वाजा लकड़ी का है या लोहे का ?

इन्द्रजीत–भला तिलिस्म बनाने वाले इमारत के काम में लकड़ी क्यों लगाने लगे जिसके थोडे ही दिन में बिगड जाने का ख्याल होता है, मगर शक मिटाने के लिए यदि चाहो तो देख लो।

का इन्तजार कर रहा हो। थाडी दर में चार-पॉच औरतें मिल कर किसी लटकते बोझ को लिए हुए उसी आदमी के पास से निकल गइ जिसके हाथ में चिराग था और उन्हीं के पीछ-पीछे वह आदमी भी चिराग लिए चला गया। दर्वाजा वन्द नहा हुआ मगर उसके अन्दर अधकार हो गया। भैरोंसिह ने यह समझ कर कि शायद हम और भी कुछ तमाशा देखें दोनों कुमारों का चैतन्य कर दिया और जो कुछ देखा था बयान किया।

हम कह अय है कि इस वारहदरी की पिछली दीवार के नीचे बीचोबीच में अथात चबूतरे के सामन एक छाटा दुर्वाजा था जिसक अन्दर भैरोसिह न जाने का इरादा किया था। इस समय यकायक उसी दर्वाजे के अन्दर चिराग की रोशनी दख कर भैरोसिह और दोनों कुमार चोक पडे और उठकर दरवाज के सामन जा झाककर देखने लगे। मालूम हुआ कि इस छाटे से दर्वाजे के अन्दर एक बहुत बडा कमरा है जिसके दोनों तरफ की लोहे वाली शहतीर (बडी धरन)बडे वड चौकूटे खम्भों के ऊपर हैं और उसकी छत लदाव की बनी हुई है। उस कमरे के दोनों तरफ के खम्भों के वाद भी एक दालान है और दालान की दीवारों में कई वडे दर्वाजे बने है जिनमें कुछ खुले और कुछ बन्द हैं।

दोनों कुमारा और भैरासिह ने दखा कि उसी कमर के मध्य में एक आदमी जिसके चहरे पर नकाब पडी थी हाथ में चिराग लिए हुए खडा छत की तरफ देख रहा है। कुछ दर तक देखन बाद वह आदमी एक खम्भे के सहारे चिराग रख कर पीछ की तरफ लौट गया।

भैरोसिह और दोनों कुमार आड में खडे होकर सब तमाशा दख रह थे और जब वह आदमी चिराग रख कर हट गया तब भी यह सोचकर खडे ही रहे कि जब चिराग रख कर गया है ता पुन आवे ही गा।

उस नकाबपोश को चिराग रख कर गये हुए दस बारह पल से ज्याद न बीते होंगे कि दूसरी तरफ वाले दर्वाजों के अन्दर से कोई दूसरा आदमी निकल कर तेजी के साथ इस कमरे के मध्य में आ पहुचा ओर हाथ की हवा देकर उस चिराग को बुझा दिया जिस पहिला आदमी एक खम्भे के सहारे रखकर चला गया था और इसके बाद कमरे में अधकार हो जान के कारण कुछ मालूम न हुआ कि दूसरा आदमी चिराग बुझा कर चला गया या उसी जगह कहीं आड दकर छिप रहा।

यह दूसरा आदमी भी जिसन कमरे में आकर चिराग बुझा दिया था अपने चहरे पर स्याह नकाब डाले हुए था केवल नकाब ही नहीं उसका तमाम बदन भी स्याह कपडे से ढका हुआ था और कद में छोटा रहने के कारण इसका पता नहीं लग सकता था कि वह मर्द है या औरत।

थाडी ही देर वाद दानों कुमार और भैरोसिह के कान में किसी के बोलने की आवाज सुनाई दी जैसे किसी ने उस अन्धेरे कमरे में आकर ताज्जुब क साथ कहा हा कि है ! चिराग कौन बुझा गया ?

इसके जवाब में किसी ने कहा अपने का सम्हाले रहो और जल्दी स हट जाओ काई दुश्मन न आ पहुचा हो !

इसके बाद चौथाई घडी तक न तो किसी तरह की आवाज ही सुनाई दी और न काई दिखाई ही पडा मगर दोनों कुमार और भैरोसिह अपनी जगह से न हिले।

आधी घडी के वाद वह आदमी पुन हाथ में चिराग लिए आया जो पहले खम्भे के सहारे चिराग रखकर चला गया था। इस आदमी का बदन गठीला और फुर्तीला मालूम पडता था इसका पायजामा अगा पटूका मुडासा और नकाब ढीले कपडे का बना हुआ था। अब की दफे वह बायें हाथ में चिराग और दाहिने हाथ में नगी तलवार लिए था शायद उसे पहले दुश्मन का ख्याल था जिसने चिराग बुझा दिया था इसलिए उसने चिराग जमीन पर रख दिया और तलवार लिए चारों तरफ घूम-घूम कर किसी को दूढने लगा। वह आदमी जिसने चिराग बुझा दिया था एक खम्भे की आड में छिपा हुआ था। जब ढीले कपडे वाला उस खम्भे के पास पहुचा तो उस आदमी पर निगाह पडी उसी समय वह नकाबपोश भी सम्हल गया और तलवार खैंच कर सामने खडा हो गया। पीले कपडे वाल ने तलवार वाला हाथ ऊचा करके पूछा सच बता तू कौन है ?'

इसके जवाब में स्याह नकाबपोश ने यह कहत हुए उस पर तलवार का वार किया कि मरा नाम इसी तलवार की धार पर लिखा हुआ है'।

पीले कपडे वाले ने बडी चालाकी से दुश्मन का वार बचाकर अपना वार किया और इसक बाद दोनों में अच्छी तरह लडाई होने लगी।

दोनों कुमार और भैरोसिह लडाइ के बड ही शौकीन थे इसलिए बडी चाह से ध्यान देकर उन दोनों की लडाई देखन लगे। नि सन्देह दोनों नकाबपोश लडने में होशियार और बहादुर थे एक दूसरे क वार को बडी खूबी से बचाकर अपना वार करता था जिसे देख इन्द्रजीतसिह ने आनन्दसिह से कहा दोनों अच्छे है चिराग की रोशनी एक ही तरफ

पडती है दूसरी तरफ सिवाय तलवार की चमक के कोई सहारा वार बचाने के लिए नहीं हो सकता ऐसे समय में इस खूबी के साथ लडना मामूली काम नहीं है ।'

इसी बीच यकायक स्याह नकाबपोश ने अपने हाथ की तलवार जमीन पर फेंक दी और एक खम्भे की आड़ घूमता हुआ खजर खींच और उसका कब्जा दबा कर बोला, 'अब तू अपने को किसी तरह नहीं बचा सकता ।

नि सन्देह वह तिलिस्मी खजर था जिसकी चमक से उस कमरे में दिन की तरह उजाला हो गया। मगर पीले नकाबपोश ने भी उसका जवाब तिलिस्मी खजर ही से दिया क्योंकि उसके पास भी तिलिस्मी खजर मौजूद था। तिलिस्मी खजरों से लडाई अभी पूरी तौर से होने भी न पाई थी कि एक तरफ से आवाज आई, पील मकरन्द ले जाने न पावे ! अब मुझे मालूम हो गया कि भैरोसिह के तिलिस्मी खजर और बटुए का चोर यही है दखो इसकी कमर से वह बटुआ लटक रहा है अगर तुम इस बटुए के मालिक बन जाओगे तो फिर इस दुनिया में तुम्हारा मुकाबला करने वाला कोई भी न रहेगा क्योंकि यह तुम्हारे ही ऐसे ऐयारों के पास रहने योग्य है ।'

यह एक ऐसी बात थी जिसने सबसे ज्यादे भैरोसिह को चौका ही नहीं दिया बल्कि बेचैन कर दिया। उसने कुअर इन्द्रजीतसिह से कहा बस आप कृपा करके अपना तिलिस्मी खजर मुझे दीजिये मै स्वय उसके पास जाकर अपनी चीज ले लूगा, क्योंकि यहा पर तिलिस्मी खजर के बिना काम न चलेगा और यह मौका भी हाथ से गवा देने लायक नहीं है।

इन्द–हॉ बेशक ऐसा ही है, अच्छा चलो मै तुम्हारे साथ चलता हू।

आनन्द–और मै ?

इन्द्रजीत–तुम इसी जगह खड़े रहो, दोनों भाइयों का एक साथ वहा चलना ठीक नहीं अकेला मै ही उन दोनों के लिये काफी हू।

आनन्द–फिर भैरोसिह जा कर क्या करेगे ? तिलिस्मी खजर की चमक में इनकी आख खुली नही रह सकती।

इन्द्रजीत–सो तो ठीक है।

भैरो–अजी आप इस समय ज्यादे सोच विचार न कीजिए ! आप अपना खजर मुझे दीजिये बस मै निपट लूगा।

इन्द्रजीतसिह ने खजर जमीन पर रख दिया और उसके जोड़ की अगूठी भैरोसिह की उगली में पहिरा देने बाद खजर उठा लेने के लिए कहा। भैरोसिह ने तिलिस्मी खजर उठा लिया और उस छोटे दर्वाजे के अन्दर जाकर बोला मै भैरोसिह स्वय आ पहुचा !

भैरोसिह के अन्दर जाते ही दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया और दोनों कुमार ताज्जुब से एक दूसरे की तरफ देखने। लगे।

*सत्रहवा भाग समाप्त *

चन्द्रकान्ता सन्तति

अट्ठारहवां भाग

पहिला बयान

कह सकते है कि तारासिह के हाथ में नानक का मुकदमा दे ही दिया गया। राजा बीरेन्द्रसिह ने तारासिह को इस काम पर मुकर्रर किया था कि वह नानक के घर जाय और उसकी चाल चलन तथा उसके घर के सच्चे-सच्चे हाल की तहकीकात करके लौट आवे मगर इसके पहिले कि तारासिह नानक की चालचलन और उसकी नीयत का हाल जाने, उसने नानक के घर ही की तहकीकात शुरू कर दी और उसकी स्त्री का भेद जानने के लिए उद्योग किया जब नानक की स्त्री सहज ही में तारासिह के पास आ गई तो उसे उसकी बदचलनी का विश्वास हो गया और उसने चाहा कि किसी तरह नानक की स्त्री को टाल दे और इसके बाद नानक की नीयत का अन्दाजा करे मगर उसकी कार्रवाई में उस समय विघ्न पड गया जब नानक की स्त्री तारासिह के सामने जा बैठी और उसी समय बाहर से किसी के चिल्लाने की आवाज आई।

हम कह चुके है कि नानक के यहा एक मजदूरनी थी। वह नानक के काम की चाहे न हो मगर उसकी स्त्री के लिए उपयुक्त पात्र थी और उसके द्वारा नानक की स्त्री का सब काम चलता था। मगर इस तारासिह वाले मामले में नानक की स्त्री श्यामा की बातचीत हनुमान छोकरे की मारफत हुई थी इसलिए बीच वाले मुनाफे की रकम में उस मजदूरनी के हाथ झझी कौड़ी भी न लगी थी जिसका उसे बहुत रज हुआ और वह दोस्ती के बदले में दुश्मनी करने पर उतारु हो गई। इसलिए कि श्यामारानी को उससे किसी तरह का पर्दा तो था ही नहीं, उसने मजदूरनी से अपना भेद तो सब कह दिया

मगर उसके हानि-लाभ पर ध्यान न दिया। इसलिए वह मजदूरनी चुपचाप सब कार्रवाई देखती सुनती और समझती रही मगर जब श्यामारानी तारासिह के यहा चली गई और कुछ देर बादनानक घर में आया तो उसने अपना नाम प्रकट न करने का वादा कराके सब हाल नानक से कह दिया और तारासिह का मकान दिखा देने के लिए भी तैयार हो गई क्योंकि उसे पता ठिकाना तो मालूम हो ही चुका था।

नानक ने जब सुना कि उसकी स्त्री किसी परदेशी के घर चली गई है, तब उसे बडा क्रोध आया और उसने ऐयारी के सामान से लैस हाकर अकेले ही अपनी स्त्री का पीछा किया।

नानक ने यद्यपि किसी कारण से लोकलाज को तिलाजुली द दी थी मगर ऐयारी को नहीं। उसे अपनी ऐयारी पर बहुत भरोसा था और वह दस-पाच आदमियों में अकेला घुस कर लडने की हिम्मत भी रखता था, यही सबब था कि उसने किसी सगी-साथी का खयाल न करके अकेले श्यामारानी का पीछा किया, हॉ यदि उसे मालूम हाता कि श्यामारानी का उपपति तारासिंह है तो कदापि अकेला न जाता।

नानक औरत के वेष में घर से बाहर निकला और जब मकान के पास पहुचा जिसमें तारासिह ने डेरा डाला था, तो कमन्द लगा कर मकान के ऊपर चढ गया और धीरे-धीरे उस कोठरी के पास जा पहुचा जिसके अन्दर तारासिह और श्यामारानी थी और बाहर तारासिह का चेला और नानक का नौकर हनुमान हिफाजत कर रहा था। वहाँ पहुँचते ही उसने एक लात अपने नौकर की कमर में ऐसी जमाई कि वह तिलमिला गया और जब वह चिल्लाया तो उसे चिढाने की नीयत से नानक स्वयं भी औरतों ही की तरह चिल्ला उठा।

यही वह चिल्लाने की आवाज़ थी जिसे कोठरी के अन्दर बैठे हुए तारासिह और श्यामा ने सुना था। चिल्लाने की आवाज सुनते ही तारासिह उठ खडा हुआ और हाथ में खजर लिए कोठरी के बाहर निकला। वहा अपने चेले और हनुमान के अतिरिक्त एक औरत को खडा देख वहताज्जुब करने लगा और उसने औरत अर्थात् नानक से पूछा 'तू कौन है ?'

नानक–पहिले तू ही बता कि तू कौन है जिसमें तुझे मार डालने के बाद यह तो मालूम रहे कि मैंने फलाने को मारा था।

तारा–तेरी ढिठाई पर मुझे ताज्जुब ही नहीं होता बल्कि यह भी मालूम होता है कि तू औरत नहीं कोई ऐयार है !

नानक–(गम्भीरता के साथ) बेशक मैं ऐयार हूँ तभी तो अकेले तेरे घर में घुस आया हूँ ! शैतान, तू नहीं जानता कि बुरे कर्मो का फल क्योंकर मिलता है और वह कितना बडा ऐयार है जिसकी स्त्री को तूने धोखा देकर बुला लिया है !

तारा–(जोर से हस कर) अ ह ह ह ! अब मुझे विश्वास हो गया कि बेहया नानक तू ही है और शायद अपनी पतिव्रता की आमदनी गिनाने के लिए यहा आ पहुँचा है। अच्छा तो अब तुझे यह भी जान लेना चाहिए कि जिसका तू मुकाबला कर रहा है उसका नाम तारासिह है और वह राजा बीरेन्द्रसिह की आज्ञानुसार तेरे चाल-चलन की तहकीकात करने आया है।

तारासिह और राजा बीरेन्द्रसिह का नाम सुनते ही नानक सन्न हो गया। उधर उसकी स्त्री ने जब यह जाना कि इस कोठरी के बाहर उसका पति खडा है तो वह नखरे से रोने और पीटने लगी तथा यह कहती हुई कोठरी के बाहर निकल कर नानक के पैरों पर गिर पड़ी कि मुझे तो तुम्हारा नाम ले कर हनुमान यहा ले आया है।

नानक थोडी देर तक सन्नाटे में रहा इसके बाद तारासिह की तरफ देख के बोला–

नानक–क्या ऐयारों का यही धर्म है कि दूसरों की औरतों को खराब करें और बदकारी का धब्बा अपने नाम के साथ लगावें।

तारा–नहीं नहीं एयारों का यह काम नही है और एयारों को यह भी उचित नहीं है कि सब तरफ का ख्याल छोड केवल औरत की कमाई पर गुजारा करें। मैंने तेरी औरत को किसी बुरी नीयत से नहीं बुलाया बल्कि चाल-चलन का हाल जानने के लिए ऐसा किया है। जो बातें तेरे बारे में सुनी गई हैं और जो कुछ यहा आने पर मैंने मालूम कीं, उनसे जाना जाता है कि तू बडा ही कमीना और नमकहराम है। नमकहराम इसलिए कि मालिक के काम की तुझे कोई भी फिक्र नहीं है और इसका सबूत केवल मनोरमा ही बहुत है जिसके साथ तू शादी किया चाहता था और जिसने जूतियों से तेरी पूजा ही नहीं की बल्कि तिलिस्मी खजर भी तुझसे ले लिया।

नानक–यह कोई आवश्यक नहीं है कि ऐयारों का काम सदैव पूरा ही उतरा करे कभी धाखा खाने में न आवे। यदि मनोरमा की ऐयारी मुझ पर चल गई तो इसके बदले में कमीना और नमक हराम कहे जाने लायक मै नहीं हो सकता। क्या तुमने और तुम्हारे बाप ने कभी धोखा नहीं खाया ? और मेरी स्त्री को जो तुम बदनाम कर रहे हो वह तुम्हारी भूल है। वह तो खुद कह रही है कि 'मुझे तो तुम्हारा नाम लेकर हनुमान यहा ले आया है'। मेरी स्त्री बदकार नहीं है बल्कि वह साध्वी और सती है असल में बदमाश तू है जो इस तरह धोखा देकर पराई स्त्री को अपने घर में बुलाता है और मुझे यहा पर अकेला जान कर गालिया देता है नहीं तो मै तुझसे किसी बात में कम नहीं हूँ।

तारा–नहीं-नहीं तू बहुत बातों में मुझसे बढ के है, और मै भी अकेला समझ के तुझे गालिया नहीं देता बल्कि दोषी जान कर गालिया देता हू। तू अपनी स्त्री को साध्वी सती छोड के चाहे माता से भी बढ़कर समझ ले, मेरी कोई हानि नहीं है। मै वास्तव में जिस काम के लिए आया था उसे कर चुका, अब यहा से जाकर मालिक से सब कह दूंगा और तेरे गम्भीर स्वभाव की प्रशसा भी करुँगा जिसे सुन कर तेरा बाप बहुत ही प्रसन्न होगा जो अपनी एक भूल के कारण हद से ज्यादे पछता रहा है और बदनामी का टीका मिटाने के लिए जी जान से उद्योग कर रहा है मगर तुझ कपूत के मारे कुछ भी करने नहीं पाता। (हस कर) ऐसी कुलटा स्त्री को सती और साध्वी समझने वाला अपने को ऐयार कहे यही आश्चर्य है।

नानक–मेरे ऐयार होने में तुम्हें कुछ शक है !

तारा–कुछ ? अजी बिल्कुल शक है !

नानक–यदि तुम ऐसा समझ भी लो तो इसमें मेरी कुछ हानि नहीं है इससे ज्यादे तुम और कुछ भी नहीं कर सकते कि यहा से जाकर राजा बीरेन्द्रसिह से मेरी झूठी शिकायतें करो मगर इस बात को भी समझ लो कि मै किसी का ताबेदार नहीं हूँ ?

तारा–(क्रोध से) तू किसी का तावेदार नहीं है ?

तारासिह को क्रोधित देखकर नानक डर गया केवल इसलिए कि इस जगह वह अकेला था और अकेले ही इस मकान में तारासिह का मुकाबला करना अपनी ताकत से बाहर समझता था जिसके दो चेले भी यहा मौजूद थे अस्तु समय पर ध्यान देकर वह चुप हो गया मगर दिल में वह तारासिह का जानी दुश्मन हो गया। उसने मन में निश्चय कर लिया कि तारासिह को किसी न किसी ढग से अवश्य नीचा दिखाना बल्कि मार डालना चाहिए।

नानक ने और भी न मालूम क्या सोचकर अपनी जुबान को रोका और सिर नीचा करके चुपचाप खडा रह गया। तारासिह ने कहा, बस अब तू जा और अपनी साध्वी तथा नौकर को भी अपने साथ लेता जा !"

नानक ने इस आज्ञा को गनीमत समझा और चुपचाप वहा से रवाना हो गया। उसकी स्त्री और नानक भी उसके पीछे चल पडे।

उसी समय तारासिह ने भी अपना डेरा कूच कर दिया और शहर के बाहर हो चुनार का रास्ता लिया, मगर दिल में सोच लिया कि कम्बख्त नानक अवश्य मेरा पीछा करेगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि धाखा देकर जान लेने की फिक्र भी करे।

दूसरा बयान

सध्या हुआ ही चाहती है। पटने की बहुत बडी सराय के दर्वाजे पर मुसाफिरों की भीड हो रही है। कई भठियारे भी मौजूद है जो तरह-तरह के आराम की लालच दे अपनी-अपनी तरफ मुसाफिरों को ले जाने का उद्योग कर रहे हैं और मुसाफिर लोग भी अपनी-अपनी इच्छानुसार उनके साथ जा कर डेरा डाल रहे है। मुसाफिरों को भठियारी के सुपुर्द करके भठियारे पुन सराय के फाटक पर लौट आते और नए मुसाफिरों को अपनी तरफ ले जाने का उद्योग करते है।

यह सराय बहुत बडी और इसका फाटक मजबूत तथा बडा था। फाटक के दोनों तरफ (मगर दर्वाजे के अन्दर) बारह सिपाही और एक जमादार का डेरा था जा इस सराय में रहने वाले मुसाफिरों की हिफाजत के लिए राजा की तरफ से मुकर्रर थे। उनकी तनखाह सराय के भठीयारों से वसूल की जाती थी। ये ही सिपाही बारी-बारी से घूम कर सराय के अन्दर पहरा दिया करते थे और जब मुसाफिरों की किसी तरह की तकलीफ होती तो सीधे राज दीवान के पास जाकर रप्ट किया करते थे।

थोडी देर बाद जब सब मुसाफिरों का बन्दोबस्त हो गया और सराय के फाटक पर कुछ सन्नाटा हुआ तो उन सिपाहियों का जमादार अपनी जगह से उठकर सराय के अन्दर इसलिए घूमने लगा कि देखें सब मुसाफिरों का ठीक-ठीक बन्दोबस्त हो गया या नहीं। वह जमादार केवल घूमता ही न था बल्कि भठियारों से भी तरह-तरह के सवाल करके मुसाफिरों का हाल दरियाफ्त करता जाता था।

जमादार घूमता हुआ जब उत्तर तरफ वाले उस कमरे के पास पहुचा जो इस सराय में सबसे अच्छा ऊचा दो मजिला और अमीरों के रहने लायक बना और सजा हुआ था तो कुछ देर के लिए अटक गया और उस कमरे तथा उसमें रहने वालों की तरफ ध्यान देकर देखने लगा क्योंकि उसमें एक जवहरी का डेरा पडा हुआ था जो बहुत मालदार मालूम होता था। वह जवहरी भी जमादार को देखकर कमरे के बाहर निकल आया और इशारे से जमादार को अपने पास बुलाया।

पास पहुँचने पर जमादार ने उस जवहरी को एक रोआबदार और अमीर आदमी पाकर सलाम किया और सलाम का जवाब पाने बाद बोला, "कहिए क्या है ?"

जवहरी–मालूम होता है कि इस सराय की हिफाजत महाराज की तरफ से तुम्हारे ही सुपुर्द है और वे फाटक पर रहने वाले सिपाही सब तुम्हारे ही आधीन हैं।

जमादार–जी हा।

जवहरी–तो पहरे का इन्तजाम क्या है ? किस ढग से पहरा दिया जाता है ?

जमादार–मेरे पास बारह सिपाही हैं जिनके तीन हिस्से कर देता हूँ, चार-चार आदमी एक-एक दफे घूम कर पहरा देते हैं।

जवहरी–एक साथ रह कर ?

जमादार–जी नहीं चारो अलग-अलग रहते है, घूमते समय थोडी-थोडी देर में मुलाकात हुआ करती है।

जव–मगर ऐसा तो (कुछ रुक कर) यों खडे बातें करना मुनासिब न होगा आओ कमरे में जरा बैठ जाओ हमें तुमसे कई जरूरी बातें करनी हैं।

इतना कह कर जवहरी कमरे के अन्दर चला गया और उसके पीछे-पीछे जमादार भी यह कहता हुआ चला गया कि 'कुछ देर तक आपके पास ठहरने में हर्ज नहीं है मगर ज्यादे देर तक

वह कमरा कुछ तो पहिले ही से दुरुस्त था और कुछ जवहरी साहब ने अपने सामान से उसे रौनक दे दिया था। फर्श के एक तरफ बडा सा ऊनी गालीचा बिछा हुआ था उसी पर जाकर जवहरी साहब बैठ गए और जमादार भी उन्हीं के पास मगर गालीचे के नीचे बैठ गया। बैठने के साथ ही जवहरी साहब ने जेब में से पाच अशर्फिया निकालीं और जमादार की तरफ बढा के कहा अपने फायदे के लिए मैं तुम्हारा समय नष्ट कर रहा हूँ और करूँगा। अस्तु उसका हर्जाना पहिले ही दे देना उचित है।

जमादार–नहीं-नहीं इसकी क्या जरूरत है इतने समय में मेरा कोई हर्ज न होगा !

जव–समय का व्यर्थ नष्ट होना ही हर्ज कहलाता है, मैं जिस तरह अपने समय की प्रतिष्ठा करता हूँ उस तरह दूसरे के समय की भी।

जमा–हा ठीक है मगर मैं तो, --आपका

जव–नहीं-नहीं इसे अवश्य लेना होगा।

यों तो जमादार ऊपर के मन से चाहे जो कहे मगर अशर्फी देख कर उसके मुह में पानी भर आया। उसने सोचा कि यह जवहरी एक मामूली बात के लिए जब पाच अशर्फिया देता है तो अगर मैं इसका करुगा तो बेशक बहुत बडी रकम मुझे देगा। ऐसा देने वाला तो आज तक मैंने देखा ही नहीं अस्तु इस रकम को हाथ से न जाने देना चाहिए।

जमा–(अशर्फिया लेकर) कहिए क्या आज्ञा होती है ?

जव–हा तो चार आदमी का पहरा बधा है ?

जमा–जी हा।

जव–तो तुम्हें तो न घूमना पडता होगा ?

जमा–जी नहीं मैं अपने ठिकाने उसी फाटक में बैठा रहता हूँ और बाकी के आठ आदमी भी मेरे पास ही सोए रहते हैं। जब पहरा बदलने का समय होता है तो घण्टे की आवाज से होशियार करके दूसरे चार को पहरे पर भेज देता हूँ और उन चारों को बुला कर आराम करने की आज्ञा देता हूँ। आप अपना मतलब तो कहिए !

जव–मेरा मतलब केवल इतना ही है कि मैं आज चार दिन का जागा हुआ हूँ, सफर में आराम करने की नौबत नहीं आई मगर आज सब दिन की कसर मिटाना अर्थात अच्छी तरह सोना चाहता हूँ।

जमा–तो आप आराम से सोइए कोई हर्ज नहीं।

जव–मैं क्योंकर बेफिक्री के साथ सो सकता हू ! मेरे साथ बहुत बड़ी रकम है। (कमरे में रक्खे हुए सन्दूकों की तरफ इशारा करके) इस सभों में जवाहिरात की चीजें भरी हुई है। जब तक मेरे मन माफिक इनकी हिफाजत का बन्दोबस्त न हो जायगा तब तक मुझे नींद ही नहीं आ सकती।

जमा–आप इन्हें बहुत बडी हिफाजत के अन्दर समझिए क्योंकि इस सराय के अन्दर से कोई चोरी करके बाहर नहीं निकल सकता इसलिए कि फाटक बन्द करके ताली मैं अपने पास रखता हूँ और सिवाय फाटक के दूसरे किसी तरफ से किसी के निकल जाने का रास्ता ही नहीं है।

जव–ठीक है मगर आखिर बहुत सवेरे फाटक खुलता ही होगा। कौन ठिकाना मै कई दिनों का जागा व गहरी नींद में सो जाऊ और मेरे आदमी भी मुझे वेफिक्र दख खुर्राटे लेने लगें और दिन चढ तक आख ही न खुले तो ऐसी हालत में कोई चारी करेगा भी तो प्रात समय फाटक खुलने पर उसका निकल जाना कोई वडी वात न होगी।

जमा–ठीक है, मगर में वादा करता हूँ कि सुवह मै आपसे पूछ कर फाटक खोलूगा।

जव–हो सकता है परन्तु कदाचित चोरी हो ही जाय और चोर पकडा भी जाय तो मुझे राजा या किसी राजकर्मचारी के पास सवूत देन के लिए जाना पडगा और एसा हाने से मेरा वहुत वडा हर्ज हागा ताज्जुव नहीं कि राजा साहव या राजकर्मचारी मुझे ठहरने की आज्ञा दें मगर मै एक दिन भी नहीं रुक सकता इत्यादि वहुत सी वातों को साच कर मैं चाहता हूँ कि चोरी होने का शक ही न रह और मैं आराम के साथ टाग फैला कर सोऊ और यह बात यदि तुम चाहो ता सहज ही में हो सकती है इसक वदले में मै तुम्हें अच्छी तरह खुश कर दूँगा।

जमा–कोई चिन्ता नहीं मै अपने सिपाहियों को हुक्म दे दूँगा कि चार में से एक आदमी सिर्फ आपके दरवाजे पर और तीन आदमी तमाम सराय में घूम-घूम कर पहरा दिया करें।

जव–बस-बस इतने ही से मै बेफिक्र हो जाऊगा। अपने सिपाहियों को यह भी ताकीद कर देना कि मरे सिपाहियों को सोने न दें। यद्यपि मै भी अपने आदमियों का जागने के लिए सख्त ताकीद कर दूँगा मगर वे कई दिन के जागे हुए है नींद आ जाय तो कोई ताज्जुव की बात नहीं है। हा एक तर्कीव मुझ और मालूम है जो इससे भी सहज में हो सकती है अर्थात् तुम स्वय अकेले भी यदि यहा अपने सोने का वन्दावस्त रक्खोग तो तमाम रात यहा अमन-चमन वना रहेगा, पहरा बदलने के समय

जमा–मे आपका मतलव समझ गया मगर नहीं एसा करने से मेरी बदनामी हा जायगी मुझे हरदम फाटक पर मौजूद रहना चाहिए क्योंकि रात भर में पचासों दफ लोग फाटक पर मेरे पास तरह-तरहकी फरियाद करने आया करते है। खैर आप इस वार मे चिन्ता न कीजिए मै आपके माल असवाव की निगहदानी का पूरा इन्तजाम कर दूँगा अगर आपका कुछ नुकसान हो तो मेरा जिम्मा।

कुछ और वातचीत करने के वाद जमादार अपने स्थान पर चला गया और थोडी देर बाद प्रतिज्ञानुसार उसने पहरे का बन्दावस्त भी कर दिया।

पाठक यह सौदागरमहाशय हमारे उपन्यास का कोई नवीन पात्र नहीं है बल्कि वहुत प्राचीन पात्र तारासिह है जो नानक की चालचलन का पता लगा के चुनारगढ लौट जा रहा है। इसे इस बात का विश्वास हो गया है कि नानक मेरा पीछा करेगा और एयारी के कायदे को छप्पर पर रख के जहा तक हो सकेगा मुझे नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेगा इसलिए वह इसढग से सफर कर रहा है। हकीकत में तारासिह का खयाल बहुत ठीक था। नानक तारासिह को नुकसान पहुँचाने, बल्कि जान से मार डालने की कसम खा चुका था। केवल इतना ही नहीं वल्कि वह अपने बाप का तथा राजा बीरेन्दसिह का भी विपक्षी वन गया था क्योंकि अव उसे किसी तरफ से किसी तरह की उम्मीद न रही थी। अस्तु वह (नानक) भी अपने शागिर्दो को साथ लिए हुए तारासिह के पीछे-पीछेसफर कर रहा है और आज उसका भी डेरा इसी सराय में पडा है क्योंकि पहिले ही से पता लगाए रहने के कारण वह तारासिह की पूरी खबर रखता है और जानता है कि तारासिह सौदागर बन कर इसी सराय में उतरा हुआ है। नानक यद्यपि तारासिह को फसाने का उद्योग कर रहा है मगर उसे इस बात की खबर कुछ भी नहीं है कि तारासिह भी मेरी तरफ से गाफिल नही है और उसे मेरा रत्ती-रत्ती हाल मालूम है। अस्तु देखना चाहिए अब किसकी चालाकी कहा तक चलती है।

रात आधी से ज्याद हो चुकी है। सराय के अन्दर बिल्कुल सन्नाटा तो नहीं है मगर पहरा देने वालों के अतिरिक्त बहुत कम आदमी ऐस है जिन्हे अपनी कोठरी क बाहर की खबर हो। सराय का बडा फाटक वन्द है। पहरे के सिपाहियों में से एक तो तारासिह (सौदागर) के दरवाजे पर टहल रहा है और वाकी के तीन घूम-घूम कर इस बहुत बडी सराय के अन्दर पहरा दे रहे हैं। तारासिह के साथ-साथ दो आदमी ता इसके शागिद है और दो नौकर ऐसे भी है जिन्हें तारासिह ने रास्त में ही तनख्वाह मुकर्रर करके रख लिया था मगर ये दोनों नौकर तारासिह के सच्चे हाल को कुछ भी नहीं जानते इन्हें केवल इतना ही मालूम है कि तारासिह एक अमीर सौदागर है। इस समय ये दोनों नौकर कमरे के बाहर दालान में पडे खुर्राटे लेरह हैं और तारासिह तथा उसके शागिर्द कमरे के अन्दर बैठे आपुस में कुछ बातचीत कर रहे हैं। कमरे का दर्वाजा भिडकाया हुआ है।

तारासिह का एक शागिर्द कमरे के बाहर निकला और उसने चारो तरफ निगाह दौडाने के बाद पहरे वाले सिपाहीसे कहा तुम्हें सौदागर साहब बुला रहे है जाओ सुन आओ, तब तक तुम्हारे बदले में पहरा देता हू। अन्दर जाकर दर्वाजा भिडका देना खुला मत रखना।

हुक्म पाते ही लालची सिपाही जिसे विश्वास था कि हमारे जमादार को कुछ मिल चुका है और मुझे अवश्य मिलेगा कमरे के अन्दर घुस गया और बहुत देर तक तारासिंह का शागिर्द इधर-उधर टहलता रहा। इसी बीच में उसने देखा कि एक आदमी कई दफे इस तरफ आया मगर किसी को टहलते देख कर लौट गया।

बहुत देर के बाद कमरे से दो आदमी बाहर निकले एक तो तारासिंह का दूसरा शागिर्द और दूसरा स्वयम् सौदागर भेषधारी तारासिंह। तारासिंह के हाथ में सिपाही का ओढना मौजूद था जिसे अपने शागिर्द को जो पहरा दे रहा था देकर उसने कहा इसे ओढ कर तुम एक किनारे सो जाओ अगर कोई तुम्हारे पास आकर बेहोशी की दवा भी सुघावे तो बेखटके सूघ लेना और मुझको अपने से दूर न समझना।

तारासिंह के शागिर्द ने ओढना ले लिया और कहा-- 'जब से मैं टहल रहा हू तब से दो तीन दफे दुश्मन आया मगर मुझे होशियार देख कर लौट गया।

तारा--हां काम में कुछ देर तो जरूर हो गई है। मैं उस सिपाही को बेहोश करके अपनी जगह सुला आया हूँ और चिराग गुल कर आया हूँ। (हाथ से इशारा करके) अब तुम इस खम्भे के पास लेट जाओ (दूसरे शागिर्द से) और तुम उस दर्वाजे के पास लेटो। मैं भी किसी ठिकाने छिप कर तमाशा देखूगा।' तारासिंह की आज्ञानुसार उसके दोनों शागिर्द बताए हुए ठिकाने पर जाकर लेट गए और तारासिंह अपने दर्वाजे से कुछ दूर जाकर एक दूसरे मुसाफिर की कोठरी के आगे लेट रहा मगर इस ढग से कि अपने तरफ की सब कार्रवाई अच्छी तरह देख सके। -

आधे घण्टे के बाद तारासिंह ने देखा कि दो आदमी उसके दरवाजे पर आकर खडे हो गए है जिनकी सूरत अधेरे के सबब दिखाई नहीं देती और यह भी नहीं जान पडता कि वे दोनों अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए हैं या नहीं। कुछ अटक कर उन दोनों आदमियों ने तारासिंह के आदमियों को देखा भाला, इसके बाद एक आदमी कमरे का दर्वाजा खोल कर अन्दर घुस गया और आधी घडी के बाद जब वह कमरे के बाहर निकला तो उसकी पीठ पर एक बडी सी गठरी भी दिखाई पडी। गठरी पीठ पर लादे हुए अपने साथी को लेकर वह आदमी सराय के दूसरे भाग की तरफ चला गया। जब वह दूर निकल गया तो तारासिंह अपने दरवाजे पर आया और शागिर्दों का चैतन्य पान पर समझ गया कि दुश्मन ने उसके आदमी को बेहोशी की दवा नहीं सुघाई थी। तारासिंह के दोनों शागिर्द उठे मगर तारासिंह उन्हें उसी तरह लेटे रहने की आज्ञा देकर अपने कमरे के अन्दर चला गया और भीतर से दर्वाजा बन्द कर लिया। रोशनी करने के बाद तारासिंह ने देखा कि दुश्मन ने उसकी कोई चीज नहीं चुराई है, वह केवल उस सिपाही को उठा कर ले गया है जिसे तारासिंह अपनी सूरत का सौदागर बना कर अपनी जगह लिटा गया था। तारासिंह अपनी कार्रवाई पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कमरे के बाहर निकल कर अपने शागिर्दों को उठाया और कहा हमारा मतलब सिद्ध हो गया अब इसमें कोई सदेह नहीं कि कम्बख्त नानक अपनी मुराद पूरी हो गई समझ के इसी समय सराय का फाटक खुलवा कर निकल जायगा और मैं भी ऐसा ही चाहता हूँ। अस्तु अब उचित है कि तुम दोनों में से एक आदमी तो यहा पहरा दे और एक आदमी सराय के फाटक की तरफ जाय और छिप कर मालूम करे कि नानक कब सराय के बाहर निकलता है। जिस समय वह सराय के बाहर हो उसी समय मुझे इत्तला मिले।

इतना कहकर तारासिंह कमरे के अन्दर चला गया और भीतर से दर्वाजा बन्द कर लेने के बाद कमरे की छत पर चढ गया इसलिए कि वह कमरे के ऊपर से अपने मतलब की बात बहुत कुछ देख सकता था।

इस समय नानक की खुशी का कोई ठिकाना ना था। वह समझे हुए था कि हमने तारासिंह को गिरफ्तार कर लिया, अस्तु जहा तक जल्द हो सके सराय के बाहर निकल जाना चाहिए। इसी ख़याल से उसने अपना डेरा कूच कर दिया और सराय के फाटक पर आकर जमादार को बहुत कुछ कह सुन के या दे दिला के दर्वाजा खुलवाया और बाहर हो गया।

तारासिंह को जब मालूम हुआ कि नानक सराय के बाहर निकल गया तब उसने अपने यहा चोरी हो जाने की खबर मशहूर करने के बन्दोबस्त किया। उसके पास जो सन्दूक थे, जिनमें कीमती माल होने का लोगों या जमादार को गुमान था उनका ताला तोड़ कर खोल दिया क्योंकि वास्तव में सन्दूक बिल्कुल खाली केवल दिखाने के लिए थे। इसके बाद अपने नौकरों को होशियार किया और खूब रोशनी कर के चोर चोर' का हल्ला मचाया और जाहिर किया कि हमारी लाखों रुपये की चीज (जवाहिरात) चोरी हो गई।

चोरी की खबर सुन बेचारा जमादार दौडा हुआ तारासिंह के पास आया जिसे देखते ही तारासिंह ने रोनी सूरत बना कर कहा, 'देखो जमादार मैं पहिले ही कहता था कि मेरे असबाब की खूब हिफाजत होनी चाहिए! आखिर मेरे यहा चोरी हो ही गयी! मालूम होता है कि तुम्हारे सिपाही ने मिल कर चोरी करवा दी क्योंकि तुम्हारा सिपाही दिखाई नहीं देता। कहो अब हम अपने लाखों रुपये के माल का दावा किस पर करें?'।

तारासिह की बात सुनते ही जमादार के तो होश उड गए। उसने टूटे हुए सन्दूकों को भी अपनी ऑखों से देख लिया और खोज करने पर उस सिपाही को भी न पाया जिसका इस समय पहरे पर मौजूद रहना वाजिब था। यद्यपि जमादार ने उसी समय सिपाहियों को फाटक पर होशियार रहने का हुक्म दे दिया मगर इस बात का उसे बहुत रज हुआ कि उसने थोडी ही देर पहिले एक आदमी को डेरा उठा कर सराय के बाहर ले चल जाने दिया था। उसने तुरन्त ही कई सिपाहियों को उसकी गिरफ्तारी के लिए रवाना किया और तारासिह से कहा 'मै इसी समय इस मामले की इत्तिला करने राज दीवान के पास जाता हूँ।'

तारा--तुम जहा चाहो वहा जाओ मगर हमारा तो नुकसान हो ही गया। अस्तु हम भी अपने मालिक के पास इस बात की इत्तिला करने जाते है।

जमादार--(ताज्जुब से) तो क्या आप स्वय मालिक नहीं है ?

तारा--नहीं हम मालिक नहीं बल्कि मालिक के गुमाश्ते हैं। हमें इस बात का बहुत रज है कि तुमने हमसे पूछे बिना सराय का फाटक खोल दिया और चोर को सराय के बाहर निकल जाने की इजाजत दे दी यद्यपि तुम मुझसे कह चुके थे कि आपसे पूछे बिना सराय का फाटक न खोलेंगे और इसी हिफाजत के लिए हमने अपनी जेब की अशर्फिया तुम्हारी जेब में डाल दी थीं मगर अफसोस मुझे इस बात की बिल्कुल खबर न थी कि तुम हद से ज्यादे लालची हो हमारा माल चोरी करवा दोगे और चोर से गहरी रकम रिश्वत लेकर उसे फाटक के बाहर निकल जाने की आज्ञा दे दोगे और मैं यह भी नहीं जानता था कि इस सराय की हिफाजत करने वाले इस किस्म का रोजगार करते है अगर जानता तो ऐसी सराय में कभी थूकने भी न आता।

तारासिह ने धमकी के ढग पर ऐसी-एसी बातें जमादार से कहीं कि वह डर गया और सोचने लगा कि नाहक मैंने इनसे पूछे बिना सराय का फाटक खोल कर किसी को जाने दिया अगर किसी को जाने न देता तो बेशक इनका माल सराय के अन्दर ही से निकल आता अब बेशक मै दोषी ठहरता हू, ताज्जुब नहीं कि सौदागर की बातों पर दीवान साहब को भी यह शक हो जाय कि जमादार ने रिश्वत ली है। अगर ऐसा हुआ तो मै कहीं का भी न रहूगा मेरी बडी दुर्गति की जायगी। चोरी भी ऐसी नहीं है कि जिसे मै अपने पल्ले से पूरी कर सकू--इत्यादि बातें सोचता हुआ जमादार बहुत ही घबडा गया और बडी नर्मी और आजीजि के साथ तारासिह से माफी माग कर बोला नि सन्देह मुझसे बडी भूल हो गई मगर मैं आपसे वादा करता हू कि उस चोर को जो मुझे धोखा देकर और फाटक खुलवाकर चला गया है गिरफ्तार कर लूगा परन्तु मेरी जिन्दगी आपके हाथ में है अगर आप मुझ पर दया कर फाटक खोल देने वाले मेरे कसूर को छिपावेंगे तो मेरी जान बच जायेगी नहीं तो राजा साहब मेरा सिर कटवा डालेंगे और इससे आपका कुछ लाभ न होगा। मै कसम खाकर कहता हू कि मैंने उससे एक कोडी भी रिश्वत नहीं ली है ! मुझे उस कम्बख्त ने पूरा धोखा दिया मगर मैं उसे नि सन्देह गिरफ्तार करूगा और आप की रकम जाने न दूगा। यदि आप को मुझ पर शक हो और आप समझते हो कि मैंने रिश्वत ली है तो फाटक पर चलकर मेरी कोठरी की तलाशी ले लीजिए मगर आप मेरी जान बचाइये !

जमादार ने तारासिह की हद्द से ज्यादे खुशामद की और यहा तक गिडगिडाया कि तारासिह का दिल हिल गया मगर अपना काम निकालना भी बहुत जरुरी था इसलिए चालबाजी के साथ उसने जमादार का कसूर माफ करके कहा अच्छा मैं कसूर तो तुम्हारा माफ कर देता हूँ। मगर इस समय जो कुछ मै तुमसे कहता हू उसे बडी होशियारी के साथ करना होगा अगर कसर करोगे तो तुम्हारे हक में अच्छा न होगा।

जमा--नहीं-नहीं मै जरा भी कसर न करूगा जो कुछ आप हुक्म देंगे वही करुँगा कहिये क्या आज्ञा होती है ?

तारा--एक तो मै अपनी जुबान से झूठ कदापि न बोलूगा।

जमा--(कॉप कर) तब मेरी जान कैसे बचेगी ?

तारा--तुम मेरी बात पूरी हो लेने दो--दूसरे मुझे यहा से तुरन्त चले जाने की जरुरत भी है इसलिए मै अपने इन (अपने शार्गिदों की तरफ इशारा करके) दोनों साथियों को यहा छोड जाता हूँ, तुम जब चोरको गिरफ्तार करके अपने राजदीवान या राजा के पास जाना तो इन्हीं दोनों को ले जाना ये दोनों आदमी अपने को मेरा नौकर कह कर चोरी गई हुई चीजों को बखूबी पहिचान लेंगे और ये चोरी के समय मेरा यहा मौजूद रहना तथा तुम्हारा कसूर कुछ भी जाहिर न करेंगे और तुम भी इस बात को जाहिर मत करना। ये दोनों आदमी अपने काम को पूरी तरह से अजाम दे लेंगे। हा एक बात कहना तो भूल गया इस सराय के अन्दर जितने आदमी है उन सभों की भी तलाशी ले लेना।

जमा--(दिल में खुश होकर) जरूर उन सभी की तलाशी ले ली जायगी और जो कुछ आपने आज्ञा दी है वही किया जायगा, आप अपना हर्ज न कीजिए और जाइए यहा मै किसी तरह का नुकसान होने न दूँगा।

सौदागर (तारासिह) चला जायगा यह जान कर जमादार अपने दिल में बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि इनके रहने से उसे अपना कसूर प्रकट हो जाने का डर भी था।

जमादार से और भी कुछ बातें करने के बाद तारासिह अपने दोनों शागिर्दो को एकान्त में ले गया और हर तरह की बातें समझाने के बाद यह भी कहा तुम लोग मेरे चले जाने के बाद किसी तरह घबडाना नहीं और मुझे हर वक्त अपने पास मौजूद समझना।

इन सब बातों से छुट्टी पाकर तारासिह अकेले ही वहा से रवाना हो गया।

तीसरा बयान

तारासिह के चले जाने के बाद सराय में चोरी की खबर बडी तेजी के साथ फैल गई। जितने मुसाफिर उसमें उतरे हुए थे सब रोके गये। राजदीवान को भी खबर हो गई वह भी बहुत से सिपाहियों को साथ लेकर सराय में आकर मौजूद हुआ। खूब हो हल्ला मचा, चारो तरफ 'तलाशी और ढूँढ़ ढाँढ़' की कार्रवाई होने लगी, मगर सभों को निश्चय इसी बात का था कि चोर सिवाय उसके और कोई नहीं है जो रात रहते ही फाटक खुलवा कर सराय के बाहर निकल गया है। पहरे वाले सिपाही के गायब हो जाने से और भी परेशानी हो रही थी। चोर की गिरफ्तारी में कई सिपाही तो जा ही चुके थे मगर दीवान साहब के हुक्म से और भी बहुत से सिपाही भेजे गये, आखिर नतीजा यह निकला कि दोपहर के पहिले ही हजरत नानकपरसाद गिरफ्तार हो कर सराय के अन्दर आ पहुँचे जो अपने खयाल में तारासिह को गिरफ्तार कर ले गये थे और अभी तक सौदागर का चेहरा धो कर देखने भी न पाये थे मगर उन कृपानिधान को ताज्जुब था तो इस बात का कि वे चोरी के कसूर में गिरफ्तार किए गये थे।

अभी तक दीवान साहब सराय के अन्दर मौजूद थे। नानक के आते ही चारों तरफ से मुसाफिरों की भीड आ जुटी और हर तरफ से नानक पर गलियों की बौछार होने लगी। जिस कमरे में तारासिह उतरा हुआ था उसी के आगे वाले दालान में सुन्दर फर्श के ऊपर दीवान साहब विराज रहे थे और उनके पास ही तारासिह के दोनों शागिर्द भी अपनी असली सूरत में बैठे हुए थे। सामने आते ही दीवान साहब ने क्रोध भरी आवाज में नानक से कहा, "क्यों बे! तेरा इतना बड़ा हौसला हो गया कि तू हमारी सराय में आकर इतनी बडी चोरी करे !!

नानक--(अपने को बेतरह फसा हुआ देख हाथ जोड के) मुझ पर चोरी का इलजाम किसी तरह नहीं लग सकता, मुझे यह मालूम होना चाहिये कि यहा किसकी चोरी हुई है और मुझ पर चोरी का इलजाम कौन लगा रहा है ?

दीवान--(तारासिह के दोनो शागिर्द की तरफ इशारा करके) इनका माल चोरी हो गया है और यहा के सभी आदमी तुझे चोर कहते हैं।

नानक--झूठ बिल्कुल झूठ।

तारासिह का एक शागिर्द (दीवान से) यदि हर्ज न हो तो पहिले इसका चेहरा धुलवा दिया जाय।

दीवान--क्या तुम्हें कुछ दूसरे ढग का भी शक है ? अच्छा (जमादार से) पानी मगा कर इस चोर का चेहरा धुलवाओ।

जमादार--जो हुक्म।

नानक--चेहरा धुलवा के क्या कीजिएगा ? हम ऐयारों की सूरत हरदम बदली ही रहती है खास कर सफर में।

दीवान--तू ऐयार है ! ऐयार लोग भी कहीं चोरी करते हैं ?

नानक--जी मै कह चुका हूँ कि चोरी का इलजाम मुझ पर नहीं लग सकता।

तारा का एक शागिर्द--चोरी तो अच्छी तरह साबित हो जायगी जरा अपने माल असबाब की तलाशी तो होने दो ! (दीवान से) लीजिए पानी भी आ गया अब इसका चेहरा धुलवाइये।

जमादार--(पानी की गगरी नानक के सामने धर के) लो अब पहिले अपना चेहरा साफ कर डालो।

नानक--मैं अभी अपना चेहरा साफ कर डालता हूँ, चेहरा धोने में मुझे कोई उज्र नहीं है क्योंकि मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि ऐयारों की सूरत प्राय बदली रहती है और मै भी एक ऐयार हूँ।

इतना कह कर नानक ने अपना चेहरा साफ कर डाला और दीवान साहब से कहा, 'कहिए अब क्या हुक्म होता है ?'

दीवान--अब तुम्हारी तलाशी ली जायगी।

नानक--तलाशी देने में भी मुझे कुछ उज्र न होगा मगर मुझे पहिले उन चीजों की फिहरिश्त मिल जानी चाहिए जो

चोरी गई है। कहीं ऐसा न हो कि मेरी कुछ चीजों को ये नकली सौदागर साहब अपनी ही चीज बतावें उस समय ताज्जुब नहीं कि मै अपनी ही चीजों का चोर बन जाऊ।

दीवान–चीजों की फिहरिश्त जमादार के पास मौजूद है, तुम्हारी चीजों का तुम्हें कोई चोर नहीं बना सकता। हा तुमने इन्हें नकली सौदागर क्यों कहा ?

नानक–इसलिए कि ये दोनों भी मेरी तरह से ऐयार है और इनके मालिक तारासिह को मैने गिरफ्तार कर लिया है दुश्मनी से नहीं बल्कि आपुस की दिल्लगी से, क्योंकि हम दोनों एक ही मालिक अर्थात् राजा बीरेन्द्रसिह के एयार है धोखा देने की शर्त लग गई थी।

राजा बीरेन्द्रसिह का नाम सुनते ही दीवान साहब के कान खडे हो गए और ये ताज्जुब के साथ तारासिह के दोनों शागिर्दो की तरफ देखने लगे। तारासिह के एक शागिर्द ने कहा, इसने तो झूठ बोलने पर कमर बांध रक्खी है ! यह चाहे राजा बीरेन्द्रसिंह का ऐयार हो मगर हम लोगों को उससे कोई सरोकार नहीं है। हम लोग न तो ऐयार हैं और न हम लोगों का कोई मालिक ही हमारे साथ था जिसे इसने गिरफ्तार कर लिया हो। यह तो अपने को ऐयार बताता ही है फिर अगर झूठ बोल के आपको धोखा देने का उद्योग करे तो ताज्जुब ही क्या है ? इसकी झुठाई-सचाई का हाल तो इतने ही से खुल जायगा कि एक तो इसकी तलाशी ले ली जाय दूसरे इससे ऐयारी की सनद मागी जाय जो राजा बीरेन्द्रसिह की तरफ से नियमानुसार इसे मिली होगी।

दीवान–तुम्हारा कहना बहुत ठीक है, ऐयारों के पास उनके मालिक की सनद जरुर हुआ करती है। अगर यह प्रतापी महाराज बीरेन्द्रसिह का ऐयार होगा तो इसके पास सनद जरुर होगी और तलाशी लेने पर यह भी मालूम हो जायगा कि इसने जिसे गिरफ्तार किया है वह कौन है। (नानक से) अगर तुम राजा बीरेन्द्रसिह के ऐयार हो तो उनकी सनद हमको दिखाओ। हा और यह भी बताओ कि अगर तुम ऐयार हो तो इतनी जल्दी गिरफ्तार क्यों हो गए क्योंकि ऐयार लोग जहा कब्जे के बाहर हुए तहा उनका गिरफ्तार होना कठिन हो जाता है।

नानक–मैं गिरफ्तार कदापि न होता मगर अफसोस मुझे यह बात बिल्कुल मालूम न थी कि तारासिह को मेरी पूरी खबर है और वह मेरी तरफ से होशियार है तथा उसने पहिले ही से मुझे गिरफ्तार करा देने का बन्दोबस्त कर रक्खा है।

दीवान–खैर तुम ऐयारी की सनद दिखाओ।

नानक–(कुछ लाजवाब सा होकर) सनद मुझे अभी नहीं मिली है।

तारासिह का शा० (दीवान से) देखिए मै कहता था न कि यह झूठा है !

दीवान–(क्रोध से) बेशक झूठा है और चोर भी है (जमादार से) हॉ अब इसकी तलाशी ली जाय।

जमादार–जो आज्ञा।

नानक की तलाशी ली गई और दो ही तीन गठरियोंबाद वह बडी गठरी खोली गई जिसमें सराय का सिपाही बेचारा बँधा हुआ था।

नानक ने उस बेहोश सिपाही की तरफ इशारा करके कहा "देखिए यही तारासिह है जो सौदागर बना हुआ सफर कर रहा था।

तारासिह का शा०–(दीवान से) यह बात भी इसकी झूंठ निकलेगी, आप पहिले इस बेहोश का चेहरा धुलवाइये।

दीवान–हॉ मेरा भी यही इरादा है। (जमादार से) इसका चेहरा तो धोकर साफ करो।

नानक–मैं खुद इसका चेहरा धोकर साफ किये देता हूँ और तब आपको मालूम हो जायगा कि मैं झूठा हूँ या सच्चा।

नानक ने उस सिपाही का चेहरा धोकर साफ किया मगर अफसोस नानक की मुराद पूरी न हुई और वह सिर से पैर तक झूठा साबित हो गया। अपने यहॉ के सिपाही को ऐसी अवस्था में देख कर जमादार और दीवान साहब को क्रोध चढ आया। जमादार ने किसी तरह का ख्याल न करके एक लात नानक के कमर पर ऐसी जमाई कि वह लुढक गया मगर बहुत जल्द सम्हल कर जमादार को मारने के लिए तैयार हुआ। नानक का हर्बा पहिले ही ले लिया गया था और अगर इस समय उसके पास कोई हर्बा मौजूद होता तो बेशक वह जमादार की जान ले लेता मगर वह कुछ भी न कर सका उलटा उसे जोश में आया हुआ देख सभी को क्रोध चढ आया। सराय में उतरे हुए मुसाफिर भी उसकी तरफ से चिढे हुए थे क्योंकि वे बेचारे बेकसूर रोके गये थे और उन पर शक भी किया गया था, अतएव एक दम से बहुत से आदमी नानक पर टूट पड़े और मन मानती पूजा करने के बाद उसे हर तरह से बेकार कर दिया इसके बाद दीवान साहब की आज्ञानुसार उसकी और उसके साथियों की मुश्कें कस दी गई।

दीवान साहब ने जमादार को आज्ञा दी कि–यह शैतान (नानक) बेशक झूठा और चोर है इसने बहुत ही बुरा किया कि सरकारी नौकर को गिरफ्तार कर लिया। तुम कह चुके हो कि उस समय यही सिपाही सौदागर के दर्वाजे पर पहरा

द रहा था। बेशक चोरी करने के लिए ही इस सिपाही को इसने गिरफ्तार किया होगा। अब इसका मुकदमा थोडी देर में निपटने वाला नहीं है और इस समय बहुत देर भी हो गई ह अस्तु तुम इसे और इसके साथियों को कैदखाने में भेज दो तथा इसका माल असबाब इसी सराय की किसी कोठरी में बन्द करके ताली मुझे दे दो और सराय के सब मुसाफिरों को छोड दो। (तारासिह के शागिर्द की तरफ देख के) क्यों साहब अब मुसाफिरों को रोकने की तो कोई जरूरत नहीं है !

तारासिह का शा०–बेशक बेचारे मुसाफिरों का छोड देना चाहिए क्योंकि उनका कोई कसूर नहीं। मेरा माल इसी ने चुराया है। अगर इसके असबाव में से कुछ भी न निकलेगा तो भी हम यही समझेंगे कि सराय से बाहर दूर जाकर इसने किसी ठिकाने चोरी का माल गाड दिया है।

दीवान–बेशक ऐसा ही है ! (जमादार से) अच्छा जो कुछ हुक्म दिया गया है उसे जल्द पूरा करो।

जमादार–जो आज्ञा।

बात की बात में वह सराय मुसाफिरों से खाली हो गई। नानक हवालात में भेज दिया गया और उसका असबाब एक कोठरी में रख कर ताली दीवान साहब को दे दी गई। उस समय तारासिह के दोनों शागिर्दो ने दीवान साहब से कहा– शैतान का मामला दो एक दिन में निपटता नजर नहीं आता इसलिए हम लोग भी चाहते हैं कि यहाँ स जाकर अपने मालिक को इस मामले की खबर दें और उन्हें भी सर्कार के पास ले आवें अगर ऐसा न करेंगे तो मालिक की तरफ से हम लोगों पर बडा दोष लगाया जायगा। यदि आप चाहें तो जमानत में हमारा माल असबाब रख सकते हैं।

दीवान–तुम्हारा कहना बहुत ठीक है। हम खुशी से इजाजत देते हैं कि तुम लोग जाओ और अपने मालिक को ले आओ जमानत में तुम लोगों का माल असबाव रखना हम मुनासिब नहीं समझते इसे तुम लोग ले जाओ।

तारासिह के दोनों शा०–(दीवान साहब को सलाम करके) अपने बडी कृपा की जो हम लोगों को जाने की आज्ञा दे दी हम लोग बहुत जल्द अपने मालिक को लेकर हाजिर होंगे।

तारासिह के दोनों शागिर्दो ने भी डेरा कूच कर दिया और बेचारे नानक को खटाई में डाल गए। देखा चाहिए अब उस पर क्या गुजरती है। वह भी इन लोगों से बदला लिए बिना रहता नजर नहीं आता।

चौथा बयान

भैरोसिह के चले जाने के बाद दर्वाजा बन्द हो जाने से दोनों कुमारों को ताज्जुब ही नहीं हुआ बल्कि उन्हें भैरोसिह की तरफ से एक प्रकार की फिक्र लग गई। आनन्दसिह ने अपने बडे भाई की तरफ देख कर कहा अब इस रात के समय भैरोसिह के लिए हम लोग क्या कर सकते हैं ?

इन्द्रजीत–कुछ भी नहीं। मगर भैरोसिह के हाथ में तिलिस्मी खजर है वह यकायक किसी के कब्जे में न आ सकेगा।

आनन्द–पहिले भी तो उनके पास तिलिस्मी खजर था बल्कि ऐयारी का बटुआ भी मौजुद था तब उन्होंने क्या कर लिया था ?

इन्द्रजीत–सो तो ठीक कहते हो तिलिस्म के अन्दर हर तरह से बचे रहना मामूली काम नहीं है मगर रात के समय अब हो ही क्या सकता है।

आनन्द–मेरी राय है कि तिलिस्मी खजर से इस छोटे से दरवाजे को काटने का उद्योग किया जाय शायद

इन्द्रजीत–अच्छी बात है कोशिश करो।

आनन्दसिह से तिलिस्मी खजर का वार उस छोटे से दरवाजे पर किया मगर कोई नतीजा न निकला आखिर दोनों भाई लाचार होकर वहाँ से हटे और किसी दालान में एक किनारे बैठ कर बातचीत में रात बिताने का उद्योग करने लगे।

रात के साथ ही साथ दोनों कुमारों की उदासी भी कुछ कुछ जाती रही और फूलों की महक से बसी हुई सुबह की ठण्डी हवा ने उद्योग और उत्साह का सचार किया। दोनों के पराधीन और चुटीले दिलों में किसी की याद ने गुदगुदी पैदा कर दी और बारह पर्दे के अन्दर से भी खुशबू फैलाने वाली मगर कुछ दिनों तक नाउम्मीदी के पाले स गन्धहीन हो गई कलियों पर आशारूपी वायु के झपेटे से बहक कर आए हुए श्रृगार रूपी भ्रमर इस समय पुन गुजार करने लग गये।

क्या आज दिन भर की मेहनत से भी अपने प्रेमी का पता न लगा सकेंगे ? क्या आज दिन भर के उद्योग की सहायता से भी इस छोटी सी मगर अनूठी रगशाला के नेपथ्य में से किसी की खोज निकालने में सफल मनोरथ न होंगे ? क्या

आज दिन भर की कार्रवाई भी हमें विश्वास न दिला सकेगी कि इस जानोदिल का मालिक इसी स्थान में आ पहुँचा है। जैसा कि सुन चुके हैं और क्या आज दिन भर की उपासना का फल भी जुदाई की उस काली घटा को दूर न कर सकेगा जिसने इन चकोरों को जीवनदान देने वाले पूर्णचन्द्र को छिपा रक्खा है? नहीं-नहीं ऐसा कदापि नहीं हो सकता आज दिन भर में हम बहुत कुछ कर सकेंगे और उनका पता अवश्य लगावेंगे जिन पर अपनी जिन्दगी का भरोसा समझते हैं और जिनके मिलाप से बढ़ कर इस दुनिया में और किसी चीज को नहीं मानते।

इसी तरह की बातें सोचते हुए दोनों कुमार खड़े हो गये। नहर के किनारे आकर हाथ मुँह धोने बाद घड़ी भर के अन्दर ही जरूरी कामों से छुट्टी पावें बाग मे घूमने और वहाँ की हर एक चीज को गौर से देखने लगे और थोड़ी ही देर में बारहदरी के सामने वाली दो मंजिला इमारत के नीचे जा पहुँचे जिसके ऊपर वाली मंजिल में रात को कोई काम करते हुए भैरोंसिंह ने कई आदमियों को देखा था।

इस इमारत के नीचे वाला भाग ऊपर वाले हिस्से के विपरीत दर्वाजे बल्कि दर्वाजे के किसी नामानिशान तक से भी खाली था। बाग की तरफ वाली नीचे की दीवार साफ तथा चिकने संगमर्मर की बनी हुई थी और बीचोबीच चार हाथ ऊँचा और दो हाथ चौड़ा स्याह पत्थर का एक टुकड़ा लगा हुआ था। उसमें नीचे लिखे मोटे छत्तीस अक्षर खुदे हुए थे जिसे दोनों कुमार बड़े गौर से देखने और उसका मतलब जानने के लिए उद्योग करने लगे।

वे अक्षर ये थे –

ने	ए	ती	क	स्म	स्सो
हि	को	ड़	की	उ	ति
स्स	का	स	लि	टि	न
या	से	न	न	टू	र
य	क	ल	सै	जो	ग
रा	ख	हाँ	टें	क	रो

दो घड़ी तक गौर करने पर कुँअर इन्द्रजीत उसका मतलब समझ गये और अपने छोटे भाई कुँअर आनन्दसिंह को भी समझाया इसके बाद दोनों भाइयों ने जोर करके उस पत्थर को दबाया तो वह अन्दर की तरफ घुस कर जमीन के बराबर हो गया और अन्दर जाने लायक एक खासा दर्वाजा दिखाई देने लगा साथ इसके भीतर की तरफ अन्धकार भी मालूम हुआ। इन्द्रजीत ने तिलिस्मी खंजर की रोशनी करके आगे चलने के लिए आनन्दसिंह से कहा।

तिलिस्मी खंजर की रोशनी के सहारे दोनों भाई उस दर्वाजे के अन्दर चले गये और एक छोटे से कमरे में पहुंचे जिसके बीचोंबीच से ऊपर की मंजिल में जाने के लिए छोटी-छोटी चक्करदार सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। उन्हीं सीढ़ियों की राह से दोनों कुमार ऊपर वाली मंजिल पर चढ़ गये और एक ऐसी कोठरी में पहुंचे जिसकी बनावट अर्धचन्द्र के ढंग की थी और तीन दर्वाजे बाग की तरफ उस बारहदरी के ठीक सामने थे जिसमें रात को दोनों कुमारों ने आराम किया था।

बाग की तरफ वाले तीनों दर्वाजे खोल देने से उस कोठरी के अन्दर अच्छी तरह उजाला हो गया, उस समय आनन्दसिंह ने तिलिस्मी खंजर की रोशनी बन्द की और उस कमरे में रखने बाद अपने भाई से कहा–

आनन्द–इसी कोठरी में रात को भैरोंसिंह ने कई आदमियों को चलते फिरते तथा काम करते देखा था, और मालूम होता है कि इसके दोनों तरफ की कोठरियों का सिलसिला एक दूसरे से लगा हुआ है और सभों का एक दूसरे से सम्बन्ध है।

इन्द–मैं भी ऐसा ही विश्वास करता हूं, इस दाहिने बगल वाली दूसरी कोठरी का दर्वाजा खोलो और देखो कि उसके अन्दर क्या है?

बड़े कुमार की आज्ञानुसार आनन्दसिंह ने बगल वाली दूसरी कोठरी का दर्वाजा खोला, उसी समय दोनों कुमारों को ऐसा मालूम हुआ कि कोई आदमी तेजी के साथ कोठरी में से निकल कर इसके बाद वाली दूसरी कोठरी में चला गया। दोनों कुमारों ने तेजी के साथ उसका पीछा किया और उस दूसरी कोठरी में गए जिसका दर्वाजा मजबूती के साथ बन्द न था, तो नानक पर निगाह पड़ी। यद्यपि उस कोठरी के वे दरवाजे जो बाग की तरफ पड़ते थे बन्द थे मगर दिन का समय होने के कारण झिलमिलियों की दरारों में से पड़ने वाली रोशनी ने उसमें इतना उजाला जरूर कर रक्खा था कि आदमी की सूरत शक्ल बखूबी दिखाई दे जाय, यही सबब था कि निगाह पड़ते ही दोनों कुमारों ने नानक को पहिचान लिया इसी तरह नानक ने

भी दोनों कुमारों को पहिचान कर प्रणाम किया और कहा, 'मैं किसी दुश्मन का होना अनुमान करके भागा था, मगर जब आवाज सुनी तो पहिचान कर रुक गया। मैं कल से आप दोनों भाईयों को खोज रहा हूँ मगर पता न लगा सका क्योंकि तिलिस्मी कारखाने में बिना बूझे दखल देना उचित न जान कर अपनी बुद्धिमानी या जबर्दस्ती से किसी दर्वाजे को खोल न सका और इसलिए बाग में भी पहुँचने की नौबत न आई। कहिए आप लोग कुशल से तो हैं !'

इन्द्र–हाँ हम लोग बहुत अच्छी तरह हैं तुम बताओ कि यहाँ कब कैसे क्यों और किस तरह से आए ?

नानक–कमलिनीजी से मिलने के लिए घर से निकला था मगर जब मालूम हुआ कि वे राजा गोपालसिह के साथ जमानिया गई तब मैं राजा गोपालसिह के पास आया और उन्हीं की आज्ञानुसार यहाँ आपके पास आया हूँ।

इन्द्र–किनकी आज्ञानुसार ? राजा गोपालसिह की या कमलिनी की ? नानक–कमलिनी की आज्ञानुसार।

नानक की बात सुन कर आनन्दसिह ने एक भेद की निगाह इन्द्रजीतसिह पर डाली और इन्द्रजीतसिह ने कुछ मुस्कुराहट के साथ आनन्दसिह की तरफ देख कर कहा– 'बाग की तरफ जो दर्वाजे पडते हैं उन्हें खोल दो चाँदनी हो जाय।

आनन्दसिह ने दर्वाजे खोल दिए और फिर नानक के पास आकर पूछा, हाँ तो कमलिनीजी की आज्ञानुसार तुम यहाँ आए ?

नानक–जी हाँ।

आनन्द–कमलिनी को कहाँ छोडा ?

नानक–राजा गोपालसिह के तिलिस्मी बाग में।

इन्द्र–वह अच्छी तरह से तो हैं न ?

नानक–जी हाँ बहुत अच्छी तरह से है।

आनन्द–घोडे पर से गिरने के कारण उनकी टागे जो टूट गई थी वह अच्छी हुई ?

नानक–यह खबर आपको कैसे मालूम हुई ?

आनन्द–अजी वाह मेरे सामने ही तो घोडे पर से गिरी थीं भैरोसिह ने उनका इलाज किया था अच्छी हो गई थी मगर कुछ दर्द बाकी था जब मैं इधर चला आया।

नानक–जी हाँ अब तो वह बहुत अच्छी है।

आनन्द–(हस कर) अच्छा यह तो बताओ कि तुम किस रास्ते से यहा आए हो ?

नानक–उसी बुर्ज वाले रास्ते से आया हूँ।

आनन्द–मुझे अपने साथ ले चलकर वह रास्ता बता तो दो।

नानक–बहुत अच्छा चलिए मैं बता देता हूँ, मगर मुझसे कमलिनीजी ने कहा था कि जब तुम बाग में जाओगे तो लौटने का रास्ता बन्द हो जाएगा।

आनन्द–यह तो उन्होंने ठीक ही कहा था। हम दोनों भाइयों को भी उन्होंने यह कहला भेजा था कि मैं नानक को तुम्हारे पास भेजूँगी तुम उसकी जुबानी सब हाल सुन कर हिफाजत के साथ उसे तिलिस्म के बाहर कर देना।

नानक–(कुछ शर्माना सा होकर) जी ई ई ई, आप तो दिल्लगी करते है, मालूम होता है आपको मुझ पर कुछ शक है और आप समझते हैं कि मैं आपके दुश्मन का ऐयार हूँ और नानक की सूरत बन आया हूँ, अस्तु आप जिस तरह चाहें मेरी आजमाइश कर सकते हैं।

इतने ही में एक तरफ से आवाज आई ' जब तुम कमलिनीजी के भेजे हुए आए हो तो आजमाइश करने की जरुरत ही क्या है ? थोडी देर में कमलिनी का सामना आप ही हो जाएगा !'

इस आवाज ने दोनों कुमारों को तो कम मगर नानक को हद से ज्यादे परेशान कर दिया। उसके चेहरे पर हवाई सी उडने लगी और वह घबडा कर पीछे की तरफ देखने लगा। इस कोठरी में से दूसरी कोठरी में जाने के लिए जो दर्वाजा था वह इस समय मामूली तौर पर बन्द था इसलिए किसी गैर पर उसकी निगाह न पडी अतएव उस दर्वाजे को खोल कर नानक अगली कोठरी में चला गया मगर साथ ही आनन्दसिह ने भी वहाँ पहुँच कर उसकी कलाई पकड ली और कहा बस इतने ही में घबड़ा गए ! इसी हौसले पर तिलिस्म के अन्दर आए थे ! आओ-आओ हम तुम्हें बाग में ले चलते हैं जहाँ निश्चिन्ती से बैठ कर अच्छी तरह बातें कर सकेंगे।

इसी समय दो दर्वाजे खुले और स्याह लबादा ओढे हुए चार-पाचआदमी उसके अन्दर से निकलआयेजो नानक को जबर्दस्ती घसीट कर ले गए, साथ ही वे दर्वाजे भी उसी तरह बन्द हो गए जैसे पहिले थे। दोनों कुमारों ने भी कुछ सोच

कर आपत्ति न की और उसे ले जाने दिया।

और कोठरियों की बनिस्बत इस कोठरी मे दर्वाजे ज्यादे थे अर्थात् दो दरवाज दानों तरफ ता थे ही मगर बाग की तरफ चार और दो दर्वाजे पिछली तरफ भी थे और उसी पिछली तरफ वाले दोनों दर्वाजों में स व लोग आए थ जो नानक को घसीट कर ल गए थे। नानक को ले जाने क बाद आनन्दसिह से उन्हीं पिछली तरफ वाले दवाजों मे से एक दर्वाजा खाला और अन्दर की तरफ झांक के देखा। भीतर बहुत लम्बा चौड़ा एक कमरा नजर आया जिसमें अन्धकार का नाम निशान भी न था बल्कि अच्छी तरह उजाला था। दानों कुमार उस कमर में चल गए और तब मालूम हुआ कि वे दर्वाजे एक ही कमरे मे जान के लिए है। इस कमर में दोनों कुमारो ने एक बहुत बूढ़े आदमी को दखा जो चारपाई के ऊपर लेटा हुआ कोई किताब पढ रहा था। कुमारो को देखत ही वह चारपाई के नीच उतर कर खड़ा हो गया और सलाम कर के बोला, आज कई दिनों से मैं आप दानों भाइयों के आने का इन्तजार कर रहा हूँ।

इन्द–तुम कौन हो ?

बुड्ढा–जी मै इस बाग का दारोगा हूँ।

इन्द–तुम हम लोगों का इन्तजार क्यों कर रहे थे ?

दारोगा–इसलिए कि आप लागों को यहा की इमारतों और अजायबातों की सैर करा के अपने सर से एक भारी बोझ उतार दूँ।

इन्द–क्या इधर दो-तीन दिन के बीच मे कोई और भी इस बाग मे आया है ?

दारोगा–जी हा दो मर्द और कई औरते आई है।

इन्द–क्या उन लोगों के नाम बता सकते हो ?

दारोगा–नानक और भैरोसिह के सिवाय मै और किसी का नाम नहीं जानता (कुछ सोच कर) हां एक औरत का भी नाम जानता हूँ शायद उसका नाम कमलिनी है क्योंकि वह दो एक दफे इसी नाम से पुकारी गई थी बड़ी ही धूर्त और चालाक है अपनी अक्ल के सामन किसी का कुछ समझती ही नही अस्तु बिना धोखा खाये नहीं रह सकती।

इन्द–क्या बता सकते हो कि वे सब इस समय कहाँ है और उनस मुलाकात क्योंकर हो सकती है ?

दारोगा–जी मुझे उन लोगों का पता नही मालूम क्योंकि कमलिनी ने उन सभों को मेरी बात मानने न दी और अपनी इच्छानुसार उन सभों को लिए हुए चारों तरफ घूमती रही, इसी से मुझे रंज हुआ और मैने उनकी खबरगीरी छोड़ दी।

इन्द–अगर तुम यहाँ के दारोगा हो तो खबरदारी न रखने पर भी यह ता जरुर जानते ही होवोगे कि वे सब कहा है ?

दारोगा–मुझे यहाँ का दारोगा समझने और न समझने का तो आपको अख्तियार है मगर मै यह जरुर कहूँगा कि मुझे उन सभों का पता नही मालूम है।

आनन्द–(हस कर) यही हाल है तो यहाँ की हिफाजत क्या करते हो ?

दारोगा–इसका हाल तो तभी मालूम होगा जब आप मेरे साथ चल कर यहाँ की सैर करेंगे।

आनन्द–अच्छा यह बताओ कि अभी हमारे देखते ही देखते जो लोग नानक को ले गए वे कौन थे ?

दारोगा–वे सब मेरे ही नौकर थे। वह झूठा और शैतान है तथा आपको नुकसान पहुँचाने की नीयत से धोखा देकर यहाँ घुस आया है इसी लिए मैंने उसे गिरफ्तार करन का हुक्म दिया

आनन्द–तुम्हारे आदमी लोग कहाँ रहते है ? यहाँ तो मैं तुमको अकेला ही देखता हूँ।

दारोगा–यह कमरा तो मेरा एकान्त स्थान है जब पढने या किसी विषय पर गौर करने की जरुरत पड़ती है तब मै इस कमरे में आकर बैठता या लेटता हूँ। मगर यहाँ खड़े-खड़े बातें करने में तो आपको तकलीफ होगी। आप मेरे स्थान पर चलें तो उत्तम हो या बाग ही मे चलिए जहाँ और भी कई

इन्द्रजीत–खैर यह सब तो होता रहेगा पहिले हम लोगों को यह मालूम होना चाहिए कि तुम हमारे दोस्त हो, दुश्मन नहीं और तुम्हारी यह सूरत असली है, बनावटी नही। इसके बाद मै तुमसे दिल खोल कर बातें कर सकूँगा।

दारोगा–इस बात का पता तो आपको मेरी कार्रवाई से ही लग सकेगा, मेरे कहने का आपको एतबार कब होगा मगर इस बात को खूब समझ

दारोगा की बात पूरी न होने पाई थी कि एक तरफ से आवाज आई, अजी तुम्हें कुछ खाने पीने की भी सुध है या यों ही बकवाद किया करोगे।

दानों कुमार ताज्जुब के साथ उस तरफ देखने लगे जिधर से आवाज आई थी। उसी समय एक बुढिया उसी तरफ से कमरे के अन्दर आती दिखाई पडी और वहदारोगा के पास आकर फिर बोली, मै बडी ही बदकिस्मत थी जो तुम्हारे साथ ब्याही गई। मैंने जो कहा तुमने कुछ सुना या नहीं ?

दारोगा–(क्रोध से) आ गई शैतान की नानी !

दोनों कुमारों ने दखते ही उस बुढिया को पहियान लिया कि वही बुढिया है जो भैरोसिह की जोरु उस समय बनी हुई थी जब भैरोसिह पागल भया हुआ इसी बाग में हम लोगों को दिखाई दिया था।

इन्द्रजीतसिह ने ताज्जुब और दिल्लगी की निगाह से उस वुढिया की तरफ देखा और कहा ' अभी कल की बात है कि तू भैरोसिह पागल की जोरु बनी हुई थी और आज इस दारोगा को अपना मालिक बता रही है।

पाँचवाँ बयान

कुँअर इन्द्रजीतसिह की यात सुन कर वह बुढिया चमक उठी और नाक भौ चढा कर बोली बुडढी औरतों से दिल्लगी करते तुम्हें शर्म नहीं मालूम होती।

इन्द–क्या मै झूठ कहता हूँ ?

बुढिया–इससे बढ कर झूठ और क्या हो सकता है ? लोग किसी के पीछे झूठ बोलते है मगर आप मुँह पर झूठ बोल के अपने को सच्चा बनाने का उद्योग करते है ! भला इस तिलिस्म में दूसरा आ ही कौन सकता है ? और वह भैरोसिह कौन है जिसका नाम आपने लिया ?

इन्द्रजीत–बस-बस मालूम हो गया। मै अपने को तुम्हारी जुवान से

बुड्ढा–(इन्द्रजीतसिह को रोक कर) अजी आप किससे बातें कर रहे हैं ? यह तो पागल है। इसकी बातों पर ध्यान देना आप ऐसे बुद्धिमानों का काम नहीं है। (बुढिया से) तुझे यहाँ किसने बुलाया जो चली आई ? तेरे ही दु ख से तो भाग कर मैं यहा एकान्त में आ बैठा हूँ, मगर तू ऐसी शैतान की नानी है कि यहाँ भी आए विना नहीं रहती। सवेरा हुआ नहीं और खान की रट लग गई !

बुड्ढी–अजी ता क्या तुम कुछ खाओ पीओगे नहीं ?

बुड्ढा–जब मेरी इच्छा होगी तब खा लूँगा तुम्हें इससे मतलब ? (दोनों कुमारों से) आप इस कम्बख्त का ख्याल छोडिए और मेरे साथ चले आइए। मैं आपको ऐसी जगह ले चलता हूँ, जहाँ इसकी आत्मा भी न जा सके। उसी जगह हम लोग बात-चीतकरेंगे फिर आप जैसा मुनासिब समझिएगा आज्ञा दीजिएगा।

यह बात उस बुड्ढे ने ऐसे ढग से कही और इस तरह पलटा खा कर चल पड़ा कि दोनों कुमारों को उसकी बातों का जवाव देने या उस पर शक करने का मौका न मिला और वे दोनों भी उसके पीछे-पीछे रवाना हो गए।

उस कमरे के बगल ही में एक कोठरी थी और उस कोठरी में ऊपर छत पर जाने के लिए सीढियाँ बनी हुई थी। वह बुडढा दोनों कुमारों को साथ-साथ लिए हुए उस कोठरी में और वहाँ से सीढियों की राह चढ कर उसके ऊपर वाली छत पर ले गया। उस मजिल में छोटी-छोटी कई कोठरियाँ और कमरे थे। बुडढे के कहे मुताबिक दोनों कुमारों ने एक कमरे की जालीदार खिडकी में से झाँक कर देखा तो इस इमारत के पिछले हिस्से में एक और छोटा सा बाग दिखाई दिया जो बनिस्यत इस बाग के जिसमें कुमार एक दिन और रात रह चुके थे ज्यादे खूबसूरत और सरसब्ज नजर आता था। उसमें फूलों के पेड बहुतायत से थे और पानी का एक छोटा सा साफ झरना भी वह रहा था जो इस मकान की दीवार से दूर और उस बाग के पिछलें हिस्से की दीवार के पास था और उसी चश्मे के किनारे पर कई औरतों को भी बैठे हुए दोनों कुमारों ने देखा।

पहिले तो कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह को यही गुमान हुआ कि ये औरतें किशोरी और कामिनी और कमलिनी इत्यादि होंगी मगर जब उनकी सूरत पर गौर किया तो दूसरी ही औरतें मालूम हुई जिन्हें आज के पहिले दोनों कुमारों ने कभी नहीं देखा था।

इन्द्रजीत–(बुडढे से) क्या ये वे ही औरतें है जिनका जिक्र तुमने किया था और जिनमें से एक औरत का नाम तुमने कमलिनी बताया था ?

बुड्ढा–जी नही उनकी तो मुझे भी खबर नहीं कि वे कहाँ गई और क्या हुई।

आनन्द–फिर ये सब कौन हैं ?

बुड्ढा–इन सभों के बारे मे इससे ज्यादे और मैं कुछ नहीं जानता कि ये सब राजा गोपालसिंह की रिश्तेदार है और किसी खास सबब से राजा गोपालसिंह ने इन लोगों को यहा रख छोडा है।

इन्द्रजीत–ये सब यहाँ कब से रहती हैं?

बुड्ढा–सात वर्ष से।

इन्द्रजीत–इनकी खबरगीरी कौन करता है और खाने पीने तथा कपडे लत्ते का इन्तजाम क्योंकर होता है?

बुड्ढा–इसकी मुझे भी खबर नहीं। यदि मैं इन सभों से कुछ बात-चीत करता या इनके पास जाता तो कदाचित् कुछ मालूम हो जाता मगर राजा साहब ने मुझे सख्त ताकीद कर दी है कि इन सभों से कुछ बातचीत न करूँ बल्कि इनके पास भी न जाऊँ।

इन्द्रजीत–खैर यह बताओ कि हम लोग इनके पास जा सकते हैं या नहीं?

बुड्ढा–इन सभों के पास जाना न जाना आपकी इच्छा पर है मैं किसी तरह की रुकावट नहीं डाल सकता और न कुछ राय ही दे सकता हूँ।

इन्द्रजीत–अच्छा इस बाग में जाने का रास्ता तो बता सकते हो?

बुड्ढा–हाँ मैं खुशी से आपको रास्ता बता सकता हूँ मगर स्वयं आपके साथ वहाँ तक नहीं जा सकता इसके अतिरिक्त यह कह देना भी उचित जान पडता है कि यहाँ से उस बाग में जाने का रास्ता बहुत पचीदा और खराब है इसलिए वहाँ जाने में कम से कम एक पहर तो जरुर लगेगा। इससे यही बेहतर होगा कि यदि आप उस बाग में या उन सभों के पास जाना चाहतें हैं तो कमन्द लगा कर इस खिडकी की राह से नीचे उतर जांय। ऐसा आप किया चाहें तो आज्ञा दें मैं एक कमन्द आपको ला दूँ।

इन्द्रजीत–हाँ यह बात मुझे पसन्द है यदि कमन्द ला दो तो हम दोनों भाई उसी के सहारे नीचे उतर जायें।

वह बुड्ढा दोनों कुमारों को उसी तरह उसी जगह छोड कर कहीं चला गया और थोडी देर में एक बहुत बडी कमन्द हाथ में लिए हुए आकर बोला– लीजिए यह कमन्द हाजिर है।

इन्द्रजीत–(कमन्द लेकर) अच्छा तो अब हम दोनों इस कमन्द के सहारे उस बाग में उतर जाते हैं।

बुड्ढा–जाइये मगर यह बताते जाइये कि आप लोग यहाँ से लौट कर कब आवेंगे और मुझे आपको यहाँ की सैर कराने का मौका कब मिलेगा?

इन्द्रजीत–सो तो मैं ठीक नहीं कह सकता मगर तुम यह बता दो कि अगर हम लौटे तो यहाँ किस राह से आवें?

बुड्ढा–इसी कमन्द के जरिये इसी राह से आ जाइयेगा मैं यह खिडकी आपके लिए खुली छोड दूँगा।

आनन्द–अच्छा यह बताओ कि भैरोसिंह की भी कुछ खबर है?

बुड्ढा–कुछ नहीं।

इसके बाद दोनों कुमारों ने उस बुड्ढे से कुछ भी न पूछा और खिडकी खोलने के बाद कमन्द लगा कर उसी के सहारे दोनों नीचे उतर गये।

दोनों कुमारों ने यद्यपि उन औरतों को ऊपर से बखूबी देख लिया था क्योंकि वह बहुत दूर नहीं पडती थीं मगर इस बात का गुमान न हुआ कि उन औरतों ने भी उन्हें उस समय या कमन्द के सहारे नीचे उतरती समय देखा या नहीं।

जब दोनों कुमार नीचे उतर गये तो कमन्द को भी खैंच कर साथ ले लिया और टहलते हुए उस तरफ रवाना हुए जिधर चश्मे के किनारे बैठी हुई वे औरतें कुमार ने देखी थीं। थोडी देर में कुमार उस चश्मे के पास जा पहुँचे और उन औरतों को उसी तरह बैठे हुए पाया। कुमार चश्मे के इस पार थे और वे सब औरतें जो गिनती में सात थीं चश्मे के उस पार सब्ज घास के ऊपर बैठी हुई थीं।

किसी गैर को अपनी तरफ आते देख वे सब औरतें चौकन्नी होकर उठ खडी हुई और बडे गौर के साथ मगर क्रोध भरी निगाहों से कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की तरफ देखने लगीं।

जिस जगह वे औरतें बैठी थीं उससे थोडी ही दूर पर दक्खिन तरफ बाग की दीवार के साथ ही एक छोटा सा मकान बना हुआ था जो पेडों की आड में होने के कारण दोनों कुमारों को ऊपर से दिखाई नहीं दिया था मगर अब नहर के किनारे आ जाने पर बखूबी दिखाई दे रहा था।

वे औरतें जिन्हें कुमार ने देखा था सब की सब नौजवान और हसीन थीं। यद्यपि इस समय वे सब बनाव श्रृंगार और जेवरों के ढकोसलों से खाली थीं मगर उनका कुदरती हुस्न ऐसा न था जो किसी तरह की खूबसूरती को अपने

सामने ठहरन देता। यहा पर यदि ऐसी केवल एक औरत होती तो हम उसकी खूबसूरती के बारे में कुछ लिखते भी मगर एक दम से सात ऐसी औरतों की तारीफ में कलम चलाना हमारी ताकत क बाहर है जिन्हें प्रकृति ने खूबसूरत बनाने के समय हर तरह पर अपनी उदारता का नमूना दिखाया हो।

कुअर इन्द्रजीतसिह ने जब उन औरतों को अपनी तरफ क्रोध भरी निगाहों से देखते देखा तो एक औरत से मुलायम और गम्भीर शब्दों में कहा 'हमलोग तुम्हारे पास किसी तरह की तकलीफ देने की नीयत से नहीं आए हैं बल्कि यह कहने के लिए आए हैं कि किस्मत ने हम लोगों को अकस्मात् यहा पहुँचा कर तुम लोगों का मेहमान बनाया है। हमलोग लाचार होकर और राह भूले हुए मुसाफिर है और तुम लोग यहाँ की रहने वाली और दयावान् हो, क्योंकि जिस ईश्वर ने तुम्हें इतना सुन्दर बना कर अपनी कारीगरी का नमूना दिखाया है उसने तुम्हारे दिल को कठोर बना कर अपनी भूल का परिचय कदापि न दिया होगा,' अतएव उचित है कि तुम लोग ऐसे समय में हमारी सहायता करो और बताओ कि अब हम दोनों भाई क्या करें और कहाँ जायें ?

औरतें खुशामद पसन्द तो होती ही हैं। कुँअर इन्द्रजीतसिह की मीठी और खुशामद भरी बातें सुन कर उन सभों की चढी हुई त्यौरिया उतर गई और होठों पर कुछ मुस्कुराहट दिखाई देने लगी। एक ने जो सबसे चतुर-चचल और चालाक जान पडती थी, आगे बढ कर कुअर इन्दजीतसिह से कहा जब आप हमारे मेहमान बनते है और इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि हमारे साथ दगा न करगे तो हम लोग भी नि सन्देह आपको अपना मेहमान स्वीकार करके जहा तक हो सकेगा आपकी सहायता करेंगी, अच्छा ठहरिए हम लोग जरा आपुस में सलाह कर लें।

इतना कह कर वह चुप हो गई उन लोगों ने आपुस म धीर धीरे कुछ बातें की और इसके बाद फिर उसी औरत ने इन्द्रजीतसिह की तरफ देखकर कहा –

औरत–(हाथ का इशारा करक) उस तरफ एक छोटा सा पुल बना हुआ है, उसी पर से होकर आप इस पार चले आइए।

इन्द–क्या इस नहर में पानी बहुत ज्यादा है ?

औरत–पानी तो ज्यादा नहीं है मगर इसमें लोहे के तेज नोक वाले गोखरू बहुत पडे है इसलिए इस राह से आपका आना असम्भव है।

इन्द–अच्छा तो हम पुल से होकर आवेंगे।

इतना कह कुमार उस तरफ रवाना हुए जिधर उस औरत ने हाथ के इशारे से पुल का होना बताया था। थोडी दूर जाने बाद एक गुजान और खुशनुमा झाडी के अन्दर वह छोटा सा पुल दिखाई दिया। इस जगह नहर के दोनों तरफ पारिजात के कई पेड थे जिनकी डालियाँ ऊपर से मिली हुई थीं और उस पर खूबसूरत फूल पत्तों वाली बेलें इस ढग से चढी हुई थीं कि उनकी सुन्दर छाया में छिपा हुआ वह छोटा सा पुल बहुत खूबसूरत और स्थान बडा रमणीक मालूम होता था। इस जगह से न तो दोनों कुमार उन औरतों को देख सकते थे और न उन औरतों की निगाह इन पर पड सकती थी।

जब दोनों कुमार पुल की राह पार उतर कर और घूम फिर कर उस जगह पहुँचे जहाँ उन औरतों को छोड आए थे तो केवल दो औरतों को मौजूद पाया जिनमें से एक तो वही थी जिससे कुअर इन्द्रजीतसिह से बातचीत हुई थी और दूसरी उससे उम्र में कुछ कम मगर खूबसूरती में कुछ ज्यादे थी। बाकी औरतों का पता न था कि क्या हुईं और कहा गईं। कुँअर इन्दजीतसिह ने ताज्जुब में आकर उस औरत से जिसने पुल की राह इधर आने का उपदेश किया था पूछा 'यहाँ तुम दोनों के सिवाय और कोई नहीं दिखाई देता सब कहा चली गईं' ?

औरत–आप को उन औरतों से क्या मतलब ?

इन्द्रजीत–कुछ नहीं यों ही पूछता हूँ।

औरत–(मुस्कुराती हुई) वे सब आप दोनों भाइयों की मेहमानदारी का इन्तजाम करने चली गईं अब आप मेरे साथ चलिए।

इन्दजीत–कहाँ ले चलोगी ?

औरत–जहाँ मेरी इच्छा होगी' जब आपने मेरी मेहमानी कबूल ही कर ली तब

इन्दजीत–खैर अब इस किस्म की बातें न पूछूँगा और जहाँ ले चलोगी चला चलूँगा।

औरत–(मुस्कुरा कर) अच्छा तो आइए।

दोनों कुमार उन दोनों औरतों के पीछे-पीछे रवाना हुए। हम कह चुके है कि जहाँ ये औरतें बैठी थीं वहाँ से थोडी ही दूर पर एक छोटा सा मकान बना हुआ था। वे दोनों औरतें कुमारों को लिए उसी मकान के दरवाजे पर पहुँची जो इस

समय बन्द था मगर कोई जंजीर, कुण्डा या ताला उसमें दिखाई नही देता था। कुमारों को यह भी मालूम न हुआ कि किस खुटके को दबा कर या क्योंकर उसने वह दर्वाजा खोला। दर्वाजा खुलने पर उस औरत ने पहिले दोनों कुमारो को उसके अन्दर जाने के लिए कहा, जब दोनों कुमार उसके अन्दर चले गए तब उन दोनों ने भी उसके अन्दर पैर रक्खा और उसके बाद हलकी आवाज के साथ वह दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया। इस समय दोनों कुमारों ने अपने को एक सुरग में पाया जिसमें अन्धकार के सिवाय और कुछ दिखाई नहीं देता था और जिसकी चौड़ाई तीन हाथ और ऊंचाई चार हाथ से किसी तरह ज्यादे न थी। इस जगह कुमार को इस बात का ख्याल हुआ कि कहीं इन औरतों ने मुझे धोखा तो नही दिया मगर यह सोच कर चुप रह गये कि अब तो जो कुछ होना था हो ही गया और ये औरतें भी तो आखिर हमारे साथ ही हैं जिनके पास किसी तरह का हर्बा देखने में नहीं आया था।

दोनों कुमारो ने अपना हाथ पसार कर दीवाल को टटोला और मालूम किया कि यह सुरग है उसी समय पीछे उस औरत की यह आवाज आई, ' आप दोनों भाई किसी तरह का अन्देशा न कीजिए और सीधे चले चलिए इस सुरग में बहुत दूर तक जाने की तकलीफ आप लोगों को न होगी ।"

वास्तव में यह सुरग बहुत बडी न थी चालीस पचास कदम से ज्यादे कुमार न गए होंगे कि सुरग का दूसरा दर्वाजा मिला और उसे लांघ कर कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने अपने को एक दूसरे ही बाग में पाया जिसकी जमीन का बहुत बड़ा हिस्सा मकान कमरों बारहदरियों तथा और इमारतो के काम में लगा हुआ था और थोड़े हिस्से में मामूली ढग का एक छोटा सा बाग था। हा उस बाग के बीचोबीच में एक छोटी सी खूबसूरत बावली जरूर थी जिसकी चार अगुल ऊंची सीढ़ियाँ सफेद लहरदार पत्थरों से बनी हुई थी। इसके चारों कोने पर चार पेड कदम्ब के लगे हुए थे और एक पेड़ के निचे एक चबुतरा सगमर्मर का इस लायक था कि उस पर बीस-पच्चीस आदमी खुले तौर पर बैठ सकें। इमारत का हिस्सा जो कुछ बाग में था वह सब बाहर से तो देखने में बहुत ही खूबसूरत था मगर अन्दर से वह कैसा और किस लायक था सो नहीं कह सकते।

बावली के पास पहुँच कर उस औरत ने कुअर इन्द्रजीतसिंह से कहा 'यद्यपि इस समय धूप बहुत तेज हो रही है मगर इस पेड (कदम्ब) की घनी छाया में इस सगमर्मर के चबूतरे पर थोडी देर तक बैठने में आपको किसी तरह की तकलीफ न होगी, मैं बहुत जल्द (सामने की तरफ इशारा करके) इस कमरे को खुलवा कर आपके आराम करने का इन्तजाम करूँगी, केवल आधी घडी के लिए आप मुझे बिदा करें।

इन्द–खैर जाओ मगर इतना बताती जाओ कि तुम दोनों का नाम क्या है जिससे यदि कोई आवे और कुछ पूछे तो कह सकें कि हम लोग फलाने के मेहमान हैं।

औरत–(हस कर) जरूर जानना चाहिये केवल इसलिए नही बल्कि कई कामों के लिए हम दोनो बहिनों का नाम जान लेना आपके लिए आवश्यक है मेरा नाम इन्द्रानी (दूसरी की तरफ इशारा करके) और इसका नाम आनन्दी है। यह मेरी सगी छोटी बहिन है।

इतना कह कर वे औरतें तेजी के साथ एक तरफ चली गई और इस बात का कुछ भी इन्तजार न किया कि कुमार कुछ जवाब देंगे या और कोई बात पूछेंगे। उन दोनों औरतों के चले जाने बाद कुअर आनन्दसिंह ने अपने भाई से कहा, 'इन दोनों औरतों के नाम पर आपने कुछ ध्यान दिया ?"

इन्द–हाँ, यदि इनका यह नाम इनके बुजर्गो का रक्खा हुआ और इनके शरीर का सबसे पहिला साथी नहीं है तो कह सकते है कि हम दोनों ने धोखा खाया।

आनन्द–जी मेरा भी यही ख्याल है मगर साथ ही इसके मैं यह भी ख्याल करता हूँ कि अब हम लोगों को चालाक बनना

इन्द्र–(जल्दी से) नही-नहीं अब हम लोगों को जब तक छुटकारे की साफ सूरत दिखाई न दे जाय प्रकट में नादान बने रहना ही लाभदायक होगा।

आनन्द–नि सन्देह, मगर इतना तो मेरा दिल अब भी कह रहा है कि ये सब हमारी जिन्दगी के धागे में किसी तरह का खिचाव पैदा न करेंगी।

इन्द–मगर उसमें लगर की तरह लटकाने के लिए इतना बडा बोझ जरूर लाद देंगी कि जिसका सहन करना असम्भव नहीं तो असह्य अवश्य होगा।

आनन्द–हा, अब यदि हम लोगों को कुछ सोचना है तो इसी के विषय में

इन्दजीत–अफसोस, ऐसे समय में भैरोंसिंह को भी इत्तिफाक ने हम लोगों से अलग कर दिया। ऐसे मौकों पर उसकी बुद्धि अनूठा काम किया करती है। (कुछ रुक कर) देखो तो सामने से वह कौन आ रहा है!

आनन्द–(खुशी भरी आवाज में ताज्जुब के साथ) यह तो भैरोसिह ही है! अब कोई परवाह की बात नहीं है अगर वास्तव में भैरोसिह ही हैं।

अपने से थोडी ही दूर पर दोनों कुमारों ने भैरोसिह को देखा जो एक कोठरी के अन्दर से निकल कर इन्हीं की तरफ आ रहा था। दोनों कुमार उठ खडे हुए और मिलने के लिए खुशी-खुशी भैरोसिह की तरफ रवाना हुए। भैरोसिह ने भी इन्हें दूर से देखा और तेजी के साथ चल कर इन दोनों भाइयों के पास आया। दोनों भाइयों ने खुशी-खुशी भैरोसिह को गले लगाया और उसे साथ लिए हुए उसी चबूतरे पर चले आए जिस पर इन्दानी उनको बैठा गई थी।

इन्द्रजीत–(चबूतरे पर बैठ कर) भैरो भाई यह तिलिस्म का कारखाना है यहा फूक-फूकके कदम रखना चाहिए, अस्तु यदि मैं तुम पर शक करके तुम्हें जाचने का उद्योग करु तो तुम्हें खफा न होना चाहिए।

भैरो–नहीं नहीं नहीं मै ऐसा बेवकूफ नहीं हूँ कि आप लोगों की चालाकी और बुद्धिमानी की बातों से खफा होऊँ तिलिस्म और दुश्मन के घर में दोस्तों की जा बहुत जरूरी है। बगल वाला मसा और कमर का दाग दिखलाने के अतिरिक्त बहुत सी बातें ऐसी हैं जिन्हें सिवाय मेरे और आपके दूसरा कोई भी नहीं जानता जैसे 'लड़कपन वाला मजनूं'।

इन्द्रजीत–(हस कर) बस-बस मुझे जाच करने की कोई जरूरत नहीं रही अब यह बताओ कि तुम्हारा बटुआ तुम्हें मिला या नहीं ?

भैरो–(ऐयारी का बटुआ कुमार के आगे रख कर) आपके तिलिस्मी खजर की बदौलत मेरा यह बटुआ मुझे मिल गया। शुक्र है कि इसमें की कोई चीज नुकसान नहीं गई सब ज्यों की त्यों मौजूद है। (तिलिस्मी खजर और उसके जोड की अगूठी देकर) लीजिए अपना तिलिस्मी खजर अब मुझे इसकी कोइ जरूरत नहीं मेरे लिए मेरा बटुआ काफी है।

इन्द–(अगूठी और तिलिस्मी खजर लेकर) अब यद्यपि तुम्हारा किस्सा सुनना बहुत जरुरी है क्योंकि हम लोगों ने एक आश्चर्यजनक घटना के अन्दर तुम्हें छोडा था मगर इस सब के पहिले अपना हाल तुम्हें सुना देना उचित जान पडता है क्योंकि एकान्त का समय बहुत कम है और उन दोनों औरतों के आ जाने में बहुत विलम्ब नहीं है जिनकी बदौलत हम लोग यहा आए हैं और जिनके फेर में अपने को पडा हुआ समझते हैं।

भैरो–क्या किसी औरत ने आप लोगों को धोखा दिया ?

इन्द्रजीत–निश्चय तो नहीं कह सकता कि धोखा दिया मगर जो कुछ हाल है उसे सुन के राय दो कि हम लोग अपने को धोखे में फसा हुआ समझें या नहीं।

इसके बाद कुँअर इन्द्रजीतसिह ने अपना कुल हाल भैरोसिह से जुदा होने के बाद से इस समय तक कह सुनाया। इसके जवाब में अभी भैरोसिह ने कुछ कहा भी न था कि सामने वाले कमरे का दर्वाजा खुला और उसमें से इन्द्रानी को निकल कर अपनी तरफ आते देखा।

इन्द्रजीत–(भैरो से) लो वह आ गई, एक तो यही औरत है, इसी का नाम इन्द्रानी है मगर इस समय वह दूसरी औरत इसके साथ नहीं है जिसे यह अपनी संगी छोटी बहिन बताती है।

भैरो–(ताज्जुब से उस औरत की तरफ देखकर) इसे तो मै पहिचानता हूँ मगर यह नहीं जानता था कि इसका नाम इन्द्रानी है।

इन्द्रजीत–तुमने इसे कब देखा ?

भैरो–तिलिस्मी खजर लेकर आपसे जुदा होने के बाद बटुआ पाने के सम्बन्ध में इसने मेरी बडी मदद की थी जब मैं अपना हाल सुनाऊगा तब आप को मालूम होगा कि यह कैसी नेक औरत है मगर इसकी छोटी बहिन को मै नही जानता , शायद उसे भी देखा हो।

इतने ही में इन्द्रानी वहा आ पहुँची जहा भैरोसिह और दोनों कुमार बैठे बातचीत कर रहे थे। जिस तरह भैरोसिह ने इन्द्रानी को देखते ही पहिचान लिया उसी तरह इन्द्रानी ने भी भैरोसिह को देखते ही पहचान लिया और कहा, "क्या आप भी यहा आ पहुचे ? अच्छा हुआ क्योंकि आपके आने से दोनों कुमारों का दिल बहलेगा इसके अतिरिक्त मुझ पर भी किसी तरह का शक शुबहा न रहेगा।

भैरो–जी हा मैं भी यहा आ पहुचा और आपको दूर से देखते ही पहिचान लिया बल्कि कुमार से कह भी दिया कि इन्होंने मेरी बडी सहायता की थी।

इन्द्रानी–यह तो बताओ कि स्नान सन्ध्या से छुट्टी पा चुके हो या नहीं ?

भैरो–हा मैं स्नान सध्या से छुट्टी पा चुका हूँ और हर तरह से निश्चिन्त हूँ।

इन्द्रानी–(दोनों कुमारों से) और आप लोग ?

इन्द–हम दोनों भाई भी।

इन्द्रानी–अच्छा तो अब आप लोग कृपा करके उस कमरे में चलिए।

भैरो–बहुत अच्छी बात है (दोनों कुमारों से) चलिए।

भैरोसिंह को लिए हुए कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह उस कमरे में आए जिसे इन्द्रानी ने इनके लिए खोला था। कुमार ने इस कमरे को देख कर बहुत पसन्द किया क्योंकि यह कमरा बहुत बड़ा और खूबसूरती के साथ सजाया हुआ था। इसकी छत बहुत ऊंची और रंगीन थी, तथा दीवारों पर भी मुसौवर ने अनोखा काम किया था। कुछ दीवारों पर जंगल, पहाड़, खोह, कदारा, घाटी और शिकारगाह तथा बहते हुए चश्मे का अनोखा दृश्य ऐसे अच्छे ढंग से दिखाया गया था कि देखने वाला नित्य पहरों देखा करे और उसका चित न भरे। मौके-मौके से जंगली जानवरों की तस्वीरें भी ऐसी बनी थीं कि देखने वालों का उसके असली होने का धोखा होता था। दीवारों पर बनी हुई तस्वीरों के अतिरिक्त कागज और कपड़ों पर बनी हुई तथा सुन्दर चौखटों में जड़ी हुई तस्वीरों की भी इस कमरे में कमी न थी। ये तस्वीरें केवल हसीन और नौजवान औरतों की थीं जिनकी खूबसूरती और भाव को देख कर देखने वाला प्रेम से दीवाना हो सकता था। इन्हीं तस्वीरों में इन्द्रानी और आनन्दी की तस्वीरें भी थीं जिन्हें देखते ही कुंअर इन्द्रजीतसिंह हंस पड़े और भैरोसिंह की तरफ देख के बोले, "देखो वह तस्वीर इन्द्रानी की और यह उनकी बहिन आनन्दी की है। उन्हें तुमने न देखा होगा !

भैरो–जी इनकी छोटी बहिन को तो मैंने नहीं देखा।

इन्द–स्वयम जैसी खूबसूरत है वैसी ही तस्वीर भी बनी है। (इन्द्रानी की तरफ देख कर) मगर अब हमें इस तस्वीर के देखने की कोई जरूरत नहीं !

इन्द्रानी–(हंस कर) बेशक क्योंकि अब आप स्वतन्त्र और लड़के नहीं रहे। इन्द्रानी का जवाब सुन भैरोसिंह तो खिलखिला कर हंस पड़ा मगर आनन्दसिंह ने मुश्किल से हँसी रोकी।

इस कमरे में रोशनी का सामान (दीवारगीर डाल हांडी इत्यादि) भी बेशकीमत खूबसूरत और अच्छे ढंग से लगा हुआ था। सुन्दर बिछावन और फर्श के अतिरिक्त चांदी और सोने की कई कुर्सियां भी उस कमरे में मौजूद थीं जिन्हें देखकर कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने एक सोने की कुर्सी पर बैठने का इरादा किया मगर इन्द्रानी ने सभ्यता के साथ रोक कर कहा – पहिले आप लोग भोजन कर लें क्योंकि भोजन का सब सामान तैयार है और ठंडा हो रहा है।

इन्द–भोजन करने की तो इच्छा नहीं है।

इन्द्रानी–(चेहरा उदास बना कर) तो फिर आप हमारे मेहमान ही क्यों बने थे ? क्या आप अपने को बेमुरौवत और झूठा बनाया चाहते है ?

इन्द्रानी ने कुमार को हर तरह से कायल और मजबूर करके भोजन करने के लिए तैयार किया। इस कमरे में छोटा सा एक दर्वाजा दूसरे कमरे में जाने के लिए बना हुआ था इसी राह से दोनों कुमार भैरोसिंह को लिए हुए इन्द्रानी कमरे में पहुँची। यह कमरा बहुत ही छोटा और राजाओं के पूजा पाठ तथा भोजन इत्यादि के योग्य बना हुआ था। कुमार ने देखा कि दोनों भाइयों के लिए उत्तम से उत्तम भोजन का सामान चांदी और सोने के बर्तनों में तैयार है और हाथ में सुन्दर पंखा लिए आनन्दी उसकी हिफाजत कर रही है। इन्द्रानी ने आनन्दी के हाथ से पंखा ले लिया और कहा, " भैरोसिंह भी आ पहुँचे हैं इनके वास्ते भी सामान बहुत जल्द ले आओ।"

आज्ञा पाते ही आनन्दी चली गई और थोड़ी देर में कई औरतों के साथ भोजन का सामान लिए लौट आई। करीने से सब सामान लगाने बाद उसने उन औरतों को बिदा किया जिन्हें अपने साथ लाई थी।

दोनों कुमार और भैरोसिंह भोजन करने के लिए बैठे, उस समय इन्द्रजीतसिंह ने भेद भरी निगाह से भैरोसिंह की तरफ देखा और भैरोसिंह ने भी इशारे में ही लापरवाही दिखा दी। इस बात को इन्द्रानी और आनन्दी ने भी ताड़ लिया कि कुमार को इस भोजन में बेहोशी की दवा का शक हुआ मगर कुछ बोलना मुनासिब न समझ कर चुप रह गई। जब तक दोनों कुमार भोजन करते रहे तब तक आनन्दी पंखा हांकती रही। दोनों कुमार इन दोनों औरतों का बर्ताव देख कर बहुत खुश हुए और मन में कहने लगे कि ये औरतें जितनी खूबसूरत है उतनी ही नेक भी है, जिनके साथ ब्याही जायगी उनके बड़भागी होने में कोई सन्देह नहीं (क्योंकि ये दोनों कुमारी मालूम होती थीं)।

भोजन समाप्त होने पर आनन्दी ने दोनों कुमारों और भैरोसिंह के हाथ धुलाये और इसके बाद फिर दोनों कुमार और भैरोसिंह इन्द्रानी और आनन्दी के साथ उसी पहिले वाले कमरे में आये। इन्द्रानी ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह से कहा अब थोड़ी देर आप लोग आराम करें और मुझे इजाजत दें तो

इन्द्रजीत–मेरी जी तुम लोगों का हाल जानने के लिए बेचैन हो रहा है इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम एक पल के

लिए भी कहीं जाओ जब तक कि मेरी बातों का पूरा-पूरा जवाब न दे लो। मगर यह तो बताओ कि तुम लोग भोजन कर चुकी हो या नहीं !

इन्द्रानी–जी अभी तो हम लोगों ने भोजन नहीं किया है जैसी मर्जी हो

इन्द्रजीत–तब मैं इस समय नहीं रोक सकता, मगर इस बात का वादा जरूर ले लूगा कि तुम घण्टे भर से ज्यादे न लगाओगी और मुझे अपने इन्तजार का दु ख न दोगी।

इन्द्रानी–जी मैं वादा करती हूँ कि घण्टे भर के अन्दर ही आपकी सेवा में लौट आऊगी।

इतना कहकर आनन्दी को साथ लिए हुए इन्द्रानी चली गई और दोनों कुमार तथा भैरोसिह को बातचीत करने का मौका दे गई।

छठवां बयान

इन्द्रानी और आनन्दी के चले जाने के बाद कुअर इन्द्रजीतसिह आनन्दसिह और भैरोसिह में यों बातचीत होने लगी –।

इन्द्रजीत–(भैरो से) असल बात जो कुछ इन्द्रानी से पूछा चाहता था उसका मौका तो अभी तक मिला ही नहीं।

भैरो–यही कि तुम कौन और कहा की रहने वाली हो इत्यादि !

इन्द्र–हा और किशोरी, कामिनी इत्यादि कहा हैं तथा उनसे मुलाकात क्योंकर हो सकती है ?

आनन्द–(भैरो स) इस बात का कुछ पता तो शायद तुम भी द सकोगे क्योंकि हम लोगों के पहिले तुम इन्द्रानी को जान चुके हो और कई ऐसी जगहों में भी घूम चुके हो जहा हम लोग अभी तक नहीं गए है।

इन्द–हा पहिले तुम अपना हाल तो कहो !

भैरो–सुनिए– अपना बटुआ पाने की उम्मीद में जब मैं उस दर्वाजे के अन्दर गया ता जाते ही मैंने उन दोनों को ललकार के कहा मैं भैरोसिह स्वय आ पहुँचा। इतने ही में वह दर्वाजा जिस राह से मैं उस कमरे में गया था बन्द हो गया। यद्यपि उस समय मुझे एक प्रकार का भय मालूम हुआ परन्तु बटुए की लालच ने मुझे उस तरफ देर तक ध्यान न देने दिया और सीधा उस नकाबपोश के पास चला गया , जिसकी कमर में मेरा बटुआ लटक रहा था।

मैं समझे हुए था कि पीला मकरन्द' अर्थात् पीली पोशाक वाला नकाबपोश स्याह नकाबपोश का दुश्मन तो है ही अतएव स्याह नकाबपोश का मुकाबला करने में, पीले मकरन्द से मुझे कुछ मदद अवश्य मिलेगी मगर मेरा ख्याल गलत था। मेरा नाम सुनत ही वे दोनों नकाबपोश मेरे दुश्मन हो गए और यह कह कर मुझसे लडने लग कि 'यह ऐयारी का बटुआ अब तुम्हें नहीं मिल सकता जब रहेगा तो हम दोनों में से किसी एक के पास ही रहेगा।

परन्तु मैं इस बात से भी हताश न हुआ। मुझे उस बटुए की लालच ऐसी कब न थी कि उन दोनों के धमकाने से डर जाता और अपने बटुए के पान से नाउम्मीद होकर अपने बचाव की सूरत देखता इसके अतिरिक्त आपका तिलिस्मी खजर भी मुझे हताश नहीं होने दता था अस्तु मैं दोनों के वारों का जवाब उन्हें देन और दिल खोल कर लडने लगा और थोडी ही देर में विश्वास करा दिया कि राजा बीरेन्द्रसिह के ऐयारों का मुकाबला करना हसी खेल नहीं है। *

थोडी देर तक ता दोनों नकाबपोश मेरा वार बहुत अच्छी तरह बचाते चले गये मगर इसके बाद जब उन दोनों ने देखा कि अब उनमें वार बचान की कुदरत नही रही और तिलिस्मी खजर जिस जगह बैठ जायगा दो टुकडे किए बिना न रहेगा तब पीले मकरन्द ने ऊची आवाज में कहा भैरोसिह ठहरो-ठहरो जरा मेरी बात सुन लो तब लडना। ओ स्याह नकाब वाल क्यों अपनी जान का दुश्मन बन रहा है ? जरा ठहर जा और मुझे भैरोसिह से दो-दो बातें कर लेने दे।

पीले मकरन्द की बात सुन कर स्याह नकाबपोश ने और साथ ही मैंने भी लडाई से हाथ खैंच लिया मगर तिलिस्मी खजर की रोशनी को कम होने न दिया। इसके बाद पीले मकरन्द ने मुझसे पूछा, 'तुम हम लोगों से क्यों लड रहे हो ?

मैं–(स्याह नकाबपोश की तरफ बता कर) इसके पास मरा ऐयारी का बटुआ है जिसे मैं लिया चाहता हूँ।

पीला मकरन्द– तो मुझसे क्यों लड रहे हो ?

मैं–मैं तुमसे नहीं लडता बल्कि तुम खुद ही मुझसे लड रहे हो !

पीला मक–(स्याह नकाबपोश से) क्यों अब क्या इरादा है इनका बटुआ खुशी से इन्हें दोगे या लड कर अपनी जान दोगे ?

---

*बहुत ठीक सत्य वचन !

स्याह नकाबपोश–जब बटुए का मालिक स्वयम् आ पहुँचा है तो बटुआ देन में मुझे क्योंकर इनकार हो सकता है ? हा यदि ये न आते तो मैं बटुआ कदापि न देता।

पीला मक–जब ये न आते तो मैं भी देख लेता कि तुम वह बटुआ मुझे कैसे नहीं देते, खैर अब इनका बटुआ इन्हें दे दो और पीछा छुडाओ !

स्याह नकाबपोश ने बटुआ खोल कर मेरे आगे रख दिया और कहा 'अब तो मुझे छुट्टी मिली ? ' इसके जवाब में मैंने कहा, 'नहीं पहिले मुझे देख लेने दो कि मेरी अनमोल चीजें इसमें है या नहीं।'।

मैंने उस बटुए के बन्धन पर निगाह पड़ते ही पहचान लिया कि मेरे हाथ की दी हुई गिरह ज्यों की त्यों मौजूद है तथापि होशियारी के तौर पर बटुआ खोल कर देख लिया और जब निश्चय हो गया कि मेरी सब चीजें इसमें मौजूद है तो खुश होकर बटुआ कमर में लगा कर स्याह नकाबपोश से बोला ' अब मेरी तरफ से तुम्हें छुट्टी है, मगर यह तो बता दो कि कुमार के पास किस राह से जा सकता हूँ ?' इसका जवाब स्याह नकाबपोश ने यह दिया कि यह सब हाल मैं नही जानता तुम्हें जो कुछ पूछना है पीले मकरन्द से पूछ लो

इतना कह कर स्याह नकाबपोश न मालूम किधर चला गया और मैं पीले मकरन्द का मुँह देखने लगा। पीले मकरन्द ने मुझसे पूछा, अब तुम क्या चाहते हो ?

मैं–अपने मालिक के पास जाना चाहता हूँ !

पीला मक–तो जाते क्यों नहीं ?

मैं–क्या उस दरवाजे की राह जा सकूगा जिधर से आया था ?

पीला मक–क्या तुम देखते नहीं कि वह दर्वाजा बन्द हो गया है और अब तुम्हारे खोलने स नहीं खुल सकता !

मैं–तब मैं क्योंकर बाहर जा सकता हूँ ?

इसके जवाब में पीले मकरन्द ने कहा 'तुम मेरी सहायता के बिना यहा से निकल कर बाहर नही जा सकते क्योंकि रास्ता बहुत कठिन और चक्करदार है खैर तुम मेरे पीछे-पीछे चलेआओ मैं तुम्हें यहा से बाहर कर दूँगा।

पीले मकरन्द की बात सुन कर मैं उसके साथ-साथजाने के लिए तैयार हो गया मगर फिर भी अपना दिल भरने के लिए मैंने एक दफे उस दर्वाजे को खोलने का उद्योग किया जिधर से उस कमरे में गया था। जब दर्वाजा न खुला तब लाचार हो कर मैंने पीले मकरन्द का सहारा लिया मगर दिल में इस बात का ख्याल जमा रहा कि कहीं वह मेरे साथ दगा न करे।

पीले मकरन्द ने चिराग उठा लिया और मुझे अपने पीछे-पीछे आने के लिए कहा तथा मैं तिलिस्मी खजर हाथ में लिए हुए उसके साथ रवाना हुआ। पीले मकरन्द ने विचित्र ढग से कई दर्वाजे खोले और मुझे कई कोठरियों में घुमाता हुआ मकान के बाहर ले गया। मैं तो समझे हुए था कि अब आपके पास पहुँचा चाहता हूँ मगर जब बाहर निकलने पर देखा तो अपने को किसी और ही मकान के दर्वाज पर पाया। चारो तरफ सुबह की सुफेदी अच्छी तरह फैल चुकी थी और मैं ताज्जुब की निगाहों से चारो तरफ दख रहा था। उस समय पीले मकरन्द ने मुझे उस मकान के अन्दर चलने के लिए कहा मगर इस जगह वह स्वय पीछे हो गया और मुझे आगे चलने क लिए बोला। उसकी इस बात से मुझे शक पैदा हुआ मैंने उससे कहा कि 'जिस तरह अभी तक तुम मेरेआगे-आग चलते आये हो उसी तरह अब भी इस मकान के अन्दर क्यों नहीं चलते ? मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चला । इसके जवाब में पीले मकरन्द ने सिर हिलाया और कुछ कहा ही चाहता था कि मेरे पीछे की तरफ से आवाज आई, ओ भैरोसिह, खबरदार !इस मकान के अन्दर पैर न रखना, और इस पीले मकरन्द को पकड रखना भागने न पावे !

मै घूम कर पीछे की तरफ देखने लगा कि यह आवाज देने वाला कौन है। इतने ही में इस इन्दानी पर मेरी निगाह पडी जो तेजी के साथ चल कर मेरी तरफ आ रही थी। पलट कर मैंने पीले मकरन्द की तरफ देखा तो उसे मौजूद न पाया, न मालूम वह यकायक क्योंकर गायब हो गया। जब इन्दानी मेरे पास पहुँची तो उसने कहा, 'तुमने बड़ी भूल की जो उस शैतान मकरन्द को पकड न लिया। उसने तुम्हारे साथ धोखेबाजी की। बेशक वह तुम्हारे बटुए की लालच में तुम्हारी जान लिया चाहता था। ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि मुझे खबर लग गई और मैं दौड़ी हुई यहाँ तक चली आई। वह कम्बख्त मुझे देखते ही भाग गया।'

इन्दानी की बात सुन कर मैं ताज्जुब में आ गया और उसका मुह देखने लगा। सबसे ज्यादे ताज्जुब तो मुझे इस बात का था कि इन्दानी जैसी खूबसूरत और नाजुक औरत को देखते ही वह शैतान मकरन्द भाग क्यों गया। इसके अतिरिक्त देर तक तो मैं इन्द्रानी की खूबसूरती ही को देखता रह गया। (मुस्कुरा कर) माफ कीजिए बुरा न मानियेगा, क्योंकि मैं सच कहता हूँ कि इन्दानी को मैंने किशोरी से भी बढ कर खूबसूरत पाया। सुबह के सुहावने समय में उसका चेहरा दिन की तरह दमक रहा था !

इन्द्रजीत–यह तुम्हारी खुशनसीबी थी कि सुबह के वक्त ऐसी खूबसूरत औरत का मुह देखा।

भैरो–उसी का यह फल मिला कि जान बच गई और आपसे मिल सका।

इन्द्रजीत–खैर तब क्या हुआ !

भैरो–मैंने धन्यवाद देकर इन्द्रानी से पूछा कि तुम कौन हो और यह मकरन्द कौन था ? इसके जवाब में इन्द्रानी ने कहा कि 'यह तिलिस्म है यहा के भेदों का जानने का उद्योग न करो, जो कुछ आप से आप मालूम होता जाय उसे समझते जाओ। इस तिलिस्म में तुम्हारे दोस्त और दुश्मन बहुत हैं, अभी तो आए हौ दो चार दिन में बहुत सी बातों का पता लग जाएगा हा अपने बारे में मैं इतना जरुर कह दूँगी कि इस तिलिस्म की रानी हूं और तुम्हें तथा दोनों कुमारों को अच्छी तरह जानती हूँ।

इन्द्रानी इतना कह के चुप हो गई और पीछे की तरफ देखने लगी। उसी समय और भी चार पाच औरतें वहा आ पहुँचीं जो खूबसूरत कमसिन और अच्छे गहने कपडे पहिरे हुए थीं। मैंने किशोरी कामिनी वगैरह का हाल इन्द्रानी से पूछना चाहा मगर उसने बात करने की माहलत न दी और यह कह कर मुझ एक औरत के सुपुर्द कर दिया कि यह तुम्हें कुअर इन्द्रजीतसिह के पास पहुँचा दगी। इतना कह कर बाकी औरतों को साथ लिए हुए इन्द्रानी चली गई और मुझे तरद्दुद में छाड गई। अन्त में उसी औरत की मदद स मैं यहा तक पहुँचा।

इन्द्रजीत–आखिर उस औरत से भी तुमने कुछ पूछा या नहीं ?

भैरो–पूछा तो बहुत कुछ मगर उसने जवाब एक बात का भी न दिया मानों वह कुछ सुनती ही न थी। हा एक बात कहना तो मैं भूल ही गया।

इन्द्र–वह क्या ?

भैरो–इन्द्रानी के चले जाने के बाद जब मैं उस औरत के साथ इधर आ रहा था तब रास्ते में एक लपेटा हुआ कागज मुझे मिला जो जमीन पर इस तरह से पडा हुआ था जैसे किसी राह चलते की जेब से गिर गया हो। (कमर से कागज निकाल कर और कुँअर इन्द्रजीतसिह के हाथ में दे कर) लीजिए पढ़िए मैं तो इसे पढ कर पागल सा हो गया था।

भैरोसिह के हाथ स कागज लकर कुअर इन्द्रजीतसिह ने पढा और उसे अच्छी तरह देख कर भैरोसिह से कहा 'बडे आश्चर्य की बात है मगर यह हा नहीं सकता, क्योंकि हमारा दिल हमारे कब्जे में नहीं है और न हम किसी के आधीन हैं।

आनन्द–भैया जरा मैं भी देखू यह कागज कैसा है और इसमें क्या लिखा है ?

इन्द्रजीत–(वह कागज देकर) लो दखो।

आनन्द–(कागज पढकर और उसे अच्छी तरह देखकर) यह तो अच्छी जबर्दस्ती है मानों हम लोग कोई चीज ही नही है। (भैरोसिह से) जिस समय यह चीठी तुमने जमीन पर से उठाई थी उस समय उस औरत ने भी देखा या तुमसे कुछ कहा था कि नहीं जो तुम्हारे साथ थी ?

भैरो–उसे इस बात की कुछ भी खबर नहीं थी क्योंकि वह मरे आगे-आगे चल रही थी। मैंने जमीन पर से चीठी उठाई भी और पढी भी मगर उसे कुछ भी मालूम न हुआ। मुझे ता शक होता है कि वह गूगी और बहरी अथवा हद से ज्यादे सूधी और बेवकूफ थी।

आनन्द–इस पर मोहर इस ढग की पडी है जैसे किसी राजदर्बार की हा।

भैरो–बेशक ऐसी ही मालूम पडती है। (हस कर इन्द्रजीतसिह से) चलिए आपके लिए तो पौ बारह है किस्मत का घनी हाना इसे कहते है !

इन्द्र–तुम्हारी ऐसी की तैसी।

पाठकों के सुबीते के लिए हम उस चीठी की नकल यहा लिख देते हैं जिसे पढ कर और देख कर दोनों कुमारों और भैरोसिह को ताज्जुब मालूम हुआ था – 'पूज्यवर

पत्र पाकर चित्त प्रसन्न हुआ। आपकी राय बहुत अच्छी है। उन दोनों के लिए कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह ऐसा वर मिलना कठिन है, इसी तरह दोनों कुमारों को भी ऐसी स्त्री नहीं मिल सकती। बस अब इसमें सोच विचार करने की कोई जरूरत नहीं, आपकी आज्ञानुसार मैं साठ पहर के अन्दर ही सब सामान दुरुस्त कर दूँगा। बस परसों ब्याह हो जाना ही ठीक है। बड़े लोग इस तिलिस्म में जो कुछ दहेज की रकम रख गये है वह इन्हीं दोनों कुमारों के योग्य है। यद्यपि इन दोनों का दिल चुटिला हो चुका है परन्तु हमारा प्रताप भी तो कोई चीज है ! जब तक दोनों कुमार आपकी आज्ञा न मानेंगे तब तक जा कहा सकते हैं, अन्त को वह होना आवश्यक है जो आप चाहते है।

मुहर

द० –मु० मा०

इस चीठी को कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने पुन पढ़ा और ताज्जुब करते हुए अपने छोटे भाई की तरफ देख के कहा ताज्जुब नहीं कि यह चीठी किसी ने दिल्लगी के तौर पर लिख कर भैरोसिंह के रास्ते में डाल दी हो और हम लोगों को तरद्दुद में डाल कर तमाशा देखा चाहता हो ?'

आन–कदाचित ऐसा ही हो। अगर कमलिनी से मुलाकात हो गई होती तो

भैरो–तब क्या होता ? मैं यह पूछता हूँ कि इस तिलिस्म के अन्दर आकर आप दोनों भाइयों ने क्या किया ? अगर इसी तरह से समय बिताया जायगा तो देखियेगा कि आगे चल कर क्या-क्या होता है।

इन्द्र–तो तुम्हारी क्या राय है, बिना समझे-बूझे तोड़ फोड़ मचाऊं ?

भैरो–बिना समझे बूझे तोड़ फोड़ मचाने की क्या जरूरत है ? तिलिस्मी किताब और तिलिस्मी बाजे से आपने क्या पाया और वह किस दिन काम आवेगा ? क्या इन बागों का हाल उसमें लिखा हुआ न था ?

इन्द्रजीत–लिखा हुआ तो था मगर साथ ही इसके यह भी अन्दाज मिलता था कि तिलिस्म के ये हिस्से टूटने वाले नहीं हैं।

भैरो–यह तो मैं भी बिना तिलिस्मी किताब पढ़े ही समझ सकता हूँ कि तिलिस्म के ये हिस्से टूटने वाले नहीं हैं अगर टूटने वाले होते तो किशोरी कामिनी वगैरह को राजा गोपालसिंह हिफाजत के लिए यहां न पहुँचा देते मगर यहां से निकल जाने का या तिलिस्म के उस हिस्से में पहुँचने का रास्ता तो जरूर होगा जिसे आप तोड़ सकते हैं।

आनन्द–हां इसमें क्या शक है।

भैरो–अगर शक नहीं है तो उसे खोजना चाहिए।

इतने ही में इन्द्रानी और आनन्दी भी आ पहुचीं जिन्हें देख दोनों कुमार बहुत प्रसन्न हुए और इन्द्रजीतसिंह ने इन्द्रानी से कहा– मैं बहुत देर से तुम्हारे आने का इन्तजार कर रहा था।

इन्द्रानी–मेरे आने में वादे से ज्यादे देर तो नहीं हुई।

इन्द्र–न सही मगर ऐसे आदमी के लिए जिसका दिल तरह-तरह के तरद्दुदों और उलझनों में पड़ कर खराब हो रहा हो इतना इन्तजार भी कम नहीं है।

इस समय इन्द्रानी और आनन्दी यद्यपि सादी पौशाक में थीं मगर किसी तरह की सजावट की मुहताज न रहने वाली उनकी खूबसूरती देखने वाले का दिल, चाहे वह परले सिरे का त्यागी क्यों न हो अपनी तरफ खैंचे बिना रह सकती थी। नुकीले हर्बों से ज्यादे काम करने वाली उनकी बड़ी-बड़ी आंखों में मारने और जिलाने वाली दोनों तरह की शक्तियाँ मौजूद थीं। गालो पर इत्तिफाक से आ पड़ी हुई घुंघराली लटें शान्त बैठ हुए मन को भी चाबुक लगा कर अपनी तरफ मुतवजह कर रही थीं। सूधपन और नेकचलनी का पता देने वाली सीधी और पतली नाक तो जादू का काम कर रही थी मगर उनके खूबसूरत पतले और लाल ओंठों को हिलते देखने और उनमें से तुले हुए तथा मन लुभाने वाले शब्दों के निकलने की लालसा से दोनों कुमारों को छूटकारा नहीं मिल सकता था और उनकी सुराहीदार गर्दनों पर गर्दन देने वालों की कमी नहीं हो सकती थी। केवल इतना ही नहीं उनके सुन्दर-सुडौल और उचित आकार वाले अंगों की छटा बड़े-बड़े कवियों और चित्रकारों को भी चक्कर मे डाल कर लज्जित कर सकती थीं।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के आग्रह से वे दोनों उनके सामने बैठ गई मगर अदब का पल्ला लिए और सर नीचा किए हुए।

इन्द्रानी–इस जल्दी और थोड़े समय में हम लोग आपकी खातिरदारी और मेहमानी का इन्तजाम कुछ भी न कर सकीं मगर मुझे आशा है कि कुछ देर के बाद इस कसूर की माफी का इन्तजाम अवश्य कर सकूँगी।

इन्द्रजीतसिंह–इतना क्या कम है कि मुझ जैसे नाचीज मुसाफिर के साथ यहाँ की रानी होकर तुमने ऐसा अच्छा बर्ताव किया। अब आशा है कि जिस तरह तुमने अपने बर्ताव से मुझे प्रसन्न किया है उसी तरह मेरे सवालों का जवाब देकर मेरा सन्देह भी दूर करोगी।

इन्द्रानी–आप जो कुछ पूछना चाहते हों पूछें, मुझे जवाब देने में किसी तरह का उज्र न होगा।

इन्द्रजीत–किशोरी, कामिनी कमलिनी और लाड़िली वगैरह इस तिलिस्म के अन्दर आई हैं ?

इन्द्रानी–जी हां आई तो हैं ? इन्द्रजीत–क्या तुम जानती हो कि इस समय वे सब कहां हैं ?

इन्द्रानी–जी हा, मै अच्छी तरह जानती हूँ इस वाग के पीछे सटा हुआ एक और तिलिस्मी वाग है सभों को लिए हुए कमलिनी उसी में चली गई है और उसी में रहती है।

इन्द्रजीत–क्या हम लोगों का तुम उनके पास पहुँचा सकती हो ?

इन्द्रानी–जी नहीं।

इन्द्रजीत–क्यों।

इन्द्रानी–वह वाग एक दूसरी औरत के आधीन है जिससे बढ कर मेरी दुश्मन इस दुनिया में काई नहीं।

इन्द–ता क्या उस बाग में कभी नहीं जातीं ?

इन्द्रानी–जी नहीं क्योंकि एक तो दुश्मन के ख्याल मे मेरा जाना वहाँ नहीं हाता दूसरे उसने रास्ता भी बन्द कर दिया है इसी तरह मै उसके पक्ष-पातियों को अपने वाग में नहीं आने देती।

इन्द–तो हमारी उनकी मुलाकात क्योंकर हो सकती है ?

इन्द्रानी–यदि आप उन सभों से मिला चाहें तो तीन-चार दिन और सब्र करें क्योंकि अब ईश्वर की कृपा से ऐसा प्रबन्ध हो गया है कि तीन-चार दिन के अन्दर ही वह वाग मेर कब्जे में आ जाय और उसका मालिक मेरा कैदी बने। मेरे दारोगा ने तो कमलिनी को उस बाग में जाने स मना किया था मगर अफसोस कि उसने दारोगा की बात न मानी और धोख मे पड कर अपने को एक ऐसी जगह फसाया जहा से हम लोगों का सम्बन्ध कुछ भी नहीं है।

इन्द–तो क्या तुम लोग राजा गोपालसिह के आधीन नहीं हो ?

इन्द्रानी–हम लोग जरूर राजा गोपालसिह के आधीन है और मै यह जानती हूँ कि आप यहा के तिलिस्म तोडने के लिए आए है अस्तु इस बात को भी जानते होंगे कि यहा के बहुत से ऐसे हिस्से है जिन्हें आप तोड नहीं सकेंगे।

इन्द–हॉ जानते है।

इन्द्रानी–उन्हीं हिस्सों में से जो टूटने वाले नहीं हैं कई दर्जे ऐसे है जो केवल सैर तमाशे के लिए बनाए गए है और वहा जमानिया का राजा प्राय अपने मेहमानों को भेज कर सैर तमाशा दिखाया करता है अस्तु इसलिए कि वह जगह हमेशा अच्छी हालत में बनी रहे हम लोगों के कब्जे में दे दी गई है और नाममात्र के लिए हम लोग तिलिस्म की रानी कहलाती है मगर हा इतना तो जरूर है कि हम लोगों को सोना चादी और जवाहिरात की (यहा की बदौलत) कमी नहीं है।

इन्द–जिन दिनों राजा गोपालसिह को मायारानी ने कैद कर लिया था उन दिनों यहॉ की क्या अवस्था थी ? मायारानी भी कभी यहा आती थी या नहीं ?

इन्द्रानी–जी नहीं मायारानी को इन सब बातों और जगहों की कुछ खबर ही न थी इसलिए वह अपने समय में यहा कभी नहीं आई और तव तक हम लोग स्वतन्त्र बने रहे। अब इधर से आपने राजा गोपालसिह को कैद से छुडा कर हम लोगों को पुन जीवनदान दिया है तब से केवल तीन दफे राजा गोपालसिह यहा आए हैं और चौथी दफे परसों मेरी शादी में यहा आवेंगे !

इन्द–(चौक कर) क्या परसों तुम्हारी शादी होने वाली है ?

इन्द्रानी–(कुछ शर्मा कर) जी हा मेरी और (आनन्दी की तरफ इशारा करके) मेरी इस छोटी बहिन की भी।

इन्द–किसके साथ ?

इन्द्रानी–सो तो मुझे मालूम नहीं।

इन्द–शादी करने वाले कौन है ? तुम्हारे मा बाप होंगे ?

इन्द्रानी–जी मेरे मा बाप नहीं केवल गुरुजी महाराज हैं जिनकी आज्ञा मुझे मा बाप की आज्ञा से भी बढ कर माननी पडती है।

भैरो–(इन्द्रानी से) इस तिलिस्म के अन्दर कल परसों में किसी और का ब्याह भी होने वाला है ?

इन्द्रानी–नहीं।

भैरो–मगर हमने सुना है।

इन्द्रानी–कदापि नहीं, अगर ऐसा होता तो हम लोगों को पहिले खबर होती।

इन्द्रानी का जवाब सुन कर भैरोसिह ने मुस्कुराते हुए कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह की तरफ देखा और दोनों कुमारों ने भी उसका मतलब समझ कर सर नीचा कर लिया।

इन्द्रजीत–(इन्द्रानी से) क्या तुम लोगों में पर्दे का कुछ ख्याल नहीं रहता ?

इन्द्रानी–पर्दे का खयाल बहुत ज्यादे रहता है मगर उस आदमी से पर्दे का बर्ताव करना पाप समझा जाता है

जिसको इश्वर ने तिलिस्म तोडन की शक्ति दी है, तिलिस्म तोड़ने वाल को हम ईश्वर समझें यही उचित है।

आनन्द–तो तुम राजा गोपालसिह के पास जा सकती है या हमारी चीठी उनके पास पहुँचा सकती हो ?

इन्दानी–मै स्वय राजा गोपालसिह के पास जा सकती हूँ और अपना आदमी भी भज सकती हूँ मगर आजकल एसा करन का मोका नहीं है, क्योंकि आजकल मायारानी वगैरह खास बाग में आई हुई है और उनसे तथा राजा गोपालसिह स वदा-वदी हो रही है शायद यह वात आपको भी मालूम होगी।

इन्दजीत–हा मालूम है।

इन्दानी–एसी अवस्था मे हम लोगों का या हमारे आदमियों का वहा जाना अनुचित ही नहीं बल्कि दु ख दाई भी हो सकता है।

इन्दजीत–हा सो तो जरूर है।

इन्दानी–मगर मैं आपका मतलव समझ गइ आप शायद उसके विषय में राजा गोपालसिह को लिखा चाहते हैं जिसके हिस्से में किशोरी कामिनी वगैरह पडी हुई है मगर ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है दो रोज सब्र कीजिए तव तक स्वय राजा गोपालसिह ही यहा आकर आपसे मिलेंगे।

इन्दजीत–अच्छा यह वताओ कि हमारी चीठी किशोरी या कमलिनी के पास पहुचा सकती हो ?

इन्दानी–जी हा वल्कि उसका जवाब भी मगवा सकती हूँ, मगर ताज्जुब की बात है कि कमलिनी ने आपके पास कोई पत्र क्यों नहीं भेजा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्हें आप लोगों का यहा आना मालूम है।

इन्दजीत–शायद कोई सवव होगा, अच्छा तो मै कमलिनी के नाम से एक चीठी लिख दूँ ?

इन्दानी–हा लिख दीजिये मैं उसका जवाव मगा दूँगी।

कुअर इन्दजीतसिह ने भैरोसिह की तरफ देखा। भैरोसिह ने अपने वटुए में स कलम दवात और कागज निकाल कर कुमार के सामने रख दिया और कुमार ने कमलिनी के नाम से इस मजमून की चीठी लिख और बन्द कर इन्दानी के हवाले कर दी –

' मेरी कमलिनी,

यह तो मुझे मालूम ही है कि किशोरी कामिनी, लक्ष्मीदेवी और लाडिली वगैरह को साथ लेकर राजा गोपालसिह की इच्छानुसार तुम यहा आई हो मगर मुझे अफसोस इस बात का है कि तुम्हारा दिल जो किसी समय मक्खन की तरह मुलायम था अब फौलाद की तरह ठस हो गया। इस वात का तो विश्वास हो ही नहीं सकता कि तुम इच्छा करके भी मुझसे मिलन में असमर्थ हो परन्तु इस बात का रज अवश्य हो सकता है कि किसी तरह का कसूर न होने पर भी तुमने मुझे दूध की मक्खी की तरह अपने दिल से निकाल कर फेंक दिया। खैर तुम्हारे दिल की मजबूती और कठोरता का परिचय तो तुम्हारे अनूठे कामों ही से मिल चुका था परन्तु किशोरी के विषय में अभी तक मेरा दिल इस वात की गवाही नहीं देता कि वह भी मुझे तुम्हारी ही तरह अपने दिल से भुला देने की ताकत रखती है। मगर क्या किया जाय ? पराधीनता की वेडी उसके पैरों में है और लाचारी की मुहर उसके होठों पर ! अस्तु इन सब बातों का लिखना तो अब वृथा ही है, क्योंकि तुम अपनी आप मुख्तार हो मुझसे मिलो चाहे न मिलो यह तुम्हारी इच्छा है मगर अपना तथा अपने साथियों का कुशल मगल तो लिख भेजो या यदि अब मुझे इस योग्य भी नहीं समझती तो जाने दो।

क्या कहें, किसका – इन्दजीत"

कुअर आनन्दसिह की भी इच्छा थी कि अपने दिल का कुछ हाल कामिनी और लाडिली को लिखें परन्तु कई बातों का खयाल कर रह गए। इन्दानी कुअर इन्दजीतसिह की लिखी हुई चीठी लेकर उठ खडी हुई और यह कहती हुई अपनी बहिन को साथ लिए चली गई कि अब मैं चिराग जले के वाद आप लोगों से मिलूगी तव तक आप लोग यदि इच्छा हो तो इस बाग की सैर करें मगर किसी मकान के अन्दर जाने का उद्योग न करें।

सातवां बयान

अब हम थोडा सा हाल राजा गोपालसिह का लिखते हैं। जब वह बरामदे पर से झाकने वाला आदमी मायारानी के चलाए हुए तिलिस्मी तमचे की तासीर से वेहोश होकर नीचे आ गिरा और भीमसेन उसके चेहरे की नकाब हटाने और सूरत देखने पर चौंक कर वोल उठा कि वाह-वाह यह तो राजा गोपालसिह हैं, तव मायारानी बहुत ही प्रसन्न हुई और भीमसेन से बोली ' बस अब विलम्ब करना उचित नहीं है, एक ही वार में सिर धड से अलग कर देना चाहिए।

भीम–नहीं, इसे एकदम से मार डालना उचित न होगा वल्कि कैद करके तिलिस्म का कुछ हाल मालूम करना लाभदायक होगा।

मायारानी–मैंने इसे कैद में रखकर हद से ज्यादे तकलीफ दी तब तो इसने तिलिस्म का कुछ हाल कहा ही नहीं अब क्या कहेगा बस इसे मार डालना ही मुनासिब है।

इसके जवाब में उसी बारामदे पर से जिस पर से वह आदमी लुढ़क कर नीचे आया था किसी ने कहा, तिलिस्म का हाल जानने का शौक अभी तक लगा ही हुआ है? इस बात की खबर नहीं कि अब तुम लोगों के मरने में केवल सात घंटे की देर रह गई है।

सभों ने चौंककर उधर की तरफ देखा और पुनः एक आदमी को उसी बरामदे में टहलता हुआ पाया मगर अबकी दफे इस आदमी का चेहरा नकाब से खाली था और एक जलती हुई मोमबत्ती बायें हाथ में मौजूद थी जिससे उसका रोबीला चेहरा साफ-साफ दिखाई दे रहा था। मायारानी और उसके साथियों को यह देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ कि यह दूसरा आदमी भी राजा गोपालसिंह मालूम होता था बल्कि बनिस्बत पहिले आदमी के ठीक राजा गोपालसिंह मालूम होता था। इस कैफियत ने मायारानी का कलेजा हिला दिया और वह डर से कॉंपती हुई उसको इस तरह देखने लगी जैसे कोई व्याध जंगल में अकस्मात् आ पड़े हुए शेर की तरफ देखता हो।

सभी को अपनी तरफ ताज्जुब के साथ देखते देख उस आदमी ने पुनः कहा "न तो वह राजा गोपालसिंह है और न उसकी जुबानी तिलिस्म का कोई भेद ही तुम लोगों को मालूम हो सकता है। अरे ओ कम्बख्त मायारानी तू तो वर्षों मेरे साथ रह चुकी है क्या तू भी मुझे नहीं पहिचानती! राजा गोपालसिंह मैं हूँ या वह है? तू उसके नाटे कद को नहीं देखती? अगर वह गोपालसिंह होता तो क्या उस तिलिस्मी तमंचे की एक गोली खाकर गिर पड़ता! भला मुझ पर भी एक नहीं पचास गोली चला देख क्या असर होता है।"

नये गोपालसिंह की इस बात ने मायारानी की रही सही ताकत भी हवा कर दी और अब उसे अपने सामने मौत की सूरत दिखाई देने लगी। यद्यपि उसने इस गोपालसिंह पर भी तिलिस्मी तमंचा चलाने का इरादा किया था मगर अब उसके हाथों में इतनी ताकत न रही कि तमंचे में गोली डाल कर चला सके उसी की तरह उसके साथी भी घबड़ा कर इस नये राजा गोपालसिंह की तरफ देखने और अपने मन में सोचने लगे 'व्यर्थ इस मायारानी के फेर में पड़ कर यहाँ आये।'

इस नये गोपालसिंह ने पुनः पुकार कर मायारानी से कहा "हा हा सोचती क्या है, तिलस्मी तमंचा चला और तमाशा देख या कह तो मैं स्वयं तेरे पास चला आऊँ! और भीमसेन वगैरह तुम लोग क्यों इसके फेर में पड़ कर अपनी-अपनी जान दे रहे हो! क्या तुम समझ रहे हो कि यह तिलिस्म की रानी हो जाएगी और तुम्हें अपना हिस्सेदार बना लेगी! कदापि नहीं, अब इसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती और मैं अभी नीचे आकर तुम सभों का काम तमाम करता हूँ। हाँ अगर तुम लोग अपनी जान बचाना चाहते हो तो मैं तुम्हें कहता हूँ कि मायारानी का खयाल न करके उसे इसी जगह छोड़ दो और तुम लोग उस सफेद संगमर्मर के चबूतरे पर भाग कर चले जाओ खबरदार दूसरी जगह मत खड़े होना और मेरे नीचे आने के पहिले ही यहाँ से हट कर उस चबूतरे पर चले जाना नहीं तो पछताओगे!

इतना कह कर नए गोपालसिंह ने मोमबत्ती नीचे फेंक दी और पीछे की तरफ हट कर उन लोगों की नजरों से गायब हो गए।

अब भीमसेन और माधवी वगैरह को निश्चय हो गया कि मायारानी के किए कुछ न होगा और इसका साथ करके हम लोगों ने व्यर्थ ही अपने को आफत में ला फँसाया। इस तिलिस्मी बाग तथा राजा गोपालसिंह की माया का पता नहीं लगता अस्तु अब मायारानी का साथ देना और गोपालसिंह की बात न मानना निःसन्देह अपना गला अपने हाथ से काटना है। इतना सोचते-सोचते ही वे लोग गोपालसिंह के कहे मुताबिक उस संगमर्मर के चबूतरे पर चले गए जो उनसे थोड़ी ही दूर पर उनके पीछे की तरफ पड़ता था।

होना तो ऐसा ही चाहिए था कि गोपालसिंह की बातों से डर कर मायारानी भी उन लोगों के साथ ही साथ उसी संगमर्मर वाले चबूतरे पर चली जाती मगर न मालूम क्या सोच कर उसने ऐसा न किया और वहाँ से भाग कर उन फौजी सिपाहियों की भीड़ में जा छिपी जो इस बाग में खड़े हुए इनकी बातें सुन नहीं सकते थे मगर ताज्जुब के साथ सब कुछ देख जरूर रहे थे।

वह संगमर्मर का चबूतरा जिस पर भीमसेन वगैरह चले गए थे उनके जाने के थोड़ी ही देर बाद इस तेजी के साथ जमीन के अन्दर धँस गया कि उन लोगों को कूद कर भागने की मोहलत न मिली। कुछ देर बाद उन सभों को न मालूम कहाँ उलट कर वह चबूतरा फिर ऊपर चला आया और ज्यों का त्यों अपने स्थान पर जम गया।

इस समय केवल सुबह की सुफेदी ही ने चारो तरफ अपना दखल नहीं जमा लिया था बल्कि आसमान पर पूरब तरफ सूर्य की लालिमा भी कुछ दूर तक फैल चुकी थी इसलिए उस चबूतरे पर जाने वाले भीमसेन और माधवी वगैरह का जो हाल हुआ वह माधवी के फौजी सिपाहियों ने भी बखूबी देख लिया। अपने मालिक और उनके साथियों की यह दशा देख फौजी सिपाही घबड़ा गए और चाहने लगे कि यदि कहीं रास्ता मिल जाय तो हम लोग भी यहां से भाग कर

अपनी जान बचावें। उन्हें अपने झुण्ड में मायारानी का आ जाना बहुत ही बुरा मालूम हुआ और उन्होंने बड़ी बेमुरौवती के साथ मायारानी से कहा तुम्हारी ही बदौलत हम लोगों की यह दशा हुई और हमारे मालिकों पर भी आफत आई अस्तु अब तुम हमारी मण्डली से चली जाओ नहीं तो हमलोग जूते से तुम्हारे सर की खबर लेंगे तुम्हारे चले जाने के बाद हम लोगों पर जो कुछ बीतेगी सह लेंगे।"

अफसोस अपनी करतूतों के कारण आज मायारानी इस दशा को पहुँच गई कि अदने सिपाहियों की झिडकी सहे और जूतियां खाय। सिपाहियों की बात जब मायारानी ने न मानी तो कई सिपाहियों ने जूतियों से उसकी खबर ली, और उसी समय ऊपर से किसी के पुकारने की आवाज आई।

जिस जगह ये सिपाही लोग थे उससे थोडी ही दूर पर एक बुर्ज था। इस समय उसी बुर्ज पर चढ़े हुए राजा गोपालसिंह को उन सिपाहियों ने देखा और मालूम किया कि यह आवाज उन्हीं ने दी थी।

गोपालसिंह की कैफियत देखकर सिपाहियों का कलेजा पहिले ही दहल चुका था अस्तु अब इस बात का हौसला नहीं कर सकते थे कि उनका मुकाबला करें। उन्हें देखने के साथ ही उस फौज का अफसर हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया और बोला आज्ञा!

गोपालसिंह ने कहा, हम खूब जानते हैं कि तुम लोग बेकसूर हो और जो कुछ कसूर है वह तुम्हारे मालिकों का है, सो तुमने देख ही लिया कि वे अपनी सजा को पहुँच गये अब वे जीते नहीं हैं जो तुमसे आकर मिलेंगे अस्तु अब तुम लोगों को हुक्म दिया जाता है कि तुम लोग अपनी-अपनी जान बचा कर यहाँ से निकल जाओ। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम्हारे जाने के लिए दर्वाजा खोल दिया जाय और तुम लोग बाग से बाहर होकर जहाँ इच्छा हो चले जाओ। यदि तुम लोग चाहोगे और नेकचलनी का वादा करोगे तो हमारी फौज में तुम लोगों को जगह भी मिल जायगी।

फौजी अफसर–(हाथ जोडे हुए) आप स्वयं राजा हैं और जानते हैं कि सिपाही लोग तनख्वाह के वास्ते लड़ते हैं। जो राज्य या जमीन के वास्ते लड़े और सिपाहियों को तनख्वाह दे, कसूर उसी का समझा जाता है। हमारे मालिक नादान थे आपके प्रताप का खयाल न करके मायारानी की बातों में आकर नष्ट हो गये अब हम लोग आपके आधीन हैं और चाहते हैं कि हम लोगों को इस कैद से छुटकारा ही नहीं बल्कि आपके सरकार में नौकरी भी मिले इस समय हम लोग अपने को आप ही का ताबेदार समझते हैं।

गोपाल–अच्छा तो जैसा चाहते हो वैसा ही होगा। इस समय से तुम्हें अपना नौकर समझ के हुक्म दिया जाता है कि मायारानी जो तुम लोगों के बीच में चली आई है जूतियां लगा कर अलग कर दी जाय और तुम लोग (हाथ का इशारा करके) उस तरफ की दीवार के पास चले जाओ। वहां तुम्हें एक छोटा सा दर्वाजा खुला हुआ दिखाई देगा बस उसी राह से तुम लोग बाहर चले जाओ और किसी ठिकाने मैदान में डेरा जमाना। हमारा राजदीवान स्वयम् तुम्हारे पास पहुँचकर सब इन्तजाम कर देगा। मगर खबरदार इस बात का खूब खयाल रखना कि मायारानी तुम लोगों के साथ बाहर न जाने पावे और तुम लोगों में से एक आदमी भी उसका साथ न दे।

फौजी अफसर–जो हुक्म।

मायारानी बेइज्जत हो ही चुकी थी मगर फिर भी दूर खड़ी यह सब कार्रवाई देख और बातें सुन रही थी। उसे इन सिपाहियों की नमकहरामी पर बड़ा क्रोध आया और वह वहाँ से भाग कर पश्चिम की तरफ वाले दालान में चली गई तथा एक कोठरी के अन्दर घुस कर गायब हो गई। शायद इस कोठरी में कोई तहखाना या रास्ता था जिसका हाल उसे मालूम था। उसी राह से होकर वह मकान की दूसरी मंजिल पर चली गई और उसी जगह से छिप कर तिलिस्मी तमंचे की गोली उन फौजी सिपाहियों पर चलाने लगी जो राजा गोपालसिंह की आज्ञानुसार दर्वाजे की तरफ जा रहे थे। इन गोलियों की तासीर का हाल हम पहिले कई जगह लिख आये हैं और बता आए हैं कि इन गोलियों में से निकला हुआ धूँआ आला दर्जे की बेहोशी का असर बात की बात में पैदा करता था अस्तु बेचारे सिपाहियों को दर्वाजे तक पहुँचने की भी मोहलत न मिली और तीन ही चार गोलियों में से निकले धूँए ने उन सभों को बेहोश करके जमीन पर लिटा दिया।

अपनी इस कार्रवाई को देख कर मायारानी बहुत प्रसन्न हुई मगर उसकी प्रसन्नता ज्यादा देर तक कायम न रही क्योंकि उसी समय उसने राजा गोपालसिंह को उन सिपाहियों की तरफ जाते देखा। वह ताज्जुब में आकर उसी जगह खड़ी देखने लगी कि अब क्या होता है। उसने देखा कि राजा गोपालसिंह ने उन सिपाहियों के मध्य में पहुँचकर एक गोला जमीन पर पटका जो गिरते ही भारी आवाज के साथ फट गया और उसमें से इतना ज्यादा धूआँ निकला कि उसने क्रमशः फैल कर हर तरफ से उन सिपाहियों को घेर लिया और फिर हलका होकर आसमान की तरफ उठ गया। उस धूए की तासीर से सब सिपाहियों की बेहोशी जाती रही और वे लोग उठ कर ताज्जुब के साथ एक दूसरे का मुँह देखने लगे। सिपाहियों के अफसर ने अपने पास राजा गोपालसिंह को मौजूद पाया और निगाह पड़ते ही हाथ जोड कर बोला आपने तो हम लोगों को बाहर चले जाने की आज्ञा दे दी थी, फिर हम लोग बेहोश क्योंकर किए गये।"

इसके जवाब में गोपालसिंह न कहा तुम लोगों को हमने नहीं बल्कि कम्बख्त मायारानी ने वेहोश किया था हमने यहाँ पहुँच कर तुम लोगों की वहोशी दूर कर दी अब तुम लोग एक सायत भी विलम्ब न करो और शीघ्र ही यहा से चले जाओ।'

उस अफसर ने झुक कर सलाम किया और अपने साथियों को कुछ इशारा करके वहाँ से चल पडा। यह हाल देख मायारानी ने पुन तिलिस्मी तमचे की गोलियाँ उन लोगों पर चलाई मगर इसका असर कुछ भी न हुआ और वे सब सिपाही राजा गोपालसिंह की बदौलत थोडी ही देर में इस बाग के बाहर हो गए। फिर मायारानी को यह भी मालूम न हुआ कि राजा गोपालसिंह कहा गए और क्या हुए।

आठवां बयान

वास्तव में भूतनाथ का हाल बडा ही विचित्र है। अभी तक उसका असल भद खुलने में नहीं आता। वह जहाँ जाता है वहाँ ही एक विचित्र घटना देखने में आती है जिससे मिलता है उसी से एक नई बात पैदा होती है और जब जो करता है उसी में एक अनूठापन मालूम होता है। इस समय वह बलभद्रसिंह के साथ चुनारगढ वाले तिलिस्म में मौजूद है और वहाँ पहुँचने के साथ ही वह सुन चुका है कि कल राजा वीरेन्द्रसिंह भी इस जगह आने वाले हैं। वीरेन्द्रसिंह को तो आए हुए आज कई दिन हो चुके होते मगर उन्होंने जान बूझ कर रास्ते में बहुत दर लगा दी। नकली किशोरी कामिनी और कमला के क्रिया कर्म का बखेडा (जिसका करना लोगों को धोखे में डालने के लिए आवश्यक था) चुनार में ले जाना उन्होंने पसन्द न किया बल्कि रास्ते ही में निपटा डालना उचित जाना इसलिए पन्द्रह-बीस दिन की देर उन्हें रास्ते ही में हो गई और इसी से वहाँ पहुँच जाने पर भूतनाथ ने सुना कि राजा वीरेन्द्रसिंह कल आने वाले हैं।

उस खण्डहर में पहुँचने पर रात के समय भूतनाथ ने जो कुछ तमाशा देखा था उसका विचित्र हाल तो हम ऊपर के किसी बयान में लिख ही चुके हैं आज उसी के आगे का हाल लिख कर हम अपने पाठकों के चित्त में भूतनाथ की तरफ से पुनः एक तरह का खुटका पैदा किया चाहते हैं।

बलभद्रसिंह ने जब सिरहाने वाला लिफाफा उठा कर शमादान के साम्हने खोला तो उसके अन्दर से एक अँगूठी निकली जिसे देखते ही वह चिल्ला उठा और तब बिना कुछ कहे अपनी चारपाई पर आकर बैठ गया। भूतनाथ ने उससे पूछा क्यों यह अँगूठी कैसी है और इसे देख कर तुम घबडा क्यों गए ?

बलभद्र--इस अँगूठी ने मुझे कई ऐसी बातें याद दिला दी जिन्हें स्वप्न की तरह कभी-कभी याद करके मैं चौंक पडता था मगर आज नहीं फिर कभी मैं इसका खुलासा हाल तुमसे कहूँगा।

भूत--भला देखो तो सही उस लिफाफे के अन्दर कोई चीठी भी है या केवल यह अँगूठी ही थी।

बलभद्र--(लिफाफा भूतनाथ के हाथ में देकर) लो तुम्हीं देखो।

भूत--(शमादान के पास लिफाफा ले जाकर और उसे अच्छी तरह देख कर) हाँ हाँ इसमें चीठी भी तो है।

बलभद्र--(भूतनाथ के पास जा कर) देखें।

भूतनाथ ने वह चीठी बलभद्रसिंह के हाथ में दी और बलभद्रसिंह ने बडे शौक से उसे पढा यह लिखा हुआ था --

यह अँगूठी दे कर तुम्हें विश्वास दिलाते हैं कि तुम हमारे हो और हम तुम्हारे हैं। भूतनाथ को अपना सच्चा सहायक समझो और जो कुछ वह कहे उसे करो। भूतनाथ यह नहीं जानता कि हम कौन हैं मगर हम कल उससे मिल कर अपना परिचय देंगे और जो कुछ कहना होगा कहेंगे।

इस चीठी को पढकर दोनों के जी में एक तरह का खुटका पैदा हो गया और बिना कुछ विशेष बातचीत किये दोनों अपनी अपनी चारपाई पर जाकर लेट रहे मगर बची हुई रात दोनों ने अपनी आँखों में ही काटी, किसी को नींद न आई।

दूसरे दिन सवेरे ही पन्नालाल उन दोनों के पास पहुँचे और रात भर का कुशल मगल पूछा। दोनों ही ने दुनियादारी के तौर पर कुशल मंगल कह कर बातचीत की, मगर रात के विचित्र हाल को अपने दिल के अन्दर ही छिपा रक्खा।

दिन भर दोनों का बडे चैन और आराम से बीता। जीतसिंह से भी मुलाकात और कई तरह की बातें हुई मगर जीतसिंह और उनकी आज्ञानुसार किसी ऐयार ने भी उन दोनों से मुकदमे की बात या किसी तरह का सवाल न किया क्योंकि यह बात पहिले से ही तय पा चुकी थी कि बिना राजा बीरेन्द्रसिंह के आये इस बारे में किसी तरह की बात-चीत भूतनाथ से न की जायगी।

आज किसी समय राजा बीरेन्द्रसिंह के आने की खबर थी मगर वे न आये। सध्या के समय हरकारे ने आकर जीतसिंह को खबर दी कि राजा साहब कल सध्या के समय यहाँ आवेंगे भूतनाथ और बलभद्रसिंह के आने की खबर उन्हें हो गई है।

सध्या होने के साथ ही भूतनाथ और बलभद्रसिंह के दिल में धुकधुकी पैदा हो गई कि देखा चाहिये कि आज की रात कैसी गुजरती है तिलिस्मी चबूतरे के अन्दर से कौन निकलता है, और क्या कहता है।

रात आधी से ज्यादे जा चुकी है कल की तरह आज भी इस लम्बे चौडे मकान के अन्दर सन्नाटा छाया हुआ है। भूतनाथ और बलभद्रसिह अपनी-अपनी चारपाई पर लेटे हुए हैं मगर नींद किसी की ऑखों में नहीं है और दोनों का ध्यान उसी तिलिस्मी चबूतरे की तरफ है। कल की तरह आज भी उस चबूतरे वाले दालान में कन्दील जल रही है जिसके सबब से वह पत्थर वाला चबूतरा साफ दिखाई दे रहा है।

भूतनाथ ने देखा कि कल की तरह आज भी इस पत्थर वाले चबूतरे का दर्वाजा खुला और उसके अन्दर से एक आदमी स्याह लबादा ओढे हुए निकला। धीरे-धीरे घूमता फिरता वह उस कमरे के दर्वाजे पर पहुँचा जिसमें भूतनाथ और बलभद्रसिह आराम कर रहे थे। कमरे का दर्वाजा खुलने के साथ ही वे दोनों उठ बैठे और उस आदमी को कमरे के अन्दर पैर रखते हुए देखा।

उस आदमी ने हाथ के इशारे से बलभद्रसिह को वैठने के लिए कहा और भूतनाथ को अपने पास बुलाया। भूतनाथ चारपाई के नीचे उतर पडा और अपना तिलिस्मी खजर, जो खूटी के साथ लटक रहा था, लेकर उस आदमी के पास गया। वह आदमी भूतनाथ को अपने साथ कमर के बाहर वाले दालान में ले गया और वहा से सीढी की राह नीचे उतरने के लिए कहा। भूतनाथ भी चुपचाप उसके साथ नीचे चला गया।

यहा भी एक कन्दील जल रही थी और चारों तरफ सन्नाटा था। उस आदमी ने अपना चेहरा खोल दिया और भूतनाथ को अपनी तरफ अच्छी तरह देखने के लिए कहा। भूतनाथ सूरत देखते ही चौक पडा और बोला – है यह मैं किसकी सूरत देख रहा हूँ ! क्या धोखा तो नहीं है !

आदमी– नहीं-नहीं कोई धोखा नहीं है मेमकुलचे कहने से शायद तुम्हारा शक जाता रहेगा।

भूतनाथ–हॉ अब मेरा शक जाता रहा मगर आप यहा कहा ? क्या मुझे किसी तरह का विचित्र हुक्म दिया जायगा ? या मुझे राजा साहब से माफी मागने की मोहलत ही न मिलेगी ?

आदमी–हा तुम्हें एक विचित्र हुक्म दिया जायगा मगर यह बताओ कि राजा साहब के बारे में तुमने क्या सुना है ! वे कब तक यहा आयेंगे !

भूत–राजा बीरेन्द्रसिह कल यहा अवश्य आ जायगे, आज हरकारे ने आ कर यह पक्की खबर जीतसिह को दी है !

आदमी–(कुछ सोच कर) यह तो बडी मुश्किल हुई हमारे लिए नहीं बल्कि तुम्हारे लिए।

भूत–(कॉप कर) सो क्या ! मैने अब कौन सा नया अपराध किया है ?

आदमी–नया अपराध किया तो नहीं, मगर करना पडेगा।

भूत–नहीं नहीं मै अब कोई अपराध न करूगा जो कुछ कर चुका हूँ, उसी का कलक मिटाना मुश्किल हो रहा है !

आदमी–मगर क्या किया जाय लाचारी है, अपराध तो करना ही होगा और सो भी इसी समय।

भूत–(कुछ सोच कर) भला यह तो बताइए कि वह अपराध है क्या और मुझे क्या करना होगा ?

आदमी–यह तो जानते ही हो कि बलभद्रसिह हमारा है।

भूत–जी हा मगर इस समय तो मेरी जान बचाने वाला है।

आदमी–बेशक।

भूत–तब आप क्या चाहत है ?

आदमी–यही कि इस समय बलभद्रसिह को बेहोश करके हमारे हवाले कर दो। हम तो उन्हें कल ही उठा ले गये होते मगर कल हमें निश्चय हो गया था कि तुम जाग रहे हो और लडने के लिए अवश्य तैयार हो जाओगे, इसलिए साचा कि पहिले तुम्ह अपना परिचय दे-दें तब यह काम करें जिसमें तुम्हारा दिल भी खुटक में न रहे।

भूत–मगर यह तो बडी मुश्किल होगी। अच्छा कल राजा बीरेन्द्रसिह से उनकी मुलाकात करा लेने दीजिए।

आदमी–यह नहीं हो सक्ता उन्हें हम आज ही ले जायेंग नहीं तो हमारा बुहत हर्ज होगा और उस हर्ज में तुम्हारा भी नुकसान है।

भूत–हाय नुकसान और दु ख भोगने के लिए तो मै पैदा ही हुआ हूँ ! न जाने मेरी किस्मत में निश्चिन्त होना भी बदा है या नहीं। राजा बीरेन्द्रसिह सुन चुके है कि भूतनाथ बलभद्रसिह को छुडा लाया है, अब अगर इस समय आप उन्हें ले जायगे और कल राजा बीरेन्द्रसिह उन्हें मुझसे मागेंगे तो क्या जवाब दूगा ?

आदमी–कह देना कि मै रात को सोया हुआ था न मालूम बलभद्रसिह कहा चले गए मुझे कुछ खबर नहीं आप अपने पहरे वालों से पूछिए।

भूत–हा यदि आप न मानेंगे तो ऐसा ही करना पडेगा।

आदमी–तो बस अब विलम्ब न करो झटपट जाओ और उन्हें बेहोश करके हमार पास ले आओ।

भूत–जिस समय मैंने बलभद्रसिंह को छुड़ाया था उस समय उन्हें विश्वास नहीं होता था कि मैं उनके साथ नेकी कर रहा हूं, बड़ी मुश्किल से तो उन्हें विश्वास दिलाया। इस समय आप जानते हैं कि वे भी जाग रहे हैं, आप खुद ही उन्हें बैठ रहने के लिए कह आए हैं, अब मैं उन्हें जबर्दस्ती बेहोश करूँगा तो उनके दिल में क्या आवेगा क्या वे यह नहीं समझेंगे कि भूतनाथ ने नेकनीयती के साथ मेरी जान नहीं बचाई थी !

आदमी–अगर ऐसा समझेंगे तो समझें तुम सोच क्या रहे हो ! क्या मेरा हुक्म न मानोगे ?

भूत–मेरी क्या मजाल जो आपका हुक्म न मानूं।

इतने ही में उसी तरह का स्याह लबादा ओढ़े और भी एक आदमी वहाँ आ पहुँचा। भूतनाथ समझ गया कि वह आदमी इसी का साथी है और कल भी यहाँ आया था। इस नए आए हुए आदमी ने पहिले आदमी से खास बोली (भाषा) में कुछ बात-चीत की जिसे भूतनाथ कुछ भी न समझ सका, इसके बाद उसने परदा हटा के अपनी सूरत भूतनाथ को दिखा दी।

अब भूतनाथ के ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा और वह एक दम घबडा के बोला नहीं-नहीं, मैं जागता नहीं हूँ बल्कि जो कुछ देख रहा हूँ सब स्वप्न है !

दूसरा आदमी–भूतनाथ तुम पागल हो गए हो !

भूत–बेशक यही बात है या तो मैं स्वप्न देख रहा हूं या पागल हो गया हूँ।

पहिला आदमी–न तो तुम स्वप्न देख रहे हो और न पागल ही हो गए हो जो कुछ देख सुन रहे हो सब ठीक है। अच्छा अब तुम हम लोगों के साथ आओ किसी दूसरी जगह अँधेरे में खड़े होकर बातचीत करेंगे यहाँ केवल इसलिए खडे हो गये थे कि तुम्हे अपनी सूरत दिखा दें।

इतना कह कर वे दोनों आदमी भूतनाथ का हाथ पकड़े हुए दूसरे दालान में चले गए जहां बिलकुल अंधकार था और यहां बात-चीत करने लगे। इस जगह उन तीनों में जो कुछ बातें हुईं वह ऐयारी भाषा में हुई इसलिए लिख न सके मगर आगे चल कर इन बातों का जो कुछ नतीजा निकलेगा पाठकों को मालूम हो जायगा। हाँ इतना कह देना जरूरी है कि डेढ घण्टे तक उन तीनों में खूब बातें होती रहीं इस बीच में दो दफे भूतनाथ के बड़े जोर से हँसने की आवाज आई ताज्जुब नहीं कि वह आवाज बलभद्रसिंह के कानों तक भी पहुँची हो। इसके बाद भूतनाथ वहाँ से रवाना होकर बलभद्रसिंह के पास आया देखा कि अभी तक वह बैठे हुए हैं और भूतनाथ का इन्तजार कर रहे हैं।

भूतनाथ को देखते ही बलभद्रसिंह बोले आओ-आओ भूतनाथ मेरे पास बैठ जाओ और बताओ कि क्या हुआ ! वह आदमी कौन था जो तुम्हें ले गया था ?

मैं सब विचित्र हाल आपसे कहता हूँ। यह कहता हुआ भूतनाथ बलभद्रसिंह के पास बैठ गया, मगर इस तरह पर सट कर बैठा कि उसकी कमर में लगा तिलिस्मी खंजर बलभद्रसिंह के बदन के साथ छू गया और वह उसी समय कांप कर बेहोश हो गये।

बलभद्रसिंह के बेहोश हो जाने के बाद भूतनाथ ने उनकी गठरी बाँधी और नीचे उतार कर दोनों विचित्र आदमियों के पास ले गया। उन दोनों ने उसी तिलिस्मी चबूतरे के पास पहुँचा देने के लिए कहा और भूतनाथ उसे तिलिस्मी चबूतरे के पास ले गया तब वे दोनों आदमी बलभद्रसिंह को लेकर चबूतरे के अन्दर चल गये, चबूतरे का पल्ला बन्द हो गया और भूतनाथ कुछ सोचता विचारता अपनी चारपाई पर आकर लेट रहा।

नौवां बयान

सवेरा हो जाने पर जब भूतनाथ और बलभद्रसिंह से मिलने के लिए पन्नालाल तिलिस्मी खण्डहर के अन्दर नम्बर दो वाले कमरे में गये तो भूतनाथ को चारपाई पर सोये पाया और बलभद्रसिंह को वहाँ न देखा। पन्नालाल ने भूतनाथ को जगा कर पूछा आज तुम इस समय तक खुर्राटे ले रहे हो, यह क्या मामला है !'

भूतनाथ–बलभद्रसिंह जी ने गप्प-शप्प में तीन पहर रात बैठे ही बैठे बिता दी इसलिए सोने में बहुत कम आया और अभी तक आँख नहीं खुली आइये बैठिये।

पन्ना–बलभद्रसिंह जी कहाँ हैं ?

भूतनाथ–मुझे क्या खबर, इसी जगह कहीं होंगे, मुझे तो अभी आपने सोते से जगाया है।

पन्ना- मगर मैंने तो उन्हें कहीं भी नहीं देखा !

भूतनाथ–किसी पहरे वाले से पूछिये, शायद हवा खाने के लिए कहीं बाहर चले गये हों।

बलभद्रसिंह को वहाँ न पाकर पन्नालाल को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और भूतनाथ भी घबड़ाया सा दिखाई देने लगा। पहिले तो पन्नालाल और भूतनाथ दोनों ही ने उन्हें खण्डहर वाले मकान के अन्दर खोजा मगर जब कुछ पता न लगा तब

फाटक पर आकर पहरे वालों से पूछा। पहरे वालों ने भी उन्हें देखने से इनकार करके कहा कि 'हम लोगों ने बलभद्रसिह जी को फाटक के बाहर निकलते नहीं देखा। अस्तु हम लोग उनके बारे में कुछ नहीं कह सकते'।

बलभद्रसिह कहाँ चले गये? आसमान पर उड गये, दीवार में घुस गये या जमीन के अन्दर समा गये क्या हुए? इस बात ने सभों को तरद्दुद में डाल दिया। धीरे-धीरे जीतसिह को भी इस बात की खबर हुई। जीतसिह स्वय उस खण्डर वाले मकान में गये और तमाम कमरों कोठरियों और तहखानों को देख डाला मगर बलभद्रसिह का पता न लगा। भूतनाथ से भी तरह तरह के सवाल किये गये मगर इससे भी कुछ फायदा न हुआ।

सध्या के समय राजा बीरेन्द्रसिह की सवारी उस तिलिस्मी खण्डहर के पास आ पहुँची और राजा बीरेन्द्रसिह तथा तेजसिह वगैरह सब कोई उसी खण्डर वाले मकान में उतरे। पहर भर रात जाते तक तो इन्तजामी हो हल्ला मचता रहा, इसके बाद लोगों को राजा साहब से मुलाकात करने की नौबत पहुची, मगर राजा साहब ने वहाँ पहुँचने के साथ ही भूतनाथ और बलभद्रसिह का हाल जीतसिह से पूछा था और बलभद्रसिह के बारे में जो कुछ हुआ था, उसे उन्होंने राजा साहब से कह सुनाया था। पहर रात जाने बाद जब भूतनाथ आज्ञानुसार दर्बार में हाजिर हुआ तब राजा बीरेन्द्रसिह ने उससे पूछा, 'कहो भूतनाथ अच्छे तो हो?

भूतनाथ–(हाथ जोड कर) महाराज के प्रताप से प्रसन्न हूँ।

बीरेन्द्र–सफर में हमको जो कुछ रज और गम हुआ तुमने सुना ही होगा?

भूतनाथ–ईश्वर न करे महाराज को कभी रज और गम हो मगर हा समयानुकूल जो कुछ होना था हो ही गया।

बीरेन्द्र–(ताज्जुब से) क्या तुम्हें इस बारे में कुछ मालूम हुआ है?

भूतनाथ–जी हॉ!

बीरेन्द्र–कैसे?

भूतनाथ–इसका जवाब देना तो कठिन है क्योंकि भूतनाथ बनिस्बत जबान और कान के अन्दाज से ज्यादे काम लेता है।

बीरेन्द्र–(मुस्कुरा कर) तुम्हारी होशियारी और चालाकी में तो कोई शक नहीं है मगर अफसोस इस बात का है कि तुम्हारे रहस्य तुम्हारी ही तरह द्विविधा में डालने वाले है। अभी कल की बात है कि हमको तुम्हारे बारे में इस बात की खुशखबरी मिली थी कि तुम बलभद्रसिह को किसी भारी कैद से छुड़ा कर ले आये, मगर आज कुछ और ही बात सुनाई पड रही है।

भूतनाथ–जी हॉ मै तो हर-तरह से अपनी किस्मत की गुत्थी सुलझाने का उद्योग करता हूँ मगर विधाता ने उसमें ऐसी उलझनें डाल दी है कि मालूम पडता है कि अब इस शरीर को चुनारगढ के कैदखाने का आनन्द अवश्य भोगना ही पडेगा।

बीरेन्द्र–नहीं-नहीं, भूतनाथ, यद्यपि बलभद्रसिह का यकायक गायब हो जाना तरह-तरह के खुटके पैदा करता है मगर हमे तुम्हारे ऊपर किसी तरह का सन्देह नहीं हो सकता। अगर तुम्हें ऐसा करना ही होता तो इतनी आफत उठा कर उन्हें क्यों छुड़ाते और क्यों यहॉ तक लाते! अस्तु तुम हमारी खफगी से तो बेफिक्र रहो मगर इस बात के जानने का उद्योग जरुर करो कि बलभद्रसिह कहा गये और क्या हुए।

भूतनाथ–(सलाम कर के) ईश्वर आपको सदैव प्रसन्न रक्खे, मै आशा करता हूँ कि एक सप्ताह के अन्दर ही बलभद्रसिह का पता लगा कर उन्हें सरकार में उपस्थित करुँगा।

बीरेन्द्र–शाबाश अच्छा अब तुम जाकर आराम करो।

आज्ञानुसार भूतनाथ वहॉ से उठ कर अपने डेरे पर चला गया और बाकी लोग भी अपने ठिकाने कर दिये गये। जब राजा बीरेन्द्रसिह और तेजसिह अकेले रह गए तब उन दोनों में यों बातचीत होने लगी।–

बीरेन्द्र–कुछ समझ में नहीं आता कि यह रहस्य कैसा है? भूतनाथ की बातों से तो किसी तरह का खुटका नहीं होता!

तेज–जहॉ तक पता लगाया गया है उससे यही जाहिर होता है कि बलभद्रसिह इस इमारत के बाहर नहीं गए, मगर इस बात पर भी विश्वास करना कठिन हो रहा है।

बीरेन्द्र–नि सन्देह ऐसा ही है!

तेज–अब देखा चाहिए भूतनाथ एक सप्ताह के अन्दर क्या कर दिखाता है।

बीरेन्द्र–यद्यपि मैने भूतनाथ की दिलजमई कर दी है परन्तु उसका जी शान्त नहीं हो सकता। खैर जो भी हो, मगर तुम उसे अपनी हिफाजत में समझो और पता लगाओ कि यह मामला कैसा है।

तेज–ऐसा ही होगा!

दसवां बयान

मायारानी ने जब समझा कि वे फौजी सिपाही इस बाग के बाहर हो गये और गोपालसिह को भी वहाॅ न देखा तब हिम्मत करके अपने ठिकाने से निकली और पुन बाग में आकर उस तरफ रवाना हुई जिधर उस गोपालसिह को बेहोश छोड आई थी जो उसके चलाए हुए तिलिस्मी तमचे की गोली के असर से बेहोश होकर बारामदे के नीचे आ रहा था मगर वहाॅ पहुॅचने के पहिले ही उसने उस दूसरे कूए के ऊपर एक गोपालसिह को देखा जिसे फौजी सिपाहियों ने मिट्टी से पाट दिया था। मायारानी एक पेड की आड में खडी हो गई और उसी जगह से तिलिस्मी तमचे वाली एक गोली उसने इस गोपालसिह पर चलाई। गोली लगते ही गोपालसिह लुढक कर जमीन पर आ रहा और मायारानी दौडती हुई उसके पास जा पहुॅची। थोडी देर तक उसकी सूरत देखती रही, इसके बाद कमर से खजर निकाल कर गोपालसिह का सर काट डाला और तब खुशी भरी निगाहों से चारों तरफ देखने लगी यद्यपि उसे पूरा विश्वास न था कि मैंने असली गोपालसिह को मार डाला है।

यद्यपि दिन बहुत चढ चुका था मगर अभी तक उसे जरूरी कामों से निपटने या कुछ खाने-पीने की परवाह न थी या यों कहिए कि उसे इन बातों की मोहलत ही नहीं मिल सकी थी। गोपालसिह की लाश को उसी जगह छोड कर वह बाग की तीसरे दर्जे में जाने की नीयत से अपने दीवानखाने में आई और उसी मामूली राह से बाग के तीसरे दर्जे में चली गई जिस राह से एक दिन तेजसिह वहाॅ पहुॅचाये गये थे।

वहाॅ भी उसने दूर ही से नम्बर दो वाली कोठरी के दर्वाजे पर एक गोपालसिह को बैठे बल्कि कुछ करते हुए देखा। मायारानी ताज्जुब में आकर थोडी देर तक तो उस गोपालसिहको देखती रही इसके बाद उसे भी उसी तिलिस्मी तमञ्चे वाली गोली का निशाना बनाया। जब वह भी बेहोश होकर जमीन पर लेट गया तब मायारानी ने वहाॅ पहुॅच कर उसका भी सर काट डाला और एक लम्बी सास लेकर आप ही आप बोली, 'क्या अब भी असली गोपालसिह न मरा होगा ! मगर अफसोस उस एक गोपालसिह पर तो ऐसी गोली ने कुछ भी असर न किया था। कदाचित असली गोपालसिह वही हो।

इसके जवाब में किसी ने कोठरी के अन्दर से कहा 'हाॅ असली गोपालसिह यह भी न था और असली गोपालसिह अभी तक नहीं मरा !

इस बात ने मायारानी का कलेजा दहला दिया और वह कापती हुई ताज्जुब के साथ कोठरी के अन्दर देखने लगी। अकस्मात कोठरी के अन्दर से निकलते हुए नानक पर मायारानी की निगाह पडी। नानक को देखते ही मायारानी का पुराना क्रोध (जो नानक के बारे में था) पुन उसके चेहरे पर दिखाई देने लगा। वह कुछ देर तक तो नानक को देखती रही और इसके बाद उसे तिलिस्मी गोली का निशाना बनाना चाहा मगर नानक मायारानी की अवस्था देखकर हस पडा और बोला, क्या अब भी आप मुझे अपना पक्षपाती नहीं समझतीं ?

माया–क्यों ? तूने कौन सा ऐसा काम किया है जिससे मैं तुझे अपना पक्षपाती समझू ?

नानक–क्या आपको इस बात की खबर न लगी होगी कि राजा वीरेन्द्रसिह और उनके खानदान तथा ऐयारों से मेरी गहरी दुश्मनी हो गई ? मेरा बाप गिरफ्तार करके दोषी ठहराया गया वीरेन्द्रसिह के ऐयारों ने उसे बहुत तग किया और इसी के साथ ही मेरी भी बहुत बड़ी बेइज्जती की। मेरा बाप अपने बचाव की फिक्र कर रहा है और मैं उन सभों स बदला लेने का बन्दोबस्त कर रहा हूॅ। इस समय मैं इसलिए यहाॅ आया हूॅ कि आप मेरी सहायता करें और मैं आपका साथ दूॅ।

माया–यदि तेरा कहना वास्तव में सच है तो बड़ी खुशी की बात है।

नानक–जो कुछ मैं कह रहा हूॅ उसके सच होने में किसी तरह का सन्देह न कीजिए मैं उन लोगों की बुराई में जान तक खर्च करने का सकल्प कर चुका हूॅ।

माया–यदि तू पहिले ही मेरी बात मान चुका होता तो आज मुझे और तुझे दानों ही को यह दिन देखना नसीब न होता। खैर आज भी अगर तू राह पर आ जाय तो हम लोग मिल-जुल कर बहुत कुछ कर सकते हैं।

नानक–उन दिनों मुझे हरी-हरी सूझती थी और उस दरबार से बहुत कुछ पाने की आशा थी मगर इस बात की खबर न थी कि उनके ऐयार अपनी मण्डली के सिवाय किसी नये या दूसरे ऐयार को अपने दर्बार में देखना पसन्द नहीं करते। मुझे कमलिनी ने जितनी उम्मीदें दिलाई थीं उनका एक अश भी पूरा न निकला उल्टे मेरा बाप दोषी ठहराया गया।

माया–भूतनाथ पर जो कुछ इल्जाम लगाया गया है मुझे उसकी पूरी-पूरी खबर लग चुकी है। अब भूतनाथ बिना मेरी मदद के किसी तरह अपनी जान नहीं बचा सकता और न वह बलभद्रसिंह का ही पता लगा सकता है। सच तो यों है कि भूतनाथ ने मुझे भी बड़ा धोखा दिया।

नानक–उन दिनों जो कुछ उन्होंने किया सो किया क्योंकि कमलिनी की दिलाई हुई उम्मीदों ने उन्हें भी अन्धा कर दिया था मगर अब तो उन्हें कमलिनी से भी दुश्मनी हो गयी है और मैं भी यह सुन कर कि कमलिनी वगैरह का राजा गोपालसिंह ने इसी बाग में लाकर रक्खा है उससे बदला लेने का खयाल करके यहां आया हूं।

माया–यहाँ का रास्ता तुझे किसने बताया ?

नानक–यहाँ के बहुत से रास्तों का हाल कमलिनी ने ही मुझे बताया था, मैं एक दफे यहाँ पहिले भी आ चुका हूं।

माया–कब ?

नानक–जब तेजसिंह को आपने कैद किया था और जब चण्डूल ने आकर आप लोगों को छकाया था।

माया–(उन बातों की याद से कांप कर) तब तो तुम्हें मालूम होगा कि वह चण्डूल कौन था।

नानक–वह कमलिनी थी और मैं उसके साथ था।

माया–(कुछ सोचकर) हां ठीक है। प तब तो तुम्हें अच्छा अच्छा तुम मेरे पास आओ, पहिले मैं निश्चय कर लूँ कि तुम ईमानदारी से साथ देने के लिए तैयार हो या यह सब बातें धोखा देने के लिए कह रहे हो इसके बाद अगर तुम सच्चे निकले तो हम दोनों आदमी मिल कर बहुत बड़ा काम कर सकेंगे और तुम्हें भी बहुत सी खैर तुम इधर आओ और मेरे साथ एकान्त में चलो।

नानक–(मायारानी के पास आकर) और यहां तीसरा कौन है जो हम लोगों की बातें सुनेगा !

माया–चाहे न हो मगर शक तो है।

मायारानी नानक को लिए दूसरी तरफ चली गई।

ग्यारहवाँ बयान

सध्या होने में अभी दो घण्टे से कुछ ज्यादे देर थी जब कुंअर इन्दजीतसिंह आनन्दसिंह और भैरोसिंह कमरे से बाहर निकल कर बाग के उस हिस्से में घूमने लगे जो तरह-तरह के खुशनुमा पेड़, फूल पत्तों, गमलों और फैली हुई लताओं से सुन्दर और सुहावना मालूम पड़ता था क्योंकि इन तीनों को इन्द्रानी के मुँह से निकले हुए वे शब्द बखूबी याद थे कि मगर आप लोग किसी मकान के अन्दर जाने का उद्योग न करें !

भैरो–(घूमते हुए एक फूल तोड़ कर) यहाँ एक तो बागीचे के लिए बहुत कम जमीन छोड़ी गई है दूसरे जो कुछ जमीन छोड़ी गई है उसमें भी काम खूबी और खूबसूरती के साथ नहीं लिया गया है जहाँ पर जिस ढंग के पेड़ होने चाहिये वैसे नहीं लगाए गए हैं।

आनन्द–बाग के शौकिन लोग प्राय बेला चमेली जुही और गुलाब इत्यादि खुशबूदार फूलों के पेड क्यारियों के बीच में लगाते हैं।

इन्दजीत–ऐसा न होना चाहिए क्यारियों के अन्दर केवल पहाडी गुल बूटों के ही लगाने में मजा है, जूही, बेला मातिया इत्यादि देशी खुशबूदार फूलों को रविशों के दोनों तरफ लगाना चाहिये जिसमें सैर करने वाला घूमता-फिरता जब चाहे एक दो फूल तोड के सूघ सके।

आनन्द–बेशक ऐसा न होना चाहिए कि खुशबूदार फूल तोड़ने की लालच में कहीं सैर करने वाला बुद्धि विसर्जन करके क्यारी के बीच में पैर रक्खे और जूते समेत फिल्ली तक जमीन के अन्दर जा रहे क्योंकि सिंचाव का पानी क्यारियों में जमा होकर कीचड करता है इसलिए क्यारियों के बीच में उन्हीं पेड़ पौधों का होना आवश्यक है जिन्हें केवल देखने ही से तृप्ति हो जाय और जिनमें ज्यादे सर्दी और पानी के बर्दाश्त करने की ताकत हो।

भैरो–मेरी भी यही राय है, मगर साथ ही इसके यह भी कहूँगा कि गुलाब के पेड रविशों के दोनों तरफ न लगाने चाहिए जिसमें कॉटों की बदौलत सैर करने वाले के (यदि वह भूल से कुछ किनारे की तरफ जा रहे तो) कपड़ों की दुर्गति हो जाय उसके लिए क्यारी अलग ही होनी चाहिए जिसकी जमीन बहुत नम न हो।

इन्दजीत–ठीक है इसी तरह चमेली के पेड़ों की कतार भी ऐसी जगह लगाना चाहिए जहां टट्टी बना कर आड करने का इरादा हो।

भैरो–आड का काम तो मेंहदी की टट्टी से भी लिया जाता है।

इन्द्रजीत–हॉ लिया जाता है मगर जमीन के उस हिस्से में जो बीच वाली या खास जलसे वाली इमारत से कुछ दूर हा क्योंकि मेंहदी जब फूलती है तो अपने सिवाय और फूलों की खुशबू का आनन्द लेन की इजाजत नहीं देती।

आनन्द–जैसे कि अब भैरोसिह को हम लोग अपने साथ चलने की इजाजत न देंगे।

भैरो–(चौक कर) है इसका क्या मतलब ?

आनन्द–इसका मतलब यही है कि अब आप थोडी देर के लिए हम दोनों भाइयों का पिण्ड छोडिये और कुछ दूर हटकर उधर की रविशों पर पैर थकाइए।

भैरो–(कुछ चिढ कर) क्या अब मुझे ऐसे साथी और ऐयार से भी बात छिपाने की नौवत आ गई ?

आनन्द–(इन्द्रजीतसिह का इशारा पा कर) हॉ और इसलिए कि बात छिपाने का कायदा तुम्हारी तरफ से जारी हो गया ;

भैरो–सो कैसे ?

आनन्द–अपने दिल से पूछो।

भैरो–क्या मैं वास्तव में भैरोसिह नहीं हूँ ?

आनन्द–तुम्हारे भैरोसिह होने में कोई शक नहीं है बल्कि तुम्हारी बातों की सच्चाई मे शक है।

भैरो–यह शक कब स हुआ ?

आनन्द–जब से तुमने स्वयम कहा कि राजा गापालसिह न तुम्हें इस तिलिस्म में पहुँचाती समय ताकीद कर दी थी कि सब काम कमलिनी की आज्ञानुसार करना यहा तक कि यदि कमलिनी तुम्हें सामना हो जाने पर भी कुमार से मिलने के लिए मना करे तो तुम कदापि न मिलना।*

भैरो–(कुछ सोच कर) हा ठीक है मगर आपको यह कैसे निश्चय हुआ कि मैंने राजा गोपालसिह की बात मान ली

इन्द–यह इसी से मालूम हो गया कि तुमने अपने बटुए का जिक्र करते समय तिलिस्मी खजर का जिक्र छोड दिया।

भैरो–(कुछ सोच कर और शर्मा कर) बेशक यह मुझसे भूल हुई।

आनन्द–कि उस तिलिस्मी खजर के लिए भी कोई अनूठा किस्सा गढ कर हम लोगों को सुना न दिया।

भैरो–(और भी शर्मा कर) नहीं ऐसा नहीं है उस समय मैं इतना कहना भूल गया कि ऐयारी के बटुए के साथ-साथ वह तिलिस्मी खजर मुझे उस नकाबपोश या पीले मकरन्द से नहीं मिला उन्होंने कसम खा कर कहा कि तुम्हारा खंजर हममें से किसी के पास नहीं है।

आनन्द–हा–और तुमने मान लिया।

भैरो–(हिचकता हुआ) इस जरा सी भूल के हो जाने पर ऐसा न होना चाहिए कि आप लोग अपना विश्वास मुझ पर से उठा लें।

इन्द्रजीत- नहीं-नहीं इससे हम लोगों का ख्याल ऐसा नहीं हो सकता कि तुम भैरोसिह नहीं हो या अगर हो भी तो हमारे दुश्मनों के साथी बन कर हमे नुकसान पहुचाया चाहते हो ? कदापि नहीं। हम लोग अभी तुम्हारा उतना ही भरोसा रखते हैं जितना पहिले रखते थे मगर कुछ देर के लिए जिस तरह तुम असली बातों को छिपाते हो उसी तरह हम भी छिपावेंगे।

अभी भैरोसिह इस बात का जवाब सोच ही रहा था कि सामने से एक औरत आती हुई दिखाई पडी। तीनों का ध्यान उसी तरफ चला गया। कुछ पास आने और ध्यान देने पर दोनों कुमारों ने उसे पहिचान लिया कि इसे हम इस बाग में आने के पहिले इन्द्रानी और आनन्दी के साथ नहर के किनारे देख चुके है।

आनन्द–यह भी उन्हीं औरतों में हैं जिन्हें हम लोग इन्द्रानी और आनन्दी के साथ पहले बाग में नहर के किनारे देख चुके है।

इन्द्रजीत–बेशक मगर सब कि सब एक ही खानदान की मालूम पडती है यद्यपि उम्र में इन सभी के बहुत फर्क नहीं है।

आनन्द–देखा चाहिए यह क्या सन्देशा लाती है।

---

*देखिये सत्रहवा भाग चौदहवा बयान।

इतने मे वह औरत कुमार के पास आ पहुची और हाथ जोडकर दोनों कुमारों की तरफ देखती हुई बोली इन्द्रानी और आनन्दी ने हाथ जोड कर आप दानों से इस बात की माफी मागी है कि अब वे दोनों आप लोगों के सामने हाजिर नहीं हो सकतीं।

इन्दजीत–(ताज्जुब स) सो क्यों ?

औरत–उन्हें इस बात का बहुत रज है कि वे आप लोगों की खातिरदारी अच्छी तरह स न कर सकी और उनक गुरु महाराज ने उन्हें आप लोगों का सामना करन से रोक दिया।

इन्दजीत–आखिर इसका कोई सबब भी है ?

औरत–इसके सिवाय तो और कोई सबब नहीं जान पडता कि उन दोनों की शादी आप दोनों भाइयों के साथ होने वाली है।

इन्दजीत–(ताज्जुब के साथ) मुझसे और आनन्द से !

औरत–जी हा।

इन्दजीत–तब तो यह खासी जबर्दस्ती है !

औरत–जी हा।

इन्दजीत–क्या उनके गुरु महाराज में इतनी सामर्थ्य है कि अपनी इच्छानुसार हम लोगों के साथ बर्ताव करें ?

औरत–जी हा।

इन्दजीत– (झुझलाकर) कभी नहीं कदापि नहीं।

आनन्द–ऐसा हो ही नहीं सकता !(औरत से, जो जाने के लिए अपना मुह फेर चुकी थी) क्या तुम जाती हो ?

औरत–जी हा।

इन्दजीत–बस इतना ही कहने के लिए आई थी ?

औरत–जी हा।

इन्दजीत–क्या भेजने वालों ने तुम्हे कह दिया था कि जी हा के सिवाय और कुछ मत बोलना ?

औरत–जी हा।

इन्दजीतसिह की झुझलाहट देखकर उस औरत को भी हसी आ गई और वह मुस्कुराती हुई जिधर से आई थी उधर ही चली गई तथा थोडी दूर जाकर नजरों से गायब हो गई। तब भैरोसिह ने दिल्लगी के तौर पर कुमार से कहा आप लोगो की खुशकिस्मती का कोई ठिकाना है ! रम्भा और उर्वशी के समान औरतें जबर्दस्ती आप लोगों के गले मढ़ी जाती है तिस पर मजा यह कि आप लोग नखरा करते है। ऐसा ही है तो मुझे कहिए मै आपकी सूरत बनकर ब्याह कर लू।

इन्दजीत–तब कमला किसके नाम की हाडी चढावेगी ?

भैरो–अजी कमला से क्या जाने कब मुलाकात हो और क्या हो ! यह तो परोसी हुई थाली ठहरी।

इन्दजीत–ठीक है मगर भैरोसिह जहा तक मेरा ख्याल है, मै समझता हूँ कि तुम्हे इस ब्याह-शादी वाले मामले की कुछ न कुछ खबर जरूर है।

भैरो–अगर खबर हो भी तो अब मै कुछ कहने का साहस नहीं कर सकता।

आनन्द–सो क्यों।

भैरो–इसलिए कि आप लोग मुझे झूठा समझ चुके है।

इन्द–सो तो जरूर है।

भैरो–(चिढ़कर) अगर ऐसा ही खयाल है तो अब मै आप लोगों के साथ रहना भी मुनासिब नहीं समझता।

इन्द–मेरी भी यही राय है।

भैरो–अच्छा तो (सलाम करता हुआ) जय माया की !

इन्द्र–जय माया की।

आनन्द–जय माया की मगर यह तो मालूम हो कि आप जायगे कहा ?

भैरो–इससे आपको कोई मतलब नहीं।

इन्द–हा साहब इसस हम लोगों को मतलब नहीं आप जाइए और जल्द जाइए।

इसके जवाब में भैरोसिह ने कुछ भी न कहा और वहा से रवाना होकर पूरब तरफ वाली इमारत के नीचे वाली एक कोठरी में घुस गया इसके बाद मालूम न हुआ कि भैरोसिह का क्या हुआ या वह कहा गया ! उसके जाने बाद दोनों

कुमार भी धीर-धीरे उस कोठरी में चल गए मगर वहाँ भैरासिह दिखाई न पडा और न उस कोठरी में स किसी तरफ जाने का रास्ता ही मालूम हुआ।

इन्द्र–(आनन्द से) क्यों हम लागों का खयाल ठीक निकला न !

आनन्द–नि सन्देह वह झूठा था अगर ऐसा न होता तो जानकारों की तरह इस कोठरी में घुसकर गायब न हो जाता।

इन्द्र–वात तो यह है कि तिलिस्म के इस भाग में वहुत समझ-वूझकर काम करना चाहिए जहा की आबोहवा अपनों को भी पराया कर देती है।

आनन्द–मामला तो कुछ ऐसा ही नजर आता है। मेरी राय मे तो अब यहा चुप-चापबैठना भी व्यर्थ जान पडता है। यहा से किसी तरफ जाने का उद्याग करना चाहिए।

इन्द्र–अब आज की रात तो सब्र करके विता दा कल सवेरे कुछ न कुछ बन्दोबस्त जरूर करेंगे।

इसके वाद दानों भाई वहाँ से हटे और टहलते हुए वावली के पास आकर सगमर्मर वाले चवूतरे पर बैठ गए। उसी समय उन्होंन एक आदमी को सामने वाली इमारत के अन्दर से निकलकर अपनी तरफ आते देखा।

यह शख्स वही बुड्ढा दारोगा था जिससे पहिले बाग में मुलाकात हो चुकी थी जिसने नानक को गिरफ्तार किया था और जिसके दिए हुए कमन्द के सहारे दोनों कुमार उस दूसरे वाग में उतर कर इन्द्रानी और आनन्दी से मिले थे।

जव वह कुमार के पास पहुचा तो साहव सलामत के बाद कुमारों ने उसे इज्जत के साथ अपन पास बैठाया और यों वातचीत होने लगी –

इन्द्रजीत–आज पुन आपसे मुलाकात होने की आशा तो न थी !

दारोगा–वेशक मुझ भी इस वात का गुमान न था परन्तु एक आवश्यक कार्य के कारण मुझे आप लोगों की सेवा में उपस्थित होना पडा। क्षमा कीजिएगा जिस समय आप कमन्द के सहारे उस बाग में उतरे थे उस समय मुझे इस बात की कुछ भी खवर न थी कि उन औरतों में जिन्हें देख कर आप उस वाग में गए थे दो औरतें ऐसी हैं जिन्हें और बातों के अतिरिक्त यहा की रानी कहलाने की प्रतिष्ठा भी प्राप्त है। जिन्दगी का पिछला भाग इस वुढौती के लिबास में काट रहा हूँ इसलिए आखों की राशनी और ताकत ने भी एक तौर पर जवाव ही दे दिया है इसलिए मैं उन ओरतों को भी पहिचान न सका।

इन्द्र–खैर ता यह वात ही क्या थी जिसके लिए आप माफी माग रहे हे और इससे मेरा हर्ज भी क्या हुआ ? आप उस काम की फिक्र कीजिए जिसके लिए आपको यहा आने की तकलीफ उठानी पडी।

दारोगा–इस समय वे ही दोनों अर्थात इन्द्रानी और आनन्दी मेरे यहा आने का सबब हुई हैं। मै आपके पास इस वात की इत्तिला करने के लिए भेजा गया हू कि परसों उन दोनों औरतों की शादी, आप दोनों भाइयों के साथ होने वाली है आशा है कि आप दोनों भाई इसे स्वीकार करेंगे।

इन्द्र–मै अफसोस के साथ यह जवाव देने पर मजवूर हू कि हम लोग इस शादी को मजूर नही कर सकते और इसके कई सवव है।

दारोगा–ठीक है, मुझे भी पहिले-पहिले यही जवाव सुनने की आशा थी मगर मै आपको अपनी तरफ से भी नेकनीयती के साथ यह राय दूगा कि आप इस शादी से इनकार न करें और मुझे उन सब बातों के कहने का मौका न दें जिन्हें लाचारी की हालत में निवेदन करके समझाना पडेगा कि आप इस शादी से इन्कार नहीं कर सकते बाकी रही यह वात कि इनकार करने के कई सवब है, सो यद्यपि मैं उन कारणों के जानने का दावा तो नहीं कर सकता मगर इतना तो जरूर कह सकता हूँ कि सबसे बडा सबब जो है वह केवल मुझी को नहीं बल्कि सभों को यहा तक कि इन्द्रानी और आनन्दी को भी मालूम है। परन्तु मै आपको भरोसा दिलाता हू कि किशोरी और कामिनी को भी इस शादी से किसी तरह का दुख न होगा क्योंकि उन्हें इस बात की पूरी-पूरी खवर है कि यह शादी ही आपकी और उनकी मुलाकात का सबब होगी विना इस शादी के हुए वे आपको और आप उन्हें दख भी नहीं सकते।

इन्द्र–मैं आपकी वातों पर विश्वास करने की कोशिश करूँगा परन्तु और सव बातों को किनारे रख कर मैं आपसे पूछता हू कि यह शादी किस रीति के अनुसार हो रही है ? विवाह के आठ प्रकार शास्त्र ने कहे हैं, यह उनमें से कौन सा प्रकार है और ऐसी शादी का नतीजा क्या निकलेगा। यद्यपि इसमें मेरी कुछ हानि नहीं हो सकती परन्तु मरी अनिच्छा के कारण जो कुछ हानि हो सकती है, इसका विचार लडकी वाले के सिर है।

दारोगा–ठीक है मगर जहा तक मै सोचता हूँ इन सब बातों पर अच्छी तरह विचार किया जा चुका है और ज्योतिषी

न भी निश्चय दिला दिया है कि इस शादी का नतीजा दोनों तरफ बहुत अच्छा निकलेगा। यद्यपि आप इस समय प्रसन्न नहीं होते परन्तु अन्त में बहुत प्रसन्न होंगे। अच्छा इस समय तो मैं जाता हू क्योंकि मैं कंपल इत्तिला करन क लिए आया था वाद-विवादकरने के लिए नहीं परन्तु इसका जवाव पाने के लिए कल प्रात काल अवश्य आऊगा।

इतना कहकर दारोगा उठा खडा हुआ और जवाव का इन्तजार कुछ भी न करके जिधर से आया था उधर ही चला गया। उसके जाने के बाद कुछ दर तक तो दोनों भाई उसी जगहबात-चीतकरत रहे और इसके बाद जरूरी कामों से छुट्टी पा और उसी बावली पर सध्या-वन्दन कर पुन उस कमरे में चले आये जिसमें दोपहर तक बिता चुके थ। इस समय सध्या हो चुकी थी और कुमारों को यह देख कर ताज्जुव हा रहा था कि उस कमरे मं रोशनी हो चुकी थी मगर किसी गैर की सूरत दिखाई नहीं पडती थी।

कुमार को उस कमरे म गए बहुत देर न हुई होगी कि इन्द्रानी और आनन्दी वहा आ पहुँचीं जिन्हें देख कुमार बहुत खुश हुए और इन्द्रजीतसिह ने इन्द्रानी से कहा तुमने तो कहला भेजा था कि अब मैं मुलाकात नहीं कर सकती !

इन्द्रानी–वेशक ऐसा ही हे मगर मैं छिप कर आपसे कुछ कहने के लिए आई हू।

इन्द्रजीत–वह कौन सी बात हे जिसने तुम्हें छिप कर यहा आने के लिए मजबूर किया और वह कोन सा कसूर है जिसने मुझे तुम्हारा मेहमान

इन्द्रानी–(बात काट कर और मुस्कुरा कर) मैं आपकी सब बातों का जवाव दूँगी आप महरबानी करके जरा मेरे साथ इस दूसरे कमरे में आईये।

इन्द्रजीत–क्या मेरी चीठी का जवाव भी लाई हो ?

इन्द्रानी–जी हा जवाब की चीठी भी इसी समय आपको दूगी (इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह को उठते देख कर आनन्दसिह से) आप इसी जगह ठहरिये (आनन्दी से) तू भी इसी जगह ठहर मैं अभी आती हू।

इन्द्रजीतसिह यद्यपि इन्द्रानी के साथ शादी करने स इनकार करते थे, मगर इन्द्रानी और आनन्दी की खुबसूरती बुद्धिमानी सभ्यता और उनकी मीठी बातें इस योग्य न थी कि कुमार के दिल पर गहरा असर न करतीं और सामना होनेपर उस अपनी तरफ न खेंचतीं। इन्द्रजीतसिह-इन्द्रानी की बात स इनकार न कर सके और खुशी-खुशी उसके साथ दूसरे कमरे में चले गये।

हम नहीं कह सकते कि इन्द्रजीतसिह और इन्द्रानी में दो घण्टे तक क्या बातें हुई और इधर आनन्दसिह और आनन्दी में कैसी ठहरी मगर इतना जरूर कहेंगे कि जब इन्द्रजीतसिह और इन्द्रानी दोनों आदमी लौट कर कमरे में आय तो बहुत खुश थे और इसी तरह आनन्दी और आनन्दसिह के चेहरे पर भी खुशी की निशानी पाई जाती थी। इन्द्रानी और आनन्दी के चले जान क बाद कई औरतें खाने-पीने का सामान लकर हाजिर हुईं और दोनों भाई भोजन करके सो रहे। सुबह को जब वह दारोगा अपनी बातों का जवाब लेने के लिए आया तो दोनों कुमार उससे खुशी-खुशी मिले और बोले कि हम दोनों भाइयों का इन्द्रानी और आनन्दी के साथ व्याह करना स्वीकार किया है।

बारहवां बयान

कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह ने इन्द्रानी और आनन्दी स व्याह करना स्वीकार कर लिया और इस समय से उस छोटे से बाग में व्याह की तैयारी दिखाई दन लगी। इन दोनों कुमारो के व्याह का बयानधूम-धाम स लिखने के लिए हमारे पास कोई मसाला नहीं है। इस शादी में न तो बारात है न बाराती, न गाना हे न बजाना न धूम है न धडक्का, न महफिल है न ज्याफत अगर कुछ बयान किया भी जाय तो किसका ! हा इसमें कोई शक नहीं कि व्याह कराने वाले पण्डित अविद्वान और लालची न थे तथा शास्त्र की रीति से ब्याह करान में किसी तरह की त्रुटि भी दिखाई नहीं देती थी। बावली के ऊपर सगमर्मर वाला चबूतरा ब्याह का मडवा बनाया गया था और उसी पर दोनों शादिया एक साथ ही हुई थीं अस्तु ये बात भी योग्य नहीं कि जिनके बयान म तूल दिया जाय और दिलचस्प मालूम हो हा इस शादी क सम्बन्ध में कुछ बातें ऐसी जरूर हुईं जो ताज्जुब और अफसोस की थी और उनका बयान इस जगह कर देना हम आवश्यक समझते हैं।

इन्द्रानी के कहे मुताबिक कुअर इन्द्रजीतसिह को आशा थी कि राजा गोपालसिह से मुलाकात होगी मगर ऐसा न हुआ। व्याह के समय पाच-सात औरतों के (जिन्हें कुमार देख चुक थ मगर पहिचानते न थे) अतिरिक्त केवल चार मर्द वहा मौजूद थे। एक वही बुडढा दारोगा दूसरे ब्याह कराने वाले पण्डितजी तीसरे एक आदमी और जो पूजा इत्यादि की सामग्री इधर से उधर समयानुकूल रखता था और चौथा आदमी वह था जिसने कन्यादान (दोनों) किया था। चाहे वह इन्द्रानी और आनन्दी का बाप हो या गुरु हो या चाचा इत्यादि जो कोई भी हो उसकी सूरत देख कुअर इन्द्रजीतसिह

और आनन्दसिंह को बडा ही आश्चर्य हुआ। यद्यपि उसकी उम्र पचास से ज्याद न थी मगर वह साठ वर्ष से भी ज्यादे उम्र का बुड्ढा मालूम होता था। उसके खूबसूरत चेहर पर जर्दी छाई थी, बदन में हड्डी ही हड्डी दिखाई देती थी, और मालून होता था कि इसकी उम्र का सब से बडा हिस्सा रज गम और मुसीबत ही में बीता है। इसमें कोइ शक नहीं कि यह किसी जमाने में खूबसूरत दिलेर और बहादुर रहा होगा मगर अब तो अपनी सूरत-शक्लसे देखन वालों के दिल में दु ख ही पैदा करता था। दोना कुमार ताज्जुब की निगाहों स उसे देखते रहे और उसका हाल जानने की उत्कण्ठा उन्हें बेचैन कर रही थी।

कन्यादान हो जाने के बाद दोनों कुमारों ने अपनी-अपनी उगली से अगूठी उतार कर अपनी-अपनी स्त्री को (निशानी या तोहफे के तौर पर) दी और इसके बाद सभों की इच्छानुसार दोनों भाई उठ उसी कमरे में चले गये जो एक तौर पर उनके बैठने या रहने का स्थान हो चुका था। इस समय रात घण्टे भर से कुछ कम बाकी थी।

दोनों कुमारों को उस कमरे में बैठे पहर भर से ज्यादे बीत गया मगर किसी ने आकर खबर न ली कि वे दोनों क्या कर रहे हैं और उन्हें किसी चीज की जरूरत है या नहीं। आखिर राह देखत-देखते लाचार होकर दोनों कुमार कमरे के बाहर निकले और इस समय बाग में चारों तरफ सन्नाटा देखकर उन्हें बड़ा ही ताज्जुब हुआ। इस समय न तो उस बाग में कोई आदमी था और न ब्याह-शादी के सामान में से ही कुछ दिखाई देता था यहा तक कि उस संगमर्मर क चबूतरे पर भी (जिस पर ब्याह का मडवा था) हर तरह से सफाई थी और यह नहीं मालूम होता था कि आज रात का इस पर कुछ हुआ था।

बेशक यह बात ताज्जुब की थी बल्कि इससे भी बढकर यह बात ताज्जुब की थी कि दिन भर बीत जाने पर भी किसी ने उनकी खबर न ली। जरूरी कामों से छुट्टी पाकर दोनों कुमारों ने बावली में स्नान किया और दो-चार फल जो कुछ उस बागीच में मिल सके खाकर उसी पर सन्तोष किया।

दोनों भाइयों ने तरह-तरह के सोच विचार में दिन ज्यों त्यों करके बिता दिया मगर सध्या होते-होते जो कुछ वहा पर उन्होंन दखा उसके बर्दाश्त करने की ताकत उन दोनों के कोमल कलेजों में न थी। सध्या होने में थोडी ही देर थी जब उन दोनों ने उस बुड्ढे दारोगा को तेजी के साथ अपनी तरफ आते हुए देखा। उसकी सूरत पर हवाई उड रही थी और वह घबडाया हुआ सा मालूम पड रहा था। आने के साथ ही उसन कुँअर इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख के कहा 'बडा अन्धेर हो गया! आज का दिन हम लोगों के लिए प्रलय का दिन था इसलिए आपकी सेवा में उपस्थित न हो सका!'

इन्द्रजीत–(घबडाहट और ताज्जुब के साथ) क्या हुआ?

दारोगा–आश्चर्य है कि इसी बाग में दो-दो खून हो गये और आपको कुछ मालूम न हुआ!!

इन्द्रजीत–(चौंक कर) कहा और कौन मारा गया?

दारोगा–(हाथ का इशारा करके) उस पड के नीचे, चलकर देखने से आपको मालूम होगा कि एक दुष्ट ने इन्द्रानी और आनन्दी को इस दुनिया से उठा दिया लेकिन बडी कारीगरी से मैंने खूनी को गिरफ्तार कर लिया है।

यह एक ऐसी बात थी जिसने इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के होश उडा दिए। दोनों घबडाए हुए उस बुड्ढे दारोगा के साथ पूरब तरफ चले गये और एक पेड के नीच इन्द्रानी और आनन्दी की लाश देखी। उनके बदन में कपडे और गहने सब वही थ जो आज रात को ब्याह के समय कुमार ने देखे थे और पास ही एक पेड के साथ बधा हुआ नानक भी उसी जगह मौजूद था। उन दोनों को देखने के साथ ही इन्द्रजीतसिंह ने नानक से पूछा "क्या इन दोनों को तूने मारा है?

इसक जवाब में नानक ने कहा 'हा इन दोनों को मैंने मारा है और इनाम पाने का काम किया है ये दोनों बडी ही शैतान थी!

अठारहवा भाग समाप्त

* श्री *

चन्द्रकान्ता सन्तति

उन्नीसवां भाग

पहिला बयान

अटठारहवें भाग के अन्त में हम इन्द्रानी और आनन्दी का मारा जाना लिख आये है और यह भी लिख चुके है कि कुमार के सवाल करने पर नानक ने अपना दोष स्वीकार किया और कहा–' इन दोनों को मैंने ही मारा और इनाम पाने का काम किया है ये दोनों बड़ी शैतान थीं।

एक तो इनके मारे जाने ही से दोनों कुमार दुःखी हो रहे थे दूसरे नानक के इस उद्दण्डता के साथ जवाब देने ने उन्हें अपने आप से बाहर कर दिया। कुँअर आनन्दसिंह ने तलवार के कब्जे पर हाथ रखकर बड़े भाई की तरफ देखा अर्थात इशारे में पूछा कि यदि आज्ञा हो तो नानक को दो टुकड़े कर दिया जाय। कुँअर आनन्दसिंह के इस भाव को नानक भी समझ गया और हंसता हुआ बोला आश्चर्य है कि आपके दुश्मनों को मार कर भी दोषी ठहराया जाता हू!

इन्दजीत–क्या ये दोनों हमारी दुश्मन थी ?

नानक–बेशक !

इन्दजीत–इसका सबूत क्या है ?

नानक–केवल ये दोनों लाशे।

इन्दजीत–इसका क्या मतलब ?

नानक–यही कि इन दोनों का चेहरा साफ करने पर आपको मालूम हो जायगा कि ये दोनों वास्तव में मायारानी और माधवी थी।

इन्दजीत–(चौंक कर ताज्जुब से) है मायारानी और माधवी !!

नानक–(बात पर जोर देकर) जी हां मायारानी और माधवी !

इन्दजीत–(आश्चर्य और क्रोध से बूढ़े दारोगा की तरफ देखकर) आप सुनते है नानक क्या कह रहा है ?

दारोगा–नहीं कदापि नहीं नानक झूठा है।

नानक–(लापरवाही से) कोई हर्ज नहीं यदि कुमार चाहेंगे तो बहुत जल्द मालूम हो जायगा कि झूठा कौन है !

दारोगा–बेशक कोई हर्ज नहीं मैं अभी बावली में से जल लाकर और इनका चेहरा धोकर अपने को सच्चा साबित करता हू।

इतना कहकर दारोगा जोश दिखाता हुआ बावली की तरफ चला गया और फिर लौट कर न आया।

पाठक आप समझ सकते है कि नानक की बातों ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के कोमल कलेजो के साथ कैसा बर्ताव किया होगा ? आनन्दी और इन्द्रानी वास्तव मे मायारानी और माधवी है इस बात ने दोनों कुमारों को हद से ज्यादा बेचैन कर दिया और दोनों अपने किए पर पछताते हुए क्रोध और लज्जा भरी निगाहों से बराबर एक दूसरे को देखते हुए मन में सोचने लगे कि हाय हम दोनों से कैसी भूल हो गई ! यदि कहीं यह हाल कमलिनी और लाडिली तथा किशोरी और कामिनी को मालूम हो गया तो क्या वे सब मारे तानों के हम लोगों के कलेजो को चलनी न कर डालेंगी ! अफसोस उस बुड्ढे दारोगा ही ने नही बल्कि हमारे सच्चे साथी भैरोसिह ने भी हमारे साथ दगा की। उसने कहा था कि इन्द्रानी ने मेरी सहायता की थी इत्यादि पर यह कदापि सम्भव नहीं कि मायारानी भैरोसिंह की सहायता करे। अफसोस क्या अब यह जमाना आ गया कि सच्चे ऐयार भी अपने मालिकों के साथ दगा करें !

कुछ देर तक इसी तरह की बातें दोनों कुमार सोचते और दारोगा के आने का इन्तजार करते रहे। आखिर आनन्दसिंह ने अपने बड़े भाई से कहा, "मालूम होता है कि वह कम्बख्त बुड्ढा दारोगा डर के मारे भाग गया यदि आज्ञा हो तो मैं जाकर पानी लाने का उद्योग करूं। इसके जवाब में कुँअर इन्दजीतसिंह ने पानी लाने का इशारा किया और आनन्दसिंह बावली की तरफ रवाना हुए।

थोड़ी ही देर में कुअर आनन्दसिंह अपना पटूका पानी से तर कर ले आए और यह कहते हुए इन्दजीतसिंह के पास पहुचे –"बेशक दारोगा भाग गया।

उसी पट्टके के जल से दोनों लाशों का चेहरा साफ किया गया और उसी समय मालूम हो गया कि नानक ने जो कुछ कहा सब सच है अर्थात् वे दोनों लाशें वास्तव में मायारानी तथा माधवी की ही हैं।

अव दोनों भाइयों के रज और गम का कोई हद न रहा। सकते की हालत में खडे हुए पत्थर की मूरत की तरह वे उन दोनों लाशों की तरफ देख रहे थे। कुछ देर बाद कुँअर आनन्दसिह ने एक लम्बी सॉस लेकर कहा, 'वाह रे भैरोसिह, जब तुम्हारा यह हाल है तब हम लोग किस पर भरोसा कर सकते हैं !'

इसके जवाब में पीछे की तरफ से आवाज आई, 'भैरोसिह ने क्या कसूर किया है जो आप उस पर आवाज कस रहे हैं !'

दोनों कुमारों ने घूम कर देखा तो भैरोसिह पर निगाह पडी। भैरोसिह ने पुन कहा जिस दिन आप इस बात को सिद्ध कर देंगे कि भैरोसिह ने आपके साथ दगा की उस दिन जीते जी भैरोसिह को इस दुनिया में कोई भी न देख सकेगा।

इन्द्रजीत--आशा तो ऐसी ही थी, मगर आज कल तुम्हारे मिजाज में कुछ फर्क आ गया है।

भैरो--कदापि नहीं।

इन्द्रजीत--अगर ऐसा न होता तो तुम बहुत सी बातें मुझसे छिपा कर मुझे आफत में न डालते।

भैरो--(कुमार के पास जाकर) मैने कोई बात आपसे नहीं छिपाई और जो कुछ आप समझे हुए हैं,वह आपका भ्रम है।

इन्द्रजीत--क्या तुमने नहीं कहा था कि इन्दानी तुम्हें इस तिलिस्मी में मिली थी और उसने तुम्हारी सहायता की थी ?

भैरो--कहा था और बेशक कहा था।

इन्द्रजीत--(उन दोनों लाशों की तरफ इशारा करके) फिर यह क्या मामला है ? तुम देख रहे हो कि ये किसकी लाशें है ?

भैरो--मैं जानता हू कि ये मायारानी और माधवी की लाशें है जो नानक के हाथ से मारी गई हैं, मगर इससे मेरा कोई कसूर साबित नहीं होता और न मेरी बात ही झूठी होती है। सम्भव है कि इन दोनों ने जिस तरह आपको धोखा दिया उसी तरह आपका मित्र और साथी समझ कर मुझे भी धोखा दिया हो।

इन्द्रजीत--(कुछ सोच कर) खैर एक नहीं मैं और भी कई बातों में तुम्हें झूठा साबित करूँगा।

भैरो--दिल्लगी के शब्दों को छोडकर आप मेरी एक बात भी झूठी साबित नहीं कर सकते।

इन्द्रजीत--सो सब कुछ नहीं इन पेंचीली बातों को छोडकर तुम्हें साफ-साफ मेरी बातों का जवाब देना होगा।

भैरो--मैं वहुत साफ-साफ आपकी बातों का जवाब दूँगा, आप जो कुछ पूछना हो पूछें।

इन्द्रजीत--तुम हम लोगों से विदा होकर कहाँ गए थे अब कहाँ से आ रहे हो और इन लाशों की खबर तुम्हें कैसे मिली ?

भैरो--आप तो एक साथ बहुत से सवाल कर गए जिनका जवाब मुख्तसर में हो ही नहीं सकता। बेहतर होगा कि आप यहा स चलकर उस कमरे में या और किसी ठिकाने बैठें और जो कुछ मैं जवाब देता हूँ उसे गौर से सुनें। मुझे पूरा यकीन है कि नि सन्देह आप लोगों के दिल का खुटका निकल जायगा और आप लोग मुझे बेकसूर समझेंगे, इतना ही नहीं मैं और भी कई बातें आपसे कहूगा !

इन्द्रजीत--इन दोनों लाशों को और नानक को यों ही छोड दिया जाय ?

भैरो--क्या हर्ज है अगर यों ही छोड दिया जाय !

नानक--जब कि मैने आप लोगों के साथ किसी तरह की बुराई नहीं की है तो फिर मुझे बेबसी की हालत में क्यों छोड जाते हैं ? यदि मुझे कुछ इनाम न मिले तो कम से कम कैद से तो छुट्टी मिल जाय !

इन्द्रजीत--ठीक है, मगर अभी हमें यह मालूम होना चाहिए कि तू इस तिलिस्म के अन्दर क्योंकर और किस नीयत से आया था क्योंकि अभी उसी बाग में तेरी बदनीयती का हाल मालूम हो चुका जब दारोगा ने तुझे पकडा था।

नानक--मगर आपको दारोगा की बदनीयती का हाल भी तो मालूम हो चुका है।

भैरो--इस पचडे से हमें कोई मतलब नहीं अभी राजा गोपालसिह का आदमी इसको लेने के लिए आता होगा इसे

उसके हवाले कर दीजिएगा।

इन्द्र-अगर ऐसा हो तो बहुत अच्छी बात है, मगर क्या तुमको ठीक मालूम है कि राजा गोपालसिंह का आदमी आयेगा ? क्या इस मामले की खबर उन्हें लग गई है ?

भैरो-जी हां।

इन्द्र-क्योंकर ?

भैरो-सो तो मैं नहीं जानता मगर कमलिनी की जुबानी जो कुछ सुना है वह कह सकता हूं।

इन्द्र-तो क्या तुमसे और कमलिनी से मुलाकात हुई थी ? इस समय वे सब कहां हैं ?

भैरो-जी हां हुई थी और मैं आपकी मुलाकात उन लोगों से करा सकता हूं। (हाथ का इशारा कर के) वे सब उस तरफ वाले बाग में हैं, और इस समय मैं उन्हीं के साथ था (रुक कर और सामने की तरफ देखकर) वह देखिए, राजा गोपालसिंह का आदमी आ पहुंचा।

दोनों भाइयों ने ताज्जुब के साथ उस तरफ देखा। वास्तव में एक आदमी आ रहा था जिसने पास पहुंच कर एक चीठी इन्द्रजीतसिंह के हाथ में दी और कहा 'मुझे राजा गोपालसिंह ने आपके पास भेजा है।'

इन्द्रजीतसिंह ने उस चीठी को बड़े गौर से देखा। राजा गोपालसिंह का हस्ताक्षर और खास निशान भी पाया। जब निश्चय हो गया कि यह चीठी राजा गोपालसिंह ही की लिखी है, तब पढ़ के आनन्दसिंह को दे दिया। उस पत्र में केवल इतना लिखा हुआ था –

'आप नानक तथा मायारानी और माधवी की लाश को इस आदमी के हवाले करके अलग हो जायं और जहां तक जल्दी हो सके तिलिस्म का काम पूरा करें।"

इन्द्रजीतसिंह ने उस आदमी से कहा 'नानक और ये दोनों लाशें तुम्हारे सुपुर्द हैं, तुम जो मुनासिब समझो करो, मगर राजा गोपालसिंह को कह देना कि कल तक वह इस बाग में मुझसे जरूर मिल लें।' इसके जवाब में उस आदमी ने "बहुत अच्छा' कहा और दोनों कुमार तथा भैरोसिंह वहां से रवाना होकर बावली पर आए। तीनों ने उस बावली में स्नान करके अपने कपड़े सूखने के लिए पेड़ों पर फैला दिए और इसके बाद ऊपर वाले चबूतरे पर बैठकर बात-चीत करने लगे।

दूसरा बयान

कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने एक लम्बी सांस लेकर भैरोसिंह से कहा ' भैरोसिंह इस बात का मुझे गुमान भी नहीं हो सकता कि तुम स्वप्न में भी हम लोगों के साथ बुराई करने का इरादा करोगे, मगर तुम्हारे झूठ बोलने से हम लोगों को दुःखी कर दिया। अगर तुमने झूठ बोलकर हम लोगों को धोखे में न डाला होता तो आज इन्दानी और आनन्दी वाले मामले में पड़कर हमने अपने मुंह में अपने हाथ से स्याही न मली होती। यद्यपि इन दोनों औरतों के बारे में तरह-तरह के विचार मन में उठते थे, मगर इस बात का गुमान कब हो सकता था कि ये दोनों मायारानी और माधवी होंगी ! ईश्वर ने बड़ी कुशल की, कि शादी होने के बाद आधी घड़ी के लिए भी उन दोनों कम्बख्तों का साथ न हुआ अगर होता तो बड़े ही धर्म सकट में जान फंस जाती। मैं यह समझता हूं कि राजा गोपालसिंह की आज्ञानुसार आजकल तुम कमलिनी वगैरह का साथ दे रहे हो शायद ऐसा करने में भी कोई फायदा ही होगा, मगर इस बात पर हमारा खयाल कभी नहीं जम सकता कि इतनी बड़ी-बढ़ी दिल्लगी करने की किसी ने तुम्हें इजाजत दी होगी। नहीं-नहीं इसे दिल्लगी नहीं कहना चाहिए, यह तो इज्जत और हुर्मत को मिट्टी में मिला देने वाला काम है। भला तुम ही बताओ कि किशोरी और कमलिनी वगैरह तथा और लोगों के सामने अब हम अपना मुँह क्योंकर दिखायेंगे ?

भैरो-और लोगों की बातें तो जाने दीजिए क्योंकि इस तिलिस्म के अन्दर जो कुछ हो रहा है इसकी खबर बाहर वालों को हो ही नहीं सकती हां किशोरी कामिनी और कमला वगैरह अवश्य ताना मारेंगी क्योंकि उनको इस मामले की पूरी खबर है और वे लोग इसी बगल वाले बाग में मौजूद भी हैं मगर मैं सच कहता हूं कि इस मामले में मैं बिल्कुल बेकसूर हूं। इसमें कोई शक नहीं कि कमलिनी की इच्छानुसार मैं बहुत सी बातें आप लोगों से छिपा गया हूं मगर इन्दानी के मामले में मैं भी धोखा खा गया। मैंने ही नहीं बल्कि कमलिनी ने भी यही समझा था कि इन्दानी और आनन्दी इस तिलिस्म की रानी हैं। खैर अब तो जो कुछ होना था वह हो चुका रंज का दूर कीजिए और चलिए मैं आपकी कमलिनी वगैरह से मुलाकात कराऊं।

इन्द्रजीत– नहीं अभी मै उन लोगों से मुलाकात न करूँगा कुछ दिन के बाद देखा जायगा।

आनन्द–जी हा मेरी भी यही राय है। अफसोस !माधवी की बनावटी कलाई पर भी उस समय कुछ ध्यान नहीं गया यद्यपि यह एक मामूली और छाटी बात थी।

भैरो–नहीं-नहीं ऐसा खयाल न कीजिए जब आप अपना दिल इतना छोटा कर लेंगे तब किसी भारी काम का क्योंकर करेंगे ? इसे भी जान दीजिए आप यह बताइये कि इसमें किशोरी या कमलिनी वगैरह का क्या कसूर है जो आप उनसे मुलाकात तक भी न करेंगे ? शादी-व्याह का शौक बढा आपको और भूल हुई आपसे कमलिनी ने भला क्या किया ? (चौककर) खैर आप उनके पास न जाइए, वह देखिए कमलिनी खुद ही आपके पास चली आ रही है !

कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह ने अफसोस और रज से झुका सिर उठा करदखा तो कमलिनी पर निगाह पडी जो धीरे-धीरे चलती और मुस्कुराती हुई इन्हीं लोगों की तरफ आ रही थी।

तीसरा बयान

नानक को लिए हुए मायारानी दूसरी तरफ चली गई मगर जिस जगह जाना चाहती थी वहा पहुचने के पहिले ही उसने पुन एक गोपालसिह को अपने से कुछ दूर पर देखा और उसी समय तिलिस्मी तमचे में गोली भर कर निशाना सर किया। गोली उसके घुटने पर लग कर फूट गई और उसमें से निकला हुआ बेहोशी का धूआ उसके चारो तरफ फैल गया मगर उसका असर गोपालसिह पर कुछ न हुआ। गोपालसिह तेजी के साथ लपककर मायारानी के पास चले आय और बोले 'मै वह नकली गोपालसिह नहीं हू जिस पर इस तमचे का कुछ असर हो, मैं असली गोपालसिह हू और तुझसे यह पूछने के लिए आया हू कि बता अव तेरे साथ क्या सलूक किया जाय ?

यह कैफियत देख कर मायारानी घबडा गई और उसे निश्चय हो गया कि अव उसकी मौत सामने आ खडी हुई है जो एक पल के लिए भी उसका मुलाहिजा न करेगी अस्तु वह गोपालसिह की बात का कुछ जवाव न दे सकी और नानक की तरफ देखने लगी। गोपालसिह ने यह कहकर कि 'नानक की तरफ क्या देख रही है मेरी तरफ देख' ! एक तमाचा उसके गाल पर इस जोर से मारा कि वह इस सदमे को बर्दाश्त न कर सकी और चक्कर खा कर जमीन पर बैठ गई। गोपालसिह ने अपनी जेब में से कुछ निकाल कर उसे जबर्दस्ती सुँघाया जिससे वह बेहोश होकर जमीन पर लेट गई।

इसके बाद गोपालसिह ने नानक की तरफ जो– डर के मारे खडा काप रहा था देखा और कहा –

गोपाल–कहो नानक तुम यहा कैसे आ गये ? क्या इस भुवनमोहिनी के प्रेम में कमी तो नहीं हो गई या मनोरमा को खोजते हुए तो नहीं आ गए ?

नानक–(डरता हुआ हाथ जोड कर) जी मैं कमलिनी जी से मिलने के लिए आया था क्योंकि वे मुझ पर कृपा रखती हैं और जब-जब मुझे ग्रहदशा आकर घेरती है तब सहायता करती हैं। मुझे यह खबर लगी थी कि वे इस बाग में आई हुई है।

गोपाल–मगर यहा आकर कमलिनी की जगह मायारानी से मदद मागने की नौबत आ गई, बल्कि क्या ताज्जुब कि इसी के साथ तुम यहा आये भी हो !

नानक–जी नहीं मेरा इसका साथ भला क्योंकर हो सकता है क्योंकि यह मेरी पुरानी दुश्मन है और इसने धोखा देकर मेरे बाप को ऐसी आफ़त में डाल दिया है कि अभी तक उन्हें किसी तरह छुटकारा नहीं मिलता।

गोपाल–वह सब जो कुछ है मै खूब जानता हू। तुमने अपने बाप के लिए जो कुछ कोशिश की वह भी किसी से छिपी नहीं है तथा तारासिह ने तुम्हारे यहा जाकर जो कुछ तुम्हारा हाल मालूम किया है वह भी मुझे मालूम है। अच्छा अब मै समझा कि तुम तारासिह से बदला लेने यहा आये हो। मगर यह तो बताओ कि किस राह से तुम यहा आए ?

नानक–जी नहीं यह बात नहीं , भला मैं तारासिह से क्या बदला ले सकूगा तारासिह ही से नहीं बल्कि राजा वीरेन्द्रसिह के किसी भी एयार का मुकाबला करने की हिम्मत मेरे में नहीं मगर तारासिह ने जो कुछ सलूक मेरे साथ किया है उसका रज जरूर है और मै कमलिनी से इसी बात की शिकायत करने यहा आया था क्योंकि मुझे उनका बडा भरोसा रहता है और यहा आने का रास्ता भी उन्होंने ही उस समय मुझे बताया था जब कम्बख्त मायारानी की बदौलत आप यहाँ कैद थे और पागल बने हुए तेजसिह यहाँ आए हुए थे।

गोपाल–हा ठीक है मगर मैं समझता हू कि साथ ही इसके तुम उन भेदों के जानने का भी इरादा करके आए होंगे जो गूगी रामभोली की बदौलत यहा आने पर तुमने देखा था

नानक–जी हा इसमें कोई शक नहीं कि मै उन भेदों को भी जानना चाहता हू, परन्तु यह बात बिना आपकी कृपा क

गोपाल– नही-नहीउन भेदों का जानना तुम्हारे लिए बहुत ही मुश्किल है क्योंकि तुम्हारी गिनती ईमानदार ऐयारों मे नहीं हो सकती। यद्यपि वह सब हाल मुझे मालूम है, लाडिली ने तुम्हारा अनूठा हाल पूरा-पूरा बयान किया था और उसी को रामभोली समझकर तुम यहाँ आए भी थे मगर जो कुछ तुमने यहा आकर देखा उसका सबब बयान करना मै उचित नहीं समझता फिर भी इतना जरूर कहूगा कि वह अनोखी तस्वीर जो दारोगा वाले अजायबघर के बगले में तुमने देखी थी वास्तव में कुछ न थी या अगर थी तो केवल तुम्हारी रामभोली की निरी शरारत।

नानक–और वह कूए वाला हाथ ?

गोपाल–वह तुम्हारे बुजुर्ग धनपत का साया था। (कुछ सोचकर) मगर नानक, मुझे इस बात का अफसोस है कि तुम अपनी जवानी हिम्मत, लियाकत और एयारी तथा बुद्धिमानी का खून बुरी तरह कर रहे हो। इसमें कोई शक नहीं कि अगर तुम इश्क और मुहब्बत के झगड़ों में न पडे होते तो समय पर अपने बाप की सहायता करने लायक होते। अब भी तुम्हारे लिए उचित यही है कि तुम अपने खयालों को सुधारकर इज्जत पैदा करने की कोशिश करो और किसी के साथ दुश्मनी करने या बदला लेने का खयाल दिल से दूर कर दो। इस थोड़ी सी जिन्दगी में मामूली ऐशोआराम के लिए अपना परलोक बिगाडना पढे-लिखे बुद्धिमानों का काम नहीं है। अच्छे लोग मौत और जिन्दगी का फैसला एक अनूठे ढग पर करते हैं। अपने खयाल है कि दुनिया में वह कभी मरा हुआ तब तक न समझा जायगा जब तक उनका नाम नेकी के साथ सुना या लिया जायगा और जिसने अपने माथे पर बुराई का टीका लगा लिया, वह मुर्दे से भी बढ कर है। दुष्ट लोग यदि किसी कारण मनुष्य को चींटी समझने लायक हो भी जाय तो भी कोई बात नहीं,मगर ईश्वर की तरफ से वे किसी तरह निश्चिन्त नहीं हो सकते और अपने-अपने कामों का फल अवश्य पाते है। क्या इन्हीं राजा बीरेन्दसिह और मेरे किस्से से तुम यह नसीहत नहीं ले सकते ? क्या तुम मायारानी माधवी अग्निदत्त और शिवदत्त वगैरह से भी अपने को बढकर समझते हो और नहीं जानते कि उन लोगों का अन्त किस तरह हुआ और हो रहा है ? फिर किस भरोसे पर तुम अपने को बुरी राह चलाया चाहते हो ? नि सन्देह तुम्हारा बाप बुद्धिमान है जो एक नामी और अदभुत शक्ति रखने वाला अमीर ऐयार होने और हर तरह की बेइज्जती सहने पर भी राजा बीरेन्द्रसिह का कृपापात्र बनने का ध्यान अपने दिल से दूर नहीं करता और तुम उसी भूतनाथ के लडके हो जो अपने दिल को काबू में नहीं रख सकते !

इस तरह की बहुत सी नसीहत भरी बातें राजा गोपालसिह ने इस ढग से नानक को कहीं कि उसके दिल पर असर कर गई वह राजा गोपालसिह के पैरों पर गिर पडा और जब उन्होंने उसे दिलासा देकर उठाया तो हाथ जोड़ के अपनी डबडबाई हुई ऑखें नीचे किए हुए बोला, मेरा अपराध क्षमा कीजिये ! यद्यपि मै क्षमा मागने योग्य नहीं हू परन्तु आपकी उदारता मुझे क्षमा देने योग्य है। अब मुझे अपनी ताबेदारी में लीजिये और हर-तरह से आजमाकर देखिये कि आपकी नसीहत का असर मुझ पर कैसा पडा और अब मै किस तरह आपकी खिदमत करता हू।'

इसके जवाब में गोपालसिह ने कहा "अच्छा हम तुम्हारा कसूर माफ करके तुम्हारी दर्खास्त कबूल करते है। तुम मेरे साथ आओ और जो कुछ मै कहू सो करो।

चौथा बयान

कमलिनी को देखकर दोनों कुमार शर्माए और मन में तरह-तरह की बातें सोचने लगे। देखते-दखते कमलिनी उनके पास आ गई और प्रणाम करके बोली, आप यहा जमीन पर क्यों बैठे हैं ? उस कमरे में चलकर बैठिए जहा फर्श बिछा है और सब तरह का आराम है।'

इन्द–मगर वहा अधकार तो जरूर होगा ?

कम–जी नहीं,वहा बखूबी रोशनी हो रही होगी (मुस्कुरा कर) क्योंकि यहाँ की रानी के मर जाने से यह बाग एक सुघड रानी के अधिकार में आ गया है और उसने आपकी खातिर में रोशनी जरूर कर रक्खी होगी।

इन्द–(कुछ शर्मिन्दगी के साथ) बस रहने दीजिए मै यहाँ की रानियों का मेहमान नहीं बनता जो कुछ बनना था सो बन चुका, अब तो तुम्हारी दिल्लगी का निशाना बनूगा।

कमलिनी–(हाथ जोड के) मेरी क्या मजाल जो आपसे दिल्लगी करू, अच्छा आप मेरे मेहमान बनिए और यहा से उठिये।

इन्द–क्या तुम नहीं जानती कि यहाँ अपने भी पराए होकर दु ख दने के लिए तैयार हो जाते हैं ?

भैरो–(कमलिनी से) आपने खयाल किया या नहीं ? यह मेरी पूजा हो रही है।

कम–होनी ही चाहिये आप इसी योग्य हैं। (इन्दजीतसिहसे मगर आप मुझ लौंडी पर किसी तरह का शक न करें। यदि आप यह समझते हों कि मैं वास्तव में कमलिनी नहीं हू तो मैं वहुत सी बातें उस जमाने की आपको याद दिलाकर अपने पर विश्वास करा सकती हू जिस जमान में आप तालाव वाले तिलिस्मी मकान नें मरे साथ रहते थे। (उस स्मय की दो-तीन गुप्त बातों का इशारा करके) कहिए अब भी मुझ पर शक है ?

इन्द–(बनावटी मुस्कुराहट क साथ) नहीं अब तुम पर शक तो किसी तरह का नहीं है मगर रज जरूर है।

कम–रज ! सो किस बात का ?

इन्द–इस बात का कि यहा आने पर तुमने जान बूझ के अपने को मुझसे छिपाया और मुझे तरद्दुद में डाला !

कम–(हसकर और कुमार का हाथ पकड के) अच्छा आप यहा से उठिये और उप कमरे में चलिए तो मैं आपकी सब बातों का जवाब दूगी। आप तो जरा सी बातों में रज हो जाते हैं। अगर आपके साथ किसी तरह का मसखरापन किया या हम लोगों को आपसे मिलने नहीं दिया तो आपकी भावज साहेबा ने अस्तु आपकी ऐसी बातों का जवाब भी वे ही देंगी और उनसे भी उसी कमरे में मुलाकात होगी।

इन्द–मेरी भावज साहेबा ! सो कौन, क्या लक्ष्मीदेवी ?

कम–जी हॉ वे उसी कमरे में बैठी आपका इन्तजार कर रही हैं चलिए।

इन्द–हॉ उनसे तो मै जरुर मिलूगा। जब से मैने यह सुना है कि तारा वास्तव में लक्ष्मीदेवी है 'तभी से मै उनसे मिलने के लिए बेताव हो रहा हू।

यह कहकर इन्दजीतसिह उठ खडे हुए और अपने सूखे हुए कपडे पहिर कर कमलिनी के साथ उसी कमरे की तरफ चले जिसमें पहिले भी कई दफे आराम कर चुके थे। उनके पीछे-पीछे आनन्दसिह और भैरोसिह भी गए।

इस समय कमलिनी मामूली ढग में न थी बल्कि बेशकीमत पौशाक और गहनों से अपने को सजाए हुए थी। एक तो यों ही किशोरी के मुकाबिले की खूबसूरत और हसीन थी तिस पर इस समय की बनावट और श्रृगार ने उसे और भी उभाड रक्खा था। यद्यपि आज उससे मिलने के पहिले कुमार तरह-तरह की बातें सोच रहे थे और इन्दानी तथा आनन्दी वाले मामले से शर्मिन्दा होकर जल्दी उससे मिलना नहीं चाहते थे मगर जब सामने आकर खडी हो गई तो सब बातें एक तरह पर थोडी देर के लिए भूल गये और खुशी-खुशी उसके साथ चलकर उस कमरे में जा पहुचे।

इस कमरे का दर्वाजा मामूली ढग पर बन्द था जो कमलिनी के धक्का देने से खुल गया और ज्यादे रोशनी के सबब भीतर के जगमगाते हुए सामान तथा कई औरतों पर दोनों कुमारों की निगाह पड़ी जो उन्हें देखते ही उठ खडी हुई और जिन में से एक को छोड बाकी की सभी ने कुँअर इन्दजीतसिह को और कई ने आनन्दसिह को भी प्रणाम किया।

वह औरत जिसने कुमार को सलाम नहीं किया लक्ष्मीदेवी थी और वह राजा गोपालसिह की जुबानी सुन चुकी थी कि दोनों कुमार उनके छोटे भाई हैं अस्तु दोनों कुमारों ने स्वय लक्ष्मी देवी को सलाम किया और उनकी पिछली अवस्था पर अफसोस करके पुन जमानिया की रानी बनने पर प्रसन्नता के साथ मुबारकवाद देने बाद और विषयों में भी देर तक उससे बातें करते रहे। इसके बाद किशोरी, कामिनी इत्यादि से बातचीत की नौबत पहुची। किशोरी और इन्दजीतसिह में तथा कामिनी और आनन्दसिह में सच्ची और बढी-चढी मुहब्बत थी परन्तु धर्म लज्जा और सभ्यता का पल्ला भी उन लोगों ने मजबूती के साथ पकडा हुआ था, इसलिए यद्यपि यहा पर कोई बडी-बूढी औरत मौजूद न थी जिससे विशेष लज्जा करनी पडती तथापि इन चारों ने इस समय बनिस्बत जुबान के विशेष करके आखों के इशारों तथा भावों ही में अपने दु ख दर्द और जुदाई के सदमे को झलका कर उपस्थित अवस्था तथा इस अनोखे मेल मिलाप पर प्रसन्नती प्रकट की। कमलिनी लाडिली कमला सर्यू और इन्दिरा आदि से भी कुशल क्षेम पूछने बाद इन लोगों में यों बातें होने लगीं —

इन्द–(लक्ष्मीदेवी से) आपको इस बात की शिकायत तो जरूर होगी कि आपको हद्द से ज्यादे दु ख भोगना पडा मगर यह जानकर आप अपना दु ख जरुर भूल गई होंगी कि भाई साहब ने कम्बख्त मायारानी की बदौलत जो कुछ कष्ट भोगा उसे भी कोई साधारण मनुष्य सहन नहीं कर सकता।

लक्ष्मीदेवी–नि सन्देह ऐसा ही है क्योंकि मुझे तो किसी न किसी तरह आजादी की हवा मिल भी रही थी मगर उन्हें अधेरी कोठरी में जिस तरह रहना पडा वैसा ईश्वर न करे किसी दुश्मन को भी नसीब हो।

इन्द–(मुस्कुराकर) मगर मैंने तो सुना था कि आप उनसे नाराज हो गईहैंऔर जमानिया जाने में

कम–(हस कर) ये बनिस्वत उनके जिन्न को ज्यादे पसन्द करती थीं।

लक्ष्मी–वास्तव में उन्होंने बडा भारी धोखा दिया था।

इन्द्र–जैसा कि आपने तारा बनकर कमलिनी को धोखा दिया था।

कमला–आपने ठीक कहा क्योंकि ऐयारी दोनों ही ने की थी।

कम–आफ जब मैं वह समय याद करती हू जब ये तारा बनकर मेरे यहा रहती और ऐयारी का काम करती थीं, तो मुझे आश्चर्य होता है। वास्तव में इनकी ऐयारी बहुत अच्छी होती थी और ये दुश्मनों का पता खूब लगाती थीं, रोहतासगढ पहाडी के नीचे जब मायारानी का ऐयार कचनसिह को मार कर आपको रथ पर सुला के ले गया था तब भी इन्होंने मुझे वह खबर कुछ ही देर पहिले पहुँचाई थी।

इन्द्र–(ताज्जुब से) हा ! तब तो इनका बहुत बड़ा अहसान मेरी गर्दन पर भी है ! ओफ, ! वह जमाना भी कैसा भयानक था ! मजा तो यह था कि दुश्मन लोग आपुस में लड़ मरते थे पर एक दूसरे को खबर नहीं होती थीं। देखो रोहतासगढ में मायारानी की चमेली ने तो माधवी पर वार किया और माधवी को मरत दम-तक इस बात का पता न लगा। अगर पता लग जाता तो क्या आज दिन माधवी मायारानी के साथ मिलकर यहाँ के तिलिस्मी बाग में आने की हिम्मत कभी करती ?

कम–कदापि नही (हस कर) मगर आश्चर्य तो यह है कि जिस माधवी और मायारानी ने इतना ऊधम मचा रक्खा था उन्हीं दोनों से आपने शादी कर ली। अफसोस तो यही कि उनके पापों ने उन्हें बचने न दिया और हम लोगों को मुबारकबाद देने का मौका न मिला !

इन्द्र–(शर्मा कर) तुम तो !

लक्ष्मी–(कुमार की बात काट कर कमलिनी से) बहिन तुम भी कैसी शोख हो ! कई दफे तुमसे कह चुकी कि इस बात का जिक्र न करना मगर आखिर तुमने न माना ! खैर अगर कुमार ने शादी किया तो किया फिर तुम्हें क्या ? तुम ताना मारने वाली कौन ? और फिर भूलचूक की बात ही क्या है इन्होंने कुछ जान बूझ के तो शादी की ही नहीं धोखे में पड़ गये। खबरदार अब इस बात का जिक्र कोई करने न पाये (कुमार से) हाँ तो बताइए कि हम लोगों का हाल आपको कुछ मालूम हुआ या नहीं ?

इन्द्र–मैं तो बहुत दिनों से तिलिस्म के अन्दर हू मगर बाहर का हाल जिसमें आप लोगों का हाल भी मिला हुआ था भाई साहब (गोपालसिह) बराबर सुना दिया करते थे और जो कुछ नहीं मालूम वह अब मालूम हो जायगा, क्योंकि ईश्वर की कृपा से आप लोगों का बहुत अच्छा समागम हुआ है, एक दूसरे की बीती कहने-सुनने का मौका आज से बढ कर फिर न मिलेगा। साथ ही इसके मै यह भी कहूगा कि आप (कमलिनी की तरफ इशारा करके) इन्हें बात-बात में डाटने या दबाने की तकलीफ न करें, ये जितना और जो कुछ मुझे कहें कहने दीजिए क्योंकि मै इनके हाथ बिका हुआ हू, इन्होंने हम लोगों के साथ जो कुछ सलूक किया है वह किसी से छिपा नहीं है और न उसका बोझ हम लोगों के से कभी उतर सकता है

कम–बस बस बस ज्यादे तारीफों की भरमार न कीजिए। अगर आप (सर्यू की तरफ देख के) चाची क्षमा कीजिए और जरा इस कमरे में जाकर (दोनों कुमारों और भैरोसिह की तरफ बताकर) इन लोगों के लिए खाने का इन्तजाम कीजिए।

सर्यू कमलिनी का मतलब समझ गई कि उसके सामने हसी-दिल्लगी की बातें करते इन लोगों को शर्म मालूम होती है और उचित भी यही है, अस्तु वह उठकर दूसरे कमरे में चली गई और तब कमलिनी ने पुन इन्द्रजीतसिह से कहा 'हा अगर मेरे हाथ बिके हुए हैं तो कोई चिन्ता नहीं, मैं आपको बड़ी खातिर के साथ अपने पास रक्खूगी।

किशोरी–(मुस्कुराती हुई) इनकी तावीज बना के गले में पहिर लेना।

कम–जी नहीं गले तो ये तुम्हारे मढे जायगे, मैं तो इन्हें हाथों पर लिए फिरूगी।

लक्ष्मी–बल्कि चुटकियों पर, क्योंकि तुम ऐसी ही शोख और मसखरी हो ! (कुमार से) आज हम लोगों के लिए बड़ी खुशी का दिन है, ईश्वर ने बड़े भागों से यह दिन दिखाया है अतएव अगर हम लोग हसी दिल्लगी में कुछ विशेष कह जाय तो रज न मानिएगा।

इन्द्रजीत–ताज्जुब है कि आप रज होने का जिक्र करती है ! क्या आप इस बात को नहीं जानती कि इन्हीं बातों के लिए हम लोग कब से तरस रहे है ! (कमलिनी की तरफ देख के और मुस्कुरा के) मगर आशा है कि अब तरसना न पडेगा।

कमलिनी–यह तो (किशोरी की तरफ बता के) इन्हें कहिए, तरसने की बात का जवाब तो यह ही दे सकेंगी।

किशोरी–ठीक है, क्योंकि आदमी जब किसी के हाथ बिक जाता है तो आजादी की हवा खाने के लिये उसे तरसना ही पडता है।

इन्द्रजीत–(बात का ढग दूसरी तरफ बदलने की नीयत से कमलिनी की तरफ देखकर) हॉ यह ता बताओं की नानक और तुम लोगों से मुलाकात हुई थी या नहीं ?

कमलिनी–जी नहीं, उस पर तो आपका बडा रज होगा !

इन्द्रजीत–हा इसलिये कि उसने अपनी चाल-चलनको बहुत विगाड रक्खा है। (कमला से) तुमने यह तो सुना ही होगा कि नानक भूतनाथ का लडका है और भूतनाथ तुम्हारा पिता है !

कमला–जी हॉ मै सुन चुकी हू, मगर वे (लम्बी सॉस लेकर) आजकल अपनी भूलों के सबब आप लोगों के मुर्जरिम बन रहे है !

इन्दजीत–चिन्ता मत करो, पिछले जमाने में अगर भूतनाथ स किसी तरह का कसूर हो गया तो क्या हुआ, आज कल वह हम लोगों का काम बडी खूबी और नेकनीयती के साथ कर रहा है और तुम विश्वास रक्खो कि उसका सब कसूर माफ किया जायगा।

कमला–यदि आप की कृपा हा तो सब अच्छा ही होगा, (कमलिनी की तरफ इशारा करके) इन्होंने भी मुझे ऐसी ही आशा दिलाई हे।

लक्ष्मीदेवी–इनका तो वह ऐयार ही ठहरा, इन्हीं के दिए हुए तिलिस्मी खञ्जर की वदौलत उसने वडे-वड़ेकाम किए और कर रहा है। हां खूब याद आया (इन्द्रजीतसिह से) मैं आपसे एक बात पूछूगी।

इन्दजीत–पूछिये।

लक्ष्मीदेवी–तालाब वाले तिलिस्मी मकान से थोडी दूर पर जगल में एक खूब सूरत नहर हे और वहीं पर किसी योगिराज की समाधि है

इन्दजीत–हा-हा, मै उस स्थान का हाल जानता हू। यद्यपि मैं वहा कभी गया नहीं, मगर रिक्तग्रन्थ 'की वदौलत मुझे वहा का हाल बखूबी मालूम हो गया है, (कमलिनी की तरफ देखकर) इन्हें भी तो मालूम ही होगा क्योंकि वह रिक्तग्रन्थ बहुत दिनों तक इनके पास था।

कम–जी हा उसी रिक्तग्रन्थ की बदौलत मुझ उसका कुछ हाल मालूम हुआ था और उसी जगह से वह तिलिस्मी खजर और नेजा मैंने निकाला था *मगर मैं उस रिक्तग्रन्थ की लिखावट अच्छी तरह समझ नहीं सकती थी इसलिए उसका ठीक-ठीक और पूरा हाल मैं न जान सकी।

लक्ष्मी–इसी सवब से मेरी बातों का ठीक जवाब न दे सकी तब मैंने सोचा कि आपसे मुलाकात होने पर पूछूगी कि क्या वहॉ भी कोई तिलिस्म है ?

इन्द–जी नहीं, वहॉ कोई तिलिस्म नहीं है। जिस दार्शनिक महात्मा की वह समाधि है उन्होंने यह तिलिस्म तथा रोहतासगढ का तहखाना तालाव वाला तिलिस्मी खण्डहर जिसमें मे मुर्दा बनाकर पहुचाया गया था अथवा जिसमें किशोरी, कामिनी और भैरोसिह वगैरह फस गये थ बनवाया है और चुनारगढ वाला तिलिस्म उनके गुरु का बनवाया हुआ हे यहॉ के राजा जिन्होंने यह तिलिस्म बनवाया था उन्हीं के शिष्य थे। उन महात्मा ने जीते जी समाधि ल ली थी और उन्होंने अपना योगाश्रम भी उसी स्थान में बनवाया था। कमलिनी ने तिलिस्मी खजर उसी योगाश्रम से निकाला हागा क्योंकि वहॉ भी वडी-बडी अनूठी चीजें हैं।

कम–जी हा और उसी जगह मैंने इस बात की कसम भी खाई थी कि भूतनाथ और नानक को अपना भाई समझूगी अगर ये लोग हम लोगों के साथ दगा न करेंगे। यद्यपि यह आश्चर्य की बात है कि अभी तक भूतनाथ के भेदों का सही-सही पता नहीं लगता फिर भी चाहे जो हो यह तो मै जरूर कहूगी कि भूतनाथ ने हम लोगों के साथ बडी नेकिया की है।

इन्द–इसमें किसी को क्या शक हो सकता है ? भूतनाथ वास्तव में बडा भारी ऐयार है। हॉ यह तो बताओ कि नानक यहॉ कैसे आ पहुचा ?

कम–भला मै इस बात को क्या जानू ?

आनन्द–(मुस्कराते हुए) अपनी रामभोली को खोजता हुआ आया होगा।

---

* देखिये छठवा भाग तीसरा बयान।

लाडिली–उसे मालूम हो चुका है कि उसकी रामभोली को मरे मुददत हो गई।

आनन्द–खैर उसकी तस्वीर खोजने आया होगा !

लाडिली–या किसी की बारात में आया होगा !

लाडिली की इस आखिरी बात ने सभों को हसा दिया और आनन्दसिह शर्मा कर चुप हो रहे।

इन्द–(कमलिनी से) इस बात का कुछ पता न लगा कि अग्निदत्त को किसने मारा था ! (किशोरी से) शायद इसका जवाब तुम दे सकती हो ?

किशोरी–अग्निदत्त को मायारानी के ऐयारों ने मारा था * और उन्हीं लोगों ने मुझे ले जाकर उस तिलिस्मी खण्डहर में कैद किया था।

भैरो–(कमलिनी से) हा खूब याद आया, हमने सुना था कि उस समय जब हम लोग शाहदरवाजा बन्द हो जाने के कारण दु खी हो रहे थे तब आपने ही विचित्र ढग से वहा पहुचकर हम लोगों की सहायता की थी। आपको इन बातों की खबर कैसे मिली थी ? * *

कम–(लक्ष्मीदेवी की तरफ इशारा करके) उन दिनों ये ऐयारी कर रही थीं और उन्होंने ही उन बातों की खबर पहुचाई थी तथा यह भी कहा था कि खण्डहर वाली बावली साफ हो गई है । उस बावली में पहुचने का रास्ता उसी योगिराज की समाधि के पास ही से है। अगर वह बावली खुदकर साफ न हो गई होती तो मै शाहदर्वाजा खोल न सकती क्योंकि ऊपर की तरफ से खण्डहर के अन्दर पहुचना कठिन हो रहा था और भीतर मायारानी के आदमी उस तहखाने में जा पहुचे थे। वह भी बडा कठिन समय था।

कमला–उसी समय राजा शिवदत्त भी वहाँ आकर

कम–हा, उस समय भी भूतनाथ ने बडी मदद दी रूहा बन कर अगर वह राजा शिवदत्त को पकड न लिए होता तो गजब ही हो जाता †

भैरो–मै तो कुमार की जिन्दगी से बिल्कुल ही नाउम्मीद हो गया था।

कम–(कुमार से) हा यह तो बताइये कि आप वहा किस तरह पहुचाये गये थे इसमें कोई शक नहीं कि आपको मायारानी के आदमियों ने गिरफ्तार किया था मगर इस बात का पता अभी तक न लगा कि उस मकान के अन्दर आप तथा दवीसिह वगैरह ने क्या देखा कि हसते-हसते उसके अन्दर कूद गये। और कूदने के बाद फिर क्या हुआ ?

इन्द–कूद पडने के बाद फिर मुझे तनोबदन की सुध न रही और यही हाल उन सभों का भी हुआ जो मेरे पहिले उसके अन्दर कूद चुके थे मगर यह अभी न बताऊगा कि उसके अन्दर कौन सी हसाने वाली चीज थी।

कम–यही बात हम लोगों ने जब देवीसिह से पूछी तो उन्होंने भी इनकार करके कहा था कि माफ कीजिए उस विषय में तब-तक कुछ न कहूगा जब तक इन्दजीतसिह मेरे सामने मौजूद न होंगे क्योंकि उन्होंने इस बात को छिपाने के लिए मुझे सख्त ताकीद कर दी है****। ताज्जुब है कि आपने अपने साथियों को भी इस तरह की ताकीद कर दी और आज स्वय भी उसके बताने स इनकार करते है !

इन्द्र–उसमें कोई ऐसी बात नहीं थी जिसके बताने से मुझें परहेज हो मगर मै चाहता हू कि वही तमाशा तुम लोगों को तथा और अपने सभों को दिखा कर बताऊ कि उस मकान के अन्दर बस यही था नि सन्देह तुम लोगों की भी वही दशा होगी। कम–तो आज ही वह तमाशा क्यों नहीं दिखाते ?

इन्द्र–आज वह तमाशा मै नहीं दिखा सकता हा भाई साहब (गोपालसिह) अगर चाहें तो दिखा सकते हैं मगर इसके लिए जल्दी ही क्या है ?

लक्ष्मी–खैर जाने दीजिये आखिर एक न एक दिन मालूम हो ही जायगा। अच्छा यह बताइये कि आप जब इस तिलिस्म में या इसके बगल वाले बाग में आये थे तो उस बुड्ढे तिलिस्मी दारोगा से मुलाकात हुई थी या नहीं ?

इन्द–हा हुई थी बडा ही शैतान है क्या तुम लोगों से वह नहीं मिला ?

लक्ष्मी–भला वह कभी बिना मिले रह सकता है ? उसने तो हम लोगों को भी धोखे में डालना चाहा था मगर तुम्हारे

---

*देखिये पाचवा भाग चौथा बयान।

**देखिये छठवा भाग पहिला बयान।

***देखिए छठवा भाग, दूसरा बयान।

†देखिए छठवा भाग चौथा बयान।

****देखिए दसवा भाग तीसरा बयान।

भाई साहब ने पहिले हीउसकी शैतानी से हम लोगों को होशियार कर दिया था इसलिए हम लोगों का वह कुछ बिगाड न सका।

कम–मगर आपने उसकी बात मान ली और इसलिये उसने भी आपसे खुश होकर आपकी शादी करा दी। आपको तो उसका अहसान मानना चाहिये

लक्ष्मी–(कमलिनी को झिडक कर) फिर तुम उसी रास्ते पर चलीं ! खामखाह एक आदमी को

इन्द्रजीत–अबकी अगर वह मुझे मिले तो उसे बिना मारे कभी न छोड़ू चाहे जो हो।"

इन्द्रजीतसिह की इस बात पर सब हस पडे और इसके बाद लक्ष्मीदवी ने कुमार से कहा, 'अच्छा अब यह बताइये कि मेरे चले जाने के बाद आपने तिलिस्म में क्या किया और क्या देखा ?"

इसी समय सर्यू भी वहीं आ पहुची और बोली, चलिये पहिले खा-पी लीजिए तब बातें कीजिये।'

लक्ष्मीदेवी के जिद करने से दोनों कुमारों को उठना पडा और भोजन इत्यादि से छुट्टी पाने बाद फिर उसी ठिकाने बैठ कर गप्पें उडने लगीं। कुमार ने अपना बिल्कुल हाल बयान किया और वे सब आश्चर्य से सब कथा सुनती रहीं। इसके बाद कुमार ने इन्दिरा से उसका बाकी किस्सा पूछा।

पाँचवां बयान

दूसरे दिन तेजसिह को उसी तिलिस्मी इमारत में छोड़ कर और जीतसिह को साथ लेकर राजा वीरेन्द्रसिह अपने पिता से मिलने के लिए चुनार गए। मुलाकात होन पर बीरेन्द्रसिह ने पिता के पैरों पर सर रक्खा और उन्होंने आर्शीवाद देने के बाद बडे प्यार से उठा कर छाती से लगाया और सफर का हाल चाल पूछने लगें।

राजा साहब की इच्छानुसार एकान्त हो जाने पर बीरेन्द्रसिह ने सब हाल अपने पिता से बयान किया जिसे वे बडी दिलचस्पी के साथ सुनते रहे। इसके बाद पिता के साथ ही साथ महल में जाकर अपनी माता से मिले और सक्षेप में सब हाल कहकर बिदा हुए तब चन्द्रकान्ता के पास गए और उसी जगह चपला तथा चम्पा से मिल कर देर तक अपने सफर का दिलचस्प हाल कहते रहे।

दूसरे दिन राजा बीरेन्द्रसिह अपने पिता के पास एकान्त में बैठे हुए बातों में राय ले रहे थे जब जमानिया से आये हुए एक सवार की इत्तिला मिली जो राजा गोपालसिह की चीठी लाया था। आज्ञानुसार वह हाजिर किया गया, सलाम करके उसने राजा गोपालसिह की चीठी दी और तब विदा देकर बाहर चला गया।

यह चीठी जो राजा गोपालसिह ने भेजी थी, नाम ही को चीठी थी, असल में यह एक ग्रन्थ ही मालूम होता था जिसमें राजा गोपालसिह ने दोनों कुमार किशोरी कामिनी सर्यू तारा मायारानी और माधवी इत्यादि का खुलासा किस्सा जो कि हम ऊपर के बयानों में लिख आये है और जो राजा बीरेन्द्रसिह को अभी मालूम नहीं हुआ था तथा अपने यहा का भी कुछ हाल लिख भेजा था और साथ ही यह भी लिखा कि आप लोग उसी खण्डहर वाली नई इमारत में रह कर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह के मिलने का इन्तजार करें' इत्यादि।

राजा सुरेन्दसिह को यह जानकर वडी प्रसन्नता हुई कि हम और राजा गोपालसिह असल में एक ही खानदान की यादगार हैं और इन्द्रजीतसिह तथा आनन्दसिह से भी अब बहुत जल्द मुलाकात हुआ चाहती है, अस्तु यह बात तै पाई कि सब कोई उसी तिलिस्मी खण्डहर वाली इमारत में चलकर रहें और उसी जगह भूतनाथ का हाल-चाल मालूम करें। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात् राजा सुरेन्दसिह, बीरेन्द्रसिह महारानी चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा वगैरह सभों की सवारी वहाँ आ पहुची और मायारानी दारोगा तथा और कैदियों को भी उसी जगह लाकर रखने का इन्तजाम किया गया।

हम बयान कर चुके हैं कि इस तिलिस्मी खण्डहर के चारों तरफ अब बहुत बडी इमारत बन कर तैयार हो गई है जिसके बनवाने में जीतसिह ने अपनी बुद्धिमानी का नमूना बडी खूबी के साथ दिखाया है --इत्यादि। अस्तु इस समय इन लोगों को यहा ठहरने में तकलीफ किसी तरह की नहीं हो सकती थी बल्कि हर तरह का आराम था।

पश्चिम तरफ वाली इमारत के ऊपर वाले खडों में कोठरिया और बालाखानों के अतिरिक्त बडे-बडे कमरे थे जिनमें से चार कमरे इस समय बहुत अच्छी तरह सजाए गये थे और उनमें महाराज सुरेन्द्रसिह, जीतसिह, बीरेन्द्रसिह और तेजसिह का डेरा था। यहा भूतनाथ के डेरे वाला बारह नम्बर का कमरा ठीक सामने पड़ता था और वह तिलिस्मी चबूतरा भी यहा से उतना ही साफ दिखाई देता था जितना भूतनाथ के डेरे से।

इन कमरों के पिछले हिस्से में बाकी लोगों का डेरा था और बचे हुए ऐयारों को इमारत के बाहरी हिस्से में स्थान

मिला था और उस तरफ थोडे से फौजी सिपाहियों और शागिर्द पेश वालों को भी जगह दी गई थी।

इस जगह राजा जीतसिंह तथा तेजसिंह के भी आ जाने से भूतनाथ तरद्दुद में पड गया और सोचने लगा कि 'उस तिलिस्मी चबूतरे के अन्दर से निकलकर मुझसे मुलाकात करने वाले या बलभद्रसिंह को ले जाने वाले आदमियों का हाल कहीं राजा साहब या उनके ऐयारों को मालूम न हो जाय और मैं एक नई आफत में न फस जाऊ क्योंकि उनका पुन उस चबूतरे के नीचे से निकलकर मुझसे मिलने आना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है। राजा बीरेन्द्रसिंह अपने कमरे के बाहर बारामदे में फर्श पर बैठे अपने मित्र तेजसिंह से धीरे-धीरे कुछ बातें कर रहे है। कमरे के अन्दर इस समय एक हल की रोशनी हो रही है सही मगर कमरे का दर्वाजा घूमा रहने के सबब यह रोशनी बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह तक नहीं पहुच रही थी जिससे ये दोनों एक प्रकार से अन्धकार में बैठे हुए थे और दूर से इन दोनों का कोई देख नहीं सकता था। नीचे बाग के लोहे के बड-बडे खम्भों पर लालटेन जल रही थीं फिर भी बाग की घनी सब्जी और लताओं का सहारा उसमें छिप कर घूमने वालों के लिए कम न था। उस दालान में भी कन्दील जल रहा था जिसमें तिलिस्मी चबूतरा था और इस समय राजा बीरेन्द्रसिंह की निगाह भी जो तेजसिंह से बात कर रहे थे उसी तिलिस्मी चबूतरे की तरफ ही थी।

यकायक चबूतरे के निचले हिस्से में रोशनी देख कर राजा बीरेन्द्रसिंह को ताज्जुब हुआ और उन्होंने तेजसिंह का ध्यान भी उस तरफ दिलाया। उस रोशनी के सबब से साफ मालूम होता था कि चबूतरे का अगला हिस्सा (जो बीरेन्द्रसिंह की तरफ पडता था) किवाड के पल्ले की तरह खुल कर जमीन के साथ लग गया है और दो आदमी एक गठरी लटकाये हुए चबूतरे से बाहर की तरफ ला रहे है। उन दोनों के बाहर आने के साथ ही चबूतरे के अन्दर वाली रोशनी बन्द हो गई और उन दोनों में से एक ने दूसरे के कधे पर चढकर वह कन्दील भी बुझा दी जो उस दालान में जल रही थी।

कन्दील बुझ जाने से वहाँ अन्धकार हो गया और इसके बाद मालूम न हुआ कि वहाँ क्या हुआ या क्या हो रहा है। तेजसिंह और बीरेन्द्रसिंह उसी समय उठ खडे हुए और हाथ में नगी तलवार लिए तथा एक आदमी को लालटेन लेकर वहा जाने की आज्ञा देकर उस दालान की तरफ रवाना हुए जिसमें तिलिस्मी चबूतरा था मगर वहाँ जाकर सिवाय एक गठरी के जो उसी चबूतरे के पास पडी हुई थी और कुछ नजर न आया। जब आदमी लालटेन लेकर वहा पहुचा तो तेजसिंह ने अच्छी तरह घूमकर जाच की मगर नतीजा कुछ भी न निकला न तो यहा कोई आदमी दिखाई दिया और न उस चबूतरे ही में किसी तरह का निशान या दर्वाजे का पता लगा।

तेजसिंह ने जब वह गठरी खोली तो एक आदमी पर निगाह पडी। लालटेन की रोशनी में बडे गौर से देखने पर भी तेजसिंह या बीरेन्द्रसिंह उसे पहिचान न सके अस्तु तेजसिंह ने उसी समय जफील बजाई जिसे सुनते ही कई सिपाही और खिदमतगार वहाँ इकट्ठे हो गये। इसके बाद बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह उस आदमी को उठवा कर राजा सुरेन्द्रसिंह के पास ले आए जो इस समय का शोर-गुल सुन कर जाग चुके थे और जीतसिंह को अपने पास बुलवा कर कुछ बातें कर रहे थे।

उस बेहोश आदमी पर निगाह पडते ही जीतसिंह पहिचान गये और बोल उठे—"यह तो बलभद्रसिंह है !"

बीरेन्द्र—(ताज्जुब से) हैं, यही बलभद्रसिंह है जो यहा से गायब हो गये थे !!

जीत—हा यही है ताज्जुब नहीं कि जिस अनूठे ढग से ये यहा पहुचाए गये हैं उसी ढग से गायब भी हुए हों।

सुरेन्द—जरूर ऐसा ही हुआ होगा, भूतनाथ पर व्यर्थ का शक किया जाता था। अच्छा अब इन्हें होश में लाने की फिक्र करो और भूतनाथ को बुलाओ।

तेज—जो आज्ञा।

सहज ही में बलभद्रसिंह चैतन्य हो गये और तब तक भूतनाथ भी वहाँ आ पहुँचा। राजा सुरेन्द्रसिंह जीतसिंह और तेजसिंह को सलाम करने बाद भूतनाथ बैठ गया और बलभद्रसिंह से बोला—

भूत—कहिये कृपानिधान आप कहा छिप गये थे और कैसे प्रकट हो गये ? सभी को मुझ पर सन्देह हो रहा है।

पाठक इसके जवाब में बलभद्रसिंह ने यह नहीं कहा कि 'तुम्हीं ने तो मुझे बेहोश किया था' जिसके सुनने की शायद आप इस समय आशा करते होंगे, बल्कि बलभद्रसिंह ने यह जवाब दिया कि 'नहीं भूतनाथ तुम पर कोई क्यों शक करेगा ? तुमने ही तो मेरी जान बचाई है और तुम्हीं मेरे साथ दुश्मनी करोगे ऐसा भला कौन कह सकता है ?

तेज—खैर यह बताइये कि आपको कौन ले गया था और कैसे ले गया था ?

बल—इसका पता तो मुझे भी अभी तक नहीं लगा कि वे कौन थे जिनके पाले मैं पड गया था हा जो कुछ मुझ पर

बीती है उसे अर्ज कर सकता हू मगर इस समय नही, क्योंकि मेरी तबीयत कुछ खराब हो रही हे, आशा है कि अगर मैं दो-तीन घण्ट सो सकूगा तो सुबह तक ठीक हो जाऊगा।

सुरेन्द्र–कोई चिन्ता नहीं आप इस समय जाकर आराम कीजिए।

जीत–यदि इच्छा हो तो अपने उसी पुराने डेरे में भूतनाथ के पास रहिए नहीं तो कहिए आपके लिए दूसरे डेरे का इन्तजाम कर दिया जाय।

बलभद्र–जी नहीं मैं अपने मित्र भूतनाथ के साथ ही रहना पसन्द करता हूँ।

बलभद्रसिह को साथ लिए भूतनाथ अपने डेरे की तरफ रवाना हुआ, इधर राजा सुरेन्द्रसिह जीतसिह बीरेन्द्रसिह और तेजसिह उस तिलिस्मी चबूतरे तथा बलभद्रसिह के बारे में बात-चीतकरने लगे तथा अन्त में यह निश्चय किया कि बलभदसिह जो कुछ कहेंगे उस पर भरासा न करके अपनी तरफ से इस बात का पता लगाना चाहिए कि उस तिलिस्मी चबूतरे की राह से आने जान वाले कौन है उस दालान में ऐयारों का गुप्त पहरा मुकर्रर करना चाहिए।

छठवां बयान

कुमार की आज्ञानुसार इन्दिरा ने अपना किस्सा यों बयान किया –

इन्दिरा–मै कह चकी हू कि ऐयारी का कुछ सामान लकर जब मै उस खोह के बाहर निकली और पहाड तथा जगल पार करके मैदान में पहुची तो यकायक मेरी निगाह एक ऐसी चीज पर पडी जिसने मुझे चौंका दिया और मैं घबडा-कर उस तरफ देखने लगी।

जिस चीज को देखकर मैं चौंकी वह एक कपडा था जो मुझसे थोडी ही दूर पर ऊचे पेड की डाल के साथ लटक रहा था और उस पेड के नीचे मेरी मा बैठी हुई कुछ सोच रही थी। जब मै दौडती हुई उसके पास पहुची ता वह ताज्जुब भरी निगाहों से मेरी तरफ देखने लगी क्योंकि उस समय ऐयारी से मेरी सूरत बदली हुई थी। मैंने बडी खुशी के साथ कहा 'मॉ, तू यहा कैसे आ गई ?' जिसे सुनते ही उसने उठ कर मुझे गले से लगा लिया और कहा, 'इन्दिरा, यह तेरा क्या हाल है ? क्या तूने ऐयारी सीख ली है 'मैने मुख्तसर में अपना सब हाल बयान किया मगर उसने अपने विषय में केवल इतना ही कहा कि अपना किस्सा मे आग चल कर तुझसे बयान करूगी इस समय केवल इतना ही कहूगी कि दारोगा ने मुझे एक पहाडी में कैद किया था जहा से एक स्त्री की सहायता पाकर परसों मै निकल भागी मगर अपने घर का रास्ता न पाने के कारण इधर-उधर भटक रही हूँ।

अफसोस उस समय मैने बडा ही धोखा खाया और उसके सबब से मै बडे सकट में पड गई क्योंकि वह वास्तव में मरी मॉ न थी बल्कि मनोरमा थी और यह हाल मुझे कई दिनों के बाद मालूम हुआ। मै मनोरमा को पहिचानती न थी मगर पीछे मालूम हुआ कि वह मायारानी की सखियों में से थी और गौहर के साथ वह वहॉ तक गई थी मगर इसमें कोई शक नहीं कि वह बडी शैतान बेदर्द और दुष्टा थी। मेरी किस्मत में दु ख भोगना बदा हुआ था जो मै उसे मॉ समझ कर कई दिनों तक उसक साथ रही और उसने भी नहाने धोने के समय अपने को मुझसे बहुत बचाया। प्राय कई दिनों के बाद वह नहाया करती और कहती कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है।

साथ ही इसक यह भी शक हो सकता है कि उसने मुझे जान से क्यों नहीं मार डाला ? इसके जवाब में मै कह सकती हू कि वह मुझे जान से मार डालने के लिए तैयार थी, मगर वह भी उसी कम्बख्त दारोगा की तरह मुझसे कुछ लिखवाया चाहती थी। अगर मैं उसी की इच्छानुसार लिख देती तो वह नि सन्देह मुझे मार कर बखेडा तै करती, मगर ऐसा न हुआ।

जब उसने मुझसे यह कहा कि रास्ते का पता न जानने के कारण से भटकती फिरती हू तब मुझे एक तरह का तरद्दुद हुआ मगर मैंने कुछ जोश के साथ उसी समय जवाब दिया– कोई चिन्ता नहीं मैं अपने मकान का पता लगा लूगी।

मनो–मगर साथ ही इसके मुझे एक बात और भी कहनी है।

मैं–वह क्या ?

मनो–मुझे ठीक खबर लगी है कि कम्बख्तदारोगा ने तेर बाप को गिरफ्तार कर लिया है और इस समय वह काशी में मनोरमा के मकान में कैद है।

मैं–मनोरमा कौन ?

मनो–राजा गोपालसिह की स्त्री लक्ष्मीदेवी (जिसे अब लाग मायारानी के नाम से पुकारते है) की सखी

मैं–असली लक्ष्मीदेवी से गोपालसिंह की शादी हुई ही नहीं वह बेचारी तो

म्नो–(बात काट कर) हा-हा यह हाल मुझे भी मालूम है मगर इस समय जो राजरानी बनी हुई है लोग तो उसी कौन लक्ष्मीदेवी समझे हुए हे इसी से मैंने उस लक्ष्मीदेवी कहा !

मैं–(ऑखों में आसू भरकर) तो क्या मेरा बाप भी कैद हो गया ?

मनो–बेशक मैंने उसके छुडाने का भी बन्दोबस्त कर लिया है क्योंकि तुझे तो शायद मालूम ही होगा कि तेरे बाप ने मुझे भी थोडी बहुत ऐयारी सिखा रक्खी है अस्तु वही ऐयारी इस समय मेरे काम आई और आवेगी।

मैं–(ताज्जुब से) मुझे तो नहीं मालूम कि पिताजी ने तुम्हे भी ऐयारी सिखाई है !

मनोरमा–ठीक है तू उन दिनों बहुत नादान थी इसलिए आज वे बातें तुझे याद नहीं है पर मेरा मतलब यही है कि मैं कुछ ऐयारी जानती हूँ और इस समय तेरे बाप को छुडा भी सकती हूँ।

मनोरमा की यह बात ऐसी थी कि मुझे उस पर शक हो सकता था मगर उसकी मीठी-मीठी बातों ने मुझे धोखे में डाल दिया और सच तो यों है कि मेरी किस्मत में दु ख भोगना बदा था अस्तु मैंने कुछ सोचकर यही जवाब दिया कि अच्छा जो उचित समझो सो करो। ऐयारी तो थोडी सी मुझे भी आ गई और इसका हाल भी मैं तुम्हें कह चुकी हू कि चम्पा ने मुझे अपनी चेली बना लिया है ।

मनोरमा–हा ठीक है तो अब सीधे काशी ही चलना चाहिए और वहॉ चलने का सबसे ज्यादे सुभीता डोंगी पर है इसलिए जहा तक जल्द हो सके गगा किनारे चलना चाहिए वहा कोई न कोइ डोंगी मिल ही जायगी।

मैं–बहुत अच्छा चलो।

उसी समय हम लोग गगा की तरफ रवाना हो गए और उचित समय पर वहा पहुचकर अपने योग्य डोंगी किराये पर ली। डोंगी किराए करने में किसी तरह की तकलीफ न हुई क्योंकि वास्तव में डोंगी वाले भी उसी दुष्ट मनोरमा के नोकर थे मगर उस कम्बख्त ने ऐसे ढग से बातचीत की कि मुझे किसी तरह का शक न हुआ या यों समझिए कि मै अपनी मॉ से मिलकर एक तरह पर कुछ निश्चिन्त सी हो रही थी। रास्ते ही में मनोरमा ने मल्लाहों से इस किस्म की बातें भी शुरु कर दीं कि काशी पहुचकर तुम्हीं लोग हमारे लिए एक छोटा सा मकान भी किराए पर तलाश कर देना इसके बदले में तुम्हें बहुत कुछ इनाम दूँगी ।

मुख्तसर यह कि हम लोग रात के समय काशी पहुचे। मल्लाहों द्वारा मकान का बन्दोबस्त हो गया और हम लोगों ने उसमें जाकर डेरा भी डाल दिया। एक दिन उसमें रहने के बाद मनोरमा ने कहा कि बेटी तू इस मकान के अन्दर दवाजा बन्द करके बैठ तो मैं जाकर मनोरमा का हाल दरियाफ्त कर आऊ। अगर मौका मिला तो मै उसे जान से मार डालूगी और तब स्वय मनोरमा बन कर उसके मकान असबाब और नौकरों पर कब्जा करके तुझे लेने के लिए यहॉ आऊगी उस समय तू मुझे मनोरमा की सूरत शक्ल में देखकर ताज्जुब न कीजियो जब मैं तेरे सामने आकर 'चापगेच शब्द कहू तब समझो जाइयो कि यह वास्तव में मेरी मॉ है मनोरमा नहीं क्योंकि उस समय कई सिपाही और नौकर मुझे मालिक समझकर आज्ञानुसार मेरे साथ होंगे। तेरे बारे में मैं उन लोगों में यही मशहूर करुगी कि यह मेरी रिश्तेदार है इसे मैने गोद लिया है और अपनी लडकी बनाया है। तेरी जरुरत की सब चीजें यहा मौजूद हैं तुझे किसी तरह की तकलीफ न होगी ।

इत्यादि बहुत सी बातें समझा बुझाकर मनोरमा मकान के बाहर हो गई और मैंने भीतर से दवाजा बन्द कर लिया मगर जहा तक मेरा ख्याल है वह मुझे अकेला छोडकर न गई होगी बल्कि दो-चार आदमी उस मकान के दर्वाजे पर या इधर उधर हिफाजत के लिए जरूर लगा गई होगी।

आफ आह उसने अपनी बातों और तर्कीबों का ऐसा मजबूत जाल बिछाया कि मै कुछ कह नहीं सकती। मुझे उस पर रत्ती भर भी किसी तरह का शक न हुआ और मै पूरा धोखा खा गई। इसके दूसरे दिन वह मनोरमा बनी हुई कई नौकरों को साथ लिए मेरे पास पहुची और चापगेच' शब्द कह कर मुझे अपना परिचय दिया। मैं यह समझ कर बहुत प्रसन्न हुई कि मॉ ने मनोरमा को मार लिया अब मेरे पिता भी कैद से छूट जायेंगे। अस्तु जिस रथ पर सवार होकर मुझे लेने के लिए आई थी उसी पर मुझे अपने साथ बैठाकर वह अपने घर ले गई और उस समय मै हर तरह से उसके कब्जे में पड गई।

मनोरमा के घर पहुचकर मैं उस सच्ची मुहब्बत को खोजने लगी जो मा को अपने बच्चे के साथ होती है मगर मनोरमा में वह बात कहा से आती ? फिर भी मुझे इस बात का गुमान न हुआ कि यहा धोखे का जाल बिछा हुआ है जिसमें मै फस गई हू बल्कि मैंने यह समझा कि वह मेरे पिता को छुडाने की फिक्र में लगी हुई है और इसी से मेरी तरफ ध्यान नहीं देती और वह मुझसे घडी-घडी यही बात कहा भी करती कि 'बेटी, मै तेरे बाप को छुडाने की फिक्र में पागल हो रही हूँ ।

जब तक मै उसके घर में बेटी कहला कर रही तब तक न तो उसने स्नान किया और न अपना शरीर ही देखने का कोई ऐसा मौका मुझे दिया जिसमे मुझ को शक होता कि यह मेरी माँ नहीं बल्कि दूसरी औरत है। और हा मुझे भी वह असली सूरत में रहने नहीं देती थी, चेहरे में कुछ फर्क डालने के लिए उसने एक तेल बना कर मुझे दे दिया था जिसे दिन में एक या दो दफे मै नित्य लगा लिया करती थी। इससे केवल मेरे रंग में फर्क पड गया था और कुछ नहीं।

उसके यहा रहने वाले सभी मेरी इज्जत करते और जो कुछ मै कहती उसे तुरन्त ही मान लेते मगर मै उस मकान के हाते के बाहर जाने का इरादा नहीं कर सकती थी। कभी अगर ऐसा करती तो सभी लोग मना करते और रोकने को तैयार हो जाते।

इसी तरह वहा रहते मुझे कई दिन बीत गए। एक दिन जब मनोरमा रथ पर सवार होकर कहीं बाहर गई थी मैं समझती हू कि मायारानी से मिलने गई होगी, सध्या के समय जब थोडा सा दिन बाकी था मैं धीरे-धीरे बाग में टहल रही थी कि यकायक किसी का फेंका हुआ पत्थर का छोटा सा टुकडा मेरे सामने आकर गिरा। जब मैने ताज्जुब से उसे देखा तो उसमें बंधे कागज के एक पुरजे पर मेरी निगाह पडी। मैने झट उठा लिया और पुर्जा खोल कर पढा उसमें यह लिखा हुआ था —

अब मुझे निश्चय हो गया कि तू इन्दिरा है अस्तु तुझे होशियार करे देता हू और कहे देता हू कि तू वास्तव में मायारानी की सखी मनोरमा के फन्दे में फसी हुई है। यह तेरी मा बन कर तुझे फसा लाई है और राजा गोपालसिह के दारोगा की इच्छानुसार अपना काम निकालने के बाद तुझे मार डालेगी। मुझे जो कुछ कहना था कह दिया, अब जैसा तू उचित समझ कर। तुझे धर्म की शपथ है इस पुर्जे को पढ कर तुरन्त फाड दे।

मैंने उस पुर्जे को पढने बाद उसी समय टुकडे-टुकडे करके फेंक दिया और घबडाकर चारो तरफ देखने अर्थात उस आदमी को ढूढने लगी जिसने वह पत्थर का टुकडा फेंका था मगर कुछ पता न लगा और न कोई मुझे दिखाई ही पडा।

उस पुर्जे के पढने से जो कुछ मेरी हालत हुई मै बयान नहीं कर कर सकती। उस समय मै मनोरमा के विषय में ज्यों-ज्यों पिछली बातों पर ध्यान देने लगी त्यों-त्यों मुझे निश्चय होता गया कि यह वास्तव में मनोरमा है मेरी माँ नहीं और अब अपने किये पर पछताने और अफसोस करने लगी कि क्यों उस खोह के बाहर पैर रक्खा और आफत में फसी ?

उसी समय से मेरे रहन-सहन का ढग भी बदल गया और मै दूसरी ही फिक्र में पड गई। सब से ज्यादे फिक्र मुझे उसी आदमी के पता लगाने की हुई जिसने वह पुर्जा मेरी तरफ फेंका था। मै उसी समय वहाँ से हट कर मकान में चली गई इस ख्याल से कि जिस आदमी ने मेरी तरफ वह पुर्जा फेंका था और उसे फाड डालने के लिए कसम दी थी वह जरूर मनोरमा से डरता होगा और यह जानने के लिए कि मैने पुर्जा फाडकर फेंक दिया या नहीं उस जगह जरूर जायगा जहा (बाग में) टहलती समय मुझे पुर्जा मिला था।

जब मै छत पर चढकर और छिपकर उस तरफ देखने लगी जहा मुझे वह पुर्जा मिला था तो एक आदमी को धीरे-धीरे टहल कर उस तरफ जाते देखा। जब वह उस ठिकाने पर पहुच गया तब उसने इधर-उधर देखा और सन्नाटा पाकर पुर्जे के टुकडों को चुन लिया जो मैने फेंके थे और उन्हें कमर में छिपा कर उसी तरह धीरे-धीरे टहलता हुआ उस मकान की तरफ चला आया जिसकी छत पर से मै ये सारा तमाशा देख रही थी। जब वह मकान के पास पहुँचा। तब मैने उसे पहिचान लिया। मनोरमा से बातचीत करते समय मै कई दफे उसका नाम 'नानू' सुन चुकी थी।

इन्दिरा अपना किस्सा यहा तक बयान कर चुकी थी कि कमलिनी ने चौंक कर इन्दिरा से पूछा 'क्या नाम लिया नानू !!'

इन्दिरा—हा उसका नाम नानू था।

कमलिनी—वह तो इस लायक नहीं था कि तेरे साथ ऐसी नेकी करता और तुझे आने वाली आफत से होशियार कर देता। वह बडा ही शैतान और पाजी आदमी था ताज्जुब नहीं कि किसी दूसरे ने तेरे पास वह पुर्जा फेंका और नानू ने देख लिया हो और उसके साथ दुश्मनी की नीयत से उन टुकडों को बटोरा हो।

इन्दिरा—(बात काट कर) बेशक ऐसा ही है इस बारे में भी मुझे धोखा हुआ जिसके सबब से मेरी तकलीफ बढ गई जैसा कि मै आगे चल कर बयान करूंगी।

कमलिनी—ठीक है मै उस कम्बख्त नानू को खूब जानती हूँ। जब मै मायारानी के यहा रहती थी तब वह मायारानी और मनोरमा की नाक का बाल हो रहा था और उनकी खैरखाही के पीछे प्राण दिए देता था, मगर अन्त में न मालूम क्या सबब हुआ कि मनोरमा या नागर ही ने उसे फासी देकर मार डाला। इसका सबब मुझे आज तक मालूम न हुआ और न मालूम होने की आशा ही है क्योंकि उन लोगो में से इसका सबब कोई भी न बतावेगा। मै भी उसके हाथ से बहुत

तकलीफ उठा चुकी हू जिसका वदला तो मै ले न सकी मगर उसकी लाश पर थूकने का मौका मुझे जरूर मिल गया। (लक्ष्मीदेवी की तरफ देख के) जब मैने भूतनाथ के कागजात लेने के लिए मनोरमा के मकान पर जाकर नागर को धोखा दिया था तब मैने अपनी कोठरी के वगल वाली कोठरी में इसी की लटकती हुई लाश पर थूका था *। उसी कोठरी में मैने अफसोस के साथ वरदेवू को भी मुर्दा पाया था, उसके मरने का सवव भी मुझे न मालूम हुआ और न होगा। वास्तव मे वरदूवे वडा ही नेक आदमी था और उसने मेरे साथ वडी नेकियॉ की थीं। मुझे यह खवर उसी ने दी थी कि अव मायारानी तुम्हें मार डालने का वन्दोवस्त कर रही है। वह उन दिनों खास वाग के मालियों का दारोगा था।

इन्दिरा–वेशक वरदेवू वडा नेक आदमी था असल में वह पुर्जा उसी ने मेरी तरफ फेंका था और कम्वख्त नानू ने देख लिया था, मगर मै धोखा खा गई, मेरी समझ में आया कि वह पुर्जा नानू का फेंका हुआ है और उन टुकडों को इस ख्याल से उसने चुन लिया है कि कोई देखने न पावे या किसी दुश्मन के हाथ में पड कर मेरा

कमलिनी–अच्छा फिर आगे क्या हुआ सो कहो।

इन्दिरा–जब मैने यह समझ लिया कि यह नेकी नानू ने ही मेरे साथ की है और वह टहलता हुआ मकान के पास आ गया तो मै छत पर से उतर कर पुन वाग में आई और टहलती हुई उसके पास पहुची।

मै–(नानू से) आपने मुझ पर वडी कृपा की है जो मुझे आने वाली आफत से होशियार कर दिया। मै अभी तक मनोरमा को अपनी मॉ ही समझ रही थी।

नानू–ठीक है मगर तुम्हें मुझसे ज्यादा वात-चीत न करनी चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि लोगों को मुझ पर शक हो जाय।

मै–इस समय यहॉ कोई भी नहीं है इसलिए मै यह प्रार्थना करने आई हू कि जिस तरह आपने मुझ पर इतनी कृपा की है उसी तरह मेरे निकल भागने में भी मदद देकर अनन्त पुण्य के भागी हों।

नानू–अच्छा मै इस काम में भी तुम्हारी मदद करूगा मगर तुम भागने में जल्दी न करना नहीं तो सव काम चौपट हो जायगा क्योंकि यहॉ के सभी आदमी तुम पर गहरी हिफाजत की निगाह रखते है और 'बरदेवू तो तुम्हारा पूरा दुश्मन है उससे कभी वातचीत न करना वह वडा ही धोखेबाज ऐयार है। बरदेवू को जानती हो ?

मै–हॉ मै वरदेवू को जानती हू।

नानू–वस तो तुम यहा से चली जाओ, मै फिर किसी बहाने से तुम्हारे पास आऊगा तव वातें करूगा। मै खुशी-खुशी वहा से हटी और वाग के दूसरे हिस्से में जाकर टहलने लगी जहा से पहरे वाले वखूबी देख सकते थे।

जैसे-जैसे अन्धकार वढता जाता था मुझ पर हिफाजत की निगाह भी वढती जाती थी यहा तक आधी घडी रात जाने पर लौंडियो और खिदमतगारों ने मुझे मकान के अन्दर जाने पर मजवूर किया और मै भी लाचार होकर अपने कमरे में आ विस्तर पर लेट गई सभों ने खाने-पीने के लिए कहा मगर इस समय मुझे खाना-पीना कहा सूझता था अस्तु वहाना करके टाल दिया और लेटे-लेटे सोचने लगी कि अव क्या करना चाहिए ?

मै समझे हुए थी कि नानू मेरे पास आकर मुझे यहा से निकल जाने के विषय में राय देगा जैसा कि वह वादा कर चुका था मगर मेरा ख्याल गलत था आधी रात तक इन्तजार करने पर भी वह मेरे पास न आया। इसके अतिरिक्त रोज मेरी हिफाजत के लिये रात को दो लौंडियाँ मेरे कमरे में रहती थीं मगर आज चार लौंडियों को रोज से ज्यादे मुस्तैदी के साथ पहरा देते देखा। उस समय मुझे खुटका हुआ मै सोचने लगी कि नि सन्देह इन लोगों को मेरे वारे में कुछ सन्देह हो गया है। मै नींद न पडने और सिर में दर्द होने से वेचैनी दिखाकर उठी और कमरे में टहलने लगी यहा तक कि दर्वाजे के वाहर निकल कर सहन में पहुची और तव देखा कि आज तो वाहर भी पहरे का इन्तजाम बहुत सख्त हो रहा है। मैने प्रकट में किसी तरह का आश्चर्य नहीं किया और पुन अपने विस्तर पर आकर लेट रही और तरह-तरह की वातें सोचने लगी। उसी समय मुझे निश्चय हो गया कि उस पुर्जे को फेंकने वाला नानू नहीं कोई दूसरा है अगर नानू होता तो इस वात की खवर फैल न जाती क्योंकि उन टुकडों को तो नानू ने मेरे सामने ही बटोर लिया था। अफसोस, मैने बहुत बुरा किया, अगर वे थोडे से शब्द मै न कहती तो नानू सहज में ही टुकडों से कोई मतलव नहीं निकाल सकता था, मगर अब तो असल भेद खुल गया और मेरे पैरों में दोहरी जंजीर पड गई अस्तु अव क्या करना चाहिए !

---

* देखिए सन्तति सातवा भाग, सातवा वयान।

रात भर मुझे नींद न आई और सुबह को जैसे ही मैं बिछावन पर से उठी तो सुना कि मनोरमा आ गई है। कमरे के बाहर निकलकर सहन में गई जहा मनोरमा एक कुर्सी पर बैठी नानू से बात कर रही थी। दो लौंडिया उसके पीछे खड़ी थीं और उसके बगल में दो-तीन खाली कुर्सियां भी पडी हुई थीं। मनोरमा ने अपने पास एक कुर्सी खैंच कर मुझे बड़े प्यार से उस पर बैठने के लिए कहा और जब मैं बैठ गई तो बातें होने लगी ! -

मनोरमा-(मुझ से) बेटी तू जानती है कि यह (नानू की तरफ बताकर) आदमी हमारा कितना बडा खैरखाह है !

मैं-मां, शायद यह तुम्हारा खैरखाह होगा मगर मेरा तो पूरा दुश्मन है।

मनोरमा-(चौंककर) क्यों क्यों सो क्यों ?

मैं-सैकडों मुसीबतें झेलकर तो मैं तुम्हारे पास पहुची और तुमने भी मुझे अपनी लडकी बनाकर मेरे साथ जो सलूक किया वह प्राय यहा के रहने वाले सभी कोई जानते होंगे, मगर यह नानू नहीं चाहता कि मैं अब भी किसी तरह सुख की नींद सो सकू। कल शाम को जब मैं बाग में टहल रही थी तो यह मेरे पास आया और एक पुर्जा मेरे हाथ में देकर बोला कि इसे पढ और होशियार हो जा मगर खबरदार मेरा नाम न लीजियें ।

नानू-(मेरी बात काटकर क्रोध से) क्यों मुझ पर तूफान बाध रही हो ! क्या यह बात मैंने तुमसे कही थी !

मैं-(रंग बदलकर) बेशक तूने पुर्जा देकर यह बात कही थी और मुझे भाग जाने के लिए भी ताकीद की। ऑखें क्यों दिखाता है ! जो बातें तूने

मनो-(बात काटकर) अच्छा अच्छा तु क्रोध मत कर जो कुछ होगा मैं समझ लूंगी, तू जो कहती थी उसे पूरा कर। (नानू से) बस चुपचाप बैठे रहो, जब यह अपनी बात पूरी कर ले तब जो कुछ कहना हो कहना।

मैं-मैंने उस पुर्जे को खोल कर पढा तो उसमें लिखा हुआ पाया - जिसे तू अपनी मॉ समझती है वह मनोरमा है, तुझे अपना काम निकालने के लिए यहा ले आई है काम निकल जाने पर तुझे जान से मार डालेगी अस्तु जहा तक जल्द हो सके निकल भागने की फिक्र कर'। इत्यादि और भी कई बातें उसमें लिखी हुई थीं, जिन्हें पढकर मैं चौंकी और बात बनाने के तौर पर नानू से बोली, ' आपने बडी मेहरबानी की जो मुझे होशियार कर दिया अब भागने में भी आप ही मेरी मदद करेंगे तो जान बचेगी।' इसके जवाब में इसने खुश होकर कहा कि तुम्हें मुझसे ज्यादे बात-चीत न करनी चाहिए कहीं ऐसा न हो कि लोगों को मुझ पर शक हो जाय। मैं भागने में भी तुम्हारी मदद करुगा मगर इस बात को बहुत छिपाये रखना क्योंकि यहा बरदेबू नाम का आदमी तुम्हारा दुश्मन है। इत्यादि-

नानू-(बात काटकर) हा बेशक यह बात मैंने तुमसे जरूर कही थी कि

मैं-धीरे-धीरे तुम सभी बातें कबूल करोगे मगर ताज्जुब यह है कि मना करने पर भी तुम टोके बिना नहीं रहते।

मनोरमा-(क्रोध से) क्या तुम चुप न रहोगे ?

इसका जवाब नानू ने कुछ न दिया और चुप हो रहा। इसके बाद मनोरमा की इच्छानुसार मैंने यों कहना शुरु किया -

मैं-मैंने इस पुर्जे को पढ कर टुकडे-टुकड़े कर डाला और फेंक दिया। इसके बाद नानू भी चला गया और मैं भी यहा आकर छत के ऊपर चढ गई और छिप कर उसी तरफ देखने लगी जहा उस पुर्जे को फाड कर फेंक आई थी। थोडी देर बाद पुन इसको (नानू को) उसी जगह पहुचकर कागज के उन टुकडों को चुनते और बटोरते देखा। जब यह उन टुकड़ों को बटोर कर कमर में रख चुका और इस मकान की तरफ आया तो मैं भी तुरन्त छत पर से उतरकर इसके पास चली आई और बोली 'कहिए अब मुझे कब यहा से बाहर कीजिएगा ? इसके जवाब में इसने कहा कि मैं रात को एकान्त में तुम्हारे पास आऊगा तो बातें करुगा'। इतना कहकर यह चला गया और पुन मैं बाग में टहलने लगी। जब अन्धकार हुआ तो मैं घूमती हुई (हाथ का इशारा करके) उस झाड़ी की तरफ से निकली और किसी के बात की आहट पा पैर दबाती हुई आगे बढी यहा तक कि थोड़ी ही दूर पर दो आदमियों के बात करने की आवाज साफ-साफ सुनाई देने लगी। मैंने आवाज से नानू को तो पहिचान लिया मगर दूसरे को पहिचान न सकी कि वह कौन था हा पीछे मालूम हुआ कि वह बरदेबू था।

मनो-अच्छा खैर यह बता कि इन दोनो में क्या बातें हो रही थीं।

मैं-सब बातें मैं सुन न सकी, हा जो कुछ सुनने और समझने में आया सो कहती हूँ। इस नानू ने दूसरे से कहा कि नहीं-नहीं अब मैं अपना इरादा पक्का कर चुका हूँ और उस छोकरी को भी मेरी बातों पर पूरा विश्वास हो चुका है नि सन्देह उसे ले जाकर मैं बहुत रुपये उसके बदले में पा सकूगा अगर तुम इस काम में मेरी मदद करोगे तो मैं उसमें से

आधी रकम तुम्हें दूँगा'। इसके जवाब में दूसरे ने कहा कि 'देखो नानू यह काम तुम्हारे योग्य नहीं है मालिक के साथ दगा करने वाला कभी सुख नहीं भोग सकता, बेहतर है कि तुम मेरी बात मान जाओ नहीं तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा और मैं तुम्हारा दुश्मन बन जाऊगा'। यह जवाब सुनते ही नानू क्रोध में आकर उसे बुरा भला कहने और धमकाने लगा। उसी समय इसके सम्बोधन करने पर मुझे मालूम हुआ कि उस दूसरे का नाम बरदेवू है। खैर, जब मैंने जाना कि अब ये दानों अलग होते है तो मै चुपके से चल पड़ी और अपने कमरे में लेट रही। थोडी ही देर में यह मेरे पास पहुचा और बोला 'बस अब जल्दी से उठ खडी हो और मेरे पीछे चली आओ क्योंकि अब वह मौका आ गया कि मै तुम्हें इस आफत में बचा कर बाहर निकाल दूँ।' इसके जवाब में मैंने कहा कि बस रहने दीजिए आपकी सब कलई खुल गई, मै आपकी और बरदवू की बातें छिपकर सुन चुकी हूँ, माँ को आने दीजिए तो मै आपकी खबर लेती हूँ।

इतना सुनते ही यह लाल-पीला होकर बोला कि खैर देख लेना कि मैं तेरी खबर लेता हूँ या तू मेरी खबर लेती है। बस यह कह के चला गया और थोडी देर में मैने अपने को सख्त पहरे में पाया।

मनो--ठीक है अब मुझे असल बातों का पता लग गया।

नानू--(क्रोध के साथ) ऐसी तेज और धूर्त लड़की तो आज तक मैने देखी ही नहीं ! मेरे सामन ही मुझे झूठा और दोषी बना रही है और अपने सहायक बरदेवू को निर्दोष बनाया चाहती है !

इतना कहकर इन्दिरा कुछ देर के लिए रुक गई और थोड़ा सा जल पीने के बाद बोली –

"जो कुछ मैंने कहा उस पर मनोरमा को विश्वास हो गया।'

इन्द्रजीत--विश्वास होना ही चाहिए, इसमें कोई शक नहीं कि तूने जो कुछ मनोरमा से कहा उसका एक-एकअक्षर चालाकी और होशियारी से भरा हुआ था।

कमला--नि सन्देह, अच्छा तब क्या हुआ ?

इन्दिरा--नानू ने मुझे झूठा बनाने के लिए बहुत जोर मारा मगर कुछ कर न सका क्योंकि मनोरमा के दिल पर मरी बातों का पूरा असर पड़ चुका था। उस पुर्जे के टुकडों ने उसी को दोषी ठहराया जो उसने बरदेवू को दोषी ठहराने के लिये चुन रक्खे थे क्योंकि बरदेवू ने यह पुर्जा अक्षर बिगाडकर ऐसे ढग से लिखा था कि उसके कलम का लिखा हुआ कोई कह नहीं सकता था। मनोरमा ने इशारे से मुझे हट जाने के लिए कहा और मै उठकर कमरे के अन्दर चली गई। थोडी देर बाद, जब मै उसके बुलाने पर पुन बाहर गई तो वहाँ मनोरमा को अकेले बैठे हुए पाया। उसके पास वाली कुर्सी पर बैठ कर मैंने पूछा कि माँ, नानू कहाँ गया' ? इसके जवाब में मनोरमा ने कहा कि 'बेटी, नानू को मैंने कैदखाने में भेज दिया। ये लोग उस कम्बख्त दारोगा के साथी और बड़े ही शैतान है इसलिए किसी न किसी तरह इन लोगों को दोषी ठहरा कर जहन्नुम में मिला देना ही उचित है। अब मैं उस दारोगा से बदला लेने की धुन में लगी हुई हू, इसी काम के लिए मैं बाहर गई थी और इस समय पुन जाने के लिए तैयार हूँ केवल तुझे देखने के लिए चली आई थी तू बेफिक्री के साथ यहा रह, आशा है कि कल शाम तक मैं अवश्य लौट आऊगी। जब तक मै उस कम्बख्त से बदला न ले लूँ और तेरे बाप को कैद से छुड़ा न लूँ तब तक एक घड़ी के लिए अपना समय नष्ट करना नहीं चाहती। बरदेवू को अच्छी तरह समझा जाऊँगी, वह तुझे किसी तरह की तकलीफ न होने देगा।

इन बातों को सुनकर मै बहुत खुश हुई और सोचने लगी कि यह कम्बख्त जहाँ तक शीघ्र चली जाय उत्तम है क्योंकि मुझे हर तरह से निश्चय हो चुका थ' कि यह मेरी माँ नहीं है और यहाँ से यकायक निकल जाना भी कठिन है। साथ ही इसके मेरा दिल कह रहा था कि मेरा बाप कैद नहीं हुआ यह सब मनोरमा की बनावट है जो मेरे बाप का कैद होना बता रही है।

मनोरमा चली गई मगर उसने शायद ठीक मुझको यह न बताया कि नानू के साथ क्या सलूक किया या अब वह कहा है फिर भी मनोरमा के चले जाने के बाद मैने नानू को न देखा और न किसी लौंड़ी या नौकर ही ने उसके बारे में कभी मुझसे कुछ कहा।

अबकी दफे मनोरमा के चले जाने के बाद मुझ पर उतना सख्त पहरा नहीं रहा जितना नानू ने बढा दिया था मगर वहाँ का कोई आदमी मेरी तरफ से गाफिल भी न था।

उसी दिन आधी रात के समय जब मै कमरे में चारपाई पर पडी हुई नींद न आने के कारण तरह-तरहके मनसूबे बाँध रही थी, यकायक बरदेवू मेरे सामने आकर खडा हो गया और बोला, "शाबाश, तूने बड़ी चालाकी से मुझे बचा लिया और ऐसी बात गढ़ी कि मनोरमा को नानू ही पर पूरा शक हो गया और मै इस आफत से बच गया नहीं तो नानू ने मुझे पूरी तरह फाँस लिया था, क्योंकि वह पुर्जा वास्तव में मेरा ही लिखा हुआ था। मै तुझसे बहुत खुश हू और तुझे इस योग्य समझता हू कि तेरी सहायता करू।

मैं–आपको मेरी बातों का हाल क्योंकर मालूम हुआ ?

बरदवू–एक लौडी की जुबानी मालूम हुआ जा उस समय मनोरगा के पास खडी थी।

मैं–ठीक है, मुझ विश्वास होता है कि आप मेरी सहायता करेंगे और किसी तरह इस आफत से बाहर कर देंगे क्योंकि मनारमा के न रहने से अब मौका भी बहुत अच्छा है।

बरदेवू–बेशक मैं तुझे आफत से छुडाऊँगा, मगर आज ऐसा करने का मौका नहीं है मनोरमा की मौजूदगी में यह काम अच्छी तरह हो जायगा और मुझ पर किसी तरह का शक भी न होगा क्योंकि जाते समय मनोरमा तुझे मेरी हिफाजत में छोड गई है। इस समय मैं केवल इसलिए आया हू कि तुझ हर तरह की बातें समझा-बुझा कर यहाँ से निकल भागने की तर्कीब बता दूँ और साथ ही इसके यह भी कह दूँ कि तेरी माँ दारागा की बदौलत जमानिया में तिलिस्म के अन्दर कैद है और इस बात की खबर गोपालसिह को नहीं है। मगर मैं उससे मिलने की तर्कीब तुझे अच्छी तरह बता दूँगा।

बरदेवू घटे भर तक मेरे पास बैठा रहा और उसने वहाँ की बहुत सी बातें मुझे समझाई और निकल भागने के लिए जो कुछ तर्कीब सोची थी वह भी कही जिसका हाल आगे चल कर मालूम होगा–साथ ही इसक बरदेवू ने मुझे यह भी समझा दिया कि मनोरमा की उँगली में एक अगूठी रहती है जिसका नाकीला नगीना बहुत ही जहरीला है किसी के बदन में कहीं भी रगड दने स बात की बात में उसका तेज जहर तमाम बदन में फैल जाता है और तब सिवाय मनोरमा की मदद के वह किसी तरह नहीं बच सकता। वह जहर की दवाइयों का (जिन्हें मनारमा ही जानती है) घाडे का पेट चीर कर और उसकी ताजी आँतों में उनको रखकर तैयार करती है

इतना सुनते ही कमलिनी ने रोक कर कहा हा हाँ यह बात मुझे भी मालूम है। जब मैं भूतनाथ के कागजात लेने वहाँ गइ तो उसी कोठरी में एक घोड की दुर्दशा भी देखी थी जिसमें नानू और बरदेबू की लाश देखी अच्छा तब क्या हुआ ? इसके जवाब में इन्दिरा ने फिर कहना शुरू किया

बरदेवू मुझे समझा बुझाकर और बेहोशी की दवा की दो पुडियाएँ देकर चला गया और उसी समय से मैं भी मनोरमा के आने का इन्तजार करने लगी। दो दिन तक वह न आई और इस बीच में पुन दो दफे बरदेवू से बातचीत करने का मौका मिला। और सब बातें तो नहीं मगर यह मैं इसी जगह कह देना उचित समझती हू कि बरदेबू ने वह दवा की पुडियाए मुझे क्यों दी थीं। उनमें स एक तो बेहोशी की दवा थी और दूसरी होश में लाने की। मनोरमा के यहाँ एक ब्राह्मणी थी जो उसकी रसोई बनाती थी और उस मकान में रहने तथा पहरा देने वाली ग्यारह लौंडियों को भी उसी रसोई में से खाना मिलता था। इसके अतिरिक्त एक ठकुरानी और थी जो मास बनाया करती थी। मनोरमा को मास खाने का शौक था और प्राय नित्य खाया करती थी। मास ज्यादे बना करता और जो बच जाता वह सब लौंडियों नौकरों और मालियों में बाँट दिया जाता था। कभी-कभी मैं भी रसोई बनाने वाली मिसरानी या ठकुरानी के पास बैठ कर उसक काम में सहायता कर दिया करती थी और वह बेहोशी की दवा बरदेबू ने इसीलिए दी थी कि समय आने पर खाने की चीजों तथा मास इत्यादि में जहा तक हो सके मिला दी जाय।

आखिर मुझे अपने काम में सफलता प्राप्त हुई अर्थात चौथे या पाँचवे दिन सध्या के समय मनोरमा आ पहुची और मास के बटुए में बेहोशी की दवा मिला देने का भी मौका मिल गया।

रात के समय जब भोजन इत्यादि से छुट्टी पाकर मनोरमा अपने कमर में बैठी तो उसने मुझे भी अपने पास बुला कर बैठा लिया और बातें करने लगी। उस समय सिवाय हम दानों के वहाँ कोई भी न था।

मनोरमा–अबकी का सफर मेरा बहुत अच्छा हुआ और मुझे बहुत सी बातें नई मालूम हो गईं जिससे तेरे बाप के छुडाने में अब किसी तरह की कठिनाई नहीं रही। आशा है कि दा ही तीन दिन में वह कैद से छूट जायगे और हम लोग भी इस अनूठ भेष को छोड कर अपने घर जा पहुचेंगे।

मैं–तुम कहाँ गई थीं और क्या करके आई ?

मनो–मैं जमानिया गई थी। वहाँ के राजा गोपालसिह की मायारानी तथा दारोगा से भी मुलाकात की। मायारानी ने वहाँ अपना पूरा दखल जमा दिया है और वहाँ की तथा तिलिस्म की बहुत सी बातें उसे मालूम हो गई है। इसीलिए अब वह राजा गोपालसिह को भी मार डालन का बन्दोबस्त कर रही है।

मैं–तिलिस्म कैसा ?

मनोरमा–(ताज्जुब के साथ) क्या तू नहीं जानती कि जमानिया का खास बाग एक बडा भारी तिलिस्म है ?

मैं–नहीं मुझे ता यह बात नहीं मालूम और तुमने भी कभी मुझे कुछ नहीं बताया।

यद्यपि मुझ जमानिया के तिलिस्म का हाल मालूम था और इस विषय की बहुत सी बातें अपनी माँ से सुन चुकी थी मगर इस समय मनोरमा से यही कह दिया कि नहीं यह बात भी मालूम नहीं है और तुमने भी इस विषय में कभी कुछ नहीं

कहा'। इसके जवाब में मनोरमा ने कहा, 'हॉं ठीक है, मैने नादान समझ कर तुझे वे बातें नहीं कही थीं।

मैं–अच्छा यह तो बताओ कि मायारानी को थोडे ही दिनों में वहॉं का सब हाल कैसे मालूम हो गया ?

मनोरमा–ये सब बातें मुझे मालूम न थी मगर दारोगा ने मुझको असली मनोरमा समझ कर बता दिया, अस्तु जो कुछ उसकी जुबानी सुनने में आया है सो तुझे कहती हूँ। मायारानी को वहा का हाल यकायक थोडे ही दिनों में मालूम न हो जाता और दारोगा भी इतनी जल्दी उसे होशियार न कर देता, मगर उसके (मायारानी के) बाप ने उसे हर तरह से होशियार कर दिया है क्योंकि उसके बडे लोग दीवान क तौर पर वहॉं की हुकूमत कर चुके है और इसीलिए उसके बाप को भी न मालूम किस तरह पर वहॉं की बहुत सी बातें मालूम हैं।

मैं–खैर इन सब बातों से मुझे कोई मतलब नहीं यह बताओ कि मेरे पिता कहा है और उन्हें छुड़ाने के लिए तुमने क्या बन्दोबस्त किया ? वह छूट जायें तो राजा गोपालसिंह को मायारानी के फन्दे से बचा लें। हम लोगों के किये इस बारे में कुछ न हो सकेगा !

मनोरमा–उन्हें छुडाने क लिए भी मै सब बन्दोबस्त कर चुकी हू, दर बस इतनी ही है कि तू एक चीठी गोपालसिंह के नाम की उसी मजमून की लिख दे जिस मजमून की लिखने के लिए दारोगा तुझ कहता था। अफसोस इसी बात का है कि दारोगा को तेरा हाल मालूम हो गया है। वह तो मुझे नहीं पहिचान सका मगर इतना कहता था कि इन्दिरा को तूने अपनी लडकी बना कर घर में रख लिया है सो खैर तेरे मुलाहिज से मै उसे छोड देता हूँ मगर उसके हाथ से इस मजमून की चीठी लिखाकर जरूर भेजना होगा (कुछ रुक कर) न मालूम क्यों मेरा सिर घूमता है।

मैं–खाने को ज्यादा खा गई होगी !

मनोरमा–नहीं मगर

इतना कहते-कहते मनोरमा ने गौर की निगाह से मुझे देखा और मैं अपने को बचाने की नीयत से उठ खडी हुई। उसने यह देख मुझे पकड़ने की नीयत से उठना चाहा मगर उठ न सकी और उस बेहोशी की दवा का पूरा-पूरा असर उस पर हो गया अर्थात वह बेहोश होकर गिर पडी। उस समय मै उसके पास से चली आई और कमरे के बाहर निकली। चारों तरफ देखने से मालूम हुआ कि सब लौंडी नौकर मिसरानी और माली वगैरह जहा तहा बेहोश पडे है किसी को तनोबदन की सुध नहीं है। मैं एक जानी हुई जगह से मजबूत रस्सी लेकर पुन मनोरमा के पास पहुँची और उसी से खूब जकडकर दूसरी पुडिया सुघा उसे होश में लाई। चैतन्य होने पर उसने हाथ में खंजर लिए हुए मुझे सामने खडे पाया। वह उसी का खजर था जो मैंने ले लिया था।

मनोरमा–हैं यह क्या ? तूने मेरी ऐसी दुर्दशा क्यों कर रक्खी है ?

मैं–इसलिए कि तू वास्तव में मेरी मा नहीं है और मुझे धोखा देकर यहा ले लाई है।

मनोरमा–यह तुझे किसने कहा ?

मैं–तेरी बातों और करतूतों ने।

मनोरमा– नहीं-नहीं यह सब तेरा भ्रम है।

मैं–अगर यह सब मेरा भ्रम है और तू वास्तव में मेरी मॉं है तो बता मेरे नाना ने अपने अन्तिम समय में क्या कहा था ?

मनोरमा–(कुछ सोच कर) मेरे पास आ तो बताऊँ।

मैं–मै तेरे पास आ सकती हूँ मगर इतना समझ ले कि अब वह जहरीली अगूठी तेरी उँगली में नहीं है।

इतना सुनते ही वह चौंक पड़ी। इसके बाद और भी खूब-खूब बातें उससे हुई जिससे निश्चय हो गया कि मेरी ही करनी से वह बेहोश हुई थी और अब मै उसके फेर में नहीं पड सकती। मै उसे नि सन्देह जान से मार डालती मगर बरदबू ने ऐसा करने से मुझे मना कर दिया था। वह कह चुका था कि मैं तुझ इस कैद से छुड़ा तो देता हूँ मगर मनोरमा की जान पर किसी तरह की आफत नहीं ला सकता क्योंकि उसका नमक खा चुका हू।'

यही सबब था कि उस समय मैने उसे केवल बातों की ही धमकी देकर छोड़ दिया। बची हुई बेहोशी की दवा जबर्दस्ती उसे सुँघा कर बेहोश करने बाद मै कमरे के बाहर निकली और बाग में चली आई जहॉं प्रतिज्ञानुसार बरदेबू खडा मेरी राह देख रहा था। उसने मेरे लिए एक खंजर और एक ऐयारी का बटुआ भी तैयार कर रक्खा था जो मुझे देकर उसके अन्दर की सब चीजों के बारे मे अच्छी तरह समझा दिया और इसके बाद जिधर मालियों के रहने का मकान था उधर ले गया। माली सब तो बेहोश थे ही अस्तु कमन्द के सहारे मुझे बाग की दीवार के बाहर कर दिया और फिर मुझे मालूम न हुआ कि बरदेबू ने क्या कार्रवाइयॉं कीं और उस पर तथा मनोरमा इत्यादि पर क्या बीती।

मनोरमा के घर से बाहर निकलते ही मै सीधे जमानिया की तरफ भागी क्योंकि एक तो अपनी मॉं को छुड़ाने कि फिक्र लगी हुई थी जिसके लिए बरदेबू ने कुछ रास्ता भी बता दिया था मगर इसके इलावे मेरी किस्मत में भी यही लिखा था कि बनिवस्त घर जाने के जमानिया को जाना पसन्द करूँ और वहॉं अपनी मॉं की तरह खुद भी फॅंस जाऊ। अगर मै

घर जाकर अपने पिता से मिलती और यह सब हाल कहती तो दुश्मनों का सत्यानाश भी होता और मेरी माँ भी छूट जाती मगर सो न तो मुझको सूझा और न हुआ। इस सम्बन्ध में उस समय मुझको वडी-घडी इस वात का भी खयाल होता था मनारमा मेरा पीछा जरूर करेगी अगर मैं घर की तरफ जाऊँगी तो नि सन्देह गिरफ्तार हो जाऊँगी।

खैर, मुख्तसर यह है कि वरदेबू के बताए हुए रास्ते से मैं इस तिलिस्म के अन्दर आ पहुँची। आप तो यहा की सब वातों का भद जान गए होंगे इसलिए विस्तार के साथ कहने की कोई जरूरत नहीं केवल इतना ही कहना काफी होगा कि गगा किनारे एक श्मशान पर जो महादेव का लिग एक चबूतरे के ऊपर है वही रास्ता आने के लिए बरदेबू ने मुझे वताया था।

इन्दिरा ने अपना हाल यहाँ तक बयान किया था कि कमलिनी ने रोका और कहा हाँ-हाँ उस रास्ते का हाल मुझे मालूम है (कुमार से) जिस रास्ते से मैं आप लोगों को निकाल कर तिलिस्म के बाहर ले गई थी *।

इन्द्रजीत–ठीक है (इन्दिरा से) अच्छा तब क्या हुआ ?

इन्दिरा–मे इस तिलिस्म के अन्दर आ पहुची और घूमती-फिरती उसी कमरे में पहुच गई जिसमें आपने उस दिन मुझे मेरे पिता और राजा गोपाल सिह को देखा था, जिस दिन आप उस बाग में पहुँचे थे जिसमें मेरी माँ कैद थी।

इन्द्रजीत–अच्छा ठीक है तो उसी खिडकी में से तूने भी अपनी माँ को देखा होगा ?

इन्दिरा–जी हाँ दूर ही से उसने मुझे देखा और मैंने उसे देखा मगर उसके पास न पहुच सकी। उस समय हम दोनों की क्या अवस्था होगी इसेआप स्वय समझ सकते हैं मुझ में कहने की सामर्थ्य नहीं है। (एक लम्बी सास लेकर) कई दिनों तक व्यर्थ उद्याग करने पर भी जब मुझे निश्चय हो गया कि मैं किसी तरह उसके पास नहीं पहुँच सकती और न उसके छुडाने का कुछ बन्दोबस्त ही कर सकती हू तब मैंने चाहा कि अपने पिता को इन सब बातों की इत्तिला दूँ। मगर अफसोस यह काम भी मेरे किए न हो सका। मैं किसी तरह इस तिलिस्म के बाहर न जा सकी और मुद्दत तक यहाँ रह कर ग्रह दशा के दिन काटती रही।

इन्द्रजीत–अच्छा यह बता कि राजा गोपालसिह वाली तिलिस्मी किताब तुझे क्योंकर मिली ?

इन्दिरा–यह हाल भी मैं आपसे कहती हूँ।

इतना कह कर इन्दिरा थोडी देर के लिए चुप हो गयी और उसके बाद फिर अपना किस्सा शुरु किया ही चाहती थी कि कमरे का दर्वाजा जो कुछ घूमा हुआ था, यकायक जोर से खुला और राजा गोपालसिह आते हुए दिखाई पडे।

सातवाँ बयान

राजा गोपालसिह को देखते ही सब कोई उठ खडे हुए और बारी-बारी से सलाम की रस्म अदा की। इस समय भैरोसिह ने लक्ष्मीदेवी की आँखों से मिलती हुई राजा गोपालसिह की उस मुहब्बत, मेहरबानी और हमदर्दी की निगाह पर गौर किया जिसे आज के थोडे दिन पहिले लक्ष्मी देवी बेताबी के साथ ढूँढती थी याजिसके न पाने से वह तथा उसकी वहिनें तरह-तरह का इलजाम गोपालसिह पर लगाने का ख्याल कर रही थीं।

सभों की इच्छानुसार राजा गोपालसिह भी दोनों कुमारों के पास ही वैठ गए और सभों के कुशल मगल पूछने के बाद कुमार से बोले "क्या आपको उस बडे इजलास की फिक्र नहीं है जो चुनार में होने वाला है जिसमें भूतनाथ का दिलचस्प मुकद्दमा फैसला किया जायेगा और जिसमें उसके तथा और भी कई कैदियों के सम्बन्ध में एक से एक बढकर अनूठा हाल खुलेगा ? साथ ही इसके मुझे यह भी सन्देह होता है कि आप उनकी तरफ से भी कुछ बेफिक्र हो रहे हैं जिनके लिए

इन्द– नहीं-नहीं मैं न तो बेफिक्र हू और न अपने काम में सुस्ती ही किया चाहता हूँ !

गोपाल–क्या हम लोग नहीं जानते कि इधर के कई दिन आपने किस तरह व्यर्थ नष्ट किए हैं और इस समय भी किस बेफ़िक्री के साथ वैठे गप्पें उडा रहे हैं ?

इन्द–(कुछ कहने-कहते रुक कर) जी नहीं इस समय तो हम लोग इन्दिरा का किस्सा सुन रहे थे।

गोपाल–इन्दिरा कहीं भागी नहीं जाती थी यहाँ नहीं तो चुनार में हर तरह से बेफिक्र होकर आप इसका किस्सा सुन सकते थे जहा और भी कई अनूठे किस्से आप सुनेंगे। खैर बताइए कि आप इन्दिरा का किस्सा सुन चुके या नहीं ?

---

*देखिए आठवाँ भाग दूसरे बयान का अन्त।

इन्द–हाँ और सब किस्सा तो सुन चुका, केवल इतना सुनना बाकी है कि आपकी वह तिलिस्मी किताब क्योंकर इसके हाथ लगी और यह उस पुतली की सूरत में क्यों वहां रहा करती थी।

गोपाल–इतना किस्सा आप तिलिस्मी कार्रवाई से छुट्टी पाकर सुन लीजिएगा और खैर अगर इस पर ऐसा ही जी लगा हुआ है तो मैं मुख्तसर में आपको समझाये देता हूँ क्योंकि मैं यह सब हाल इन्दिरा से सुन चुका हूं। असल यह है कि मेरे यहां दो ऐयार हरनामसिंह और बिहारी रहते थे। वे रुपये की लालच में पड़कर कम्बख्त मायारानी से मिल गए थे और मुझे कैदखाने में पहुँचाने के बाद वे लोग उसी की इच्छानुसार काम करते थे मगर बुरी राह चलने वालों को या बुरों का संग करने वालों को कुछ फल मिलता है वही उन्हें भी मिला, अर्थात् एक दिन मायारानी ने धोखा देकर उन्हें खास बाग के एक गुप्त कूए में ढकेल दिया * जिसके बारे में वह केवल इतना ही जानती थी कि वह तिलिस्मी ढंग का कूआँ लोगों को मार डालने के लिए बना हुआ है मगर वास्तव में ऐसा नहीं है। वह कुआ उन लोगों के लिए बना है जिन्हें तिलिस्म में कैद करना मंजूर होता है। मायारानी को चाहे यह निश्चय हो गया कि दोनों ऐयार मर गए लेकिन वास्तव में वे मरे नहीं बल्कि तिलिस्म में कैद हो गये थे। इस बात को मायारानी बहुत दिनों तक छिपाये रही लेकिन आखिर एक दिन उसने अपनी लौंडी लीला से कह दिया और लीला से यह बात हरनामसिंह की लड़की ने सुन ली।

जब आपने मुझे कैद से छुड़ाया और मैं खुल्लमखुल्ला पुनः जमानिया का राजा बना तब हरनामसिंह की लड़की फरियाद करने के लिए मेरे पास पहुंची और मुझसे वह हाल कहा। मैंने जवाब में कहा कि वे दोनों ऐयार उस कूएँ में ढकेल देने से मरे नहीं बल्कि तिलिस्म में कैद हो गए हैं जिन्हें मैं छुड़ा तो सकता हूं, मगर उन दोनों ने मेरे साथ दगा की है इसलिए छुड़ाने योग्य नहीं है और न मैं उन्हें छुड़ाऊंगा ही। इतना सुन वह चली गई मगर छिपे-छिपे उसने ऐसा भेद लगाया और चालाकी की जिसे सुनेंगे तो दंग हो जायेंगे। मुख्तसर यह कि अपने बाप को छुड़ाने की नीयत से उसी लड़की ने मेरी तिलिस्मी किताब चुराई और उसकी मदद से तिलिस्म के अन्दर पहुँची, मगर उस किताब का मतलब ठीक ठीक न समझने के सबब वह न तो अपने बाप को छुड़ा सकी और न खुद ही तिलिस्म के बाहर निकल सकी, हाँ उसी जगह अकस्मात् इन्दिरा से उसकी मुलाकात हो गई। इन्दिरा को भी अपनी तरह दुःखी जान कर उसने सब हाल इससे कहा और इन्दिरा ने चालाकी से वह किताब अपने कब्जे में कर ली तथा उससे बहुत कुछ फायदा भी उठाया। तिलिस्म के आने में जाने वालों से अपने को बचाने के लिए इन्दिरा उस पुतली की सूरत बनकर रहने लगी क्योंकि उसी ढंग के कपड़े इन्दिरा को उस पुतली वाले घर से मिल गए थे। जब मैंने इन्दिरा से यह हाल सुना तो बिहारीसिंह और हरनामसिंह तथा उसकी लड़की को बाहर निकाला। वे सब भी चुनारगढ़ पहुंचाए जा चुके हैं। जब आप चुनारगढ़ पहुंचेंगे तो औरों के साथ-साथ उन लोगों का भी तमाशा देखेंगे, तथा

लक्ष्मीदेवी–(गोपालसिंह से) मगर आप इन बातों को इतनी जल्दी-जल्दी और संक्षेप में कह कर कुमारों को भगाना क्यों चाहते हैं ? इन्हें यहाँ अगर एक दिन की देर हो ही जायगी तो क्या हर्ज है ?

कमलिनी–मेहमानदारी के ख्याल से जल्द छूटना चाहते हैं !

गोपाल–औरतों का काम तो आवाज कसने का हई है मगर मैं किसी और ही सबब से जल्दी मचा रहा हूं। महाराज (वीरेन्द्रसिंह) के पत्र बराबर आ रहे हैं कि दोनों कुमारों को शीघ्र भेज दें इसके अतिरिक्त वहां कैदियों का जमाव हो रहा है और नित्य एक नया रंग खिलता है। वहाँ जितनी आफतें थीं वह सब जाती रहीं

लक्ष्मी–(बात काट कर) तो कुमार को और हम लोगों को आप तिलिस्म के बाहर क्यों नहीं ले चलते ? वहाँ से कुमार बहुत जल्दी चुनार पहुंच सकते हैं।

गोपाल–(कुमार से) आप इस समय मेरे साथ तिलिस्म के बाहर जा सकते हैं मगर ऐसा होना न चाहिए। आप लोगों के हाथ से जो कुछ तिलिस्म टूटने वाला है उसे तोड़ कर ही आपका इस तिलिस्म के अन्दर ही अन्दर चुनार पहुंचना उचित होगा। जब आपकी शादी हो जायगी तब मैं आपको यहाँ लाकर अच्छी तरह इस तिलिस्म की सैर कराऊँगा। इस समय मैं (किशोरी कामिनी इन्दिरा वगैरह की तरफ बताकर) इन सभों को लेकर खास बाग में जाता हूं क्योंकि अब वहाँ सब तरह से शान्ति हो चुकी है और किसी तरह का अन्देशा नहीं। वहाँ आठ-दस दिन रह कर सभों को लिए हुए मैं चुनार चला जाऊँगा और तब उसी जगह आपसे हम लोगों की मुलाकात होगी।

इन्द्रजीत–जो कुछ आप कहते हैं वही होगा मगर यहां की अद्भुत बातें देखकर मेरे दिल में कई तरह का खुटका बना हुआ है

---

* देखिए सन्तति आठवां भाग, पाँचवां बयान।

गोपाल–वह सव चुनार में निकल जायगा यहाँ मैं आपको कुछ न बताऊँगा। देखिए अब रात बीता चाहती है, सवेरा हाने से पहिल ही आपको अपने काम में हाथ लगा दना चाहिए।

लक्ष्मी–(हसकर) आप क्या आये मानों भूचाल आ गया ! अच्छी जल्दी मचाई बात तक नहीं करने देते ! (कुमार से) जग इन्हें अच्छी तरह जॉच ता लीजिए, कहीं कोई ऐयार रूप बदल कर न आया हो।

गोपाल–(इन्दजीतसिह के कान में कुछ कहकर) बस अव आप विलम्ब न कीजिए।

इन्द्रजीत–(उठकर) अच्छा ता फिर मै प्रणाम करता हूँ और भैरोसिह को भी आपके ही सुपुर्द किये जाता हूँ। (लक्ष्मीदेवी से) आप किसी तरह की चिन्ता न करें ये (गोपालसिह) वास्तव में हमारे भाई साहव ही है अस्तु अव चुनार में पुन मुलाकात की उम्मीद करता हुआ मे आप लोगों से विदा होता हू।

इतना कहकर इन्दजीतसिह न मुस्कुरात हुए सभों की तरफ देखा और आनन्दसिह ने भी वडे भाई का अनुसरण किया। राजा गापालसिह दानों कुमारों को लिए कमरे के वाहर चले गये और कुछ देर तक वातचीत करने तथा समझा कर विदा करन के वाद पुन कमर में चले आये।

आठवां बयान

यद्यपि चुनारगढ वाले तिलिस्मी खडहर की अवस्था ही जीतसिह न बदल दी और अव वह आला दर्जे की इमारत वन गई है मगर उसके चारा तरफ दूर-दूर जो जगलों की शोभा थी उसमें किसी तरह की कमी उन्होंने होने न दी।

सुवह का सुहावना समय है और राजा सुरन्दसिह बीरेन्द्रसिह जीतसिह तथा तेजसिह वगैरह धूर ऊपर वाले कमरे म वैठ जंगल की शाभा दखने क साथ ही साथ आपुस में धीरे-धीर बात भी करते जाते हैं। जगली पेडों के पत्तों से छनी और फूलों की महक से सोंधी हुई भई दक्षिणी हवा के झपेटे आ रहे है और रात भर की चुप बैठी हुई तरह तरह की चिडियाएँ सवेरा होन की खुशी में अपनी सुरीली आवाजों से लागों का जी लुभा रही हैं। स्याह तीतर अपनी मस्त और वॅधी हुई आवाज स हिन्दू मुसलमान कुँजडे और कस्साव में झगडा पैदा कर रहे हैं। मुसलमान कहते हैं कि तीतर साफ आवाज में यही कह रहा है 'सुब्हान तरी कुदरत मगर हिन्दू इस वात को स्वीकार नहीं करते और कहते हैं कि यह स्याह तीतर राम लक्ष्मण दशरथ कह कर अपनी भक्ति का परिचय दे रहा है। कुँजडे इसे भी नहीं मानते और उसकी बोली का मतलव मूली प्याज अदरक' समझकर अपना दिल खुश कर रहे है, परन्तु कस्सावों को सिवाय इसके और कुछ नहीं सूझता कि यह तीतर 'कर जवह और ढक रख'का उपदश दे रहा है।

इसी समय देवीसिह भी वहाँ आ पहुँचे और भूतनाथ और वलभद्रसिह के हाजिर होने की इत्तिला दी। इच्छानुसार दानों न सामने आकर सलाम किया और फर्श पर वैठन के वाद इशारा पाकर भूतनाथ ने तेजसिह से कहा –

भूत–(वलभद्रसिह की तरफ इशारा करके) इनका हाल सुनने के लिए जी बेचैन हो रहा है मैं इनसे कई दफे पूछ चुका हू मगर ये कुछ कहते नहीं।

तेज–(वलभद्रसिह से) अब ता आपकी तबीयत ठिकान हो गई होगी ?

वल–जी हॉ, अब मैं बहुत अच्छा और अपना हाल कहने के लिए तैयार हू।

तेज–अच्छी बात है हम लोग भी सुनने के लिए तैयार हैं और आप ही का इन्तजार कर रहे थे।

सभों का ध्यान वलभद्रसिह की तरफ खिच गया और वलभद्रसिह ने अपने गायब होने का हाल इस तरह कहना शुरू किया –

इस वात की तो मुझे कुछ भी खवर नहीं कि मुझे कौन ले गया और क्यों कर ले गया। उस दिन मैं भूत नाथ के पास ही एक चारपाई पर सो रहा था और जव मेरी ऑख खुली तो मैंने अपने को एक हरे-भरे और खूबसूरत बाग में पाया। उस समय मैं विल्कुल मजवूर था अर्थात् मेरे हाथों में हथकडी और पैरों में बेडी पडी हुई थी और एक औरत नगी तलवार लिए मेरे सामने खडी थी। मैंने सोचा कि अव मेरी जान नहीं बचती और मेरे भाग्य ही में कैदी बनकर जान देना बदा है। वहुत सी वातें सोच-विचार के मैंने उस औरत से पूछा कि 'तू कौन है और मैं यहाँ क्योंकर पहुँचा हू ? जिसके जवाव में उस औरत ने कहा कि 'तुझे मैं यहाँ ले आई हूँ और इस समय तू मेरा कैदी है। मैं जिस मुसीबत में फसी हुई हू उससे छुटकारा पाने क लिए इसक सिवाय और काई तरकीब न सूझी कि तुझे अपने कब्जे में करके अपने छुटकारे की सूरत निकालू क्योंकि मेरा दुश्मन तेरे ही कब्जे में है। अगर तू उसे समझाकर राह पर ले आवेगा तो मेरे साथ साथ तेरी जान वच जायगी।

उस औरत की बातें सुनकर मुझे बडा ही ताज्जुब हुआ और मैंने उससे पूछा, वह है कौन जो तेरा दुश्मन है और मेरे कब्जे में है ?

औरत–तेरी बेटी कमलिनी मेरे साथ दुश्मनी कर रही है।

मै–क्यों ?

औरत–उसकी खुशी मैंने तो उसका नुकसान नहीं किया।

मै–आखिर दुश्मनी का कोई सबब भी तो होगा ?

औरत–अगर कोई सबब है तो केवल इतना ही की वह भूतनाथ का पक्ष करती है और मुझे भूतनाथ का दुश्मन समझती है मगर मैं कसम खाकर कहती हूँ कि मुझे भूतनाथ से जरा भी रज नहीं है बल्कि मै भूतनाथ को अपना मददगार और भाई समझती हूँ। अगर मुझे भूतनाथ से किसी तरह का रज होता तो मै तुझे गिरफ्तार करके न लाती बल्कि भूतनाथ ही को ले आती क्योंकि जिस तरह मै तुझे उठा लाई हूँ उसी तरह भूतनाथ को भी उठा ला सकती थी। खैर अब मै चाहती हूँ कि तू एक चीठी कमलिनी के नाम की लिख दे कि वह मेरे साथ दुश्मनी का बर्ताव न करे। अगर तू अपनी कसम दे के यह बात कमलिनी को लिख देगा, तो वह जरूर मान जायगी।

मैंने कई तरह से उलट फेर के कई तरह की बातें उस औरत से पूछी मगर साफ-साफ न मालूम हुआ कि कमलिनी उसके साथ दुश्मनी क्यों करती है ? इसके अतिरिक्त मुझे इस बात का भी निश्चय हो गया कि जब तक मै कमलिनी के नाम की चीठी न लिख दूँगा तब तक मेरी जान को छुट्टी न मिलेगी। चीठी लिखने से इनकार करने के कारण कई दिनों तक मै उसका कैदी बना रहा आखिर लाचार हो मैंने उसकी इच्छानुसार पत्र लिख दिया, तब उसने बेहोशी की दवा सुँघा कर मुझे बेहोश किया और उसके बाद जब मेरी ऑख खुली तो मैंने अपने को आपके सामने पाया।

भूत–आपको यह नहीं मालूम हुआ कि उस औरत का नाम क्या था ?

बल–मैंने कई दफे नाम पूछा मगर उसने न बताया।

मालूम होता है कि बलभद्रसिह ने अपना जो कुछ हाल बयान किया उस पर हमारे राजा साहब या ऐयारों को विश्वास न हुआ मगर उनकी खातिर से तेजसिह ने कह दिया कि 'ठीक है ऐसा ही होगा ।

बलभद्रसिह और भूतनाथ को राजा साहब बिदा किया ही चाहते थे कि उसी समय इन्द्रदेव के आने की इत्तिला मिली। आज्ञानुसार इन्द्रदेव हाजिर हुए और सभों को सलाम करने के बाद इशारा पाकर तेजसिह के बगल में बैठ गए।

इन्द्रदेव के आने से हमारे राजा साहब और ऐयारों को बडी खुशी हुई और इसीलिए पन्नालाल रामनारायण और प० बद्रीनाथ वगैरह हमारे बाकी के ऐयार लोग भी जो इस समय यहॉ हाजिर और इस इमारत के बाहरी तरफ टिके हुए थे इन्द्रदेव के साथ ही साथ राजा साहब के पास पहुँचे क्योंकि इन्द्रदेव बलभद्रसिह और भूतनाथ का अनूठा हाल जानने के लिए सभी बेचैन हो रहे थे और खास करके भूतनाथ के मुकदमे से तो सभों को दिलचस्पी थी। इसके अतिरिक्त इन्द्रदेव अपने साथ दो कैदी अर्थात् नकली बलभद्रसिह और नागर को भी लाए थे और बोले थे कि 'काशिराज के भेजे हुए और भी कई कैदी थोडी देर में हाजिर हुआ चाहते हैं जिस कारण हमारे ऐयारों की दिलचस्पी और भी बढ रही थी।

सुरेन्द–तुम्हारे आने से हम लोगों को बडी प्रसन्नता हुई। इन्द्रजीत और गोपालसिह तुम्हारी बडी प्रशसा करते हैं और वास्तव में तुमने जो कुछ किया है वह प्रशसा के योग्य भी है।

इन्द्रदेव–(हाथ जोडकर) मै तो किसी योग्य भी नहीं हू और न कोई काम ही मेरे हाथ से ऐसा निकला जिससे महाराज के गुलाम के बराबर भी अपने को समझने की प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकू–हॉ दुर्दैव ने जो कुछ मेरे साथ बर्ताव किया और उसके सबब से मुझ अभागे को जो कष्ट भोगने पडे उन्हें सुनकर दयालु महाराज को मुझ पर दया अवश्य आई होगी।

सुरेन्द–हम लोग ईश्वर को धन्यवाद देते है जिसकी कृपा से एक विचित्र और अनूठी घटना के साथ तुम्हारी स्त्री और लडकी का पता लग गया और तुमने उन दोनों को जीती-जागती देखा।

इन्द–यह सब कुछ आपके और कुमारों के चरणों की बदौलत हुआ। वास्तव में तो मै भाडे की जिन्दगी बिताता हुआ दुनिया से विरक्त ही हो चुका था। अब भी वे दोनों आप लोगों के चरणों की धूल ऑखों में लगा लेंगी तभी तेरी प्रसन्नता का कारण होंगी। आशा है कि आज ही या कल तक राजा गोपालसिह भी उन दोनों तथा किशोरी, कामिनी, लक्ष्मीदेवी कमलिनी लाडिली और कमला इत्यादि को लेकर यहॉ आवें और महाराज के चरणों का दर्शन करेंगे।

सुरेन्द–(आश्चर्य और प्रसन्नता के साथ) हॉ ! क्या गोपाल ने तुम्हें कुछ लिखा है ?

इन्द्रदेव–जी हॉ, उन्होंने मुझे लिखा है कि मै शीघ्र ही उन सभों को लेकर महाराज की सेवा में उपस्थित हुआ

चाहता हू, तुम भी अपने दोनों कैदी नकली बलभद्रसिह और नागर को लेकर काशिराज से मिलते हुए चुनार जाओ और काशिराज ने हम पर कृपा करके हमारे जिन दुश्मनों को कैद कर रक्खा है अर्थात् बेगम जमालो और नौरतन वगैरह को भी अपने साथ लेते जाओ। अस्तु इस समय उन्हीं के लिखे अनुसार मै सेवा में उपस्थित हुआ हू !

सुरेन्द–(उत्कण्ठा के साथ) तो क्या तुम उन लोगों को भी अपने साथ लेते आए हो ?

इन्द्रदेव–जी हॉ और उन सभों को बाहर सरकारी सिपाहियों की सुपुर्दगी में छोड आया हू। बेगम वगैरह का हाल तो काशिराज ने महाराज को लिखा होगा ?

सुरेन्द–हॉ काशिराज ने गोपालसिह को लिखा था कि 'तुम्हारे ऐयार भूतनाथ के निशान देने के मुताबिक बलभद्रसिह के दुश्मन गिरफ्तार कर लिए गए है और मनोरमा का मकान भी जब्त कर लिया गया है'। गोपालसिह ने यह समाचार मुझको लिखा था !

इन्द्रदेव–ठीक है तो अब उन कैदियों के लिए भी उचित प्रबन्ध कर देना चाहिए जिन्हें मै अपने साथ लाया हू।

सुरेन्द–उसका प्रबन्ध बद्रीनाथ कर चुके होंगे क्योंकि कैदियों का इन्तजाम उन्हीं के सुपुर्द है।

बद्री–(इन्द्रदेव से) उनके लिए आप तरद्दुद न करें क्योंकि वे लोग अपने उचित स्थान पर पहुँचा दिए गए।

पन्नालाल–(सुरेन्दसिह स– भूतनाथ और बलभद्रसिह की तरफ बताकर) मगर इन दोनों महाशयों में से जिनकी खातिरदारी मेरे सुपुर्द की गई यह बलभद्रसिह जी कहत है कि मै महाराज का अन्न न खाऊँगा बल्कि अपने आराम की कोई चीज भी यहॉ से न लूगा क्योंकि अब यह बात मालूम हो चुकी है कि राजा गोपालसिह महाराज के पोते हैं और

सुरेन्द–ठीक है ठीक है वास्तव में ऐसा ही होना चाहिए। (बलभद्रसिह से) मगर आप बहुत ही मुसीबत और कैद से, छूट कर आए हैं इसलिए आपके पास रुपये पैसे की जरूर कमी होगी फिर आप क्योंकर अपने लिए हर तरह का सामान जुटा सकेंगे ?

बलभद्र–मै भी इसी फिक्र में डूबा हुआ था मगर ईश्वर ने बडी कृपा की जो मेरे प्यारे मित्र इन्द्रदेव को यहॉ भेज दिया। जब मुझे किसी तरह की तकलीफ न होगी जो कुछ जरूरत पडेगी मैं इनसे ले लूगा, फिर इसके बाद मुझे यह भी आशा हे कि दुष्टों का मुकदमा हो जाने पर बेगम के कब्जे से निकली हुई मेरी दौलत भी मुझे मिल जायगी।

इन्द–(हाथ जोड कर महाराज सुरेन्दसिह से) मरे मित्र बलभद्रसिह जो कुछ कह रहे हैं, ठीक है और आशा है कि महाराज भी इस बात को स्वीकार कर लेंगे।

सुरेन्द–(पन्नालाल से) खैर ऐसा ही किया जाय इन्द्रदेव का डेरा बलभद्रसिह के साथ ही करा दो, जिसमें ये दोनों मित्र प्रसन्नता से आपस में बातें करते रहें।

इन्द्रदेव–(हाथ जोडकर) मै भी यही अर्ज किया चाहता था आज न मालूम किस तरह, कितने दिनों के बाद, ईश्वर ने मित्र दर्शन का सुख दिया है, सो भी ऐसे मित्र का दर्शन जिसके मिलने की आशा कर ही नहीं सकते थे और इसके लिए हम लोग भूतनाथ के बडे ही कृतज्ञ हैं।

भूतनाथ–वह सब महाराज के चरणों का प्रताप है जिनके सदैव दर्शन के लोभ से महाराज का कुछ न बिगाडने पर भी मैं अपने को दोषी बनाए और भगवती की कृपा पर भरोसा किए बैठा हुआ हूँ।

इन्द्रदेव–(महाराज की तरफ देख के) वास्तव में ऐसा ही है। अभी तक जो कुछ मालूम हुआ है उससे तो यही जाना जाता है कि भूतनाथ ने महाराज के यहॉ एक दफे चोरी करने के अतिरिक्त और कोई काम ऐसा नहीं किया जिससे महाराज या महाराज के सम्बन्धियों को दु ख हो ,

भूतनाथ–(लज्जा से नीची गर्दन करके) और सो भी बदनीयती के साथ नहीं !

इन्द्रदेव–आगे चलकर और कोई बात जानी जाय तो मै नहीं कह सकता, मगर

भूत–ईश्वर न करे ऐसा हो।

बीरेन्द–भूतनाथ ने अगर हम लोगों का कोई कसूर किया भी हो तो अब हम लोग उस पर ध्यान नहीं दे सकते क्योंकि रोहतासगढ के तहखाने में मै भूतनाथ का कसूर माफ कर चुका हूँ।

भूत–ईश्वर आपका सहायक रहे !

इन्द्रदेव–लेकिन अगर भूतनाथ ने किसी ऐसे के साथ बुरा बर्ताव किया हो जिससे आज के पहिले महाराज का कोई सम्बन्ध न था तो उस पर भी महाराज को विशेष ध्यान न देना चाहिये।

तेज–जी हॉ मगर इसमें कोई शक नहीं कि भूतनाथ की जीवनी अनेक अद्भुत अनूठी और दुखद घटनाओं से भरी हुई है। मै समझता हूँ कि भूतनाथ ने लोगों के दिल पर अपना भयानक प्रभाव तो पैदा किया परन्तु अपने कामों की

बदौलत अपने को सुखी न बना सका उल्टा इसने जमाने को दिखा दिया कि प्रतिष्ठा और सभ्यता का पल्ला छोडकर केवल लक्ष्मी का कृपापात्र बनने के लिए उद्योग और उत्साह दिखाने वाले का परिणाम कैसा होता है।

इन्द्रदेव–नि सन्देह ऐसा ही है। अगर भूतनाथ उसके साथ ही साथ प्रतिष्ठा और सभ्यता का पल्ला भी मजबूती के साथ पकडे होता और इस बात पर ध्यान रखता कि जो कुछ करे वह इसकी प्रतिष्ठा के विरुद्ध न होने पावे तो आज दुनिया में भूतनाथ तीसरे दर्जे का ऐयार कहा जाता।

जीत–(मुस्कुराकर) मगर सुना जाता है कि अब भूतनाथ इज्जत और हुर्मत की मीनार पर चढकर दुनिया की सैर किया चाहता है और यह बात देवताओं को भी वश में कर लेने वाले मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर नही।

इन्द्रदेव–अगर सिफारिश न समझी जाय तो मै यह कहने का हौसला कर सकता हू कि दुनिया में इज्जत और हुर्मत उसी को मिल सकती है जो इज्जत और हुर्मत का उचित बर्ताव करता हुआ किसी बडे इज्जत और हुर्मत वाले का कृपापात्र बने।

देवी–भूतनाथ का खयाल भी आज कल इन्हीं बातों पर है। मैने बहुत दिनों तक छिप-छिप भूतनाथ का पीछा कर के जान लिया है कि भूतनाथ को होशियारी,चालाकी और ऐयारी की विद्या के साथ ही साथ दौलत की भी कमी नहीं है। अगर यह चाहे तो बेफिक्री के साथ अमीराना ढग पर अपनी जिन्दगी बिता सकता है मगर भूतनाथ इसे पसन्द नहीं करता और खूब समझता है कि वह सच्चा सुख जो प्रतिष्ठा सभ्यता और सज्जनता के साथ सज्जन और मित्र मण्डली में बैठ कर हँसने-बोलने से प्राप्त होता है और ही कोई वस्तु है और उसके बिना मनुष्य का जीवन वृथा है।

बलभद्र–बेशक यही सबब है कि आजकल भूतनाथ अपना समय ऐसे ही कामों और विचारों में बिता रहा है और चाहता है कि अपना चेहरा बेदाग आइने में उसी तरह देख सके जिस तरह हीरा निर्मल जल में, मगर इसके लिए भूतनाथ को अपने पुराने मालिक से भी मदद लेनी चाहिए।

इन्द्रदेव–(कुछ चौककर) हा, मै यह निवेदन करना तो भूल ही गया कि आज ही कल में यहा रणधीरसिह भी आने वाले हैं अस्तु उनके लिए महाराज को प्रबन्ध कर देना चाहिए।

यह एक ऐसी बात थी जिसने भूतनाथ को चौका दिया और वह थोडी देर के लिए किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न हो गया मगर उद्योग करके उसने शीघ्र ही अपने दिल का सम्हाला और कहा–

भूतनाथ–क्योंकि वे महाराज के मेहमान बनकर इस मकान में रहना कदाचित स्वीकार न करेंगे।

जीत–ठीक है तो उनके लिए दूसरा प्रबन्ध किया जायगा।

इन्द–उनका आदमी उनके लिए खेमा वगैरह सामान लेकर आता ही होगा।

जीत–(इन्द्रदेव से) हमारे पास कोई इत्तिला तो नहीं आई !

इन्द–जी यह काम भी मेरे ही सुपुर्द किया गया था।

जीत–तो क्या तुम्हारे पास उनका कोई आदमी या पत्र गया था ?

इन्द–जी नहीं वे स्वय राजा गोपालसिह के पास यह सुनकर गए थे कि माधवी उन्हीं के यहाँ कैद है क्योंकि उन्होंने अपने हाथ से माधवी को मार डालने का प्रण किया था

सुरेन्द–(ताज्जुब से) तो क्या उन्होंने माधवी को अपने हाथों से मारा ?

इन्द–जी नहीं, अपने खानदान की एक लडकी को मारकर हाथ रगने की बनिस्बत प्रतिज्ञा भग करना उत्तम समझा उस समय मै भी वहाँ था।

भूत–(सुरेन्द्रसिह के साथ हाथ जोडकर) यदि मुझे आज्ञा हो तो खेमा वगैरह खडा करने का इन्तजाम मै करुँ और समय पर आगवानी के लिए कुछ दूर जाकर अपना कलकित मुख उनको दिखाऊँ। यद्यपि मै इस योग्य नहीं हू और न वे मेरी सूरत देखना पसन्द ही करेंग मगर उनके नमक से पला हुआ यह शरीर उनसे दुर्दुराया जाकर भी अपनी प्रतिष्ठा ही समझेगा।

सुरेन्द–ठीक है मगर उनकी इच्छा के विरुद्ध ऐसा करने की आज्ञा हम नहीं दे सकते। हा यदि तुम अपनी इच्छा से ऐसा करो तो हम रोकना भी उचित नही समझेंगे।

ये बातें हो ही रही थीं कि जमानिया से राजा गोपालसिह के कूच करने की इत्तिला मिली इस तौर पर कि– किशोरी कामिनी और लक्ष्मीदेवी वगैरह को लिए राजा गोपालसिह चले आ रहे हैं'।

नौवां बयान

चुनारगढ वाली तिलिस्मी इमारत के चारों तरफ छोटे बडे सैकडों खेमों डेरों रावटियों और शामियानों की बहार दिखाई दे रही है जिनमें से बहुतों में लोगों के डेरे पड चुके है और बहुत अभी तक खाली पडे है मगर वे धीरे-धीरे भर

रहे हैं। किशोरी के नाना रणधीरसिह और किशोरी कामिनीवगैरह को लिए हुए राजा गोपालसिह भी आ गए हैं और इन लोगों के साथ कुछ फौजी सिपाही भी आ पहुँचे हैं जो कायदे के साथ रावटियों में डरा डाले हुए हैं। किशोरी इत्यादि महल में पहुँचा दी गई है जिसके सबब से अन्दर तरह-तरहकी खुशियाँ मनाई जा रही हैं। राजा गोपालसिह का डेरा भी तिलिस्मी इमारत के अन्दर ही पडा है। राजा बीरेन्द्रसिह ने उनके लिए अपने कमरे के पास ही एक सुन्दर और सजा हुआ कमरा मुकर्रर कर दिया है और उनके (गोपालसिह के) साथी लाग इमारत के बाहर वाले खेमों में उतरे हुए हैं। इसी तरह रणधीरसिह का भी डेरा इमारत क बाहर उन्हीं के भेजे हुए खेमे में पडा है और वे यहाँ पहुच कर राजा सुरेन्द्रसिह और बीरेन्द्रसिह तथा और लोगों से मुलाकात करन के बाद किशोरी और कमला से मिल कर खुश हो चुके है और साथ ही इसके भूतनाथ की नजर भी कबूल कर चुके हैं जिसकी उम्मीद भूतनाथ को कुछ भी न थी।

इसी तरह राजा बीरेन्द्रसिहे के बचे हुए ऐयार लोग भी जो यहा मौजूद न थे, अब आ गए है, यहा तक कि रोहतासगढसे ज्योतिषीजी का डेरा भी आ गया है और वे भी तिलिस्मी इमारत के बाहर एक खेमे में टिके हुए है।

इनके अतिरिक्त कई बडे-बड रईस जमींदार और महाजन लोग भी गया रोहतासगढ जमानिया और चुनार वगैरह से राजा बीरेन्द्रसिह को नजर और मुबारकबाद देने की नीयत से आये हुए हैं जिनके सबब से यहाँ खूब अमन-चमन हो रहा है और सभी को यह भी विश्वास है कि कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह भी तिलिस्म फतह करते हुए शीघ्र आना चाहते हैं और उनके आने के साथ ही ब्याह शादी के जलसे शुरू हो जायगे। साथ ही इसके भूतनाथ वगैरह के मुकदमे से भी सभों को दिलचस्पी हो रही है यहा तक कि बहुत से लोग केवल इसी कैफियत को देखने-सुनने की नीयत से आए हुए हैं।

तिलिस्मी इमारत के बाहर एक छोटा सा बाजार लग गया है जिसमे जरूरी चीजें तथा खाने का कच्चा गल्ला तथा सब तरह का सामान मेहमानों के लिए मौजूद है और राजा साहब की आज्ञा है कि जिसको जिस चीज की जरूरत हो दी जाय और उसकी कीमत किसी से भी न ली जाय। इस काम की निगरानी के लिए कई नेक और ईमानदार मुन्शी मुकर्रर हैं जो अपना काम बडी खूबी और नेकनीयती के साथ कर रहें हैं। यह बात तो हुई है मगर लोगों को आश्चर्य के साथ उस समय और भी आनन्द मिलता है जब एक बहुत बडे खेमे या पन्डाल के अन्दर कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह की शादी का सामान इकटठा होते देखते है।

कैदियों को किसी खेमे में जगह नहीं मिली है बल्कि वे सब तिलिस्मी इमारत के अन्दर एक ऐसे स्थान में रक्खे गये हैं जो उन्हीं के योग्य है, मगर भूतनाथ बिल्कुल आजाद है और आश्चर्य के साथ लोगों की उगलियाँ उठवाता हुआ इस समय चारों तरफ घूम रहा है और महमानों की खातिरदारी का खयाल भी करता रहता है।

राजा साहब की आज्ञानुसार तिलिस्मी इमारत के अन्दर पहिले खण्ड में एक बहुत बडा दालान उस आलीशान दर्बार के लिए सजाया जा रहा है जिसमें पहिले तो भूतनाथ तथा अन्य कैदियों का मुकद्दमा फैसला किया जायगा और बाद में दोनों कुमारों के ब्याह की महफिल का आनन्द लागों को मिलगा और इसे लोग 'दर्बारे-आम' के नाम से सम्बोधन करते हैं। इसके अतिरिक्त 'दर्बारे-खास' के नाम से दूसरी मजिल पर एक और कमरा सज कर तैयार हुआ है जिसमें नित्य पहर दिन चढे तक दर्बार हुआ करेगा और उसमें खास-खासतथा ऐयारी पेशे वाले लोग बैठ कर जरूरी कामों पर विचार किया करेंगे। इस समय हम अपने पाठकों को भी इसी दर्बारे खास में ले चल कर बैठाते हैं।

एक ऊँची गद्दी पर महाराज सुरेन्द्रसिह और उनके बाई तरफ राजा बीरेन्द्रसिह बैठे हुए हैं। सुरेन्द्रसिह के दाहिने तरफ जीतसिह और बीरेन्द्रसिह के बाई तरफ तेजसिह बैठे हैं और उनके बगल में क्रमश देवीसिह पन्डित बद्रीनाथ रामनारायण जगन्नाथ ज्योतिषी पन्नालाल और भूतनाथ वगैरह दिखाई दे रहे हैं और भूतनाथ के बगल में चुन्नी लाल हाथ में नगी तलवार लिए हुए खड़े हैं। उधर जीतसिह के बगल में राजा गोपालसिह और फिर क्रमश बलभद्रसिह इन्द्रदेव भैरोसिह वगैरह बैठे है और उनके बगल में नाहरसिह नगी तलवार लिए खडा है और इस बात पर विचार हो रहा है कि कैदियों का मुकद्दमा कब से शुरू किया जाय तथा उस सम्बन्ध में किन-किन बातों या चीजों की जरूरत है।

इसी समय चोबदार ने आकर अदब से अर्ज किया— 'महल के दर्वाजे पर एक नकाबपोश हाजिर हुआ है जो पूछने पर अपना परिचय नहीं देता परन्तु दर्बार में हाजिर हाने की आज्ञा माँगता है।

इस खबर को सुन कर तेजसिह ने राजा साहब की तरफ देखा और इशारा पाकर उस सवार को हाजिर करने के लिए चोबदार को हुक्म दिया।

वह नौजवान नकाबपोश सवार जो सिपाहियाना ठाठ के बेशकीमत कपडों से अपने को सजाए हुए था हाजिर होने की आज्ञा पा कर घोडे स उतर पडा। अपना नेजा जमीन में गाड और उसी के सहारे घोडे की लगाम अटकाकर वह इमारत के अन्दर गया और चोबदार के साथ घूमता फिरता दर्बारे-खास में हाजिर हुआ। महाराज सुरेन्द्रसिह बीरेन्द्रसिह

जीतसिह और तेजसिह को अदब से सलाम करने बाद उसने अपना दाहिना हाथ जिसमें एक चीठी थी दर्बार की तरफ बढाया और देवीसिह ने उसके हाथ से पत्र लेकर तेजसिह के हाथ में दे दिया। तेजसिह ने राजा वीरेन्द्रसिह को दिया, उन्होंने उसे पढकर जीतसिह के हवाले किया और इसके बाद वीरेन्द्रसिह और तेजसिह ने भी वह पत्र पढा।

जीत–(नकाबपोश से) 'इस पत्र के पढ़ने से जाना जाता है कि खुलासा हाल तुम्हारी जुबानी मालूम होगा ?

नकाबपोश–(हाथ जोडकर) जी हॉ। मेरे मालिकों ने यह अर्ज करने के लिए मुझे यहाँ भेजा है कि हम दोनों भूतनाथ तथा और कैदियों का मुकद्दमा सुननेके समय उपस्थित रहने की इच्छा रखते हैं और आशा करते हैं कि इसके लिए महाराज प्रसन्नता के साथ हम लोगों को आज्ञा देंगे। हम लोग यह प्रतिज्ञापूर्वक कहते हैं कि हम लोगों के हाजिर होने का नतीजा देख कर महाराज प्रसन्न होंगे।

जीत–मगर पहिले यह तो बताओ कि तुम्हारे मालिक हैं कौन और कहा रहते हैं ?

नकाब–इसके लिए आप क्षमा करें क्योंकि हमारे मालिक लोग अभी अपने को प्रकट नहीं किया चाहते और इसीलिए जब यहा उपस्थित होंगे तो अपने चेहरे पर नकाब डाले होंगे। हाँ मुकद्दमा खतम हो जाने के बाद वे अपने को प्रसन्नता के साथ प्रकट कर देंगे। आप देखेंगे कि उनकी मौजूदगी में मुकद्दमा सुनने के समय कैसे-कैसे गुल खिलते हैं जिससे आशा है कि 'महाराज भी बहुत प्रसन्न होंगे।

जीत–कदाचित् तुम्हारा कहना ठीक हो मगर ऐसे मुकदमों में जिन्हें घरेलू मुकद्दमे भी कह सकते हैं अपरिचित लोगों को शरीक होने और बोलने की आज्ञा महाराज कैसे दे सकते है ?

नकाब–ठीक है महाराज मालिक हैं जो उचित समझें करें मगर इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि अगर उस समय हमारे मालिक लोग (केवल दो आदमी) उपस्थित न होंगे तो मुकद्दमे की बारीक गुत्थी सुलझ न सकेगी और यदि वे पहिले ही से अपने को प्रकट कर देंगे तो

जीत–(तेजसिह से) इस विषय में उचित यही है कि एकान्त में इस नकाबपोश सेबात-चीत की जाय।

तेज–(हाथ जोडकर) जो आज्ञा।

इतना कह कर तेजसिह उठे और उस नकाबपोश को साथ लिए हुए एकान्त में चले गए।

इस नकाबपोश को देखकर सभी हैरान थे। इसकी सिपाहियाना चुस्त और बेशकीमत पौशाक, इसका बहादुराना ढंग और इसकी अनूठी बातों ने सभों के दिल में खलबली पैदा कर दी थी खासकरके भूतनाथ के पेट में तो चूहे दौडने लगे और उसने इस नकाबपोश की असलियत जानने का ख्याल अपने दिल में मजबूती के साथ बॉध लिया था। यही कारण था कि जब थोडी देर बाद तेजसिह उन नकाबपोश से बातें करके और उसको साथ लिए हुए वापस आए तब सभों का ध्यान उसी तरफ चला गया और सभी यह जानने के लिए व्यग्र होने लगे कि देखें तेजसिह क्या कहते हैं।

तेजसिह ने अपने बाप जीतसिह की तरफ देख कर कहा 'मेरे ख्याल से इनकी प्रार्थना स्वीकार करने में कोई हर्ज नहीं है। यदि मान लिया जाय कि वे लोग हमारे साथ दुश्मनी भी रखते हों तो भी हमें इसकी कुछ परवाह नहीं हो सकती और न वे लोग हमारा कुछ बिगाड ही सकते है।

तेजसिह की बात सुन कर जीतसिह ने महाराज की तरफ देखा और कुछ इशारा पाकर नकाबपोश से कहा, 'खैर तुम्हारे मालिकों की प्रार्थना स्वीकार की जाती है। उनसे कह देना कि कल से नित्य एक पहर दिन चढने के बाद इस दर्बारे- खास में हाजिर हुआ करें।

नकाबपोश ने झुककर सलाम किया और जिधर से आया था उसी तरफ लौट गया। थोडी देर तक और कुछ बात-चीत होती रही जिसके बाद सब कोई अपने-अपने ठिकाने चले गए। केवल महाराज सुरेन्द्रसिह वीरेन्द्रसिह जीतसिंह तेजसिह और गोपालसिह रह गए और इन लोगों में कुछ देर तक उसी नकाबपोश के विषय में बात-चीत होतीरही। क्या क्या बातें हुई इसे हम इस जगह खोलना उचित नहीं समझते और न इसकी जरूरत ही देखते हैं।

दसवां बयान

दूसरे दिन फिर उसी तरह का दर्बारे खास लगा जैसा पहिले दिन लगा था और जिसका खुलासा हाल हम ऊपर के बयान में लिख आए हैं। आज के दर्बार में वे दोनों नकाबपोश हाजिर होने वाले थे जिनकी तरफ से कल एक नकाबपोश आया था अस्तु राजा साहब की तरफ से कल ही सिपाहियों और चोबदारों को हुक्म मिल गया था कि जिस समय दोनों नकाबपोश आवें उसी समय बिना इत्तिला किए ही दर्बार में पहुँचा दिये जॉय। यही सबब था कि आज दरबार लगने के कुछ ही देर बाद एक चोबदार के पीछे-पीछे वे दोनों नकाबपोश हाजिर हुए।

इन दोनों नकाबपोशों की पौशाक बहुत ही बेशकीमत थी। सर पर बेलदार शलमा * था जिसके आगे हीरे का जगमगाता हुआ सरपेंच था। भद्दी-मगर क़ीमती नकाब में बडे-बडे मोतियों की झालर लगी हुई थी। चपकन और पायजामे में भी सलमें सितारे की जगह हीरे और मोतियों की भरमार थी तथा परतले क बेशकीमत हीरे ने तो सभों को ताज्जुब ही में डाल दिया था जिसके सहारे जडाऊ कब्जे की तलवार लटक रही थी। दोनों नकाबपोशों की पौशाक एक ही ढग की थी और दोनों एक ही उम्र के मालूम पडते थे।

यद्यपि देखने से तो यही मालूम होता था कि ये दोनों नकाबपोश राजाओ से भी ज्यादे दौलत रखने वाल और किसी अमीर खान्दान के होनहार बहादुर हैं मगर इन दोनों ने बडे अदब के साथ महाराज सुरेन्द्रसिह और वीरेन्द्रसिह जीतसिह को सलाम किया और इन तीनों के सिवाय और किसी की तरफ ध्यान भी न दिया। महाराज की आज्ञानुसार राजा गोपालसिह के बगल में इन दोनों को जगह मिली जीतसिह ने सभ्यतानुसार कुशलमगल का प्रश्न किया।

दुष्टों क सिरताज पतित के महाराजाधिराज नमकहरामों के किबलेगाह और दोजखियों के जहापनाह मायारानी के तिलिस्मी दारोगा साहब तलब किये गए और जब हाजिर हुए तो बिना किसी को सलाम किए जहा चोबदार ने बैठाया बैठ गय। इस समय इनके हाथों में हथकडी और पैरों में ढीली बेडी पडी हुई थी। जब से इन्हें कैदखाने की हवा नसीब हुई तब से बाहर की कोई खबर इनके कानों तक पहुची न थी। इन्हीं के लिए नहीं बल्कि तमाम कैदियों के लिए इस बात का इन्तजाम किया गया था कि किसी तरह की अच्छी या बुरी खबर उनके कानों तक न पहुँचे और न कोई उनकी बातों का जवाब ही दे।

महाराज का इशारा पाकर पहिले राजा गापालसिह न बात शुरू की और दारोगा की तरफ देख कर कहा –

गोपाल–कहिए दारागा साहब मिजाज ता अच्छा है ! अब आपको अपनी बकसूरी साबित करने के लिए किन-किन चीजों की जरूरत है ?

दारोगा–मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है और उम्मीद करता हूँ कि आपको भी इस बात का कोई सबूत न मिला होगा कि मैंने आपके साथ किसी तरह की बुराई की थी या मुझ इस बात की खबर भी थी कि आपको मायारानी ने कैद कर रक्खा है।

गोपाल–(मुस्कुराते हुए) नहीं-नहीं आप मेरे बारे में किसी तरह का तरददुद न करें। मैं आपसे अपने मामले में बात-चीत करना नहीं चाहता और न यही पूछना चाहता हूँ कि शुरू-शुरू में आपने मेरी शादी में कैसे-कैसे नोंक-झोंक के काम किए और बहुत सी मडवे की बातों को तै करते हुए अन्त में किस मायारानी को लेकर अपने किस मेहरबान गुरुभाई के पास किस तरह की मदद लेने गये थे या फिर जमाने ने क्या रग दिखाए, इत्यादि। मेरे साथ तो जो कुछ आपने किया उसे याद करने का ध्यान भी मैं अपने दिल में लाना पसन्द नहीं करता मगर मेरे पुराने दोस्त इन्द्रदेव आपसे कुछ पूछे बिना भी न रहेंगे। उन्हें चाहिए था कि अब भी अपने गुरु भाई का नाता निबाहें मगर अफसोस किसी बेविश्वासे ने उन्हें यह कह कर रञ्ज कर दिया है कि इन्दिरा और सर्यू की किस्मतों का फैसला भी इन्हीं दारागा साहब के हाथ से हुआ है !

राजा गोपालसिह के जुबानी थपेडा ने दारोगा का मुंह नीचा कर दिया। पुरानी बातों और करतूतों ने ऑखों के आगे ऐसी भयानक सूरतें पैदा कर दीं जिनके देखने की ताकत इस समय उसमें न थी। उसके दिल में एक तरह का दर्द सा मालूम हाने लगा और उसका दिमाग चक्कर खाने लगा। यद्यपि उसकी बदकिस्मती और उसके पापों ने भयानक अन्धकार का रूप धारण करके उसे चारों तरफ से घेर लिया था परन्तु इस अन्धकार में भी उसे सुबह के झिलमिलाते हुए तारे की तरह उम्मीद की एक बारीक और हलकी रोशनी बहुत दूर पर दिखाई दे रही थी जिसका सबब इन्द्रदेव था क्योंकि इसे (दारोगा को) इन्दिरा और सर्यू के प्रकट होने का हाल कुछ भी मालूम न था और वह यही समझ रहा था कि इन्द्रदेव पहिल की तरह अभी तक इन बातों से बेखबर होगा और इन्दिरा और सर्यू भी तिलिस्म के अन्दर मर-खप कर अपने बारे में मेरी बदकारियों का सबूत अपने साथ ही लेती गई होंगी अस्तु ताज्जुब नहीं कि आज भी इन्द्रदेव मुझे अपना गुरुभाई समझकर मदद करे। इसी सबब से उसने मुश्किल से अपने दिल को सम्हाला और इन्द्रदेव की तरफ देख के कहा–

'राम-राम भला इस अनर्थ का भी कुछ ठिकाना है ! क्या आप भी इस बात को सच मान सकते हैं ?

इन्द्रदेव–अगर इन्दिरा मर गई होती और यह कलमदान नष्ट हो गया होता तो इस बात को मानने के लिए मुझे जरूर कुछ उद्योग करना पडता।

इतना कहकर इन्द्रदेव ने इन्दिरा की तस्वीर वाला वह कलमदान निकाल कर सामने रख दिया।

---

* पगडी का सिरा।

इन्द्रदेव की बातें सुन और इस कलमदान की सूरत पुन देखकर दारोगा की बची बचाई उम्मीद भी जाती रही। उसने भय और लज्जा से सिर झुका लिया और बदन में पैदा हुई कँपकपी को रोकने का उद्योग करने लगा। इसी बीच में भूतनाथ बोल उठा –

दारोगा साहब इन्दिरा को आपके पंजे से बार-बार छुड़ाने वाला भूतनाथ भी तो आपके सामने ही मौजूद है और अगर आप चाहें तो उस नेकबख्त औरत से भी मिल सकते हैं जिसने उस बाग में आपको कूएँ के अन्दर और बेचारी इन्दिरा को दुख के अथाह समुद्र से बाहर किया था।

भूतनाथ की बात सुनते ही दारोगा कांप गया और घबडाकर उन नए आए हुए दोनों नकाबपोशों की तरफ देखने लगा। उसी समय उनमें से एक नकाबपोश ने नकाब हटाकर रुमाल से अपने चेहरे को इस तरह पोछा जैसे पसीना आने पर कोई अपने चेहरे को साफ करता है लेकिन इससे उसका असल मतलब केवल इतना ही था कि दारोगा उसकी सूरत देख ले।

दारोगा के साथ ही साथ और कई आदमियों की निगाह उस नकाबपोश के चेहरे पर पड गई मगर उनमें से किसी ने भी आज के पहिले उसकी सूरत नहीं देखी थी इसलिए कोई कुछ अनुमान न कर सका हाँ दारोगा उसकी सूरत देखते ही भय और दुख से पागल हो गया। वह घबड़ाकर उठ खडा हुआ और उसी समय चक्कर खाकर जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गया।

यह कैफियत देख लोगों को बडा ही ताज्जुब हुआ। राजा सुरेन्द्रसिह, जीतसिह वीरेन्द्रसिह तेजसिह देवीसिह और राजा गोपालसिंह ने भी उस नकाबपोश की सूरत देख ली थी मगर इनमें से न तो किसी ने उसे पहिचाना और न उससे कुछ पूछना ही उचित जाना अस्तु आज्ञानुसार दरबार बर्खास्त किया गया और वह कमबख्त नकटा दारोगा पुन कैदखाने की अंधेरी कोठरी में डाल दिया गया। उन दोनों नकाबपोशों में से एक ने तेजसिह से पूछा कल किसका मुकद्दमा होगा? जवाब में तेजसिह ने बलभद्रसिह का नाम लिया और दोनों नकाब पोश वहा से रवाना हो गये।

ग्यारहवां बयान

दूसरे दिन नियत समय पर फिर दरबार लगा और वे दोनों नकाबपोश भी आ मौजुद हुए। आज के दरबार में बलभद्रसिह भी अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए थे। आज्ञानुसार पुन वह नकटा दारोगा और नकली बलभद्रसिह हाजिर किए गए और सबसे पहिले इन्द्रदेव ने नकली बलभद्रसिह से इस तरह पूछना शुरू किया–

इन्द्रदेव–क्यों जी, क्या असली बलभद्रसिह का ठीक-ठीक पता न बताओगे?

नकली बलभद्र–(लम्बी सॉस लेकर और महाराजा साहब की तरफ देखकर) कैसा बुरा जमाना हो रहा है। हजार बार पहिचाने जाने पर भी अभी तक मैं नकली बलभद्रसिह ही कहा जाता हू और गुनाहों की टोकरी सर पर लादने वाले भूतनाथ को मूछों पर ताव देता हुआ देखता हू। (इन्द्रदेव की तरफ देखकर) मालूम होता है कि आपको जमानिया के दारोगा वाला रोजनामचा नहीं मिला, अगर मिलता तो आपको मुझ पर किसी तरह का शक न रहता।

भूत–(जैपाल अर्थात् नकली बलभदसिह से) तुझे अभी तक हौसला बना ही हुआ है?
(तेजसिह से) कृपानिधान अभी कल की बात है, आप उन बातों को कदापि न भूले होंगे जो मैंने कमलिनीजी के तालाब वाले तिलिस्मी मकान में इस दुष्ट के सामने आप लोगों से उस समय कही थीं जब आप लोग इसे सच्चा मानकर मुझे कैदखाने की हवा खिलाने का बन्दोबस्त कर चुके थे। क्या मैंने नहीं कहा था कि महाराज के सामने मेरा मुकद्दमा एक अनूठा रंग पैदा करके मेरे बदले में किसी दूसरे ही को कैदखाने की कोठरी का मेहमान बनावेगा? देखिये आज वह दिन आपकी ऑखों के सामने है आपके साथ वे लोग भी हर तरह से मेरी बातों को सुन रहे हैं जिन्होंने उस दिन इसे असली बलभद्रसिह मान लिया और मुझे घृणा की दृष्टि से भी देखना पसन्द नहीं करते थे। आशा है आप लोग उस समय की भूल पर अफसोस करेंगे और इस समय मैं बडे अनूठे रहस्यों को खोलकर जो तमाशा दिखाने वाला हू उसे ध्यान देकर देखेंगे।

तेज–बेशक ऐसा ही है औरों के दिल की तो मैं नहीं कह सकता, मगर मैं अपनी उस समय की भूल पर जरूर अफसोस करता हू।

इस कमरे में जिसमें दर्बार लगा हुआ था ऊपर की तरफ कई खिडकिया थीं जिनमें दोहरी चिकें पडी हुई थीं जहा बैठी लक्ष्मीदेवी कमलिनी वगैरह इन बातों को बड़े गौर से सुन रही थीं। भूतनाथ ने पुन जैपाल की तरफ देखा और कहा–

भूत–अब मैं उन बातों को भी जान चुका हूँ जिन्हें उस समय न जानने के कारण मैं सचाई के साथ अपनी बेकसूरी साबित नहीं कर सकता था। हां कहो अब तुम अपने बारे में क्या कहते हो ?

जैपाल–मालूम होता है कि आज तू अपने हाथ की लिखी हुई उन चीठियों से इनकार किया चाहता है जो तेरी बुराइयों के खजाने को खोलने क काम में आ चुकी हैं और आवेंगी। क्या लक्ष्मीदेवी की गद्दी पर मायारानी को बैठाने की कार्रवाई में तूने सबसे बडा हिस्सा नहीं लिया था और क्या वे सब चीठियाँ तेरे हाथ की लिखी हुई नहीं हैं ?

भूत- नहीं-नहीं मैं इस बात से इनकार नहीं करूँगा कि व चीठियाँ मेरे हाथ की लिखी हुई नहीं हैं बल्कि इस बात को साबित करूँगा कि लक्ष्मीदेवी के बारे में मैं बिल्कुल बेक़सूर हू और वे चीठियाँ जिन्हें मैंने अपने फायदे क लिए लिख रक्खा था मुझे नुकसान पहुँचाने का सबब हुईं, तथा इस बात को भी सबित करूँगा कि मैं वास्तव में वह रघुबरसिह नहीं हू जिसने लक्ष्मीदेवी के बारे में कार्रवाई की थी। इसके साथ ही तुझे और नकटे दारागा को भी यह सुनकर-अपने उछलते हुए कलजे को रोकने क लिए तैयार हा जाना चाहिए कि केवल असली बलभद्रसिह ही नहीं बल्कि इन्दिरा तथा सर्यू भी दम-भर म तुम लोगों की कलई खोलने के लिए यहाँ आ चुकी हैं।

जैपाल–(बेहयाई के साथ) मालूम होता है कि तुम लोगों ने किसी को जाली बलभद्रसिह बनाकर राजा साहब के सामने पश कर दिया है।

इतना सुनते ही **बलभद्रसिंह** न अपने चेहरे से नकाब हटाकर जैपाल की तरफ देखा और कहा, नहीं-नहीं जाली बलभद्रसिह बनाया नहीं गया बल्कि मैं स्वय यहाँ बैठा हुआ तेरी बातें सुन रहा हू।

बलभद्रसिह की सूरत देख के एक दफे तो जैपाल हिचका मगर तुरन्त ही उसने अपने को सम्हाला और परले सिरे की बेहयाई को काम में ला कर बोला आहा हेलासिह भी यहाँ आ गए ! मुझे तुमसे मिलने की कुछ भी आशा न थी, क्योंकि मेरे मुलाकातियों न जोर दकर कहा था कि हेलासिह मर गया और अब तुम उसे कदापि नहीं देख सकते।'

बलभद्र–(मुस्कुराता हुआ तेजसिह की तरफ देख के) ऐसे बेहया की सूरत भी आज के पहिले आप लोगों ने न देखी होगी। (जैपाल से) मालूम होता है कि तू अपने दोस्त हेलासिह की मौत का सबब भी किसी दूसरे को ही बताना चाहता है मगर ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि मेरे दोस्त भूतनाथ मेरे साथ हेलासिह के मामले का सबूत भी बेगम के मकान से लते आये हैं।

भूत– हाँ-हाँ वह सबूत भी मेरे पास मौजूद है जो सबसे ज्यादे मेरे खास मामले में काम देगा।

इतना कह के भूतनाथ ने दो-चारकागज दस बारह पन्ने की एक किताब, और हीरे की अँगूठी जिसके साथ छोटा सा पुरजा बँधा हुआ था अपने बटुए में से निकाल कर राजा गोपालसिह के सामने रख दिया और कहा, ' बेगम नौरतन और जमालो को भी तलब करना चाहिए।

इन चीजों को गौर से देखकर राजा गोपालसिह ताज्जुब में आ गए और भूतनाथ का मुंह देखने लगे।

भूत–(गोपालसिह से) आप जिस समय कृष्णाजिन्न की सूरत में थे उस समय मैंने आपसे अर्ज किया था कि अपनी 'बेकसूरी का बहुत अच्छा सबूत किसी समय आपके सामने ला रक्खूगा सो यह सबूत मौजूद है इसी से दोनों काम चलेगा।

गोपाल–(ताज्जुब के साथ) हाँ ठीक है, (बीरेन्द्रसिह से) य बडे काम की चीजें भूतनाथ ने पेश की हैं। बगम नौरतन और जमालो के हाजिर होने पर मैं इनका मतलब बयान करूँगा।

बीरेन्द्रसिह ने तजसिह की तरफ देखा और तेजसिह ने बगम नौरतन और जमालो के हाजिर होने का हुक्म दिया। इस समय जैपाल का कलेजा उछल रहा था। वह उन चीजों को अच्छी तरह देख नहीं सकता था और न उसे इसी बात का गुमान था कि बगम के यहा से भूतनाथ फलानी चीजें ले आया है।

कैदियों की सूरत में बेगम नौरतन और जमालो हाजिर हुईं। उस समय एक नकाबपोश ने जिसने भूतनाथ की पेश की हुई चीजों को अच्छी तरह देख लिया था गापालसिह से कहा मैं उम्मीद करता हू कि भूतनाथ की पेश की हुई इन चीजों का मतलब बनिस्बत आपके मैं ज्यादा अच्छी तरह बयान कर सकूगा। यदि आप मेरी बातों पर विश्वास करके य चीजें मरे हवाल करें तो उत्तम हो।

नकाबपोश की बातें सभी ने ताज्जुब क साथ सुनीं खास करके जैपाल ने जिसकी विचित्र अवस्था हो रही थी। यद्यपि वह अपनी जान से हाथ धो बैठा था मगर साथ ही इसके यह भी साच हुए था कि मेरी चालबाजियों में उलझे हुए भूतनाथ का कोई कदापि बचा नहीं सकता और इस समय भूतनाथ के मददगार जा आदमी हैं वे लोग तभी भूतनाथ का बचा सकेंगे जब मरी बातों पर पर्दा डालेंगे या मेरे कसूरों की माफी दिला देंगे तथा जब तक एसा न हागा मैं कभी भूतनाथ को अपने पजे से निकलने न दूँगा। यही सबब था कि एसी अवस्था में भी वह बोलने और बातें बनाने से बाज नहीं आता था।

नकाबपोश की बात सुनकर राजा गोपालसिह ने मुस्कुरा दिया और भूतनाथ की दी हुई चीजें उसके सामने रख कर कहा अच्छी बात है यदि आप मुझसे ज्यादा जानते हैं तो आप ही इस गुत्थी को साफ करें।

नकाबपोश–अच्छा होता यदि इन चीजों को पहिले बडे महाराज और जीतसिह भी देख लेते।

गोपाल–मैं भी यही चाहता हू।

इतना कहकर राजा गोपालसिह ने उन चीजों को हाथ में उठा लिया और तेजसिह की तरफ देखा। तेजसिह का इशारा पाकर देवीसिह राजा गोपालसिह के पास गए और वे चीजे ले कर जीतसिह के हाथ में दे आए।

महाराज सुरेन्द्रसिह जीतसिह राजा बीरेन्द्रसिह और तारासिह ने भी उन चीजों को अच्छी तरह देखा और इसके बाद महाराज की आज्ञानुसार जीतसिह ने कहा महाराज हुक्म देते हैं कि आज की कार्रवाई यहीं खतम की जाय और इसके बाद की कार्रवाई कल दर्बारे-आम में हो और इन पुर्जों का मतलब भी कल ही के दर्बार में नकाबपोश साहब बयान करें।

इस बात को सभों ने पसन्द किया खास करके दोनों नकाबपोश और भूतनाथ की भी यही इच्छा थी अस्तु दर्बार बर्खास्त हुआ और कल के लिए दर्बारे-आम की मुनादी की गई।

बारहवां बयान

आज के दर्बारे-आम की बैठक भी उसी ढग की है जैसा कि हम दर्बारे-खास के बारे में बयान कर चुके है अगर फर्क है तो सिर्फ इतना ही कि दर्बारे-खास में बेठने वाले लोगों के बाद उन रईसो, अमीरों और अफसरों तथा ऐयारों को दर्जे बदर्जे जगह मिली हैं जो आज के दर्बारे में शरीक हुए है और आदमी भी बहुत ज्यादे इकट्ठे हुए है मगर आवाज के खयाल से पूरा-पूरा सन्नाटा छाया हुआ है। गुलशोर की तो दूर रहे किसी की मजाल नहीं कि विना मर्जी के चुटकी भी बजा सके। इसके अतिरिक्त नगी तलवार लिए रुआबदार फौजी सिपाहियों के पहरे का इन्तजाम भी बहुत ही मुनासिब और खूबसूरती के साथ किया गया है और बाहर के आए हुए मेहमान भी बडी दिलचस्पी के साथ बलभद्रसिह और भूतनाथ का मुकद्दमा सुनने के लिए तैयार हैं।

नकटा दारोगा जैपाल, बेगम नौरतन और जमालो के हाजिर होने बाद तेजसिह ने कल के दर्बार में भूतनाथ की पेश की हुई चीठियाँ अगूठी और छोटी किताब राजा गोपालसिह को दे दी और राजा गोपालसिह ने इस ख्याल से कि कल के और परसों के मामले से भी सभी को आगाही हो जानी चाहिए जो कुछ पिछले दो दिन के दर्बारे-खास में हुआ था रणधीरसिह की तरफ देखकर बयान किया और इसके बाद कहा ' आज भी वे दोनों नकाबपोश इस दर्बार में हाजिर हैं जिन्हें हम लोग ताज्जुब की निगाहों से देख रहे है और नहीं जानते कि कौन है कहाँ के रहने वाल है या इन मामलों से इन्हें क्या सम्बन्ध है जिसके लिए इन दोनों ने यहाँ आने और मुकद्दमें में शरीक होने का कष्ट स्वीकार किया है। फिर भी जब तक ये दोनों अपने को प्रकट न करें हम लोगों को इनका हाल जानने के लिए उद्योग न करना चाहिए और देखना चाहिए कि इनकी कार्रवाइयों और बातों का असर कम्बख्त मुजरिमों पर कैसा पडता है।'

यह कहकर गोपालसिह ने वह अँगूठी चीठियाँ और छोटी किताब नकाबपोश के आगे रख दी।

इस दर्बार-आम वाले मकान में भी ऐसी जगह बनी हुई थी जहा से रानी चन्द्रकान्ता और किशोरी कामिनी लक्ष्मीदेवी,कमलिनी वगैरह भी यहाँ की कैफियत देख सुन सकती थीं इसलिए समझ रखना चाहिए कि वे सब भी दर्बार के मामले को देख सुन रही हैं।

उन दोनों में से एक नकाबपोश ने भूतनाथ के पेश किए हुए कागजों में से एक कागज उठा लिया और खडे होकर इस तरह कहना शुरू किया –

नि सन्देह आप लोग हम दोनों को ताज्जुब की निगाह से देखते होंगे और यह भी जानने की इच्छा रखते होंगे कि हम लोग कौन और कहाँ के रहने वाले है इस समय इस बारे में हम इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सकते कि हमलोग ईश्वर के दूत हैं और इन दुष्टों के अच्छे बुरे कर्मों को अच्छी तरह जानते हैं। यह जैपाल अर्थात् नकली बलभद्रसिह चाहता है कि अपने साथ भूतनाथ को भी ले डूबे मगर इसे समझ रखना चाहिए कि भूतनाथ हजार बुरा होने पर भी इज्जत और कदर की निगाह से देखे जाने के लायक है। अगर भूतनाथ न होता तो यह जैपाल इस समय असली बलभद्रसिह बन कर न मालूम और भी कैसे-कैसे अनर्थ करता और असली बलभद्रसिह की जान न जाने किस तकलीफ के साथ निकलती। अगर भूतनाथ न होता तो आज का यह आलीशान दर्बार भी हम लोगों के लिए न होता और राजा गोपालसिह भी इस

तरह बैठ हुए दिखाई न देते, क्योंकि भूतनाथ की ही वदौलत दारोगा की गुप्त कुमेटी का अन्त हुआ और इसी की बदौलत कमलिनी भी गायारानी के साथ मुकावला करने लायक हुई। अगर भूतनाथ ने दो काम बुरे किये है तो दस काम अच्छे भी किए है जो आप लोगों से छिपे नहीं है। भूतनाथ के अनूठे कामों का वदला यह नहीं हो सकता कि उसे किसी तरह की सजा मिले बल्कि यही हो सकता है कि उसे मुह मॉगा इनाम मिले, आशा है कि मेरी इस बात को महाराज खुले दिल से स्वीकार भी करेंगे।

इतना कहकर नकावपोश चुप हो गया और महाराज की तरफ देखने लगा। महाराज का इशारा पाकर तेजसिह ने कहा 'महाराज आपकी इस बात को प्रसन्नता के साथ स्वीकार करते हैं।

इतना सुनते ही भूतनाथ ने खडे होकर सलाम किया और नकाबपोश ने भी सलाम करके पुन इस तरह कहना शुरू किया –

वहुतों को ताज्जुव होगा कि जैपाल जब बलभद्रसिह वन ही चुका था तो इतने दिनों तक कहा और क्योंकर छिपा रहा लक्ष्मीदेवी या कमलिनी से मिला क्यों नहीं और इसी तरह से भूतनाथ भी जब जानता था कि बलभद्रसिह कौन और कहा है तो उसने इस वात को इतने दिनों तक छिपा क्यों रक्खा ? इसका जवाव मै इस तरह देता हूँ कि अगर भूतनाथ कमलिनी का ऐयार बना हुआ न होता ता यह नकली वलभद्रसिह अर्थात जैपाल जिसे भूतनाथ मरा हुआ समझे बैठा था कभी का प्रकट हो चुका हाता मगर भूतनाथ का डर इसे हद से ज्यादे था और यह चाहता था कि कोई ऐसा जरिया हाथ लग जाय जिससे भूतनाथ इसके सामने सर उठान लायक न रह और तब यह प्रकट होकरअपने को बलभद्रसिह के नाम से मशहूर करे। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात वह छोटी सन्दूकडी जिसकी तरफ देखने की भी ताक्त भूतनाथ मे नहीं है इसके हाथ लग गई और वह कागज का मुट्ठा भीडसे मिल गया जो भूतनाथ के हाथका लिखा हुआ था।अपनी इस बात के सवूत में मैं इस (हाथ की चीठी दिखाकर) चीठी कोजो आज क वहुत दिन पहिले की लिखी हुई है पढकर सुनाऊॅगा।

इतना कह कर उनसे चीठी पढना शुरू किया जिसमें यह लिखा हुआ था –

'प्यारी वेगम

वह सन्दूकडी तो मेरे हाथ लग गई जा भूतनाथ को वस में करन के लिए जादू का असर रखती है मगर भूतनाथ तथा उसक आदमी वेहतर मेरे पीछे पडे हुए हैं। ताज्जुव नहीं कि मे गिरफ्तार हो जाऊँ इसलिए यह सन्दूकडी तुम्हारे पास भजता हू, तुम इसे हिफाजत के साथ रखना। मै भूतनाथ को धाखा देने का वन्दोबस्त कर रहा हूँ। अगर मे अपना काम पूरा कर सका तो नि सन्देह भूतनाथ को विश्वास हो जायगा कि जैपाल मर गया। उस समय मै तुम्हारे पास आकर अपनी खुशी का तमाशा दिखाऊॅगा। मुझ इस बात का पता लग चुका है कि वह कागज की गठरी उसकी स्त्री क सन्दूक में है जिसका जिक्र मैं कई दफे तुमस कर चुका हूँ और जिसके मिले विना मै अपन को वलभद्रसिह वना कर प्रकट नहीं कर सकता।

–वही जैपाल।

पढने के वाद नकावपोश ने वह चीठी गोपालसिह के आगे फेंक दी और बेगम की तरफ देख के पूछा तुझे याद है कि यह चीठी किस महीने मे जैपाल ने तेरे पास भेजी थी ?

बेगम–बहुत दिन की वात हो गई इसलिए मुझे महीना और दिन तो याद नहीं है।

नकाब–(जैपाल स) क्या तुझे याद है कि यह चीठी तूने किस महीने में लिखी थी ?

जैपाल–वह चीठी मेरे हाथ की लिखी हुई होती तो मै तेरी बात का जवाब देता।

नकाब–तो यह वेगम क्या कह रही है ?

जैपाल–तू ही जाने कि तेरी बेगम क्या कह रही है ? मै तो उसे पहिचानता भी नहीं !

इतना सुनते ही नकाबपाश को गुस्सा चढ आया। उसने अपने चेहरे से नकाब हटा कर गुस्से भरी निगाहों से जैपाल की तरफ देखा जिसकी ताज्जुब भरी निगाहपहिले हीसे उसकी तरफ जम रही थीं और इसके बाद तुरन्त अपना चेहरा ढॉक लिया।

न मालूम उस नकाबपोश की सूरत में क्या वात थी कि उसे देखते ही जैपाल की सूरत बिगड गई और वह कांपता तथा नकावपोश की तरह देखता हुआ अपने हथकडी सहित हाथों को जोडकर वोला, बस-बसमाफ कीजिए, बेशक यह चीठी मेरे हाथ की लिखी हुई है !ओफ, मै नहीं जानता था कि तुम अभी तक जीते हो। मै तुम्हारी तरफ देखना नहीं चाहता वल्कि अपनी मौत चाहता हू !

इतना कहकर जैपाल ने दोनों हाथों से अपनी ऑखे ढक ली और लम्बी-लम्बी सॉसें लेने लगा।

इस नकावपोश की सूरत पर सभों की तो नहीं मगर बहुतों की निगाह पडी। हमारे राजा साहब, ऐयार लोग

गोपालसिह इन्द्रदेव और भूतनाथ वगैरह ने भी इसे देखा मगर पहिचाना किसी ने भी नहीं, क्योंकि इन लोगों में से किसी ने भी आज के पहिले इसे देखा न था। इसके अतिरिक्त पहिले दिन दर्बार में नकाबपोश की जो सूरत दिखाई दी थी उसमें और आज की सुरत में जमीन-आसमान का फर्क था। इस विषय में लोगों ने यह खयाल कर लिया कि पहिले दिन एक नकाबपोश ने सूरत दिखाई थी और आज दूसरे ने, क्योंकि नकाब और पोशाक इत्यादि के खयाल से जाहिर में दोनों नकाबपोश एक ही रंग-ढंग के थे।

इन नकाबपोशों की तरफ से भूतनाथ का दिल तरद्दुद और खुटके से खाली न था। पहिले दिन उस नकाबपोश की जो सूरत भूतनाथ ने देखी उसने अपने दिल में अच्छी तरह नक्श कर लिया था—बल्कि एक कागज पर उसकी सूरत (तस्वीर) भी बना कर तैयार कर ली थी और आज भी इसी नीयत से उसकी सूरत के विषय में बारीक निगाह से भूतनाथ ने काम लिया मगर ताज्जुब कर रहा था कि ये दोनों कौन हैं जो बेवजह मेरी मदद कर रहे हैं और ये गुप्त बातें इन दोनों को कैसे मालूम हुई।

थोडी देर तक नकाबपोश चुप रहा और इसके बाद उसने राजा साहब की तरफ देख के कहा "महाराज देखते हैं कि मैं इस मुकद्दमें की गुत्थी को किस तरह सुलझा रहा हू और इस जैपाल के दिल पर मेरी सूरत का क्या असर पडा अस्तु मैं इसी जगह एक और भी गुप्त बात की तरफ इशारा किया चाहता हू जिसका हाल शायद अभी तक भूतनाथ को भी मालूम न होगा। वह यह है कि मनोरमा इस (बेगम की तरफ बता कर) बेगम की मौसेरी बहिन है और भूतनाथ की गुप्त सहेली, नन्हों से गहरी मुहब्बत रखती है। यही सबब है कि भूतनाथ के घर से यह गठरी गायब हुई और जैपाल ने भी प्रकट होने के साथ ही लामाघाटी *की तरफ इशारा करके भूतनाथ को काबू में कर लिया। इस बात को महाराज तो न जानते होंगे मगर भूतनाथ को इनकार करने की जगह अब नहीं तो, दो दिन बाद न रहेगी।"

नकाबपोश की इस बात ने भूतनाथ को चौंका दिया और उसने घबडा कर नकाबपोश से कहा "क्या यह बात आप पूरी तरह से समझ बूझकर कह रहे है ?

नकाब—हॉ और यह बात तुम्हारे ही सबब से पैदा हुई थी जिसके सबूत में मैं यह पुर्जा पेश करता हू।

इतना कह कर नकाबपोश ने अपने जेब में से एक पुर्जा निकालकर पढा और फिर राजा गोपालसिह के सामने फेंक दिया। उसमें लिखा हुआ था—

प्यारी नन्हो

अब तो उन्होंने अपना नाम भी बदल दिया। तुम्हें पता लगाना हो तो भूतनाथ के नाम से पता लगा लेना और मुझे भी चाद वाले दिन गौहर के यहाँ देखना जो शेर की लडकी है। — करौंदा की छैंय-छंय।

इस चीठी ने भूतनाथ को परेशान कर दिया और उसने खडे होकर कहा बस-बस मुझे आपके कहने का विश्वास हो गया और बहुत सी पुरानी बातों का पता भी लग गया।

नकाबपोश—मैं इस बारे में और भी बहुत सी बातें कहूँगा मगर अभी नहीं जब समय तथा बातों का सिलसिला आ जायगा तब। मैं यह तो ठीक-ठीक नहीं कह सकता कि तुम्हारी स्त्री तुमसे दुश्मनी रखती है या वह इस बात को जानती है कि नन्हों और बेगम की मुहब्बत है मगर इतना जरूर कहूगा कि तुमने अपनी स्त्री को गौहर के यहा जाने की इजाजत देकर अपने पैर में आप कुल्हाडी मार ली। मुझे इन बातों के कहने की कोई जरूरत नहीं थी मगर इस खयाल से बात निकल आई कि तुम भी अपनी गठरी के चोरी जाने का सबब जान जाओ। (तेजसिह की तरफ देखकर) औरों को क्या कहा जाय, भूतनाथ ऐसे चालाक ऐयार लोग भी औरतों के मामले में चूक ही जाते है !

इसी समय बेगम उद्योग करके उठ खडी हुई और महाराज की तरफ देखकर जोर से बोली दोहाई महाराज की ! इन नकाबपोश का यह कहना कि नन्हों नाम की किसी औरत से मुझसे दोस्ती है बिल्कुल झूठ है। इसका कोई सबूत नकाबपोश साहब नहीं दे सकते। मैं तो जानती भी नहीं कि नन्हों किस चिडिया का नाम है। असल तो यह है कि यह केवल भूतनाथ की मदद करने आए है और झूठ-सच बोलकर अपना काम निकालना चाहते हैं। अगर सरकार उस सन्दूकडी को खोलें तो सारी कलई खुल जाय।

---

*देखिए सन्तति ग्यारहवा भाग आठवाँ बयान।

बेगम की बात सुनकर दोनों नकाबपोश गुस्से में आ गये। दूसरा नकाबपोश जो बैठा था उठ खडा हुआ और अपने चेहरे की एक झलक लापरवाही के साथ बेगम को दिखाकर क्रोध भरी आवाज में बोला, 'क्या ये सब बातें झूठ हैं !"

इस दूसरे नकाबपोश ने अपनी सूरत दिखाने की नीयत से अपनी नकाब को दमभर के लिए इस तरह हटाया जिससे लोगों का गुमान हो सकता था कि धोखे में नकाब खसक गई मगर होशियार और ऐयार लाग समझ गए कि इसन जान बूझ के अपनी सूरत दिखाई है। यद्यपि इसके चेहरे पर केवल तेजसिह देवीसिह, गोपालसिह भूतनाथ जैपाल और बेगम की निगाह पडी थी मगर इस दूसरे नकाबपोश के चेहरे पर निगाह पडते ही बेगम यह कह कर चिल्ला उठी– आह तू कहॉ ! क्या नन्हों भी गई !!'

बस इससे ज्यादे और कुछ न कह सकी एक दफे कॉप कर बेहाश हो गई और जैपाल भी जमीन पर गिरकर बेहाश हो गया अतएव मुकद्दमे की कार्रवाई राक देनी पडी।

भूतनाथ तथा हमारे ऐयारों को विश्वास था कि यह दूसरा नकाबपोश वही होगा जिसने पहिले दिन सूरत दिखलाई थी, मगर ऐसा न था। उस सूरत और इस सूरत में जमीन आसमान का फर्क था अतएव सभों ने निश्चय कर लिया कि वह काई दूसरा था और यह कोई और है।

इस सूरत को भी भूतनाथ पहिचानता न था। उसके ताज्जुब का हद्द न रहा और उसने निश्चय कर लिया कि आज इनकी खबर जरूर ली जायगी और यही कैफियत हमारे ऐयारों की भी थी।

कैदी पुन कैदखाने में भज दिये गये दोनों नकाबपोश बिदा हुए और दर्बार बर्खास्त किया गया।

तेरहवॉ बयान

दर्बार बर्खास्त होने के बाद जब महाराज सुरेन्द्रसिह जीतसिह बीरेन्द्रसिह तेजसिह गोपालसिह और देवीसिह एकान्त में बैठे ता यों बातचीत होने लगी –

सुरेन्द्र–ये दोनों नकाबपोश ता विचित्र तमाशा कर रहे हैं ! मालूम होता है कि इन सब मामलों की सबसे ज्यादे खबर इन्हीं लागों को है।

जीत–बेशक ऐसा ही है।

बीरेन्द्र–जिस तरह इन दोनों ने तीन दफे तीन तरह की सूरतें दिखाई इसी तरह मालूम होता है और भी कई दफे कई तरह की सूरतें दिखाएँगे।

गोपाल–नि सन्देह ऐसा ही हागा। मै समझता हू कि या तो ये लोग अपनी सूरत बदल कर आया करते है या दोनों कवल दो ही नहीं हैं और भी कई आदमी हैं जो पारी-पारी से आकर लोगों को ताज्जुब में डालते हैं और डालेंगे।

तेज–मेरा भी यही खयाल है। भूतनाथ क दिल मे भी खलबली पैदा हो रही है। उसके चेहर से मालूम होता था कि वह इन लोगों का पता लगाने के लिए परेशान हो रहा है।

देवी–भूतनाथ का एसा विचार काई ताज्जुब की बात नहीं ! जब हम लोग उनका हाल जानने के लिए व्याकुल हो रहे है तब भूतनाथ का क्या कहना है !

सुरेन्द्र–इन लागों ने मुकदमे की उलझन खोलने का ढग तो अच्छा निकाला है मगर यह मालूम करना चाहिए कि इन मामलों से इन्हें क्या सम्बन्ध है ?

देवी–अगर आज्ञा हो तो मै उनका हाल जानने के लिए उद्योग करूँ ?

बीरेन्द्र–कहीं ऐसा न हो कि पीछा करने से ये लोग बिगड जायें और फिर यहॉ आने का इरादा न करें।

गोपाल–मरे खयाल से तो उन लागों को इस बात का रज न होगा कि लोग उनका हाल जानने के लिए पीछा कर रहे हैं क्योंकि उन लोगों ने काम ही ऐसा उठाया है कि सैकडों आदमियों को ताज्जुब हो और सैकडों ही उनका पीछा भी करें। इस बात को वे लोग खूब ही समझते होंगे और इस बात का भी उन्हें विश्वास होगा कि भूतनाथ उनका हाल जानने के लिए सबस ज्यादे कोशिश करेगा।

बीरेन्द्र–ठीक है और इसी खयाल से वे लोग हर वक्त चौकन्ने भी रहते हों तो कोई ताज्जुब नहीं।

जीत– जरूर चौकन्ने रहते होंग और ऐसी अवस्था में पता लगाना भी कठिन हागा।

गोपाल–जो हो मगर मेरी इच्छा तो यही है कि स्वय उनका हाल जानने के लिए उद्योग करूँ।

सुरेन्द्र–अगर उनके मामल में पता लगाने की इच्छा ही है तो क्या तुम्हारे यहाँ ऐयारों की कमी है जो तुम स्वय कष्ट करोगे ? तेजसिह दवीसिह पण्डित वद्रीनाथ या और जिसे चाहो इस काम पर मुकर्रर करो।

गोपाल–जो आज्ञा देवीसिह कहते ही हैं तो इन्हीं को यह काम सुपुर्द किया जाय।

देवीसिह–(सलाम करके) जो आज्ञा।

गोपाल–और इस वात का भी पता लगाना कि भूतनाथ उनका पीछा करता है या नहीं !

देवी–जरूर पता लगाऊँगा।

इस वात से छुट्टी पाने बाद थोडी देर तक और बातें हुईं इसके बाद महाराज आराम करने चले गए तथा और लोग भी अपने ठिकाने पधारे।

चौदहवां बयान

सवसे ज्यादे फिक्र भूतनाथ को इस बात के जानने की थी कि वे दोनों नकाबपोश कौन है और दारोगा जैपाल तथा बेगम को उन सूरतों से क्या सम्बन्ध है जो समय-समय पर नकाबपोशों ने दिखाई थीं या हमारे तथा राजा गोपालसिह और लक्ष्मीदेवी इत्यादि के सम्बन्ध में हम लोगों से भी ज्यादे जानकारी इन नकाबपोशों को क्योंकर हुई तथा ये दोनों वास्तव में दो ही है या कई।

इन्हीं बातों के सोच-विचार में भूतनाथ का दिमाग चक्कर खा रहा था। यों तो उस दरबार में जितने भी आदमी थे सभी उन दोनों नकाबपोशों का हाल जानने के लिए बेताब हो रहे थे और दर्बार बर्खास्त होने तथा अपने डेरे पर जाने के बाद भी हर एक आदमी इन्हीं दोनों नकाबपोशों का खयाल और फिक्र करता था मगर किसी की हिम्मत यह न होती थी कि उनके पीछे-पीछे जाय। हॉ ऐयार और जासूस लोग जिनकी प्रकृति ही ऐसी होती है कि खामख्वाह भी लोगों के भेद जानने की कोशिश किया करते है उन दोनों नकाबपोशों का हाल जानने के फेर में पड़े हुए थे।

भूतनाथ का डेरा यद्यपि तिलिस्मी इमारत के अन्दर बलभद्रसिह के साथ था मगर वास्तव में वह अकेला न था। भूतनाथ के पिछले किस्से से पाठकों को मालूम हो चुका होगा कि उसकेसाथी नौकर सिपाही याजासूस लोग कम न थे जिनसे वह समय समय पर काम लिया करता था और जो उसके हाल-चाल की खबर बराबर रक्खा करते थे। अब यह कह देना आवश्यक है कि यहॉ भी भूतनाथ के बहुत से आदमी धीरे-धीरे आ गए है जो सूरत बदल कर चारों तरफ घूमते और उसकी जरूरतों को पूरा करते हैं और उनमें से दो आदमी खास तिलिस्मी इमारत के अन्दर उसके साथ रहते हैं जिन्हें भूतनाथ ने अपने खिदमतगार कह-कर अपने पास रख लिया है और इस बात को बलभद्रसिह भी जानते है।

दर्बार वर्खास्त होने के वाद भूतनाथ और बलभद्रसिह अपने डेरे पर गये और कुछ जलपान इत्यादि से छुट्टी पाकर यों वातचीत करने लगे–

वलभद्र–ये दोनों नकावपोश तो वडे ही विचित्र मालूम पडते है।

भूत–क्या कहें कुछ अक्ल काम नहीं करती। मजा तो यह है कि वे हमी लोगों की बातों को हम लोगों से भी ज्यादा जानते और समझते है !

वलभद्र–वेशक ऐसा ही है।

भूत–यद्यपि अभी तक इन नकावपोशों ने मेरे साथ कुछ बुरा बर्ताव नहीं किया बल्कि एक तौर पर मेरा पक्ष ही करते रहे हैं तथापि मेरा कलेजा डर के मारे सूखा जाता है यह सोचकर कि जिस तरह आज मेरी स्त्री की एक गुप्त बात इन्होंने प्रकट कर दी जिसे मैं भी नहीं जानता था उसी तरह कहीं मेरी सन्दूकडी का भेद भी न खोल दें जो जैपाल की दी हुई अभी तक राजा साहव के पास अमानत रक्खी है और जिसके खयाल ही से मरा कलेजा हरदम कापा करता है।

वलभद्र–ठीक है मगर मेरा खयाल है कि नकाबपोश तुम्हारी उस सन्दूकडी का भेद न तो खुद ही खोलेंगे और न खुलने ही देंगे।

भूत–सो कैसे ?

वलभद्र–क्या तुम उन बातों को भूल गये जो एक नकावपोश ने भरे दर्वार में तुम्हारे लिए कही थीं ? उसने नहीं कहा था कि भूतनाथ नेजैसे-जैसे काम किए हैं उनके वदले में उसे मुहमागा इनाम देना चाहिए और क्या इस बात को महाराज ने भी स्वीकार नहीं किया था ?

भूत–ठीक है तो इस कहने से शायद आपका मतलव यह है कि मुहमॉगा इनाम के वदले में मै उस सन्दूकडी को भी पा सकता हू ?

वलभद्र–वशक ऐसा ही है और उन नकावपोशों ने भी इसी खयाल से वह बात कही थीं, मगर अब यह सोचना चाहिए कि मुकदमा तै होने के पहिले मॉगने का मौका क्यों कर मिल सकता है।

भूत–मेरे दिल ने भी उस समय यही कहा था मगर दो बातों के खयाल से मुझ प्रसन्न होने का समय नहीं मिलता।

वलभद्र–वह क्या ?

भूत–एक तो यही कि मुकदमा होने के पहिले इनाम में उस सन्दूकडी के मागने का मौका मुझे मिलेगा या नहीं, और दूसरे यह कि नकावपोश न उस समय यह बात सच्चे दिल से कही थी या केवल जैपाल को सुनाने की नीयत से। साथ ही इसके एक बात और भी है।

वलभद्र–यह भी कह डालो।

भूत–आज आखिरी मर्तवे दूसर नकाबपोश ने जो सूरत दिखाई थी उसके बारे में मुझे कुछ भ्रम सा होता है। शायद मैंने उसे कभी देखा है मगर कहॉ और क्योंकर सो नहीं कह सकता।

वलभद्र–हॉ उस सूरत के वारे में तो अभी तक मै भी गौर कर रहा हू मगर अक्ल तब तक कुछ ठीक काम नहीं कर सकती जव तक उन नकावपाशों का कुछ हाल मालूम न हा जाय।

भूत–मेरी तो यही इच्छा है कि उनका हाल जानने के लिए उद्योग करूँ, वल्कि कल मै अपन आदमियों को इस काम के लिए मुस्तैद भी कर चुका हू।

वलभद्र–अगर कुछ पता लगा सको तो बहुत ही अच्छी बात है सच तो यों है कि मेरा दिल भी खुटके से खाली नहीं है।

भूत–इस समय सध्या तक और इसके बाद रात भर मुझे छुट्टी है यदि आप आज्ञा दें तो मै इस फिक्र में जाऊँ।

वलभद्र–कोई चिन्ता नहीं, तुम जाओ अगर महाराज का कोई आदमी खोजने आवेगा तो मैं जवाव दे लूगा।

भूत–बहुत अच्छा।

इतना कहकर भूतनाथ उठा और अपने दोनों आदमियों में से एक को साथ लेकर मकान के बाहर हो गया।

पन्द्रहवां बयान

तिलिस्मी इमारत से लगभग दो कोस दूरी पर जगल में पडों की घनी झुरमुट के अन्दर बैठा हुआ भूतनाथ अपने दो आदमियों से वातें कर रहा है।

भूत–तो क्या तुम उनके पीछे-पीछे उस खोह के मुहाने तक चले गये थे ?

एक आदमी–जी नहीं थोडी देर तक तो मै उन नकाबपोशों के पीछे-पीछे चला गया मगर जब देखा कि वे दोनों वेफिक्र नहीं है बल्कि चौकन्ने होकर चारों तरफ खास करके मुझे गौर से देखते जाते हैं तब मैं भी तरह देकर हट गया। दूसरे दिन हम लोग कई आदमी एक दूसरे से अलग दूर-दूर बैठ गये और आख़िर मेरे एक साथी ने उन्हें ठिकाने तक पहुँचाकर पता लगा ही लिया कि ये दोनों इस खोह के अन्दर रहते हैं। इसके बाद हम लोगों ने निश्चय कर लिया और उसी खोह के पास छिपकर मैंने स्वय कई दफे उन लोगों को उसी के अन्दर आते-जाते देखा और यह भी जान लिया कि वे लोग दस-वारह आदमी से कम नहीं हैं।

भूत–मेरा भी यही खयाल था कि वे लोग दस-वारह मे कम न होंगे, खैर जो होगा देखा जायगा, अब मैं सध्या हो जाने पर उस खोह के अन्दर जाऊँगा, तुम लोग हमारी हिफाजत का खयाल रखना और इसके अतिरिक्त इस बात का पता लगाना कि जिस तरह मैं उनकी टोह में लगा हुआ हू उसी तरह और कोई भी उनका पीछा करता है या नहीं।

आदमी–जो आज्ञा।

भूत–हॉ एक वात और पूछना है। तुम लोगों ने जिन दस-वारह आदमियों को खोह के अन्दर आते-जाते देखा है वे सभी अपने चहरे पर नकाव रखते हैं या दा-चार ?

आदमी–जी हम लोगों ने जितने आदमियों को देखा सभों को नकावपोश पाया।

भूत–अच्छा तो तुम अब जाओ और अपने साथियों को मेरा हुक्म सुना कर हाशियार कर दो।

इतना कह कर भूतनाथ खडा हो गया और अपन दोनों आदमियों को बिदा करने के वाद पश्चिम की तरफ रवाना हुआ। इस समय भूतनाथ अपनी असली सूरत में न था वल्कि सूरत वदलकर अपने चेहरे पर नकाव डाले हुए था।

यहा स लगभग कोस भर की दूरी पर उस खोह का मुहाना था जिसका पता भूतनाथ के आदमियों ने दिया था।

सध्या होने तक भूतनाथ इधर-उधर जगल में घूमता रहा और जब अधेरा हो गया तब उस खोह के मुहाने पर पहुच कर चारों तरफ देखने लगा।

यह स्थान एक घने और भयानक जगल में था। छोटे से पहाड के निचले हिस्से में दो-तीन आदमियों के वैठने लायक एक गुफा थी और आगे से पत्थरों के वडे-बड़े ढोकों ने उनका रास्ता रोक रक्खा था। उसके नीचे की तरफ पानी का एक छोटा सा नाला वहता था जिसमें इस समय कम मगर साफ पानी वह रहा था और उस नाल के दोनों तरफ भी पेडों की बहुतायत थी। भूतनाथ ने सन्नाटा पाकर उस गुफा के अन्दर पैर रक्खा और सुरग की तरह रास्ता पाकर टटोलता हुआ थोडी देर तक बेखटके चला गया। आगे जाकर जब रास्ता खराव मालूम हुआ तब उसने बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर जलाई और चारो तरफ देखने लगा। सामने का रास्ता बिलकुल बन्द पाया अर्थात सामने की तरफ पत्थर की दीवार थी जो एक चबूतरे की तरह मालूम पडती थी मगर वहाँ की छत इतनी ऊँची जरूर थी कि आदमी उस चबूतरे के ऊपर चढकर बखूबी खडा हो सकता था, अस्तु भूतनाथ उस चबूतरे के ऊपर चढ गया और जब आगे की तरफ देखा तो नीचे उतरने के लिए सीढियाँ नजर आई।

भूतनाथ सीढियों की राह नीचे उतर गया और अन्त में उसने एक छोटे से दर्वाजे का निशान देखा जिसमें किवाड पल्ले इत्यादि की कोई जगह न थी केवल बाँए-दाहिने और नीचे की तरफ चौखट का निशान था। दर्वाजे के अन्दर पैर रखने बाद सुरग की तरह रास्ता दिखाई दिया जिसे गौर से अच्छी तरह देखने बाद भूतनाथ ने मोमबत्ती बुझा दी और टटोलता हुआ आगे की तरफ बढा। थाडी दूर जाने के बाद सुरग खतम हुई और रोशनी दिखाइ दी। यह हल्की और नाम मात्र की रोशनी किसी चिराग या मशाल की न थी बल्कि आसमान पर चमकते हुए तारों की थी क्योंकि वहाँ से आसमान तथा सामने की तरफ मैदान का एक छोटा सा टुकडा दिखाई दे रहा था।

यह मैदान आठ या दस बिगहे से ज्यादे न होगा। बीच में एक छोटा सा बँगला था, उसके आगे वाले दालान में कई आदमी बैठे हुए दिखाई देते थे तथा चारों तरफ बडे-बडे जंगली पेडों की भी कमी न थी। सन्नाटा देखकर भूतनाथ सुरग के पार निकल गया और एक पेड़ की आड देकर इस खयाल से खडा हो गया कि मौका मिलने पर आगे की तरफ बढेगे। थोड़ी ही देर में भूतनाथ को मालूम हो गया कि उसके पास ही एक पेड की आड में कोई दूसरा आदमी भी खडा है।

यह दूसरा आदमी वास्तव में देवीसिह थे जो भूतनाथ के पीछे ही पीछे थोडी देर बाद यहाँ आकर पेड की आड़ में खडे हो गये थे और वह भी सूरत बदलने के वाद अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए थे इसलिए एक को दूसरे का पहिचानना कठिन था।

थोडी ही देर बाद दो औरतें अपने अपने हाथों में चिराग लिए बँगले के अन्दर से निकलीं और उसी तरफ रवाना हुई जिधर पेड की आड में भूतनाथ और देवीसिह खड़े हुए थे। एक तो भूतनाथ और देवीसिह का दिल इस खयाल से खुटके में था ही कि मेरे पास ही एक पेड की आड मे कोई दूसरा भी खडा है, दूसरे इन दो औरतों को अपनी तरफ आते देख और भी घबड़ाये, मगर कर ही क्या सकते थे, क्योंकि इस समय जो कुछ ताज्जुब की बात उन दोनों ने देखी उसे देख कर भी चुप रह जाना उन दोनों की सामर्थ्य से बाहर था अर्थात् कुछ पास आने पर मालूम हो गया कि उन दोनों की औरतों में से एक तो भूतनाथ की स्त्री है जिसे वह लामाघाटी में छोड आया था और दूसरी चम्पा !

भूतनाथ आगे बढा ही चाहता था कि पीछे से कई आदमियों ने आकर उसे पकड लिया और उसी की तरह देवीसिह भी बेकाबू कर दिये गये।

* उन्नीसवा भाग समाप्त *

चन्द्रकान्ता सन्तति

बीसवॉ भाग

पहिला बयान

भूतनाथ और दवीसिह को कई आदमियों ने पीछे स पकडकर अपने काबू में कर लिया और उसी समय एक आदमी ने किसी विचित्र भाषा में पुकारकर कुछ कहा जिसे सुनते ही वे दोनों औरतें अर्थात चम्पा तथा भूतनाथ की स्त्री चिराग फेंक-फेंक कर पीछे की आर लौट गई और अन्धकार के कारण कुछ मालूम न हुआ कि वे दोनों कहा गई, हा भूतनाथ और देवीसिह को इतना मालूम हो गया कि उन्हें गिरफ्तार करने वाले भी सब नकाबपोश हैं। भूतनाथ की तरह देवीसिह भी सूरत बदल कर कर अपने चेहर पर नकाब डाले हुए थे।

गिरफ्तार हो जाने के बाद भूतनाथ और देवीसिह दोनों एक साथ कर दिये गये और दोनों ही को लिए हुए वे सब बीच वाले बगले की तरफ रवाना हुए। यद्यपि अन्धकार के अतिरिक्त सूरत बदलने और नकाब डालने के सबब एक को दूसरे का पहिचानना कठिन था तथापि अन्दाज ही से एक को दूसर ने जान लिया और शरमिन्दगी के साथ धीरे-धीरे उस बगले की तरफ जाने लगे। जब बगले के पास पहुचे तो आगे वाले दालान में जहा दा चिरागों की रोशनी थी तीन आदमियों को हाथ में नगी तलवार लिये पहरा देते देखा। वहा पहुचने पर हमारे दोनों ऐयारों का मालूम हुआ कि उन्हें गिरफ्तार करने वाले गिनती में आठ से ज्यादे नहीं है। उस समय देवीसिह और भूतनाथ के दिल में थोडी देर के लिए यह बात पैदा हुई कि केवल आठ आदमियों से हमें गिरफ्तार हो जाना उचित न था और अगर हम चाहते तो इन लोगों से अपने को बचा ही लेते, मगर उन दोनों का यह विचार तुरन्त ही जाता रहा जब उन्होंने कुछ कम बेश यह सोचा कि अगर हम इन लोगों से अपने को बचा लेते तो क्या हाता क्योंकि यहा स निकल कर भाग जाना कठिन था और अगर भाग भी जाते तो जिस काम के लिए आये उससे हाथ धो बैठते अस्तु जा होगा देखा जायगा।

इस दालान के अन्दर जाने के लिए दर्वाजा था और उसके आगे लाल रग का रेशमी पर्दा लटक रहा था। दीवार छत इत्यादि सब रगीन बने हुए थे और उन पर बनी हुई तरह-तरह की तस्वीरें अपनी खूबी और खूबसूरती के सबब देखने वालों का दिल खींच लेती थीं परन्तु इस समय उन पर भरपूर और बारीक निगाह डालना हमारे ऐयारों के लिये कठिन था इसलिए हम भी उनका हाल बयान नहीं कर सकते।

जो लोग दानों एयारों को गिरफ्तार कर लाये थे उनमें से एक आदमी पर्दा उठा कर बगले के अन्दर चला गया और चौथाई घडी के बाद लौट आकर अपने साथियों से बोला, इन दोनों महाशयों को सर्दार के सामने ले चलो और एक आदमी जाकर इनके लिए हथकडी-बेडी भी ले आओ कदाचित हमारे सर्दार इन दोनों के लिए कैदखाने का हुक्म दे।

अस्तु एक आदमी हथकडी बेडी लाने के लिए चला गया और वे सब देवीसिह और भूतनाथ का लिए हुए बगले की तरफ रवाना हुए।

यह बगला बाहर से जैसा सादा और मामूली ढग का मालूम होता था वैसा अन्दर से न था। जूता उतारकर चौखट के अन्दर पैर रखते ही हमारे दोनों ऐयार ताज्जुब के साथ चारो तरफ देखने लगे और फौरन ही समझ गये कि इसके अन्दर रहन वाला या इसका मालिक काई साधारण आदमी नहीं है। देवीसिह के लिए यह बात सबसे ज्यादे ताज्जुब की थी और इसीलिए उनके दिल में घडी-घडी यह बात पेदा होती थी कि यह स्थान हमारे इलाक मे होने पर भी अफसोस और ताज्जुब की बात है कि इतने दिनों तक हम लोगों को इसका पता न लगा।

पर्दा उठा कर अन्दर जाने पर हमारे दोनों ऐयारो ने अपन को एक गाल कमरे में पाया जिसकी छत भी गाल और गुम्बजदार थी और उसमें बहुत सी बिल्लौरी हाडिया जिनमें इस समय मामबत्तिया जल रही थीं कायदे और मौके के साथ लटक रही थीं। दीवारों पर खूबसूरत जगली और पहाडों की तस्वीरें निहायत खूबी के साथ बनी हुई थीं जो इस जगह की ज्यादे रोशनी के सबब साफ मालूम होती थीं और यही जान पडता था कि अभी बन कर तैयार हुई है। इन तस्वीरों में अकस्मात् देवीसिह और भूतनाथ ने राहतासगढ के पहाड और किल की भी तस्वीर देखी जिसक सबब से और तस्वीरों

को भी गौर सेदेखने का शौक इन्हें हुआ मगर ठहरने की माहलत न मिलने के सबब से लाचार थे। यहाँ की जमीन सुर्ख मखमली मुलायम गद्दा बिछा हुआ था और सदर दरवाजे के अतिरिक्त और भी तीन दर्वाजे नजर आ रहे थे जिन पर वेशकीमत किमखाव क पर्दे पडे हुए थे और उनमें मोतियों की झालरें लटक रही थीं। हमारे दोनों ऐयारों को दाहिने तरफ वाले दर्वाजे के अन्दर जाना पडा जहा गली के ढग पर रास्ता घूमा हुआ था। इस रास्ते में भी मखमली गद्दा बिछा हुआ था। दोनों तरफ की दीवारें साफ और चिकनी थीं तथा छत के सहारे एक विल्लौरी कन्दील लटक रही थी जिसकी रोशनी इस सात-आठहाथ लम्बी गली क लिए काफी थी। इस गली को पार करके ये दोनों एक वहुत वडे कमरे में पहुचाए गए जिसकी सजावट और खूबी न उन्हें ताज्जुव में डाल दिया और वे हैरत की निगाह से चारो तरफ दखने लग। जगल मैदान पहाड खोह दर्रे झरने शिकारगाह तथा शहरपनाह किले मारचे और लडाई इत्यादि की तस्वीरें चारो तरफ दीवार में इस खूबी और सफाई के साथ वनी हुई थीं कि देखने वाला यह कह सकता था कि वस इससे ज्याद कारीगरी और सफाई का काम मुसौवर कर ही नहीं सकता। छत पर हर तरह की चिडियों और उनके पीछे झपटते हुए वाज वहरी इत्यादि शिकारी परिन्दों की तस्वीरें वनी हुई थीं जो दीवारगीरों और कन्दीलों की तेज रोशनी के सवव वहुत साफ दिखाई दे रही थीं। जमीन पर साफ सुथरा फर्श बिछा हुआ था और सामने की तरफ हाथ भर ऊची गद्दी पर दो नकावपोश तथा गद्दी के नीच और कई आदमी अदव के साथ वैठे हुए थे मगर उनमें से ऐसा कोई भी न था जिसके चहरे पर नकाव न हो।

दवीसिह और भूतनाथ को उम्मीद थी कि हम उन्हीं दोनों नकावपाशों को उसी ढग की पोशाक में देखेंगे जिन्हें कई दफे दख चुके है मगर यहा उसके विपरीत देखने में आया। इस वात का निश्चय तो नहीं हो सकता था कि इस नकाव के अन्दर वही सूरत छिपी हुई है या कोई और लेकिन पौशाक और आवाज यही प्रकट करती थी कि वे दानों कोई दूसरे ही है मगर इसमें भी कोइ शक नहीं कि इन दोनों की पौशाक उन नकावपोशों से कहीं वढ्चढ के थी जिन्हें भूतनाथ और देवीसिह देख चुके थे।

जव देवीसिह और भूतनाथ उन दोनों नकावपोशों क सामने खडे हुए तो उन दोनों में से एक न अपने आदमियों से पूछा ये दोनों कौन है जिन्हें गिरफ्तार कर लाए हो ?

एक–जी इनमें से एक (हाथ का इशारा करके) राजा वीरेन्द्रसिह के ऐयार देवीसिह हैं और यह वही मशहूर भूतनाथ है जिसका मुकद्दमा आज कल राजा वीरन्द्रसिह के दर्वार में पेश है।

नकाव–(ताज्जुव से) हा ! अच्छा तो ये दोनों यहा क्यों आये ? अपनी मर्जी से आये हैं या तुम लोग जवर्दस्ती गिरफ्तार कर लाए हो ?

वही आदमी–इस हाते के अन्दर ता ये दोनों आदमी अपनी मर्जी से आये थे मगर यहा हम लोग गिरफ्तार करके लाय हैं।

नकाव–(कुछ कडी आवाज में) गिरफ्तार करने की जरूरत क्यों पडी ? किस तरह मालूम हुआ कि ये दोनों यहा वदनीयती के साथ आये हैं ? क्या इन दोनों ने तुम लोगों से कुछ हुज्जत की थी ?

वही आदमी–जी हुज्जत तो किसी से न की मगर छिप-छिप कर आने और पेड की आड में खडे होकर ताक झाक करने स मालूम हुआ कि इन दोनों की नीयत अच्छी नहीं है इसीलिए गिरफ्तार कर लिए गये।

नकाव–इतने वडे प्रतापी राजा बीरेन्द्रसिह के ऐसे नामी ऐयार के साथ केवल इतनी वात पर इस तरह का वर्ताव करना तुम लोगों को उचित न था कदाचित ये हम लोगों से मिलने के लिए आए हों। हा अगर केवल भूतनाथ के साथ ऐसा वर्ताव होता तो ज्यादे रज की वात न थी।

यद्यपि नकावपोश की आखिरी वात भूतनाथ को कुछ वुरी मालूम हुई मगर कर ही क्या सकता था ? साथ ही इसके यह भी देख रहा था कि नकाबपोश भलमनसी और सभ्यता के साथ वातें कर रहा है जिसकी उम्मीद यहा आने के पहिले कदापि न थी। अस्तु जव नकावपोश अपनी बात पूरी कर चुका तो इसके पहिले कि उसका नौकर कुछ जवाव दे भूतनाथ बोल उठा–

भूतनाथ–कृपानिधान हम लोग यहा किसी बुरी नीयत से नहीं आये है न तो चोरी करने का इरादा है न किसी को तकलीफ देने का मै केवल अपनी स्त्री का प्ता लगाने के लिए यहा आया हू, क्योंकि मेरे जासूसों ने मेरी स्त्री के यहा होने की मुझे इत्तिला दी थी।

नकाव–(मुस्कुरा कर) शायद ऐसा ही हो मगर मेरा ख्याल कुछ दूसरा ही है। मेरा दिल कह रहा है कि तुम लोग उन दोनों नकावपोशों का असल हाल जानने के लिए यहा आये हो जो राजा साहब के दर्वार में जाकर अपने विचित्र कामों से लोगों को ताज्जुव में डाल रहे हैं मगर साथ ही इसके इस वात को भी समझ लो कि यह मकान उन दोनों नकाबपोशों

का नही है बल्कि हमारा है। उनके मकान में जाने का रास्ता तुम उस सुरग के अन्दर ही छोड आये जिसे तै करके यहा आये हो अर्थात् हमारे और उनके मकान का रास्ता बाहर से तो एक ही हे मगर सुरग के अन्दर ही दो हो गया है। खैर जो कुछ हो हम इस वारे में ज्यादा वात-चीत करना उचित नहीं समझते और न तुम लोगों को कुछ तकलीफ ही देना चाहते हैं वल्कि अपना मेहमान समझ कर कहते हैं कि अब आ गये हो ता रात भर कुटिया में आराम करो सवेरा होने पर जहा इच्छा हो चल जाना। (गद्दी के नीचे बैठे हुए एक नकाबपोश की तरफ देख के) यह काम तुम्हारे सुपुर्द किया जाता है, इन्हें खिला-पिला कर ऊपर वाली मजिल में सोने की जगह दो और सुबह को इन्हें खोह के वाहर पहुचा दो।

इतना कहकर वह नकावपोश उठ खडा हुआ और उसका साथी दूसरा नकाबपोश भी जाने के लिए तैयार हो गया। जिस जगह इन नकाबपोशों की गद्दी लगी हुई थी उस (गद्दी) के पीछे दीवार से एक दर्वाजा था जिस पर पर्दा लटक रहा था। दोनों नकाबपोश पर्दा उठा कर अन्दर चले गये और यह छाटा सा दर्वार वर्खास्त हुआ। गद्दी के नीचे बैठने वाले भी मुसाहव दर्वारी जो कोई हों उठ खडे हुए और उस आदमी ने जिसे दोनों ऐयारों की मेहमानी का हुक्म हुआ था देवीसिह और भूतनाथ की तरफ देख कर कहा— आप लोग मेहरबानी करके मेरे साथ आइये और ऊपर की मजिल में चलिए। भूतनाथ और देवीसिह भी कुछ उज्र न करके पीछे-पीछे चलने के लिए तैयार हो गये।

नकावपोश की वातों ने भूतनाथ और देवीसिह दोनों ही को ताज्जुब में डाल दिया। भूतनाथ न नकावपोश से कहा था कि मैं अपनी स्त्री की खोज में यहा आया हू, मगर बहुत कुछ कह जाने पर भी नकाबपोश ने भूतनाथ की इस बात का कोई जवाव न दिया और ऐसा करना भूतनाथ के दिल में खुटका पेदा करने के लिए कम न था। भूतनाथ को निश्चय हो गया कि उसकी स्त्री यहा है और अवश्य है। उसने सोचा कि जो नकावपोश राजा बीरेन्द्रसिंह के दर्बार में पहुच कर बडी वडी गुप्त वातें इस अनूठे ढग से खोलते हैं उनके घर में यदि मैं अपनी स्त्री को देखू तो यह कोई आश्चर्य की वात नहीं है। हमारे देवीसिह ने तो एक शब्द भी मुँह से निकालना पसन्द न किया, न मालूम इसका सबब क्या था और वे क्या सोच रहे थे मगर कम से कम इस वात की शर्म तो उनको जरूर ही थी कि वे यहा आने के साथ ही गिरफ्तार हो गये। यह तो नकावपोशों की मेहरबानी थी कि हथकडी और वेडी से उनकी खातिर न की गई।

वह नकावपोश कई रास्तों स घूमता-फिरता भूतनाथ और देवीसिह को ऊपर वाली मजिल में ल गया। जो लोग इन दोनों को गिरफ्तार कर लाए थे वे भी उनके साथ गये।

जिस कमरे में भूतनाथ और देवीसिह पहुचाये गये वह यद्यपि बहुत बडा न था मगर जरूरी और मामूली ढग के सामान से सजाया हुआ था। कन्दील की रोशनी हो रही थी जमीन पर साफ सुथरा फर्श बिछा था और कई तकिए भी रक्खे हुए थे एक सगमर्मर की छोटी चौकी बीच में रक्खी हुई थी और किनारे दो सुन्दर पलग आराम करने के लिए बिछे हुए थे।

भूतनाथ और देवीसिह को खाने पीने के लिए कई दफा कहा गया मगर उन दोनों ने इनकार किया अस्तु लाचार होकर नकावपोशों ने उन दोनों को आराम करने के लिए उसी जगह छोडा और स्वय उन आदमियों को जो दोनों ऐयारों को गिरफ्तार कर लाये थे साथ लिए हुए वहा से चला गया। जाते समय ये लोग बाहर से दर्वाजे की जजीर वन्द करते गये और इस कमरे में भूतनाथ और देवीसिह अकेले रह गये।

दूसरा बयान

जब दोनों ऐयार उस कमरे में अकेले रह गये तव थोडी देर तक अपनी अवस्था और भूल पर गौर करने के वाद आपुस में यों वातचीत करने लगे —

देवी—यद्यपि तुम मुझसे और मै तुमसे छिप कर यहा आया मगर यहा आने पर वह छिपना बिल्कुल व्यर्थ गया। तुम्हारे गिरफ्तार हो जाने का तो ज्यादे रञ्ज न होना चाहिये क्योंकि तुम्हें अपनी जान की फिक्र पडी थी अतएव अपनी भलाई के लिए तुन यहा आये थे और जो कोई किसी तरह का फायदा उठाना चाहता है उसे कुछ न कुछ तकलीफ भी जरूर ही भोगनी पडती है मगर मैं तो दिल्लगी ही दिल्लगी में वेवकूफ वन गया। न तो मुझे इन लागों से कोई मतलव ही था और न यहा आए विना मेरा कुछ हर्ज ही होता था।

भूत—(मुस्कुरा कर) मगर आने पर आपका भी एक काम निकल आया क्योंकि यहा अपनी स्त्री को देख कर अव किसी तरह भी जाच किए विना आप नहीं रह सकते।

देवी–ठीक है ! मगर भूतनाथ, तुम बडे ही निडर और हौसले के ऐयार हो जो ऐसी अवस्था में भी हसने और मुस्कुराने से बाज नहीं आते !

भूत–तो क्या आप ऐसा नहीं कर सकते ?

देवी–अगर बनावट के तौर पर हसने या मुस्कुराने की जरूरत न पडे तो मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं इस बात को खूब समझता हू कि तुम्हारे जीवट और हौसले की इतनी तरक्की क्योंकर हुई मगर वास्तव में तुम निराले ढग के आदमी हो, सच तो यह है कि तुम्हारी ठीक-ठाक अवस्था जानना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है।

भूत–आपका कहना बहुत ठीक है मगर अभी तक मेरे जीवट और मर्दानगी का अन्दाजा मिलना कठिन है जब तक कि मैं अपने को मुर्दा समझे हुए हू, जिस दिन मैं अपने को जिन्दा समझूगा उस दिन यह बात न रहेगी।

देवी–तो क्या तुम अभी तक भी अपने को मुर्दा ही समझे हुए हो ?

भूत–बेशक क्योंकि अब मैं बेइज्जती और बदनामी के साथ जीने को मरने के बराबर समझता हू। जिस दिन मैं राजा बीरेन्द्रसिह का विश्वासपात्र बनने योग्य हो जाऊगा उस दिन समझूगा कि जी गया। मैं आपसे इस किस्म की बातें कदापि न करता अगर आपको अपना मेहरबान और मददगार न समझता। आप को जैपाल या नकली बलभद्रसिह की पहिली मुलाकात का दिन याद होगा जब आपने मुझ पर मेहरबानी रखने और मुझे अपनाने का शपथपूर्वक एकरार किया था !

देवी–बेशक मुझे याद है जब तुम घबराये हुए और बेबसी की अवस्था में थे तब मैंने तुमसे कहा था कि 'यदि मुझे यह मालूम हो जायगा कि तुम मेरे पिता के घातक हो जिन पर मेरा बडा स्नेह था तब भी मैं तुम्हें इसी तरह मुहब्बत की निगाह से देखूगा जैसे कि अब मैं देख रहा हू *। कहा है न यही बात ?

भूत–बेशक यही शब्द आपने कहे थे।

देवी–और अब भी मैं उसी बात का एकरार करता हू।

भूत–(प्रसन्नता से) आपकी सचाई पर भी मुझे उतना ही विश्वास है जितना एक और एक दो होने पर !

देवी–यह बात तो तुम सच नहीं कहते !

भूत– (चौंककर) सो क्यों ?

देवी–इसी से कि तुमने भेद की कोई बात आज तक मुझसे नहीं कही, यहा तक कि इस जगह आने की इच्छा भी मुझ पर प्रकट न की।

भूत–(शरमिन्दगी और सिर नीचा करके) बेशक यह मेरा कसूर है जिसके लिए (हाथ जोडकर) मैं आपसे माफी मागता हू, क्योंकि मैं इस बात को अच्छी तरह देख चुका हूँ कि आपने अपनी बात का निवाह पूरा-पूरा किया।

देवी–खैर अब भी अगर तुम मुझे अपना विश्वासपात्र समझोगे तो मेरे दिल का रज निकल जायगा, असल तो यों है कि इस मौके पर तुमसे मिलने के लिए ही मैंने यहाँ आने का इरादा भी किया क्योंकि मुझे विश्वास था कि यहाँ तुम जरूर आओगे। खैर अब तुम अपने कौल और इकरार को याद रक्खो और इस समय इन बातों का इसी जगह छोडकर इस बात पर विचार करो कि अब हम लोगों को क्या करना चाहिये। मैं समझता हू कि तुम्हारे पास तिलिस्मी खजर मौजूद है।

भूत–जी हाँ (खजर की तरफ इशारा करके) यह तैयार है।

देवी–(अपने खजर की तरफ बता के) मेरे पास भी है।

भूत–आपको कहा से मिला ?

देवी–तेजसिंह ने दिया था। यह वही खजर है जो मनोरमा के पास था कमबख्त ने इसके जोड की अगूठी अपनी जाघों के बीच छिपा रक्खा था जिसका पता बडी मुश्किल से लगा और तब से इस ढग को मैंने भी पसन्द किया।

भूत–अच्छा तो अब आपकी क्या राय होती है ? यहाँ से निकल भागने की कोशिश की जाय या यहाँ रहकर कुछ भेद जानने की ?

देवी–इन दोनों खजरों की बदौलत शायद हम यहाँ से निकल जा सकें मगर ऐसा करना चाहिए। अब जब गिरफ्तार होने की शरमिन्दगी उठा ही चुके तो बिना कुछ किये चले जाना उचित नहीं है। अब क्या बिना उन दोनों का असल भेद मालूम किये यहाँ से चलने की इच्छा हो सकती है !

भूत–बेशक ऐसा ही है

इतना कहते-कहते भूतनाथ यकायक रुक गया क्योंकि उसके कान में किसी के जोर से हसने की आवाज आई और

---

* देखिये ग्यारहवें भाग का आखिरी-बयान।

यह आवाज कुछ पहिचानी हुई सी जान पडी। देवीसिह ने भी इस आवाज पर गौर किया ओर उन्हें भी इस बात का शक हुआ कि इस आवाज का मै कई दफे सुन चुका हूँ मगर इस बात का काई निश्चय वे दानों नहीं कर सके की यह आवाज किसकी है।

दवीसिह और भूतनाथ दोनों ही आदमी इस बात को गौर से देखने और जांचने लगे कि यह आवाज किधर स आई या हम उसे किसी तरह दख भी सकत है या नहीं जिसकी यह आवाज है। यकायक उनदानों न दीवार में ऊपर की तरफ दो सूराख देख जिनमें आदमी का सर बखूबी जा सकता था। यह सूराख छत से हाथ भर नीचे हट कर बन हुए थे और हवा आने जाने के लिए बनाए गये थे। दोनो को खयाल हुआ कि इसी सूराख में से आवाज आती है और उसी समय पुन हसन की आवाज आने से इस बात का निश्चय हा गया।

फौरन ही दानों क मन में यह बात पैदा हुई कि किसी तरह उस सूराख तक पहुच कर देखना चाहिए कि कुछ दिखाई दता है या नहीं मगर इस ढग स कि उस दूसरी तरफ वालों को हमारी इस ढिठाई का पता न लग।

हम लिख चुके है कि इस कमर में दा चारपाईया बिछी हुई थी देवीसिह ने उन दोनों चारपाइयो को उस सूराख तक पहुचाने का जरिया बनाया अर्थात बिछावन हटा देने के बाद एक चारपाई दीवार के सहारे खडी करके दूसरी चारपाइ उसके ऊपर खडी की और कमन्द से दानों के पावे अच्छी तरह मजबूती के साथ बाधकर एक प्रकार की सीढ़ी तैयार की। इसके बाद देवीसिह ने भूतनाथ के कन्ध पर चढकर कन्दील की रोशनी बुझा दी और तब उस चारपाई की अनूठी सीढी पर चढने का विचार किया, उस समय मालूम हुआ कि उस सूराख में से थाडी-थाडी रोशनी भी आ रही है। भूतनाथ न नीचे खडे रहकर चारपाई को मजबूती के साथ थामा और बिनवट के सहारे अगूठा अडाते हुए दवीसिह ऊपर चढ गए। व सूराख टेढ़े अर्थात् दूसरी तरफ को झुकते हुए थ। एक सूराख म गदन डालकर देवीसिह ने देखना शुरू किया। उधर नीच की मजिल में एक बहुत बडा कमरा था जिसकी ऊची छत इस कमर की छत के बराबर पहुची हुई थी जिसमे देवीसिह और भूतनाथ थे। उस कमरे में सजावट की कोई चीज ना थी सिर्फ जमीन पर साफ सुफेद फर्श बिछा हुआ था और दा शमादान जल रहे थे। वहा पर देवीसिह ने दो नकाबपोशों को ऊची गद्दी पर और चार को गद्दी क नीचे बैठे पाया और एक तरफ जिधर कोई मर्द न था अपनी और भूतनाथ की स्त्री को भी देखा। ये लोग आपुस में धीरे-धीरे बातें कर रहे थे इनकी बातें साफ समझ में नहीं आती थीं, जो कुछ टूटी-फूटी बातें सुनने में आईं उनका मतलब यह था कि सुरग का दर्वाजा बन्द करने में भूल हो जाने क सबब स भूतनाथ और देवीसिह वहा आ गये,अस्तु अब ऐसी भूल ना हानी चाहिए जिसमें यहा तक कोइ आ सके। इसी बीच में एक और नकाबपोश आ पहुचा जो इस समय अपने नकाब का उलट कर सिर के ऊपर फेंके हुए था। इस आदमी की सूरत देखते ही देवीसिह ने पहिचान लिया कि भूतनाथ का लडका तथा कमला का सगा तथा बड़ा भाई हरनामसिह है। देवीसिह ने अपनी जिन्दगी में हरनामसिह का शायद एक या दा दफे किसी मौके पर देखा होगा इसलिए उसको पहिचान लिया मगर ताज्जुब के साथ ही साथ शक बना रहा, अस्तु इस शक का मिटाने के लिए देवीसिह नीचे उतर आय और चारपाई को खुद पकडकर भूतनाथ को ऊपर चढ़न और सूराख के अन्दर झांकने के लिए कहा।

जब भूतनाथ चारपाई की बिनन के सहारे ऊपर चढ गया और उस सूराख में झाककर देखा तो अपने लड़के हरनामसिह को पहिचानकर उसे बडा ही ताज्जुब हुआ और वह बड़े गौर से देखने तथा उन लोगों की बातें सुनने लगा।

पाठक ताज्जुब नहीं कि आप इस हरनामसिह को एक दम ही भूल गये हो क्योंकि जहा तक हमें याद है इसका नाम शायद चन्द्रकान्ता सन्तति के दूसरे भाग के पाचवें बयान में आकर रह गया और फिर कही इसका जिक्र तक नहीं आया। यह वह हरनामसिह नहीं है जा मायारानी का ऐयार था बल्कि यह कमला का बडा भाई तथा खास भूतनाथ का पहिला और असल लडका हरनामसिह है। इसे बहुत दिनों के बाद आज यहा देखकर आप नि सन्देह आश्चर्य करेंगे परन्तु खैर अब हम यह लिखते है कि भूतनाथ न सूराख के अन्दर झाक कर क्या देखा ?

भूतनाथ ने देखा कि उसका लड़का हरनामसिह गद्दी के ऊपर बैठे हुए दोनो नकाबपोशों के सामने खडा है और सदर दर्वाज की तरफ बड़े गौर स देख रहा है। उसी समय एक आदमी लपेटे हुए मोटे कपड़े का बहुत बड़ा लम्बा पुलिन्दा लिए हुए आ पहुचा और इस पुलिन्दे को गद्दी पर रख के खड़ा हो हाथ जोड़कर भर्राई हुई आवाज में बोला, "कृपानाथ बस मै इसी का दावा भूतनाथ पर करूगा।

गद्दी के नीचे बैठे हुए दा आदमियों ने इशारा पाकर लपेटे हुए कपडे को खाला और तब भूतनाथ ने भी देखा कि वह एक बहुत बड़ी और आदमी के कद के बराबर तस्वीर है।

उस तस्वीर पर निगाह पडते ही भूतनाथ की अवस्था बिगड गई और वह डर के मारे थर-थर कापने लगा। बहुत कोशिश करने पर भी वह अपने को सम्हाल न सका और उसके मुह से एक चीख की आवाज निकल ही गई अर्थात् वह

चिल्ला उठा। उसी समय उसने यह भी देखा कि उसकी आवाज उन लोगों के कानों में पहुच गई और इस सबब से वे लोग ताज्जुब के साथ ऊपर की तरफ देखन लगे।

भूतनाथ जल्दी के साथ चारपाई के नीचे उतर आया और कापती हुई आवाज में देवीसिह से बोला "ओफ मै अपने को सम्हाल न सका और मेरे मुँह से चीख की आवाज निकल ही गई जिसे उन लोगों ने सुन लिया ताज्जुव नहीं कि उन लोगों में से कोई यहा आय, अस्तु आप जो उचित समझिये कीजिये, कुछ देर बाद मै अपमा हाल आपसे कहूगा।' इतना कह भूतनाथ जमीन पर बैठ गया।

देवसिह ने झटपट अपने बटुए में से सामान निकालकर मोमवत्ती जलाई दो-तीनडपट की बातें कह भूतनाथ को चैतन्य किया और उसके मोढे पर चढ कर कन्दील जलाने बाद मोमवत्ती बुझा कर बटुए में रख ली और इसके बाद दोनों चारपाई उसी तरह दुरुस्त कर दी जिस तरह पहिले थी इसके जाद एक चारपाई पर भूतनाथ को सुला कर पेट दर्द का बहाना करने और हाय-हाय करके कराहने के लिए कहकर आप उसी चारपाई के सहारे बेठ गय। उसी समय कमरे का दर्वाजा खुला और तीन-चार नकावपोश अन्दर आते हुए दिखाई पडे।

उन आदमियों ने पहिले तो गौर से कमरे के अन्दर की अवस्था देखी और तव उनमें से एक ने आगे वढ कर देवीसिह से पूछा क्या अभी तक आप लोग जाग रहे है ?

देवी—हा (भूतनाथ की तरफ इशारा करके) इनके पट में यकायक दर्द पैदा हो गया और वडी तकलीफ है अक्सर दर्द की तकलीफ से चिल्ला उठते हैं।

नकाब—(भूतनाथ की तरफ देख के) आज यहाँ कुछ खाने के भी तो नहीं आया।

देवी—पहिले ही की कुछ कसर होगी।

नकाव—फिर कुछ दवा वगैरह का बन्दोबस्त किया जाय ?

देवी—मैंने दो दफे दवा खिलाई है अव तो कुछ आराम हो रहा है पहिले बडी तेजी पर था।

इतना सुनकर वे लोग चले गये और जाती समय पहिले की तरह दर्वाजा पुन बन्द करते गय।

अव फिर उस कमरे में सन्नाटा हा गया और भूतनाथ तथा देवीसिह को धीरे-धीर बातचीत करन का मौका मिला।

देवी—हा अव बताओ तुमने पिछले कमरे में क्या देखा और तुम्हारे मुँह से चीख की आवाज क्यों निकल गई ?

भूत—ओफ मेरे प्यारे दोस्त देवीसिह क्योंकि अव मैं आपको खुशी और सच्चे दिल से अपना दोस्त कह सकता हू चाहे आप मुझसे हर तरह पर वडे क्यों न हो उस कमरे में जो कुछ मैंने देखा वह मुझे दहला देने के लिए काफी था। पहिले तो वहाँ मैंने अपने लडके को देखा जिसे उम्मीद है कि आपने भी देखा होगा।

देवी—बेशक उसे मैंने देखा था मगर शक मिटाने के लिये तुम्हें दिखाना पडा चाहे वह कोई ऐयार ही सूरत वदले क्यों न हो मगर शक्ल ठीक वैसी ही थी।

भूत—अगर उसकी सूरत बनावटी नहीं है तो वह मेरा लडका हरनामसिह ही है खैर उसके वारे में तो मुझे कुछ ज्यादे तरद्दुद न हुआ मगर उसके कुछ ही देर बाद मैंने एक ऐसी चीज देखी कि जिससे मुझे हौल हो गया और मुँह से चीख की आवाज निकल पडी।

देवी—वह क्या चीज थी ?

भूत—एक बहुत बडी तस्वीर थी जिसे एक आदमी ने पहुच कर उस नकाबपोशों के आगे रख दिया जो गद्दी पर बैठे हुए थे और कहा, बस मैं इसी का दावा भूतनाथ पर करूँगा।

देवी—वह किसकी तस्वीर थी किसी मर्द की या औरत की ?

भूत—(एक लम्बी सास लेकर) वह औरत मर्द जगल पहाड बस्ती उजाड सभी की तस्वीर थी मैं क्या बताऊँ **किसकी तस्वीर थी। एक यही बात है जिसे मैं अपने मुँह से नहीं निकाल सकता। मगर अब मैं आपसे कोई** बात न छिपाऊगा चाहे कुछ ही क्यों न हो। आप यह तो अच्छी तरह जानते ही है कि मैं उस पीतल की सन्दूकडी से कितना डरता हू जो नकली बलभद्रसिह की दी हुई अभी तक तेजसिह के पास है।

देवी—मैं खूब जानता हू और उस दिन भी मेरा खयाल उसी सन्दूकडी की तरफ चला गया था जब एक नकाबपोश ने दर्बार में खडे होकर तुम्हारी तारीफ की थी और तुम्हें मुँहमागा इनाम देने के लिए कहा था।

भूत—ठीक है, बलभदसिह ने भी मुझे यही कहा था कि 'ये नकाबपोश तुम्हारे मददगार हैं और तुम्हारा भेद ढके रहने

के लिए महाराज स यह सन्दूकडी तुम्हें दिलाया चाहते हं । मैं भी यह सोचकर प्रसन्न था और चाहता था कि मुकदमा फैसला होने के पहिले ही इनाम मागने का मुझे कोई मौका मिल जाय, मगर इस तस्वीर ने जिसे मैं अभी देख चुका हूँ मेरी हिम्मत तोड दी और पुन अपनी जिन्दगी से नाउम्मीद हो गया हू।

देवी–तो उस सन्दूकडी से और इस तस्वीर से क्या सम्बन्ध ?

भूत–वह सन्दूकडी अपने पेट में जिस भेद को छिपाये हुए है उसी भेद को यह तस्वीर प्रकट करती है। इसके अतिरिक्त मैं सोचे हुए था कि अव उसका कोई दावेदार नहीं है मगर अब मालूम हो गया कि उसका दावेदार भी आ पहुचा और उसी ने यह तस्वीर नकाबपोश के आगे पेश की ।

देवी–क्या तुम यह नहीं वता सकते कि उस सन्दूकडी और इस तस्वीर में क्या भेद है ?

भूत–(लम्बी सॉस लेकर) अव मैं आपसे कोई वातछिपा न रक्खूगा मगर इतना समझ रखिये कि उस भेद को सुनकर आप अपने ऊपर एक तरद्दुद का बोझा डाल लेंगे।

देवी–खैर जो कुछ होगा सहना ही पडेगा और तुम्हारी मदद भी करनी ही पडेगी मगर सबक पहिले मैं यह जानना चाहता हूँ कि उस भेद से हमारे महाराज का भी कुछ सम्बन्ध है या नहीं ।

भूत–अगर कुछ सम्बन्ध है भी तो केवल इतना ही कि उस भेद को सुनकर वे मुझ पर घृणा करेंगे नहीं तो महाराज से और उस भेद से कोई सम्बन्ध नहीं। मैने महाराज के विपक्ष में कोई बुरा काम नहीं किया जो कुछ बुरा किया है वह सिर्फ अपने और अपने दुश्मनों के साथ।

देवी–जब महाराज से उस भेद का कोई सम्बन्ध ही नहीं है तो मैं हर तरह से तुम्हारी मदद कर सकता हू, अच्छा तो यह वताओ कि वह कौन सा भेद है ?

भूत–इस समय न पूछिये क्योंकि हम लोग विचित्र स्थान में कैद है ताज्जुब नहीं हम दोनां की वातें कोई किसी जगह छिप कर सुनता हो हॉ मैदान में निकल चलने पर ज़रूर कहूगा।

देवी–अच्छा यह तो बताओ कि उस आदमी की सूरत भी तुमने अच्छी तरह देख ली या नहीं जिसने यह तस्वीर नकावपोश के आगे पेश की थी ।

भूत–हा उसकी सूरत मैंन वखूबी देखी थी मैं उसे खूव पहिचानता हू, क्योंकि दुनिया में मेरा सबसे बडा दुश्मन वही है और उस अपनी ऐयारी का घमंड भी है।

देवी–अगर वह तुम्हारे कब्जे में आ जाए ता ?

भूत–जरूर उसे फसाने बल्कि मार डालने की फिक्र करुगा । मैं तो उसकी तरफ से विल्कुल बेफिक्र हो गया था मुझ इस बात की रत्ती भर उम्मीद न थी कि वह जीता है।

देवी–खैर कोई चिन्ता नहीं जैसा होगा देखा जायगा तुम अभी से हताश क्यों हो रहे हौ ।

भूत–अगर वह सन्दूकडी मुझे मिल जाती और उसके खुलने की नौबत न आती तो

देवी–वह सन्दूकडी मैं तुम्हें दिला दूँगा और उसे किसी के सामने खुलने भी न दूँगा उसकी तरफ स तुम बेफिक्र रहो।

भूत–(मुहब्बत से देवीसिंह का पजा पकड के) अगर एसा करो तो क्या वात है ।

देवी–ऐसा ही होगा। खैर अब यह सोचना चाहिए कि इस समय हम लोगों का क्या करना उचित है मैं समझता हू कि सुबह होने के साथ ही हम लोग इस हद क बाहर पहुचा दिये जायेंगे।

भूत–मरा ख्याल भी यही है लेकिन अगर ऐसा हुआ तो आपकी और मेरी स्त्री के बारे में किसी बात का पता न लगेगा।

देवीसिह और भूतनाथ इस विषय पर बहुत दर तक बात चीत और राय पक्की करते रहे और यहा तक कि सवेरा हो गया कई नकावपोश उस कमरे को खोलकर भूतनाथ तथा देवीसिह के पास पहुचे और उन्हें बाहर चलने के लिए कहा।

तीसरा बयान

महाराज से जुदा होकर देवीसिह और वलभद्रसिह से विदा होकर भूतनाथ ये दोनों ही नकावपोशों का पता लगाने के लिए चले गये। वचा हुआ दिन और तमाम रात तो किसी ने इन दोनों की खोज न की मगर दूसरे दिन सवेरा होने के साथ ही इन दोनों की तलबी हुई और थोडी ही देर में जवाव मिला कि उन दोनों का पता नहीं है कि कहा गये और अभी

तक क्यों नहीं आये। हमारे महाराज समझ गये कि देवीसिह की तरह भूतनाथ भी उन्हीं दोनों नकाबपोशों का पता लगाने चला गया मगर उन दोनों के न लौटने से एक तरह की चिन्ता पैदा हो गई और लाचार होकर आज दर्बारे-आम का जलसा बन्द रखना पडा।

दर्बारे-आम के बन्द होने की खबर वहा वालों को तो मिल गई मगर वे दोनों नकाबपोश अपने मामूली समय पर आ ही गये और उनके आने की इत्तिला राजा वीरेन्द्रसिह से की गई। उस समय राजा वीरेन्द्रसिह एकान्त में तेजसिह तथा और भी कई ऐयारों के साथ बैठे हुए देवीसिह और भूतनाथ के बारे में बात कर रहे थे। उन्होंने ताज्जुब के साथ नकाबपोशों का आना सुना और उसी जगह हाजिर करने का हुक्म दिया।

हाजिर होकर दोनों नकाबपोशों ने बडे अदब से सलाम किया और आज्ञा पाकर महाराज से थोडी दूर पर तेजसिह के बगल में बैठ गये। इस समय तखलिये का दर्बार था तथा गिनती के मामूली आदमी बैठे हुए थे राजा वीरेन्द्रसिह का नकाबपोशों की बातें सुनने का शौक था इसलिये तेजसिह के बगल ही में बैठने की आज्ञा दी और स्वयं बातचीत करने लगे।

वीरेन्द्र–आज भूतनाथ के न होने से मुकदमे की कारवाई रोक देनी पडी।

नकाब–(अदब से हाथ जोडकर) जी हा मैंने यहा पहुचने के साथ ही सुना कि कल से देवीसिह और भूतनाथ का पता नहीं है इसलिए आज दर्बार न होगा। मगर ताज्जुब की बात है कि भूतनाथ और देवीसिहजी एक साथ कहाँ चले गये। मैं तो यही समझता हू कि भूतनाथ हम लोगों का पता लगाने के लिए निकला है और उसका ऐसा करना कोई ताज्जुब की बात भी नहीं मगर देवीसिहजी बिना मर्जी के चले गये इस बात का ताज्जुब है।

वीरेन्द्र–देवीसिह बिना मर्जी के नहीं चले गये बल्कि हमसे पूछ के गये है।

नकाब–तो उन्हें महाराज ने हम लोगों का पीछा करने की आज्ञा क्यों दी ? हम लोग तो महाराज के तावेदार स्वयं ही अपना भेद कहने के लिए तैयार है और शीघ्र ही समय पाकर अपने को प्रगट करेंगे केवल मुकदमे की उलझन खुलने और कैदियों को निरुत्तर करने के लिए अपने को छिपाये हुए है।

तेज- आप लोगों को शायद यह मालूम नहीं है कि भूतनाथ ने देवीसिह को अपना दोस्त बना लिया है। जिस समय भूतनाथ के मुकदमे का बीज रोपा गया था उसके कई घंटे पहिले ही देवीसिह ने उसकी सहायता करने की प्रतिज्ञा कर दी थी क्योंकि वह भूतनाथ की चालाकी ऐयारी तथा अच्छे कामों से प्रसन्न थे।

नकाब–ठीक है तब तो ऐसा हुआ ही चाहिये परन्तु कोई चिन्ता नहीं भूतनाथ वास्तव में अच्छा आदमी है और उसे महाराज की सेवा का उत्साह भी है।

तेज–इसके अतिरिक्त उसने हमारे कई काम भी बडी खूबी के साथ किए है। नकाब–ठीक है।

तेज–हा मैं एक बात आप से पूछना चाहता हू। नकाब–आज्ञा !

तेज–निःसन्देह भूतनाथ और देवीसिह आप लोगों का भेद लेने के लिए गए है अस्तु आश्चर्य नहीं कि वे दोनों उस तक पहुच गये हों जहाँ आप लोग रहते है और आपका उनका कुछ हाल भी मालूम हुआ हो।

नकाब–न तो वे हम लोगों के डेरे तक पहुंचे और न हम लोगों को उनका कुछ हाल ही मालूम है। हम लोगों के विषय में हजारों आदमी बल्कि यों कहना चाहिए कि आज-कल यहाँ जितने लोग इकट्टा हो रहे है सभी आश्चर्य करते है और इसीलिए जब हम लोग यहा आते है तो सैकडों आदमी चारों तरफ से घेर लेते है और जाते समय तक कोसों तक पीछा करते है इसलिए हम लोगों को बहुत घूम फिर तथा लोगों को भुलावा देते हुए अपने डेरे की तरफ जाना पडता है।

तेज–तब तो उन दोनों का न लौटना आश्चर्य है।

नकाब–बेशक अच्छा तो आज हम लोग कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह का कुछ हाल महाराज को सुनाते जाय, आखिर आ गये तो कुछ काम करना ही चाहिये।

वीरेन्द्र–(ताज्जुब से) उनका कौन सा हाल ?

नकाब–वही तिलिस्म के अन्दर का हाल। जब तक राजा गोपालसिह वहा थे तब तक का हाल तो उनकी जुबानी आप ने सुना ही होगा मगर उसके बाद क्या हुआ और तिलिस्म में उन दोनों भाइयों ने क्या किया सो न सुना होगा। वह सब हाल हम लोग सुना सकते है यदि आज्ञा हो तो

वीरेन्द्र–(ज्यादे ताज्जुब के साथ) कब तक का हाल आप सुना सकते है ?

नकाब–आज तक का हाल, बल्कि आज के बाद भी रोज-रोज का हाल तब तक बराबर सुना सकते है जब तक उनके यहा आने में दो घण्टे की देर हो।

वीरेन्द्र–हम बडी प्रसन्नता से उनका हाल सुनने के लिए तैयार है बल्कि हम चाहते है कि गोपालसिंह और अपने पिताजी के सामने वह हाल सुनें।

नकाब–जो आज्ञा, मैं सुनाने के लिए तैयार हू।

वीरेन्द्र–मगर वह सब हाल आप लोगों को कैसे मालूम हुआ, होता है और होगा ?

नकाब–(हाथ जोडकर) इसका जवाब देन के लिए मैं अभी तैयार नहीं हू, लेकिन यदि महाराज मजबूर करेंगे तो लाचारी है क्योंकि हम लोग महाराज को अप्रसन्न भी नहीं किया चाहते।

वीरेन्द्र–(मुस्कुराकर) हम तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कोई काम करना भी नहीं चाहते।

इतना कह के बीरेन्द्रसिह ने तेजसिह की तरफ देखा। तेजसिह स्वय उठकर महाराज सुरेन्द्रसिह के पास गये और थोडी ही दर में लौट आकर बोले चलिए महाराज बैठे हैं और आप लोगों का इन्तजार कर रहे हैं। सुनते ही सब कोई उठ खडे हुए और राजा सुरेन्द्रसिह की तरफ चले। उसी समय तेजसिह ने एक ऐयार राजा गोपालसिह के पास भेज दिया।

चौथा बयान

राजा सुरेन्द्रसिह का दरबारे–खास लगा हुआ है। जीतसिह,वीरेन्द्रसिह,तेजसिह और भैरोसिह वगैरह अपने खास ऐयारों के अतिरिक्त कोई गैर आदमी यहा दिखाई नही देता। महाराज की आज्ञानुसार एक नकाबपोश ने कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह का हाल इस तरह कहना शुरु किया –

नकाब–जब तक राजा गोपालसिह वहा रहे तब तक का हाल तो इन्होंने आप से कहा ही होगा अब मैं उसके बाद का हाल बयान करूँगा।

राजा गोपालसिह से विदा हो दोनों कुमार उस बावली पर पहुचे। जब राजा गोपालसिह सभों को लिए हुए वहा से चले गये उस समय सवेरा हो चुका था अतएव दोनों भाई जरूरी काम और प्रात कृत्य से छुट्टी पाकर बावली के अन्दर उतर। निचली सीढी पर पहुच कर आनन्दसिह ने अपने कुल कपडे उतार दिए और केवल लगोट पहने हुए जल के अन्दर कूद कर बीचों-बीच में जा गोता लगाये। वहा जल के अन्दर एक छोटा सा चबूतरा था और चबूतरे के बीचोबीच में लोहे की मोटी कडी लगी हुई थी। जल में जाकर उसी को आनन्दसिह ने उखाड लिया और उसके बाद जल के बाहर चले आए। बदन पोंछकर कपडे पहिर लिये लगोट सूखने के लिए फैला दिया और दोनों भाई सीढी पर बैठकर जल के सूखने का इन्तजार करने लगे।

जिस समय आनन्दसिह ने जल में जाकर वह लोहे की कडी निकाल ली उसी समय से बावली का जल तेजी के साथ घटने लगा, यहा तक कि दो घटे के अन्दर बावली खाली हो गई और सिवाय कीचड के उसमें कुछ भी न रहा और वह कीचड़ भी मालूम होता था कि बहुत जल्द सूख जायेगा क्योंकि नीचे की जमीन पक्की और सगीन बनी हुई थी, केवल नाममात्र का मिट्टी या कीचड का हिस्सा उस पर था। इसके अतिरिक्त किसी सुरग या नाली की राह निकल जाते हुए पानी ने भी बहुत कुछ सफाई कर दी थी।

बावली के नीचे वाली चारो तरफ की अतिम सीढी लगभग तीन हाथ के ऊची थी और उसकी दीवार में चारो तरफ चार दरवाजों के निशान बने हुए थे जिसमें से पूरब तरफ वाले निशान को दोनों कुमारों ने तिलिस्मी खजर से साफ किया। जब उसके आगे वाले पत्थरों को उखाड कर अलग किया तो अन्दर जाने के लिए रास्ता दिखाई दिया जिसके विषय में कह सकते है कि वह एक सुरग का मुहाना था और इस ढग से बन्द किया गया था जैसा कि ऊपर बयान कर चुके हैं।

इसी सुरग के अन्दर कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह को जाना था मगर पहर तक उन्होंने इस ख्याल से उसके अन्दर जाना मौकूफ रक्खा कि उसके अन्दर से पुरानी हवा निकल कर ताजी हवा भर जाय क्योंकि यह बात उन्हें पहिल से ही मालूम थी कि दरवाजा खुलने के बाद थोडी देर में उसके अन्दर की हवा साफ हो जायगी।

पहर दिन बाकी था जब दोनों कुमार उस सुरग के अन्दर घुसे और तिलिस्मी खजर की रोशनी करते हुए आधे घण्टे तक बराबर चले गये। सुरग में कई जगह ऐसे सूराख बने हुए थे जिनमें से रोशनी तो नहीं मगर हवा तेजी के साथ आ रही थी और यही सबब था कि उसके अन्दर की हवा थोडी देर में साफ हो गई।

आप सुन चुके होंगे कि तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में (जहा के देवमन्दिर में दोनों कुमार कई दिन तक रह चुके हैं) देवमन्दिर के अतिरिक्त चारों तरफ चार मकान बने हुए थे *और उनमें से उत्तर तरफ वाला मकान गोलाकार स्याह पत्थर का बना हुआ तथा उसके चारो तरफ चर्खिया और तरह-तरह के कल पुर्जे लगे हुए थे। उस सुरग का दूसरा

---

*देखिये नौवा भाग, पहिला बयान।

मुहाना उसी मकान के अन्दर था और इसीलिये सुरग के बाहर होकर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह ने अपने को उसी मकान में पाया। इस मकान में चारो तरफ गालाकार दालान के अतिरिक्त कोई कोठरी या कमरा न था। बीच में एक सगमर्मर का चबूतरा था और उस पर स्याह रग का एक मोटा आदमी बैठा हुआ था जो जाच करने पर मालूम हुआ कि लोह का है। उसी आदमी के सामने की तरफ के दालान में सुरग का वह मुहाना था जिसमें दोनों कुमार निकले थे। उस सुरग के बगल में एक और सुरग थी और उसके अन्दर उतरने के लिए सीढिया बनी हुई थीं। चारो तरफ देख भाल करने के बाद दानों कुमार उसी सुरग में उतर गये और आठ-दस सीढी नीचे उतर जाने के बाद दखा कि सुरग खुलासा तथा बहुत दूर तक चली गई है। लगभग सौ कदम तक दोनों कुमार बेखटके चले गये और इसके बाद एक छोटे से बाग में पहुचे जिसमें खबसूरत पेड पत्तों का तो कहीं नाम निशान भी न था हा जगली बैर,मकोय तथा केले के पेडों की कमी न थी। दोनों कुमार सोचे हुए थे कि यहा भी और जगहों की तरह हम सन्नाटा पाएगे अर्थात् किसी आदमी की सूरत दिखाई न देगी मगर ऐसा न था। वहा कई आदमियों को इधर-उधर घूमते देख दोनों कुमारों को बडा ही ताज्जुब हुआ और वे गौर से उन आदमियों की तरफ देखने लगे जो बिल्कुल जगली और भयानक मालूम पडते थे।

वे आदमी गिनती में पाच थे और उन लोगों ने भी दोनों कुमारों को देख कर उतना ही ताज्जुब किया जितना कुमारों ने उनको देख कर। वे लोग इकट्ठे होकर कुमार के पास चले आये और उनमें से एक ने आगे बढ कर कुमार से पूछा 'क्या आप दानों के साथ भी वही सलूक किया गया जो हम लोगों के साथ किया गया था ? मगर ताज्जुब है कि आपके कपडे और हरबे छीने नहीं गए और आप लोगों के चेहरे पर भी किसी तरह का रज मालूम नहीं पडता !

इन्द्र–तुम लोगों के साथ क्या सलूक किया गया था और तुम लोग कौन हो ?

आदमी–हम लोग कौन है इसका जवाब देना सहज नहीं है और न आप थोडी देर में इसका जवाब सुन ही सकते है मगर आप अपने बारे में सहज में बता सकते हैं कि किस कसूर पर यहा पहुचाए गये।

इन्द्र–हम दोनों भाई तिलिस्म को तोडते और कई कैदियों को छुडाते हुए अपनी खुशी से यहाँ तक आये हैं और अगर तुम लोग कैदी हो तो समझ रक्खो कि इस कैद की अवधि पूरी हो गई और बहुत जल्द अपने को स्वतन्त्र विचरते हुए देखाग।

आदमी–हमें कैसे विश्वास हो कि जो कुछ आप कह रहे हैं वह सच है !

इन्द्र–अभी नहीं तो थोडी देर में स्वय विश्वास हो जायगा।

इतना कहकर कुमार आगे की तरफ बढे और वे लोग उन्हें घेरे हुए साथ-साथ जाने लगे। इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह को विश्वास हो गया कि सरयू की तरह ये लोग भी इस तिलिस्म में कैद किये गये है और दारोगा या मायारानी ने इनके साथ यह सलूक किया है और वास्तव में बात भी ऐसी ही थी।

इन आदमियों की उम्र यद्यपि बहुत ज्यादे न थी मगर रज गम और तकलीफ की बदौलत सूख कर काटा हो गये थे। सर और दाढी के बालों ने बढ और उलझ कर उनकी सूरत डरावनी कर दी थी और चेहरे की जर्दी तथा गडहे में धुसी हुई आखें उनकी बुरी अवस्था का परिचय दे रही थीं।

इस बाग में पानी का एक चश्मा था और वही इन कैदियों की जिन्दगी का सहारा था मगर इस बात का पता नहीं लग सकता था कि पानी कहा से आता है और निकल कर कहा चला जाता है। इसी नहर की बदौलत यहा की जमीन का बहुत बडा हिस्सा तर हो रहा था और इस सबब से उन कैदियों को केला वगैरह फल खाकर अपनी जान बचाये रहने का मौका मिलता था।

बाग के बीचोबीच में बीस या पचीस हाथ ऊँचा एक बुर्ज था और उस बुर्ज के चारों तरफ स्याह पत्थर का कमर बराबर ऊँचा चबूतरा बना हुआ था मगर इस बात का पता नहीं लगता था कि इस बुर्ज पर चढने के लिए कोई रास्ता भी है या नहीं अगर हैं तो कहा से है। दोनों कुमार उस चबूतरे पर बेधडक जाकर बैठ गये और तब इन्द्रजीतसिह ने उन कैदियों की तरफ देख के कहा 'कहो अब तुम्हें विश्वास हुआ कि जो कुछ हमने कहा था सच है ?

आदमी–जी हा अब हम लोगों को विश्वास हो गया क्योंकि हम लोगों ने इस चबूतरे को कई दफे आजमा कर देख लिया है। इस पर बैठना तो दूर रहा हम इसे छूने के साथ ही बेहोश हो जाते थे मगर ताज्जुब है कि आप पर इसका असर कुछ भी नहीं होता।

इन्द्र–इस समय तुम लोग भी इस चबूतरे पर बैठ सकते हो जब तक हम बैठे हैं।

आदमी–(चबूतरा छूने की नीयत से बढता हुआ) क्या ऐसा हो सकता है !

इन्द्र–आजमा के देख लो।

उस आदमी ने चबूतरा छूआ मगर उस पर कुछ बुरा असर न हुआ और तब कुमार की आज्ञा पा वह चबूतरे पर बैठ गया। उसकी देखा-देखी सभी आदमी उस चबूतरे पर बैठ गये और जब किसी तरह का बुरा असर होते न देखा तब हाथ जोड कर कुमार से बोले अब हम लोगों को आपकी बात में किसी तरह का शक न रहा आशा है कि आप कृपा करके अपना परिचय देंगे।

जब कुँअर इन्द्रजीतसिह ने अपना परिचय दिया तब सब के सब उनके पैरों पर गिर पडे और डबडबाई ऑखों से उनकी तरफ देख के बोले दोहाई है महाराज की हमारे मामले पर विचार होकर दुष्टों को दण्ड मिलना चाहिये।

इतना कहकर नकाबपोश चुप हो गया और कुछ सोचने लगा। इसी समय बीरेन्द्रसिह ने उससे कहा 'मालूम होता है कि उस चबूतरे में बिजली का असर था और इस सबब से उसे काई छू नहीं सकता था मगर दोनों लडकों के पास बिजली वाला तिलिस्मी खञ्जर मौजूद था और उसके जोड की अगूठी भी इसलिये तब तक के लिए उसका असर जाता रहा जब तक दोनों लडके उस पर बैठे रहे।

नकाब–(हाथ जोडकर) जी बेशक यही बात है।

बीरेन्द–अच्छा तब क्या हुआ ?

नकाब–इसके बाद कुमार ने उन सभों का हाल पूछा और उन सभों ने रो रो कर अपना हाल बयान किया।

बीरेन्द्र–उन लोगों ने अपना हाल क्या कहा ?

नकाब–मैं यही सोच रहा था कि उन लोगों ने जो कुछ अपना हाल बयान किया वह मैं इस समय कहूँ या न कहूँ।

तेज–क्या उन लोगों का हाल कहने में कोइ हर्ज है ? आखिर हम लोगों को मालूम तो होगा ही।

नकाब–जरूर मालूम होगा और मेरी ही जुबानी मालूम होगा मैं जो कहने से रुकता हू वह केवल एक ही दो दिन के लिए, हमेशा के लिए नहीं।

तेज–अगर यही बात है तो हमें दो एक दिन के लिए कोई जल्दी भी नहीं।

नकाब–(हाथ जोडकर) अस्तु अब आज्ञा हो तो हम लोग डेरे पर जाय। कल पुन सभा में उपस्थित होकर यदि देवीसिह और भूतनाथ न आये तो कुमार का हाल सुनावेंगे।

सुरेन्द–(इशारे से जाने की आज्ञा दे कर) तुम दोनों ने इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह का हाल सुनाकर अपने विषय में हम लोगों का आश्चर्य और भी बढा दिया।

दोनों नकाबपोश उठ खडे हुए और अदब के साथ सलाम करके वहा से रवाना हुए।

पॉचवॉ बयान

देवीसिह और भूतनाथ की यह इच्छा न थी कि आज सवेरा होते ही हम लोग यहा से चले जाय और अपनी स्त्रियों के विषय में किसी तरह की जाच न करें, मगर लाचारी थी क्योंकि नकाबपाशों की इच्छा के विरुद्ध वे यहा रह नहीं सकत थे साथ ही इसके मालिक मकान की मेहरबानी और मीठे बर्ताव का भी उन्हें वैसा ही खयाल था जैसा कि इस मजबूरी की अवस्था में होना चाहिए। सवेरा होने पर जब कई नकाबपोश उनके सामने आये और उन्हें बाहर निकलने के लिए कहा ता देवीसिह और भूतनाथ उठ खडे हुए और कमरे के बाहर निकल उनके पीछे-पीछे रवाना हुए। जब मकान के नीचे उतरकर मैदाम में पहुँचे तो देवीसिह का इशारा पाकर भूतनाथ ने एक नकाबपोश से कहा हम तुम्हारे मालिक से एक दफा और मिलना चाहते हैं।

नकाब–इस समय उनसे मुलाकात नहीं हो सकती।

भूत–अगर घण्टे या दो घण्टे में मुलाकात हो सके तो हम लोग ठहर जाय।

नकाब–नहीं अब मुलाकात हो ही नहीं सकती उन्होंने रात ही को जो हुक्म दे रक्खा था हम लोग उसको पूरा कर रहे हैं।

भूत–हम लोगों को कोई जरूरी बात पूछनी हो तो ?

नकाब–एक चीठी लिख कर रख जाओ, उसका जवाब तुम्हारे पास पहुच जायगा।

भूत–अच्छा यह बताओ कि यहा हम लोगों ने गिरफ्तार होने के पहिले जिन दो औरतों को देखा था उनसे भी मुलाकात हो सकती है या नहीं ?

नकाब–नहीं क्या उन लोगों को आपने खानगी समझ रक्खा है ?

दूसरा नकाब–इन सब फजूल बातों से कोई मतलब नहीं और न हम लागों को इतनी फुरसत ही है। आप लोग

नाहक हम लोगों को रज करते है और हमारे मालिक की उस मेहरबानी को एक दम भूल जाते हैं जिनकी बदौलत आप लोग कैदखाने की हवा खान से बच गये ?

भूत–(कुछ क्रोध भरी आवाज में) अगर हम लोग न जाय तो तुम क्या करोगे ?

नकाब–(रज के साथ) जबर्दस्ती निकाल बाहर करेगें। आप लोग अपने तिलिस्मी खजर के भरोसे न भूलियगा, ऐसे-ऐसे तुच्छ खजरो का काम हम लोग अपने नाखूनों से लेते है। बस सीधी तरह कदम उठाइये और इस जमीन को अपनी मिलकियत न समझिये।

नकाबपोशा की बातें यद्यपि भूतनाथ और देवीसिह को बुरी मालूम हुई मगर बहुत सी बातों को सोच-विचार कर चुप हो रहे और तकरार करना उचित न जाना। सब नकाबपाशों ने मिल कर उन्हें खोह के बाहर किया और लौटते समय भूतनाथ आर दवीसिह से एक नकाबपोश ने कहा, "बस अब इसके अन्दर आने का ख्याल न कीजियेगा, कल दर्वाजा खुला रह जाने के कारण आप लोग चले आये मगर अब ऐसा मौका भी न मिलेगा।

नकाबपोशों के चले जाने बाद भूतनाथ और देवीसिह वहा से रवाना हुए और कुछ दूर जाकर जगल में एक घने पेड की छाया देखकर बैठ के यों बातचीत करने लगे –

भूत–कहिये अब क्या इरादा है ?

देवी–बात तो यह है कि हम लोग नकाबपोशों के घर जाकर बेइज्जत हो गये। चाहे ये दोनों नकाबपोश कुछ भी कहें मगर मुझे निश्चय है कि दर्बार में आने वाले दोनों नकाबपोश वही हैं जिनके हम महमान हुए थे। मुझे ता शर्म आवगी जब दर्बार में मै उन्हें अपने सामन देखूगा। इसके अतिरिक्त यदि यहा से जाकर अपनी स्त्री को घर में न देखूगा तो मेरे आश्चर्य, रज, और क्रोध का कोई हद न रहेगा।

भूत–यद्यपि मैं एक तौर पर बेहया हो गया हू परन्तु आज की बेइज्जती दिल को फाडे डालती है बहुत ऐयारी की मगर ऐसा जक कभी न उठाया मेरी तो यहा से हटने की इच्छा नहीं होती यही जी में आता है कि इनमें से एक न एक को अवश्य पकडना चाहिये और अपनी स्त्री क विषय में ता इतना कहना काफी है कि यदि अपने घर जाकर अपनी स्त्री को पा लिया ता मै भी अपनी स्त्री की तरफ से बेफिक्र हो जाऊगा।

देवी–करने के लिए तो हम लोग बहुत कुछ कर सकते है मगर जब मै उनके बर्ताव पर ध्यान देता हू तब लाचारी आकर पल्ला पकडती है। जब एक बार उन्होंने हम लोगों को गिरफ्तार किया तो हर तरह का सलूक कर सकते थे परन्तु किसी तरह की बुराई हम लोगों के साथ न की दूसरे वे लोग स्वय हमारे महाराज के दर्बार में हाजिर हुआ करते हैं और समय पर अपने को प्रकट कर देने का वादा भी कर चुके है ऐसी अवस्था में उनके साथ खोटा बर्ताव करते डर लगता है कहीं ऐसा न हो कि व लोग रज हो जायं और दर्बार में आना छोड दें अगर ऐसा हुआ तो बडी बदनामी होगी और कैदियों का मामला भी आज कल के ढग से अधूरा ही रह जायेगा !

भूत–आप बात तो ठीक कहते हैं, परन्तु

देवी–नहीं, अब इस समय तरह देना ही उचित है जिस तरह मैं अपनी बदनामी का खयाल करता हू उसी तरह तुमको भी तो खयाल होगा !

भूत–जरूर, यदि नकाबपोशों का कोई अकेला आदमी कब्ज में आ जाय तो शायद काम निकल जाय और किसी का इस बात की खबर भी न हो।

इस तरह की बातें हो रही थीं कि उनके कानों में घोड के टापों की आवाज आई और दोनों ने घूम कर पीछे की तरफ देखा। एक नकाबपोश सवार आता हुआ दिखाई पडा जिस पर निगाह पड़ते ही भूतनाथ ने देवीसिह से कहा "यह भी जरूर उन्हीं में से है, भला एक दफे और तो कोशिश कीजिए और जिस तरह हो सके इसे गिरफ्तार कीजिए फिर जैसा होगा देखा जायगा। बस अब इस समय सोचने विचारने का मौका नहीं है।

वह सवार बिल्कुल बेफिक्री के साथ धीरे-धीरे आ रहा था अस्तु ये दोनों भी उसके रास्ते के दोनों तरफ पेडों की आड देकर उसे गिरफ्तार करने की नीयत से खडे हो गये। जब वह नकाबपोश सवार इन दोनों की सीध पर पहुँचा और आग बढा ही चाहता था तभी भूतनाथ के हाथ की फेंकी हुई कमन्द उसके घोडे के गले में जा पडी। घोडा भडक कर उछलने कूदने लगा और तब दोनों ने लपक कर घोडे की लगाम थाम ली। उस सवार ने खञ्जर खैंच कर वार करना चाहा मगर कुछ सोच कर रुक गया और साथ ही इस के इन दोनों को भी उसने लडने के लिए तैयार देखा।

नकाब–(भूतनाथ से) तुम लोग मुझे व्यर्थ क्यों रोकते हो ? मुझस क्या चाहते हो ?

भूत–हम लोग तुम्हें किसी तरह की तकलीफ देना नहीं चाहतें, बस थोडी देर के लिए घोडे से नीचे उतरो और हमारी दो-चार बातों का जवाब देकर जहा जी में आवे चले जाओ।

नकाब–बहुत अच्छा मगर नकाब हटाने के लिए जिद्द न करना।

इतना कहकर नकाबपोश घाडे के नीचे उतर पडा और भूतनाथ ने उससे कहा "लेकिन तुम्हें अपने चेहरे से नकाब हटाना ही पडेगा और यह काम सबसे पहिले होगा। यह कहते-कहते भूतनाथ ने अपन हाथ से उसके चेहरे की नकाब उलट दी मगर उसके चेहरे पर निगाह पडते ही चौक कर बोल उठा "है, यह तो मेरी स्त्री है जो नकाबपोशों के घर में दिखाई पडी थी!

छठवां बयान

अपनी स्त्री की सूरत दखकर जितना ताज्जुब भूतनाथ को हुआ उतना ही आश्चर्य देवीसिह को भी हुआ। यह विचारकर रजगम और गुस्से से देवीसिह का सिर घूमने लगा कि इसी तरह मेरी स्त्री भी अवश्य नकाबपोशों के यहा होगी और हम लोगों को उसकी सूरत देखने मे किसी तरह का भ्रम नहीं हुआ। यदि सोचा जाय कि जिन दोनों औरतों को हम लागों ने देखा था वे वास्तव में हम लोगों की औरतें न थीं बल्कि वे औरतों की सूरत में ऐयार थे तो इसका निश्चय भी इस समय हो सकता है। वह औरत सामने मौजूद है देख लिया जाय कि कोई ऐयार है या वास्तव में भूतनाथ की स्त्री।

उस स्त्री ने भूतनाथ केमुह से यह सुनकर कि यह तो मेरी स्त्री है क्रोध भरी ऑखों से भूतनाथ की तरफ देखा और कहा एक तो तुमने जबर्दस्ती मेरी नकाब उलट दी दूसरे बिना कुछ सोचे विचारे अवारा लोगों की तरह यह कह दिया कि यह मेरी स्त्री है। क्या सभ्यता इसी को कहते है? (देवीसिह की तरफ देख के) आप ऐसे सज्जन और प्रतापी राजा वीरेन्द्रसिह के ऐयार होकर क्या इस बात को पसन्द करते है?

देवी–अगर तुम भूतनाथ की स्त्री नही हो तो मै जरूर इस बर्ताव को बुरा समझता हूँ जो भूतनाथ ने तुम्हारे साथ किया है।

औरत–(भूतनाथ से) क्यों साहब आपन मेरी ऐसी बेइज्जती क्यों की! अगर मेरा मालिक या कोई वारिस इस समय यहा हाता तो अपने दिल में क्या कहता?

भूत–(ताज्जुब से उसका मुह देखता हुआ) क्या मै भ्रम में पडा हुआ हू या मेरी ऑखें मेरे साथ दगा कर रही है?

औरत–सो तो आप ही जानें, क्योंकि दिमाग आपका है और ऑखें भी आपकी हैं, हॉ इतना मुझे अवश्य कहना पडेगा कि आप अपनी असभ्यता का परिचय देकर पुरानी बदनामी को चरितार्थ करते है। कौन सी बात आपने मुझमें ऐसी देखी जिससे इतना कहने का साहस आपको हुआ?

भूत–मालूम होता है कि या तो तू कोई ऐयार है और या फिर किसी दूसरे ने तेरी सूरत मेरी स्त्री के ढग की बना दी है जिसे शायद तूने कभी देखा नहीं।

भूतनाथ ने उस औरत की बातों का जवाब तो दिया मगर वास्तव में वह खुद भी बहुत घबरा गया था। अपनी स्त्री की ढिठाई और चपलता पर उसे तरह-तरह के शक होने लगे और वह बडी बेचैनी के साथ सोच रहा था कि अब क्या करना चाहिए कि इसी बीच में उस स्त्री ने भूतनाथ की बात का यों जवाब दिया –

स्त्री–यों आप जिस तरह चाहें सोच समझकर अपनी तबीयत खुश कर लें मगर इस बात को खूब समझ रक्खें कि मैं भी लावारिस नहीं हू और आप अगर मेरे साथ कोई बेअदबी का बर्ताव करेंगे तो उसका बदला भी अवश्य पावेंगे साथ ही इस बात को भी अवश्य समझ लें कि आपके इस कहने पर कि तू कोई ऐयार नहीं है आपके सामने अपना चेहरा धोने की बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकती।

भूत–मगर अफसोस है कि मैं बिना जाच किए तुम्हें छोड भी नहीं सकता।

स्त्री–(देवीसिह की तरफ देख के) बहादुरी तो तब थी जब आप लोग किसी मर्द के साथ इस ढिठाई का बर्ताव करते। एक कमजोर औरत को इस तरह मजबूर करके फजीहत करना ऐयारों और बहादुरों का काम नहीं है। हाय इस जगह अगर मेरा कोई होता तो दु ख न भोगना पडता। (यह कह कर वह आसू बहाने लगी)

उस औरत की बातचीत कुछ ऐसे ढग की थी कि सुनने वालों को उस पर दया आ सकती थी और यही मालूम होता था कि यह जो कुछ कह रही है उससे झूठ का लेश नहीं है यहॉ तक कि स्वय भूतनाथ को भी उसकी बातों पर सहम जाना पडा और वह ताज्जुब के साथ उस औरत का मुह देखने लगा खास करके इस ख्याल से भी कि देखें आसू बहने के सबब से उसके चेहरे का रग कुछ बदलता है या नहीं। उधर देवीसिह तो उसकी बातों से ही हैरान हो गये और उनके जी में रह-रह के यह बात पैदा होने लगी कि जरूर भूतनाथ इसके पहिचानने में धोखा खा गया और वास्तव में यह भूतनाथ की स्त्री नहीं है। अक्सर लोगों ने एक ही रग रूप के दो आदमी देखे है ताज्जुब नहीं कि यहॉ भी वैसा ही कुछ मामला आ पडा हो।

देवी–(स्त्री से) तो तू भूतनाथ की स्त्री नहीं है ?

स्त्री–जी नहीं।

देवी–आखिर इसका फैसला क्योंकर हो ?

स्त्री–आप लोग जरा तकलीफ करके मेरे घर तक चलें, वहाँ मेरे बच्चों को देखने और मेरे मालिक से बातचीत करने पर आपको मालूम हो जायगा कि मेरा कहना सच है या झूठ।

देवी–(औरत की बात पसन्द करके) तुम्हारा घर यहा से कितनी दूर है ?

स्त्री–(हाथ का इशारा करके) इसी तरफ है यहा से थोडी ही दूर पर। इन घने पेडों के पार होते ही आपको वह झोपडी दिखाई देगी जिसमें आज कल हम लोग रहते हैं।

देवी–क्या तुम झोपडी में रहती हो ? मगर तुम्हारी सूरत शक्ल किसी झोपडी में रहने योग्य नहीं है।

स्त्री–जी मेरे दो लडके बीमार हैं उनकी तन्दुरुस्ती का ख्याल करके हवा-पानी बदलने की नीयत से आज-कल हम लोग यहा आ टिके हैं। (हाथ जोडकर) आप कृपा कर शीघ्र उठिये और मेरे डेरे पर चलकर इस बखेडे को तै कीजिये, विलम्ब होने से मै मुफ्त में सताई जाऊगी।

देवी–(भूतनाथ से) क्या हर्ज है अगर इसके डेर पर चलकर शक मिटा लिया जाय ?

भूत–जो कुछ आपकी राय हो मै करने को तैयार हू, मगर यह तो मुझे अजीब ढग से अन्धा बना रही है।

देवी–अच्छा फिर उठो, अब देर करना उचित नहीं !

उस औरत की अनूठी बातचीत ने इन दोनों को इस बात पर मजबूर किया कि उसके साथ-साथ डेरे तक या जहा वह ले जाय चुपचाप चले जाय और देखें कि जो कुछ वह कहती है कहा तक सच है और आखिर ऐसा ही हुआ।

इशारा पाते ही औरत उठ खडी हुई। देवीसिह और भूतनाथ उसके पीछे-पीछे रवाना हुए। उस औरत को घोड़े पर सवार होने की आज्ञा न मिली इसलिए वह घोडे की लगाम थामे हुए धीरे-धीरे इन दोनों के साथ चली।

लगभग आध कोस के गए होंगे कि दूर से एक छोटा सा कच्चा मकान दिखाई पडा जिसे एक तौर पर झोपडी कहना उचित है। इस मकान के ऊपर खपडे की जगह केवल पत्ते से ही छाया हुआ था।

जब लोग झोपडी के दर्वाजे पर पहुचे तब उस औरत ने अपने घोडे को खूटे के साथ बाधकर थोडी सी घास उसके आगे डाल दी जो उस जगह एक पेड के नीचे पडी हुई थी और जिसे देखने से मालूम होता था कि रोज इसी जगह घोडा बधा करता है। इसके बाद उसने देवीसिह और भूतनाथ से कहा आप लोग जरा सा इसी जगह ठहर जाय मैं अन्दर जाकर आप लोगों के लिए चारपाई ले आती हू और अपने मालिक तथा लडकों को भी बुला लाती हू।'

देवीसिह और भूतनाथ ने इस बात को कबूल किया और कहा क्या हर्ज है जाओ मगर जल्दी आना क्योंकि हम लोग ज्यादे देर तक यहा ठहर नहीं सकते।

वह औरत मकान के अन्दर चली गई और वे दोनों देर तक बाहर खडे रहकर उसका इन्तजार करते रहे यहा तक की घण्टे भर से ज्यादे बीत गया और वह औरत मकान के बाहर न निकली। आखिर भूतनाथ ने पुकारना और चिल्लाना शुरू किया मगर इसका भी कोई नतीजा न निकला अर्थात् किसी ने भी उसे किसी तरह का जवाब न दिया। तब लाचार होकर वे दोनों मकान के अन्दर घुस गए मगर फिर भी किसी आदमी को यहाँ तक कि उस औरत की भी सूरत दिखाई न पडी। उस छोटी झोपडी में किसी को ढूढना या पता लगाना कौन कठिन था अस्तु बित्ता-बित्ता भर जमीन देख डाला मगर सिवाय एक सुरग के और कुछ भी दिखाई न पडा। न तो मकान में किसी तरह का असबाब ही था और न चारपाई बिछावन कपडा-लत्ता या अन्न और बरतन इत्यादि ही दिखाई पडा अस्तु लाचार होकर भूतनाथ ने कहा, बस-बस, हम लोगों को उल्लू बना कर वह इसी सुरग की राह निकल गई !

बेवकूफ बना कर इस तरह उस औरत के निकल जाने से दोनों ऐयारों को बड़ा ही अफसोस हुआ। भूतनाथ ने सुरग के अन्दर घुस कर उस औरत को ढूढने का इरादा किया। पहिले तो इस बात का ख्याल हुआ कि कहीं उस सुरग में दो-चार आदमी घुस कर बैठे न हों जो हम लोगों पर बेमौके वार करें, मगर जब अपने तिलिस्मी खजर का ध्यान आया तो यह खयाल जाता रहा और बेफिक्री के साथ हाथ में तिलिस्मी खजर लिये हुए भूतनाथ उस सुरग के अन्दर घुसा पीछे-पीछे देवीसिह ने भी उसके अन्दर पैर रक्खा।

वह सुरग लगभग पॉच सौ कदम के लम्बी होगी। उसका दूसरा सिरा घने जगल में पेडों के झुरमुट के अन्दर निकला था। देवीसिह और भूतनाथ भी उसी सुरग के अन्दर वहा तक चले गये और इन्हें विश्वास हो गया कि अब उस औरत का पता किसी तरह नहीं लग सकता।

इस समय इन दोनों के दिल की क्या कैफियत थी सो वे ही जानते होंगे, अस्तु लाचार होकर देवीसिह ने घर लौट चलने का विचार किया मगर भूतनाथ ने इस बात को स्वीकार न करके कहा 'इस तरह तकलीफ उठाने और बेइज्जत होने पर भी बिना कुछ काम किए घर लौट चलना मेरे ख्याल से उचित नहीं है।'

देवी–आखिर फिर किया ही क्या जायगा ? मुझे इतनी फुरसत नहीं है कि कई दिनों तक बेफिक्री के साथ इन लोगों का पीछा करूँ। उधर दरबार की जो कुछ कैफियत है तुम जानते ही हो ! ऐसी अवस्था में मालिक की प्रसन्नता का खयाल न करके एक साधारण काम में दूसरी तरफ उलझे रहना मेरे लिये उचित नहीं है।

भूत–आपका कहना ठीक है मगर इस समय मेरी तबीयत का क्या हाल है सो भी आप अच्छी तरह समझते होंगे।

देवी–मेरे ख्याल से तुम्हारे लिये कोई ज्यादे तरद्दुद की बात नहीं इसके अतिरिक्त घर लौट चलने पर मैं अपनी औरत का देखूगा, अगर वह मिल गई तो तुम भी अपनी स्त्री की तरफ से बेफिक्र हो जाओगे।

भूत–अगर आपकी स्त्री घर पर मिल जाय तो भी मेरे दिल का खुटका न जायगा।

देवी–अपनी स्त्री का हाल-चाल लेने के लिए तुम भी अपने आदमियों को भेज सकते हो।

भूत–यह सब कुछ ठीक है मगर क्या करूँ इस समय मेरे पेट मे अजब तरह की खिचडी पक रही है और क्रोध क्षण-क्षण में बढा ही चला आता है।

देवी–अगर ऐसा ही है तो जो कुछ तुम्हें उचित जान पडे सो करो मै अकेला ही घर की तरफ लौट जाऊगा।

भूत–अगर ऐसा ही कीजिये तो मुझ पर बडी कृपा होगी मगर जब महाराज मेरे बारे में पूछेंगे तब क्या जवाब

देवी–(बात काटकर) महाराज की तरफ से तुम बेफिक्र रहो मै जैसा मुनासिब समझूगा कह-सुन लूगा मगर इस बात का वादा कर जाओ कि कितने दिन पर तुम वापस आओगे या तुम्हारा हाल मुझे कब और क्योंकर मिलेगा ?

भूत–मैं आपसे सिर्फ तीन दिन की छुट्टी लेता हू। अगर इससे ज्यादे दिन तक अटकने की नौबत आई तो किसी न किसी तरह अपने हाल-चाल की खबर आप तक पहुँचा दूँगा।

देवी–बहुत अच्छा (मुस्कुराते हुए) अब आप जाइये और पुन लात खाने का बन्दोबस्त कीजिए मैं तो घर की तरफ रवाना होता हू, जय माया की !

भूत–जय माया की !

भूतनाथ को उसी जगह छोड कर देवीसिह रवाना हुए और सध्या होने के पहिले ही तिलिस्मी इमारत के पास आ पहुँचे।

सातवाँ बयान

डेरे पर पहुँचकर स्नान करने और पौशाक बदलने के बाद देवीसिह सबसे पहिले राजा बीरेन्द्रसिह के पास गये और उसी जगह तेजसिह से भी मुलाकात की। पूछने पर देवीसिह ने अपना और भूतनाथ का कुल हाल बयान किया जो कि हम ऊपर के बयानों में लिख आये है। उस हाल को सुनकर बीरेन्द्रसिह और तेजसिह को कई दफे हसने और ताज्जुब करने का मौका मिला और अन्त में बीरेन्द्रसिह ने कहा अच्छा किया जो तुम भूतनाथ को छोड कर यहा चले आये। तुम्हारे न रहने के कारण नकाबपोशों के आगे हम लोगों को शर्मिन्दा होना पडा।'

देवी–(ताज्जुब से) क्या वे लोग यहा आये थे ?

बीरेन्द्र–हा, वे दोनों अपने मामूली वक्त पर यहा आये थे और तुम दोनों के पीछा करने पर ताज्जुब और अफसोस करते थे, साथ ही इसके उन्होंने यह भी कहा था कि वे दोनों ऐयार हमारे मकान तक नहीं पहुँचे।

देवी–वे लोग जो चाहें सो कहें मगर मेरा ख्याल यही है कि हम दोनों उन्हीं के मकान में गए थे।

बीरेन्द्र–खैर जो हो मगर उन नकाबपोशों का यह कहना बहुत ठीक है कि जब हम लोग समय पर अपना हाल आप ही कहने के लिए तैयार हैं तो आपको हमारा भेद जानने के लिए उद्योग न करना चाहिए !

देवी–बेशक उनका कहना ठीक है मगर क्या किया जाय, ऐयारों की तबीयत ही ऐसी चचल होती है कि किसी भेद को जानने के लिए वे देर तक या कई दिनों तक सब्र नहीं कर सकते। यद्यपि भूतनाथ इस बात को खूब जानता है कि वे दोनों नकाबपोश उसके पक्षपाती हैं और पीछा करके उनका दिल दुखाने का नतीजा शायद अच्छा न निकले मगर फिर भी उसकी तबीयत नहीं मानती, तिस पर कल की बेइज्जती और अपनी स्त्री को वहा न देखता तो नि सन्देह मेरे साथ वापस चला आता और उन लोगों का पीछा करने का ख्याल अपने दिल से निकाल देता।

तेज–खैर कोई चिन्ता नहीं, वे नकाबपोश खुशदिल नेक और हमारे प्रेमी मालूम होते हैं, इसलिए आशा है कि भूतनाथ को अथवा तुम्हारे किसी आदमी को तकलीफ पहुँचाने का ख्याल न करेंगे।

बीरेन्द्र–हमारा भी यही ख्याल है। (देवीसिह से मुस्कुराकर) तुम्हारा दिल भी तो अपनी बीबी साहेबा को देखने के लिए बेताब हो रहा होगा ?

देवी–बेशक मेरे दिल में धुकनी सी लगी हुई है और मै चाहता हू कि किसी तरह आपकी बात पूरी हो तो महल में जाऊ।

बीरेन्द्र–मगर हमसे तो तुमने पूछा ही नहीं कि तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारी बीबी महल में थीं या नहीं।

देवी–(हसकर,) जी आपसे पूछने की मुझे कोई जरुरत नहीं और न मुझे विश्वास ही है कि आप इस बारे में मुझे से सच बोलेंगे।

बीरेन्द्र–(हस कर) खैर मेरी बातों पर विश्वास न करो और महल में जाकर अपनी रानी को देखो मै भी उसी जगह पहुचकर तुम्हें इस बेयातबारी का मजा चखाता हू !

इतना कहकर राजा बीरेन्द्रसिह उठ खडे हुए और देवीसिह भी हसते हुए वहा से चले गये।

महल के अन्दर अपने कमरे में एक कुर्सी पर बैठी चम्पा रोहतासगढ पहाडी और किले की तस्वीर दीवार के ऊपर बना रही है और उसकी दो लौंडिया हाथ में मोमी शमादान लिए हुए रोशनी दिखाकर इस काम में उसकी मदद कर रही हैं। चम्पा का मुह दीवार की तरफ और पीठ सदर दर्वाजे की तरफ है। दोनों लौंडिया भी उसी की तरह दीवार की तरफ देख रही है इसलिए चम्पा तथा उसकी लौंडियों को इस बात की कुछ भी खबर नहीं कि देवीसिह धीरे-धीरे पैर दबाते हुए इस कमरे में आकर दूर से और कुछ देर से उनकी कार्रवाई देखते हुए ताज्जुब कर रहे है। चम्पा तस्वीर बनाने के काम में बहुत ही निपुण और शीघ्र काम करने वाली थी तथा उसे तस्वीरों के बनाने का शौक भी हद्द से ज्यादे था। देवीसिह ने उसके हाथ की बनाई हुई सैकडों तस्वीरें देखी थीं मगर आज की तरह ताज्जुब करने का मौका उन्हें आज के पहिले नहीं मिला था। ताज्जुब इस लिये कि इस समय जिस ढग की तस्वीरें चम्पा बना रही थी ठीक उसी ढग की तस्वीरें देवीसिह ने भूतनाथ के साथ जाकर नकाबपोशोंके मकान में दीवार के ऊपर बनी हुई देखी थीं। कह सकते हैकि एक स्थान या इमारत की तस्वीर अगर कोई कारीगर बनावे तो सम्भव है कि एक ढंग की तैयार हो जाय मगर यहा यही बात न थी। नकाबपोशों के मकान में रोहतासगढ पहाडी की जो तस्वीर देवीसिह ने देखी थी उसमें दो नकाबपोश सवार पहाडी के ऊपर चढते हुए दिखलाये गयेथे जिसमें से एक का घोडा मुश्की और दूसरे का सब्ज था। इस समय जो तस्वीर चम्पा बना रही थी उसमें भी उसी ठिकाने उसी ढग के दो सवार इसने बनाये और उसी तरह इन दोनों सवारों में से भी एक का घोडा मुश्की और दूसरे का सब्ज था। देवीसिह का ख्याल है कि यह बात इत्तिफाक से नहीं हो सकती।

ताज्जुब के साथ उस तस्वीर को देखते हुए देवीसिह सोचने लगे कि क्या यह तस्वीर इसने यों ही अन्दाज से तैयार की है ? नहीं-नहीं ऐसा नहीं हो सकता। अगर यह तस्वीर इसने अन्दाज से बनाई होती तो दोनों सवार और घोडे ठीक उसी रग के न बनते जैसा कि मै उन नकाबपोशों के यहा देख आता हू। तो क्या यह वास्तव में उन नकाबपोशों के यहा गई थी ? बेशक गई होगी, क्योंकि उस तस्वीर के देखे बिना उसके जोड की तस्वीर यह बना नहीं सकती, मगर इस तस्वीर के बनाने से साफ जाहिर होता है कि यह अपनी उन नकाबपोशों के यहा जाने वाली बात गुप्त रखना भी नहीं चाहती मगर ताज्जुब है कि जब इसका ऐसा ख्याल है तो वहा (नकाबपोशों के घर पर) मुझे देख कर छिप क्यों गई थी ? खैर अबबात-चीतकरने पर जो कुछ भेद है सब मालूम हो जायगा।

यह सोचकर देवीसिह दो कदम आगे बढे ही थे कि पैरों की आहट पाकर चम्पा चौकी और घूमकर देखने लगी। देवीसिह पर निगाह पडते ही कूची और रग की प्याली जमीन पर रखकर उठ खडी हुई और हाथ जोडकर प्रणाम करने बाद बोली आप सफर से लौट कर कब आये ?

देवी–(मुस्कुराते हुए) चार-पाच घण्टे हुए होंगे, मगर यहा भी मैं आधी घडी से तमाशा देख रहा हू।

चम्पा–(मुस्कुराती हुई) क्या खूब ! इस तरह चोरी से ताक-झाक करने की क्या जरूरत थी ?

देवी–इस तस्वीर और इसकी बनावट को देखकर मैं ताज्जुब कर रहा था और तुम्हारे काम में हर्ज डालने का इरादा नहीं होता था।

चम्पा–(हसकर) बहुत ठीक, खैर आइये बैठिये।

देवी–पहिले मैं तुम्हारी इस कुर्सी पर बैठ के इस तस्वीर को गौर से देखूँगा।

इतना कह कर देवीसिह उस कुर्सी पर बैठ गए जिस पर थोडी देर पहिले चम्पा बैठी हुई तस्वीर बना रही थी और बडे

गौर से उस तस्वीर को देखने लगे, चम्पा भी कुरसी की पिछवाई पकड कर खडी हो गई और दखने लगी। दखते-दखते देवीसिह ने झट हलके जर्द रग की प्याली ओर कूची उठा ली और उस तस्वीर में रोहतासगढ किले के ऊपर एक बुर्ज और उसके साथ सटे हुए पताके का साधारण निशान बनाया अर्थात् उसकी जमीन बाधी जिसे देखते ही चम्पा चौंकी और बोली, 'हा-हाठीक है, यह बनाना तो मै भूल ही गई थी। बस अब आप रहने दीजिये, इन्मे भी मै ही अपने हाथ से बनाऊगी, तब आप दखकर कहियेगा कि तस्वीर कैसी बनी और इसमें कौन सी बात छूट गई थी।'

चम्पा की इस बार्त को सुन देवीसिह चौक पड़े। अब उन्हें पूरा-पूरा विश्वास हो गया कि चम्पा उन नकाबपोशों के मकान में जरूर गई थी और मैने नि सन्देह इसी को देखा था अस्तु देवीसिह ने घूम कर चम्पा की तरफ देखा और कहा तुम भाग क्यों गई थी ?'

चम्पा–(ताज्जुब की सूरत बना के) कहाँ ? कब ?

देवी–उन्ही नकाबपाशों के यहा !

चम्पा–मुझे बिल्कुल याद नहीं पड़ता कि आप कब की बात कर रहे हैं।

देवी–अब लगीं न नखरा करके परेशान करने ?

चम्पा–मै आपके चरणों की कसम खाकर कहती हू कि मुझे कुछ याद नहीं कि आप कब की बात कर रहे है।

अब तो देवीसिह के ताज्जुब का काई हद्द न रहा क्योंकि वे खूब जानते थे कि चम्पा जितनी खूबसूरत और ऐयारी के फन में तेज है उतनी ही नेक और पतिव्रता भी है। वह उनके चरणों की कसम खाकर झूठ कदापि नहीं बोल सकती। अस्तु कुछ देर तक ताज्जुब के साथ गौर करने के बाद पुन देवीसिह ने कहा, 'आखिर कल या परसों तुम कहा गई थी ?

चम्पा–मै तो कहीं नहीं गई ! आप महारानी चन्द्रकान्ता से पूछ लें क्योंकि मेरा उनका तो रात-दिन का सग है, अगर कहीं जाती तो किसी काम के ही सिर जाती और ऐसी अवस्था में आपसे छिपाने की जरूरत ही क्या थी ?

देवी–फिर यह तस्वीर तुमने कहा देखी ?

चम्पा–यह तस्वीर ? मै

इतना कह चम्पा कपडे का एक लपेटा हुआ पुलिन्दा उठा लाई और देवीसिह के हाथ में दिया। देवीसिह मे उसे खोल कर देखा और चौककर चम्पा से पूछा 'यह नक्शा तुम्हे कहा से मिला?'

चम्पा–यह नक्शा मुझे कहा से मिला सो मै पीछे कहूगी पहिले आप यह बतावें कि इस नक्शे को देखकर आप चौके क्यों और यह नक्शा वास्तव मै कहा का है ? क्योंकि मै इसके बारे में कुछ भी नहीं जानती।

देवी–यह नक्शा उन्हीं नकावपोशों के मकान का है जिसके बारे में मै अभी तुमसे पूछ रहा था ?

चम्पा–कौन नकाबपोश ? वे ही जो दरबार में आया करते है ?

देवी–हा वे ही और उन्ही के यहा मैने तुमको देखा था।

चम्पा–(ताज्जुब के साथ) यों मै कुछ भी नहीं समझ सकती, पहिले आप अपने सफर का हाल सुनावें और यह बतावें कि आप कहा गये थे और क्या देखा ?

इसके जवाब में देवीसिह ने अपने और भूतनाथ के सफर का हाल बयान किया और इसके बाद उस कपडे वाले नक्शे की तरफ बता के कहा 'यह उसी स्थान का नक्शा है। इस बगले के अन्दर दीवारों पर तरह-तरह की तस्वीरें बुनी हुई है जिन्हें कारीगर दिखा नही सकता, इसलिए नमूने के तौर पर बाहर की तरफ यही रोहतासगढ की एक तस्वीर बना कर उसने नीचे लिख दिया है कि इस बगले में इसी तरह की बहुत सी तस्वीरें बनी हुई है। वास्तव में यह नक्शा बहुत ही अच्छा साफ और **बेशकीमत** बना हुआ है।'

चम्पा–अब मै समझी कि असल मामला क्या है, मै उस मकान में नहीं गई थी।

देवी–तब यह तस्वीर तुमने कहा से पाई ?

चम्पा–यह तस्वीर मुझे लडके (तारासिह) ने दी थी।

देवी–तुमने पूछा तो होगा कि यह तस्वीर उसे कहा से मिली ?

चम्पा–नहीं, उसने बहुत तारीफ करके यह तस्वीर मुझे दी और मैंने ले ली थी।

देवी–कितने दिन हुए ?

चम्पा–आज पाच-छ दिन हुए होंगे।

इसके बाद देवीसिह बहुत देर तक चम्पा के पास बैठे रहे और जब वहा से जाने लगे तब वह कपडे वाली तस्वीर अपने साथ बाहर लेते गये।

आठवाँ बयान

महल के बाहर आने पर भी देवीसिह के दिल को किसी तरह का चैन न पडा। यद्यपि रात बहुत बीत चुकी थी तथापि राजा बीरेन्द्रसिह से मिलकर उस तस्वीर के विषय में बातचीत करने की नीयत से वह राजा साहब के कमरे में चले गए मगर वहा जाने पर मालूम हुआ कि बीरेन्द्रसिह महल में गए है लाचार होकर लौटा ही चाहते थे कि राजा बीरेन्द्रसिह भी आ पहुँचे और अपने पलग के पास देवीसिह को देखकर बोले रात को भी तुम्हें चैन नहीं पडती! (मुस्कुराकर) मगर ताज्जुब यह है कि चम्पा ने तुम्हें इतने जल्दी बाहर आने की छुट्टी क्योंकर दी!

देवी—इस हिसाब से तो मुझे भी आप पर ताज्जुब करना चाहिए मगर नहीं असल तो यह है कि मैं एक ताज्जुब की बात आपको सुनाने के लिए यहा चला आया हू।

बीरेन्द्रसिह—वह कौन सी बात है, तुम्हारे हाथ में यह कपडे का पुलिन्दा कैसा है?

देवी—इसी कम्बख्त ने तो मुझे इस आनन्द के समय में आपसे मिलने पर मजबूर किया।

बीरेन्द्र—सो क्या? (चारपाई पर बैठकर) बैठ के बातें करो।

देवीसिह ने महल में चम्पा के पास जाकर जो कुछ देखा और सुना था सब बयान किया इसके बाद वह कपडे वाली तस्वीर खोलकर दिखाई तथा उस नक्शे को भी अच्छी तरह समझाने के बाद कहा 'न मालूम यह नक्शा तारा को क्योंकर और कहा से मिला और उसने इसे अपनी माँ को क्यों दे दिया!'

बीरेन्द्र—तारासिह से तुमने क्यों नहीं पूछा।

देवी—अभी तो मैं सीधा आप ही के पास चला आया हू अब जो कुछ मुनासिब हो किया जाय। कहिए तो लड़के को इसी जगह बुलाऊँ?

बीरेन्द्र—क्या हर्ज है किसी को कहो बुला लावे।

देवीसिह कमरे के बाहर निकले, और पहरे के एक सिपाही को तारासिह को बुलाने की आज्ञा देकर पुन कमरे में चले आये और राजा साहब से बात-चीत करने लगे। थोडी देर में पहरे वाले ने वापस आकर अर्ज किया कि तारसिह से मुलाकात नहीं हुई और इसका भी पता न लगा कि वे कब और कहा गये हैं उनका खिदमतगार कहता है कि सध्या होने के पहिले ही से उनका पता नहीं है।

बेशक यह बात ताज्जुब की थी। रात के समय बिना आज्ञा लिए तारासिह का गैरहाजिर रहना सभों को ताज्जुब में डाल सकता था, मगर राजा बीरेन्द्रसिह ने यह सोचा कि आखिर तारासिह ऐयार है शायद किसी काम की जरूरत समझ कर कहीं चला गया हो अस्तु राजा साहब ने भैरोसिह को तलब किया और थोड़ी देर में भैरोसिह ने हाजिर होकर सलाम किया।

बीरेन्द्र—(भैरो से) तुम जानते हो कि तारासिह क्यों और कहा गया है?

भैरो—तारा तो आज सध्या होने के पहिल ही से गायब है, पहर भर दिन बाकी था जब वह मुझसे मिला था उसे तरद्दुद में देखकर मैंने पूछा भी था कि आज तुम तरद्दुद में क्यों मालूम पडते हो मगर इसका उसने कोई जवाब नहीं दिया।

बीरेन्द्र—ताज्जुब की बात है! हमें उम्मीद थी कि तुम्हें उसका हाल जरूर मालूम होगा।

भैरो—क्या मै, सुन सकता हूँ कि इस समय उसे याद करने की जरूरत क्यों पडी?

बीरेन्द्र—जरूर सुन सकते हो।

इतना कहकर बीरेन्द्रसिह ने देवीसिह की तरफ देखा और देवीसिह ने कुछ कम बेश अपना और भूतनाथ का किस्सा बयान करने के बाद उस तस्वीर का हाल कहा और तस्वीर भी दिखाई। अन्त मैं भैरोसिह ने कहा मुझे कुछ भी मालूम नहीं कि तारासिह को यह तस्वीर कब और कहा से मिली मगर अब इसका हाल जानने की कोशिश जरूर करूँगा।

हुक्म पाकर भैरोसिह बिदा हुआ और थोड़ी देर तक बात-चीत करने बाद देवीसिह भी चले गये।

दूसरे दिन मामूली कामों से छुट्टी पाकर राजा बीरेन्द्रसिह जब दर्बार खास में बैठे तो पुन तारासिह के विषय में बात-चीत शुरू हुई और इसी बीच में नकाबपोशों का भी जिक्र छिडा। उस समय वहा राजा बीरेन्द्रसिह गोपालसिह तेजसिह तथा देवीसिह वगैरह अपने ऐयारों के अतिरिक्त कोई गैर आदमी न था। जितने थे सभी ताज्जुब के साथ

तारासिंह के विषय में तरह-तरहकी बातें कर रहे थे और मौके पर भूतनाथ तथा नकाबपोशों का भी जिक्र आता था। दोनों नकाबपोश वहा आ के इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह का किस्सा सुना गये थे उसे आज तीन दिन का जमाना गुजर गया। इस बीच में न तो वे दोनों नकाबपोश आये और न उनके विषय में कोई बात ही सुनी गई। साथ ही इसके अभी तक भूतनाथ का कोई हाल-चाल मालूम न हुआ। खुलासा यह कि इस समय के दर्बार में इन्हीं सब बातों की चर्चा थी और तरह-तरहके ख्याल दौडाये जा रहे थे। इसी समय चोबदार ने दोनों नकाबपोशों के आने की इत्तिला की। हुक्म पाकर वे दोनो हाजिर किए गये और सलाम करके आज्ञानुसार उचित स्थान पर बैठ गए।

एक नकाब--(हाथ जोड़ के राजा वीरेन्द्रसिह से) महाराज ताज्जुब करते होंगे कि ताबेदारों ने हाजिर होने में दो-तीन दिन का नागा किया।

बीरेन्द--बेशक ऐसा ही है क्योंकि हम लोग इन्द्रजीत और आनन्द का तिलिस्मी किस्सा सुनने के लिए बेचैन हो रहे थे।

नकाब--ठीक है हम लोग हाजिर न हुए इसके कई सबब है। एक तो इसका पता हम लोगों को लग चुका था कि भूतनाथ जो हम लोगों की फिक्र में गया था अभी तक लौट कर नहीं आया और इस सबब से कैदियों के मुकदमें में दिलचस्पी नही आ सकती थी। दूसरे कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह के किस्से में कई बातें ऐसी थीं जिनका हाल दरियाफ्त करना बहुत जरूरी था और इस काम के लिए हम लोग तिलिस्म के अन्दर गये हुए थे।

बीरेन्द--क्या आप लोग जब चाहे तब उस तिलिस्म के अन्दर जा सकते है जिसे वे दोनों लड़के फतह कर रहे है ?

नकाब--जी सब जगह नहीं मगर खास-खास ठिकाने कभी-कभी जा सकते हैं जहा तक कि हमारे गुरु महाराज जाया करते थे, मगर उनकी खबर एक-एक घडी की हम लोगों को मिला करती है।

बीरेन्द--आप लोगों के गुरु कौन और कहा है ?

नकाब--अब तो वे परमधाम को चले गए।

बीरेन्द--खैर तो जब आप लोग तिलिस्म में गए थे तो क्या दोनों लडकों से मुलाकात हुई थी !

नकाब--मुलाकात तो नहीं हुई मगर जिन बातों का शक था वह मिट गया और पुन उनका किस्सा कहने के लिए तैयार है। (देवीसिह की तरफ देखकर) आपने भूतनाथ को अकेला ही छोड़ दिया !

देवी--हा, क्योंकि मुझे आप लोगों का भेद जानने का उतना शौक न था जितना भूतनाथ को है। मैं तो उस दिन केवल इतना ही जानने के लिए गया था कि देखें भूतनाथ कहा जाता है और क्या करता है मगर मेरी तबीयत इतने ही में भर गई।

नकाब--मगर भूतनाथ की तबीयत अभी नहीं भरी।

तेज--वह भी विचित्र ढग का ऐयार है ? साफ-साफ देखता है कि आप लोग उसके पक्षपाती है मगर फिर भी आप लोगों का असल हाल जानने के लिए बेताब हो रहा है। यह उसकी भूल है तथापि आशा है कि आप लोगों की तरफ से उसे किसी तरह की तकलीफ न पहुचेगी।

नकाब--नहीं-नहीं कदापि नहीं। (बीरेन्द्रसिह की तरफ देख के और हाथ जोड़ के) हम लोगों को अपना लड़का समझिए और विश्वास रखिए कि आपके किसी ऐयार को हम लोगों की तरफ से किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुच सकती चाहे वे लोग हमें किसी तरह का रज पहुचावें।

बीरेन्द--आशा तो ऐसी ही है, और हमारे ऐयार भी बड़े ही नालायक होंगे अगर आप लोगों को किसी तरह की तकलीफ पहुचाने का इरादा करेंगे।

देवी--मै कल से एक और तरद्दुद में पड गया हू।

नकाब--वह क्या ?

देवी--कल से मेरे लड़के तारासिह का पता नहीं है, न मालूम वह क्यों और कहा चला गया !

नकाब--तारासिह के लिए आपको तरद्दुद न करना चाहिये, आशा है कि घण्टे भर के अन्दर ही यहा आ पहुचेगा।

देवी--आपके इस कहने से तो मालूम होता है कि आपको उसका हाल मालूम है।

नकाब--बेशक मालूम है मगर मै अपनी जुबान से कुछ भी न कहूगा, आंप स्वय उससे जो कुछ पूछना होगा पूछ लेंगे। (बीरेन्दसिह से) आज जिस समय हम लोग घर से यहा की तरफ रवाना हो रहे थे उसी समय एक चीठी कुअर इन्द्रजीतसिह की मुझे मिली जिसमें उन्होंने लिखा था कि तुम महाराज के पास जाकर मेरी तरफ से अर्ज करो कि महाराज भैरोसिह और तारासिह को मेरे पास भेज दें क्योंकि उनके बिना हम लोगों को कई बातों की तकलीफ हो रही है,

साथ ही इसके एक चीठी महाराज के नाम की भी उन्होंने भेजी है।

इतना कह के नकाबपोश ने अपनी जेब में से एक बन्द लिफाफा निकालकर वीरेन्द्रसिह के हाथ में दिया।

बीरेन्द–(ताज्जुब के साथ लिफाफा लेकर) सीधे मेरे पास क्यों नहीं भेजा ?

नकाब–वे न तो खुद तिलिस्म के बाहर आ सकते है और न किसी को भेज सकते है हम लोगों का आदमी हरदम तिलिस्म के अन्दर मौजूद रहता है और हाल-चाल की खबर लिया करता है इसलिए उसके मारफत पत्र भेज सकते है।

इतना सुनकर वीरेन्द्रसिह चुप रहे और लिफाफा खोल कर पढने लगे। प्रणाम इत्यादि के बाद यह लिखा था –

"हम दोनों भाई कुशल पूर्वक तिलिस्म की कार्रवाई कर रहे है परन्तु कोई एयार या मददगार न रहने के कारण कभी कभी तकलीफ हो जाती है इसलिए आशा है कि भैरोसिह और तारासिह को शीघ्र भेज देंगे। यहा तिलिस्म में ईश्वर ने हमें दो मददगार बहुत अच्छे पहुचा दिये है जिनका नाम रामसिह और लक्ष्मणसिह है। ये दोनों मायारानी और तिलिस्मी दारोगा इत्यादि के भेदों से खूब वाकिफ हैं। यदि इन लोगों के सामने दुष्टों के मुकदमे का फैसला करेंगे तो आशा है कि देखने-सुननेवालों को एक अपूर्व आनन्द मिलेगा। इन्हीं दोनों की जुबानी हम दोनों भाइयों का हालपूरा-पूरा मिला करेगा और ये ही दोनों भैरोसिह को भी हम लोगों के पास पहुचा देंगे। भाई गोपालसिह से कह दीजिएगा कि उनके दोस्त भरतसिह जी भी इस तिलिस्म में मुझे मिले है। उन्हें कम्बख्त दारोगा ने कैद किया था ईश्वर की कृपा से उनकी जान बच गई। भाई गोपालसिह जी मुझसे विदा होते समय तालाब वाले नहर के विषय में गुप्त रीति से जो कुछ कह गये थे वह ठीक निकला, चाद वाला पताका भी हम लोगों को मिल गया।

आपके आज्ञाकारी पुत्र –इन्द्रजीत, आनन्द।'

इस चीठी को पढ़कर वीरेन्द्रसिह बहुत प्रसन्न हुए मगर साथ ही इसके उन्हें ताज्जुब भी हद्द से ज्यादे हुआ। इन्द्रजीतसिह के हाथ के अक्षर पहिचानने में किसी तरह की भूल नहीं हो सकती थी, तथापि शक मिटाने के लिए बीरेन्द्रसिह ने वह चीठी राजा गोपालसिह के हाथ में दे दी क्योंकि उनके विषय में भी दो एक गुप्त बातों का ऐसा इशारा था जिसके पढने से इस बात का रत्ती भर शक नही हो सकता था कि यह चीठी कुमार के हाथ की लिखी हुई नहीं है या ये नकाबपोश जाल करते हैं।

चीठी पढने के साथ ही राजा गोपालसिह हद्द से ज्यादे खुश होकर चौंक पड़े और राजा बीरेन्द्रसिह की तरफ देखकर बोले, नि सन्देह यह पत्र इन्द्रजीतसिह के हाथ का लिखा हुआ है। विदा होते समय जो गुप्त बातें मैं उनसे कह आया था इस चीठी में उनका जिक्र एक अपूर्व आनन्द दे रहा है, तिस पर अपने मित्र भरतसिह के पा जाने का हाल पढ कर मुझे जो प्रसन्नता हुई उसे मै शब्दों द्वारा प्रकट नहीं कर सकता। (नकाबपोशों की तरफ देख के) अब मालूम हुआ कि आप लोगों के नाम रामसिह और लक्ष्मणसिह है, जरूर आप लोग बहुत सी बातों को छिपा रहे है परन्तु जिस समय भेदों को खोलेंगे उस समय नि सन्देह एक अद्भुत आनन्द मिलेगा।"

इतना कह कर राजा गोपालसिह ने वह चीठी तेजसिह के हाथ में दे दी और इन्होंने पढ़ कर देवीसिह को और देवीसिह ने पढकर और ऐयारों को भी दिखाई जिसके सबब से इस समय सभों ही के चेहरे पर प्रसन्नता दिखाई देने लगी। इस समय तारासिह भी वहा आ पहुचा।

नकाबपोश ने जो कुछ कहा था वही हुआ अर्थात् थोड़ी देर में तारासिह ने भी वहा पहुँचकर सभों के दिल से खटका दूर किया, मगर हमारे राजा साहब और ऐयारों को इस बात का ताज्जुब जरूर था कि नकाबपोश को तारासिह का हाल क्योंकर मालूम हुआ और उसने किस जानकारी पर कहा कि वह घण्टे भर के अन्दर आ जायगा। खैर इस समय तारासिह के आ जाने से सभों को प्रसन्नता ही हुई और देवीसिह को भी उस तस्वीर के विषय में कुछ खुलासा हाल पूछने का मौका मिला मगर नकाबपोशों के सामने उस विषय में बात-चीत करना उचित न जाना।

नकाबपोश–(वीरेन्द्रसिह से) देखिए तारासिह आ गये, जो मैंने कहा था वही हुआ। अब इन दोनों के विषय में क्या हुक्म होता है ? क्या आज ये दोनों ऐयार कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह के पास जाने के लिए तैयार हो सकते हैं।

तेज–हा तैयार हो सकते है और आप के साथ जा सकते है मगर दो जरूरी कामों की तरफ ध्यान देने से यही उचित जान पडता है कि आज नहीं बल्कि कल इन दोनों भाईयों को आपके साथ विदा किया जाय।

नकाब–जैसी मर्जी अब आज्ञा हो तो हम लोग विदा हों।

तेज–क्या आज इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह का किस्सा आप न सुनावेंगे ?

देर तो हो गई मगर फिर भी कुछ थोडा सा हाल सुनाने के लिए हम लोग तैयार है आप दरियाफ्त करायें यदि वडे महाराज निश्चिन्त हों तो

इशारा पाते ही भैरोसिह वडे महाराज अर्थात् महाराज सुरेन्द्रसिह के पास चले गये और थोडी देर में लौट आकर वोल महाराज आप लागा का इन्तजार कर रहे है।

इतना सुनते ही बीरेन्द्रसिह क साथ ही साथ सव कोई उठ खडे हुए और बात की बात में यह दर्बार-खास महाराज सुरेन्द्रसिह का दर्वार-खास हो गया।

नौवां बयान

महाराज सुरेन्द्रसिह और वीरन्द्रसिह तथा उनके ऐयारों के सामने एक नकाबपोश ने दोनों कुमारों का हाल इस तरह बयान करना शुरु किया –

नकाव–कुअर इन्द्रजीतसिह ने भी उन पाचो कैदियों के साथ रात को उसी बाग में गुजारा किया। सवेरा होने पर मामूली कामों से छुट्टी पाकर दोनों भाई उसी बीच वाले बुर्ज के पास गये और चबूतरे वाले पत्थरों को गौर से देखने लगे। उन पत्थरों में कहीं अक और अक्षर भी खुदे थे उन्हीं अकों को दखत-देखत इन्द्रजीतसिह ने एक चौखूटे पत्थर पर हाथ रक्खा और आनन्दसिह की तरफ दखकर कहा 'बस इसी पत्थर को उखाडना चाहिए। इसके जवाब में आनन्दसिह ने 'जी हा कहा और तिलिस्मी खञ्जर की नोक से टुकडे को उखाड डाला।

पत्थर के नीचे एक छोटा सा चोखटा कुण्ड बना हुआ था आर उस कुण्ड के वीचोवीच में लाहे की एक गोल कडी लगी थी जिस कुअर इन्दजीतसिह न खींचना शुरु किया। उस कडी के साथ लाहे की पचीस तीस हाथ लम्बी जजीर लगी हुई थी जो वरावर खिंचती हुइ चली आई और जव वह रुक गइ अर्थात् अपनी हद तक खिंच कर बाहर निकल आई तव उस चवूतरे के चारो तरफ का निचला पत्थर आप से आप उखडकर जमीन के साथ लग गया और उसके अन्दर जाने के लिए दो रास्त दिखाई दन लग। इनमें से एक रास्ता नीचे तहखाने में उतर जाने के लिए था दूसरा बुर्ज के ऊपर चढने के लिए।

दानों कुमार पहिले बुर्ज के ऊपर चढ गय और वहा से चारों तरफ की वहार देखन लगे। खास बाग के कुछ हिस्स और उनके कई तरफ की मजबूत दीवारें तथा कुछ इमारत और पड पत्त इत्यादि दिखाई दे रहे थे। उन सभों को गौर से दखने वाद कुमार नीचे उतर आय और उन पाचों कैदियों का यह कहकर कि 'तुम लोग इसी वाग में रहा खवरदार नीचे न उतरना दानों भाई तहखाने में उतर गये।

नीचे उतरने के लिए चक्करदार ग्यारह सीढिया थीं जिन्हें तै करने वाद वे दानों एक लम्बें चौडे कमरे में पहुँचे। वहा विल्कुल अन्धकार था' मगर तिलिस्मी खजर की रोशनी करन पर वहा की सव चीजें साफ दिखाई देन लगीं। वह कमरा लम्वाइ में बीस हाथ ओर चौडाई में पन्द्रह हाथ से ज्यादे न हागा। उसक वीचोवीच में लोह का एक चवूतरा था और उसके ऊपर लोहे ही का एक शेर वैठा हुआ था जिसकी चमकदार आखें उसके भयानक चेहरे के साथ ही साथ देखने वालों के दिल पर खौफ पैदा कर सकती थीं। उसके सामने जमीन पर लोह का एक हथौडा पडा हुआ था। बस इसके अतिरिक्त उस कमर में और कुछ भी न था। कुअर इन्द्रजीतसिह ने उस शेर के सर को अच्छी तरह टटोलना शुरू किया।

उस शेर के दाहिन कान की तरफ कवल एक उगली जाने लायक छोटा सा एक गडहा था। कुअर इन्द्रजीतसिह ने अपनी जेव में से एक चमकदार चीज निकाल कर उस गडहे में फसाने के वाद शर के सामने वाला हथौडा जमीन स उठा कर उसी स वह चमकदार चीज (कील) एक ही चोट में ठोंक दी ओर इसके बाद तुरन्त ही दोना भाई उस तहखान के बाहर निकल आय।

वह चमकदार चीज जो शेर के सिर में ठोंकी गई थी क्या थी इसे आप लोग जानते होंग। यह वही चमकदार चीज थी जो कुँअर इन्द्रजीतसिह को बाग क उस तहखाने में एक पुतल के पेट में से मिली थी जिसमें वे कुँअर आनन्दसिह को खोजते हुए गये थे * ।

जव दोनों कुमार तहखाने के वाहर निकल आय उसके थोडी ही देर वाद जमीन के अन्दर से धमधमाहट और

---

*देखियेचन्द्रकान्ता सन्तति दसवा भाग पहिला बयान।

घडघडाहट ही आवाज आने लगी जिससे वे पाँचों कैदी बहुत ही ताज्जुब और घबडाहट में आ गये। मगर कुमार ने उन्हें समझा कर शान्त किया और कुछ खाने-पीनेकी फिक्र में लगे। पहर भर बाद वह आवाज बन्द हुई और तब कुमार भी हर तरह से निश्चिन्तहो गये। दोपहर दिन ढलने के बाद पाँचों कैदियों को साथ लिए हुए दोनों कुमार पुन तहखाने के अन्दर उतरे। जब उस कमरे में पहुचे तो वहा शेर और चबूतरे का नाम निशान भी न पाया, हा उसके बदले में उस जगह एक गडहा देखा जिसमें उतरने के लिए छ सात सीढिया बनी हुई थी। कैदियों को भी साथ लिए और तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी किए हुए दोनों कुमार इस सुरग में घुसे और लगभग पचास कदम जाने बाद पुन एक कमरे में पहुचे। यह कमरा भी पहिले ही कमरे के बराबर था और इसके सामने की दीवार में पुन आगे जाने के लिए एक सुरग का मुहाना नजर आ रहा था अर्थात् इस कमरे को लाघ कर पुन आगे बढ जाने के लिए भी सामने की तरफ सुरग दिखाई दे रही थी।

यह कमरा पहिले ही तरह खाली या सूनसान न था। इसमें तरह-तरह की बेशकीमत चीजो तथा जवाहिरात और अशर्फियों के भी जगह जगह ढेर लगे हुए थे जिन्हें देखकर उन पाचों कैदियों में से एक ने कुअर इन्द्रजीतसिह से पूछा इतनी बडी रकम यहा किसके लिए रक्खी हुई है ?

इन्द–यह सब दौलत हमारे लिए रक्खी हुई है केवल इतनी ही नहीं बल्कि इसी तरह और भी कई जगह इससे भी बढ के अच्छी-अच्छी और कीमती चीजें दिखाई देंगी।

कैदी–इन चीजों को आप क्योंकर बाहर निकालेंगे ?

इन्द–जब हम लोग तिलिस्म तोडते हुए चुनारगढ पहुचेंगे तब ये सब चीजे निकलवा ली जायगी।

कैदी–तब तक इसी तरह ज्यों की त्यों पडी रहेंगी ?

इन्द–हा।

इस कमरे में चारों तरफ की दीवारों के साथ तरह-तरह के बेशकीमत हर्बे लटक रहे थे जिन पर इस खयाल से कि जग इत्यादि लग कर खराब न हो जाय एक किस्म का मोमी रोगन लगा हुआ था। नीचे दो सन्दूक जड़ाऊ जेवरों से भरे हुए थे जिनमें ताले लगे हुए न थे। इसके अतिरिक्त सोने के बहुत से जड़ाऊ खुशनुमा और नाजुक बर्तन भी दिखाई दे रहे थे।

इन चीजों को देखभाल कर कुमार आगे बढे और सुरग के दूसरे मुहाने में घुस कर दूर तक चले गये। अबकी दफे का सफर सीधा न था बल्कि घूम-घुमौवा था। लगभग दो या डेढ कोस जाने के बाद पुन एक कमरे में पहुचे। पहिले कमरे की तरह इसमें भी आमने-सामने दोनों तरफ सुरग बनी हुई थी।

इस कमरे में सोने चादी या जवाहिरात की कोई चीज न थी हा दीवारों पर बड़ी-बडी तस्वीरें लटक रही थीं जो एक किस्म के रोगनी कपडे पर जिस पर सर्दी गर्मी का असर नही पहुच सकता था बनी हुई थी। इन तस्वीरों में रोहतासगढ और चुनार की तस्वीरें ज्यादे थीं और तरह-तरह के नक्शे भी जगह-जगह लटक रहे थे जिन्हें बड़े गौर से दोनों कुमार देर तक देखते रहे।

इस कमरे की कैफियत को देख के इन्द्रजीतसिह ने आनन्दसिह से कहा 'मालूम होता है 'ब्रह्म मण्डल' यही है इसी जगह हम लोगों को बराबर आना पडेगा तथा चुनारगढ के तिलिस्म की चाभी भी इसी जगह से हमें मिलेगी।

आनन्द–बेशक यही बात है इस जगह के 'ब्रह्म मण्डल' होने में कुछ भी शक नहीं हो सकता।

इन्द–फिर अब तुम्हारी क्या राय है ? इस समय यहा कुछ काम किया जाय या नहीं ? क्योंकि इस काम को हम लोग अपनी इच्छानुसार कर सकते है।

आनन्द–मेरी राय में तो इस समय यहा कोई काम न करना चाहिये क्योंकि (कैदियों की तरफ इशारा करके) इन लोगों को तकलीफ होगी पहिले इन लोगों को तिलिस्म के बाहर कर देना उचित होगा फिर हम लोग यहा आकर अपना काम किया करेंगे।

इन्द–मैं भी यही उचित समझता हू, इसके अतिरिक्त हम लोगों को यहा कई दफे आने की जरूरत पडेगी अस्तु इस समय अगर यहा अटककर कोई काम करेंगे तो बाहर निकलने में बहुत देर हो जायगी और हम भी परेशान और दुखी हो जायगे।

इतना कहकर इन्द्रजीतसिह आगे की तरफ बढे और सभों को लिए सामने वाली सुरग में घुसे। अबकी दफे दोनों कुमारों और कैदियों को बहुत ज्यादे चलना पडा और साथ ही इसके भूख प्यास की भी तकलीफ उठानी पडी। कई कोस का सफर करने के बाद जब वे लोग सुरग के बाहर निकले तो सुबह की सफेदी आसमान पर फैल चुकी थी इसलिए

दानों कुमारों न अन्दाज से समझा कि अवकी दफे हम लोग चौदह या पन्द्रह घण्टे तक वरावर चलते रहे आर जमानिया को वहुत दूर छाड आये।

सुरग के बाहर निकल कर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह ने जिस सरजमीन में अपने को पाया वह एक वहुत ही दिलचस्प और सुहावनी घाटी थी। चारों तरफ कम ऊची सुन्दर और हरी-हरी पहाडियों के बीच में सरसब्ज मैदान था जिसके वीच में वरसाती पानी से वचने के लिए स्थान भी बना हुआ था। इस सरजमीन को इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह ने वहुत ही पसन्द किया और इन्द्रजीतसिह ने उन कैदियों की तरफ दख कर कहा 'अव तुम लोग अपने को आजाद और तिलिस्मी कंदखाने से वाहर निकला हुआ समझो थोडी देर में हम लोग तुम्हें इस घाटी से वाहर पहुँचा दंगे फिर जहा तुम लोगों की इच्छा हो चले जाना।'

इसके जवाव में इन कैदियों ने हाथ जोडकर कहा– अव हम लोग इन चरणों को छोड नहीं सकते ! यद्यपि अपने दुश्मनों से वदला लेने के लिए हम लोग वेताव हो रहे है परन्तु हमारी यह अभिलाषा भी आपकी कृपा के बिना पूरी नहीं हो सकती अस्तु हम लोग आपके साथ ही साथ राजा वीरेन्द्रसिह के दर्वार में चलने की इच्छा रखते हैं।

दोनों कुमारों ने उनकी प्रार्थना मजूर कर ली और इसके वाद जो कुछ अनूठी कार्रवाई उन लोगों ने की दूसरे दिन वयान करूगा।

इतना कहकर नकावपोश चुप हो गया और अपने घर जाने की इच्छा से राजा साहव का मुह देखने लगा। यद्यपि महाराज इसके आगे भी इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह का हाल सुना चाहते थे परन्तु इस समय नकावपोशों को छुट्टी दे दना ही उचित जानकर घर जाने की इजाजत दे दी और दर्वार वर्खास्त किया।

दसवां बयान

अव देखना चाहिए कि देवीसिह का साथ छोड के भूतनाथ ने क्या किया। भूतनाथ भी वास्तव में एक विचित्र ऐयार है। जिस तरह वह अपने फन में वडा ही तेज और होशियार है और जिस काम के पीछे पड जाता है उसे कुछ न कुछ सीधा किये विना नहीं रहता उसी तरह वह निडर भी परले सिरे का कहा जा सकता है। यद्यपि आज-कल उसे इस बात की धुन चढी हुई है कि उसके दो-एक पुराने ऐब जिनके सबब से उसकी ऐयारी में धब्बा लगता है छिपे रह जाय और वह किसी न किसी तरह राजा वीरेन्द्रसिह का ऐयार बन जाय, मगर फिर भी ऐयारी के समय अपना काम निकालने की धुन में वह जान तक की परवाह नही करता। इस मौके पर भी उसने नकाबपोशों का पीछा करके जो कुछ किया उसके विषय में भी यही कहने की इच्छा होती है कि उसने अपनी जान को हथेली पर लेकर वह काम किया जिसका हाल अब हम लिखते हैं।

सध्या होने में अभी घण्टे भर की देर है। उसी खोह के मुहाने पर जिसके अन्दर नकावपोशों का मकान है या जिसमें भूतनाथ और देवीसिह नकाबपोशों का पता लगाते हुए गये थे हम दो नकाबपोशों को ढाल तलवार लगाये हाथ में हाथ दिये टहलते हुए देखते हैं। इन दोनों नकाबपोशों की पोशाक और नकाव साधारण थी और हाथ-पैर से भी ये दोनों दुबले पतले और कमजोर मालूम पड़ते थे। हम नहीं कह सकते कि यह दोनों यहा कितनी देर से और किस फिक्र में घूम रहे हैं तथा आपुस में किस ढग की बातें कर रहे है, हा इनके हाव-भावसे इस बात का पता जरूर लगता है कि ये दोनों किसी के आने का इन्तजार कर रहे हैं। ऐसे ही समय में अचानक एक आदमी इनके पास आकर खड़ा हो गया जो सूरत शक्ल आदि से बिल्कुल उजड्ड और देहाती मालूम पडता था तथा जिसके हाथ पैर तथा चेहरे पर गर्द रहने से यह भी जान पड़ता था कि यह कुछ दूर से सफर करता हुआ आ रहा है।

दोनों नकावपोशों ने उसकी सूरत गौर से देखी और एक ने पूछा, 'तू कौन है और क्या चाहता है ?

उसे देहाती ने नकावपोश की बात का कुछ जवाब न दिया और इशारे से बताया कि यहा से थोड़ी दूर पर कोई किसी को मार रहा है।

पुन एक नकावपोश ने पूछा "क्या तू गूगा है ?'

इसका भी उसने कुछ जवाब न देकर फिर पहिले की तरह इशारे से कुछ समझाया और अपने साथ आने के लिए कहा।

दोनों नकावपोशों को विश्वास हो गया कि यह गूगा वहरा और साथ ही इसके उजड्ड तथा बेवकूफ भी है अस्तु एक नकावपोश ने अपने साथी से कहा 'इसके साथ चलकर देखो तो सही क्या कहता है !

दोनों नकावपोश उसके साथ चलने के लिए तैयार हो गये और वह भी यह इशारा करके कि तुम्हें थोडी ही दूर

चलना पडगा उन्हें अपने साथ लिए हुए पूरब की तरफ रवाना हुआ।

थाडी दूर जान के बाद उस दहाती ने जमीन पर गिरे कई रुपय और दो-तीनजनाने जेवर नकावपाशों को दिखाए जिससे इन्हें ताज्जुव हुआ और उन्होंने उस देहाती को जेवर और रुपये उठा लने के लिए कहा मगर उस दहाती न ऐसा करने से इनकार किया और आगे चलने के लिए इशारा किया।

दानों नकावपोश भी जेवरों और रुपयों को उसी तरह छोड उस देहाती क पीछे पीछ चलकर और आग वढ़े तथा कुछ दूर चलने पर पुन दो-तीन जवर और एक कटा हुआ हाथ जमीन पर दखा। ताज्जुव में आकर एक नकावपोश न दूसर स कहा यह क्या मामला है ? हमारे पडोस ही में कोई वुरी घटना भई हुई जान पड़ती है ?

दूसरा–रग तो एसा ही मालूम पडता है !

पहिला–यह हाथ भी किसी औरत का जान पड़ता है शायद य जवर भी उसी क हों ?

दूसरा–वशक ये जेवर उसी के होंग इस वात का पता लगा के अपन सर्दार का इत्तिला दनी चाहिय।

य वातें हो ही रही थीं कि आग स किसी औरत के रोने की आवाज इन दोनों नकावपाशों ने सुनी जिससे ताज्जुव में आकर ये आगे की तरफ वढे।

इसी तरह चलकर व दानों अपन स्थान स दूर निकल गय और अन्त में एक औरत को जार-जार स रोते और चिल्लाते देखा। यह औरत साधारण न थी वल्कि किसी अमीर घर की मालूम पडती थी। इसक वदन स खुशवूदार फूलों के जेवर पडे हुए थ और यह दानों हाथ स अपना सर पीट-पीटके रा रही थी। इसके सामन एक दूसरी औरत की लाश पडी हुइ थी और उसके वदन में भी खुशवूदार फूलों के जेवर पड हुए थ। उस लाश क वदन स खून वह रहा था और उसका एक हाथ कटा हुआ था।

थोडी देर तक ताज्जुव के साथ देखने क बाद एक नकावपोश न उस औरत स पूछा, इस किसन मारा और यह तरी कौन है ? इसके जवाव में उस औरत न अपन आचल स आसू पोछकर कहा, मैं क्या बताऊ कि किसने मारा ! तुम्हारे किसी साथी न मारा है अव तुम मुझ भी मार कर छुट्टी करो जिससे वखडा ही तै हा जाय।'

एक नकाव–(ताज्जुव और क्रोध के साथ) क्या हम लोग ऐसे नामर्द और पतित है जा औरतों क खून से अपना हाथ रगेंग ?

औरत–मै ता यही सोचती हू जब खुद मुझी पर वीत चुकी और बीत रही है तब मैं और क्या कहू ? शायद आप न हों मगर आप ही कि तरह पर्दे में मुह छिपाने वालों ने इसे मारा है चाहे वह मर्द हो या औरत मगर याद रह कि इसका बदला लिये विना न रहूगी या इसके साथ अपनी भी जान द दूगी।

नकाबपोश–मगर यह तू कह किससे रही है और तुझे क्योंकर यकीन हो गया कि इसे हमारे साथियों ने मारा है ?

औरत–तुम्हीं लोगों से कह रही हू और मुझे अच्छी तरह यकीन है कि इसे तुम्हारे साथियों ने मारा है !

नकाबपोश–(क्रोध से) क्या कहू तू औरत है तुझपर हाथ छोड नही सकता अगर कोई मर्द ऐसी बातें करता तो उस इस कहने का मजा चखा देता !

औरत–शायद मुझे धोखा हुआ हो मगर इसमें कोई शक नहीं कि जिसने इसे मारा है वह तुम्हारी ही तरह का था।

नकाब–तू अपना और इसका हाल तो कह शायद उससे कुछ पता लगे।

औरत–मै इस जगह कुछ भी नहीं कहने की अगर तुम उन लोगों में से नहीं हो जिन्होंने मुझे सताया है और असल मर्द हो तो मुझ अपने सर्दार के पास ले चलो उसी जगह मै सब हाल कहूगी।

नकाव–हमारे सर्दार के पास तू नहीं जा सकती।

औरत–तो अव मुझे विश्वास हो गया कि जो कुछ किया है सव तुम लोगों ने किया है।

इसी तरह की वातें देर तक होती रहीं। यद्यपि वे दोनों नकाबपोश उस औरत को अपने सर्दार के पास ले चलना या उस अपना पता देना नहीं चाहते थे मगर उस औरत ने ऐसी तीखी-तीखी वातें कहीं कि व दोनों जोश में आ गए और उसे तथा उस लाश को उठाकर अपने खोह के मुहाने पर चलने के लिए तैयार हो गय। उन्होंने लाश उठाकर ले चलने में मदद करने लिए उस गूगे देहाती को इशारे में कहा मगर उसने ऐसा करन से साफ इनकार किया वल्कि जव उन दानों नकावपाशों ने उसे डाटा तव वह डरकर वहा से भागा और कुछ दूर पर जाकर खडा हा गया।

हम ऊपर वयान कर चुक हैं कि उस औरत की लाश भी फूलों के गहनों से भरी हुई थी अव इतना और कह दना है कि उन फूलों पर वेहोशी की दवा इस ढग पर छिडकी हुई थी कि कुछ मालूम नही होता था और खुशवू क साथ उस दवा का गुण भी धीरे-धीर फैल रहा था यद्यपि फूलों की फैलन वाली खुशबू क सवव नकावपाशों पर उसका कुछ असर हा चुका था मगर उन्हें इस वात का खयाल कुछ भी न था।

जब उन दोनों ने उस लाश को उठा लिया और फूलों की खुशबू को तेजी के साथ दिमाग में घुसने का मौका मिला तब उन दोनों नकाबपोशों ने समझा कि हमारे साथ ऐयारी की गई मगर अब कर ही क्या सकते थे ? तुरन्त सर में चक्कर आने लगा जिसके सबब से वे दोनों बैठ गये और साथ ही इसके बेहोश होकर जमीन पर लम्बे हो गये। उस समय औरत की लाश भी चैतन्य हो गई और वह देहाती गूगा भी उनकी खोपडी पर आ मौजूद हुआ। उस औरत ने देहाती गूगे से कहा अब क्या करना चाहिये ?

देहाती--अब हमारा काम हो गया अब इन्हें मालूम हो जायगा कि भूतनाथ कोई साधारण ऐयार नहीं है।

औरत--मगर अब भी आपको इस बात के सोचने का मौका है कि नकाबपोश लोग आपसे रज न हो जाय और इस बखेडे का नतीजा बुरा न निकले।

देहाती--इन बातों को मैं खूब सोच चुका हू। उन दोनों नकाबपोशों को जो हमारे राजा साहब के दर्बार में जाया करते हैं मै रज होने का मौका ही न दूगा और इन दोनों में से भी केवल एक ही को उठा ले जाऊगा और उसी से अपना काम निकालूगा।

इतना कह उस देहाती ने दोनों नकाबपोशों के चेहरे पर से नकाब उलट दी मगर असली सूरत पर निगाह पडते ही चौक के उस औरत की तरफ देखकर कहा ओफ,आह य सूरतें तो वे ही हैं जिन्होंने दर्बारे-आम में दारोगा और जैपाल को बदहवास कर दिया था पहिले दिन जब एक नकाबपोश ने अपने चेहरे पर से नकाब हटाई थी तो दारोगा के सर में चक्कर *आ गया था और दूसरे दिन जब दूसरे नकाबपोश ने सूरत दिखाई तो जैपाल की जान शरीर से निकलने की तैयारी करने लगी थी * *।

इसी बीच में वह औरत भी उठकर हर तरह से दुरुस्त हो गई थी जिसे थोडी देर पहिले दोनों नकाबपोश मुर्दा समझ कर उठा ले चले थे असल में उसका हाथ कटा हुआ न था, असली हाथ कपडे के अन्दर छिपा हुआ था और एक बनावटी कटा हुआ हाथ लगा कर दिखा दिया गया था।

ऊपर की बात-चीत से हमारे पाठक समझ गये होंगे कि ये देहाती महाशय असल में भूतनाथ है और दोनों औरतें उसके नौजवान शागिर्द तथा मर्द है।

भूतनाथ की आखिरी बात सुनकर उसके एक शागिर्द ने जो औरत की सूरत में था कहा, 'क्या ये ही दोनों हमारे महाराज के दबार में जाया करते है।

भूत--दर्बार में जब नकाबपोशों ने सूरत दिखाई थी तब दो दफे इन्हीं दोनों की सूरतें देखने में आई थीं मगर मैं नही कह सकता कि वहा जाने वाले दोनों नकाबपोश यही हैं। मेरा दिल तो यही गवाही देता है कि दोनों नकाबपोश कोई दूसरे है और जब दर्बार में जाते है तो केवल नकाब ही डाल कर नहीं बल्कि अपनी सूरतें भी बदल कर जाते हैं और उस दिन इन्हीं की सी सूरत बना कर गये थे।

शागिर्द--बेशक ऐसा ही है।

भूत--खैर अब मै इन दोनों में से एक को छोड न जाऊँगा जैसा कि पहिल इरादा कर चुका था बल्कि दोनों ही को उठा कर ले जाऊगा और असली भेद मालूम करके ही छोडूगा।

इतना कहकर भूतनाथ ने ऐयारी ढग पर उन दोनों नकाबपोशों की गठरी बाधी और तीनों आदमी मिल-जुल कर उन्हें उठा ले गये।

---

*देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति उन्नीसवा भाग दसवा बयान।

* *देखिय चन्द्रकान्ता सन्तति उन्नीसवा भाग बारहवा बयान।

ग्यारहवाँ बयान

नकाबपोशों के चले जाने के बाद जब केवल घर वाले ही वहा रह गय तब राजा वीरेन्द्रसिंह ने अपन पिता से तारासिंह की बाबत जो कुछ हाल हम ऊपर लिख आए है कुछ घटा बढ़ाकर बयान किया और इसके बाद कहा, 'तारासिंह नकाबपोशों के सामने ही लौट कर आ गया था जिससे अभी तक यह पूछने का मौका न मिला कि वह कहा गया था और वह तस्वीर उसे कहा से मिली थी जो उसने अपनी मा को दी थी।

इतना कहकर वीरेन्द्रसिंह चुप हो गये और देवीसिंह न वह कपड़ वाली तस्वीर (जो चम्पा न दी थी) महाराज सुरेन्द्रसिंह के सामने रख दी। सुरेन्द्रसिंह ने बड़े गौर से उस तस्वीर को देखा और इसक बाद तारासिंह से पूछा –

सुरेन्द्र–नि सन्देह यह तस्वीर किसी अच्छ कारीगर के हाथ की बनी हुई है यह तुम्हे कहा मिली ?

तारा–मै स्वयम् इस तस्वीर का हाल अर्ज करन वाला था, परन्तु इसके सम्बन्ध की कई एसी बातो को जानना आवश्यक था जिनके बिना इसका पूरा भेद मालूम नही हो सकता अतएव मै उन्ही बातो क जानने की फिक्र मे पड़ा हुआ था और इसी सबब से अभी तक कुछ अर्ज करने की नौबत नही आई।

तेज–तो क्या तुम्हे इसका पूरा-पूरा भद मालूम हो गया ?

तारा–जी नही, मगर कुछ कुछ जरूर मालूम हुआ है ?

तेज–तो इस काम मे तुमने अपने साथियो से मदद क्यो नही ली ?

तारा–अभी तक मदद की जरूरत नही पडी थी मगर हा अब मदद लनी पडेगी !

वीरेन्द–खैर बताओ कि इस तस्वीर को तुमने क्योंकर पाया ?

तारा–(इधर-उधर देख कर) भूतनाथ की स्त्री से।

तारासिंह की इस बात को सुनकर सब चौक पड़े खास कर देवीसिंह को तो बड़ा ही ताज्जुब हुआ और उसने हैरत कि निगाह से अपने लडके तारासिंह की तरफ देख कर पूछा –

देवी–भूतनाथ की स्त्री तुम्हे कहा मिली ?

तारा–उसी जगल मे जिसमे आपने और भूतनाथ ने उसे देखा था बल्कि उसी झोपडी मे जिसमे भूतनाथ और आप उसके साथ गये थे और लाचार होकर लौट आए थे। आपको यह सुनकर ताज्जुब होगा कि वह वास्तव मे भूतनाथ की स्त्री ही **थी**।

देवी–(आश्चर्य) है, क्या वह वास्तव मे भूतनाथ की स्त्री थी ?

तारा–जी हा, आप और भूतनाथ नकाबपोशों के फेर मे यद्यपि कई दिनों तक परेशान हुए परन्तु उतना हाल मालूम न कर सके जितना मै जान आया हू।

इस समय दर्बार मे आपुस वालों के सिवाय कोई गैर आदमी ऐसा न था जिसके सामन इस तरह की बातो को कहने सुनने मे किसी तरह का खयाल होता अतएव बड़ी उत्कण्ठा के साथ सब कोइ तारासिंह की बाते सुनने के लिए तैयार हो गय और देवीसिंह का तो कहना ही क्या जिनका दिल तूफान मे पडे हुए जहाज की तरह हिंडोल खा रहा था। उन्हे यकायक ख्याल पैदा हुआ कि अगर वह वास्तव मे भूतनाथ की स्त्री थी तो दूसरी औरत भी जरूर चम्पा ही रही होगी जिसे नकाबपोशों के मकान मे देखा गया था अस्तु बड़े ताज्जुब के साथ अपन लडके तारासिंह से पूछा 'क्या तुम बता सकते हो कि जिन दो औरतो को हमने नकाबपोशों के मकान मे देखा था वे कौन थी ?'

तारा–उनमे से एक तो जरूर भूतनाथ की स्त्री थी मगर दूसरी के बारे मे अभी तक कुछ पता नही लगा।

देवी–(कुछ सोचकर) दूसरी भी तुम्हारी माँ होगी ?

तारा–शायद ऐसा हो मगर विश्वास नही होता।

तेज–तुम्हें यह कैसे निश्चय हुआ कि वह वास्तव मे भूतनाथ की स्त्री थी ?

तारा–उसने स्वय भूतनाथ की स्त्री होना स्वीकार किया बल्कि और भी बहुत सी बाते ऐसी कहीं जिससे किसी तरह का शक नहीं रहा।

देवी–और तुम्हे यह कैसे मालूम हुआ कि नकाबपोशों के घर मे जाकर हम लोगो ने किसे देखा यहा जंगल मे भूतनाथ की स्त्री हम लोगों को मिली थी और हम लोग उसके पीछे-पीछे एक झोपड़ी मे जाकर सूखे हाथ लौटे आये थे ?

तारा–यह सब हाल मुझे बखूबी मालूम है और उस समय मै भी उसी जगल मे था जिस समय आपने भूतनाथ की

स्त्री को दखा था और उसके पीछे-पीछे गये थे। इस समय आप यह सुनकर और ताज्जुब करेंगे कि आपसे अलग होकर भूतनाथ ने उसी दिन अर्थात् कल सध्या के समय उन दोनों नकाबपोशों को गिरफ्तार कर लिया जिनकी सूरत यहा दरवार में देख कर दारोगा और जैपाल वदहवास हो गये थे।

वीरेन्द्र–(ताज्जुब से) मगर वे दोनों नकाबपोश तो आज भी यहा आये थे जिनका जिक्र तुम कर रहे हो

तारा–जी हा उन्हें तो मै अपनी आखों ही से देख चुका हू मगर मेरे कहने का मतलब यह है कि भूतनाथ ने कल जिन दोनों नकाबपोशों को गिरफ्तार किया है उनकी सूरतें ठीक वैसी ही हैं जैसी दारोगा और जैपाल ने यहा देखी थीं चाहे ये लोग हों कोई भी।

तेज–और भूतनाथ ने उन्हें गिरफ्तार कहा पर किया ?

तारा–उसी खोह के मुहाने पर उसने उन्हें धोखा दिया जिसमें नकाबपोश लोग रहते थे।

देवी–मालूम होता है कि हम लोगों की तरह तुम भी कई दिनों से नकाबपोशों की खोज में पडे हो ?

तारा–खोज में नहीं बल्कि फेर में।

बीरेन्द्र–खैर तुम खुलासे तौर पर सब हाल बयान कर जाओ इस तरह पूछने और कहने से काम नहीं चलगा।

तारा–जो आज्ञा मगर मेरा हाल कुछ बहुत लम्बा चौडा नहीं, केवल इतना ही कहना है कि मैं भी पाच-सात दिन से उन नकाबपोशों के फेर में पडा हू और इत्तिफाक से मै भी उसी खोह के अन्दर जा पहुचा जिसमें वे लोग रहते है। (कुछ सोच और जीतसिह की तरफ देखकर) अगर कोई हर्ज न हो तो दो घण्टे के बाद मुझसे मेरा हाल पूछा जाय।

जीत–(महाराज की तरफ देखकर और कुछ इशारा पाकर) खैर कोई चिन्ता नहीं, मगर यह बताओ कि इस दो घण्टे के अन्दर तुम क्या काम करोगे।

तारा–कुछ भी नहीं, मैं केवल अपनी मा से मिलूगा और स्नान-ध्यान से छुट्टी पा लूगा।

देवी–(धीरे से) आज के लडके भी कुछ विचित्र ही पैदा होते हैं खास करके ऐयारों के।

इसके जवाव में तारासिह ने अपने पिता की तरफ देखा और मुस्कुराकर सर झुका लिया। यह बात देवीसिह को कुछ वुरी मालूम हुई मगर वोलने का मौका न देखकर चुप रह गये।

तेज–(तारा से) आज जब हम लोग तुम्हारे न मिलने से परेशान थे तो हमारी परेशानी को देख कर नकाबपोशों ने कहा था कि तारासिह के लिए आपको तरद्दुद न करना चाहिये आशा है कि वह घण्टे भर के अन्दर ही यहा आ पहुँचेगा, और वास्तव में हुआ भी ऐसा ही, तो क्या नकाबपोशों को तुम्हारा हाल मालूम था ? यह बात नकाबपोशों से भी पूछी गई थी मगर उन्होंने कुछ जवाब न दिया और कहा कि इसका जवाब तारा ही देगा।

तारा–नकाबपोशों की सभी बातें ताज्जुब की होती हैं मैं नहीं जानता कि उन्हें मेरा हाल क्योंकर मालूम हुआ।

तेज–क्या तुम्हें इस बात की खबर है कि इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह ने तुम्हें और भैरोसिह को बुलाया है ?

तारा–जी नहीं।

तेज–(कुमार की चीठी तारा को दिखाकर) लो इसे पढो।

तारा–(चीठी पढकर) नकाबपोशो ही के हाथ यह चीठी आई होगी ?

तेज–हा और उन्हीं नकाबपोशों के साथ तुम दोनों को जाना भी पडेगा।

तारा–जब मर्जी होगी हम दोनों चले जायगे।

इसके बाद महाराज की आज्ञानुसार दर्बार वर्खास्त हुआ और सब कोई अपने-अपने ठिकाने चले गये। तारासिह भी महल में अपनी मा से मिलने के लिये चला गया और घण्टे भर से ज्यादे देर तक उसके पास बैठा वात-चीत करता रहा इसके वाद जब महल से वाहर आया तो सीधे जीतसिह के डेरे में चला गया और जब मालूम हुआ कि वे महाराज सुरेन्द्रसिह के पास गये हुए है तो खुद भी महाराज सुरेन्द्रसिह के पास चला गया।

हम नहीं कह सकते कि महाराज सुरेन्द्रसिह जीतसिह और तारासिह में देर तक क्या क्या बातें होती रहीं हा इसका नतीजा यह जरूर निकला कि तारासिह को पुन अपना हाल किसी से कहना न पडा अर्थात महाराज ने उसे अपना हाल बयान करने से माफी द दी और तारासिह को भी जो कुछ कहना-सुनना था महाराज से ही कह-सुन कर छुटटी पा ली। औरों को तो इस वात का ऐसा ख्याल न हुआ मगर देवीसिह को यह चालाकी वुरी मालूम हुई और उन्हें निश्चय हो गया कि तारासिह और चम्पा दोनों मा वेटे मिले हुए हैं और साथ ही इसके वडे महाराज भी इस भेद का जानते है मगर ताज्जुव है कि ऐयारों पर प्रकट नहीं करते, इसका कोई न कोई सवव जरूर है और तव देवीसिह की हिम्मत न पडी कि अपने लडके को कुछ कहें या डाटें।

दो घण्ट रात जा चुकी थी जब महाराज सुरेन्दसिह ने वीरेन्दसिह और तेजसिह को अपन पास बुलवाया। उस समय जीतसिह पहिले ही से महाराज सुरेन्दसिह के पास बैठे हुए थे अस्तु जब दोनों आदमी वहा आ गये तो दो घण्टे तक तारासिह के बारे में बात-चीत होती रही और इसके बाद महाराज आराम करने के लिए पलग पर चल गये। बीरेन्द्रसिह और तेजसिह भी अपने अपन कमरे में चले आये।

बारहवाँ बयान

दूसरे दिन आपने मामूली समय पर पुन दोनों नकाबपोशों के आने की इत्तिला मिली। उस समय जीतसिह बीरेन्दसिह और तेजसिह राजा गोपालसिह बलभदसिह इन्ददेव और बद्रीनाथ वगैरह अपन यहा के कुल ऐयार लोग भी महाराज सुरेन्दसिह के पास बैठे हुए थे और उन्हीं नकाबपोशों के बारे में तरह-तरह की बातें हो रही थी। आज्ञानुसार दोनों नकाबपोश हाजिर किए गए और फिर इस तरह बात-चीत होने लगी –

तेज–(नकाबपोश की तरफ देखकर) तारासिह की जुबानी सुनने में आया कि भूतनाथ ने आपके दो आदमियों को ऐयारी करके गिरफ्तार कर लिया है।

एक नकाब–जी हाँ हम लोगों को भी इस बात की खबर लग चुकी है मगर कोई चिन्ता की बात नहीं है। गिरफ्तार होने और बइज्जती उठाने पर भी वे दोनों भूतनाथ को किसी तरह की तकलीफ न देंगे और न भूतनाथ ही उन्हें किसी तरह की तकलीफ दे सकेगा। यद्यपि उस समय भूतनाथ ने उन दोनों को नहीं पहिचाना मगर जब उनका परिचय पायेगा और पहिचानेगा तो उसे बडा ही ताज्जुब होगा। जो हो मगर भूतनाथ को ऐसा करने की जरूरत न थी। ताज्जुब है कि ऐसे फजूल के कामों में भूतनाथ का जी क्योंकर लगता है। ऐयारी करके जिस समय भूतनाथ ने दोनों को गिरफ्तार किया था उस समय उन दोनों की सूरत देखने के साथ ही छोड देना चाहिये था क्योंकि एक दफे भूतनाथ इस दर्बार में उन दोनों सूरतों को देख चुका था और जानता था कि आखिर इन दोनों का हाल मालूम होगा ही। अब दोनों को गिरफ्तार करके ले जाने से भूतनाथ की बेचैनी कम न होगी बल्कि और ज्यादे बढ जायगी।

तेज–हा हम लोगों ने भी यही सुना था कि जिन सूरतों को देखकर मायारानी का दारोगा और जैपाल बदहवास हो गये थे उन्हीं दोनों को भूतनाथ ने गिरफ्तार किया है। नकाब–जी हाँ ऐसा ही है।

तेज–तो क्या वे दोनों स्वय इस दर्बार में आये थे या आप लोगों ने उन दोनों के जैसी सूरत बनाई थी ?

नकाब–जी वे लोग स्वय यहा नहीं आये थे बल्कि हम ही दोनों उन दोनों की तरह सूरत बनाए हुए थे। दारोगा और जैपाल इस बात को समझ न सके।

तेज–असल में दोनों कौन हैं जिन्हें भूतनाथ ने गिरफ्तार किया है ?

नकाब–(कुछ सोचकर) आज नहीं, अगर हो सकेगा तो दो एक दिन में मैं आपकी इस बात का जवाब दूगा क्योंकि इस समय हम लोग ज्यादा देर तक यहा ठहरना नहीं चाहते। इसके अतिरिक्त सम्भव है कि कल तक भूतनाथ भी उन दोनों को लिए हुए यहीं आ जाय। अगर वह अकेला ही आवे तो हुक्म दीजियगा कि उन दोनों को भी यहा ले आये उस समय कम्बख्त दारोगा और जैपाल के सामने उन दोनों का हाल सुननेसे आप लोगों को विशेष आनन्द मिलेगा। मैं भी (कुछ रुक कर) मौजूद ही रहूगा जो बात समझ में न आवेगी समझा दूगा। (कुछ रुक कर) हाँ भैरोसिह और तारासिह के विषय में क्या आज्ञा होती है ? क्या आज वे दोनों हमारे साथ भेजे जायगे ? क्योंकि इन्दजीतसिह और आनन्दसिह को उन दोनों के बिना सख्त तकलीफ है।

सुरेन्द–हा भैरो और तारा तुम दोनों के साथ जाने के लिए तैयार है।

इतना कहकर महाराज ने भैरोसिह और तारासिह की तरफ देखा जो उसी दर्बार में बैठे हुए नकाबपोशों की बातें सुन रहे थे। महाराज को अपनी तरफ देखते देख दोनों भाई उठ खडे हुए और महाराज को सलाम करने बाद दोनों नकाबपोशों के पास आकर बैठ गये।

नकाब–(महाराज से) तो अब हम लोगों को आज्ञा मिलनी चाहिए।

सुरेन्द–क्या आज दोनों लडकों का हाल हम लोगों को न सुनाओगे ?

नकाब–(हाथ जोडकर) जी नहीं क्योंकि देर हो जाने से आज भैरोसिह और तारासिह को इन्दजीतसिह के पास हम लोग पहुचा न सकेंगे।

सुरेन्द–खैर क्या हर्ज है कल तो तुम लोगों का आना होगा ही ? नकाब–अवश्य।

इतना कहकर दोनों नकाबपोश उठ खडे हुए और सलाम करके बिदा हुए। भैरोसिह और तारासिह भी उनके साथ रवाना हुए।

तेरहवाँ बयान

रात घण्टे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी हे। पहाड के एक सूनसान दर्रे म जहा किसी आदमी का जाना कठिन ही नहीं वल्कि असम्भव जान पडता है सात आदमी वेठ हुए किसी के आने का इन्तजार कर रहे हैं और उन लोगों क पास ही एक लालटेन जल रही हे। यह स्थान चुनार गढ के तिलिस्मी मकान से लगभग छ सात कास की दूरी पर होगा। यह दा पहाडों के वीच वाला दर्रा वहुत वडा पचीदा ऊचा-नीचा और ऐसा भयानक था कि साधारण मनुष्य एक सायत के लिए भी यहा खडा रहकर अपने उछलते और कापते हुए कलेजे को सम्हाल नहीं सकता था। इस दर्रे म वहुत सी गुफाए ऐसी है जिनमें सैकडा आदमी आराम से रहकर दुनियादारी की आखों से वल्कि वहम और गुमान स भी अपने को छिपा सकत हें और इसी स समझ लेना चाहिये कि यहा ठहरने या बैठने वाला आदमी साधारण नहीं वल्कि वडे जीवट और कड दिल का होगा।

य सातों आदमी जिन्हे हम वेफिक्री के साथ वैठे देखते हें भूतनाथ के साथी है और उसी की आज्ञानुसार ऐसे स्थान में अपना घर बनाय पडे हुए हैं। इस समय भूतनाथ यहा आने वाला है, अस्तु ये लोग भी उसी का इन्तजार कर रहे हैं।

इसी समय भूतनाथ भी उन दोनों नकाबपोशों को जिन्हे आज ही धोखा देकर गिरफ्तार किया था लिए हुए आ पहुचा। भूतनाथ को देखते ही वे लोग उठ खडे हुए आर नकावपोशों की गठरी उतारने म सहायता दी।

दानों वेहाश जमीन पर सुला दिए गये और इसके बाद भूतनाथ ने अपने एक साथी की तरफ देखकर कहा थोडा पानी ले आआ मे इन दोनों के चहर धोकर देखा चाहता हू।

इतना सुनते ही एक आदमी दौडता हुआ चला गया और थोडी देर दूर पर एक गुफा के अन्दर घुस कर पानी भरा हुआ लोटा ल कर चला आया। भूतनाथ न वडी होशियारी से (जिसमें उनका कपडा भीगने न पावे) दोनों नकाबपोशों का चहरा धोकर लालटेन की रोशनी में गौर स दखा मगर किसी तरह का फर्क न पाकर धीरे से कहा इन लोगों का चेहरा रगा हुआ नहीं है।

इसके वाद भूतनाथ ने उन दोनों को लखलखा सुघाया जिससे वे तुरन्त ही होश में आकर उठ बैठे और घवराहट के साथ चारों तरफ देखने लगे। लालटेन की राशनी में भूतनाथ के चेहरे पर निगाह पडते ही उन दोनों ने भूतनाथ को पहिचान लिया और हस कर उससे कहा "बहुत खास ! तो ये सब जाल आप ही के रच हुए थे ?

भूत—जी हा मगर आप इस बात का ख्याल भी अपने दिल में न लाइयेगा कि मैं आपको दुश्मनी की नीयत से पकड लाया हू।

एक नकाबपोश—(हस कर) नहीं नही यह वात हम लोगों के दिल में नही आ सकती आर न तुम हमें किसी तरह का नुकसान पहुचा ही सकते हो, मगर मै यह पूछता हू कि तुम्हें इस कार्रवाई के करने से फायदा क्या होगा ?

भूत—आप लोगों से किसी तरह का फायदा उठाने की भी मेरी नीयत नही हैं। म तो केवल दो-चारवातों का जवाब पाकर ही अपनी दिलजमई कर लूगा और इसके बाद आप लोगों को उसी ठिकान पहुचा दूगा जहॉ से लाया हू।

नकाव—मगर तुम्हारा यह ख्याल भी ठीक नही है क्योंकि तुम खुद समझ गये हागे कि हम लोग थोडे ही दिनों के लिए अपने चेहरे पर नकाव डाले हुए हैं और अपना भेद प्रकट होने नहीं देते इसके बाद हम लोगों का भेद छिपा नहीं रहगा अस्तु इस बात को जान कर भी तुम्हें इतनी जल्दी क्यों पडी है और क्यों तुम्हारे पेट में चूह कूद रहे हैं ? क्या तुम नहीं जानते कि स्वय महाराज सुरेन्दसिह और राजा बीरेन्दसिह हम लोगों का भेद जानने के लिए बताब हो रहे थे मगर कई बातों पर ध्यान दकर हम लोगों ने अपना भेद खोलने से इनकार कर दिया और कह दिया की कुछ सब्र कीजिए फिर आपसे आप हम लोगों का भेद खुल जायगा, फिर तुम हो क्या चीज जो तुम्हारे कहने से हम लोग अपना भेद खाल देंगे ?

नकावपाश की कुरुखी मिली हुई बातें सुन कर यद्यपि भूतनाथ को क्रोध चढ आया मगर क्रोध करने का माका न दख वह चुप रह गया और नरमी के साथ फिर वात-चीत करने लगा।

भूत—आपका कहना ठीक है मे इस बात को खूव जानता हू, मगर मै उन भेदों को खुलवाना नही चाहता जिन्हें हमारे महाराज जानना चाहते है मैं तो केवल दो-चार मामूली वातें आप लोगों से पूछना चाहता हू जिनका उत्तर देने में न तो आप लोगों का भेद ही खुलता है और न आप लोगों का कोई हज ही होगा इसके अतिरिक्त मैं वादा करता हू कि मेरी वातों का जो कुछ आप जवाब देंगे उसे मै किसी दूसर पर तव तक प्रकट न करूगा जब तक आप लोग अपना भेद न खोलेंगे।

नकाब–(कुछ सोचकर) अच्छा पूछो क्या पूछते हो ?

भूत–पहली बात, मैं यह पूछता हू कि देवीसिह के साथ मैं आप लोगों के मकान में गया था यह बात आपको मालूम है या नहीं ?

नकाब–हा मालूम है।

भूत–खैर और दूसरी बात यह है कि वहा मैंने अपने लडके हरनामसिह को देखा, क्या वह वास्तव में हरनामसिह ही था ?

नकाब–(कुछ क्रोध की निगाह से भूतनाथ को देखकर) हा था तो सही, फिर ?

भूत–(लापरवाही के साथ) कुछ नहीं, मैं केवल अपना शक मिटाना चाहता था। अच्छा अब तीसरी बात यह जानना चाहता हू कि वहा देवीसिह ने अपनी स्त्री को और मैंने अपनी स्त्री को देखा था, क्या वे दोनों वास्तव में हम दोनों की स्त्रियॉ थीं या कोई और ?

नकाब–चम्पा के बारे में पूछने वाले तुम कौन हो हा अपनी स्त्री के बारे में पूछ सकते हो सो मैं साफ कह देता हू कि वह बेशक तुम्हारी स्त्री 'रामदेई' थी।

यह जवाब सुनते ही भूतनाथ चौका और उसके चेहरे पर क्रोध और ताज्जुब की निशानी दिखाई देने लगी। भूतनाथ को निश्चय था कि उसकी स्त्री का असली नाम 'रामदेई' किसी को मालूम नहीं है मगर इस समय एक अनजान आदमी के मुह से उसका नाम सुनकर भूतनाथ को बडा ही ताज्जुब हुआ और इस बात पर उसे क्रोध भी चढ आया कि मेरी स्त्री इन लोगों के पास क्यों आई, क्योंकि वह एक ऐसे स्थान पर थी जहा उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई जा नहीं सकता था ऐसी अवस्था में निश्चय है कि वह अपनी खुशी से बाहर निकली और इन लोगों के पास आई। केवल इतना ही नहीं उसे इस बात के खयाल से और भी रज हुआ कि मुलाकात होने पर भी उसकी स्त्री ने उससे अपने को छिपाया बल्कि एक तौर पर धोखा देकर बेवकूफ बनाया–आदि इसी तरह की बातों को परेशानी और रज के साथ भूतनाथ सोचने लगा।

नकाब–अब जो कुछ पूछना था पूछ चुके या अभी कुछ बाकी है ?

भूत– हा अभी कुछ और पूछना है।

नकाब–तो जल्दी से पूछते क्यों नहीं सोचने क्या लग गये ?

भूत–अब यह पूछना है कि मेरी स्त्री आप लोग के पास कैसे आई और वह खुद आप लोगों के पास आई या उसके साथ जबर्दस्ती की गई ?

नकाब–अब तुम दूसरी राह चले, इस बात का जवाब हम लोग नहीं दे सकते।

भूत–आखिर इसका जवाब देने में हर्ज ही क्या है ?

नकाब–हो या न हो मगर हमारी खुशी भी तो कोई चीज है।

भूत–(क्रोध में आकर) ऐसी खुशी से काम नहीं चलेगा आपको मेरी बातों का जवाब देना ही पडेगा !

नकाब–(हस कर) मानों आप हम लोगों पर हुकूमत कर रहे हैं और जबर्दस्ती पूछ लेने का दावा रखते है ?

भूत–क्यों नहीं आखिर आप लोग इस समय मेरे कब्जे में हैं !

इतना सुनते ही नकाबपोश को भी क्रोध चढ आया और उसने तीखी आवाज में कहा इस भरोसे न रहना कि हम लोग तुम्हारे कब्जे में हैं, अगर अब तक नहीं समझते थे तो अब समझ रक्खो कि उस आदमी का तुम कुछ नहीं बिगाड सकते जो अपने हाथों से तुम्हारे छिपे हुए ऐबों की तस्वीर बनाने वाला है। हा-हा बेशक तुमने वह तस्वीर हमारे मकान में देखी होगी अगर सचमुच अपने लडके हरनामसिह को उस दिन देख लिया है तो।'

यह एक ऐसी बात थी जिसने भूतनाथ के होश हवास दुरुस्त कर दिये। अब तक जिस जोश और दिमाग के साथ वह बैठा बातें कर रहा था वह बिल्कुल जाता रहा और घबराहट तथा परेशानी ने उसे अपना शिकार बना लिया वह उठकर खडा हो गया और बेचैनी के साथ इधर-उधर टहलने लगा। बडी मुश्किल से कुछ देर में उसने अपने को सम्हाला और तब नकाबपोश की तरफ देखकर पूछा 'क्या वह तस्वीर आपके हाथ की बनाई हुई थी ?

नकाब–बेशक !

भूत–तो आप ही ने उस आदमी को वह तस्वीर दी भी होगी जो मुझ पर उस तस्वीर की बाबत दावा करने के लिये कहता था !

नकाब–इस बात का जवाब नहीं दिया जायगा।

भूत–तो क्या आप मेरे उन भेदों को दर्बार में खोला चाहते हैं ?

नकाब–अभी तक तो ऐसा करने का इरादा नहीं था, मगर अब जैसा मुनासिब समझा जायगा वैसा किया जायगा

भूत–उन भेदों को आपके अतिरिक्त आपकी मण्डली में और भी कोई जानता है ?

नकाब–इसका जवाब देना भी उचित नहीं जान पडता।

भूत–आप बडी जबर्दस्ती करते है !

नकाब– जबर्दस्ती करने वाले तो तुम थ मगर अब क्या हो गया?

भूत–(तेजी के साथ) मुमकिन है कि मै अब भी जबर्दस्ती का वर्ताव करू। कोई क्या जान सकता है कि तुम लोगों को कौन उठा ले गया।

नकाब– (हसकर) ठीक है, तुम समझते हो कि यह बात किसी को मालूम न होगी कि हम लोगों को भूतनाथ उठा ले गया है।

भूत–(जोर देकर।) ऐसा ही है इसके विपरीत भी क्या कोई समझ सकता है ? इतने ही में थोडी दूर पर से यह आवाज आई, 'हा समझ सकता हे और विश्वास दिला सकता है कि यह बात छिपी हुई नहीं है।'

अब तो भूतनाथ की कुछ विचित्र हालत हो गई वह घबडाकर उस तरफ देखने लगा जिधर से आवाज आई थी और फुर्ती के साथ अपने आदमियों से बोला पकडो जाने न पाये !'

भूतनाथ के आदमी तेजी के साथ उस बोलने वाले की खोज में दौड गये मगर नतीजा कुछ भी न निकला अर्थात् वह आदमी गिरफ्तार न हुआ और भागकर निकल गया। यह हाल देख दोनों नकाबपोश खिलखिला कर हस दिये और कहा, 'क्यों अब तुम अपनी क्या राय कायम करते हो ?'

भूत–हा मुझे विश्वास हा गया कि आपका यहा रहना छिपा नहीं रहा अथवा हमारे पीछे आपका कोई आदमी यहा तक जरूर आया है। इसमें कोई शक नहीं कि आप लोग अपने काम में पक्के है कच्चे नहीं मगर ऐयारी के फन में मैंने आपको दबा लिया।

नकाब–यह दूसरी बात है तुम ऐयार हो और हम लोग ऐयारी नहीं जानते, मगर इतना होने पर भी तुम हमारे लिये दिन रात परेशान रहते हो और कुछ करते-धरते नहीं बन पडता। मगर भूतनाथ, हम तुमसे फिर भी कहते हैं कि हम लोगों के फेर में न पड़ो और कुछ दिन सब्र करो, फिर आप से आप तुम्हें हम लोगों का हाल मालूम हो जायगा। ताज्जुब है कि तुम इतने बडे ऐयार होकर जल्दबाजी के साथ ऐसी ओछी कार्रवाई करके खुदबखुद अपना काम बिगाडने की कोशिश करते हो ! उस दिन दर्बार में तुम देख चुके हो और जान भी चुके हो कि हम लोग तुम्हारी तरफदारी करते है तुम्हारे ऐबों को छिपाते हैं, और तुम्हें एक विचित्र ढग से माफी दिला कर खास महाराज का कृपापात्र बनाया चाहते है फिर क्या सबब है कि तुम हम लोगों का पीछा करके खामखाह हमारा क्रोध बढ़ा रहे हौ ?

भूत–(गुस्से को दबा कर नर्मी के साथ) नहीं-नहीं, आप इस बात का गुमान भी न कीजिए कि मै आप लोगों को दु ख दिया चाहता हू और .

नकाब–(बात काट के लापरवाही के साथ) दु ख देने की बात मै नहीं कहता क्योंकि तुम हम लोगों को दु ख दे ही नहीं सकते।

भूत–खैर न सही मगर मै अपने दिल की बात कहता हू कि किसी बुरे इरादे से मै आप लोगों का पीछा नही करता क्योंकि मुझे इस बात का निश्चय हो चुका है कि आप लोग मेरे सहायक है, मगर क्या करू अपनी स्त्री को आपके मकान में देखकर हैरान हू और मेरे दिल के अन्दर तरह-तरह की बातें पैदा हो रही है। आज मै इसी इरादे से आप लोगों को यहा ले आया था कि जिस तरह हो सके अपनी स्त्री का असल भेद मालूम कर लू।

नकाब–जिस तरह हो सके के क्या मानी ? हम कह चुके है कि तुम हमें किसी तरह की तकलीफ नही पहुचा सकते और न डरा-धमका कर ही कुछ पूछ सकते हो क्योंकि हम लोग बड़े ही जबर्दस्त हैं।

भूत–अब इतनी शेखी तो नही बघारिये, क्या आप ऐसे मजबूत है कि हमारा हाथ कोई काम कर ही नही सकता।

नकाब–हमारे कहने का मतलब यह नही हे बल्कि यह है कि ऐसा करने से तुम्हें कोई फायदा नहीं हो सकता, क्योंकि हमारे सगी साथी सभी कोई तुम्हारे भेद को जानते है मगर तुम्हें नुकसान पहुचाना नहीं चाहते। हमारी ही तरफ ध्यान देकर देख लो कि तुम्हारे हाथों दु खी होकर भी तुम्हें दु ख देना नहीं चाहते और जो कुछ तुम कर चुके हो उसे सह कर बैठे है।

भूत–हमने आपको क्या दु ख दिया है ?

नकाब–अगर हम इस बात का जवाब देंगे तो तुम औरों को तो नही, मगर हमें पहिचान जाओगे।

भूत--अगर आपको पहिचान भी जाऊगा तो क्या हर्ज है ? मै फिर प्रतिज्ञापूर्वक कहता हू कि जब तक आप स्वय अपना भेद न खोलेगे तब तक मैं अपने मुह से कुछ भी किसी के सामने न कहूगा आप इसका निश्चय रखिये।

नकाब--(कुछ सोचकर) मगर हमारा जवाब सुनकर तुम्हें गुस्सा चढ आवेगा और ताज्जुब नही कि खञ्जर का वार कर बैठो।

भूत-- नही-नहीं कदापि नहीं क्योंकि मुझे अब निश्चय हो गया कि आपका यहा आना छिपा नहीं है, अगर मैं आपके साथ कोई बुरा बर्ताव करूगा तो किसी लायक न रहूगा।

नकाब--हा ठीक है और बेशक बात भी ऐसी ही है (फिर कुछ सोचकर) अच्छा तो अब तुम्हारी उस बात का जवाब देते है सुनो और अपने कलेजे को अच्छी तरह सम्हालो।

भूत--कहिये मै हर तरह से सुनने के लिए तैयार हू।

नकाब--उस पीतल वाली सन्दूकडी में जिसके खुलने से तुम डरते हो जो कुछ है वह हमारे ही शरीर का खून है उसे तुम हमारे ही सामने से उठा ले गये थे और हमारा ही नाम 'दलीपशाह है।

यह एक ऐसी बात थी कि जिसके सुनने की उम्मीद भूतनाथ को नहीं हो सकती थी और न भूतनाथ में इतनी ताकत थी कि ये बातें सुन कर भी अपने का सम्हाले रहता उसका चेहरा एक दम जर्द पड गया कलेजा धड-कने लगा हाथ पैर में कपकपी होने लगी और वह सकते की सी हालत में ताज्जुब के साथ नकाबपोश के चेहरे पर गौर करने लगा।

नकाब--तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास हुआ या नही !

भूत--नहीं तुम दलीपशाह कदापि नहीं हो सकते, यद्यपि मैंने दलीपशाह की सूरत नहीं देखी है मगर मै उसके पहिचानने में गलती नहीं कर सकता और न इसी बात की उम्मीद हो सकती है कि दलीपशाह मुझे माफ कर देगा या मेरे साथ दोस्ती का बर्ताव करेगा।

नकाब--तो मुझे दलीपशाह होने के लिए कुछ और भी सबूत देना पडेगा और उस भयानक रात की ओर इशारा करना पडेगा जिस रात को तुमने वह कार्रवाई की थी, जिस रात को घटा-टोपअधेरी छाई हुई थी, बादल गरज रहे थे बार बार बिजली चमक-चमक कर औरतों के कलेजों को दहला रही थी, बल्कि उसी समय एक दफे बिजली तेजी के साथ चमक कर पास ही वाले खजूर के पेड पर गिरी थी, और तुम स्याह कम्बल की घोंघी लगाए आम की बारी में घुस कर यकायक गायब हो गये थे। कहो कुछ और भी परिचय दूँ या बस !

भूत--(कापती हुई आवाज में) बस-बस मैं ऐसी बातें सुनना नहीं चाहता (कुछ रुक कर) मगर मेरा दिल यही कह रहा है कि तुम दलीपशाह नहीं हो।

नकाब--हॉ ! तब तो मुझे कुछ और भी कहना पडेगा। जिस समय तुम घर के अन्दर घुसे थे तुम्हारे साथ में स्याह कपडे का एक बहुत बडा लिफाफा था जब मैंने तुम पर खजर का वार किया तब वह लिफाफा गिर पडा और मैंने उठा लिया जो अभी तक मेरे पास मौजूद है, अगर तुम चाहो तो मै दिखा सकता हू !

भूत--(जिसका बदन डर के मारे काँप रहा था) बस बस मैं तुम्हें कह चुका हू और फिर चाहता हू कि ऐसी बातें सुना नहींचाहता और न इसके सुनने से मुझे विश्वास ही हो सकता है कि तुम दलीपशाह हो। मुझ पर दया करो और अपनी चलती फिरती जुबान रोको !

नकाब--अगर विश्वास नहीं हो सकता तो मै कुछ और भी कहूगा और अगर तुम न सुनोगे तो अपने साथी को सुनाऊगा। (अपने साथी नकाबपोश की तरफ देख के) मैं उस समय अपनी चारपाई के पास बैठा हुआ लिख रहा था जब यह भूतनाथ मेरे सामने आकर खडा हो गया। कम्बल की घोंघी एक क्षण के लिये इसके आगे की तरफ से हट गई थी और इसके कपडे पर पड़े हुए खून के छींटे दिखाई दे रहे थे। यद्यपि मेरी तरह इसके चेहरे पर भी नकाब पड़ी हुई थी मगर मै खूब समझता था कि यह भूतनाथ है। मैं उठ खड़ा हुआ और फुरती के साथ इसके चेहरे पर से नकाब हटा कर इसकी सूरत देख ली। उस समय इसके चेहरे पर भी खून के छींटे पडे हुए दिखाई दिये। भूतनाथ ने मुझे डॉट कर कहा कि 'तुम हट जाओ और मुझे अपना काम करने दो । तब तक मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि यह मेरे पास क्यों आया है और क्या चाहता है। जब मैंने पूछा कि तुम क्या किया चाहते हो और मैं यहा से क्यों हट जाऊ' तब इसने मुझ पर खञ्जर का वार किया क्योंकि यह उस समय बिल्कुल पागल हो रहा था और मालूम होता था कि इस समय अपने पराये को पहिचान नहीं सकता

भूत--(बात काटकर) ओफ, बस करो वास्तव में उस समय मुझमें अपने पराये को पहिचानने की ताकत न थी, मै अपनी गरज में मतवाला और साथ ही इसके अन्धा भी हो रहा था !

नकाब–हा-हा सो तो मै खुद ही कह रहा हू क्योंकि तुमने उस समय अपने प्यारे लडके को कुछ भी नहीं पहिचाना और रुपये की लालच ने तुम्हें मायारानी के तिलिस्मी दारोगा का हुक्म मानने पर मजबूर किया। (अपने साथी नकाबपोश की तरफ देखकर) उस समय इसकी स्त्री अर्थात् कमला की मा इससे रज होकर मेरे घर में आई और छिपी हुई थी और जिस चारपाई के पास मै बैठा हुआ लिख रहा था उसी पर उसका छोटा बच्चा अर्थात् कमला का छोटा भाई सो रहा था, उसकी मा अन्दर के दालान में भोजन कर रही थी और उसके पास उसकी बहिन अर्थात् भूतनाथ की साली भी बैठी हुई अपने दु ख दर्द की कहानी के साथ ही इसकी शिकायत भी कर रही थी, उसका छोटा बच्चा गोद में था मगर भूतनाथ

भूत–(बात काटता हुआ) ओफ, ओफ ! बस करो मै सुनना नहीं चाहता। तु तु तु तुम में

इतना कहता हुआ भूतनाथ पागलों की तरह इधर-उधर घूमने लगा और फिर एक चक्कर खाकर जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गया।

चौदहवाँ बयान

भूतनाथ के बेहोश हो जाने पर दोनों नकाबपोशों ने भूतनाथ के साथियों में से एक को पानी लाने के लिए कहा और जब वह पानी ले आया तो उस नकाबपाश ने जिसने अपने को दलीपशाह बताया था अपने हाथ से भूतनाथ को होश में लाने का उद्योग किया। थोडी ही देर में भूतनाथ चैतन्य हो गया और नकाबपोश की तरफ देख कर बोला "मुझसे बडी भारी भूल हुई जो आप दोनों को फसा कर यहॉ ले आया ! आज मेरी हिम्मत बिल्कुल टूट गई और मुझे निश्चय हो गया कि अब मेरी मुराद पूरी नहीं हो सकती और मुझे लाचार होकर अपनी जान दे देनी पडेगी।'

नकाब–नहीं-नहीं भूतनाथ तुम ऐसा मत सोचो, देखो हम कह चुके है और तुम्हें मालूम भी हो चुका है कि हम लोग तुम्हारे ऐबों को खोला नहीं चाहते बल्कि राजा बीरेन्द्रसिह से तुम्हें माफी दिलाने का बन्दोबस्त कर रहे है। फिर तुम इस तरह हताश क्यों होते हो ? होश करो और अपने को सम्हालो।

भूत–ठीक है, मुझे इस बात की आशा हो चली थी कि मेरे ऐब छिपे रह जायगे और मैं इसका बन्दोबस्त भी कर चुका था कि वह पीतल वाली सन्दूकडी खोली न जाय मगर अब वह उम्मीद कायम नहीं रह सकती क्योंकि मै अपने दुश्मन को अपने सामने मौजूद पाता हू।

नकाब–बडे ताज्जुब की बात है कि दर्बार में हम लोगों की कैफियत देख सुनकर भी तुम हमें अपना दुश्मन समझते हो ! यदि तुम्हें मेरी बातों का विश्वास न हो तो मैं तुम्हें इजाजत देता हू कि खुशी से मेरा सिर काट कर पूरी दिलजमई कर लो और अपना शक भी मिटा लो। तब तो तुम्हें अपने भेदों के खुलने का भय न रहेगा ?

भूत– (ताज्जुब से नकाबपोश की सूरत देख कर) दलीपशाह वास्तव में तुम बडे ही दिलावर शेर, मर्द रहमदिल और नेक आदमी हो। क्या सचमुच तुम मेरे कसूरों को माफ करते हो ?

नकाब–हॉ हॉ मै सच कहता हू कि मैंने तुम्हारे कसूरों को माफ कर दिया बल्कि दो रईसों के सामने इस बात की कसम खा चुका हू।

भूत–वे दोनों कौन है ?

नकाब–जिनके कब्जे में इस समय हम लोग है और जो नित्य महाराज साहब के दर्बार में जाया करते है।

भूत–क्या राजा साहब के दर्बार में जाने वाले नकाबपोश कोई दूसरे है आप नहीं या उस दिन दर्बार में आप नहीं थे जिस दिन आपकी सूरत देख कर जैपाल घबडाया था ?

नकाब–हा बेशक वे नकाबपोश दूसरे है और समय-समय पर नकाब डालने के अतिरिक्त सूरतें भी बदल कर जाया करते है। उस दिन वे हमारी सूरत बन कर दर्बार में गए थे।

भूत–वे दोनों कौन है ?

नकाब–यही तो एक बात है जिसे हम लोग खोल नहीं सकते, मगर तुम घबडाते क्यों हो ? जिस दिन उनकी असली सूरत देखोगे खुश हो जाओगे। तुम ही नहीं बल्कि कुल दर्बारियों को और महाराजा साहब को भी खुशी होगी क्योंकि वे दोनों नकाबपोश कोई साधारण व्यक्ति नहीं है।

भूत–मेरे इस भेद को वे दोनों जानते है या नहीं ?

नकाब–फिर तुम उसी तरह की बातें पूछने लगे।

भूत–अच्छा अब न पूछूगा। मगर अन्दाज से मालूम होता है कि जब आप उनके सामने भेद छिपाने की कसम खा चुके हैं तो वे इस भेद को जानते जरूर होंगे। खैर जब आप कहते ही हैं कि मेरा भेद छिपा रह जायगा तो मुझे घबराना न चाहिए। मगर मै फिर यही कहूगा कि आप दलीपशाह नहीं है।

नकाब–(खिल-खिला कर हॅसने के बाद) तब तो फिर मुझे कुछ और कहना पडेगा। वाह, तुम्हारी स्त्री बडी ही नेक थी, जो कुछ तुमने उसके सामने किया

भूत–(नकाबपोश के मुह पर हाथ रखकर) बस बस बस, मै कुछ भी सुना नहीं चाहता, यह कैसी माफी है कि आप अपनी जुबान नहीं रोकते !

इतने ही में पत्थरों की आड में से एक आदमी निकल कर बाहर आया और यह कहता हुआ भूतनाथ के सामने खड़ा हो गया, 'तुम उन्हें भले ही रोक दो मगर मै उन बातों की याद दिलाए बिना नहीं रह सकता !"

हम नहीं कह सकते कि इस नए आदमी को यहा आए कितनी देर हुई या यह कब से पत्थरों की आड में छिपा हुआ इन दोनों की बातें सुन रहा था, मगर भूतनाथ उसे यकायक अपने सामने देखकर चौंक पडा और घबराहट तथा परेशानी के साथ उसकी सूरत देखने लगा। यह देख उस आदमी ने जान बूझ कर रोशनी के सामने अपनी सूरत कर दी जिसमें पहिचानने के लिए भूतनाथ को तकलीफ न करनी पडे।

यह वही आदमी था जिसे भूतनाथ ने नकाबपोशों के मकान में सूराख के अन्दर से झाक कर देखा था और जिसने नकाबपोशों के सामने एक बड़ी सी तस्वीर पेश करके कहा था, 'कृपानाथ, बस मै इसी का दावा भूतनाथ पर करूँगा'।

इस आदमी को देखकर भूतनाथ पहिले से भी ज्याद घबडा गया। उसके बदन का खून बर्फ की तरह जम गया और उसमें हाथ पैर हिलाने की ताकत बिल्कुल न रही। उस आदमी ने पुन कडककर भूतनाथ से कहा,"ये नकाबपोश साहब तुम्हारी बात मान कर चाहे चुप रह जाय मगर मै उन बातों को अच्छी तरह याद दिलाए बिना न रहूगा जिसे सुनने की ताकत तुममें नहीं है। अगर तुम इनको दलीपशाह नहीं मानते तो मुझे दलीपशाह मानने में तुम्हें कोई उज्र भी न होगा।

भूतनाथ यद्यपि आश्चर्य घटनाओं का शिकार हो रहा था और एक तौर पर खौफ तरद्दुद परेशानी और ना उम्मीद ने उसे चारों तरफ से आकर घेर लिया था मगर फिर भी उसने कोशिश करके अपने होश हवास दुरुस्त किये और उस नए आये दलीपशाह की तरफ देखकर कहा, "बहुत खासे ! एक दलीपशाह ने तो परेशान कर ही रक्खा था अब आप दूसरे दलीपशाह भी आ पहुचे थोडी देर में कोई तीसरे दलीपशाह भी आ जायगे, फिर मैं काहे को किसी से दो बात कर सकूगा। (पुराने दलीपशाह की तरफ देखकर) अब बताइये दलीपशाह आप हैं या ये ?'

पुराना दलीप–तुम इतने हीमें घबडा गये! हमारे यहा जितने नकाबपोश हैं सभी अपना नाम दलीपशाह बताने के लिए तैयार होंगे मगर तुम्हें अपनी अक्ल से पहिचानना चाहिये कि वास्तव में दलीपशाह कौन है।

भूत–इस कहने का मतलब तो यही है कि आप लोग सच नहीं बोलते ?

पुराना दलीप–जो बातें हमने तुमसे कही क्या वे झूठ हैं ?

नया दलीप–या मै जो कुछ कहूगा वह झूठ होगा ! अच्छा सुनो मै एक दिन का जिक्र करता हू जब तुम ठीक दोपहर के समय उसी पीतल वाली सन्दूकडी को बगल में छिपाये रोहतासगढ की तरफ भागे जा रहे थे। जब तुम्हें प्यास लगी तब तुम एक ऊचे जगत वाले कूए पर पानी पीने के लिए ठहर गये जिस पर एक पुराने नीम के पेड़ की सुन्दर छाया पड़ रही थी। कूए की जगत में नीचे की तरफ एक खुली कोठरी थी और उसमें एक मुसाफिर गर्मी की तकलीफ मिटाने की नीयत से लेटा हुआ तुम्हारे ही बारे में तरह-तरह की बातें सोच रहा था। तुम्हें उस आदमी के वहा मौजूद रहने का गुमान भी न था मगर उसने तुम्हें कूए पर जाते हुए देख लिया, अस्तु वह इस फिक्र में पड़ गया कि तुम्हारी छोटी सी गठरी में क्या चीज है इसे मालूम करे और अगर उसमें कोई चीज उसके मतलब की हो तो उसे निकाल ले। उस समय उस आदमी की सूरत ऐसी न थी कि तुम उसे पहिचान सकते बल्कि वह ठीक एक देहाती पडित की सूरत में था क्योंकि वह वास्तव में एक ऐयार था, अस्तु वह हाथ में लोटा लिए हुए कोठरी के बाहर निकला और उस ठिकाने गया जहा तुम कूए में झुककर पानी खींच रहे थे। तुम्हें इस बात का गुमान भी न था कि वह तुम्हारे साथ दगा करेगा मगर उसने पीछे से तुम्हें ऐसा धक्का दिया कि तुम कूए के अन्दर जा रहे और उसने तुम्हारे ऐयारी के बटुए पर कब्जा करके जो अन्दर था उसे अच्छी तरह देख और समझ लिया बल्कि कुछ ले भी लिया। क्या तुम्हें आज तक मालूम भी हुआ कि वह कौन था।

भूत–(ताज्जुब से) नहीं मैं अभी तक न जान सका कि वह कौन था मगर इन बातों केकहनेसे तुम्हारा मतलब ही क्या है ?

नया दलीप–मतलब यही है कि तुम जान जाओ कि इस समय वह आदमी तुम्हारे सामने खड़ा है।

भूत–(क्रोध से खजर निकाल कर) क्या वह तुम ही थे ?

नया दलीप–(खजरका जवाब खजर ही से देने के लिए तैयार होकर) बेशक मैं ही था और मैंने तुम्हारे बटुए में क्या देखा सो भी इस समय बयान करूगा।

पहला दलीप–(भूतनाथ को डपटकर) बस खबरदार होश में आओ और अपनी करतूतों पर ध्यान दो। हमने पहिले ही कह दिया था तुम क्रोध में आकर अपने को बर्बाद कर दोगे। बेशक तुम बर्बाद हो जाओगे और कौडी काम के न रहोगे, साथ ही इसके यह भी समझ रखना कि तुम दलीपशाह का कुछ नहीं बिगाड सकते और न उसे तुम्हारे तिलिस्मी खजर की परवाह है।

भूत–मै आपसे किसी तरह तकरार नहीं करता मगर इसको सजा दिये बिना भी न रहूगा क्योंकिइसने मेरे साथ दगा करके मुझे बडा नुकसान पहुचाया है और यही शख्स है जो मुझ पर दावा करने वाला है, अस्तु हमारे इसके इसी जगह सफाई हो जाय तो बेहतर है।

पहिला दलीप–खैर जब तुम्हारी बदकिस्मती आ ही गई है तो हम कुछ नहीं कह सकते तुम लडके देख लो और जो कुछ बदा है भोगो मगर साथ ही इसके यह भी सोच लो तुम्हारे तरह इसके और मेरे हाथ में भी तिलिस्मी खजरों की चमक में तुम्हारे आदमी तुम्हें कुछ भी मदद नहीं पहुचा सकते।

भूत–(कुछ सोचकर और फिर रुक के) तो क्या आप इसकी मदद करेंगे ?

पहिला दलीप–बेशक !

भूत–आप तो मेरे सहायक है !!

पहिला दलीप–मगर इतने नहीं कि अपने साथियों को नुकसान पहुचावें।

भूत–आखिर ये जब मुझे नुकसान पहुचाने के लिए तैयार है तो क्या किया जाय ?

पहिला दलीप–इनसे भी माफी की उम्मीद करो क्योंकि हम लोगों के सर्दार तुम्हारे पक्षपाती हैं।

भूत–(खजर म्यान में रखकर) अच्छा अब हम आपकी मेहरबानी पर भरोसा करते हैं, जो चाहे कीजिये।

पहिला दलीप–(नये दलीप से) आओ जी मेरे पास बैठ जाओ।

नया दलीप–मैं तो इससे लड़ता ही नहीं मुझे क्या कहते हो। लो मै तुम्हारे पास बैठ जाता हू, मगर यह तो वताओ कि अब इसी भूतनाथ के कब्जे में पडे रहोगे या यहा से चलोगे भी ?

पहिला दलीप–(भूतनाथ से) कहो अब मेरे साथ क्या सलूक किया चाहते हो ? तुम्हें मुनासिब तो यही है कि हमें कैद करके दर्बार में ले चलो।

भूत–नहीं मुझमें इतनी हिम्मत नहीं बल्कि आप मुझे माफी की उम्मीद दिलाए तो मै यहा से चला जाऊ।

पहिला दलीप–हा तुम माफी की उम्मीद कर सकते हो मगर इस शर्त पर कि अब हम लोगों का पीछा न करोगे !

भूत–नहीं अब ऐसा न करूगा। चलिए मैं आपको आपके ठिकाने पहुचा दूँ।

नया दलीप–हमें अपना रास्ता मालूम है किसी मदद की जरुरत नहीं।

इतना कहकर नया दलीपशाह उठ खडा हुआ और साथ ही वे दोनों नकाबपोश भी जिन्हें भूतनाथ बेहोश करके लाया था उठे और अपने मकान की तरफ चल पडे।

पन्द्रहवां बयान

महाराज सुरेन्द्रसिह के दर्बार में दोनों नकाबपोश दूसरे दिन नहीं आये, वल्कि तीसरे दिन आये आज्ञानुसार बैठ जाने पर अपनी गैरहाजिरी का सबब एक नकाबपोश ने इस तरह बयान किया –

भैरोंसिह और तारासिह को साथ लेकर यद्यपि हम लोग इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह के पास गये मगर रास्ते में कई तरह की तकलीफ हो जाने के कारण जुकाम (सर्दी) और बुखार के शिकार बन गये गले में दर्द और रेजिश के सबब साफ बोला नहीं जाता था बल्कि अभी तक आवाज साफ नहीं हुई इस लिए कुवर इन्द्रजीतसिह ने जोर देकर हम लोगों को रोक लिया और दो दिन अपने पास से हटने न दिया लाचार हम लोग हाजिर न हो सके बल्कि उन्होंन एक चीठी भी महाराज के नाम की दी है।'

यह कह के नकाबपोश ने एक चीठी जेब से निकाली और उठ कर महाराज के हाथ में दे दी। महाराज ने बडी

प्रसन्नता स वह चीठी जा खास इन्द्रजीतसिह के हाथ की लिखी हुई थी पढी और इसके वाद वारी-वारीसे सभों के हाथ में वह चीठी घूमी। उसमें यह लिखा हुआ था –

प्रणाम इत्यादि के वाद –

आप क आशीर्वाद स हम लोग प्रसन्न है। दोनों एयारों क न होने से जो तकलीफ थी अव वह भी जाती रही। रामसिह ओर लक्ष्मणसिह ने हम लोगों की वडी मदद की इसमें कोई सन्देह नहीं। हम लोग तिलिस्म का वहुत ज्यादे काम खत्म कर चुक है। आशा है कि आज क तीसरे दिन हम दोनों भाई आपकी सवा में उपस्थित हॉग और इसक वाद जो कुछ तिलिस्म का काम बचा हुआ हे उसे आपकी सेवा में रहकर ही पूरा करेंगे। हम दोनों की इच्छा हे कि तव तक आप केदिया का मुकदमा भी वन्द रक्खें क्योंकि उसके देखने और सुनने के लिए हम दोनों वेचैन हो रहे हैं। उपस्थित होने पर दोनों अपना अनूठा हाल भी अर्ज करेंग।'

इस चीठी को पढ कर और यह जान कर सभी प्रसन्न हुए कि अव कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह आया ही चाहते है इसी तरह इस उपन्यास के प्रेमी पाठक भी जान कर प्रसन्न हांगे कि अव यह उपन्यास भी शीघ्र ही समाप्त हुआ चाहता है। अस्तु कुछ देर तक खुशी के चर्चे होते रहे और इसक वाद पुन नकावपोशों स वातचीत होने लगी –

एक नकाबपोश–भूतनाथ लोटकर आया या नहीं ?

तेज–ताज्जुव हे कि अभी तक भूतनाथ नहीं आया। शायद आपके साथियों न उसे

नकावपोश–नहीं-नहीं हमारे साथी लोग उसे दु ख नहीं देंग मुझे तो विश्वास था कि भूतनाथ आ गया होगा क्योंकि वे दोनों नकावपोश लौट कर हमारे यहा पहुच गये जिन्हें भूतनाथ गिरफ्तार कर के ले गया था। मगर अव शक होता है कि भूतनाथ पुन किसी फेर में तो नहीं पड गया या उसे पुन हमारे किसी साथी को पकडने का शौक तो नहीं हुआ !

तेज–आपके साथी ने लौटकर अपना हाल तो कहा होगा ?

नकावपोश–जी हां, कुछ हाल कहा था जिससे मालूम हुआ कि उन दोनों को गिरफ्तार करके ले जान पर भूतनाथ को पछताना पडा।

तेज–क्या आप वता सकते है कि क्या-क्या हुआ ?

नकाव–वतासकते है मगर यह वात भूतनाथ को नापसन्द होगी क्योंकि भूतनाथ को उन लोगों ने उसके पुराने ऐबों को वता कर डरा दिया था और इसी सवव से वह उन नकावपोशों का कुछ बिगाड़ न सका। हा हम लोग उन दोनों नकावपोशों को अपने साथ यहा ले आये हैं यह सोचकर कि भूतनाथ यहा आ गया होगा अस्तु उनका मुकाविला हुजूर के सामने करा दिया जायगा।

तेज–हॉ ! वे दोनों नकाबपोश कहा हैं ?

नकावपोश–वाहर फाटक पर उन्हें छोड आया हू, किसी को हुक्म दिया जाय बुला लावे।

इशारा पाते ही एक चोवदार उन्हें वुलाने के लिए चला गया और उसी समय भूतनाथ भी दर्वार में हाजिर होता दिखाई दिया। कौतुक की निगाह से सभों ने भूतनाथ का देखा, भूतनाथ ने सभों को सलाम किया और आज्ञा पा देवीसिह के वगल में वैठ गया।

जिस समय भूतनाथ इस इमारत की ड्योढी पर आया था उसी समय उन दोनों नकावपोशों को फाटक पर टहलता हुआ दखकर चौक पडा था। यद्यपि उन दोनों के चेहरे नकाबसे खाली न थे मगर फिर भी भूतनाथ ने उन्हें पहिचान लिया कि ये दोनों वही नकावपोश हैं जिन्हें हम फॅसा ले गये थे। अपने धडकते कलेजे और परेशान दिमाग को लिए हुए भूतनाथ फाटक के अन्दर चला गया और दर्बार में हाजिर होकर उसने दोनों सर्दार नकावपोशों को देखा।

एक नकावपोश–कहो भूतनाथ अच्छे तो हो ?

भूत–हुजूर लोगों के एकवाल से जिन्दा हूँ मगर दिन-रात इसी सोच में पड़ा रहता हूँ कि प्रायश्चित करन या क्षमा मागन से ईश्वर भी अपने भक्तों के पापों को भुलाकर क्षमा कर देता है परन्तु मनुष्यों में वह वात क्यों नहीं पाई जाती !

नकाव–जो लोग ईश्वर के भक्त है और जो निर्गुण और सगुण सर्वशक्तिमान जगदीश्वर का भरोसा रखते हैं व जीव मात्र क साथ वैसा ही बर्ताव करते हैं जैसा ईश्वर चाहता है या जैसा कि हरि इच्छा समझी जाती है।

अगर तुमने सच्चे दिल से परमात्मा से छमा माग ली और अव तुम्हारी नीयत साफ है तो तुम्हें किसी तरह का दु ख नहीं मिल सकता अगर कुछ मिलता है तो इसका कारण तुम्हारे चित का विकार है। तुम्हारे चित्त में अभी तक शान्ति नहीं हुई और तुम एकाग्र होकर उचित कार्यो की तरफ ध्यान नहीं देते इसलिए तुम्हें सुख प्राप्त नहीं होता। अब हमारा कहना इतना ही है तुम शान्ति के स्वरूप वनो और ज्यादे खोज-वीन के फेर में न पडो। यदि तुम इस वात को मानोगे तो नि सन्देह अच्छे रहोगे और तुम्हें किसी तरह का कष्ट न होगा।

भूत–नि सन्देह आप उचित कहते है।

देवी–भूतनाथ तुम्हें यह सुनकर प्रसन्न होना चाहिए के दो ही तीन दिन में कुवर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह आने वाले हैं !

भूत–(ताज्जुव से) यह कैसे मालूम हुआ !

देवी–उनकी चीठी आई है।

भूत–कोन लाया है ?

देवी–(नकावपोशों की तरफ वताकर) ये ही लाये हैं।

भूत–क्या मै उस चीठी को देख सकता हूँ ?

देवी–अवश्य।

इतना कहकर देवीसिह ने कुँवर इन्द्रजीतसिह की चीठी भूतनाथ के हाथ में दे दी और भूतनाथ ने प्रसन्नता के साथ पढकर कहा अब सब बखडा तै हो जायगा !

जीत–(महाराज का इशारा पाकर भूतनाथ से) भूतनाथ तुम्हें महाराज की तरफ से किसी तरह का खौफ न करना चाहिये, क्योंकि महाराज आज्ञा दे चुके हैं कि तुम्हारे ऐबों पर ध्यान न देंगे और देवीसिह जिन्हें महाराज अपना अग समझते है, तुम्हें अपने भाई के बराबर मानते हैं। अच्छा यह बताओ कि तुम्हारे लौट आने में इतना विलम्ब क्यों हुआ क्योंकि जिन दो नकाबपोशों को तुम गिरफ्तार करके ले गए थे उन्हें अपने घर लौटे दो दिन हो गए !

भूतनाथ कुछ जवाब देना ही चाहता था कि वे दोनों नकाबपोश भी हाजिर हुए जिन्हें बुलाने के लिए चोबदार गया था। जब वे दोनों सभों को सलाम करके आज्ञानुसार बैठ गये तब भूतनाथ ने जवाब दिया –

भूत–(दोनों नकावपोशों की तरफ बता कर) जहा तक मैं ख्याल करता हू ये दोनों वे ही हैं जिन्हें मैं गिरफ्तार करके ले गया था। (नकाबपोशों से) क्यों साहबों ?

एक नकाबपोश–ठीक है मगर हम लोगों को ले जाकर तुमने क्या किया सो महाराज को मालूम नहीं है।

भूत–हम लोग एक साथ ही अपने अपने स्थान की तरफ रवाना हुए थे ये दोनों तो बेखटके अपने घर पर पहुच गए होंगे मगर मैं एक विचित्र तमाशे के फेर में पड गया था।

जीत–वह क्या ?

भूत–(कुछ सकोच के साथ) क्या कहू कहते शर्म मालूम होती है ?

देवी–ऐयारों को किसी घटना के कहने में शर्म न होनी चाहिये चाहे उन्हें अपनी दुर्गति का हाल ही क्यों न कहना पडे, और यहा कोई गैर शख्स भी बैठा हुआ नहीं है ये नकाबपोश साहब भी अपने ही है तुम खुद देख चुके हो कि कुअर इन्द्रजीतसिह ने इनके वारे में क्या लिखा है।

भूत–ठीक है मगर खैर जो होगा देखा जायगा, मैं बयान करता हू सुनिये। इन नकाबपोशों को बिदा करने बाद जिस समय मैं वहा से रवाना हुआ रात आधी से कुछ ज्यादा जा चुकी थी। जब मैं पिपलिया वाले जगल में पहुचा जो यहा से दो-ढाईकोस होगा तो गाने की मधुर आवाज मेरे कानों में पडी और मैं ताज्जुब से चारों तरफ गौर करने लगा। मालूम हुआ कि दाहिनी तरफ से आवाज आ रही है अस्तु मैं रास्ता छोड धीरे-धीरे दाहिनी तरफ चला और गौर से उस आवाज को सुनने लगा। जैसे-जैस आगे बढता था आवाज साफ होती जाती थी और यह जान पडता था कि मैं इस आवाज से अपरिचित नहीं बल्कि कई दफे सुन चुका हू, अस्तु उत्कण्ठा के साथ कदम बढा कर चलने लगा। कुछ और आगे जाने के बाद मालूम हुआ कि दो औरतें मिल कर बारी-बारी से गा रही है जिनमें से एक की आवाज पहिचानी हुई है।जब उस ठिकाने पहुच गया जहॉ से आवाज आ रही थी तो देखा कि एक बडे और पुराने पेड के ऊपर कई औरतें चढी हुई हैं जिनमें दो औरतें गा रही हैं। वहा बहुत अन्धकार हो रहा था इसलिए इस बात का पता नहीं लग सकता था कि वे औरतें कौन कैसी किस रग-ढग की है तथा उनका पहिरावा कैसा है।

मैं भले-बुरे का कुछ ख्याल न करके उस पेड के नीचे चला गया और खजर अपने हाथ में लेकर रोशनी के लिए उसका कब्जा दबाया। उसकी तेज रोशनी से सब तरफ उजाला हो गया और पेड पर चढी हुई वे औरतें साफ दिखाई देने लगीं। मैं उनकोपहिचानने की कोशिश कर ही रहा था कि यकायक उस पेड के चारों तरफ चक्र की तरह आग भभक उठी और तुरन्त ही बुझ गई। जैसे किसी ने बारूद्द की तकीर में आग दी हो और वह भक से उड जाने बाद केवल धूआ ही धूआं रह जाय ठीक वैसा ही मालूम हुआ। आग बुझ जाने के साथ ही ऐसा जहरीला और कडुआ धूआ फैला कि मेरी तबीयत घवडा गई और मैं समझ गया कि इसमें बेहोशी का असर जरूर है और मेरे साथ ऐयारी की गई। बहुत कोशिश की मगर मैं अपने को सम्हाल न सका और बेहोश होकर जमीन पर गिर पडा।

मै नहीं कह सकता कि बेहोश होने बाद मेरे साथ कैसा सलूक किया गया, हा जब मै होश में आया और मेरी आखें खुलीं तो मैने एक सुन्दर सजे हुए कमरे में अपने को हथकडी बेडी से मजबूर पाया। उस कमरे में रोशनी बखूबी हो रही थी और मेरे सामने साफ फर्श के ऊपर कई औरतें बैठी हुई थीं जिनमें मेरी औरत ऊची गद्दी पर बैठी हुई उन सभों की सर्दार मालूम पड़ती थी।

॥ बीसवा भाग समाप्त ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

इक्कीसवॉ भाग

पहिला बयान

भूतनाथ अपना हाल कहते-कहते कुछ देर के लिए रुक गया और इसके बाद एक लम्बी सॉस लेकर पुन यों कहने लगा —

भूत—मैं अपने को कैदियों की तरह और अपने सामने,अपनी ही स्त्री को सरदारी के ढग पर बैठे हुए देख कर एक दफे घबडा गया और सोचने लगा कि यह क्या मामला है? मेरी स्त्री मुझे सामन ऐसी अवस्था में देखे और सिवाय मुस्कुराने के कुछ न बोले ! अगर वह चाहती तो मुझे अपने पास गद्दी पर बैठा लेती क्योंकि इस कमरे में जितने दिखाई दे रहे हैं उन सभों की वह सर्दार मालूम पडती है इत्यादि बातों को सोचते-सोचते मुझे क्रोध चढ आया और मैंने लाल आँखों से उसकी तरफ देख कर कहा, ' क्या तू मेरी स्त्री वही रामदेई है जिसके लिए मैंने तरह-तरह के कष्ट उठाये और जो इस समय मुझे कैदियों की अवस्था में अपने सामने देख रही है ?

इसके जवाब में मेरी स्त्री ने कहा 'हॉ मै वही रामदेई हूँ जिसके लडके को तुम किसी जमाने में अपना होनहार लडका समझ कर चाहते और प्यार करते थे-मगर आज उसे दुश्मनी की निगाह से देख रहे हो मैं वही रामदेई हूँ जो तुम्हारे असली भेदों को न जानकर और तुम्हे नेक ईमानदार तथा सच्चा ऐयार समझ कर तुम्हारे फदे में फॅस गई थी मगर आज तुम्हारे असली भेदों का पता लग जाने के कारण डरती हुइ तुमसे अलग हुआ चाहती हूँ, मै वही रामदेई हूँ जिसे तुमने नकाबपोशों के मकान में देखा था, और मैं वही रामदेई हूँ जिसने उस दिन तुम्हें जगल में धोखा देकर बैरग वापस होने पर मजबूर किया था, मगर मै वह रामदेई नहीं हूँ जिसे तुम 'लामाघाटी में छोड़ आए हो।

मुझे उस औरत की बातों ने ताज्जुब में डाल दिया और मैं हैरानी के साथ उसका मुंह देखने लगा। अनूठी बात तो यह थी कि वह अपनी बातों में शुरू से तो रामदेई अथवा मेरी स्त्री बनती चली आई मगर आखीर में बोल बैठी कि 'मगर मै वह रामदेई नहीं हूँ जिसे तुम लामाघाटी में छोड आए हो'।"आखिर बहुत सोच-विचार कर मैंने पुन उससे कहा, "अगर तू वह रामदेई नही है जिसे मै लामाघाटी में छोड़ आया था तो तू मेरी स्त्री भी नहीं है।"

स्त्री—तो यह कौन कहता है कि मै तुम्हारी स्त्री हूँ।

मै—अभी इसके पहिले तूने क्या कहा था ?

स्त्री—(हसकर) मालूम होता है कि तुम अपने होश में नही हो।

इतना सुनते ही मुझे क्रोध चढ़ आया और मैं अपनी हथकडी बेड़ी तोडने का उद्योग करने लगा। यह हाल देखकर उस औरत को भी क्रोध आ गया और उसने अपनी एक सखी या लौडी की तरफ देखकर कुछ इशारा किया। वह लौंडी इशारा पाते ही उठी और उसी जगह आले पर से एक बोतल उठा लाई जिसमें किसी प्रकार का अर्क था। उस अर्क से चुल्लू भर उसने दो-तीन छींटे मेरे मुँह पर दिये जिसके सबब से मै बेहोश हो गया और मुझे तनोबदन की सुध न रही। मैं यह नहीं बता सकता कि इसके बाद कै घण्टे तक मैं उसके कब्जे में रहा परन्तु जब होश में आया तो मैने अपने को जगल में एक पेड के नीचे पाया। घण्टों तक ताज्जुब के साथ चारो तरफ देखता रहा, इसके बाद एक चश्मे के किनारे जाकर हाथ-मुँह धोने के बाद इस तरफ रवाना हुआ। बस यही सबब था कि मुझे हाजिर होने में देर हो गई।

भूतनाथ की बातें सुन कर सभों को ताज्जुब हुआ मगर वे दोनो नकाबपोश एकदम खिल-खिला कर हॅस पड़े और उनमें से एक ने भूतनाथ की तरफ देख कर कहा—

नकाब–भूतनाथ, नि सन्देह तुम धोखे में पड गये। उस औरत ने जा कुछ तुमसे कहा उसमें शायद ही दो-तीन बातें सच हों।

भूत–(ताज्जुब से) सो क्या ! उसने कौन सी बातें सच कही थीं कौन सी झूठ ?'

नकाब–सो मैं नहीं कह सकता मगर आशा है कि शीघ्र ही तुम्हें सच-झूठ का पता लग जायगा।

भूतनाथ ने बहुत कुछ चाहा, मगर नकाबपोश ने उसके मतलब की कोई बात न कही। थोडी देर तक इधर-उधर की बातें करके नकाबपोश बिदा हुए और जाती समय एक सवाल के जवाब में कह गये कि 'आप लोग दो दिन और सब्र करें, इसके बाद कुँअर इन्दजीतसिह और आनन्दसिह के सामने ही सब भेदों का खुलना अच्छा होगा क्योंकि उन्हें इन बातों के जानने का बडा शौक है'।

दूसरा बयान

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है। महाराज सुरेन्द्रसिह अपने कमरे में पलग पर लेटे हुए जीतसिह सेधीरे-धीरे कुछ बातें कर रहे हैं जो चारपाई के नीचे उनके पास ही बैठे है। केवल जीतसिह ही नहीं बल्कि उनके पास वे दोनों नकाबपोश भी बैठे हुए हैं जो दर्बार में आकर लोगों को ताज्जुब में डाला करते हैं और जिनका नाम रामसिह और लक्ष्मणसिह है। हम नहीं कह सकते कि ये लोग कब से इस कमरे में बैठे हुए है या इसके पहिले इन लोगों में क्या-क्या बातें हो चुकी हैं, मगर इस समय तो ये लोग कई ऐसे मामलों पर बातचीत कर रहे हैं जिनका पूरा होना बहुत जरूरी समझा जाता है।

बात करते-करते एक दफे कुछ रुक कर महाराज सुरेन्द्रसिह ने जीतसिह से कहा इस राय में गोपालसिह का भी शरीक होना उचित जान पडता है, किसी को भेज कर उन्हें बुलाना चाहिए।'

'जो आज्ञा कहकर. जीतसिह उठे और कमरे के बाहर जाकर राजा गोपालसिह को बुलाने के लिए चोबदार को हुक्म देने के बाद पुन अपने ठिकाने पर बैठकर बातचीत करन लगे।

जीतसिह–इसमें तो कोई शक नहीं कि भूतनाथ आदमी चालाक और पूरे दर्जे का ऐयार है मगर उसके दुश्मन लोग उस पर बेतरह टूट पडे है और चाहते है कि जिस तरह बने उसे बर्बाद कर दें और इसीलिए उसके पुराने ऐबों को उधेड कर उसे तरह-तरह की तकलीफें दे रहे हैं।

सुरेन्द–ठीक है मगर हमारे साथ भूतनाथ ने सिवाय एक दफे चोरी करने के और कौन सी बुराई की है जिसके लिए उसे हम सजा दें या बुरा कहें ?

जीत–कुछ भी नहीं और वह चोरी भी उसने किसी बुरी नीयत से नहीं की थी इस विषय में नानक ने जो कुछ कहा था महाराज सुन ही चुके हैं।

सुरेन्द–हॉ मुझे याद है, और उसने हम लोगों पर अहसान भी कई किये है बल्कि यों कहना चाहिए कि उसी की बदौलत कमलिमी किशोरी लक्ष्मीदेवी और इन्दिरा वगैरह की जानें बचीं और गोपालसिह को भी उसकी मदद से बहुत फायदा पहुँचा है। इन्हीं सब बातों को सोच के तो देवीसिह ने उसे अपना दोस्त बना लिया था मगर साथ ही इसके इस बात को भी समझ रखना चाहिए कि जब तक भूतनाथ कामामला तै नहीं हो जायगा तब तक लोग उसके ऐबों को खोद-खोद कर निकाला ही करेंगे और तरह-तरह की बातें गढते रहेंगे।

एक नकाबपोश–सो तो ठीक ही है मगर सच पूछिए तो भूतनाथ का मुकदमा ही कैसा और मामला ही क्या ? मुकदमा तो असल में नकली बलभदसिह का है जिसने इतना बडा कसूर करने पर भी भूतनाथ पर इल्जाम लगाया है। उस पीतल वाली सन्दूकडी से तो हम लोगों को कोई मतलब ही नहीं हॉ बाकी रह गया चीठियों वाला मुट्ठा जिसके पढने से भूतनाथ लक्ष्मीदेवी का कसूरवार मालूम होता है सो उसका जवाब भूतनाथ काफी तौर पर दे देगा और साबित कर देगा कि वचीठियॉ उसके हाथ की लिखी हुई होने पर भी वह कसूरवार नहीं है और वास्तव में वह बलभद्रसिह का दोस्त है दुश्मन नहीं।

सुरेन्द्र–(लम्बी सॉस लेकर) ओफ ओह इस थोडे से जमाने में कैसे-कैसे उलटफेर हो गए ! बेचारे गोपालसिह के साथ कैसी धोखेबाजियॉ की गई ! इन बातों पर जब हमारा ध्यान जाता है तो मारे क्रोध के बुरा हाल हो जाता है।

जीत–ठीक है मगर खैर अब इन बातों पर क्राध करने की जगह नहीं रही क्योंकि जो कुछ होना था हो गया। ईश्वर की कृपा से गोपालसिह भी मौत की तकलीफ उठा कर बच गए और अब हर तरह से प्रसन्न है, इसके अतिरिक्त उनके दुश्मन लोग भी गिरफ्तार होकर अपने पजे में आये हुए है।

सुरेन्द्र–बेशक ऐसा ही है मगर हमें कोई ऐसी सजा नहीं सूझती जो उनके दुश्मनों को देकर कलेजा ठंडा किया जाय और समझा जाय कि अब गोपालसिंह के साथ बुराई करने का बदला ले लिया गया।

महाराज सुरेन्द्रसिंह इतना कह ही रहे थे कि राजा गोपालसिंह कमरे के अन्दर आते हुए दिखाई पड़े क्योंकि उनका डेरा इस कमरे से बहुत दूर न था।

राजा गोपालसिंह सलाम करके पलंग के पास बैठ गए और इसके बाद दोनों नकाबपोशों से भी साहब सलामत करके मुस्कुराते हुए बोले–

आप लोग कब से बैठे हैं ?"

एक नकाबपोश–हम लोगों को आये बहुत देर हो गई।

सुरेन्द्र–ये बेचारे कई घण्टे से बैठे हुए हमारी तबीयत बहला रहे है और कई जरूरी बातों पर विचार कर रहे हैं।

गोपाल–वे कौन सी बातें है ?

सुरेन्द्र–यही लड़कों की शादी भूतनाथ का फैसला कैदियों का मुकदमा, कमलिनी और लाडिली के साथ उचित बर्ताव इत्यादि विषयों पर बातचीत हो रही है और सोच रहे है कि किस तरह क्या किया जाय तथा पहिले क्या काम हो ?

गोपाल–इस समय मैं भी इसी उलझन में पड़ा हुआ था। मैं सोया नहीं था बल्कि जागता हुआ इन्हीं बातों को सोच रहा था कि आपका सन्देशा पहुंचा और तुरन्त उठकर इस तरफ चला आया। (नकाबपोशों की तरफ देखकर) आप लोग तो अब हमारे घर के व्यक्ति हो रहे है अस्तु ऐसे विचारों में आप लोगों को शरीक होना ही चाहिए।

सुरेन्द्र–जीतसिंह कहते हैं कि कैदियों का मुकदमा होने और उनको सजा देने के पहले ही दोनों लड़कों की शादी हो जानी चाहिए जिसमें कैदी लोग भी इस उत्सव को देखकर अपना जी जला लें और समझ लें कि उनकी बेईमानी हरामजदगी और दुश्मनी का नतीजा क्या निकला। साथ ही इसके एक बात का फायदा और भी होगा, अर्थात् कैदियों के पक्षपाती लोग भी जो ताज्जुब नहीं कि इस समय भी कहीं इधर-उधर छिपे मन के लड्डू बना रहे हों समझ जायेंगे कि अब उन्हें दुश्मनी करने की कोई जरूरत नहीं रही और न ऐसा करने से कोई फायदा ही है।

गोपाल–ठीक है, जब तक दोनों कुमारों की शादी न हो जायगी तब तक तरह-तरह के खुटके बने ही रहेंगे। शादी हो जाने के बाद मेहमानों के सामने ही कैदियों को जहन्नुम में पहुंचाकर दुनिया को दिखा दिया जायगा कि बुरे कर्मों का नतीजा यह होता है।

सुरेन्द्र–खैर तो आपकी भी यही राय होती है ?

गोपाल–बेशक !

सुरेन्द्र–(जीतसिंह की तरफ देखकर) तो अब हमें और किसी से राय मिलाने की जरूरत नहीं रही आप हर तरह का बन्दोबस्त शुरू कर दें और जहाँ-जहाँ न्यौता भेजना हो भेजवा दें।

जीत–जो आज्ञा। अच्छा अब भूतनाथ के विषय में कुछ तै हो जाना चाहिए।

गोपाल–हम लोगों में से कौन सा आदमी ऐसा है जो भूतनाथ के अहसान के बोझ से दबा हुआ न हो ? बाकी रही यह बात कि जैपाल ने भूतनाथ के हाथ की चीठियां कमलिनी और लक्ष्मीदेवी को दिखाकर भूतनाथ को दोषी ठहराया है सो वास्तव में भूतनाथ दोषी नहीं है और इस बात का सबूत भी वह दे देगा।

सुरेन्द्र–हाँ तुमको तो इन सब बातों का सच्चा-हाल जरूर ही मालूम होगा क्योंकि तुम्हीं ने कृष्णाजिन्न बनकर उसकी सहायता की थी अगर वास्तव में वह दोषी होता तो तुम ऐसा करते ही क्यों ?

गोपाल–बेशक यही बात है इन्दिरा का किस्सा आपको मालूम ही है क्योंकि मैंने आपको लिख भेजा था और आशा है कि आपको वे बातें याद होंगी ?

सुरेन्द्र–हाँ मुझे बखूबी याद है बेशक उस जमाने में भूतनाथ ने तुम लोगों की बड़ी सहायता की थी बल्कि इसी सबब से उससे और दरोगा से दुश्मनी हो गई थी, अस्तु कब हो सकता है कि भूतनाथ लक्ष्मीदेवी के साथ दगा करता जो कि दरोगा से दोस्ती और बलभद्रसिंह से दुश्मनी किए बिना हो ही नहीं सकता था ! लेकिन आखिर यह बात क्या है, वे चीठियाँ भूतनाथ की लिखी हैं या नहीं ? फिर इस जगह एक बात का और भी खयाल होता है जो यह कि उस मुट्ठे में दोनों तरफ की चीठियाँ मिली हुई हैं अर्थात् जो रघुबरसिंह ने भेजी, वे भी है और जो रघुबर के नाम आई थीं वे भी हैं।

गोपाल–जी हाँ और यह बात भी बहुत से शकों को दूर करती है। असल यह है कि वे सब चीठियाँ भूतनाथ के हाथ की नकल की हुई हैं ! वह रघुबरसिंह जो दारोगा का दोस्त था और जमानिया में रहता था उसी की यह सब कार्रवाई है और यह सब विष उसी के बोये हुए हैं, वह बहुत जगह इशारे के तौर पर अपना नाम 'भूत' लिखा करता था। आपने इन्दिरा के हाल में पढ़ा होगा कि भूतनाथ बेनीसिंह बन कर बहुत दिनों तक रघुबरसिंह के यहाँ रह चुका है और उन दिनों

यही भूतनाथ हेलासिह के यहाँ रघुबरसिह का खत लेकर आया-जाया करता था

सुरेन्द–ठीक है मुझे याद है।

गोपाल–बस ये सब चीठियाँ उन्हीं चीठियों की नकलें हैं। भूतनाथ ने मौके पर दुश्मनों को कायल करने के लिए उन चीठियों की नकल कर ली थी और कुछ उनके घर से भी चुराई थीं। बस भूतनाथ की गलती या बेईमानी जो कुछ समझिये यही हुई कि उस समय कुछ नगदी फायदे के लिए उसने इस मामले को दबा रक्खा और उसी वक्त मुझ पर प्रकट न कर दिया। रिश्वत लेकर दारोगा को छोड देना और कलमदान के भेद को छिपा रखना भी भूतनाथ के ऊपर धब्बा लगाता है क्योंकि अगर ऐसा न होता तो मुझे यह बुरा दिन देखना नसीब न होता और इन्हीं भूलों पर आज भूतनाथ पछताता और अफसोस करता है। मगर आखीर में भूतनाथ ने इन बातों का बदला भी ऐसा अदा किया कि वे सब कसूर माफ कर देने के लायक हो गए।

सुरेन्द–उस कलमदान में क्या चीज थी ?

गोपाल–उस कलमदान को दारोगा की उस गुप्त सभा का दफ्तर समझिए। उन सभासदों के नाम और सभा के मुख्य-मुख्य भेद उसी में बन्द रहते थे इसके अतिरिक्त दामोदरसिह ने जो वसीयतनामा इन्दिरा के नाम लिखा था वह भी उसी में बन्द था।

सुरेन्द–ठीक है ठीक है इन्दिरा के किस्से में यह बात भी तुमने लिखी थी, हमें याद आया। मगर इसमें भी कोई शक नहीं कि उन दिनों लालच में पड़ कर भूतनाथ ने बहुत बुरा किया और उसी सबब से तुम लोगों को तकलीफ उठानी पडी।

एक नकाबपोश–शायद भूतनाथ को इस बात की खबर न थी कि इस लालच का नतीजा कहाँ तक बुरा निकलेगा।

सुरेन्द–जो हो मगर उस समय की बातों पर ध्यान देने से यह भी कहना पडता है कि उन दिनों भूतनाथ एक हाथ से भलाई कर रहा था और दूसरे हाथ से बुराई।

गोपाल–ठीक है बेशक ऐसी ही बात थी।

सुरेन्द–(जीतसिह की तरफ देख के) भूतनाथ और इन्ददेव को भी इसी समय यहाँ बुला कर इस मामले को तै ही कर देना चाहिये।

'जो आज्ञा' कहकर जीतसिह उठे और कमरे के बाहर जा कर चोबदार को हुक्म देने के बाद लौट आये इसके बाद कुछ देर तक सन्नाटा रहा तब फिर गोपालसिह ने कहा—

गोपाल–अपने खयाल में तो भूतनाथ ने कोई बुराई नहीं की थी क्योंकि बीस हजार अशर्फी दारोगा से वसूल करके उसे छोड देने पर भी उसने एक इकरारनामा लिखा लिया था कि 'वह (दारोगा) ऐसे किसी काम में शरीक न होगा और न खुद एसा कोई काम करेगा जिसमें इन्ददेव, सर्यू, इन्दिरा और मुझ (गोपालसिह) को किसी तरह का नुकसान पहुँचे' * मगर दारोगा फिर भी बेईमानी कर ही गया और भूतनाथ एकरारनामे के भरोसे बैठा रह गया। इससे खयाल होता है कि शायद भूतनाथ को भी इन मामलों की ठीक खबर न हो अर्थात् मुन्दर का हाल मालूम न हुआ हो और वह लक्ष्मीदेवी के बारे में धोखा खा गया हो तो भी ताज्जुब नहीं।

सुरेन्द–हो सकता है। (कुछ देर तक चुप रहने के बाद) मगर यह तो बताओ कि इन सब मामलों की खबर तुम्हें कब और क्योंकर लगी ?

गोपाल–इन सब बातों का पता मुझे भूतनाथ के गुरुभाई शेरसिह की जुबानी लगा जो भूतनाथ को भाई की तरह प्यार करता है मगर उसकी इन सब लालच भरी कार्रवाइयों के बुरे नतीजे को सोच और उसे पूरा कसूरवार समझकर उससे डरता और नफरत करता है। जिन दिनों रोहतासगढ़ का राजा दिग्विजयसिह किशोरी को अपने किले में ले गया था और इस सबब से शेरसिह ने अपनी नौकरी छोड दी थी उन दिनों भूतनाथ छिपा-छिपा फिरता था। मगर जब शेरसिह ने उस तिलिस्मी तहखाने में जाकर डेरा डाला *और छिपे-छिपे कमला और कामिनी की मदद करने लगा तो उन्हीं दिनों तक तिलिस्मी तहखाने में जाकर भूतनाथ ने शेरसिह से एक तौर पर (बहुत दिनों तक गायब रहने के बाद) नई मुलाकात की, मगर धर्मात्मा शेरसिह को यह बात बहुत बुरी मालूम हुई

गोपालसिह इतना कह ही रहे थे कि भूतनाथ और इन्ददेव कमरे के अन्दर आ पहुँचे और सलाम करके आज्ञानुसार जीतसिह के पास बैठ गये।

---

*इन्दिरा का किस्सा चन्द्रकान्ता सन्तति पन्द्रहवाँ भाग पहिला बयान।

*देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति तीसरा भाग तेरहवाँ बयान।

जीत-(भूतनाथ और इन्ददेव से) आप लोग बहुत जल्द आ गये।

इन्ददेव-हम दोनों इसी जगह बरामदे के नीचे बाग में टहल रहे थे इसलिए चोवदार नीचे उतरने के साथ ही हम लोगों से जा मिला।

जीत-खैर, (गोपालसिंह से) हाँ तब ?

गोपाल-अपनी नेकनामी में धब्बा लगने और बदनाम होने के डर से भूतनाथ की सूरत देखना भी शेरसिंह पसन्द नहीं करता था बल्कि उसका तो यही बयान है कि मुझे भूतनाथ से मिलने की आशा ही न थी और मै समझे हुए था कि अपने दोषों से लज्जित होकर भूतनाथ ने जान दे दी'। मगर जिस दिन उसने उस तहखाने में भूतनाथ की सूरत देखी कॉप उठा। उसने भूतनाथ की बहुत लानत-सलामत करने के बाद कहा कि 'अब तुम हम लोगों को अपना मुँह मत दिखाओ और हमारी जान और आबरू पर दया करके किसी दूसरे वेश में चले जाओ'। मगर भूतनाथ ने इस बात को मजूर न किया और यह कहकर अपने भाई से विदा हुआ कि'चुप-चापबैठे देखते रहो कि मै किस तरह अपने पुराने परिचितों में प्रकट होकर खास राजावीरेन्दसिंह का ऐयार बनता हूँ। बस इसके बाद भूतनाथ कमलिनी से जा मिला और जी जान से उसकी मदद करने लगा। मगर शेरसिंह को यह बात पसन्द न आई। यद्यपि कुछ दिनों तक शेरसिंह ने कमलिनी तथा हम लोगों का साथ दिया, मगर डरतेडरते। आखिर एक दिन शेरसिंह ने एकान्त में मुझसे मुलाकात की और अपने दिल का हाल तथा मेरे विषय में जो कुछ जानता था कहने के बाद बोला, "यह सब हाल कुछ तो मुझे अपने भाई भूतनाथ की जुबानी मालूम हुआ और कुछ रोहतासगढ़ को इस्तीफा देने के बाद तहकीकात करने से मालूम हुआ मगर इस बात की खबर हम दोनों भाइयों में से किसी को भी न थी कि आपको मायारानी ने कैद कर रक्खा है। खैर अब ईश्वर की कृपा से आप छूट गये हैं इसलिए आपके सम्बन्ध में जो कुछ मुझे मालूम है आपसे कह दिया, जिसमें आप दुश्मनों से अच्छी तरह बदला ले सकें। अब मैं अपना मुँह किसी को दिखाना नहीं चाहता क्योंकि मेरा भाई भूतनाथ जिसे मैं मरा हुआ समझता था,प्रकट हो गया और न मालूम क्या-क्या किया चाहता है। कहीं ऐसा न हो कि गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाय अस्तु अब मैं जहाँ भागते बनेगा भाग जाऊँगा। हाँ अगर भूतनाथ जो कि बड़ा जिद्दी और उत्साही है किसी तरह नेकनामी के साथ राजा बीरेन्दसिंह का ऐयार बन गया तो पुन प्रकट हो जाऊँगा।' इतना कहकर शेरसिंह न मालूम कहाँ चला गया मैंने बहुत कुछ समझाया मगर उसने एक न मानी। (कुछ रुककर) यहीसबब है कि मुझे इन सब बातों से आगाही हो गई और भूतनाथ के भी बहुत से भेदों को जान गया।

जीत-ठीक है। (भूतनाथ की तरफ देख के) भूतनाथ, इस समय तुम्हारा ही मामला पेश है। इस जगह जितने आदमी हैं सभी कोई तुमसे हमदर्दी रखते हैं महाराज भी तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। ताज्जुब नहीं वह दिन आज ही हो कि तुम्हारे कसूर माफ किए जायें और तुम महाराज के ऐयार बन जाओ, मगर तुम्हें अपना हाल या जो कुछ तुमसे पूछा जाय उसका जवाब सच-सच कहना और देनाा चाहिए। इस समय तुम्हारा ही किस्सा हो रहा है।

भूतनाथ-(खड़े होकर सलाम करने के बाद) आज्ञा के विरुद्ध कदापि न करूँगा और कोई बात छिपा न रक्खूँगा।

जीत-तुम्हें यह तो मालूम हो गया कि सर्यू और इन्दिरा भी यहाँ आ गई हैं जो जमानिया के तिलिस्म में फँस गई थीं और उन्होंने अपना अनूठा किस्साबड़े दर्द के साथ बयान किया था।

भूतनाथ-(हाथ जोड़ के) जी हाँ, मुझ कम्बख्त की बदौलत उन्हें उस कैद की तकलीफ भोगनी पडी। उन दिनों बदकिस्मती ने मुझे हद से ज्यादे लालची बना दिया था। अगर मैं लालच में पड कर दारोगा को न छोड देता ता यह बात न होती। आपने सुना ही होगा कि उन दिनों हथेली पर जान लेकर मैंने कैसे-कैसेकाम किये थे मगर दौलत की लालच ने मेरे सब कामों पर मिट्टी डाल दी। अफसोस, मुझे इस बात की कुछ भी खबर न हुई कि दारोगा ने अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध काम किया अगर खबर लग जाती तो उससे समझ लेता।

जीत-अच्छा यह बताओ कि तुम्हारा भाई शेरसिंह कहाँ है ?

भूत-मेरे यहाँ होने के सबब से न मालूम वह कहाँ जाकर छिपा बैठा है। उसे विश्वास है कि भूतनाथ जिसने बडे बड़े कसूर किए हैं कभी निर्दोष छूट नहीं सकता बल्कि ताज्जुब नही कि उसके सबब से मुझ पर भी किसी तरह का इलजाम लगे। हाँ अगर वह मुझे बेकसूर छूटा हुआ देखेगा या सुनेगा तो तुरन्त प्रकट हो जायगा।

जीत-वह चीठियों वाला मुट्ठा तुम्हारे ही हाथ का लिखा हुआ है या नहीं ?

भूत–जी व सब चीठियाँ हैं तो मेरे ही हाथ की लिखी हुई मगर वे असल नहीं बल्कि असली चीठियों की नकल है जो कि मैंने जैपाल (रघुबरसिंह) के यहाँ से चोरी की थी। असल में इन चीठियों का लिखने वाला मैं नहीं बल्कि जैपाल है।

जीतसिंह–खैर तो जब तुमने जैपाल के यहाँ से असल चीठियों की नकल की थी तो तुम्हें उसी समय मालूम हुआ होगा कि लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह पर क्या आफत आने वाली है ?

भूत–क्यों न मालूम होता ! परन्तु रूपये की लालच में पडकर अर्थात् कुछ लेकर मैंने जैपाल को छोड दिया। मगर बलभद्रसिंह से मैंने इस होनहार के बारे में इशारा जरूर कर दिया था हाँ जैपाल का नाम नहीं बताया क्योंकि उससे रूपया वसूल कर चुका था। हाँ और यह कहना तो मैं भूल ही गया कि रूपये वसूल करने के साथ ही मैंने जैपाल से इस बात की कसम भी खिला ली थी कि अब वह लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह से किसी तरह की बुराई न करेगा। मगर अफसोस उसने (जैपाल ने) मेरे साथ दगा करके मुझे धोखे में डाल दिया और वह काम कर गुजरा जो किया चाहता था। इसी तरह मुझे बलभद्रसिंह के बारे में भी धोखा हुआ। दुश्मनों ने उन्हें कैद कर लिया और मुझे हर तरह से विश्वास दिला दिया कि बलभद्रसिंह मर गए। लक्ष्मीदेवी के बारे में जो कुछ चालाकी दारोगा ने की उसका मुझे कुछ भी पता न लगा और न मैं कई वर्षों तक लक्ष्मीदेवी की सूरत ही देख सका कि पहिचान लेता। बहुत दिनों के बाद जब मैंने नकली लक्ष्मीदेवी को देखा भी तो मुझे किसी तरह का शक न हुआ क्योंकि लडकपन की सूरत और अधेडपन की सूरत में बहुत बडा फर्क पड जाता है। इसके अतिरिक्त जिन दिनों मैंने नकली लक्ष्मीदेवी को देखा था उस समय उनकी दोनों बहिनें अर्थात् श्यामा (कमलिनी) और लाडिली भी उसके साथ रहती थीं जब वे ही दोनों उसकी बहिन होकर धोखे में पड गई तो मेरी कौन गिनती है ?

बहुत दिनों के बाद जब यह कागज का मुट्ठा मेरे यहाँ से चोरी हो गया तब मैं घबडाया और डरा कि समय पर वह चोरी गया हुआ मुट्ठा मुझी का मुजरिम बना देगा और आखिर ऐसा ही हुआ। दुष्टों ने यही कागजों का मुट्ठा कैदखाने में बलभद्रसिंह को दिखा कर मेरी तरफ से उनका दिल फेर दिया और तमाम दोष मेरे ही सर पर थोपा। इसके बाद और भी कई वर्ष बीत जाने पर जब राजा गोपालसिंह के मरने की खबर उडी और किसी को किसी तरह का शक न रहा तब धीरे-धीरे मुझे दारोगा और जैपाल की शैतानी का कुछ पता लगा मगर फिर मैंने जान बूझ कर तरह दे दिया और सोचा कि अब उन बातों को खोदने से कोई फायदा ही क्या जब कि खुद राजा गोपालसिंह ही इस दुनिया से उठ गये तो मैं किसके लिए इन बखेडों का उठाऊँ ? (हाथ जोडकर) बेशक यही मेरा कसूर है और इसीलिए मेरा भाई भी रंज है। हाँ इधर जब कि मैंने देखा कि अब श्रीमान् राजा बीरेन्द्रसिंह का दौरदौरा है और कमलिनी भी उस घर से निकल खडी हुई तब मैंने भी सर उठाया और अबकी दफे नेकनामी के साथ नाम पैदा करने का इरादा कर लिया। इस बीच में मुझ पर बडी आफतें आईं मेरे मालिक रणधीरसिंह भी मुझसे बिगड गये और मैं अपना काला मुँह लेकर दुनिया से किनारे हो बैठा तथा अपने को मरा हुआ मशहूर कर दिया इत्यादि कहाँ तक बयान करूँ बात तो यह है कि मैं सर से पैर तक अपने को कसूरवार समझ कर भी महाराजा की शरण में आया हूँ।

जीत–तुम्हारी पिछली कार्रवाई का बहुत सा हाल महाराज को मालूम हो चुका है उस जमाने में इन्दिरा को बचाने के लिए जो कार्रवाइयाँ तुमने की थीं उनसे महाराज प्रसन्न हैं, खास करके इसलिए कि तुम्हारे हर एक काम में देवता का हिस्सा ज्यादे था और तुम सच्चे दिल से इन्द्रदेव के साथ दोस्ती का हक अदा कर रहे थे मगर इस जगह एक बात का बडा ताज्जुब है।

भूत–वह क्या ?

जीत–इन्दिरा के बारे में जो जो काम तुमने किये थे वे इन्द्रदेव से तो तुमने जरूर ही कहे होंगे ?

भूत–बेशक जो कुछ काम मैं करता था वह इन्द्रदेव से पूरा-पूरा कह देता था।

जीत–तो फिर इन्द्रदेव ने दारोगा को क्यों छोड दिया ? सजा देना तो दूर रहा इन्होंने गुरुभाई का नाता तक नहीं तोडा।

भूत–(एक लम्बी साँस लेकर और उँगली से इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके) इनके ऐसा भी बहादुर और मुरौवत का आदमी मैंने दुनिया में नहीं देखा। इनके साथ जो कुछ सलूक मैंने किया था उसका बदला एक ही काम से इन्होंने ऐसा अदा किया कि जो इनके सिवाय दूसरा कर ही नहीं सकता था और जिससे मैं जन्म भर इनके सामने सर उठाने लायक न रहा, अर्थात् जब मैंने रिश्वत लेकर दारोगा को छोड देने और कलमदान दे देने का हाल इनसे कहा तो सुनते ही इनकी आँखों में आँसू भर आये और एक लम्बी साँस लेकर इन्होंने मुझसे कहा, "भूतनाथ तुमने यह काम बहुत ही बुरा किया। किसी दिन इसका नतीजा बहुत ही खराब निकलेगा ! खैर, अब तो जो कुछ होना था हो गया, तुम मेरे दोस्त हो,अस्तु जो कुछ तुम कर आये उसे मैं भी मंजूर करता हूँ और दारोगा को एक दम भूल जाता हूँ। अब मेरी लडकी

और स्त्री पर चाहे कैसी आफत क्यों न आय और मुझे भी चाहे कितना ही कष्ट क्यों न भोगना पडे मगर आज से दारोगा का नाम भी न लूँगा और न अपनी स्त्री के विषय मे ही किसी से कुछ जिक्र करूँगा, जो कुछ तुम्हें करना हो करो और उस कम्बख्त दारोगा से भले ही कह दो कि इन बातों की खबर इन्द्रदेव को नहीं दी गई । मै भी अपने का ऐसा ही बनाऊँगा कि दारोगा को किसी तरह का खुटका न होगा और वह मुझे निरा उल्लू ही समझता रहेगा।" इन्द्रदेव की यह बात मेरे कलेजे में तीर की तरह लगी और मै यह कहकर उठ खड़ा हुआ कि 'दोस्त, मुझे माफ करो, बेशक मुझसे बडी भूल हुई। अब मै दारोगा को कभी न छोडूँगा और जो कुछ उससे लिया है उसे वापस कर दूँगा'। मगर इतना कहते ही इन्द्रदेव ने मेरी कलाई पकड ली और जोर के साथ मुझे बैठा कर कहा, ' भूतनाथ, मैने यह बात तुमसे ताने के ढग पर नहीं कही थी कि सुनने के साथ ही तुम उठ खड़े हुए। नहीं-नही ऐसा कभी न होने पायेगा, हमने और तुमने जो कुछ किया सा किया और जो कहा सो कहा अब उसके विपरीत हम दोनों में से कोई भी न जा सकेगा !

सुरेन्द्र–शाबाश !!

इतना कहकर'सुरेन्द्रसिह ने मुहब्बत की निगाह से इन्द्रदेव की तरफ देखा और भूतनाथ न फिर इस तरह कहना शुरू किया –

'भूत–मैन बहुत कुछ कहा मगर इन्द्रदेव ने एक न माना और बहुत बडी कसम दकर मेरा मुह बन्द कर दिया मगर इस बात का नतीजा यह निकला कि उसी दिन से हम दोनों दोस्त दुनिया से उदासीन हा गये मेरी उदासीनता में ता कुछ कसर रह गई मगर इन्द्रदेव की उदासीनता में किसी तरह की कसर न रही। यही सबब था कि इन्द्रदव क हाथ से दारोगा बच गया और दारोगा इन्द्रदेव की तरफ से (मेरे कहे मुताबिक) बेफिक्र रहा।

सुरेन्द्र–बेशक इन्द्रदेव ने यह बडे हौसले और सब्र का काम किया।

गोपाल–दोस्ती का हक अदा करना इसे कहते है, जितने एहसान भूतनाथ ने इन पर किये थे सभों का बदला एक ही बात से चुका दिया !!

भूत–(गोपालसिह की तरफ देख के) कुअर इन्दजीतसिह और आनन्दसिह से इन्दिरा ने अपना हाल किस तरह पर बयान किया था सो मुझे मालूम न हुआ। अगर यह मालूम हो जाता तो अच्छा होता कि इन्दिरा ने जो कुछ बयान किया था वह ठीक है अथवा उसने जो कुछ सुना था वह सच था ?

गोपाल–जहाँ तक मेरा खयाल है मैं कह सकता हूँ कि इन्दिरा ने अपने विषय में कोई बात ज्यादे नहीं कही बल्कि ताज्जुब नहीं कि वह कई बातें मालूम न होने के कारण छोड गई हो। मैंने उसका पूरा पूरा किस्सा महाराज को लिख भेजा था। (जीतसिह की तरफ देख कर) अगर मेरी वह चीठी यहाँ मौजूद हो तो भूतनाथ को दे दीजिये उसमें से इन्दिरा का किस्सा पढकर ये अपना शक मिटा लें।

हाँ वह चीठी मौजूद है इतना कह कर जीतसिह उठे और आलमारी से वह किताबनुमा चीठी निकाल कर और इन्दिरा का किस्सा बता कर भूतनाथ को दे दी। भूतनाथ उसे तेजी के साथ पढ गया और अन्त में बोला 'हाँ ठीक है, करीब करीब सभी बातें उसे मालूम हो गई थीं और आज मुझे भी एक नई मालूम हुई अर्थात आखिरी मर्तबे जब मैं इन्दिरा को दारोगा के कब्जे से निकाल कर ले गया था और अपने एक अडडे पर हिफाजत के साथ रख गया था तो वहाँ से एकाएक उसका गायब हो जाना मुझे बडा ही दु खदाई हुआ। मै ताज्जुब करता था कि इन्दिरा वहा से क्योंकर चली गई। जब मैंने अपने आदमियों से पूछा तो उन्होंने कहा कि 'हम लोगों को कुछ भी नहीं मालूम कि वह कब निकल कर भाग गई क्योंकि हम लोग कैदियों की तरह उस पर निगाह नहीं रखते थे बल्कि घर का आदमी समझकर' कुछ बेफिक्र थे। परन्तु मुझे अपने आदमियों की बात पसन्दं न आई और मैंने उन लोगों को सख्त सजा दी। आज मालूम हुआ कि वह काँटा मायाप्रसाद का बोया हुआ था। मैं उसे अपना दोस्त समझता था मगर अफसोस, उसने मेरे साथ बडी दगा की !

गोपाल–इन्दिरा की जुबानी यह किस्सा सुन कर मुझे भी निश्चय हो गया कि मायाप्रसाद दारोगा का हिती है अस्तु मैंने उसे तिलिस्म में कैद कर दिया है। अच्छा यह तो बताओ कि उस समय जब तुम आखिरी मर्तबे इन्दिरा को दारोगा के यहाँ से निकालकर अपने अडडे पर रख आये और लौट कर पुन जमानिया गये तो फिर क्या हुआ, दारोगा से कैसी निपटी और सर्यू का पता क्यों न लगा सके ?

भूत–इन्दिरा को उस ठिकाने रख कर जब मै लौटा तो पुन जमानिया गया परन्तु अपनी हिफाजत के लिए पाँच आदमियों को अपने साथ लेता गया और उन्हें (अपने आदमियों को) कब क्या करना चाहिए इस बात को भी अच्छी तरह समझा दिया क्योंकि वे पाँचों आदमी मेरे शागिर्द थे और कुछ ऐयारी भी जानते थे। मुझे सर्यू के लिए दारोगा से फिर मुलाकात करने की जरूरत थी मगर उसके घर में जाकर मुलाकात करने का इरादा न था क्योंकि मैं खूब समझता था कि यह 'दूध का जला छाछ फूँक के पीता होगा और मेरे लिये अपने घर में कुछ न कुछ बन्दोबस्त जरूर कर रक्खा होगा ! अगर अबकी दिलेरी के साथ उसके घर में आऊँगा तो बेशक फँस जाऊँगा, इसलिये बाहर ही उससे मुलाकात

करने का बन्दोबस्त करन लगा। खैर इस फेर में दस-बारह दिन बीत गए और इस बीच में मुलाकात करने का कोई अच्छा मौका न मिला। पता लगाने से मालूम हुआ कि वह बीमार है और घर से बाहर नहीं निकलता। यह बात मुझे मायाप्रसाद ने कही थी मगर मैने मायाप्रसाद से इन्दिरा के बारे में कुछ भी नहीं कहा और न राजा साहब (गोपालसिंह की तरफ इशारा करके) ही से कुछ कहा क्योकि दारोगा को बेदाग छोड दने के लिए मेरे दोस्त इन्द्रदेव न पहिले ही से तै कर लिया था अब अगर राजा साहब से मै कुछ कहता तो दारोगा जरूर सजा पा जाता। लेकिन मै यह नहीं कह सकता कि मायाप्रसाद और दारोगा को इस बात का पता क्योंकर लग गया कि इन्दिरा फलानी जगह है खैर मुख्तसर यह है कि एक दिन स्वयम् मायाप्रसाद न मुझसे कहा कि गदाधरसिंह मैं तुम्हें इसकी इत्तिला देता हूँ कि सर्यू नि सन्देह दारोगा की कैद में है मगर बीमार है अगर तुम किसी तरह दारोगा के मकान में चले जाओ तो उसे जरूर अपनी आँखों से देख सकोगे। मेरी इस बात में तुम किसी तरह शक न करो मै बहुत पक्की बात तुमसे कह रहा हूँ। मायाप्रसाद की बात सुन कर मुझे एक दफे जोश चढ आया और मै दारोगा के मकान में जाने के लिए तैयार हो गया। मै क्या जानता था कि मायाप्रसाद दारोगा से मिला हुआ है। खैर मै अपनी हिफाजत के लिए कई तरह का बन्दोबस्त करके आधी रात के समय कमन्द के जरिये दारोगा के लम्बे-चौड और शैतान की ऑत की सूरत वाले मकान में घुस गया और चोरों की तरह टोह लगाता हुआ उस कमरे में जा पहुँचा जिसमें दारोगा एक गद्दी के ऊपर उदास बैठा हुआ कुछ सोच रहा था। उस समय उसके बदन पर कई जगह पट्टी बँधी हुई थी जिससे वह चुटीला मालूम पडता था और उसके सर का भी यही हाल था। दारोगा मुझे देखते ही चौक उठा और ऑखें-चार होने के साथ ही मैने उससे कहा, 'दारोगा साहब, मै आपके मकान में कैद होने के लिए नहीं आया हूँ बल्कि सर्यू को देखने के लिए आया हूँ जिसके इस मकान में होने का पता मुझे लग चुका है। अस्तु इस समय मुझसे किसी तरह की बुराई करने की उम्मीद न रखिए क्योंकि मै अगर आधे घटे के अन्दर इस मकान के बाहर होकर अपने साथियों के पास न चला जाऊँगा तो उन्हें विश्वास हो जायगा कि गदाधरसिंह फँस गया और तब वे लोग आपको हर तरह से बर्बाद कर डालेंगे जिसका कि मै पूरा-पूरा बन्दोबस्त कर आया हूँ।

इतना सुनते ही दारोगा खडा हो गया और उसने हँसकर जवाब दिया मेरे लिए आपको इस कडे प्रबन्ध की कोई आवश्यकता न थी और न मुझमें इतनी सामर्थ्य ही है कि आप ऐसे ऐयार का मुकाबला करूँ, मैं तो खुद आपकी तलाश में था कि किसी तरह आपको पाऊँ और अपना कसूर माफ कराऊँ। मुझे विश्वास है कि जब आप मेरा एक बड़ा कसूर माफ कर चुके हैं तो इसको भी माफ कर देंगे। गुस्से को दूर कीजिए मैं फिर भी आपके लिए हाजिर हूँ।'

मै–(बैठकर और दारोगा को बैठाकर) कसूर माफ कर देने के लिए तो कोई हर्ज नहीं है मगर आइन्दे के लिए कसूर न करने का वादा करके भी आपने मेरे साथ दगा की इसका मुझे जरूर बडा रज है !

दारोगा–(हाथ जोड कर) खैर जो हो गया सो हो गया, अब अगर फिर कोई कसूर मुझसे हो तो जो चाहे सजा दीजियेगा मै ओफ भी न करूँगा।

मै–खैर एक दफे और सही मगर इस कसूर के लिए आपको कुछ जुर्माना जरूर देना पडेगा।

दारोगा–यद्यपि आप मुझे पहिले ही कगाल कर चुके हैं मगर फिर भी मै आपकी आज्ञा-पालन के लिए हाजिर हूँ।

मै–दो हजार अशर्फी।

दारोगा–(आलमारी में से एक थैली निकाल कर और मेरे सामने रख कर) बस एक हजार अशर्फी को कबूल कीजिए और

मै–(मुस्कुराकर) मै कबूल करता हूँ और अपनी तरफ से यह थैली आपको देकर इसके बदले में सर्यू को माँगता हूँ जो इस समय आपके घर में है।

दारोगा–बेशक सर्यू मेरे घर में है और मै उसे आपके हवाले करूँगा मगर इस थैली को आप कबूल कर लीजिये नहीं तो मै समझूगा कि आपने मेरा कसूर माफ नहीं किया !

मै–नहीं-नहीं मै कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने आपका कसूर माफ कर दिया और खुशी से यह थैली आपको वापस करता हूँ, अब मुझे सिवाय सर्यू के और कुछ नहीं चाहिए।

हम दोनों में देर तक इसी तरह की बातें हुईं और इसके बाद मेरी आखिरी बात सुनकर दारोगा उठ खडा हुआ और मेरा हाथ पकड़कर दूसरे कमरे की तरफ यह कहता हुआ ले चला कि आओ मै तुमको सर्यू के पास ले चलूँ, मगर अफसोस की बात है कि इस समय वह हद दर्जे की बीमार हो रही है' ! खैर वह मुझे घुमाता फिराता एक दूसरे कमरे में ले गया और वहाँ मैंने एक पलग पर सर्यू को बीमार पड देखा। एक मामूली चिराग उससे थोडी ही दूर पर जल रहा था। (लम्बी साँस लेकर) अफसोस मैने देखा कि बीमारी ने उसे आखिरी मजिल के करीब पहुँचा दिया है और वह इतनी कमजोर हो रही है कि बात करना भी उसके लिए कठिन हो रहा है। मुझे देखते ही उसकी आँखें डबडबा आईं और मुझे भी रुलाई आने लगी। उस समय मैं उसके पास बैठ गया और अफसोस के साथ उसका मुँह देखने लगा। उस वक्त दो

लौंडियाँ उसकी खिदमत के लिए हाजिर थीं जिनमें से एक ने आगे बढ कर रूमाल से उसके आँसू पोंछे और पीछे हट गई। मैंने अफसोस के साथ पूछा कि 'सयू यह तेरा क्या हाल है ?

इसके जवाब में सर्यू ने बहुत बारीक आवाज में रूककर कहा, भैया, (क्योंकि वह प्राय मुझे भैया कहकर ही पुकारा करती थी) मेरी बुरी अवस्था हो रही है। अब मेरे बचने की आशा न करनी चाहिए। यद्यपि दारोगा साहब ने मुझे कैद किया था मगर मैं इनका एहसान मानती हूँ कि इन्होंने मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं दी बल्कि इस बीमारी में मेरी बडी हिफाजत की, दवा इत्यादि का भी पूरा प्रबन्ध रक्खा मगर यह न बताया कि मुझे कैद क्यों किया था। खैर जा हो इस समय तो मैं आखिरी दम का इन्तजार कर रही हूँ और सब तरफ से माहमाया को छोड ईश्वर से लौ लगाने का उद्योग कर रही हूँ। मैं समझ गई हूँ कि तुम मुझे लने के लिए आए हो मगर दया कर के मुझ इस जगह रहने दा और इधर-उधर कहीं मत ले,जाआ क्योंकि इस समय मै किसी अपने को देख माया-मोह में आत्मा को फँसाया नहीं चाहती और न गगाजी का सम्बन्ध छोडकर दूसरी किसी जगह मरना ही पसन्द करती हूँ यहाँ यों भी अगर गगाजी में फेंक दी जाऊँगी तो मेरी सदगति हो जायगी बस यही आखिरी प्रार्थना है। एक बात और भी है। कि मेर लिए दारोगा साहब को किसी तरह की तकलीफ न देना और ऐसा करना जिसमें इनकी जरा वेइज्जती न हा यह मेरी वसीयत है और यह मेरी आरजू। अब श्रीगगाजी का छुडाकर मुझ नर्क में मत डालो। इतना कह सर्यू कुछ दर के लिए चुप हा गई और मुझे उसकी अवस्था पर रुलाई आने लगी। मैं और भी कुछ देर तक उसके पास बैठा रहा और धीरे-धीर बातें भी हाती रहीं मगर जो कुछ उसने कहा उसका तत्त्व यही था कि मुझे यहा से मत हटाओ और दारोगा को कुछ तकलीफ मत दा। उस समय मर दिल में यही बात आई कि इन्द्रदेव को इस बात की इत्तिला दे देनी चाहिए, वह जैसी आज्ञा देंगे किया जायेगा। मगर अपना यह विचार मैंने दारोगा से नहीं कहा क्योंकि उसे मैं इन्द्रदेव की तरफ से बेफिक्र कर चुका था और कह चुका था कि सर्यू और इन्दिरा के साथ जो कुछ बर्ताव तुमने किया है उसकी इत्तिला मैं इन्द्रदेव को न दूगा, दूसरे को कसूरवार ठहरा कर तुम्हारा नाम बचा जाऊगा। अस्तु मैं सर्यू से दूसरे दिन मिलने का वादा करके वहा से उठा और अपने डेरे पर चला आया। यद्यपि रात बहुत कम बाकी रह गई थी परन्तु मैंने उसी समय अपने एक आदमी को पत्र देकर इन्द्रदेव के पास रवाना कर दिया और ताकीद कर दी कि एक घोडा किराए का लेकर दौडा-दौड चला जाय और जहा तक जल्द हो सके पत्र का जवाब लेकर लौट आवें। दूसरे दिन आधी रात जात जाते वह आदमी लौट आया और उसने इन्द्रदव का पत्र मेर हाथ में दिया। लिफाफा खालकर मैंने पढा उसमें यह लिखा हुआ था --

तुम्हारा पत्र पढ़ने से कलेजा हिल गया। सच तो यह है कि दुनिया में मुझ सा बदनसीब भी कोई न होगा ? खैर परमश्वर की मरजी ही ऐसी है तो मैं क्या कर सकता हू। दारोगा के बारे में मैंने जा प्रतिज्ञा तुमसे की है उसे झूठा न होने दूँगा। मैं अपन कलजे पर पत्थर रखकर सब कुछ सहूँगा मगर वहाँ जाकर बेचारी सर्यू का अपना मुँह न दिखाऊँगा और न दारोगा से मिलकर उसके दिल में किसी तरह का शक ही आने दूगा। हाँ अगर सर्यू की जान बचती नजर आवे या इस बीमारी से बच जाय तो उसे जिस तरह मुनासिब समझना मेरे पास पहुचा देना और अगर वह मर जाय तो मेरी जगह तुम बैठे ही हो उसकी अन्त्येष्टि क्रिया अपनी हिम्मत के मुताबिक करके मेरे पास आना। मेरी तबीयत अब दुनिया से हट गई बस इससे ज्यादे मैं कुछ नहीं कहा चाहता हाँ यदि कुछ कहना होगा तो तुमस मुलाकात होने पर कहूगा। आग जो ईश्वर की मर्जी।

तुम्हारा वही--इन्द्रदेव

इस चीठी को पढ कर मैं बहुत देर तक रोता और अफसोस करता रहा इसके बाद उठकर दारोगा के मकान की तरफ रवाना हुआ मगर आज भी अपने बचाव का पूरा-पूरा इन्तजाम करता गया। मुलाकात होन पर दारोगा ने कल से ज्यादा खातिरदारी के साथ मुझे बैठाया और देर तक बातचीत करता रहा मगर जब मैं सर्यू के पास गया तो उसकी हालत कल से आज बहुत ज्यादे खराब देखने में आई, अर्थात् आज उसमें बोलन की भी ताकत न थी। मुख्तसर यह कि तीसरे दिन बेहाश और चौथे दिन आधी रात के समय मैंने सर्यू को मुर्दा पाया। उस समय मेरी क्या हालत थी सो मैं बयान नहीं कर सकता। अस्तु उस समय जा कुछ करना उचित था और मै कर सकता था उसे सवेरा होने के पहिले ही करके छुट्टी किया अपने खयाल से सर्यू के शरीर की दाह क्रिया इत्यादि करके पचतत्त्व में मिला दिया और इस बात की इत्तिला इन्द्रदेव को दे दी। इसके बाद इन्दिरा के लिए अपने अड्डे पर गया और वहाँ उसे न पाकर बडा ही ताज्जुब हुआ। पूछने पर मेरे आदमियों ने जवाब दिया कि 'हम लोगों को कुछ भी खबर नहीं कि वह कब और कहाँ भाग गई। इस बात

स मुझे सन्तोष न हुआ। मैंने अपने आदमियों को सख्त सजा दी और बराबर इन्दिरा का पता लगाता रहा। अब सर्यू के मिल जाने से मालूम हुआ कि उस दिन मेरी कम्बख्त आखों ने मेरे साथ दगा की और दारोगा के मकान में बीमार सर्यू को मे पहिचान न सका। मेरी आखों के सामने सर्यू मर चुकी थी और मैंने खुद अपन हाथ से इन्द्रदेव को यह समाचार लिखा था इसलिय उन्हें किसी तरह का शक न हुआ और सर्यू तथा इन्दिरा के गम में ये दीवाने से हो गये हर तरह के चेन और आराम को इन्होंने इस्तीफा दे दिया और उदासीन हो एक प्रकार से साधू ही बन बैठे। मुझस भी मुहब्बत कम कर दी और शहर का रहना छोड़ अपने तिलिस्म के अन्दर चले गय और उसी में रहने लगे मगर न मालूम क्या सोचकर इन्होंने मुझे वहा का रास्ता न बताया। मुझ पर भी इस मामले का बडा असर पडा क्योंकि ये सब बातें मेरी ही नालायकी के सबब रो हुई थीं अतएव मैंन उदासीन हो रणधीरसिहजी की नौकरी छोड दी और अप्न बाल-बच्चों तथा स्त्री को भी उन्हीं के यहाँ छोड बिना किसी को कुछ कहे जगल और पहाड का रास्ता लिया। उधर एक और स्त्री से मैंने शादी कर ली थी जिससे नानक पैदा हुआ है उधर भी कई एसे मामले हो गए जिनसे मै बहुत उदास और परेशान हो रहा था उसका हाल नानक की जुबानी तेजसिह को मालूम ही हो चुका है बल्कि आप लोगों ने भी सुना ही होगा। अस्तु हर तरह से अपने को नालायक समझ कर मैं निकल भागा और फिर मुद्दत तक अपना मुह किसी को न दिखाया। इधर जब जमाने ने पलटा खाया तब मै कमलिनीजी से मिला। उन दिनों मरे दिल में विश्वास हो गया था कि इन्द्रदेव मुझसे रज हैं अस्तु मैंने इनसे भी मिलना जुलना छाड दिया बल्कि यों कहना चाहिए कि हमारी इतनी पुरानी दोस्ती का उन दिनों अन्त हा गया था।

इन्द्रदेव—बेशक यही बात थी। स्त्री के मरने की खबर सुनकर मुझ बडा ही रज हुआ। मुझे कुछ तो भूतनाथ की जुबानी और कुछ तहकीकात करने पर मालूम ही हो चुका था कि मेरी लडकी और स्त्री इसी की बदौलत जहन्नुम में मिल गई अस्तु मैंने भूतनाथ की दोस्ती को तिलाजली दे दी और मिलना जुलना बिल्कुल बन्द कर दिया मगर इससे कहा कुछ भी नहीं क्योंकि मैं अपनी जुबान स दारागा को माफ कर चुका था, इसके अतिरिक्त इसने मुझ पर कुछ एहसान भी तो जरूर ही किये थे उनका भी खयाल था अस्तु मैंने कुछ कहा तो नहीं मगर इसकी तरफ से दिल हटा लिया और फिर अपना कोई भेद भी इसे नहीं बताया। कभी-कभी इसस मुझसे इधर उधर मुलाकात हो जाती थी क्योंकि इसे मैंने अपने मकान का तिलिस्मी रास्ता नहीं दिखाया था। अगर यह कभी मेरे मकान पर आया भी तो अपनी ऑखों में पट्टी बॉध कर। यही सबब था कि इसे लक्ष्मीदेवी का हाल मालूम न हुआ। लक्ष्मीदेवी के बारे में भी मैं इसे कसूरवार समझता था और मुझे यह भी विश्वास था कि यह अपना बहुत सा भेद मुझसे छिपाता है और वास्तव में छिपाता था भी।

भूत—(इन्द्रदेव से) नहीं सो बात तो नहीं है मेरे कृपालु मित्र।

इन्द—अगर यह बात नहीं है तो वह कलमदान जिसे तुम आखिरी मर्तबे इन्दिरा के साथ दारोगा के यहा से उठा लाये और मुझे द गये थे मेरे यहा से गायब क्यों हो गया ?

भूत—(मुस्कुराकर) आपके किस मकान में से वह कलमदान गायब हो गया था ?

इन्द—काशीजी वाले मकान में से। उसी दिन तुम मुझसे मिलने के लिए वहा आये थे और उसी दिन वह कलमदान गायब हो गया।

भूत—ठीक है ता उस कलमदान को चुराने वाला मैं नहीं हू बल्कि मेरा लडका नानक है मै तो यों भी अगर जरूरत पडती तो तुमसे वह कलमदान माग सकता था। दारोगा की आज्ञानुसार लाडिली ने रामभोली बनकर नानक को धोखा दिया और आपके यहा स कलमदान चुरवा मगवाया।*

गोपाल—हा ठीक है इस बात का तो मै भी सकारूँगा क्योंकि मुझे इसका असल हाल मालूम है। बेशक इसी ढग से वह कलमदान वहा पहुचा था और अन्त में बडी मुश्किल से उस समय मेरे हाथ लगा, जब मैं कृष्णाजिन्न बनकर रोहतासगढ पहुचा था। नानक को विश्वास है कि लाडिली ने रामभोली बनकर उसे धोखा दिया था मगर वास्तव में ऐसा नहीं हुआ। वह एक दूसरी ही ऐयारा थी जो रामभोली बनी थी लाडिली ने तो केवल एक ही दिन या दो दिन रामभोली का रूप धरा था।

जीत—(राजा गोपालसिह से) वह कलमदान आपको कहा से मिल गया ? दारोगा ने तो उसे बडी ही हिफाजत से रक्खा होगा !

गोपाल—बेशक एसा ही है मगर भूतनाथ की बदौलत वह मुझे सहज ही में मिल गया। ऐसी-ऐसी चीजों को दारोगा बहुत गुप्त रीति से अपने अजायबघर में रखता था जिसक ताली मायारानी से लेकर भूतनाथ ने मुझे दी थी। उस

*देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति चौथा भाग छठवा बयान।

अजायबघर का भेद मेरे पिता और उस दारोगा के सिवाय कोई नहीं जानता था। मेरे पिता ही ने दारोगा को वहा का मालिक बना दिया था, जब भूतनाथ ने उसकी ताली मुझे ला दी तब मुझे भी वहा का पूरा-पूरा हाल मालूम हुआ।

जीत–(भूतनाथ से) खैर यह बताओ कि मनोरमा और नागर से तुमसे क्या सम्बन्ध था ?

यह सवाल सुनकर भूतनाथ सन्न हो गया और सिर झुकाकर कुछ सोचने लगा। उस समय गोपालसिह ने उसकी मदद की और जीतसिह की तरफ देखकर कहा इस सवाल को छोड़ दीजिए क्योंकि वह जमाना भूतनाथ का बहुत ही बुरा तथा ऐयाशी का था। इसके अतिरिक्त जिस तरह राजा बीरेन्द्रसिहजी ने रोहतासगढ के तहखाने में भूतनाथ का कसूर माफ किया था उसी तरह कमलिनी ने भी इसका वह कसूर कसम खाकर माफ कर दिया और साथ ही इसके उन ऐबों को छिपाने का बन्दोबस्त कर दिया है। इसके जवाब में जीतसिह ने कहा, "खैर जाने दो, देखा जायगा।"

गोपाल–जब से भूतनाथ ने कमलिनी का साथ किया है तब से इसने (भूतनाथ ने) जो जो काम किये है उस पर ध्यान देने से आश्चर्य होता है। वास्तव में इसने वह काम किये है जिनकी ऐसे समय में सख्त जरूरत थी, मगर इसका लडका नानक तो बिलकुल ही बोदा और खुदगर्ज निकला। न तो कमलिनी के साथ मिलकर उसने कोई तारीफ का काम किया और न अपने बाप को किसी तरह की मदद पहुचाई !

भूत–बेशक ऐसा ही है, मैंने कई दफा उसे समझाया मगर

सुरेन्द्र–(गोपाल से) अच्छा अजायबघर में क्या बात है जिससे ऐसा अनूठा नाम उसका रक्खा गया। अब तो तुम्हें उसका पूरा-पूरा हाल मालूम हो ही गया होगा।

गोपाल–जी हा। एक किताब है जिसे 'ताली' के नाम से सबोधन करते है उसके पढने से वहा का कुल हाल मालूम होता है। वह बड़े हिफाजत और तमाशे की जगह थी और कुछ है भी क्योंकि अब उसका काफी हिस्सा मायारानी की बदौलत बर्बाद हो गया।

जीत–उस किताब (ताली) की बदौलत मायारानी को भी वहा का हाल मालूम हो गया होगा ?

गोपाल–कुछ-कुछ क्योंकि उस किताब की भाषा वह अच्छी तरह समझ नहीं सकती थी। इसके अतिरिक्त उस अजायबघर का जमानिया के तिलिस्म से भी सबध है इसलिए कुअर इन्द्रजीतसिहऔर आनन्दसिह को वहा का हाल मुझसे भी ज्यादे मालूम हुआ होगा।

जीत–ठीक है (सुरेन्द्रसिह की तरफ देख के) आज यद्यपि बहुत सी नई बातें मालूम हुई हैं परन्तु फिर भी जब तक दोनों कुमार यहा न आ जायगे तब तक बहुत सी बातों का पता न लगेगा।

सुरेन्द्र–सो तो हई है परन्तु इस समय हम केवल भूतनाथ के मामले को तय किया चाहते हैं। जहा तक मालूम हुआ है भूतनाथ ने हम लोगों के साथ सिवाय भलाई के बुराई कुछ भी नहीं की। अगर उसने बुराई की तो इन्द्रदेव के साथ या कुछ गोपालसिह के साथ सो भी उस जमाने में जब इनसे और हमसे कुछ सबध नहीं था। आज ईश्वर की कृपा से ये लोग हमारे साथ है बल्कि हमारे अग हैं इससे कहा भी जा सकता है कि भूतनाथ हमारा ही कसूरवार है मगर फिर भी हम इसके कसूरों को माफ का अख्तियार इन्हीं दोनों अर्थात् गोपालसिह और इन्द्रदेव को देते हैं। ये दोनों अगर भूतनाथ का कसूर माफ कर दें तो हम इस बात को खुशी से मजूर कर लेंगे। हा, लोग यह कह सकते हैं कि इस माफी देने में बलभद्रसिह को भी शरीक करना चाहिए था। मगर हम इस बात को जरूरी नहीं समझते क्योंकि इस समय बलभद्रसिह को कैद से छुडाकर भूतनाथ ने उन पर बल्कि सच तो ये है कि हम लोगों पर भी बहुत बडा अहसान किया है इसलिए अगर बलभद्रसिह को इससे कुछ रज हो तो भी माफी देने में वे कुछ उज्र नहीं कर सकते।

गोपाल–इसी तरह हम दोनों को भी माफी देने में किसी तरह का उज्र न होना चाहिए। इस समय भूतनाथ ने मेरी बहुत बडी मदद की है और मेरे साथ मिलकर ऐसे अनूठे काम किये हैं कि जिनकी तारीफ सहज में नहीं हो सकती। इस हमदर्दी और मदद के सामने उन कसूरों की कुछ भी हकीकत नहीं अस्तु मैं इससे बहुत प्रसन्न हू और सच्चे दिल से इसे माफी देता हू।

इन्द्रदेव–माफी देनी ही चाहिए और जब आप माफी दे चुके तो मैं भी दे चुका, ईश्वर भूतनाथ पर कृपा करे जिससे अपनी नेकनामी बढाने का शौक इसके दिल में दिन-दिन तरक्की करता रहे। सच बात तो यह है कि कमलिनी की बदौलत इस समय हम लोगों को यह शुभ दिन देखने में आया और जब कमलिनी ने इससे प्रसन्न हो इसके कसूर माफ कर दिए तो हमलोगों को बाल बराबर भी उज्र नहीं हो सकता।

जीत–बेशक बेशक !

सुरेन्द्र–इसमें कुछ भी शक नहीं ! (भूतनाथ की तरफ देख के) अच्छा भूतनाथ, तुम्हारा सब कसूर माफ किया जाता है और इन दिनों हमलोगों के साथ तुमने जो जो नेकिया की हैं उनके बदले में हम तुम पर भरोसा करके तुम्हें अपना

ऐयार बनाते हैं।

इतना कह सुरेन्दसिह उठ बैठे और अपने सिरहाने के नीचे से अपना खास बेशकीमत खजर निकालकर भूतनाथ की तरफ बढाया। भूतनाथ खडा हो गया और झुककर सलाम करने के बाद खजर ले लिया और इसके बाद जीतसिह गोपालसिह और इन्ददव को भी सलाम किया। जीतसिह ने अपना खास ऐयारी का बटुआ भूतनाथ को दिया। गोपालसिह ने वह तिलिस्मी तमचा जिससे आखिरी वक्त मायारानी ने काम लिया था और जो इस समय उनके पास था गाली बनान की तर्कीब सहित भूतनाथ को दिया और इन्द्रदेव ने यह कहकर उसे गले से लगा लिया कि मुझ फकीर के पास इमसे बढकर और कोई चीज नहीं है कि मै फिर तुम्हें अपना भाई बनाकर ईश्वर से प्रार्थना करू कि अब इस नाते में किसी तरह का फर्क न पडने पाव ।

इसके बाद दोनों आदमी अपनी-अपनी जगह बैठ गये और भूतनाथ ने हाथ जाडकर सुरेन्दसिह से कहा ' आज मै समझता हू कि मुझ सा खुशनशीब इस दुनिया में दूसरा कोई भी नहीं है। बदनसीबी के चक्कर में पडकर मै वर्षो परेशान रहा तरह-तरह की तकलीफें उठाई पहाड-पहाड और जगल जगल मारा फिरा, साथ ही इसके पैदा भी बहुत किया और बिगाडा भी बहुत परन्तु सच्चा सुख नाम मात्र के लिए एक दिन भी न मिला और न किसी को मुह दिखाने की अभिलाषा ही रह गई। अन्त में न मालूम किस जन्म का पुण्य सहायक हुआ जिसने मेरे रास्ते को बदल दिया और जिसकी बदौलत आज मै इस दर्जे को पहुचा। अब मुझे किसी बात की परवाह नहीं रही। आज तक जो मुझसे दुश्मनी रखते थ कल से वे मेरी खुशामद करेंगे क्योंकि दुनिया का कायदा ही ऐसा है। महाराज इस बात का भी निश्चय रक्खे कि उस पीतल की सन्दूकडी से महाराज या महाराज के पक्षपातियों का कुछ भी सबंध नहीं है, जो नकली बलभद्रसिह की गठरी में से निकली है और जिसके ब्यान ही से मेरे रोंगटे खडे होते हैं। मै उस भेद को भी महाराज से छिपाना नहीं चाहता हा यह अच्छा है कि सर्वसाधारण में वह भेद फैलने न पावे। मैने उसका कुछ हाल देवीसिह से कह दिया है आशा है कि व महाराज से जरूर अर्ज करेंगे।

जीत-खैर उसके लिए तुम चिन्ता न करो, जैसा होगा देखा जायगा। अब अपन डेरे पर जाकर आराम करो, महाराज भी आज रातभर जागते ही रहे है।

गोपाल-जी हा अब तो नाम मात्र को रात बच गई होगी।

इतना कहकर राजा गोपालसिह उठ खडे हुए और सभों को साथ लिए हुए कमरे के बाहर चले गए।

तीसरा बयान

इस समय रात बहुत बाकी थी और सुबह की सुफेदी आसमान पर फैला ही चाहती थी। और लोग तो अपने-अपने ठिकाने चले गए और दोनों नकाबपोशों ने भी अपने घर का रास्ता लिया, मगर भूतनाथ सीधे देवीसिह के डेरे पर चला गया। दरवाजे ही पर पहरवाले की जुबानी मालूम हुआ कि वे सोए हैं परन्तु देवीसिह को न मालूम किस तरह भूतनाथ के आने की आहट मिल गई (शायद जागते हों) अस्तु वे तुरन्त बाहर निकल आए और भूतनाथ का हाथ पकड के कमरे के अन्दर ले गए। इस समय वहा केवल एक शमादान की मद्धिम रोशनी हो रही थी, दोनों आदमी फर्श पर बैठ गए और यों बातचीत होने लगी---

देवी-कहो इस समय तुम्हारा आना कैसे हुआ ? क्या कोई नई बात हुई ?

भूत-बेशक नई बात हुई और वह इतनी खुशी की हुई है जिसके योग्य मै नहीं था।

देवी-(ताज्जुब से) वह क्या ?

भूत-आज महाराज ने मुझे अपना ऐयार बना लिया और इस इज्जत के लिए मुझे यह खजर दिया है।

इतना कहकर भूतनाथ ने महाराज का दिया हुआ खजर और जीतसिह तथा गोपालसिह का दिया हुआ बटुआ और तमचा देवीसिह को दिखाया और कहा इसी बात की मुबारकबाद देने के लिए मै आया हू कि तुम्हारा एक नालायक दोस्त इस दरजे को पहुच गया।

देवी-(प्रसन्न होकर और भूतनाथ को गले से लगाकर) बेशक यह बडी खुशी की बात है ऐसी अवस्था में तुम्हें अपने पुराने मालिक रणधीरसिह को भी सलाम करने के लिए जाना चाहिए।

भूत-जरूर जाऊगा।

देवी-यह कार्रवाई कब हुई ?

भूत–अभी थोडी ही देर हुई। मै इस समय महाराज के पास से ही आ रहा हू।

इतना कहकर भूतनाथ ने आज रात का बिल्कुल हाल देवीसिह से बयान किया। इसके बाद भूतनाथ और देवीसिह में देर तक बातचीत होती रही और जब दिन अच्छी तरह निकल आया तब दोनों ऐयार वहा से उठे और स्नान सध्या की फिक्र में लगे।

जरूरी कामों से निश्चिन्ती पा और स्नान-पूजा से निवृत्त होकर भूतनाथ अपने पुराने मालिक रणधीरसिह के पास चला गया। बेशक उसके दिल में इस बात का खुटका लगा हुआ था कि उसका पुराना मालिक उसे देखकर प्रसन्न न होगा बल्कि सामना होने पर भी कुछ देर तक उसके दिल में इस बात का गुमान बना रहा मगर जिस समय भूतनाथ ने अपना खुलासा हाल बयान किया उस समय रणधीरसिह को बहुत मेहरवान और प्रसन्न पाया। रणधीरसिह ने उसको खिलअत और इनाम भी दिया और बहुत देर तक उससे तरह तरह की बातें करते रहे।

चौथा बयान

यह बात तो तै पा चुकी थी कि सब कामों के पहिले कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह की शादी हो जानी चाहिए अस्तु इसी खयाल से जीतसिह शादी के इन्तजाम में जी जान से कोशिश कर रहे हैं और इस बात की खबर पाकर सभी प्रसन्न हो रहे हैं कि आज दोनों कुमार यहा आ जायेंगे और शीघ्र ही उनकी शादी भी हो जायेगी। महाराज की आज्ञानुसार जीतसिह मुलाकात करने के लिए रणधीरसिह के पास गये और हर तरह की जरूरी बातचीत करने के बाद इस बात का फैसला भी कर आय कि किशोरी के साथ ही साथ कामिनी का भी कन्यादान रणधीरसिह ही करेंगे। साथ ही इसके रणधीरसिहकी यह बात भी जीतसिह ने मजूर कर ली कि इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह के आने के पहिले किशोरी और कामिनी उनके (रणधीरसिह के) खेमे में पहुचा दी जायगी। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात् किशोरी और कामिनी बड़ी हिफाजत के साथ रणधीरसिह के खेमे में पहुचा दी गई और बहुत से फौजी सिपाहियों के साथ पन्नालाल, रामनारायण चुन्नीलाल और पण्डित बद्रीनाथ ऐयार खास उनकी हिफाजत के लिए छोड दिए गए।

आज कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह के आने की उम्मीद में लोग खुशी- खुशी तरह-तरह के खर्चे कर रहे हैं। आज ही के दिन आने के लिए दोनों कुमारों ने चीठी लिखी थी इस लिए आज उनके दादा-दादी बाप मा दोस्तों और मुहब्बतियों को उम्मीद हो रही है कि उनकी तरसती हुइ आखे ठडी होंगी और जुदाई के सदमों से मुर्झाया हुआ दिल हरा हागा। अहलकार और खैरखाह लोग जरूरी कामों को भी छोडकर तिलिस्मी इमारत में इकट्ठे हो रहे हैं। इसी तरह हर एक अदना और आला दोनों कुमारों के आने की उम्मीद में खुश हो रहा है। गरीबों और मोहताजों की खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं उन्हें इस बात का पूरा विश्वास हो रहा है कि अब उनका दारिद्रय दूर हो जायगा।

दो पहर दिन ढलने के बाद दानों नकाबपोश भी आकर हाजिर हो गए है केवल वे ही नहीं बल्कि उनके साथ और भी कई नकाबपोश है जिनके बारे में लोग तरह-तरहके चर्चे कर रह है और साथ ही यह भी कह रहे हैं कि जिस समय ये नकावपोश लाग अपने चहरों से नकावें हटावेंगे उस समय जरुर कोई न कोई अनूठी घटना देखने-सुनने में आवगी।

नकावपोशों की जुबानी यह तो मालूम हो ही चुका था कि दोनों कुमार उसी पत्थर वाले तिलिस्मी चबूतरे के अन्दर से प्रकट होंगे जिस पर पत्थर का आदमी सोया हुआ है इसलिए इस समय महाराज राजा साहब और सलाहकार लोग उसी दालान में इकट्ठ हो रहे है और वह दालान भी सज-सजा कर लोगो के बैठने लायक बना दिया गया है।

तीन पहर दिन बीत जान पर तिलिस्मी चबूतरे के अन्दर से कुछ विचित्र ही ढग के बाजे की आवाज आने लगी जो कि भारी मगर सुरीली थी और जिसके सबब से लोगों का ध्यान उसी तरफ खिचा। महाराज सुरेन्द्रसिह बीरेन्द्रसिह जीतसिह तेजसिह गोपालसिह तथा दोनों नकाबपोश उठकर उस चबूतरे के पास गये। ये लोग बडे गौर से उस चबूतरे की अवस्था पर ध्यान दिये रहे क्योंकि इस बात का पूरा गुमान था कि पहिले की तरह आज भी उस चबूतरे का अगला हिस्सा किवाड के पल्ले की तरह खुलकर जमीन के साथ लग जायगा। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात जिस तरह बलभद्रसिह के आने और जाने के वक्त उस चबूतरे का अगला हिस्सा खुल गया था उसी तरह इस समय भी वह किवाड के पल्ल की तरह धीरे-धीरे खुलकर जमीन के साथ लग गया और उसके अन्दर से कुअर इन्द्रजीतसिह तथा आनन्दसिह बाहर निकलकर महाराज सुरेन्द्रसिह के पैरों पर गिर पडे। उन्होंने बडे प्रेम से उठा कर छाती से लगा लिया। इसके बाद दोनों कुमारों ने अपने पिता का चरण छूआ फिर जीतसिह और तेजसिह को प्रणाम करने के बाद राजा गोपालसिह से मिले। इसके बाद बारी-बारी नकाबपोशों ऐयारों दोस्तों से भी मुलाकात की।

वन्दोवस्त पहिले से हो चुका था और इशारा भी बधा हुआ था अतएव जिस समय कुमार महाराज के चरणों पर गिरे हैं उसी समय फाटक पर से वाजे की आवाज आने लगी जिससे बाहर वालों को भी मालूम हो गया कि कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह आ गये।

इस सम्य की खुशी का हाल लिखना हमारी ताकत से वाहर है हाँ अन्दाज पाठकगण स्वयम् कर सकते है कि जब दोनों कुमार मिलने के लिए महल के अन्दर गए तो औरतों में खुशी का दरिया कितने जोश के साथ उमडा होगा। महल के अन्दर दोनों कुमारों का इन्तजार वनिस्वत वाहर के ज्यादा होगा यह सोचकर महाराज ने दोनों कुमारों को ज्यादे देर तक बाहर राकना मुनासिब न समझकर शीघ्र ही महल में जाने की आज्ञा दीऔरदोनों कुमार भी खुशी-खुशी महल क अन्दर जाकर सभों से मिले। उनकी मा और दादी की बढती हुई खुशी का ता आज अन्दाज करना बहुत ही कठिन है जिन्होंने लडकों की जुदाई तथा रजऔर नाउम्मीदी के साथ ही साथ तरहतरह की खबरों से पहुची हुई चोटों को अपने नाजुक कलेजों पर सम्हाल कर और देवताओं की मिन्नतें मान कर आज का दिन देखने के लिए अपनी नन्हीं सी जान को वचा रक्खा था। अगर उन्हें समय और नीति पर विशष ध्यान न रहता तो आज घटो तक अपने बच्चों को कलेजे से अलग करक वातचीत करने और महल के वाहर जाने का मौका न देतीं।

दानों कुमार खुशी-खुशी सभों से मिले। एक-एक करके सभों से कुशल मगल पूछा कमलिनी और लाडिली से भी चार आखें हुई मगर किशोरी और कामिनी की सूरत दिखाई न पडी जिनके बारे में सुन चुक थे कि महल के अन्दर पहुच चुकी है। इस सबब से उनके दिल का जो कुछ तकलीफ थी उसका अन्दाज औरों को तो नहीं मगर कुछ-कुछ कमलिनी और लाडिली को मिल गया और उन्होंने बात ही वात में इस भेद को खुलवा कर कुमारों की तसल्ली करवा दी।

थाडी देर तक दोनों भाई महल के अन्दर रहे और इस बीच में बाहर से कई दफे तलबी का सन्देश पहुचा अस्तु पुन मिलने का वादा करके वहा से उठ करके बाहर की तरफ रवाना हुए और उस आलीशान कमरे में पहुचे जिसमें कई खास-खासआदमियाँ और आपुस वालों क साथ महाराज सुरेन्द्रसिह और बीरेन्द्रसिह उनका इन्तजार कर रहे थे। इस समय इस कमरे में यद्यपि राजा गोपालसिह नकाबपाश लोग जीतसिह तेजसिह, भूतनाथ और ऐयार लोग भी मौजूद थे मगर कोई आदमी ऐसा न था जिसके सामने भेद की बातें करने में किसी तरह का सकोच हो। दोनों कुमार इशारा पाकर अपने दादा साहव के बगल में बैठ गए और धीरे-धीरे बात-चीत होने लगी।

सुरेन्द–(दानों कुमारों को तरफ देख क) भैरोसिह ओर तारासिह तुम्हारे पास गये हुए थे, उन दोनों को कहा छोडा ?

इन्द्रजीत–(मुस्कुराते हुए) जी वे दोनों तो हम लागों के आने के पहिले ही से हजूर में हाजिर हैं !

सुरेन्द–(ताज्जुब से चारो तरफ दख कं) कहा ?

महाराज क साथ ही साथ और लोगों ने भी ताज्जुब के साथ एक दूसरे पर निगाह डाली।

इन्दजीत–(दोनों सर्दार नकाबपोशों की तरफ बता कर जिनके साथ और भी कई नकाबपोश थे) रामसिह और लक्ष्मणसिह का काम आज वे ही दोनों पूरा कर रहे हैं।

इतना सुनते ही दोनों नकाबपोशों नें अपने अपने चेहरे पर से नकाब हटा दी और उनके बदले में भैरोसिह तथा तारासिह दिखाई देने लगे। इस जादू के से मामले को दख कर सभी की विचित्र अवस्था हो गई और सब ताज्जुब में आकर एक दूसरे का मुँह देखने लग। भूतनाथ और देवीसिह की तो और ही अवस्था हो रही थी। बडे जोरों के साथ उनका कलेजा उछलने लगा और वे कुल बातें उन्हें याद आ गईं जो नकाबपोशों के मकान में जाकर देखी सुनी थी और वे दानों ही ताज्जुव के साथ गौर करने लगे।

सुरेन्द–(दोनों कुमारों से) जब भैरो और तारासिह तुम्हारे पास नहीं गये और यहा मौजूद थे तब भी तो रामसिह और लक्ष्मणसिह कई दफे आये थे उस समय इस विचित्र पर्दे (नकाब) के अन्दर कौन छिपा हुआ था ?

इन्द्रजीत–(और सब नकाबपोशों की तरफ बताकर) कई दफे इन लोगों में से बारी-बारी से समयानुसार और कई दफे स्वय हम दोनों भाई इसी पौशाक और नकाब को पहिर कर हाजिर हुए थे।

कुँअर इन्द्रजीतसिह की इस वात ने इन लोगों को और भी ताज्जुब में डाल दिया और सब कोई हैरानी के साथ उनकी तरफ देखने लगे। भूतनाथ और देवीसिह की तो बात ही निराली थी इनको तो विश्वास हो गया कि नकाबोशों की टोह में जिस मकान के अन्दरहमलोग गए थे उसके मालिक ये ही दोनों है इन्हीं दोनों की मर्जी से हम लोग गिरफ्तार हुए थे और इन्हीं दोनों के सामने पेश किए गए थे। देवीसिह यद्यपि अपने दिल को वार-बार समझा बुझाकर सम्हालते थे मगर इस बात का ख्याल हो ही जाता था कि अपने ही लोगों ने मेरी बेइज्जती की और मेरे ही लड़के ने इस काम में शरीक होकर मेरे साथ दगा की। मगर देखना चाहिए इन सब बातों का भेद सबब और नतीजा क्या खुलता है।

भूतनाथ इस सोच में घडी-घडी सर झुका लेता था कि मेरे पुराने ऐब जिन्हें मै बडी कोशिश से छिपा रहा था अब छिपे न रहे क्योंकि इन नकाबपोशों को मेरा रत्ती-रत्ती हाल मालूम है और दोनों कुमार इन सभों के मालिक और मुखिया हैं अस्तु इनसे कोई बात छिपी न रह गई होगी। इसके अतिरिक्त मै अपनी आखों से देख चुका हू कि मुझसे बदला लेने की नीयत रखने वाला मेरा दुश्मन उस विचित्र तस्वीर को लिए हुए इनके सामने हाजिर हुआ था और मेरा लड़का हरनामसिह भी वहा मौजूद था। यद्यपि अब इस बात की आशा नहीं हो सकती कि यह दोनों कुमार मुझे जलील और बेआबरू करेंगे मगर फिर भी शरमिन्दगी मेरा पल्ला नहीं छोड़ती। इत्तिफाक की बात है कि जिस तरह मरी स्त्री और लडके ने इस मामले में शरीक होकर मुझ छकाया है उसी तरह देवीसिह की स्त्री लडके ने उनके दिल में भी चुटकी ली है।

देवीसिह और भूतनाथ की तरफ हमारे और ऐयारों के दिल में भी करीब-करीब इसी ढग की बातें पैदा हा रही थीं और इन सब भेदों को जानने के लिए वे बनिस्बत पहिले के अब और ज्यादे बेचैन हा रहे थे तथा यही हाल हमारे महाराज और गोपालसिह वगैरह का भी था।

कुछ देर तक ताज्जुब के साथ सन्नाटा रहा और इसके बाद पुन महाराज ने दोनों कुमारों की तरफ देख कर कहा--

सुरेन्द्र--ताज्जुब की बात है कि तुम दोनों भाई यहा आकर भी अपने को छिपाए रहे!

इन्द्रजीत--(हाथ जोडकर) मै यहा हाजिर होकर पहिले ही अर्ज कर चुका था कि हमलोगों का भेद जानन के लिए उद्योग न किया जाय, हम लोग मौका पाकर स्वय अपने को प्रकट कर देंगे। इसके अतिरिक्त तिलिस्मी नियमों के अनुसार तब तक हम दोनों भाई प्रकट नहीं हो सकते थे जब तक कि अपना काम पूरा कर इसी तिलिस्मी चबूतरे की राह से तिलिस्म के बाहर नहीं निकल आते। साथ ही इसके हम लोगों की यह भी इच्छा थी कि जब तक निश्चिन्त होकर खुले तौर पर यहा न आ जाय तब तक कैदियों के मुकदमें का फैसला न होने पावे क्योंकि इस तिलिस्म के अन्दर जाने के बाद हम लोगों का बहुत से नए-नए भेद मालूम हुए है जो (नकाबपोशों की तरफ इशारा करके) इन लोगों से सम्बन्ध रखते है और जिनका आपसे अर्ज करना बहुत जरूरी था।

सुरेन्द्र--(मुस्कुराते हुए और नकाबपाशों की तरफ देख के) अब ता इन लोगों को भी अपने चेहरों स नकाब उतार देना चाहिए हम समझते है इस समय इन लोगों का चेहरा साफ होगा।

कुअर इन्द्रजीतसिह का इशारा पाकर उन नकाबपोशों ने भी अपने-अपने चेहरे से नकाब हटा दी और खडे हाकर अदब के साथ महाराज को सलाम किया। ये नकाबपोश गिनती में पाच थे और इन्हीं पाचों में इस समय वे दोनों सूरतें भी दिखाई पडीं जो यहा दर्बार में पहिले दिखाई पड़ चुकी थीं या जिन्हें देख कर दारोगा और बेगम के छक्के छूट गए थे।

अब सभों का ध्यान उन पाँचों नकाबपोशों की तरफ खिच गया जिनका असल हाल जानने के लिए लोग पहिले ही से बेचैन हो रहे थे क्योंकि इन्होंने कैदियों के मामले में कुछ विचित्र ढग की कैफियत और उलझन पैदा कर दी थी। यद्यपि कह सकते है कि यहा पर इन पाचों को पहिचानने वाला कोई न था मगर भूतनाथ और राजा गोपालसिह बडे गौर से उनकी तरफ दखकर अपने हाफजे (स्मरण-शक्ति) पर जोर दे रहे थे और उम्मीद करत थे कि इन्हें हम पहिचान लेंगे

सुरेन्द्र--(गोपालसिह की तरफ देख के) केवल हमीं लोग नहीं बल्कि हजारों आदमी इनका हाल जानने के लिए बेताब हो रहे है अस्तु ऐसा करना चाहिए कि एक साथ ही इनका हाल मालूम हो जाय।

गोपाल--मेरी भी यही राय है।

एक नकाब--कैदियों के सामने ही हम लोगों का किस्सा सुना जाय तो ठीक है क्योंकि ऐसा होने ही से महाराज का विचार पूरा होगा। इसके अतिरिक्त हम लोगों के किस्से में वही कैदी हामी भरेंगे और कई अधूरी बातों को पूरा करके महाराज का शक दूर करेंगे जिन्हें हमलोग नहीं जानते और जिनके लिए महाराज उत्सुक होंगे।

इन्द--(सुरेन्दसिह से) बेशक ऐसा ही है। यद्यपि हम दानों भाई इन लोगों का किस्सा सुन चुके है मगर कई भेदों का पता नही लगा जिनके जाने बिना जी बेचैन हो रहा है और उनका मालूम होना कैदियों की इच्छा पर निर्भर है।

सुरेन्द्र--(कुछ सोचकर) खैर ऐसा ही किया जायगा।

इसके बाद उनलोगों में दूसरे तरह की बातचीत होने लगी जिसके लिखने की कोई आवश्यकता नहीं जान पडती। इसके घण्टे भर बाद दर्बार बर्खास्त हुआ और सब कोई अपने स्थान पर चले गए।

कुअर इन्द्रजीतसिह का दिल किशोरी को देखने के लिए बेताब हो रहा था। उन्हें विश्वास था कि यहा पहुचकर उससे अच्छी तरह मुलाकात होगी और बहुत दिनों का अरमान भरा दिल उसकी सोहबत से तस्कीन *पाकर पुन उनके

---

* सात्वना।

कब्ज में आ जायगा मगर ऐसा नहीं हुआ अर्थात कुमार के आने के पहिले ही वह अपने नाना के डेरे में भेज दी गई और उनका अरमान भरा दिल उसी तरह तडपता रह गया। यद्यपि उन्हें इस बात का भी विश्वास था कि अब उनकी शादी किशोरी के साथ बहुत जल्दी होने वाली है मगर फिर भी उनका मनचला दिल जिसे उनके कब्जे के बाहर भए मुद्दत हो चुकी थी इन चापलूसियों को कब मानता था ! इसी तरह कमलिनी से भी मीठी-मीठी बातें करने के लिए वे कम बेताब न थे, मगर बडों का लहाज उन्हें इस बात की इजाजत नहीं देता था कि उससे एकान्त में मुलाकात करें यद्यपि ऐसा करते तो कोई हर्ज की बात न थी मगर इस लिए कि उसके साथ भी शादी होने की उम्मीद थी शर्म और लेहाज के फेर में पडे हुए थे। परन्तु कमलिनी को इस बात का सोच-विचार कुछ भी न था। हम इसका सबब भी बयान नहीं कर सकते हॉ इतना कहेंगे कि जिस कमरे में कुअर इन्द्रजीतसिंह का डेरा था उसी के पीछे वाले कमरे में कमलिनी का डेरा था और उस कमरे से कुअर इन्द्रजीतसिंह के कमरे में आने जाने के लिए एक छोटा सा दरवाजा भी था जो इस समय भीतर की तरफ से अर्थात् कमलिनी की तरफ से बन्द था और कुमार को इस बात की कुछ भी खबर न थी।

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी थी। कुअर इन्द्रजीतसिंह अपने पलग पर लेटे हुए किशोरी और कमलिनी के विषय में तरह-तरह की बातें सोच रहे थे। उनके पास कोई दूसरा आदमी न था और एक तरह पर सन्नाटा छाया हुआ था एकाएक पीछे वाले कमरे का (जिसमें कमलिनी का डेरा था) दरवाजा खुला और अन्दर से एक लौंडी आती हुई दिखाई पडी।

कुमार ने चौंककर उसकी तरफ देखा और उसने हाथजोड कर अर्ज किया "कमलिनीजी आपसे मिला चाहती हैं आज्ञा हो तो स्वयं यहाँ आवें या आप ही वहा तक चलें।

कुमार–वे कहा है ?

लौंडी–(पिछले कमरे की तरफ बताकर) इसी कमरे में तो उनका डेरा है।

कुमार–(ताज्जुब से) इसी कमरे में ! मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी। अच्छा मैं स्वयं चलता हू, तू इस कमरे का दरवाजा बन्द कर दे।

आज्ञा पाते ही लौंडी ने कुमार के कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया जिसमें बाहर से कोई यकायक आ न जाय। इसके बाद इशारा पाकर लौंडी कमलिनी के कमरे की तरफ रवाना हुई और कुमार उसके पीछे-पीछे चले। चौखट के अन्दर पैर रखते ही कुमार की निगाह कमलिनी पर पडी और वे भौचक्के से होकर उसकी सूरत देखने लगे।

इस समय कमलिनी की सुन्दरता बनिस्बत पहिले के बहुत ही बढी चढी देखने में आई। पहिले जिन दिनों कुमार ने कमलिनी की सूरत देखी थी उन दिनों वह बिल्कुल उदासीन और मामूली ढग पर रहा करती थी। मायारानी के झगडे की बदौलत उसकी जान जोखिम में पडी हुई थी और इस कारण से उसके दिमाग को एक पल के लिए भी छुट्टी नहीं मिलती थी। इन्हीं सब कारणों से उसके शरीर और चेहरे की रौनक में भी बहुत बडा फर्क पड गया था तिस पर भी वह कुमार की सच्ची निगाह में एक ही दिखाई देती थी। फिर आज उसकी खुशी और खूबसूरती का क्या कहना है जब कि ईश्वर की कृपा से वह अपने तमाम दुश्मनों पर फतह पा चुकी है तरद्दुदों के बोझ से हलकी हो चुकी है और मनमानी उम्मीदों के साथ अपने को बनाने सवारने का भी मुनासिब मौका उसे मिल गया है यही सबब है कि इस समय वह रानियों की सी पोशाक और सजावट में दिखाई देती है।

कमलिनी की इस समय की खूबसूरती ने कुमार पर बहुत बडा असर किया और बनिस्बत पहिले के इस समय बहुत ज्यादे कुमार के दिल पर अपना अधिकार जमा लिया। कुमार को देखते ही कमलिनी ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कुमार ने आगे बढ कर बडे प्रेम से उसका हाथ पकडकर पूछा "कहो अच्छी तो हो ?

अब भी अच्छी न होऊगी ! कहकर मुस्कुराती हुई कमलिनी ने कुमार को ले जाकर एक ऊची गद्दी पर बैठाया और आप भी उनके पास बैठकर यों बातचीत करने लगी।

कम–कहिए तिलिस्म के अदर आपको किसी तरह की तकलीफ तो नहीं हुई !

इन्द्र–ईश्वर की कृपा से हमलोग कुशलपूर्वक यहा तक चले आए और अब तुम्हें धन्यवाद देते हैं क्योंकि यह सब बातें तुम्हारी ही बदौलत नसीब हुई है। अगर तुम मदद न करती तो न मालूम हम लोगों की क्या दशा हुइ होती ! हमारे साथ तुमने जो कुछ उपकार किया है उसका बदला चुकाना मेरी सामर्थ्य के बाहर है सिवाय इसके मैं क्या कह सकता हू कि (अपनी छाती पर हाथ रख के) यह जान और शरीर तुम्हारा है।

कम–(मुस्कुराकर) अब कृपा कर इन सब बातों को तो रहने दीजिए क्योंकि इस समय मैंने इस लिए आपको तकलीफ नहीं दी है कि अपनी बडाई सुनू या आप पर अपना अधिकार जमाऊँ।

इन्द्र–अधिकार तो तुमने उसी दिन मुझ पर जमा लिया जिस दिन ऐयार के हाथ से मेरी जान बचाई और मुझसे

तलवार की लडाई लड़कर। यह दिखा दिया कि मैं तुमसे ताकत में कम नहीं हूँ।

कम–(हॅसकर) क्या खूब ! मै और आपका मुकाबला करूँ !! आपने मुझ भी क्या कोई पहलवान समझ लिया है ?

इन्द्र–आखिर बात क्या थी जो उस दिन मैं तुमसे हार गया था।

कम–आपको उस बेहोशी की दवा ने कमजोर और खराब कर दिया था जो एक अनाडी ऐयार की बनाई हुई थी। उस समय केवल आपको चैतन्य करने के लिए मै लड पडी थी नहीं तो कहॉ मैं और कहॉ आप !!

इन्द्र–खैर ऐसा ही होगा मगर इसमें तो काई शक नहीं कि तुमने मेरी जान बचाई केवल उसी दफे नहीं बल्कि उसके बाद भी कई दफे।

कम–भया भया अब इन सब बातों को जाने दीजिए मैं ऐसी बातें नहीं सुना चाहती। हॉ यह बतलाइए कि तिलिस्म के अन्दर आपने क्या-क्या देखा और क्या-क्या किया ?

इन्द्र–मैं सब हाल तुमसे कहूँगा बल्कि उन नकाबपोशों की कैफियत भी तुमसे बयान करूँगा जो मुझे तिलिस्म के अन्दर मिले हें और जिनका हाल अभी तक मैंने किसी से बयान नहीं किया मगर तुम यह सब हाल अपनी जुबान से किसी से न कहना।

कम–बहुत खूब।

इसके बाद कुँअर इन्द्रजीतसिह ने अपना कुल हाल कमलिनी स बयान किया और कमलिनी ने भी अपना पिछला किस्सा और उसी के साथ-साथ भूतनाथ नानक तथा तारा वगैरह का हाल बयान किया जो कुमार को मालूम न था इसक बाद पुन उन दोनों में बातचीत होने लगी —

इन्द–आज तुम्हारी जुबानी बहुत सी ऐसी बातें मालूम हुई है जिनके विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता था।

कम–इसी तरह आपकी जुबानी उन नकाबपोशों का हाल सुनकर मेरी अजीब हालत हो रही है क्या करूँ आपने मना कर दिया है कि किसी से इस बात का जिक्र न करना नहीं तो अपने सुयोग्य पति से उनके विषय में

इन्द–(चौंककर) हैं ! क्या तुम्हारी शादी हो गई ?

कम–(कुमार के चेहरे का रग उडा हुआ देख मुस्कराकर) मै अपने उस तालाब वाले मकान में अर्ज कर चुकी थी कि मेरी शादी बहुत जल्द होन वाली है।

इन्द–(लम्बी सॉस लेकर) हॉ मुझे याद हे मगर यह उम्मीद न थी कि वह इतनी जल्दी हो जायगी।

कम–तो क्या आप मुझे हमेशा कुँआरी ही देखना पसन्द करते थे ?

इन्द–नहीं ऐसा तो नहीं है मगर

कम–मगर क्या ? कहिए-कहिए रुके क्यों ?

इन्द–यही कि मुझसे पूछ ता लिया होता।

कम–क्या खूब ! आपन क्या मुझसे पूछ कर इन्द्रानी के साथ शादी की थी जो मैं आपसे पूछ लेती !

इतना कह कर कमलिनी हॅस पडी और कुमार ने शर्मा कर सिर झुका लिया मगर इस समय कुमार के चेहरे से **मालूम होता था कि उन्हें हद दर्जे का रज है और कलेजे में बेहिसाब तकलीफ हो रही है।**

कुमार–(कमलिनी क पास से कुछ खिसककर) मुझे विश्वास था कि जन्म भर तुमसे हॅसने बोलने का मौका मिलेगा।

कम–मेरे दिल में भी यही बात बैठी हुई थी और यही तै कर मैंने शादी की है कि आपसे कभी अलग होने की नौबत न आवे। मगर आप हट क्यों गये ? आइये आइये जिस जगह बैठे थे बैठिए।

कुमार– नह-नही पराई स्त्री के साथ एकान्त में बैठना ही धर्म के विरुद्ध है न कि साथ सटकर मगर आश्चर्य है कि तुम्हें इस बात का कुछ भो खयाल नहीं है ! मुझे विश्वास था कि तुमसे कभी कोई काम धर्म के विरुद्ध न हा सकेगा।

कम–मुझमें आपने कौन सी बात धर्म-विरुद्ध पाई ?

कुमार–यही कि तुम इस तरह एकान्त में बैठ कर मुझसे बातें कर रही हो इससे भी बढ कर वह बात जो अभी तुमन अपनी जुबान से कबूल की है कि तुमसे कभी अलग न होऊँगी। क्या यह धर्म विरुद्ध नहीं है ? क्या तुम्हारा पति इस बात को जानकर भी तुम्हें पतिव्रता कहेगा ?

कम–कहेगा और जरूर कहेगा अगर न कहे तो इसमें उसकी भूल है। उसे निश्चय है और आप सच समझिए कि कमलिनी प्राण दे देना स्वीकार करेगी परन्तु धर्म-विरुद्ध पथ पर चलना कदापि नहीं आपको मरी नीयत पर ध्यान देना चाहिए दिल्लगी क कामों पर नहीं क्योंकि मैं ऐयारा भी हूँ। यदि मेरा पति इस समय यहॉ आ जाय तो आपका मालूम हा

जाय कि मुझ पर वह जरा भी शक नही करता और मेरा इस तरह वैठना उस कुछ भी नहीं गढाता।

कुमार–(कुछ सोचकर) ताज्जुब ह !!

कम–अभी क्या आगे आपको और भी ताज्जुब होगा।

इतना कहकर कमलिनी ने कुमार की कलाई पकड ली और अपनी तरफ खींच कर कहा पहिल आप अपनी जगह पर आ कर वैठ जाइये तो मुझसे वात कीजिए।

कुमार–नहीं-नहीं कमलिनी तुम्हें एसा उचित नहीं है। दुनिया में धर्म से वढ कर और काई वस्तु नहीं है अतएव तुम्हें भी धर्म पर ध्यान रखना चाहिए अब तुम स्वतन्त्र नहीं हो पराये की स्त्री हा।

कम–यह सच है परन्तु मैं आपसे पूछती हूँ कि यदि मेरी शादी आपके साथ होती ता क्या मै आनन्दसिह से हॅसने वालने या दिल्लगी करने लायक न रहती ?

कुमार–वेशक उस हालत में तुम आनन्द से हस वोल और दिल्लगी भी कर सकती थी क्योंकि यह बात हम लोगों में लौकिक व्यवहार के ढग पर प्रचलित ह।

कम–वस तो में आपसे भी उसी तरह हॅस बोल सकती हूँ और ऐसा करने के लिए मेरे पति ने मुझे आज्ञा दे दी है मैं उनका पत्र आपको दिखा सक्ती हूँ इसलिए कि मरा आपका नाता ही ऐसा है एक नहीं बल्कि तीन-तीन नाते है।

इन्द–सा कैस ?

कम–सुनिए मैं कहती हूँ। एक ता मैं किशोरी का अपनी बहिन समझती हूँ अतएत आप मेरे बहनोई हुए कहिए हॉ।

कुमार–यह कोई वात नहीं है क्योंकि अभी किशारी की शादी मेरे साथ नहीं हुई है।

कम–खैर जाने दीजिए मैं दूसरा और तीसरा नाता बताती हूँ। जिनके साथ मेरी शादी हुई है वे राजा गोपालसिह के भाई हैं इसके अतिरिक्त लक्ष्मीदवी की मैं छोटी वहिन हूँ अतएव आपकी साली भी हुई।

कुमार–(कुछ सोचकर) हॉ इस वात स तो मै कायल हुआ मगर तुम्हारी नीयत में किसी तरह का फर्क न आना चाहिए।

कम–इससे आप वफिक्र रहिए मै अपना धर्म किसी तरह नहीं विगाड सकती और न दुनिया में काई ऐसा पैदा हुआ है जो मेरी नीयत विगाड सके। आइए अव अपन ठिकान पर वैठ जाइए।

लाचार कुॅअर इन्द्रजीतसिह अपने ठिकाने पर जा वैठे और पुन, बात-चीत करने लगे मगर उदास वहुत थे और यह बात उनके चेहर से ज़ाहिर होती थी।

यकायक कमलिनी ने मसखरेपन के साथ हॅस दिया जिससे कुमार को खयाल हो गया कि इसन जो कुछ कहा सब झूठ और केवल दिल्लगी के लिए था मगर साथ ही इसके उनके दिल का खुटका साफ नहीं हुआ।

कम–अच्छा आप यह वताइये कि तिलिस्म की कैफियत देखने के लिए राजा साहव तिलिस्म के अन्दर जायेंगे या नहीं ?

कुमार–जरूर जायेंगे।

कम–कब ?

कुमार–सो मैं ठीक नहीं कह सकता शायद कल या परसों ही जॉय कहते थे कि तिलिस्म के अन्दर चल कर देखने का इरादा है। इसके जवाव में भाई गोपालसिह ने कहा कि जरूर और जल्द चल कर देखना चाहिए।

कम–तो क्या हम लोगों को साथ ले जायेंग ?

कुमार–सो मैं कैसे कहूँ ? तुम गोपाल भाई से कहो वह इसका बन्दोबस्त जरूर कर देंगे, मुझे तो कुछ कहते शर्म मालूम होगी।

कम–सो तो ठीक है अच्छा मै कल उनसे कहूँगी।

कुमार–मगर तुम लोगों के साथ किशोरी भी अगर तिलिस्म के अन्दर जाकर वहॉ की कैफियत न देखेगी तो मुझे इस बात का रज जरूर होगा।

कम–वात तो वाजिब है मगर वह इस मकान में तभी आवेंगी जब उनकी शादी आपके साथ हो जायगी ओर इसीलिए वह अपने नाना के डेरे में भेज दी गई हैं। खैर तो आप इस मामले को तव तक के लिए टाल दीजिए जब तक आपकी शादी न हो जाय।

कुमार–मैं भी यही उचित समझता हूँ अगर महाराज मान जायँ तो।

कम–या आप हम लोगों को फिर दूसरी दफे ल जाइयेगा।

कुमार–हॉं यह भी हो सकता है। अबकी दफे का वहॉं जाना महाराज की इच्छा पर ही छोड देना चाहिए वे जिसे चाहें ले जायॅं।

कम–बेशक ऐसा ही ठीक होगा। अब तिलिस्म के अन्दर जाने में आपत्ति ही काहे की है जब और जै दफे आप चाहेंगे हम लोगों को ले जायेंगे।

कुमार–नहीं सो बात ठीक नहीं बहुत सी जगहें ऐसी है जहॉं सैकड़ों दफे जाने में भी हर्ज नहीं है मगर बहुत सी जगहें तिलिस्म टूट जाने पर भी नाजुक हालत में बनी हुई है और जहॉं बारम्बार जाना कठिन है तथापि मै तुम लोगों को वहॉं की सैर जरूर कराऊँगा।

कम–मै समझती हूँ कि मेरे उस तालाब वाले तिलिस्मी मकान के नीचे भी कोई तिलिस्म जरूर है। उस खून से लिखी हुई तिलिस्मी किताब का मजमून पूरी तरह से मेरी समझ में नहीं आता था तथापि इस ढग की बातों पर कुछ शक जरूर होता था।

कुमार–तुम्हारा ख्याल बहुत ठीक है हम दोनों भाइयों को खून से लिखी उस तिलिस्मी किताब के पढने से बहुत ज्यादे हाल मालूम हुआ है इसके अतिरिक्त मुझे तुम्हारा वह स्थान पसन्द भी ज्यादे है और पहिले भी मै (जब तुम्हारे पास वहॉं था) यह विचार कर चुका था कि सब कामों से निश्चिन्त हो कर कुछ दिनों के लिये जरूर यहॉं डेरा जमाऊँगा परन्तु अब मेरा वह विचार कुछ काम नहीं दे सकता।

कम–सो क्यों ?

कुमार–इसलिए कि अपर तुम्हारी बातें ठीक हैं तो अब वह स्थान तुम्हारे पति के अधिकार में होगा।

कम–(मुस्कुराकर) तो क्या हर्ज है मैं उनसे कहकर आपको दिला दूँगी।

कुमार–मैं किसी से भीख मॉंगना पसन्द नहीं करता और न उनसे लडकर वह स्थान छीन लेना ही मुझे मजूर होगा। कमलिनी सच तो यों है कि तुमने मुझे धोखा दिया और बहुत बडा धोखा दिया ! मुझे तुमसे यह उम्मीद न थी। (कुछ सोचकर) एक दफे तुम मुझसे फिर कह दो कि सचमुच तुम्हारी शादी हो गई।

इसके जवाब में कमलिनी खिलखिलाकर हॅंस पडी और बोली, 'हॉं हो गई।

कुमार–मेरे सिर पर हाथ रख कर कसम खाओ।

कम–(कुमार के पैरों पर हाथ रख के) आपसे मै कसम खाकर कहती हूँ कि मेरी शादी हो गई।

हम लिख नहीं सकते कि इस समय कुमार के दिल की कैसी बुरी हालत थी रज और अफसोस से उनका दिल बैठा जाता था और कमलिनी हॅंस हॅंस कर चुटकियॉं लेती थी। बडी मुश्किल से कुमार थोड़ी देर तक और उसके पास बैठे और फिर उठ कर लम्बी सॉंसें लेते हुए अपने कमरे में चले गए। रात भर उन्हें नींद न आई।

पॉंचवॉं बयान

महाराज की आज्ञानुसार कुँअर इन्दजीतसिह और आनन्दसिह के विवाह की तैयारी बडी धूमधाम से हो रही है। यहॉं से चुनार तक की सडकें दोनों तरफ जाफरी * वाली से सजाई गई है जिन पर रोशनी की जायगी और जिनके बीच में थोडी थोडी दूर पर बडे फाटक बने हुए है और उन पर नौबतखाने का इन्तजाम किया गया है। टट्टियों के दोनों तरफ बाजार बसाया जायगा जिसकी तैयारी कारिन्दे लोग बडी खूबी और मुस्तैदी के साथ कर रहे है। इसी तरह और भी तरह तरह के तमाशों का इन्तजाम बीच बीच में हो रहा है जिसके सबब से बहुत ज्यादे भीड-भाड होने की उम्मीद है और अभी से तमाशबीनों का जमावडा हो रहा है। रोशनी के साथ साथ आतिशबाजी के इन्तजाम में भी बडी सरगर्मी दिखाई जा रही है कोशिश हो रही है कि उम्दी से उम्दी तथा अनूठी आतिशबाजी का तमाशा लोगों को दिखाया जाय। इसी तरह और भी कई तरह के खेल तमाशे और नाच इत्यादि का बन्दोबस्त हो रहा है मगर इस समय हमें इन सब बातों से कोई मतलब नहीं है क्योंकि हम अपने पाठकों को उस तिलिस्मी मकान की तरफ ले चलना चाहते हैं जहा भूतनाथ और देवीसिह ने नकाबपोशों के फेर में पडकर शर्मिन्दगी उठाई थी और जहा इस समय दोनों कुमार अपने दादा पिता तथा और सब आपुस वालों को तिलिस्मी तमाशा दिखाने के लिए ले जा रहे हैं।

सुबह का सुहावना समय है और ठडी हवा चल रही है। जगली फूलों की खुशबू से मस्त भई सुन्दर-सुन्दर रग-बिरगी खूबसूरत चिडियाएँ हमारे सर्वगुण सम्पन्न मुसाफिरों को मुबारकबाद दे रही हैं जो तिलिस्म की सैर करने की नीयत से मीठी-मीठी बातें करते हुए जा रहे है।

---

*पीला फूल।

घोडे पर सवार महाराज सुरन्दसिह राजा वीरेन्द्रसिह जीतसिह गोपालसिह इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह तथा पैदल तेजसिह देवीसिह भूतनाथ पडित वद्रीनाथ रामनारायण पन्नालाल वगैरह अपने ऐयार लोग जा रहे थे। तिलिस्म के अन्दर मिले हुए कैदी अर्थात् नकाबपोश लोग तथा भैरोसिह और तारासिह इस समय साथ न थे। इस समय देवीसिह से ज्याद भूतनाथ का कलेजा उछल रहा था और वह अपनी स्त्री का असली भेद जानन के लिए बेताब हो रहा था। जव से उस इस बात का पता लगा कि वे दोनों सर्दार नकाबपोश यही दोनों कुमार हैं तथा उस विचित्र मकान के मालिक भी यही हैं तब से उसके दिल का खुटका कुछ कम तो हो गया मगर खुलासा हाल जानने और पूछने का मौका न मिलन के सवब उसकी बेचैनी दूर नहीं हुई थी। वह यह भी जानना चाहता था कि अब उसकी स्त्री तथा लडका हरनामसिह किस फिक्र में है। इस समय जब वह फिर उसी ठिकाने जा रहा था जहाँ अपनी स्त्री की बदौलत गिरफ्तार होकर अपने लडके का विचित्र हाल देखा था तब उसका दिल और बैचेन हो उठा था, मगर साथ ही इसके उसे इस बात की भी उम्मीद हो रही थी कि अब उसे उसकी स्त्री का हाल मालूम हो जायगा या कुछ पूछने का मौका ही मिलेगा।

ये लाग धीरे-धीरे बातचीत करते हुए उसी खोह या सुरग की तरफ जा रहे थे। पहर भर दिन से ज्यादे न चढा होगा जव ये लोग उस ठिकाने पहुँच गए। महाराज सुरेन्द्रसिह और बीरेन्द्रसिह वगैरह घोडे पर से नीचे उतर पडे साईसों ने घोड़े थाम लिए और इसके बाद उन सभों ने सुरग के अन्दर पैर रक्खा। इस सुरग वाले रास्ते का कुछ खुलासा हाल हम इस सन्तति के उन्नीसवें भाग में लिख आये है जब भूतनाथ यहाँ आया था, अब पुन दोहराने की आवश्यकता नहीं जान पडती हॉ इतना लिख देना जरूरी जान पडता है कि दोनों कुमारों ने सभों को यह बात समझा दी कि यह रास्ता बन्द क्यों कर हो सकता है। वन्द होने का स्थान वही चबूतरा था जो सुरग के बीच में पडता था।

जिस समय ये लोग सुरग तै करके मैदान में पहुँचे सामने वही छोटा बॅगला दिखाई दिया जिसका हाल हम पहिले लिख चुके हैं। इस समय उस बगले के आगे वाले दालान में दा नकाबपोश औरतें हाथ में तीर कमान लिए टहलती पहरा दे रही थीं जिन्हें देखते ही खास करके भूतनाथ और देवीसिह को बडा ताज्जुब हुआ और उनके दिल में तरह-तरह की बातें पैदा होने लगीं। भूतनाथ का इशारा पाकर देवीसिह ने कुँअर इन्द्रजीतसिह से पूछा 'ये दोनों नकाबपोश औरतें कौन हैं जो पहरा दें रही हे? इसके जवाव मेंकुमार तो चुप रह गए मगर महाराज सुरेन्द्रसिह ने कहा इसके जानने की तुम लोगों को क्या जल्दी पडी हुई है? जो कोई होंगी सब मालूम ही हो जायगा!"

इस जवाव ने देवीसिह और भूतनाथ को देर तक के लिए चुप कर दिया और विश्वास दिला दिया कि महाराज को इनका हाल जरूर मालूम है।

जव उन औरतों ने इन सभों को पहिचाना और अपनी तरफ आते दखा तो वंगले के अन्दर घुसकर गायब हो गई तब तक ये लोग भी उस दालान में जा पहुँचे। इस समय भी यह बॅगला उसी हालत में था जैसा कि भूतनाथ और देवीसिह ने देखा था।

हम पहिले लिख चुके है ओर अब भी लिखते है कि यह बॅगला जैसा बाहर से सादा और साधारण मालूम होता था वैसा अन्दर से न था और यह बात दालान में पहुँचने के साथ ही सभों को मालूम हो गई। दालान की दीवारों में निहायत खूबसूरत और आला दर्जे की कारीगरी का नमूना दिखाने वाली तस्वीरों को देख कर सब कोई दग हो गए और मुसौवर के हाथों की तारीफ करने लगे। ये तस्वीरें एक निहायत आलीशान इमारत की थीं और उसके ऊपर वडे बडे हरफों में यह लिखा हुआ था –

यह तिलिस्म चुनारगढ के पास ही एक निहायत खूवसूरत जगल में कायम किया गया है जिसे महाराज सुरेन्द्रसिह के लडके वीरेन्द्रसिह तोड़ेंगे।

इस तस्वीर को दखते ही सभों को विश्वास हो गया कि वह तिलिस्मी खॅडहर जिसमें तिलिस्मी बगुला था और जिस पर इस समय निहायत आलीशान इमारत बनी हुई है पहिले इसी सूरत शक्ल में था जिसे जमाने के हेर-फेर ने अच्छी तरह बर्वाद करके उजाड और भयानक बना दिया। इमारत की उस बडी और पूरी तस्वीर के नीचे उसके भीतर वाले छोटे-छोटे टुकडे भी बना कर दिखलाए गए थे और उस वगुले की तस्वीर भी बनी हुई थी जिसे राजा बीरेन्द्रसिह ने वखूबी पहिचान लिया और कहा 'बेशक अपने जमान में यह बहुत अच्छी इमारत थी।

सुरेन्द्र–यद्यपि आजकल जो इमारत तिलिस्मी खॅडहर पर बनी है और जिसके बनवाने में जीतसिह ने अपनी तबीयतदारी और कारीगरी का अच्छा नमूना दिखाया हे वुरी नहीं है मगर हमें इस पहिली इमारत का ढंग कुछ अनूठा और सुन्दर मालूम पडता है।

जीत–बेशक एसा ही है। यदि इस तस्वीर को मैं पहिले देखे हुए होता तो जरूर इसी ढग की इमारत बनवाता।

वीरेन्द्र–ओर ऐसा होनें सें वह तिलिस्म एक दफे नया मालूम पडता।

इन्द्–यह चुनारगढ वाला तिलिस्म साधारण नहीं वल्कि बहुत वडा है। चुनारगढ नौगढ, विजयगढ और जमानिया तक इसकी शाखा फैली हुई है। इस वगले को इस बहुत बडे और फैल हुए तिलिस्म का केन्द्र समझना चाहिए वल्कि एसा भी कह सकत हैं कि यह वगला तिलिस्म का नमूना है।

थाडी दर तक दालान में खड़ इसी किस्म की वातें होती रहीं और इसक वाद स मों का साथ लिए हुए दोनों कुमार वॅगल के अन्दर रवाना हुए।

सदर दरवाजे का पर्दा उठा कर अन्दर जाते ही य लोग एक गोल कमरे में पहुँचे जा भूतनाथ और देवीसिह का देखा हुआ था। इस गोल और गुम्वजदार खूबसूरत कमरे की दीवारों पर जगल पहाड और रोहतासगढ़ की तस्वीरें वनी हुई थीं। घडी-घडी तारीफ न करक एक ही दफा लिख दना ठीक हागा कि इस वगले में जितनी तस्वीरें दखने में आई सभी आला दर्जे की कारीगरी का नमूना थीं और यही मालूम होता था कि आज ही वनकर तैयार हुई हैं। इस राहतासगढ की तस्वीर को देखकर सव काई वड प्रसन्न हुए और राजा वीरेन्द्रसिह न तेजसिह की तरफ देखकर कहा राहतासगढ किले और पहाडी की वहुत ठीक और साफ तस्वीर वनी हुई है।

तेज–जगल भी उसी ढग का वना हुआ है, कहीं-कहीं पे ही फर्क मालूम पडता है नहीं तो वाज जगहें ता एसी बनी हुई हैं जैसी मैंने अपनी आखों से देखी हैं। (उगली का इशारा करके) देखिये यह वही कब्रिस्तान है जिस राह से हम लोग रोहतासगढ के तहखाने में घुस थे। हाँ यह देखिए वारीक हरफो में लिखा हुआ भी है तहखान में जान का वाहरी फाटक।

इन्द्–इस तस्वीर को अगर गौर से दखेंगे तो वहाँ का वहुत ज्यादे हाल मालूम हागा। जिस जमान में यह इमारत तैयार हुई थी उस जमान में वहाँ की और उसके चारो तरफ की जैसी अवस्था थी वैसी ही इस तस्वीर में दिखाई है आज चाह कुछ फर्क पड गया हा!

तेज–वशक ऐसा ही है।

इन्द्–इसक अतिरिक्त एक और ताज्जुव की वात अर्ज करूँगा।

वीरेन्द्र–वह क्या ?

इन्द्–इसी दीवार मे स वहाँ (रोहतासगढ) जाने का रास्ता भी है!

सुरेन्द्र–वाह-वाह! क्या तुम इस रास्ते को खाल भी सकते हा ?

इन्द्–जी हाँ हम लाग इसमें वहुत दूर तक जाकर घूम आय हैं।

सुरेन्द्र–यह भद तुम्हें क्योंकर मालूम हुआ ?

इन्द्–उसी रिक्तगन्थ की वदौलत हम दोनों भाइयों का इन सब जगहा का हाल और भद पूरा-पूरा मालूम हो चुका है। यदि आज्ञा हो तो दर्वाजा खोलकर मै आपका रोहतासगढ के तहखाने में ले जा सकता हूँ। वहाँ के तहखाने में भी एक छाटा सा तिलिस्म है जा इसी वडे तिलिस्म स सम्बन्ध रखता है और हम लोग उस खोल या तोड भी सकते हैं परन्तु अभी तक एसा करन का इरादा नहीं किया।

सुरन्द्र–उस रोहतासगढ वाले तिलिस्म के अन्दर क्या चीज है ?

इन्द्–उसमें केवल अनूठे अद्भुत आश्चर्य गुण वाले हर्वे रक्खे हुए हैं उन्हीं हरवों पर वह तिलिस्म बँधा है। जैसा तिलिस्मी खजर हम लोगों के पास है या जैस तिलिस्मी जिर वख्तर और हरवा की बदौलत राजा गोपालसिह ने कृष्णाजिन्न का रूप धरा था वैस हरवों और असवावों का ता वहाँ ढेर लगा हुआ है हाँ खजाना वहाँ कुछ भी नहीं है।

सुरेन्द्र–ऐसे अनूठे हर्वे खजान स क्या कम हे ?

जीत–वेशक! (इन्द्रजीतसिह स) जिस हिस्से को तुम दोनों भाइयों न तोडा है उसमें भी तो ऐस अनूठ हरवे होंगे ?

इन्द्–जी हाँ मगर वहुत कम है ?

वीरेन्द्र–अच्छा यदि ईश्वर की कृपा हुई ता फिर किसी मौके पर इस रास्ते से रोहतासगढ़ जाने का इरादा करेंगे। (मकान की सजावट और परदों की तरफ देखकर) क्या यह सव सामान कन्दील पर्दे और बिछावन वगैरह तुम लोग तिलिस्म के अन्दर से लाए थे ?

इन्द्–जी नहीं जव हम लाग यहाँ आए ता इस वॅगले को इसी तरह सजा-सजाय पाया और तीन-चार आदमियों को भी दखा जा इस वॅगले की हिफाजत और मेर आने का इन्तजार कर रहे थे।

सुरेन्द्र–(ताज्जुब से) वे लोग कौन थे और अब कहाँ हैं ?

इन्द्–दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि वे लोग इन्द्रदेव के मुलाजिम थे जो इस समय अपने मालिक के पास चले

गए हैं। इस तिलिस्म का दारोगा असल में इन्ददव है, और आज के पहिले भी इसी के बुजुर्ग लोग दारोगा होते आए हैं।

सुरेन्द–यह तुमने वडी खुशी की वात सुनाई मगर अफसोस यह है कि इन्ददेव ने हमें इन वातों की कुछ भी खबर न की।

आनन्द–अगर इन्द्रदेव ने इन सब वातों को आपसे छिपाया तो यह कोई ताज्जुव की वात नहीं है तिलिस्मी कायदे क मुताविक एसा हाना ही चाहिए था।

सुरेन्द–ठीक है ता मालूम हाता है कि यह सब सामान तुम्हारी खातिरदारी के लिए इन्द्रदेव की आज्ञानुसार किया गया है।

आनन्द–जी हाँ उसके आदमियों की जुवानी मैंन भी यही सुना है।

इसके वाद वडी देर तक य लोग इन तस्वीरों को दखते और ताज्जुव भरी वातें करते रहे और फिर आगे की तरफ वढ। जव पहिले भूतनाथ और दवीसिह यहाँ आए थे तव हम लिख चुक हैं कि इस कमरे में सदर सर्वाजे के अतिरिक्त और भी तीन दर्वाजे थे–इत्यादि। अस्तु उन दोनों एयारों की तरह इस समय भी सभी को साथ लिए हुए दोनों कुमार दाहिने तरफ वाले दर्वाज के अन्दर गए और घूमते हुए उसी वहुत वडे और आलीशान कमरे में पहुँचे जिसमें पहिले भूतनाथ और देवीसिह ने पहुँच कर आश्चर्य भरा तमाशा देखा था।

इस आलीशान कमरे की तस्वीरें खूवी और खूवसूरती में सब तस्वीरों से वढी-चढी थीं तथा दीवारों पर जगल मैदान पहाड, खाह दर्रे झरने शिकारगाह तथा शहरपनाह किले मोर्चे और लडाई इत्यादि की तस्वीरें बनी हुई थीं जिन्हें सब कोई गौर और ताज्जुव क साथ दखन लगे।

सुरेन्द–(एक किले की तरफ इशारा करके) यह तो चुनारगढ किले की तस्वीर है।

इन्दजीत–जी हाँ (उँगली का इशारा करके) और यह जमानिया के किले तथा खास बाग की तस्वीर है। इसी दीवार में से वहाँ जाने का भी रास्ता है। महाराज सूर्यकान्त के जमाने में उनके शिकारगाह और जगल की यह सूरत थी।

बीरेन्द–और यह लडाई की तस्वीर कैसी है ? इसका क्या मतलव है ?

इन्दजीत–इन तस्वीरों में वडी कारीगरी खर्च की गई है। महाराज सूर्यकान्त ने अपनी फौज को जिस तरह की कवायद और व्यूह-रचना इत्यादि का ढग सिखाया था वे सब वातें इन तस्वीरों में भरी हुई हैं। तर्कीब करने से ये सब तस्वीरें चलती-फिरती और काम करती नजर आएगी और साथ ही इसके फौजी वाजा भी वजता हुआ सुनाई देगा अर्थात् इन तस्वीरों में जितने वाजे वाले हैं वे सब भी अपना अपना काम करते हुए मालूम पडेंगे। परन्तु इस तमाशे का आनन्द रात को मालूम पडेगा दिन का नहीं। इन्हीं तस्वीरों क कारण इस कमरे का नाम 'व्यूह-मण्डल रक्खा गया है वह देखिए ऊपर की तरफ वडे हरफों में लिखा हुआ है।

सुरेन्द–यह वहुत अच्छी कारीगरी है। इस तमाशे को हम जरूर देखेंगे वल्कि और भी कई आदमियों को दिखाएंगे।

इन्द–वहुत अच्छा रात हा जाने पर मैं इसका वन्दोवस्त करूँगा तव तक आप और चीजों को देखें।

य लाग जिस दर्वाजे से इस कमरे में आये थे उसके अतिरिक्त एक दर्वाजा और भी था जिस राह से सभों को लिए दोनों कुमार दूसर कमरे में पहुँच। इस कमरे की दीवार विल्कुल साफ थी अर्थात् उस पर किसी तरह की तस्वीर वनी हुई न थी। कमरे क वीचोंवीच दो चवूतर सगमर्मर क वने हुए थ जिसमें एक खाली था और दूसरे चवूतरे के ऊपर सुफेद पत्थर की एक खूवसूरत पुतली वैठी हुई थी। इस जगह पर ठहर कर कुँअर इन्दजीतसिह ने अपने दादा और पिता की तरफ दखा और कहा 'नकावपाशों की जुवानी हम लागों का तिलिस्मी-हाल जो कुछ आपने सुना है वह ता याद ही हागा अस्तु हम लोग पहिली दफे तिलिस्म स वाहर निकलकर जिस सुहावनी घाटी में पहुँचे थे वह यही स्थान है *। इसी चवूतर के अन्दर से हमलाग वाहर हुए थे। उस 'रिक्तगन्थ' की वदौलत हम दोनों भाई यहाँ तक ता पहुँच गए मगर उसक वाद इस चवूतर वाले तिलिस्म कोखोल न सके हाँ इतना जरूर है कि उस रिक्तगन्थ' की वदौलत इस चवूतर में स (जिस पर एक पुतली वैठी हुई थी उसकी तरफ इशारा करके) एक दूसरी किताव हाथ लगी जिसकी वदौलत हम लोगों ने उस चवूतरे वाल तिलिस्म को खाला और उसी राह स आपकी सेवा में जा पहुँचे।

आप सुन चुके हैं कि जव हम दोनों भाई राजा गोपालसिह को मायारानी की कैद से छुडाकर जमानिया क खास वाग वाले दवमन्दिर में गये थे तव वहाँ पहिले आनन्दसिह तिलिस्म के फन्दे में फँस गये थ उन्हें छुडान के लिए जव मैं भी उसी गडहे या कूएँ में कूद पडा ता चलता-चलता एक दूसर वाग में पहुँचा जिसके वीचा-वीच में एक मन्दिर था। उस मन्दिर वाल तिलिस्म का जव मैंने ताडा ता वहाँ एक पुतली क अन्दर काई चमकती हुई चीज मुझ मिली **।

---

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति वीसवा भाग नौवाँ वयान।

** देखिये दसवा भाग पहिला वयान।

बीरेन्द्र–हॉ हमें याद है उस मूरत को तुमने उखाड कर किसी कोठरी के अन्दर फेंक दिया था और वह फूट कर चूने की कली की तरह हो गई थी। उसी के पेट में से

इन्द्र–जी हॉ।

सुरेन्द्र–तो वह चमकती हुई चीज क्या थी और वह कहॉ है ?

इन्द्र–वह हीरे की बनी हुई एक चाभी थी जो अभी तक मेरे पास मौजूद है (जेब से निकालकर और महाराज को दिखाकर) दखिये यही ताली इस पुतली के पेट में लगती है।

सभों ने उस चाभी को गौर से देखा और इन्द्रजीतसिह ने सभों के देखते-देखते उस चबूतरे पर बैठी हुई पुतली की नाभी में वह ताली लगाई। उसका पेट छोटी आलमारी के पल्ल की तरह खुल गया।

इन्द्र–बस इसी मं वह किताब मेरे हाथ लगी जिसकी बदौलत वह चबूतरे वाला तिलिस्म खोला।

सुरेन्द्र–अब वह किताब कहॉ है ?

इन्द्र–आनन्दसिह के पास मौजूद है।

इतना कहकर इन्दजीतसिह ने आनन्दसिह की तरफ देखा और उन्होंने एक छोटी सी किताब जिसके अक्षर बहुत बारीक थे महाराज के हाथ में दे दी। यह किताब भाजपत्र की थी जिस महाराज ने बडे गौर स दखा और दा तीन जगहों से कुछ पढकर आनन्दसिह के हाथ में देते हुए कहा "इसे निश्चिन्ती में एक दफे पढेंग।

इन्द्र–यह पुतली वाला चबूतरा उस तिलिस्म में घुसने का दर्वाजा है।

इतना कहकर इन्द्रजीतसिह ने उस पुतली के पट में (जो खुल गया था) हाथ डाल क कोई पेच घुमाया जिसस चबूतरे के दाहिने तरफ वाली दीवार किवाड के पल्ले की तरह धीरे-धीरे खुलकर जमीन के साथ सट गई और नीचे उतरने के लिए सीढियॉ दिखाई देने लगीं। इन्द्रजीतसिह ने तिलिस्मी खजर हाथ में लिया और उसका कब्जा दबाकर रोशनी करते हुए चबूतरे के अन्दर घुसे तथा सभों का अपने पीछे आन के लिए कहा। सभों के पीछे आनन्दसिह तिलिस्मी खजर की रोशनी करते हुए चबूतरे के अन्दर घुसे। लगभग पन्द्रह बीस चक्करदार सीढियों के नीचे उतरने बाद ये लोग एक बहुत बडे कमरे में पहुँचे जिसमें सोने-चॉदी के सैकडों बडे-बड हण्डे अशर्फियों और जवाहिरात स भरे पडे हुए थे जिसे सभों ने बडे गौर और ताज्जुब के साथ देखा और महाराज ने कहा इस खजाने का अन्दाज करना भी मुश्किल है।

इन्द्र–जो कुछ खजाना इस तिलिस्म के अन्दर मैने देखा और पाया है उसका वह पासँगा भी नहीं है। उसे बहुत जल्द ऐयार लोग आपके पास पहुँचावेगे। उन्हीं के साथ-साथ कई चीजें दिल्लगी की भी है जिसमें एक चीज वह भी है जिसकी बदौलत हम लोग एक दफे हॅसते-हॅसते दीवार के अन्दर कूद पडे थे और मायारानी के हाथ में गिरफ्तार हो गए थे।

जीत–(ताज्जुब से) हॉ ! अगर वह चीज शीघ्र बाहर निकाल ली जाय ता (सुरेन्द्रसिह से) कुमारों की शादी में सर्वसाधारण को उसका तमाशा दिखाया जा सकता है।

सुरेन्द्र–बहुत अच्छी बात है ऐसा ही होगा।

इन्द्र–इस तिलिस्म में घुसन के पहिल ही मैने सभों का साथ छोड दिया अर्थात् नकाबपोशों को (कैदियों को) बाहर ही छोडकर केवल हम दोनों भाई इसके अन्दर घुसे और काम करते हुए धीरे-धीरे आपकी सेवा में जा पहुँचे।

सुरेन्द्र–तो शायद उसी तरह हम लोग भी सब तमाशा देखते हुए उसी चबूतरे की राह बाहर निकलेंगे ?

जीत–मगर क्या उन चलती-फिरती तस्वीरों का तमाशा न देखिएगा ?

सुरेन्द्र–हॉ ठीक है उस तमाशे का तो जरूर देखेंगे।

इन्द्र–तो अब यहॉ से लौट चलना चाहिए क्योंकि इस कमरे के आगे बढ़ कर फिर आज ही लौट आना कठिन है इसके अतिरिक्त अब दिन भी थोडा रह गया है सध्यावन्दन और भोजन इत्यादि के लिए भी समय चाहिए और फिर उन तस्वीरों का तमाशा भी कम से कम चार-पॉच घण्टे में पूरा हागा।

सुरेन्द्र–क्या हर्ज है लौट चलो।

महाराज की आज्ञानुसार सब कोई वहॉ से लौटे और घूमत हुए बॅगले के बाहर निकल आये देखा तो वास्तव में दिन बहुत कम रह गया था।

छठवॉं बयान

रात आधे घण्टे से कुछ ज्यादे जा चुकी थी जब सब कोई अपने जरूरी कामों से निश्चिन्त हो बगले के अन्दर घुसे और घूमत-फिरत उसी चलती फिरती तस्वीरों वाले कमरों में पहुँचे। इस समय बगले के अन्दर हर एक कमरे में रोशनी बखूबी हो रही थी जिसके विषय में भूतनाथ और दवीसिह ने ताज्जुब के साथ ख्याल किया कि यह काम बेशक उन्हीं लोगों का होगा जिन्हें यहाँ पहुँचने के साथ ही हम लोगों ने पहरा दते देखा था या जो हम लोगों को देखते ही बँगले के अन्दर घुसकर गायब हो गए थे। ताज्जुब है कि महाराज को तथा और लोगों को भी उनके विषय में कुछ खयाल नहीं है और न कोई पूछता ही है कि वे कौन थे और कहाँ गए मगर हमारा दिल उनका हाल जाने बिना बेचैन हो रहा है।

चलती-फिरती तस्वीरों वाले कमरे मे फर्श बिछा हुआ था और गद्दी लगी हुई थी जिस पर सब कोई कायदे से अपने, अपने ठिकाने पर बैठ गए और इसके बाद इन्द्रजीतसिह की आज्ञानुसार रोशनी गुल कर दी गई। कमरे में बिल्कुल अन्धकार छा गया, यह नहीं मालूम होता था कि कौन क्या कर रहा है, खास करके इन्द्रजीतसिह की तरफ लोगों का ध्यान था जो इस तमाशे को दिखाने वाले थे मगर कोई कह नहीं सकता था कि वह क्या कर रहे हैं।

थोडी ही देर बाद चारो तरफ की दीवारें चमकने लगीं और उन पर की कुल तस्वीरें बहुत साफ और बनिस्बत पहिले के अच्छी तरह पर दिखाई देने लगीं। पहिले तो वे तस्वीरें केवल चित्रकारी ही मालूम पड़ती थीं परन्तु अब सचमुच की बातें दिखाई देने लगीं। मालूम होता था कि जैसे हम बहुत दूर से सच्चे, किले पहाड़, जगल, मैदान, आदमी, जानवर और फौज इत्यादि का दख रहे है। सब कोई ताज्जुब के साथ इस कैफियत को देख रहे थे कि एकाएक बाजे की आवाज कान में आई। उस समय सभों का ध्यान जमानिया के किले की तस्वीर पर जा पडा जिधर से बाजे की आवाज आ रही थी। देखा कि—

एक बहुत बडे मैदान में बेहिसाब फौज खडी है जिसक आमने-सामने दो हिस्से हैं मानों दो फौजें लडने के लिए तैयार खडी हैं। पैदल और सवार दोनों तरह की फौजें हैं तथा तोप इत्यादि और भी जो कुछ सामान फौज में होना चाहिए सब मौजूद है। इन दोनों फौजों में एक की पोशाक सुर्ख और दूसरे की आसमानी थी। बाजे की आवाज केवल सुर्ख वर्दी वाली फौज में से आ रही थी बल्कि बाजे वाले अपना काम करते हुए साफ दिखाई दे रहे थे। यकायक सुर्ख वर्दी वाली फौज हिलती हुई दिखाई पड़ी। गौर करने पर मालूम हुआ कि सिपाहियों का मुँह घूम गया है और वे दाहिनी तरफ वाली एक पहाडी की तरफ तेजी के साथ बाजे की गत पर पैर रखते हुए जा रहे है। जैसे-जैसे फौज दूर होती जाती वैसे ही वैसे बाजे की आवाज भी दूर होती जाती है। देखते ही देखते वह फौज मानों कोसो दूर निकल गई और एक पहाडी के पीछे की तरफ जाकर आँखों की ओट हा गई। अब यह मैदान ज्यादा खुलासा दिखाई देने लगा। जितनी जगह दोनों फौजों से भरी थी वह एक फौज के हिस्से में रह गई। अब दूसरी अर्थात् आसमानी वर्दी वाली फौज में से बाजे की आवाज आने लगी और सवार तथा पैदल भी चलते हुए दिखाई देने लगे। एक सवार हाथ में झडा लिए तेजी के साथ घोडा दौडाकर मैदान में आ खडा हुआ और झडे के इशारे से फौज को कवायद कराने लगा। यह कवायद घन्टे भर तक होती रही और इस बीच में आले दर्जे की होशियारी, चालाकी, मुस्तैदी सफाई और बहादुरी दिखाई दी जिससे सब कोई बहुत ही खुश हुए और महाराज बोले 'बेशक फौज को ऐसा ही तैयार करना चाहिए।'

कवायद खत्म करन के बाद बाजा बन्द हुआ और वह फौज एक तरफ का रवाना हुई मगर थोडी ही दूर गई होगी कि उस लाल वर्दी वाली फौज न यकायक पहाडी के पीछे से निकलकर इस फोज पर धावा मारा। इस कैफियत को दखत ही आस्मानी वर्दी वाली फौज के अफसर होशियार हो गए झडे का इशारा पाते ही बाजा पुन बजने लगा और फौजी सिपाही लडने के लिए तैयार हा गये। इस बीच में वह फौज भी आ पहुँची और दोनों में घमासान लडाई हाने लगी।

इस कैफियत का देखकर महाराज सुरेन्द्रसिह बीरेन्द्रसिंह गोपालसिह जीतसिंह तेजसिह वगैरह तथा एयार लोग हैरान हा गए और हद्द स ज्यादे ताज्जुब करने लगे। लडाई के फन की ऐसी कोई बात नहीं बच गई थी जो इसमें न दिखाइ पडी हा। कइ तरह की घुसबन्दी और किलबन्दी के साथ ही साथ घुडसवारों की करीगरी ने सभों को सकते में डाल दिया और सभों के मुँह से बार-बार वाह वाह की आवाज निकलती रही। यह तमाशा कई घण्टे में खत्म हुआ और इसक बाद एकदम स अन्धकार हा गया उस समय इन्द्रजीतसिह ने तिलिस्मी खजर की राशनी की और देवीसिह ने इशारा पाकर कमर में रोशनी कर दी जा पहिल बुझा दी गई थी।

इस समय रात थाडी सी बच गइ थी जा सभों ने सो कर बिता दी मगर स्वप्न में भी इसी तरह के खेल तमाशे देखते रह। जब सभों की आँखें खुलीं ता दिन घन्टे भर से ज्यादे चढ चुका था। घबडाकर सब कोई उठ खडे हुए और कमरे

के बाहर निकल कर जरुरी कामों स छुट्टी पाने का बन्दोबस्त करने लगे। इस समय जिन चीजों की सभों को जरूरत पडी वे सब चीजें वहाँ मौजूद पाइ गई मगर उन दोनों स्त्रियों पर किसी की निगाह न पडी जिन्हें यहाँ आने के साथ ही सभों न देखा था।

सातवां बयान

जरुरी कामों से छुट्टी पाकर ऐयारों ने रसोई बनाई क्योंकि इस बँगले में खाने-पीने की सभी चीजें मौजूद थीं और सभों ने खुशी-खुशी भोजन किया। इसके बाद सब कोई उसी कमरे में आकर बैठे जिसमें रात को चलती-फिरती तस्वीरों का तमाशा देखा था। इस समय भी सभी की निगाहें ताज्जुब के साथ उन्हीं तस्वीरों पर पड रही थीं।

सुरेन्द—मैं बहुत गौर कर चुका मगर अभी तक समझ में न आया कि इन तस्वीरों में किस तरह की कारीगरी खर्च की गइ है जो ऐसा तमाशा दिखाती है। अगर मैं अपनी आँखों से इस तमाशे को देखे हुए न होता और कोई गैर आदमी मेरे सामने ऐसे तमाशे का जिक्र करता तो मैं उसे पागल समझता मगर स्वयं देख लेने पर भी विश्वास नहीं होता कि दीवार पर लिखी तस्वीरें इस तरह काम करेंगी।

जीत—बेशक ऐसी ही बात है। इतना देखकर भी किसी के सामने यह कहने का हौसला न होगा कि मैंने ऐसा तमाशा देखा था और सुनने वाला भी कभी विश्वास न करेगा।

ज्योति—आखिर तिलिस्म ही है, इसमें सभी बातें आश्चर्य की दिखाई देती हैं।

जीत—चाहे तिलिस्म हो मगर इसके बनाने वाले तो आदमी ही थे। जो बात मनुष्य के लिये नहीं हो सकती वह तिलिस्म में भी नहीं दिखाई दे सकती।

गोपाल—आपका कहना बहुत ठीक है तिलिस्म की बातें चाहे कैसा ही ताज्जुब पैदा करने वाली क्यों न हो मगर गौर करन से उनकी कारीगरी का पता लग ही जायगा। यह आपने बहुत ठीक कहा कि आखिर तिलिस्म के बनाने वाले भी तो मनुष्य ही थे!

वीरेन्द—जब तक समझ में न आवे तब तक उसे चाहे कोई जादू कहे या करामात कहे मगर हम लोग सिवाय कारीगरी के कुछ भी नहीं कह सकते और पता लगाने तथा भेद मालूम हो जाने पर यह बात सिद्ध हो ही जाती है। इन चित्रों की कारीगरी पर भी अगर गौर किया जायगा तो कुछ न कुछ पता लग ही जायगा। ताज्जुब नहीं कि इन्दजीतसिह को इसका भेद मालूम हो।

सुरेन्द—बेशक इन्दजीत को इसका भेद मालूम होगा। (इन्दजीतसिह की तरफ देखकर) तुमने किस तर्कीब से इन तस्वीरों को चलाया था?

इन्द—(मुस्कुराते हुए) मैं आपसे अर्ज करूँगा और यह भी बताऊँगा कि इसमें भेद क्या है। मालूम हो जाने पर आप इसे एक साधारण बात समझेंगे। पहिली दफे जब मैंने इस तमाश को देखा था तो मुझे भी बडा ही ताज्जुब हुआ था मगर तिलिस्मी किताब की मदद से जब मैं इस दीवार के अन्दर पहुँचा तो सब भेद खुल गया।

सुरेन्द—(खुश होकर) तब तो हम लोग बेफायदे परेशान हो रहे है और इतना सोच-विचार कर रहे हैं। तुम अब तक चुप क्यों थे?

गोपाल—ऐयारो की तबीयत देख रहे थे।

सुरेन्द—खैर बताओ तो सही कि इसमें क्या कारीगरी है?

इतना सुनते ही इन्दजीतसिह उठकर उस दीवार के पास चले गये और सुरेन्दसिह की तरफ देखकर बोले आप जरा तकलीफ कीजिए तो मैं इस भेद को समझा दूँ!

महाराज सुरेन्दसिह उठकर कुमार के पास चले गये और उनके पीछे-पीछे और लोग भी वहाँ जाकर खडे हो गये। इन्दजीतसिह ने दीवार पर हाथ फेरकर सुरेन्दसिह से कहा देखिये असल में इस दीवार पर किसी तरह की चित्रकारी या तस्वीर नहीं है दीवार साफ है और वास्तव में शीशे की है तस्वीरें जो दिखाई देती है वे इसके अन्दर और दीवार से अलग है।

कुमार की बात सुनकर सभों न ताज्जुब के साथ दीवार पर हाथ फेरा और जीतसिह ने खुश होकर कहा— ठीक है अब हम इस कारीगरी को समझ गए! ये तस्वीरें अलग-अलग किसी धातु के टुकडों पर बनी हुई है और ताज्जुब नही तार या कमानी पर जडी हों किसी तरह की शक्ति पाकर उस तार या कमानी की हरकत होती है और उस समय ये तस्वीरें चलती हुई दिखाई देती है।

इन्द–बेशक यही बात है, देखिये अब मैं इन्हें फिर चलाकर आपको दिखाता हूँ और इसके बाद दीवार के अन्दर ले चलकर सब भ्रम दूर कर दूँगा।

इस दीवार में जिस जगह जमानिया के किले की तस्वीर बनी थी उसी जगह किले के बुर्ज के ठिकाने पर कई सूराख भी दिखाए गये थे जिनमें से एक छेद (सूराख) वास्तव में सच्चा था पर वह केवल इतना ही लम्बा चौडा था कि एक मामूली खंजर का कुछ हिस्सा उसके अन्दर जा सकता था। इन्द्रजीतसिंह ने कमर से तिलिस्मी खंजर निकालकर उसके अन्दर डाल दिया और महाराज सुरेन्द्रसिंह तथा जीतसिंह की तरफ देखकर कहा इस दीवार के अन्दर जो पुर्जे बने हैं व बिजली का असर पहुँचने ही से चलने-फिरने या हिलने लगते हैं। इस तिलिस्मी खंजर में आप जानते ही हैं कि पूरे दर्जे की बिजली भरी हुई है अस्तु उन पुर्जों के साथ इनका संयोग होने ही से काम हो जाता है।

इतना कहकर इन्द्रजीतसिंह चुपचाप खडे हो गये और सभों ने बडे गौर से उन तस्वीरों का देखना शुरू किया बल्कि महाराज सुरेन्द्रसिंह वीरेन्द्रसिंह जीतसिंह तेजसिंह और राजा गोपालसिंह ने तो कई तस्वीरों के ऊपर हाथ भी रख दिया। इतने ही में दीवार चमकने लगी और इसके बाद तस्वीरों ने वही रंगत पैदा की जो हम ऊपर के बयान में लिख आये हैं। महाराज और राजा गोपालसिंह वगैरह ने जो अपना हाथ तस्वीरों पर रख दिया था वह ज्यों का त्यों बना रहा और तस्वीरें उनके हाथों के नीचे से निकल कर इधर से उधर आने जाने लगीं जिसका असर उनके हाथों पर कुछ भी नहीं होता था इस सबब से सभों को निश्चय हो गया कि उन तस्वीरों का इस दीवार से कोई सम्बन्ध नहीं। इस बीच में कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने अपना तिलिस्मी खंजर दीवार के अन्दर से खींच लिया। उसी समय दीवार का चमकना बन्द हो गया और तस्वीरें जहां की तहां खडी हो गईं अर्थात् जो जितनी चल चुकी थी उतनी ही चलकर रुक गई। दीवार पर गौर करने से मालूम होता था कि तस्वीर पहिले ढंग की नहीं बल्कि दूसरे ढंग की बनी हुई हैं।

जीत–यह भी बडे मजे की बात है लोगों को तस्वीरों के विषय में धोखा देने और ताज्जुब में डालने के लिए इससे बढकर कोई खेल हो नहीं सकता।

तेज–जी हाँ एक दिन में पचासों तरह की तस्वीरें इस दीवार पर लोगों को दिखा सकते हैं पता लगना तो दूर रहे गुमान भी नहीं हो सकता कि यह क्या मामला है और ऐसी अनूठी तस्वीरें नित्य क्यों बन जाती हैं।

सुरेन्द–बेशक यह खेल मुझे बहुत अच्छा मालूम हुआ परन्तु अब इन तस्वीरों को ठीक अपने ठिकाने पर पहुँचा कर छोड देना चाहिए।

बहुत अच्छा कह कर इन्द्रजीतसिंह आगे बढ गये और पुनः तिलिस्मी खंजर उसी सूराख में डाल दिया जिससे उसी तरह दीवार चमकने और तस्वीरें चलने लगीं। ताज्जुब के साथ लोग उसका तमाशा देखते रहे। कई घण्टे के बाद जब तस्वीरों की लीला समाप्त हुई और एक विचित्र ढंग के खटके की आवाज आई तब इन्द्रजीतसिंह ने दीवार के अन्दर से तिलिस्मी खंजर निकाल लिया और दीवार का चमकना भी बन्द हो गया।

इस तमाशे से छुट्टी पाकर महाराज सुरेन्द्रसिंह ने इन्द्रजीतसिंह की तरफ देखा और कहा अब हम लोगों को इस दीवार के अन्दर ले चलो।

इन्द–जो आज्ञा पहिले बाहर से जाँच कर आप अन्दाजा कर लें कि यह दीवार कितनी मोटी है।

सुरेन्द–इसका अन्दाज हमें मिल चुका है, दूसरे कमरे में जाने के लिए इसी दीवार में जो दर्वाजा है उसकी मोटाई से पता लग जाता है जिस पर हमने गौर किया है।

इन्द–अच्छा तो अब एक दफे आप पुनः उसी कमरे में चलें क्योंकि इस दीवार के अन्दर जाने का रास्ता उधर ही से है।

इन्द्रजीतसिंह की बात सुनकर महाराज सुरेन्द्रसिंह तथा और सब कोई उठ खडे हुए और कुमार के साथ-साथ पुनः उसी कमरे में गए जिसमें दो चबूतरे बने हुए थे।

इस कमरे में तस्वीर वाले कमरे की तरफ जो दीवार थी उसमें एक आलमारी का निशान दिखाई दे रहा था और उसके बीचोबीच में लोहे की एक खूँटी गडी हुई थी जिसे इन्द्रजीतसिंह ने उमेठना शुरू किया। तीस-पैंतीस दफे उमेठ कर अलग हो गए और दूर खडे होकर उस निशान की तरफ देखने लगे। थोडी देर बाद वह आलमारी हिलती हुई मालूम पडी और फिर यकायक उसके दोनों पल्ले दर्वाजे की तरह खुल गए। साथ ही उसके अन्दर से दो औरतें निकलती हुई दिखाई पड़ीं जिनमें एक तो भूतनाथ की स्त्री थी और दूसरी देवीसिंह की स्त्री चम्पा। दोनों औरतों पर निगाह पडते ही भूतनाथ और देवीसिंह चमक उठे और उनके ताज्जुब का कोई हद न रहा साथ ही इसके दोनों एयारों

को क्रोध भी चढ आया और लाल-लालआखें करके उन औरतों की तरफ देखने लगे। उन्हीं के साथ ही साथ और लोगों ने भी ताज्जुब के साथ उन औरतों को देखा।

इस समय उन दोनों औरतों का चेहरा नकाब से खाली था मगर भूतनाथ और देवीसिह के चेहरे पर निगाह पड़ते ही उन दोनों ने आचल से अपना चेहरा छिपा लिया और पलटकर पुन उसी आलमारी के अन्दर जा लोगों की निगाह से गायब हो गई। उनकी इस करतूत ने भूतनाथ और देवीसिह के क्रोध को और भी बढा दिया।

आठवाँ बयान

अब हम पीछे की तरफ लौटते है और पुन उस दिन का हाल लिखते है जिस दिन महाराज सुरेन्द्रसिह और बीरेन्द्रसिह वगैरह तिलिस्मी तमाशा देखने के लिए रवाना हुए हैं। हम ऊपर के बयान में लिख आये हैं कि उस समय महाराज और कुमार लोगों के साथ भैरोसिह और तारासिह न थे अर्थात वे दानों घर ही पर रह गए थे, अस्तु इस समय उन्हीं दानों का हाल लिखना बहुत जरूरी हो गया है।

'महाराज सुरेन्द्रसिह, बीरेन्द्रसिह, कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह वगैरह के चले जाने बाद भैरोसिह अपनी मॉ से मिलन के लिए तारासिह को साथ लिए हुए महल में गये। उस समय चपला अपनी प्यारी सखी चम्पा के कमरे में बैठी हुई धीरे-धीरे कुछ बातें कर रही थी जो भैरोसिह और तारासिह को आते देख चुप हो गई और इन दोनों की तरफ देख कर बोली, 'क्या महाराज तिलिस्मी तमाशा देखने के लिए गए ?"

भैरोसिह–हॉ अभी थोडी ही देर हुई है कि वे लोग उसी पहाडी की तरफ रवाना हो गए।

चपला–(चम्पा से) तो अब तुम्हें भी तैयार हो जाना पडेगा।

चम्पा–जरूर, मगर तुम भी क्यों नहीं चलती ?

चपला–जी तो मेरा ऐसा ही चाहता है मगर मामा साहब की आज्ञा हो तब ता !

चम्पा–जहॉ तक मै खयाल करती हूँ वे कभी इनकार न करेंगे। बहिन जब से मुझे यह मालूम हुआ कि इन्द्रदेव तुम्हारे मामा होते है तब से मै बहुत प्रसन्न हूँ।

चपला–मगर मेरी खुशी का तुम अन्दाजा नहीं कर सकती खैर इस समय असल काम की तरफ ध्यान देना चाहिए। (भैरोसिह और तारासिह की तरफ देखकर) कहो तुम लोग इस समय यहॉ कैसे आये ?

तारा–(चपला के हाथ में एक पुर्जा दकर) जो कुछ है इसी से मालूम हो जायगा।

चपला ने तारासिह के हाथ से पुर्जा लेकर पढा और फिर चम्पा के हाथ में देकर कहा, अच्छा जाओ कह दो कि हम लोगों के लिए किसी तरह का तरद्दुद न करें मैं अभी जाकर कमलिनी और लक्ष्मीदेवी से मुलाकात करके सब बातें कर लेती हूँ।'

'बहुत अच्छा' कहकर भैरोसिह और तारासिह वहॉ से रवाना हुए और इन्द्रदेव के डेरे की तरफ चले गये।

जिस समय महाराज सुरेन्द्रसिह वगैरह तिलिस्मी कैफियत देखन क लिए रवाना हुए हैं उसके दो या तीन घडी बाद घोड़े पर सवार इन्द्रदेव भी अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए उसी पहाडी की तरफ रवाना हुए मगर ये अकेले न थे बल्कि और भी तीन नकाबपोश इनके साथ थे। जब ये चारों आदमी उस पहाडी के पास पहुँचे तो कुछ देर के लिए रुके और आपुस में यों बात-चीत करने लगे –

इन्द्रदेव–ताज्जुब है कि अभी तक हमारे आदमी लोग यहाँ नहीं पहुँचे।

दूसरा–और जब तक वे लोग न आवेंगे तब तक यहॉ अटकना पडेगा।

इन्द्रदेव–बेशक !

तीसरा–व्यर्थ यहॉ अटके रहना तो अच्छा न होगा।

इन्द्रदेव–तब क्या किया जायगा ?

तीसरा–आप लोग जल्दी से वहॉ पहुँचकर अपना काम कीजिये और मुझे अकेले इसी जगह छोड दीजिए मै आपके आदमियों का इन्तजार करूगा और जब वे आ जायेंगे तो सब चीजें लिए आपके पास पहुँच जाऊँगा।

इन्द्रदेव–अच्छी बात है मगर उन सब चीजों को क्या तुम अकेले उठा लोगे ?

तीसरा–उन सब चीजों की क्या हकीकत है कहिए तो आपके आदमियों को भी उन चीजों के साथ पीठ पर लाद कर लेता आऊँ।

इन्द–शाबाश ! अच्छा रास्ता तो न भूलोगे ?

तीसरा–कदापि नहीं अगर मेरी ऑखों पर पट्टी बॉध कर भी आप वहॉ तक ले गये होते तब भी मै रास्ता न भूलता

और टटोलता हुआ वहॉं तक पहुँच ही जाता।

इन्द्रदेव-(हँसकर) बेशक तुम्हारी चालाकी के आगे यह कोई कठिन काम नहीं है अच्छा हम लोग जाते हैं तुम सब चीजें लकर हमारे आदमियों को फौरन वापस कर देना।

इतना कहकर इन्द्रदेव ने उस तीसरे नकावपोश को उसी जगह छोडा और दो नकाबपोशों को साथ लिए हुए आगे की तरफ बढे।

जिस सुरग की राह से राजा बीरेन्द्रसिह वगैरह उस तिलिस्मी बॅगले में गये थे उनसे लगभग आध कोस उत्तर की तरफ हटकर और भी एक सुरग का छोटा सा मुहाना था जिसका बाहरी हिस्सा जगली लताओं और बेलों से बहुत ही छिपा हुआ था। इन्द्रदेव दोनों नकावपोशों को साथ लिए तथा पेडों की आड देकर चलते हुए इसी दूसरी सुरंग के मुहाने पर पहुँचे और जगली लताओं को हटाकर वडी होशियारी से इस सुरग के अन्दर घुस गये।

नौवॉं बयान

देवीसिह का चम्पा की सचाई पर भरोसा था और वह उसे बहुत ही नेक तथा पतिव्रता भी समझते थे जिस पर चम्पा ने देवीसिह के चरणों की कसम खा कर विश्वास दिला दिया था कि वह नकाबपोशों के घर में नहीं गई और कोई सबब न था कि देवीसिह चम्पा की बात झूठ समझते। इस जगह यद्यपि देवीसिह पुन चम्पा को देखकर क्रोध में आ गये मगर तुरन्त ही नीचे लिखी बातें विचारकर ठण्डे हो गये और सोचने लगे-

'क्या मुझ पहिचानने में धोखा हुआ ? नहीं-नहीं, मेरी ऑखें ऐसी गन्दी नहीं हैं। तो क्या वास्तव में वह चम्पा ही थी जिसे अभी मैंने देखा था या पहिले भी देखा था ! यह भी नहीं हो सकता ! चम्पा ऐसी नेक औरत कसम खाकर मुझसे झूठ भी नहीं बोल सकती। हॉ उसने क्या कसम खाई थी ? यही कि 'मैं आपके चरणों की कसम खाकर कहती हूँ कि मुझे कुछ भी याद नहीं कि आप कब की बात कर रहे हैं। ये ही उसके शब्द हैं' मगर यह कसम तो ठीक नहीं। यहॉ आने के बारे में उसने कसम नहीं खाई वल्कि अपनी याद के बारे में कसम खाई है, जिसे ठीक नहीं भी कह सकते। तो क्या उसने वास्तव में मुझे भूलभुलैये में डाल रक्खा है ? खैर यदि ऐसा भी हो तो मुझे रज न होना चाहिये क्योंकि वह नेक है, यदि ऐसा किया भी होगा तो किसी अच्छे ही मतलव से किया होगा या फिर कुमारों की आज्ञा से किया होगा।

ऐसी बातों को सोचकर देवीसिह ने अपने क्रोध को ठण्ढा किया मगर भूतनाथ की बेचैनी दूर नहीं हुई।

वे दोनों औरतें जव आलमारी के अन्दर घुसकर गायब हो गईं तब हमारे दोनों कुमार तथा महाराज सुरेन्द्रसिह और बीरेन्द्रसिह ने भी उसके अन्दर पैर रक्खा। दर्वाजे के साथ दाहिनी तरफ एक तहखाने के अन्दर जाने का रास्ता था जिसके बारे में दरियाफ्त करने पर इन्द्रजीतसिह ने बयान किया कि 'जमानिया जाने का रास्ता है तहखाने में उतर जाने के बाद एक सुरग मिलेगी जो बराबर जमानिया तक चली गई है। इन्द्रजीतसिह की बात सुन कर देवीसिह और भूतनाथ को विश्वास हो गया कि दोनों औरतें इसी तहखाने में उतर गई है जिससे उन्हें भागने के लिए काफी जगह मिल सकती है। भूतनाथ ने देवीसिह की तरफ देखकर इशारे से कहा कि 'इस तहखाने में चलना चाहिए' मगर जवाब में देवीसिह ने इशारे से ही इनकार करके अपनी लापरवाही जाहिर कर दी।

उस दीवार के अन्दर इतनी जगह न थी कि सब कोई एक साथ ही जाकर वहॉं की कैफियत देख सकते, अतएव दो तीन दफे करके सब कोई उसके अन्दर गये और उन सब पुरजों को देख बहुत प्रसन्न हुए जिनके सहारे वे तस्वीरें चलती-फिरती और काम करती थीं। जब सब कोई उस कैफियत को देख चुके तब उस दीवार का दर्वाजा बन्द कर दिया गया।

इस काम से छुट्टी पाकर सब कोई इन्द्रजीतसिह की इच्छानुसार उस चबूतरे के पास आए जिस पर सुफेद पत्थर की खूबसूरत पुतली बैठी हुई थी। इन्द्रजीतसिह ने सुरेन्द्रसिह की तरफ देखकर कहा, 'यदि आज्ञा हो तो मैं इस दरवाजे को खोलूँ और आपको तिलिस्म के अन्दर ले चलूँ।

सुरेन्द्र-हम भी यही चाहते हैं कि अब तिलिस्म के अन्दर चलकर वहॉं की कैफियत देखें मगर यह तो बताओ कि जब इस चबूतरे के अन्दर जाने बाद हम यह तिलिस्म देखते हुए चुनारगढ वाले तिलिस्म की तरफ रवाना होंगे तो वहॉं पहुँचन में कितनी देर लगेगी ?

इन्द-कम से कम बारह घटे। तमाशा देखने के सबब से यदि इससे ज्यादे देर हो जाय तो भी कोई ताज्जुब नहीं।

सुरेन्द्र-रात हो जाने ... किसी तरह का हर्ज तो न होगा ?

दसवाँ बयान

यह दालान जिसमें इस समय महाराज सुरेन्द्रसिह वगैरह आराम कर रहे है, बनिस्बत उस दालान के जिसमें ये लोग पहिले पहल पहुचे थे बड़ा और खूबसूरत बना हुआ था। तीन तरफ दीवार थी और बाग की तरफ तरह खम्भे और महराब लगे हुए थे जिससे इसे बारहदरी भी कह सकते है। इसकी कुर्सी लगभग ढाई हाथ के ऊँची थी और इसके ऊपर चढने के लिए पांच सीढियाँ बनी हुई थीं। बारहदरी के आगे की तरफ कुछ सहन छूटा हुआ था जिसकी जमीन (फर्श) सगमर्मर और सगमूसा के चौखठे पत्थरों से बनी हुई थी। बारहदरी की छत में मीनाकारी का काम बना हुआ था और तीनों तरफ की दीवारों में कई आलमारिया भी थीं।

रात पहर भर से कुछ ज्याद जा चुकी थी। इस बारहदरी में जिसमें सब कोई आराम कर रहे थे, एकआलमारी की कार्निस के ऊपर मोमबत्ती जल रही थी जो देवीसिह ने अपने ऐयारी के बटुए में से निकालकर जलाई थी। किसी को नींद नहीं आई थी बल्कि सब कोई बैठे हुए आपस में बातें कर रहे थे। महाराज सुरेन्द्रसिह बाग की तरफ मुह किये बैठ थें और उन्हें सामने की पहाडी का आधा हिस्सा भी जिस पर इस समय अन्धकार की बारीक चादर भी पड़ी हुई थी दिखाई दे रहा था। उस पहाडी पर यकायक मशाल की रोशनी देखकर महाराज चौके और सभों को उस तरफ देखने का इशारा किया।

सभों ने उस रोशनी की तरफ ध्यान दिया और दोनों कुमार ताज्जुब के साथ सोचने लगे कि यह क्या मामला है? इस तिलिस्म में हमारे सिवाय किसी गैर आदमी का आना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है, तब फिर यह मशाल की रोशनी कैसी! खाली रोशनी ही नहीं बल्कि उसके पास चार-पाँचआदमी भी दिखाई देत है हाँ यह नही जान पडता कि वे सब औरत है या मर्द।

और लोगों के विचार भी दोनों कुमारों ही की तरह के थे और मशाल के साथ कई आदमियों को देखकर सभी ताज्जुब कर रहे थे। यकायक वह रोशनी गायब हो गई और आदमी दिखाई देने से रह गये मगर थोडी ही देर बाद वह रोशनी फिर दिखाई दी। अबकी दफ रोशनी और भी नीचे की तरफ थी और उसके साथ के आदमी साफ साफ दिखाई देते थे।

गोपाल–(इन्द्रजीतसिह से) मैं समझता था कि आप दोनों भाइयों के सिवाय कोई गैर आदमी इस तिलिस्म में नहीं आ सकता।

इन्द्रजीत–मेरा भी यही खयाल था मगर क्या आप भी यहाँ तक नही आ सकते? आप तो तिलिस्म के राजा है।

गोपाल–हाँ मैं आ तो सकता हूँ मगर सीधी राह से और अपने को बचाते हुए वे काम मैं नहीं कर सकता जो आप कर सकते हैं परन्तु आश्चर्य तो यह है कि वे लोग पहाड़ पर से आते हुए दिखाई दे रहे है जहाँ से आने का रास्ता ही नहीं है। तिलिस्म बनाने वालों ने इस बात को जरूर अच्छी तरह विचार लिया होगा।

इन्द्रजीत–बेशक ऐसा ही है मगर यहाँ पर क्या समझा जाय? मेरा खयाल है कि थोडी ही देर में वे लाग इस बाग में आ पहुँचेंगे।

गोपाल–बेशक ऐसा ही होगा (रूककर) देखिए रोशनी फिर गायब हो गई, शायद वे लोग किसी-गुफा में घुस गये।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा और सब कोई बड गौर से उस तरफ देखते रहे उसके बाद यकायक बाग के पश्चिम तरफ वाले दालान में रोशनी मालूम होने लगी जो उस दालान के ठीक सामने था जिसमें हमारे महाराज तथा ऐयार लोग टिके हुए थे मगर पेडों के सबब से साफ नही दिखाई देता था कि दालान में कितने आदमी आए है और क्या कर रहे हैं।

जब सभों को निश्चय हो गया कि वे लोग धीरे-धीरे पहाडों के नीचे उतरकर बाग के दालान या बारहदरी में आ गए है तब महाराज सुरेन्द्रसिह ने तेजसिह को हुक्म दिया कि जाकर देखो और पता लगाओ कि वे लोग कौन है और क्या कर रहे है।

गोपाल–(महाराज से) तेजसिहजी का वहाँ जाना उचित न होगा क्योंकि तिलिस्म का मामला है और यहाँ की बातों से ये बिल्कुल बेखबर हैं यदि आज्ञा हो तो कुँअर इन्द्रजीतसिह को साथ लेकर मैं जाऊँ।

महाराज–ठीक है अच्छा तुम्हीं दोनों आदमी जाकर देखो क्या मामला है।

कुँअर इन्द्रजीतसिह और राजा गोपालसिह वहाँ से उठे और धीरे-धीरे तथा पेडों की आड में अपने को छिपाते हुए उस दालान की तरफ रवाना हुए जिसमें राशनी दिखाई दे रही थी, यहाँ तक कि उस दालान अथवा बारहदरी के बहुत पास पहुँच गये और एक पेड की आड म खडे होकर गौर से देखने लगे।

इस दालान में उन्हें पन्द्रह आदमी दिखाई दिय जिनके विषय म यह जानना कठिन था कि वे मर्द है या औरत, क्योंकि सभों की पोशाक एक ही रग-ढंगकी तथा सभों के चेहरे पर नकाब पडी हुई थी। इन्हीं पन्द्रह आदमियों में से दो आदमी मशालची का काम दे रहे थे। जिस तरह उनकी पौशाक खूबसूरत और वेशकीमत थी उसी तरह मशाल भी सुनहरी तथा जडाऊ काम की दिखाई दे रही थी और उसके सिरे की तरफ बिजली की तरह रोशनी हो रही थी इसके अतिरिक्त उनके हाथ में तल की कुप्पी न थी और इस वात का कुछ पता नहीं लगता था कि इस मशाल की रोशनी का सवव क्या है।

राजा गोपालसिह और इन्द्रजीतसिह ने देखा कि व लोग शीघ्रता के साथ उस दालान के सजाने और फर्श वगैरह के ठीक करन का इन्तजाम कर रहे है। बारहदरी के दाहिने तरफ एक खुला हुआ दर्वाजा है जिसके अन्दर वे लोग बार बार जाते है और जिस चीज की जरुरत समझते हैं ले आते हैं। यद्यपि उन सभों की पाशाक एक ही रग-ढंग की है और इसलिए वडाई छुटाई का पता लगाना कठिन है तथापि उन सभों में स एक आदमी ऐसा है जो स्वय कोई काम नहीं करता और एककिनारे कुर्सी पर वैठा हुआ अपने साथियों से काम ले रहा है। उसके हाथ में एक विचित्र ढग की छडी दिखाई दे रही है जिसक मुट्ठे पर नेहायत खूबसूरत और कुछ वडा हिरन बना हुआ है। देखत ही देखते थोडी देर में बारहदरी सज के तैयार हो गई और कन्दीलों की रोशनी से जगमगाने लगी। उस समय वह नकाबपोश जो कुर्सी पर बैठा हुआ था और जिसे हम उस मण्डली का सर्दार भी कह सकते है अपने साथियों से कुछ कह-सुनकर वारहदरी के नीचे उतर आया और धीरे-धीरे उस तरफ रवाना हुआ जिधर महाराजा सुरेन्द्रसिह वगैरह टिके हुए थे।

यह कैफियत देखकर राजा गोपालसिह और इन्द्रजीतसिह जा छिपे-छिपे सब तमाशा देख रहे थे वहाँ स लौटे और शीघ्र ही महाराज क पास पहुँचकर जो कुछ देखा था सक्षेप में बयान किया। उसी समय एक आदमी आता हुआ दिखाई दिया। सभों का ध्यान उसी तरफ चला गया और इन्द्रजीतसिह तथा राजा गोपालसिह ने समझा कि यह वही नकाबपोशों का सर्दार होगा जिसे हम उस बारहदरी में देख आये है और जो हमारे देखते-दखते वहाँ से रवाना हो गया था मगर जब पास आया तो सभों का भ्रम जाता रहा और एकाएक इन्द्रदेव पर निगाह पड़ते ही सब कोई चौंक पड़े। राजा गोपालसिह और इन्द्रजीतसिह को इस बात का भी शक हुआ कि वह नकाबपोशों का सर्दार शायद इन्द्रदेव ही हो, मगर यह देख कर उन्हें ताज्जुब मालूम हुआ कि इन्द्रदेव उस (नकाबपोशों की सी) पोशाक में न था जैसा कि उस बारहदरी में देखा था वल्कि वह अपनी मामूली दर्बारी पोशाक में था।

इन्द्रदेव ने वहाँ पहुँचकर महाराज सुरेन्द्रसिह वीरेन्द्रसिह, जीतसिह, तेजसिह राजा गोपालसिह तथा दोनों कुमारों को अदव के साथ झुककर सलाम किया और इसके वाद वाकी ऐयारों से भी जै भाया की' कहा।

सुरेन्द्र–इन्द्रदेव जव से हमने इन्द्रजीतसिह की जुबानी यह सुना है कि इस तिलिस्म के दारोगा तुम हो तब से हम बहुत ही खुश हैं मगर ताज्जुब होता था कि तुमन इस बात की हमें कुछ भी खबर नहीं की और न हमारे साथ यहाँ आये ही। अव यकायक इस समय यहाँ पर तुम्हें देख कर हमारी खुशी और भी ज्यादे हो गई। आओ हमारे पास बैठ जाओ और यह कहो कि हम लोगों के साथ तुम यहाँ क्यों नहीं आये?

इन्द्रदेव– (बैठकर) आशा है कि महाराज मेरा वह कसूर माफ करेंगे। मुझे कई जरूरी काम करने थे जिनके लिए अपने ढग पर अकेले आना पडा। बेशक मैं इस तिलिस्म का दारोगा हूँ और इसलिए अपने को बडा ही खुशकिस्मत समझता हूँ कि ईश्वर न इस तिलिस्म को आप ऐसे प्रतापी राजा के हाथ में सौंपा है। यद्यपि आपके फर्माबर्दार और होनहार पोतों ने इस तिलिस्म को फतह किया है और इस सबब से वे इसके मालिक हुए हैं तथापि इस तिलिस्म का सच्चा आनन्द और तमाशा दिखाना मरा ही काम है यह मरे सिवाय किसी दूसरे के किए नहीं हो सकता। जो काम कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह का था उसे ये कर चुक अर्थात तिलिस्म तोड चुके और जा कुछ इन्हें मालूम होना था हो चुका परन्तु उन बातों भेदों और स्थानों का पता इन्हें नहीं लग सकता जा मेरे हाथ में हैं और जिसके सवव से मैं इस तिलिस्म का दारोगा कहलाता हूँ। तिलिस्म बनाने वालों ने तिलिस्म के सम्बन्ध में दो किताबें लिखी थीं जिनमें से एक तो दारागा के सुपुर्द कर गये और दूसरी तिलिस्म तोडने वाले के लिए छिप कर रख गये जो कि अव दोनों कुमारों के हाथ लगी या कदाचित इनके अतिरिक्त और भी काई किताव उन्होंने लिखी हो तो उसका हाल मैं नहीं जानता हाँ जो किताव दारागा के सुपुर्द कर गये थे वह वसीयतनामे के तौर पर पुश्तहापुश्त से हमारे कब्जे में चली आ रही है और आजकल मेरे पास मौजूद है। यह मैं जरूर कहूँगा [illegible] में बहुत से मुकाम ऐसे है जहा दोनों कुमारों का जाना तो असम्भव ही है परन्तु तिलिस्म टूटने के पहिले [illegible] सकता था हाँ अव मैं वहाँ वखूबी जा सकता हूँ। आज मैं इसीलिए इस तिलिस्म के अन्दर आपके पा[illegible] तिलिस्म का पूरा पूरा तमाशा आपको दिखाऊँ जिसे कुँअर [illegible] और आनन्दसिह नहीं दिखा [illegible] क पहिले मैं महाराज से एक चीज माँगता हूँ जिसक [illegible]

चल सकता।

महाराज–वह क्या ?

इन्द्रदेव–जब तक इस तिलिस्म में आप लोगों के साथ हूँ तब तक अदब लेहाज और कायदे की पाबन्दी से माफ रक्खा जाऊँ।

महाराज–इन्द्रदेव, हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। जब तक तिलिस्म में हम लोगों के साथ हो तभी तक के लिए नहीं बल्कि हमेशा के लिए हमने इन बातों से तुम्हें छुट्टी दी तुम विश्वास रक्खो कि हमारे बाल-बच्चे और सच्चे साथी भी हमारी इस बात का पूरा-पूरा लेहाज रक्खेंगे।

यह सुनते ही इन्द्रदेव ने उठकर महाराज को सलाम किया और फिर बैठकर कहा अब आज्ञा हो तो खान-पीने का सामान जो आप लोगों के लिए लाया हूँ हाजिर करूँ।

महाराज–अच्छी बात है लाओ क्योंकि हमारे साथियों में से कई ऐसे हैं जो भूख के मारे बेताब हो रहे होंगे।

तेज–मगर इन्द्रदेव तुमने इस बात का परिचय तो दिया ही नहीं कि तुम वास्तव में इन्द्रदेव ही हो या कोई और ?

इन्द्रदेव– (मुस्कुराकर) मेरे सिवाय कोई गैर यहाँ आ नहीं सकता।

तेज–तथापि– चिलेण्डाला।

इन्द्रदेव– चक्रधर।

वीरेन्द्र–मैं एक बात और पूछना चाहता हूँ ?

इन्द्रदेव–आज्ञा।

वीरेन्द्र–वह स्थान कैसा है जहाँ तुम रहा करते हो और जहाँ मायारानी अपने दारोगा को लेकर तुम्हारे पास गई थी ?

इन्द्र- वह स्थान तिलिस्म से सम्बन्ध रखता है और यहाँ से थोड़ी ही दूर पर है। मैं स्वयं आप लोगों को ले चलकर वहाँ की सैर कराऊँगा। इसके अतिरिक्त अभी मुझे बहुत सी बातें कहनी हैं। पहिले आप लोग भोजन इत्यादि से छुट्टी पा लें।

तेज–हम लोग मशाल की रोशनी में क्या आप ही लोगों को पहाड़ से उतरते देख रहे थे ?

इन्द्र–जी हाँ मैं एक निराले ही रास्ते से यहाँ आया हूँ। आप लोग बेशक ताज्जुब करते होंगे कि पहाड़ पर से कौन उतर रहा है परन्तु मैं अकेला ही नहीं आया हूँ बल्कि कई तमाशे भी अपने साथ लाया हूँ मगर उनका जिक्र करने का अभी मौका नहीं है।

इतना कहकर इन्द्रदेव उठ खड़ा हुआ और देखते-देखते दूसरी तरफ चला गया मगर अपनी इस बात से कि–'कई तमाशे भी अपने साथ लाया हूँ कइयों को ताज्जुब और घबराहट में डाल गया।

ग्यारहवाँ बयान

थोड़ी ही देर बाद इन्द्रदेव वहाँ आया। अबकी दफे उसके साथ कई नकाबपोश भी थे जो अपने हाथ में तरह-तरह की खाने-पीने की चीजें लिए हुए थे। एक के हाथ में जल था जिससे जमीन धोई गई और खाने-पीने की चीजें वहाँ रखकर वे नकाबपोश लौट गये तथा पुनः कई जरूरी चीजें लेकर आ पहुँचे। इन्तजाम ठीक हो जाने पर इन्द्रदेव ने कायदे के साथ सभों को भोजन कराया और इस काम से छुट्टी मिलने पर उस बारहदरी में चलने के लिए अर्ज किया जिसे उसने यहाँ पहुँचकर सजाया था और जिसका हाल हम ऊपर के बयान में लिख चुके हैं।

वास्तव में यह बारहदरी बड़ी खूबी के साथ सजाई गई थी। यहाँ सभों के लिए कायदे के साथ बैठने और आराम करने का सामान मौजूद था जिसे देखकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए और इन्द्रदेव की तरफ देखकर बोले क्या यह सब सामान इसी बाग में मौजूद था ?

इन्द्र–जी हाँ केवल इतना ही नहीं बल्कि इस बाग में जितनी इमारतें हैं उन सभों को सजाने और दुरुस्त करने के लिए यहाँ काफी सामान है इसके अतिरिक्त यहाँ से मेरा मकान बहुत नजदीक है इसलिए जिस चीज की जरूरत हो मैं बहुत जल्द ला सकता हूँ। (कुछ देर सोचकर और हाथ जोड़कर) एक और भी जरूरी बात अर्ज किया चाहता हूँ।

महाराज–वह क्या ?

इन्द्र–यह तिलिस्म आप ही के बुजुर्गों की बदौलत बना है और उन्हीं की आज्ञानुसार जब से यह तिलिस्म तैयार

हुआ हे तब स मेरे बुजुर्ग लोग इसके दारोगा होते आये है। अब मेर जमान में इस तिलिस्म की किस्मत ने पलटा खाया है। यद्यपि कुमार इन्दजीतसिह और आनन्दसिह ने इस तिलिस्म का तोडा या फतह किया है और इसमें की बेहिसाब दौलत के मालिक हुए हैं तथापि यह तिलिस्म अभी दौलत स खाली नहीं हुआ है और न एसा खुल ही गया है कि एरे गरे जिसका जी चाहे इसमें घुस आय। हॉ यदि आज्ञा हा तो दानों कुमारों के हाथ से मैं इसक बचे बचाय हिस्से को भी तोडवा सकता हूँ क्योंकि यह काम इस तिलिस्म क दारागा का अर्थात् मेरा है मगर मैं चाहता हूँ कि वड लोगों की इस कीर्ति को एकदम स मटियामट न करक भविष्य क लिए भी कुछ छाड दना चाहिए। आज्ञा पाने पर में इस तिलिस्म की पूरी सैर कराऊगा और तब अर्ज करूँगा कि बुजुर्गो की आज्ञानुसार इस दास ने भी जहॉ तक हा सका इस तिलिस्म की खिदमत की, अब महाराज का अख्तियार है कि मुझस हिसाब-किताब समझकर आइन्द के लिए जिसे चाहें यहॉ का दारोगा मुकर्रर करें।

महाराज–इन्द्रदेव मै तुमसे और तुम्हार कामों से बहुत ही प्रसन्न हूँ मगर मै यह नहीं चाहता कि तुम मुझे बातो के जाल में फँसाकर बवकूफ बनाओ और यह कहा कि भविष्य क लिए किसी दूसर का यहॉ का दारोगा मुकर्रर कर लो। जो कुछ तुमन राय दी है वह बहुत ठीक ह अर्थात् इस तिलिस्म के बचे बचाए स्थानों को छाड देना चाहिए जिसमें वड लोगों का नाम निशान बना रहे मगर यहॉ के दारोगा की पदवी सिवाय तुम्हार खान्दान के काइ दूसरा कब पा सकता है? बस दया करक इस ढग की बातों को छाड दो और जो कुछ खुशी-खुशी कर रहे हो करो।

इन्द्र–(अदब के साथ सलाम करके) जो आज्ञा। मैं एक बात और भी निवदन किया चाहता हू।

महाराज–वह क्या ?

इन्द्रदेव–वह यह कि इस जगह से आप कृपा करके पहिले मेरे स्थान को, जहा मै रहता हूँ, पवित्र कीजिए और तब तिलिस्म की सैर करत हुए अपन चुनारगढ वाले तिलिस्मी मकान में पहुँचिये। इसके अतिरिक्त इस तिलिस्म के अन्दर जो कुछ कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह ने पाया है अथवा वहा से जिन चीजों को निकाल कर चुनारगढ पहुँचाने की आवश्यकता ह उनकी फिहरिस्त मुझे मिल जाय और ठीक तौर पर बता दिया जाय कि कौन चीज कहॉ पर है तो उन्हें वहॉ से बाहर करके आपक पास भेजन का बन्दोबस्त करूँ। यद्यपि यह काम भैरोंसिह और तारासिह भी कर सकते हैं परन्तु जिस काम को मै एक दिन में करूगा उसे वे चार दिन म भी पूरा न कर सकेंगे क्याकि मुझे यहॉ के कई रास्ते मालूम हैं जिस चीज का जिस राह स निकाल ले जाने में सुबीता दखूँगा निकाल ल जाऊँगा।

महाराज–ठीक है मै भी इस बात का पसन्द करता हूँ और यह भी चाहता हूँ कि चुनार पहुँचन के पहिल ही तुम्हारे विचित्र स्थान की सैर कर लूँ। चीजों की फिहरिस्त और उनका पता इन्द्रजीतसिह तुमको देग।

इतना कह क महाराज न इन्द्रजीतसिह की तरफ देखा और कुमार ने उन सब चीजों का पता इन्द्रदेव का बताया जिन्हें बाहर निकालकर घर पहुँचाने की आवश्यकता थी और साथ ही साथ अपना तिलिस्मी किस्सा भी जिसके कहने की जरूरत थी इन्द्रदव से बयान किया और बाद में दूसरी बातों का सिलसिला छिडा।

बीरेन्द्र–(इन्द्रदव स) आपने कहा था कि मैं कई तमाशे भी साथ लाया हूँ ता क्या व तमाशे ढके ही रह जायेंगे।

इन्द्रदेव–जी नहीं आज्ञा हो तो अभी उन्हें पश करूं परन्तु यदि आप मरे मकान पर चलकर उन तमाशों का देखेंगे तो कुछ विशेष आनन्द मिलगा।

महाराज–यही सही हम लोग तो अभी तुम्हारे मकान पर चलने के लिए तैयार हैं।

इन्द्रदव–अब रात बहुत चली गई है, महाराज दो चार घण्टे आराम कर लें, दिन भर की हरारत मिट जाय जब कुछ रात बाकी रह जायेगी तो मैं जगा दूँगा और अपन मकान की तरफ ले चलूँगा। तब तक मैं अपने साथियों को वहॉ रवाना कर दता हूँ जिसमें आगे चलकर सभों का होशियार कर दें और महाराज के लिए हर एक तरह का सामान दुरुस्त हो जाय।

इन्द्रदेव की बात का महाराज ने पसन्द करक सभों को आराम करन की आज्ञा दी और इन्द्रदव भी वहॉ स विदा होकर किसी दूसरी जगह चला गया।

इधर-उधर की बातचीत करत-करते महाराज को नींद आ गइ बीरेन्द्रसिह दानों कुमार और राजा गापालसिह भी सा गये तथा और ऐयारों ने भी स्वप्न देखना आरम्भ किया मगर भूतनाथ की ऑखों में नींद का नाम निशान भी न था और वह तमाम रात जागता ही रह गया।

जब रात घन्टे भर से कुछ ज्यादे बाकी रह गई और सुबह का अठखेलियों के साथ चलकर खुशदिलों तथा नौजवानों के दिलों में गुदगुदी पैदा करने वाली ठडी ठडी हवा ने खूशबूदार जगली फूलों और लताओं से हाथापाही करके उनकी सम्पत्ति छीनना और अपन को खुशबूदार बनाना शुरु कर दिया तब इन्द्रदेव भी उस बारहदरी में आ पहुँचा और सभों को गहरी नींद में सात दख जगान का उद्योग करने लगा। इस बारहदरी क आगे की तरफ एक छाटा सा सहन था

जिसकी जमीन सगमूसा के स्याह और चौखूट पत्थरों से मढी हुई थी इस सहन के दाहिने और बाएँ कोनों पर दो-तीन आदमी बखूबी बैठ सकते थे। इन्ददेव दाहिने तरफ वाले सिहासन पर जाकर बैठ गया और उसके पावों को बारी-बारी स किसी हिसाब स घुमान या उमेठने लगा। उसी समय सिहासन के अन्दर से सरस और मधुर बाजे की आवाज आने लगी और थोडी ही दर बाद गान की आवाज भी पैदा हुई। मालूम होता था कि कई नौजवान औरतें बडी खूबी के साथ गा रही हैं और कई आदमी पखावज बीन बंशी मजीरा इत्यादि बजाकर उन्हं मदद पहुँचा रह हैं। यह आवाज धीरे-धीरे बढने और फैलने लगी यहा तक कि उस बारहदरी में साने वाले सभी लोगों को जगा दिया अर्थात् सब कोई चौक कर उठ बैठे और ताज्जुब के साथ इधर-उधर दखने लगे। केवल इतने ही से बेचैनी दूर न हुई और सब कोई बारहदरी से बाहर निकलकर सहन में चले आये उस समय इन्ददेव न सामन आकर महाराज को सलाम किया।

महाराज—यह ता मालूम हो गया कि यह सब तुम्हारी कारीगरी का नतीजा है मगर बताओ ता सही कि यह गाने बजान की आवाज कहा स आ रही है ?

इन्द—आइय मैं बताता हू। महाराज को जगाने ही के लिए यह तर्कीब की गई थी क्योंकि अब यहाँ स रवाना हाने का समय हो गया है और विलम्ब न करना चाहिये।

इतना कहकर इन्द्रदव सभों का उस सिहासन क पास ले गया जिसमें स गाने की आवाज आ रही थी। और उसका असल भेद समझाकर बोला, 'इसमें से मौके-मौके पर हर एक रागिनी पैदा हो सकती है।

इस अनूठे गाने बजाने स महाराज बहुत प्रसन्न हुए और इसके बाद सभों को लिए हुए इन्द्रदव के मकान की तरफ रवाना हुए।

उस बारहदरी के बगल में ही एक काठरी थी जिसमें सभा को साथ लिए हुए इन्द्रदव चला गया। इस समय इन्द्रदव के पास भी तिलिस्मी खजर था जिससे उसने हल्की रोशनी पैदा की और उसी के सहारे सभों को लिए हुए आगे की तरफ बढा।

उस कोठरी में जान के बाद पहिले सभों को एक छोटे से तहखाने में उतरना पडा। वहा सभों ने लाल रग की एक समाधि दखी जिसके बारे में दरियाफ्त करने पर इन्द्रदव ने कहा कि यह समाधि नहीं है सुरग का दर्वाजा है। इन्द्रदव उस समाधि के पास बैठ गया और कोई ऐसी तर्कीब की कि जिससे वह बीचोबीच से खुल गई और नीचे उतरन के लिए चार-पाच सीढिया दिखाई दीं। इद्रदेव क कहे मुताबिक सब कोई नीचे उतर गये और इसके बाद सीधी सुरग में चलने लगे। सुरग की हालत और ऊँची-नीची जमीन से साफ-साफ मालूम होता था कि वह पहाड काटकर बनाई हुई है और सब लोग ऊँचे की तरफ बढते जा रहे हैं। हमार मुसाफिरों का दा-अढाई घडी के लगभग चलना पडा और तब इन्द्रदेव ने ठहरने क लिए कहा क्योंकि यहा पर सुरग खतम हो चुकी थी और सामने एक बन्द दर्वाजा दिखाई दे रहा था। इन्द्रदेव ने ताली लगाकर ताला खोला और सभी का साथ लिये हुए उसके अन्दर गया। सभों ने अपने को एक सुन्दर कमरे में पाया और जब इस कमर के बाहर हुए तब मालूम हुआ कि सवेरा हा चुका है।

यह इन्ददेव का वही मकान है जिसमें बुड्ढे दारोगा के साथ मदद पान की उम्मीद में मायारानी गई थी। इस सुन्दर और सुहावने स्थान का हाल हम पहिले लिख चुके हैं इसलिए अब पुन बयान करने की कोई जरूरत नहीं मालूम होती।

इन्ददव सभों को लिए हुए अपने छोटे से बागीचे में गया वहाँ चारो तरफ की सुन्दर छटा दिखाई दे रही थी और खुशबूदार ठण्डी-ठण्डी हवा दिल और दिमाग के साथ दोस्ती का हक अदा कर रही थी।

महाराज सुरेन्द्रसिह और बीरेन्द्रसिह तथा दोनों कुमारों को यह स्थान बहुत पसन्द आया और बार-बार इसकी तारीफ करने लगे। यद्यपि इस बागीचे में सभों के लायक दर्जे-बदर्जे कुर्सियाँ बिछी हुई थीं मगर किसी का जी बैठने को नहीं चाहता था। सब कोई घूम-घूम कर यहाँ का आनन्द लेना चाहते थे और ले रहे थे मगर इस बीच में एक ऐसा मामला हो गया जिसन भूतनाथ और दवीसिह दोनों ही को चौंका दिया। एक आदमी जल से भरा हुआ चाँदी का घडा और सोने की झारी लेकर आया और सगमर्मर की चौकी पर जो बागीचे में पडी हुई थी रखकर लौट चला। इसी आदमी को देख कर भूतनाथ और दवीसिह चौंके थे क्योंकि यह वही आदमी था जिसे ये दोनों ऐयार नकाबपाशों के मकान में देख चुके थे। इसी आदमी ने नकाबपोशों के सामने एक तस्वीर पेश की थी और कहा था कि 'कृपानाथ बस मैं इसी का दावा भूतनाथ पर करूँगा।*

केवल इतना ही नहीं भूतनाथ ने वहाँ स थोडी दूर पर एक झाडी में अपनी स्त्री को फूल तोडते देखा और धीरे से देवीसिह को छेड कर कहा 'वह देखिये मेरी स्त्री भी वहाँ मौजूद है ताज्जुब नहीं कि आपकी चम्पा भी कहीं घूम रही हो।

---

*दखिये बीसवाँ भाग दूसरा बयान।

बारहवाँ बयान

यद्यपि भूतनाथ को तरददुदों से छुट्टी मिल चुकी थी, यद्यपि उसका कसूर माफ हो चुका था और वह महाराज के खास ऐयारों में मिला लिया गया था मगर इस जगह उस आदमी को जिसने नकाबपोशों के मकान में तस्वीर पेश करके उस पर दावा करना चाहा था देखकर उसकी अवस्था फिर बिगड गई और साथ ही इसके अपनी स्त्री को भी वहाँ काम करते हुए देखकर उसे क्रोध चढ आया।

जब वह आदमी पानी का घडा और भ्मारी रख कर लौट चला तब इन्द्रदेव ने उसे पुकार कर कहा, 'अर्जुन जरा वह तस्वीर भी तो ले आओ जिसे बार-बार तुम दिखाया करते हो और जो हमारे दोस्त भूतनाथ को डराने और धमकाने के लिए एक औजार की तरह पर तुम्हारे पास रक्खी हुई है।'

इस नाम ने भूतनाथ के कलेजे को और भी हिला दिया। वास्तव में उस आदमी का यही नाम था और इस खयाल ने तो उसे और भी बदहवास कर दिया कि अब वह तस्वीर लेकर आयेगा।

इस समय सब कोई बाग में टहल रहे थे और इसीलिए एक दूसरे से कुछ दूर हो रहे थे। भूतनाथ बढकर देवीसिंह के पास चला गया और उसका हाथ पकडकर धीरे से बोला 'देखा इन्द्रदेव का रंग-ढंग ?'।

देवी—(धीरे से) मैं सब कुछ देख और समझ रहा हूँ, मगर तुम घबडाओ नहीं।

भूत—मालूम होता है कि इन्द्रदेव का दिल अभी तक मेरी तरफ से साफ नहीं हुआ।

देवी—शायद ऐसा ही हो मगर इन्द्रदेव से ऐसी उम्मीद हो नहीं सकती, मेरा दिल इसे कबूल नहीं करता। मगर भूतनाथ तुम भी अजीब सिडी हो।

भूत—सो क्या ?

देवी—यही कि नकाबपोशों का पीछा करके तुमने कैसे-कैसे तमाशे देखे और तुम्हें विश्वास भी हो गया कि इन नकाबपोशों से तुम्हारा कोई भेद छिपा नहीं है, फिर अन्त में यह भी मालूम हो गया कि इन नकाबपोशों के सर्दार कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह थे अस्तु इन दोनों से भी अब कोई बात छिपी नहीं रही।

भूत—बेशक ऐसा ही है।

देवी—तो फिर अब क्यों तुम्हारा दम घुटा जाता है ? अब तुम्हें किसका डर रह गया।

भूत—कहते तो ठीक हो खैर कोई चिन्ता नहीं जो कुछ होगा देखा जायगा।

देवी—बल्कि तुम्हें यह जानने की कोशिश करना चाहिये कि दोनों कुमारों को तुम्हारे भेदों का पता क्योंकर लगा। ताज्जुब नहीं कि अब वे सब बातें खुला चाहती हों।

भूत—शायद ऐसा ही हो मगर मेरी स्त्री के बारे में तुम क्या ख्याल करते हो ?

देवीसिंह—इस बारे में मेरा तुम्हारा मामला एक सा हो रहा है अस्तु इस विषय में मैं कुछ भी नहीं कह सकता। वह देखो इन्द्रदेव तेजसिंह के पास चला गया है और तुम्हारी स्त्री की तरफ इशारा करके कुछ कह रहा है। तेजसिंह अलग हों तो मैं उनसे कुछ पूछूँ। यहाँ की छटा ने तो लोगों का दिल ऐसा लुभा लिया है कि सभों ने एक दूसरे का साथ ही छोड दिया। (चौंककर) लो देखो तुम्हारा लडका नानक भी तो आ पहुँचा उसके हाथ में भी कोई तस्वीर मालूम पडती है, अर्जुन भी उसी के साथ है।

भूत—(ताज्जुब से) आश्चर्य की बात है ! नानक और अर्जुन का साथ कैसे हुआ ? और नानक यहाँ आया ही क्यों ? क्या अपनी माँ के साथ आया है ? क्या कपूत छोकरे ने भी मेरी तरफ से आँख फेर ली है ? ओफ यह तिलिस्मी जमीन तो मेरे लिए भयानक सिद्ध हो रही है अच्छा खासा तिलिस्म मुझे दिखाई दे रहा है। जिन पर मुझे विश्वास था जिनका मुझे भरोसा था जो मेरी इज्जत करते थे यहाँ उन्हीं को मैं अपना विपक्षी पाता हूँ और वे मुझसे बात तक करना पसन्द नहीं करते।

नानक और अर्जुन को भूतनाथ और देवीसिंह ताज्जुब के साथ देख रहे थे। नानक ने भी भूतनाथ को देखा मगर दूर ही से प्रणाम करके रह गया पास न आया और अर्जुन को लिए सीधे इन्द्रदेव की तरफ चला गया जो तेजसिंह से बातें कर रहे थे। इस समय आज्ञानुसार अर्जुन अपने हाथ में तस्वीर लिए हुए था और नानक के हाथ में भी एक तस्वीर थी।

नानक और अर्जुन को अपने पास आते देख इन्द्रदेव ने हाथ के इशारे से उन्हें दूर ही खडे रहने के लिए कहा और उन्होंने भी ऐसा ही किया। कुछ देर तक और भी तेजसिंह के साथ इन्द्रदेव बातें करता रहा इसके बाद इशारे से अर्जुन और नानक को अपने पास बुलाया और जब वे दोनों पास आ गये तो कुछ कह-सुन कर बिदा किया।

भूतनाथ यह सब तमाशा देखकर ताज्जुब कर रहा था। अर्जुन और नानक को बिदा करने बाद तेजसिंह को साथ लिए हुए इन्द्रदेव महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास गया जो एक सुन्दर चट्टान पर खड-खड ढालवीं जमीन और पहाडी पर से नीचे की तरफ गिरते हुए सुन्दर झरने की शोभा देख रहे थे और बीरेन्द्रसिंह भी उन्हीं के पास खडे थे। वहाँ भी कुछ देर तक इन्द्रदेव ने महाराज से बातचीत की और इसके बाद चारो आदमी लौट कर बागीचे में चले आये। महाराज को बागीचे में आते देख और सब कोई भी जो इधर-उधर फैले हुए तमाशा देख रहे थे बागीचे में आकर इकट्ठे हो गए और अब मानो महाराज का यह एक छोटा सा दर्बार बागीचे में लग गया।

बीरेन्द्र–(इन्द्रदेव से) हाँ तो अब वे तमाशे कब देखने में आवेंगे जो आप अपने साथ तिलिस्म में लेते गये थे ?

इन्द्रदेव–जब आज्ञा हो तभी दिखाये जाँय।

बीरेन्द्र–हम लोग तो देखने के लिए तैयार बैठे हैं।

जीत–मगर पहिले यह मालूम हो जाना चाहिए कि उनके देखने में कितना समय लगेगा, अगर थोडी देर का काम हो तो अभी देख लिया जाय।

इन्द्र–जी वह थोडी देर का काम तो नहीं है इससे यही बेहतर होगा कि पहले जरूरी कामों से छुट्टी पाकर स्नान ध्यान तथा भोजन इत्यादि से निवृत्त हो लें।

महाराज–हमारी भी यही राय है।

महाराज का मतलब समझकर सब कोई उठ खडे हुए और जरूरी कामों से छुट्टी पाने की फिक्र में लगे। महाराज सुरेन्द्रसिंह बीरेन्द्रसिंह तथा और भी सब कोई इन्द्रदेव के उचित प्रबन्ध को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए। किसी को किसी तरह की तकलीफ न हुई और न कोई चीज माँगने की जरूरत ही पडी। इन्द्रदेव के ऐयार और कई खिदमतगार आकर मौजूद हो गये और बात की बात में सब सामान ठीक हो गया।

स्नान तथा सध्या पूजा इत्यादि से छुट्टी पाकर सभों ने भोजन किया और इसके बाद इन्द्रदेव ने (बगल के अन्दर) एक बहुत बडे और सजे हुए कमरे में सभों को बैठाया जहाँ सभों के योग्य दर्जे व दर्जे बैठने का इन्तजाम किया गया था। एक ऊँची गद्दी पर महाराज सुरेन्द्रसिंह और उनके दाहिने तरफ बीरेन्द्रसिंह गोपालसिंह तेजसिंह देवीसिंह पण्डित बद्रीनाथ रामनारायण पन्नालाल तथा भूतनाथ वगैरह बैठे।

कुछ देर तक इधर-उधर की बातचीत होती रही इसके बाद इन्द्रदेव ने हाथ जोडकर पूछा– अब यदि आज्ञा हो तो तमाशों को

महाराज–हाँ हाँ अब तो हम लोग हर तरह से निश्चिन्त हैं।

सलाम करके इन्द्रदेव कमरे के बाहर चला गया और घडी भर तक लौट के नहीं आया इसके बाद जब आया तो चुपचाप अपने स्थान पर आकर बैठ गया। सब कोई (भूतनाथ पन्नालाल वगैरह) ताज्जुब के साथ उसका मुँह देख रहे थे कि इतने में ही सामने वाले दर्वाजे का परदा हटा और नानक कमरे के अन्दर आता हुआ दिखाई दिया। नानक ने बडे अदब के साथ महाराज को सलाम किया और इन्द्रदेव का इशारा पाकर एक किनारे बैठ गया। इस समय नानक के हाथ में एक बहुत बडी मगर लपेटी हुई तस्वीर थी जो कि उसने अपने बगल में रख ली।

नानक के बाद हाथ में तस्वीर लिए अर्जुन भी आ पहुचा और महाराज को सलाम कर नानक के पास बैठ गया उसी समय कमला का भाई अथवा भूतनाथ का लडका हरनामसिंह दिखाई दिया, वह भी महाराज को प्रणाम करके अर्जुन के बगल में बैठ गया। हरनामसिंह के हाथ में एक छोटी सी सन्दूकडी थी जिसे उसने अपने सामने रख लिया।

इसके बाद नकाब पहने हुई तीन औरतें कमरे के अन्दर आईं और अदब के साथ महाराज को सलाम करती हुई दूसरे दर्वाजे से कमरे के बाहर निकल गईं।

इस समय भूतनाथ और देवीसिंह के दिल की क्या हालत थी सो वे ही जानते होंगे। उन्हें इस बात का तो विश्वास ही था कि इन औरतों में एक तो भूतनाथ की स्त्री और दूसरी चम्पा जरूर है मगर तीसरी औरत के बारे में कुछ भी नहीं कह सकते थे।

महाराज–(इन्द्रदेव से) इन औरतों में भूतनाथ की स्त्री और चम्पा जरूर होंगी ?

इन्द्र–(हाथ जोडकर) जी हाँ कृपानाथ।

महाराज–और तीसरी औरत कौन है ?

इन्द्र–तीसरी एक बहुत ही गरीब नेक सूधी और जमाने की सताई हुई औरत है जिसे देखकर और जिसका हाल सुनकर महाराज को बडी ही दया आयेगी। यह वह औरत है जिसे मरे हुए एक जमाना हो गया मगर अब उसे विचित्र ढंग से पैदा होते देख लोगों को बडा ही ताज्जुब होगा।

महाराज–आखिर वह औरत है कौन ?

इन्द्र–बेचारी दुःखिनी कमला की माँ यानी भूतनाथ की पहली स्त्री।

यह सुनते ही भूतनाथ चिल्ला उठा और उसने बडी मुश्किल से अपने को बेहोश होने से रोका।

॥ इक्कीसवाँ भाग समाप्त ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

बाईसवां भाग

पहिला बयान

भूतनाथ की अवस्था ने सभों का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया। कुछ देर तक सन्नाटा रहा और इसके बाद इन्द्रदेव ने पुनः महाराज की तरफ देखकर कहा–

महाराज, ध्यान देने और विचार करने पर सभों को मालूम होगा कि आज कल आपका दर्बार नाट्यशाला (थियेटर का घर) हो रहा है। नाटक खेलकर जो जो बातें दिखाई जा सकती हैं और जिनके देखने से लोगों को नसीहत मिल सकती है तथा मालूम हो सकता है कि दुनिया में जिस दर्जे तक के नेक और बद दुखिया और सुखिया, गंभीर और छिछोर इत्यादि पाये जाते हैं वे सब इस समय (आज कल) आपके यहां प्रत्यक्ष हो रहे हैं। ग्रह-दशा के फेर में जिन्होंने दुःख भोगा वे भी मौजूद हैं और जिन्होंने अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारी वे भी दिखाई दे रहे हैं जिन्होंने अपने किये का फल ईश्वरेच्छा से पा लिया है वे भी आये हुए हैं और जिन्हें अब सजा दी जायगी वे भी गिरफ्तार किये गए हैं। बुद्धिमानों का यह कथन है कि 'जो बुरी राह चलेगा उसे बुरा फल अवश्य मिलेगा' ठीक है, परन्तु कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अच्छी राह चलने वाले तथा नेक लोग भी दुःख के चेहले में फंस जाते है और दुर्जन तथा दुष्ट लोग आनन्द के साथ दिन काटते दिखाई देते हैं। इसे लोग ग्रह-दशा के कारण कहते हैं मगर नहीं इसके सिवाय कोई और बात भी जरूर है। परमात्मा की दी हुई बुद्धि और विचारशक्ति का अनादर करने वाले ही प्रायः संकट में पडकर तरह तरह के दुःख भोगते हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि इस समय अथवा आजकल आपके यहां सब तरह के जीव दिखाई देते हैं, दृष्टान्त देने के बदले केवल इशारा करने से काम निकलता है। हां मैं यह कहना तो भूल ही गया कि इन्हीं में से ऐसे भी जीव आए हुए हैं जो अपने किए का नहीं बल्कि अपने सम्बन्धियों के किये हुए पापों का फल भोग रहे हैं और इसी से नाते (रिश्ते) और सम्बन्ध का गूढ अर्थ भी निकलता है। बेचारी लक्ष्मीदेवी की तरफ देखिये जिसने किसी का कुछ भी नहीं बिगाडा और फिर भी हद्द दर्जे की तकलीफ उठाकर ताज्जुब है कि जीती बच गई। ऐसा क्यों हुआ ? इसके जवाब में मैं तो यही कहूंगा कि राजा गोपालसिंह की बदौलत जो बेईमान दारोगा के हाथ की कठपुतली हो रहे थे और इस बात की कुछ भी खबर नहीं रखते थे कि उनके घर में क्या हो रहा है या उनके कर्मचारियों ने उन्हें कैसे जाल में फंसा रक्खा है। जिस राजा को अपने घर की खबर न होगी वह प्रजा का क्या उपकार कर सकता है, और ऐसा राजा अगर संकट में पड जाय तो आश्चर्य ही क्या है ! केवल इतना ही नहीं इनके दुःख भोगने का एक सबब और भी है। बडों ने कहा है कि 'स्त्री के आगे अपने भेद की बात प्रकट करना बुद्धिमानों का काम नहीं है' परन्तु राजा गोपालसिंह ने इस बात पर कुछ भी ध्यान न दिया और दुष्टा मायारानी की मुहब्बत में फंस कर तथा अपने भेदों को बता कर बर्बाद हो गये। सज्जन और सरल स्वभाव होने से ही दुनिया का काम नहीं चलता कुछ नीति का भी अवलम्बन करना ही पडता है।

इसी तरह महाराज शिवदत्त को देखिये जिसे खुशामदियों ने मिल जुलकर बर्बाद कर दिया। जो लोग खुशामद में पड कर अपन को सबसे बडा समझ बैठते हैं और दुश्मन को कोई चीज नहीं समझते है उनकी वैसी ही गति होती है जैसी शिवदत्त की हुई। दुष्टों और दुजनों की बात जाने दीजिए उनको तो उनके बुरे कामों का फल मिलना ही चाहिए मिला ही है और मिलेगा ही उनका जिक्र तो मै पीछे करूगा अभी तो मै उन लोगों की तरफ इशारा करता हू जो वास्तव में बुरे नहीं थे मगर नीति पर न चलने तथा बुरी सोहबत में पड रहने के कारण सकट में पड गय। मै दावे के साथ कहता हू कि भूतनाथ ऐसा नेक दयावान और चतुर ऐयार बहुत कम दिखाई देगा, मगर लालच और ऐयाशी के फेर में पडकर यह ऐसा बर्बाद हुआ कि दुनिया भर में मुह छिपाने और अपने का मुर्दा मशहूर करने पर भी इसे सुख की नींद नसीब न हुई। अगर यह मेहनत करके ईमानदारी के साथ दौलत पैदा किया चाहता तो आज इसकी दौलत का अन्दाज करना कठिन होता और अगर ऐयाशी के फेर में न पडा होता तो आज नाती पोतो से इसका घर दूसरों क लिए नजीर गिना जाता। इसने सोचा कि मै मालदार हू, होशियार हू, चालाक हू और ऐयार हू, कुलटा स्त्रियों और रण्डियों की सोहबत का मजा लेकर सफाई के साथ अलग हो जाऊँगा, मगर इसे अब मालूम हुआ होगा कि रण्डिया ऐयारों के भी कान काटती हैं। नागर वगैरह के बर्ताव को जब यह याद करता होगा तब इसके कलेजे में चोट सी लगती होगी। मैं इस समय इसकी शिकायत करने पर उतारू नहीं हुआ हू बल्कि इसके दिल पर से पहाड सा बोझ हटाकर उसे हलका किया चाहता हू, क्योंकि इसे मै अपना दोस्त समझता था और समझता हू, हॉ इधर कई वर्षो से इसका विश्वास अवश्य उठ गया था और मै इसकी सोहबत पसन्द नहीं करता था मगर इसमें मेरा कोई कसूर नहीं किसी की चाल-चलन जब खराब हो जाती है तब बुद्धिमान लोग उसका विश्वास नहीं करते और शास्त्र की भी ऐसी ही आज्ञा है, अतएव मुझे भी वैसा ही करना पडा। यद्यपि मैंने इसे किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुचाई परन्तु इसकी दोस्ती को एक दम भूल गया, मुलाकात हाने पर उसी तरह बर्ताव करता था जैसा लोग नए मुलाकाती के साथ किया करते है। हॉ अब जब कि यह अपनी चाल-चलन को सुधार कर आदमी बना है अपनी भूलों को सोच-समझकर पछ्ता चुका हे एक अच्छे ढग से नेकी के साथ नामवरी पैदा करता हुआ दुनिया में फिर दिखाई देने लगा है और महाराज भी इसकी योग्यता से प्रसन्न होकर इसके अपराधों को (दुनिया के लिए) क्षमा कर चुके हैं तब मैंन भी इसके अपराधों को दिल ही दिल में क्षमा कर इसे अपना मित्र समझ लिया है और फिर उसी निगाह से देखने लगा हू जिस निगाह से पहिले देखता था। परन्तु इतना मै जरूर कहूगा कि भूतनाथ ही एक ऐसा आदमी है जो दुनिया में नेकचलनी और बदचलनी के नतीजे को दिखाने के लिए नमूना बन रहा है। आज यह अपने भेदों को प्रकट हाते दख डरता है और चाहता है कि हमारे भेद छिपे के छिपे रह जाय मगर यह इसकी भूल है क्योंकि किसी के एब छिप नहीं रहते। सब नहीं तो बहुत कुछ दोनों कुमारों को मालूम हो ही चुके हैं और महाराज भी जान गये हैं ऐसी अवस्था में इसे अपना किस्सा पूरा-पूरा बयान करके दुनिया में एक नजीर छोड देना चाहिए और साथ ही इसक (भूतनाथ की तरफ देखते हुए) अपने दिल के बोझ को भी हलका कर लना चाहिए। भूतनाथ तुम्हारे दो चार भेद ऐसे है जिन्हें सुनकर लोगों की ऑखें खुल जायँगी और लाग समझेंगे कि हॉ आदमी ऐसे-ऐसे काम भी कर गुजरते हैं और उनका नतीजा एसा होता है मगर यह ता कुछ तुम्हारे ही ऐसे बुद्धिमान और अनूठे ऐयार का काम है कि इतना करने पर भी आज तुम भले-चगे ही नहीं दिखाई देते हो बल्कि नेकनामी के साथ महाराज के ऐयार कहलाने की इज्जत पा चुके हो। मैं फिर कहता हू कि किसी बुरी नियत से इन बातों का जिक्र मैं नहीं करता बल्कि तुम्हारे दिल का खुटका दूर करने के साथ ही साथ जिनके नाम से तुम डरते हो उन्हें तुम्हारा दोस्त बनाया चाहता हू, अस्तु तुम्हे बेखौफ अपना हाल बयान कर देना चाहिये।

भूत—ठीक है मगर क्या करूँ मेरी जुबान नहीं खुलती मैने ऐसे-ऐसे बुरे काम किये है जिन्हें याद करके आज मेरे रॉगटे खडे हो जाते हैं और आत्महत्या करने की जी में इच्छा होती है, मगर नहीं मै बदनामी के साथ दुनिया से उठ जाना पसन्द नहीं करता अतएव जहॉ तक हो सकेगा एक दफे नेकनामी अवश्य पैदा करूँगा।

इन्द्र—नेकनामी पैदा करने का ध्यान जहॉ तक बना रहे अच्छा ही है परन्तु मै समझता हू कि तुम नेकनामी उसी दिन पदा कर चुके जिस दिन हमारे महाराज ने तुम्हें अपना ऐयार बनाया इसलिए कि तुमने इधर-उधर बहुत ही अच्छे काम किये हैं ओर व सब एसे थे कि जिन्हें अच्छे से अच्छा ऐयार भी कदाचित नहीं कर सकता था। चाहे तुमने पहिले कैसी ही बुराई और कैसे ही खोटे काम क्यों न किये हों मगर आज हम लोग तुम्हारे देनदार हो रहे हैं तुम्हारे एहसान के बोझ से दब हुए हैं और समझत हैं कि तुम अपने दुष्कर्मो का प्रायश्चित कर चुके हो।

भूत—आप जो कुछ कहते है यह आपका बडप्पन है परन्तु मैने जो कुछ कुकर्म किये हैं मै समझता हू कि उनका प्रायश्चित ही नहीं है तथापि अब तो मै महाराज की शरण में आ ही चुका हू और महाराज ने भी मेरी बुराइयों पर ध्यान न देकर मुझे अपना दासानुदास स्वीकार कर लिया हे इससे मेरी आत्मा सन्तुष्ट है और मै अपने को दुनिया में मुंह दिखाने योग्य समझने लगा हू। मै यह भी समझता हू कि आप जो कुछ आज्ञा कर रहे है यह वास्तव में महाराज की आज्ञा है जिसे मै

कदापि उल्लंघन नहीं कर सकता अस्तु मैं अपनी अद्भुत जीवनी सुनने के लिए तैयार हू, परन्तु
इतना कहकर भूतनाथ ने एक लम्बी सास ली और महाराज सुरेन्द्रसिह की तरफ देखा।
सुरेन्द्र–भूतनाथ यद्यपि हमलोग तुम्हारा कुछ-कुछ हाल जान चुके हैं मगर फिर भी तुम्हारा पूरा-पूरा हाल तुम्हार ही मुँह से सुनने की इच्छा रखते है। तुम बयान करने में किसी तरह का सकोच न करो। इससे तुम्हारा दिल भी हल्का हो जायगा और दिन-रात जो तुम्हें खुटका बना रहता है वह भी जाता रहेगा।
भूत–जो आज्ञा।
इतना कहकर भूतनाथ ने सलाम किया और अपनी जीवनी इस तरह बयान करने लगा –

भूतनाथ की जीवनी

भूत–सवक पहिले मैं वही बात कहूगा जिसे आप लोग नहीं जानते अर्थात मैं नौगढ के रहने वाले और देवीसिह के सग चाचा जीवनसिह का लडका हू। मेरी सौतेली माँ मुझे देखना पसन्द नहीं करती थी और मैं उसकी आँखों में काँटे की तरह गडा करता था। मेरे ही सबब से मेरी माँ की इज्जत और कदर थी और उस बाँझ को कोई पूछता भी न था अतएव वह मुझे दुनिया से ही उठा देने की फिक्र में लगी और यह बात मेरे पिता को भी मालूम हो गई इसलिए जब कि मैं आठ वर्ष का था मेरे पिता ने मुझे अपने मित्र देवदत्त ब्रह्मचारी के सुपुर्द कर दिया जो तेजसिह के गुरु *थे और महात्माओं की तरह नौगढ की उस तिलिस्मी खोह में रहा करते थे जिसे राजा वीरेन्द्रसिहजी ने फतह किया। मैं नहीं जानता कि मेरे पिता ने मेरे विषय में उन्हें क्या समझाया और क्या कहा परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि ब्रह्मचारीजी मुझे अपने लडके की तरह मानते, पढाते-लिखाते और साथ-साथ ऐयारी भी सिखाते थे परन्तु जडी बूटियों के प्रभाव से उन्होंने मेरी सूरत में बहुत बडा फर्क डाल दिया था जिसमें मुझे कोई पहिचान न ले। मेरे पिता मुझे देखने के लिए बराबर इनके पास आया करते थे।
इतना कहकर भूतनाथ कुछ देर के लिए चुप रह गया और सभों के मुह की तरफ देखने लगा।
सुरेन्द्र–(ताज्जुब के साथ) ओफ ओह ! क्या तुम जीवनसिह के वही लडके हो जिसके बारे में उन्होंने मशहूर कर दिया था कि उसे जगल में शेर उठा ले गया !!
भूत–(हाथ जोडकर) जी हाँ !
तेज–और आप वही हैं जिसे गुरुजी 'फिरकी' कह के पुकारा करते थे क्योंकि आप एक जगह ज्यादा देर तक बैठते न थे।
भूत–जी हाँ।

देवी–यद्यपि मैं बहुत दिनों से आपको भाई की तरह मानने लग गया हूँ परन्तु आज यह जानकर मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा कि आप वास्तव में मेरे भाई हैं, मगर यह तो बताइए कि ऐसी अवस्था में शेरसिह आपके भाई क्योंकर हुए ? वह कौन हैं ?
भूत–वास्तव में शेरसिह मेरा भाई नहीं है बल्कि गुरुभाई और उन्हीं ब्रह्मचारीजी का लडका है मगर हाँ लडकपन ही से एक साथ रहने के कारण हम दोनों में भाई की सी मुहब्बत हो गई थी।
तेज–आजकल शेरसिह कहाँ हैं ?
भूत–मुझे उनकी कुछ भी खबर नहीं है मगर मेरा दिल गवाही देता है कि अब वे हम लोगों को दिखाई न देंगे।
वीरेन्द्र–सो क्यों ?
भूत–इसीलिए कि वे भी अपने को छिपाये और हम लोगों में मिल जुले रहते। और साथ ही इसके ऐबों से खाली न थे।
सुरेन्द्र–खैर कोई चिन्ता नहीं अच्छा तब ?
भूत–अस्तु मैं उन्हीं ब्रह्मचारीजी के पास रहने लगा। कई वर्ष बीत गये। पिताजी मुझसे मिलने के लिए कभी-कभी आया करते थे और जब मैं बडा हुआ तो उन्होंने मुझे अपने से जुदा करने का सबब भी बयान किया और वे यह जानकर बहुत प्रसन्न हुए कि मैं ऐयारी के फन में बहुत तेज और होशियार हो गया हू। उस समय उन्होंने ब्रह्मचारीजी से कहा कि

---

*चन्द्रकान्ता पहिले भाग के छठे बयान में तेजसिह ने अपने गुरु के बारे में वीरेन्द्रसिह से कुछ कहा था।

इसे किसी रियासत में नोकर रख दना चाहिए तव इसकी एयारी खुलेगी। मुख्तसर यह कि ब्रह्मचारीजी की ही बदौलत मैं गदाधरसिह क नाम मे रणधीरसिहजी के यहाँ और शरसिह महाराज दिग्विजयसिह क यहाँ नोकर हो गय और यह जाहिर किया गया कि शरसिंह और गदाधरसिह दोनों भाई है और हम दाना आपुस में प्रम भी ऐसा ही रखत थे।

उन दिनों रणधीरसिह की जमीदारी मे तरह-तरह के उत्पात मच हुए थ और वहुत से आदमी उनके जानी दुश्मन हो रहे थ। उनके आपुस वालो का तो इस वात का विश्वास हो गया था अब रणधीरसिहजी की जान किसी तरह नहीं बच सकती क्योंकि उन्हीं दिना उनका ऐयार श्रीसिह दुश्मनों के हाथों स मारा जा चुका था और खूनी का कुछ पता नहीं लगता था। कोई दूसरा एयार भी उनके पास न था इसलिय वे बड़ ही तरद्दुद में पड हुए थे यद्यपि उन दिनों उनक यहाँ नौकरी करना अपनी जान खतर में डालना था मगर मुझे इन बातो की कुछ भी परवाह न हुई। रणधीरसिहजी भी मुझे नोकर रख कर बहुत प्रसन्न हुए। मेरी खातिरदारी में कभी किसी तरह की कमी नहीं करते थे। इसका दो सबब था, एक तो उन दिनों उन्हें एयार की सख्त जरूरत थी दूसरे मेरे पिता से और उनसे कुछ मित्रता भी थी जो कुछ दिन के बाद मुझे मालूम हुआ।

रणधीरसिहजी न मेरा ब्याह भी शीघ्र ही करा दिया। सम्भव है कि इस मे उनकी कृपा और स्नेह के कारण समझू, पर यह भी हो सकता है कि मेरे पैर में गृहस्थी की वेडी डालने और कही भाग जाने लायक न रखने के लिए उन्होंने ऐसा किया हो क्योंकि अकेला और वफिक्र आदमी कहीं पर जन्म भर रहे और काम कर इसका विश्वास लोगों का कम रहता है। खैर जो कुछ हो मतलब यह है कि उन्होने मुझे वडी इज्जत और प्यार क साथ अपने यहा रक्खा और मैंने भी थोड ही दिनो में ऐस अनूठे काम कर दिखाए कि उन्हें ताज्जुब होता था। सच तो यो है कि उनके दुश्मनो की हिम्मत टूट गई और वे दुश्मनी की आग में आप ही जलने लगे।

कायदे की बात है कि जब आदमी के हाथ से दो-चार काम अच्छे निकल जाते है और चारो तरफ उसकी तारीफ होने लगती है तब वह अपने काम की तरफ से बेफिक्र हो जाता है। वही हाल मेरा भी हुआ।

आप जानते ही होंगे कि रणधीरसिहजी का दयाराम नाम एक भतीजा था जिस वह बहुत प्यार करते थे और वही उनका वारिस होने वाला था। उसके माँ-बाप लडकपन ही में मर चुके थे मगर चाचा की मुहब्बत के सबब उसे भी बाप के मरने का दु ख मालूम न हुआ। वह (दयाराम) उम्र में मुझसे कुछ छोटा था मगर मेरे और उसके बीच में हद दर्जे की दोस्ती और मुहब्बत हो गई थी। जब हम दोनों आदमी घर पर मौजूद रहते तो बिना मिले जी नहीं मानता था। दयाराम का उठना बैठना मेरे यहा ज्यादे होता था अक्सर रात को मेरे यहा खा-पीकर सो जाता था और उसके घर वाले भी इसमें किसी तरह का रज नहीं मानते थ।

जो मकान मुझे रहने के लिए मिला था वह निहायत उम्दा और शानदार था। उसके पीछे की तरफ एक छोटा सा नजरबाग था जो दयाराम के शौक की बदौलत हरदम हरा-भरा गुजान और सुहावना बना रहता था। प्राय सध्या के समय हम दोनों उसी बाग में बैठ कर भाग-बूटी छानते और सन्ध्यापासन स निवृत्त हो बहुत रात गये तक गप-शप किया करते।

जेठ का महीना था और गर्मी हद दर्जे की पड रही थी। पहर रात बीत जाने पर हम दोनों दोस्त उसी नजरबाग में दो चारपाई के ऊपर लेटे हुए आपुस में धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। मेरा खूबसूरत और प्यारा कुत्ता मेरे पायताने की तरफ एक पत्थर की चौकी पर बैठा हुआ था। बात करते-करते हम दोनो को नींद आ गई।

आधी रात से कुछ ज्यादे बीती होगी जब मेरी आँख कुत्ते के भोंकने की आवाज से खुल गई। मैंने उस पर कुछ विशेष ध्यान न दिया और करवट बदल कर फिर आखे बन्द कर लीं क्योंकि वह कुत्ता मुझसे बहुत दूर और नजरबाग के पिछले हिस्से की तरफ था मगर कुछ ही देर बाद वह मेरी चारपाई के पास आकर भौंकने लगा और पुन मेरी आख खुल गई। मैंने कुत्ते को अपने सामने बचैनी की हालत में देखा उस समय वह जुबान निकालने हुए जोर-जोर से हाफ रहा और दोनों अगले पैरो से जमीन खोद रहा था।

मैं अपने कुत्ते की आदतों को खूब जानता और समझता था अस्तु उसकी ऐसी अवस्था देखकर मेरे दिल में खुटका हुआ और मैं घबडाकर उठ बैठा। अपने मित्र को भी उठाकर होशियार कर देने की नीयत से मैंने उसकी चारपाई की तरफ देखा मगर चारपाई खाली पाकर मैं बचैनी के साथ चारो तरफ देखने लगा और उठकर चारपाई के नीचे खडे होने के साथ ही मैंने अपने सिरहाने के नीचे से खजर निकाल लिया। उस समय मेरा नमकहलाल कुत्ता मेरी धोती पकड कर बार-बार खैचने और बाग के पिछले हिस्से की तरफ चलने का इशारा करने लगा और जब मैं उसके इशारे के मुताबिक चला तो वह धोती छोड कर आगे-आगे दौडने लगा। कदम बढाता हुआ मैं उसके पीछे-पीछे चला। उस समय मालूम हुआ कि मेरा कुत्ता जख्मी है उसके पिछले पैर में चोट आई है इसलिए वह पैर उठाकर दौडता था।

अस्तु कुत्ते के पीछे-पीछे चल कर मै पिछली दीवार के पास जा पहुचा जहा मालती और मामियान की लताओं के सबब घना कुज और पूरा अन्धकार हो रहा था। कुत्ता उस झुरमुट के पास जाकर रुक गया और मेरी तरफ देख कर सिर हिलाने लगा। उसी समय मैंने झाडी में से तीन आदमियों को निकलते हुए देखा जो बाग की दीवार के पास चले गए और फुर्ती से दीवार लाघकर पार हो गये। उन तीनों में से एक आदमी के हाथ में एक छोटी सी गठरी थी जो दीवार लाघते समय उसके हाथ से छूट कर बाग के भीतर ही गिर पडी। नि सन्देह वह गठरी लेने के लिए वह भीतर लौटता मगर उसने मुझे और मेरे कुत्ते को देख लिया था इसलिए उसकी हिम्मत न पडी।

गठरी गिरने के साथ ही मैंने जफील बुलाई और खञ्जर हाथ में लिए हुए उस आदमी का पीछा करना चाहा अर्थात् दीवार की तरफ बढ़ा, मगर कुत्ते ने मेरी धोती पकड ली और झाडी की तरफ हटकर खैंचने लगा जिससे मै समझ गया कि इस झाड़ी में भी कोइ छिपा हुआ है जिसकी तरफ कुत्ता इशारा कर रहा है। मै सम्हल कर खडा हो गया और गौर के साथ उस झाडी की तरफ देखने लगा। उसी समय पत्तों की खड़खड़ाहट ने विश्वास दिला दिया कि इसमें कोई और भी है। मैं इस ख्याल से कि जिस तरह पहिले तीन आदमी दीवार लाघ कर भाग गये हैं उसी तरह इसको भी भाग जाने न दूगा, घूम कर दीवार की तरफ चला गया। उस समय मैंने देखा कि एक चार डण्डे की सीढी दीवार के साथ लगी हुई है जिसके सहारे वे तीनों निकल गये थे। मैंने वह सीढी उठा कर उस गठरी के ऊपर फेंक दी जो उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ी थी क्योंकि मै उस गठरी की हिफाजत का भी ख्याल कर रहा था।

सीढ़ी हटाने के साथ ही दो आदमी उस झाडी में से निकले और बडी बहादुरी के साथ मेरा मुकाबला किया, और मै भी जी तोड़ कर उनके साथ लडने लगा। अन्दाज से मालूम हो गया कि गठरी उठा लेने की तरफ ही उन दोनों का ध्यान विशेष है। आप सुन चुके है कि मेरे हाथ मे केवल खजर था मगर उन दोनों के हाथ में लम्बे-लम्बे लट्ठ थे और मुकाबला करने में भी वे दोनों कमजोर न थे। अस्तु मुझे अपने बचाव का ज्यादा ख्याल था और मैं तब तक लडाई खतम करना नहीं चाहता था जब तक मेरे आदमी न आ जाय जिन्हें जफील देकर मैंने बुलाया था।

आधी घडी से ज्यादा देर तक मेरा उनका मुकाबला होता रहा। उसी समय मुझे रोशनी दिखाई दी और मालूम हुआ कि मेरे आदमी चले आ रहे है। उनकी तरफ देख कर मेरा ध्यान कुछ बटा ही था कि एक आदमी के हाथ का लट्ठ मेरे सिर पर बैठा और मै चक्कर खाकर जमीन पर गिर पडा।

दूसरा बयान

जब मेरी आख खुली मैंने अपने को अपने आदमियों से घिरा हुआ पाया। मशालों की रोशनी बखूबी हो रही थी। जाच करने पर मालूम हुआ कि मैं आधे घडी से ज्यादे देर तक बेहोश नही रहा। जब मैंने दुश्मन के बारे में दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि वे दोनों भी भाग गये मगर मेरे आदमियों के सबब से उस गठरी को न ले जा सके। मैंने अपनी हिम्मत और ताकत पर ख्याल किया तो मालूम हुआ कि मै इस समय उनका पीछा करने लायक नहीं हूँ। आखिर लाचार हो और पहिरे का इन्तजाम करके मैं गठरी लिए हुए अपने कमरे में चला आया मगर अपने मित्र की तरफ से मेरा दिल बडा ही बेचैन रहा और तरह तरह के शक पैदा होते रहे।

मेरे कमरे में रोशनी बखूबी हो रही थी। दरवाजा बन्द करके मैंने गठरी खोली और उसके अन्दर की चीजों को बडे गौर से देखने लगा।

गठरी में दो जोडे ता कपडे निकले जिन्हें मै पहिचानता न था मगर वे कपडे पहिरे हुए और मैले थे। कागजों का एक मुट्ठा निकला जिसे देखते ही मै पहिचान गया कि यह रणधीरसिहजी के खास सन्दूक के कागज है। मोम का एक साचा कई कपडों की तह में लपेटा हुआ निकला जो खास रणधीरसिहजी की मोहर पर से उठाया गया था। इन चीजों के अतिरिक्त मोतियों की एक माला एक कण्ठा और तीन जडाऊ अगूठिया निकलीं। ये चीजें मेरे मित्र दयारामसिह की थीं। इन सब चीजों को पहिरे हुए ही आज वे मेरे यहा से गायब हुए थे।

इन सब चीजों को देखकर मैं बडी देर तक सोच विचार में पडा रहा। उसी समय कमरे का वह दर्वाजा खुला जो जनाने मकान में जाने के लिए था और मेरी स्त्री कमला की मा आती हुई दिखाई पडी। उस समय वह एक बच्चे की मा हो चुकी थी और अपने बच्चे को भी गोद में लिए हुए थी। इसमें कोई शक नहीं कि मेरी स्त्री बुद्धिमान थी और छोटे-मोटे कामों में मै उसकी राय भी लिया करता था।

उसकी सूरत देखते ही मै पहिचान गया कि तरद्दुद और घबराहट ने उसे अपना शिकार बना लिया है अस्तु मैंने उसे बुलाकर अपने पास बैठाया और सब हाल कह सुनाया साथ ही इसके यह भी कहा कि मै इसी समय अपने दोस्त का

पता लगाने के लिए जाया चाहता हू। मगर उसने इस आखिरी बात को कबूल न किया और कहा कि मेरी राय में पहिले रणधीरसिहजी से मिल लेना चाहिये ।

कई बातों को सोच कर मैंने उसकी राय कबूल कर ली और उस गठरी को लेकर रणधीरसिहजी से मिलने के लिए रवाना हुआ । मुझे इस बात का भी धोखा लगा हुआ था कि रास्ते में कहीं दुश्मनों से मुलाकात न हो जाय जो जरूर इस गठरी को छीन लेने की धुन में लगे हुए होंगे इसलिये मैंने अपने दो शागिर्दो को भी साथ में ले लिया।

रणधीरसिहजी बेफिक्र और आराम की नींद सो रहे थे जब मैंने पहुचकर उन्हें उठाया। जागने के साथ ही वे मुझे देखकर चौंके और बोले क्यों क्या मामला है जो इस समय ऐसे ढग से यहा आये हो ? दयाराम कुशल से तो है ?

मेरी सूरत देखते ही उन्होंने दयाराम का कुशल पूछा इससे मुझे बडा ही ताज्जुब हुआ। खैर मैं उनके पास बैठ गया और जो कुछ मामला हुआ था साफ-साफ कह सुनाया।

मैं इस किस्से का मुख्तसर ही मे बयान करूँगा। रणधीरसिहजी इस हाल को सुनकर बहुत ही दु खी और उदास हुए। बहुत कुछ बातचीत करने के बाद अन्त मे बोले 'दयाराम मेरा एक ही एक वारिस और तुम्हारा दिली दोस्त है ऐसी अवस्था मे उसके लिए क्या करना चाहिए सो तुम ही सोच लो मैं क्या कहू। मैं तो समझ चुका था कि दुश्मनों की तरफ से अब निश्चिन्त हुआ मगर नहीं ।

इतना कह के कपडे से अपना मुह ढाप कर रोने लगे। मैं उन्हें बहुत कुछ समझा बुझाकर बिदा हुआ और अपने घर चला आया। अपनी स्त्री से मिल कर सब हाल कहने और समझाने बुझाने के बाद मैं अपने शागिर्दो को साथ लेकर घर से बाहर निकला। बस यहीं से मेरी बदकिस्मती का जमाना शुरू हुआ।

इतना कहकर भूतनाथ अटक गया और सिर नीचा करके कुछ सोचने लगा। सब कोई बेचैनी के साथ उसकी तरफ देख रहे थे और भूतनाथ की अवस्था से मालूम होता था कि वह इस बात को सोच रहा है कि मैं अपना किस्सा आगे बयान करूँ या नहीं। उसी समय दो आदमी और कमरे के अन्दर चले आये और महाराज को सलाम करके खडे हो गये। इनकी सूरत देखते ही भूतनाथ के चेहरे का रग उड गया और वह डरे हुए ढग से उन दोनों की तरफ देखने लगा।

दोनों आदमी जो अभी-अभी कमरे में आये वे ही थे जिन्होंने भूतनाथ को अपना नाम 'दलीपशाह' बतलाया था। इन्द्रदेव की आज्ञा पाकर वे दोनों भूतनाथ के पास ही बैठ गये ।

तीसरा बयान

प्रेमी पाठक भूले न होंगे कि दो आदमियों ने भूतनाथ से अपना नाम दलीपशाह बतलाया जिनमे से एक को पहिला दलीप और दूसरे को दूसरा दलीप समझना चाहिए।

भूतनाथ तो पहिले ही सोच में पड गया था कि अपना हाल आगे बयान करे या नहीं अब दोनों दलीपशाह को देख कर वह और भी घबडा गया। ऐयार लोग समझ रहे थे अब उसमें बात करने की भी ताकत नहीं रही। उसी समय इन्द्रदेव ने भूतनाथ से कहा क्यों भूतनाथ चुप क्यों हो गये ? कहो हॉ तब आगे क्या हुआ ?

इसका जवाब भूतनाथ ने कुछ न दिया और सिर झुकाकर जमीन की तरफ देखने लगा। उस समय पहिले दलीपशाह ने हाथ जोडकर महाराज की तरफ देखा और कहा 'कृपानाथ भूतनाथ को अपना हाल बयान करने में बडा कष्ट हो रहा है और वास्तव मे बात भी ऐसी ही है। कोई भला आदमी अपनी उन बातों को जिन्हें वह ऐब समझता है अपनी जुबान से अच्छी तरह बयान नहीं कर सकता। अस्तु यदि आज्ञा हो तो मैं इसका हाल पूरा-पूरा बयान कर जाऊँ क्योंकि मैं भी भूतनाथ का हाल उतना ही जानता हू जितना स्वय भूतनाथ। भूतनाथ जहाँ तक बयान कर चुके हैं उसे मैं बाहर खडा सुन भी चुका हू। जब मैंने समझा कि अब भूतनाथ से अपना हाल नहीं कहा जाता तब मैं यह अर्ज करने के लिए हाजिर हुआ हू। (भूतनाथ की तरफ देख के) मेरे इस कहने से आप यह न समझियेगा कि मैं आपके साथ दुश्मनी कर रहा हू। नहीं जो काम आपके सुपुर्द किया गया है उसे आपके बदले में मैं आसानी के साथ कर दिया चाहता हू।

इन दोनों आदमियों (दलीपशाह) को महाराज तथा और सभों ने भी ताज्जुब के साथ देखा था मगर यह समझ कर इन्द्रदेव से किसी ने कुछ भी न पूछा कि जो कुछ है थोडी देर में मालूम हो ही जायगा मगर जब दलीपशाह ऊपर लिखी बात बोलकर चुप हो गया तब महाराज ने भेद भरी निगाहों से इन्द्रजीतसिह की तरफ देखा और कुमार ने झुक कर धीरे से कुछ कह दिया जिसे वीरेन्द्रसिह तथा तेजसिह ने भी सुना तथा इनके जरिए से हमारे और रणधीरों को भी मालूम हो गया कि कुमार ने क्या कहा।

दलीपशाह की बात सुनकर इन्द्रदेव ने महाराज की तरफ देखा और हाथ जोडकर कहा इन्होंने (दलीपशाह ने)

जो कुछ कहा इन्द्रदेव ने ठीक है, मेरी समझ में अगर भूतनाथ का किस्सा इन्हीं की जुबानी सुन लिया जाय तो कोई हर्ज नहीं है ! इसके जवाब में महाराज ने मंजूरी के लिए सिर हिला दिया।

इन्द्र–(भूतनाथ की तरफ देख के) क्यों भूतनाथ इसमें तुम्हें किसी तरह का उज्र है ?

भूत–(महाराज की तरफ देखकर और हाथ जोड़कर) जो महाराज की मर्जी मुझमें नहीं करने की सामर्थ्य नहीं है। मुझे क्या खबर थी कि कसूर माफ हो जाने पर भी यह दिन देखना नसीब होगा। यद्यपि यह मैं खूब जानता हू कि मेरा भेद अब किसी से छिपा नहीं रहा परन्तु फिर भी अपनी भूल बार-बार कहने या सुनने में लज्जा बढती ही जाती है कम नहीं होती। खैर कोई चिन्ता नहीं जैसा होगा देखे अपने कलेजे को मजबूत करूँगा और दलीपशाह की कही हुई बातें सुनूगा तथा देखूँगा कि ये महाशय कुछ झूठ का भी प्रयोग करते हैं या नहीं।

दलीप–नहीं-नहीं भूतनाथ मैं झूठ कदापि न बोलूगा इससे तुम बेफिक्र रहो। (इन्द्रदेव की तरफ देख के) अच्छा तो अब मैं प्रारम्भ करता हू।

दलीपशाह ने इस तरह कहना शुरू किया –

महाराज इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐयारी के फन में भूतनाथ परले सिरे का ओस्ताद और तेज आदमी है। अगर यह ऐयारी के दरिया में गोता लगा कर अपने को बरबाद न कर दिया होता तो इसके मुकाबिले का ऐयार आज दुनिया में दिखाई न देता। मेरी सूरत देख के ये चौंकते और डरते हैं और इनका डरना वाजिब ही है मगर अब मैं इनके साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव नहीं कर सकता क्योंकि मैं ऐसा करने के लिए दोनों कुमारों से प्रतिज्ञा कर चुका हू, और इनकी आज्ञा मैं किसी तरह टाल नहीं सकता क्योंकि इन्हीं की बदौलत आज मैं दुनिया की हवा खा रहा हू। (भूतनाथ की तरफ देख के भूतनाथ मैं वास्तव में दलीपशाह हू, उस दिन तुमने मुझे नहीं पहचाना तो इसमें तुम्हारी आखों का कोई कसूर नहीं है कैद की सख्तियों के साथ-साथ जमाने की चाल ने मेरी सूरत ही बदल दी है तुम तो अपने हिसाब से मुझे मार ही चुके थे और तुम्हें मुझसे मिलने की कभी उम्मीद भी न थी मगर सुन लो और देख लो कि ईश्वर की कृपा से मैं अभी तक जीता जागता तुम्हारे सामने खडा हू। यह कुअर साहब के चरणों का प्रताप है। अगर मैं कैद न हो जाता तो तुमसे बदला लिए बिना कभी न रहता मगर तुम्हारी किस्मत अच्छी थी जो मैं कैद ही रह गया और छूटा भी तो कुअर साहब के हाथ से जो तुम्हारे पक्षपाती हैं। तुम्हें इन्द्रदेव से बुरा न मानना चाहिए और यह न सोचना चाहिए कि तुम्हें दु ख देने के लिए इन्द्रदेव तुम्हारा पुराना पचडा खुलवा रहे हैं। तुम्हारा किस्सा तो सब को मालूम हो चुका है इस समय ज्यों का त्यों चुपचाप रह जाने पर तुम्हारे चित्त को शान्ति नहीं मिल सकती और तुम हम लोगों की सूरत देखकर दिन-रात तरद्दुद में पडे रहोगे अस्तु तुम्हारे पिछले ऐबों को खोलकर इन्द्रदेव तुम्हारे चित्त को शान्ति दिया चाहते हैं और तुम्हारे दुश्मनों को जिनके साथ तुम ही ने बुराई की है तुम्हारा दोस्त बना रहे हैं। ये यह भी चाहते हैं कि तुम्हारे साथ ही साथ हम लोगों का भेद भी खुल जाय और तुम जान जाओ कि हम लोगों ने तुम्हारा कसूर माफ कर दिया है क्योंकि अगर ऐसा न होगा तो जरूर तुम हम लोगों को मार डालने की फिक्र में पड़ रहोगे और हम लोग इस धोखे में रह जायेंगे कि हमने इनका कसूर तो माफ ही कर दिया अब ये हमारे साथ बुराई न करेंगे। (जीतसिंह की तरफ देखकर) अब मैं मतलब की तरफ झुकता हू और भूतनाथ का किस्सा बयान करता हू।

जिस जमाने का हाल भूतनाथ बयान कर रहा है अर्थात जिन दिनों भूतनाथके मकान से दयाराम गायब हो गए थे उन दिनों यही नागर काशी के बाजार में वेश्या बन कर बैठी हुई अमीरों के लडकों को चौपट कर रही थी। उसकी बढी चढी खूबसूरती लोगों के लिए जहर हो रही थी और माल के साथ ही विशेष प्राप्ति के लिए यह लोगों की जान पर भी वार करती थी। यही दशा मनोरमा की भी थी परन्तु उसकी बनिस्बत यह बहुत ज्यादा रुपए वाली होने पर भी नागर की सी खूबसूरत न थी हा चालाक जरूर ज्यादे थी। और लोगों की तरह भूतनाथ और दयाराम भी नागर के प्रेमी हो रहे थे। भूतनाथ को अपनी ऐयारी का घमण्ड था और नागर को अपनी चालाकी का। भूतनाथ नागर के दिल पर कब्जा किया चाहता था और नागर इसकी तथा दयाराम की दौलत अपने खजाने में मिलाना चाहती थी।

दयाराम की खोज में घर से शागिर्दों को साथ लिए हुए बाहर निकलते ही भूतनाथ ने काशी का रास्ता लिया और तेजी के साथ सफर तय करता हुआ नागर के मकान पर पहुचा। नागर ने भूतनाथ की बडी खातिरदारी और इज्जत की तथा कुशल मँगल पूछने के बाद यकायक यहा आने का सबब भी पूछा।

भूतनाथ ने अपने आने का ठीक-ठीक सबब तो नहीं बताया मगर नागर समझ गई कि कुछ दाल में काला जरूर है। इसी तरह भूतनाथ को भी [illegible] पैदा हो गया कि दयाराम की चोरी में नागर का कुछ लगाव जरूर है अथवा यह उन आदमियों [illegible] ने दयाराम के साथ ऐसी दुश्मनी की है।

भूतनाथ का शक काशी ही वालों पर था इसलिए काशी ही में अड्डा बना कर इधर उधर घूमना और दयाराम का पता लगाना आरम्भ किया। जैस जैसे दिन बीतता था भूतनाथ का शक भी नागर के ऊपर बढता जाता था। सुनते है कि उसी जमाने में भूतनाथ ने एक और के साथ काशीजी में ही शादी भी कर ली थी जिससे कि नानक पैदा हुआ है क्योंकि इस झमेले में भूतनाथ का बहुत दिनों तक काशी में रहना पडा था।

सच है कि कम्बख्त रण्डिया रुपये के सिवा और किसी की नहीं हाती। जो दयाराम कि नागर का चाहता मानता और दिल खोल कर रुपया देता था नागर उसी के खून की प्यासी हा गई क्योंकि एसा करने से उसे विशेष प्राप्ति की आशा थी। भूतनाथ न यद्यपि अपने दिल का हाल नागर से बयान नहीं किया मगर नागर को विश्वास हो गया कि भूतनाथ को उस पर शक है और दयाराम ही की खाज में काशी आया हुआ हे अस्तु नागर ने अपना उचित प्रबन्ध करके काशी छोड दी और गुप्त रीति से जमानिया में जा बसी। भूतनाथ भी मिट्टी सूँघता हुआ उसकी खोज में जमानिया जा पहुचा और एक भाडे का मकान लेकर वहा रहने लगा।

इस खोज ढूँढ में वर्षों बीत गय मगर दयाराम का पता न लगा। भूतनाथ न अपन मित्र इन्द्रदेव से भी मदद मागी और इन्द्रदेव ने मदद भी दी मगर नतीजा कुछ भी न निकला। इन्द्रदेव ही के कहन से मै उन दिनों भूतनाथ का मददगर बन गया था।

इस किस्से के सम्बन्ध में रणधीरसिह के रिश्तेदारों की तथा जमानिया गयाजी और राजगृही इत्यादि की भी बहुत सी बातें कही जा सकती है परन्तु मै उन सभों का बयान करना व्यर्थ समझता हूँ और केवल भूतनाथ का ही किस्सा चुन चुन कर बयान करता हूँ जिससे कि खास मतलब है।

मैं कह चुका हूँ कि दयाराम का पता लगान के काम में उन दिनों मै भी भूतनाथ का मददगार था मगर अफसोस भूतनाा की किस्मत तो कुछ और ही कराया चाहती थी इसलिए हम लोगों की महनत का काई अच्छा नतीजा न निकला बल्कि एक दिन जब मिलने के लिए मै भूतनाथ के डेरे पर गया तो मुलाकात होने के साथ ही भूतनाथ ने आखें बदल कर मुझसे कहा दलीपशाह मैं तो तुम्हें बहुत अच्छा और नेक समझता था मगर तुम बहुत ही बुरे और दगाबाज निकले। मुझे ठीक ठीक पता लग चुका है कि दयाराम का भेद तुम्हारे दिल के अन्दर है और तुम हमारे दुश्मनों के मददगार और भेदिए हो तथा खूब ज़ानते हो कि इस समय दयाराम कहा है। तुम्हारे लिए यही अच्छा है कि सीधी तरह उनका (दयाराम का) पता बता दो नहीं तो मै तुम्हारे साथ बुरी तरह पेश आऊगा और तुम्हारी मिट्टी पलीद करके छोडूगा।

महाराज,मै नहीं कह सकता कि उस समय भूतनाथ की इन बतुकी बातों को सुनकर मुझे कितना क्राध चढ आया। इसके पास बैठा भी नहीं और इसकी बात का कुछ जवाब ही दिया,बस चुपचाप पिछले पैर लौटा और मकान के बाहर निकल आया। मेरा घोडा बाहर खडा था,मै उस पर सवार होकर सीधे इन्द्रदेव की तरफ चला गया। (इन्द्रदेव की तरफ हाथ का इशारा करके) दूसरे दिन इनके पास पहुचा और जा कुछ बीती थी इनसे कह सुनाया। इन्हें भी भूतनाथ की बातें बहुत बुरी मालूम हुई और एक लम्बी सॉस लेकर ये मुझसे बाले मै नहीं जानता कि इन दो चार दिनों में भूतनाथ को कौन सी नई बात मालूम हा गई और किस बुनियाद पर उसन तुम्हार साथ एसा सलूक किया। खैर कोई चिन्ता नहीं भूतनाथ अपनी इस बेवकूफी पर अफसोस करेगा और पछतायगा,तुम इस बात का ख्याल न करो और भूतनाथ से मिलना जुलना छाडकर दयाराम की खाज में लगे रहो,तुम्हारा एहसान रणधीरसिंह और मेरे ऊपर हागा।

इन्द्रदव ने बहुत कुछ कह सुनकर मेरा क्राध शान्त किया और दो दिन तक मुझे अपने यहा महमान रक्खा। तीसरे दिन मैं इन्द्रदेव से विदा होने वाला ही था कि इनके शागिर्द न आकर एक विचित्र खबर सुनाई उसने कहा कि आज रात को बारह बजे क समय मिर्जापुर क जमीदार राजसिह क यहा दयाराम क होने का पता मुझे लगा है। खुद मेरे भाई ने यह खबर दी है। उसने यह भी कहा है कि आजकल नागर भी उन्हीं के यहाँ है।

इन्द--(शागिर्द से) वह खुद मरे पास क्यों नहीं आया ?

शागिर्द--वह आप ही के पास आ रहा था,मुझस रास्ते में मुलाकात हुइ आर उसके पूछने पर मैंन कहा कि दयारामजी का पता लगाने के लिए मै तैनात किया गया हूँ। उसने जवाब दिया कि अब तुम्हारे जाने की कोइ जरुरत न रही,मुझ उनका पता लग गया और यही खुशखबरी सुनाने क लिए मै सरकार के पास जा रहा हूँ मगर अब तुम मिल गये हो तो मेरे जाने की कोई जरुरत नहीं,जो कुछ मै कहता हूँ तुम जाकर उन्हे सुना दा और मदद लेकर बहुत जल्द मेरे पास आओ। मै फिर उसी जगह जाता हूँ,कहीं ऐसा न हो कि दयारामजी वहॉ से भी निकाल कर दूसरी जगह पहुँचा दिये जायें और हम लोगों को पता न लगे-मै जाकर इस बात का ध्यान रक्खूँगा। इसके बाद उसने सब कैफियत बयान की और अपने मिलन का पता बताया।

इन्द--ठीक है उसने जो कुछ किया बहुत अच्छा किया अब उसे पहुँचाने का बन्दोबस्त करना चाहिये।

शागिर्द--यदि आज्ञा हो तो भूतनाथ को भी इस बात की इत्तिला दे दी जाय ?

इन्द--कोई जरूरत नहीं अब तुम जाकर कुछ आराम करो तीन घण्टे बाद फिर तुम्हें सफर करना होगा।

इसके बाद इन्द्रदेव का शागिर्द जब अपने डेरे पर चला गया तब मुझसे और इन्द्रदेव से बातचीत होने लगी। इन्द्रदेव ने मुझसे मदद मांगी और मुझे मिर्जापुर जाने के लिए कहा मगर मैंने इनकार किया और कहा कि अब मैं न तो भूतनाथ का मुह देखूगा और न उसके किसी काम में शरीक होऊँगा। इसके जवाब में इन्द्रदेव ने मुझे पुन समझाया और कहा कि यह काम भूतनाथ का नहीं है मैं कह चुका हू कि इसका अहसान मुझ पर और रणधीरसिहजी पर होगा।

इसी तरह की बहुत सी बातें हुई लाचार मुझे इन्द्रदेव की बात माननी पड़ी और कई घण्टे के बाद इन्द्रदेव के उसी शागिर्द शम्भू को साथ लिए हुए मैं मिर्जापुर की तरफ रवाना हुआ। दूसरे दिन हम लोग मिर्जापुर जा पहुचे और बताये हुए ठिकाने पर पहुच कर शम्भू के भाई से मुलाकात की। दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि दयाराम अभी तक मिर्जापुर की सरहद के बाहर नहीं गये हैं अस्तु जो कुछ हम लोगों को करना था आपुस में तै करने के बाद सूरत बदल कर बाहर निकले।

दयाराम का दूढ निकालने के लिए हमने कैसी-कैसी महनत की और हम लोगों को किस-किस तरह की तकलीफें उठानी पड़ीं इसका बयान करना किस्से को व्यर्थ तूल देना और अपने मुह मिया मिट्ठू बनना है। महाराज के (आपके) नामी ऐयारों ने जैसे-जैसे अनूठे काम किये हैं उनके सामने हमारी ऐयारी कुछ भी नहीं है अतएव केवल इतना ही कहना काफी है कि हम लोगों ने अपनी हिम्मत से डटकर काम किया और हद्द दर्जे की तकलीफ उठा कर दयारामजी को दूढ निकाला। केवल दयाराम को नहीं बल्कि उनके साथ ही साथ राजसिह को भी गिरफ्तार करके हम लोग अपने ठिकाने पर ले आये मगर अफसोस! हम लोगों की सब मेहनत पर भूतनाथ ने पानी ही नहीं फेर दिया बल्कि जन्म भर के लिए अपने माथे पर कलक का टीका भी लगाया।

कैद की सख्ती उठाने के कारण दयारामजी बहुत ही कमजोर और बीमार हो रहे थे, उनमें बात करने की भी ताकत न थी इसलिये हम लोगों ने उसी समय उन्हे उठाकर इन्द्रदेव के पास ले जाना मुनासिब न समझा और दो-तीन दिन तक आराम देने की नीयत से अपने गुप्त स्थान पर जहा हम लोग टिके हुए थे ले गये। जहा तक हो सका नरम बिछावन का इन्तजाम करके उस पर उन्हें लिटा दिया और उनके शरीर में ताकत लाने का बन्दोबस्त करने लगे। इस बात का भी निश्चय कर लिया कि जब तक इनकी तबीयत ठीक न हो जायगी इनसे कैद किये जाने का सबब तक न पूछेंगे।

दयाराम जी के आराम का इन्तजाम करने के बाद हम लोगों ने अपने अपने हर्बे खोलकर उनकी चारपाई के नीचे रख दिये कपडे उतारे और बातचीत करने तथा दुश्मनी का सबब जानने के लिए राजसिह को होश में लाये और उसकी मुश्कें खोलकर बातचीत करने लगे क्योंकि उस समय इस बात का डर हम लोगों को कुछ भी न था कि वह हम पर हमला करेगा या हम लोगों का कुछ बिगाड सकेगा।

जिस मकान में हम लोग टिके हुए थे वह बहुत ही एकान्त और उजाड़ महल्ले में था। रात का समय था और मकान की तीसरी मजिल पर हम लोग बैठे हुए थे, एक मद्धिम चिराग आले पर जल रहा था। दयारामजी का पलग हम लोगों के पीछे की तरफ था और राजसिह सामने बैठा हुआ ताज्जुब के साथ हम लोगों का मुह देख रहा था। उसी समय यकायक कई दफे धम्माके की आवाज आई और उसके कुछ ही देर बाद भूतनाथ तथा उसके दो साथियों को हम लोगों ने अपने सामने खडा देखा। सामना होने के साथ ही भूतनाथ ने मुझसे कहा 'क्यों बे शैतान के बच्चे, आखिर मेरी बात ठीक निकली न! तू ही ने राजसिह के साथ मेल करके हमारे साथ दुश्मनी पैदा की! खैर ले अपने किए का फल चख!!'

इतना कहकर भूतनाथ ने मेरे ऊपर खञ्जर का वार किया जिसे बड़ी खूबी के साथ मेरे साथी ने रोका। मैं भी उठ कर खड़ा हो गया और भूतनाथ के साथ लड़ाई होने लगी। भूतनाथ ने एक हाथ में राजसिह का काम तमाम कर दिया और थोडी ही देर में मुझे भी खूब जख्मी किया यहा तक कि मैं जमीन पर गिर पडा और मेरे दोनों साथी भी बेकार हो गये। उस समय दयारामजी को जो पडे-पड़े सब तमाशा देख रहे थे जोश चढ आया और चारपाई पर से उठकर खाली हाथ भूतनाथ के सामने आ खडे हुए, कुछ बोला ही चाहते थे कि भूतनाथ के हाथ का खञ्जर उनके कलेजे के पार हो गया और वे बेदम होकर जमीन पर गिर पडे।

चौथा बयान

मैं नहीं कह सकता कि भूतनाथ ने ऐसा क्यों किया। भूतनाथ का कौल तो यही है कि मैंने उनको पहिचाना नहीं, और धोखा हुआ। खैर जो हो, दयाराम के गिरते ही मेरे मुह से 'हाय' की आवाज निकली और मैंने भूतनाथ से कहा, 'ऐ कम्बख्त! तैंने बेचारे दयाराम को क्यों मार डाला जिन्हें बड़ी मुश्किल से हम लोगों ने खोज निकाला था!!'

मेरी बात सुनते ही भूतनाथ सन्नाटे में आ गया। इसके बाद उसके दोनों साथी तो न मालूम क्या सोचकर एकदम भाग खडे हुए मगर भूतनाथ बडी बेचैनी से दयाराम के पास बैठ कर उनका मुह देखने लगा। उस समय भूतनाथ के देखते ही देखते उन्होंने आखिरी हिचकी ली और दम तोड दिया। भूतनाथ उनकी लाश के साथ चिमट कर रोने लगा और बडी देर तक रोता रहा। तब तक हम तीनों आदमी पुन मुकाबिला करने लायक हो गये और इस बात से हम लोगों का साहस और भी बढ गया कि भूतनाथ के दोनों साथी उसे अकेला छोड कर भाग गये थे। मैने मुश्किल से भूतनाथ को अलग किया और कहा अब रोने और नखरा करने से फायदा ही क्या होगा उनके साथ एसी ही मुहब्बत थी तो उन पर वार न करना था, अब उन्हें मारकर औरतों की तरह नखरा करने बैठे हो ?

इतना सुनकर भूतनाथ ने अपनी ऑखें पोछी और मेरी तरफ देख के कहा 'क्या मैने जान बूझकर इन्हें मार डाला है ?

मै–बेशक ! क्या यहा आने के साथ ही तुमने उन्हें चारपाई पर पडे हुए नहीं देखा था ?

भूत–देखा था मगर मै नहीं जानता था कि ये दयाराम है। इतने मोटे-ताजे आदमी को यकायक दुबला-पतला देखकर मै कैसे पहिचान सकता था ?

मै–क्या खूब ऐसे ही तो तुम अन्धे थे ? खैर इसका इन्साफ तो रणधीरसिह के सामने ही होगा, इस समय तुम हमसे फैसला कर लो क्योंकि अभी तक तुम्हारे दिल में लडाई का हौसला जरूर बना होगा।

भूत–(अपने को सभालकर और मुह पोंछकर) नहीं-नहीं मुझे अब लडने का हौसला नहीं है, जिसके वास्ते मै लडता था जब वही नहीं रहा तो अब क्या ? मुझे ठीक पता लग चुका था कि दयाराम तुम्हारे फेर में पडे हुए हैं और सो अपनी आखों से देख भी लिया मगर अफसोस है कि मैने पहिचाना नहीं और ये इस तरह धोखें में मारे गये, लेकिन इसका कसूर भी तुम्हारे ही सिर लग सकता है।

मै–खैर अगर तुम्हारे किए हो सके तो तुम बिल्कुल कसूर मेरे ही सिर थोप देना, मै अपनी सफाई आप कर लूगा मगर इतना समझ रक्खो कि लाख कोशिश करने पर भी तुम अपने को बचा नहीं सकते क्योंकि मैने इन्हें खोज निकालने में जो कुछ महनत की थी वह इन्द्रदेवजी के कहने से की थी न तो मै अपनी प्रशसा कराना चाहता था और न इनाम ही लेना चाहता था जरूरत पडने पर मै इन्द्रदेव की गवाही दिला सकता हूँ और तुम अपने को बेकसूर साबित करने के लिए नागर को पेश कर देना जिसके कहने और सिखाने में तुमने मेरे साथ दुश्मनी पैदा कर ली।

इतना सुनकर भूतनाथ सन्नाटे में आ गया। सिर झुकाकर देर तक सोचता रहा और इसके बाद लम्बी सास लेकर उसने मेरी तरफ देखा और कहा बेशक मुझे नागर कम्बख्त ने धोखा दिया ! अब मुझे भी इन्हीं के साथ मर मिटना चाहिए ! इतना कहकर भूतनाथ ने खजर हाथ में ले लिया मगर कुछ न कर सका अर्थात् अपनी जान न दे सका।

महाराज जवामर्दो का कहना बहुत ठीक है कि बहादुरों को अपनी जान प्यारी नहीं होती। वास्तव में जिसे अपनी जान प्यारी होती है वह कोई हौसले का काम नहीं कर सकता और जो अपनी जान हथेली पर लिए रहता है और समझता है कि दुनिया में मरना एक बार ही है कोई बार-बार नहीं मरता वही सब कुछ कर सकता है। भूतनाथ के बहादुर होने में सन्देह नहीं परन्तु इसे अपनी जान प्यारी जरूर थी और इस उल्टी बात का सबब यही था कि यह ऐयाशी के नशे में चूर था। जो आदमी एयाश होता है उसमें ऐयाशी के सबब कई तरह की बुराइया आ जाती हैं और बुराइयों की बुनियाद जम जाने के कारण ही उसे अपनी जान प्यारी हो जाती है तथा वह कोई भारी काम नहीं कर सकता। यही सबब था कि उस समय भूतनाथ जान न दे सका बल्कि उसकी हिफाजत करने का ढग जमाने लगा नहीं तो उस समय मौका ऐसा ही था इससे जैसी भूल हो गई थी उसका बदला तभी पूरा होता जब यह भी उसी जगह अपनी जान दे देता और उस मकान से तीनो लाशें एक साथ ही निकाली जाती।

भूतनाथ ने कुछ देर तक सोचने के बाद मुझसे कहा– 'मुझे इस समय अपनी जान भारी हो रही है और मैं मर जाने के लिए तैयार हू मगर मै देखता हू कि ऐसा करने से भी किसी को फायदा नहीं पहुचेगा। मैं जिसका नमक खा चुका हू और खाता हू उसका और भी नुकसान होगा क्योंकि इस समय वह दुश्मनों से घिरा हुआ है। अगर मैं जीता रहूगा तो उनके दुश्मनों का नामोनिशान मिटाकर उन्हें बेफिक्र कर सकूगा अतएव मै माफी मागता हू कि तुम मेहरबानी कर मुझे सिर्फ दो साल के लिए जीता छोड दो।

मै–दो वर्ष के लिए क्या जिन्दगी भर के लिए तुम्हे छोड देता हू, जब तुम मुझसे लडना नहीं चाहते तो मै क्यों तुम्हें मारने लगा ? बाकी रही यह बात कि तुमने खामखाह मुझसे दुश्मनी पैदा कर ली है सो उसका नतीजा तुम्हें आप से आप मिल जायगा जब लोगों को यह मालूम होगा कि भूतनाथ के हाथ से बेचारा दयाराम मारा गया।

भूत–नहीं-नहीं मेरा मतलब तुम्हारी पहिली बात से नहीं है बल्कि दूसरी बात से है अर्थात अगर तुम चाहोगे तो लोगों

का इस बात का पता ही नहीं लगेगा कि दयाराम भूतनाथ के हाथ से मारा गया।

मैं–यह क्योंकर छिप सकता है ?

भूत–अगर तुम छिपाओ तो सब कुछ छिप जायगा।

मुख्तसर यह कि बातों का धीरे-धीरे बढ़ाता हुआ भूतनाथ मेरे पैरों पर गिर पड़ा और बड़ी खुशामद के साथ कहने लगा कि तुम इस मामले को छिपाकर मेरी जान बचा लो। केवल इतना ही नहीं इसने मुझे हर तरह के सब्जबाग दिखाए और कसमें दे देकर मेरी नाक में दम कर दिया। लालच में तो मैं नहीं पड़ा मगर पिछली मुरौवत के फेर में जरूर पड़ गया और भेद को छिपाये रखने की कसम खाकर अपने साथियों को साथ लिए हुए मैं उस घर के बाहर निकल गया। भूतनाथ तथा दोनों लाशों को उसी तरह छोड़ दिया फिर मुझे मालूम नहीं कि भूतनाथ ने उन लाशों के साथ क्या वर्ताव किया।

यहां तक भूतनाथ का हाल कह कर कुछ देर के लिए दलीपशाह चुप हो गया और उसने इस नीयत से भूतनाथ की तरफ देखा कि देखें यह कुछ बोलता है या नहीं। इस समय भूतनाथ की आखों से आंसू की नदी बह रही थी और वह हिचकियां ले लेकर रो रहा था। बड़ी मुश्किल से भूतनाथ ने अपने दिल को सम्हाला और दुपट्टे से मुंह पोंछ कर कहा ठीक है-ठीक है जो कुछ दलीपशाह ने कहा सब सच है मगर यह बात मैं कसम खाकर कह सकता हूं कि मैंने जान बूझ कर दयाराम को नहीं मारा। वहां राजसिंह को खुले हुए देखकर मेरा शक यकीन के साथ बदल गया और चारपाई पर पड़े हुए देखकर भी मैंने दयाराम को नहीं पहिचाना मैंने समझा कि यह भी कोई दलीपशाह का साथी होगा। बेशक दलीपशाह पर मेरा शक मजबूत हो गया था और मैं समझ बैठा था कि जिन लोगों ने दयाराम के साथ दुश्मनी की है दलीपशाह जरूर उनका साथी है। यह शक यहां तक मजबूत हो गया था कि दयाराम के मारे जाने पर भी दलीपशाह की तरफ से मेरा दिल साफ न हुआ बल्कि मैंने समझा कि इसी (दलीपशाह) ने दयाराम को वहां लाकर कैद किया था। जिस नागर पर मुझे शक हुआ था उसी कम्बख्त की जादू भरी बातों में फंस गया और उसी ने मुझे विश्वास दिला दिया कि इसका कर्ता-धर्ता दलीपशाह है। यही सबब है कि इतना हो जाने पर भी मैं दलीपशाह का दुश्मन बना ही रहा। हां दलीपशाह ने एक बात नहीं कही वह यह है कि इस भेद को छिपाये रखने की कसम खाकर भी दलीपशाह ने मुझे सूखा नहीं छोड़ा। उन्होंने कहा कि तुम कागज पर लिख कर माफी मांगो तब मैं तुम्हें माफ करके यह भेद छिपाये रखने की कसम खा सकता हूं। लाचार होकर मुझे ऐसा करना पड़ा और माफी के लिए चीठी लिख हमेशा के लिए इनके हाथ में फंस गया।

दलीप–बेशक यही बात है और मैं अगर ऐसा न करता तो थोड़े ही दिन बाद भूतनाथ मुझे दोषी ठहराकर आप सच्चा बन जाता। खैर अब मैं इसके आगे का हाल बयान करता हूँ जिसमें थोड़ा सा हाल तो ऐसा होगा जो मुझे खास भूतनाथ से मालूम हुआ था।

इतना कहकर दलीपशाह ने फिर अपना बयान शुरू किया –

दलीप–जैसा कि भूतनाथ कह चुका है बहुत मिन्नत और खुशामद से लाचार होकर मैंने कसूरवार होने और माफी मांगने की चीठी लिखाकर इसे छोड़ दिया और इसका ऐब छिपा रखने का वादा करके अपने साथियों को साथ लिए हुए उस घर से बाहर निकल गया और भूतनाथ की इच्छानुसार दयाराम की लाश को और भूतनाथ को उसी मकान में छोड़ दिया। फिर मुझे नहीं मालूम कि क्या हुआ और इसने दयाराम की लाश के साथ कैसा वर्ताव किया !

वहां से बाहर होकर मैं इन्द्रदेव की तरफ रवाना हुआ मगर रास्ते भर सोचता जाता था कि अब मुझे क्या करना चाहिए दयाराम का सच्चा-सच्चा हाल इन्द्रदेव से बयान करना चाहिए या नहीं। आखिर हम लोगों ने निश्चय कर लिया कि जब भूतनाथ से वादा कर ही चुके हैं तो इस भेद को इन्द्रदेव से भी छिपा ही रखना चाहिए।

जब हम लोग इन्द्रदेव के मकान में पहुंचे तो उन्होंने कुशल मंगल पूछने के बाद दयाराम का हाल दरियाफ्त किया जिसके जवाब में मैंने असल मामले को तो छिपा रक्खा और बात बनाकर यों कह दिया कि जो कुछ मैंने या आपने सुना था वह ठीक ही निकला अर्थात् राजसिंह ही ने दयाराम के साथ वह सलूक किया और दयाराम राजसिंह के घर में मौजूद भी थे मगर अफसोस बेचारे दयाराम को हम लोग छुड़ा न सके और वे जान से मारे गये !

इन्द्र–(चौंककर) हैं ! जान से मारे गये !!

मैं–जी हां और इस बात की खबर भूतनाथ को भी लग चुकी थी। मेरे पहिले ही भूतनाथ राजसिंह के उस मकान में जिसमें दयाराम को कैद कर रक्खा था पहुंच गया और उसने अपने सामने दयाराम की लाश देखी जिसे कुछ ही देर पहिले राजसिंह ने मार डाला था अस्तु भूतनाथ ने उसी समय राजसिंह का सिर काट डाला सिवाय इसके वह और कर ही क्या सकता था ! इसके थोड़ी देर बाद हम लोग भी उस घर में जा पहुंचे और दयाराम तथा राजसिंह की लाश और

भूतनाथ को वहा मौजूद पाया। दरियाफ्त करने पर भूतनाथ ने सब हाल बयान किया और अफसोस करते हुए हम लोग वहां से रवाना हुए। इन्द–अफसोस ! बहुत बुरा हुआ ! खैर ईश्वर की मर्जी !

मैने भूतनाथ के एब को छिपा कर जो कुछ इन्द्रदेव से कहा भूतनाथ की इच्छानुसार ही कहा था। भूतनाथ ने भी यही बात मशहूर की और इस तरह अपने एब को छिपा रक्खा।

यहा तक भूतनाथ का किस्सा कह कर जब दलीपशाह कुछ देर के लिए चुप हो गया तब तेजसिंह ने उससे पूछा तुमने तो भला भूतनाथ की बात मान कर उस मामले को छिपा रक्खा मगर शम्भू वगैरह इन्द्रदेव के शागिर्दो ने अपने मालिक से उस भेद को क्यों छिपाया ?

दलीप–(एक लम्बी सास लेकर) खुशामद और रुपया बडी चीज है बस इसी में समझ जाइये और मै क्या कहू !

तेज–ठीक है अच्छा तब क्या हुआ ? भूतनाथ की कथा इतनी ही है या और भी कुछ ?

दलीप–जी अभी भूतनाथ की कथा समाप्त नहीं हुई अभी मुझे बहुत कुछ कहना बाकी है और बातों के सिवाय भूतनाथ से एक कसूर ऐसा हुआ है जिसका रज भूतनाथ को इससे भी ज्यादा होगा।

तेज–सो क्या ?

दलीप–सो भी मै अर्ज करता हू।

इतना कह कर दलीपशाह ने फिर कहना शुरू किया –

इस मामले को वर्षो बीत गये। मै भूतनाथ की तरफ से कुछ दिनों तक बेफिक्र रहा मगर जब यह मालूम हुआ कि भूतनाथ मेरी तरफ से निश्चिन्त नहीं है बल्कि मुझे इस दुनिया से उठा बेफिक्र हुआ चाहता है तो मैं होशियार हो गया और दिन रात अपने बचाव की फिक्र में डूबा रहने लगा। (भूतनाथ की तरफ देख कर) भूतनाथ अब मैं वह हाल बयान करूगा जिसकी तरफ उस दिन मैने इशारा किया था जब तुम गिरफ्तार करके एक विचित्र पहाडी स्थान *मे ले गये और जिसके विषय में तुमने कहा था कि – यद्यपि मैंने दलीपशाह की सूरत नही देखी है इत्यादि। मगर क्या तुम इस समय भी

भूत–(बात काट कर) भला मै कैसे कह सकता हू कि मैने दलीपशाह की सूरत नहीं देखी है जिसके साथ ऐसे ऐसे मामले हो चुके हैं मगर उस दिन मैंने तुम्हें धोखा देने के लिए वे शब्द कहे थे क्योंकि मैंने तुम्हें पहिचाना नहीं था। इस कहने से मेरा यही मतलब था कि अगर तुम दलीपशाह न होगे तो कुछ न कुछ जरूर बात बनाओगे। खैर जो कुछ हुआ सो हुआ मगर क्या तुम वास्तव में अब उस किस्से को बयान करने वाले हो ?

दलीप–हा मै उसे जरूर बयान करूँगा।

भूत–मगर उसके सुनने से किसी को कुछ फायदा नहीं पहुंच सकता है और न किसी तरह की नसीहत ही हो सकती है। वह तो महज मेरी नादानी और पागलपन की बात थी। जहा तक मैं समझता हू उसे छोड देने से कोई हर्ज नहीं होगा।

दलीप–नही, उसका बयान जरूरी जान पडता है क्या तुम नहीं जानते या भूल गये कि उसी किस्से को सुनने के लिए कमला की मा अर्थात तुम्हारी स्त्री यहा आई हुई है ?

भूत–ठीक है मगर हाय ! मै सच्चा बदनसीब हू जो इतना होने पर भी उन्ही बातों को

इन्द–अच्छा-अच्छा जाने दो भूतनाथ ! अगर तुम्हें इस बात का शक है कि दलीपशाह बातें बनाकर कहेगा या उसके कहने का ढग लोगों पर बुरा असर डालेगा तो मै दलीपशाह को वह हाल कहने से रोक दूगा और तुम्हारे ही हाथ की लिखी हुई तुम्हारी अपनी जीवनी पढने के लिए किसी को दूगा जो इस सन्दूकडी में बन्द है।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने वही सन्दूकडी निकाली जिसकी सूरत देखने ही से भूतनाथ का कलेजा कापता था।

उस सन्दूकडी को देखते ही एक दफे तो भूतनाथ घबडाना सा होकर कापा मगर तुरन्त ही उसने अपने को सम्हाल लिया और इन्द्रदेव की तरफ देख के बोला, हा हा, आप कृपा कर इस सन्दूकडी को मेरी तरफ बढाइये क्योंकि यह मेरी चीज है और मै इसे लेने का हक रखता हू। यद्यपि कई ऐसे कारण हो गये है जिनसे आप कहेंगे कि यह सन्दूकडी तुम्हें नहीं दी जायगी मगर फिर भी मै इसी समय इस पर कब्जा कर सकता हू क्योंकि देवीसिंहजी मुझसे प्रतिज्ञा कर चुके है कि यह सन्दूकडी बन्द की बन्द तुम्हें दिला दूगा अस्तु देवीसिंहजी की प्रतिज्ञा झूठ नही हो सकती। इतना कह कर भूतनाथ ने देवीसिंह की तरफ देखा।

देवी–(महाराज से) नि सन्देह मै ऐसी प्रतिज्ञा कर चुका हू।

महा–अगर ऐसा है तो तुम्हारी प्रतिज्ञा झूठी नही हो सकती मैं आज्ञा देता हू कि तुम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो।

---

*देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति बीसवा भाग बारहवा बयान।

इतना सुनते ही देवीसिंह उठ खडे हुए। उन्होंने इन्द्रदेव के सामने से वह सन्दूकड़ी उठा ली और यह कहते हुए भूतनाथ के हाथ में दे दी 'लो मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता हू, तुम महाराज को सलाम करो जिन्होंने मेरी और तुम्हारी इज्जत रख ली।

भूत–(महाराज को सलाम करके) महाराज की कृपा से अब मैं जी उठा !

तेज–भूतनाथ तुम यह निश्चय जानो कि यह सन्दूकडी अभी तक खाली नहीं गई है अगर सहज में खुलने लायक होती तो शायद खुल गई होती।

भूत–(सन्दूकडी अच्छी तरह देख भाल कर) बेशक यह अभी तक खुली नहीं है ! मेरे सिवाय कोई दूसरा आदमी इसे बिना तोडे खोल भी नहीं सकता। यह सन्दूकडी मेरी बुराइयों से भरी हुई है, या यों कहिये कि यह मेरे भेदों का खजाना है यद्यपि इसमें के कई भेद खुल चुके हैं खुल रहे हैं और खुलते जायेंगे तथापि इस समय इसे ज्यों का त्यों बन्द पाकर मैं बराबर महाराज को दुआ देता हुआ यही कहूँगा कि मैं जी उठा, जी उठा जी उठा ! अब मैं खुशी से अपनी जीवनी कहने और सुनने के लिए तैयार हू और साथ ही इसके यह भी कहे देता हू कि अपनी जीवनी के सम्बन्ध में जो कुछ कहूगा सच कहूगा !

इतना कह कर भूतनाथ ने वह सन्दूकडी अपने बटुए मे रख ली और पुनः हाथ जोड कर महाराज से बोला महाराज मैं वादा कर चुका हू कि अपना हाल सच सच बयान करूँगा परन्तु मेरा हाल बहुत बडा और शोक दुःख तथा भयंकर घटनाओं से भरा हुआ है। मेरे प्यारे मित्र इन्द्रदेवजी जिन्होंने मेरे अपराधों को क्षमा कर दिया है कहते हैं कि तेरी जीवनी से लोगों का उपकार होगा और वास्तव में बात भी ठीक ही है अतएव कई कठिनाइयों पर ध्यान देकर मैं विनयपूर्वक महाराज से एक महीने की मोहलत माँगता हू। इस बीच में अपना पूरा-पूरा हाल लिख कर पुस्तक के रूप में महाराज के सामने पेश करूँगा और सम्भव है कि महाराज उसे सुन-सुना कर यादगार की तौर पर अपने खजाने में रखने की आज्ञा देंगे। इस एक महीने के बीच में मुझे भी सब बातें याद करके लिख देने का मौका मिलेगा और मैं अपनी निर्दोष स्त्री तथा उन लोगों से जिन्हें देखने की भी आशा नहीं थी परन्तु जो बहुत कुछ दुःख भोग कर भी दोनों कुमारों की बदौलत इस समय यहा आ गये हैं और जिन्हे मैं अपना दुश्मन समझता था मगर अब महाराज की कृपा से जिन्होने मेरे कसूरों को माफ कर दिया है मिल जुल कर कई बातों का पता भी लगा लूगा जिससे मेरा किस्सा सिलसिलेवार और ठीक कायदे से हो जायगा।

इतना कह कर भूतनाथ ने इन्द्रदेव राजा गोपालसिंह दोनों कुमारों और दलीपशाह वगैरह की तरफ देखा और तुरन्त ही मालूम कर लिया कि उसकी अर्जी कबूल कर ली जायगी।

महाराज ने कहा कोई चिन्ता नहीं तब तक हम लोग कई जरूरी कामों से छुट्टी पा लेंगे। राजा गोपालसिंह और इन्द्रदेव ने भी इस बात को पसन्द किया और इसके बाद इन्द्रदेव ने दलीपशाह की तरफ देख कर पूछा क्यों दलीपशाह इसमें तुम लोगो को तो कोई उज्र नहीं है ?

दलीप–(हाथ जोड कर) कुछ भी नहीं, क्योंकि अब महाराज की आज्ञानुसार हम लोगों की भूतनाथ से किसी तरह की दुश्मनी भी नहीं रही और न यही उम्मीद है कि भूतनाथ हमारे साथ किसी तरह की खुटाई करेगा परन्तु मैं इतना जरूर कहूगा कि हम लोगों का किस्सा भी महाराज के सुनने लायक है और हम लोग भूतनाथ के बाद अपना किस्सा भी सुनाना चाहते हैं।

महा–निःसन्देह तुम लोगों का किस्सा भी सुनने योग्य होगा और हम लोग उसके सुनने की अभिलाषा रखते है। यदि सम्भव हुआ तो पहिले तुम्हीं लोगों का किस्सा सुनने में आवेगा। मगर सुनो दलीपशाह, यद्यपि भूतनाथ से बडी बडी बुराइया हो चुकी हैं और भूतनाथ तुम लोगों का कसूरवार है परन्तु इधर हम लोगों के साथ भूतनाथ ने जो कुछ किया है उसके लिये हम लोग इसके अहसानमन्द हैं और इसे अपना हितू समझते हैं।

इन्द– बेशक-बेशक !

गोपाल–जरूर हम लोग इसके अहसान के बोझ से दबे हुए हैं !

दलीप–मैं भी ऐसा ही समझता हू क्योंकि भूतनाथ ने इधर जो जो अनूठे काम किए हैं उनका हाल कुँअर साहब की जुबानी हम लोग सुन चुके हैं। इसी ख्याल से तथा कुँअर साहब की आज्ञा से हम लोगों ने सच्चे दिल से भूतनाथ का अपराध क्षमा ही नहीं कर दिया बल्कि कुँअर साहब के सामने इस बात की प्रतिज्ञा भी कर चुके हैं कि भूतनाथ को दुश्मनी की निगाह से कभी न देखेंगे।

महा–बेशक ऐसा ही होना चाहिए अस्तु बहुत सी बातों को सोच कर और इसकी कारगुजारी पर ध्यान देकर हमने इसका कसूर माफ करके इसे अपना ऐयार बना लिया है आज्ञा है कि तुम लोग भी इसे अपनायत की निगाह से देखोगे

आर पिछली वार्ता का बिल्कुल भूल जाआग।

दलीप–महाराज अपनी आज्ञा क विरुद्ध चलत हुए हम लागा का कदापि न दखेंग यह हमारी प्रतिज्ञा है।

महा–(अजुनसिह तथा दलीपसिह क दूसरे साथी की तरफ दख कर) तुम लागा की जुबान स भी हम एसा हा सुना चाहत है।

दलीप का साथी–मरा भी यही प्रतिज्ञा है और ईश्वर स प्राथना है कि मर दिल म दुश्मनी क बदल दिन दूनी रात चोगुनी तरक्की करन वाली भूतनाथ की मुहब्बत पदा कर।

महा–शावाश ! शावाश !!

अर्जुन–कुँअर साहब के सामने मै जा कुछ प्रतिज्ञा कर चुका हू उस महाराज सुन चुक होंग इस समय महाराज क सामन भी शपथ खाकर कहता हू कि स्वप्न में भी भूतनाथ क साथ दुश्मनी का ध्यान आन पर मै अपन का दाषी समझूगा।

इतना कह कर अजुनसिह न वह तस्वीर जा उसक हाथ म थी फाड डाली और टुकड टुकड करक भूतनाथ क आग फक दी और पुन महाराज की तरफ दख कर कहा यदि आज्ञा हा और बअदबी न समझा जाय ता हम लाग इसी समय भूतनाथ स गल मिल कर अपन उदास दिल का [illegible]।

महा–यह ता हम स्वयम कहन वाल थ।

इतना सुनत ही दाना दलीप अजुन और भूतनाथ आपुस म गल मिल और इसक बाद महाराज का इशारा पाकर एक साथ बैठ गय।

भूत–(दूसर दलीप और अजुनसिह की तरफ [illegible]) [illegible] मर दिल का [illegible] मिटाआ और साफ साफ बता दा कि तुम दाना म स असल म अजुनसिह [illegible] महाराज [illegible] उस [illegible] म ल गया था * तब तुम दाना म स [illegible] महाराज [illegible] तैयार हुए थ ?

दूसरा दलीप–([illegible]) [illegible] तुम्हार [illegible] उस दिन [illegible] अजुनसिह की सूरत [illegible] बाहर घूम रहा था और जब तुम दलीपशाह [illegible] किया था [illegible] अजुनसिह [illegible] यहा आया हू।

इतना कह कर दूसर दलीप न [illegible] और [illegible] उस [illegible]।

[illegible] सूरत [illegible] हुए उसक पास चल गय [illegible] और [illegible] फिर [illegible] और [illegible] [illegible] था कि [illegible] ।*

महा–[illegible]

भरथ–[illegible] आज्ञा हा [illegible]

इन्दजीत–[illegible] महाराज [illegible] ता यह अजुनसिह [illegible] और दलीपशाह है इसक अतिरिक्त दा और है [illegible] सम्बन्ध म [illegible] का किस्सा सुनन [illegible] आप दखिएगा कि इन लागा की सूरत दख कर कदियो की क्या हालत हाती है !

महा–व [illegible] कहा है ?

इन्दजीत–इस समय यहा माजूद नहीं है [illegible] हुक्म [illegible] आ जायग।

भूत–(इन्द्रदव स) यदि आज्ञा हा ता मै भी कुछ पूछू !

इन्द्रदव–आप जा कुछ पूछग उस म खूब जानता हू मगर खैर पूछिय

भूत–कमला की मा आप लागा का कहा और क्योंकर मिली?

इन्द्रदव–यह ता उसी की जुबानी सुनन में ठीक होगा। जब वह अपना किस्सा बयान करेगी काइ बात छिपी न रह जायगी।

---

*दखिए चन्द्रकान्ता सन्तति बीसवा भाग तेरहवा बयान।

*दखिय बीसवें भाग क आठवें बयान म कुमार की चीठी।

जीत– जरूर ऐसा होना चाहिए इसीलिए मै चाहता हू कि यहा से जल्द चलिए। भरतसिह वगैरह की कहानी वहाँ ही सुन लेंगे या शादी के बाद और लोगों को भी यहा लेआवेंगे जिसमें वे लोग भी तिलिस्म और इस स्थान का आनन्द ले लें।

महा–अच्छी वात है खैर यह बताओ कि कमलिनी और लाडिली के विषय में भी तुमने कुछ सोचा।

जीत–उन दोनों के लिए जो कुछ भी आप विचार कर रहे है, वही मेरी भी राय है, उनकी भी शादी दोनों कुमारों क साथ कर ही देना चाहिए।

महा–है न यही राय ?

जीत–जी हा, मगर किशारी और कामिनी की शादी के वाद क्योंकि किशोरी एक राजा की लड़की है इसलिए उसी की औलाद को गद्दी का हकदार होना चाहिए, यदि कमलिनी के साथ पहिल शादी हो जायगी तो उसी का लड़का गद्दी का मालिक समझा जायगा, इसी से मै चाहता हू कि पटरानी किशोरी ही वनाई जाय।

महा–यह वात तो ठीक है, अस्तु एसा ही होगा और साथ ही इसके कमला की शादी भैरा के साथ और इन्दा की तारा के साथ कर दी जायेगी।

जीत–जो मर्जी।

महा–अच्छा तो अव यही निश्चय रहा कि दलीपशाह और भरथसिह की वीती यहा चलने के वाद घर ही पर सुनना चाहिए।

जीत–जी हा सच तो यों है कि ऐसा करना ही पडेगा क्योंकि इन लोगों की कहानी दारोगा ओर जैपाल इत्यादि कैदियों से घना सम्बन्ध रखती है वल्कि यो कहना चाहिये कि इन्हीं जागों के इजहार पर उन लोगों के मुकद्में का दारोमदार (हेस-नेस) है और यही लोग उन कैदियों का लाजवाव करेंग।

महा–नि सन्देह एसा ही है, इसके अतिरिक्त उन कैदियों ने हम लोगों तथा हमारे सहायकों को वडा दुख दिया है औरदोनोंकुमारों की शादी में भी बडे-वडे विघ्न डालते है अतएव उन कम्वख्तां को कुमारों की शादी का जलसा भी दिखा देना चाहिये जिसमें ये लाग भी अपनी ऑखों स देख ले कि जिन वातों का वे विगाडा चाहते थे वे आज कैसी खूबी और खुशी क साथ हो रही हैं, इसके वाद उन लोगों को सजा देना चाहिए। मगर अफसोस तो यह है कि मायारानी और माधवी जमानिया ही में मार डाली गईं नहीं तो व दोनों भी देख लेती कि

जीत–खैर उनकी किस्मत में यही वदा था।

महा–अच्छा तो एक वात का और खयाल करना चाहिये।

जीत–आज्ञा ?

महा–भूतनाथ वगैरह को मौका देना चाहिए कि वे अपने सम्वन्धियों से वखूवी मिल जुल कर अपने दिल का खुटका निकाल लें क्योंकि हम लोग तो उनका हाल वहा चल कर ही सुनेंगे।

जीत–वहुत खूब।

इतना कह कर जीतसिह उठ खडे हुए और कमरे से वाहर चले गये।

छठवां बयान

इन्द्रदेव के इस स्वर्ग-तुल्य स्थान में वगले से कुछ दूर हट कर वागीचे के दक्खिन तरफ एक घना जामुन का पेड है जिसे सुन्दर लताओं ने घेर कर देखने योग्य वना रक्खा है और जहा एक कुज की सी छटा दिखाई पडती हैउसी के नीचे समय निकट जान अपने घोंसले के चारों तरफ फुदक फुदक कर अपने अपौरुष बच्चों को चैतन्य करती हुई कह रही है कि लो मै वहुत दूर से तुम लोगों के लिए दाना पानी अपन पेट में भर लायी हूँ जिससे तुम्हारी सतुष्टि की जायगी।
दूर से तुम लागों के लिए दाना पानी अपने पेट में भर लायी हू जिससे तुम्हारी सतुष्टि की जायेगी।

यह रमणीक स्थान ऐसा है कि यहा दो चार आदमी छिप कर इस तरह बैठ सकते हैं कि वे चारो तरफ के आदमियों को बखूबी देख लें पर उन्हें कोई भी न देखे। इस स्थान पर हम इस समय भूतनाथ और उसकी पहली स्त्री कमला की मा को पत्थर की चट्टानों पर बैठे बातें करते हुए देख रहे हैं। य दोनों मुद्दत से बिछडे हुए हैं और दोनों के दिल में नहीं तो कमला के मा के दिल में जरूर शिकायतों का खजाना भरा हुआ है जिसे वह इस समय बेतरह उगलने के लिए तैयार है। प्यारे पाठक आइये हम आप मिल कर जरा इन दोनों की बातें,तो सुन लें।

भूत–शान्ता,* आज तुमसे मिलकर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ।

शान्ता–क्यों? जो चीज किसी कारणवश खो जाती है उसे यकायक पाने से प्रसन्नता हो सकती है, मगर जो चीज जान बूझ कर फेंक दी जाती है उसके पाने की प्रसन्नता कैसी?

भूत–किसी को कहीं से एक पत्थर का टुकड़ा मिल जाय और वह उसे बेकार या बदसूरत समझ कर फेंक दे तथा कुछ समय के बाद जब उसे मालूम हो कि वास्तव में वह हीरा था पत्थर नहीं तो क्या उसके फेंक देने का उसको दुःख न होगा? या उसे पुनः पाकर प्रसन्नता न होगी?

शान्ता–अगर वह आदमी जिसने हीरे को पत्थर समझ कर फेंक दिया है यह जान कर वह वास्तव में हीरा था, उसकी खोज करे या इस विचार से कि उसे मैंने फलानी जगह छोड़ा या फेंका है वहां जाने से जरूर मिल जायगा उसकी तरफ दौड़ जाय तो बेशक समझा जायगा कि उसे उसके फेंक देने का रंज हुआ था और उसके मिल जाने से प्रसन्नता होगी लेकिन यदि ऐसा नहीं है तो नहीं।

भूत–ठीक है मगर वह आदमी उस जगह जहां उसने हीरे का पत्थर समझ कर फेंका था पुनः उसे पाने की आशा में तभी जायगा जब अपना जाना सार्थक समझेगा। परन्तु जब उसे यह निश्चय हो जायगा कि वहां जाने में उस हीरे के साथ तू भी बर्बाद हो जायगा अर्थात वह हीरा भी काम का न रहेगा और तेरी भी जान जाती रहेगी तब वह उसकी खोज में क्योंकर जायगा?

शान्ता–ऐसी अवस्था में वह अपने को इस योग्य बनावेहीगा नहीं कि वह उस हीरे की खोज में जाने लायक न रहे यदि यह बात उसके हाथ में होगी और वह उस हीरे को वास्तव में हीरा समझता होगा।

भूतनाथ–बेशक मगर शिकायत की जगह तो ऐसी अवस्था में हो सकती थी जब वह अपने बिगड़े हुए कटीले रास्ते को जिसके सबब से वह उस हीरे तक नहीं पहुंच सकता था पुनः सुधारने और साफ करने के लिए परले सिरे का उद्योग करता हुआ दिखाई न देता।

शान्ता–ठीक है लेकिन जब वह हीरा यह देख रहा है कि उसका अधिकारी या मालिक बिगड़ी हुई अवस्था में भी एक मानिक के टुकड़े को कलेजे से लगाये हुए घूम रहा है और यदि वह चाहता तो उस हीरे को भी उसी तरह रख सकता था मगर अफसोस उस हीरे की तरफ जो वास्तव में पत्थर ही समझा गया है कोई भी ध्यान नहीं देता जो बे हाथ पैर का हो कर भी उसी मालिक की खोज में जगह जगह की मिट्टी छानता फिर रहा है जिसने जान बूझ कर उसे पैर में गड़ने वाले कंकड़ की तरह अपने आगे से उठा कर फेंक दिया है और जानता है कि उस पत्थर के साथ जिसे वह व्यर्थ ही में हीरा कह रहा है वास्तव में छोटी छोटी हीरे की कनियां भी चिपकी हुई हैं जो छोटी होने के कारण सहज ही मिट्टी में मिल जा सकती हैं। तब क्या शिकायत की जगह नहीं है!!

भूत–परन्तु अदृष्ट भी कोई वस्तु है प्रारब्ध भी कुछ कहा जाता है और होनहार भी किसी चीज का नाम है!!

शान्ता–यह दूसरी बात है इन सभों का नाम लेना वास्तव में निरुत्तर (लाजवाब) होना और चलती बहस को जान बूझ कर बन्द कर देना ही नहीं है बल्कि उद्योग ऐसे अनमोल पदार्थ की तरफ से मुंह फेर लेना भी है। अस्तु जाने दीजिए मेरी यह इच्छा भी नहीं है कि आपको परास्त करने की अभिलाषा से मैं विवाद करती ही जाऊं यह तो बात ही बात में कुछ कहने का मौका मिल गया और छाती पर पत्थर रख कर जी का उबाल निकाल लिया नहीं तो जरूरत ही क्या थी।

भूतनाथ–मैं कसूरवार हूं और बेशक कसूरवार हूं मगर यह उम्मीद भी तो न थी कि ईश्वर की कृपा से तुम्हें इस तरह जीती इस दुनिया में देखूंगा।

शान्ता–अगर यही आशा या अभिलाषा होती तो अपने परलोकगामी होने की खबर मुझ अभागी के कानों तक पहुंचाने की कोशिश क्यों करते और ..

भूत–बस बस, अब मुझ पर दया करो और इस ढंग की बातें छोड़ दो क्योंकि आज बड़े भाग्य से मेरे लिए यह खुशी का दिन नसीब हुआ है इसे जली कटी बातें सुनाकर पुनः कड़वा न करो और यह सुनाओ कि तुम इतने दिनों तक कहां छिपी हुई थी और अपनी लड़की कमला को किसी तरह धोखा देकर चली गई कि आज तक तुमको मरी हुई ही समझती है?

इस समय शान्ता का खूबसूरत चेहरा नकाब से ढका हुआ नहीं है। यद्यपि वह जमाने के हाथों सताई हुई तथा दुबली-पतली और उदास है और उसका तमाम बदन पीला पड़ गया है मगर फिर भी आज की खुशी उसके सुन्दर

---

*शान्ता कमला की मां का नाम था।

वादामी चहरे पर रौनक पैदा कर रही है और इस वात की इजाजत नहीं देती कि कोई उसे ज्यादे उम्र वाली कहकर खूबसूरतों की पंक्ति में बैठने से राके। हजार गई गुजरी होने पर भी वह रामदेई (भूतनाथ की दूसरी स्त्री) से बहुत अच्छी मालूम पडती है और इस वात का भूतनाथ भी वड गौर से देख रहा है। भूतनाथ की आखिरी वात सुन कर शान्ता न अपनी डवडवाई हुई बडी वडी आखों को आंचल से साफ किया और एक लम्बी सास ले कर कहा–

शान्ता–मैं रणधीरसिहजी के यहाँ स कभी न भागती अगर अपना मुह किसी को दिखान लायक समझती। मगर अफसोस आपके भाई ने इस वात को अच्छी तरह मशहूर किया कि आपके दुश्मन (अर्थात आप) इस दुनिया स उठ गय। इसके सवूत में उन्होंने वहुत सी वातें पेश की मगर मुझे विश्वास न हुआ तथापि इस गम में मैं बीमार हो गई और दिन दिन मरी बीमारी वढती ही गई। उसी जमाने में मरी मौसेरी वहिन अर्थात् दलीपशाह की स्त्री मुझे देखने के लिए मेरे घर आई। मैंने अपने दिल का हाल और बीमारी का सवव उससे वयान किया और यह भी कहा कि जिस तरह मेरे पति ने सही सलामत रह कर भी अपने को मरा हुआ मशहूर किया उसी तरह मुझे तुम कहीं छिपा कर मरा हुआ मशहूर कर दो। अगर एसा हो जायगा ता मैं अपने पति को दूढ निकालन का उद्योग करूगी। उन्होंने मेरी वात पसन्द कर ली और लागों को यह कह कर कि मर यहाँ की आवोहवा अच्छी है वहाँ शान्ता को वहुत जल्द आराम हो जायगा मुझे अपन यहाँ उठा ले जाने का वन्दोवस्त किया और रणधीरसिहजी से इजाजत भी ले ली। मैं दो दिन तक अपनी लडकी कमला को नसीहत करती रही और इसक वाद उस किशारी के हवाल करके और अपने छाटे दूध पीते वच्चे को गाद में लकर दलीपशाह के घर चली आई और धीरे-धीरे आराम हाने लगी। थोड़ ही दिन वाद दलीपशाह के घर में उस भयानक आधी रात के समय आपका आना हुआ मगर हाय उस समय आपकी अवस्था पागलों की सी हो रही थी और आपने धाखे में पड कर अपन प्यारे लडक का जिस मैं अपन साथ ल गई थी खून कर डाला *।

इतना कहत कहते शान्ता का जी भर आया और वह हिचकियाँ ले ले कर राने लगी। भूतनाथ की वुरी अवस्था हो रही थी और इससे ज्यादे वह उस घटना का हाल नहीं सुनना चाहता था। वह यह कहता हुआ कि 'वस माफ करा अव इसका जिक्र न करो अपनी स्त्री शान्ता क पैरों पर गिरा ही चाहता था कि उसने पैर खैंच कर भूतनाथ का सिर थाम लिया और कहा– 'हा-हा क्या करते हो ? क्यों मेरे सिर पर पाप चढात हो ! मैं खूब जानती हू कि आपने उसे नहीं पहिचाना मगर इतना जरूर समझते थे कि वह दलीपशाह का लडका है अस्तु फिर भी आपको ऐसा नहीं करना चाहिये था खैर अव मैं इस जिक्र को छोड देती हूँ।

इतना कह कर शान्ता ने अपन आसू पोंछे और फिरैं इस तरह वयान करना शुरू किया–

शाक और दु ख से मैं पुन वीमार पड गई मगर आशालता ने धीरे धीरे कुछ दिन में अपनी तरह मुझ भी (आराम) कर दिया। यह आशा केवल इसी वात की थी कि एक दफे आपसे जरूर मिलूगी। मुश्किल तो यह थी कि उस घटना ने दलीपशाह को भी आपका दुश्मन वना दिया था केवल उस घटना न ही नहीं इसक अतिरिक्त भी दलीपशाह का। वर्वाद करन में आपने कुछ उठा न रक्खा था यहा तक कि आखिर वह दारोगा क हाथ फस ही गये।

भूत–(वेचैनी के साथ लम्बी सास लकर) ओफ ! मैं कह चुका हूँ कि इन वातों को मत छेडो केवल अपना हाल वयान करो। मगर तुम नहीं मानती।'

शान्ता–नहीं नहीं मैं ता अपना हाल वयान कर रही हूँ, खैर मुख्तसर ही में कहती हूँ।

उस घटना के वाद ही मेरी इच्छानुसार दलीपशाह ने मेरा और वच्चे का मर जाना मशहूर किया जिसे सुनकर हरनामसिह और कमला भी मरी तरफ से निश्चिन्त हो गये। जव खुद दलीपशाह भी दारागा के हाथ में फस गये तव मैं वहुत ही परशान हुई और सोचन लगी कि अव क्या करना चाहिए। उस समय दलीपशाह के घर में उनकी स्त्री एक छोटा सा बच्चा और मैं केवल ये तीन ही आदमी रह गये थे। दलीपशाह की स्त्री को मैंने धीरज धराया और कहा कि अभी अपनी जान मत वर्वाद कर मैं वरावर तेरा साथ दूगी और दलीपशाह को खोज निकालने में उद्योग करूँगी मगर अव हमलोगों को यह घर एकदम छोड देना चाहिए और ऐसी जगह छिपकर रहना चाहिए जहाँ दुश्मनों को हम लोगों का पता न लगे। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात् हमलोगों का जो कुछ जमा पूजी थी उसे लेकर हमने उस घर को एक दम छोड दिया और काशीजी में जाकर एक अधेरी गली में पुराने और गद मकान में डेरा डाला मगर इस वात की टोह लेते रह कि दलीपशाह कहाँ हैं अथवा छूटने के वाद अपने घर की तरफ जा कर हम लोगों को दूढ़ते हैं या नहीं। इस फिक्र में

---

* दलीपसिह ने वीसवें भाग के तेरहवें वयान में इस घटना की तरफ भूतनाथ से इशारा किया।

मैं कई दफे सूरत बदल कर बाहर निकली और इधर उधर घूमती रही। इत्तिफाक से दिल में यह बात पैदा हुई कि किसी तरह अपने लडके हरनामसिह से छिपकर मिलना और उसे अपना साथी बना लेना चाहिए। ईश्वर ने मेरी यह मुराद पूरी की। जब माधवी कुँअर इन्द्रजीतसिह को फँसा ले गई और उसके बाद उसने किशोरी पर भी कब्जा कर लिया तब कमला और हरनामसिह दोनों आदमी किशोरी की खोज में निकले और एक दूसरे से जुदा हो गये। किशोरी की खोज में हरनामसिह काशी की गलियों में घूम रहा था जब उस पर मेरी निगाह पडी और मैंने इशारे से अलग बुला कर अपना परिचय दिया। उसको मुझसे मिल कर जितनी खुशी हुई उसे मैं बयान नहीं कर सकती। मैं उसे अपने घर में ले गई और सब हाल उससे कह अपने दिल का इरादा जाहिर किया जिसे उसने खुशी से मजूर कर लिया। उस समय मैं चाहती तो कमला को भी अपने पास बुला लेती मगर नहीं, उसे किशोरी की मदद के लिए छोड दिया क्योंकि किशोरी के नमक को मैं किसी तरह भूल नहीं सकती थी अस्तु मैंने केवल हरनामसिह को अपने पास रख लिया और खुद चुपचाप अपने घर में बैठी रह कर आपका और दलीपशाह का पता लगाने का काम लडके के सुपुर्द किया। बहुत दिनों तक बेचारा लडका चारो तरफ मारा फिरा और तरह तरह की खबरें ला कर मुझे सुनाता रहा। जब आप प्रकट हो कर कमलिनी के साथी बन गए और उसके काम के लिए चारो तरफ घूमने लगे तब हरिनामसिह ने भी आपको देखा और पहिचान कर मुझे इत्तिला दी। थोडे दिन बाद यह भी उसी की जुबानी मालूम हुआ कि अब आप नेकनाम होकर दुनिया में अपने को प्रकट किया चाहते हैं। उस समय मैं बहुत प्रसन्न हुई और मैंने हरनाम को राय दी कि तू किसी तरह राजा बीरेन्द्रसिह के किसी एयार की शागिर्दी कर ले। आखिर वह तारासिह से मिला और उसके साथ रह कर थोडे ही दिनों में उसका प्यारा शागिर्द बल्कि दोस्त बन गया। तब उसने अपना हाल तारासिह से कह सुनाया और तारासिह ने भी उसके साथ बहुत अच्छा बर्ताव करके उसकी इच्छानुसार उसके भेदों को छिपाया। तब से हरनामसिह सूरत बदले हुए तारासिह का काम करता रहा और मुझे भी आपकी पूरी पूरी खबर मिलती रही। आपको शायद इस बात की खबर न हो कि तारासिह की मा चम्पा से और मुझसे बहिन का रिश्ता है वह मेरे मामा की लडकी है- अस्तु चम्पा ने अपने लडके की जुबानी हरनामसिह का हाल सुना और जब यह मालूम हुआ कि वह रिश्ते में उसका भतीजा होता है तब उसने भी उस पर दया प्रकट की और तब से उसे बराबर अपने लडके की तरह मानती रही।

जमानिया के तिलिस्मी को खोलते और कैदियों को साथ लिए हुए जब दोनों कुमार उस खोह वाले तिलिस्मी बगले में पहुचे तो उन्होंने भैरोसिह और तारासिह को अपने पास बुला लिया और तिलिस्मी का पूरा हाल उनसे कह के उन दोनों को अपने पास रक्खा। दलीपशाह को यह हाल भी तारासिह ही से मालूम हुआ कि उनके बाल बच्चे ईश्वर की कृपा से अभी तक राजी खुशी हैं साथ ही इसके मेरा हाल भी दलीपशाह को मालूम हुआ। उस समय तारासिह दोनों कुमारों से आज्ञा लेकर हरनामसिह को उस बगले में ले आया और दलीपशाह से उसकी मुलाकात कराई। हरनामसिह को साथ लेकर दलीपशाह काशी गये और वहा से मुझको तथा अपनी स्त्री और लडके को साथ लेकर कुमार के पास चले आये। जब तारासिह की जुबानी चम्पा ने यह हाल सुना तब वह मुझसे मिलने के लिये तारासिह के साथ यहा अथार्त् उस बगले में आई।

भूत–जब दोनों कुमार नकाबपोश बनकर भैरोसिह और तारासिह को यहा ले आए उसके पहिले तो तारासिह यहा नहीं आए थे ?

शान्ता–जी उसके पहिले ही से वे दोनों यहा आते जाते रहे उस दिन तो प्रकट रूप से यहा लाए गये थे। क्या इतना हो जाने पर भी आपको अन्दाज से मालूम न हुआ ?

भूत–ठीक है इस बात का शक तो मुझे और देवीसिह को भी होता रहा।

शान्ता का किस्सा भूतनाथ ने बडे गौर के साथ ध्यान देकर सुना और तब देर तक आरजू-मिन्नत के साथ शान्ता से माफी मागता रहा। इसके बाद पुन दोनों में बात-चीत होने लगी।

शान्ता–अब तो आपको मालूम हुआ कि चम्पा यहाँ क्योंकर और किस लिए आई।

भूत–हाँ यह भेद तो खुल गया मगर इसका पता न लगा कि नानक और उसकी माँ का यहाँ आना कैसे हुआ !

शान्ता–सो मैं न कहूँगी यह उसी से पूछ लेना।

भूत–(ताज्जुब से) क्यों ?

शान्ता–मैं उसके बारे में कुछ कहा ही नहीं चाहती !

भूत–आखिर इसका कोई सबब भी है ?

शान्ता–सबब यही है कि उसकी यहाँ कोई इज्जत नहीं है बल्कि वह बेकदरी की निगाह से देखी जाती है।

भूत–वह है भी इसी योग्य ! पहिले तो मैं उसे प्यार करता था मगर जब से यह सुना कि उसी की बदौलत मैं जैपाल

(नकली वलभद्र) का शिकार वन गया और एक भारी आफत में फस गया तव से मेरी तवीयत उससे खट्टी हो गई।

शान्ता—सो क्यों ?

भूत—उसीलिए कि वह वेगम की गुप्त सहेली नन्हों से गहरी मुहव्वत रखती है *और इसी सवव से वह कागज का मुट्ठा जो मैन अपने फायदे के लिए तैयार किया था गायव हो क जैपाल के हाथ लग गया और उससे मुझ नुकसान पहुचा। इस वात का सवूत भी मैंन अपनी आखों से देख लिया।

शान्ता—सो ठीक है मैं भी दलीपशाह से यह बात सुन चुकी हूँ।

भूत—इसी से अब मे उसे अपनी स्त्री नहीं वल्कि दुश्मन समझता हूँ। केवल नन्हों ही से नही वल्कि कम्वख्त गोहर से भी वह दोस्ती रखती थी और वह दोस्ती पाक न थी (लम्वी सास लेकर) अफसोस ! इसी से उस खाटी का लडका नानक भी खाटा ही निकला।

शान्ता—(मुस्कुरा कर) तब आप उसक लिए इतना परेशान क्यों थे ? क्योंकि यह बात सुनने के वाद ही तो आपन उसे नकाबपोशों के स्थान में देखा था !

भूत—वह परशानी मेरी उसी मुहव्वत के सवव से न थी वल्कि इस ख्याल से थी कि कहीं वह मुझ पर कोई नई आफत लाने क लिए तो नकावपोशों से नही आ मिली।

शान्ता—ठीक है यह ख्याल भी हो सकता था।

भूत—फिर इसी बीच में जब उसने मुझ जगल में गाना सुना के धोखा दिया और गिरफ्तार कर के अपने स्थान पर ले गई** जिसका हाल शायद तुम्हें मालूम होगा तव मेरा रज और भी बढ गया।

शान्ता—यह हाल मुझे मालूम है मगर यह कार्रवाइ उसकी न थी बल्कि इन्द्रदेव की थी। उन्होंने ही आपके साथ यह ऐयारी की थी और उस दिन जगल में घोड पर सवार जो औरत आपको मिली थी और जिसे आपने अपनी स्त्री समझा था, वह भी इन्द्रदेव का एक ऐयार ही था। यह वात मैं उन्हीं (इन्द्रदेव) की जुवानी सुन चुकी हूँ, शायद आपसे भी वे कहें। हॉ उस दिन वगले में जिस औरत को आपने दखा था वह वेशक नानक की मॉ थी। वह तो खुद कैदियों की तरह यहाँ रक्खी गई है मैदान की हवा क्योंकर खा सकती है ! दोनों कुमार नहीं चाहते थे कि प्रकट हाने के पहिले ही कोई उन लोगों का पता लगा लें इसीलिए ये सव खल खल गये। (कुछ सोचकर) आखिर आपने धीरे-धीरे नानक की मॉ का हाल पूछ ही लिया मैं उसके वारे में कुछ भी नहीं कहा चाहती थी अस्तु अव इससे आगे और कुछ भी न कहूँगी, आप उसके वारे में मुझस कुछ न पूछें।

भूत—नहीं-नहीं जव इतना बता चुकी हो तो कुछ और भी वताओ क्योंकि उससे मिलकर कुछ भी नहीं पूछा चाहता बल्कि अब उसका मुह देखना भी मुझे पसन्द नहीं है। अच्छा यह ता वताओ कि वह कम्वख्त यहा क्यों लाई गई ?

शान्ता—लाई नहीं गई बल्कि उसी नन्हों क यहा गिरफ्तार की गई उस समय नानक भी उसके साथ था।

भूत—(आश्चर्य और क्रोध से) फिर भी उसी नन्हों के यहा गई थी ?

शान्ता—जी हा।

भूत—(लम्वी सॉस लकर) लोग सच कहत है कि ऐयाशी का नतीजा वहुत बुरा निकलता है।

शान्ता—अस्तु अब उसके वारे में मुझसे कुछ न पूछिए, इन्द्रदेवजी आपको सव कुछ बात देंगे।

भूत—हॉ ठीक है खैर अव उसके वारे में कुछ न पूछूगा जो कुछ पूछूगा वह तुम्हार और हरनाम ही के बारे में होगा ! अच्छा एक बात और वताओ आज के दर्वार में मैंने हरनाम को हाथ में एक सन्दूकड़ी लिए देखा था वह सन्दूकड़ी कैसी थी और उसमें क्या था ?

शान्ता—उसमें दारोगा के हाथ की लिखी हुई वहुत सी चिट्ठिया हैं जिनके देखने से आपको निश्चय हो जायगा कि आपने दलीपशाह को व्यर्थ ही अपना दुश्मन समझ लिया था। पहिले जब दारागा ने दलीपशाह को लालच दिखाकर लिखा था कि वह आपको गिरफ्तार करा दें तब दो चार चिट्ठियों में तो दलीपशाह ने इस नीयत स कि दारोगा की शैतानियों का सवूत उससे मिल कर बटोर लें दारोगा के मतलब ही का जवाब दिया था जिससे खुश होकर उसने कई चीठियों में दलीपशाह को तरह तरह के सब्जबाग दिखलाए मगर जब दारोगा की कई चीठिया दलीपशाह ने बटोर ली तव साफ जवाव दे दिया। उस समय दारोगा वहुत घवडाया और उसने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि दलीपशाह मुझसे

---

*उन्नीसवा भाग बारहवा बयान, देखिए नकाबपोश की वातचीत

**देखिये वीसवें भाग का अन्त।

दुश्मनी करक मेरा भेद खोल दे अस्तु किसी तरह उस गिरफ्तार कर लना चाहिए। उस समय कम्बख्त दारोगा आपसे मिला और उसने दलीपशाह की पहली चीठिया आपका दिखा कर खुद आप ही को दलीपशाह का दुश्मन वना दिया, वल्कि आप ही क जरिय स दलीपशाह का गिरफ्तार भी करा लिया।

भूत–ठीक है, इस विपय में मैंने वहुत वड़ा धोखा खाया।

शान्ता–मगर दलीपशाह का गिरफ्तार कर लेन पर भी वे चीठिया दारोगा क हाथ न लगीं क्योंकि व दलीपशाह की स्त्री के कब्जे में थी, अव हम लोग उन्हें अपने साथ लाये हे जिसमें दारोगा के मुकदमें में पेश करें।

भूत–अस्तु अव मेरे दिल का खुटका निकल गया और मुझे निश्चय हा गया कि हरनाम की कोई कार्रवाई मेर खिलाफ न हागी।

शान्ता–भला वह कोई काम एसा क्यों करेगा जिससे आपका तकलीफ हा ? ऐसा ख्याल भी आपको न रखना चाहिये।

इन दोनों में इसी तरह की वातें हो रही थीं कि किसी के आने की आहट मालूम हुई। भूतनाथ ने घूम कर दखा तो नानक पर निगाह पडी। जब वह पास आया तव भूतनाथ ने उससे पूछा 'क्या चाहत हा ?'

नानक–मरी मॉ आपसे मिलना चाहती है।

भूत–ता यहॉ पर क्यों न चली आई ? यहॉ कोई गैर तो था नहीं !

नानक–सो ता वही जानें।

भूत–अच्छा जाओ उसे इसी जगह मेर पास भेज दो।

नानक–वहुत अच्छा।

इतना कह कर नानक चला गया और इसके वाद शान्ता ने भूतनाथ से कहा 'शायद उसे मेर सामने आपस वातचीत करना मजूर न हो शर्म आती हो या किसी तरह का और कुछ खयाल हो, अस्तु आज्ञा दीजिये तो मे चली जाऊँ फिर

भूत–नहीं उसे जो कुछ कहना होगा तुम्हारे सामने ही कहेगी तुम चुपचाप वैठी रहो।

शान्ता–सम्भव है कि वह मेरे रहते यहॉ न आवे या उसे इस बात का ख्याल हो कि तुम मेर सामन उसकी वेइज्जती करागे।

भूतनाथ–हा सकता है मगर (कुछ सोच के) अच्छा तुम जाओ।

इतना सुन कर शान्ता वहॉ स उठी और वगले की तरफ रवाना हुई। इस समय सूर्य अस्त हो चुका था और चारो तरफ स अधरी झुकी आती थी।

सातवां बयान

इन्द्रदेव का यह स्थान वहुत वड़ा था। इस समय यहॉ जितने आदमी आए हुए हैं उनमें से किसी को किसी तरह की भी तकलीफ नहीं हो सकती थी और इसके लिए प्रबन्ध भी वहुत अच्छा कर रक्खा गया था। औरतों के लिए एक खास कमरा मुकर्रर किया गया था मगर रामदेई (नानक की मॉ) की निगरानी की जाती थी और इस बात का भी वन्दोवस्त कर रक्खा गया था कि कोई किसी के साथ दुश्मनी का वर्ताव न कर सके। महाराज सुरेन्द्रसिह, वीरन्दसिह और दोनों कुमारों के कमरों के आगे पहरे का पूरा-पूरा इन्तजाम था और हमारे ऐयार लोग भी वरावर चौकन्ने रहा करते थे।

यद्यपि भूतनाथ एकान्त में वैठा हुआ अपनी स्त्री स वातें कर रहा था, मगर यह बात इन्द्रदेव और देवीसिह से छिपी हुई न थी जा इस समय वागीच में टहलते हुए वातें कर रहे थे। इन दानों क दखते ही दखत नानक भूतनाथ की तरफ गया और लौट आया इसक बाद भूतनाथ की स्त्री अपने डरे पर चली गई और फिर रामदेई अर्थात् नानक की मॉ भूतनाथ की तरफ जाती हुई दिखाई पडी। उस समय इन्ददेव ने देवीसिह से कहा सिहजी देखिये भूतनाथ अपनी पहली स्त्री स वातचीत कर चुका है अव उसन नानक की मॉ का अपने पास बुलाया है। शान्ता की जुवानी उसकी खुटाई का हाल तो उसजरूर मालूम हो ही गया हागा इसलिए ताज्जुव नहीं कि वह गुस्से में आकर रामदई के हाथ पैर ताड डाले !

देवी–एसा हो तो कोई ताज्जुव की बात नहीं है मगर उस औरत न भी तो सजा पाने क ही लायक काम किया है।

इन्द–ठीक है मगर इस समय उसे बचाना चाहिय।

देवी–तो जाइये वहॉ छिप कर तमाशा देखिये और मौका पडन पर उसकी सहायता कीजिए। (मुस्कुरा कर) आप

*दखिय उन्नीसवा भाग तीसरा बयान।

नानक–मगर आप मेरा कसूर माफ कर चुके हैं और

गोपाल–(नानक से) अगर तुम उस माफी को पाकर खुश हुए थे तो फिर पुराने रास्ते पर क्यों गये और पुन अपनी माँ को लेकर नन्हो के पास क्यों पहुचे ? तुम्हें बात करते शर्म नहीं आती !!

गोपाल–फिर भी मैं अपनी जबान(माफी) का ख्याल करूँगा और तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न दूँगा मगर अब भूतनाथ की तरह मैं भी तुम्हारी सूरत देखना पसन्द नहीं करता और न भूतनाथ का इस विषय में कुछ कहना चाहता हू। इन्द्रदेव ने तुम्हारे साथ इतनी ही रेआयत की सो बहुत किया कि तुमको यहाँ से निकल जाने की आज्ञा दे दी नहीं तो तुम इस लायक थे कि जन्म भर कैद में पडे सडा करते।

नानक–जो आज्ञा मगर मेरे पिता से इतना तो दिला दीजिए कि मेरी माँ जन्म भर खाने पीने की तरफ से बेफिक्र रहे।

इन्द–अबे कमीने तुझे यह कहते शर्म नहीं मालूम होती ! इतना बडा हो के भी तू अपनी माँ के लायक दाना पानी नहीं जुटा सकता ? खैर अब तुझे आखिरी मर्तबे कहा जाता है कि अब हम लोगों से किसी तरह की उम्मीद न रख और अपनी माँ को साथ लेकर यहाँ से चला जा। भूतनाथ ने भी मुझे ऐसा ही कहने के लिए कहला भेजा है।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने ताली बजाई और साथ ही अपने एयार सर्यूसिह को कमर के अन्दर आते देखा।

इन्द–(सयू से) भूतनाथ कहाँ है ?

सर्यू–नम्बर पाच के कमर मे देवीसिहजी बातें कर रह हैं वे दोनों यहा आए भी थे मगर यह सुन कर कि नानक यहाँ बैठा हुआ है पिछले पैर लौट गए।

इन्द–अच्छा तुम जाओ और उन्हें यहाँ बुला लाओ।

सर्यूसिह–जो आज्ञा, परन्तु मुझे आशा नहीं है कि वे लोग नानक के रहते यहाँ आवेंगे।

इन्द–अच्छा तो मै खुद जाता हू।

गोपाल–हा तुम्हारा ही जाना ठीक होगा, देवीसिह को भी बुलाते आना।

इन्द्रदेव उठ कर चले गये और थोडी ही देर में भूतनाथ तथा देवीसिह को साथ लिए आ पहुचे।

गोपाल–(भूतनाथ से) क्यों साहब आप यहाँ तक आकर लौट क्यों गए ?

भूत–यों ही मैंने समझा कि आप लोग किसी खास बात में लगे हुए हैं।

गोपाल–अच्छा बैठिए और एक बात का जवाब दीजिए।

भूत–कहिए ?

गोपाल–रामदेई और नानक के बारे में आप क्या हुक्म देते हैं ?

भूत–महाराज ने क्या आज्ञा दी है ?

गोपाल–उन्होंने इसका फैसला आप ही के ऊपर छोडा है।

भूत–फिर जो राय आप लोगों को हो, मैंने तो इन दोनों क बारे में इसकी माँ का हुक्म सुना ही दिया है।

गोपाल–इनके कसूर तो आप सुन ही चुके होंगे।

भूत–पिछले कसूरों को तो मे सुन ही चुका हूँ, हाँ नया कसूर सिर्फ इतना ही मालूम हुआ है कि ये दोनों नन्हों के यहाँ गिरफ्तार हुए हैं।

गोपाल–इसके अतिरिक्त एक बात और है।

भूत–वह क्या ?

गोपाल–यही कि ये दोनों अगर खाली हाथ न होते तो बेचारी शान्ता को जान से मार डालते।

इतने ही में नानक बोल उठा, 'नहीं नही, यह आपके जासूसों ने हमारे ऊपर झूठा इलजाम लगाया है !

भूत–अगर यह बात है तो मैं इसे हथकडी से खाली क्यों देखता हूँ ?

इन्द्रदेव–इसीलिए कि हमारे हाते के अन्दर ये लोग कुछ कर नहीं सकते। जब ये लोग यहाँ गिरफ्तार होकर आये तो कुछ दिन तक तो भलमनसी के साथ रहे मगर आज इनकी नीयत बिगडी हुई मालूम पडी।

भूत–खैर अब आप ही इनके लिए हुक्म सुनाइये। मगर इन्द्रदेव आप यह न समझियेगा कि इन लोगों के बारे में मुझे किसी तरह का रज है। मै सच कहता हू कि इन दोनों का यहाँ आना मेरे लिए बहुत अच्छा हुआ ! मै इन लोगों के फेर में बेतरह फँसा हुआ था। आज मालूम हुआ कि ये लोग जहर हलाहल से भी बढे हुए हैं, अस्तु आज इन लोगों से पीछा छुडा कर मै बहुत ही प्रसन्न हुआ। मरे सिर से बोझा उतर गया और अब मेरी जिन्दगी खुशी के साथ बीतेगी। आप का

कहना सच निकला अर्थात् इनका यहाँ आना मेरे लिए खुशी का सबब हुआ।

इन्द्र–अच्छा यह बताइये कि ये अगर इसी तरह छाड दिय जायें तो आपके खजान को तो किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचा सकते जो लामाघाटी के अन्दर है?

भूत–कुछ भी नहीं, और लामाघाटी के अन्दर जेवरों के अतिरिक्त ओर कुछ है भी नहीं सा जवरों को मैं वहाँ से मँगवा ले सकता हूँ।

इन्द्र–अगर सिर्फ नानक की माँ के जेवरों से आपका मतलव है तो वह अव मेरे कब्जे में है क्योंकि नन्हों के यहाँ वह विना जेवरों के नहीं गई थी।

भूत–वस ता मैं उस तरफ से वेफिक्र हो गया। यद्यपि उन जेवरों की मुझे कोई परवाह नहीं है मगर उसके पास मैं एक कौडी भी नहीं छोडा चाहता। इसक अतिरिक्त यह भी जरूर कहूगा कि अव ये लोग सूखा छोड देने लायक नहीं रहे।

इन्द्र–खैर जैसी राय होगी वैसा ही किया जायगा।

इतना कह कर इन्ददेव न पुन सर्यू सिह को बुलाया और जब वह कमरे के अन्दर आ गया तो कहा– थोडी देर के लिए नानक को बाहर ले जाओ।

नानक को लिए हुए सर्यूसिह कमरे क बाहर चला गया और इसके बाद चारों आदमी विचार करने लगे कि नानक और उसकी माँ के साथ क्या बर्ताव करना चाहिए। देर तक साच विचार कर यही निश्चय किया कि उन दोनों को देश से निकाल दिया जाय और कह दिया जाय कि जिस दिन हमारे महाराज की अमलदारी में दिखाई दोगे उसी दिन मार डाले जाओगे।

इस हुक्म पर महाराज से आज्ञा लेने की इन लोगों को कोई जरूरत न थी क्योंकि उन्होंने सब बातें सुन सुना कर पहिल ही हुक्म दे दिया था कि भूतनाथ की आज्ञानुसार काम किया जाय, अस्तु नानक कमरे के अन्दर बुलाया गया और इसके बाद रामदेई भी बुलाई गई। जब दानों इकट्ठे हो गए तो उन्हें हुक्म सुना दिया गया।

यह हुक्म यद्यपि साधारण मालूम होता है मगर उन दोनों के लिए ऐसा न था जिन्हें भूतनाथ की बदौलत शाहखर्ची की आदत पड गई थी। नानक और रामदेई की आँखों से आँसू जारी था जब इन्ददेव न सर्यूसिह को हुक्म दिया कि चार आदमी उन दोनों को ले जायें और महाराज की सरहद क बाहर कर आवें। सर्यूसिह दोनों को लिए हुए कमरे के बाहर निकल गया।

भूत–सिर स बोझ उतरा और कम्बख्तों से पीछा छूटा अच्छा अब बतलाइये कि कल क्या होगा?

गोपाल–महाराज न तो यही हुक्म दिया है कि कल यहाँ से डेरा कूच किया जाय और तिलिस्म की सैर करते हुए चुनारगढ पहुँचें चम्पा शान्ता हरनामसिह भरथसिहऔर दलीपशाह वगैरह बाहर की राह से चुनार भेज दिये जाय, यदि हमारे किसी ऐयार की भी इच्छा हा तो उनके साथ चला जाय।

भूत–एसा कौन वेवकूफ होगा जो तिलिस्म की सैर छोड उनके साथ जायगा!

देवीसिह–सभी कोई ऐसा ही कहते हैं।

भूत–हाँ यह तो बताइये कि मैंने नानक को जब दरबार में देखा था तो उसके हाथ में एक लपेटी हुई तस्वीर थी अब वह तस्वीर कहाँ है और उसमें क्या बात थी?

इन्द्र–वह कागज जिसे आप तस्वीर समझे हुए हैं मेरे पास है आपको दिखाऊँगा। असल में वह तस्वीर नहीं है वल्कि नानक ने उसमें एक बहुत बडी दर्खास्त लिख कर तैयार की थी जो दर्बार में आ के पेश किया चाहता था मगर ऐसा कर न सका।

भूत–उसमें लिखा क्या था?

भूत–जा लोग उसे गिरफ्तार कर लाये हैं उनकी शिकायत के सिवाय और कुछ भी नहीं। साथ ही इसके उस दर्खास्त में इस वात पर बहुत जोर दिया गया था कि कमला की मा वास्तव में मर गई है और आज जिस शान्ता को सब काइ देख रहे हैं वह वास्तव में नकली है।

भूत–वाह र शैतान! (कुछ सोच कर) तो शायद वह दर्खास्त महाराज के हाथ तक नहीं पहुँची?

इन्द्र–क्यों नहीं मैंने जान बूझ कर ऐसा करने का मौका दिया। वह रात की पहरे वालों से इत्तिला करा कर खुद महाराज के पास पहुँचा और उनके सामने वह दर्खास्त दी। उस समय महाराज ने मुझे बुलाया और मुझी को वह दर्खास्त पढने के लिए दी गई। उसे सुनकर महाराज ने मुस्कुरा दिया और इशारा किया कि वह कमरे के बाहर निकाल दिया जाय क्योंकि इसके पहिले मैं शान्ता और हरनामसिह का पूरा-पूरा हाल महाराज से अर्ज कर चुका था।

भूत–अच्छा मुझे भी वह दर्खास्त दिखाइयेगा।

इन्द–(उगली से इशारा करके) वह कारनिस के ऊपर पडी हुई है देख लीजिये।

भूतनाथ न दर्खास्त उतार कर पढी और इसक वाद कुछ देर तक उन दोनों में वातचीत होती रही।

नौवां बयान

सुबह का सुहावना समय सब जगह एक सा नहीं मालूम होता घर की 'खिडकियों उसका चेहरा कुछ और ही दिखाई देता है और वाग में उसकी कैफियत कुछ और ही मस्तानी होती है पहाड में उसकी खूबी कुछ और ही ढग की दिखाई दती है और जगल में इसकी छटा कुछ निराली ही होती है। आज इन्द्रदेव के इस अनूठे स्थान में इसकी खूबी सबसे चढी बढी है' क्योंकि यहॉ जगल भी हैं पहाड भी अनूठा वाग तथा सुन्दर वगला या कोठी भी है, फिर यहॉ के आनन्द का पूछना ही क्या ! इसलिए हमारे महाराज कुअर साहव और ऐयार लोग भी यहॉ घूम घूम कर सुवह के सुहावने समय का पूरा आनन्द ले रहे हैं खास करके इसलिए कि आज य लोग डेरा कूच करने वाले हैं।

वहुत दर घूमने फिरने के वाद सव काई वाग में आकर वैठ और इधर उधर की बातें हाने लगीं।

जीत–(इन्द्रदव से) भरथसिह वगैरह तथा औरतों को आपने चुनार रवाना कर दिया।

इन्द्रदेव–जी हॉ वडे सवरे ही उन लागों को वाहर की राह से रवाना कर दिया। औरतों के लिए सवारी का इन्तजाम कर दने क अतिरिक्त अपन दस पन्द्रह मातविर आदमी भी साथ कर दिये हैं।

जीत–ता अव हम लोग भी कुछ भोजन करके यहॉ स रवाना हुआ चाहते हैं।

इन्द्रदेव–जेसी मर्जी।

जीत–भैरो और तारा जो आपके साथ यहॉ आए थे कहॉ चले गए दिखाई नहीं पडते।

इन्द्रदेव–अव भी मैं उन्हें अपने साथ ही ले जान की आज्ञा चाहता हूँ क्योंकि उनकी मदद की मुझे जरूरत है।

जीत–तो क्या आप हम लोगों के साथ न चलेंगे ?

इन्द–जी हॉ उस वाग तक जरूर साथ चलूँगा जहॉ से मैं आप लोगों को यहॉ तक ले आया हू पर उसके वाद गुप्त हो जाऊँगा क्योंकि मैं आपको कुछ तिलिस्मी तमाश दिखाना चाहता हू और इसके अतिरिक्त उन चीजों को भी तिलिस्म के अन्दर स निकलवा कर चुनार पहुँचाना है जिनके लिये आज्ञा मिल चुकी है।

सुरेन्द–नहीं नहीं गुप्त रीति पर हम तिलिस्म का तमाशा नहीं देखा चाहते हमार साथ रहकर जा जो कुछ दिखा सको दिखा दो बाकी रहा उन चीजों को निकलवा कर चुनार पहुँचाना सा यह काम दो दिन के वाद भी होगा तो कोई हर्ज नहीं। इन्द–जेसी आज्ञा।

इतना कहकर इन्द्रदेव थोडी दर के लिए कहीं चले गए और तव भैरोसिह तथा तारासिह को साथ लिए आकर बोल भाजन तैयार है।

सव काइ वहॉ से उठ और भाजन इत्यादि से छुट्टी पाकर तिलिस्म की तरफ रवाना हुए। जिस तरह इन्द्रदेव इन लोगों का अपन स्थान में ले आय थे उसी तरह पुन उस तिलिस्मी बाग में ले गये जिसमे से लाए थे।

जव महाराज सुरेन्द्रसिह वगैरह उस बारहदरी में पहुँचे जिसमें पहिले दिन आराम किया था और जहॉ बाजे की आवाज सुनी थी तत्र दिन पहर भर से कुछ ज्यादे बाकी था। जीतसिह ने इन्द्रदेव से पूछा अब क्या करना चाहिए ?

इन्द्रदेव–यदि महाराज आज की रात यहॉ रहना पसन्द करें ता एक दूसरे वाग में चलकर वहॉ की कुछ कैफियत दिखाऊँगा ! जीत–वहुत अच्छी वात है चलिय।

इतना सुनकर इन्द्रदव ने उस वारहदरी की कइ आलमारियों में स एक आलमारी खोली और उसके अन्दर जाकर सभों का अपने पीछे आन का इशारा किया। यहॉ एक गली के तौर पर रास्ता वना हुआ था जिसमें सव कोई इन्द्रदेव की इच्छानुसार वखौफ चले गए और थाडी दूर जाने क वाद जव इन्द्रदेव न दूसरा दर्वाजा खोला तब उसके बाहर हाकर सभों न अपन को एक छाटे बाग में पाया जिसकी वनावट कुछ विचित्र ही ढग की थी। यह बाग जगली पौधों की सब्जी से हरा भरा था और पानी का चश्मा भी वह रहा था मगर चारदीवारी क अतिरिक्त और किसी तरह की बडी इमारत इसमें न थी हॉ वीच में एक वहुत वडा चबूतरा जरूर था जिस पर धूप और वरसाती पानी क लिए सिर्फ मोटे माटे वारह खम्भों के सहारे पर छत बनी हुई थी और चबूतरे पर चढन क लिए चारो तरफ सीढियॉ थीं।

यह चबूतरा कुछ अजीव ढग का वना हुआ था। लगभग चालीस हाथ के चौडा और इतना ही लम्बा हागा। इसक फर्श में लाह की वारीक नालियॉ जाल की तरह जडी हुई थीं और बीच में एक चौखूटा स्याह पत्थर इस अन्दाज का रक्खा था जिस पर चार आदमी वैठ सकत थे। वस इसके अतिरिक्त इस चबूतरे में और कुछ भी न था।

थाडी दर तक सब कोई उस चबूतरे की बनावट देखत रहे इसके वाद इन्द्रदेव ने महाराज से कहा तिलिस्म वनाने वालों ने यह वागीचा कवल तमाशा देखने के लिए वनाया था। यहॉ की कैफियत आपके साथ रह कर मै नहीं दिखा सकता हॉ यदि आप मुझ दो तीन पहर की छुट्टी दें तो "

इन्द्रदव की वात महाराज ने मजूर कर ली और तव वह (इन्द्रदेव) सभों के दखते दखते चौखूटे पत्थर क ऊपर चले गए जा चवूतर के वीच में जडा हुआ था। सवार होन क साथ ही वह पत्थर हिला और इन्द्रदेव को लिए हुए जमीन क अन्दर चला गया मगर थाडी देर तक ता सव कोई उस चवूतरे पर खडे रह इसके वाद धीर धीरे वह चवूतरा गरम होन के अन्दर चला गया मगर थोडी देर में पुन ऊपर चला आया और अपने पर ज्यों का त्यों बैठ गया लेकिन इस समय इन्द्रदव उस पर न थे।

इन्द्रदव के चले जाने बाद थोडी देर तक तो सव कोई उस चबूतरे पर खडे रहे इसके वाद धीरे-धीरे वह चबूतरा गरम होने लगा और वह गर्मी यहॉ तक वढी कि लाचार उन सभों को चवूतरा छोड देना पडा अर्थात् सव कोई चबूतरे के नीचे उतर आए और वाग में टहलने लगे। इस समय दिन घण्टे भर स कुछ कम वाकी था।

इस ख्याल से कि दख इसकी दीवार किस ढग की बनी हुई हे सब कोई घूमते हुए पूरव तरफ वाली दीवार के पास जा पहुच और गौर से देखन लग मगर कोई अनूठी बात दिखाई न दी। इसके वाद उत्तर तरफ वाली और फिर पश्चिम तरफ वाली दीवार का देखते हुए सब कोई दक्खिन तरफ गए और उधर की दीवार को आश्चर्य के साथ देखने लगे क्योंकि इसमें कुछ विचित्रता जरूर थी।

यह दीवार शीशे की मालूम होती थी और इसमें महाभारत की तस्वीरें बनी हुई थीं। य तस्वीरें उसी ढग की थीं जैसी कि उस तिलिस्मी बगले में चलती फिरती तस्वीरें इन लोगों न देखी थीं। ये लोग तस्वीरों को बडी देर तक देखते रहे और सभों को विश्वास हो गया कि जिस तरह उस बगले वाली तस्वीरों को चलते फिरते और काम करते हम लोग देख चुके हैं उसी तरह इन तस्वीरों को भी देखेंगे क्योंकि दीवार पर हाथ फेरने से साफ मालूम होता था कि तस्वीरें शीशे के अन्दर हैं।

इन तस्वीरों का दखने से महाभारत की लडाइ का जमाना ऑखों के सामने फिर जाता था। कोरवों और पाण्डवों की फौज बडे वड सेनापति तथा रथ,हाथी,घाड इत्यादि जो कुछ बने थे सभी अच्छे और दिल पर असर पैदा करने वाले थ। इस लडाइ की नकल अपनी ऑखों से देखेंगे इस विचार से सब काई प्रसन्न थे। बडी दिलचस्पी के साथ उन तस्वीरों का दख रहे थे यहॉ तक कि सूर्य अस्त हो गया और धीरे धीरे अन्धकार ने चारो तरफ अपना दखल जमा लिया। उस समय यकायक दीवार चमकने लगी और तस्वीरों में हरकत पैदा हुई जिससे सभों ने समझा कि नकली लडाई शुरु हुआ चांहती हे मगर कुछ ही देर बाद लोगों का यह विश्वास ताज्जुब के साथ बदल गया जब यह देखा कि उसमें की तस्वीर एक-एक करक गायव हो गइ हैं यहॉ तक कि घडी भर के अन्दर ही सब तस्वीरें गायव हा गईं और दीवार साफ दिखाई दने लगी। इसके बाद दीवार की चमक भी बन्द हो गई और फिर अन्धकार दिखाई देने लगा।

थाडी दर वाद उस चबूतरे की तरफ रोशनी मालूम हुई। यह देख कर सब कोई उसी तरफ रवाना हुए और जब उसके पास पहुचे ता दखा कि उस चवूतरे की छत में जडे हुए शीशों क दस बारह टुकडे इस तेजी के साथ चमक रहे हैं कि जिसमें कवल चवूतरा ही नहीं बल्कि तमाम बाग उजाला हो रहा है। इसके अतिरिक्त सैकडों मूरतें भी उस चबूतरे पर इधर उधर चलती फिरती दिखाई दीं। गौर करने से मालूम हुआ कि ये मूरतें (या तस्वीरें) बेशक वे ही हैं जिन्हें उस दीवार क अन्दर दख चुके हैं। ताज्जुब नहीं कि वह दीवार इन सभों का खजाना हा और वे ही यहा इस चबूतरे पर आकर तमाशा दिखाती हा।

इस समय जितनी मूरतें उस चबूतरे पर थीं सब अर्जुन क पुत्र अभिमन्यु की लडाई स सम्बन्ध रखती थीं। जव उन मूरतों न अपना काम शुरु किया तो ठीक अभिमन्यु की लडाइ का तमाशा आखों के सामने दिखाई देने लगा। जिस तरह कारवों क रच हुए व्यूह क अन्दर फॅस कर कुमार अभिमन्यु ने वीरता दिखाई थी और अन्त में अधर्म के साथ जिस तरह वह मारा गया था उसी को आज नाटक स्वरुप में देख कर सव कोई बडे प्रसन्न हुए और सभों के दिलों पर बहुत देर तक इसका असर रहा।

इस तमाशे का हाल खुलासे तौर पर हम इसलिए नहीं लिखते कि इसकी कथा बहुत प्रसिद्ध है और महाभारत में विस्तार के साथ लिखी है।

यह तमाशा थाडी ही देर में खत्म नहीं हुआ वल्कि दखते देखते तमाम रात वीत गई। सवेरा हाने क कुछ पहिले अन्धकार हो गया और उसी अन्धकार में सव मूरतें गायव हो गईं। उजाला होने और ऑखें ठहरन पर जव सभों ने देखा ता उस चवूतर पर सिवाय इन्द्रदव के और कुछ भी दिखाई न दिया।

इन्ददेव का देख कर सब कोई प्रसन्न हुए और साहब सलामत के बाद इस तरह बातचीत होने लगी –

इन्द–(चबूतरे से नीचे उतरकर और महाराज के पास आकर) मैं उम्मीद करता हूँ कि इस तमाशे को देखकर महाराज प्रसन्न हुए होंगे।

महाराज–बेशक ! क्या इसके सिवाय और भी कोई तमाशा यहां दिखाई दे सकता है ?

इन्द–जी हां यहां पूरा महाभारत दिखाई दे सकता है, अर्थात् महाभारत ग्रन्थ में जो कुछ लिखा है वह सब इसी ढंग पर और इसी चबूतरे पर आप देख सकते हैं मगर दो-चार दिन में नहीं बल्कि महीनों में इसके साथ साथ बनाने वाले ने इसकी भी तर्कीब रक्खी है कि चाहे शुरू ही से तमाशा दिखाया जाय या बीच ही में कोई टुकड़ा दिखा दिया जाय अर्थात् महाभारत के अन्तर्गत जो कुछ चाहें देख सकते हैं।

महाराज–इच्छा तो बहुत कुछ देखने की थी मगर इस समय हम लोग यहां ज्यादे रुक नहीं सकते अस्तु फिर कभी जरूर देखेंगे। हां हमें इस तमाशे के विषय में कुछ समझाओ तो सही कि यह काम क्योंकर हो सकता है और तुमने यहाँ से कहाँ जाकर क्या किया ?

इन्ददेव ने इस तमाशे का पूरा पूरा भेद सभों को समझाया और कहा कि ऐसे ऐसे कई तमाशे इस तिलिस्म में भरे पड़े हैं अगर आप चाहें तो इस काम में वर्षों बिता सकते हैं, इसके अतिरिक्त यहां की दौलत का भी यही हाल है कि वर्षों तक ढोते रहिये फिर भी कमी न हो सोने चांदी का तो कहना ही क्या है जवाहिरात भी आप जितना चाहें ले सकते हैं सच तो यों है कि जितनी दौलत यहाँ है उसके रहने का ठिकाना भी यही हो सकता है। इस बागीचे के आस ही पास और भी चार बाग हैं शायद उन सभों में घूमना और वहां के तमाशों का देखना इस समय आप पसन्द न करें

महा–बेशक इस समय हम इन सब तमाशों में समय बिताना पसन्द नहीं करते। सबसे पहिले शादी ब्याह के काम से छुट्टी पाने की इच्छा लगी हुई है मगर इसके बाद पुनः एक दफे इस तिलिस्म में आकर यहां की सैर जरूर करेंगे।

कुछ देर तक इसी किस्म की बातें होती रहीं इसके बाद इन्ददेव सभों को पुनः उसी बाग में ले आये जिसमें उनसे मुलाकात हुई थी या जहाँ से इन्ददेव के स्थान में जाने का रास्ता था।

दसवां बयान

इस बाग में पहिले दिन जिस बारहदरी में बैठ कर सभों ने भोजन किया था, आज पुनः उसी बारहदरी में बैठने और भोजन करने का मौका मिला। खाने की चीजें ऐयार लोग अपने साथ ले आये थे और जल की वहाँ कमी ही न थी, अस्तु स्नान सन्ध्योपासन और भोजन इत्यादि से छुट्टी पाकर सब कोई उसी बारहदरी में सो रहे क्योंकि रात के जागे हुए थे और बिना कुछ आराम किये बढ़ने की इच्छा न थी।

जब दिन पहर भर से कुछ कम बाकी रह गया तब सब कोई उठे और चश्मे के जल से हाथ मुंह धोकर आगे की तरफ बढ़ने के लिए तैयार हुए।

हम ऊपर किसी बयान में लिख आये हैं कि यहां तीनों तरफ की दीवारों में कई आलमारियां भी थीं अस्तु इस समय कुँअर इन्दर्जीतसिंह ने उन्हीं आलमारियों में से एक आलमारी खोली और महाराज की तरफ देख कर कहा, "चुनार के तिलिस्म में जाने का यही रास्ता है और हम दोनों भाई इसी रास्ते से वहां तक गये थे।

रात बिल्कुल अंधेरी थी इसलिए इन्दजीतसिंह तिलिस्मी खंजर की रोशनी करते हुए आगे-आगे रवाना हुए और उनके पीछे महाराज सुरेन्द्रसिंह राजा वीरेन्द्रसिंह, गोपालसिंह, इन्ददेव वगैरह और ऐयार लोग रवाना हुए। सबसे पीछे कुँअर आनन्दसिंह तिलिस्मी खंजर की रोशनी करते हुए जाने लगे क्योंकि सुरंग पतली थी और केवल आगे की रोशनी से काम नहीं चल सकता था।

ये लोग उस सुरंग में कई घंटे तक बराबर चले गये और इस बात का पता न लगा कि कब सन्ध्या हुई या अब कितनी रात बीत चुकी है। जब सुरंग का दूसरा दर्वाजा इन लोगों को मिला और उसे खोल कर सब कोई बाहर निकले तो अपने को एक लम्बी चौड़ी कोठरी में पाया जिसमें इस दर्वाजे के अतिरिक्त तीनों तरफ की दीवारों में और भी तीन दर्वाजे थे जिनकी तरफ इशारा करके कुँअर इन्दजीतसिंह ने कहा, "अब हम लोग उस चबूतरे वाले तिलिस्म के नीचे आ पहुंचे हैं। इस जगह एक दूसरे से मिली हुई सैकड़ों कोठरियाँ है जो भूलभुलैये की तरह चक्कर दिलाती हैं और जिनमें फंसा हुआ अनजान आदमी जल्दी निकल ही नहीं सकता।' जब पहिले पहल हम दोनों भाई यहाँ आये थे सब कोठरियों के दर्वाजे बन्द थे जो तिलिस्मी किताब की सहायता से खोले गये और जिनका खुलासा हाल आपको तिलिस्मी किताब के पढ़ने से मालूम होगा मगर इनके खोलने में कई दिन लगे और तकलीफ भी बहुत हुई। इन कोठरियों के मध्य में एक चौखूटा

कमरा आप दखेंग ता ठीक चबूतर के नीच है और उसी में से बाहर निकलने का रास्ता है, बाकी सब कोठरियों में असबाब और खजाना भरा हुआ है। इसके अतिरिक्त छत के ऊपर एक और रास्ता उस चबूतरे में से बाहर निकलने क लिए बना हुआ है जिसका हाल मुझ पहिले मालूम न था जिस दिन हम दोनों भाई उस चबूतरे की राह निकले हैं उस दिन देखा कि इसके अतिरिक्त एक रास्ता और भी है।

इन्द्रदेव–जी हॉ दूसरा रास्ता भी जरूर है मगर वह तिलिस्म के दारोगा के लिए बनाया गया था तिलिस्म तोडने वाल क लिए नहीं। मुझे उस रास्ते का हाल बखूबी मालूम है।

गोपाल–मुझे भी उस रास्ते का हाल (इन्द्रदव की तरफ इशारा करके) इन्हीं की जुबानी मालूम हुआ है, इसके पहल मैं कुछ भी नहीं जानता था और न ही मालूम था कि इस तिलिस्म के दारोगा यही हैं।

इसक बाद कुँअर इन्द्रजीतसिह ने सभों को तहखाने अथवा कोठरियों और कमरों की सैर कराई जिसमें लाजवाब और हद्द दरजे की फिजूलखर्ची को मात करन वाली दौलत भरी हुई थी और एक से एक बढ कर अनूठी चीजें लोगों क दिल का अपनी तरफ खैंच रही थीं। साथ ही इसके यह भी समझाया कि इन कोठरियों को हम लोगों ने कैसे खोला और इस काम में कैसी कैसी कठिनाइयॉ उठानी पडीं।

घूमत फिरत और सर करत हुए सब कोइ उस मध्य वाल कमरे में पहुच जो ठीक तिलिस्मी चबूतरे के नीचे था। वास्तव म यह कमरा कल पुरजों स बिल्कुल भरा हुआ था। जमीन से छत तक बहुत सी तारा और कल पुर्जो का सम्बन्ध था और दीवार क अन्दर स ऊपर चढ जान के लिए सीढियॉ दिखाई दे रही थीं।

दानों कुमारों न महाराज का समझाया कि तिलिस्म टूटने के पहिले वे कल पुरजे किस ढग पर लग थ और ताडते समय उनक साथ कैसी कार्रवाई की गइ। इसके बाद इन्द्रजीतसिह ने सीढियों की तरफ इशारा करके कहा अब भी इन सीढियों का तिलिस्म कायम है हर एक की मजाल नहीं कि इन पर पैर रख सके।

वीरेन्द–यह सब कुछ ह मगर असल तिलिस्मी बुनियाद वही खोहवाला बगला जान पडता है जिसमें चलती फिरती तस्वीरा का तमाशा दखा था और जहॉ स तिलिस्म क अन्दर घुसे थे।

सुरेन्द–इसम क्या शक ह। वही चुनार जमानिया और राहतासगढ वगैरह के तिलिस्मों की नकल है और वहॉ रहन वाला तरह तरह क तमाश देख दिखा सकता है और सब से बढ कर आनन्द ले सकता है।

जीत–वहा की पूरी पूरी कफियत अभी दखने में नहीं आई।

इन्द्रजीत–दा चार दिन म वहॉ की कैफियत देख भी नहीं सकते। जो कुछ आप लोगों ने देखा वह रुपये में एक आना भी न था। मुझ भी अभी पुन वहॉ जाकर बहुत कुछ देखना बाकी है।

सुरेन्द–इस समय ता जल्दी म थोडा बहुत दख लिया है मगर काम से निश्चिन्त होकर पुन हम लोग वहॉ चलेंगे आर उसी जगह स राहतासगढ क तहखाने कीभी सैर करेंग। अच्छा अब यहॉ से बाहर होना चाहिए।

आग आग कुँअर इन्द्रजीतसिह रवाना हुए। पॉच सात सीढियॉ चढ जाने के बाद एक छाटा सा लाहे का दर्वाजा मिला जिस उसी हीर वाली तिलिस्मी ताली से खाला और तब सभों को लिए हुए दोनों कुमार तिलिस्मी चबूतरे के बाहर हुए।

सब काइ तिलिस्म की सैर करके लौट आये और अपने अपन काम धन्धे में लगे। कैदियों के मुकदमे का थोड दिन तक मुल्तवी रख कर कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह की शादी पर सभा ने ध्यान दिया और इसी के इन्तजाम की फिक्र करन लग। महाराज सुरन्दसिह न जो काम जिसके लायक समझा उसके सुपुर्द करके कुल कैदियों का चुनारगढ भेजने का हुक्म दिया आर यह भी निश्चय कर लिया कि दो तीन दिन के बाद हम लोग भी चुनारगढ चले जायगे क्योंकि बारात चुनारगढ ही स निकल कर यहा आवगी।

भरथसिह और दलीपशाह वगरह का डेरा बलभदसिह क पडोस ही में पडा और दूसरे मेहमानों के साथ ही साथ इनकी खातिरदारी का बाझ भी भूतनाथ के ऊपर डाला गया। इस जगह सक्षेप में हम यह भी लिख देना उचित समझते हैं कि कौन काम किसक सुपुर्द किया गया।

(१) इस तिलिस्मी इमारत के इर्द गिद जिन महमानो के डरे पडे हैं उन्हें किसी बात की तकलीफ तो नहीं हाती इस बात का बराबर मालूम करते रहन का काम भूतनाथ के सुपुर्द किया गया।

(२) मादी बनिए और हलवाइ वगैरह किसी से किसी चीज का दाम तो नहीं लेत इस बात की तहकीकात क लिए रामनारायण ऐयार मुकर्रर किय गए।

(३) रसद वगैरह के काम में कहीं किसी तरह की बेईमानी तो नहीं होती या चोरी का नाम तो किसी की जुबान से नहीं सुनाई देता इसको जानने और शिकायतों को दूर करने पर चुन्नीलाल ऐयार तैनात किए गए।

(४) इस तिलिस्मी इमारत से लेकर चुनारगढ़ तक की सड़क और उसकी सजावट का काम पन्नालाल और पण्डित बद्रीनाथ के जिम्मे किया गया।

(५) चुनारगढ़ में बाहर से न्योते में आये हुए पण्डितों की खातिरदारी और पूजा पाठ इत्यादि के सामान की दुरुस्ती का बोझ जगन्नाथ ज्योतिषी के ऊपर डाला गया।

(६) बारात और महफिल वगैरह की सजावट तथा उसके सम्बन्ध में जो कुछ काम हो उसके जिम्मेवार तेजसिंह बनाये गये।

(७) आतिशबाजी और अजायबातों के तमाशे तैयार करने के साथ ही साथ उसी तरह की एक इमारत के बनवाने का हुक्म इन्द्रदेव को दिया गया जैसी इमारत के अन्दर हंसते हंसते इन्द्रजीतसिंह वगैरह एक दफे कूद पड़े थे और जिसका भेद अभी तक खोला नहीं गया है।*

(८) पन्नालाल वगैरह के बदले में रणधीरसिंहजी के डेरे की हिफाजत तथा किशोरी कामिनी वगैरह की निगरानी के जिम्मेदार देवीसिंह बनाये गये।

(९) ब्याह सम्बन्धी रस्म की तहवील राजा गोपालसिंह के हवाले की गई।

(१०) कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के साथ रह कर उनके विवाह सम्बन्धी शान शौकत और जरूरतों को कायदे के साथ निबाहने के लिए भैरोसिंह और तारासिंह छोड़ दिये गए।

(११) हरनामसिंह को अपने मातहत में लेकर जीतसिंह ने यह काम अपने जिम्मे ले लिया कि हर एक के कामों की जांच और निगरानी रखने के अतिरिक्त कुछ कैदियों को भी किसी उचित ढंग से इस विवाहोत्सव के तमाशे दिखा देंगे ताकि वे लोग भी देख लें कि जिस शुभ दिन के हम बाधक थे वह आज किस खुशी और खूबी के साथ बीत रहा है और सवसाधारण भी देख लें कि धन दौलत और ऐश आराम के फेर में पड़ कर अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारने वाले छोटे होकर बड़ों के साथ वैर बांधने का नतीजा भोगने वाले मालिक के साथ में नमकहरामी और उग्र पाप करने का फल इस जन्म में भी भोग लेने वाले और बदनीयती तथा पाप के साथ ऊंचे दर्जे पर पहुंच कर यकायक रसातल में पहुंच जाने वाले धर्म और ईश्वर से विमुख ये ही प्रायश्चित्ती लोग हैं।

इन सभों के साथ मातहती में काम करने के लिए आदमी भी काफी तौर पर दिए गये।

इनके अतिरिक्त और लोगों को भी तरह तरह के काम सुपुर्द किए गए और सब कोई बड़ी खुशी के साथ अपना अपना काम करने लगे।

ग्यारहवां बयान

अब हम थोड़ा सा हाल कुँअर इन्द्रजीतसिंह का बयान करेंगे जिन्हें इस बात का बहुत ही रंज है कि कमलिनी की शादी किसी दूसरे के साथ हो गई और वे उम्मीद में ही बैठे रह गये।

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है और कुंअर इन्द्रजीतसिंह अपने कमरे में बैठे भैरोसिंह से धीरे धीरे बातें कर रहे हैं। इन दोनों के सिवाय कोई तीसरा आदमी इस कमरे में नहीं है और कमरे का दर्वाजा भी भिड़काया हुआ है।

भैरो—तो आप साफ साफ कहते क्यों नहीं कि आपकी उदासी का सबब क्या है? आपको तो आज खुश होना चाहिये कि जिस काम के लिए बरसों परेशान रहे जिसकी उम्मीद में तरह-तरह की तकलीफें उठाई जिसके लिए हथेली पर जान रख के बड़े-बड़े दुश्मनों से मुकाबिला करना पड़ा और जिसके होने या मिलने ही पर तमाम दुनिया की खुशी समझी जाती थी आज वही काम आपकी इच्छानुसार हो रहा है और उसी किशोरी के साथ अपनी शादी का इन्तजाम अपनी आंखों से देख रहे हैं फिर भी ऐसी अवस्था में आपको उदास देख कर कौन ऐसा है जो ताज्जुब न करेगा?

इन्द्रजीत—बेशक मेरे लिए आज बड़ी खुशी का दिन है और मैं खुश हूं भी मगर कमलिनी की तरफ से जो रंज मुझे हुआ है उसे हजार कोशिश करने पर भी मेरा दिल बरदाश्त नहीं कर पाता।

भैरो—(ताज्जुब का चेहरा बना कर) हैं! कमलिनी की तरफ से और आप को रंज! जिसके अहसानों के बोझ से आप दबे हुए हैं उसी कमलिनी से रंज! यह आप क्या कह रहे हैं?

इन्द्र—इस बात को तो मैं खुद कह रहा हूं कि उसके अहसानों के बोझ से मैं जिन्दगी भर हलका नहीं हो सकता और अब तक उसके जी में मेरी भलाई का ध्यान बँधा ही हुआ है मगर रंज इस बात का है कि अब मैं उस उस मोहब्बत की

---

*देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति पांचवां भाग चौथा बयान।

निगाह स नहीं दख सकता जिससे कि पहिले देखना था।

भैरो–सो क्यों क्या इसलिए कि अब वह अपन स्पुगल चली जायगी और फिर उसे आप पर अहसान करन का मौका न मिलेगा?

इन्द्र–हॉ करीब करीब यही बात है।

भैरा–मगर अब आपका उसकी मदद की जरूरत भी ता नहीं है। हॉ इस बात का खयाल बेशक हो सकता है कि अब आप उसक तिलिस्मी मकान पर कब्जा न कर सकेंगे।

इन्द्र–नहीं नहीं मुझ इस बात की कुछ जरूरत नहीं है और न इसका कुछ खयाल ही है।

भैरो–ना इस बात का खयाल है कि उसने अपनी शादी में आपका न्योता नहीं दिया? मगर वह एक हिन्दू लडकी की हैसियत स ऐसा कर भी ता नहीं सकती थी। हॉ इस बात की शिकायत आप राजा गापालसिहजी स जरूर कर सकते है क्योंकि उस काम क कर्ता धर्ता व ही हैं।

इन्द्र–उनस ता मुझ बहुत ही शिकायत है मगर मैं शर्म के मार कुछ कह नहीं सकता।

भैरो–(चौंक कर) शर्म तो तब होती जब आप इस बात की शिकायत करत कि मैं खुद उमसे शादी किया चाहता था।

इन्द्र–हो बात ता ऐसी ही है। (मुस्कुरा कर) मगर तुम ता पागलों की सी बातें करते हो।

भैरा–(हॅस कर) यह कहिए न! आप दानों हाथ लड्डू चाहत थे! तो इस चार का आप इतने दिनों तक छिपाए क्यों रह?

इन्द्र–ता यही कब उम्मीद हा सकती थी कि इस तरह यकायक गुमसुम शादी हा जायगी।

भैरा–खैर अब ता जा कुछ हाना था सा हा गया मगर आपका इस बात का ख्याल न करना चाहिए। इसके अतिरिक्त क्या आप समझते है कि किशारी इस बात का पसन्द करती? कभी नहीं बल्कि आये दिन का झगडा पैदा हा जाता।

इन्द्र–नहीं किशारी स मुझे एसी उम्मीद नहीं हा सकती। खैर अब इस विषय पर बहस करना व्यर्थ है मगर मुझे इसका रज जरुर है। अच्छा यह ता बताओ तुमने उन्हें देखा है जिसके साथ कमलिनी की शादी हुइ?

भैरो–कइ दफ बातें भी अच्छी तरह कर चुका हू।

इन्द्र–कैसे हैं?

भैरो–बडे लायक पढे लिखे पण्डित बहादुर दिलेर हसमुख और सुन्दर। इस अवसर पर आवेंगे ही देख लीजिएगा। आपने कमलिनी से इस बार में बातचीत नहीं की?

इन्द्र–इधर ता नहीं मगर तिलिस्म की सैर का जाने क पहिले मुलाकात हुई थी उसने खुद मुझ बुलाया था बल्कि उसी की जुबानी उसकी शादी का हाल मुझ मालूम हुआ था। मगर उसने मेरे साथ विचित्र ढग का बर्ताव किया।

भैरा–सो क्या?

इन्द्र–(जा कुछ कैफियत हा चुकी थी उस बयान करने के बाद) तुम इस बर्ताव का कैसा समझते हो?

भैरो–बहुत अच्छा और उचित।

इसी तरह की बातचीत हा रही थी कि पहिले दिन की तरह बगल वाले कमरे का दर्वाजा खुला और एक लौंडी न आकर सलाम करने बाद कहा "कमलिनीजी आपसे मिला चाहती है" आज्ञा हो तो

इन्द्र–अच्छा मैं चलता हू, तू दरवाजा बन्द कर दे।

भैरा–अब मैं भी जाकर आराम करता हू।

इन्द्र–अच्छा जाओ फिर कल देखा जायगा।

लौंडी–इनस (भैरासिह से) भी उन्हें कुछ कहना है।

यह कहती हुई लौंडी न दर्वाजा बन्द कर दिया तब तक कमलिनी इस कमर में आ पहुची और भैरासिह की तरफ देख कर बोली (जा उठ कर बाहर जाने के लिए तैयार था) आप कहाँ चले? आप ही से तो मुझे बहुत सी शिकायत करनी है।

भैरा–सा क्या?

कमलिनी–अब उसी कमर में चलिये वहा बातचीत हागी।

इतना कह कर कमलिनी न कुमार का हाथ पकड लिया और अपने कमर की तरफ ल चली पीछे-पीछे भैरासिह भी

गये। लौडी दर्वाजा बन्द करके दूसरी राह से वाहर चली गई और कमलिनी ने इन दोनों को उचित स्थान पर बैठा कर पानदान आग रख दिया और भैरोसिंह से कहा आप लोग तिलिस्म की सैर कर आये और मुझे पूछा भी नहीं !"

भैरो–महाराज खुद ही कह चुके है कि शादी के वाद औरतों को भी तिलिस्म की सैर करा दी जाय और फिर तुम्हारे लिए तो कहना ही क्या है, तुम जब चाहे तिलिस्म की सैर कर सकती हो।

कम–ठीक है, मानों यह मेरे हाथ की वात है !

भैरो–हई है।

कम–(हस कर) टालने के लिए यह अच्छा ढग है ! खैर जाने दीजिए, मुझे कुछ ऐसा शौक भी नहीं है, हा यह बताइए कि वहा क्या-क्या कैफियत देखने में आई ? मैने सुना कि भूतनाथ वहा बड़े चक्कर में पड़ गया था और उसकी पहली स्त्री भी वहा दिखाई पड गई।

भैरो–वेशक ऐसा ही हुआ।

इतना कहकर भैरोसिंह ने कुल हाल खुलासा वयान किया और इसके वाद कमलिनी ने इन्द्रजीतसिंह से कहा "खैर आप वताइए कि शादी की खुशी में मुझे क्या इनाम मिलेगा ?'

इन्द–(हस कर) गालियों के सिवाय और किसी चीज की तुम्हें कमी ही क्या है जो मै दूं ?

कम–(भैरो से) सुन लीजिये मेरे लिए कैसा अच्छा इनाम सोचा गया है ! (कुमार से हस कर) याद रखियेगा, इस जवाब के वदले में मैं आपको ऐसा छकाऊगी कि खुश हो जाइयेगा !

भैरो–इन्हें तो तुम छका ही चुकी हो, अब इससे बढ के क्या होगा कि चुपचाप दूसर के साथ शादी कर ली और इन्हें अगूठा दिखा दिया। अव तुम्हें ये गालियां न दें तो क्या करें !

कम–(मुस्कुराती हुई) आपकी राय भी यही है ?

भैरो–वेशक !

कम–तो वेचारी किशोरी के साथ आप अच्छा सलूक करते है।

भैरो–इसका इलजाम तो कुमार के ऊपर हो सकता है !

कम–हा साहव मर्दो की मुरौवत जो कुछ दिखाए थोड़ा है, मै किशोरी बहिन से इसका जिक्र करूँगी !

भैरो–तव तो अहसान पर अहसान करोगी।

इन्द–(भैरो से) तुम भी व्यर्थ की छेडछाड मचा रहे हो, भला इन बातों से क्या फायदा ?

भैरो–ब्याह-शादी में ऐसी बातें हुआ ही करती हैं !

इन्द–तुम्हारा सिर हुआ करता है ! (कमलिनी स) अच्छा यह बताओ कि इस समय तुमने मुझे क्यों याद किया ?

कम–हरे राम ! अब क्या मैं ऐसी भारी हो गई कि मुझसे मिलना भी बुरा मालूम होता है ?

इन्द–नहीं नहीं, अगर मिलना बुरा मालूम होता तो मै यहा आता ही क्यों ? पूछता हू कि आखिर कोई काम भी है या ?

कम–हा है तो सही।

इन्द–कहो !

कम–आपको शायद मालूम होगा कि मेरे पिता जब से यहा आये हैं उन्होंने अपने खाने पीने का इन्तजाम अलग रक्खा है अर्थात् आपके यहा का अन्न नहीं खाते और न कुछ अपने लिए खर्च कराते हैं।

इन्द–हा मुझ मालूम है।

कम–अब उन्होंने इस मकान में रहने से भी इनकार किया है। उनके एक मित्र ने खेमे वगैरह का इन्तजाम कर दिया है और वे उसी में अपना डेरा उठा ले जाने वाले हैं।

इन्द–यह भी मालूम है।

कम–मेरी इच्छा है कि यदि आप आज्ञा दें तो लाडिली का साथ लेकर मै भीउसी डेरे में चली जाऊ।

इन्द–क्यों तुम्हें यहा रहने मे परहेज ही क्या हो सकता है ?

कम–नहीं नहीं, मुझे किस बात का परहेज होगा मगर यों ही जी चाहता है कि दो चारदिन मैअपने बाप के साथ ही रह कर उनकी खिदमत करू।

इन्द–यह दूसरी बात है, इसकी इजाजत तुम्हें अपने मालिक से लेनी चाहिए मै कौन हू जो इजाजत दू ?

कम–इस समय वे तो यहॉ है नहीं अस्तु उनके वदले मे मै आप ही को अपना मालिक समझती हू।

इन्द–(मुस्कुरा कर) फिर तुमने वही रास्ता पकड़ा ? खैर मै इस बात की इजाजत न दूगा ।

कम–तो मैं आज्ञा के विरुद्ध कुछ न करूँगी

इन्द–(भैरो से) इनकी बातचीत का ढग देखते हो ?

भैरो–(हस कर) शादी हो जाने पर भी ये आपको नहीं छोडा चाहती तो मै क्या करूँ।

कम–अच्छा मुझे एक बात की इजाजत तो जरूर दीजिए।

इन्द–वह क्या ?

कम–आपकी शादी में मैं आपसे एक विचित्र दिल्लगी किया चाहती हू।

इन्द–वह कौन सी दिल्लगी होगी ?

कम–यही बता दूँगी तो उसमें मजा ही क्या रह जायगा ? बस आप कह दीजिए कि उस दिल्लगी से रज न होंगे चाहे वह कैसी ही गहरी क्यों न हो।

इन्द–(कुछ सोच कर) खैर मैं रज न होऊँगा।

इसके बाद थोड़ी देर तक हसी की बातें होती रहीं और फिर सब कोई उठ कर अपने अपने ठिकाने चले गये।

बारहवां बयान

ब्याह की तैयारी और हँसी खुशी में ही कई सप्ताह बीत गये और किसी को कुछ मालूम न हुआ। हॉ कुँअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह को खुशी के साथ ही रज और उदासी से भी मुकाबला करना पडा। यह रज और उदासी क्यों ? शायद कमलिनी और लाडिली के सबब से हो। जिस तरह कुअर इन्द्रजीतसिह कमलिनी से मिल कर और उसकी जुबानी उसके ब्याह का हो जाना सुनकर दु खी हुए, उसी तरह आनन्दसिह को भी लाडिली से मिल कर दु खी होना पडा या नहीं सो हम नहीं कह सकते क्योंकि लाडिली से और आनन्दसिह से जो बातें हुई उससे और कमलिनी की बातों से बडा फर्क है। कमलिनी ने तो खुद इन्द्रजीतसिह को अपने कमरे में बुलवाया था मगर लाडिली ने ऐसा नहीं किया। लाडिली का कमरा भी आनन्दसिह के कमरे के बगल ही मे था। जिस रात कमलिनी से और इन्द्रजीतसिह से दूसरी मुलाकात हुई थी उसी रात को आनन्दसिह ने भी अपने बगल वाले कमरे में लाडिली को देखा था मगर दूसरे ढग से। आनन्दसिह अपने कमरे में मसहरी पर लेटे हुए तरह तरह की बातें सोच रहे थे कि उसी समय बगल वाले कमरे में से कुछ खटके की आवाज आई जिसे आनन्दसिह चौंके और उन्होंने घूमकर देखा तो उस कमरे का दरवाजा कुछ खुला हुआ नजर आया। इन्हें यह जरूर मालूम था कि हमारे बगल ही में लाडिली का कमरा है और उससे मिलने की नीयत से इन्होंने कई दफे दरवाजा खोलना भी चाहा था मगर बन्द पाकर लाचार हो गये थे। अब दरवाजा खुला पाकर बहुत खुश हुए और मसहरी पर से उठ धीरे धीरे दरवाजे के पास गये। हाथ के सहारे दरवाजा कुछ विशेष खोला और अन्दर की तरफ झाक कर देखा। लाडिली पर निगाह पडी जो एक शमादान के आगे बैठी हुई कुछ लिख रही थी। शायद उसे इस बात की कुछ खबर ही न थी कि मुझे कोई देख रहा है।

भीतर सन्नाटा पाकर अर्थात् किसी गैर को न देख कर आनन्दसिह बेधड़क कमरे के अन्दर चले गये। पैर की आहट पाते ही लाडिली चौंकी तथा आनन्दसिह को अपनी तरफ आते देख उठ खडी हुई और बोली, आपने दरवाजा कैसे खोल लिया ?

आनन्द–(मुस्कुराते हुए) किसी हिकमत से !

लाडिली–क्या आज के पहिले वह हिकमत मालूम न थी ? शायद सफाई के लिए किसी लौंडी ने दरवाजा खोला हो और बन्द करना भूल गई हो।

आनन्द–अगर ऐसा ही हो तो क्या कुछ हर्ज है ?

लाडिली–नहीं हर्ज काहे का है, मै तो खुद ही आपसे मिला चाहती थी मगर लाचारी–

आनन्द–लाचारी कैसी ? क्या किसी ने मना कर दिया था ?

लाडिली–मना ही समझना चाहिये जब कि मेरी बहिन कमलिनी ने जोर देकर कह दिया कि 'या तो तू मेरी इच्छानुसार शादी कर ले या इस बात की कसम खा जा कि किसी गैर मर्द से कभी बातचीत न करेगी। जिस समय उनकी (कमलिनी की) शादी होने लगी थी उस समय भी लोगों ने मुझ पर शादी कर लेने के लिए दबाव डाला था मगर मैं इस समय जैसी हू वैसी ही रहने के लिए कसम खा चुकी हू, मतलब यह है कि इसी बखेडे में मुझसे और उनसे कुछ तकरार भी हो गई है।

आनन्द–(घवराहट और ताज्जुव के साथ) क्या कमलिनी की शादी हो गई है ?

लाडिली–जी हा।

आनन्द–किसके साथ ?

लाडिली–सो तो मै नहीं कह सकती आपको खुद मालूम हो जायगा।

आनन्द–यह बहुत बुरा हुआ।

लाडिली–वेशक बुरा हुआ मगर क्या किया जाय जीजाजी (गोपालसिह) की मर्जी ही ऐसी थी क्योंकि किशोरी ने ऐसा करन के लिए उन पर वहुत जोर डाला था अस्तु कमलिनी वहिन दवाव में पड गई मगर मैंने साफ इनकार कर दिया कि जेसी हू वैसी ही रहूगी।

आनन्द–तुमने वहुत अच्छा किया।

लाडिली–और मै ऐसा करने के लिए सख्त कसम खा चुकी हू।

आनन्द–(ताज्जुव से) क्या तुम्हारे इस कहने का यह मतलव लगाया जाय कि अव तुम शादी करागी ही नहीं ?

लाडिली–वेशक !

आनन्द–यह ता कोई अच्छी वात नही !

लाडिली–जो हो अव तो मैं कसम खा चुकी हू और वहुत जल्द यहा स चली जाने वाली भी हू सिर्फ कामिनी वहिन की शादी हो जाने का इन्तजार कर रही हू।

आनन्द–(कुछ सोच कर) कहा जाओगी ?

लाडिली–आप लोगों की कृपा से अव तो मरा वाप भी प्रकट हो गया है अब इसकी चिन्ता ही क्या है ?

आनन्द–मगर जहा तक मैं समझता हू तुम्हारे वाप तुम्हें शादी करन के लिए जरूर जार देंगे।

लाडिली–इस विषय में उनकी कुछ न चलेगी।

लाडिली की वार्ता से आनन्दसिह को ताज्जुव के साथ ही साथ रज भी हुआ और ज्यादे रज ता इस वात का हुआ कि अव तक लाडिली ने खडे ही खडे वातचीत की और कुमार को वैठने तक के लिए नहीं कहा। शायद इसका यह मतलव हो कि मैं ज्याद देर तक आपसे वात नहीं कर सकती'। अस्तु आनन्दसिह को क्राध और दु ख के साथ लज्जा ने भी घर दबाया और वे यह कह कर कि अच्छा मैं जाता हू अपने कमरे की तरफ लौट चल।

आनन्दसिह के दिल में जा वातें घूम रही थीं उनका अन्दाजा शायद लाडिली का भी मिल गया और जव वे लौट कर जाने लग तव उसने पुन इस ढग पर कहा मानों उसकी उसकी आखिरी वात अभी पूरी नहीं हुई थी— क्योंकि जिनकी मुझ पर कृपा रहती थी अव वे और ही ढग क हो गए !!

इस बात ने कुमार को तरद्दुद में डाल दिया। उन्होंन घूम कर एक तिरछी निगाह लाडिली पर डाली और कहा 'इसका क्या मतलव ?

लाडिली–सो कहने की सामर्थ्य मुझमें नहीं ह। हा जव आपकी शादी हा जायगी तव मैं साफ आपस कह दूगी उस समय जो कुछ आप राय देंगे उसे मैं कवूल भी कर लूगी !

इस आखिरी वात से कुमार को कुछ हिम्मत वध गइ मगर वैठने की या और कुछ कहने की हिम्मत न पडी और अच्छा कह कर व अपने कमरे में चले आये।

तेरहवां बयान

विवाह का सब सामान ठीक हा गया मगर हर तरह की तैयारी हा जाने पर भी लोगों की मेहनत में कमी नहीं हुई। सव कोई उसी तरह दौड धूप और काम काज में लगे हुए दिखाई दे रह हे। महाराज सुरेन्द्रसिह सभों को लिए हुए चुनारगढ चले गए। अव इस तिलिस्मी मकान में सिर्फ जरूरत की चीजों के ढेर और इन्तजामकार लोगों के डेरे भर ही दिखाई द रहे हैं। इस मकान में से उन लोगों के लिए भी रास्ता वनाया गया है जो हसत हसते उस तिलिस्मी इमारत में कूदा करेंगे जिसके वनान की आज्ञा इन्द्रदेव को दी गई थी और जो इस समय वन कर तैयार हो गई है।

यह इमारत वीस गज लम्बी और इतनी ही चौडी थी। ऊँचाई इसकी लगभग चालीस हाथ से कुछ ज्यादे होगी। चारो तरफ की दीवार साफ और चिकनी थी तथा किसी तरफ कोई दरवाजे का निशान दिखाई नही देता था। पूरब तरफ ऊपर चढ जाने के लिए छोटी सीढिया वनी हुई थीं जिनके दानों तरफ हिफाजत के लिए लाहे क सीखचे लगा दिए गय थ। उसी पूरब तरफ वाली दीवार पर वडे वडे हरफों में यह भी लिखा हुआ था —

'जो आदमी इन सीढियों की राह ऊपर जायगा और एक नजर अन्दर की तरफ झाक वहा की कैफियत देखकर इन्हीं सीढियों की राह नीचे उतर आवेगा उसे एक लाख रुपये इनाम में दिए जायग ।

इस इमारत ने चारो तरफ एक अनूठा रग पैदा कर दिया था। हजारों आदमी उस इमारत के ऊपर चढ जाने के लिए तैयार थ और हर एक आदमी अपनी अपनी लालसा पूरी करने के लिए जल्दी मचा रहा था मगर सीढी का दर्वाजा वन्द था। पहरेदार लाग किसी को ऊपर जाने की इजाजत नहीं देत थे और यह कह कर सभों को सन्तोष करा देते थे कि वारात वाले दिन दर्वाजा खुलगा और पन्द्रह दिन तक बन्द न होगा ।

यहा से चुनारगढ की सडकों के दोनों तरफ जो सजावट की गई उसमें भी एक अनूठापन था। दोनों तरफ रोशनी के लिए जाफरी बनी हुई थी और उसमें अच्छे अच्छे नीति के श्लोक दरसाये गये थे। बीचोबीच में थोडी-थोडी दूर पर नौबतखाने के वगल में एक एक मचान था जिस पर एक या दो कैदियों के वैठन के लिए जगह बनी हुई थी। जाफरी के दोनों तरफ दस हाथ चौड़ी जमीन में बाग का नमूना तैयार किया गया था और इसके बाद आतिशवाजी लगाई गई थी। आध आध कोस की दूरी पर सर्वसाधारण और गरीब तमाशबीनों के लिए महफिल तैयार की गई थी और उसके लिए अच्छी अच्छी गाने वाली रडियाँ और भाड मुकर्रर किए गए थे। रात अधेरी होने के कारण रोशनी का सामान ज्यादे तैयार किया गया था और वह तिलिस्मी चन्द्रमा जो दोनों राजकुमारों को तिलिस्म के अन्दर से मिला था चुनारगढ किले के ऊचे कगूरे पर लगा दिया गया था जिसकी रोशनी इस तिलिस्मी मकान तक बडी खूबी और सफाई के साथ पड रही थी।

पाठक दोनों कुमारों के बारात की सजावट महफिलों की तैयारी रोशनी और आतिशबाजी की खूबी मेहमानदारी की तारीफ और खैरात की वहुतायत इत्यादि का हाल विस्तारपूर्वक लिख कर पढने वालों का समय नष्ट करना हमारी आत्मा और आदत के विरुद्ध है। आप खुद समझ सकते है कि दोनों कुमारों की शादी का इन्तजाम किस खूबी के साथ किया गया होगा नुमाइश की चीजें कैसी अच्छी होंगी वडप्पन का कितना बडा खयाल किया गया होगा और बारात किस धूमधाम से निकली हागी। हम आज तक जिरा तरह सक्षेप में लिखते आए है अव भी उसी तरह लिखेंगे तथापि हमारी उन लिखावटों से जो ब्याह के सम्बन्ध में ऊपर कई दफे मौके मौके पर लिखी जा चुकी हैं आपको अन्दाज के साथ-साथ अनुमान करने का हौसला भी मिल जायगा और विशष सोच विचार की जरूरत न रहेगी। हम इस जगह पर केवल इतना ही लिखेंगे कि–

बारात बडे धूमधाम से चुनारगढ के वाहर हुई।* आगे आग नोबत निशान और उसके बाद सिलसिलेवार फौजी सवार पैदलऔर तोपखाने वगैरह थे जिसक बाद ऐसी फुलवारिया थीं जिनके देखने से खुशी और लूटने से दौलत हासिल हो। इसके बाद बहुत बडे सजे हुए अम्बारीदार हाथी पर दोनों कुमार हाथी ही पर सवार अपने वडे वुजुर्गो रिश्तेदारों और मेहमानों से घिरे हुए धीरे धीरे दोतर्फी बहार लूटते और दुश्मनों के कलेजों को जलाते हुए जा रहे थे और उनके बाद तरह तरह की सवारियों और घोडों पर बैठे हुए बडे बडे सर्दार लोग दिखाई दे रहे थे। अन्त में फिर फौजी सिपाहियों का सिलसिला था। आगे वाल नौवत निशान से लेकर कुमारों के हाथी तक कई तरह के बाजे वाले अपने अपने मौके से अपना इल्म और हुनर दिखा रहे थे।

कुशल पूर्वक बारात ठिकाने पहुची और शास्त्रानुसार कर्म तथा रीति होने क बाद कुँअर इन्द्रजीतसिह का विवाह किशोरी और आनन्दसिह का कामिनी के साथ हो गया और इस काम में रणधीरसिह ने भी वित्त के अनुसार दिल खोल कर खर्च किया। दूसरे रोज पहर भर दिन चढने के पहिले ही दोनों बहुओं की रुखसती करा कर महाराज चुनार की तरफ लौट पडे।

चुनारगढ पहुचने पर जो कुछ रस्में थीं वे पूरी होने लगीं और मेहमान तथा तमाशबीन लोग तरह तरह के तमाशों और महफिलों का आनन्द लूटने लग। उधर तिलिस्मी मकान की सीढियों पर लाख रुपया इनाम पाने की लालसा से लोगों ने चढना आरम्भ किया। जा कोई दीवार के ऊपर पहुच कर अन्दर की तरफ झाँकता वह अपने दिल को किसी तरह न सम्हाल सकता और एक दफे खिलखिला कर हसने के बाद अन्दर की तरफ कूद पडता और कई घण्टे के बाद उस चबूतरे वाली बहुत बडी तिलस्मी इमारत की राह स बाहर निकल जाता।

---

*देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति इक्कीसवाँ भाग आठवा बयान।

बस विवाह का इतना ही हाल सक्षेप में लिख कर हम इस बयान को पूरा करते हैं और इसके बाद सोहागरात की एक अनूठी घटना का उल्लेख करक इस बाईसवें भाग को समाप्त करेंगे क्योंकि हम दिलचस्प घटनाओं ही का लिखना पसन्द करने हैं।

चौदहवां बयान

आज कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह के खुशी का कोई ठिकाना नहीं है क्योंकि तरह तरह की तकलीफें उठा कर एक मुददत के बाद इन दोनों की दिली मुरादें हासिल हुई हैं।

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है और एक सुन्दर सजे हुए कमरे में ऊँची और मुलायम गद्दी पर किशोरी और कुअर इन्द्रजीतसिह बैठे हुए दिखाई देते हैं। यद्यपि कुअर इन्द्रजीतसिह की तरह किशोरी के दिल में भी तरह तरह की उमग भरी हुई हैं और वह आज इस ढग पर कुँअर इन्द्रजीतसिह की पहिली मुलाकात को सौभाग्य का कारण समझती हैं मगर उस अनोखी लज्जा के पाले में पडी हुई किशोरी का चेहरा घूघट की ओट से बाहर नहीं होता जिसे प्रकृति अपने हाथो से औरत की बुद्धि में जन्म ही स दे दती ह। यद्यपि आज से पहिले कुँअर इन्द्रजीतसिह का कई दफे किशोरी देख चुकी है और उनसे बातें भी कर चुकी है तथापि अज पूरी स्वतत्रता मिलने पर भी यकायक सूरत दिखाने की हिम्मत नहीं पडती। कुमार तरह-तरह की बातें कहकर और समझा कर उसकी लज्जा दूर किया चाहते है मगर कृतकार्य नहीं होते। वहुत कुछ कहने-सुनन पर कभी कभी किशारी दो एक शब्द बोल देती है मगर वह भी धडकते हुए कलेजे के साथ। कुमार ने साच लिया कि यह स्त्रियों की प्रकृति है अतएव इसके विरुद्ध जोर न देना चाहिये यदि इस समय इसकी हिम्मत नहीं खुलती तो क्या हुआ घण्टे दो घण्टे, पहर या एक दो दिन में खुल ही जायगी। आखिर ऐसा ही हुआ।

इसक बाद किस तरह की छेडछाड शुरू हुई या क्या हुआ सो हम नहीं लिख सकते, हा उस समय का हाल जरूर लिखेंगे जब धीरे धीरे सुबह की सुफैदी आसमान पर फैलने लग गई थी और नियमानुसार प्रात काल बजाये जाने वाली नफोरी की आवाज ने कुँअर इन्द्रजीतसिह और किशोरी को नींद से जगा दिया था। किशोरी जो कुँअर इन्द्रजीसिह के बगल में सोई हुई थी घबडाकर उठ बैठी और मुह धोने तथा बिखर हुए बालों को सुधारने की नीयत से उस सुनहरी चौकी की तरफ बढी जिस पर सोने के बर्तन में गगाजल भरा हुआ था और जिसके पास ही जल गिराने के लिए एक बडा सा चॉदी का आफताबा *भी रक्खा हुआ था। हाथ में जल लेकर चहरे पर लगात और पुन अपना हाथ देखने के साथ ही किशारी चौक पडी और घवडा कर वोली 'हैं !यह क्या मामला है ?

इन शब्दो ने इन्द्रजीतसिह को चौंका दिया। वे घबडा कर किशोरी क पास चले गए और पूछा, 'क्यों क्या हुआ ?'

किशोरी–मेरे साथ यह क्या दिल्लगी की !!

इन्द्र – कुछ कहो भी तो क्या हुआ ?

किशोरी–(हाथ दिखा कर) देखिए यह रग कैसा है जो चेहरे पर स पानी लगने के साथ ही छूट रहा है।

इन्द्र–(हाथ देख कर) हॉ है तो सही मगर मैंने तो कुछ भी नहीं किया तुम खुद सोच सकती हो कि मैं भला तुम्हारे चेहरे पर रग क्यों लगाने लगा। मगर तुम्हारे चेहरे पर यह रग आया ही कहॉ से !

किशोरी–(पुन चेहरे पर जल लगा के) यह देखिए है य नहीं !

इन्द्र–सो तो मै खुद कह रहा हू कि रग जरूर है मगर जरा मेरी तरफ देखो तो सही !

किशोरी ने जो अब समयानुकूल लज्जा के हाथों से छूट कर ढिठाई का पल्ला पकड चुकी थी और जो कई घण्टों की कशमकश और चालचलन की बदौलत बातचीत करने लायक समझी जाती थी कुमार की तरफ देखा और फिर कहा, देखिए और कहिए यह किसकी सूरत है ?

इन्द्र–(और भी हैरान होकर) बड ताज्जुब की बात है ! और इस रग के छूटने से तुम्हारा चेहरा भी कुछ बदला हुआ सा मालूम पडता है ! अच्छा जरा अच्छी तरह मुह धो डालो।

किशोरी ने अच्छा कह कर मुँह धा डाला और रूमाल से पोछने के बाद कुमार की तरफ देख कर बोली वताइए अव कैसा मालूम पडता है रग अब छूट गया या अभी नहीं ?'

इन्द्र–(घबडा कर) हे !अब तो तुम साफ कमलिनी मालूम पडती हो !! यह क्या मामला है ?

किशोरी – मैं कमलिनी तो हई हू। क्या पहिले कोई दूसरी मालूम पडती थी ?

इन्द्र–बेशक ! पहिले तुम किशोरी मालूम पडती थीं कम रोशनी और कुछ लज्जा के कारण यद्यपि बहुत अच्छी

---

* एक प्रकार का बर्तन।

तरह तुम्हारी सूरत रात को देखने में नहीं आई तथापि मौके मौक पर कई दफे निगाह पड ही गई थी अस्तु किशोरी के सिवाय दूसरी होन का गुमान भी नहीं हा सकता था। मगर सच तो यों है कि तुमने मुझे बडा धोखा दिया !

कम–(जिसे अब इसी नाम से लिखना उचित है) मैंने धोखा नहीं दिया बल्कि आप मुझे इस बात का जवाब तो दीजिये कि अगर आपने मुझे किशोरी समझा था तो इतनी ढिठाई करने की हिम्मत कैसे पडी ? क्योंकि किशोरी आपकी स्त्री नहीं थी !

इन्द्र–क्या पागलपन की सी बातें कर रही हो। अगर किशोरी मेरी स्त्री नहीं थी तो क्या तुम मेरी स्त्री थीं ?

कम–अगर आपने मुझे किशोरी समझा था तो आपको मेरे पास से उठ जाना चाहिए था। जब कि आप जानते हैं कि किशोरी कुमार के साथ ब्याही गई है तो आप को उसके पास बैठने या उससे बातचीत करने का क्या हक था ?

इन्द्र–तो क्या मैं इन्द्रजीतसिह नहीं हू ?,बल्कि उचित तो यह था कि तुम मेरे पास से उठ जातीं। जब तुम कमलिनी थीं तो तुम्हें पराये मर्द के पास बैठना भी न चाहिए था।

कम–(ताज्जुब और कुछ क्रोध का चेहरा बना कर) फिर आप वही बातें कहे जाते हैं ? आप अपने को समझ ही क्या रहे है ? पहिले आप आईने में अपनी सूरत देखिए और तब कहिए कि आप किशोरी के पति हैं या कमलिनी के ! (आले पर से आइना उठा और कुमार को दिखा कर) बतलाइये आप कौन हैं ? और मैं क्यों आपके पास से उठ जाती ?

अब तो कुमार के ताज्जुब का कोई हद्द न रहा क्योंकि आईने में उन्होंने अपनी सूरत में फर्क पाया। यह तो नहीं कह सकते थे कि किस आदमी की सूरत मालूम पडती है क्योंकि ऐस आदमी को कभी देखा भी न था मगर इतना जरूर कह सकते थे कि सूरत बदल गई और अब मैं इन्द्रजीतसिह नहीं मालूम पडता। इन्द्रजीतसिह समझ गए कि किसी ने मेरे और कमलिनी के साथ चालबाजी करके दोनों का धर्म नष्ट किया और इसमें बेचारी कमलिनी का कोई कसूर नहीं है मगर फिर भी कमलिनी को आज का सामान देख कर चौकना चाहिए था। हॉ ताज्जुब की बात यह है कि इस घर में आने के पहिले मुझे किसी ने टोका भी नहीं ! तो क्या इस घर में आने के बाद मेरी सूरत बदली गई ? मगर ऐसा भी क्योंकर हा सकता है ? इत्यादि बातें सोचते हुए कुमार कमलिनी का मुह देखने लगे। कमलिनी ने आईना हाथ से रख दिया और पूछा अब बताइये आप कौन हैं ! इसके जवाब में इन्द्रजीतसिह ने कहा, 'अब मैं भी अपना मुह धो डालू तो कहू।

इतना कह कर कुमार ने भी जल से अपना चेहरा साफ किया और रूमाल से पोछने के बाद कमलिनी की तरफ देख के कहा– अब तुम ही बताओ कि मैं कौन हू ?

कम–अरे यह क्या हुआ ! तुम तो बेशक बडे कुमार हो ! मगर तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया ? तुम्हें जरा भी धर्म का विचार न हुआ !! बताओ अब मैं किस लायक रह गई और क्या कर सकती हू ? लोगों को कैसे अपना मुह दिखाऊँगी और इस दुनिया में क्योंकर रहूगी ?

इन्द्र–जिसने ऐसा किया वह बेशक मारे जाने लायक है। मैं उसे कभी न छोडूगा क्योंकि ऐसा होने से मेरा भी धर्म नष्ट हुआ और इस बदनामी को मैं कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता मगर यह तो बताओ कि आज का सामान देखकर तुम्हारे दिल में किसी प्रकार का शक पैदा न हुआ ?

कम–क्योंकर शक पैदा हो सकता था जब कि आप ही की तरह मेरे लिए भी 'सोहागरात' आज ही तै की गई थी ! मैं नहीं कह सकती कि दूसरी तरफ का क्या हाल है ! ताज्जुब नहीं कि जिस तरह मैं धोखे में डाली गई उसी तरह किशोरी के साथ भी बेईमानी की गई हो और आपके बदले में किशोरी मेरे पति के पास पहुचाई गई हो !!'

ओ हो ! कमलिनी की इस बात ने तो कुमार की रही सही अक्ल भी खो दी ! जिस बात का अब तक कुमार के दिल में ध्यान भी न था उसे समझा कर तो कमलिनी ने अनर्थ कर दिया। ब्याह हो जाने पर भी किशोरी किसी दूसरे मर्द के पास भेजी जाय क्या इस बात को कुमार बर्दाश्त कर सकते थे ? कभी नहीं ! सुनने के साथ ही मारे क्रोध के उनका शरीर कापने लगा और वे घबडा कर कमलिनी से बोले यह तो तुमने ठीक कहा ! ताज्जुब नहीं कि ऐसा हुआ हो। लेकिन अगर ऐसा हुआ होगा तो मैं उन दोनों को इस दुनिया से उठा दूगा !'

इतना कहकर कुमार ने अपनी तलवार उठा ली जो गद्दी पर पडी हुई थी और कमरे के बाहर जाने लगे। उस समय कमलिनी ने कुमार का हाथ पकड लिया और कहा 'कृपानिधान, जरा मेरी एक बात का जवाब दे दीजिये तो यहॉ से जाइये !'

इन्द्र–कहो।

कम–आपका धर्म नष्ट हुआ खैर कोई चिन्ता नहीं क्योंकि धर्मशास्त्र में मर्दों के लिए कोई कडी पाबन्दी नहीं लगाई गई है, मगर औरतों को तो किसी लायक नहीं छोडा है। आपके लिए तो प्रायश्चित्त है मगर मेरे लिए तो कोई प्रायश्चित्त भी नहीं जिसे कर मैं सुधर जाऊँगी इतना जानकर भी मेरे धर्म नष्ट होने पर आपको उतना रज या क्रोध नहीं हुआ

जितना यह सोचकर हुआ कि किशोरी की भी ऐसी ही दशा हुई होगी ! ऐसा क्यों ? क्या मेरा पति कमजोर और नामर्द है ? क्या वह भी आपकी ही तरह क्रोध में न आया होगा ? क्या इसी तरह वह भी तलवार लेकर मेरी और आपकी खोज में न निकला होगा ? आप जल्दी क्यों करते है, वह खुद यहा आता होगा क्योंकि वह आपसे ज्यादे क्रोधी है मै तो खुद उसके सामने अपनी गर्दन झुका दूगी !!

कुमार को क्रोध पर क्रोध रज पर रज और अफसोस पर अफसोस होता ही जाता था। कमलिनी की इस आखिरी बात ने कुमार के दिल में दूसरा ही रग पैदा कर दिया। उन्होंने घबडाकर एक लम्बी सास ली और ऊपर की तरफ मुह करके कहा विधाता! तूने यह क्या किया ? मैंने कौन सा ऐसा पाप किया था जिसके बदल में इस खुशी को ऐसे रज के साथ तूने बदल दिया अब मैं क्या करूँ ? क्या अपने हाथ से अपना गला काटकर निश्चिन्त हो जाऊँ ? मुझ पर आत्मघात का दोष तो नहीं लगाया जायगा !!"

इन्द्रजीतसिह ने इतना ही कहा था कि कमरे का दर्वाजा जिसे कुमार बन्द समझते थे खुला और किशोरी तथा कमला अन्दर आती हुई दिखाई पडी। कुमार ने समझा कि बेशक किशोरी इसी ढग का उलाहना लेकर आई होगी मगर उन दोनों के चेहरे पर हँसी देख कर कुमार को ताज्जुब हुआ और यह देखकर ताज्जुब और भी बढ गया कि किशोरी और कमला को देखकर कमलिनी खिलखिला कर हँस पडी और किशोरी से बोली— "लो बहिन आज मैंने तुम्हारे पति को अपना बना लिया !" इसके जवाब में किशोरी बोली तुमने पहिले ही अपना बना लिया था, आज की बात ही क्या है !!"

*बाईसवा भाग समाप्त *

चन्द्रकान्ता सन्तति

तेईसवां भाग

पहिला बयान

सोहागरात के दिन कुँअर इन्द्रजीतसिह जैसे तरद्दुद और फेर में पड गये थे ठीक वैसा तो नहीं मगर करीब करीब उसी ढग का बखेडा कुँअर आनन्दसिह के साथ भी मचा अर्थात उसी दिन रात के समय जब आनन्दसिह और कामिनी का एक कमरे में मेल हुआ तो आनन्दसिह छेडछाड करके कामिनी की शर्म को तोड़ने और कुछ बातचीत करने के लिए उद्योग करने लगे मगर लज्जा और सकोच के बोझ से कामिनी हर तरह दबी जाती थी। आखिर थोड़ी देर की मेहनत और चालाकी तथा बुद्धिमानी की बदौलत आनन्दसिह ने अपना मतलब निकाल ही लिया और कामिनी भी जो बहुत दिनों से दिल के खजाने में आनन्दसिह की मुहब्बत को हिफाजत के साथ छिपाये हुए थी लज्जा और डर को बिदाई का बीडा दे कुमार से बातचीत करने लगी।

जब रात लगभग दो घण्टे के बाकी रह गई तो कामिनी जाग पडी और घबराहट के साथ चारो तरफ देख के सोचने लगी कि कहीं सवेरा तो नहीं हो गया क्योंकि कमरे के सभी दर्वाजे बन्द रहने के कारण आसमान दिखाई नहीं देता था। उस समय आनन्दसिह गहरी नींद में सो रहे थे और उनके खुर्राटे की आवाज से मालूम होता था कि वे अभी दो तीन घटे तक बिना जगाये नहीं जाग सकते अस्तु कामिनी अपनी जगह से उठी और कमरे की कई छोटी छोटी खिडकियों (छोटे दर्वाजों) में से जो मकान के पिछली तरफ पडती थीं एक खिडकी खोल कर आसमान की तरफ देखने लगी। इस तरफ

से पतित-पावनी भगवती जहनवी की तरल तरगों की सुन्दर छटा दिखाई देती थी जो उदास से उदास और बुझे दिल को भी एक दफ प्रसन्न करने की सामर्थ्य रखती थी परन्तु इस समय अधकार के कारण कामिनी उस छटा का नहीं देख सकती थी और इस सबब से आसमान की तरफ देख कर भी वह इस बात का पता न लगा सकी कि अब रात कितनी बाकी है, मगर सवेरा होने में अभी देर है इतना जान कर उसके दिल को कुछ भरोसा हुआ। उसी समय सरकारी पहरे वाले ने घड़ी बजाई जिसे सुन कामिनी ने निश्चय कर लिया कि रात अभी दो घटे से कम बाकी नहीं है उसने उसी तरफ की एक और खिडकी खोल दी और तब उस जगह चली गई जहाँ चौकी के ऊपर गगा-जमुनी लोटे में जल रक्खा हुआ था। उसी चौकी पर से एक रूमाल उठा लिया और उसे गीला करके अपना मुँह अच्छी तरह पोंछने अथवा धोने के बाद रूमाल खिड़की के बाहर फेंक दिया और तब उस जगह चली आई जहाँ आनन्दसिह गहरी नींद में सो रहे थे।

कामिनी न आचल के कपडे से एक मामूली बत्ती बनाई और नाक में डाल कर उसके जरिये से दो तीन छींकें मारीं जिसकी आवाज से आनन्दसिह की आँख खुल गई और उन्होंने अपन पास कामिनी को बैठे हुए देख कर ताज्जुब से कहा, 'है, तुम बैठी क्यों हो ? खैरियत तो है !"

कामिनी–जी हाँ मेरी तबीयत तो अच्छी है मगर तरददुद और सोच के मारे नींद नहीं आ रही है। बहुत देर से जाग रही हू।

आनन्द–(उठ कर) इस समय भला कौन से तरद्दुद और सोच ने तुम्हें आ घेरा ?

कामिनी–क्या कहू, कहते हुए भी शर्म मालूम पडती है ?

आनन्द–आखिर कुछ कहा तो सही, शर्म कहाँ तक करोगी ?

कामिनी–खैर मैं कहती हू मगर आप बुरा तो नहीं मानेंगे !

आनन्द–मैं कुछ भी बुरा न मानूगा, तुम्हें जो कुछ कहना है कहो।

कामिनी–बात केवल इतनी ही है कि मै छोटे कुमार से एक दिल्लगी कर बैठी हूँ मगर आज उस दिल्लगी का भेद जरूर खुल गया होगा इसलिए साच रही हू कि अब क्या करूँ ? इस समय कामिनी बहिन से भी मुलाकात नहीं हो सकती जो उनको कुछ समझा बुझा देती।

आनन्द–(ताज्जुब में आकर) तुमने कोई भयानक सपना तो नहीं देखा जिसका असर अभी तक तुम्हारे दिमाग में घुसा हुआ है ? मामला क्या है ? तुम कैसी बातें कर रही हो !

कामिनी–नहीं नहीं कोई विशेष बात नहीं है और मैने कोई भयानक सपना भी नहीं दखा, बात कवल इतनी ही है कि मैं हसी हसी में छोटे कुमार से कह चुकी हू कि 'मेरी शादी अभी तक नहीं हुई है और मैं प्रतिज्ञा कर चुकी हू कि ब्याह कदापि न करूँगी'। अब आज ताज्जुब नहीं कि कामिनी बहिन ने मेरा सच्चा भेद खोल दिया हो और कह दिया हो कि 'लाडिली की शादी तो कमलिनी की शादी के साथ ही साथ अर्थात दानों की एक ही दिन हो चुकी है और आज उसकी भी सोहगरात है। अगर ऐसा हुआ तो मुझे बडी शम

आनन्द–(ताज्जुब और घबराहट से) तुम तो पागलों की सी बातें कर रही हो। आखिर तुमने अपने को और मुझका समझा ही क्या है ? जरा घूघट हटा कर बातें करो। तुम्हारा मुँह तो दिखाई ही नहीं देता !!

कामिनी–नहीं मुझे इसी तरह बैठे रहने दीजिए। मगर आपने क्या कहा मैं कुछ भी नहीं समझी इसमें पागलपने की भला कौन सी बात है ?

आनन्द–तुमने जरूर काई सपना देखा है जिसका असर अभी तक तुम्हारे दिमाग में बसा हुआ है और तुम अपने को लाडिली समझ रही हो। ताज्जुब नही कि लाडिली ने तुमसे वे बातें कही हों जो उसने मुझसे दिल्लगी के ढग पर की थी।

कामिनी–मुझे आपकी बातों पर ताज्जुब मालूम पडता है। मैं समझती हू कि आप ही ने कोई अनूठा स्वप्न देखा है और यह भी देखा है कि कामिनी आपके बगल में पडी हुई है जिसका ख्याल अभी तक बना हुआ है और मुझे आप कामिनी समझ रहे हैं। भला सोचिए ता सही कि छोटे कुमार (आनन्दसिह) को छोड कर कामिनी आपके पास आने ही क्यों लगी ? कहीं आप मुझसे दिल्लगी तो नहीं कर रहे है ?

कामिनी की आखिरी बात का सुन कर आनन्दसिह बहुत बेचैन हो गय और उन्होंने घबडा कर कामिनी के मुँह से घूघट हटा दिया, मगर शमादान की रोशनी में उसका खूबसूरत चेहरा देखते ही वे चौक पड और बोले– 'है ! यह मामला क्या है ? लाडिली को मेरे पास आने की क्या जरूरत थी ? बशक तुम लाडिली मालूम पडती हो? कहीं तुमने अपना चेहरा रगा तो नहीं है ?

कामिनी–(घबराहट के ढग पर) आपकी बातें तो मरे दिल में हौल पैदा करती है ! न मालूम आप क्या कह रहे है

और इस बात को क्यों नहीं साचते कि कामिनी को आपके पास आने की जरूरत ही क्या थी !

आनन्द–(बेचैनी के साथ) पहिले तुम अपना चेहरा धो डालो तो मैं तुमसे बात करूं ! तुम मुझे जरूर धोखा दे रही हो और अपनी सूरत लाडिली की सी बना कर मेरी जान सासत में डाल रही हो ! मैं अभी तक तुम्हें कामिनी समझ रहा था और समझता हू।

कामिनी–(ताज्जुब से आनन्दसिह की सूरत देख कर) आपकी बातें तो कुछ विचित्र ढग की हो रही हैं। जब आप मुझे कामिनी समझते हैं तो अपने को भी जरूर आनन्दसिह समझते होंगे !

आनन्द–इसमें शक ही क्या है ? क्या मैं आनन्दसिह नहीं हू ?

कामिनी–(अफसोस से हाथ मल कर) हे परमेश्वर ! आज इनको क्या हो गया है !!

आनन्द–बस अब तुम अपना चेहराधो डालो तो मुझसे बातें करो तुम नहीं जानतीं कि इस समय मेरे दिल की कैसी अवस्था है !

कामिनी–ठहरिये ठहरिये मैं बाहर जाकर सभों को इस बात की खबर कर देती हू कि आपका कुछ हो गया है। मुझे आपके पास बैठते डर लगता है ! हे परमेश्वर !!

आनन्द–तुम नाहक मेरी जान का दु ख द रही हो ! पास ही तो पानी पडा है अपना चेहरा क्यों नहीं धो डालतीं। मुझे ऐसी दिल्लगी अच्छी नहीं मालूम होती, खैर अब बहुत हो गया तुम उठो !

कामिनी–मेरे चेहरे में क्या लगा है जो धो डालू ? आप ही क्यों नहीं अपना चहरा धा डालते ! क्या मुह में पानी लगा कर मैं लाडिली से काई दूसरी ही औरत बन जाऊगी ? या आप मुँह धोकरछोटे कुमार बन जायगे ?

आनन्द–(बेचैनी से बिगड कर) बस बस अब मैं बरदाश्त नहीं कर सकता और न ज्यादे दर तक ऐसी दिल्लगी सह सकता हू। मैं हुक्म देता हू कि तुम तुरन्त अपना चेहरा धो डालो नहीं तो तुम्हार साथ जबर्दस्ती की जायगी फिर पीछे दोष न देना !

यह सुनते ही कामिनी घबडाकर उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई कि 'आज भोर ही भोर ऐसी दुर्दशा में फँसी हूँ न मालूम दिन कैसा बीतेगा उस चौकी के पास चली गई जिस पर गगाजमनी लोटा जल से भरा हुआ रक्खा था और पास ही में एक बडा सा आफताबा भी था। पानी से अपना चेहरा साफ किया और दो चार कुल्ला भी करने के बाद रूमाल से मुँह पोंछ आनन्दसिह से बोली 'कहिये मैं वही हूँ कि बदल गई ?

कामिनी के साथ ही साथ आनन्दसिह भी बिछावन पर से उठ कर वहाँ तक चले आये थे जहाँ पानी और आफताबा रक्खा हुआ था। जब कामिनी ने मुँह धोकर उनकी तरफ देखा तो कुमार के ताज्जुब का कोई हद न रहा और वह पत्थर की मूरत बन कर एकटक उसकी तरफ देखते खड़े रह गये। इस समय खिड़कियों में से आसमान पर सुबह की सुफेदी फैली हुई दिखाई दे रही थी और कमरे में भी रोशनी की कमी न थी।

कामिनी–(कुछ चिढी हुई आवाज में) कहिये कहिये क्या मैं मुँह धोने से कुछ बदल गई ? आप बोलते क्यों नहीं ?

आनन्द–(एक लम्बी साँस लेकर) अफसोस ! तुम्हारे घूघट ने मुझे धोखा दिया। अगर मिलाप के पहिले तुम्हारी सूरत देख लेता तो धर्म नष्ट क्यों होता !

कामिनी–(जिसे अब हम लाडिली लिखेंगे क्योंकि वह वास्तव में लाडिली ही है) फिर भी आप उसी ढग की बातें कर रहे हैं और अभी तक अपने को छोटे कुमार समझते है ! इतना हिलने डोलने पर भी आपके दिमाग से स्वप्न का गुबार न निकला। (कमरे में लटकते हुए एक बडे आईने की तरफ उगली से इशारा करके) अब आप उसमें अपना चेहरा देख लीजिये तो मुझसे बातें कीजिये !

कुँअर आनन्दसिह भी यही चाहते थे, अस्तु वे उस आईने के सामने चले गये और बडे गौर से अपनी सूरत देखने लगे। लाडिली भी उनके साथ ही साथ उस आईने के पास चली गई और जब वे ताज्जुब के साथ आईने में अपना चेहरा देख रहे थे तो बोली 'कहिये अब भी आप अपने को छोटे कुमार ही समझते है या और कोई ?

क्रोध क साथ ही साथ शर्मिन्दगी ने भी आनन्दसिह पर अपना कब्जा कर लिया और वे घबडा कर अपनी पोशाक पर ध्यान देने लगे मगर उसमें किसी तरह की खराबी न पाकर उन्होंने पुन लाडिली की तरफ देखा और कहा 'यह क्या मामला है ? मेरी सूरत किसने बदली ?

लाडिली–(ताज्जुब और घबराहट के ढग पर) क्या आप अपनी सूरत बदली हुई समझते है ?

आनन्द–बेशक !!

लाडिली–(अफसोस के साथ हाथ मल कर) अफसोस ! अगर यह बात ठीक है तो बडा ही गजब हुआ !!

आनन्द–जरूर ऐसा ही है, मैं अभी अपना चेहरा धोता हूँ !

इतना कह कर कुँअर आनन्दसिह उस चौकी क पास चले गये जिस पर पानी रक्खा हुआ था और अपना चेहरा धाने लग। पानी पडते ही हाथ पर रग उतर आया जिस पर निगाह पडते ही लाडिली चौंकी और रज के साथ बोली बशक चेहरा रगा हुआ है ! हाय बडा ही गजब हो गया ! मै वमौत मारी गई। मेरा धर्म नष्ट हुआ। अब मै अपने पति क सामने किस मुँह से जाऊँगी और अपनी हमजोलियों की बातों का क्या जवाब दूँगी ! औरतों के लिये यह बडे ही शर्म की बात है नहीं नही, वल्कि औरतों क लिए यह घोर पातक है कि पराये मर्द का सग करें। सच ता यो है कि पराये मर्द का शरीर छू जाने से भी प्रायश्चित लगता है और बात का ता कहना ही क्या है ! हाय मै बर्बाद हो गई और कहीं की भी न रही। इसमें शक कोई नहीं कि आपन जान बूझ कर मुझ मिट्टी में मिला दिया !

आनन्द–(अच्छी तरह चेहरा धोने के बाद रूमाल स मुह पोछ कर) क्या कहा ? क्या जान बूझ कर मैने तुम्हारा धर्म नष्ट किया ?

लाडिली–बशक एसा ही है, मै इस बात की दुहाई दूँगी और लोगों से इन्साफ चाहूगी।

आनन्द–क्या मेरा धर्म नष्ट नहीं हुआ

लाडिली–मर्दों के धर्म का क्या कहना है अ उसका बिगडना ही क्या जो दस पन्द्रह ब्याह से भी ज्यादे कर सकते हैं ! बर्बादी तो औरतों के लिय है। इसमें कोई शक नहीं कि आपन जान बूझ कर मेरा धर्म नष्ट किया ! जब आप छाटे कुमार ही थे तो आपका मेरे पास से उठ जाना चाहिये था या मेरे पास बैठना ही मुनासिब न था।

आनन्द–मै कसम खा कर कह सकता हू कि मैने तुम्हारी सूरत घूंघट के सबब से अच्छी तरह नहीं देखी एक दफे ऐंचातानी में निगाह पड भी गई थी तो तुम्हें कामिनी ही समझा था और इसके लिए भी मै कसम खाता हू कि मैंने तुम्हें धोखा दने क लिए जान बूझ कर अपनी सूरत नहीं रगी है बल्कि मुझ इस बात की खबर भी नही कि मेरी सूरत किसने रगी या क्या हुआ।

लाडिली–अगर आपका यह कहना ठीक है तो समझ लीजिये कि और भी गजब हो गया ! मेरे साथ ही साथ कामिनी भी बर्बाद हा गइ हागी। जिस धर्मात्मा ने धाखा दकर मरा सग आपके साथ करा दिया है उसन कामिनी को भी जो आपके साथ ब्याही गइ है जरूर धाखा दकर मेरे पति के पलग पर सुला दिया होगा !

यह एक ऐसी बात थी जिस सुनते ही आनन्दसिह का रग बदल गया। रज और अफसोस की जगह क्रोध न अपना दखल जमा लिया और कुछ सुस्त तथा ठडी रगों में बमौके हरारत पैदा हो गई जिससे बदन कॉपने लगा और उन्होंने लाल आँखें करक लाडिली की तरफ देख क कहा– क्या कहा ? तुम्हार पति के पलग पर कामिनी ! यह किसकी मजाल है कि

लाडिली–ठहरिये ठहरिय आप गुस्से में न आइये। जिस तरह आप अपनी और कामिनी की इज्जत समझते है उसी तरह मरी और मेरे पति की इज्जत पर भी आपको ध्यान देना चाहिय। मेरी बर्बादी पर तो आपको गुस्सा न आया और कामिनी का भी मेरा ही सा हाल सुन कर आप जोश में आकर उछल पडे अपने आपे से बाहर हो गये और आपको बदला लेने की धुन सवार हो गई ! सच है दुनिया में किसी बिरले ही महात्मा को हमदर्दी और इन्साफ का ध्यान रहता है दूसरे पर जा कुछ बीती है उसका अन्दाजा किसी का तब तक नहीं लग सकता जब तक उस पर भी वैसी ही न बीते। जिसने कभी एक उपवास भी नहीं किया है वह अकाल के मारे भूखे गरीबों पर उचित और सच्ची हमदर्दी नही कर सकता यों उनके उपकार के लिए भले ही बहुत कुछ जोश दिखाये और कुछ कर भी बैठे। ताज्जुब नहीं कि हमारे बुजुर्ग और बडे लाग इसी खयाल से बहुत से व्रत चला गये हों और इससे उनका मतलब यह भी हो कि स्वय भूखे रह कर देख लो तब भूखों की कदर कर सकागे। दूसरे के गले पर छुरी चला देना कोई बडी बात नहीं है मगर अपने गल पर सूई से भी निशान नहीं किया जाता ! जो दूसरे की बहू बटियों को झाका करते हैं वे अपनी बहू बेटियों का झाका जाना सहन नहीं कर सकते। बस इसी से समझ लीजिय कि मेरी बर्बादी पर आपको अगर कुछ खयाल हुआ तो केवल इतना ही कि कसम खा कर अफसोस करने लगे और सोचने लगे कि मेरे दिल से किसी तरह इस बात का रज निकल जाय मगर कामिनी का भी मरे ही ऐसा हाल सुन कर म्यान के बाहर हो गये ! क्या यही इन्साफ है और यही हमदर्दी है ? इसी दिल को लेकर आप राजा बनेंगे और राज-काज करेंगे !!

लाडिली की जोश भरी बातें सुन कर आनन्दसिह सहम गये और शर्म ने उनकी गर्दन झुका दी। वह सचेचने लगे कि क्या करूँ और इसकी बातों का क्या जबाब दूँ ! इसी समय कमरे का दर्वाजा खुला (जो शायद धोखे में खुला रह गया होगा) और इन्द्रदव की लडकी इन्दिरा का साथ लिये हुए कामिनी आती दिखाई पडी।

लाडिली–लीजिए, कामिनी बहिन भी आ पहुची ! ताज्जुब नही कि ये भी अपना हाल कहने के लिए आई हों (कामिनी से) लो बहिन आज हम तुम्हारे बराबर हो गए !

कामिनी–बराबर नहीं, बल्कि बढ के !!

दूसरा बयान

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है। महल के अन्दर एक सजे हुए कमरे में एक तरफ रानी चन्दकान्ता चपला और चम्पा बैठी हुई हैं और उनसे थोडी ही दूर पर राजा बीरेन्दसिह गोपालसिह और भैरोसिह बैठे आपुस में कुछ बातचीत कर रहे है।

चन्द–(बीरेन्द से) सच्चा सच्चा हाल मालूम होना ता दूर रहा मुझे इस बात का किसी तरह कुछ गुमान भी न हुआ। इस समय मै दुलहिनों की सोहागरात का इन्तजाम देख सुन कर यहाँ आई और दिन भर की थकावट से सुस्त होकर पड़ रही जी में आया कि घन्टे दो घन्टे सो रहू, मगर इसी बीच में चपला बहिन आ पहुची और बोली, लो बहिन, मै तुम्हें एक अनूठा हाल सुनाती हू जिसकी अब तक हम लोगों को कुछ खबर ही न थी('बस इतना कह कर बैठ गई और कहने लगी कि कमलिनी और लाडिली की शादी तिलिस्म के अन्दर ही इन्दजीत और आनन्द के साथ हो चुकी है जिसके बारे में अब तक हम लोगों को किसी ने कुछ भी नहीं कहा इस समय लड़के (भैरोसिह) ने मुझसे कहा है'। सुनते ही मै धक्क हो गई कि या राम यह कौन सी बात थी जिसे अभी तक सब कोई छिपाये बैठे रहे !!

चपला–(भैरोसिह की तरफ इशारा करके) सामने तो बैठा हुआ है, पूछिये कि इस समय के पहिले कभी कुछ कहा था ! यद्यपि दोनों की शादियाँ इसके सामने ही तिलिस्म के अन्दर हुई थीं।

बीरेन्द–मुझे भी इस विषय में किसी ने कुछ नहीं कहा था, अभी थोडी देर हुई कि गोपालसिह ने यह सब हाल पिताजी से बयान किया तब मालूम हुआ।

चन्द–यही सुन के तो मैने आपको तकलीफ दी क्योंकि आपकी जुबानी सुने बिना मेरी दिलजमई नहीं हो सकती।

बीरेन्द–जो कुछ तुमने सुना सब ठीक है।

चन्द–मजा तो यह है कि लड़कों ने भी मुझसे इस बात की कुछ चर्चा नहीं की।

बीरेन्द–लड़कों को तो खुद ही इस बात की खबर नही है कि उनकी शादी कमलिनी और लाडिली के साथ हुई थी।

चन्द–यह तो आप और भी ताज्जुब की बात कहते है ! यह भला कैसे हो सकता है कि जिनकी शादी हो उन्ही को पता न लगे कि मेरी शादी हो गई है ? इस पर कौन विश्वास करेगा !

बीरेन्द–बात ही कुछ ऐसी हो गई थी और यह शादी जानबूझ कर किसी मतलब से छिपाई गई थी। (गोपालसिह की तरफ इशारा करके) अब ये खुलासा हाल तुमसे बयान करेंगे तब तुम समझ जाओगी कि ऐसा क्यों हुआ।

गोपाल–मै सब हाल आपसे खुलासा बयान करता हू और आशा करता हू कि आप मेरा कसूर माफ करेंगी क्योंकि यह सब मेरी ही करतूत है और मैंने ही यह शादी कराई है।

चन्द–अगर तुमने ऐसा किया तो छिपाने की क्या जरूरत थी ? क्या हम लोग तुमसे रज हो जाते ? या हमलोग इस बात को नहीं समझते कि जो कुछ तुम करोगे अच्छा ही समझ के करोगे !

गोपाल–ठीक है मगर किया क्या जाय इस बात को छिपाये बिना काम नहीं चलता था यही तो सबब हुआ कि खुद दोनों कुमारों को भी इस बात का पता न लगा कि उनकी शादी फलाने के साथ हो गई है।

चन्द–आखिर ऐसा किया क्यों गया सो तो कहो !

गोपाल–इसका सबब यह है कि एक दिन कमला मेरे पास आई और बोली कि 'मै आपसे एक जरूरी बात कहती हू जिस पर आपको विशेष ध्यान देना होगा'। मैंने पूछा– 'क्या !' इस पर उसने जवाब दिया कि कमलिनी ने जो कुछ अहसान हम लोगों पर खास करके दोनों कुमारों तथा किशोरी और कामिनी पर किये हैं वह किसी से छिपे नहीं हैं। किशोरी का ख्याल है कि 'इसका बदला किसी तरह अदा हो ही नहीं सकता और बात भी ऐसी ही है अस्तु किशोरी ने बात ही बात में अपने दिल का हाल मुझसे भी कह दिया और इस बारे में जो कुछ उसने सोच रक्खा था वह भी बयान किया। किशोरी कहती है कि अगर मै शादी न करूँ या शादी होने के पहिल ही इस दुनिया से उठ जाऊँ तो उसके अहसान और ताने से कुछ बच सकती हू। इस विषय पर जब मैंने किशोरी को बहुत कुछ समझाया तो बोली कि खैर मेरी शादी के पहिले कमलिनी की शादी कुँअर इन्दजीतसिह के साथ हो जायेगी तब मै सुख से अपनी जिन्दगी बिता सकूगी और उसके अहसान से भी हलकी हो जाऊँगी क्योंकि ऐसा होने से कमलिनी को पटरानी की पदवी मिलेगी और उसी का लडका गद्दी का मालिक समझा जायेगा। मै छोटी रानी और कमलिनी की लौंडी होकर रहूगी तभी मेरे दिल को तस्कीन होगी और मै समझूगी कि कमलिनी के अहसान का बोझ मेरे सिर से उतर गया।

चन्द–शावाश ! शावाश !

वीरेन्द–वेशक किशोरी ने वडे हौसले की और लासानी वात सोची !

चपला–वेशाक यह साधारण बात नहीं है, यह वडे कलेज वाली औरतों का काम है और इससे वढ कर किशोरी कुछ कर ही नहीं सकती थी।

गोपाल–मैंने जव कमला की जुवानी यह वात सुनी तो दग हो गया और मन में किशोरी की तारीफ करने लगा। सच तो यों है कि यह वात मेरे दिल में भी जन गई। अस्तु मैंने कमला से वादा तो कर दिया कि 'ऐसा ही होगा' मगर तरद्दुद में पड गया कि यह काम क्योंकर पूरा होगा क्योंकि यह बात वडी ही कठिन बल्कि असम्भव थी कि इन्द्रजीतसिह और कमलिनी इस राय को मजूर करें। इसके अतिरिक्त यह भी उम्मीद नहीं हो सकती थी कि हमारे महाराज इस बात को स्वीकार कर लेंगे।

भैरो–वेशक यह कठिन काम था, इन्द्रजीतसिह इस बात को कभी मजूर न करते।

गोपाल–कई दिन के सोच विचार क वाद मैंने और भैरोसिह ने मिल कर एक तर्कीव निकाल ली और किसी न किसी तरह कमलिनी और लाडिली को इन्द्रानी और आनन्दी वना कर दोनों की शादी इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह के साथ करा दी। उन दिनों कमलिनी के पिता बलभद्रसिहजी भूतनाथ की मदद से छूट कर यहा (अर्थात बगुले वाले तिलिस्मी मकान में) आ चुके थे अस्तु मै तिलिस्म के अन्दर ही अन्दर यहा आया और बलभद्रसिहजी को कन्यादान करने के लिए समझा वुझा कर जमानिया ले गया *। उस दिन भूतनाथ बहुत परेशान हुआ था और भैरोसिह मेरे साथ था। हम लोग पहले जव इस मकान में आये थे तो भूतनाथ और वलभद्रसिहजी के नाम की एक एक चीठी दोनों की चारपाई पर रख के चले गये थे। वलभद्रसिहजी की चीठी में उनकी दिलजमई के लिए एक अगूठी भी रक्खी थी जो उन्होंने ब्याह के पहिले मुझे बतौर सगुन के दी थी। इसके बाद दूसरे दिन फिर पहुचे और भूतनाथ को अपना पूरा पूरा परिचर देकर बलभद्रसिहजी को ले गये। उनके जाने का सबव भूतनाथ के ठीक ठीक कह दिया था मगर साथ ही इसके इस बात की भी ताकीद कर दी थी कि यह हाल किसी को मालूम न होवे।

इतना कहते कहते गोपालसिह कुछ देर के लिए रुके और फिर इस तरह कहने लगे –

पहिले तो मुझे इस बात की चिन्ता थी कि बलभद्रसिह मेरा कहना मानेंगे या नहीं मगर उन्होंने इस बात को वडी खुशी से मजूर कर लिया। अपनी लडकियों से मिल कर वे बहुत ही प्रसन्न हुए और हम लोगों पर जो कुछ आफतें बीत चुकी थीं उन्हें सुन सुना कर अफसोस करते रहे, फिर अपनी बीती सुना कर प्रसन्नता पूर्वक हम लोगों के काम में शरीक हुए अर्थात् हँसी खुशी के साथ उन्होंने कमलिनी और लाडिली का कन्यादान कर दिया**। इस काम में भैरोसिह को भी कम तरद्दुद नहीं उठाना पडा बल्कि दोनों कुमार इनसे रञ्ज भी हो गये थ क्योंकि इनकी जुबानी असल बातों का पता उन्हे नहीं लगता था, अस्तु शादी हो जाने के बाद इस बात का बन्दोबस्त किया गया कि इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह इस अनूठे ब्याह को भूल जायँ तथा इन्द्रानी और आनन्दी से मिलने की उम्मीद न रक्खें।

इसके बाद राजा गोपालसिह ने और भी बहुत सा हाल बयान किया जो हम सन्तति के अट्ठारहवें भाग में लिख आये है और सब बातें सुन कर अन्त में चन्द्रकान्ता ने कहा 'खैर जो हुआ अच्छा ही हुआ, हम लोगों के लिए तो जैसे किशोरी और कामिनी हैं वैसे ही कमलिनी और लाडिली हैं, मगर किशोरी के नाना को यदि इस बात का कुछ रज हो तो ताज्जुव नहीं।'

वीरेन्द–पिताजी भी यही कहते थे। मगर इसमें कोई शक नहीं कि किशोरी ने परले सिरे की हिम्मत दिखलाई !

गोपाल–साथ ही इसके यह भी समझ लीजिये कि कमलिनी ने भी इस वात को सहज ही में स्वीकार नहीं कर लिया, इसके लिए भी हम लोगों को वहुत कुछ उद्योग करना पडा। बात यह है कि कमलिनी भी किशोरी को जान से ज्यादे चाहती और मानती है।

चन्द–मगर मुझे इस बात का अफसोस जरूर है कि इन दोनों की शादी में किसी तरह की तैयारी नहीं की गई और न कुछ धूमधाम ही हुई।

इसके वाद वहुत देर तक इन सभों में वातचीत होती रही।

---

*देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति अट्ठारहवॉ भाग, आठवा वयान।

**देखिये अट्ठारहवा भाग बारहवा वयान।

तीसरा बयान

अव हम कुँअर इन्द्रजीतसिह की तरफ चलते और दखते है कि उधर क्या हो रहा है ?

किशारी और कमलिनी की वातचीत सुन कर कुँअर इन्द्रजीतसिह से रहा न गया और उन्होंने वेचैनी के साथ उन दोनों की तरफ देखकर कहा क्या तुम लोगों न मुझे सताने और दु ख देन के लिए कसम ही खा ली है ? क्यों मेरे दिल में हौल पैदा कर रही हा ? असल वात क्यों नहीं वताती ! "

किशोरी– (मुस्कराती हुई) यद्यपि मुझ आपस शर्म करनी चाहिए मगर कमला और कमलिनी बहिन ने मुझे वेहया वन दिया तिस पर आज की दिल्लगी मुझे हसाते हसाते वेहाल कर रही है। आप विगडे क्यों जाते हैं। ठहरिये, ठहरिये, जल्दी न कीजिये और समझ लीजिये कि मेरी शादी आपके साथ नहीं हुई वल्कि कमलिनी की शादी आपके साथ हुई है।

कुमार– सो कैस हा सकता है ! और मै क्योंकर ऐसी अनहोनी वात मान लूँ !

कमलिनी–अव आपकी हालत वहुत ही खराव हो गई ! क्या कहू, मै तो आपको अभी और छकाती मगर दया आती है इसलिए छोड देती हू। इसमें काई शक नहीं कि मैंने आपसे दिल्लगी की है मगर इसके लिए मैं आपसे इजाजत ले चुकी हू ! (अपनी तर्जनी उगली की अगूठी दिखाकर) आप इसे पहिचानते हैं !

कुमार– हा हा मैं इस अगूठी को खूव पहिचानता हू, तिलिस्म के अन्दर यह अगूठी मैंने इन्द्रानी को दी थी, मगर अफसास !

कमलिनी–अफसोस न कीजिए आपकी इन्द्रानी मरी नहीं वल्कि जीती जागती आपके सामने खडी है।

कमलिनी की इस आखिरी वात ने कुमार क दिल से आश्चर्य और दु ख का धोकर साफ कर दिया और उन्होंने खुशी-खुशी कमलिनी और किशोरी का हाथ पकड कर कहा क्या यह सच है ?

किशोरी– जी हा सच है।

कुमार– और जिन दानों को मैंन मरी हुई देखा था वे कौन थीं ?

किशोरी– वे वास्तव में माधवी और मायारानी थीं जो तिलिस्म के अन्दर ही अपनी वदकारियों का फल भोग कर मर चुकी थीं। आपके दिल से उस शादी का खयाल उठा देने के लिए ही उनकी लाशें इन्द्रानी और आनन्दी बना कर दिखा दी गई थीं मगर वास्तव में इन्द्रानी यहीं मौजूद है और आनन्दी लाडिली थी जो आनन्दसिह के साथ ब्याही गई थी। इस समय उधर भी कुछ ऐसा ही रग मचा हुआ है।

कुमार–तुम्हारी वातों ने इस समय मुझे प्रसन्न कर दिया। विशेष प्रसन्नता तो इस बात से होती है कि तुम खुले दिल से इन वातों को वयान कर रही हो और कमलिनी में तथा तुममें पूरे दर्जे की मुहब्बत मालूम होती है। ईश्वर इस मुहब्बत को वरावर इसी तरह वनाए रहे। (कमलिनी से) मगर तुमने मुझे वडा ही धोखा दिया एसी दिल्लगी भी कभी किसी ने नहीं सुनी होगी ! आखिर ऐसा किया ही क्यों !

कमलिनी–अव क्या सव वातें खडे खडे ही खतम होंगी और वैठने की इजाजत न दी जायगी।

कुमार–क्यों नहीं अव बैठकर हँसी दिल्लगी करने और खुशी मनाने के सिवाय और हम लोगों को करना ही क्या है !

इतना कह कर कुँअर इन्द्रजीतसिह गद्दी पर वैठ गए और हाथ पकड कर किशोरी और कमलिनी को अपने दोनों वगल में बैठा लिया। कमला आज्ञा पाकर बैठा ही चाहती थी कि दर्वाजे पर ताली बजने की आवाज आई जिसे सुनते ही वह वाहर चली गई और तुरन्त लौट कर वोली पहरे वाली लौंडी कहती है कि भैरोसिह वाहर खडे हैं।'

कुमार– (खुश होकर) हा-हा, उन्हें जल्द ले आओ इन हजरत ने मेरे साथ क्या कम दिल्लगी की है ? अब तो मै सब वातें समझ गया। भला आज उन्हें इत्तिला कराके मेरे पास आने का दिन तो नसीव हुआ !

कुमार की वातें सुन कर कमला पुन वाहर चली गई और कमलिनी तथा किशोरी कुमार के वगल से कुछ हटकर वैठ गई इतने ही में भैरोसिह भी आ पहुचे।

कुमार–आइए आइए आपने भी मुझे वहुत छकाया हे पर क्या चिन्ता है, समय मिलने पर समझ लूगा !

भैरो–(हस कर) जा कुछ किया (किशोरी की तरफ बता कर) इन्होंने किया मेरा कोई कसूर नहीं !

कुमार–खैर जो कुछ हुआ सो हुआ अव मुझ सच्चा सच्चा हाल तो सुना दो कि तिलिस्म के अन्दर इस तरह की रूखी फीकी शादी क्यों कराई गई और इस काम क अगुआ कौन महापुरुष हैं ?

भैरो–(किशोरी की तरफ इशारा करके) जो कुछ किया सब इन्होंने किया। यही सब काम में अगुआ थीं और राजा गोपालसिह इस काम में इनकी मदद कर रहे थे। उन्हीं की आज्ञानुसार मुझे भी मजबूर होकर इन लोगों का साथ देना पडा था। इसका खुलासा हाल आप कमला से पूछिए यही ठीक ठीक बतावेगी।

कुमार–(कमला से) खैर तुम्हीं बताओ कि क्या हुआ ?

कमला–(किशोरी से) कहो बहन अब तो मैं साफ कह दूँ ?

किशोरी–अब छिपाने की जरूरत ही क्या है !

कमला ने इस तरह से कहना शुरू किया किशोरी बहिन ने मुझसे कई दफे कहा कि 'तू इस बात का बन्दोबस्त कर कि किसी तरह मेरी शादी के पहिले ही कमलिनी की शादी कुमार के साथ हो जाय मगर मेरे किये इसका कुछ भी बन्दोबस्त न हो सका और कमलिनी रानी भी इस बात पर राजी होती दिखाई न दीं अस्तु मैं बात टाल कर चुपकी हो बैठी मगर मुझे इस काम में सुस्त देख कर किशोरी ने फिर मुझसे कहा कि देख कमला तू मेरी बात पर कुछ ध्यान नहीं देती मगर इसे खूब समझ रखियो कि अगर मेरा इरादा पूरा न हुआ अर्थात मेरी शादी के पहिले ही कमलिनी की शादी कुमार के साथ न हो गई तो मैं कदापि ब्याह न करूँगी बल्कि अपने गले में फाँसी लगा कर जान दे दूँगी। कमलिनी ने जो कुछ अहसान मुझ पर किये हैं उनका बदला मैं किसी तरह चुका नहीं सकती अगर कुछ चुका सकती हू तो इसी तरह कि कमलिनी को पटरानी बनाऊँ और आप उसकी लौंडी होकर रहू, मगर अफसोस है कि तू मेरी बातों पर कुछ भी ध्यान नही देती जिसका नतीजा यह होगा कि एक दिन तू रोएगी और पछताएगी।

किशोरी की इस आखिरी बात से मेरे कलेजे पर एक चोट सी लगी और मैंने सोचा कि जो कुछ यह कहती हैं बहुत ठीक है ऐसा होना ही चाहिये। आखिर मैंने राजा गोपालसिह से यह सब हाल कहा और उन्हें अपनी तरफ से भी बहुत कुछ समझाया जिसका नतीजा यह निकला कि वे दिलोजान से इस काम के लिये तैयार हो गये। जब वे खुद तैयार हो गये तो फिर क्या था ? सब काम खूबी के साथ होने लगा।

राजा गोपालसिह ने इस विषय में कमलिनीजी से कहा और इन्हें बहुत समझाया मगर ये राजी न हुईं और बोलीं कि आपकी आज्ञानुसार मैं कुमार से ब्याह कर लेने के लिये तैयार हूँ मगर यह नही हो सकता कि किशोरी से पहिले ही अपनी शादी करके उसका हक मार दूँ, हा किशोरी की शादी हो जाने के बाद जो कुछ आप आज्ञा देंगे मैं करूँगी। यह जवाब सुन कर गोपालसिहजी ने फिर कमलिनी को समझाया और कहा कि अगर तुम किशोरी की इच्छा पूरी न करोगी तो वह अपनी जान दे देगी फिर तुम ही सोच लो कि उसके मर जाने से कुमार की क्या हालत होगी और तुम्हारी इस जिद्द का क्या नतीजा निकलेगा ?

गोपालसिहजी की इस बात ने (कमलिनी की तरफ बता के) इन्हें लाजवाब कर दिया और ये लाचार हो शादी करने पर राजी हो गईं। तब राजा साहब ने भैरोसिह को मिलाया और ये इस बात पर राजी हो गये। इसके बाद यह सोचा गया कि कुमार इस बात को स्वीकार न करेंगे अस्तु उन्हें धोखा देकर जहा तक जल्द हो तिलिस्म के अन्दर ही कमलिनी के साथ उनकी शादी कर देनी चाहिये क्योंकि तिलिस्म के बाहर हो जाने पर हम लोग स्वाधीन न रहेंगे और अगर बडे महाराज इस बात को सुन कर अस्वीकार कर देंगे तो फिर हम लोग कुछ भी न कर सकेंगे, इत्यादि।

'बस यही सबब हुआ कि तिलिस्म के अन्दर आपसे तरह तरह की चालबाजियां खेली गईं और भैरोसिह ने भी आप से सब भेद छिपा रक्खा। खुद राजा गोपालसिहजी तिलिस्म के अन्दर आये और बुड्ढे दारोगा बन कर इस काम में उद्योग करने लगे।'

कुमार–(बात रोक कर ताज्जुब के साथ) क्या खुद गोपालसिह बुड्ढे दारोगा बने थे ?

कमला–जी हा वह बुड्ढी मैं बनी थी, तथा किशोरी और इन्दिरा आदि ने लडकों का रूप धरा था।

कम–(हँस कर) यह बुड्ढी भैरोसिह की जोरू बनी थी। अब इस बात को सच कर दिखाना चाहिये अर्थात् इस बुड्ढी को भैरोसिह के गले मढना चाहिये।

कुमार–जरूर ! (कमला से) तब तो मैं समझता हू कि 'मकरन्द इत्यादि के बारे में जो कुछ भैरोसिह ने बयान किया था वह सब झूठ था ?

कमला–हा बेशक उसमें बारह आने से ज्यादा झूठ था।

कुमार–खैर तब क्या हुआ ? तुम आगे बयान करो।

कमला ने फिर इस तरह बयान करना शुरू किया –

भैरोसिह जान बूझ कर इसलिये पागल बना कर आपको दिखाये गये थे जिसमें एक तो आप धोखे में पड जाय और समझें कि हमारे विपक्षी लोग भी वहा रहते हैं, दूसरे आपसे मिलाप हो जाने पर यदि भैरोसिह से कभी कुछ भूल भी

हो जाय ता आप यही समझें कि अभी तक इनके दिमाग में पागलपन का कुछ धूआ बचा हुआ है। जिस समय हम लाग तिलिस्म के अन्दर पहुचाए गये थे उस समय राजा गोपालसिह ने अपनी खास तिलिस्मी किताब कमलिनीजी का दे दी थी जिससे तिलिस्म का बहुत कुछ हाल इन्हें मालूम हो गया था और इनकी मदद से हम लोग जो चाहते थे करते थे तथा किसी बात की तकलीफ भी नहीं होती थी और खान पीने की सभी चीजें राजा गोपालसिहजी पहुचा दिया करते थे।

भैरोसिह जब पागल बनने के बाद आपसे मिले थे तो अपना ऐयारी का बटुआ जान बूझ कर कमलिनीजी के पास रख गये थे। फिर जब भैरोसिह को बुलाने की इच्छा हुई तो उन्हीं का बटुआ और पील मकरन्द की लडाई दिखा कर वे आपसे अलग कर लिये गय कमलिनी पीले मकरन्द की सूरत में थी और मैं उनका मुकाबला कर रही थी कही बदी और मेल की लड़ाई थी इसलिए आपने समझा होगा कि हम दानों बड़े बहादुर और लड़ाके हैं। अस्तु इस मामले के बाद जब इन्दानी और आनन्दी वाले बाग में भैरोसिह आपसे मिले तब भी इन्होंने बहुत सी झूठ बातें बना कर आपस कहीं और जब आप इनसे रज हुए तो आपका सग छोड कर फिर हम लोगों की तरफ चले आये *। आप दानों भाई उससमय शादी करने से इन्कार करते थे मगर मजबूरी और लाचारी ने आपका पीछा न छोडा, इसके अतिरिक्त खुद इन्द्रानी और आनन्दी ने भी आप दोनों को किशोरी और कामिनी की चीठी दिखा कर खुश कर लिया था। यहॉ आकर आपने सुना ही है कि कमलिनीजी के पिता बलभद्रसिहजी जिन्हें भूतनाथ छुडा लाया था यकायक गायब हो गए और कई दिनां क बाद लौट कर आये।

कुमार–हा सुना था।

कमला–बस उन्हें राजा गोपालसिह ही यहॉ आकर ले गय थे और खुद बलभद्रसिहजी ने ही अपनी दोनों लडकियों का कन्यादान किया था।

कुमार–(हसते हुए) ठीक है अब मै सब बातें समझ गया और यह भी मालूम हो गया कि केवल धोखा देने के लिए ही माधवी और मायारानी जो पहिले ही मर चुकी थीं इन्द्रानी और आनन्दी बनाकर दिखाई गई थी।

भैरो–जी हॉ।

कुमार–मगर नानक वहॉ क्योंकर पहुचा था ?

भैरो–आप सुन चुके है कि तारासिह न नानक को कैसा छकाया था, अस्तु वह हम लोगों से बदला लेने की नीयत करके वहॉ गया और मायारानी से मिल गया था कमलिनी ने वहा का रास्ता उसे बता दिया था उसी का यह नतीजा निकला। जब मायारानी राजा गोपालसिह के कब्जे में पड गई तब राजा साहब ने नानक को बहुत कुछ बुरा भला कहा यहॉ तक कि नानक उनके पैरो पर गिर पडा और उनसे अपने कसूर की माफी मॉगी। उस समय राजा साहब ने उसका कसूर माफ करके उसे अपने साथ रख लिया। तब से वह उन्हीं के कब्जे में रहा और उन्हीं की आज्ञानुसार आपको धोखे में डालन की नीयत से मायारानी और माधवी की लाश के पास दिखाई दिया था। वे दोनों पहिले ही मारी जा चुकी थीं मगर आपका भुलावा देने की नीयत से उनकी लाश इन्द्रानी और आनन्दी बना कर दिखाई गई थी। इसके अतिरिक्त और जो कुछ हाल है वह आपको राजा गोपालसिहजी की जुबानी मालूम होगा।

कुमार–ठीक है मै ईश्वर को धन्यवाद देता हू कि मायारानी और माधवी की लाश को इन्द्रानी और आनन्दी की सूरत में देख कर जो कुछ रज मुझे हुआ था और आज तक इस घटना का जो कुछ असर मेरे दिल में था वह जाता रहा। अब मैं अपने को खुशनसीब समझने लगा। (कमलिनी से) अच्छा यह बताओ कि रात की दिल्लगी तुमने किस तौर पर की ? मेरी समझ में कुछ न आया और न इसी बात का पता लगा कि मेरी सूरत क्योंकर बदल गई ?

कमलिनी–इस बात का जवाब आपको कमला से मिलेगा।

कमला–यह ता एक मामूली बात है। समझ लीजिये कि जब आप सो गए तो इन्हीं (कमलिनी) ने आपको बेहोश करके आपकी सूरत बदल दी *।

कुमार–ठीक है मगर ऐसा क्यों किया ?

कमला–एक ता दिल्लगी के लिए और दूसरे किशोरी के इस खयाल से कि जिसकी शादी पहिले हुई है उसी की

---

*दखिये अट्ठारहवा भाग ग्यारहवा बयान।

*यही काम उधर लाडिली ने किया था। खुद तो पहिले ही से कामिनी बनी हुई थी मगर जब कुमार सो गये तब उन्हें बेहोश करके उनकी सूरत बदल दी और सुबह को उनके जागने के पहिले ही अपना चेहरा साफ कर लिया।

सुहागरात भी पहिले होनी चाहिये।

कुमार--(हँस कर और किशोरी की तरफ देख कर) अच्छा तो यह सब आपकी बहादुरी है। खैर आज आपकी पारी होगी ही समझ लूगा !

किशोरी न शर्मा कर सिर नीचा कर लिया और कुमार की बात का कुछ भी जवाब न दिया।

इसके बाद व लोग कुछ दर तक हँसी खुशी की बातें करते रहे और तब अपने अपने ठिकाने चले गय।

कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह की शादी के बाद कई दिनोंतकहँसी खुशी का जलसा बराबर बना रहा क्योंकि इस शादी के आठवें ही दिन कमला की शादी भैरोंसिह के साथ और तारासिह की शादी इन्दिरा के साथ हो गई और इस नाते को भूतनाथ तथा इन्ददेव ने बडी खुशी के साथ मजूर कर लिया।

इन सब कामों से छुट्टी पाकर महाराज ने निश्चय किया कि अब पुन उसी बगुले वाले तिलिस्मी मकान में चल कर कैदियों का मुकदमा सुना जाय अस्तु आज्ञानुसार बाहर के आये हुए मेहमान लोग हँसी खुशी के साथ बिदा किए गये और फिर कई दिनों तक तैयारी करने के बाद सभों का डेरा कूच हुआ और पहिले की तरह पुन वह तिलिस्मी मकान हरा भरा दिखाई देने लगा। कैदी भी उसी मकान के तहखानों में पहुँचाये गये और सबका मुकदमा सुनने की तैयारी होन लगी।

चौथा बयान

अब हम थोडा सा हाल नानक और उसकी मा का बयान करते है जो हर तरह से कसूरवार होने पर भी महाराज की आज्ञानुसार कैद किये जान से बच गये और उन्हें केवल देश निकाले का दण्ड दिया गया।

यद्यपि महाराज ने उन दानों पर दया की और उन्हें छोड दिया मगर यह बात सर्वसाधारण को पसन्द न आई। लोग यही कहते रहे कि 'यह काम महाराज ने अच्छा नहीं किया और इसका नतीजा बहुत बुरा निकलेग । आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात् नानक न इस अहसान को भूल कर फसाद करने और लोगों की जान लेने पर कमर बाधी।

जब नानक की मां और नानक को देश निकाले का हुक्म हा गया और इन्द्रदव क आदमी इन दोनों को सरहद क पार करके लौट आये तब ये दोनों बहुत ही दु खी और उदास हो एक पेड के नीचे बैठ कर सोचन लगे कि अब क्या करना चाहिये। उस समय सवेरा हो चुका था और सूर्य की लालिमा पूरब तरफ आसमान पर फैल रही थी।

राम--कहो अब क्या इरादा है ? हम लोग तो बडी मुसीबत में फँस गए !

नानक--बेशक मुसीबत में फँस गए और बिल्कुल कगाल कर दिये गए। तुम्हारे जेवरों के साथ ही साथ मेर हर्बे भी छीन लिए गये और हम इस लायक भी न रहे कि किसी ठिकाने पहुच कर रोजी के लिए कुछ उथोग कर सकते।

राम--ठीक है मगर मैं समझती हू कि अगर हम लाग किसी तरह नन्हों के यहा पहुँच जायगे तो खाने का ठिकाना हो जायेगा और उससे किसी तरह की मदद भी ले सकेंगे।

नानक--नन्हों के यहाँ जाने से क्या फायदा हागा ? वह तो खुद गिरफ्तार होकर कैदखाने की हवा खा रही होगी ! हा उसका भतीजा बेशक बचा हुआ हे जिसे उन लागों ने छोड दिया और जो नन्हों की जायदाद का मालिक बन बैठा हागा मगर उससे किसी तरह की उम्मीद मुझको नहीं हों सकती है।

रामदेई--ठीक है मगर नन्हों की लौडियों में से दो एक ऐसी हैं जिनसे मुझे मदद मिल सकती है।

नानक---मुझ इस बात की भी उम्मीद नहीं है इसके अतिरिक्त वहा तक पहुचने के लिए भी तो समय चाहिये यहाँ ता एक शाम की भूख बुझाने के लिए पल्ले में कुछ नहीं है।

राम--ठीक है मगर क्या तुम अपन घर भी मुझे नहीं ले जा सकते ? वहा तो तुम्हारे पास रुपये पैसे की कमी नहीं होगी !

नानक--हा यह हो सकता है वहा पहुचने पर फिर मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती मगर इस समय ता वहा तक पहुँचना भी कठिन हो रहा है। (लम्बी सास लेकर) अफसोस मरा ऐयारी का बटुआ भी छीन लिया गया और हम लोग इस लायक भी न रह गये कि किसी तरह सूरत बदल कर अपने को लागों की आखों स छिपा लेते।

राम--खैर जो होना था सो हा गया अब इस समय अफसोस करने स काम न चलेगा। सब जेवर छिन जाने पर भी मेरे पास थोडा सा साना बचा हुआ है अगर इसमें कुछ काम चले तो

नानक--(चौंक कर) क्या कुछ है !!

रामदेई--हाँ !

इतना कह कर रामदेई ने धोती के अन्दर छिपी हुई सोने की एक करधनी निकाली और नानक के आगे रख दी।

नानक--(करधनी को हाथ में लेकर) बहुत है, हम लोगों को घर तक पहुँचा देने के लिए काफी है, और वहाँ पहुचने पर किसी तरह की तकलीफ न रहेगी क्योंकि वहाँ मेरे पास खाने पीने की कमी नहीं है।

रामदेई–तो क्या वहा चल कर इन बातों को भूल

नानक---(बात काट कर) नहीं नहीं यह न समझना कि वहा पहुँच कर हम इन बातों को भूल जायगे और बेकार बैठे टुकडे तोडेगे बल्कि वहाँ पहुँच कर इस बात का बन्दोबस्त करेगे कि अपने दुश्मनों से बदला लिया जाय।

रामदेई–हा मेरा भी यही इरादा है, क्योंकि मुझे तुम्हारे बाप की बेमुरौवती का बड़ा रज है जिसमें हम लोगों को दूध की मक्खी की तरह एक दम निकाल कर फेंक दिया और पिछली मुहब्बत का कुछ ख्याल न किया। शान्ता और हरनामसिह को पाकर ऐंठ गया और इस बात का कुछ भी ख्याल न किया कि आखिर नानक भी तो उसका ही लड़का है और वह ऐयारी भी जानता है। |

नानक--(जोश के साथ) बेशक यह उसकी बेईमानी और हरमजदगी है ! अगर वह चाहता तो हम लोगों को बचा सकता था।

रामदेई–बचा लेना क्या, यह जो कुछ किया सब उसी ने तो किया। महाराज ने तो हुक्म दे ही दिया था कि भूतनाथ की इच्छानुसार इन दोनों के साथ बर्ताव किया जाय'।

नानक–बेशक ऐसा ही है ! उसी कम्बख्त ने हम लोगों क साथ एसा सलूक किया। मगर क्या चिन्ता है इसका बदला लिये बिना मै कभी न छोडूगा।

रामदेई–(ऑसू बहा कर) मगर तरी बातों पर मुझे विश्वास नहीं होता क्योंकि तेरा जोश थोडी ही देर का होता है।

नानक–(क्रोध के साथ रामदेई के पैरों पर हाथ रख के) मै तुम्हारे चरणों की कसम खाकर कहता हूँ कि इसका बदला लिए बिना कभी न रहूगा।

रामदेई–भला मै भी तो सुनू कि तुम क्या बदला लोगे ? मेरे ख्याल से तो वह जान से मार दने लायक है।

नानक–ऐसा ही होगा ऐसा ही होगा ! जो तुम कहती हो वही करूगा बल्कि उसक लडके हरनामसिह को भी यमलोक पहुँचाऊँगा !!

रामदेई–शाबाश ! मगर मेरा चित्त तब तक प्रसन्न न होगा जब तक शान्ता का सिर अपने तलवों से न रगडने पाऊँगी !

नानक–मै उसका सिर भी काट कर तुम्हारे सामने लाऊगा और तब तुमसे आशीर्वाद लूगा।

रामदेई–शाबाश, ईश्वर तेरा भला करें ! मै समझती हू कि इन बातों के लिए तू एक दफे फिर कसम खा जिसमें मेरी पूरी दिलजमई हो जाय।

नानक–(सूर्य की तरफ हाथ उठा कर) मै त्रिलोकीनाथ के सामने हाथ उठा कर कसम खाता हू कि अपनी माँ की इच्छा पूरा करूँगा और जब नक ऐसा न कर लूगा अन्न न खाऊँगा।

रामदेई–(नानक की पीठ पर हाथ फेर कर) बस बस, अब मै प्रसन्न हो गई और मेरा आधा दु ख जाता रहा।

नानक–अच्छा तो फिर यहाँ से उठो। (हाथ का इशारा करके) किसी तरह उस गॉव में पहुँचना चाहिये फिर बन्दोबस्त होता रहेगा।

दोनों उठे और एक गॉव की तरफ रवाना हुए जो वहाँ से दिखाई दे रहा था।

पॉचवॉ बयान

पाठक आपने सुना कि नानक ने क्या प्रण किया ? अस्तु अब यहॉ पर हम यह कह देना उचित समझते हैं कि नानक अपनी मॉ को लिये हुए जब घर पहुँचा तो वहॉ उसने एक दिन के लिए भी आराम न किया। ऐयारी का बटुआ तैयार करने के बाद हर तरह का इन्तजाम करके और चार पॉच शागिर्दों और नौकरों को साथ ले के वह उसी दिन घर के बाहर निकला और चुनार की तरफ रवाना हुआ। जिस दिन कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह की बारात निकलने वाली थी उस दिन वह चुनार की सरहद में मौजूद था। बारात की कैफियत उसने अपनी ऑखों से देखी थी और इस बात की फिक्र में भी लगा हुआ था कि किसी तरह दो चार कैदियों को कैद से छुडाकर अपना साथी बना लेना चाहिये और मौका मिलने पर राजा गोपालसिह को भी इस दुनिया से उठा देना चाहिये।

अब हम कुअर इन्द्रजीतसिह और आनन्दसिह का हाल बयान करते है।

दोपहर दिन का समय है और सब कोई भोजन इत्यादि से निश्चिन्त हो चुके है। एक सजे हुए कमरे में राजा गोपालसिह और भरतसिह कुअर आनन्दसिह भैरोसिह और तारासिह बैठे हुए-हॅसी खुशी की बातें कर रहे हैं।

गोपाल–(भरतसिह से) क्या मुझे स्वप्न में भी इस बात की उम्मीद हो सकती थी कि आपसे किसी दिन मुलाकात होगी ? कदापि नहीं क्योंकि लोगों के कहने पर मुझे विश्वास हो गया था कि आप जगल में डाकुओं के हाथ से मारे गए

भरत–और इसका बहुत बडा सवब यह था कि तव तक दारोगा की वेईमानी का आपको पता न लगा था, उसे आप ईमानदार समझते थे और उसी ने मुझे कैद किया था।

गोपाल–बेशक यही बात है मगर खैर ईश्वर जिसका सहायक रहता है वह किसी के बिगाडे नहीं विगड सकता। देखिए मायारानी ने मेरे साथ क्या कुछ न किया मगर ईश्वर ने मुझे वचा लिया और साथ ही इसके बिछुडे हुओं को भी मिला दिया !

भरत–ठीक है मगर मेरे प्यारे दोस्त, मैं कह नहीं सकता कि कम्बख्त दारोगा ने मुझे कैसी कैसी तकलीफें दी हैं और मजा तो यह है कि इतना करने पर भी वह वरावर अपने को निर्दोष ही बताता रहा। अस्तु जब मै अपना हाल बयान करूँगा तव आपको मालूम होगा कि दुनिया में कैसे कैसे निमकहराम और सगीन लोग होते हैं और बदों के साथ नेकी करने का नतीजा बहुत बुरा होता है।

गोपाल–ठीक है ठीक है इन्हीं वातों को सोच कर भैरोसिह वार बार मुझसे कहते हैं कि 'आपने नानक को सूखा छोड दिया सो अच्छा नहीं किया वह बद है और बदों के साथ नेकी करना वैसा ही है जैसा नेकों के साथ बदी करना।

भरत–भैरोसिह का कहना वाजिब है, मै उनका समर्थन करता हू।

भैरो–कृपानिधान सच तो यों है कि नानक की तरफ से मुझे किसी तरह बेफ्रिकी होती ही नहीं। मै अपन दिल को कितना ही समझाता हू मगर वह जरा भी नहीं मानता। ताज्जुब नहीं कि

भैरोसिह इतना कह ही रहा था कि सामने से भूतनाथ आता हुआ दिखाई पडा।

गोपाल–अजी वाह जी भूतनाथ, चार चार दफे बुलाने पर भी आपक दर्शन नहीं होते !!

भूत–(मुस्कुराता हुआ) अभी क्या हुआ हे दो चार दिन बाद तो मेरे दर्शन और भी दुर्लभ हो जायगे !

गोपाल–(ताज्जुब से) सो क्या ?

भूत–यही कि मेरा सपूत नानक इस शहर में आ पहुचा है और मेरी अन्त्येष्टि क्रिया करके बहुत जल्द अपने सिर का वोझ हलका करने की फिक्र में लगा है। (बैठ कर) कृपा कर आप भी जरा हाशियार रहियेगा !

गोपाल–तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वह बदनीयती के साथ यहॉ आ गया है !

भूत–मुझ अच्छी तरह मालूम हो गया है। इसी से तो मुझे यहॉ आन में देर हो गई क्योंकि मै यह हाल कहने और तीन चार दिन की छुट्टी लेने के लिए महाराज के पास चला गया था वहॉ से लौटा हुआ आपके पास आ रहा हूँ !

गोपाल–तो क्या महाराज से छुट्‌टी ले आये ?

भूत–जी हॉ अब आपसे यह पूछना है कि आप अपने लिये क्या बन्दोबस्त करेंगे ?

गोपाल–तुम तो इस तरह की वातें करते हो जैसे उसकी तरफ से कोई बहुत बडा तरद्‌दुद हो गया हो ! वह बेचारा कल का लौडा हम लोगों के साथ क्या कर सकता है ?

भूत–सो तो ठीक है मगर दुश्मन को छोटा और कमजोर न समझना चाहिये।

गोपाल–तुम्हें ऐसा ही डर है तो कहा बैठे ही बैठे चौबीस घण्टे के अन्दर उसे गिरफ्तार करा के तुम्हारे हवाले कर दू ?

भूत–यह मुझे विश्वास है और आप ऐसा कर सकते हैं, मगर मुझे यह मजूर नहीं है, क्योंकि मैं जरा दूसरे ढग से उसका मुकाविला किया चाहता हू। आप जरा बाप वेटे की लडाई देखिये तो ! हॉ अगर वह आपकी तरफ झुके तो जैसा मौका देखिये कीजियेगा।

गोपाल–खैर ऐसा ही सही मगर तुमने क्या सोचा है जरा अपना मनसूवा तो सुनाओ !

इसके बाद उन लोगों में देर तक वातें हाती रहीं और दो घण्टे के बाद भूतनाथ उठ कर अपने डेरे की तरफ चला गया।

छठवां बयान

नानक जब चुनारगढ की सरहद पर पहुचा तब सोचने लगा कि दुश्मनों से क्योंकर बदला लेना चाहिये। वह पाच आदमियों को अपना शिकार समझे हुए था और उन्हीं पाँचों को जान लेना का विचार करता था। एक तो राजा गापालसिह दूसरे इन्द्रदेव तीसरा भूतनाथ चौथा हरनामसिह और पाचवीं शान्ता। बस ये ही पाच उसकी आखों में खटक रहे थे मगर इनमें से दो अर्थात् राजा गोपालसिह और इन्ददेव के पास फटकने की तो उसकी हिम्मत नही पडती थी और वह समझता था कि ये दोनों तिलिस्मी आदमी हैं इनके काम जादू की तरह हुआ करते हैं और इनमें लागों के दिलं की बात समझ जाने की कुदरत है मगर बाकी तीनों को वह निरा शिकार ही समझता था और विश्वास करता था कि इन तीनों को किसी न किसी तरह फँसा लेंगे। अस्तु चुनारगढ की सरहद में आ पहुचने के बाद उसने गोपालसिह और इन्द्रदव का ख्याल तो छोड दिया और भूतनाथ की स्त्री और उसके लडके हरनामसिह की जान लेन के फेर में पडा। साथ ही इसके यह भी समझ लेना चाहिये कि नानक यहाँ अकेला नहीं आया था बल्कि समय पर मदद पहुचाने क लायक सात आठ आदमी और भी अपने साथ लाया था जिनमें से चार पाँच तो उसके शागिर्द ही थे।

दोनों कुमारों की शादी में जिस तरह दूर दूर के मेहमान और तमाशबीन लोग आये थे उसी तरह साधु महात्मा तथा साधू वेषधारी पाखण्डी लोग भी बहुत से इकटठ हो गये थे जिन्हें सरकार की तरफ से खाने पीने को भरपूर मिलता था और इस लालच में पडे हुए उन लोगों ने अभी तक चुनारगढ का पीछा नहीं छोडा था तथा तिलिस्मी मकान के चारो तरफ तथा आस पास के जगलों में डेरा डाले पडे हुए थे। नानक और उसके साथी लोग भी साधुओं ही के वेष में वहाँ पहुचे और उसी मडली में मिल जुल कर रहने लग।

नानक को यह बात मालूम थी कि भूतनाथ का डेरा तिलिस्मी इमारत के अन्दर है और वह वहाँ बडी कडी हिफाजत के साथ रहता है। इसलिए वह कभी कभी यह सोचता था कि मेरा काम सहज ही में नही हो जायगा बल्कि वह इसके लिए बडी भारी मेहनत करनी पडेगी। मगर वहा पहुचने के कुछ ही दिन बाद (जब शादी व्याह से सब कोई निश्चिन्त होकर तिलिस्मी इमारत में आ गए) उसने सुना और देखा कि महाराज की आज्ञानुसार भूतनाथ ने स्त्री और लड़के सहित तिलिस्मी इमारत के बाहर एक बहुत बडे और खूबसूरत खेमे में डेरा डाला है अतएव वह बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसे विश्वास हो गया कि मैं अपना काम शीघ्र और सुभीते के साथ निकाल लूगा।

नानक ने और भी दो तीन रोज तक इन्तजार किया और इस बीच में यह भी जान लिया कि भूतनाथ के खेमे की कुछ विशेष हिफाजत नहीं होती और पहरे वगैरह का इन्तजाम भी साधारण सा ही है तथा उसके शागिर्द लोग भी आजकल मौजूद नहीं हैं।

रात आधी से कुछ ज्यादा जा चुकी थी। यद्यपि चन्द्रदेव के दर्शन नहीं हाते थे मगर आसमान साफ होने के कारण टुटपूँजिया तारागण अपनी नामवरी पैदा करने का उद्योग कर रहे और नानक जैसे बुद्धिमान लोगों से पूछ रहे थे कि यदि हम लोग इकट्ठे हो जाय तो क्या चन्दमा से चौगुनी और पाँचगुनी चमक दमक नहीं दिखा सकते तथा जवाब में यह भी सुना चाहते थे कि 'नि सन्देह ! ऐसे समय एक आदमी स्याह लबादा ओढे रहने पर भी लोगों की निगाहों से अपने को बचाता हुआ भूतनाथ के खेम की तरफ जा रहा है। पाठक समझ ही गए होंगे कि यह नानक है अस्तु जब वह खेमे के पास पहुचा तो अपने मतलब का सन्नाटा देख खडा हो गया और किसी के आने का इन्तजार करने लगा। थोड़ी ही देर में एक दूसरा आदमी भी उसके पास आया और दो चार सायत तक बातें करके चला गया। उस समय नानक जमीन पर लेट गया और धीरे धीरे खिसकता हुआ खेमे की कनात के पास जा पहुचा, तब उसे धीरे से उठा कर अन्दर चला गया। यहाँ उसने अपने कागुलामगर्दिशमें पाया मगर यहाँ बिल्कुल ही अन्धकार था, हाँ यह जरूर मालूम होता था कि आगे वाली कनात के अन्दर अर्थात् खेमे में कुछ रोशनी हो रही है। नानक फिर वहाँ लेट गया और पहिले की तरह यह दूसरी कनात भी उठा कर खेमे के अन्दर जान का विचार कर ही रहा था कि दाहिनी तरफ से कुछ खडखडाहट की आवाज मालूम पडी। वह चौका और उसी अधेरे में तीन चार कदम बाईं तरफ हटकर पुन कोई आवाज सुनने और उसे जाचने की नियत से ठहर गया। जब थोडी देर तक किसी तरह की आहट नहीं मालूम हुई तो पहिले की तरह जमीन पर लेट गया और कनात उठा अन्दर जाया ही चाहता था कि दाहिनी तरफ फिर किसी के पैर पटक-पटक कर चलने की आहट मालूम हुई। वह खडा हो गया और पुन चार पाच कदम पीछे की तरफ (बाईं तरफ) हट गया मगर इसके बाद फिर किसी तरह की आहट मालूम न हुई। कुछ देर तक इन्तजार करने के बाद वह पुन जमीन पर लेट गया और कनात के अन्दर सिर डालकर देखने लगा। कोने की तरफ एक मामूली शमादान जल रहा था जिसकी मद्धिम रोशनी में दो

चारपाई बिछी हुई दिखाई पडी। कुछ देर तक गौर करने पर नानक को निश्चय हो गया कि इन दोनों चारपाइयों पर भूतनाथ तथा उसकी स्त्री शान्ता सोई हुई है। परन्तु उनका लडका हरनामसिह खेमे के अन्दर दिखाई न दिया और उसके लिए नानक का बहुत चिन्ता हुई तथापि वह साहस करके खेमे के अन्दर चला ही गया।

डरता कापता नानक धीरे धीरे चारपाई के पास पहुच गया चाहा कि खञ्जर से इन दोनों का गला काट डाले मगर फिर यह साचन लगा कि पहिले किस पर वार करूँ, भूतनाथ पर या शान्ता पर ? वे दोनों सिर से पैर तक चादर ताने पडे हुए थे इससे यह मालूम करने की जरूरत थी कि किस चारपाई पर कौन सो रहा है साथ ही इसके नानक इस बात पर भी गौर कर रहा था कि रोशनी बुझा दी जाय या नहीं। यद्यपि वह वार करने के लिए खञ्जर हाथ में ले चुका था मगर उसकी दिली कमजोरी ने उसका पीछा नहीं छोडा था और उसका हाथ काप रहा था।

सातवाँ बयान

किशोरी कामिनी कमलिनी और लाडिली ये चारों बडी मुहब्बत के साथ अपने दिन विताने लगीं। इनकी मुहब्बत दिखौवा नहीं थी बल्कि दिली और सचाई के साथ थी। चारों ही जमने के ऊच नीच को अच्छी तरह समझ चुकी थीं और खूब जानती थीं कि दुनिया में हर एक के साथ दु ख और सुख का चर्खा लगा ही रहता है खुशी तो मुश्किल से मिलती है मगर रज और दु ख के लिए किसी तरह का उद्योग नहीं करना पडता, यह आप से आप पहुचता है, और एक साथ दस को लपेट लेने पर भी जल्दी नहीं छोडता, इसलिदे बुद्धिमान का काम यही है कि जहा तक हो सके खुशी का पल्ला न छोडे और न कोई काम ऐसा करे जिसमें दिल को किसी तरह का रज पहुच। इन चारों औरतों का दिल उन नादान और कमीनी औरतों का सा नहीं था जो दूसरों को खुश देखते ही जलभुन कर कोयला हो जाती हैं और दिन रात कुप्पे की तरह मुह फुलाये आखों से पाखण्ड का आसू बहाया करती है अथवा घर की औरतों के साथ मिल जुल कर रहना अपनी वइज्जती समझनीं हैं।

इन चारों का दिल आईने की तरह साफ था। नहीं नहीं हम भूल गये, हमें दिल के साथ आईने की उपमा पसन्द नहीं। न मालूम लागों ने इस उपमा को किस लिये पसन्द कर रक्खा है ! उपमा में उसी बस्तु का व्यवहार करना चाहिए जिसकी प्रकृति में उपमेय से किसी तरह का फर्क न पड, मगर आईने (शीशे) में यह बात पाई नहीं जाती हर एक आईना वेऐब साफ और बिना धब्बे के नहीं होता और वह हर एक की सूरत एक सा भी नहीं दिखाता बल्कि जिसकी जैसी सूरत होती है उसके मुकाबिले में वैसा ही बन जाता है। इसलिये आईना उन लोगों के दिल को कहना उचित है जो नीति कुशल हैं या जिन्होंने यह बात ठान ली है कि जो जैसा करे उसके साथ वैसा ही करना चाहिये, चाहे वह अपना हो या पराया छोटा हो या बडा। मगर इन चारों में यह बात न थी ये बडों की झिडकी को आशीर्वाद और छोटों की ऐंठन को उनकी नादानी समझती थीं। जब कोई हमजोली या आपुस वाली क्रोध में मरी हुई अपना मुह बिगाडे इनके सामने आती तो यदि मौका होता तो ये हस कर कह देतीं कि 'वाह, ईश्वर ने अच्छी सूरत बनाई है ! या 'बहिन हमने तो तुम्हारा जो कुछ बिगाडा सो बिगाडा मगर तुम्हारी सूरत ने तुम्हारा क्या कसूर किया है जो तुम उसे बिगाड रही हो ? 'बस इतने ही में उसका रग बदल जाता। इन बातों को विचार कर हम इनके दिल का आईने के साथ मिलान करना पसन्द नहीं करते बल्कि यह कहना मुनासिब समझते हैं कि 'इनका दिल समुद्र की तरह गम्भीर था।

इन चारों को इस बात का ख्याल ही न था कि हम अमीर हैं हाथ पैर हिलाना या घर का कामकाज करना हमारे लिए पाप है। ये खुशी से घर का काम जो इनके लायक होता करतीं और खाने पीने की चीजों पर विशेष ध्यान रखतीं। सबसे बडा ख्याल इन्हें इस बात का रहता था कि इनके पति इनसे किसी तरह रज न होने पावें और घर के किसी बडे बुजुर्ग को इन्हें बेअदब कहने का मौका न मिले। महारानी चन्द्रकान्ता की तो बात ही दूसरी है, ये चपला और चम्पा को भी सास की तरह समझतीं और इज्जत करती थीं। घर की लौंडिया तक इनसे प्रसन्न रहतीं और जब किसी लौंडी से कोई कसूर हा जाता तो झिडकी और गालियों के बदले नसीहत के साथ समझा कर ये उसे कायल और शर्मिन्दा कर देतीं और उसके मुँह से कहला देतीं कि 'बेशक मुझसे भूल हुई आइन्दे कभी ऐसा न होगा ! सबसे विचित्र बात तो यह थी कि इनके चेहरे पर रज क्रोध या उदासी कभी दिखाई देती ही न थी और जब कभी ऐसा होता तो किसी भारी घटना का अनुमान किया जाता था। हा, उस समय इनके दु ख और चिन्ता का कोई ठिकाना न रहता था जब ये अपने पति को किसी कारण दु खी देखतीं। ऐसी अवस्था में इनकी सच्ची भक्ति के कारण इनके पति को अपनी उदासी छिपानी पडती या इन्हें प्रसन्न करने और हँसाने के लिए और किसी तरह का उद्योग करना पडता। मतलब यह है कि इन्होंने घर भर का दिल अपने हाथ में कर रक्खा था और ये घर की प्रसन्नता का कारण समझी जाती थीं।

भूतनाथ की स्त्री शान्ता का इन्हे बहुत बडा खयाल रहता और ये उसकी पिछली घटनाओं की याद करके उसकी पति-भक्ति की सराहना किया करतीं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन्हें अपनी जिन्दगी मे दुखों के बडे बडे समुद्र पार करने पडे थे परन्तु ईश्वर की कृपा से जब ये किनार लगीं तव इन्हें कल्पवृक्ष की छाया मिली और किसी बात की परवाह न रही।

इस समय सध्या होने में घन्टे भर की देर है। सूर्य भगवान अस्ताचल की तरफ तेजी क साथ झुके चले जा रहे हैं और उनकी लाल लाल पिछली किरणों से बडी-बडी अटारिया तथा ऊचे ऊचे वृक्षों के ऊपरी हिस्सों पर ठहरा हुआ सुनहरा रग बहुत ही सोहावना मालूम पडता है। ऐसा जान पडता है मानों प्रकृति ने प्रसन्न होकर अपना गौरव बढाने के लिए अपने सहचरियाँ और सहायकों को सुनहरा ताज पहिरा दिया है।

एसे समय में किशोरी कामिनी कमलिनी लाडिली और कमला अटारी पर एक सजे हुए बगले के अन्दर बैठी जालीदार खिडकियों से उस जगल,की शोभा देख रही हैं जो इस तिलिस्मी मकान से थोडी दूर पर है और साथ ही इसके मीठी बातें भी करती जाती हैं।

कमलिनी–(किशोरी से) बहिन, एक दिन वह था कि हमें अपनी इच्छा के विरुद्ध ऐसे,बल्कि इससे भी बढ कर भयानक जगलों में घूमना पडता था और उस समय यह सोच कर डर मालूम पडता था कि कोई शेर इधर उधर से निकल कर हम पर हमला न करे, और एक आज का दिन है कि इस जगल की शोभा भली मालूम पडती है और इसमें घूमने को जी चाहता है।

किशोरी–ठीक है जो काम लाचारी के साथ करना पडता है वह चाहे अच्छा ही क्यों न हो परन्तु चित्त को बुरा लगता है, फिर भयानक तथा कठिन कामों का तो कहना ही क्या ! मुझे तो जगल में शेर और भेडियों का इतना खयाल न होता था जितना दुश्मना का मगर वह समय और ही था जो ईश्वर न करे किसी दुश्मन को दिखे। उस समय हम लोगों की किस्मत बिगडी हुई थी और अपने साथी लोग भी दुश्मन बन कर सताने के लिए तैयार हो जाते थे। (कमला की तरफ देख कर) भला तुम्हीं बताओ कि उस चमेलों छोकरी का मैंने क्या बिगाडा था जिसने मुझे हर तरह से तबाह कर दिया ? अगर वह मेरी मुहब्बत का हाल मेरे पिता से न कह देती तो मुझ पर वैसी भयानक मुसीबत क्यों आ जाती ?

कमला–बेशक ऐसा ही है मगर उसने जैसी नमकहरामी की वैसी ही सजा पाई। मेरे हाथ के कोड *वह जन्म भर न भूलेगी !

किशोरी–मगर इतना होने पर भी उसने मेरे पिता का ठीक ठीक भेद न बताया।

कमला–बेशक वह बडी जिद्दी निकली मगर तुमने भी यह बडी लायकी दिखाई कि अन्त में उसे छोड देने का हुक्म दे दिया। अब भी वह जहा जायगी दु ख ही भोगेगी।

किशोरी–इसके अतिरिक्त उस जमाने में धनपति के भाई ने क्या मुझे कम तकलीफ दी थी जब मै नागर के यहाँ कैद थी। उस कम्बख्त की तो सूरत देखने से मेरा खून खुश्क हो जाता था** !

लाडिली–वही जिसे भूतनाथ ने जहन्नुम में पहुचा दिया ! मगर नागर इस मामले को बिल्कुल ही छिपा गई मायारानी से उसने कुछ भी न कहा और इसी में उसका भला भी था।

किशोरी–(लाडिली से) बहिन तुम यों तो बडी नेक हो और तुम्हारा ध्यान भी धर्म विषयक कामों में विशेष रहता है मगर उन दिनों तुम्हें क्या हो गया था कि मायारानी के साथ बुरे कामों में अपना दिन विताती थीं और हम लोगों की जान लेने के लिए तैयार रहती थीं ?

लाडिली–(लज्जा और उदासी के साथ) फिर तुमने वही चर्चा छेडी ! मै कई दफे हाथजोड कर तुमसे कह चुकी हू कि उन बातों की याद दिला कर मुझे शर्मिन्दा न करो, दु ख न दो मेरे मुह में बार बार स्याही न लगाओ। उन दिनों मैं पराधीन थी, मेरा कोई सहायक न था, मेरे लिए कोई और ठिकाना न था, और उस दुष्टा का साथ छोड कर मैं अपने को कहीं छिपा भी नहीं सकती थी और डरती थी कि वहा से निकल भागने पर कहीं मेरी इज्जत पर न आ बने ! मगर बहिन, तुम जान बूझ कर बार बार उन बातों की याद दिला कर मुझे सताती हो कहो बैठू या यहाँ से उठ जाऊँ ?

---

*देखिये पहिला भाग ग्यारहवें बयान का अन्त।

**देखिये आठवा भाग नौवा बयान।

किशोरी—अच्छा अच्छा जाने दो माफ करो मुझसे भूल हो गई मगर मेरा मतलब वह न था जा तुमने समझा है मै दो-चार बातें नानक के विषय में पूछा चाहती थी जिनका पता अभी तक नहीं लगा और जो भेद की तरह हम लोगों

लाडिली—(वात काट कर) वे बातें भी तो मेरे लिए वैसी ही दु खदायी हैं।

किशोरी—नहीं नहीं मैं यह न पूछूगी कि तुमने नानक के साथ रामभोली बन कर क्या क्या किया वल्कि यह पूछूगी कि उस टीन के डिब्बे में क्या था जो नानक ने चुरा ला कर तुम्हें बजरे में दिया था ? कूएँ में से हाथ कैसे निकला था ? नहर के किनारे वाले बगले में पहुच कर वह क्योंकर फसा लिया गया ? उस बगले में वह तस्वीर कैसी थीं ? असली रामभोली कहा गई और क्या हुई ? रोहतासगढ तहखाने क अन्दर तुम्हारी तस्वीर किसने लटकाई और तुम्हें वहा का भेद कैसे मालूम हुआ था इत्यादि बातें मै कई दफे कई तरह से सुन चुकी हू मगर उनका असल भेद अभी तक कुछ मालूम न हुआ*।

लाडिली—हा इन सब बातों का जवाब देने के लिए मैं तैयार हू। तुम जानती हो और अच्छी तरह से सुन और समझ चुकी हो कि वह तिलिस्मी बाग तरह तरह के अजायबातों से भरा हुआ है, विशेष नहीं तो भी वहा का बहुत कुछ हाल मायारानी और दारोगा को मालूम था। वहा अथवा उसकी सरहदमें ले जाकर किसी को डराने धमकाने या तकलीफ देने के लिए कोई ताज्जुब का तमाशा दिखाना कौन बडी बात थी !

किशोरी—हॉ सो तो ठीक ही है।

लाडिली—और फिर नानक जान बूझ कर काम निकालने के लिए ही तो गिरफ्तार किया गया था। इसके अतिरिक्त तुम यह भी सुन चुकी हो कि दारोगा के बगले या अजायबघर स खास बाग तक नीचे नीचे रास्ता बना हुआ है ऐसी अवस्था में नानक के साथ वैसा बर्ताव करना कौन बडी बात ही थी !

किशोरी—बेशक ऐसा ही है अच्छा उस डिब्बे वगैरह का भेद तो बताओ ?

लाडिली—उस गठरी में जो कलमदान था वह तो हमारे विशेष काम का न था मगर उस डिब्बे में वही इन्दिरा वाला कलमदान था जिसके लिय दारोगा साहब बेताब हो रहे थे और चाहते थे कि वह किसी तरह पुन उनके कब्जे में आ जाय। असल में उसी कलमदान के लिये मुझे राभोली बनना पडा था। दारोगा ने असली रामभोली को गिरफ्तार करवा के इस तरह मरवा डाला कि किसी को कानोंकान खबर भी न हुई और मुझे रामभोली बन कर यह काम निकालने की आज्ञा दी। लाचार मैं रामभोली बन कर नानक से मिली और उसे अपने वश में करने के बाद इन्द्रदेवजी के मकान में से वह कलमदान तथा उसके साथ और भी कई तरह के कागज नानक की मार्फत चुरा मॅगवाया। मुझ तो उस कलमदान की सूरत देखने से डर मालूम होता था क्योंकि मैं जानती थी कि वह कलमदान हमलोगों के खून का प्यासा और दारोगा के बड़े बडे भेदों से भरा हुआ है। इसके अतिरिक्त उस पर इन्दिरा की बचपन की तस्वीर भी बनी हुई थी और सुन्दर अक्षरों में इन्दिरा का नाम लिखा हुआ था जिसके विषय में मैं उन दिनों जानती थी कि वे मा बेटी वडी बेदर्दी के साथ मारी गईं। यही सब सबब था कि उस कलमदान की सूरत देखते ही मुझे तरह तरह की बातें याद आ गई मेरा कलेजा दहल गया और मैं डर के मरे कॉपने लगी। खैर जब मैं नानक को लिये हुए जमानिया की सरहद में पहुची तो उसे धनपति के हवाल करके खास बाग में चली गई, अपना दुपट्टा नहर में फेंकती गई। दूसरीराह से उस तिलिस्मी कूएँ के नीचे पहुच कर पानी का प्याला और बनावटी हाथ निकालने बाद मायारानी से जा मिली और फिर बचा हुआ काम धनपति और दारोगा ने पूरा किया। दारोगा वाले बगले में जो तस्वीर रक्खी हुई थी वह केवल नानक को धोखा देने के लिए थी, उसका और कोई मतलब न था और रोहतासगढ के तहखाने में जो मेरी तस्वीर** आप लोगों ने देखी थी वह वास्तव में दिग्विजयसिह के बूआ ने मेरे सुवीते के लिए लटकाई थी और तहखाने की बहुत सी बातें समझा कर बता दिया था कि 'जहा तू अपनी तस्वीर देखियो समझ लीजियो कि उसके फलानी तरफ फलानी बात है' इत्यादि। बस वह तस्वीर इतने ही काम के लिए लटकाई गई थी। वह बुढिया वडी नेक थी, और उस तहखाने का हाल बनिस्वत दिग्विजयसिह के बहुत ज्यादे जानती थी मै पहिले भी महाराज के सामने बयान कर चुकी हू कि उसने मेरी मदद की थी। वह कई दफे मेरे डेरे पर आई थी और तरह तरह की बातें समझा गई थी। मगर न तो दिग्विजयसिह उसकी कदर करता था और न वही दिग्विजयसिह को चाहती थी। इसके अतिरिक्त यह भी कह देना आवश्यक है कि मैं तो उस बुढिया की मदद से तहखाने के अन्दर चली गई थी मगर कुन्दन अर्थात् धनपति ने वहा जो कुछ किया वह मायारानी के दारोगा की बदौलत था। घर लौटने पर मुझे मालूम हुआ कि दारागा वहा कई दफ छिप कर गया और कुन्द से मिला था मगर उसे मरे बारे में कुछ

---

*देखिये सन्तति चौथा भाग नानक का बयान।

**देखिये सन्तति का चौथा भाग दसवा बयान।

खबर न थी, अगर खबर होती तो मेरे और कुन्दन में जुदाई न रहती। मगर मुझे इस बात का ताज्जुब जरूर है कि घर पहुचने पर भी धनपति ने वहाँ की बहुत सी बातें मुझसे छिपा रक्खीं।

किशोरी–अच्छा यह तो बताओ कि रोहतासगढ में जो तस्वीर तुमने कुन्दन को दिखाने के लिए मुझे दी थी वह तुम्हें कहाँ से मिली थी और तुम्हें तथा कुन्दन को उसका असली हाल क्योंकर मालूम हुआ था ?

लाडिली–उन दिनों मै यह जानने के लिए वेताव हा रही थी कि कुन्दन असल में कौन है। मुझे इस बात का भी शक हुआ था कि वह राजा साहब (बीरेन्द्रसिह) की कोई ऐयारा होगी और यही शक मिटाने के लिए मैंन वह तस्वीर खुद बना कर उसे दिखाने के लिए तुम्हें दी थी। असल में उस तस्वीर का भेद हम लोगों को मनोरमा की जुबानी मालूम हुआ था, और मनोरमा न इन्दिरा से उस समय सुना था जब मनोरमा को मा समझे के वह उसके फेर में पड़ गई थी*।

किशोरी–ठीक है मगर इसमें भी कोई शक नहीं कि इन सब वखेडों की जड वही कम्वख्त दारोगा है। यदि जमानिया के राज्य में दारोगा न होता तो इन सब बातों में से एक भी न सुनाई देती और न हम लागों को दु खमय कहानी

का कोई अश लोगों के कहने सुनने के लिए पैदा होता (कमलिनी से) मगर बहिन, यह तो बताओ कि इस हरामी के पिल्ले (दारोगा) का कोई वारिस या रिश्तेदार भी दुनिया में है या नहीं ?

कम–सिवाय एक के और कोई नहीं ! दुनिया का कायदा है कि जब आदमी भलाई या बुराई कुछ सीखता है तो पहिल अपने घर ही से आरम्भ करता है। माँ बाप के अनुचित लाड प्यार और उनकी असावधानी से बुरी राह पर चलने वाले लडके घर ही में श्रीगणेशाय करते हैं और तब कुछ दिन के बाद दुनिया में मशहूर होने योग्य होते हैं। यही बात इस हरामखोर की भी थी, इसने पहिले अपने नाते रिश्तेदारों ही पर सफाई का हाथ फेरा और उन्हें जहन्नुम में मिलकर समय के पहले घर का मालिक बन बैठा। साधु का भेष धरना इसने लडकपन ही से सीखा है और विशेष करके इसके इसी भेष की बदौलत लोग धोखे में भी पडे। हमारे राजा गोपालसिह ने भी (मुस्कुराती हुई) इसे वशिष्ट ऋषि ही समझ कर अपने यहाँ रक्खा था। हाँ इसका एक चचेरा भाई जरूर बच गया जो इसके हत्थे नहीं चढा था क्योंकि वह खुद भी परले सिरे का बदमाश था और इसी करतूतों को खूब समझता था जिससे लाचार होकर इसे उसकी खुशामद करनी ही पडी और उस अपना साथी बनाना ही पडा।

किशोरी–क्या वह मर गया ? उसका क्या नाम था ?

कमलिनी–नहीं वह मरा नहीं मगर मरने के ही बराबर है, क्योंकि यह हमारे यहा कैद है। उसने अपना नाम शिखण्डी रख लिया था। तुम जानती ही हो कि जब मैं जमानिया के खास बाग के तहखाने और सुरग की राह से दोनों कुमारों तथा बाकी कैदियों का लेकर बाहर निकल रही थी तो हाथी वाले दरवाजे पर उसने इनके (इन्द्रजीतसिह) के ऊपर वार किया था**

किशोरी–हाँ हाँ ता क्या वह वही कम्बख्त था ?

कमलिनी–हाँ वही था। उसे मैं अपना पक्षपानी समझती थी मगर बेईमान ने मुझे धोखा दिया। ईश्वर की कृपा थी कि पहिले ही वार में वह उसी जगह गिरफ्तार हो गया नहीं तो शायद मुझे धोखे में पड कर बहुत तकलीफ उठानी पडती और

कमलिनी ने इतना कहा ही था कि उसका ध्यान सामने के जगल की तरफ जा पडा। उसने देखा कि कुअर आनन्दसिह एक सब्ज घोडे पर सवार सामने की तरफ से आ रहे हैं, साथ में केवल तारासिह एक छोटे टटटू पर सवार बातें करत आ रहे है और दूसरा आदमी साथ नहीं है। साथ ही इसके कमलिनी को एक और अदभुत दृश्य दिखाई दिया जिससे वह एकाएक चौंक पडी और इसलिए उसका तथा और सभों का ध्यान भी उसी तरफ जा पडा।

उसने देखा कि आनन्दसिह और तारासिह जगल में स निकल कर कुछ दूर मैदान में आये थे कि यकायक एक बार पुन पीछे की तरफ घूम और गौर के साथ कुछ देखने लगे। कुछ ही देर बाद और भी दस बारह नकाबपोश आदमी हाथ में तीर कमान लिए दिखाई पडे जा जगल से बाहर निकलते ही इन दोनों पर फुर्ती के साथ तीर चलाने लगे। ये दोनों भी म्यान से तलवार निकाल कर उन लागों की तरफ झपटे और देखते ही दखते सब के सब लडते भिडते पुन जगल में घुस

---

*देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति तीसरा भाग दसवाँ बयान, और उन्नीसवाँ भाग छठवा बयान।

**देखिये आठवाँ भाग दूसरा बयान।

कर देखन वालों की नजरों से गायव हो गए। कमलिनी किशारी और कामिनी वगैरह इस घटना को देखकर घवरा गयीं, सभों की इच्छानुसार कमला दौड़ी हुई गई और एक लौडी का इस मामल की खवर करने क लिए नीच कुअर इन्द्रजीतसिह क पास भेजा।

आठवां बयान

नानक इस बात का सोच रहा था कि पहिले किस पर वार करूं? अगर पहिले शान्ता पर वार करूं तो आहट पाकर भूतनाथ जाग जायगा और मुझ गिरफ्तार कर लेगा क्योंकि मै अकेला किसी तरह उसका मुकाबिला नहीं कर सकता अतएव पहिले भूतनाथ ही का काम तमाम करना चाहिए। अगर इसकी आहट पाकर शान्ता जाग भी जायगी तो काई चिन्ता नहीं, मैं उसे सॉस लेने की भी मोहलत न दूगा वह औरत की जात मेरे मुकाबिले में क्या कर सकती है। मगर ऐसा करने के लिए यह जानने की जरूरत है कि इन दोनों में शान्ता कौन है और भूतनाथ कोन है।

थोडी ही दर के अन्दर ऐसी बहुत सी बातें नानक क दिमाग में दौड गई और उन दोनों में भूतनाथ कौन है इसका पता न लगा सकने के कारण लाचार होकर उसने यह निश्चय किया कि इन दोनों ही को वेहाश करके यहा से ले चलना चाहिए। ऐसा करन से मेरी मॉ बहुत ही प्रसन्न होगी।

नानक ने अपने बटुए में स बहुत ही तज बेहोशी की दवा निकाली और उन दोनों के मुह पर चादर के ऊपर ही छिडक कर उनके वेहोश होने का इन्तजार करने लगा।

थाड़ी ही दर में उन दोनों न हाथ पैर हिलाये जिससे नानक समझ गया कि अव इन पर बेहोशी का असर हो गया, अस्तु उसने दोनों के ऊपर स चादर हटा दी और तभी देखा कि इन दोनों में भूतनाथ नहीं है वल्कि ये दोनों औरतें ही हैं जिनमें एक भूतनाथ की स्त्री शान्ता है। उस दूसरी औरत को नानक पहिचानता न था।

नानक ने फिर एक दफे वेहाशी की दवा सुघा कर शान्ता को अच्छी तरह वेहोश किया और चारपाई पर से उठा कर बहुत हिफाजत और हाशियारी क साथ खेमे के वाहर निकाल लाया जहॉ उसने अपने एक साथी को मौजूद पाया। दोनो न मिलकर उसकी गठरी वाधी और फुर्ती से लश्कर के वाहर निकाल ले गये।

शान्ता को पा जाने से नानक वहुत ही खुश था और साचता जाता था कि इसे पाकर मेरी मॉ बहुत ही प्रसन्न होगी और हद्द से ज्यादे मरी तारीफ करेगी इसे सीधे अपन घर ले जाऊँगा और जब दूसरी दफा लौटूगा तो भूतनाथ पर कब्जा करूगा। इसी तरह धीर धीरे अपने सब दुश्मनों को जहन्नुम में मिला डालूँगा।

कोस भर निकल जान क वाद जब नानक एक सकेत पर पहुचा तो उसके और साथियों से मुलाकात हुई जो कसे कसाये कई घाडों क साथ उसका इन्तजार कर रहे थे।

एक घोडे पर सवार होने क वाद नानक ने शान्ता को अपने आगे रख लिया उसके साथी लोग भी घोडों पर सवार हुए और सभों ने पूरब का रास्ता लिया।

दूसरे दिन सध्या के समय नानक अपन घर पहुचा। रास्त में उसने और उसके साथिया ने कई दफे भोजन किया मगर शान्ता की कुछ खवर न ली बल्कि उसे इस बात का ख्याल हुआ कि अव उसकी वेहोशी उतरा चाहती है तव पुन दवा सुघा कर उसकी वेहाशी मजवूत कर दी गई।

नानक का दखकर उसकी मा वहुत प्रसन्न हुइ आर जब उसे यह मालूम हुआ कि उसका सपूत शान्ता को गिरफ्तार कर लाया है तब ता उसकी खुशी का काई ठिकाना ही न रहा। उसन नानक की बहुत ही आवभगत की और बहुत तारीफ करन क वाद वाली इससे वदला लेने में अब क्षण भर की भी देर न करनी चाहिये इसे तुरन्त खम्भे के साथ बाधकर हाश में ले आओ और पहिल जूतियो से खूब अच्छी तरह खवर लो फिर जा कुछ हागा दखा जायेगा। मगर इसके मुह मे खूब अच्छी तरह कपडा ठूस दा जिसस कुछ वाल न सक और हमलागों का गालिया न द।'

नानक का भी यह वात पसन्द आई और उसने ऐसा ही किया। शान्ता क मुह में कपड़ा ठूस दिया गया और वह दालान में एक खम्भे के साथ वाध कर होश में लाई गई। हाश आते ही अपन का ऐसी अवस्था में देख कर वह बहुत ही घबराई और जब उद्योग करने पर भी कुछ बोल न सकी ता आखों से आसू की धारा वहान लगी।

नानक न उसकी दशा पर कुछ भी ध्यान न दिया। अपनी मा की आज्ञा पाकर उसन शान्ता का जूते से मारना शुरू किया और यहा तक मारा कि अन्त में वह वेहोश होकर झुक गई। उस समय नानक की मॉ कागज का एक लपटा हुआ पुर्जा नानक के आग फेंक कर यह कहती हुइ घर क वाहर निकल गई कि इसे अच्छी तरह पढ रख तब तक मै लौट कर आती हू।

उसकी कार्रवाई ने नानक को ताज्जुब में डाल दिया। उसने जमीन पर से पुर्जा उठा लिया और चिराग के सामने ले जाकर पढा यह लिखा हुआ था –

' भूतनाथ के साथ ऐयारी करना या उसका मुकाबला करना नानक ऐसे नौसिखे लौडों का काम नहीं है। तै समझता होगा कि मैंने शान्ता को गिरफ्तार कर लिया, मगर खूब समझ रख कि वह कभी तेरे पजे में नहीं आ सकती। जिस औरत को तू जूतियों से मार रहा है वह शान्ता नहीं है पानी से इसका चेहरा धो डाल और भूतनाथ के कारीगरी का तमाशा देख ! अब अगर अपनी जान तुझे प्यारी है ता खबरदार भूतनाथ का पीछा कभी न कीजियो।

पुर्जा पढते ही नानक के होश उड गये। झटपट पानी का लोटा उठा लिया और मुंह में ठूँसा हुआ लत्ता निकाल कर शान्ता का चेहरा धोने लगा, तब तक वह भी होश में आ गई। चेहरा साफ होने पर नानक ने देखा कि यह तो उसकी असली मॉ रामदेई है। उसने होश में आते ही नानक से कहा 'क्यों बेटा, तुमने मेरे ही साथ ऐसा सलूक किया !'

नानक के ताज्जुब का कोई हद्द न रहा। वह घबराहट के साथ अपनी मॉ का मुँह देखने लगा और ऐसा परेशान हुआ कि आधी घडी तक उसमें कुछ बोलने की शक्ति न रही। इस बीच में रामदेई ने उसे तरह तरह की बेतुकी बातें सुनाई जिन्हें वह सिर नीचा किये हुए चुपचाप सुनता रहा। जब उसकी तबीयत कुछ ठिकाने हुई तब उसने सोचा कि पहिले उस रामदेई को पकडना चाहिये जो मेरे सामने चीठी फेंक कर मकान के बाहर निकल गई है, परन्तु यह उसकी सामर्थ्य के बाहर था क्योंकि उसे घर से बाहर गए हुए देर हो चुकी थी अस्तु उसने सोचा कि अब वह किसी तरह नहीं पकडी जा सकती।

नानक ने अपनी मॉ के हाथ पैर खोल डाले और कहा, 'मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि यह क्या हुआ तुम वहॉ कैसे जा पहुची और तुम्हारी शक्ल में यहॉ रहने वाली कोन थी या क्योंकर आई !

रामदेई–मै इसका जवाब कुछ भी नहीं दे सकती और न मुझे कुछ मालूम ही है। मै तुम्हारे चले जाने के बाद इसी घर में थी इसी घर में बेहोश हुई और होश आने पर अपन को इसी घर मे देखती हू ! अब तुम्ही बयान करा कि क्या हुआ और तुमने मेरे साथ ऐसा सलूक क्यों किया ?

नानक नें ताज्जुब क साथ अपना किस्सा पूरा पूरा बयान किया और अन्त में कहा अब तुम ही बताओ कि मैंन इसमें क्या भूल की ? "

नौवां बयान

दिन का समय है और दोपहर ढल चुकी है। महाराज सुरेन्द्रसिह अभी अभी भोजन करके आये हैं और अपने कमरे में पलग पर लेटे हुए पान चबाते हुए अपने दोस्तों तथा लडकों से हॅसी-खुशी की बातें कर रहे हैं जो कि महाराज से घटे भर पहिले ही भोजन इत्यादि से छुटटी पा चुके हैं।

महाराज के अतिरिक्त इस समय इस कमरे में राजा बीरेन्द्रसिह कुँअर इन्द्रजीतसिह आनन्दसिह और राज गोपालसिह जीतसिह तेजसिह देवीसिह पन्नालाल रामनारायण पडित बद्रीनाथ, चुन्नीलाल, जगन्नाथ ज्योतिषी भैरोसिह इन्ददेव और गोपाल के दोस्त भरतसिह भी बैठे हुए है।

बीरेन्द–इसमें काई सन्देह नहीं कि जो तिलिस्म मैंने तोड़ा था वह इस तिलिस्म के सामने रुपये में एक पैसा भी नहीं है, साथ ही इसके जमानिया राज्य में जैसे जैसे महापुरुष (दारोगा की तरह) रह चुके हैं तथा वहॉ जैसी जैसी घटनाऍ हो गई हैं उनकी नजीर भी कभी सुनने में न आवेगी।

गोपाल–इन बखेडों का सबब भी उसी तिलिस्म को समझना चाहिए उसी का आनन्द लूटने के लिए लोगों ने ऐसे बखेडे मचाए और उसी की बदौलत लोगों की ताकत और हैसियत भी बढी।

जीत–बेशक यही बात हे, जैसे जैसे तिलिस्म के भेद खुलते गये तैसे तैसे पाप और लोगों की बदकिस्मती का जमाना भी तरक्की करता गया।

सुरेन्द–हमें तो कम्बख्त दारोगा क कामों पर आश्चर्य होता है न मालूम किस सुख के लिए उस कम्बख्त ने ऐसे ऐसे कुकर्म किए !!

भरत–(हाथ जोड कर) मै तो समझता हू कि दारोगा के कुकर्मो का हाल महाराज ने अभी बिल्कुल नहीं सुना, उसकी कुछ पूति तब होगी जब हम लोग अपना किस्सा बयान कर चुकेंगे।

सुरेन्द–ठीक है हमने भी आज आप ही का किस्सा सुनने की नीयत से आराम नहीं किया।

भरत–मै अपनी दुर्दशा बयान करने के लिए तैयार हू।

जीत–अच्छा तो अब आप शुरू करें।

भरत–जो आज्ञा।

इतना कहकर भरतसिह न इस तरह अपना हाल बयान करना शुरू किया –

भरत–मै जमानिया का रहने वाला और एक जमींदार का लडका हू। मुझ इस बात का सौभाग्य प्राप्त था कि राजा गोपालसिह मुझ अपना मित्र समझते थे, यहाँ तक कि भरी मजलिस में भी मित्र कह कर मुझे सम्बोधन करते थे और घर मे भी किसी तरह का पर्दा नहीं रखते थे। यही सबब था कि वहाँ के कर्मचारी लोग तथा अच्छे अच्छ रईस मुझस डरते और मेरी इज्जत करते थे परन्तु दारागा को यह बात पसन्द न थी।

केवल राजा गोपालसिह ही नहीं इनके पिता भी मुझ अपने लडके की तरह ही मानत और प्यार करते थे विशेष करक इसलिए कि हम दानों मित्रों की चालचलन में किसी तरह की बुराई दिखाई नहीं देती थी।

जमानिया में जा बेईमान और दुष्ट लोगों का एक गुप्त कमटी थी उसका हाल आप लोग जान ही चुक हैं अतएव उसक विषय में विस्तार के साथ कुछ कहना वृथा ही है हॉ जरूरत पडने पर उसके विषय में इशारा मात्र कर देन से काम चल जायगा।

रियासतों में मामूली तौर पर तरह तरह की घटनाऍं हुआ ही करती हैं इसलिए राजा गापालसिह को गद्दी मिलने क पहिले जो कुछ मुझ पर बीत चुकी है उसे मामूली समझ कर मैं छोड देता हू और उस समय से अपना हाल बयान करता हू जब इनकी शादी हो चुकी थी। इस शादी मं जो कुछ चालबाजी हुई थी उसका हाल आप सुन ही चुक हैं।

जमानिया की वह गुप्त कुमेटी यद्यपि 'भूतनाथ की बदौलत टूट चुकी थी मगर उसकी जड नहीं कटी थी क्योंकि कम्बख्त दारागा हर तरह से साफ बच रहा था और कुमेटी का कमजार दफ्तर अभी भी उसके कब्जे में था।

गोपालसिहजी की शादी हो जाने के बहुत दिन बाद एक दिन मेरे एक नौकर ने रात के समय जब कि वह मेरे पैरों में तेल लगा रहा था मुझसे कहा कि 'राजा गोपालसिह की शादी असली लक्ष्मीदेवी क साथ नहीं बलिक किसी दूसरी ही औरत के साथ हुई है। यह काम दारागा ने रिश्वत लेकर किया है और इस काम में सुबीता होने के लिए गोपालसिह जी के पिता को भी उसी न मारा हे।

सुनने के साथ ही मैं चौंक पडा मेरे ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा मैंने उससे तरह तरह के सवाल किये जिनका जवाब उसने ऐसा तो न दिया जिससे मेरी दिलजमई हो जाती मगर इस बात पर बहुत जोर दिया कि 'जो कुछ मै कह चुका हू वह बहुत ठीक है।

मेरे जी में तो यही आया कि इसी समय उठकर राजा गोपालसिह के पास जाऊँ और सब हाल कह दूँ, परन्तु यह सोच कर कि किसी काम में जल्दी न करनी चाहिए मै चुप रह गया और साचने लगा कि यह कार्रवाई क्योंकर हुई और इसका ठीक ठीक पता किस तरह लग सकता है?

रात भर मुझ नींद न आई और इन्हीं बातों को सोचता रह गया। सवेरा होने पर स्नान सध्या इत्यादि से छुटटी पाकर मै राजा साहब से मिलने के लिए गया मालूम हुआ कि राजा साहब अभी महल से बाहर नहीं निकले हैं। मै सीधे महल में चला गया। उस समय गापालसिहजी सन्ध्या कर रहे थे और इनसे थोडी दूर पर साम्ने बैठी मायारानी फूलों का गजरा तैयार कर रही थी। उसने मुझे देखते ही कहा अहा आज क्या है ! मालूम होता हे मेरे लिए आप कोई अनूठी चीज लाए हे !"

इसक जवाब में मै हँस कर चुप हो गया और इशारा पाकर गोपालसिहजी के पास एक आसन पर बैठ गया। जब वे सन्ध्योपासना मे छुट्टी पा चुके तब मुझसे बातचीत होने लगी। मैं चाहता था कि मायारानी वहॉ से उठ जाय तब मैं अपना मतलब बयान करूँ पर वह वहॉ से उठती न थी और चाहती थी कि मैं जो कुछ बयान करूँ उसे वह भी सुन ले। यह सम्भव था कि मै मामूली बातें करके मौका टाल देता और वहॉ से उठ खडा होता मगर वह हो न सका क्योंकि उन दोनों ही को इस बात का विश्वास हो गया था कि मै जरूर कोई अनूठी बात कहने क लिये आया हूँ। लाचार होकर गोपालसिहजी से इशारे में कह देना पडा कि 'मै एकान्त में कवल आप ही से कुछ कहना चाहता हूँ। जब गोपालसिह ने किसी काम के बहाने से उसे अपने सामने से उठाया तब वह भी मेरा मतलब समझ गई और कुछ मुँह बनाकर उठ खडी हुई।

हम दानों यही समझते थे कि मायारानी वहा से चली गई मगर उस कम्बख्त ने हम दोनों की बातें सुन लीं क्योंकि उसी दिन स मरी कम्बख्ती का जमाना शुरू हो गया। मै ठीक नहीं कह सकता कि किस ढग से उसने हमारी बातें सुनी। जिस जगह हम दोनों बैठे थे उसके पास ही दीवार में एक छाटी सी खिडकी पडती थी शायद उसी जगह पिछवाडे की तरफ खडी होकर उसन मेरी बातें सुन ली हो तो कोई ताज्जुब नहीं।

मैंने जो कुछ अपने नौकर से सुना था सब तो नहीं कहा केवल इतना कहा कि 'आपके पिता को दारोगा ही ने मारा है और लक्ष्मीदेवी की इस शादी में भी उसने कुछ गड़बड किया है गुप्त रीति पर इसकी जाच करनी चाहिए । मगर अपने नौकर का नाम नहीं बताया क्योंकि मै उसे बहुत चाहता था और वैसा ही उसकी हिफाजत का भी खयाल रखता था। इसमें कोई शक नहीं कि मेरा वह नौकर बहुत ही होशियार और बुद्धिमान था बल्कि इस योग्य था कि राज्य का कोई भारी काम उसके सुपुर्द कया जाता, परन्तु वह जाति का कहार था इसलिए किसी बड़े मर्तबे पर न पहुच सका।

गोपालसिहजी ने मेरी बातें ध्यान देकर सुनीं मगर इन्हें उन बातो का विश्वास न हुआ क्योंकि मायारानी को पतिव्रताओं की नाक और दारोगा को सच्चाई तथा ईमानदारी का पुतला समझते थे। मैंने इन्हें अपनी तरफ से बहुत कुछ समझाया और कहा कि यह बात चाहे झूठ हो मगर आप दारोगा से हर दम होशियार रहा कीजिए और उसके कामों को जाच की निगाह से देखा कीजिए मगर अफसोस, इन्होंने मेरी बातों पर कुछ ध्यान न दिया और इसी से मेरे साथ ही अपने को भी बर्बाद कर लिया।

उसके बाद भी कई दिनों तक मैं इन्हें समझाता रहा और ये भी हॉं में हॉं मिला देते रहे जिससे विश्वास होता था कि कुछ उद्योग करने से ये समझ जायेंगे मगर ऐसा कुछ न हुआ। एक दिन मेरे उसी नौकर ने जिसका नाम हरदीन था मुझसे फिर एकान्त में कहा कि अब आप राजा साहब को समझाना बुझाना छोड़ दीजिए मुझे निश्चय हो गया कि उनकी बदकिसमती के दिन आ गये है और वे आपकी बातों पर कुछ भी ध्यान न देंगे। उन्होंने बहुत बुरा किया कि आपकी बातें मायारानी और दारोगा पर प्रकट कर दीं। अब उनको समझाने के बदल आप अपनी जान बचाने की फिक्र कीजिए और अपने को हर वक्त आफत से घिरा हुआ समझिए। शुक्र है कि आपने सब बातें नहीं कह दीं नहीं तो और भी गजब हो जाता

औरों को चाह कैसा ही कुछ खयाल हो मगर मै अपने खिदमतगार हरदीन की बातों पर विश्वास करता था और उसे अपना खैरख्वाह समझता था। उसकी बातें सुनकर मुझे गोपालसिह पर बेहिसाब क्रोध चढ आया और उसी दिन से मैने इन्हें समझाना बुझाना छोड दिया मगर इनकी मुहब्बत ने मेरा साथ न छोड़ा।

मैंने हरदीन से पूछा कि 'ये सब बातें तुझे क्योंकर मालूम हुई और होती है ? मगर उसने ठीक ठीक न बताया बहुत जिद्द करने पर कहा कि कुछ दिन और सब्र कीजिए मै इसका भेद भी आपको बता दूगा।

दूसरे दिन जब कि सूरज अस्त होने में दो घण्टे की देर थी मै अकेला अपने नजरबाग में टहल रहा था और इस सोच में पड़ा हुआ था कि राजा गोपालसिह का भ्रम मिटाने क लिए अब क्या बन्दोबस्त करना चाहिये। उसी समय रघुबरसिह मेरे पास आया और साहब सलामत करने के बाद इधर उधर की बातें करन लगा। बात ही बात में उसने कहा कि आज मैंने एक घोडा नेहायत उम्दा खरीद किया है मगर अभी तक उसका दाम नहीं दिया है आप उस पर सवारी करके देखिये अगर आप भी पसन्द करें तो मै उसका दाम चुका दू। इस समय मै उसे अपने साथ लेता आया हूँ, आप उस पर सवार हो लें और मे अपने पुराने घोडे पर सवार होकर आपके साथ चलता हू, चलिए दो चार कोस का चक्कर लगा आवें ।

मुझे घोडे का बहुत ही शौक था। रघुबरसिह की बातें सुनकर मैं खुश हो गया और यह सोचकर कि अगर जानवर उम्दा होगा तो मै खुद उसका दाम देकर अपने यहाँ रख लूगा मैंने जवाब दिया कि 'चलो देखें कैसा घोड़ा है, एक घोड़े की जरूरत मुझे भी थी । इसके जवाब मे रघुबर ने कहा कि अच्छी बात है अगर आपको पसन्द आवे तो आप ही रख लीजियेगा ।

उन दिनों मैं रघुबरसिह को भला आदमी अशराफ और अपना दोस्त समझता था, मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि ये परले सिरे का बेईमान और शैतान का भाई है, उसी तरह दारोगा को भी मैं इतना बुरा नहीं समझता था और राजा गोपालसिह की तरह मुझे भी विश्वास था कि जमानिया की उस गुप्त कुमेटी से इन दोनों का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है मगर हरदीन ने मेरी ऑंखें खोल दीं और साबित कर दिया कि जो कुछ हम लोग सोचे हुए थे वह हमारी भूल थी।

खैर मैं रघुबरसिह के साथ ही बाग के बाहर निकला और दर्वाजे पर आया। कसे कसाये दो घोडे दिखे जिनमें एक तो खास रघुबरसिह का घोडा था और दूसरा एक नया और बहुत ही शानदार वही घोडा था जिसकी रघुबरसिह ने तारीफ की थी।

मै उस घोडे पर सवार होने वाला ही था कि हरदीन दौडा दौडा बदहवास मेरे पास आया और बोला, घर में बहूजी (मेरी स्त्री) को न मालूम क्या हो गया है कि गिर कर बेहोश हो गई हैं और मुह से खून निकल रहा है, जरा चल कर देख लीजिए।'

हरदीन की बात सुनकर मैं तरद्दुद में पड गया और उसे साथ लेकर घर के अन्दर गया, क्योंकि हरदीन बराबर जनाने में आया जाया करता था और उसके लिए किसी तरह का पर्दा न था। जब घर की दूसरी ड्योढी मैंने लाघी तब वहॉं एकान्त देख कर हरदीन ने मुझे रोका और कहा ' जो कुछ मैंने आपको खबर दी वह बिल्कुल झूठ थी बहूजी बहुत अच्छी तरह हैं।

मैं–तो तुमने ऐसा क्यों किया ? '

हरदीन–इसलिए कि रघुबरसिह के साथ जाने से आपको रोकूँ।

मैं–सो क्यों ?

हरदीन–इसलिए कि वह आपको धोखा देकर ले जा रहा है और आपकी जान लिया चाहता है। मै उसके सामने आपको रोक नहीं सकता था, अगर रोकता तो उसे मेरी तरफदारी मालूम हो जाती और मैं जान से मारा जाता और फिर आपको इन दुष्टों की चालबाजियों से बचाने वाला कोई न रहता। यद्यपि मुझे अपनी जान आपसे बढ कर प्यारी नहीं है तथापि आपकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है और यह बात आपके आधीन है यदि आप मेरा भेद खोल देंगे तो फिर मेरा इस दुनिया में रहना मुश्किल है।

मैं–(ताज्जुब के साथ) तुम यह क्या कह रहे हो ? रघुबर तो हमारा दोस्त है ?

हर–इस दोस्ती पर आप भरोसा न करें और इस समय इस मौके को टाल जायें, रात को मै सब बातें आपको अच्छी तरह समझा दूँगा या यदि आपको मेरी बातों पर विश्वास न हो तो जाइए मगर एक तमंचा कमर में छिपा कर लेते जाइए और पश्चिम तरफ कदापि न जाकर पूरब तरफ जाइए–साथ ही हर तरह से होशियार रहिए। इतनी होशियारी करने पर आपको मालूम हो जायगा कि मैं जो कुछ कह रहा हू वह सच है या झूठ। -

हरदीन की बातों ने मुझे चक्कर में डाल दिया। कुछ सोचने के बाद मैंने कहा, "शाबाश हरदीन, तुमने बेशक इस समय मेरी जान बचाई, मगर खैर तुम चिन्ता न करो और मुझे इस दुष्ट के साथ जाने दो, अब मैं इसके पजे में न फसूगा और जैसा तुमने कहा है वैसा ही करूँगा।'

इसके बाद मैं चुपचाप अपने कमरे में चला गया और एक छोटा सा दोनाली तमंचा भर कर अपने कमर में छिपा लेने के बाद बाहर निकला। मुझे देखते ही रघुबरसिह ने पूछा, 'कहिए क्या हाल है ? मैंने जवाब दिया, "अब तो होश में आ गई हैं, वैद्यजी को बुला लाने के लिए कह दिया है, तब तक हम लोग भी घूम आवेंगे।'

इतना कहकर मैं उस घोडे पर सवार हो गया, रघुबरसिह भी अपने घोडे पर सवार हुआ और मेरे साथ चला। शहर के बाहर निकलने के बाद मैंने पूरब तरफ घोडे को घुमाया उसी समय रघुबरसिह ने टोका और कहा, उधर नहीं पश्चिम तरफ चलिए इधर का मैदान बहुत अच्छा और सोहावना है।

मैं–इधर पूरब तरफ भी तो कुछ बुरा नही है, मैं इधर ही चलूगा।

रघु–नहीं नहीं आप पश्चिम ही की तरफ चलिए, उधर एक काम और निकलेगा। दारोगा साहब भी इस घोड की चाल देखा चाहते थे, मैंने कह दिया था कि आप अपने घोडे पर सवार होकर जाइये और फलानी जगह ठहरियेगा हम लोग घूमते हुए उसी तरफ आवेंगे वे जरूर वहॉं गये होंगे और हम लोगों का इन्तजार कर रहे होंगे।

मैं–ऐसा ही शौक था तो दारोगा साहब भी हमारे यहॉं आ जाते और हम लोगों के साथ चलते !

रघु–खैर अब तो जो हो गया सो हो गया अब उनका ख्याल जरूर करना चाहिए।

मैं–मुझे भी पूरब तरफ जाना बहुत जरूरी है क्योंकि एक आदमी से मिलने का वादा कर चुका हू।

इसी तौर पर मेरे और उसके बीच बहुत देर तक हुज्जत होती रही। मैं पूरब तरफ जाना चाहता था और वह पश्चिम की तरफ जाने के लिए जोर देता रहा, नतीजा यह निकला कि न पूरब ही गय और पश्चिम ही गये बल्कि लौटकर सीधे घर चले आय और,यह बात रघुबरसिह को बहुत ही बुरी मालूम हुई उसने मुझसे मुँह फुला लिया और कुढा हुआ अपने घर चला गया।

मेरा रहा सहा शक भी जाता रहा और हरदीन की बातों पर मुझे पूरा-पूरा विश्वास हो गया, मगर मेरे दिल में इस बात की उलझन हद्दसे ज्यादा पैदा हुई कि हरदीन को इन सब बातों की खबर क्यों कर लग जाती है। आखिर रात के समय जब एकान्त हुआ तब मुझसे हरदीन से इस तरह की बातें होने लगी –

मै–हरदीन तुम्हारी बात तो ठीक निकली, उसने पश्चिम तरफ ले जाने के लिए बहुत जोर मारा मगर मैंने उसकी एक न सुनी।

हरदीन–आपने बहुत अच्छा किया नहीं तो इस समय बडा अन्धेर हो गया होता।

मैं–खैर, यह तो बताओ कि यकायक वह मेरी जान का दुश्मन क्यों बन बैठा ? वह तो मेरी दोस्ती का दम भरता था !

हर—इसका सवब वही लक्ष्मीदेवी वाला भेद है। मै अपनी भूल पर अफसोस करता हू, मुझे चूक हो गई जो मैने वह भेद आपसे खोल दिया। मैने तो राजा गोपालसिहजी का भला करना चाहाथा मगर उन्होंने नादानी करके मामाला ही बिगाड दिया। उन्होंने जो कुछ आपसे सुना था लक्ष्मीदेवी से कह कर दारोगा और रघुबर का आपका दुश्मन बना दिया क्योंकि इन्ही दोनों की वदौलत वह इस दर्जे को पहुची इन्हीं दोनों की वदौल हमारे महाराज (गापालसिह के पिता) मारे गये और इन्हीं दोनों ने लक्ष्मीदेवी ही को नहीं बल्कि उसके घर भर को बर्बाद कर दिया।

मै—इस समय तो तुम बडे ही ताज्जुब की बातें सुना रह हा ?

हर—मगर इन बातों को आप अपने ही दिल मे रख कर जमाने की चाल के साथ काम करें नही ता आपको पछताना पडगा, यद्यपि मै यह कदापि न कहूगा कि आप राजा गोपालसिह का ध्यान छोड दें और उन्हें डूबने दें क्योंकि वह आपके दोस्त हैं।

मै—जैसा तुम चाहते हो मै वैसा ही करूगा। अच्छा तो यह बताओ कि लक्ष्मीदेवी और वलभद्रसिह पर क्या वीती ?

हर—उन दोनों को दारोगा ने अपने पजे में फसा कर कहीं कैद कर दिया था इतना तो मुझे मालूम है मगर इसके बाद का हाल मैं कुछ भी नहीं जानता, न मालूम वे मार डाले गये या अभी तक वही कैद हैं। हा उस गदाधरसिह को इसका हाल शायद मालूम होगा जो रणधीरसिहजी का एयार है और जिसन नानक की मा को धोखा दन के लिए कुछ दिन तक अपना नाम रघुवरसिह रख लिया था तथा जिसकी बदौलत यहाँ की गुप्त कुमेटी का भण्डा फूटा है। उसन इस रघुवरसिह और दारोगा को खूब ही छकाया है। लक्ष्मीदेवी की जगह मुन्दर की शादी करा दन की वावत इनके और हेलासिह के वीच में जा पत्र-व्यवहार हुआ उसकी नकल भी गदाधरसिह (रणधीरसिह के ऐयार) के पास मोजूद हे जा कि उसने समय पर काम देने के लिए असल चीठियों स अपन हाथ स नकल की थीं। अफसास, उसन रुपये की लालच में पड कर रघुवरसिह और दारोगा को छोड दिया और इस बात का छिपा रक्खा कि यही दानों उस गुप्त कुमेटी के मुखिया हैं। इस पाप का फल गदाधरसिह को जरूर भागना पडगा ताज्जुब नहीं कि एक दिन उन चीठियों की नकल स उसी का दु ख उठाना पडे और वे चीठियाँ उसी के लिए काल बन जॉय।

इस समय मुझ हरदीन की वे बातें अच्छी तरह याद पड रही हैं। मै दखता हू कि जो कुछ उसने कहा था सच उतरा। उन चीठियों की नकल ने खुद भूतनाथ का गला दवा दिया जो उन दिनों गदाधरसिह के नाम स मशहूर हा रहा था। भूतनाथ का हाल मुझ अच्छी तरह मालूम है और इधर जा कुछ हो चुका हे वह सब तो मै सुन चुका हू। मगर इतना मैं जरूर कहूगा कि भूतनाथ के मुकदमे म तेजसिहजी ने बहुत बडी गलती की। गलती तो सभों न की मगर तजसिहजी का ऐयारा का सरताज मान कर मै सब के पहिले इन्ही का नाम लूगा। इन्होंने जब लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडिली इत्यादि क सामने वह कागज का मुट्ठा खाला था और चीठियों का पढ कर भूतनाथ पर इलजाम लगाया था कि 'बेशक ये चीठिया भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई हे तो इतना क्यों नही सोचा कि भूतनाथ की चीठियों के जवाब में हेलासिह ने जो चीठियॉ भेजी हैं वे भी तो भूतनाथ ही के हाथ की लिखी हुई मालूम पडती हैं, ता क्या अपनी चीठी का जवाब भी भूतनाथ अपन ही हाथ से लिखा करता था ?

यहाँ तक कह कर भरतसिह चुप हा रहे और तेजसिह की तरफ देखने लगे। तेजसिह ने कहा आपका कहना बहुत ही ठीक है बेशक उस समय मुझसे वडी भूल हो गई। उनमें की एक ही चीठी पढ कर क्रोध क मार हम लोग ऐसा पागल हा गए कि इस बात पर कुछ भी ध्यान न दे सके। वहुत दिनों के बाद जब देवीसिह ने यह बात सुझाई तब हम लोगों को बहुल अफसोस हुआ और तब से हम लोगो का ख्याल भी बदल गया।

भरतसिह ने कहा तेजसिहजी इस दुनिया में बडे बडे चालकों और हाशियारों से यहा तक कि स्वय विधाता ही स भूल हा गई हे तो फिर हम लागों की क्या बात हे ? मगर मजा तो यह है कि बडों को भूल कहने सुनने में नहीं आती इसीलिए आपकी भूल पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

को कहि सके बडन सों लखे बडेई भूल।
दीन्हें दई गुलाब के इन डारन ये फूल ॥

अस्तु अब मैं पुन अपनी कहानी शुरू करता हू।

इसके बाद भरतसिह ने फिर इस तरह कहना शुरू किया —

भरत—मैंने हरदीन से कहा कि अगर यह बात है तो गदाधरसिह से मुलाकात करनी चाहिए मगर वह मुझसे अपने भेद की बातें क्यों कहने लगा ? इसके अतिरिक्त वह यहाँ रहता भी नहीं है कभी कभी आ जाता है। साथ ही इसके यह जानना भी कठिन हे कि वह कब आया और कब चला गया।

हर–ठीक है मगर मै आपसे उनकी मुलाकात करा सकता हू, आशा है कि वे मेरी बात मान लेंगे और आपको असल हाल भी बता देंगे। कल वह जमानिया में आने वाले हैं।

मैं– **मगर मुझसे और उससे तो किसी तरह की मुलाकात नहीं है, वह मुझ पर क्यों भरोसा करेगा ?**

हर– **कोई चिन्ता नहीं मैं आपकी उनकी मुलाकात करा दूँगा।**

हरदीन की इस बात ने मुझे और भी ताज्जुब में डाल दिया मैं सोचने लगा कि इससे और गदाधरसिह (भूतनाथ) से ऐसी गहरी जान पहिचान क्यों कर हो गई और वह इस घर पर क्यों भरोसा करता है ?

भरतसिह ने अपना किस्सा यहाँ तक बयान किया था कि उनके काम में विघ्न पड गया अर्थात् उसी समय एक चोबदार ने आकर इत्तिला दी कि भूतनाथ हाजिर है। इस खबर को सुनते ही सब कोई खुश हो गये और भरतसिह ने भी कहा अब मेरे किस्से में विशेष आनन्द आयेगा।

महाराज ने भूतनाथ को हाजिर करने की आज्ञा दी और भूतनाथ ने कमरे के अन्दर पहुच कर सभों को सलाम किया।

तेज–(भूतनाथ से) कहो भूतनाथ कुशल तो है ? आज कई दिनों पर तुम्हारी सूरत दिखाई दी !

भूत–जी हॉ ईश्वर की कृपा से सब कुशल है जितने दिन की छुटटी लेकर गया था उसके पहिले ही हाजिर हो गया हूँ।

तेज–सो तो ठीक है मगर अपने सपूत लडके का तो कुछ हाल कहो कैसी निपटी ?

भूत–निपटी क्या आपकी आज्ञा पालन की नानक को मैंने किसी तरह की तकलीफ नहीं दी मगर सजा बहुत ही मजेदार और चटपटी दे दी गई।

देवी–(हँसते हुए) सो क्या ?

भूत–मैंने उससे एक ऐसी दिल्लगी की कि वह भी खुश हो गया होगा। अगर बिल्कुल जानवर न होगा तो अब हम लोगों की तरफ कभी मुह भी न करेगा। बात बिल्कुल मामूली थी जब वह यहा आकर मेरी फिक्र में डूबा तो घर की हिफाजत का बन्दोबस्त करने बाद कुछ शागिर्दो को साथ लेकर मै उसके मकान पर पहुच उसकी मा को उडा लाया मगर उसकी जगह अपने एक शागिर्द का रामदेई बना कर छोड आया। यहा उसे शान्ता बना कर अपने खेमे में जो इसी काम के लिए खडा किया गया था एक लौंडी के साथ सुला दिया और खुद तमाशा देखने लगा। आखिर नानक उसी को शान्ता समझ के उठा ले गया और खुशी खुशी अपनी नकली मा के सामने पहुच कर डींग हाकने लगा बल्कि उसकी आज्ञानुसार नकली शान्ता को खम्भे के साथ बाध कर जूते से पूजा करने लगा। जब खूब दुर्गति कर चुका तब नकली रामदेई उसके सामने एक पुर्जा फेंक कर घर से बाहर निकल गई। उस पुर्जे के पढने से जब उसे मालूम हुआ कि मैंने जो कुछ किया अपनी ही मा के साथ किया तब वह बहुत ही शर्मिन्दा हुआ। उस समय उन दोनों की जैसी कैफियत हुई मै क्या बयान करूँ आप लाग खुद सोच समझ लीजिये।

भूतनाथ की बात सुन कर सब लोग हँस पडे। महाराज न उसे अपने पास बुला कर बैठाया और कहा भूतनाथ जरा एक दफे तुम इस किस्से को फिर बयान कर जाओ मगर जरा खुलासे तौर पर कहो।

भूतनाथ न इस हाल को विस्तार के साथ ऐसे ढग पर दोहराया कि हँसते हँसते सभों का दम फूलने लगा। इसके बाद जब भूतनाथ को मालूम हुआ कि भरतसिह अपना किस्सा बयान कर रहे हैं तब उसने भरतसिह की तरफ देखा और कहा 'मुझे भी तो आपके किस्से से कुछ सम्बन्ध है।

भरत–बेशक, और वही हाल मै इस समय बयान कर रहा था।

भूतनाथ–(गोपालसिह से) क्षमा कीजियेगा, मैंने आपसे उस समय जब कृष्णाजिन्न बने हुए थे यह झूठ बयान किया था कि राजा गोपालसिह के छूटने के बाद मैंने उन कागजों का पता लगाया है जो इस समय मेरे ही साथ दुश्मनी कर रहे है इत्यादि। असल में वे कागज मेरे पास उसी जमाने में मौजूद थे, जब जमानिया में मुझसे और भरतसिह से मुलाकात हुई थी। आप यह हाल इनकी जुबानी सुन चुके होंगे।

भरत–हा भूतनाथ, इस समय मै वही हाल बयान कर रहा हू, अभी कह नहीं चुका।

भूत–खैर तो अभी श्रीगणेश है। अच्छा आप बयान कीजिए।

भरतसिह ने फिर इस तरह बयान किया –

भरत–दूसरे दिन आधी रात के समय जब मै गहरी नींद में सोया हुआ था हरदीन ने आकर मुझे जगाया [illegible] 'लीजिए मै गदाधरसिहजी को ले आया हूँ, उठिए और इनसे मुलाकात कीजिए ये बडे ही लायक और [illegible] है ! मै खुशी खुशी उठ बैठा और बडी नर्मी के साथ भूतनाथ से मिला। इसके बाद मुझसे और भूतनाथ [illegible] इस तरह [illegible] गी –

भूत—साहब, आपका हरदीन बडा ही नेक और दिलावर है, ऐसे जीवट का आदमी दुनिया में कम दिखाई देगा। मै तो इसे अपना परम हितैषी और मित्र समझता हू, इसने मेरे साथ जो कुछ भलाइया की है उनका बदला मैं किसी तरह चुका ही नहीं सकता। मुझसे आपसे कभी की जान पहिचान नही मुलाकात नहीं ,ऐसी अवस्था में मैं पहिल पहल विना मतलब के आपके घर कदापि न आता परन्तु इनकी इच्छा क विरुद्ध मै नहीं चल सका, इन्होंने यहाँ आन के लिए कहा और मै बेधडक चला आया। इनकी जुवानी में सुन भी चुका हू कि आज कल आप किस फेर में पडे हुए है और मुझसे मिलने की जरूरत आपको क्यों पड़ी अस्तु हरदीन की आज्ञानुसार मै वह कागज का मुट्ठा भी आपको दिखाने के लिए लेता आया हू जिससे आपको दारोगा और रघुवरसिह की हरामजदगी और राजा गोपालसिंह की शादी का पूरा पूरा हाल मालूम हो जायेगा, मगर खूब याद रखिये कि इस कागज को पढ कर आप वेताव हो जायेंगे, आपको वेहिसाव गुस्सा चढ़ आवेगा और आपका दिल वेचैनी के साथ तमाम भण्डा फोड़ देन के लिए तैयार हो जायगा। मगर नही, आपको वहुत बर्दाश्त करना पडेगा दिल को सम्हालना और इन वातों को हर तरह से छिपाना पड़ेगा। मुझे हरदीन ने आपका बहुत ज्यादा विश्वास दिलाया है तभी मैं यहा आया हू और यह अनूठी चीज भी दिखान के लिए तैयार हूँ, नही तो कदापि न आता।

मैं—आपने बडी मेहरवानी की जो मुझ पर भरोसा किया और यहा तक चले आय मेरी जुवान से आपका रत्ती भर भेद किसी को नहीं मालूम हो सकता इसका आप विश्वास रखिए। यद्यपि मैं इस बात का निश्चय कर चुका हू कि गोपालसिह के मामले में मै अब कुछ भी दखल न दूगा मगर इस बात का अफसोस जरूर है कि वह मेरे मित्र है और दुष्टों ने उन्हें बेतरह फसा रक्खा है।

भूत—केवल आप ही को नहीं इस बात का अफसोस मुझको भी है और मै खुद गोपालसिंह को इस आफत में छुडाने का इरादा कर रहा हू, मगर लाचार हू कि बलभद्रसिह और लक्ष्मीदवी का कुछ भी पता नहीं लगता और जब तक उन दोनों का पता न लग जाय तब तक इस मामले का उठाना बडी भूल है।

मैं—मगर यह तो आपको निश्चय है न कि इसका कर्त्ता-धर्ता कम्वख्त दारोगा ही है!

भूत—भला इसमें भी कुछ शर्म है? लीजिये इस कागज के मुटठे को पढ जाइये तब आपको भी विश्वास हो जायगा।

इतना कहकर भूतनाथ न कागज का एक मुट्ठा निकाला और मेरे आगे रख दिया तथा मैंने भी उस पढना शुरू किया। मै आपसे नहीं कह सकता कि उन कागजों को पढकर मर दिल की कैसी अवस्था हो गई और दारोगा तथा रघुवरसिह पर मुझे कितना क्रोध चढ आया। आप लोग तो उसे पढ सुन चुके है अतएव इस वात को खुद समझ सकते है। मैने भूतनाथ से कहा कि यदि तुम मेरा साथ दो तो मै आज ही दारोगा और रघुवरसिह को इस दुनिया से उठा दूँ।

भूत—इससे फायदा ही क्या होगा? और यह काम भी कितना बडा है? मुझे खुद इस बात का ख्याल है और मै लक्ष्मीदेवी का पता लगाने के लिए दिल से कोशिश कर रहा हू तथा आप का हरदीन भी पता लगा रहा है। इस तरह समय के पहिले छेडछाड करने से खुद अपने को झूठा वनाना पडेगा और लक्ष्मी देवी भी जहाँ की तहा पडी सडेगी या मर जायेगी।

मैं—हाँ ठीक है, अच्छा यह तो बताइये कि आप हरदीन की इतनी इज्जत क्यों करते है?

भूत—इसलिये कि यह सब कुछ इन्हीं की बदौलत है, इन्होंने मुझे कुमेटी का पता बताया और उसका भेद समझाया और इन्हीं की मदद से मैंने उस कुमेटी का सत्यानाश किया।

मैं—(हरदीन से) और तुम्हें उस कुमेटी का भेद क्योकर मालूम हुआ?

हर—(हाथ जोड के) माफ कीजियेगा मै उस कुमेटी का सदस्य था और अभी तक उन लोगों के ख्याल से उन सभों का पक्षपाती बना हुआ हू, मगर मैं ईमानदार सदस्य था इसीलिए ऐसी बातें मुझे पसन्द न आई और मै गुप्त रीति से उन लोगों का दुश्मन बन बैठा मगर इतना करने पर भी अभी तक मेरी जान इसलिए बची हुई है कि आपके घर मे मेरे सिवाय और कोई उन लोगों का साथी नहीं है।

भूत—तो क्या अभी तक तुम उन लोगों के साथी बने हुए हो और वे लोग अपने दिल का हाल तुमसे कहते हैं?

हर—जी हा अभी तो मैंने आपको रघुबरसिह के पजे से बचाया था जब वेह आपको घोडे पर सवार कराके ले चला था!

मैं—अगर ऐसा हो तो तुम्हें यह भी मालूम हो गया होगा कि उस दिन घात न लगने के कारण रघुवरसिह ने अब कौन सी कार्रवाई सोची है।

हर—जी हॉ पहले तो उसने मुझसे पूछा कि भरतसिह ने ऐसा क्यों किया क्या उसको मेरी नियत का कुछ पता लग

गया' ? जिसके जवाब में मैने कहा कि नहीं किसी दूसरे सवव से ऐसा हुआ होगा'। इसके बाद दारागा साहब ने मुझ पर हुक्म लगाया कि 'तू भरतसिह को जिस तरह हा सके जहर द दे'। मैने कहा 'वहुत अच्छा ऐसा ही करूँगा मगर इसका काम में पॉच सात दिन जरूर लग जायेंगे।

इतना कह कर हरदीन ने भूतनाथ से पूछा कि 'कहिए अब क्या करना चाहिए' ? इसके जवाब में भूतनाथ ने कहा कि 'अव पॉच-सात दिन के बाद भरतसिह को झूठ मूठ हल्ला मचा देना चाहिए कि मुझको किसी ने जहर दे दिया बल्कि कुछ बीमारी की सी नकल भी करके दिखा देनी चाहिये'।

इसके बाद थाडी देर तक और भी भूतनाथ स बातचीत होती रही और किसी दिन फिर मिलने का वादा करके भूतनाथ विदा हुआ।

इस घटना के बाद कई दफे भूतनाथ से मुलाकात हुई वल्कि कहना चाहिए कि इनक और मेरे बीच में एक प्रकार की मित्रता सी हा गई और इन्होंन कई कामों में मेरी सहायता की।

जैसा कि आपुस में सलाह हो चुकी थी मुझे यह मशहूर करना पडा कि 'मुझे किसी ने जहर दे दिया। साथ ही इसके कुछ बीमारी की नकल भी की गई जिसमें मेरे नौकर पर कम्बख्त दारागा को शक न हो जाय मगर इसका कोई अच्छा नतीजा न निकला अर्थात् दारागा को मालूम हो गया कि हरदीन उसका सच्चा साथी और भेदिया नहीं है।

एक दिन रात के समय एकान्त में हरदीन ने मुझसे कहा, लीजिये अब दारोगा साहब को निश्चय हो गया कि मैं उनका सच्चा साथी नहीं हू। आज उसने मुझे अपने पास बुलाया था मगर मैं गया नहीं क्योंकि मुझे यह निश्चय हो गया कि जान के साथ ही मैं उसक कब्जे में आ जाऊँगा और फिर किसी तरह जान न बचेगी यों तो छिटके रहने पर लडते झगडते जैसा होगा देखा जायगा। अस्तु इस समय मुझ आपस यह कहना है कि आज से मैं आपके यहॉ रहना छोड दूँगा और तव तक आपके पास न आऊँगा जब तक मैं दारोगा की तरफ से बेफिक्र न होऊँगा देखा चाहिए मेरे उससे क्योंकर निपटती है वह मुझे मार कर निश्चिन्त होता है या मैं उसे जहन्नुम में पहुचा कर कलेजा ठडा करता हू। मुझे अपने मरन का रज कुछ भी नहीं है मगर इस बात का अफसोस जरूर कि मरे जान बाद आपका मददगार यहॉ काई भी नहीं है और कम्बख्त दारोगा आपको फॅसाने में किसी तरह की कसर न करेगा खैर लाचारी है क्योंकि मेर यहॉ रहने से भी आपका कोई कल्याण नहीं हो सकता यों ता मै छिपे छिपे कुछ न कुछ मदद जरूर करूँगा परन्तु आप जहॉ तक हो सके खूब होशियारी के साथ काम कीजियेगा।"

मैं—अगर यही बात है तो तुम्हारे भागने की कोई जरूरत नहीं मालूम होती। हम लोग दारोगा के भेदों को खोल कर खुल्लमखुल्ला उसका मुकाबला कर सकते है।

हर—इससे कोई फायदा नहीं हो सकता क्योंकि हम लोगों के पास दारागा के खिलाफ कोई सबूत नहीं है और न उसक बराबर ताकत ही है।

मैं—क्या इन भदों को हम गोपालसिह से नहीं खोल सकते और ऐसा करने से भी कोई काम नहीं चलेगा ?

हर—नहीं ऐसा करने से जो कुछ बरस दो बरस गोपालसिह जी की जिन्दगी है वह भी न रहेगी अर्थात् हम लोगों के साथ ही साथ वे भी मार डाले जायेंगे। आप नहीं समझ सकते और नहीं जानते कि दारोगा की असली सूरत क्या है उसकी ताकत कैसी है और उसके मजबूत जाल किस कारीगरी के साथ फैले हुए है। गोपालसिह अपने को राजा और शक्तिमान समझते होंगे मगर मैं सच कहता हू कि दारोगा के सामने उनकी कुछ भी हकीकत नहीं है हॉ यदि राजा गोपालसिह किसी को किसी तरह की खबर किए बिना एकाएक दारागा को गिरफ्तार करके मार डालें तो बेशक वे राजा कहला सकते है मगर ऐसी अवस्था में मायारानी उन्हें जीता न छाडेगी और लक्ष्मीदेवी वाला भेद भी ज्यों का त्यों बन्द रह जायगा वह भी किसी तहखाने में पडी पडी भूखी प्यासी मर जायगी।

इसी तरह पर हमारे और हरदीन के बीच में देर तक बातें होती रही और वह मेरी हर एक बात का जबाब देता रहा। अन्त में वह मुझे समझा बुझा कर घर से बाहर निकल गया और उसका पता न लगा।

रात भर मुझे नींद न आई और मै तरह तरह की बातें सोचता रह गया। सुबह को चारपाई से उठा हाथ मुह धोने के बाद दर्बारी कपडे पहिरे हर्बे लगाए और राजा साहब की तरफ रवाना हुआ। जब मै उस त्रिमुहानी पर पहुचा जहॉ से एक रास्ता राजा साहब के दीवानखाने की तरफ और दूसरा खास बाग की तरफ गया है तब उस जगह पर दारागा साहब से मुलाकात हुई जो दीवानखाने की तरफ से लौटे हुए चले आ रहे थे।

प्रकट में मुझसे और दारोगा साहब से बहुत अच्छी तरह साहब सलामत हुई और उन्होंने उदासीनता के साथ मुझसे कहा आप दीवानखाने की तरफ कहॉ जा रहे है राजा साहब तो खास बाग में चले गये, मेरे साथ चलिए, मैं भी उन्हीं से मिलने के लिए जा रहा हूँ, सुना है कि रात स उनकी तबीयत खराब हो रही है।

मैं–(ताज्जुव के साथ) क्यों क्यों कुशल तो है ?

दारोगा–अभी अभी पता लगा है कि आधी रात के वाद से उन्हें वेहिसाहव दस्त और कै आ रहे हैं, आप कृपा करके यदि माहनजी वैद्य को अपने साथ लेते आवें तो बडा काम हो, मैं खुद उनकी तरफ जाने का इरादा कर रहा था।

दारोगा की बातें सुन कर मैं घबडा गया राजा साहब की वीमारी का हाल सुनते ही मेरी तबीयत उदास हो गई और मैं 'वहुत अच्छा' कह उल्टे पैर लौटा और मोहनजी वैद्य की तरफ रवाना हुआ।

यहाँ तक अपना हाल कह कुछ देर के लिए भरतसिह चुप हो गये और दम लेने लगे। इस समय जीतसिह ने महाराज की तरफ देखा और कहा भरतसिहजी का किस्सा भी दर्बारे आम में कैदियों के सामने ही सुनने लायक है !

महाराज–वशक ऐसा ही है। (गोपालसिह से) तुम्हारी क्या राय है ?

गोपाल–महाराज की इच्छा के विरुद्ध मैं कुछ वाल न सका नहीं तो मैं भी यही चाहता था कि और नकावपोशों की तरह इनका किस्सा भी कैदियों के सामने सुना जाय।

और सभों ने भी यही राय दी आखिर महाराज ने हुक्म दिया कि 'कल दर्बारे-आम किया जाय और कैदी लोग दर्वार में लाय जाय ।

दिन पहर भर से कुछ कम वाकी था जव यह छोटा सा दर्वार बर्खास्त हुआ और सब कोई अपने ठिकाने चले गये कुँअर आनन्दसिह शिकारी कपडे पहिन कर तारासिह को साथ लिये महल के बाहर आये और दोनों दोस्त घोडों पर सवार होकर जगल की तरफ रवाना हो गये।

दसवां बयान

घाडे पर सवार तारासिह का साथ लिये हुए कुँअर आनन्दसिह जगल ही जगल घूमते और साधारण ढग पर शिकार खेलते हुए बहुत दूर निकल गये और जब दिन बहुत कम बाकी रह गया तब धीरे धीरे घर की तरफ लौटे।

हम ऊपर के किसी बयान में लिख आये हैं कि अटारी पर एक सजे हुए बगले में बैठी हुई किशोरी कामिनी और कमलिनी वगैरह ने जगल से निकल कर घर की तरफ आते हुए कुँअर आनन्दसिह और तारासिह को देखा तथा यह भी देखा कि दस-वारह नकावपोशों ने जगल में से निकल इन दोनों पर तीर चलायें और ये दोनों उनका पीछा करते हुए पुन जगल के अन्दर घुस गये –इत्यादि।

यह वही मौका है जिसका हम जिक्र कर रहे हैं। उस समय कमला ने एक लौंडी की जुबानी इन्द्रजीतसिह को इस वात की खबर दिलवा दी थी, और खबर पाते ही कुँअर इन्द्रजीतसिह भैरोसिह तथा और भी बहुत से आदमी आनन्दसिह की मदद के लिए रवाना हो गए थे।

असल वात यह थी कि भूतनाथ की चालाकी से शर्मिन्दगी उठा कर भी नानक ने सब्र नहीं किया बल्कि पुन इन लोगों का पीछा किया और अबकी दफे इस ढग से जाहिर हुआ था कि मौका मिले तो आनन्दसिह को तीर का निशाना बनावे और इसी तरह वारी बारी से अपने दुश्मनों की जान लेकर कलेजा ठढा करे। मगर उसका यह इरादा भी काम न आया आनन्दसिह और तारासिह की चालाकी तथा उनके घोडों की चपलता के कारण उसका निशाना कारगार न हुआ और उन्होंने तेजी के साथ उसके सर पर पहुच कर सभों को हर तरह से मजबूर कर दिया। तब तक मदद लिए हुए कुँअर इन्द्रजीतसिह भी जा पहुचे और आठ साथियों के सहित वेईमान नानक को गिरफ्तार कर लिया। यद्यपि उसी समय यह भी मालूम हो गया कि इसके साथियों में से कई आदमी निकल गए, मगर इस बात की कुछ परवाह न की गई और जो कुछ गिरफ्तार हो गए थे उन्हीं को लेकर सब कोई घर की तरफ रवाना हो गए।

कम्बख्त नानक पर हर तरह की रियाअत की गई वहुत कडी सजा पाने के योग्य होने पर भी उसे किसी तरह की सजा न दी गई और वह इस ख्याल से बिल्कुल साफ छोड दिया गया कि शायद फिर भी सुधर जाय मगर नहीं–

भूयोपि सिक्ता पयसा घृतेन
न निम्ब वृक्षो मधुरत्वमेति

अर्थात नीम न मीठी होय सींचे गुड घीउ से।

आखिर नानक को वह दुख भोगना ही पडा जो उसकी किस्मत में बदा हुआ था।

जिस समय नानक गिरफ्तार करके लाया गया और लोगों ने उसका हाल सुना उस समय सभों को उसकी नालायकी पर वहुत ही रज हुआ। महाराज की आज्ञानुसार वह कैदखाने में पहुचाया गया और सभों को निश्चय हो गया कि अव इस किसी तरह छुटकारा नहीं मिल सकता।

दूसरे दिन दर्बार-आम का बन्दावस्त किया गया और कैदियों का मुकदमा सुनने के लिए वडे शौक से लोग इकट्ठा होने लग। हथकडियों और बड़ियों से जकड हुए कैदी लाग हाजिर किए गए और आपुस वाला तथा ऐयारों का साथ लिए हुए महाराज भी दर्बार में आकर एक ऊँची गद्दी पर बैठ गये। आज क दर्बार में भीड मामूली से बहुत ज्यादे थी और कैदियों का मुकदमा सुनने के लिए सभी उतावले हो रहे थे। भरतसिह,दर्लापशाह,अर्जुनसिह तथा उनके और भी दो साथी जो तिलिस्म के वाहर हाने के बाद अपने घर चल गए थे और अब लाट आये हैं अपने अपने चेहरा पर नकाब डाल कर दर्बार मे राजा गोपालसिह के पास बैठ गये और महाराज के हुक्म का इन्तजार करने लगे।

महाराज का इशारा पाकर भरतसिह खडे हा गए और उन्होंने दारोगा तथा जैपाल की तरफ देख कर कहा– दारोगा साहब जरा मेरी तरफ दखिए और पहिचानिए कि मैं कौन हू। जैपाल तू भी इधर निगाह कर !'

इतना कह कर भरतसिह ने अपने चेहरे पर से नकाब उलट दी और एक दफे चारों तरफ देख कर सभों का ध्यान अपनी तरफ खैंच लिया। सूरत देखते ही दारोगा और जैपाल थर थर कापने लगे। दारोगा ने लडखडाई हुई आवाज में कहा कौन ? ओफ भरतसिह ! नहीं नहीं भरतसिह कहाँ ? उस मरे बहुत दिन हा गए यह तो कोई ऐयार है !!'

भरत–नहीं नही दारागा साहब मै ऐयार नही हू, मैं वही भरतसिह हू जिसे आपने हद से ज्यादा सताया था मैं वही भरतसिह हू जिसके मुह पर आपन मिर्च का तोबडा चढाया था और मैं वही भरतसिह हू जिस आपने अधेरे कूएँ में लटका दिया था। सुनिय मैं अपना किस्सा बयान करता हू और यह भी कहता हू कि आखीर में मेरी जान क्योंकर बची। जैपालसिह आप भी सुनिए और हुकारी भरते चलिए।

इतना कहकर भरतसिह ने अपना किस्सा आदि से कहना आरम्भ किया जैसा कि हम ऊपर बयान कर आये हैं और इसके बाद यों कहन लगे –

भरत–दारागा की बाता न मुझे घबडा दिया और मै उलटे पैर मोहनजी वैद्य को बुलाने के लिए रवाना हुआ। मुझे इस बात का रत्ती भर भी शक न था कि मोहनजी और दारोगा साहब एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं अथवा इन दोनों में हमारे लिए कुछ बातें तै पा चुकी हे। मैं बेधडक उनके मकान पर गया और इत्तिला करान के बाद उनक एकान्त वाले कमरे में जा पहुचा जहा उन्होंने मुझ बुला भेजा था। उस समय वे अकेल बैठे माला जप रहे थ। नौकर मुझे वहाँ तक पहुचाकर बिदा हो गया और मैंने उनक पास बैठकर राजा साहब का हाल बयान करक खास बाग में चलन के लिए कहा। जवाब में वैद्यजी यह कह कर कि "मैं दवाओं का बन्दोबस्त करके अभी आपके साथ चलता हू खडे हुए और आलमारी में स कई तरह की शीशियाँ निकाल निकाल जमीन पर रखने लग। उसी बीच में उन्होंने एक छोटी शीशी निकाल कर मेरे हाथ मे दी और कहा "देखिए यह मैंने एक नये ढग की ताकत की दवा तयार की है खाना तो दूर रहा इसके सूघने ही से तुरन्त मालूम हाता है कि बदन में एक तरह की ताकत आ रही है ! लीजिए जरा सूघ क अन्दाज तो कीजिए।

मैं वैद्यजी के फेर म पड गया और शीशी का मुह खाल कर सूघने लगा। इतना तो मालूम हुआ कि इसमें कोई खुशबूदार चीज है मगर फिर तनोबदन की सुध न रही। जब मैं होश में आया ता अपने को हथकडी बेडी से मजबूर एक अधेरी कोठरी में कैद पाया। नहीं कह सकता कि वह दिन का समय था या रात का। कोठरी के एक कोने में चिराग जल रहा था और दारागा तथा जैपाल हाथ में नगी तलवार लिए साम्ने बैठ हुए थे।

मैं–(दारागा से) अब मालूम हुआ कि आपने इसी काम के लिए मुझे वैद्यजी के पास भजा था।

दारोगा–बेशक इसीलिए क्योंकि तुम मरी जड काटने क लिए तैयार हा चुके थे।

मैं–ता फिर मुझे कैद कर रखने स क्या फायदा ? मार कर बखेडा निपटाइए और बेखटके आनन्द कीजिए।

दारोगा–हा अगर तुम मेरी बात न मानोगे तो बेशक मुझे ऐसा ही करना पडेगा।

मैं–मानने की कौन सी बात है ? मैने ता अभी तक कोई एसा काम नहीं किया जिससे आपको किसी तरह का नुकसान पहुच।

दारोगा–ये सब बातें तो रहन दो क्योंकि तुम और हरदीन मिल कर जा कुछ कर चुके थे और जो किया चाहते थे उसे मैं खूब जानता हू मगर बात यह है कि अगर तुम चाहा तोमैं तुम्हें इस कैद से छुट्टी दे सकता हू नहीं तो मौत तुम्हारे लिए रक्खी हुइ है।

मैं–खैर बतलाइये ता सही कि वह कौन सा काम है जिसके करन से छुट्टी मिल सकती है !

दारोगा–यही कि तुम एक चीठी इन रघुबरसिह अर्थात् जैपाल के नाम की लिख दो जिसमें यह बात हो कि लक्ष्मीदेवी के बदले में मुन्दर को मायारानी बना देन में जो कुछ मेहनत की हे वह हम तुम दोनों न मिल कर की है अतएव

इसके बाद बाहर का हाल बहुत दिनों तक कुछ भी मालूम न हुआ कि क्या हो रहा है और क्या हुआ। बहुत दिनों तक वहा से बाहर निकलने के लिए उद्योग करते रहे परन्तु सब व्यर्थ हुआ और वहा से छुट्टी तभी मिली जब दोनों कुमारों के दर्शन हुए *। कुछ दिनों बाद दलीपशाह से भी उसी बाग में मुलाकात हुई जिसका हाल उनका किस्सा सुनने से आप लोगों को मालूम होगा। बस इतना ही तो मेरा किस्सा है, हा जब आप लोग दलीपशाह की कहानी सुनेंगे तब बेशक कुछ आनन्द मिलेगा। (एक नकाबपोश की तरफ बताकर) मेरा पुराना खैरख्वाह हरदीन यही है जो इतने दिनों तक मेरे दु ख सुख का साथी बना रहा और अन्त में मेरे साथ ही कैद से छूटा।

भरतसिह की कथा समाप्त होने के बाद दर्बार बर्खास्त किया गया और महाराज ने हुक्म दिया कि कल के दर्बार में दलीपशाह अपना किस्सा बयान करेंगे ।

ग्यारहवां बयान

दूसरे दिन पुन उसी ढग का दर्बार लगा और सब कोई अपने ठिकाने पर बैठ गये।

इशारा पाकर दलीपशाह उठ खडा हुआ और उसने अपने चेहरे पर से नकाब हटा कर दारोगा जैपाल बेगम और नागर वगैरह की तरफ देख कर कहा--

दलीप--आप लोगों की खुशकिस्मती का जमाना तो बीत गया अब वह जमाना आ गया है कि आप लोग अपने किए का फल भोगें और देखें कि आपने जिन लोगों को जहन्नुम में पहुचाने का बीड़ा उठाया था आज ईश्वर की कृपा से वे ही लोग आपको हँसते खेलते दिखाई देते हैं। खैर मुझे इन बातों से कोई मतलब नहीं इसका निपटारा तो महाराज की आज्ञा से होगा मुझे अपना किस्सा बयान करने का हुक्म हुआ है सो बयान करता हू। (और लोगों की तरफ देख कर) मेरे किस्से से भूतनाथ का भी बहुत बडा सम्बन्ध है मगर इस खयाल से कि महाराज ने भूतनाथ का कसूर माफ करके उसे अपना ऐयार बना लिया है मै अपने किस्से में उन बातों का जिक्र छोडता जाऊगा जिससे भूतनाथ की बदनामी होती है इसके अतिरिक्त भूतनाथ प्रतिज्ञानुसार महाराज के आगे पेश करने के लिए स्वय अपनी जीवनी लिख रहा है जिससे महाराज को पूरा पूरा हाल मालूम हो जायगा अस्तु मुझे कुछ कहने की जरूरत भी नहीं है।

मै मिर्जापुर के रहने वाले दीनदयालसिंह ऐयार का लडका हू। मेरे पिता महाराज धौलपुर के यहा रहते थे और वहा उनकी बहुत इज्जत और कदर थी। उन्होंने मुझे एयारी सिखाने में किसी तरह की त्रुटि नहीं की जहा तक हो सका दिल लगा कर मुझे एयारी सिखाई और मै भी इस फन में खूब होशियार हो गया, परन्तु पिता के मरने के बाद मैंने किसी रियासत में नौकरी नहीं की। मुझे अपने पिता की जगह मिलती थी और महाराज मुझे बहुत चाहते थे, मगर मैंने पिता के मरने के साथ ही रियासत छोड दी और अपने जन्म-स्थान मिर्जापुर में चला आया क्योंकि मेरे पिता मेरे लिए बहुत दौलत छोड गये थे और मुझे खाने पीने की कुछ परवाह न थी। पिता के देहान्त के साल भर पहिले ही मेरी मा मर चुकी थी अतएव केवल मै और मेरी स्त्री दो ही आदमी अपने घर के मालिक थे।

जमानिया की रियासत में मुझे किसी तरह का सम्बन्ध नहीं था परन्तु इस लिए कि मै एक नामी ऐयार का लडका और खुद भी ऐयार था तथा बहुत से ऐयारों से गहरी जान पहिचान रखता था मुझे चारो तरफ की खबरें बराबर मिला करती थीं इसी तरह जमानिया में जो कुछ चालबाजिया हुआ करती थीं वह भी मुझसे छिपी हुई न थीं। भूतनाथ की स्त्री और मेरी स्त्री आपुस में मौसेरी बहिनें होती हैं और भूतनाथ को जमानिया से बहुत घना सम्बन्ध हो गया था इसलिए जमानिया का हाल जानने के लिए मै उद्योग भी किया करता था मगर उसमें किसी तरह का दखल नहीं देता था। (दारोगा की तरफ इशारा करके) इस हरामखोर दारोगा ने रियासत पर अपना दबाव डालने की नीयत से विचित्र ढोंग रच लिया था, शादी नहीं की थी और बाबाजी तथा ब्रह्मचारी के नाम से अपने को प्रसिद्ध कर रक्खा था बल्कि मौके मौके पर लोगों को कहा करता था कि मै तो साधू आदमी हू मुझे रुपये पैसे की जरूरत ही क्या है, मै तो रियासत की भलाई और परोपकार में अपना समय बिताना चाहता हू, इत्यादि। परन्तु वास्तव में यह परले सिरे का ऐयाश बदमाश और लालची था जिसके विषय में कुछ विशेष कहना मै पसन्द नहीं करता।

---

*देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति बीसवा भाग चौथा बयान।

मेरे पिता और इन्द्रदेव के पिता दोनों दिली दोस्त और ऐयारी में एक ही गुरु के शिष्य थे अतएव मुझमें और इन्द्रदेव म भी उसी प्रकार की दोस्ती और मुहब्बत थी इसीलिए मैं प्राय इन्द्रदेव से मिलने के लिए उनके घर जाया करता और कभी कभी वे भी मेरे घर आया करते थे। जरूरत पडने पर इन्द्रदेव की इच्छानुसार मैं उनका कुछ काम भी कर दिया करता और उन्हीं के यहा कभी कभी इस कम्बख्त दारोगा से भी मुलाकात हो जाया करती थी बल्कि यों कहना चाहिए कि इन्ददव ही के सबब स दारोगा जैपाल राजा गोपालसिह और भरतसिह तथा जमानिया के और भी कई नामी आदमियों से मेरी मुलाकात और साहब सलामत हो गई थी।

जब भूतनाथ क हाथ से बचारा दयाराम मारा गया तबस मुझमें और भूतनाथ में एक प्रकार की खिचाखिची हो गई थी और वह खिचाखिची दिनों दिन बढती ही गई यहा तक कि कुछ दिनों बाद हम दोनों की साहब,सलामत भी छूट गई।

एक दिन मैं इन्द्रदेव के यहा बैठा हुआ भूतनाथ क विषय में बातचीत कर रहा था क्योंकि उन दिनों यह खबर बडी तेजी के साथ मशहूर हो रही थी कि गदाधरसिह (भूतनाथ) मर गया । परन्तु उस समय इन्द्रदेव इस बात पर जोर दे रहे थे कि भूतनाथ मरा नहीं कहीं छिप कर बैठ गया है कभी न कभी यकायक प्रकट हो जायगा। इसी समय दारोगा क आने की इत्तिला मिली जो बडे शान शौकत के साथ इन्द्रदव से मिलने के लिए आया था। इन्द्रदेव बाहर निकल कर बडी खातिर के साथ इस घर के अन्दर ल गय और अप्न आदमियों को हुक्म दे गये कि दारोगा के साथ जो आदमी आये हैं उनके खाने पीने और रहने का उचित प्रबन्ध किया जाय।

दारोगा को साथ लिए हुए इन्द्रदव उसी कमर में आए जिसमें म पहिले ही से बैठा हुआ था क्योंकि इन्द्रदेव की तरह मैं दारोगा को लने के लिए मकान के बाहर नहीं गया था और न दारोगा के आ पहुचने पर मैंने उठ कर इसकी इज्जत ही बढाई हा साहब सलामत जरूर हुई। यह बात दारोगा को बहुत ही बुरी मालूम हुई मगर इ द्रदेव को नहीं क्योंकि इन्द्रदेव गुरुभाई का सिर्फ़ नाता निबाहते थे दिल से दारोगा की खातिर नहीं करते थे।

इन्द्रदव और दारोगा में देर तक तरह तरह की बातें होती रहीं जिसमें मौके मौक पर दारोगा अपनी हाशियारी और बुद्धिमानी की तस्वीर खैंचता रहा। जब ऐयारों की कहनी छिडी तो वह एकाएक मेरी तरफ पलट पडा और बोला, आप इतन बडे ऐयार के लडके हाकर घर में बेकार क्यों बैठे हैं ? और नहीं तो मेरी ही रियासत में काम कीजिए यहा आपको बहुत आराम मिलगा। देखिए बिहारीसिह और हरनामसिह कैसी इज्जत और खुशी के साथ रहते हैं आप तो उनसे बहुत ज्याद इज्जत के लायक है।

मैं–मैं बेकार तो बैठा रहता हू मगर अभी तक अपने को महाराज धौलपुर का नौकर समझता हू क्योंकि रियासत का काम छोड देने पर भी वहा से मुझे खाने को बराबर मिल रहा है।

दारोगा–(मुह बना कर) अजी मिलता भी होगा तो क्या एक छोटी सी रकम से आपका क्या काम चल सकता है ? आखिर अपने पल्ले की जमा तो खर्च करते होंगे।

मैं–यह भी तो महाराज ही का दिया हुआ है !

दारोगा–नहीं वह आपके बाप का दिया हुआ है। खैर मेरा मतलब यह है कि वहा से अगर कुछ मिलता है तो उसे भी आप रखिए और मेरी रियासत से भी फायदा उठाइए।

मैं–ऐसा करना बेईमानी और नमकहरामी कहा जायगा और यह मुझसे न हो सकेगा।

दारोगा–(हँस कर) वाह वाह ! ऐयार लोग दिन रात ईमानदारी की हँडिया ही तो चढाए रहते हैं !!

मैं–(तेजी के साथ) बेशक ! अगर ऐसा न हो तो-वह ऐयार नहीं रियासत का कोई ओहदेदार कहा जायगा !

दारोगा–(तन कर) ठीक है, गदाधरसिह आप ही का नातेदार तो है जरा उसकी तस्वीर तो खैंचिए !

मैं–गदाधरसिह किसी रियासत का ऐयार नहीं है और न मैं उसे ऐयार समझता हू, इतना होने पर भी आप यह साबित नहीं कर सकते कि उसने अपने मालिक के साथ किसी तरह की बेईमानी की।

दारोगा–(और भी तनक के) बस बस बस रहने दीजिए, हमारे यहा भी बिहारीसिह और हरनामसिह ऐयार ही तो हैं।

मैं–इसी से तो मैं आपकी रियासत में जाना बेइज्जती समझता हू।

दारोगा–(भौं सिकोड कर) तो इसका यह मतलब है कि हमलोग बेईमान और नमकहराम हैं !!

मैं–(मुस्कुरा कर) इस बात को तो आप ही सोचिये !

दारोगा–देखिए जुबान सम्हाल कर बात कीजिए नहीं तो समझ रखिए कि मैं मामूली आदमी नहीं हू !!

मैं–(क्रोध से) यह तो मैं खुद कहता हू कि आप मामूली आदमी नहीं हैं क्योंकि आदमी में शर्म होती है और वह

जानता है कि ईश्वर भी कोई चीज है !

दारोगा–(क्रोध भरी ऑखें दिखा कर) फिर वही बात !!

मैं–हॉ वही बात ! गोपालसिह के पिता वाली बात ! गुप्त कमेटी वाली बात ! गदाधरसिह की दोस्ती वाली बात ! लक्ष्मीदेवी की शादी वाली बात ! और जो बात कि आपके गुरुभाई साहब को नही मालूम है वह बात !!

दारोगा–(दॉत पीस कर और कुछ देर मेरी तरफ देख कर) खैर अब इस बहुत सी बात का जवाब लात ही से दिया जायगा।

मैं–बेशक, और साथ ही इसके यह भी समझ रखिए कि जवाब देने वाले भी एक दो नहीं हैं, लातों की गिनती भी आप न सम्हाल सकेंगे। दारोगा साहब जरा होश में आइए और सोच विचार कर बातें कीजिए। अपने को आप ईश्वर न समझिए बल्कि यह समझ कर बातें कीजिए कि आप आदमी हैं और रियासत धौलपुर के किसी ऐयार से बातें कर रहे हैं।

दारोगा–(इन्ददेव की तरफ घूरर कर) क्या आप चुपचाप बैठ तमाशा देखेंगे और अपने मकान मे मुझे बेइज्जत करावेंगे ?

इन्ददेव–आप तो खुद ही अपनी अनोखी मिलनसारी से अपने को बेइज्जत करा रहे हैं इतनी बात बढाने की आपको जरूरत ही क्या थी ? मैं आप दोनों के बीच में नहीं बोल सकता क्योंकि दलीपशाह को भी अपना भाई समझता और इज्जत की निगाह से देखता हू।

दारोगा–तो फिर जैसे बने हम इनसे निपट लें !

इन्ददेव–हा हॉ !

दारोगा–पीछे उलाहना न देना क्योंकि आप इन्हें अपना भाई समझते हैं !

इन्ददेव–मै कभी उलाहना न दूगा।

दारोगा–अच्छा तो अब मै जाता हू, फिर कभी मिलूगा तो बातें करूँगा।

इन्ददेव ने इस बात का कुछ भी जवाब न दिया, हा जब दारोगा साहब बिदा हुए तो उन्हें दरवाजे तक पहुचा आये। जब लौट कर कमरे में मेरे पास आये तो मुस्कुराते हुए बोले 'आज तो तुमने इसकी खूब खबर ली। जो बात तुम्हारे गुरु भाई साहब को नही मालूम है वह बात', इन शब्दों ने तो उसका कलेजा छेद दिया होगा। मगर तुमसे बेतरह रज होकर गया है इस बात का खूब खयाल रखना।

मैं–आप इस बात की चिन्ता न कीजिए देखिये मै इन्हें कैसा छकाता हू। मगर वाह रे आपका कलेजा ! इतना कुछ हो जाने पर भी आपने अपनी जुबान से कुछ न कहा बल्कि पुराने बर्ताव में बल तक न पडने दिया।

इन्ददेव–मैंने तो अपना मामला ईश्वर के हवाले कर दिया है।

मैं–खैर ईश्वर भी इन्साफ करेगा। अच्छा तो अब मुझे भी बिदा दीजिए क्योंकि अब इसके मुकाबले का बन्दोबस्त शीघ्र करना पडेगा।

इन्द–यह तो मै कहूगा कि आप बेफिक्र न रहिए।

थोडी देर तक और बातचीत करने बाद मै इन्ददेव से बिदा होकर अपने घर आया और उसी समय से दारोगा के मुकाबले का ध्यान मेरे दिमाग मे चक्कर लगाने लगा।

घर पहुच कर मैने सब हाल अपनी स्त्री से बयान किया और ताकीद की हर दम होशियार रहा करना। उन दिनों मेरे यहॉ कई शागिर्द भी रहा करते थे जिन्हें मै ऐयारी सिखाता था। उनसे भी यह सब हाल कहा और होशियार रहने की ताकीद की। उन शागिर्दों में गिरिजाकुमार नाम का एक लडका बडा ही तेज और चचल था, लोगों को धोखे में डाल देना तो उसके लिए एक मामूली बात थी बातचीत के समय वह अपना चेहरा ऐसा बना लेता था कि अच्छे अच्छे उसकी बातों में फॅस कर बेवकूफ बन जाते थे। यह गुण उसे ईश्वर का दिया हुआ था जो बहुत कम ऐयारों मे पाया जाता है। अस्तु गिरिजाकुमार ने मुझसे कहा कि 'गुरुजी यदि दारोगा वाला मामला आप मेरे सुपुर्द कर दीजिए तो मै बहुत ही प्रसन्न होऊँ और उसे ऐसा छकाऊँ कि वह भी याद करे जमानिया में मुझे कोई पहिचानता भी नहीं है अतएव मै अपना काम बडे मजे से निकाल लूगा।

मैंने उसे समझाया और कहा कि 'कुछ दिन सब्र करो जल्दी क्यों करते हो, फिर जैसा मौका होगा किया जायगा मगर उसने एक न माना। हाथ जोड के खुशामद करके, गिडगिड़ा के जिस तरह हो सका उसने आज्ञा ले ही ली और उसी दिन सब सामान दुरुस्त करके मेरे यहॉ से चला गया।

अब मैं थोडा सा हाल गिरिजाकुमार का बयान करूँगा कि इसने दारोगा के साथ क्या किया।

आप लागों को यह बात सुन कर ताज्जुब हागा कि मनोरमा असल में दारोगा साहब की रडी है इन्हीं की बदौलत मायारानी के दरबार में उसकी इज्जत बढी और इन्हीं की बदौलत उसने मायारानी को अपने फन्दे में फँसा कर बेहिसाब दौलत पैदा की। पहिले पहिल गिरिजाकुमार ने मनोरमा के मकान ही पर दारोगा साहब से मुलाकात भी की थी।

दारोगा साहब मनोरमा से प्रेम रखते थे सही मगर इसमें कोई शक नहीं कि इस प्रेम और ऐयाशी को इन्होंने बहुत अच्छे ढग से छिपाया और बहुत आदमियों को मालूम न होने दिया तथा लागों की निगाहों में साधू और ब्रह्मचारी ही बने रह। स्वय तो जमानिया में रहत थ मगर मनोरमा के लिए इन्होंने काशी में एक मकान भी बनवा दिया था दसवें-बारहवें दिन अथवा जब कभी समय मिलता तेज घोडे पर या रथ पर सवार होकर काशी चले जाते और दस बारह घण्टे मनोरमा क मेहमान रहकर लौट जाते।

एक दिन दारोगा साहब आधी रात क समय मनोरमा के खास कमरे में बैठे हुए उसके साथ शराब पी रहे थे और साथ ही साथ हँसी दिल्लगी का आनन्द भी लूट रहे थे। उस समय इन दोनों में इस तरह की बातें हो रही थी –

दारोगा–जो कुछ मेरे पास है सब तुम्हारा है, रुपये पैसे के बारे में तुम्हें कभी तकलीफ न होने दूँगा। तुम बेशक अमीराना ठाठ क साथ रहो और खुशी से जिन्दगी बिताओ गोपालसिह अगर तिलिस्म का राजा है तो क्या हुआ मै भी तिलिस्म का दारोगा हू, उसमें दो चार स्थान ऐसे हैं कि जिनकी खबर राजा साहब को भी नहीं मगर मै वहाँ बखूबी जा सकता हू और वहाँ की दौलत को खास अपनी मिल्कियत समझता हू। इसके अतिरिक्त मायारानी से भी मैंने तुम्हारी मुलाकात करा दी है और वह भी हर तरह से तुम्हारी खातिर करती ही है फिर तुम्हें परवाह किस बात की है ?

मनोरमा–बेशक मुझे किसी बात की परवाह नहीं है और आपकी बदौलत मैं बहुत खुश रहती हूँ, मगर मै यह चाहती हूँ कि मायारानी के पास खुल्लमखुल्ला मेरी आमदरफ्त हो जाय अभी गोपालसिह के डर से बहुत कुछ छिप कर और नखरे तिल्ले क साथ जाना पडता है !

दारोगा–फिर यह तो जरा मुश्किल बात है।

मनोरमा–मुश्किल क्या है ? लक्ष्मीदेवी की जगह दूसरी औरत को राजरानी बना देना क्या साधारण काम था ? सो तो आपने सहज ही में कर दिखाया और इस एक सहज काम के लिए कहते हैं कि मुश्किल है।

दारोगा–(मुस्कुरा कर) सो तो ठीक है गोपालसिह को मैं सहज में बैकुंठ पहुचा सकता हू मगर यह काम मेरे किए न हो सकेगा उसके ऊपर मेरा हाथ न उठेगा।

मनोरमा–(तिनक कर) अब इतनी रहमदिली से तो काम न चलेगा। उनके मौजूद रहने से बहुत बडा हर्ज हो रहा है अगर वह न रहें तो बेशक आप जमानिया और तिलिस्म का राज्य कर सकते हैं मायारानी तो अपने को आपका ताबेदार समझती है।

दारोगा–बेशक ऐसा ही है मगर

मनोरमा–और इसमें आपको कुछ करना भी न पडेगा सब काम मायारानी ठीक कर लेंगी।

दारोगा–(चौंक कर) क्या मायारानी का भी ऐसा इरादा है ?

मनोरमा–जी हाँ, वह इस काम के लिए तैयार है मगर आपसे डरती है आप आज्ञा दें तो सब कुछ ठीक हो जाय।

दारोगा–तो तुम उसी की तरफ से इस बात की कोशिश कर रही हो ?

मनोरमा–बेशक मगर साथ ही इसमें आपका और अपना भी फायदा समझती हूँ तब ऐसा कहती हूँ। (दारोगा के गले में हाथ डाल कर) बस आप आज्ञा दे दीजिए।

दारोगा–(मुस्कुरा कर) खैर तुम्हारी खातिर मुझे मजूर है मगर एक काम करना कि मायारानी से और मुझसे इस बारे में बातचीत न कराना जिसमें मौका पडे तो मैं यह कहने लायक रह जाऊँ कि मुझे इसकी कुछ भी खबर नहीं। तुम मायारानी की दिलजमयी करा दो कि दारोगा साहब इस बारे में कुछ भी न बोलेंगे तुम जो कुछ चाहो कर गुजरो, मगर साथ ही इसके इस बात का खयाल रक्खो कि सर्वसाधारण को किसी तरह का शक न होने पावे और लोग यही समझें कि गोपालसिह अपनी मौत से मरा है। मै भी जहाँ तक हो सकेगा छिपाने की कोशिश करूँगा।

मनोरमा–(खुश होकर) बस अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम मुझसे प्रेम रखते हो।

इसके बाद दोनों में बहुत ही धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं जिन्हें गिरिजाकुमार सुन न सका। गिरिजाकुमार चोरों की तरह उस मकान में घुस गया था और छिप कर ये बातें सुन रहा था। जब मनोरमा ने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया तब वह कमन्द लगा कर मकान के पीछे की तरफ उतर गया और धीरे धीरे अस्तबल में जा पहुचा। अबकी दफे दारोगा यहाँ रथ पर सवार होकर आया था, वह रथ अस्तबल में था, घोडे बँधे हुए थे और सारथी रथ के अन्दर सो रहा

था। इससे कुछ दूर पर मनोरमा के और सब साईस तथा घसियारे वगैरह पड़े खुर्राट ले रहे थ।

बहुत होशियारी स गिरिजाकुमार ने दारोगा के सारथी को वेहोशी की दवा सुँघा कर वेहोश किया और उठा के बाग के एक कोने में घनी झाड़ी क अन्दर छिपा कर रख आया, उसके कपड़े आप पहिर लिए और चुपचाप रथ क अन्दर घुस कर सो रहा।

जब रात घण्टा भर के लगभग बाकी रह गई तब दारोगा साहब जमानिया जाने के लिए विदा हुए और एक लौंडी ने अस्तबल में आकर रथ जोतन की आज्ञा सुनाई। नये सारथी अर्थात् गिरिजाकुमार ने रथ जात कर तैयार किया और फाटक पर लाकर दारोगा साहब का इन्तजार करने लगा। शराब क नशे में चूर झूमत और एक लौंडी का हाथ थाम हुए दारोगा साहब भी आ पहुचे। उनके रथ पर सवार होन के साथ ही रथ तेजी के साथ रवाना हुआ। सुबह की ठढी हवा ने दारोगा साहब के दिमाग में खुनकी पैदा कर दी और वे रथ क अन्दर लट कर बखबर सा गये। गिरिजाकुमार न जिधर चाहा घोडों का मुँह फेर दिया और दारोगा साहब को लेकर रवाना हा गया। इस तौर पर उसे सूरत बदलने की जरूरत न पडी।

नहीं कह सकते कि मनोरमा के बाग में दारागा का असली सारथी जब हाश में आया हागा ता वहा कैसी खलबली मची होगी मगर गिरिजाकुमार को इस बात की कुछ भी परवाह न थी, उसने रथ को रोहतासगढ की सड़क पर रवाना किया और चलते चलते अपने बटुए में से मसाला निकाल कर अपनी सूरत साधारण ढग पर बदल ली जिसमें हाश आने पर दारोगा उसकी सूरत से जानकार न हो सक इसक बाद उसने दवा सुघा कर दारोगा को और भी वेहोश कर दिया।

जब रथ एक घने जगल में पहुचा और सुबह की सुफेदी भी निकल आई ता गिरिजाकुमार रथ को सडक पर से हटा कर जगल में ले आया जहाँ सडक पर चलने वाल मुसाफिरों की निगाह न पड़। घोडों का खाल लम्बी बागडोर के सहारे एक पेड के साथ बाँध दिया और दारागा का पीठ पर लाद वहाँ स थोडी दूर पर एक घनी झाडी के अन्दर ले गया जिसके पास ही एक पानी का झरना भी बह रहा था। घाडे की रास से दारागा साहब का एक पेड़ क साथ बाँध दिया और वेहोशी दूर करने की दवा सुँघाने क बाद थाडा पानी भी चहरे पर डाला जिसमें शराब का नशा ठढा हो जाय और तब हाथ में काडा लेकर सामने खडा हो गया।

दारोगा साहब जब हाश में आय ता बडी परेशानी के साथ चारो तरफ निगाह दौडाने लगे। अपने को मजबूर और एक अनजान आदमी को हाथ में कोडा लिए सामन खड़ा दख काँप उठ और बोल 'भाई तुम कौन हा और मुझे इस तरह क्यों सता रक्खा है? मैन तुम्हारा क्या बिगाडा है?

गिरिजा–क्या करूँ लाचार हूँ, मालिक का हुक्म ही एसा है!

दारोगा–तुम्हारा मालिक कौन है और उसने ऐसी आज्ञा तुम्हें क्यों दी?

गिरिजा–मैं मनोरमाजी का नौकर हू और उन्होंने अपना काम ठीक करने के लिए मुझे ऐसी आज्ञा दी है।

दारोगा–(ताज्जुब से) तुम मनारमा के नौकर हो! नहीं नही ऐसा नहीं हो सकता मैं उसके सब नोकरों को अच्छी तरह पहिचानता हूँ।

गिरिजा–मगर आप मुझ नहीं पहिचानते क्योंकि मै गुप्त रीति पर उनका काम किया करता हूँ और उनके मकान पर बराबर नहीं रहता!

दारोगा–शायद ऐसा हो मगर विश्वास नहीं होता खैर यह बताओ कि उन्होंने किस काम के लिए ऐसा करने को कहा है?

गिरिजा–आपको विश्वास हो चाहे न हो इसके लिए मै लाचार हू, हाँ उनके हुक्म की तामील किए बिना नहीं रह सकता। उन्होंन मुझे यह कहा है कि दारोगा साहब मायारानी के लिए इस बात की इजाजत दे गये है कि वह जिस तरह हो सके राजा गोपालसिंह को मार डाल हम इस मामल में कुछ दखल न देंगे, मगर यह बात वह नशे में कह गये है कही ऐसा न हो कि भूल जायँ अस्तु जिस तरह हो सके तुम इस बात की एक चीठी उनसे लिखा कर मेरे पास ले आओ जिसमें उन्हें अपना वादा अच्छी तरह याद रहे। अब आप कृपा कर इस मजमून की एक चीठी लिख दीजिये कि मैं गोपालसिंह को मार डालन के लिए मायारानी को इजाजत देता हू।

दारोगा–(ताज्जुब का चेहरा बना कर) न मालूम तुम क्या कह रहे हो! मैंने मनोरमा से ऐसा कोई वादा नहीं किया!!

गिरिजा–तो शायद मनोरमाजी ने मुझसे झूठ कहा होगा मैं इस बात को नहीं जानता, हाँ उन्होंने जो आज्ञा दी है सो आपसे कह रहा हू।

इतना सुन कर दारोगा कुछ सोच में पड गया। मालूम होता था कि उसे गिरिजाकुमार की बातों पर विश्वास हो रहा है मगर फिर भी बात को टाला चाहता है।

दारोगा–मगर ताज्जुब है कि मनोरमा ने मरे साथ ऐसा बुरा बर्ताव क्यों किया और उसे जो कुछ कहना था वह स्वय मुझसे क्यों नहीं कहा ?

गिरिजा–मैं इस बात का जवाब क्योंकर दे सकता हू ?

दारोगा–अगर मैं तुम्हार कह मुताविक चीठी लिख कर न दूँ तो ?

गिरिजा–तब इस कोडे से आपकी खबर ली जायगी और जिस तरह हो सकेगा आपसे चीठी लिखाई जायगी। आप खुद समझ सकते है कि यहॉ आपका कोई मददगार नहीं पहुच सकता।

दारोगा–क्या तुमको या मनोरमा को इस बात का कुछ भी खयाल नही है कि चीठी लिख कर भी छूट जाने के बाद मैं क्या कर सकता हू !!

गिरिजा–अब ये सब बातें तो आप उन्हीं से पूछियेगा मुझे जवाब देने की कोई जरूरत नहीं मैं सिर्फ उनके हुक्म की तामील करना जानता हू। बताइए आप जल्दी चीठी लिख देते हैं या नहीं, मैं ज्यादे दर तक इन्तजार नहीं कर सकता !

दारोगा–(झुझला कर और यह समझ कर कि यह मुझ पर हाथ न उठावेगा कवल धमकाता है) अबे मैं चीठी किस बात का लिख दूँ ! व्यर्थ की बकबक लगा रक्खी है !!

इतना सुनत ही गिरिजाकुमार ने कोड जमाने शुरू किए पॉच ही सात कोडे खाकर दारोगा बिलबिला उठा और हाथ जोड कर बाला "बस बस माफ करो, जो कुछ कहो मैं लिख देने को तैयार हू !

गिरिजाकुमार ने झट कलम, दावात और कागज अपने बटुए में से निकाल कर दारोगा के सामने रख दिया और उसके हाथ की रस्सी ढीली कर दी। दारोगा ने उसकी इच्छानुसार चीठी लिख दी। चीठी अपने कब्जे में कर लेने के बाद उसन दारागा की तलाशी ली कमर में खंजर और कुछ अशर्फियॉ निकलीं वह भी लेने के बाद दारोगा के हाथ पैर खोल दिए और बता दिया कि फलानी जगह आपके रथ और घोडे हैं जाइए कस कसा कर अपने घर का रास्ता लीजिए।

इतना कह गिरिजाकुमार चला गया और फिर दारागा को मालूम न हुआ कि वह कहॉ गया और क्या हुआ।

बारहवां बयान

इतना किस्सा कह कर दलीपशाह ने कुछ दम लिया और फिर इस तरह कहना शुरू किया –

गिरिजाकुमार ने अपना काम करके दारोगा का पीछा छोड नहीं दिया बल्कि उसे यह जानने का शौक पैदा हुआ कि देखें अब दारागा साहब क्या करते हे, जमानिया की तरफ विदा हाते हैं या पुन मनोरमा के घर जाते है या अगर मनोरमा के घर जाते हैं तो देखना चाहिए कि किस ढग की बातें हाती हे और कैसी रगत निकलती है।

यद्यपि दारोगा का चित्त द्विविधा में पडा हुआ था परन्तु उसे इस बात का कुछ कुछ विश्वास जरूर हो गया था कि मेरे साथ ऐसा खाटा बर्ताव मनोरमा ही ने किया है दूसरे किसी को क्या मालूम कि मुझसे उससे किस समय क्या बातें हुई। मगर साथ ही इसके वह इस बात को भी जरूर सोचता था कि मनोरमा ने एसा क्यों किया ? मैं तो कभी उसकी बात से किसी तरह इनकार नहीं करता था। जा कुछ उसने कहा उस बात की इजाजत तुरन्त दे दी अगर वह चीठी लिख देन के लिए कहती तो चीठी भी लिख देता फिर उसन ऐसा क्यों किया ? इत्यादि।

खैर जो कुछ हो दारागा साहब अपन हाथ से रथ जोत कर सवार हुए और मनोरमा के पास न जाकर सीधे जमानिया की तरफ रवाना हो गये। यह देख कर गिरिजाकुमार ने उस समय उनका पीछा छोड दिया और मेरे पास चला आया। जो कुछ मामला हुआ था खुलासा बयान करन बाद दारोगा साहब की लिखी हुई चीठी दी और फिर मुझसे विदा हाकर जमानिया की तरफ चला गया।

मुझे यह जान कर एक हौल सा पैदा हो गया कि बेचार गोपालसिह की जान मुफ्त में जाया चाहती है। मैं सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए जिसमें गोपालसिह की जान बचे। एक दिन और रात तो इसी सोच में पडा रह गया और अन्त में यह निश्चय किया कि इन्दरदेव से मिल कर यह सब हाल कहना चाहिए। दूसरा दिन मुझे घर का इन्तजाम करने में लग गया क्योंकि दारोगा की दुश्मनी के खयाल से मुझे घर की हिफाजत का पूरा-पूरा इन्तजाम करके ही तब बाहर जाना जरूरी था अस्तु मैंने अपनी स्त्री और बच्चे को गुप्त रीति से अपने ससुराल अर्थात् स्त्री के मॉ बाप के घर पहुचा दिया और उन लोगों को जो कुछ समझाना था सो भी समझा दिया इसके बाद घर का इन्तजाम करके इन्दरदेव की तरफ रवाना हुआ।